CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ाताजी : एक दृष्टि में

कैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

सोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१ न् १९३४)

: कु. मैना

मती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

र्य व्रत एवं गृहत्याग : ई. सन् १९५२ में पूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी

: चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी

: वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को ज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्य श्री की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री करकमलों से।

त्व : अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, -व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के स्कृत टीकाएं एवं २०० विशिष्ट ग्रंथों की में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा 'डी.लिट्.' से विभूषित।

गा : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, योध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, तीर्थंकर थली प्रयाग तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि दा) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल आदि।

: पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या भदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर न पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय व।

: 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर ठी, अवध विश्वविद्यालय-फैजाबाद में जैन , राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार धीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक य स्तर के सेमिनार आदि।

: जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (१९८२), र (१९९८), महावीर ज्योति (२००३)।

नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, N..., Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

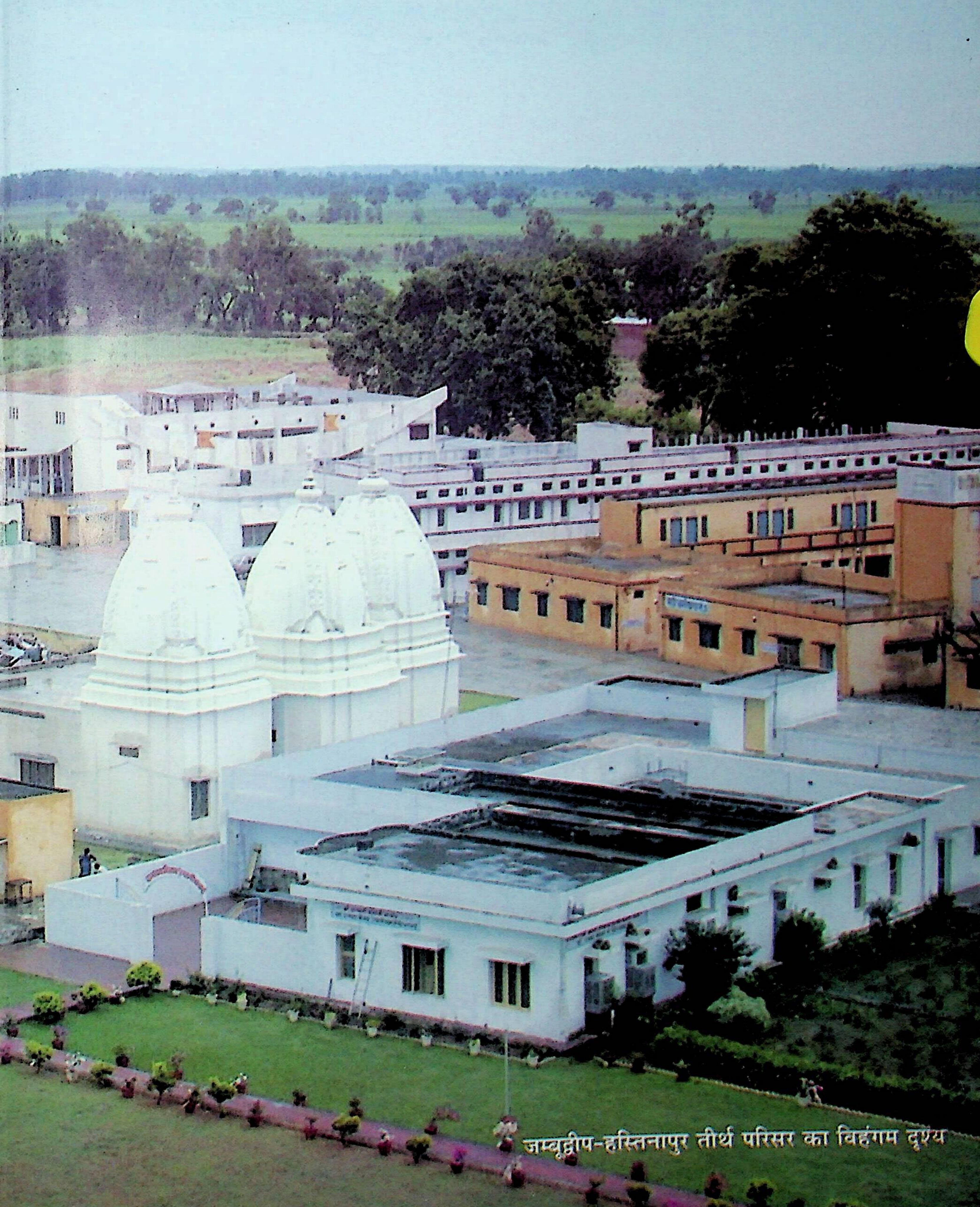

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर तीर्थ परिसर का विहंगम दृश्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आइरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वंदना

(शेर छंद)

कृतयुग के प्रथम देव आदिनाथ को नमूँ।
कलियुग के महासूरि कुन्दकुन्द को नमूँ।।
उस श्रृँखला के सूरि शान्ति सिंधु को नमूँ।
सदी बीसवीं के प्रथम महासूरि को नमूँ।।1।।

उनके ही प्रथम शिष्य वीर सिंधु को नमूँ।
आचार्य शिरोमणि के प्रथम पट्ट को नमूँ।।
श्री वीरसिंधु शिष्या ज्ञानमती को नमूँ।
सदी बीसवीं की प्रथम बालसती को नमूँ।।2।।

ये आर्यिका शिरोमणि गणिनी स्वरूप हैं।
ये युगप्रवर्तिका हैं माँ ब्राह्मी का रूप हैं।।
ये शान्ति सिंधु वाटिका की शान्तिदूत हैं।
ये वीर सिंधु शिष्यावलि की अग्रदूत हैं।।3।।

भवभोगों का स्पर्श भी जिनने नहीं किया।
सुकुमार अवस्था में ब्रह्मचर्य व्रत लिया।।
आगर्भ ब्रह्मचारिणी पावन पवित्र है।
इनकी तपोशक्ती जगत में सुप्रसिद्ध है।।4।।

हे माँ! मैं करूँ याचना वरदान दीजिए।
भव भव में रहे भक्ति तेरी ध्यान दीजिए।।
निज ख्याति लाभ पूजा से दूर रह सकूँ।
कर रत्नत्रय की वृद्धि ज्ञान पूर्ण भर सकूँ।।5।।

जिस गुरु के निकट धर्म को स्वीकार किया है।
जिस गुरु ने मुक्तिमार्ग का आधार दिया है।।
उन ज्ञानमती मात को शतशत मेरा नमन।
स्वीकार लो माँ चन्दनामती का समर्पण।।6।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण

जिनके आदर्श हिमालय पर्वत
से भी ऊँचे हैं, जिनकी वाणी से निःसृत
ज्ञानगंगा नील नदी से भी बड़ी है, जिनकी
कीर्ति प्रसार के समक्ष एशिया महाद्वीप का क्षेत्रफल
भी छोटा लगने लगता है और जिनके हृदय की गंभीरता
प्रशान्त महासागर को भी उथला सिद्ध कर रही है ऐसी
बीसवीं सदी की उन प्रथम बालब्रह्मचारिणी
दिगम्बर जैन समाज की वरिष्ठतम आर्यिका

डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय-फैजाबाद द्वारा
डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित

वात्सल्यमूर्ति, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, तीर्थोद्धारिका
गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

के पावन करकमलों में उनकी
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव
के स्वर्णिम अवसर पर दीपक से
सूर्य की आरती उतारने के सदृश
यह गौरव ग्रंथ
सविनय समर्पित।

4853

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
१५ अप्रैल २००६

वैशाख कृ. २,
वीर नि. सं. २५३२

समर्पणकर्ता
आर्यिका चन्दनामती,
समस्त सम्पादक मण्डल एवं श्रद्धालु भक्तगण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 263

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के शुभ अवसर पर प्रकाशित

गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ

मार्गदर्शन
आर्यिकारत्न
श्री अभयमती माताजी

प्रधान संपादिका
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका
श्री चन्दनामती माताजी

निर्देशन
पीठाधीश क्षुल्लकरत्न
श्री मोतीसागर जी महाराज

वरिष्ठ सम्पादक

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन
हस्तिनापुर

प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन
फिरोजाबाद

सम्पादक मण्डल

पं. शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी
डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद
डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
डॉ. सुशीलचन्द्र जैन, मैनपुरी
डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर

ब्र. कु. बीना जैन, हस्तिनापुर
ब्र. कु. इन्दू जैन, हस्तिनापुर
ब्र. कु. स्वाति जैन, हस्तिनापुर

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर
डॉ. भागचंद जैन भागेन्दु, दमोह
प्रो. टीकमचंद जैन, दिल्ली
प्रो. शुभचंद्र जैन, मैसूर
जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर

जम्बूद्वीप हस्तिनापुर

5853

– प्रकाशक –

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. फोन नं.- (01233) 280184, 280236

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

पुस्तकालय संस्करण : प्रथम

प्रकाशन तिथि : वैशाख वदी दूज, 15 अप्रैल 2006, शनिवार
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती

मूल्य : 1500/-रुपये

अक्षरांकन : ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

मुद्रक : विजय जैन, पारस प्रिंटर्स, नई दिल्ली। दूरभाष : (011) 23244060, 23289976

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Veer Gyanodaya Granthmala Serial No. 263

Published on the auspicious occasion of Aryika Deeksha Golden Anniversary Celebration of Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji

Ganini Gyanmati Gaurav Granth

GUIDANCE
Aryika Ratna
Shri Abhaymati Mataji

CHIEF EDITOR
Pragyashramani Aryika
Shri Chandnamati Mataji

DIRECTION
Peethadheesh Kshullak
Shri Motisagar Maharaj

SENIOR EDITORS
Karmayogi Br. Ravindra Kumar Jain
Hastinapur

Pracharya Narendra Prakash Jain
Firozabad

EDITORIAL BOARD
Pt. Shivcharan Lal Jain,
Mainpuri
Dr. Shekharchand Jain,
Ahmedabad
Dr. Shreyans Kumar Jain,
Baraut
Dr. Sushilchandra Jain,
Mainpuri
Dr. Jaikumar Jain,
Muzaffarnagar

Br. Km. Beena Jain
Br. Km. Indu Jain
Br. Km. Swati Jain

Dr. Anupam Jain,
Indore
Dr. Bhagchand Jain Bhagendu,
Damoh
Prof. Tikamchand Jain,
Delhi
Prof. Shubhchandra Jain,
Mysore
Jeevan Prakash Jain,
Hastinapur

जम्बूद्वीप हस्तिनापुर

Publisher
Digambar Jain Institute of Cosmographic Research
Jamboodweep-Hastinapur (Meerut) U.P.-250404
Ph. No.-(01233) 280184, 280236

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

VEER GYANODAYA GRANTHMALA

This granthmala is an ambitious project of D.J.I.C.R. in which we are publishing the original and translated works of Digamber Jain sect written in Hindi, English, Sanskrit, Prakrit, Apabhransh, Kannad, Gujarati, Marathi etc. We are also publishing short story type books, booklets etc. in the interest of beginners and children.

—Founder & Inspiration—

Ganini Pramukh Aryika Shiromani

SHRI GYANMATI MATAJI

—Guidance—

Pragya Shramni Aryika Shri Chandnamati Mataji

—Direction—

Peethadhish Kshullakratna Shri Motisagar Ji Maharaj

—Granthmala Editor—

Karmayogi Br. Shri Ravindra Kumar Jain

All Rights Reserved for the Publisher

Library Edition : First

Date of Publication : Vaishakh Vadi 2, 15 April 2006, Saturday
Aryika Deeksha Golden Anniversary

Price : 1500/-Rs.

Composing : Gyanmati Network, Jamboodweep-Hastinapur (Meerut) U.P.

Printed by : Vijay Jain, Paras Printers, New Delhi. Tel. : (011) 23289976, 9811083737

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न खण्ड के माध्यम से ग्रंथ में समाविष्ट विषय वस्तु का संक्षिप्त विवरण

		पेज संख्या
प्रथम खण्ड	–स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ	1 से 424
द्वितीय खण्ड	–मैना से ज्ञानमती तक जीवन यात्रा	1 से 120
तृतीय खण्ड	–साहित्य सृजन में तुमने नूतन इतिहास बनाया	1 से 88
चतुर्थ खण्ड	–पूज्य माताजी की ऐतिहासिक यात्राएँ एवं सृजनात्मक उपलब्धियाँ	1 से 120
पंचम खण्ड	–पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के अमूल्य प्रवचन एवं समसामयिक वार्ता	1 से 56
षष्ठ खण्ड	–पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के 50 स्वर्णिम वर्ष एवं वर्षायोग	1 से 88
सप्तम खण्ड	–राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय धर्मप्रभावना एवं तीर्थ विकास	1 से 104
अतिरिक्त	–रंगीन चित्रावली	
	ग्रंथ में समाविष्ट कुल पृष्ठ	1000
	(प्रारंभिक पृष्ठों से अतिरिक्त)	

नोट - ग्रंथ सामग्री की विस्तृत विषयानुक्रमणिका प्रारंभिक पृष्ठ क्रमांक 28 से प्रस्तुत की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथमाला सम्पादकीय

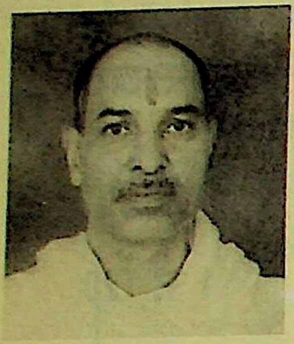

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा से हस्तिनापुर में सन् 1972 में 'दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान' की स्थापना के साथ-साथ उसके अन्तर्गत 'वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला' की भी स्थापना की गई। दिगम्बर जैन आर्ष मार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन तथा साथ-साथ धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाओं का प्रकाशन इस ग्रंथमाला का मूल उद्देश्य रहा है।

इस ग्रंथमाला द्वारा अब तक पूज्य ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित सैकड़ों ग्रंथ लाखों की संख्या में प्रकाशित हो चुके हैं, जिसका हमें विशेष गौरव है परन्तु यह गौरव सहस्रगुणा वृद्धिंगत हो रहा है जबकि प्रस्तुत **'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ'** को हम प्रकाशित करके आपके हाथों में सौंप रहे हैं। कारण स्पष्ट है कि जिन माताजी की प्रेरणा से इस ग्रंथमाला की स्थापना हुई तथा जिसने 1972 से पूज्य माताजी की ज्ञानसाधना, धर्मप्रभावना, तीर्थ निर्माण इत्यादि स्वर्णिम कार्य कलापों को प्रत्यक्षतया देखा एवं जाना है, उन्हीं की **'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव'** के अवसर पर इसे प्रकाशित करके उनके करकमलों में सौंपा जा रहा है, एक ग्रंथमाला हेतु अपनी प्रेरणास्रोत के प्रति यही विशिष्ट विनयांजलि है।

पूज्य माताजी कालजयी व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपनी साधना, कर्मठता एवं दृढ़ परिश्रम से समय की पुस्तक में अपना स्वर्णिम इतिहास जोड़ दिया है, उसी इतिहास के कतिपय अंश इस गौरव ग्रंथ में प्रस्तुत किये गये हैं, क्योंकि ऐसे युग प्रवर्तक व्यक्तित्व किसी भी लेखनी में आमूलचूल आबद्ध नहीं हो सकते तथापि यह गौरव ग्रंथ सुदीर्घ भविष्य में भी पूज्य ज्ञानमती माताजी के युग का स्मरण कराने में सक्षम होगा, ऐसा विश्वास है।

इस ग्रंथ के प्रकाशन का मुख्य श्रेय प्रज्ञाश्रमणी पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी को है, जिन्होंने अथक प्रयास एवं कठोर परिश्रम से ग्रंथ की रूपरेखा बनाने से लेकर फाइनल प्रूफ तैयार होने तक अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान किया है, ग्रंथ तैयार करने में विद्वत्वर्ग की विशेष सहृदयता भी प्रशंसनीय है। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला का यह पुष्प आपको भी अपनी गौरवमयी जिनसंस्कृति पर गौरव करने का अवसर प्रदान करे, यही मंगल भावना है।

—कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन
(अध्यक्ष—दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयोध्या

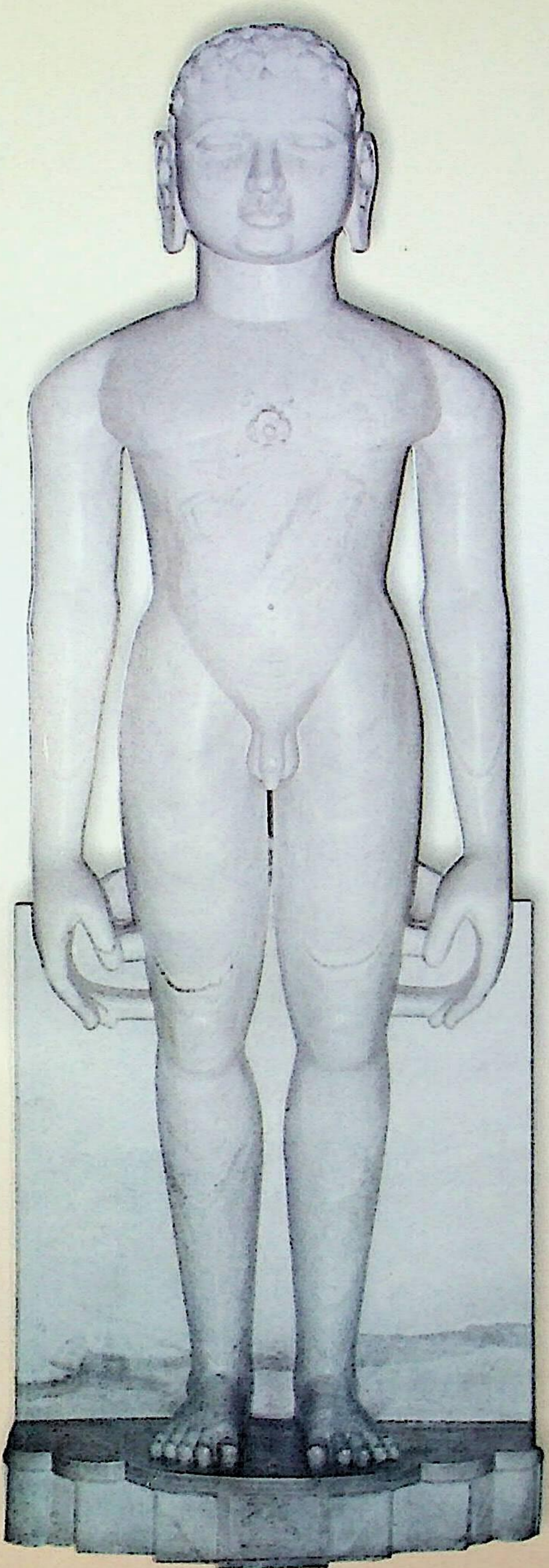

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या में विराजमान ३१ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा

कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार

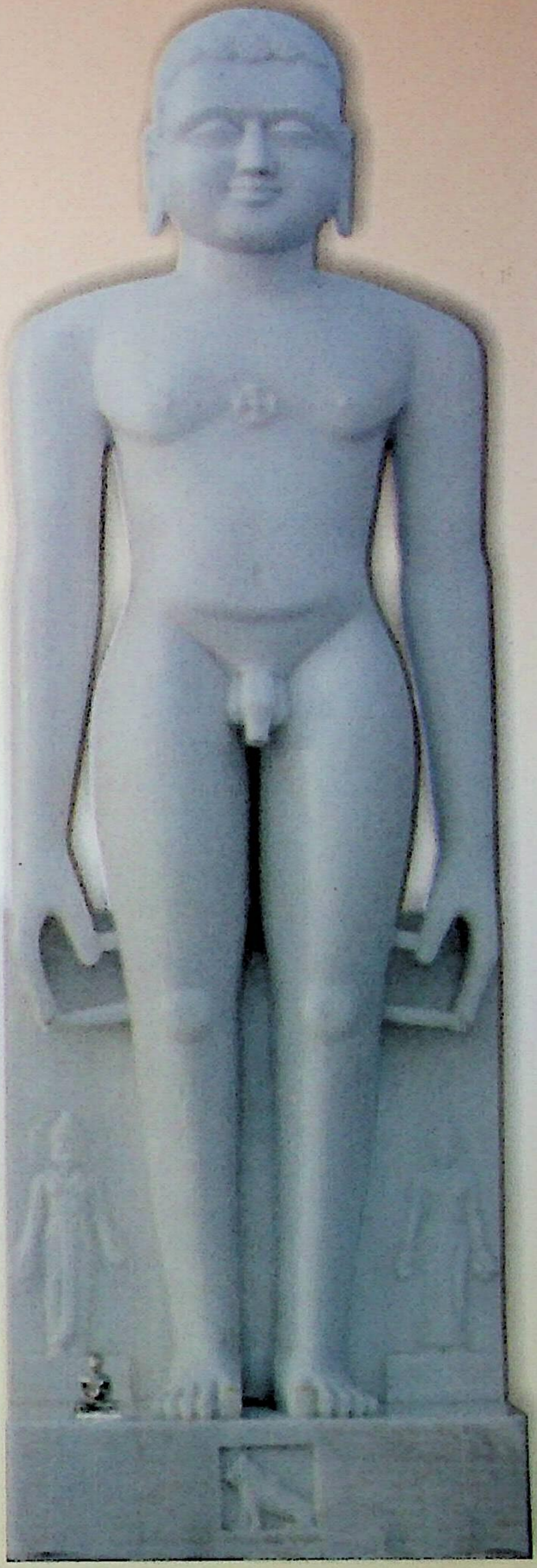

अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में विराजमान भगवान महावीर स्वामी की मनोज्ञ प्रतिमा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पूज्य माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र. में भगवान पार्श्वनाथ मंदिर की मूलवेदी
बचपन में इसी मंदिर में दर्शन व पूजन करती थीं कु. मैना (वर्तमान आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी)

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती
श्री शांतिसागर जी महाराज (दक्षिण)

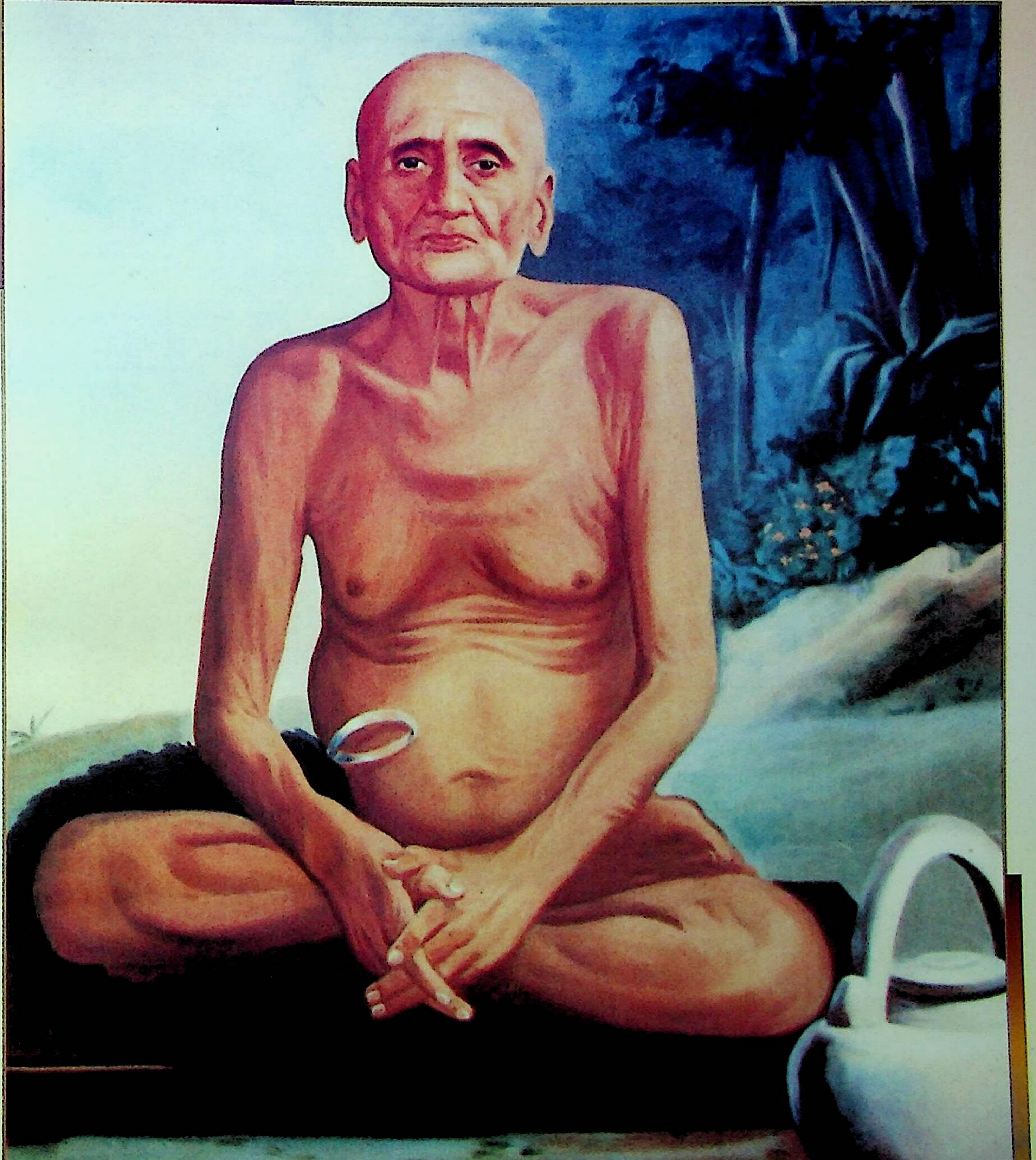

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की क्षुल्लिका दीक्षा के गुरु

आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज

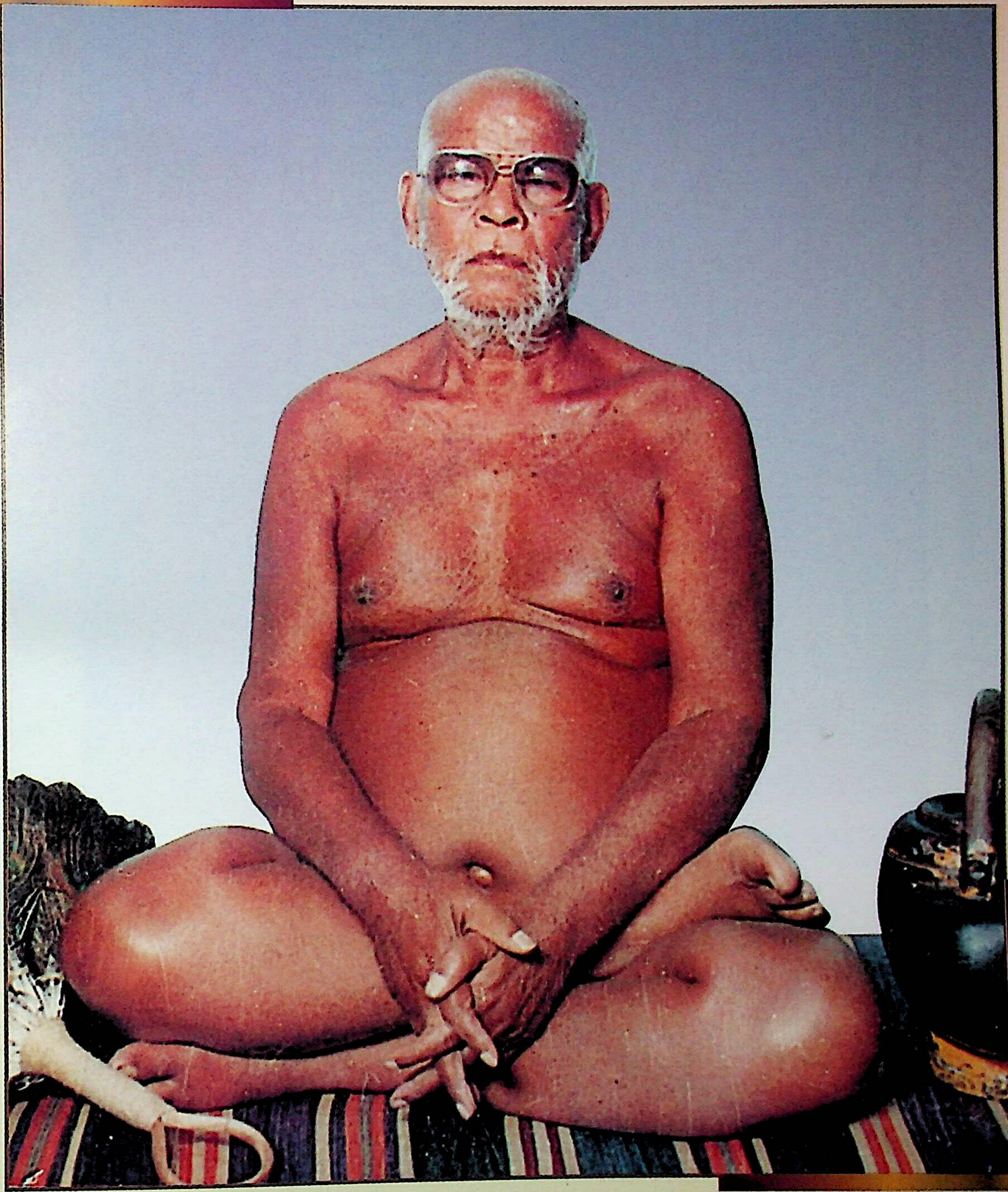

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षा गुरु

आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज

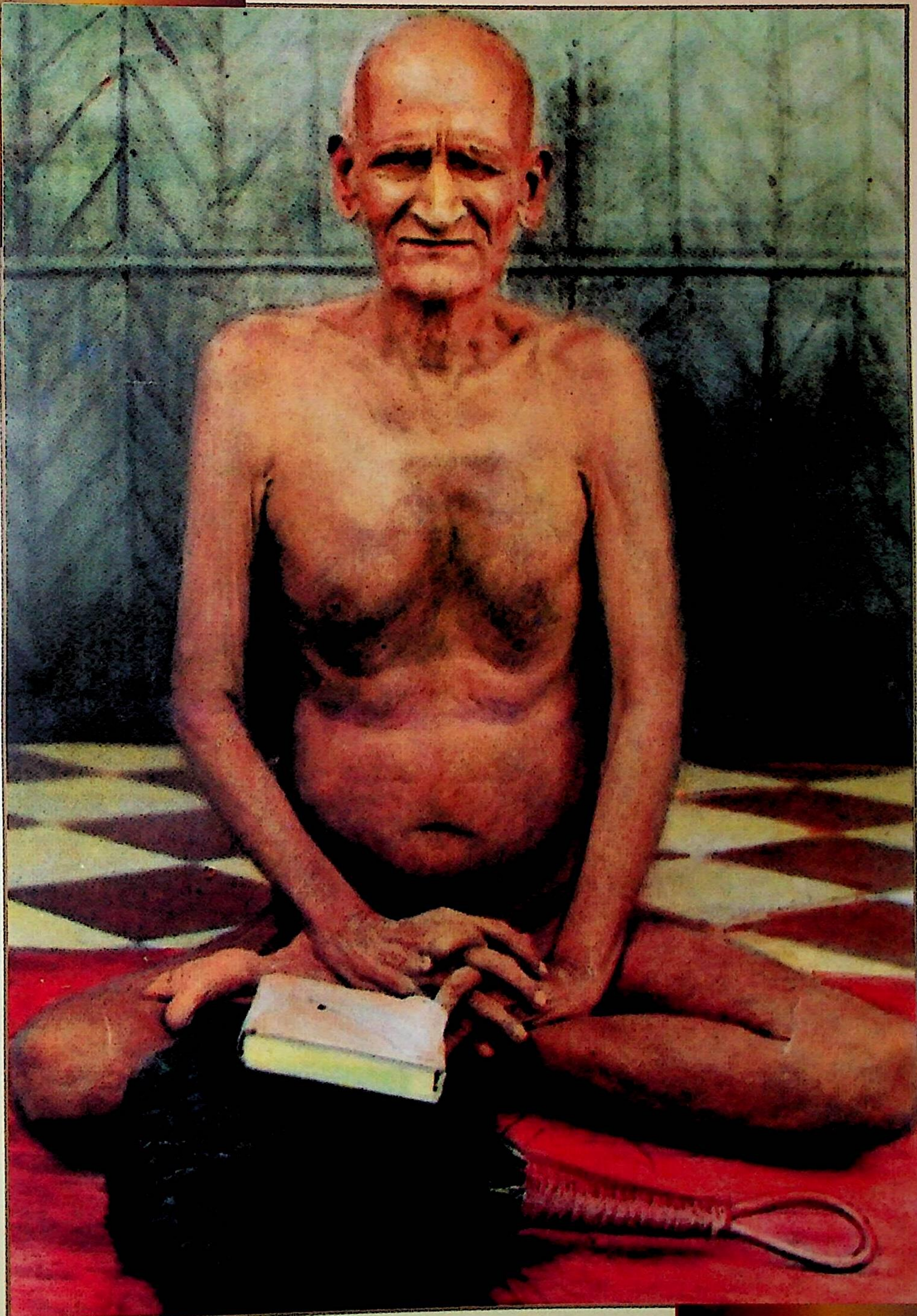

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका श्री रत्नमती माताजी

(पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की जन्मदात्री माँ)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गौरव ग्रंथ की मार्गदर्शिका

आर्यिका श्री अभयमती माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

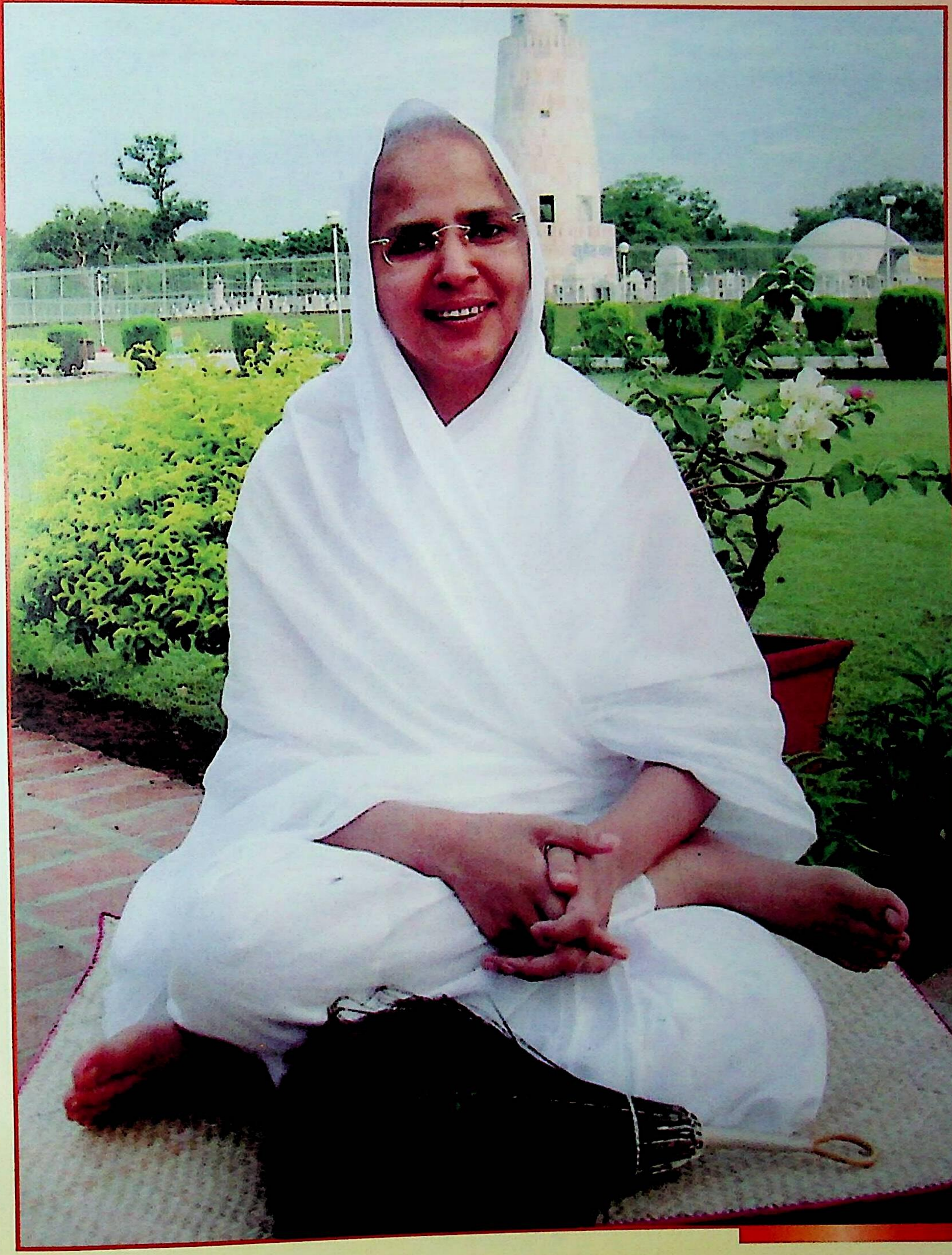

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संघस्थ शिष्य-शिष्याएँ

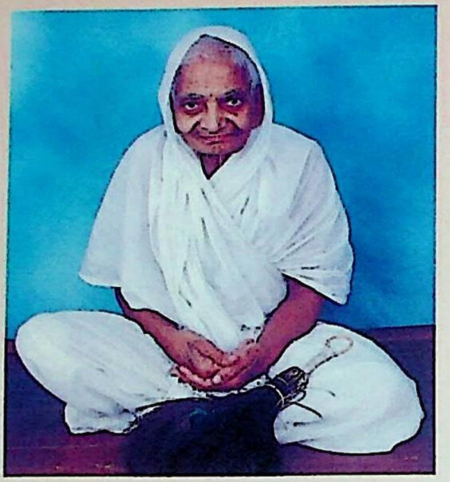

क्षुल्लिका श्री शांतिमती माताजी

ब्र. कु. बीना जैन

ब्र. कु. आस्था जैन

ब्र. कु. सारिका जैन

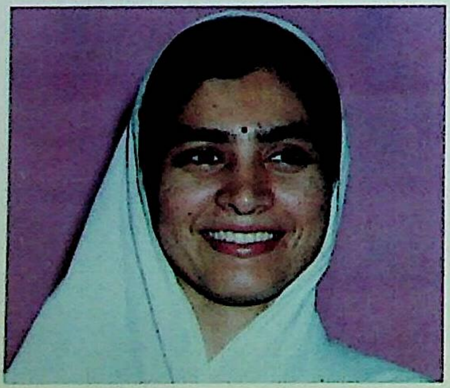

ब्र. कु. चन्द्रिका जैन

ब्र. कु. इन्दू जैन

ब्र. कु. अलका जैन

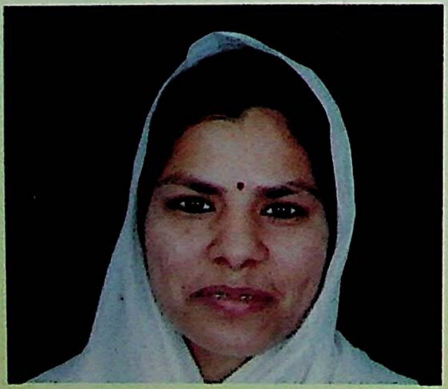

ब्र. कु. प्रीति जैन

ब्र. कु. स्वाति जैन

ब्र. विजय जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पीठाधीश

क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

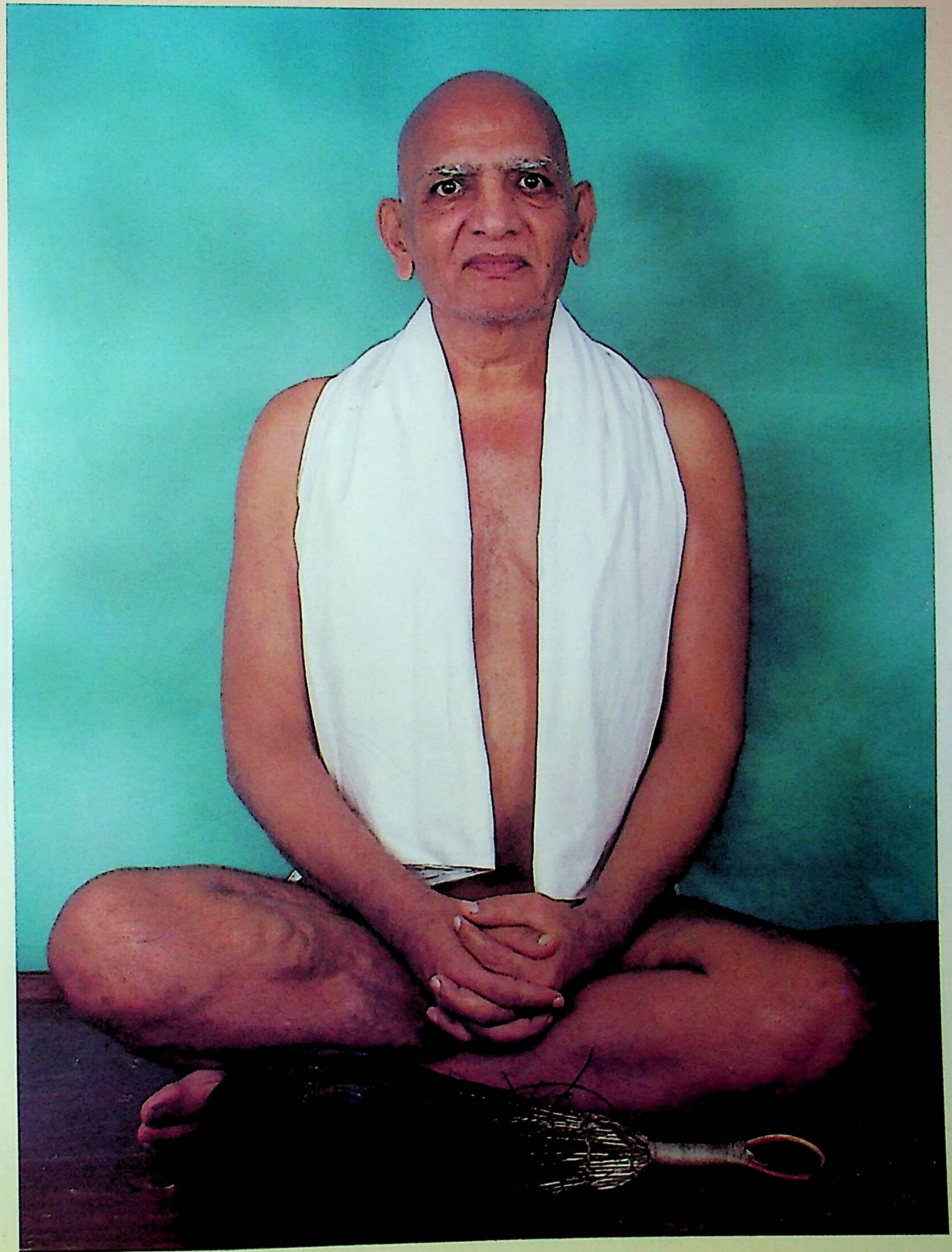

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

अध्यक्ष-दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के विशेष सहयोगी

शिरोमणि संरक्षक

संघपति महावीर प्रसाद जैन
दिल्ली

शिरोमणि संरक्षक

राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स'
दिल्ली

परम संरक्षक

जगजीवन जैन, राजौरी गार्डन
दिल्ली

संरक्षकगण

रिसबदास जैन-वाराणसी

कमलचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली

विजय जैन, दरियागंज-दिल्ली

ज्ञानचंद जैन, आरा

अनिल जैन (कमल मंदिर),
दिल्ली

कमल कुमार जैन, आरा

सुमत प्रसाद जैन,
देवनगर, दिल्ली

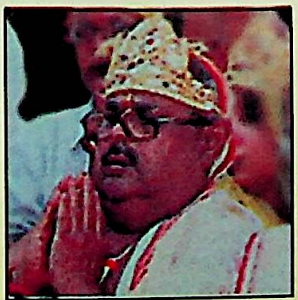

अजित कुमार अजमेरा,
धूलियान

अतुल कुमार जैन,
प्रीतविहार, दिल्ली

सुधीर जैन ठेकेदार,
लखनऊ

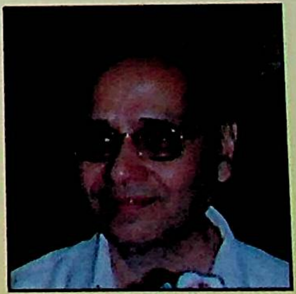

सुभाषचंद जैन,
साउथ एक्स.दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, हस्तिनापुर

ग्रंथ के वरिष्ठ सम्पादक

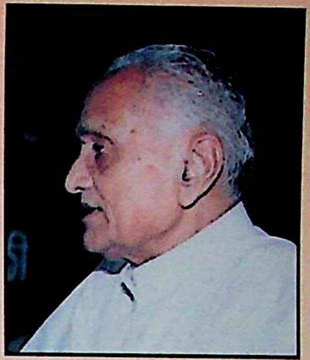

प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद

सम्पादक मण्डल

ब्र. कु. बीना जैन

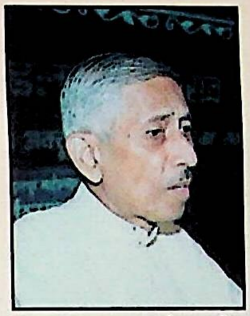

पं. शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

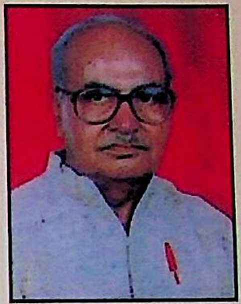

डॉ. भागचन्द जैन भागेन्द्र, दमोह

ब्र. कु. इन्दू जैन

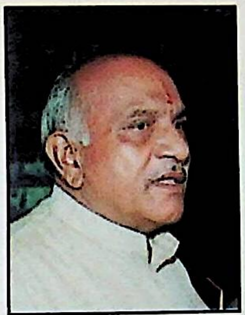

डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद

डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर

प्रो. टीकमचंद जैन, दिल्ली

ब्र. कु. स्वाति जैन

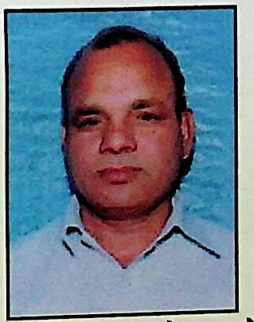

डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत

डॉ. सुशीलचन्द्र जैन, मैनपुरी

प्रो. शुभचन्द्र जैन, मैसूर

जीवन प्रकाश जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आभार

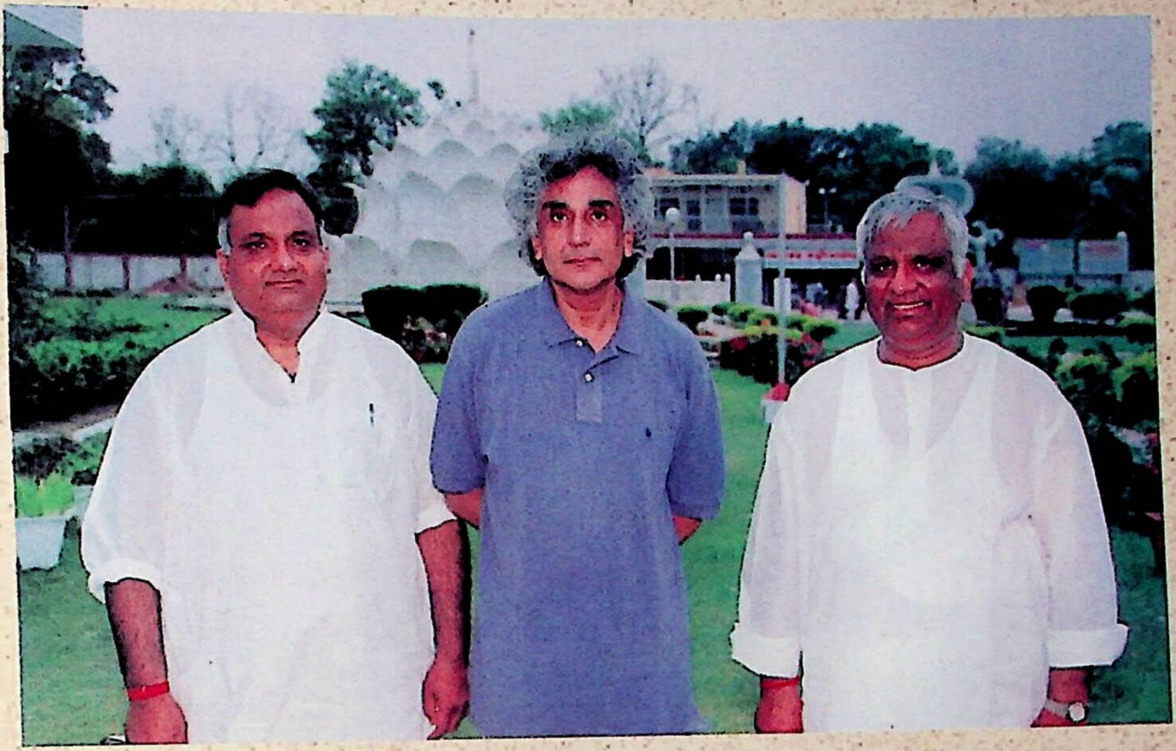

भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थ के जम्बूद्वीप स्थल पर बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की पावन परम्परा में उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर महाराज के द्वारा दीक्षित प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित इस ''गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ'' के प्रकाशन में राजेन्द्र नगर-नई दिल्ली निवासी श्री आनन्द जैन, दीपक जैन एवं मुम्बई निवासी श्री अशोक पाटनी ने अपने परिवार की ओर से गुरुभक्ति के प्रतीक में अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग कर आर्थिक सहयोग प्रदान किया है।

एतदर्थ दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति इस परिवार के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हुए धन्यवाद ज्ञापित करती है।

अध्यक्ष-आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रधान सम्पादिका की कलम से

"गौरव ग्रंथ मात्र एक पुष्पांजलि है"

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

व्यक्ति पूजा से हटकर गुण पूजा को मान्यता देने वाले जैनधर्म का इतिहास अनादिनिधन है। इसमें सदैव से महापुरुषों ने जन्म लेकर धर्मतीर्थ की रक्षा, वृद्धि और प्रभावना करते हुए जैनशासन को गौरवान्वित किया है। उन्हीं महापुरुषों में इस युग के 24 तीर्थंकर (भगवान ऋषभदेव से महावीर तक) हुए हैं पुनः उसी मार्ग का अनुसरण करने वाले आचार्य श्रीकुन्दकुन्द स्वामी का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है तथा उसी निर्ग्रन्थ परम्परा में बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्र-चक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज का उपकार तो वर्तमान चतुर्विध संघ के लिए एक अमूल्य वरदान ही सिद्ध हुआ है। क्योंकि उन्होंने न केवल मुनि परम्परा का पुनरुद्धार किया है, बल्कि मूलाचार ग्रंथ के अनुसार मुनियों की आचार संहिता को स्वयं अपनाकर भावी परम्परा को मोक्षमार्ग का सच्चा दिग्दर्शन कराया है।

ऐसी शीघ्र मोक्षगामी महान आत्माएं संसार में कभी-कभी जन्म लेकर नये युग का निर्माण करती हैं तभी तो वे युग निर्माता के रूप में जाने जाते हैं। पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी भी ऐसी ही एक युग निर्मात्री हैं, जिन्होंने अपने दीर्घकालीन दीक्षित जीवन में देश के लिए जो अमूल्य धरोहरें प्रदान की हैं, वे युग-युग तक जैन संस्कृति की प्रभावना करने वाली हैं।

दीर्घकालीन तपस्या से अर्जित किया है पुण्य इन्होंने–

जब किसी जिन प्रतिमा का दर्शन किया जाता है तो उसकी प्राचीनता ज्ञात होने पर दर्शन करने वाले श्रद्धालु भक्त की भक्ति कुछ विशेष ही हो जाती है, यह सर्वमान्य तथ्य है। वास्तविकता यह है कि जिनप्रतिमा जितनी प्राचीन होती है, उसके भक्तिभावपूर्वक दर्शन-वंदना करने से उतना ही अधिक पुण्य प्राप्त होता है। वर्तमान काल में यही सत्य हमारे सामने साकाररूप ले रहा है पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के रूप में। 18 वर्ष की अल्प आयु में घर का त्याग कर युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी के रूप में त्यागमार्ग में कदम बढ़ाने वाली इस लौह-बाला ने त्यागमयी जीवन के जो 54 वर्ष पूर्ण किए हैं उनसे एक विशेष प्रकार का अतिशय उनमें उत्पन्न हो गया है। पूज्य माताजी के अनेक कार्यकलापों को देखकर लोग अक्सर कहा करते हैं कि माताजी तो महान पुण्यशालिनी हैं और उस पुण्य के बल पर ही उनके द्वारा इतने बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न हो रहे हैं, परन्तु वास्तव में पुण्य कहीं बाजार में नहीं मिलता है और न ही किसी दुकान से खरीदा जा सकता है। पूज्य माताजी ने भी यह अपार पुण्य किसी से उधार नहीं लिया है वरन् इन 54 वर्षों में एक-एक क्षण करके घट में बूँद-बूँद की भाँति उसे अर्जित किया है।

अखण्ड असिधारा व्रत की स्वर्णिम धारा (54 वर्ष), महाव्रतों को पालन करने की सूक्ष्म चर्या, मोक्षमार्ग के प्रणेता भगवान जिनेन्द्र के प्रति उनके कण-कण में व्याप्त अनुपमेय अपार भक्ति, प्रतिक्षण स्व एवं पर के कल्याण हेतु अटूट परिश्रम के महायज्ञ में समर्पण उनके इस महान पुण्यरूपी प्रासाद के सुदृढ़ स्तम्भ बने हैं।

किन्हीं नीतिकार का कथन पूर्ण सत्य है–

पुण्यस्य फलमिच्छंति, पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः।
न पापफलमिच्छंति, पापं कुर्वन्ति यत्नतः।।

अर्थात् लोग पुण्य से प्रसूत सुखरूप फल की इच्छा करते हैं, परन्तु पुण्य करना नहीं चाहते हैं। वे पापरूप फल को नहीं चाहते हैं परन्तु पाप के संचय में (सदैव) प्रयत्नशील रहते हैं।

देखा जाये तो संसार में यही स्थिति बनी हुई है, लोग समस्त सुख-सम्पत्ति-वैभव के आधारभूत पुण्य क्रियाओं से तो अछूते बने रहते हैं और अपने जीवन में सदैव ऊँचाईयों की अभिलाषा से त्रस्त रहा करते हैं। ऐसे लोगों के लिए पूज्य माताजी का जीवन विशेषरूप से प्रेरणास्पद है।

पूज्य माताजी जिस तीर्थ को छूती हैं, वह आकाश की ऊँचाईयों को छूने लगता है, जिस मिट्टी को छूती हैं, वह सोना बन जाती है, जिस जंगल में पहुँच जाती हैं, वहाँ स्वर्ग बन जाता है, जिस ग्राम की धरती पर चरण रखती हैं, वह मंदिर बन जाता है, जिस व्यक्ति पर उनकी दृष्टि पड़ जाती है, वह अपने जीवन में इंसान से भगवान बनने की ओर अग्रसर हो जाता है और जिस बिन्दु का वह स्पर्श करती हैं, वह सिंधु बनने के लिए चयनित हो जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यही कारण है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में मात्र 22 माह में हुए विशाल निर्माणकार्य को देखकर लोगों के मुख से सहसा निकलता है कि बीसों वर्ष का कार्य मानो स्वयं देवों ने आकर इतने अल्प समय में साकार कर दिया है। वस्तुतः देवोपुनीत इस कार्य को देखकर लोग आश्चर्य से दाँतों तले अगुँली दबा लेते हैं। पूज्य माताजी के साथ जुड़ने वाले भक्तों का समर्पण भी इसीलिए रहता है क्योंकि वह मात्र मंदिर या तीर्थ नहीं बनाती हैं वरन् जैन शासन की प्राचीन संस्कृति एवं अतिप्राचीन इतिहास की सुरक्षा में आचार्य कुन्दकुन्द एवं अकलंक देव जैसे उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं। साररूप में यदि कहा जाये तो उनके द्वारा विशाल साहित्य सृजन, हस्तिनापुर-अयोध्या-मांगीतुंगी-अहिच्छत्र-प्रयाग-कुण्डलपुर जैसे अनेकानेक तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं विकास, जैन धर्म की प्राचीनता को जन-जन तक पहुँचाने के लिए किए गए महान प्रभावनात्मक कार्य जिनेन्द्र भगवान, जिनशासन एवं जिनवाणी के प्रति उनकी अटूट भक्ति एवं समर्पण के ही प्रतीक हैं। प्रारंभ से ही जिनशासन को अपना सर्वस्व मानने वाली पूज्य माताजी ने अपना हर कदम आगमानुकूल एवं अपने मोक्षमार्ग को प्रशस्त करने के लिए बढ़ाया है। प्रतिदिन उनके मुख से यही निकला करता है कि हे भगवन्! यदि मेरे द्वारा किंचित् भी आपके प्रति भक्ति एवं गुणानुरागरूप क्रियाएँ सम्पन्न हो रही हैं, तो उनके पीछे मेरा एकमात्र यही स्वार्थ निहित है कि आने वाले कुछ ही भवों में मैं इस प्रकार की उच्चतम साधना एवं ध्यानाग्नि का प्रश्रय ले सकूँ कि मेरे समस्त कर्म मलों की शृँखला चूर-चूर होकर मेरी शुद्ध चेतनस्वरूप आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति हो सके।

तीर्थंकर भगवन्तों एवं आगम में वर्णित मोक्ष पथ की वर्तमानकालीन साधना के प्रति उनकी अतिशय भक्ति का ही यह परिणाम है कि तीर्थंकर भगवन्तों के पंचकल्याणकों की भूमियों विशेषरूप से संस्कृति की उद्गमस्थल-जन्मभूमियों के संरक्षण एवं विकास के प्रति उनके हृदय में विशेष संकल्प बना हुआ है। उनकी कर्मठता एवं संकल्पशक्ति के विषय में समाज को पूर्ण विश्वास है कि जिस कार्य को माताजी हाथ में लेंगी, वह निश्चित रूप से बहुत ही सुन्दर एवं व्यवस्थित रूप में अल्प समय में ही पूर्ण हो जायेगा, इसीलिए पूज्य माताजी के आह्वान पर समाज भी हृदय से उस उद्देश्यात्मक कार्य के प्रति समर्पित हो जाता है। ठीक ही है कि जो वास्तव में कार्य करके दिखाते हैं, उनके प्रति श्रद्धा का भाव सहज ही उमड़ता है।

गौरव ग्रंथ का समर्पण मात्र एक पुष्पांजलि समर्पण है–

पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति वर्तमान युग के लिए एक स्वर्णिम प्रेरणा का अवसर है, जो हमें संदेश देता है कि इस भौतिक युग में भी त्याग और संयम की दुष्कर साधना करने वाले तपस्वी विद्यमान हैं, जो वृक्ष की तरह प्रत्येक प्राणी को धर्म की शीतल छाया प्रदान करते हैं, मिश्री के समान धर्मामृत का मीठा स्वाद प्रदान करते हैं, वर्षा के जल सदृश सभी को ज्ञान गंगा से अभिसिंचित करते हैं तथा औषधि के समान सभी को आरोग्यता प्रदान करते हैं। जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण नई उपलब्धि से सहित है, जिनके जीवन का प्रत्येक दिवस नई प्रेरणा प्रदान करने वाला होता है, जिनके जीवन का प्रत्येक मास नये सृजन-निर्माण को करने वाला है एवं जिनके जीवन का प्रत्येक वर्ष नया कीर्तिमान स्थापित करने वाला रहा है, ऐसी परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षित जीवन के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर इस गौरव ग्रंथ का निर्माण किसी हरे-भरे उद्यान से कुछ पुष्पों को लेकर उद्यान को ही समर्पित करने के समान है या फिर गंगा के जल से गंगा को संतर्पण करने के समान ही समझना चाहिए।

इस ग्रंथ का नाम है-गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ। अर्थात् नाम के अनुसार इस ग्रंथ में पूज्य माताजी के गौरव के अनुरूप बहुत भारी-भरकम विषय समाविष्ट होना चाहिए था किन्तु इस ग्रंथ जैसे यदि इनके पचास वर्षों के 50 ग्रंथ प्रकाशित कर दिये जावें तो शायद ही इनका वास्तविक गौरव प्रकाशित हो सकेगा। क्योंकि इनके गृहत्याग से लेकर दीक्षा ग्रहण, शिष्य संग्रह, अध्ययन-अध्यापन, भारत भ्रमण, साहित्य सृजन, तीर्थ निर्माण, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय धर्मप्रभावना एवं अन्य अनेकानेक प्रेरणाएं वास्तव में ग्रंथाकार करने में वृहत् काय इतिहास देश के समक्ष प्रस्तुत हो सकता है। आगे की पीढ़ियाँ इस कार्य हेतु निश्चितरूप से उपक्रम करेंगी, अनेक उत्साही एवं गुणग्राही शोध छात्र-छात्राएं इस ओर आज से ही प्रयत्नशील हैं।

पूज्य माताजी के जीवन पक्ष को विभिन्न पहलुओं के द्वारा संक्षिप्त रूप में प्रदर्शित करने वाले सात खण्डों में विभक्त इस गौरव ग्रंथ को साकार करने में सहयोगी रहे सभी लोगों ने गुरुभक्ति का उदाहरण प्रस्तुत कर पुण्य संचित किया है। 22 दिसम्बर 2005 को निर्णय होने के बाद अति अल्प समय में स्वर्णजयंती महोत्सव समिति एवं महोत्सव विद्वत् समिति के पत्राचार प्रयासों से ग्रंथ की सामग्री का संग्रह हुआ। इसमें साधु-साध्वियों का वात्सल्य, राजनेताओं की धर्मभावना, विद्वानों का समर्पण, संस्थाओं की सहृदयता, समाजों की श्रद्धा एवं जनसामान्य की अप्रतिम भक्ति का अतिशीघ्र प्रभाव सामने आया और उसी का संयोजन कर यह ग्रंथ आप सभी के समक्ष प्रस्तुत हुआ है।

ग्रंथ की योजना प्रारंभ होते ही कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी (अध्यक्ष-स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति) एवं डॉ. सुशीलचन्द्र जैन-मैनपुरी (महामंत्री-महोत्सव विद्वत् समिति) ने देश भर से पत्राचार की जिम्मेदारी का भार लिया, उनकी कार्यकुशलता से सभी परिचित हो ही चुके हैं। गौरव अध्यक्ष प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन-फिरोजाबाद से तो मैंने दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव एवं गौरव ग्रंथ संबंधी सम्पूर्ण विचार-विमर्श करके ही प्रत्येक कार्य को मूर्तरूप दिया है। इसी प्रकार अध्यक्ष के रूप में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डॉ. श्रेयांस जैन-बड़ौत, कार्याध्यक्ष डॉ. अनुपम जैन-इंदौर एवं अनेकानेक विद्वानों ने भी समय-समय पर अपने सुझाव देकर इस दीक्षा स्वर्ण जयंती को प्रभावकस्वरूप प्रदान करने में अपनी अहम् भूमिका निभाई है। इन सभी की सहृदयता हेतु मंगल आशीर्वाद है।

अक्टूबर 2005 में दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव की रूपरेखा बनते ही मैंने सर्वप्रथम संघपति लाला महावीर प्रसाद जी-दिल्ली से परामर्श किया, तो उन्होंने बड़ी प्रसन्नता दर्शाते हुए गौरवपूर्वक प्रथम शिरोमणि संरक्षक के रूप में अर्थांजलि समर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त किया, फिर तो एक से एक भक्त जुड़ते गये, जिनमें पूज्य माताजी के अनन्य भक्त श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स'-दिल्ली (शिरोमणि संरक्षक), श्री जगजीवन कुमार जैन-दिल्ली (परम संरक्षक), श्री कमलचंद जैन-दिल्ली, श्री अजित जैन अजमेरा-धूलियान (प. बंगाल), श्री अनिल जैन 'कमल मंदिर', प्रीतविहार-दिल्ली एवं श्री विजय कुमार जैन (पारस प्रिन्टर्स) दरियागंज-दिल्ली आदि अनेक महानुभावों ने उत्साहपूर्वक अर्थांजलि भेंट करके महोत्सव को गरिमा प्रदान की है। इन सभी दानी महानुभावों के लिए मंगल आशीर्वाद है।

पूज्य माताजी के वरिष्ठतम शिष्य, जम्बूद्वीप के पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज यूँ तो संस्थान के प्रत्येक कार्य को अपने कुशल निर्देशन में सम्पन्न करवाते ही हैं, फिर भी ग्रंथ के निमित्त से उनके द्वारा किया गया लेखन परिश्रम वास्तव में सराहनीय रहा है। मेरी एक मात्र प्रेरणा पर उन्होंने पूज्य माताजी के सन् 1953 से लेकर 2005 तक वर्ष एवं वर्षायोग लिखने में रात-दिन मेहनत की। इसी प्रकार माताजी के सम्पूर्ण साहित्य के संक्षिप्त परिचय भी उन्होंने प्रदान किये हैं। पूर्ण मनोयोग के साथ हर पल कार्य को सम्पन्न कराने वाले उन मोतीसागर महाराज एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी के लिए भला लिखा भी क्या जाए, उनके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन के लिए मंगल कामना के साथ भविष्य में भी वात्सल्यभाव की अपेक्षा है। पूज्य माताजी की पुरानी शिष्या पूज्य चारित्रश्रमणी आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी के वात्सल्यपूर्ण मार्गदर्शन ने भी हम लोगों का प्रत्येक कार्य में उत्साहवर्धन किया है। संघस्थ ब्रह्मचारिणी कु. बीना, आस्था, सारिका, चन्द्रिका, इन्दू, अलका, प्रीति, स्वाति जैन ने पूरी तन्मयता के साथ प्रत्येक कार्य में जो सक्रिय सहयोग प्रदान किया है, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता, इन सभी बहनों को ज्ञान और चारित्र की वृद्धि हेतु खूब मंगल आशीर्वाद है। संघ में नये प्रविष्ट हुए युवा ब्रह्मचारी विजय कुमार जैन ने भी ग्रंथ में प्रकाशन हेतु तीन रथों के भ्रमण का विवरण लिखने के साथ-साथ अन्य कार्यों में भी सहयोग प्रदान किया है। इनके नव जीवन निर्माण हेतु शुभाशीर्वाद। युवा प्रतिभा चिरंजीव जीवन प्रकाश जैन की गुरुभक्ति एवं लगनशीलता ने ग्रंथ के सौन्दर्य को वृद्धिंगत किया है, उनके लिए मंगल आशीष। इसी क्रम में चि. अंशुल मित्तल को अल्पसमय में ग्रंथ की कम्प्यूटर कम्पोजिंग करके समय पर सारा मैटर तैयार करने हेतु आशीर्वाद है।

मैं समझती हूँ कि पूज्य माताजी जैसी महान विभूति के करकमलों में कुछ भी समर्पित करके उन्हें हम सम्मानित नहीं कर सकते हैं। अपितु अपने आपको ही गौरवान्वित बना सकते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में आयोजित वर्तमान सदी के प्रथम दीक्षा स्वर्ण जयंती के इस विलक्षण महोत्सव में दिगम्बर जैन समाज के सभी वर्ग अति उत्साह से भाग लेकर पूज्य माताजी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट कर रहे हैं। उनमें प्रमुख दिगम्बर जैन राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं क्षेत्रीय संस्थाओं/समाज के प्रतिनिधिगण महोत्सव में पधारकर पूज्य माताजी के प्रति अपने भक्तिसुमन अर्पित करेंगे साथ ही इस महोत्सव के माध्यम से उत्तर भारत में प्रथम बार आयोजित भट्टारक सम्मेलन में दक्षिण भारत के भट्टारकगण पधारकर पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित करेंगे। पूज्य माताजी के प्रति जैन-जैनेतर भक्तों की श्रद्धा भी अटूट है, यह इस बात से महसूस होता है कि जहाँ इस स्वर्णिम मौके पर विभिन्न विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थाओं, जिलाधिकारी एवं देश के उच्च कोटि के अनेकानेक विद्वानों द्वारा पूज्य माताजी की अभिवंदना करके अनूठा पुण्य अर्जित किया जा रहा है वहीं अनेक पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकगण स्वर्ण जयंती के विशेषांकों को प्रकाशित करके अपना गौरव बढ़ा रहे हैं। ऐसा लगता है कि जब आस्था चैनल के माध्यम से इस वैराग्यमयी चारित्र समारोह का सीधा प्रसारण किया जायेगा, तब प्रत्यक्षरूप से यहाँ पधारे एवं घर बैठे दुनिया के करोड़ों लोग इस पुण्य को अर्जित करने से अछूते नहीं रहेंगे।

इस तरह जहाँ सारा समाज पूज्य माताजी के प्रति अपने भक्ति पुष्पों को अर्पित करके गौरवान्वित हो रहा है, वहीं उनके करकमलों में यह गौरव ग्रंथ समर्पित करते हुए मेरा मन भी अत्यंत हर्षित है। मुझे विश्वास है कि स्वर्ण जयंती के अवसर पर प्रकाशित इस ग्रंथ के माध्यम से पूज्य माताजी के बेमिसाल व्यक्तित्व, उनके आगमोक्त चिंतन एवं चर्या के साथ-साथ उनके द्वारा किये गये आश्चर्यकारी ऐतिहासिक कार्यों की सत्य घटनाएं सप्रमाण इतिहास के पन्नों पर हजारों वर्षों तक सुरक्षित रहेंगी। ग्रंथ की समग्र विषय वस्तु में समाहित पूज्य माताजी के जीवन दर्शन को पढ़कर एक नहीं वरन् अनेक पीढ़ियाँ सदियों तक जैन संस्कृति के संरक्षण, तीर्थोद्धार, तप-त्याग, देव, शास्त्र और गुरु के प्रति अगाढ़ भक्ति आदि की प्रेरणाएं प्राप्त करती रहे, यही मंगल भावना है।

पूज्य माताजी के श्रीचरणों में शत-शत नमन करते हुए मैं जिनेन्द्र प्रभु से उनके दीर्घ, मंगल एवं स्वस्थ्य जीवन की प्रार्थना करती हूँ।

दिनाँक–18-3-06

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरोवाक्

जैन जगत् में ऐसा कौन है, जो गणिनीप्रमुख पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के नाम से परिचित न हो! किसी का नाम हमेशा उसके काम से होता है, जो बड़ा काम करता है, उसका नाम इतिहास में सदियों के लिए सुरक्षित हो जाता है। पूज्य माताजी के काम चतुर्मुखी रहे हैं- (1) गत 20वीं सदी की वह ऐसी प्रथम महिलारत्न हैं, जिन्होंने अगम और अथाह आगम-सिंधु में तल तक गोते लगाकर जैन तत्त्वज्ञान के बहुमूल्य हीरे-मोती बटोरे हैं (2) इस बेशकीमती श्रुत-सम्पदा को पाकर उस पर अपना एकाधिकार न रखते हुए उन्होंने अपने प्रवचनों, शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों और साहित्य-सृजन के माध्यम से संतों, विद्वानों और श्रावक-श्राविकाओं को निरन्तर बाँटते रहने की अपूर्व उदारता प्रदर्शित की है (3) सभी मोहासक्त संसारी जीवों को यव-सन्तरण की प्रेरणा देने वाले तीर्थक्षेत्रों, विशेषतः तीर्थंकरों के कल्याणक क्षेत्रों के जीर्णोद्धार और विकास से उन्होंनें भक्तों का हृदय जीत लिया है तथा (4) **'संयम बिनु जीवन सयल सुण्ण'** की सूक्ति को सकल संयम धारण कर साकार किया है एवं अपने परिवार एवं समाज के अनेकानेक भव्य प्राणियों को **'संयम बिनु घणिय न इक्क जाहु'** की प्रेरणा देकर संयम-पथ पर अग्रसर किया है। उनके इस चतुर्मुखी अवदान से विश्व की चारों दिशाओं में आज उनकी यशःसुरभि व्याप्त है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनके सामने चलने और आगे बढ़ने के लिए पूर्वजों के द्वारा बना-बनाया मार्ग होता है। उन्हें गन्तव्य तक पहुँचने में ज्यादा शक्ति और बुद्धि नहीं लगानी पड़ती है, किन्तु कुछ लोगों को अपना मार्ग स्वयं बनाना पड़ता है। इसमें बड़े पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। सुयश ऐसे ही लोगों को मिलता है। हिन्दी के यशस्वी कवि श्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने लिखा है–

राह पर तो वे चलें, जिनके चरण दुर्बल और हारे हैं।
हमें, जो हमारे पग से बने, वे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।।

पूज्य माताजी से पूर्व गत ढ़ाई हजार वर्षों में ग्रंथ रचना का कार्य किसी महिला के द्वारा सम्पादित नहीं हुआ। यह पहल माताजी ने की और कष्टसहस्री समझे जाने वाले जटिल ग्रंथ 'अष्टसहस्री' की टीका लिखकर सबको चौंका दिया। उनकी इस पहल से अन्य आर्यिका माताओं का भी मार्ग प्रशस्त हुआ। बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य पूज्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की प्रशस्त परम्परा में पूज्य आर्यिका विशुद्धमती, सुपार्श्वमती, जिनमती, आदिमती आदि ने भी संस्कृत-प्राकृत के प्राचीन ग्रंथों की टीकाएं लिखकर इस कार्य को गति प्रदान की। जैनदर्शन के चार अनुयोगों में करणानुयोग सबसे कठिन माना जाता है। उसमें पुरुष विद्वानों की गति भी मंद होती है, परन्तु इन माताओं की उसमें गहरी पैठ देखकर सुखद आश्चर्य होता है। सृजनधर्मिता के इस अनिर्मित पंथ पर चलने का जो पुरुषार्थ पूज्य ज्ञानमती माताजी ने किया है, उस पर आने वाली पीढ़ियाँ भी गर्व करती रहेंगी।

जिन चतुर्मुखी कार्यों की हमने चर्चा की है, वे सभी कार्य पूज्य माताजी ने स्वान्तःसुखाय ही किए हैं, **'ज्ञानं दानात् वर्धते'** का लक्ष्य उनके सामने रहा है और ज्ञान (सम्यग्ज्ञान) ही जीवन को दुःखों से छुड़ाने में एकमात्र निमित्त है। इन कार्यों में अपने उपयोग को लगाकर उन्होंने अपने भावी भवों को सीमित कर लिया है। उन्हें यश की आकांक्षा कतई नहीं है, किन्तु जो इन कार्यों से लाभान्वित होते हैं, वे मुक्तकण्ठ से उनकी प्रशंसा न करें, यह कैसे संभव है। गुणीजनों के प्रति आदर व्यक्त करने में स्तवक के गुणों में भी वृद्धि होती है। कृतज्ञ भक्तजनों की भद्र भावनाओं का ही मूर्तरूप है यह गौरव ग्रंथ। पहले तो इस गौरव ग्रंथ का आकार छोटा ही रखने का विचार था, किन्तु भक्तों के कृतज्ञतापूर्ण उद्गार इतनी अधिक मात्रा में प्राप्त हुए कि ग्रंथ का आकार बढ़ता ही गया। किसी के उद्गारों को रोकने का साहस सम्पादक मण्डल के सदस्य नहीं जुटा सके। फिर भी अति विलम्ब से प्राप्त होने वाली सामग्री ग्रंथ में स्थान नहीं पा सकी है, अपनी इस विवशता के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

ग्रंथ के कुशल सम्पादन का सम्पूर्ण श्रेय पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी को ही है। पिछले दो-तीन माह से वह इसमें जुटी रही हैं। सुना है कि देवों में बहुत शक्ति होती है, वे घण्टों का काम मिनटों में निपटा लेते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं, पर माताजी की सृजन-शक्ति को देखकर वे भी हैरान हुए बिना नहीं रहेंगे। वह स्वयं ज्ञानरसिक तो हैं ही, धर्म और अध्यात्म पर उनकी पकड़ भी बहुत गहरी है और होगी भी क्यों नहीं, आखिर उन्हें तराश कर सौ टंच बनाने का कार्य भी तो पूज्य ज्ञानमती माताजी ने ही किया है। **'जैसा गुरु, वैसी शिष्या'** यह उक्ति असत्य नहीं है। इस कार्य को पूरी लगन और निष्ठा से सम्पादित कर उन्होंने अपनी शिक्षा-दीक्षा गुरु के असीम उपकार का मूल ही तो चुकाया है। उनके चरणों में हमारा विनम्र प्रणाम।

यह कार्य बड़ा और गुरु गंभीर था। इसमें संघस्थ सभी शिष्याओं ने भी यथाशक्ति अपनी भूमिका का सम्यक् निर्वाह किया है। विशेषरीत्या ब्र. स्वाति जैन, ब्र. कु. बीना, ब्र. कु. सारिका जैन, ब्र. कु. इन्दु, ब्र.कु. आस्था जैन आदि तथा सर्वश्री जीवनप्रकाश ने भी खूब श्रम किया है। कम समय में इतने मोटे ग्रंथ की कम्पोजिंग का महनीय कार्य श्री अंशुल मित्तल ने सम्पन्न करके अपनी गुरुभक्ति और क्षमता का लोहा सबसे मनवा लिया है। ये सभी साधुवाद के पात्र हैं।

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन (भाईजी) तो माताजी से संबंधित हर योजना के प्रमुख सूत्रधार हैं। इनके कार्य करने का ढंग सभी को चमत्कृत करने वाला है। ये भी माताजी के गृहस्थावस्था के भाई हैं और उनकी छत्रछाया में रहकर अपनी भव-सन्तति को धीरे-धीरे काट रहे हैं। कर्म-काष्ठ को काटने में ज्ञान-कुठार से बड़े अस्त्र का अभी तक आविष्कार ही नहीं हुआ, भविष्य में होगा भी नहीं।

पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी की सूझबूझ अपूर्व है। वह स्वयं तो दिन-रात बोलने-लिखने और सबको जोड़े रखने का कार्य करते ही रहते हैं, दूसरों से काम लेने की उनकी क्षमता भी प्रशंसनीय है। उनके योगदान के बिना भी कोई कार्य पूरा नहीं होता। उनके प्रति इच्छामि निवेदन करते हुए हम यही कामना करते हैं कि वे अभी वर्षों तक ऐसे ही चाक-चौबन्द बने रहकर धर्म सेवा करते रहें।

ग्रंथ सात खण्डों में है और एक-एक खण्ड में क्या छिपा है, इसकी एक झलक प्रिय पाठकों को सम्पादकीय में मिलेगी ही, इसीलिए हम यहाँ पुनरुक्ति दोष से स्वयं को बचा रहे हैं। यह पचास वर्षों की धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों का एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। यह एक ऐसा संदर्भ ग्रंथ है, जिसे पाठक वर्षों तक सहेज कर रखना चाहेंगे।

जिन लेखकों ने अपने शोधालेख, संस्मरण, विनयांजलि आदि भेजकर इस ग्रंथ की समृद्धि को बढ़ाया है, वे सभी धन्यवादार्ह हैं। सम्पादक मण्डल के सदस्यों में तो हम भी शामिल हैं, इसलिए उन्हें धन्यवाद देने का अर्थ तो खुद की ही पीठ थपथपाना होगा। वैसे भी सम्पादक संवेदनशील होते हैं। बिना कहे ही हमारे मन की भाषा को वे उसी तरह समझ लेंगे, जिस प्रकार तीव्र घ्राणशक्ति वाले पुरुष सूँघकर पड़ोस में क्या बन रहा है, इसे जान लेते है।

विज्ञेषु किमधिकम्?

दिनाँक—20-3-06

—(प्राचार्य) नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद

(संरक्षक-श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर्ण जयंती महोत्सव की स्थायी स्मृति : गौरव ग्रंथ

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष की संपूर्ति पर दीक्षा की स्वर्ण जयंती मनाने का तथा उक्त महान अवसर पर 'गौरव ग्रंथ' का प्रकाशन करने की परिकल्पना प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की है। दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाने से तथा 'गौरव ग्रंथ' का प्रकाशन करने से गणिनी माताजी का गौरव नहीं बढ़ जावेगा। क्योंकि उनका गौरव तो उनमें विद्यमान अपार गुणों से तथा उनके दिव्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संपूर्ण विश्व में व्याप्त है। यह महोत्सव तथा ग्रंथ त्याग एवं संयम की महिमा को युगों-युगों तक प्रद्योतित करने वाला होगा।

पूज्य माताजी में जितने गुण हैं उनको एक ग्रंथ की सीमा में बांध पाना बहुत ही दुरूह कार्य है। पूज्य माताजी का व्यक्तित्व इतना विशाल है कि उसको प्रगट करने के लिए अनेक ग्रंथ भी कम हैं। व्यक्तित्व के अनुसार ही कृतित्व भी है। इनके बचपन में ही पचपन की झलक परिलक्षित होती थी। इनकी दीक्षा के 50 वर्ष ही नहीं पूरी आयु के 72 वर्ष एक आइने की तरह आदर्श रहे, जिसमें झांककर कोई व्यक्ति अपने गुण-दोषों को समीक्षा करके स्वयं को आदर्श बना सकता है, जिन्होंने इस ग्रंथ के साथ प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपने को संलग्न किया है, उनका स्वयं का गौरव बढ़ा है। गुणी जन ही गुण तथा गुणी का मूल्याकंन कर सकते हैं। पूज्य गणिनी माताजी वास्तव में रत्नाकर हैं। गुण रूपी रत्नों की भंडार हैं। तभी अनेक कुशल गोता लगाने वालों ने गहरा गोता लगाकर कतिपय गुण रत्नों को निकालकर प्रस्तुत किया है इस ग्रंथ में।

पूज्य माताजी में एक अद्‌भुत चमत्कारिक शक्ति है। तभी तो ज्येष्ठ मास की अमावस्या में जन्म लेने वाली चंदनामती माताजी में तथा आसोज मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के अंधेरे में जन्म लेने वाले मुझमें पूर्णिमा की चांदनी का उजाला भर दिया। अंधकार से प्रकाश में ले आईं तथा जेठ मास सुदी पंचमी की कड़ी गर्मी में जन्म लेने वाले रवीन्द्र कुमार में अपार शीतलता का समावेश कर दिया। अनेकों व्यक्तियों के व्यक्तित्व को पूज्य माताजी ने निखारा है और अभी भी निखार रही हैं। तराश रही हैं। इस ग्रंथ में चाहे किसी को मार्गदर्शक, किसी को निर्देशक, किन्हीं को संपादक अथवा कुछ भी बनाया गया हो किन्तु ग्रंथ प्रकाशन का सम्पूर्ण श्रेय पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी को ही है, जिन्होंने रात-दिन एक करके अति अल्पसमय में तथा इतने सुंदर रूप में इसे तैयार कर दिया।

यह ग्रंथ ही नहीं एक दस्तावेज है जो शताब्दि के इतिहास को प्रकाश स्तंभ के रूप में आने वाली सैकड़ों पीढ़ियों तक इस काल का समीचीन दिग्दर्शन कराता रहेगा। पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी को नमन करते हुए पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चिरकाल तक आशीर्वाद का आकांक्षी, उनका अपना ही–

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. **-पीठाशीश क्षुल्लक मोतीसागर**
20 मार्च 2006, सोमवार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Few Words About Gaurav Granth........

—Aryika Chandnamati

In the tradition of 24 Tirthankars from Lord Mahavir to Lord Rishabhdev a number of great Jain saints like Kunkund Acharya have occured. In the same immortal tradition the first Acharya of the 20th century Charitra Chakravarti Shri Shantisagar Ji Maharaj was born, whose benevolence on the 'Chaturvidh Sangh' of Jain saints can never be forgotten. Besides a number of great contributions given by him to the Jain society, He was the only saint who caused the revival of the right observances of Jain saints as according the *Moolachar Granth*, that is why he is the key person of the century among all the Jain saints.

Sometimes such great souls by taking birth in this world cause the evolution of the new world of idealism. Similarly The most revered Jain Sadhvi **Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji** entered the path of salvation by taking initiation in the tender age of 18 years only and till now after passing a very vast period of 54 years of the ascetic life, she has much amazingly contributed in the protection of cultural heritage of Jainism. By observing the most hard rules of penance according to the texts written by the ancient Jain Acharyas, she has got an extraordinary spiritual image & power.

Every moment her deep religious devotion & very sincere faith in paying the hearty reverence to the Jain Lords & Treatises are highly appreciable and inspiring for every human being. The most knowledgeable Ganini Mataji has written more than 200 great treatises in Sanskrit, Hindi, Kannad & Marathi Languages in very simple & easy way.

Also on her auspicious inspiration, at the birth & other Kalyanak places of Jain Lords as Hastinapur, Ayodhya, Mangitungi, Ahichchhatra, Allahabad-Prayag & Kundalpur (Nalanda) etc. grand development of Jain Temples have taken place.

The Aryika Deeksha Golden Anniversary of such a divine personality is very inspiring for us, it gives the message that even in the present time of materialism, the great ascetics like Mataji are present here to follow the hard penance of worldly renunciation & sensual restraint with spreading the values of humanity & kindness to benefit others.

On the auspicious completion of the 50 golden years of the Aryika Deeksha of the most noble Mataji, we are entirely unable to guess what to present in her holy hands. Because to present anything into her hands is just like to flow the water of Ganga into itself or offering the flowers, plucked from a garden to the same garden. Even so I am very happy & greatful to present this Gaurav Granth to Pujya Mataji. Infact Mataji is the mine of virtues therefore even if we publish 50 such Gaurav Granthas of her 50 years of ascetic life then also we will be unable to express her splendid qualities.

I hope that for coming hundreds of years this commemorative volume will be very authentic source to acquire the knowledge about the true biography, principles & illuminating character of Pujya Mataji. With bowing down into the feet of adorable Mataji, I wish that Mataji may live long with good health & internal enlightenment.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्पादकीय

समाज में व्यक्ति का मूल्यांकन उसके व्यक्तित्व से होता है और व्यक्तित्व की महानता का परिचय हमें उस व्यक्ति के कृतित्व से मालूम पड़ता है। संसार में कुछ विरले व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं जिनके नाम पर समाज और देश को गौरव होता है। ऐसे ही महापुरुषों की शृंखला में गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी जैन समाज की एक ऐसी महान विभूति हैं, जिनके कृतित्व को युगों-युगों तक याद किया जाता रहेगा। पूज्य माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की मिसाल मिलना अत्यंत दुर्लभ है। हमारे जीवन में अक्सर ऐसा होता है कि ऐतिहासिक व्यक्तियों के संदर्भ में सिर्फ हम उनके कार्यकलापों के बारे में सुन पाते हैं या फिर कहीं किताबों में पढ़ पाते हैं लेकिन हमें साक्षात् उनके अनुभव प्राप्त करने का मौका नहीं मिल पाता है। ऐसी स्थिति में जब हमें देश, समाज और साधु परम्परा की गौरव महान साधिका राष्ट्रगौरव गणिनी माताजी के दर्शनों का लाभ आज प्राप्त हो रहा है, तो हमारे लिए यह बहुत सौभाग्य की बात है। वर्तमान में यह सौभाग्य कई गुना अधिक वृद्धिंगत इसलिए हो गया है, क्योंकि पूज्य माताजी अपने कठोर तपस्यामयी जीवन को सार्थक करते हुए आर्यिका दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण कर रही हैं। हम जानते हैं कि जैन साधु की निर्दोष चर्या को निभाना कितना कठिन होता है। यूँ तो किसी जैन साधु की एक दिन की भी चर्या अपने आप में महान होती है, तब तो यहाँ पूज्य माताजी एक दिन नहीं, एक वर्ष नहीं, अपितु 50 स्वर्णिम वर्ष पूर्ण कर रही हैं एवं रत्नत्रय का कुशलतापूर्वक पालन करते हुए समस्त महाव्रतों (मूलगुणों) का निर्दोष पालन कर रही हैं, यह अपने आप में किसी अतिशय से कम नहीं।

इन पचास वर्षों में पूज्य माताजी ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय धर्मप्रभावना के ऐतिहासिक कार्य किये हैं। जिसे बीसवीं-इक्कीसवीं सदी के महान कार्यों में सदैव गिना जायेगा। पूज्य माताजी द्वारा रचित क्लिष्ट आध्यात्मिक ग्रंथों की सरल संस्कृत एवं हिन्दी टीका ने जहाँ विद्वानों के लिए जैन आगम को समझने का मार्ग प्रशस्त किया है, वहीं पूज्य माताजी द्वारा सरल, सरस एवं अलंकारिक भाषा में लिखे गये अनेक छोटे-बड़े पूजन मण्डल विधानों से सामान्य भक्तजनों के लिए विशेष भक्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ है। आज सारे देश में प्रतिदिन कहीं न कहीं मण्डल विधानों का आयोजन होता रहता है और भक्तगण भगवान की भक्ति में भावविभोर होकर अनंतगुणा पुण्य अर्जित करते हैं। यह सब महिमा बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की है, जिन्होंने जैन संस्कृति के संरक्षण के लिए हजारों किमी. की पदयात्राएँ करके तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास का बीड़ा उठाया और वहाँ नूतन निर्माण, विकास एवं जीर्णोद्धार करवाकर जैन समाज पर बहुत बड़ा उपकार किया है, जिसे सदियों तक भुलाया नहीं जा सकेगा।

ऐसी महान विभूति जिनसे हम सदैव कुछ पाने की वांछा रखते हैं, उनके सम्मान में उन्हें हम क्या समर्पित कर सकते हैं? तथापि उनकी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती पर उनके करकमलों में यह गौरव ग्रंथ भेंट कर हम अपने को सौभाग्यशाली मानते हैं।

यह बात बिल्कुल सत्य है कि पूज्य माताजी जैसे विशाल व्यक्तित्व को एक ग्रंथ मात्र के माध्यम से लेखनीबद्ध कर पाना अत्यंत दुष्कर कार्य है, क्योंकि जिस प्रकार समुद्र की वास्तविक गहराई को अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना मुश्किल है, उसी प्रकार पूज्य माताजी के गुणों का वर्णन कर उसे कागज पर अंकित कर पाना भी कदापि संभव नहीं है। फिर भी इस ग्रंथ में उनके जीवन से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ, उनका इतिहास, जीवन शैली एवं उनके साहित्यिक, आध्यात्मिक अवदान का विशेष विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, जिससे आने वाली पीढ़ियों को पूज्य माताजी जैसे पर्वतीय व्यक्तित्व एवं उनके कार्यकलापों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकेगी। इस ग्रंथ के माध्यम से व्यक्तिगतरूप से किसी भी विषयवस्तु को जानने-समझने अथवा पढ़ने के लिए इसमें सात खण्डों का विभाजन किया गया है, जिसमें प्रत्येक खण्ड में पेज संख्या नये सिरे से अर्थात् '1' से प्रारंभ की गई है। साथ ही प्रत्येक पेज के फोलियो पर खण्ड का नाम एवं क्रमांक आदि जानकारी भी दी गई है। साज-सज्जा का ध्यान रखते हुए ग्रंथ के हर खण्ड में फोलियो पर पूज्य माताजी के विभिन्न मुद्राओं में चित्र दिये गये हैं और पुष्प गुच्छ से सुशोभित किया गया है। प्रथम खण्ड में हर पृष्ठ पर पूज्य माताजी की स्वर्ण जयंती को प्रदर्शित करते हुए 50 प्रज्ज्वलित दीपक सजाए गए हैं। ग्रंथ में समाविष्ट लेख, परिचय आदि को जीवंत स्वरूप देने के लिए उन-उन से संबंधित छोटे चित्र भी पृष्ठ के कॉर्नर पर दिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गये हैं, जिससे सामग्री में विशेष रुचि जागृत हो सके।

ग्रंथ के **प्रथम खण्ड** का नाम **''स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक भावनाएँ''** हैं, जिसमें दिगम्बर जैन आचार्यों एवं मुनियों के मंगल आशीर्वाद तथा आर्यिकाओं, क्षुल्लक-क्षुल्लिकाओं, भट्टारकों तथा ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों आदि की विनयांजलि एवं संस्मरणों को समाविष्ट किया गया है। इसके साथ इस खण्ड में देश के राजनेताओं एवं प्रशासनिक अधिकारियों, न्यायाधीशों, कुलपतियों के शुभकामना संदेश, जैन समाज के विद्वान् एवं अनेक विशिष्ट महानुभावों, श्रेष्ठियों, कवियों, राष्ट्रीय अथवा क्षेत्रीय जैन संस्थाओं की ओर से उनके पदाधिकारियों द्वारा भेजी गई विनयांजलियाँ एवं सैकड़ों भक्तों द्वारा सुन्दर काव्यमयी और लेखनरूप में भेजी गई भावाँजलियों को भी दिया गया है।

द्वितीय खण्ड ''मैना से ज्ञानमती तक जीवन यात्रा'' में पूज्य माताजी के जन्म एवं गृहस्थावस्था से लेकर वैराग्यमयी ज्ञानमती तक का विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया गया है, इसके साथ ही उनकी जीवंत उपलब्धियाँ अर्थात् उनके कुछ प्रमुख शिष्य-शिष्याओं के जीवन से परिचित कराया गया है। इस खण्ड में पूज्य माताजी की जन्मस्थली, दीक्षास्थली, उनकी आचार्य परम्परा के सर्वप्रथम गुरु, दीक्षा गुरु, आचार्य परम्परा एवं उनके महान माता-पिता के परिचय भी प्रस्तुत किये गये हैं। इस खण्ड के माध्यम से पाठकगण कु. मैना (गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी) के पारिवारिक विवरण की जानकारी तो प्राप्त करेंगे ही साथ में कु. मैना के मन में बचपन से ही किस तरह धार्मिक संस्कार और वैराग्य के बीज अंकुरित हुए इस बात से भी भलीभांति परिचित हो सकेंगे।

यह बात समस्त श्रावक एवं साधु समाज में सर्वविदित है कि पूज्य माताजी ने श्रुत की सेवा करने में ऐतिहासिक योगदान दिया है अतः ग्रंथ में **''साहित्य सृजन में तुमने नूतन इतिहास बनाया''** नामक **तृतीय खण्ड** समाविष्ट किया गया है। पूज्य माताजी का व्यक्तित्व समस्त समाज के लिए गौरवमयी है, इस खण्ड की विषयवस्तु इसी बात को प्रमाणित करती है। यहाँ देश के शीर्ष विद्वानों द्वारा पूज्य माताजी के कतिपय प्रमुख ग्रंथों पर लिखित आलेखों को प्रस्तुत किया गया है, जिससे पूज्य माताजी द्वारा जैन संस्कृति में साहित्य जगत को दिये गये अवदान की महत्ता जन-जन में पहचानी जा सकेगी। पूज्य माताजी ने किस तरह समय-समय पर षट्खण्डागम सिद्धांतग्रंथ और अष्टसहस्री जैसे क्लिष्टतम न्याय ग्रंथ की संस्कृत-हिन्दी टीकाएँ करके प्राचीन ग्रंथों को विद्वानों के लिए सरलता के साथ बोधगम्य बनाया है, यह बात इस खण्ड से स्वतः ही समझ आती है। खण्ड के अंत में पूज्य माताजी द्वारा प्रणीत समस्त साहित्य रचनाओं को **चतुरनुयोग** के क्रम रूप में विभाजित करते हुए उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है, जो सभी के लिए विशेष उपयोगी है।

यात्राओं से मनुष्य के जीवन में विशेष उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं, किसी भी महापुरुष के जीवन में यात्राओं का विशेष वर्णन मिलता है। कहते हैं कि अमेरिका के ग्रेट कोलम्बस ने यात्रा के दौरान ही भारत जैसे विशाल पृथ्वी खण्ड की खोज की थी। फिर जैन साधुओं की चर्या में तो एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर गमन करते रहना ही उनके अखण्ड साधुत्व का सूचक है अतः पूज्य माताजी ने भी अपने जीवन में अनेकों अविस्मरणीय यात्राएँ की हैं, जिनके वर्णन को इस ग्रंथ में निहित किया जाना संभव नहीं है। अतः कतिपय विशेष यात्राओं और उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाने वाला **''पूज्य माताजी की ऐतिहासिक यात्राएँ एवं सृजनात्मक उपलब्धियाँ''** नामक यह **चतुर्थ खण्ड** है। इसको पढ़कर पाठकगण समझ सकते हैं कि पूज्य माताजी ने स्वास्थ्य आदि की अनेक प्रतिकूलताओं को सहन करते हुए भी हजारों किमी. की यात्रा की है, जिसके फलस्वरूप उनके द्वारा संस्कृति संरक्षण के हित में एक नहीं अपितु अनेक तीर्थों का निर्माण, विकास एवं जीर्णोद्धार आदि संभव हो पाया है।

महापुरुषों की वाणी का महत्व अतिविशेष होता है, जो एक मनुष्य के चारित्रिक उत्थान में ही नहीं अपितु उसकी आत्मा को परमात्मा बनाने तक में उपयोगी होता है अतः **''पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के अमूल्य प्रवचन एवं समसामयिक वार्ता''** नामक **पंचम खण्ड** में विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर पूज्य माताजी के बहुमूल्य एवं प्रेरक प्रवचन प्रस्तुत किए गये हैं। साथ ही जनसामान्य के लिए प्रासंगिक साक्षात्कारों अथवा वार्ता को भी इसमें समाविष्ट किया गया है, जिन्हें पढ़कर अनेक विषयों का शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त होगा। पूज्य माताजी प्राचीन पूर्वाचार्यों द्वारा कहे हुए एवं सच्चे आगमों में निहित प्रमाण के आधार पर ही अपनी बात कहती हैं अतः इस खण्ड की विषयवस्तु साधुओं, विद्वानों और समस्त पाठकगण के लिए विशेष अनुकरणीय है। अनेक रूढ़ीवादियों और वर्तमान में चल रही ऐसी परम्पराएँ जो आगम सम्मत नहीं है, का समाधान भी इस खण्ड के माध्यम से पाठकगण प्राप्त कर सकेंगे।

स्वर्णिम 50 वर्षों में पूज्य माताजी की लेखनी से प्रसूत विपुल साहित्य, उनकी प्रेरणा से हुए तीर्थ विकास एवं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय धर्मप्रभावना के कार्यों को विभिन्न खण्डों के माध्यम से पाठकगण तक प्रस्तुत किया गया है लेकिन पूज्य माताजी के समग्र दीक्षित जीवन की अमृतमयी गाथा, उनकी कार्यशैली, अनेक दृष्टांत और घटनाओं के संक्षिप्त वर्णन को सरल, सुन्दर एवं रुचिकर भाषा में **''पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के 50 स्वर्णिम वर्ष एवं वर्षायोग''** नामक विवरण **छठे खण्ड** में प्रस्तुत किया गया है। इस खण्ड में सन् 1953 में पूज्य माताजी द्वारा क्षुल्लिका दीक्षा एवं सन् 1956 में आर्यिका दीक्षा ग्रहण करने से लेकर सन् 2005 तक के समस्त चातुर्मासों एवं उनकी उपलब्धियों का क्रमशः वर्णन किया गया है। बहुउपयोगी इस खण्ड को पढ़कर पाठकगण पूज्य माताजी के वास्तविक व्यक्तित्व एवं बहुआयामी कृतित्व को आसानी से जान पायेंगे।

पूज्य माताजी का व्यक्तित्व देश, समाज और जन-जन के लिए गौरवमयी क्यों है? इस बात की पुष्टि करता **''राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय धर्मप्रभावना एवं तीर्थ विकास''** नामक यह **सप्तम खण्ड** है। इस खण्ड से पूज्य माताजी के बेमिसाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व की गहराई स्पष्ट ही परिलक्षित होती है क्योंकि क्षण-क्षण के कठोर परिश्रम और तपस्या से प्राप्त उनके प्रभावी व्यक्तित्व को सिर्फ उनके कृतित्व से ही महसूस किया जा सकता है। वरन् ऐसे महापुरुषों का व्यक्तित्व तो समुद्र की गहराई, पर्वत सी ऊँचाई और व्योम के विस्तार जैसा कल्पनातीत होता है। इस खण्ड में पूज्य माताजी द्वारा भगवान ऋषभदेव से भगवान महावीर पर्यंत समस्त तीर्थंकरों और जैनधर्म का विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार वर्णित किया गया है। जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से धर्म प्रभावना हेतु तीन रथों का भारत भ्रमण, कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान, विश्वशांति महावीर विधान आदि अनेकों आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न हुए हैं, वहीं उनकी प्रेरणा से ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव अपूर्व सफलता के साथ मनाया गया। न्यूयार्क, अमेरिका में आयोजित विश्वशांति शिखर सम्मेलन में भी आपके आशीर्वाद से भगवान ऋषभदेव का उद्घोष हुआ। इस खण्ड में इन सभी विशेष उपलब्धियों के उल्लेख के साथ पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित महान तीर्थों के परिचयों को भी समाविष्ट किया गया है, जिससे वर्तमान में उन-उन तीर्थों के विकास की महिमा को पाठकगण समझ सकेंगे।

किसी भी कृति का सचित्र संकलन एवं समायोजन पाठकों के मन-मस्तिष्क पर संबंधित विषय वस्तु को स्पष्ट करते हुए सरलता के साथ ग्राह्य बनाता है, यादों को ताजा करता है और पठन-पाठन को भी रुचिकर बनाता है। इस बात का ध्यान रखते हुए इस ग्रंथ के चित्रावली खंड में पूज्य माताजी के जीवन दर्शन, उनके द्वारा हुआ तीर्थ विकास एवं राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय धर्मप्रभावना के क्षेत्र में दिये गये महनीय अवदान, शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों और इन तपस्विनी माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते देश के शीर्ष नेतागण एवं अन्य विशिष्ट महानुभावों के चित्रों को चित्रांकित किया गया है। जिससे पूज्य माताजी के समग्र जीवन को और उनके द्वारा स्वर्णिम 50 वर्षों में सफलता के साथ किये गये अनेकानेक कार्यों को जन-सामान्य के द्वारा सरलता के साथ समझा व जाना जा सकेगा।

इस तरह सात खण्डों में विभक्त इस गौरव ग्रंथ की विषय सामग्री से पूज्य माताजी देश की बहुमूल्य निधि और गौरव क्यों हैं? यह बात दर्पण की तरह स्पष्ट समझ में आती है। पूज्य माताजी के कार्यकलापों एवं व्यक्तित्व को शब्दों में समायोजित कर पाना अत्यंत मुश्किल कार्य है, फिर भी यदि उनके ऐतिहासिक व्यक्तित्व को हम किसी उपयुक्त सीमा तक इस ग्रंथ में निबद्ध कर सकें हैं, तो इसमें प्रमुखरूप से सादर वंदनीय पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का सहयोग विशेष कथनीय है, क्योंकि इतने कम समय में इतना बड़ा कार्य कर पाना एक चुनौतीपूर्ण था, इसके लिए उनके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

अतिशीघ्रता में इस गौरव ग्रंथ का मैटर संग्रहीत करने में हो सकता है कि कुछ विद्वानों एवं श्रद्धालु भक्तों की विनयांजलियाँ नहीं भी समाविष्ट हो सकी हों, अतः अधिकतम समयसीमा तक उपलब्ध हुए विनयपुष्पों को ही सभी लोगों का सामूहिक अर्घ्य समर्पण मानकर इस ग्रंथ को पूर्णता का रूप प्रदान किया जा रहा है।

यह गौरव ग्रंथ विद्वान, श्रेष्ठी एवं भक्तजन सभी वर्ग के लिए विशेष पठनीय है और हमें विश्वास है कि पूज्य माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जीवंत मिसाल बताता यह ग्रंथ सदियों तक लोगों को धर्म प्रभावना, तीर्थ संरक्षण, जिनेन्द्र भक्ति एवं श्रुत सेवा की प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में शत-शत नमन। उनकी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के महान अवसर पर उनके स्वस्थ्य, मंगल और दीर्घ जीवन की शुभकामना करते हुए उनके करकमलों में यह गौरव ग्रंथ समर्पण कर हम सभी को परम आल्हाद हो रहा है।

हम हैं सदैव आपके शुभाशीर्वाद के अभिलाषी
संपादक मण्डल के सभी सम्पादकगण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव
त्रिदिवसीय कार्यक्रम

14 अप्रैल 2006, शुक्रवार	15 अप्रैल 2006, शनिवार	16 अप्रैल 2006, रविवार
प्रातः 6 बजे से विभिन्न धार्मिक मण्डल विधान एवं गणिनी ज्ञानमती महापूजा **मध्यान्ह 1 से 5 बजे** उद्घाटन सत्र (विनयांजलि/अभिवंदना) **रात्रि 7.30 बजे** विनयांजलि सभा एवं विद्वत् भाषण प्रतियोगिता **रात्रि 9 बजे** सांस्कृतिक कार्यक्रम	**भगवान पार्श्वनाथ गर्भकल्याणक दिवस** **प्रातः 6 से 9 बजे** झण्डारोहण, रथयात्रा, भगवान पार्श्वनाथ अभिषेक **मध्यान्ह 2 से 5 बजे** भट्टारक सम्मेलन एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी का अभिवंदन **रात्रि 7.30 बजे** डी.पी. कौशिक नाइट	**प्रातः 7.30 से 9 बजे** विनयांजलि सभा **मध्यान्ह 12.30 बजे से** दीक्षा स्वर्णजयंती समारोह कार्यक्रम (51 कलश से पूज्य माताजी का पाद प्रक्षालन, 51 अर्घ्य थाल समर्पण, 51 दीपकों से आरती, 51 ग्रंथ भेंट आदि) **रात्रि 7.30 बजे** सांस्कृतिक कार्यक्रम (महिला जागृति संघ-जयपुर द्वारा)

आस्था चैनल पर सीधा प्रसारण दिनाँक 16 अप्रैल 2006, मध्यान्ह 1 बजे से

आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के मार्गदर्शक पूज्य साधुवृंद

-: मार्गदर्शक आर्यिका माताएँ :-

पूज्य गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी
पूज्य आर्यिका श्री आदिमती माताजी
पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी
पूज्य आर्यिका श्री शुभमती माताजी
पूज्य गणिनी आर्यिका श्री चन्द्रमती माताजी
पूज्य गणिनी आर्यिका श्री प्रज्ञामती माताजी
पूज्य गणिनी आर्यिका श्री स्याद्वादमती माताजी
पूज्य आर्यिका श्री सुप्रकाशमती माताजी
पूज्य आर्यिका श्री सुभूषणमती माताजी
पूज्य आर्यिका श्री प्रशांतमती माताजी
पूज्य आर्यिका श्री कैलाशमती माताजी

मार्गदर्शन
पूज्य आर्यिकारत्न
श्री अभयमती माताजी

सम्प्रेरिका
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका
श्री चन्दनामती माताजी

निर्देशन
पीठाधीश क्षुल्लकरत्न
श्री मोतीसागर जी महाराज

-: मार्गदर्शक भट्टारकवृंद :-

जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी, श्रवणबेलगोला
जगद्गुरु स्वस्तिश्री देवेन्द्रकीर्ति भट्टारक पट्टाचार्यवर्य स्वामी जी, हुम्मचा
स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक पण्डिताचार्यवर्य स्वामी जी, मूड़बिद्री
स्वस्तिश्री लक्ष्मीसेन भट्टारक स्वामी जी, नरसिंहराजपुरा
स्वस्तिश्री ललितकीर्ति भट्टारक स्वामी जी, कार्कल
स्वस्तिश्री भट्टाकलंक स्वामी जी, सोंडा
स्वस्तिश्री लक्ष्मीसेन भट्टारक स्वामी जी, कोल्हापुर
स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक स्वामी जी, नांदड़ी
स्वस्तिश्री भुवनकीर्ति भट्टारक स्वामी जी, कनकगिरि
स्वस्तिश्री भानुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी, कम्बदहल्ली
स्वस्तिश्री धर्मसेन भट्टारक स्वामी जी, अम्मिनाभावी
स्वस्तिश्री धवलकीर्ति भट्टारक स्वामी जी, अरिहंतगिरि
स्वस्तिश्री लक्ष्मीसेन भट्टारक स्वामी जी, जिनकांची
स्वस्ति श्री वृषभसेन भट्टारक स्वामी जी, लक्कावल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्ति सुमन अर्पित करने वाली राष्ट्रीय एवं अन्य प्रमुख जैन संस्थाएँ

- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
- अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद
- भारत जैन महामण्डल
- दिगम्बर जैन महासमिति
- दक्षिण भारत जैन सभा
- प्राचीन श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत दिल्ली
- महाराष्ट्र प्रान्तीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
- बिहार प्रान्तीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
- अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद
- अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद
- तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ
- अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद
- अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन
- भारतीय जैन मिलन
- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी
- दिगम्बर जैन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी
- तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ समिति
- भगवान श्री ऋषभदेव 108 फुट विशालकाय दिगम्बर जैन मूर्ति निर्माण कमेटी, मांगीतुंगी
- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति
- भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव समिति
- महाराष्ट्र प्रांतीय गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल

विनयांजलि अर्पित करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालय/ शैक्षणिक संस्थान

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

होल्कर स्वशासी विज्ञान महाविद्यालय, इंदौर

नाईस सोसायटी इंस्टीट्यूशन्स, मेरठ

गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठ, इंदौर

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन इंटर कालेज, टिकैतनगर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति

विशिष्ट संरक्षक

डॉ. एल.एम. सिंघवी, दिल्ली
न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण जी, इलाहाबाद
न्यायमूर्ति श्री एम.सी. जैन,इलाहाबाद
श्री जे.के. जैन (पूर्व सांसद), दिल्ली

सम्माननीय संरक्षक

धर्माधिकारी डॉ. श्री वीरेन्द्र हेगड़े, धर्मस्थल
श्री वी. धनंजय कुमार जैन, बैंगलोर
साहू इन्दू जैन, दिल्ली
श्री एन.के. सेठी, जयपुर
श्री कल्लप्पा अवाड़े, इचलकरंजी
श्री निर्मल कुमार सेठी, लखनऊ
श्री डालचंद जैन, सागर
श्री प्रदीप कुमार कासलीवाल, इंदौर
श्री चक्रेश जैन, दिल्ली
श्री विवेक काला, जयपुर
श्री आर.के. जैन, मुम्बई
श्री डी.ए.पाटिल, सांगली
श्री डी.आर.शाह, इंडी (कर्नाटक)
श्री महेन्द्र पाण्ड्या, न्यूयार्क
श्री अशोक पाटनी, किशनगढ़
श्री अरविंद राव दोशी, मुम्बई
सुभाषचंद जैन, साउथ एक्स., दिल्ली

मानद संरक्षक

मुंशी सुमेरचंद जैन, दिल्ली
जिनेन्द्र प्रसाद जैन 'ठेकेदार', दिल्ली
नरेश मादीपुरिया, दिल्ली
त्रिलोकचंद जैन, दिल्ली
जिनेन्द्र कुमार जैन एडवो., दिल्ली
त्रिलोकचंद कोठारी, दिल्ली
गणेशीलाल रानीवाला, कोटा
चैनरूप बाकलीवाल, गुड़गाँवा
सुरेश जैन रितुराज, मेरठ
इंजी. धर्मवीर जैन, लखनऊ
बलवंत राय जैन, भिलाई (म.प्र.)
बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद
श्रीमती सरिता एम.के. जैन, चेन्नई

अध्यक्ष

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, हस्तिनापुर

शिरोमणि संरक्षक

महावीर प्रसाद जैन संघपति, दिल्ली
राजकुमार जैन, वीरा बिल्डर्स, दिल्ली

परम संरक्षक

जगजीवन जैन, राजौरी गार्डन, दिल्ली

संरक्षक

कमलचंद जैन, खारीबावली, दिल्ली
अजित कुमार अजमेरा, धूलियान (पं. बंगाल)
श्री राजेश जैन (गर्ग डुप्लेक्स),मुजफ.
रिसबदास जैन, वाराणसी
विजय कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
श्रीमती अनीता जैन, प्रीतविहार, दिल्ली
ज्ञानचंद जैन, आरा (बिहार)
कमल कुमार जैन, आरा (बिहार)
अतुल कुमार जैन, प्रीतविहार, दिल्ली
सुधीर जैन ठेकेदार, लखनऊ
सुभाषचंद जैन, साउथ एक्स., दिल्ली

कार्याध्यक्ष

डॉ.पन्नालाल पापड़ीवाल, पैठण (महा.)

उपाध्यक्ष

प्रेमचंद जैन, खारीबावली, दिल्ली
श्रीपाल जैन, 'मोटर वाले', दिल्ली
सतेन्द्र जैन, प्रीतविहार, दिल्ली
कैलाशचंद जैन, करोलबाग, दिल्ली
दीपक जैन, वाराणसी

महामंत्री

अनिल कुमार जैन, प्रीतविहार, दिल्ली

मंत्री

मनोज कुमार जैन, मेरठ

संयुक्त मंत्री

राकेश कुमार जैन, मेरठ

शासन संपर्क मंत्री

कैलाशचंद जैन चौधरी, सनावद
कैलाशचंद जैन सर्राफ, लखनऊ
ब्र. विजय कुमार जैन, हस्तिनापुर

प्रचार मंत्री

ब्र. कु. स्वाति जैन (संघस्थ)

उत्तरप्रदेश प्रतिनिधि

सरोज कुमार जैन, तह. फतेहपुर

बिहार प्रतिनिधि

अजय कुमार जैन, आरा-पटना

मध्यप्रदेश प्रतिनिधि

माणिकचंद पाटनी, इंदौर

सदस्य

(दिल्ली प्रदेश)

राकेश कुमार जैन, ऋषभ विहार
कलीराम जैन, मॉडल टाउन
सागरचंद जैन, प्रीतविहार
सुनील जैन, प्रीतविहार
एन.सी. जैन एडवो., प्रीतविहार
अजय कुमार जैन, प्रीतविहार
स्वदेशभूषण जैन, अशोक विहार
आनंद प्रकाश जैन, गांधीनगर
प्रमोद कुमार जैन, 'राजवैद्य'
नितिन जैन, नवीन शाहदरा
सुभाषचंद जैन, राजा टॉयज
पवन जैन आनंद जैन, जैन मार्बल
विजय कुमार जैन, सरस्वती विहार
सुशील कुमार जैन, अशोक विहार
सुरेन्द्र कुमार जैन, त्रिनगर
उमेश कुमार जैन, नजफगढ़
दीपक कुमार जैन, पूसा रोड
नानकचंद जैन, अशोक विहार
सुभाषचंद जैन, टाई वाले, चाँदनी चौक
राजकुमार जैन, ऋषभ विहार
हंसराज जैन, प्रियदर्शनी विहार
त्रिलोक कुमार जैन, सब्जी मण्डी
नवीन जैन, पहाड़गंज
विकास जैन, प्रियदर्शनी विहार
महेश कुमार जैन, मॉडल टाउन
सुधीर कुमार जैन, मॉडल टाउन
अशोक कुमार जैन, गोटे वाले
श्रीपाल जैन, शालीमार बाग
प्रदीप कुमार जैन, नांगलोई
राजेन्द्र कुमार जैन 'चाँदी वाले'
विजेन्द्र कुमार जैन, भोलानाथ नगर
श्रीमती आशा जैन, रोहिणी
श्रीमती प्रभा जैन, चाँदनी चौक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमती विद्यावती जैन, पूसा रोड
रजनीश जैन, मॉडल बस्ती
मुकेश कुमार जैन, बंगाली मार्केट
नरेशचंद जैन, कामधेनू सरिया
सुमत प्रसाद जैन, देव नगर
रमेशचंद जैन, राजाबाजार
श्रीमती मंजू जैन, राजाबाजार
नरेश बंसल, गुड़गाँवा
सुनील जैन, शिवम् एन्क्लेव
राजेन्द्र कुमार जैन, भागलपुर वाले
नंद किशोर जैन, प्रीतमपुरा
श्रीमती सुधा जैन गुप्ता
श्रीमती कुमकुम जैन
गोपेन्द्र कुमार जैन, आदर्श नगर

(पश्चिमी उत्तरप्रदेश)

प्रेमचंद जैन 'तेल वाले', मेरठ
जयप्रकाश जैन एडवो., मेरठ
सुनील कुमार जैन सर्राफ, सदर मेरठ
मुकेश कुमार जैन 'तेल वाले', मेरठ
पवन कुमार जैन, पल्लवपुरम, मेरठ
राजकुमार जैन, लोहे वाले, मेरठ
अजय कुमार जैन, मेरठ
अशोक कुमार जैन, मेरठ
अम्यु जैन, शास्त्रीनगर, मेरठ
राजेन्द्र कुमार जैन, मेरठ
मुकेश कुमार जैन, मेरठ
पुष्पदंत जैन सर्राफ, गोरखपुर
पुष्कर जैन, गोरखपुर
पुखराज पाण्ड्या, गोरखपुर
डॉ. अभय कुमार जैन, गोरखपुर
पुष्पराज जैन 'पम्मी', कन्नौज
महेश कुमार जैन, बुढ़ाना
रमेश कुमार जैन, बुढ़ाना
अमरचंद सर्राफ, खतौली
चमनलाल जैन, खतौली
सतेन्द्र कुमार जैन, खतौली
डॉ. अशोक कुमार जैन, मवाना
राजेश कुमार जैन, सलावा
प्रेमचंद जैन, सलावा
पवन कुमार जैन, सरधना
सतीश कुमार जैन, सरधना
प्रमोद कुमार जैन, सरधना
श्रेयांस कुमार जैन, सरधना
श्री सुरेशचंद जैन, मुरादाबाद
जवाहरलाल जैन, सिकन्दराबाद
राजेश कुमार जैन, मुजफ्फरनगर
सुधीर जैन ठेकेदार, मुजफ्फरनगर
पं. धनराज जैन, अमीनगर सराय
महेन्द्र कुमार जैन, बड़ौत
सुनील कुमार जैन, बड़ौत
नरेशचंद जैन, बड़ौत
जिनेन्द्र कुमार जैन 'गोटे वाले', बड़ौत
रघुनाथ सिंह जैन, बड़ौत
डॉ. प्रमोद कुमार जैन, आगरा
स्वरूपचंद जैन मार्शन्स, आगरा
शिखरचंद जैन, आगरा
निर्मल कुमार जैन, आगरा
सलिल जैन, देहरादून
महेन्द्र कुमार जैन रपरिया, करहल
अनिल कुमार जैन, छपरौली

(पूर्वी उत्तरप्रदेश)

संजय जैन, वाराणसी
कोमलचंद जैन, महमूदाबाद
प्रेमचंद जैन, महमूदाबाद
भीमसेन जैन, महमूदाबाद
श्रीपाल जैन, कानपुर
अशोक जैन, राईस मिल, फतेहपुर
विजय कुमार जैन पत्रकार, फतेहपुर
अनूपचंद जैन, इलाहाबाद
श्रीमती साधना जैन, इलाहाबाद
श्रीमती आरती जैन, इलाहाबाद
नेम कुमार जैन, गनेशपुर
प्रद्युम्न कुमार छोटी शाह, टिकैतनगर
सुभाषचंद जैन सर्राफ, टिकैतनगर
पंकज जैन, टिकैतनगर
ऋषभ जैन, टिकैतनगर
मदनलाल जैन, टिकैतनगर
डॉ. विनय जैन, बाराबंकी
अजय कुमार जैन, बाराबंकी
अशोक जैन, कल्पना साड़ी, बाराबंकी
श्रवण जैन, यहियागंज, लखनऊ
राकेश जैन, यहियागंज, लखनऊ
राकेश जैन, चौक, लखनऊ
रज्जूमल जैन, लखनऊ
अजय किशोर जैन, चौक, लखनऊ
वीरचंद जैन, चौक, लखनऊ
प्रदीप कुमार जैन, लखनऊ
पी.सी. जैन, इन्दिरानगर, लखनऊ
रोहित जैन, इन्दिरानगर, लखनऊ
वीर कुमार जैन, डालीगंज, लखनऊ
राजकुमार जैन, डालीगंज, लखनऊ
चन्द्रप्रकाश जैन, नाका हिन्डोला, लखनऊ
प्रेमचंद जैन, बहराइच
प्रकाशचंद जैन, बहराइच
विजय कुमार जैन, बहराइच
कुंवरसेन जैन, बहराइच
मुन्नालाल सेठ, बहराइच
जयप्रकाश जैन, दरियाबाद
पदमचंद जैन, त्रिलोकपुर
सुमतप्रसाद जैन, हरदोई

(बिहार प्रदेश)

मुकेश कुमार जैन, आरा
चिरंजीलाल जैन, पटना
महावीर कुमार सेठी, सरिया
सुरेशचंद जैन झांझरी, झुमरीतलैया
कन्हैयालाल सेठी, औरंगाबाद
बालचंद छाबड़ा, गया
विनोद कुमार जैन, सिवान

(आसाम)

हुकमीचंद पाण्ड्या, गोहाटी
पन्नालाल सेठी, डीमापुर
इंजी. गुणसागर जैन, गोहाटी
ललित छाबड़ा, गोहाटी

(राजस्थान)

महावीर मिण्डा, उदयपुर
भागचंद जैन, चित्तौड़गढ़
उत्तमचंद निर्खी, कोटा
उदयभान जैन, जयपुर
दिलीप जैन, जयपुर
ज्ञानचंद झांणरी, जयपुर
राजकुमार कोठारी, जयपुर
अशोक कुमार रांवका, जयपुर
अशोक कुमार पाटनी, जयपुर
संतोष रांवका, जयपुर
शांतिलाल पारलिया, सलूम्बर
नरेन्द्र मिण्डा, सलूम्बर
कवरीलाल जी वोहरा, आनन्दपुर कालू
नाथूलाल सेठ, लोहारिया

(महाराष्ट्र)

जयचंद कासलीवाल, चांदवड़
श्रीपाल जी गंगवाल, गेवराई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजाभाऊ पाटनी, नासिक
राजमल संदीप कुमार कासलीवाल, औरंगाबाद
प्रमोद कुमार कासलीवाल, औरंगाबाद
कस्तूरचंद बड़जाते, औरंगाबाद
पवन पापड़ीवाल, औरंगाबाद
एड. अभय कासलीवाल, औरंगाबाद
प्रदीप ठोले, सटाणा
डॉ. आर.एल. पहाड़े, मनमाड़
इंजी. सी.आर. पाटिल, पुणे
ज्ञानचंद मिण्डा, मुम्बई
श्रीमती लक्ष्मी देवी, मुम्बई
राजेन्द्र जैन 'वास्तु शास्त्री', मुम्बई
सन्नी जैन, मुम्बई
वीरेन्द्र कुमार जी भूता, मुम्बई
डी.यू. जैन, मुम्बई
शिखरचंद पहाड़िया, मुम्बई
भरत कुमार जैन काला, मुम्बई
चीनू भाई बखारिया, मुम्बई
सूरजमल गंगवाल, शिर्डी
शरदचंद विकासचंद पहाड़े, श्रीरामपुर
माणिकचंद पहाड़े, मालेगांव
मदनलाल पाटनी, धूलिया
प्रकाशचंद पाटनी, औरंगाबाद
विजय कुमार पाटनी, औरंगाबाद
नेमीचंद रमनलाल कासलीवाल, राजनांदगांव
मदनलाल कासलीवाल, औरंगाबाद
महावीर कुमार ठोलिया, औरंगाबाद
राजेश हुकमचंद बड़जाते, पाचोड़
इन्दरचंद लोहाड़े, हुडको-औरंगाबाद
अशोक गंगवाल, औरंगाबाद
दीपचंद पाटनी, औरंगाबाद
पूनमचंद कासलीवाल, औरंगाबाद
दिलीप संतोष कुमार कासलीवाल, औरंगाबाद
राजकुमार काला, अम्बड़
वर्धमान निहालचंद पांडे, चांदवड़
श्रीमती ज्योति बाई, नागपुर
सविता जैन, औरंगाबाद
किशोर कुमार शांतिलाल गंगवाल, शिर्डी
जीवन दादा पाटिल, कासारसिरसी
एड. शांतिलाल काला, परभणी
माणिकचंद जगन्नाथ कासलीवाल, नांदगांव
शरदभाई गंगाराम दोशी, फलटण

मध्यप्रदेश

श्रीमती सुमन जैन, इंदौर
इन्दरचंद चौधरी, सनावद
प्रकाशचंद जैन सर्राफ, सनावद
सुरेशचंद जैन, खण्डवा
डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल

हरियाणा प्रदेश

सतपाल जैन, गुड़गाँवा
देवेन्द्र कुमार जैन, गुड़गाँवा
सुभाषचंद जैन, रेवाड़ी
देवेन्द्र कुमार सर्राफ, रेवाड़ी
जयप्रकाश महावीरचंद जैन, करनाल
महेन्द्र जैन, राखी भंडार, पलवल

पं. बंगाल

भागचंद पहाड़िया, कलकत्ता
महावीर गंगवाल, कलकत्ता
अजीत पाटनी, कलकत्ता

गुजरात

विनोद भाई हर्ष, अहमदाबाद
कमलेशभाई बाबूलाल गांधी, सूरत

आंध्रप्रदेश

सुमेरचंद जैन पाण्ड्या, हैदराबाद
किशोर जैन पहाड़े, हैदराबाद

कर्नाटक

सुरेन्द्र हेगड़े, बैंगलोर
नरेन्द्र कुमार जैन, बैंगलोर
अशोक कुमार सेठी, बैंगलोर

विदेश

श्रीमती भावना जैन, कैलीफोर्निया
सतेन्द्र जैन, न्यूयार्क

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती

महोत्सव विद्वत् समिति

परामर्श प्रमुख

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन हस्तिनापुर

मानद संरक्षिका

ब्र. विद्युल्लता शहा-सोलापुर
ब्र. कमलाबाई-श्री महावीर जी

गौरव अध्यक्ष

प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन फिरोजाबाद

परामर्शदाता

पं. शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी
डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद
डॉ. फूलचंद जैन 'प्रेमी', वाराणसी

अध्यक्ष

डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत

कार्याध्यक्ष

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

उपाध्यक्ष

डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर
डॉ. नलिन के. शास्त्री, दिल्ली
प्रो. टीकमचंद जैन, दिल्ली
प्रो. शुभचंद्र जैन, मैसूर

महामंत्री

डॉ. सुशीलचंद्र जैन, मैनपुरी

सदस्य

डॉ. भागचन्द भास्कर, नागपुर
डॉ. भागचन्द भागेन्दु, दमोह
पं. खेमचंद जैन, जबलपुर
पं. पदमचंद जैन, पानीपत
सुरेशचंद जैन बारोलिया, आगरा
डॉ. संजीव सर्राफ, वाराणसी
डॉ. कु. स्नेहरानी जैन, सागर
डॉ. कु. मालती जैन, मैनपुरी
श्रीमती विमला जैन, फिरोजाबाद
डॉ. नीलम जैन, गुड़गाँवा
निर्मल जैन, सतना
सुरेश जैन मारोरा, शिवपुरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहित्य सृजन की दिशा में जिन्होंने नया इतिहास रचा, ऐसी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित कतिपय ग्रंथों के हस्तलिखित पृष्ठ

अष्टसहस्री की स्याद्वाद चिन्तामणि हिन्दी टीका का एक पृष्ठ

तत हैं । वीणा, सुघोष आदि के शब्द वितत हैं ।
घंटा, ताल आदि के अभिघात से हुये शब्द घन हैं ।
एवं बांसुरी शंख आदि से निकलने वाले शब्द
सौषिर हैं । [मीमांसक के स्फोटवाद पर विचार]
कोई मीमांसक स्फोटवादी हैं वे कहते हैं कि -
ध्वनियां अभिव्यक्त हैं, क्रमशः उत्पन्न होती हैं, और
अनंतर क्षण में नष्ट हो जाती हैं, वे वर्णपद के ज्ञान कराने
में क्षीणशक्तिक हो जाती हैं अतः अर्थान्तर का ज्ञान
कराने में समर्थ नहीं हैं। यदि ध्वनियां ही समर्थ होतीं
तो पदों से पदार्थ की तरह प्रत्येक वर्ण से अर्थबोध
होना चाहिये । पुनः एक वर्ण से अर्थ ज्ञान हो जाने पर
तो भिन्न भिन्न वर्णों का ग्रहण करना निरर्थक ही
हो जावेगा । क्रम से उत्पन्न होने वाली ध्वनियों का
सहभावरूप संघात भी संभव नहीं है जिससे अर्थ
का ज्ञान हो सके । अतः इन ध्वनियों से अभिव्यक्त
होनेवाला, अर्थप्रतिपादन में समर्थ, अमूर्त,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहित्य सृजन की दिशा में जिन्होंने नया इतिहास रचा, ऐसी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित कतिपय ग्रंथों के हस्तलिखित पृष्ठ

कल्पद्रुम विधान का एक पृष्ठ

कल्पद्रुम विधान का एक पृष्ठ

१४२

४-८-८५

पूजा नं. १४

तीर्थंकर गुण पूजा

अथ स्थापना

शंभु छंद — जो पंचकल्याणक के स्वामी, तीर्थंकर पद के धारी हैं।
उनका ही समवसरण बनता, जिसकी शोभा अतिन्यारी है॥
यद्यपि उनके गुण हैं अनंत, फिर भी छ्यालिस गुण हैं विख्याते।
उनका आह्वानन कर पूजें, ये मेरे सब गुण विकसाते॥१॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं ... अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं ... अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक

चाल-शेर — सरयू नदी को नीर स्वर्णभृंग में भरूं।
जिननाथ पादपद्म में त्रयधार मैं करूं॥
तीर्थेश गुणसमूह की मैं अर्चना करूं।
निजगुण समूह हेतु आज प्रार्थना करूं॥१॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणमंडितचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः जलं..

केशर कपूर को घिसा चंदन सुरभि लिया।
जिननाथ चरण चर्च मैं मन को सुवासिया॥तीर्थेश..॥२॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणमंडितचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः चंदनं..

उज्ज्वल अखंड शालि धोय थाल में भरे।
जिन अग्र पुंज धारते अखंड सुख भरें॥तीर्थेश..॥३॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणमंडितचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अक्षतं...

बेला गुलाब केतकी चंपा खिले खिले।
जिनपाद में चढ़ावते सम्यक्त्व गुण मिले॥तीर्थेश..॥४॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणमंडितचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं..

पूड़ी सोहाल मालपुआ थाल भर लिये।
जिन अग्र में चढ़ाय आत्मतृप्ति कर लिये॥तीर्थेश..॥५॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणमंडितचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं..

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षट्खण्डागम ग्रंथ की सिद्धान्तचिंतामणि संस्कृत टीका का एक पृष्ठ

वी. नि. सं. २५३२
४-१-२००६
हस्तिनापुर

षट्खण्डागम की स्याद्वादचिन्तामणि संस्कृत टीका का
एक पृष्ठ

२४०

पुनः कश्चिदाशंकते –

यद्येवं तर्हि पूर्वकोट्यायुष्केषु चैव भ्रामयित्वा तैजसशरीरनोकर्मणः उत्कृष्टसंचयः किन्न क्रियते ?

आचार्यदेवः समाधत्ते –

न, बहुवारं कालं कृत्वा उत्पद्यमानस्य अपर्याप्तयोगैः स्तोकद्रव्यसंचयप्रसंगात्। नारकेषु द्वाभ्यां पूर्वकोटिभ्यां देशोनाभ्यां ऊनत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमायुर्बंधापयितव्यं, अन्यथा नारकचरमसमये षट्षष्टिसागरोपमानां परिसमाप्तिविरोधात्।

संप्रति तैजसशरीरप्रदेशाग्रक्रमनिर्देशार्थं चतुर्दशसूत्राण्यवतार्यन्ते –

कमेण कालगदसमाणो अधो सत्तमाए पुढवीए उववण्णो ॥४६१॥

सिद्धान्तचिंतामणिटीका –

कदलीघातेन विना जीवित्वा मृतः इति ज्ञापनार्थं "कमेण कालगद" इति भणितं। सप्तमी पृथ्वी अधश्चैव भवति नान्यत्र इति ज्ञापनार्थं सूत्रे "अधो" निर्देशः कृतः। यत्र आयुर्बद्धं तत्रैव नियमेन उत्पद्यते इति ज्ञापनार्थं द्वितीयवारं "सत्तमाए पुढवीए" इति ग्रहणं कृतं।

अत्र कश्चित् पृच्छति –

सप्तमीपृथिव्यामेव किमर्थं उत्पादितः ?

आचार्यदेवः उत्तरयति –

नैतत्, किंच – तत्र संक्लेशेन बहुद्रव्यस्य उत्कर्षणोपलंभात् अन्यत्र एवंविधसंक्लेशाभावात्। आयुःप्रमाण

पुनः कश्चिदाशंकते –

आयुःप्रमाणनिर्देशः किन्न कृतः ?

आचार्यदेवः समाधत्ते –

तदायुषो देशोनत्वप्रतिपादनार्थं आयुःप्रमाणं न कथितं।

तदो उवट्टिदसमाणो पुणरवि पुव्वकोडाउएसु उववण्णो ॥४६२॥

तेणेव कमेण आउअमणुपालइत्ता तदो कालगदसमाणो पुणरवि अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उववण्णो ॥४६३॥

सिद्धान्तचिन्तामणिटीका –

25

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नियमसार प्राभृत की स्याद्वादचन्द्रिका संस्कृत टीका का एक पृष्ठ

नियमसार की स्याद्वादचन्द्रिका संस्कृत टीका का एक पृष्ठ

१०

वैशाख शु. १२
वी.सं. २५०८

अथ सूत्रस्य पूर्वार्धेन सभेदं जीवस्वरूपं उत्तरार्धेन च ज्ञानोपयोगप्रकारं निरूपयितुकामा ब्रुवन्त्याचार्याः —

जीवो उवओगमओ उवओगो णाणदंसणो होइ।
णाणुवजोगो दुविहो सहावणाणं विभावणाणं ति ॥१०॥

जीवो उवओगमओ - जीवः उपयोगमयः। उवओगो णाणदंसणो होइ - उपयोगः ज्ञानदर्शनं भवति। णाणुवओगो दुविहो सहावणाणं विभावणाणं ति - ज्ञानोपयोगो द्विविधः स्वभावज्ञानं विभावज्ञानं इति तावत् क्रियाकारकसंबंधः।

तद्यथा — बाह्याभ्यन्तरहेतुद्वयसान्निध्याने यथासंभवमुपलब्धुश्चैतन्यानुविधायी परिणाम उपयोगः, स तु जीवस्य लक्षणं, जीवो लक्ष्य इति। 'परस्परव्यतिकरे सति येनान्यत्वं लक्ष्यते तल्लक्षणं' एतदात्मभूतं वर्तते अग्नेरौष्ण्यमिव। जीवो गुणी धर्मी वा, अयं उपयोगो गुणो धर्मो वा इति। उपयोगो द्विधा ज्ञानोपयोगो दर्शनोपयोगश्च। अत्र ज्ञानोपयोगो मुख्यरूपेण द्विविधः, स्वभावविभावभेदात्। अनयोर्लक्षणं सूत्रद्वयेन सूचयन्ति स्वयं ग्रन्थकाराः।

यद्यपि आ निगोदजीवात् सिद्धराशिं यावत् सर्वे जीवाः सामान्येन ज्ञानदर्शनस्वभावास्तथापि विशेषापेक्षया मिथ्यात्वगुणस्थानात् क्षीणकषायपर्यन्ता विभावज्ञानदर्शनवन्तः, ततः परे स्वभावज्ञानदर्शनवन्त एव। अथवा शुद्धनिश्चयनयेन सर्वे जीवाः स्वभावज्ञानदर्शनोपयोगमयाः सन्तोऽपि अशुद्धनयेन संसारिणो विभावज्ञानदर्शनाभ्यां परिणता एव तप्तायःपिण्डवत्।

तथैव प्रोक्तं च प्रवचनसारग्रन्थे —

"परिणमदि जेण दव्वं तक्कालं तम्मय त्ति पण्णत्तं।"[1]

एतदुक्तं भवति — शुद्धाशुद्धनयद्वयविभागेन स्वात्मतत्त्वं विज्ञाय शुद्धस्वभावपरिहारार्थं शुद्धात्मस्वभावमेव भावयितव्यं, तस्योपलब्धिश्च यथा स्यात् तथैव यतितव्यमाचरितव्यमपि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषयानुक्रमणिका

प्रथम खण्ड — स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
1.	आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज का पूज्य माताजी को प्राप्त उद्बोधन		2
2.	आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज का पूज्य माताजी को प्राप्त उद्बोधन		3
3.	आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज द्वारा पूज्य माताजी के प्रति आत्मीय भावना		4
5.	"आशीर्वाद देने वाली माताजी को कोटि-कोटि आशीर्वाद'	आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी	5
6.	मङ्गल मनीषा के साथ	आचार्य श्री वर्धमानसागर जी	6
7.	आशीर्वाद	आचार्य श्री बाहुबलीसागर जी	7
8.	मंगल आशीर्वाद	आचार्यश्री भरतसागर जी महाराज	7
9.	मंगल आशीर्वाद	आचार्य श्री पद्मनंदी जी	8
10.	मंगल आशीर्वाद	आचार्य श्री भरतसागर जी (गुज. संत केसरी)	9
11.	आशीर्वाद	आचार्य श्री गुणनंदी जी	10
12.	इतिहास की ज्ञानज्योति	आचार्य श्री कुशाग्रनंदी जी	10
13.	शुभाशीर्वाद	उपाध्याय श्री समतासागर जी	11
14.	सरस्वती की प्रतिकृति	उपाध्याय श्री श्रुतसागर जी	12
15.	मंगल आशीर्वाद	प्रज्ञाश्रमण मुनि श्री अमितसागर जी	12
16.	आशीर्वाद	मुनि श्री सौभाग्यसागर जी	13
17.	विनयांजलि	मुनि श्री सौरभसागर जी	13
18.	शुभ भावना	मुनि श्री शशांकसागर जी	13
19.	पूज्य माताजी सदा जयवन्त रहें	मुनि श्री रविनंदि जी	14
20.	माताजी दीर्घायु होवें	युवा मुनि श्री मयंकसागर जी	14
21.	विनयांजलि	मुनि श्री अजेयसागर जी	15
22.	गौरव ग्रंथ का प्रकाशन सराहनीय कार्य है	मुनि श्री अजेयनंदी जी	16
23.	विनयांजलि	गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी	16
24.	मातृवत्सला	आर्यिका श्री आदिमती माताजी	17
25.	अविस्मरणीय है उनका अवदान	आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी	18
26.	संस्मरण	आर्यिका श्री अभयमती माताजी	19
27.	वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि	आर्यिका श्री शुभमती माताजी	22
28.	विशुद्ध भावना एवं मंगल कामना	गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी	24
29.	परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के गुणानुवाद	गणिनी आर्यिका श्री चन्द्रमती माताजी	24
30.	पंच तीर्थ उद्धारिका	गणिनी आर्यिका श्री प्रज्ञामती माताजी	25
31.	एक भक्ति पुष्प 'माँ तार दे'	गणिनी आर्यिका श्री स्याद्वादमती माताजी	26
32.	पूज्य माताजी का व्यक्तित्व-कर्तृत्व	आर्यिका श्री सुप्रकाशमती माताजी	27
33.	हमारे आदर्श	आर्यिका श्री सुभूषणमती माताजी	27
34.	भावांजलि	आर्यिका श्री प्रशांतमती माताजी	29
35.	स्तुति	आर्यिका श्री अभयमती माताजी	30
36.	गणिनीज्ञानमतीकाव्याञ्जलिः	आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी	31

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
37.	सविनय विनयांजलि समर्पित है	आर्यिका श्री शिवमती माताजी	32
38.	परोपकारिणी गुरु माता के उपकारों के प्रति मेरी स्मृतियाँ	आर्यिका श्री कैलाशमती माताजी	32
39.	विनयांजलि	आर्यिका श्री संयमश्री माताजी	34
40.	स्वर्णिम संयम के समयोत्सव पर 'वंदनीय माँ ज्ञानमती'	आर्यिका श्री विनीतमती माताजी	34
41.	विनयांजलि	आर्यिकारत्न श्री विशाश्री माताजी	35
42.	विनयांजलि	आचार्य चंदना जी (राजगीर-नालंदा)	36
43.	"माता तेरे उपकारों से मैं उऋण नहीं हो सकता हूँ"	क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी	36
44.	शुभ संदेश	स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक जी, श्रवणबेलगोल	40
45.	My Regards	Shri Devendrakeerty Bhattaaraka Swamiji, Hombuja	40
46.	विनयांजलि	स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन भट्टारक जी , कोल्हापुर	41
47.	विनयांजलि	स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी, मूडबिद्री	41
48.	विनयांजलि	स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक जी, कोल्हापुर	42
49.	विनयांजलि	स्वस्ति श्री भानुकीर्ति भट्टारक जी, कम्बदहल्ली	43
50.	Vinayanjali	Bhattarak Vrishabhsen Swami Ji, Lakkavalli	43
51.	"नहि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति"	स्वस्ति श्री धवलकीर्ति भट्टारक स्वामी, अरिहंतगिरी	44
52.	विनयांजलि	स्वस्ति श्री भट्टाकलंक स्वामी, सोंडा	45
53.	ज्ञानमेरु श्री ज्ञानमती माताजी	स्वस्ति श्री भुवनकीर्ति भट्टारक जी, कनकगिरी	46
54.	The Great Mataji	Swasti Shri Laxmisen Bhattarka Ji, N. R. Pura	46
55.	Mataji is the Holist of Holies	Swasti Shri Laksmisena Bhattarak Ji Jinkanchi	47
56.	हे ज्ञानमती माताजी! तुमको लाखों प्रणाम	क्षुल्लिका श्री शांतिमती माताजी	48
57.	उत्कृष्ट क्षयोपशम का जीवन्त उदाहरण हैं पूज्य माताजी	क्षुल्लिका श्री चन्द्रमती माताजी	48
58.	मुझे वैराग्यपथ पर आरूढ़ करने वाली	कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, हस्तिनापुर	49
59.	महामना गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी	ब्र. विद्युल्लता शहा, सोलापुर	50
60.	विनयांजलि	ब्र. कमलाबाई, श्री महावीर जी	51
61.	ज्ञानमती यानि कि सृजनशीलता	ब्र. कु. रेवती दोशी, अकलूज	52
62.	जैन क्षितिज पर "शरदपूर्णिमा का चाँद"	ब्र. कु. स्नेहरानी जैन, सागर	53
63.	विशल्या की प्रतिकृति माँ ज्ञानमती	ब्र.कु. बीना जैन (संघस्थ)	54
64.	भक्ति-मुक्तक	ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)	55
65.	मुझे भी कुछ सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है	ब्र. कु. आस्था जैन (संघस्थ)	55
66.	ज्ञानमती माताजी ने बनाया-HINDUSTAN	ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)	57
67.	स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर शत-शत बार नमन	ब्र. कु. चन्द्रिका जैन (संघस्थ)	60
68.	मेरी जीवन नैय्या की कर्णधार	ब्र. कु. इन्दू जैन (संघस्थ)	61
69.	दृढ़ संकल्पी	ब्र. कु. अलका जैन (संघस्थ)	63
70.	संसार समुद्र से पार लगाने वाली पूज्य माताजी	ब्र. कु. प्रीति जैन (संघस्थ)	64
71.	एक रात बनी सौगात	ब्र. कु. स्वाति जैन (संघस्थ)	65

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
72.	विनयांजलि	ब्र.कु. मंजू जैन शास्त्री, लखनऊ	67
73	गवेषणा-पिपासु-आर्यिका ज्ञानमती माताजी	ब्र. जयकुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)	68
74.	जीते हों किसी ने देश तो क्या, इनने हर दिल को जीता है	ब्र. कु. विजय कुमार जैन (संघस्थ)	69
75.	माँ! चरणों में तुम्हें नमस्ते...........	ब्र. कु. आभा जैन (संघस्थ-गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी)	70

भारत के राजनेताओं द्वारा पूज्य माताजी के प्रति प्रेषित शुभकामना संदेश

76.	शुभकामना संदेश	उपराष्ट्रपति सचिवालय	71
77.	शुभकामना संदेश (गृह मंत्री-भारत सरकार)	शिवराज पाटिल	72
78.	शुभकामना संदेश (रक्षा मंत्री-भारत सरकार)	प्रणव मुखर्जी	73
79.	शुभकामना संदेश (राज्य मंत्री-गृह मंत्रालय, भारत सरकार)	श्रीप्रकाश जायसवाल	74
80.	शुभकामना संदेश (कृषि, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्यमंत्री-भारत सरकार)	कांतिलाल भूरिया	75
81.	शुभकामना संदेश (नेता प्रतिपक्ष-लोक सभा)	लाल कृष्ण आडवाणी	76
82.	शुभकामना संदेश (राज्यपाल-उत्तरप्रदेश)	टी.वी. राजेश्वर	77
83.	शुभकामना संदेश (राज्यपाल-हरियाणा प्रदेश)	ए.आर. किदवई	78
84.	शुभकामना संदेश (मुख्यमंत्री-उत्तरप्रदेश)	मुलायम सिंह यादव	79
85.	शुभकामना संदेश (मुख्यमंत्री-दिल्ली प्रदेश)	शीला दीक्षित	80
86.	शुभकामना संदेश (मुख्यमंत्री-राजस्थान प्रदेश)	वसुन्धरा राजे	81
87.	शुभकामना संदेश (मुख्यमंत्री-बिहार)	नीतीश कुमार	82
88.	शुभकामना संदेश (मुख्यमंत्री-उत्तरांचल)	नारायण दत्त तिवारी	83
89.	शुभकामना संदेश (विधानसभा अध्यक्ष-उत्तरप्रदेश)	माता प्रसाद पाण्डेय	84
90.	शुभकामना संदेश (विधानसभा अध्यक्ष-बिहार)	उदय नारायण चौधरी	85
91.	शुभकामना संदेश (विधानसभा अध्यक्ष-हिमाचल प्रदेश)	जी.आर. मुसाफिर	86
92.	शुभकामना संदेश (संसद सदस्य)	डॉ. मुरली मनोहर जोशी	87
93.	शुभकामना संदेश (सांसद)	मोतीलाल वोरा	88
94.	शुभकामना संदेश (नेता प्रतिपक्ष-राज्यसभा)	जसवंत सिंह	89
95.	शुभकामना संदेश (लोक निर्माण मंत्री-उत्तरप्रदेश सरकार)	शिवपाल सिंह यादव	90
96.	शुभकामना संदेश (लोक निर्माण राज्य मंत्री-उत्तरप्रदेश)	अरविंद कुमार सिंह 'गोप'	91
97.	शुभकामना संदेश (पर्यटन मंत्री-उत्तरप्रदेश)	कौकब हमीद	92
98.	शुभकामना संदेश (समाज कल्याण मंत्री-उत्तरप्रदेश)	अवधेश प्रसाद	93
99.	शुभकामना संदेश (कृषि एवं धर्मार्थ कार्य मंत्री-उत्तरप्रदेश)	डॉ. अशोक बाजपेयी	94
100.	शुभकामना संदेश (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष-विश्व हिन्दू परिषद)	अशोक सिंघल	95
101.	शुभकामना संदेश (अध्यक्ष (मंत्री स्तर)-सिंचाई विकास एवं बाढ़ नियंत्रण आयोग, उत्तरप्रदेश)	अनुराधा चौधरी	96
102.	शुभकामना संदेश (अध्यक्ष-समाज कल्याण निर्माण निगम, उत्तरप्रदेश)	प्रभुदयाल बाल्मीकि	97
103.	शुभकामना संदेश (सरकारी मुख्य सचेतक-राजस्थान विधान सभा)	महावीर प्रसाद जैन	98
104.	शुभकामना संदेश (प्रमुख सचिव-विधान सभा, उत्तरप्रदेश)	राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय	99
105.	विनयांजलि (पूर्व सांसद-राज्य सभा)	जे.के. जैन	100
106.	..........Mataji : A personification of Jainism (Ex. Finance State Minister & M.P.)	V. Dhananjaya Kumar Jain	101

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
107.	शुभकामना संदेश (मुख्य सचेतक (सत्तारूढ़ दल)-बिहार विधान सभा)	श्रवण कुमार	102
108.	पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी-सर्वोदयी व्यक्तित्व (सलाहकार योजना आयोग-योजना भवन, नई दिल्ली)	चन्द्रपाल	103

हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीशों द्वारा पूज्य माताजी के प्रति प्रेषित भक्तिसुमन

109.	शुभकामना संदेश (न्यायाधीश-दिल्ली हाईकोर्ट)	न्यायमूर्ति वीरेन्द्र जैन	104
110.	गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी-एक चिरंतन प्रकाश (पूर्व न्यायाधीश-इलाहाबाद हाईकोर्ट एवं सदस्य-कावेरी जल विवाद)	न्यायमूर्ति सुधीर नारायण	105
111.	शुभकामना संदेश (न्यायधीश-इलाहाबाद हाईकोर्ट)	न्यायमूर्ति महेशचंद जैन	107
112.	शुभकामना संदेश (न्यायाधीश-इलाहाबाद हाईकोर्ट)	न्यायमूर्ति दिलीप गुप्ता	108
113.	शुभकामना संदेश (न्यायाधीश-इलाहाबाद हाईकोर्ट)	न्यायमूर्ति (डॉ.) बी.एस. चौहान	109

प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा पूज्य माताजी के प्रति प्रेषित शुभकामना संदेश

114.	शुभकामना संदेश (पुलिस महानिरीक्षक-लखनऊ)	बिजेन्द्र सिंह	110
115.	शुभकामना संदेश (पुलिस महानिरीक्षक-आर्थिक अपराध अनुसंधान संगठन, लखनऊ)	ए.के. जैन	111
116.	शुभकामना संदेश (आई.आर.एस.) (कॉम्पिटेंट ऑथोरिटी एण्ड एडमिनिस्ट्रेटर, लखनऊ)	आशु जैन	112
117.	शुभकामना संदेश (पुलिस महानिरीक्षक-मेरठ)	एन.बी. सिंह (आई.पी.एस.)	113
118.	शुभकामना संदेश (पुलिस उप महानिरीक्षक, मेरठ परिक्षेत्र)	आर.के. विश्वकर्मा (आई.पी.एस.)	114
119.	शुभकामना संदेश (आयुक्त-मेरठ मण्डल)	मोहिन्दर सिंह (आई.ए.एस.)	115
120.	शुभकामना संदेश (जिलाधिकारी-मेरठ)	रामकृष्ण (आई.ए.एस.)	116
121.	शुभकामना संदेश (उप श्रम आयुक्त, मेरठ क्षेत्र)	ए.एन. मिश्र	117
122.	शुभकामना संदेश (वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक-मेरठ)	राजीव सभरवाल (आई.पी.एस.)	118
123.	शुभकामना संदेश (महाप्रबंधक-दूरसंचार मेरठ)	चन्द्रहास	119
124.	शुभकामना संदेश (पुलिस अधीक्षक ग्रामीण-मेरठ)	शिवसागर सिंह	120

विभिन्न विशिष्ट शिक्षाविदों द्वारा प्रेषित विनयांजलि/शुभकामना संदेश

125.	गणिनीप्रमुख पंचकम् (कुलाधिपति-जैन विश्व भारती, लाडनूँ एवं गांधी विद्या मंदिर)	डॉ. एल.एम. सिंघवी	121
126.	शुभकामना संदेश (कुलपति-जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)	बी.बी. भट्टाचार्य	122
127.	शुभकामना संदेश (कुलपति-काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)	प्रो. पंजाब सिंह	123
128.	शुभकामना संदेश (निदेशक-भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की)	प्रो. प्रेम व्रत	124
129.	शुभकामना संदेश (कुलपति-लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)	प्रो. राम प्रकाश सिंह	125
130.	शुभकामना संदेश (कुलपति-चौधरी चरण सिंह वि.वि., मेरठ)	प्रो. एस.पी. ओझा	126
131.	विनम्र वंदना! (कुलपति-राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद)	डॉ. एस.बी. सिंह	127
132.	शतशः नमन! (प्राचार्य-साकेत महाविद्यालय, फैजाबाद)	डॉ.एच.बी. सिंह	127

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
133.	शुभकामना संदेश (कुलपति-सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)	प्रो. अशोक कुमार कालिया	128
134.	शुभकामना संदेश (कुलपति-देव संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार)	डॉ. एस.पी. मिश्रा	129
135.	शुभकामना संदेश (कुलपति-इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़-छत्तीसगढ़)	प्रो. पूर्णिमा पाण्डे	130
136.	शुभकामना संदेश (निदेशक-इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ममेंट टेक्नो., पुणे)	प्रो. पी. रामचन्द्र राव	131
137.	शुभकामना संदेश (वाइस चेयरमेन-नाइस सोसायटी, नई दिल्ली)	कुँवर शेखर विजेन्द्र	132
138.	विनियांजलि (निदेशक-नाइस मैनेजमेंट कॉलेज, मेरठ)	प्रो. सुरेशचंद्र अग्रवाल	133
139.	शुभकामना संदेश (निदेशक-शोभित इंस्टी. ऑफ इंजी. एण्ड टेक्नो., मेरठ)	डॉ. एम.एल. सदाना	134
140.	शुभकामना संदेश (निदेशक-नव नालंदा महाविहार, नालंदा)	डॉ. रवीन्द्र पंथ	135

प्रमुख राष्ट्रीय जैन संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी के प्रति अर्पित भक्तिसुमन

141.	भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी	नरेश कुमार सेठी, जयपुर (अध्यक्ष)	136
142.	श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्मसंरक्षिणी) महासभा	निर्मल कुमार जैन सेठी, दिल्ली (अध्यक्ष)	136
143.	अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद	दीपचंद जैन (राष्ट्रीय महामंत्री)	137
144.	दिगम्बर जैन महासमिति	विवेक काला, जयपुर (अध्यक्ष)	138
145.	दक्षिण भारत जैन सभा	कल्लप्पा अवाड़े, सांगली (अध्यक्ष)	138
146.	दक्षिण भारत जैन सभा	प्रो. डी.ए. पाटिल, जयसिंहपुर (चेयरमैन)	139
147.	भारतीय जैन मिलन	सुरेश जैन 'रितुराज', मेरठ (राष्ट्रीय अध्यक्ष)	140
148.	भारत जैन महामण्डल, मुम्बई	श्री आर.के. जैन-मुम्बई (राष्ट्रीय अध्यक्ष)	141
149.	अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद	डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत (अध्यक्ष)	141
150.	अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद	डॉ. फूलचंद जैन 'प्रेमी', वाराणसी (अध्यक्ष)	142
151.	तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ	डॉ. अनुपम जैन, इंदौर (महामंत्री)	143
152.	दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ)		144
153.	अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद	मनोज कुमार जैन, मेरठ (राष्ट्रीय महामंत्री)	145
154.	अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन	श्रीमती आशा जैन, दिल्ली (राष्ट्रीय अध्यक्षा)	145
155.	भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा	सुरेश जैन मारोरा, शिवपुरी (महामंत्री)	147
156.	भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी	अनिल जैन, प्रीतविहार-दिल्ली (महामंत्री)	147

अन्य प्रांतीय/शहरी विशिष्ट संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी के प्रति अर्पित विनयांजलियाँ

157.	प्राचीन श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत (पंजी.) दिल्ली	पंच	148
158.	बिहार स्टेट दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी	अजय कुमार जैन, आरा (मानद मंत्री)	149
159.	महाराष्ट्र प्रांतीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी	डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण (अध्यक्ष) शांतिलाल काला-परभणी (महामंत्री)	150
160.	भगवान महावीर मेमोरियल समिति, दिल्ली	महेन्द्र प्रसाद जैन (महामंत्री)	151
161.	मध्यांचल दिगम्बर जैन महासमिति	माणिकचंद जैन पाटनी, इंदौर (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष व मध्यांचल अध्यक्ष)	151
162.	अ.भा.दि. जैन परिषद, राजस्थान	खिल्लीमल जैन, अलवर (प्रान्त अध्यक्ष)	153
163.	अ.भा.दि. जैन युवा परिषद, दिल्ली प्रदेश	बिजेन्द्र कुमार जैन, दिल्ली (महामंत्री)	154
164.	अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद, राज. प्रांत	उदयभान जैन, जयपुर (प्रदेश अध्यक्ष)	155

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र. मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
165. दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन, इंदौर	प्रदीप कासलीवाल (राष्ट्रीय अध्यक्ष)	155
166. जैन महासभा, दिल्ली	प्रो. रतन जैन, दिल्ली (महासचिव)	156
167. श्री आत्मानन्द जैन महासभा (उत्तरी भारत)	श्री राजकुमार जैन, दिल्ली (संरक्षक)	157
168. अ. भा.दि. जैन युवा परिषद एटा	सुनील कुमार जैन, बाँदा (अध्यक्ष)	158
169. आगरा दिगम्बर जैन परिषद	शिखरचंद जैन सिंघई (अध्यक्ष)	158
170. गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति	डॉ. सुशीलचंद्र जैन, मैनपुरी (महामंत्री)	158
171. भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव समिति	दीपक जैन, वाराणसी (महामंत्री)	160

प्रांतीय/शहरी/क्षेत्रीय दिगम्बर जैन समाजों द्वारा पूज्य माताजी के प्रति अर्पित भक्तिसुमन

172. दिगम्बर जैन समाज, इंदौर	बाबूलाल पाटोदी (अध्यक्ष)	160
173. दिगम्बर जैन समाज, वाराणसी	रिसबदास जैन, वाराणसी (अध्यक्ष)	161
174. सकल दिगम्बर जैन समाज टिकैतनगर	ऋषभ कुमार जैन, टिकैतनगर (महामंत्री)	162
175. सकल दिगम्बर जैन समाज, बाराबंकी (उ.प्र.)	अजय जैन (मंत्री)	163
176. दिगम्बर जैन समाज माधोराजपुरा (जयपुर) राज.	भँवर सेठी 'झुमर'	164
177. दिगम्बर जैन समाज मैनपुरी (उ.प्र.)	वीरेन्द्र कुमार जैन (मंत्री)	165
178. दिगम्बर जैन समाज तहसील फतेहपुर	सरोज कुमार जैन (अध्यक्ष)	166
179. समस्त दिगम्बर जैन समाज, खैरवाड़ा		166
180. समस्त दिगम्बर जैन समाज, अमरोहा-जे.पी. नगर	राजेन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष) राजेन्द्र कुमार जैन एडवोकेट (मंत्री)	167
181. समस्त दिगम्बर जैन समाज, प्रयाग	पं. पन्नालाल जैन	168
182. दिगम्बर जैन समाज बड़ौत	राजबहादुर जैन (अध्यक्ष) सुनील कुमार जैन (मंत्री)	170
183. सकल दिगम्बर जैन समाज, खतौली	चमनलाल जैन एवं अमरचंद जैन (सर्राफ)	170
184. समस्त दिगम्बर जैन समाज, ललितपुर	पं. उत्तमचंद राकेश, ललितपुर	172
185. सकल जैन समाज, सरधना	सतीशचंद जैन, सरधना	173
186. दिगम्बर जैन समाज हरदोई	सुमत जैन (अध्यक्ष)	174
187. सकल दिगम्बर जैन समाज, दरियाबाद	प्रकाश जैन (अध्यक्ष)	175
188. दिगम्बर जैन समाज, सुदामानगर	प्रकाशचंद जैन काला, इंदौर (अध्यक्ष)	176
189. सकल दिगम्बर जैन समाज, अशोक विहार-दिल्ली	राजेन्द्र कुमार जैन 'चाँदी वाले' (कोषाध्यक्ष)	177
190. श्री 1008 ऋषभदेव जिनालय, आदर्शनगर	श्रीमती प्रेमकुमारी जैन, गुड़गाँवा (अध्यक्षा)	177

देश के विभिन्न दिगम्बर जैन महिला संगठनों द्वारा पूज्य माताजी के प्रति अर्पित विनयांजलियाँ

191. अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, दिल्ली प्रदेश	श्रीमती प्रभा जैन (मंत्री)	178
192. अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, मुम्बई इकाई	लक्ष्मी जैन, मुम्बई (अध्यक्षा)	179
193. अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, इंदौर	श्रीमती सुमन जैन (अध्यक्षा)	180
194. अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, मोतीकटरा-आगरा	श्रीमती अरुणा जैन (अध्यक्षा)	181
195. अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, सूर्यनगर-दिल्ली	श्रीमती हिना जैन, सूर्यनगर, जिला-गाजियाबाद-उ.प्र. (अध्यक्षा)	181
196. अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, नजफगढ़ इकाई, दिल्ली	त्रिशला जैन, दिल्ली (अध्यक्षा)	182

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
197.	अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, ज्योति कालोनी, दिल्ली इकाई	श्रीमती शिवकुमारी जैन, दिल्ली (अध्यक्षा)	183
198.	अ.भा.दि. जैन महिला संगठन शंकरनगर, एक्स., दिल्ली इकाई	श्रीमती मिथलेश जैन, दिल्ली (अध्यक्षा)	183
199.	अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, मोरीगेट, दिल्ली	माया देवी जैन, दिल्ली (अध्यक्षा)	184
200.	अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन छतरपुर	डॉ. रमा जैन (संयुक्त महामंत्री)	185
201.	अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, कोड़ा (फतेहपुर)	श्रीमती सुमन जैन (अध्यक्षा)	185
202.	अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, एटा (उ.प्र.)	श्रीमती बबिता जैन, एटा (अध्यक्षा)	186
203.	अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, शास्त्रीनगर-मेरठ	श्रीमती अर्चना जैन, मेरठ (मंत्री)	186
204.	अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन-प्रयाग	श्रीमती साधना जैन, इलाहाबाद (अध्यक्षा)	187
205.	अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, बोंली (राज.)	श्रीमती विमला जैन (अध्यक्षा)	187

विभिन्न तीर्थों की क्षेत्रीय कमेटियों द्वारा पूज्य माताजी के प्रति अर्पित विनयांजलियाँ

206.	श्री दि. जैन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी	सरोज कुमार जैन (महामंत्री)	188
207.	भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ प्रयाग-इलाहाबाद	इंजीनियर आर.के. जैन (मंत्री)	189
208.	भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति	कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष)	190
209.	भगवान ऋषभदेव 108फुट विशालकाय मूर्ति निर्माण कमेटी मांगीतुंगी	कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष) डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण (महामंत्री)	191
210.	श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सिहोनियां जी (मुरैना) म.प्र.	सुमतिचंद्र शास्त्री-मोरैना (अध्यक्ष)	192
211.	श्री कहाऊँ दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र	डॉ. अभयकुमार जैन, गोरखपुर (महामंत्री)	193

देश के अन्य विशिष्ट महानुभावों/विद्वानों/श्रेष्ठियों एवं भक्तजनों द्वारा प्रेषित भक्ति पुष्प

212.	मंगल संदेश	डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े, धर्मस्थल	194
213.	कल्याणकभूमियों के विकास का प्रयास अनुकरणीय	देवकुमार सिंह कासलीवाल, इंदौर	194
214.	साधु सेवा महान पुण्योदय का द्योतक है	महावीर प्रसाद जैन (संघपति), दिल्ली	195
215.	पूज्य माताजी पारसमणि हैं	कमलचंद जैन, खारीबावली, दिल्ली	196
216.	संस्कृति की संरक्षिका पूज्य माताजी	राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स', दिल्ली	197
217.	सरस्वती की प्रतिमूर्ति माँ ज्ञानमती	प्रेमचंद जैन, खारीबावली, दिल्ली	198
218.	माताजी ने मेरा जीवन बदल दिया	जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार, दिल्ली	199
219.	चमत्कारिक पूज्य माताजी	कैलाशचंद जैन, करोलबाग, दिल्ली	199
220.	दृढ़ इच्छा शक्ति की जीवन्त प्रतिमूर्ति	चक्रेश जैन (बिजली वाले), दिल्ली	200
221.	विनयांजलि	गणेशीलाल रानीवाला, कोटा	201
222.	त्याग की प्रतिमूर्ति गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी	दीपचंद गार्डी, मुम्बई	202
223.	कलियुग की ब्राह्मी माता	श्रीपाल जैन 'मोटर वाले', दिल्ली	203
224.	चारित्रचन्द्रिका माताजी	विजय जैन, दरियागंज, दिल्ली	203
225.	ज्ञान का भण्डार माँ ज्ञानमती	ज्ञानचंद जैन, आरा	204
226.	मुझे मिलीं सच्ची माता!	दीपक जैन, वाराणसी	205
227.	वात्सल्य की प्रतिमूर्ति-माता ज्ञानमती जी	अतुल जैन, प्रीतविहार, दिल्ली	205
228.	अद्भुत प्रतिभा की धनी	कमल कुमार जैन, आरा	206
229.	हम भाग्यशाली हैं	अजित कुमार अजमेरा धूलियान (प. बंगाल)	206
230.	जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका	जगजीवन जैन, राजौरीगार्डन, दिल्ली	207
231.	तीर्थोद्धारिका-पूज्य ज्ञानमती माताजी	सुधीर जैन ठेकेदार,गोमतीनगर, लखनऊ	208
232.	और उसने मेरे जीवन की दिशा बदल ली	डॉ. अनुपम जैन, इंदौर	208

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
233.	"कैसे भूलूँगा उस क्षण को"	मनोज कुमार जैन, मेरठ	210
234.	युगप्रवर्तिका माताजी	राकेश जैन, मेरठ	211
235.	जो एक मात्र देश की नहीं पूरे जम्बूद्वीप की निर्मात्री हैं	जीवन प्रकाश जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर	211
236.	इतिहास की प्रतिमूर्ति ज्ञानमती माँ	पं. शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी	213
237.	वात्सल्य-गंगा : माँ ज्ञानमती	डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद	214
238.	जिनके तिरेपन चातुर्मास पूरे हो चुके हैं	कैलाशचंद जैन सर्राफ, लखनऊ	215
239.	पूज्य माताजी का मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहे	डॉ. अनिल कुमार जैन, अहमदाबाद	218
240.	भक्तिमार्ग प्रदर्शिका पूज्य माताजी	सुनील कुमार जैन सर्राफ, मेरठ	219
241.	सच्ची माता हैं आप!	डॉ. देवेन्द्र जैन (वास्तु सलाहकार), भोपाल	219
242.	दीर्घ तपस्वी पूज्य माताजी	कैलाशचंद जैन चौधरी, सनावद	220
243.	जैन जगत की अद्वितीय धर्मप्रभाविका	प्रो. टीकमचंद जैन, दिल्ली	220
244.	जैनशासन की अनुपम विभूति	डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत	222
245.	चारित्र की प्रतिमूर्ति-माताजी	डॉ. सुशील कुमार जैन, कुरावली-मैनपुरी	223
246.	भजन (दीक्षा जयंती आई रे...........दीक्षा)	ब्र. कु. चन्द्रिका जैन (संघस्थ)	224
247.	अवध की अनमोल मणि, विश्व का गौरव माँ ज्ञानमती	प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी सा.),टिकैतनगर	225
248.	युग की महान धरोहर	स्वदेशभूषण जैन, दिल्ली	226
249.	विनयांजलि	डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर	227
250.	काव्य सुमन	सौ. त्रिशला जैन, नाका हिंडोला-लखनऊ	227
251.	युग प्रवर्तिका	डॉ. फूलचंद जैन 'प्रेमी', वाराणसी	227
252.	शत-शत नमन हमारा	कपूरचंद्र घुवारा, छतरपुर	229
253.	स्वीकारो माँ	डॉ. कु. मालती जैन, मैनपुरी	230
254.	ज्ञान की माता-गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी	पं. सागरमल जैन, विदिशा	230
255.	जियो और उतने ही दिन तक, जितना बिता दिया जीवन	श्रीमती मालती जैन, मोरीगेट, दिल्ली	231
256.	सदी की महान आराधिका : गणिनी माताजी	डॉ. जयकुमार उपाध्ये, दिल्ली	232
257.	विनम्र विनयांजलि	डॉ. विमल कुमार जैन, जयपुर	235
258.	हमारी कुलगुरु पूज्य माताजी चिरायु हों	प्रकाशचंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)	236
259.	विनयांजलि	इंजी. धर्मवीर जैन, लखनऊ	237
260.	200 ग्रंथों की रचयित्री-गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी	डॉ. संजीव सर्राफ, वाराणसी	238
261.	संस्मरण-विनयांजलि	वैद्य धर्मचन्द्र जैन, इंदौर (म.प्र.)	239
262.	जिसके स्मरण से पाप कटे, ऐसी वात्सल्यमयी माता	कस्तूरचंद बड़जाते, औरंगाबाद	239
263.	भजन (हे माता धन्य हो तुम, कितना परिषह सहती हो)	संजय जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर	241
264.	गुरु नाम जपो, मन-वचन-काय	सुमतचंद जैन दिल्ली	241
265.	विश्व का महान आश्चर्य : गणिनी ज्ञानमती..........	पं. नरेश जैन 'कांसल', हस्तिनापुर	242
266.	105 पूज्य श्री ज्ञानमती स्तुति अष्टक	पं. प्रवीणचंद जैन शास्त्री, हस्तिनापुर	243
267.	माताजी दया की मूर्ति हैं	पदमचंद जैन, त्रिलोकपुर	244
268.	शांतिधारा : श्री ज्ञानमती माताजी की अलौकिक देन	पं. प्रदीप जैन शास्त्री, हस्तिनापुर	245
269.	पुनः पुनः तव दर्शन होवे	डॉ. प्रमोद कुमार जैन, आगरा	246
270.	गौरवमय हो यह उत्सव	ब्र. कु. आस्था जैन (संघस्थ)	247
271.	श्रद्धा सुमन	सुरेश जैन (आई.ए.एस.), भोपाल	248
272.	हम उस नगर के वासी हैं............	संतोष राँवका, माधोराजपुरा	248
273.	साक्षात् सरस्वती	श्रीमती साधना जैन, मैनपुरी	249
274.	'पूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी में मैंने माँ का प्यार देखा'	सौ. समीक्षा नांदगांवकर, नागपुर (महा.)	250

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
275.	हमें गौरव है इन पर	राजकुमार जैन, लखनऊ	251
276.	कृतज्ञता का प्रकाशन	डॉ. कमलेश जैन, जयपुर	252
277.	विनयांजलि	महेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार, नई दिल्ली	252
278.	षट्खण्डागम ग्रंथ पर 'सिद्धान्तचिंतामणि' टीका लेखिका	प्रेमचंद जैन, बहराइच	253
279.	काव्यांजलि	सुरेशचंद जैन बारोलिया, आगरा	254
280.	ज्ञान गंगा से मुलाकात	डॉ. ऊर्जिता जैन, मुम्बई	254
281.	साहित्य सृजन को अद्वितीय ऊँचाईयाँ प्रदान कीं	श्रीमती सुमन जैन, इंदौर	255
282.	विनयांजलि	सरोज कुमार जैन, राजगीर	256
283.	एक विशेष संस्मरण एवं आदरांजलि	एम. सी. जैन (पत्रकार), चिकलठाणा	257
284.	पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को सौ-सौ बार नमन है	पं. लालचंद जैन 'राकेश', गंजबासौदा	257
285.	निरंतर ज्ञानामृत की वर्षा के पचास वर्ष	रमेशचंद्र मनयां, भोपाल	259
286.	आर्यिका ज्ञानमती माताजी-जीवंत जिनवाणी	सुभाषचंद जैन (रानी पॉलीमर्स), नई दिल्ली	262
287.	तेरे चरणों की धूली है, हर माथे का चंदन	वीरकुमार, राजन जैन, टिकैतनगर	263
288.	काव्य सुमन	श्रीमती ज्ञाना देवी जैन, टिकैतनगर	264
289.	एक संस्मरण	डॉ. प्रेमचंद्र जैन, इलाहाबाद	264
290.	पूज्य माताजी का जीवन मूलाचार के अनुकूल है	विजय कुमार जैन, बहराइच	265
291.	अद्वितीय व्यक्तित्व	योगेश कुमार जैन, लाडनूँ	265
292.	वीतरागता की मूर्ति-पूज्य माताजी	पुखराज जैन, गोरखपुर	266
293.	मंगलाभिनन्दन	सुमन्तभद्र, चिंचवड़ (पूना)	266
294.	माताजी का योगदान स्वर्णक्षरों में उल्लेखनीय है	डॉ. प्रेमचंद रांवका, जयपुर	267
295.	पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में तमिल वंदना	जम्बुकुमारन, चेन्नई	267
296.	माताजी की लेखनी ऐसे ही चलते रहे	डॉ. दिलीप जैन, फैजाबाद (उ.प्र.)	268
297.	गणिनीप्रमुख आर्यिका श्रेष्ठ को विनम्र नमन	डॉ. पदमचंद जैन (पत्रकार), एत्मादपुर	269
298.	सारी दुनिया का जब परित्याग किया आपने!	प्रो. एन. नागराज पूवणी जैन, उजिरे	270
299.	भजन (दीक्षा की स्वर्ण जयंती है,सब मिलके मनाओ)	आर्यिका श्री चंदनामती माताजी	270
300.	एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक व्यक्तित्व	पूरनचंद जैन, पावागिर ऊन	271
301.	जन-जन में धार्मिक संस्कारों को स्थापित किया	डॉ. बी.जे. ज्वाला सुरेश, मैसूर	271
302.	ज्ञानमती माताजी में अकाट्य तर्कणा शक्ति है	कपूरचंद जैन पाटनी, गुवाहाटी	271
303.	गणिणी णाणमदीए विणयञ्जलि	डॉ. एन. सुरेश कुमार, मैसूर	272
304.	माताजी के वचन परमौषधि हैं	विनोद कुमार जैन, खतौली	273
305.	सरस्वती की भण्डार जगत्माता ज्ञानमती जी	महावीर दीपचंद ठोले, औरंगाबाद	274
306.	जिनकी सुरभि से सुरभित सारा संसार	सुरभि जैन, इन्दिरानगर-लखनऊ	275
307.	विनयांजलिः	पं. राकेश कुमार जैन, सांगानेर	276
308.	विनयांजलि	वीरेन्द्र कुमार जैन, रायबरेली	277
309.	हे दिव्य विभूति! ज्ञानमती तुमको अभिवंदन करता हूँ..........	पंकज त्यागी, मेरठ	278
310.	माताजी के चरणों में समर्पित मंगल कामना	श्रवण कुमार जैन प्रतिष्ठाचार्य, बण्डा	279
311.	पारसमणि सा व्यक्तित्व	श्रीमती महिमा जैन, लाडनूँ	279
312.	पचास वर्षीय संयम यात्रा	डॉ. प्रकाशचंद जैन, साहिबाबाद	280
313.	मूल को नहीं भुलाया जा सकता	धरमचंद जैन (काका), सनावद (म.प्र.)	282
314.	एक अनोखा संस्मरण	डॉ. हेमन्त कुमार, राजगीर (नालंदा)	282
315.	विनयांजलि	डॉ. कृष्णा जैन, ग्वालियर	284
316.	तपःपूत भक्ति से–मृत्यु पर विजय	श्रीमती डॉ. वंदना जैन, आगर-मालवा	285

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
317.	विनयांजलि	उत्तमचंद निर्खी, कोटा	285
318.	विनयांजलि	सौ. अरुणा सी.पाटिल, पुणे	286
319.	माँ शत-शत तुम्हें प्रणाम है	लक्ष्मी नारायण सरस्वती, मेरठ	287
320.	विनयांजलि	स्वरूपचंद जैन सोगानी, हजारीबाग	288
321.	स्वाध्याय का प्रतिफल माँ ज्ञानमती जी	भीमसेन जैन, महमूदाबाद	288
322.	तुम साक्षात् शुचि शारद हो	डॉ. कमलेश जैन 'बसंत', बांसवाड़ा	289
323.	कुशल लेखिका	पं. सनत कुमार जैन, रजवॉस	290
324.	बीते कैसे वर्ष पचास	राजेन्द्र कुमार जैन-मुम्बई (वास्तुविद)	291
325.	तीर्थंकर प्रकृति की आत्मा	डॉ. कुलभूषण जैन	292
326.	तुम जन्म-जन्म का वन्दन हो	कवि विजय प्रेमी, मेरठ	292
327.	'50 साल की आर्यिका दीक्षा, सोने की स्वर्ण जयंती'	प्रभात कुमार जैन, फरीदाबाद	293
328.	विनयांजलि	प्रो. (डॉ.) राजाराम जैन, नोएडा	294
329.	"गौरव ग्रंथ समर्पण बेला, श्रद्धायुत् मन.......	"पं. शिखरचंद्र जैन साहित्याचार्य, सागर	295
330.	कविता	सौरभ जैन 'सुमन', मेरठ	296
331.	चुम्बकीय शक्ति	अरुण कुमार जैन, इलाहाबाद	297
332.	पूज्य गणिनी ज्ञानमती अष्टक	आर्यिका श्री अभयमती माताजी	297
333.	वात्सल्य की प्रतिमूर्ति माताजी	योगेन्द्र जैन, सनावद	298
334.	हे माँ! आप हो भवदधि तारिणी	पं. बसंत कुमार जैन, शिवाड़ (राज.)	298
335.	गौरवमय हो यह उत्सव	श्रीमती उषा बैनाडा, लालसोंट (राज.)	299
336.	दृढ़ संकल्पी	सुधीर कुमार जैन, सनावद	299
337.	माताजी की वाणी में जादू है	अजित प्रसाद जैन, इलाहाबाद	300
338.	ज्ञानोद्योतिका धर्मप्रभाविका संस्कृति.......	अभयकुमार जैन, बीना (म.प्र.)	300
339.	नर से भारी नारी	श्रीमती रविकांता जैन, मैनपुरी	301
340.	विश्व में अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया है!	पं. खेमचंद जैन, जबलपुर	302
341.	गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का भारत को अवदान	अरविंद कुमार जैन शास्त्री, इंदौर	303
342.	भक्त के भावोद्गार	प्रमोद कुमार जम्मनलाल जैन, औरंगाबाद	304
343.	माताजी एवं संत-संस्था के संबंध	सुरेश जैन सरल, जबलपुर (म.प्र.)	305
344.	भजन (गणिनी ज्ञानमती माताजी, कोटि-कोटि वंदन है)	ब्र. विजय कुमार जैन (संघस्थ)	306
345.	अदम्यसाहसी व्यक्तित्व की धनी हैं आप!	विनय कुमार जैन, अकोला (महा.)	307
346.	बीसवीं सदी की महान गौरव	श्रीमती सुमती देवी कासलीवाल	307
347.	"मोक्षमार्गनेत्री श्री ज्ञानमती माताजी"	डॉ. सुरेन्द्र जैन, लाडनूँ (नागौर) राज.	308
348.	जब मौत को भी लौटना पड़ा	श्रीमती प्रेमलता जैन, इलाहाबाद	309
349.	हे माँ! अनेकों ज्ञानमति बना दो!	आर्यिका श्री सुभूषणमती माताजी	309
350.	मैं जीवन भर आपका ऋणी रहूँगा	विकास जैन, प्रियदर्शनी विहार-दिल्ली	310
351.	रिद्धि-सिद्धिमयी रत्नत्रयी हैं माताजी	श्रीमती गीता जैन, स्योहारा, बिजनौर	310
352.	यथा नाम तथा गुण : आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी	शरद जैन 'सुधाँसु', लाडनूँ (राज.)	311
353.	जिनशासन प्रभाविका पूज्या गणिनी आर्यिका.......	डॉ. अशोक कुमार जैन, लाडनूँ	312
354.	जन्मान्तर प्राप्त वैदुष्य	डॉ. नेमीचन्द्र जैन, खुरई (म.प्र.)	312
355.	बीसवीं सदी में साक्षात् सरस्वती	पं. कमल कुमार जैन, मैनपुरी	313
356.	हम सभी महान पुण्यशाली हैं!	सागरचंद जैन, प्रीतविहार-दिल्ली	314
357.	नारी जगत की आदर्श साधिका	श्रीमती क्रान्ति जैन, लाडनूँ	315
358.	तप-त्याग की साधना में समर्पित हैं आप!	पं. आनन्द प्रकाश जैन (शास्त्री), कलकत्ता	315

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
359.	जिनेन्द्र भक्ति और श्रुतभक्ति	डॉ. ज्योति जैन, खतौली	316
360.	आपका व्यक्तित्व विलक्षण एवं बहुआयामी है	डॉ. सौरभ जैन, मैनपुरी	316
361.	जब गूँज उठा महावीर भवन	कृष्ण कुमार जैन, इलाहाबाद	317
362.	क्षण-क्षण प्रतिक्षण आनन्दित हूँ	प्रेमचंद जैन, महमूदाबाद	317
363.	तां ज्ञानमूर्तिममलां सततं नमामि	आर्यिका श्री चंदनामती माताजी	318
364.	आर्यिका ज्ञानमती की साहित्य-साधना	श्रीमती अलका जैन, अहमदाबाद	319
365.	प्रतिभाशाली विदुषी माता	राजकुमार कोठारी, जयपुर (राज.)	321
366.	कृतज्ञ है दिगम्बर जैन समाज	पं. कमल कुमार जैन शास्त्री, कलकत्ता	321
367.	ऊर्ध्वमुखी चेतना का निष्पन्द............	डॉ. कमलेश कुमार जैन, वाराणसी	322
368.	गीत (जिन दर्शन जिन वंदन का, दुनिया में बजता डंका)	आर्यिका श्री अभयमती माताजी	323
369.	आपने जैन संस्कृति में नवचेतना का संचार किया है	शान्तिलाल पारलिया, सलुम्बर (राज.)	324
370.	विनयांजलि	मिश्रीलाल, 'कोहडार, इलाहाबाद	324
371.	शत शत वंदन, शत अभिनंदन	डॉ. चन्द्रवीर जैन, शिकोहाबाद	325
372.	जैनधर्म की वैज्ञानिकता ही नहीं, प्राचीनता को भी बताया	डॉ. जयकुमार जलज, रतलाम (म.प्र.)	325
373.	विनयांजलि	चन्द्रसेन जैन, भोपाल	326
374.	जैन समाज की अमूल्य निधि	सरमनलाल जैन 'दिवाकर' शास्त्री, सरधना	327
375.	समर्पित हैं उन्हें अभिवंदना के सुमन	श्रीमती ज्योति संतोष कुमार पाटनी, नागपुर	327
376.	"सर्वोच्च आर्यिका माताजी"	नरेन्द्र कुमार मिण्डा, सलुम्बर (राज.)	328
377.	व्यवस्था और साधना के प्रतीक का संस्मरण	वृषभ प्रसाद जैन, वर्धा (महा.)	329
378.	उन्हें अभी मृत्यु को पराजित करना ही होगा..............!	सूरजमल बोबरा, इंदौर	330
379.	गौरवमयी व्यक्तित्व है जिनका	पं. प्रदीप जैन शास्त्री, हस्तिनापुर	331
380.	जंगल में मंगल कर दिया	प्रदीप जैन (कक्कन), लखनऊ	332
381.	स्वर्णिम दीक्षा जयंती का स्वर्णिम अवसर	प्रमोद कुमार जैन, सरधना	332
382.	अनेकांत की सशक्त हस्ताक्षर हैं पूज्या माताजी	विनोद हर्ष, अहमदाबाद	333
383.	धन्य हैं ज्ञानमती माता	विनोद जैन, सीवान (बिहार)	334
384.	और वह जीवन का स्वर्णिम दिवस बन गया.........	श्रीमती लता जैन, सलावा	334
385.	"गणिनी बाल सती"	प्रो डॉ. विमला जैन, फिरोजाबाद	335
386.	एक ममतामयी जगतमाता	डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा, कलकत्ता	336
387.	आपके प्रवचन जीवन निर्माण हेतु मूल्यवान हैं!	ओमप्रकाश जैन, आगरा	337
388.	आर्यिका ज्ञानमती अष्टक	डॉ. महेन्द्र कुमार सागर प्रचंडिया, अलीगढ़	338
389.	ज्ञानोपासिका पूज्य 105 आर्यिका ज्ञानमती माताजी	डॉ. रमेशचंद जैन, बिजनौर	339
390.	आगमानुकूल तप-साधना में लीन हैं	डॉ. कस्तूरचंद्र 'सुमन', महावीर जी	339
391.	पुरुषार्थ से सब कुछ प्राप्त हो जाता है	राजेन्द्र कुमार जैन, मेरठ	339
392.	आपके प्रत्येक कार्य सफलता की पराकाष्ठा को छू रहे हैं	नरेशचंद जैन, बड़ौत (बागपत)	340
393.	मेरी कामना : काव्यांजलि	ब्र. कु. अलका जैन (संघस्थ)	341
394.	"विनयांजलि पंच पुष्प"	पं. पवन कुमार शास्त्री 'दीवान', मोरेना	342
395.	हेय ज्ञेय उपादेय का, सबको भान कराती हैं	श्री शरद पहाड़े, शोभा पहाड़े	342
396.	हे ज्ञानमती माता वरदान हमें तुम दे देना	प्रतिष्ठाचार्य पं. सुरेशचंद जैन, दमोह	343
397.	अगाध ज्ञान भरा है माता ज्ञानमती में	निशंका जैन, मैनपुरी	344
398.	गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती मातुः स्तुतिः	आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी	344
399.	अज्ञानांधकार को दूर करने वाली प्रकाश ज्योति हैं आप!	जिनेन्द्र प्रसाद जैन एडवोकेट, दिल्ली	345
400.	ये पचास वर्ष जैनधर्म के 'स्वर्णयुग' हैं	एडवोकेट एन.सी. जैन, दिल्ली	345

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
401.	विनयांजलि	पं. पदमचंद जैन शास्त्री, पानीपत	346
402.	"मेरे प्रेरक दीपों में एक दीप गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी"	डॉ. सोहनलाल जी देवोत, लोहारिया	347
403.	माताजी इस युग की पावन विभूति हैं	प्रियंका जैन, मैनपुरी	348
404.	मातुश्री दैदीप्यमान संस्मरण	डॉ. शैलेन्द्र कुमार रस्तोगी, अयोध्या	348
405.	यह शुभ दिन आया है	श्रीमती सुरेखा शहा, बैंगलोर	349
406.	तुम हो विदुषी बड़ी महान	प्रदीप कुमार जैन, बहराइच	350
407.	इंटरनेट पर जैन साहित्य : ज्ञानमती माताजी..........	विवेकानन्द जैन, वाराणसी	351
408.	भावांजलि	वर्धमान पीयूष कुमार काला, नांदगांव	351
409.	ज्ञान दान	प्रा. सुरेश संगई, जालना (महा.)	352
410.	जंगल में मंगल कर देनी वाली माता	श्रीमती मनोरमा जैन, विकासपुरी, दिल्ली	352
411.	विनयांजलि	प्रो. माणिकचंद एस. पहाड़े, मालेगांव	353
412.	विनयांजलि	आनंद प्रकाश मदन कुमार जैन, दिल्ली	354
413.	प्रश्न अनेक उत्तर एक-बूझो तो जानें	श्रीमती श्रद्धा विक्रांत जैन, सिडनी	354
414.	विनयांजलि	नाथूलाल सेठ, लोहारिया	355
415.	मेरी अम्मा ज्ञानमती माताजी	दिलीप शांतिलाल कासलीवाल, औरंगाबाद	355
416.	एक मौन तपस्विनी-श्री ज्ञानमती माताजी	डॉ. हरिकृष्णा प्रसाद गुप्त, अग्रहरि	356
417.	आगम ज्ञाता ज्ञानमती	सुरेश स्वरूपचंद ठोले, औरंगाबाद	357
418.	विनयांजलि	पं. बाबूलाल फणीश, पावागिरी ऊन	358
419.	विनयांजलि	श्रीमती कुमुदनी जैन, कानपुर	359
420.	विनयांजलि	अनिल कुमार जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर	359
421.	विनयांजलि	श्रीमती कुसुम जैन, केकड़ी	360
422.	तुम्हें है बारम्बार प्रणाम	डॉ. महेन्द्र कुमार 'मनुज', इंदौर	361
423.	विनयांजलि	प्रकाशचंद जैन, गुड़गाँवा	361
424.	ये गणिनी माता महान हैं!	श्रीमती पूजा डॉ. प्रशांत जैन, भोपाल	362
425.	विनयांजलि	श्रीमती मंजू जैन, बैंगलोर	362
426.	विनयांजलि	डॉ. सौ बबिता अजित बेलकुडे, जयसिंहपुर	363
427.	Paying Homage to Ganini Aryikaratna............	Dr. (Mrs). Padmavathamma, Mysore	363
428.	अक्षय ज्ञान निधि	आलोक जैन (एम.बी.ए.), दिल्ली	364
429.	सत्यम् शिवम् नित सुन्दरम् की मंगल मूर्ति	सुरेन्द्र सागर प्रचंडिया, कुरावली (मैनपुरी)	365
430.	विनयांजलि	बाबूलाल जैन शास्त्री, इंदौर	365
431.	यह युग सदा याद रखेगा	उत्सव जैन 'कवि', बागीदौरा (राज.)	366
432.	ब्रह्मचर्य का तेज	जयप्रकाश जैन, दरियाबाद	366
433.	शारद माता	नवीन जैन, पहाड़गंज-दिल्ली	367
434.	हे जगदम्बे! मंगलमूर्ते! सरिता क्या तुम सागर हो?	सुशील जैन, अशोक विहार, दिल्ली	368
435.	स्याद्वाद सिद्धान्त की वाग्मी विवेचिका	सुरेन्द्र जैन, त्रिनगर-दिल्ली	368
436.	मंगल स्तवन	आर्यिका श्री अभयमती माताजी	369
437.	जिनभक्ति में अटूट शक्ति	कोमलचंद जैन, महमूदाबाद	370
438.	संस्कृति की संरक्षिका	राजेश जैन, बाराबंकी	370
439.	करुणामूर्ति परम साधिका–माँ ज्ञानमती	अरुण कुमार जैन, इलाहाबाद	371
440.	समय भाल पर तैजस का तिलक हैं पूज्य माताजी	डॉ. नीलम जैन, गुड़गाँव (हरि.)	372
441.	विनयांजलि	अरुण कोडीवाल, जयपुर	373
442.	अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी	सुभाष जैन, श्रीमती सुषमा जैन, टिकैतनगर	373

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
443.	णाणमई मादा (अट्ठगं)	तुकाराम चाल, नागपुर	374
444.	ज्ञान का तेज पुंज हैं ज्ञानमती माताजी	सत्येन्द्रमोहन जैन 'वास्तुविद्', वाराणसी	375
445.	गागर में सागर भरने की सूक्ति को चरितार्थ करने वाली	विजय कुमार जैन, सरस्वती विहार-दिल्ली	375
446.	पूनों का चाँद हैं पूज्य माताजी	हंसराज जैन, प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली	376
447.	विनयांजलि	डॉ. सरोज जैन, बीना	377
448.	विनयांजलि	कु. खुशबू जैन, रामगंजमण्डी	377
449.	ज्ञान-ध्यान एवं अध्यात्म की त्रिवेणी संगम.........	शैलेश डाह्याभाई कपाडिया, सूरत	378
450.	यथा नाम तथा गुण	निर्मल जैन, सतना	379
451.	जब सम्पूर्ण जैन समाज गौरवान्वित हुआ	अनूपचंद्र जैन (एडवो.), फिरोजाबाद	381
452.	ज्ञानमती माता	यशवंत इंगोले, अकोला (महा.)	382
453.	वन्दना-सप्तकम्	डॉ. दामोदर शास्त्री, नई दिल्ली	382
454.	हमारी कुलगुरु हैं भारतभूषण पूज्यनीया ज्ञानमती माताजी	भरत सेना-टिकैतनगर	383
455.	सार्थक जीवन	पं. बच्चूलाल जैन शास्त्री, कानपुर	385
456.	पुष्पांजलि	डॉ. पुष्पलता जैन, नागपुर	385
457.	चारित्रचक्रवर्ती गुरुवर के समान वंदनीय हैं ज्ञानमती माताजी	अमरचंद जैन, डालीगंज, लखनऊ	386
458.	विनयांजलि	मानिकचंद जैन, सरधना	387
459.	जन-जन की श्रद्धा का केन्द्र हैं माताजी	शुभचंद जैन, टिकैतनगर	387
460.	प्रणम्य है उनकी ज्ञानाराधना	नीरज जैन, सतना	387
461.	मेरे उद्‌गार	तरुण जैन, मेरठ	388
462.	भारतीय संस्कृति को समृद्धि देने वाली.............	प्राचार्य सुभाष वर्धमान शास्त्री, सोलापुर	388
463.	धर्ममाता पूज्य ज्ञानमती जी	रत्नप्रभा रणदिवे, सोलापुर	389
464.	Who is Gyanmati	Km. Princi Jain, Sardhana	390
465.	चमत्कारिक माताजी हैं	अशोक कुमार जैन, मेरठ	390
466.	सच्ची माता तो यह ही हैं!	श्रीमती माला जैन, दिल्ली	391
467.	विनम्र विनयांजलि	पं. जयसेन जैन, इंदौर	392
468.	"दीक्षायाः सुवर्णोत्सवैषा विनत प्रार्थना"	कु. भारती पेंदे, सोलापुर	393
469.	वंदन मेरा बारम्बार	महेन्द्र कुमार जैन शास्त्री', मुरैना	394
470.	विनयांजलि	पं. नागनाथ जैन (काटकर), मुम्बई	394
471.	भजन (दीक्षा लेकर चलीं आर्यिका, अपने कर्म जलाने को)	श्रीमती त्रिशला जैन, नाका हिंडोला,लखनऊ	395
472.	विनयांजलि	पूर्णचंद्र जैन शास्त्री, सागर	395
473.	भव्यात्माओं का किया उद्धार	मिलापचंद जैन सोगाणी, जयपुर	396
474.	विनयांजलि	डॉ. राजकुमारी जैन, अजमेर (राज.)	399
475.	आर्ष परम्परा और साहित्य की संरक्षिका	प्रा. सौ. सुजाता कु. लोखंडे, सोलापुर	400
476.	ज्ञानमती तुम जग माता हो..............	पं. विमल कुमार जैन सोरंया, टीकमगढ़	400
477.	वात्सल्यमयी गणिनी माता ज्ञानमती जी!	रतनचंद सखाराम शहा, सोलापुर	401
478.	'पन्यास प्रवर साध्वी श्री ज्ञानमती माताजी ज्ञान का सागर हैं'	प्रो. एन. देवेन्द्र कुमार जैन, मैसूर	402
479.	हृदयवाणी	सुरेश जैन, मुरादाबाद	403
480.	अपूर्व ज्ञानसाधना	डॉ. शीतलचंद जैन, जयपुर	404
481.	परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी........	डॉ. अशोक कुमार जैन, वाराणसी	405
482.	शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की प्रेरिका	अजय जैन एवं सौ. साधना जैन, मेरठ	405
483.	भजन (माँ तुम्हें माना है मैंने..........)	हृदय कुमार जैन, आगरा	406
484.	तीर्थंकर ज़न्मभूमि विकास की संप्रेरिका	कलीराम जैन, दिल्ली	407

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	मांगलिक कामनाएँ	प्रेषक	पृष्ठ
485.	विनयांजलि	सुरेन्द्र कुमार जैन, सुल्तानपुर	407
486.	विनयांजलि	सुभाष भूपाल वर्डे, बारेगाँव (सांगली) महा.	408
487.	विनयांजलि	घुरालाल सोमचंद शाह, मुम्बई	409
488.	विनयांजलि	प्रो. विजय कुमार पाण्डे, फैजाबाद	409
489.	विनयांजलि	नरेन्द्र मोहन कासलीवाल, जयपुर	410
490.	स्वर्ग जैसा सुन्दर होता है सत्संग	हेमचंद जैन, दिल्ली	410
491.	विनयांजलि	विजय कुमार जैन (पत्रकार), फतेहपुर	411
492.	विनयांजलि	के.सी. जैन, लखनऊ	412
493.	विनयांजलि	हुकमीचंद जैन, पॉण्डीचेरी	412
494.	विनयांजलि	आर.के. जैन, यमुनागर, दिल्ली	413
495.	पूज्य माताजी का सम्बोधन हमेशा मिला रहे!	ब्र. कमला जैन, दिल्ली	414
496.	विनयांजलि	बी.के. पाटिल, सांगली	414
497.	आध्यात्मिक आकाश में चमकता एक सितारा	किरनचंद जैन, दरियाबाद	415
498.	विनयांजलि	नानकचंद जैन, अशोक विहार, दिल्ली	416
499.	विनयांजलि	पारसमल जैन, नई दिल्ली	416
500.	विनयांजलि	सुनीलचंद जैन सुचंती, नालंदा (बिहार)	417
501.	दृढ़ संकल्प की मूर्ति-आर्यिका ज्ञानमती माताजी	भरत कुमार जैन काला, मुम्बई	417
502.	विनयांजलि	प्रदीप कुमार जैन एडवो., इलाहाबाद	418
503.	विनयांजलि	रोहित कुमार जैन, लखनऊ	419
504.	विनयांजलि	राकेश जैन, लखनऊ	419
505.	विनयांजलि	सिद्धार्थ जैन, लखनऊ	419
506.	विनयांजलि	पं. अमृतलाल जैन शास्त्री, दमोह	420
507.	A wonderful Personality of the Century	Shubha Chandra Jain, Mysore	420
508.	श्री ज्ञानमती पञ्चकम्	डॉ. भागचंद जैन भागेन्दु, दमोह	421
509.	युग-युग तू जीती रहे,..............	इन्दरचंद जैन चौधरी, सनावद	422
510.	गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन	आर्यिका श्री चंदनामती माताजी	422

द्वितीय खण्ड - मैना से ज्ञानमती तक जीवन यात्रा

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	आर्यिका चर्या	प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी	2
2.	माताजी तो बेजोड़ हैं	(प्रा.) नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद	16
3.	THE TOWERING PERSONALITY OF GANINI PRAMUKH SHRI GYANMATI MATJI	Brahmacharini Km. Swati Jain	28
4.	ब्राह्मी लिपि में गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय	डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन, वाराणसी	34
5.	श्री ज्ञानमती माताजी चतुरनुयोगों के परिप्रेक्ष्य में	प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी	37
6.	गणिनी आर्यिका श्री की पवित्र जन्मभूमि टिकैतनगर का परिचय	ब्र. कु. इन्दू जैन (संघस्थ)	48
7.	पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रथम त्यागभूमि बाराबंकी का परिचय	अजय कुमार जैन, बाराबंकी	50
8.	पूज्य ज्ञानमती माताजी की क्षुल्लिका दीक्षास्थली दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी	कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन	51
9.	गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा भूमि माधोराजपुरा-एक धार्मिक स्थल	भंवर लाल जैन सेठी 'झुमर', माधोराजपुरा	53

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

10.	आचार्य श्री देशभूषण महाराज का परिचय	डॉ. जयकुमार उपाध्ये, दिल्ली	56
11.	बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती 108 श्री शांतिसागर जी महाराज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	आर्यिका श्री सुभूषणमती माताजी	61
12.	आचार्य श्री वीरसागर महाराज का परिचय	गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी	67
13.	चा.च. आ.श्री शांतिसागर महाराज की पट्ट परम्परा के आचार्य	प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी	73
14.	"प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरं"	डॉ. कु. मालती जैन, मैनपुरी	75
15.	गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की जन्मदात्री माता मोहिनी देवी का परिचय	ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)	77
16.	गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के जनक लाला श्री छोटेलाल जी का परिचय	ब्र. कु. आस्था जैन (संघस्थ)	82
17.	पूज्य माताजी की ऐतिहासिक आत्मकथा "मेरी स्मृतियाँ" से उद्धृत कुछ खास संस्मरण		86

पूज्य माताजी के प्रमुख शिष्य-शिष्याओं के संक्षिप्त परिचय

18.	परमपूज्य आर्यिका श्री जिनमती माताजी	श्रीमती मालती शास्त्री, मोरीगेट, दिल्ली	101
19.	परमपूज्य आर्यिका श्री आदिमती माताजी	आर्यिका सुबोधमती माताजी	104
20.	परमपूज्य आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी	ब्र. कु. चन्द्रिका जैन (संघस्थ)	105
21.	प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी	ब्र. कु. स्वाति जैन (संघस्थ)	107
22.	पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज	डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल	110
23.	क्षुल्लिका श्री शांतिमती माताजी		112
24.	कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन	मनोज जैन, मेरठ	113
25.	पूज्य माताजी के संघस्थ ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों का परिचय	श्रीमती त्रिशला जैन, लखनऊ	114
26.	पूज्य माताजी को प्रदत्त उपाधियों की प्रशस्ति/अभिनंदन पत्र		117

तृतीय खण्ड – साहित्य सृजन में तुमने नूतन इतिहास बनाया

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अष्टसहस्री हिन्दी अनुवाद की विशेषताएं	प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर, नागपुर	2
2.	समयसार की 'ज्ञानज्योति' टीका का वैशिष्ट्य	डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत	8
3.	षट्खण्डागम की सिद्धान्तचिन्तामणि टीका	डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर	13
4.	नियमसार प्राभृत और उसकी टीका "स्याद्वाद चन्द्रिका" का वैशिष्ट्य	प्रो. डॉ. भागचंद्र जैन 'भागेन्दु', दमोह	17
5.	गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी एवं त्रिलोक भास्कर	डॉ. अनुपम जैन, इंदौर	24
6.	मूलाचार : आदर्श टीकानुवाद	पं. शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी	28
7.	जैनागम का सार : ज्ञानामृत (एक अनुशीलन)	प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद	32
8.	'प्रवचन निर्देशिका' पुस्तक : जिसने जीवन दिशा ही बदल दी	डॉ.सुशीलचंद्र जैन, मैनपुरी	35
9.	नियमसार	पं. शिखरचंद जैन 'साहित्याचार्य', सागर	41
10.	जैनभारती : समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद	47
11.	मेरी स्मृतियाँ : एक अध्ययन	डॉ. कपूरचंद जैन, खतौली	61
12.	पूज्य ज्ञानमती माताजी की कृति "जैन भूगोल" : एक अनुचिंतन	प्रो. नलिन के शास्त्री, दिल्ली	63
13.	पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा प्रणीत समग्र ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय	पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी	67

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुर्थ खण्ड - पूज्य माताजी की ऐतिहासिक यात्राएँ एवं सृजनात्मक उपलब्धियाँ

प्रस्तुति-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

1. शाश्वत तीर्थ अयोध्या की मंगल यात्रा एवं आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव का प्रथम महामस्तकाभिषेक 2
2. मांगीतुगी सिद्धक्षेत्र की पर्वतीय यात्रा 23
3. प्रयाग तीर्थ की ऐतिहासिक यात्रा 50
4. भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर की अविस्मरणीय यात्रा (भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव की अमिट उपलब्धि) 74
5. पूज्य माताजी को प्रदत्त उपाधियों की प्रशस्ति/अभिनंदन पत्र 117

पंचम खण्ड - पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के अमूल्य प्रवचन एवं समसामयिक वार्ता

क्र.	प्रवचन विषय	पृष्ठ
1.	स्वरूपाचरण चारित्र	2
2.	जम्बूद्वीप क्या है?	8
3.	आर्यिकाओं की नवधाभक्ति आगमोक्त है	17
4.	विद्वानों के लिए दिशा निर्देश	22
5.	सृष्टि की व्यवस्था	26
6.	वैराग्यपथ पर बढ़ते कदमों को रोकें नहीं	31
7.	चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के जीवन से संबंधित एक परिचर्चा	37
8.	आवश्यक शंका-समाधान	40
9.	परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से एक विशेष साक्षात्कार	52

षष्ठ खण्ड - पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के 50 स्वर्णिम वर्ष एवं वर्षायोग

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के 50 स्वर्णिम वर्ष एवं वर्षायोग	पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी	1 से 88

सप्तम खण्ड - राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय धर्मप्रभावना एवं तीर्थ विकास

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सन् 1978 में हुआ एक ऐतिहासिक प्रशिक्षण शिविर	कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन	2
2.	जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार	डॉ. अनुपम जैन, इंदौर	9
3.	"वास्तव में धरती पर चतुर्थकाल का ही दृश्य उपस्थित हुआ था"	प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी	14
4.	भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन	डॉ. अनुपम जैन, इंदौर	23
5.	कुलपति सम्मेलन : एक ऐतिहासिक उपलब्धि	प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी	25

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

6. ACHIEVEMENTS OF BHAGWAN RISHABHDEVA INTERNATIONAL NIRVAN MAHAMAHOTSAVA YEAR — Brahmacharini Km. Swati Jain — 29

7. द्वितीय सहस्राब्दि का अंतिम दशक ऋषभदेवमय रहा — प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी — 36

8. विश्वशांति शिखर सम्मेलन : न्यूयार्क में हुआ भगवान ऋषभदेव का उद्घोष — कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन — 41

9. पूज्य माताजी का सातिशय-भक्ति परिणाम : विश्वशांति महावीर विधान — पं. शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी — 44

10. CONTRIBUTION OF GANINI PRAMUKH SHRI GYANMATI MATAJI FOR THE INTERNATIONAL PUBLICITY OF JAIN RELIGION — Brahmacharini Km. Swati Jain — 47

11. इतिहासकार सम्मेलन की सफल प्रेरणा — जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर — 53

12. तीन रथ प्रवर्तन द्वारा हुई देशव्यापी धर्मप्रभावना — ब्र: विजय जैन (संघस्थ) — 55

तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास में श्री ज्ञानमती माताजी का अवदान

13. ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर का परिचय — कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन — 71

14. तीर्थंकर जन्मभूमि अयोध्या का परिचय — आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी — 76

15. मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र का परिचय — ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ) — 79

16. ऋषभदेव तीर्थ-प्रयाग का परिचय — जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर — 81

17. भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर-एक परिचय — पं.नरेश कुमार जैन 'प्रतिष्ठाचार्य', हस्तिनापुर — 84

18. नवविकसित कुण्डलपुर : जैसा हमने देखा — अनूपचन्द्र जैन एडवोकेट, फिरोजाबाद — 87

19. अहिच्छत्र तीर्थ का परिचय — ब्र. (कु.) इन्दु जैन (संघस्थ) — 90

20. सम्मेदशिखर तीर्थ पर निर्मित भगवान ऋषभदेव मंदिर — पं. अकलंक कुमार जैन, लखनऊ — 92

21. राजगृही तीर्थ को पूज्य माताजी का अवदान — डॉ. हेमन्त कुमार, राजगृही — 94

22. भगवान महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी में हुआ नवनिर्माण — अजय कुमार जैन, आरा — 96

23. सिद्धक्षेत्र गुणावां जी में गौतम गणधर विराजमान हुए — अजय कुमार जैन, आरा — 98

24. अतिशय क्षेत्र महावीर जी के श्री शांतिवीरनगर तीर्थ परिसर में निर्मित मन्दार कल्पवृक्ष — राजकुमार जैन कोठारी, जयपुर (राज.) — 99

25. पूज्य माताजी की एक देन-कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली — अनिल कुमार जैन, दिल्ली — 101

26. जनवरी 1997 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित अतिशय क्षेत्र कैलाशगिरि — चन्द्रप्रकाश जैन, खैरवाड़ा (उदयपुर) राज. — 102

27. गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से नजफगढ़-दिल्ली में भरतक्षेत्र रचना का निर्माण — श्रीमती त्रिशला जैन, नजफगढ़-दिल्ली — 103

28. तीर्थंकर पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि — प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी — 104

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खण्ड-१

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

हस्तिनापुर में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित विश्व की अद्वितीय रचना जम्बूद्वीप

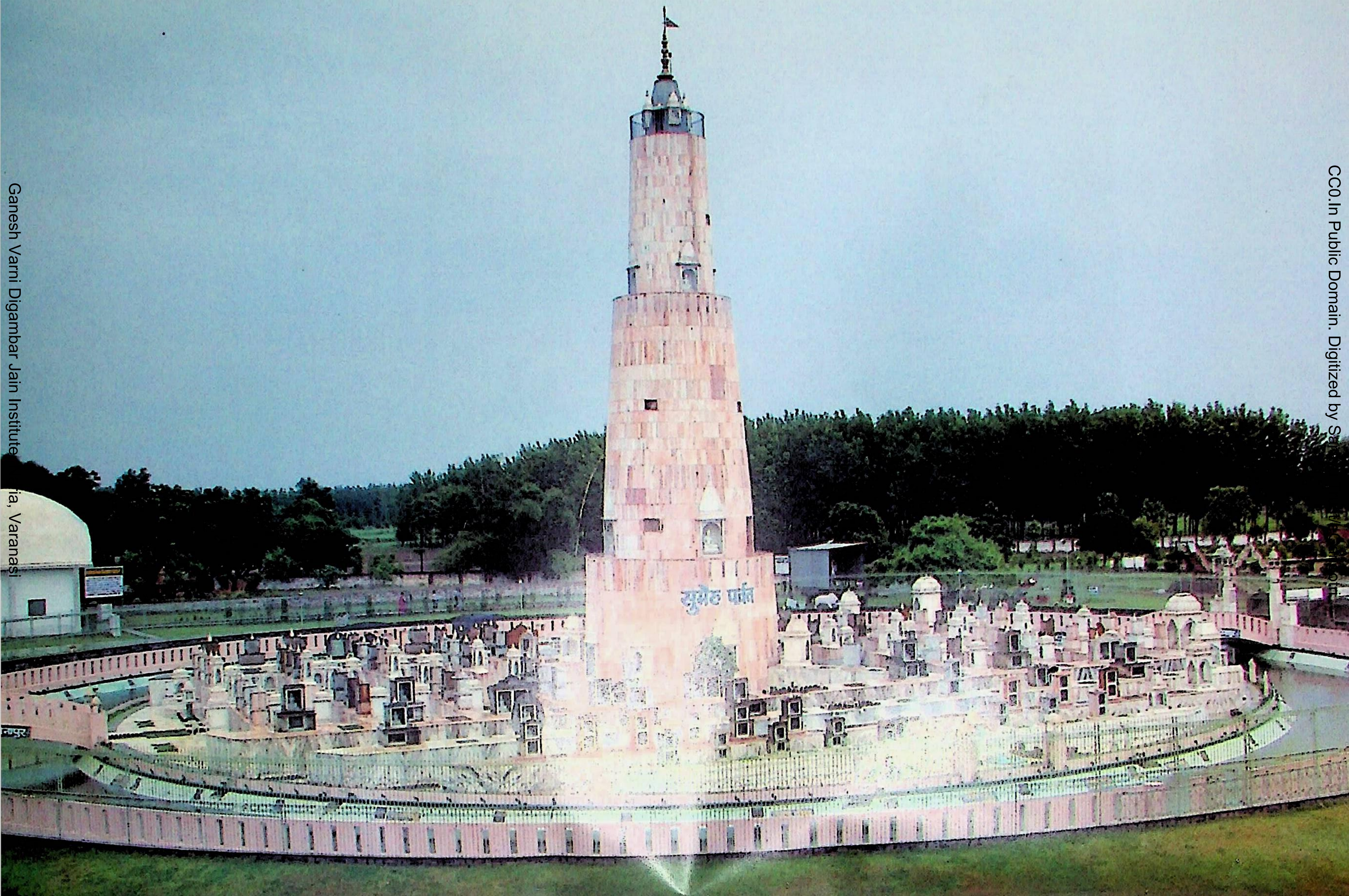

CC0.In Public Domain. Digitized by S...
Ganesh Varni Digambar Jain Institute ...ia, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4853

ॐ

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमतीमातुः पवित्रगुर्वावलिः

निजकेवलज्ञानज्योतिषा त्रिलोकवर्तिचराचरसमस्तपदार्थानां हस्तामलकवत् जानंति वृषभादयः चतुर्विंशतितीर्थंकराः। तीर्थस्य अविच्छिन्न-परम्परायां सम्प्रति श्रीवर्धमानभगवतः सार्वभौमशासनं वर्धति। तस्यैव वीरजिनेन्द्रस्य शासनकाले श्रीकुन्दकुन्दाम्नाये मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे चारित्रचक्रवर्ती श्रीशांतिसागराचार्यवर्यस्तत्प्रथमपट्टाधीशो आचार्यः श्रीवीरसागरमुनीन्द्रोऽस्य करकमलात् "वीराब्दे (2482) द्व्यशीत्यधिकचतुर्विंशतिशततमे वर्षे बैशाखमासे कृष्णपक्षे द्वितीयातिथौ राजस्थानप्रान्तस्य माधोराजपुरापत्तने" सुदीक्षिता महासाध्वी आर्यिका श्री ज्ञानमती माता इह जगति चिरकालपर्यंतं भव्यप्राणिनां कल्याणं कुर्यात् सम्यग्ज्ञानप्रकाशं च कुर्यात्।

अधुना –

वीराब्दे द्वात्रिंशदधिकपंचविंशतिशततमे वर्षे वैशाखकृष्ण द्वितीयायां तिथौ शनिवासरे मातुः आर्यिकादीक्षास्वर्णजयन्त्यवसरे भाक्तिकजनाः गुणानुरागवशात् गणिनी ज्ञानमतीगौरव ग्रंथस्य प्रकाशनं कृत्वा अस्याः जगन्मातुः करकमलयोः समर्पयन्ति। निजख्यातिलाभपूजाभ्यः दूरीभूत्वा गणिनीप्रमुखआर्यिकाशिरोमणिश्रीज्ञानमती माता ज्ञानध्यानतपोरक्ता विराजिता। मातुः ज्ञानप्रकाशिकादृष्टिः युगानुयुगपर्यन्तं वसुन्धरां विकासयेत्। इति वर्धताम् गुरुशासनम्।

-आर्यिका चन्दनामतिः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज का पूज्य माताजी को प्राप्त उद्बोधन

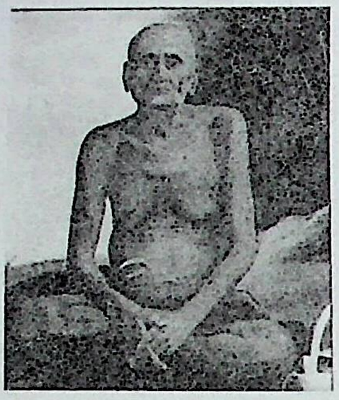

"अभी तुम्हारी उम्र बहुत ही छोटी है, तीस वर्ष तक किसी न किसी के साथ ही रहना, अकेली नहीं रहना, खूब धार्मिक अध्ययन करना, अनगारधर्मामृत, भगवती आराधना और समयसार अवश्य पढ़ना। मैंने भगवती आराधना 36 बार पढ़ी है।"

" अब मैंने दीक्षा नहीं देने का नियम ले लिया है। अतः तुम मेरे शिष्य नेमिसागर के पास दीक्षा ले लो। मैं सूचना भिजवा दूँगा अथवा तुम्हें तुम्हारे शरीर, स्वास्थ्य और भाषा आदि के अनुकूल उत्तर प्रान्त ठीक रहेगा वहाँ वीरसागर जी महाराज हैं, उनके संघ में वयोवृद्ध आर्यिकायें भी हैं। तुम उसी संघ में जाकर दीक्षा लेओ तो अच्छा रहेगा, क्योंकि इधर इस समय कोई आर्यिकायें नहीं हैं।"

"तुम निकट भव्य हो क्योंकि तुम्हारे परिणाम बहुत ही कोमल हैं।"

वीरमती, देखो! उत्तर के कुछ पण्डित वर्ग शास्त्रों के बहुत से अंश को भट्टारक द्वारा प्रक्षिप्त कहकर निकाल देते हैं। उन्हें पाप का भय नहीं है। इसलिए तुम्हारे लिए मेरी प्रेरणा है कि पण्डितों की बात प्रमाणिक न मानकर सदैव प्राचीन आचार्यरचित आर्षग्रंथों को ही प्रमाणिक मानना। तुम्हारी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण है। आगमानुकूल प्रवृत्ति से उसमें और भी प्रखरता आएगी।

(सन् 1954-55, बारामती-कुंथलगिरि-महा.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका दीक्षा गुरु आचार्य
श्री वीरसागर जी महाराज द्वारा पूज्य माताजी को प्राप्त उद्‌बोधन

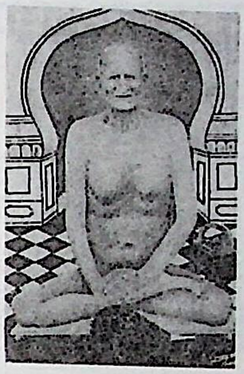

4853

"आज से तुम्हारे अट्ठाईस मूलगुण हैं। 5 महाव्रत, 5 समिति, 5 इन्द्रियनिरोध, 6 आवश्यक और केशलोंच आदि 7 शेष गुण, सभी 28 मूलगुण हैं। नग्नत्व और खड़े होकर आहार लेना इनके स्थान पर आर्यिकाओं के लिए दो साड़ी रखना और बैठकर करपात्र में आहार लेना ही ये दो मूलगुण हैं।"

"दूसरी बात यह है कि प्रायश्चित्त ग्रंथ में आर्यिकाओं के लिए मुनियों के बराबर प्रायश्चित्त देने का विधान है, जबकि क्षुल्लक-क्षुल्लिकाओं को उससे आधा प्रायश्चित्त देने की आज्ञा है। तीसरी बात शास्त्रों में आर्यिकाओं को मुनियों के सदृश ही पूजा के योग्य माना है। देखो ज्ञानमती! तुम अपनी शिष्याओं का आर्यिका संघ बनाकर अलग विहार करना और उन्हें स्वयं प्रायश्चित्तादि देना ऐसा मैं तुम्हें अधिकार और आदेश देता हूँ।"

'ज्ञानमती! तुम्हें मुझे और ज्यादा कुछ नहीं कहना है, बस एक ही बात कहता हूँ कि तुम हमेशा अपने नाम का ध्यान रखना।'

"ज्ञानमती! आजकल तेरापंथ और बीसपंथ ये दो पंथ चल रहे हैं, अतः यदि तुम्हारे साथ में ब्रह्मचारिणी हों तो चैत्यालय अवश्य रखना जिससे उन्हें अभिषेक पूजन करने की सुविधा रहे क्योंकि किसी मंदिर जी में मान लीजिये श्रावक स्त्रियों को अभिषेक नहीं करने देते हैं तो वहाँ अपने निमित्त से विसंवाद नहीं होना चाहिए, यह बात हमेशा ध्यान में रखो।"

वैशाख वदी दूज, सन् 1956, माधोराजपुरा (राज.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षुल्लिका दीक्षा गुरु आचार्य
श्री देशभूषण जी महाराज द्वारा पूज्य माताजी के प्रति आत्मीय भावना

"मैंने प्रारंभ से ही इसमें जितनी वीरता देखी है, आज के युग में वह अन्यत्र किसी में नहीं देखी है अतः मैं इसके गुणों के अनुरूप ही इसका "वीरमती" यह नाम प्रसिद्ध कर रहा हूँ।

"वीरमती! मैंने तुम्हारे गोम्मटसार ग्रंथ की गाथाओं के उच्चारण एवं अर्थ समझने आदि की क्षमता देखी है। तुम वास्तव में बहुत विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न हो। इसलिए मेरी प्रेरणा है कि तुम स्वयं पढ़कर तथा संघस्थ शिष्य-शिष्याओं को पढ़ा-पढ़ाकर ही विद्वत्ता वृद्धिंगत करो। तुम एक दिन महान विद्वान् बनकर खूब नाम कमाओगी।"

चैत्र कृष्णा एकम्, सन् 1953

" ये ज्ञानमती आर्यिका मेरी ही शिष्या हैं, इन्होंने घर छोड़ते समय जो पुरुषार्थ किया है, वह आज पुरुषों के लिए भी असंभव है। इनका स्वास्थ्य अस्वस्थ सुनकर मैं इन्हें शुभाशीर्वाद देने आया हूँ। अभी इन्होंने जो अष्टसहस्री ग्रंथ का अनुवाद किया है वह एक अभूतपूर्व कार्य किया है। ये जल्दी ही स्वास्थ्य लाभ करें, इनसे समाज को बहुत कुछ मिलने वाला है। इतनी सुयोग्य अपनी शिष्या को देखकर मेरा हृदय गद्‌गद हो जाता है।"

" ये नारी होकर इतना कार्य कर रही हैं, तो यदि पुरुष होतीं तब तो न जाने क्या कर डालतीं।"

सन् 1972, पहाड़ी धीरज-दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज (दक्षिण) की परम्परा के वर्तमान पट्टाचार्य 108 श्री अभिनंदनसागर महाराज का मंगल आशीर्वाद

"आशीर्वाद देने वाली माताजी को कोटि-कोटि आशीर्वाद"

इस धरती पर अभिनंदनीय महान आत्माओं का अभिनंदन करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। इसी परम्परा में हमारी परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर सभी संस्थाएं एवं जैन समाज उनका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाकर अभिनंदन कर रही है यह सभी के लिए बड़े ही गौरव की बात है। उन जैसे दृढ़, कर्मठ एवं ज्ञानी साधु का जितना भी सम्मान किया जाए कम है क्योंकि ऐसी महान आत्माएँ धरती पर कभी-कभी ही जन्म लेती हैं। मेरी दृष्टि में ज्ञानमती जी शीघ्र मोक्षगामी जीव हैं। इसीलिए इस भव में ये सम्यग्दर्शन की विशुद्धि के अनेकानेक प्रयत्न कर रही हैं।

दुनिया के शिल्पी तो पत्थर को छेनी और हथौड़े से गढ़-गढ़कर मूर्ति बनाते हैं और पंचकल्याणक के द्वारा पूज्य बनाते हैं लेकिन गणिनी ज्ञानमती माताजी ने तो अपने ज्ञान, ध्यान की छेनी द्वारा और संस्कार एवं तप-त्याग के हथौड़े के द्वारा अनेक भव्यों को, चेतन आत्माओं को आचार्य, मुनी, आर्यिका, ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणी बना दिया तथा आगे और बनाती रहें और चिरायु रहें, ऐसा मेरा आशीर्वाद।

मैंने आचार्य श्री शिवसागर महाराज के संघ में जब से ज्ञानमती माताजी को देखा है, तब से सदैव मुनि-आर्यिका एवं संघस्थ शिष्य-शिष्याओं को अध्ययन कराते ही पाया है। मैं यह भी कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मुझे और आचार्य वर्धमानसागर दोनों को इन्होंने पुत्रवत् स्नेह देकर अध्ययन कराया एवं वर्तमान अवस्था तक पहुँचाया है अतः आज भी उनके प्रति मेरी पूर्ण आत्मीय भावना है।

आचार्यश्री शांतिसागर जी के संयमरूपी बगीचे को हरा-भरा रखने में आज तक ज्ञानमती माताजी का अपूर्व योगदान है। ज्ञानमती माताजी की एक और विशेषता है कि अनेक नए-नए निर्माणकार्य करवा रही हैं व अपनी नवीन-नवीन रचनाओं के द्वारा भव्यों के ज्ञानाभ्यास में और पूजादि शुभोपयोग होने में निमित्त बन रही हैं। इसलिए पुनः-पुनः आशीर्वाद और माताजी के बाएँ हाथ के समान हर कार्य में साथ देने वाली आर्यिका चंदनामती जी, क्षुल्लक मोतीसागर जी और विशेष सहायक ब्र. रवीन्द्र कुमार जी एवं सभी भक्त श्रावकों को आशीर्वाद।

मुक्तक- सूर्य की प्रभा से दिन चमकता है,
चन्द्रमा की प्रभा से रात्रि चमकती है।
दया-दान की प्रथा से दिल और दौलत चमकती है,
'ज्ञानमती' की ज्ञान प्रभा से भारत की धरती चमकती है।

-आचार्य अभिनंदनसागर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मङ्गल मनीषा के साथ

दीक्षा जीवन का आमूल चूल परिवर्तन है। इसमें सब कुछ परिवर्तित हो जाता है और सब छूट जाता है। छूट जाने पर भी शेष रही आत्मसाधना के साथ ज्ञान-ध्यान-तपप्रधान जीवन में अध्ययन-अध्यापन एवं धर्मप्रभावना के कार्य के साथ आत्मप्रभावना रत्नत्रय की साधना करता है आत्मसाधक।

20वीं सदी में लुप्तप्राय: मुनिधर्म को पुन: प्रकाशित किया, प्रथमाचार्य परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने। उसी का फल है आज दिगम्बर समाज के लगभग एक हजार मुनि-आर्यिका-ऐलक-क्षुल्लक-क्षुल्लिकारूप साधुवर्ग देश में निर्बाधगति से विहार कर रहे हैं। उन महामना आचार्यदेव ने देश के बहुभाग में अपने मंगल विहार से धर्म की प्रभावना की, धर्म और संस्कृति की सुरक्षा के साथ जिनवाणी संरक्षण के कार्य भी सम्पन्न हुए उनके द्वारा। अंत में अपने सुयोग्य शिष्य मुनि श्री वीरसागर जी को अपना आचार्यपद प्रदान कर आगमानुसार 36 दिवसीय साधना द्वारा सल्लेखना का आदर्श जगत के सम्मुख प्रस्तुत किया।

परमपूज्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज ने अनेक भव्यजीवों को दीक्षा देकर उन्हें आत्मकल्याण के मार्ग में लगाते हुए चतुर्विध संघ की अभिवृद्धि की तथा सुव्यवस्था दी। उन्हीं महामना आचार्यदेव के शिष्यवर्ग में मुख्य मुनि-शिष्यों में आचार्यश्री शिवसागर, आचार्य धर्मसागर जी, आचार्यकल्प श्रुतसागर जी ने अपने समय में आत्मसाधना से धर्म की महती प्रभावना की है। आर्यिका शिष्याओं में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती जी एवं सुपार्श्वमती जी के नाम प्रमुख हैं।

सन् 1963 से 1967 तक छह आर्यिकाओं के समूह में मुख्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने यात्रार्थ तत्कालिक आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के संघ से पृथक् विहार कर महती धर्मप्रभावना की थी। सन् 1967 में उनका ससंघ चातुर्मास सनावद में हुआ था, उस चातुर्मास में उन्हीं मातृवत्सला आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से मुझे धर्मवात्सल्य मिला और उनकी प्रेरणा से गृहत्यागकर उनके साथ आचार्य संघ में प्रवेश किया। धर्म शास्त्रों का अध्ययन भी उन्हीं से हुआ। आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात् परम्पराचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज से मुनिदीक्षा ग्रहण करने के पीछे भी आर्यिका श्री की ही प्रेरणा ने कार्य किया। आज हम यहाँ तक जो पहुँचे हैं, वह सभी माताजी के बीजारोपण का फल है। अस्तु!

माताजी की दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो गये हैं। संयमी जीवन की यह सुदीर्घ यात्रा अपने आप में महत्वपूर्ण होती है। आर्यिका श्री ने इस सुदीर्घ दीक्षित जीवन में संयम की साधना तो की ही है, आत्मप्रभावना के साथ-साथ जिनधर्म की भी बहुत प्रभावना उनसे हुई है। माताजी ने माँ जिनवाणी के भण्डार को भी अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। उनकी ज्ञानगंगा में अवगाहन करने का अवसर हमें लगभग 9 वर्ष तक प्राप्त हुआ है। न्याय-व्याकरण-सिद्धान्त-अध्यात्म के ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद तथा स्वतंत्र संस्कृत टीकाएँ भी उन्होंने लिखी हैं। जिनेन्द्रभक्ति से ओतप्रोत उनकी हृदयभावनाएँ अनेकानेक छोटे-बड़े विधानों की रचनाओं में प्रकट हुई हैं। अनेक स्तुति-स्तोत्र देव-शास्त्र-गुरु भक्ति में उन्होंने लिखे हैं। 20वीं सदी में उनकी यह जिनवाणी एवं साहित्य सेवा अप्रतिम है। उन्हीं की प्रेरणा-आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन के फलस्वरूप जम्बूद्वीप रचना तीर्थस्वरूप हो सकी है। अनेक तीर्थों के विकास में उनका महनीय अवदान रहा है। इन तीर्थों और शास्त्र प्रकाशन के विशाल कार्यों से उनके द्वारा पिछले 50 वर्षों में जिनधर्म की महती प्रभावना हुई है। इसके अतिरिक्त अनेक जीवों को संयम मार्ग की प्रेरणा देकर धर्ममार्ग में उन्होंने स्थित किया है। कई जीवों को दीक्षा दिलाकर तथा कुछ को दीक्षा देकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोक्षमार्ग में लगाने में भी वे पीछे नहीं रही हैं। 20वीं सदी के युग में जैन संस्कृति के प्रति दिया गया उनका यह अवदान इतिहास में सदैव स्मरण किया जाता रहेगा।

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती पर हमारी मंगल मनीषा है कि माताजी स्वस्थ दीर्घजीवन प्राप्त करें। मंगल आशीर्वाद के साथ यही भावना भाते हैं कि इसी प्रकार जिनधर्म की प्रभावना के महनीय कार्य उनके द्वारा सम्पन्न होते रहें। इत्यलं।

-आचार्य वर्द्धमानसागर

आशीर्वाद

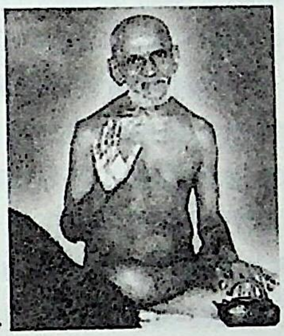

सत्-ज्ञान, तप, चारित्र सम्पन्न, धर्मतीर्थ उद्धारिका, दीर्घसंयमधारी, गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती" महोत्सव के अवसर पर मंगल शुभ आशीर्वाद।

'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' प्रकाशन समिति के अध्यक्ष एवं भक्तगण, गुणी जनों को सद्धर्मवृद्धि। पूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने अपने मानवपर्याय के जीवन को संयमरूपी नौका में बैठकर उसे मुक्तिपथ की ओर चलाया है।

आपने प्राचीन-ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं धार्मिक क्षेत्र हस्तिनापुर में वैज्ञानिक पद्धति से जंबूद्वीप का भी निर्माण कराया है।

प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी आदि भाषाओं में अनेक ग्रंथों का लेखन, अनुवाद आदि करके साहित्य निर्माण किया है।

कर्तव्य एवं गुणानुवाद में आप प्रशंसनीय हैं। आप आर्यिकाओं में ज्येष्ठ-श्रेष्ठ होने से आप "आर्यिका तिलक" से विभूषित हैं।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अध्यक्ष एवं संयोजकों को आशीर्वाद देते हैं कि आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव भव्य समारोह में सम्पन्न हो।

-आचार्य बाहुबलीसागर

मंगल आशीर्वाद

नारी एक पहेली थी, पर आप तो ज्ञान की सहेली निकली। तभी तो आचार्य गुरुवर ने 'ज्ञानमती' यह सार्थक नाम दिया और आपने 'जस नाम तस गुण' चरितार्थ कर दिया।

आपने अपने आत्मबल व लगन से बीसवीं सदी की प्रथम लेखिका के रूप में मेरे अनुसार मानो शिखर को ही छू लिया। आपके द्वारा ग्रंथों की टीकाएँ व सर्वप्रथम विधानादि की रचनाएं बरबस ही मन के स्थलों को छू जाती हैं। आपकी रचनाएँ मानव मात्र को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, लेखनी इतनी सशक्त, सरल तथा रसयुक्त है कि कोई भी पाठक आनन्द-विभोर हुए बिना नहीं रह पाता। ऐसी सारगर्भित टीकाएं व विधानादि लिखकर माताजी ने मानव समाज पर बहुत बड़ा उपकार किया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपके द्वारा अष्टसहस्री टीका, समयसार टीका, कल्पद्रुम विधान, इन्द्रध्वज विधान, सिद्धचक्र विधान आदि 200 से भी अधिक ग्रंथों का सृजन होना एक अमिट इतिहास के रूप में हम सबके समक्ष विद्यमान है।

तीर्थों के जीर्णोद्धार के विषय में पूरा भारत परिचित है कि आपकी दृष्टि जिस क्षेत्र पर गई, समझो कि उसकी काया ही बदल गई। वह क्षेत्र वर्तमान समय में एक दर्शनीय एवं वंदनीय क्षेत्र बन गया। ऐसे हस्तिनापुर, कुण्डलपुर, वाराणसी, प्रयाग, प्रभाषगिरि, मांगीतुंगी, पावापुरी आदि अनेकों स्थान हैं।

सदैव ही आत्मनिष्ठा, आत्मश्रद्धा व आत्म जागृति की त्रिवेणी आपके हृदय-कमल में विराजित रहती है।

आपने पृथ्वी से क्षमा, आकाश से निर्मलता, चन्द्रमा से शीतलता व समुद्र से गंभीरता प्राप्त की है।

ऐसी गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को क्या कहें— "आराधक वीरांगना", बस इतना ही कि भविष्य में और भी वीरता से आगे बढ़ें व पूर्व की तरह समाज का कल्याण करें। मेरा आपको सदैव ही आशीर्वाद—

-आचार्य भरतसागर

(शिष्य-आचार्य श्री विमलसागर महाराज)

मंगल आशीर्वाद

इस दुःषमा पंचमकाल में उत्पन्न होकर भी अपने जीवन के द्वारा एक अनोखा उदाहरण पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रस्तुत किया है। छोटी सी उम्र में ही संसार को दुःखस्वरूप जानकर न केवल विवाह न करने का निर्णय, अपितु दीक्षा को ग्रहण करने का उत्कृष्ट विचार करना दुर्लभ एवं महान् कार्य है। ऐसी वीरता दिखाने में उनके पूर्वजन्म के संस्कार ही बलवती रहे। जबकि, जिस समय माताजी ने दीक्षा ग्रहण की, उस समय आर्यिकाओं की संख्या भी कोई ज्यादा नहीं थी कि उन्हें देख-देखकर दीक्षा के परिणाम होते, क्योंकि संगति का बहुत प्रभाव पड़ता है। बाह्य वातावरण के अभाव में भी दीक्षा का दृढ़संकल्प यह महान् सराहनीय कार्य किया है। इसका अर्थ यह है कि माताजी का संसार परिभ्रमण बहुत ही अल्प रह गया है इसीलिए संयम ग्रहण किया।

दीक्षामात्र ग्रहण करना ही पूर्णविराम नहीं हुआ बल्कि संस्कृत और सिद्धान्तग्रंथों का अध्ययन करके अनेकों का मार्ग प्रशस्त किया। माताजी के ज्ञान का क्षयोपशम भी प्रशंसनीय है। उन्होंने नियमसार की संस्कृत टीका लिखी, षट्खण्डागम जैसे कठिन विषय की सरल संस्कृत टीका लिखी। इसे पंचमकाल का महान अतिशय कहा जाये, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

गणिनी माताजी ने हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप तथा सुमेरु पर्वत की रचना करके वर्तमान में साधुवर्ग और विद्वान् श्रावकों को त्रिलोकसार, तिलोयपण्णत्ति ग्रंथों को पढ़ने में रुचि उत्पन्न कर दी। यदि अजैन बंधु ढाई द्वीप के नक्शे को न जानें, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं किन्तु जैन विद्वान्, श्रावक, साधु भी जो इन्हें नहीं जानते थे, उनके ज्ञानचक्षु खोल दिये हस्तिनापुर की रचना ने। इससे बढ़कर आगम की और प्रभावना क्या हो सकती है? इस क्षेत्र का अवलोकन कर वैज्ञानिकों को भी जैनदर्शन की जानकारी में सुविधा हो गई। वैसे ही अयोध्या, प्रयाग तथा तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास आगम के अनुकूल किया। कुण्डलपुर (नालंदा) में 7 मंजिल का 'नंद्यावर्त महल" बनाकर एक इतिहास रचा। यह बुद्धि का ही विकास है। उनकी प्रत्येक योजना और साकारता आगम को पुष्ट करने वाली है क्योंकि तीर्थंकरों की जन्मभूमि के दर्शन भी सम्यग्दर्शन के कारण हैं, वे क्षेत्र आज आकर्षक और पुण्यकारी बन गये हैं। धन्य है माताजी की लगन!

यद्यपि पहले भी विधान रचे हुए थे किन्तु वे मात्र किताबों में बंद थे, किन्तु माताजी ने इन्द्रध्वज आदि विधानों की छंदबद्ध सरल रचना करके भारतवर्ष में जैन अनुयायियों की भगवान की पूजन-भक्ति में रुचि उत्पन्न करवा दी। भक्ति में तन्मय होकर लोग पुण्य संचय करके इन विधानों से लाभान्वित हो रहे हैं। विधानों के माध्यम से अकृत्रिम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चैत्यालयों के अतिदुर्लभ दर्शन हो जाते हैं। जो मंदिर की पेढ़ी चढ़ना नहीं चाहते थे, वे विधानों में भाग लेकर भगवान से सदा के लिए जुड़ जाते हैं। विधानों की विविध रचना करके माताजी ने अनेक जीवन्त धार्मिक मूर्तियाँ तैयार कर दी हैं। वास्तव में उनके इन उपकारों को जन्म-जन्म तक नहीं भुलाया जा सकता है। कल्पद्रुम विधान को करके तो लोग समवसरण के प्रत्यक्ष दर्शन का लाभ प्राप्त कर लेते हैं।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का सर्वश्रेष्ठ गुण यह है कि उन्होंने जितनी भी रचनाएँ की हैं, चाहे वे पृथ्वी पर हों या पुस्तकों पर, किन्तु प्रत्येक रचना तिलोयपण्णत्ती, त्रिलोकसार आदि आगम ग्रंथों पर आधारित ही हैं, मनगढ़ंत नहीं। प्रत्येक रचना से आगम को पुष्ट करना ही उनका प्रमुख लक्ष्य और उत्तम ध्येय है।

माताजी को व्याकरण का ज्ञान तो अगाध है। इसी संस्कृत व्याकरण के आधार पर ही ग्रंथों की सूक्ष्मता को सही-सही समझा जा सकता है, गलतियों और चूकों से बचा जा सकता है।

सचमुच माताजी ने अथक प्रयास कर स्वाध्याय तप को सार्थक किया है।

माताजी स्वयं तो जैनदर्शन से प्रभावित हुई हीं, साथ में ज्ञान की विशेष आराधना करके व्यक्तिमात्र को केवलज्ञान की प्राप्ति के लिए ज्ञानदान दे रही हैं। जो पंचमकाल दुःख का कारण था, उसे अपनी ज्ञानरश्मियों द्वारा पुरुषार्थ करके संसारसमुद्र से लघुपार होने का मार्ग प्रशस्त किया। आज विद्वत् वर्ग भी माताजी की रचनाओं, कृतियों से बहुत प्रभावित हो रहे हैं। इसलिए स्त्रीपर्याय निकृष्ट होती है, ऐसा कोई कह नहीं सकता। ज्ञान की साक्षात् प्रतिमूर्ति माताजी आज सबके लिए आदर्श और प्रेरक हैं।

माताजी की आयु का अधिक भाग पूरे 50 वर्ष संयमकाल में बीते हैं और आगे 25 वर्ष संयम की आराधना और धर्म की प्रभावना में बीतें, अपनी ज्ञानसाधना के द्वारा हम सबको ज्ञानगंगा में शीतलता प्रदान करें, दीर्घायु होवें और निकटभव में केवलज्ञान की प्राप्ति हो, यही हमारी शुभकामनाएँ हैं तथा स्वाध्याय-लाभ के साथ माँ जिनवाणी की सेवा जीवन की अंतिम साँस तक करती रहेंगी, ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

-आचार्य पद्मनंदी

मंगल आशीर्वाद

भरत चक्रवर्ती की भारत भूमि पर श्रमण संस्कृति के परमाणु अनादिकाल से विद्यमान हैं। श्रमण संस्कृति को अमर रखने के लिए हमारे आचार्य दीक्षा संस्कार विधि आज भी करते आ रहे हैं। गणिनी आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी की भी दीक्षा संस्कार विधि को ५० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं।

वर्तमान में परिवार को, समाज को, देश को ऐसे ही साधु एवं साध्वियों की जरूरत है। धर्म के संस्कार को जीवित रखने में आप एक सफल साध्वी हैं। आप धर्म के हर क्षेत्र में अग्रणी हैं, चाहे तीर्थ क्षेत्रों का निर्माण हो, चाहे जिनवाणी को सरल रूप में भाषानुवाद करना हो। आपकी रचनाकृति जैन समाज के लिए ही नहीं अपितु विश्व के लिए गौरवपूर्ण हैं।

ऐसी गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के लिए समाधिवृद्धि आशीर्वाद।

-आचार्य भरतसागर (गुजरात संत केसरी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आशीर्वाद

साधु समाज में आर्यिकाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान है, जिस प्रकार समाज में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान है, उसी प्रकार आर्यिकाओं का भी धर्म के क्षेत्र में विशेष योगदान है। आज जितनी भी धर्म प्रभावना हो रही है, उसमें सबसे ज्यादा गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का हाथ है। उन्होंने 18 वर्ष की अल्पायु में ही संयम को धारण किया और अपना सारा समय ज्ञान की साधना में बिताया है। ज्ञान के उच्चतम शिखर को प्राप्त कर अनेक शास्त्रों की टीका और अनेकों भक्तिपूर्ण एवं संगीतमय विधानों की रचना की। विश्वप्रसिद्ध कृति जम्बूद्वीप की रचना बनवाई और भी अनेक क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण निर्माण कार्य करवाए। ज्ञानमती माताजी के बारे में क्या कहें? जितना कहें, उतना कम है। इस शताब्दी में दीक्षा की स्वर्ण जयंती मनाना अर्थात् इतनी पुरानी आर्यिका का होना, समाज के लिए एक आदर्श है। ज्ञानमती माताजी के लिए यह युक्ति एकदम ठीक बैठती है कि **''यथा नाम तथा गुण''**। उनका जैसा नाम है, वैसा ही उनका काम है। जिसकी मति ज्ञानमय हो, उसे ज्ञानमती कहते हैं। ज्ञान देने से कभी घटता नहीं, बल्कि वृद्धि को प्राप्त होता है। आपने हमेशा अपने ज्ञान को बाँटा है अर्थात् अपने ज्ञान का सदुपयोग किया है इसलिए उनका क्षयोपशम सागर के समान विस्तार वाला है और समुद्र की गहराई के समान उनका चिंतवन है।

आपका वात्सल्य भी इतना विशाल है कि सब आपकी ओर आकर्षित होते हैं। हमसे आप देवपुरा में मिली थीं, तब हमने देखा कि आपने समाज को नवग्रह मंदिर बनवाने की प्रेरणा दी, तो सभी लोग तुरंत मंदिर बनवाने के लिए तैयार हो गये। यह शक्ति आपके वात्सल्य और प्रेम की ही है क्योंकि वात्सल्य से तो पत्थर भी मोम बन जाता है इसलिए ही तो उनके कहते ही हर काम हो जाता है और आपकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आप जिस काम को हाथ में लेती हैं, उसे पूरा करके ही छोड़ती हैं। आपकी तपस्या और ज्ञान की बराबरी इस पंचमकाल में कोई नहीं कर सकता। ज्ञानमती माताजी के बारे में हमने सुना है कि वह ऐसे तो हमेशा पढ़ती रहती हैं और जब रात्रि में सोती हैं, तब स्वप्न में भी कातंत्र रूपमाला पढ़ती रहती हैं। यह उनके पूर्व का संस्कार ही है। पूर्व में भी उन्होंने श्रुत का अभ्यास किया होगा, इसलिए वही ज्ञान अभी काम आ रहा है। आपके ज्ञान की महिमा अपरम्पार है इसलिए आप इस ज्ञान को दूसरों को भी देते रहना और हमेशा आर्षमार्ग की सुरक्षा करना।

आपकी संयम की 50वीं स्वर्ण जयंती महोत्सव पर आपको आशीर्वाद देते हुए यही कहेंगे कि आपने अपनी तीन चौथाई आयु तो आर्यिका के व्रत पालन करते-करते निकाल दी, अभी भी जितनी आयु बाकी है, उसमें भी इसी तरह अधिक से अधिक धर्म की प्रभावना करें।

-आचार्य गुणनंदी, श्रवणबेलगोल

इतिहास की ज्ञानज्योति

भगवान महावीर के उत्तरकाल की जैन परम्परा विभिन्न उतार-चढ़ाव, आरोह-अवरोह से गुजरी है। इस युग में अनेक ज्ञान ज्योतिर्धर प्रभावक आचार्य हुए, जिन्होंने जैनधर्म और जैन शासन की गरिमा में चार चाँद लगाये थे परन्तु इस काल खण्ड में ऐसी घटनाएँ भी हुईं, जिनके कारण यशस्वी जैन परम्परा की गरिमा धुँधली पड़ी। जैन धर्म का सूर्य पारस्परिक रागद्वेष व भौतिक अभीप्साओं के बादलों से आच्छादित हुआ और परम्परा की पुण्य सलिलगंगा का प्रवाह छोटी-छोटी धाराओं में विभक्त होकर प्रदूषित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होता गया। इतिहास करवट लेता है, काल पुरुष जागता है, अवनती की तन्द्रा टूटती है, पुनः उन्नति का प्रभास्वर चमकने लगता है।

भगवान महावीर निर्वाण की बीसवीं सदी में कुंदकुंद स्वामी की धर्मक्रांति जागृति का संदेश देती है। शिथिलप्राय श्रमणपरम्परा में क्रियोद्धार होता है और आचार्यश्री शांतिसागर आदि की परम्परा पुनः भगवान महावीर के सिद्धान्तों का सच्चा प्रतिनिधित्व करती हुई आगे बढ़ती है। वर्तमान में आचार्य वीरसागर महाराज से दीक्षित आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव सम्पन्न हो रहा है। आपने माँ सरस्वती, माँ लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करके संस्कृत, प्राकृत तथा हिन्दी भाषा का अभ्यास किया। आपके भक्तिकाव्य और अध्यात्मशास्त्र, पूजा-विधान पर अनेक लेख भी प्रकाशित हुए हैं। आपका प्रवचन तात्त्विक और मधुर होता है। आपने भारत में सभी जगह विचरण किया है। आपकी विशेष प्रवचन शैली मधुर और प्रभावपूर्ण है। प्राचीन तीर्थक्षेत्र के उद्धार एवं अध्यात्म के प्रति आपकी गहरी रुचि है। आप संघ में समन्वय की साधिका हैं। आपका स्वभाव शांत, मृदु व मिलनसार होने से आपको अच्छी लोकप्रियता प्राप्त है। शिक्षण के प्रति आपकी बहुत गहरी दिलचस्पी है। आप मधुरभक्ती और प्रवचनकर्त्री होने के साथ अच्छी लेखिका भी हैं। आपके द्वारा विपुल साहित्य प्रकाशित करवाया गया है।

पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का 51वाँ दीक्षा दिवस आनन्द मंगलमय हो और मेरा आपको शुभाशीर्वाद है, यही शुभ भावना है।

-आचार्य कुशाग्रनंदी

शुभाशीर्वाद

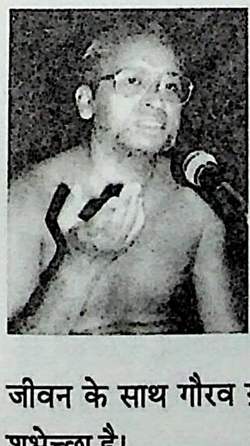

श्री गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी यथा नाम तथा गुण से सहित हैं। वे सरस्वती पुत्री हैं। उनके कार्य श्री आदिनाथ भगवान की पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी के समान हैं। उनका नया कदम संकल्पपूर्वक उठता है। तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों पर, जो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं, विकास की योजना क्रियान्वित है। यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि 9वें तीर्थंकर पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी (गोरखपुर) उ.प्र. में जीर्णोद्धार कार्य तेजी से चल रहा है। उनके सभी कार्य ऐतिहासिक हैं। ग्रंथ प्रकाशन के कार्य भी बाल गोपाल, तरुण-तरुणियों-वृद्धों के लिए, त्यागियों के लिए शिक्षाप्रद हैं। 8 फरवरी सन् 2006 में बाहुबली श्री के मस्तकाभिषेक के शुभावसर पर यही शुभाशीर्वाद है कि 50 वर्ष के तपमय जीवन के साथ गौरव ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। वे चिरायु तो हैं ही, अगले भव में वे लौकान्तिक देव बनें, यही शुभेच्छा है।

-उपाध्याय समतासागर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरस्वती की प्रतिकृति

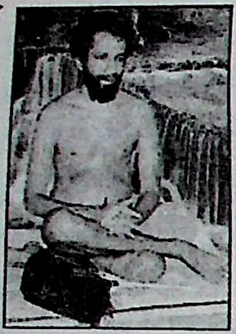

बीसवीं सदी की गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का गौरव ग्रंथ प्रकाशित करने जा रहे हैं, यह प्रसन्नता की बात है। इस संदर्भ में ज्ञान गरिमा से परिपूर्ण माताजी के व्यक्तित्व पर कुछ लिखना आसान नहीं है क्योंकि माताजी का सम्पूर्ण जीवन ज्ञानार्जन एवं ध्यानार्जन में ही व्यतीत हुआ है। जैन दर्शन में मतिज्ञान का वर्णन आता है, मुझे ऐसा महसूस होता है कि मति शब्द को माताजी ने ज्ञान के बल से पीछे किया है अतः ज्ञानमती नाम को सार्थक किया है। इन्होंने 200 ग्रंथों की रचना की है एवं अनेकों ग्रंथों का अनुवाद किया है। इस पंचमकाल में ये साक्षात् सरस्वती ही प्रतीत होती हैं। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

मुझे माताजी के सानिध्य में पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ था, उनके पढ़ाने की शैली अनुपम है, विषय को बहुत आसानी से समझाने में उनकी कोई तुलना नहीं कर सकता है। माताजी ने शताधिक साधुओं को अध्ययन कराया है और तीर्थों के जीर्णोद्धार करने में भी सबसे आगे रहती हैं। उनकी जो प्रभावना है, जिसका वर्णन करना असंभव है। वे जैन आगम के प्रत्येक ग्रंथों के तलस्पर्शी ज्ञान की धनी हैं। जैसे कोई माँ अपने बेटे को वात्सल्यपूर्ण भाव से शिक्षा देती हैं, ठीक उसी तरह माताजी ने हमें पढ़ना, लिखना और बोलना सिखाया है। माताजी के पास में रहकर जो अध्ययन करने का आनन्द का अनुभव है, वे सुबह के स्वप्नों की तरह मीठी यादें छोड़ जाते हैं। माताजी ने हर क्षेत्र में अपने योगदान के द्वारा स्वकल्याण के साथ समाज कल्याण का भी कार्य किया है। जब-जब मैंने माताजी को देखा, तब सोना देखा, सोने जैसे तपते देखा, ढलते देखा, गलते देखा, गोली जैसे चलते देखा। माताजी का स्वास्थ्य देखकर ऐसा लगता है कि वे इतना काम कैसे कर पाती हैं। ये भी एक चमत्कार ही है। उनके लिए मैं क्या कहूँ, जिनेन्द्र भगवान से उनके दीर्घ जीवन की मंगल कामना करता हूँ।

-उपाध्याय श्रुतसागर

मंगल आशीर्वाद

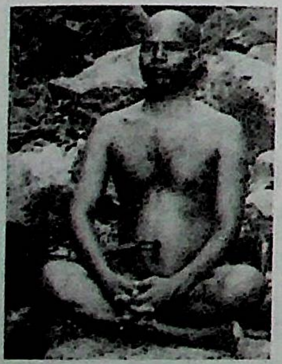

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य, चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश चारित्रशिरोमणि श्री वीरसागर जी महाराज की प्रथम विदुषी शिष्या गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष प्रभावनापूर्वक पूर्ण हो रहे हैं।

माताजी में गंगा सी पवित्रता, निर्मलता, यमुना सी गहराई, विशालता, सरस्वती सी सरलता है अतः माताजी का व्यक्तित्व त्रिवेणी संगम जैसा है। इसीलिए माताजी ने प्रयागराज को अपनी कर्म-साधना स्थली के रूप में चुना।

माताजी के द्वारा प्रारंभ किये गये नींव से लेकर शिखर तक के हर कार्य प्रभावनापूर्ण ढंग से सम्पन्न होते हैं क्योंकि हर कार्य सम्पन्न करने के लिए धन-लक्ष्मी की आवश्यकता होती है अतः उनके द्वारे पर लक्ष्मी हमेशा तत्पर रहती हैं। जिससे जम्बूद्वीप, कैलाशपर्वत, नंद्यावर्त महल जैसे विशाल कार्य सरलता से सम्पन्न हो गये। बुद्धि-विवेक की सरस्वती आपकी लेखनी पर विराजमान है, जिसके कारण साहित्य, आगम,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्यात्म, न्याय, व्याकरण का चिन्तन-मनन, लेखन, सम्पादन, अनुवाद आदि में लगभग 200 ग्रंथों का सृजन किया है। निर्भीक-निडरता के रूप में आप दुर्गा सी शक्ति हैं अत: माताजी में नारी शक्ति के तीनों रूप विद्यमान हैं।

माताजी को समाधिवृद्धि आशीर्वाद के साथ उनके दीर्घ संयम जीवन की कामना है।

-प्रज्ञाश्रमण मुनि अमितसागर

आशीर्वाद

बड़े हर्ष की बात है कि वर्तमान में सबसे पुरानी दीक्षित गणिनी आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" प्रकाशित हो रहा है। माताजी ने अपने दीक्षा के 50 वर्ष में जो-जो कार्य किये हैं, वह सब अविस्मरणीय हैं। मेरा ग्रंथ प्रकाशित करने वाले सभी महानुभावों को मंगलमय आशीर्वाद है।

-मुनि सौभाग्यसागर

विनयांजलि

छ:-सात पीढ़ियों की सन्त परम्परा का अवलोकन करने वाली, सरस्वती सुतपस्विनी प्रज्ञा एवं प्रतिभा की धनी गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर यही शुभभावना है कि इस धरा धाम पर तीर्थ विकासिका, जिनवाणी प्रकाशिका, विधान प्रभाविका का अस्तित्व जम्बूद्वीप पर सदियों तक कायम रहे ताकि आने वाली पीढ़ी आपकी संयम साधना, ज्ञानाराधना, तीर्थ निर्माण प्रभावना से प्रेरित होकर अपने जीवन को धर्मोन्मुख कर आत्मोन्थान कर सके।

इसी मंगल भावना के साथ—

-मुनि सौरभ सागर

शुभ भावना

बड़े हर्ष की बात है कि इस शताब्दी की बहुत काल से दीक्षित परम विदुषी आर्यिका शिरोमणि 105 आर्यिका गणिनी ज्ञानमती माताजी का "ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" प्रकाशित होने जा रहा है। माताजी का ज्ञान एवं चारित्र बहुत ही श्रेष्ठ है। आपने कई आगम ग्रंथों का अनुवाद एवं सम्पूर्ण विधानों को सरल-सुंदर भाषा में कर अपने नाम के अनुरूप ज्ञान क्षेत्र में अद्भुत क्रांति का कार्य किया है। आपके द्वारा कई तीर्थक्षेत्रों का जीर्णोद्धार हुआ है। प्राचीन संस्कृति को आज के युग में भी आपने आने वाली पीढ़ी को लाभ लेने व दर्शन पुण्य का मौका दिया। आपके 50वें दीक्षा स्वर्ण जयंती दिवस पर हम अपनी शुभकामनाओं के साथ शुभाशीष प्रदान करते हैं कि आपका यह ज्ञान दिन प्रतिदिन बढ़कर आप एक दिन अपने शाश्वतधाम अर्थात् स्त्रीपर्याय को छेदकर शीघ्र मुक्तिरूपी लक्ष्मी का वरण करें।

-मुनि शशांकसागर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी सदा जयवन्त रहें

कलिकाल में जहाँ साधुचर्या को पालने में मानव को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी भीषण परिस्थिति में भी परमपूज्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से दीक्षा लेकर प्रथम गणिनी बनकर विदुषी आर्यिका ज्ञानमती माताजी के ज्ञान-ध्यान की कठोर चर्या और इस कलिकाल में जैनधर्म की प्रभावना में चार-चाँद लगा रही हैं। पूज्य माताजी ने अनेकों महान साहित्यों का सृजन किया, जिनका आदर विद्वानों में है। आपने अपने ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी, पंडित, साधु-साध्वियों को प्रकाण्ड विद्वान बनाया है। आपने अपने ज्ञान के द्वारा कई जीवों को सन्मार्ग पर लगाया है। माताजी के अंदर ज्ञानरूपी नेत्र का समागम है। लगभग १२ साल तक मैं भी आपके सम्पर्क में रहा और आपने मुझे अध्ययन करवाया। मुझ बालक का आप बड़ा ध्यान रखती थीं। स्नेह वात्सल्यपूर्वक पढ़ाती थीं। आपकी वाणी प्रत्येक प्राणी के लिए हितकारी होती है, ऐसा मुझे विश्वास था। मेरी धारणा शक्ति कमजोर होने पर भी आपकी असीम कृपा से ही मैं ब्र. सुरेश कोटड़िया से आज मुनि रविनंदि महाराज जी के पद तक पहुँचा हूँ। आगे आपके ५० वर्ष संयम मय व्यतीत हुए हैं सो न जाने आपको कितना अनुभव है। वह अनुभव हमको मार्गदर्शन के रूप में सदैव मिलता रहे।

आपके उत्तमगुणों के कारण आपको चतुर्विध संघ ने गणिनी पद से गौरवान्वित किया था। ऐसी विदुषी माताजी के गौरव को सुरक्षित रखने वाले 'गौरव ग्रंथ' को प्रभावनापूर्वक प्रकाशन करायें। मेरी लेखनी में वह ताकत नहीं है जो आपके सभी गुणों को प्रकट कर सकूँ।

अतः यही आशीर्वाद है हे माँ आप दीर्घायु हों, आप स्वस्थ रहें, जैनधर्म का उद्योतन करें, प्रभावना करें। मेरे ऊपर आपके अनेक उपकार हैं। किस विधि मैं ऋण चुका पाऊँगा? आप बीसवीं सदी की महान ज्ञान की साधिका रही हैं और इक्कीसवीं सदी की मार्गदर्शिका हैं। कथनी करनी की संगम रूप उन प्रथम गणिनी माताजी के लिए मेरी मंगल कामनाएं।

समस्त संघ को मेरा शुभाशीर्वाद।

-मुनि रविनंदि

माताजी दीर्घायु होवें

महापुरुषों की जीवन शैली से सुशोभित महापुरुषों द्वारा निर्दिष्ट आत्मकल्याण के पथ पर चलने वाली आप मोक्षमार्ग में तारण-तरण-तरणी स्वरूप हैं। जिनकी लेखनी से अनेक ग्रंथों काअनुवाद, टीका और रचनात्मक मनोज्ञ साहित्य भी भव्य जनों को प्राप्त हुआ है। उन्हीं महान विदुषी आर्यिका के जीवन चारित्र से सुशोभित यह गौरव ग्रंथ है।

महापुरुषों को अपने जीवन की गौरवगाथा का अभिवादन का (आवश्यकता) अपेक्षा नहीं होती पर उनकी पावन जीवन गाथा से अनेक भव्यों को मार्गदर्शन मिलता है, वे उनके अनुसरण से अपने जीवन को भी महान बना लेते हैं और अपने चारित्र का मार्जन कर मोक्षमार्ग में आरूढ़ होते हैं।

भारत भूमि पर यद्यपि नारी जगत् प्रारंभ से ही गौरवान्वित रहा है किन्तु इस दुसमकाम में भी ब्राह्मी-सुन्दरी मैना अंजना सीता-मनोरमा जैसी सतियों के समान शीलवती, संयमप्रिय आर्यिका वर्ग होना अधिक महत्वपूर्ण है, जिनने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रव्रज्या धारणकर, संयम ग्रहण कर आत्महित किया, इतिहास को पन्नों पर उनकी यशोगाथा अमर रहे, गौरव के साथ उनका नाम लिया जाता है। निःसंदेह तथागत साधनारत प्रथम गणिनी विदुषी प्रमुख आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी का भी दीर्घकाल तक आदर के साथ नाम लिया जायेगा।

जब माताजी मुझे क्षुल्लक अवस्था में 1996 में मांगीतुंगी जी सिद्धक्षेत्र पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में मिले, तब माताजी से बहुत कुछ अनुभव और ज्ञान की बातें सीखने को मिली थीं। माताजी का वात्सल्यरूप देखकर बहुत खुशी होती थी, माताजी की हर बात मेरे जीवन में उज्ज्वल बनाने का काम कर गई, माताजी हमेशा कहा करती थी कि मयंकसागर जी ! साधु जीवन में हमेशा जिह्वा इन्द्रिय और स्पर्शन इन्द्रियों पर पूरा कंट्रोल रखना, ब्रह्मचर्य व्रत में दृढ़ रहना, इस तरह माताजी मुझे बड़े प्रेम से हर बात समझाती थीं, माताजी के आशीर्वाद से ही मैं क्षुल्लक से मुनि बनकर आज अपने व्रतों का पालन दृढ़ता से कर रहा हूँ। माताजी की प्रेरणा थी कि चारित्रचक्रवर्ती श्री आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की परम्परा में दीक्षा लेकर उज्ज्वल परम्परा पर धब्बा मत लगा देना, इस तरह माताजी की प्रेरणा मेरे जीवन को मिलती रही।

ऐसे उज्ज्वल चारित्र की धारी श्री ज्ञानमती माताजी अपने भावी जीवन में दूज की मयंक (चन्द्रमा) की तरह जिनशासन को बढ़ाती रहे और स्वास्थलाभपूर्वक दीर्घायु प्राप्त करें, यही माताजी को आशीर्वाद है।

-युवा मुनि मयंकसागर

विनयांजलि

आदरणीय ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में मांगीतुंगी से अहमदाबाद तक पैदल चलने का अवसर प्राप्त हुआ था। माताजी से बहुत कुछ बातें सीखने को मिलीं। माताजी सरस्वती की पुत्री हैं, तीन कक्षा पढ़ी हुई माताजी ने 200 ग्रंथों से ज्यादा लिखकर अज्ञान जनता को सज्ञान बनाया और सच्चे मार्ग से जैनधर्म का झण्डा जगत में फहराने का कार्य किया। जो कई दिनों तक मांगीतुंगी की प्रतिष्ठा का काम किया और वहाँ पर उनकी प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव की 108 फुट ऊँची प्रतिमा बन रही है। बाहुबली श्रवणबेलगोला की मूर्ति से बड़ी वह प्रतिमा बनेगी। जो काम बड़े पुरुष कर नहीं सकते, वो काम ज्ञानमती माताजी कर रही हैं। उस मूर्ति पर चामुण्डराय करवियले लिखा है और सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी पर बनने वाली मूर्ति पर पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी करवियले ऐसा लेख लिखा जाना चाहिए। आपके दीक्षा के 50 वर्ष पर भगवान से प्रार्थना करते हैं कि माताजी को सौ साल की उमर प्राप्त हो, माताजी को हीरा जन्म प्राप्त हुआ, आपके कर कमलों से हमारे काम पूरे हुए हैं। लोगों को विश्वास हो गया है कि माताजी जो भी काम करती हैं, वह देश, समाज और संस्कृति के हित में होता है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी जैसी कोई माताजी बनने वाली नहीं, मेरे को उनके सानिध्य में मांगीतुंगी में रहने को मिला। सुशिक्षा, संस्कार, सुसंगति प्राप्त हुए, वही कारण आज मुनिपद मिला है यह सब मुझे माताजी के सानिध्य से मिला। माताजी बहुत करुणावान है, उनके मार्गदर्शन से आज यह पद प्राप्त हुआ हैं पारस के संपर्क से सोना प्राप्त हुआ है। माताजी बहुत करुणावान है, उनके मार्गदर्शन से आज यह पद प्राप्त हुआ हैं पारस के संपर्क से सोना बनता है। हजारों प्राणियों के उद्धार हो, हम यही प्रार्थना भगवान से करते हैं।

-मुनि अजेय सागर

(शिष्य-आचार्य श्री रयणसागर जी महाराज)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गौरव ग्रंथ का प्रकाशन सराहनीय कार्य है

जिनका ज्ञानोपयोग निरन्तर आत्म विशुद्धि के लिए प्रवर्तमान रहता है, उन्हें अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी कहते हैं। आगम के रहस्य को केवल कण्ठगत ही नहीं किया अपितु आचरण में उतार कर सम्यग्ज्ञान के द्वारा पिपासु श्रोताओं की सभी जिज्ञासाओं को शान्तकर प्यास बुझाती हुई आबाल वृद्ध सबके चित को हरण करने वाली प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की आर्यिका शिष्या जो की चंदन से भी अधिक सुगंधि प्रदान करने वाली हैं, ऐसे आत्म सौरभ एवं आत्म गौरव को प्रकटाने वाली प्रथम गणिनीप्रमुख विदुषी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का गौरव ग्रंथ प्रकाशित होने जा रहा है, वह सराहनीय है। ग्रंथ प्रकाशन समिति के लिए मेरा मंगल आशीर्वाद है।

-मुनि अजेयनंदी

(शिष्य-आचार्य गुणनंदी महाराज)

विनयांजलि

इस भूतल पर अनन्तानन्त प्राणी जन्म लेते हैं और मरते हैं। उनमें अनन्तानन्त प्राणी तो ऐसे हैं, जो एक श्वास में अठारह बार जन्म और अठारह बार मरण करते रहते हैं। तीन हजार तेहत्तर श्वासोच्छ्‌वास में छ्यासठ हजार तीन सौ बार जन्म कर लेता है। इस जन्म-मरण की कड़ी में कई ऐसे विरले प्राणी होते हैं, जो इस अनादिकालीन पर्याय को छोड़कर त्रस पर्याय को प्राप्त करते हैं। त्रस पर्याय को प्राप्त करना अति दुर्लभ है। जैसे चिन्तामणि रत्न का प्राप्त करना दुर्लभ है। इस त्रय पर्याय में भी पंचेन्द्रिय, सैनी, पर्याप्त की प्राप्ति दुर्लभतर है और इससे भी दुर्लभतम है, मनुष्य भव का प्राप्त होना।

मानव पर्याय को प्राप्त कर कुछ प्राणी तो ऐसे होते हैं, जो समुद्र की लहरों के समान उत्पन्न होते हैं और विलीन हो जाते हैं। मानव जैसी उत्तम पर्याय को प्राप्त कर विषयरूपी विष को खाकर चले जाते हैं। जिनके हृदय में हित और अहित का विचार करने का सामर्थ्य नहीं हो, वे अधिक से अधिक दो हजार सागर काल तक त्रस पर्याय में रहकर पुनः एक श्वास में अठारह बार जन्म-मरण करने वाले निगोद स्थान में चले जाते हैं। कोई विरले प्राणी मानव पर्याय प्राप्त कर आत्मा और अनात्मा के भेदज्ञान को प्राप्त कर आत्मतत्व को आत्मसात् कर जिनेन्द्र भगवान के वचनों का आश्रय लेकर परमपद (परमात्मा पद) को प्राप्त कर लेते हैं। स्वकीय स्वरूप को जानकर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्‌चारित्र रूपी त्रिवेणी में अवगाहन कर अनादिकालीन कर्म कालिमा का प्रक्षालन कर अपनी आत्मा को परम पवित्र किया, मुक्तिरमा को वरण किया, ऐसे अनन्त जीव हो चुके हैं और भविष्य में होंगे। इस वर्तमानकाल में वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर ने कर्मों का नाशकर सिद्धपद प्राप्त किया तथा उन्हीं द्वारा कथित मार्ग का अनुसरण कर स्वात्मोपलब्धि को प्राप्त करने वाले भी असंख्यात जीव हुए हैं और होंगे। इसी मार्ग पर चलकर संख्यातों जीवों ने स्वर्गपद प्राप्त किया है और कर रहे हैं।

वर्तमानकाल में अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु की परम्परा में लोहाचार्य, धरसेन, कुन्दकुन्द आदि अनेक आचार्य हुए। उनकी परम्परा में उन्हीं के पथ पर चलने वाले आचार्य शांतिसागर महाराज हुए, जिन्होंने संसार समुद्र में डूबते हुए प्राणियों को निकालकर उत्तम पद पर स्थापित किया, सदाचार के पथ को सुरक्षित कर कदाचार को हटाया, धार्मिक क्रियाओं का प्रचार-प्रसार किया। सत्मार्ग को दिखाकर सन्मार्ग पर लगाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वप्रथम उनके चरणों में दिगम्बर दीक्षा ग्रहण कर आत्म कल्याण के मार्ग पर आरूढ़ हुए आचार्य वीरसागर जी महाराज, जिन्होंने तेंतीस वर्ष तक इस पद पर स्थित होकर अनेक भव्यात्माओं को दिगम्बर मुद्रा प्रदान की। अनेकों महिलाओं को आर्यिका दीक्षा प्रदान की। कितने ही मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिकाओं के दीक्षादायक होते हुए भी उन्होंने कभी भी अपने को आचार्य इस विशेषण से सम्बोधित नहीं करने दिया। जब आचार्य शांतिसागर महाराज ने आपको आचार्यपद प्रदान किया है, तभी आपको लोग आचार्य कहते थे।

वे अपने शिष्यों को संक्षेप में हितकारी शिक्षा देते कि जीवन में आसक्ति नहीं वैराग्य चाहिए, ममता नहीं समता चाहिए, निराशा नहीं आशा चाहिए, कृपणता नहीं उदारता चाहिए, लोभ नहीं संतोष चाहिए, निष्ठल्लपना नहीं अपितु पुरुषार्थ चाहिए, क्रूरता, दानवता नहीं दयालुता एवं मानवता चाहिए। कभी किसी से नफरत, ग्लानि मत करो, हो सके तो सहानुभूति सांत्वना देकर उसे सन्मार्ग में स्थिर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

वे प्रतिदिन अपने शिष्यों को कहते थे कि तन और मन को स्वस्थ रखना हो तो भोजन की आसक्ति मत रखना क्योंकि अधिक गरिष्ठ भोजन करने से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, स्वास्थ्य बिगड़ता है, आलस्य आता है। स्वाध्याय आदि शुभ कार्यों में आलस्य आता है, अतः छहों रसों में से किसी एक रस का त्याग करके भोजन करना चाहिए, उसमें से निर्दोष व्रतों का पालन करने के लिए नमक का त्याग कर देना चाहिए।

वीरसागर महाराज बालब्रह्मचारी थे। वीरसागर महाराज के करकमलों से बालब्रह्मचारिणी कु.की दीक्षा मैना (ज्ञानमती) जी की हुई थी। यद्यपि आचार्यश्री ने बाल ब्रह्मचारी शिवसागर जी, धर्मसागर जी, पद्मसागर जी आदि अनेकों भव्यों को मुनि दीक्षा दी थी परन्तु बालब्रह्मचारिणी ज्ञानमती जी ही थीं। संघ में बहुत-बहुत आर्यिका थीं परन्तु बाल ब्रह्मचारिणी ज्ञानमती ही थीं तथा उनकी शिष्या जिनमती क्षुल्लिका थीं। बाल ब्रह्मचर्य का महत्व महान होता है।

गुरुदेव ने उनका नाम ज्ञानमती यह सार्थक रखा था। वे भविष्य को जानने वाले थे इसलिए उन्होंने व्यक्ति को परखकर नाम रखा। उसी का फल है कि ज्ञानमती माताजी संस्कृत, प्राकृत, साहित्य, न्याय, छंद, अलंकार आदि सर्वशास्त्रों में निपुण हैं। जिन्होंने सारे सिद्धान्त शास्त्रों का निचोड़ इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र आदि पूजाओं में भरा है। उनके द्वारा रचित शास्त्रों को पढ़ लेने पर तिलोयपण्णत्ति आदि शास्त्रों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं होती। छंदों का ज्ञान तो छंद शास्त्र पढ़े बिना भी उन पूजाओं को पढ़ने से हो जाता है। अष्टसहस्री हिन्दी अनुवाद कर उन्होंने इसे सरलसहस्री बना दी है। कातंत्र के रहस्य को हिन्दी अनुवाद कर अज्ञजनों का संस्कृत मार्ग सरल किया है।

महाविदुषी जन-जन की उपकारक ज्ञानमती माताजी की यशोगाथा को कहना सूर्य को दर्पण दिखाने के समान है, वे अपनी लेखनी द्वारा जिनकथित शास्त्रों का प्रचार-प्रसार करती हुई हजारों वर्ष तक जीवित रहें, यही कामना एवं भावना अहर्निश करती हूँ और बार-बार वंदामि करती हूँ।

-गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमती

मातृवत्सला

जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख, सर्वोच्च साध्वी गुरु माँ आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50वें संयम वर्ष की सम्पूर्णता पर आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया जा रहा है।

माताजी की महानता सर्वविदित है तथा वक्तृत्वकला का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। आप न्याय, व्याकरण, साहित्य, अध्यात्म एवं सिद्धांत विषयों की मर्मज्ञा हैं, कष्टसहस्री कहे जाने वाले अष्टसहस्री जैसे जटिल न्याय ग्रंथ, कातंत्र व जैनेन्द्र प्रक्रिया सदृश व्याकरण ग्रंथ, अध्यात्म ग्रंथ नियमसार, समयसार आदि तथा करणानुयोगी भावत्रिभंगी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदि अनेक ग्रंथों का अनुवाद किया है। अनेक ग्रंथों का पद्यानुवाद एवं स्वतंत्ररूप में अनेक स्तवन भी प्रकाशित हैं। अभी भी षट्खण्डागम ग्रंथ की संस्कृत टीका लिख रही हैं जो कि पूर्णता पर है। इस प्रकार आपने 200 से अधिक ग्रंथों का सृजन करके साहित्य के क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य किया है। इतना ही नहीं, आप तीर्थंकरों की जन्मभूमि विकास की प्रेरणास्रोत भी हैं। आपके द्वारा अनेक तीर्थों का विकास एवं निर्माण का कार्य बहुत ही भव्यता के साथ सम्पन्न हो रहे हैं तथा इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक आदि विधानों की रचना करके भक्तिमार्ग में मानव मन को मोड़ दिया है।

वास्तव में परमविदुषी पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के मुझ पर अनंत उपकार हैं। मैं मातृवत्सला, अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी, हितमित, मृदु उपदेष्ट्री आर्यिका की खोज में थी, उसकी सम्पूर्ति आपके मिलने से हो गई। माताजी के प्रथम दर्शन होने पर ऐसा लगा; मानों चिरकाल से बिछुड़ी त्रिभुवन जननी ही मिल गई हों। माताजी ने मुझे न्याय, व्याकरण, साहित्य, सिद्धांत का अध्ययन कराकर महोपकार किया है। आपकी शरण ग्रहण करने वाले प्रार्थी को उन्नत होना ही है। आपकी ही असीम प्रेरणा से प्रेरित होकर सन् 1961 में गुरुवर्य आचार्य शिवसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा ग्रहण करने का मुझे सुमंगल अवसर प्राप्त हुआ क्योंकि आपकी भावना सदैव शिष्यों को चारित्र और ज्ञान में अग्रसर करने की रही है। माताजी के अनुशासन में रहने वाला अपने को चारित्रनिष्ठ बना लेता है। इनका जैसा साहस और धैर्य अन्यत्र नहीं दिखाई देता है। मैंने तो यह देखा है कि माताजी जिस कार्य को करने का विचार करती हैं, उसको नियम से करके ही विश्राम लेती हैं।

कमाल का पुरुषार्थ है। जिसकी मैं और हमारे जैसे कल्पना भी नहीं कर सकते। माताजी ने हम शिष्याओं को उत्कर्ष करने में सदा आगे बढ़ाया है, कभी पीछे नहीं रखा। मुझसे भी कर्मकाण्ड, भगवती आराधना आदि ग्रंथों की टीका करवाई है। यह उदारता उनकी महानता को सूचित करती है।

मेरे पास वो शब्द ही नहीं और योग्यता नहीं है कि मैं महोपकारी सरस्वती की प्रतिमूर्ति गुरु माँ के गुणों का वर्णन कर सकूँ। मैं महोपकारी गुरु माँ के चरणों में त्रिकरणशुद्धिपूर्वक वंदामि के साथ विनयांजलि अर्पित करती हूँ तथा यह भावना करती हूँ आपके आशीर्वाद से मैं शीघ्र ही संसार बंधन से मुक्त हो जाऊँ।

–आर्यिका आदिमती

अविस्मरणीय है उनका अवदान

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी को सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्तिपूर्वक सादर सविनय वंदामि।

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि आगमनिष्ठ, तपोनिधि, सर्वप्राचीन दीक्षित साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" का प्रकाशन किया जा रहा है। वस्तुतः माताजी का गुणानुवाद करके हम माताजी का गौरव नहीं बढ़ा रहे हैं, प्रत्युत् अपना गौरव बढ़ा रहे हैं क्योंकि ऐसी महान आत्माएँ विरली ही इस संसार में जन्म लेती हैं और संसार में ऐसा कुछ कर जाती हैं, जो युगों-युगों तक चिरस्मरणीय हो जाता है।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की परम्परा के पंचम पट्टाचार्य आचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज ने जब मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के विकास हेतु कार्य प्रारंभ किया, मूर्तियाँ तैयार होकर आ गईं, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होनी थी लेकिन विधि का विधान देखिए, आचार्यश्री समाधिस्थ हो गए। तब मन में बार-बार यही आता था कि कोई दैवी शक्ति ही यह कार्य सम्भव करवा सकती है, बस उस समय मन में ज्ञानमती माताजी का ही ध्यान आया। मेरे बार-बार लिखे गए पत्र, हम सभी के आग्रह तथा ट्रस्टियों के विशेष निवेदन को स्वीकार करके दया की मूर्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी ने मांगीतुंगी की ओर संघ सहित मंगल विहार किया और तीर्थ को नया स्वरूप प्रदान किया। पंचकल्याणक करवाकर पूज्य आचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज के सपनों को साकाररूप दिया। मात्र इतना ही नहीं, हम सभी के आग्रह को स्वीकार कर उन्होंने संघ सहित सन् 1996 में मांगीतुंगी में चातुर्मास किया। उस चातुर्मास के मध्य अनेकों धर्मप्रभावना के कार्यों के साथ-साथ उन्होंने सहस्रकूट कमल मंदिर की सुन्दर रचना तीर्थ को प्रदान की।

उस समय मैंने माताजी की दूरदर्शिता, आगमनिष्ठा आदि को नजदीकी से देखा, साथ ही एक विशेषता देखी कि वह जो भी कार्य हाथ में लेती हैं, आमूल-चूल जिनधर्म की कीर्तिपताका को दिग्दिगन्तव्यापी प्रसारित करता हुआ, विशेष प्रभावनापूर्वक, निर्विघ्न एवं शीघ्र सम्पन्न होता है। चरैवेति-चरैवति की सूक्ति को चरितार्थ करता उनका व्यक्तित्व उनके द्वारा किए गए धर्मप्रभावना के कार्यों, तीर्थंकर भगवन्तों की अविकसित जन्मभूमि एवं अन्य कल्याणकभूमियों के जीर्णोद्धार-विकास में स्पष्ट झलकता है। जिनधर्म की यशसुरभि को प्रसारित करने में कीर्तिमान स्थापित करने वाली पूज्य माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती पर उनके चरणों में विनयांजलि समर्पित करते हुए उनके दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करती हूँ और बारम्बार वंदामि करती हूँ।

–आर्यिका श्रेयांसमती, मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र

संस्मरण

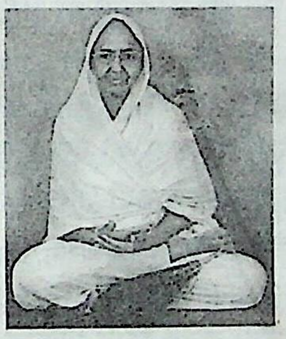

पूज्य गणिनीप्रमुख तीर्थोद्धारिका, धर्मप्रभाविका, भारतप्रसिद्ध परमपूज्य आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का जीवन बड़ा विचित्र, अलौकिक, अनुपम एवं आदर्शमयी है। इनके गुणों का वर्णन करना मानों सूर्य को दीपक दिखाना है। इनके जन्म लेते ही माता-पिता एवं नगरी खुशी में आनंद विभोर एवं धन्य हो गई "होनहार विरवान के होत चीकने पात"। यह कौन जानता था कि ये कन्यारत्न आगे भविष्य में आर्यिका बनकर सारी दुनिया को चकित/ आश्चर्य करने वाली बड़ा भारी विशाल कार्य करके दिखायेगी। आपके माता-पिता बड़े धार्मिक प्रवृत्ति के थे, माँ मोहिनी देवी ने आप पर बचपन से ही ऐसे संस्कार डाले। देवदर्शन करके भोजन करना, रात्रि भोजन नहीं करना, पानी छान कर पीना, सभी कंदमूल का त्याग करना और आपका नाम मैना रखा। मैना ने ये सभी नियम स्वयं पालन किया। दस वर्ष की अवस्था में ही और सभी भाई-बहनों को ये सभी नियम का पालन करवाया। दिन में चार बार शास्त्र पढ़कर माँ को सुनाती थीं, पत्थर की रेखा के समान माँ के संस्कार आपके अंदर जम गये। पूर्ण चन्द्रमा के समान आप गुणों से, ज्ञान से वृद्धि को प्राप्त हुईं। आयु आपकी बढ़ती गई। आचार्य देशभूषण महाराज जी का संघ भी टिकैतनगर में आ गया। उस समय आपकी उम्र करीब 17-18 वर्ष की होगी। भाग्य से चतुर्विध संघ का चातुर्मास बाराबंकी में हो गया। उस समय प्रथा थी, 10 वर्ष से अधिक उम्र वाली कन्याएं बाहर नहीं निकलती थीं। मैना के वैराग्य को देखकर माता-पिता घबड़ा गये और शादी करने चले, तब मैना ने शादी करने से इंकार कर दिया और बड़े-बड़े संकटों को झेलकर बाराबंकी में जाकर आचार्य देशभूषण महाराज जी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत सात प्रतिमा ले लिया। एक दिन आचार्यश्री का केशलोंच का प्रोग्राम रखा समाज ने, उसी केशलोंच के बीच 10 हजार जनता में मैना अपने बालों को घास के समान उखाड़ने लगी। उसी समय बहुत सी महिलाओं ने इनका हाथ पकड़ लिया, पर ये मानी नहीं,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे वैराग्य को देखकर सभी लोग बड़ा आश्चर्य किया पुनः सन् 1953 में महावीर जी में इनने आचार्यश्री से क्षुल्लिका दीक्षा लेकर शास्त्रों का अध्ययन करने लगीं पुनः माधोराजपुरा में आचार्य वीरसागर जी से आपने आर्यिका दीक्षा ले ली। आर्यिका दीक्षा लेकर आपने अपना संघ बनाकर अलग विहार करती हुई खूब धर्म प्रभावना किया। आपके वैराग्य को देखकर मेरे भी मन में वैराग्य हो गया। मैं अपनी जन्मदात्री माँ के उपकार को कभी नहीं भूल सकती। जिन्होंने मुझे पूज्य माताजी के पास लाकर मोक्षमार्ग में लगा दिया और स्वयं आचार्य धर्मसागर जी से आर्यिका दीक्षा लेकर 13 वर्ष तक घोर व्रत, तप करके चारित्र में दृढ़ रहकर पूज्य ज्ञानमती माताजी के संघ में रहकर खूब आत्मसाधना किया। पुनः समाधि लेकर स्वर्गपुरी में प्रस्थान कर गई। मुझे पूज्य ज्ञानमती जी ने आचार्य शिवसागर जी से ब्रह्मचर्य व्रत दिलाकर मोक्षमार्ग में लगा दिया। पुनः मैंने लाडनू से विहार करके पूज्य ज्ञानमती माताजी को सम्मेदशिखर की पूरी यात्रा कराई। उस समय कार, बस का कोई साधन नहीं था। मैंने पूरी यात्रा बैलगाड़ी से कराई। पूज्य माताजी के साथ प्रथमशिष्या आर्यिका जिनमती जी, आर्यिका पद्मावती जी, आर्यिका आदिमती जी, क्षुल्लिका श्रेष्ठमती जी थीं। प्रतिदिन पूज्य माताजी दोनों समय 25 मील चलती थीं सभी गाँवों में खूब प्रभावना करती हुई विधान आदि करातीं। मैं साथ में चौका की व्यवस्था बनाती थी और पूज्य माताजी से अध्ययन भी करती थी। साथ में ब्र. सुगनचंद जी और भी लोग थे, इस प्रकार समय बीत रहा था, सम्मेदशिखर की यात्रा में (मार्ग में) बड़ा आनंद आ रहा था, क्योंकि कहा भी है-

उत्तम से उत्तम मिले, मिले नीच से नीच।
पानी से पानी मिले, मिले कीच से कीच।

जहाँ पर दो विद्वान मिलते हैं, वे आपस में धर्म की चर्चा करते हैं और जहाँ दो मूर्ख मिलते हैं, वे आपस में अधर्म की चर्चा करते हैं। पूज्य माताजी धर्म की चर्चा करते हुए अपना मार्ग प्रशस्त कर रही थीं। सम्मेदशिखर अब आधी दूर रह गया था। इसी बीच में एक अद्भुत चमत्कारिक घटना घटती है।

अद्भुत घटना—एक दिन की बात, पूज्य माताजी को अपने स्थान पर पहुँचने में रात हो गई, रास्ते में रुकना पड़ा। ग्रामवासियों ने कहा हे माता! यहाँ से आप विहार कर देवें, क्योंकि यहाँ पर शाम को एक शेर निकलता है, जिसके डर से कोई बाहर नहीं निकलता है पूज्य माताजी ने कहा भाई! जैनधर्म में बड़ी शक्ति है। जैन दिगम्बर साधु रात्रि में अर्थात् दिन छिपने पर विहार नहीं करते, आप लोग चिंता मत करो। बस क्या था, पूज्य माताजी संघ सहित वहीं पर ध्यान में लीन हो गईं एवं पूज्य माताजी के भक्तों ने णमोकार मंत्र का अखण्ड पाठ करना शुरू कर दिया। इतने में रात बीत गई, शेर का पता नहीं चला कहाँ गया। सुबह पूज्य माताजी सकुशल संघ सहित विहार कर गईं। ये है पूज्य माताजी का प्रभाव एवं आत्मशक्ति। इस प्रकार संघ 2 माह में सम्मेदशिखर पहुँच गया। वहाँ पर हम चौका लगाकर पाँचों माताजी को आहार कराती थीं। पाँच प्रतिमा के व्रत आरा में मैंने लिए। आचार्य विमलसागर जी से 7 प्रतिमा के व्रत पूज्य माताजी ने मुझे सम्मेदशिखर की अंतिम टोंक पार्श्वनाथ के समक्ष दिलाया। व्रत लेकर मैं चौका लगाने हेतु पर्वत से नीचे आ रही थी कि एक चमत्कारिक घटना और घटी। मैं रास्ता भूल गई, रोने लगी।

सम्मेदशिखर का चमत्कार—मैं दूसरे जंगल में निकल गई। इतने में एक देव ब्राह्मण का रूप रखकर मुझे सीधा रास्ता बताकर गायब हो गया। मैं नीचे आकर सभी माताजी को आहार कराकर सब बात बताई, पूज्य माताजी ने कहा आपके व्रत के प्रभाव से एवं इस सिद्धक्षेत्र के प्रभाव से बड़ी भारी आपत्ति टल गई। इस प्रकार पूज्य माताजी वहाँ पर रहकर खूब वंदना की और मैंने भी वंदना किया। पुनः संघ ने वहाँ से जाकर कलकत्ता में चातुर्मास किया। खूब धर्मप्रभावना हुई। पुनः वहाँ से विहार करती हुई पूज्य माताजी संघ सहित हैदराबाद पधारीं, यहाँ पर खूब सिद्धचक्र आदि पाठ विधान कराया। खूब समाज ने भक्ति किया। मैंने दही रस का त्याग कर दिया, जब पूज्य माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने आचार्य शिवसागर जी की आज्ञा से यहीं पर क्षुल्लिका दीक्षा दिया। उस समय ऐसी विशालरूप में दीक्षा हुई, ऐसा चमत्कार दिखा। ऐसे विशाल हाथी पर बिनौरी निकली। ऐसी दीक्षा "न भूतो न भविष्यति" इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है।

दीक्षा के पांच दिन पूर्व का चमत्कार—जब दीक्षा के 5 दिन रह गए, तब मेरी आँख में खूब दर्द हो गया। आँख बिल्कुल बंद हो गई, खुली नहीं, चारों तरफ से बड़ी-बड़ी दूर से डाक्टर को बुलाया। बड़े-बड़े डाक्टर आये, सभी ने जवाब दे दिया। यदि इन्हें दीक्षा दोगी, तो इनकी आँख चली जायेगी। केशलोंच करने से आँख शिर दोनों का खतरा है, सभी लोग घबड़ा गये। पूज्य माताजी नहीं घबड़ाई। णमोकार मंत्र की ध्वनि शुरू करवा दिया और चौथे दिन गुलाब जल में नीम की पत्ती का रस मिलाकर मंत्र-पढ़कर मेरी आँख में डाल दिया। इसे डालते ही मेरी आँख खुल गई। चारों तरफ पूज्य माताजी की जय-जयकार होने लगी। सभी जनता एवं हैदराबाद की समाज ये अद्भुत चमत्कारिक घटना देखकर बड़े प्रभावित हुए और खूब जोरों से मेरी दीक्षा हुई। लंबे-लंबे बालों को मैंने हंस-हंसकर निकाल दिया। ऐसे वैराग्यमयी दृश्य देखकर सभी जनता हर्ष से प्रफुल्लित हो गई। चातुर्मास के बाद पुनः वहाँ से विहार करके पूज्य माताजी संघ सहित क्रम-क्रम से श्रवणबेलगोला, सोलापुर, सनावद में चातुर्मास करके खूब धर्म प्रभावना करती हुई आचार्य शिवसागर जी के संघ प्रतापगढ़ में चातुर्मास किया। पुनः आचार्य शिवसागर जी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में संघ सहित महावीर जी पधारे। वहाँ पर आचार्यश्री को ज्वर आने से अकस्मात् समाधि हो गई। तब सभी चतुर्विध संघ एवं समाज ने मिलकर धर्मसागर मुनि को आचार्यपद पर नियुक्त किया, तभी फौरन आचार्य धर्मसागर जी के ससंघ सानिध्य में फाल्गुन शु. 8 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के मध्य आचार्यश्री के करकमलों से कई दीक्षाएं हुईं। मुझे भी उनकी प्रथम शिष्या के रूप में आर्यिका दीक्षा लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पुनः वहाँ से संघ सहित विहार करके आचार्यश्री ने जयपुर में चातुर्मास किया। मैंने भी आचार्यश्री के संघ में पूज्य गणिनी ज्ञानमती जी के साथ जयपुर और टोंक में दो चातुर्मास किए। पुनः किशनगढ़ में आचार्य ज्ञानसागर जी के संघ में एक चातुर्मास करके पुनः रत्नमती माँ की दीक्षा में शामिल होकर सन् 1972 में "बुंदेलखंड की यात्रा हेतु" संघ से ही अलग विहार कर दिया। बुंदेलखण्ड के कोने-कोने में मैंने उपदेश देकर खूब धर्म प्रभावना किया। सैकड़ों जगह गुरुकुल, विद्यालय, स्कूल एवं महिला मण्डल की स्थापना की। इस प्रकार बुंदेलखण्ड में 12 वर्ष निकल गये, पता नहीं चला। सन् 1985 में अतिशय क्षेत्र लूणवां में आचार्य श्री धर्मसागर गुरु के साथ चातुर्मास किया। मैंने गुरु से प्रायश्चित्त मांगा। गुरु ने कहा तुमने अकेले निस्पृही बनकर बुंदेलखण्ड में बड़ी प्रभावना किया, यही सबसे बड़ा प्रायश्चित्त है। पुनः वहाँ से विहार करके 1986 में जंबूद्वीप-हस्तिनापुर आ गई। पूज्य माताजी के दर्शन करके मानो कोई मुझे निधि मिल गई। जम्बूद्वीप की रचना देखकर मुझे बड़ी शांति मिली। भारतवर्ष में मैंने बहुत सी रचनाएं देखीं, पर जम्बूद्वीप की रचना अनुपम निराली, मुझे सबसे अधिक सुंदर लगी। इधर हस्तिनापुर एवं आसपास में रहते हुए मुझे 20 वर्ष निकल गए, पता नहीं चला। यहीं से अतिशय क्षेत्र बरनावा, बड़ागाँव, वहलना, बिहारी क्षेत्र, सरधना, खतौली, मुजफ्फरनगर आदि में विहार करके मैंने खूब धर्मप्रभावना की, बरनावा में उदासीन आश्रम खोला, जिसमें अभी औषधालय चल रहा है। बड़ा गाँव में मेरी प्रेरणा से रथ दिया, जुगमंधर ने। इस प्रकार मैंने घूम-घूम कर खूब धर्मप्रचार किया। इसी जंबूद्वीप में वर्तमान में पूज्य माता गणिनी ज्ञानमती जी ने सहस्रकूट जिनालय, कैलाशपर्वत मंदिर, ध्यान मंदिर, ॐ मंदिर, बीस तीर्थंकर मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, कमल मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, आदिनाथ मंदिर, तेरहद्वीप रचना आदि मंदिरों का सुन्दर निर्माण कराया। ऐसी रचना "न भूतो न भविष्यति" मैंने कहीं नहीं देखी, जो भी यात्री दर्शन करने आते हैं, वे आश्चर्यचकित होकर आनंद-विभोर हो जाते है। साथ ही महान ग्रंथों की रचना करके भारतवर्ष में ज्ञान ज्योति का प्रकाश भर दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जगह-जगह तीर्थों का उद्धार करके खूब धर्मप्रभावना किया। ऐसी प्रमुख गणिनी जैन साध्वी को देखकर ऐसा लगता है मानो कोई स्वर्ग से देवांगना ही उतरकर आई हो, मुझे पूज्य माताजी ने मोक्षमार्ग में लगाकर मेरा उद्धार कर दिया। इस समय सभी आर्यिकाओं में सबसे पुरानी दीक्षित पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी हैं, जिनका 51वीं दीक्षा दिवस वैशाख वदि 2 को खूब जोरों से मनाया जा रहा है। इन 50 वर्षों में पूज्य माताजी खूब ज्ञानाराधना एवं धर्मप्रभावना करती हुई सदैव आत्म-साधना में लीन रहती हैं, कितनी बार बीमार हुईं, फिर भी हमेशा ज्ञानोपयोग में लगी रहती हैं। संघ में कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी सभी प्रकार से सहयोग दे रहे हैं। जिस प्रकार आकाश के तारों को, शरीर के रोम को कोई गिन नहीं सकता, उसी प्रकार मैं पूज्य माताजी के गुणों का वर्णन नहीं कर सकती। जिस प्रकार इंजन के ठीक रहने पर सारे रेल के डब्बे भी कार्य करते रहते हैं, उसी प्रकार गुरुरूपी इंजन के ठीक रहने पर ही श्रावक मोक्षमार्ग में लग सकते हैं। पूज्य माताजी ऐसी इंजन हैं, जिनकी शक्ति से सारे देश-विदेशियों का उद्धार हो गया। ऐसी पूज्य माताजी के चरणों में मैं अपनी विनयांजलि पुष्पांजलि, भक्तिसुमन अर्पण करती हूँ। पूज्य माताजी शतायु हों, यही कामना करती हूँ। यह तो मैंने मात्र पूज्य माताजी के प्रति भक्ति प्रगट किया है। संक्षिप्त में पूज्य माताजी का पूरा इतिहास लिखे, तो बड़ा भारी शास्त्र महान ग्रंथ बनकर तैयार हो जावे। क्योंकि शेरनी का दूध स्वर्ण पात्र में ही ठहरेगा। दूसरे पात्र में रखेंगे तो दूध भी फटेगा और पात्र भी फटेगा। उसी प्रकार पूज्य माताजी की वाणी में इतना ठोस पन है कि विवेकी पुरुष ही उनकी वाणी को ग्रहण कर सकते हैं, मूर्ख पुरुष नहीं ग्रहण कर सकते।

-आर्यिका अभयमती

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि

गणिनीप्रमुख आर्यिका परमपूज्या 105 श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष हो जाने के मंगलमय अवसर पर 'दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' के उपलक्ष्य में उन आर्यिका माताजी के प्रति अपने हृदयोद्‌गार प्रकट करते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है। संयमी जीवन का इतना सुदीर्घकाल धर्मप्रभावना, जिनवाणीसेवा और संयम के पालन के साथ व्यतीत होना अपने आपमें महत्वपूर्ण है। अस्तु-परमज्ञानी, परमध्यानी, आप सभी में पूज्यता को प्राप्त हैं, अनेक गुणों की भंडार हैं, जो जीव दुःखरूपी तरंगों से टकराकर संसाररूपी बीच समुद्र में पड़े हैं, वे प्राणी आपका सहयोग प्राप्त करके मोक्षमार्ग प्राप्त कर लेते हैं। आप जीवों को मेघतुल्य उपकारक हैं, माता के समान हितकारी हैं, जिनवाणी के समान समीचीन शिक्षा देने वाली हैं, आपका आश्रय लेने वालों को विद्या और विनय की वृद्धि होती है, जिस प्रकार चंद्रमा की किरणों से समुद्र वृद्धि को प्राप्त होता है, उसी प्रकार आपका आश्रय लेने वालों का प्रज्ञारूपी समुद्र बढ़ता है। आँखों में काजल के समान लाभदायक, धान कूटने में मूसल के समान उपकारी हैं। जैसे घी के बिना भोजन, अग्नि के बिना रसोई घर, विश्वास के बिना सेवा, सौंदर्य के बिना युवावस्था शोभा को प्राप्त नहीं होती, उसी प्रकार आपके बिना आर्यिकाओं का समुदाय शोभा को प्राप्त नहीं होता। आपके पावन चरणों का जो एक बार दर्शन कर लेता है, वह विरोधी भी भक्त, कायर-शूरवीर, निर्दयी-दयावान, कृपण-महादानी, कटुभाषी-मधुरवक्ता और अकर्मण्य-कर्मठ बन जाते हैं।

आप ऐसी अगाध तीर्थ हृद हैं, जिसमें कीचड़ नहीं है, क्रूर जन्तुओं का निवास नहीं है। आप ऐसी दीपक हैं, जिसमें कालिमा नहीं है, आपकी ऐसी मुस्कराहट है, जिसमें वेदना की टीस नहीं है, आप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानसमुद्र हैं। आपका ही रत्न परम पूज्या समता-विनय-धैर्य और सहिष्णुता की साकार मूर्ति, वात्सल्य मूर्ति, महान् विदुषी जिनमती जी माताजी कहती थीं कि जब हम और ज्ञानमती माताजी श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली के चरणों में भगवान बाहुबली की स्तुति बनाने का संकल्प करके बैठे, तो जितने समय में माताजी ने 50 श्लोक बनाये, उतने समय में हमसे 10 श्लोक बनाये जाते थे अतः जिस प्रकार आचार्य शांतिसागर जी महाराज ही प्रथमाचार्य हैं, उसी प्रकार आर्यिकाओं में बाल ब्रह्मचारिणी गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ही हैं।

रत्नत्रय मूर्ति, परम श्रद्धेया पूज्य जिनमती माताजी कहती थीं कि वे मेरी गर्भाधान विहीन माता हैं, जन्मदात्री माता तो संसार के बंधन में डालकर मेरे अनंत संसार के दुःखों की वृद्धि कर देतीं किन्तु इन माता के द्वारा जो उपकार हुआ है, उसे मैं वचनों से कह नहीं सकती, मन से विचार नहीं सकती, लेखनी से लिख नहीं सकती। मुझे दृढ़संकल्पी पूज्या जिनमती माताजी के साथ 28 वर्ष रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, मैंने देखा कि माताजी के सामने किसी की भी हिम्मत नहीं थी कि ज्ञानमती माताजी के विरोध में कोई दो शब्द बोल जाये, वे कहती थीं कि शुभमती! माताजी के द्वारा जो अनन्य उपकार हुआ है, वह चक्रवर्ती की संपदा भेंट में देकर भी नहीं चुकाया जा सकता है। जिस सम्यग्दर्शन के प्रभाव से जीवों का अनंत संसार कटकर मात्र अर्द्धपुद्गल परिवर्तन शेष रह जाता है, जिस सम्यग्ज्ञान से तत्त्वज्ञान प्राप्त होता है, जिस चारित्र से जीव शाश्वत सुख प्राप्त करता है, ऐसा रत्नत्रय उन माता के महान उपकार से प्राप्त हुआ है। माताजी का जीवन ठोस जिनागम का सुदृढ़ स्तंभ है, आर्षपरम्परा की एक ऐसी खुली वीथी है, जिसमें आबालवृद्ध सभी सरलता से प्रवेश पाकर गन्तव्य स्थान तक पहुँच जाते हैं। एक दीप से अनेकों दीप जल जाते हैं। एक स्विच ऑन करने से अनेकों बल्ब जगमगा उठते हैं, इसी प्रकार आपकी ज्ञानज्योति भी अनेकों को मिथ्यात्वरूप अंधकार से हटाकर ज्योतिर्मय बना देती है।

जिस प्रकार वृक्ष फल स्वयं नहीं खाते, नदियाँ स्वयं पानी नहीं पीती, गायें स्वयं दूध नहीं पीतीं, ये सब दूसरों का उपकार करते हैं, उसी प्रकार माताजी अनेक कष्ट सहकर भी भव्य जीवों का उपकार करती हैं। भगवान आदिनाथ के समवसरण में बाल ब्र. गणिनी आर्यिका ब्राह्मी थीं, भगवान महावीर के समवसरण में बाल ब्र. गणिनी आर्यिका चंदना थीं और अब चारित्रचक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी की परम्परा में बाल ब्र. गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी हैं।

आपमें मेरी सुश्रद्धा बनी रहे, स्मृतिपटल पर आप सदैव विराजें, कर्ण आपके गुणों को सुनने में लगे रहें, मुख से स्तुति करने की आदत हो, मस्तक आपके समक्ष झुका करे, इसी में अपने को भाग्यशाली मानती हूँ। दुग्ध पुष्टिकारक है किन्तु केवल देह का। अमृत की बड़ी महिमा है किन्तु वह भी आत्मपुष्टि में सहयोगी नहीं है। आपके द्वारा उपदिष्ट रत्नत्रयधर्म तो आत्मीय सुख स्वरूप है। आपके प्रति मन-वचन-काय से विनयांजलि समर्पित करती हुई आपसे यही आशीर्वाद प्राप्त हो कि आपके ही द्वारा परम्परा से प्राप्त सम्यग्ज्ञान सल्लेखना प्राप्ति में सहयोगी बने।

-आर्यिका शुभमती

(संघस्थ-आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशुद्ध भावना एवं मंगल कामना

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि परम विदुषी दीर्घकालीन दीक्षित ज्ञान-ध्यान-आराधना एवं जिनधर्म प्रभावना करने में अग्रणी गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के ५० वर्ष की संपूर्ति पर एवं दीक्षा स्वर्ण जयंती के पावन प्रसंग पर "गौरव ग्रंथ" का प्रकाशन किया जा रहा है।

आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी स्वयं अपने जीवन में चिरकाल से अनवरत तप, साधना में संलग्न हैं एवं परोपकार करती हुई दैनन्दिनी चर्या का आगमानुकूल प्रतिपालन कर रही हैं।

आपने जिनमंदिर निर्माण, प्राचीन शास्त्रों की टीका, जिनाराधना की परिचायिका स्वरूप विधानादि लिखकर व तीर्थंकरों की कल्याणकभूमियों में दूरदृष्टि रख जीर्णोद्धार कराकर जो जिनधर्म प्रभावना की है वह अतिश्लाघनीय है।

इस पावन प्रसंग पर माताजी को 'जिनधर्म प्रभाविका" से विभूषित कर वीरप्रभु से प्रार्थना करती हूँ कि माताजी आरोग्यता एवं शतायु को प्राप्त कर इसी तरह धर्मप्रभावना कर धर्मध्वजा फहरायें।

यही भावना एवं मंगल कामना के साथ विराम।

–गणिनी आर्यिका विशुद्धमती

परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के गुणानुवाद

यह भारत भूमि धर्म की वृद्धि करने वाली भूमि रही है, इसी भूमि पर सन्तों की साधना से आज धर्म अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित हो रहा है।

इसी भारत भूमि के अवध प्रान्त के टिकैतनगर में पिता श्री छोटेलाल जी एवं माता श्री मोहिनी देवी के दाम्पत्य जीवन में कन्या के रूप में एक देवी का ही अवतार हुआ, जिन्होंने अपनी कन्या का नाम मैना रखा।

जिस प्रकार शरदपूर्णिमा की छटा अमृत बरसाती है, उसी प्रकार मैना देवी भी "ज्ञानमती" के रूप में ज्ञान की अमृतमय वर्षा कर रही हैं। पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के चरण जहाँ भी पड़ते हैं, वहाँ की रज चन्दन बनती चली जाती है। मैंने आपके सबसे प्रथम दर्शन मांगीतुंगी में किये थे, आपके दर्शन से ही ऐसा लगता है, मानो जैनागम का अवलोकन ही हो रहा है। इस क्षणिक विनश्वर जीवन में भी मानव अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग करके उसे महान बना लेता है, ऐसे गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने भी प्रत्येक क्षण को अमूल्य समझकर स्वकल्याण के साथ-साथ परकल्याण के लिए अनेकों शास्त्र एवं विधानों की रचना करके इस युग में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

यह हस्तिनापुर भी तीन-तीन तीर्थंकरों की जन्मस्थली एवं राजा श्रेयांस की दानस्थली, कौरव-पाण्डवों की राजधानी, मनोवती की त्यागस्थली, सात सौ मुनियों की रक्षास्थली, ऐसे महान क्षेत्र पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने एक विशाल जम्बूद्वीप की रचना एवं अनेकों मंदिरों का निर्माण कराने की प्रेरणा देकर हस्तिनापुर को नूतन क्षेत्र के रूप में प्रकाशित किया है, जहाँ पर जैन-अजैन सभी बंधु सुमेरु पर्वत पर मनोरंजन की भावना से चढ़ते हैं और अनायास ही भगवान के सामने उन का मस्तक झुक जाता है। माताजी ने हस्तिनापुर का तो उत्थान किया ही है और भी अयोध्या, इलाहाबाद (प्रयाग) कुण्डलपुर (नालंदा), शिखरजी एवं मांगीतुंगी आदि अनेक क्षेत्रों का जीर्णोद्धार कर फिर उसे एक नूतन रूप देकर पुराने क्षेत्रों को नवीन बना दिया।

माताजी का सानिध्य हमें मांगीतुंगी क्षेत्र पर मिला। पूज्य माताजी का वात्सल्य एवं कई अनुभव की बातें भी प्राप्त हुईं एवं जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर की चर्चा चलती और माताजी के द्वारा सुनकर मन में कई बार भावना होती कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमें भी जम्बूद्वीप के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो। वह शुभावसर एक बार प्राप्त हुआ और हमें भी जम्बूद्वीप के दर्शन कर, डेढ़ माह वहाँ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ की पवित्र भूमि एवं मनमोहक क्षेत्र तन-मन की शांति, आत्मध्यान की स्थिरता और स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से अनुकूल रहा, वहाँ का पर्यावरण भी शुद्ध आत्मलाभ के लिए अति उपयोगी है।

अतः माताजी की दृष्टि में जीवन का प्रत्येक क्षण महत्वपूर्ण था, इसलिए उन्होंने सतत ज्ञान-ध्यान में लीन रहकर अहिंसा की साधना से अपने जीवन को मंगलमय बनाया है। माताजी शतायु हों, दीर्घायु हों, यही हमारी मनोभावना है।

उनके चरणों में शत-शत वंदामि—

-गणिनी आर्यिका चन्द्रमती

पंच तीर्थ उद्धारिका

परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती की शुभ बेला में मेरी उनके चरणों में बारम्बार वंदामि।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी (दक्षिण) की परम्परा के प्रथम आचार्य 108 श्री वीरसागर महाराज की प्रथम शिष्या आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी हैं, जो वर्तमान में पूरे भारत की आर्यिका वर्गों में ज्ञानी, अग्रणी हैं और पाँच तीर्थों की उद्धारिका हैं।

1. वे प्राचीन तीर्थों की उद्धारिका हैं।

2. जिनवाणी उद्धारिका— आपने कई प्राचीन आचार्य प्रणीत ग्रंथों की टीका की है और बड़े-बड़े विधानों की रचना की है, जिससे पूरे देश में जैनधर्म के अनुयायी बड़े-बड़े विधान आदि धार्मिक अनुष्ठान करके पुण्य उपार्जन कर रहे हैं, सम्यक्‌दर्शन को प्राप्त हो रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे।

3. अनेक भव्यों को शिक्षा देकर संसार से वैराग्य प्राप्त कराकर दीक्षा दिलाई, दीक्षा दी और दीक्षा का फल समाधि की प्रेरणा दी, समाधि कराई।

4. निज आत्मा की उद्धारिका— छोटी सी उम्र में दीक्षा ग्रहण कर आपने अपनी आत्मा का उद्धार किया।

"यथा-यथा समायाति, संवित्तौ तत्व मुत्तमम्।
तथा-तथा न रोचन्ते विषयाः सुलभाः अपि।।

अर्थ-जैसे-जैसे भव्य प्राणियों को उत्तम तत्त्वों का ज्ञान होता है, वैसे-वैसे विषयों से रुचि हटती जाती है। उसी प्रकार पूज्य ज्ञानमती माताजी पिछले भवों के शुभ संस्कारों से छोटी उम्र में ही सदाचार एवं ज्ञानाभ्यास में लग गईं और दीक्षा ग्रहण कर ली।

5. पूज्य माताजी की प्रेरणा से ही 24 तीर्थंकरों की जन्मभूमियाँ, निर्वाणभूमियाँ प्रसिद्धी में आ रही हैं, चमक रही हैं क्योंकि जन्म, निर्वाणादि भूमियों पर आपने बड़े-बड़े निर्माण कार्य करवा दिये, माताजी के आशीर्वाद का यह बड़ा चमत्कार है। इस प्रकार माताजी चारों प्रकार की प्रेरणा करके अपना तो कल्याण कर ही रही हैं, साथ में अनेक भव्य जीवों के लिए भी मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। इसलिए मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि माताजी पंचमकाल की उत्कृष्ट आयु पूर्ण करें और अनेक भव्यों को अपने समान तैयार करें। पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के पचास वर्षों की सम्पूर्ति पर मैं उनसे यही मंगल आशीर्वाद की कामना करती हूँ कि गुरु चरणों में रहकर गुरु सेवा करती हुई अपना कल्याण करूँ।

-गणिनी आर्यिका प्रज्ञामती
(संघस्थ-आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी महाराज)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक भक्ति पुष्प ''माँ तार दे''

माँ ज्ञानमती!
ओ सरस्वती!
ओ शारदे!
ओ कामिनी!
माँ तार दे, माँ तार दे, माँ तार दे।।1।।

मुख मुण्डल है,
शान्त तिहारा,
तेज दीप्ति है,
अनुपम धारा
चाँद सूर्य,
तुझसे शरमाया,
माँ तार दे, माँ तार दे, माँ तार दे।।2।।

प्यार भरा है,
जीवन न्यारा,
ज्ञान सुधारस,
पीता प्यारा
जिनवाणी की
प्यास में जिनका
बीत गया है
जीवन सारा...........
माँ तार दे, माँ तार दे, माँ तार दे।।3।।

तन मन अर्पण
सब कुछ तेरा
जिनशासन
का बना है चेरा
युग की अनुपम
नेक धरोहर
दी तुम जग को
सदा मनोहर
माँ तार दे, माँ तार दे, माँ तार दे।।4।।

युग युग तेरी
'गौरव गाथा'
गायेगा
इतिहास सुनहला
भक्ति औ पूजा
के क्षण में
याद करेगा लोक ये सारा
माँ तार दे, माँ तार दे, माँ तार दे।।5।।

युग युग जीओ
माता, जीओ
जिनवाणी की
किरण तुम्हीं हो
नारी जगत्
की
शान हो जीओ
माँ तार दे, माँ तार दे, माँ तार दे।।6।।

युग की प्रथम
ओ बाल योगिनी!
समता रस
की
ओ सदा भोगिनी!
स्वर्ण जयंती
त्याग धर्म की
चलो मनाएं आज श्रेष्ठ की
माँ तार दे, माँ तार दे, माँ तार दे।।7।।

स्याद्वादमती
शरण तिहारी
तुम सम
जागे
ज्योति हमारी
चरण-कमल की
बनूँ पुजारी
माँ तार दे, माँ तार दे, माँ तार दे।।8।।

–गणिनी आर्यिका स्याद्वादमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी का व्यक्तित्व-कर्तृत्व

परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर गौरव ग्रंथ प्रकाशित होने जा रहा है, यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ, इससे पूज्य माताजी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के बारे में युग परिचित हो सकता है। पूज्या माताजी ने स्त्रीपर्याय का उत्कृष्ट व्रत, आर्यिका दीक्षा को ग्रहण करके 20वीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी के रूप में आर्यिका के व्रत को स्वीकार कर एक चुनौती दी है। पूज्या माताजी का व्यक्तित्व ही सरस्वती का स्वरूप बतलाता है। सुडौल एवं कोमल काय मानों साक्षात् सरस्वती ही है। मधुर भाषी पूज्य माताजी जगत के लोगों के लिए धर्म का आकर्षण महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। जिनका चुम्बकीय आकर्षण ही है कि परिवार के लोग भी धर्ममार्ग में लगकर स्वपर का उपकार कर रहे हैं। अपनी जननी को जगत जननी बनाकर महान उपकार किया। पूज्या माताजी का कर्तृत्व अनूठा है, इसके बारे में क्या चर्चा करना? माताजी ने जगत को ऐसी कृति दी है, जो सारा जैन समाज ऋणी है, जो कि जम्बूद्वीप की कृति आज विश्व में प्रथम कृति है। जिसने जैन समाज का मस्तिष्क (सिर) उठा दिया है और अनेकानेक ग्रंथ माताजी ने अपनी कलम से लिखे हैं। माँ सरस्वती की सेवा स्वरूप ग्रंथ लिखकर हम सभी का उपकार किया है जो कि हर ग्रंथ को पढ़कर सरल, सुगमता से ज्ञानार्जन हो सकता है।

परमपूज्या गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी के दीर्घायु की शुभ कामना करते हुए उनके श्रीचरणों में वंदामि.........3।

-आर्यिका सुप्रकाशमती

हमारे आदर्श

प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाचार्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज की सुशिष्या गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि परमपूज्य ज्ञानमती माताजी की 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती' के पावन प्रसंग पर 'गौरव ग्रंथ' अर्पित-समर्पित करने का स्वर्णिम अवसर भारत की जैन समाज को प्राप्त हुआ, यह समाज का सौभाग्य है, गौरवानुभूति की बात है। यह उपक्रम जैन संस्कृति के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। वर्तमान में साधनारत भारत के समस्त महाव्रतियों में एकमेव आप ऐसी महाव्रती हैं, जो 50 वर्ष से महाव्रतों की साधना में रत हैं।

परमपूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी ने कालदोष से अवरुद्ध हुई मुनि परम्परा को परिमार्जित कर जैन जगत का महान उपकार किया, वहीं दूसरी ओर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस परम्परा का संरक्षण-संवर्द्धन करके जैन जगत का अकथनीय उपकार किया।

पूज्य माताजी एक आदर्श साध्वी हैं, आपका सम्पूर्ण जीवन आदर्शों का भण्डार है। आपका आदर्श जीवन देखकर ऐसा लगता है, आदर्श ही मूर्तरूप हो गया है। आप साधु समाज की गौरव हैं।

माताजी का व्यक्तित्व बहुआयामी व्यक्तित्व है, जैन दर्शन की कोई भी विधा आपसे अछूती नहीं है। चाहे वह प्राचीन ग्रंथानुवाद हो, धवला जैसे सिद्धांत ग्रंथ की संस्कृत टीका हो या भक्ति रस से अर्हंत महापूजा का काव्यात्मक सृजन हो, बाल मन को प्रिय लगने वाली शिक्षात्मक कथायें हों, नारी चरित्रसृजनात्मक लघु उपन्यास हो, आध्यात्मिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथ समयसार के रहस्यों का सरलीकरण हो, सभी विषय पर आपकी कलम का साम्राज्य है।

आपकी कलम का एक यह वैशिष्ट्य है कि आपने तोतली आवाज में पढ़ने वाले बालक के साथ आत्मानुभूति का रसास्वादन लेने वाले योगियों के लिए भी ज्ञानामृत परोसा है, इसलिए आप ज्ञानदायिनी/प्रदायिनी माँ हैं।

आपकी जीवन चर्या में भी बड़ा वैशिष्ट्य है। आठ वर्षीय भोले भाले मन से लेकर साठ वर्षीय गोरे-काले मन वाले तक को अपनी जीवन शैली से प्रभावित कर सदाचार के मार्ग पर आरूढ़ कराया, वहीं दूसरी ओर आठ से साठ वर्षीय वैरागियों को समयाचार के मार्ग पर आरूढ़ कराया इसीलिए आप संयमदायिनी/प्रदायिनी माँ हैं।

आपकी तत्त्वज्ञानमयी देशना भी वैशिष्ट्पूर्ण है। हृदय स्पर्श देशना ने जनमानस के हृदय पटल पर परम परमात्मा की ऐसी छवि अंकित कर दी कि वह जिनेन्द्र प्रभु का चरणानुरागी बनकर समीचीन श्रद्धालु बन जाता है। इसलिए आप श्रद्धादायिनी/प्रदायिनी माँ हैं।

पूज्य माताजी चुम्बकीय व्यक्तित्व की प्रतिमूर्ति हैं, आपकी गौरवमय गाथा को शब्दों से श्रृँगारित करना अल्प बुद्धि-जीवों को कठिन है।

''सरिता किनारों में नहीं बंधती, हवा हाथों में नहीं थमती,
जमी के नूर हो आप, जीवन गाथा शब्दों में नहीं बंधती''

पर श्रद्धालु मन कुछ कहकर ही शान्त होता है। शब्दों के पुष्प अर्पित करने की तीव्र उत्कंठा क्रियाशील बनाती है—

फिर भी प्रयास न छोडूँगी, अपना साहस न तोडूंगी,
चढ़ाने को शब्दांजलि, अपनी कलम न रोकूँगी।

क्योंकि आप— समन्तभद्र जैसी अटूट श्रद्धा की धनी,
सिद्धान्त सिद्धी हेतु अकलंक जैसी तार्किकता की धनी,
कुन्द-कुन्द जैसी आध्यात्मिकता कला की धनी,
मानतुंग जैसी निर्मल भक्ति की धनी,
ब्राह्मी जैसी कौमार्य अवस्था में महाव्रत की धनी,
हृदय स्पर्शी वक्तृत्व कौशल की धनी,
कलम प्रवर्तन में अद्वितीय प्रवीणता की धनी,
कर्म संहार करने में वज्रसम दृढ़ता की धनी,
ध्यान करने में निश्चल एकाग्रता की धनी,
वात्सल्य गुण परिपालन में नवनीत सम मृदुता की धनी,
मैत्री गुण परिपालन में सरिता सम निर्मलता की धनी,
प्रमोद गुण परिपालन में नीर सम धवल हर्ष की धनी,
अनुकंपा गुण परिपालन में नीर सम सहजता की धनी,
माध्यस्थ गुण परिपालन में नीर सम सहजता की धनी,
माध्यस्थ गुण परिपालन में समीर सम समानता की धनी।

विनय ही जिनकी चर्या है, उन्हें विनयांजलि अर्पित करना विनयशीलता है। ज्ञान ही जिनका परिचय है, उन्हें शब्दांजलि अर्पित करना ज्ञानपिपासा का सूचक है।

आज भारत की भूमि पुलकित है, हर्षित है क्योंकि इस भूमि को 50 वर्ष से दीक्षित प्रथम दिगम्बर जैन बाल साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का चरण स्पर्श मिल रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज समीर भी भाग्यशाली, सौभाग्यशाली है क्योंकि इस समीर को 50 वर्ष से दीक्षित जैन साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती के चरण स्पर्श करने का सुअवसर मिल रहा है। मैं भाग्यशाली ही नहीं महाभाग्यशाली हूँ, क्योंकि इन चरणों को स्पर्श करने, चरण रज लेने का व चरण शरण में कुछ समय व्यतीत करने का अवसर पाया है और आज इन पावन पुनीत चरणों में-

विनयांजलि, भावांजलि, आदरांजलि, प्रणमांजलि, शब्दांजलि, अर्पित-समर्पित कर अपना जीवन धन्य किया।

-आर्यिका सुभूषणमती

(संघस्थ आचार्य श्री अभिनंदनसागर महाराज)

भावांजलि

युगादिदेव भगवान ऋषभदेव ने ब्राह्मी लिपि एवं अंक विद्या का आविष्कार करके लेखन और पठन-पाठन के क्षेत्र में विशेषरूप से अपनी कन्या ब्राह्मी और सुन्दरी को निष्णात बनाकर "अक्षर आराधना" पर नारी का विशेष अधिकार स्वयं स्थापित और प्रमाणित कर दिया था। इन दोनों राजकन्याओं ने आजन्म अविवाहित रहकर बड़े से बड़ा त्याग करने की क्षमता नारी में है, यह प्रदर्शित किया। दोनों बहनों ने साधना के उच्चतम शिखर आर्यिकाव्रत को धारण कर आर्यिका संघ का नेतृत्व किया। आगे चलकर द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ से लेकर अंतिम महावीर स्वामी तक त्याग और साधना के क्षेत्र में नारियाँ सदा पुरुषों से आगे रहीं। भगवान के समवसरण से लेकर प्रत्येक धार्मिक क्षेत्र में नारियों की संख्या भी अधिक रही। पिछले हजार-सवा हजार वर्षों में जिनवाणी की सेवा और ग्रंथ रचना के विषय में आर्यिकाओं की सेवा और ग्रंथ लगभग नहीं पाये जाते थे, पर वर्तमान में स्थितियाँ बदल गई हैं।

20वीं शताब्दी के प्रथम दिगम्बराचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज श्री की परम्परा के पाँच आर्यिकारत्नों में 1. परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी 2. परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका सुपार्श्वमती माताजी 3. परमपूज्य विदुषी आर्यिकारत्न जिनमती माताजी 4. परमपूज्य विदुषी आर्यिका आदिमती माताजी एवं 5. परमपूज्य विदुषी आर्यिकारत्न विशुद्धमती माताजी ने जैनागम के प्रचार-प्रसार में अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन पंचरत्नों में प्रथमरत्न के रूप में हैं परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी, जो इस शताब्दी में ब्राह्मी-सुन्दरी की प्रतिकृति रूप हैं।

पूज्य माताजी दीक्षा के पूर्व से ही निरन्तर पठन-पाठन और साहित्य क्षेत्र में संलग्न रहती थीं। दीक्षा के पश्चात् संयम और तप के प्रभाव से ज्ञान का क्षयोपशम शीघ्र वृद्धिंगत हुआ। चारों अनुयोगों के ग्रंथों को चिन्तन-मननपूर्वक हृदयंगम किया। स्व-अध्ययन के साथ अध्यापन कार्य भी चलता रहा। न्याय, व्याकरण और साहित्य के क्षेत्र में भी शीघ्र प्रगति की।

पूर्व जन्म के ज्ञान के संस्कार एवं वर्तमान के पुरुषार्थ से पूज्य माताजी ने छोटी सी अवस्था में सभी ग्रंथों को कण्ठाग्र किया एवं जैन कथा-साहित्य-आगम, सिद्धान्त पर अपनी सशक्त लेखनी चलाई।

अष्टसहस्री जिनको विद्वान लोग भी कष्टसहस्री कहते हैं, ऐसे अत्यन्त कठिनतम न्यायग्रंथ की टीका करके आपने उसे सरलतम बनाया। कातंत्र व्याकरण का टीका सहित हिन्दी अनुवाद करके बाल-अज्ञानीजनों को पढ़ने के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिए सुगम बनाया। आगम-सिद्धान्त एवं अध्यात्म ग्रंथों की संस्कृत-हिन्दी टीका, हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद किया। जिन सूत्रों के पठन मात्र से असंख्यात गुणी कर्मनिर्जरा होती है, ऐसे षट्खण्डागम सिद्धान्त ग्रंथ पर धवला टीका के माध्यम से आपने सिद्धान्तचिंतामणि नामक संस्कृत टीका की, जो कि अत्यन्त सराहनीय है।

पूज्य माताजी सरस्वती की साक्षात् जीवन्त प्रतिमूर्ति ही हैं, उनकी लेखनी अनवरत चलती रहती है। उत्तर से दक्षिण यात्रा के मध्य चाँदवड़ ग्राम में जब हमारा संघ पहुँचा, उस समय मंदिर में एक पाषाण खंड पर प्रशस्ति लिखी हुई थी कि परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने धवला के इस भाग की टीका यहाँ समाप्त की। पढ़कर इतना आश्चर्य एवं आल्हाद हुआ कि धन्य है इन आर्यिकारत्न को, कि विहार में भी जिनकी लेखनी विश्राम नहीं लेती है। पूज्य माताजी का अपूर्व योगदान है, जिसके माध्यम से उनका कृतित्व जगह-जगह हजारों कण्ठों से समवेत दोहराया जा रहा है, वह है उनके द्वारा रचित पूजन और विधान। इन विधानों में सिद्धान्त-भक्ति और साहित्य एक साथ पिरोया गया है।

जैन आगम-सिद्धान्त-साहित्य निर्माण के साथ परमपूज्य माताजी ने तीर्थंकरों की पंचकल्याणक भूमियों पर नाना प्रकार के नवीन-नवीन निर्माण की प्रेरणा मार्गदर्शन देकर उन क्षेत्रों को बहुत विकसित करवाया है। दूसरे अनेक स्थानों पर वृहत् धार्मिक अनुष्ठान करवाके जैनधर्म का महान उद्योत और प्रभावना की।

परमपूज्य माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती के स्वर्णिम अवसर पर हम यही भावांजलि समर्पित करते हैं कि भविष्य में भी आपके द्वारा आगम-सिद्धान्त-साहित्य की सेवा होती रहे एवं आपकी रत्नत्रय आराधना दिनोंदिन वृद्धिंगत होवे, यही मंगल-पवित्र भावना के साथ परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के परमपुनीत पावन चरणकमलों में सिद्ध-श्रुतभक्तिपूर्वक अनन्तशः वंदामि, वंदामि, वंदामि।

-आर्यिका प्रशांतमती

(संघस्थ-आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज)

स्तुति

हे ज्ञानमती माता, अज्ञान हरो मेरा।
विज्ञान किरण द्वारा, भव-भव का मिटे फेरा।।टेक.।।
सूरज चंदा तारे, नहिं मन शीतल करते।
तव वचनामृत पीकर, भवि संत अमर बनते।
रत्नत्रय निधि द्वारा, चेतन में कर डेरा।।विज्ञान.।।
निज शक्ति को खोकर के, पर को निजमान रहा।
कर्तव्य भुला करके, निज को पर जान रहा।
सद्भेदज्ञान द्वारा, कर्मों का नशे मेला।।विज्ञान.।।
एकांत का खंडन कर, दिव्य ज्योति प्रकाश किया।
अनेकांत का मंडन कर, सहजिक सुख प्राप्त किया।
आत्मिक वैभव द्वारा, हो शिवपुर में डेरा।।विज्ञान.।।

-आर्यिका अभयमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनीज्ञानमती काव्याञ्जलिः

-आर्यिका चन्दनामती

—शार्दूलविक्रीडित छन्द—

यज्ज्ञानं च भवाब्धितीरतरणे नौकासमं वर्त्तते।
यद्वाणी शुभमानसाम्बुजरविर्शास्त्रार्थसम्बोधिनी।।
यत्कीर्तिः खलु दिक्षु विस्तृततरा चन्द्रोज्ज्वला शर्मदा।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।1।।

यस्याः शान्तिरनल्पकोपशमने धैर्यं वरं सौख्यकृत्।
नानाग्रन्थसुरत्नवृन्दरचितं सद्बोधिरत्नप्रदम् ।।
दुर्दान्तप्रतिवादिवादनिपुणा गणिनीपदालंकृता।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतांश्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।2।।

नाना तर्कपरायणा गुणयुता लावण्यपूर्णामुखा।
न्यायव्याकरणादिग्रन्थरचना नैपुण्यसिद्धा वरा।।
तीर्थोद्धारधुरन्धरा मतिवरा वात्सल्यरत्नाकरा।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।3।।

वैराग्यद्रुमवर्धने जलधरा साध्वी सभाग्रेसरा।
शिष्याणामुपकारकार्यकुशला सिद्धान्तपारंगता।।
सम्यग्दर्शन ज्ञानचक्रसहिता सद्ब्रह्मचर्यार्चिता।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।4।।

छोटेलाल इति श्रुतस्सुजनको यस्यास्ति धर्मोद्यतः।
गार्हस्थ्ये कुशला सतीगुणयुता माता मता मोहिनी।।
आर्या रत्नमती प्रसिद्धनाम्ना यज्जन्मदात्री सती।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।5।।

यन्नामस्मरणं प्रकाशकरणं बोधिं समाधिप्रदम् ।
भव्यानां सकलार्थसिद्धिसदनं संसारपापापहम् ।।
अज्ञानानलदाहशान्तिसलिलं यद्दर्शनं शर्मदं।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।6।।

जम्बूद्वीपकृतिः सुनिर्मितवती यस्या समालम्बने।
यस्याः प्रेरणया हि ज्योतिःप्रभा ज्ञानस्य संचारिणी।।
गणिनी ज्ञानमती सुभारतमणिः चारित्रचक्रेश्वरी।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।7।।

सम्प्रत्यस्ति न शान्तिसागरमुनिः चारित्रचक्रीगुरुः।
तद्वाचः शुभमासतेऽत्र गणिनीमातुः प्रयासेन च।।
या रत्नत्रयधारिणी श्रुतवरा तस्याः समालम्बने।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।8।।

अनुष्टुप छंद — ज्ञानमत्यार्यिका माता, जीयात् वर्ष शतं भुवि।
चन्दनामतिशिष्यायाः, पूर्यात् सर्वं मनोरथं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सविनय विनयांजलि समर्पित है

पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की पूर्ति पर आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव को जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में मना रहे हैं, यह जानकर मन में बहुत खुशी हुई। इसके साथ गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के बारे में क्या लिखूँ समझ में नहीं आता, फिर भी अल्पबुद्धि से दो शब्द लिखने का प्रयास कर रही हूँ।

माता के भी उपकार चुका सकते हैं।
दाता के भी उपकार चुका सकते हैं।।
पर करोड़ों जीवन में भी 'गुरु माँ',
तेरा उपकार चुका नहीं सकते हैं।।1।।

गुरु माँ ने जो भी दिया है, मुझको यही आधार है।
युगों-युगों तक मैं नहीं भूलूँगी, इनका यह उपकार है।।2।।

धरती तेरे पद को पाकर, बिखरा देती है चंदन।
पास तेरे जो भी आ जाता, उसका जीवन बनता कुंदन।
लोक शिखर पर चढ़ने का है, दिया जिन्होंने सहारा।
ऐसे गुरु माँ श्री ज्ञानमती जी को, बारम्बार वंदन है हमारा।।3।।

सन् 1965 में पूज्य माताजी श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली के दर्शनार्थ पधारी थीं। उस समय मेरा सौभाग्य था माताजी संघ का चातुर्मास हुआ, उसी समय से इनकी प्रेरणा से संघ के साथ जाने की इच्छा हुई। जब तक माताजी श्रवणबेलगोला में रहीं, इनके साथ में रहकर पठन-पाठन किया। हिन्दी भी इन्होंने सिखाया, मेरी मातृभाषा कन्नड़ थी। पूज्य गुरु माँ की सतत प्रेरणा से धर्ममार्ग पर लगी। आज उन्हीं के प्रेरणा से संयम के मार्ग में लगी हूँ। कर्नाटकी महिलाओं को भी धर्म के मार्ग पर लगाया, भगवान बाहुबली के चरणों में एक वर्ष तक रहीं। महिला-पुरुषों को और बच्चों को भी प्रेरणा दी। व्रत, उपवास, आहार कैसे देना चाहिए? पूजा कैसे करना चाहिए? ये सब इन्होंने ही सिखाया। उसी समय से इनके साथ में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज भी पूज्य माताजी को खूब याद करते हैं हर दिन। कर्नाटक की जैनसमाज आपको अभी भी भूली नहीं है, रोज एक बार सभी लोग आपकी बनाई हुई 'बारह भावना" कन्नड़ में पढ़ते हैं, आपके गुण गाते रहते हैं।

अन्त में पूज्य माताजी के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्यभक्तिपूर्वक बारम्बार वंदामि करते हुए अपनी विनयांजलि समर्पित करती हूँ।

-आर्यिका शिवमती

परोपकारिणी गुरु माता के उपकारों के प्रति मेरी स्मृतियाँ

कोटिक चन्दा ऊगवे, सूरज कोटि हजार।
सद्गुरु बिन संसार में, दिखे घोर अंधियार।।

अर्थात् यदि कदाचित् आकाश मण्डल पर करोड़ चन्द्र और हजार सूर्य उग जावें, तो भी सद्गुरु की देशना के अभाव में सम्पूर्ण जगत अंधकारमय ही दिखेगा क्योंकि गुरुरूपी सूर्य के बिना उस अज्ञान अंधकार का विनाश हो नहीं सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसा कि कहा भी है—

"गुरु के बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान के बिना भेद विज्ञान नहीं।"

और भी कहा है—

बिना गुरुभ्यो गुणनीरधिभ्यो,
जानाति तत्त्वं न विचक्षणोऽपि।
स्वकर्ण पूर्णोज्ज्वल लोचनोऽपि,
दीपं बिना पश्यति नान्धकारे।।

गुरुओं के बिना विद्वान् भी तत्त्व को नहीं जानता। सो ठीक ही है, क्योंकि अपने कानों तक लम्बे उज्ज्वल नेत्रों को धारण करने वाला मनुष्य भी अंधकार में दीपक के बिना पदार्थ को नहीं देख पाता है। अर्थात् गुरुओं के अवलम्बन बिना जब विद्वानों को तत्त्व का परिचय नहीं होता तब अल्पज्ञों को कैसे होगा?

"जिसके जीवन में गुरु नहीं, उनका जीवन भी शुरू नहीं।"

यह सूक्ति मुझ जैसी के अज्ञानान्धकारमय गर्तपूर्ण जीवन के लिए पूर्णरूपेण चरितार्थ बन गई।

चूँकि मेरी बाल्यजीवनरूपी पुष्पकलिका यदि परमोपकारिणी, जगतकल्याणी पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी जैसी गुरु माता के हाथों में पहुँचकर सुसंस्कार व सुशिक्षारूपी जल से सिंचित न होती, तो वह छोटी सी पुष्प कलिका मुरझाकर वहीं समाप्त हो जाती, अर्थात् इस संयमपथरूपी गुलशन में पल्लवित व सुसज्जित नहीं हो पाती।

सन् 1968 में जब मेरी उम्र साढ़े ग्यारह साल के करीब थी, तभी पूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का अपने आर्यिका संघ सहित सनावद से चातुर्मास पूर्ण कर विहार करती हुई बाँसवाड़ा नगरी में आगमन हुआ और प्रथम बार पूज्य माताजी के दर्शन प्राप्त कर मानों मेरा जीवन धन्य हो गया।

न मालूम अनायास ही पूज्य माताजी को देखकर मन इतना आकर्षित हुआ कि स्कूल जाना छोड़कर केवल माताजी के पास ही बैठने को मन उत्सुक होने लगा। उस समय मेरे छठवीं कक्षा की अर्द्धवार्षिक परीक्षा ही पूर्ण हुई थी। उस समय पूज्य माताजी का केवल तीन दिन का प्रवास ही मेरे जीवन के लिए वरदान बन गया। वहीं से पूज्य माताजी के साथ पैदल चलने की उत्सुकता से विहार में साथ चलने का संकल्प जुड़ गया। पूज्य माताजी का संघ अतिशय क्षेत्र अन्देश्वर पार्श्वनाथ पहुँचा। वहाँ पर पूज्य माताजी ने संघ सहित श्री पार्श्वनाथ प्रभु की चमत्कारी प्रतिमा के दर्शन कर आगे बागीदौरा गाँव के लिए विहार किया। बागीदौरा गाँव में पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर जी महाराज संघ सहित विराजमान थे। हम लोग भी पिताजी के साथ बागीदौरा माताजी के साथ-साथ में पहुँचे और पूज्य आचार्यश्री के दर्शन किये। वहाँ पर पूज्य माताजी का प्रवचन सुनकर पिताजी ने मुझे व छोटी बहन (नौ वर्षीय कनकलता) दोनों को पाँच वर्ष के लिए माताजी के सुपुर्द कर दिया। बस उसी समय पूज्य माताजी ने आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के चरणों में हमसे श्रीफल चढ़वाकर पाँच वर्ष के लिए ब्रह्मचर्यव्रत दिलाकर संस्कारों से बीजारोपण कर दिया तथा क्रम-क्रम से अध्ययन कराने का संकल्प लेकर ही मानों पढ़ाने का अथक परिश्रम माताजी ने मेरे लिए प्रारंभ कर दिया। उस समय पूज्य माताजी की संघस्थ पूज्य आर्यिका श्री जिनमती माताजी व पूज्य आर्यिका श्री आदिमती माताजी से भी पढ़ने का लाभ मुझे मिलता रहा और केवल तीन-चार वर्षों में विशारद व शास्त्री की परीक्षा दिलवाकर पूज्य माताजी ने मेरे जीवन को कृतार्थ कर दिया। जब माताजी संघ सहित पूज्य आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज के संघ में पहुँचीं तथा कुछ माह के उपरान्त पूज्य आचार्यश्री के संघ के साथ विहार करती हुईं पुनः बांसवाड़ा नगरी में एक माह प्रवास रहा, उस दौरान मुझसे बड़ी बहन मनोरमा जी को भी पूज्य माताजी की सद्प्रेरणा मिली, वह भी माताजी के साथ हो गईं, किन्तु जन्मदात्री माँ का दिल मोह के कारण विह्वल हो उठा।

आखिरकार छोटी बहन को समझा-बुझाकर घर में ले ही आई और उसे गृहस्थ मार्ग में फंसा दिया। गृहस्थ जीवन की हम दो बहनों को पूज्य माताजी की सद्प्रेरणा व अनुशासित संस्कार अनवरत मिले हैं और आज तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आशीर्वादरूप में प्राप्त हो रहे हैं। यह जीवन का महान सौभाग्य है। पूज्य माताजी के अनन्त-अनन्त उपकारों के प्रति हम चिरऋणी हैं। जन्म-जन्मान्तर तक भी उऋण होना कठिन है। पूज्य माताजी स्वाध्यायपूर्ण मंगलमय दीर्घ जीवन प्राप्त करें और हम पर मंगलमय शुभाशीर्वाद बना रहे, जिससे कि यह आर्यिकाव्रतरूप संयममार्ग निर्दोषरीत्या पालन करते हुए जीवन के क्षण पूर्ण हों और अंतिम समाधि की साधना का चरम लक्ष्य साहसप्रद बने यही शुभभावना है।

गुरोर्भक्तिःगुरोर्भक्तिः गुरुोर्भक्तिः सदास्तु मे।
सम्यक्त्वमेव संसार-वारणं मोक्ष कारणं।।

पूज्या गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षा स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में माताजी के शतायुरूप दीर्घ जीवन की मंगल कामना करते हुए चरणों में शत-शत वंदामि-वंदामि-वंदामि।

''तुम जीओ हजारों साल माता, जीओ हजारों साल।।

-आर्यिका कैलाशमती

विनयांजलि

माताजी का जीवन इस युग को एक अलौकिक देन है, निस्पृहता, निर्ममता, आत्मज्ञान, ज्ञान चारित्र तप और दर्शन में प्रीति आपकी निकट भव्यता सूचित करती है, आज विश्व कल्याण कर्त्री गणिनी आर्यिका के रूप में हमारे बीच उपस्थित हैं। आपका जीवन 'सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं। माध्यस्य भावं विपरीत वृत्तौ से समन्वित है तथा ज्ञान-ध्यान में अनुशासन है, केवल शरीर पर ही शासन नहीं है, मेरे जीवनोत्थान में आपका ज्ञान आपके द्वारा प्रदत्त प्रोत्साहन सदा सहयोगी रहा।

आपके गुणों का वर्णन जितना अधिक किया जाये, उतना ही कम है। आपकी लेखनी से जो छोटे से लेकर बड़े भारी ग्रंथों की टीकाओं को पढ़ने से भी आपके ज्ञान की पराकाष्ठा प्रकट होती है।

उसका अध्ययन कर भव्यप्राणी आत्मतत्व को प्राप्त हो, इन्हीं शुभ भावों के साथ पूज्य मातुश्री के चरणों में नमन। आप दीर्घायु, चिरायु, शतायु की कामना करते हुए विनयांजलि समर्पित करती हूँ।

-आर्यिका संयमश्री

स्वर्णिम संयम के समयोत्सव पर
''वंदनीय माँ ज्ञानमती''

कोटि मस्तक झुका, नित्य तुमको नमन।
कोटि कंठों से उचरे, माँ तुम स्तवन।।
कोटि उर में बसीं, ज्ञान तुम मात हो।
कोटि नयनों से झरता, गुरु स्तवन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(1)

ज्ञान की वंदन, जग का वंदन, वंदनीय माँ ज्ञानमती।
आज आपके स्वर्णिम दिन पर, शत-शत वंदन मैं करती।।

(2)

त्यागमूर्ति तुम विश्वमात तुम, जिनवाणी की हो आकार।
जैनधर्म की ध्वजा फहराने, छोड़ दिया माता का प्यार।।

(3)

वीर सिंधु से लेकर दीक्षा, बनीं आर्यिका नारी श्रेष्ठ।
गुणवानों से ग्रहण किये गुण, अतः आप हो गुण में श्रेष्ठ।।

(4)

सरस्वती की तनुजा माता, वंदनीय माँ तुम्हें प्रणाम।
स्वर्णिम संयम दिवस पे माता, स्वीकारो वंदन अविराम।।

इस स्वर्णिम संयम दिवस के शुभ अवसर पर वीरप्रभू से प्रार्थना है कि माताजी की आयु को प्रशस्त शताधिक संवत्सर प्रदान करें, उनका यशो विस्तार आकाश की ऊँचाई को स्पर्श कर महीतल को कृतार्थ करें।

अन्त में कोटि नमोस्तु अर्पित कर बार-बार नतमस्तक हो उनके परम निर्मल आशीष हेतु इच्छुक-

बा. ब्र. आर्यिका विनीतमती
(संघस्थ-गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी)

विनयांजलि

पूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी जितनी सरल स्वभावी, दृढ़ संयमी, प्रखर तपस्वी हैं, उतनी ही गंभीर, श्रुताराधक, प्रभावी उपदेशिका मर्मस्पर्शी सुप्रसिद्ध लेखिका भी हैं। आपकी कई कृति प्रकाशित हो चुकी हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन बाल्यावस्था से साहित्य जगत में व्यतीत हुआ। आपने ज्ञान चेतना के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व क्रांति ला दी है। आप वीर प्रभु के परमधर्म को जन-जन तक पहुँचाने वाली हैं। आप वर्तमान की प्रथम तीर्थउद्धारिका भी हैं। कई आकर्षक तीर्थों का निर्माण आपने अपने अथक प्रयास से कराया है, जो भारतवर्ष में आपकी छवि को प्रकाशित करते हैं। आपका जैसा नाम है 'ज्ञानमती' वास्तव में आप अपार ज्ञान की भण्डार हैं। आपके वैराग्य, प्रखर ज्ञान एवं तीर्थ निर्माणों ने जो परिचय दिया है, उसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है। मैंने माताजी का नाम सुना था, दर्शन करने के भाव काफी दिन से थे, पुण्ययोग से मैं श्री सम्मेदशिखर की यात्रा पर जा रही थी। बनारस में प्रवेश 6-1-2005 को हुआ, तो पता चला पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी विराजमान हैं। सुनकर मन गद्-गद हो गया। पहुँचकर दर्शन पाकर एवं उनकी सरलता एवं वात्सल्य को पाकर मन फूला न समाया, उनका शुभ आशीष पाकर ऐसा महसूस हुआ, जैसे कई जन्मों की बिछुड़ी हुई माँ मिल गई हों।

आपके वात्सल्य से मेरा रोम-रोम पुलकित हो गया। आपने अपने आत्मबल से मोक्षमार्ग को प्रशस्त किया एवं नवीन युवा बहिनों को इस मार्ग पर बढ़ने का साहस दिलाया है। मैं तो प्रभु से यही प्रार्थना करती हूँ कि माताजी की साधना सूर्य की तरह सारे जम्बूद्वीप में प्रकाशमान हो और भविष्य में आप अनन्त चतुष्टय को प्राप्त करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सौम्यता मृदुता सदाशय शीलता पावन तुम्हारी,
सौम्य वाणी सींचती है धर्म की मनुहार क्यारी।
क्या अतुल मृदु संयममय श्रमणी जीवन को उभारा,
हम सभी हर्षित हृदय से करते आज अभिनंदन तुम्हारा।।

पूज्य माताजी के चरणों में मेरा भक्ति भाव एवं विनयांजलि सहित वंदामि-वंदामि-वंदामि।

-आर्यिकारत्न विशाश्री, बुढ़ार (शहडोल)

विनयांजलि

अपने जीवन के लक्ष्य का साक्षात्कार एक बहुत बड़ी साधना है। जिन्होंने उसका साक्षात्कार कर लिया हो अर्थात् जिन्हें जीवन के लक्ष्य का बोध हो गया हो और बोध के साथ उस दिशा में जीवन का हर क्षण समर्पित कर दिया हो, उनके जीवन में समस्त विभूतियाँ स्वतः आ जाती हैं तथा इतिहास के पृष्ठों को सुनहले रंग से रंग देती है।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ऐसा ही एक व्यक्तित्व हैं। उनका विलक्षण आत्मविश्वास, प्रखरपौरुष एवं कार्यतत्परता रूप बाह्य व्यक्तित्व जितना प्रभावशाली है, उतना ही उनका आन्तरिक व्यक्तित्व प्रेरणादायी है। उनका हृदय विशाल और उदार है। इन्हीं गुणों ने उन्हें महत्ता के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित किया है। उनका जीवन बहुआयामी रहा है। साधना, शिक्षा, कला और यात्रा के साथ साहित्य सृजन एवं जैन स्थापत्य की दिशा में अनुपमेय कार्य किया है। इतनी अद्भुत सृजनशक्ति है कि जिसकी तुलना दूसरी उपलब्ध नहीं है। ऐसे सफल दीक्षा के 50 वर्ष की सम्पूर्ति पर संघ के द्वारा भाव-भक्तिपूर्ण "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" का मनाना संघ की कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है।

गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ के लिए सम्पूर्ण शुभाकांक्षा के साथ-

-आचार्य श्री चंदना जी, वीरायतन (राजगृही)

"माता तेरे उपकारों से मैं उऋण नहीं हो सकता हूँ"

विगत 50 वर्षों में धर्म के क्षेत्र में चहुँमुखी विकास हुआ। तेजी से मंदिर बढ़े, खूब प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हुईं, विपुल मात्रा में साहित्य का प्रकाशन हुआ, ज्ञान बढ़ा, चारित्रधारी बढ़े, उसी वृद्धि को करने में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का बहुत बड़ा योगदान रहा। कुंआरी कन्याएँ भी दीक्षा धारण कर सकती हैं, इसे स्वयं ने धारण करके दिखाया। संघर्ष झेलकर दीक्षा धारण की। आज अब कुंआरी कन्याओं के दीक्षा धारण करने में अवरोध नहीं है। युवा पीढ़ी द्रुतगति से दीक्षा धारण कर रही है। मार्ग पर चलना सरल है किन्तु मार्ग को बनाना कठिन है।

सन् 1967 का महावीर जयंती का दिन था, ज्ञात हुआ कि पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का संघ निकटवर्ती ग्राम बेड़ियाँ में आ चुका है। मैंने अपने मित्र श्री देवेन्द्र कुमार शाह को संघ की जानकारी लेने के लिए बेड़ियाँ जाने के लिए अनुरोध किया, उन्होंने जाकर संपूर्ण जानकारी मुझे दी। देवेन्द्र जी ने मेरे बारे में जानकारी माताजी को दे दी। चैत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुक्ला पूर्णिमा को संघ के आगमन की सूचना मैंने समाज को दी। समाज के स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकाएँ नगर के बाहर संघ की अगवानी के लिए बैंड-बाजे लेकर पहुँच गए। मैंने सोचा पहले पूजा कर लूँ, अन्यथा संघ आने के बाद पूजा नहीं हो पावेगी। श्रावकों के स्वागतार्थ पहुँचते ही पूज्य ज्ञानमती माताजी ने लोगों से पूछना प्रारंभ कर दिया कि ब्र. मोतीचंद कौन से हैं? लोगों ने कहा कि वे अभी आये नहीं हैं, आते ही होंगे। संघ का नगर के मध्य पदार्पण हो चुका था। मैंने जैसे ही संघ के समक्ष पहुंचकर नमस्कार किया, तभी सब लोग कहने लगे-माताजी ये ही ब्र. मोतीचंद हैं। माताजी ने एक बार दृष्टिपात करके आशीर्वाद प्रदान किया तथा रास्ते में ही परिचय पूछना प्रारंभ कर दिया। संघ मंदिरों के दर्शन करते हुए दि. जैन धर्मशाला पहुँचा। संघ मंच पर विराजमान हो गया। मैंने समाज के वरिष्ठ महानुभावों को साथ में लेकर श्रीफल चढ़ाते हुए मंगल प्रवचन प्रदान करने के लिए निवेदन किया। इस प्रकार विधिवत् निवेदन को देखकर माताजी मन ही मन बहुत प्रभावित हुईं। (यह बात मुझे बाद में माताजी ने स्वयं बताई)। प्रवचन सुनकर समाज के स्त्री-पुरुष अपने-अपने घर चले गये। मुझे माताजी ने रोक लिया तथा कुछ धार्मिक चर्चा करते हुए मुझे धीरे से संघ में रहने की प्रेरणा देना प्रथम दिवस ही प्रारंभ कर दिया। मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर क्या था सुबह-शाम वही चर्चा, संघ में रहने की प्रेरणा।

पूज्य माताजी ने अपने नाम के अनुसार वहाँ कार्य प्रारंभ कर दिया। विशाल शिक्षण-शिविर का आयोजन किया। स्त्री-पुरुष, युवक-युवती, बालक-बालिकाओं को खूब ज्ञानामृत का पान कराया। श्रवणबेलगोला में पूज्य आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी ने जैसा कहा था, वैसा ही अनुभव हुआ। ज्ञान का अपार भंडार देखा गया। प्रवचनों के माध्यम से भी सभी वय वाले लाभान्वित हो रहे थे। समाज के वरिष्ठ तथा युवा वर्ग ने वर्ष 1967 का चातुर्मास सनावद में ही करने के लिए कई बार निवेदन किया। मैं भी यही चाहता था कि ज्ञान की गंगा इस वर्ष यहीं प्रवाहित हो। संघ को सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र की यात्रा कराई। संघ में पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री जिनमती माताजी, आर्यिका श्री पद्मावती माताजी, आर्यिका श्री आदिमती माताजी, क्षुल्लिका श्रेष्ठमती माताजी तथा क्षुल्लिका श्री अभयमती माताजी ऐसे कुल 6 साध्वियाँ थीं। सिद्धवरकूट क्षेत्र दर्शन के उपरांत इंदौर जाकर चातुर्मास का निर्णय करने के लिए कहा। अतः संघ को सनावद से इंदौर ले गये। वहाँ से सनावद का एक प्रतिनिधिमण्डल मेरे साथ उदयपुर गया। वहाँ आचार्यश्री शिवसागर महाराज से सनावद में आर्यिका संघ का चातुर्मास कराने की स्वीकृति प्राप्त की। अनंतर संघ इंदौर से सनावद वापस आया। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की पूर्व रात्रि में विशाल जनसमुदाय के मध्य पूज्य माताजी ने चातुर्मास की स्थापना की। पूज्य माताजी ने पूरे चातुर्मासपर्यंत प्रेरणा प्रदान की-"मोतीचंद! अब घर में न रहकर संघ में रहो। जब ब्रह्मचर्यव्रत ले रखा है, तो व्यापार किसके लिए करने में समय गवां रहे हो?" अपने सर्राफे के व्यापार को, घर के आराम, सुख-सुविधाओं को छोड़कर संघ में कैसे रहना हो पावेगा।" यह सोचकर मैं हाँ नहीं कर पा रहा था। चातुर्मास में विविध प्रकार के कार्यक्रम हुए।

दीपावली पर चातुर्मास के पश्चात् माताजी की भावनानुसार सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरी की यात्रा करवाकर संघ को वापस सनावद लाये। पुनः माताजी ने कहा कि हमें आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज के संघ में राजस्थान पहुँचना है। सनावद से संघ विहार के पूर्व माताजी ने अंततोगत्वा संघ में रहने के लिए मुझसे हाँ करवा ही ली। फिर भी मेरी हिम्मत अपने माता-पिता से यह कहने की नहीं हुई कि अब मैं माताजी के संघ के साथ में जा रहा हूँ, संघ में ही रहूँगा। संघ इंदौर होकर बाँसवाड़ा (राज.) पहुँचा, मैं बीच से ही घर वापस आ गया। पुनः मन ही मन योजना बनाई। संघ में जाने की तैयारी की तथा यह कहकर घर से निकला कि मैं माताजी के दर्शन करने जा रहा हूँ। फिर भी यह नहीं कहा कि अब मैं संघ में ही रहूँगा। बाँसवाड़ा पहुँचकर फिर दो वर्ष तक घर वापस नहीं गया। आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज वैसे तो बहुत कड़ी वृत्ति वाले थे किन्तु उनका मुझे बहुत वात्सल्य मिला। वर्ष 1968 का चातुर्मास आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के साथ प्रतापगढ़ (राज.) में हुआ। समाज के महानुभावों का भी भरपूर प्रेम प्राप्त हुआ। घर की याद नहीं आने दी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संघ में रहकर अध्ययन के साथ माताजी के मन में जो तेरहद्वीप की विशाल रचना खुले मैदान पर बनवाने की थी, उसके विषय में भी आपस में विचार-विमर्श चलता रहा कि कहाँ बनाई जावे? कैसी बनाई जावे इत्यादि। माता-पिता ने प्रतापगढ़ आकर घर चलने के लिए कई बार आग्रह किया किन्तु तब मैंने स्पष्ट कह दिया कि "अब मैं संघ में ही रहूँगा। किसी विशेष धार्मिक कार्यक्रम में ही कभी आना हो पावेगा।" चातुर्मास के पश्चात् संघ शांतिवीरनगर श्री महावीर जी पहुँचा। वहाँ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फाल्गुन शुक्ला में होना था, किन्तु उससे पूर्व ही आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज को थोड़ा सा बुखार आने से अचानक समाधिमरण हो गया। नये आचार्य के रूप में मुनि श्री धर्मसागर जी को चतुर्विध संघ ने अधिष्ठापित किया। वे चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के तृतीय पट्टाधीश बने। शांतिवीरनगर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के पश्चात् संघ का विहार राजस्थान में ही होता रहा। 1969 का चातुर्मास जयपुर में, 1970 का चातुर्मास टोंक में तथा 1971 का चातुर्मास अजमेर में हुआ। इन चातुर्मासों में पहली बार दीक्षाएँ, समाधि आदि देखने का अवसर प्राप्त हुआ।

अजमेर चतुर्मास के उपरांत पूज्य माताजी ने आचार्यसंघ से अलग विहार किया। तेरहद्वीप रचना बनाने की दुरुहता को देखते हुए केवल जम्बूद्वीप रचना बनाने का आपस में निर्णय हुआ। इसी मध्य दिल्ली जैन समाज के वरिष्ठ महानुभावों ने पूज्य माताजी से इस जम्बूद्वीप रचना को देश की राजधानी दिल्ली में बनवाने के लिए निवेदन किया। विचार-विमर्श के पश्चात् माताजी ने दिल्ली की ओर विहार करने की घोषणा की। संघ राजस्थान से दिल्ली आ गया। सन् 1972 का चातुर्मास पहाड़ी धीरज-दिल्ली में हुआ। 1967 से 1972 तक माताजी अध्ययन कराती रहीं तथा जैनदर्शन के महान ग्रंथ अष्टसहस्री का अनुवाद पूरा कर दिया। उसका प्रकाशन भी अजमेर से प्रारंभ हो गया। सन् 1970 से साहित्य प्रकाशन का एक नया अनुभव प्राप्त हुआ। अष्टसहस्री तथा कुछ छोटी पुस्तकों के प्रकाशन में प्रूफरीडिंग करने का भी अभ्यास हुआ।

सन् 1967 के सनावद चातुर्मास के पश्चात् धीरे-धीरे संघ में त्यागियों तथा ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों की अभिवृद्धि होने लगी। पूज्य माताजी के दिल्ली आगमन के पश्चात् जम्बूद्वीप रचना निर्माण के लिए "दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान" नाम से एक रजिस्टर्ड समिति का गठन हुआ तथा साहित्य प्रकाशन के लिए "वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला" की स्थापना की गई। देशव्यापी प्रचार-प्रसार के लिए सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया गया। दिल्ली जैन समाज माताजी के अगाध ज्ञान तथा क्रियाकलापों से विशेष प्रभावित हुई। केवल दिल्ली ही नहीं, पूरे देश में माताजी के कार्यों की चर्चा होने लगी। श्रीमान-धीमान माताजी के नजदीक आने में अपना सौभाग्य समझने लगे। उन दिनों में पूज्य माताजी के क्षुल्लिका दीक्षागुरु आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज भी दिल्ली में विराजमान थे, वे भी अपनी शिष्या के महान कार्यों से अत्यधिक प्रसन्न होते थे। वे माताजी की शिष्यमंडली को देखकर बड़ा कौतुक करते थे। एक दिन तो आचार्यश्री ने पुलकित होकर कह दिया कि ज्ञानमती जी महिला होकर इतने बड़े-बड़े कार्य कर रही हैं, पुरुष होतीं तो न जाने और कितने महान कार्य कर लेतीं।

पूज्य माताजी ने जो भी कार्य करने का सोचा, उसके बारे में प्रथम विचार-विमर्श मुझे, रवीन्द्र कुमार, कु. माधुरी (बाद में आर्यिका चंदनामती माताजी) को बैठाकर किया। विचार-विमर्श इसलिए नहीं करती हैं कि यह कार्य करना है या नहीं, बल्कि इसलिए करती हैं कि इस कार्य को कैसे खूबसूरती के साथ किया जा सकता है? निर्णय होने के पश्चात् उस कार्य की संपूर्ति के लिए तीनों लोग अपने-अपने पद के अनुसार कार्य करने-कराने में जुट जाते हैं तथा आवश्यकतानुसार समिति के कार्यकर्ताओं तथा समाज का सहयोग लेकर कार्य को आकर्षक रूप से पूरा किया जाता है। दूसरी बात यह है कि हमेशा माताजी ने अपनी क्षमता को देखकर ही कार्यों के बारे में सोचा। बहुत भारी बजट के काम नहीं कराये तथा बहुत लम्बे समय में पूरे होने वाले काम भी नहीं बताये। कार्यों की थोड़ी-थोड़ी योजना बनाकर पूरे करवाए। आज इसलिए माताजी द्वारा प्रेरित कार्य प्रशंसा को प्राप्त हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहाँ तक साहित्य लेखन की बात है, वह भी विधिवत् योजना बनाकर ग्रंथ लिखे। दीक्षा के प्रारंभिक वर्षों में पहले मूलग्रंथों का गहन अध्ययन किया, शिष्यों को अध्ययन कराया, उसके पश्चात् लेखनी प्रारंभ की। यही कारण रहा कि पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य में किसी भी प्रकार से सैद्धान्तिक भूल आज तक कोई भी विद्वान नहीं दिखा सका। माताजी ने प्रारंभ में पद्य रूप में लेखन किया, बाद में गद्य में लिखा। जितना पद्यात्मक लेखन किया, वह अधिकतम भक्तिपरक रहा। प्रारंभ में भगवान बाहुबली की 111 पद्यों में रचना लिखी, वह अत्यन्त भावपूर्ण रचना बनी और जो लेखनी सन् 1955 से प्रारंभ की, वह अब तक अनवरत रूप से चलती चली जा रही है। लेखन के सारे रेकार्ड तोड़ दिये। भगवान महावीर के पश्चात् विगत 2500 वर्षों में जो नहीं लिखा गया, उसे लिखा। लेखन में माताजी को किसी अन्य के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ी और न ही माताजी ने किसी की नकल की। न किसी प्रकार का अनुपयोगी लेखन किया। उनके द्वारा लिखी गई एक छोटी सी पुस्तक 'जीवनदान' नाम के उपन्यास पर भी समीक्षा लिखी जावे, तो वह समीक्षा भी वृहत्काय हो सकती है। जिन विधान पूजाओं के केवल नाममात्र शास्त्रों में मिलते थे, उनकी विषय सामग्री अपने मन से आगम परिप्रेक्ष में निर्धारित करके भावपूर्ण पूजाएँ लिखी, जिससे पूरे देश में भक्ति की भागीरथी प्रवाहित हो रही है। जिन्होंने कभी पूजा नहीं की, वे भी 6-6, 8-8 घंटे बैठकर भक्ति में सराबोर होकर आनंद का अनुभव करते हैं। समयसार ग्रंथ की आचार्य अमृतचंद्र तथा आचार्य जयसेन की संस्कृत टीकाओं का, जो माताजी ने हिन्दी अनुवाद किया तथा उसमें जो भावार्थ-विशेषार्थ दिये, उससे समयसार पर व्याप्त समस्त भ्रांतियाँ दूर हो गईं। ग्रंथ लेखन में माताजी को भी थकान का अनुभव नहीं होता, प्रत्युत् लेखन नहीं करने से थकान लगने लगती है।

माताजी ज्ञान की अगाध सागर हैं। लिखते समय अथवा प्रवचन करते समय कभी सोचने की या रुकने की आवश्यकता नहीं रहती। नदी की तरह अविरल प्रवाह रहता है। प्रवचनों में सदैव उदाहरण के रूप में प्रथमानुयोग की कथाएँ ही सुनाती हैं। लेखन तथा प्रवचन में चारों अनुयोगों का समावेश रहता है। पूज्य माताजी को चारों अनुयोगों का समान रूप से तलस्पर्शी ज्ञान है। सर्वत्र लेखन में पूर्वाचार्य प्रणीत ग्रंथों के विषय को ही उद्धृत किया। विषय कौन से ग्रंथ से लिया है, इसे अवश्य उल्लिखित किया। माताजी के ज्ञान के अद्भुत क्षयोपशम को देखते हुए कहा जा सकता है कि "माताजी सरस्वती की प्रतिमूर्ति हैं"। माताजी ने जितना लेखन किया है, जितने तीर्थों का विकास कराया है, उससे जैन धर्म की महिमा पूरे विश्व में व्याप्त हुई है।

पूज्य माताजी ने शिष्यों के सृजन में अपनी पूरी शक्ति लगाई। कई शिष्यों के परिजनों की कोपभाजन भी बनीं, किन्तु आज वे ही परिजन अपने परिवार के सदस्य को त्याग में अग्रणी देखकर हर्षित तथा गौरवान्वित होते देखे जा रहे हैं। माताजी ने केवल शिष्यों का सृजन ही नहीं किया प्रत्युत् उन्हें त्याग तथा ज्ञान की ऊँचाईयों तक पहुँचाया। अपने से उच्च पद पर अधिष्ठापित किया।

पूज्य माताजी ने अपने जीवन में सदैव जोड़ने का/समन्वय का कार्य किया। चाहे संघ हो, समाज सभी में सामंजस्य बैठाने का पूरी शक्ति से प्रयास किया और सफलता भी मिली। अनेक नगरों की समाजों में वर्षों से चले आ रहे वैमनस्य को समाप्त करवाकर गले से मिलवा दिया किन्तु धार्मिक विषयों में आगम से हटकर कभी सामंजस्य नहीं किया।

सन् 1982 से 1985 तक जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति प्रवर्तन का भार मुझ पर डालकर माताजी ने बड़ा भारी उपकार किया। उस प्रवर्तन में सैकड़ों तीर्थ, हजारों जिनमंदिरों के दर्शन, देश की सांस्कृतिक, पुरातात्विक तथा प्राकृतिक दृश्यों को देखने का लाभ प्राप्त हुआ। लाखों धर्मात्माओं, श्रेष्ठियों, विद्वानों, कार्यकर्ताओं से भेंट हुई। वह एक अमूल्य अवसर था क्योंकि व्यक्ति कितना भी पैसा खर्च करके इतना लाभ प्राप्त नहीं कर सकता। प्रत्येक नगर में जाने पर समाज ने भावभीना स्वागत किया, सम्मान दिया तथा प्रवचन भी सुने। हजारों-हजार जैनेतरों ने प्रवचनों से प्रभावित होकर शराब, अंडे, मांस, जुएँ आदि व्यसनों का त्याग किया।

सन् 1972 के बाद से आज पूज्य माताजी की छत्रछाया में बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न हुए, जिनका विवरण इस ग्रंथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में तथा अन्यत्र भी प्रकाशित हुआ है। उन सबमें मुझे भी अपनी शक्ति का योगदान करने का पुण्य अवसर प्राप्त हुआ, जिसके ऋण को कभी चुकाया नहीं जा सकता। अंत में ऐसी दृढ़संकल्पी, अदम्य उत्साह की धनी ऐतिहासिक साध्वी, चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की निर्दोष परम्परा को अक्षुण्णरूप से प्रवाहित करने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा की 50 वर्षों की संपूर्ति पर आयोजित दीक्षा स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर शत-शत बार नमन करके उनके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना करते हुए उनके अहर्निश पुनीत आशीर्वाद की अभिलाषा व्यक्त करते हुए पुनः-पुनः युगल चरणों में वंदामि करता हूँ।

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

शुभ संदेश

पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ग्रंथ संपादन, संकलन, अनुवाद कला में निपुण हैं। साधना के माध्यम से धर्म की महती प्रभावना करते हुए आदर्श कार्य किया है।

अगाध ज्ञान की ज्योती, विद्या भूषण, विदुषी पूज्य गणिनी श्री १०५ ज्ञानमती माताजी की यह आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव सम्पूर्ण यश-गौरव के साथ सफल हो यही मंगल कामना।

-स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक पट्टाचार्य स्वामी, श्रवणबेलगोला

MY REGARDS

We are extremely happy to know about the Aryika Deeksha Golden Anniversary Celebration of most Rev. Aryika Shri Shri Shri Gyanmati Mataji, Shall be held from 14th through 16th of April 2006 at 'Jamboodweep', Hastinapur, U.P.

Most Rev. Aryika Shri Shri Shri Gyanmati Mataji is one of the most Senior Aryikas of this nation. Rev. Shri Shri Shri Mataji's contribution to the field of Jaina religious research wroks is worth remembering for ever. Being an author of hundreds of books, religious research works and devotional 'Stutees' rev. Shri Shri Mataji has done the renaisence work of this holy faith Viz. Jainism. Her Guidance, Inspiration and blessings for the renovation of hundreds of ancient Jain temples are worth mentioning. Celebration of 'Deeksha Swarna Jayanti Mahotsav" of such a Rev. H.H. Shri Shri Shri Mataji is a right step of Digambar Jain Samaj of this nation.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

We do pray lord supreme Bhagwan Shri 1008 Parshwanatha Swami and Divine mother Shri Padmavati Devi for the grand success of the ceremony and also for long spiritual life of Rev. Shri Shri Shri Mataji.

-Shri Devendrakeerty Bhattaaraka Pattaacharyavarya,
Hombuja

विनयांजलि

वर्तमान की सभी आर्यिकाओं में प्राचीन दीक्षित बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों को वैशाख कृ. 2, दिनाँक 15 अप्रैल 2006 को पूर्ण कर रही हैं। अत: इस अवसर पर त्रिदिवसीय आयोजन के साथ उनका "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" 14, 15, 16 अप्रैल 2006 को विशाल स्तर पर आयोजित किया जा रहा है। इस महोत्सव की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भगवान महावीर के पश्चात् 2600 वर्षों में कभी किसी दिगम्बर जैन साध्वी द्वारा इतने ग्रंथों का लेखन नहीं हुआ था। लेकिन पूज्य माताजी ने संस्कृत, हिन्दी, मराठी, कन्नड़, भाषाओं में 200 से भी अधिक ग्रंथों की रचना करके इस युग में एक नया इतिहास बनाया है।

माताजी की प्रेरणा से अनेक तीर्थोद्धार और विकास का कार्य सम्पन्न हुआ है। जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु माताजी ने जो दायित्व ग्रहण किया है, वह निश्चित ही महान एवं प्रशंसनीय कार्य है।

माताजी की प्रेरणा से ऐसे ही शुभकार्य होते रहें इसी कामना के साथ माताजी के मंगलमय एवं स्वस्थ जीवन के लिए सर्वोदयी व्यक्तित्व और अधिक बिखरने तथा भविष्य में और भी पुलकित एवं तेजस्वी होने के लिए हमारी मंगल कामना है।

-स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन भट्टारक महास्वामी, कोल्हापुर

विनयांजलि

84 लाख योनियों व चार गतियों में मानवयोनि या मनुष्यगति मिलना बहुत दुर्लभ है। मनुष्य गति मिल जाये, तो जैन कुल, सद्गृहस्थ, श्रावक के व्रत ग्रहण कर पाना दुर्लभ है और मोक्षप्राप्ति के लिए आवश्यक महाव्रत अंगीकार करना तो अति दुर्लभ है। मनुष्यपर्याय में जहाँ मुनिपद धारण करना सर्वोत्कृष्ट अवस्था है, वहीं स्त्रीपर्याय में आर्यिकापद ग्रहण करना नारी जीवन की सर्वोत्कृष्ट सफलता है। इस पंचमकाल में चारित्र चक्रवर्ती परमपूज्य आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज ने जहाँ एक बार पुन: महाव्रतों व मुनिधर्म, श्रमण परम्परा की प्रतिष्ठा की, वहीं उन्होंने स्त्रियों को भी मुक्ति मार्ग पर आगे बढ़ाने हेतु आर्यिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीक्षाएँ भी प्रदान की। कुछ महिलाओं ने जहाँ वैधव्य की अवस्था के कारण पुनः कीच में उलझना उचित नहीं समझा तथा आर्यिका दीक्षा ग्रहण की, वहीं उत्तरप्रदेश की टिकैतनगर (बाराबंकी) में श्री छोटेलाल जी के यहाँ जन्मी 'मैना' ने भोगों की कीचड़ में फंसना उचित नहीं समझा तथा स्वयं बालब्रह्मचारिणी रहते हुए आर्यिका दीक्षा अंगीकार कर नारी समाज के पथ प्रदर्शन में अग्रणी बनीं।

युग की आदि में प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की सुपुत्रियों ब्राह्मी, सुन्दरी ने अंक और लिपि विद्या सीखकर जहाँ नारी समाज को शिक्षा का अधिकार दिलाया, वहीं आर्यिका दीक्षा लेकर नारी शक्ति के हेतु धर्ममार्ग को खोला। सीता, चंदनबाला, चेलना, कालल देवी, दान चिंतामणि अतिमब्बे, रविन्दे विक्का जिसने षट्खण्डागम की टीका, धवल ग्रंथ की हस्तलिखित प्रतिलिपि आचार्य शुभचन्द्र को भेंट की थी आदि अनेक ऐतिहासिक महिलाओं की भांति वर्तमान में पूज्य ज्ञानमती माताजी ने उसी प्रकार आर्यिका के रूप में साध्वी जगत को गौरवान्वित किया है।

आर्यिका की चर्या का भलीभांति निर्वहन करते हुए पूज्य माताजी ने स्वयं गंभीर स्वाध्याय किया तथा सागर में से मोती निकालकर आगमोक्त आधार पर चारों अनुयोगों के ग्रंथों की रचना भी प्रारंभ की और एक बार जो लेखनी चली, तो ऐसी चली कि वह अभी भी अबाध गति से चल रही है और लगभग 200 ग्रंथों का सृजन पूज्य माताजी द्वारा हो चुका है।

"दिगम्बर मुनि" ग्रंथ में जहाँ उन्होंने शास्त्रोक्त रूप से मुनिधर्म का वर्णन किया, वहीं "आर्यिका" पुस्तक लिखकर आगम के आधार पर सिद्ध किया कि आर्यिका श्राविका नहीं है अपितु उपचार से महाव्रती ही हैं। चार प्रकार के पात्रों में मुनि के बाद आर्यिका को ही स्थान दिया है तथा उसे उपचार से महाव्रती कहा है, जो उचित ही है।

जम्बूद्वीप की रचना हस्तिनापुर में करवाकर पूज्य माताजी ने जहाँ प्राचीन तीर्थ को नवरूप देकर उसे विश्वप्रसिद्ध पर्यटक स्थल बना दिया, वहीं अयोध्या, प्रयाग, कुण्डलपुर (भगवान महावीर की जन्मस्थली), मांगीतुंगी आदि क्षेत्रों का जीर्णोद्धार करके उनका कायाकल्प कर दिया।

उनकी गृहस्थावस्था की माँ मोहिनी देवी ने भी इसी मार्ग का अनुसरण कर "आर्यिका रत्नमती" का नाम ग्रहण किया, वहीं इनकी बहनों ने 'आर्यिका अभयमती' व 'आर्यिका चंदनामती' बनकर उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग का अनुसरण किया तथा नारी समाज को यह संदेश दिया कि भोगवाद की संस्कृति से नहीं अपितु त्यागमार्ग की संस्कृति से ही जीवन सफल हो सकता है। ऐसी विदुषी, चारित्र की धनी, ज्ञान की धरोहर पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी अपनी दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं, यह बड़े ही पुण्योदय की बात है। सौभाग्य के इस अवसर पर उनको सादर 'वंदामि' तथा ये भावना कि वे इसी प्रकार रत्नत्रय पथ पर अग्रसर होते हुए परमपद की अनुगामिनी बनें।

इति भद्रं भूयात्, वर्धताम् जिन शासनम्।

–स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी, मूडबिद्री जैन मठ

विनयांजलि

परम्परा के प्रमुख पट्टाचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से दीक्षित गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका हैं, इसमें कोई शक नहीं। माताजी का लेखन छोटी-छोटी नीतिपरक शिक्षाप्रद पुस्तकों से लेकर जिनवाणी के चारों अनुयोगों के विशाल और गूढ़ ग्रंथों तक चला है, चल रहा है। 200 से अधिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उनमें गूढ़ ग्रंथों की टीकाएं, अनुवाद, पद्य, पद्यानुवाद और मौलिक रचनाएं भी हैं।

उनका हस्तिनापुर, अयोध्या, प्रयाग तीर्थ, कुण्डलपुर आदि क्षेत्रों का कार्य भी शाश्वत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। वहाँ ऐसे ऐतिहासिक निर्माण एवं विकास कार्य हुए हैं, जिसे आने वाली पीढ़ियाँ सदियों तक याद करेंगी।

अभी भावी पीढ़ियों के लिए उनका अखंड कार्य चल रहा है। इसके वास्तव मैं उनके लिए सुदीर्घायु आरोग्य की भावना भा रहा हूँ। माताजी को सविनय वंदामि। इति भद्रं भूयात्।

-स्वस्ति श्री जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी, कोल्हापुर जैन मठ

विनयांजलि

परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का अर्धशती पूर्व पुनर्जन्म (आचार्य 108 श्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा लेकर) निज-पर कल्याण हेतु त्यागमय जीवन सभी को अनुकरणीय है।

भारत भर में पैदलयात्रा कर जो धर्म का प्रचार-प्रसार किया। तीन रथों के द्वारा जन-जागरण किया, प्रशंसनीय है। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप धर्मकेन्द्र (दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान), अयोध्या में त्रिकाल चौबीसी जिनालय एवं राजकीय उद्यान में जिनबिंब स्थापना, देशभर में अनेकानेक जिनालयों, तीर्थक्षेत्रों का जीर्णोद्धार वंदनीय है।

विद्वानों को आमंत्रित कर जिनवाणी संवर्द्धन, लेखन, मनन-चिंतन, प्रचार-प्रसार करने में जो अद्वितीय प्रभावना का कार्य किया है। इससे प्रमाणित होता है कि आपका जीवन बीसवीं सदी की महानतम उपलब्धि है।

आपके संबंध में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है। अंत में विनम्र नमोस्तु सहित कि उनका स्वस्थ चिंतन, सानिध्य सभी को बहुत समय तक प्राप्त हो, उनकी जनकल्याणी भावना, वाणी, विचार एवं चिन्तन से विश्वकल्याण हो, यही मेरी कामना है।

-स्वस्तिश्री भानुकीर्ति भट्टारक स्वामी, कम्बदहल्ली (कर्नाटक) जैन मठ

VINAYANJALI

'Param Poojya Hon'ble Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji Aryika Diksha Golden Anniversary' is being organized, this news is very pleasant for all of us. The world is progressing in all the fields like Science and Technology & People are rushing for mortal things but they have no peace of mind and happiness and so the world is on the verge of destruction. Param Pujya Mataji has done tremendous work in philosophical field and has given the world a golden way of how to live the life towards the completion of the eternal aim.

I wish to Lord Jinendra for the long, happy & successful life of Pujya Mataji.

-Bhattarak Vrishabhsen Swami, Lakkavalli (Karnataka)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"नहि कृत मुपकारं साधवो विस्मरन्ति"

मेरा परम सौभाग्य है कि मेरे जीवन में ऐसा अवसर आया था कि पाँच साल तक परम पूज्य माताजी का सानिध्य प्राप्त कर, उनके आशीर्वाद एवं वात्सल्यता में विद्याध्ययन करने का अनुभव बहुत अच्छे से प्राप्त हुआ। मैंने भी उनके आशीर्वाद एवं वात्सल्यता को अच्छे से सदुपयोग कर लिया था। आज श्री क्षेत्र अरिहन्तगिरि में भट्टारक रूप में बैठकर श्री क्षेत्र की उन्नति एवं आचार्य श्री अकलंक विद्यापीठ में ढाई सौ बच्चों को रखकर आश्रम को चला रहे हैं, तो इसमें भी माताजी का आशीर्वाद है एवं उनके द्वारा सिखाई गई विद्या और संयम भी कारण है। ऐसे माताजी के उपकारों को मैं जन्म-जन्मान्तर तक भूल नहीं सकता हूँ। गुरुओं का सानिध्य प्राप्त कर होना भी पूर्व जन्म का पुण्य फल है।

"पुण्ये किं वा दुरासदय"

पुण्योदय के होने पर कौन सा वस्तु दुष्प्राप्य है, कुछ भी नहीं।

जीवन में गुरुओं का सानिध्य प्राप्त होना अति आवश्यक है।

कहावत है—"जिनके जीवन में गुरु नहीं, उनका जीवन शुरू नहीं।"

प्रत्येक जीव जन्म लेने से जीवन का प्रारंभ नहीं होता। जीवन को सार्थकता तब प्रारंभ होगी, जब उनके जीवन में गुरुओं का समागम एवं सानिध्य प्राप्त होकर उनके द्वारा संयम का बीज लगाये जाये।

माताजी का स्वभाव—मैंने अपने जीवन में अनेक साधुओं का समागम किया है किन्तु माताजी जैसी वात्सल्य हृदयी, चारित्र में अटूट उदारता को और कहीं भी नहीं देखा।

"वक्त्रं वक्ति हि मानसम्"

मुख की आकृति मन के भाव को प्रकट कर देती है। माताजी के अन्तरंग में हमेशा ऐसी भावना रहती है कि हर एक जीव सुख शांति में रहे, उनका दुःख दूर हो, वे धर्म मार्ग पर चल कर अपनी आत्मा को समझें और शीघ्रता से कर्म को क्षयकर मोक्ष को प्राप्त कर लें।

माताजी जितना स्व-कल्याणार्थ ध्यान रखती हैं, उससे भी ज्यादा पर-कल्याण के प्रति हमेशा चिन्तवन भी करती हैं, उनके ऐसे विचार को देखते हुए एवं मैंने पढ़ा एवं गुरुओं से सुना भी है कि जो व्यक्ति पर कल्याण का चिन्तवन करता है। उनकी आत्मा निश्चितरूपेन तीर्थंकर प्रकृति को प्राप्त कर धर्मतीर्थ को चलायेंगे। आचार्यों का कहना भी है कि—

"इव्यूहेन विरक्तोऽभूद् गव्यधीनं हि मानसम्"

मन का विचार आगे होने वाली शुभाशुभ अवस्था के अनुसार होता है।

इस युक्ति से स्पष्ट होता है कि आगे यह जीव (माताजी का) तीर्थंकर प्रकृति को प्राप्त करेगा।

गुरु की भक्ति से फल—गुरु के प्रति जो भक्ति श्रद्धा है, वह निश्चित रूप में मुक्ति का साधन बनेगा, यानि सुख की सोपान बनेगा। महापुरुषों का कहना है कि—

"ध्यान मूलं गुरौ मूर्तिः" गुरु की मूर्ति ध्यान का मूल है।

"पूजा मूलं गुरु पद्म" गुरु के चरण पूजा का मूल है।

"मंत्र मूले गुरु वाक्यं" गुरु की वाणी-मंत्र का मूल है।

"मोक्ष मूलं गुरु कृपा" गुरु कृपा मोक्ष का मूल है अर्थात् गुरु की कृपा से मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान—'विद्या लाभो गुरोर्वशात्'' विद्या की प्राप्ति गुरु से ही मिलती है। कुछ गुरुओं के पास जीने का ज्ञान मिलता है, तो माताजी के पास जिंदा रहने का ज्ञान मिलता है।

हमने माताजी के पास एक विशेषता देखी है कि माताजी कभी भी ज्ञान के पीछे नहीं दौड़ीं, बल्कि ज्ञान माताजी के पीछे-पीछे दौड़ता आया है। इसलिए माताजी ने उसे संभालकर हम सबको ग्रंथों के माध्यम से प्रदान किया और कर रही हैं। वे सामान्य पुत्री नहीं हैं वे सरस्वती पुत्री हैं।

प्रवचन—माताजी के प्रवचन में हमने एक बात देखी है कि माताजी कभी भी काल्पनिक कथा या विषयों को नहीं सुनाती हैं। वे हमेशा वास्तविक आगमयुक्त पौराणिक कथा एवं विषयों को सुनाती हैं। उनके अंदर इतना क्षयोपशम है कि कोई भी आकर कभी भी पूछे, तो तुरंत उत्तर देती हैं। कौन से ग्रंथ में, कौन से पेज में कौन सी लाइन में वह विषय है, उसे तुरंत प्रमाण के साथ बताती हैं। वास्तव में ज्ञान की माता हैं। जिसमें ज्ञान है, मति (बुद्धि) में ज्ञान है इसलिए माताजी का नाम 'ज्ञानमती' है।

वात्सल्य—माताजी वास्तव में वात्सल्य की मूर्ति हैं। जो व्यक्ति माताजी के पास रहते हैं, वे ही उस अनुभव को प्राप्त कर सकते हैं। हमारे जीवन में तो हमारे लिए जितना वात्सल्य माताजी से प्राप्त हुआ, उतना हमारे जननी माँ से भी नहीं मिला। माताजी के वात्सल्यता में बहुत कुछ वास्तविकता छिपी रहती है।

प्रतिभा—वास्तव में माताजी सहजगम्य प्रतिभा की धनी हैं। उनकी प्रतिभा का मूल्यांकन करना सूर्य के सामने दीपक दिखाने जैसा है। वे आदर्श जीवन की प्रेरणास्रोत हैं। अनुशासन और सरलता की प्रतिमूर्ति हैं। विलक्षण प्रतिभा की धनी हैं। अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी हैं, कर्मठ कर्मयोगी युग विदुषी हैं। उदार हृदयांगिणी हैं।

अब माताजी की दीक्षा के 50 साल पूरे हो रहे हैं। उनके इस 50 साल के संयमरूपी जीवन के आदर्श को सामान्य (गौरव ग्रंथ को) पेपर में नहीं छापना चाहिए। उसे स्वर्णाक्षर में खोदना चाहिए। तब ही स्वर्ण जयंती महोत्सव की सार्थकता बनेगी क्योंकि उनकी प्रतिभा, गौरव, प्रभावना, आदर्श हमेशा युग-युग तक शाश्वत रहना चाहिए। इसी भावना के साथ उनके चरणों में शत-शत प्रणाम करते हुए अभिनंदन करते हैं।

-स्वस्ति श्री धवलकीर्ति भट्टारक स्वामी, अरिहंतगिरी जैन मठ

विनयांजलि

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के शुभ अवसर पर स्वस्ति श्री भट्टाकलंक स्वामी की शुभकामनाएं। श्री माताजी ने जम्बूद्वीप का निर्माण करके जैन धर्म पर बहुत बड़ा उपकार किया है। माताजी का मार्गदर्शन जैन समाज के लिए आवश्यक है। श्री ज्ञानमती माताजी विश्व को ज्ञानामृत पान कराने वाली माता हैं।

-स्वस्ति श्री भट्टाकलंक स्वामी,
सोंडा (कर्नाटक)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानमेरु श्री ज्ञानमती माताजी

जैन वाङ्मय में जैनाचार्यों की ग्रंथ सृजन सेवा लोक विश्रुत है। हजारों वर्षों की अविच्छिन्न धारा में पूज्य भगवन्तों का योगदान अविस्मरणीय है। लेकिन वर्तमान युग में आर्यिका परम्परा में श्री ज्ञानमती माताजी का योगदान अनुपमेय है। इसे हम युग की देन कह सकते हैं क्योंकि इससे पूर्व कई सदियाँ भी ऐसा योगदान नहीं दे सकी हैं। विशेषकर पूज्य श्री माताजी में अनूठी प्रतिभा के साथ सिद्धहस्थ लेखनकला और कवियित्री की अनुपम कला-कौशल स्वयंमेव सम्पन्न है। न्याय, सिद्धान्त, आगम और दर्शन शास्त्रों की विशेष वेत्ता के रूप में गणिनी अग्रणी भी हैं।

पूज्या आर्यिका माताओं ने व्रत, त्याग-तपस्या के साथ धर्म प्रभावना का महत्वपूर्ण परिचय समाज को दिया है। वर्तमान में ग्रंथ संरक्षण, ग्रंथ रचना, मंदिर निर्माण, स्थापत्यकला जैसे स्थाई प्रबुद्ध संस्कृति निर्माण में श्री ज्ञानमती माताजी अग्रणी हैं। फलस्वरूप आज इनके निर्देशन में अनेकों संस्थान, क्षेत्र, समाज, निर्मित हैं। इन सभी स्थानों में नया आयाम, नयी रूप-रेखा और आदर्श भूमिका माताजी से ही प्राप्त हुई है। अब तक हस्तिनापुर विभूति को एक विस्मृति के रूप में इतिहास के पन्नों में पलटा जाता था लेकिन माताजी की शोधदृष्टि वर्तमान में हस्तिनापुर की काया पलटाने की ओर पड़ी। वो स्मृतियाँ अब अविस्मरणीय बन गई हैं। अयोध्या, प्रभासगिरी, नालंदा-कुण्डलपुर, काशी-बनारस की धरती में माताजी के पग पड़ने से वहाँ के इतिहास फिर से अपनी यादगार परिचय माताजी को बताकर उन तीर्थों ने जीर्णोद्धार का दायित्व माताजी को सौंपा है। आज ये सभी तीर्थ जीर्णोद्धार को प्राप्त हो चुके हैं। हम हार्दिक भावना और आस्था के साथ प्रार्थना करते हैं कि अयोध्या और गिरिनार तीर्थों की सुरक्षा और संवर्धन में पूज्य माताजी विशेष प्रेरणा और मार्गदर्शन देकर समाज को कृतार्थ करें।

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के स्वर्ण जयंती महोत्सव के इस संदर्भ में आयोजित सभी कार्यक्रम यशस्वीपूर्वक सम्पन्न हों और स्वर्णयुग के रूप में इसे चरितार्थ करें।

-स्वस्तिश्री भुवनकीर्ति भट्टारक स्वामी,
कनकगिरी (कर्नाटक)

THE GREAT MATAJI

Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji is the great knowledgeable Jain saint of the present time. On the auspicious occasion of her Aryika Deeksha Golden Anniversary, I wish that, may the blessings of Pujya Mataji remain with us for the longer period of thousands of years.

May Mataji always remain healthy & cheerful with spreading the teachings of humanity in the world.

-Swasti Shri Laxmisen Bhattarka Swami, Narsimhrajpura

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Mataji is the Holiest of Holies

Our most precious mother land **Bharat Kshetra** no doubt, feels proud of observing this year, 2006, as the Golden Jubilee year just for the reason that the Holiest of Holies **Ganini Pramukh Gyanmati Mataji** completes her 50th year of attaining **"Aryika Deeksha"** on 14, 15 & 16 April 2006. We deem it as our unique privilege to be one of her lakhs and lakhs of devotees and receive her special blessings of the occasion. It is indeed the rarest golden opportunity we are all blessed with.

We do not venture on elaborating on the background of her receiving "Deeksha" or on her multivarious contributions to Jainism because there is practically none who is not aware of all these.

Since many thousand years ago, **Hastinapura** is referred in History as **"Pandava Bhoomi"**. This name Pandava Bhomi is now replaced by **Gyanmati Mataji Bhoomi** through the services of **Samava Sarana** founded and efficiently organised by our Mataji. The services of Mataji at Hastinapura deserve to be inscribed in golden letters and they will ever remain green in the History with all glories.

It is our worst misfortune that Mataji has yet to make her holy appearance in the **Southern part** of our country. In this connection, we request that at least her **Aryeegai Sangam** may be deputed on her behalf to visit the southern parts so that this particular part of the land where the champions of Idhikasa and Agamas like Kundkunda, Aghalanga, Poojya Bathar etc. chose to live and lead the society in spiritual path. It is done, it will go a long way in improving and encouraging Jainism here. We also wish that our beloved Mataji should witness in her life time many more celebrations like **"Deeksha Jayanti"** centered at her achievements and celebrated by here ever increasing number of devotees.

Lastly, we express our wish that our most revered Mataji should come forward to execute a project in south, preferably at our **"Kshetra"**, which will ever remain a monument and stand aloft to proclaim her glorious contributions to Jainism. We are prepared to assign the land required for it. If required.

-Swasti Shri Lakshmisena Bhattarak Pattacharyavarya Mahaswami, Jinakanchi

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे ज्ञानमती माताजी! तुमको लाखों प्रणाम

इस संसार में अनादिकाल से भ्रमण करते-करते अत्यन्त दुर्लभता से अमूल्य मानवयोनि की प्राप्ति होती है।

यह मेरा परम सौभाग्य है कि लगभग 25 वर्षों से मुझे पूज्य चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती माताजी के पास रहने का अवसर प्राप्त हो रहा है तथा इसी निमित्त से अनेकों बार मुझे इस युग की महान साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के भी दर्शनों का, उनके सानिध्य में रहने का गौरव भी प्राप्त होता रहता है। पूज्य माताजी के अंदर वात्सल्य की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। समय-समय पर उनका स्नेह प्राप्त होता रहता है तथा उनके मुखारविंद से अनेकों शिक्षाएँ भी मिलती रहती हैं।

पूज्य माताजी की दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर उनके चरणों में लाखों-लाख बार प्रणाम करते हुए मैं अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित करती हूँ।

–क्षुल्लिका शांतिमती माताजी (संघस्थ-आर्यिका श्री अभयमती माताजी)

उत्कृष्ट क्षयोपशम का जीवन्त उदाहरण हैं पूज्य माताजी

उत्कृष्ट क्षयोपशम की जीवन्त उदाहरण पूज्य ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में नमन करते हुए हृदय से वंदामि करती हूँ। गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का नाम श्रावकों और साधुओं के मुख से मैंने सुना है और किताबों में पढ़ा भी है। लेकिन अभी तक मैं उन तीर्थ स्वरूप विदुषी आर्यिका माताजी के दर्शनों का लाभ प्रत्यक्ष नहीं उठा सकी हूँ।

जब हम किताबों में पूर्व आचार्यों के बारे में अध्ययन करते हैं तो उनके वैदुष्य की बातें पढ़कर ही चमत्कृत रह जाते हैं। लेकिन वर्तमान में तो हम सभी के लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि पूज्य माताजी जैसे महान व्यक्तित्व को एवं उनके कृतित्व को हम प्रत्यक्ष ही अनुभव कर पा रहे हैं। वास्तव में पूज्य माताजी ने अपने इन 50 स्वर्णिम वर्षों के क्षण-क्षण का सदुपयोग किया होगा, तभी उनकी लेखनी से 200 से भी अधिक महान ग्रंथों का सृजन हुआ है। साथ ही उनके द्वारा तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास का जो बीड़ा उठाया गया है वह अत्यन्त प्रशंसनीय एवं वंदनीय प्रयास है। पूज्य माताजी द्वारा किये गये समस्त कार्यों से आर्यिका जगत ही नहीं अपितु समस्त नारी समाज का मस्तक गर्व से ऊँचा हुआ है। समाज उनके द्वारा किये गये उपकारों का सदैव ऋणी रहेगा। उनकी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर मैं उनके प्रति अपनी विनम्र विनयांजलि अर्पित करती हूँ तथा भगवान महावीर से उनके स्वस्थ्य, दीर्घ एवं मंगलमयी जीवन की प्रार्थना करते हुए एक बार फिर उनके श्रीचरणों में बारम्बार वंदामि करती हूँ।

पूज्य माताजी के प्रत्यक्ष दर्शनों की आकांक्षाओं के साथ–

–क्षुल्लिका चन्द्रमती

(शिष्या-गुजरात संत केसरी आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझे वैराग्यपथ पर आरूढ़ करने वाली

लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् पूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की वैराग्यप्रद शिक्षाएं, घर का धार्मिक वातावरण और माता मोहिनी द्वारा प्रदत्त धर्मसंस्कारों ने 21 वर्ष की अवस्था में सन् 1972 में मुझे भी आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज से आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके वैराग्यपथ पर आरूढ़ कर दिया। जीवन का नया अध्याय प्रारंभ हुआ, पूज्य माताजी ज्ञानसाधना में लीन थीं और समस्त शिष्यवर्ग को अध्ययन कराना उनकी विशेष अभिरुचि थी, फलस्वरूप जैनागम का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु उन्होंने मुझे भी प्रेरित किया और मैंने भी 'शास्त्री' की परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ-साथ उनके मुखारविन्द से समयसार, नियमसार, अष्टसहस्री इत्यादि ग्रंथों का स्वाध्याय करके अपने धार्मिक आधार को सुदृढ़ किया। पुनः स्वाध्याय के साथ-साथ पूज्य माताजी के जिनधर्म प्रभावना के स्वप्नों को साकार करने का भी सौभाग्य मुझे मिलता चला गया। ब्र. मोतीचंद जी (वर्तमान में क्षुल्लक मोतीसागर जी) एवं मेरी गृहस्थावस्था की छोटी बहन ब्र. कु. माधुरी शास्त्री (वर्तमान में आर्यिका चंदनामती जी) के साथ मिलकर भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप निर्माण के साथ जो क्रम प्रारंभ हुआ, वह अयोध्या, मांगीतुंगी, प्रयाग, कुण्डलपुर, राजगृही, पावापुरी, गुणावां जी इत्यादि तीर्थों के विकास के रूप में जारी रहा और आज भी निरन्तर चल ही रहा है।

पूज्य माताजी के दिशानिर्देश एवं मंगल सानिध्य में जिनसंस्कृति के आयतनों अर्थात् जिनायतनों के निर्माण का शनैः शनैः अनुभव तो प्राप्त हुआ ही, महान पुण्य का संपादन करके विशेष हार्दिक संतुष्टि भी हुई। सत्यता तो यही है कि सांसारिक वैभव के शिखर पर आरूढ़ सांसारिक जन जीवन भर बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने में तो जीवन व्यतीत कर देते हैं पर सम्यग्दर्शन के आधारभूत जिनमंदिर के निर्माण की परिकल्पना भी नहीं कर पाते। मैं तो स्वयं को महान सौभाग्यशाली मानता हूँ कि पूज्य माताजी ने अपने संरक्षण में जिनधर्म प्रभावना की सर्वाधिक उचित दिशा में मेरी क्षमता को विकसित किया।

इसी प्रकार अनेकानेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों के सफल आयोजन करने के अवसर आये। कार्यक्रमों की सफलता जहाँ उचित नेतृत्व एवं टीम वर्क पर आधारित रही, वहीं पूज्य माताजी की अटूट जिनभक्ति, निरंतर मंत्र जाप्य एवं संकल्प शक्ति इसमें मुख्य अवलम्बन बनीं। सन् 1985-86 में पूज्य माताजी जब अत्यधिक बीमार हुईं और उनका उठना-बैठना भी दूभर हो गया, तब कौन सोच सकता था कि पूज्य माताजी इस बीमारी के बाद भी इतना अधिक साहित्य सृजन और अयोध्या, मांगीतुंगी, प्रयाग, कुण्डलपुर तीर्थों के विकास जैसे वृहद् कार्य सम्पन्न कर पाएंगी। मुझे स्वयं भी ऐसी कल्पना नहीं थी परन्तु दिगम्बर जैन समाज के अनेक शीर्षस्थ कार्य पूज्य माताजी के वरदहस्त एवं दृढ़ आत्मबल द्वारा साकार हुए तथा मुझे भी उन सभी में सहयोगी बनने का श्रेय प्राप्त हुआ। पूज्य माताजी की यह विशेषता रही है कि मार्ग में चाहे कितने भी विघ्न आएं, कैसी भी बाधाएं आएं, सदैव अपने लक्ष्य पर दृष्टि रखते हुए बढ़ते चलो; शरीर चाहे कितना भी कमजोर हो, शक्ति कितनी भी क्षीण हो, आत्मबल के आधार पर कार्य में संलग्न रहो; यही कारण है कि पूज्य माताजी ने दीक्षा के 50 वर्षों में सैकड़ों वर्षों का कार्य कर दिया है। वर्तमान में भी पूज्य माताजी प्रतिक्षण साहित्य लेखन अथवा धर्मप्रभावना के विविध आयामों के क्रियान्वयन में ही संलग्न रहती हैं और मुझे भी नित-प्रति इसी क्रियान्वयन की सहभागिता का अवसर प्राप्त होता रहता है, जिसे मैं अपने जीवन की अमूल्य निधि मानता हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी ने अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष निराबाध रूप से महान साधना करते हुए व्यतीत किए हैं, जो आज के कलिकाल के लिए कीर्तिमान के सदृश हैं, मेरे जीवन की प्रेरणास्रोत मेरी गुरु पूज्य ज्ञानमती माताजी जैन समाज की तो अनमोल निधि हैं हीं, मेरे लिए भी अमूल्य सौगात के सदृश हैं। ऐसी माताजी चिरायु हों एवं स्वस्थ रहते हुए हम सबका मार्गदर्शन करती रहें, यही मंगल भावना है।

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

महामना गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

अपने जीवन में शाश्वत एवं सर्वमान्य सत्य एवं उसके आचरण का अवलंबन कर जीने वाले व्यक्ति को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। ऐसी महान विभूति युगों-युगों में विरली ही होती हैं।

'मानसं उन्नतं यस्य, भाग्यं तस्य समुन्नतं'' इस उक्ति के अनुसार अपने जीवन को उदात्त-उदार एवं अध्यात्मनिष्ठ बनाकर औरों के लिए दीपस्तंभवत् जीने वाले महान एवं युगीन विरले व्यक्तियों में पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का नाम परमादरणीय है। 'धन्य मात सानिध्य तुम्हारा' जैसी उक्ति जिनके पुनीत सानिध्य के कारण निकलती हो, जिनके सानिध्य से जीवन पद्धति में आमूलाग्र सार्थकतामूलक परिवर्तन आता हो, ऐसी माताजी के गुणों का बखान शब्दातीत है। पूज्य गणिनी माताजी ने अपनी आर्यिका अवस्था के पचास वर्ष आध्यात्मिकता, नारीचेतना की संपन्नता, आत्मसाधना, ज्ञानाराधना, मानव कल्याणार्थ सदुपदेश एवं सत्साहित्यसृजन, संशोधन इत्यादि से स्वर्णमय-सुगंधयुक्त बनाया है। इन शाश्वत मूल्यों को धारण करने वाली साध्वी भारतीय इतिहास में युगीन महत्व रखती है।

पूज्य माताजी के अलौकिक व्यक्तित्व का विचार आते ही उनके सानिध्य के संस्मरण रह रहकर मनः पटल पर आने लगते हैं। 108 स्व. पायसागर महाराज जी के पावन दर्शनार्थ वे बीसवीं सदी के छठे दशक (सन् 1955) में जब सोलापुर (वह क्षु. वीरमती माताजी की अवस्था में) आयी थीं, उस समय उनके वैराग्य, त्यागभाव के वैभव को देखकर सारा समाज अचंभित था। वह अवसर इतना पुनीत था कि उनके सोलापुर के वास्तव्य में ही श्राविकाश्रम, सोलापुर में सातिशय, मनोज्ञ, कमलासनस्थ 1008 भगवान महावीर की ढ़ाई फुट की मूर्ति जयपुर से भेंट स्वरूप आई थी। स्व. बधीचन्द्र जी गंगवाल (महामंत्री-महावीर जी क्षेत्र) ने यह मनोरम मूर्ति श्रावका संस्था को भेंट कर अपने जीवन को धन्य किया। पूज्य माताजी की उपस्थिति के कारण यह मंगल वातावरण द्विगुणित हो रहा था। सभी आश्रमजन तथा पूरा सोलापुर जैन समाज अपूर्व धन्यता का अनुभव कर रहा था।

इसके बाद पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में अनेक संस्मरणीय अवसर मेरे जीवन को कृतार्थता का अनुभव दे गये। उमाबाई श्राविका हायरस्कूल सोलापुर के प्रधानाचार्य पद पर कार्य करते समय हर दीर्घकालीन छुट्टी में पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी के सानिध्य एवं आशीर्वाद लाभ लेने के लिए, अंतरंग शुद्धि की आनंदप्राप्ति के लिए उनके पास जाने का क्रम कई साल जारी रहा। मेरे साथ मेरी सहेली ब्र. प्रभावती बेन (आ.सुप्रभावती माताजी) भी तन-तन-धन से, समर्पण बुद्धि से आती थी।

1965 की बात है। श्री क्षेत्र गोम्मटेश्वर के दर्शन कर वापसी में सोलापुर श्राविकाश्रम में पूज्य माताजी का विहार हुआ था। संघ में 5 आर्यिकाएँ भी थीं। सोलापुर में आ. विमलसागर महाराज जी का ससंघ चातुर्मास हो रहा था, अतः ऐतिहासिक सुयोग था। सोलापुर समाज के भाग्य एवं पुण्य के उदय का काल था। दोनों ओर से हर रोज होने वाली धर्मवर्षा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाज को प्रफुल्लित कर रही थी। उनके धार्मिक आयोजन, प्रवचन, स्वाध्याय, पूजा-विधान इससे श्राविकाश्रम का हर रजोकण धर्ममंगल वातावरण से पुनीत हो चला था। यहीं पर पूज्य माताजी ने जम्बूद्वीप निर्माण का संकल्प व्यक्त किया था और ऐसे महान संकल्प और विचारों ने आदरणीय सुमतीबाई जी तथा हमें दिव्य प्रेरणा भी दी थी।

पूज्य माताजी की श्राविकाश्रम सोलापुर के प्रति धर्मवत्सलता की बात क्या कहें। सदैव धार्मिक आयोजनों में उनके द्वारा प्रधानता से श्राविकाश्रम सोलापुर को याद किया जाता है। सन 2002 में भारत के अनेक क्षेत्रों के लिए भगवान आदिनाथ की प्रतिष्ठित मूर्तियों को उनकी प्रेरणा से भेजा गया। उस समय भगवान आदिनाथ की मनोरम मूर्ति श्राविकाश्रम भेजकर उन्होंने श्राविकाश्रम के धार्मिक आध्यात्मिक वातावरण में चार चांद लगाये थे। उस समय अवर्णनीय धन्यता का अनुभव हुआ था।

पूज्य माताजी का आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव का यह स्वर्णिम अवसर निश्चित ही है। दीक्षोपरांत पूज्य माताजी ने स्वात्मोपलब्धि के लिए जिस यात्रा का प्रारंभ किया, वह आज तक चली है। श्रमण संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते हुए उन्होंने जिनवाणी को समृद्ध किया। दर्शन, ज्ञान, चारित्र तथा तपरूप चार आराधनाओं का तल्लीनता से अवलंबन कर खुद वे शक्ति का केन्द्र बनी हैं। क्रोध, मान, माया, लोभादि पर विजय पाया ही है। सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूपी रत्नत्रय को हर तरह से सबल बनाया है। जीवमात्र के लिए अभय का आश्वासन देने वाली महामाता के रूप में वह पूज्य बनी हैं।

पूज्य माताजी के जीवन सुगंध से खुद को पावन मानकर किसी ने कहा है—

माँ ज्ञानमती ने विराग का, पावन बाग लगाया है,
जिसकी हर शाखा पर त्याग, तप का प्रसून लहराया है।
जिसने जड़ तन को चेतन के, रंग में रंगकर के मोड़ा है,
उस महाविरागी माता का, जितना जस गाये थोड़ा है।।

भारत ही नहीं, संपूर्ण विश्व की महिलाओं के उज्ज्वल जीवन की प्रेरणास्थान, त्याग, स्नेह, करुणा की प्रतिमूर्ति, आध्यात्मिक क्षेत्र में अपूर्व क्रांति का सूत्रपात करने वाली, आध्यात्मिक उज्ज्वलता का प्रतीक महामना पूज्य गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर विनम्र अभिवादन।

-ब्र. विद्युल्लता शहा, सोलापुर
(संचालिका/अध्यक्षा-राजुलमती दि. जैन श्राविकाश्रम)

विनयांजलि

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी वैशाख कृ. 2, दिनाँक 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं।

पूज्य माताजी ने आर्यिका दीक्षा के उपरान्त इन 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा में जैन समाज एवं अन्य धार्मिक समुदायों को सेवामयी प्रेरणा देकर जैन समुदाय की संस्कृति एवं धर्म का संरक्षण किया है। पूज्य माताजी ने अपने स्वर्णिम विचारों से धार्मिक निर्माणकार्य एवं विकास में प्रेरणामयी ज्योति जलाकर विभिन्न प्रकार के कार्य सम्पन्न कराये हैं।

पूज्य माताजी ने अपनी विद्वत्ता द्वारा 200 से अधिक महान ग्रंथों की रचना कर समाज का मार्गदर्शन किया है, यह महान सराहनीय कार्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस अवसर पर जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में माताजी के आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव को सम्पन्न करने हेतु समिति का गठन किया गया है तथा इस शुभ अवसर पर महोत्सव समिति द्वारा गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी गौरव ग्रंथ प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है, यह महान त्यागमयी मूर्ति के गौरवमयी स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में प्रशंसनीय कार्य है।

मैं महोत्सव की सफलता एवं गौरव ग्रंथ प्रकाशित होने के लिए श्रीवीरप्रभू से प्रार्थना करती हूँ तथा माताजी के स्वस्थ एवं दीर्घायु होने के साथ जिनशासन की शोभा बढ़ाने की मंगलकामना करती हूँ।

-ब्र. कमलाबाई, श्री महावीर जी

(संस्थापिका एवं संचालिका-श्री दिगम्बर जैन आदर्श महिला महाविद्यालय)

ज्ञानमती यानि कि सृजनशीलता

दिगम्बर जैनों का बीसवीं शताब्दी का इतिहास स्वर्ण अक्षरों से लिखने योग्य है, क्योंकि अनेक साध्वियों ने अपनी महती गुणवत्ता से उसे प्रभावित किया है, जनमानस को अंकित किया है, महान प्रभावना की है। राजकीय क्षेत्र में इन्दिरा गांधी, वैदकीय क्षेत्र में मदर टेरेसा जैसे महिलाओं का अमिट प्रभाव है। वैसे ही कतिपय माताजी लोगों ने धर्मप्रभावना का महान कार्य किया है, जिसे समाज कभी नहीं भुला सकेगा। एक शलाका है आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी।

आपने लघुवय में संयम ग्रहण किया। आपकी सशक्त कलम ने अष्टसहस्री जैसे कठिन न्याय ग्रंथ का अनुवाद किया। अनेक विधानों की पूजा विविध छंदों में रचकर लोगों को पूजा करने में भाव-विभोर कर दिया। जगह-जगह पर तीर्थों का निर्माण और संवर्द्धन किया। गुरुकुल प्रणाली के प्रणेता मुनिश्री समंतभद्र महाराज ने सन् 1933 में ब्यावर (राज.) में बीसवीं शताब्दी के प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की थी। आगे चलकर आचार्यश्री के दीक्षित बंधु मुनिश्री वर्द्धमानसागर जी से मुनिदीक्षा ग्रहण की और सन् 1988 में आपकी समाधि हो गई यानि कि दीक्षित अवस्था में बहुत समय बिताया। विदुषी रत्न चारित्रचन्द्रिका आर्यिका 105 श्री अजितमती माताजी की तो लघुवय में दीक्षा लेकर यानि कि सन् 1928 में क्षुल्लिका दीक्षा लेकर अंत समय में आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर सन् 1991 में समाधिमरण को प्राप्त किया। उसी तरह ज्ञानमती माताजी का जीवन अर्धशतक से आर्यिका संयम में बीत रहा है, यह बात विशेष है। माताजी को देखकर ''तीर्थभूता हि साधवः'' यह सूक्ति याद आती है।

इससे भी आगे ठीक इसी तरह जिनवाणी की सेवा करते-करते अंतिम समय तक धर्मप्रभावना करते-करते बीत जाये और उसके लिए आपको दीर्घायु, आरोग्य, विशेष क्षयोपशम सहित रत्नत्रय वृद्धि की सन्मति प्रभु के चरणों में बार-बार प्रार्थना करते हैं। माताजी के चरणों में सादर वंदामि।

-ब्र. कु. रेवती दोशी, अकलूज

(शिष्या-आर्यिका 105 श्री अजितमती माताजी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन क्षितिज पर "शरदपूर्णिमा का चाँद"

सन् 1968 में 'पश्चिमी जर्मनी' के अपने 'शोध अध्ययन' से जब वापस लौटी, तब इसी संकल्प के साथ लौटी थी कि "अब जैनधर्म का अध्ययन अवश्य करूँगी।" किंतु समझ नहीं आता था कि इतने बड़े-बड़े कठिन ग्रंथों में से कहाँ से किसे प्रारंभ करूँ।

नगर म्युंस्टर वि.वि. के ग्रंथागार प्रमुख ने बड़ी आशाओं से मुझे एक जैन पांडुलिपी दिखाई थी, जो उसने किसी जैन गृह से ही खरीदी थी। किन्तु मैं उस 'दक्षिण भारतीय लिपि" को पहचान नहीं पाई थी। मेरे नाम का 'जैन' शब्द भी किसी के 'पल्ले' नहीं पड़ता था। सब मुझे 'जैन' पुकारते थे। अपने तब तक के संस्कारों के कारण मैं कट्टर शाकाहारी तो थी, णमोकार मंत्र पर पूरा-पूरा विश्वास भी था। दर्शन स्तुति, पार्श्वनाथ स्तोत्र, पं. दौलतराम जी की सकल ज्ञेय विनती, छोटी बारह भावना, वीतराग स्तोत्र भी कंठस्थ थे। वि.वि. में पढ़ाते हुए लगभग 10 वर्षों से ऊपर हो चुके थे। मुझे जैन बंधु जहाँ-तहाँ प्रवचन हेतु भारत में बुलाते भी थे, किन्तु मेरा परिचय जैनधर्म के जीवन में किसी क्षितिज के कोने से दूर था। यूरोप में जहाँ-जहाँ गई, मेरे विदेशी परिचित मुझसे मेरे धर्म के विषय में जानना चाहते। जब उन्हें 'अहिंसा, तीर्थंकरों और शाकाहार धर्म' के विषय में बताती तो सब मुझे बौद्ध समझते और आश्चर्य करते कि बौद्ध तो अंडा और मांस खा लेते हैं, फिर मैं क्यों परहेज करती हूँ। तब मुझे लगता कि मुझे धर्म का ज्ञान क्यों नहीं है, कि उन्हें संतुष्ट कर दूँ? इसीलिए संकल्प लिया था कि मुझे ज्ञान प्राप्त करके इन सबकी शंका का समाधान कर सकूँ।

दिल्ली के फार्मेसी विद्यार्थियों के परीक्षक के रूप में मुझे बुलाया गया था। काफी पहले की बात है। तब एक कर्मचारी ने डरते-डरते पूछा कि क्या आपसाधुओं के दर्शन करेंगी! अपने कार्य समापन के बाद। मैंने हिचकते हुए "हाँ" कहा। तब एक विद्यार्थी मुझे किन्हीं साधु संघ के दर्शन कराने ले जाने लगा। तभी मैंने उससे पूछा कि हस्तिनापुर कितनी दूर होगा? उसने बतलाया कि 'मेरठ होकर जाना होगा।' मैं बस स्टैण्ड की तरफ मुड़ गई और हस्तिनापुर पहुँच गई। वहाँ के दर्शन करके लौटने लगी। भोजन का समय हो रहा था। तब किसी ने पूछा कि थोड़ा ही आगे जंबूद्वीप है, उसके दर्शन किए? मैंने कहा कि "नहीं"। तब उसके बतलाने पर मैं आगे जंबूद्वीप के उस बड़े विस्तार में पहुँची। कुछ समझ नहीं आया। कुछ-कुछ निर्माण कार्य चालू था। वहाँ पहुँची तो आहार चालू थे। पता नहीं क्यों, मैंने खिड़की से झांका। अंदर सुंदर-सी आर्यिका के आहार चालू थे। उनकी दृष्टि उठी तो मैंने वंदना की। आहार के पश्चात् वे बाहर आईं और पूछने की दृष्टि डाली। मैंने अपना परिचय दिया।

उन्होंने पूछा-भोजन हो गया? मैंने कहा कि मेरे साथ है, अभी कर लूँगी। वे बोलीं, वो बाद में करना, अभी तो यहीं ताजा खाओ और संकेत किया कि "इन्हें भोजन कराओ। मैंने भोजन से पूर्व उनके विषय में पूछा कि वे कौन हैं? तब लोगों ने बताया कि ये आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी हैं..........।" उनके व्यक्तित्व के विषय में सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। एक वह भी कन्या थीं, जिसने अपनी आत्म रक्षा के लिए उस काल में समाज एवं परिवार से धर्मपथ पर चलने को विद्रोह किया था और अंत में 'विजयी बनकर' सत्पथ चुन लिया था। लगभग उसी काल में (3 वर्ष छोटी) मैं भी एक विद्रोहिणी थी, जिसने परिवार और समाज से बढ़कर अपने को पढ़ाई के क्षेत्र में आगे लाकर स्थापित किया। भारत की मैं प्रथम पी.एच.डी.-फार्मेसी की महिला थी, जिसने स्वतंत्र, स्वावलम्बी जीवन जिया था किन्तु जिसे धर्म की पहचान भी नहीं थी, फिर भी अंतरंग में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण, क्योंकि वह व्यक्तित्व ही ऐसा लगा।

भोजन करके मैं उनके पास गई पुनःदर्शन करने। इतने स्नेह और आत्मीयता से उन्होंने मेरी जानकारी पूछी और अपना बना लिया, लगा कि हम चिरपरिचित हैं। वह मेरी किसी साधु-साध्वी के सत्संग की पहली अनुभूति थी। मैं लौटने लगी तो उन्होंने आग्रह किया कि मैं रुकूँ किन्तु मेरे पास समय नहीं था। वापस लौटना अत्यन्त जरूरी था परन्तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनकी उस निर्मल दृष्टि और वात्सल्य से मैं उनकी हो गई। कुछ दिन बाद मुझे उनका आमंत्रण मिला और तब देखा कि वह ज्ञान की मूर्ति तो जिनवाणी बन गई हैं। अपने आसपास के समूचे वातावरण में जीवों को शरदपूर्णिमा की निर्मल चांदनी की तरह अमृत से सराबोर कर धन्य हो गई हैं वह।

फिर तो अनेक बार पूज्य माताजी के दर्शन एवं विचारों के आदान-प्रदान का सौभाग्य मिलता रहा और आज भी उनके स्नेह-वात्सल्य को याद कर हृदय में परम आनन्द की अनुभूति होती है। उनके आर्यिका दीक्षास्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर कोटि-कोटि नमन सहित मेरी विनयांजलि समर्पित है।

-ब्र. कु. स्नेहरानी जैन, सागर

विशल्या की प्रतिकृति माँ ज्ञानमती

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षित जीवन के 53 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। बाल ब्रह्मचर्यव्रत, निर्दोष चर्या, दीर्घकालीन तपस्या, अडिग साधना, तीक्ष्ण बुद्धि, सरस्वती की विशेष अनुकम्पा आदि सब कारणों से अगर पूज्य माताजी में विशल्या जैसी शक्ति उत्पन्न हो गई हो, तो कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है। पूज्य माताजी के पास लगभग 20-22 वर्षों से रहते हुए मैंने नजदीकी से देखा है कि अनेक लोग पूज्य माताजी के पास अपना दुःख-दर्द लेकर जाते हैं और उनके आशीर्वाद तथा मंत्र जाप्य से उनका दुःखदर्द ठीक हो जाता है। मैंने तो यहाँ तकदेखा है कि अनेक लोग पूज्य माताजी की पहनी हुई साड़ी ले जाते हैं और उसे पहनते हैं, तो उनके शरीर के रोग ठीक हो जाते हैं।

कई कैंसर जैसे रोग भी पूज्य माताजी के आशीर्वाद से ठीक हो गए हैं। एक तो प्रत्यक्ष आँखों देखी घटना मैंने सरधना के भाई से सुनी है कि सन् 1991 का चातुर्मास माताजी का सरधना (मेरठ) में हुआ था। उस समय एक दिन माताजी आहारचर्या करके वापस आ रही थीं, तब एक घर से एक महिला दौड़ती हुई आई और उसने माताजी से कहा-माताजी! आप मेरे घर चलकर मेरे श्वसुर को पीछी लगा दीजिए, वे बहुत अस्वस्थ हैं। माताजी उसके घर गईं, मंत्र पढ़ा, पीछी लगाई और कहा, सब ठीक हो जायेगा।

माताजी का सरधना चातुर्मास पूर्ण होने पर विहार हो गया। माताजी हस्तिनापुर आ गईं। एक दिन माताजी त्यागी भवन में अपनी लिखाई कर रही थीं कि वही सरधना वाली महिला आई और आते ही माताजी को नमस्कार करके कहने लगी-माताजी! आपकी पीछी में जादू है, मेरे घर चमत्कार हो गया। मेरे श्वसुर को पैर में फोड़ा था, जिसका आप्रेशन भी हो गया, लेकिन फिर भी वह ठीक नहीं हो रहा था। बहुत दवाई कर ली थी। लेकिन जिस दिन से आपने उन्हें पीछी लगाई है, वह फोड़ा अपने आप धीरे-धीरे सूख गया है। अब वे बिल्कुल स्वस्थ हैं।

स्वयं मैंने व मेरे परिवार के सदस्यों ने अनुभव किया है कि घर-परिवार में कोई अस्वस्थ होता है, पूज्य माताजी का आशीर्वाद मिलते ही ठीक हो जाता है।

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष की पूर्णता पर उनकी स्वर्ण दीक्षा जयंती मनाई जा रही है। आज उनके ज्ञान और चारित्र से पूरे विश्व में उनका नाम है, तो उनके व्यक्तित्व व कृतित्व के प्रति गौरव होना सहज सी बात है। ऐसी माताजी के पावन चरणों में रहकर अपनी मानव पर्याय को सार्थक करने का, मोक्षमार्ग में लगने का सौभाग्य मुझे मिला, यह मेरे महान पुण्योदय की बात है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों और उनका वरदहस्त सदैव हम सभी पर बना रहे, यही भगवान से मंगल प्रार्थना है।

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्ति-मुक्तक

गणिनी माता ज्ञानमती, इतिहास बनीं धरती का।
दीक्षा स्वर्ण महोत्सव उनका, करेगी अब धरती माँ।।
सोने से भी अधिक चमकशाली है जीवन इनका।
हीरे से भी अधिक मूल्य, करती हैं जो क्षण-क्षण का।।1।।

मेरा भी सौभाग्य खिला, जो पाई ऐसी गुरु छाया।
कहीं न मिल पाएगा जो, अनमोल रतन मैंने पाया।।
ब्रह्मचर्य व्रत माता से ले, मैंने जीवन धन्य किया।
गुण के कुछ कण भी मिल जावें, यह भाव हृदय में प्रगट हुआ।।2।।

दो सौ ग्रंथों की रचना की, जम्बूद्वीप बनाया।
तीर्थ अयोध्या मांगीतुंगी, का उद्धार कराया।।
दीक्षा तीर्थ प्रयाग में, नव-तीरथ निर्माण कराया।
महावीर की जन्मभूमि में, नंद्यावर्त बनाया।।3।।

स्वर्ण जयंती के अवसर पर, मेरी यह विनयांजलि है।
मिले सदा सानिध्य तुम्हारा, यही भक्ति पुष्पांजलि है।।
ब्राह्मी माता के समान, उपहार हो तुम धरती का।
"बीना" चरणों में नत है, वंदन स्वीकारो हे माँ।।4।।

-ब्र. कु. बीना जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

मुझे भी कुछ सीखने का सौभाग्य प्रप्त हुआ है

गृहस्थ धर्म में हम देखते हैं, जब किसी की शादी के 50 वर्ष पूरे हो जाते हैं, तो वे गोल्डेन जुबली मनाते हैं उसी प्रकार उस गृहस्थ धर्म से ऊपर उठकर, जहाँ जमीन और आसमान का अंतर होता है, ऐसे त्यागमार्ग पर जिन्होंने अपने जीवन के 50 वर्ष पूरे किए हों, अपने शरीर और आत्मा को तपस्यारूपी अग्नि में तपाकर कुंदन बनाया हो, उनका स्वर्ण दीक्षा जयंती मनाने का अवसर प्राप्त होना यह हम सभी सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज के लिए बहुत ही गौरव, हर्ष एवं आल्हाद का विषय है।

सन् 1988 में मैं पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी जी, जो कि उस समय ब्र. कु. माधुरी थीं, उनके निमित्त से, उनकी प्रेरणा से, प्रेम एवं वात्सल्य से पूज्य माताजी के पास हस्तिनापुर आई। उसके दो वर्ष पूर्व सन् 1986 बहराइच (उ.प्र.) में इन्द्रध्वज विधान में ब्र. कु. माधुरी, ब्र. श्री रवीन्द्र जैन, ब्र. श्री मोतीचंद जी आए थे और काफी धर्मप्रभावना के साथ विधान सम्पन्न हुआ था। उस समय मुझे इन लोगों को देखकर बहुत अच्छा लगा था और मन में इनके जैसा बनने का भाव आया था। मैंने उस समय इनके साथ हस्तिनापुर आने का विचार बनाया था, लेकिन पारिवारिक लोगों के कारण मुझे उस समय सफलता नहीं मिल पाई थी। बाद में सन् 1988 में बम्बई यात्रा के निमित्त से मुझे ब्र. कु. माधुरी (गृहस्थावस्था की मौसी जी) ने हस्तिनापुर बुलाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस समय मैं हस्तिनापुर आई और मैंने निकटता से पूज्य माताजी का दर्शन किया, उनकी दिव्य देशना सुनी। उस समय जिस दिन मैं हस्तिनापुर पहुँची थी, माताजी ने एक बात बताई थी कि आज मैंने प्रातः ही स्वप्न में देखा है कि एक कन्या को मैंने कुएँ से बाहर निकाला है। जिसका फल यह निकला कि मुझे माताजी ने गृहस्थरूपी कीचड़, कुएँ से निकला कर त्यागमार्ग में लगाया है। मैंने माताजी के पास आने के बाद ही सन् 1989 में जनवरी-फरवरी में आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत एवं दो प्रतिमा के व्रत धारण कर लिए। मुझे इस त्यागमार्ग में आने के लिए पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का जो स्नेह, वात्सल्य, प्रेरणा, शिक्षा एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ है, उसे मैं कभी भी विस्मृत नहीं कर सकती। सन् 1988 से अब तक इन 18 वर्षों में मुझे भी माताजी से बहुत कुछ शास्त्रीय ज्ञान एवं अनुभव ज्ञान प्राप्त हुआ है। मैंने माताजी के जीवन से एक विशेष बात सीखी है कि हमें अपने जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग करना है क्योंकि जो समय निकल गया, उसे हम कभी वापस नहीं ला सकते अतः हम अपने जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने दें। दूसरा मैंने पूज्य माताजी के जीवन से यह सीखा है कि हम जो भी कार्य कर रहे हैं, उसमें चाहे जितने संघर्ष आएँ, लेकिन हमें पीछे हटना नहीं, कार्य को बीच में छोड़ना नहीं, संघर्षों को झेलते हुए कार्य को पूर्ण करना है। तीसरी बात मैंने यह सीखी है कि जीवन में गुरु एक बनाना, चाहे जितनी विषम परिस्थिति क्यों न आए लेकिन मूलगुरु को कभी छोड़ना नहीं। चाहे वो दिन को रात कहें या रात को दिन क्योंकि इस संसार समुद्र से पार करने के लिए एक गुरु ही भवदधि नौका के समान हैं।

चौथी बात मैंने माताजी से यह सीखी कि हमें हमेशा गुरु के अनुशासन में रहना है। जो वो कहें सो करना है, जो वो करें सो नहीं। पाँचवी बात यह सीखी कि हमें सुई का काम करना है, कैंची का नहीं अर्थात् संघ में सबको जोड़कर चलना है, अलग करके नहीं। छठी बात मैंने यह सीखी कि आगम से हटकर कभी धर्मप्रभावना के कार्य मत करो अर्थात् प्रभावना के लिए हम आगम को भूल जाएँ, उसे छोड़ दें, तो धर्मप्रभावना का कोई महत्व नहीं है। सातवीं बात हमें अपनी संस्कृति की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखना है। आठवीं बात नए-नए तीर्थों के निर्माण की बजाय हमें तीर्थंकरों की जन्मभूमियों का एवं उनकी पंचकल्याणक भूमियों को विकसित करना है। एक नया तीर्थ बनाने में जितना पुण्य है, उसके सौ गुना पुण्य एक तीर्थंकर की जन्मभूमि का विकास करने में है और भी बहुत सी ऐसी शिक्षास्पद बातें हैं जिन्हें माताजी के मुखारविंद से ग्रहण करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

मैं समझती हूँ जहाँ तक मैंने भी पूर्व जन्म में जरूर कुछ न कुछ पुण्य किया होगा, तभी मुझे माताजी के परिवार में जन्म मिला और त्यागमार्ग में आने के भाव हुए और आज माताजी के चरण सानिध्य में रहकर धर्मध्यान करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। मैंने माताजी से सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण कर लिए हैं। अब भावना है कि मुझे वह दिन भी शीघ्र प्राप्त हो जब माताजी के करकमलों से इस स्त्रीपर्याय के सर्वोत्कृष्ट पद—आर्यिका पद को प्राप्त कर अपने जीवन को सार्थक करूँ। पूज्य माताजी की इस दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर उनके श्रीचरणों में शत-शत वंदामि करते हुए विनयांजलि समर्पित करती हूँ।

-ब्र. कु. आस्था जैन

(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानमती माताजी ने बनाया - HINDUSTAN

किसी ने कहा है—

जिन्दगी जीत बन जाए, सच ईमान बन जाए।
तुम दिल को इतना फैला दो कि हिन्दुस्तान बन जाए।।

देशप्रेम की भावना को प्रदर्शित करती हुई ये सुन्दर पंक्तियाँ वास्तव में देखा जाए तो इस युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी, जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व में पूर्णरूपेण साकार होती दिखाई देती हैं।

इनके विस्तृतज्ञान के प्रभाव से, विभिन्न कार्यकलापों से एक HINDUSTAN हिन्दुस्तान का निर्माण हो गया है। आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि ज्ञानमती माताजी ने जम्बूद्वीप बनवाया, प्रयाग तीर्थ बनवाया, कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल नाम से तीर्थ बनवाया, यहाँ तक तो ठीक है परन्तु ज्ञानमती माताजी ने हिन्दुस्तान का निर्माण कर दिया, यह बात कुछ समझ में नहीं आती है। हिन्दुस्तान तो प्राचीनकाल से ही निर्मित है। आप चौंकिए मत, मैं आपको बताती हूँ कि इस नवअक्षरी HINDUSTAN शब्द में किस प्रकार ज्ञानमती माताजी के कार्यकलापों का अनूठा संग्रह है—

H— Hastinapur (हस्तिनापुर)— भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ इन तीन तीर्थंकरों के चार-चार कल्याणकों से पवित्र हस्तिनापुर नगरी अपने में कई इतिहासों को समेटे हुए है। इस भूमि पर जब से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरण पड़े, तब से इस तीर्थ की तो काया ही पलट हो गई। जहाँ पर भयानक जंगल था, लोग दिन में आने से डरते थे, अब वहाँ रात के 12 बजे भी किसी को आने में डर नहीं लगता है। इसका मुख्य कारण यहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित विश्व की अद्वितीय रचना जम्बूद्वीप है, जिसे देखने के लिए देश-विदेश से जैन-जैनेतर बन्धु आते हैं तथा यहाँ के अप्रतिम सौन्दर्य से प्रभावित होकर उत्तरप्रदेश पर्यटन विभाग ने उसे अपने फोल्डर में ''**अतुलनीय मानव निर्मित स्वर्ग**'' की उपमा प्रदान की है। साथ ही वहाँ निर्मित कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, ॐ मंदिर आदि अनेकों मंदिर भव्यों को क्षणमात्र में ही असीम पुण्य का संचय करा देते हैं।

I— International Nirwan Mahotsav (अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव)— जन-जन को जैनधर्म की प्राचीनता से परिचित कराने हेतु 4 फरवरी 2000 को दिल्ली के लाल किला मैदान में ''**भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव**'' का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत पूज्य माताजी की प्रेरणा से एक कृत्रिम कैलाशपर्वत की रचना की गई, जिसके समक्ष देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी, वित्त राज्यमंत्री-श्री धनंजय कुमार जैन सहित सम्पूर्ण देश की जनता ने 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाकर अपने जीवन को धन्य किया।

N— Nandyawart Mahal-Kundalpur (नंद्यावर्त महल-कुण्डलपुर)— आज से 2605 वर्ष पूर्व भगवान महावीर स्वामी ने जिस महल में जन्म लिया था, उसका नाम था "नंद्यावर्त महल"। वह महल सात खण्ड ऊँचा बहुत ही सुन्दर था। उस सोने के महल में महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला ने चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को बालक महावीर को जन्म दिया था।

जब पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने यह सुना कि पिछले 50 वर्षों से भगवान की जन्मभूमि कुण्डलपुर में मात्र एक छोटा सा मंदिर है, उसका विकास नहीं हो पा रहा है, तब उन्होंने कहा कि ''**भगवान के जन्मकल्याणक महोत्सव में जन्मभूमि का विकास होना नितान्त आवश्यक है, इससे अधिक सुनहरा अवसर शायद दोबारा नहीं प्राप्त होगा।**'' मन में ऐसा विचार आते ही 20 फरवरी 2002 को उन्होंने दिल्ली के इण्डियागेट से विशाल जनसमूह के साथ मंगल विहार प्रारंभ किया। जब पूज्य माताजी ने कुण्डलपुर की धरती पर अपने कदम रखे, उस समय उन्हें असीम आनन्द की अनुभूति हुई। मंगल प्रवेश के पश्चात् तो तीर्थ निर्माण का कार्य ऐसा शुरू हुआ कि देखते ही देखते पाँच वृहत् मंदिरों के निर्माण हो गए। यह सब देखकर ऐसा लगता था कि जैसे देवताओं ने आकर ये सभी कार्य कर दिए हों। वहाँ अनेक मंदिरों के साथ-साथ विशाल नंद्यावर्त महल का निर्माण हुआ है, जो सभी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

D– Delhi (दिल्ली)–"भारत का दिल–दिल्ली माना जाता है" उस दिल्ली महानगरी में पूज्य माताजी की प्रेरणा से चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान, 26 विश्वशान्ति महावीर विधान, अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार, कैलाश मानसरोवर यात्रा, 48 भक्तामर मण्डल विधान आदि अनेकानेक भक्तिपूर्ण आयोजन तो सम्पन्न हुए ही हैं, साथ ही कई स्थायी निर्माणात्मक कार्य भी हुए हैं, जिनमें प्रीतविहार में भव्य कमल मंदिर रचना, कनॉट प्लेस स्थित राजा बाजार मंदिर परिसर में भगवान महावीर कीर्तिस्तंभ एवं पावापुरी रचना, नजफगढ़–दिल्ली में भरतक्षेत्र तीर्थ का निर्माण तथा अनेक कॉलोनियों में जिनमंदिर, गृहचैत्यालय आदि प्रमुख कार्य हैं।

U– University of Jainism (धार्मिक विश्वविद्यालय)— देशभर में विश्वविद्यालय तो बहुत हैं परन्तु धार्मिकता का, आध्यात्मिकता का पाठ सिखाने वाली ये एकमात्र विश्वविद्यालय हैं। छोटा या बड़ा, महिला या पुरुष कोई भी क्यों न हो, जिसे भी किसी शंका का समाधान प्राप्त करना होता है, वे बिना अपना समय गंवाए इस चलते–फिरते **"ज्ञानमती विश्वविद्यालय"** में आकर संतुष्ट हो जाते हैं। शायद यही कारण है कि फरवरी सन् 1995 में अयोध्या प्रवास के मध्य **"फैजाबाद विश्वविद्यालय"** के तत्कालीन कुलपति श्री के.पी. नौटियाल ने इन्हें **"डी.लिट्."** की मानद् उपाधि प्रदान कर दी।

S– Samavsaran Shrivihar (समवसरण श्रीविहार)— 22 मार्च सन् 1998 को पूज्य माताजी की प्रेरणा से **"भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार"** का शुभारंभ राजधानी दिल्ली के लालकिला मैदान से किया गया पुन: 9 अप्रैल 1998 को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करके इस समवसरण यात्रा को भारतभ्रमण हेतु प्रवर्तित किया। इस श्रीविहार यात्रा के माध्यम से अहिंसा एवं शाकाहार का प्रचार–प्रसार आशातीत सफलता के साथ हुआ। लगभग 4 वर्षों की मंगल यात्रा के पश्चात् अब यह धातुनिर्मित समवसरण पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रयाग–इलाहाबाद में निर्मित ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ पर स्थापित हो चुका है।

T– Tirthankar Rishabhdev Deeksha Tirth (तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ–प्रयाग)— दिगम्बर जैन समाज की भोली–भाली जनता यह तो जानती थी कि भगवान ऋषभदेव ने जन्म कहाँ लिया? और उन्हें निर्वाण कहाँ से प्राप्त हुआ? परन्तु कोई भी व्यक्ति यह बता पाने में समर्थ नहीं था कि भगवान ऋषभदेव ने दीक्षा कहाँ ली? और उन्हें केवलज्ञान कहाँ प्रगट हुआ? इस सत्यतथ्य से जनमानस को परिचित कराने के उद्देश्य से पूज्य माताजी की प्रेरणा से इलाहाबाद–बनारस हाइवे पर **"तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ"** नाम से सुन्दर तीर्थ का निर्माण किया गया, जहाँ पर बीचोंबीच में 72 जिनप्रतिमाओं से (त्रिकाल चौबीसी) समन्वित विशाल कैलाशपर्वत पर भगवान ऋषभदेव की 14 फुट उत्तुंग मनोहारी प्रतिमा विराजमान है एवं कैलाशपर्वत के बाईं ओर धातुनिर्मित वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा विराजमान है तथा दाईं ओर निर्मित समवसरण मंदिर में भारत भ्रमण कर चुके समवसरण को विराजमान किया गया है।

A– Ayodhya and America (अयोध्या और अमेरिका)—आज से कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व अनादिनिधन जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने अयोध्यानगरी में जन्म लिया था। चूँकि भगवान ऋषभदेव ने युग की आदि में अवतार लिया था अत: इन्हें आदिब्रह्मा, युगादिपुरुष, युगपुरुष, युगस्रष्टा आदि अनेक नामों से जाना जाता है। पिता–नाभिराय एवं माता मरुदेवी तो अपने असीम पुण्य, अतुलनीय सौभाग्य की अनुमोदना करते नहीं थकते थे क्योंकि उन्हें प्रथम तीर्थंकर को जन्म देने का शुभ संयोग जो प्राप्त हुआ था।

इसी अयोध्या नगरी में भगवान ऋषभदेव के भरत, बाहुबली आदि 101 पुत्र एवं ब्राह्मी–सुन्दरी कन्याओं ने भी जन्म लिया। भगवान ऋषभदेव ने अपने सभी पुत्र–पुत्रियों को अनेक प्रकार की विद्याएं इसी अयोध्या की धरती पर सिखाई थीं।

धीरे–धीरे समय बीत गया, करोड़ों वर्षों बाद वह अयोध्या नगरी अपने वास्तविक स्वरूप को छोड़कर वीरान अवस्था में आ गई थी। आज से 13 वर्ष पूर्व (सन् 1993 में) जब पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की दृष्टि उस तीर्थ पर पड़ी, तो उनकी प्रेरणा पाकर उस तीर्थ ने काफी हद तक अपना विस्तृत एवं विकसित स्वरूप प्राप्त कर लिया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

सन् 2000 में अमेरिका में यू.एन.ओ के द्वारा विश्वशांति शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसमें पूज्य माताजी ने अपने शिष्य ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन को जैन धर्माचार्य के रूप में जाने की स्वीकृति प्रदान की। ब्र. जी ने वहाँ जाकर जैनधर्म की जो अभूतपूर्व प्रभावना की, वह सब पूज्य माताजी के शुभाशीर्वाद का ही प्रतिफल रहा तथा वहाँ विभिन्न देशों से पधारे सैकड़ों धर्माचार्यों को पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य प्राप्त हुआ, जिससे उन्होंने भी जैनधर्म के मर्म को समझने में सफलता प्राप्त की।

N— Nagar (नगर)— साधारण बोलचाल की भाषा में जिसे नगर कह दिया जाता है और जिसका पूरा नाम है टिकैतनगर। यह वह पुण्यभूमि है, जहाँ आज से 72 वर्ष पूर्व श्रेष्ठी छोटेलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनीदेवी ने एक कन्यारत्न को जन्म दिया था। बड़े ही प्यार से कन्या का नाम रखा गया 'मैना'। नाम रखते समय किसी को यह जरा भी आभास नहीं था कि वास्तव में यह कन्या एक दिन मैना की भाँति ही गृहपिंजड़े से उड़ जाएगी। लेकिन यह तो सच है कि यदि ज्ञानमती माताजी ने इस त्यागमार्ग पर अपने कदम न बढ़ाए होते, तो ब्राह्मी, सुन्दरी, चन्दना आदि के मार्ग का अनुपालन कैसे संभव हो सकता था? इनके बारे में एक लेखक ने लिखा है—

माँ बनतीं तो बन पातीं, दो-तीन-चार की माता।
वीरसिन्धु से दीक्षा ले, बन गईं जगत की माता।।

मेरा यह परम सौभाग्य है कि मुझे ऐसी विश्ववंद्य पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में रहने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। इसका सबसे मुख्य कारण तो मुझे यह लगता है कि मैंने इस परिवार में जन्म लेकर ही यह सुनहरा अवसर प्राप्त किया है। बचपन में गर्मी की छुट्टियों में माँ (कामनी देवी) हमें ननिहाल (टिकैतनगर) न ले जाकर हस्तिनापुर (या पूज्य माताजी जहाँ भी विराजमान होती थीं) ले जाती थीं जिसके कारण प्रारंभ से ही बालमन पर उन धार्मिक संस्कारों का गहरा प्रभाव पड़ा और उसके परिणामस्वरूप सन् 1994 में पूज्य माताजी के अयोध्या प्रवास के मध्य पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की प्रबल प्रेरणा से उसी समय से संघ में रहना निश्चित हो गया। चूंकि उससे पूर्व सन् 1992 में मैं हस्तिनापुर में पूज्य माताजी से आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत ले चुकी थी अत: रहना तो संघ में ही था परन्तु लौकिक शिक्षा की पूर्णता की इच्छा से उस समय मैं घर चली गई थी परन्तु बाद में माताजी ने यही समझाया कि इस जीवन में लौकिक शिक्षा की अपेक्षा अलौकिक शिक्षा— धार्मिक शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। इतने वर्षों से पूज्य माताजी के निकट रहते हुए मैंने उनके अंदर जो वीतरागता, निस्पृहता, आगमनिष्ठता, परम्परा संरक्षण, वात्सल्य आदि अनेकानेक गुण देखे हैं, किसी एक ही व्यक्तित्व के अंदर इन सभी गुणों का समावेश एक साथ होना प्राय: दुर्लभ रहता है।

उन अप्रतिम प्रतिभा की धनी एवं अपने कार्यकलापों से हिन्दुस्तान की रचना को अंग्रेजी शब्दों में साकार करने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के इस अभूतपूर्व अवसर पर मैं उनके पवित्र चरणकमलों में अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित करती हूँ तथा भगवान से यह प्रार्थना करती हूँ कि—

किन शब्दों में गुणगान करूँ, गणिनी श्री ज्ञानमती जी का।
है पावन-स्वर्णिम अवसर उनकी, दीक्षा स्वर्ण जयंती का।।
बस एक प्रार्थना है मेरी, जब तक नहिं मोक्ष मिले मुझको।
तब तक अपना आशिष माता, बस देती रहना तुम मुझको।।

-ब्र. कु. सारिका जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर शत-शत बार नमन

सदी बीसवीं की पहली तुम बालसती हो जग माता।
दीक्षा स्वर्ण जयंती पर हम झुका रहे अपना माथा।।

महापुरुष वही होते हैं, जो अपने जीवन में कुछ आदर्श उपस्थित करते हैं। जिस प्रकार गुलाब कांटों के बीच रहकर भी अपनी सुगंधि से वातावरण को महकाता है। उसी प्रकार महापुरुष भी अपने जीवन में अनेक संघर्षों को झेलकर अपने गुणों की सुरभि से सारे विश्व को सुवासित करते हैं। उन्हीं में से एक युग की पहली बालसती पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं। पूज्य माताजी के जीवन के विषय में लिखना प्रारंभ किया जाये, तो शायद लेखनी कभी बंद न हो।

जब तक किसी व्यक्ति को गुरु का सानिध्य नहीं प्राप्त होता, वह अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ सकता। जन्म से ही माँ रूपी गुरु से सर्वप्रथम वह चलना, फिरना, बोलना, सीखता है और कुछ बड़ा होता है तो पाठशाला में गुरु से शिक्षा प्राप्त करता है। प्रत्येक कदम पर हमें गुरु के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। मैं जिस परिवार से संघ में आई, वहाँ प्रतिदिन पूज्य माताजी का नाम स्मरण किया जाता है क्योंकि उस नगर में सर्वप्रथम वैराग्य का अंकुर डालने वाली पूज्य माताजी ही हैं। बचपन से ही जिनका वरदहस्त प्राप्त हुआ, वही संस्कार जागृत हुए और आज मुझे उनका सानिध्य व वात्सल्य प्राप्त हो रहा है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं माताजी के इतने निकट रहकर उनके जीवन को, उनके कार्यकलापों को देखूँगी। मुझे गौरव है कि मैं पूज्य माताजी के संघ का एक हिस्सा हूँ।

जैसे कस्तूरी मृग की नाभि में ही होती है, फिर भी उसकी सुगंधि के पीछे वह जगह-जगह भागता है। उसी प्रकार पूज्य माताजी के रूप में हमें भी उनके गुणरूपी कस्तूरी की सुगंध प्राप्त हो रही है। जिसकी सुरभि से हम भी अपनी आत्मा को सुवासित कर सकते हैं। हमें कहीं और भटकने की आवश्यकता नहीं है, इनके रूप में साक्षात् सरस्वती, ब्राह्मी माता के दर्शन होते हैं।

पचास वर्षों के दीर्घ संयम, त्याग, तपस्या की साधना का यह संयम वर्ष देखकर यही भावना है कि ऐसी अनेक स्वर्ण जयंती हम सब मनाएँ। पूज्य माताजी का हम जितना गौरव करें, कम है। वर्षा की बूँद जब धरती पर गिरती है, तो वह सीप में जाकर मोती, नीम के वृक्ष पर गिरकर कड़वी, कीचड़ में गिरकर कीचड़, गन्ने के खेत में जाकर मीठी, सर्प के मुख में जाकर विष और भगवान के मस्तक पर जाकर गंधोदक बन जाती है, वैसे ही जो जन पूज्य माताजी जैसे गुरुओं के चरणों में आ जाते हैं, उनका जीवन अमृत के समान हो जाता है। ऐसे गुरु का चरण सानिध्य प्राप्त हुआ, जिसका मुझे गर्व है और वीर प्रभु से यही कामना है कि जब तक मोक्ष न प्राप्त हो, ऐसे गुरु का ही सामीप्य मिले। स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर पूज्य माताजी के मंगल आशीर्वाद भी कामना के साथ उनके चरणों में विनम्र विनयांजलि है।

शरदपूर्णिमा को तुम जन्मीं, उसी तिथि में त्याग लिया।
दीक्षा स्वर्ण जयंती का यह, स्वर्णिम अवसर आज मिला।।
हमको भी सन्मार्ग दिखा दो, हो जाए कल्याण जरा।
माता वरदहस्त हो हम पर, मिल जाये आशीष तेरा।।

-ब्र. कु. चन्द्रिका जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरी जीवन नैय्या की कर्णधार

आज ऐसे व्यक्तित्व के संबंध में लिखने हेतु मेरी लेखनी व्याकुल हो उठी, जिस व्यक्तित्व से मुझे जीवन का नवप्रकाश मिला। केवल मुझे ही नहीं पिछले कई दशकों से भी अधिक समय में अनेकों युवकों, युवतियों तथा अन्य और भी कई लोगों को नवज्योति मिली। जिस व्यक्तित्व की सन्निकटता को प्राप्त प्रायः सभी जीव मुनि, आर्यिका एवं ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी जैसे पदों को धारण करते हुए विशिष्ट ज्ञानार्जनपूर्वक मोक्षमार्ग के पथ पर अग्रसर हैं। प्रत्येक शताब्दी किसी विशेष पुण्यशाली महान आत्मा के जन्म लेने के कारण उसके महानतम व्यक्तित्व और कृतित्व से इतिहास के पृष्ठों में एक विशिष्ट कीर्तिमान स्थापित कर लेती है। बीसवीं शताब्दी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की भांति अद्वितीय व्यक्तित्व की धनी पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी जैसे चारित्रशिरोमणि उद्‌भट विद्वान संत के कारण भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगी।

जिस प्रकार पंचपरमेष्ठी भगवन्तों को नमस्कार करते हुए महामंत्र णमोकार के अन्दर सिद्ध अवस्था की प्राप्ति कराने वाले, मोक्षमार्ग में लगाने वाले अरहंत भगवान को सर्वप्रथम नमस्कार किया गया है, जबकि सिद्ध परमेष्ठी अरहंत परमेष्ठी से श्रेष्ठ हैं, ठीक उसी प्रकार हमें भगवान तक पहुँचाने वाले, मुक्ति का पथ दर्शाने वाले, सन्मार्ग पर लगाने सच्चे गुरु होते हैं इसलिए लोक व्यवहार में गुरु को परम श्रेष्ठ माना गया है। वे महान सौभाग्यशाली होते हैं, जिन्हें उन गुरुवर की छत्रछाया, उनकी सद्‌प्रेरणा प्राप्त होती है।

मैं समझती हूँ कि मेरा अनन्त-अनन्त जन्मों का पुण्यकर्म एक साथ संचित होकर उदय में आया, जब मुझे इस युग की विशल्या, आगम का साकार रूप, साक्षात् शारदा माता की प्रतिकृति, ब्राह्मी माता स्वरूपा, विद्वानों की जननी परम पूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैसे गुरु का सतत सानिध्य, उनकी पावन छत्रछाया एवं वात्सल्यपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है, जिनके सम्मुख आज सम्पूर्ण विश्व नतमस्तक है, जिनके ज्ञान और चारित्र का लोहा आज बड़े-बड़े आचार्य, मुनि, आर्यिकाएँ एवं मनीषीगण मानते हैं।

जिस टिकैतनगर ग्राम और जिन माता मोहिनी तथा पिता श्री छोटेलाल जी के नाम की यशकीर्ति पूज्य माताजी के व्यक्तित्व-कृतित्व के कारण आज चहुँ दिशाओं में व्याप्त है पुण्योदय से मुझे भी उसी वंशावलि में उस सुरभित, पुष्पित-पल्लवित उपवन की एक कली के रूप में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हालांकि जब मेरा जन्म हुआ, तब तक तो पूज्य माताजी के कार्यकलापों से जैन जगत में उनके नाम का डंका बज रहा था, अतः उन्हें कभी बुआ के रूप में देखा नहीं, सदैव कुलगुरु के रूप में देखा। जन्म से पूर्व ही दादी ने भी दीक्षा ले ली थी और एक बुआ और एक चाचा जी भी आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर सतत ज्ञानाराधना में लीन थे। हाँ इतना अवश्य रहा कि जब कभी टिकैतनगर में मेरी सबसे प्रिय माधुरी बुआजी पूज्य माताजी के पास से धार्मिक विधान-अनुष्ठान के निमित्त से टिकैतनगर आती थीं, तो मन शनैः-शनैः उनकी ओर खिंचता चला गया, उनके प्रति एक अजीब सा आकर्षण महसूस करती। मुझे स्मरण है कि वैसे तो विरासत में प्राप्त संस्कारों के फलस्वरूप हम सब अपने पिताजी (स्व. श्री प्रकाशचंद जी) के साथ हर गर्मी की छुट्टियों में इधर-उधर घूमने जाने के बजाय माताजी के पास आते थे, लेकिन जब माधुरी बुआजी ने दीक्षा ली, पुनः घर की एक दो-बहनों का झुकाव त्यागमार्ग की ओर देखा, तो मन में बार-बार आता कि ऐसा क्या है कि सभी लोग त्यागमार्ग की ओर बढ़ रहे हैं? पुनः माताजी के सरधना चातुर्मास के मध्य जब 4-5 वर्षों बाद माताजी के दर्शन मिले तब पूज्य बड़ी माताजी व छोटी माताजी की मनमोहक छवि, वात्सल्यपूर्व उद्‌बोधन से मैं प्रभावित हुए बिना न रह सकी और मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि मुझे इन्हीं माताजी की छत्रछाया में रहना है लेकिन शायद प्रबल पुण्यकर्म का उदय न होने से 2-3 बार प्रयास करने के बाद भी मुझे यह सुयोग न मिल सका। इस मध्य दोनों माताजी की वात्सल्यमयी प्रेरणा मुझे त्यागमार्ग में निकलने का सम्बल बनती रही और अन्ततः मेरा भाग्योदय हुआ सन् 1994 में, जब पूज्य माताजी का पावन चातुर्मास टिकैतनगर में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुआ, उस समय शरदपूर्णिमा की पावन तिथि में मुझे इस महान व्रत को ग्रहण करने का सौभाग्य मिला जो कि मेरे जीवन का सबसे स्वर्णिम क्षण था। आज व्रती जीवन व्यतीत करते हुए निरन्तर 12 वर्षों से माताजी के चरण सानिध्य में रहकर मैंने यही पाया कि ऐसे गुरु इस पंचमकाल में मिल पाना दुर्लभ ही नहीं असंभव है।

वर्तमान साधु जगत में पूज्य माताजी ऐसी पहली साध्वीरत्न हैं, जिन्होंने अपनी आर्यिका दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण किये हैं। वस्तुतः जैनधर्म के अनुसार संसार, शरीर, भोगों से विरक्तभावना के 28 मूलगुण रूप उपचार महाव्रत ग्रहण करने का नाम दीक्षा है। इसे धारण करने के बाद यतिधर्म के रूप में मानव जीवन का आमूल चूल परिवर्तन होता है ऐसी सम्यक्दीक्षा से दीक्षित, प्रथम क्वाँरी कन्या के रूप में कुमारिकाओं की पथप्रदर्शिका, चारित्रचक्रवर्ती गुरुवर सम पूज्यनीया माताजी वर्तमान साधु जगत की प्रकाशस्तंभ हैं। उनकी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर 'दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' का आयोजन युग के लिए स्वर्णिम देन है।

जहाँ तक मेरी दृष्टि में मात्र दीक्षा जयंती मना कर इतिश्री करना ही पर्याप्त नहीं है वरन् इस स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर उनके वैराग्यमयी जीवन से प्रेरणा लेकर हम त्याग की शिक्षा ग्रहण कर सकें, तभी इसको मनाने की सार्थकता है।

इस पावन अवसर पर मेरी एकमात्र यही अभिलाषा है कि माताजी आप दीर्घायु, शतायु होकर इस धरा को अपना दिव्यप्रकाश प्रदान करती रहें तथा इस संयम जयंती वर्ष में मैं आपके करकमलों से संयम की परिपूर्णता रूप नारी जीवन को सफल करने वाली आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर जन्म को सफल कर सकूँ। वैसे तो ऐसी प्रकाण्ड विदुषी माता के बारे में कुछ भी लिखने में मेरी लेखनी असमर्थ है फिर भी कतिपय भक्ति पुष्पों को गूंथ कर यह भक्ति कुसुमांजलि उनके पावन चरणयुगल में सविनय सादर समर्पित करती हूँ-

1. सर्वोच्च नारी रत्न

यूँ तो कई एक महापुरुषों से भारत का मस्तक ऊँचा।
पर जीवन के हर क्षेत्र में नारी का अद्भुत सहयोग रहा।।
नारी समाज में सर्वश्रेष्ठ, आदर्श रूप तेरा अनुपम।
तेरे व्यक्तित्व की दिव्य महक, खिल उठा त्याग का नया चमन।।

2. ज्ञान की सरिता ज्ञानमती

हे ज्ञान की सरिता ज्ञानमती, तुम जैन जगत की दिव्य प्रभा।
त्रय शतक ग्रंथ की रचयित्री, शारद माता सी स्वर्णाभा।।
ज्ञानामृत का निर्झर झरना, अंतर से तेरे बहता है।
उसमें अवगाहन जो कर ले, मुक्तिश्री मानो वरता है।।

3. निकट मोक्षगामी

जिनवाणी की साकार मूर्ति, आगम से गहरा नाता है।
जीवन का हर इक पहलू माँ, आगम का रूप दिखाता है।।
तुम तो हो निकट मोक्षगामी, यह चर्या तेरी कहती है।
जिनशासन रक्षा, तीर्थ सुरक्षा हेतु सदा रत रहती हैं।।

4. चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी

है चतुर्मुखी प्रतिभा तेरी, हर कार्य स्वयं में निराला है।
तेरे इस नाम में वीरसिंधु, गुरु ने सब कुछ भर डाला है।।
इस चतुरक्षर के नाम में, गुरु ने अमृत स्वयं उड़ेला है।
प्रतिभाओं ने आ-आ के स्वयं, तुझमें ही डाला डेरा है।।

6. प्रज्ञा और पुरुषार्थ की मूर्ति

पुरुषार्थ तुम्हारा इस युग में, हर नवयौवन को चुनौती है।
सुकुमारी कन्याओं को माँ, मिल गई ज्ञान की ज्योती है।।
बचपन से ही प्रज्ञा तेरी, हर जन-जन को चौंकाती है।
जब प्रज्ञा गुण को नमन करें, मूरत तेरी दिख जाती है।।

6. दृढ़ संकल्प की साक्षात प्रतिमूर्ति

जीवन में जो संकल्प लिया, उस पर दृढ़ता से अडिग रहीं।
उस दृढ़ता ने हर मानव को, दृढ़ रहने की वह शिक्षा दी।।
गर डिगो कभी मारग से तो, माँ ज्ञानमती का ध्यान करो।
दृढ़ संकल्पों की प्रतिमूरत को, ध्या करके हर विघ्न हरो।।

7. प्राचीन आचार्य परम्परा की संवाहिका

बीसवीं सदी के प्रथम गुरु, आचार्य शांतिसागर जी थे।
चारित्र चक्रवर्ती सूरीश्वर, निष्कलंक गुण आगर थे।।
उन गुरुवर की वह परम्परा है, आज भी कायम इस भू पर।
उस परम्परा को वृद्धिंगत करने में माता तू सर्वप्रथम।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

8. विद्वानों की जननी

जो शास्त्र लिखे माता तुमने, उसको पढ़ कई विद्वान हुए।
जिनको तुमसे शिक्षाएँ मिलीं, विद्वानों में शिरमौर्य बने।।
विद्वानों की तुम जननी हो, सब कहें वाग्देवी हो तुम।
हे विद्वत्जननी ज्ञानमती माँ, तुम चरणों में शत वंदन।।

9. श्रमण संस्कृति की उन्नयनकर्त्री

उन्नयन श्रमण संस्कृति का करने वाली माता नमूँ तुम्हें।
हे तीर्थोद्धारक! युगप्रवर्तिका! त्रिकाल वंदन करूँ तुम्हें।।
यह श्रमण संस्कृति युग-युग तक उपकार तेरा नहिं भूलेगी।
संस्कृति हेतू सर्वस्व न्योछावर करने की शिक्षा देगी।।

10. इस व्यक्तित्व को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता

सागर को बनाऊँ मैं स्याही, सब धरती को कागज समझूँ।
सब वनों की कलम बनाऊँ मैं, गुण गाने का मैं प्रयास करूँ।।
तेरे व्यक्तित्व को हे माता, शब्दों में बांध नहीं सकते।
जैसे सागर की गहराई, ऊँचाई माप नहीं सकते।।

11. स्वर्णाक्षरों में रहेगा अंकित नाम तुम्हारा

प्रत्येक कदम तेरा माता, इतिहास का स्वर्णिम पन्ना है।
हर कृतियाँ है अनमोल धरोहर, विश्व की अनुपम रचना हैं।।
हर चर्या आगम के अनुकूल तथा हर कार्य निराला है।
स्वर्णाक्षरों में लिख नाम तेरा, इतिहास भी गौरव वाला है।।

12. भारत माता की गोदी इस माता से कभी न सूनी हो

जब तक इस भू पर रवि शशि हैं, गंगा यमुना में नीर भरा।
युग-युग तक यशसुरभी बिखरे, औ नाम रहे जीवन्त तेरा।।
है यही प्रार्थना जिनवर से, यह दिव्य प्रभा दिन दूनी हो।
भारत माता की गोदी इस, माता से कभी न सूनी हो।।

-ब्र. कु. इन्दु जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

दृढ़ संकल्पी

हम पूज्य माताजी के इतिहास को पढ़कर देखें, तो ज्ञात होता है कि यह प्रारंभ से ही अपने कार्यों में दृढ़ संकल्पी रही हैं। घर में ही इन्होंने माँ की प्रेरणा से पद्मनंदिपंचविंशतिका ग्रंथ का स्वाध्याय कर-करके अपने मन में वैराग्य को उत्पन्न कर लिया था और जब एक दिन अकलंक-निकलंक नाटक का मंचन देखा और उसमें अकलंक-निकलंक के मुख से यह पंक्ति सुनी कि पिताजी! कीचड़ में पैर रखकर धोने की बजाय कीचड़ में पैर नहीं रखना ही अच्छा है अतः शादी न करके हम आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत लेना चाहते हैं। यह पंक्ति माताजी के मन में बैठ गई और उन्होंने भी मन में संकल्प कर लिया कि मैं भी इस गृहस्थरूपी कीचड़ में न फँसकर आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत धारण करूँगी।

एक दिन माताजी ने घर में एक स्वप्न देखा कि मैं पूजन की थाली लेकर मंदिर जा रही हूँ और मेरे साथ-साथ चन्द्रमा की चाँदनी चल रही है, इससे भी उन्हें यह आभास हो गया था कि मुझे अपने कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी और हुआ भी यही।

जब माताजी ने घर में शादी न करने की बात कही और आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज से दीक्षा लेने की बात कही, तब काफी हंगामा हुआ था। लोगों ने खूब इसका विरोध किया था क्योंकि उस समय तब किसी भी क्वाँरी कन्या ने आर्यिका दीक्षा नहीं ली थी लेकिन माताजी ने सभी संघर्षों को झेलकर अपनी माँ को समझा-बुझाकर उन्हें त्यागमार्ग पर बढ़ने के लिए मना लिया और आचार्य देशभूषण जी महाराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत एवं गृहत्याग व्रत लेकर अपने दृढ़ संकल्प को पूरा किया। इसी तरह से माताजी के जीवन में और भी अनेक संघर्ष आए, जिन्हें माताजी अपने दृढ़ संकल्प के द्वारा जीत कर आगे बढ़ती ही गईं। कभी भी माताजी ने जो कदम आगे बढ़ाया, उससे पीछे नहीं हटीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह एक विशेष गुण माताजी के जीवन का रहा है। माताजी के जीवन से हम भी इस गुण को अपने जीवन में धारण करें और एक आदर्श, उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें।

आज पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष की पूर्णता पर हम उनका स्वर्णिम दीक्षा जयंती का कार्यक्रम मना रहे हैं, यह समाज के लिए बड़े ही गौरव का विषय है। इस अवसर पर मैं पूज्य माताजी के चरण कमलों में वंदन करती हुई उनके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की भगवान से प्रार्थना करती हूँ।

-ब्र. कु. अलका जैन

(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

संसार समुद्र से पार लगाने वाली पूज्य माताजी

भारतवर्ष की पावन वसुन्धरा अनेकों साधु-सन्तों से पवित्र रही है। आज भी इस धरा पर महापुरुषों, महात्माओं के द्वारा अध्यात्म एवं ज्ञान की गंगा सदा बहती रहती है। पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी का व्यक्तित्व, कृतित्व अनुपम है। आपके द्वारा अनेकों अलौकिक कार्य हुए हैं। रत्नत्रय की धारक, ज्ञानियों में ज्ञानी, दर्शन मात्र से सम्पूर्ण सांसारिक कष्टों का निवारण भी क्षणभर में हो जाता है। समाज की ही नहीं अपितु इस देश की अमूल्य निधि हैं। आप तो वह पारसमणि हैं, जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती है। जहाँ आपके चरण पड़ते हैं, वह धरती स्वर्ग बन जाती है। जहाँ आपकी दृष्टि पड़ती है, वह तीर्थ चमन हो जाता है।

श्रवणबेलगोला में ध्यान साधना से आपको जम्बूद्वीप की रचना की उपलब्धि हुई पुनः आपकी प्रेरणा से शांति, कुंथु, अरहनाथ भगवन्तों के 4-4 कल्याणकों से पवित्र एवं अनेकों इतिहासों से सुप्रसिद्ध इस हस्तिनापुर की धरती पर जैन भूगोल की अद्‌भुत रचना जम्बूद्वीप का निर्माण हुआ। आज यह तीर्थ जन-जन की श्रद्धा-भक्ति का केन्द्रबिन्दु बना हुआ है। आगन्तुक दर्शनार्थी इस प्राकृतिक छटा के विहंगम दृश्य को देखकर खुशी से झूम उठते हैं एवं इसे धरती का स्वर्ग कहते हैं। पूज्य माताजी की प्रेरणा से अनेकों प्राचीन तीर्थों का एवं तीर्थंकरों की अविकसित जन्मभूमियों का पुनः जीर्णोद्धार हुआ। आपने तीर्थों का संरक्षण व संवर्धन किया है। आप दिव्यशक्ति हैं, आपके आशीर्वादमात्र से बड़े-बड़े कार्य भी मिनटों में हो जाते हैं। आपके द्वारा इन 50 वर्षों में अनगिनत कार्य हुए हैं। जिन संस्कृति के प्रति, विशेषतौर पर तीर्थंकरों की जन्मभूमियों एवं निर्वाणभूमियों के प्रति जो अनुराग एवं अकाट्य श्रद्धा है, यह विशेषता किसी और में नहीं हो सकती है, वह सिर्फ आप में ही है। आपकी प्रेरणा से कुण्डलपुर तीर्थ का भी सुन्दरतम विकास हुआ है। आपकी सूझबूझ एवं चिन्तन से इस तीर्थ का नाम नंद्यावर्त महल रखा गया है। कुण्डलपुर में आने वाले प्रत्येक यात्री इस अप्रतिम दृश्य को देखकर अत्यधिक खुश होते हैं। वस्तुतः यह तीर्थ बिहार का खूबसूरत तीर्थ है।

चहुँमुखी प्रतिभा की धनी परम विदुषी माताजी के द्वारा साहित्य लेखन का क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा। आपने छोटे-बड़े सभी 200 से अधिक ग्रंथों की रचनाकर विश्व में कीर्तिमान स्थापित किया है, तो फैजाबाद विश्वविद्यालय ने आपको डी.लिट्. की मानद् उपाधि से अलंकृत कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया है। आपके द्वारा लिखित भक्ति विधानों की तो समाज में चारों ओर धूम मची हुई है। पाश्चात्य युग में जिनवाणी को सुन्दर एवं सरल रूप में संगीत के माध्यम से जन-जन के मध्य भक्ति गंगा की लहरों में प्रवाहित कर दिया है। पूज्य माताजी अस्वस्थ अवस्था में भी इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम विधानों की कर्णप्रिय जयमालाओं को आत्मलीन होकर सुनती थीं, जब भी आपसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूछा जाता था तो आपके मुख से यही निकलता था कि मुझे विधानों की जयमालाएँ सुनाओ, मैं इसी से स्वस्थ हो जाऊँगी, मेरी दवाई यही है। आज इस अवस्था में भी आप प्रतिदिन लिखाई करती हैं। आपकी तो लेखनी इतनी सुन्दर एवं सुसज्जित है कि देखने वाले देखते रह जाते हैं। आपके कंठ में साक्षात् सरस्वती विराजमान हैं। आपकी सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि विशाल सभाओं में शोरगुल के बीच भी आपकी लेखनी निरन्तर चलती रहती है। सर्वसाधु जगत में श्रेष्ठतम ज्ञान की धनी आप ही हैं।

सन् 1996 में पूज्य माताजी के पावन चरण कमल मेरे छोटे से सुसनेर नगर (म.प्र.) में पड़े थे। मैंने उससे पूर्व आपके बारे में सुना था, लेकिन दर्शन नहीं किए थे। प्रथम बार दर्शनों का लाभ मेरे ही गाँव में मुझे प्राप्त हुआ और मैंने अपने आपको धन्य समझा था। आपकी सौम्य छवि एवं वात्सल्यमयी अतिशयकारी सुमधुर वाणी से मैं प्रभावित हो गई थी और चुम्बकीय शक्ति सम आपके पीछे-पीछे चल पड़ी थी और मुझे सहजता से आपके चरणों में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपके द्वारा प्रदत्त सहिष्णुता, सहनशीलता, एकता आदि की शिक्षाएँ सदैव मेरे जीवन में अंकित रहें और चन्द्रगुप्त मुनिराज की भाँति मैं भी आपकी सेवा भक्ति कर सकूँ, पूज्य माताजी के चरणों में शत-शत नमन करते हुए अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित करती हूँ।

-ब्र. कु.प्रीति जैन

(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

एक रात बनी सौगात

इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण कर मेडिकल की प्रवेश परीक्षा की तैयारी में मैं संलग्न थी। जुलाई सन् 1987 में नजीबाबाद (जि.-बिजनौर, उ.प्र.) के जैन मंदिर में 'सिद्धचक्रमहामण्डल विधान' का आयोजन रखा गया और उसी विधान में पधारीं जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से ब्र. कु. माधुरी शास्त्री। प्रभावक प्रवचन ने मेरे किशोर मन पर अमिट छाप छोड़ दी थी, पता चला रात्रि में बहन जी को हमारे घर पर ही प्रवास करना था, मन में बड़ी प्रसन्नता हुई। रात्रि विश्राम से पूर्व कुछ ही देर बहन माधुरी जी से वार्तालाप हुआ, प्रथम बार किसी त्यागमार्ग के पथिक का निकट सानिध्य मिला था और भविष्य को मुझे भी इसी पथ पर लाना था, शायद इसीलिए मात्र कुछ क्षणों की बातचीत ने जीवन और मन को एक नवीन पथ से परिचित करा दिया था। बहन जी ने कहा-हमारे साथ हस्तिनापुर चलो तो पूज्य ज्ञानमती माताजी के दर्शन तुम्हें करायेंगे, प्रथम बार ज्ञानमती माताजी का नाम सुना था, जिज्ञासा हुई 'माताजी कैसी होती हैं?'

सौभाग्य से कुछ ही दिन बाद भैय्या के साथ हस्तिनापुर आकर पूज्य ज्ञानमती माताजी के दर्शन प्राप्त हुए। अत्यंत शांत मुद्रा में पूज्य माताजी लेखन में व्यस्त थीं, बहुत देर तक माताजी का लेखन चलता रहा, मुझे भी बैठे-बैठे उनको देखते रहना अच्छा लग रहा था, माधुरी बहनजी बाहर गई हुई थीं अतः किसी से कोई परिचय भी नहीं था। बहुत देर के बाद पूज्य माताजी ने मस्तक ऊपर उठाया, परिचय पूछा और प्रथम ही परिचय में वैराग्य पथ का उपदेश देना प्रारंभ कर दिया। किशोर मन पर संस्कार पड़ते गये और मात्र 15 दिन के अनन्तर ही मैंने माधुरी बहन जी से कहा कि मुझे अब कभी विवाह इत्यादि के बंधन में बंधना ही नहीं है और 19 जुलाई 1987 को पूज्य माताजी के तृतीय बार दर्शन के अवसर पर उनसे ब्रह्मचर्यव्रत रूप महान निधि मुझे प्राप्त हो गई।

माता-पिता और भाई-बहन का अपार स्नेह मुझ पर था और मेरे लौकिक अध्ययन के प्रति उनकी विशेष अभिरुचि और सहयोग होने से उनकी इच्छा के अनुरूप लौकिक शिक्षा भी पूर्ण करनी था। आज की आधुनिक शिक्षा के वातावरण में यद्यपि कहीं धर्म का अंश भी प्राप्त नहीं हो पाता है तथापि पूज्य माताजी द्वारा प्रदत्त शिक्षाएँ मानस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पटल पर अंकित थीं, सदैव हृदय में ये व्यग्रता रहती थी कि कहीं सांसारिकताओं में पड़कर जीवन की सत्यता को विस्मृत न कर दूँ। धीरे-धीरे रुड़की विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. (बायोसांइसेज) की परीक्षा डिस्टिंकशन के साथ उत्तीर्ण की, सुन्दर लौकिक भविष्य प्रतीक्षारत था, सहपाठी वर्ग विदेश में पी.एच.डी. करने हेतु जा रहे थे, परन्तु सौभाग्य से पूज्य माताजी के वैराग्यमयी संदेश का पलड़ा कहीं अधिक भारी रहा। धर्ममार्ग में आने से पूर्व इच्छा थी कि भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) की परीक्षा उत्तीर्ण करूँ, इसीलिए राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी)-दिल्ली में प्रोजेक्ट एसोसिएट के रूप में ज्वॉइन किया, धीरे-धीरे वैराग्य भावनाएँ प्रबल होने लगीं, सांसारिक पदों की उपादेयता पर मन ही मन विशेष चिंतन चला करता था, इसी बीच पी.सी.एस. (उ.प्र.) की प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण हुई, मुख्य परीक्षा की तैयारी करनी थी परन्तु अब तक संसार की असारता प्रबल रूप से हृदय पर अंकित हो गई थी, पूरे दस वर्ष बाद 1997 में दिल्ली में पूज्य माताजी का दर्शन पुनः प्राप्त हुआ, उन्होंने पुनः यही शिक्षा दी कि आत्मकल्याण का प्रयास ही सच्चा प्रयास है, अब जीवन को जीने की दिशा का उचित निर्धारण सर्वाधिक आवश्यक लगने लगा और पूज्य माताजी के चरणों में रहने की जिजीविषा प्रबलतम हो गई, पुनः इसमें सफलता भी प्राप्त हुई, जीवन का नया अध्याय प्रारंभ हुआ।

यहाँ पर तात्पर्य यही है कि पूज्य ज्ञानमती माताजी की शिक्षाएँ एवं व्यक्तित्व प्रभाव इस प्रकार का था कि अन्य प्रकार का विपरीत वातावरण भी मेरे लिए अप्रभावी रहा, यही मेरा सौभाग्य था। किंचित सानिध्य मात्र में ही पूज्य माताजी ने जो बीजारोपण कर दिया था, उसकी जड़े दस वर्षों तक हरी रहीं, यह मुख्य बात थी।

पुनः संघ में आने के पश्चात् पूज्य माताजी के विराट व्यक्तिव का समग्र परिज्ञान होना प्रारंभ हुआ। जिनधर्म के प्रति अगाध समर्पण, कार्य में अद्‌भुत तत्परता, जिनेन्द्र भक्ति एवं साहित्य साधना के प्रति विपुल अनुराग, कठोर परिश्रम, दृढ़ इच्छाशक्ति, कार्य में एकाग्रता, अनुशासन, वात्सल्यमयी हृदय इत्यादि गुणों को दृष्टिगत करते हुए मुझे यह अनुभव होता कि बहुत बड़ी लौकिक शैक्षणिक डिग्रियों को धारण करने वाले भी कार्य क्षमता में पूज्य माताजी के समक्ष बौने हैं।

भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, प्रयाग (इलाहाबाद) में 'ऋषभदेवपुरम् दिगम्बर जैन तीर्थ' एवं कुण्डलपुर (नालंदा) में 'नंद्यावर्त महल तीर्थ' के भव्य निर्माण, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव आदि धर्मप्रभावनात्मक गतिविधियों को अपनी आँखों के समक्ष सम्पन्न होते हुए देखकर मैंने जाना कि 'संस्कृति-संरक्षण' किस प्रकार पूज्य माताजी की रग-रग में बसा है।

पूज्य माताजी के जिनेन्द्र भक्ति एवं अध्यात्म से सराबोर प्रवचनों को सुनते-सुनते मुझे जो निधि प्राप्त हुई है, उसका उल्लेख उनके परम उपकार के रूप में करना मैं आवश्यक समझती हूँ क्योंकि सम्यक्त्वरूपी रत्न की प्राप्ति ही जीवन में सबसे बड़ा उपहार है। 'जिनेन्द्रदेव और उनके द्वारा प्रणीत धर्म ही हमारा सर्वस्व है, जिनभक्ति से ही समस्त इच्छित फलों की प्राप्ति होती है, मैं चिच्चैतन्य स्वरूप भगवान आत्मा हूँ, आधि-व्याधि देह में हैं आत्मा में नहीं, आत्मा को परमात्मा बनाने के लिए ही मानव जीवन की प्राप्ति हुई है इत्यादि वचनामृत जब उनसे प्राप्त होते हैं, तो अंदर तक तृप्ति हो जाती है। नारी होकर जिन ऊँचाईयों को पूज्य माताजी ने स्पर्श किया है, वो किसी असाधारण व्यक्तित्व का ही कार्य है।

पूज्य बड़ी माताजी और पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने धर्म के मार्ग के प्रति आकृष्ट करके, पुनः अपने संघ में स्थान देकर, पुनः हर प्रकार से वात्सल्य और प्रोत्साहन देकर मुझ पर जो महान उपकार किया है, उसके लिए शब्दों में कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरी घृष्टता होगी। जिनेन्द्र भगवान से यही विनम्र विनती है कि सदैव और सदैव ऐसी सद्‌बुद्धि बनी रहे कि ऐसे महान धर्म और गुरुओं के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना नितप्रति वृद्धिंगत होती चली जाये और वह रात जो सौगात बनकर मुझे प्राप्त हुई थी, उसका सर्वाधिक सुंदर प्रतिफल दीक्षित अवस्था में क्रमशः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानार्जन करते हुए अपने लक्ष्य की सिद्धि हो सके।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती पर मेरी यही हार्दिक भावना है कि उनकी छत्रछाया अविरल रूप से दीर्घकाल तक हमें प्राप्त होती रहे।

-ब्र. कु. स्वाति जैन

(संघस्थ-पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी)

विनयांजलि

दिन बीतते देर नहीं लगती है, कितना सत्य है यह वाक्य। आज से 50 वर्ष पूर्व माधोराजपुरा में आचार्य वीरसागर महाराज ने क्षुल्लिका वीरमती माताजी को आर्यिका ज्ञानमती बनाकर दीक्षा प्रदान की थी। कितनी शुभ घड़ी थी और कितना विशाल आशीर्वाद गुरु जी का था और कैसा फलित हुआ, यह किसी से छिपा नहीं है। ज्ञान की गंगा बहाने वाली ज्ञानमती माताजी ने सम्मेदशिखर की सर्वप्रथम यात्रा की। उसी यात्रा के मध्य मार्ग में जो भी स्थान पर माताजी का पदार्पण हुआ, वहीं धर्म की वर्षा हुई और लगा कि स्वयं ज्ञानार्जन करने वाली एवं संघस्थ साधुओं को ज्ञान दान देने वाली आर्यिका ज्ञानमती माताजी को गुरु का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है। आज तक माताजी ने पचास चातुर्मास विभिन्न स्थानों पर करके महती धर्मप्रभावना की है। लगभग दो सौ केशलोंच स्वयं के किये हैं। इस पचास साल के मध्य माताजी ने अनेक क्लिष्ट ग्रंथों का अध्ययन-अध्यापन एवं संस्कृत व हिन्दी अनुवाद करके कीर्तिमान स्थापित किया है। जहाँ साधारण ज्ञान वालों के लिए जैनभारती लिखी, उत्कृष्ट ज्ञान वालों के लिए अष्टसहस्री जैसे ग्रंथों का पठन-पाठन सरल कर महान उपकार किया है। पहले लोग किसी जैन पंडित को बुलाकर विधान कराकर संतुष्टी तो कर लेते थे परन्तु स्वयं ही पूजा का अर्थ नहीं समझ पाते थे। इस बात पर पूज्य माताजी का ध्यान जाना स्वाभाविक था, तभी बड़े-बड़े पूजा-विधानों को इतनी सरल एवं लयपूर्ण मधुर भाषा में सृजन किया कि देखते ही देखते सारे भारतवर्ष में इन्द्रध्वज विधान की धूम मच गई। समाज में इतना लोकप्रिय पूजा विधान इससे पूर्व कोई भी न था। इसके पश्चात् लोगों के आग्रह पर समवसरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, कल्पद्रुम विधान, तीस चौबीसी विधान आदि विधानों की झड़ी ही लग गई। लोगों को आश्चर्य हुआ कि यह सारे विधान हमारे आचार्यों की देन तो थी परन्तु हम सब इनसे अनभिज्ञ थें। पूज्य ज्ञानमती माताजी ने नई भाषा एवं नई लय में विधानों को रचकर हम पर महानं उपकार किया। जब माताजी ने देखा कि आज लोग तीर्थों के नवनिर्माण में तो धन व्यय कर रहे हैं, पर तीर्थों के जीर्णोद्धार में रुचि नहीं है। तभी खासकर तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के विकास एवं जीर्णोद्धार का भी बीड़ा उठाया। फलस्वरूप आपकी प्रेरणा से भगवान शांति, कुंथु, अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर, भगवान ऋषभदेव आदि पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या, भगवान ऋषभदेव दीक्षाभूमि इलाहाबाद, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) आदि भूमियों पर भव्य विकास कार्य हुआ, जो अपने में एक अति महत्वपूर्ण विषय है।

वीरप्रभु से यही प्रार्थना है कि पूज्य माताजी शतायु हों और इसी तरह अपने अपार ज्ञान से जिनेन्द्रदेव की वाणी को जन-जन तक अपने आशीष के साथ प्रसारित करती रहें। माताजी के चरणों में बारम्बार वंदामि।

-ब्र. कु. मंजू जैन शास्त्री

(सुपुत्री-कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गवेषणा-पिपासु-आर्यिका ज्ञानमती माताजी

साहित्य समाज का दर्पण है, साहित्य से इतिहास, संस्कृति एवं धर्म का संरक्षण होता है। सत् साहित्य से समाज का उत्थान, संस्कारारोपण एवं आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। साहित्य जब आगम का रूप लेता है, तो वह सर्वमान्य एवं प्रामाणिक हो जाता है। जिनेन्द्र भगवान की दिव्यध्वनि से निःसृत वाणी गणधर परमेष्ठी के माध्यम से आचार्यों द्वारा अनुयोगों का रूप ग्रहण करती है। श्रावकाचार एवं मूलाचार के ग्रंथ श्रावकों एवं मुनिराजों की चर्या का दिग्दर्शन करते हैं। वर्तमान पंचमकाल में साक्षात् अरिहंत भगवान का सद्भाव न होने से श्रावकों को मोक्षपथ जिनवाणी एवं वर्तमान आचार्यों से ही प्राप्त होता है।

श्रावक अपने कर्तव्यों का पालन माँ जिनवाणी का आश्रय पाकर ही करते हैं। प्रथम कर्तव्य देवपूजा के कई भेद मिलते हैं। महापूजा के रूप में इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम आदि का निर्देश शास्त्रों में वर्णित है। समस्त अनुष्ठान विधि संस्कृत में उपलब्ध होने के कारण सामान्य श्रावक उनसे पूर्णरूपेण लाभान्वित नहीं हो पाते थे। आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने अपने विशिष्टज्ञान के द्वारा हिन्दी में विभिन्न विधानों की रचना करके अरिहंत भक्ति को नया आयाम दिया है। माताजी ने अपने विधानों में सरल शब्दों के साथ-साथ व्याकरण, छंद एवं संगीत का अद्भुत समायोजन किया है। गूढ़ से गूढ़ विषय भी भक्त को सहजता से हृदयंगम हो जाता है। लयबद्ध काव्य की सरसधारा से भक्ति का आनन्द कई गुना होकर कर्मनिर्जरा का सार्थक कार्य करता है।

तिलोयपण्णत्ति एवं त्रिलोकसार जैसे गणितीय ग्रंथों के साथ कई ग्रंथों का सार माताजी ने विधानों की जयमाला में देकर गागर में सागर भरने का भगीरथ प्रयास किया है। आगमिक एवं शास्त्रीय आधार पर शताधिक रचनाओं का सृजन माताजी के ज्ञान एवं अनुभव का जीवन्त साक्ष्य है। कई सैद्धान्तिक ग्रंथों का सृजन, संस्कृत रचनाएँ, विशिष्ट ग्रंथों का सम्पादन एवं कई तीर्थक्षेत्रों का संरक्षण तथा संवर्द्धन आपकी अरहंत भक्ति, श्रुत भक्ति एवं स्थितीकरण और वात्सल्य गुण को प्रकट करता है।

मुझे कई बार माताजी के अल्प सानिध्य का सौभाग्य मिला, परन्तु हस्तिनापुर में रेवाड़ी जैन मिलन द्वारा आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में माताजी का पूर्ण सानिध्य प्राप्तकर उनकी सहजता, सरलता, वात्सल्य एवं विलक्षण ज्ञान प्रतिभा का साक्षात्कार किया। कुछ अस्वस्थ होने पर भी उन्होंने प्रतिदिन कक्षा के माध्यम से आध्यात्मिक, सैद्धान्तिक विषयों पर महत्वपूर्ण चर्चा करके शंकाओं का समाधान किया। पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के साथ आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी, ब्र. रवीन्द्र जी की कार्यक्षमता एवं शैली से परिचित होने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ।

शिविरार्थियों के ज्ञानवर्धन हेतु आर्यिका माताजी ने हस्तिनापुर गौरव जम्बूद्वीप का विस्तृत विवेचन उत्साह एवं वात्सल्यपूर्वक करके सभी को अभिभूत किया। इतनी उम्र में भी इतना श्रम एवं ज्ञान का क्षयोपशम उनकी संयम साधना का सुफल है। अनुष्ठानविषयक महत्वपूर्ण आगमिक रहस्यों का उपहार माताजी से पाकर मेरा हस्तिनापुर प्रवास सफल हो गया।

मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया माताजी की सहजता ने। जिस विषय का उन्हें ज्ञान है, उसका विवेचन शास्त्रीय आधार से करती हैं तथा जिस विषय की जानकारी नहीं हो, उसको स्पष्ट शब्दों में कहती हैं कि यह विषय मुझे स्वाध्याय में नहीं मिला है, इसके बारे में मैं बता नहीं सकती। आज भी माताजी संघ के साथ कई विषयों की खोज एवं शोध में प्रयासरत हैं। स्वाध्याय एवं चिंतन से विषय के शास्त्रीय समाधान का श्रमसाध्य एवं दुरूहकार्य अनवरत चलता है। माँ जिनवाणी के प्रति उनका बहुमान एवं बिना शास्त्रीय प्रमाण के विषय का प्रतिपादन न करने की शैली ने मुझे सिखाया कि जिनवाणी के आसन पर बैठकर आगम एवं आचार्यों के अनुसार ही बोलना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी ने ज्ञान को आचरित कर स्वयं को ज्ञानमय बना लिया है। आपके द्वारा सृजित साहित्य माँ जिनवाणी के अक्षयकोष की अमूल्य धरोहर है। आपकी कल्पना, संयोजना, रचना एवं कार्यशैली अनुकरणीय है। संयम साधना का दीर्घ जीवन हमें सतत मार्ग- निर्देशन देता रहे। आपके द्वारा भव्यजीवों को ज्ञान का प्रकाश दीर्घकाल तक मिलता रहे, जिससे उनका जीवन पथ सदैव आलोकित होता रहे।

इसी मंगलकामना एवं शुभकामना के साथ गवेषणा पिपासु माताजी के प्रति वंदामि करता हुआ अपनी विनय भावना समर्पित करता हूँ।

-ब्र. जयकुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)

जीते हों किसी ने देश तो क्या,
इनने हर दिल को जीता है

माताजी का नाम लेते ही लेखनी स्वयं चल पड़ती है। जिनको लिखना नहीं आता है, उनका मन भी करता है कि कुछ शब्द सुमन तो मैं भी माताजी के चरणों में अर्पण कर दूँ। जिनके जीवन का हर पल प्रेरणा देता है। हर बात से कुछ न कुछ सीख मिलती है। जीवन तो हर कोई जीता है लेकिन ऐसे संत युग को कुछ दे जाते हैं और माताजी ने तो समाज को इतना विराट साहित्य दिया है अपनी लेखनी के द्वारा, जिसकी इतिहास में कोई मिसाल नहीं देखने को मिलती है। माताजी का व्यक्तित्व ऐसा है कि हर व्यक्ति बहुत प्रभावित होता है। पावापुरी में राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी माताजी से और उनके विचारों से बहुत प्रभावित हुए। इंदिरा जी (प्रधानमंत्री) जब रथ का उद्घाटन करने आईं और अपने घर गईं, तो उन्होंने जाते ही कार्यकर्ताओं को फोन किया कि मैंने बहुत से कार्यक्रमों में भाग लिया, लेकिन आज मुझे विशेष सुखद अनुभूति हो रही है। वह अनुभूति पूज्य माताजी की चुम्बकीय शक्ति की है, जो देश के राष्ट्रपति से लेकर सामान्य नागरिक तक को प्रभावित करती है।

मैंने माताजी के साथ रहकर महसूस किया कि इतनी ज्यादा सरलता है इनके अंदर कि शायद किसी अन्य साधु में न मिलें। एक संस्मरण मुझे याद आ रहा है। माताजी ने जब दिल्ली से कुण्डलपुर विहार किया, तो विहार मार्ग को चयन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। नितप्रति प्रातः 15/20 किमी. व शाम को 8/10 किमी. विहार होता था। एक दिन बहुत अच्छा स्थान मिला। मैंने उस दिन शाम का विहार का कार्यक्रम नहीं बनाया, माताजी ने मध्याह्न में मुझसे पूछा कि विजय! आज मध्याह्न में कितना चलना है [illegible] स्थान अच्छा है, आज नहीं चलना है थोड़ा यहाँ विश्राम हो जायेगा एवं आपको आराम मिल [illegible]। माताजी ने जो उत्तर दिया उससे मन इतना अधिक प्रभावित हुआ कि शब्दों में उसका वर्णन नहीं कर सकता हूँ। माताजी ने कहा यदि अच्छा ही देखना था तो घर छोड़कर क्यों आते, स्वर्ग से सुंदर जम्बूद्वीप छोड़कर क्यों आते। इसलिए तुम तो अभी ही व्यवस्था कर दो और उसी समय विहार कर गईं।

दीपक की भांति जलता है कोई कोई, फलों की भांति फलता है कोई कोई।
आदर्शों की बात सभी लोग करते हैं, आदर्शों के मार्ग पर चलता है कोई कोई।।

माताजी ने जब भी तीर्थ निर्माण की प्रेरणा दी, स्वयं जंगलों में समय व्यतीत किया। जब बाग बस जाये, तो बागवान चल देता। जब रहने की सुन्दर व्यवस्था बनती, उसके पूर्व ही माताजी का विहार हो जाता। खुद को जला कर दूसरों को प्रकाशित किया है दीपक की भाँति। आज उसी का प्रतिफल है कि हमें इतने सुन्दर तीर्थ दिखाई दे रहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं। ये माताजी की दूरदर्शिता है कि हर व्यक्ति कुण्डलपुर, प्रयाग तीर्थ की प्रशंसा बिना किये नहीं रह पाता है आंज सारे देश में पूज्य माताजी के कार्य कलापों का हर व्यक्ति लोहा मानता है। माताजी के बारे में जितना भी कहा जाए कम है। अंत में मेरी माताजी के प्रति यही मंगल कामना है कि

ऐसी माता से धरती का आंचल होय न सूना।
सूर्य चाँद सम अमर रहे, बस यह प्राचीन नमूना।।

-ब्र. विजय कुमार जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

माँ! चरणों में तुम्हें नमस्ते.......

ज्ञाननन्दनी वरदनन्दनी ज्ञानमती माँ तुम्हें नमस्ते।।1।।
आशा हो जन-जन की तुम माँ अतः तुम्हें सविनम्र नमस्ते।।2।।
नारी पद की पराकाष्ठा तुमने धारी तुम्हें नमस्ते।।3।।
गगन चुम्बि चारित अवधारी करते लाखों भक्त नमस्ते।।4।।
ज्ञानी-ध्यानी हो विज्ञानी रत्नत्रय की मूर्ति नमस्ते।।5।।
जम्बूद्वीप निर्माण सुकर्त्री पद कमलों में सदा नमस्ते।।6।।
बचपन में वैराग्य को साधा अतः बालयोगिनी नमस्ते।।7।।
मोहपाश से खुद को निकाला खुदा रूप माँ तुम्हें नमस्ते।।8।।
दीक्षा को फिर कदम बढ़ाया बनीं आर्यिका मातु नमस्ते।।9।।
अविचल अविरामी पुरुषार्थी सुभट विजेता चरण नमस्ते।।10।।
आगम दर्पण बनकर आयीं अतः वरूं तव शरण नमस्ते।।11।।
दुःख हरती सुख देती जन को शांति प्रदाता तुम्हें नमस्ते।।12।।
सहज सुन्दराकृति वसुधा की कुदरत करती तुम्हें नमस्ते।।13।।
ज्ञानस्रोत अद्भुत निर्झरणी सरस्वती प्रतिमूर्ति नमस्ते।।14।।
धर्म सूर्य हो भक्त गगन में, भक्तों को अविराम नमस्ते।।15।।
प्रथम लेखिका हो इस युग की स्वीकारो मम लिखित नमस्ते।।16।।
ब्राह्मी सुन्दरी का पथ धारा अतः आचरित चरण नमस्ते।।17।।
संयम रथारूढ़ हो माता निज सारथि को करूँ नमस्ते।।18।।
स्वर्ण संयमावर्ष हितंकर पद वंदन अरु सहस नमस्ते।।19।।
दो वरदान ज्ञानवृद्धि हो रहूँ पार्श्व तुम चरण नमस्ते।।20।।
इक्कीस प्रकृति यूँ क्षय कर पाऊँ क्षायिक श्रेणी हेतु नमस्ते।।21।।
माँ ज्ञानमती की "आभा" जग में चरणों में आ करें नमस्ते।।22।।

-बा.ब्र. आभा जैन
(संघस्थ-गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारत के राजनेताओं द्वारा पूज्य माताजी के प्रति प्रेषित शुभकामना संदेश

सत्यमेव जयते

भारत के उप-राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी
OFFICER ON SPECIAL DUTY
TO THE VICE-PRESIDENT OF INDIA
नई दिल्ली/NEW DELHI - 110011
TEL.: 23016422 / 23016344 FAX : 23012645

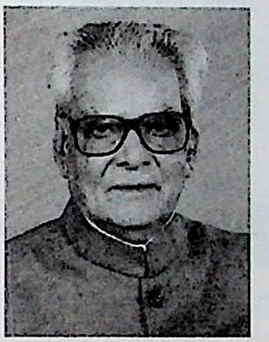

MESSAGE

Vice-President of India is glad to know that Sadhvi Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji has completed fifty years of ascetic life and Ganini Gyanmati Gaurav Granth is being published to mark this occasion.

Vice-President of India extends his greetings and good wishes to Sadhvi Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji and wishes Mataji many more years of spiritual service to the people.

(ASHOK ARYA)

New Delhi
20th February, 2006

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवराज पाटील
SHIVRAJ V. PATIL
गृह मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

17 फरवरी, 2006

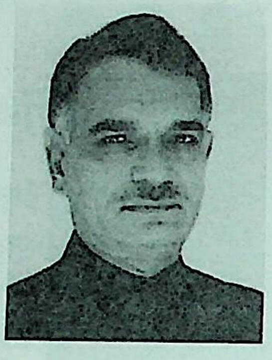

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी दीक्षा स्वर्ण जयन्ती महोत्सव समिति द्वारा जैन समाज की सर्वोच्च एवं प्राचीन दीक्षित जैन साध्वी श्री ज्ञानमती माताजी की दीक्षा की स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रन्थ" का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा एवं विश्वास है कि इस गौरव ग्रन्थ में प्रकाशित लेखों से समाज को एक नई दिशा मिलेगी तथा समाज का नैतिक उत्थान होगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ और अपनी ओर से हार्दिक शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

(शिवराज वि. पाटील)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रधान मंत्री
Prime Minister

MESSAGE

I am glad to know that the 50th Deeksha Samaroh of Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji is being organized during April 14-16, 2006.

A prominent spiritual leader Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji has rendered valuable services in protecting the heritage of Jainism and transmitting our cultural values among people. Revered by large number of her followers for her wisdom and spiritual insights she has spread the gospel of non-violence, compassion and universal brotherhood. I am sure that the golden jubilee of her Deeksha ceremony will contribute to the religious and spiritual tradition of our composite culture.

On this occasion, I greet all those associated with the Deeksha Samaroh and convey my best wishes to Mataji for health, well-being and many years of service for the cause of spreading spirituality.

Manmohan Singh
(Manmohan Singh)

New Delhi
April 4, 2006

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रणब मुखर्जी
PRANAB MUKHERJEE

रक्षा मंत्री, भारत
MINISTER OF DEFENCE
INDIA

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर जैन समाज द्वारा आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव का आयोजन हस्तिनापुर में किया जा रहा है।

वास्तव में देखा जाए तो कठोर तपस्या करने वाले संतों के आशीर्वाद से ही समाज एवं राष्ट्र में शांति, क्षेत्र एवं सुभिक्ष की स्थापना होती है। आज के आधुनिक युग में भी तपस्यारत साधु-साध्वी इस भारतधरा पर विद्यमान हैं, यह हम सबका सौभाग्य है। पूज्य माताजी की तपस्या की स्वर्ण जयंती मनाने में जनमानस को भी त्याग और सदाचार का संदेश प्राप्त हो सकेगा।

महोत्सव के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रणब मुखर्जी

(प्रणब मुखर्जी)

दिनांक : 22 मार्च, 2006

स्थान : नई दिल्ली

Office : 104, South Block, New Delhi-110011. Ph. : 23012286, 23019030 Fax : 23015403
Residence : 13, Talkatora Road, New Delhi-110001. Ph. : 23737623, 23323042 Fax : 23737658

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पत्र सं. 901/वी.आई.पी. [illegible]
D.O.No. 901 .... /[illegible] (C) 2006

श्रीप्रकाश जायसवाल
SRIPRAKASH JAISWAL

राज्य मंत्री
गृह मंत्रालय
नार्थ ब्लाक, नई दिल्ली-110001
MINISTRY OF STATE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
NORTH BLOCK, NEW DELHI-110001

15 FEB 2006

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि जैन समाज की सर्वोच्च एवं वर्तमान में सबसे प्राचीन दीक्षित जैन साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी अपनी अर्यिका दीक्षा के 50 स्वर्णिम वर्षो को दिनांक 15 अप्रैल, 2006 को पूर्ण कर रही हैं और इस अवसर पर **" गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ "** प्रकाशित किया जा रहा है । पू0 माताजी ने अपने त्यागमयी संयमी जीवन के इन 50 वर्षो में जैन संस्कृति के उत्थान में अभूतपूर्व योगदान दिया है एवं साहित्यिक क्षेत्र में अपनी लेखनी से 200 से भी अधिक महान ग्रंथों का सृजन किया है तथा अनेक भव्य तीर्थो एवं मंदिरों का निर्माण कराया है । यह एक सराहनीय प्रयास है ।

मैं इस आर्यिक दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के शुभ अवसर पर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं और **"गौरव ग्रंथ"** के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं ।

(श्रीप्रकाश जायसवाल)

श्री रवीन्द्र कुमार जैन,
अध्यक्ष, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान,
पो0 जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर- 250404
मेरठ, उ0प्र0

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कांतिलाल भूरिया
KANTI LAL BHURIA

सत्यमेव जयते

कृषि, उपभोक्ता मामले,
खाद्य और सार्वजनिक वितरण
राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF STATE FOR
AGRICULTURE, CONSUMER AFFAIRS,
FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI-110001

7 मार्च, 2006

संदेश

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि जैन समाज की सर्वोच्च एवं वर्तमान में सबसे प्राचीन दीक्षित जैन साध्वी गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 स्वर्णिम वर्षों को दिनांक 15 अप्रैल, 2006 को पूर्ण कर रही हैं । इस अवसर पर "गौरव ग्रंथ" का प्रकाशन किया जाना स्वागत योग्य कदम है । आशा है धर्मावलम्बी एवं उनके अनुयायी माताजी की उपस्थिति में उनके प्रवचनों एवं समाज के लोग उनके द्वारा किए गए कल्याणकारी कामों को आत्मसात कर अपने जीवन में खुशियों लायेंगे ।

मैं इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कर रहा हूँ ।

(कांतिलाल भूरिया)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाल कृष्ण आडवाणी
नेता प्रतिपक्ष
लोक सभा

[illegible]
नई दिल्ली 110
दूरभाष: 2301670[illegible]
फैक्स: 2301[illegible]

दिनांकः 22 फरवरी, 2006

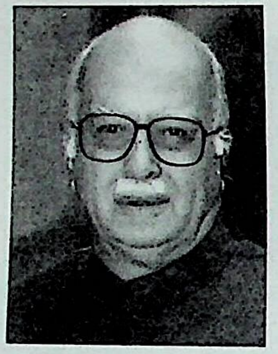

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जैन समाज की सर्वोच्च जैन साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष 15 अप्रैल, 2006 को पूर्ण कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि इस अवसर पर समिति द्वारा "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" प्रकाशित किया जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि ग्रंथ में पूज्य माताजी के द्वारा इन 50 वर्षों में जैन संस्कृति के उत्थान हेतु किये गये योगदान का उल्लेख होगा। ग्रंथ लाभप्रद एवं उपयोगी होगा तथा पाठकगण पूज्य माताजी के त्याग व आदर्शों से प्रेरणा लेकर लाभान्वित हो सकेंगे।

लाल आडवाणी

(लाल कृष्ण आडवाणी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टी. वी. राजेस्वर
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ-227 132

<u>सन्देश</u>

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के ५० वर्षो की सम्पूर्ति पर ''गौरव ग्रंथ'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

''गौरव ग्रंथ'' के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(टी०वी० राजेस्वर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

DR. A. R. KIDWAI
GOVERNOR OF HARYANA

सत्यमेव जयते

HARYANA RAJ BHAVAN
CHANDIGARH - 160019

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि जैन समाज की ही नहीं पूरे देश की अमुल्य निधि गणिनीप्रमुख्य श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। भारत की यह वेुन्धरा संतों के द्वारा किये जाने वाले त्याग और तपस्या के कारण ही सारे विश्व में महान और पूज्य मानी जाती है। श्री ज्ञानमती माताजी जैसी संतों के कारण ही आज भारतीय संस्कृति का समूचे विश्व में विशेष महत्व है।

मुझे प्रसन्नता है कि पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर उनका हार्दिक अभिनंदन करते हुए समाज द्वारा गौरव ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। पूज्य माताजी के प्रति अपनी मंगल भावनाएं व्यक्त करते हुए भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि साते देशवासियों को युगों तक पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त होता रहे।

यह ग्रंथ सभी के लिए प्रेरणादायी हो। ग्रंथ के सफल प्रकाशन की मंगल कामनाओं के साथ।

April 1, 2006

A R Kidwai
ए.आर. किदवई
(राज्यपाल-हरियाणा प्रदेश)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14,15,16 अप्रैल 2006

मुलायम सिंह यादव

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

लालबहादुर शास्त्री भवन
लखनऊ
दि0-27 सितम्बर, 2004

संदेश

प्रिय श्री जैन,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूरे होने पर एक **गौरव ग्रंथ** का प्रकाशन किया जा रहा है।

श्री ज्ञानमती माताजी ने मानव मात्र के कल्याण और संस्कृति के उत्थान के लिए उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनकी जन्मभूमि उत्तरप्रदेश रही है, किन्तु उन्होंने अपनी कर्मभूमि राजस्थान बनाकर अनेक ग्रंथों की रचना की है। उनका चिंतन एवं उपदेश सम्पूर्ण मानवता के लिए है। उन्होंने जैन समाज को जागृत कर धर्म के सही अर्थों को प्रतिपादित करते हुए सभी प्राणियों के कल्याण के लिए अलख जगाया है।

मुझे विश्वास है कि **गौरव ग्रंथ** में जैन समाज के गौरवशाली इतिहास एवं महापुरुषों के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा, जो जैन अनुयायियों एवं युवा पीढ़ी के लिए प्रकाश स्तंभ का कार्य करेगा।

गौरव ग्रंथ के प्रकाशन के लिए मेरी आर्दिक शुभकामनाएं।

(**मुलायम सिंह यादव**)

श्री कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन
अध्यक्ष, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान,
पोस्ट-जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर-मेरठ, उ.प्र.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

GOVT. OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
DELHI SECRETARIAT, I.P. ESTATE, NEW DELHI-110002

SHEILA DIKSHIT
CHIEF MINISTER

D.O. NO. : CMO/ Message/ 04/ ...
Dated : 14 09 04

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' का प्रकाशन करने जा रही है। इस ग्रंथ को आगामी 14, 15 व 16 अप्रैल 2006 को आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर पूज्य माताजी के करकमलों में भेंट किया जायेगा। आशा है गौरव ग्रंथ में पूज्य माताजी के त्यागमयी संयमी जीवन के 50 वर्षों का विस्तृत विवरण होगा, जो लोगों के लिए प्रेरणादायक होगा।

मैं महोत्सव के सफल आयोजन तथा गौरव ग्रंथ के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

Sheila Dikshit

(शीला दीक्षित)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान

- 2 MAR 2006

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति, जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर (मेरठ) की ओर से 14 से 16 अप्रेल,2006 को 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' आयोजित किया जा रहा है। यह शुभ संकेत है कि इस अवसर पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रन्थ" का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

महान सन्नारियों एवं महापुरुषों की स्वर्ण जयंती पर महोत्सव आयोजित करने एवं गौरव ग्रन्थ प्रकाशित करने की परम्परा अपने आपमें अनूठी परम्परा है। समाज की भलाई के लिए किये गये उनके त्याग एवं समर्पण से जनसाधारण का मार्ग प्रशस्त होता है। भव्य तीर्थों एवं मन्दिरों के निर्माण की प्रेरणा देने वाली इस तपस्विनी द्वारा साहित्यिक क्षेत्र में किया गया योगदान भी सर्वविदित है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी विदुषी साध्वी की आध्यात्मिक सेवाओं पर समुचित प्रकाशन जारी किये जायें। यह खुशी की बात है कि गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के पचास स्वर्णिम वर्षों की सम्पूर्ति पर आयोजित समारोह श्रद्धालुओं के लिए उनके गुणों की चर्चा का एक अच्छा अवसर सुलभ करायेगा।

आशा है 'गौरव ग्रंथ' युवा पीढ़ी को सुसंस्कारित करने में मददगार सिद्ध होगा।

मैं महोत्सव की सफलता एवं प्रकाशन की सार्थकता के लिये हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं।

(वसुन्धरा राजे)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुख्य मंत्री
बिहार

पटना
25-03-2006

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दिनाँक 14 से 16 अप्रैल, 2006 को हस्तिनापुर में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण-जयंती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर माताजी पर आधारित एक ग्रंथ भी प्रकाशित किया जायेगा।

आदरणीया माताजी को नमन करते हुए कामना करता हूँ कि ईश्वर इनको दीर्घायु प्रदान करें ताकि इनका उचित मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद अनुयायियों को लम्बे समय तक प्राप्त होता रहे।

पूज्य माताजी ने मेरे संसदीय क्षेत्र नालंदा में भगवान महावीर स्वामी की जन्मस्थली कुण्डलपुर का बहुत ही चमत्कारिक ढंग से विकास करवाकर वहाँ नंद्यावर्त महल नामक भव्य तीर्थ को स्थापित किया है, जो पूरे क्षेत्र के विकास में सहयोगी बना है तथा बिहार प्रांत का एक दर्शनीय स्थल बन गया है, इसके लिए माताजी के श्रीचरणों में कोटिशः नमन।

ऐसी पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के आयोजन की सफलता एवं ग्रंथ की जनोपयोगिता हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

(नीतीश कुमार)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारायण दत्त तिवारी

मुख्य मंत्री, उत्तरांचल

विधान भवन,
देहरादून- 248001
भारत

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति मेरठ द्वारा "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" के शुभ अवसर पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रन्थ" प्रकाशित किया जा रहा है।

आशा है कि संस्था द्वारा समाज सेवा एवं आपसी भाईचारा बढ़ाने के कार्यों में बढ़–चढ़ कर प्रतिभाग किया जायेगा, जिससे समाज के मध्य प्रेरणास्पद वातावरण भी सृजित होगा। जैन समाज की महान परम्पराओं त्याग, तपस्या आदि कतिपय श्रेष्ठ मानव मूल्यों का लेखों के रूप में गौरव ग्रन्थ के माध्यम से संस्था के कार्यों एवं ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदर्शों की प्रेरणादायी जानकारी जन–जन को सुलभ हो सकेगी।

मैं इस महान स्वर्ण जयंती महोत्सव की पूर्ण सफलता एवं गौरव ग्रन्थ के उद्देश्यपूर्ण सफल प्रकाशन के लिये शुभ कामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

(नारायण दत्त तिवारी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या / अ वि स /

माता प्रसाद पाण्डेय

विधान भवन
लखनऊ
दिनांक : 6-3-06

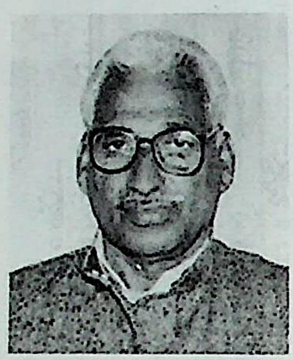

शुभकामना

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर गौरव ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत ऋषियों-मुनियों एवं सूफी-संतों का देश है। यहां हर युग में अनेक महापुरूषों ने जन्म लेकर भटकी हुई मानवता को सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव तथा वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश दिया है। ज्ञानमती माताजी ने जैन धर्म के प्रचार-प्रसार एवं भारतीय संस्कृति के उत्थान में जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है वह सराहनीय ही नहीं वरन अनुकरणीय है। उनके जीवन पर आधारित 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' के प्रकाशन का लाभ समूचे जैन समाज के लोगों को मिल सकेगा और यह ग्रंथ अनेक आध्यात्मिक एवं धार्मिक लेखों से परिपूर्ण होगा।

मैं आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की सफलता एवं गौरव ग्रंथ के सार्थक प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(माता प्रसाद पाण्डेय)

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन
अध्यक्ष
दिगम्बर जैन त्रिलोक संस्थान,
हस्तिनापुर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदय नारायण चौधरी
अध्यक्ष
बिहार विधान सभा

2, देशरत्न मार्ग
पटना

का० : 2223856, 2226082
आ० : 2221858, 2222232
फैक्स : 2225343
मो० : 9431223133

दिनांक :..........................

शुभकामना संदेश

मानवता की निर्मल धारा से प्राणियों को निर्मल करने जैसा जैन धर्म सुधा की अनुगामिनी साध्वी गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि ज्ञानमती माता जी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के पावन अवसर पर " गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ " के प्रकाशन की सूचना पाकर मुझे अतीव आनन्द का अनुभव हुआ है ।

ज्ञानमती माता जी का जीवन मानवता के प्रति करुणा, दया एवं ज्ञान प्रकाश का एक पावन संदेश है । ऐसी महिमयी लोक जननी को महिमा मण्डित करने हेतु ऐसे पुण्य महोत्सव में ग्रंथ का प्रकाशन सराहनीय कार्य है ।

मेरी हार्दिक शुभकामना है कि यह प्रकाशन विश्व मानवता के कल्याण की दिशा में सुखद संबल का प्रकाश पुंज बन सकेगा तथा ज्ञानमयी माता जी की करुणा की रसधारा सतत् लोक-जीवन को आप्लावित करती रहेगी ।

असीम शुभ कामनाओं के साथ,

17/2

(उदय नारायण चौधरी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

G. R. Mussafir
SPEAKER

हि. प्र. विधान सभा

LEGISLATIVE ASSEMBLY
HIMACHAL PRADESH
COUNCIL CHAMBER
SHIMLA-171004
(INDIA)
Ph. No. 0177-2658164 (O)
0177-2633364 (R)

"संदेश"

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि जैन समाज की सर्वोच्च एवं वर्तमान में सबसे प्राचीन दीक्षित जैन साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 स्वर्णिम वर्षों को दिनांक 15 अप्रैल, 2006 को पूर्ण कर रही है, तथा इस अवसर पर श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिक दीक्षा के पचास स्वर्णिम वर्षो की सम्पूर्ति पर **"गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ"** को प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है।

साहित्यिक क्षेत्र में उनकी लेखनी से जहां 200 से भी अधिक महान् ग्रथों का सृज़न हिन्दी संस्कृत आदि भाषाओं में हुआ है, वहीं उनकी प्रेरणा से देश के विभिन्न अंचलों में एक नहीं अपितु अनेक भव्य तीर्थों एवं मन्दिरों का निर्माण ऐतिहासिक स्तर पर हुआ है, जिसे सदी का महानतम कार्य कहा जाता है।

मैं इस शुभ अवसर पर आयोजकों एवं संस्था के सभी सदस्यों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ तथा इसकी सफलता की कामना करता हुँ।

(जी0आर0 मुसाफिर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डॉ. मुरली मनोहर जोशी
संसद सदस्य (राज्य सभा)
अध्यक्ष
वाणिज्य सम्बन्धी संसदीय
स्थायी समिति

सत्यमेव जयते

123, संसदीय सौध
नई दिल्ली-110 001
दूरभाष : 23034123, 23011991

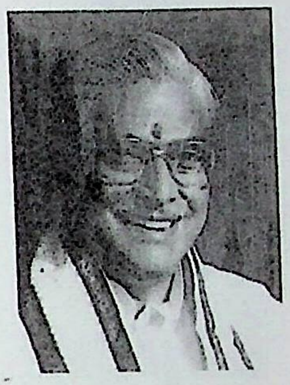

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी की दीक्षा के 50 वर्षों की पूर्णता पर स्वर्ण जयंती महोत्सव एवं इस शुभ अवसर पर उनके गौरवपूर्ण जीवन पर एक ग्रंथ का प्रकाशन किया जाने वाला है।

पूज्य साध्वी जी का जीवन देश, धर्म एवं समाज के कल्याण के लिए सदैव ही समर्पित रहा है। सागर समान इतिहास के पन्नों पर ऐसे महापुरुषों का भी जन्म हुआ है, जिनके जीवन की स्याही कभी धुंधली नहीं पड़ती है। वे इस अंतहीन गगन मण्डल में ध्रुवतारे की भांति सदैव स्थिर है, उदीप्त है। उनका जीवन आने वाले कल के लिए भी मूल्यवान रहता है। पूज्य साधवी जी के तप:पूर्ण जीवन ने उनको अग्रणी एवं सच्चे राष्ट्र संतों की श्रेणी में स्थापित किया है।

मेरा विश्वास है, उनके जीवन पर प्रकाशित ग्रंथ राष्ट्रोत्थान एवं राष्ट्रसेवा का अद्‌भुत मार्गदर्शक बनेगा एवं समाज को प्रेरणा देता रहेगा। इस अवसर पर मेरी अनेक शुभकामनाएं।

(मुरली मनोहर जोशी)

6, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001 दूरभाष : 23718444, 23711144, फैक्स : 23711772
"आंङ्गिरस" 9/10-ए टैगोर नगर, अनुकूल बैनर्जी रोड, इलाहाबाद-211002 • दूरभाष : 0532-2465008, फैक्स : 0532-2466800

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोतीलाल वोरा, सांसद

सत्यमेव जयते

33, लोधी स्टेट,
नई दिल्ली–110 011
फोन : 24651313, 24623838

09.03.2006

संदेश

जैन धर्म भारतवर्ष के प्राचीनतम धर्मों में से एक प्रमुख धर्म माना जाता है, जिसमें 24 तीर्थकरों ने समस्त विश्व को अहिंसा, सत्य अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह के महान सिद्धान्त प्रदान किये हैं। तीर्थंकर भगवन्तों ने स्त्रियों को भी धर्मपथ का अनुसरण करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी है।

उसी धर्मपथ का अनुसरण करने वाली वर्तमान जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अखण्ड रूप से 50 वर्ष तक कठोर जैन साधना का परिपालन करते हुये समस्त देश का मस्तक गौरव से ऊँचा कर दिया है। 50 वर्ष की सम्पूर्ति पर आयोजित होने वाले **'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव'** में प्रकाश्यमान गौरव गौरव ग्रंथ हेतु मेरी बहुत–बहुत शुभकामनायें है।

पूज्य माताजी के प्रति विनम्र विनयांजलि समर्पित करते हुये उनसे इसी आर्शीवाद की कामना हैं कि भारत देश में सदैव सुभिक्ष–क्षेम–शांति की स्थापना रहे तथा आम जैसे संतों का आर्शीवाद सब पर बना रहे।

शुभकामनाओं सहित,

मोतीलाल वोरा।
(मोतीलाल वोरा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्यमेव जयते

नेता प्रति पक्ष
राज्य सभा
LEADER OF OPPOSITION
RAJYA SABHA

दिनाँकः 23 फरवरी, 2006

संदेश

मुझे खुशी है कि जैन साध्वी, गणिनीप्रमुख, ज्ञानमती माताजी की दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" का प्रकाशन किया जा रहा है ।

गणिनीप्रमुख ने इन वर्षों में त्याग, तपस्या और संयमी जीवन से जो ज्ञान प्राप्त किया है वह मानव कल्याण हेतु इस ग्रंथ के माध्यम से सभी तक पहुंचे और अनुकरणीय सिद्ध हो, ऐसी शुभकामनाओं के साथ ।

आपका,

(जसवन्त सिंह)

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन,
अध्यक्ष,
गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति,
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान,
पो. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर-250404,
मेरठ, उत्तर प्रदेश ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1084/VIP

शिव पाल सिंह यादव

मंत्री

लोक निर्माण, ऊर्जा, भूतत्व एव खनिकर्म एवं
कृषि विदेश व्यापार, विपणन व निर्यात विभाग

मंत्री
उत्तर प्रदेश

कार्यालय : 99 / 100, मुख्य भवन,
सचिवालय
आवास : 7, कालीदास मार्ग, लखनऊ
(का.) : 2238088
सी.एच. : 3272
(आ.) : 2235190
फैक्स : 0522-2235364

दिनांक 11·03·2006

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 स्वर्णिम वर्षों की सम्पूर्ति पर 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

इस ग्रंथ के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

मैंने 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' के उद्घाटन अवसर पर 6 जनवरी 2005 को वाराणसी में पूज्य माताजी का दर्शन करके उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया था, वह स्मृति आज भी मानस पटल पर अंकित है। पूज्य माताजी का आशीर्वाद सबके लिए ही विशेष मंगलकारी है, ऐसी माताजी दीर्घायु हो तथा स्वस्थ रहकर सभी को कल्याण के पथ पर बढ़ाती रहें, यही मंगलकामना है।

(शिवपाल सिंह यादव)

श्री कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन
अध्यक्ष, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान,
पोस्ट-जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर-मेरठ, उ.प्र.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरविन्द कुमार सिंह 'गोप'
राज्य मंत्री
लोक निर्माण विभाग

राज्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

का० : 2235296
(सी०एच०) : 4812
(आ०) : 2235635

बापू भवन
तृतीय तल, (एफ-1-2)
सचिवालय, लखनऊ।

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' प्रकाशित किये जाने का निर्णय लिया गया है। उक्त ग्रंथ जंबूद्वीप-हस्तिनापुर मेरठ में आयोजित होने वाले 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' के शुभ अवसर पर पूज्य माताजी के करकमलों में भेंट किया जायेगा।

इस गौरव ग्रंथ के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामना है।

(अरविन्द कुमार सिंह 'गोप')

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कौकब हमीद
मंत्री
पर्यटन विभाग

मंत्री
उत्तर प्रदेश

दूरभाष (का०) : 0522-2238476
सी०एच० : 3276
(आ०) : 0522-2237545

विधान भवन,
लखनऊ

दिनांक 02-03-06

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के ५० वर्षों के सम्पूर्ति पर दिनांक १४ से १६ अप्रैल, २००६ तक दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है तथा उक्त अवसर पर 'गौरव ग्रंथ' के प्रकाशन का भी कार्यक्रम है। इस प्रकार के आयोजनों से समाज को एक नई दिशा मिलेगी।

कार्यक्रम की सफलता एवं 'गौरव ग्रंथ' की सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(कौकब हमीद)

कर्मयोगी श्री रवीन्द्र कुमार जैन,
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान,
पो० जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर,
मेरठ- २५०४०४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवधेश प्रसाद
मंत्री,
समाज कल्याण।

विधान भवन,
लखनऊ।
दिनांक: 9 मार्च, 2006

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हार्दिक प्रसन्नता हुई कि परम पूज्य साध्वी गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन एवं गरिमामय आर्यिका दीक्षा के 50 स्वर्णिम वर्ष पूर्ण होने के पावन अवसर पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" का प्रकाशन होने जा रहा है। मैं ऐसी परम पूज्यनीय माता जी के दीर्घायु एवं कुशल स्वास्थ्य की कामना करते हुए उनके चरणों में अपना श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शत-शत नमन करता हूं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि उक्त "गौरव ग्रंथ" जैन समाज ही नहीं अपितु सर्व समाज को सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा स्रोत के प्रकाशपुंज का कार्य करेगा। उक्त ग्रंथ में पूज्यनीय माताजी के अनमोल वचनों, वाणियों, उपदेशों एवं उनके दीर्घकालीन ईश्वरीय ज्ञान संबंधी अनुभवों का समावेश होगा।

मैं उक्त ग्रंथ के सार्थक प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनायें व्यक्त करता हूं।

(अवधेश प्रसाद)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डा० अशोक बाजपेयी
मंत्री
कृषि एंव धर्मार्थ कार्य

दूरभाष 2238070 (का०)
3290 (सीएच)
2207319 (आ०)
2205825 (आ०)

विधान भवन

लखनऊ : दिनांक ....

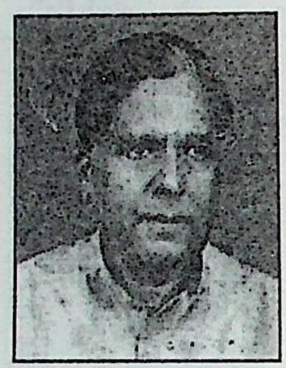

संदेश

यह जानकर मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष आगामी 15 अप्रैल, 2006 को पूरे हो रहे हैं। इस पावन अवसर पर आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयन्ती महोत्सव समिति द्वारा एक गौरव ग्रन्थ का प्रकाशन निश्चय ही और प्रसन्नतादायक है। ममतामयी मां ने जहां एक ओर अध्यात्म में स्वयं को रमाया है वहीं साहित्य के क्षेत्र में दो सौ से अधिक महान ग्रन्थों का सृजन हिन्दी एवं संस्कृत आदि भाषाओं में किया है और विभिन्न भव्य तीर्थों और मन्दिरों का निर्माण कराकर महान कार्य किया है।

निःसंदेह माता ज्ञानमती तीर्थंकर महावीर स्वामी के उपदेशों पर स्वयं चलने एवं समाज को मार्गदर्शन देने वाली इस सदी की महानतम साध्वी हैं। मुझे जब भी माता जी के दर्शनों का सौभाग्य मिला, मैने देखा कि साहित्य साधना में रत पूज्य माताजी लेखन कार्य में व्यस्त हैं जिनका जीवन्त प्रमाण उनकी दो सौ अधिक रचनायें हैं।

ऐसी विदुषी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा की 50 स्वर्णिम वर्षों की सम्पूर्ति पर हम अपनी विनयांजलि अर्पित करते हैं।

(डा0 अशोक बाजपेई)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

दूरभाष : ६१-११-२६१०३४६५, २६१७८६६२
फैक्स : ६१-११-२६१६५५२७
तार : हिन्दूधर्म
Phones : 91-11-26103495, 26178992
Fax : 91-11-26195527
E-Mail : vhp@vichaar.net
vhpnews@vichaar.net
jaishriram@vsnl.in
manish@vichaar.net
Gram : 'HINDUDHARMA'

विश्व हिन्दू परिषद ॐ VISHVA HINDU PARISHAD

Registered under Societies Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-११० ०२२ (भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM, RAMAKRISHNA PURAM-VI, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

वि०हि०प०/15ए/06 22 फरवरी, 2006

बन्धुवर कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन जी

सस्नेह जय श्रीराम।

14, 15 व 16 अप्रैल, 2006 को जम्बूद्वीप हस्तिनापुर, (मेरठ) उ०प्र० में आयोजित "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" का शुभ समाचार प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई।

सर्वोच्च साध्वी गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर "गौरव ग्रन्थ" का प्रकाशन अति समीचीन है। युवाकाल से ही पूज्य माता जी ने अपने त्यागमयी संयमी जीवन के इन 50 वर्षों में हिन्दी–संस्कृत आदि भाषाओं में जिन महान ग्रन्थों का सृजन कर समाजोत्थान में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया है वह सदैव मानव समाज को "जीओ और जीने दो" की आत्मीय भावना से एक ऐसे अजेय राष्ट्र का निर्माण करने की प्रेरणा देगा जो ज्ञान–विज्ञान आदि सभी दृष्टि से विश्व में अग्रणी होगा। समाज की सात्विक अजेय शक्ति ही अहिंसा, अध्यात्मवाद आदि सद्गुणों का सम्बल होती है।

प्रभु के श्रीचरणों में विनम्र प्रार्थना है कि पूज्य माता जी स्वस्थ, दीर्घायु प्राप्त कर अपने आशीर्वचनों से समाज का मार्गदर्शन करती रहें।

शुभकामनाओं सहित।

मैं इस पावन अवसर पर [illegible]
[illegible] पू. माताजी के
श्री [illegible] में सादर प्रणाम -

राष्ट्र एवं धर्म की सेवा में

अशोक सिंहल
(अशोक सिंहल)
अध्यक्ष

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन जी
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान,
पोस्ट–जम्बूद्वीप,
हस्तिनापुर– 250 404 (मेरठ) उ०प्र०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुराधा चौधरी
अध्यक्ष (मंत्री स्तर)
सिंचाई विकास एवं
बाढ़ नियंत्रण आयोग,
उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश सरकार

सांसद लोकसभा
कैराना– मुजफ्फरनगर

पत्राँक सं० : /वी.आई.पी./06
11.03.2006
दिनाँक : 20/3/06

श्री रवीन्द्र कुमार जैन,

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि **विदुषी आर्यिका परम् पूज्यनीय ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा के पचास स्वर्णिम वर्षो की सम्पूर्ति पर गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ** प्रकाशित होने जा रहा है। वास्तव में माताजी की त्यागमई संयमी जीवन की तपस्या का ही फल है कि दो सौ से अधिक महान ग्रंथो का सृजन हुआ, तथा भव तीर्थों एवं मदिरों का निमार्ण ऐतिहासिक स्तर पर उनकी प्रेरणा से हो पाया।

प्रस्तावित/आयोजित कार्यक्रम आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव पर मेरी कोटिशः विनयांजलि व शुभकामनाऐं स्वीकार करें।

(अनुराधा चौधरी)
अध्यक्ष
सिंचाई विकास
एवम्
बाढ़ नियंत्रण आयोग
उत्तर प्रदेश

श्री कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन
अध्यक्षः दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध
संस्थान, पो. जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर–250404
जनपद मेरठ

कार्यालय : 90– मुख्य भवन, विधान भवन, लखनऊ, दूरभाष/फैक्स– 2238134, सी.एच. 3608
आवास : 8 कालिदास मार्ग लखनऊ दूरभाष : 0522–2237902,
आवास : 8/1 शान्ति निकेतन, नई दिल्ली–21, दूरभाष : 011–24113396, फैक्स– 24112152

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभुदयाल बाल्मीकि
अध्यक्ष
समाज कल्याण निर्माण निगम, उत्तर प्रदेश

दूरभाष (का०) : 0522-2384356
फैक्स नं० : 0522-2383725
आवास (मवाना) : 01233-271386
लेखराज मार्केट, इन्दिरा नगर,
लखनऊ - 226016

पत्रांक : ....

दिनांक : ....

संदेश

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हमारे क्षेत्र की महान संत हैं, जिनका आशीर्वाद प्राप्त करके सभी अपने को सौभाग्यशाली मानते हैं, पूज्य माताजी का व्यक्तित्व वास्तव में चमत्कारी है। इस चमत्कार का ही प्रभाव है कि हस्तिनापुर की धरती आज देश-विदेश के पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र सिद्ध हो रही है।

हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से जो 'जम्बूद्वीप' की रचना हुई है, वह बेमिसाल है; धार्मिक महत्व के अतिरिक्त यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता सभी वर्ग, जाति, आयु के लोगों को आकृष्ट करती है, इसी रचना के निर्माण के पश्चात् ही हस्तिनापुर का इतना अधिक विकास हो सका है। हस्तिनापुर ही नहीं प्रयाग (इलाहाबाद), कुण्डलपुर (नालंदा) इत्यादि स्थानों पर भी पूज्य माताजी की प्रेरणा से सुंदर तीर्थ बने हैं। साररूप में कहें तो समाज के लिए पूज्य माताजी ने बहुत बड़ी देन प्रदान की है।

ऐसी महान माताजी के 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' हेतु मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं तथा उनके चरणों में विनम्र विनयांजलि है।

प्रभुदयाल वाल्मिकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्यमेव जयते

महावीर प्रसाद जैन
सरकारी मुख्य सचेतक
राजस्थान विधान सभा

पत्रांकः 607 / समुस / राविस / 06

जयपुर, दिनांक 18 मार्च ,2006

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणी श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा की स्वर्णिम-जयन्ती का यह पावन अवसर न केवल समस्त जैन समाज वरन सम्पूर्ण विश्व के लिए बडे आनन्द और गौरव का विषय है, यह भारत की भूमि ऐसी तपस्वी, ज्ञानी, परम विदुषी, कोमल, प्रेममयी माताजी को पाकर अपने में फूली नहीं समा रही है।

पचास वर्षो में आपने २०० से भी अधिक ग्रंथों का सृजन कर जो जिनज्ञान की गंगा इस भारत भूमि पर बहायी है यह युगों-युगों तक समाज को लाभान्वित करती रहेगी। सम्पूर्ण देश के कोने-कोने में आप द्वारा जो आधुनिक भव्य तीर्थो एवं मन्दिरो का निर्माण कराया है वह अनेक पीढ़ीयों तक आपकी कीर्ति की पताका पहराते रहेंगे और उन जिनमन्दिरो के दर्शन कर लाखों लाख श्रावक-श्राविकाऐं अपने को धन्य-धन्य करेंगे।

इस अवसर पर मुझे वह चमत्कारी घटना याद आ रही है जब मुनिश्री वर्धमान सागरजी की नेत्र-ज्योति कुछ समय के लिए चली गई थी उस अवसर पर पूज्य मां ज्ञानमती माताजी जिन्होने गृहस्थावस्था में जैनेश्वरी दीक्षा के लिए प्रेरित किया मुनिश्री पर हुए उपसर्ग से दुःखी थी और उन्होने भगवान जिनेन्द्र के समक्ष अपने भाव निम्न शब्दों में प्रकट किये "हे भगवान ! आप बड़े हैं या डॉक्टर" और भगवान के प्रति अपनी अटूट आस्था प्रकट करते हुए भक्ति में ऐसी तदाकार हुई ५२ घण्टों से लुप्त नेत्र-ज्योति तीन घण्टों की सामूहिक भक्ति सें पुनः ज्यों-की-त्यों प्राप्त हो गई। ऐसी माताजी के चरणों में शत-शत वन्दना।

यह और भी हर्ष का विषय है कि आर्यिका दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव का मुख्य समारोह वंहा होने जा रहा है जंहा माताजी द्वारा निर्मित कालजयी कृति जम्बूद्वीप मौजूद है। श्रवणबेलगोला की विन्ध्यगिरि (इन्द्रगिरि) पहाड़ी पर जब पूज्यश्री ज्ञानमती माताजी ध्यानस्थ थी तब उनको ध्यान के अन्तर्गत सतत तेरह दिन तक जम्बूद्वीप की रचना दिखाई दी और आप उसकी प्रतिकृति बनाने हेतु कृतनिश्चयी हुई और आज सारा विश्व उनकी प्रतिकृति हस्तिनापुर में देखकर अचंभित हो रहा है और माताजी की जय-जयकार स्वतः ही मुख निकल पड़ती है।

ऐसी परम श्रद्धेय आर्यिकाशिरोमणी की दीक्षा की स्वर्णिम जयन्ती पर प्रकाशित "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" में मुझे माताजी के पावन चरणों में विनयांजलि प्रस्तुत करने का अवसर देकर महोत्सव समिति ने मुझ पर जो उपकार किया है, उसके लिए मैं समिति का आभारी हूं।

अन्त में पुनः परम श्रद्धेय माताजी के चरणों में शत-शत वन्दना।

भवदीय

(महावीर प्रसाद जैन)

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन,
अध्यक्ष, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान,
पो. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ)
पिन-250404

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

प्रमुख सचिव
विधान सभा, उत्तर प्रदेश

विधान भवन,
लखनऊ
06-06-2006

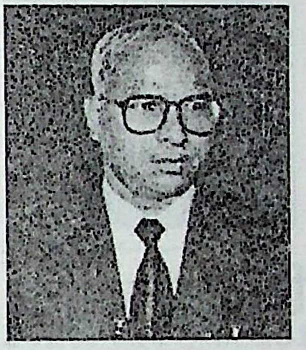

शुभकामना

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में ''गौरव ग्रन्थ'' के प्रकाशन के सम्बन्ध में जानकारी हुई । जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी के रूप में 50 वर्ष पूरे होने एवं इस उपलक्ष्य में प्रकाशित की जा रही पुस्तक के लिए मैं अपनी शुभ कामनायें व्यक्त करता हूँ ।

भारत में अहिंसा, सत्य, प्रेम एवं शांति का संदेश प्रसारित करने वाले जैन समाज के लिए यह एक महत्वपूर्ण घटना है । मुझे आशा है कि जैन मुनियों द्वारा जैन धर्म के प्रचार एवं प्रसार तथा भारतीय संस्कृति के उत्थान में जो महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है, वह गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी के जीवन-आदर्श पर आधारित ''गणनीय ज्ञानमती गौरव ग्रंथ'' के प्रकाशन से और विकसित होगा ।

मै आर्यिका दीक्षा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के आयोजन की सफलता एवं ''गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ'' के प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभ-कामनाएं प्रेषित् करता हूँ ।

(राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

J.K. Jain Member AICC
ex
M.P. (Rajya Sabha)
Secy gl Cong Party in Parliament
Jt Secy AICC

G-91, Preet Vihar, Vikas Marg, Delhi - 110 092
Tel : 22420060/61, 22435544
Fax : 91-11-2243 8030
Mobile : 011-309 33133 / 9871504444
e-mail : jkjainexmp@yahoo.co.in

11-3-2006

विनयांजलि

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी **पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी** की विशेष अनुकम्पा मुझ पर रही है जो कि मेरे लिए विशेष सौभाग्य की बात है क्योंकि आज के समय में सच्ची तपस्या करने वाले संतों का आशीर्वाद प्राप्त होना बड़ा ही दुर्लभ है।

पूज्य माताजी के निकट सानिध्य में आकर मुझे उनकी चारित्रिक विशिष्टताओं को समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ। ज्ञान और चारित्र की सतत आराधना करने वाली पूज्य माताजी मात्र मुख से कहकर 'इतिश्री' समझने वाला व्यक्तित्व नहीं हैं वरन् किसी भी उत्तम विचार को तुरंत क्रियान्वित करना उनकी विशिष्टता है, यही कारण है कि उन्होंने सफलता के नित-नूतन सोपान चढ़े हैं। पूज्य माताजी की सेवा में मुझसे जो बन पड़ा है, वह करने का प्रयास मैंने सदा किया भी है और करुँगा भी।

सन् 1982 से लेकर राष्ट्रीय नेताओं श्रीमती इंदिरागांधी, श्री राजीव गांधी, श्री पी.वी. नरसिम्हाराव, श्री माधवराव सिंधिया आदि को पूज्य माताजी के विविध कार्यक्रमों में लेकर आने से जहाँ व्यक्तिगत रूप से मुझे प्रसन्नता हुई वहीं इन शीर्ष नेताओं ने भी पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त कर स्वयं को सौभाग्यशाली माना। स्व. इंदिरा जी ने मुझसे कहा था कि पूज्य माताजी के दर्शन करके उनको बहुत ही आत्मिक शांति प्राप्त हुई है।

सभी भव्यजनों को वात्सल्यमयी मंगल आशीर्वाद प्रदान कर संतृप्त करने वाली पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर उनके श्रीचरणों में विनम्र विनयांजलि अर्पित करते हुए जिनेन्द्रप्रभु से यही प्रार्थना करता हूँ कि चिरकाल तक हमें उनका वात्सल्यपूर्ण वरदहस्त प्राप्त होता रहे। इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले **गौरव ग्रंथ** के प्रकाशनकर्ताओं हेतु मेरी बहुत-बहुत मंगल शुभकामनाएँ हैं।

जे०के० जैन

जे.के. जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

V. DHANANJAYA KUMAR
EX-MEMBER OF PARLIAMENT
(LOK SABHA)
FORMER UNION MINISTER

4/35, "PARINITH"
16TH MAIN, M.C. LAYOUT,
VIJAYANAGAR
BANGALORE-560040
PH.-080-23105959

Ganini Gyanmati Mataji : A Personification of Jainism

Jain religion is one of the ancientmost religion of our country. Penance, Austerity, Renunciation etc. are the chief characteristics observed by the followers of Jainism. Even today we can have the *darshans* of such saints, which is our great luck. The supreme Sadhvi of the present Jain Society **Pujya Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji** is one such saint. She is observing the strict code of conduct of *Aryika* for 50 long years without any interruption, it is a matter of great dignity for all of us. Since long I have been a devotee of her as she is supposed to be well versed in *Gyan & Charitra* in the tradition of Charitra Chakravarti Acharya Shri Shantisagar Ji Maharaj.

In 1998 when "Bhagwan Rishabhdev Samavsaran Shrivihar' was inaugurated at Tal Katora Stadium by the then Prime Minister, Shri Atal Bihari Vajpayee in the auspicious presence of Pujya Gyanmati Mataji and again when the PM inaugurated 'Bhagwan Rishabhdev International Nirvan Mahamahotsava Year' at the Red Fort ground in the year 2000 by offering Nirvan Ladoo before the model structure of Kailash Parvat, I took active participation in organizing these programmes and I felt how keenly Pujya Mataji is involved in the *Prabhavna* (publicity) of Jain Dharma. It is very true that such moments come very rarely and they remain inscribed on heart for long.

I always pray to Lord Jinendra that Pujya Mataji, who is a real symbol of Jain Culture, may live long and we may also celebrate the Diamond Jubilee of her ascetic life.

-V. Dhananjaya Kumar Jain

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रवण कुमार
मुख्य सचेतक
सत्तारूढ़ दल
बिहार विधान सभा

आर० ब्लॉक रोड नं० 7
न्यू फेमली टाईप
मकान नं०-8
दूरभाष :
0612-2225474 (आ०)
0612-2222140 (का०)

पत्रांक 179/ मु० स०/ विधान-स०

दिनांक 24.03.2006

संदेश

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की तपस्या के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उत्तरप्रदेश में आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया जा रहा है और इस अवसर पर एक गौरव ग्रंथ का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

वर्तमान समाज की व्याधियाँ इतनी जटिल एवं व्यापक हो गयी हैं, जिसका निदान ज्ञानमती माताजी के पदचिन्हों एवं उनके प्रवचनों को हृदयंगम करने से ही संभव हो सकेगा।

मुझे यह सौभाग्य प्राप्त है कि मेरे क्षेत्र में परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की सत्प्रेरणा से भगवान महावीर जन्मस्थली कुण्डलपुर (नालंदा) में भगवान महावीर मंदिर एवं नंद्यावर्त महल का भव्य निर्माण कराया गया है।

मैं हृदय की गहराईयों से इस आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव की सफलता की कामना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि इस अवसर पर प्रकाशित गौरव ग्रंथ जन-जन तक पहुँच कर मानव कल्याण का निष्कंटक मार्ग प्रशस्त करेगा।

मैं ज्ञानमती माताजी की दीघार्यू की कामना करता हूँ।

श्रवण कुमार
24/3/2006
(श्रवण कुमार)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

14,15,16 अप्रैल 2005

CHANDRA PAL
Adviser (MLP, SP-E SCP&TSP)-cum-
Additional Secretary
TeleFax. No. 23096584

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
योजना आयोग
योजना भवन
नई दिल्ली--११०००१

GOVERNMENT OF INDIA
PLANNING COMMISSION
YOJANA BHAWAN
NEW DELHI-110001

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी-सर्वोदयी व्यक्तित्व

-विनीत विनयांजलि-

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का व्यक्तित्व 'सर्वोदयी' व्यक्तित्व है, मैंने सारनाथ एवं लखनऊ में सन् 2005 में पूज्य माताजी का दर्शन लाभ प्राप्त किया और इस बात का सुखद अनुभव किया कि आज के आधुनिक युग में भी अहिंसा, करुणा, मैत्री, बंधुत्व इत्यादि सिद्धान्तों को साकाररूप में अपनी चर्या द्वारा उपस्थित करने वाले एवं उनका संदेश देने वाले साधु-संतों का प्रत्यक्ष दर्शन पूज्य माताजी जैसी साध्वी के रूप में आज भी हमें प्राप्त हो रहा है। वास्तव में अहिंसात्मक नीतियों से ही विश्व में शांति संभव है और जैन साधु विशेष रूप से अहिंसा का ही संदेश प्राणीमात्र को प्रदान करते हैं।

पूज्य ज्ञानमती माताजी के 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' के उपलक्ष्य में हमारा हृदय प्रसन्नता से परिपूर्ण है एवं इस अवसर पर मैं पूज्य माताजी के श्रीचरणों में अपनी विनम्र विनयांजलि प्रस्तुत करता हूँ तथा महोत्सव के आयोजकों को मंगल शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

चन्द्रपाल
(सलाहकार-योजना आयोग)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीशों द्वारा पूज्य माताजी के प्रति प्रेषित भक्ति-सुमन

VIJENDER JAIN
Judge

15, Akbar Road,
New Delhi-110011
Tel. : 23792822
23792929

February 22, 2006

Dear Shri Jain,

I received your letter dated February 04, 2006 and came to know that Jain Samaj is bringing out a 'Gaurav Granth' on the completion of 50 years of Deeksha of Gyanmati Mataji. The contribution of Mataji in creating literature in various languages regarding Jain philosophy is not only historic but will give a long way for future generations to understand the true tenets of Jainism. It will not only a contribution in the field of spiritual writings but a greater contribution to the literature in Hindi. Her unique contribution in creating literature for children has to be emulated by others. The great contribution of Mataji at Hastinapur by establishing a Jamboodweep will go a long way in the annals of the history of Jain centres of pilgrimage.

She has contributed immensely in bringing the birth places of Tirathankars into the limelight. Five decades have passed, the great contribution of Mataji is a source of great inspiration not only to the Jain community but to all those who believe in the doctrine of Ahimsa and international brotherhood.

I hope that we will be fortunate to have her guidance for many years to come.

Yours sincerely,

(Vijender Jain)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

JUSTICE SUDHIR NARAIN
Former Judge, Allahabad High Court
MEMBER
CAUVERY WATER DISPUTES TRIBUNAL

सत्यमेव जयते

Off. :
A-Wing, 4th Floor
Janpath Bhawan, Janpath
New Delhi-110001
Phone : 23711601
23715945

Res. :
29, C.Y. CHINTAMANI ROAD,
GEORGE TOWN,
ALLAHABAD
PHONE : 0532-2468526

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी-एक चिरंतन प्रकाश

लगभग तीन साल पहले हम भगवती विन्ध्यवासिनी देवी के दर्शन करने विन्ध्याचल गए। वहाँ दर्शन कर इलाहाबाद आ रहे थे, मार्ग पर देखा एक अत्यन्त रमणीय मंदिर बना हुआ है, उस मंदिर के चारों ओर उपवन एवं हरियाली देखकर मन मोहित हो गया। यह मंदिर प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी का था। प्रयाग उनकी दीक्षास्थली रही है और इस स्थान का नाम भी ''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली'' रखा गया है।

प्रांगण में जाने पर ज्ञात हुआ कि इस भव्य मंदिर एवं दीक्षास्थली के निर्माण की प्रेरिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं, जो कुछ समय के लिए पधारी हुई हैं। यह भी ज्ञात हुआ कि उन्होंने लगभग 200 से अधिक ग्रंथों की रचना की है। ऐसी ज्ञानमयी तपस्विनी के दर्शन करने की उत्कण्ठा हुई, उनके दर्शन किए। उस समय उनकी आयु 70 वर्ष की थी। कृश शरीर, मुख पर तेजस्विता, वाणी सरल और उसमें मधुरता थी।

उन्होंने न्याय के सर्वोच्च ग्रंथ 'अष्टसहस्री' का अनुवाद किया था। न्याय के विभिन्न पहलुओं पर उनकी रुचि देखकर न्यायविद्, न्यायाधीशों एवं न्यायशास्त्र के मर्मज्ञों से विचार विनमय की उत्कण्ठा हुई और उसको सार्थक करने के लिए एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। उसमें उच्च न्यायालय के न्यायमूर्तिगण, अधिवक्ता, न्यायविद् एवं अन्य जनों ने भाग लिया। आयोजन सफल रहा। घटना लगभग तीन वर्ष पुरानी है। समय बीतता गया और मेरी श्रद्धा प्रगाढ़ होती गई।

उन्होंने लगभग 200 ग्रंथ लिखे हैं। ग्रंथ विचारों का प्रतिपादन है। पढ़ने वाला उन विचारों से कितना प्रभावित होता है, यह लेखक के विचारों की मौलिकता एवं अनुभूति पर निर्भर करती है। उन्होंने जीवन में जो अनुभव किया है, वही उनके ग्रंथों में गंगा के स्रोत सी बह रही है। उनको विचार करके लिखने की आवश्यकता नहीं, वरन् स्वयं बहती है। जिनके विचार सत्पथ की ओर चलें, वही महान है। एक विचार वह होते हैं, जो बाह्य जगत के पदार्थों की कामना को जागृत करते हैं और दूसरे वह जो अन्तश्चेतना के हृद अवस्थित अमृतानन्द में अवगाहना करा देते हैं। एक ओर उनके ग्रंथ जैनधर्म के सिद्धान्तों की व्याख्या है और दूसरी ओर अन्य ग्रंथ मूल विचारों का प्रतिपादन है।

मुझे यह जानने की भी उत्सुकता हुई कि इतने ग्रंथों का प्रतिपादन कम अवधि में किस प्रकार हुआ? इसका साक्षात् प्रमाण तब मिला, जब कुण्डलपुर में आयोजित समारोह में यह देखा कि माताजी उससे निरत रहकर उनकी लेखनी चल रही थी। कार्यक्रम होते रहे, लेकिन वह लिख रही थीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में पुस्तक है। विचारों को जब लेखन में बद्ध किया, वह ग्रंथ का निर्माण करेगा लेकिन विचार कर्म में प्रेरित होकर प्रतिदिन बिना लिपिबद्ध किए लिपिबद्ध हो रहा है। अपना जीवन कितना निर्मल, कितना कलंकित रहा, संसार के प्रकाश में कोई भी पढ़ सकता है, उसे छिपाया नहीं जा सकता।

ज्ञानमती माताजी का जीवन स्वयं पावन पुस्तक है। 18 वर्ष की आयु में जब कुमारी कन्या संसार के सपनों को संजोती हैं, माताजी ने उस आयु में सपनों के आवरण को मिटाकर, तपस्या की तपती अग्नि में प्रवेश किया। गृहत्याग कर ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। धर्म के अनुसार सन्यास की दीक्षा ली। उनका दिन में केवल एक बार भोजन होता है। वह भी हाथ में जो परोसा जाए। पानी भी केवल एक बार। उत्सुकंतावश भोजन करने की उस प्रक्रिया को स्वयं देखा। पहनने के लिए दो धोती। धन या अन्य कोई पदार्थ ग्रहण नहीं करतीं। यह अपरिग्रहता की पराकाष्ठा है। भ्रमण केवल पैदल ही होता है। यह सत्य है कि महान विभूतियों के पद एवं हस्त भी उपदेश देते हैं।

मूर्तिकार मृत्तिका से मूर्ति बनाता है और देवमूर्ति की पूजा होने लगती है। ईश्वर ने हर प्राणी को पंचधातु से निर्मित कर मूर्ति बनाया, लेकिन सबमें देवत्व न दिया। मानव कहीं पशु है, कहीं दानव, उसमें देवत्व केवल संत ही दे सकते हैं। माताजी ने संतान नहीं दिए-संत बनाए। लगभग 50 वर्ष से निरन्तर शिष्याओं की अन्तश्चेतना को पराकाष्ठा पर ले जाकर सन्तस्वरूप बनाया। उन्होंने शरीर की जड़ मूर्ति नहीं, धर्मस्वरूप की जागृत चैतन्य मूर्ति बनाई। कृषक भूमि को उर्वरक करके खेती करता है, माताजी मानव-मन को निर्मल कर उसी को प्रज्ञा देती हैं।

भौतिक रूप से माताजी की अनेक जैन तीर्थस्थलों के निर्माण में प्रेरणा रही है। तीर्थ वही जो तार दे। दुःख के सागर में जो डूब रहे हों, उससे उबार कर पार करा दे, वही तीर्थ है। यह दुःख की पीड़ा शारीरिक, मानसिक या आधिभौतिक हो सकती है। जब तीर्थ स्थल पर जाये, मन शांत, चित्त निर्मल होगा। प्रिय की स्मृति मधुरता देता है और उसी के पास चलें, आनन्द विभोर हो जाते हैं। चौबीस तीर्थंकर ज्ञान एवं चेतना के स्वयं सूर्य रहे हैं, जिन्होंने अपनी इन्द्रियों पर विजय पाई, जैन बने, अपने अन्तर शत्रुओं का विनाश किया,अरहन्त हुए। ऐसे तीर्थंकर की जन्मस्थली पावन है, उनकी मूर्तियाँ उच्च साधना की साकार पराकाष्ठा हैं। ऐसे स्थल पर जाना मन को पावन करता है।

तीर्थस्थलों के निर्माण के लिए माताजी ने किसी से धन न मांगा। उनका मात्र संकल्प ही उनके विचारों को साकार कर देता है। प्रयाग में उन्होंने संकल्प लिया था कि भगवान महावीर के जन्मस्थल कुण्डलपुर में उनका मंदिर बनवायेंगे और लगभग दो साल के अन्तर्गत वह पूर्ण हो गया। हम वहाँ देखने के लिए गए कि किस प्रकार का बना है। देखकर आश्चर्य हुआ कि इतने कम समय में विशाल प्रांगण में अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ।

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप भी उनकी कल्पना का साकार रूप है। इसकी सुन्दरता एवं वास्तुकला की प्रशंसा सुन चुका था और उसको देखने के लिए गया। जम्बूद्वीप जैनधर्म के भूगोल के सिद्धान्त पर आधारित है। आधुनिक विश्व का भूगोल और जैनधर्म का भूगोल अलग है और उसे जैनधर्मों के सिद्धान्तों के समझे बिना नहीं जाना जा सकता है। यह अद्भुत अद्वितीय निर्माण है। उसके चारों ओर सुन्दर उपवन है तथा अनेक मंदिर हैं। इसमें ओम मंदिर विशेष उल्लेखनीय है। ओम शब्द हिन्दू एवं जैन दोनों धर्मों में सामंजस्य उपस्थित करता है। जम्बूद्वीप की संरचना एवं स्थल की रमणीयता देखकर भारत के पर्यटन विभाग ने इसे अपने पर्यटन स्थलों में दर्शाया है।

सूर्य को अपने स्वरूप को नहीं बताना पड़ता, न सागर को अपनी गहराई, वह स्वयं से स्वयं का वाचक है। धरातल पर महान सन्त, स्वयं ही प्रकाशित होते हैं। केवल इतना ही है कि हम प्रकाश को ग्रहण करें।

ज्ञानमती माताजी का जीवन स्वयं प्रकाश है। वे हमारे बीच में सदैव प्रकाशित रहें, यही कामना है।

-न्यायमूर्ति सुधीर नारायण, इलाहाबाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्यायमूर्ति महेश चन्द जैन

JUDGE, HIGH COURT AT ALLAHABAD

इलाहाबाद

फरवरी 20, 2006

सन्देश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष है कि गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में हस्तिनापुर में 14 से 16 अप्रैल 2006 तक "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयन्ती महोत्सव" आयोजित किया जा रहा है और इस अवसर पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" का प्रकाशन भी होगा ।

पूज्य माता जी स्वयं में तीर्थ हैं । उनकी प्रेरणा व सानिध्य में देश के विभिन्न क्षेत्रों में भव्य मन्दिरों का निर्णाण व जीर्णोद्धार हुआ है । इलाहाबाद में प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की तपस्थली उनमें से एक है ।

जैन धर्म के आदि से अनन्तकाल तक सार्थक व उपयोगी रहने वाले सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने में सद्मार्ग की प्रेरक पूज्य माता जी का योगदान सदैव स्थिर रहेगा । साहित्यिक क्षेत्र में उनके द्वारा अनेक महान जैन ग्रन्थों का सृजन अद्वितीय है ।

पूज्य माता जी को भक्तिपूर्ण नमन करते हुए, आयोजन की सफलता हेतु मैं अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ ।

(महेश चन्द जैन)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Justice Dilip Gupta

JUDGE, HIGH COURT AT ALLAHABAD

5/13, Auckland Road,
Allahabad- 211 001
Phones: 2623032, 2420229
March 22, 2006

Dear Sri Jain,

It is indeed a pleasure to learn that Jain Sadhvi Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji will be completing 50 golden years of the ascetic life on 15.4.2006.

I send my best wishes for "Ganini Gyanmati Gaurav Granth" on this occasion. It cannot be doubted that Jain Sadhvi Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji has contributed a lot particularly in matters relating to treatises in Hindi, Sanskrit and other languages and in construction of pilgrimage places and temples all over the country.

With kind regards,

Yours sincerely
Dilip Gupta
(Dilip Gupta)

Sri Ravindra Kumar Jain,
Chairman,
Jamboodweep-Hastinapur,
Meerut

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Justice (Dr.) B.S. Chauhan

JUDGE, HIGH COURT AT ALLAHABAD

Dated: 22.3.2006

MESSAGE

I am happy to learn that the Jain Society is publishing "Ganini Gyanmati Gaurav Granth" on completion of 50 golden years of ascetic life of the supreme Jain Sadhvi Ganini Pramukh Aryika Shiromani Shri Gyanmati Mataji on 15th April, 2006.

I extend my congratulations and good wishes to all concerned involved in bringing out this holy Granth. I do hope that this publication shall inspire the persons, who after disenchantment want to take the real pleasure, craving for salvation, to lead an ascetic life.

(B.S. Chauhan)

Karmayogi Bramhachari
Ravindra Kumar Jain,
Chairman,
Digambar Jain Institute of Cosmographic Research,
Jamboodweep- Hastinapur (Meerut),
U.P. -250404

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा पूज्य माताजी के प्रति प्रेषित शुभकामना संदेश

पुलिस महानिरीक्षक
Inspector General of Police

दूरभाष : कार्यालय 0522-2286468
आवास 0522-27212-0
मुख्यालय : अपर पुलिस महानिदेशक, विशेष जाँच, उत्तर प्रदेश, नवम् तल, जवाहर भवन, अशोक मार्ग, लखनऊ - 226 001
HEADQUARTERS : ADDL. DIRECTOR GENERAL OF POLICE SPECIAL ENQUIRIES, U.P.
IX FLOOR, JAWAHAR BHAWAN, LUCKNOW - 226 001

उत्तर प्रदेश शासन

D.O. LETTER NO आई.जी./वर्ष/2006

DATE: मार्च 13, 2006

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई है कि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा में संयमित जीवन के 50 स्वर्णिम वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में दिनाँक 14-4-2006 से 16-4-2006 तक स्वर्ण जयंती समारोह जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. में मनाया जा रहा है और इस अवसर पर पूज्य माताजी के करकमलों में 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' का समर्पण दिनाँक 16-4-2006 को किया जायेगा। कृपया इस अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

ससद्भाव,

(बिजेन्द्र सिंह)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

14,15,16 अप्रैल 2006

कार्यालय 2287256
आवासः 2721613
मोबाइल 9839041002
9415902052

कार्यालय पुलिस महानिरीक्षक आर्थिक अपराध अनुसंधान संगठन

अपराध अनुसंधान विभाग, उत्तर प्रदेश

पंचम तल, इन्दिरा भवन, अशोक मार्ग, लखनऊ।

संख्या : ई०ओ०डब्लू० दिनाक : लखनऊ 200

यह अत्यन्त हर्ष व उल्लास का विषय है कि ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 स्वर्णिम वर्ष दिनांक 15 अप्रैल , 2006 को पूर्ण कर रही हैं। मुझे पूजनीय माताजी की जन्मस्थली टिकैतनगर (बाराबंकी) के भी दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है तथा समय–समय पर उनसे मार्गदर्शन व आर्शीवाद मुझे व मेरे परिवार को मिलता रहा है, जिसके लिए मैं सदैव अनुग्रहीत रहूँगा।

परम श्रद्धेय माताजी का जैन समाज में योगदान के संबंध में लिखने के लिए मैं अपने को सक्षम नहीं पाता हूँ। सम्पूर्ण देश व विशेषकर जैन समाज का जो मार्गदर्शन लेखनीय व वाणी के माध्यम से माताजी ने किया है वह अविस्मरणीय है।

माताजी ने जिस प्रकार जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर, कुण्डलपुर, अयोध्या, इलाहाबाद के भव्य मन्दिरों का निर्माण कराया है तथा समाज को प्रेरित किया है ऐसा योगदान अन्य किसी भी साध्वी व मुनि महाराज का देश में नहीं है।

"गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" प्रकाशित करने का जो निर्णय लिया गया है उसके लिए कृपया मेरी व मेरे परिवार की ओर से शुभ कामनायें स्वीकार करें। मेरी महावीर भगवान से विनती है कि परम पूजनीय माताजी को दीर्घायु प्रदान करें, जिससे कि देश व समाज का हित वर्षो तक माताजी कर सकें। मैं 14, 15,16 अप्रैल , 2006 के जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर, के आयोजन में सपिरवार सम्मिलित होकर गौरान्वित होऊँगा।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

23.3.06

(ए०के०जैन)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ashu Jain I.R.S.
Competent Authority
& Administrator

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF FINANCE (Deptt. of Revenue)
COMPETENT AUTHORITY & ADMINISTRATOR
Smugglers & Foreign Exchange Manipulators (Forfeiture of Property) Act, 1976, and Narcotic Drugs and Psychotropic Substances Act, 1985

सत्यमेव जयते

D.O. No. LKO/CA/AJ/JINA/2005-06 Dated 10 मार्च 2006

ज्ञानमती माता जी के चरणों में सादर वंदामि ।

मुझे जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि 105 परम् पूज्य श्री ज्ञानमती माता जी को आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष 14 अप्रैल, 2006 को होने जा रहे है । इस अवसर पर स्वर्ण जंयती समारोह भी मनाया जा रहा है , साथ ही एक ग्रन्थ भी प्रकाशित हो रहा है ।

पूज्य माता जी ने शुरू से ही आर्ष परम्परा की रक्षा की है । उनके प्रवचन हमेशा आगम सम्मत होते है । उन्होंने अनेक विधानों की रचना कर जो भक्ति की गंगा सारे भारत में बहाई हैं वह अद्वितीय है । जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति का प्रवर्तन भी पूज्य माता जी के प्रेरणा से हुआ । अनेकों ग्रन्थों की रचना की है । पूज्य माता जी की सेवायें अद्वितीय हैं ।

मैं वीर प्रभू से यह कामना करता हूँ कि माता जी स्वस्थ रहें और धर्म का प्रवर्तन करती रहें व समाज को अपना आशीर्वाद देती रहें ।

(आशु जैन)

SAMPAHARAN BHAWAN, 57-A, R.F. Bahadurji Marg, (Meera Bai Marg) Lucknow - 226 001
☎ Office : 2209432, Fax : 2209432
Website : http//www.candpslko.gov.in

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अ0शा0प0सं0:एमजेड-1-पर्स/2006

एन0 बी0 सिंह,
आई0पी0एस0

पुलिस महानिरीक्षक,
मेरठ जोन, मेरठ ।

दिनांक:फरवरी 8, 2006

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि जैन साध्वी गणिनी प्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माता जी के 50 स्वर्णिम वर्षो की सम्पूर्ति पर ''गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ'' का प्रकाशन किया जा रहा है । इसके सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें है । निश्चय ही यह ग्रंथ समाज के हर वर्ग के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी और इससे आम जनता को प्रेरणा मिलेगी ।

भवदीय,
8.2.06
(एम0 बी0 सिंह)

कर्मयोगी ब्र0 रविन्द्र कुमार जैन,
अध्यक्ष,
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान,
पो0 जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर,
जनपद मेरठ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर0के0विश्वकर्मा,
आई0पी0एस0

अर्द्धशा० पत्र संख्या
D.O. No.

पुलिस उप महानिरीक्षक,
मेरठ परिक्षेत्र मेरठ
Dy. Inspr. Genl. of Police.
Meerut Range, Meerut
दिनांक : मेरठ: मार्च 4 2006

प्रिय महोदय,

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षो की सम्पूर्ति पर एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है ।

2- श्री ज्ञानमती माताजी के प्रवचनों को सुनने का सुअवसर मुझे भी प्राप्त हुआ है एंव उनकी लेखनी तथा पूर्व प्रकाशित साहित्यों का जीवन में अमिट प्रभाव पडा है । उक्त आर्यिका दीक्षा के 50 स्वर्णिम वर्षो की सम्पूर्ति पर दिनांक 14/15/16 अप्रैल 2006 को जम्बूदीप -हस्तिनापुर में आयोजित आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती समारोह का सीधा प्रसारण भी आस्था चैनल पर प्रसारित होगा जिससे निश्चित ही देश के लाखों लोग दर्शन करके लाभान्वित हो सकेगें। मैं इस गौरव ग्रन्थ के प्रकाशन एंव उक्त समारोह की सफलता की कामना करता हूँ।

पुनः शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,
(आर0के0विश्वकर्मा)

कर्मयोगी ब्र0 रवीन्द्र कुमार जैन,
अध्यक्ष,
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान,
जम्बूद्वीप,हस्तिनापुर,
मेरठ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

मोहिन्दर सिंह
आई० ए० एस०

आयुक्त
मेरठ मण्डल, मेरठ

आयुक्त निवास :
मेरठ-250 001

दूरभाष : कार्यालय } : 2664431
एवं निवास } : 2641377, 2657539
फैक्स : 0121-2640411

"सन्देश"

हमारे भारत देश की संस्कृति प्राचीन काल से ही तप–त्याग एवं उच्च आदर्शों की संस्कृति रही है। ऋषियों–मुनियों ने सदा ही इस धरा का गौरव बढ़ाया है, साथ ही साथ अनेक नारी रत्नों ने भी अपने महान सदाचारी आदर्शमयी जीवन से देश का मस्तक ऊँचा किया है। वर्तमान में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 50 वर्ष तक अखण्ड रूप से साधनारत रहकर महान कीर्तिमान स्थापित कर दिया है, जो सभी के लिए अनुकरणीय है। जैन धर्म की दीक्षा का पालन वास्तव में कठोर नियमों से युक्त होता है और उस दीक्षित जीवन के एक या दो नहीं वरन् 50 वर्ष निराबाध रूप से व्यतीत करना किसी असाधारण व्यक्तित्व द्वारा ही असम्भव है।

पूज्य माता जी मेरठ जिले के हस्तिनापुर तीर्थ जम्बूद्वीप स्थल पर विराजमान हैं तथा इस पवित्र स्थान पर उन्होंने अपनी साधना के कई महत्वपूर्ण वर्ष व्यतीत किये हैं, जिससे स्वतः ही उनकी साधना के पुण्य का कुछ भाग हम सबको भी निरन्तर प्राप्त हो रहा है।

पूज्य माता जी की आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जंयती के उपलक्ष्य में प्रशासन की ओर से उनके प्रति शतशः नमन है एवं भगवान से यही मंगल प्रार्थना है कि वें दीर्घायु हों, स्वस्थ्य रहें तथा आबाल–गोपाल सभी को सही पथ पर चलने की शिक्षा उनसे सदैव प्राप्त होती रहे।

(मोहिन्दर सिंह)
आयुक्त,
मेरठ मण्डल, मेरठ।

कर्मयोगी ब्र0 रवीन्द्र कुमार जैन,
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जंयती महोत्सव समिति,
कार्यालय दिगम्बर जैन त्रिलोक संस्थान, पो0–
जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर–250404 (मेरठ)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रामकृष्ण
आई०ए०एस०
जिलाधिकारी

जिलाधिकारी निवास
मेरठ।
(0121) 2642232
(0121) 2640166

दिनांक : 02-03-2006

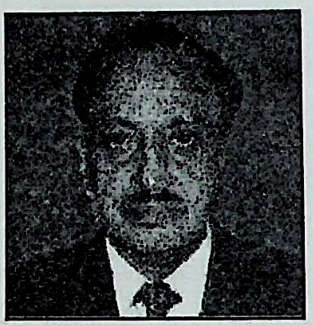

:: संदेश ::

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के पचास स्वर्णिम वर्षों की सम्पूर्ति पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रन्थ" का प्रकाशन किया जा रहा है जिसे 14–16 अप्रैल, 2006 को जम्बूद्वीप– हस्तिनापुर (मेरठ) में आयोजित "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयन्ती महोत्सव" के शुभ अवसर पर पूज्य माताजी के करकमलों में भेंट किया जायेगा।

सन्त/साध्वी शिरोमणि न केवल किसी समाज विशेष के बल्कि उस राष्ट्र के पथ--पदर्शक होते हैं जिसमें वे रहते हैं। इनके द्वारा दिये गये संदेश एवं दिखाये गये मार्गों को अपनाकर समाज एवं राष्ट्र में भाईचारे एवं एकरूपता की भावना बलवती होती है। आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा जैन संस्कृति के उत्थान में अभूतपूर्व योगदान दिया गया है । आपकी लेखनी से 200 से भी अधिक महान ग्रन्थों का सृजन हिन्दी–संस्कृत आदि भाषाओं में विभिन्न विषयों में हुआ है जो सदी का महानतम कार्य कहा जा सकता है और इन ग्रन्थों में समाविष्ट आपके विचार आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणा–स्रोत का कार्य करेंगे।

मैं "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयन्ती महोत्सव" एवं उक्त अवसर पर प्रकाशित होने वाले "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रन्थ" की सफलता की कामना करता हूं।

सादिनवादन

(रामकृष्ण)

कर्मयोगी ब्र०श्री रवीन्द्र कुमार जैन,
अध्यक्ष,
गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति,
हस्तिनापुर (मेरठ)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14,15,16 अप्रैल 2006

ए० एन० मिश्र
उप श्रम आयुक्त, उ०प्र०,
मेरठ क्षेत्र, मेरठ।

दूरभाष (कार्या.) : 0121-2663622

दिनांक : 06-03-2006

सन्देश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ है कि दिनांक 14 अप्रैल, 06 से 15 अप्रैल, 06 तक आयोजित गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव एवं ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर " गौरव ग्रंथ " का प्रकाशन किया जा रहा है।

उक्त आयोजन की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामना है। इस प्रकार के आयोजन से निश्चयही समाज में अच्छा सन्देश प्रसारित होगा और जनसमाज में धार्मिक एवं जनकल्याण की भावना का अभ्युदय होगा।

शुभ-कामनाओं के साथ।

सद्भावी,

। ए० एन० मिश्र ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजीव सभरवाल,
आई.पी.एस.

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक,
मेरठ

दिनांक: मार्च ०९ , 2006

प्रिय श्री जैन,

कृपया आपके पत्र दिनांक: 26.02.2006 के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि जैन समाज की सर्वोच्च एवं वर्तमान में सबसे प्राचीन दीक्षित जैन साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 स्वर्णिम वर्षो को दिनांक 15.04.2006 को पूर्ण कर रही हैं। इस अवसर पर 'गणिनी ज्ञानमती गौरव' ग्रंथ'' प्रकाशित किया जा रहा है

उक्त अवसर पर ''गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ'' के प्रकाशन से साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के विचारों को आम नागरिक पढकर लाभ उठा सकेंगें और इससे आम जनता में एक अच्छा संदेश जायेगा । इस ग्रन्थ के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

सस्नेह।

भवदीय,

9/3/06

(राजीव सभरवाल)

कर्मयोगी ब्र० रवीन्द्र कुमार जैन,
अध्यक्ष,
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान,
जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर, मेरठ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द्रहास
महाप्रबन्धक
Chandrahas
General Manager

BHARAT SANCHAR NIGAM LTD.

महाप्रबन्धक
भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
जिला मेरठ - 250 001
फोन : 0121 . 2662200
फैक्स : 0121 . 2641122
General Manager
Bharat Sanchar Nigam Ltd.
(A Govt. of India Enterprises)
Distt. Meerut - 250 001
Ph. : 0121 - 2662200
Fax : 0121 - 2641122

अ.शा.प.सं. : म.प्र.दू.जि. / मेरठ /
दिनांक : 02.03.2006

शुभ कामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति जम्बूद्वीप हस्तिनापुर, मेरठ के द्वारा जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर 14 से 16 अप्रैल 2006 तक "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर "गौरव ग्रंथ" का प्रकाशन किया जा रहा है।

पूज्य माताजी के त्याग, संयम एवं समाज के सांस्कृतिक उत्थान की भावना से समाज को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी। आपका योगदान सदैव स्मरण किया जाएगा।

इस शुभ अवसर पर मै आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के सफल आयोजन एवं "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" के सफल प्रकाशन हेतु आयोजकों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

चन्द्रहास

(चन्द्रहास)
महाप्रबन्धक दूरसंचार
जिला मेरठ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभकामना

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आपके द्वारा गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर 'गौरव ग्रंथ' का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह गौरव ग्रंथ सभी श्रद्धालुओं के लिए एक अद्वितीय ग्रंथ सिद्ध होगा तथा समस्त श्रद्धालुओं के हृदय में नवजीवन ज्योति का संचार करेगा। इस ग्रंथ के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

-शिवसागर सिंह, मेरठ
(पुलिस अधीक्षक ग्रामीण)

Gaṇesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न विशिष्ट शिक्षाविदों द्वारा प्रेषित विनयांजलि/शुभकामना संदेश

डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी
Dr. L.M. Singhvi

Member, Permanent Court of Arbitration at the Hague
Formerly Member of Lok Sabha (1962-67) and Rajya Sabha (1998-2004)
Formerly India's High Commissioner in U.K., (1991-98)
Senior Advocate, Supreme Court of India
Formerly Chairman, High Level Committee on Indian Diaspora (2000-2004)

गणिनी प्रमुखा ज्ञानमती माताजी की दीक्षा के र्स्वणजयंती उत्सव के उपलक्ष्य में –

गणिनीप्रमुख पंचकम्

1

अर्धशती की पुण्य साधना,
दीक्षा की स्वर्णिम यशगाथा !
ज्ञानमती माता का जीवन,
गौरव से उन्नत है माथा !!

2

ज्ञान तपस्या और साधना,
जिनशासन का वल संबल है !
मोक्ष मार्ग के आराधन में,
ज्ञानसाधना सदा सबल है !!

3

विचरण में, विहार में जिसकी,
वाणी में उद्बोधन पाया !
ज्ञानशलाका, सदावत्सला,
माता का संबोधन पाया !!

4

अर्धशती का दीक्षित जीवन,
इस जीवन में गहरा चिन्तन !
गहरा चिन्तन कितना पावन,
चिन्तन में कितना निर्मल मन !!

5

संयम नियम अहिंसा जिसकी,
राहों को आलोकित करते !
अर्धशती हो चुकी, किन्तु,
थकी नही जो चलते चलते !!

लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी
(एल. एल. डी., डि. लिट., साहित्यवाचस्पति,
न्यायवाचस्पति, पूर्व गजदूत एवं मांसद)
कुलाधिपति– जैन विश्व भारती, लाडनूं
एवं गांधी विद्या मंदिर
(प्रथम ग्रामीण विश्वविद्यालय)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
नई दिल्ली-११००६७
NEW DELHI-110067

Professor B.B. Bhattacharya
Vice-Chancellor

February 21, 2006
VC/320 24

Karmayogi Bramhachari
Shri Ravindra Kumar Jain
Chairperson
Digambar Jain Institute of Cosmographic Research
Jamboodweep-Hastinapur (Meerut) 250404 (UP).

Respected Shri Jain,

Please refer to your letter dated February 1, 2006, addressed to Professor GK Chadha, former Vice-Chancellor of the University. I took over as the Vice-Chancellor of the University in June 2005 and hence taking the liberty of responding to your letter.

I am happy to learn that the Institute would be celebrating Jain Sadhvi Ganini Pramukh Aryika Shiromani Shri Gyanmati Mataji's fiftieth year of ascetic life on April 14-16, 2006. I seek the blessings of the Almighty in giving a long and healthy life and many more years of service to the humanity to Mata Ji.

With respectful regards,

Yours sincerely,

B.B. Bhattacharya

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रोफेसर पंजाब सिंह
Prof. Panjab Singh
FNAAS, FIAS, FNIE, FBRSI, FSEE
(EX-SECRETARY, DARE, GOI & DG, ICAR)
कुलपति
VICE-CHANCELLOR

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY
VARANASI - 221 005 (INDIA)
Phones : (0542) 2368938/230-7220 (O)
: (0542) 2368339/230-7209 (R)
Fax : (0542) 2369951
e-mail : vc_bhu@sify.com

मंगल कामना

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति द्वारा गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

वर्तमान की सभी जैन आर्यिकाओं में प्राचीन दीक्षित बीसवी सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी साध्वी गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही है। पूज्य माताजी ने संस्कृत, हिन्दी, मराठी, कन्नड़ भाषाओं में 200 से अधिक कृतियों की रचना की है तथा जैन धर्म के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाया है। साथ ही माताजी के आर्शीवाद से बहुत से तीर्थो का जीर्णोद्धार भी हुआ है तथा धर्म प्रभावना के विशिष्ट कार्य हुए हैं।

पूज्य माताजी काशी हिन्दू विश्वविघालय के मालवीय भवन में अपनी पियूष वाणी से प्रवचन के माध्यम से धर्म वर्षा भी कर चुकी हैं।

ऐसी तप और संयम की साक्षात मूर्ति के चरणों में शत-शत नमन।

(पंजाब सिंह)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रो० प्रेम व्रत
निदेशक
Prof. Prem Vrat
B.Tech.(Hons), M.Tech., Ph D
FNAE, FNASc, FWAPS, FISTE, FIIIE
Director

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की
रुड़की--247 667, उत्तरांचल, भारत

INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY ROORKEE
ROORKEE-247 667, UTTARANCHAL, INDIA

TEL : +911332-272742, 285500 (O). 272342, 285400 (R)
FAX : +911332-273560, 285815 (O).
e-mail : director@iitr.ernet.in

MESSAGE

I am pleased to learn that Supreme Jain Sadhvi Ganini Pramukh Aryika Shiromani Shri Gyanmati Mataji is completing 50 golden years of her ascetic life on April 15, 2006 and the Jain Society has decided to organize "Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mata Ji Aryika Deeksha Goldfen Anniversary Celebration" on April 14-16, 2006. It is heartening to note that Mataji is the first Jain Sadhvi of the present century who has done remarkable work in the field of protection & development of cultural heritage of Jainism and the Jain Society will be presenting "Ganini Gyanmati Gaurav Granth" in her holy hands on this occasion.

I congratulate the Organizers on this occasion and wish the function all success.

Premvrat
(PREM VRAT)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

प्रोफेसर राम प्रकाश सिंह
कुलपति
PROFESSOR RAM PRAKASH SINGH
F.N.A Sc.
VICE-CHANCELLOR

लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ-226007
UNIVERSITY OF LUCKNOW,
LUCKNOW-226007
(U.P.) INDIA.

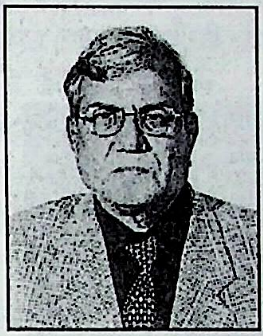

Message

I am happy to know that supreme Jain Sadhavi Ganini Pramukh Aryika Shiromani Shri Gyanmati Mataji is completing 50 years of her ascetic life this year and on this occasion Jain Society is going to organize **"Mataji Aryika Deeksha Golden Anniversary Celebration"** on 14th, 15th &16th April, 2006, and a Granth is also being published by the Society.

I hope the Granth will be very much useful for the people of the country.

I congratulate Jain Society on this auspicious occasion and wish the celebration a great success.

(R.P. Singh)
Vice-Chancellor

March 26, 2006.

TELEPHONES : OFF : 0522-2740467, RES.: 2740462, FAX : (0522) 2740467, (0522) 2740462
E Mail vc@lkouniv.ac.in

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
CH. CHARAN SINGH UNIVERSITY, MEERUT

प्रो० सन्त प्रसाद ओझा
कुलपति

Prof. S.P. Ojha
VICE CHANCELLOR

पत्रांक : एस0वी0सी0/16/492-
दिनांक : 31.03.2006

मंगल शुभकामना

भारतदेश आध्यात्मिक गुरु के रूप में समस्त विश्व में प्रसिद्ध है, इस देश की माटी में उत्पन्न महापुरूषों ने मानवजाति को सदाकाल से अहिंसा, सत्य, अनेकांत, अपरिग्रह, पारस्परिक मैत्री, विश्व एकता जैसे सार्वभौमिक सिद्धान्तों का उपदेश देकर सबको कल्याण का मार्ग दिखाया है।

इसी परम्परा में वर्तमान जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं, जिन्होंने 50 वर्ष तक कठोर त्याग–तपस्या करके मात्र अपना कल्याण ही नहीं किया है परन्तु जनसाधारण को भी संयम एवं सदाचार की महान शिक्षाएं प्रदान की हैं, ऐसे संतों के सानिध्य एवं आर्शीवाद से ही विश्व में अभी भी धर्म की पताका फहरा रही है।

मुझे प्रसन्नता है कि पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर में सम्पन्न हुए अनेक राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों में मेरठ विश्वविद्यालय का भी संयुक्त तत्त्वावधान रहा है, जिससे हम भारतीय संस्कृति एवं जैनधर्म के तथ्यों को उच्च शिक्षाविदों तक पहुँचाने में सक्षम हुए हैं।

पूज्य ज्ञानमती माताजी के 'आर्यिका दीक्षा स्वण जयंती महोत्सव' के उपलक्ष्य में मेरा उनके श्रीचरणों में विनीत वंदन है तथा इस अवसर पर गौरवग्रंथ प्रकाशित करने वाले कार्यकर्ताओं हेतु मंगल शुभकामना है। समस्त कार्यक्रम के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने हेतु मेरी हार्दिक शुभकामना।

सन्त प्रसाद ओझा

(प्रो0एस0पी0ओझा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनम्र वंदना!

अवध प्रांत को अपने जन्म से विभूषित करने वाली परमपूज्य आचार्या प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी! आप आध्यात्मिक ज्ञान एवं दृढ़ सदाचारमयी चारित्र की प्रतिमूर्ति हैं, आज के कलिकाल में आपने अध्यात्म, ज्ञान, नैतिक मूल्यों एवं अहिंसा की जो अजस्र धारा प्रवाहित की है, वह स्तुत्य है। आपने 250 से अधिक ग्रंथ लिखकर साहित्य सृजन के क्षेत्र में जो मानक स्थापित किये हैं, वे आश्चर्यजनक हैं।

हे सरस्वती माता! सन् 1995 में आपको डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान कर विश्वविद्यालय परिवार ने स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया था, आज पुनः आपकी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर आयोजित "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" के सुअवसर पर राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय परिवार संयुक्त रूप से आपके श्रीचरणों में विनम्र वंदन ज्ञापित करता है तथा आपके दीर्घजीवन एवं स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हुए आपके द्वारा हमारे विश्वविद्यालय में स्थापित "भगवान ऋषभदेव जैन पीठ" के उज्ज्वल भविष्य हेतु आपके मंगल आशीर्वाद की प्रार्थना करता है।

—डॉ. एस.बी. सिंह

(कुलपति-राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद)

शतशः नमन!

त्याग, तपस्या, अहिंसा, नैतिकता की साक्षात प्रतिमूर्ति सर्वोच्च जैन साध्वी परमपूज्य आचार्या प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी! आपने जीवन भर 'ज्ञान' रूपी अमृत की जो महान साधना करके सैकड़ों ग्रंथों की सजृना की है, वह निसंदेह ही अतुलनीय है; विश्व को आपसे अध्यात्म एवं नैतिकता का जो महान संदेश प्राप्त हुआ है, वह निश्चित ही सब की महान धरोहर है; आज आपके दीक्षित जीवन के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर आयोजित 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' की मंगल बेला में आपको पूर्वांचल के सर्वाधिक बड़े 'साकेत महाविद्यालय' परिवार के ओर से शतशः नमन करते हुए विनयांजलि अर्पित करते हैं।

—डॉ. एच.बी. सिंह

(प्राचार्य-साकेत महाविद्यालय, फैजाबाद)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रो. अशोककुमार कालिया
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी - २२१००२

दूरलेख : 'श्रुतम्'
दूरभाष कार्यालय : (०५४२) २२०४०८९
: (०५४२) २२०४२१३
निवास : (०५४२) २२०६६१७
: (०५४२) २२०७४५७
फैक्स : (०५४२) २२०६६१७

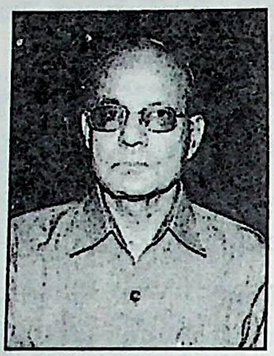

आदरणीय श्री रविन्द्र कुमार जी,

आपका पत्र दिनांक 21-03-06 प्राप्त हुआ। यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हुआ कि जैन सोसाइटी के तत्वाधान में जैन सम्प्रदाय की प्रथम जैन साध्वी, जैनसम्प्रदाय की मार्गदर्शिका आचार्य माता ज्ञानमती जी का 50 वें वर्ष के परिपूर्ण होने के अवसर पर ''गणिनी ज्ञानमती गौरव'' ग्रन्थ का प्रकाशन होने जा रहा है। सर्वप्रथम मैं इसके लिये आपको एवं सम्पूर्ण कमेटी के माननीय सदस्यों को साधुवाद देता हूँ।

जैन सम्प्रदाय का साहित्य अद्वितीय है, उसमें माता ज्ञानमती एक ऐसी साध्वी जैन आचार्य हैं, जिनके अध्यात्मिक प्रकाश से जैन समाज को एक नई दिशा मिली है। आदरणीय माता जी के विचारों एवं ज्ञानमयी ज्योति का दिव्य प्रकाश का लाभ मुझे भी हुआ है, जो मेरा परम सौभाग्य है।

इस पावन एवं पुनीत अवसर पर मैं अपनी ओर से एवं सम्पूर्ण विश्वविद्यालय परिवार की ओर से आदरणीय माता ज्ञानवती जी के प्रति मंगलकामनायें करता हूँ एवं सफल ग्रन्थ प्रकाशन के लिये बाबा विश्वनाथ एवं माँ अन्नपूर्णा से कामना करता हूँ।

पुनः बधाई एवं मंगलकामनाओं के साथ!

भवदीय,

(प्रो० अशोक कुमार कालिया)
कुलपति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Dev Sanskriti Vishwavidyalaya

(Established by the act of the Government of Uttaranchal and sponsored by Vedmata Gayatri Trust, shantikunj, Hardwar)

Gayatrikunj, Shantikunj, Hardwar (Uttaranchal) 249411

An University of Excellence for Cultural Renaissance of the globe

Dr. S. P. Mishra
VICE CHANCELLOR

No. :: 525 /PSVC/Let- 186/05
Date :: February 21, 2006

MESSAGE

It gives me immense pleasure to know that we have with us Sadhvi Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji, who has been kind enough to shower her blessings since last 50 years. The humanity at a large is indebted to her. On the eve of completion of 50 golden years of her ascetic life, it is perhaps befitings gratitude to publish **"Ganini Gyanmati Gaurav Granth"** in her honour.

I appreciate this effort by the Jain society for taking up such initiative and extend my whole hearted good wishes for successful publication and its dissemination for the benefit of the society.

(S.P. Mishra)
Vice-Chancellor

Tel : (01334) 260602, 261955, 261367, (Ext. 402, 403, 404, 405) Fax: 260866
Email: shail@del2.vsnl.net.in, pranavp@ndb.vsnl.net.in,
Website : www.dsvv.org, www.gayatripariwar.com

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रो. पूर्णिमा पाण्डे, पीएच.डी
Prof. Purnima Pande, Ph D
कुलपति
Vice-Chancellor

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
खैरागढ़ – 491881 छत्तीसगढ़
INDIRA KALA SANGIT VISHWAVIDYALAYA
KHAIRAGARH - 491881 Chhattisgarh

REGISTERED.

No.VC/Sectt./2006/ 9173

Dated, February 14, 2006

MESSAGE

I am pleased to know that the supreme Jain Sadhvi Ganini Pramukh Aryika Shiromani Shri Gyanmati Mataji is completing 50 golden years of her ascetic life on 15 April 2006. Adorable Mataji is the first Jain Sadhvi of the present century who has done remarkable work in the field of protection and development of the cultural heritage of Jainism.

I am also glad to know that the Jain Society has decided to organize 'Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mata Ji Aryika Deeksha Golden Anniversary Celebration' on 14th, 15th & 16th April, 2006 and they will be dignified by presenting "Ganini Gyanmati Gaurav Granth" in her holy hands on this auspicious occasion.

I convey my best wishes for the success of the celebration.

Purnima

(PURNIMA PANDE)

Karmayogi Bramhachari
Ravindra Kumar Jain,
Chairman,
Digambar Jain Institute Of Cosmographic Research,
Jamboodweep-Hastinapur,
Meerut U.P.-250404

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

Prof. P. Ramachandra Rao
M.Sc., B.E., M.Sc. (Met Engg), Ph.D.
FIE, FNAE, FNASc., FIM, FASc., FNA, FTWAS

[Formerly: Vice Chancellor, Banaras Hindu University, Varanasi & Director, National Metallurgical Laboratory, Jamshedpur]

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF DEFENCE
DEFENCE RESEARCH & DEVELOPMENT ORGANISATION
INSTITUTE OF ARMAMENT TECHNOLOGY
(DEEMED UNIVERSITY)
GIRINAGAR, PUNE 411025

No. 009/Dir

DIRECTOR

Date : 18 Mar 06

I consider it my great good fortune to have had the opportunity of meeting the most benevolent and the most saintly Ganini Pramukh Aryika Shiromani Shri Gyanmati Mataji at Varanasi during my tenure as the Vice-Chancellor of Banras Hindu University. After my meeting her I have listened to her discourses as and when possible and have greatly benefited from her vast spiritual knowledge and derived inspiration. She has the great ability to put across the most profound ideas in a language and with a logic that is easily understood by the common man. Mataji's benign persona embodies the most ancient knowledge derived not only from the teachings of the great and revered Jain Tirthankaras but also from her own studies of the ancient literature. The astoundingly large number of treatises authored by Mataji bear testimony to her profound knowledge. These volumes of outstanding erudition will stand as the brightest beacons of light to guide the generations to come.

Ganini Pramukh Aryika Shiromani Shri Gyanmati Mataji has not confined herself to the study of ancient texts and keeping the glorious traditions of Jainism intact in the modern age. Mataji has also responded equally effectively to the need to have a social awakening through service. Mataji has also established many pilgrimage centers, temples and institutions. Mataji also undertook a yatra to instill peace and tranquility amongst the masses.

The effort of Jain Society to commemorate the golden jubilee of Mataji's ascetic life is commendable and I feel privileged as well as most humble in sending my Very Best Wishes for the success of this great event. I also take this opportunity to pray God the Almighty to grant our most revered Mataji many more years of active life so that all of us whom she so generously blesses can celebrate the centenary of her ascetic life as well.

(P. Ramachandra Rao)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

NICE SOCIETY

A Philanthropic Educational Organization

Corporate Office :
54, Todar Mal Road
Bengali Market, New Delhi-110001
Tel : 91-11-2332 3994
Fax : 91-11-2332 3996
E mail : mail@nicesociety.org
Website : www.nicesociety.org

Date:- 22.03.2006

Message

I am feeling honoured in writing this message on the occasion of "*Aryika Deeksha Golden Anniversary Celebrations*" of Jain Sadhavi Ganini Pramukh Aryika Shiromani Shri Gyanmati Mataji, being organized in Jamboodweep, Hastinapur on April 14-16, 2006.

Whether it is the honorary degree of D. Lit from Avadh University, Faizabad, or titles such as Vagdevi, Yugpravartika, Rashtragaurav etc, from various Institutions, they have no meaning to Mataji as she is above these worldly attractions.

Mataji has done great service not only to Jaina Religion but also to whole mankind by writing over 200 books and arranging National & International Conferences jointly with C.C.S. University, Meerut.

I congratulate the organizers of the **Aryika Deeksha Golden Anniversary Celebrations** and wish them all success in bringing out **Ganini Gyanmati Gaurav Granth.**

(Kunwar Shekhar Vijendra)
Vice - Chairman, NICE Society

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

NMC MEERUT

NICE MANAGEMENT COLLEGE

ISO 9001 : 2000 CERTIFIED INSTITUTE

(Approved by AICTE, Ministry of H.R.D., Govt. of India & Affiliated to U.P. Technical University, Lucknow and Chaudhary Charan Singh University, Meerut.)

विनयांजलि

गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माता जी के विषय में लिखने का प्रयास सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है। विगत 50 वर्षों से जन–जन के मानस में ज्ञान का दीप प्रज्वलित करने वाली जैन समाज की वरिष्ठतम् साध्वी श्री ज्ञानमती माता जी का दीक्षा स्वर्ण जयन्ती महोत्सव आयोजन कर हम सभी आत्म तुष्टि ही कर रहे हैं क्योंकि माता जी तो प्रशंसा, आयोजनों आदि से परे हैं। मेरा उनके श्री चरणों में कोटि कोटि नमन्।

पिछले 20 वर्षों से मुझे माताजी का आशीर्वाद प्राप्त है। सर्वप्रथम 1985 में माताजी के आशीर्वाद से मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ एवं जम्बूद्वीप त्रैलोक्य शोध संस्थान, हस्तिनापुर के संयुक्त तत्वाधान में जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर में "Jain Mathematics & Cosmology" विषय पर अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। मेरठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में अनेकों गोष्ठियों विशेषकर "भगवान् ऋषभदेव" पर आयोजित कुलपति सम्मेलन, के आयोजन जहाँ एक ओर उनके दिव्य ज्ञान और जन मानस में ज्ञान की ज्योति जगाने की प्रबल इच्छा की ओर इंगित करते हैं तो वहीं दूसरी ओर उनके जैन धर्म की शिक्षाओं जैसे अहिंसा और त्याग के प्रचार एवं प्रसार में उनके अद्वितीय योगदान को दर्शाते हैं।

परम विदुषी, महान, त्यागी, ज्ञान की देवी, अनेकान्य भाषाविद, अलौकिक, 200 से भी अधिक ग्रंथों की रचियता परम पूज्य माता जी के "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयन्ती महोत्सव" के महान अवसर पर मैं आयोजनकर्ताओं को बधाई देता हूँ, शुभ कामना देता हूँ, और इस महोत्सव के सफल आयोजन की कामना करता हूँ। ऐसी परम पूज्या गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माता जी के प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए मैं अत्यन्त गौरवान्वित हूँ, और माता जी के आशीर्वाद की कामना करता हूँ।

22.03.06

प्रो0 सुरेश चंद्र अग्रवाल
निदेशक

Agriculture University, Roorkee Road, Modipuram, Meerut-250 110. Ph. : 0121-2575091, 2575092, Fax : 0121-2575911
E-mail : nicemgmt@nicesociety.org

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

SIET

SHOBHIT INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY

ISO 9001 : 2000 CERTIFIED INSTITUTE

(Approved by AICTE, Ministry of H.R.D., Govt. of India & Affiliated to U.P. Technical University, Lucknow)

Dated: 22/03/2006

MESSAGE

I was deeply touched to learn about the Ganini Gyanmati Gaurav Granth being brought on the eve of completion of 50 golden years by most revered Ganini Pramukh Aryika Shri Gyanmati Mataji who symbolizes the sangam of spirituality and dignity.

The impact of her 'Pravachans' and 'Explanatory Notes' indeed is everlasting and unique on our daily life. I am sure that they will continue to inspire and provide unparallel guidance in the moral upliftment of the society for all the time to come.

I really consider it my honour and privilege to offer my best regards to organizers and wish them all the success in taking up such a noble cause.

(Dr. M. L. Sadana)
Director

Opp. Agriculture University, Roorkee Road, Modipuram, Meerut-250 110. Ph. : 0121-2575091, 2575092, Fax : 0121-2575911
E-mail : sietmeerut@nicesociety.org

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14,15,16 अप्रैल 2006

NAVA NALANDA MAHAVIHARA

(An autonomous institute under Ministry of Tourism & Culture, Government of India)
NALANDA-803111 (BIHAR) INDIA

Dr. R. Panth
Director

शुभकामना संदेश

जैनधर्म के वर्तमान व्योम पर छिटके नक्षत्रों में देदीप्यमान सूर्य की भाँति अपनी प्रकाश-रश्मियों को प्रकीर्णित कर रहीं पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी जिन्होंने 50 वर्ष पूर्व भगवान महावीर के पंच महाव्रत-सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लेकर गृहत्याग किया, आज इस महनीय उद्देश्य में सफल रही हैं। इनके जैन धर्म में दीक्षित होने के 50वें वर्ष के इस पवित्र अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

रवीन्द्र पंथ
(रवीन्द्र पंथ)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमुख राष्ट्रीय जैन संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी के प्रति अर्पित भक्तिसुमन

विनम्र विनयांजलि

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं।

पूज्य माताजी ने मात्र 18 वर्ष की आयु में परमपूज्य आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज से शरदपूर्णिमा के दिन बाराबंकी (उ.प्र.) में आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर गृह-त्याग किया था और फिर 1953 में श्री महावीर जी (राजस्थान) में क्षुल्लिका दीक्षा एवं 1956 में चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राजस्थान) में आर्यिका दीक्षा ग्रहणकर कुमारिकाओं के लिए मोक्षमार्ग प्रशस्त किया।

देश का सम्पूर्ण जैन समाज यह जानता है कि पूज्य माताजी की लेखनी से पिछले 50 वर्षों में चारों ही अनुयोगों से संबंधित लगभग 200 ग्रंथों का सृजन हुआ है। माताजी द्वारा जैनधर्म एवं संस्कृति के संरक्षण में किया गया साहित्यिक अवदान सदैव स्मरण किया जाता रहेगा।

पिछले दशक में परमपूज्य माताजी ने देश के विभिन्न तीर्थों के जीर्णोद्धार में अपनी शक्ति की आहुति देकर "भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी" के लक्ष्यों की प्राप्ति में अभूतपूर्व सहयोग प्रदान किया है। पूज्य माताजी का तीर्थों के प्रति समर्पण तथा उनके विकास एवं विस्तार की समाज को प्रेरणा ही हम सभी का सम्बल है।

"भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी" को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में परमपूज्य माताजी से सदैव मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। हम परमपूज्य माताजी के स्वस्थ रहते हुए शतायु होने की भावना रखते हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
नरेश कुमार सेठी, जयपुर (अध्यक्ष)

विनयांजलि

मुझे जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि परमपूज्य 105 गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा दिनाँक 15 अप्रैल 2006 को 50 वर्षों के पूर्ण होने पर एक गौरव ग्रंथ को प्रकाशित करने की विद्वानों ने योजना बनाई है, इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये, थोड़ी है।

पूज्य माताजी सिंह प्रवृत्ति की नारी हैं। छोटी अवस्था में ही उन्होंने गृहत्याग कर अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति का परिचय देते हुए परमपूज्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत और क्षुल्लिका दीक्षा श्री महावीर जी में मात्र 18 वर्ष की आयु में ही धारण किया और परमपूज्य 108 महान तपस्वी आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के प्रथम शिष्य श्री वीरसागर जी से आर्यिका दीक्षा सन् 1956 में माधोराजपुरा (राज.) में ली थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

उसके बाद अनेक जगहों पर विहार करके आर्यिका धर्म का दृढ़ता के साथ पालन करते हुए पूज्य माताजी ने लाखों लोगों को व्रत व नियम दिलवाये।

भक्ति के अनेक ग्रंथों की रचना करके भारतवर्ष में एक भक्तिमय वातावरण बना दिया। इन ग्रंथों की रचना अद्वितीय है। आज उनके द्वारा रचित 'इन्द्रध्वज विधान' एवं 'सिद्धचक्र विधान' का पाठ करवाकर लोग धन्य-धन्य हो रहे हैं। माताजी ने समय-समय पर विद्वानों की गोष्ठी करके उन्हें आगम की व्याख्या को भली-भांति से समझाया। हजारों विद्वान उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

मेरे पूज्य पिताजी श्री हरकचंद जी सेठी सन् 1979-80 में दिल्ली में बीमार थे, तब मेरा माताजी से विशेष परिचय हुआ। बीमारी की अवस्था में वे माताजी के दर्शन करके और उनका आशीर्वाद प्राप्त करके अपना अहोभाग्य मानते थे। माताजी के प्रति उनमें अनन्य भक्ति थी इसलिए माताजी द्वारा रचित ग्रंथों को सेठी ट्रस्ट की ओर से छपवाया। उसके बाद इन ग्रंथों को पढ़कर माताजी के प्रति अगाध श्रद्धा हुई।

1985 में मुझे कमेटी ने माताजी के आशीर्वाद से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति प्रवर्तन समिति का अध्यक्ष बनाया। सारे देश में भ्रमण करने का मौका मिला। सब जगहों में मैंने पूज्य माताजी के प्रति अनन्य भक्ति देखी।

पूज्य माताजी आगम निष्ठ हैं। आगम के विरुद्ध कुछ भी स्वीकार नहीं करतीं। आज के आचार्य व मुनि संघों को माताजी का सानिध्य लेकर आगम संबंधी विवाद सुलझा लेने चाहिए। पूज्य आचार्य वीरसागर जी महाराज कहते थे कि हमारी बुद्धि आगम अनुसार करनी चाहिए न कि बुद्धि के अनुसार आगम।

अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी का मैं अध्यक्ष था। श्री सुमेरचंद जी पाटनी, श्री सौभाग्यमल जी काला, श्री रूपचंद जी गंगवाल एवं अन्य लोगों के साथ बिलारी चीनी मिल में पूज्य माताजी को नारियल चढ़ाकर रायगंज-अयोध्या में स्थित भगवान आदिनाथ की बड़ी मूर्ति का पहला महामस्तकाभिषेक करवाया। माताजी के द्वारा प्रेरित यह योजना बहुत सफल रही। प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ जी की गौरव गाथा को करने में, दिग्दिगंतर तक फैलाने में इस कार्यक्रम का बड़ा हाथ रहा।

पूज्य माताजी को पूरे महासभा परिवार की ओर से इस शुभ अवसर पर विनयांजलि अर्पित करता हूँ और भगवान जिनेन्द्र से हम सब लोग यही कामना करते हैं कि पूज्य माताजी दीर्घायु हों एवं समाज को उनका लाभ मिलता रहे तथा वे जिन आगम की और भी प्रभावना अपने पुरुषार्थ से बढ़ाती रहें।

-श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा

निर्मल कुमार जैन सेठी, दिल्ली (अध्यक्ष)

विनयांजलि

जैन जगत के लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि समाज की वरिष्ठतम साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। चारित्रचक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में आचार्य वीरसागर जी महाराज से आपने 22 वर्ष की आयु में आर्यिका दीक्षा धारण की थी और ज्ञानमती के नाम से अलंकृत हुईं। विगत 50 वर्षों में अपने नाम को चरितार्थ करते हुए आपने 200 सौ से अधिक ग्रंथों की रचना की है। विद्वत् जगत में आप जैन विदुषी के रूप में अपनी पहचान रखती हैं। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप क्षेत्र का निर्माण और जैन गणित में शोधात्मक कार्यों के लिए भी आप जानी जाती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुमुखी प्रतिभा की धनी माताजी ने जैन धर्म, जैन साहित्य और संस्कृति के उन्नयन में जो योगदान दिया है, उसके लिए जैन समाज उनका ऋणी रहेगा। उनके चिरस्मरणीय कार्यों से भावी पीढ़ियों को प्रेरणा मिलती रहेगी। मैं इस स्वर्णिम अवसर पर अपनी व संस्था की ओर से उन्हें विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

-अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद
दीपचंद जैन (राष्ट्रीय महामंत्री)

विनयांजलि

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी वैशाख कृ. 2, तदनुसार 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। इस शुभ वैराग्यमय अवसर पर महोत्सव समिति ने वंदनीय गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती त्रिदिवसीय महोत्सव' मनाने का शुभ निर्णय लिया है।

जैन धर्म एवं समाज की वर्तमान आर्यिका परम्परा में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का सर्वोपरि स्थान है। वे वर्तमान साधु-साध्वियों में इस सदी की प्राचीन-दीक्षित साध्वी हैं। अपने पचास वर्ष के स्वर्णिम साध्वी-काल में आपने स्व-पर-हितार्थ बहुआयामी मार्ग समाज को प्रशस्त किये हैं। आपकी उत्कृष्ट आत्मसाधना, विपुल मात्रा में साहित्य-सृजन, जैन तीर्थों के निर्माण एवं विकास की उदात्त भावना तथा सत्प्रेरणा ने जैनधर्म एवं संस्कृति के उन्नयन में जो अवदान दिया है, वह जैन संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में उल्लेखनीय रहेगा। आपने साहित्य-सृजन से अध्यात्म के क्षेत्र में महत्वपूर्ण आयाम प्रदान किये हैं। सभी आबाल-वृद्धों के लिए गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने चारों अनुयोगों पर साहित्य रचना कर स्वाध्याय का मार्ग प्रशस्त किया है। अष्टसहस्री जैसे कष्टसहस्री कहलाने वाले ग्रंथ को आपकी सुमेधा ने ही हस्तामलक किया है। आपने श्रेष्ठियों एवं विद्वानों को एक मंच पर लाकर समाज-सुधार की दिशा प्रदान की है।

ऐसी वंदनीय माताजी का त्रिदिवसीय दीक्षा स्वर्ण जयंती समारोह सामाजिकों के लिए निश्चित ही उपादेय होगा। माताजी के चरणों में वंदामि। मैं महासमिति एवं अपनी ओर से दीक्षा स्वर्ण जयंती समारोह के आयोजन की शुभकामना, माताजी की दीर्घायुष्य की मंगल भावना भाता हूँ।

-दिगम्बर जैन महासमिति
विवेक काला, जयपुर (राष्ट्रीय अध्यक्ष)

वात्सल्यमूर्ती आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

त्याग, साधना और धर्माचरण से जीवन में वैराग्य की प्राप्ति होती है। अध्ययन एवं स्वाध्याय से ज्ञान की प्राप्ति होती है। इन सभी गुणों से मण्डित श्री ज्ञानमती माताजी का दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समस्त जैन समाज के लिए एक पवित्र अवसर है।

साधुपद धारण करके माताजी ने अपना परिवार त्यागा। लेकिन उन्होंने सारी वसुधा को अपना कुटुम्ब बनाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सती से बनी ज्ञानमती माताजी अखिल विश्व के लिए प्रेरणादात्री बनी हैं। जैनधर्म के विचारों से प्रेरित होकर छोटी सी आयु में ब्रह्मचर्यव्रत अपनाने से जैनधर्म में वर्तमान में प्रथम आर्यिका बनने का अवसर माताजी को मिला। माताजी व्याकरण तथा संस्कृत भाषा की महापण्डित हैं। उनकी मधुर वाणी से झरने वाले अध्यात्मिक प्रवचन मनुष्य के हृदय को स्पर्श करते हैं। अनेक प्राचीन ग्रंथों के परिशीलन से माताजी की वाणी में सरलता, दृष्टि में विशालता और हृदय में कोमल भाव प्रतीत होता है। मिताहार, पदविहार, केशलोंच जैसे कठिन साधना से माताजी में तेज निर्माण हुआ है।

अहिंसा, शाकाहार और सदाचार इन्हीं सिद्धान्तों का प्रचार और प्रसार माताजी ने जीवन भर किया है। हस्तिनापुर में स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के द्वारा धर्म और शिक्षा के प्रचार हेतु अनेक सम्मेलनों का आयोजन, सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन, महामहोत्सव विधान जैसी अनेक विध गतियाँ शुरू हैं। जिसका लाभ देशभर के श्रावकों को हो रहा है। जम्बूद्वीप की अलौकिक रचना माताजी के अध्यात्मपूर्ण जीवन की शैली का श्रेष्ठ आविष्कार है। उन्हीं की प्रेरणा से महाराष्ट्र में मांगीतुंगी में भगवान श्री ऋषभदेव की 108 फुट विशाल मूर्ति का निर्माणकार्य चल रहा है।

अनेक त्यागी, आर्यिका श्रावकों को माताजी ने स्वाध्याय में बहुमूल्य मार्गदर्शन दिया है। देश के विद्वान, साधु, त्यागी माताजी का अत्यंत आदर करते हैं। 200 से अधिक ग्रंथों की रचना वर्तमान में नया इतिहास बन चुका है। धर्मपालन की महत्ता, सेवावृत्ति का महत्व, सदाचार तथा गृहस्थ धर्म का आचार आदि विविध विषयों पर, माताजी के उपदेशात्मक वचन जीवन कल्याण का साधन बन जाते हैं। इसलिए अनेक श्रावक जीवन में सफलता पाने के लिए माताजी के दर्शन तथा आशीर्वाद के लिए पधारते हैं। तीर्थंकरों की दिव्य वाणी माताजी के श्रीमुख से सुनने का अवसर सभी श्रावकों को मिलता है। आज जैन बंधुओं में धर्म प्रभावना बढ़ रही है। इस परिवर्तन में पूज्य माताजी का श्रेष्ठ योगदान है।

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने बीते पचास साल में अद्वितीय कार्य किये हैं। प्रबोधन, तीर्थोद्धार एवं संस्कृति संरक्षण तथा साहित्य रचना जैसे विविध रूप में माताजी का योगदान हजारों वर्षों तक स्मरणीय रहेगा। माताजी का दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाकर उनका उचित गौरव करना तथा उनके प्रति विनयांजलि अर्पित करना हमारा कर्त्तव्य है, इसे हम अपना सौभाग्य मानते हैं। पूज्य माताजी शतायुषी बनें, ऐसी प्रार्थना करते हुए दक्षिण भारत जैन सभा की ओर से इस शुभ अवसर पर मैं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ।

–दक्षिण भारत जैन सभा

कल्लप्पा अवाड़े, सांगली (अध्यक्ष)

विनयांजलि

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी अद्वितीय व्यक्तित्व की धनी हैं, ऐसा विचार कर हमें बहुत ही गर्व होता है। पूज्य माताजी ने 18 वर्ष की अल्पवय में ही गृहत्याग कर आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से शरदपूर्णिमा के दिन आजीवन ब्रह्मचर्यव्रतरूप सप्तम प्रतिमा को धारण किया था। पश्चात् पूज्य माताजी ने बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के तीन बार दर्शन किए तथा उनके चरण सानिध्य में रहकर कई दिन धर्माराधना की है पुनः पूज्य माताजी ने आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से सन् 1956 में माधोराजपुरा (राज.) में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका दीक्षा प्राप्त की। ऐसी पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होना हम सभी के लिए एवं आचार्य शांतिसागर परम्परा के लिए गौरवपूर्ण बात है।

पूज्य माताजी ने अपने इन 50 वर्षों में संस्कृत, हिन्दी, मराठी, कन्नड़ आदि भाषाओं में दो सौ से अधिक ग्रंथों की रचना करके साहित्य जगत को ऐतिहासिक अवदान दिया है।

कई अज्ञानी लोग भगवान महावीर को जैनधर्म का संस्थापक मानते थे अत: सही और सत्य इतिहास सामने रखने के लिए और जैनधर्म की अति प्राचीनता को साबित करने के लिए कुलपति सम्मेलन आदि अनेक शैक्षणिक संगोष्ठियों का महत्वपूर्ण आयोजन कराया। पूज्य माताजी ने भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान महावीरपर्यंत सभी तीर्थंकरों की जन्मभूमियों एवं पंचकल्याणक भूमियों के विकास का भी बीड़ा उठाया और अनेक तीर्थों का भव्य एवं ऐतिहासिक निर्माण कार्य कराया है।

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में मात्र 22 महीनों की अल्पावधि में नंद्यावर्त नामक ऐतिहासिक तीर्थ का निर्माण कराया, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी।

पूज्य माताजी के कारण ही आज बाराबंकी जिले में अवस्थित टिकैतनगर विश्व में सुप्रसिद्ध हुआ है। पूज्य माताजी के द्वारा किये गये महान कार्यों से भारतीय समाज में विशेष परिवर्तन आया है। इस कार्य के लिए पूज्य माताजी को पद्मश्री, पद्मभूषण अथवा भारतरत्न जैसी उपाधि देकर भारत सरकार जैन समाज को गौरवान्वित करे, हमारी यही भावना है।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर समिति ने परमपूज्य भट्टारक महास्वामी जी का सम्मेलन रखकर एवं भारतवर्ष की सभी शीर्ष दि. जैन संस्थाओं को महोत्सव में सम्मिलित करके एकता का परिचय दिया है, जिसके लिए महोत्सव समिति धन्यवाद की पात्र है।

यह आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। परमपूज्य माताजी का स्वास्थ्य सदैव अच्छा रहे एवं वे दीर्घ जीवन को प्राप्त करें, इस अवसर पर मैं यही शुभकामना एवं विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

–दक्षिण भारत जैन सभा

प्रो. डी.ए. पाटिल, जयसिंहपुर–महा. (चेयरमैन)

विनयांजलि

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि महोत्सव विद्वत् समिति द्वारा 'गणिनी श्री ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' प्रकाशित किया जा रहा है।

जैन समाज की वरिष्ठ साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। यह सोचकर ही मन श्रद्धा और भक्ति से परिपूर्ण हो जाता है।

मैं जब से माताजी के संपर्क में आया हूँ, उनके दिव्य तेज से सदैव प्रभावित एवं सराबोर रहा हूँ। पूज्य माताजी इस सदी की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी हैं, जिन्होंने दीक्षा ग्रहण कर कुमारिकाओं के लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया है।

पूज्य माताजी धर्म की साक्षात् मूर्ति हैं। ज्ञान का ऐसा अतुल भंडार हैं जिसकी आज के युग में कल्पना भी नहीं की जा सकती। कौन सोच सकता है कि पूज्य माताजी के द्वारा अष्टसहस्री, मूलाचार आदि जैसे 200 महान ग्रंथों का सृजन हुआ है। एकदम असंभव कार्य है, जो उनके द्वारा सम्पन्न हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह भी एक अविस्मरणीय तथ्य है कि पूज्य माताजी की प्रेरणा से तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं अन्य पंचकल्याणक भूमियों पर तीर्थ निर्माण एवं विकास का कार्य भी ऐतिहासिक स्तर पर हुआ है।

भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय महामंत्री एवं वर्तमान में राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में मुझे अनेकों साधु-साध्वी का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ है लेकिन मैं कह सकता हूँ कि जैनधर्म एवं संस्कृति के संरक्षण में पूज्य माताजी के योगदान को सदियों-सदियों तक याद किया जायेगा।

मैं भारतीय जैन मिलन की ओर से पूज्य माताजी के चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए खुद में गौरव का अनुभव करता हूँ।

-भारतीय जैन मिलन
सुरेश जैन 'रितुराज', मेरठ (राष्ट्रीय अध्यक्ष)

अभिवंदना

अगाध ज्ञान धारिका, दृढ़ चारित्र निष्ठ, आगम की प्रतिमूर्ति विपुल साहित्य प्रणेत्री, महान जिनधर्म प्रभाविका भक्तिविधानों की शिरोमणि रचनाकर्त्री महान तीर्थोद्धारिका तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की सम्प्रेरिका वात्सल्य प्रतिमूर्ति परमपूज्य प्रातःस्मरणीय गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी! आपके गुण अनन्त हैं और हमारी मति अल्प है। हे युग प्रवर्तिका, चारित्र चन्द्रिका माता! आप जिनशासन की महान आभूषण उत्कृष्ट साधिका हैं, आपकी यशोगाथा युग-युग तक जीवंत रहेगी। आज आपके आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव की महान पवित्र बेला में हम भारत जैन महामण्डल के समस्त सदस्य आपके श्रीचरणों में कोटिशः नमन करते हुए अपने सौभाग्य की सराहना कर रहे हैं। आपके सुस्वास्थ्यमयी दीर्घकालीन जीवन की मंगलकामना के साथ हम आपके चरणों में विनयांजलि समर्पित करते हैं।

-भारत जैन महामण्डल, मुम्बई
आर. के. जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष)

शास्त्री परिषद की भावना

विश्व में श्रणमसंस्कृति का गौरव ऋषि-मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविकाओं की साधना पद्धति से है। साधना के साथ ज्ञानाराधना करने वाले विरले साधक-साधिकाओं में गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। इनके द्वारा आगम-सिद्धान्त-अध्यात्म, न्याय, साहित्य, व्याकरण आदि विषयों से संबंधित दो सौ से अधिक रचनाओं द्वारा महती साहित्य सम्वृद्धि की गई है, जिससे समस्त विद्वत्वर्ग प्रभावित है।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री-परिषद के विद्वानों को आपके प्रशस्त क्षायोपशमिक ज्ञान का विशेष लाभ मिला है। आपके सानिध्य में अक्टूबर 1978 में दस दिवसीय शास्त्री परिषद के विद्वानों का हस्तिनापुर में प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ था, जिसमें आपने विद्वानों को निश्चय-व्यवहार, निमित्त-उपादान, क्रमबद्ध पर्याय का निराकरण, सम्यग्दर्शन, चारों अनुयोगों की मुख्यतः वर्तमान भावलिंगी, मुनि आदि विषयों का प्रशिक्षण देकर महान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपकार किया था। इस शिविर में शिक्षण प्राप्त कर ही पं. श्री शिवचरनलाल जैन, डॉ. सुशील जैन प्रभृति जैन सिद्धान्तविज्ञ विद्वान् तैयार हुए। आर्यिका श्री ने जिस रीति से सिद्धान्त बोध कराया, वह उत्तम गुरु के बिना असंभव था। तभी से हम सभी विद्वानों ने दुर्बोध से दुर्बोध विषय का परिज्ञान आपसे प्राप्त किया और समय-समय पर शास्त्रीय शंकाओं का समाधान भी पाया। ज्ञान प्राप्ति के लिए ज्ञानी का आश्रय लेना ही चाहिए। इसीलिए विद्वानों ने आपसे निरन्तर मार्गदर्शन प्राप्त किया। विद्वानों के प्रति माताजी का विशेष वात्सल्य है फलस्वरूप इनकी प्रेरणा से अनेक संगोष्ठियों, शिविरों के आयोजन हुए, जिनमें विद्वानों को जो लाभ हुआ, उसको शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता।

चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में वरिष्ठ आर्यिका पद पर प्रतिष्ठित आपकी आर्यिका दीक्षा की अर्धशती पूर्ण हुई अतः आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव में विद्वानों द्वारा भी श्रद्धा अभिव्यक्त की जा रही है। आर्यिका श्री के जीवन में ज्ञान का अथाह सागर लहलहा रहा है। पूज्य गणिनीप्रमुख की प्रज्ञा जिस प्रकार अन्तर्मुखी है, उसी प्रकार बहिर्मुखी है, जो इनके प्रवचनों में निरन्तर झलकती है। संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अपभ्रंश और हिन्दी भाषा पर असाधारण अधिकार के फलस्वरूप अध्यात्म, सिद्धान्त ग्रंथों की टीकाओं को लिखकर विद्वत् जगत पर जो अनन्य उपकार किया है, उसी के प्रति अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद की ओर से सश्रद्धा कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और विद्या, विवेक, विनयशील आपके महान जीवन से सहस्रों वर्षों तक प्रेरणा प्राप्त होती रहे, ऐसी मंगल भावना।

-अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद

डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत (अध्यक्ष)

विनयांजलि

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के गौरवशाली पचास वर्ष पूर्ण कर रही हैं। यह मात्र हम सभी के लिए ही नहीं अपितु संस्कृति, समाज और सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए गौरव और हर्ष का विषय है।

इस आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर अपने नाम और पद को सार्थक करने वाली ज्ञानाराधिका उत्कृष्ट विदुषी आर्यिकाश्री के प्रति अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद की ओर से उनका गौरवपूर्ण गुणानुवाद तथा विनयांजलि अर्पित करते हुए अत्यन्त हर्ष और गौरव का अनुभव कर रहा हूँ और सदा यही मंगलभावना है कि वे निरन्तर साहित्य, संस्कृति, धर्म-दर्शन की अभूतपूर्व सपर्या के रूप में जिनशासन की सेवा और प्रभावना एवं दीर्घकाल तक अपना पावन मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करती हुई मंगल आशीष तथा छत्रछाया प्रदान करती रहें।

-अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद

-डॉ. फूलचंद जैन 'प्रेमी', वाराणसी (अध्यक्ष)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्वानों की मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत

अनादिनिधन जैनधर्म में सभी तीर्थंकरों के चतुर्विध संघों में आर्यिकाओं एवं श्राविकाओं का मुनियों एवं श्रावकों की अपेक्षा बाहुल्य रहा है। आदिपुराण के उल्लेखों से यह स्पष्ट है कि लिपि विद्या की प्रथम ज्ञाता पूज्य गणिनी ब्राह्मी एवं अंक विद्या की आर्यिका सुन्दरी थीं। भगवान महावीर के शासनकाल में भी एक नहीं, अनेक जग प्रसिद्ध आर्यिकाएं हुई हैं किन्तु 20वीं सदी से पूर्ववर्ती कोई आर्यिकाप्रणीत ग्रंथ का उपलब्ध न होना स्वयं में बहुत आश्चर्यजनक है। इसका क्या कारण है? यह स्वयं शोध का विषय है।

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने 1956 में चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से दीक्षा लेकर प्राप्त ज्ञानमती संज्ञा को 200 से अधिक ग्रंथों का सृजन कर सार्थक किया है। उनकी रचनाओं में इतनी विविधता है कि कुछ काल के बाद यदि कोई अनजान साहित्य समीक्षक उनके समग्र साहित्य की समीक्षा करे, तो संभव है कि वह उन्हें किसी एक व्यक्ति का कृतित्व स्वीकार करने में असमर्थता व्यक्त कर दे। वास्तविकता के बोध होने पर भी वह आश्चर्यचकित अवश्य रहेगा, क्योंकि उनके द्वारा सृजित त्रिलोकभास्कर एवं जैन ज्योतिर्लोक में जहाँ करणानुयोग के अन्तर्गत लोकानुयोग का सार है, वहीं अष्टसहस्री और न्यायसार में न्याय की बारीकियाँ एवं तार्किक विवेचनाएं हैं। जिन स्तोत्र संग्रह, आराधना, कल्याण कल्पतरु स्तोत्र, ऋषभदेव चरितम् में संस्कृत भाषा के तलस्पर्शी ज्ञान एवं छंदशास्त्र के लाघव के दर्शन होते हैं। सर्वतोभद्र विधान, कल्पद्रुम विधान, जम्बूद्वीप विधान की संगीतात्मकता इन विधानों को जहाँ जन-जन का कण्ठहार बना रही हैं, वहीं उनमें प्रामाणिकता और पारम्परिकता भी भरपूर है। इन विधानों ने सम्पूर्ण देश को भावनात्मक एकता के सूत्र में पिरोने के साथ धर्मविमुख हो रही युवा पीढ़ी को भक्ति गंगा में अवगाहन करने का अवसर दिया है। आपाधापी के वर्तमान दौर में जब नई पीढ़ी पुराण साहित्य को पढ़ने का समय ही नहीं निकाल पाती, तब आटे का मुर्गा, सती अंजना, आदिब्रह्मा, परीक्षा जैसी कृतियाँ सरल, सहज, सुबोध एवं प्रभावपूर्ण शैली में मूल विषय वस्तु का संरक्षण करते हुए उन्हें पुराणों की विषयवस्तु का बोध कराती हैं। बाल विकास एवं नारी आलोक वर्गविशेष हेतु लिखी बहुश्रुत उपयोगी कृतियाँ हैं।

ऐसी परम विदुषी पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी स्वयं तो जिनवाणी के अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए समर्पित हैं ही, वे जैन विद्या के अध्येताओं के संरक्षण तथा उनको सम्यक् सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु भी सतत् प्रयत्नशील हैं। भारत गणतंत्र के स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली पाठ्य पुस्तकों में जब जैनधर्म के बारे में अनर्गल प्रलाप किया जाता है, तीर्थंकरों के अस्तित्व को कपोल कल्पित बताया जाता है अथवा जैनधर्म को प्रतिक्रियावादी एवं वणिकों का धर्म बताया जाता है, तब माताजी को घोर वेदना होती है। उन्होंने जैनधर्म की प्राचीनता, तीर्थंकर परम्परा के अस्तित्व एवं भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित अहिंसाप्रधान जीवनशैली के प्रचार-प्रसार हेतु 1998 में भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन का हस्तिनापुर में सफल आयोजन की प्रेरणा दी। इस अभूतपूर्व सम्मेलन में उपस्थित 20 कुलपतियों/पूर्व कुलपतियों तथा शताधिक वरिष्ठ जैन मनीषियों की उपस्थिति में कुलपति सम्मेलन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सतत् प्रयत्नशील रहने तथा भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की प्रासंगिकता एवं व्यापकता को प्रतिपादित करने हेतु तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ की स्थापना की गई। मुझे इस बात का गौरव है कि पूज्य माताजी ने स्थापना दिवस को ही महामंत्री के रूप में मुझे महासंघ की सेवा का अवसर प्रदान किया। अद्यतन 125 वरिष्ठ जैन विद्वान् इस महासंघ से आजीवन सदस्यरूप से सम्बद्ध होकर संघ के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सतत् प्रयत्नशील हैं। आप सभी विद्वानों की मार्गदर्शक एवं प्रेरणा स्रोत हैं।

पूज्य माताजी की दूरदृष्टि, सम्यक् मार्गदर्शन एवं कल्पनाशीलता का ही प्रतिफल है कि विद्वत् महासंघ आज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने शैशवकाल में ही उन ऊँचाइयों को प्राप्त कर सका है, जो किसी भी विद्वत् संगठन के लिए अनुकरणीय है। बहुउपयोगी डाइरेक्टरी सम्पर्क के अल्पावधि में 6 संस्करण, 5 प्रतिष्ठित प्रकाशन, पुरस्कार योजनाओं का नियमित संचालन, इंदौर में 1500 छात्र-छात्राओं का सफल शिक्षण शिविर, अनेक सार्थक संगोष्ठियाँ, सतत् अधिवेशन, निरन्तर वृद्धिंगत सदस्य संख्या एवं राष्ट्रीय स्तर पर पहचान इसके पुष्ट प्रमाण हैं।

आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर मैं जैन विद्या के अध्ययन, अनुसंधान में निरत मनीषियों विशेषत: विद्वत् महासंघ के सभी सदस्यों की ओर से आपके स्वस्थ, सुदीर्घ, यशस्वी, जीवन की मंगल कामना करता हूँ। हमारी भावना है आपका रत्नत्रय निरन्तर वृद्धिंगत हो एवं हम सबको आपका मंगल आशीष एवं प्रेरक मार्गदर्शन मिलता रहे।

-तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर (महामंत्री)

विनम्र विनयांजलि

सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा से हस्तिनापुर की पावन धरा पर 'जम्बूद्वीप' का निर्माण करने के उद्देश्य से 'दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान' की स्थापना की गई। अपने नाम के अनुरूप जैन भूगोल की विशिष्ट रचना 'जम्बूद्वीप' का निर्माण तो इस संस्थान ने किया ही, अपनी स्थापना के दिवस से ही धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक गतिविधियों में इस प्रकार सक्रिय भूमिका निभायी कि आज भारतवर्ष की दिगम्बर जैन समाज के संस्थानों में 'त्रिलोक शोध संस्थान' अग्रगण्य पंक्ति में खड़ा है।

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला हो या णमोकार महामंत्र बैंक, परिसर में निर्मित आकर्षक कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, ॐ मंदिर इत्यादि रचनाएँ हों या ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ-प्रयाग या नंद्यावर्त महल-कुण्डलपुर (नालंदा) तीर्थ, सभी उपलब्धियाँ जो शोध संस्थान के नाम में लिखी हैं, वे सब एक ही शक्ति का प्रतिफल है, वह हैं पूज्य ज्ञानमती माताजी, जिनकी दूरदर्शितापूर्ण कुशल प्रेरणा के माध्यम से जिनधर्म प्रभावना के महान कार्य इस संस्थान के द्वारा सम्पन्न हो पाये हैं। आज हमारे लिए यह विशेष सौभाग्यशाली अवसर आया है, जबकि संस्थान अपनी ही प्रणेत्री पूज्य ज्ञानमती माताजी की 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' का विशाल आयोजन अपनी ही भूमि पर कर रहा है।

वीर प्रभु से प्रार्थना है कि सुदूरवर्ती भविष्य तक संस्थान को पूज्य गणिनी माताजी की मंगल छत्रछाया प्राप्त होती रहे ताकि दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते हुए जिनधर्म की पताका को फहराते रहने में यह सफल हो सके।

-दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष)

जिनेन्द्र प्रसाद जैन 'ठेकेदार' (कार्याध्यक्ष)

कैलाशचंद जैन (महामंत्री)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युवाओं की मार्गदर्शिका

आज से 30 वर्ष पूर्व फलटण में सन् 1976 में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज की प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतीय दिगम्बर जैन युवा परिषद के हम सभी कार्यकर्ताओं ने इन वर्षों में जैनधर्म की जो कुछ भी सेवा-सुश्रूषा की है, उसके लिए हम अपने को गौरवशाली अनुभव करते हैं।

इस परिषद की स्थापना के समय किसी ने यह सोचा नहीं था कि यह परिषद देशव्यापी स्तर पर अपनी अलग पहचान बना लेगा और लगभग पूरे भारत में इसकी शाखाओं के माध्यम से युवा साथी सामाजिक कार्यों में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करेंगे। ऐसे अवसरों पर आज से करोड़ों वर्ष पूर्व सम्राट चन्द्रगुप्त के द्वारा देखे गये स्वप्न साकार होते प्रतीत होते हैं, जब उन्होंने कई स्वप्नों में से एक स्वप्न देखा था कि "एक बड़े से रथ को दो छोटे-छोटे बैल खींच रहे हैं, जिसका अर्थ पुरोहितों ने बताया था कि पंचमकाल में धर्मरूपी रथ को समाज के युवा कंधे ही आगे बढ़ाएंगे।

आज हम देख रहे हैं कि 72 वर्ष की उम्र में भी ज्ञानमती माताजी के अन्दर नवयुवकों जैसा उत्साह रहता है, तभी तो उन्होंने अयोध्या, मांगीतुंगी, प्रयाग, कुण्डलपुर आदि तीर्थों पर स्वयं पदविहार करके नवनिर्माण कराया। किसी कार्य की प्रेरणा देना तो महत्वपूर्ण बात है ही परन्तु उन सभी कार्यक्रमों में अपना सानिध्य प्रदान करना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है।

हमें गौरव है कि हमें ऐसी पूज्या माताजी के मार्गदर्शन में कार्य करने का अवसर प्राप्त हो रहा है,जिनको आज पूरा देश सम्मान की दृष्टि से देखता है, जिन्हें 'राष्ट्रगौरव', 'विश्वविभूति' आदि न जाने कितनी उपाधियाँ प्राप्त हैं।

वर्तमान में उन पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष की सम्पूर्णता पर उनका "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' मनाने का पुण्य अवसर प्रापत हो रहा है, जो कि हमारे जीवन का प्रथम स्वर्णिम अवसर है। इतने वर्षों में पूज्य माताजी ने साहित्य के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है, तीर्थों का विकास, जीर्णोद्धार, नवनिर्माण कराकर उपेक्षित तीर्थों को साकाररूप प्रदान किया है तथा शिष्यों का संग्रह करके आचार्यों की वाणी को जीवन्तता प्रदान की है।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद के समस्त युवाओं की ओर से भगवान जिनेन्द्रदेव से हमारी प्रार्थना है कि पूज्य माताजी चिरायु हों तथा इसी प्रकार हम सभी को मार्गदर्शन प्रदान करती रहें, इसी भावना के साथ—

-अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद
मनोज कुमार जैन, मेरठ (राष्ट्रीय महामंत्री)

अपार गुणों की महिमा, मैं कह नहीं सकती

महान तीर्थोद्धारिका, विपुल साहित्य की सृजनकर्त्री परमविदुषी परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न 105 श्री ज्ञानमती माताजी को मेरी व अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की सभी महिलाओं की ओर से शत-शत वंदामि।

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़ और मराठी आदि भाषाओं में धार्मिक सरल साहित्य की सर्वोच्च लेखिका के बारे में लिखना ऐसा प्रतीत होता है। जैसे—

गागर में सागर भर नहीं सकती।
चाँद की चाँदनी पकड़ नहीं सकती।।
कैसे लिखूँ पूज्य माताजी की महिमा।
आपके अपार गुणों की महिमा मैं कह नहीं सकती।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माँ सरस्वती का साक्षात् स्वरूप आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी में विद्यमान है। जिन्होंने अपनी 50 वर्षों की संयम साधना करते हुए माँ जिनवाणी की जो सेवा की है एवं तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों पर तीर्थ निर्माण, जीर्णोद्धार एवं विकास का जो ऐतिहासिक कार्य करवाया है, उसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है। दृढ़ता व कर्मठता, सहनशीलता व त्याग, आगमानुकूल चर्या व जिन धर्म की सेवा हेतु लघु एवं वृहद् ग्रंथों का लेखन, स्वाध्याय, चिंतन एवं मनन को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानों उनके जीवन का प्रत्येक क्षण इतिहास की स्वर्णिम गाथा है। चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा को पूज्य माताजी ने वास्तव में गौरवान्वित किया है। आपने आगम को ही अपनी प्राणचेतना मानते हुए अपने आर्यिका दीक्षित जीवन के 50 वर्ष पूर्ण कर संसार सागर से पार लगाने वाली रत्नत्रय रूप महान निधि को प्राप्त किया है।

पूज्य माताजी को एकाग्र ध्यान व त्याग से जो ऋद्धि-सिद्धि मिली, उसका अनूठा उदाहरण आप स्वयं भी देख सकते हैं कि किस प्रकार आपने श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली स्वामी जी की प्रतिमा के सम्मुख ध्यान लगाकर साक्षात् सुमेरु पर्वत व जम्बूद्वीप का नक्शा देखा था। वही पूरी साधना आपने हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप व सुमेरु पर्वत बनवाने में लगवाई है। आपने अयोध्या, मांगीतुंगी, सम्मेदशिखर, प्रयाग तीर्थ और कुण्डलपुर आदि तीर्थों पर जीर्णोद्धार व नवनिर्माण करवाकर विश्व को जो अमूल्य निधियाँ प्रदान की हैं, आने वाले युगों-युगों तक उनकी गौरव गाथा इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगी और जन-जन उसकी गौरव गाथा गाकर स्वयं को पुण्यशाली व गौरवान्वित महसूस करेगा।

पूज्य माताजी ने 1997 में दिल्ली में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन-दिल्ली प्रदेश की स्थापना करवाई। उसी दिन से हमने कभी 24 कल्पद्रुम महामण्डल विधान में हो या समवसरण विहार या फिर 2600 मंत्रों से समन्वित विश्वशांति महावीर विधान, या फिर कृत्रिम कैलाशपर्वत पर 72 जिन मंदिरों में भगवान आदिनाथ मोक्षकल्याणक के दिन लाडू चढ़ाने आदि सभी उत्सवों में जिस प्रकार अपार जनसमूह को मंत्रमुग्ध होते देखा, मानों पृथ्वी पर स्वर्ग ही उतर आया हो। उससे मैं तो यही कहूँगी कि पूज्य माताजी दूरदर्शी एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व की धनी हैं। आपकी प्रेरणा से इतनी अल्प अवधि में कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल व तीन चौबीसी के मंदिर का निर्माण व उनके गुम्बजों का दृश्य देखते ही बनता है। आपका आदर्श जीवन, वाणी का ओज, चेहरे का तेज और ज्ञान की उत्कर्ष लालिमा गुलाब के फूल की तरह ताजी दिखाई पड़ती है।

अन्त में मैं अपनी और अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की सभी बहनों की ओर से यही कामना करती हूँ कि पूज्य माताजी चिरकाल तक इसी प्रकार धर्म प्रभावना के कार्य करवाती रहें तथा हम सभी को भी सद्बुद्धि प्रदान करती रहें, ताकि हम भी अपने जीवन को मोक्षमार्ग की ओर लगा सकें। पूज्य माताजी का उज्ज्वल जीवन प्रत्येक प्राणी के लिए आदर्श बने। प्रत्येक प्राणी के हृदय में उनकी छवि माँ के समान अंकित रहे। उनका आशीर्वाद हमेशा हमारी आत्मा को निर्मलता प्रदान करता रहे। आप अपनी हीरे जैसी चमक तथा फूलों जैसी सुगंध को जन-जन में प्रसारित करती रहें। ऐसी देवीस्वरूपा माताजी का वरदहस्त सदैव जिनशासन और हम सब पर बना रहे, जिससे हम सब अज्ञानी जीव उनके द्वारा प्रवाहित ज्ञान गंगा में अवगाहन कर संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन की प्रेरणा प्राप्त करते रहें। अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की सभी महिलाएं अपने को ऐसी गुरु माँ की शिष्या मानते हुए धन्य मानती हैं व कामना करती हैं कि हम आपकी छत्रछाया में रहकर संगठन को बढ़ाते हुए धर्म प्रभावना करते रहें। पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" पर एक बार फिर अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की सभी इकाईयों की सभी बहनों की ओर से सामूहिक विनयांजलि अर्पित करते हैं।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन

श्रीमती आशा जैन, दिल्ली (राष्ट्रीय अध्यक्षा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"माताजी की उपकार वृत्ति"

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि परमपूज्य गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती समारोह हम लोग विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाने जा रहे हैं और इस अवसर पर गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ भी प्रकाशित किया जा रहा है। पूज्य माताजी अपने युग की ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ आर्यिका होने के साथ-साथ तीर्थोद्धार की सम्प्रेरिका तथा उद्‌भट विदुषी लेखिका हैं। जिन्होंने चारों अनुयोगों से संबंधित अष्टसहस्री, मूलाचार, षट्खण्डागम आदि महान ग्रंथों की संस्कृत-हिन्दी टीकाओं के साथ 200 से अधिक ग्रंथों का सृजन किया है। निःसंदेह ग्रंथों का प्रकाशन प्रशंसनीय कार्य है। पूज्य माताजी के जीवन पर जितना प्रकाश डाला जावे, उतना कम है।

मैंने माताजी का साहित्य पढ़ा तो था लेकिन दर्शन सबसे पहले 1991 में सरधना चातुर्मास के समय किये थे। पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज की दीक्षा के बाद मुझे माताजी से चर्चा करने में डर लगता था, दिसम्बर 2001 में जब माताजी संघ सहित कुण्डलपुर (नालंदा) पहुँची, तब अनायास 30 दिसम्बर को मुझे कुण्डलपुर में दर्शन का सौभाग्य मिला। मैंने पूज्य चंदनामती माताजी से कहा कि माताजी! मैं संघ को आहार दे सकता हूँ क्या? मैंने अन्य संघों को तो आहार दिया है लेकिन पूज्य विशुद्धमती माताजी को आज तक आहार न दे सका, यह मेरा दुर्भाग्य है। पूज्य ज्ञानमती माताजी यह सुन रही थीं और मुझे बुलाकर मेरा इंटरव्यू लिया। कहा कि चौके में जाओ और क्षुल्लक जी को आहार देना। मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला के साथ पड़गाहन के लिए खड़ा हुआ, बड़ी माताजी का पड़गाहन हुआ। माताजी ने हमसे आहार लिया। संघ की आहार चर्या के बाद पूज्य चंदनामती माताजी ने बड़ी माताजी से पूछा कि आपने तो सुरेश से आहार ले लिया। माताजी ने कहा हमारे साधु कुल का यह जोड़ा जिसके पास जनेऊ के साथ, रात्रि भोजन निषेध देवदर्शन, छने पानी का नियम है, यदि ऐसे श्रावकों को प्रोत्साहन नहीं दिया जावेगा, तो भविष्य में साधु संघों को आहार देने वाले नहीं मिलेंगे।

अतः माताजी की इस प्रकार की उपकारवृत्ति श्रावकों पर गहरी छाप छोड़ती है, मोक्षमार्ग में लगाती है। पूज्य माताजी ने जैनधर्म एवं संस्कृति के संरक्षण में साहित्यिक अवदान के साथ तीर्थोद्धार, तीर्थंकरों की जन्मभूमियों, पंचकल्याणक एवं निर्वाणभूमियों को विकसित करने के लिए जो कदम उठाया है, उसकी सर्वत्र प्रशंसा है, जो देश के इतिहास में भी नया अध्याय बनेगा।

-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा
सुरेश जैन मारोरा, शिवपुरी (महामंत्री)

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का, उत्थान माता तुमने किया

शाश्वत तीर्थ अयोध्या के निकट जन्म लेने के कारण ही मानों ज्ञानमती माताजी के हृदय में तीर्थंकरों की जन्मभूमि के विकास की भावना गहराई तक समाविष्ट है। जन्मभूमि विकास की तीव्रतम भावनाओं से ओतप्रोत होकर ही पूज्य माताजी ने एक 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी' के गठन की प्रेरणा प्रदान की, जिसके द्वारा चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के विकास एवं जीर्णोद्धार का संकल्प लिया गया, जिनमें से कई जन्मभूमियों का विकास कार्य पूर्ण हो गया है और कई जन्मभूमियाँ विकासोन्मुख हैं।

हम सभी अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं जो कि हमें इस कलिकाल में भी पूज्य ज्ञानमती माताजी जैसी दिव्य अलौकिक शक्ति के दर्शनों का लाभ प्राप्त हो रहा है तथा उनके मार्गदर्शन में कार्य करने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्तमान में पूज्य माताजी द्वारा किया गया यह अनुपम कार्य वास्तव में समय की महती आवश्यकता थी। आज जब लोग अतिशय-चमत्कारों की ओर ज्यादा भागते हैं, तब उन्हें यह बताना आवश्यक था कि जिन चन्द्रप्रभु भगवान की अतिशयभूमि तिजारा जी, भगवान महावीर के अतिशय क्षेत्र महावीर जी, भगवान पद्मप्रभु के अतिशय क्षेत्र पद्मपुरी में लोग हजारों दीपक जलाते हैं, अनेकों मनौतियाँ मांगते हैं, उन भगवान चन्द्रप्रभु, भगवान महावीर एवं भगवान पद्मप्रभु की जन्मभूमियाँ किस स्थिति में हैं? वहाँ कोई एक दीपक जलाने वाला है या नहीं!

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में सैकड़ों वर्षों से एक छोटा सा मंदिर था, पूज्य माताजी की प्रेरणा पाकर आज वह कुण्डलपुरी अपने स्वरूप को प्राप्त हो चुकी है।

जन्मभूमियों के विकास क्रम में सर्वप्रथम अयोध्या का विकास हुआ, जिसके माध्यम से रामजन्मभूमि के नाम से प्रचलित शाश्वत तीर्थ अयोध्या नगरी अब 'ऋषभदेव जन्मभूमि' के नाम से विश्व के क्षितिज पर अपना स्थान प्राप्त कर सकी है। इसी प्रकार भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी के विकास की भी पूज्य माताजी ने प्रेरणा प्रदान की है। सिंहपुरी, कम्पिल जी, शौरीपुर आदि तीर्थ भी विकासोन्मुख हैं तथा भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थ के बारे में तो शायद अब कुछ भी कहने की जरूरत नहीं रह जाती है क्योंकि यह तीर्थ अब एक चिर-परिचित तीर्थ बन चुका है।

अन्त में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में शत-शत नमन करते हुए उनकी दीर्घ जीवन की हम सभी मंगल कामना करते हैं।

-भारतवर्षीय दिगंम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी
अनिल जैन (कमल मंदिर), प्रीतविहार-दिल्ली (महामंत्री)

अन्य प्रांतीय/शहरी विशिष्ट संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी के प्रति अर्पित विनयांजलियाँ

अलौकिक प्रतिभा की जीवन्त प्रतिमा परमपूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी

श्रमण परम्परा के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास की दिशा तय करने में 20वीं शताब्दी का अवदान स्वर्णाक्षरों में अंकित किए जाने योग्य है। परमपूज्य आचार्यश्री शांतिसागर जी ने जहाँ श्रमण-संस्था को पुनर्जीवित किया, वहीं परमपूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने इतिहास ही बदल दिया। आर्यिकाश्री ने इस अवधारणा को निर्मूल कर दिया कि केवल साधु ही साहित्य सृजन, तीर्थ जीर्णोद्धार, तीर्थ-विकास, धर्मप्रभावना आदि कार्यों में समर्थ हैं।

परमपूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी ने स्वाध्याय के माध्यम से रत्नत्रय की जो अलख जगाई, उसमें सर्वोदय की भावना और करुणा बुद्धि से सर्वजन हिताय उसे प्रचारित-प्रसारित कर एक मिसाल कायम की है। उनकी परिकल्पना और विहंगम दृष्टिसम्पन्न होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है-जम्बूद्वीप रचना। आज विश्व का जन-मानस इस अलौकिक रचना से अभिभूत हो जाता है।

दिल्ली जैन समाज को प्रथम गणिनीरत्न आर्यिका ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य का लाभ प्राप्त हुआ है। 1972, 1973, 1974, 1979, 1980, 1982, 1997, 1999, 2000, 2001 के चातुर्मास दिल्ली में हुए। इन सभी अवसर पर प्राचीन श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत की गतिविधियों पर न केवल उनका मंगल आशीर्वाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिला, बल्कि समय-समय पर समुचित दिशा-निर्देशों से भी पंचायत को वे उपकृत करती रहीं। वैसे भी यह पंचायत अग्रवाल जैन समाज की सर्वाधिक प्राचीन पंचायत है। इसने अनेक उतार-चढ़ावों के मध्य भी जैन परम्परा की रक्षा में अहम् भूमिका निभायी है और निभा रही है।

विगत एक लम्बे समय में पंचायत के सभी पंच, प्रधान एवं कार्यकारिणी के सभी अधिकारीगण माताजी के साथ निकट संपर्क में रहे और समाज की विभिन्न समस्याओं के समाधान में माताजी का परामर्श प्राप्त करते रहे। पंचायत को इस बात से भी गौरव की अनुभूति होती है कि पूज्य माताजी ने 1972-74 के चातुर्मास के समय ही जम्बूद्वीप की परिकल्पना के मॉडल को मूर्तरूप देने की अभिव्यक्ति की थी।

आज पूरी जैन परम्परा में गणिनीरत्न ज्ञानमती जी के नाम से विख्यात माताजी ऐसी साध्वी हैं, जिन पर पंचायत को तो गर्व है ही, साथ ही सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज उनके द्वारा धर्मायतनों के निमित्त किए गए कार्यों से सदियों तक उपकृत रहेगी। जैन परम्परा के समुचित विकास, जीर्णोद्धार और साहित्यिक अवदानों से सुवासित उनका व्यक्तित्व और कृतित्व प्रकाशस्तंभ की तरह है, जिससे भावी पीढ़ी आलोकित होती रहेगी।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि हम उनके दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होते देख रहे हैं। उनकी विहंगम दृष्टि, परिकल्पना, प्रेरक व्यक्तित्व, ज्ञानाराधना आदि सभी गुणों का स्मरण करते हुए पंचायत के हम सभी पंच, अधिकारी और सदस्य तथा जैन समाज उनके प्रति श्रद्धावनत है और उनकी दीर्घायुष्य की कामना करते हुए उनके मंगलमय आशीष तथा दिशा-निर्देश प्राप्त करते रहने की भावना भाते हैं।

-प्राचीन श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत (पंजी.) दिल्ली

(श्री नरेश चंद मादीपुरिया)
संयोजक, पंच समिति

(श्री जिनेन्द्र प्रसाद ठेकेदार)
पंच

(श्री त्रिलोक चंद जैन)
(भारत नगर) पंच

(श्री मुंशी सुमेर चंद जैन)
पंच

(श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन) वकील
पंच

बार-बार विनऊ माता, चरण शरण मोहि दीजै

मुझे यह जानकर बहुत ही प्रसन्नता हुई कि पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर उनका 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' मनाया जा रहा है तथा इस अवसर पर 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' का प्रकाशन किया जा रहा है।

वैसे तो पूज्य माताजी के प्रति मेरी प्रारंभ से ही श्रद्धा है परन्तु 2-3 वर्ष पूर्व भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर विकास क्रम में पूज्य माताजी के बिहार प्रवास के मध्य उनके प्रति श्रद्धा, अपनत्व, आत्मीयता कुछ ज्यादा ही हो गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह तो सच है कि किसी साधारण मानव में इतनी शक्ति नहीं हो सकती है, जो हमने पूज्य माताजी के अंदर देखी है। आज कुण्डलपुर तीर्थ में नवनिर्मित भव्य मंदिरों के धवल कलात्मक शिखरों पर लहराते ध्वज दूर से ही यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं, जिसके कारण सैकड़ों भक्त यहाँ आकर अनेक विशाल मंदिरों एवं भगवान महावीर के नंद्यावर्त महल की वंदना कर अपने को धन्य मानते हैं।

सहज विश्वास नहीं होता कि केवल दो वर्षों में इतना सब कैसे संभव हो पाया है? निश्चयपूर्वक यह सब पूज्य माताजी के तप का, उनके दृढ़ निश्चय का, उनके आशीर्वाद का फल है।

कुण्डलपुर ही क्यों? बिहार में माताजी के प्रवास के दौरान दर्जनों निर्माण कार्य हुए हैं। पावापुरी जी में भगवान महावीर एवं राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की उत्तुंग प्रतिमा, राजगृही में विपुलाचल स्थित समवसरण के मार्ग पर मनोहारी मानस्तंभ, गुणावाँ जी में गौतम गणधर का कलात्मक मंदिर, तीर्थराज सम्मेदशिखर में आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा, अनेकों पंचकल्याणक, विधान, समारोह, महामस्तकाभिषेक, मानों विधाता ने भगवान महावीर की जन्मभूमि के नवनिर्माण की खुशी में आसपास के सभी तीर्थों को उन्नत करने का, सजाने का आदेश दिया हो।

बिहार में दो वर्ष के प्रवास के मध्य जब ज्ञात हुआ कि अब पूज्य माताजी यहाँ से दिल्ली के लिए विहार करेंगी, तो सुनकर मन में बड़ा कष्ट हुआ। इतने दिनों उनके साथ रहने की, कार्य करने की, उनके निर्देशों का पालन करने की ऐसी आदत हो गई थी कि ऐसा लगता था कि अब हम इनसे अलग रहकर कभी कोई कार्य कर ही नहीं पाएंगे लेकिन बस यही सोचकर संतोष करना पड़ा कि आखिर जिस प्रकार चिड़िया अपने बच्चों को उड़ना सिखाकर उड़ने के लिए अकेला छोड़ देती है, वैसे ही हमें भी अब अकेले रहकर ही काम करना होगा। हाँ! इनका आशीर्वाद, मार्गदर्शन व प्रेरणा तो अब भी हमारे साथ है।

ऐसी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी वैशाख कृष्णा दूज को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं, यह सबके लिए अत्यंत हर्ष एवं गौरव की बात है। इस मंगलमय अवसर पर पूज्य माताजी को बिहार प्रांतीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की तरफ से और अपनी तरफ से विनयांजलि अर्पित करते हुए बार-बार वंदामि करते हैं। हमेशा की भाँति पूज्य माताजी का आशीर्वाद हमारा संबल रहे, यही जिनेन्द्रप्रभु से प्रार्थना है।

-बिहार स्टेट दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

अजय कुमार जैन, आरा (मानद मंत्री)

शत-शत नमन

हे जिनधर्म उन्नायिका, हे भक्तवत्सल, हे वात्सल्यमूर्ति, हे तीर्थोद्धारिका! परमपूज्य प्रातःस्मरणीय गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी! आपने साहित्य साधना, तीर्थ निर्माण, जिनधर्म प्रभावना आदि समस्त क्षेत्रों में महान कीर्तिमान स्थापित किये हैं, आपकी यशःकीर्ति आज चहुँ ओर व्याप्त है, आपको आगम ज्ञान का साकार प्रतिरूप माना जाता है।

आपने भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ की जन्मभूमि-हस्तिनापुर, भगवान ऋषभदेव सहित पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि-अयोध्या, भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा), भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि-राजगृही (नालंदा) एवं अनेकानेक तीर्थों को अपनी प्रेरणा से चमत्कृत कर दिया है, जो जैनशासन की कीर्ति को उच्च स्वर से उद्घाटित कर रहे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपने आत्म कल्याण के साथ-साथ विपुल साहित्य सृजन एवं भक्ति विधानों की रचना करके भारतवर्ष में जो भक्तिगंगा बहाई है, वह अतुलनीय है। आप सम्पूर्ण मानव समुदाय की महान धरोहर एवं निधिस्वरूप हैं। आपकी आर्यिका दीक्षा के ५० दीर्घ वर्षों की निराबाध सम्पूर्ति पर महाराष्ट्र प्रांतीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 34 तीर्थों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की ओर से आपके श्रीचरणों में शत-शत नमन है।

-महाराष्ट्र प्रांतीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण (महा.)-अध्यक्ष

शांतिलाल काला-परभणी (महा.)-महामंत्री

विनयांजलि

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि पूज्यनीय ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। इस उपलक्ष्य में 14 से 16 अप्रैल 2006 को आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती मनाई जा रही है। पूज्यनीय माताजी की लेखनी से इन 50 वर्षों में चारों ही अनुयोगों से संबंधित अष्टसहस्री, मूलाचार, षट्खण्डागम आदि जैसे महान ग्रंथों की संस्कृत, हिन्दी टीकाएँ एवं अन्य लगभग 200 ग्रंथों का सृजन हुआ है। पूज्यनीय माताजी की प्रेरणा से तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं अन्य पंचकल्याणक भूमियों पर तीर्थ निर्माण एवं विकास का कार्य भी ऐतिहासिक स्तर पर हुआ है।

मैं भगवान महावीर मेमोरियल समिति की ओर से आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती उत्सव मनाने के लिए बधाई देता हूँ और भगवान महावीर से पूज्यनीय माताजी की लम्बी आयु की प्रार्थना करता हूँ और आशा करता हूँ कि पूज्यनीय माताजी जैन समाज की लगातार सेवा करती रहेंगी।

-भगवान महावीर मेमोरियल समिति, दिल्ली

महेन्द्र प्रसाद जैन (महामंत्री)

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का समाज सदा ऋणी रहेगा

सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की दीक्षा के 50 वर्षों की अवधि में उनकी प्रेरणा से समाज के लिए आगम के आधार पर नये तीर्थों का निर्माण, तीर्थों का जीर्णोद्धार, उपेक्षित तीर्थों को प्रकाश में लाने का अभूतपूर्व कार्य हुआ है। अभी-अभी उनके द्वारा तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के जीर्णोद्धार, विकास एवं संरक्षण की घोषणा की गई है और इस हेतु अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समिति का गठन भी किया गया।

जैनधर्म की चहुँमुखी प्रभावना के लिए उनके द्वारा जो ऐतिहासिक कार्य किये गये, उनकी लम्बी सूची तैयार की जा सकती है, जिनके कारण समाज लाभान्वित हुआ है और होता रहेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप का निर्माण—श्रद्धेय माताजी ने सर्वप्रथम भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की गर्भ, जन्म, तप, केवल ज्ञान भूमि में सन् 1974 में जैन भूगोल की शास्त्रीय रचना कर, जम्बूद्वीप का निर्माण कर जंगल में मंगल कर दिया। 300 फीट न्यास में इस जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में 101 फीट ऊँचा सुमेरु पर्वत है। इसके अतिरिक्त इस तीर्थ में कमल मंदिर, त्रिमूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, कैलाशपर्वत रचना, ज्ञानमती कला मंदिर भी दर्शनीय हैं। गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोध पीठ का मुख्यालय भी यहीं पर स्थित है।

भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि शाश्वत तीर्थ अयोध्या—भगवान ऋषभदेव के गर्भ, जन्मकल्याणक व भगवान अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ व अनन्तनाथ की गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान की इस पावन नगरी में जीर्णोद्धार और विकास, दो नवीन मंदिर का निर्माण, आवासीय व्यवस्था के अलावा प्राचीन मंदिरों-टोकों के जीर्णोद्धार तथा राजकीय उद्यान का नामकरण ऋषभदेव उद्यान सन् 1993-94 में कराया।

भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली प्रयाग में जैन तीर्थ—भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली प्रयाग में श्रद्धेय ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से फरवरी 2001 में उक्त तीर्थ का अभूतपूर्व निर्माण हुआ। इसमें दीक्षा तपोवन, समवसरण रचना, कैलाशपर्वत, गुफा मंदिर, कीर्तिस्तंभ निर्मित कराकर इसे वंदनीय स्थल बनाया।

मांगीतुंगी में भगवान ऋषभदेव की 108 फीट ऊँची खड्गासन प्रतिमा का निर्माण—श्रीराम, हनुमान, सुग्रीव, नील, महानील सहित 99 करोड़ मुनिराजों की मोक्ष स्थली मांगीतुंगी पर सहस्रकूट, कमल मंदिर निर्माण के साथ-साथ भगवान ऋषभदेव की 108 फुट ऊँची मूर्ति की निर्माण प्रेरणा श्रद्धेय माताजी के आशीर्वाद का ही फल है।

भगवान महावीर की जन्मस्थली कुण्डलपुर—2603 वर्ष पूर्व कुण्डलपुर स्थित नंद्यावर्त महल में माता प्रियकारिणी (त्रिशला) ने चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को भगवान महावीर को जन्म दिया, उस समय विशाल जन्मोत्सव इंद्रों द्वारा मनाया गया।

समयानुसार यह तीर्थ उपेक्षित हो गया, पर तीर्थयात्री दर्शनार्थ बराबर आते रहे। 21वीं शताब्दी के शुभारंभ में गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने इस भूमि के वैभव को पुनः प्रतिष्ठापित करने हेतु दृढ़ संकल्प पर कुण्डलपुर पधारीं। इसके विकास हेतु भूमि क्रय करके नंद्यावर्त महल के नाम से इस तीर्थ को विकसित किया। इस परिसर में पाँच मंदिर भगवान ऋषभदेव मंदिर 101 फीट उत्तुंग मंदिर में भगवान महावीर की अवगाहना प्रमाण खड्गासन प्रतिमा, नवग्रह मंदिर, त्रिकाल चौबीसी व चन्दनबाला द्वारा भगवान महावीर की आहार प्रक्रिया के साथ-साथ आवास व भोजनालय का निर्माण प्रमुख है।

राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा का पंचकल्याणक—20वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि व भगवान महावीर की प्रथम देशनाभूमि राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की 12 फुट खड्गासन प्रतिमा स्थापित कराई।

पावापुर में भी भगवान महावीर—इसी प्रकार पावापुर परिसर में भगवान महावीर की खड्गासन मूर्ति स्थापित हुई।

भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी—भगवान पार्श्वनाथ की गर्भ, जन्म, तप, कल्याणक की इस भूमि वाराणसी पर तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव 6 जनवरी 2005 को प्रारंभ होकर पूरे एक वर्ष तक मनाया गया। माताजी ने राजगृही, पावापुर पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर इसकी घोषणा की थी।

ग्रंथों का प्रकाशन—श्रद्धेय माताजी ने साहित्य जगत में 200 से भी अधिक ग्रंथों को लिखकर प्रकाशित किया। भगवान महावीर के पश्चात् 2600 वर्षों में माताजी ने किसी भी महिला साध्वी के द्वारा ग्रंथ नहीं लिखे जाने के इतिहास को बदला है।

तीर्थंकर जन्मभूमि का विकास—भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर, भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या, भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि राजगृही, भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि (सिंहपुरी), सारनाथ का विकास कर भगवान पुष्पदंतनाथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की जन्मभूमि काकंदी जिला देवरिया के विकास की घोषणा की है, वहाँ शिलान्यास भी हो चुका है।

परमपूज्य श्रद्धेय ज्ञानमती माताजी ने समय-समय पर रथों का प्रवर्तन कर जैनधर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार जन-जन तक पहुँचाया, यह अद्वितीय है और जैन समाज उपरोक्त कार्यों के लिए पूज्य ज्ञानमती माताजी का सदैव ऋणी रहेगा। गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर दिगम्बर जैन महासमिति की ओर से मैं पूज्य माताजी के कुशल रत्नत्रय की सदैव कामना करते हुए उनके सुदीर्घ जीवन की मंगलकामना करता हूँ।

-मध्यांचल दिगम्बर जैन महासमिति

माणिकचंद जैन पाटनी, इंदौर (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष व मध्यांचल अध्यक्ष)

विनयांजलि

परमपूज्य आर्यिकाशिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षामयी जीवन स्वर्णिम जयन्ती महोत्सव के पावन अवसर पर सादर नमन।

परमपूज्य माताजी ने 50 वर्षों में 200 से अधिक ग्रंथों एवं विधान आदि का लेखन करके समग्र समाज पर जो उपकार किया है, वह अतुलनीय है। परमपूज्य माताजी की विहंगम दृष्टि ने ही जम्बूद्वीप की रचना को साकाररूप प्रदान किया, जो कि सैकड़ों वर्षों तक वैज्ञानिकों के अनुसंधान का केन्द्र रहेगा तथा प्रयाग तीर्थ इलाहाबाद में भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली के रूप में तीर्थ की प्रमाणिकता अक्षुण्ण रहेगी एवं कुण्डलपुर में भगवान महावीर की जन्मभूमि के विकास का समस्त श्रेय परमपूज्य माताजी को ही है।

परमपूज्य माताजी का समाज को जोड़ने का वात्सल्य भाव अनुपम है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को माताजी के ऐसे ही नजदीक पाता है, जैसे कि वह अपनी माँ के समीप हो। माताजी का रक्षाबंधन के पावन पर्व पर रक्षासूत्र, रोली-चावल व जवें (सिंवई) भिजवाना सारे समाज के लोगों के प्रति अगाध स्नेह का सूचक है। जैसे ही रक्षाबंधन से पूर्व माताजी के यहाँ से लिफाफा प्राप्त होता है, उसी क्षण समस्त मुनिवर्ग के प्रति श्रद्धा एवं धर्म की रक्षा का भाव मन में उत्पन्न हो जाता है, जो धर्म के प्रति समर्पण का भाव पैदा करता है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तक "प्राचीन भारत" में जैनधर्म और भगवान महावीर के बारे में अनर्गल बातें प्रकाशित की गईं व उक्त विषय जब माताजी के ध्यान में आया, तो सन् 2000 में तत्काल उन्होंने मुझे दिल्ली बुलाकर उक्त तथ्यों को सही कराने की कार्य योजना बनाने का आदेश दिया व इस संबंध में 11 जून 2000 को हस्तिनापुर में एक राष्ट्रीय स्तरीय सेमिनार आयोजित किया गया एवं परमपूज्य माताजी के सानिध्य में उपरोक्त पाठ्य-पुस्तक के आपत्तिजनक शब्दों को बदलने के बारे में सहमति बनी व प्रस्ताव पारित कर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के पाठ्य-पुस्तक में संशोधन करना स्वीकार किया।

मैं परमपूज्य माताजी के दीक्षामयी पावन जीवन की स्वर्ण जयंती के मंगल अवसर पर पूज्य माताजी के दीर्घायु होने की मंगल कामना करता हूँ। परमपूज्य चन्दनामती माताजी एवं क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज को भी इस पावन अवसर पर चरण वंदन एवं बधाई।

-अ.भा.दि. जैन परिषद, राजस्थान

खिल्लीमल जैन (एडवोकेट), अलवर (प्रान्तीय अध्यक्ष)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूलाचार की श्रुत गाथा है माताजी का चरित्र

श्रमण संस्कृति के आचार ग्रंथ मूलाचार की गाथाओं पर दृष्टि डालें तो अनायास ही यह विचार मन में आ जाता है कि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने स्त्री पर्याय को प्राप्त करने के बाद भी अपने जीवन को पूर्वाचार्यों के वचनानुसार पूर्णरूपेण अनुशरण किया और एक नई मिसाल पैदा करके विश्व की अद्वितीय "जम्बूद्वीप" की रचना को इस पावन वसुमति पर साकाररूप प्रदान किया।

मुझे वह क्षण याद आता है कि जब पूज्य माताजी स्वयं संघ के समस्त साधकों को नियमसार, समयसार, मूलाचार आदि ग्रंथों का स्वाध्याय कराती थीं और बार-बार उन आचार्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर हर्षित होती थी कि आज ऐसे-ऐसे ग्रंथ का मंगल स्वाध्याय करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। मैं विद्यार्थी जीवन में रहकर पूज्य माताजी के श्रीचरणों में बैठकर हमेशा स्वाध्याय के समय त्यागी भवन चला जाता था और अनेक जिज्ञासाओं को संजोकर बाद में जिज्ञासा का समाधान करता था। वैसे तो प्रश्न करते हुए भी डर सा लगा रहता था परन्तु माताजी की स्नेह भरी छवि प्रश्न को माताजी तक पहुँचा देती थी और समाधान पाकर अत्यन्त हर्ष को प्राप्त करता था।

एक बार परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की पुण्यतिथि थी और एक सभा पूज्य माताजी के सानिध्य में थी। अचानक ही माताजी ने मुझे खड़ा किया और बाल ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र कुमार जी (भाई जी) से कहा कि आज का संचालन बिजेन्द्र करेगा, इतना सुनना था कि पैरों में थिरकन और शरीर में कंपन शुरू हो गया। बोलना कुछ चाहता था और शब्द कुछ और निकल जाता था। श्रोता तो हंसते थे, परन्तु माताजी बोले हुए शब्दों के पर्यायवाची एवं सैद्धान्तिक व्याख्या पर सभा को अधिक गरिमामयी बना देती थीं। धन्य हैं पूज्य माताजी! जिन्होंने अपने 50 वर्षों के दीर्घतपस्वी जीवन में लाखों लोगों को धर्म की राह पर लगा दिया और नारी जीवन को भी श्रेष्ठ बना दिया।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का नाम "यथा नाम तथा गुण" लोकोक्ति को भी पूर्णरूपेण चरितार्थ करता है। माताजी के जीवन में अनेकों बार ऐसे पड़ाव भी आये, जो साधारण साधक को विचलित करने वाले होते हैं परन्तु माताजी ने तो "मूलाचार" एवं "पद्मनंदि-पंचविंशतिका" ग्रंथ, जो उनकी माता मोहिनी देवी को दहेज के रूप में प्राप्त हुआ था, उसके एक-एक शब्द का पावन अमृत अपने कंठ में उतार रखा था और उन्हीं शब्दों को ध्यान में रखकर उस पीड़ादायक समय को भी हँसते-हँसते चलता कर देती थीं और सभी को समझाती थीं कि ये पूर्व में किये कर्म हैं, जो सत्ता में आये है और अपना कर्मफल देकर चले जायेंगे, इससे आपको घबराने की आवश्यकता नहीं है। धन्य है उनकी धैर्य शक्ति, कठोर परिश्रम, अद्‌भुत इच्छा शक्ति! जिसने "मैना" को 'मै-ना' बनाकर भी सब कुछ बना दिया। पूज्य माताजी की कथनी और करनी दोनों ही एक समान रही, जिसमें ज्ञान और चारित्र का अद्‌भुत मेल देखने को प्राप्त हुआ। माताजी के संघर्षमयी जीवन के विषय में यही कहा जा सकता है कि-

वह पथ क्या पथिक सफलता क्या, जिस पथ में बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या, यदि धाराएँ प्रतिकूल न हों।।

पूज्य माताजी ने अपने स्वर्णिम आर्यिका दीक्षाकाल में अनेक तीर्थों का निर्माण कराकर तीर्थंकरों की यशोगाथा को जन-जन तक पहुँचाया और अपना व पर का कल्याण कर धर्म की पावन पताका को पूरे विश्व में फैलाकर धर्म की प्रभावना की है। मैं अपनी गुरु गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में त्रिकाल वंदामि करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि माताजी चिरायु हों और उनकी अमृत देशना विश्व के समस्त श्रावकों को प्राप्त होती रहे।

माताजी के स्वर्णिम आर्यिका दीक्षा अवसर पर कोटिशः नमन।

-अ.भा.दि. जैन युवा परिषद, दिल्ली प्रदेश
बिजेन्द्र कुमार जैन, दिल्ली (महामंत्री)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

राजस्थान प्रान्त धन्य है, धन्य है जयपुर जिला, विशेष धन्य है माधोराजपुरा, जहाँ विश्व की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने वैशाख कृष्णा 2, ई. सन् 1956 को चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से दीक्षा ग्रहण की थी।

हम यहाँ पर विशेषरूप से पूज्य माताजी की प्रेरणा से स्थापित सन् 1972 में त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर के बारे में लिखना चाहेंगे कि उक्त संस्था ने अब तक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक आयोजन किये, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास हुआ, जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ, भगवान महावीर ज्योति रथ ने भारत भ्रमण करके जैनधर्म की प्रभावना की।

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ (सन् 1998) एवं भगवान महावीर ज्योति रथ (सन् 2003) में राजस्थान में भ्रमण कराने का दायित्व युवा परिषद को युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र जी 'भाई जी' ने सौंपा। मेरी और प्रदेश महामंत्री श्री दिलीप जैन की ऐसी परिस्थिति नहीं थी कि हम पूरे राजस्थान में 10 माह तक उक्त रथों का भ्रमण करा सकें, यह पूज्य माताजी का ही चमत्कार एवं अतिशय था तथा भाई जी का वात्सल्य प्रेम था कि विपरीत परिस्थतियों में भी राजस्थान के लगभग 350 कस्बों में रथ का भ्रमण कराया। जन-जन तक राजस्थान प्रान्त में पूज्य माताजी की दिव्यवाणी पहुँचाने का अवसर मिला।

पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व की ही देन है कि भारत के प्रधानमंत्री स्व. इन्दिरागांधी एवं श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं राष्ट्रपति डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम ने भी आशीर्वाद प्राप्त करके स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभव किया। आज पूज्य माताजी की प्रेरणा से पाँच-पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या, तीन तीर्थंकरों की जन्मभूमि हस्तिनापुर, ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग, काकन्दी, बनारस, राजगृही, अनेकों क्षेत्र एवं भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास कर विश्व की जनता को तीर्थंकरों एवं जैनधर्म की प्राचीनता को बताया है।

हम 50 वर्षों से निरन्तर धर्म प्रभावना, चारों अनुयोगों पर टीकाएँ, तीर्थंकरों की जन्मभूमि पर तीर्थ निर्माण एवं विकास सदी के महानतम कार्य कराने में पूज्य माताजी ने जैनधर्म एवं संस्कृति का संरक्षण किया, ऐसी माँ के लिए जिनेन्द्र प्रभु से बारम्बार ये ही प्रार्थना है कि ऐसे विपुल क्षयोपशम की धनी, अपने मुख से रत्नत्रयस्वरूप आत्मकल्याण की वर्षा करने वाली, जैन समाज की महिलाओं, युवाओं एवं पुरुषों में धर्म की प्रेरणा करने वाली माताजी शतायु हों।

सदैव-सदैव हम पर आशीर्वाद बना रहे, इसी मंगल भावना के साथ!

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन युवा परिषद, राजस्थान प्रांत

उदयभान जैन 'बड़जात्या', जयपुर (प्रदेश अध्यक्ष)

विनयांजलि

यह हमारे लिए बहुत ही गौरव की बात है कि परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। देश की सबसे प्राचीनतम साध्वी, जिन्होंने इस देश एवं उसकी प्रजा को धर्म, ज्ञान एवं सामाजिक मार्ग पर चलना सिखाया है, उनके करकमलों से कई क्षेत्रों, भूमियों एवं तीर्थों का जन्म एवं विकास हुआ है। ऐसी वरिष्ठतम पूज्य साध्वी से समाज एवं पूरा देश गौरवान्वित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाना हमारे लिए गर्व की बात है। इस अवसर पर समिति ने जो 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' प्रकाशित करने का निश्चय किया है, उसके लिए समिति के सभी सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद।

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई। इस कार्यक्रम में निश्चित ही पूरा फेडरेशन परिवार उपस्थित रहेगा।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में सादर नमन, वंदन एवं नमोस्तु।

-दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन, इंदौर

प्रदीप कासलीवाल (राष्ट्रीय अध्यक्ष)

विश्वचेतना की अमर साधिका-श्रद्धेया गणिनी ज्ञानमती माताजी

श्रमण प्रभु महावीर की संघ व्यवस्था तीर्थ संरचना में साधु के साथ साध्वी और श्रावक के साथ श्राविका को समानता की भूमिका दी है। आत्मा की सत्ता को रेखांकित कर, विश्ववंदनीय प्रभु ने लिंग आधार पर मनुष्य-मनुष्य के बीच किसी भेद को स्वीकार नहीं किया, न क्षमता के भेद को, न मुक्ति के अधिकार को। इस उदात्त 'दर्शन' के साथ व्यवहार का सच यह है कि प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर अंतिम तीर्थंकर प्रभु महावीर तक और अंतिम तीर्थंकर प्रभु महावीर से लेकर, आज तक की व्यवस्था तक, धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में साधुओं के मुकाबले में साध्वियों की और श्रावकों के मुकाबले श्राविकाओं की भूमिका हर दृष्टि से अधिक प्रभावी और विशिष्ट रही है। परम्परा की इस वंदनीय विशिष्टता को आज के युग में रेखांकित कर रही हैं हमारी श्रद्धेया विश्व चेतना की अमर साधिका गणिनी ज्ञानमती माताजी।

ज्ञानमती माताजी जैनदर्शन में उद्‌घोषित मोक्षमार्ग की 'रत्नत्रय' की प्रतीक पहली उपासिका हैं। 'ज्ञान' से विशुद्ध 'मति' की धनी 'ज्ञानमती' हजारों-हजारों श्रावक-श्राविकाओं के लिए 'मति' शुद्ध अभियान की उद्‌भट विदुषी साध्वी हैं।

भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव की ऐतिहासिक सफलता और दूरगामी सम्यक् परम्पराओं के उद्‌घाटन का मूल कारण यह रहा था कि उस समय के समाज नेतृत्व के दिशा निर्देशक हमारे पूज्य आचार्य, संत और श्रद्धेया गणिनी माता ज्ञानमती जी, महासाध्वी श्रद्धेया मृगावती जी और कर्मशीला श्रद्धेया साध्वी चंदना जी थीं। उस समय की ऐतिहासिक संस्थाओं की आधारशिला, चाहे वह दिल्ली का बल्लभ स्मारक हो, या राजगृह का वीरायतन या हस्तिनापुर का जम्बूद्वीप तीर्थ, इसी साध्वी वर्ग की तेजस्विता और कर्मठता रही है। भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक पर हुई समाज की दुर्दशा के मुख्य कारण हैं सामाजिक नेतृत्व का अपनी-अपनी कुर्सी के प्रति आसक्ति का प्रबल भाव और उनकी अहंजन्य मानसिकता, जिसके कारण उन्होंने इस ऐतिहासिक महापर्व पर समाज की भावनाओं को नजर अंदाज कर पूज्य आचार्यों, संतों और साध्वियों के प्रति उपेक्षा भाव रखा। यही कारण है कि जिन गणिनी ज्ञानमती जैसी कर्मशील, तपस्विनी, साध्वी ने बिहार प्रदेश में प्रभु महावीर की जन्मभूमि पर 'जंगल में मंगल' कर दिया, उन्होंने भी मुख्य समारोह की स्थली दिल्ली की ओर अपनी पीठकर विहार कर दिया। यदि समाज उस दिन चेत जाता और दिल्ली से बाहर जाते उनके कदमों को रोक लिया होता, तो शायद देश के प्रधानमंत्री की उपस्थिति में आयोजित 2600वें जन्मकल्याणक के मुख्य समारोह में दिल्ली में जो शर्मनाक तमाशा हुआ, वह न होता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14,15,16 अप्रैल 2006

श्रद्धेया गणिनी ज्ञानमती जी ने अपने हर पग पर, नव सृजन और नव चिंतन का शिलान्यास किया है। उनके द्वारा निर्देशित प्रवृत्तियाँ, उनकी प्रेरणाएँ और उनकी कर्मठता, समन्वय भावना और दूरदर्शिता के अमर शिलालेख हैं। आप इतिहास की साधिका भी हैं और इतिहास की दिशा बोधक भी। माता 'ज्ञानमती' एक व्यक्ति नहीं, एक आन्दोलन हैं। उत्साह का एक ऐसा तूफान हैं, जहाँ उम्र और पद बौने हो जाते हैं। वे लीक पर नहीं चलीं, अपितु जहाँ चलीं वे ही मार्ग हजारों-हजारों के लिए लीक बन गए।

गणिनी माताजी जी अहिंसक चेतना और समाज का वह स्वर हैं, जिसे अनसुना नहीं किया जा सकता। वे तेजस्विता के सूर्य की वह किरण हैं, जो हर भक्त के आंगन में निरपेक्ष भाव से प्रविष्ट हुई हैं। वे करुणा, प्रेम, वात्सल्य की एक ऐसी बदली हैं, जो श्रद्धावानों की अट्टालिकाओं एवं झोपड़ियों पर पूर्ण आशीर्वाद के साथ बरसी हैं और बरस रही हैं।

विश्व चेतना की इस अमर साधिका, वसुधैव कुटुम्बकम् के उदात्त आदर्श की इस सतत् उपासिका को मेरा कोटिशः वंदन, भावयुक्त नमोस्तु। विनयांजलि के इन क्षणों में क्या समर्पित कर सकता है मुझ जैसा अकिंचन सुदामा श्रावक! सिवाय अपनी इन मंगल भावनाओं और श्रद्धा सिंचित, प्रार्थनाओं के, कि हे प्रभु! जब तक मेरे तन में सांस धड़कती है, तब तक इन आँखों और कानों को इस युग सुधारक साधिका के पावन दर्शन, प्रवचन और मार्गदर्शन का सौभाग्य मिलता रहे।

-जैन महासभा, दिल्ली

प्रो. रतन जैन, दिल्ली (महासचिव)

विनयांजलि

परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी वास्तव में ज्ञान एवं शक्ति की पुंज हैं। उनका विशुद्ध संयममयी जीवन, सम्प्रदाय निष्पक्षता तथा स्वाध्याय एवं दक्षतापूर्ण बहुमुखी कार्यशैली सराहनीय एवं अनुमोदनीय है। उनका मौलिक चिन्तन, स्वाध्याय, शोधकार्य तथा प्रवचनकला कौशल सर्वविदित है। भगवान महावीर ने जो नारी जाति को सम्मान दिया, वे उसकी जीती जागती तस्वीर हैं। सौहार्द, सामंजस्य, आत्मोत्थान, धर्मप्रचार, नारी उद्धार जैसे गुणों से वे ओतप्रोत हैं। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप निर्माण तथा शोधपीठ पूज्य माताजी के जीवन तथा कृतित्व का एक उज्ज्वल उदाहरण है। भारत के अन्य क्षेत्रों में ऐसे अन्य अनेक कार्य भी उनकी निश्रा में अथवा प्रेरणा से सम्पन्न हुए हैं, जो युगों तक समाज याद रखेगा। पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर जो त्रिदिवसीय स्वर्ण जयंती महोत्सव दिनाँक 14, 15, 16 अप्रैल 2006 को आयोजित हो रहा है, उसकी सफलता के लिए हृदय से कामना करता हूँ तथा शासनपति भगवान महावीर के चरण कमलों में प्रार्थना है कि श्रद्धेय गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी स्वस्थ रहें तथा दीर्घायु हों एवं समाज पर उनका वरदहस्त बना रहे।

-श्री आत्मानन्द जैन महासभा (उत्तरी भारत)

राजकुमार जैन, दिल्ली (संरक्षक)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पारसमणि समान माँ ज्ञानमती

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न 105 श्री ज्ञानमती माताजी तीर्थ शिरोमणि, तीर्थ विकास सम्प्रेरिका, 200 से अधिक ग्रंथों की रचयित्री माँ जैन-अजैन सभी जीवों का दु:ख हरने वाली और भव्य प्राणियों को दीक्षा देकर मोक्ष के रास्ते में संलग्न करने वाली ऐसी माताजी के 50वें दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव पर हम विनयांजलि अर्पित कर यही मंगल कामना करते हैं कि आप शतायु हों। जिससे तमाम भव्य जीव आपकी छत्रछाया में आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त करते रहें।

नित नये आयाम प्रस्तुत कर हिमालय से उत्तम दृढ़ चारित्र वाली, आकाश से विराट हृदय वाली, वसुन्धरा से विशाल व सहिष्णु हृदय वाली, करुणाकर, अतिशय पुंज गुरु ज्ञानमती माँ ससंघ इस धरती पर अवतरित होती रहें, माताजी युगों-युगों तक अपनी अमृतमय वाणी की बरसात से लोगों के मन रूपी आँचल को भिगोती रहें, ताकि इस धरती पर स्वर्ग की कल्पना साकार हो उठे, ऐसे पारस को छू-छूकर लौहकण (समस्त भक्त) स्वर्णमय होते रहें, ऐसी एटा युवा परिषद की समस्त कार्यकारिणी की मंगल भावनाएँ हैं।

दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के शुभ अवसर पर माँ के चरणों में शत-शत वंदन, शत-शत वंदन।

-अ. भा.दि. जैन युवा परिषद,एटा
सुनील कुमार जैन, बाँदा (अध्यक्ष)

रत्नत्रय की मूर्ति माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का दिगम्बर जैन समाज अतिशय कृतज्ञ है। उन्होंने अपने नारी जीवन को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। वे प्रभावक संघ की नायिका सिद्ध हुई हैं। उनके उपदेशों से लाखों लोगों का कल्याण हुआ है। ये चारों अनुयोगों की ज्ञाता हैं। सम्पूर्ण संघ उच्च चारित्र का धारी है। माताजी के द्वारा धर्म की प्रभावना होती रहे और दीर्घ काल तक पूज्य माताजी के पुण्य दर्शन एवं उनका आशीर्वाद प्राप्त होता रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

-आगरा दिगम्बर जैन परिषद
शिखरचंद जैन सिंघई (अध्यक्ष)

वात्सल्य की धनी माँ

जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के 60 वर्ष पूर्ण कर 'षष्टिपूर्ति' समारोह या विवाह के 25 वर्ष पूर्ण कर रजत जयंती मनाता है, तो उसके हृदय में अपार खुशी, उत्साह, हर्ष होता है। सभी ने जीवन में ऐसे अनेकों समारोहों में भाग लिया होगा, पर किसी की दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लेने का शायद सभी का पहला अवसर होगा और संयम की इस लम्बी दुरुह किन्तु सफल यात्रा के इस पड़ाव पर परमपूज्य माताजी को उत्साह हो रहा होगा और हम सबके लिए भी यह बहुत ही गौरव की बात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है और इसलिए 'गौरव ग्रंथ' के रूप में हम सब अपनी विनम्र भक्ति विनयांजलि परमपूज्य माताजी के प्रति समर्पित करते हैं।

मेरा प्रायः सभी संघों में आना जाना रहता है। कुछ वर्षों से एक नया दृष्टिकोण संघों में उभर रहा है कि केवल मेरे पास आओ या मेरे ही भक्त रहो। एक संघ में एक ने मुझसे कहा तुम तो ज्ञानमती के भक्त हो, जब मुझे आचार्य पुष्पदंतसागर पुरस्कार मिला तो कहा कि तुम तो दूसरे ने अब पुष्पदंत के हो गये। लोग अप्रत्यक्ष रूप से यही चाहते, कहते हैं कि तुम मेरे होकर ही रहो, पर परमपूज्य माताजी के हृदय की विशालता, उनके वात्सल्य का सागर कि उन्होंने कभी मुझसे 32 वर्षों के सम्पर्क में यह नहीं कहा, पूछा कि तुम अन्य संघों में क्यों जाते हो? बल्कि जब कभी दूसरे संघों से आकर उनके दर्शनार्थ गया, तो उन्होंने संघ के समाचार ही पूछे। यह परमपूज्य माताजी के वात्सल्य धनी होने का ही सूचक है और सम्यक्त्व का वात्सल्य अंग है। आज वात्सल्य का अभाव होता जा रहा है। हमें पूज्य माताजी से इस संदर्भ में प्रेरणा लेनी चाहिए।

डॉ. सुशील को एक चिकित्सक से पण्डित सुशील बनाने का श्रेय अगर किसी को है, तो वह एक मात्र परमपूज्य ज्ञानमती माताजी को ही है, जिन्होंने सन् 1977 के विद्वत् शिविर में, जहाँ मैं मात्र एक दर्शनार्थी की दृष्टि से गया था, वहाँ उन्होंने मुझ पर वात्सल्य अनुकम्पा प्रगट करते हुए 26 वर्ष की अल्पायु में मुझे माँ के समान अपना सहारा दिया। 'प्रवचन निर्देशिका' पकड़ाकर सम्यक् दर्शन की उत्पत्ति में बाह्य निमित्त पर बोलने का आदेश दिया तथा अवलम्बन, प्रेरणा, मार्ग दर्शन देकर श्रुत-ज्ञान के प्रति समर्पित होने का ऐसा बीजारोपण किया कि एक चिकित्सक, समाज में एक विद्वान के रूप में स्थान, सम्मान पा गया। निश्चय ही यह माँ की करुणा व दुलार तथा दूरदृष्टि का ही फल है। हर माँ अपने बेटे को ऐसा ही चाहती है और उसकी प्राप्ति होने पर माँ व बेटा दोनों को ही असीम सुख व हर्ष की प्राप्ति होना स्वाभाविक है।

हस्तिनापुर आदि अन्य तीर्थों के उत्थान, तीर्थंकरों की जन्मकल्याणक भूमियों का विकास और अब मांगीतुंगी में भगवान आदिनाथ की 108 फुट की मर्ति का निर्माण, ऐसा कार्य होगा, जो उन्हें आचार्य नेमिचंद्र और चामुण्डराय की भाँति ऐतिहासिक महत्व दे जायेगा। पर इन सबसे ज्यादा जो है वह अपने नाम की सार्थकता "ज्ञान और मति" बुद्धि में जिसका ज्ञान इतना तीव्र है। उल्लेख नहीं मिलता है कि भूत या वर्तमान में किसी महिला ने इतने ग्रंथों की रचना की हो। आर्ष मार्ग की परम्परा का पालन करते हुए, आचार्यों की वाणी को प्रसारित करते हुए "सम्यक् ज्ञान" का जो प्रचार-प्रसार परमपूज्य माताजी की लेखनी के माध्यम से जन-जन तक पहुँचा है, उससे जो शुकर्म का आस्रव परमपूज्य माताजी ने किया है, वह निश्चय ही उनको मति ज्ञान व श्रुतज्ञान की परम्परा से ऊपर उठाकर उन्हें केवलज्ञान की परम्परा में ले जायेगा, इसमें कोई शक नहीं। अनेक स्वप्नों को देखने वाली माता अगले भव में सोलह स्वप्न देखकर जगत की श्रेष्ठ माता बनकर अगले भव में केवलज्ञान की प्राप्ति कर इस संसार से पार हों, उनके संयम धारण के 50 वर्ष पूर्ण होने पर हम सभी यही कामना करते हैं। वह अभी दीर्घ जीवन तक स्वस्थ रहते हुए हम लोगों को इसी प्रकार ज्ञान व संयम का मार्गदर्शन देती रहें, यही भावना है, कामना है। परमपूज्य माताजी के चरणों में कोटि-कोटि वंदामि। उनकी दीक्षा की स्वर्ण जयंती पर उनका कोटि-कोटि अभिनंदन, अभिवंदन।

-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति
डॉ. सुशीलचन्द्र जैन, मैनपुरी (महामंत्री)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ने वाराणसी को विशेष ख्याति प्रदान की

यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे जैनधर्म के 7वें तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ एवं 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी का निवासी होने का गौरव प्राप्त है तथा मात्र वाराणसी ही नहीं अपितु इस तीर्थ के आस-पास भगवान चन्द्रप्रभु की जन्मभूमि चन्द्रपुरी एवं भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सारनाथ जैसे महान तीर्थ भी स्थित हैं।

यूँ तो सैकड़ों वर्षों से लोग वाराणसी तीर्थ को पूजा-भजन आदि के माध्यम से अथवा साक्षात् दर्शन करके इसकी महिमा से परिचित हैं परन्तु इस तीर्थ को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कराने में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर को विकसित स्वरूप प्रदान करने के पश्चात् पूज्य माताजी ने 'भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' मनाने की घोषणा की तथा मुझे यह कहते हुए अपार प्रसन्नता एवं गौरव है कि इस महोत्सव का राष्ट्रीय स्तर पर उद्घाटन 'वाराणसी' नगरी से ही 6 जनवरी 2005 को सम्पन्न हुआ। इस उद्घाटन समारोह में राजनेताओं के साथ ही दूर-दूर से जैन बंधुओं ने भी पधारकर इस तीर्थ के दर्शन किए। तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव के अन्तर्गत एक वर्ष तक विविध आयोजन देशभर में सम्पन्न हुए पुन: पूज्य माताजी द्वारा घोषित 'सम्मेदशिखर वर्ष' के अन्तर्गत धर्मप्रभावनात्मक कार्यों का आयोजन चल रहा है।

पूज्य माताजी के प्रभावशाली व्यक्तित्व का एक और प्रत्यक्ष उदाहरण हम सभी ने यह देखा कि काफी समय से सारनाथ में भगवान श्रेयांसनाथ की बड़ी मूर्ति के विषय में विवाद चल रहा था, सो वह सब भी पूज्य माताजी के आशीर्वाद से समाप्त हो गया तथा उनके ही पावन सानिध्य में सारनाथ में भव्यता से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न होकर यथास्थान वहाँ विशाल प्रतिमा जी विराजमान हो गईं।

हमारी पूरी वाराणसी जैन समाज पूज्य माताजी के क्रियाकलापों से बहुत प्रभावित है तथा उनके द्वारा आदेशित प्रत्येक कार्य को करने के लिए हमेशा तत्पर है।

पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर मैं 'भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव समिति' की ओर से भावभीनी विनयांजलि समर्पित करता हूँ तथा उनके दीर्घ एवं यशस्वी जीवन की मंगल प्रार्थना करता हूँ।

-भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव समिति
दीपक जैन, वाराणसी (महामंत्री)

प्रांतीय/शहरी/क्षेत्रीय दिगम्बर जैन समाजों द्वारा पूज्य माताजी के प्रति अर्पित भक्तिसुमन

विनयांजलि

यह जानकर हृदय प्रफुल्लता से भर गया कि परमपूज्य माताजी की दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो गये हैं और हमें यह अवसर प्रदान हुआ कि सारा देश मिलकर पूज्य माताजी के चरणों में विनयांजलि प्रस्तुत करें। गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने आत्मकल्याण के साथ समाज को भी धार्मिक एवं सामाजिक उत्थान हेतु अनेकों कार्यक्रम दिये, जहाँ माताजी के चरण पड़े, वहीं तीर्थ का निर्माण हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हस्तिनापुर क्षेत्र तो ऐसा स्थान निर्मित हुआ कि जहाँ जम्बूद्वीप नक्शा जमीन पर उतर कर आ गया। निःसंकोच भाव से कह सकता हूँ कि जहाँ एक ओर पूज्य माताजी ने क्षेत्रों का निर्माण किया, वहीं दूसरी ओर स्वयं लिखकर जैन शास्त्र भण्डार को परिपूर्ण किया। पचासों मण्डल विधान, जो लुप्त हो गये थे, उन्हें पुनर्जीवित किया व जन-जन के लिए सरल हिन्दी भाषा में लोकप्रिय बना दिया।

आज स्थान-स्थान पर प्रत्येक जिनमंदिरों में माताजी द्वारा रचित मण्डल विधानों की पूजन संगीतमय धुनों के साथ हो रही हैं। पूज्य माताजी ने इन पचास वर्षों में चारों अनुयोगों का विस्तृत विवेचन करते हुए अनेक ग्रंथों की रचना की। जहाँ एक ओर धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत होकर वहीं दूसरी ओर तीर्थंकरों की जन्मभूमि का नव-निर्माण एवं जीर्णोद्धार करवाया। हस्तिनापुर, कुण्डलपुर, मांगीतुंगी आदि कई तीर्थ स्थानों का जीर्णोद्धार करवाया। इंदौर नगर सौभाग्यशाली रहा कि यहाँ पधारने पर माताजी ने महिलाओं में धार्मिक और सामाजिक जागृति को पूर्ण करने के लिए महिला संगठन की स्थापना की, जिसे आज हमारी सुमन बहन परिश्रमपूर्वक संभाल रही हैं। मैं कह सकता हूँ कि यही संस्था जागृत एवं कल्याणकारी है, जिसने महिलाओं में एक धार्मिक जागृति पैदा की। पूज्य माताजी की दीक्षा की स्वर्ण जयंती नहीं है, अपितु सारे देश को जागृत करने की स्वर्ण जयंती है। चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा को जीवित रखने में माताजी का पूर्ण योगदान रहा है।

मैं इंदौर दिगम्बर जैन समाज, गोम्मटगिरि ट्रस्ट की ओर से अपनी विनयांजलि प्रस्तुत करता हूँ और जिनेन्द्र देव से प्रार्थना करता हूँ कि माताजी युग-युग तक जिए और समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर करती रहें। प्रभु से प्रार्थना है कि मुझे भी माताजी की सेवा करने का अवसर प्रदान हो।

दिगम्बर जैन समाज, इंदौर
बाबूलाल पाटोदी (अध्यक्ष)

चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी

हमारे लिए यह गौरवपूर्ण बात है कि एक नारी होकर आज पूज्य ज्ञानमती माताजी ने जो चहुँमुखी कार्य किए हैं, उसे कोई कर नहीं सकता। साहित्य लेखन, तीर्थ निर्माण, तीर्थों का जीर्णोद्धार, भगवन्तों की जन्मभूमियों का विकास आदि अनेक कार्य माताजी की प्रतिभा शक्ति के द्योतक हैं।

साहित्य लेखन में भी बाल विकास से लेकर षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ की टीका तक लिखना यह भी विशेष प्रतिभा को दर्शाता है। जिनधर्म की विशेष प्रभावना करते हुए भी आगम के परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक कार्य करना यह और विशेषता है।

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के विकास हेतु मंगल विहार करते हुए पूज्य माताजी के चरण बनारस नगर में पड़े, तब नजदीकी से माताजी की आगम चर्या एवं वात्सल्यपूर्ण व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मैं माताजी का अनन्य भक्त बन गया। वास्तव में मैंने अपने जीवन में अनेक साधुओं के दर्शन किए परन्तु उन जैसा साधु आज तक नहीं देखा। मैं स्वयं को गौरवशाली मानता हूँ, जो कि ऐसी चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी माताजी के दर्शन व मार्गदर्शन का सौभाग्य मुझे मिला।

सन् 2005 में 6 जनवरी, पौष कृ. 11 को पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं उन्हीं के ससंघ सानिध्य में हमारे बनारस में 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' वर्ष का उद्घाटन किया गया, जिसके माध्यम से देश के कोने-कोने से भाक्तिक जनता ने बनारस पधारकर जन्मभूमि तीर्थ के दर्शन करके महान पुण्य का संचय किया। पूज्य माताजी के बनारस आगमन से बड़ी उपलब्धि यह भी हुई कि मेरे पुत्र दीपक जैन ने भी पूज्य माताजी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर प्रत्येक कार्य में रुचिपूर्वक भाग लिया एवं उनके साथ ही मेरी पुत्रवधू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुभाषिनी जैन के अन्दर भी धर्म के प्रति विशेष भावना वृद्धिंगत हुई।

ऐसी गणिनी माताजी के आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती पर उनके दीर्घजीवन की कामना करते हुए मैं अपने वाराणसी समाज की ओर से भक्ति सुमन अर्पित करता हूँ और माताजी के पावन चरणकमल में शत-शत वंदन करता हूँ।

-दिगम्बर जैन समाज, वाराणसी

रिसबदास जैन, वाराणसी (अध्यक्ष)

विनयांजलि

मुझे गर्व है कि मैंने भी उस पावन वसुन्धरा पर जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त किया है, जिस पावन पवित्र वसुन्धरा पर हमारी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जन्म लिया है।

जैसा कि हमारे पूर्वज बताते रहते हैं पूज्य माताजी बाल्यकाल से ही धार्मिक संस्कारों एवं विचारों से ओत-प्रोत थीं। लगभग 8 वर्ष की अल्पवय में पूज्य माताजी ने एक नाटक अकलंक और निकलंक देखा था। नाटक के संवाद "कीचड़ में पैर रखकर धोने से अच्छा है कि कीचड़ में पैर ही न रखा जाये" का माताजी के बालमन पर बहुत ही प्रभाव पड़ा था। नाटक को देखकर ही पूज्य माताजी ने कभी भी शादी न करने का प्रण अपने मन में कर लिया था।

विधि का विधान कोई झुठला नहीं सकता। परमपूज्य आचार्य श्री 108 देशभूषण जी महाराज का बाराबंकी नगर में चातुर्मास हो रहा था। आचार्यश्री के दर्शन को मैना बाराबंकी गई थी, लेकिन पुनः वापस गृहस्थ आश्रम में प्रवेश नहीं किया। वहीं पर आचार्य श्री से आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत ले लिया था।

पूज्य माताजी ने तमाम ग्रंथ लेखन के साथ ही अनेक तीर्थभूमियों का भी उद्धार किया है। जितने महान-महान कार्य पूज्य माताजी के हाथों से सम्पन्न हुये हैं, उनका बखान करने में मेरी अल्पबुद्धि सक्षम नहीं है।

40 वर्षों तक पूरे भारत में भ्रमण करते हुए वर्ष 1994 में पूज्य माताजी एक बार पुनः टिकैतनगर आई थीं, उस समय केवल जैन समाज में ही नहीं वरन् टिकैतनगर के जन-जन में अपार खुशी हुई थी और उस समय जो भव्य स्वागत माताजी का जन्मभूमि में हुआ था, उसका बखान करना अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना ही होगा।

टिकैतनगर में मंदिर निर्माण एवं अतिशीघ्र पंचकल्याणक सम्पन्न होने वास्ते हम एक बस एवं कई छोटी गाड़ियों से प्रयाग (इलाहाबाद) पूज्य माताजी से निवेदन करने गये थे। मैंने पूज्य माताजी से, भारतवर्ष से आये हुए हजारों लोगों के बीच में निवेदन करते हुए 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' पर बोलते हुए निवेदन किया। उस समय वहाँ उपस्थित तमाम लोगों के साथ ही पूज्य माताजी की आँखों में प्रेम अश्रु सभी ने देखे थे। पूज्य माताजी ने मुझे आशीर्वाद देते हुए टिकैतनगर मंदिर का निर्माण एवं पंचकल्याणक अपने सानिध्य में सम्पन्न कराने की घोषणा की और आज सभी के सामने टिकैतनगर का विशाल चौबीसी मंदिर एवं सहस्रकूट जिनचैत्यालय मौजूद है।

पूज्य माताजी के हाथों से जितने भी कार्य आज तक हुए हैं, वह सभी श्रेष्ठतम हैं एवं दिगम्बर जैन आम्नाय में श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के अनुकूल हैं।

माताजी इस युग की अवतार हैं, आज उनका नाम केवल भारतवर्ष में नहीं, बल्कि पूरे विश्व में श्रद्धा एवं भक्ति से लिया जाता है। मैं कई प्रदेश के तीर्थ क्षेत्रों पर गया हूँ, वहाँ पर मैंने अपना परिचय पूज्य माताजी की जन्मभूमि से आया हूँ, ऐसा कहकर दिया है, इसके आगे मुझे और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं हुई, यह पूज्य माताजी की प्रसिद्धि का ही सूचक है।

आज पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, यह गर्व की बात है कि आज अनेक मुनि एवं आर्यिका भी अनेक धार्मिक जटिल प्रश्नों की चर्चा पूज्य माताजी से करते हैं, यह पूज्य माताजी के ज्ञान का, अखण्ड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्रह्मचर्य व्रत के प्रभाव का, 50 वर्षों की घोर तपश्चर्या का ही परिणाम है। आज पूज्य माताजी वर्तमान सभी साधुओं (मुनियों एवं आर्यिका माताओं) में सबसे प्राचीन दीक्षित आर्यिका माता हैं। ऐसी ज्ञानवान माताजी के श्रीचरणों में मेरा, मेरे परिवार व मेरी समस्त समाज का कोटिश: नमन, शत-शत वंदन।

मैं पूज्य माताजी के इस 50वें दीक्षा दिवस पर टिकैतनगर वाले देवाधिदेव 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी माताजी युगों-युगों तक जीवित रहकर जैनधर्म एवं हम सबका कल्याण करती रहें।

-सकल दिगम्बर जैन समाज टिकैतनगर

ऋषभ कुमार जैन, टिकैतनगर (महामंत्री)

बाराबंकी को आपने बनाया अतिशय क्षेत्र

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के क्रम में बाराबंकी जैन समाज उनको शत्-शत् नमन एवं अभिनंदन करती है।

पूज्य माताजी ने बाराबंकी में वैराग्य का बीज डालते हुए 1952 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग का व्रत लिया था। बचपन की धूमिल यादों में यह पूर्णरूपेण याद है कि माताजी के व्रत धारण के समय मंदिर जी में पूरे जैन समाज की भीड़ उमड़ पड़ी थी। उसमें पूरी अवध की जैन समाज जिसमें मुख्य रूप से टिकैतनगर, दरियाबाद, महमूदाबाद, गनेशपुर एवं लखनऊ से भी जैनबंधु पधारे थे। जैनेतर समाज ने भी बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया था। इसी व्रत धारण के अतिशय से बाराबंकी जैन मंदिर अतिशय युक्त हो गया था, इसमें समय-समय पर आचार्य देशभूषण जी महाराज, विमलसागर जी महाराज, आचार्य भरतसागर जी महाराज का ससंघ प्रवास हुआ है। आचार्य भरतसागर महाराज की वाणी 11 माह 4 दिन में आ जाने से सारे भारत में इसकी बड़ी ख्याति हुई। पूज्य माताजी ने आर्यिकापद ग्रहण करके आज लगभग 200 ग्रंथों की रचना कर सारे भारत में धर्म ध्वजा फहरा दी, जिसमें से विशेषरूप से श्री सिद्धचक्र विधान, श्री इन्द्रध्वज विधान, श्री सर्वतोभद्र विधान आदि आज भारत भर में पूरे मनोयोग एवं धर्मगंगा बहाते हुए आयोजित किये जा रहे हैं और समाज धर्म गंगा में स्नान करके आनन्दित होती है।

पूज्य माताजी के विश्व वंद्य त्रिलोकीनाथ भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की जन्मभूमि और भगवान आदिनाथ के प्रथम आहार स्थल कुरुजांगल के हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की शास्त्रोक्त रचना को साकार रूप दिया, जिसके दर्शन कर प्रत्येक प्राणी आश्चर्य चकित होकर आत्म दर्शन प्राप्त करने वाले मार्ग का पथिक बन सकता है। माताजी द्वारा प्रयाग-इलाहाबाद में भगवान आदिनाथ की दीक्षा भूमि पर तीर्थ रचना, कुण्डलपुर भगवान महावीर की जन्मस्थली को सौन्दर्यरूप प्रदान किया है। माताजी ने त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा महत्वपूर्ण साहित्य प्रकाशन कर लोगों को ज्ञान अर्जित करने का सुगम अवसर प्रदान किया । माताजी के अन्दर सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक्चारित्र मोक्षमार्ग के तीनों रत्न मौजूद हैं अत: जिनेन्द्रदेव के चरणों में तथा शासन देवताओं से प्रार्थना करता हूँ कि आप दीघार्यु हों और आप हम संसारी प्राणियों में दीक्षा का प्रबल बीज अंकुरित करते हुए जिनवाणी माता का प्रचार-प्रसार सदा करती रहें, पूज्य माताजी के चरणों में शत-शत वंदन नमन।

-सकल दिगम्बर जैन समाज, बाराबंकी (उ.प्र.)

अजय जैन (मंत्री)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माधोराजपुरा बने इक, तीरथ क्षेत्र महान

ज्ञान की पिटारी, सम्यक्त्व से निखारी, जन-मन अज्ञान-तम नशावन हारी है।
नमन करत तव पादपद्म बार-बार, भव्य जनमानस की पूज्य महतारी है।।
मत्त-मद-होश जन जकड़े जड़ता के बीच, ऐसे जन-मन को जगावन हारी है।
तिमिराछन्न पथ में ज्ञान का आलोक डारि, सत्ता सन्मार्ग को दर्शावन वारी है।।1।।

गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि परमपूज्य मातु श्री 105 श्री ज्ञामनती माताजी के पावन चरणारविन्द में माधोराजपुरा क्षेत्र के दिगम्बर जैन समाज का शत-शत वंदन।

हे माताजी! परमपूज्य आचार्यश्री 108 श्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा ग्राम में आर्यिका दीक्षा धारण करके आपने इस क्षेत्र को पावन तीर्थस्थल बना दिया है। पूज्य आचार्यश्री द्वारा तराशा और परीक्षित किया गया यह हीरा कितनी चमक बिखेरेगा? यह तो भविष्य के गर्भ में था, आज इसकी चमक ने संसार को चकित कर दिया है।

अतुल ज्ञान का भण्डार जिनके हृदय में खुल गया है, जिन्होंने चारों अनुयोगों पर अनेक ग्रंथों की रचना करके तथा महत्वपूर्ण अध्यात्म-ग्रंथों का सरल अनुवाद करके ज्ञानाकांक्षी मनों को झकझोर दिया है, जो भटकते हुए जनजीवन को ज्ञानाधार देकर पथ प्रदर्शन करने को सहायक सिद्ध हुआ है। यह अद्भुत ज्ञान-संचार आपके पूर्वजन्म की तपश्चर्या और पुण्यकर्म की भी पुष्टि करता है।

आपकी तपश्चर्या और पुण्य संचय के प्रतीक ये प्रतिष्ठान वास्तव में एक महान आश्चर्य बन गये हैं। साथ ही यह भी एक महान आश्चर्य की ही बात है कि जहाँ-जहाँ भी आपने विहार किया और आपके श्रीमुख से ज्ञान चर्चा सुनी गई, वहाँ लोग अभिभूत हो जाते हैं और धर्मकार्यों के प्रति तन-मन-धन सहित समर्पित हो जाते हैं। करोड़ों रुपयों की धन-सम्पत्ति आपकी शुभ प्रेरणा से समाज द्वारा समर्पित होकर खर्च करना और धर्मोन्नति के कार्यों में जुट जाना, यह आपके व्यक्तित्व का प्रभावकारी-आश्चर्य नहीं तो और क्या है?

जिनका हृदय सम्यक्ज्ञान, दर्शन, चारित्र के साथ-साथ अतुलित गुणों का भंडार है, ऐसे व्यक्तित्व के गुणों का वर्णन शब्दों से किया जाना संभव नहीं है, अतएव मुखर होने के बजाय मौन होकर हम आपके गुणों की आराधना करते हैं और समाज में प्रतिफलित हो रही इन जन-कल्याणकारी गतिविधियों के प्रति मंगलकामना करते हैं।

हे माताजी! भारत के विशाल क्षितिज पर छाये हुए आपकी बिरदावली के ज्ञान तडितमय मेघपटल तो हमें आल्हादित करते ही रहते हैं, किन्तु हमारी अपनी क्षेत्रीय वाटिका को मुरझाई हुई देखकर हमारा मन क्षोभित हो उठता है। वह इसलिए कि जिस स्थान पर ऐसी महान विभूति का आध्यात्मिक जन्म (दीक्षा संस्कार) हुआ, इस स्थान पर इस यादगार का प्रतीक कोई भव्य प्रतिष्ठान अभी तक निर्मित नहीं हो पाया है। यद्यपि हम सभी लोग इस कार्य के लिए पूर्ण उत्साहित और कृतसंकल्प हैं किन्तु अन्तराय कर्मोदय के कारण ऐसा शुभ निमित्त अभी तक नहीं बन पा रहा है। हमारी कामना है-उत्कट अभिलाषा है कि इस कार्य के लिए आपसे जुड़े सभी भक्तजनों का सहयोग हमें उपलब्ध हो और माधोराजपुरा (माताजी की दीक्षास्थली) भी हस्तिनापुर की तरह एक भव्य तीर्थस्थल हो, जो जैन समाज की धरोहर के रूप में ख्याति को प्राप्त करे।

माताजी के श्रीचरणों में आशीर्वाद के आकांक्षी हम माधोराजपुरा के सर्व दिगम्बर जैन समाज की यही विनम्र भावपूर्ण विनयांजलि है।

हमारी अभिलाषा—

ज्ञानमती सी विभूति का, दीक्षा स्मृति स्थान।
माधोराजपुरा बने इक, तीरथ क्षेत्र महान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसी अभिलाषा लिये, हम करतें आह्वान।
तन-मन-धन से सब करें, योगदान श्रीमान।।
मातुश्री का हुआ था, दीक्षा युत प्रस्थान।
तदनु-ख्याति को प्राप्त हो, यह पुनीत सु-स्थान।।

-दिगंम्बर जैन समाज माधोराजपुरा (राज.)
भँवर सेठी 'झुमर'

आगम परम्पराओं की पोषक माँ

यह हम सबके लिए बहुत ही गर्व की बात है कि परमपूज्य ज्ञानमती माताजी अपने दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। नारी पर्याय में जन्म लेकर भी उन्होंने जो महान कार्य किये, वह युगों-युगों तक लोगों के लिए प्रेरणा का कार्य करेंगे।

परमपूज्य माताजी कुण्डलपुर जाते हुए 2 दिन के लिए मैनपुरी पधारी थीं। रात्रि विश्राम अंजनी में करके वह यहाँ मैनपुरी पधारीं तथा बाद में भोगाँव की ओर उनका विहार हो गया। उनके आने पर यहाँ कुछ एकान्तवादी लोगों में बहुत विकल्प था कि माताजी पंचामृत अभिषेक करायेंगी, फल चढ़वायेंगी, पर दो दिन माताजी की चर्या देखकर उन लोगों के मुँह बंद हो गये, जो नाना प्रकार के अनर्गल प्रलाप कर रहे थे। पूज्य माताजी धर्मशाला में रुकी थीं। वहाँ उनके साथ की मूर्ति का शास्त्रोक्त विधि से पूर्ण अभिषेक हुआ तथा सभी लोगों ने देखकर आनन्द की अनुभूति की, पर मंदिर में माताजी ने यही कहा कि ज़हाँ जिस स्थान पर, जो परम्परा चल रही है, वहाँ उसका पूरी तरह पालन होना चाहिए। अभिषेक की दोनों विधियाँ ही शास्त्रोक्त हैं अत: किसी के निषेध का तो प्रश्न ही नहीं होना चाहिए, जहाँ जैसे हो, उसे वैसा ही मानना चाहिए। वास्तव में यही समन्वयात्मक दृष्टिकोण ही उचित है। यहाँ उनका निर्विघ्न आहार भी हुआ था। पं. शिवचरनलाल जैन, डॉ. सुशील जैन आदि के परिवारीजनों ने आहारदान का पुण्यलाभ प्राप्त किया था। जाने की शीघ्रता के कारण पूज्य माताजी यहाँ अधिक समय नहीं रुक सकीं, जिसका मैनपुरी जैन समाज को दुख रहा। जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति एवम् समवसरण रथ के आगमन पर भी मैनपुरी में विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए। पं. श्री शिवचरणलाल जी को जम्बूद्वीप से ज्ञानमती पुरस्कार मिलना भी मैनपुरी पर उनकी अनुकम्पा का ही द्योतक है। यहाँ से समय-समय पर लोग जम्बूद्वीप पूज्य माताजी के दर्शनार्थ जाते रहते हैं। स्व. डॉ. सतीशचन्द्र जैन ने तो जम्बूद्वीप निर्माण के समय लगभग एक माह तक वहाँ रहकर सहयोग प्रदान किया था और उनके सुपुत्र डॉ. सुशील जैन को इस समारोह की विद्वत् समिति का महामंत्री बनाने से मैनपुरी का गौरव बढ़ा है। अभी दिसम्बर 2005 में आयोज़ित समारोह में भाई अभयप्रकाश को हस्तिनापुर में सम्मानित किया गया, उनका आकस्मिक स्वर्गवास 21 जनवरी 2006 को हो गया, वह भी मैनपुरी के ही थे। इस तरह से यह दृष्टिगोचर होता है कि परमपूज्य माताजी की मैनपुरी पर विशेष अनुकम्पा रही है और हम आशा करते हैं कि वह ऐसी ही कृपा मैनपुरी जैन समाज पर सदैव बनाये रखेंगी। कम्पिल तथा शौरीपुर बटेश्वर जन्मभूमियों पर भी पूज्य माताजी की दृष्टि से विकास होगा, हमें ऐसी भी आशा है। पूज्य माताजी के चरणों में वंदामि तथा उनकी दीक्षा की स्वर्ण जयंती पर मैनपुरी जैन समाज की ओर से बहुत-बहुत अभिनंदन।

-दिगम्बर जैन समाज मैनपुरी
वीरेन्द्र कुमार जैन (मंत्री)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंख्य गुणों की खान — श्री ज्ञानमती माताजी

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, अवध की अनमोल मणि, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर सम्पूर्ण भारतवर्ष का जैन समाज आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मना रहा है। इस ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय अवसर पर सर्वप्रथम तो मैं फतेहपुर सकल दिगम्बर जैन समाज की ओर से पूज्य माताजी के श्रीचरणों में सादर वंदामि करता हूँ।

फतेहपुर जैन समाज अत्यन्त सौभाग्यशाली है कि यहाँ पूज्य माताजी का तीन बार मंगल आगमन हुआ और यहाँ पूज्य माताजी का 8वाँ गणिनीपद प्रतिष्ठापना समारोह, 39वाँ दीक्षा जयंती महोत्सव, श्रावक संस्कार शिविर, श्री महावीर जयंती महोत्सव सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए और पूरे क्षेत्र में महती धर्मप्रभावना हुई। प्रथम बार 29 अप्रैल 1993 को उस समय पूज्य माताजी का यहाँ मंगल आगमन हुआ, जब पूज्य माताजी ने तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या के विकास का लक्ष्य लेकर हस्तिनापुर से अवध की ओर मंगल विहार किया। पूज्य माताजी के आगमन से अत्यधिक उत्साहित क्षेत्र के लोगों ने आर्यिका संघ का भव्य स्वागत किया। 30 अप्रैल 1993 को यहाँ संचालित श्री महावीर जैन विद्यालय के नवीन भवन के निर्माण हेतु पूज्य माताजी के करकमलों से 'शिलान्यास' सम्पन्न हुआ।

2 मई 1993 को पूज्य माताजी का 8वाँ गणिनीपद प्रतिष्ठापना समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर 8 निराश्रित महिलाओं को सिलाई मशीनें प्रदान की गईं तथा वस्त्र, बर्तन इत्यादि वितरित किये गये। दूसरी बार पूज्य माताजी के यहाँ आगमन पर पूज्य माताजी का 39वाँ दीक्षा जयंती समारोह एवं श्रावक संस्कार शिविर का आयोजन हुआ।

21 अप्रैल 2005 को भगवान महावीर की पावन जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास करने के बाद पूज्य माताजी का पुनः यहाँ मंगल आगमन हुआ और पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में श्री महावीर जयंती महोत्सव पर विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। महाराज सिद्धार्थ के 'नंद्यावर्त महल' का भव्य मॉडल बनाया गया तथा भव्य रथयात्रा निकाली गई। इसी दौरान भगवान बाहुबली का पंचामृत अभिषेक का कार्यक्रम भी धूमधाम से मनाया गया एवं अन्य अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गए।

सरलता और सौम्यता की प्रतिमूर्ति पूज्य माताजी असंख्य गुणों की खान हैं। उनकी गौरव गाथा का बखान करना सूर्य को दीपक दिखाना है। निस्पृहता आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आपके वचनों में आकर्षण शक्ति के साथ-साथ माधुर्य और स्पष्टवादिता है। आप चिरकाल तक पृथ्वीतल पर रहकर समाज को अनुगृहीत करती रहें, यही हमारी मंगलकामना है।

-दिगम्बर जैन समाज तहसील फतेहपुर
सरोज कुमार जैन (अध्यक्ष)

विनयांजलि

परमपूज्य गणिनी आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में खैरवाड़ा दिगम्बर जैन समाज का बारम्बार वंदामि। परमपूज्या गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी अपने उम्र के इस पड़ाव पर भी निरन्तर समसामयिक साहित्य का सृजन करती रहती हैं, जो निश्चित ही स्तुत्य है। आपके द्वारा सृजित या संकल्पित साहित्य निश्चय ही जैन इतिहास की अनुपम धरोहर बनेगा। परम पूज्या माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं, यह हम सबके लिए गौरव की बात है, जो हम ऐसी प्राचीन साध्वी के दर्शन कर रहे हैं। उनके गौरव का गुणानुवाद करने हेतु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्तमान में "गौरव ग्रंथ" का प्रकाशन होने जा रहा है, जो कि पूज्य माताजी का गुणानुवाद न होकर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का ही गुणानुवाद है। आपके द्वारा सृजित मासिक कृति सम्यग्ज्ञान, जम्बूद्वीप पूजांजलि एवं अन्य साहित्य से जैन समाज लाभान्वित हो रहा है। आपके द्वारा जैन इतिहास के विवादित विषय वस्तु पर भी निर्बाध एवं बेहिचक रूप से मार्गदर्शन ने समाज.का उत्थान किया है। आपका निरन्तर जैनधर्म एवं धर्मावलम्बियों के लिए यह प्रयास हम सबके लिए वंदनीय है। खैरवाड़ा जैन समाज "गौरव ग्रंथ" के प्रकाशन पर परमपूज्या गणिनी आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में विनयांजलि समर्पित करते हुए कोटिशः वंदन करती है और यही कामना करती है कि उनका वरदहस्त सदैव हम सब पर बना रहे।

–समस्त दिगम्बर जैन समाज, खैरवाड़ा

विनयांजलि

जैन जगत की वर्तमान में "सर्वोच्च साध्वी", राष्ट्रगौरव परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के पचास वर्षों की सम्पूर्ति के शुभ अवसर पर जैन समाज, अमरोहा उनके श्रीचरणों में सादर नमन करती है। पूज्य माताजी आज के युग की एक ऐसी साध्वी हैं, जिन्होंने आत्मकल्याण के साथ-साथ प्राणी मात्र को भी मोक्षमार्ग पर चलने की राह दिखाई है। 18 वर्ष की अल्प आयु में गृहत्याग कर पूज्य माताजी ने जैनधर्म का गहन अध्ययन किया और 1956 में आपने आर्यिका दीक्षा लेकर सोये हुए जैन धर्मावलम्बियों को जगाने के लिए, उनमें अपने धर्म के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए देशभर में भ्रमण किया और आज भी इसी पुनीत कार्य में लगी हैं। इसी संदर्भ में आपने अनेक तीर्थंकरों की जन्मस्थली एवं अन्य कल्याणक स्थलियों पर अनेक मंदिरों का निर्माण करवाकर उन स्थानों को तीर्थ स्थल बना दिया। आपने भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि भेलूपुर (बनारस) में दिनाँक 6 जनवरी 2005 से भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक दिवस पर प्रारंभ किये जाने वाले "भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव" की देशव्यापी तैयारियों का सूत्रपात किया। श्री हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र की पावन भूमि पर जम्बूद्वीप की रचना करके उन्होंने ऐसा कार्य किया है, जिसकी पूरे भारत वर्ष में कोई दूसरी मिसाल नहीं है। जम्बूद्वीप एक तीर्थक्षेत्र होने के साथ-साथ ही लोगों के लिए पर्यटन स्थल भी बन गया है, जहाँ न केवल देश के अपितु विदेश से भी पर्यटक आकर अपने को धन्य मानते हैं। भविष्य की उनकी धार्मिक योजनाओं में अत्यधिक महत्वपूर्ण योजना मांगीतुंगी में भगवान ऋषभदेव की 108 फुट ऊँची विशालकाय मूर्ति की स्थापना करना है, जो अपने आप में देश की एक अनूठी कृति होगी।

देश के कोने-कोने में जैनधर्म का परचम फहराने वाली परमपूज्य माताजी की दीर्घायु की हम सभी मंगल कामना करते हैं और उनके दीक्षाकाल के 50 वर्ष पूर्ण होने के पावन अवसर पर पुनः एक बार उनके श्रीचरणों में नतमस्तक होकर श्री जिनेन्द्र देव से प्रार्थना करते हैं कि पूज्य माताजी का आशीर्वाद हमें हमेशा प्राप्त होता रहे। इसी मंगलकामना के साथ–

–समस्त दिगम्बर जैन समाज, अमरोहा-जे.पी. नगर
राजेन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष)
राजेन्द्र कुमार जैन एडवोकेट (मंत्री)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

परमपूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी का प्रथम दर्शन मैंने तीर्थ यात्रा से लौटते में अपने समधी पं. जमुनाप्रसाद जी शास्त्री-कटनी वालों के साथ हस्तिनापुर में किया था, तभी बातचीत में यह बात ज्ञान में आई कि पूज्य माताजी की बाल्यकाल की धार्मिक शिक्षा उनके जन्मस्थान-टिकैतनगर में पंडित जी द्वारा सम्पन्न हुई। उसके बाद दुबारा दर्शन अयोध्या जी में किए नीरज जैन-सतना वालों के साथ। उसके बाद पुन: पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर अयोध्या जी में, उसके बाद अनेक बार प्रयाग में और अन्य तीर्थों पर।

इलाहाबाद में मेरा प्रवास सन् 1971 से है। वर्ष 1998 में डॉ. प्रेमचंद जी से ज्ञात हुआ कि पूज्य माताजी की भावना इलाहाबाद में भगवान ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ निर्माण की है, उस हेतु किन्हीं दातार ने मेटल (धातु) का वटवृक्ष देने का वचन भी पूज्य माताजी को दिया है, एक जमीन छोटी सी प्राप्त हो जाये, तो उस पर एक छोटे मंदिर का निर्माण कराया जाए। अनेक भूखण्ड देखे गये, चिन्तन मनन हुआ, कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र जी, श्री प्रेमचंद जी 'तेल वाले'-मेरठ और अनेक सज्जन कई बार इलाहाबाद आये-गये किन्तु कोई निर्णय जमीन के संबंध में अगस्त-सितम्बर 2000 तक नहीं हो पाया।

मैं सितम्बर 2000 में पर्यूषण पर्व में हटा (दमोह) म.प्र. में प्रवासरत था। मुझसे वहीं किन्हीं सज्जन ने कहा कि फरवरी 2001 में आपके इलाहाबाद में पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन है। मुझे उनकी बात पर बिल्कुल विश्वास नहीं हुआ, मैंने उनसे कहा कि इलाहाबाद में पंचकल्याणक हो और मुझे ज्ञान भी न हो, यह तो संभव ही नहीं है, तब उन्होंने एक अन्य दिगम्बर जैन मंदिर जी में ले जाकर मुझे प्रयाग में पंचकल्याणक महोत्सव का पोस्टर दिखा दिया। मैं एकदम आश्चर्यचकित था कि जहाँ अभी जमीन का अता-पता नहीं है, वहाँ पर पंचकल्याणक किसका होगा? वापस इलाहाबाद आने पर ज्ञात हुआ कि इलाहाबाद-बनारस नेशनल हाइवे पर इलाहाबाद से तेरह किलोमीटर दूर झूँसी से आगे एक बड़ा भूखण्ड लेना तय हो चुका है। तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ निर्माण हेतु अक्टूबर 2000 में उस भूखण्ड के क्रय हेतु रजिस्ट्री सम्पन्न हुई। दिसम्बर 2000 के अन्त में उस पर निर्माणकार्य की शुरूआत हुई। जनवरी 2001 में वहाँ पर इक्यावन फुट ऊँचा कैलाशपर्वत निर्माण करके उसके ऊपर चौदह फुट उत्तुंग लाल वर्ण पाषाण की भगवान ऋषभदेव की पद्मासन भव्य प्रतिमा जी विराजमान होकर तथा कैलाशपर्वत के नीचे गुफा मंदिर जी में भगवान आदिनाथ की पद्मासन प्रतिमा अष्टधातु की लगभग तीन फुट अवगाहना की, कैलाशपर्वत के बायें ओर तप में लीन भगवान आदिनाथ खड्गासन वटवृक्ष के नीचे तथा दाहिनी ओर भगवान ऋषभदेव के समवसरण मंदिर की निर्मित होकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक 4 फरवरी से 8 फरवरी 2001 में घोषित तिथियों में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव में पूज्य माताजी के आशीर्वाद से मुझे सनत कुमार इन्द्र का पद प्राप्त करके भगवान जिनेन्द्र देव के अभिषेक पूजन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ये सब कार्य कल्पना से बाहर के हैं किन्तु सभी कार्य आँखों से देखने में सम्पन्न हुए हैं। तब से लगातार क्षेत्र के विकास का क्रम जारी है और यह तीर्थ निरन्तर प्रगति कर रहा है।

यह सब देखकर मुझे लगता है कि पूज्य माताजी के निमित्तज्ञान है या वचन रिद्धि है कि वे जो कह दें, वह समय पर सम्पन्न हो जाये। यही बात लगभग भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ (नालंदा-बिहार) के विकास में भी देखने में आई। प्रयाग से भी विकट स्थिति वहाँ की थी। बहुत छोटे-छोटे जमीन के टुकड़े पचीसों लोगों से खरीदकर वहाँ भगवान महावीर स्वामी का विशाल, भगवान आदिनाथ स्वामी का मंदिर, कीर्तिस्तंभ (प्राचीन मंदिर परिसर में), नवग्रह मंदिर, सतखण्ड नंद्यावर्त महल आदि निर्माण होकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव जनसमुदाय की उपस्थिति में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में घोषित तिथियों में सोल्लास सम्पन्न हुए, जिसकी घोषणा जमीन क्रय किये जाने के पूर्व ही पूज्य माताजी ने प्रयाग में ही कर दी थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी ने अनेक बड़े सिद्धान्त ग्रंथों की टीका के साथ सैकड़ों विधान एवं पूजाएं भी लिखी हैं। हमें इस बात का गौरव है कि भगवान महावीर विधान लिखे जाने के बाद जब प्रकाशित होकर आया, तब पूज्य माताजी का प्रवास प्रयाग में ही था। प्रकाशित होने के बाद उस विधान का प्रथम आयोजन पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में जैन धर्मशाला, जीरोरोड के नवनिर्मित हाल में भाई कृष्ण कुमार जैन एवं उनकी ध.प. श्रीमती साधना जैन के सौजन्य से रत्नों के पुंज चढ़ाकर सानन्द सम्पन्न हुआ। हम गौरव के साथ इस बात को कहते हैं कि यहाँ की जैन धर्मशाला का उद्घाटन पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में भगवान महावीर विधान के आयोजन के साथ सम्पन्न हुआ, जिसकी स्मृतिस्वरूप हमने धर्मशाला का नामकरण निम्न प्रकार शिलालेख लगवाकर किया है—

श्री वीर जयंती भवन 2001

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मोत्सव

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी दि. 6 अप्रैल 2001 को गणिनीप्रमुख आर्यिका

श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में उद्घाटित।

प्रयाग में भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मजयंती महोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में अनेक प्रकार के आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ। उसके उपरांत पूज्य माताजी का विहार दिल्ली की ओर था, उसके पूर्व ही प्रयाग की दि. जैन समाज ने भगवान पद्मप्रभु के चार कल्याणक तीर्थ श्री प्रभासगिरि (कौशाम्बी) में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव उनके ससंघ सानिध्य में कराने हेतु निवेदन किया, जिसे पूज्य माताजी ने सहर्ष स्वीकार किया और मई 2001 में पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हुआ। भगवान महावीर मुनि अवस्था में सती चन्दनबाला से आहार लेते हुए, भगवान पद्मप्रभु की आठ फुट ऊँची विशाल पद्मासन मूर्ति और नवनिर्मित मानस्तंभ की प्रतिष्ठा अनेक जिनेन्द्र प्रतिमाओं सहित सानन्द सम्पन्न हुई, जिसमें पूज्य माताजी के आशीर्वाद से मेरी पत्नी एवं मुझे भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य मिला, उसी अवसर पर हमने पूज्य माताजी से ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया था।

पिछले वर्ष कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में चातुर्मास के उपरान्त पूज्य माताजी ने वहाँ से विहार कर राजगृही, पावापुर, सम्मेदशिखर तीर्थों पर प्रेरणा करके मंदिरों का निर्माण कराया और उनके पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अल्प समय में ही सोल्लास सम्पन्न हुए हैं। सारनाथ वाराणसी में भगवान श्रेयांसनाथ की एक बड़ी मूर्ति, जो पुरातत्व विभाग के कारण विवाद में पड़कर अप्रतिष्ठित ही रखी थी, पूज्य माताजी के आशीर्वाद से विवाद मुक्त होकर पूरे पंचकल्याणक महोत्सव में प्रतिष्ठित होकर पूज्यता को प्राप्त हो चुकी है अभी कुछ दिन पूर्व ही मुझे दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के पुनीत अवसर पर मेरी ओर से एवं प्रयाग नगर की सकल दिगम्बर जैन समाज की ओर से शत-शत नमन, वंदामि-वंदामि-वंदामि।

पूज्य माताजी स्वपर कल्याण की भावना में रत रहते हुए अपने रत्नत्रय धर्म का पालन करते हुए आत्मोत्कर्ष की चरम सीमा को प्राप्त हों, ऐसी मंगल भावना के साथ पुनः नमन।

-समस्त दिगम्बर जैन समाज, प्रयाग

पं. पन्नालाल जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वात्सल्यमूर्ति आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

भारतवर्ष का गौरव ऋषि-मुनि, आर्यिका एवं त्यागीव्रतियों के कारण ही है क्योंकि इनकी साधना का फल इस देश को सदैव प्राप्त होता रहता है। तप-साधना में शिखर पर पहुँची हुई गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का समाज पर अनन्त उपकार है। इन्होंने पूजा साहित्य के माध्यम से सम्पूर्ण समाज को भक्ति में तत्पर किया हुआ है। बड़ौत समाज के लिए माताजी ने जो संस्कार दिए हैं, उनका समाज सदैव ऋणी रहेगा।

आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा बड़े विधानों में सर्वप्रथम इन्द्रध्वज विधान रचा गया, जिसकी प्रशंसा सुनकर बड़ौत दिगम्बर जैन समाज की भावना बनी कि माताजी के संघ सानिध्य में ही इन्द्रध्वज महामण्डल विधान कराया जाये। समाज ने माताजी से हस्तिनापुर जाकर आग्रह किया। माताजी समाज के प्रति विशेष स्नेह-वात्सल्य रखती हैं अतः उन्होंने स्वीकृति प्रदान की। अनन्तर उन्हीं के संघ सानिध्य में विधान कराकर समाज को विशेष पुण्य लाभ मिला।

इसके बाद पुनः बड़ौत नगरी का सौभाग्य जागा कि आचार्य कुन्थुसागर महाराज ससंघ, आचार्यश्री सुमतिसागर जी महाराज ससंघ और आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ बड़ौत में विराजमान रहीं। उस समय माताजी मुनियों, आर्यिकाओं को न्याय-दर्शन, सिद्धान्त ग्रंथों का स्वाध्याय कराती थीं, तब समाज अचम्भित रहती थी कि माताजी का ज्ञान तो सागर सम गंभीर है। माताजी के संघ में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी और क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज ज्ञानविद्या के पुंज हैं, उनके द्वारा बालक-बालिकाओं को जो संस्कार और ज्ञान मिला, वह भी समाज के लिए वरदान है।

प्रसन्नता है कि आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की दीक्षा के 50 वर्ष पूरे हो गये हैं, जिसके उपलक्ष्य में दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया जा रहा है। समस्त दिगम्बर जैन समाज बड़ौत कामना करती है कि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी समाज को ऐसा ही ज्ञान लाभ कराती हुईं शरद ऋतुओं के सुमनों से सुवासित होकर गौरवगरिमा बढ़ाती रहें।

-दिगम्बर जैन समाज बड़ौत

राजबहादुर जैन (अध्यक्ष), सुनील कुमार जैन (मंत्री)

पावन वर्षायोग की स्मृति सदैव अंकित रहेगी

'पूजौं गुरु पद सार' यह वह सूत्र है, जिसे हृदयंगम करने से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। निर्गुण भक्ति के महान कवि एवं सन्त कबीरदास जी ने सच्चे गुरु को महिमा मंडित करते हुए उद्धृत किया है।

'सतगुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपकार'

धर्म की ज्योति को प्रज्वलित करने वाली, अनेक तीर्थों की उद्धारिका, जम्बूद्वीप रचना निर्माण की सम्प्रेरिका, युगप्रवर्तिका, यथा नाम तथा गुण को सार्थक करने वाली परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी बीसवीं सदी एवं इक्कीसवीं सदी की ऐसी संत हैं, जिनके दर्शन मात्र से पापों का क्षय हो जाता है। अपनी मर्मस्पर्शी वाणी से जिनेन्द्र भगवान की वाणी का उद्घोष करने वाली, मानवता की पोषक, हित मित प्रियभाषी, लोककल्याणकारिणी वे सच्ची गुरु हैं। आर्यिका दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण होने पर हम उनके श्रीचरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

14,15,16 अप्रैल 2006

माताजी के परिप्रेक्ष्य में हमें वे दिन याद आ जाते हैं, जब हमें 1976 में उनका पावन सानिध्य वर्षायोग में प्राप्त हुआ। पूज्य माताजी अप्रैल मास में खतौली आईं। उस समय नगर में महावीर जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में पंच दिवसीय कार्यक्रम चल रहा था। रथयात्रा, जल कलश महोत्सव तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा था। क्षेत्र की जनता माताजी के आगमन का समाचार सुनकर बड़ी संख्या में आई। माताजी की मधुर वाणी ने सभी का दिल जीत लिया। उस समय ऐसा प्रतीत होता था, जैसे पतझड़ में बसंत की बहार आ गई हो, रेगिस्तान में गंगा की अविरल धारा फूट पड़ी हो, चातक को स्वाति की बूँद मिल गई हो।

नगर की जनता लालायित थी कि माताजी का मंगल चातुर्मास हो जाये, तो धर्म की वर्षा होगी। फलतः नगर के गणमान्य व्यक्ति लाला शीतलप्रसाद जैन, लाला गेंदनलाल जैन (मुखिया जी), लाला सलेकचंद ठेकेदार, लाला रतनलाल जैन आदि ने सैकड़ों धर्म प्रेमियों को साथ लेकर माताजी के श्रीचरणों में चातुर्मास की अनुमति प्रदान करने हेतु श्रीफल अर्पित किये। भक्तों की भावना रंग लाई। माताजी ने चातुर्मास की आज्ञा प्रदान कर दी।

माताजी का चातुर्मास नगरवासियों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। माताजी ने जहाँ अपने मंगल प्रवचनों से जन-जन का उद्धार किया, वहीं धर्म की कक्षाएं चलाकर आबाल-वृद्ध, युवक एवं युवतियों को धर्म के मार्ग पर चलने को प्रेरित किया। संत जहाँ रहते हैं, वहाँ की धरा पावन हो जाती है और पुण्य की अभिवृद्धि होती है। माताजी के खतौली प्रवास के समय जैन नगर कालोनी का शिलान्यास, भगवान महावीर मार्ग का शिलान्यास और कीर्तिस्तंभ का निर्माण हुआ। यह विचित्र बात है कि तब से आज तक यहाँ इस प्रकार का कोई सार्वजनिक निर्माण नहीं हुआ। जब हम इस बात को स्मरण करते हैं, तो माताजी के अमिट प्रभाव की छाप हम पर अवश्य ही पड़ती है। यह नगर का और हमारा सौभाग्य था कि माताजी ने अपनी इन्द्रध्वज विधान रचना इसी नगर में पूर्ण की। माताजी के उपदेशों की गूँज चिरस्थाई होकर आज भी हमारा कल्याण कर रही है।

पत्थरों को मूर्ति का रूप देने का कार्य तो व्यसनी शिल्पकार भी कर सकता है किन्तु आदमी में आदमियत की प्रतिष्ठा तथा सुसंस्कारों का निर्माण संत ही कर सकते हैं। माताजी दीप-स्तंभ हैं, ज्ञान की आगार हैं, धर्म प्रहरी हैं, साक्षात् प्रज्ञा पुंज हैं।

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहे, थोथा देइ उड़ाय।।

माताजी सदैव तत्व की चर्चा करती हैं। जीवन जीने की कला को माताजी के श्रीचरणों में बैठकर सीखा जा सकता है। उनके चरण-वंदन से आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। हमें आज भी माताजी का चातुर्मास जब याद आ जाता है, तो ऐसा प्रतीत होता है मानों कल की बात है। माताजी की दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर सकल जैन समाज खतौली अपनी विनयांजलि अर्पित करता है।

हम जिनेन्द्र भगवान से विनती करते हैं कि परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी दीर्घायु हों। माताजी की दिव्य वाणी सभी भक्तों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती रहे।

माताजी के श्रीचरणों में कोटि-कोटि वंदन।

-सकल दिगम्बर जैन समाज, खतौली

विनयावनत-चमनलाल जैन एवं अमरचंद जैन (सर्राफ)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन के सौ बसन्तों तक धर्मध्वजा फहराती रहें

परमपूज्य आर्यिका 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर मेरे एवं मेरे परिवार की ओर से तथा ललितपुर नगर की समस्त दिगम्बर जैन समाज की ओर से पूज्यनीया माताजी की चरणों में विनम्र अभिवंदना करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

आज सम्पूर्ण भारत भूमि पर दिगम्बर जैन परम्परा में गणिनीप्रमुख परम पूज्यनीया आर्यिका ज्ञानमती का नाम भलीप्रकार विदित है। पूज्यनीया माताजी ने जैनधर्म के गूढ़, गहन सिद्धान्तों पर 200 से अधिक ग्रंथों की हिन्दी व संस्कृत टीकाएं लिखकर जैन वाङ्मय को बोधगम्य बनाकर साधारण श्रावक के लिए पठन योग्य बनाया है।

दिगम्बर जैन साधु संस्था में 20वीं सदी के प्रथमाचार्य परमपूज्य 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी के प्रथम कुशल उत्तराधिकारी शिष्य परम पूज्य 108 आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से सन् 1956 में माधोराजपुरा (राज.) में दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा गुरु आचार्य श्री ने अपने चिन्तन मनन में दीक्षार्थी गृहस्थ (मैनाबाई) को दीक्षा देकर "ज्ञानमती" नाम से सम्बोधित किया था। परमपूज्य आचार्य श्री ने अपने ज्ञान से यह अनुमान लगाया होगा कि आर्यिका माताओं में धर्म की इस ध्वजा को अग्रगामी बनाने में "ज्ञानमती जी" पूर्णरूपेण सक्षम होगी तथा अपने नाम के अनुरूप पूज्यनीय माताजी द्वारा ज्ञान की जो गंगा प्रवाहित की जायेगी, उसके द्वारा समस्त जैन समाज को ज्ञान की एक नयी धारा प्राप्त होगी। अतएव परम पूज्यनीया गणिनीप्रमुख ने "यथा नाम तथा गुण" की सूक्ति को पूर्णतया चरितार्थ किया है। माताजी ने अपने संयम मार्ग पर चलकर स्वयं के कल्याण के साथ ही अपने परिवार के दो बहनों व गृहस्थ अवस्था की अपनी पूज्य माताजी को दीक्षित कर उनकी कोख को धन्य बनाया है।

परमपूज्यनीया माताजी द्वारा लिखित सम्पूर्ण वांङ्मय आज सभी संयममार्गी संघों में श्रद्धा, विनय और गरिमापूर्ण स्थान पर रखकर चिंतनपूर्वक स्वाध्याय किया जाता है।

मेरा मानना है कि यदि परम पूज्यनीया माताजी की दृष्टि इस ओर नहीं हुई होती या चिन्तन में नहीं आती, तो शायद जैन वाङ्मय को विधान ग्रंथ, न्याय शास्त्र के गहन गूढ़ ग्रंथ "अष्टसहस्री" की व्याख्या, उसकी टीका हस्तगत नहीं होती। आज भी उनका लेखन षट्खण्डागम पर संस्कृत टीका के लेखन का कार्य चालू है। वे महान चिन्तक, गंभीर एवं गूढ़ विषयों की सरल समीक्षा करने में पारंगत हैं।

उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को कोई भी लेखक अधिकारपूर्वक अपनी लेखनी से पूर्ण करने में सक्षम नहीं हो सकता है।

दिनाँक 15 अप्रैल 2006 में आयोजित स्वर्ण जयंती दीक्षा समारोह पर अपनी विनयांजलि प्रस्तुत करते हुए यही मंगल भावना करता हूँ कि वे अपने जीवन के 100 बसन्तों तक जैनधर्म की महान सेवा कर धर्म ध्वजा को अग्रणी बनाये रखें।

उनकी शतायु होने की कामना के साथ वह स्वस्थ एवं अपनी चर्या में परिपूर्ण रहें। हम हैं आपके पदानुरागी एवं गुणानुरागी।

–समस्त दिगम्बर जैन समाज, ललितपुर

पं. उत्तमचंद राकेश, ललितपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

जिनके दर्शन करते ही भक्तों का, होता पाप शमन है।
परमपूज्य माँ ज्ञानमती जी को, सौ-सौ बार नमन है।।

कितना पावन था 19 जुलाई 1991 का वह दिन पश्चिम उत्तरप्रदेश की प्रमुख जैन नगरी सरधना (मेरठ) के लिए, जब गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी यहाँ पधारी थीं। सरधना नगरी जो भगवान पद्मप्रभु के अतिशय से सुशोभित, नौ गगनचुंबी शिखरों जिन मंदिरों से सुसज्जित और अपने अंचल में अनेक ग्रामीण जिन मंदिरों एवं जैन ग्रामों से वेष्ठित है, जिसे अपने चरण कमलों से पवित्र किया था इस युग के प्रथम जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने जो अपने संघ सहित 1940 में यहाँ पधारे थे। परमपूज्य आचार्यश्री नमिसागर जी महाराज ने 1943 में अपना वर्षायोग यहाँ किया और इसी परम्परा के आचार्य शिरोमणि धर्मसागर जी महाराज ने अपने विशाल संघ सहित 1975 में एक माह का प्रवास कर ज्ञान की पवित्र गंगा यहाँ बहाई थी। इसके बाद भी संतों और आचार्यों का पदार्पण इसी नगरी को प्राप्त होता रहा किन्तु 1943 के बाद किसी प्रमुख संत के वर्षायोग का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका था पुनः 19 जुलाई 1991 का दिन सरधना नगरी के इतिहास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिवस बना। हो भी क्यों न? आज आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा की विश्व की सर्वोच्च जैन साध्वी, इस युग की प्रथम बालसती, अवध की लाडली, नारी शक्ति की प्रतीक, वात्सल्य की धनी, माँ सरस्वती की जीवन्त प्रतिमा, रत्नत्रय आराधिका, भगवान महावीर के संदेशों की प्रचारिका, श्रमण संस्कृति की अद्भुत धरोहर, जिनशासनप्रभाविका, जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका, तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि की उद्धारिका, जिनभक्तों के हृदय कमल में निवास करने वाली, सभी के दुःख दूर करने वाली, गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का वर्षायोग करने हेतु अपने संघ सहित सरधना नगरी में मंगल प्रवेश हो रहा था। पूरे नगर में हर्षोल्लास का वातावरण था। चारों ओर माताजी का जयघोष हो रहा था, द्वार-द्वार पर पदप्रक्षालन हो रहा था, आरती उतारी जा रही थी। विशाल शोभायात्रा सहित पूज्य माताजी का मंगल प्रवेश हो रहा था। यह ऐसा सुखद अवसर था, मानो एक गरीब याचक को नवनिधि मिल गई हो। कभी किसी ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि इस महान पुण्यावसर का सौभाग्य इस नगरी को भी मिल सकेगा क्योंकि जम्बूद्वीप निर्माण के काफी समय पश्चात् वर्षायोग कराने का महान वरदान इस नगरी को प्राप्त हो रहा था। हम भूल नहीं सकते परमपूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के उपकार को, जिन्होंने कुछ समय पूर्व ही इस नगरी में पधारकर सबका मन मोह लिया था तथा श्री 1008 कल्पद्रुम विधान का भव्य आयोजन कराकर सभी को पुण्यशाली बना दिया था तथा परमपूज्य ज्ञानमती माताजी के वर्षायोग की स्वीकृति प्रदान कराने में एक सशक्त वकील की भूमिका निभाई थी, जिसके फलस्वरूप यह सुखद अवसर प्राप्त हुआ था।

सभी फूले नहीं समा रहे थे और अचंभित भी कि यह सुखद और महान पुण्य का अवसर हमें कैसे प्राप्त हुआ। माताजी का संघ सहित सरधना में पधारना ही एक अद्भुत और अनोखा सुयोग अवसर था।

25 जुलाई 1991 को पूज्य माताजी ने अपना वर्षायोग स्थापित कर हम सभी पर महान कृपा की थी। विशाल जनसमूह के बीच वर्षायोग स्थापना का आयोजन सम्पन्न हुआ था। दूर-दूर से भक्त यहाँ पधारे थे।

पूरे वर्षायोग ने सरधना नगरी को एक तीर्थ क्षेत्र में परिवर्तित कर दिया था। नित्यप्रति माँ के श्री मुख से अमृतवर्षा श्रवण करने, आहार देने, प्रश्नमंच का आयोजन, तीर्थंकरों-भगवन्तों के जन्मकल्याणक एवं निर्वाण कल्याणक मनाने के पुण्यार्जन के आयोजन होते रहते थे। सरधना के इतिहास में होने वाला सबसे बड़ा विधान श्री 1008 सर्वतोभद्र विधान का आयोजन पर्वराज पर्यूषण पर्व में हुआ, जिसमें 300 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया था। इस विधान की अपने आप में एक अनुपम विशेषता थी कि विधान की लेखिका परमपूज्य माताजी अपना पावन सानिध्य प्रदान कर रही थीं, जिस कारण एक इतिहास की रचना हुई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी का हृदय इतना सरल है, जिसकी कोई उपमा नहीं है, जो भक्त चरणों में आता है, वह अपनी मनोकामना पूर्ण करते जाता है। सभी को अपने वरदहस्त से आशीर्वाद देतीं, धर्म उपदेश सुनातीं, कुछ न कुछ नियम व्रत देकर उसके जीवन को सफल बनातीं। वर्षायोग के मध्य देश के कोने-कोने से भक्तगण पधारे थे अतः ऐसा लगा था मानो एक तीर्थ ही बन गया था।

यही नहीं, इस नगरी को एक और अतिशायी पुण्य का अवसर प्राप्त हुआ, 23 अक्टूबर 1991 को परमपूज्य माताजी के 58वाँ जन्म दिवस मनाने का। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी अपनी भावभीनी विनयांजलि लेकर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। भारतीय जैन मिलन हास्पिटल के विशाल प्रांगण में अपार जनसमूह के बीच पूज्य माताजी का भव्य मनमोहक जन्मदिवस मनाया गया, वह पल कभी नहीं भुलाये जा सकते।

वैसे तो इस नगरी को पूज्य माताजी के चरण स्पर्श करने का सुयोग अवसर 24 जून 1974 को भी प्राप्त हुआ था, जब पूज्य माताजी जम्बूद्वीप स्थल का चयन कर हस्तिनापुर से दिल्ली के लिए विहार कर रही थीं। यात्रा के मध्य एक दिन के लिए यहाँ पधारी थीं। तभी से सरधना जैन समाज पूज्य माताजी एवं उनकी परम्परा के प्रति समर्पित रहा। जम्बूद्वीप स्थापना से लेकर अब तक हर छोटे-बड़े कार्य (आयोजन) में पूर्ण समर्पण भाव से सहयोगी रहा है और अपने को गौरवान्वित समझता है।

परमपूज्य माताजी के चरणकमलों में शत-शत नमन करते हुए उनके स्वस्थ, चिरायु जीवन की मंगल कामना करते हुए प्रार्थना करते हैं कि उनके आशीर्वाद का वरदहस्त हम सभी पर हमेशा बना रहे।

-सकल जैन समाज सरधना

सतीशचंद जैन, सरधना

विनयांजलि

परमपूज्य युगप्रवर्तिका, आर्यिकाशिरोमणि, विश्वविभूति, विधान वाचस्पति, राष्ट्रगौरव आदि अलंकारों से शोभित ममतामयी श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में समर्पित

बाल ब्रह्मचारिणी आर्यिका ज्ञानमती जी माताजी।
जैनधर्म की नहीं, अपितु यह जग भर की हैं माताजी।।
इन्हें बाँधना उचित नहीं है, जाति-धर्म की रेखा से।
इनका मूल्य आंकना अनुचित, देशकाल की लेखा से।।
ये व्यापक हैं इतनी, जितना, व्यापक है धरती और गगन।
श्री ज्ञानमती माताजी, को, शत बार नमन-शत बार नमन।।

परमपूज्या, युगप्रवर्तिका, न्याय प्रभाकर माताजी।
शुद्धाचरण, परम धर्मज्ञा, सरल हृदय श्री माताजी।।
सित वसना, आर्यिकाशिरोमणि, वाग्देवी श्री माताजी।
गणिनीप्रमुख, राष्ट्रगौरव, चिर सत सेवी श्री माताजी।।
तुम्हें अलंकृत करें देश के, विद्वत्जन, ज्ञानी, मुनि-जन।
श्री ज्ञानमती माताजी को, शत बार नमन-शत बार नमन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तन से निर्मल, मन से निर्मल और विचारों से निर्मल हैं।
परमपूज्या ज्ञानमती माताजी, चलती-फिरती गंगाचल हैं।।
विश्वविभूति ज्ञान की सागर, माताजी श्री ज्ञानमती।
श्वेत वस्त्र में लगतीं मानों, साक्षात् हों सरस्वती।।
कितने धार्मिक ग्रंथ लिखे, जिनसे होता है पावन मन।
श्री ज्ञानमती माताजी को, शत बार नमन-शत वार नमन।।

हमको संशय होता है श्री ज्ञानमती जी नारी हैं?
या सुरपुर से भू पर उतरीं, ये कोई अवतारी हैं।।
बड़ी शांति मिलती है सचमुच, माताजी के चरणों में।
सारे तीर्थ समाये लगते, माताजी के आचरणों में।।
बड़े भाग्यशाली हैं वे जो, पाते माताजी के दर्शन।
श्री ज्ञानमती माताजी को, शत बार नमन-शत बार नमन।।

तुमने दुनिया को दिखा दिया, संकल्प शक्ति यदि है मन में।
तो प्राप्त विश्व में कर सकते, सब कुछ हम अपने जीवन में।।
यदि हार मानकर बैठ गये, हम कुछ बाधाओं से डरकर।
तो व्यर्थ हमारा जीवन है, हम नारी हों अथवा हों नर।।
आदर्श बन गया हम सबको, श्री ज्ञानमती माँ का जीवन।
श्री ज्ञानमती माताजी को, शत बार नमन-शत बार नमन।।

-दिगम्बर जैन समाज हरदोई
सुमत जैन (अध्यक्ष)

सिंघई महल का खण्डहर "ऋषभदेव उद्यान" बन गया!

वर्तमान में जितने भी सुव्यवस्थित, आगमसम्मत एवं समसामयिक कार्य सम्पन्न हो रहे हैं, सबके पीछे प्रेरणा एवं आशीर्वाद प्राप्त है गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का।

हमारे दरियाबाद से मात्र 6 किमी. की दूरी पर स्थित टिकैतनगर में जन्म लेकर ज्ञानमती माताजी ने उस छोटे से ग्राम टिकैतनगर का नाम आज भारत ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में रोशन कर दिया है।

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना, प्रयाग में दीक्षा तीर्थ की रचना, कुण्डलपुर में नंद्यावर्त तीर्थ का निर्माण, अयोध्या में दो मंदिरों के निर्माण, मांगीतुंगी में सहस्रकूट मंदिर का निर्माण आदि कार्य पूज्य माताजी के अतिरिक्त किसी अन्य के द्वारा सम्पन्न होना शायद संभव भी नहीं था।

ज्यादा दूर की क्या कहें, हमारे दरियाबाद में अनेक वर्षों से 'सिंघई महल' के नाम से भूमि खण्डहर अवस्था में पड़ी थी, जिसने भी इस भूमि पर निर्माण कराने का प्रयास किया, उसका कुछ न कुछ अहित अवश्य हुआ पुनः पूज्य माताजी के अयोध्या प्रवास के समय दरियाबाद आगमन पर जैन समाज ने पूज्य माताजी से इस भूमि के उद्धार हेतु निवेदन किया। सामाजिक निवेदन को स्वीकार करके उन्होंने इस भूमि को 'ऋषभदेव उद्यान' के नाम से घोषित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया और वहाँ भगवान ऋषभदेव के चरण विराजमान करवाकर उस स्थान को पूज्य बना दिया। तब से लेकर आज तक जैन समाज के लोग वहाँ दर्शन-आरती आदि करने जाते हैं तथा विशेष पर्व के दिनों में वहाँ सामूहिक पूजन करते हैं। इस प्रकार हम सभी लोग तो इस ऋषभदेव उद्यान के माध्यम से भी पूज्य माताजी का दिन में कई बार स्मरण करते हैं।

ऐसी पूज्यनीया गणिनीप्रमुख राष्ट्रगौरव पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर 14-15-16 अप्रैल 2006 को आयोजित आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के पावन अवसर पर हम सम्पूर्ण जैन समाज की ओर से भावभीनी विनयांजलि समर्पित करते हैं तथा पूज्य माताजी के चरणों में बार-बार वंदामि करते हुए भगवान महावीर स्वामी से पूज्य माताजी के दीर्घ जीवन की मंगल प्रार्थना करते हैं।

-सकल दिगम्बर जैन समाज, दरियाबाद
प्रकाश जैन (अध्यक्ष)

विनयांजलि

हम सभी जानते हैं कि पूज्य माताजी का समाज पर विगत 50 वर्षों से महान उपकार है। आपने अपनी लेखनी द्वारा चारों अनुयोगों से संबंधित महान ग्रंथों की संस्कृत, हिन्दी टीकाएँ एवं अन्य धार्मिक पर्व, विधि-विधान आदि अनेकों ग्रंथों का सृजन किया है।

आज हर मंदिर एवं देवालय में आपके द्वारा रचित ग्रंथों का स्वाध्याय एवं मण्डल विधान आदि अत्यधिक उत्साह के साथ सम्पन्न किए जाते हैं।

जिनवाणी माताजी की जितनी सेवा आपके द्वारा की गई है, उसका दूसरा कोई सानी नहीं है। आज भी इस उम्र के पड़ाव पर आपकी लेखनी द्वारा नित्य नये सृजन किये जा रहे हैं।

पूज्य माताजी ने जिनवाणी की सेवा के साथ आपकी प्रेरणा से ही तीर्थंकरों की जन्मभूमि, निर्वाण क्षेत्र, सिद्धक्षेत्र एवं अतिशय क्षेत्र आदि तीर्थों पर निर्माण एवं विकास के ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुए हैं।

इस प्रकार पूज्य माताजी ने जिनधर्म, जिनसंस्कृति एवं जिनवाणी की सेवा का जो व्रत संकल्प लिया है, उसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है।

सुदामा नगर, इंदौर का यह परम सौभाग्य रहा है कि आपके श्रीचरण स्पर्श होने के साथ ही इस मंदिर में त्रिकाल चौबीसी के निर्माण का संकल्प सुदामा नगर जैन समाज ने लिया है, जिसकी प्रारंभिक तैयारियाँ पूर्णता की ओर हैं।

हमारे लिए यह और भी गौरव की बात है कि गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ की एक शाखा सुदामा नगर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से ही स्थापित की गई है, जिसमें डॉ. अनुपम जैन के निर्देशन में शोधकार्य जारी है।

पूज्य माताजी के इस स्वर्ण जयंती महोत्सव में सुदामा नगर समाज की ओर से हमारी विनम्र विनयांजलि प्रस्तुत करने का सौभाग्य में प्राप्त हुआ। समाज अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। विनम्र विनयांजलि सहित,

-दिगम्बर जैन समाज, सुदामानगर
प्रकाशचंद जैन काला, इंदौर (अध्यक्ष)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

यह महान हर्ष एवं गौरव का विषय है कि गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष निराबाध रूप से परिपूर्ण हो रहे हैं। पूज्य माताजी वर्तमान जैन साधु परम्परा मे सर्वाधिक प्राचीन दीक्षित आर्यिका होने के गौरव से संयुक्त होकर और भी अधिक पूज्यनीय हो गयी हैं, वास्तव में इन 50 वर्षों में ज्ञान साधना, शिष्य निर्माण, तीर्थ विकास, धर्म प्रभावना इत्यादि में क्षण-क्षण का उपयोग करके आपने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आपके आभामयी प्रभावी व्यक्तित्व का परिज्ञान हमें साक्षात् रूप से सन् 2001 में अशोक विहार-दिल्ली में हुए चातुर्मास में प्राप्त हुआ। आप जहाँ अपनी साधुचर्या के परिपालन में सतत जागरूक रहती हैं, वहीं समाज के आबाल-वृद्ध को किस प्रकार धार्मिक भावनाओं में परिपुष्टता प्राप्त हो, यह प्रयास सदैव ही आपके द्वारा साकार होता रहता है। वीर शासन जयंती पर्व के त्रिदिवसीय भव्य आयोजन एवं तीर्थंकर महावीर देशना शिविर के द्वारा प्राप्त ज्ञान रश्मियाँ आज भी हम सबके मानस पटल पर अंकित हैं। आपका क्षयोपशम एवं ज्ञान-विस्तार धन्य-धन्य है, आपका नाम आपके यशस्वी कार्यकलापों द्वारा युगों तक जीवंत रहेगा।

'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' की मंगल बेला में हम सभी बारम्बार आपके श्रीचरणों में शतशः नमन करते हुए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। जिनेन्द्र प्रभु से यही प्रार्थना है कि आप शतायु हों तथा आपकी छत्रछाया इसी प्रकार हमें सतत प्राप्त होती रहे।

चरणों में विनीत सकल दिगम्बर जैन समाज।

-सकल दिगम्बर जैन समाज, अशोक विहार-दिल्ली
राजेन्द्र कुमार जैन, 'चाँदी वाले' (कोषाध्यक्ष)

अतिशयी माताजी को नमन

पूज्य माताजी के श्रीचरणों में मेरा और मेरे परिवार के सभी सदस्यों तथा इस जिनालय में आने वाले सभी भक्तगण की ओर से बारम्बार वंदना स्वीकार करें।

माताजी जगह-जगह महान उत्सव करने की प्रेरणा देती हैं, मैं भी उन उत्सवों जैसे-इलाहाबाद, मांगीतुंगी, टिकैतनगर, अयोध्या जी, कुण्डलपुर, दिल्ली व हस्तिनापुर आदि में सम्मिलित हुई। इतने महान उत्सव, जिनमें हजारों की संख्या में भक्तगण आए, कुदरत की ओर से कभी भी कोई बाधा जैसे वर्षा, तूफान या अप्रिय घटना कभी भी किसी भी उत्सव में नहीं आई। मैं समझती हूं कि यह माताजी का ही अतिशय है। टिकैतनगर में तो मैंने देखा कि वहाँ की समाज में मंदिर में चौबीसी मूर्तियों को रखने में काफी विवाद होता रहा। अगले दिन देखा कि सारा विवाद समाप्त हो गया और सर्वसम्मति से बड़े हर्षपूर्वक मूर्तियों की स्थापना हुई, ये माताजी की भक्ति का ही अतिशय है।

अन्त में पुनः-पुनः माताजी को व अन्य सभी साध्वियों व साधुओं की वंदना करते हुए पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित करती हूँ।

-श्री 1008 ऋषभदेव जिनालय, आदर्शनगर
श्रीमती प्रेमकुमारी जैन, गुड़गाँवा (अध्यक्षा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देश के विभिन्न दिगम्बर जैन महिला संगठनों द्वारा पूज्य माताजी के प्रति अर्पित विनयांजलियाँ

कोटि पग चल पड़े, उस तरफ देश के

चल पड़े जिस तरफ दो कदम मात के,
कोटि पग चल पड़े, उस तरफ देश के।

संस्कारों की प्रतिमूर्ति, संस्कृति की संवाहिका, श्रमणधर्म की साधिका, सरस्वती की आराधिका, विलक्षण प्रतिभा एवं अद्वितीय कल्पनाशक्ति की धनी 105 गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में मेरा कोटिशः वंदन-नमन।

इस युग की माँ शारदे के बारे में कुछ भी लिखना असंभव है, क्योंकि यदि व्यक्तित्व के सब आयाम किसी एक साधक-साधिका में सम्मिलित रूप से देखने हों तो बस एक ही नाम दिखाई देता है, वह है परमपूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का नाम। इतिहास के पढ़ने वाले संसार के असंख्य प्राणी हैं किन्तु इतिहास का निर्माण करने वाले विरले प्राणी होते हैं। नर के साथ नारियों ने भी देश के स्वर्णिम इतिहास को लिखने में योगदान दिया। इतिहास की इस श्रृंखला में बीसवीं सदी सर्वाधिक भाग्यशाली सिद्ध हुई, जिसने हमें जीवन्तरत्न प्रदान किये। दक्षिण भारत में जहाँ एक चारित्रचक्रवर्ती ने जन्म लेकर मुनिपरम्परा का पुनरुद्धार किया, वहीं उत्तरभारत में एक चारित्रचन्द्रिका ने जन्म लेकर संसार की कन्याओं के लिए माता ब्राह्मी का पथ प्रदर्शित किया है। उन महान् चारित्रचक्रवर्ती को मैं अपने चर्मचक्षुओं से ना देख पाई किन्तु उनका प्रतिनिधित्व कर रही उन चारित्रचन्द्रिका को देखने का हमें पुण्य महान अवसर, स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है। दक्षिण भारत के उस सूर्यरत्न का नाम था ''चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज'' और उत्तरभारत की इस अनमोल मणि का नाम है ''चारित्रचन्द्रिका गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी''। इन ममतामयी माँ से मिलने के संयोग को मैं अपना बहुत ही पुण्यकर्म मानती हूँ।

तीर्थंकर भगवन्तों की उपेक्षित प्राचीन जन्मभूमियों एवं उनकी पंचकल्याणक भूमियों के जीर्णोद्धार-विकास की प्रेरणा आपकी सूझबूझ और दूरदर्शिता का परिणाम है। हस्तिनापुर जो कि एक अत्यन्त प्राचीन तीर्थंकर कल्याणक भूमि है और इतिहास का वो स्वर्ण वैभव है, वहाँ पर जम्बूद्वीप की रचना कर, सुमेरुपर्वत को बनाकर नया इतिहास रचाया है। उसी पावन तीर्थ को जम्बूद्वीप रचना निर्माण के निमित्त से अपनी कर्मभूमि, तपोभूमि एवं साधनाभूमि बनाया। इसलिए अब सुदूरवर्ती प्रान्तों में विहार करने के बाद काफी समय के अन्तराल से आपका पुनः पदार्पण हस्तिनापुर में हुआ, तब अनहोना संयोग मिल रहा है हमें परमपूज्यनीय माताजी के दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाने का। ऐसे दुर्लभक्षण जीवन में कभी-कभी प्राप्त होते हैं कि तीर्थदर्शन, गुरुभक्ति एवं चारित्र महोत्सव की त्रिवेणी में महाकुंभ स्नान करके हम अपनी आत्मा को पवित्र करें।

युगों-युगों तक 'माँ', गूँजे आपकी वाणी,
स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव में, यही विनयांजलि हमारी।।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, दिल्ली प्रदेश
श्रीमती प्रभा जैन (मंत्री)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

प्रातःस्मरणीय परमपूज्य आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित इन्द्रध्वज विधान, सर्वतोभद्र विधान, कल्पद्रुम विधानादि में हम कई बार भगवान की भक्ति कर अपने को धन्य कर चुके हैं। प्राकृत, संस्कृत के गूढ़ अर्थ वाले अनेक ग्रंथ और लघु पुस्तकें जो सरल हिन्दी भाषा में अनुवादित हैं, को पढ़कर जैन धर्म और आत्म ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। ऐसी विदुषी हमारी माताजी (जिनकी मति ही ज्ञानरूप है) के दर्शन करने का सौभाग्य हमें 1999 में शरदपूर्णिमा के (इस दिन इनका जन्मदिन होता है, ये बात हमें इसी दिन पता चली) दो दिन बाद मिला। जब हम जम्बूद्वीप के दर्शन करने गये थे। उनके मुख के आभामंडल की शांत, सौम्य, हंसमुख, सरल, सहज, वात्सल्यमयी छवि और उनकी मधुर वाणी से मैं बहुत प्रभावित हुई। उनके चरण स्पर्श कर हम उनके सम्मुख बैठ गये।

ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा और आशीर्वाद से स्थापित "अखिल भारतीय दि. जैन महिला संगठन" की महिलाएं अपने-अपने नगर में किये कार्यों का ब्यौरा दे रही थीं। भीड़ में से एक महानुभाव बोले-माताजी! आपने "णमोकार मंत्र बैंक" खुलवाकर चिंताग्रस्तों को आर्तरौद्र ध्यान से उबार लिया है। मैंने तथा मेरी पत्नी ने जब से "णमोकार मंत्र" लिखने शुरू किये हैं, घर में सुख-शांति समृद्धि का वास हो गया है। मैं माताजी के भक्तों की बातें सुन उनके प्रति अत्यधिक श्रद्धा से भर उठी। मुझे लगा मैं तृतीय चतुर्थकाल की ब्राह्मी-सुन्दरी, चंदनबाला के चरणों में बैठी हूँ। माताजी ने मुझसे ये जानकर कि मैं मुम्बई से आई हूँ मुझे भी महिला संगठन की और "णमोकार मंत्र बैंक" स्थापना करने की प्रेरणा और आशीर्वाद दिया।

ये जम्बूद्वीप की अद्‌भुत अनमोल रचना का निर्माण, पंचमकाल की 20वीं सदी के मनुष्यों की क्षीण होती बुद्धि को ध्यान में रखकर प्राकृत, संस्कृत ग्रंथों का सरल हिन्दी भाषा में प्रकाशन, जैनधर्म की प्राचीनता सिद्ध करने हेतु प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ जी की दीक्षास्थली प्रयाग (इलाहाबाद) में कैलाशपर्वत सहित 72 जिनालयों का निर्माण, 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ सहस्राब्दि जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष मनाने की प्रेरणा और घोषणा, मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर्वत पर भगवान आदिनाथ जी की 108 फुट उत्तुंग प्रतिमा की निर्माण प्रेरणा इत्यादि कार्यों के साथ-साथ उनका त्याग, तप, संयम, आत्म विश्वास, प्रेम, करुणा, वात्सल्य, धर्म के प्रति समर्पणता को देख मैं बारम्बार उनके चरणों में नतमस्तक हूँ।

ये माताजी की प्रेरणा, आशीर्वाद और उनके चरणों के सानिध्य का फल ही है कि मैं घर-गृहस्थी की चार-दीवारी में आरम्भ- परिग्रह में लीन सभी जिम्मेदारियों को पूर्णकर अपने खाली समय का सदुपयोग धर्मकार्य और धर्मध्यान में कर रही हूँ।

पूज्य माताजी का रचनात्मक व्यक्तित्व इतना विशाल और उदार है कि मुझ तुच्छबुद्धि को शब्द ही नहीं सूझते, कुछ लिखने और कहने के लिए। सरस्वती की साक्षात् मूर्ति के प्रति मेरे टूटे-फूटे शब्द भला कैसे सक्षम हो सकते हैं?

मेरी माताजी ज्ञानमती से अधिक पावन गंगा का नीर नहीं।
मेरी माताजी ज्ञानमती से अधिक मधुर धेनू का क्षीर नहीं।।
मेरी माताजी ज्ञानमती के सानिध्य से अधिक सुख स्वर्गों में नहीं।
मेरी माताजी ज्ञानमती के ज्ञान तेज से अधिक सूरज का तेज नहीं।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, मुम्बई इकाई
लक्ष्मी जैन, मुम्बई (अध्यक्षा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंदौर में हुआ था ऐतिहासिक, भव्य एवं अनुशासित स्वागत

अत्यन्त प्राचीनकाल से जहाँ जैन परम्परा में नारियों को गणिनी जैसे गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित कर उसे श्रावक-श्राविकाओं द्वारा पूज्य एवं वंदनीय पद दिया गया है, वहीं वैदिक परम्परा में भी **''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता''** के रूप में नारी को सम्मानजनक स्थान दिया गया किन्तु कालक्रम से उसकी स्थिति में क्षरण होता गया।

'शूद्र गंवार ढोल पशु नारी,
ये सब ताड़न के अधिकारी' (तुलसी)

अथवा- **अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।**
आँचल में है दूध एवं आँखों में पानी।।

जैसा लेखन नारी की सामाजिक स्थिति को अभिव्यक्त करता है। जैन परम्परा में भी भगवान महावीर के परिवर्ती 2500 वर्षों में गणिनी आर्यिका या श्राविका द्वारा रचित एक भी ग्रंथ न मिलने के क्या कारण हैं? यह विचारणीय है किन्तु परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने युग प्रवर्तिका के रूप में अनेक ऐसे ऐतिहासिक कार्य किये हैं, जिन्होंने प्रचलित धारा की दिशा ही बदल दी।

1. बीसवीं सदी में सर्वप्रथम आर्यिका दीक्षा ग्रहण की।
2. 200 से अधिक ग्रंथों का सृजन किया।
3. सिद्धान्त एवं अध्यात्म ग्रंथों की टीकाएं लिखी।
4. तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों का विकास कराया।
5. जैन साहित्य के करणानुयोग वर्ग में उपलब्ध लोक के स्वरूप विषयक विवेचनों में से जम्बूद्वीप के विवरणों के आधार पर 'जम्बूद्वीप रचना' का हस्तिनापुर में निर्माण कराया।

ऐसी विशिष्ट नारी सम्पूर्ण नारी जाति का गौरव हैं। यह दिगम्बर जैन महिला संगठन इंदौर का सौभाग्य है कि दिनाँक 11 मार्च 2006 को हमें इंदौर में ही आपका सानिध्य मिला। संगठन की 40 इकाईयों की 1008 सदस्याओं द्वारा एक समान साड़ियों में सिर पर मंगल कलश धारण करके पंक्तिबद्ध रूप में की गई आपकी अगवानी तथा भव्य एवं अनुशासित शोभायात्रा एक मिसाल बन गई। इंदौर के लोकप्रिय समाचार पत्रों में प्रकाशित टिप्पणी ''इंदौर के इतिहास में किसी संत की इतनी अनुशासित एवं भव्य अगवानी कभी नहीं हुई।' आज भी सत्य है।

आपकी आर्यिका दीक्षा के सफल 50 वर्ष पूर्ण होने पर सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज अप्रैल-2006 में आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मना रहा है। इस अवसर पर दिगम्बर जैन महिला संगठन-इंदौर उनके चरणों में शत-शत वंदन करता है एवं उनके स्वस्थ, सुदीर्घ एवं यशस्वी जीवन की मंगल कामना करता है।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, इंदौर

श्रीमती सुमन जैन (अध्यक्षा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

इस प्रथम पुष्प के खिलते ही, एक अपूर्व प्रकाशित आलोकित हो गया।
बाराबंकी के टिकैतनगर में तुमने, शरदपूर्णिमा को जन्म लिया।।
छोटेलाल जी पूज्य पिताजी, माता मोहिनीं को कृत्य कृत्य किया।
जीवन उपवन में खिले इस, प्रथम पुष्प का नाम मैना रखा।।

अट्ठारह वर्ष की अल्प आयु में, आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत से गृह त्याग दिया।
दीक्षा की कामना हर सांस में संजोये, क्षुल्लिका पद 'वीरमती' धारण किया।।
आचार्य वीरसागर जी ने सन् 1956 में, आर्यिका पद दे डाला।
इस क्वाँरी कन्या का नाम, आर्यिका 'ज्ञानमती' रख डाला।।

धन्य धन्य है ऐसी महान, प्रतिभावान, सरस्वती माता।
इन पचास वर्षों में तुमने, साहित्य सृजन अति कर डाला।।
200 ग्रंथों का लेखन, चौबीस कल्पद्रुम विधान रचा डाले।
तीर्थ अयोध्या, मांगीतुंगी, कुण्डलपुर, प्रयाग आदि का विकास कर डाला।।

माता तेरी प्रेरणा से होता है जंगल में मंगल,
युग की पहली ज्ञानमती तेरे चरणों में करते हैं अभिनंदन।
हमारा शत-शत वंदन स्वीकारो, गणिनी माता ज्ञानमती।।

ऐसी चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी, वात्सल्यमूर्ति, युगप्रवर्तिका, तीर्थोद्धारिका, डी.लिट्. उपाधि, विधान वाचस्पति, चारित्रचन्द्रिका, श्रुत तीर्थ प्रकाशिका, आर्यिकाशिरोमणि आदि पदवी से अलंकृत पूज्य माताजी के चरणों में, मोतीकटरा महिला संगठन आगरा की तरफ से भावभीनी विनयांजलि अर्पित करते हैं तथा भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि उनके इस पवित्र त्यागमयी जीवन का हमें 100वाँ दीक्षा स्वर्ण महोत्सव मनाने व देखने का भी लाभ प्राप्त हो, यही हमारी मंगलकामना है और विनयांजलि है।

-अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, मोतीकटरा -आगरा
श्रीमती अरुणा जैन (अध्यक्षा)

विनयांजलि

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी की 50वीं आर्यिका दीक्षा जयंती पर मैं हिना जैन अपने महिला संगठन की सभी बहनों के साथ उनके चरणों में शत-शत नमन करती हूँ। पूज्य माताजी के व्यक्तित्व में आपकी आत्म सिद्धि, कार्यिक दृष्टि, स्वशक्ति मूल्यांकन, लक्ष्यनिष्ठा, सहजता, आत्म विश्वास, संतुलित जीवन, साहस, शुद्ध व्यवहार पद्धति, सतत् प्रयास, समतावादी दृष्टिकोण, धर्म एवं सहनशीलता, विनम्र व्यवहार, मृदुवाणी, शीलव्रत, सुरीला कंठ, अहिंसावाद, नम्रता, अनुशासन जैसे अनेकानेक महान गुण समाविष्ट हैं। पूज्य माताजी भारतीय ऋषि परम्परा का गौरव, सौम्यता की प्रतिमूर्ति, प्रज्ञा एवं प्रतिज्ञा की धनी हैं, जिन्होंने ज्ञान के माध्यम से पूरे भारत में जैनधर्म की पताका को लहराया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान का भण्डार बिना आत्मसिद्धि के प्राप्त नहीं हो सकता। आपके ज्ञान की गंगा ने शास्त्रों, विधानों एवं पूजा के माध्यम से पूरे विश्व में जैनधर्म को अपनी पहचान बनाने में कामयाबी दी है। हमारा संगठन भी आपके आशीर्वाद का बोया हुआ बीज है, जो आज 60 टहनियों का वृक्ष बन गया है। आप हम महिलाओं का गौरव हैं, आदर्श हैं, मान सम्मान हैं, हमें अपने नारी होने पर गर्व है। जैसे सूर्य की पहली किरण फूल को विकसित करती है, उसी तरह मेरी प्रतिभा को नया जीवन देने में प्रमुख आपका हाथ है। आपके आशीर्वाद से मैं धर्म के मार्ग पर चलकर आप जैसे ज्ञानमयी समुद्र की एक बूंद बन सकूँ, यही भावना है। अंत में पूज्य माताजी के प्रति विनयांजलि अर्पित करते हुए उनकी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती पर वीरप्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि हम उनकी 75वीं दीक्षा जयंती भी धूमधाम से मनायें।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, सूर्यनगर इकाई

श्रीमती हिना जैन, सूर्यनगर,गाजियाबाद-उ.प्र. (अध्यक्षा)

इस अपार भव सिंधु का, दुर्लभ मिलना छोर
आप ऐसी नौका बने, पहुँचे हम उस ओर

यथा नाम तथा काम! आदरणीय माताजी के रोम-रोम में जिनेन्द्र भक्ति का वास है और उनके शरीर में रक्त के स्थान पर ज्ञान गंगा बह रही है, ऐसा हमारा विश्वास है। उसी के प्रभाव से माताजी ने 18 वर्ष की तरुण अवस्था में आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत लिया और महिलाओं का सिर ऊँचा उठाते हुए कुमारिकाओं के लिए मोक्ष का मार्ग प्रदर्शित किया तथा चार वर्ष पश्चात् ही आर्यिका दीक्षा ग्रहण की। तत्पश्चात् 50 वर्षों में चारों अनुयोगों से संबंधित ग्रंथों के रूप में लगभग 200 बहुमूल्य अनमोल रत्न जैन समाज को दिये, जो भवसागर से पार होने के लिए सुदृढ़ नौका का कार्य कर रहे हैं। आज शायद ही कोई ऐसा विधान हो, जो माताजी के द्वारा न लिखा गया हो। विधान की काव्य रचना बहुत सरल व सरस है।

इन पचास वर्षों में चातुर्मास के समय तो ज्ञानमती माताजी ज्ञान का सागर ही बहा देती हैं, ऐसा ही एक अवसर नजफगढ़ वासियों को भी मिला था, इसके लिए नजफगढ़ निवासी पूज्य माताजी एवं संघ के आभारी हैं। नजफगढ़ पर माताजी की विशेष कृपा दृष्टि रही है और उन्होंने नजफगढ़ समाज को प्रेरित करके एवं अपने सानिध्य में स्वयं मंत्रोच्चारण करके श्री भरतक्षेत्र का शिलान्यास करवाया, जहाँ अब पावापुरी का साक्षात् प्रतिबिंब भी बन चुका है, जो कि भारत की राजधानी दिल्ली का एक विशाल तीर्थ बनने जा रहा है।

पूज्यनीय ज्ञानमती माताजी ने जैनधर्म एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं नवीन तीर्थों की रचना भी की है। जिसके लिए जैन समाज अनेक वर्षों तक आभारी रहेगा और ऐसी सुन्दर रचनाओं के लिए समस्त भारतवासी आप पर गौरव करते रहेंगे। हम अपनी तुच्छ बुद्धि से माताजी के गुणों का वर्णन तो नहीं कर सकते परन्तु इन थोड़े से शब्दों से हम अपनी विनयांजलि तो अर्पित कर सकते हैं। अतः परमपूज्य माताजी के चरणों में हम हमारी महिला समाज की ओर से विनयांजलि अर्पित करते हैं।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, नजफगढ़-दिल्ली इकाई

त्रिशला जैन, दिल्ली (अध्यक्षा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी परमपूज्य आर्यिकारत्न गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी 15 अप्रैल 2006, वैशाख कृष्णा 2 को आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं, यह सुनकर बड़ी खुशी हुई। पूज्य माताजी के चरणकमलों में मैं त्रिवार वंदामि कर अपने को धन्य मानती हूँ। जिस प्रकार सम्यक्दर्शन के बिना व्रतों का समूह शोभा नहीं देता, उसी प्रकार सद्गुरुओं के बिना मनुष्य कहीं सुशोभित नहीं होता, गुरु के बिना कोई भी संसार से तारने वाला एवं मोक्षमार्ग पर ले जाने वाला नहीं है। वैसे तो जैनधर्म में जन्म लेकर मैंने सदैव ही गुरु उपासना की, लेकिन आज से 9 साल पहले जब गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न, वर्तमान साधु-साध्वियों में सदी की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी ने ज्योति कालोनी में 1997 में पदार्पण किया, तब हम सभी ने पूज्य माताजी के दर्शन किए। पूज्य माताजी ने मेरी अध्यक्षता में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, ज्योति कालोनी इकाई का शुभारंभ करवाया। तभी से आज तक हम पूज्य माताजी के सद्गुणों से लाभान्वित हो रहे हैं। पूज्य माताजी के सानिध्य में 24 कल्पद्रुम महामण्डल विधान, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, समवसरण श्रीविहार, तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग में भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक, 2600 मंत्रों से समन्वित 'विश्वशांति महावीर विधान' सभी में इकाई की सभी बहनों ने भरपूर आनन्द लिया व धर्मप्रभावना की।

पूज्य माताजी ने अपने दीक्षित 50 वर्षों में चारों ही अनुयोगों से संबंधित अष्टसहस्री, मूलाचार, षट्खण्डागम आदि महान ग्रंथों की संस्कृत-हिन्दी टीकाएँ कर विश्व को एक अमूल्य निधि प्रदान की है। पूज्य माताजी की प्रेरणा से तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं पंचकल्याणक भूमियों पर तीर्थ निर्माण एवं विकास का कार्य ऐतिहासिक स्तर पर हो रहा है। जिसके लिए हम पूज्य माताजी के सदा ऋणी रहेंगे। जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों की जन्मभूमियों का जीर्णोद्धार एवं तीर्थोद्धार का जो भी कार्य आपकी प्रेरणा से हो रहा है, उसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है।

मैं अपने संगठन की ओर से चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर महाराज की परम्परा के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य वीरसागर जी महाराज की शिष्या अद्भुत, चमत्कारिक एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व की धनी, ऋद्धि, सिद्धि सहित आर्यिकारत्न गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को भावभीनी विनयांजलि अर्पित करती हूँ।

-अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, ज्योति कालोनी-दिल्ली इकाई

श्रीमती शिवकुमारी जैन (अध्यक्षा)

विनयांजलि

यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका, परमविदुषी, शताधिक ग्रंथों की लेखिका श्री ज्ञानमती माताजी के 50 वें दीक्षा वर्ष के पावन उपलक्ष्य में ''गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ'' का प्रकाशन हो रहा है।

पूज्य माताजी ने तीर्थ उद्धार, ग्रंथों के प्रकाशन एवं समाज को दिशाबोध देकर जो उपकार किया है, उसका ऋण समाज पर सदा रहेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस पवित्र प्रसंग पर शंकरनगर एक्स. दिल्ली इकाई की हम सभी महिला ईश्वर से यही कामना करते हैं कि माताजी दीर्घायु हों, रत्नत्रय की साधना में सदा निरत हों।

सादर कोटिशः वंदन-कोटि कोटि वंदामि।

-अ.भा.दि. जैन महिला संगठन शंकरनगर एक्स.-दिल्ली इकाई
श्रीमती मिथलेश जैन (अध्यक्षा)

जैन जगत की स्वर्णिम आभा

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैन जगत की वह स्वर्णिम आभा हैं, जिसका अभिनंदन कर देश का हर नागरिक स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेगा। उनके पावन श्रीचरणों में शतशः नमन।

पूज्य माताजी का सन् 1979 का चातुर्मास हमारे दिल्ली-मोरीगेट में हुआ, उस चातुर्मास में जैनधर्म की खूब प्रभावना हुई। उस समय माताजी द्वारा लिखित इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का आयोजन मोरीगेट में हुआ, संभवतः पूरी दिल्ली में प्रथम बार यह विधान हो रहा था। उसमें पूरी समाज ने बहुत ही श्रद्धा-भक्तिपूर्वक भाग लेकर महान पुण्य संचय के साथ-साथ खूब आनन्द लिया था, रथयात्रा भी निकाली थी। विधान के मध्य माताजी की अमृतमयी वाणी सुनकर हमें शास्त्र के गूढ़ विषय अत्यन्त सरलतापूर्वक समझ में आ जाते थे।

पुनः सन् 1981 में चातुर्मास के पश्चात् चार माह माताजी का यहीं प्रवास रहा, उस समय ज्ञानज्योति प्रवर्तन की रूपरेखा बन रही थी, जिसका कार्यालय यहीं खोला गया था, उस समय समाज के वरिष्ठ लोग श्री श्रीपाल जी, शांति देवी जी आदि उसमें सक्रियता से भाग ले रहे थे। जब ज्ञानज्योति रथ प्रवर्तन के बाद मोरीगेट में भी शोभायात्रा निकाली, उस समय मुझे भी अपने पति श्री सतवीर सिंह जी के साथ रथ पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसके बाद तो माताजी के द्वारा किये जाने वाले धर्मप्रभावना के कार्यों की मानो झड़ी लग गई। अनेक पूजाएँ, उपन्यास आदि बड़े-छोटे दो सौ ग्रंथों की रचना सरल भाषा में की, रिंग रोड पर चौबीस कल्पद्रुम विधान, विश्वशांति महावीर विधान का विराट आयोजन, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव आदि अनेकानेक कार्यक्रमों से राजधानी दिल्ली में जो धर्मप्रभावना हुई, उसे देखकर मन में बड़ा आश्चर्य होता था कि माताजी ने एक नारी होकर इतने महान कार्य किए हैं। इनसे नारियों को प्रेरणा प्राप्त होती है, बल मिलता है। उन्होंने नारी शक्ति को आगे बढ़ाया है और अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की स्थापना करके हमें समाज में आगे आकर कुछ करने का मौका प्रदान किया है, नारी चेतना को जागृत किया है। ऐसी माताजी के चरणों में उनके स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर नमन करते हुए मोरीगेट महिला संगठन माताजी को बारम्बार नमन करता है।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, मोरीगेट-दिल्ली
श्रीमती माया देवी जैन (अध्यक्षा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी ने कहा-जगा लो ज्योति अंतर्मन की

मनुष्य जीवन भर भौतिक एवं बाह्य जगत की उपलब्धियों को पाने और अपने ठाठ-बाट, चमक-दमक बढ़ाने में लगा रहता है। उसे अपने अन्तर्जगत, अन्तर्मन और अपनी आंतरिक विरासत का, दिव्य और सूक्ष्म अनंत शक्तियों का तनिक भी पता नहीं रहता। विकारों और बाह्य बुराइयों के वशीभूत होकर वह विनाशिक चीजों का संग्रह करता है। वह भूल जाता है कि यह मनुष्य पर्याय, उत्तम कुल एवं जिनवाणी का आश्रय बार-बार मिलना अत्यंत कठिन है। जैसा कि दौलतराम जी कहते हैं-

यह मानुष पर्याय सुकुल सुनवो जिनवाणी।
यह विध गये न मिले, सुमणि ज्यों उदधि समानी।

अर्थात् समुद्र में गिरी मणि के समान दुर्लभ मनुष्य पर्याय को पाकर पूज्य ज्ञानमती माताजी ने उसे पूर्ण सफल करके दिखाया है। उनकी अविरल रत्नत्रयसाधना उनके शीघ्र मोक्षगमन का भाव दर्शाती है। पूज्य मातुश्री के इस दीक्षास्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मैं भक्ति के स्वर्ण पुष्प उनके चरणों में समर्पित कर अपनी आत्मा की स्वर्णिम छवि को प्राप्त करना चाहती हूँ।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन-छतरपुर
डॉ. रमा जैन (संयुक्त महामंत्री)

विनयांजलि

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में शत-शत वंदन वंदामि!

हमारे लिए बड़े हर्ष व गौरव की बात है कि पूज्य माताजी वर्तमान सदी की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी हैं। आज वे अपने आर्यिका जीवन के 50 साल पूरे कर रही हैं। उन्होंने इन 50 सालों में 200 ग्रंथों का सृजन किया है। ऐसी पूज्यनीया माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष की सम्पूर्ति पर जो विद्वत् समिति ने "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" प्रकाशित करने की जो योजना बनाई है, उसके लिए हमारी तरफ से, हमारे महिला संगठन की तरफ से हार्दिक बधाई है। हमारी पूज्यनीया माताजी दीर्घायु हों, इसी तरह धर्म का सृजन करती रहें, माताजी स्वयं में एक अति विशिष्ट व्यक्तित्व हैं, जो अपने प्रकाश से कहीं भी अंधकार नहीं रहने देती हैं और सबके अन्तर्मन को आलोकित करती हैं। उनके अलौकिक और निकट सम्पर्क में जो भी आया, उसने एक आत्मीय शक्ति अनुभव की, हमारे लिए सन् 2002 ता. 29 मई ऐसा ही शुभ दिन था। हमारे नगर कोड़ा-जहानाबाद में जहाँ पूज्य माताजी के पावन चरण पड़े मन गद्गद हो गया। माताजी ने महिला संगठन बनवाया, मुझे कुछ करने का उत्साह दिलाया। आज माताजी के आशीर्वाद से छोटी-सी इकाई का संगठन सुचारूरूप से चल रहा है। कभी पाठ, कभी विधान, हम सभी बहनें बड़े उत्साह से माताजी का स्मरण करके धर्मलाभ लेते रहते हैं। माताजी सत्य प्रतिभा, त्याग एवं ममता का ऐसा समन्वय हैं, जिसका मिलना आज के युग में दुर्लभ होता जा रहा है। 50 वर्षों से गृह त्याग कर समाज के मध्य रहकर धर्म प्रभावना करने वाली ऐसी माताजी के चरणों में हमारी तरफ से, हमारे महिला संगठन की तरफ से शत-शत वंदन।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, कोड़ा (फतेहपुर)
श्रीमती सुमन जैन (अध्यक्षा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करुणा की प्रतिमूर्ति माँ

परमपूज्य गणिनी शिरोमणि तीर्थ विकास संप्रेरिका आर्यिकारत्न 105 श्री ज्ञानमती माताजी को कौन नहीं जानता? जिनकी यश पताका सारे विश्व में निर्विरोध रूप से लहरा रही है, ऐसी रत्नत्रय की साकार मूर्ति जो बिना बोले ही अपनी निर्ग्रन्थ मुद्रा से मोक्षमार्ग का निरूपण कर रही है। ऐसे रत्नत्रय की साधना में विरत वात्सल्यमूर्ति आर्यिका माँ ज्ञानमती भारतभर में तीर्थ विकास कर, चाहे जन्मभूमियाँ हो अथवा तीर्थंकर निर्वाणभूमि, अद्वितीय जम्बूद्वीप जैसी बेमिसाल रचना या नंद्यावर्त महल आदि अनेकों रचनाएं, प्रान्तों में ही नहीं, भारत भर में महती धर्मप्रभावना कर रही हैं।

माताजी करुणा की मूर्ति हैं, गणिनी पद से तथा और भी अनेकों पदवियों से विभूषित ज्ञानमती माताजी अपने ज्ञान की ज्योति जलाकर सभी प्राणियों को प्रकाश देकर अंधेरों को दूरकर उजाले में ला रही हैं, ऐसी पूज्य माँ के चरणों में मैं मन-वचन-काय से त्रिकाल वंदामि करते हुए आशीर्वाद की प्राप्ति चाहती हूँ, जिस आशीर्वाद से हम सभी का कल्याण हो, उसी आशीर्वाद का अवलम्बन लेकर मैं भी माँ के पद चिन्हों पर चलकर उनके बताए हुए कार्यों को करने में संलग्न रह कर खूब धर्मप्रभावना करूँ, उनके स्वप्नों को साकार कर एक दिन स्वयं उन जैसी बन जाऊँ, ऐसी मेरी भावना है।

मैं एवं अ.भा.दि. जैन महिला संगठन एटा की समस्त कार्यकारिणी उनके चरणों में एक बार पुनः सादर सविनय विनयांजलि प्रेषित करते हुए अपने को अत्यधिक धन्य एवं गौरवशाली महसूस करते है। माताजी! स्वस्थ, निरोगी, चिरायु होकर समस्त जगती का कल्याण करतीं रहे, ऐसी मंगलभावनाएँ हैं। पूज्य माँ की 50वीं दीक्षा जयंती पर अर्पित विनयांजलि एवं शुभकामनाओं सहित-

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन-एटा (उ.प्र.)
बबिता जैन 'प्रेरणा', एटा (अध्यक्षा)

विनयांजलि

जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष 15 अप्रैल 2006 को पूर्ण हो रहे हैं। इस युग की प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी आर्यिका के रूप में प्रख्यात ज्ञानमती माताजी ने अनेक मुनि, आर्यिकाओं को क्लिष्ट ग्रंथों का अध्ययन कराकर त्याग, ज्ञान की ऊँचाईयों को प्राप्त कराया।

गुरुदेव से प्राप्त नाम के अनुसार आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने अपने जीवन में ज्ञानक्षेत्र में युग का इतिहास ही परिवर्तित कर दिया। ढाई हजार वर्ष के इतिहास में किसी आर्यिका के द्वारा रचित कोई साहित्य प्राप्त नहीं होता है किन्तु माताजी ने अष्टसहस्री, नियमसार, जैन भारती, ज्ञानामृत आदि छोटे-बड़े 200 ग्रंथों की रचना की है।

आर्यिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के गुणों का बखान करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। माताजी सहज, सरल, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, समताभावी, उपशांत मूर्ति व क्षमाशील हैं। जिनधर्म की प्रभावना व आत्म साधना में लीन रहती हैं। उनके चेहरे पर सदैव निश्छल वात्सल्ययुक्त मुस्कान झलकती रहती है।

ऐसी पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा की 50 वर्ष की सम्पूर्ति पर अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संगठन, शास्त्रीनगर-मेरठ इकाई, जिसकी स्थापना दिनाँक 24 नवम्बर को गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में हुई थी। महिला संगठन की समस्त कार्यकारिणी व सदस्याएँ माताजी के श्रीचरणों में शत-शत नमन करते हुए उनके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करते हैं। साथ ही यह भी कामना करते हैं कि पूज्य माताजी का वरदहस्त सदैव हमारे ऊपर बना रहे और उनके आशीर्वाद से हम निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर हों।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, शास्त्रीनगर-मेरठ

श्रीमती अर्चना जैन, शास्त्रीनगर-मेरठ (मंत्री)

नई सदी साथ लाई, त्याग मूर्ति को

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के दिव्य प्रथम दर्शन का सौभाग्य मुझे नई सदी की पूर्व संध्या में तब मिला, जब पूज्य माताजी "तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ" की प्रेरणास्रोत बनकर प्रयाग की धरती पर प्रथमबार पधारीं, तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों की उद्धारक पूज्य माताजी के साथ हम सभी 1 जनवरी 2001 को जब दीक्षास्थली तीर्थ की ओर चले तो मानो गंधोदक वृष्टि द्वारा देवों ने भी पूज्य माताजी का स्वागत किया। तीर्थ की तब तक दीक्षा भूमि क्रय करके निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका था एवं फरवरी में पंचकल्याणक की तिथि की घोषणा हो चुकी थी। पूज्य माताजी भगवान आदिनाथ के तपकल्याणक एवं केवलज्ञानकल्याणक की साक्षी उस भूमि पर पहुँचकर इतनी गद्‌गद् हुईं कि पूज्य माताजी ने जीरोरोड जैन मंदिर लौटने के विचार को रद्द करके घोषणा कर दी कि वह अब वही रहेंगी। हम सब उस त्याग, तपस्या की सौम्य मूर्ति को लख हतप्रभ एवं अचंभित थे न कोई आवास की व्यवस्था, न बिजली, पानी, चारों ओर मिट्टी ही मिट्टी, सीमेंट, बालू साथ में भयंकर सर्द दिन और रात, कैसे पूज्य माताजी यहाँ संघ सहित रहेंगी? लेकिन पूज्य माताजी का निर्णय अटल था और हम सभी उनके अपरिगृही व्यक्तित्व के आगे नतमस्तक थे। तब पूज्य माताजी के साथ कुछ समय बिताकर मैंने उनके सौम्य सरल व्यक्तित्व एवं त्यागमयी जीवन को थोड़ा सा जाना, वह मेरी स्मृति में सदैव अक्षीण रहेगा, पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर पूज्य माताजी को मेरा शत-शत वंदन।

-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन-प्रयाग (इलाहाबाद-उ.प्र.)

श्रीमती साधना जैन, इलाहाबाद (अध्यक्षा)

विनयांजलि

परमपूज्य माताजी इस शताब्दी की वह महिलारत्न हैं, जिन्होंने नारी जाति के इतिहास को बदल दिया है एवं स्वयं साहित्य सेवा में निरन्तर संलग्न रहती हैं। माताजी का जन्म ईसवी सन् 1934 वि.सं. 1991 की शरदपूर्णिमा के चाँद के रूप में हुआ। अवध प्रान्त में बाराबंकी जिले का टिकैतनगर ग्राम भी आज इस पुष्प सुगंधी के कारण प्रसिद्ध हो चुका है। सन् 1953 में आचार्य श्री देशभूषण जी से क्षुल्लिका दीक्षा धारण कर "वीरमती" नाम प्राप्त किया तथा 1956 में वैशाख कृ. दूज को चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में आर्यिका दीक्षा धारण कर "वीरमती" नाम प्राप्त किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरस्वती की इस साक्षात् प्रतिमा के प्रति मेरी तो जिनेन्द्र भगवान से यही प्रार्थना है कि आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी स्वस्थ रहकर भविष्य में भी समाज की धर्म साहित्य आवश्यकताओं की पूर्ति अपने कार्यकलापों से करती रहें ताकि हम जैसे अज्ञानी प्राणियों को लाभ प्राप्त होता रहे। पूज्य माताजी जिस तीर्थ को स्पर्श करती हैं, वह आकाश की ऊंचाईयों को छूने लगता है। यही कारण है कि अनेक तीर्थों सहित भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में बहुत कम समय में हुए विशाल निर्माणकार्य को देखकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं।

पुनः पूज्य माताजी के चरण कमलों में बारम्बार अभिवंदन करती हुई जिनेन्द्र प्रभु से यही प्रार्थना करती हूँ कि यह पुण्यधारा निरन्तर हम सबको सराबोर करती रहे।

अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, बोंली (राज.)
श्रीमती निमला जैन (अध्यक्षा)

विभिन्न तीर्थों की क्षेत्रीय कमेटियों द्वारा पूज्य माताजी के प्रति अर्पित विनयांजलियाँ

"अयोध्या तीर्थ का विकास वास्तव में चमत्कारिक हुआ है"

अनेक वर्षों से उपेक्षित और वीरान पड़ी अयोध्या को विकसित करने का और विश्व के क्षितिज पर पहुँचाने का श्रेय प्राप्त हुआ जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को।

सन् 1992 का चातुर्मास पूज्य माताजी का हस्तिनापुर में हुआ। वहाँ पर धनतेरस के दिन पूज्य माताजी ने ध्यान में अयोध्या के भगवान ऋषभदेव के दर्शन किए और उन्हें भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक कराने की भावना जागृत हुई। बस फिर क्या था, पूज्य माताजी ने अयोध्या जाने की ठान ली। यद्यपि उस समय श्री राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद के निमित्त से काफी हंगामा चल रहा था, फिर भी माताजी ने उसकी परवाह नहीं की।

तब तक अयोध्या को लोग श्रीराम जन्मभूमि के ही नाम से जानते थे, कोई उसे ऋषभदेव जन्मभूमि और अनन्त तीर्थंकरों की जन्मभूमि के नाम से नहीं जानते थे। पूज्य माताजी को हस्तिनापुर से अयोध्या की यात्रा कराने का श्रेय प्राप्त हुआ श्री छोटी शाह (प्रद्युम्न कुमार)-टिकैतनगर को और उन्होंने बहुत ही अच्छी व्यवस्था के साथ पूज्य माताजी को यात्रा कराई। माताजी का पहले अपनी जन्मभूमि टिकैतनगर में सन् 1993 का चातुर्मास करने का 99 प्रतिशत पक्का हो गया था, लेकिन जब माताजी अयोध्या पहुँची और वहाँ की स्थिति देखी, तो माताजी के आँखों से अश्रु निकल पड़े। उन्होंने यह मन में सोच लिया कि अब अयोध्या में रहकर यहाँ का विकास कराकर ही कहीं जाना है। इसके लिए टिकैतनगर के लोगों से काफी संघर्ष लेना पड़ा क्योंकि वे माताजी का चातुर्मास टिकैतनगर में कराने के लिए अड़े हुए थे। खैर! माताजी ने सभी को समझा-बुझाकर शांत कर दिया। अयोध्या में यात्री भी नहीं आते थे, कोई रहता भी नहीं था अतः वह परिसर भूतों का अड्डा बन गया था। कई लोगों ने डर भी दिखाया, माताजी यहाँ बहुत डर है, बिच्छू भी बहुत थे लेकिन माताजी ने अपने मंत्र जाप्य और तपस्या के द्वारा सारे भूत भगा दिए, बिच्छू भी चले गए। धीरे-धीरे वहाँ का वातावरण एकदम बढ़िया हो गया। भगवान ऋषभदेव के मस्तकाभिषेक की जोरदार तैयारी हुई। हजारों की संख्या में लोगों ने आकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभिषेक करने का, दर्शन का पुण्य लाभ लिया। इसकी सुगंधि पूरे देश में फैली और लोगों ने करोड़ों वर्ष प्राचीन भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि को जाना और घर बैठे भी नमन किया।

उस समय वहाँ पर माताजी ने एक तीन चौबीसी मंदिर और एक समवसरण मंदिर बनवाया। टोकों पर जीर्णोद्धार कराया। 24 तीर्थंकरों के, ब्राह्मी-सुन्दरी, भरत, बाहुबली, गणधरों के, सप्तऋषि आदि के चरण स्थापित कराए। ऋषभदेव टोंक पर कैलाशपर्वत की रचना बनवाई।

पुनः माताजी सन् 2005 में अयोध्या आईं और पुनः भगवान का महामस्तकाभिषेक हुआ। जिसका सीधा प्रसारण 'आस्था चैनल' के माध्यम से कई देशों में दिखाया गया। लोगों के फोन आने शुरू हो गए। उन्हें बहुत अच्छा लगा। अयोध्या की, जिनधर्म की खूब प्रभावना हुई। इस प्रकार देखा जाये, पूज्य माताजी ने जैन समाज पर जो उपकार किया है, उसे हम कभी भूल नहीं सकते।

आज खूब यात्री अयोध्या में आते हैं। भगवान का दर्शन करके और वहाँ की समुचित व्यवस्था देखकर खुश होते हैं। अब वहाँ पर आवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था हो गई है। कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी की अध्यक्षता में अयोध्या की व्यवस्था सुचारूरूप से चल रही है।

पूज्य माताजी के स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर हम सभी तीर्थक्षेत्र कमेटी अयोध्या के लोग माताजी के प्रति विनयावनत होते हुए अपनी विनयांजलि अर्पित करते हैं और भगवान जिनेन्द्र से यह प्रार्थना करते हैं कि माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों और इसी तरह से समय-समय पर अयोध्या में पधारकर उसके विकास की प्रेरणा प्रदान करती रहें। माताजी के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन।

-श्री दि. जैन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी
सरोज कुमार जैन (महामंत्री)

तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ की प्रेरिका

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जहाँ भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या का विकास कराया, वहीं उनकी तपोभूमि एवं केवलज्ञानकल्याणक से पवित्र भूमि प्रयाग को भी विकसित कर उसकी प्राचीनता एवं भव्यता से परिचित कराया।

जिस भूमि पर आज से करोड़ों वर्ष पूर्व भगवान ऋषभदेव ने अपना प्रथम केशलोंच किया, जिस भूमि पर प्रथम बार भगवान का समवसरण बना, जिस भूमि पर प्रथम बार ब्राह्मी, सुन्दरी ने केशलोंच कर दीक्षा ग्रहण की, जिस भूमि पर भगवान ऋषभदेव के 100 पुत्रों ने दीक्षा ग्रहण की, वह भूमि परमपवित्र, पावन रही है। इस भूमि का कण-कण पवित्र है।

आज भी वह वटवृक्ष, जिसके नीचे भगवान ऋषभदेव ने दीक्षा ली, केशलोंच किया, प्रयाग में अक्षय वटवृक्ष के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त है। उस वटवृक्ष की शाखाएँ-प्रतिशाखायें आज भी मौजूद हैं। वर्तमान में वह स्थल मिलिट्री के अण्डर में है, जिसे देखने के लिए देश-विदेशों से यात्रीगण जाते हैं।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी भी उस अक्षय वटवृक्ष को देखने गईं और वहाँ पर भगवान ऋषभदेव के चरण स्थापित कर उनका अभिषेक-पूजन कराया। जन-जन के आराध्यदेव भगवान ऋषभदेव आदिम बाबा के नाम से जाने जाते हैं। प्रयाग में प्रतिवर्ष महाकुंभ मेला लगता है, जिसमें करोड़ों यात्री प्रयाग जाते हैं और संगम स्नान के साथ-साथ भगवान ऋषभदेव की विशालमूर्ति का दर्शन करके हर्षित होते हैं और अपनी मुरादें पूरी करते हैं। इस स्थल पर अनेक लोग आ करके अपने बच्चे का मुंडन संस्कार कराते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम सौभाग्यशाली हैं, जो हमें इस तीर्थ की सेवा करने का छोटा सा अवसर प्राप्त हो रहा है।

इस प्रकार से पूज्य माताजी ने जैन समाज को एक प्राचीन तीर्थ प्रदान किया है, जिसका उपकार जैन समाज कभी भूल नहीं सकती। ऐसी माताजी के 50 वर्ष के दीक्षित जीवन में उनकी स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर माताजी के दीर्घ जीवन की भगवान से प्रार्थना करते हुए उनके प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित करते हैं और पुनः पुनः माताजी के चरणों में नमन करते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं, जो हमें इस तीर्थ की सेवा करने का छोटा सा अवसर प्राप्त हो रहा है।

-भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद
इंजीनियर आर.के. जैन (मंत्री)

चलो कुण्डलपुर चलना है

जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर शासनपति भगवान महावीर स्वामी ने आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व कुण्डलपुर में जन्म लिया था, यह बात सभी लोग जानते हैं क्योंकि हम सभी लोग रोज शाम को भगवान महावीर स्वामी की आरती में पढ़ते हैं "कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो" परन्तु पता नहीं क्या कारण रहा कि उन त्रिशलानन्दन की जन्मभूमि उपेक्षित रह गई! वहाँ कई वर्षों से मात्र एक छोटा सा मंदिर था, उसको विस्तृतस्वरूप प्रदान करने की बात किसी ने नहीं सोची!

सन् 2001 में भगवान महावीर स्वामी के 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव में जब सारी दुनिया भगवान महावीर से संबंधित अनेकानेक छोटे-बड़े कार्यक्रमों का आयोजन कर रही थी, उस समय पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस समसामयिक कार्य को करने की योजना बनाई और उन्होंने मात्र योजना ही नहीं बनाई अपितु स्वयं पदविहार करके उस तीर्थ पर पहुँचीं। मात्र एक-डेढ़ वर्ष के अल्प समय में ही तीर्थ का जो विकसित स्वरूप देश और समाज के समक्ष आया है, वह किसी से छिपा नहीं है। यह हम सभी का परम सौभाग्य है कि हमने अपने जीवनकाल में इस तीर्थ को मूल से लेकर चूल तक बनाया है।

पूज्य माताजी के समक्ष कई बार भक्तगण आकर कह देते कि माताजी! आपने इतने कम समय में इतने सुन्दर तीर्थ का निर्माण करा दिया, तब पूज्य माताजी अत्यन्त निस्पृहतापूर्वक यही जवाब देतीं कि भैय्या! हमने कुछ नहीं किया है, यह सब तो कमेटी के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने परिश्रमपूर्वक निर्माण कराया है, मैं तो मात्र प्रेरणा दे देती हूँ।

उनकी इस निस्पृहवृत्ति को देखकर मन उनके प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता कि बिना प्रेरणा एवं आशीर्वाद के हम लोग तो कुछ भी नहीं कर सकते थे।

वास्तव में पूज्य माताजी की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उनके द्वारा किया गया प्रत्येक समसामयिक होता है। अगर इस 2600वें जन्मोत्सव में इस कुण्डलपुर तीर्थ का विकास न होता, तो शायद कभी नहीं हो पाता।

वर्तमान में पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर हम सभी पदाधिकारीगण पूज्य माताजी के चरणों में कोटि-कोटि नमन करते हुए उनके प्रति हार्दिक विनयांजलि समर्पित करते हैं तथा उनके दीर्घजीवन की वीरप्रभु से मंगल कामना करते हैं।

-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति
कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर विशेष उपलब्धि

"राम हनू सुग्रीव सडील, गव गवाख्य नील महानील।
कोडि निन्यानवे मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वन्दौ धर ध्यान।।"

श्री राम, हनुमान, सुग्रीव, सुडील, गव, गवाक्ष, नील, महानील आदि निन्यानवे करोड़ मुनियों की निर्वाणभूमि मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी का चातुर्मास सन् 1996 में हुआ।

उसके पूर्व मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी विराजमान थीं। आज भी माताजी संघ सहित यहाँ विराजमान हैं। काफी समय से वहाँ पर आचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज की प्रेरणा से निर्मित विशाल मंदिर में विराजमान होने वाली भगवान मुनिसुव्रतनाथ की विशाल प्रतिमा का निर्माण नहीं हो पा रहा था एवं 24 तीर्थंकरों की 24 प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा नहीं हो पा रही थी। पूज्य श्रेयांसमती माताजी बराबर माताजी को पत्र डालती रहीं कि माताजी आप जैसी दिव्य शक्ति के द्वारा ही यहाँ आचार्यश्री श्रेयांससागर महाराज का अधूरा सपना पूर्ण हो सकता है अतः आपसे प्रार्थना है कि आप ससंघ मांगीतुंगी अवश्य पधारें। यहाँ आकर के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा निर्विघ्न सम्पन्न कराएं।

यद्यपि रास्ता लम्बा था। माताजी का इतना स्वास्थ्य नहीं था, फिर भी माताजी ने हिम्मत करके भगवान की भक्ति के बल पर, आर्यिका श्रेयांसमती माताजी एवं मांगीतुंगी ट्रस्ट कमेटी के विशेष आग्रह पर 27 नवम्बर 1995 को मांगीतुंगी के लिए विहार कर दिया। रास्ते में अनेक जैन स्थानों पर पूज्य माताजी ने अनेक निर्माण योजनाएं दीं एवं काफी जैनधर्म की प्रभावना हुई।

5 माह तक निरन्तर चलने के बाद मांगीतुंगी पहुँच कर पूज्य माताजी ने वहाँ की स्थिति का अवलोकन किया। मंत्र जाप्य, अनुष्ठान आदि एवं तपस्या की शक्ति से उस क्षेत्र का वातावरण पवित्र किया। मांगीतुंगी में जल की बहुत कमी थी अतः यह समस्या थी कि जल के बिना कार्य कैसे चलेगा। तब माताजी ने मंत्र पढ़कर कुँए में जल डाला फिर क्या जल ही जल हो गया और माताजी के वहाँ पहुँचते ही यात्रियों का तांता लग गया और सभी कार्यकर्ता सक्रिय होकर कार्य में जुट गये।

पहले लोग जिसका नाम भी ठीक से नहीं जानते थे, कोई कहता यह मांगातुंगा कौन सा पर्वत है, कहाँ है, हमने तो अभी तक नाम ही नहीं सुना। लेकिन माताजी के पहुँचते ही वहाँ चमत्कार जैसा हो गया। पंचकल्याणक की तिथि घोषित हो गई। मई 1996 में वहाँ बहुत ही धूमधाम से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा निर्विघ्न सम्पन्न हुई। वहाँ पर सहस्रकूट की खड्गासन 1008 प्रतिमाएँ भी प्रतिष्ठित हुई थीं, उनके विराजमान होने की समस्या थी, तब माताजी ने अपने विशिष्ट ज्ञान से 108 पंखुडियों का एक कमल बनवाया, जिसमें एक-एक पंखुड़ी पर 10-10 प्रतिमा विराजमान कराके, एक नूतन कमल मंदिर का निर्माण अल्प समय में कराकर भगवान विराजमान कर दिए।

मांगीतुंगी में माताजी के चातुर्मास से पूरी महाराष्ट्र जैन समाज ने आकर खूब लाभ लिया। अनेक मण्डल विधान के आयोजन हुए। शिविर-संगोष्ठियाँ भी सम्पन्न हुईं। इसके साथ ही माताजी ने आस-पास गाँवों मालेगांव, सटाणा आदि में विहार कर लोगों को काफी धर्मलाभ प्रदान किया।

मांगीतुंगी में एक और विशेष उपलब्धि पूज्य माताजी के ध्यान से प्राप्त हुई। भगवान ऋषभदेव की 108 फुट की मूर्ति पहाड़ में पूर्व दिशा की ओर मुख करके निर्मित हो, यह ध्यान में चिंतन आया।

जब माताजी ने सभी को इस बारे में बताया तब लोगों के हर्ष का पार न रहा। क्योंकि अभी तक भारत में इतनी बड़ी दिगम्बर जैन मूर्ति नहीं है। श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली की 57 फुट ऊँची मूर्ति है। बावनगजा में भगवान ऋषभदेव की 52 गज (84 फुट) ऊँची मूर्ति है, लेकिन मांगीतुंगी में बनने वाली यह सबसे बड़ी मूर्ति रहेगी।

वर्तमान में पूज्य माताजी की प्रेरणा से उस विशाल मूर्ति के निर्माण का कार्य चल रहा है। पहाड़ पर हजारों ट्रक पत्थर कांटा-छांटा जा चुका है और मूर्ति का निर्माण कार्य प्रगति पर है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्ति निर्माण कमेटी के सभी कार्यकर्ता पूज्य माताजी से यह प्रार्थना करते हैं कि माताजी ऐसा आशीर्वाद दें कि शीघ्र ही मूर्ति बनकर तैयार हो जाये। हम सब आपकी भावना को शीघ्र ही साकार कर सकें.......आदि।

पूज्य माताजी के 50 वर्ष के दीक्षित जीवन में उनकी कठोर तपश्चर्या एवं उनका ब्रह्मचर्य का तेज देखकर हम सभी बहुत ही हर्षित हैं। जैन समाज पर माताजी के अनन्य उपकार हैं। हम लोगों को आगे आप जैसी प्रेरणा और मार्गदर्शन देंगी कमेटी हमेशा करने के लिए कृतसंकल्प रहेगी। हम सभी माताजी के दीर्घ जीवन की कामनाएं करते हुए उनके स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर अपनी विनयांजलि समर्पित करते हैं और यह भावना करते हैं कि आप इस मूर्ति की प्रतिष्ठा अपने सानिध्य में सम्पन्न करावें।

-भगवान ऋषभदेव 108 फुट विशालकाय मूर्ति निर्माण कमेटी

अध्यक्ष-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन (जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर)

महामंत्री-डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल (पैठण-महाराष्ट्र)

विनयांजलि

दिगम्बर जैन समाज में पौराणिक इतिहास से लेकर गणिनी आर्यिका परमपूज्य बहुश्रुतवंत श्री ज्ञानमती माताजी जैसी मौलिक और अनुवादक विदुषीरत्न आज तक नहीं हुई।

धर्म साम्राज्य नामक भगवान महावीर के पहले कभी भी पुराणों में ये उल्लेख नहीं मिलता कि कभी किसी विदुषीरत्न ने कोई ठोस रचना की हो।

लेकिन बहुश्रुतवंत तथा तत्त्वज्ञान की प्रखर ज्ञाता और अपने कम्प्यूटराइज्ड मस्तिष्क से छोटी-बड़ी सैकड़ों रचनाएं आबाल-वृद्ध के लिए कल्याणकारी जितनी पूज्य माताजी ने प्रस्तुत किए हैं और किसी ने नहीं।

गोम्मटसार जीवकाण्ड और कर्मकाण्ड की अनुवादिका पूज्य आदिमती माताजी जो हमारे चंबल क्षेत्र में ही अजमेर से आई थीं, वो भी ज्ञानमती माताजी की परम शिष्या हैं।

जब माताजी दिल्ली के पास हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना की प्रेरणा कर रही थीं, तब मैं उनके दर्शनार्थ पहुँचा था, वे अष्टसहस्री का अनुवाद कर रही थीं और आदिमती माताजी को पढ़ा रही थीं।

उन्होंने बड़े मंदिर में रहकर जम्बूद्वीप की रचना के प्लान बनाए। उस समय माताजी ने कई शिविर लगाए। एक शिविर ऐतिहासिक हुआ, जिसमें श्री बाबुलाल जमादार संयोजक थे और गुरुदेव पं. मक्खनलाल जी शास्त्री-मुरैना, पं. मोतीचंद जी कोठारी-फलटण (महाराष्ट्र) और अनेकों मूर्धन्य विद्वान उपस्थित थे। हम भी उस सभा में निरन्तर मौजूद रहे।

उल्लेखनीय बात ये है कि जहाँ चारों ओर खेत ही खेत थे, वहाँ आज वृन्दावन गार्डन मैसूर के बाद जम्बूद्वीप का ही नाम आता है, जो विदेशी पर्यटकों का भी दर्शनीय केन्द्र बना हुआ है।

ये संयोग की बात है कि माताजी की गृहस्थावस्था की माँ भी आर्यिका थीं, इनकी बहनें भी आर्यिका हैं, विद्वान हैं। साथ ही ब्रह्मचारी रवीन्द्र कुमार जैसा कर्मठ और कौशल कर्मयोगी भाई मिला।

माताजी का कार्यक्षेत्र केवल हस्तिनापुर ही नहीं है बल्कि अपने बड़े-बड़े अन्वेषणों के तहत प्रयाग-इलाहाबाद में भगवान आदिनाथ की दीक्षास्थली भी अपनी प्रेरणा से निर्मित करा दिया है और प्रयाग भी जैनों का तीर्थ बन गया है।

भगवान महावीर की जन्मस्थली कुण्डलपुर भी अभी तक जीर्णशीर्ण था, उसका दर्शनीय विकास करवा दिया।

माताजी स्वयं एक विशाल ग्रंथरूप हैं, उनकी दीक्षा की स्वर्ण जयंती अप्रैल में मनाई जा रही है। वास्तव में वे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन समाज की ही नहीं अपितु समूचे देश की अन्यतम विभूति हैं और उनका नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। इसमें कोई संदेह नहीं है। इस सुअवसर पर हम उनकी सेवा में यह शब्द पुष्पांजलि समर्पित करते हुए उनको शत-शत वंदन, अभिनंदन करते हैं और उनके दीर्घ आयु की कामना करते हैं।

-श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सिहोनियां जी (मुरैना) म.प्र.

सुमतिचंद्र शास्त्री-मोरैना (अध्यक्ष)

अब काकन्दी की बारी है

जैन आगम में वर्णित पंचपरमेष्ठी में प्रत्यक्ष साधु परमेष्ठी, प्रातः स्मरणीय, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न, श्री ज्ञानमती माताजी निर्विवादरूप से इक्कीसवीं सदी की सर्वश्रेष्ठ साध्वी हैं, उनके चरणों में नमोस्तु! असीम ज्ञान एवं ध्यान से परिपूर्ण, साधना के पचास वर्षों में, श्री ज्ञानमती माताजी ने एक सच्चे पथ प्रदर्शक के रूप में अपनी लेखनी से, चारों अनुयोगों से संबंधित ग्रंथों की टीकाएँ सृजित कर, दिशा भ्रमित जैन धर्मावलम्बियों को जैनदर्शन का सम्यक् बोध कराकर सही दिशा प्रदान की है।

यह सर्वविदित है कि वर्ष 1982 में जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति प्रवर्तन के साथ ही तीर्थक्षेत्र के विकास का संकल्प लिया गया। पूज्य माताजी के आशीर्वाद से सर्वप्रथम हस्तिनापुर तीर्थ क्षेत्र पर जम्बूद्वीप का निर्माण कर, जैनधर्म प्रभावना का सराहनीय कार्य किया गया। शनैः शनैः परमपूज्य माताजी ने तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों को विकसित करने तथा जैन धर्मायतनों एवं संस्कृति-संरक्षण हेतु प्रेरणा प्रदान की। परमपूज्य माताजी की अनुकम्पा एवं धर्मप्रभावना से चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मकल्याणक भूमि कुण्डलपुर पर विकास एवं नवीन मंदिर 'नंद्यावर्त' का निर्माण इस दिशा में मील का पत्थर है, जो सदियों तक आने वाली पीढ़ी को जैनदर्शन की ओर आकृष्ट करने में महत्वपूर्ण योगदान करेगा। यह मेरा परम सौभाग्य ही है कि गोरखपुर नगर में जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति प्रवर्तन के संयोजक का कार्य कर मैंने सुखद अनुभव की अनुभूति की है।

पिछले वर्ष माताजी के 49वें दीक्षा दिवस पर महमूदाबाद में हमें उनके चरणों में स्थान मिला और आशीर्वादस्वरूप नवें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी पर नवीन मंदिर के निर्माण की स्वीकृति पुनः सुखद अनुभव है। अति उत्साहित मन 15 अक्टूबर 2005 को परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में पुष्पांजलि अर्पित करने हस्तिनापुर पहुँचा। इस बार न केवल मैं उनके आशीर्वाद से धन्य हुआ, वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष का जैन समाज प्रफुल्लित हो गया। माताजी ने अपने संयम दिवस 17 अक्टूबर 2005 को काकन्दी तीर्थक्षेत्र पर नवीन मंदिर निर्माण की घोषणा कर दी। तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने 20 नवम्बर 2005 को अपने निर्देशन में दिल्ली के श्रेष्ठी राजकुमार जी एवं धर्मपत्नी आशा जैन से मंदिर की आधारशिला रखवाकर कार्य प्रारंभ करा दिया है।

वैशाख कृष्ण द्वितीया का दिन जैन दर्शन के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होगा और आने वाले समय की साध्वी, वर्तमान युग की प्रणेता, आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के जीवन दर्शन से प्रेरणा प्राप्त कर धर्म प्रभावना का कार्य करेंगी, ऐसा विश्वास है।

-श्री कहाऊँ दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र

डॉ. अभयकुमार जैन, गोरखपुर (महामंत्री)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देश के अन्य विशिष्ट महानुभावों/श्रेष्ठियों एवं भक्तजनों द्वारा प्रेषित भक्ति पुष्प

मंगल संदेश

हमें यह जानकर नितांत प्रसन्नता हुई कि परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस मंगलमय अवसर पर एक गौरव ग्रंथ का समर्पण किया जाना भी परम श्लाघनीय पुनीत कार्य माना जायेगा।

भगवान श्री महावीर जी की मंगलमय वाणी पर आधारित धर्म के संदेश की माता के समान बच्चों को हितकारी तौर पर कोई नहीं समझा सकते। हर माता के मन में जो ममता रहती है, वह बच्चे की भलाई के लिए ही होती है, बच्चे के स्वास्थ्य के लिए होती है, बच्चे के उज्ज्वल भविष्य की कामना से युक्त होती है तथा बच्चे का सर्वांगीण विकास ही वांछित रहता है। बच्चे के स्वास्थ्य लाभ के लिए कडुई दवा भी माता पिलाती है। यद्यपि बच्चा इस कटु औषध को पिलाने पर खुशी से स्वीकार नहीं करता, फिर भी माता इस विचार को भलीभांति जानती है कि रोग निवारण में यह दवा पूर्णतः उपयोगी है। उसी कारण से माता बच्चे के मुँह में इस उपयुक्त एवं स्वास्थ्यवर्धक दवा को पिलाती है।

जैसे इस संसार की समस्त समस्याओं से माता अपने बच्चे की रक्षा करती है, उसी प्रकार से परमपूज्या श्री ज्ञानमती माताजी ने सारे संसार की जनता को अपने बच्चों के समान मानकर उनकी भलाई के अनेक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किये हैं। इहलोक एवं परलोक के लिए आवश्यक स्वास्थ्य, सुख-सुविधा एवं शाश्वत सत्य व मुक्ति की प्राप्ति के पथ पर मार्गदर्शन देती रहती है। जब हम उनके सानिध्य में बैठते हैं, तब हमें महान माताजी की पुनीत ममता के अनिर्वचनीय आनंद का अनुभव होता है। जब हम उनकी बातें सुनने लगते हैं तो प्रेम की गंगा बहा करती है। इस प्रकार से निरंतर पचास वर्षों से सारे भारतवर्ष के लाखों श्रावक-श्राविकाओं को "आकाशदीप" बनकर माताजी ने मार्गदर्शन दिया है। आपने अनेक अमूल्य अर्थपूर्ण ग्रंथों की रचना करके प्रकाशित किया तथा पाठकों के हाथों में ज्ञान का दिया पहुँचा दिया। माता कुछ दूर तक अपने बच्चे को चलने की प्रेरणा देती है, चलने का प्रशिक्षण देती है, उसके बाद उठते, गिरते, फिर उठते चलने में बच्चे की मदद करती है तथा बच्चे के मन में जान फूंकती है। परमपूज्य माताजी ने भारत के आस्तिक समाज को इसी प्रकार से मार्गदर्शन दिया है।

आजकल सारे राष्ट्र में माताजी का महिमापूर्ण प्रभाव सर्वत्र व्याप्त है। आपका एक वाक्य सब कुछ कर सकता है। इतना ही नहीं, आपके आदेश पर आपके श्रद्धालु लोग आपकी सेवा के लिए तत्पर हो जायेंगे।

इस प्रकार से सारे भारत वर्ष में अपूर्व ज्ञान की गंगा बहाने वाली परमपूज्या गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन सानिध्य में हम अपनी ओर से तथा अपने परिवार के सदस्यों की ओर से शतशः 'नमोस्तु-नमोस्तु' समर्पण कर रहे हैं।

-डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े, धर्मस्थल (कर्नाटक)

कल्याणकभूमियों के विकास का प्रयास अनुकरणीय

जैन जगत की वरिष्ठतम साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होना प्रसन्नतादायक है। आपने बहुजनोपयोगी वैविध्यपूर्ण साहित्य का सृजन कर अनुपम कार्य किया है।

हमारी नई पीढ़ी प्रथमानुयोग के ग्रंथों का स्वाध्याय न करने के कारण धर्मविमुख होती जा रही थी। हर व्यक्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को द्रव्यानुयोग की चर्चा नहीं सुनाई जा सकती। न तो यह उपादेय है और न शक्य। पूज्य माताजी ने प्राचीन पुराणों से प्रामाणिक रूप से कथानकों का संकलन कर सुबोध शैली में उपन्यासों, नाटकों एवं कथा संग्रहों का सृजन किया। बच्चों एवं महिलाओं हेतु रचित उनका साहित्य अत्यन्त लोकप्रिय है, इस साहित्य से बालकों एवं किशोरों की धर्म के प्रति रुचि बढ़ी है, यह बहुत बड़ी सफलता है। पूज्य माताजी ने यह कार्य कर समाज पर बड़ा उपकार किया है।

लगभग एक दशक पूर्व तक मात्र अष्टान्हिक पर्वों में सिद्धचक्र विधान एवं यदा-कदा चतुर्विंशति विधान, पंचपरमेष्ठी विधान की बात सुनाई देती थी किन्तु आज इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, जम्बूद्वीप, तीन लोक आदि विधानों की यत्र-तत्र सर्वत्र धूम मची है। स्वयं मैंने कुछ वर्ष पूर्व इन्द्रध्वज विधान का अपने निवास पर आयोजन किया था, उस समय इस विधान में निहित विषयों की प्रामाणिकता, गाम्भीर्य, लयात्मकता, प्रवाह से मैं अभिभूत हुआ।

विगत 25-30 वर्षों में आपने भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की जन्मभूमि-हस्तिनापुर, भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि-अयोध्या, सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी, महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर, ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग तथा भगवान पुष्पदंतनाथ जी की जन्मभूमि काकन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नये तीर्थों के विकास के स्थान पर कल्याणक भूमियों के जीर्णोद्धार विकास का आपका प्रयास अनुकरणीय है।

दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर मैं आपके चरणों में वंदना करता हूँ एवं आपके रत्नत्रय के निरन्तर वृद्धिंगत होने की कामना करता हूँ।

-देवकुमार सिंह कासलीवाल, इंदौर

(परम संरक्षक-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी)

साधु सेवा महान पुण्योदय का द्योतक है

साधु संतों की अजस्र प्रवाहमान धारा में बीसवीं शताब्दी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज जिस प्रकार शताब्दी के समस्त मुनिराजों में शिरमौर रहे हैं और जिन-जिनने उनकी येन-केन प्रकारेण सेवा की है, वह प्राणी सौभाग्यशाली एवं स्तुत्य बने हैं। ठीक उसी प्रकार बीसवीं शताब्दी में कुवाँरी कन्याओं के लिए त्यागमार्ग को प्रारंभ करने वाली, जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी समस्त आर्यिका माताओं में शिरमौर हैं और उनका चरण सानिध्य प्राप्त करने वाला, उनकी तिल-तुष मात्र भी सेवा-सुश्रूषा करने वाला महान सौभाग्यशाली है, जिनके त्याग का प्रतिफल आज हजारों की संख्या में विद्यमान सुकुमारी, बाल ब्रह्मचारिणी आर्यिका माताएँ हैं।

हम स्वयं को महान सौभाग्यशाली समझते हैं कि हमें उन विश्वविभूति पूज्यनीया माताजी के संघ की कुछ सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह सौभाग्य हमको ही मिलना हमारे संसार संतति के शीघ्र छेदन एवं अनन्त जनमों के संचित पुण्य परमाणुओं के एक साथ उदय में आने का ही द्योतक है। इस संघ की सेवा करते हुए हमने संघपति के रूप में मांगीतुंगी, कुण्डलपुर, सम्मेदशिखर आदि यात्राओं के मध्य माताजी की आगम चर्या, उनके त्यागमयी-वैराग्यमयी जीवन, उनका निर्दोष चारित्र, प्रतिक्षण तीर्थंकर भगवन्तों एवं उनकी कल्याणमयी वाणी के प्रचार-प्रसार में स्वयं संलग्न रहना तथा संघस्थ सभी शिष्य-शिष्याओं को संलग्न रखना, आदि जो विशेषताएँ नजदीकी से देखी हैं, वह अन्य किसी साधुओं में मिल पाना शायद कठिन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझे अत्यन्त गौरव है कि पूज्य ज्ञानमती माताजी ने मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर्वत पर भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उत्तुंग प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा प्रदान कर जैन समाज पर महान उपकार किया है। हमें सर्वप्रथम 3 मार्च 2002 को उसकी शिलापूजन करने की प्रेरणा देकर हम लोगों को अपना विशेष भक्त माना, उनका यह उपकार हम कभी नहीं भूल सकते हैं। यह मूर्ति जिस दिन बनकर पूरी होगी, वह दिन तो सचमुच ऐतिहासिक दिवस के रूप में विश्व के मानस पटल पर अंकित हो जाएगा। पूज्य माताजी हमारी माँ भी हैं और परमगुरु भी हैं। सादा जीवन, उच्च विचार की सूक्ति को यह संघ चरितार्थ करता है। सादा भोजन और इतने महान कार्य देखकर आश्चर्य होता है। जब कभी माताजी के रूखे-सूखे नीरस आहार को देखकर इस संबंध में माताजी से पूछा, तो वे सदैव कहती हैं कि गाय माता की तरह सूखा भोजन खाकर मीठा दूध रूप सदैव ज्ञानामृत प्रदान करते हुए जिनशासन की सेवा करना ही साधु जीवन है, शरीर तो भव-भव में मिलता है अतः इसकी परवाह न कर जिनशासन की हर क्षण हम जितनी सेवा कर लें, कम है। वास्तव में ऐसी माताजी धन्य हैं और इनका पूरा संघ धन्य है, वंदनीय है, अभिवंदनीय है।

उनके दीक्षागुरु भी वास्तव में बहुत महान थे, जिन्होंने इन्हें माधोराजपुरा में आर्यिका दीक्षा देकर एक कीर्तिमान स्थापित किया। मुझे जानकर यह प्रसन्नता है कि उस दीक्षास्थली को वहाँ के लोग तीर्थ के रूप में विकसित कर रहे हैं। वहाँ भी मेरे परिवार की ओर से भगवान पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा विराजमान कराने का हमें लाभ मिल रहा है यह सौभाग्य की बात है। इसी प्रकार माताजी हम लोगों को सदैव धर्ममार्ग में लगाती रहें यही आशीर्वाद की आकांक्षा है।

माताजी वात्सल्य की मूर्ति हैं, इतने महान कार्यों को करने के बाद भी सदैव निश्छल मुस्कान प्रत्येक आगन्तुक प्राणी के लिए आगे बढ़ने का मुख्य संबल है। हमारे पूरे परिवार को माताजी और उनके संघ से जो वात्सल्य मिला है, उसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता है। आज हमारे पास जो कुछ भी है, सब पूज्य माताजी के आशीर्वाद से है। उनकी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर यही भावना और वीरप्रभू से यही प्रार्थना है कि हम स्वर्ण जयंती की भांति ही पूज्य माताजी की हीरक जयंती मनावें, वे दीर्घायु हों और सिद्धशिला तक पहुँचने तक सदैव उनका सानिध्य हमें मिलता रहे।

-महावीर प्रसाद जैन (संघपति) एवं श्रीमती कुसुमलता जैन,
साउथ एक्स.-दिल्ली

पूज्य माताजी पारसमणि हैं

कहते हैं कि पारस पत्थर को जब लोहे से स्पर्श कराया जाता है, तो वह सोना बन जाता है। पर पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी तो उस पारस के समान हैं, जो लोहे को सोना ही क्या पारस बना देती हैं। आपने अनेक शिष्यों को संसाररूपी कीचड़ से निकालकर संयम और त्यागमार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्हें शास्त्रों का अध्ययन करवाकर ज्ञानरूपी अमृत का पान कराया। फलस्वरूप आज अनेक शिष्य, आचार्य, मुनि-आर्यिका आदि पदों पर प्रतिष्ठित होकर धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। जिस प्रकार अतिप्राचीन प्रतिमाएँ चमत्कारिक हो जाती हैं, उनके सामने जो भी भक्त अपनी मनोकामनाएँ प्रगट करता है, दीपक जलाता है, पूजन करता है, वह पूर्ण हो जाती हैं, उसी प्रकार पूज्य माताजी ने अपने 50 वर्ष के दीर्घ दीक्षित जीवन में ज्ञान, चारित्र और तपस्या से अपने को कुन्दन बना लिया है। जो भी भक्त इनका साक्षात् चरण सानिध्य प्राप्त करते हैं, इनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, उनके मनोरथ पूर्ण होते हैं। बड़े-बड़े संकटों का निवारण हो जाता है, ऐसे अनेक उदाहरण देखने में आए हैं, अध्यात्म एवं ब्रह्मचर्य का तेज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमेशा इनके मुख पर प्रतिभासित होता है। स्वयं मैंने अपने जीवन में माताजी का नाम लेने मात्र से अनेक संकटों का निवारण होते देखा है। मैं सन् 1972 से पूज्य माताजी का भक्त हूँ और हमारे पूरे परिवार पर इनका वरदहस्त शुरू से रहा है। इनकी प्रेरणा से हमारे घर में चैत्यालय भी है अतः सभी बच्चों में दर्शन-पूजन के संस्कार अच्छे हैं। इनकी कृपाप्रसाद से हम लोगों को जहाँ अनेक तीर्थों के दर्शन हुए हैं, वहीं उन तीर्थों पर अपनी शक्ति के अनुसार कुछ निर्माण आदि कराने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है।

सन् 2001 में आयोजित विश्वशांति महावीर विधान के विराट महोत्सव में 26 मण्डल विधानों में से मुझे प्रथम मण्डल का प्रमुख यजमान कुण्डलपुर के महाराजा सिद्धार्थ और मेरी पत्नी को महारानी त्रिशला का पद प्रदान कर माताजी ने कृतार्थ कर दिया। उस पर चढ़ाये गये 2600 रत्नों का मैं पुण्य प्रभाव ही मानता हूँ कि भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में भी मुझे कीर्तिस्तंभ बनाने का श्रेय प्राप्त हो गया। वस्तुतः ऐसी तेजोमयी प्रतिभा का दर्शन व चरण सामीप्य प्राप्त करने वाला बड़ा ही सौभाग्यशाली होता है। मैं और मेरा परिवार बड़ा ही सौभाग्यशाली है जो सर्वप्राचीन दीक्षित पूज्य माताजी का वात्सल्यपूर्ण मार्गदर्शन व स्नेहिल आशीर्वाद हमें हर पल हर क्षण प्राप्त होता रहता है। ऐसी पूज्यनीय माताजी के स्वर्णिम दीक्षा जयंती महोत्सव पर उनके चरणों में कोटिशः वंदन करते हुए यही इच्छा है कि इनकी चमत्कारिक दीक्षाभूमि माधोराजपुरा (राज.) में दीक्षा तीर्थ का सुन्दर निर्माण हो, मेरे परिवार की ओर से पूज्य माताजी का दीक्षा स्वर्णिम कीर्तिस्तंभ भी निर्मित होवे। उस दीक्षा भूमि को भावपूर्वक नमन करके लेखनी को विराम देता हूँ।

-कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली
एवं समस्त परिवार

संस्कृति की संरक्षिका पूज्य माताजी

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की सन्निकटता प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे तब मिला, जब पूज्य माताजी की प्रेरणा से दिल्ली में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान का विराट आयोजन रिंग रोड पर हो रहा था, उस समय माताजी द्वारा प्राप्त प्रेरणा से उस महाविधान में भरत चक्रवर्ती बनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसे मैं कभी विस्मरण नहीं कर सकता हूँ। उस विधान में मुझे जो अनिर्वचनीय आनन्द आया है, वह शब्दों में वर्णित करना असंभव है। उस समय अधिक से अधिक समय धर्माराधना के साथ माताजी के निकट बिताये, तब मैंने जाना कि वास्तव में माताजी वात्सल्य की प्रतिमूर्ति हैं और मात्र अल्प शब्दों में अत्यन्त सारभूत एवं गूढ़ विषयों का दिग्दर्शन कराकर भूले-भटके प्राणियों को सन्मार्ग में लगा देती हैं। इसी प्रकार सन् 2000 में हम लोग माताजी के आशीर्वाद से भाई श्री रवीन्द्र जी के साथ श्री वी. धनंजय कुमार जैन की प्रेरणानुसार वेणूर (कर्नाटक) में भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक करने हेतु गये। वे पावन क्षण भी मेरे जीवन में अमिट बन गये।

अपनी लेखनी के द्वारा सतत ज्ञान आराधना करते हुए पूज्य माताजी ने जहाँ अनेक भव्य जीवों को प्रेरणा प्रदान कर धर्ममार्ग पर लगाकर उन्हें चेतन तीर्थ स्वरूप बनाया, वहीं भगवान की भक्ति के वशीभूत होकर अचेतन तीर्थों के पुनरुद्धार एवं नवनिर्माण कराकर संस्कृति के संरक्षण का महान कार्य भी किया है, जिनमें तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों का विकास अग्रणी है। सर्वप्रथम हस्तिनापुर, जो भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4-4 कल्याणकों से पवित्र भूमि है, वहाँ विश्व में अद्वितीय जम्बूद्वीप की रचना का निर्माण कराया, जिसे देखने के लिए विदेशों से पर्यटक आते हैं।

इसी शृँखला में शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या, भगवान ऋषभदेव के दीक्षा तीर्थ प्रयाग का नवनिर्माण, मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास विशेषरूप से हैं। पूज्य माताजी की सदैव यही प्रेरणा रहती है कि यदि अन्य स्थानों की अपेक्षा तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों से पवित्र भूमियों पर नवनिर्माण किया जाये, तो सौ गुना नहीं हजार गुना पुण्य अधिक मिलता है और तीर्थों का विकास होकर हमारी जैन संस्कृति का संरक्षण भी होगा। उन्हीं परम विदुषी माताजी की पावन प्रेरणा प्राप्तकर तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास की शृँखला में 9वें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी (गोरखपुर) उ.प्र. में मुझे भी अपनी कुछ पत्र-पुष्परूप अर्थांजलि समर्पित कर उस गौरवमयी भूमि के विकास में सहयोगी बनने का गौरव प्राप्त हुआ है, जो कि मेरे जीवन का सबसे आनन्ददायक एवं सौभाग्यपूर्ण क्षण है, जिसके लिए मैं एवं मेरा परिवार पूज्य माताजी का चिरऋणी रहेगा।

ऐसी संस्कृति संरक्षिका पूज्य माताजी के स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर उनके चरणों में विनम्र विनयांजलि है।

-राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स' एवं
सौ. श्रीमती आशा जैन, दिल्ली

सरस्वती की प्रतिमूर्ति माँ ज्ञानमती

हमें यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि गणिनी ज्ञानमती माताजी का गौरव ग्रंथ छप रहा है। वास्तव में देखा जाये तो आज माताजी ने जो कार्य किए हैं, जो समाज का उपकार किया है, उसके लिए अगर हम कई ग्रंथ भी माताजी के लिए लिखकर तैयार कर दें, तो कम है।

माताजी के ज्ञान का कहना ही क्या! जब इनकी पुस्तक पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि साक्षात् सरस्वती माँ ने ही ग्रंथ लिखे हों। इनकी लेखनी में जादू है। एक-एक शब्द मोती की माला के समान पिरोए हुए रहते हैं अतः अगर हम इन्हें सरस्वती की प्रतिमूर्ति कहते हैं, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

इनकी कृपा से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में मेरे परिवार को ॐ मंदिर बनाने का पुण्य प्राप्त हुआ तथा मांगीतुंगी, कुण्डलपुर आदि यात्राओं में संघ की सेवा करने में भी मुझे बहुत ही संतुष्टि का अनुभव हुआ। मैं शारीरिक अस्वस्थता के कारण उनका अधिक सानिध्य अब नहीं प्राप्त कर पाता हूँ किन्तु मेरे मन में सदैव माताजी की मूर्ति स्थापित रहती है। मेरी धर्मपत्नी निर्मला जैन ने भी आपके आशीर्वाद से महिला संगठन की केन्द्रीय अध्यक्षा बनकर समाज की कुछ सेवा करने का पुण्य प्राप्त किया। इसी प्रकार मेरे परिवार पर सदैव आपका वरदहस्त बना रहे, यही मेरी अभिलाषा है।

माताजी के इस स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर हम उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हैं एवं उनके श्रीचरणों में कोटिशः नमन करते हुए मैं अपनी भावांजलि-विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

-प्रेमचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली
एवं समस्त परिवार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी ने मेरा जीवन बदल दिया

सन् 1972 में माताजी जब से दिल्ली आईं, तब से हमारा परिवार माताजी से जुड़ा हुआ है। माताजी हमारी प्रथम गुरुवर हैं, उनकी प्रेरणा से हम थोड़ा सा संयम की ओर बढ़े, उनकी एवं चंदनामती माताजी की प्रेरणा से मैंने बाल विकास प्रथम एवं द्वितीय भाग का अंग्रेजी में अनुवाद किया, मेरे लिए यह बहुत अच्छा कार्य था।

राजधानी दिल्ली में पूज्य माताजी के कई चातुर्मास हुए। उनमें से सन् 1999 का चातुर्मास दिल्ली राजाबाजार (कनॉट प्लेस) में हुआ। उस समय दिल्ली-कनॉट प्लेस में ज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई। चातुर्मास में प्रवचन, संगोष्ठी, प्रश्नमंच, विधान आदि अनेक कार्यक्रम हुए। दशलक्षण पर्व में भगवान ऋषभदेव के दस भवों पर रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम नाटक आदि हुए। पूज्य माताजी के मुखारविंद से प्रतिदिन एक-एक धर्म पर प्रवचन होता था। मध्यान्ह में तत्त्वार्थसूत्र का वाचन होता था।

वहाँ मंदिर के प्रांगण में पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से हम लोगों ने एक भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ (प्रथम) का निर्माण किया है, जो कि करोड़ों वर्ष प्राचीन भगवान ऋषभदेव के इतिहास को बताता है। इसके साथ ही दिगम्बर जैन मंदिर के परिसर में ही पावापुरी जल मंदिर की रचना भी पूज्य माताजी की प्रेरणा से बनाई गई है, जहाँ प्रतिवर्ष दीपावली पर धूमधाम से निर्वाणलाडू चढ़ाया जाता है।

पूज्य माताजी के निमित्त से आज जितनी जैनधर्म की प्रभावना हुई है उसे कोई नकार नहीं सकता है। माताजी द्वारा रचित विधानों के माध्यम से भक्त भक्ति में भावविभोर हो जाता है। विधान की पंक्तियाँ जब माईक के माध्यम से घर बैठे लोगों के कानों में पहुँचती हैं, तो लोग स्वयं खिंचे चले जाते हैं और मंदिर जाकर विधान पढ़ने का आनन्द और पुण्य प्राप्त करते हैं।

ऐसी ममतामयी माताजी की छत्रछाया में रहते हुए हमारी तो यही इच्छा है कि हम घर-बार छोड़कर पूज्य माताजी के पास रहकर संयम साधना करें परन्तु शारीरिक अस्वस्थता के कारण संभव नहीं हो पाता है। हम घर में भी रहकर प्रतिक्षण पूज्य माताजी का ही ध्यान करते रहते हैं। भगवान से यही प्रार्थना है कि पूज्य माताजी चिरंजीवी हों तथा उनके आशीर्वाद से हमारे घर में धर्म का सदा-सदा पालन होता रहे, यही भावना है।

-जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार एवं
ध.प. श्रीमती विमला जैन, नई दिल्ली

चमत्कारिक पूज्य माताजी

परमपूज्य आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के पावन चरणों में सादर नमोस्तु!

परमपूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी अपने संयम के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। इस स्वर्णिम अवसर का साक्षात् अवलोकन कर हमें भी अपने जीवन के क्षणों को सार्थक बनाने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। ये हमारे लिए बड़े ही गौरव के क्षण हैं।

पूज्य माताजी के अंतरंग में चुम्बकीय शक्ति विद्यमान है, जो भी प्राणी उनके संपर्क में आता है, उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है। यही कारण है आज उनकी वात्सल्यपूर्ण छवि का अवलोकन करने हेतु भक्तों की भीड़ उमड़ कर आती है। अपने जीवन में स्वयं मैंने भी ऐसे क्षणों को प्राप्त किया है। लगभग 35 वर्ष पूर्व पूज्य माताजी करोलबाग मंदिर के दर्शनार्थ पधारीं, तो मैंने भी प्रथम बार उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया। पूज्य माताजी का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमण्डलु उठाकर पहाड़ी धीरज-चातुर्मास स्थल पर छोड़ने गया था। तभी से पूज्य माताजी की चमत्कारी सम्मोहक दृष्टि से प्रभावित होकर आज तक उनके मार्गदर्शन एवं सत्प्रेरणा से भक्ति करने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। उन्हीं के कुशल नेतृत्व, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा पाकर विभिन्न समितियों एवं संगठनों का गठन एवं संचालन करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।

पूज्य माताजी ने पूरे संसार में ख्याति प्राप्त कर विशेष कीर्तिमान स्थापित किया है। उनके प्रवचन एवं लेखनी का लाभ संसार के प्रत्येक प्राणी-मात्र को प्राप्त हो रहा है। उन्होंने अपनी आत्मीक शक्ति एंव दिव्यदृष्टि का उपयोग कर आगमसम्मत लगभग 200 ग्रंथों की रचना कर महिला जगत में भी विशेष कीर्तिमान स्थापित किया है।

पूज्य माताजी ने तीर्थों के उद्धार पर विशेष ध्यान आकृष्ट कर विभिन्न तीर्थ यथा जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, अयोध्या, दीक्षा तीर्थ (प्रयाग), कुण्डलपुर, राजगृही, पावापुर, गुणावां, मांगीतुंगी, सम्मेदशिखर आदि तीर्थक्षेत्रों पर नव निर्माण एवं पुनर्निर्माण करवा कर तीर्थोद्धारिका बन गई हैं। उनकी सत्प्रेरणाओं ने विभिन्न आयोजनों के माध्यमों से रथों का प्रवर्तन कर तीर्थ उद्धार हेतु विशेष योगदान प्रदान कराया है।

पूज्य माताजी सर्वगुण सम्पन्न हैं। उनके संबंध में जितना भी लिखा एवं कहा जाये, उतना ही थोड़ा है। उनके गुणों को यदि कार्यरूप किया जाये, तो सागर की स्याही भी लिखने में सक्षम न हो पायेगी। अत: आज हमें पूज्य माताजी के त्याग एवं तपस्या की स्वर्ण जयंती के पावन क्षणों को साक्षात् अवलोकन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। यह जीवन की सबसे बड़ी सुखद अनुभूति एवं उपलब्धि है। हम उनके गुणों का स्मरण तो कर सकते हैं तथा उनसे प्रेरणा पाकर अपने जीवन को भी संयमित बना सकते हैं अपितु लेखनीबद्ध नहीं कर सकते।

अत: आज इस स्वर्णिम पावन बेला में अपनी एवं परिवार इष्ट मित्रों की ओर से पूज्य माताजी के चरणों में सादर नमोस्तु करते हुए अपनी भावांजलि/विनयांजलि प्रस्तुत कर रहा हूँ तथा परमपिता परमात्मा से आग्रह कर रहा हूँ कि पूज्य माताजी स्वस्थ एवं दीर्घायु हों तथा इस ही प्रकार अक्षुण्ण संयम का पालन करते हुए हमें भी उस मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करती रहें।

पूज्य माताजी के चरणों में बारम्बार नमोस्तु।

-कैलाशचंद जैन, करोलबाग-दिल्ली

दृढ़ इच्छा शक्ति की जीवन्त प्रतिमूर्ति

आत्म कल्याण का आधार है निवृत्ति प्रधान जीवन, और श्रमण जैन परम्परा में यही श्रेयो-मार्ग के रूप में निरूपित किया गया है। चतुर्विध संघ (मुनि-आर्यिका, श्रावक-श्राविका) में उसी निवृत्ति मार्ग पर आरूढ़ होकर साधना की जाती है। वीतराग-जिनमार्ग की साधना को असिधारा व्रत के रूप में भी जाना जाता है। 20वीं शताब्दी का उत्तरार्ध जैन परम्परा के उन्नयन और विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कालखण्ड रहा है। आचार्य शांतिसागर जी महाराज ने जहाँ विलुप्त होती दिगम्बर जैन साधु परम्परा को पुनर्जीवित किया, वहीं आर्यिकारत्न माता ज्ञानमती जी ने जिनधर्म की प्रभावना में अपनी विहंगम दृष्टि का परिचय दिया है। तत्त्वचिन्तन, स्वाध्याय, तीर्थ-उद्धार के साथ-साथ जैन-भूगोल के यथार्थ को जम्बूद्वीप की प्रतिकृति के माध्यम से प्रतिबिम्बित कर आधुनिक गवेषकों को परम्परित आचार्यों द्वारा जिनोदित तथ्य-कथ्य को जीवन्तता प्रदान कर अनुपम कार्य किया है। साधना के मार्ग पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आरूढ़ रहते हुए भी धर्मप्रभावना के कार्यों को सफल बनाना उनकी विहंगम दृष्टि और दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचायक है। माताजी का 50वाँ दीक्षा दिवस वर्तमान और भावी पीढ़ी को धर्म प्रभावना के लिए उत्प्रेरित करेगा, इसी मंगल भावना के साथ उनके चरणों में सादर विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

-चक्रेश जैन (बिजली वाले), दिल्ली
(अध्यक्ष-जैन समाज, दिल्ली)

विनयांजलि

परम श्रद्धेय परमपूज्य 105 गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का 50वाँ दीक्षा समारोह स्वर्ण जयंती के रूप में मनाने का जो निश्चय त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर ने किया है, वह वास्तव में बहुत सुंदर विचार है। इस अवसर पर मुझे भी उनके चरणों में विनयांजलि प्रस्तुत करने का सौभाग्य मिला है, जिसके लिए मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

मैं बचपन से ही सदैव मुनियों, आर्यिकाओं एवं समस्त त्यागियों के दर्शनों का लाभ पाता रहा हूँ परन्तु पूज्य माताजी का सर्वाधिक सानिध्य मुझे दिनाँक 7 अक्टूबर 1978 से मिला। दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का जन्म पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में हुआ था परन्तु सन् 1978 में जब भारतवर्षीय शांतिवीर दिगम्बर जैन संस्थान संरक्षिणी सभा ने हस्तिनापुर में पूज्य माताजी के सानिध्य में एक शिविर के आयोजन का निर्णय लिया, तब मैंने कुछ सदस्यों के साथ संस्था के महामंत्री की हैसियत से अगस्त 1978 में माताजी के पास जाकर इसके लिए निवेदन किया और उन्होंने इसकी स्वीकृति दे दी। अंततः 7 अक्टूबर से 16 अक्टूबर 1978 तक इस दस दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें देश भर के उच्चकोटि के विद्वान एवं जैन समाज के अनेकों महानुभाव एकत्रित हुए और शिविर बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उसी समय पूज्य गणिनी आर्यिका माताजी का 45वाँ जन्मदिवस भी 16 अक्टूबर को हमने बहुत धूमधाम से मनाया।

वैसे तो परमपूज्य माताजी ने अनेकों ग्रंथों की रचना की है और अनेकों जटिल ग्रंथों का सरल भाषा में अनुवाद किया है ताकि उनके अध्ययन से समाज को सही दिशा, सही सोच एवं सकारात्मक दिशा मिले पर एक ग्रंथ इसी शिविर के अवसर पर लिखने के लिए हमने माताजी को विशेष आग्रह किया था, जिसकी स्वीकृति उन्होंने हमें प्रदान की तथा उपरोक्त शिविर के अवसर पर 7-10-1978 को माताजी द्वारा रचित प्रवचन निर्देशिका (वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला का 24वाँ पुष्प) नामक उस ग्रंथ का विमोचन हुआ।

पूज्य माताजी ने अपनी इस पुस्तक में बहुचर्चित विषय जैसे—व्यवहारनय-निश्चयनय, निमित्त-उपादान, पंचमकाल में मुनियों के अस्तित्व के बारे में आर्षमार्ग के अनुसार उनका दृष्टान्त देते हुए इतनी सरल भाषा में संपूर्ण विवरण दिया है कि समाज के सभी व्यक्ति इन विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। मुझे भी इस पुस्तक के अध्ययन से बहुत लाभ हुआ।

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है कि सन् 1978 में पूज्य माताजी के विशेष सानिध्य में आया था, अब इसे मैं दैवयोग कहूँ अथवा अपने ऊपर पूज्य माताजी की कृपादृष्टि कहूँ? थोड़े ही समय बाद हस्तिनापुर में श्री सुदर्शनमेरु बिम्ब की प्रतिष्ठा समिति के कार्याध्यक्ष के रूप में मुझे जिम्मेदारी सौंपी गई। यह प्रतिष्ठा 29 अप्रैल 1979 में सम्पन्न हुई। इससे पहले भी मैंने कई प्रतिष्ठाओं में भाग लिया था परन्तु इसमें भाग लेकर मैंने जो ज्ञानार्जन किया, वैसा मुझे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहले कभी नहीं मिला। इन सबमें समय-समय पर मुझे माताजी का दिशा-निर्देश भी मिलता गया, जिसके लिए मैं उनको शत-शत नमन करता हूँ।

मैंने देखा कि जो भी व्यक्ति पूज्य माताजी के संपर्क में आता था, वे उसे उसकी आत्मा की उन्नति हेतु सदा ही प्रेरित करती रहती थीं। मुझे भी उन्होंने बहुत प्रेरित किया और मैं उनकी आज्ञा का पालन करते हुए तकरीबन 10-12 वर्षों तक हस्तिनापुर जाता रहा था तथा उनके सत्संग का लाभ लेता रहा। पूज्य माताजी का मुझ पर अपार स्नेह था। जिन वर्षों में मेरा हस्तिनापुर रहने का अधिक काम पड़ा, उन दिनों मैं उनके प्रातःकाल के स्वाध्याय में हमेशा सम्मिलित होता था। यदि कभी किसी कारणवश मुझे पहुँचने में देर हो जाती, तो कहीं मैं उनके स्वाध्याय लाभ से वंचित ना रह जाऊँ, आप मुझे सदा बुलवा लिया करते थे। उस वक्त के स्वाध्याय में मुझे आध्यात्मिक, धार्मिक एवं श्रावक के रूप में संसार में किस प्रकार से प्रसन्नतापूर्वक जीवनयापन कर सकते हैं, यह सब कुछ विस्तार एवं ज्ञानवर्धक तरीके से सीखने को मिला। जिसका लाभ मुझे आज भी मिल रहा है, जिसके लिए मैं पूज्य माताजी का कोटिशः वंदन करता हूँ।

मैं तकरीबन 11 शिविरों का संचालन कर सका और इन सभी शिविरों में देश के पूज्यनीय त्यागियों, मुनियों का सानिध्य मिला एवं उच्च कोटि के विद्वानों से संपर्क हुआ तथा सबका पूर्ण सहयोग भी मिला, जो कि पूज्य माताजी के शुभाशीर्वाद का ही फल मानता हूँ।

इन दिनों मेरा स्वास्थ्य बाहर आने-जाने के लिए उपयुक्त नहीं रहने लगा है अतः मैं परमपूज्य माताजी के दर्शनार्थ नहीं जा सका।

पूज्य माताजी के 50वें दीक्षा जयंती समारोह के अवसर पर यदि जम्बूद्वीप रचना के बारे में मैं कुछ नहीं लिखूँगा तो मेरी विनयांजलि अधूरी रह जायेगी। जिस प्रकार आदरणीय चामुण्डराय जी को भगवन बाहुबली के बारे में स्वप्न आया था और उनका वह स्वप्न एक मूर्ति के रूप में दुनिया का आठवाँ आश्चर्य बन गया। उसी प्रकार जम्बूद्वीप नामक रचना की उपलब्धि भी पूज्य माताजी को श्रवणबेलगोला में ध्यान करते हुए हुई थी और उन्होंने उसको साकार करने का निश्चय किया। अंततः हस्तिनापुर में आपने विश्व की इस अनूठी रचना को साकार किया, जो विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है और इसी जम्बूद्वीप में अपना भरत क्षेत्र है, जहाँ हम रहते हैं।

मैं स्वयं की ओर से तथा अपने समस्त परिवार की ओर से आदरणीय परमपूज्य माताजी के श्रीचरणों में विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

-गणेशीलाल रानीवाला, कोटा

त्याग की प्रतिमूर्ति गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का नाम जैन समाज में विशिष्टता के साथ लिया जाता है, पूज्य माताजी ने जैन ग्रंथों की विपुल मात्रा में रचना करके अपना नाम इतिहास में अमर कर लिया है, आपने पूरा जीवन जैनागम का विशेष अभ्यास करके अपने ज्ञान को अत्यंत परिमार्जित किया है। आपके द्वारा निर्मित सुंदर तीर्थ-जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर), दीक्षा तीर्थ (इलाहाबाद), नंद्यावर्त महल (कुण्डलपुर-नालंदा) जैन-जैनेतर सभी को आकर्षित करते हैं। आपने जैनधर्म की प्रभावना में विशेष योगदान प्रदान किया है। आप समस्त जैन समाज का गौरव हैं।

आपकी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों का अखण्डरूप से सम्पन्न होने के अवसर पर आयोजित 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' एक विशेष आयोजन सिद्ध होगा, क्योंकि कलिकाल में कठोर साधना के पचास वर्षों की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्पूर्ति किसी महामानव द्वारा ही संभव है। आपके श्रीचरणों में इस अवसर पर विनीत अभिवंदन प्रस्तुत करते हुए आपके सुदीर्घ जीवन की मैं मंगल कामना करता हूँ।

-दीपचंद गार्डी, मुम्बई

कलियुग की ब्राह्मी माता

वर्तमान में हमने ब्राह्मी, चन्दना, राजुल, सीता आदि माताएं नहीं देखी, लेकिन पूज्य ज्ञानमती माताजी के दर्शन कर रहे हैं, जिनमें सभी माताओं की छवि झलकती है। आर्यिकाएं भी मुनियों के समान ग्यारह अंग तक आगमज्ञान प्राप्त कर सकती हैं, ऐसा शास्त्रों में लिखा है। मूलाचार में लिखा है कि जयकुमार की पत्नी सुलोचना भी भगवान के समवसरण में दीक्षित हो गईं और वह ग्यारह अंग की पाठी हो गईं।

आज यद्यपि ग्यारह अंग और चौदह पूर्व का ज्ञान नहीं है, उसका अंश मात्र धवला ग्रंथ में मिलता है। पूज्य माताजी ने धवला आदि सभी बड़े-बड़े ग्रंथों का कई बार खूब स्वाध्याय किया है उसका मनन, चिंतन किया है। षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ पर स्वयं 'सिद्धांत चिंतामणि' नाम से संस्कृत टीका लिखी है। पूज्य माताजी अत्यन्त तीक्ष्ण प्रज्ञाधारी हैं। एक बार जो पढ़ लेती हैं, उन्हें स्मरण रहता है। 'कातंत्र व्याकरण' जिसे लोग लोहे को चना चबाना कहते थे, उसे भी माताजी ने मात्र दो महीने में कण्ठस्थ करके दिखा दिया। उस कांतत्र व्याकरण के पूर्ण ज्ञान से ही माताजी सतत धारावाहिक संस्कृत में टीका लिख रही हैं।

कलियुग में जब कि मन अत्यधिक चंचल है फिर भी संयम, त्याग, चारित्र को धारण करने वाले साधु आज विरले ही हैं। आज उत्तम संहनन नहीं है अतः आचार्य कहते हैं कि चतुर्थकाल में 1000 वर्ष तक तपस्या करने पर जो पुण्य मिलता था, आज पंचम काल में एक वर्ष की तपस्या में वह पुण्य प्राप्त हो जाता है। एक छोटा सा मंदिर बनवाने में महान पुण्य मिलता है और जहाँ माताजी ने भगवन्तों के इतने बड़े-बड़े तीरथ बनवा दिए हों, वहाँ उनके पुण्य का क्या कहना?

पूज्य माताजी ने आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं यह जानकर हृदय रोमांचित है। ऐसी माताजी के स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर हम अपने पूरे परिवार की ओर से माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित करते हैं और भगवान से उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हुए उनके चरण कमलों में बारम्बार नमोऽस्तु करते हैं।

-श्रीपाल जैन 'मोटर वाले', दिल्ली

चारित्रचन्द्रिका माताजी

जिस प्रकार से पूर्णिमा का एक चांद अपनी चाँदनी से सम्पूर्ण संसार को आलोकित करता हुआ जगत को शीतलता भी प्रदान करता है, उसी प्रकार पूज्य माताजी भी अपनी ज्ञानरूपी किरण से समस्त विश्व को आलोकित कर रही हैं।

इस संसार में ज्ञान के समान कोई भी वस्तु सुख का कारण नहीं है। ज्ञान ही इस लोक में अमृत के समान है और जनम; जरा, मृत्युरूपी रोग को दूर करने वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इनके ज्ञान और चारित्र को देखकर ही इन्हें चारित्रचन्द्रिका की पदवी से अलंकृत किया गया है। आज पूज्य माताजी ने अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। जैसे-गृहस्थ में लोग 50 वर्ष के पूर्ण होने पर गोल्डन जुबली मनाते हैं, उसी प्रकार त्यागमार्ग में जब किसी साधु के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होते हैं, तो हम जैसे श्रावकगण उनकी स्वर्णजयंती मनाकर उनका गुणानुवाद करते हुए अपना अहोभाग्य मानते हैं। क्योंकि साधु तो इन सभी से पूर्ण निस्पृह होते हैं। शताब्दी में प्रथमबार पूज्य माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती मनाई जा रही है। जिसमें गौरव ग्रंथ का प्रकाशन हो रहा है। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है।

इनके आशीर्वाद से मैंने अपने जीवन में भौतिक एवं धार्मिक जो भी उन्नति की है वह सदैव वृद्धिंगत होती रहे तथा मेरे परिवार में गुरुभक्ति का वातावरण बना रहे, यही आशीर्वाद चाहता हूँ। इनकी कृपा से मुझे पावापुरी सिद्धक्षेत्र पर भगवान महावीर का मंदिर बनाने का पुण्य लाभ मिला, वह उपकार मैं कभी चुका नहीं पाऊँगा।

मैं अपने पूरे परिवार की ओर से माताजी के इस स्वर्णिम दीक्षा जयंती दिवस पर अपनी शुभकामना प्रेषित करता हूँ। हमारे अहोभाग्य से ऐसी दीर्घकालीन तपस्विनी माताजी का वरदहस्त, उनका दर्शन हमें प्राप्त हुआ, जो कि महान पुण्य की बात है। माताजी दीर्घायु हों, शतायु हों और उनकी ज्ञानरूपी चाँदनी की कुछ किरणें, हम पर पड़कर हमें भी मोक्षमार्ग का पथिक बनाने में सहायक हों, ऐसी चारित्र चन्द्रिका माता के चरणों में शतशः नमन।

-विजय जैन (पारस प्रिन्टर्स)-दरियागंज, नई दिल्ली

ज्ञान का भण्डार माँ ज्ञानमती

यह हमारे लिए गौरव एवं आल्हाद का प्रसंग है कि सर्वप्राचीन दीक्षित साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। सन् 1956 में माधोराजपुरा में आचार्यश्री वीरसागर महाराज ने जब इन्हें आर्यिका दीक्षा प्रदान की, उस समय इनके विशिष्ट ज्ञान, क्षयोपशम को देखकर ही इनका नाम ज्ञानमती रखा था। हमने तो सन् 2003 में ही इन्हें नजदीकी से देखा और फिर कुण्डलपुर का विकास देखकर तो इनकी असली आत्मशक्ति का परिचय प्राप्त हुआ। पूज्य माताजी ने कुण्डलपुर में जो नवग्रहशांति मंदिर बनवाया, वह वास्तव में भारत का एक अभूतपूर्व मंदिर है उसके अंदर मेरे परिवार की ओर से प्रतिमाएं विराजमान करवाकर माताजी ने सचमुच बड़ा उपकार किया है। इसी प्रकार उनकी प्रेरणा से मुझे धार्मिक, सामाजिक कार्य करने की शक्ति प्राप्त होती रहे, यही भावना है।

वास्तव में अपार ज्ञान का भण्डार हैं माताजी! ऐसी माताजी के स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर हम भी अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए माताजी से प्रार्थना करते हैं कि वे हमें भी अपने भण्डार में से कुछ ज्ञान प्रदान करें। माताजी स्वस्थ रहें और दीर्घायु रहें, यही जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना है।

-ज्ञानचंद जैन, आरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझे मिलीं सच्ची माता!

जब से मुझे यह जानकारी प्राप्त हुई कि पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष वैशाख कृ. 2, 15 अप्रैल 2006 को पूरे होने वाले हैं तथा इस अवसर पर उनके अभिनंदन में 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' प्रकाशित किया जा रहा है, तब से मुझे इतनी खुशी है कि उसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता हूँ।

जहाँ तक मैं समझता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि भगवान महावीर 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव की सबसे बड़ी उपलब्धि मेरे लिए यही है कि इस दौरान हुए मंगल विहार के मध्य मुझे पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन हुए।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ पर अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, मेरी धर्मपत्नी सुभाषिनी, पुत्री स्तुति, पुत्र प्रतीक एवं मेरे माँ-पिताजी सभी लोग इसे पूज्य माताजी का उपकार मानते हैं।

मैं तो हमेशा यही सोचता रहता हूँ कि वास्तव में मुझे ज्ञानमती माताजी के रूप में एक सच्ची माता मिल गई हैं, इन्होंने हमारे बाकी जीवन को संस्कारित करने के लिए हमें जो प्रेरणा प्रदान की है, वह इनका हमारे और हमारे परिवार के प्रति बहुत बड़ा उपकार है, उनके इस उपकार को हम सब मिलकर भी कई जन्मों तक नहीं चुका सकते हैं।

दीक्षा स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर हम भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि पूज्य माताजी चिरायु हों तथा हमें इसी प्रकार सत्कार्यों की प्रेरणा प्रदान करती रहें ताकि हम अपने जीवन को सर्वतोमुखी बना सकें।

-दीपक जैन, वाराणसी

वात्सल्य की प्रतिमूर्ति-माता ज्ञानमती जी

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का सन् 2000 का चातुर्मास प्रीतविहार-दिल्ली में हुआ, उस समय हम सभी प्रीतविहार दिल्लीवासियों को 4 महीने तक पूज्य माताजी से धर्मलाभ लेने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रतिदिन उनका दर्शन एवं प्रवचन सुनने का लाभ प्राप्त होता था। साथ ही उनके मुखारविन्द से उनके दीक्षित जीवन (50 वर्ष के) अनुभव भी हमें सुनने को मिले। वास्तव में इतनी नजदीकी से माताजी के वात्सल्य, स्नेह, प्रेम को पाकर हम सभी धन्य-धन्य हो गए।

प्रीतविहार में यद्यपि पूज्य माताजी को यहीं के भक्तिमान श्रावक श्री अनिल जैन कागजी के विशेष आग्रह से कमल मंदिर परिसर में ठहराया गया था। लेकिन पूज्य माताजी का बराबर बड़े मंदिर जाना, वहाँ प्रवचन करना, कार्यक्रम आदि आयोजित कराना आदि चलते रहता था।

प्रीतविहार चातुर्मास की एक विशेष उपलब्धि यह रही कि प्रीतविहार जैन समाज द्वारा पूज्य माताजी की मंगल प्रेरणा से कैलाशपर्वत की विशाल रचना बनवाकर हजारों जैन-जैनेतर बंधुओं को कैलाशयात्रा का पुण्य लाभ प्राप्त कराया गया। कई महानुभावों ने तो कैलाशपर्वत की 108 वंदना करके महान पुण्य का संचय किया। इसी के साथ कमल मंदिर में आयोजित अनेकानेक विधानों में भाग लेकर सभी ने अपार पुण्य अर्जित किया।

इसी तरह समूचे विश्व में जैनधर्म की महती प्रभावना करने वाली पूज्य माताजी के प्रति दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर विनम्र विनयांजलि अर्पित करते हुए सदैव उनके वात्सल्यमयी आशीर्वाद का आकांक्षी-

-अतुल जैन, प्रीतविहार-दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अद्भुत प्रतिभा की धनी

हमारा भारतदेश प्राचीनकाल से ऋषिमुनियों का देश कहा जाता रहा है। इस भूमि पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लेकर इसे पावन व पवित्र किया है। जैनधर्म के 24 तीर्थंकरों में प्रथम ऋषभदेव व अंतिम महावीर स्वामी हुए हैं। जिन्होंने प्राणीमात्र के लिए अहिंसा व मैत्री का संदेश दिया। उन्हीं की परम्परा में बीसवीं सदी में प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज हुए जिन्होंने पुनः मुनि परम्परा को जीवंत किया है। जिसके फलस्वरूप आज हमें सुलभता से साधुओं के, मुनि-आर्यिकाओं के दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। उन्हीं में बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान के विशेष क्षयोपशम से अनेक ग्रंथों का सृजन कर इस सदी में एक अद्भुत कार्य किया है। वे इस साधु समूह में प्रथम साध्वी हैं, जिन्होंने अपने दीक्षित जीवन के 50 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। इन 50 वर्षों में उन्होंने त्याग, तपस्या व ज्ञान से अपने जीवन को स्वर्णिम बनाया है। अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार किया है, जिसमें हस्तिनापुर में निर्मित जम्बूद्वीप की रचना एक अद्वितीय कृति है। जब तक इस धरती पर यह रचना रहेगी, तब तक पूज्य माताजी का स्मरण कर हर भक्त उनके प्रति नतमस्तक हुए बिना नहीं रहेगा। पूज्य माताजी ने शरदपूर्णिमा के दिन इस धरती पर जन्म लिया है, जिस प्रकार आकाश का चन्द्रमा अपनी किरणों से धरती को शीतलता प्रदान करता है, उसी प्रकार धरती का यह पूनों का चाँद भी हम सबके हृदय में सदैव अपने ज्ञानरूपी अमृत के द्वारा हमें शीतलता प्रदान करता रहे, यही भावना है। पूज्य माताजी ने साहित्य सृजन, तीर्थ उद्धार एवं अनेक शिष्यों का संग्रह कर देव, शास्त्र, गुरु इन तीनों के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मैं तो साधुओं से ज्यादा संबंधित नहीं रहा किन्तु पूज्य माताजी के संघ का वात्सल्यपूर्ण व्यवहार मुझे एवं मेरी पत्नी को स्वयमेव उनके सन्निकट लाने में सहयोगी बन गया। यही कारण रहा कि भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में पहले धनकुबेर बनने का पुनः वहाँ निर्मित नंद्यावर्त महल में शांतिनाथ चैत्यालय की अतिशयकारी प्रतिमा स्थापित करने का सौभाग्य मिल गया। यह शायद कई जन्म का पुण्य ही होगा कि ऐसे महान कार्यों में मुझे भी कुछ योगदान का अवसर मिल पाया। पूज्य माताजी का यह स्वर्णिम दीक्षा दिवस हम सबके लिए मंगलमय हो तथा आपका वरदहस्त हमें युगों-युगों तक प्राप्त हो, इन्हीं भावों के साथ आपके चरणों में शत-शत नमन।

-कमल कुमार जैन, आरा (भोजपुर) बिहार
एवं समस्त परिवार

हम भाग्यशाली हैं

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सन् 2003 और 2004 का चातुर्मास भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में किया। वहाँ मात्र 22 माह में इतना विशाल निर्माण हो जाना पाँच विशाल जिनमंदिर-भगवान महावीर स्वामी का मंदिर, भगवान ऋषभदेव का मंदिर, नवग्रह मंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर, नंद्यावर्त महल में सभी निर्माण ऐसा लगता था मानों सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर आकर ही कर गया हो। लेकिन हमने अपनी आँखों से सारा निर्माण देखा है, तो विश्वास करना पड़ता है कि लोगों ने अपने श्रम से ही निर्माण किया है। फिर भी चमत्कार अवश्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लगता है क्योंकि इतनी जल्दी समाज का करोड़ों रुपया लग करके इतना सुन्दर तीरथ बन जाना यह सब भगवान महावीर का चमत्कार एवं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का अतिशय पुण्य एवं तपस्या का प्रतिफल है।

पूज्य माताजी ने कितना मंत्र जाप्य स्वयं किया और सभी से कराया। खूब विधान, अनुष्ठान आदि किए। प्रतिदिन कोई न कोई विधान होता ही रहता था। सन् 2003-2004 में भगवान महावीर की जयंती बहुत ही जोरदार मनाई गई। अब प्रतिवर्ष वहाँ आस-पास के सभी गाँवों, नगरों के लोग भगवान महावीर की जयंती मनाने कुण्डलपुर आने लगे हैं।

आज जो भी कुण्डलपुर जाता है, वह वहाँ की सुन्दरता का, वहाँ निर्मित जिनमंदिरों, आवास एवं भोजन आदि की व्यवस्था की प्रशंसा करते हुए नहीं थकता है। विश्व में प्रथम बार निर्मित हुए भगवान महावीर के नंद्यावर्त महल को, उसमें भगवान महावीर के जीवन की जीवन्त झांकी को देखकर हर्ष से गद्‌गद हो जाता है।

पूज्य माताजी ने स्वयं तो तपस्या करके तीरथ बनाया और तीरथ बनने के बाद वहाँ से विहार कर दिया। यह माताजी की कितनी बड़ी निस्पृहता है।

हम लोगों को भी पूज्य माताजी के सानिध्य में रहने का, उनसे कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके लिए हम अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानते हैं। हमारा पूरा परिवार माताजी के लिए पूर्ण समर्पित है। माताजी जब भी कोई आज्ञा देंगी, हम उसे तन-मन-धन से करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। माताजी ने जो निधि भारत की जैन समाज को प्रदान की है, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

पूज्य माताजी के स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर हम अपने पूरे परिवार की ओर से माताजी के चरणों में बारम्बार नमन करते हुए उनके दीर्घ जीवन की कामना के साथ अपनी विनयांजलि समर्पित करते हैं।

-मोहनलाल धन्नालाल अजित कुमार जैन अजमेरा, धूलियान (पं. बंगाल)

जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्रचन्द्रिका आर्यिकाशिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप का निर्माण हुआ। जैन भूगोल में वर्णन आया है कि मध्यलोक में असंख्यातों द्वीप समुद्र हैं। उनमें से पहला द्वीप जम्बूद्वीप है। इस जम्बूद्वीप में 78 अकृत्रिम जिनमंदिर हैं।

ऐसी भौगोलिक रचना को पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर की धरती पर साकार रूप देकर जैन समाज पर एक महान उपकार किया है। आप सभी जिन्होंने अभी तक इस रचना के दर्शन किए हों, वे अवश्य हस्तिनापुर आकर इसके दर्शन कर जैन भूगोल का ज्ञान प्राप्त करें।

पूज्य ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं अत: इनकी स्वर्णिम दीक्षा जयंती के शुभ अवसर पर हम भी अपने परिवार की ओर से माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित करते हैं और माताजी के दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

-जगजीवन जैन-राजौरी गार्डन, दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थोद्धारिका-पूज्य ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सबसे पहले श्री शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ तीन भगवन्तों की चार-चार कल्याणकों से पवित्र भूमि पर जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कराकर तीर्थ का विकास किया क्योंकि जम्बूद्वीप रचना जब हस्तिनापुर में नहीं बनी थी, उसके पहले बहुत कम लोग हस्तिनापुर जाते थे लेकिन जम्बूद्वीप बनने के बाद प्रतिदिन हजारों यात्री आते हैं और जैन भूगोल का दिग्दर्शन कराने वाली उस रचना के दर्शन कर स्वर्ग के आनन्द का अनुभव करते हैं।

इसी तरह पूज्य माताजी ने शाश्वत तीर्थ अयोध्या, जो कि अनन्तानन्त तीर्थंकरों की जन्मभूमि है, उस पवित्र भूमि पर पधारकर भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक कराकर, तीन चौबीसी और समवसरण दो नूतन मंदिर का निर्माण कराकर टोंकों का जीर्णोद्धार कराया, वहाँ पर अनेक चरण स्थापित कराकर अयोध्या तीर्थ का उद्धार किया। आज वहाँ भी खूब यात्री दर्शन के लिए आने लगे हैं और वहाँ की व्यवस्था से संतुष्ट हैं।

पुनः माताजी की दृष्टि प्रयाग पर गई, जो कि करोड़ों वर्ष पुराना तीरथ है, जहाँ पर आज से करोड़ों वर्ष पूर्व भगवान ऋषभदेव ने तपस्या की और केवलज्ञान प्राप्त किया। वहाँ पर भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का निर्माण हुआ। विशाल कैलाशपर्वत की रचना, भगवान ऋषभदेव का समवसरण, वटवृक्ष के नीचे ध्यानस्थ भगवान ऋषभदेव (मुनि अवस्था में) और ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ ये सभी अभूतपूर्व रचनाएँ बनी, इनके दर्शन के लिए दूर-दूर से यात्री आते हैं और हर्षित होते हैं।

फिर माताजी ने भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में विशाल निर्माण कराकर उसका विकास कराया। मात्र डेढ़ वर्षों में कुण्डलपुर तीर्थ का विकास हो जाना एक चमत्कार रहा है।

ऐसी माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष की पूर्णता पर उनकी स्वर्ण जयंती पर हम सभी पूज्य माताजी का अभिनंदन करते हैं और माताजी के प्रति हम सब विनयांजलि समर्पित करते हुए भगवान से माताजी के दीर्घायु होने की मंगल कामना करते हैं।

-सुधीर जैन ठेकेदार-गोमतीनगर, लखनऊ

और उसने मेरे जीवन की दिशा बदल ली

M.Phil. (Mathematics) के अध्ययन के संदर्भ में मेरठ प्रवास में वहाँ की जैन समाज विशेषतः जैन बोर्डिंग हाऊस के प्रबंधन द्वारा प्रदत्त स्नेह-वात्सल्य के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए मैंने "गणित के विकास में जैनाचार्यों का योगदान" शीर्षक प्रोजेक्ट हेतु चुना।

M.Phil. के उपरांत इसी विषय पर पी.एच.डी. करने हेतु मूल स्रोतों से सामग्री का संकलन जरूरी था। एतदर्थ जब मैंने व्यापक जनसंपर्क किया, तो सैद्धान्तिक विषयों में पूज्य माताजी से वैचारिक मतभेद रखने वाले श्री जयचंद जैन (अध्यक्ष-जैन बोर्डिंग हाऊस सोसायटी) मेरठ ने कहा कि "अनुपम! करणानुयोग के बारे में यदि तुम्हें जानकारी लेनी हो, तो पूज्य माताजी के पास जाओ। वर्तमान में उनके जैसा कोई करणानुयोग का जानकार नहीं है।" इनकी प्रेरणा से सितम्बर 1981 में मैंने सर्वप्रथम पूज्य माताजी के दर्शन किये। प्रथम दर्शन में संवाद भले ही नहीं हुआ किन्तु उनके तेजस्वी मुखमण्डल ने मन पर ऐसी छाप छोड़ी कि मैं बार-बार हस्तिनापुर जाने के लिए लालायित होने लगा। कहा भी गया है कि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

If you do not understand my silence, you can't understand my words.

महज 8-10 दिन के अंतराल में की गई दूसरी यात्रा में उनके द्वारा प्रदत्त स्नेह, वात्सल्य एवं अपनत्व ने मेरे जीवन की दिशा ही बदल दी। मेरे अन्तर्मन में व्याप्त दिगम्बर जैन साधुओं के प्रति भय का भाव तिरोहित हो गया और जाग उठी श्रद्धा और भक्ति। मैं तो सोचता था कि साधु के पास जाने से विभिन्न प्रकार के त्याग एवं यम-नियम स्वीकार करने पड़ेंगे, जिनके लिए मैं मानसिक रूप से तैयार नहीं था। उन्होंने मुझे तिलोयपण्णत्ति, जम्बुद्दीवपण्णत्तिसंगहो, त्रिलोकसार जैसे आर्षप्रणीत ग्रंथ और उनके आधार पर सरल, सहज भाषा में लिखी गई त्रिलोकभास्कर एवं जैन ज्योतिर्लोक जैसी कृतियाँ उपलब्ध कराईं, जिससे मेरे लेखन को दिशा ही नहीं, अपितु गति भी मिली। उन्होंने मुझे 11-15 अक्टूबर 1981 में होने वाले जम्बूद्वीप सेमिनार में सम्मिलित होने की प्रेरणा भी दी।

दिनाँक 11 से 15 अक्टूबर 1981 में आपके ही ससंघ सानिध्य में आयोजित जम्बूद्वीप सेमिनार में मुझे आपकी प्रेरणा से सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। डॉ. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य, सागर के कुलपतित्व में सम्पन्न इस सेमिनार में मैंने जंबूद्वीप को कतिपय तथ्य आलेख के माध्यम से जैनाचार्यों द्वारा पारम्परिक रूप से तथा तदनुरूप पूज्य माताजी द्वारा स्वयं भी (pi)= $\sqrt{10}$ मान लेने की तीखी आलोचना की। वहाँ मैंने कहा कि आज जब सारी दुनिया (pi) का मान 3.1416 मानती है, तब 1 लाख योजन के जम्बूद्वीप की परिधि 3 लाख 16 हजार बताना हास्यास्पद ही है और इस प्रकार के प्रयोगों से जैनधर्म की प्रभावना नहीं हो सकती अपितु अप्रभावना ही होगी। मुझ अल्पमति, वाचाल बाल पर क्रोध न कर पूज्य माताजी ने स्नेह और वात्सल्य दिया और कहा कि यह पूर्वाचार्यों की वाणी है, हम इसे बदल नहीं सकते। मात्र इतना ही नहीं, उन्होंने इस प्रसंग के बाद मुझे इतना स्नेह दिया कि मैं उनका भक्त बन गया। आज स्वयं मुझे इस बात का अहसास होता है कि पूज्य माताजी द्वारा जैनाचार्यों की सुदीर्घ परम्परा के संरक्षण की दृष्टि से ऐसा करना उचित है।

पूज्य माताजी का ज्ञान अगाध है। भक्ति-काव्यों की शृंखला में रचित दशाधिक पूजन-विधान, बाल एवं नारी साहित्य, उपन्यास एवं कथा साहित्य में भावों की अनुगामिन भाषा एवं सरल-सहज प्रवाहपूर्ण शैली उनके भाषा पर अधिकार को परिलक्षित करती है। अध्यात्म, न्याय, व्याकरण, भूगोल एवं खगोल पर लिखे गये ग्रंथ एवं टीकाएँ उनके ज्ञान की विविधता एवं गाम्भीर्य को प्रकट करती हैं। इन टीका ग्रंथों में गूढ़ विषयों की व्याख्या तथा अनुवादों के मध्य लिखे विशेषार्थ विद्वत्जनों के लिए प्रकाश स्तंभ हैं। नियमित प्रातःकालीन स्वाध्याय एवं शंका समाधान के समय एक विषय के विवेचन में विभिन्न आगमों/टीकाओं से मूल प्राकृत गाथाओं एवं उनकी संस्कृत छायाओं को सहज ही स्मरण के आधार पर बताना तथा उनकी पुष्टि/विरोध को सप्रमाण प्रस्तुत करते हुए उन्हें आज भी देखा जा सकता है। 1985 में आयोजित International Seminar on Jaina Mathematics & Cosmology एवं भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन-98 के मध्य समागत विद्वानों की अनेक जिज्ञासाओं को माताजी ने मंच पर ही सप्रमाण सुलझा दिया था। उनकी इस विलक्षण प्रतिभा को देखकर उन्हें चलती-फिरती इनसाइक्लोपीडिया कहना ही उचित है।

स्वयं का गंभीर अध्ययन, निर्माण कार्यों की प्रेरणा, शिष्यों को विद्यादान एवं देश की सुदीर्घ पदयात्राओं के बावजूद 200 से अधिक प्रकाशित एवं 50 से अधिक अप्रकाशित ग्रंथों का सृजन आपने किया है। इससे लगता है कि पूज्य माताजी ग्रंथ सृजन में आत्मानुभूति का आनन्द लेती हैं, वरना इतना लेखन संभव ही नहीं है। जैनदर्शन के गूढ़ रहस्यों को जीवन में आत्मसात् करने वाली पूज्य माताजी सच्चे अर्थों में विद्वान हैं।

आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती समारोह विद्वत् समिति का कार्याध्यक्ष होने से मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ। इस युग की महान साध्वी, चारित्र चन्द्रिका, तीर्थोद्धारिका, युग प्रवर्तिका, जिनशासन प्रभाविका, संस्कृति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संरक्षिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाने का हम सबको अवसर प्राप्त हुआ, यह भी पूर्वापार्जित पुण्यकर्मों का सुफल है। पूज्य माताजी शतायु हों और जैन विद्या के अध्येताओं को अपना स्नेहाशीष प्रदान करती रहें, इसी भावना के साथ,

विनयानवत।

-डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

"कैसे भूलूँगा उस क्षण को"

बात सन् 1975 की है, मैं लगभग 12 वर्ष का था। अपने पिता स्व. श्री अनन्तवीर जैन एवं पूरे परिवार के साथ तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर दर्शनार्थ गए थे। बड़ौत में उस समय परम पूज्य आचार्य धर्मसागर महाराज का संघ विराजमान था। संघ के प्रभाव से काफी धार्मिक भावनाएँ जाग्रत थीं। पिताजी के मन में श्री सिद्धचक्र विधान वृहद् स्तर पर हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पर करने की भावना थी। विद्वान् की तलाश में ब्र. श्री मोतीचंद जी (वर्तमान क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी) मिले, उन्होंने सानिध्य देना स्वीकार किया। फिर उन्होंने परमपूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन करवाए। एक महान व्यक्तित्व के दर्शन करने पर असीम प्रसन्नता व अलौकिक अनुभूति और मन को एक शान्ति का अहसास हुआ। परमपूज्य माताजी से विधान में सानिध्य प्रदान करने के लिए निवेदन किया गया। माताजी ने सहर्ष स्वीकार किया। अष्टान्हिका पर्व के वह आठ दिन मानों एक दिन में ही समाप्त हो गए हों। परमपूज्य माताजी विधान के महत्व एवं पूजाओं का अर्थ अपनी सुंदर, सुगम व सरल भाषा में वर्णन करतीं, हम लोग मंत्रमुग्ध होकर सुनते। विधान के समापन होने तक एक अलौकिक व्यक्तित्व के मोहपाश में पूरा परिवार बंध चुका था। हस्तिनापुर से जाने का मन नहीं था, फिर भी जाना मजबूरी थी। जाना पड़ा, पर बार-बार दर्शनों की उत्कण्ठा के कारण आना-जाना लगा रहा और एक दिन माताजी की प्रेरणा से हस्तिनापुर आ बसने का निर्णय हो गया। सन् 1977 में पूरा परिवार हस्तिनापुर आ गया तथा माताजी के सानिध्य में रहकर परमपूज्य माताजी का एक-एक गुण सामने आता रहा। माताजी वात्सल्य की प्रतिमूर्ति तो हैं ही एक महान लेखिका हैं ही, एक महान कवियित्री हैं ही, बड़े-बड़े तीर्थों की सृजनकर्त्री हैं ही, आगम की महान ज्ञाता हैं ही परन्तु एक ऐसी प्रेरणास्रोत भी हैं जिनके पास मात्र पहुँच जाने से ही शंकाओं एवं समस्याओं का समाधान स्वयमेव ही हो जाता है और मन एक नए स्पंदन एवं प्रेरणा से ओतप्रोत हो जाता है।

हमने तो कई बार यह महसूस किया, जब भी कोई समस्या या आपत्ति हमारे या परिवार के ऊपर आई, माताजी के दर्शन करते ही जिस प्रकार सूर्य के उदय होने से अंधकार स्वयमेव ही हट जाता है, ऐसे ही समस्याएँ व विघ्न बाधाएँ भी समाप्त हो जाती हैं। वास्तव में इन 30 वर्षों में पूज्य माताजी के चारित्र एवं व्यक्तित्व का सम्पूर्ण अवलोकन करने के उपरान्त ही ऐसा लगता है कि मानों अभी भी कुछ जानना बाकी है। ऐसी ज्ञानमयी, आभामयी, महान व्यक्तित्व-कृतित्व एवं सृजनकर्त्री परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का स्वर्ण जयंती दीक्षा महोत्सव हम लोग मनाने जा रहे हैं, यह वास्तव में हम लोगों के जीवन का बड़ा ही गौरवशाली क्षण है, कभी-कभी तो एक स्वप्न सरीखा अहसास होता है और वास्तविकता के धरातल पर आने पर मन एक गौरव और अश्रुपूरित खुशी से भर उठता है कि ऐसी परमपूज्य माताजी का सानिध्य हमें प्राप्त हुआ। वास्तव में कितने पुण्य किये होंगे, जो माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। हम तो स्वार्थी लोग हैं, माताजी की इस स्वर्ण जयंती दीक्षा महोत्सव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में परमपुनीत एवं एकमात्र अवसर पर भी मैं तो यही विनयांजलि अर्पित करता हूँ कि माताजी का सदैव दर्शन सानिध्य मेरे पूरे परिवार को प्राप्त होता रहे तथा मेरी समस्त भवबाधाएँ माताजी के दर्शन से कटती चली जाएँ। पूज्य माताजी के चरणों में त्रिकाल त्रिबार वंदामि।

-मनोज कुमार जैन, मेरठ

युगप्रवर्तिका माताजी

जिस प्रकार बीसवीं शताब्दी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युग प्रवर्तक चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज हुए हैं, उसी प्रकार क्वाँरी कन्याओं के लिए त्यागमार्ग प्रशस्त करने वाली युगप्रवर्तिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं। इनसे पहले किसी भी क्वांरी कन्या ने आर्यिका दीक्षा धारण नहीं की थी।

इन्होंने बचपन में स्वाध्याय के बल से इतना ज्ञान प्राप्त कर लिया था कि उन्होंने सोचा, जब भगवान ऋषभदेव के समय उनकी पुत्री ब्राह्मी-सुन्दरी ने शादी न करके ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके भगवान के समवसरण में आर्यिका दीक्षा लेकर गणिनी पद प्राप्त कर लिया था, तो आज मैं भी क्यों न आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके आर्यिका दीक्षा लेकर अपना आत्मकल्याण करूँ। कहते हैं 'भावना भवनाशिनी'। और उन्होंने अपने पुरुषार्थ के बल पर सब करके दिखा दिया।

ऐसी पुरुषार्थी ज्ञानमती माताजी के पुरुषार्थ की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए मैं उनके 50 वर्ष के दीक्षित जीवन के पुष्पित, पल्लवित होते विशाल वटवृक्ष को देखते हुए उनके ज्ञान, संयम, चारित्र के प्रति विनयावनत होते हुए भगवान जिनेन्द्र देव से यही प्रार्थना करता हूँ कि माताजी स्वस्थ रहें और दीर्घायु हों और हमें भी इस संसार से निकाल कर भवसागर से पार लगा दें, उनके चरणों में यही विनम्र विनयांजलि है।

-राकेश जैन, मेरठ

जो एक मात्र देश की नहीं पूरे जम्बूद्वीप की निर्मात्री हैं

मैंने कई बार दुनिया को नजदीकी से जानने का प्रयास किया। कई बार अपने आप को अकेले किसी मोड़ पर खड़ा करके जिंदगी को और उस जिंदगी में रचे-पचे इंसान को अंदर-बाहर से झाँकने का प्रयत्न किया। तब अंतरंग से आती मुस्कान ने मुझे यही बताया कि जाता हुआ कोई इंसान तो बहुत खुश है लेकिन कोई इंसान बहुत दुखी भी है, किसी के घर दीवाली सी रौनक है तो किसी के घर श्मशान सा सन्नाटा है, किसी का भण्डार भरा है तो किसी के यहाँ भण्डार का अस्तित्व ही नहीं है। दुनिया के इस रेले को जब दुनिया से ही हट कर जानने की कोशिशें की तो मुझे धर्मगुरुओं के द्वारा कही जाने वाली बातों ने सहसा ही जकड़ लिया, बस एक पल के लिए भगवान के प्रति राग और संसार के प्रति विराग की भावनाओं ने मेरे अन्तरमन में जन्म लिया। मुझे आत्मा के अस्तित्व का कुछ अहसास यूँ हुआ कि जैसे आत्मा बहुत ही गहरी तिजोरी में रखे कोहिनूर हीरे के समान है, जिसके दिव्य प्रकाश को, उसकी रेश्माओं को हम महसूस तक नहीं कर पा रहे हैं। वहीं संसारी प्राणी के बारे में यही चिंतन आया कि मनुष्य सचमुच ही क्षणभंगुर भोगोपभोग के रसास्वादन में निमग्न है, जिसका अस्तित्व मात्र पानी के बुलबुले के समान है। मनुष्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने वास्तविक अस्तित्व और कर्तव्यों से दिशाहीन होकर मानवता के सारे नियमों को ताक में रखकर स्वार्थ का जीवन जीता है। निःसंदेह समाज में कुछ विरले प्राणी ही ऐसे होते हैं, जो महापुरुष के रूप में वास्तविक लक्ष्य की ओर चलते हैं।

मेरा एक पल बीत गया, वापस वक्त ने मुझे अपने पिंजड़े में कैद कर लिया, लेकिन दुबारा मुझे इस चिंतन ने इतना तो बता ही दिया कि आत्मा कैसी हो सकती है, उसका दिव्य प्रकाश कितना अलौकिक हो सकता है। हमारे द्वारा किये जाने वाले अच्छे और बुरे कार्यों से उस आत्मा की प्रभा पर क्या प्रभाव पड़ता होगा......इत्यादि।

कछुए के समान दबे पैरों से समय निकलता गया। संतों का समागम होता रहा। धर्म की शिक्षाएँ, प्रेरणाएँ और उसका महत्व यदा-कदा कभी गुरुओं से तो कभी अपने पारिवारिक संस्कारों से प्राप्त होता रहा। इसी मध्य अपने लौकिक गुरु डॉ. अनुपम जैन के माध्यम से एक ऐसा अवसर आया जब प्रथम बार महागुरु परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन किये, उनके दर्शन करके मानों मैंने इस धरा पर अपने हर श्वेतवर्णी चिंतन को साकाररूप में पा लिया। पूज्य माताजी का बाह्य आवरण अवश्य ही श्वेत है लेकिन निःसंदेह ही उनके अंतः पटल से निकलती जीवदया और प्राणी मात्र के प्रति कल्याण की भावनाएँ उनके अंतः आवरण को भी स्पष्ट एवं श्वेत प्रदर्शित करती हैं। सन् 1934 में शरदपूर्णिमा के दिन जन्मीं इस महान आत्मा का अंतरंग उतना ही बेदाग है जितना कि शरदपूर्णिमा का चाँद हुआ करता है। जिस प्रकार प्रतिदिन उदीयमान सूर्य स्वयं तपकर भी अपनी किरणों से संसार में जीवन के अस्तित्व का पल्लवन करता है एवं जीवों के पोषण में महान सहकारी बनता है, उसी प्रकार पूज्य माताजी ने भी सूर्यसम कठोर तपस्या में तपकर इस पृथ्वी पर जहाँ जैन धर्म एवं संस्कृति के अस्तित्व का उन्नयन कर वर्तमान की महती आवश्यकता में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, वहीं उन्होंने मानव जीवन के उच्च संस्कारों को भी इस धरा पर पोषित कर बेमिसाल प्रयास किया है। पूज्य माताजी ने त्याग के इन स्वर्णिम 50 वर्षों में हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप, प्रयाग-इलाहाबाद में ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ, कुण्डलपुर (नालंदा) में नंद्यावर्त महल एवं अयोध्या, पावापुरी, राजगीर, गुणावां, मांगीतुंगी आदि अनेक पवित्र स्थानों, तीर्थों के निर्माण एवं विकास की सफल प्रेरणा दी है और स्वयं अपनी लेखनी से सच्चे आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन कर उसका सार 200 से भी अधिक ग्रंथों में निबद्ध किया है। मैं समझता हूँ कि पूज्य माताजी ने अपने जीवन में तीर्थ एवं साहित्य निर्माण के साथ देश में हजारों किमी. की पदयात्रा करके चारित्र निर्माण के क्षेत्र में भी कोई कम कार्य नहीं किया है। पूज्य माताजी ने प्रारंभ से ही जहाँ अनेकों भव्य जीवों को सच्चे आगम का अध्ययन करवाकर अनेकानेक मोक्षमार्ग के पथिकों को राह दिखाई है, वहीं स्थान-स्थान पर जन-जन को शाकाहार, अहिंसा और जीव दया जैसे सिद्धान्तों को बताकर मानव समाज का कल्याण किया है

पूज्य माताजी के व्यक्तित्व को शब्दों में गूंथा नहीं जा सकता, सिर्फ महसूस किया जा सकता है। उदारमना पूज्य माताजी का हृदय एक ऐसी अखण्ड रत्नमयी शिला के समान है, जिससे निकलने वाली दिव्य किरणें सभी को प्रकाशित एवं लाभान्वित करती हैं। पूज्य माताजी के समक्ष आने वाले हर व्यक्ति को वे महत्व देती हैं। पूज्य माताजी में धर्म प्रभावना और संस्कृति संरक्षण के प्रति सृजनात्मक चिंतन और चंचलता हर पल बनी रहती है, वे सोते, उठते-बैठते भी किसी ऐसे कार्य अथवा योजना का चिंतन करती रहती हैं, जो धर्म, संस्कृति एवं मानव मात्र के लिए लाभकारी हो। समाज पर अनेकानेक अप्रतिम उपकारों को करने वाली पूज्य माताजी के प्रति हर किसी का मस्तक श्रद्धा से नत हो जाता है और ऐसी अतिशयी आर्यिका माताजी के दर्शन को मन लालायित हो उठता है।

भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी जैन शब्दकोश के निमित्त से मुझे भी जब धर्म के प्रति अगम्य श्रद्धा एवं विश्वास रखने वाली पूज्य माताजी को नजदीकी से देखने व जानने का और उनका सानिध्य, स्नेह एवं आशीर्वाद प्राप्त करने का मौका मिला, तब इस महान आर्यिका संघ के बारे में मैंने सुनी हुई प्रशंसा से बहुत अधिक विशेषताएँ देखी, उसमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ पूज्य माताजी की योजनाबद्ध कार्यप्रणाली से, जो इनकी सर्वतोमुखी सफलता का प्रमुख कारण समझ में आया।

मैंने तपस्वी संतों की तपस्या के प्रभाव को सुना जरूर था लेकिन पूज्य माताजी का सानिध्य पाकर उसे प्रत्यक्ष महसूस किया है। गुरुओं की महान तपस्या और धर्म के प्रति उनके प्रगाढ़ अनुराग एवं समर्पण में अतुलनीय शक्ति होती है। यह बात प्रमाणिकरूप से मेरे मन में तब जन्मीं जब मई-जून 2005 में मैंने पूज्य माताजी की गंभीर अस्वस्थता के क्षण अपनी आँखों से देखे। पूरा संघ उनकी प्रासुक चर्या में लगा था और माताजी के सुदृढ़ आत्मबल के समक्ष सभी के सारे व्यवहारिक प्रयास असफल थे क्योंकि उन्होंने किसी भी वैद्य द्वारा बताई जाने वाली आयुर्वेदिक औषधि की एक भी पुड़िया लेने से पूरी तरह इंकार कर दिया था, फिर तो चौबीस घंटे स्तोत्रपाठ, अध्यात्मपियूष, समयसार एवं इन्द्रध्वज आदि विधानों की सारगर्भित वैराग्यभरित जयमालाओं का सुनना ही उनका ज्ञानामृत भोजन बन गया था, वही स्वाध्याय का प्रयोगात्मक स्वरूप इनकी पुनः स्वस्थता में कारण बना और जैन समाज की इस अमूल्य निधि का एक बार फिर से हम लोगों को सतयुगी ब्राह्मी माता के रूप में दर्शन सानिध्य प्राप्त हो सका है अब वे निरंतर लेखन-प्रवचन आदि में तल्लीन हैं। इनकी दृढ़ इच्छा शक्ति देखकर मैं भी जान सका हूँ कि सच्चे साधु आज भी किस प्रकार आत्मसाधना के द्वारा शरीर से निर्ममता को रखते हुए मोक्षमार्ग पर चलते रहने का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, हमें भी उनकी भक्ति करते हुए अपना जीवन सार्थक करना चाहिए।

ऐसी त्याग तपस्या की प्रतिमा पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जो घरों की नहीं तीर्थों की निर्मात्री हैं, जो मात्र भारत देश की नहीं पूरे जम्बूद्वीप (जैन भूगोल की रचना) की निर्मात्री हैं, जो विनाश की नहीं सृजन की प्रणेत्री हैं, जहाँ इन्द्रिय जन्य सुख नहीं आत्मजन्य सुख का प्रवाह होता है, जहाँ विकारों का नहीं निवृत्ति का आधिपत्य रहता है, जो सूर्य महाग्रह की तरह मात्र बाह्य को नहीं अंतरंग को भी प्रकाशित करती हैं, जो स्वार्थ की नहीं निःस्वार्थ की प्रतिमूर्ति हैं, सदैव जिनके कार्य की गति समय की तीव्रतम गति को भी चुनौती देती है, जम्बूद्वीप रचना के बाद जिनका मन-मस्तिष्क अब तेरहद्वीपों की रचना में लगा है, ऐसी महाशक्ति महामना की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के इस महान अवसर पर उनके पावन चरण कमलों में विनयांजलि अर्पित करते हुए अपने बाल मस्तक को उनके वात्सल्यमयी आशीर्वाद से पवित्र करने का अभिलाषी—

-जीवन प्रकाश जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

इतिहास की प्रतिमूर्ति ज्ञानमती माँ

परिवर्तनशील काल के अनन्त क्रम में कतिपय ऐसी विभूतियों का आविर्भाव होता है, जो अपने विराट कर्तृत्व से नवीन इतिहास का निर्माण करके पश्चात्वर्ती युग के लिए अपने प्रेरणादायी पदचिन्ह छोड़कर प्रयाण करती हैं। पूज्य गणिनी 105 आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी उन शिखर प्रज्ञावान मनीषियों में अग्रणी हैं। उन्होंने धर्म, समाज के लिए अपने सम्पूर्ण शीलमय एवं विशेषतः 50 वर्षों के नारी पर्याय के उत्कृष्ट पद श्रमणी रूप में त्याग-तपस्या के द्वारा बहुआयामी महनीय आध्यात्मिक योगदान किया है। वे इस दृष्टि से मानों जनसमुदाय के लिए वटवृक्ष ही प्रतीत होती हैं, जिसकी शीतलछाया में व्यक्ति शोक-संताप को भूल जाता है।

सम्यग्ज्ञान के क्षेत्र में अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग एवं सतत स्वाध्यायशील रहते हुए उन्होंने जिनागम के सभी विषयों पर विशाल साहित्य की रचना कर मानदण्ड स्थापित किया है। वे गंभीर से गंभीर विषयों पर लेखनी प्रयोग करने में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धहस्त सारस्वत हैं। सिद्धान्त, न्याय, दर्शन, अध्यात्म, भक्ति, इतिहास, गणित आदि सभी आयामों पर चारों अनुयोगों की सापेक्षता लिए हुए उनका प्रणयन लगभग 2 शतकीय ग्रंथमाला के रूप में अवतार ले चुका है। उनके द्वारा भाषा व्याकरण, पिंगल आदि लेखन-कारकों के समष्टि रूप ज्ञान के अकथित प्रयोग से ऐसा प्रतीत होता है कि मानों ब्राह्मी और सुन्दरी की प्रतिनिधि ही अवतरित हुई हों। वे आगम ज्ञान की भंडार हैं। षट्खण्डागम की सिद्धान्त चिंतामणि, नियमसार की स्याद्वाद चन्द्रिका आदि संस्कृत भाषा में रचित टीकाएं आचार्य वीरसेन स्वामी का पावन स्मरण दिलाती हैं। अष्टसहस्री, कातंत्र का अनुवाद लोहे के चने चबाना कहावत को चरितार्थ कर रहा है।

पूज्य माताजी सातिशय पुण्यात्मा हैं, उनके संकल्पित कार्य सदैव पूरे होते हैं। तीर्थों के विकास, विशेषतः जम्बूद्वीप, मांगीतुंगी, अयोध्या, इलाहाबाद, कुण्डलपुर (नालंदा) एवं तीर्थंकर जन्मकल्याणक से पवित्र क्षेत्रों के विकास क्रम में धर्मायतनों में लगे पाषाण पवित्र स्वरूप होकर उनके यशोगान में मुखरित से प्रतीत हो रहे हैं। इनसे जैन धर्म परम्परा प्रस्फुटित हो रही है।

पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी समता और साहस की धनी हैं। विपरीत परिस्थितियों, विरोध, अस्वास्थ्य आदि विषमताओं के मध्य भी त्याग और तपोबल के सम्बल द्वारा वे अनवरत लेखनी के माध्यम से साहित्य का सृजन कर रही हैं। असीम गुणों से युक्त वे सरस्वती की मूर्ति ही हैं।

जैन इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों का स्वरूप उनका जीवन हम सबके लिए गौरव एवं प्रेरणा का प्रतीक है।

निम्न पंक्तियाँ उनके व्यक्तित्व पर सटीक बैठती हैं—

सम्पदि यस्य न हर्षे, विपदि विषादो रणे न भीरुत्वं।
तं भुवनत्रयतिलकं, जननी जनयति सुतं विरलम्।।

ऐसी माताजी के प्रति कोटिशः वंदामि। भगवान् से मंगल कामना है कि वे स्वस्थ एवं चिरंजीवी होकर रत्नत्रय की उत्कृष्टता को प्राप्त करती हुईं लोक-कल्याण में अग्रसर रहें।

-पं. शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी

वात्सल्य-गंगा : माँ ज्ञानमती

परमपूज्या गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का स्मरण आते ही मानों सरस्वती की छवि ही साकार हो उठती है। धवल परिधान में वेष्टित देह स्वयं चारित्रिक धवलता का प्रतीक है। माँ के चेहरे का तेज उनकी साधना को प्रतिबिंबित करता है, उनका अखंड ब्रह्मचर्य ही उनकी दृढ़ता का द्योतक है।

'मैना' ने जब सोचा 'मै' 'ना' बस, अन्तस भर गया तीर्थंकरों की उस ज्योतिं से, जिसने पूरा जीवन ही आलोकित कर दिया। किशोरी मैना चल पड़ी उस कंटकाकीर्ण मार्ग पर, उन्हें कहाँ ध्यान था देह के कष्टों का? भक्तिरस में पगी यह मुक्तिपथ की मीरा को कंकड़ भी फूल ही लगे। मैना एक दिन वीरमती हो गईं, तो पूज्य आचार्यों के दर्शन-ज्ञान-चारित्र की त्रिवेणी में अवगाहन करते-करते स्वयं दर्शन-ज्ञान-चारित्र की त्रिवेणी बन गई। भगवान गोमटेश के चरणों में दत्त-चित्त होते-होते मानों परीषह सहन करने का ध्येय ही जीवन में उतार डाला। साधना के पथ पर वीरता से बढ़ने वाली वीरमती एक दिन 'ज्ञानमती' के रूप में संसार को ज्ञान के भंडार के रूप में प्राप्त हुईं।

श्रुत के प्रति समर्पित इस सरस्वती ने जैसे ज्ञान की वीणा के तार ही झनझना दिए और उसमें से फूटे वे स्वर जो साहित्य की अमोल देन बन गये, क्लिष्ट व्याकरण भी सरल हो गया, कठिन ग्रंथ भी सरल प्रवाह में बहने लगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शरीर से मोह त्याग कर जैसे श्रुत संवर्धन ही जीवन का लक्ष्य बन गया और उस श्रुत तपस्या का परिणमन 200 ग्रंथों में समाता गया..........समाता गया.............समाता जा रहा है............समाता जा रहा है।

कैसी है यह साधिका! देह की ओर ध्यान ही नहीं, व्याधियों को जैसे अपनी इच्छा से दूर कर दिया। अरे! व्याधियाँ भी हाथ जोड़कर पराजय स्वीकार कर लौट गईं।

साधना ने 50 बसंत-वर्षा-शिशिर देखे......पर इस साधिका को कहाँ पता चला कि-'कब दिन डूबा, कब रात ढली' साधना और सिद्धि की यह तपस्विनी चिंतित रही कि भगवान आदिनाथ की जन्मभूमि, तपभूमि जैसे नहिंवत् हो गई हैं, भगवान महावीर का कुण्डलपुर सूना-सूना है। बस उस ओर कदम मुड़े और देखते-देखते कुण्डलपुर, इलाहाबाद, अयोध्या की चमक लौट आई। वे सही अर्थों में तीर्थ बन गये।

इसी परिप्रेक्ष्य में यह सोचती रहीं कि सभी तीर्थंकरों की जन्मभूमियाँ सही अर्थों में तीर्थ बनें......बस यह अभियान भी अब कार्यरत है। मांगीतुंगी पर 108 फुट उत्तुंग भगवान आदिनाथ को प्रस्थापित करने का संकल्प तरंगायित हो रहा है।

कौन कहता है कि जैनधर्म के पास गणित-भूगोल-इतिहास या परम्परा नहीं है। यह लोगों के अज्ञान को दूर करने हेतु पूरा जैन भूगोल हस्तिनापुर की धरती पर जगत का आह्वान कर रहा है कि "आओ! मुझे देखो! पढ़ो और अपने लोक को पहिचानो।'

ज्ञानमती जी के जिसने दर्शन किए, वह तो पावन हो ही गया, पर जिनके शिर पर उनके ममतामयी आशीर्वाद के हाथ का स्पर्श हो गया, वह लोहा भी स्वर्ण बन गया। धरती का व्यक्ति आकाश की ऊँचाइयाँ छूने को मचलने लगा। उसे कीर्ति-यश स्वयं प्राप्त होने लगा। उनका हाथ मस्तक पर हो, तो लगता है कि ज्ञान की कोई किरण अंतर को आलोकित कर रही है।

ऐसी माँ, जिसके चेहरे पर चमक है, आँखों में वात्सल्य है, मुस्कुराहट में अमृतवर्षा है, आशीष में वरदान है, का सानिध्य ही हमारा परम सौभाग्य है।

पूज्य माँ की उम्र 72 वर्ष, दीक्षा की आयु 50 वर्ष हो गई है। मैं तो चाहता हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि उनका 100वाँ दीक्षा या वैराग्य दिवस भी मनाने का आने वाली पीढ़ी को अवसर मिले, वे पूर्ण स्वस्थ रहें। अपने वात्सल्य का अमृत सबको बाँटती रहें, यही प्रार्थना-अभ्यर्थना।

हे ज्ञान भास्कर सी भाषित माँ तुम्हें प्रणाम,
हे सरस्वती की प्रतिमूर्ति माँ तुम्हें प्रणाम,
हे वात्सल्यमयी माता गंगा तुमको प्रणाम,
हे 'शेखर' की आराध्य माँ तुमको प्रणाम।

-डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद
(अध्यक्ष-भगवान ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ)

जिनके तिरेपन चातुर्मास पूरे हो चुके हैं

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने वैसे तो जीवन के 71 बसन्त पूर्ण किये हैं परन्तु साधु जीवन के भी 53 चौमासे पूर्ण किये हैं, 1953 में क्षुल्लिका दीक्षा आचार्यप्रवर श्री देशभूषण जी महाराज ने अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में प्रदान कर वीरमती नाम दिया था। तीर्थंकर महावीर के इस शासनकाल में माता वीरमती ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्याकरण और संस्कृत का गहनतम अध्ययन प्रारंभ किया, जिससे भविष्य में स्वयं तो लाभान्वित हुईं ही, तमाम साधु और साध्वियों को भी लाभान्वित किया। मात्र तीन वर्ष की क्षुल्लिका दीक्षा के काल में ही शिक्षा, अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन समाज को दिखा, तो एक स्वर से वीरमती की सर्वत्र मुनि संघों में प्रशंसा होने लगी। माताजी ने कुंथलगिरि पर सल्लेखनारत आचार्य शांतिसागर महाराज से आर्यिका दीक्षा हेतु प्रार्थना किया। माताजी की योग्यता, साहस, दृढ़ता देखकर पूज्याचार्य श्री ने प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज को आर्यिका दीक्षा देने की अनुमति प्रदान कर दी। सल्लेखना के बाद प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री ने आपको आर्यिका दीक्षा देकर ज्ञानमती नाम प्रदान किया। गुरु आज्ञा से आपने देश के विभिन्न अंचलों में पदविहार करके, धर्म की उन्नति में नये मानकों का सृजन करके देश और समाज के उद्धार हेतु बहुत बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न किये।

इसके पूर्व जब आप गृहस्थ अवस्था में बालिका मैना थीं, तभी विलक्षण प्रतिभा की धनी थीं। 14 साल की उम्र में ही अपनी माता मोहिनी देवी से गृहस्थ में रहते हुए धर्मचर्चा किया करती थीं। खासकर समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति किन्तु चर्चा ही नहीं, कार्यरूप में परिणत करते हुए मैंने स्वयं देखा है। जब किसी हिन्दू या अन्य पर्वों पर देवी-देवताओं की आराधना, बालप्रथा, परदा प्रथा, दहेज प्रथा आदि पर चर्चा होती थी, तो लगता था मानों देवी का अवतार, समाज की सच्ची सुधारिका, यह भाग्यवान कुमारिका मैना ने पिता छोटेलाल के घर अवतार लिया हो। दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ विद्यालय टिकैतनगर के शिक्षक पंडित कामताप्रसाद जैन, पंडित जमुना प्रसाद जैन एवं अन्य आश्चर्यचकित थे कि मैना कैसे और कितनी शीघ्र पाठ कंठस्थ कर लेती है? अतः अन्य बालिकाओं से दो गुना, चार गुना पाठ याद करने के लिए देते थे, फिर भी शुद्ध और धारावाहिक सुना देती थी। एक बार मेरे दो छोटे भाइयों प्रकाशचंद्र एवं सुभाषचंद्र को चेचक का प्रकोप हो गया। भयानक बड़ी और फफोले वाली चेचक देखकर दिल दहल जाता था। दादी ने कहा कि बेटी! कुलदेवता को ढरकौना आदि दिलावो, इन पर देवी की दृष्टि है, अगर देवी कुपित हो गई, तो बच्चों की जान चली जायेगी।

कुमारी मैना ने कहा कि यह देवी का प्रकोप नहीं, बल्कि रोग है, जिनेन्द्र भगवान का गंधोदक लगाने से, जिनेन्द्र भगवान की पूजा करने से रोग से छुटकारा मिल जायेगा। परन्तु दादी, बुआ व कुछ बूढ़े रिश्तेदार भी अड़े हुए थे कि कुल परम्परा से जो होता आया है, उसके न करने से देवी अप्रसन्न हो जायेगी और बच्चों का भविष्य खतरे में है किन्तु माँ की स्वीकृति होने से प्रतिदिन ऋषिमण्डल महापूजन एवं अभिषेक का गंधोदक बच्चों पर छिड़का जाता रहा और कुछ दिनों में अद्भुत सफलता मिली किन्तु इस कार्य में इतनी भ्रान्तियाँ थीं कि पग पग पर कठिनाईयों का, संघर्षों का सामना करना पड़ता था। अपने जन्मस्थान से कुछ दूरी पर देवी पाटन, किन्तूर आदि कुछ जगह पर देवी-देवताओं को मूक पशुओं की बलि चढ़ाई जाती थी, जिसे टिकैतनगर के ही लाला पन्नालाल, लाला उल्लाशाह, लाला शांतिप्रसाद फूसू आदि के प्रयासों से लोगों को समझा-बुझाकर बंद कराया गया था। आपने इस पुनीत कार्य में भगवान की पूजा-अर्चना कर बहुत सहायता की और सफलता मिलने पर बहुत खुशी व्यक्त की थी।

पानी छानने की अधूरी प्रक्रिया को शास्त्र के अनुसार पहिले तो अपने घर से प्रारंभ किया पश्चात् धीरे-धीरे पूरे नगरवासियों को बताया। रात्रि में भोजन करने एवं कंदमूल का स्वयं तो त्याग किया ही, घर के बड़े-बूढ़ों को भी कराकर इस अवरुद्ध मार्ग को भी प्रशस्त किया।

एक दिन रात्रि को जीजी मैना ने एक अद्भुत स्वप्न देखा, जिससे वह प्रसन्न तो थीं, पर उसका विस्तार से फल जानने की उत्कण्ठा से व्याकुल भी थीं और जब उन्होंने एकान्त में मुझसे कहा कि देखो कैलाश! मैंने एक स्वप्न देखा है। उनका स्वप्न सुनकर मैंने अपनी अल्पबुद्धि से कहा कि बहुत लोग जो इकट्ठा हुए हैं, वह एक धर्मसभा है, परिजन एवं बड़े मामा और बड़े पिता जी (ताऊ जी) तो तुम्हारा हाथ पकड़ रहे हैं, यह तुम्हें केशलोंच करने से रोक रहे हैं और रोने धोने का अर्थ है-कुटुम्बी जन रो-धोकर रोक रहे हैं। धर्म की चादर ऊपर है, तुम जहाँ-जहाँ जावोगी,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह स्थान धर्म की प्रखर ज्योति से आलोकित होकर उठेगा और जो तुमने सफेद साड़ी का स्वप्न देखा है, वही तो तुम्हारा आर्यिका का वेश होगा इत्यादि।

मुझे जहाँ तक याद है, यह स्वप्न 1952 का है, मेरी उम्र उस समय 13/14 वर्ष के ही करीब थी। पिताजी अक्सर कुछ बीमार रहा करते थे, सभी भाई-बहनों और परिवार की जिम्मेदारी मैं ही उठाता था।

पुनः एक दिन मुझे एकान्त में बुलाकर जीजी मैना ने मुझसे यह शब्द कहे, जो मुझे आज भी याद हैं। कहा था कि तुम मेरे छोटे भाई हो और अत्यन्त प्रिय हो, तुम मुझे वचन दो कि मैं तुम्हारा कहना मानूँगा, जो तुम कहोगी, वह करूँगा। मैंने सहजभाव में हाँ कर दिया। जीजी ने बड़े वात्सल्य से मेरे सर पर हाथ फेरकर कहा कि मैंने सुना है कि बाराबंकी में आचार्यरत्न देशभूषण महाराज का चातुर्मास हो रहा है, मुझे उनके दर्शन करा दो, सुना है वे बहुत ही विद्वान और तपस्वी हैं, किन्तु एक बात और है कि पिताजी जानने न पावें, वह मुझसे बहुत प्यार करते हैं, मुझे जाने नहीं देंगे। मैं उस समय बहुत धर्मसंकट में पड़ गया और मैं कुछ सोचने लगा। एकटक सोचते हुए काफी देर हो गई, तब मुझसे जीजी ने कहा कि तुमने मुझे वचन दिया है, तो पूरा करो।

अगले दिन प्रातःकाल मेरी माँ ने मेरे साथ बहन मैना को महाराजश्री के दर्शनार्थ बाराबंकी भेज दिया। करीब 10.30 बजे हम लोग बड़े मंदिर बाराबंकी में पहुँच गये। आचार्यश्री के दर्शन कर आशीर्वाद ग्रहण किया। वहाँ रिश्तेदारी में भोजन किया, सायं मैंने वापस चलने को कहा, तो इन्होंने मुझसे कहा कि मेरा मन अभी दर्शनों से भरा नहीं है अतः भैय्या कैलाश! तुम घर चले जावो और पिताजी से प्रणाम कह देना तथा आठ दिन के बाद हम घर आयेंगे। बहुत अनुनय-विनय के बाद भी मैना का मन नहीं पसीजा। संभवतः यह पहला मौका था, जब मैं एक बार भी कुछ मांगता, चाहे खाने पीने या पहनने को या कोई सामान, चाहे दीपावली पर्व पर जैन समाज में सांस्कृतिक कार्यक्रम पर लेख लिखना हो, वे सारे काम अलग रहते थे और जीजी का मुझ पर स्नेह अलग। मैं कितने भारी मन से घर वापस लौटा और जब पिताजी को यह बताया, तो वह बहुत ही रोये थे और मुझसे कहा कि "भैया! तुमने बिना मुझसे बताये बहुत बड़ी भूल की है, अब मैना कब आवेगी" और मैना की क्षण-प्रतिक्षण याद करके रोते रहते थे।

किसी तरह आठ दिन आठ वर्ष के समान बीते पुनः हम लेने गये किन्तु अब देखा कि वह जीजी मैना को मेरे प्रति वह मोह ही नहीं रहा। मेरे को रोते न देख पाने वाली बहन आज स्वयं मुझे रुला रही है और कह रही है कि "भैय्या मैं तुम्हारे घर नहीं जाऊँगी। तुमने मुझ पर बड़ा उपकार किया, जो मुझे घर से निकलने में सहयोग दिया है, अब मुझे पुनः उस पिंजड़े में मत बंद करो, नहीं तो पिताजी एवं सब लोग जबरदस्ती मेरी शादी कर देंगे और मोह के कारण मेरा जीवन नर्क कर देंगे। मैंने अकलंक-निकलंक का वह दृश्य कुछ ही दिन पूर्व नाटक में देखा है, जिसमें कहा गया कि "कीचड़ में पैर रखकर धोने की अपेक्षा कीचड़ में पैर न रखना ही लाभप्रद है" हमें पहली बार यह बेरूखी बहुत ही कष्टकारी लगी और मैंने घर आकर जब पिताजी को सारी बातें बताईं, तो वह शोक से मूर्च्छित हो गये।

और कुछ ही दिनों में मैना जीजी ने बाराबंकी में आचार्यश्री के सम्मुख केशलुंचन करना प्रारंभ कर दिया। जिसे पिताजी, ताऊजी एवं बड़े मामा ने हाथ पकड़कर रोका, तो उन्होंने इसे उपसर्ग मानकर अन्नजल का त्याग कर दिया। आचार्य महाराज ने मेरी माँ से अनुमति लेकर जीजी मैना को आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत बाराबंकी की विशाल सभा में दे दिया। आज 53-54 वर्ष बीत गये हैं, कुछ उस समय के नवयुवक जो अब वृद्ध हो चुके हैं, मौजूद हैं, जिन्होंने वैराग्यपूर्ण दृश्य को देखने का सौभाग्य प्राप्त किया था।

जहाँ भी चातुर्मास होता, सभी भक्तजन संघ के सभी साधुओं को दर्शन-वंदन तो करते परन्तु चर्चा करने एवं सुनने के लिए माताजी के पास ही भीड़ लगाते थे। इनके उपदेशों के लिए आचार्यश्री से निवेदन करते और बहुत ही ध्यान से उपदेश सुनते। माताजी समय निकालकर अध्ययन-अध्यापन-लेखन कार्य जारी रखतीं, जो आज भी जारी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीव्र असाता के उदय से जब गत वर्ष 2005 में माताजी की तबियत बहुत खराब हुई थी, तो हमने वीरप्रभु से एक ही वरदान मांगा था कि भगवान! जब मैं हस्तिनापुर अगली बार आऊँ, तो ज्ञानमती माताजी को मैं कलम कागज लेकर लिखते हुए दर्शन करूँ। मेरी और असंख्यों भक्तजनों की मनोकामना पूर्ण हुई। माताजी का जैसे ही कुछ स्वास्थ्य अनुकूल हुआ तुरंत ही षट्खण्डागम की पुस्तकों पर लेखनी को आगे बढ़ाया। अपने तपोमय जीवन में जो साहित्य माताजी ने दिया, वह युगों-युगों तक मार्गदर्शक रहेगा।

वर्तमान में भी उन्हीं धार्मिक संस्कारों के कारण मेरे पुत्र-पौत्र, प्रपौत्र, पुत्रवधुएँ सभी इस परम्परा का यथाशक्ति निर्वाह कर रहे हैं। मेरी पुत्रवधुएँ, पौत्रवधुएँ भी पूज्य माताजी की आज्ञानुसार व्रत, नियम आदि का पालन करके असीम प्रसन्नता एवं गौरव का अनुभव करती हैं।

भविष्य में भी यह पूरा परिवार धर्ममार्ग पर चलकर इस परम्परा का निर्दोषरूप से पालन करता रहे, यही मेरी हार्दिक भावना है तथा वीरप्रभु से मंगलकामना है कि पूज्य माताजी शतायु हों और दशों दिशाओं में माताजी की कीर्तिपताका इसी तरह फहराती रहे।

-कैलाशचंद जैन सर्राफ, लखनऊ
(संरक्षक-अ.भा.दि. जैन विद्वत् परिषद)
(तत्पुत्र आदीश जैन, पौत्र-अध्यात्म जैन, सिद्धार्थ जैन, अमृत जैन, आगम जैन,
प्रपौत्र सम्यक् जैन एवं समस्त परिवार)

पूज्य माताजी का मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहे

यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती का आयोजन किया गया है। पूज्य माताजी ने अपने इस दीर्घकाल में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये हैं। स्वयं उन्होंने बाल ब्रह्मचारिणी रहकर आर्यिका दीक्षा धारण की तथा अन्य युवतियों को भी मोक्षमार्ग में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित किया। हस्तिनापुर में आपकी प्रेरणा से निर्मित जम्बूद्वीप स्थल संसार का एक प्रमुख दर्शनीय स्थल बन गया है। आपने अनेक सैद्धान्तिक ग्रंथों का अध्ययन किया है तथा जन-साधारण को उसमें लिखित गूढ़ रहस्यों को समझाने के लिए अनेक ग्रंथ लिखे हैं। संभवतः आपके द्वारा रचित ग्रंथों/पुस्तकों की संख्या 200 के लगभग है। यह जैन साहित्य में उनका बहुमूल्य अवदान है। ऐसी विदुषी आर्यिका आज हमारे बीच हैं तथा समाज को आवश्यक दिशा-निर्देश दे रही हैं, यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है। पूज्य माताजी के माध्यम से जैनधर्म का अच्छा प्रचार हो रहा है। आप परम गुरु भक्त भी हैं, अपने गुरु द्वारा स्थापित मानकों को पूर्णतः पालन कर रही हैं।

आज़ समाज में कुछ बिंदुओं को लेकर मतभेद हैं। हम चाहते हैं कि पूज्य माताजी उन बिन्दुओं पर कुछ ऐसा समाधान प्रस्तुत करें, जो सभी को मान्य हो। पूज्य माताजी अन्य अनेक विषयों पर भी हम लोगों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करें, ऐसी विनय है।

मैं पूज्य माताजी के चरणों में सादर वंदामिपूर्वक विनयांजलि अर्पित करता हूँ और कामना करता हूँ कि माताजी दीर्घायु हों, जिससे हमें निरन्तर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे।

-डॉ. अनिल कुमार जैन, अहमदाबाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्तिमार्ग प्रदर्शिका पूज्य माताजी

पूज्य माताजी ने अपनी लेखनी से अनेक छोटे-बड़े पूजन-विधानों की रचना कर जनसामान्य के लिए भी भक्तिमार्ग के द्वारा ज्ञानाराधना करने का माध्यम प्रदान किया है। ज्ञानी व विद्वान् श्रावक तो बड़े-बड़े ग्रंथ पुराण पढ़कर ज्ञानार्जन कर लेते हैं, पर एक सामान्य श्रावक किस प्रकार धर्म के मर्म को जाने, इसके लिए पूजन-विधान एक सरल साधन है। आपकी लेखनी में इतनी सरलता होते हुए भी गूढ़ ज्ञान भरा होता है, जिसे हर कोई पढ़कर इसके भाव को समझ लेता है। ज्ञान के बिना जीवन अंधकारमय प्रतीत होता है, थोड़ा सा भी ज्ञान जीवन को प्रकाशित कर देता है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरु का सानिध्य आवश्यक है, इसके बिना वह ज्ञान अधूरा होता है। पूर्ण ज्ञान ही परलोक की सिद्धि में कारण हो सकता है। इसलिए कहा है—

ज्ञान समान न आन, जगत में सुख को कारण।
इह परमामृत जन्मजरा मृत रोग निवारण।।

पूज्य माताजी के स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर विनम्र विनयांजलि और उनके चरणों में शतशः नमन।

-सुनील कुमार जैन सर्राफ, मेरठ

सच्ची माता हैं आप!

संसार में तीन प्रकार की माताएँ होती हैं—जननी (जन्म देने वाली), भरणी (पालने वाली) और तारणी (तारने वाली)। परन्तु कभी-कभी भरणी नहीं होती है जैसा कि नारायण श्रीकृष्ण जी के साथ हुआ। जननी एवं भरणी का लक्ष्य होता है कि उसकी संतान संसार में नाम एवं धन कमाये, परिवार की सेवा करे और अपनी सात पीढ़ी के लिए धन इकट्ठा करे। कभी-कभी ये दोनों माताएँ अपने इस सांसारिक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु अपने पुत्रों को मोहजाल में फँसा देती हैं, जिस दुष्चक्र से वापस निकलना उसके लिए संभव नहीं होता है, परन्तु तारणी ही एक ऐसी माता होती है, जो उस डूबते हुए पुत्र को हस्तावलम्बन देकर संसार समुद्र में समा जाने से बचाती है। उसे उस गहरे समुद्र की लहरों से निकालकर, दुलारकर, पुचकारकर, फटकारकर या कभी-कभी मार लगाकर भी सच्चे मार्ग में लगाती है।

ऐसी ही माता आज से ठीक 39 वर्ष पूर्व मुझे मेरे गृहनगर से 18 किलोमीटर दूर बेड़िया ग्राम में मिली। उन्हें देखकर एक क्षण में ही ऐसा आभास हो गया कि शायद मैं 21 वर्ष की उम्र तक जिसे ढूँढ़ रहा था, वह मुझे मिल गई।

मुझे जन्म देने वाली माता सन् 1956 में (पूज्य माताजी के दर्शन से 11 वर्ष पूर्व) छोड़कर चली गई थीं, जिसकी पूर्ति उस सौभाग्यशाली दिन हो गई। पिछले 39 साल से पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में जो मैंने और मेरे परिवार ने पाया, उसका एक पृष्ठ में वर्णन करना अत्यंत असंभव है। इतना ही कहूँगा कि माताजी ने मुझे दृढ़ता, धर्म में निष्ठा, धर्म के प्रति समर्पण, साधर्मी वात्सल्य, ममत्व, स्नेह और त्याग का मार्ग सिखाया और उस पर पक्का कर दिया। यही कारण है कि जब मुझे सन् 1996 में बैंक की नौकरी के दौरान एक चार लाख रुपये का मछली पालन का ऋण स्वीकृत करने का प्रस्ताव ठुकराकर नौकर छोड़ने का निर्णय लेने में एक सेकेंड से अधिक का समय नहीं लगा। मैं तो यही कहूँगा कि माँ ने मुझे बचा लिया। ऐसे कई प्रसंग हैं, जब पूज्य माताजी के आशीर्वाद से हमने अपना जीवन सफल बनाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरी तो जिनेन्द्र देव से प्रार्थना है कि पूज्य माताजी सहस्रायु हों और मेरे जैसे संसार वन में भटके अनन्त प्राणियों को मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती रहें।

-डॉ. देवेन्द्र जैन (वास्तु सलाहकार), भोपाल (म.प्र.)

दीर्घ तपस्वी पूज्य माताजी

सन् 1967 में पूज्य माताजी का जब म.प्र. के सनावद नगर में चातुर्मास हुआ, तब से पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में निकटता से आकर उनका आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। पूज्य माताजी के आशीर्वाद से प्रत्येक कार्यों की सिद्धि सरलतापूर्वक हो जाती है। जैसे जब कोई प्रतिमा प्राचीन हो जाती है, तो उसमें अतिशय आ जाता है, वह चमत्कारिक हो जाती है उसके दर्शन से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। वैसे ही अपने 50 वर्ष के दीर्घ दीक्षित जीवन में तप, त्याग और दृढ़ चारित्र से इनमें भी ऐसा ही अतिशय प्रगट हो गया है कि जो भी भक्त इनके चरणों में आता है , उनके कष्टों का निवारण हो जाता है, ऐसे कई उदाहरण देखने में आए हैं। परोक्ष में भी यदि ऐसे गुरुओं का स्मरण कर नमस्कार करते हैं, तो आशीर्वाद से कार्यों की सिद्धि हो जाती है।

पूज्य माताजी द्वारा प्रेरित प्रत्येक कार्य के साथ मुझे जुड़ने का सदैव इसलिए मन बना रहता है कि पूरी प्लानिंग के साथ बड़े व्यवस्थित ढंग से कार्य का संचालन किया जाता है। पूज्य चंदनामती माताजी, पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज एवं कर्मयोगी रवीन्द्र भाई जी का स्नेह एवं संगठन शक्ति वास्तव में सराहनीय है। मुझे इस संघ में आकर जो आत्मीय भाव मिलता है, उसे कभी भूल नहीं सकता हूँ। यह सब आकर्षण पूज्य गणिनी माताजी की तपस्या का फल ही मैं समझता हूँ।

ऐसी दीर्घ तपस्वी, चारित्रचन्द्रिका पूज्य माताजी के चरणों में विनम्र विनयांजलि है।

-कैलाशचंद जैन चौधरी एवं
सौ. किरण देवी जैन, सनावद (म.प्र.)

जैन जगत की अद्वितीय धर्म प्रभाविका

विश्व के धर्मगुरु के रूप में विख्यात यह रत्नगर्भा भारत वसुन्धरा धर्मतीर्थप्रवर्तक तीर्थंकरों की जन्मस्थली तो है ही, इसने ऐसी महान विभूतियों को भी प्रसूत करने का गौरव प्राप्त किया, जिनने इस विषम पंचमकाल में भी अहिंसामय जैनधर्म का अपने बहुमुखी कार्यों द्वारा विश्व में व्यापक प्रचार-प्रसार किया है, उनमें परमपूज्य बीसवीं सदी की प्रथम बालसती रत्नत्रयपूर्णा, चारित्रचन्द्रिका अभीक्ष्ण, ज्ञानोपयोगी, सर्वोपयोगी विपुल साहित्य की सृजनकर्त्री, सरस्वती की प्रतिमूर्ति, न्याय प्रभाकर, सिद्धान्त कल्पतरु कलिका, डी.लिट्., महान तीर्थोद्धारिका, चिन्तनशील साधिका, धर्मप्रभाविका, जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका, वात्सल्यमूर्ति, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि 105 श्री ज्ञानमती माताजी,जो सर्वत्र ज्ञानज्योति का प्रसार कर अशान्त व कलान्त मानव को शाश्वत सुख शान्ति का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। भगवान महावीर के शासनकाल की आप एक अपूर्व लेखिका हैं, जिनकी दिव्य लेखनी 20वीं शताब्दी से 21वीं शताब्दी तक अनवरत चलकर उससे निःसृत ज्ञान प्रवाह से शताब्दियों तक भव्य जीवों को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मकल्याण का मार्ग निर्देशित करती रहेगी। इस सतत चलने वाली दिव्य लेखनी से अब तक 200 से अधिक सर्वोपयोगी ग्रंथ प्रसूत हो चुके हैं तथा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा लाखों की संख्या में प्रकाशित होकर देश-विदेश में स्वाध्याय प्रेमी जन-जन के हाथों में पहुँच रहे हैं। आप एक अपूर्व साधिका हैं एवं अलौकिक कार्यों की प्रणेत्री हैं। विषम एवं प्रतिकूल परिस्थितियों एवं कालदोष के प्रभाव को निष्प्रभावी बनाकर आप स्वपर कल्याण के अपने उद्देश्यों में सफल हो जाती हैं।

धर्म ग्रंथों में उल्लेख है कि जब-जब धर्म की क्षीणता होती है और कुत्सित आचरण रूपी अधर्म पनपने लगता है, तब कोई न कोई महान व्यक्ति जन्म लेकर धर्म का उत्थान करते हैं। संभवतः वर्तमान परिस्थितियों का निवारण करने और जन-कल्याण की भावना से ओतप्रोत पापान्धकार एवं अज्ञानांधकार से मुक्ति दिलाने हेतु सन् 1934 की शरदपूर्णिमा को एक ऐसे अद्वितीय चाँद का अभ्युदय हुआ, जिसने जन-जन के संतापों का अपने शीतल किरणों से निवारण किया। टिकैतनगर में जन्मी कु. मैना ने 18 वर्ष की अल्प आयु में ही ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया और श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर चैत्र कृष्णा एकम् सन् 1953 में क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण की और पारस प्रभु की जन्मकल्याणक तिथि वैशाख कृष्ण द्वितीया सन् 1956 में बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ती श्री 108 शांतिसागर जी महाराज की आज्ञा से उन्हीं के प्रथम पट्टाधीश परमपूज्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से वीरभूमि राजस्थान प्रान्त की धर्मनगरी माधोराजपुरा में नारी जीवन के सर्वोत्कृष्ट पद आर्यिका दीक्षा को ग्रहण कर क्षुल्लिका वीरमती से आर्यिका ज्ञानमती के नाम से विख्यात हुईं। ऐसी स्वनाम धन्य पूज्य माताजी के प्रथम दर्शन का सौभाग्य मुझे तब प्राप्त हुआ, जब आप सन् 1970 में मेरी जन्मस्थली पचेवर पधारीं थीं। तब से आपकी निरन्तर चरण सानिध्यता व आशीर्वाद प्राप्त करने का मुझे गौरव प्राप्त है।

पचास वर्षों से भी अधिक समय से नारी जीवन की साधना पथ के सर्वोच्च पद पर रहकर त्यागमय संयमित जीवन में भी साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, तीर्थोद्धार आदि रचनात्मक बहुमुखी जनहितकारी समाजोपयोगी कार्यों को भी सम्पन्न कराने की प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं शुभाशीर्वाद देती रही। आपके तपःपूत चरण की जो सानिध्य प्राप्त करते हैं, उनके मनोरथ आपके आशीर्वाद से पूर्ण हो जाते हैं। ऐसी परमोपकारी ज्ञानवृद्ध, तपोवृद्ध, वयोवृद्ध गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ का प्रकाशन समयानुकूल एवं प्रशंसनीय है। परम श्रद्धेया पूज्य माताजी वर्तमान दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों में वरिष्ठतम दीक्षित प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका हैं, जो जैन समाज की अमूल्य निधि हैं। पूज्य माताजी के द्वारा प्रेरित सभी योजनाओं को साकार करने में उनके शिष्यों की भी महती भूमिका होती है। उनकी संघस्था मर्यादा शिष्योत्तमा प्रज्ञाश्रमणी आशु कवियित्री परमपूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी अनवरत ज्ञानाराधना एवं लेखनकार्य में निरत रहती हैं एवं सुमधुर वाणी से प्रवचनामृत की वर्षा करती हैं। परमपूज्य पीठाधीश धर्मदिवाकर क्षुल्लकरत्न 105 श्री मोतीसागर जी महाराज पूज्य माताजी के निर्देशों को क्रियान्वित करते हैं और दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर के अध्यक्ष कर्मयोगी धर्मालंकार बाल ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र जैन अपनी अद्वितीय सूझ-बूझ एवं कार्यक्षमता के बल पर पूज्य माताजी द्वारा प्रेरित सभी ज्ञानोपयोगी योजनाओं को भक्तजनों के द्वारा प्रदत्त स्वैच्छिक सहयोग से अविलम्ब क्रियान्वित कर देते हैं।

पूज्या माताजी ने तीर्थंकरों की जन्मस्थली एवं कल्याणकभूमियों के विकास की प्रेरणा प्रदान की है, उसी के फलस्वरूप हस्तिनापुर, अयोध्या, मांगीतुंगी, प्रयाग एवं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर आदि तीर्थों का तो आश्चर्यजनक विकास हो गया तथा अन्य तीर्थों का भी विकासक्रम जारी है। विद्वानों को भी इस पुनीत कार्य हेतु प्रोत्साहित करती हैं, उसी श्रृँखला में मुझे कुण्डलपुर पुरस्कार-2004 से सम्मानित किया गया। एतदर्थ मैं प्रेरणादात्री पूज्य माताजी व प्रायोजक दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर का हृदय से आभार व्यक्त करता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हूँ तथा जैनधर्म के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में इसी प्रकार संलग्न रहने का संकल्प करता हूँ।

जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी आर्यिका दीक्षा के पचास वर्षों में अगणित स्वर्णिम कार्य किये हैं, जो विश्व इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। ऐसी पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा जयंती तो 15 अप्रैल 2006 को हम सबको उनके ससंघ सानिध्य में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पर मनाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, उनकी आर्यिका दीक्षा हीरक जयंती भी उन्हीं के सानिध्य में मनाने की कामना करते हैं। जैन जगत की अद्वितीय धर्मप्रभाविका एवं सर्वोच्च साध्वी के पावन चरणों में कोटिशः नमन करता हुआ उनके सतत आशीर्वाद की कामना करता हूँ।

-प्रो. टीकमचंद जैन, दिल्ली

जैनशासन की अनुपम विभूति

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी अलौकिक प्रतिभा और अप्रतिम व्यक्तित्व की शुभ्र ज्योत्सना से ज्योतिर्मय हैं। इनके द्वारा जैन शासन की महती प्रभावना हो रही है। इस युग में समाज के मध्य नई चेतना, नई प्रेरणा और नया उत्साह समुत्पन्न करने वाली महान विभूति हैं। इनके व्यक्तित्व में सुमेरु सी महानता, आकाश सी अनन्तता और सागर सी गंभीरता परिलक्षित होती है और जीवन में सरलता तथा विनम्रता की निर्मल धारा सतत प्रवाहित हो रही है। मुखमण्डल पर तपःसंयम की दीप्तिमान आभा बिखरी हुई है। वाणी में अनोखा ओज है। साथ में मधुरता एवं सुन्दरता का भी समन्वय है। समता, सहिष्णुता, दूरदर्शिता, निष्कामना, गंभीरता, निरन्तर, वैराग्यभाव आदि अनन्त गुणों का भंडार होने के कारण ही आर्यिका श्री निरन्तर गौरव की अभिवृद्धि कर रही हैं, यह तो सत्य ही है- **"गुणसंपदेव गुरुतां नयते"** गुणसम्पत्ति ही गौरव की ओर ले जाती है।

वर्तमान में गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा वह कार्य किया गया है, जो युगारम्भ में आर्यिका ब्राह्मी-सुन्दरी ने करके दिखाया था। जन-जन में धार्मिक भावनाओं को जागृत करते हुए माताजी ने अपने संयम विभूषित पचास वर्षों इतना कुछ किया है कि कोई व्यक्ति दस जन्म लेकर भी करने में सक्षम नहीं हो सकता। नारी कितनी ऊँचाईयों पर पहुँच सकती है, इसके लिए आप एक आदर्श उदाहरण हैं। रचनाधर्मिता के फलस्वरूप जो प्रसिद्धि आर्यिका श्री को प्राप्त हुई, जैन जगत् में वह अद्यावधि किसी अन्य को प्राप्त नहीं हो सकी है।

बहुमुखी प्रतिभाशाली आर्यिका श्री ज्ञानमती जी को आगम-सिद्धान्त, अध्यात्म विद्या-न्याय विद्या, इतिहास-भूगोल-खगोल-गणित आदि विषयों पर असाधारण अधिकार है। फलस्वरूप इनके द्वारा षट्खण्डागम, समयसार, नियमसार, अष्टसहस्री आदि गूढ़ ग्रंथों की संस्कृत हिन्दी टीकाएँ की गईं। साथ में पूजा, साहित्य के द्वारा जो साहित्य समृद्धि माताजी के द्वारा हुई, वह इतिहास के लिए एक दस्तावेज बन गया है।

ज्ञान की अगाध गहराईयों में डूबा हुआ व्यक्तित्व साधना की उच्च भूमिका पर जा पहुँचा। आपका तपःपूत जीवन सबके लिए आदर्श है। इसी कारण आपके द्वारा संयमी जीवन (आर्यिका दीक्षा) की अर्धशती पूर्ण करने पर समस्त प्रबुद्धजनों को अत्यन्त प्रसन्नता है इसीलिए आपके सम्मानार्थ आपको गौरव ग्रंथ समर्पित कर अपनी भक्ति और आस्था प्रगट कर रहे हैं। **"गुणेषु केषां न मनोऽनुरक्तम्"** गुणों के ऊपर किनका मन अनुरक्त नहीं होता है। माताजी के गुणों से प्रभावित मैं इस अवसर पर अपनी अनन्त आस्था के सहस्रों पुष्प अर्पित करता हूँ। माताजी दीर्घजीवी होकर वीतराग शासन की गौरव-गरिमा में अभिवृद्धि करती रहें, यही आन्तरिक अभिलाषा और प्रशस्त मनीषा है।

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्र की प्रतिमूर्ति-माताजी

जैन जगत के आध्यात्मिक विभूति पूज्यपाद स्वामी आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी ने प्रवचनसार की गाथा 7 में "चारित्तं खलु धम्मो" चारित्र ही वास्तव में धर्म हैद्ध यह कथन स्पष्ट रूप से किया है और उस धर्म की जड़ सम्यक् दर्शन है। वस्तु स्वभावरूप धर्म को प्राप्त करने का यही एक मार्ग है।

परमपूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री 108 श्री शांतिसागर जी महाराज ने बीसवीं सदी में इन्हीं आगम वाक्यों को अपने जीवन में उतारा और चारित्रमार्ग की सम्यक् प्रतिष्ठापना की। उन्हीं आचार्यश्री की परम्परा में आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज ने भी आचार्यपद पर प्रतिष्ठित होकर चारित्र की महत्ता पर विशेष बल दिया। उसी परम्परा को स्वीकार करते हुए गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा ग्रहण की, जो आज बीसवीं सदी की प्रथम आर्यिकारत्न के रूप में चारित्र धर्म को उद्योतित कर रही हैं। वास्तव में वे चारित्र की प्रतिमूर्ति हैं। मुझे अनेक बार माताजी के चरण स्पर्श करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। चारित्र धर्म के प्रति किंचित् भी शैथिल्य वे सहन नहीं करती हैं। निस्पृहता और निर्लोभता उनके जीवन के अभिन्न अंग हैं। भौतिकता वादी युग में इस महान पद को निर्दोषरीति से निभाना अत्यन्त दुष्कर है। माताजी ने बड़े ही उत्साह एवं गौरव से इस पद की गरिमा बढ़ाई है। मैंने माताजी को जब भी देखा, समुद्रवत् गंभीरता परिलक्षित होती है। आपके चरणों में बैठकर अपार शान्ति का अनुभव होता है। वास्तव में माताजी के चरण जहाँ-जहाँ पहुँचते हैं, वहाँ उनके चमत्कारी व्यक्तित्व का कल्याणकारी प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।

पूज्यनीय परम तपस्विनी माताजी का प्रयाग (इलाहाबाद) की ओर विहार के समय कुरावली में मंगल प्रवेश हुआ, श्री 1008 शांतिनाथ जिनालय में माताजी के सानिध्य में पद्मावती देवी की प्रतिष्ठा की गई। माताजी के प्रवेश के समय सैकड़ों जैन-अजैन श्रद्धालु माताजी की तपस्या, शान्तमुद्रा एवं चमत्कार देखकर दाँतों तले उंगली दबा लेते थे। गाँव-गाँव में जहाँ माताजी का रात्रि विश्राम हुआ, स्वयमेव वहाँ के नर-नारियों की भीड़ लग जाती थी। सुबह विहार के बाद गाँववासी माताजी के पदचिन्हों की रज को मस्तक पर लगाकर अपने को सौभाग्यशाली समझते थे। वास्तव में बीसवीं सदी की ऐसी चन्दनबाला सम आर्यिका माताजी का मिलना कठिन है, जिसकी सदैव मुस्कराती शांत मुद्रा दर्शनार्थियों को बिना कुछ कहे-सुने भी सन्मार्ग की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है।

आज माताजी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं, यह जैन समाज के लिए ही नहीं अपितु पूरे भारत के लिए गौरव की बात है। जिनका मस्तिष्क कम्प्यूटर से भी आगे चलता है। आज माताजी की प्रेरणा से ही तीर्थंकरों की जन्मभूमियों एवं अन्य पंचकल्याणक भूमियों पर तीर्थ निर्माण एवं विकास का कार्य ऐतिहासिक स्तर पर हो रहा है। इतिहास साक्षी है, 20वीं सदी में किसी भी चतुर्विध संघ ने वृहद् स्तर पर इतना बड़ा कार्य नहीं कराया। अनेक ग्रंथों की टीका लिखकर जैन साहित्य को पुनः जीवित किया है। यह अपूर्व कार्य जो माताजी ने किया है, उसके लिए समाज सदैव माताजी का ऋणी रहेगा।

मैं माताजी के लिए कितने भी पृष्ठ लिखूँ, फिर भी उसके पन्ने अधूरे ही रहेंगे। मैं माताजी के चरणकमलों में अपनी श्रद्धा एवं भक्तिपूरित प्रणमांजलि समर्पित करता हूँ। माताजी का मार्गदर्शन सदैव मुझे मिलता रहे, यही भावना है।

-डॉ.सुशील कुमार जैन, कुरावली-मैनपुरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भजन

रचयित्री-ब्र. कु. चन्द्रिका जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

तर्ज—पुरवा सुहानी आई रे...............

दीक्षा जयंती आई रे.............दीक्षा
स्वर्ण जयंती आई है, मन में खुशियाँ छाई हैं, पावन तिथि आई रे।

शरदपूर्णिमा को जनम लिया माँ। हो..........
पिता छोटेलाल जी व मोहिनी थी माँ।। हो..........
नगरी भी धन्य हुई, पावन पवित्र हुई, अपनी निधि पाई रे। दीक्षा..........।।1।।

कलियुग की ब्राह्मी माँ, आई धरा पर। हो............
कई इतिहासों को रचने यहाँ पर। हो............
मुक्ति की राह को, संयम और त्याग को, जन-जन में पहुँचाया रे। दीक्षा..........।।2।।

जम्बूद्वीप की रचना बनाई। हो............
ज्ञान की ज्योति जग में जलाई। हो............
आगम के ज्ञान से, ज्ञानामृत पान से, जिनकिर्ती फैलाई रे।। दीक्षा..........।।3।।

माँ शारदा का वरदहस्त पाया। हो............
साहित्य लेखन कर जग को जगाया।। हो............
पूनो के चाँद ने, ज्ञान की भंडार ने, ज्ञानामृत बरसाया रे।। दीक्षा..........।।4।।

वीर जन्मभूमि में उत्सव कराया। हो............
छब्बीस सौ वर्षों का इतिहास छाया। हो............
कुण्डलपुर पूज्य है, कण-कण पवित्र है, प्रभु ने जनम पाया रे।। दीक्षा..........।।5।।

वैशाख वदी दूज की तिथि है आई। हो............
पच्चास वर्षों की संपूर्ति लाई। हो............
चारित्रचन्द्रिका, ब्राह्मी पथ दर्शिका, नई सदी ने पाई रे।। दीक्षा..........।।6।।

स्वर्णिम जयंती है दीक्षा की आई।
हर भक्त के मन में खुशियाँ है छाई।।
कलशों में नीर ले, सोने का दीप ले, 'चन्द्रिका' चरण आई रे।। दीक्षा..........।।7।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवध की अनमोल मणि, विश्व का गौरव माँ ज्ञानमती

अवध की धरती टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र. में सन् 1934 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म हुआ। सन् 1953 में क्षुल्लिका दीक्षा लेकर प्रथम चातुर्मास क्षुल्लिका दीक्षागुरु भारतगौरव आचार्यश्री देशभूषण महाराज के साथ जन्मभूमि टिकैतनगर में हुआ था। उसके बाद सन् 1994 का चातुर्मास पूज्य माताजी का टिकैतनगर में हुआ।

आर्यिका दीक्षा के बाद पूज्य माताजी का प्रथम बार अपनी जन्मभूमि में मंगल आगमन हुआ, उस समय टिकैतनगर में सभी लोग इतने अधिक उत्साह और हर्ष के साथ माताजी का स्वागत करके जन्मभूमि में लाने के लिए उत्सुक थे, जिसका हम वर्णन नहीं कर सकते। पूरा टिकैतनगर दुल्हन की तरह सजाया गया था, जगह-जगह सुन्दर-सुन्दर गेट बनाए गए। पचासों बैनर लगवाए, 1-1 क्विंटल गुलाब के फूल पूरे रास्ते भर वृष्टि करते हुए जय-जयकारा लगाते हुए सभी नगरवासी चल रहे थे। उनका यही नारा था-**''ज्ञानमती माँ आई हैं, नई रोशनी लाई हैं।''** और दूसरा नारा था-**''अवध की रौनक आई है, सारी निधियाँ लाई हैं।''**

''अवध की बिटिया आई है सारी खुशियाँ लाई हैं।''

बड़ें-बूढ़ों में तो खुशी का ठिकाना नहीं था, उनकी आँखों से खुशी के आँसू झलक रहे थे। स्वाभाविक है जिस कन्या ने इतने बड़े-बड़े कार्य किए हों, अपने कार्यकलापों से पूरे विश्व में अपना नाम रौशन कर दिया हो, उसके घर वाले, परिवार वाले, गाँव वालों का सीना क्यों नहीं गर्व से फूलेगा! माताजी के साथ-साथ उनके माता-पिता का नाम और गाँव का नाम तो लोगों के मुख में आ ही जाता है।

पुनः माताजी का सन् 2005 में टिकैतनगर मंगल आगमन हुआ। उस समय टिकैतनगर में एक नूतन जिनमंदिर का निर्माण कराया गया था, जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कुछ सामाजिक कारणों से नहीं हो पा रही थी, बहुत संघर्ष चल रहा था लेकिन माताजी के टिकैतनगर पहुँचते ही मानों चमत्कार हो गया। भगवान महावीर की अवगाहनाप्रमाण प्रतिमा और चौबीस खड्गासन प्रतिमाएँ सब बनकर टिकैतनगर आ चुकी थीं।

केवल समाज में 2-4 लोग ऐसे थे, जो नहीं चाहते थे कि प्रतिमाएँ नए मंदिर में विराजमान हों। बाकी सभी लोग चाहते थे। माताजी ने उन लोगों को बुलाकर समझाया। एक बार तो यह निर्णय हुआ कि अभी पुराने मंदिर में ही पंचकल्याणक करके वहीं प्रतिमा विराजमान कर दी जाये, उसके लिए मंदिर में पीछे की दीवाल भी तोड़ी गई लेकिन प्रतिमा जी अन्दर नहीं जा पाईं, तब टिकैतनगर के सभी नवयुवकों ने मिलकर जयकारा लगाते हुए नूतन मंदिर में ही अपने हाथों से भगवान महावीर स्वामी की विशाल प्रतिमा (सवा दस फुट खड्गासन प्रतिमा) को अंदर ले आए। भगवान की जयकारों एवं पूज्य माताजी की जयकारों से सारा नगर गुंजायमान हो उठा था, सभी में हर्ष का पार नहीं था। चौबीसों प्रतिमाएँ सभी ने अपने हाथ से ला-लाकर वेदियों में विराजमान कर दीं। तुरंत नई वेदी बना-बनाकर भगवान विराजमान किए। पूरी रात्रि कार्य चलता रहा और प्रातःकाल भगवान महावीर एवं 24 प्रतिमाएँ यथास्थान खड़ी हो गई थीं। वास्तव में टिकैतनगर के लिए यह एक चमत्कार था अतः उस मंदिर का नाम भी चमत्कारिक महावीर मंदिर रखा गया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न हुई, किसी प्रकार का कोई विघ्न नहीं आया। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के बाद पूज्य माताजी अयोध्या गईं, वहाँ पर भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक हुआ, जिसका प्रचार टी.वी. आस्था चैनल के माध्यम से पूरे भारत में हुआ पुनः पूज्य माताजी को हम लोग मंदिर पर कलश चढ़ाने हेतु टिकैतनगर लाए क्योंकि इस बीच हमने शिखर तैयार करवा लिया था। मंदिर पर कलश भी चढ़ गया। पूज्य माताजी के आशीर्वाद एवं उनकी तपस्या के प्रभाव से सभी कार्य इतने शीघ्र हो गये, जिसकी हम सभी कल्पना और आशा नहीं कर सकते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसी महान जगत्पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूरे हो गए हैं अत: उनकी स्वर्ण दीक्षा जयंती मनाई जा रही है। जिसमें एक गौरव ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है अत: हमें भी माताजी के किंचित् कार्यकलापों को वर्णित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, इसके लिए हम बहुत हर्षित हैं। मैं अपने पूरे परिवार एवं पूरी टिकैतनगर जैन समाज की ओर से माताजी के इस स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर अपनी विनयांजलि समर्पित करता हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूँ माताजी की खूब लम्बी उमर हो, जिससे हमें और समाज को और भी लाभ मिल सके।

-प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी सा.)-टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

युग की महान धरोहर

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के गुणों को कुछ शब्दों में वर्णन करना असंभव सा कार्य है। आप सुप्रसिद्ध लेखिका एवं चिंतनशील साधिका हैं। आपने अपने जीवन में करुणा, सद्भावना और धर्ममांगल्य की उच्चतम साधना कर धर्ममार्ग को प्रशस्त किया है। आपके व्यक्तित्व में सरलता के साथ सहृदयता के दर्शन होते हैं।

जैन परम्परा के कठोर तप, विशुद्ध आचरण द्वारा आपने जैन समाज की त्यागी-परम्परा को संबल प्राप्त कर दिया है। अनेक आगम ग्रंथों का अनुवाद, हिन्दी, संस्कृत एवं कन्नड़ भाषाओं में आपके द्वारा की गई अनेक कृतियों की रचना, समाज एवं श्रावक श्राविकाओं को आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि एवं देन है।

साध्वियों एवं आर्यिकाओं द्वारा ग्रंथ रचने का युग आपसे प्रारंभ हुआ है। आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों में मूलाचार, नियमसार ग्रंथ की सुन्दर टीका के साथ-साथ इन्द्रध्वज विधान, कल्पद्रुम विधान, तीन लोक विधान, पंचपरमेष्ठी विधान, ऋषिमण्डल विधान, शांतिनाथ पूजा विधान, जिनगुण सम्पत्ति विधान आदि पूजा ग्रंथों की आपके द्वारा रचना से विधि-विधान कराने का मार्ग सरल हो गया है जिससे धार्मिक क्षेत्र की और समाज की रुचि और जागरूकता नि:संदेह बढ़ी है।

भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों के छोटे-बड़े गाँवों में आपका विहार, जातीय एकता, नैतिकता और अहिंसा के प्रचार एवं विशेष तौर से ज्ञानज्योति का समग्र देश में 3 वर्ष तक आपकी प्रेरणा से प्रवर्तन, अहिंसक जीवन शैली, राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित करने में प्रशंसनीय रहा है। हस्तिनापुर में विश्व की अद्वितीय जम्बूद्वीप रचना, जैन परम्परा में प्रथम बार निर्मित कमल मंदिर एवं अनेक तीर्थों के जीर्णोद्धार आपकी सोच एवं दूरदर्शिता का द्योतक होने के साथ-साथ ऐतिहासिक भी हैं। जो आगे आने वाली अनेक सदियों तक आपका स्मरण कराते रहेंगे।

मेरे पिता श्री बशेशर नाथ जी जैन, स्व. माताजी श्रीमती प्रेमवती जैन एवं समस्त परिवार पर आपका सदैव विशेष आशीर्वाद रहा है, जिनको दिल्ली में हुए अनेक वर्षायोगों में आपकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

आप धर्म का ज्योति-स्तंभ बनकर जन-जन की आत्मा को धर्म ज्ञान के आलोक से प्रकाशित करती रहें, यही मेरी मंगल भावना है। आपके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की मंगलकामना करता हूँ।

मेरे और धर्मपत्नी रेखा जैन एवं समस्त परिवार की ओर से चरणकमलों में शत-शत वंदन, इस आशा और विश्वास के साथ कि आपका आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन हर सामाजिक एवं धार्मिक कार्य में सदैव मिलता रहेगा।

-स्वदेशभूषण जैन, दिल्ली

(कार्यकारी अध्यक्ष-पंजाब केसरी दैनिक)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के साध्वी जीवन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर उनके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापनार्थ भारतवर्ष की दिगम्बर जैन समाज 51वें दीक्षा दिवस के अवसर पर एक गौरव ग्रंथ समर्पित करने जा रही है, यह परम प्रमोद की बात है। पूज्यनीयों का सम्मान समाज एवं देश में सुखकारी होता है। इससे दुर्भिक्ष, अकालमरण एवं भय से प्राणियों की रक्षा होती है। कहा भी गया है-

अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानां च व्यतिक्रमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्धन्ते, दुर्भिक्षं कारणं भयम्।।

पूज्य माताजी ने ज्ञानतप एवं ध्यानतप में लिप्त रहते हुए भारतीय वाङ्मय की जो अपूर्व सेवा की है, वह साधु-साध्वियों के लिए अनुकरणीय है। इस अवसर पर मैं 'जीवेत् शरदः शतम्' की भावना भाता हुआ कामना करता हूँ कि वे आगमानुकारी आर्यिका चर्या का परिपालन करती हुईं भारतीय वाङ्मय की सेवा करती रहें। उनके पावन चरणों में विनम्र विनयांजलि समर्पित करता हुआ मैं अपने को सौभाग्यशाली समझता हूँ।

-डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

काव्य सुमन

यूँ तो जन्म सभी लेते हैं कोई न कोई तिथि में।
मगर कई निधियाँ बन जातीं अमर अमूल्य निधी से।।
ऐसी अमर निधी हैं माँ मोहिनी देवी की मैना।
जिनने जग को सिखा दिया हरदम है आगे रहना।।
सबने समझाया दुष्कर पथ कैसे पार करोगी।
इतनी कठिन तपस्या कोमल तन से तुम कर लोगी।।
लेकिन माँ ने दिखा दिया जग को अपना वह साहस।
शरदपूर्णिमा में जन्मी हैं सारे डरें अमावस।
नहीं अंधेरों से डरतीं हैं अपनी ज्ञानमती माँ।
युग-युग तक सब याद करेंगे ऐसी शरदपूर्णिमा।।

-सौ. त्रिशला जैन ध.प. चन्द्रप्रकाश जैन,
नाका हिंडोला-लखनऊ

युग प्रवर्तिका

परमपूज्य आर्यिकारत्न गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण कर इक्यावनवें वर्ष में प्रवेश कर रही हैं, यह हम सभी के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए गौरव का विषय है। मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि लम्बे समय से मुझे उनसे मार्गदर्शन, प्रेरणा और मंगल आशीष प्राप्त करने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के सुअवसर प्राप्त हैं।

'अष्टसहस्री' ग्रंथ आचार्य समन्तभद्र विरचित आप्तमीमांसा जैसे लघु ग्रंथ पर आचार्य विद्यानंद जी द्वारा प्रणीत अति महत्वपूर्ण किन्तु अत्यन्त क्लिष्ट वृहद्भाष्य है। औरों को तो छोड़िए, स्वयं इसके कर्ता आचार्यश्री ने इसे 'कष्टसहस्री सिद्धा' तक कहा है। श्री स्याद्वाद महाविद्यालय बनारस में श्रद्धेय पं. कैलाशचंद जी सिद्धान्ताचार्य से सिद्धान्त शास्त्री की कक्षा में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की आचार्य (जैनदर्शन) कक्षा के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत श्रद्धेय डॉ. दरबारीलाल कोठिया जी जैसे उत्कृष्ट गुरुजनों से इस कष्टसहस्रीस्वरूपा अष्टसहस्री का लगभग पैंतीस वर्ष पूर्व जब मैं अध्ययन कर रहा था, उस समय इनके अनेक गहनस्थल मुझे समझ में न आने पर लगता था कि यदि इस विशाल ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद उपलब्ध होता, तो कितनी सुविधा रहती। अपने उन पूज्य गुरुजनों से इसके हिन्दी की चर्चा करता, जो कर सकते थे किन्तु जवाब मिलता-बहुत कठिन और दीर्घकालिक कार्य है। इसे तो इसी तरह गुरुमुख से पढ़ते रहो। खैर, उस समय परीक्षा उत्तीर्ण करने की दृष्टि से कार्य तो चल गया किन्तु पूर्ण संतोष नहीं हुआ।

सन् 1974 में तीर्थंकर महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव का अवसर आया। मुझे एक बार शोधछात्र के रूप में दिल्ली में आयोजित एक संगोष्ठी में सम्मिलित होने का अवसर मिला। उसी समय दिल्ली के ही दरियागंज स्थित जैन बालाश्रम में अनेक आचार्यों, मुनिराजों के ससंघ सानिध्य और विशाल जनसमुदाय के मध्य एक भव्य समारोह में जब इस "अष्टसहस्री" ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद के प्रथम भाग का विमोचन हुआ, तब मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। ऐसे असंभव जैसे कठिन कार्य को करने वाली पूज्यनीय आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शनों की तीव्र इच्छा से उनके समक्ष पहुँचा, तो उनके साधारण कृशकाय को देखकर थोड़ी निराशा हुई क्योंकि मन में तो यही बात बैठी हुई थी कि इतने विशाल और गहन दार्शनिक ग्रंथ की विदुषी अनुवादिका भी उसी के अनुरूप होंगी, किन्तु उस समय भी उनकी दैदीप्यमान प्रतिभा और संयम साधना की प्रखरता देखकर श्रद्धापूर्वक वंदामि निवेदित कर अपने को गौरवशाली मानता हुआ, यह गर्व का अनुभव किया कि मैंने इतने बड़े ग्रंथ की हिन्दी अनुवाद करने वाली विदुषी आर्यिका जी के प्रत्यक्ष दर्शन कर लिए।

इसके कुछ समय बाद जब मेरे अभिन्न मित्र डॉ. सुरेश चंद्र जी जैन-दिल्ली जब हस्तिनापुर के जैन गुरुकुल में प्राचार्य पद पर कार्यरत थे और जब मैं उनसे मिलने हस्तिनापुर पहुँचा तब, वहाँ जम्बूद्वीप आदि कुछ भी नहीं था। तब प्राचीन दि. जैन तीर्थक्षेत्र (बड़े मंदिर) के एक कक्ष में विराजमान स्वाध्याय में संलग्न पूज्यनीया आर्यिका ज्ञानमती माताजी के दर्शन किये और चर्चाओं के मध्य जब मैंने कहा कि पी.एच.डी. उपाधि हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से संबद्ध पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान से शौरसेनी प्राकृत भाषा के श्रमणाचार परक महान् ग्रंथ 'मूलाचार' पर मेरा शोध प्रबंध पूर्ण होने जा रहा है, तब पूज्यनीय माताजी ने कहा कि मूलाचार का हिन्दी अनुवाद भी मैंने तैयार किया है। सुखद समाचार मेरे लिए विशेष आनन्ददायक था। यद्यपि शोधकार्य के समय यदि मुझे यह अनुवाद मिल पाता, तो इसका उपयोग काफी लाभप्रद होता। बाद में यह मूलाचार ग्रंथ आचार्य वसुनन्दि की टीका सहित हिन्दी अनुवाद दो भागों में भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुआ और मेरा शोध प्रबंध मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन पार्श्वनाथ विद्यापीठ बनारस से प्रकाशित हुआ।

जम्बूद्वीप निर्माण और क्रमशः इसके विकास के मध्य यहाँ आयोजित अनेक संगोष्ठियों और कुलपति सम्मेलन में उ.प्र. के पूर्वांचल के संयोजक के रूप में मुझे पूज्यनीया आर्यिका माताजी के दर्शनों और चर्चाओं के अनेक सुअवसर प्राप्त हुए, षट्खण्डागम जैसे महान ग्रंथ पर इनके द्वारा लिखित संस्कृत टीका के अध्ययन और उसकी समीक्षा लिखने के भी अवसर प्राप्त हुए। इस प्रकार मैं इनकी जैन साहित्य-सपर्या से सदा प्रभावित एवं श्रद्धावनत रहा।

इधर पिछले एक वर्ष पूर्व वाराणसी में आयोजित पार्श्वनाथ महोत्सव के विशाल आयोजन के समय लगभग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक माह से भी अधिक समय तक पूज्य माताजी का ससंघ प्रवास रहा। मुझे प्रायः नित्य इनसे चर्चा का सुयोग मिलता रहा। इन्हें और इनके पूरे संघ को यह सुविदित था कि तीर्थंकर महावीर की जन्मभूमि, उमास्वामी श्रावकाचार आदि के कर्तृत्व संबंधी तथा कुछेक और भी सैद्धान्तिक विषयों पर मेरे उनसे मतभेद हैं, इस सबके बावजूद पूज्यनीया आर्यिका माताजी का अतिशय वात्सल्य, ज्ञान और विद्वानों के प्रति उनका विशेष सम्मान का भाव, आचारनिष्ठा, धर्म और संस्कृति की प्रभावना, भक्तों से घिरे रहने के बाद भी अपने दैनिक चर्या और साहित्य सृजन की निर्बाध गतिशीलता, मतभेदों के बीच भी समन्वयशीलता की सदा भावना, ज्ञान की गहनता, अपने विशिष्ट व्यक्तित्व और वाणी से किसी को भी प्रभावित और आकर्षित कर अपना भक्त बना लेने की अपूर्व क्षमता, बड़े-बड़े भव्य एवं सफल समारोहों के आयोजनों और संस्कृति संरक्षण तथा नये-नये भव्य मंदिरों, तीर्थों की सर्जना का कौशल आदि अनेक गुणों की अपूर्व संयोजना का अनुपम दिग्दर्शन इनके प्रभावी व्यक्तित्व में करने का विशेष सौभाग्य हमें बनारस में ही प्राप्त हुआ। हम सचमुच बहुत सौभाग्यशाली हैं कि हमें उनके मंगल आशीर्वाद प्राप्त हो रहे हैं और इस आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती के मंगल अवसर पर हम व्यक्तिगतरूप में पूरे परिवार की ओर से पूर्ण श्रद्धायुक्त विनयांजलि अर्पित करते हुए प्रमुदित हो रहे हैं और यही मंगल भावना भा रहे हैं कि वे दीर्घकाल तक हम सभी का मार्गदर्शन करती हुईं अपने संयममय जीवन को सार्थक करें।

-डॉ. फूलचंद जैन 'प्रेमी', वाराणसी

शत-शत नमन हमारा

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को आर्यिका दीक्षा लिए 50 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं एवं इस स्वर्ण जयंती महोत्सव के शुभ अवसर पर महोत्सव समिति 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' प्रकाशित करने जा रही है, इसके लिए कमेटी को मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाईयाँ।

परमपूज्य माताजी के संपर्क में मैं करीब 10 वर्ष से आया हूँ। पूज्य माताजी का वात्सल्य भाव मुझे उनके और करीब ले गया, मैंने यह अनुभव किया कि भारतवर्ष में स्वनाम धन्य अनेक साधु हैं, किन्तु परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की क्षेत्रों के प्रति जो भावनाएँ हैं, श्रावकजन एवं कर्मयोगी ब्रह्मचारी भैया रवीन्द्र कुमार के अथक परिश्रम से चाहे जम्बूद्वीप हो, इलाहाबाद का दीक्षास्थली तीर्थ या कुण्डलपुर अथवा अन्य जो भी योजनाएँ पूज्य माताजी के आशीर्वाद से प्रारंभ की गईं और जहाँ हमारा कुछ भी दिखाई नहीं देता था ऐसे सभी स्थान भारतवर्ष के दर्शनीय स्थानों में महत्वपूर्ण हो गये हैं। पूज्य माताजी के प्रवचनों की हर एक बात अनुकरणीय होती है, आशा है कि हमें व समाज को पूज्य माताजी का आशीर्वाद चिरकाल तक प्राप्त होता हरेगा। इसी भावना के साथ उनके चरणों में अपनी विनयांजलि प्रस्तुत करता हूँ।

ज्ञानमती ने ज्ञान प्राप्त कर, ज्ञान के दीप जलाए,
इसी ज्ञान से जीवन रोशन, करने हम सब आए।।
गणिनी रत्न गुण ज्ञान श्रेष्ठ, अतुलित तप त्याग तुम्हारा,
श्री ज्ञानमती माताजी को है, शत-शत नमन हमारा।।

-कपूरचंद्र घुवारा, छतरपुर (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वीकारो माँ

मोहिनी-मैना टिक नहीं सकी,
टिकैत के 'छोटे' से पिंजरे में।
तोड़ डाला पिंजरे का द्वार,
दृढ़ संकल्प के चंचु-प्रहार से।
उड़ चली पंख पसार,
ज्ञान के अनंत आकाश में।
बन गई वीरमती, ज्ञानमती
ज्ञान की जीवन्त प्रतिमा।
मुख पर विराजती सरस्वती,
तपःपूत लेखनी का जादुई संस्पर्श,
बन गया पर्याय अगिनत ग्रंथों का,
विलक्षण कर्मठ व्यक्तित्व।
तुमने इतिहास ही नहीं रचा,
भूगोल भी सँवारा है।
तुम्हारी महती उपलब्धियों ने,
जोड़ा है एक स्वर्णिम पृष्ठ।
स्त्री जाति के इतिहास में,
बदला है भूगोल हस्तिनापुर का।
तुम्हारे ही जम्बूद्वीप ने,
कहते हैं,सुनते हैं, आकाश के निशाकर से,
केवल शरदपूनो को अमृत झरता है,
विस्मय-तुम्हारे मुखचन्द्र से,
तरसता है ज्ञानामृत प्रतिक्षण प्रतिपल
आओ, हम सब पियें इसे,
अंजुलि भर भर कर।
शब्द बिचारे, अपनी संकीर्ण सीमा में,
कैसे समेट पाएँगे,
तुम्हारे हिमालयी व्यक्तित्व को?
किन्तु यह भी सच है,
जब शब्द हार जाते हैं,
तब मौन मुखर होता है।
स्वीकारो माँ! मेरा मौन वंदन
भाव भरा अर्चन
सादर अभिनंदन पूर्व समर्पण।
-डॉ. कु. मालती जैन, मैनपुरी

ज्ञान की माता-गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप निर्माण की प्रेरिका पूज्य माताजी को सादर नमन। कुण्डलपुर और पावापुरी को जिनने नवीन रूप दे दिया, उस माता को कौन नहीं जानता? विश्व में सुमेरु पर्वत का निर्माण करा देने वाली आर्यिकारत्न गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को सारा संसार आश्चर्यरूप से देख रहा है। विश्व में सात आश्चर्य माने जाते हैं किन्तु सुमेरु पर्वत आठवाँ आश्चर्य बन गया।

आर्यिकारत्न गणिनीप्रमुख का जन्म सन् 1934 में हुआ और 1956 में आचार्य परमपूज्य वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा ली। आज वे सबसे प्राचीन दीक्षित आर्यिका हैं। 50 वर्ष जिनकी दीक्षा के 15 अप्रैल को हो रहे हैं। जीवन में उनके द्वारा 200 से भी अधिक ग्रंथों की रचना की गई, अनूदित किये गये, जो उनके भक्तों ने ही नहीं, देश-विदेश के लोगों ने पढ़े हैं। हमें गौरव है, स्वाभिमान है कि हम भारतीय हैं, इस देश में जन्मे हैं। वे अधिक भाग्यवान हैं, जिन्होंने उनके दर्शन किये हैं। चर्चा वार्ता की है,उन्हें सुना है और उनके निकट प्रवचन भाषण किये हैं। वे धन्य हैं, उनमें मैं भी एक हूँ।

नारी जीवन कठिन है, आर्यिका जीवन और कठिन है। पद विहार करना अत्यधिक कठिन है, आज हम उनका अभिनंदन कर रहे हैं, उनके चरण पूज रहे हैं। उन्होंने 50 वर्षों में कितने किलोमीटर की यात्रा की है? कहाँ-कहाँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवीनीकरण किया है? प्राचीन को नवीन बनाया है। यह सब उनके लिए समर्पित इस ग्रंथ में मिलेगा यह संग्रह के लिए है। आज हजारों यात्री हस्तिनापुर के दर्शन करने जाते हैं। कुण्डलपुर और पावापुर कैसा संयोग है? एक जन्मनगरी, दूसरी निर्वाण भूमि दोनों को पूज्य माताजी ने और अधिक पूज्यनीय बना दिया।

उनके पावन आर्यिका दीक्षा दिवस पर समर्पित है, उनके चरणों में अर्पित है वंदामि-वंदामि-वंदामि।

-पं. सागरमल जैन, विदिशा (म.प्र.)

जियो और उतने ही दिन तक, जितना बिता दिया जीवन

जीवन में अनवरत अनेकों, संघर्षों का कर आह्वान।
माँ! तुम तो हो स्वयं सरस्वति! 'ज्ञानमती' सा सार्थक नाम।।
जिन तीरथ की रज को छूकर, हो जाता सबका कल्याण।
लेकिन चरण पड़े जहाँ माँ के, वहीं तीर्थ बन गया महान।।1।।

जन्म लिया मोहिनी माता से, माता धन्य हो गईं आज।
पिता स्वर्ग से देख रहे, अपनी पुत्री के अचरज काज।।
वाणी में जिनवाणी की, धारा दिव्यध्वनि का ही रूप।
लगता है साकार हो उठा, आज मोक्ष का मूर्तिक रूप।।2।।

चाँद स्वयं धरती पर उतरा, यशकीर्ति फैली चहुँ ओर,
आभामंडल लखकर जनता, हो जाती है भाव-विभोर।
जिस पर पड़ती करुणा दृष्टि, हो जाते उसके दुख दूर।
ऋद्धी मानों हुई समाहित, तप की शक्ती से भरपूर।।3।।

कुछ शब्दों की कुसुमांजलि को, चरणों में करके अर्पण।
गुरू, बहन, माता का जिनमें, मिला त्रिवेणी का संगम।
सम्यग्दर्शन मिला 'मालती', चारित की शक्ती पाऊँ।
इन चरणों की छत्रछाँव में, रत्नत्रय निधि भी पाऊँ।।4।।

शरदपूर्णिमा की जन्मीं, शारदमाता तुमको वंदन।
जियो और उतने ही दिन तक, जितना बिता दिया जीवन।।
होता रहे इसी क्रम-क्रम से, चेतन और तीर्थ निर्माण।
ज्ञानमती माँ! मात शारदे! तुमको शत-शत बार प्रणाम।
तुमको शत-शत बार प्रणाम।।5।।

-श्रीमती मालती जैन ध.प. यशवीर जैन,
मोरीगेट, दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदी की महान आराधिका : गणिनी माताजी

भारत एक अध्यात्मप्रधान देश है। संस्कृति और सभ्यता के कारण इस देश की प्रसिद्धि पूरे विश्व में व्याप्त है। सुदृढ़ भारतीय सभ्यता के विकास में श्रमण संस्कृति का योगदान उल्लेखनीय है। विश्व संस्कृति के विकास में अहिंसा एवं अपरिग्रह सिद्धान्तों से मण्डित दिगम्बर जैन श्रमण परम्परा का अवदान महनीय है। सामाजिक नीति निर्धारण करते हुए इस संस्कृति ने संघ व्यवस्था का अनुकरण किया है। इस संस्कृति ने चार प्रकार के संघ व्यवस्था को स्वीकार किया है। जिनमें क्रमशः 1. श्रमण 2. श्रमणा/श्रमणी 3. श्रावक एवं 4. श्राविका भेदरूप हैं। श्रम शब्द का अर्थ आत्म-साधना के रूप में स्वीकृत किया है। साधक अपने निज आत्मा को पहचानकर परमात्म पद पाने तक जो निरंतर परिश्रम करता है, उस श्रेष्ठ साधना का नाम श्रमण धर्म है। जो साधक सम्पूर्ण अहिंसा को संयम के साथ धारण कर प्राणी मात्र पर दयाभाव रखता है, अपने इन्द्रिय विषय विकारों पर अंकुश चलाता है, पूर्व संचित कर्मों को नष्ट करने के लिए सदैव सचेत रहता है, वही श्रमण धर्म का परिपालक है।

सामाजिक संरचना में श्राविका का स्थान सराहनीय है क्योंकि उनके पवित्र उन्नत आचरण से उदात्त समाज निर्माण की भूमिका प्रारंभ हुआ करती है। तदनंतर श्रावक का स्थान है जो साधना की कड़ी में आराधक के रूप में उपस्थित हैं। श्रमण संघ की अनेक जिम्मेदारियों को सुचारूता से निभाते हुए मोक्षमार्ग को निष्कंटक बनाने में अग्रसर होता है। (1) श्रमण शब्द का अर्थ दिगम्बर मुनि है। (2) श्रमणा/श्रमणी ये नाम दो हैं परन्तु पद एक है। श्रमणा वह है, जो कौमार्य अवस्था में रत्नत्रयमूलक वैराग्य प्राप्त करके आर्यिका व्रत धारण करके संयम साधना में तल्लीन रहती हैं, निज आत्मकल्याण में तत्पर रहती हैं। यदि निज साधना सुखद हो, तो पर कल्याण के भी वह अधिकारी हैं। श्रमणी वह है, जिसने अपनी गृहस्थी को बसाकर संतान के माध्यम से कुलवृद्धि करके, पूरे परिवार को धर्म के उत्तम संस्कार प्रदान करके मोक्षार्थी बनकर आर्यिका दीक्षा धारण करने वाली नारी श्रमणी कहलाती है। इन दोनों अवस्था में श्रेयस्कर पद श्रमणा का है। वर्तमान में समूची आर्यिकाओं में प्रधान, गणिनी आर्यिकाओं में अग्रणी, पूज्य ज्ञानमती माताजी सार्थक श्रमणा पद से अलंकृत हैं।

आज पूरे विश्व में आपके भक्तगण बड़े उत्साह एवं वैभव के साथ आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती समारोह भक्तिपूर्वक मना रहे हैं।

साधक अनेक होते हैं, साध्वियाँ भी अनेक होती हैं परन्तु ऐसी आर्यिका विरली ही होती हैं, जो अपने पवित्र साधना के बल पर नया इतिहास स्थापित करती हैं। ऐसी ही विरलविभूतियों में आर्यिका ज्ञानमती जी एक हैं, जिनके जीवन में साधना एवं सृजन का मणिकांचन योग है। उत्तरप्रदेश के टिकैतनगर में सुसंस्कृत परिवार में खुशहाली के वातावरण में बालिका मैना का जन्म हुआ। बालिका के पूर्व जन्म के उत्कृष्ट संस्कार के कारण बाल्यावस्था में ही धर्म में रुचि उत्पन्न हुई। नित्य देवदर्शन और स्वाध्याय की परिपाटी, परिवार के नित्यचर्या के निमित्त आपने उन्हें सहज हासिल कर ली। परिवार में बड़ी बहन होने के नाते घर की अनेक जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ीं। समय निकालकर छहढाला पुस्तक का स्वाध्याय किया। गृहस्थी की अनेक विषमताओं का अनुभव कर सच्चे देव-शास्त्र-गुरु को पहचान कर जीवन में श्रद्धा के साथ उतारा। परिवार में किसी भी तरह की मिथ्यारूढ़ियों को आपने मौका नहीं दिया। समय बीतता गया, धर्माचरण में विश्वास बढ़ता चला और एक दिन पद्मनंदिपंचविंशतिका ग्रंथ का स्वाध्याय प्रारंभ किया। नियमित स्वाध्याय एवं निर्मल साधना के फलस्वरूप मैना ने अनेक संस्कृत सूक्तियों को याद कर लिया। परिवार में मनन चिंतन की परम्परा होने के निमित्त अनेक धार्मिक महापुरुषों के जीवन चरित्र पर चर्चा हुआ करती थी। इन विधाओं के बीच मैना का मन संयम की ओर अग्रसर हुआ, वैराग्य के अंकुर फूटने लगे।

पुनः संयोगवश सन् 1952 में भारतगौरव आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज का पदार्पण टिकैतनगर में हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वहाँ पर जैनधर्म की खूब प्रभावना गुरुदेव के कारण हो रही थी। तब मैना कहने लगीं कि गुरुदेव! मुझे दीक्षा ग्रहण करना है अतः आप मुझे संसार समुद्र से पार करने वाली आर्यिका दीक्षा प्रदान कीजिए लेकिन उस समय परिवार एवं समाज की अत्यधिक प्रतिकूलता के कारण दीक्षा न हो पाई पुनः उसी वर्ष बाराबंकी के चातुर्मास में गुरुदेव का सानिध्य प्राप्त कर भावना पूर्ण हुई।

जिन गुरुदेव की प्रशंसा सुनानी थी, वे साक्षात् संयम के अमृत कलश थे। धर्म, संस्कृति, दर्शन, साहित्य और सभ्यता से समलंकृत मुनिराज का दर्शन एक दिन उनके सार्वजनिक सभा के बीच केशलोंच करते हुए हुआ। अपार जनसमुदाय के हृदय परिवर्तन कराने वाली जल्लोष भरा, जयघोष से गुंजायमान उस धर्मसभा ने मैना के वैराग्य भाव को द्विगुणित किया। गुरुदेव की शिष्या बनकर, सहस्रनाम का पाठ यादकर, ब्रह्मचर्य दीक्षा धारण करके मैना ने अपना मानव जन्म सफल किया। जो पापाचरण से सदा के लिए निवृत्ति पाता है, वह साधु कहलाता है। कुमारी मैना परिवार का सम्पूर्ण मोह त्यागकर सन् 1953 में महावीर जी तीर्थ पर वीरवृत्ती से संयम धारण कर वास्तव में क्षुल्लिका वीरमती माताजी बन गईं। जिस मंगलमय मुहूर्त पर गुरुदेव भारतगौरव आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से बालब्रह्मचारिणी मैना ने गृहत्यागकर संयम अंगीकार करके रत्नत्रय आराधना प्रारंभ की थी। उस कालमंगल ने आज गुरुदेव के जन्म शताब्दी महोत्सव वर्ष पर आपके आर्यिका दीक्षा का अर्ध शताब्दी स्वर्ण जयंती उत्सव मनाने का सुमंगल अवसर हम सबको प्राप्त हो गया है। इस भौतिक युग में स्त्री पर्याय में वैराग्य उपजना दुर्लभ है। कदापि वैराग्य भाव उपजने पर उनको पाँच दशक से भी अधिक समय तक निभाना अत्यन्त दुर्लभ है। परन्तु आपने अपनी साधना पथ को इतना प्रशस्त और पारदर्शी बनाया कि भविष्य में आर्यिका, आर्यिकारत्न, आर्यिकाशिरोमणि, गणिनीप्रमुख जैसे अलंकरणों से विभूषित होकर वीरशासन का समुन्नयन कर समस्त साधु समुदाय के तपोमय नभोमंडल में उज्ज्वल नक्षत्र जैसे राराजित हैं।

क्षुल्लिका दीक्षा धारण करके आपने अपने दीक्षागुरु के सानिध्य में दो साल वास्तव्य करके संस्कृत व्याकरण, न्याय तथा दार्शनिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज के परमगुरु चारित्रचक्रवर्ती समाधिसम्राट् आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज थे। आप 20वीं शताब्दी में दिगम्बर मुनि परम्परा को पुनरुज्जीवित करके गरूणांगुरु कहलाते थे। वे सतत अपने संघ में शांतिसागर जी की तपोसाधना, धर्मप्रभावना के विषय में चर्चा किया करते थे। अतः माताजी के मन में उन परमहंस निर्ग्रंथ श्रमणरत्न के दर्शन करने के भाव बने। आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से अनुमति प्राप्त करके दक्षिण भारत की ओर यात्रा प्रारंभ किया। महाराष्ट्र कर्नाटक प्रांतों में विहार कर आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज का साक्षात् दर्शन कर अपनी अग्रिम साधना हेतु मंगल आशीर्वचन प्राप्त किया। आपने महाराष्ट्र में पधारकर वहाँ की भाषा सीखकर मराठी साहित्य का खूब अध्ययन किया और मराठी में रचना भी आपके लेखनी द्वारा प्रसूत हैं। कर्नाटक में रहकर कन्नड़ भाषा को सीखकर वार्तालाप करना, प्राचीन साहित्य पढ़ना और कन्नड़ में बारह भावना की सुंदर रचना भी कर दिया। आप प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व की धनी हैं।

आपका जन्म उत्तरभारत में हुआ है, परन्तु दक्षिण भारत के आचार्य द्वारा संयम धारण कर अपने त्यागमय जीवन की शुरुआत किया। दक्षिण की संस्कृति तथा परम्परा को अपने त्यागमय जीवन में उतारा ही नहीं अपितु दक्षिण भारत के मूर्धन्य आचार्यों के प्राकृत, संस्कृत, कन्नड़ भाषा में रचित अनेक मूल आगम ग्रंथों का अनुवाद हिन्दी भाषा में करके उत्तर दक्षिण को जोड़ने का महान् कार्य प्रस्तुत किया है। सभी तीर्थंकरों के गर्भ से निर्वाण तक सभी कल्याणक उत्तर भारत में हुए हैं, परन्तु आपने दक्षिण के आचार्यों के आगमसम्मत साधना अपनाकर उत्तरभारत के प्राचीन तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों के विकास का श्लाघनीय कार्य प्रारंभ किया है।

आचार्य शांतिसागर जी महाराज की समाधि के बाद उनके उत्तराधिकारी के रूप में आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज को मनोनीत किया गया। उनकी परम्परा का सार्थक निर्वाह करते हुए आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संघ संचालन का दायित्व सफल निभाया। आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज आचार्य शांतिसागर जी द्वारा दीक्षित प्रथम मुनि थे। वे अत्यंत शांत स्वभावी, मृदुभाषी, गंभीर-तपस्वी, गहन अध्येता श्रमण थे। ऐसे आत्मरसानुभवी, मेधावी गुरु के करकमलों से पूज्या श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा सम्पन्न हुई।

आर्यिका दीक्षा प्रदान करते समय प्रातः स्मरणीय आचार्य श्रीवीरसागर जी महाराज ने उत्तम मुहूर्त निर्धारित कर आपको महाव्रत के मौलिक संस्कार प्रदान किया। शुक्रवार दिनाँक 27-4-1956, उत्तरायण-वसंतऋतु, वैशाख मास, कृष्णपक्ष, द्वितीया तिथि, अनुराधा नक्षत्र, वृश्चिक राशि में चंद्रमा, दिन के दोपहर 1.15 से 2.00, स्थान-माधोराजपुरा, जि.-जयपुर (राज.)। दीक्षा-नक्षत्र का फल-अनुराधा नक्षत्र आर्यिका दीक्षा धारण करने के लिए शुभ नक्षत्र है। नक्षत्र की मध्य नाडी के होने पर समताभाव प्राप्त होगा। देवगण के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। मृगयोनी के कारण अहिंसामय मृदुमानसिकता एवं आत्मबल में वृद्धि होगी। पृथ्वीतत्त्व के कारण क्षमाशीलता। संज्ञा-मृदु होने से नवनिर्माण में सफलता। जल तत्त्व-राशि होने पर नदी एवं सरोवर के तट पर अधिक निवास होगा। विप्रवर्ण की राशि से आत्मविद्या निपुण, इस नक्षत्र पर संस्कार होने के कारण उत्कृष्ट संयम तप से युक्त होकर (संयम के 70 वर्ष) 70 साधकों को व्रत संस्कार।

दीक्षा समय लग्न कुंडली

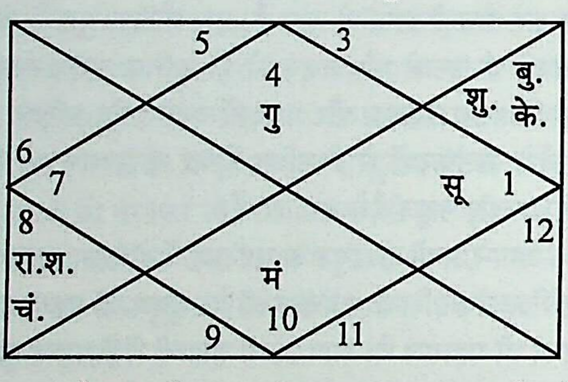

यह कुण्डली लग्न-शुद्धि की है। लग्न में गुरु कर्कराशिगत उच्चपदस्थ है। लोकमान्य, साध्वी, महायशस्वी, विदुषी, सत्यवक्ता, सुखी, सदाचारी, तेजस्विता, स्वाभिमानी, राजमान्य, दीर्घायुषी के योग बनते हैं। धर्मेशगुरु उच्चपदस्थ होकर लग्न में निवास करने से राजयोगी धर्मकार्य में निरंतर यश, श्रेष्ठ कार्यों में निरंतर अभिरुचि बढ़ेगी। लग्न कुण्डली में विद्यमान ग्रंहों के अनुसार निम्न शुभयोग उत्पन्न होते हैं।

(1) रुचकयोग—प्रसिद्ध, सम्मानित, राजशासन से निरंतर सम्मान

(2) पुष्कलयोग—सात्विक जीवन, लोकप्रिय

(3) पर्वतयोग—स्थापत्य, वास्तुविद्या, तीर्थनिर्माण आदि विधाओं में निपुण

(4) छत्रयोग—तेजस्विता, राजनेताओं द्वारा सहयोग, संतुष्ट

(5) सुपारिजात योग—विदुषी, साहित्यसृजन, नित्यशुभकर्मरत

(6) महादानयोग—लोककल्याण की भावना, परोपकारिता

(7) सात्विकबुद्धियोग—समाज में समतावाद की स्थापना

(8) त्रिकालयोग—सर्वज्ञ, हितोपदेशी, वीतरागता में शाश्वत श्रद्धा

(9) स्वर्ग सोपान योग—देवगति गमन योग

(10) गजकेशरीयोग—मेधावी, गुणी, राजप्रिय

(11) सिंहासनांश योग—शासनाधिकारी आदि भक्त बनेंगे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन सभी योगों के विषय में मानसागरी, सारावली, फलदीपिका, सर्वार्थचिंतामणि, जातकपारिजात, भारतीयज्योतिष, वृहत्पाराशर आदि ज्योतिष के मूलग्रंथों में विस्तार से विवेचन प्राप्त होता है। इस तरह के अनेक शुभयोगों से युक्त उत्तम मुहूर्त पर आचार्य वीरसागर मुनिराज के द्वारा प्रदत्त आर्यिका दीक्षा पाँच दशक तक निर्वाह कर श्रमण संस्कृति संरक्षण एवं संवर्धन में मील का पत्थर स्थापित किया है। पूज्य माताजी ने आदर्श मार्ग अपनाकर सिद्धत्व की शुरूआत की है। दुनिया में कुंभकार जैसा कोई गुरु नहीं है। क्योंकि घट को ऊपर से एक हाथ से पीटता है तो दूसरा हाथ उसके अंदर की ओर आधार देकर सुंदर आकृति देता है। आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार के 12वीं गाथा के अनुसार व्यवहार नय से धर्मतीर्थ का विकास होगा और निश्चय नय से शुद्ध आत्मतत्त्व की उपलब्धि होगी, जो तीर्थफल कहलाता है। जो राग का त्याग कर वैराग्य को धारण करता है वह आत्म वैभव को प्राप्त करता है।

गुरुभक्तिसंजमेण य, तरंति संसारसायरं घोरं।
छिण्णत्ति अट्ठकम्मं, जम्मणमरणं ण पावेंति।।

लघु आचार्य भक्ति।

जो भव्य जन्म मरण रूपी व्याधी से छुटकारा पाना चाहता है। भयंकर संसार सागर को पार पाना चाहता है। अष्टकर्म को नष्ट करना चाहता है। वह गुरुभक्ति एवं संयम धारण करे। रत्नत्रय आराधना के स्वर्ण जयंती समारोह प्रसंग में श्रद्धापूर्वक आपके चरणों में त्रिवार त्रियोगपूर्वक सविनय नमोस्तु।

-डॉ. जयकुमार उपाध्ये, दिल्ली

विनम्र विनयांजलि

जग सुहित कर सब अहित हर, श्रुति सुखद सब संशय हरें।
भ्रम रोग हर जिनके वचन, मुख चन्द्र तै अमृत झरे।।

भारतीय वसुन्धरा सदैव ऋषि-मुनियों, साधु-सन्तों एवं विद्वान-मनीषियों से आप्लावित रही हैं। यही कारण है कि इसे 'जगद्गुरु' की संज्ञा से अभिहित किया गया है। इन्हीं त्यागी, तपस्वी, साधुवृन्दों के सदाचरण व्यवहार, संयम, त्याग और तपस्या का ही परिणाम है कि भारत का भाल सदैव उच्च रहा है। भारत भूमि को भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक तथा राम, कृष्ण, बुद्ध आदि की पवित्र चरणरज स्पर्श करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

ऐसे महान देश की संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना, संयम और सदाचरण की संरक्षा तथा ऐतिहासिक वैभव की समायोजना की सुरक्षा एवं संवर्द्धन हेतु समय-समय पर महान विभूतियों ने जन्म लिया है। परम पूज्यनीया गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का उदय भी एक ऐसे ही समय में हुआ, जब देश और समाज को धार्मिक चेतना की आवश्यकता थी। यदि यह कहा जाए कि वे धार्मिक चेतना की संवाहक हैं, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

जैनदर्शन में साधुचर्या अत्यन्त कठोर किन्तु स्वयं को अत्यन्त सरल प्रतीत होती है। जिन्होंने उपसर्गों को अपना मित्र बनाना सीख लिया है, उन्हें कोई भी डगर कठिन नहीं लगती है। कहा भी है-

"सन्त न होते जगत में तो जल जाता संसार" यह उक्ति आज अक्षरशः सत्य प्रतीत हो रही है। सन्तों ने इस वसुन्धरा को न केवल अपनी चारित्रिक विभूति से बल्कि अपने अलौकिक ज्ञान से अज्ञान की ज्वाला में संतप्त प्राणियों को अपनी दिव्यदेशना के शीतल जल से आप्लावित किया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के जीवन दर्शन पर दृष्टिपात करें तो अलौकिकता के दर्शन होते हैं। आप सर्वगुणसम्पन्न प्रतिभा की धनी हैं। जीवन के कठोरतम तपों को करते हुए, साहित्यिक सपर्या का जो उदाहरण आपने प्रस्तुत किया, अन्यत्र दुर्लभ है। आध्यात्मिक क्षेत्र का कोई भी ग्रंथ आपसे अछूता नहीं है। जहाँ करणानुयोग जैसे दुरुह विषय को आपने सरलरीत्या प्रस्तुत कर दिया, तो वहीं दूसरी ओर बालक, वृद्ध, युवा के हृदय में प्रथमानुयोग की सुन्दर रचनाओं द्वारा धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण कर दिया। आज जैनाजैन समाज में आप जहाँ चारित्र शिरोमणि हैं, वहीं सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली साध्वी भी हैं। आपकी सरल, सुबोध शैली का ही कमाल है कि श्रोता व पाठक के हृदय में मानो आप ठहर गई हों। अनेक धर्म ग्रंथों व विधानों का निर्माण कर आपने सोते हुए को जगा दिया है अतः आप वन्दनीय व पूज्यनीय हैं।

आपकी वाणी में सरस्वती, लेखनी में समन्तभद्र जैसी दृढ़ता प्रतीत होती है। बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी न्याय, सिद्धान्त, कथा, बाल एवं शोधपूर्ण साहित्य में आपके अनुभव व चिंतन शैली स्पष्ट झलकती है। यदि आप द्वारा लिखित व सम्पादित साहित्य का गहराई से अध्ययन किया जाए तो शोधार्थियों के लिए उपयोगी सामग्री प्राप्त हो सकती है। आवश्यकता है पूज्य माताजी के साहित्य पर शोध की।

परमपूज्य माताजी द्वारा स्वहित के साथ परहित में किये गये कार्यों के प्रति दिगम्बर समाज ही नहीं अपितु मानव मात्र भी कृतज्ञ हैं। सच है सन्त किसी समाज विशेष के नहीं अपितु प्राणीमात्र के होते हैं। आप द्वारा किये गये अनेक रचनात्मक कार्यों को समाज सदैव स्मरण करता रहेगा। जम्बूद्वीप को अलौकिक व दिव्य रचना के स्वप्न को साकार रूप देने में तो मात्र आप ही समर्थ थीं। ऐसी दिव्य विभूति की दीक्षा की स्वर्ण जयंती (50वीं सम्पूर्ति) दिवस पर मैं अपनी भावांजलि प्रेषित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। कवि भारपि ने सच ही कहा है-

वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि। लोकोत्तराणि चेतांसि, को हि विज्ञातुर्महसि।।

अर्थात् वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल (मुदु) लोकोत्तर पुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है?

-डॉ. विमल कुमार जैन, जयपुर

हमारी कुलगुरु पूज्य माताजी चिरायु हों

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के साथ सनावद नगर का नाम सदैव जुड़ा रहेगा, क्योंकि इस नगर में वैराग्य के प्रथम अंकुर डालने वाली पूज्य माताजी ही हैं। सन् 1967 में जब पूज्य माताजी का चातुर्मास यहाँ हुआ, तो हमारे बड़े भाई श्री मोतीचंद जी (वर्तमान में पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज) को घर से निकालकर संयम मार्ग पर लगाया। साथ ही यशवंत कुमार (जो वर्तमान में आचार्यश्री वर्धमानसागर महाराज हैं) को भी त्यागमार्ग पर लगाने का श्रेय पूज्य माताजी को ही है। उन्होंने अपने त्याग, तपस्या व ज्ञान के द्वारा हम सबको सन्मार्ग पर लगाकर असीम उपकार किया है। उन्हीं संस्कारों का परिणाम है कि आज हमारे नगर से अनेक युवाओं ने इस संयम मार्ग को अपनाकर अपने जीवन को सार्थक कर लिया है। इसी शृंखला में मेरी पुत्री ब्र. कु. चन्द्रिका भी पूज्य माताजी के संघ में रहकर ज्ञानार्जन कर रही है। पूज्य माताजी तो उस महान शिल्पी के समान हैं, जो अपने हाथों से सुंदर-सुंदर प्रतिमाओं का निर्माण करके संस्कारों से उन्हें पूज्य बनाती हैं। पूज्य माताजी ने अपने इस 50 वर्ष के दीर्घ संयमी जीवन में अनेक शिष्यों को घर से निकालकर उन्हें ज्ञान व वैराग्य से संस्कारित कर अपने से भी उच्च पदों पर आसीन किया है। कोई भी वृक्ष चाहे कितना ही बड़ा व घना क्यों नहीं हो जाये, किन्तु फिर भी उसके मूल बीज को नहीं भुलाया जा सकता, उसी प्रकार हमारे यहाँ इस धर्मरूपी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशाल वृक्ष को खड़ा करने वाली पूज्य माताजी जो उसका मूल हैं, उनके उपकारों को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। पूज्य माताजी के इस स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर हम आपके चरणों में विनम्र विनयांजलि अर्पित करते हैं तथा वीरप्रभु से यही प्रार्थना करते हैं हम सब अपनी कुलगुरु पूज्य माताजी की हीरक जयंती भी मनाएं और उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

-प्रकाशचंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)

विनयांजलि

आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के प्रथम पट्टाचार्य वीरसागर जी से दीक्षित गणिनी आर्यिका ज्ञानमती जी बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका हैं। आचार्य महाराज ने उनमें ज्ञानार्जन की तीव्र लालसा देखी अतः आर्यिका ज्ञानमती नाम दिया। पूज्य माताजी अपने दीक्षा गुरु की कसौटी पर खरी उतरीं। उन्होंने ज्ञानार्जन किया भी, कराया भी। उन्होंने श्रुतलेखन का प्रारंभ जिन सहस्रनाम मंत्र से किया था। फिर तो छोटी-छोटी नीतिपरक शिक्षाप्रद पुस्तकों से लेकर जिनवाणी के चारों अनुयोगों के विशाल और गूढ़ ग्रंथों तक उनका लेखन चला है और चल रहा है। पूज्य माताजी की लेखनी से 200 से भी अधिक महान ग्रंथों का सृजन हुआ है।

माताजी की कृतियों में गूढ़ ग्रंथों की टीकाएँ हैं, अनुवाद हैं, पद्यानुवाद है और मौलिक रचनाएं भी हैं। यह मौलिक रचनाएँ अनेक विधाओं में हैं। उन्होंने गद्य में जीवन चरित्र लिखे, उपन्यास लिखे, नाटक लिखे, प्रेरक निबंध लिखे। माताजी षट्खण्डागम पर सिद्धान्तचिंतामणि टीका लिख रही हैं। जिसके प्रथम एवं द्वितीय खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। "भगवान महावीर-हिन्दी अंग्रेजी जैन शब्दकोश" इस युग में जैनग्रंथों के मर्म को जैनेतर बंधुओं के साथ विदेशी लोगों को भी समझाने में अत्यंत सहायक होगा। यह माताजी का जैन समाज पर अविस्मरणीय उपकार है।

माताजी ने तीर्थंकरों की जन्मभूमियों एवं पंचकल्याणक भूमियों पर महत्वपूर्ण निर्माण एवं विकास कार्यों की प्रेरणा देकर संस्कृति संरक्षण के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान किया है। इन सबका विवरण देखा जाये, तो एक ग्रंथ ही बन जायेगा अतः मैं केवल अपने कुछ संस्मरण ही दे रहा हूँ।

जब मैं लोकनिर्माण विभाग में मुख्य अभियंता के पद पर कार्यरत था, तब पहली बार माताजी के दर्शन किए थे। माताजी ने अपने हाथ से आशीर्वाद लिखकर "जैन भारती" मुझे दी और साथ ही हस्तिनापुर में नसियाओं के मार्गों का सुधार कराने का निर्देश दिया। यह मेरा सौभाग्य था कि मैं इन निर्देशों का पालन कर सका।

पूज्य माताजी ने मुझे उत्तर प्रदेश में तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के मार्गों को भी पक्का कराने की प्रेरणा दी। माताजी की प्रेरणा और मेरे शुभ कर्मों के उदय से प्रमुख अभियंता के पद पर कार्य करते हुए मैंने शासन से उत्तरप्रदेश में तीर्थंकरों की सभी जन्मभूमियों के मार्गों को पक्का कराने की स्वीकृतियाँ प्राप्त कीं। साथ ही अन्य क्षेत्रों पर मार्गनिर्माण, पानी एवं बिजली की व्यवस्था आदि की भी स्वीकृतियाँ प्राप्त कीं।

यह मेरा परम सौभाग्य रहा है कि माताजी मुझे विभिन्न अवसरों पर अपनी कृतियाँ अपने आशीर्वाद सहित देती रही हैं। "मेरी स्मृतियाँ" पर माताजी की परम शिष्या आर्यिका चंदनामती का आशीर्वाद निम्नांकित है—

"गृहस्थ जीवन को समुन्नत करने की दिशा में हुए इस साहित्य सृजन की शृंखला में अभूतपूर्व प्रयास का लाभ, आप इसके स्वाध्याय से प्राप्त करें। इस मंगल आशीर्वाद के साथ भेंट।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह माताजी की कृपा का ही फल है कि मैं **'अल्पश्रुतं, श्रुतवतां परिहास धाम'' ''जैन धर्म-मानव धर्म''** लघु पुस्तिका लिख सका। इस पुस्तिका पर माताजी के वृहद् आशीर्वचन का अंतिम अंश निम्नांकित है—

''धर्मवीर जी की स्वाध्याय में रुचि एवं प्रवृत्ति निरन्तर वृद्धिंगत हो, यही मेरा मंगल आशीर्वाद है।''

भगवान से प्रार्थना है कि पूज्य माताजी शतायु हों और मुझ पर और मेरे परिवार पर उनका मंगल आशीर्वाद इसी प्रकार बना रहे।

-इंजी. धर्मवीर जैन, लखनऊ

200 ग्रंथों की रचयित्री-गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी

मैं अपने आपको इस दृष्टि से बेहद सौभाग्यशाली समझता हूँ कि प्रातःवंदनीय बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका ज्ञानमती माताजी के अनेकों बार मैंने दर्शन किए हैं तथा जैनधर्म के विविध कठिन पक्षों पर अपनी जिज्ञासाओं का बेहद सरल अर्थों में समाधान भी पूज्य माताजी के श्रीमुख से पाया है।

पूज्य माताजी के प्रथम दर्शन का सौभाग्य मुझे वर्ष 1995 में हस्तिनापुर में मिला था, जब मेरे पिताजी प्रो. विमल कुमार जैन (पूर्व कुलपति, सागर वि.वि.) हृदय रोग से पीड़ित होने के बावजूद भी ओपन हार्ट सर्जरी कराने के पहले पूज्य माताजी के दर्शन करना चाहते थे तथा मुझे जैनधर्म के वैज्ञानिक पक्षों पर अध्ययन करने के लिए प्रेरित करने वाले युवा विद्वान डॉ. अनुपम जैन (इंदौर) के पुरस्कार मिलने की खुशी में शरीक होना चाहते थे अतः डाक्टरों के मना करने के बावजूद भी पिताजी की जिद के चलते जब प्रथम बार डॉ. अनुपम जैन के साथ मैंने पूज्य माताजी के दर्शन किए तथा विश्व की अद्‌भुत रचना जम्बूद्वीप परिसर को देखा तो ऐसा लगा कि पूज्य माताजी किसी काम को उठाती हैं, तो उसके सम्पन्न करने-कराने में अपने आपको तन्मय कर देती हैं।

उसके बाद तो मैंने माताजी की जन्मजयंती पर उनके दर्शन करने का नियम ही बना लिया तथा जब भी मौका मिला, उनके दर्शनों को चल दिया।

मेरे मन में पीड़ा थी कि जैन पुस्तकालय अंतर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर जनसामान्य तक नहीं पहुँच रहे थे और जब मैंने पाया कि पूज्य माताजी तो इस युग की ऐसी आर्यिका हैं, जो भगवान महावीर की परम्परा की एक कड़ी हैं, जो अपना सम्पूर्ण जीवन ग्रंथों के लेखन व अध्ययन में समर्पित किये हुए हैं, तो मैंने उनसे जैन पुस्तकालयों के लिए वर्गीकरण पद्धति हेतु आशीर्वाद मांगा, तो उन्होंने मुझे जो मार्गदर्शन प्रदान किया, उसी की बदौलत कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, जम्बूद्वीप पुस्तकालय इत्यादि पुस्तकालय विकसित रूप में आ पाए हैं।

उनके सानिध्य में मुझे लगा कि उनके गुरु ने निश्चित तौर पर ज्ञानमती नाम इसलिए दिया था क्योंकि पूज्य माताजी में ज्ञानार्जन की तीव्र लालसा गुरु महाराज को दिखी होगी तथा आचार्यश्री के संक्षिप्त उद्‌बोधन कि **''ज्ञानमती, तुम अपने नाम का सदैव ध्यान रखना''**। उन्होंने अक्षरशः पालन किया है, भौतिक शिक्षण की सर्वोच्च उपाधि देने के लिए तभी तो अवध वि.वि. फैजाबाद को आगे आना पड़ा तथा उन्हें डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

तीर्थ उद्धार के रूप में माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास सबके सामने है। जहाँ कोई जाने से भी कतराता था, ठहरना तो दूर की बात, वहाँ से अब आने का मन नहीं करता, यह पूज्य माताजी का आशीर्वाद ही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगामी अप्रैल में पूज्य माताजी के दीक्षा के पाँच दशक पूरे हो रहे हैं, मैंने पूज्य माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर के भी दर्शन किए हैं, माताजी की बौद्धिक सोच व उनके चरणों में रहने का मुझे भरपूर अवसर मिला है तथा उनके वात्सल्य गुण का मैं कायल रहा हूँ।

ऐसी इस युग की साक्षात् शारदे माँ के चरणों में सादर वंदामि।

-डॉ. संजीव सर्राफ, वाराणसी
(डिप्टी लाइब्रेरियन-बनारस हिन्दू वि.वि.)

संस्मरण-विनयांजलि

पूज्य ज्ञानमती माताजी इस युग की अद्वितीय साध्वी, महान विदुषी, जैन तीर्थोद्धारक व जैन साहित्य निर्मात्री हैं। सैकड़ों ग्रंथ, विधान, शास्त्र आपने लिखे हैं। संस्कृत भाषा की अगाध पंडिता हैं व लेखिका हैं। आप अष्टसहस्री नामक क्लिष्टतम जैन न्याय ग्रंथ की संस्कृत टीकाकर्त्री हैं, हम लोग पढ़ते समय जिसे कष्टसहस्री कहते थे। इसके अतिरिक्त अनेक विधान, पुस्तकें आपने लिखी है। हस्तिनापुर प्राचीनतम तीर्थक्षेत्र है, जो भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ इन तीन तीर्थंकरों की जन्मभूमि है। वहाँ पर माताजी ने जम्बूद्वीप का शास्त्र के आधार पर जो अभूतपूर्व निर्माण कराया है, वह उनकी अमरकृति है। न केवल भारतवर्ष किंतु विदेशों से प्रतिवर्ष हजारों यात्री, जिनधर्मानुरागी, जनसाधारण और पर्यटक आते हैं, जिससे यह भारतवर्ष के प्रसिद्ध पर्यटनक्षेत्रों में एक बन गया है। भगवान आदिनाथ की जन्मभूमि अयोध्या का नवीन निर्माण, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) आदि धर्मस्थलों का नवनिर्माण, पुनरुद्धार आदि कराना, ऐसी ही स्मरणीय ऐतिहासिक कृतियाँ हैं।

पूज्य गणिनी माताजी ने स्वयं तो जैन साहित्य लिखा है किन्तु उसके साथ में दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद, दिगम्बर जैन विद्वत् महासंघ जैसी संस्थाओं के माध्यम से अपने सानिध्य में जैन धर्म का बहुत अधिक प्रचार किया है, देश के सभी वर्गों के उच्चतम विद्वानों की संगोष्ठियाँ की हैं एवं कर रही हैं। जैन-जैनेतर मनीषी विद्वानों के मन में जैन दर्शन के प्रति जो भ्रांतियाँ थी, उन्हें दूर किया है, यह बहुत बड़ा काम जैनधर्म की प्रभावना का है। इस सबका श्रेय माताजी को है। इस प्रकार माताजी के सामाजिक, धार्मिक उपकारों का कहाँ तक उल्लेख किया जाये, वे अमर हैं। उनका स्मरण शांतिदायक है, इस अवसर पर मैं इन संस्मरणों के साथ अपनी विनयांजलि भेंट करता हुआ स्वयं को गौरवान्वित मानता हूँ।

-वैद्य धर्मचन्द्र जैन, इंदौर (म.प्र.)

जिसके स्मरण से पाप कटे, ऐसी वात्सल्यमयी माता

भारतभूमि पुण्य धरा पर, बड़ा उत्तरप्रदेश।
बाराबंकी जिले का, टिकैतनगर ग्रामेश।।1।।

छोटेलाल जी पिता तुम्हारे, माँ मोहिनी देवी।
पवित्र कूख से जन्म धरा पर, कर दी खुशहाली।।2।।

आश्विन शु. पूर्णिमा, चंद्रमा का धवल प्रकाश।
'मैना' ने जन्म लिया सन् उन्नीसौ चौबीस।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लालन पालन माँ पिता के, दिये धर्म संस्कार।
पद्मनंदिपंचविंशतिका ग्रंथ का स्वाध्याय अपरंपार।।4।।

प्रतिभा ज्ञान झलकती थी, जब करते विद्याभ्यास।
काम, क्रोध, मद, लोभ शत्रु का करते सत्यानाश।।5।।

वैराग्य भाव की वृद्धि होने पर, किया गृह त्याग।
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लिया, आ. देशभूषण महाराज।।6।।

महावीर प्रभू का अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी।
1953 में क्षुल्लिका दीक्षा, नाम वीरमती जी।।7।।

चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी से हुआ साक्षात्कार।
माधोराजपुरा में आर्यिका दीक्षा गुरु आ. वीरसागर।।8।।

जग-हितकारि पर कल्याणी, शास्त्रवचन अनुसार।
हित-मित प्रिय वचनों से माता ने, कीना जग उद्धार।।9।।

कर चातुर्मास संघ यह, कीना धर्म प्रचार।
राजस्थान, महाराष्ट्र, बंगाल, आंध्र, कर्नाटक बिहार।।10।।

एम.पी., दिल्ली, बिहार एवं उत्तरप्रदेश।
आपके चरण स्पर्श से बने तीर्थ प्रदेश।।11।।

तीर्थोद्धार, तीर्थंकर भूमि का, कुशल मार्गदर्शन करें।
चंदना, मोतीसागर रविन्द्र के हाथों उद्धार करे।।12।।

सहज सरलता से, कुण्डलपुर, प्रयाग बना महान।
मांगीतुंगी, अयोध्या, काकन्दी भी बनना है महान।।13।।

शास्त्रों का शब्दांकन, सरलभाषा शास्त्रानुसार।
सत्यधर्म का पालन करने, करने सद्व्यवहार।।14।।

मैं क्रोधी, रागी संसार सिंधु में फँसा हुआ था।
वात्सल्यमयी माता के स्पर्श से किया निज अवलोकन।।15।।

पतितोद्धारक मात से मैंने, आत्मोद्धार किया।।
दानव था मैं, मानव बनाया, नंदन खिला दिया।।16।।

महाराष्ट्र भक्त मंडल, गणिनी ज्ञानमती का।
करता रहे कार्य हरदम, आशीर्वाद हो माताजी का।।17।।

-महाराष्ट्र प्रान्तीय गणिनी ज्ञानमती ज्ञानमती भक्तमण्डल
कस्तूरचंद रामलाल बड़जाते, औरंगाबाद (संयोजक)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भजन

तर्ज-तुम दिल की धड़कन में रहते हो........

हे माता धन्य हो तुम, कितना परिषह सहती हो।
सर्दी गर्मी या हो वर्षा, तुम अपने में रहती हो।।
हे माता धन्य हो तुम...................................
श्री आचार्य वीरसागर से दीक्षा तुमने पायी है।
मैंना से फिर ज्ञानमती बनकर दुनिया में आयी है।।
संयम ही जीवन है, प्रवचन में कहती हो।
हे माता धन्य हो तुम कितना परिषह सहती हो।।
तीर्थंकरों की जन्मभूमियों का विकास करवाया है।
दीक्षा स्वर्ण जयंती का शुभ अवसर आया है।।
तप संयम उत्तम है, प्रवचन में कहती हो।
हे माता धन्य हो तुम कितना परिषह सहती हो।।
हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना करवाई है।
संजय, समता, संयम के जीवन में खुशियाँ आई हैं।।
नये-नये ग्रंथों की रचना, माता तुम तो करती हो।
हे माता धन्य हो तुम कितना परिषह सहती हो।।
सदी गर्मी या हो वर्षा तुम अपने में रहती हो।।

-संजय जैन (कानपुर वाले), जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
एवं सौ. समता जैन एवं पुत्र संयम जैन

गुरु नाम जपो, मन-वचन-काय

शास्त्रों में गुरुओं की महिमा के बारे में बहुत कुछ पढ़ने में आता है, जैसे—

'गुरु की महिमा वरणी न जाय, गुरु नाम जपों मन-वचन-काय' अथवा जहाँ पड़ें गुरु चरण वहाँ की रज चंदन बन जाती है आदि-आदि..........

परन्तु हमने तो पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की महिमा का प्रत्यक्षरूप में अवलोकन किया है। जब से हमें उनकी निकटता में आने का सौभाग्य मिला है, तब से ही उनके दर्शनमात्र से हृदय में असीम आनन्द की अनुभूति होती है। हमारा यही प्रयास रहता है कि हम पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो रहे प्रत्येक कार्य में सहभागी बनकर पुण्योपार्जन कर लें।

पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर प्रकाशित हो रहे इस 'गौरव ग्रंथ' में हमें भी विनयांजलि के माध्यम से अपने भक्ति सुमन समर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, इसे हम अपना विशेष पुण्य समझते हैं।

इस ग्रंथ में प्रकाशित सामग्री के माध्यम से जन-जन को पूज्य माताजी के असीमित कार्यकलापों, उनके असाधारण व्यक्तित्व, उनकी अनुपम कृतियों आदि अनेक महत्वपूर्ण बातों की जानकारी प्राप्त होगी।

इस दीक्षास्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर हमारी यही एकमात्र इच्छा एवं प्रार्थना है कि इसी प्रकार आने वाले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भविष्य में हमें पूज्य माताजी की दीक्षा हीरक जयंती भी मनाने का सुयोग अवश्य प्राप्त हो, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ अपने पूरे परिवार की ओर से हम पूज्य माताजी के श्रीचरणों में बार-बार वंदामि करते हुए विनम्र विनयांजलि समर्पित करते हैं।

-सुमतचंद जैन एवं श्रीमती शारदा जैन
देवनगर-दिल्ली

विश्व का महान आश्चर्य : गणिनी ज्ञानमती माताजी का दिव्य ज्ञान

युगप्रवर्तिका, गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न, आर्यिकाशिरोमणि, चारित्रचन्द्रिका, तीर्थोद्धारिका, सिद्धान्तकल्पतरुकलिका, श्रुत तीर्थ प्रकाशिका, वात्सल्यमूर्ति, न्यायप्रभाकर, राष्ट्रगौरव, विश्वविभूति, वाग्देवी, सरस्वती की प्रतिमूर्ति गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के प्रथम दर्शन मुझे सन् 1980 में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में हुए। मैं आचार्य वीरसागर संस्कृत विद्यापीठ में आगे विद्याध्ययन करने हेतु श्री महावीर जी से अध्ययन पूर्ण करके आया था। उस समय पूज्य माताजी का प्रवास दिल्ली महानगरी में चल रहा था। पूज्य माताजी के जन्म दिवस पर सभी विद्यार्थियों को दिल्ली जाने का अवसर मिला। उस समय पूज्य माताजी का संघ कम्मो जी की धर्मशाला में विराजमान था, जब मैंने प्रथम बार पूज्य माताजी का पावन दर्शन किया, तो ऐसा अनुभव हुआ, जैसे मैंने साक्षात् ममता, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति माँ के चरणों में नमन करके कोई महान निधि ही प्राप्त कर ली हो। पूज्य माताजी ने बड़े स्नेह से वात्सल्य पूर्ण आशीर्वाद देकर मेरा सम्पूर्ण जीवन धन्य कर दिया। पूज्य माताजी के ही आशीर्वाद का प्रतिफल है, जो आज मैं जैन समाज में बड़े-बड़े आयोजन, विधि-विधान पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ आदि निर्विघ्न सम्पन्न कराकर मान सम्मान प्रतिष्ठा को प्राप्त हो रहा हूँ। पूज्य माताजी के ज्ञान के विषय में कुछ भी कहना सूरज को दीपक दिखाने जैसा लगता है। पूज्य माताजी ने साहित्य लेखन से तो बहुमुखी प्रतिभा को ही प्रगट कर दिया है, जहाँ नन्हें-नन्हें बच्चों के लिए बाल विकास जैसी लघु पुस्तकों का लेखन किया, वहीं आज के युवाओं को भी धर्ममार्ग पर लगाने के लिए धार्मिक कथाओं को आधार बनाकर उपन्यास शैली में साहित्य रचना की।

कविवर सरस जी ने पूज्य माताजी के विषय में बहुत ही सुन्दर लिखा है—

जो बतलाते नारी जीवन, लगता मधुरस की लाली है।
वह त्याग तपस्या क्या जाने, कोमल फूलों की डाली है।।
जो बतलाते योगों में नारी, नर के समान कब होती है,
ऐसे लोगों को ज्ञानमती का, जीवन एक चुनौती है।।

पूज्य माताजी ने बीसवीं सदी में साहित्य सृजन करके प्राचीन 2000 वर्ष के ग्रंथ लेखन के इतिहास को ही बदल दिया।

आज हमें यह जानकर अत्यन्त हर्ष एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि पूज्य माताजी ने अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष कठिन आत्मा साधना के साथ-साथ धर्माराधना करते हुए सार्थक किये और हम सभी को दीक्षा की स्वर्ण जयंती मनाने का पावन अवसर प्रदान किया। इस पावन अवसर पर मैं अपने समस्त परिवार की ओर से भगवान महावीर से यही प्रार्थना करता हूँ कि पूज्य माताजी स्वस्थ रहते हुए हम सभी को अपनी दीक्षा की 'हीरक' जयंती भी मनाने का सौभाग्य प्रदान करें। पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन करते हुए समस्त संघ के चरणों में वंदामि/ पूज्य माताजी के पावन चरणकमलों में विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

-प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश जैन 'कांसल', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर एवं समस्त परिवार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

105 पूज्य श्री ज्ञानमती स्तुति अष्टक

(गीता छंद)

(1)

जो जैन आगम धर्म सिंधू, को मथ अमृत पिया,
ज्ञान निर्झर को बहाकर, भव्य जन का हित किया।
वे ज्ञान लक्ष्मी सुख प्रदाता, तीन जग में पूज्य हैं,
है कोटि वंदन मात पद में, वे भवोदधि तीर हैं।।

(2)

हो शुद्ध योगी, बुद्ध योगी, ज्ञान योगी साधिका,
त्रय रत्न धारक महायोगी, धर्म जिन आराधिका।
हो बाल योगी कांतिधारी, धर्मध्वज वरवीर हैं,
तव पद युगल में कोटि वंदन, परमगुण गंभीर हैं।।

(3)

निज तेज से सब तेजवंतों को लज्जित कर दिया,
नव नव सृजन कर ग्रंथ रुचिकर, श्रुत जलधि को भर दिया।
तीर्थंकरों के तीर्थ को, विकसित किया भरपूर है,
है कोटि वंदन मातपद में, वे भवोदधि तीर हैं।।

(4)

जैन वृष भूगोल जो, जग को बताया आपने,
ग्रंथ रचकर ढाई शत, इतिहास बनाया आपने।
चारित्र की हो चन्द्रिका, गणिनीप्रमुख श्रुत सूर्य हो,
चरणाब्ज में हो कोटि वंदन, धर्मरथ आरुढ़ हो।।

(5)

आर्यिकाओं की शिरोमणि, ब्राह्मी सुंदरी, सदृश,
सबसे पुनीता, आप गीता, सर्वमीता, हो सुश्रुत।
हे भारती! जन तारती, तव आरती हम कर रहे,
हो कोटि वंदन पद कमल में, सिंधु भव का तिर रहे।।

(6)

आप कमला अमल विमला, जिन भक्ति की तरंगिणी,
पाप विफला पुण्य सुफला, अध्यात्म रस की गंगिणी।
अकथ महिमा, अथक गरिमा, धर्मरथ की धारिणी,
हो कोटि वंदन चरण चंदन, धर्म विरोध निवारिणी।

(7)

सम्यक्त्व के जो अंग आठों, आप में वे राजते,
ज्ञान सम्यक आठ विध आप में ही साजते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्र सम्यक् देह धारी, आप गुण उत्तम कथा,
इस हेतु कोटि वंदना, चरणारविंदों में तथा।।

(8)

राह जो अत्यंत दुर्गम, आप हंस उन पर चलीं,
देश धर्म समाज को ले साथ, शिवपथ पर चलीं।
राह भूलों को दिखाई, कार्य सब ऐसा किया,
कर सका ना कोई नर, चरण में वंदन किया।।

(9)

है कथन करने को बहुत, पर शक्ति इतनी है नहीं,
सूर्य को जुगनू दिखाना, जलधि कर से नापना बस है, यही।
अतएव स्तुति अलम करता, वंदामि कोटी बार हो,
प्रवीन का तव चरण में, प्रणाम मां स्वीकार हो।।

-इति स्तुति अष्टक-

-प्रवीणचंद जैन शास्त्री, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

माताजी दया की मूर्ति हैं

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का गौरव ग्रंथ निकल रहा है, यह जानकर मैं भी माताजी के प्रति दो शब्द लिखने का लोभसंवरण नहीं कर सका। वैसे तो पूज्य माताजी के प्रति कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने के सदृश होगा, फिर भी उनका गुणानुवाद करके मैं मात्र अपना पुण्यवर्धन करने का ही प्रयास कर रहा हूँ।

सन् 1993 में भगवान ऋषभदेव के प्रथम महामस्तकाभिषेक हेतु जब अवध की ओर पूज्य माताजी का मंगल विहार हुआ, उस मध्य अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर में माताजी का मंगल पदार्पण हुआ। मंगल पदार्पण के साथ ही माताजी ने यहाँ भगवान नेमिनाथ के समवसरण में स्थित पारिजात कल्पवृक्ष की योजना प्रदान की, तत्क्षण ही सहयोग राशि एकत्रित हो गई और उस योजना के मूर्तरूप लेते ही उस तीर्थ को अवध के अतिरिक्त अनेक स्थानों की जनता भी जान गई। इसका श्रेय पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को जाता है, उनका त्रिलोकपुर जैन समाज पर सदैव आशीर्वाद रहा है। त्रिलोकपुर तीर्थक्षेत्र पूरे अवध में अपने अतिशय के कारण प्रसिद्ध है, यहाँ अनेकों अतिशय-चमत्कार होते रहे हैं। यहाँ के चमत्कारों की कई कहानियाँ क्षेत्र के लोगों से सुनी जा सकती हैं। जैसे अभी 21 फरवरी 2006 को एक चमत्कार देखने में आया। हम सबने इससे पूर्व पूज्य माताजी द्वारा रचित विधान किया था, उसके पश्चात् रोजाना की भांति मंदिर में पूजा-अर्चना हेतु जब 21 फरवरी को वेदी का दरवाजा खोला गया, तो श्री जी के चरणों में हरे रंग के दो फल चढ़े हुए मिले। जिसे हजारों लोग देखने के बाद भी पहचान नहीं पा रहे हैं, इससे पहले भी हरी लौंगें तथा सिक्के यहाँ कभी-कभी चढ़े मिलते रहे हैं। मुझे तो यही लगता है कि यह सब पूज्य माताजी द्वारा किए गए विधान का अतिशय था और यह फल देवों ने ही आकर यहाँ चढ़ाए हैं।

पूज्य माताजी के द्वारा किए गए प्रत्येक कार्य अलौकिक हैं, चाहे वह साहित्य निर्माण हो, तीर्थ विकास हो या अन्य धर्मप्रभावना के कार्य हों। जिस किसी को उनका वरदहस्त प्राप्त हो जाता है, उस जीव का कल्याण हो जाता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। माताजी दया की मूर्ति हैं, उनका आशीर्वाद सदैव मेरे साथ रहा है, जो कि मेरा विशेष पुण्योदय ही है। पूज्य माताजी में मैंने एक खास विशेषता देखी है कि वह जो भी कार्य हाथ में लेती हैं, कम समय में सुव्यवस्थित, गरिमापूर्ण और अलौकिकता को लिए हुए पूर्ण होता है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण अभी नवविकसित तीर्थ भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर है। जब कुण्डलपुर में रेलमंत्री नितीश जी आए और वहाँ के निर्माण को देखा तो आश्चर्यचकित रह गए। उस समय उन्होंने भाई रवीन्द्र जी से पूछा इस तीर्थ निर्माण में कितना धन व्यय हुआ, तब भाई जी ने कहा कि लगभग दो करोड़ रुपया लगा है, सुनकर वह विश्वास नहीं कर पाए और भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए बोले कि यदि हमारी सरकार इसे बनाती तो कम से कम 10 करोड़ रुपया लगता तथा इतना भव्य व मजबूत निर्माण नहीं हो पाता। वास्तव में उनके शिष्यों को देखकर ही लगता है कि पूज्य माताजी कितनी महान हैं।

उनके स्वर्णिम दीक्षा जयंती के पावन अवसर पर मैं उनके चरण युगल में वंदन करता हुआ उनके दीर्घायु व स्वस्थ जीवन की वीरप्रभु से प्रार्थना करता हूँ और सदैव उनके मंगल आशीर्वाद की कामना करता हूँ।

-पदमचंद जैन, त्रिलोकपुर (उ.प्र.)

शांतिधारा : श्री ज्ञानमती माताजी की अलौकिक देन

षट्काल परावर्तन के समय चतुर्थकाल आने पर धर्मतीर्थ स्थापना के लिए तीर्थंकरों का जन्म होता है और इसी के साथ सौधर्म इन्द्र को पांडुकशिला पर जन्माभिषेक उत्सव के माध्यम से सातिशय पुण्य बंध करने का सुयोग प्राप्त होता है। अनंतानंत कालों की इसी परम्परा के आधार पर वर्तमान में भी नित्य अभिषेक करने की परम्परा चल रही है। अभिषेक का सीधा संबंध सौधर्म इन्द्र से जुड़ा होने के कारण वर्तमान में भी नित्य अभिषेक करने वाले इन्द्र सदृश बनते हुए देखे जाते हैं अर्थात् अभिषेक की क्रिया अभिषेक करने वाले को इन्द्र सदृश बना देती है।

वर्तमान में अभिषेक के साथ शांतिधारा करने की परम्परा परम्परागत रूप से ही है। पुरानी शांतिधारा की जिस शब्दावली का हम उपयोग करते हैं, सामाजिक बदलाव के चलते उसमें आधुनिक रूप से कुछ नये की आवश्यकता थी। शांतिधारा एक सुरक्षाकवच है, जो समय-समय पर स्वचलित रूप से कार्य करता है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने अपनी दूरदृष्टि के माध्यम से इस अभाव को दूर दिया है। क्योंकि शांतिधारा सांसारिक दोषों को शमन करने में समर्थ होती है। सांसारिक दुख व कष्ट, जिनके चलते जीवन में दुःख की घड़ी आती है, उनसे बचने के लिए शांतिधारा की जाती है। जैसे शांतिधारा में पढ़ते हैं-सर्व गजभयं, सर्व सर्पभयं, सर्वसिंहभयं, इत्यादि इसी के साथ छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि बोला जाता है, जिसका अर्थ है गज, सर्प, सिंहादि से जीवन में कोई अनिष्ट न हो। इस तरह का योग यदि उदयगत हो भी, तो छिन्न-भिन्न अर्थात् नष्ट हो जाये लेकिन वर्तमान जीवन व्यवस्था में इस तरह का कोई भय नहीं है क्योंकि हाथी, घोड़े, सिंहादि से अब सामना नहीं होता है क्योंकि अब वो नहीं हैं और जो हैं वे चिड़ियाघर में हैं, तो उनसे आकस्मिक भय नहीं है।

अब यदि भय है तो अनेक प्रकार के वाहनों से, जिनका सामना रोज सुबह से शाम तक होता है। इसके भय निवारण हेतु माताजी ने शांतिधारा में लिखा है, सर्व चतुष्चक्रिकादुर्घटनाभयं अर्थात् चार पहिये के जितने वाहन हैं, उनसे कोई भय नहीं हो, सर्व त्रिचक्रिका दुर्घटनाभयं अर्थात् तीन पहिये के जितने वाहन हैं उनसे कोई भय नहीं हो, सर्व द्विचक्रिका दुर्घटनाभयं अर्थात् दो पहिये के जितने वाहन हैं, उन से कोई भय नहीं हो। इनका उच्चारण करते ही सभी वाहनों से सुरक्षा निश्चित हो जाती है। पहले बिजली नहीं थी, अब बिजली है, इससे सुरक्षा के लिए माताजी ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिखा—सर्व विद्युत्दुर्घटनाभयं छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि, पहले वायुयान नहीं थे, इससे सुरक्षा के लिए लिखा—वायुयान दुर्घटना भयं, रेल दुर्घटना से सुरक्षा के लिए सर्ववाष्पयान दुर्घटनाभयं इत्यादि प्रकार से सभी प्रकार के वर्तमानकालीन अनिष्टों से पूज्य माताजी ने सुरक्षा प्रदान की है शांतिधारा के माध्यम से।

संपूर्ण भारत में मुझे सिद्धचक्र, इन्द्रध्वज आदि विधान वृहद्स्तर पर सम्पन्न करने का सुयोग मुझे पूज्य माताजी की कृपा दृष्टि से ही प्राप्त हुआ है, ऐसे ही चण्डीगढ़ विधान के समय एक भक्त ने शांतिधारा का अर्थ समझाते समय पूछ लिया कि आज सबसे ज्यादा डर तो आदमी से है, उसके निवारण के लिए क्या लिखा है? उनके प्रश्न से मुझे गहरे चिंतन में जाने का अवसर मिला और माताजी का स्मरण करते ही समाधान प्राप्त हो गया। मुझे स्मरण हो आया कि सभ्यता कहाँ से कहाँ तक पहुँच गयी है? पहले यदि घने जंगल में आदमी दिख जाता था, तो प्रसन्नता होती थी कि भय की कोई बात नहीं, आदमी है, लेकिन अब उल्टा है जंगली जानवर मिल जाये, तो कोई बात नहीं, यदि आदमी दिख जाये, तो भय उत्पन्न हो जाता है कि संभल के रहना, आदमी है।

मैंने उनको कहा कि व्यवहारिकता के चलते ऐसा लिखना कि सर्वआदमीभयं संभव नहीं है लेकिन सर्वदुष्टभयं छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि लिखकर इस भय का निवारण भी पूज्य माताजी ने कर दिया है क्योंकि आदमी या तो सज्जन होता है या दुष्ट होता है। कभी-कभी गुस्से में कहने में भी आ जाता है दुष्ट कहीं का।

उन महानुभाव ने विधान के दसों दिन वही शांतिधारा करायी एवं आज भी करते हैं।

पूज्य माताजी की सुदूरदृष्टियुक्त विचारधारा इस बात का प्रमाण है कि आज विज्ञान के इस युग में धर्म एक साइंस है। साइंस की दृष्टि से वर्तमान में भी धर्म की असाधारण शक्ति का उपयोग सुरक्षित और सुखी जीवन हेतु किया जा सकता है। ऐसा उन्होंने समझ लिया है और हमें बताया है। पूज्य माताजी की साइंस दृष्टि आधुनिक विज्ञानरूपी इस युग में सभी को सुख, शांति, समृद्धि एवं सुखी और सुरक्षित जीवन प्रदान करे, यही मंगल कामना है।

युग युग तक माँ रहो सलामत, कोटि कोटि वंदन है।
स्वर्ण जयंती पर माँ तुमको, सौ-सौ बार नमन है।।

-प्रतिष्ठाचार्य पं. प्रदीप जैन शास्त्री, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

पुनः पुनः तव दर्शन होवे

मैंने पहले से ही ज्ञानमती माताजी का काफी नाम सुख रखा था तथा उनके आगरा प्रवास के मध्य उनके दर्शन भी किए थे परन्तु संकोचवश पास जाकर बात करने की हिम्मत नहीं कर पाया था। अपने समधी दीपक जी के साथ जब मैं पहली बार हस्तिनापुर गया, तब वहाँ पूज्य माताजी के निकटता से दर्शन किए तथा उनके वात्सल्यपूर्ण शब्दों को भी सुनने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। प्रथम बार वार्तालाप करके भी ऐसा लग रहा था कि जैसे मैं पूज्य माताजी से दीर्घकाल से परिचित हूँ। उस प्रथम अहसास की सुखद अनुभूति सहित हम आगरा वापस आ गए परन्तु न जाने क्यों, मन में पूज्य माताजी के पुनर्दर्शन की इच्छा बार-बार हो रही थी जिसके फलस्वरूप मैं अपनी पत्नी के साथ पुनः मार्च 2006 में पूज्य माताजी के दर्शनार्थ हस्तिनापुर गया और मात्र 6-7 घंटे के अल्पसमय में वात्सल्य एवं अपनत्व भरे आशीर्वाद को पाकर रोम-रोम पुलकित हो गया।

पूज्य माताजी द्वारा निर्मित तीर्थ हस्तिनापुर को देखकर तो बिल्कुल यही लगता है कि स्वर्ग में भी इससे ज्यादा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुन्दरता और क्या होगी!

ऐसी तीर्थोद्धारिका, तीर्थ विकासिका पूज्य माताजी के चरण कमलों में बारम्बार वंदामि करते हुए मैं अपने पूरे परिवार की ओर से विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

–डॉ. प्रमोद कुमार जैन, आगरा

गौरवमय हो यह उत्सव

पीछीधारी सभी साधुओं में, माता हैं सबसे प्राचीन।।
ज्ञान, ध्यान और सामायिक में, रहती हैं वे हरदम लीन।।
पार्श्वनाथ का तृतीय सहस्राब्दि, महोत्सव भी मनवाया है।
वाराणसि नगरी में सबने, उत्सव खूब मनाया है।।1।।

एक-एक क्षण का सदुपयोग, कर मानव महान बन जाता है।
माँ का कहना है बीता क्षण, वापस लौट न आता है।।
स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर, उत्सव हम सभी मनाते हैं।
माँ के गुण मुझमें प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।2।।

आस्था, श्रद्धा, विवेक गुण, जीवन में धारण करो।
उपदेश यही है माता का, जीवन में कुछ विकास करो।।
संघर्षों से डर कर तुम, जीवन में कभी पीछे न हटो।
संघर्षों पर विजय प्राप्त कर, तुम आगे बढ़ते ही चलो।।3।।

है यही प्रार्थना जिनवर से यह प्रभा सदा दिन दूनी हो।
भारत माता की गोदी इन माता से कभी न सूनी हो।।
आशीष आपका सदा मुझे, मिलता रहे, इस धरती पर।
करे 'आस्था' यही प्रार्थना, कहीं रहूँ इस अवनि पर।।4।।

ज्ञानमती माता की शिष्या, आर्यिका श्री चंदनामती जी हैं।
तेरह वर्ष की लघु वय से ही, सम्पूर्ण जीवन समर्पित है।।
गौरव ग्रंथ प्रकाशन में, माँ ने किया अति परिश्रम है।
माँ का आशीष सदा मिले, यही प्रार्थना उनसे है।।5।।

–ब्र. कु. आस्था जैन
(संघस्थ–गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रद्धा सुमन

पूज्य माताजी ने सदैव सम्पूर्ण समाज की दुष्प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने तथा सत्कर्मों एवं सात्विक भावनाओं के माध्यम से अपने साधनों का सदुपयोग करने हेतु प्रभावी प्रेरणा प्रदान की है। उनकी प्रेरणा से आज अनेक व्यक्ति अपने संसाधनों का सतत सदुपयोग कर चतुर्मुखी सफलता एवं प्रसन्नता प्राप्त कर रहे हैं। पूज्य माताजी अपने शिष्यों के व्यक्तित्व का सतत संपोषण करते हुए उनका चतुर्मुखी विकास करती हैं। उनके व्यक्तित्व में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा संस्थापित कर उनके दीपक को प्रज्वलित रखती हैं। वे उनके व्यक्तित्व को सदैव सँवारती रहती हैं।

पूज्य माताजी ने व्यवहारिक धरातल पर समाज की समस्याओं का गहन चिंतन और विश्लेषण कर सफलतम ढंग से समाधान किया है। वे अपने आलोक से सम्पूर्ण जैन समाज को ज्योतिर्मय बना रही हैं और जनसाधारण की वाणी में जैनधर्म के सत्य को मुखरित कर रही हैं। निश्चित ही उनकी उदात्त भावनाओं और मार्मिक अनुभूतियों के सम्पूर्ण चित्र का दर्शन अन्यत्र दुर्लभ है। वे जीवन से निसंग, निस्पृह, निर्लिप्त और तटस्थ रहते हुए भी जीवन की पूर्णता का भव्य चित्र प्रस्तुत करती हैं। उनकी वाणी क्षेत्र और काल की सीमाएँ लाँघकर सम्पूर्ण राष्ट्र में गूंजती है। उनकी स्वरलहरी का संगीत हमारे घर में प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल ध्वनित होता है।

पूज्य माताजी ने हमें सदैव सहनशीलता का पाठ पढ़ाया है, हमारी सुप्त चेतना को जागृत किया है। हमारे व्यक्तित्व में भावनाजनित, क्षणिक जैविक मूल्यों के स्थान पर शाश्वत आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना की है। लोक कल्याण के पावन उद्देश्य से सर्जन और विसर्जन, राग और विराग, प्रिय और अप्रिय एवं अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में विवेकपूर्ण समन्वय स्थापित कर हमें अविचलित रहने और साहसपूर्वक समग्र विकास के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की है।

युगदृष्टा और युगसृष्टा माताजी को विनम्र प्रणाम।

-सुरेश जैन (आई.ए.एस.), भोपाल (म.प्र.)

-विमला जैन (एच.जे.एस.) जिला एवं सत्र न्यायाधीश

हम उस नगर के वासी हैं.........

संयम जीवन के स्वर्णिम महोत्सव के पावन क्षणों में परम पूज्यनीया 105 गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को त्रिकाल वंदामि! वंदामि!! वंदामि!!!

जीवन में उर्द्धत्वगामी परिवर्तनों का बड़ा महत्व होता है किन्तु जिस स्थान, जिस काल और जिस महानिमित के तत्त्वावधान में उर्द्धत्वगामी परिवर्तन घटित होते हैं, वे भी महत्वपूर्ण हुए बिना नहीं रहते। ऐसी ही एक घटना राजस्थान में स्थित एक छोटे से गाँव माधोराजपुरा में घटित हुई।

सन् 1956 में 108 आचार्य श्री वीरसागर जी मुनि महाराज का माधोराजपुरा में ससंघ मंगल आगमन, संघस्थ क्षुल्लिका वीरमती माताजी का आर्यिका दीक्षा हेतु गुरु से अनुनय तथा पूर्वोपार्जित सातिशय महापुण्य व आचार्यश्री की आशीष से माता-पिता स्व. श्रीमती चान्द देवी एवं श्री सागरमल जी राँवका को भावी आर्यिका के नियोगी माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्ति के फलस्वरूप हमारे परिवार को प्रदत्त महागौरव से आज भी हमारा परिवार परम आल्हादित है, क्योंकि क्षुल्लिका वीरमती की उर्वरा मनोभूमि में आर्यिकारूपी रोपित अंकुर, आज ज्ञानमती रूपी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशाल वृक्ष सम्पूर्ण भारतभूमि पर अपने ज्ञान की शाखाओं को विस्तार दे रहा है।

ज्ञान की किरणें जहाँ पहुँचें, वहाँ अज्ञान अंधेरा सहज मिट जाता है और जहाँ ज्ञान का उद्‌गम केन्द्र ही हो, वहाँ से नित्य प्रकाशमान किरणें अपनी छटा न बिखेरें, यह कदापि संभव नहीं है। वहाँ पर किसी वस्तु की कमी नहीं रहती है। सहज सुख की फुहार की अनुभूति सम्पूर्ण दुःख दरिद्रता का परिहार कर जाती है। माताजी के दीक्षा समारोह में एक सांड द्वारा गुड़ की भेली अर्पित कर लौट जाने की घटना व दीक्षा के समय आशा के विपरीत अधिकजन समूह एकत्रित होते हुए भी भोजन की कमी न रहने की धुंधली सी स्मृति हमारे मानस पटल पर आज भी अंकित है किन्तु उन पावन क्षणों के प्रत्यक्ष साक्षी जीवित ग्रामीण वृद्धजनों द्वारा वर्णित तथ्यों को प्रमाण के रूप में देखा जा सकता है।

दीक्षा के बाद माताजी का समस्त ग्रामवासियों के पुण्योदय से मार्च 1997 में अपनी दीक्षास्थली माधोराजपुरा में मंगल पदार्पण हुआ, मानों एक ग्राम कन्या अपने परिजनों सहित अपने पीहरवासियों से मिलने आई हो, ऐसी अनुभूति ग्रामवासियों को हुई। माताजी इस बार आयीं, तो वह एक संघ की अधिष्ठात्री बन कर आईं। ज्ञान की किरणें जब वाणी के माध्यम से विकरित होने लगीं, तो धर्म पथ को प्रशस्त करने हेतु उपस्थित धर्मसभा द्वारा यह संकल्प लिया गया कि माधोराजपुरा में दीक्षा की पावन स्मृति को चिरकाल तक संयोजित रखने हेतु एक दीक्षा तीर्थ सृजित किया जावे।

आज माताजी के दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर हमारा मनोभाव उछालें मार रहा है कि उस संकल्प को माताजी के पावन सानिध्य में पूर्णता प्राप्त हो। स्वर्गवासी माता-पिता के पुण्य प्रभाव से सातों भाई-बहनों की उत्कृष्ट भावना, ग्रामवासियों एवं साधर्मी भाइयों के सहयोग व श्रम से यह दीक्षा तीर्थ माताजी का ज्ञान अनेकांत के रंग में रंग कर स्याद्‌वाद शैली में वाणी के माध्यम से माधोराजपुरा व आसपास के जनसमूह को ही नहीं किन्तु समस्त भारतवर्ष के भव्यजनों को सम्यक्त्व के अमृत का पान कराके मिथ्यात्व के जहर को उतारने में मील का पत्थर बने।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारी यह विनयांजलि स्वीकार कर माताजी अपने वात्सल्य का आनन्द बरसाते हुए दीक्षा तीर्थ की सर्वतोभद्र संरचना हेतु अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करेंगी।

-संतोष राँवका, माधोराजपुरा (राज.)
एवं समस्त परिवार

साक्षात् सरस्वती

परमपूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी बीसवीं शताब्दी की साक्षात् सरस्वती हैं। उन्हें साक्षात् सरस्वती की प्रतिमूर्ति कहना कोई अतिशयोक्ति न होगी। जैसा उनका नाम है, तदनुरूप कहा जाये या उससे भी बढ़-चढ़कर उनका कार्य है। साहित्य सृजन का जो कठिन व दुरूह कार्य माताजी ने किया, वह अनुपम व अद्वितीय है। छोटे-छोटे कथानकों व चित्रों के माध्यम से छोटे-छोटे बालकों व नयी पीढ़ी में जो धर्म के प्रति आकर्षण व प्रभाव बढ़ा है, साथ ही वह धर्म को समझकर व ज्ञान को सम्यक् बनाकर आचरण में भी लाने की कोशिश कर रहे हैं, यह पूज्य माताजी की ही अति अनुकम्पा है।

पं. मोतीचन्द्र कोठारी जी कहा करते थे कि उनकी विद्वत्ता के सामने हम कुछ नहीं हैं क्योंकि जिस ग्रंथ को पढ़ने व समझने में हमें पसीना छूट जाता है, उसे पूज्य माताजी ने बड़े ही सरल, सुबोध व सुलभ शब्दों में अनुवादित किया है। यह माताजी के अनुपम व अगाध ज्ञान का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

आज से 50 वर्ष पूर्व मात्र अष्टान्हिका पर्व में ही सिद्धचक्र विधान व यदा-कदा पंचपरमेष्ठी विधान की बात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुनायी देती थी। पूज्य माताजी ने अनेक विधानों की रचना कर भक्ति संगीत का ऐसा माहौल व सशक्त माध्यम उपलब्ध कराया कि आज सर्वत्र विधानों की धूम मची हुई है। समाज का एक बड़ा वर्ग इन विधानों के माध्यम से भक्ति से ओतप्रोत हो भक्तिरस में डूब जाता है और अपार पुण्यार्जन कर संस्कारित भी हो रहा है। साथ ही उनके जीवन की दिशा ही बदल जाती है।

पूज्य माताजी ने शास्त्रों की ही रचना नहीं की, अपितु प्राचीन तीर्थों को भी अपने अगाध ज्ञान से पुनर्स्थापित कराया व नया आकर्षित रूप प्रदान कराया, वह भी शास्त्रानुकूल। दानतीर्थ प्रवर्तक राजा श्रेयांस के अक्षय तृतीया के इक्षुरस आहारदान के विस्मृत तीर्थ हस्तिनापुर को पुनः स्मृति पटल पर अंकित कर उस इक्षु प्रदेश को पुनः अभिसिंचित कर दिया। शांति, कुंथु व अरह चक्रवर्ती, कामदेव, तीर्थंकर पदधारियों की पावन भूमि को अपनी जनकल्याणी निर्झरणी से ज्ञानामृत का प्रसार का चमत्कृत कर दिया। आपने हस्तिनापुर को उसका गौरव पुनः प्रदान किया है, उसके स्वर्णिम इतिहास में जम्बूद्वीप रचना का एक पृष्ठ और जोड़कर जो आत्मसम्मान उसे प्रदान किया है, वह देवीतुल्य कार्य ही तो है।

तीर्थंकरों, भगवन्तों की जन्मभूमियों का जो पुनः निर्माण कार्य व उन्हें पुनः जीवन व आकर्षण रूप प्रदान कर जो महान व अनुपम कार्य कर रही हैं, व जन-जन को उनका गौरव दृष्टिगोचर करा रही हैं, साथ ही जनसाधारण को तीर्थों के प्रति आकर्षित कर रही हैं, यह भी एक महान व सराहनीय कार्य है। यह पूज्य माताजी के विशाल ज्ञान व प्रखर बुद्धि का ही परिचायक है।

परमपूज्य गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी के विषय में जो कुछ भी कहा जाये, वह सब "सूर्य को दीपक दिखाने" जैसा ही है। पूज्य माताजी के अगणित व अनुपम गुणों का बखान करना हमारी तो बुद्धि व कलम से परे है। पूज्य माताजी ने आगमानुकूल, विद्वत्तापूर्ण प्रभावक प्रवचनों, लेखों, स्वतंत्र रचनाओं, अनुवादों को सरल, सरस व सुबोध शैली में प्रस्तुत कर आर्ष परम्परा व साहित्य लेखन को एक नयी व अपूर्व दिशा प्रदान की है। पूज्य माताजी की अपूर्व गौरव गाथा गाने में हमारी तो बुद्धि व ज्ञान दोनों ही असमर्थ हैं।

अन्त में हम यही कह सकते हैं कि पूज्य माताजी सरस्वती की प्रतिमूर्ति ही नहीं बल्कि साक्षात् सरस्वती ही हैं।

"तुम गुण अगम अपार है, कहत न पावै पार।"

–श्रीमती साधना जैन, मैनपुरी

'पूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी में मैंने माँ का प्यार देखा'

मैं उज्जैन में रहती थी, सरकारी क्वार्टर था। क्वार्टर के सामने बहुत बड़ा बगीचा था। बगीचे में 7-8 अमरूद के पेड़ थे। दोपहर में आस-पड़ोस की सभी बहनें एकत्रित होती थीं। अमरूद खाना, गप्पे करना, हँसी मजाक करना और स्वेटर बुनना इस बगीचे में होता था। क्वार्टर से मंदिर दूर होने के कारण सिर्फ पर्यूषण पर्व में और दिवाली के दिन ही मंदिर जाते थे। धर्म का ज्ञान तो शून्य के बराबर ही था परन्तु कुछ पुण्योदय आया और पूज्य ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में आने का अवसर मिला।

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने 'ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' आयोजित करने का सोचा था। मेरे पति डॉ. नांदगांवकर विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के भूतपूर्व कुलपति थे। पूज्य माताजी द्वारा उनको इस कुलपति सम्मेलन में शामिल करने के कारण उनका कार्यक्रम की तैयारी हेतु बार-बार हस्तिनापुर जाना-आना होता था। एक बार 15

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अगस्त 1998 में मैं भी डॉ. नांदगांवकर के साथ हस्तिनापुर गई थी। 'रत्नत्रय निलय' में पूज्य माताजी के दर्शन हेतु पहुँचे। माताजी ने पहले प्रश्न किया-आपका सफर कैसा हुआ? रास्ते में कोई तकलीफ तो नहीं हुई? यह उन्होंने दूसरा प्रश्न किया था। उसके बाद उन्होंने किसी व्यक्ति से कहा कि 'इन लोगों के रहने की, खाने-पीने की व्यवस्था करो।' हम लोग जब हस्तिनापुर जाते हैं, पूज्य माताजी यही बातें बोलती हैं और जब हस्तिनापुर से (एक बार कुण्डलपुर से) लौटते हैं, तब 'घर पहुँचते ही फोन कर देना' अवश्य कहती हैं।

जो लोग ऐसा कहते हैं कि धरती पर माँ का प्रेम उत्कृष्ट है, उन बेचारों को कभी गुरु का प्रेम नहीं मिला होगा।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी का 50वाँ दीक्षा दिवस है। उन्होंने मुक्ति यात्रा की उच्चतम सीढ़ी पर अपने चरण आगे बढ़ाये हैं। उनके ये चरण बाधारहित आगे-आगे बढ़ते जाये, यही मैं मंगल कामना करती हूँ।

-सौ.समीक्षा नांदगांवकर, नागपुर (महा.)

हमें गौरव है इन पर

वर्तमान में 1100 पीछीधारी साधु हैं, उनमें दीक्षा में सबसे पुरानी इस समय ज्ञानमती माताजी हैं। ज्ञान, ध्यान, दीक्षा, चारित्र में वयोवृद्ध पूज्य ज्ञानमती माताजी के बारे में आज शायद कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा, जो माताजी के ज्ञानगुण से परिचित न हो।

सन् 1952 से जब से माताजी ने घर छोड़ा, आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया, तभी से माताजी का त्यागमयी जीवन प्रारंभ हो गया था। सन् 1953 में इन्होंने क्षुल्लिका दीक्षा के व्रत ग्रहण किये थे। इस प्रकार अगर देखा जाये तो त्यागमार्ग में आए इन्हें 54 वर्ष हो गये हैं। सन् 1934 में माताजी का जन्म हुआ था, अतः माताजी 72वें वर्ष में चल रही हैं। देखा जाये तो 18 वर्ष की उम्र में त्यागमार्ग में आकर, आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके जैनधर्म की विशेष प्रभावना करके माताजी ने समाज के समक्ष एक महान आदर्श प्रस्तुत किया है।

माताजी ने संघ में रहकर किसी से ग्रंथ पढ़े नहीं बल्कि स्वयं संघ में आर्यिकाओं, मुनियों को पढ़ा-पढ़ाकर पढ़े। माताजी की मेरी स्मृतियाँ पढ़ने से ज्ञात होता है कि जब माताजी संघ में मुनियों-आर्यिकाओं को पढ़ातीं, उस समय कुछ विद्वान भी आकर बैठते और यह देखते कि माताजी सही पढ़ा रही हैं, या कहीं गलत अर्थ तो नहीं कर रही हैं लेकिन जब वे माताजी के धारावाहिक स्वाध्याय को सुनते, उनके सही अर्थ को सुनते, तो उनके मुख से जरूर निकल पड़ता था कि माताजी आपने जरूर इसका पूर्व जन्म में स्वाध्याय किया होगा।

माताजी के पढ़ाए कई शिष्य आज मुनि, आर्यिका बन गए। आचार्य पद पर भी सुशोभित हैं। मुनि दीक्षा लेने के बाद वे आर्यिकाओं से बड़े हो जाते हैं। माताजी उन्हें नमोऽस्तु करती हैं। ऐसे उदाहरण आज कम ही मिलते हैं कि पहले जिन शिष्यों को स्वयं पढ़ाया हो, उन्हें अपने से ऊँचा महान बना दिया हो। यही तो दिगम्बर जैन धर्म की विशेषता है, जहाँ छोटे-बड़े का भेद नहीं रहता। जो पहले दीक्षा ग्रहण करता है, वह बड़ी उम्र वालों से भी पद में बड़ा हो जाता है।

पूज्य माताजी के दीक्षा स्वर्ण जयंती के आयोजन को सुनकर मन में अपार हर्ष है। माताजी के दीर्घ जीवन की कामना करते हुए हम उनके प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित करते हैं।

-राजकुमार जैन एवं सौ. शान्तिदेवी जैन, डालीगंज लखनऊ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृतज्ञता का प्रकाशन

कृतज्ञता मनुष्य का एक प्रमुख गुण है और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति एक शिष्ट आचार है। बिना किसी जाति, लिंग अथवा उम्र भेद के गुणों की पूजा करना भारतीय संस्कृति की एक उदात्त एवं गौरवमयी परम्परा भी है। संभवतः यही कारण है कि यथानाम तथागुण की सूक्ति को चरितार्थ करने वाली आर्यिका ज्ञानमती माताजी द्वारा आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में समिति द्वारा "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" मनाने का आयोजन किया जा रहा है।

जैसा कि सर्वविदित है कि ज्ञानमती माताजी ने अपनी व्यक्तिगत साधना एवं संस्कृति की सेवा के अद्वितीय कार्य किये हैं। साथ ही पूज्या माताजी ने अपनी ज्ञान साधना से महनीय ग्रंथों का अनुवाद, सम्पादन तथा प्रकाशन किया है। उनके द्वारा की गई यह साहित्य साधना सराहनीय तो है ही, अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय भी है। आर्यिका ज्ञानमती जी द्वारा की गई भारतीय साहित्य एवं संस्कृति, विशेषतः जैनधर्म व संस्कृति की यह सेवा मुझे विशेष रूप से लुभाती है और उनके प्रति एक विशेष श्रद्धा भाव उत्पन्न करती है।

'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' प्रकाशन के इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं माताजी के प्रति अपनी विनम्र विनयांजलि व्यक्त करता हूँ और भावना भाता हूँ कि वे शतायु हों एवं साहित्य, संस्कृति की सेवा से भारतीय समाज, विशेषतः जैन समाज को उपकृत करती रहें।

-डॉ. कमलेश जैन, जयपुर (राज.)

(व्याख्याता-जैन दर्शन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान परिसर)

विनयांजलि

शरदकाल की नवज्योति, बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी, राष्ट्रगौरव, धर्ममूर्ति जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एक अनुपम विभूति हैं, जिन्होंने शरदपूर्णिमा के दिन जन्म लेकर न सिर्फ उस तिथि को ही पावन किया है अपितु उसी शरदपूर्णिमा तिथि में आज से 54 वर्ष पूर्व अपने जीवनरूपी मंदिर पर कलशारोहण करने हेतु संयम धारण कर सप्तम प्रतिमारूप ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर गृहत्यागपूर्वक उस तिथि को पूज्यनीय बना दिया। इन वर्षों में पूज्य माताजी ने विश्व को एक-दो नहीं अपितु 200 से अधिक ग्रंथ प्रदान किये। अनेकों तीर्थों का उद्धार कराया, अनेकों राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम उनकी प्रेरणा से हुए। दिल्ली में भगवान महावीर का 2600वाँ जन्म महोत्सव दिगम्बर जैन राष्ट्रीय समिति का प्रथम अधिवेशन माताजी के मंगल सानिध्य में ही सम्पन्न हुआ।

माताजी का यह अद्भुत प्रताप है कि जहाँ-जहाँ उनके चरण पड़े, मानव कल्याण और विश्व के हित में कई विलक्षण कार्य हुए। इस संदर्भ में यह उल्लेख प्रासंगिक होगा कि चातुर्मास के क्रम में माताजी जब दिल्ली पधारीं, तो उनकी प्रेरणा से कई कार्य हुए।

लोक मानस में प्रतिष्ठित श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर के पावन प्रांगण में भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ तथा पावापुरी का शिलान्यास जैसा ऐतिहासिक कार्य माताजी की प्रेरणा से ही संभव हुआ। इस तरह के जनहित और धार्मिक कार्यों में स्व. साहू रमेशचंद्र जैन, श्री चक्रेश जैन (प्राचीन अग्रवाल दि. जैन पंचायत के पूर्व प्रमुख) एवं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री मुकेश जैन (सचिव श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर) के सक्रिय सहयोग और माताजी के आशीर्वाद से ये कार्य सफलतापूर्वक सम्पादित हो सके।

भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ के निर्माण में स्व. महावीर प्रसाद जैन ठेकेदार परिवार, उनके सुपौत्र जिनेन्द्र प्रसाद जैन (सुपुत्र स्व.शामलाल जैन) एवं सुपुत्र स्व. अजितप्रसाद जैन ने महत्वपूर्ण आर्थिक सहयोग किया है। इस सिलसिले में मुझसे भी जो बन पड़ा, मैंने माताजी की प्रेरणा से इन कार्यों में यथासंभव सहयोग दिया।

यह मेरी धृष्टता होगी यदि मैं इस पुनीत कार्य के सम्पादन में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, स्वस्ति श्री पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज तथा कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन के अवदान के लिए कृतज्ञता ज्ञापित नहीं करूँ। उनके लिए मेरा यथायोग्य अभिवादन है।

–महेन्द्र प्रसाद जैन 'ठेकेदार', नई दिल्ली

षट्खण्डागम ग्रंथ की 'सिद्धान्तचिंतामणि' टीका लेखिका

आचार्य श्री पुष्पदंत, भूतबलि मुनिराज ने षट्खण्डागम ग्रंथ की रचना की। उस सूत्र ग्रंथ पर आज से 2000 वर्ष पूर्व आचार्य श्री वीरसेन स्वामी ने धवलाटीका लिखकर 16 पुस्तक प्रदान की, जो कि काफी क्लिष्ट टीका है, जिसे आज आसानी से समझा नहीं जा सकता।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने उस सूत्र ग्रंथ पर सिद्धान्तचिंतामणि नाम से सरल संस्कृत टीका लिखी है। जिसमें दो पुस्तक का प्रकाशन हो चुका है। अब तक माताजी 14 पुस्तक की टीका लिख चुकी हैं। संस्कृत में धारावाहिक लिखना, सभा के बीच में बैठकर लिखना मन की एकाग्रता की बात है।

पूज्य माताजी द्वारा लिखित टीका का हिन्दी अनुवाद पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने किया है। जगह-जगह विशेषार्थ भी दिया है। आज जब हम आचार्यश्री वीरसेन स्वामी की धवला टीका देखते हैं, तो हमें आश्चर्य होता है कि उन्हें कितना ज्ञान था! आचार्यश्री कुन्दकुन्ददेव के, आचार्यश्री अकलंक देव के ग्रंथ जब हम पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि मानों साक्षात् भगवान की दिव्यवाणी का उन्होंने लेखन किया हो। यद्यपि हम सबने उनके दर्शन नहीं किए, लेकिन उनकी कृतियाँ उनका स्मरण कराती हैं।

वर्तमान में यह हम सबका बड़ा सौभाग्य है कि आज बड़े-बड़े ग्रंथों की संस्कृत टीका लिखने वाली, अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट ग्रंथ का अनुवाद करने वाली गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आज हमारे मध्य विराजमान हैं, जिनका हम सभी चर्मचक्षुओं से दर्शन कर रहे हैं, यह एक बहुत बड़ी बात है।

ऐसी विदुषी माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इस स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर हम भी अपने पूरे परिवार की ओर से पूज्य माताजी के प्रति विनयांजलि समर्पित करते हैं और जिनेन्द्र देव से प्रार्थना करते हैं कि पूज्य माताजी स्वस्थ रहें और शतायु हों। इन्हीं मंगल भावना के साथ पूज्य माताजी को बारम्बार वंदामि।

–प्रेमचंद जैन एवं श्रीमती जैन, बहराइच

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काव्यांजलि

पूज्य गणिनीप्रमुख ज्ञानमती जी, जिनका हम गौरव गान करें।
गौरव ग्रंथ समर्पित कर, चरणों में सतत प्रणाम करें।।
भारत माँ की सच्ची पुत्री का, हम हर्षित सम्मान करें।
दीक्षा की स्वर्ण जयंती पर, हम उनका गौरवगान करें।।

मानव मंगल की अभिलाषा, जिनके गौरव की आशा है।
हर प्राणी की रक्षा होवे, ऐसी अनुपम परिभाषा है।।
पाँच व्रतों की साकार मूर्ति, दर्शन से जन सुख पाता है।
गणिनीप्रमुख की गौरव गाथा पर, झुक जाता सबका माथा है।।

अध्यात्म सुधा से प्रतिफल जो, जन-जन का पोषण करती है।
भगवन्तों के कल्याण क्षेत्र! का, तीर्थों का विकास वह करती है।।
अरिहन्तों के उपदेशों की धुरी, धरा की धर्म जगत् का पोषक है।
प्रभु महावीर की वाणी का, यह अतुलनीय उद्घोषक है।।

ऐसी विभूति के आशीर्वाद से, हम युग का निर्माण करें।
आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती पर, हम उनका गौरव गान करें।।
अतएव समन्वित सम्बल से, हम जन जन का कल्याण करें।
गौरव ग्रंथ समर्पित कर-चरणों में सतत प्रणाम करें।।

-सुरेशचंद जैन बारोलिया, आगरा

ज्ञान गंगा से मुलाकात

मैं कर्म शत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
संपूर्ण 'ज्ञानमति' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।

नौ देवताओं (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिनचैत्यालय) की पूजा करते समय उक्त दो पंक्तियों के उच्चारण के समय हमेशा यह बात मन में महसूस होती थी कि न जाने कब परमपूज्य ज्ञानमती माताजी के दर्शन होंगे? उनकी पुस्तकों, अनादिनिधन णमोकार मंत्र व्रत व इंद्रध्वज विधानों वाली किताबों से उनकी अलौकिक प्रतिभा का अनुभव हुआ था। हस्तिनापुर और अन्य कार्य के बारे में भी काफी सुना था लेकिन इतने सालों में सुदूर उत्तर भारत में रहने वाली माताजी से मुलाकात की आशा अत्यल्प थी लेकिन जब वे मांगीतुंगी में चातुर्मास हेतु यहाँ आईं, तब से उनसे भेंट करने की अदम्य इच्छा मन में उत्पन्न हुई और किस्मत से मौका भी मिला।

शनिवार, 2 नवम्बर 1996 को दो बजे हम मांगीतुंगी पहुँचे। माताजी के दर्शन हेतु बैठे रहे। पता चला कि माताजी 3 बजे के बाद आएंगी और वे किसी से भी ज्यादा बात नहीं करतीं। इसलिए मन में सिर्फ दर्शन की अभिलाषा लेकर हम बैठे रहे। वैसे मैं बिल्कुल तैयार थी। किताब, पेन, चैतन्यवन का नक्शा, वनौषधियों के नमूने, वनौषधि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वार्तापत्र, वनौषधियों से संबंधित छोटी हिन्दी पुस्तकें, कैमरा, छोटा सा टेपरेकार्डर आदि सब मेरे पास था। बड़ी माताजी के आने से पहले पूज्य चंदनामती माताजी (बड़ी माताजी की पूर्वाश्रम की छोटी बहन) और क्षुल्लक मोतीसागर जी से चर्चा हुई और अचानक सभी ने खड़े होकर जय-जय की और माताजी का आगमन हुआ।

शांत, सौम्य, सात्विक मूर्ति, धवल वस्त्रों में लिपटी हुई और मुख पर ज्ञान मंडल की आभा! तेजस्वी आँखें और उनमें वात्सल्य का आविष्कार! माताजी आकर स्थानापन्न हुईं और यहाँ-वहाँ न देखते हुए उन्होंने सीधे लिखना शुरू किया। पूज्य चंदनामती माताजी से वार्तालाप चल रहा था। बड़ी माताजी का लिखना समाप्त हुआ और उन्होंने हमारी तरफ देखा। हमने उन्हें वंदन करके चैतन्यवन और केवलज्ञान वृक्षस्थली की योजना बताई। उन्होंने बड़े चाव से सारी योजनाओं को देखा, कुछ परिवर्तन सुझाए और कहा कि "हम तो बहुत खुश हैं। आपने हमारे मन की बात करने की सोची है।" उनका आशीर्वाद पाकर मन में बड़ी खुशी हुई।

माताजी ने 200 से अधिक किताबें लिखी हैं। एक पल भी वे बेकार नहीं गँवाती, निरंतर उनका लिखना जारी रहता है। आसपास चाहे जितना हो-हल्ला हो, वे अपने लिखने में मग्न रहती हैं।

दूसरे दिन सुबह फिर से माताजी का परम मंगल सानिध्य आधे घंटे के लिए प्राप्त हुआ। वे वनौषधियों के बारे में काफी जानकारी रखती हैं। लोध्र छिलके के उपयोग से प्राप्त दो-तीन अनुभव उन्होंने बताए। माताजी के साथ फोटो खींचने का अवसर मिला और मन तृप्त हुआ। माताजी की वाणी टेपरेकॉडर में, उनका छायाचित्र कैमरे में और किताब उनके हाथ से लिखा आशीर्वाद लेकर हम प्रसन्न हुए। श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी में हमें यह धन प्राप्ति हुई, हमने तत्काल 'पुनर्भूयात् दर्शनम्' कहकर उनका वंदन किया।

-डॉ. ऊर्जिता जैन, मुम्बई

साहित्य सृजन को अद्वितीय ऊँचाईयाँ प्रदान कीं

तीर्थंकर की माता एवं आर्यिका माताओं के रूप में जैन साहित्य में नारी को अत्यंत सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। पौराणिक विवरण से स्पष्ट है कि तीर्थंकरों के संघों में आर्यिकाओं की संख्या मुनियों से तथा श्राविकाओं की संख्या श्रावकों से सदैव तीन गुनी अधिक रही है। स्पष्टतः धर्म की पताका फहराने में नारी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जब हम आधुनिक समय पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि बीसवीं सदी में दीक्षित आर्यिकाओं में सर्वोपरि स्थान पूज्य गणिनी आर्यिकाप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का है, जिन्होंने अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति का परिचय देते हुए कुमारिकाओं की दीक्षा का सूत्रपात किया। संयम के इस कठोर साधना का सहजता से पालन करते हुए समाज में संस्कारों के निर्माण, संस्कृति के संवहन और विशाल साहित्य के सृजन को अद्वितीय ऊँचाईयाँ प्रदान की है। लगभग 200 से अधिक ग्रंथों की लेखिका होने से आप जैन समाज की साधक आर्यिकाओं में प्रथम हैं। यह संपूर्ण नारी समाज के लिए गौरवास्पद है।

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का ठीक से दर्शन हमने श्री महावीर जी में किया था, तब से ही उनकी सरल, सौम्य, ममतामयी छवि आँखों में बस गई थी। बार-बार मन में एक ही भाव आ रहा था कि पूज्य माताजी का विहार इंदौर की ओर हो जाये। अच्छे मन से की गई प्रार्थना ने साकाररूप लिया। पूज्य माताजी के कदम इंदौर की ओर मुड़ गए। इंदौर जैन समाज मे हर्ष की लहर दौड़ गई। इंदौर आगमन पर महिलाओं द्वारा जो भव्य स्वागत माताजी के संघ का किया गया, वह एक इतिहास बन गया, वह शुभ दिन था 11 मार्च 1996 का। उसी शुभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिन पूज्य माताजी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की स्थापना हुई। आज संगठन की 216 इकाईयाँ विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। संगठन की इस प्रगति का श्रेय पूज्य माताजी के आशीर्वाद को ही जाता है। आप महिला संगठन की शक्ति पुंज हैं। आपके आशीर्वाद व पूज्य आर्यिका चन्दनामती माताजी, क्षुल्लकरत्न मोतीसागर जी महाराज की प्रेरणा से अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन द्वारा मासिक पत्रिका ऋषभदेशना का प्रकाशन किया जा रहा है, जो अपने प्रकाशन वर्ष से अभी तक अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से पुरस्कृत हो चुकी है तथा जन-जन की प्रिय पत्रिका बन गई है।

मेरा व्यक्तिगत तौर पर यह मानना है तथा मेरी यह आस्था है कि मैं प्रतिदिन सुबह उठकर सर्वप्रथम पूज्य माताजी के फोटो के ही दर्शन कर लेती हूँ, तो ऐसा लगता है कि मुझे दिन भर कार्य करने की अतिरिक्त ऊर्जा मिल गई। आप में ऐसा चुम्बकीय आकर्षण है कि आप जहाँ रहती हैं, हम वहाँ आपके दर्शनार्थ खींचे चले आते हैं। श्रद्धा, भक्ति, चारित्र का अनूठा संगम हम आपके पास पाते हैं। आपके 50वें दीक्षा दिवस पर पूर्ण आस्था एवं भक्ति से आपके श्रीचरणों को शतशः नमन करते हैं। साथ ही, कामना करते हैं कि आपके द्वारा प्रज्ज्वलित महिला संगठन रूपी दीपक निरंतर ऊर्जावान रहे। आपकी छत्रछाया चिरकाल तक हम सब पर बनी रहे। अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, इंदौर एवं ऋषभदेशना परिवार की ओर से शतशः वंदन.............

-श्रीमती सुमन जैन, इंदौर (म.प्र.)
(अध्यक्षा-अ.भा.दि. जैन महिला संगठन-इंदौर एवं
सम्पादिका-ऋषभदेशना)

विनयांजलि

जैनधर्म की दिव्य ज्योत्सना
नभ की तुम ध्रुवतारा।
हे ज्ञानमती माँ तुम्हें नमन है-
शत-शत बार हमारा।।
कठिन साधना पथ को चुन कर-
साधक बन सरल बनाया।
बाल ब्रह्मचारिणी, बन गणिनी
नरभव सफल बनाया।
बीते वर्ष पचास त्याग संग,
तीरथ भी उद्धारा।
हे ज्ञानमती माँ तुम्हें नमन है-
शत-शत बार हमारा।।
रत्नत्रय के सोपानों पर,
हर क्षण आरोहण हो।
स्वर्ण जयंती, अल्पविराम है माँ,
अमृत, हीरक पर तुम्हें नमन हो।।
यही प्रार्थना है 'सरोज'-
हो ज्ञान-जगत उजियारा।।
हे ज्ञानमती माँ तुम्हें नमन है-
शत-शत बार हमारा।।

-सरोज कुमार जैन, राजगीर (नालंदा) बिहार
(क्षेत्रीय प्रबंधक-श्री राजगृह जी सिद्धक्षेत्र)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक विशेष संस्मरण एवं आदरांजलि

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं तथा "दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" आयोजित किया गया है, यह एक ऐतिहासिक घटना है।

माताजी के प्रति मुझे बहुत पहले से ही आकर्षण रहा है। विशेषकर माताजी ने लगभग 200 ग्रंथ लिखे हैं, यह भारतीय विदुषी साध्वी का एक महान आदर्श है।

कुछ वर्ष पूर्व (सन् 1996 में) माताजी महाराष्ट्र के मालेगाँव आये थे। उस समय बहुत इच्छा होने पर भी कुछ कारणवश दर्शनार्थ जाना नहीं हुआ। बाद में माताजी मालेगाँव से निकलकर धूलिया रोड पर दहिगाँव में रुके थे। हम दर्शन के लिए दहिगाँव भी पहुँचे। हम वहाँ पहुँच गये, तो माताजी बड़ी प्रसन्न हुईं। माताजी ने शुभाशीर्वाद दिया तथा मैं नियमित रूप से उनके कार्यक्रमों को लेकर समाचार प्रकाशित करता हूँ तथा अंक भी उनके पास भेजता हूँ, इस पर माताजी ने इस तरह के लगन, परिश्रम, समाज और धर्म के प्रति इतनी आस्था देखकर जो प्रेरणा दी और आशीर्वाद दिया, उसको मैं कैसे भूल पाऊँगा.......?

पूज्य माताजी के आशीर्वाद के कारण ही आज भी मैं नियमित रूप से जैन गजट, जिनेन्दु, श्राविका, सन्मति, जैन बोधक के लिए नियमित लिखता आया हूँ। माताजी के आशीर्वाद से आज भी स्फूर्ति और प्रेरणा बनी हुई है।

पूज्य माताजी द्वारा लिखे 200 ग्रंथ यह अपने आप में एक ऐतिहासिक सत्य है। नाम में ज्ञान है, वह ज्ञानमती जो ज्ञान का अक्षय भंडार है। माताजी को अधिक से अधिक आयु प्राप्त हो, यही भगवान वीरप्रभु से प्रार्थना है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी एक महान विदुषी हैं। उन्हें दीर्घायु प्राप्त होवे, इसी मंगल भावना के साथ—

-एम.सी. जैन (पत्रकार), चिकलठाणा (औरंगाबाद) महा.

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को सौ-सौ बार नमन है

(1)

यू.पी., मंडल बाराबंकी, कस्बा टिकैतनगर है।
श्रावक-श्रेष्ठी-जिनालयों की, बस्ती अति सुन्दर है।।
सन् चौतीस, माह अक्टूबर, शरदपूर्णिमा आयी।
"छोटेलाल-मोहिनी" घर में, बजने लगी बधाई।।
आज हुआ धरती पर माँ का, मंगल शुभागमन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।।

(2)

मात-पिता ने लाड़-प्यार से, नाम दिया था "मैना"।
पर वह तो स्वतंत्रता प्रेमी, बंधन में रहती ना।।
सोलह वर्ष व्यतीत हुए जब, सप्तम प्रतिमा धारी।
श्री आचार्य देशभूषण जी, गुरू बड़े उपकारी।।
उतरा नया सूर्य धरती पर, विस्मित हुआ गगन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(3)

बाल योगिनी, ब्रह्मचारिणी, प्रथम बीसवीं सदि की।
"वीर" क्षेत्र पर हुई क्षुल्लिका, "मैना" "वीरमती" जी।।
माघोराजपुरा छप्पन में, और कदम बढ़ जाता।
आचार्यश्री वीरसागर से, हुई "आर्यिका" माता।।
पुरुषार्थी बढ़ते ही जाते, यह तो सत्य कथन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।।

(4)

युग प्रवर्तिका माताजी ने गुरुतर कार्य किये हैं।
ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग के निशदिन, माँ ने चषक पिये हैं।।
शतक बीस नारी समाज का, नव इतिहास लिखा है।
बहुत खोज करने पर भी, न कोई दृष्टान्त दिखा है।।
जिनवाणी माँ की बगिया को, जिसने किया चमन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।।

(5)

हस्तिनागपुर माताजी ने, "जम्बूद्वीप" रचाया।
दूर-दूर से आते यात्री, सबके मन को भाया।।
अगर ठान ले कोई मन में, सब कुछ कर सकता है।
नारी होकर भी वह नर से, आगे बढ़ सकता है।।
भू को स्वर्ग बनाने का, कर सकता पूर्ण सपन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।।

(6)

धन्य-धन्य माताजी तुमने, ढाई सौ ग्रंथ रचे हैं।
संस्कृत-हिन्दी-मौलिक-टीका, पूजा-विधान लिखे हैं।।
ऐसी विदुषी-पुरुषार्थी, नारी न दृष्टि में आयी।
"अष्टसहस्री", "षट्खण्डागम", आत्मसात् कर पायी।।
ग्रंथ पुष्प से नित ही करतीं, जिनवाणी अर्चन हैं।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।।

(7)

प्रयाग-अयोध्या-मांगीतुंगी, काशी गले लगाया।
ऋषभदेव का अखिल देश में, उत्सव गया मनाया।।
ज्ञान ज्योतिरथ, श्रीविहाररथ, तुम्हीं प्रवर्तनकारी।
शोध संस्थान, शिविर, सम्मेलन, कर्त्री की बलिहारी।।
"कुण्डलपुर" संग "काकन्दी" में, फिर आया सावन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(8)

गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि, वात्सल्यमूर्ति वंदामि।
सिद्धान्त कल्पतरुकलिका, तुमको बारम्बार वंदामि।।
तीर्थोद्धारक न्यायप्रभाकर, चारित्रचन्द्रिका माता।
श्रुत का तीर्थ प्रकाशनकर्त्री, सौम्यमूर्ति-सुखदाता।।
मुख्य मयंक है, हस्तकल्पतरु, माँ पद-रज चंदन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।।

(9)

सरिताओं में अतिमहत्व, गंगा का गाया है।
सुमनों में सम्राट गुलाब का, नाम प्रथम आया है।।
पर्वतराज हिमालय की है, अपनी अलग कहानी।
वैसी गणिनी ज्ञानमती की, कोई नहीं है सानी।।
उनके पावन श्रीचरणों में, सुमनांजलि अर्पण है।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।।

(10)

जिनकी पावन पद-रज में, "चंदन" की गंध समायी।
"मोती" हैं जिनके शब्द, अर्थ में सागर-सी गहराई।।
जिनके प्रखर ज्ञान "रवि" आगे, अन्य दीप शर्माते।
जिनकी स्तुति करते-करते, कविगण नहीं अघाते।।
बालयोगिनी माँ कृतियों से, भरा शिष्य उपवन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।।

(11)

धन्य-धन्य उसका जीवन, जो संयम को अपना ले।
वर्ष पंचाशत बीते माँ को, पंचमहाव्रत पाले।।
अनुपमनिधि हैं जैन जगत की, साध्वी ज्येष्ठतमा हैं।
बालब्रह्मचारिणी कुमारिका, सबमें श्रेष्ठतमा हैं।।
दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव, पर श्रद्धा अर्पण है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ-सौ बार नमन है।।

-पं. लालचंद जैन 'राकेश', गंजबासौदा

निरंतर ज्ञानामृत की वर्षा के पचास वर्ष

वर्तमान में दिगम्बर जैन समाज की सर्वाधिक वरिष्ठ, सर्वाधिकमान्य साध्वी, ज्ञान, लेखन, गुणग्राहकता, धर्मवात्सल्य, अद्भुत अनुशासन क्षमता की धनी गणिनीप्रमुख पीयूषवर्षिणी आर्यिकारत्न 105 श्री ज्ञानमती माताजी पिछले पचास वर्षों से देशभर में ज्ञानामृत की वर्षा कर रही हैं। वे अपनी तपोपूत और ज्ञान वृद्धकाया के बावजूद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युवकोचित क्रियाशीलता से दिगम्बर जैन संस्कृति के नये-नये अध्याय लिख रही हैं। पूज्य माताजी अध्यात्म-आगम साहित्य की दुरुह और विस्मृतप्राय: कृतियों की टीका, अनुवाद और जनसामान्य को सुपाच्य और सुपाठ्य शैली में प्रस्तुत करने में तथा ज्ञान के प्रकाश के प्रसार में दीपशिखा की भांति स्वयं जल कर जिनवाणी को जनवाणी में प्रस्तुत कर रही हैं। पूज्य माताजी विविध विषयों पर लगभग 200 से अधिक मौलिक, अनुवाद, टीका आदि ग्रंथों का प्रणयन कर चुकी हैं और सम्प्रति वे जैन आगम के आधार ग्रंथ 'षट्खण्डागम' के कुल 16 में से 14 ग्रंथों पर संस्कृत टीका लिखने का कार्य पूर्ण करके शेष दो ग्रंथों की टीकाएं वर्तमान में लिखती हुई वे मानो समय के शिलाखण्ड पर अपनी कीर्ति अमिट अक्षरों में लिखने जा रही हैं।

पूज्य आर्यिकारत्न के हीरे के समान जाज्वल्यमान व्यक्तित्व का एक और तेजोमय और प्रदीप्त पहलू है जैन तीर्थंकरों और तीर्थ स्थानों के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा, समर्पण भाव, आगमनिष्ठ दृष्टि तथा उपेक्षित, विलुप्त अथवा विस्मृत वैभवशाली सांस्कृतिक विरासत/धरोहर की रक्षा करके उन्हें उनके सम्पूर्ण वैभव के साथ उजागर करने की ललक या बेचैनी। अयोध्या, कैलाशपर्वत इलाहाबाद, मांगीतुंगी, राजगृही और हाल ही में कुण्डलपुर (नालंदा) का पुनरुद्धार पूज्य माताजी की इसी सद्वृत्ति का परिणाम है। इन सबसे ऊपर जैन करणानुयोग ग्रंथों में वर्णित शोधपूर्ण खगोल विज्ञान Cosmology पर आधारित हस्तिनापुर की जम्बूद्वीप संरचना एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान एक एकल अपूर्व प्रयास है, जो उन्हें अमर करने के लिए पर्याप्त है।

उन्होंने केवल श्रेय लेने के लिए जीर्णोद्धार/सुधार/संशोधन नहीं किए/ कराए वरन् परिपक्व मस्तिष्क से, पूर्वा-पर संतुलित विचार के पश्चात् कार्य की उपयोगिता तथा औचित्य का पूर्ण ध्यान रखते हुए एक समय में एक परियोजना को हाथ में लेकर तीर्थंकर जन्मभूमियों/कल्याणकभूमियों/सिद्धक्षेत्रों की खोई हुई प्रतिष्ठा में नवनिर्माण की प्रेरणा देकर, उनकी पुनर्प्रतिष्ठा कर महिमामण्डित किया है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी की कार्यशैली की विशेषता है कि वे एक समय में एक ही परियोजना को हाथ में लेती हैं, उस पर अपने स्वयं के दीर्घ अनुभव, उस क्षेत्र के विशेषज्ञों से पूर्ण परामर्श करके और अपने दृढ़ आत्मबल तथा पुष्कल प्रभावकारिता का समयोचित प्रयोग करके पूर्णता प्रदान करती हैं। उनमें कुशल संचालन क्षमता के साथ-साथ व्यक्ति के सही मूल्यांकन की क्षमता, किससे क्या काम लेना है, उस कार्य के लिए देशभर में उपयुक्त कौन व्यक्ति हो सकता है, उसे हाजिर करने और उनसे काम लेनमे की जादुई क्षमता है। हर व्यक्ति माताजी द्वारा निर्दिष्ट कार्य को पूरे मनोयोग से पूर्ण करता है और पूज्य माताजी के प्रति पूर्ण श्रद्धापूर्वक हृदय से जुड़कर स्वयं को धन्य/उपकृत समझता है। उनके सानिध्य में एक आल्हादकारी भाव जागृत होता है, जो उनके प्रति हृदय की श्रद्धा को गहरा स्थापित कर देता है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी के सर्वप्रथम दर्शनों का सौभाग्य मिला वर्ष 1979 में, जब जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर देशभर के विद्वान एकत्रित हुए थे, इस महोत्सव के पूर्व 1976 में आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज के पावन सानिध्य में फलटण में हुए विद्वत् सम्मेलन में उनके संघस्थ ब्र. मोतीचंद जी के द्वारा पूज्य माताजी का परिचय हो चुका था, जहाँ मुझे सोनगढ़ के एकान्तवाद के विरुद्ध मेरे द्वारा किये गये मनसा वाचा कर्मणा उग्र विरोध के कारण मुझे आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज ने "वीर निकलंक" की उपाधि से अलंकृत करने की कृपा की थी। इस कारण हस्तिनापुर में उपस्थित प्रथम पंक्ति के विद्वानों से मेरा प्रत्यक्ष परिचय भी था और उनकी आत्मीय निकटता भी प्राप्त थी। जम्बूद्वीप प्रतिष्ठा महोत्सव के समय स्वाभाविक रूप से पूज्य माताजी हर समय विद्वानों और महोत्सव के उच्च पदाधिकारियों से घिरी रहती थीं। ऐसे ही एक समय पं. बाबूलाल जी जमादार ने मेरा परिचय उत्साही युवक के रूप में कराया। माताजी ने आशीर्वाद दिया। ठीक उसी समय लखनऊ से पधारे भक्त समूह के एक सज्जन ने उनके लिए निर्धारित आवास व्यवस्था में बिजली न होने की शिकायत की। माताजी ने मुस्कुराकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरी ओर देखा। मेरे लिए इतना संकेत बहुत था। उन सज्जन को लिए-लिए मैं बाहर आया और बिजली के प्रभारी शासकीय अधिकारी से मिलकर समस्या का तत्काल समाधान करा दिया। इस प्रकार मेरे पास अघोषित रूप में बिजली का प्रभार आ गया। तब से अनेकों बार माताजी के दर्शन होते रहे।

पिछले 20 दिसम्बर 2004 को तीर्थराज शिखर जी की पांचवीं बार सपरिवार वंदना करते हुए कुण्डलपुर में गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ दर्शनों का सौभाग्य मिला। पहले के कुण्डलपुर में आज चमत्कारी अंतर था। कुण्डलपुर की काया ही पलट गई थी, तेजी से निर्माणकार्य चल रहा था। कुण्डलपुर के अभिनंदन ग्रंथ के संपादक मण्डल में कार्य करने हेतु माताजी के आदेशानुसार मैं कुण्डलपुर दो बार में लगभग 20 दिन रहा। उस दौरान पूज्य माताजी को और अधिक निकट से देखने-समझने का सौभाग्य मिला।

मैं स्वयं 35 वर्ष तक शासकीय सेवा में रहा हूँ और एक उच्च प्रशासकीय पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली है, फिर भी मैंने उनके जैसा आत्मविश्वास, कुशल नेतृत्व, वक्तृता, लेखन क्षमता, अध्ययन क्षमता, संचालन क्षमता, प्रशासनिक क्षमता, उनके जैसा दृष्टिकोण, सोच, दृढ़ निश्चय, नियमबद्धता और समयबद्धता किसी एक व्यक्ति में, एक साथ इतने गुणों का समावेश नहीं देखा। उस पर कमाल यह कि सब कुछ शास्त्रोक्त रूप से निर्धारित निरतिचारपूर्वक मूलाचार का परिपालन करना और मानव जीवन में जैन साध्वी के लिए निर्धारित सर्वोच्च पद पर बने रहना। मैंने भी थोड़ा-बहुत लिखा-पढ़ा है लेकिन पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न, ज्ञानगंगा, पीयूषवर्षिणी ज्ञानमती माताजी के गुणों का वर्णन करते हुए हमेशा मेरे शब्द चुक जाते हैं। एक विवशता के साथ लिखना पड़ता है—

''जो देखा आँख ने उसको जुबान क्या कहती।
किसी का हाल किसी से कहा नहीं जाता।।''

यद्यपि श्रीराम स्वयं में सम्पूर्ण हैं किन्तु जैसे उनका आख्यान-स्मरण श्रीकृष्ण जी और श्री हनुमान जी का उल्लेख किए बिना परिपूर्ण नहीं होता, आलाप के बिना रागिनी परिपूर्णता को प्राप्त नहीं होती और अलंकार के बिना भाषा में बोधगम्यता नहीं आती, ठीक उसी तरह मेरे विचार से पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर जी और कर्मयोगी बा. ब्र.रवीन्द्र भाई जी के उल्लेख के बिना आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का वर्णन-विवरण परिपूर्ण नहीं होता।

यह सच है कि जैन साधु एकाकी एकत्व के लिए स्वयं में लीन स्वतंत्र होता है फिर भी सांसारिक स्वरूप में उसे श्रावक और सुशील सहायक की भी आवश्यकता पड़ती है। आर्यिका श्री चंदनामती जी का जन्म ही मानो इसी स्थान की पूर्ति के लिए हुआ है। वे श्री ज्ञानमती माताजी की शिष्या, सहायिका, सहोदरा, सुहृद और सुमन्त हैं और क्षुल्लक मोतीसागर महाराज, भाई रवीन्द्र जी ज्ञान रथ के ध्वजवाहक या ज्ञान साम्राज्य की अक्षौहिणी सेना के प्रधान सेनापति हैं। आर्यिका श्री चन्दनामती जी और भाई रवीन्द्र जी के समान सुदृढ़ दोनों किनारों के बीच ज्ञान की पावन धर्म सरिता निर्बाध, अपने अभीष्ट लक्ष्य की ओर निरंतर प्रवाहमान है।

पूज्य माताजी शतायु हों और उनके श्रीमुख तथा लेखनी से निरन्तर इसी प्रकार की ज्ञान गंगा निःसृत होकर हमारा कल्याण करती रहे, यही कामना करते हुए मैं सपरिवार उनके श्रीचरणों में वंदना करता हूँ।

-रमेशचंद्र मनयां, भोपाल
(पूर्व उपसचिव-म.प्र. शासन विधि विभाग)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका ज्ञानमती माताजी-जीवंत जिनवाणी

डॉ. कैलाशचंद जैन राजा टॉयज के परिवार की गुरु परम्परा में तीन ही नाम प्रमुख हैं। आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज, आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज एवं आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी। सन् 1972 जैन समाज के इतिहास में स्वर्णिम वर्ष है। इसी वर्ष ब्यावर (राज.) में दिल्ली की ओर विहार करते हुए माताजी ससंघ हमारी गुड़गाँवा फैक्ट्री में ठहरीं और दिल्ली में भी हमने आर्यिका संघ की अगवानी की।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का नामकरण व स्थापना हमारे पूज्य पिताजी डॉ. कैलाशचंद जैन की अध्यक्षता में पूज्य माताजी ने सन् 1972 में दीपावली के शुभ दिन दिल्ली में की। हमारे लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि हमारा परिवार विश्व में एक मात्र जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर की रचना का नींव का पत्थर है। हमें गर्व है कि जैन समाज की इस शीर्ष संस्था से और जंबूद्वीप से हम हमेशा जुड़े रहेंगे।

सन् 2000 के दिल्ली चातुर्मास में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष के अन्तर्गत माताजी ने 108 ऋषभदेव विधान दिल्ली में करवाये व अन्य नगरों में भी यह विधान करवाया। केवल एक विधान माताजी ने ससंघ हमारे निवास स्थान पर पधारकर प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन शास्त्री के द्वारा स्वयं अपने पावन सानिध्य में करवाया। हमारे पारिवारिक जीवन की यह एक ऐतिहासिक घटना है। इस मांगलिक अवसर पर माताजी ने अपने आशीर्वचन में बहुत ही सहृदयता से कहा कि हम और आप कच्चे धागे से जुड़े हैं। इसीलिए यहाँ यह विधान कराने मैं स्वयं आई हूँ और कहा "आप गृहस्थाश्रम में धर्म का पालन करते हुए सभी गुरुओं से जुड़े रहो, तो अच्छी बात है, यही हमारा मंगल आशीर्वाद है।" यह पुनीत वृत्तांत हमारी परम श्रद्धेय माताजी के हमारे प्रति अपूर्व स्नेह तथा वात्सल्य का परिचायक है। जिस प्रकार वृक्षों में कल्पवृक्ष व पर्वतों में सुमेरु पर्वत श्रेष्ठ है, वैसे ही सब आर्यिकाओं में ब्राह्मी स्वरूप हमारी ज्ञानमती माताजी सर्वश्रेष्ठ हैं।

माताजी ने सैकड़ों ग्रंथों की रचना करके जैन वाङ्मय को समृद्ध करने में कालजयी अवदान दिया है। साक्षात् वाग्देवी पूज्य माताजी की दिव्य वाणी में अहर्निश विद्यमान रहती हैं। जिनागम पर आध्यात्म रस से ओत-प्रोत प्रवचनों द्वारा आप तत्वपिपासुओं को ज्ञानामृत का रसपान कराती हैं। डगर-डगर व नगर-नगर पाद भ्रमण करके जिनधर्म के प्रचार-प्रसार करने व उत्थान करने में आप आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज से पीछे नहीं हैं। निरंतर श्रावकों में धार्मिक संस्कारों का प्रत्यारोपण करके प्रेरणा का स्रोत बहाती रहती हैं।

ऐसी विश्वविभूति श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव की शुभ बेला में हमारा समस्त परिवार और मैं माताजी के श्रीचरणों में नतमस्तक होते हुए चिरायु होने की कामना करते हैं।

हे ज्ञानमती गणिनी तुमको हमारा शत-शत नमन्।
तेरा जीवन है चन्दनवन, जिससे महका जनजीवन।।
त्याग साधना के किये पूरे वर्ष पचास।
इसीलिए तो बन गया ये दिवस है खास।।
हस्तिनापुर की तीर्थस्थली पर स्वर्णिम अवसर आया।
संयम स्वर्ण दिवस पर, हमने स्वर्णिम दीप जलाया।।

-सुभाषचंद जैन (रानी पॉलीमर्स), नई दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Sansthan Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेरे चरणों की धूली है, हर माथे का चंदन

नहीं लेखनी लिख सकती है, तेरे गुण की गाथा,
तेरे चरणों में धरती का, कण कण शीश नवाता।।
सरस्वंती की प्रतिमूरत हो, ब्राह्मी मात स्वरूपा,
सूर्य किरण सम कीर्ति प्रसारित, तुम सम कोई न दूजा।।

यह हम सबके लिए अत्यंत गौरव की बात है कि हमें अपनी कुलगुरु गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती मनाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पूज्य माताजी के गुणानुवाद को कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। पूज्य माताजी ने जिस समय घर छोड़ा था, उस समय तो हम सबका जन्म भी नहीं हुआ था लेकिन जन्म के पश्चात् पूज्य माताजी ने ही हम सब पर संस्कारों का बीजारोपण किया। लोग पारसमणि के किस्से सुनाते हैं कि उसे छूकर लोहा सोना बन जाता है परन्तु पूज्य माताजी तो वह पारसमणि हैं, जो भक्तों को भी पारस बना देती हैं।

हमारे पिता जी स्व. श्री प्रकाशचंद जी, जो पूज्य माताजी की गृहस्थावस्था के भाई थे, उनकी पूज्य माताजी के प्रति अगाध श्रद्धा थी, वह हमेशा कहते थे कि पूज्य माताजी की आज्ञा हम सभी के लिए सर्वोपरि है, जहाँ पूज्य माताजी के पसीने की बूंद गिरे, वहाँ अपना खून बहा देने के लिए तैयार रहो। जब वह बताते थे कि दीक्षा के बाद किस प्रकार माताजी निर्जन वनों और ऐसे-ऐसे स्थानों पर विहार करती थीं, जहाँ लोग जाने से डरते थे, तो मन में रोमांच हो जाता था। हम सबने स्वयं पूज्य माताजी की तप शक्ति को अपनी आँखों से देखा है, पूज्य माताजी के मंत्रों से असाध्य रोगों को ठीक होते देखा है, इसके अतिरिक्त बड़े-बड़े तीर्थों का नव निर्माण, जीर्णोद्धार, विराट ग्रंथ लेखन, बड़े-बड़े राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव, यह सब पूज्य माताजी की तपशक्ति से ही संभव होते हैं और आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न होते हैं।

आज हम सब देखते हैं कि पूज्य माताजी ने जिन-जिन तीर्थों की ओर दृष्टि कर ली, हम वहाँ जाते हैं तो स्वर्ग के आनंद का अनुभव करते हैं, लेकिन उस तीर्थ के निर्माण के समय पूज्य माताजी की तपशक्ति को हमने देखा है। कुण्डलपुर में जहाँ नंद्यावर्त महल बना है, उस स्थान पर सर्प और बिच्छुओं के डर से मजदूर भी कार्य करने से डरते थे, लेकिन पूज्य माताजी उस निर्जन स्थान पर भी टेंट और टीन के कमरे में रहकर अपने तप और ध्यान-आराधना में लगी रहती थीं। जिसकी वजह से ही वहाँ मात्र डेढ़ वर्ष में भव्य विशालकाय मंदिरों, नंद्यावर्त महल और विशाल धर्मशाला का निर्माण हो गया है। इसी प्रकार प्रयाग, हस्तिनापुर आदि तीर्थों पर भी पूज्य माताजी फूस की कुटिया में रहकर जन-जन को अपनी तपशक्ति से लाभान्वित करती रहती थीं।

पूज्य माताजी के जीवन का हर पल एक नया इतिहास बनाता आया है, उसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है, भले ही उसके लिए सैकड़ों ग्रंथ बना दिये जावें।

पूज्य माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती पर हम यही भावना भाते हैं कि पूज्य माताजी की दीक्षा शताब्दी उत्सव मनाने का सौभाग्य भी हमें प्राप्त हो।

हम वाचाल बालबुद्धि से, करें मात अभिनंदन,
तेरे चरणों की धूली है, हर माथे का चंदन।
हे जग जननी ज्ञानमती माँ, हमको दो ऐसा आशीष,
दीक्षा स्वर्ण जयंती उत्सव, में हम गाएँ मिलकर गीत।।

-वीरकुमार, राजन, अकलंक, निकलंक जैन
(सुपुत्र स्व. श्री प्रकाशचंद जैन), टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काव्य सुमन

गणिनी माता ज्ञानमती इतिहास बनीं धरती का,
दीक्षा स्वर्ण महोत्सव उनका करेगी अब धरती माँ।
युग की प्रथम कुमारी कन्या बालसती बन आईं,
वीरसिंधु से पाकर दीक्षा ज्ञानमती कहलाईं।
हो प्राचीन कोई प्रतिमा स्वयमेव ही अतिशय आता,
इन प्राचीन साध्वी का इतिहास यही बतलाता।
पचास वर्षों का इनका व्यक्तित्व कृतित्व अनोखा,
अनुपम अकथनीय गुणवर्णन, जीवन जिनका ऐसा।
पुण्य उदय इस युग का जो, इस निधि के दर्शन पाए,
कलियुग में भी सतयुग सा, इतिहास मात दोहराएँ।
है इतिहास स्वयं गौरवमय, लिखकर स्वर्णिम गाथा,
युग-युग हों जीवन्त मातुश्री, हर इक की अभिलाषा।।

-श्रीमती ज्ञाना देवी जैन, टिकैतनगर
(ध.प. स्व. श्री प्रकाशचंद जैन)

एक संस्मरण

जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने सन् 1952 में सप्तम प्रतिमा रूप ब्रह्मचर्यव्रत संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 देशभूषण जी महाराज से लिया एवं सन् 1953 में श्री महावीर जी में क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। त्याग के पथ पर सदा आगे ही आगे बढ़ती गईं। सरस्वती का वरदान तो आपको प्राकृतिक रूप में ही प्राप्त है इसीलिए आज सारा विद्वज्जगत् मूक स्वर से यह स्वीकारता है कि पूज्य ज्ञानमती माताजी का ज्ञान अपरिमित एवं अतुलनीय है।

शताधिक ग्रंथों की रचना, जम्बूद्वीप निर्माण में सम्प्रेरणा, ज्ञानज्योति की भारत यात्रा का प्रवर्तन, सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का लेखन आदि आपकी चतुर्मुखी विद्वत्ता का परिचायक है।

परमपूज्य तीर्थंकरों के कल्याणकों से पुण्यशाली धरा पर उन्हीं तीर्थंकरों की प्रभावना कर आपने लुप्त होती हुई ज्ञानधारा को पुनः प्रवाहित कर दिया। प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ के दीक्षा एवं कैवल्य स्थल प्रयाग में गंगा तट पर सुरम्य ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का निर्माण, भगवान महावीर की जन्मस्थली कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल व अनेक मंदिरों का निर्माण, छठवें तीर्थंकर पद्मप्रभु की चार कल्याणक स्थली कौशाम्बी-प्रभाषगिरि में श्री पद्मप्रभु की विशाल पद्मासन प्रतिमा जी की स्थापना व पंचकल्याणक आदि इसका प्रतीक है। आहार ग्रहण करते हुए मुनि अवस्था में भगवान महावीर और प्रसन्नवदना, अपूर्व सुन्दरी, टूटी बेड़ियों वाली चंदना की मूर्ति का निर्माण उसी ऐतिहासिक स्थल श्री प्रभासगिरि-कौशाम्बी में कराना, यह पूज्य ज्ञानमती माताजी के अपूर्व ज्ञान का ही परिचायक है। यह उनकी अद्भुत कल्पना का एक अमूल्य उपहार है। तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना तो अपने आप में अप्रतिम है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शास्त्रानुसार एक-एक द्वीप, उनके सरोवर, वाटिका, वृक्षों, जिनालयों का निर्माण हुआ है। अयोध्या में भगवान ऋषभदेव जी की विशाल प्रतिमा जी का विशाल स्तर पर मस्तकाभिषेक पूज्यनीया माताजी के द्वारा सम्पादित हुए।

इस प्रकार सम्पूर्ण जैन समाज आज पूज्या गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के चतुर्मुखी कार्यकलापों पर गौरव अनुभव कर रहा है। ईश्वर से यही कामना है कि वह दीर्घायु हों और सदा यूँ ही रत्नत्रय पथ को अपने ज्ञान से आलोकित करती रहें, वह सभी भव्यों का दिशा निर्देश करती रहें। उनके चरणों में शत-शत नमन।

-डॉ. प्रेमचंद्र जैन, इलाहाबाद

पूज्य माताजी का जीवन मूलाचार के अनुकूल है

पूज्य माताजी ने अपनी आर्यिका दीक्षा के इन 50 स्वर्णिम वर्षों में आगम के अनुकूल तपश्चरण में रत रहकर सैकड़ों ग्रंथों का सृजन किया और तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं पंचकल्याणक भूमियों पर विकास कार्य की प्रेरणा देकर अनेक महान तीर्थों का निर्माण करवाया, यह समस्त दिगम्बर जैन समाज के लिए अत्यन्त गौरव का विषय है। आपकी भक्ति से जिनेन्द्र सम बनने का स्व-आत्मा को जानने का बल मिलता है। मूलाचार के अनुकूल रहती हुईं हम भक्तों को सदैव श्रावकाचार के अनुसार सही दिशा में चलने को प्रेरित करती रहें, इन्हीं भावनाओं के साथ बीसवीं सदी की प्रथम बालसती गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में बारम्बार नमन।

-विजय कुमार जैन, बहराइच

अद्वितीय व्यक्तित्व

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने कौमार्यावस्था में अर्थात् सिर्फ 18 वर्ष की उम्र में ही अपने जीवन का लक्ष्य "भौतिक भोगविलास से विमुख होकर आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त करना" बनाया और अद्यतन अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता को प्राप्त किया अतः आपका अन्य कोई सानी मिलना दुर्लभ ही नहीं, अलभ्य प्रतीत होता है। आपने जीवन के प्रारंभ से ही अपनी आत्मिक शक्ति को पहचानकर एवं श्रुत को हृदयंगम कर अकाट्य साहित्य आराधना की है।

आपने जैन श्रुत के कठिन से कठिन करणानुयोग एवं न्यायशास्त्रों का अध्ययन कर उन्हें सरल एवं पाठकप्रिय भाषा में जनसुलभ बनाया। उसके लिए हम शोधार्थियों के पास विनय से नतमस्तक होने के अलावा आपके लिए किये गये दुर्लभ प्रयास एवं आराधना के आभार का कोई अन्य मार्ग प्रतीत नहीं होता। आपने केवल स्वयं आराधना कर ज्ञान को आत्मसात् नहीं किया, अपितु अनेक सुयोग्य शिष्याओं को दुरूह श्रुताभ्यास कराकर आत्मसम बनाया, इसे आपके गुरुत्व का माहात्म्य ही कहा जा सकता है। ऐसी गुरु गणिनी की सहज उपलब्धि वर्तमान में दुर्लभ होने से आप स्वतः अद्वितीय सिद्ध हो जाती है। आपने केवल साहित्याराधन ही नहीं किया बल्कि जैन श्रुत के साथ-साथ जैन संस्कृति एवं परम्परा को भी प्रश्रय प्रदान कर जम्बूद्वीप की रचना हस्तिनापुर में कराकर हमारे समक्ष अकृत्रिम को कृत्रिम रूप प्रदान कर अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। आपने पूजन-विधान एवं आध्यात्मिक शास्त्रों को लिखकर अपनी लेखनी को सर्वाङ्गीण तथा चतुर्मुखी बनाया है, ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

105 श्री ज्ञानमती माताजी, जिन्होंने अपने नाम को सार्थक किया है उनके दीक्षा के पचास वर्षों की सम्पूर्ति के सुअवसर पर मैं हृदय से माताजी के श्रीचरणों में विनयांजलि समर्पित कर अपार प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

-योगेश कुमार जैन, लाडनूँ
कनिष्ठ शोध-अध्येता, जैन विश्वभारती संस्थान

वीतरागता की मूर्ति-पूज्य माताजी

यह मेरा परम सौभाग्य है कि मैंने विभिन्न स्थानों पर माताजी के चरणों में शीश झुकाने का सुअवसर कई बार प्राप्त किया है। माताजी ने सदैव समताभाव रखकर धर्म-ध्यान करते हुए दिगम्बर जैन समाज को नई चेतना प्रदान की है। जैनधर्म एवं संरक्षण की दिशा में माताजी द्वारा किये गये कार्य चिरस्मरणीय रहेंगे। दो सौ से अधिक ग्रंथों का सृजन एवं षट्खण्डागम जैसे ग्रंथों की सरल हिन्दी भाषा में टीका कर हम सभी अल्प बुद्धिजनों पर माताजी का उपकार है।

वीतरागता की मूर्ति माताजी आने वाले अनेक वर्षों तक दिगम्बर जैन समाज को अपने ज्ञान से सम्यक्-बोध कराती रहें, यही हमारी इच्छा है। उनके पावन चरणों में शत-शत नमन।

-पुखराज जैन, गोरखपुर

मंगलाभिनन्दन

जिनशासनश्रीसुरभिकौमुदी
निष्ठाधृतिसत्कीर्तिस्वरूपा,
विद्याविनयविवेकसुमेधा
कर्मज्ञानभक्तिचिद्रूपा।
शरणोत्तममंगलसुरसरिता
भूषणभणितिभूतिविज्ञान,
सूक्तिसुधा सिद्धान्तशारदा
प्रज्ञाशीलसमाधिवितान।
वागीश्वरी वरेण्यविशेषा
रचनाप्रवचनपरमप्रवीण,
भाष्यशोधबोधपरिपूर्णा
विश्वशान्तिसद्धर्मधुरीण।

दर्शनज्ञानचरित्रत्रिपथगा
महिमामयी विरागविशुद्ध,
दानशीलतपभावप्रतिष्ठा
प्रतिभापरिधि प्रमेय प्रबुद्ध।
गणिनीप्रमुख तीर्थपावनता
मुक्तिमार्गज्योत्स्नासधान,
संघसहस्त्ररश्मिसंज्ञाना
संघोदय-सन्दीप्ति समान।
दीक्षास्वर्णजयंतीकौस्तुभ
आर्या ज्ञानमती अभिनंदन,
आर्यावर्तसुमेरुशिखरश्री
जैनभारती शत-शत वंदन!

-सुमन्तभद्र, चिंचवड़ (पूना)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी का योगदान स्वर्णक्षरों में उल्लेखनीय है

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का जैनधर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में योगदान स्वर्णाक्षरों में उल्लेखनीय है। न केवल आर्यिका, अपितु समस्त साधु-साध्वी समुदाय में उक्त क्षेत्रों में उनका अवदान पचास वर्षों के जैन संस्कृति के इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है। गणिनी आर्यिका श्री अपनी उत्कृष्ट आत्म-साधना और तप-त्याग से प्रसूत प्रतिफल को मानव-कल्याण में वितरित कर "परस्परोपग्रहोजीवानां" सूक्ति को चरितार्थ करती हैं। आपका आभा-मण्डल एवं उच्चकोटि की ज्ञानाराधना सामाजिकों एवं विद्वानों को सहज ही प्रभावित करती है। आपकी वाणी में ओज और माधुर्य गुण होते हैं, तो साहित्य में लक्षण और व्यंजना शक्तियाँ विद्यमान रहती हैं। आर्यिका माताजी साक्षात् सरस्वतीस्वरूपा हैं। जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में सत्यं-शिवं एवं सुन्दरम् तीनों का समवाय है। बहु भाषाविद् गणिनी आर्यिका श्री का सृजित-साहित्य पाठकों के मानस को परिप्लावित करता है, जो चारों अनुयोगों को समाविष्ट किए हुए विशाल परिमाण में है। अष्टसहस्री जैसे कष्टदायी ग्रंथों को आपने सर्वप्रथम सर्वसुलभ बना दिया है। मानव-समाज को सुख-शांति की संजीवनी प्रदान करने वाली गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के उज्ज्वल रत्नत्रय के अनवरत अभ्युदय की हम मंगलकामना करते हुए उनके चरणों में बारम्बार वंदामि करते हैं।

-डॉ. प्रेमचंद रांवका, जयपुर

सेवा निवृत्त प्रो.-महाराजा संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में तमिल वंदना

वंदनैक्कुम वलिपटर्कुम्, उरियर् आगी
वामनूदन नल्लरत्तैप, बूमी एंगुम्
निदैयिला नलवलियिल, परप्पुम् एंगल्
निरुमलनन् ज्ञानमति, अन्नाय ! उंदम्
नंदलिलाच् सेवैयिनाल्, नांगल एललाम्
नन्ज्ञान विलियडैयुम्, पेरू पेट्रोम्
सिंदनैदाम अरप्पुनलिल्, तोयप् पट्रोम्
सीलमोरु उरुवागिच्, सिरंद ताये !
नावलंदी विदनिन मुलु, वडिवम् एल्लाम्
नांगलेल्लाम् उणरवली, वगै परिंदीर् !
देवर् पुगल् आरिगैयाय्, दीक्षै एट्ठु
देसोलीसेर पोन्विलावैक्, काण वैत्तीर् !
ओवलिला नर्पुगलसेर, विधानत्तोडु
ओल्लियवाम् तत्तुवनूल, पलपटैत्तीर् !
मेऊपुगल उमैप्पोल्, पेरुमै पेट्रोर्
मेदिनियिल् वेरोरुवर्, उण्डो? अम्मा !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरुदोलिलैक कर्पित्त, आदिनादर,
अवदरित्त तिरुनालै, अगिलम् एल्लाम्,
मरुवरवे कोण्डाड,वलिवगुत्तीऱ्,
माट्रिनिले विलन्दुयित्तन, उलला वण्णम्,
अखिरिय अरमलैयेच, सोरिंदे एंरुम्,
अलंदुरैक्क लागाद, नेरिगल सेप्पी,
पेरलरिय पेट्रिनैये, पेरवैत्तिट्टीऱ्,
पेरुंगुणत्तीर निन् तिरुत्ताल्, पणिगिन्नोम्!

तमिलन काव्य का भावार्थ—हे वंदनीय! पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माता! जिनेश्वर के धर्म को सारे देश में फैलाने वाली! आपकी निर्विकार, विशुद्ध सेवा से हम सब ज्ञानरूपी चक्षु को पाने में भाग्यशाली हुए। धर्मचिंतन में हमारे हृदय पिघलकर सम्यक्ज्ञान को प्राप्त हुए।

इस जम्बूद्वीप के आकार का देशवासियों को प्रत्यक्ष ज्ञान कराने हेतु सुन्दर ढंग से इमारत को बनाकर जैन भूगोल का ज्ञान कराया। आर्यिका दीक्षा लेकर पचास साल होकर स्वर्णजयंती महोत्सव को निरख रही हैं। आपने थोड़ा भी विराम लिए बिना विधान ग्रंथ एवं तत्वग्रंथों की रचना की है। आपके जैसी दीर्घकीर्ति वाली दूसरी कोई भी माता नहीं है। !

दुनिया के जनों को छह प्रकार के कर्म को सर्वप्रथम सिखाने वाले आदिनाथ भगवान के जन्म महोत्सव को पूरे भारतवर्ष में मनवाया। संसारी जीवों को संसार चक्र से निकलने हेतु अपने धर्मोपदेशरूपी बारिश बरसाकर सच्चे रास्ते दिखाने वाली सम्यक्गुणों युक्त हे माता! तुम्हारे पवित्र चरणों को स्पर्श कर हम नमन करते हैं।

—जम्बुकुमारन, चेन्नई

माताजी की लेखनी ऐसे ही चलते रहे

ज्ञानमती माताजी का आगमन 16 जून 1993 को अयोध्या में हुआ, तब सर्वप्रथम मैंने उनको देखा, इसके पूर्व मैंने माताजी के दर्शन नहीं किए थे। अपने परिवार व समाज के अन्य व्यक्तियों से सुना था कि एक कन्या ने आचार्य श्री देशभूषण जी से दीक्षा ली है, माताजी के अयोध्या आने से पूर्व यहाँ के मंदिर व टोंकों की स्थिति दयनीय थी। माताजी ने अयोध्या में चातुर्मास किया, इसी बीच टोंकों व मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया। तीन चौबीसी मंदिर, आचार्य शांतिसागर व आचार्य देशभूषण जी की चरण छतरी का निर्माण कराया। माताजी को अवध विश्वविद्यालय ने अपने दीक्षान्त समारोह में आमंत्रित कर डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत किया। अयोध्या में भगवान ऋषभदेव के प्रथम महामस्तकाभिषेक का आयोजन 24 फरवरी 1994 को हुआ, जिसमें प्रथम बार देश के कोने-कोने से श्रावक आये। इस पंचकल्याणक आयोजन में कल्याण सिंह, मोतीलाल वोरा जी, मुलायम सिंह यादव (मुख्यमंत्री), श्रीरामलाल राही, संगीतकार रवीन्द्र जैन इत्यादि प्रथम बार अयोध्या आये और एक ही मंच पर अपना धार्मिक उद्बोधन प्रदान किया। अयोध्या में इसके पूर्व विभिन्न दलों के मंत्रियों, राज्यपाल, मुख्यमंत्री की उपस्थिति नहीं हुई थी। माताजी के चातुर्मास व प्रवास के दौरान नगरवासियों ने पूजा, विधान, प्रवचन, आरती का भरपूर आनंद लिया। 6 अप्रैल 1994 को माताजी ने ससंघ लखनऊ के लिए विहार किया लेकिन समवसरण मंदिर का निर्माण व 16 अन्य कमरों की धर्मशाला का निर्माण चलता रहा। 1994 का वर्षायोग माताजी ने अपनी जन्मस्थली टिकैतनगर में

Ganesh Varni Digambar Jain Sansthan, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया। टिकैतनगर में समय-समय पर धार्मिक कार्यक्रम चलते रहे। शरदपूर्णिमा के दिन माताजी की जन्मजयंती का आयोजन नगरवासियों ने किया। पहली बार टिकैतनगर जाना हुआ। इसी बीच दरियाबाद में भूमिपूजन भी माताजी ने अपने सानिध्य में कराया। समवसरण जिन बिंब मंदिर की पंचकल्याणक हेतु माताजी पुनः 16 दिसम्बर 1994 को ससंघ अयोध्या आईं। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 15 से 20 फरवरी 1995 को सम्पन्न हुई, इसी बीच 16 अत्याधुनिक कमरों का नामकरण व उद्घाटन सम्पन्न हुआ। एक साथ रहते हुए वियोग का एक क्षण भी आया, जब माताजी ने ससंघ 28 मार्च 1995 को श्रावस्ती, बहराइच, फतेहपुर होते हुए हस्तिनापुर को प्रस्थान किया। 12 अगस्त 1995 को हस्तिनापुर पहली बार पहुँचकर जम्बूद्वीप, कमल मंदिर, ध्यान मंदिर को देखा व दर्शन-पूजन किया। माताजी का मंगल आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ। भगवान ऋषभदेव का द्वितीय व 21वीं शताब्दी का प्रथम महामस्तकाभिषेक अपने सानिध्य में सम्पन्न कराने हेतु चारित्रचन्द्रिका ज्ञानमती माताजी ससंघ कुण्डलपुर से चलकर वाराणसी, लखनऊ, बाराबंकी, टिकैतनगर होते हुए 17 मार्च 2005 को अयोध्या पहुँचीं। फैजाबाद में संघ को आहार देने का सौभाग्य सपरिवार हमें प्राप्त हुआ। 3 अप्रैल 2005 को अपार जनसमूह ने भगवान बाहुबली के पिता ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक देख अपना जीवन धन्य किया। अल्प प्रवास के बाद माताजी ने ससंघ 5 अप्रैल 2005 को सायं 5 बजे हस्तिनापुर के लिए विहार किया। हम सभी नगरवासी माताजी को अयोध्या से रत्नपुरी तक पहुँचाने गये। माताजी द्वारा रचित विभिन्न विधान, दीपावली पूजन व अन्य पुस्तकें अध्ययन योग्य हैं। इतनी पुस्तकों का लेखन अन्य किसी साधु द्वारा नहीं हुआ है। आदिब्रह्मा आदिनाथ जी से हम सभी की यह प्रार्थना है कि माताजी की लेखनी चलती रहे और हमें उनका ज्ञान पुस्तकों के रूप में निरन्तर मिलता रहे। अगला महामस्तकाभिषेक माताजी के ससंघ सानिध्य में हो, ऐसी हम सभी की अभिलाषा व प्रार्थना है।

-डॉ. दिलीप जैन, फैजाबाद (उ.प्र.)

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्रेष्ठ को विनम्र नमन

पूज्य माताजी ने जैन दर्शन एवं मानव कल्याण के लिए चारों ही अनुयोगों से संबंधित अष्टसहस्री, मूलाचार, षट्खण्डागम आदि जैसे महान ग्रंथों की संस्कृत-हिन्दी टीकाएँ एवं अन्य लगभग 200 ग्रंथों का लेखन किया है, वह अमूल्य एवं अथाह ज्ञान का सागर हैं, जिसके लिए सारा जैन समाज कृतज्ञ है। पूज्य माताजी की प्रेरणा से तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं पंचकल्याणक भूमियों पर अनेक विकास एवं जीर्णोद्धार कार्य कराए गए हैं। जैन समाज उन कार्यों को कभी भुला नहीं पायेगा।

मेरी जिनेन्द्र देव से प्रार्थना है कि पूज्य माताजी का वरदहस्त सदैव हमारे ऊपर बना रहे और हमें सदैव उनका आशीर्वाद प्राप्त होता रहे। पूज्य माताजी के श्रीचरणों में शत-शत नमन करते हुए उनके दीर्घजीवी होने की कामना करता हूँ।

-डॉ. पदमचंद जैन (पत्रकार), एत्मादपुर-आगरा

(महामंत्री-अखिल भारतीय दि. जैन पद्मावती पुरवाल पंचायत महासभा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सारी दुनिया का जब परित्याग किया आपने!

जागरूकता लाने को सारे भारत में,
नव प्रगति का सुंदर पथ दिखलाया।
देश के अबोध व्याकुल हृदयों में,
ज्ञान का पुनीत दीप तो जलाया।

आपके मुँह से निःसृत वचनामृत बूँदों ने,
सारे समाज को सात्विक एवं आस्तिक बना डाला।
आपके प्रवचनों के अति सूक्ष्म बीजों ने,
समग्र-भारत में धर्म के वटवृक्ष को सींच डाला।।

पचास वर्ष पूर्व वह भी कितना अमूल्य मुहूर्त था,
सारी दुनिया का जब परित्याग किया आपने!
जन मानस के मध्य में ज्ञान का दीप जलाया था,
विश्व के दुःख-निवारण का ज्ञान दीप सजाया था।।

-प्रो. एन. नागराज पूवणी जैन, उजिरे (कर्नाटक)

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है...........

दीक्षा की स्वर्ण जयंती है, सब मिलके मनाओ।
मिलके मनाओ, सभी खुशियाँ मनाओ।। दीक्षा की स्वर्ण.।। टेक.।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी, वैशाख वदि दूज को दीक्षा ली।
उनकी ही दीक्षाजयंती है, सब मिलके मनाओ।।दीक्षा की.।।1।।

पूरे पचास बरस दीक्षा के, बीते हैं जिनके गुरु शिक्षा से।
उनकी ही दीक्षा जयंती है, सब मिलके मनाओ।।दीक्षा की.।।2।।

यौवन को अपने तप में बिताया, तप से ही मन को कुन्दन बनाया।
आर्यिका दीक्षा जयंती ये, सब मिलके मनाओ।।दीक्षा की.।।3।।

ज्ञानमती नाम सार्थक किया है, जग को ज्ञान का अमृत दिया है।
उनकी ही दीक्षा जयंती है, सब मिलके मनाओ।।दीक्षा की.।।4।।

जिनधर्म की कीर्ति इनसे बढ़ी है, श्रुतज्ञान की इनसे सरिता बही है।
उनकी ही दीक्षा जयंती है, सब मिलके मनाओ।।दीक्षा की.।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक व्यक्तित्व

जीवन में हजारों व्यक्तियों से संपर्क होता है, किन्तु कुछ व्यक्ति मनपटल पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं। पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी इसकी आदर्श हैं। इतिहास में ऐसा व्यक्तित्व नहीं है, जो न्याय की विद्वत्ता का सामना कर सके। अष्टसहस्री ग्रंथ पर आपने टीका लिखी है। आपने अनेक जैन तीर्थों पर अपनी प्रेरणा से अनेक निर्माण कराये हैं। श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पावागिरि जी ऊन में पधारकर चार मुनियों की चरण छत्री बनाने का सुझाव दिया था, वह कार्य आपकी कृपा से पूर्ण हो चुका है, श्री वीर प्रभु से प्रार्थना है कि पूज्य माताजी शताधिक वर्षों तक मार्गदर्शन देती रहें, उनको शत-शत प्रणाम।

-पूरनचंद जैन (मुनीम)
श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पावागिर ऊन

जन-जन में धार्मिक संस्कारों को स्थापित किया

मेरे परमसौभाग्य का उदय है कि मुझे आज एक महान चेतना पुंज को अपनी हार्दिक विनयांजलि अर्पित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है, मैं धन्य हुई। समाज में आज का वातावरण इतना कलुषित है कि इसका शुद्धीकरण ही पहली प्राथमिकता बन जाती है। पूज्य माताजी ने यह अति आवश्यक कार्य बखूबी किया है। परम पवित्र मंत्रोच्चार, पूजा-भक्ति और अनेक ऐसे माध्यमों से इस कलुषित वातावरण के परमाणुओं को पवित्र करने में महान योगदान दिया है। माताजी के प्रयासों से भक्तों में भगवान के प्रति गुणानुराग बढ़ा है, जिससे सभी के मन में सरलता, अहिंसात्मकता, मैत्रीभाव, करुणा आदि भावनाएँ फल फूल रही हैं। भक्तों का यह परिवर्तन समाज के शुद्धीकरण में उनके मन की उदारता को पल्लवित करता है। वातावरण शांतिमय हो जाता है। इन सब रहस्यों की महान ज्ञाता पूज्य माताजी विधि विधान एवं आचरण के सही स्वरूप पर हमेशा जोर देती हैं, प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की रचना शैली विशेष उल्लेखनीय है क्योंकि विधि-विधान की शुद्धता के लिए आपका साहित्य विशेष प्रेरक एवं मार्गदर्शक है।

जन-जन में धार्मिक संस्कारों को स्थापित करने वाली एवं तपोवन में प्रकाश फैलाने वाली ऐसी चारित्रचन्द्रिका माताजी के दिव्यचरण कमलों में मेरा कोटि-कोटि नमन। पूज्य माताजी इस धरा पर दीर्घकाल तक ज्ञान की गंगा बहाती रहें, यही विनयांजलि अर्पित करती हूँ।

-डॉ. बी.जे. ज्वाला सुरेश, मैसूर (कर्नाटक)

ज्ञानमती माताजी में अकाट्य तर्कणा शक्ति है

आदि तीर्थंकर के काल से ही आर्यिकाओं के अस्तित्व का पता चलता है। भगवान ऋषभदेव की पुत्रियों— ब्राह्मी एवं सुन्दरी ने अपने पिता से दीक्षा ली थी और धर्मचक्र प्रवर्तन में उनका महत्वपूर्ण स्थान था। अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के धर्मचक्र प्रवर्तन में माता चंदना का इसी प्रकार अप्रतिम योगदान रहा है। इस दैदीप्यमान परम्परा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में प्रातः स्मरणीय गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का संघ आता है, जिसने अनेक कष्ट सहन करके भी देश के कोने-कोने में धर्म की जागृति की है।

परमपूज्य ज्ञानमती माताजी की ज्ञानक्षमता, सूक्ष्म तलस्पर्शिनी बुद्धि, अकाट्य तर्कणा शक्ति एवं हृदयग्राह्य प्रतिपादन शैली अद्‌भुत है और विद्वत् संसार को भी विमुग्ध करने वाली है। आपकी प्रवचन शैली विलक्षण है। श्रोतागण अभिभूत हुए बिना नहीं रहते। विशाल जनसमुदाय के समक्ष जिस निर्भीकता से आप आगम के क्रमबद्ध धाराप्रवाह प्रवचनों का प्रतिपादन करती हैं, तो ऐसा लगता है जैसे साक्षात् सरस्वती के मुख से अमृत झर रहा है।

आजकल तत्त्व की जो एकांकी चर्चा की जाती है और धर्म की जो अन्यथा व्याख्या की जाती है, उसके विरुद्ध आपके समन्वयात्मक प्रवचनों से समाज को सही दिशा मिलती है। अंधकार की प्रगाढ़ता तभी तक रहती है, जब तक सूर्य की प्रभा उदित नहीं होती। आपको यदि ज्ञान सूर्य की प्रभा कहा जावे, तो अत्युक्ति नहीं होगी। आप ज्ञान वाङ्मय की अनुपम भण्डार हैं। आप ऐसी विद्या वारिधि हैं, जिनका ज्ञान-जल भव्य आत्माओं के सांसारिक मल को धोने एवं मोक्षमार्ग के पथिक का पाथेय एवं परम प्रेरक है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी आर्षमार्ग एवं आगम की कट्टर पोषिका हैं। स्वर्गीय आचार्य 108 श्री वीरसागर जी महाराज की उच्चतम शिष्यारत्न होने के साथ-साथ आपने उनकी आर्षमार्ग परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने में जिस साहस के साथ सत्य धर्म का पोषण किया है, वह धार्मिक जनों के लिए युग-युगान्तर तक आदर्श मार्ग के रूप में अमर रहेगा।

पूज्यनीया माताजी की जीवन चर्या, वाणी-वैदुष्य तथा आहार-विहार जिन साधुचर्या की प्रयोगशाला है। ऐसी गुणवती आत्माओं के मंगल दर्शन कर भव्य आत्माएँ कल्याणोन्मुख होती हैं। पूज्य माताजी ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज हित में लगाया है। उनकी अमृतमय वाणी और उपदेश जैन-जगत के लिए ही नहीं अपितु समस्त मानव जगत के लिए कल्याणकारी है। श्री जिनेन्द्र देव से प्रार्थना है कि आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहते हुए दीर्घायु प्राप्त करें ताकि सम्पूर्ण भारतवर्ष की समाज को चिरकाल तक आपका मार्गदर्शन मिलता रहे। मैं परमपूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती पर यही हार्दिक विनयांजलि प्रेषित करता हूँ।

-कपूरचंद जैन पाटनी, गुवाहाटी (आसाम)
(सह सम्पादक-जैन गजट)

गणिणी णाणमदीए विणयञ्जलि

पणमिय सिखिसहजिणं पुणु वट्टमाण चोवीस जिणं।
सुमरिय पुणु सिरि चउसरणं विणउ करिमि पुणु णाणमदिं।।
जाणमि हुउँ ण वायरणु छंदु बालो म्हि पुणु जिणतच्चणाणें।
पर कित्तिउं लग्गमि कलिकालसरासइं गणिणी णाणमदिं तच्चणाणमदिं।।
तुहुं कलिकालसरासइ बम्हु विसिट्ठु कलिकालें दिट्ठु।
सिट्ठिं करेइ कलिकलुसणासें ओयरिय एत्थु जगि बालें।
सिक्खिया लोयववहारू सिक्खिया जिणधम्मसारु।
विरत्ता लोयववहारें पत्ता परमजिणदिक्खसारु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिक्खमदि णाणमदिपुण्णें सिक्खिया सयलतच्चसारु।
विहरिया सयल भरहखण्डें सिक्खिया सयलभरह भासा।
उवदिसिय सयलत्थसारु पाविया सयलजणमाणा।
आगमा छक्खण्ड सिद्धंतु विरइया वक्खाणु सक्कदा भासें।
गंगा-जउणाउ खेत्तें णिम्माविया सिरिजम्बद्दीउ।
पुणु णिम्मावियउ तुहुँ सिरि वसहजिण वरभव्व चेदिहरु।
पडिगहाविउ सीसाण दिक्खु विरइयउ अज्जिया संघु।
हूयउ सिरि संघस्स गणिणी मणिणया विउसाण जणणी।
पयडियउ जिणधम्म तित्थु सयलजण आणंदु पत्तु।
गणिणी णाणमदी ! तुहुं विण्णाणमदी परिहरिय लोयाण मिच्छ भावं।
हूयउ तुह जम्मु सच्चु, वंदेमि तुहुं विणयंजलिभरिय हियएँ।।
जयउ जिणसासणु जयउ गणिणी जाणमदी

-डॉ. एन. सुरेश कुमार, मैसूर (कर्नाटक)

माताजी के वचन परमौषधि हैं

एक कवि ने कहा है कि ''गुरु के वचन प्रतीति न जेहीं, सहज शांति सुख सुलभ न तेहीं। जिन व्यक्तियों को तत्वज्ञ गुरुजनों के वचनों पर विश्वास नहीं होता, उनको सहजावस्था, चित्त की शांति व जीवन मुक्ति का आनन्द नहीं मिलता है। संतजन सुसंस्कारों के निर्माण में सेतु होते हैं।

अभीक्ष्ण ज्ञान की सम्पदा से सिक्त, सहज, सरल, शान्त, प्रफुल्ल, प्रभावक, धर्मनिष्ठ, शास्त्रज्ञ गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरण सानिध्य में रहने का अनुपम अवसर मुझे माताजी के धर्मनगरी खतौली में वर्षायोग के समय प्राप्त हुआ। उस समय मेरी आयु लगभग 30 वर्ष थी। माताजी के पावन चरणों में बैठकर और उनसे ज्ञान के प्रारंभिक सूत्र सीखकर हमारी जिनधर्म में आस्था प्रबल हो गई। माताजी के चातुर्मास के समय शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। हम जैसे अज्ञानियों के लिए मानो उस समय धर्म की गंगा प्रवाहित हो गई थी। मुझ जैसे अनेक अज्ञानियों पर उनकी धर्मचर्चा का विशेष प्रभाव पड़ा। माताजी नित्यप्रति धार्मिक आयोजन कराती रहती थीं, अध्यात्मिक चर्चा से परिणाम विशुद्ध हुए, मनोबल सुदृढ़ हुआ तथा विषम परिस्थितियों में भी समताभाव रखने की सामर्थ्य प्राप्त हुई।

माताजी के वचन परमौषधि हैं। उनकी ज्ञानामृत एवं संयमरूपी औषधि का सेवन करने से आत्मा के दोष दूर हो जाते हैं और संसार सागर से पार होने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। जिस प्रकार चुम्बक लौह पदार्थ को अपनी ओर खींचता है, उसी प्रकार माताजी के अमृत उपदेशों का श्रवण कर आत्माएँ पापपंक से निकलकर संयम की उज्ज्वल भूमि में अवस्थित हो जाती हैं।

हमारे पुण्योदय से वर्षायोग अलौकिक वरदान सिद्ध हुआ। समस्त वर्षायोग में अनवरत धर्मरूपी जल की वृष्टि होती रही और यहाँ के वासियों के कर्म-मल को धोती रही। यह हमारा सौभाग्य ही था कि माताजी के खतौली प्रवास के समय ही भगवान महावीर जन्मजयंती महोत्सव का आयोजन भी धूमधाम से भक्तिभाव के साथ सम्पन्न हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी ने समस्त भारत में संस्कृति के संरक्षण का जो वृहद् कार्य किया है, वह स्वयं में एक उदाहरण है। माताजी ने तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों को पावन तीर्थ के रूप में विकसित करके महान कल्याणकारी कार्य किया है। आज हम सभी धन्य हैं माताजी को अपने बीच पाकर। उनकी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर मैं अपनी विनयांजलि समर्पित करता हूँ और यही कामना है कि माताजी का पावन सानिध्य हमें दीर्घकाल तक यथावत् प्राप्त होता रहे।

-विनोद कुमार जैन, खतौली

सरस्वती की भण्डार जगत्माता ज्ञानमती जी

इतिहास गवाह है कि जब-जब इस पृथ्वी पर अत्याचार, अनाचार, दुराचार, शोषण, हिंसा, विद्वेष, अधर्म तथा कुरीतियों का बोल-बोला हुआ, तब-तब दिव्य आत्माओं ने इस धरती पर अवतार लेकर समाज में व्याप्त समस्त बुराईयों को दूर करने का बीड़ा उठाया और पीड़ित मानव की सेवा कर उन्हें धर्म के रास्ते पर लगाया। 26सौ वर्ष पूर्व मानव जाति के जीवन में अमूलचूल बदलाव लाने हेतु भगवान महावीर का अवतरण हुआ, जिन्होंने अपने संपूर्ण जीवन को प्रयोगशाला बनाकर उसके संशोधन के माध्यम से संसार को एक क्रांतिकारी देन दी। इसी शृंखला में 22 अक्टूबर 1934 शरदपूर्णिमा के शुभ दिन मैना के रूप में ज्ञान का अवतार, सरस्वती का भंडार, गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का अवतरण टिकैतनगर में हुआ था। जिनके दीक्षा की 50 वीं वर्षगांठ मनाने का सौभाग्य हमें प्राप्त हो रहा है।

जो अपने आप को जीत कर कर्मों का नाश करने में समर्पित रहते हैं, उन्हीं की जन्मजयंती या दीक्षा दिवस मनाया जाता है।

पूज्य माताजी की प्रतिभा बहुमुखी है। दर्शनशास्त्र, धर्म, अध्यात्म, गणित, भूगोल, खगोल, नीति, इतिहास, कर्मकांड आदि विषयों पर उनका समान अधिकार है और यह देखने के पश्चात् ऐसा लगता है कि वे बहुत उच्च शिक्षित, किसी विद्यापीठ की डॉक्टरेट या डी.-लिट् उपाधि हासिल की हुई हैं परन्तु वे तो मात्र स्कूल में प्राइमरी कक्षा तक ही पढ़ी हुई हैं। फिर इतना ज्ञान का भंडार उनमें समाकर वे कैसे ज्ञानमती माता कही जाती हैं? तो अवलोकन करने के पश्चात् पता चलता है कि उन्होंने अपने जीवन को सत्यान्वेषण और संयम की महासाधना में लगाया और उसके कारण आज वे इस मुकाम पर पहुँची हैं।

दुनिया में चार प्रकार की माताएँ होती हैं....

1. पहली, जिसकी संतान इस धरातल पर जैसे-तैसे भरण-पोषण कर जीवन निर्वाह करती हैं।

2. दूसरी माता, जिसका पुत्र कुछ सामाजिक कार्य करते हुए जीवन पूर्ण करता है।

3. तीसरी माता, जिसे देशमाता या राजमाता कहा जाता है, जिसका पुत्र देश का उद्धार कर जनकल्याण करते हुए अपना कर्तव्य निभाता है।

4. चौथी माता, अपने पुत्रों को लौकिक ज्ञान देकर सुयोग्य बनाती है।

परन्तु यह माता इन सबसे बढ़कर श्रेष्ठ माता हैं। यह महामाता तथा जगतमाता है। जिसके आशीर्वाद से हम आत्मकल्याण के पथ पर कदम बढ़ाते हैं और अविनाशी सुख की प्राप्ति कर लेते हैं।

ऐसी यह जगत्माता संस्कारों की प्रतिमूर्ति, संस्कृति की संवर्धिका, सरस्वती की आराधिका, विचारों के संकल्पों को साकाररूप देने वाली, असीम गुणों की भण्डार, जैन समाज की ज्योतिर्मय नक्षत्र एवं जैन संस्कृति की उन्नायक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं। जिनका 18 वर्ष की छोटी सी आयु में लगाया गया वह वैराग्य का नन्हा-सा पौधा, आज 50 वर्ष का विशाल वटवृक्ष रूप धारण कर चुका है। जिसमें कई धर्मानुरागीजन, श्रावक-श्राविकाएँ, ब्रह्मचारिणियाँ, मुनिगण छाया, स्नेह और शीतलता प्राप्त कर रहे हैं। वीर प्रभु से प्रार्थना है कि यह वटवृक्ष दिनोंदिन घना और विशाल होता रहे तथा चिरकाल तक पीड़ित मानव को अपनी छाया प्रदान करता रहे।

पर्वत में ऊँचाई तो होती है, पर गहराई नहीं। सागर में गहराई तो होती है, पर ऊँचाई नहीं। गहराई और ऊँचाई यदि किसी में एक साथ देखना हो, तो वह गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी में मिलेगी। आप में ज्ञान की गहराई व चारित्र की ऊँचाई एक साथ मुखर हो उठी है।

माताजी की वाणी में सृष्टि का सार, जीवन का सौंदर्य, मानवता का मर्म, मनुष्यत्व की गरिमा, संस्कृति का स्वरूप, मुक्ति की प्रेरणा, तप और संयम का उत्कर्ष तथा जागरण का शंखनाद सुनाई देता है। उनके हृदय में दया, क्षमा, वात्सल्य, सहनशीलता और स्नेह का सागर हिलोर लेते रहता है।

जिनके वचनामृत में अमृत, जीवन की खुशहाली है............।
मुखमण्डल पर इनके स्वर्णिम, नव प्रभात की लाली है।
ओजस्वी है इनकी काया, नयनों में अनुराग है।
चरणस्पर्श से जिनके धन्य औरंगाबाद है।

ऐसी प्रशम और प्रज्ञा की मूर्ति पूज्य माताजी के चरणारविंद में विनम्र विनयांजलि तथा भाव पुष्पांजलि अर्पित करता हुआ भावना करता हूँ कि इनके द्वारा जिनधर्म और जिनागम की प्रभावना सहस्रों वर्षों तक होती रहे।

-महावीर दीपचंद ठोले, औरंगाबाद (महा.)

जिनकी सुरभि से सुरभित सारा संसार

जो है करुणामयी वो है ज्ञानमती माता।
जिनके दर्शन से हर पाप है नश जाता।
वो माता है, वो माता है, वो माता है, वो माता है।।

ज्ञान की गंगा, ममता की मूरत।
करुणामयी है जिनकी सूरत।।
सूरत तो देखो, कितनी है आभा।
जिनके दर्शन से हर प्राणी सुख पाता।।
वो माता है, वो माता है, वो माता है, वो माता है।।

मोह से छूटी, माया से छूटी।
जिनभक्ती में प्रतिपल डूबी।।
मन में कोमलता, नैनों में निर्मलता।
वाणी से जिनकी झरती है मधुरता।।
वो माता है, वो माता है, वो माता है, वो माता है।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने, दिये हमें अनमोल रतन हैं।
उन रतनों में हमने पाया, ग्रंथों का बहुमूल्य ये धन है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथों की रचना करने वाली माता।
जिनकी भक्ती से हर प्राणी सुख पाता।।
वो माता है, वो माता है, वो माता है, वो माता है।।

मन संकल्पित, तन संकल्पित।
तीर्थक्षेत्र को करतीं विकसित।।
माता के दर्शन को व्याकुल सब जनता।
जिनकी 'सुरभि' से सुरभित सारा संसार।।
वो माता है, वो माता है, वो माता है, वो माता है।।

जो है करुणामयी वो है ज्ञानमती माता।
जिनके दर्शन से हर पाप है नश जाता।।
वो माता है, वो माता है, वो माता है, वो माता है।।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख तीर्थोद्धारिका आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के पचासवें दीक्षा समारोह के पावन पर्व पर उनके चरणों में शत-शत वंदन।

-सुरभि जैन, इन्दिरानगर (लखनऊ)

विनयांजलि:

बसंततिलका छंद—

पुण्योदयः सुविशदो हि यदा धरायाः,
जाता धराऽविकलचन्द्रयुता तदा सा।
संस्कारिता सरलशुद्धविशुद्धभावैः,
जीयाच्चिराय गणिनी जिनशासनार्या।।1।।

अष्टादशेऽल्पवयसि प्रतिमाः गृहिताः,
श्रीवीरसागरगृहीतसुभव्यदीक्षा।
निर्दोषपालितमहाव्रतशासनाढ्या,
जीयाच्चिराय गणिनी जिनशासनार्या।।2।।

पूजाविधानलिखिता विविधा सुशब्दैः,
टीकाः कृताः समुहतां स्वधिया समीक्ष्य।
संज्ञाऽनुसारविहितं बहुलेखकार्यं,
जीयाच्चिराय गणिनी जिनशासनार्या।।3।।

निर्माणकार्यमतिसुन्दरवास्तुरूपं,
प्राचीनमन्दिरगतं नवनूतनत्वम्।
निर्देशनेन रचितः प्रियमध्यलोकः
जीयाच्चिराय गणिनी जिनशासनार्या।।4।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वात्सल्यभावभरितं सदयं नु चित्तं,
वाणी प्रिया मधुरशान्तहितान्विता च।
वृत्तिः क्षमादिगुणभूषितशंप्रधाना,
जीयाच्चिराय गणिनी जिनशासनार्या।।5।।

अनुष्टुप्— पञ्चज्ञानात्मिकायै हि, पञ्चश्लोकात्मिकेयमो।
दीक्षास्वर्ण जयन्त्यां वै, अर्प्यते विनयाञ्जलिः।।

-पं. राकेश कुमार जैन 'साहित्याचार्य',
संस्कृत व्याख्याता-श्री दि. जैन संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर (जयपुर) राज.

विनयांजलि

परम श्रद्धेय गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती के चरणों में शत-शत वंदन.............

वात्सल्य एवं त्याग की अनुपम प्रतिभा की धनी, आपका साहस और संकल्प की दृढ़ता मुझे उस अतीत की याद दिलाता रहता है, जब आपने गृह त्याग करके दीक्षा धारण की थी। माता-पिता, भाई एवं वरिष्ठ तथा प्रभावशाली नागरिकों में कोई भी आपको अपने निर्णय से विचलित नहीं कर सका था। अब त्यागमार्ग में चलते हुए आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष आपने व्यतीत कर लिए हैं तथा आगमानुकूल आर्यिका चर्या में निरंतर रत हैं। आपकी साधना सराहनीय है, अनुकरणीय है और वंदनीय है।

साधना की इस अवधि में आपने समाज को जो उपहार दिये हैं, वे अविस्मरणीय हैं तथा हम सभी को सदैव सुपथ-गमन का मार्ग प्रशस्त करते रहे हैं। अनेक क्लिष्ट ग्रंथों का सार सरल भाषा में करके रोचक पद्यों के माध्यम से आपने सामान्य गृहस्थ को धर्म का सार समझने में सहायता की है तथा तीर्थों के विकास के द्वारा हमें तीर्थ-यात्राएँ करने की प्रेरणा भी प्रदान की है। इतना ही नहीं, जम्बूद्वीप की रचना करके शोधकर्ताओं को जैन-भूगोल एवं विश्व संरचना का तत्व निरूपण करने हेतु प्रेरित किया है। रोचक पद्यों में विधानों का निर्माण करके धार्मिक आयोजनों की शृंखला को गति प्रदान की है। प्रायः सभी धार्मिक आयोजनों में आपके द्वारा रचित इन्द्रध्वज विधान, कल्पद्रुम विधान, सिद्धचक्र विधान, शांति विधान, आदिनाथ विधान एवं महावीर विधान आदि में कोई एक पाठ संगीत-मय स्वर से सुने, गुने और सराहे जाते हुए देखे जाते हैं।

आपका आशीर्वाद पाने के लिए धर्मार्थी, चाहे वह जैन हो या अजैन, सभी उत्सुक दिखते हैं। शासन की बागडोर संभालने वाले भी, चाहे वे राष्ट्रपति हों, प्रधानमंत्री हों, अथवा प्रशासनिक एवं न्यायिक अधिकारी हों, सभी आपका आशीर्वाद पाकर प्रसन्न होते हैं। जातिवाद, पार्टीवाद, धर्मवाद से आप निर्लिप्त रहती हैं। किसी प्रकार का कोई पक्षपात, लगाव, द्वेष या दुराव किसी से भी न रखने के कारण आपकी शांति और तपस्या सभी को प्रभावित करती है।

मेरी भावना है कि आप स्वस्थ रहें, दीर्घजीवी हों और आपकी लेखनी निरंतर चलती रहे, जिससे पाठकों को नये-नये आयाम धर्म समझने की जिज्ञासा में सहायक बनेंगे। पूज्य माताजी को नमन करते हुए उनके चरणों में विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

-वीरेन्द्र कुमार जैन, रायबरेली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे दिव्य विभूति! ज्ञानमती तुमको अभिवंदन करता हूँ.........

जब मादक अलसायी गंधें, मन प्राणों में भर जाती हैं।
जिस वय में कचनारी आँखें, दहकर और निखर जाती हैं।।
जब सपनों के राजकुँवर, निद्रा में पुलकित कर जाते हैं।
जब वायु के मलय झकोरे, तन-मन सुरभित कर जाते हैं।।
जब नयनों में केवल मण्डप-फेरों के सपने आते हैं।
जिस वय में बस बिन्दिया, कंगन, पायल ही मन को भाते हैं।।
उस वय में तुमने ध्यान चुना, मैं कोटिशः वंदन करता हूँ।
हे दिव्य विभूति! ज्ञानमती, तुमको अभिनंदन करता हूँ।।

जिस वय में तुलसी का दीपक, जग भर से न्यारा लगता है।
जिस वय में सूखा मौसम भी, फागुन सा प्यारा लगता है।।
जब चर्चा की वस्तू केवल, गजरे-कजरे रह जाते हैं।
जब कानों के पास पपीहे "पीहू-पीहू" कह जाते हैं।।
माला-मनका नहीं हाथ में, जब केवल दर्पण होता है।
जिस वय में बस हल्दी, मेहंदी, रोली का चिंतन होता है।।
उस वय तुमने धर्म चुना, मैं कोटिशः वंदन करता हूँ।
हे दिव्य-विभूति! ज्ञानमती, तुमको अभिनंदन करता हूँ।।

जिस वय में ये हृदय-'घर हो' ऐसे सपने बुन लेता है।
जिस वय में मन परिवार की, जिम्मेदारी चुन लेता है।।
जिस वय में सपना होता है, घर-आंगन फुलवारी महके।
जिस वय में इच्छा होती है, आँचल में किलकारी चहके।।
जिस वय में मन के आले में, तृष्णा का दीपक जलता है।
जब "मेरा घर-मेरा ही सुख', मेरा ही मेरा चलता है।।
उस वय में तुमने त्याग चुना, मैं कोटिशः वंदन करता हँू।
हे दिव्य-विभूति! ज्ञानमती, तुमको अभिनंदन करता हूँ।।

ओ ममता की शिलालेख! स्नेह-विटप! ओ काव्य-कलश!
हे सद्‌ग्रन्थों के अक्षयपात्र! हे काव्य-गर्भ! हे गीत सरस।।
ओ चिरयौवन की तुमुलनाद! ओ कालजयी तप की सरिता!
हे अमरवल्लरी संयम की, हे क्षमाशीलता की सरिता!!
तुम हो विराट, मैं क्षुद्र! तुम्हें, मैं व्यक्त नहीं कर पाऊँगा।
तुम शब्दातीत, अचर, तुमको, अभिव्यक्त नहीं कर पाऊँगा।।
बस बारम्बार तुम्हें मन से, मैं कोटिशः वंदन करता हूँ।
हे दिव्य-विभूति! ज्ञानमती, तुमको अभिनंदन करता हूँ।।

-पंकज त्यागी, मेरठ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी के चरणों में समर्पित मंगल कामना

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, अब कहाँ रही अबला नारी।
ज्ञानमती ने नारी को इक, नई चेतना दे डाली।।

बीसवीं सदी में सर्वप्रथम, आर्यिका दीक्षा की नींव पड़ी।
ढाई हजार वर्ष से लेखन, कोई आर्यिका कर न सकी।।

छोटे लाल पिता मोहिनी माँ, 'मैना की गूंजी किलकारी।
ज्ञानमती ने नारी को इक, नई चेतना दे डाली।।

कठिन-कठिन कई ग्रंथों की, टीकाएँ रचने वाली।
प्रथमानुयोग को उपन्यासवत्, समय देख गढ़ने वाली।।

मन्द मधुर मुस्कान सदा ही, इनकी भाषा कहलाती।
ज्ञानमती ने नारी को, इक नई चेतना दे डाली।।

होते हैं पूजा विधान क्या, छंद चुने क्या लय व ताल।
झूमें भक्ती रस के प्यासे, थकता नहीं कभी भी साज।।

यही हमारी जिनवाणी है, लगती गणधर की वाणी।
ज्ञानमती ने नारी को इक, नई चेतना दे डाली।।

जम्बूद्वीप की रचना को, पैमाने पर ला खड़ा किया।
कौन समझता था भूगोल यह, जिसको माँ ने बता दिया।।

हो प्रयाग या हो कुण्डलपुर, जैन ध्वजा अब लहराती।
ज्ञानमती ने नारी को इक, नईचेतना दे डाली।।

यही कामना यही कल्पना, तुम नारी की शान हो।
पथ रत्नत्रय की अनुगामी, चारित्र प्रबल बलवान हो।।

ज्ञानमति हों केवलज्ञानी, समवसरण के हम प्रत्याशी।
ज्ञानमती ने नारी को इक, नई चेतना दे डाली।।

-श्रवण कुमार जैन (प्रतिष्ठाचार्य), बण्डा (सागर) म.प्र.

पारसमणि सा व्यक्तित्व

आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी से हमारा परिचय उनके साहित्य के माध्यम से हुआ है। आपने साहित्य एवं तीर्थ निर्माण के क्षेत्र में विलक्षण कार्य किया है। अवध प्रान्त के टिकैतनगर में सन् 1934 में शरदपूर्णिमा की रात्रि में धरती पर एक चांद अवतीर्ण हुआ। कन्या के रूप में मानों कोई देवी ही वरदान बनकर आई थी। आपका बचपन का नाम मैना था। वैसे पारसमणि लोहे को सोना तो अवश्य बनाता है परन्तु पारस नहीं बनाता। किन्तु "आर्यिका रत्न गणिनीप्रमुख पूज्य 105 श्री ज्ञानमती माताजी" ने अपना जीवन तो पारस सम बनाया ही परन्तु अपने सम्पर्क एवं सानिध्य में रहने वाले समस्त जीव आपके द्वारा रचित एवं व्याख्यायित साहित्य को हृदयंगम कर स्वयं भी पारस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम बन रहे हैं। आपके व्यक्तित्व को शब्दों में बांधने की कोशिश वैसी ही है, जैसे महासागर को पार करने की कोशिश। निवृत्ति मार्ग में रहते हुए भक्ति मार्ग आपसे अछूता नहीं रहा, आपके इन्द्रध्वज और कल्पद्रुम जैसे पूजन-विधान सम्पूर्ण भारत में भक्तिरस के साथ-साथ आगम एवं अध्यात्म का रसपान करा रहे हैं। आपने जहाँ गूढ़ और रहस्यात्मक साहित्य पर टीकाएं लिखीं, वहीं बालोपयोगी साहित्य का सृजन भी किया। जितना आकर्षण उनके बाह्य व्यक्तित्व का है, उतनी ही वे अंतर से भी सरल, उदार, सौम्य और स्नेही हैं। मैं उनके इस 51वें दीक्षा जयंती के अभिनंदन अवसर पर कामना करती हूँ कि वे अखण्ड बल से परिपूरित हों ताकि लोकसेवा का उनका कार्य अनवरत चलता रहे।

सादा जीवन और है, सचमुच उच्च विचार,
सेवा मानव जाति की, ये पावन संस्कार।
जैन जगत नक्षत्र बन, करते रहें प्रकाश,
श्रद्धा सद्गुरु धर्म में, समता में विश्वास।
है मेरी शुभ भावना, पूज्य माताजी एक,
पथ दर्शन करते हुए, जीओ वर्ष अनेक।

-श्रीमती महिमा जैन, लाडनूँ (राज.)

पचास वर्षीय संयम यात्रा

गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के नाम को जैन समाज में सभी आदर के साथ लेते हैं। नाम उसी का जाना जाता है, जो कुछ काम करता है, ऐसा काम, जिसे साधारण जन न कर सकें। पूज्य ज्ञानमती माताजी ने अपनी पचास वर्षीय संयम यात्रा में ऐसे-ऐसे अद्भुत कार्य किये हैं, जो अन्य साधु-साध्वियों द्वारा करने संभव नहीं हुए। ज्ञानमती माताजी ने जितने भी कार्य किए हैं, यद्यपि उनकी गणना करना संभव नहीं है तथापि दिग्दर्शन मात्र के लिए उनके कार्यों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम कार्य तो ऐसे हैं, जो उन्होंने केवल अपने लिए, अपनी आत्मा के उद्धार के लिए, कर्म निर्जरा के लिए किए हैं। दूसरे प्रकार के कार्य वे हैं, जो उन्होंने जैन सरस्वती के संवर्द्धन के लिए, जैन आगम के प्रचार-प्रसार के लिए किए हैं। तीसरे प्रकार के कार्यों में उन कार्यों का उल्लेख किया जा सकता है, जो उनकी छत्र-छाया में जैनधर्म के प्रचार-प्रसार के लिए, जैन तीर्थों के उद्धार के लिए तथा जैन संस्कृति एवं सभ्यता को सभी जनों के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए किए गए हैं।

माता ज्ञानमती जी जो आज जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी के रूप में प्रतिष्ठित हैं, ने अट्ठारह वर्ष की अवस्था से ही जिस संयम साधना को दीक्षा के रूप में स्वीकार किया था, उसे वे निरन्तर बढ़ाती चली जा रही हैं। साधु के पाँच महाव्रतों को उन्होंने जिस कठोरता और निष्ठा के साथ पालना आरंभ किया था, उसी का परिणाम यह है कि वे आज गणिनी के पद पर विराजमान हैं। पाँचों इन्द्रियों के विषयों का निरोध करती हुईं, वे एकमात्र अपने संयम धन की सुरक्षा में तन्मय हैं।

माताजी एक सरल स्वभाव की साध्वी हैं। कोई लुकाव, छिपाव, दुराव उनमें नहीं है, जो वो कहती हैं वैसा ही उनके मन में होता है और वही उनके कार्यों में भी प्रस्फुटित होता है।

तात्पर्य यह है कि माताजी ने अपने पचास वर्ष के संयमी जीवन में कभी भी साधुत्व में दोष नहीं आने दिया। आचार की जिस स्वच्छ चादर को उन्होंने पचास वर्ष पहले ओढ़ी थी, आज तक वह स्वच्छ और उजली है। उनकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

संयम के प्रति जो जागरूकता है, जो सावधानी है और जो प्रमादहीनता है, वह अन्यत्र दुर्लभ नहीं तो कठिन अवश्य है। उनका यह आत्मोद्धार का कार्य उन्हें जन-जन के लिए आदरणीय बनाता है।

माताजी एक उच्च साध्वी तो हैं ही, साथ-साथ परम विदुषी भी हैं। उनके वैदुष्य ने उनके साधुत्व को सुगंधित बनाया है। साधुत्व और वैदुष्य दोनों उनमें एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर हैं। पचास वर्ष पहले दीक्षा से पूर्व उनकी शिक्षा, बहुत अधिक नहीं थी परन्तु अपने स्वाध्याय के बल पर उन्होंने अपने पांडित्य को इतना बढ़ा लिया है कि आज बड़े-बड़े विद्वान भी उनकी बौद्धिक प्रतिभा का लोहा मानते हैं। जैन, अजैन सभी आगमों का उन्होंने गहन-अध्ययन किया है। प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी के अतिरिक्त और भी अनेक भाषाओं पर उन्हें पूर्णाधिकार प्राप्त है। जैन आचार्यों के द्वारा लिखे गए समस्त जैन वाङ्मय को उन्होंने बड़ी गहराई से पढ़ा है। प्राकृत तथा संस्कृत आगमों में उनकी पैठ है। आगमों की गहराई और मर्म को उन्होंने बड़ी बारीकी से समझा है। कठिन से कठिन आगम ग्रंथ भी उन्होंने बड़ी रुचि के साथ पढ़े हैं। उनका ज्ञान तलस्पर्शी है। वे जो बोलती हैं, वह सब आगमसम्मत होता है।

माताजी एक विदुषी होने के साथ-साथ एक सिद्धहस्त, प्रतिभासम्पन्न लेखिका भी हैं। संस्कृत और प्राकृत में निबद्ध अनेक शास्त्रों का उन्होंने बहुत सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा की गई टीकाएँ मूल विषय को सरल और हृदयंगम बना देती हैं, उन्होंने दर्शन, न्याय, व्याकरण आदि सभी विषयों पर लिखा है। अष्टसहस्री जैसे कठिन ग्रंथ, जिसे विद्वानों में कष्टसहस्री कहा जाता है , उसका भी माताजी ने बहुत मर्मस्पर्शी अनुवाद किया है।

माताजी गद्य-पद्य सभी में लिखती हैं। वे लिखती हैं, तो लिखती ही चली जाती हैं। उन्हें साक्षात् सरस्वती कहा जाता है। उनके हाथ से लगभग छोड़े-बड़े 200 से अधिक ग्रंथ लिखे गए हैं। उनकी सभी रचनाएँ प्रामाणिक और मौलिक हैं। अनेक ग्रंथों की उन्होंने संस्कृत टीकाएँ भी लिखी हैं।

माताजी के 50 वर्ष की संयम यात्रा में जो तीसरा महत्वपूर्ण कार्य हुआ है, वह है तीर्थोद्धार, जैन संस्कृति का उन्नयन और जैनधर्म की प्राचीनता का उद्घोष।

पूज्य माताजी ने 50 वर्ष पूर्व दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् संपूर्ण भारतवर्ष में पद विहार करते हुए जैन धर्म का महान प्रचार-प्रसार किया। शायद ही कोई ऐसा प्रदेश हो, जिसे उन्होंने पाद-स्पर्श से पवित्र न किया हो। वे जहाँ-जहाँ भी गईं, वहाँ-वहाँ अपने विहार की निशानी स्वरूप कोई न कोई ऐसी स्मृति अवश्य छोड़ती गईं, जिससे लोग आज भी याद करते हैं। माताजी ने प्राचीन जैन तीर्थों का महान उद्धार किया। अपनी साधु मर्यादा में रहते हुए भी उनके दिग्दर्शन से अनेक जैन तीर्थों ने अपने नये स्वरूप को प्राप्त किया।

प्रयाग जो कि भारत की प्राचीन सांस्कृतिक भूमि है, वहाँ पर जैन समाज का कोई भी उल्लेखनीय एवं दर्शनीय स्मारक नहीं था। माताजी की शुभ प्रेरणा से वहाँ पर एक विस्तृत भू भाग में भगवान ऋषभदेव के दीक्षा तीर्थ की स्थापना की गई और भव्य कैलाशपर्वत पर भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा स्थापित करने के साथ अन्य भी भव्य जिनालयों का निर्माण हुआ। आज वह जैन समाज के एक तीर्थक्षेत्र के रूप में विकसित है। यात्रियों की सुविधा के लिए धर्मशालाओं व भोजनालयों का वहाँ विशेष निर्माण हुआ है।

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर जो कि जन-जन की श्रद्धा का केन्द्र है, उसको नयारूप प्रदान करने में माताजी का विशेष योगदान रहा है। कुछ लोगों ने नालंदा के समीप स्थित इस कुण्डलपुर की धरा को विवादास्पद बनाकर वैशाली को भगवान महावीर की जन्मस्थली निर्धारित करने का निष्फल प्रयास किया तथा इस कुण्डलपुर की घोर उपेक्षा की। तब पूज्य माताजी ने स्वयं कुण्डलपुर पदार्पण किया और विभिन्न प्रमाणों से इस कुण्डलपुर को ही भगवान महावीर की जन्मभूमि सिद्ध किया। उनकी प्रेरणा से क्षेत्र में विभिन्न निर्माणकार्य हुए और कुण्डलपुर ने नया रूप प्राप्त किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्य भी स्थानों पर अनेक प्रकार के धार्मिक स्थलों का निर्माण हुआ। माताजी ने जहाँ भी चरण रखे, वहीं कोई न कोई विशेष धार्मिक स्थल निर्मित हुआ।

अजैन ही नहीं, बल्कि अधिकांश जैन लोग भी यह मानते हैं कि जैनधर्म का प्रारंभ भगवान महावीर से हुआ। भगवान महावीर ही जैन धर्म के प्रथम संस्थापक हैं। माताजी ने इस जनभ्रान्ति को समूल नष्ट करने के लिए भगवान आदिनाथ की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया।

पूज्य माताजी ने जैन संस्कृति के संरक्षण, परिवर्द्धन और विकास के लिए ऐसे अनेक कार्य किए हैं, जो उनकी 50 वर्षीय संयम साधना को चारचाँद लगा रहे हैं। माताजी की दीक्षा के 50 वर्ष अत्यंत जागरूकता से आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक उत्थान में व्यतीत हुए। पचास वर्ष के दीक्षाकाल में माताजी द्वारा जैन समाज को जो प्राप्त हुआ, वह शब्दों की सीमा में नहीं समा सकता। उन्होंने जैन साधना को ऐसे चरम बिन्दु पर लाकर स्थापित किया है, जिसकी किसी अन्य साधक से तुलना नहीं की जा सकती। वे एक महान तपस्विनी, एक प्रकाण्ड विदुषी, सिद्धहस्त लेखिका तथा जैन संस्कृति की महान् उन्नायिका हैं।

इस पचासवीं आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती पर उनके चरणों में कोटिशः नमन्।

-डॉ. प्रकाशचंद जैन, साहिबाबाद

मूल को नहीं भुलाया जा सकता

पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने अपने आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर 51वें वर्ष में प्रवेश किया है, यह जानकर मन में अतीव हर्ष हुआ। साधारण जन तो अपने गृहस्थ जीवन में अपने परिवार के पालन-पोषण और संरक्षण करने में ही अपने को सुखी मानते हैं। पूज्य माताजी ने तो 72 वर्ष की अवस्था में अपने दीक्षित जीवन के 50 वर्ष त्याग तपस्या, व ज्ञानाराधना में व्यतीत किए और न जाने कितने भव्य प्राणियों को सन्मार्ग में लगाया। पूज्य ज्ञानमती माताजी तो मार्ग का निर्माण करने वाली हैं, जिस पर चलकर न जाने कितने भव्य प्राणी अपना आत्मकल्याण कर रहे हैं। हमारे सनावद नगर में भी धर्म का मार्ग प्रशस्त करने वाली पूज्य माताजी ही हैं, जिन्होंने सन् 1967 में वहाँ चातुर्मास कर दो युवाओं को वैराग्यमार्ग पर अग्रसर किया, तो आज आगे की युवा पीढ़ी भी उसका अनुसरण कर अपना आत्मकल्याण कर रही है। गुरु के मार्गदर्शन व आशीर्वाद से ही प्राणी सही दिशा को प्राप्त कर अपने जीवन को आदर्श बना सकता है। प्रभुभक्ति और गुरुभक्ति करके ही हम इस संसार समुद्र से पार हो सकते हैं। स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर पूज्य माताजी के चरणों में विनम्र विनयांजलि।

-धरमचंद जैन (काका), सनावद (म.प्र.)

एक अनोखा संस्मरण

भारतीय श्रमण परम्परा के दिव्याकाश में दैदीप्यमान आदित्य की भाँति अपनी ज्ञान-रश्मियों से जन-जन को प्रकाशित करने वाली परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा से सभी तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों को विकसित तीर्थ का रूप देने का कार्य चल रहा है और जो जन्मभूमियाँ उपेक्षित रही हैं, वहाँ भी भव्य एवं विशाल मंदिरों का निर्माण कराया जा रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के जीर्णोद्धार की श्रृंखला में एक कड़ी और जुड़ी राजगृही नगर। पूज्य माताजी ससंघ का वर्ष 2003 में राजगृह क्षेत्र पर प्रथम बार मंगल पदार्पण हुआ। राजगृही नगर के प्रवेश द्वार पर पूज्य माताजी ससंघ का भव्य स्वागत किया गया। तत्पश्चात् पूज्य माताजी धर्मशाला पधारीं। यहाँ आकर उन्होंने मुझसे चर्चा के क्रम में पूछा कि राजगृह नगर में किन तीर्थंकर भगवान का जन्म हुआ था? मैं इस प्रश्न से विचलित हो गया। कुछ देर सोचा किन्तु उत्तर नहीं दे पाया। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की जन्मभूमि राजगृही नगरी है। तब मुझे स्मरण आया कि मैं तो यह जानता ही था, किन्तु कैसे भूल गया।

दरअसल बात यह थी कि राजगृही क्षेत्र का महत्व भगवान महावीर की प्रथम देशनास्थली एवं कुछ मुनियों की निर्वाणभूमि के रूप में अधिक प्रचारित-प्रसारित किया जाता रहा था और भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की जन्मभूमि भी यही नगर है, इस बात पर कोई ध्यान ही नहीं देता था। इसलिए उस क्षण मेरे दिमाग में यह बात नहीं थी और फिर जैसे ही पूज्य माताजी ने बताया, वैसे ही स्मरण में आ गया। इसके थोड़ी ही देर बाद पूज्य माताजी ने पुनः राजगृही के स्थानीय समाज एवं अन्य कर्मचारियों (दिगम्बर जैन धर्मशाला के) से भी यही प्रश्न पूछा किन्तु किसी ने भी उत्तर नहीं दिया। पूज्य माताजी को इस बात से आश्चर्य हुआ कि जब यहाँ के निवासी ही नहीं जानते हैं, तो बाहर से आने वाला कैसे जानेगा?

उसी दिन सायंकाल में पूज्य माताजी के मंगल प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित था। पूज्य माताजी ने अपने मंगल प्रवचन में बताया कि राजगृह नगर बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की जन्मभूमि है। यहाँ भगवान के चार कल्याणक गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञानकल्याणक हुए हैं। उन्होंने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि आज यह जन्मभूमि विस्मृत सी हो गयी है। उन्होंने कहा कि सर्वप्रथम यहाँ एक ऐसा बोर्ड लगाया जाये, जिसमें लिखा हो कि यह नगरी बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की जन्मभूमि है। यहाँ भगवान के चार कल्याणक-गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञानकल्याणक हुए हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि यहाँ पर भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की एक मनोज्ञ एवं विशाल खड्गासन प्रतिमा की स्थापना की जाये ताकि राजगीर में रहने वाले एवं बाहर से आने वाले सभी जैन-जैनेतर यह जान सकें कि यह किस भगवान की जन्मभूमि है।

फिर क्या था पूज्य माताजी की मंगल प्रेरणा से बोर्ड तो शीघ्र ही लगवा दिया गया और श्री अनिल कुमार जैन-दिल्ली के सौजन्य से लालमंदिर परिसर में भव्य कमल मंदिर का निर्माण कराकर साढ़े बारह फुट की मनोज्ञ एवं विशाल खड्गासन प्रतिमा को स्थापित किया गया और धूमधाम से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराई गई। अब राजगृह आने वाले सभी तीर्थयात्री एवं पर्यटक बिना बताए ही जान जाते हैं कि राजगृह भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की जन्मभूमि है। यह कार्य पूज्य माताजी की मंगल प्रेरणा से पूर्ण हुआ जो राजगृह नगर एवं जैन समाज को गौरव प्रदान करने वाला है।

जैनधर्म एवं संस्कृति के संरक्षण में सदैव चिंतनशील, चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का वर्णन करना मुझ जैसे अल्पज्ञानी के लिए सूर्य को दीपक दिखाने जैसा ही है। पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के स्वर्ण जयंती महोत्सव के पावन अवसर पर अपनी सादर विनयांजलि अर्पित करते हुए यह मंगल कामना करता हूँ कि पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के अमृत जयंती महोत्सव मनाने का भी सुअवसर हमें प्राप्त हो। पूज्य माताजी के श्रीचरणों में सादर शत-शत वंदन।

-डॉ. हेमन्त कुमार, राजगीर (नालंदा) बिहार

(सम्पादक-महावीर विमल देशना)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

जैनागम के उन्मुक्त गगन पर, कीर्ति जिनकी अविराम है।
आर्यिका श्री ज्ञानमती को, बारम्बार प्रणाम है।।

जैन संस्कृति गुणाराधक संस्कृति है। ''वन्दे तद्गुण लब्धये'' की परम्परा का अनुकरण करते हुए मनुष्य अपने आराध्य के श्रीचरणों में भक्ति के पुष्प चढ़ाने एवं यशोगाथा का गौरवगान करने को सदैव तत्पर रहता है। पूज्या आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का गौरवग्रंथ प्रकाशन भी इसी परम्परा की एक कड़ी है। ग्रंथ प्रकाशन के समाचार से ''गुणिषु प्रमोदम्'' की भावना से मेरा अन्तःकरण भी प्रफुल्लित हो उठा। ऐसे गहनीय व्यक्तित्व का अभिनंदन वास्तव में अपनी आस्था का अभिवंदन है।

पूज्या माताजी का व्यक्तित्व बहुआयामी प्रतिभा एवं चुम्बकीय शक्ति से समन्वित है। आपने अपनी साधना से, आराधना से और मांगल्यपूर्ण कर्म-कर्तृत्वभाव से इस भव को समुन्नत किया है। आपने न स्वयं अपना कल्याण किया है अपितु अपने परिवार के भाई-बहनों को एवं माँ को धर्ममार्ग पर लगाकर परिवार का भी पथ प्रशस्त किया है।

विपुल साहित्य सृजन एवं हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप), कुण्डलपुर, दीक्षा तीर्थ- प्रयाग, अयोध्या जैसे तीर्थों पर अमिट निर्माण कार्यों ने ज्ञानमती इस नाम को अमरत्व प्रदान कर दिया है। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़ आदि विभिन्न भाषाओं में पूर्वाचार्यों, साहित्य मनीषियों द्वारा प्रणीत जटिल ग्रंथों को आपने अपनी सरल सुबोध भाषा एवं शैली में लोकोपयोगी रूप में प्रस्तुत करके अविस्मरणीय उपकार मानवता के ऊपर किया है। आपकी लेखनी से प्रसूत चतुरनुयोग का साहित्य सदियों तक के लिए अमर हो गया। आपके द्वारा रचे हुए हिन्दी पूजन-विधानों से आम जनता लाभ उठा रही है।

आपके द्वारा अब तक लगभग 200 से भी अधिक ग्रंथों की रचना की जा चुकी है। लेखन कार्य लगातार जारी है। व्याकरण, साहित्य, दर्शन, छंद आदि शास्त्रों का आपको तलस्पर्शी ज्ञान है। अष्टसहस्री की टीका आपके न्यायविषयक वैदुष्य को प्रकट करती है, तो नियमसार की टीका आपके सैद्धान्तिक तथा संस्कृत ज्ञान की द्योतक है। विविध विधानों की रचना आपकी काव्य प्रतिभा की परिचायक है। आप विश्व की प्रथम भारतीय नारी हैं, जिन्होंने जैन गणितीय त्रिलोक संरचना में से जम्बूद्वीप की रेखागणित को साकार रूप प्रदान किया। जैन विद्या की कोई भी विधा शेष नहीं है, जिस पर आपने लेखनी न चलाई हो।

अनेक विश्वविद्यालयों में आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर शोध कार्य सम्पन्न हो चुके हैं और अनवरत रूप से विश्वविद्यालय स्तर पर शोधकार्य जारी है। साध्वी जगत् में विद्वत्ता के नाते आज माताजी का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि आर्यिकाओं द्वारा इतने विशाल स्तर पर ग्रंथ रचना करने का युग गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से ही प्रारंभ हुआ है।

गौरव ग्रंथ प्रकाशन के अवसर पर मेरी आपके प्रति यही विनयांजलि है कि आप शतायु होकर हमें सम्यग्ज्ञान देती रहें और ज्ञान का प्रकाश फैलाती रहें। बारम्बार वंदामि-

-डॉ. कृष्णा जैन, ग्वालियर (म.प्र.)

(प्राध्यापक-संस्कृत महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तप:पूत भक्ति से-मृत्यु पर विजय

या देवी सर्वभूतेषु,मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै,नमस्तस्यै नमो नमः।।

भारतीय नारी सृष्टि के प्रारंभ से अनंत गुणों का आगार रही है। पृथ्वी सी क्षमा, सूर्य जैसा तेज, समुद्र सी गंभीरता, चन्द्रमा सी शीतलता, पर्वतों सी मानसिक उच्चता हमें एक साथ नारी के हृदय में दृष्टिगोचर होती है। ऐसी जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी को पूर्व जन्म के संस्कारवश विलक्षण बुद्धि, ज्ञान का क्षयोपशम और महान प्रतिभा प्राप्त हुई है। इस अभूतपूर्व प्रतिभा के उपयोग से आपने 200 से अधिक ग्रंथों को लिखकर जैन साहित्य जगत में नया कीर्तिमान स्थापित किया तथा सिद्धहस्त लेखिका के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। वैसे तो समाज में अनेक आर्यिकाएँ हैं, किन्तु आपका तेजस्वी, विद्वत्तापूर्ण नाम उनकी माला में सुमेरु के समान शीर्षस्थ है। आपने अपनी अद्वितीय सूझबूझ से अनेकानेक तीर्थों का उद्धार किया। साथ ही जैनागम में वर्णित भूगोल को धरती पर साकाररूप प्रदान कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

मनुष्य के जीवन में कभी-कभी ऐसी घटनाएं घटती हैं, जिसकी स्मृति जीवन पर बनी रहती है। आपके जीवन में तीन बार गंभीर अस्वस्थता के क्षण आये। एक बार सन् 1964 में हैदराबाद में और दूसरी बार सन् 1985 में हस्तिनापुर में। जब संग्रहणी एवं पीलिया रोग के प्रकोप चरम सीमा तक पहुँच गए थे। प्रत्येक डाक्टर, वैद्य, ज्योतिषी आदि ने इनकी स्थिति देखकर निर्णय दे दिया था कि 2-4 दिन से अधिक ये जीवित नहीं रह सकती हैं। अपनी दृढ़ता के बल पर संयम में पूर्ण सावधान रहती हुईं पूज्य माताजी प्रतिदिन नियम सल्लेखना ग्रहण करते समय इन्द्रध्वज की जयमाला, स्तुतियाँ आदि को भक्ति में तल्लीन होकर सुनती रहीं, जिससे कुछ दिनों में तीव्र असाता कर्म टल गये और इन्हें नवजीवन प्राप्त हुआ। भगवान की प्रगाढ़ भक्ति में लीन होकर उस गंभीर स्थिति में सुधार होते ही उन्होंने 'जम्बूद्वीप विधान' की रचना कर डाली और उसे लिखते-लिखते पूर्ण स्वस्थ हो गईं। उस विधान का दूसरा नाम "महामृत्युंजय विधान" रख दिया, जो अकाल मृत्यु को पराजित करने में अमोघ शस्त्र के समान है। ऐसी पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षा के पचास वर्षों की पूर्णता पर उनके प्रति मैं विनयांजलि अर्पित करती हूँ और जिनेन्द्र प्रभु से उनके दीर्घजीवन की मंगल कामना के साथ उनके श्रीचरणों में शत-शत नमन करती हूँ।

-श्रीमती डॉ. वंदना जैन, आगर-मालवा

विनयांजलि

आज से 50 वर्ष पूर्व चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा प्राप्त परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की 50वीं दीक्षा जयंती की सम्पूर्ति के अवसर पर हार्दिक विनयांजलि अर्पित करता हूँ। परमपूज्य माताजी द्वारा जो भी तीर्थंकर जन्मभूमियों का जीर्णोद्धार, तीर्थक्षेत्रों की रचना व लगभग 200 ग्रंथों का लेखन किया गया है, वह अपने आप में एक कीर्तिमान है। माताजी द्वारा हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना, इलाहाबाद में प्रयाग तीर्थ की रचना व भगवान महावीर के 2600वें जन्मजयंती वर्ष के अन्तर्गत भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल की रचना करना एक अलौकिक व ऐतिहासिक कार्य है। इलाहाबाद-प्रयाग में भगवान ऋषभदेव के तप एवं ज्ञान प्राप्ति की याद दिलाने वाले किसी तीर्थ का न होना एक बहुत बड़ी कमी थी, जिसे माताजी ने दीक्षास्थली तीर्थ के रूप में निर्माण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कराकर पूरा किया। इसी प्रकार भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर, जहाँ पर एक छोटा प्राचीन मंदिर था तथा कोई यात्री ठहरना भी पसंद नहीं करते थे तथा दर्शन करके ही चल देते थे, ऐसे स्थान पर माताजी ने अपनी प्रेरणा से भगवान महावीर की मूर्ति स्थापना, नंद्यावर्त महल तथा धर्मशाला आदि बनवाकर बहुत बड़ा उपकार किया है, जिसे दिगम्बर जैन समाज कभी भी नहीं भुला सकती। इसी प्रकार 5 तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या, जहाँ पर आचार्य देशभूषण जी महाराज द्वारा 31 फुट ऊँची प्रतिमा की स्थापना करने के बाद भी उस स्थान का पूर्णरूप से प्रचार-प्रसार न होने के कारण गौण हो गया था, वहाँ पर समवसरण जिनमंदिर, तीन चौबीसी जिनमंदिर, 2 सुन्दर धर्मशालाओं एवं भोजनशाला का भव्य निर्माण करवाकर एवं महामस्तकाभिषेक करवाकर उक्त स्थान को आज महत्ता प्रदान कर दी है। उसी प्रकार कौशाम्बी भगवान पद्मप्रभु की जन्मभूमि का भी जीर्णोद्धार करवाकर वहाँ भी काफी कुछ निर्माण किया गया है। इतना ही नहीं, पूज्य माताजी की प्रेरणा से मांगीतुंगी जी के पहाड़ पर ही 108 फुट ऊँची आदिनाथ भगवान की मूर्ति का निर्माणकार्य चल रहा है, इसी वर्ष काकंदी (गोरखपुर) में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि का भी उद्धार करने का निर्णय लिया गया। वहाँ पर नये मंदिर का शिलान्यास भी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसी प्रकार पूज्य माताजी ने लगभग 200 ग्रंथों की रचना कर इन्द्रध्वज मण्डल विधान, कल्पद्रुम मण्डल विधान, विश्वशांति महावीर विधान, सिद्धचक्र महामण्डल विधान, आदि कई मण्डल विधान एवं बोधगम्य शास्त्रों की रचना कर जो अनमोल रत्न समाज को दिये हैं, उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाये, वह कम है। ऐसी 105 गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के प्रति उनके 50वें दीक्षा दिवस पर मैं अपनी हार्दिक विनयांजलि समर्पित करता हूँ। मुझे पूज्य माताजी का आशीर्वाद व सहयोग मिलता रहे तथा माताजी दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति करते हुए प्रगति की ओर अग्रसर होती रहें, यही मेरी वीरप्रभु से प्रार्थना है।

-उत्तमचंद निर्खी, कोटा-राज.

(कार्याध्यक्ष-युवा परिषद एवं उपाध्यक्ष-कोटा दि. जैन समाज)

विनयांजलि

भारतवर्ष में गुरु परम्परा पुरातन काल से चली आ रही है। ज्ञात-अज्ञात करोड़ों गुरुजनों की परम्परा का ज्ञान ग्रंथों से मिलता है। उदाहरण तौर पर परमपूज्य उमास्वामी, जिनसेनाचार्य, मानतुंगाचार्य, अमृतसेन, पूज्यपाद ऐसे अनेक आचार्यों को हमने कभी देखा नहीं लेकिन उनके द्वारा लिखित ग्रंथों से भवसागर पार करने का मार्ग मालूम होता है। बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती 108 शांतिसागर जी महाराज के बारे में जानते हैं, पर उनको भी देखने का सौभाग्य नहीं मिला। पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का 50वाँ स्वर्णिम आर्यिका दीक्षा दिवस मना रहे हैं। माताजी ने आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा में दीक्षा ली है, यह अहोभाग्य है।

पूज्य माताजी द्वारा रचित साहित्य हम पूरा पढ़ सकें, तो जन्म सार्थक होगा। माताजी के साहित्य में क्या नहीं है? पूजा, विधान, व्याकरण, न्यायदीपिका आदि के अनेक ग्रंथों का समावेश है।

ऐसी परमपूज्य आर्यिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा का स्वर्णिम दिवस मनाने का दुग्ध-शर्करायोग मिल रहा है। बीसवीं सदी में दीक्षित आर्यिका माता का 21वीं सदी में यह महोत्सव हम अपने नयनों से देखने वाले साक्षीदार बन रहे हैं, यह हमारा परम सौभाग्य है।

पूज्य माताजी का यह पवित्र कार्य अखंड चलता रहे, उनको दीर्घायु मिले, इस कामना से आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

-सौ. अरुणा सी. पाटिल, पुणे (महाराष्ट्र)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माँ शत-शत तुम्हें प्रणाम है

युगों-युगों से ज्ञान की गंगा, जहाँ बहती अविराम है,
तीन लोक चौदह भुवनों में, यही वो पावन धाम है,
तीर्थंकर भगवान की भूमि, लोचन ललित ललाम है,
माँ ज्ञानमती की कर्मभूमि है, शत-शत इसे प्रणाम है।

धर्म क्रांति लाने वाली, आगम ज्योति जगाने वाली,
कीर्ति ध्वजा फहराने वाली, अक्षय पद पहुँचाने वाली,
ऋषि-मुनियों की पावन भूमि, शत्-शत् इसे प्रणाम है,
माँ शत-शत तुम्हें प्रणाम है, माँ शत-शत तुम्हें प्रणाम है।

चरण तुम्हारे पड़े धरा पर, फैला जग में उजियारा,
छाया था जो युगों-युगों से, दूर हुआ सब अंधियारा,
श्रीमुख से हुई स्वयं प्रवाहित, आगम की निर्मल धारा,
सम्यक् दर्शन, ज्ञान चरित, सब सहज भाव उर में धारा।

मन भाव विमल करने वाली, जग का कल्मष हरने वाली,
हे! शुभ्र ध्यान धरने वाली, हे! मोक्ष वरण करने वाली,
हे! माता तुम्हें प्रणाम है, शत्-शत् तुम्हें प्रणाम है,
माँ शत-शत तुम्हें प्रणाम है, माँ शत-शत तुम्हें प्रणाम है।

धर्म संस्कृति रक्षा हित माँ, जीवन तुमने वार दिया,
सन्मार्ग से भटके जन का, तुमने माँ उद्धार किया,
जीयो और जीने दो सबको, जिनधर्म का सार दिया,
काट बेड़ियाँ भवबंधन की, भव सागर को पार किया।

ज्ञान की ज्योति जगाने वाली, अमृत पान कराने वाली,
जीवन को हर्षाने वाली, प्रेम सुधा बरसाने वाली,
हे! माता तुम्हें प्रणाम है, शत्-शत् तुम्हें प्रणाम है,
माँ शत-शत तुम्हें प्रणाम है, माँ शत-शत तुम्हें प्रणाम है।

भावों के सौरभ सुमनों से, माँ का अभिनंदन करते हैं,
मन प्रेम सुधारस भाव जगा, हम शत्-शत् वंदन करते हैं,
भावों के अक्षत चन्दन से, हम माँ की पूजन करते हैं,
हे! हंस वाहिनी वाणी माँ, हम तेरा अर्चन करते हैं।

मन भाव विमल करने वाली, जग का कल्मष हरने वाली,
हे! शुभ्र ध्यान धरने वाली, हे! मोक्ष वरण करने वाली,
हे! माता तुम्हें प्रणाम है, शत्-शत् तुम्हें प्रणाम है,
माँ शत-शत तुम्हें प्रणाम है, माँ शत-शत तुम्हें प्रणाम है।

-लक्ष्मी नारायण सरस्वती, मेरठ (उ.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया जा रहा है, यह गौरव एवं प्रतिष्ठा की बात है।

पूज्य माताजी ने जैनधर्म, धर्मायतन एवं संस्कृति के संरक्षण में जो अवदान दिया है, वह चिरस्मरणीय रहेगा।

अल्पप्रवास में बिहार प्रान्त के क्षेत्रों पर जो निर्माण एवं विकास का ऐतिहासिक कार्य कराया, वह सदी का अद्वितीय कार्य कहा जा सकता है।

हस्तिनापुर क्षेत्र के निर्माण के पूर्व से ही मुझे पूज्य माताजी का सानिध्य एवं वात्सल्य प्राप्त हुआ, जिसके लिए मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूँ।

वीरप्रभु से मेरी कामना है कि पूज्य माताजी शतायु हों एवं जैनधर्म का सर्वांगीण विकास करते हुए मुक्तिपथ की राही बनें।

गौरव ग्रंथ के प्रकाशनार्थ मैं समिति को बधाई एवं साधुवाद देता हुआ पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि प्रस्तुत करता हूँ।

-स्वरूपचंद जैन सोगानी, हजारीबाग

स्वाध्याय का प्रतिफल माँ ज्ञानमती जी

हम सभी महमूदाबादवासी बहुत ही गर्व का अनुभव कर रहे हैं कि जिन ज्ञानमती माताजी का नाम आज बच्चा-बच्चा लेता है, महमूदाबाद उनकी ननिहाल है।

सन् 1914 में श्री सुखपालदास और मत्तोदेवी से कन्या मोहिनी ने जन्म लिया। बचपन से ही मोहिनी में धर्म के संस्कार पिता जी ने डाले। विवाह के समय 'पद्मनंदिपंचविंशतिका' ग्रंथ दहेज में भेंट देकर पुत्री से पिता जी ने कहा था-बेटी तुम इस ग्रंथ का प्रतिदिन स्वाध्याय अवश्य करना तुम्हारा गृहस्थ धर्म सफल होगा। मोहिनी ने भी वैसा ही किया। टिकैतनगर में सन् 1934 में मोहिनी देवी ने कु. मैना को जन्म दिया। उस समय प्रसूतिगृह में विशेष आलोक फैल गया था, जिसे देख दादी माँ ने कहा था-कोई देवी का अवतार हुआ है।

माँ मोहिनी मैना को दूध पिलाते भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र पढ़ते हुए दूध के साथ-साथ ज्ञानरूपी अमृत का पान कराती रहती थी। थोड़ी बड़ी होने पर माँ ने मैना को भी पद्मनंदिपंचविंशतिका का स्वाध्याय सुनाने एवं पढ़ने के लिए कहा। मैना को पद्मनंदिपंचविंशतिका ग्रंथ का स्वाध्याय कर बहुत आनन्द हुआ और धीरे-धीरे उसके मन में वैराग्य के अंकुर फूटने लगे।

सन् 1952 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज संघ सहित टिकैतनगर पधारे। उस समय मैना ने महाराज के दर्शन कर दीक्षा देने के लिए कहा लेकिन जब घर वालों को यह बात ज्ञात हुई तो बहुत हल्ला-गुल्ला मचाया,

कु. मैना घर में स्वाध्याय के द्वारा अपने ज्ञान और वैराग्य को बढ़ाती रही। उसने रत्नकरण्ड श्रावकाचार के पूरे श्लोक कण्ठस्थ कर लिए और अपना पाठ महाराज जी को सुनाना है यह बहाना करके बाराबंकी भाई कैलाश के साथ गईं और फिर पुरुषार्थ करके महाराज से सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण करके गृहत्याग कर दिया। उस समय बाराबंकी में माता मोहिनी और पुत्री मैना का रातभर संवाद चला। मैना ने अपने स्वाध्याय के बल पर अपनी माँ को समझा-बुझाकर ब्रह्मचर्यव्रत लेने के लिए तैयार कर लिया था। अंत में हारकर माँ मोहिनी को हाँ करना पड़ा और फिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माँ मोहिनी ने पुत्री मैना से कहा जैसे आज मैं तुम्हें त्याग मार्ग पर चलने के लिए तुम्हारा साथ दे रही हूँ, वैसे ही तुम भी एक दिन मुझे इस गृहस्थरूपी कीचड़ से निकालकर त्यागमार्ग पर लगा देना। पुनः ज्ञानमती माताजी ने अपने दिये वायदे को पूरा किया और समय आने पर सन् 1971 में अपनी माँ को आर्यिका दीक्षा दिलाई, जो आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के नाम से प्रसिद्ध हुई हैं।

जब पूज्य माताजी का जीवन चरित्र, उनके द्वारा लिखित 'मेरी स्मृतियाँ' ग्रंथ में पढ़ते हैं, तो शरीर का रोम-रोम रोमांचित हो जाता है। पूज्य माताजी दो बार (सन् 1993 एवं 2005) महमूदाबाद आईं। जैन क्या जैनेतर सभी बंधुओं को अपने प्रवचन से लाभान्वित किया। सन् 2005 में माताजी की 50वीं दीक्षा जयंती महमूदाबाद में बहुत उत्साह के साथ मनाई गई। पूज्य माताजी ने ग्रंथों के स्वाध्याय के बल पर और पूर्व जन्म से संस्कारवश आज जो ज्ञान का आलोक पूरे विश्व में फैलाया है, उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

माताजी के इस स्वर्णिम दीक्षा जयंती के अवसर पर हम सभी अपनी विनयांजलि अर्पित करते हैं और भगवान से प्रार्थना करते हैं माताजी स्वस्थ रहें और दीर्घायु प्राप्त करें।

-भीमसेन जैन, महमूदाबाद

तुम साक्षात् शुचि शारद हो

(1)

धर्म प्रभावना दानतीर्थ में, जितना भी विस्तार दिया है।
कुण्डलपुर या नालंदा हो, सपना प्रयाग साकार किया है।।
जम्बूद्वीप तो अमरद्वीप है, उसका कोई ना सानी है।
माताजी के उपकारों का, ऋणी हुआ हर प्राणी है।।

(2)

पल-पल कठिन परीक्षा देकर, चुनौतियों को हरा दिया है।
बाधाओं को झेला हँसकर, रस-विष सब स्वीकार किया है।।
खुद कल्याण मार्ग अपनाया, हमें वही पथ दिखलाया है।
शेष बचे जीवन को माँ ने, समझो हमें उधार दिया है।।

(3)

आशीष आपका पाकर माँ, गल दंभ, नीर हो जाता है।
दृष्टि पड़ जाये यदि माँ की, तो जहर खीर हो जाता है।।
स्पर्श आपका पाकर के, कोयला हीरा हो जाता है।
साहित्य सृजक गुणगान करें, तो तुलसी कबीर हो जाता है।।

(4)

माताजी की अमृतवाणी, हम सबका मन हर लेती है।
दिव्याकर्षण है तुममें ऐसा, भक्तिवश में कर लेती है।।
अंतर्मन खिल जाता उसका, जो पास आपके आता है।
चरणों की रज पाकर के माँ, पतझड़ बसंत हो जाता है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(5)

तुमने जो कीर्तिमान तिष्ठे, युग-युग भी भुला न पायेंगे।
जो संस्कार के बीज दिये, तरुवर बनकर यश गायेंगे।।
श्रीचरणों में मेरा प्रणाम, अवलंबन दो, स्वीकारो माँ।
तुम साक्षात् शुचि शारद हो, कवि हृदयासन पे पधारो माँ।।

-डॉ. कमलेश जैन ''बसंत'', बांसवाड़ा (राज.)

कुशल लेखिका

व्यक्ति का परिचय उसका कृतित्व होता है। व्यक्ति से साक्षात्कार भले न हुआ हो किन्तु उसके कृतित्व से प्रभावित होकर उसके प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं बहुमान प्रकट होने लगता है। वन्दनीय 105 आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित प्रायः सभी विधान कराने का सौभाग्य मुझे मिला है। इन विधानों के अध्ययन से उनके करणानुयोग के अधिकारी होने का प्रमाण मिलता है। विधानों को माताजी ने सरल एवं सुबोध शैली में प्रस्तुत कर मध्यम बुद्धि वालों को अनुपम सुग्राह्य सामग्री प्रदान की है। करणानुयोग के गहनतम विषयवस्तु वाले ग्रंथों को उनकी गणितीय संख्या, स्वरूप एवं व्यवस्था को सरल, सुबोध एवं सुग्राह्य भाषा शैली में वर्णन कर भक्त एवं जिज्ञासुजनों का बहुत भारी उपकार किया है। पूजा एवं विधान के क्षेत्र में माताजी ने नये युग का सूत्रपात किया है। युग को नई दिशा दी है, विधान आदि करने का उत्साह एवं प्रेरणा दी है।

आपके द्वारा रचित विधानों के छंदों की भाषा सरल है जिन्हें आधुनिक गीतों की तर्ज पर गाया जा सकता है। इनमें अनेक अलंकारों एवं विविध छंदों का प्रयोग किया गया है,जिससे इसकी रोचकता बढ़ गई है। इनमें सरसता के साथ ज्ञानवर्धक एवं वैराग्य वृद्धि के भावों को भरा गया है, जिसे समाज ने सहजता से स्वीकार किया है। प्राचीन काल की अपेक्षा आज विधानादि अधिक संख्या में होने लगे हैं क्योंकि प्राचीन विधानों की भाषा या तो संस्कृत होती थी या अनेक भाषाओं के कठिन शब्दों का सम्मिश्रण, जो श्रावकों को सरलता से ग्रहण नहीं होती थी। माताजी की सरल, सुबोध, लेखन शैली भक्तों को रुचिकर लगी, जिससे आज विधानादि करने में लोगों की रुचि जागृत होने लगी है। यह परम उपकार 105 गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का है। जिन्होंने बड़े-बड़े ग्रंथों का भाव हमें सरलता से प्राप्त कराया है। आपके जीवन की तपः साधना-आराधना ने पुष्पित एवं पल्लवित होकर स्व-परकल्याण का दीपक प्रज्ज्वलित किया है। आप अब वर्षों की नगण्य परिधि से पार होकर युगों के विशाल सागर में अवगाहन करने लगी हैं। आपकी यशोगाथा युगों-युगों तक गायी जायेगी।

आज हम आपके आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव पर आपको नमन कर अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। इन्हीं भावनाओं के साथ आपके श्रीचरणों में शत-शत नमन करते हुए अपनी विनम्र विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

-पं. सनत कुमार विनोद कुमार जैन, रजवॉस (सागर) म.प्र.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीते कैसे वर्ष पचास

मुझे अपने जीवन में गणिनीप्रमुख श्री माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती मनाने का सौभाग्य मिल रहा है, मैं अपने आपको अत्यंत सौभाग्यशाली मानता हूँ। मैं अपनी अल्प बुद्धि से इस अवसर पर कुछ शब्द लिखने की कोशिश कर रहा हूँ। माताजी के बारे में कुछ लिखना सूरज को दीपक दिखाने जैसी बात है। "जिनकी दीर्घकालीन तपस्या के वर्षों की गिनती जानकर अनेक आचार्य, मुनि, आर्यिकाएं इत्यादि भी इस बात को कहते हुए गौरव का अनुभव करते हैं कि आज जितनी मेरी उम्र भी नहीं है, उससे अधिक तो माताजी की दीक्षा आयु है अर्थात् 18 वर्ष की उम्र में त्यागमार्ग पर जिन्होंने कदम रखा, उन्होंने अपनी जन्मतिथि शरदपूर्णिमा को भी त्याग से सार्थक कर लिया।" दीक्षा के इन अमृतमयी पचास वर्षों में शायद ही कोई पुण्यकार्य शेष रह गया हो, जिसका निष्पादन पूज्य माताजी के करकमलों द्वारा न हुआ हो।

आज इस भारत वर्ष में शायद मैं ही नहीं, सम्पूर्ण जैन सम्प्रदाय गौरवान्वित हुआ है कि भगवान महावीर के शासनकाल में प्रथम नारी ने बालब्रह्मचारी दीक्षा ग्रहण कर एक ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित किया है। संयमी जीवन के इन पचास स्वर्णिम वर्षों में पूज्य माताजी की कलम से दो सौ से भी अधिक महान ग्रंथों का सृजन एवं तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं तपोभूमियों का निर्माण एवं विकास कार्य जैनधर्म की संस्कृति-संरक्षण के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान है, जिसके समक्ष संपूर्ण जैन सम्प्रदाय युगों-युगों तक नतमस्तक रहेगा। विगत बारहवर्षों से पूज्य माताजी का सानिध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त करने का परम सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ है। मुझे एक घटना याद आई, वह लिख रहा हूँ। पूज्य माताजी जब महाराष्ट्र में सन् 1996 में श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र से दिल्ली की तरफ जा रही थी, विहार करते समय कई बार पैदल विहार में मैं माताजी से कुछ धार्मिक चर्चाएं कर रहा था कि अचानक मैंने पूज्य माताजी से एक सवाल किया।"माताजी! यश, कीर्ति एवं धन कैसे प्राप्त होगा?" माताजी ने बहुत ही सरलता से मुझे जवाब दिया यह सब प्राप्त करने के लिए चारों प्रकार का श्रेष्ठदान देना चाहिए। माताजी के इस जवाब को सुनकर मैंने उसी समय से चारों प्रकार के दान में अपने अमूल्य संचय लक्ष्मी का योगदान किया, जिसका मुझे बहुत अच्छा अनुभव हुआ एवं जैसा माताजी ने कहा था यश कीर्ति सम्मान सबकुछ मुझे मिला। माताजी के इस मंगल आशीर्वाद को मैं अपने जीवन में कभी नहीं भूलूँगा। मैं हमेशा माताजी के चरणों में रहकर उनका मंगल आशीर्वाद चाहूँगा। अंत में भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि माताजी दीर्घायु हों, माताजी का रत्नत्रय कुशल हो, संपूर्ण जैन समाज को माताजी का वात्सल्य एवं आशीर्वाद मिले, ऐसी चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के चरणों में मेरी भावभीनी विनयांजलि।

-राजेन्द्र कुमार जैन-मुम्बई (वास्तुविद)

तीर्थंकर प्रकृति की आत्मा

गणिनीप्रमुख, शताधिक ग्रंथों की लेखिका, बहुश्रुत, ज्ञान, ध्यान और तप के असीम समुद्र में डूबी हुई विदुषीरत्न आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के अपने आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूरे हुए और स्वर्ण जयंती महोत्सव सम्पन्न हो रहा है, यह जानकर प्रसन्नता हुई, यह एक ऐतिहासिक घटना है। अभी तक साध्वी जगत् में जो भी दीक्षाएँ हुई हैं, उनमें वैराग्य और त्याग की भूमिका निहित होती है परन्तु श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने जीवन में वैराग्य के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र को अपने संकल्प और साधना के द्वारा परिपुष्ट किया। उनका दृष्टिकोण केवल आध्यात्मिक ही नहीं अपितु धार्मिक क्रांति और संस्कार कैसे हो. इसका प्रात्यक्षिक जम्बूद्वीप के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निमित्त से प्रकट होता है। हमने देखा है कि जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र है, पर यहाँ भारत देश में जम्बूद्वीप निर्माण के द्वारा उसकी अगाध महिमा जन-जन में उन्होंने प्रचारित की। वह स्वयं आत्मकल्याण के प्रति जागरुक हैं और अपने साथ हजारों भक्तों का आत्महित चाहती हैं इसलिए उनकी आत्मा तीर्थंकर समान है।

1934 में शरदपूर्णिमा को टिकैतनगर में जन्म लेकर 1952 में गृहत्याग कर आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज के द्वारा आजीवन ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली। जिस समाज में हम रहते हैं, उसके प्रति हमारा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक योगदान रहे, ऐसी निश्चित भूमिका के साथ श्री ज्ञानमती माताजी ने अपना एक विशाल संस्कारी विश्व निर्माण किया। श्री माताजी की साहित्य सेवा अनुपम है। करीबन 200 ग्रंथों को निर्मित कर इन्होंने अपने जीवन काल में ज्ञानोपासना की, इसलिए वे यथार्थनाम हैं। साहित्यिक और धर्मशास्त्र के वेत्ता विद्वानों को अनेक संगोष्ठी द्वारा आमंत्रित कर उन्हें साहित्यसाधना की प्रेरणा दी। अनेक दुर्लभ गूढ़ सिद्धान्तों का रहस्य उन्होंने अपने लेखन द्वारा प्रकट किया। प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली सम्यग्ज्ञान पत्रिका आपके तौलनिक अध्ययन का प्रमाण है। आप हमेशा स्वाध्याय द्वारा आत्मकल्याण की ओर अग्रसर रहती हैं। आपने जैन सारस्वतों का सत्कार कर उन्हें स्वाध्याय और अध्ययन की प्रेरणा दी है। सामाजिक कतिपय गूढ़ प्रश्नों का आपने योग्य समाधान किया है। मैंने आपके अनेक शिविरों द्वारा यह समझा है कि साध्वीगण सर्वत्र हैं, पर आप जैसे प्रकाण्ड शास्त्रज्ञाता विरले होते हैं। दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर मैं अपनी भावपूर्ण विनयांजलि प्रस्तुत करते हुए आपकी प्रदीर्घायु-आरोग्य की कामना करता हूँ।

-डॉ. कुलभूषण लोखंडे, सोलापुर
(सम्पादक-दिव्यध्वनी)

तुम जन्म-जन्म का वन्दन हो

प्राणों का पुण्य समर्पण हो, तुम जन्म-जन्म का वंदन हो
हे परम आर्यिका ज्ञानमती, तुम श्वासों का अभिनंदन हो।।

क्या कहे काव्य तुम पर कोई, कोई कैसे तुम पर गीत लिखे।
इन हाथों से कैसे कोई, तप-त्याग-राग की रीति लिखे।।
भाव नहीं मुझमें ऐसे, जो माता का अनुराग लिखूँ।
'जिन' भक्ति नहीं मुझमें ऐसी, जो आगम का अनुवाद लिखूँ।।

कैसे मैं गाऊँ प्रीत तेरी, "मैना" का कैसे मौन लिखूँ।
मैं कौन! कहाँ से आया जो, तेरी मोहिनी का रूप लिखूँ।।
रत्न देश भूषण जी से जो, दीक्षा ले व्रत पाल रहीं।।
ब्रह्मचर्य व्रत लेकर जो पल-पल संयम की ढाल रहीं।।

ऐसी गणिनी तुम वाग्देवी, चारित्र चन्द्रिका चन्दन हो।
प्राणों का पुण्य समर्पण हो तुम, जन्म-जन्म का वंदन हो।।

राष्ट्र देश का गौरव तुम, न्याय नमन 'युग प्रवर्तिका'।
वात्सल्य मूर्ति, आर्यिका रत्न, तुम धर्म ध्यान की चन्द्रिका।।
तुम शब्दों का हो स्वयं शिल्प, प्रभु अमृत घट की घाटी हो।
विधि का हो विषद विधान ध्यान, तुम भक्ती की परिपाटी हो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षुल्लिका बनीं तुम वीरमती, जिन धारा सी हो निरमलता।
क्षमा दान की देवी स्वयं, तुम वाणी जैसी निश्छलता।।
तुम सुकुमारी हो सूरज की, विद्या की विदुर कुमारी हो।
तुम संस्कार का सकल योग, धरती की प्रखर प्रभारी हो।।

शिक्षा की शील कथा अमृत, तुम बहुआयामी चन्दन हो।
प्राणों का पुण्य समर्पण हो, तुम जन्म-जन्म का वन्दन हो।।

हर भाषा का भाष्य लिये, तुम चलीं दिगम्बर मन लेकर।
कदम-कदम उत्कर्ष मिला, नव-दृष्टि, सृष्टि का तन लेकर।।
तुम चतुर्मुखी भावों का धन, उर-प्रीत-रीत की पावनता।
तुम जम्बूद्वीप का ज्ञान सृजन, नव ज्योति पुंज की साधनता।।

तुम सत्य समागम शैल शिखर, रहती कुण्डलपुर तीर्थ निकट।
कविता सी कुन्तल काया तुम, हो जैन-बैन का मोर मुकुट।।
तुम णमोकार का महामंत्र, ले उर में अनुपम गान लिये।
जल मंदिर जैसी अगम धार, नवग्रह शांति का दान लिये।।

विहंस-विहंस गाती पीड़ा, तुम स्वयं प्रार्थना की देवी।
महावीर मनोरथ की गाथा, तुम स्वयं साधना की देवी।।
तुम विश्व जैन समुदाय गगन, तपते सोने सी कुन्दन हो।
प्राणों का पुण्य समर्पण हो, तुम जन्म-जन्म का वंदन हो।।

-कवि विजय प्रेमी, मेरठ

'50 साल की आर्यिका दीक्षा, सोने की स्वर्ण जयंती'

16 साल की कोमल कली चल पड़ी तपने, माँ की कोमल गोद, पिता वृक्ष की छाया को छोड़, कूद पड़ी तप की अग्नि में और अपने गुणों से अग्नि के दोष, कालिमा को मिटा कर अग्नि के रूप को भी स्वर्णिम कर डाला। कितना सरल लगता है तपस्या का मार्ग, माताजी की कोमलता को देखकर। न कोई धुँआ, न कोई कालिमा केवल सोने की चमक, 'ऐसी है माताजी' की तपश्चर्या।

सुबह से लेकर शाम तक भरी सर्दी में भी पैर लटका कर पीछी हाथ में लेकर भक्तों को लगातार आशीर्वाद देना, वो भी हँसते हुए इसीलिए काल को भी माताजी को भक्तों के लिए लौटाना पड़ा।

आलोचक जब माताजी के पास पहुँचता है, उनके विधान पढ़ता है, शास्त्र पढ़ता है, उनकी रचनाएँ पढ़ता है, तो उनके परम भक्त के साथ-साथ उनका अनुयायी भी बन जाता है। माताजी न होतीं तो क्या होता जैनधर्म का— रूढ़ीवादता केवल रूढ़ीवादता। एक-एक शास्त्र को बच्चों की, जन-जन की भाषा में सरल कर दिया, जो हृदय को छूने के साथ-साथ चारित्र को भी पवित्र कर देते हैं। न केवल साहित्य लेखिका अपितु एक तीर्थ प्रवर्तक भी हैं। कैसी चमत्कारी क्रांति न केवल दर्शन, केवल ज्ञान, केवल चारित्र को ही उभारा, पूरे देश के जन समुदाय को जोड़ डाला। जन सुविधाएं और स्वच्छता की बेजोड़ मिसाल। कला का निखार, सौंदर्य का विकास।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज के युग में माताजी का होना न केवल जैन समाज के लिए, देश-विदेशों के लिए भी, न केवल एक वरदान, एक जरूरत, एक विभूति जिसे जितना संजोया जाये, उतना कम है। जीवन में कितनी भी परेशानी आए, माताजी का जीवन एक प्रेरणा बन कर उसको सरल कर देता है और किसी न किसी चमत्कार के रूप में रक्षा होती है। माताजी को स्मरण करते ही कोसों दूर होते हुए भी आशीर्वाद पहुँच जाता है। स्वप्न में दिखकर उपाय बता देती हैं।

लाखों बच्चे, स्त्रियाँ, पुरुष अपने को माताजी के करीब पाते हैं। मेरी माताजी हैं, मुझसे विशेष प्यार है। मुझे माताजी ने बुलवाया है। उनसे कहना मैं आया हूँ। हर सभा में दरबान कोशिश करके भी हार जाता है, वह माताजी के करीब पहुँच जाता है, उनका चरण स्पर्श पाने के लिए। इसे क्या कहेंगे? माताजी का दुलार।

इस पंचमकाल में मैं तो क्या, हर धर्म-अनुरागी यही चाहेगा माताजी का सानिध्य अनन्तकाल तक रहे। जैसे माँ के बिना बच्चा बेसहारा, अनाथ हो जाता है, तीर्थंकरों के बिना धर्म जन-जन तक नहीं पहुँचता, वैसे ही माताजी के बिना। हम लोगों का उद्धार नहीं हो सकता है। उनके चरणों में शत-शत नमन।

-प्रभात कुमार जैन एवं श्रीमती चित्रा जैन, फरीदाबाद

विनयांजलि

संभवतः सन् 1972-73 के आसपास की घटना है, मैं दिल्ली गया हुआ था। उस समय आचार्यश्री विद्यानंद जी मुनिराज जैन बालाश्रम, दरियागंज (दिल्ली) में विराजमान थे। उनके प्रातःकालीन प्रवचन सुनने हेतु मैं प्रतिदिन वहाँ उपस्थित रहता था। उसी समय ज्ञात हुआ कि आर्यिका ज्ञानमती जी भी वहाँ विराजमान हैं जिन्होंने अष्टसहस्री का हिन्दी अनुवाद किया है। मुझे यह जानकर परम प्रसन्नता का अनुभव हुआ कि दिगम्बर जैन समाज में कम से कम एक आर्यिका जी ने शाश्वत कोटि के एक महान ग्रंथ का प्रथम बार हिन्दी अनुवाद करने का पुरुषार्थ तो किया।

हम लोग तो अपने छात्र-जीवन में अष्टसहस्री को कष्टसहस्री कहा करते थे, हमारी पीढ़ी के अधिकांश साथियों ने उसके अध्ययन का साहस ही नहीं किया था अतः माताजी के प्रति अनन्य श्रद्धा उमड़ी। उनके कक्ष में जाकर देखा कि वे अपने अध्ययन, मनन, चिंतन एवं लेखन में कितनी आत्मस्थ थीं। आचार्यश्री विद्यानंद जी ने प्रारंभ में ही उनकी एकनिष्ठ ज्ञानाराधना की बड़ी प्रशंसा की थी। मेरे फूफा जी पं. मूलचन्द्र जी शास्त्री तो निरन्तर ही उनकी प्रशंसा किया करते थे।

वस्तुतः अष्टसहस्री ग्रंथ जिस विषमकाल में लिखा गया था, उस समय कुछ विरोधी-विद्वेषी अपने दम्भगर्भित-पाण्डित्य से चुनौतियों भरे शास्त्रार्थों में जैनधर्म को अपमानित करना चाहते थे। उस भीषण युग में अकलंक एवं विद्यानंदि जैसे उद्‌भट एवं निर्भीक दार्शनिकों ने तार्किक शैली में जैन-सिद्धान्तों का विश्लेषण कर ईंट का जवाब पत्थर से देकर जैनधर्म की गरिमा को सुरक्षित रखा था।

विषय भाषा एवं शैली की जटिलता, दुरूहता तथा शास्त्रीय एवं दार्शनिक पद्धति से लिखित उक्त ग्रंथ के अध्ययन से छात्र-छात्रा बचते रहे और संभव था कि वह पाठ्यक्रम से ही निकाल दिया जाता। इस दृष्टि से माताजी ने अपने संकल्प को जो साकार कर दिया और तार्किक शैली के प्राचीन ग्रंथ को वर्तमानकालीन तार्किक युग में हिन्दी अनुवाद एवं तुलनात्मक समीक्षा के साथ प्रकाशित किया, वह जैन-विद्या के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक कार्य के रूप में स्मरणीय रहेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय की गति तीव्रतर होती रही। माताजी ने विविध विषयक अनेक ग्रंथों का सृजन, सम्पादन एवं अनुवाद किया और उनकी विशेषता यही रही कि वे सर्वोपयोगी सिद्ध हुए। इसी क्रम में हस्तिनापुर जैसी ऐतिहासिक तीर्थभूमि को विशेषरूप से प्रकाशित करने हेतु वहाँ जम्बूद्वीप की कलापूर्ण वृहद् रचना कराकर सराहनीय कार्य किया।

इसी तरह पूज्य माताजी की प्रेरणा से अन्य भी ऐतिहासिक तीर्थों का निर्माणकार्य भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसे सदी का महत्वपूर्णकार्य कहा जा सकता है। ऐसी पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के पचास स्वर्णिम वर्षों की सम्पूर्ति पर उनके श्रीचरणों में शत-शत नमन करते हुए अपनी हार्दिक विनयांजलि अर्पित करता हूँ एवं जिनेन्द्र प्रभु से उनके दीर्घजीवन की मंगल कामना करता हूँ।

-प्रो. (डॉ.) राजाराम जैन, नोएडा

"गौरव ग्रंथ समर्पण बेला, श्रद्धायुत मन की धारा है। गणिनी ज्ञानमती चरणों में, शत-शत नमन हमारा है।।"

(१)

आत्म साधना पथ पर चलते, बीते वर्ष पचास।
जिनवाणी सेवा रत रहते, बीता स्वर्णमयी इतिहास।।
बाल्यकाल वैराग्य भाव का, अद्भुत् पुण्य प्रकाश।
धर्म देशना मार्ग बना जो, गणिनी का गौरव इतिहास।।
जनकल्याणी युग कल्याणी, आत्म शौर्य की धारा है।
गणिनी ज्ञानमती चरणों में, शत-शत नमन हमारा है।।

(२)

धन्य आपके जनक-मात अरु, पूर्वोपार्जित पुण्य प्रताप।
वीर सिंधु की कृपा दृष्टि से, ज्ञानमती मय संयम ताप।।
श्रवण बेलगोला-ध्यान से, साकार हस्तिनापुर का प्रताप।
जम्बूद्वीप रचना से सुरभित, जिनमत का शुभ वार्तालाप।।
बीसवीं सदी की प्रथम आर्यिका, अद्भुत श्रुत की धारा है।
गणिनी ज्ञानमती चरणों में, शत-शत नमन हमारा है।।

(३)

अद्भुत ग्रंथ लेखन की क्षमता, चारों अनुयोगों की है।
अखिल विश्व कर रहा अचंभा, ज्ञानमती गरिमामय हैं।।
ज्ञान ध्यान में तत्पर रहकर, संयम मय आराधक हैं।
आदर्शमार्ग वैराग्यमयी, जिनमत का दिग्दर्शक है।।
एक ज्योति से ज्योति सहस्त्रों, जलती जिनमत धारा है।
गणिनी ज्ञानमती चरणों में, शत-शत नमन हमारा है।।

(४)

अवध की अनमोल मणि को, करते सब हैं नम्र प्रणाम।
संयम-सौरभ-साधना, जिनके पुण्य प्रतापी नाम।।
पूर्वोपार्जित पुण्य सुयश से, फलित हुआ दीक्षा निष्काम।
तीर्थ वंदना तीर्थ कल्याणी, ज्ञानमती है सार्थक नाम।।
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती, सार्थक जिनमत धारा है।
गणिनी ज्ञानमती चरणों में, शत-शत नमन हमारा है।।

(५)

माता किस विधि करूँ वंदना, है स्वर में माधुर्य नहीं।
मन का भाव प्रगट करने को, वाणी में चातुर्य नहीं।।
श्रद्धा-सुमन समर्पित करते, आयोजक और प्रयोजक हैं।
गणिनी दीक्षा स्वर्णजयंती, पावन भाव समर्पित हैं।।
'शिखर' आज आशीष कामना, शिवपथ सुरभित धारा है।।
गणिनी ज्ञानमती चरणों में, शत-शत नमन हमारा है।।

-पं. शिखरचन्द्र जैन 'साहित्याचार्य', सागर (म.प्र.)
(प्राचार्य-सी.एल. जैन मेमो. विद्यालय)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कविता

कलम कमठ सी मद्धम है, तुम काल चक्र की महागती।
कैसे वन्दन कर पाऊँगा, हे महा आर्यिका ज्ञानमती।।
क्या लिखूँ मैं नश्वर दीप भला, तुम हर्ता महा दिवाकर पर।
तुम गगन को छूती डाल वृहद्, मैं हूँ नन्हा पक्षी बिन पर।।
स्वर्ण गिरी की आभा क्या, घाटी तल से दिख सकती हैं।
घट की बूंदें कैसे कविता, सागर जल पर लिख सकती हैं।।
मैं सुमन धरा की गोद पला, तुम कल्पवृक्ष सी पावन हो।
मैं शब्द ज्ञान अभी सीख रहा, तुम महाकाव्य मन भावन हो।।
मैं अक्षर तट सा वेगहीन, तुम बहते जल सी वेगवती।
कैसे वन्दन कर पाऊँगा, हे महा आर्यिका ज्ञानमती।।
जग उपवन से हे मात अमृते! तुमने पीर चुनी केवल।
हे ध्रुवे! सदा तप वैभव की, तुमने आकृति बुनी केवल।।
कभी न तुमने स्वप्न रचे, सम्मान मिले-सत्कार मिले।
नहीं पिपासा जगी हृदय में, निज मठ-निज जयकार मिले।।
चिर प्रभे! रहीं तुम अनासक्त, यश ख्याती के उपहारों से।
संसार को अमृत दिया निरन्तर, उलझ-उलझ विषधारों से।।
हे गजमुक्ते! हे शब्द शिल्पि! हे युग परिवर्तक कालगती।
कैसे वन्दन कर पाऊँगा, हे महा आर्यिका ज्ञानमती।।
जग का कहना कवि तिमिर हरे, बहु तुरत ज्ञान का दीप जले।
ज्यों खारे जल के तलघर में, सुन्दर मोती कोई सीप ढले।।
हे नील गगन की नृप! यूँ हम, संसार को तो छल सकते हैं।
हम तो केवल हैं तुच्छ दीप, तेरी पूजा में जल सकते हैं।।
तुम हो कविता की कल्पतरु, हम शब्दों के अंकुर केवल।
हम लघु ज्यों छोटा ताल कोई, तुम बहती नदिया की कल-कल।।
हम मृण्मय माटी की काया तुम हो चिन्मय स्व-श्वास गती।
कैसे वन्दन कर पाऊँगा, हे महा आर्यिका ज्ञानमती।।
जिन तीर्थों ने पग-पग कल्मष, धोया औ जीवोद्धार किया।
उन तीर्थों का निज हाथों से, पावनतम जीर्णोद्धार किया।।
उन-उन धामों को प्राण दिये, जो अर्चन के अधिकारी थे।
सरल सुलभ वो ग्रंथ लिखे, जो कल्याणक हितकारी थे।।
अर्द्ध शती तक तप अग्नी में, तपा सो कुन्दन रूप धरा।
तुम को पाकर अम्बर झूमा व नर्तन में रम गई धरा।।
हम जंगम-जड़ता जड़ बुद्धि, तुम तो हो पावन देवमती।
कैसे वन्दन कर पाऊँगा, हे महा आर्यिका ज्ञानमती।।

-सौरभ जैन 'सुमन', मेरठ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चुम्बकीय शक्ति

पूज्य गणिनी माताजी में एक चुंबक के समान सबको अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति है। जिस प्रकार चुंबक लोहे को पास ले जाने पर अपनी ओर खींच लेता है, वैसे ही पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में जो भी आते हैं, वे इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहते क्योंकि इनका व्यक्तित्व ही ऐसा है। साहित्य सृजन, तीर्थोद्धार, धर्मप्रभावना, शिष्यों का संग्रह, ज्ञानार्जन चाहे कोई भी क्षेत्र हो, हर कार्य को करने में माताजी कुशल व अग्रणी हैं। जो भी पूज्य माताजी के निकट में आकर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, उन्हें सदैव यही प्रेरणा प्राप्त होती है कि अपने जीवन के हर क्षण का सदुपयोग कर ज्ञान व संयम को प्राप्त करें। पूज्य माताजी ने अपने इस 50 वर्ष के दीर्घ दीक्षित जीवन में ज्ञान व चारित्र के द्वारा विश्व में सुगंधि फैलाकर अपनी नारी शक्ति का परिचय दिया है। ऐसी महान साध्वी के चरणों में मेरा एवं मेरे समस्त परिवार की ओर से कोटिशः वंदामि।

-अरुण कुमार जैन (बैंक वाले)-इलाहाबाद
एवं समस्त परिवार

पूज्य गणिनी ज्ञानमती अष्टक

गुरुओं का सम्मान जहाँ पर, करे नित्य भवि प्राणी।
तारे और सितारे उनके, श्री गुण गाते भारी।।1।।

जब गुरु भक्ति से निश्चित ही, चिंतामणि रत्न मिले हैं।
फिर कल्पवृक्ष सम सुंदर, जन-जन पंकज क्यों न खिले हैं।।2।।

गुलाब के कांटों में सदा ही, फूल खिला करते हैं।
पूज्य गणिनी ज्ञानमती जी की वाणी में, अमृत झरा करते हैं।।3।।

यह है प्राचीन शुद्ध परम्परा, आचार्य गुरुवर शांतिसागर जी की।
उनके स्मरण को हम सभी, कभी नहीं भुला सकते हैं।।4।।

भव्य जनों को मोक्ष मार्ग में, लगा लगा कर करें सुधार।
ऐसी गणिनी ज्ञानमती जी, ज्ञान दान दे करो उपकार।।5।।

जिन श्रुत गुरु की भक्ति करके, श्रद्धा विनय वात्सल्य गुणधार।
जगह जगह के तीर्थ क्षेत्र की, रक्षा कर मंदिर निर्माण।।6।।

देश राष्ट्र की उन्नति करके, कर उत्साह समाज सुधार।
ऐसी गणिनी ज्ञानमती जी, करें नित्य जग जन उद्धार।।7।।

साहित्य रचना के माध्यम से, खूब किया जिनधर्म प्रचार।
अभयमती को आशीष देकर, मुझ पर कर दो माँ उपकार।।8।।

-आर्यिका अभयमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वात्सल्य की प्रतिमूर्ति माताजी

जैन समाज का बच्चा-बच्चा आज पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के नाम से परिचित है। मुझे भी निकटता से पूज्य माताजी के जीवन को देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। क्योंकि कुछ ज्ञान व धर्म के संस्कार मुझे भी अपने परिवार से विरासत में मिले हैं। पूज्य माताजी के संघस्थ पूज्य पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज मेरे गृहस्थावस्था के मामाजी हैं। उन्हीं की प्रेरणा से मैं समाज में व साधु संघों में रहकर कुछ सेवा-वैय्यावृत्ति करने का पुण्य प्राप्त करना चाहता हूँ। बचपन से ही नाना-नानी के पास रहने से धर्म के संस्कार मुझे प्राप्त हुए, उन्हीं संस्कारों के फलस्वरूप आज मुझे गुरुओं की सेवा-वैय्यावृत्ति करने की भावना सदैव रहती है।

पूज्य माताजी में एक अद्‌भुत अलौकिक प्रतिभा शक्ति है। विश्व में अद्वितीय जंबूद्वीप की रचना, प्रयाग तीर्थ का निर्माण, कुण्डलपुर का विकास आदि अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार कराया। 200 ग्रंथों का लेखन कार्य कर विपुल साहित्य का सृजन कर जनमानस के लिए ज्ञानार्जन करने का मार्ग प्रशस्त किया तथा अपने उपदेशों के द्वारा न जाने कितने प्राणियों के जीवन में परिवर्तन कर दिया। ये सब विशेषताएँ एक साथ एक ही व्यक्तित्व में होना बहुत दुर्लभ है। इतने गुण होने पर भी सरल व शांत प्रकृति की धनी पूज्य माताजी का सबके प्रति वात्सल्यमयी व्यवहार रहता है। धन्य हैं हम, जो हमें ऐसी माताजी के चरण सानिध्य में रहकर उनका मंगल वरदहस्त प्राप्त होता है। युगों-युगों तक हमें ऐसे गुरु की छत्रछाया मिले। पूज्य माताजी के स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर हम उनके चरणों में शतशः नमन करते हैं।

-योगेन्द्र जैन, सनावद (म.प्र.)

हे माँ! आप हो भवदधि तारिणी

इक माँ होती जनम दायिनी, आप हो माता जन्म सुधारिणी।
इक माँ होती काय पोषिणी, आप हो माता भव सुधारिणी।।

इक माँ होती स्वार्थ साधिनी, आप हो माँ, स्व पर प्रज्ञायिनी।
इक माँ होती भवधार वाहिनी, हे माँ आप हो भवदधि तारिणी।।

ज्ञानोपयोग को साकार किया है, अबोधजनों को ज्ञान दिया है।
भावों में प्रज्ञा बसी आपके, नारी भाव, भव तार लिया है।।

पचास वर्ष दीक्षा को धारे, सुप्त तीर्थ को आप सुधारे।।
भव्य विधान रचे अनेकों, आत्मज्ञान को खूब प्रसारे।।

प्रथम गणिनी, प्रथम ज्ञानज्योति, प्रथम ज्ञानमती हे माता।
बसंत, चरण रज पाकर आपकी, पा ही गया है अनुपम साता।।

-पं. बसंत कुमार जैन 'शास्त्री', शिवाड़ (राज.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14,15,16 अप्रैल 2006

गौरवमय हो यह उत्सव

संसार सिंधु में तैर रही है,
जीवन अपार की सुन्दर नाव,
सुख-दुख के हिचकोले खाती,
किया स्पर्शित बहत्तर का पड़ाव।
स्वर्ण जयंती शुभ बेला में हो रहा, सबको हर्ष परम विशाल,
जैन धर्म एवं संस्कृति में, आज गौरवशाली पचास साल।
आर्यिका पद पर हो नियुक्त, फिर बढ़ चली पदोन्नति सोपान।
जैन समाज पर आरूढ़ होकर,
बनी गणिनीप्रमुख आर्यिका महान।
जन्म लिया टिकैतनगर में, बनी ब्रह्मचारिणी बाराबंकी में,
क्षुल्लिका बनी महावीर जी में, बनी आर्यिका माधोराजपुरा में।
निर्माण किया अनेक तीर्थों का,
बही ज्ञानामृत की गंगा,
सृजन कीया अनेक ग्रंथों का,
मूल समझाया जैन धर्म का,
दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव,
गौरवमय हो यह उत्सव,
धन्य है गणिनीप्रमुख आर्यिका,
शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी।

-श्रीमती उषा बैनाडा, लालसोंट (राज.)

दृढ़ संकल्पी

जब पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का चातुर्मास सन् 1967 में सनावद में हुआ, तब तो मैं सामाजिक व धार्मिक कार्यों में अग्रसर नहीं था। पिताजी ही इन कार्यों में संलग्न थे। धीरे-धीरे आगे की पीढ़ी पर कार्यभार आया, तो धार्मिक क्षेत्र में रुचि बढ़ी। अब समय-समय पर साधु संघों को नगर में लाने, उनके आहारदान, वैय्यावृत्ति आदि की व्यवस्था करने में सहभागी बनने का पुण्य प्राप्त होता है। सनावद के निकट में सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र होने से साधुओं का आवागमन अनायास ही होता है और हमें उनके दर्शनों का लाभ प्राप्त होता है। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी वर्तमान में सर्वाधिक प्राचीन दीक्षित हैं, जिन्होंने अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। वे ज्ञान और चारित्र में सबसे श्रेष्ठ हैं। आज भी समाज में जब भी कोई धार्मिक कार्य या सामाजिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्थान की बात आती है, तो सर्वप्रथम पूज्य माताजी पर ही दृष्टि जाती है। पूज्य माताजी की प्रेरणा से दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान नामक ऐसी सशक्त संस्था का निर्माण हुआ है, जिसके माध्यम से आज वर्तमान में अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कार्य हो रहे हैं। ये सब पूज्य माताजी की त्याग, तपस्या का ही फल है। हमें भी सदैव पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त हो। पूज्य माताजी के चरणों में विनम्र विनयांजलि है।

-सुधीर कुमार जैन, सनावद

माताजी की वाणी में जादू है

माताजी के गौरव ग्रंथ प्रकाशन को सुनकर मुझे बहुत ही खुशी हो रही है क्योंकि माताजी का जो व्यक्तित्व और कृतित्व है, वह विरले ही प्राणियों में मिल सकता है। जब मैं माताजी के दर्शन करने आता हूँ, उनकी वाणी को सुनता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि माताजी की वाणी में कुछ ऐसा जादू है कि फिर वापस घर जाने का मन नहीं करता। ऐसा लगता है, माताजी के पास रहकर ही धर्मध्यान कर जीवन को सफल करूँ। इनकी प्रेरणा से प्रयाग-इलाहाबाद में निर्मित ऋषभदेव की दीक्षास्थली तीर्थ आज पूरे देश का ऐतिहासिक-आध्यात्मिक केन्द्र बन गया है। वहाँ पहुँचने वाला हर यात्री प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है।

पारसमणि स्वरूप ज्ञानमती माताजी के प्रति मुझे भी कुछ लिखने का अवसर मिला, इसके लिए मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझता हूँ और मैं माताजी के चरण युगल में नमन करते हुए अपनी विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

-अजित प्रसाद जैन, इलाहाबाद
(प्रबंध मंत्री-श्री ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ-प्रयाग)

ज्ञानोद्योतिका धर्मप्रभाविका संस्कृति संरक्षिका पूज्य माताजी

ज्ञानवृद्ध, तपोवृद्ध, वयोवृद्ध, आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती" के शुभ अवसर पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" का प्रकाशन समयानुकूल एवं सराहनीय है। परम श्रद्धेय पूज्य माताजी वर्तमान साधु-साध्वियों में वरिष्ठतम दीक्षित बालब्रह्मचारिणी हैं, जो जैन समाज की अमूल्य निधि है, जिन्होंने अपना सारा जीवन जैन वाङ्मय के पठन-पाठन, मनन-चिंतन, लेखन, अनुवाद, सम्पादन, संयमसाधना-दर्शन-ज्ञान-चारित्र और तप की आराधनाओं में व्यतीत किया। 18 वर्ष की अल्पायु में सन् 1953 में ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर क्षुल्लिका दीक्षा ली। तत्पश्चात् 1956 में आर्यिका दीक्षा लेकर नारी जीवन के सर्वोत्कृष्ट पद को अलंकृत किया। 50 वर्षों से भी अधिक समय से स्त्री पर्याय के साधना-पथ के सर्वोच्च पद पर रहकर त्यागमय संयमित जीवन में भी साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सम्यग्ज्ञान के प्रचार-प्रसार आदि रचनात्मक बहुमुँखी जनहितकारी समाजोपयोगी कार्यों को भी सम्पन्न कराने की प्रेरणा, मार्गदर्शन और शुभाशीर्वाद देती रहीं। वे व्युत्पन्नमती अद्भुत प्रतिभासम्पन्न, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, स्वाध्याय निरत, संसार-शरीर-भोगों से अनासक्त/उदासीन रहकर स्व-परहित के प्रति सदैव सजग रहीं और आत्म गुणों को विकसित करती रहीं। वन्दनीया माताजी ने अपनी दुर्लभ मनुष्य पर्याय को सार्थक/

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सफल करने का सराहनीय प्रेरणादायी प्रयास/पुरुषार्थ किया है। सारा जीवन धर्मप्रभावना, जैन वाङ्मय के उद्धार, जैन संस्कृति के संरक्षण-संवर्द्धन, सद्बोध के प्रचार-प्रसार, जन-जागरण और लोकहित के लिए समर्पित किया है।

पूज्य माताजी बहुभाषाविद्, न्यायदिवाकर, सिद्धान्तवेत्ता, व्याकरणमर्मज्ञ, बहुश्रुतज्ञ, जैनसमाज की सुप्रसिद्ध लेखिका, चिन्तक, विचारक, ज्येष्ठ श्रेष्ठ आर्यिकारत्न हैं। प्रथमानुयोग की कथाओं का आधुनिक सरल सुबोध शैली में रूपान्तरण, लेखन, क्लिष्ट एवं दुरूह न्याय-व्याकरण, सिद्धान्त एवं करणानुयोग के ग्रंथों का अनुवाद-सम्पादन-प्रकाशन, अनेक स्वतंत्र कृतियों का सृजन, पूजा-विधान, भक्तिगीत, स्तुतियों का सुबोध ललित, गम्य, प्रभावी शैली में सृजन कर जैन भारती के भण्डार को भरकर जैन समाज का बड़ा उपकार किया है। निःसंदेह पूज्य माताजी का गंभीर ज्ञान, वैदुष्य, साहित्य सेवा, काव्य सृजन, देश एवं समाज को गौरवान्वित करने वाला है। उनके द्वारा लिखित, अनुवादित, सम्पादित ग्रंथों की संख्या सहज स्मरणीय नहीं है। इतने विपुल साहित्य का सृजन उनकी अनवरत कठोर साहित्य-साधना का ही प्रतिफल है। अस्वस्थता की दशा में भी उनकी लेखनी सतत चलती रहती है। उनकी साहित्य-साधना, स्वाध्यायप्रेम, ज्ञानपिपासा एवं चारित्रनिष्ठा सदा सराहनीय अनुपम एवं अनुकरणीय है।

जम्बूद्वीप की रचना, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, आचार्य वीरसागर संस्कृत विद्यापीठ एवं वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की स्थापना, ज्ञानज्योति रथ का प्रवर्तन, सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन, प्रवचनों-उपदेशों-आलेखों-सुलेखों द्वारा जीवन में स्वाध्याय-संयमसाधना और जैन जीवन शैली को अपनाने की प्रेरणा देना आदि पूज्य माताजी के जैन धर्मप्रभावक, जैन सिद्धान्त प्रचारक-प्रसारक जीवन्त स्थायी कार्य हैं, जो युगों-युगों तक आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा एवं दिशाबोध देते रहेंगे।

धर्मसंरक्षिका, आगमपोषिका, ज्ञानाराधिका, संस्कृति-संरक्षिका-संवर्द्धिका, प्रशममूर्ति, तपोनिष्ठ आर्यिकाशिरोमणि पूज्य माताजी ने जन-जन में ज्ञानालोक को प्रसारित किया है। आबाल-वृद्ध नर-नारियों ने जैनाचार विचारों को सुदृढ़ कर जैन संस्कृति की धारा को अक्षुण्ण बनाये रखा। जैनजगत को जागरूक रखकर उद्बोध दिया, सन्मार्ग प्रशस्त किया है। निःसंदेह वन्दनीया माताजी ने जैनधर्म की महती प्रभावना की है और हम सबका बड़ा उपकार किया है, जिसके लिए हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ व ऋणी हैं। उनके श्रीचरणों में बारम्बार नमन है।

वन्दनीया पूज्य माताजी की "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती" के शुभ अवसर पर हम यही भावना भाते हैं कि वे पूर्ण स्वस्थ और सजग रहते हुए सुदीर्घकाल तक स्वहित के साथ-साथ परहित करती रहें, इसी सद्भावना के साथ हम अपनी विनयांजलि समर्पित करते हैं।

-अभयकुमार जैन (पूर्व प्राचार्य), बीना (म.प्र.)

नर से भारी नारी

मेरे मन-मस्तिष्क में स्त्री जाति की जो छवि उभरी, वह घर के किसी अंधेरे कोने में बैठकर आँसू बहाती हुई उस स्त्री की थी, जिसके लिए उसका चूल्हा और चक्की ही रामायण और गीता थी। वह आजन्म पति का अनुसरण करती और मृत्यु के पश्चात् के जीवित चिता में जलकर, सहधर्मिणी के कर्त्तव्य का पालन करती। समाज के नियंताओं ने 'स्त्री शूद्रो नाधीयताम्" कहकर उसके लिए विद्याध्ययन के द्वार सदा के लिए बंद कर दिये थे। वैयक्तिक स्वतंत्रता से तो उसका दूर-दूर का नाता नहीं था।

समय का चक्र गतिशील है। मुझे जब आर्यिकारत्न गणिनी ज्ञानमती माताजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं उनकी महती उपलब्धियों से मेरा परिचय हुआ, तो मेरा मन विस्मय विमुग्ध हो गया। जिस स्त्री को वेद पढ़ने का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधिकार नहीं दिया गया, उस स्त्री की लेखनी से 200 से अधिक ग्रंथ सृजित हो चुके हैं। देवी सरस्वती उसकी जिह्वा और लेखनी दोनों पर निवास करती है और प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, हिन्दी सभी भाषाएँ उसके आधिपत्य में हैं। विश्वास नहीं होता-अहर्निश तपस्या में रत रहने पर भी पूज्या माँ पठन-पाठन और लेखन के लिए इतना समय कैसे निकाल लेती हैं? इस रहस्य का उद्घाटन होने में भी समय नहीं लगा। अधिवेशन हो रहा है, गोष्ठी चल रही है, सांस्कृतिक कार्यक्रम तुमुल ध्वनि में निष्पन्न किये जा रहे हैं, इन सब कोलाहल के मध्य माँ की लेखनी अनवरत चल रही है। कर्णेन्द्रिय अपना कार्य कर रही हैं और स्पर्शनेन्द्रिय अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कर रही है। पंचेन्द्रियों पर एक डिक्टेटर की तरह शासन करना किसी को सीखना हो, तो पूज्यनीया माताजी से सीखें।

कहते हैं-मृत्यु का भय सबसे बड़ा भय है। आयु के अंतिम पड़ाव पर भी मनुष्य इस शाश्वत सत्य को स्वीकार करने को तैयार नहीं होता, श्रद्धेया माँ ने अपनी कठोर तपस्या, दृढ़ संयम, सांसारिक भोगों से विरक्ति, प्रभु भक्ति में सच्ची लगन और अविश्वसनीय जिजीविषा के बल पर मौत को भी चुनौती दी है। 2005 के ग्रीष्मकाल में सुदीर्घ यात्रा के कारण माँ गंभीररूप से अस्वस्थ हो गई। हम सब भावविह्वल हो अधीर हो उठे किन्तु धैर्यशीला माँ के मुखमंडल पर चिंता की क्षीण रेखा भी नहीं उभरी। दृढ़ आत्मविश्वास और उपचार शांति माँ के चेहरे पर प्रतिबिम्बित हो रही थी। उनका पचास वर्षों का भेदविज्ञान शारीरिक शिथिलता में भी पूर्णरूपेण जागृत था। आत्मा और पुद्गल भिन्न है। नाशवान शरीर से मोह कैसा? संभवतः मृत्यु ने ऐसा हिमालयी नारी व्यक्तित्व, जो किसी झंझावात से प्रभावित नहीं होता, इससे पूर्व नहीं देखा था, वह दबे पाँव वापस लौट गई।

जम्बूद्वीप महोत्सव के अवसर पर जब किसी ने माँ से यह कहा — कि आप अभी-अभी गंभीर रुग्णता से मुक्त हुई है, कृपया इतना कठोर परिश्रम न करें। माँ ने कहा-कौन कहता है कि मैं बीमार हूँ? पुद्गल में किंचित् कष्ट था, दूर हो गया। मेरी आत्मा में अनंत बल है।"

सच है माँ आपका जीवन दर्शन है — चरैवेति, चरैवेति, चलते रहो, चलते रहो, चलना जीवन की कहानी है, रुकना मौत की निशानी है। ईश्वर से प्रार्थना है, आप चलती रहें, चलती रहें और ईश्वर हमें भी आपका अनुसरण करने की शक्ति और उत्साह प्रदान करें।

मैं आज भी कवियों की नारी विषयक पंक्तियों को गुनगुनाती हूँ, लेकिन बचपन में पढ़ी पंक्ति नहीं। आपके विलक्षण दिव्य स्वरूप को देखकर अब तो मेरे ओंठ पर यह पंक्ति है —

''एक नहीं दो-दो मात्राएं, नर से भारी नारी'।

-श्रीमती रविकांता जैन, मैनपुरी

विश्व में अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया है!

संसार में अनेक प्राणी जन्म लेते हैं तथा अपनी आयु पूर्ण करके काल कवलित हो जाते हैं लेकिन कुछ ऐसी विभूतियाँ होती हैं, जो इस असार संसार में अपना नाम अमर कर जाती हैं।

''स जातो येन जातेन याति वंश समुन्नितम्''।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते''।।

वास्तव में उनका जन्म ही महत्वपूर्ण होता है, जिससे वंश समुन्नति को प्राप्त हो जाता है। पूज्य माताजी ने इस धराधाम पर जन्म लेकर अपने कुल को न केवल कृतकृत्य किया परन्तु उनसे संपूर्ण वसुंधरा कृतकृत्य हो गई।

आप इस सदी की प्रथम गणिनी शिरोमणि हैं, जिन्हें सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुआ है। माताजी ने अपनी तपःपूत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधना से आर्यिका पद को सर्वोच्च वंदनीय बना दिया। आप ऋषि परम्परा की श्रेष्ठतम विदुषी गणिनी हैं। माताजी ने इसी परम्परा में अपनी दो बहनों को आर्यिका पद से सुशोभित किया तथा देश के यशः प्राप्त ब्र. भाई श्री रवीन्द्र जी को कर्मठ योगी बना दिया। पूज्य माताजी का कृतित्व एवं व्यक्तित्व अवर्णनीय है। इतिहास, संस्कृति, कला, स्थापत्य, पुराण एवं साहित्य सृजन के द्वारा विश्व में अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया है। 200 ग्रंथों के सृजन से आपने सरस्वती के भंडार में जो श्रीवृद्धि की है, वह अत्यधिक महनीय है। धवला, नियमसार आदि ग्रंथों पर रचित संस्कृत टीकाओं ने उनके पांडित्य में चार चाँद लगा दिए हैं। बच्चों की कहानियाँ, विद्वानों के लिए दार्शनिक ग्रंथ तथा पूजा प्रतिष्ठा विधान कराने वालों को संपूर्ण प्रकार के विधान ग्रंथों का सृजन आपके द्वारा किया गया है, जो आज विश्व की अमूल्य धरोहर हो गया है। माताजी ने साहित्य की अद्वितीय सेवा की है तथा जिनागम के गूढ़ रहस्यों को अपनी टिप्पणों द्वारा हल करके विद्वानों की संपूर्ण शंकाओं को दूर कर दिया है। **''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्''** के अनुसार आपके साहित्य में संपूर्ण विधाओं को सम्मिलित कर रस की सरिता प्रवाहित कर महाकवि का महत्वपूर्ण पद प्राप्त किया है।

संस्कृति के आयतनों को आपने अपने कृतित्व के द्वारा जीवंत स्वरूप प्राप्त कराकर मूर्तिमान कर दिया, जिनके अवलोकन से मानव धन्य हो जाता है। हस्तिनापुर, इलाहाबाद (प्रयाग) की दीक्षास्थली, कुण्डलपुर का नूतन निर्माण-नंद्यावर्त तथा मांगीतुंगी में निर्मित होने वाली भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उत्तुंग विशाल प्रतिमा विश्व के श्रेष्ठतम निर्माणों में है।

कुण्डलपुर संबंधी विवाद में पूज्य माताजी ने आलोचना का उत्तर न देकर जो क्षेत्र का निर्माण करा दिया, वह उनके ही कृतित्व व्यक्तित्व से संभव था। आपका कृतित्व निवात, निष्कंप दीपशिखा की भांति ज्ञान के आलोक से सदा दीप्त रहता है। वात्सल्य की मूर्ति उदार एवं प्रशस्त व्यक्तित्व की महिमा से मंडित पूज्य माताजी के प्रति मेरी विनयांजलि है कि वे दीर्घायुष्क होकर हम सबको आशीर्वाद देती रहें। वंदामि माताजी।

-पं. खेमचंद जैन, जबलपुर (म.प्र.)

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का भारत को अवदान

भारत की पवित्र भूमि हस्तिनापुर का नाम जहाँ इतिहास में कौरव-पाण्डव के कारण है, वहीं तीर्थंकरों की जन्मभूमि एवं तपस्या के लिए भी सुविख्यात है। इसी क्रम में नया अध्याय "जम्बूद्वीप रचना" से प्रारंभ हुआ। इस जम्बूद्वीप के निर्माण का शंखनाद परमपूज्य माताजी की प्रेरणा से किया गया, जहाँ आबाल-वृद्ध दर्शन, पूजन, ध्यान कर अपने आपको धन्य पाते हैं। ध्यान मंदिर, कमल मंदिर, जम्बूद्वीप नौकायन, विशाल स्वच्छ परिसर व बगीचा त्याग-तपस्या के लिए पूर्ण अवसर देता है। इसी स्थल पर माताजी ने अनेक ग्रंथों की रचना की है। सैकड़ों कठिनतम ग्रंथों का अनुवाद कर प्रकाशित कराया है। बच्चों से वृद्धों तक सभी के लिए उपयोगी साहित्य का सृजन कर उसे सर्वसुलभ कराया है। आगम साहित्य के प्रति माताजी की अपनी अनूठी श्रद्धा है। इसी को कायम रखने के लिए वे समय-समय पर विद्वत् समुदाय को एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास करती रहती हैं। डॉ. अनुपम जैन के नेतृत्व में विद्वत् महासंघ की स्थापना इसी शृंखला की एक कड़ी है। आपने अनेक संगोष्ठियों के माध्यम से विविध विषयों को गंभीरता से समझा है तथा उसे जनमानस तक पहुँचाया है।

इतिहास साक्षी है कि जैन समुदाय ने एकता, अखण्डता की बातें तो अनेक की हैं परन्तु स्वयं अपने घर को नहीं बांधे रखा न ही इतने विशाल स्तर पर अपनी बात जैनेतर समाज एवं शासन तक पहुँचाई। पूज्य माताजी ने इसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमी को पूरा किया, चाहे वह कुलपति सम्मेलन हो या विद्वत् सम्मेलन, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष में उनकी प्रेरणा से कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ परीक्षा संस्थान ने ऋषभदेव प्रतियोगिता राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की, जिसमें 6635 छात्रों ने भाग लिया। विधिवत मूल्यांकन कर परिणाम भी घोषित किया गया है।

वर्तमान में नवीन तीर्थ क्षेत्रों के निर्माण की प्रतिस्पर्धा चल रही है लेकिन पूज्य माताजी ने इससे हटके जीर्णोद्धार की योजना बनाई है। फिर चाहे भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार हो या दक्षिण का सम्मेदाचल मांगीतुंगी (महाराष्ट्र), कार्य को कैसे किया जाना है, यदि यह सीखना है तो समाज एवं नेताओं को माताजी से सीखना एवं प्रेरणा लेनी चाहिए। माताजी का इस युग को हर क्षेत्र में योगदान है। बस अवसर का लाभ लेना हमें आना चाहिए। वे शतायु हो एवं हमें निरंतर आशीर्वाद प्रदान करती रहें, यही मंगलकामना है।

–अरविंद कुमार जैन 'शास्त्री', इंदौर (म.प्र.)
(पदाधिकारी एवं प्रबंधक–कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ)

भक्त के भावोद्गार

जिनके दर्शन से ही मन पुलकित हो जाता है और एक अवर्णनीय शांति की अनुभूति होती है, ऐसी गणिनीप्रमुख पूज्य ज्ञानमती माताजी के 50वें आर्यिका दीक्षा जयंती महोत्सव के अवसर पर उनके प्रति भक्ति और श्रद्धा के सुमन अर्पित करने का सुअवसर मिलना मेरे किसी अज्ञात पूर्व पुण्य का उदय मानता हूँ।

भवसागर से पार करने के लिए अहिंसा, संयम और तप आदि शाश्वत अध्यात्मिक मूल्यों का उपदेश हमारे जैनाचार्य सदियों से अनवरत रूप से देते रहे हैं, हमारे जैनधर्म के सिद्धांत, तत्व और संस्कृति का सदैव स्मरण रहे, इसके लिए हमारे तीर्थ ही प्रमुख माध्यम हैं, इन भावों को ध्यान में रखते हुए पूज्य माताजी ने अपने तीर्थों की रक्षा, सुरक्षा एवं संवर्द्धन को सर्वाधिक प्राथमिकता दी है। उन्हीं की प्रेरणा से मेरे जैसे हजारों श्रावक इस कार्य में श्रद्धापूर्वक, शक्त्यनुसार योगदान दे रहे हैं।

परमपूज्य माताजी के ध्यान में धर्मप्रभावना में सहायक कोई कल्पना, मूर्ति अथवा कोई प्रकल्प प्रतिभासित होता है, तो उनकी प्रेरणा से हजारों हाथ प्रयत्नरत हो जाते हैं और अशक्यप्राय दिखने वाले भव्य दिव्य प्रकल्प साकार हो जाते हैं। कहा जाता है कि भाव जब सघन हो जाते हैं, तब घटना का रूप धारण कर लेते हैं। परमपूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के सघन भावों के परिणामस्वरूप धर्म में श्रद्धा बढ़ाने वाले अनेक प्रकल्प साकाररूप धारण कर चुके हैं, कर रहे हैं, हस्तिनापुर में जंबूद्वीप की रचना, कुण्डलपुर में भव्य मंदिर का निर्माण, मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर श्रवणबेलगोला की भगवान बाहुबली की मूर्ति से भी अधिक भव्य एवं ऊँची भगवान आदिनाथ स्वामी की मूर्ति के निर्माण की योजना ये सभी कार्य परमपूज्य माताजी के कर्तृत्व, तपस्या और अलौकिक एवम् अतिंद्रिय शक्ति की साक्षी देते हैं। इसी कारण भारतवर्ष का सारा दिगम्बर जैन समाज उनके समक्ष नतमस्तक है।

परमपूज्य गणिनीप्रुखख श्री ज्ञानमती माताजी का जैन साहित्य में जो महत्वपूर्ण योगदान है, वह उनके भाषा प्रभु होने की और जैन दर्शन के चिंतन की गहराई की सच्ची साक्ष्य देते हैं।

मेरे जैसा अल्पज्ञानी उनकी महिमा का वर्णन करने की पात्रता नहीं रखता, फिर भी भक्ति के वशीभूत होकर मैंने यह साहस किया है। आज के इस प्रसंग पर मेरे मन में प्रमुखरूप से जो भाव आया है कि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को धारण करते हुए परमपूज्य माताजी की ज्ञान साधना और तपस्या की यह परम्परा केवल इसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव की नहीं हो सकती है अपितु पूज्य माताजी की अनेक भवों से यह परम्परा चली आ रही है और भवसागर से पार होने तक ये अखण्ड रूप से परम्परा चलती रहेगी, ऐसे भव्य जीवात्मा को आज इस प्रसंग पर कोटि-कोटि नमन करता हूँ।

-प्रमोद कुमार जम्मनलाल जैन, औरंगाबाद (महा.)

माताजी एवं संत-संस्था के संबंध

इस कलिकाल में कुछ धूर्त व्यक्ति ऐसे भी जानने में आये हैं, जो कहते फिरते हैं कि माताजी के हस्तिनापुर में अन्य साधु-संघों को महत्व नहीं दिया जाता। उन धूर्तों में विद्वान श्रेणी के लोगों की संख्या अधिक है। मैं उन तथा-कथित विद्वानों से निवेदन करता हूँ कि वे अपनी वाणी से उपजे कालुष्य का शीघ्र प्रक्षालन कर लें, अन्यथा वे मिथ्याचारी जीवन भर पापों को बढ़ाते रहेंगे। माताजी का वात्सल्य समझने में भले ही उन्हें विलम्ब लगे, किन्तु दिगम्बर संतों के प्रति देखी गई उनकी श्रद्धा सदा उल्लेखनीय रही है, रहेगी।

प्रसंग 5 फरवरी 1991 का है। सराकोद्धारक-राष्ट्रसंत परमपूज्य उपाध्याय 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज ससंघ हस्तिनापुर पहुँचे, वे श्री सम्मेदशिखर यात्रा पर थे। परमपूज्य माताजी को जानकारी पहले ही मिल चुकी थी अतः उन्होंने अपने संघ के साधु-साध्वियों को यथासमय निर्देश प्रदान कर दिये थे, फलतः पूज्य उपाध्यायश्री की अगवानी हेतु पूज्य मुनि 108 श्री आदिसागर जी, पूज्य आर्यिका 105 श्री चंदनामती माताजी और पूज्य क्षुल्लक 105 श्री मोतीसागर जी महाराज उपस्थित हुए थे, उनके साथ जम्बूद्वीप क्षेत्र के श्रेष्ठ कर्ताधर्ता और दिशानिदेशक श्री ब्र. रवीन्द्र कुमार जी, अनेक समाजसेवियों, पदाधिकारियों, अध्यापकों और छात्रों के साथ चल रहे थे। झण्डे, बैनर और वाद्ययंत्र अभ्यागत के आगमन पर उपजे हर्ष का बखान कर रहे थे। वह संध्याकाल के क्षण थे।

दूसरे दिन 6 फरवरी 1991 को परमपूज्य राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, धरा उद्धारक, आर्यिकाश्रेष्ठ 105 श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ उपाध्यायश्री के दर्शनार्थ पहुँचीं। विशाल कक्ष में दोनों संघ सवात्सल्य उपस्थित थे। माताजी ने भक्तिपूर्वक उपाध्यायश्री के दर्शन किये। उपाध्यायश्री ने वात्सल्यपूर्वक माताजी से वार्तालाप शुरू कर दिया। 'समाचारी' सम्पन्न हुई। दो ज्ञानमूर्तियों को एक साथ देख समस्त जन प्रफुल्लित थे। ज्ञानमूर्तियों में ज्ञान की चर्चा हुई, ज्ञान से चर्चा हुई। दोनों तरफ ज्ञान के गवाक्ष थे, सो ज्ञान की किरणें फैलती रहीं, काफी समय तक। कक्ष क्या, पूरा क्षेत्र ज्ञान के उजास से जगमग हो गया था। भक्ति और वात्सल्य की (परस्पर) ज्ञानधाराएँ देश में नूतन इतिहास लिख गई थीं। खेमेबाज, ईर्ष्यालु विद्वानों को पाठ दे गईं थीं।

महागणिनी, आर्यिकारत्न 105 श्री ज्ञानमती माताजी के पचासवें दीक्षा-दिवस पर मेरी लेखनी उनके श्रीचरणों में वंदामि करती है। उनका देहतत्व सदा उनके आत्मतत्व की तरह, स्व-स्थ रहे, प्रभु से प्रार्थना है। उनका ज्ञान विद्वानों के अंतरंग का तम हटाये, उनके हृदय में जमी कपट, उपेक्षा और धूर्तता की 'काई' साफ करे।

-सुरेश जैन सरल, जबलपुर (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भजन

तर्ज-माइन माइन............

गणिनी ज्ञानमती माताजी, कोटि कोटि वंदन है
स्वर्ण जयंती पर माँ तेरा, शत शत अभिनंदन है
बोलो जय जय जय.............।

ढाई शतक ग्रंथों की रचना, कर इतिहास बनाया,
सृष्टि क्या है, जीवन क्या है, यह जग को बतलाया,
तेरे ज्ञान की गाथा गाने................
तेरे ज्ञान की गाथा गाने, को करता यह मन है,
स्वर्ण जयंती पर माँ तेरा, शत शत अभिनंदन है।
बोलो जय जय जय ....।

इस युग में नारी की शक्ति, की पहचान करायी
ब्राह्मी, चंदनबाला की माँ, फिर से याद दिलाई,
हम मानें अहसान तुम्हारा.............
हम मानें अहसान तुम्हारा, स्वीकारो वंदन है,
स्वर्ण जयंती पर माँ तेरा, शत शत अभिनंदन है।
बोलो जय जय जय ....।

तीर्थ अयोध्या मांगीतुंगी, कुण्डलपुर मन भाया,
जन्मभूमि की याद दिलाने, नव निर्माण कराया,
जन्मभूमि के दर्शन पाकर..................
जन्मभूमि के दर्शन पाकर, पुलकित होता मन है
स्वर्ण जयंती पर माँ तेरा, शत शत अभिनंदन है।
बोलो जय जय जय ....।

ज्ञान की गंगा हृदय में तेरे, मानों ठहर गई है,
हृदय सिंधु से मोती पाऊँ, इच्छा आज हुई है
विजय करे गुणगान तेरा.............
"विजय" करे गुणगान तेरा, अब पावन तन औ मन है
स्वर्ण जयंती पर माँ तेरा, शत शत अभिनंदन है।
बोलो जय जय जय................।

--ब्र. विजय कुमार जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अदम्यसाहसी व्यक्तित्व की धनी हैं आप!

हम जैन धर्मावलम्बियों के लिए यह बहुत सौभाग्य एवं हर्ष की बात है कि भारतवर्ष में जैनधर्म की सर्वोच्च महान साध्वी परमपूज्य आर्यिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का दीक्षा स्वर्ण जयंती समारोह मनाने का पुनीत अवसर प्राप्त हुआ है, जैन धर्म के बारे में जैन एवं जैनेतर समाज, प्रबुद्ध वर्ग, शासन तथा शिक्षा जगत में विद्यमान तमाम भ्रान्तियों को दूर कर सही तथ्यों पर आधारित धर्म के वास्तविक स्वरूप को स्थापित करने का प्ररुहतर कार्य करने का अदम्य साहस करने वाली माताजी भारतवर्ष की एकमात्र साध्वी हैं। देश-देशांतर में जैनधर्म के मूल 24 तीर्थंकरों की मान्यता एवं उनकी जन्मभूमि की प्रतिष्ठा स्थापित की है, यह ऐसा कार्य है, जिसके लिए संसार का समस्त जैन समाज चिरकाल तक आपका ऋणी रहेगा।

मैं अल्पज्ञानी, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की त्याग, तपस्या का वर्णन करने का न तो मुझमें साहस है, न ही सामर्थ्य, केवल उनके चरणों में स्तुति करना चाहता हूँ। 50 वर्ष पूर्व अपनी युवावस्था में ही आपने, वर्तमान युग में मुनि परम्परा के प्रतिष्ठाता परमपूज्य 108 आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से दीक्षा ग्रहण कर जैनधर्म की सेवा हेतु सर्वप्रथम अनवरत तपस्या एवं स्वाध्याय किया। फिर तो जम्बूद्वीप की रचना, ज्ञानज्योति प्रवर्तन, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार, भगवान महावीर ज्योति रथ के प्रवर्तन द्वारा समस्त भारत में धर्म पताका फहरा दी। जैनधर्म के आगम अनुकूल भगवान आदिनाथ की दीक्षास्थली प्रयाग जैसे तीर्थ का विकास, 24 तीर्थंकरों की समस्त संसार में मान्यता हेतु कुलपति सम्मेलन एवं 24 तीर्थंकरों की जन्मभूमि के विकास हेतु तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समिति का गठन आपके द्वारा प्रतिपादित है, यह कार्य हमारे धर्म की विकास यात्रा में सदैव मील के पत्थर सिद्ध होंगे, अल्पकाल में 200 जैन ग्रंथों का सृजन संसार के साहित्य जगत में हिमालय पर्वत जैसा ही होगा। सारांश में आपका समस्त जीवन ही स्वाध्याय एवं त्याग सहित जैनधर्म की सेवा को समर्पित रहा है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसी महान साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी दीर्घायु हों और उनके मार्गदर्शन में जैनधर्म की विजयपताका सदैव फहराती रहे। चरणों में मुझ अकिंचन का शत-शत वंदन, नमन।

-विनय कुमार जैन, अकोला (महा.)

बीसवीं सदी की महान गौरव

ज्ञानमती माताजी इस सदी की महान गौरव हैं, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। इनकी जन्म एवं वैराग्य तिथि (ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण) का एक होना सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का साक्षात् उदाहरण है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि शायद ये भविष्य में तीर्थंकर पदवी को ही प्राप्त करेंगी। इनके कदमों में ही चमत्कार है, जहाँ पैर रखती हैं, वहाँ की मिट्टी सोना बन जाती है, वहाँ मंदिर बनने लगते हैं, विधानों की तो झड़ियाँ ही लग जाती हैं। स्त्री-पुरुषों में जोश आ जाता है, तीर्थों का जीर्णोद्धार होने लगता है। कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल का निर्माण, मंदिरों का निर्माण, गुणावां जी में गौतम गणधर के मंदिर का निर्माण, राजगीर में मुनिसुव्रत नाथ मंदिर का निर्माण, ये तो साक्षात् ज्वलन्त उदाहरण हैं। माताजी ने अब तक जो भी कार्य इस धरा पर किए हैं, वे सारे आठवें आश्चर्य में गिनती आते हैं। जो कार्य कोई न कर सका, उस कार्य को माताजी ने किया है। जम्बूद्वीप की रचना, कैलाशपर्वत की रचना, कुण्डलपुर का विकास, मांगीतुंगी में विशाल मूर्ति की प्रेरणा, ये सब क्या है? सोचिए, क्या अब तक किसी ने ऐसे कार्य किए हैं? ये समय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय पर श्रावकों को किसी न किसी माध्यम से जगाती रहती हैं, इनकी वाणी में अमृत का घोल है, इनके दर्शन मात्र से हमारा जीवन आलोकित हो जाता है। सबसे बड़े गौरव की बात तो ये है कि इस युग के हमारे चौबीस तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों को नवजीवन दिया है माताजी ने प्रवचन के द्वारा, टी.वी. द्वारा, पत्रिका द्वारा। चाहे जैसे भी हो, सारे भारतवर्ष में लोगों को अपने तीर्थंकरों की कल्याणक तिथियों से अवगत कराया है तथा जीने की कला सिखाई है, भटके हुए लोगों को मार्ग दिखलाया है, इससे बड़ा गौरव और क्या होगा? धन्य है पूरा संघ एवं धन्य हैं रवीन्द्र भाई जी! जो माताजी की प्रेरणा को कार्यरूप में परिणत करते हैं। ऐसी गौरवमयी माँ को मेरा शत-शत वंदन।

-श्रीमती सुमती देवी कासलीवाल
ध.प. चिरंजीलाल जैन कासलीवाल, पटना

"मोक्षमार्गनेत्री श्री ज्ञानमती माताजी"

यह परम प्रसन्नता का विषय है कि हम सभी भारतवासियों को विश्व की महानतम विभूति, मोक्षमार्ग साधिका, आर्यिका शिरोमणि, तीर्थोद्धारिका, चतुरानुयोग साहित्य पोषिता पूज्या श्री ज्ञानमती माताजी की "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" मनाने का शुभावसर प्राप्त हुआ है।

आपने अपने जन्म से मात्र उत्तरप्रदेश को या भारत को ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व को गौरवान्वित किया है। आप बचपन से ही धार्मिक संस्कारों एवं वैराग्य भावों से ओत-प्रोत थीं, संसार की असारता का विचार आपको त्यागमार्ग पर प्रेरित करता रहा तथा कल्याण के अनेक निमित्तों का समुचित लाभ लेते हुए आपने अपना मोक्षमार्ग प्रशस्त किया। आपने अनेक टीकाग्रंथों के अतिरिक्त मौलिक ग्रंथों की रचना की। बच्चों से लेकर विद्वानों तक के हित के लिए चतुरानुयोग की विषय सामग्री अपनी सुबोध शैली में प्रस्तुत की। आपने धर्म, दर्शन, अध्यात्म के अतिरिक्त गणित, भूगोल, खगोल, नीति, इतिहास, कर्मकाण्ड एवं विधि-विधानों से संबंधित अनेक रचनाएँ ज्ञान पिपासुओं के समक्ष प्रस्तुत कीं। पूज्य माताजी की साहित्य सेवा इस भरतक्षेत्र की मानवजाति का कल्पान्तकाल तक कल्याण करती रहेगी। आपके द्वारा रचित लगभग 200 ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं, शायद ही किसी लेखक के इतनी प्रचुर मात्रा में ग्रंथ प्रकाशित हुए हों।

साहित्य सेवा के अतिरिक्त आपने तीर्थोद्धार का जो बीड़ा अपने हाथों में लिया है, वह जैन संस्कृति को जीवंत एवं प्रतिष्ठित बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना को प्रथमबार देखने वाला आश्चर्यचकित रह जाता है, शास्त्रोक्त प्रमाणों के आधार पर आपने अनेक तीर्थंकरों की कल्याणकभूमियों का उद्धार कराने का महान प्रयत्न किया है। मांगीतुंगी जैसे ऊँचाई वाले पहाड़ पर भगवान ऋषभदेव की 108 फुट ऊँची प्रतिमा का निर्माण कार्य आपकी प्रेरणा से चल रहा है, ये प्रतिमा विश्व की सर्वोच्च प्रतिमा होगी।

आपने समताभाव पूर्वक बच्चों, युवाओं, युवतियों, महिलाओं, श्रेष्ठीवर्ग एवं विद्वत्वर्ग सभी की प्रतिभा उजागर करने के लिए अनेक संगठन बनवाकर उन्हें मंच प्रदान किया। प्रतिभाओं का सम्मान कराके सभी का उत्साह बढ़ाया।

इन सब परोपकार के कार्यों को प्रेरणा देती हुईं आप स्वयं आत्म साधना करके अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। पूज्य माताजी वात्सल्य की साक्षात् प्रतिमा हैं। बहुमुखी प्रतिभा की धनी विश्व की इस महान् विभूति को मैं इस शुभावसर पर कोटि-कोटि नमन करता हूँ। निरन्तर आशीर्वाद प्राप्त करने का इच्छुक-

-डॉ. सुरेन्द्र जैन, लाडनूँ (नागौर) राज.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब मौत को भी लौटना पड़ा

पूज्य माताजी जब प्रयाग आईं, तब माताजी के दर्शन का सौभाग्य मुझे मिला। मेरा पौत्र कुछ दिनों से बहुत बीमार था और संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ में उसका इलाज चल रहा था। दवाएँ दी जा रही थीं, पर कुछ लाभ नहीं हो रहा था। लगभग एक साल के इलाज के बाद डाक्टरों ने हमको जवाब दे दिया कि बच्चे को अब इलाहाबाद वापस ले जाएँ, बच्चा अब चंद घण्टों का मेहमान है, कुछ ही सासें शेष हैं। बहन साधना जी को जब यह बात पला चली, तो वह अविलम्ब मेरे पौत्र को लेकर पूज्य माताजी के चरणों में पहुँचीं। हम सभी उनकी शरणागत थे, पूज्य माताजी ने मंत्रोच्चारण के साथ पिच्छी बच्चे के ऊपर फेरी और हम लोग स्तब्ध थे, बच्चे ने धीरे से आँखें खोलीं, फिर 3-4 दिन तक पूज्य माताजी के मंत्रों की साधना ने उस बच्चे सिद्धार्थ को नव जीवन दे दिया। आज भी मेरा स्वस्थ पौत्र मेरे घर आँगन की शोभा है, ऐसी पूज्य ज्ञानमती माताजी के चरणों में मेरा शत-शत वंदन।

-श्रीमती प्रेमलता जैन, इलाहाबाद

हे माँ! अनेकों ज्ञानमति बना दो!

जिनेश्वर ईश हे मेरे, आराध्य जिनेश मुझको चाहिए।
समय की माँग ज्ञानमति, ज्ञानमति जिनधर्म को चाहिए।।
संतों को सुना, पुराणों में पढ़ा।
राजा श्रीपाल ने, चंपापुरी का द्वार खोला।।

जगत है साक्षी, सच है बात भी।
आर्यिका ज्ञानमति ने, कुमारियों का दीक्षा द्वार खोला।। समय............
इतिहास हमको बताता, लक्ष्मी रानी से मिलाता।
देश प्रेम के खातिर, महारानी हँसते-हँसते युद्ध लड़ी।।

हो वैराग्य की मूरत, हो ज्ञान की सूरत।
आत्म प्रेम के खातिर, यौवन में दीक्षा ले सबके आगे खड़ी।।समय............
माँगता हो जग सारा, दे दो ज्ञान भंडारा।
बनकर शारदे, तुम ज्ञान के सुभूषण लुटाने आयी।।

लगती हो जीवंत भारती, काव्य से उतारी आरती।
बन ज्ञान रथ की सारथी, धरा पर ज्ञान का शंखनाद कराने आयी।। समय.......
जग की है कामना, मेरी हार्दिक भावना।
बनकर दीर्घ जीवी, जिन धर्म जन-जन को बता दो।

रहेगा जग पे उपकार, होगी सदा जय-जयकार।
एक नहीं, दो नहीं, हे माँ! अनेकों ज्ञानमति बना दो।। समय...........

-आर्यिका सुभूषणमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं जीवन भर आपका ऋणी रहूँगा

वर्तमानकाल में हुण्डावसर्पिणी काल होते हुए भी बड़ा आश्चर्य है कि जैन जगत में जहाँ महान तपस्वी साधु हैं, वहीं महान साध्वी भी पीछे नहीं हैं, उन्हीं साध्वी में गणिनी ज्ञानमती माताजी का प्रथम स्थान है। पूज्य माताजी प्रखर व्याख्यात्री, मृदुभाषी, सरलता एवं सादगी की प्रतिमूर्ति हैं। अप्रैल सन् 1997 में पूज्य माताजी ने अपने करकमलों से हमारे निवास स्थान पर 1008 श्री शांतिनाथ भगवान जी का चैत्यालय स्थापित करवाया, तब से हमारे घर में खूब धार्मिक वातावरण रहता है। बच्चों में भी पूज्य माताजी से प्राप्त संस्कारों का पूरा प्रभाव है। माताजी ने हमें सदैव यह शिक्षा दी है कि गृहस्थ में भी रहकर जिनधर्म का पालन किया जा सकता है और देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करके मोक्षमार्गी बना जा सकता है।

आप कुन्दकुन्द आचार्य के पद चिन्हों पर चलकर यथार्थ में अनेक ग्रंथों की रचना करके तथा धार्मिक आयोजनों, उपदेशों द्वारा समाज को सन्मार्ग दिखाकर स्व-परकल्याण कर रही हैं। यह आपकी अगाध विद्वत्ता का परिचायक है। उन सर्वतोमुखी प्रतिभा की धनी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर उनका दीक्षा स्वर्ण जयंती मनाना वास्तव में हम सभी के लिए सौभाग्य का सूचक है। इस अवसर पर आपके चरणों में बारम्बार नमोस्तु करते हुए हम आपके दीर्घयशस्वी जीवन की कामना करते हैं।

-विकास जैन एवं श्रीमती अंजू जैन, प्रियदर्शनी विहार-दिल्ली

रिद्धि-सिद्धिमयी रत्नत्रयी हैं माताजी

विश्व वसुन्धरा का अवलोकन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि किन्हीं-किन्हीं की यशपताका, युग युगान्तर ही नहीं, कल्पकाल व्यतीत हो जाने पर भी दिग्दिगन्त में फहराती रहती है। जो सभी की दृष्टि में पूज्य हैं, आराध्य हैं, ऐसी ही हैं गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी। इसमें कोई संदेह नहीं है, आप कलियुग में तृतीय काल की ब्राह्मी हैं और साथ है बहन सुन्दरी आर्यिका चन्दनामती माताजी के रूप में। तभी तो विद्यावारिधि बन 200 से अधिक ग्रंथों का सृजन कर सरस्वती माता भी हैं आप। "दंसणणाण चरित्ताणि" की आप साकार मूर्ति हैं। मैं अपने को सौभाग्यशाली मान रही हूँ, जो कि मुझे भी "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" में अपने भाव लिखने का सुनहरा अवसर मिल रहा है। अनेकों बार माताजी के दर्शन किये, आशीर्वाद भी प्राप्त किया परन्तु एक घटना मुझे सदैव याद रहती है।

यह बात है 1993 फरवरी की, जब हम हस्तिनापुर माताजी को स्योहारा आने के लिए निमंत्रण तथा श्रीफल भेंट करने गये थे। रास्ते में मैंने दिल्ली अपनी बेटी को फोन किया (तब वह प्रेगनेंट थी तथा पूरा समय था) बेटी ने कहा-मम्मी! आप 20 फरवरी तक आ जाओ, डॉ. ने अल्ट्रासाउंड किया है, उन्होंने कहा है कि सिजेरियन करना होगा तथा लड़की है। हस्तिनापुर पहुँचकर माताजी से बात हुई, उन्होंने 22 फरवरी का प्रोग्राम स्योहारा के लिए बताया। सुनकर मैं उदास हो गई, माताजी समझ गईं, बोलीं, क्या बात है? मैंने माताजी को फोन वाली बात बताई और कहा—मुझे दुख हो रहा है कि मैं स्योहारा आपके दर्शन नहीं कर पाऊँगी। माताजी ने कुछ रुककर कहा-"नहीं जाना, हम तुम्हें बता रहे हैं। डॉ. ने कुछ भी कहा हो, जब हम स्योहारा से चले जायेंगे, तब कुछ होगा, कोई सिजेरियन नहीं होगा और निश्चित है लड़का ही होगा।" मैं चुप रही, पर विश्वास नहीं हुआ, विज्ञान का युग है। पर आज भी मैं सोचकर आश्चर्य चकित हो जाती हूँ। 27 फरवरी को नार्मल डिलेवरी हुई तथा लड़का ही हुआ। यह चमत्कार से कम नहीं था। विज्ञान पर धर्म की विजय थी। आस्था का सागर दैदीप्यमान हो उठा, श्रद्धा का सागर लहराने लगा। माताजी ऐसी कल्पवृक्ष हैं, जहाँ सभी की अभिलाषा अवश्य पूरी होती हैं। दर्शन से मन नहीं भरता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"गुण-पयोद! छल-छल छलकाती, अमृत की गागर हो तुम।
दिव्य ज्योति! अरु ज्ञान पुंज, पूनों का उज्ज्वल चाँद हो तुम।।

ऐसी परम पूज्य प्रातःस्मरणीय रिद्धि-सिद्धिमयी रत्नत्रयी माताजी के चरणों में त्रिकाल वंदना करती हूँ तथा मैं अपनी एवं अपने पति लोकेन्द्र और पूरे परिवार राजीव-रचना, पंकज-रीना, नलिन, जलज, तूलिका और पर्णिका की ओर से विनम्र विनयांजलि अर्पित करती हूँ।

-श्रीमती गीता जैन, स्योहारा (बिजनौर) म.प्र.

यथा नाम तथा गुण : आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी

निश्चित ही घर के अच्छे संस्कार व्यक्ति को जीवन के अंत तक साथ देते हैं, संस्कारों की क्यारियों से जीवन महक जाता है, संस्कार जीवन को बहुत प्रभावित करते हैं तथा अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और ऐसे ही संस्कार मैना को बचपन से ही मिले। मैना का मन शुरू से ही धर्म-ध्यान, अध्यात्म, स्वाध्याय की ओर था और इसी के फलस्वरूप 11 वर्ष की अल्पआयु में ही उस नन्हीं सी मैना के जीवन को "अकलंक-निकलंक" नाटक के दृश्य की एक पंक्ति इतना प्रभवित कर देगी, किसी ने सोचा भी नहीं था, जो विवाह के समय अकलंक ने अपने माता-पिता से कही थी कि "कीचड़ में पैर रखकर धोने की अपेक्षा नहीं रखना ही श्रेयस्कर है।" उसी क्षण से ही मैना ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने का संकल्प अपने मानस में स्थापित कर लिया और सन् 1952 की शरदपूर्णिमा के दिन बाराबंकी ग्राम में मैना ने आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज के द्वारा सप्तम प्रतिमा एवं आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर लिया। कुमारी मैना को बहुतों ने समझाया-बुझाया, लेकिन उसके अटल निश्चय को किसी के विचारों ने नहीं डगमगाने दिया। अन्ततः उसने सन् 1953 (वि.स. 2009) के दिन आचार्य श्री से दिगम्बर अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण की, जहाँ मैना की संयम, साधना, तप, ध्यान आदि को ध्यान में रखकर गुरु ने "वीरमती" नाम रख दिया। तब से मैना का नाम क्षुल्लिका वीरमती माताजी हो गया और मैना ने संसार-सागर से तरने के लिए गृहस्थ जीवन का त्याग कर मोक्ष का मार्ग अपनाया।

सन् 1956 (वि.सं. 2013, वैशाख कृ. दूज) को आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की आज्ञानुसार आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज द्वारा माधोराजपुरा (राज.) की पवित्र धरा पर आपको दीक्षा प्राप्त हुई। दीक्षा के पश्चात् वीरमती माताजी का नाम आर्यिका ज्ञानमती माताजी रखा गया। इसके बाद आप छोटी सी उम्र में ही साहित्य-साधना के साथ-साथ जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में लग गईं। "यथा नाम-तथा गुण" की संज्ञा को सार्थक करते हुए आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने अनेक संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी के जैन शास्त्रों, ग्रंथों का सम्पादन, पद्यानुवाद, अनुवाद किया। इसी के साथ आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने जैन-दर्शन-शास्त्रों तथा अनेकों भाषाओं पर अपना अधिकार हासिल किया और संसार-सागर में भटक रहे लोगों को सन्मार्ग-मोक्षमार्ग प्रशस्त कर रही हैं। साहित्यिक क्षेत्र में आर्यिका ज्ञानमती माताजी का बहुत बड़ा योगदान है, माताजी ने प्रारंभ से ही साहित्य सृजन में लगकर अब तक करीब दो सौ ग्रंथों का लेखन, अनुवाद, पद्यानुवाद किया एवं सैकड़ों स्तुतियों का निर्माण उनकी प्रखर लेखनी से हुआ। यहाँ तक कि माताजी ने अष्टसहस्री जैसे ग्रंथ का हिन्दी पद्यानुवाद किया। आगम ग्रंथ नियमसार पर स्याद्वादचन्द्रिका नामक संस्कृत टीका और अनेक महत्वपूर्ण जैन ग्रंथों का लेखन व सम्पादन कार्य किया तथा आज भी अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का लेखन, सम्पादन कार्य आपके सानिध्य में चल रहा है।

आर्यिका ज्ञानमती माताजी के मानस में एक जम्बूद्वीप निर्माण की योजना आई, यह विचार माताजी के कर्नाटक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रान्त के श्रवणबेलगोला चातुर्मास के दौरान ही प्रकट हो चुका था। जब माताजी ने भगवान बाहुबली की मनमोहक वीतरागतायुक्त छवि के सम्मुख 15 दिन का मौन व्रत धारण करने का संकल्प ले लिया था। जम्बूद्वीप का निर्माण या तो भगवान बाहुबली के प्रताप से या आर्यिका ज्ञानमती माताजी के तेज से कार्य शुरू किया गया और सन् 1974 को दिगबर जैन त्रिलोक शोध संस्थान ने पावन और पवित्र तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर में संस्था के नाम भूमि खरीदकर निर्माणकार्य प्रारंभ कर दिया। जिसका प्रथम चरण 101 फुट सुमेरु पर्वत का कार्य 1979 को सम्पन्न हुआ। जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 29 अप्रैल से 3 मई 1979 को सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् कुछ ही वर्षों के अन्तराल में जम्बूद्वीप के निर्माण का कार्य पूर्ण हुआ तथा 28 अप्रैल से 2 मई तक जम्बूद्वीप पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। निश्चित ही आपकी बहुमुखी प्रतिभा से तथा किए गए अनेक साहित्यिक, धार्मिक आदि अवदानों से आपके व्यक्तित्व की पृथक् पहचान बनी है। वास्तव में उन्हें यदि "यथा नाम-तथा गुण" कहा जाये, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अस्तु इस अवसर पर मैं अपनी विनयांजलि का अर्घ्य आपके चरणों में सादर समर्पित करता हूँ और कामना करता हूँ कि आप युगों-युगों तक प्राणिमात्र का कल्याण करें।

-शरद जैन 'सुधाँसु', लाडनूँ (राज.)

जिनशासन प्रभाविका पूज्या गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

बीसवीं सदी की आर्यिकाओं में पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने रत्नत्रय साधना से स्वयं के जीवन को ज्योतिर्मय बनाने के साथ अन्यान्य धर्माराधकों को भी सन्मार्ग पर लगाया। उनका समग्रजीवन पुरुषार्थ की गौरवगाथा का स्वर्णिम अध्याय है। वे अप्रतिम ज्ञान गरिमा से सम्पन्न हैं। व्याकरण, न्याय, ज्योतिष, छंद, साहित्य आदि का आपको तलस्पर्शी ज्ञान है। अनेक आचार्य प्रणीत मूलग्रथों के सम्पादन एवं अनुवाद के साथ आधुनिक विधा में नये ग्रंथों का सृजन कर जिनशासन की प्रभावना में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। अष्टसहस्री जैसे क्लिष्टतम ग्रंथ के अनुवाद से जन-जन को जैनदर्शन के वैशिष्ट्य से अवगत कराया है। ज्ञान और चारित्र का विरल संयोग आपमें विद्यमान है। 50 वर्षों से निरन्तर मोक्षमार्ग में संलग्न रहकर ब्राह्मी, सुन्दरी की प्रशस्त परम्परा का अनुगमन करके आबाल-वृद्ध जनों को संयम एवं त्यागमार्ग की ओर अग्रसर कर रही हैं। वस्तुतः उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है। उनका समग्र जीवन गुण गरिमा मण्डित है। दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति के उपलक्ष्य में कृतज्ञता का अर्घ्य समर्पित कर हम गुणों की आराधना कर रहे हैं। उनका प्रशस्त जीवन हम सभी लोगों को प्रेरणास्रोत बने, इस भावना से विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

-डॉ. अशोक कुमार जैन, लाडनूँ (राजस्थान)

जन्मान्तर प्राप्त वैदुष्य

आत्मा नित्य, निरंजन, निरामय एवं शाश्वत है। संसार अवस्था में कर्मोपाधिवश गति एवं आयुबंध के साथ-साथ अन्य कर्मों का बंध करता है और जन्म-मरण करता हुआ स्थूल पौद्गलिक पर्याय परिवर्तन करता है। पुनर्जन्म के साथ-साथ जीव कर्मों के क्षयोपशम के अनुसार पूर्व जन्म के संस्कार भी लाता है। जिन जीवों का ज्ञानावरण का जितना क्षयोपशम होता है, तदनुसार पूर्व जन्म की स्मृतियाँ भी उसके साथ होती हैं या निमित्तों के आधार से जागृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो जाती हैं। परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने कातंत्र रूपमाला ग्रंथ के प्रकाशन पर 'मेरे उद्गार' शीर्षक द्वारा स्वयं ऐसा लिखा है।

सन् 1934 तदनुसार वि.सं. 1991 की असौज शुक्ला पूर्णिमा अर्थात् शरद पूर्णिमा के दिन उ.प्र. के बाराबंकी जिले के टिकैतनगर में जन्मी माता-पिता एवं परिवार के धार्मिक संस्कारों में रहकर उनका मन वैराग्योन्मुख हुआ। गृहनगर में प्रारंभिक शिक्षा लेकर उत्कृष्ट ज्ञानार्जन की भावना से वि.सं. 2009 की चैत्र कृष्णा प्रतिपदा के दिन श्री महावीर जी क्षेत्र पर परमपूज्य श्री 108 आचार्य देशभूषण जी से क्षुल्लिका दीक्षा ले ली, पर ज्ञान-पिपासा वृद्धिंगत होने से वि.सं. 2013 की वैशाख कृष्णा दोज की शुभ बेला में राजस्थान के माधोराजपुरा में परमपूज्य 108 आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा लेकर वीरमती से ज्ञानमती नाम प्राप्त कर लिया। ज्ञानार्जन की बलवती भावना के कारण पूज्य आचार्यश्री से निवेदन किया। आचार्यश्री के आदेशानुसार ब्राह्मण विद्वान पं. दामोदर जी शास्त्री से मात्र दो माह के अल्प समय में ही "कातंत्र रूपमाला" का अध्ययन कर संपूर्ण ग्रंथ स्मरण द्वारा कंठस्थ हो गया। पूज्या माताजी ने लिखा है कि पढ़ते समय उन्हें ऐसा लगता था, मानों पूर्व से ही याद हो, यह सब पूर्व जन्म के संस्कार का ही फल था। मात्र "कातंत्र रूपमाला" के आधार पर ही उनका संस्कृत व्याकरण ज्ञान ऐसा विकसित हुआ कि थोड़े ही समय में जैनेन्द्र प्रक्रिया, शब्दार्णव चन्द्रिका, जैनेन्द्र महावृत्ति आदि व्याकरण के ग्रंथों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर संस्कृत के अत्यंत कठिन व्याकरण ग्रंथ अष्टसहस्री का भी सफल अनुवाद कर दिया और संस्कृत के श्रेष्ठ विद्वज्जगत में अपना यश फैलाया। संस्कृत रचनाओं के द्वारा संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि भी की है।

हिन्दी में भी काव्यात्मक शैली में अनेक विधान एवं पूजाओं की रचना की है। जैनदर्शन और न्याय के श्रेष्ठ संस्कृत ग्रंथों का हिन्दी भाषा में अनुवाद कर जैनदर्शन और न्याय के विद्यार्थियों को अध्ययन-अध्यापन में सहयोग किया है। आज भी लेखन में संलग्न हैं। ऐसी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग में संलग्न, आशुकवि, प्रखर-प्रवक्ता, विद्वानों को स्नेह एवं सम्मान देने वाली, त्रिलोक शोध संस्थान के साथ-साथ जम्बूद्वीप एवं अन्य श्रेष्ठ धर्मायतनों का निर्माण कराने वाली, आत्म कल्याण के साथ-साथ जन-जन के कल्याण की भावना सम्पन्न, सिद्धांत वाचस्पति, न्यायदिवाकर उपाधियुक्ता परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षा के स्वर्ण जयंती के शुभावसर पर उनके शतायुष्क की कामना एवं उनके श्रीचरणों में सादर विनयांजलि अर्पित करते हैं।

-डॉ. नेमीचन्द्र जैन (पूर्व प्राचार्य), खुरई (म.प्र.)

बीसवीं सदी में साक्षात् सरस्वती

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की 50वीं दीक्षा जयंती के पावन अवसर पर "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" का प्रकाशन किया जा रहा है, अत्यन्त हर्ष का विषय है।

बाराबंकी के टिकैतनगर में श्रीमान् छोटेलाल जी जैन एवं श्रीमती मोहिनी देवी जी जैन के घर में जन्मी नन्हीं बालिका "मैना" मात्र अठारह वर्ष की अल्प आयु में ही वैराग्य की ओर अग्रसित होकर बाल ब्रह्मचारिणी रहते हुए आर्यिका दीक्षा लेकर जगत् पूज्य माताजी आज वर्तमान की सर्वश्रेष्ठ साध्वी हैं।

पूज्य माताजी ने अपने साध्वी जीवन में त्याग तपस्या के कठिन मार्ग पर अग्रसर रहते हुए लगभग 200 से भी अधिक ग्रंथों, विधान, चित्र कथाएँ, एकांकी आदि की रचना करके जैन समाज पर जो उपकार किया है, वह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतुलनीय है। जिसके लिए यदि माताजी को 'साक्षात् सरस्वती' की उपमा दी जाये, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

ज्ञान, ध्यान, त्याग, तपस्या में रत रहते हुए भी आपने जम्बूद्वीप रचना, नंद्यावर्त महल आदि के निर्माण की प्रेरणा देकर "जिसकी मात्र कल्पना ही नहीं की जा सकती थी" उन कल्पनाओं को साकाररूप प्रदान कराके जो ऐतिहासिक कार्य किया है, वह आपकी दूरदर्शिता का द्योतक है। आपके इस उपकार को जैन समाज सदियों तक नहीं भुला सकेगा।

जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति एवं समवसरण श्रीविहार रथ प्रवर्तन द्वारा सम्पूर्ण भारत में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार कराके विश्वशांति अहिंसा, सुख, समृद्धि का संदेश दिया, यह आपके ही प्रयासों का सुफल है। पूज्य माताजी की प्रेरणा से संचालित श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा दिया जाने वाला गणिनी आर्यिका ज्ञानमती पुरस्कार (2001 में) जैन जगत में ख्याति प्राप्त प्रकाण्ड विद्वान एवं मेरे मार्गदर्शक मैनपुरी नगर के ही पं. श्री शिवचरणलाल जी जैन को दिया गया, जिससे सारे देश में मैनपुरी नगर को गरिमा प्राप्त हुई, इसके लिए समस्त जैन समाज मैनपुरी पूज्य माताजी एवं संस्थान का कृतज्ञ रहेगा। पूज्य माताजी की प्रेरणा से कराये गये कार्यों एवं गुणों का वर्णन करना तो ऐसा ही है जैसे सूर्य के सामने दीपक जलाना। फिर भी मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि पूज्य माताजी ने अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करते हुए भव्य जीवों के लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया है, जिसके लिए हम सभी को पूज्य माताजी का कृतज्ञ होना चाहिए। ऐसी विलक्षण प्रतिभा की धनी, त्याग, तपस्या, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, परम तपस्वी, दर्शन-ज्ञान-चारित्र से परिपूर्ण आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में कोटिशः नमन करते हुए उनके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करता हूँ।

-पं. कमल कुमार जैन, मैनपुरी

हम सभी महान पुण्यशाली हैं!

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैनधर्म की दिगम्बर परम्परा में दीक्षित वर्तमान काल की सर्वोच्च साध्वी हैं। आपने अपने 50 वर्षीय दीक्षित जीवन में भारत की सहस्रों किलोमीटर की पदयात्राएँ कर नैतिक मूल्यों, शाकाहार एवं जैन संस्कृति का व्यापक प्रचार-प्रसार किया है। अध्यात्म साहित्य, व्याकरण एवं अन्यान्य विविध विषयक 200 से अधिक ग्रंथों का सृजन किया है।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान ने हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना, त्रिमूर्ति मंदिर, कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, ॐ मंदिर आदि के निर्माण व अन्य साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालित कर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है।

हमारे असीम पुण्योदय से सन् 2000 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का ससंघ चातुर्मास कमल मंदिर प्रीतविहार, दिल्ली में हुआ। इस मंगल चातुर्मास के मध्य अनेक धार्मिक व शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। उन्हीं कार्यक्रमों की शृंखला में 4 फरवरी सन् 2000 को ऐतिहासिक लाल किला मैदान में "भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव" का भव्य आयोजन करवाया, जिसमें कैलाशपर्वत की आकर्षक एवं भव्य रचना बनाकर सभी श्रद्धालु भक्तों को उसके दर्शन एवं महाभिषेक का लाभ प्रदान किया गया था। लेकिन उस पर चढ़कर उसकी यात्रा की भावना अधूरी रह गई थी। जनसाधारण की इन्हीं भावनाओं को ध्यान में रखते हुए पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से प्रीतविहार जैन समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा "कैलाशपर्वत-मानसरोवर यात्रा" नाम से विकास मार्ग-कॉफी होम के नजदीक के विशाल मैदान में भव्य रचना बनाकर लाखों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्मप्रेमी बंधुओं को उसकी यात्रा करवायी गई। जिसमें श्रद्धालुजनों ने पर्वत की ऊँची चोटी पर जाकर प्रत्येक जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाओं के दर्शन किए तथा दर्शन के साथ-साथ मानसरोवर झील, झरने, दुर्गम पहाड़ियाँ, गुफाएँ एवं प्राकृतिक दृश्य का भी पूर्ण आनन्द प्राप्त किया। उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि हम साक्षात् कैलाशपर्वत की यात्रा कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त 48 भक्तामर महामण्डल विधान के एक दिवसीय आयोजन में 72 रत्नप्रतिमाओं के महाभिषेक का लाभ प्राप्त हुआ।

माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर मैं अपनी व प्रीतविहार जैन समाज की ओर से पूज्य माताजी के प्रति विनयांजलि प्रस्तुत करता हूँ। मैं उनकी दीर्घ आयु व स्वस्थ जीवन की भी कामना करता हूँ।

-सागरचंद जैन, प्रीतविहार-दिल्ली
(पूर्व अध्यक्ष-प्रीतविहार जैन समाज)

नारी जगत की आदर्श साधिका

भगवान महावीर का तीर्थ सर्वोदय तीर्थ है। इसमें व्यक्तित्व विकास का सभी को समान अवसर है। जीवन की सार्थकता संयम धारण से है। पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का समग्र जीवन नारी जगत के लिए आदर्श है। सतत ज्ञान और ध्यान की आराधना में संलग्न रहकर जन-जन को मोक्षमार्ग में प्रवृत्त कर रही हैं। हस्तिनापुर को विश्व मानचित्र में प्रतिष्ठित करने का श्रेय पूज्य ज्ञानमती माताजी को है। वक्तृत्व एवं लेखनकला में वे अत्यन्त कुशल हैं। वस्तुतः जैन साधु-साध्वी के मार्ग की साधना अत्यन्त कठिन है। वे इस भौतिकता के युग में नारी जगत के लिए आदर्श हैं। संयम, तप और त्याग की आदर्श साधिका पूज्य ज्ञानमती माताजी को इस अभिनंदन की बेला में श्रद्धा सहित प्रणाम अर्पित करती हूँ।

-श्रीमती क्रान्ति जैन (एम.ए.), लाडनूँ (राज.)

तप-त्याग की साधना में समर्पित हैं आप!

तपश्चर्या की साधना में समर्पित अध्यात्म सृष्टि में विचरण करने वाली, अपनी सात्विक साहित्यिक रचनाओं के द्वारा ज्ञान पिपासुओं की प्यास बुझाने वाली, अपने बहुमूल्य ऊँचे आदर्शों से युक्त व्याख्यानों के द्वारा जन-जन के मानस पटल पर छाई हुई परमपूज्य गणिनी आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी, जिन्होंने अंतःकरण साफ कर हर जटिल एवं उलझी शंकाओं का समाधान कर अंतर्मुखी वनस्थूल में सूक्ष्म की यात्रा के कपाट खोल दिये।

प्रतिभावान आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने आध्यात्मिक जीवन की अजस्र धारा का निर्वाह किया है, जो भारतीय हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि बन गई। आर्यिका ज्ञानमती माताजी जहाँ शालीनता, धर्मज्ञता, अहिंसावादिता, आध्यात्मिकता, गुणज्ञता, काव्यज्ञाता की विधायिनी प्रतिभा हैं, वही आपका बहुमुखी व्यक्तित्व भी दर्पणवत् प्रत्यक्ष प्रमाण है।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी के द्वारा जो साहित्य सृजन हुआ है तथा जिन्होंने जिनवाणी की सेवा कर अजस्रधारा का प्रवाह किया है और प्रतिष्ठा ग्रंथों और विधानों का नवीनीकरण किया तथा विधानों के प्रत्येक काव्यों में भगवद्गुणों का गान करके भावों की जो अभिव्यक्ति की है, वह स्तुत्य और वंदनीय है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधान पूजा पढ़ते समय श्रावकगण जहाँ अपने भावों की विशुद्धि बढ़ाते हैं, वहीं उन गुणों में खोकर अक्षयपुण्य का संपादन करते हैं और वही अपने भावों को उजागर करने से भी नहीं चूकते। पूज्य माताजी ने प्रत्येक काव्यों में अपने भावों तथा भगवत् गुणों का गान किया है।

ऐसी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, आगमनिष्ठ, काव्यज्ञाता की विधायिनी मूरत परमपूज्य गणिनी आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी के पावन श्रीचरणों में बारम्बार नमन करता हुआ, उनके स्वस्थ, धार्मिक, शतायु और रत्नत्रय वृद्धि की मंगलकामना करता हुआ विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

-पं. आनन्द प्रकाश जैन (शास्त्री), कलकत्ता

जिनेन्द्र भक्ति और श्रुतभक्ति

एक बार जब मैंने प्रश्नमंच के एक प्रश्न में पूछा कि ऐसी कौन सी माताजी हैं, जिन्होंने जैन साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर सबसे अधिक ग्रंथों की रचना की है? सन्नाटा सा छा गया, थोड़ी देर में मैंने कहा कि चलो यह प्रश्न कैंसिल करते हैं। तब बहुत सी आवाजें आयीं कि आप बताइये! तब मैंने धर्म एवं साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाली प्रथम गणिनी आर्यिकारत्न पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के साहित्य सृजन की चर्चा की। आश्चर्य से लोगों का मुँह खुला का खुला रह गया। बहुत से लोगों को पता तो था कि माताजी साहित्य-सृजन करती हैं पर उनका इतना विपुल साहित्य है, यह जानकारी सामान्य लोगों को कम ही थी। जिनेन्द्र भक्ति के साथ श्रुतभक्ति में भी उनकी लगनशीलता स्पष्ट दिखाई देती है। वे श्रुत का स्वयं अभ्यास करती हैं और ग्रंथ लेखन के माध्यम से न जाने कितने लोगों को ज्ञान का प्रकाश दिखा रही हैं। जैनधर्म-संस्कृति-साहित्य के क्षेत्र में पूज्य माताजी का योगदान जैनधर्म के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। भविष्य में शोधपरक अनुसंधान कर्ताओं को भी माताजी के साहित्य से भरपूर मार्गदर्शन मिलेगा। इस स्वर्णिम अवसर पर भावना भाती हूँ कि माताजी की लेखनी इसी तरह चलती रहे और आने वाली पीढ़ी को मार्गदर्शन तो मिले ही, साथ ही धर्म एवं अध्यात्मसाधना का मार्ग भी प्रशस्त हो।

-डॉ. ज्योति जैन, खतौली

आपका व्यक्तित्व विलक्षण एवं बहुआयामी है

होनहार बिरवान के होत चीकने पात' इस उक्ति के अनुसार बचपन में ही कु. मैना के अद्वितीय व्यक्तित्व का आभास होने लगता था। बारह वर्ष की अवस्था में पद्मनंदिपंचविंशतिका नामक ग्रंथ के स्वाध्याय से कु. मैना के अंतरंग में जो वैराग्य का बीजारोपण हुआ, वह आज वटवृक्ष के रूप में परमपूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी के नाम से हमारे समक्ष है। बालब्रह्मचारिणी आर्यिका ज्ञानमती माताजी के द्वारा काफी विशाल साहित्य का सृजन हुआ। जैनधर्म, जैन साहित्य और जैन संस्कृति के उन्नयन में आपका महत्वपूर्ण योगदान है। दर्शनशास्त्र, धर्म, अध्यात्म और इतिहास आदि विषयों पर आपका समान अधिकार है। आपको साहित्य की विभिन्न शैलियों जैसे गद्य, पद्य आदि में विशेष महारथ हासिल है। बच्चों को संस्कारित करने और उनके जीवन में सदाचार का बीजारोपण करने के लिए पूज्य माताजी ने अतिसरल भाषा में अनेक बाल साहित्य की रचना की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपका व्यक्तित्व विलक्षण एवं बहुआयामी है। भारत की अध्यात्म विभूतियों में पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का एक अलग ही स्थान है। आत्म विभूतियों की वाणी हृदय और आत्मा को पवित्र करती है और यही विशेषगुण आपकी मधुरवाणी में भी है। पूज्य माताजी ने देश के तमाम सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र और तीर्थक्षेत्रों की वंदना कर उनका जीर्णोद्धार भी कराया। पूज्य माताजी तप और त्याग की मूर्ति हैं, शान्ति और संयम की जीवन्त प्रतिमा है। आपके हृदय में क्षमा, दया, करुणा, सहनशीलता, वात्सल्य और स्नेह का अपार भण्डार है। मैं बहुमुखी प्रतिभा की धनी पूज्य ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व को, उनके गुणों को, शब्दों में बांधना स्वयं का अल्पज्ञान ही मानता हूँ, पर भक्ति के वशीभूत होकर अपने मनोभावों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, हम सब आपके पदानुगामी बनें। आपकी ज्ञानरूपी किरणें, हमारे अंदर प्रवेश कर हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जायें, ऐसी प्रशम और प्रज्ञा की मूर्ति ज्ञानमती माताजी के प्रति अपनी विनम्र विनयांजलि अर्पित करता हुआ चरण-कमल में बार-बार नतमस्तक होता हूँ।

-डॉ. सौरभ जैन, मैनपुरी

जब गूँज उठा महावीर भवन

नई दिल्ली से प्रयाग की ओर विहार करके पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी 1 जनवरी 2001को ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ-प्रयाग पहुँची और उसी दिन पूज्य माताजी ने भगवान ऋषभदेव की तप एवं केवलज्ञान धरा पर अपनी अमूल्य कृति "विश्वशांति महावीर विधान" को पूर्ण किया। मेरा मन यह सोचकर आज भी आल्हादित हो उठता है कि असीम पुण्य के बंध से पूज्य माताजी के आशीर्वाद से महावीर जयंती अप्रैल 2001 में इस विधान में सौधर्म इन्द्र बनकर सर्वप्रथम भगवान महावीर के चरणों में 2600 रत्नमयी अर्घ्य चढ़ाने का पावन अवसर मुझे व मेरी पत्नी श्रीमती साधना जैन को प्राप्त हुआ। पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ सानिध्य में जीरोरोड जैन मंदिर स्थित महावीर जयंती भवन स्वर्णिम आभा से भर उठा था, उन 10 दिनों की स्मृतियाँ मेरे जीवन की अमूल्य निधि हैं। वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती मनाने का सौभाग्य हमको मिल रहा है, आगे इसी प्रकार हमको पूज्य माताजी की हीरक जयंती मनाने का भी अवसर प्राप्त हो।

-कृष्ण कुमार जैन, इलाहाबाद

(मंत्री-श्री मुकुन्दीलाल दि. जैन मंदिर, प्रयाग)

क्षण-क्षण प्रतिक्षण आनन्दित हूँ

माताजी का हृदयरूपी अनुराग तो सदैव पराकाष्ठा 'दया' के रूप में पल्लवित होता रहा है। उत्तरप्रदेश के सीतापुर जनपद में महमूदाबाद की धरित्री जो ननिहाल के रूप में विशेष प्रेमभावनाएँ, आबद्धित-हर्षित और कुसुमित लीलाओं की परिदृश्यक है, विनयांजलि समर्पण करने को उत्कंठित है।

तप के क्षेत्र में विभूषणों से अभिनन्दित आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज ने जिस क्षण चैत्र कृष्णा प्रतिपदा विक्रमी संवत् दो हजार नौ में माताजी को श्री महावीर जी में क्षुल्लिका दीक्षा दी, सम्पूर्ण प्रकृति में आध्यात्मिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सजीवता प्रतिबिम्बित हो उठी, विक्रमी संवत् दो हजार तेरह में वैशाख कृष्णा द्वितीया ने माताजी को महानात्मा आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज की अनुपम दृष्टि से अवलोकित कर "आर्यिका दीक्षा" का सुअवसर घटित किया, सन्तुलित प्रवाह की सजगता से जीवन जगमगा उठा।

वर्तमान सम्पूर्ण भारत का ही धरातल नहीं, विदेश भी माँ की सुकृपाकांक्षी अवलोकित हेतु जिज्ञासु है।

मांगीतुंगी, अयोध्या, अहिच्छत्र, कुण्डलपुर (नालंदा), प्रयाग-इलाहाबाद, बनारस, काकन्दी और विश्वविख्यात जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर की जगमगाहट से सम्पूर्ण प्रकृति अनुकम्पित और आल्हादित हो रही है।

आपके चरणों में स्वानुभूति अर्पित करते हुए हृदय अनुराग के अतिरेक से प्रमुदित है।

महमूदाबाद की धरती सदैव आपकी असीम अनुकम्पा से आनन्दित एवं सुकृपालु छाया के रूप में धर्मज्ञान से अवलोकित रही है। प्रकृति की विघ्नलता वर्तमान रूप धारण कर आपके चरणों में विनयावनत है-

क्षण-क्षण प्रतिक्षण आनन्दित हूँ, श्रद्धा शीश झुकाता हूँ।
आत्म ज्ञानमय माता न्यारी, प्रमुदित तनमन अर्पित हूँ।
स्वपाता हूँ माँ की छैया, कृपा रूप मैं गन्धित हूँ।।
क्षण-क्षण प्रतिक्षण आनन्दित हूँ।

-प्रेमचंद जैन, महमूदाबाद

तां ज्ञानमूर्तिममलां सततं नमामि

-आर्यिका चन्दनामती

बसन्ततिलका छंद —

या ज्ञानवारिग्रहणे पृथिवी समाना,
या धर्मध्यानकरणे धरणिः समाना।
या संघवृद्धिकरणे गणिनी समाना,
तां ज्ञानमूर्तिममलां सततं नमामि।।1।।

ते अम्ब! ज्ञानमति नाम परं पवित्रं,
चारित्रनन्दनवने भ्रमणं करोसि।
कल्याणधामशिखरोपरि गन्तुकामा,
तां ज्ञानमूर्तिममलां सततं नमामि।।2।।

संसार सागर समुत्तरणाय नौका,
मिथ्यान्धकारहरणाय विधोश्च रश्मिः।
भूमण्डले त्विह प्रसिद्धं ज्ञानज्योतिः,
तां ज्ञानमूर्तिममलां सततं नमामि।।3।।

कर्मारिदुःखदलनाय सदानुरक्ता,
पंचेन्द्रियेषु विषयेषु सदा विरक्ता।
शास्त्रानुशीलनगुणेषु सदैव व्यस्ता,
तां ज्ञानमूर्तिममलां सततं नमामि।।4।।

भक्त्या दधाति हृदि यो तव नाममात्रं,
अज्ञानमोहतिमिरं किल नाशयेत् सः।
ते चन्दनामतिरपि स्तवनैकबुद्ध्या,
त्वां ज्ञानमूर्तिममलां सततं नमामि।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका ज्ञानमती की साहित्य-साधना

उत्तरप्रदेश के टिकैतनगर नामक कस्बे में 22 अक्टूबर सन् 1934 में श्री छोटेलाल की धर्मपत्नी मोहिनी देवी ने मैना नाम की एक कन्या को जन्म दिया। यह वह समय था, जब घर-परिवार में पुत्र के जन्म पर तो खुशियाँ मनायी जाती थीं, लेकिन पुत्री के जन्म पर सबके चेहरे मुरझा जाते थे। बचपन में सबकी झिड़कियाँ खाना कन्याओं की नियति बन चुकी थी। बड़े होने पर चक्की-चूल्हा में जुटना, कपड़े धोना, बर्तन मांजना और खाली समय में सिलाई-बुनाई करना, यही इनकी दिनचर्या थी। कन्याओं को पढ़ाने-लिखाने में उनके माता-पिता को रुचि नहीं थी। अक्षरज्ञान और थोड़ा सा जोड़नी सीख लेने पर ही कन्या-शिक्षा को इतिश्री मान ली जाती थी। कु. मैना ने कन्याओं के विषय में प्रचलित रूढ़ियों की इस जंजीर को तोड़कर उस समय के समाज में एक क्रांति का सूत्रपात किया।

वह बचपन से ही मंदिर जाती थी और वहाँ प्रतिदिन चल कर प्रवचन को बड़ी रुचि से सुनती थी। अक्षर-ज्ञान और प्रारंभिक शिक्षा उनके गाँव में ही उपलब्ध थी। माँ उन्हें शीलकथा और दर्शन-कथा पढ़ाया करती थीं। जब वह पाठशाला में पढ़ रही थीं, तब वहाँ अभिनीत एक नाटक अकलंक-निकलंक को देखकर उनके मन में उन्हीं की तरह धर्मप्रचार करने का भाव उत्पन्न हुआ। उसी के अनुसार उन्होंने विवाह-बंधन में न फंसने का भी निर्णय ले लिया।

उस समय मिथ्यात्व का प्रचार चरम पर था। घर-घर में छोटे देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी। बाधाओं के निवारण के लिए पीपल आदि वृक्षों की पूजा-अर्चनादि लोग करते रहते थे। लोग संस्कार-शून्य थे। माताजी को यह सब देखकर कष्ट होता था। विद्वानों का एक ऐसा वर्ग भी जो केवल शुद्धात्मा के गीत गाते थे, किन्तु श्रावकों की पूजा-पाठ और व्रत आदि क्रियाओं को महत्वहीन बताते थे। गुण-पूजा का बोलबाला था। माताजी ने मन में ठान लिया कि वह लोगों को सम्यग्ज्ञान के प्रचार द्वारा जागृत करेंगी और सन्मार्ग में लगायेंगीं। जब भी वह दस-बीस बहनों के बीच में बैठतीं, वह उनसे सम्यक्त्व की चर्चा करती थीं। कुछ रूढिग्रस्त महिलाएं प्रारंभ में जो उनकी बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देती थीं, पर धीरे-धीरे उनके विचारों में परिवर्तन दिखाई देने लगा। उनकी माँ को विवाह के समय दहेज में पिता ने पद्मनंदिपंचविंशतिका नाम का एक ग्रंथ भी दहेज में दिया था। माँ उसका स्वाध्याय किया करती थीं और इस ग्रंथ के स्वाध्याय से प्रेरणा पाकर उन्होंने आजन्म शीलव्रत और अष्टमी-चौदस का ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया था। ऐसी संस्कारशील माँ की बेटी मैना पर उनका प्रभाव कैसे न पड़ता? उन्हें भी माँ से स्वाध्याय की प्रेरणा मिली। उन्होंने भी पद्मनंदिपंचविंशतिका का स्वाध्याय किया और उससे प्रेरणा पाकर ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर वैराग्योन्मुख हो गईं। उन्होंने स्कूल में छहढाला का अध्ययन किया और जब उसकी परीक्षा हुई, तो वे पुरस्कृत की गईं। इसमें उनका उत्साह बढ़ा और वह घर पर ही बारह भावना, वैराग्य भावना अनेक स्तुतियाँ पढ़ने लगीं। उन्होंने इन सबको कंठस्थ कर लिया। इसके अतिरिक्त वह सीता जी और राजुल के चरित्र भी पढ़ती थीं। उनके इस तरह दृढ़ हुए वैराग्य भाव को देखकर माता-पिता उनके विवाह की चर्चा करने लगे, जैसे ही इनकी भनक उन्हें लगी, वैसे ही उन्होंने अपनी माँ से एक दिन कहा-मुझे अपनी आत्मा का कल्याण करना है। मैं इस मनुष्य भव को व्यर्थ नहीं खोना चाहती। मैं तो गृहत्याग कर मोक्ष-मार्ग पर चलने का दृढ़ निश्चय कर चुकी हूँ। उनके दृढ़ निश्चय को देखकर माँ को भी चुप रहना पड़ा। जब वह मात्र 18 वर्ष की थीं, उन्होंने आचार्य देशभूषण महाराज से आजन्म ब्रह्मचर्यव्रतरूप सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग का नियम ले लिया। इस छोटी वय में उनके इस साहस को देखकर सब लोग दंग रह गये। ठीक एक वर्ष बाद उन्होंने आचार्य श्री देशभूषण महाराज से ही ग्यारह प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। उनका नाम क्षुल्लिका 'वीरमती' रखा गया। सन् 1956 में वह बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य शांतिसागर महाराज के पट्टशिष्य श्री वीरसागर महाराज से दीक्षा लेकर आर्यिका बन गईं। आज आर्यिका ज्ञानमती के रूप में अपनी विद्वत्ता, निर्दोष चर्या, ग्रंथ लेखिका, तीर्थोद्धारिका के रूप में संपूर्ण भारत में जन-जन की श्रद्धा का पात्र बनी हुई हैं। आज माताजी को जैन महिला जगत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में बीसवीं सदी के आश्चर्य के रूप में देखा जाता है। पिछले दो हजार वर्षों में वह ऐसी प्रथम महिला हैं, जिन्होंने अपने कोमल करों से सुई-धागा या सलाइयाँ न पकड़कर कलम पकड़ी और ग्रंथ लेखन के क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया। गत पाँच दशकों में उन्होंने लगभग 200 ग्रंथ लिखे हैं। लेखन कर्म अपने आप में एक कठोर तपस्या है और इस तपस्या से माताजी ने अपने अन्तःकरण को निष्कलुष और पवित्र बनाया है। माताजी की प्रतिभा बहुमुखी है। उन्होंने दर्शन-शास्त्र, धर्म, अध्यात्म, गणित, भूगोल, खगोल, नीति, इतिहास, कर्मकांड आदि सभी क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में लेखन कार्य किया है। साहित्य की विविध शैलियों—जैसे गद्य, पद्य, नाटक, कहानी, संस्मरण, आत्मकथा, पूजा-विधान आदि सभी में उन्हें विशेषज्ञता प्राप्त है। उनकी कीर्ति-कौमुदी केवल देश में ही नहीं, विदेशों में भी फैल चुकी है। पाश्चात्य् विद्वान भी उनकी रचनाधर्मिता की प्रशंसा करते हैं।

अनेक तीर्थक्षेत्रों के जीर्णोद्धार और विकास के लिए उन्होंने जो प्रशस्त प्रेरणा दी है और उससे एक निश्चित समय-सीमा में इन क्षेत्रों के प्रति भक्तों का जो आकर्षण बढ़ा है, इससे उनकी गणना इतिहास-पुरुषों की श्रेणी में की जाने लगी है। पिछले सैकड़ों वर्षों से अतिशय क्षेत्रों के विकास की ओर तो लोगों का ध्यान था, क्योंकि लोग प्रायः चमत्कारप्रिय होते हैं, किन्तु कल्याणक क्षेत्रों की ओर किसी का ध्यान नहीं था, उनकी दुर्दशा देखकर यात्रियों का मन वहाँ ठहरने का नहीं होता था। न वहाँ आने-जाने के लिए पक्की सड़कें थी और न ठहरने के लिए धर्मशालाएँ। मंदिर भी जीर्णशीर्ण दशा में थे। भगवान के साधना-स्थलों की ऐसी दुर्दशा देखकर माताजी के मन में उनके कायाकल्प का भाव उत्पन्न हुआ। आज उनकी प्रेरणा से हस्तिनापुर, अयोध्या, इलाहाबाद, कुण्डलपुर, वाराणसी, राजगृही, गुणावां आदि क्षेत्रों में विकास की जैसी धारा बह रही है, उसका श्रेय माताजी की लगन और प्रेरणा को ही है। इनमें से कुछ स्थान तो आज धरती के स्वर्ग की शोभा को प्राप्त कर चुके हैं। दक्षिण भारत में सम्मेदशिखर के नाम से विख्यात महाराष्ट्र के मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर भगवान ऋषभदेव की 108 फुट ऊँची प्रतिमा का निर्माण हो रहा है। उत्तुंग और खड्गासन प्रतिमाओं में यह विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा होगी। इसके बन जाने पर विश्वप्रसिद्ध श्रवणबेलगोला स्थित गोम्मटेश्वर की प्रतिमा के निर्माता वीर मार्तण्ड चामुण्डराय की तरह लोग उन्हें याद करेंगे। विद्वानों के प्रति माताजी के हृदय में असीम वात्सल्य है। उनका कहना है कि प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर पर्यंत जैन धर्म की जो धारा अनवरत रूप से प्रवाहित होती आ रही है, उसको जीवंत और अक्षुण्ण बनाये रखने में साधुवर्ग के बाद विद्वानों की ही सबसे बड़ी भूमिका रहेगी। इसकी पूर्ति के लिए उन्होंने विद्वत् प्रशिक्षण-शिविरों के माध्यम से विद्वानों को जैन धर्म का तलस्पर्शी पाण्डित्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है। आज की पीढ़ी के शताधिक विद्वान उनके इस औदार्य के प्रति नतमस्तक हैं। उन्होंने देश के ही नहीं, विश्वभर के मनीषियों को जैनधर्म, दर्शन, गणित और खगोल भूगोल से संबंधित अब तक के अछूते प्रमेयों पर शोधकार्य करने के लिए प्रेरित और उत्साहित किया है। इस दिशा में अनेक अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनारों की संयोजना करने वाली वह प्रथम महिलारत्न हैं।

साहित्य-प्रकाशन के क्षेत्र में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान और इसके अंतर्गत वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की स्थापना एक स्पृहणीय कार्य है। संस्थान से सम्यग्ज्ञान शीर्षक से एक मासिक पत्र भी प्रकाशित होता है, जिसमें जैन धर्म के चारों अनुयोगों से संबंधित विषय-वस्तु पाठकों को पढ़ने के लिए मिलती है। अनेक रथयात्राओं के सफल प्रवर्तन द्वारा उन्होंने पूरे भारत के गाँव-गाँव और घर-घर में जैनधर्म का अलख जगाने का कार्य किया है। अनेक विधानों की रचनाकर एवं पूजा-पाठ एवं विश्वशांति कामना यज्ञ की एक अजस्र श्रृंखला जो देश में चल रही है, उसका श्रेय उन्हीं को जाता है, कहते हैं कि भक्ति में बड़ी शक्ति होती है। एक प्रकार से अल्प ज्ञानियों के लिए वह मोक्षमहल तक पहुँचने का एक शार्ट-कट मार्ग है। इस भक्तिमार्ग को पूज्य माताजी ने जीवंत बनाया है। पूज्य माताजी के और भी अनन्त उपकार हैं। वह पूरे देश में घूम-घूम कर व्यसन मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दे रही हैं। उनका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सानिध्य पाने के लिए पूरे देश के लोग उत्सुक और व्यग्र रहते हैं। वह एक युगनायिक आर्यिका हैं।

उनके उदार व्यक्तित्व और विराट कृतित्व पर बड़े-बड़े शोध ग्रंथ लिखे जा सकते हैं।

सैकड़ों वर्षों में ही कोई एक ऐसी विभूति जन्म लेती हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से एक नयी चैतन्य धारा का उद्‌गम और विकास हो, यही हमारी भावना है।

-श्रीमती अलका जैन, अहमदाबाद

प्रतिभाशाली विदुषी माता

पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी से मैं बाल्यकाल से ही परिचित हूँ। आपका मेरे स्वर्गीय पिता श्री रामचन्द्र जी कोठ्यारी एवं मेरे परिवार के प्रति सदैव आशीर्वाद रहा है। माताजी प्रतिभाशाली विदुषी हैं। आपके द्वारा रचित ग्रंथ एवं टीकाएँ विद्वत्तापूर्ण हैं। आपकी रुचि न्याय, व्याकरण आदि सभी विषयों में है। आपके द्वारा रचित कविताएँ रसपूर्ण एवं ओजस्वी हैं। आपने ऐसी अनेक विधान एवं पूजाओं की रचनाएँ बनाकर दी हैं, जो कभी हिन्दी भाषा में उपलब्ध नहीं थे। आपके द्वारा रचे हुए हिन्दी पूजन विधानों से सभी धर्मप्रेमी लाभ उठा रहे हैं। पूज्य माताजी की विद्वत्ता की जितनी भी प्रशंसा की जाये, थोड़ी ही है। आप स्वास्थ्य नरम रहते हुए भी निरन्तर ज्ञानोपयोग में लगी रहती हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि पूज्य माताजी शतायु होकर हमें सम्यग्ज्ञान देती रहें, यही मेरी विनयांजलि है।

-राजकुमार कोठारी, जयपुर (राज.)

कृतज्ञ है दिगम्बर जैन समाज

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का अभिनंदन कर, जीव सभी कृत-कृत्य हो रहे।
निश दिन ध्यान धरकर, आत्मा का, मन के कलुष-विचार धो रहे।।

जैन जगत में आर्यिकाओं में ज्ञान सूर्य समान जगतीतल के मिथ्यात्वरूपी अंधकार को शमन करने वाली पूज्य 105 गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी प्रसिद्धि को प्राप्त हुई हैं। आपकी संयम, साधना, त्याग, तपस्या से जैन जगत में अत्यन्त गौरव एवं श्रद्धा के साथ नाम स्मरण किया जाता है।

दिगम्बर जैन समाज के तीर्थंकरों के कल्याणक क्षेत्रों की जो प्रगति देखने में आयी है, वह पूज्य ज्ञानमती माताजी के दिशानिर्देश एवं प्रेरणा की ही देन है। पूज्य माताजी की लेखनी में समन्तभद्र जैसी दृढ़ता प्रतीत होती है। बहु आयामी व्यक्तित्व की धनी न्याय, सिद्धान्त, कथा, विधान एवं शोधपूर्ण साहित्य में आपके आध्यात्मिक चिन्तन की शैली स्पष्ट झलकती है। पूज्य माताजी के विषय में ऐसा कहे, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

वदनं प्रसाद सदनं सदयं, हृदयं सुधा मुचो वाचः।
करणं परोपकरणं येषां केषां न ते वन्द्याः।।

अर्थात् प्रसन्नता से युक्त ही जिनका मुख मण्डल है, दया से पूर्ण जिनका हृदय है, सुधामयी है जिनकी वाणी, परोपकार ही जिनका कृत्य है, ऐसी आर्यिकाशिरोमणि किनके द्वारा वंदनीय एवं अभिनंदनीय नहीं हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्यात्म साहित्य जगत में तो आपने वह कार्य किया हैं, जो सदियों तक याद रखा जायेगा। जिन्होंने 18 वर्ष की अल्पवय में ही दीक्षा लेकर 50 वर्ष तक देश में विहार करके धर्म की प्रभावना की है, वह अविस्मरणीय एवं वंदनीय है। आज भी आपके मार्गदर्शन ने कुण्डलपुर में भगवान महावीर की जन्मभूमि को जो नया रूप दिया, क्षेत्र की उन्नति कर वार्षिक मेला, महामस्तकाभिषेक, पंचकल्याणक आदि आयोजनों के माध्यम से जैन समाज में एक नया महत्वपूर्ण चेतना का स्रोत बनाया है, वह भी आपकी संयम साधना का ही प्रभाव रहा है।

अतः दिगम्बर जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि पूज्य 105 श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष की पूर्णता पर प्रकाशित होने वाले "गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" प्रकाशन पर हम उनका हार्दिक अभिनंदन करते हैं एवं उनके स्वस्थ शतायु होने की कामना करते हैं। ऐसी विदुषी पूज्य माताजी के पावन चरणों में सविनय वंदामि करता हुआ मैं अपने आपको गौरवान्वित मानता हूँ। इन्हीं शब्दों के साथ कि-

जब तक सूरज चाँद जगत में, भूमण्डल चमकाएँगे।
इतिहास तुम्हारे पन्नों से, जिनवाणी को दर्शाएँगे।।

-प्रतिष्ठाचार्य पं. कमल कुमार जैन शास्त्री, कलकत्ता

ऊर्ध्वमुखी चेतना का निष्पन्द : आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी

विगत पाँच दशकों से संयम और साधना में सतत तल्लीन गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि पूज्या श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने पुरुषार्थ से विविध धार्मिक एवं साहित्यिक कार्य सम्पन्न कर अपनी ऊर्जा का सही दिशा में उपयोग किया है। आचार्य विद्यानंदकृत अष्टसहस्री जैसे दुरूह न्यायविषयक ग्रंथ, जो सदियों से विद्वज्जनों के बीच कष्टसहस्री के रूप में जाना जाता रहा है, का हिन्दी अनुवाद कर अपनी साहित्य-साधना एवं प्रतिभा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस एक ग्रंथ के अनुवाद से आपकी कीर्तिकौमुदी की जो पताका साहित्य-साधकों के मध्य लहराई, वह उत्तरोत्तर वृद्धिंगत होती गई और उसी का परिणाम यह है कि आपकी लेखनी से चारों अनुयोगों के शताधिक मौलिक ग्रंथों के साथ ही अनेक टीका ग्रंथों का सृजन हुआ है, हो रहा है।

आचार्य कुन्दकुन्दकृत नियमसार की संस्कृत टीका और धरसेनाचार्य के शिष्यद्वय-पुष्पदंत एवं भूतबलीकृत षट्खण्डागम पर आचार्य वीरसेनकृत धवला टीका पर संस्कृत टीका लिखकर पूज्य माताजी ने उस धारा को प्रवाहित किया है, जो अद्यावधि अवरुद्ध थी। सैकड़ों जैन एवं जैनेतर ग्रंथों से उद्धरण प्रस्तुत कर प्राचीन आचार्यों की शैली में संस्कृत टीकाओं का सृजन आपके वैदुष्य और ऊर्ध्वमुखी चेतना का निष्पन्द है।

पूज्या माताजी की प्रेरणा से अनेक तीर्थों का विकास हुआ है, उनमें दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर, अयोध्या और तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तो हैं ही, साथ ही भगवान महावीर की जन्मस्थली बिहार स्थित कुण्डलपुर का विकास भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

पूज्य माताजी के पास समर्पित भक्तों की एक अच्छी टीम है और सांसारिक पक्ष के कुटुम्बीजन भी उनके सात्त्विक कार्यों में निरन्तर सहयोगी बने रहते हैं। फलस्वरूप माताजी के प्रत्येक स्वप्न को साकार होने में देर नहीं लगती है। जनवरी 2005 के प्रथम सप्ताह में पूज्या माताजी वाराणसी के भेलूपुर क्षेत्र में ससंघ विराजमान थीं। उस समय एक आम सभा में उनके एक भक्त श्रेष्ठी ने एक गंभीर बात कही थी, जिसका आशय यह था कि हिन्दुस्तान में केवल दो ही महाशक्तियाँ हैं। उन महाशक्तियों में एक हैं अम्बानी बंधु और द्वितीय हैं गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न पूज्य ज्ञानमती माताजी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सचमुच में जब मैं उनके द्वारा संकल्पित कार्यों की समीक्षा करते हुए उन कार्यों को मूर्तरूप में देखता हूँ, तो उक्त भक्त श्रेष्ठी का वह कथन मेरे मानसपटल पर सहसा कौंध जाता है और उसकी यथार्थता का अनुभव कर मैं अत्यन्त प्रमुदित हो जाता हूँ।

हमारे तीर्थ पौद्‌गलिक होने के कारण अचेतन भले ही हों, किन्तु वहाँ विराजित प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ हमारे चेतन मन को प्रभावित किये बिना नही रहती हैं, क्योंकि ये भव्य जीवों के पुण्य का कारण नियम से है, इसमें कहीं कोई संदेह नहीं है। प्रतिमाओं के दर्शन से साक्षात् जिनेन्द्र भगवान का स्मरण होता है, निरन्तर उनका साक्षात् ध्यान होता है और उसके फलस्वरूप पापों का निरोध होता है, पुण्य की प्राप्ति होती है और पुण्योदय से जीवों को इहलोक तथा परलोक संबंधी सभी अभिलषित पदार्थ प्राप्त होते हैं। जिस प्रकार चिन्तामणिरत्न सत्पुरुषों को मन से चिन्तित पदार्थ देता है, उसी प्रकार अचेतन तीर्थ/प्रतिमाएँ भी भक्ति करने वालों को मन से चिन्तित पदार्थ देती हैं। जिस प्रकार अचेतन मणि, मंत्र, औषधि आदि विष तथा रोगादिक को नष्ट करते हैं, उसी प्रकार अचेतन तीर्थ/प्रतिमाएँ भी पूजा-भक्ति करने वाले पुरुषों के विष और रोगादिक को नष्ट करती हैं अतः प्राचीन तीर्थों का उद्धार और आवश्यकतानुसार नवीन तीर्थों/मंदिरों की स्थापना आज भी प्रासंगिक है।

पूज्या माताजी ने उसी सात्त्विक भावना से प्रेरित होकर प्राचीन तीर्थों का उद्धार और आवश्यकतानुसार नवीन तीर्थों की स्थापना करके जीवों के त्रैकालिक पुण्यार्जन में अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है।

उक्त कार्यों के साथ-साथ पूज्या माताजी अपने संयममय जीवन के पूरे पचास वर्ष पूर्ण कर रही हैं और उसी के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा उनके आर्यिका दीक्षा के स्वर्ण जयंती समारोह का दिव्य एवं भव्य आयोजन तथा गौरव ग्रंथ का समर्पण निश्चय ही उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के अनुरूप है।

इस परम पावन अवसर पर मैं पूज्य माताजी के श्रीचरणों में त्रिवार वंदामिपूर्वक सादर विनयांजलि अर्पित करता हुआ उनके स्वस्थ दीर्घायुष्य की मंगलकामना करता हूँ।

-डॉ. कमलेश कुमार जैन, वाराणसी
(रीडर एवं पूर्व अध्यक्ष-काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)

गीत

जिन दर्शन जिन वंदन का, दुनिया में बजता डंका।
गुण गाऊँ ज्ञानमती का, शत वंदन ज्ञानमती का।।टेक.।।
उपसर्ग परीषह सहती, मेरु सम निश्चल रहती।
हे चतुर्थकाल सम माता, दर्पणवत निर्मल गुरु का।।जिन.।।
मंदिर निर्माण कराया, जन जन के मन को भाया।
हे अद्‌भुत भारत माता, उदार भावी गुरु का।।जिन.।।
अट्ठाईस मूलगुण धारी, रत्नत्रय निधि से भारी।
हे निस्पृह धारी माता, व्यवहार कुशल श्री गुरु का।।जिन.।।
ग्रंथों को खूब रचाया, बहु ज्ञान ज्योति प्रगटाया।
दो 'अभयमती' को आशीष, जग विख्याता गुरु का।। जिन.।।

-आर्यिका अभयमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपने जैन संस्कृति में नवचेतना का संचार किया है

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न 105 श्री ज्ञानमती माताजी से मैं करीब 40 वर्षों से बहुत प्रभावित हूँ। माताजी की प्रेरणा से निरन्तर धर्म के प्रति मेरा विश्वास बढ़ा है। माताजी के वात्सल्य से प्रभावित होकर मैं प्रतिवर्ष जन्मजयंती समारोह में उपस्थित होता हूँ व विनयांजलि समर्पित कर अपने आपको धन्य महसूस करता हूँ।

परमपूज्य माताजी के प्रति मैं इतना समर्पित हूँ कि जब भी माताजी के करीब पहुँचता हूँ, तो अपने आप मन से जयकारा गूँज जाता है। परमपूज्य माताजी ने पूरे देश में तीर्थों का उद्धार कर जैन संस्कृति में नवचेतना का संचार किया है। माताजी को आत्मबल से जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं, वे सब ऐतिहासिक आधार स्तंभ हैं। मैं पुनः पुनः माताजी के चरणों में नतमस्तक हूँ व अपेक्षित हूँ कि आपकी सतत प्रेरणा से निरन्तर आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होकर मुक्त हो सकूँ।

विघ्न व आपत्ति के समय पूज्यनीय माताजी के आशीर्वाद से संकटों का निवारण हुआ ही है अतः हृदय से आभारी हूँ।

-शान्तिलाल पारलिया, सलुम्बर (राज.)

विनयांजलि

—दोहा—

श्री जिनवर को नमन करि, नमूँ शारदा मॉय।
मा ता देवी मोहिनी, गोदी तोंहि खिलाय।।
ता त जु छोटे लाल हैं, चार पुत्र के बाप।
जी वन में सन्तति लयो, नौ पुत्री लखि आप।।
का म विषय फल पाय के, धर्म ध्यान मन लीन।
आ गम कथित मक चालते, पुण्य उपार्जन कीन।।
शी श नवाऊँ मात को, नाम ज्ञानमति जान।
वां द विवाद तजूँ सकल, मैना शरणा आन।।
द यो दया करि वीर गुरु, दीक्षा आर्या भ्रात।
मु झको पद जु सुहावना, रह्यो सु कोमल गात।।
झे लत परिषह वन विषै, उम्र रह्यो बावीस।
मि श्री नमते भाव सो, चरण झुकाकर शीश।।
ल हूँ ज्ञान हिरदैविषै, ज्ञानमती को ध्याय।
ता रत भव्यन को सदा, खुद भव से तरि जाय।।
रहे ध्यान त्रै काल में, बाल सती के पाय।
हे! माँ नित यह भावना, पग रज शीश लगाय।।

-मिश्रीलाल जैन, कोहेंडार, इलाहाबाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शत शत वंदन, शत अभिनंदन

हे माता ज्ञानमती गणिनी, तुमको मेरा शतबार नमन।
हे जैनागम की धर्मध्वजा, शत-शत वन्दन शत अभिनंदन।।1।।

तुम धर्मनिष्ठ तुम कर्मनिष्ठ, तुम तपोनिष्ठ सम्यक्ज्ञानी।
तुम यथानाम गुण की प्रतीक, निःशंकित निःकांक्षित ध्यानी।।
तपतेज तुम्हारा फैल रहा, जस अन्तरिक्ष में सूर्य किरन।
हे जैनागम की धर्मध्वजा, शत-शत वंदन शत अभिनंदन।।2।।

तुम ज्ञान ज्योति से जनगणमन, करतीं रहतीं नित आलोकित।
तुम धर्म देशना से अपनी, कर देतीं जनमन आलोकित।।
तुम द्वादशांगमय वाणी से, विकसा देती हो हृदय सुमन।
हे जैनागम की धर्मध्वजा, शत-शत वंदन शत अभिनंदन।।3।।

माँ की वाणी जगकल्याणी, अज्ञान तिमिर हित भानु किरन।
तुम्हरी वाणी में है अमृत, है सम्मोहन हित उद्बोधन।।
वचनामृत गंगा से अपनी, कर देती निर्मल कलुषित मन।
हे जैनागम की धर्मध्वजा, शत-शत वंदन शत अभिनंदन।।4।।

रवि किरणों सी है फैल रही, तपकीर्ति तुम्हारी दिन अनुदिन।
जिस जगह तुम्हारे चरण पड़े, वह बन जाती है नन्दन वन।।
जिस थान तुम्हारा प्रवचन हो, वह बन जाता है शमोशरन।
हे जैनागम की धर्मध्वजा, शत-शत वंदन शत अभिनंदन।।5।।

सब तीर्थों का उद्धार किया, अपने शुभ पावन प्रवचन से।
कर्मों की कड़ियाँ कट जातीं, माता के पावन दर्शन से।।
दीक्षा की स्वर्ण जयंती है, प्रमुदित हैं आज यहाँ जन-जन।
हे जैनागम की धर्मध्वजा, शत-शत वंदन शत अभिनंदन।। 6।।

-डॉ. चन्द्रवीर जैन, शिकोहाबाद

जैनधर्म की वैज्ञानिकता ही नहीं, प्राचीनता को भी बताया

जिन महान व्यक्तियों ने बहुआयामी सोच और संतुलन को साधने का कठिन कार्य किया है, उनमें गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का अप्रतिम स्थान है। उन जैसी दृष्टि की निर्मलता और संकल्प की असाधारण दृढ़ता आज की दुनिया में किसी चमत्कार से कम नहीं है। जैन संदर्भ में क्या जरूरी है और क्या गैरजरूरी, इसकी बेहद मजबूत पकड़ पूज्य गणिनी जी में है। इसीलिए एक ओर जहाँ उन्होंने हस्तिनापुर, अयोध्या, इलाहाबाद, राजगृही जैसे कल्याणकक्षेत्रों को मोहक और सुविधासम्पन्न बनाकर उनका कायाकल्प करने की तरफ ध्यान दिया, वहीं वे चर्या, रचना और विद्वत्ता की ऊँचाई नापने में भी पीछे नहीं रहीं।

गणिनीप्रमुख को लोकमानस की गहरी पहचान है। वे जान सकीं कि सीधे-सीधे सूक्ष्म को नहीं पकड़ा जा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सकता, इसलिए उन्होंने उसके लिए कर्मठ कार्यकर्ता की तरह भी काम किया। पूरे देश में अलख जगाकर व्यसनमुक्त जीवन की प्रेरणा देने, पूजापाठ एवं विश्वशांति यज्ञ की एक अजस्र श्रृंखला शुरू करने जैसे कार्यों में भी वे अग्रणी रहीं। जैन धर्म की वैज्ञानिकता को ही नहीं, उसकी प्राचीनता को भी रेखांकित करते हुए उन्होंने उसकी प्रभावना के लिए भरपूर परिश्रम किया।

पूज्य ज्ञानमती माताजी आज विचार, प्रोत्साहन, प्रेरणा और जीवन तथा आत्मा के कल्याण के लिए ध्रुव नक्षत्र के प्रकाशपुंज की तरह हैं, वे दिशादर्शक हैं। उनकी दीक्षा की आधी शताब्दी का पूरा होना एक ऐसा अवसर है, जब हम भी उस रास्ते पर चलने का संकल्प लेकर उस पर प्रणाम और विश्वासपूर्वक चलें। वे स्वयं अपने रास्ते पर बिना किसी मोह के अपने अमिट पदचिन्ह अंकित करती हुई, अविराम बढ़ती जा रही हैं। उन्हें मेरा शत-शत नमन।

–डॉ. जयकुमार जलज, रतलाम (म.प्र.)

विनयांजलि

श्रद्धेय माँ
सृष्टि के अनंत विश्वास की
साक्षी है
तुम्हारी साधना के
पचास वर्ष,
एक सुदीर्घ कालखंड की
स्वर्णिम उपलब्धियों में
शामिल है
तुम्हारी कालजयी यात्रा
करती हुई
आत्मा से साक्षात्कार,
और समय
जो तुम्हारे बिल्कुल समीप से
छूकर तुम्हारे चरण
हो गया है लीन
तुम्हारी तपस्या के पन्नों में,
सतरंगी है आसमान की आँखें
देखकर
तुम्हारी प्रभावना के रंग,

सच माँ
तुम असीम हो
शब्द नहीं हैं किसी के पास
जो स्पर्श कर सके
तुम्हारे यश की सीमा,
मेरी स्मृतियों में छाया रहेगा
यही हीन भाव
कि,
मैं लिख नहीं सका
वैसी कविता
जैसी कि तुम हो माँ
सदैव गतिमान
निश्छल नदी की तरह,
काल की पगडंडियों में
देगी सुनाई तुम्हारी पदचाप
आने वाले युगों तक
और अनगिन लोग
करते रहेंगे तुम्हारी
चरण वंदना।

–चन्द्रसेन जैन, भोपाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन समाज की अमूल्य निधि

भारतीय जैन जगत के इतिहास में प्रथम बार किसी दिगम्बर जैन साध्वी (आर्यिका माताजी) का दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव अखिल भारतीय स्तर पर मनाया जा रहा है।

गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न 105 परमपूज्य श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा 50 वर्ष पूर्व दीक्षा लेकर अपने तप, त्याग, ज्ञानाराधना, विधान, पाठों, न्याय के ग्रंथों की रचना करना एक इतिहास है।

पूज्य माताजी द्वारा तीर्थक्षेत्रों का विकास तीर्थंकरों की जन्मभूमियों का विकास कराना दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों के लिए एक इतिहास रहेगा।

पूज्य माताजी भारतीय दिगम्बर जैन समाज की अमूल्य निधि, अमूल्य रत्न, हीरा हैं। आप में जितना ज्ञान है, आप ज्ञान का एक अगाध समुद्र हैं। इस ज्ञान समुद्र से समाज ज्ञान, चारित्र, तप, ध्यान, संयम के हीरे प्राप्तकर जीवन सफल बना सकता है।

मैं स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर श्रद्धापूर्वक अपनी भावांजलि प्रस्तुत करता हूँ और कामना करता हूँ कि आपका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के पश्चात् दीक्षा शताब्दी समारोह मनाया जा सके।

-सरमनलाल जैन 'दिवाकर' शास्त्री, सरधना (मेरठ) उ.प्र.

समर्पित हैं उन्हें अभिवंदना के सुमन

रत्नत्रय से पावन जिनका, यह औदारिक तन है।
गुप्ती, समिति अनुप्रेक्षा में रहती जो मगन है।।
आदि युग की ब्राह्मी जैसा जिनका बीत रहा हर क्षण है।
ऐसी आर्यिका माँ ज्ञानमती जी को लाखों बार नमन है।।

वीर प्रभु परमात्मा के पावन चरणों में कोटि-कोटि अभिवंदना करते हुए उन्हीं के पावन चरणों में परमपूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी के मंगलमय स्वस्थ व दीर्घायु की कामना करती हूँ।

प्राणीमात्र को भवताप से बचाने के लिए, मानव से समता, दया व अहिंसा का भाव लाने के लिए, हिंसा पर अहिंसा से विजय प्राप्त करने के लिए, जीवों को मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए कभी-कभी भगवान स्वयं संत-साध्वी के रूप में इस धरती पर अवतरित होते हैं। ईश्वर की कृपा व हमारी कठोर साधना से जब वह हमें मिल जाते हैं, तो हमारा जीवन धन्य हो जाता है।

ऐसे ही प्रातःस्मरणीय परमपूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी का विचार मन में आते ही हमारी नजरों के सामने एक सीधी सादी, निश्छल, निर्दोष, निष्कलंक, चुम्बकीय, चंद्रमा सी सौम्य, शीतल, शांत प्रतिमा आ झलकती है। इनके व्यक्तिव में ऐसा आकर्षण है, जिससे हम सब इनकी ओर स्वयं खिंचे चले आते हैं। इनके दर्शनमात्र से ही आत्म सुख, शांति की अनुभूति होती है। यह एक ऐसी साध्वी हैं, जो नारी जगत के उत्तुंग शिखर पर विराजमान हैं। इनके व्यक्तित्व को, शब्दों की सीमा में बांधना बहुत मुश्किल है।

इनके व्यक्तित्व में है अलौकिक ज्ञान, वाणी में है चुम्बकीय आकर्षण व हृदय में है ममता का, करुणा का, वात्सल्य का अथाह सागर, ये सब अगर किसी एक संत में समाहित हो जाते हैं, तो वे जनमानस के श्रद्धा भक्ति का केन्द्रबिन्दु बन, आराध्य बनकर परमेश्वर का रूप धारण कर लेते हैं। ऐसी हमारी आराध्य, हमारी पथ प्रदर्शक,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नसम जगमगाती, ममतामयी ज्ञानमती माताजी जिनकी लेखनी द्वारा सैकड़ों कृतियों का सृजन हमारे लिए मोक्षपथ प्रदर्शक बनकर हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है और हृदय में दया, करुणा, अहिंसा का भाव जगाकर परमसुख की अनुभूति कराता है।

ऐसी परमपूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी के "आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" के पावन अवसर पर माताजी के श्रीचरणों में मेरी व मेरे परिवार की ओर से श्रद्धा, भक्ती, भावनारूपी पुष्प इन पंक्तियों के साथ सादर समर्पित कर रही हूँ।

चाँद सी शीतलता है जिसमें, सूरज सा प्रकाश,
गंगा सी पावनता है जिसमें, सागर सी गंभीर,
दूर कर दी धरती की तपन, धरती को किया है चमन,
ऐसी पूज्य आर्यिका माँ ज्ञानमती जी को,
श्रद्धा, भक्ती, आस्थापूर्वक मन,वचन, तन से नमन।।

-श्रीमती ज्योति संतोष कुमार पाटनी, नागपुर (महा.)

"सर्वोच्च आर्यिका माताजी"

प्रतिभाएँ नैसर्गिक होती हैं और जब गुरुजनों के आशीर्वाद व प्रोत्साहन से आलोकित हो जायें, तो वे पुण्यशाली आत्माएँ धन्य हो जाती हैं, गुरु नाम धन्य आचार्य 108 श्री वीरसागर जी महामुनिराज से पचास वर्ष पूर्व दीक्षित परमपूज्य गणिनी आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी को यही सुयोग रहा है।

विशिष्ट भव्य आत्माएँ विशेष पुण्य लिए इस धरा पर प्रकट होती रही हैं। परमपूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की आत्मा का पुण्य इतना प्रबल है कि वे स्वयं स्त्रीपर्याय का विच्छेद करते हुए सांसारिक प्राणियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गये हैं। जो भी भव्य प्राणी पूज्य माताजी के चरणों में नतमस्तक हुए हैं, उनसे आत्मकल्याण के लिए प्रेरित हुए हैं, वे विश्ववंदनीय हो गये हैं।

सर्वोच्च प्रज्ञा की धनी पूज्य माताजी ने विस्तृत अध्ययन के साथ समग्र चिन्तवन से, उच्चतम निष्कर्ष को आधार बनाकर ऐतिहासिक महत्व से परिपूर्ण हस्तिनापुर में ही सुमेरु पर्वत को स्थापित करवाकर वास्तविक जम्बूद्वीप की रचना को, श्रावक श्रेष्ठियों, वैज्ञानिकों को प्रेरित कर महानतम रचना का निर्माण करवाया है। जम्बूद्वीप का परिचय कराना सब जन के लिए आवश्यक रहा है।

कई प्राणियों में, विद्वानों में ज्ञान भी होता है, जिज्ञासा भी होती है, लेकिन मात्र इनसे ही काम नहीं चलता है। पूज्य माताजी ने जब-जब सोचा, विचारा, निष्कर्ष निकाला, उस अनुरूप आत्मबल की शक्ति से श्रावकों को प्रेरित कर सही अर्थों में कर दिखाया। विश्ववंदनीय जम्बूद्वीप तो है ही अयोध्या जो तीर्थंकरों की जन्मभूमि रही है, उसे अनेक दिव्य अनुष्ठानों द्वारा जन-जन के लिए मंगलमय बना दिया है। तीर्थराज प्रयाग के महत्व को प्रकाशित करते हुए नवनिर्माण से आच्छादित कर पुनर्जागरण करवा दिया है। वर्तमान शासक जिनेन्द्र 1008 श्री महावीर भगवान के जन्मस्थान को विवादों से निकलवाकर, महान आगम अनुसार स्थापत्य कला के आधार पर नवनिर्माण करवाकर, प्रतिष्ठापित कर हम श्रावकों पर महान उपकार किया है।

पाठ्यक्रमों में त्रुटिपूर्ण तरीके से नैसर्गिक जैनधर्म के प्रवर्तन के बारे में जो भ्रम था, प्रकाशित किया जाता रहा था, उसे हस्तिनापुर में कुलपतियों का अधिवेशन आमंत्रित कर साक्ष्यों के आधार पर समाधान करवाकर, स्वीकृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करवाकर पाठ्यक्रमों में उचित सुधार करवा लिया, जिसकी महती आवश्यकता रही है।

श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र, जिसकी वंदना यात्रियों के लिए दुर्गम रही है, वहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से नवनिर्माण होकर, नये भगवान की प्रतिमा को उत्कीर्ण करवाकर, सहज आकर्षण का केन्द्र बनाया जा रहा है। ऐसे अनेक स्थानों पर माताजी की प्रेरणा से ऐतिहासिक नवनिर्माणों को किया गया है।

श्री जी की पूजा अर्चना के लिए तो पूज्य माताजी द्वारा रचित लय, ताल में आगम अनुसार अति मनोरंजित शब्दों द्वारा विधानों की रचना से तो देश में विधानों, मण्डलों की धूम मच गई है, नव क्रान्ति उपज गई है। किसी भी विधान के लिए पूज्य माताजी द्वारा रचित विधान पूजन की ही भरपूर विवाद रहित मांग रही है। आगम अनुसार नव साहित्य की रचना सहजकार्य नहीं है। परमपूज्य माताजी ने अभी तक जितना साहित्य निर्माण किया है, धर्म प्रभावना को बढ़ाया है, नव प्रेरणाएँ दी हैं, पीढ़ी दर पीढ़ी समाज आपके प्रति कृतज्ञ रहेगी।

पूज्य माताजी को आर्यिका पद पर आरूढ़ हुए सफल पचास वर्ष पूरे हो रहे हैं, अब इन सफल वर्षों के आकलंन से पूज्य माताजी को संतोष है, समाज को महान उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। आई हुई विकृतियों का निराकरण हुआ है, पूजन विधानों का विकास हुआ है, सातिशय पुण्य संचय का अवसर प्राप्त हो रहा है, जिनधर्म की महान प्रभावना हो रही हैं, अतः हम सभी श्रावक आपके चरणों में नतमस्तक हैं। अपेक्षित हैं आपके आशीर्वाद के, सत् प्रेरणा के, जिससे निरन्तर हम अपनी आत्मा की पवित्रता की ओर अग्रसर हो सकें।

पूज्य माताजी सर्वोच्च हैं। आगम निष्ठ होकर श्रावकों को अनेक उच्चस्तरीय विधानों द्वारा भक्तिरस में डुबा दिया है। आगम अनुसार नवनिर्माण द्वारा इतिहास का परिचय कराया है। अनेक श्रमण परम्परा अनुसार दीक्षाएँ देकर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। भव्य जीवों का चयन कर, प्रेरणा देकर, उच्चस्तरीय पदों पर आरूढ़ होने योग्य बनाया है। वे उच्च स्तरीय आत्माएँ आज धर्म की प्रभावनाओं, आर्ष परम्परा व श्रमण परम्पराओं को दिव्य सुयोग्य नेतृत्व देकर जिनधर्म की महान प्रभावना कर रहे हैं।

पूर्व जन्म के महान पुण्य से व वर्तमान में पुण्य संचय से परमपूज्य सर्वोच्च गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को इतनी उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं कि उनके लिए ये सभी विशेषण लघु लगते हैं। किसी भी प्रकार के विशेषणों को लगाकर परमपूज्य माताजी को संक्षिप्त नहीं किया जा सकता। वे महान हैं, उनकी महानता से हम सभी श्रावक-श्राविकाएँ आलोकित होकर संसार भार से मुक्त होते चले, यही अपेक्षा है।

पूज्य माताजी के चरणों में नमन! उनकी पवित्र आत्मा के प्रति नमन।

-नरेन्द्र कुमार मिण्डा, सलुम्बर (राज.)

व्यवस्था और साधना के प्रतीक का संस्मरण

अब कुछ ऐसा समाज विकसित हो रहा है, जहाँ कोई किसी को पहचानता नहीं, या फिर किसी को पहचानना नहीं चाहता, इतना ही नहीं, बल्कि कई बार तो यहाँ तक होता है कि सामने दिखते को भी हम अनदेखा करके चल रहे होते हैं। ऐसे में भी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका की दीक्षा-जयंती का स्वर्ण महोत्सव मनाकर संस्मरण किया जाना अपने में ही बड़ी बात है, बल्कि यह घटना इस बात को दर्शाती है कि समाज में उन्होंने कुछ ऐसे पद-चिह्न/प्रतिबिंब छोड़े हैं, जो ऐसे अनदेखा करने वाले समाज को भी संस्मरण करने के लिए विवश कर रहे हैं और इस अवसर पर विद्वत् समिति "गौरव ग्रंथ" प्रकाशित करने जा रही है, जबकि विद्वानों के बारे में यह सहज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मान्यता है कि विद्वान बड़ी मुश्किल से किसी को स्वीकारता है, चमत्कार की बात यह कि यह स्वीकृति किसी एक विद्वान की नहीं, बल्कि विद्वत्-समिति की होने जा रही है, जो निश्चय ही महनीय है।

मुझे लगता है कि आर्यिका श्री में यह चमत्कार दो कारणों से-(1) विद्या को प्रस्तुत करने का बेमिसाल यत्न किया आर्यिका श्री ने, यह यत्न भी दो स्तरों पर हुआ (अ) विद्या में विचार के पल्लवन के स्तर पर (ब) विद्या के प्रतीक ग्रंथों के प्रकाशन के स्तर पर, प्रबंधन/व्यवस्थापन के अद्भुत कला-कौशल को अपने में आत्मसात किया है उन्होंने। आज भारतवर्ष में कोई ऐसा आर्यिका संघ नहीं है, जिसने इतने आयामों में अपने आपको विकसित किया हो। इसलिए उनके इस अद्भुत चमत्कार से चमत्कृत होकर इस स्वर्णाब्द पर अपनी विनयांजलि अर्पित करना चाहता हूँ और कामना करता हूँ कि ऐसे ही वे और नए-नए उपागमों से समाज को और साधना से अपने आपको समृद्ध करती रहें, जो हम सबके लिए अनुकरणीय बने।

सादर वंदामि सहित।

-वृषभ प्रसाद जैन, वर्धा (महा.)
(प्रोफेसर एवं चेयरमैन-भाषा विद्यापीठ)

उन्हें अभी मृत्यु को पराजित करना ही होगा.............!

बहुत प्रयत्न करता हूँ कि कोई बात बन जाये और ब्राह्मी व सुन्दरी के हृदय में बैठकर मैं सभ्यता के चाप सुन सकूँ। पिता ऋषभ ने अंक और लिपि का ज्ञान उन्हें दिया ही इसलिए था कि विज्ञान अनावृत्त हो और संग्रहित हो, जिससे भविष्य प्रकाशित रहे।

अंक और लिपि साझीदार हैं। सुंदरी ने ब्राह्मी को अवश्य कहा होगा, बहना! वर्तमान और भविष्य की कड़ियों को बांध! पर क्या वह बंधा? वह बंधा तो फिर कहाँ चला गया? ऋषभ की ऊर्जा, उनके अवधिज्ञान की दूरबीन से स्पष्ट हुआ भविष्य क्यों हमें दिखाई नहीं देता? क्या यह संभव है कि लिपि जानते हुए भी ज्ञान को बांधा न गया हो?

एक लंबा अंतराल-सभ्यता के न पहचाने जाने लायक घटना चक्र इसके मध्य सिर्फ कुछ नाम, जिन्हें हम तीर्थंकर कहते हैं, उन्हें हम केवल गोलाकार मस्तिष्क और नासिका केन्द्रित दृष्टि से स्पंदनहीन देखते हैं। बस और कुछ नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि वे सुपर कम्प्यूटर हों और कोई अनजान स्विच दब जाये और ब्रह्माण्ड के विशाल स्क्रीन पर सभ्यता का इतिहास दिखाई देने लगे।

सब साधु-साध्वी, श्रावक दुनिया किनारे तटस्थ खड़े होकर जब कुछ करते-कहते हैं, तो लगता है पाषाण की वह मौन मूर्ति अवश्य दिव्यध्वनि का प्रतीक होना चाहिए। किसके हृदय में दर्द नहीं पलता कि सभ्यता के प्रतीक तीर्थ और आगम पर काल ने इतना क्रूर प्रहार क्यों किया है?

सभ्यता दूसरी सभ्यता को काटे तो वह सभ्यता कैसे हुई? सभ्यता का विकास होता है, वह असभ्यता में नहीं बदलती।

किसी गजनी ने संहार के शस्त्रों को न अपनाया होता तो हो सकता है मूर्तियों के अधिक कम्प्यूटर हमारे पास होते और हम सोये न होते। लूट से शेष बचे आगमों की जगह हम मनुष्य के वैज्ञानिक भंडारों से भरे होते।

तब हो सकता है ज्ञानमती माताजी को अयोध्या, इलाहाबाद, कुण्डलपुर, अहिच्छत्र, हस्तिनापुर को जागृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न करना पड़ता, पर समय किसी के रोके नहीं रुकता, वह सब कुछ बंद कर देता है। उसे तो ज्ञानमती का स्विच चाहिए ही।

टूटे मन और मंदिर के इस भयावह वीराने में हमें स्विच तो चाहिए ही। कहीं ऐसा तो नहीं कि ब्राह्मी और सुन्दरी की आत्मा की कुछ वर्गणाएँ ज्ञानमती के रूप में प्रेरित हो रही हों और हम उसे समझ न पा रहे हों। हो सकता है इतिहास के कुछ लुप्तप्रमाण उनके माध्यम से और जागृत हो जायें। हमें उस स्विच की अभी जरूरत है, उन्हें अभी मृत्यु को पराजित करना ही होगा। उन महामना पूज्य गणिनी माता श्री ज्ञानमती जी के चरणों में नमन एवं उनके दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ।

-सूरजमल बोबरा, इंदौर (म.प्र.)

गौरवमयी व्यक्तित्व है जिनका

(व्यक्तित्व एक रूप अनेक)

—शंभु छंद—

अनादिकाल की सृष्टि व्यवस्था, स्वयं सृष्टिगत होती है।
कर्ताधर्ता कोई नहीं है, स्वयं परिणमित होती है।।१।।
जिन शासन वो शासन जिससे, सब संकट मिट जाते हैं।
सुख सम्पत्ति साथ न छोड़े, जो जन मन से ध्याते हैं।।२।।
गणिनी ज्ञानमती माता ने, जब ये जग को बतलाया।
फिर अवतरित हुआ है कोई, मानों मन में ये आया।।३।।
धीरवीर गंभीर छवि है, हाथ स्वयं जुड़ जाते हैं।
दर्शन की अभिलाषा से जब, मात सामने आते हैं।।४।।
महावीर प्रभू के शासन में, गणिनी ज्ञानमती माता।
प्रमुख आर्यिका मान्य जगत में, सकल विश्व में विख्याता।।५।।
लेखन में सरस्वती दिखती, दर्शन में ब्राह्मी सम माता।
पिच्छी में अतिशय दिखता है, भक्त मनोवांछित पाता।।६।।
राजपुरुष क्या विद्वत्जन जब, मात चरण में झुकते हैं।
निज सराहना करते हैं फिर धन्य धन्य कह उठते हैं।।७।।
सन् १९९० में जब, मात शरण में मैं आया।
धर्म पाठ क्या पढ़ा है तुमने, पूछा तब यों बतलाया।।८।।
तब आशीष दिया माता ने, विधी विधान कराओ तुम।
धर्म पताका फहरा करके, यश अरु पुण्य कमाओ तुम।।९।।
यह आशीष फला जीवन में, कोटिकोटि वंदन है।
स्वर्ण जयंती पर माँ तुमको, सौ सौ बार नमन है।।१०।।

-प्रदीप जैन शास्त्री, हस्तिनापुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जंगल में मंगल कर दिया

मैं अक्सर ज्ञानमती माताजी के बारे में, उनकी कार्यशैली, शास्त्र रचना, तीर्थ रचना के बारे में बहुत कुछ सुनता रहता था। जब मैंने इलाहाबाद-प्रयाग के बाद कुण्डलपुर महावीर जन्मभूमि पर दर्शन किये, तो मुझे लगा कि साक्षात् देवी का ही अवतार हैं। सरस्वती का अवतार देखकर मन में जो खुशी हुई, वह अवर्णनीय है। तभी तो नंद्यावर्त महल, श्री महावीर स्वामी जन्मभूमि देखकर लगा कि जैसे यह रचना के पीछे देवताओं का सहयोग है, जो इतने अल्प समय में इतनी सुन्दर साकार हो सकी। आने वाला हर दर्शक आश्चर्यचकित होकर एकटक निहारता है।

मैं तो मानता हूँ कि पूज्य माताजी की तपस्या का ही फल है कि जंगल में मंगल हो गया। जहाँ सदियों से किसी त्यागी ने चातुर्मास तो किया ही नहीं, बल्कि दो-चार दिन भी नहीं रुके। मात्र एक मंदिर में एक मूर्ति स्थापित रही, जिसके दर्शन मात्र के बाद यात्री दूसरी यात्रा पर विहार कर देते थे और अब तो यहाँ प्रत्येक यात्रियों का कुछ दिन ठहरने का मन करता है। मुझे बड़ी खुशी होती है चूँकि इसके पंचकल्याणक के शुभावसर पर जय जिनेन्द्र सेवा समिति, लखनऊ के सदस्यों के साथ मैंने भी अपना योगदान दिया था। मेरी तो सन्मति प्रभु से यही अर्चना है कि ज्ञानमती माताजी की पचासवीं दीक्षा जयंती के बाद सौंवी जयंती मनाने का सौभाग्य प्राप्त हो।

माताजी की ऐसी अमर कृतियाँ प्रत्येक वर्ष निर्मित होती रहें, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। मैं हजारों बार माताजी को नमन करता हूँ।

-प्रदीप जैन (कक्कन), लखनऊ

स्वर्णिम दीक्षा जयंती का स्वर्णिम अवसर

यह हमारा पुण्योदय है कि हम पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की 50वीं आर्यिका दीक्षा जयंती उनके ही सानिध्य में मना रहे हैं। यह उन श्रावकों एवं शिष्यों के लिए गर्व की बात है, जिन्हें पूज्य माताजी का सानिध्य और वात्सल्य मिला।

पूज्य ज्ञानमती माताजी का जन्म आश्विन शुक्ला 15, सन् 1934 टिकैतनगर (बाराबंकी) में माता मोहिनी देवी एवं पिता छोटेलाल जी की प्रथम संतान के रूप में हुआ। जिनका नामकरण हुआ 'मैना', जिसने अपनी 18 वर्ष की अल्प आयु में अपने जन्मदिवस यानि शरदपूर्णिमा सन् 1952 के दिन आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर कुँवारी कन्याओं के लिए दीक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। आपने आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के सानिध्य में रहकर अनेक अनुभव प्राप्त किये और उनसे दीक्षा की विनती की। पूज्य आचार्यश्री द्वारा "अब मैंने दीक्षा देना छोड़ दिया है, वीरसागर जी से दीक्षा लेना" कहने पर ही उनके पट्टाचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से दीक्षा ली। पूज्य माताजी की दीक्षा आज वर्तमान में स्थित सभी मुनि-आर्यिकाओं में सबसे अधिक 50 वर्ष की है, जिन्होंने बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर के पट्टशिष्य आचार्य वीरसागर जी महाराज के करकमलों द्वारा माधोराजपुरा (राज.) में वैशाख कृष्णा द्वितीया सन् 1956 में आर्यिका दीक्षा ग्रहण की, क्षुल्लिका दीक्षा 3 वर्ष पूर्व अर्थात् 1953 में ही हो गई थी।

पूज्य माताजी ने अपने दीक्षाकाल में सर्वत्र पद विहार किया। सन् 1965 में अपने श्रवणबेलगोला चातुर्मास में पर्वत पर 15 दिनों तक बाहुबली भगवान के चरणों में ध्यान स्वरूप माताजी को मध्यलोक में तेरह द्वीप रचना के अकृत्रिम चैत्यालयों के दर्शन हुए, पुनः तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार ग्रंथों में वैसा ही वर्णन पढ़कर माताजी ने अपनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिष्याओं को उपदेशों द्वारा मध्यलोक में चैत्यालयों के दर्शन कराये। पूज्य माताजी के मन में इस रचना को पृथ्वी पर साकार करने की भावना हुई, तो दिल्ली, सिद्धवरकूट, महावीर जी आदि अनेकों स्थानों से प्रस्ताव आये परन्तु ध्यान का साकाररूप जम्बूद्वीप रचना होनी थी हस्तिनापुर में, जहाँ करोड़ों वर्ष पूर्व राजा श्रेयांस ने स्वप्न में सुमेरु पर्वत को देखा था, फिर क्या था, देखते ही देखते हस्तिनापुर तीर्थ की काया पलट हो गई। सन् 1975 में कल्पवृक्ष सदृश भगवान महावीर की मूर्ति विराजमान होने के बाद सुमेरु पर्वत, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर आदि अनेक मंदिरों के शृंखलाबद्ध निर्माण हुए और सुमेरु पर्वत की प्रसिद्धि इस तरह फैली कि अब लोग जम्बूद्वीप को हस्तिनापुर का पर्यायवाची शब्द ही मानने लगे।

पूज्य माताजी का विकास क्रम यहीं नहीं रुका, इसके बाद अयोध्या, मांगीतुंगी, प्रयाग, कुण्डलपुर आदि अनेक तीर्थों का निर्माण, विकास का पहिया घूमता रहा। पूज्य माताजी ने 200 से अधिक ग्रंथों की रचना की, जिसमें अनेक विधान हैं, जिनकी आराधना कर भक्तगण स्वयं को धन्य मानते हैं। पूज्य माताजी ने अनेक शिष्यों को दीक्षा देकर उनका एवं समाज का कल्याण किया है, जिनमें प्रमुख हैं आर्यिका चन्दनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज, इनके अतिरिक्त बालब्रह्मचारी रवीन्द्र कुमार जी एवं अनेक ब्रह्मचारिणी बहनें हैं, जिन्हें आपने कल्याणमार्ग में प्रशस्त किया है।

पूज्य माताजी अपने त्याग और संयम के प्रति कितनी दृढ़ हैं, इसका अनुमान इसी बात से लगा सकते हैं कि मई-जून 2005 में जब माताजी अत्यधिक बीमार हुईं और लगा कि अब पता नहीं क्या होने वाला है, उस समय माताजी ने कहा था "मेरी आत्मा अजर-अमर है। शरीर बीमार है आत्मा नहीं" और वे सदैव समयसार आदि ग्रंथों का स्वाध्याय उस समय प्रयोगात्मक रूप में अपने में साकार कर रही थीं पूज्य माताजी के समाज पर अनेकों उपकार हैं, मुझ जैसे अल्पज्ञ को भी पूज्य माताजी का सानिध्य, वात्सल्य और आशीर्वाद मिला है, यह मेरा अहोभाग्य है। पूज्य माताजी की जन्म शताब्दी हम उनके ही सानिध्य में मनायें, यही वीरप्रभु से प्रार्थना है।

–प्रमोद कुमार जैन, सरधना

अनेकांत की सशक्त हस्ताक्षर हैं पूज्या माताजी

परिवर्तन की पक्षधर हैं पूज्य माताजी,
केवल परिवर्तन की पक्षधर नहीं अपितु,
अपरिवर्तन की भी पक्षधर हैं पूज्य माताजी।।

कैसे?

पूज्य माताजी ने तीर्थंकर भगवंतों की उपेक्षित प्राचीन जन्मभूमियों एवं उनकी पंचकल्याणक भूमियों के स्थान अपरिवर्तनीय रखकर, उनके जीर्णोद्धार, विकास और वैभव के परिवर्तन की प्रेरणा दी, जो माताजी की दूरदर्शिता एवं सूझबूझ का प्रतिफल है।

भगवान महावीर के शासन में आर्यिकारत्न द्वारा 200 से अधिक ग्रंथों की रचना प्रथम अनुपम देन है। ग्रंथों की गाथाओं के भाव-अर्थों में परिवर्तन किये बिना उनका हिन्दी पद्यानुवाद, टीका आदि सरल भाषा में लिखकर साधारण जन की समझ में आये, ऐसे लिखकर समसामयिक परिवर्तन किया है पूज्य माताजी ने।

विविध स्थल एवं समय पर अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया है पूज्य माताजी को। उपाधियों से निस्पृह रहकर अपनी आत्मसाधना में मगन रहने में कोई परिवर्तन नहीं किया माताजी ने।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा में भौतिक वैभव के इस युग में भी जैसी की जैसी निभाते हुए वर्तमान में भी बढ़ावा दे रही हैं पूज्य माताजी। सही में चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के संवर्द्धन की कुशल शिल्पी हैं माँ ज्ञानमती जी।

परिवर्तन-अपरिवर्तन की पक्षधर एवं अनेकांत की सशक्त हस्ताक्षर हैं पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी। अनेक युवाओं एवं ब्रह्मचारियों को अध्ययन कराकर मुनि एवं आचार्य पदवी तक पहुँचाया है, तो ब्रह्मचारिणी बहनों को आर्यिका पद पर विभूषित किया है। त्याग मार्ग का पथ प्रशस्त करने वाली माताजी अनेक जीवों की उदाहरण भी रही हैं। पूज्य माताजी के आध्यात्मिक साहित्यों को देखते हुए कवि की यह पंक्तियाँ पेश किये बिना नहीं रह सकता-

मौन हो गए ग्रंथ जहाँ पर, तुमने की फिर से वाणी।
गूंजेगी अब दिग्दिगंत में, बनकरके जो जिनवाणी।।

माताजी का हर कदम वंदन, अभिवंदन, अभिनंदन, अहिंसा और अनेकान्तमयी व्यक्तित्व, आध्यात्मिकता के आकाश पर नये-नये स्वस्तिक उकेरता रहे, यही कामना के साथ त्रिबार वंदामि।

-विनोद हर्ष, अहमदाबाद

धन्य हैं ज्ञानमती माता

जिन्होंने बाल्यकाल से आज तक अपना एक ही लक्ष्य रखा कि जिन आगम के अनुसार कथनी और करनी एक हो, ऐसी माता ज्ञानमती जी धन्य हैं। ये कलिकाल में जुगनू के समान हैं, जो घनी और काली रातों में भी रोशनी देनी की क्षमता रखती हैं। प्रयाग तीर्थ के निर्माण में माताजी का साक्षात् आशीर्वाद पाकर मेरा मन प्रसन्न हुआ। आदिनाथ भगवान से प्रार्थना है कि माताजी की सैकड़ों वर्षों तक दीक्षा जयंती मनाने को मिले और प्रत्येक वर्ष एक विलुप्त तीर्थ का निर्माण, जीर्णोद्धार भी होता रहे।

शत-शत नमन माताजी के चरणों में।

-विनोद जैन, सीवान (बिहार)

और वह जीवन का स्वर्णिम दिवस बन गया.........

शरदपूर्णिमा सन् 1991 का वह दिन, हम पूरे जीवन नहीं भूल सकते। जब गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का ससंघ चातुर्मास सरधना में था, तो हमें शिक्षण, प्रशिक्षण शिविर में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। शिविर की समाप्ति पर माताजी का जन्मोत्सव भी था, सो हमें उसमें भी शामिल होना था।

आहारचर्या का समय था। हम दोनों भी आहार देने की इच्छा से एक चौके के सामने, जो शायद टिकैतनगर वालों का था, पड़गाहन के लिए खड़े हो गये। वहाँ पर आहार देने वाले बहुत लोग थे। हम ये सोच ही रहे थे कि दूसरे चौके में चला जाये। इतने में ही माताजी आहार के लिए उठ गयीं। सभी श्रावक, हे माताजी! वंदामि-वंदामि, अत्रो-अत्रो, तिष्ठो-तिष्ठो, आहार जल शुद्ध है, बोल रहे थे। मैंने देखा वहाँ पर चार पति-पत्नी के जोड़े खड़े थे, तो माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वापस जाने लगीं। तभी किसी ने कहा, राजेश जी! आप भी अपनी पत्नी के साथ आ जायें, तो पाँच जोड़े हो जायेंगे। सो हम भी उनमें मिल गये। पाँच जोड़े होते ही माताजी का पड़गाहन हो गया। फिर प्रथम ग्रास देने लगे, तो चंदनामती माताजी ने कहा, जो जोड़ा आज दूसरी प्रतिमा के व्रत पालन करने का नियम लेगा, माताजी उसी के हाथ से प्रथम ग्रास लेंगी। वहाँ पर करीब बीस श्रावक और श्राविकाएँ थीं। कोई भी व्रत लेने को तैयार नहीं हुआ, तब चंदनामती माताजी ने मेरे पति से कहा, राजेश जी! आप दोनों दूसरी प्रतिमा के व्रत ले लो और माताजी का आहार शुरू कराओ।

हमने उनसे पहले कभी व्रती होने के बारे में न तो सोचा था और न ही कुछ जानते थे। आहार देने की बहुत इच्छा थी, सो दूसरी प्रतिमा के व्रत ले लिए और आज तक दृढ़तापूर्वक एवं शुद्धि से व्रतों का पालन हो रहा है। इसे हम दोनों अपने जीवन का स्वर्णिम दिन मानते हैं तथा हमें विश्वास है कि हम आर्ष परम्परा एवं गुरु परम्परानुकूल व्रतों का पालन करते रहेंगे।

-श्रीमती लता जैन ध.प. राजेश कुमार जैन, सलावा (मेरठ)

"गणिनी बाल सती"

प्रात वन्दना नित्य प्रति, गणिनी बाल यतीश,
युग की बर्नी प्रवर्तिका, आगम की वागीश।

मध्य लोग नारी निरी, 'ज्ञान' सुधाकर एक,
जैसे नभ नक्षत्र में, दिखे सुधाकर एक।

पावन बाल वैरागिनी, स्वयं बोध श्रुत ज्योत,
जैसे ब्राह्मी शुचि रहीं, युग अक्षर का श्रोत।

लाख विघन बाधा रही, महा शक्ति बनीं आप,
हिमगिर सुर सरिता चयी, हरने को भव ताप।

संयम तप अरु त्याग का, पहना कवच विवेक,
मोह, काम सेना थकी, हिला न सकी सुटेक।

देश भूषण भूषित किया, रत्नत्रय व्रत श्रेष्ठ,
जैसे कंचन खान का, तप चमकाया ज्येष्ठ।

'वीर मती' की वीरता, देख चकित थे लोग,
जैसे हीरा की कनी, कटे काँच, त्यौं भोंग।

'ज्ञानमती' गणिनी बनीं, इस युग की सर्वोच्च,
जिनवाणी अवतार सी, लिखना भर है सोच।

जम्बूद्वीप लावण्य का, अनुपम स्वप्न प्रतीक,
जैसे कोई 'देवकृति' भूमी धरी सटीक।

ऋषभेश्वर कैलाश संग, बैठे आय प्रयाग,
'हनू' लाय पर्वत धरा, त्रयवेणी का राग।

अबध कमल चौबिस त्रय, दर्शन से आनन्द,
समवसरण वाणी खिरे, ऋषभ पार्क सानन्द।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुण्डलपुर काया पलट, उतरा स्वर्ग सटीक।
नंद्यावर्त यथार्थ सा, मंदिर स्वपन प्रतीक।
व्यक्तित्वत्व का व्यामोह तज कह कर्तव्य अनूप,
'विमल' बिंदु छू बन सकूँ, पद रज के अनुरूप।

-प्रो. डॉ. विमला जैन 'विमल'
ध.प. प्रकाशचंद जैन (पी.एम.), फिरोजाबाद

एक ममतामयी जगतमाता

राष्ट्रगौरव परमपूज्य गणिनी आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा के पाँच दशक पूर्ति के स्वर्ण जयंती महोत्सव के मंगलमयी पावन प्रसंग पर गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ के प्रकाशन का निर्णय अति सामयिक एवं समाज के लिए प्रेरक प्रसंग है। संयम साधना काल के इस अर्ध-शतक को वर्तमान भोगवादी संस्कृति का हम एक सुनहरा अध्याय कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सम्पूर्ण जैन जगत के लिए नारीचरमोत्कर्ष के ऐतिहासिक उपलब्धि का यह एक दुर्लभ उदाहरण है। पूज्य माताजी का कालजयी व्यक्तित्व अनेक आसन्न भव्य प्राणियों के लिए मोक्षमार्ग के प्रशस्त पथ पर आरूढ़ होने में हेतुक बना है, उनकी दिव्यदेशना एवं प्रौढ़ अनुभव से समाज को सदैव नई पहचान मिली है, उनके कृतित्व से जैन दर्शन एवं जैन संस्कृति को नए आयाम मिले हैं तथा उनके साहित्य सृजन से जैन वाङ्मय विपुल समृद्ध हुआ है। उनकी अलौकिक सृजनशीलता, सतत कर्मठता एवं अपूर्व दूरदर्शिता से जैन समाज का गौरव दिग्दिगन्त तक अपनी सुरभि फैलाने में सफलीभूत हुआ है।

तीर्थप्रेम, त्याग, संयम एवं ज्ञान की एक साक्षात् प्रतिमूर्ति, परमपूज्य आर्यिका माताजी के चरणों में मेरा शत-शत बार नमन है।

पूज्य माताजी के साथ वैसे तो मेरा परिचय काफी पुराना है परन्तु एक घटना, जो मेरे स्मृति पटल पर अटल रेखांकित हो गई, वह प्रसंग सन् 2003 का है। तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर तीर्थक्षेत्र के तेरहपंथी कोठी सभागार में हमारे द्वारा होली के अष्टान्हिका के अवसर पर 16, 17, 18 मार्च का तीन दिवसीय "द्वितीय राष्ट्रीय अहिंसा सम्मेलन" आयोजित था। होली के अवसर पर तीर्थराज पर अपार भीड़ जुटती है। मैं सपरिवार अपनी पूरी तैयारी एवं कार्यकर्ताओं की टीम के साथ 15 तारीख की रात को कार से श्री सम्मेदशिखर क्षेत्र पर पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर अचानक ज्ञात हुआ कि उन्हीं 16 से 18 के तीन दिनों में पूज्य माताजी के सानिध्य में बीसपंथी कोठी में तीन दिवसीय विधान एवं अन्य आयोजन रखे हुए हैं। एक ही समय में दो समानान्तर कार्यक्रमों के होने से मेरा चिंतित होना स्वाभाविक था। संयोग ऐसा बना कि तीन अंक पूर्व ही दिशाबोध के सम्पादकीय में मैंने कुण्डलपुर जन्मभूमि प्रकरण पर काफी विषम टिप्पणियाँ लिखी थीं।

सम्मेदशिखर जी पहुँचने पर जब मुझे सारी बातें ज्ञात हुईं, तो मैं थोड़ा चिंतित हो उठा। 16 ता. की प्रातः पाँच बजे के पूर्व ही मैं सीधे बीसपंथी कोठी, जहाँ पूज्य माताजी विराजमान थी, वहाँ जा पहुँचा। बाहर ही ब्रह्मचारी भाई रवीन्द्र जी से मुलाकात हो गई। माताजी भीतर कमरे में माला फेर रही थीं। भाई जी ने कमरा खुलवाया। मैं अंदर पहुँचकर माताजी को वंदन कर चुपचाप सामने बैठ गया। माला पूर्ण होते ही मैंने पूज्य माताजी को अहिंसा सम्मेलन के आयोजन की जानकारी दी, कार्यक्रम तीन माह पूर्व बना था, सारी बातें बताईं तथा सम्पूर्ण सम्मेलन में उनसे सानिध्य, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्रदान करने का विनम्र निवेदन किया। उन्होंने इस कार्यक्रम की पूर्व में जानकारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से अनभिज्ञता प्रकट की तथा आर्यिका चन्दनामती माताजी प्रकट हुईं और दिशाबोध के मेरे सम्पादकीय को लेकर थोड़ी कड़वाहट व्यक्त की।

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने उस वक्त जो बातें कहीं, उन्हें मैं जिंदगी में कभी विस्मृत नहीं कर सकता। उन्होंने चंदनामती जी को कहा-"तुम बहन-भाई बाहर जाकर लड़ लेना, मेरे पास मेरा बेटा आया है। अहिंसा का कार्य मेरा अपना कार्य है और यह कार्यक्रम मेरा अपना कार्यक्रम है," बाद की तमाम बातें गौण है। तथ्य यह है कि पूज्य माताजी ने विधान के कार्यक्रम को संघस्थ अन्य त्यागियों के सुपुर्दकर अहिंसा सम्मेलन के सभी सत्रों में अपनी सम्पूर्ण उपस्थिति, सानिध्य, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्रदान कर उस सम्मेलन की सफलता एवं गरिमा में चार चाँद लगा दिए तथा पूरे देश से पधारे सभी प्रतिनिधि बेहद संतुष्ट एवं प्रभावित होकर लौटे।

ममतामयी जगत माता का यह तो एक छोटा सा संस्मरण है, जो अपने बच्चों की हर भूल को माफ कर उन्हें अपनत्व देती है, संरक्षण देती है और मातृवत् करुणादान करती है।

इसी प्रकार अहिंसा हेतु प्रदत्त जम्बूद्वीप पुरस्कार का प्रसंग है। पूज्य माताजी मुझे काफी दिनों से उस पुरस्कार हेतु स्वीकृति देने को कर रही थीं और मैं उसे स्वीकार करने में हिचक रहा था और अन्त में जब यह बात स्पष्ट हो गई कि वे वास्तव में मेरे अहिंसा-जीव-दया के कार्यों से संतुष्ट होकर मुझे सम्मानित करना चाहती हैं और इसमें मेरी वैचारिक स्वतंत्रता बाधित नहीं होगी, तभी मैंने हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप पुरस्कार लेना स्वीकार किया था। इस प्रसंग से उनके वैचारिक विशालता, गुणग्राहकता एवं सहृदयता के विलक्षण गुणों का स्पष्ट दिक्दर्शन होता है।

परमपूज्य ज्ञानमती माताजी के अनेक कार्यों से मत-भिन्नता रखते हुए भी मैंने उन्हें सदैव प्रणम्य माना है, बीसवीं सदी के बीस कालजयी व्यक्तित्व में उन्हें पूर्ण श्रद्धा के साथ सम्मिलित किया है, उनकी विलक्षण क्षमताओं को सदैव मन से सराहा है तथा वर्तमानयुगीन समस्त साधु-साध्वियों में उन्हें अग्रिम पंक्ति के कालजयी व्यक्तित्व के रूप में स्वीकारा है।

इस सदी के प्रथमाचार्य युगप्रवर्तक आचार्य शांतिसागर जी महाराज की गौरवशाली परम्परा की आप वरिष्ठतम प्रतिनिधि हैं। ऐसी जगत माता को मेरा कोटिशः वंदन। उनकी आर्यिका दीक्षा के स्वर्ण-जयंती महोत्सव के इस पावन प्रसंग पर मैं उनके रत्नत्रय की रक्षा एवं दीर्घायु की मंगल कामना करता हूँ। उनका सदैव आशीर्वाद मिलता रहे, वीरप्रभु से यही प्रार्थना है।

-डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा, कलकत्ता
(सम्पादक-दिशाबोध)

आपके प्रवचन जीवन निर्माण हेतु मूल्यवान हैं!

यह जानकर अत्यन्त हर्ष एवं भक्ति भावना जागृत हो रही है कि जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के स्वर्णिम 50 वर्ष अप्रैल 2006 में पूर्ण कर रही हैं।

भारतीय संस्कृति में सदैव से ही नारी का स्थान गौरवमय रहा है। नारी सृष्टि की अनुपमेय कृति एवं अतुल्य सम्पदा है। लौकिक जगत में नारी की शौर्य गाथाओं से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। चित्तौड़ की महारानी-कर्मवती, झाँसी की रानी-लक्ष्मीबाई, शिवाजी की माँ-जीजाबाई, हनुमान जी की माँ-अंजना, भरत की माँ शकुन्तला, कालीदास की पत्नी विद्योत्तमा, तुलसीदास की पत्नी रत्नावली, महात्मा गांधी की माँ पुतलीबाई आदि के कर्तृत्व को कभी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भुलाया नहीं जा सकता है और उनकी यश गाथाएँ, प्रेरणा, मार्गदर्शन अमर हैं और सदैव अमर रहेंगे।

अध्यात्म जगत में नारी पर्याय में से पूज्य ज्ञानमती माताजी पंचमयुग की प्रथम आर्यिका प्रकाशपुंज की तरह उभर कर आई हैं। उन्होंने यथा नाम तथा गुण वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए अपने दीक्षागुरु द्वारा संस्कारित प्रदत्त नाम को अपने जीवन काल में सार्थक करते हुए दिखाया है। स्वनाम धन्य, पूज्य माताजी की गौरवगाथाएँ चारों ओर स्वतः स्फूर्त भावना के साथ गाई जा रही हैं। पूज्य माताजी को ज्ञान, वैराग्य, त्याग, तपस्या के संस्कार अपनी पूज्य जननी से मिले हैं, जिनके परिणामस्वरूप आप अल्प वय में ही अध्यात्म की गहन अध्येता बनी एवं आगम की ज्ञाता बनी। आपके प्रवचन प्रेरणादायी व हृदयग्राही हैं, प्रवचन शैली सरल, सहज, रोचक एवं प्रभावक है। आपकी वाणी में अद्भुत ओज और माधुर्य है। शास्त्रों का गहनतम अध्ययन और अनुशीलता से प्रस्फुटित अनुभूतियाँ जब अपनी वाणी से अभिव्यक्त करती हैं, तो श्रोता सुनते-सुनते भाव-विभोर हो उठते हैं। आपके प्रवचन जीवन निर्माण के लिए मूल्यवान सिद्ध होते हैं। यही कारण है कि आपके चुम्बकीय व्यक्तित्व के सम्मुख सभी स्वतः ही खिंचे चले जाते हैं। यह अनुभव मैंने स्वयं पूज्य माताजी के आगरा आगमन पर किया। तपस्याचरण के फलस्वरूप आपके व्यक्तित्व का आभामण्डल इतना सशक्त है कि इस आभामण्डल की सीमा रेखा में प्रवेश करते ही व्यक्ति श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता है और परमशांति की अनुभूति के सागर में डूब जाता है।

- अध्यात्म जगत की अनमोल रत्न, तेजस्वी, ज्ञान की सागर, पारसमणि के समान कान्तिमान, आगमपंथी, अपने युग की प्रभावक लेखिका एवं प्रवचनकर्ता, आत्मबोध करानें वाली और संस्कारों के शंखनाद फूँकने वाली गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि पूज्य श्री 105 ज्ञानमती माताजी के 50वें दीक्षा दिवस पर उनके पावन चरण कमलों में शत-शत नमन, वंदामि/कामना करता हूँ कि उनकी साधना का दिव्य प्रकाश अनन्त आकाश में व्याप्त होकर जन-जन का कल्याण करे।

-ओमप्रकाश जैन, आगरा
(सम्पादक-जैसवाल जैन पत्र)

आर्यिका ज्ञानमती अष्टक

रत्नत्रय की आँख से, देखा जब संसार।
तुम्हें भासने तब लगा, जग-जीवन निस्सार।।१।।

जग-जीवन को छोड़कर, किया त्याग स्वीकार।
जैनधर्म के ब्याज से, किया स्व-पर उद्धार।।२।।

द्वादश तप के तेज से, जागा अन्तर्देश।
ज्ञान और श्रद्धान से, शांत सभी संक्लेश।।३।।

मोह-महल के छोड़ते, मिटे सभी संताप।
समता से हर जीव में, दिखें आप ही आप।।४।।

स्वाध्याय सातत्य से, किया सार्थक नाम।
धर्म-ध्यान में लीन हो, बीता समय तमाम।।५।।

मिली प्रेरणा आपकी, निर्मित जम्बूद्वीप।
दूर-दूर के भक्तगण, दर्शन करें समीप।।६।।

इलाहाबाद में तीर्थ की, रचना हुई विशेष।
माताजी के ज्ञान का, चमके नित्य निशेष।।७।।

आज वंदना कर रहा, सविनय सकल समाज।
बन जाते आशीष पा, बिगड़े सारे काज।।८।।

-विद्यावारिधि डॉ.महेन्द्र सागर प्रचंडिया,
अलीगढ़ (उ.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानोपासिका पूज्य 105 आर्यिका ज्ञानमती माताजी

मुझे यह जानकर परम प्रसन्नता हुई कि पूज्य आर्यिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। साधु जीवन को अपनाना और उसे प्रतिफल निर्वहन करना एक कठिन कार्य है। "चित्रं जैनी तपस्या हि स्वैराचार विरोधिनी।'' जैनी तपस्या स्वैराचार की विरोधिनी है। माताजी इस उक्ति की सार्थकता करती हुईं ज्ञान, ध्यान और तप में तल्लीन रहती हैं। हस्तिनापुर तीर्थ के विकास में उनका बहुत बड़ा योगदान है। अपने डी.लिट्. के शोधकार्य हेतु पूज्य माताजी ने अष्टसहस्री के अनुवाद की मौलिक अप्रकाशित प्रति देखने का अवसर प्रदान किया था। उनके स्मरण के फलस्वरूप मुझे अनेक बार हस्तिनापुर जाने का मौका मिला और उन्होंने मेरे प्रति वात्सल्य भाव दिखाया। मेरा उनके प्रति आदरभाव है। उनकी ज्ञानगरिमा के प्रति मेरी प्रणति है। वे जिनवाणी के प्रचार और प्रसार में तत्पर रहें और तटस्थभावपूर्वक समाज को दिशानिर्देश देती रहें। जैनं जयतु शासनम्।

-डॉ. रमेशचंद जैन, बिजनौर

आगमानुकूल तप-साधना में लीन हैं

श्री महावीर जी-शांतिवीर नगर मंदिर में पूज्य 105 आर्यिका माताजी की ईसवी सन् 1953 में चैत्र वदी एकम् के दिन आचार्य देशभूषण महाराज से ग्रहण की गई क्षुल्लिका दीक्षा की स्मृति स्वरूप श्री महावीर जी प्रवास में माताजी की प्रेरणा से बनवाये गये सिद्धार्थ वृक्ष के दर्शन कर अतीव प्रसन्नता होती है। पूज्य माताजी के तप-त्याग का प्रदर्शक यह वृक्ष दर्शकों को माताजी की क्षुल्लिका दीक्षा-दिवस का सदा स्मरण कराता रहेगा और त्यागोन्मुखी वृत्ति की प्रेरणा देता रहेगा।

पूज्य माताजी ने दीक्षाकाल में जिनवाणी की अभूतपूर्व सेवा की है। अष्टसहस्री जैसे ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद उनके अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग का फल है। यह ग्रंथ जैन विद्या के सभी केन्द्रों को सुलभ कराया जावे, तो अतीव प्रसन्नता होगी।

पूज्य माताजी शतायु हों और इसी प्रकार जिनवाणी की सेवा करती रहें। आगमानुकूल तप-साधना में उपयोग बना रहे, यही भगवान वीरप्रभु से कामना है। मेरा माताजी के युगल चरणारविंदों में नमन, वंदामि।

-डॉ. कस्तूरचंद्र 'सुमन', श्री महावीर जी (राज.)

पुरुषार्थ से सब कुछ प्राप्त हो जाता है

यह हम सबका सौभाग्य है कि बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 50वाँ दीक्षा दिवस वैशाख कृ. 2 को दीक्षा स्वर्ण जयंती के रूप में मनाने का सुअवसर हमें प्राप्त हुआ है। वास्तव में वैवाहिक स्वर्ण जयंती या स्वर्ण जन्मजयंती को श्रावक लोगों को मनाते हुए हम देखते रहते हैं परन्तु संभवतः ये इस सदी का पहला अवसर है जब किसी संयमी, त्यागी, संत का स्वर्णिम दीक्षा दिवस इतने भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की अमृत बरसाती आँखें, उनका स्मित बिखेरता मुखमण्डल और मधुर भाषी व्यक्तित्व प्रत्येक श्रावक को अपनी ओर आकर्षित ही नहीं करता बल्कि उन्हें अभिभूत कर देता है। माताजी अपनी अद्भुत नेतृत्व शक्ति, संयमित जीवन एवं त्याग- तपस्या के कारण सभी के द्वारा वंदनीय हैं। कुशल नेतृत्व, दूरदर्शिता, अद्भुत गंभीरता एवं अप्रमाद आपके व्यक्तित्व के सहजात अंग है। 200 से अधिक शास्त्र एवं अनेक पूजा विधानों की रचना जैन वाङ्मय को उनकी अनुपम देन है। इन ग्रंथों में जैन न्याय के सर्वोच्च ग्रंथ अष्टसहस्री का हिन्दी अनुवाद एवं कातंत्ररूपमाला नामक संस्कृत व्याकरण ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद एवं नियमसार ग्रंथ की संस्कृत एवं हिन्दी में टीका तथा षट्खण्डागम के सूत्रों पर "सिद्धान्तचिंतामणि" नामक संस्कृत टीका उनके द्वारा रचित ग्रंथों में सर्वोपरि है एवं ये कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि इन ग्रंथों की रचना करके पूज्य माताजी ने विद्वानों के समक्ष एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

इसके अतिरिक्त देश के चार प्रमुख तीर्थों जैसे श्री हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना, पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या का विकास एवं उसके पश्चात् भगवान आदिनाथ की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि प्रयाग में निर्माण एवं भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में नंद्यावर्त महल तीर्थ का निर्माण कराकर पूज्य माताजी ने बहुत बड़ा कार्य किया है। आज पूज्य माताजी की दृढ़ इच्छा शक्ति से संस्थापित जम्बूद्वीप पर्यटन का प्रमुख केन्द्र बन गया है एवं उसका परचम सारे देश में लहरा रहा है।

जम्बूद्वीप को पल्लवित करने में पूज्य माताजी ने अपने पद की गरिमा बनाये रखते हुए कठिन एवं कठोर पलों से गुजरते हुए एवं स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए अपने आपको समर्पित कर दिया। आपने विपरीत परिस्थितियों में भी कभी समझौता नहीं किया एवं दीक्षा लेने के पश्चात् 50 वर्षों में अनेक उपलब्धियाँ हासिल कर यह दिखा दिया कि पुरुषार्थ से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी पूज्य आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी के चरणों में मेरा शत-शत वंदन।

-राजेन्द्र कुमार जैन, मेरठ
(भूतपूर्व सम्पादक-वीर)

आपके प्रत्येक कार्य सफलता की पराकाष्ठा को छू रहे हैं

किसी महान आत्मा के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित करने का मेरा यह पहला प्रयास है। मैं पूज्य माताजी से सन् 1980 से जुड़ा हूँ, लेकिन उनके चरणों में एक छोटा सा स्थान सन् 1985 में बना पाया, ऐसा मैं समझता हूँ। सन् 1985 में सम्पूर्ण भारत वर्ष की नगरी बड़ौत में श्री दि. जैन युवा समिति के अथक प्रयास से तब आपकी बहन माधुरी-ब्र. श्री मोतीचंद जी तथा ब्र. रवीन्द्र जी के सानिध्य में एक विशाल इन्द्रध्वज महामण्डल विधान अपार सफलता के साथ कराया था, उस अपार सफलता का राज माताजी का मंगल आशीर्वाद, उनकी प्रेरणा व उनके सुझाव थे और इन सबके साथ बहन माधुरी की मेहनत हमारे साथ थी। उस वक्त टी.वी. के न्यूज कार्यक्रम में विधान का कवरेज होना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि थी। माताजी ने भारतवर्ष की दिगम्बर जैन समाज के लिए जितने कार्य किये, उनको कभी भुलाया नहीं जा सकता है। वे भी रचनात्मक कार्य, चाहे अयोध्याजी का हो या जम्बूद्वीप का हो या कुण्डलपुर के नंद्यावर्त महल का हो या फिर ग्रंथों की रचनाओं का, ये सभी कार्य अपनी-अपनी सफलता की पराकाष्ठा को छू रहे हैं।

लिखना तो बहुत कुछ चाहता था, लेकिन सीमा में बँधा रहना चाहता हूँ और अंत में जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करता हूँ कि माताजी शताधिक आयु वाली हों और माताजी के चरणों में मेरा छोटा सा स्थान सदैव बना रहे। मैंने अपने हृदय के भाव उद्धृत किये हैं, मुझे नहीं पता कि विनयांजलि का अर्थ क्या है? ये ही मेरी विनयांजलि या भावांजलि है।

पुनः माताजी के चरणों में सविनय शत-शत वंदन।

-नरेशचंद जैन, बड़ौत (बागपत)

मेरी कामना : काव्यांजलि

ज्ञानमती जी मात की, महिमा अपरम्पार।
क्या-क्या गुण तेरे लिखूं, तुम हो ज्ञान भण्डार।।1।।

मोहिनी देवी मात थी, छोटेलाल जी पितु।
टिकैतनगर में जन्म लियो, हो गई नगरी धन्य।।2।।

नव बहन चार भाई से, सहित हो तुम मात।
तीन बहन आर्यिका बनीं, एक भाई हैं साथ।।3।।

महावीर जी तीर्थ पर, पहुँची गुरु के संग।
दीक्षा ली क्षुल्लिका वहाँ, सन् तिरपन हो गया धन्य।।4।।

पुनः वीरसागर गुरु से, बनीं आर्यिका महान।
तेरह विधि चारित्र पा, हो गईं मालामाल।।5।।

तीर्थ प्रेरणा निर्माण आपकी, दिख रही बेमिसाल।
ग्रंथ अनेकों जो लिखे, कैसा किया कमाल।।6।।

स्वर्ण जयंती आपकी, आर्यिका दीक्षा प्रधान।
गणिनीप्रमुख युत मात को, शत-शत करूँ प्रणाम।।7।।

सारा जग यह चाह रहा, तुम जिओ हजारों साल।
'अलका' भी कामना करे, युग-युग तक रहे गुरु साथ।।8।।

-ब्र. कु. अलका जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"विनयांजलि पंच पुष्प"

"हे शारद रूपा, दिव्य स्वरूपा, ज्ञानमती तव चरण नमूँ।
हे श्रुतदेवी, जन जन सेवी, हृदय कमल तव छवि धरूँ।
बाल ब्रह्म जग, जननी माता, मोक्षमार्ग पथ किया गमन।
बहुभाषा विद्, गणिनीप्रमुख हो, युगल पदाम्बुज नित्य नमन।।1।।

बहु विध विद्या, गहन विदुषी, मनन चिन्तवन धर्म ध्यान।
द्वय शतकाधिक, ग्रंथ लेखिका, चरण कमल द्वय पुण्य प्रणाम।
दृढ़ संकल्पी, उपसर्गजयी माँ, निष्प्रमाद तव तपाचरण।
गुरु परम्परा की, दृढ़ संवाहिका, निज परहित में नित अर्पण।।2।।

बहुविध आयामी संस्थान खुलाया, दिन दिन बढ़ते उन्नति आयाम।
जम्बूद्वीप साकार हुआ है, विश्व श्रेष्ठ रचना अभिराम।
ज्ञानज्योति रथ आदि कार्य से, जुड़ी देश की सभी समाज।
तीर्थ संरक्षण विकास की धारा, खूब बढ़ायी जैन समाज।।3।।

आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती, गौरव गाथा मंगलगान।
सरस्वती की परमोपासिका, सौम्य मूर्ति हो ज्ञान निधान।
अविरलगति से चले लेखनी, गद्य पद्य द्वय विद्या कमाल।
गाऊँ गाथा नत कर माथा, कृपा दृष्टि हो, बनूँ निहाल।।4।।

मंगल भावना यही कामना, जुग जुग जीवें जग जन मात।
दिवस साल के होंय हजारों, ऐसे साल हों अनगिन भ्रात।।
अन्तभावना मोक्ष गमन हो, सिद्धशिला माँ करें गमन।
सौख्य शाश्वत हम सब चाहत 'पवन' शीश नमि करे नमन।।5।।

।।इत्यलम्।।

-पं. पवन कुमार शास्त्री 'दीवान', मोरेना

हेय ज्ञेय उपादेय का, सबको भान कराती हैं

चारित्रचन्द्रिका ज्ञानमती जी हैं उस चाँद का नाम,
सम्यग्ज्ञान तथा धर्म प्रचार करना एकमात्र है काम।
दर्शनविशुद्धि कराकर सबको श्रद्धावान बनाती हैं,
हेय ज्ञेय उपादेय का, सबको भान कराती हैं।।

पूज्य माताजी इस युग की सरस्वती माता हैं। हम जब माताजी के चरणों में पहुँचते हैं, तो ऐसा लगता है कि हमारी खोई हुई निधि हमें मिल गई। उन साक्षात् सरस्वती माता के मुख से खिरी वाणी से ऐसा लगता है कि यह शब्दों का खजाना हमें मिलता रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी के कदम जिस धरती पर पड़ते हैं, वह धरा स्वर्ग बन जाती है। वह चहुँमुखी प्रतिभा की धनी हैं। आप 20वीं शताब्दी की आध्यात्मिक जगत की तेजपुंज, ज्ञानज्योति और महान आर्यिका माताजी हैं। उनके पावन दीक्षा स्वर्ण जयंती अवसर पर हम सब पहाड़े परिवार की ओर से मंगल कामनाएँ प्रेषित करते हैं और चरणों में विनयांजलि समर्पित करते हैं।

–श्री शरद पहाड़े-शोभा पहाड़े एवं समस्त परिवार

हे ज्ञानमती माता वरदान हमें तुम दे देना

परम पिता परमेश्वर की जब हुई कृपा हम पर।
शरदपूर्णिमा के दिन निकला एक चाँद भू पर।।
छोटेलाल की छोटी बगिया मोहित हो गई उसे देखकर।
मैना मैना मैना मैना कह उठी मोहिनी ममता उर धर।।
अकलंक निकलंक के नाट्य चरित्र को जीवन में है उतार लिया।
आचार्य देशभूषण जी के चरणों में निज को डाल दिया।।
ब्रह्मचर्य और क्षुल्लिका दीक्षा लेकर तन को सँवार लिया।
स्वाध्याय के बल पर तुमने अभीक्ष्ण ज्ञान है पाय लिया।।
आचार्य शांतिसागर की सल्लेखना से है मन भीग गया।
गुरुवर वीरसागर जी से आर्यिका दीक्षा लेने का है भाव भया।।
मैना से वीर बनी थी जो वे ज्ञानमति बन प्रकटी है।
अज्ञान तिमिर को हरने को, सु ज्ञानमति बन चमकी है।।
संस्कृतज्ञ बन कर माता ने, विद्वत्ता का ध्वज लहराया।
अष्टसहस्री जैसे ग्रंथों को सहज, और सरल बनाया।।
कातंत्र माला के स्वाध्याय से शिष्यों को संस्कृत ज्ञान दिया।
करणानुयोग के ग्रंथों का सरल सहज अनुवाद किया।।
करके विधानों की संरचना, भक्ति की लहर लहराई है।
छंद छंद में प्रभु की महिमा और तत्व की बात बतलायी है।।
एक नहीं दो चार नहीं, छत्तीसों छंदों में करके रचना।
भक्ति की ऐसी गागर भर दी, भक्तों के दिल की खिल गई रसना।।
भूगोल का ज्ञान तिरोहित था, उस पर भी कलम चलाई है।
जम्बूद्वीप की रचना से, हस्तिनापुरी हरषायी है।।
गजदन्तों सह सुमेरु पर्वत, देख-देख मन हरषाया।
द्वीप समुद्रों और लवणोदधि की रचना देख-देख मन हरषाया।।
वीर की नगरी कुण्डलपुर में भारी धूम मचायी है।
बजा के डंका बनाया मंदिर और महल नंद्यावर्त है।।
इलाहाबाद अयोध्या नगरी में मूर्ति विशाल बिठायी है।
सम्मेदशिखर में जिन मंदिर की रचना अजब रचायी है।।
कहाँ कहाँ लौ कहूँ मैं इनका कौशल, ये कौशल की महारानी है।
बड़े बड़े मंदिर और मूर्तियों के बनने में प्रेरणा इनकी लासानी है।।
स्वर्ण जयंती दीक्षा का अवसर था मन मेरा हरषाय रहा।
उम्र के पनघट का मनघट कदम कदम कर जाय रहा।।
मन की प्रसन्नता वाणी की मुखरता सब कुछ वैसी की वैसी है।
मंद मुस्कान ओठों पे सदा वाणी में समरसता देती है।।
जिनवाणी रूपा सरस्वती कंठ में जिनके बैठी है।
ज्योत्सना शरद के चाँद की अभी अभी तो देखी है।।
जिनके चरण कमल को निशिवासर लक्ष्मी धोती है।
अभयमती चंदनामती माता इनकी बहना होती है।।
स्वर्ण जयंती के महोत्सव पर खुशियों से भर भर नाचें हम।
दीपों की आवली जला जला आरत से मुक्तिपायें हम।।
हे ज्ञानमती माता, वरदान हमें तुम दे देना।
भक्ति से भर जाऊँ तेरी, आशीष हमें तुम दे देना।।
हे ज्ञानमती हे ज्ञानमती हम सब मिल उतारें तेरी आरती।

–प्रतिष्ठाचार्य पं. सुरेशचंद जैन, दमोह (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अगाध ज्ञान भरा है माता ज्ञानमती में

ज्ञान रहा भण्डार तुम्हारा सर्वश्रेष्ठ है आतम ज्ञान,
अज्ञानी गर भव्य रहा तो, कर लेगा निश्चित कल्याण।
हम सबकी आराध्य आप ही, बढ़े आप से सम्यग्ज्ञान,
आप रहें जग में सर्वोत्तम, श्रमणोत्तम हमको वरदान।।

पूज्य माताजी को चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान है। जैसी आपकी सशक्त लेखनी है, वैसे ही आपकी वाणी भी ओजपूर्ण है। जिनागम के विभिन्न विषयों पर आप पूर्ण अधिकार रखती हैं, नीरस विषयों को भी आपने प्रखर बुद्धि से सहजमय व रुचिपूर्ण बना दिया है, मैंने माताजी द्वारा लिखित जैन भारती ग्रंथ का स्वाध्याय किया, जिसमें चारों अनुयोगों को एक ही स्थान पर जानने का ज्ञान प्राप्त हुआ।

माताजी के द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य हमेशा आगमसम्मत व प्रमाणभूत होता है। उन्होंने कुण्डलपुर भगवान महावीर की जन्मभूमि को विकसित कर उसे सही रूप प्रदान दिया। वास्तव में माताजी तप, त्याग व ज्ञान की जीवंत मूर्ति हैं। उनके स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर उनके चरणाविंद में शत-शत नमन करते हैं।

-निशंका जैन, मैनपुरी

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती मातुः स्तुतिः

-आर्यिका चंदनामती

उपजाति छंद--

मातः सुपूज्या गणिनी सदैव,
यस्याः प्रसादेन सुदीक्षिताहम्।
न मे हि मात्रं बहुबालिकानां,
मार्गं प्रशस्तं कुरुषे त्वमेव।।1।।

मातुः प्रवृत्तिः समयानुकूला,
सिद्धान्तन्यायेषु बहुप्रवीणा।
अभीक्ष्णज्ञाने सततं सुलीना,
ज्ञानं बिना ते क्षणमेव नैति।।2।।

श्री शांतिसिन्धोश्च परम्परायां,
श्री वीरसिन्धोस्तु प्रसिद्धशिष्या।
प्रणौम्यहं ज्ञानमतिं सदा तां,
आचार्यवर्यो च नमामि नित्यं।।3।।

मित्रे च शत्रौ समभावदृष्टिः,
दुःखे सुखे चापि समत्त्वबुद्धिः।
ज्ञानेन धैर्येण च सर्वथियं,
मातः! स्वसंज्ञा सफलीकृता हि।।4।।

दधाति भक्त्या हृदि त्वां च कोऽपि,
स ज्ञानदीप्त्या सततं विभाति।
या "चन्दना" ते चरणानुरक्ता,
सा वांछति त्वत्सदृशं च ज्ञानम्।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14,15,16 अप्रैल 2006

अज्ञानांधकार को दूर करने वाली प्रकाश ज्योति हैं आप!

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं
ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमो नमः

पूज्यनीय गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में बारम्बार नमोस्तु।

सर्वप्रथम मैं आपके आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के शुभ अवसर पर मन-वचन-काय सहित बारम्बार अपनी विनयांजलि अर्पित करता हूँ और आपके पवित्र चरणों में बारम्बार नमन करता हूँ। आपने 18 वर्ष की लघु आयु में ग्रह त्याग कर बिना पीछे मुड़कर देखे जिनवाणी माता व जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार में जो निरन्तर सेवा की है, वह अवर्णनीय है, सराहनीय ही नहीं बल्कि अद्वितीय है। आप वास्तव में ज्ञान की भंडार हैं। आपके नामकरण के अनुसार ही आपमें वे सब गुण विद्यमान हैं, जो सब गुण उच्चतम के हैं, जो एक पवित्र आत्मा में पाये जाते हैं। आपने अनेक विधानों को शास्त्रानुसार रचकर नीति व विधिपूर्वक सृजन व निर्माण किया है, जो देश-विदेश में भलीभांति प्रचलित हैं और अध्ययन किये जाते हैं। वे जैनधर्म का मर्म समझाने में पूर्णरूप में सार्थक हैं। यह विधान अति भक्तिपूर्वक आदर-सम्मान सहित गुने जाते हैं। आपने जैनदर्शन के गुणों व भावों को गद्य-पद्य के रूप में ऐसा पिरोया व संजोया है, जो अति प्रशसंनीय है और जो एक साधारण व्यक्ति ही नहीं बल्कि एक ज्ञानी व्यक्ति की भी शक्ति से कोसों दूर है। आप अज्ञानता के अंधकार को लुप्त करने हेतु प्रकाश ज्योति हैं। Torchlighl हैं। Para-Suparh हैं।

आपने अनेक मंदिरों व तीर्थक्षेत्रों का विधि-विधानपूर्वक निर्माण कराया है, जहाँ प्रत्येक प्राणीमात्र प्रवेश पाकर वास्तविक सिद्धभूमि का आभास प्राप्त करता है। आपने हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप क्षेत्र का निर्माण कराया है, जिसमें प्रवेश करके ऐसा प्रतीत होता है कि इस संसार में भौगोलिक दृष्टि से आगे भी कुछ और है, जहाँ प्रत्येक प्राणीमात्र की भ्रमण करने की इच्छा होती है परन्तु वहाँ केवल मोक्षगामी ही जा सकता है। बहुत आनन्द आता है। आप वास्तव में चिरस्मरणीय हैं, मैं आपकी चिरायु की शुभकामना करता हूँ। मैं तो आपके चरणों की धूल के समान भी नहीं हूँ, केवल आयुपर्यन्त इस पृथ्वी पर बोझ हूँ।

अन्त में पुनः मैं आपको अपनी विनयांजलि अर्पित करता हूँ और यदि कोई त्रुटि हो गई हो, तो अनजान बालक समझ कर क्षमा कर दीजिएगा।

-जिनेन्द्र प्रसाद जैन (एडवोकेट), दिल्ली

ये पचास वर्ष जैनधर्म के 'स्वर्णयुग' हैं

प्रातःस्मरणीय, श्रद्धा, ममता एवं प्रेरणा की देवी, आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों में 200 से अधिक साहित्यिक एवं आध्यात्मिक ग्रंथों की रचना कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। उपेक्षित एवं जर्जर तीर्थंकर जन्मभूमियों, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना निर्माण, अयोध्या, प्रयाग, कुण्डलपुर, मांगीतुंगी में अनेक नूतन निर्माण कराये। इसके अलावा भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली के चौबीस कल्पद्रुम विधान एवं विश्वशांति महावीर विधान का भव्य आयोजन कर अपनी अनूठी कार्यशैली और धर्म प्रभावना का परिचय दिया। आप "ज्ञानमती" ही नहीं अपितु "वीरमती" भी हैं। आप धन्य हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अगर हम इन 50 वर्षों को (1956-2006) जैनधर्म का 'स्वर्ण युग' कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इनके इन कार्यों ने जैन समाज के गौरव को नई गरिमा प्रदान की। ऐसी चहुँमुखी प्रतिभा एवं दिव्यशक्ति की धनी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में मेरा कोटि-कोटि नमन एवं वंदन।

-एडवोकेट एन.सी. जैन, प्रीतविहार-दिल्ली

विनयांजलि

विश्ववंदनीय, 21वीं सदी की महा साध्वी, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि, शांति एवं ममता की साकार मूर्ति, रत्नत्रय की अप्रतिम धनी परम पूज्यनीया श्री ज्ञानमती माताजी श्रमण संस्कृति पथ पर अग्रसर रहने वाली एक आगमनिष्ठ एवं महान जैन ग्रंथों की लेखिका साध्वी हैं।

आर्यिकाशिरोमणि पद से अलंकृत पूज्य माताजी वात्सल्य की रत्नाकर, उत्तम क्षमा, मार्दव आदि धर्मों से परिपूर्ण एक युगप्रवर्तिका एवं सम्पूर्ण राष्ट्र की गौरव है। पूज्य माताजी विलक्षण प्रतिभा की धनी, ज्ञान, ध्यान, तप में सदैव लीन रहने वाली अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी तपस्विनी के रूप में सर्वत्र जानी जाती हैं। रत्नत्रय से सुशोभित पूज्य माताजी का सम्पूर्ण जीवन जैन शास्त्रों के पठन-पाठन, मनन एवं चिंतन में व्यतीत हुआ है। वास्तव में देखा जाये तो माताजी का सम्पूर्ण जीवन अपने आप में एक पावन इतिहास है, जो युगों-युगों तक वंदनीय एवं अभिवंदनीय रहेगा। आपका त्यागमय जीवन हम सबके लिए एवं सम्पूर्ण जैन जगत के लिए एक आदर्श है। कल्पवृक्ष के सुगंधित प्रसूनों की भाँति माताजी की कीर्तिपताका यत्र-तत्र सर्वत्र फैली हुई है।

सर्वोपयोगी सरस जैन साहित्य की सृजनकर्त्री, जम्बूद्वीप निर्माण की प्रणेता, सरस्वती पुत्री अथवा यह कहा जाये कि सरस्वती जिनके कंठ का हार है, ऐसी ज्ञानमती माताजी के असाधारण धार्मिक योगदानों से हमारा समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्र लाभान्वित एवं सुशोभित हो रहा है। आप सदैव आत्म साधना में लीन रहने के साथ-साथ जनकल्याण में भी रत हैं।

परमपूज्यनीया वंदनीया 105 आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (उ.प्र.) में इस समय विराजमान है। मैंने अनेकों बार उनके भक्तिपूर्वक दर्शन किए हैं। मेरा अनुभव है कि माताजी का पावन जीवन हमारे लिए सत्पथ पर चलने के लिए प्रेरणा है। स्वपर कल्याण में तत्पर माताजी जैन एवं जैनेतर समाज का प्रकाश स्तंभ हैं। अनुपम रत्नत्रय की खान इस महान् माँ का जीवन जैनधर्म एवं संस्कृति के उन्नयन में एक विशिष्ट स्थान रखता है। पूज्य माताजी ने अल्पायु में ही इस असार संसार से मोह त्याग कर तृष्णा से रहित होकर अभ्यन्तर एवं बाह्य उपाधियों के भार को दूर करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन तप-त्याग एवं निर्दोष आत्म साधना में व्यतीत किया है। आप एक सजग एवं सतत् सावधान रहने वाली आर्यिकारत्न हैं तथा जैन समाज की एक अनुपम निधि है। जैन आगम में वर्णित आर्यिकाचर्या का आप कठोरतापूर्वक पूर्णरूपेण पालन करती हैं। जिन-जिन को माताजी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला है, उन लोगों ने माताजी में माँ की ममता, शिशु सा सरल हृदय, अपार करुणा एवं वात्सल्य का दर्शन किया है। इनके दर्शन से हृदय गद्‌गद एवं भक्तिभाव से सहज ही भर जाता है।

पूज्य माताजी एक आगमनिष्ठ विदुषी आर्यिकाशिरोमणि हैं। स्वाध्याय, आत्मचिंतन एवं तपश्चर्या में लीन माता ज्ञानमती जी सम्पूर्ण विद्वत् जगत में पूज्यनीय एवं वंदनीय हैं। आप कुछ ही भवों में सिद्धों की श्रेणी में आरुढ़ होने वाली चारित्रचन्द्रिका माताजी हैं। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जैनधर्म का जो वृहद् प्रचार-प्रसार एवं ख्याति देखने को मिल रही है, उसका श्रेय माताजी द्वारा अपनी लेखनी से लिखित विपुल साहित्य ही है। माताजी के प्रवचन के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय जो ज्ञान गंगा बहती है तथा जो धर्मवर्षा होती है, वह देखते ही बनती है। विशाल जनसमुदाय के मध्य विशाल पांडाल में जब माताजी सर्वोच्चासन पर विराजमान होकर धर्मोपदेश एवं धर्मप्रवचन करती हैं, तो जनसमुदाय श्रद्धा एवं भक्ति से विभोर होकर मंत्र मुग्ध सा हो जाता है। सम्पूर्ण भारत में माताजी का मंगल विहार हुआ है तथा सभी धर्मवर्षा से लाभान्वित हुए हैं।

पूज्य माताजी के प्रशस्त एवं तपस्वी जीवन के संदर्भ में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी, गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी 15 अप्रैल 2006 वैशाख कृष्णा दूज को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। माताजी भारत के टिकैतनगर (उ.प्र.) में सन् 1934 में जन्म लेकर अवतरित हुईं, यह हम सब का अहोभाग्य है। सन् 1952 में 18 वर्ष की अल्पायु में ही आचार्यशिरोमणि श्री 108 देशभूषण जी महाराज से शरदपूर्णिमा के दिन बाराबंकी में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके माताजी ने गृहत्याग कर दिया था पश्चात् चारित्र चक्रवर्तीआचार्य प्रवर श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा राजस्थान में वैशाख कृ. दूज को आर्यिका दीक्षा ग्रहण की थी।

माताजी ने अपनी लेखनी से इन 50 वर्षों में चारों ही अनुयोगों से संबंधित अनेक ग्रंथ लिखे तथा अष्टसहस्री, मूलाचार, षट्खण्डागम आदि जैसे महान ग्रंथों की संस्कृत एवं हिन्दी टीकाएं करके जैन जगत को आश्चर्य चकित कर दिया। सरस काव्यों की रचना, इन्द्रध्वज, सर्वतोभद्र, जम्बूद्वीप विधान जैसे अनेक महाविधानों की रचना करके माताजी ने अध्यात्म की जो लहर इस 21वीं सदी में लहराई है, वह वर्ष वर्षान्तरों तक रहेगी।

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर हम सभी ने आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव हस्तिनापुर-जम्बूद्वीप में मनाने का जो निर्णय लिया है, वह एक पावन कार्य है।

जैन साहित्य एवं संस्कृति के संवर्द्धन में, सम्पोषण में माताजी का योगदान सर्वत्र श्रद्धापूर्वक स्वीकारा जाता है। अपने ज्ञान के आलोक से माताजी ने हमारी समाज एवं राष्ट्र को गौरवान्वित किया है अतः समस्त समाज आपका चिरऋणी रहेगा। जैन समाज में पूज्य माताजी का अवदान एवं उपकार अत्यन्त महान है।

पूज्य माताजी शतायु हों। मैं पूज्य माताजी के चरणकमलों में अपनी भक्तिपूर्ण विनयांजलि अर्पित करते हुए माताजी के प्रति दो पंक्तियाँ प्रस्तुत करता हूँ-

ज्ञानी दानी ओ ज्ञानमती, भव सिंधु तरण नौका समान।
शत-शत वंदन गणिनी महान्, तव पावन चरणों में प्रणाम......।।

-पं. पदमचंद जैन शास्त्री 'प्रतिष्ठाचार्य', पानीपत (हरियाणा)

"मेरे प्रेरक दीपों में एक दीप गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी"

प्रेरणा, प्रयत्न और प्रगति—मेरे नास्तिक जीवन से आस्तिक जीवन के प्रभातकाल में परमविदुषी श्री ज्ञानमती माताजी अपने सनावद (म.प्र.) चातुर्मास की समाप्ति के पश्चात् ससंघ विहार करते हुए सन् 1968 के ग्रीष्मकाल के प्रारंभ में मेरी जन्मस्थली ग्राम लोहारिया, जि.-बाँसवाड़ा (राज.) में पदार्पण क्या हुआ, उन्होंने मेरे जीवन सूत्रों में एक सूत्र मील का इतिहास रच दिया। उसे मेरे द्वारा भुलाया कैसे जा सकता है।

माताजी द्वारा प्रज्वलित ऐतिहासिक ज्योति व्यक्तित्वों पर परमविदुषी जिनमती माताजी, विदुषी आदिमती माताजी, ब्र. श्री यशवन्त कुमार (वर्तमान आचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी), ब्र. कलाबेन (वर्तमान विदुषी आर्यिका कैलाशमती माताजी) आदि का संघ मन को स्फूर्ति एवं शकून देता उपदेश आज भी कान में एक विशेष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुंजन सुनाता है।

एक दिन सायंकाल में माताजी से चर्चा में मैंने एक प्रश्न किया। माताजी! महान कौन होता है? मेरे प्रश्न के प्रत्युत्तर में माताजी ने सारगर्भित शब्दों में कहा "मास्टर साहब! जो दूसरों के अन्तर्गर्भित गुणों को देखें और उन्हें विकास मार्ग की प्रेरणा देवें।"

पुनः माताजी ने कहा-"मास्टर साहब! आप तो अध्यापक हैं अतः आपको अनवरत अध्ययन और अध्यापन करते हुए अपनी आत्मा का कल्याण करना है।

अन्य निमित्तों की तरह माताजी के उक्त शब्दों ने मेरे अन्तर्मन को प्रेरणाद्वीप स्वरूप उत्तेजना प्रदान की, जिसके प्रतिफल आज 38 वर्षों से त्यागी जीवन जीते हुए अनवरत-अध्ययन-अध्यापन के साथ दर्शनशास्त्र एवं समाजशास्त्र में अधिस्नातक तथा जैन मंत्र विद्या में पी.एच.डी. (विद्यावाचस्पति) जैसी उच्च उपाधि प्राप्त करने का सुअवसर हस्तगत हुआ। यही नहीं, आज भी वास्तु शास्त्र जैसे गूढ़ विषय में शोधरत हूँ।

अस्तु, जीवन में शान्ति एवं त्याग की ओर उत्तरोत्तर बढ़ते हुए की भावना आदि मूर्त प्रेरक दीपों में एक दीप गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में शत-शत नमन करता हूँ एवं भावना करता हूँ कि अनेक गुणों की पुंजस्वरूप गणिनीशिरोमणि की दीर्घकालीन छत्रछाया ने जो जैन धर्मायतन के विकास एवं श्रमणसंघ के आत्मोन्नति का राजमार्ग हम सबके लिए खोलकर रखा है, आओ हम सब उस राजमार्ग पर चलें और अपनी आत्मा का कल्याण करें। ॐ शांति शांति शांति...............

-डॉ. सोहनलाल जी देवोत, लोहारिया (राज.)

माताजी इस युग की पावन विभूति हैं

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी समुच्चय जैनागम का सरल व सहज रूप में ज्ञान कराने वालीं बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालसती माताजी हैं।

हमारे मैनपुरी में माताजी का नवम्बर 2002 में आगमन हुआ, तब उनके प्रथम दर्शन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। उनके तप, त्याग व ज्ञान की झलक व ओजस्वी तेज उनकी वैराग्यमयी मुद्रा से स्वयमेव मिलता है। उस समय मुझे उनके प्रवचन व जीवनकाल के जीवंत संस्मरण सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। वास्तव में पूज्य माताजी ने अपने नाम का सार्थक प्रयोग किया है, वह तप, त्याग व ज्ञान की जीवन्त मूर्ति हैं। ऐसी पावन विभूति के चरणों में शत-शत नमन।

-प्रियंका जैन, मैनपुरी

मातुश्री दैदीप्यमान संस्मरण

लखनऊ के इन्द्रानगर स्थिति जैन मंदिर में गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ससंघ विराजमान हैं, ऐसा ज्ञात होने पर मैं दर्शनार्थ पहुँच गया। मातुश्री ने पूछा क्या करते हो? मैंने बतला दिया कि लखनऊ संग्रहालय में पुरातत्व अनुभाग का प्रभारी हूँ और संग्रहालय की जैन प्रतिमाओं पर शोध प्रबंध भी लिखा है जो कि अप्रकाशित है। पूज्य माताजी ने इच्छा प्रकट की कि मैं उन्हें ग्रंथ दिखलाऊँ। ग्रंथ लेकर सपत्नी सेवा में पहुँचा। मैं ग्रंथ पूज्य महाराज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोतीसागर जी के पास छोड़ आया। दो-तीन दिन बाद माताजी ने अपने प्रवचन में इसके प्रकाशन की ओर जैन समाज का ध्यान आकृष्ट किया। उस समय तो कोई प्रतिक्रिया न हुई लेकिन मातुश्री की अभिलाषा से श्री भारतवर्षीय दिगम्बर धर्मतीर्थ संरक्षिणी महासभा, लखनऊ ने इसे सन् 2002 में प्रकाशित किया और जैन विद्या संस्थान, जयपुर ने इसे भगवान महावीर 2002 पुरस्कार से गौरवान्वित कर श्रीमहावीर जी में अप्रैल 2003 में समारोहपूर्वक समाहित किया। ठीक ही है महाकवि भास का वचन-

''न हि सिद्धवाक्यान्युत्क्रम्यगच्छतिविधिः सुपरीक्षितानि''।

अर्थात् ब्रह्मा भी सुपरीक्षित सिद्ध वाक्यों का उल्लंघन नहीं करते हैं।

पूज्य मातेश्वरी के चरणों में मेरा शत-शत नमन।

-डॉ. शैलेन्द्र कुमार रस्तोगी, अयोध्या

यह शुभ दिन आया है

मन में है आनंद, आज यह
शुभ दिन आया है ऽऽऽऽ
दीक्षा स्वर्ण जयंती का दिन
खुशियाँ लाया है ऽऽऽऽ।।धृ।।
मन में है आनंद...............

नाम से बढ़कर है वो ज्ञानी,
जैनत्व को लेकर सम्यक ज्ञानी,
जैन समाज की अमूल्य निधी है,
आर्यिका ज्ञानमती ऽऽऽऽ
मन में है आनंद ऽऽऽऽ...........।।1।।

गणिनीप्रमुख है ज्ञानमती जी,
आर्यिकाशिरोमणि ज्ञानमती जी,
जेष्ठ श्रेष्ठ इस साध्वी रत्न का
गुण गौरव करना है ऽऽऽऽ
मन में है आनंद ऽऽऽऽ।।2।।

आर्यिका स्वर्ण महोत्सव आया,
'गुण-गौरव ग्रंथ' यह हार बनाया,
विनयांजलि-संस्मरण ग्रंथ यह
गुणों की पूजा है ऽऽऽऽ
मन में है आनंद ऽऽऽऽ।।3।।

सारे देश को यादगार यह,
हस्तिनापुर का जंबूद्वीप है
निर्मल और सुंदरता, प्रतीक यह
कमल का मंदिर है ऽऽऽऽ
मन में है आनंद ऽऽऽऽ।।4।।

दिव्य भव्य इस आर्यिका रत्न का
दिव्य भव्य यह-स्वर्ण महोत्सव
रत्नत्रय-शुद्धात्मा बनके
शताब्दी मनाना है ऽऽऽऽ
मन में है आनन्द आज
शुभ दिन आया है ऽऽऽऽ
मन में है आनंद ऽऽऽऽ।।5।।

-श्रीमती सुरेखा शहा, बैंगलोर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम हो विदुषी बड़ी महान

तर्ज-देख तेरे संसार की हालत ....

हे माँ ज्ञानमती तुम जग में जैनधर्म की शान,
तुम हो विदुषी बड़ी महान-२।
ग्राम टिकैतनगर में जन्मी, सम्यग्ज्ञान की ज्योति जलाई
बचपन में वैराग्य हुआ जब, घर छोड़ा गुरु शरण में आईं
छोटे लाल पिता, माँ मोहिनि की हो प्रथम संतान,
तुम हो विदुषी बड़ी महान-२।।
आचार्य देशभूषण से व्रत लेकर के तुम बन गईं क्षुल्लिका।
गुरुवर श्री वीरसागर से दीक्षा लेकर बनीं आर्यिका।।
आचार्य शांतिसागर की शिष्या, माँ ब्राह्मी के समान,
तुम हो विदुषी बड़ी महान-२।।
था वीरान हस्तिनापुर जो, जम्बूद्वीप वहाँ बनवाया।
सोलह जिनालयों से शोभित ऊँचा गिरि सुमेरु मन भाया।।
युग-युग तक धरती गायेगी, माँ तेरा यशगान,
तुम हो विदुषी बड़ी महान-२।।
तीर्थ अयोध्या और प्रयाग में जैनधर्म का विगुल बजाया।
महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर ही है सबको बताया।।
जैनागम जैनियों का प्राण है, दिया है सभी को ज्ञान,
तुम हो विदुषी बड़ी महान-२।।
तुमने माँ ढाई सौ से भी, ज्यादा ग्रंथों की रचना की।
अष्टसहस्री, षट्खण्डागम जैसे ग्रंथों की टीका की।।
मात सरस्वती का हे माता, मिला तुम्हें वरदान,
तुम हो विदुषी बड़ी महान-२।।
मात मोहिनी को भी तुमने, रत्नमती आर्यिका बनाया।
क्षुल्लक श्री मोतीसागर को, मिली आपकी शीतल छाया।।
माँ अभयमती, चन्दनामती से, महके तेरा उद्यान,
तुम हो विदुषी बड़ी महान-२।।
जो भी शरण तुम्हारी आता, लोहे से पारस बन जाता।
दर्शन-ज्ञान-चरित्र का संगम, तीनों ही माँ तुममें पाता।।
करके नमन तव चरणों में, माँगे प्रदीप भी ज्ञान,
तुम हो विदुषी बड़ी महान-२।।
हे माँ ज्ञानमती तुम जग में जैनधर्म की शान,
तुम हो विदुषी बड़ी महान-२।

-प्रदीप कुमार जैन, बहराइच

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंटरनेट पर जैन साहित्य : ज्ञानमती माताजी के विशेष संदर्भ में

वर्तमान समय में इंटरनेट सूचना प्राप्ति एवं आदान-प्रदान का एक प्रमुख माध्यम बन गया है। इंटरनेट पर प्रत्येक विषय क्षेत्र— ज्ञान-विज्ञान, धर्म-दर्शन आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इंटरनेट पर जैन साहित्य भी विपुलता में उपलब्ध है। जिसको गूगल, याहू, अल्टाविस्टा, लाइकोस आदि सर्च इंजन के माध्यम से खोजा जा सकता है। इंटरनेट पर बिब्लियोग्राफिक तथा फुलटेक्स्ट दोनों तरह के जैन साहित्य उपलब्ध हैं।

पूज्य ज्ञानमती माताजी के द्वारा लिखित साहित्य व उनके विभिन्न विषयों पर विचार इण्टरनेट पर उपलब्ध है। मैंने गूगल सर्च इंजन के माध्यम से जब जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की, तब मुझे लगभग 14 वेबसाइट प्राप्त हुईं, जिन पर माताजी के द्वारा लिखित साहित्य तथा अन्य समसामयिक जानकारी उपलब्ध हैं। हमें खोज के दौरान हस्तिनापुर, जम्बूद्वीप, कमल मंदिर आदि के बारे में विस्तृत तथा चित्रित जानकारी भी प्राप्त हुई।

जानकारी हेतु कुछ प्रमुख वेबसाइट्स निम्न हैं—

www.jainsamaj.org
www.jaintirth.org
www.jaintirthdarshan.com
www.jainpilgimages.com
www.digambarJain.com
www.jainworld.com

गणिनी ज्ञानमती माताजी के द्वारा लिखित साहित्य का विद्वत् वर्ग में विशेष महत्व है। माताजी के द्वारा कही गई बात आगमसम्मत होती है, जिससे भी विद्वान् व समाज सहर्ष स्वीकारते हैं। इंटरनेट पर माताजी व अन्य साधुसंत से संबंधित जानकारी उपलब्ध होने से विश्व के किसी भी हिस्से में रहने वाले धर्मप्रेमी बंधु इसका लाभ उठा सकते हैं।

पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 स्वर्णिम वर्षों की सम्पूर्ति पर उनके श्रीचरणों में नतमस्तक होते हुये यही विनयांजलि है कि वे शतायु हों और उनके द्वारा रचित, इंटरनेट पर उपलब्ध अथवा अन्य प्रकाशित महान ग्रंथों के माध्यम से सारे विश्व में शांति हेतु अहिंसा, अनेकांत और स्याद्वादमयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार होवे।

-विवेकानन्द जैन एवं श्रीमती प्रीति जैन, वाराणसी

भावांजलि

"जीवन में पहली बार कुछ ऐसा हुआ,
ज्ञानमती माताजी से मिलने का अवसर मिला,
सिद्धान्त और व्यवहार में समन्वय नजर आया,
हर एक में माताजी का वात्सल्य भरा आशीर्वाद पाया,
आपका आशीर्वाद यदि साथ में हमारे हो
जीवन के हर असंभव कार्य, संभव हमारे हों।"

परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने भगवान जिनेन्द्र द्वारा प्रणीत सिद्धान्तों को अपने व्यवहार में उतारकर अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त कर दिया। आज के इस युग में परम पूज्य माताजी द्वारा लिखित करीब 200 ग्रंथों का अध्ययन करते हुए हम भी पूज्य माताजी द्वारा प्रशस्त इस पथ पर अग्रसर हों और वह अवसर हमारे जीवन में शीघ्र आये।

हमें उनके साथ बिताये हुए कुछ प्रेरक अनुभवों को बीज की भाँति अपने व्यवहाररूपी क्षेत्र में भक्ति और श्रद्धा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से सिंचित कर अपने जीवनरूपी वृक्ष को पुष्पित एवं पल्लवित करना चाहिए। जिस प्रकार पूज्य ज्ञानमती माताजी ने त्याग एवं अध्यात्मरूपी पुष्पों के द्वारा अपने जीवन को सुगंधित करने के साथ-साथ हमारे जैसे भक्तों को भी सुरभित किया है। ऐसी पूज्यनीया गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा स्वर्णिम जयंती महोत्सव पर पूज्यनीय माताजी एवं संघ के चरणों में कोटिशः नमन।

युग युगान्तरों में, भव भवान्तरों में।
आप ही एक सहारा, समर्पित है चरणों में।।
शत शत बार नमन हमारा!

-वर्द्धमान पीयूष कुमार काला, नांदगांव (नासिक)
एवं समस्त परिवार

ज्ञान दान

आज के युग में पचास (50) साल "वैराग्य जीवन" आपका।
हमको है 'आदर्श' और 'प्रेरणा' मिलने का।।1।।
जिसने 'मेरी स्मृतियाँ' का स्वाध्याय किया।
उसने 'जीने की कला' का ज्ञान प्राप्त कर लिया।।2।।
मानव जीवन का सम्यक् दर्शन।
आपका सम्यक्ज्ञान है दर्पण।।3।।
सम्यक्चारित्र पथ पर आपका जीवन।
रहे हमेशा करे हमारा भी पावन।।4।।
युगपत रहेगी आपकी 'धर्मप्रभावना'।
आगे युग तक मिलेगी, रहेगी सबकी भावना।।5।।
जीवन आपके बिना सार्थक हुआ है।
"जिवो हजारो साल", मेरी यही कामना है।।6।।
'आगम' का सही शब्दार्थ आपने हमें सिखाया है।
'सच्चे सुख' को ज्ञानमती ने दिखाया है।।7।।

-प्रा. सुरेश संगई, जालना (महाराष्ट्र)

जंगल में मंगल कर देनी वाली माता

बड़े हर्ष एवं गौरव का विषय है कि आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के 50 वर्ष दीक्षा के पूर्ण होने जा रहे हैं और महोत्सव समिति ने गौरव ग्रंथ प्रकाशन करके इसमें चार चाँद लगा दिये हैं। यह प्रथम आर्यिका हैं, जिनके 50 वर्ष पूर्ण हुए हैं। माताजी ने जब हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की स्थापना की थी, तब प्राचीन मंदिर आज जैसा नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था। हस्तिनापुर की सड़क भी टूटी हुई हुआ करती थी। जंगल ही जंगल था। जम्बूद्वीप बनने से माताजी के चरण से वहाँ भी मंगल हो गया। मांगीतुंगी, प्रयाग, अयोध्या के विकास के साथ-साथ बिहार का सर्वाधिक विकास हुआ। पावापुर, कुण्डलपुर, राजगृही में मुनिसुव्रतनाथ भगवान की प्रतिमा की स्थापना करके समुचित जनता को भी मालूम चल गया है कि मुनिसुव्रतनाथ भगवान की जन्मभूमि राजगृही है। कुण्डलपुर के लिए जो कुछ कहा जाए, वह कम है।

असंभव को संभव बनाया। बनाया कुछ ही दिनों में नया कुण्डलपुर जाकर देखो कुण्डलपुर में आँखें चकाचौंध हो जायेंगी। नंद्यावर्त महल की शोभा तो अपनी अलग छटा छिटका रहा है। उसमें शांतिनाथ की मूर्ति तो शांति सुधा बरसा रही है। मेरा संपर्क माताजी से 12 वर्ष की उम्र से चला आ रहा है। आदिमती माताजी के दर्शन के लिए जाती थी, जब माताजी ने मुझको रात्रि भोजन का त्याग एवं देवदर्शन का नियम, 12 बजे के बाद पानी न पीना यह नियम दिये। उसी दिन से मैंने माताजी को अपना गुरु बना लिया। संयोग वश समय-समय पर टोंक, जयपुर, मालपुरा में दर्शन होते रहे हैं। अजमेर में 1970-71 में एम.ए. करने के समय माताजी का सानिध्य काफी समय के लिये मिला। सन् 1972 में मैं शादी के बाद दिल्ली आई, तो कुछ ही समय बाद माताजी का आगमन भी संयोगवश दिल्ली हो गया। देवदर्शन में परेशानी आने लगी, जब माताजी ने 1974 में निजी मूर्ति शांतिनाथ भगवान की श्री मोतीसागर जी महाराज के हाथ से हमारे घर में स्थापना करा दी। ऐसी माताजी के लिए मेरा मस्तक बार-बार नमन करता है। अंत में यही कहूँगी कि माताजी चिरायु हों, उनका स्वास्थ्य ठीक रहे, अध्ययन चलता रहे, हमें मार्गदर्शन और आशीर्वाद मिलता रहे। बारम्बार वंदामि करके मैं विनयांजलि अर्पित करती हूँ।

-श्रीमती मनोरमा जैन
ध.प. श्री महेशचंद जैन, विकासपुरी-दिल्ली

विनयांजलि

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी वैशाख कृ. 2, दिनाँक 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। पूज्य माताजी ने सन् 1934 में टिकैतनगर में जन्म लेकर 18 वर्ष की लघु आयु में सन् 1952 में गृहत्यागकर सप्तम प्रतिमा रूप ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया। पश्चात् सन् 1953 में क्षुल्लिका दीक्षा और सन् 1956 में माधोराजपुरा (राज.) में आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा को धारण किया था।

पश्चात् संयमी जीवन के इन 50 स्वर्णिम वर्षों में पूज्य माताजी की लेखनी से 200 से अधिक महान ग्रंथों का लेखन हुआ। आपने तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं अन्य पंचकल्याणक भूमियों पर महत्वपूर्ण तीर्थ निर्माण एवं विकास कार्य प्रेरणा देकर सांस्कृतिक संरक्षण के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान किया है। जिसे अखिल भारतीय जैन समाज नहीं भूल सकता। श्री मांगीतुंगी जी यहाँ भगवान वृषभदेव की प्रतिमा 108 फुट की बन रही है। इसका श्रेय तथा प्रेरणा पूज्य माताजी को ही है। इस प्रकार माताजी ने अपनी दीक्षा काल में जैन जगत में महान कार्य किया है। उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदामि।

-प्रो. माणिकचंद एस. पहाड़े, मालेगांव (महा.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

रवि रश्मि के रमैया, पावन प्रभा दिखा दो,
अज्ञान की तमिस्रा, भू लोक से मिटा दो।
हे साधना के स्वामी, तेरी दूर दृष्टि प्यारी,
श्रुत ज्ञान को न भूले, रसना कभी हमारी।।१।।

इन बाह्य चक्षुओं, ने तुझे दृष्टि में न पाया,
चाहा पता लगाना, तुझे अपने हृदय में पाया।
प्रसन्न मन से जब मैं, घर लौट आ रहा था,
सृष्टि का जर्रा जर्रा, तेरा गान गा रहा था।।२।।

दर्शन हे मात करके, जब मन मेरा न माना,
भर कर खुशी से मैंने, गाया नया तराना।
जीवन में ज्योति, प्राणों में प्रेरणा तुम्हीं हो,
मन में मनन वदन में, नवचेतना तुम्हीं हो।।३।।

तन-मन-वचन से होऊँ, मैं शुद्ध कर्मचारी,
दुष्कर्म से बचेंगीं, ये इन्द्रियाँ जो सारी।।
वाणी श्रुत ज्ञान होगी, प्रिय प्राण शक्तिशाली,
होंगी मेरी दो आँखें, शुभ दिव्य ज्योतिवाली।।४।।

ये कान ज्ञान भूषित, नाशा महत् सुखारी,
होगा हृदय दयामय, निर्मल नृधर्म धारी।
माता तेरी ये गाथा, गायेगा कंठ मेरा,
सिर में सदा रमेगा, गौरव अनन्त तेरा।।५।।

होंगे ये हाथ मेरे, यश ओज तेज धारी,
मेरी हथेलियाँ ये होंगी पवित्र सारी।।
प्राणों की प्राण माता, मस्तक पवित्र कर दो।
श्रुतधार माँ दया कर, आँखों में ज्योति भर दो।।६।।

अद्भुत स्वरूप तेरा, तेरी अनूप करनी,
है आप में अवस्थित द्यो अन्तरिक्ष अवनी।
तेरी कृपा से माता, सच्चा प्रकाश पाया,
श्रद्धा की अंजली ले, तेरे समीप आया।।७।।

हे मात यह विनय है, हम वीर वर कहावें,
साधन समाधि हेतु, तुमसे लगन लगावें।
ना मध्य मृत्यु मेरी, जीवित रहे सुखारी,
सर्वांग की क्रियाएँ, स्थिर रहें हमारी।।८।।

अनेक शास्त्रों का सृजन किया है माता,
अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार किया है माता।
हम हाथ जोड़ माता, करते तुम्हें नमस्ते,
जीवन मेरा हो पूरा, गोदी में हँसते-हँसते।।९।।

-आनन्द प्रकाश मदन कुमार जैन
धर्मपुरा-गांधीनगर, दिल्ली

प्रश्न अनेक उत्तर एक-बूझो तो जानें (विनयांजलि)

वह कौन सी आर्यिका माताजी हैं—

1. जिनका जन्म टिकैतनगर (बाराबंकी) में हुआ था?
2. जिन्होंने बालब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए आर्यिका दीक्षा ले ली?
3. जिनकी दीक्षा के 50 वर्ष पूर्णता पर स्वर्ण जयंती मनाई जा रही है?
4. जिन्होंने 200 से ज्यादा ग्रंथ लिखे हैं?
5. जिन्होंने चारों अनुयोगों पर समान अधिकार से लेखनी चलाई है ?
6. जिन्होंने अनेक ग्रंथों की संस्कृत टीका की है?
7. जिन्होंने अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट ग्रंथ की भी हिन्दी टीका की है?
8. जिन्होंने भगवान बाहुबली के सामने श्रवणबेलगोला में ध्यान में तेरह द्वीपसंबंधी दृश्य देखा था?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

9. जिनकी प्रेरणा से जम्बूद्वीप की महान अद्‌भुत रचना सम्पन्न हुई?
10. जिन्होंने तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के उत्थान का दृढ़ संकल्प कर रखा है?
11. जिन्हें लक्ष्मीपुत्र व सरस्वतीपुत्र समान रूप से चाहते हैं?
12. जिनके हृदय में अपने भक्तों के प्रति असीम वात्सल्य है?
13. जिनकी विद्वानों के ऊपर सदैव वात्सल्य व अनुकम्पा रहती है?
14. जिनकी प्रेरणा से अनेक पुरस्कार स्थापित किये गये?
15. जिनके मार्गदर्शन में युवा परिषद का संगठन युवाओं के विकास में तत्पर है?
16. जिन्हे मानद डी.लिट्. की उपाधि विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई?
17. जिनके सानिध्य में विश्वविद्यालय में कुलपतियों का सम्मेलन हुआ?
18. जिनकी प्रेरणा व मार्गदर्शन से अनेक विश्वविद्यालयों में जैन चैयर्स की स्थापना हुई?
19. जिनके सानिध्य में जैन विद्वत् शिविरों का आयोजन हुआ, जो अभूतपूर्व रहा।
20. जिनकी प्रेरणा से 108 फीट ऊँची भगवान आदिनाथ की प्रतिमा मांगीतुंगी शिला में उत्कीर्ण हो रही है?

उत्तर—परमपूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी

ऐसी बहुविध, बहुआयामी सरस्वती सम वात्सल्यमूर्ति माँ के चरणों में कोटि-कोटि वंदामि।

-श्रीमती श्रद्धा विक्रांत जैन, सिडनी (आस्ट्रेलिया)

विनयांजलि

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि विद्वत् समिति ने पूज्य गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ प्रकाशित करने की योजना बनाई है। पूज्य माताजी का व्यक्तित्व सिर्फ जैन समाज ही नहीं, अपितु मानव समाज के लिए प्रेरणादायक है।

अतः मैं उनके मंगल रत्नत्रय की अक्षुण्ण साधना हेतु श्री वीतराग प्रभू से प्रार्थना करते हुए माताजी के चरणों में शत-शत वंदन, निवेदन करता हूँ।

-नाथूलाल सेठ, लोहारिया (राज.)

मेरी अम्मा ज्ञानमती माताजी

जिनके दर्शन मात्र से भव-भव के पाप धुल जाते हैं, ऐसी परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का पावन पुण्यमयी सानिध्य प्रथमबार 2005 के पर्यूषण पर्व के मंगलमयी अवसर पर श्रीक्षेत्र हस्तिनापुर के पावन तीर्थ जम्बूद्वीप स्थल पर 11 दिन प्राप्त हुआ।

प्रथम बार दर्शन होते ही कुछ क्षणों का परिचय मात्र हमारे संघ नायक श्री कस्तूरचंद जी बड़जाते ने माताजी से कराया और उसके बार माताजी ने चिंतामणि के दिलीप कुमार आपको बहुत-बहुत आशीर्वाद है और प्रतिदिन माताजी ने इसी नाम से पुकारा। ऐसा महसूस होता था मानों माँ ने ही आवाज दी है। इतना वात्सल्य, इतना मधुर व्यवहार इतनी महान त्याग की प्रतिभा से प्राप्त होना ही मेरे लिए सम्पूर्ण जीवन की पूंजी बन गई है। इसीलिए मैं अब उन्हें केवल मेरी अम्मा (माता) के रूप में ही पूजने लगा हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह एक सुखद संयोग था, मन में औरंगाबाद से निकलते समय यह दुविधा रही कि कैसा होगा हस्तिनापुर? कैसे होंगे वहाँ के लोग? कैसी होंगी माताजी! कैसा होगा संघ? लेकिन प्रवेश करते ही सारी दुविधाएँ अपने आप समाप्त हो गईं और ऐसा लगा, मानों हम अपनों के बीच अपने ही घर में आ गये हैं।

प्रतिदिन माताजी के दर्शन, पूजन, अभिषेक, विधान, पूजा में कब 11 दिन समाप्त हो गये, पता ही नहीं चला।

क्षेत्र पर माताजी का कितना सूक्ष्म ध्यान रहता है, इसका पग पग पर अनुभव होता था, इतना विशाल जम्बूद्वीप क्षेत्र, बनाया कैसे होगा? यह प्रश्न बार-बार मन में उठता रहा, लेकिन जब एक-एक पन्ना खुलता गया, तब महसूस हुआ कि कुण्डलपुर, अयोध्या, प्रयाग क्षेत्र एवं मांगीतुंगी जी में 108 फुट आदीश्वर की प्रतिमा का उत्खनन सभी कार्य माताजी के मार्ग निर्देशन में सम्पन्न हो रहे हैं और ऐसा भी नहीं कि कोई काम अधूरा रहा हो। उपरोक्त सभी क्षेत्र को पूर्णरूप होने के पश्चात् ही आगे का कार्य प्रारंभ होता है।

जो जानकारी हस्तिनापुर में मिली, उस अनुसार तीर्थंकरों से संबंधित जितने क्षेत्र अविकसित हैं, उन क्षेत्रों का जीर्णोद्धार करके सभी का आधुनिक सुविधा से परिपूर्ण करना यही माताजी का ध्येय है।

गत 50 वर्षों में 200 से अधिक ग्रंथ सम्पदा, दशाधिक क्षेत्रों का उद्धार और साथ ही जनकल्याण हेतु अनेक कार्यक्रमों का संयोजन करना ही मेरी अम्मा ज्ञानमती जी का लक्ष्य है। आदिप्रभु 24 तीर्थंकरों के चरणों में मैं यही प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी माताजी की दीक्षा का अमृत महोत्सव एवं सहस्रचंद्र दर्शन मनाने का सौभाग्य पूज्य गणिनी आर्यिका ज्ञानमती जी के सानिध्य में हो, यही भावना भाते हुए चरणों में त्रिबार नमन है।

-दिलीप शांतिलाल कासलीवाल, औरंगाबाद

एक मौन तपस्विनी-श्री ज्ञानमती माताजी

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्व-रजत-नग पग तल में।
पीयूष-स्रोत-सी बहा करें, जीवन के सुन्दर समतल में।।"(जयशंकर प्रसाद)

सच है सृजन और सहनशीलता नारी के वे गुण हैं, जो समाज में आगे बढ़ने में मदद करते हैं। किसी ने सच ही कहा है-"जीवन में जो कुछ भी पवित्र सुन्दर एवं महत्वपूर्ण है सिर्फ नारी ही उसकी साक्षिका एवं संरक्षिका है क्योंकि नारी ने आज प्रत्येक क्षेत्र में अपना अस्तित्व स्थापित करके यह बात पूर्णतया झुठला दी है कि वह कमजोर है।" नारी आदरणीय है, पूज्यनीय है। ऐसी ही नारियों में एक हैं जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी!

गुलाब का फूल काँटों पर ही खिलता है, वैसे ही ज्ञानमती माताजी कष्टों-संघर्षों, अभावों की कंटीली डाली पर गुलाब की तरह खिलती रहें और अपना शील-सौरभ-जैनाकाश में यत्र-तत्र-सर्वत्र फैलाती रही हैं। 'चाहे आँधी हो या तूफान, हम आगे बढ़ते ही जायेंगे।' इस उक्ति को चरितार्थ करती हुई वे दृढ़-संकल्प के साथ विघ्न-बाधाओं का सामना करती हुई अपने लक्ष्य में अडिग रहीं। जैसा कि मैथिलीशरणगुप्त ने 'पंचवटी' काव्य में कहा है—

"नहीं विघ्न-बाधाओं को हम, स्वयं बुलाने जाते हैं,
फिर भी यदि आ जावें तो, कभी नहीं घबराते हैं।।"

परम श्रद्धेय ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व को शब्दों में बांधना अत्यन्त कठिन सा प्रतीत होता है। इनके उच्चता, निर्मलता व निश्छलता जैसे अनुपम गुण सदा सर्वदा प्रेरणा का स्रोत रहते हैं। बार-बार नमन है इस अद्वितीय व्यक्तित्व को।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक ऐसी दिव्य ज्योति, जिसके सामने लाखों, करोड़ों सूर्यों का प्रकाश भी कम पड़े, क्योंकि सूर्य भी कुछ समय के लिए अपनी तेजस्विता छोड़कर अस्ताचल में चला जाता है। लेकिन जिनके नाम की दैदीप्यमान ज्योति लाखों लोगों के हृदय में हर घड़ी प्रज्वलित है।

जैसे बीज बोने के लिए किसान के पास बीज का होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके लिए कोमल धरती की भी आवश्यकता पड़ती है। जैसे घड़ा बनाने के लिए कुम्हार मिट्टी को इच्छित आकार देने के लिए पहले पानी डालकर उसे कोमल बनाता है, उसी तरह गुणों का आरोपण करने के लिए पहले आत्मा को सुकोमल बनाना पड़ता है। धर्म को प्रतिष्ठित करने के लिए पहले मन सरल व कोमल चाहिए और ऐसी ही सरलता, कोमलता की मूर्ति हैं "पूज्या श्री ज्ञानमती माताजी"।

उनके जीवन में गोपनीय तो कुछ है ही नहीं। जो कुछ है, वह एक खुली पुस्तक की तरह स्पष्ट है।

सच है, आरंभ से लेकर अभी तक उन्होंने कभी कुछ छिपाया ही नहीं है अपने जीवन में। वे स्व और पर के भेद-रहित बालक की तरह स्वच्छमना बनी रहती हैं।

'धन्य-धन्य आदर्श तुम्हारा, आत्मा को श्रृंगार किया।
आत्म शुद्धि के महायज्ञ में, तन-मन जीवन वार दिया।।''
व्यक्ति-व्यक्ति को नहीं देखता, उसकी सरलता को देखता है।
व्यक्ति-व्यक्ति से प्रभावित नहीं होता, उसके गुणों से प्रभावित होता है।

अंत में मैं अपनी काव्यमयी पंक्तियों में उनका आदर करता हूँ-

''जब तक रहेगा चाँद गगन में, दरिया में रहेगा पानी।
जिन्दा रहेगी गुरूवर्या आपकी, वात्सल्यमयी वाणी।।''

-डॉ. हरिकृष्णा प्रसाद गुप्त अग्रहरि, भेलाही (बिहार)

आगम ज्ञाता ज्ञानमती

संपूर्ण भारत में सभी साधु संतों, साध्वियों ने अनेक विधान-पूजा सम्पन्न कराई होगी, उन्हें अवलम्बन लेना पड़ता है पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित विधान पुस्तक का।

अनेक कठिन स्तोत्रों को अपनी भाषा में शब्दांकन करके जन-मन के भोले-भाले, कम पढे-लिखे माता-बहनों को उसमें रुचि निर्माण कराने का कार्य यदि गत 50 वर्षों में किसी ने किया होगा तो वे केवल परमपूज्य माताजी ही हैं।

आज संपूर्ण भारत में धर्म में रुचि बढ़ी है। हर घर में शांति विधान हो, किसी क्षेत्र पर किसी महान संत द्वारा कोई विधान पूजन हो रहा हो, छोटे-छोटे बालकों को भी पूजन में आनंद आता है, तो केवल माताजी द्वारा शब्दांकित रचित 250 ग्रंथों के कारण, ऐसी अद्वितीय माताजी की स्वर्णजयंती दीक्षा को मनाने का सौभाग्य हम सबको मिल रहा है।

हम सब यही भावना भाते हैं कि "आगम माता" ज्ञानमती अपने दीक्षा के 100 वर्ष पूर्ण करें।

-सुरेश स्वरूपचंद जी ठोले, औरंगाबाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

प्रथम गणिनी ज्ञानमती को शत-शत वंदन अभिनंदन है।
त्याग तपस्वनी ज्ञानमूर्ति को सौ सौ बार नमन है।।
उत्तरप्रदेश पावन टिकैतनगर में, छोटेलाल का गृह मकाया।
श्रीमती मोहिनी देवी ने उर बगिया को दमकाया।।
आश्विन शुक्ला शरदपूर्णिमा दिन 'मैना' को चमकाया।
लाड़ प्यार से पालन कर 'मैना' चमकी कुहकखन।
अठारह वर्ष यों बीत गये जब स्वाध्याय में हर्षित मन।।1।।

परमपूज्य आचार्यरत्न देशभूषण जब आये।
रत्नत्रय निधि पाने को जब 'मैना' मन हर्षाये।।
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ले मैना शरणे आये।
वीरप्रभू के पथ पर चलकर 'वीरमती' महकाये।।
सन् उन्नीस सौ तिरेपन, क्षुल्लिका दीक्षा को वन चंदन।
चरित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर गुरु का कर दर्शन।।2।।

पट्टाधीश श्री वीरसागर से आर्यिकाव्रत लेकर चमकी।
उन्नीस सौ छप्पन जब आया 'दीक्षा' से शोभित हो दमकी।।
ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रथम गणिनी से नित महकायी।
आत्म साधना तप त्याग तपस्या से उदित हुआ मन दर्शायी।
मोक्षमार्ग का आश्रय लेकर चमकी आर्यिका वन चंदन।
धन्य!धन्य श्री गणिनी ज्ञानमती को करते हम सब वंदन।।3।।

उत्तरोत्तर ज्ञानाभ्यास क्षयोपशम संस्कृत प्राकृत अध्ययन।
व्याकरण न्याय छंदकला का अभ्यास किया महाचिंतन।।
ज्ञानोपयोग से चमकाया आपने नित्य सम्यग्ज्ञान गगन।
तलस्पर्शी स्वाध्यायी बनकर अष्टसहस्री समयसार का अध्ययन।।
द्वय अर्द्धशतक ग्रंथों को लिखकर पाया आपने श्रुतवंदन।
धन्य! धन्य हो गई धरा पर ज्ञानमती जग वंदन।।4।।

प्रथम चतुर्मास जयपुर खानिया में प्रभाव शाली गंगा बहाई।
पचास वर्ष में विविध नगरों में श्रुतज्ञान की धारा चमकाई।।
भव्य मनोहर 'जम्बूद्वीप' की रचना का श्रेय आपने पाय।
अयोध्या, अहिच्छेत्र कुण्डलपुर इलाहाबाद दीक्षास्थली चमकाया।।
राजगृही, पावापुरी, सम्मेदशिखर, बद्रीनाथ जीर्णोद्धार संवर्द्धन।
और अनेकों तीर्थ धामों का उद्धार किया पुण्यार्जन।।5।।

जब तक नभ में चन्दा सूरज, प्रथम गणिनी 'ज्ञानमती' चमकायेंगे।
इनके बताये पथ पर चलकर मानव सुख को पायेंगे।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनसा वाचा और कर्मणा जो जो जन मिलकर ध्यायेंगे।
दिव्य अलौकिक श्री ज्ञानमती का यश गगन धरा पर चमकायेंगे।
प्रथम प्रशम भी ज्ञानमती को नत 'फणीश' हे वंदन।
पावन स्वर्ण जयंती 'दीक्षा'' अवसर पर कोटि-कोटि जन का अभिनंदन।।6।।

-पं. बाबूलाल फणीश, पावागिरी ऊन (खरगोन) म.प्र.

विनयांजलि

'गागर में सागर' भरने की सूक्ति को चरितार्थ करने वाली पूज्य माताजी ने सर्वतोमुखी कार्य किया है। साक्षात् सरस्वती माता का जिनके हृदय में वास है तथा जिन्होंने अपनी लेखनी भगवान के 1008 नामों को लिखकर चलाई इसलिए उनकी लेखनी में अतिशय आ गया।

''पारस पत्थर लोहे को सोना बनाता है'' यह सभी जानते हैं किन्तु पूज्य ज्ञानमती माताजी वह पारस हैं, जो लोहे को सोना ही नहीं, पारस बना देती हैं। पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में रहने वाला सचमुच एक दिन पारस बन जाता है।

अनेक घटनाओं की शृँखला के क्रम में एक और मजबूत कड़ी के रूप में जुड़ गई जम्बूद्वीप की रचना। इस रचना ने विस्मृत हस्तिनापुर को पुनः संसार के स्मृति पटल पर अंकित कर दिया। न केवल भारत के कोने-कोने में अपितु विश्वभर में जम्बूद्वीप रचना के दर्शन की चर्चा रहती है। जैन जगत में ही नहीं प्रत्युत वर्तमान दुनिया में पहली बार हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का विशाल खुले मैदान पर भव्य निर्माण हुआ है, जो कि गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी के ज्ञान व उनकी प्रेरणा का प्रतिफल है।

ऐसे ही तीर्थंकरों की जन्मभूमि विकास क्रम में माताजी ने देशभर के लोगों को तीर्थंकरों की जन्मभूमि के बारे में बताया, जिसके बारे में लोगों को कुछ भी ज्ञान नहीं था। प्रयाग तीर्थ, जहाँ पर भगवान ऋषभदेव ने दीक्षा ली थी, वहाँ एक ऐसा तीर्थ बना दिया कि जो लोग वहाँ जाते हैं, वो माताजी के बारे में कहते हैं कि पूज्य माताजी ने बहुत अच्छा कार्य किया है। महावीर भगवान की जन्मभूमि कुण्डलपुर में भी, जहाँ भगवान महावीर ने खेला-कूदा और जिस राजमहल में रहे, उसकी प्रतिकृति नंद्यावर्त महल जो कि 7 मंजिला है का है, जिसको देखते ही ऐसा लगता है कि सचमुच में भगवान महावीर इसी महल में खेले-कूदे होंगे। पूज्य माताजी के ये कार्य इतिहास के लिए अविस्मरणीय हैं। मुझे इस बात का गौरव है कि मुझे इनकी छोटी बहन के रूप में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, ऐसी गौरवमयी माताजी के श्रीचरणों में शत-शत नमन।

-श्रीमती कुमुदनी जैन ध.प. स्व. श्री प्रकाशचंद जैन, कानपुर (उ.प्र.)

विनयांजलि

आज वर्तमान में आचार्य शांतिसागर जी की परम्परा में परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को हम देख करके इस बात का अंदाजा लगा सकते हैं कि आचार्यश्री की चर्या किस प्रकार की होगी। आज वर्तमान में लगभग 1000 साधु-साध्वी विद्यमान हैं। सबमें सबसे प्राचीन दीक्षित पूज्य माताजी की इस वर्ष दीक्षा की स्वर्ण जयंती मनाई जा रही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरा हस्तिनापुर आने के पूर्व साधुओं से इतना जुड़ाव नहीं था, यहाँ आकर के मैंने पूज्य माताजी के क्रियाकलापों को देखा एवं उनके द्वारा बनाये गये तीर्थों की व्यवस्था को देखा। मन में अपार हर्ष हुआ कि आज इस कलिकाल में भी ऐसी सरस्वती की प्रतिमूर्ति साक्षात् विराजमान हैं, जिनको देखकर के मस्तक स्वयमेव झुक जाता है, जिनकी प्रशंसा के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं, आज भी ऐसे साधु विराजमान हैं जिन्हें देखकर आँखों को विश्वास नहीं होता है।

मेरा परम सौभाग्य है कि जिनके दर्शन को लोग तरसते हैं उन माताजी की छत्रछाया में रहकर कार्य करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। नितप्रति नई-नई योजनाओं में भाग लेने का अवसर प्राप्त होता रहता है। मैं सोचता हूँ कि जरूर मेरे पिछले जन्म का कोई पुण्य है कि माताजी के इतने निकट रहने का सौभाग्य मिल रहा है। जम्बूद्वीप जैसे सुन्दर स्थान पर कार्य करने में मुझे बड़ा गौरव होता है कि यह विश्व का अद्वितीय जैन तीर्थ है। आज माताजी अपनी दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं, इस अवसर पर मेरे एवं मेरे परिवार की ओर से विनयांजलि सुमन अर्पित है।

–अनिल कुमार जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मैनेजर)

विनयांजलि

हे ज्ञानमती माता, तुम सब जग की माता,
हम वंदन करते हैं, चरणों में झुका माथा।।टेक.।।१।।
तुम ज्ञान की सागर हो, तुम गुणों की गागर हो।
सन्मार्ग दिवाकर हो, भक्तों की सुखदाता।। हे ज्ञानमती.........।।२।।
जिस भू पर पग पड़ते, वह क्षेत्र नाम पाता।
लाखों नर नारी जन दर्शन कर सुख पाता।। हे ज्ञानमती.........।।३।।
तुम त्याग की मूरत हो, सद् ज्ञान से पूरित हो।
तुम शान्ति की मूरत हो, शिवपथ की हो दाता।।हे ज्ञानमती.........।।४।।
हस्तिनापुर को सार्थक, कीना तुमने माता।
मांगीतुंगी पर, कैसा आनन्द आता।। हे ज्ञानमती.........।।५।।
कुण्डलपुर नगरी को, तुम स्वर्ग बना डाला।
नंद्यावर्त महल बना, जग में सब से निराला।। हे ज्ञानमती.........।।६।।
वर्तमान में गणिनी कोई, तुम सम नहिं हैं माता।
तुम सम बन जाऊँ मैं, कब दिन आये माता।। हे ज्ञानमती.........।।७।।
सम्यक् दर्शन अरु ज्ञान, चारित्र से हो भरपूर।
तप त्याग व संयम में, शिथिलाचारों से दूर।। हे ज्ञानमती.........।।८।।
महिमा गाते गाते नहिं तृप्त हुई आशा,
भावना, कुसुम, भाये, आशीष दो हे माता।।हे ज्ञानमती.........।।९।।

–श्रीमती कुसुम जैन, केकड़ी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम्हें है बारम्बार प्रणाम

ऐसा दो आशीष कि हम भी, कर जाएँ कुछ काम।
ज्ञान की देवी ज्ञानमती जी, तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।
जो कल्पना कोई नहिं कर पाता, वे काम सहज ही करवातीं।
ऐसे दीप जलाये तुमने, कभी न बुझ पाये बाती।।

कुण्डलपुर, प्रयाग, अयोध्या, जम्बूद्वीप का जग में नाम।
ज्ञान की देवी ज्ञानमती जी, तुम्हें है बारम्बार प्रणाम।।
खुद डिग्री नहिं ली लेकिन, प्रतिष्ठा के आचार्य बनाये।
धवलकीर्ति जी भट्टारक भी , किसी से छुपेंगे नहीं छुपाये।।

अनुपम मानव कृतियाँ तुम्हारीं, हमें भी दे दो थोड़ा ज्ञान।
ज्ञान की देवी ज्ञानमती जी, तुम्हें है बारम्बार प्रणाम।।
चांसलरों के सम्मेलन औ, गोष्ठी की कल्पना तुममें है।
श्रावक से श्रमण बनाने की, अद्भुत क्षमता तुममें है।।

कितनी पीछी औरों को दीं, खुद बदलीं पिछी पचास महान।
ज्ञान की देवी ज्ञानमती जी, तुम्हें है बारम्बार प्रणाम।।
इक राज हमें भी बतला देना, जो हमें समझ नहिं आया।।
ये चमक तेज चेहरे पर माता, तुमने कैसे, कहाँ से पाया।।

तीक्ष्ण बुद्धि, चातुर्य, सौम्यता, और वात्सल्य की तुम हो खान।।
ज्ञान की देवी ज्ञानमती जी, तुम्हें है बारम्बार प्रणाम।।
ऐसा दो आशीष कि हम भी, कर जाएं कुछ काम।
ज्ञान की देवी ज्ञानमती जी, तुम्हें है बारम्बार प्रणाम।।

-डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज', इंदौर

विनयांजलि

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों की सम्पूर्ति पर प्रकाशित हो रहा "गौरव ग्रंथ" की सूचना पाकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

इस ग्रंथ की सम्पूर्णता के लिए मंगल कामना प्रेषित करता हूँ। इस कार्यक्रम में मुझे निमंत्रण दिया, उसके लिए धन्यवाद। जब से मुझे माताजी का सम्पर्क प्राप्त हुआ, तभी से मेरे अन्दर धार्मिक भावनाएँ इतनी प्रबल हो गई हैं कि मैंने अपनी भूमि पर एक जिनालय की स्थापना व्यक्तिगत रूप से की। इस कार्य में मैं समझता हूँ कि मुझे माताजी का ही आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। जितने भी महानुभाव गौरव ग्रंथ के सम्पादन में सहयोगी होंगे, उन सभी को मेरी शुभकामनाएँ एवं सभी साधुगण और साध्वी वृन्द को मेरा शत-शत वंदन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सभी वर्ग के लोग इस ग्रंथ से लाभान्वित होंगे, ऐसी मुझे आशा है। मैं इस अवसर पर समस्त समिति को बधाई देता हूँ और गौरव ग्रंथ का उद्देश्य सफल हो, यही कामना करता हूँ।

-प्रकाशचंद जैन, गुड़गाँवा

(अध्यक्ष-1008 ऋषभदेव जिनालय, आदर्शनगर)

ये गणिनी माता महान हैं!

चेहरे पर तेज, वाणी में ओज, हृदय में मानव कल्याण के भाव हैं।
शत-शत करें इनका वंदन, ये गणिनी माता महान हैं।।

सतयुगी साधनों को अंगीकार कर, अपने प्रतीक बने।
भौतिकता में लिप्त जग को, उद्‌बोध दे रही।।
करें इनका अनुकरण, दे रही सम्बल हमें आज हैं।
शत-शत करें इनका वंदन, ये गणिनी माता महान हैं।।

माँ की ममता, बहन का नेह, व स्वजनों का मोह त्यागा।
छोड़ दिए भवन, वैभव, वस्त्र, तिल मात्र साथ है।।
निराशा के तम में, जिनवाणी की जीवन्त प्रतीक विद्यमान हैं।
शत-शत करें इनका वंदन, ये गणिनी माता महान हैं।।

है यह सौभाग्य हमारा, इस संक्रमणकाल में मिला इनका दर्शन।
धो लें मन का मैल, कलुषता, करें नित्य इनका वंदन।।
अनुकरण करें इनका, आत्म कल्याण की लिए चाह है।
शत-शत करें इनका वंदन, ये गणिनी माता महान हैं।।

-श्रीमती पूजा, डॉ. प्रशांत जैन, भोपाल

विनयांजलि

जो युग पुरुष होता है, वह युग दृष्टा भी होता है। जीवन का व्यापक और उदार दृष्टिकोण ही युग पुरुष और युग दृष्टा की सच्ची कसौटी है। इस कसौटी पर गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी पूर्णरूप से खरी उतरती हैं। आप बहुमुखी, प्रतिभा सम्पन्न गणिनीप्रमुख हैं। आपने लोगों को नया विचार, नयी वाणी और नया कर्म दिया। भोगमार्ग से हटाकर धर्ममार्ग की ओर बढ़ने के लिए उत्प्रेरित किया। प्रत्येक व्यक्ति के मन से अज्ञानरूपी अंधकार को हटाकर ज्ञान की दिव्य ज्योति जलाई। ऐसी प्रातः स्मरणीया पूज्य माताजी के चरणों में शत-शत वंदामि।

पूज्य माताजी ने तीर्थंकरों की जन्मभूमि के पुनरुद्धार के लिए संकल्प लिया और उसे पूर्ण किया। कुण्डलपुर, प्रयागराज, हस्तिनापुर इसके उदाहरण हैं। इस समय काकंदी एवं मांगीतुंगी जी के पुनरुद्धार के लिए तत्पर हैं।

पानी अपना आकार बदलने में समर्थ है, अगर उसको संयोग मिल जाये, गिरगिट भी संयोग मिलने पर अपना रंग बदलने में समर्थ है, अगर उसको वैसी प्रकृति मिल जाये, सोना भी अपना आकार बदलने में समर्थ है यदि उसको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किसी सुनार का योग मिल जाये, उसी प्रकार प्रातःस्मरणीय माँ का आशीर्वाद मिल जाये, तो व्यक्ति धर्म की प्रभावना करता हुआ अपने जीवन को सफल बनाते हुए इस भवजाल से मुक्ति प्राप्त कर लेगा।

जैनधर्म की हैं ज्ञाता, मूर्तिमान हैं धर्म विधान,
इंसान नहीं इस धरती पर, मूर्तिमंत्र हैं माता महान।।
इनके चरण कमल में वंदन, श्रद्धान्वित हो नित्य करें,
श्रद्धा सुमन समर्पित कर, पुण्य वंदन सर्व दुखः हरें।।

माताजी का एक ही संकल्प है—

''कर्म वा साधयामि, देहं वा पातयामि'

कार्य पूरा करूँगी, चाहे भले ही शरीर क्यों न छूट जाये। ऐसी दृढ़ निश्चयी माँ के चरणों में शत-शत वंदामि।

-श्रीमती मंजू जैन ध.प. श्री नरेन्द्र जैन, बैंगलोर

विनयांजलि

भारतवर्ष के नदनवंन में फूल खिला है सुंदर,
गणिनी माता ज्ञानमती जी के चरणों में शत-शत वंदन।
हमने देखा प्रयाग का रूप मनोहर प्यारा,
वृषभदेव के दीक्षा कल्याणक का सुंदर नजारा।
शाश्वत तीर्थ अयोध्या की तो बात है निराली,
अनंतानंत चौबीस भगवानों की जन्मनगरी।
हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना है अति प्यारी,
ये अद्भुत देन है गणिनी ज्ञानमती की सारी।
कुण्डलपुर का विकास कराके शोभा अति बढ़ाई,
ऐसी माता के दर्शन कर हम धन्य हुए हैं भाई।
माताजी का पचासवाँ दीक्षा दिवस है सुनो भाई,
इस सुनहरे मौके पर अजित टूर्स की ओर से बधाई।

-डॉ. सौ. बबिता अजित बेलकुड परिवार, जयसिंहपुर (महा.)

Paying Homage to Ganini Aryikaratna Shri Gyanmati Mataji

I was very happy to know that a commemorative volume is going to be published on the occasion of the 50th Diksha Mahotsav of Ganini Aryikaratna Vidya Vachaspati, 105 Gyanmati Mataji.

I have great respect and regards towards mataji and I wanted to meet her. This was fulfilled when I went to New Delhi to present a paper at the first internationl conference on History of Mathematics. Prof. Anupam Jain, Indore had arranged this visit.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Mataji is a twentieth century adition to he illustrious list of lady saints glorifying the Jain order, in general and the Digambara Sect in particular. She is well-known for her teaching and writing. Her devotional and meditational practices have shown many religious glorification. She realises the importance of yogic and devotional practices for inner and outer well-being of human beings. Her dynamism is shown through her gigantic multifarious activities.

Mataji's first memorable work was the construction of Jambudweep at Hastinapur, which has now become a tourist place besides a holy place for all Indians and foreigners.

Mataji was instrumental in the opening of Digambara Jain Trilok Shodh Sansthan at Hastinapur in the year 1974. This has now published many books on Jain Cosmology and mathematics both in Hindi and English. Her motive was intellectual growth and developments of knowledge fronts.

My shat shat vandan to Aryika Gyanmati Mataji.

-Dr. (Mrs). Padmavathamma, Mysore

अक्षय ज्ञान निधि

जैन वाङ्मय में सभी विधाओं संबंधी लेखनकार्य करने वाले व्यक्तित्व की खोज करते हैं, तो उसमें आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का नाम सर्वोपरि मिलता है। मैंने अपने पिता डॉ. श्रेयांसकुमार जैन के साथ जब-जब दर्शन किये, तब-तब मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ। मुझे तो माताजी साक्षात् सरस्वती प्रतीत हुईं। इनके मुस्कराते हुए चेहरे को देखकर जीवन में निराशा से दूर रहने की प्रेरणा मिली। इनकी अलौकिक प्रतिभा और साधना प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करती ही है। माताजी गतिशील व्यक्तित्व सरिता की सरस धारा की तरह निरन्तर आगे बढ़ना जानती हैं किन्तु पीछे मुड़ना नहीं, इसी कारण आपके द्वारा मनभावन जम्बूद्वीप जैसी अद्भुत संरचना करायी गई। इसके साथ ही सरस सुबोध कथा कहानियों के साथ भक्ति साहित्य लिखकर आबाल-वृद्ध को सत्मार्ग पर आगे बढ़ाया है। मुझे कहने में प्रसन्नता हो रही है कि इनका जीवन विकासोन्मुख है, बड़ी से बड़ी प्रतिकूलताएँ अनुकूलताओं में बदल जाती हैं। सर्व कार्यों की सफलता हो जाती है। आपमें अक्षयज्ञान का भण्डार विद्यमान है।

माताजी का मार्गदर्शन जीवन के लिए वरदान है। मुझे जो भी आशीर्वाद के साथ मार्गदर्शन मिला, वह प्रेरणा बनकर सदैव साथ रहता है। गुरु की कृपा के बिन कुछ भी संभव नहीं है। मैं माताजी से सदैव आशीर्वाद का आकांक्षी हूँ—

न बिना यान पात्रेण, तरितुं शक्यतेऽर्णवः।
नर्ते गुरुपदेशाच्च सुतरोऽयं भवार्णवः।।

जैसे जहाज के बिना समुद्र को पार नहीं किया जा सकता है, वैसे ही गुरु के मार्गदर्शन के बिना संसार सागर को पार पाना अत्यन्त कठिन है।

आर्यिकाश्री का इसी प्रकार का आशीर्वाद मेरे जीवन में सतत रहे और इनका तेजोमय व्यक्तित्व, कृतित्व समाज को यावच्चन्द्रदिवाकर तेजस्विता प्रदान करता रहे।

-आलोक जैन (एम.बी.ए.), दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्यम् शिवम् नित सुन्दरम् की मंगल मूर्ति

—हरिगीतिका छंद—

आचार्य कुल में आर्यिकाओं का विशिष्ट स्थान है।
यों आ रहा होता चला उनका सतत गुण-गान है।
अणुणीया, वंदनीया ज्ञानमति माँ आर्यिका।
अविरल युगान्तर ला रही सद्नेत्रि का उन्नायिका।

जिन-वाङ्मय की सर्जिका, निष्णात आशु-कवित्व में।
तप-त्याग का आदर्श-दर्शन दीप्त है व्यक्तित्व में।
क्षत तीर्थ-जीर्णोद्धार की माँ प्रेरिका उत्थानिका।
अतित्व स्वरूपांकित करातीं, कुशलतम निर्मापिका।

शिव-मार्ग की संचालिका, शिव-मार्ग पर आरूढ़ हो।
शिव-तत्त्व की उपदेशिका, कोई नहीं व्यामूढ़ हो।
जो है स्व-परकल्याण की शुचि भावना भव नाशिनी।
पदवी करे तीर्थंकरों की आप वत्सल-भाविनी।

इस से बड़ा नहिं पुण्य कोई, माँ सहज अधिकारिणी।
अध्यात्म का है लक्ष्य अनुपम, आप जगदोद्धारिणी।
इन विचेतन शब्द में, कैसे गुंथे गौरव भला।
माता स्वसंचेतन-स्ववेदन, की अहो ! चिन्मय कला।

सत्यम् शिवम् नित सुंदरम् की, मूर्ति मातु ललाम हो।
निज मुक्ति साधन में कुशल, अनवच अहो अभिराम हो।
कर जोड़कर करते विनय, माँ हो विशुद्धि स्वदर्श की।
आशीष द्रुत दो जन-मनोरथ, सिद्धि हो उत्कर्ष की।

—दोहा—

अद्यावधि की अग्रणी, गणिनी माँ गुण-दाम
उर-धारें बनते यही, परमारथ के धाम।।

-सुरेन्द्र सागर प्रचंडिया, कुरावली (मैनपुरी) उ.प्र.

विनयांजलि

परमपूज्य आर्यिकाशिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के सुअवसर पर अपनी सविनय विनयांजलि समर्पित करते हुए मैं उन्हें इस युग की सर्वश्रेष्ठ विदुषी एवं प्राचीन दीक्षित बालब्रह्मचारिणी आर्यिका मानता हूँ। सहस्रों वर्षों से ऐसी विशिष्ट विदुषी साध्वी नहीं हुई हैं।

पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर को अपना कार्यस्थल बनाकर, वहाँ जो जम्बूद्वीप आदि का विशाल निर्माण किया है, वह दर्शनीय है। जिस पूजा साहित्य की कमी थी, उसकी पूर्ति बड़ी-बड़ी विद्यानुरूप में पचासों पूजा ग्रंथों की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रचना कर समाज में एक बहुत बड़ी कमी को दूर किया है।

आपके दर्शन साहित्य आदि बड़े-बड़े विषयों का पूर्ण अधिकार है। अष्टसहस्री जैसे सर्वोच्च जैन दर्शन के अत्यंत क्लिष्ट ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद कर अपना वैदुष्य स्थापित किया। इसके अनुवाद में अन्य दर्शनों का सूत्र ज्ञान भी आवश्यक रहा है। समयसार आदि आपके अनुवादित ग्रंथ भी अनेक हैं।

आपने अपनी आर्यिका दीक्षा का अनेक बार अस्वस्थता होने के बावजूद भी निर्दोष रूप से पालन किया है। प्रयाग, अयोध्या, कुण्डलपुर (नालंदा) में आपने जो विशाल निर्माण किया है, वह एक आदर्श रचना है।

आप सतत क्रियाशील एवं सतत सावधान रहकर अपने व्रत का पालन करते हुए एक आर्यिका पद का आदर्श स्थापित कर रही हैं। पंच दशक वर्ष पूर्ति के इस अवसर पर स्वर्ण जयंती के आयोजन के लिए सफलता चाहता हूँ। आपकी उदारता का मैं अनुग्रहीत हूँ। बहुत दीर्घकाल से शास्त्रचर्चा के माध्यम से मेरा आपसे संपर्क बना हुआ है। आपके प्रति मेरी हार्दिक मंगलकामना और विनयांजलि है।

-बाबूलाल जैन शास्त्री, इंदौर

यह युग सदा याद रखेगा

प्रबल पुण्य हम सबका है जो, मना रहे हम दीक्षा जयंती।
दूर-दूर से भक्त आ रहे, जम्बूद्वीप की है अनुपम कृति।।
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती, नहिं इतिहास कभी भूलेगा,
माताजी कृत सभी कार्य को, यह युग सदा याद रखेगा।
जैनधर्म का गौरव है शुभ, जम्बूद्वीप की अनुपम रचना,
जम्बूद्वीप कुण्डलपुर विकसित, सभी गा रहे उसकी महिमा।
चली लेखनी माताजी की, जिनशासन का हुआ प्रचार,
'दीर्घायु' 'नीरोगी' हो माँ, 'उत्सव' नत है शत-शत बार।।

-उत्सव जैन 'कवि', बागीदौरा (राज.)

ब्रह्मचर्य का तेज

जब हम माताजी का दर्शन करते हैं तो माताजी के मुख पर एक विशेष आभा का दर्शन होता है ऐसा लगता है माताजी के चारों ओर किरणें निकल रही हैं। ब्रह्मचर्य का तेज मुख पर प्रतिभासित होता है। 72 वर्ष की उम्र में भी ब्रह्मचर्य के तेज से ऐसा प्रतीत होता है कि माताजी अभी 50-60 वर्ष की हैं। 18 वर्ष की उम्र से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने से माताजी के शरीर में भी विशल्या जैसे शक्ति आ गई है, जिससे लोग माताजी का आशीर्वाद पाकर रोग, शोक से मुक्त हो जाते हैं।

पंचमकाल में ऋद्धियाँ नहीं हैं। नहीं तो इतनी तपस्या के बाद माताजी को भी न जाने कितनी ऋद्धियाँ प्रकट हो जातीं फिर भी वर्तमान में माताजी की तपस्या की शक्ति को लोग अपने मुख से कहते हैं।

पहले विद्या सिद्ध करके लोग सुमेरु पर्वत पर जाकर दर्शन कर आते थे लेकिन आज विज्ञान का युग है। आज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विज्ञान ने इतनी तरक्की की है कि हम घर बैठे टी.वी. के माध्यम से देश-विदेशों के समाचार जान जाते हैं। हम घर बैठे फोन के माध्यम से विदेश में बैठे व्यक्ति से बात कर लेते हैं। पहले देवविमान होते थे, जिस पर बैठकर कहीं से कहीं पहुँच जाते थे। आज देव विमान की जगह हेलीकॉप्टर, हवाई जहाज आदि का आविष्कार हुआ है, जिस में बैठकर व्यक्ति घंटों में देश से विदेश में पहुँच जाता है। रेडियो, टेपरिकार्ड, टी.वी. वीडियो, सी.डी., ट्रेन, बस, हेलीकाप्टर, फोन, मोबाइल, कम्प्यूटर आदि सब वर्तमान की ऋद्धियाँ हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें इसी परिवार की परम्परा में धर्म के संस्कार विरासत में प्राप्त हुए हैं। भगवान जिनेन्द्र से प्रार्थना है कि हमारा जीवन पूज्य माताजी से प्राप्त धार्मिक संस्कारों से संस्कारित रहे तथा आने वाली पीढ़ी में भी हमेशा-हमेशा धर्म के प्रति आकर्षण बना रहे।

वर्तमान में पंचमकाल में माताजी की तपस्या का फल भी विशेष है। जिनके आशीर्वाद से अनेक रोगी स्वस्थ हो गए हैं, ऐसी महातपस्वी साध्वी के स्वर्ण दीक्षा जयंती पर उनके त्याग, संयम, ब्रह्मचर्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए अपने पूरे परिवार की ओर से माताजी के श्रीचरणों में नमन करते हुए उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हुए हम अपनी विनयांजलि समर्पित करते हैं।

-जयप्रकाश जैन एवं श्रीमती कामिनी जैन,
दरियाबाद (जि.-बाराबंकी) उ.प्र.

शारद माता

शारद माता का रूप दिखाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया,
दीक्षा लेती न थीं क्वाँरी कन्या यहाँ,
बीसवीं सदि में तुमने प्रथम पद लिया,
ज्ञानमती नाम तब तूने पाया..............

पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित भजन की यह पंक्तियाँ जब कानों में पड़ती हैं, तो ऐसा लगता है कि सचमुच में हम आज कितने भाग्यशाली हैं, पुण्यशाली हैं, जो कि हमें शारद माता के दर्शन और उनका आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। आज जिन्होंने अपने ज्ञान के द्वारा पूरे विश्व में अलख जगा दिया है। बीसवीं शताब्दी में आज तक किसी भी क्वाँरी कन्या ने दीक्षा नहीं ली थी, आपने प्रथम बार बालब्रह्मचारिणी बनकर आर्यिका के पद को प्राप्त किया और ज्ञान गुण की विशेषता के कारण ज्ञानमती नाम प्राप्त किया।

'यथा नाम तथा गुण' को धारण करने वाली माताजी ने जहाँ बड़े-बड़े ग्रंथों का सृजन किया है, वहीं पर बच्चों के लिए बाल विकास भी लिखे हैं। सामान्य लोगों के लिए बड़े-बड़े पुराणों को उपन्यास रूप में लिखा है।

पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष हो चुके हैं अतः उनके स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर मैं भी पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित करता हूँ और माताजी के स्वस्थ एवं दीर्घजीवन की कामना करता हूँ। माताजी के चरणों में बारम्बार नमोऽस्तु।

-नवीन जैन एवं सौ. अलका जैन, पहाड़गंज-दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे जगदम्बे! मंगलमूर्ते! सरिता क्या तुम सागर हो?

एक कवियित्री ने इन पंक्तियों में अपने भावों को संजोया है-

हे सम्पूर्ण जगत की माता! आप सभी प्राणियों के लिए मंगलमूर्ति के समान हैं, आपका ज्ञान सागर के समान गहरा है। जैसे सागर में अगाध रत्न भरे होते हैं, उसी प्रकार आपके ज्ञानरूपी सागर में अगाध रत्न भरे हुए हैं। जिसे आप अपनी लेखनी के द्वारा लिख-लिखकर एवं प्रवचनों के द्वारा बोल कर लोगों को बाँट रही हैं।

सन् 1965 में पूज्य माताजी ने श्रवणबेलगोला तीर्थ पर भगवान बाहुबली के चरण सानिध्य में 15 दिन तक मौन रहकर ध्यान किया था। माताजी के ध्यान में एक दिन एक प्रकाश पुंज आया, जिसमें माताजी ने मध्यलोक के तेरहद्वीपों के 458 जिनमंदिरों का दर्शन किया। यह माताजी के ध्यान की विशेष उपलब्धि रही है।

हस्तिनापुर में पूज्य माताजी ने प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप की रचना को साकार रूप दिया है। जिसका दर्शन करके लोग स्वर्ग सुख का अनुभव करते हैं। अभी तेरहद्वीप की रचना साकाररूप नहीं ले पाई है लेकिन शीघ्र ही हस्तिनापुर में इन्द्रध्वज मंदिर में तेरहद्वीप की रचना साकार रूप ले रही है। जब हम इन्द्रध्वज विधान करते हैं, तो मण्डल पर तेरहद्वीप की रचना बनाकर करते हैं उनमें 458 जिनमंदिरों की पूजा करते हैं, तो इस रचना के पूर्ण होने के बाद हमें उस इन्द्रध्वज मंदिर में बैठकर इन्द्रध्वज विधान करने का भी आनंद प्राप्त होगा।

सन् 1992 में हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप में माताजी ने ध्यान किया था, उस समय माताजी के ध्यान में अयोध्या के ऋषभदेव की 31 फुट ऊँची मूर्ति आई थी और उनका महामस्तकाभिषेक कराने की भावना जागृत हुई। तब माताजी ने अयोध्या जाकर उस अविकसित तीर्थ का विकास कराया तथा भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक कराकर प्राचीन शाश्वत तीर्थ अयोध्या का पूरे विश्व में प्रचार कराया था।

आज हम सभी बहुत ही गौरव का अनुभव कर रहे हैं कि ऐसी सर्वगुण सम्पन्न माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं अतः सम्पूर्ण समाज मिलकर माताजी की स्वर्णिम दीक्षा जयंती बड़े ही धूमधाम के साथ हस्तिनापुर तीर्थ पर मना रही है। इस जयंती के माध्यम से अवश्य लोगों में एक चेतना जागृत होगी कि हम भी अपने जीवन में इस त्यागमयी जीवन को अंगीकार कर अपना मानव जीवन सफल करें। पूज्य माताजी के इस स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर मैं भी अपने पूरे परिवार की ओर से विनयांजलि समर्पित करते हुए पूज्य माताजी के दीर्घ जीवन की भगवान जिनेन्द्रदेव से प्रार्थना करता हूँ। माताजी के चरणों में बारम्बार नमन।

-सुशील जैन, अशोक विहार-दिल्ली

स्याद्वाद सिद्धान्त की वाग्मी विवेचिका

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने नियमसार ग्रंथ पर 'स्याद्वाद चन्द्रिका' नाम से टीका लिखी है, जो बहुत ही सुन्दर सरलभाषा में है। न्याय के अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट ग्रंथ का भी पूज्य माताजी ने बहुत ही सरल भाषा में हिन्दी अनुवाद किया है। न्यायसार आदि न्याय के और अनेक ग्रंथ पूज्य माताजी ने लिखे हैं, जिसमें बहुत अच्छी तरह से स्याद्वाद का, अनेकांत का प्रतिपादन किया है। समयसार ग्रंथ की टीका में भी पूज्य माताजी ने बहुत अच्छी तरह से व्यवहारनय और निश्चयनय का वर्णन किया है और फिर दोनों का समन्वय भी दिखाया है।

जैन आगम में द्वादशांग 11 अंग और 14 पूर्व माने हैं। वर्तमान में 11 अंग, 14 पूर्व का ज्ञान नहीं है, उसका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंश मात्र धवला ग्रंथ में है। उस धवला ग्रंथ का भी स्वाध्याय कर माताजी ने उस पर संस्कृत टीका लिखी है। वर्तमान में उपलब्ध सभी ग्रंथों का बार-बार स्वाध्याय करके माताजी ने खूब ज्ञानार्जन किया है। आज लगभग उपलब्ध सभी शास्त्रों का माताजी को ज्ञान है।

ऐसी ज्ञान की प्रखर ज्योतिपुंज पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने अल्पवय में दीक्षा धारण कर और स्वाध्याय के द्वारा खूब ज्ञान का अर्जन करके अपनी लेखनी के द्वारा अनेक ग्रंथों का सृजन किया है।

पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूरे हो चुके हैं अतः उनकी स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर मैं भी अपने पूरे परिवार की ओर से पूज्य माताजी के श्रीचरणों में बारम्बार नमन करते हुए अपनी विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

-सुरेन्द्र जैन, त्रिनगर-दिल्ली

मंगल स्तवन

धन्य धन्य है हस्तिनागपुर, धन्य यहाँ की माटी है।।
चंदन समझो शीश चढ़ालो, तीर्थक्षेत्र की माटी है।।
वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं।टेक.।।

तीर्थ क्षेत्र प्राचीन जो कौरव-पांडव की रजधानी है।
इसकी गौरव गाथाएं, जन-जन को याद दिलानी है।
जिसकी शीतल छाया प्रतिदिन, सबके मन को भाती है।
चंदन समझो.. ।।

शुभ मनोज्ञ जंबूद्वीप है मंदिर, कलापूर्ण शुभ रचनाएं।
मूलनायक महावीर जी मंदिर, जो नित अतिशय दिखलावे।
शांति कुंथु अरह सुपार्श्व पार्श्व, प्रतिमा मनोज्ञ कहलाती है।
चंदन समझो..।।

आदिनाथ अरु भरत बाहुबलि ह्रीं चौबीसी जन-जन सोहे।
सहस कूट अरु बीस कमल दल, गिरि कैलाश भी मन मोहे।।
वासुपूज्य श्री नेमिनाथ ॐ पंचपरमेष्ठी सुहाती है।
चंदन समझो..।।

अरु कीर्तिस्तंभ के दर्शन कर यात्रीगण प्रभु गुण गायें।
हस्तिनापुर के दर्शन करके जन-जन के मन हर्षाये।
कहं "अभयमती" प्रभु भक्ती पार करे भवदधि की घाटी है।
चंदन समझो..।।

-आर्यिका अभयमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनभक्ति में अटूट शक्ति

पूज्य माताजी की बचपन से ही जिनेन्द्रदेव के प्रति अटूट भक्ति थी। प्रतिदिन देवदर्शन करके ही मुख में जल डालने का नियम बना रखा था। प्रतिदिन भगवान का अभिषेक पूजन करने का नियम था। एक बार गाँव में कई बच्चों को चेचक हो गई, उस समय इनके दो भाईयों को भी चेचक हो गई थी, तब लोग कहते यह भयानक रोग है, जब हम शीतला माता की पूजा करेंगे, तब यह ठीक होंगी। लेकिन माताजी को अपने जिनेन्द्रदेव पर अटूट श्रद्धा थी, वे प्रतिदिन भगवान शीतलनाथ का अभिषेक करके गंधोदक लेकर आतीं और उसे अपने दोनों भाइयों को लगातीं। उन्हें रुई के फाहे में रखतीं। उन्हें णमोकार मंत्र सुनातीं। जिससे दोनों भाई धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगे। उस समय कुछ लोगों ने कहा था कि यह मैना अपने भाईयों की जान ले लेगी, लेकिन उल्टा हुआ। मैना के भाई तो स्वस्थ हो गए और अनेक लोगों के बच्चे मृत्यु को प्राप्त हुए। उस समय इस घटना से टिकैतनगर में काफी लोगों ने मिथ्यात्व का त्यागकर सम्यग्दर्शन को ग्रहण किया था।

इसी तरह से जब माताजी ने त्यागमार्ग में बढ़ने के लिए कदम बढ़ाया था, उस समय उन्हें सफलता नहीं मिल पा रही थी, तब भी उन्होंने बाराबंकी में चन्द्रप्रभ भगवान के मंदिर में जाकर भगवान की शरण ली और यह नियम कर लिया कि जब तक मुझे ब्रह्मचर्यव्रत नहीं मिलेगा, तब तक मेरे चतुर्विध आहार का त्याग है। उस समय भी भगवान की भक्ति के फल से उन्हें सफलता मिली थी और माता मोहिनी ने आचार्य देशभूषण जी के नाम पत्र लिखकर दिया था कि मुझे विश्वास है मेरी बेटी मैना इस त्यागमार्ग को अच्छी तरह से निभायेगी। तब जाकर महाराज ने मैना को ब्रह्मचर्यव्रत और गृहत्याग व्रत दिए थे।

पूज्य माताजी बताती हैं कि जब भी वे किसी भी ग्रंथ का लेखन कार्य करने बैठतीं, उस समय भगवान को अपने हृदयरूपी कमल पर विराजमान कर लेतीं, जिससे उनका लेखन कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो जाता। देखा जाये जिस भगवान की भक्ति से भक्त एक दिन भगवान बन जाता है, तो दूसरे छोटे-मोटे कार्य पूर्ण हो जायें, यह कोई बड़ी बात नहीं है। पूज्य माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर मुझे भी अपनी विनयांजलि समर्पित करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है, यह मेरे लिए बहुत ही प्रसन्नता का विषय है। मैं भगवान से माताजी के स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की कामना करते हुए अपने पूरे परिवार की ओर से माताजी के चरणों में बारम्बार नमन करता हुआ अपनी विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

-कोमलचंद जैन, महमूदाबाद (सीतापुर-उ.प्र.)

संस्कृति की संरक्षिका

सन् 1952 में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने बाराबंकी में आचार्यश्री देशभूषण महाराज के करकमलों से आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत, सप्तम प्रतिमा के व्रत एवं गृहत्याग व्रत तमाम संघर्षों को झेलकर प्राप्त किया। सन् 1953 में मात्र 19 वर्ष की अवस्था में महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा प्राप्त कर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया। महाराज ने कु. मैना की त्यागमार्ग में आने के लिए की गई वीरता को देखकर ही सार्थक नाम रखा। बाह्य प्रपंचों से दूर ज्ञान, ध्यान और स्वाध्याय में लीन रहते हुए माताजी ने सन् 1955 में कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम दर्शन किए। उनकी त्याग,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तपस्या की कठिन साधना को देखते हुए माताजी का मन बहुत ही आल्हादित हुआ। माताजी ने आचार्यश्री से आर्यिका दीक्षा देने के लिए प्रार्थना की, लेकिन उस समय महाराज ने दीक्षा देने का त्याग कर दिया था, उन्होंने सल्लेखना धारण कर ली थी और अपना पट्ट श्री वीरसागर जी महाराज को प्रदान कर दिया था अतः महाराज जी ने माताजी से कहा था कि तुम मेरे पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा ग्रहण करना।

पूज्य माताजी ने चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की पूरी सल्लेखना, समाधि देखी। उसके बाद सन् 1956 में माधोराजपुरा (राज.) में आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर ज्ञानमती सार्थक नाम प्राप्त किया। महाराज जी माताजी के ज्ञान, क्षयोपशम, तीक्ष्ण बुद्धि-कुशाग्र बुद्धि को देख-देखकर बहुत प्रसन्न होते थे। कुछ दिन बाद महाराज जी ने माताजी को संघ बनाकर अलग विहार करने की आज्ञा दी, उस समय महाराज जी ने माताजी को बस एक ही शिक्षा दी थी-'ज्ञानमती ! तुम अपने नाम का ध्यान रखना।' और फिर सचमुच माताजी ने अपने गुरु की दी गई शिक्षा को ध्यान में रखते हुए जो भी कार्य किए हैं, उनसे आप सभी भलीभांति परिचित हैं।

सन् 1956 से लेकर अब तक 50 वर्ष के स्वर्णिम वर्षों में पूज्य माताजी ने जो कार्य किए हैं, जिनधर्म की जो प्रभावना की है, जो संस्कृति की सुरक्षा की है, उसके लिए जैन समाज उन्हें कभी विस्मृत नहीं कर सकता। ऐसी परमपूज्य माताजी को वंदामि करते हुए उनके दीक्षा जयंती महोत्सव पर हम विनयांजलि अर्पित करते हैं।

-राजेश जैन एवं सौ. शशि जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)

करुणामूर्ति परम साधिका-माँ ज्ञानमती

कहते हैं जब पूर्व जन्म का पुण्य, पूर्व जन्म के अच्छे संस्कार और वर्तमान का पुण्य एवं अधिक संस्कार मिल जाते हैं, तब वह व्यक्ति जहाँ भी जाता है, जहाँ भी अपना हाथ लगाता है, वहाँ उसे लाभ ही लाभ प्राप्त होता है। धन्य कुमार चरित्र को पढ़ने से यह ज्ञात हुआ कि पूर्व जन्म में उसने इतना पुण्य एकत्र कर लिया कि जब उसका जन्म हुआ, उसकी नाल गाड़ने के लिए गड्ढा खोदा गया, तो वहाँ धन से भरा घड़ा निकला और जब उसे व्यापार के लिए भेजा गया, तब उसने खाट के जले पाए खरीदे, जिसके अंदर एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि जो इस पत्र को प्राप्त करेगा, वह नवनिधि का स्वामी होगा। तो इस प्रकार वह धन्यकुमार बचपन से ही नवनिधि का स्वामी हो गया। राजगृही का धन्ना सेठ बन गया। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि पूज्य माताजी ने पूर्वजन्म में बहुत सा पुण्य एकत्र किया है और बहुत ही ज्ञानार्जन करके ज्ञानदान दिया है। तभी आज इस भव में पूज्य माताजी ने 200 से अधिक ग्रंथ अपनी लेखनी से लिख दिए एवं जिस भी कार्य को करने का बीड़ा उठाया, उसे विशेष प्रभावना के साथ पूरा करके दिखाया। जिस भूमि पर माताजी अपने चरण रखती हैं, वह भूमि धनधान्य से परिपूर्ण हो जाती है, एक स्वर्ग का रूप धारण कर लेती है, तो इस प्रकार पूज्य माताजी का पूर्व जन्म का पुण्य और वर्तमान में माँ द्वारा दिए गए धार्मिक संस्कारोंरूपी पुण्य ने मिलकर पूज्य माताजी को आज विश्व के क्षितिज पर पहुँचा दिया है।

ऐसी शान्तमूर्ति पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर उनके चरणों में आशीर्वाद की अभिलाषा के साथ शत-शत वंदन।

-अरुण कुमार जैन एवं सौ. सविता जैन, इलाहाबाद (उ.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय भाल पर तैजस का तिलक हैं पूज्य माताजी

युग के फलक पर बौद्धिक सम्पदा के अनगिनत स्वस्तिक रचने वाली अतीन्द्रिय पूजा की धनी परमपूज्या गणिनी आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी की सवत्सलता एवं मृदुभासिता का शीतल निर्झर हर सोपान पर उजालों का प्रदीप बनकर शरणागतों में प्रेरणा, भक्तों में शक्ति व आस्था का संचालन कर रहा है। पूज्य माताजी अदम्य आत्मविश्वास, अनिर्णीत रास्तों पर चलकर पदचिन्ह अंकित करने की अपूर्व क्षमता और प्रौढ़ चिन्तन के साथ कर्मजा शक्ति समन्वित तो हैं ही, साथ ही उनके व्यक्तित्व के अनेक ऐसे पहलू हैं, जिनमें वाक् और अर्थ की संपृक्ति का चमत्कारिक प्रस्फुटन हुआ है, निशिवासर स्वच्छ चिंतन, निर्मल लेखन उनकी दिनचर्या है।

पूज्य माताजी के दिव्यचरणों की रज विगत दो दशकों से मुझे धन्य कर रही है। मुझ अनगढ़ पत्थर को एक विश्वसनीय आकृति प्रदान करने वाली माताजी ही हैं। षष्ठिपूर्ति वर्ष में महिला संयोजिका के रूप में आशीर्वाद की जो संजीवनी एवं आर्यिका रत्नमती पुरस्कार प्रदान कर जो प्रतिष्ठा प्रदान कराई, वह मेरे जीवन के असीम पुण्यों का नहीं, पूज्य माताजी की अनन्त कृपा का अमृतफल है। माताजी के चरण सामीप्य में रहकर मैंने पाया वे रात-दिन इसी सिंधु मंथन में रहती हैं कि वर्तमान में प्राणिमात्र को भौतिकता के काले धुएँ से कैसे बचाया जाए? सृजनशीलता नारी और युवाओं की शक्ति को कैसे सशक्त बनाया जाए? आज उन्हीं के महनीय प्रयासों एवं आशीर्वाद से हजारों महिला और युवा एक मंच पर एकत्रित होकर जनकल्याण में कार्यरत हैं और अपने जीवन को सुसंस्कारी बना रहे हैं।

पूज्य माताजी की साहित्य सृजना शारदा सदन की निधि है। उनकी सिद्धहस्त तपानुप्राणित लेखनी से सृजित 200 से अधिक पुस्तकें हैं, उनके रचना सूत्र महनीय आर्ष चिंतन को उजागर करते हुए परिलक्षित होते हैं। उन्होंने अपनी दिव्य लेखनी से पाठकों के नीरस रेगिस्तान में सुरभित पुष्प खिलाये हैं। उनकी रचनाओं को पढ़कर साधारण जन तो क्या, मनीषी विद्वान भी प्रशंसा की पंखुड़ियाँ बिखेरा करते हैं। गद्य और पद्य दोनों पर आपका समानाधिकार है। माताजी मन की निरंजन पारखी हैं, इसीलिए आपको जन-जन में श्रद्धा और प्रतिष्ठा दोनों ही प्राप्त हुई। आपकी कृतियाँ आचरण के दीप प्रज्ज्वलित कर जगजीवन का अंधेरा दूर करने हेतु संकल्पित हैं। ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म-दर्शन का कोई भी कोना अछूता नहीं रहा, आपके द्वारा रचित विधानों के छंद अंतरंग में छम-छम करते हुए भक्ति में लीन कर देते हैं।

अध्यात्म सौरभ से सुवासित पूज्य माताजी की बगिया का हर फूल सत्कर्म, सत्चिंतन और सद्विचार की त्रिपथगा में स्नान कर भाव, साधना, तप का ऊर्ध्व लिए भगवान बनने को समुत्सुक है। अपनी 50 वर्षीय दीक्षा यात्रा में एक कुशल शिल्पी बनकर कितने युवा/युवतियों की आवृत/धूमिल प्रतिभाओं को अनावृत बनाकर श्रमण परम्परा में प्रतिष्ठा दिलायी। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जैन भूगोल, गणित की अभिव्यक्तियाँ आपके ही अद्वितीय ज्ञान के स्वयंभू प्रमाण हैं। चारित्र की इस महायात्रा में माताजी ने जहाँ देश की माटी में संस्कारों के बीज बोए, वहीं अनेक आयोजनों से समाज एवं राष्ट्र में जैनत्व का शंखनाद किया। तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के जीर्णोद्धार के साथ-साथ जम्बूद्वीप सदृश विश्व की अद्वितीय संरचना आपकी अलौकिकता और उत्कृष्ट साधना समन्वित चिंतन की ही परिणति है।

सत्यत: देश-विदेश में भगवान ऋषभदेव से महावीरपर्यंत चौबीसों तीर्थंकरों की विचार सम्पदा एवं साधना की प्रविधियों को पूज्य माताजी जिस प्रभावी शैली से प्रस्तुत कर रही हैं, उससे अवश्य ही पूरी इक्कीसवीं सदी प्रभावित होगी। उन्होंने सूर्य बन श्रमणत्व एवं श्रावकत्व को जो ऊर्जा, तेज और प्रकाश बाँटा है, उससे घोर अंधेरों में भी सबको अपनी-अपनी मंजिल और दिशा का बोध रहेगा। आपने अर्द्धशतकपर्यंत अपनी संतता को जो ऊँचाईयाँ दी हैं, वह स्वयं एक विलक्षणता है, श्रमण संस्कृति के शुभ भविष्य के रूप में आपकी अभ्यर्थना अर्चना वंदामि के अवसर हमारे जन्म-जन्मांतर के सुकृत का सुफल है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम आपके दीर्घायुष्य की मंगलकामना करते हुए जिनेन्द्रदेव से प्रार्थना करते हैं कि चिरकाल तक हम आपकी आशीष छाया का अमृतपान करें। ऐसी युगनिधि के पावन चरण युगल में युगों-युगों तक युग-युग का वंदन अभिवंदन।

–डॉ. नीलम जैन, गुड़गाँव (हरि.)

विनयांजलि

धन्य है वह घड़ी एवं माँ, जिसने ऐसी पुत्री को जन्म दिया, जिसने ज्ञानमती नाम पाकर दिगम्बर जैन समाज ही नहीं वरन् पूरे देश में ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित की। संसार में आपकी वाणी सुन जलचर, थलचर और गगनचर सबका कल्याण संभव हुआ। आपके द्वारा रचित धार्मिक पुस्तकों से पूजा-विधान आयोजित कर जैनसमाज विश्वशांति हेतु अग्रणीय स्थान बनाये हुए हैं। गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की निर्भीकता का उदाहरण मुझे याद है।

दिल्ली में लाल किला मैदान पर भगवान आदिनाथ जयंती समारोह आपके सानिध्य में सम्पन्न किया जा रहा था, उसमें भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को आना था। मैं वीर सेवक मण्डल की ओर से माताजी की सुरक्षा व्यवस्था में ड्यूटी पर था। प्रधानमंत्री महोदय को माताजी से अकेले मार्गदर्शन प्राप्त करना था, वहाँ उपस्थित सुरक्षाकर्मियों ने मुझे ड्यूटी से उस स्थान से हटने को कहा, माताजी को जानकारी मिलते ही उन्होंने निर्देश दिये कि मुझे आपकी नहीं, इनकी आवश्यकता है, ये यहीं रहेंगे। उस वक्त सभी ने देखा और कहा कि जैन साधु अहिंसा का पुजारी है। उसे लाठी व बंदूकधारियों की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसी गुरु माँ का आशीर्वाद प्राप्त कर मैं अपने आपको धन्य मानता हूँ व भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे ऐसी साधना शक्ति प्रदान करें कि अपना जीवन पूज्य माताजी के चरणों में व्यतीत करूँ।

–अरुण कोडीवाल, जयपुर
(मंत्री-श्री वीर सेवक मण्डल, जयपुर)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी

''जिनके उर में कल कल बहती, गंगा की निर्मल धारा,
त्याग और शुभ ज्ञानमणी से, जिनने निज को श्रृँगारा।
वचनों के मोती बिखराती, युग की पहली बालसती,
मेरा शत वंदन स्वीकारो, गणिनी माता ज्ञानमती।।''

पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने इन पंक्तियों में अपने भावों को संजोया है। जिनके हृदय में सतत ज्ञानरूपी गंगा की निर्मल धारा प्रवाहित होती रहती है, जिन्होंने त्याग और ज्ञानरूपी मणियों से अपना श्रृंगार किया है। वचनों से सदा मोती बिखराती रहती हैं और इस युग की प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी हैं, ऐसी गणिनी ज्ञानमती माताजी आप मेरा शत वंदन स्वीकार करें।

पूज्य माताजी का ज्ञान अभीक्ष्ण ज्ञान है। आज बड़े-बड़े विद्वान भी अनेक प्रश्नों का समाधान करने के लिए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी के पास आते हैं। उनसे चर्चा करते हैं और उनके उत्तर से संतुष्ट होते हैं। पूज्य माताजी ने एक बार बताया कि जब उन्होंने अष्टसहस्री ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया, उस समय उसमें एक 'भावनानुयोग' नाम का अधिकार था, जिसे अति क्लिष्ट समझकर छोड़ दिया था। तब माताजी ने अनेक विद्वानों के पास कहलाया कि आप इसका अनुवाद कर दीजिए, लेकिन सभी विद्वानों ने कह दिया कि माताजी यह मेरे वश का नहीं है। आप ही इसे कर सकती हैं। तब माताजी ने पुनः उस भावनानुयोग का अनुवाद भगवान के चरण सानिध्य में बैठकर भगवान को अपने हृदयकमल में विराजमान करके किया, तो उनका वह अनुवाद भी बहुत सुन्दर पूर्ण हो गया। तब माताजी को असीम प्रसन्नता हुई और भी जिस ग्रंथ को माताजी ने लिखना शुरू किया, धारावाहिक लिखती चली गईं। संघ में माताजी आर्यिकाओं, मुनियों को बड़े-बड़े ग्रंथों का स्वाध्याय करातीं, तो पहले बिना पढ़े देखे भी धारावाहिक पढ़ जाती थीं, जिसे देख उनका विशेष क्षयोपशम ज्ञान पता लग जाता। माताजी ने पठन-पाठन कार्य बहुत किया है।

इस प्रकार से पूज्य माताजी के अभीक्ष्णज्ञानोपयोग को देखकर ऐसा मन में भाव आता है कि हमें भी कभी ऐसा ज्ञान प्राप्त हो। पूज्य माताजी के स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर उनके दीर्घजीवन की कामना करते हुए हम अपने पूरे परिवार की ओर से विनयांजलि समर्पित करते हैं।

-सुभाष जैन एवं श्रीमती सुषमा जैन, टिकैतनगर

णाणमई मादा (अट्ठगं)

तुम्हाकं चरणेसु एसु दिणदो, सज्झायतो पुण्णधी।
हिंदीसक्कदगंधकत्तुपडिहायुत्ता सवा अज्झिगा।
वेरगेण टिकेतपट्टणपमे णिक्कय्य संकप्पिदा।
जंबुद्दीव-विणीद-णाण-वसुहा जोदीं दिहि सेविदा।।१।।

उवट्ठिदे सिद्धिगिरिम्हिधीरे
मोती-रवींदा तवपादलीणा।
पसंदरूवी हि सरस्सदी या।
पचारयामास जिणेंदचक्कं।।२।।

सदनवरूवा जुगजोदिरूवा।
सण्णाणसीला, हृदये विसाला।।
णमोऽत्थु तुज्झं सदइं णमामि।
सया करोदु वरधम्मकज्जम्।।३।।

अज्झत्तदिट्ठी सहिदा सहावा।
सद्धम्ममग्गा तव पव्वदे सया।।
णियप्प कल्लाणवरा गभीरा।
सा णाणदेवी विदधादु भद्दं।।४।।

अज्ज सव्वभूदला हि भट्टचारदूसिदा।
भोदिगा हि मग्गतक्कतक्कणा हि सिंजिदा।।
रागदोसतद्दहू य युज्झकूवमंडिदा।
मग्गदस्सणं करोहि तं सया वसुंहरा।।५।।

अणुवमजोग जोगेण हत्थिणापुरपट्टणे।
तित्थयरसिद्धदेवेण रट्टिवकुलवदिमेलणं।।६।।

संहूदा विहिणा पवोह णिवुणा।
संगोट्ठि संसाहिगा।।
रट्ठियविज्जदमण्डलं पहकरा।
गणिनी महा अज्झिगा।।७।।

संसोद्यं जिणदव्वकव्वकरणं।
संठाविदा सिद्धिदा।।
सा गणिनी गुणणाणठाण बहुणा।
णाणामई पादुणो।।८।।

सट्ठिपंचजम्माहे सईकरोहि ममांजलि।
जीवेद सयवस्सं तं होहि णिच्चणिरामया।।९।।

-तुकाराम चाल, नागपुर (महा.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान का तेज पुंज हैं ज्ञानमती माताजी

जैनधर्म के तीन रत्नों में से सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र में ज्ञान एक महत्वपूर्ण अंग है, जैनधर्म के मूल सिद्धान्तों में ज्ञान भी मुक्ति के लिए आवश्यक माना गया है। इस कलियुग में ज्ञानमती माताजी ज्ञान की पुंज हैं। धन्य है चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टाचार्य आचार्यश्री वीरसागर महाराज, जिन्होंने दीक्षा देते समय इनके व्यक्तित्व को देखते हुए इनकी उज्ज्वल आगमचर्या को समझते हुए इन्हें 'ज्ञानमती' नाम दिया।

बीसवीं शताब्दी में जब नारी जाति पर भारतीय समाज द्वारा नाना प्रकार की पाबन्दियाँ लगी हुई थीं, ऐसे विषम समय में नारी स्वतंत्रता का झण्डा फहराने वाली, कुमारी कन्याओं का मार्ग प्रशस्त करने वाली पूज्य ज्ञानमती माताजी हैं। जैनधर्म की 84 जातियों में अग्रवाल जाति प्रमुख मानी जाती है। पूज्य माताजी अग्रवाल जाति की हैं और मुझे भी अग्रवाल जाति में जन्म लेने का सौभाग्य मिला है, वस्तुतः सम्पूर्ण अग्रवाल जाति को माताजी पर गर्व है और माताजी अग्रवाल जैन जाति का गौरव हैं। पूज्य माताजी ने भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर से अयोध्या मस्तकाभिषेक एवं टिकैतनगर पंचकल्याणक हेतु विहार करते समय वाराणसी पदार्पण पर मेरे ऊपर विशेष कृपा करते हुए "पार्श्वनाथ विद्यापीठ" करौंदी-वाराणसी में मेरे द्वारा स्थापित पुरातत्त्व संग्रहालय में नवम्बर 2002 में भगवान ऋषभदेव की दसवीं शताब्दी की प्रतिमा का अनावरण कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है।

बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि ऐसी विलक्षण प्रतिभासम्पन्न माताजी ने अपने 72 जीवन के 53 वर्ष दीक्षित जीवन में व्यतीत किए, जिसमें उन्होंने आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण किए हैं। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस अवसर पर उनके पावन चरणों में विनयांजलि समर्पित करने का सुअवसर मिला। ऐसी राष्ट्रगौरव पूज्य माताजी शतायु हों और अपनी ज्ञानछाया से हम सभी को संतृप्त करती रहें, यही मंगल भावना है।

नहीं मांगते सोना चाँदी, नहीं मांगते हम मोती।
हमको रत्नत्रय निधि दो माँ!, वे ही हैं सच्चे मोती।।

-सत्येन्द्रमोहन जैन 'वास्तुविद्' एवं
श्रीमती इन्द्राणी जैन, वाराणसी

गागर में सागर भरने की सूक्ति को चरितार्थ करने वाली

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आज जितने भी ग्रंथ अपनी लेखनी से लिखे हैं, सभी गागर में सागर भरने के समान हैं। एक-एक शब्द मोती की माला के समान पिरोए हुए हैं। एक-एक पंक्तियों में आगम का रहस्य भरा हुआ है। बड़े-बड़े पुराणों को छोटी सी पुस्तक में समाहित करके माताजी ने गागर में सागर को भरा है। आज जब लोगों के पास पुराणों को पढ़ने का समय नहीं है, तब वे उस छोटी सी पुस्तक को पढ़कर पुराण पढ़ने का आनंद प्राप्त कर लेते हैं।

माताजी ने सभी ग्रंथों में एक-एक शब्द ऐसे चुनकर सरल भाषा में लिखे हैं, जिसे पढ़कर उसका अर्थ सहज ही समझ में आ जाता है। भक्त जब इनके द्वारा रचित विधानों को करता है, तो भक्ति में भावविभोर होकर नृत्य करने लग जाता है। उसके पैर अपने आप थिरकने लग जाते हैं। भगवान की भक्ति से कर्मों की निर्जरा हो जाती है। सातिशय पुण्य का बंध होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी ने दर्शन शास्त्र, धर्म, अध्यात्म, गणित, भूगोल, खगोल, नीति, इतिहास, कर्मकाण्ड आदि अनेक विषयों पर लेखन कार्य किया है। साहित्य भी विविध शैलियों में लिखा है-गद्य, पद्य, नाटक, कहानी, संस्मरण, आत्मकथा, पूजा विधान आदि। साहित्य लेखन से माताजी की कीर्ति केवल भारत में ही नहीं, विदेशों में भी प्रसारित हो चुकी है। विदेशों से अनेक यात्रियों ने आ करके पूज्य माताजी के दर्शन करके उनका लिखित साहित्य प्राप्त किया है।

इस प्रकार से पूज्य माताजी ने अपने ज्ञान का जो उपयोग किया है, जो ज्ञान लोगों को दिया है, उसे समाज कभी भूल नहीं सकती। पूज्य माताजी के स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर हम सभी उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हुए उनके प्रति विनयावनत होते हुए अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित करते हैं और उन्हें बारम्बार नमन करते हैं।

-विजय कुमार अजय कुमार जैन,
सरस्वती विहार-दिल्ली

पूनो का चाँद हैं पूज्य माताजी

वर्ष में एक बार शरदपूर्णिमा तिथि आती है। कहते हैं इस दिन रात्रि में अमृत की वृष्टि होती है अतः लोग शरदपूर्णिमा की चाँदनी में गोला, मिश्री, मिष्ठान आदि रखकर प्रातः उसे खाते हैं। यह दिवस अपने आप में एक विशेष महत्व को लिए हुए है।

सन् 1934 में इसी शरदपूर्णिमा के दिन रात्रि में 9 बजकर 15 मिनट पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म हुआ। उस समय प्रसूतिगृह में एक विशेष आलोक फैल गया था, जिसे देख दादी माँ ने कहा था कि कोई देवी का अवतार हुआ है।

आज क्या देखा जाता है कि घर में प्रथम कन्या के जन्म लेने पर लोग खुशी मनाने की बजाय दुखी हो जाते हैं लेकिन उस घर में कन्या को रत्न मानकर सभी ने खूब खुशियाँ मनाई थीं।

पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने 'पूनो का चाँद' नाम से एक पुस्तक लिखी है, जिसे नाटक के रूप में अनेक बार मंच पर खेला भी गया है। तो जिस प्रकार से शरदपूर्णिमा की चाँदनी अपने प्रकाश से सभी को प्रकाशित करती है, उसी प्रकार गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी ज्ञानरूपी रश्मियों से सारे जग को प्रकाशमान किया है। अपने ज्ञानरूपी आलोक से अज्ञानरूपी अंधकार को दूर भगाया है।

"पूनो का चाँद" ज्ञानमती माताजी के जीवन से हमें यह सीखना है कि हमें भी ऐसा कार्य करना है, ज्ञानार्जन करना है, खूब स्वाध्याय करके ज्ञान को बाँटना है जिससे हमारा जीवन भी एक आदर्श जीवन बन सके। अगर हम इस जनम में उनके जैसा न बन सकें, तो भावना भाएं और पुरुषार्थ करें। अवश्य एक न एक दिन भावना सफल होगी।

पूज्य माताजी के इस दीक्षा स्वर्ण जयंती पर मैं भी अपने पूरे परिवार की ओर से माताजी के चरणों में नमन करता हुआ, भगवान से उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हुआ अपनी विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

-हंसराज जैन, प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

ज्ञान-गरिमा से मंडित परमपूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की शिष्या और वर्तमान में जैन समाज की अमूल्य निधि हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। 200 से अधिक ग्रंथ आपके असीमित ज्ञान के परिचायक हैं। चारित्रिक दृढ़ता, आगम सम्मत, निष्पक्ष बेवाक निर्णय लेने की क्षमता आपके व्यक्तित्व की विशेषता है।

15 वर्ष पूर्व आपके दर्शन प्रथम बार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। निरन्तर धाराप्रवाह शैली में तर्कसंगत प्रवचन करना आपकी वाक्पटुता और वाक्विदग्धता का परिचायक है। आपने अपने विचारों से जन-जन को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। जीवन में संयम की राह प्रशस्त की। अनेक जीर्ण मंदिरों का पुनर्निमाण और भगवान की जन्मभूमियों पर मंदिर निर्माण कर विश्व में नवीन कीर्तिमान स्थापित किए। कुण्डलपुर (बिहार), प्रयाग, अयोध्या में मंदिरों का निर्माण और हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना उनकी महती प्रेरणा के कीर्तिस्तंभ हैं। 18 वर्ष की कौमार्यावस्था में वैराग्यपथ पर निरन्तर बढ़ते कदम जन-जन के लिए मोक्षमार्ग पर बढ़ने हेतु प्रेरणास्रोत हैं। उन्हें सच्चे अर्थों में विनयांजलि यही होगी कि हम उनके बताए पथ पर निरन्तर बढ़ते रहें। ईश्वर मोक्षमार्ग की पथिक परमपूज्य ज्ञानमती माताजी को स्वस्थ जीवन और दीर्घायु प्रदान करें, ऐसी ही अनेक मंगलमयी भावनाओं के साथ वंदामि अर्पित है।

-डॉ. सरोज जैन, बीना

विनयांजलि

आर्यिकाशिरोमणि ज्ञानमति माँ, चरणों में शत-शत वंदन।
भावों के पुष्प समर्पित हैं, माँ अभिनंदन, माँ अभिनंदन।।

माँ जिनवाणी का शुभ दर्शन, अपनी चर्या से दिखलाया।
आदर्श बनीं हर नारी की, माँ ज्ञानमती युग कहलाया।।।
इस भारत भू पर जिनमत का, यश ध्वज तुमने फहराया है।
मानो यश का सागर खुद ही, चरणों को धोने आया है।।

हे ज्ञानमती माता तुमने निज, नाम सार्थक कर डाला।
जब अल्प समय में कठिन ग्रंथ, कातंत्र व्याकरण पढ़ डाला।।
लखकर प्रज्ञा हो गए चकित, कातंत्र व्याकरण के पाठी।
हो धन्य-धन्य माँ ज्ञानमती, चढ़ ली तुमने क्षण में घाटी।।

अनवरत साधना के संग-संग, कल-कल छल-छल चल पड़ी कलम।
श्री कल्पद्रुम, श्री सिद्धचक्र, श्री इन्द्रध्वज करके परिश्रम।।
रच दिये अनेकों ही विधान, उपकार किया भवि जीवों पर।
माँ नहीं भुला सकता कोई, चाहे नारी हो या हो नर।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग हो गए अमर।
श्री समयसार जी की टीका, माँ रची आपने अति सुंदर।।
श्रुत संवर्द्धन में माँ तुमने, इतना अधिकार जमाया है।
इतिहास नहीं साक्षी कोई, अब तक ऐसा कर पाया है।।

श्री शांति, कुंथु व अरहनाथ की, नगरी हस्तिनापुर में।
रचना की जम्बूद्वीप अहा! ऐसी न कहीं विश्वभर में।।
सुन्दर से सुन्दर तीर्थक्षेत्र, रचकर सपना साकार किया।
हो नगर अयोध्या, या प्रयाग, या कुण्डलपुर उद्धार किया।।

दीक्षा की स्वर्ण जयंती शुभ, अन्तर के दीप जलाती है।
तुम भी कुछ त्याग ग्रहण कर लो, कह-कह के मुझे बुलाती है।।
दो माँ मुझको वरदान यही, मिट जाए भव-भव का क्रन्दन।
रत्नत्रय की 'खुशबू' पाऊँ, शत-शत वंदन, शत-शत वंदन।।

-कु. खुशबू जैन (कवियित्री), रामगंजमण्डी (कोटा) राज.

ज्ञान-ध्यान एवं अध्यात्म की त्रिवेणी संगम
गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी

भारत की भूमि सदैव तपस्या, त्याग एवं संयम की भूमि है। भगवान ऋषभदेव, राम, महावीर की यह भूमि आज भी ऐसे महान व्यक्तियों से सुशोभित है, जो अपने जीवन में ही ऐतिहासिक बन जाते हैं। इसी धरती पर शरदपूर्णिमा के दिन पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का बाराबंकी जिले के टिकैतनगर ग्राम में माता मोहिनी एवं पिता श्री छोटेलाल जी के दाम्पत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में जन्म हुआ। मात्र 18 वर्ष की अल्पायु में शरदपूर्णिमा के दिन ही आपने आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत एवं गृहत्याग किया। राजस्थान की भूमि श्री महावीर जी में आपने आचार्यरत्न 108 श्री देशभूषण जी महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा ली। आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा में आर्यिका दीक्षा लेकर ''ज्ञानमती'' नाम को प्राप्त किया।

आपने संस्कृत, व्याकरण एवं जैनागम का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त कर लगभग 200 से अधिक ग्रंथों का सृजन किया। संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, कन्नड़ आदि भाषाओं की प्रकाण्ड विद्वान हैं। अपनी अद्भुत कला से जिनेन्द्रभक्ति के रस से अनेक पूजा-विधान की की रचना की है।

आपने कर्मठता, दृढ़ संकल्प, अनुशासन के साथ-साथ कौरवों-पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर में अपनी बुद्धि एवं प्रेरणा से जैन भूगोल की अद्वितीय 'जम्बूद्वीप' की रचना की, जो अद्भुत है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली का भव्य निर्माण किया। भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में श्री नंद्यावर्त महल तीर्थ का निर्माण भी पूज्य माताजी की विराट ज्ञानसाधना के तपोबल से हुआ है। आपकी निष्ठा एवं प्रेरणा से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति, ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ, भगवान महावीर ज्योति रथ प्रवर्तन भी सफलतापूर्वक हुआ। सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी सिद्धान्त की व्यापक प्रेरणा मिली।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की सूझबूझ एवं प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना हुई। संस्थान के द्वारा मासिक पत्रिका "सम्यग्ज्ञान" का प्रकाशन भी हुआ, जिसमें चारों अनुयोगों के द्वारा प्रचार-प्रसार कर रही हैं। संस्थान के अंतर्गत स्थापित वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की स्थापना कर 250 से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

हस्तिनापुर जम्बूद्वीप में आचार्यश्री वीरसागर जी विद्यापीठ, जम्बूद्वीप पारमार्थिक औषधालय, जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक जैसे धार्मिक शैक्षणिक कार्यों के द्वारा जैनधर्म का प्रचार-प्रसार कर रही हैं।

वर्तमान में महाराष्ट्र प्रांत के श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट की उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण अभी आपकी ही प्रेरणा एवं सूझबूझ का एक महान कार्य है। आपने आगम ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त कर अष्टसहस्री, नियमसार, कातंत्र रूपमाला, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों की रचना लिखकर जैन वाङ्मय की उपासना की है। पूज्य माताजी की प्रेरणा से सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी सिद्धांत की व्यापक प्रभावना हुई। शैक्षणिक क्षेत्र में भी अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ-सेमिनार आपके सानिध्य में ही समय-समय पर सम्पन्न हुए।

आज के कलिकाल में आध्यात्मिक ज्ञान, चारित्र साधना एवं मोक्षपद को साकार करने वाली परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के स्वर्णिम 50 वर्षों की स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया जा रहा है, उनको जैनमित्र परिवार की ओर से त्रिबार वंदामि! वंदामि!! वंदामि!!!

-शैलेश डाह्याभाई कपाडिया, सूरत
(संपादक-जैन मित्र साप्ताहिक)

यथा नाम तथा गुण

शरदपूर्णिमा की धवल चाँदनी अनेक लोगों को भोगोपभोग में वृद्धि का कारण बनती है परन्तु सन् 1934 में शरदपूर्णिमा की धवल चाँदनी की छाया में जन्मी बालिका मैना को उस चाँदनी में कुछ ऐसा वरदान मिला कि अठारह वर्ष बाद वही शरदपूर्णिमा उसके व्रती जीवन का प्रारंभ बन गई। मैना ने अपने मैं को विसर्जित करके आत्म कल्याण का मार्ग अपनाने का निश्चय कर लिया।

जब कोई श्रावक/श्राविका आत्मकल्याण के मार्ग पर चलने का संकल्प लेकर गुरु के समक्ष अपना समर्पण करता है, तब आचार्य दीक्षा संस्कारों के रूप में दीक्षार्थी के जीवन का नया द्वार खोलते हुए उसे नया नाम भी प्रदान करते हैं। तपस्वी आचार्यों को साधना के माध्यम से ऐसी शक्ति प्राप्त हो जाती है कि वे सहज ही दीक्षार्थी के भविष्य का आकलन कर लेते हैं और प्रायः उसी के अनुरूप नया नामकरण करते हैं।

बीसवीं शताब्दी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाचार्य वीरसागर जी महाराज सन् 1956 में माधोराजपुरा (राज.) में वैशाख कृष्णा दूज को जिसकी आर्यिका दीक्षा सम्पन्न कर रहे थे उसके साहस की क्षमता तो पूर्व में ही आचार्य देशभूषण महाराज परख चुके थे, तभी तो मैना को क्षुल्लिका के रूप में नाम मिला था वीरमती। अब तो आचार्य महाराज दीक्षार्थी के भविष्य का अनुमान कर रहे थे।

पूज्य ज्ञानमती माताजी क्षुल्लिका अवस्था में ही दक्षिण की ओर जाकर आचार्य शांतिसागर महाराज का दर्शन कर चुकी थीं, उनकी अनुपम सल्लेखना साधना को प्रत्यक्ष देख चुकी थीं। उन्होंने आर्यिका दीक्षा के लिए भी आचार्य महाराज से निवेदन किया था परन्तु आचार्य महाराज समाधि की तैयारी के कारण अब दीक्षाएँ न देने का निर्णय कर चुके थे अतः उनकी आज्ञा से ही वे आचार्य वीरसागर के पास दीक्षा के लिए पहुँची थीं अतः आचार्य महाराज को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनकी साधना पर तो विश्वास था ही, उन्हें लगा होगा कि यह बाल ब्रह्मचारिणी बालिका ज्ञानोपयोग के माध्यम से सरस्वती के भण्डार की अभिवृद्धि में एक कीर्तिमान स्थापित करेगी अतः उहोंने उसे नाम दिया ज्ञानमती।

आचार्य कुन्दकुन्द आदि पूर्वाचार्यों की निर्मल परम्परा को अपनाने वाले प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज के बाल ब्रह्मचारी शिष्य आचार्य वीरसागर जी को इस बात का भी गौरव रहा होगा कि उनसे दीक्षित होने वाली आर्यिका ज्ञानमती इस युग में बाल ब्रह्मचारिणी आर्यिकाओं की परम्परा भी प्रारंभ कर रही हैं।

ज्ञानमती जी अपने दीक्षा गुरु की कसौटी पर खरी उतरीं। सतत ज्ञानोपयोग के माध्यम से उन्होंने ज्ञानार्जन किया भी और दूसरों को कराया भी। फिर उन्होंने जिनवाणी सेवा का जो अनुष्ठान प्रारंभ किया, वह सतत वृद्धिंगत हो रहा है। यथा नाम तथा गुण की उक्ति को चरितार्थ करने वाली माताजी ने श्रुतलेखन का प्रारंभ जिनसहस्रनाम मंत्र से किया था। फिर तो छोटी-बड़ी नीतिपरक शिक्षाप्रद पुस्तकों से लेकर जिनवाणी के चारों अनुयोगों के विशाल और गूढ़ ग्रंथों की टीकाओं, अनुवाद तथा मौलिक कृतियों तक उनका लेखन चला है, चल रहा है। उनकी लगभग 200 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

माताजी की मौलिक रचनाएँ अनेक विधाओं में हैं। उन्होंने जीवनचरित्र लिखे, उपन्यास और नाटक लिखे, निबंध लिखे और 'मेरी स्मृतियाँ' जैसी संस्मरण बहुल कृति भी लिखी। उनकी 'जैन भारती' और 'प्रवचन निर्देशिका' जैसी कृतियों ने नवोदित विद्वानों को मार्गदर्शन दिया और 'अष्टसहस्री', 'नियमसार' जैसी टीकाएँ वरिष्ठ विद्वानों के लिए उपयोगी हो रही हैं। अभी भी माताजी ज्ञानोपयोग में अधिक समय लगाती हैं, वे षट्खण्डागम पर सिद्धान्त चिंतामणि टीका लिख रही हैं जिसके प्रथम और द्वितीय खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं।

माताजी को पद्य लेखन में तो महारथ हासिल है। उन्होंने अनेक पूजन-विधानों की रचना की है, जिनमें कल्पद्रुम और इन्द्रध्वज जैसे बड़े विधान भी हैं। भाव और स्वर ताल में निबद्ध उनकी रचनाओं ने विधान आयोजनों को आकर्षक बना दिया है। बड़े विधान प्रायः माताजी द्वारा रचित पुस्तकों से ही होते हैं। आपकी लिखी नवदेवता पूजा तो ऐसी प्रचलित हुई है कि जिनवाणी संग्रहों में प्रकाशित होती है और सब दूर उसका उपयोग दैनिक पूजन में और विधानों में किया जाता है।

धर्मप्रभावना के क्षेत्र में भी माताजी का अवदान उल्लेखनीय है। आपके सानिध्य में अनेक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों का आयोजन हो चुका है। आपकी प्रेरणा से निर्मित हस्तिनापुर का जम्बूद्वीप आपकी गौरव गाथा दूर-दूर तक प्रसारित कर रहा है। श्रद्धालु वहाँ पहुँचकर अनुपम आनन्द का अनुभव करते हैं। तीर्थक्षेत्रों के विकास में भी माताजी की महनीय भूमिका रही है। तीर्थंकरों के कल्याणकों से संबंधित क्षेत्रों के विकास की आप निरंतर प्रेरणा देती रहती हैं। तीन तीर्थंकरों की जन्मभूमि हस्तिनापुर में आपका अधिक समय बीतता है, संभवतः इस कारण तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि संबंधी क्षेत्रों के विकास पर आपका अधिक ध्यान है। वर्तमान में मांगीतुंगी पर्वत पर 108 फुट अवगाहना वाली अनोखी मूर्ति का निर्माण आपकी प्रेरणा से चल रहा है।

मुझे माताजी का सानिध्य पाने का प्रथम अवसर सन् 1968 में प्रतापगढ़ (राज.) में आचार्य शिवसागर जी ससंघ के चातुर्मास अवसर पर मिला था। संघ मे मेरी बहन भी थीं, जो सन् 1964 में आचार्य शिवसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा प्राप्तकर सुमित्रा जी से आर्यिका विशुद्धमती माताजी बनी थीं। प्रतापगढ़ में एक सप्ताह के प्रवास में ज्ञानमती माताजी की वात्सल्यपूर्ण वाणी, ब्रह्मचर्य के तेज से दीप्त मुखमण्डल की अभयदायिनी मुद्रा, धर्मचर्चा के बीच सरलता से बात समझाने की उनकी प्रभावक शैली और चिंतनपूर्ण प्रवचन की कुछ ऐसी छाप मेरे मन पर अंकित हुई कि मैं कभी भुला नहीं सका।

संघ में तो मैं प्रतिवर्ष जाता था, ज्ञानमती माताजी का कुछ आर्यिकाओं के साथ पृथक् विहार हो जाने से उनके दर्शन नियमित तो नहीं मिलते परन्तु जब भी मुझे अवसर मिलता, मैं उनके चरणों में पहुँच जाता। वे मुझे स्वाध्याय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की प्रेरणा देतीं, प्रश्नोत्तर के माध्यम से मेरी परीक्षा लेतीं, अध्ययन के लिए आशीर्वाद के साथ कुछ ग्रंथ प्रदान करतीं। मेरी पत्नी श्रीमती सरोज उन्हें आहार देकर प्रसन्न होतीं, उन्हें भी माताजी का वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद मिलता है। पहले मेरे साथ प्राय: मेरे बच्चे भी जाते थे, सो वे भी सहज ही माताजी के स्नेहभाजन बन गये हैं।

बाद में माताजी के सानिध्य में होने वाली संगोष्ठियों और अन्य कार्यक्रमों में जाना और बोलना मेरा क्रम बन गया। अस्वस्थता के कारण उसमें व्यवधान भी पड़े। प्रयास यही रहता है कि अवसर का लाभ ले सकूँ। गत वर्ष वाराणसी के पार्श्वनाथ महोत्सव में और अयोध्या के आदिनाथ महोत्सव में प्रसन्नतापूर्वक माताजी के सानिध्य का लाभ मिला। फिर मई में दिल्ली के एक कार्यक्रम में जाने पर माताजी की अस्वस्थता के समाचार मिले, तो हस्तिनापुर जाकर दर्शन किये, उनकी शारीरिक स्थिति देखकर चिंतित भी हुआ। समाचार मिलते रहे, प्रसन्नता है माताजी शीघ्र स्वस्थ हो गईं, चिंता दूर हुई। कुछ अपरिहार्य कारणों से जम्बूद्वीप महोत्सव में नहीं पहुँच सका, इसका खेद भी रहा।

अब माताजी की पचासवीं दीक्षा जयंती का पावन प्रसंग आ रहा है, मैं बहुत प्रसन्न हूँ। सर्वोच्चदीक्षा की पचासवीं जयंती, ऐसा पुण्य प्रसंग बिरले साधकों को ही मिलता होगा। गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने इस लम्बी साधना के बीच धर्म प्रभावना और जिनवाणी की सेवा के जो महत्वपूर्ण कार्य किये हैं, उसके लिए साधुवाद के साथ उनके चरणों में सविनय विनयांजलि अर्पित करता हुआ मैं कामना करता हूँ कि उनकी पचहत्तरवीं दीक्षा जयंती मनाने का सौभाग्य भी समाज को प्राप्त हो। उनकी साधना और चिंतन में निरंतर वृद्धि होती रहे और वे सबके कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती रहें। मुझे भी आयु के इस अंतिम पड़ाव पर उनका आशीर्वाद और समाधिमरण की प्रेरणा मिलती रहे।

-निर्मल जैन, सतना

जब सम्पूर्ण जैन समाज गौरवान्वित हुआ

मार्च 1998 में हस्तिनापुर में भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय अधिवेशन में मैं गया था। परमपूज्य आर्यिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के वात्सल्य एवं श्रद्धेय भाई रवीन्द्र जी के स्नेह से जम्बूद्वीप में ही प्रवास किया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री देवप्रिय जी महापाल-मेरठ में अधिवक्ताओं के कार्यक्रम में पधारे थे। प्रात:काल वे सपरिवार हस्तिनापुर भ्रमण पर आए। भाई जी के साथ सहयोगी के रूप में जम्बूद्वीप में मैंने भी उनकी अगवानी की। माननीय श्री महापाल जी इतिहास व भूगोल के भी अध्येता थे। उन्होंने कहा कि जम्बूद्वीप के बारे में इतिहास में तो बहुत पढ़ा था किन्तु उसकी साक्षात् परिकल्पना देखकर मैं धन्य हुआ हूँ, अभिभूत हूँ। पूज्य माताजी को मेरा विनम्र प्रणाम कहिए। She is really a saint of Practical approch.

पूज्य माताजी उस समय हस्तिनापुर में नहीं थीं अत: बाद में उन्हें इस प्रसंग से अवगत कराया गया।

वह दिन सम्पूर्ण जैन समाज को गौरवान्वित करने वाला था। आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के 50वें स्वर्ण दीक्षा महोत्सव पर मेरा कोटिश: नमन।

-अनूपचंद्र जैन (एडवो.), फिरोजाबाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानमंती माता

चाल-जिनवाणी माता दर्शन की..............

ज्ञानमती माता! जिनधर्म की बलहारिया।।टेक.।।
सर्वोदयी व्यक्तित्व ही जिनका, भारत माता न्यारी।
प्रथम आर्यिका ज्ञानोदय श्री जिन धर्म की है प्यारी।।1।।
जन्म लिया था टिकैतनगर में, उत्तरप्रदेश की नारी,
शरद पूर्णिमा जीवन भर की ज्ञान पूर्णिमा भारी।।2।।
छोटे लाल पिता-माताजी मोहिनी देवी थारी,
स्वाध्याय की तो लगन लगी थी, बचपन से तुम न्यारी।।3।।
ब्रह्मचर्य की सप्तम प्रतिमा, मुनि देशभूषण ने दी थी,
क्षुल्लिका दीक्षा श्री महावीर जी पर, नाम रखा वीरमती।।4।।
वीरसागर आचार्य जिन्होंने आर्यिका दीक्षा दी थी,
ज्ञानमती यह नाम बढ़ाया और ज्ञान की गंगा बढ़ायी।।5।।
हस्तिनापुर को जम्बूद्वीप और मांगीतुंगी जगाई,
सहस्त्रकूट का कमल मंदिर निर्माण प्रेरणा (तुम) दी थी।।6।।
इंद्रध्वज, कल्पद्रुम पूजा, सर्वतोभद्र, महावीर की,
संगीत, सरल शब्दों में सजाकर, आनंदघन तुम दीनी।।7।।
पावागढ़ ईडर, तारंगा, उदयपुर अणिंदा,
जैनधर्म की प्राचीनता का सेमिनार लगा था।।8।।
मांगीतुंगी यात्रा करके, पूजा भक्ती बढ़ाया,
ग्रंथ संपदा ज्ञान संपदा अर्घ्य जिन चरण चढ़ाया।।9।।
ज्ञानदान का कलश भरा यह शिर पर धारो भाई।
प्रथम आर्यिका ज्ञानमती का यश गुण गाओ भाई।।10।।

-यशवंत इंगोले, अकोला (महा.)

यन्दना-सप्तकम्

श्रेष्ठार्यिकाचार-समुज्ज्वलानि, वर्षाणि पञ्चाशदिहानधानि।
यस्या व्यतीतानि, यशस्विनीं ताम्, मुख्यार्यिकां ज्ञानमतीं नमामः।।1।।

अर्थ—आर्यिकोचित श्रेष्ठ आचार से उज्ज्वल एवं निर्दोष 50 वर्ष जिनके परिपूर्ण हो चुके हैं, उन यशस्विनी पूज्य आर्यिकाप्रमुख ज्ञानमती माताजी को हमारा नमन है।

जिनेन्द्रवाण्या रसिकाऽद्वितीया, सर्वानुयोगार्णवपारगा या।
स्वाध्याय-सद्ध्यानपरायणां ताम्, मुख्यार्यिकां ज्ञानमतीं नमामः।।2।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—जो जिनवाणी की अनुपम रसिक हैं, जो सभी अनुयोगों के शास्त्र-रूपी समुद्र में पारंगत हैं, जो स्वाध्याय व सद्ध्यान में ही निरत रहती हैं, उन पूज्य आर्यिकाप्रमुख ज्ञानमती माताजी को हमारा नमन है।

अध्यात्मविद्या-करणानुयोग-न्यायादिषड्दर्शनशास्त्रविज्ञा।
परात्मकल्याणरतां सदा ताम्, मुख्यार्यिकां ज्ञानमतीं नमामः।।3।।

अर्थ—जो अध्यात्मविद्या, करणानुयोग एवं न्याय आदि छहों दर्शन-शास्त्रों में पारंगत विदुषी हैं, जो स्वपर-कल्याण में सदैव संलग्न रहती हैं, उन पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी को हमारा नमन-वंदन है।

आचार्यवर्यैर्जिनशासनस्थैः, ग्रन्था अनेके रचिताः पुरेह।
व्याख्याय तान् लब्धवती यशः ताम्, मुख्यार्यिकां ज्ञानमतीं नमामः।।4।।

अर्थ—जिनशासन सेवी पुरातन आचार्यों ने अनेक ग्रंथों की रचना की है, उनमें से अनेक ग्रंथों की व्याख्या-विवेचना आदि कर जिन्होंने उत्तम यश अर्जित किया है, उन पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी को हमारा नमन-वंदन है।

या संशयस्थान् विषयान् विविच्य, जिनेन्द्रसिद्धान्तविदां समाजे।
समर्जयत् या निरवद्यकीर्तिम्, मुख्यार्यिकां ज्ञानमतीं नमामः।।5।।

अर्थ—जिन्होंने संशयास्पद अनेक विषयों की सम्यक् विवेचना कर जैन सिद्धान्त के विद्वानों के समाज में निष्कलंक कीर्ति अर्जित की है, उन पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी को हमारा नमन-वंदन है।

एकान्तवादाः प्रथिता अनेके, जिनोक्त सन्मार्ग-विरोधिनो ये।
लब्धप्रतिष्ठा च निरस्य तान् ताम्, मुख्यार्यिकां ज्ञानमतीं नमामः।।6।।

अर्थ—देश में उन अनेक एकान्तवादों का जोर बढ़ रहा था, जो तीर्थंकर जिनेन्द्रदेव के बताये हुए सन्मार्ग से विरुद्ध थे, उन एकान्तवादों का निराकरण कर जिन्होंने महती प्रतिष्ठा प्राप्त की, उन पूज्य गणिनप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी को हमारा नमन-वंदन है।

वाण्या स्वकृत्येन च जैनधर्म-प्रभाविकानां धुरि याऽग्रगण्या।
ब्राह्मीव विद्वत्सु सुकीर्तितां ताम्, मुख्यार्यिकां ज्ञानमतीं नमामः।।7।।

अर्थ-अपने भाषण तथा अपने सदाचरण के माध्यम से जैनधर्म की प्रभावना करने वाली महिलाओं-आर्यिकाओं में जो अग्रगण्य रही हैं और जो विद्वत्समाज में अभिनव 'ब्राह्मी' के रूप में विख्यात हैं, उन पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी को हमारा नमन-वंदन है।

-डॉ. दामोदर शास्त्री, नई दिल्ली

हमारी कुलगुरु हैं भारतभूषण पूज्यनीया ज्ञानमती माताजी

ग्रंथों एवं शास्त्र कथाओं में पढ़ने-सुनने में आता था कि राजा-महाराजाओं के समय में कुलगुरु होते थे, जो समय-समय पर अपने धर्ममयी उपदेशों से राजाओं को सम्बोधित कर उन्हें योग्य दिशानिर्देश प्रदान करते थे, धर्ममार्ग में प्रवृत्त करते थे लेकिन प्रत्यक्ष में इस कलिकाल में भी ऐसे कुलगुरु मिलेंगे, हमने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी।

सन् 1993 में जब शाश्वत तीर्थ अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक हेतु साक्षात् सरस्वती का अवतार पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 40 वर्षों पश्चात् अवध प्रान्त में मंगल पदार्पण हुआ, उस समय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्होंने अपनी जन्मभूमि टिकैतनगर की समाज के अतीव आग्रह पर वहाँ मंगल पदार्पण किया। तब इस नगरी का उत्साह देखते ही बनता था, जैन-अजैन सभी पलक-पांवड़े बिछाए अपनी बिटिया को 40 वर्षों पश्चात् जगत्माता के रूप में पाकर रोमांचित व हर्षित हो रहे थे, उस समय टिकैतनगर, अयोध्या की धरती एवं वहाँ के नागरिक माता कौशल्या के समान तथा पूज्य माताजी राम के समान प्रतीत हो रही थीं। उसी समय माताजी के अल्प प्रवास के मध्य हम युवाओं में धर्म का उत्साह जाग्रत कर संघस्थ पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने माताजी की आज्ञा से "भरतसेना" के नाम से हमारी एक टीम बनाई और मात्र यही प्रेरणा दी कि सदैव धर्मप्रभावना के कार्यों में भरत के समान तत्पर रहना और इस नगर का नाम रोशन करना।" इसके पश्चात् अयोध्या की जीर्ण-शीर्ण अवस्था को देखते हुए पूज्य माताजी का चातुर्मास अयोध्या में हो गया। हम युवाओं ने बालिका समिति की बहनों के साथ मिलकर बड़ों से अनुनय-विवय कर हर संभव कोशिश की कि यह चातुर्मास टिकैतनगर में हो जाए परन्तु अयोध्या की स्थिति देख माताजी के समझाने पर शांत हो गये और टिकैतनगर में राजा भरत के समान पूज्य माताजी के केशर से छपे हुए चरण व पिच्छी का चातुर्मास कर उनकी भक्ति करते रहे। समय-समय पर माताजी से की गई विनय के कारण सन् 1994 का चातुर्मास जन्मभूमि टिकैतनगर में हो गया फिर तो उन चार महीनों में हमें कुलगुरु के रूप में पूज्य माताजी से एवं उनके संघ से इतना कुछ सीखने को मिला, जो आगे तक हमारे जीवन के लिए अमूल्य निधि बन गया। हम किशोर बालक एक और एक मिलकर ग्यारह होते गए और समय-समय पर माताजी द्वारा किए जाने वाले कार्यों में ब्र. श्री रवीन्द्र भाई जी के निर्देशानुसार जो भी कार्य मिला, प्रसन्नतापूर्वक अपना अहोभाग्य समझकर हम लोग करते गए।

आज वर्तमान में कोई भी बड़े कार्यों को करने में हमें जरा सी भी घबराहट या हिचकिचाहट नहीं होती है, जो कि हमारी कुलगुरु पूज्य माताजी के कारण ही संभव हो सका है। आज अवध प्रांत या अन्य प्रदेशों में कोई वृहद् कार्यक्रम होता है, तो लोग अपेक्षा करते हैं कि भरतसेना आकर अमुक व्यवस्था संभाल ले।

आज हम सफलता की जिन ऊँचाइयों पर हैं, उसका सम्पूर्ण श्रेय पूज्य माताजी को है, उन्होंने हमारी जन्मभूमि को अपने जन्म से सनाथ करने के साथ उसे विश्व में गौरवपूर्ण स्थान दिलाया है, सन् 2005 में पूज्य माताजी के सानिध्य में अतिशयकारी पंचकल्याणक के अतिशयकारी महावीर मंदिर की कहानी आज अवध के बच्चे-बच्चे की जुबान पर है। वास्तव में माताजी सम्पूर्ण भारत की आभूषण हैं।

ऐसी राष्ट्रगौरव, भारतभूषण, तीर्थोद्धारिका माता के बारे में कुछ भी कहना किसी नन्हें बालक द्वारा समुद्र की माप बताने के सदृश ही होगा।

उनके दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के पावन अवसर पर हम युवावर्ग उनके वैराग्यमयी क्षणों को स्मरण करते हुए उनके शतायु, दीर्घायु होने की शुभ भावना करते हैं और विराट व्यक्तित्व की धनी ऐसी तपस्विनी माताजी से यही प्रार्थना करते हैं कि हम युवाओं को सदैव आपका पावन सानिध्य, मंगलमयी वरदहस्त और वात्सल्यपूर्ण दिशानिर्देशन प्राप्त होता रहे, जिससे हम अपनी समाज, अपने ग्राम एवं अपने अवध प्रदेश का नाम रोशन करते हुए भरतसेना की सशक्त टीम के द्वारा धर्मप्रभावना के कार्यों में तन-मन-धन से संलग्न रहें।

-भरतसेना-टिकैतनगर के सक्रिय कार्यकर्ता

पंकज जैन, राजन जैन, अखिलेश जैन, निकलंक जैन,

राजू जैन एवं समस्त सदस्यगण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सार्थक जीवन

"जमाने में उसने बड़ी बात कर ली।
खुद अपने से जिसने मुलाकात कर ली।।"

प्रातःस्मरणीय त्याग एवं ज्ञान की जाज्वल्य मूर्ति पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी भी एक ऐसी ही आदर्श महिला हैं जिन्होंने अपनी आत्मशक्ति के महत्व को पहचाना और बाल्यकाल से ही विभूषा से मोह त्यागकर, शुचिता को स्वीकार कर, श्रावक के व्रतों का अनुसरण कर, अनेक विज्ञ आत्माओं के सत्संग से धर्म-न्याय-व्याकरण एवं साहित्य का अध्ययन कर, उच्च कोटि की विद्वत्ता प्राप्त कर, चारित्र रत्न की सुरक्षा हेतु आर्यिका के व्रतों का पालन करते हुए प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग संबंधी साहित्य की रोचक एवं परिमार्जित भाषा में रचना करके जन साधारण का जो कल्याण किया है, वह युग युगान्तर तक उनकी पावन स्मृति दिलाने में पर्याप्त है।

वर्तमान में भी आपके द्वारा रचित अनेक ग्रंथों के अध्ययन से तथा आपकी वाणी की विकसित शक्ति से अनेक नर-नारी संस्कृति की विकृति को दूर कर अपनी आत्मशक्ति की अभिव्यक्ति कर अपने धार्मिक संस्कारों की रक्षा कर रहे हैं।

किसी देश की सीमा की रक्षा तो सेना के माध्यम से की जा सकती है किन्तु संस्कारों की रक्षा तो महान आत्माओं के संसर्ग से या उनके द्वारा उपदिष्ट धर्ममार्ग के अनुसरण से ही संभव है। जिसके लिए पूज्य माताजी सर्वतोभद्र हैं।

ऐसी विशिष्ट आत्मा की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर विद्वत् समाज ने 'ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' प्रकाशन का जो विचार बनाया है, वह पूर्णतया स्तुत्य है क्योंकि गुणियों के गुणों का मूल्यांकन तो गुणवान ही कर सकते है। अल्पज्ञ तो जैसे तैलपायी घृत का, तक्रपायी दूध का, भोगाशक्त व्यक्ति आत्मसाधना का मूल्यांकन नहीं कर सकता, उसी प्रकार "ज्ञानमती" जैसे बेजोड़ साध्वी के आदर्श गुणों का मूल्यांकन अल्पज्ञ कदापि नहीं कर सकते हैं।"

मैं विनम्रतापूर्वक पूज्य माताजी को परोक्ष नमन कर उनके आदर्श गुणों की उपलब्धि की भावना भरते हुए उनकी दीर्घायु की मंगल कामना व 'ज्ञानमती गौरव ग्रंथ" के प्रकाशन की सफलता की हृदय से अनुमोदना करता हूँ।

-पं. बच्चूलाल जैन शास्त्री, कानपुर

पुष्पांजलि

तपोनिष्ठ, हे ज्ञाननिष्ठ, चारित्रनिष्ठ हे माता।
स्वर्णजयंती आज मनायें पावें हम सुख साता।
आभा मंडल तेरा पावन, ज्योतिर्मय जीवन है।
आध्यात्मिक सरिता बहती है, मंगलमय दर्पण है।।

ऋषभदेव की ब्राह्मी हो तुम, सरस्वती की पुत्री।
सन्तप्त भविक जन, आ-आकर पाते तुमसे तृप्ति।।
धन्य तुम्हारी वत्सलता है, समता से आपूरित।
श्रद्धा की आँखें प्रस्तुत हैं, होती रहें प्रफुल्लित।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप तुम्हारी माया, सार्थक दिखती नगरी।
डगर-डगर पद चिह्नित गलियाँ, भरती दिखती गगरी।।
जीवन का सुंदर यह उपवन, सबको सुरभित कर दो।
शस्य-श्यामला से शोभित हो, मन जिनवाणी से भर दो।।

जो भी तुमने दिया समाज को, अनुपम है, अगणित है।
ग्रंथों पर ग्रंथों को लिखकर, षट्खण्डागम भावित है।।
अनुयोगों से सिंचित वाणी, प्रतिभा से शोभित है।
नारी वर्ग समुन्नत होगा, वह तुमसे भूषित है।।

निरामयी हो तेरा जीवन, अमृत वर्षा बनी रहे।
सम्यक्ज्ञानी जग हो जाये, अज्ञान तिमिर नश जाये।।
जो भी तुमने पाया अब तक, सोपान और भी आगे हैं।
अध्यात्म साधना की झोली में, रत्नत्रय के धागे हैं।।

ये धागे जोड़े समाज को, नहीं कभी कोई टूटे।
तेरी ममता से बंध जायें, राग द्वेष से वह छूटे।।
निज पर का कल्याण करो, हे ज्ञानमती जी माता।
सर्वोदय से आप्लावित हो, हे ज्ञानमती जी माता।।

-डॉ. पुष्पलता जैन, नागपुर

चारित्रचक्रवर्ती गुरुवर के समान वंदनीय हैं ज्ञानमती माताजी

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म हमारे टिकैतनगर ग्राम में हुआ, यह बड़े ही गौरव की बात है। मैं पूज्य माताजी से तो वैसे तब से जुड़ा हूँ, जब से माताजी आचार्यश्री धर्मसागर महाराज के संघ में थीं, लेकिन विशेषरूप से जुड़ाव तब हुआ, जब मेरे पिताजी ने (श्री छोटेशाह जी) सन् 1993 में हस्तिनापुर से अयोध्या की ओर संघपति के रूप में माताजी का विहार करवाया था।

पूज्य माताजी सर्वप्राचीन दीक्षित साध्वी हैं, उन्होंने चारित्रचक्री गुरुवर के दर्शन किए हैं, इन्होंने जो भी कार्य किए हैं, जैन समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा। चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के दर्शन कर उन्होंने अपना जीवन धन्य कर लिया और ठीक उसी प्रकार वे जीव धन्य हैं, जिन्होंने ज्ञानमती माताजी जैसी महासाध्वी के दर्शन किए हैं, मेरी नजर में तो जिन्होंने पूज्य माताजी के दर्शन नहीं किए, उन्होंने जीवन में कुछ भी नहीं किया।

ऐसी दिव्य प्रतिभा सम्पन्न माताजी की दीक्षा स्वर्णजयंती पर शतशः नमन।

-अमरचंद जैन, डालीगंज-लखनऊ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

निरारम्भ आशा रहित, ज्ञान ध्यान तपलीन।
ऐसी गुरुवर को नमूँ, हो संसार विलीन।।
माता ज्ञानमती गुरू, ऐसा दो आशीष।
चरण कमल में आपके, झुका रहे मम शीश।।

श्रमण संस्कृति की साक्षात् ओजस्वी बिम्ब, दूर-दूर तक भक्तों के मानस क्षितिज को छूता विशाल उदात्त अन्तःकरण, अथाह गहराई लिए अध्यात्म चिंतन, अनुकम्पा, क्षमा, जनमंगल की भव्य-भावनाओं की उच्छल लहरों से तरंगित, हमेशा ज्ञानमयी व्यक्तित्व, अनेकों महान ग्रंथों की लेखिका, यथा नाम तथा गुण के अनुरूप गणिनीप्रमुख सर्वोच्च आर्यिका ज्ञानमती माताजी की तेजस्विता बहुमुखी प्रतिभा एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व ने सम्पूर्ण विश्व की जैन समाज की सामाजिक चेतना को नया मोड़ दिया, सत्यानुलक्षी दृष्टि दी। जीर्ण-शीर्ण होते जनजीवन में ऊर्जा का संचार किया।

उनके श्रद्धेय चरणों में मेरी भावभीनी विनयांजलि समर्पित है।

-मानिकचंद जैन, सरधना

जन-जन की श्रद्धा का केन्द्र हैं माताजी

बीसवीं शताब्दी की प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी चारित्रचन्द्रिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की यशकिरणें आज देश ही नहीं, विदेशों में भी सूर्य किरणों के समान फैली हुई हैं। सन् 1956 में चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के पट्टशिष्य श्री वीरसागर महाराज से दीक्षा लेकर इन्होंने आर्यिकापद प्राप्त किया। तब से लेकर अब तक इनकी दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि इन पूज्य माताजी के गृहस्थावस्था की कुल परम्परा में हमें सद्गृहस्थ के कर्तव्यों का पालन करने की जो प्रेरणा विरासत में प्राप्त हुई है, उसे निभाने की शक्ति प्राप्त होती रहे। पूज्य माताजी की कृपादृष्टि सदैव हम पर बनी रहे और वे चिरायु हों, यही उनकी दीक्षा स्वर्ण जयंती पर हमारी मंगल भावना है।

-शुभचंद जैन एवं श्रीमती क्षमा जैन, टिकैतनगर

प्रणम्य है उनकी ज्ञानाराधना

मुझे प्रसन्नता है कि ज्ञानाराधना के लिए प्रसिद्धिप्राप्त साधिका पूज्य ज्ञानमती माताजी की दीक्षा प्राप्ति की स्वर्ण जयंती का उत्सव मनाया जा रहा है। लगभग चालीस वर्षों से उनके चरणों में मेरा अनुराग है और मुझे उनका वात्सल्य भी प्राप्त रहा है।

यह दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव इस बात का प्रतीक है कि माताजी की साधना परिपक्व हो चुकी है। आम के फल में पकने पर जैसी मधुरता भरी सुवास व्यक्त हो जाती है, माताजी की साधना में उसी आत्मलीनता की नित्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वृद्धिंगत सुरभि की शुभेच्छा लेकर आज उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हुए मैं आयोजन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ। पूज्य माताजी की सतत ज्ञानाराधना को मेरा शतशः नमन।

–नीरज जैन, सतना

मेरे उद्गार

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में शत–शत नमन। मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है कि अपने पापा के कारण बचपन से ही माताजी का सानिध्य एवं आशीर्वाद मिला, जिससे मुझे धार्मिक संस्कार मिले। माताजी ज्ञान का सागर हैं, माताजी ने 200 से ज्यादा ग्रंथों की रचना की है और इतने सारे तीर्थों का विकास कराया है। माताजी ने जो कार्य 50 वर्षों में किये हैं वो अन्य कोई 1000 वर्ष में नहीं कर सकता है। यह माताजी की तपस्या, परिश्रम और दृढ़ निश्चय का प्रतीक है।

कुछ लोगों का मानना है कि इतने मंदिरों की क्या आवश्यकता है, भगवान तो हमारे मन में रहते हैं परन्तु वे लोग ये भूल जाते हैं कि हम अपने अंदर के उस भगवान को सांसारिक भौतिकताओं में भुला चुके हैं। मैं भी अपनी शिक्षा के कारण से धर्म का उतना पालन नहीं कर सका, जितना कि करना चाहिए लेकिन मंदिर जी में वीतराग प्रभु के दर्शन करके तीर्थों पर आकर माताजी द्वारा रचित विधान करके मन में जो भाव उत्पन्न होते हैं, भक्ति में जो आनन्द आता है, जो पुण्य प्राप्त होता है, वह घर बैठे–बैठे कभी नहीं मिल सकता। तीर्थों के दर्शन करने से, गुरु के सानिध्य में आकर हम धर्म के और निकट आते हैं और मोक्षमार्ग की ओर प्रशस्त होते हैं।

माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूरे होने पर मेरा माताजी को बारम्बार नमन और प्रभु से यही प्रार्थना है कि माताजी इसी प्रकार अनेकों वर्षों से हमें अपना आशीर्वाद देती रहें और धर्म का मार्ग दिखाती रहें।

–तरुण जैन, मेरठ (सुपुत्र राकेश जैन)
(एम.टेक.–आई.आई.टी.–रुड़की)

भारतीय संस्कृति को समृद्धि देने वाली पूज्य गणिनी आर्यिका ज्ञानमती जी

आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव को मनाने का भाग्य विरले ही लोगों को मिलता है। स्वर्ण शब्द को लेकर स्वर्णिम आभा, स्वर्ण अवसर, सुवर्णयुग इत्यादि शब्दों के योग से विशिष्ट व्यक्ति या परिस्थिति के महत्व को आंका जाता है। अतः 'स्वर्ण' शब्द से जिन व्यक्तियों के जीवनकार्यों का मूल्यांकन किया जाता है, वे व्यक्ति निश्चित ही धन्य हैं, प्रेरणास्थान हैं। परमपूज्य गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी तो स्वनाम धन्य हैं। 18 साल की छोटी उम्र में वैराग्य धारणकर जैनागम के गहन अध्ययन के साथ उसकी समकालीन उपयोगिता एवं उसका महत्व जानते हुए मानव मात्र के हित में अनेक महत्वपूर्ण युगीन कार्यक्रमों का आयोजन करना, सामान्य व्यक्ति का कार्य नहीं है।

'जम्बूद्वीप रचना' जैन भूगोल को वैज्ञानिक पद्धति से पूरे विश्व के सामने रखने का सफल प्रयास है। तीर्थंकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषभदेव दीक्षास्थली (प्रयाग-जैन तीर्थ), नंद्यावर्त महल तीर्थ, नवग्रहशांति मंदिर (कुण्डलपुर), अयोध्या, मांगीतुंगी, राजगृही, सम्मेदशिखर जी, पावापुरी, गुणावां, दिल्ली इन तीर्थधामों में विविध आयोजन पूज्य माताजी द्वारा प्रेरित त्रिलोक शोध संस्थान के ऐसे प्रयास हैं, जिन्हें युगों-युगों तक याद किया जायेगा। भारतीय जैन परम्परा एवं संस्कृति के लिए अपूर्व योगदान उनसे मिला है।

भारतीय संस्कृति के प्रशिक्षण निमित्त 1992 में दिल्ली जाना हुआ। पूज्य माताजी के दर्शन का योग मिला। उन्होंने मुझे प्रेरित किया था, 'शैक्षणिक संस्था में कार्य कर रहे हो, जैन धर्म के तत्वों का आचरण निश्चित ही तुम्हारे अध्यापन कार्य में तथा प्रशासकीय काम में उपयोगी होगा। अपने पिता पं. वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री की जिनवाणी सेवा को अपना व्रत बना लेना।'

ये ऐसे प्रेरणा के क्षण होते हैं, उनसे जीवन में अनायास धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगते हैं। श्राविका संस्था, सोलापुर में यशाशक्ती शैक्षिक, आध्यात्मिक एवं साहित्यिक सेवाओं में लगा हूँ।

जिनवाणी के अध्ययन के साथ जिनागम के अनेक ग्रंथों का संपादन, समीक्षण तथा मौलिक ग्रंथों का लेखन पूज्य गणिनी आर्यिका की विद्वत्ता का परिचायक है ही परन्तु

शास्त्राणि अधीत्यपि भवन्ति मूर्खाः, यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्।

इस उक्ति के अनुसार जैनधर्म का डंका बजाकर संपूर्ण विश्व में उसकी सर्वांगीण महत्ता को प्रचारित करने में पूज्य गणिनी माताजी ने अपने जीवन के अमूल्य क्षण बिताये हैं। अनेक सेमिनार, विज्ञान संगोष्ठियाँ, शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, भगवान ऋषभदेव विचार संगोष्ठी, चारित्र निर्माण संगोष्ठी, साहित्य संगोष्ठी, कुलपति सम्मेलन, जैनधर्म की प्राचीनता पर सेमिनार इत्यादि अनेक उपलब्धियाँ पूज्य गणिनी माताजी के मार्गदर्शन में हुए। ऐसी अनेक गतिविधियों ने पूज्य माताजी के जीवन को सुरभित-सुवर्णांकित किया है।

पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर उनके सुवर्ण आभा-सुवर्ण क्षण, सुवर्णयोग पूर्ण जीवन की याद आती है। उनको भविष्य में भी जिनवाणी, जैनसमाज, राष्ट्र तथा विश्व के कल्याणार्थ दीर्घ आयुरारोग्य प्राप्त हो, विश्व के इतिहास में पूज्य माताजी के जीवन कार्यों का समावेश सुवर्णपृष्ठों के रूप में हो, ऐसी विनम्र भावना व्यक्त करता हूँ। उनके दिव्य चरणों में त्रिबार विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

-प्राचार्य सुभाष वर्धमान शास्त्री, सोलापुर

धर्ममाता पूज्य ज्ञानमती जी

प्रातःस्मरणीय परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में त्रिबार सविनय वंदामि।

ऐसा कहा जाता है कि अगर एक स्त्री शिक्षित होगी तो उसका सारा घर सुसंस्कृत बन जाता है और कहा भी है कि बच्चे के लिए प्रथम पाठशाला या प्रथम गुरु माता ही है।

माता तो बच्चों को सुसंस्कृत, सुसंस्कारित बनाती है, लेकिन धर्ममाता पूज्य ज्ञानमती माताजी ने तो धर्मप्रभावना, क्षेत्रोद्धार करके हम पर बड़े उपकार किये हैं। इसलिए मैंने उन्हें धर्ममाता कहा है। धर्ममाता ने समाज और राष्ट्र सुसंस्कृत और संस्कारों से समृद्ध किया है क्योंकि उन्होंने हस्तिनापुर, अयोध्या, काकंदी, मांगीतुंगी में जैनधर्म की ध्वजा फहराती रखकर वहाँ की क्षेत्ररचना सुंदरतम, श्रेष्ठतम, मनोहारी की है। वहाँ एक बार जो जाये, वो धन्यता पाये और बार-बार जाने की इच्छा रखता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं बड़ी भाग्यशाली हूँ। 1994 में अयोध्या में भगवान आदिनाथ की विशाल प्रतिमा का पहला महामस्तकाभिषेक देखने का मुझे सौभाग्य मिला। मैंने पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी और पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के दर्शन किये। उन्हें श्राविकाश्रम से आने की बात कही, तब बड़ी आस्था और वात्सल्यपूर्णता से उन्होंने संस्था के बारे में पूछा और जानकारी ली। उनका आशीर्वाद पाकर मैंने बड़ी धन्यता पायी अतः श्राविका की मुख पत्रिका पर उनके आशीर्वाद युक्त मेरे माता-पिता के साथ छायाचित्र प्रकाशित करने का मोह नहीं टाल सकी। मैं प्रातःस्मरणीया माताजी के दर्शन लेकर धन्यता का अनुभव करती रहती हूँ।

पुनश्च पूज्य माताजी के चरणारविंदों में बार-बार वंदामि।

-रत्नप्रभा रणदिवे, सोलापुर (महा.)

WHO IS GYANMATI

G–GAINER –You are gainer of Matchless qualities with Picchi and Kamandalu.

Y–YIELDER –You are a yielder of five mahavratas Ahinsa, Satya, Astai, Brhamcharya and Aprigraha .

A–ACCELERATER–You are an Accelerater of vehicle to Mokshpuri and increaser of the speed of the vehicle.

N–NARRATOR –You are a narrotor of the way to salvation.

M–MONITOR –You are Monitor of all Aryikas.

A–ALTRUISTIC –You are an Altruistic for all creatures.

T–TUTOR –You are a tutor of preaching religious books.

I –INSTRUCTOR –You are an instructor of religious principles.

-Km. Princi Jain, Sardhana

चमत्कारिक माताजी हैं

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को अगर हम चमत्कारमती माताजी कहें तो कोई बड़ी बात नहीं होगी। बहुत बार लोगों के मुख से सुनते थे कि माताजी बड़ी चमत्कारी हैं, उनके पास जाने वालों के बड़े-बड़े संकट दूर हो जाते हैं। कई बार इच्छा भी हुई, आते भी, किन्तु संकोचवश दूर से दर्शन करके वापस चले जाते थे।

लगभग 9-10 वर्ष पूर्व की बात है, उस दौरान मैं एक पारिवारिक समस्या से बहुत दुखी था, उस समय माताजी हस्तिनापुर में ही थीं, मैं हिम्मत करके माताजी के पास गया, माताजी ने ध्यानपूर्वक मेरी समस्या सुनकर मात्र इतना ही कहा कि तुम चिंता मत करो, 2 दिन में ही सब ठीक हो जायेगा और वास्तव में चमत्कार हो गया। 2 दिन में मेरी समस्या का स्वयमेव समाधान हो गया। माताजी के इतने वात्सल्यपूर्ण शब्दों को सुनकर मन में यही आया कि किस प्रकार लोग गलत अफवाह बना लेते हैं कि माताजी केवल बड़े-बड़े लोगों से बात करती हैं। वास्तव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में इस प्रकार की धारणा बनाने वाले लोगों को सुनी-सुनाई बातों पर ध्यान न देकर माताजी को नजदीकी से जाकर देखना चाहिए कि वह कितनी स्नेहमयी है। उनका स्नेह पाकर मैं और मेरा पूरा परिवार परम सौभाग्य का अनुभव करता है। आज माताजी के शुभाशीर्वाद से ही मेरे दोनों बेटे इंजीनियर हैं और बेटियाँ अपनी ससुराल में प्रसन्न हैं। जहाँ-जहाँ पूज्य माताजी का विहार होता है, मेरी इच्छा रहती है कि मैं हर जगह पहुँचकर जितना संभव हो सके, उनकी सेवा करूँ। स्वर्णिम दीक्षा जयंती महोत्सव पर मेरे पूरे परिवार की यही कामना है कि हम सबकी आयु माताजी को लग जाये और वे सदैव स्व-परकल्याण करती रहें, उनका वरदहस्त सदैव हम पर बना रहे। पूज्य मांताजी को शतशः नमन।

-अशोक कुमार जैन एवं श्रीमती लता जैन (कोयले वाले)
शंभूनगर, मेरठ (उ.प्र.)

सच्ची माता तो यह ही हैं!

बचपन में माता-पिता के मुख से सुना करती थी कि हमारी सबसे बड़ी बुआ और अन्य दो बुआ ने दीक्षा ले ली, इसके उपरान्त हमारी दादी ने भी आर्यिका दीक्षा ले ली। बड़ी बुआ (ज्ञानमती माताजी) ने बीसवीं शताब्दी में जो भी अलौकिक कार्य किए, क्वाँरी कन्याओं के लिए त्याग का मार्ग खोला, सुनकर बहुत ही प्रसन्नता व रोमांच होता था कि एक नारी होकर उन्होंने कैसे इतने महान कार्य कर डाले, पुनः जब पिताजी श्री प्रकाशचंद जी बताते थे, कैसे उन्होंने सम्मेदशिखर यात्रा के मध्य माताजी की महानता के अनेक अनुभव प्राप्त किए, तो एक बार मन में आता था कि क्या मैं भी उनके पास रह सकती हूँ? पिताजी के साथ कई बार माताजी के दर्शनार्थ जाने पर उनकी अलौकिक एवं ममतापूर्ण छवि मन में अंकित हो चुकी थी।

कुछ बड़ी होने पर एक बार 2 माह तक पूज्य माताजी के सानिध्य में रहने का सुअवसर मिला। उससे पूर्व अपनी दादी रत्नमती माताजी की समाधि के समय भी मुझे उनकी सेवा का अवसर मिल चुका था। चूँकि बचपन से ही मैं बहुत कम बोलती थी अतः माताजी अक्सर कहतीं कि तुम्हारी तो आवाज ही नहीं सुनाई देती है, पुनः उनका वैराग्यमयी उद्बोधन भी कभी-कभी प्राप्त होता, तो मन में कई बार त्यागमार्ग पर बढ़ने की इच्छा होती थी किन्तु शायद मेरा प्रबल पुण्योदय नहीं था अतः प्रयत्न करने के बावजूद, उसी कुलपरम्परा की एक कली होने के बाद भी त्यागमार्ग की ओर न बढ़ सकी और यह सौभाग्य मेरी छोटी एवं लाडली बहन इन्दू को प्राप्त हो गया। आज उसे उस अवस्था में देखकर मन में बड़ा आल्हाद होता है। आज मैं दिल्ली नगरी में रहकर गृहस्थ धर्म का विधिवत् पालन कर रही हूँ, फिर भी विरासत में प्राप्त संस्कारों के प्रतिफल मेरे अंदर आज भी धर्म के संस्कार मौजूद हैं और उसी धर्म संस्कार के फलस्वरूप मैं सदैव अन्त समाधि की ही आकांक्षा करती रहती हूँ।

यह पूज्य माताजी का शुभाशीर्वाद है कि मुझे मेरी भावनानुसार धर्मपरायण पति मिले हैं, जिससे मेरे नित्य अभिषेक-पूजा, देवदर्शन आदि श्रावकोचित्त कर्त्तव्य सुलभतया पल रहे हैं। मेरी शुरू से ही इच्छा थी कि जहाँ मेरा विवाह हो, उस घर में जिनमंदिर अवश्य हो, वह भावना फली, दिल्ली की ग्रीनपार्क कालोनी में विशाल जिनमंदिर है। धार्मिक संस्कारों के फलस्वरूप ही भगवान की पूजा-अभिषेक हेतु हमने अपने निवास स्थान पर माताजी की प्रेरणा से गृहचैत्यालय बनवाया और मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि मैं व मेरे पति प्रतिदिन भगवान का अभिषेक पूजन करते हैं। हालांकि गृहचैत्यालय बनवाते समय कुछ विघ्न आए भी, पर वह माताजी की कृपाप्रसाद से क्षणमात्र में दूर हो गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वास्तव में माताजी मेरी सच्ची माता हैं, जन्मदात्री माता तो मात्र जन्म देती हैं पर इन माताजी ने मुझे व मेरे पति श्री अरिहंत जैन को अनेक बार नवजीवन दिया है। हम पर कभी कोई संकट आता है, तो हम पिताजी के कथनानुसार अपनी गुरु के रूप में माताजी का स्मरण कर स्वयं को हर संकट से दूर पाते हैं। यह मेरा अनेक जन्मों का पुण्य है, जो ऐसे कुल में मुझे जन्म मिला और ऐसी कुलगुरु हमें मिलीं, जिनका सम्बोधन हमारे जीवन का संबल है।

हम पूज्य माताजी के 50 वर्षों की अनवरत साधना को प्रणाम करते हुए उनके स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर उनके शतायु होने की मंगल कामना करते हैं और यही भावना करते हैं कि जिस वंश परम्परा का हिस्सा होने का सौभाग्य हमें मिला, उसकी मर्यादा को कायम रखते हुए हम अपनी मनुष्य पर्याय को सार्थक कर सकें। पूज्य माताजी को शत-शत वंदन।

-श्रीमती माला जैन ध.प. अरिहंत जैन, ग्रीनपार्क-दिल्ली

विनम्र विनयांजलि

श्रवणबेलगोला में गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली सहस्राब्दि समारोह व महामस्तकाभिषेक महोत्सव (1981) के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु 'जनमंगल महाकलश' का देशव्यापी प्रवर्तन हुआ था। प्रवर्तन का शुभारंभ दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले से तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इन्दिरागांधी के प्रमुख आतिथ्य में दि. 29 दिसम्बर 1980 को आयोजित था। इस समारोह को सर्वाधिक रूप में गरिमा प्रदान की परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के पावन सानिध्य ने। प्रवर्तन शुभारंभ समारोह के पूर्व श्रीमती इन्दिरा गांधी ने पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया था। ज्ञातव्य है कि मंगल कलश के सम्पूर्ण प्रवर्तन का सौभाग्यपूर्ण उत्तरदायित्व श्रद्धेय डॉ. प्रकाशचंद जी सहित मुझे प्राप्त हुआ। हमारी टीम में 15 सदस्य थे। लगभग 5 माह में संपूर्ण देश का भ्रमण करते हुए महामस्तकाभिषेक महोत्सव (फरवरी 1981) तक हमें श्रवणबेलगोला पहुँचना अनिवार्य था। हमारा उत्साह व मनोबल तो प्रबल था किन्तु कार्य सरल नहीं था। परोक्ष रूप में एक चुनौती हमारे समक्ष थी। समारोह के पश्चात् हम अपने दल सहित पूज्य माताजी का आशीर्वाद लेने हेतु पूज्य माताजी के पास पहुँचे। पूज्य माताजी ने हमें न केवल वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद ही दिया, प्रत्युत् आठ फुट ऊँचे ताम्र कलश में स्थापित करने हेतु एक मंत्रित सुरक्षा यंत्र भी प्रदान किया। परिणामस्वरूप 'मंगल कलश' भी पूज्य हो गया, साथ ही हमारा मनोबल भी चौगुना हो गया और अनेक प्रतिकूलताओं के बावजूद मंगल कलश की लगभग 5 माह की यात्रा (23500 किमी.) निर्विघ्न सम्पन्न हुई। प्रवर्तन का उद्देश्य भी आशातीत रूप में सफल व सार्थक हुआ।

कालांतर में पूज्य माताजी की प्रेरणा व संकल्प से हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना ने आकार लिया और द्रुतगति से उसका विकास हुआ। 'जम्बूद्वीप' के माध्यम से अनेक धार्मिक गतिविधियाँ प्रारंभ हुईं, अनेक तीर्थों व जिनालयों के जीर्णोद्धार व नवनिर्माण हुए। पूज्य माताजी द्वारा अनेक ग्रंथ लिखे गये, उनका स्तरीय प्रकाशन हुआ। धर्मप्रभावनासंबंधी ऐसे अनेक कार्य सम्प न्नहुए जिनकी गणना व मूल्यांकन करना कठिन है। पूज्य माताजी की कल्पना व स्वप्नों को साकाररूप प्रदान करने में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज व कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी का समर्पण तो प्रत्यक्षरूप में दृष्टव्य है ही, साथ ही विलक्षण प्रतिभासम्पन्न युवा विद्वान डॉ. अनुपम जैन (इंदौर) का परामर्श व परोक्ष योगदान भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। देश के अनेक शीर्षस्थ मनीषी विद्वान तो 'जम्बूद्वीप' से प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से संलग्न हैं ही, दोयम दर्जे के विद्वानों व हम जैसे सामान्य कार्यकर्ताओं को भी विद्वानों की श्रेणी में सम्मिलित होने का जो गौरव प्राप्त हुआ है, वह भी पूज्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी की दूरदृष्टि व सकारात्मक सोच का ही सुफल है, ऐसी मेरी मान्यता है।

पूज्य माताजी की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वे जिस कार्य को हाथ में लेती हैं, उसे पूर्ण करने के पूर्व अन्य किसी कार्य में हाथ नहीं डालतीं। भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार के चमत्कारिक जीर्णोद्धार व नवनिर्माण का उदाहरण हमारे समक्ष है ही।

श्रमण संस्कृति की श्रेष्ठतम साधिका, अतीव पुण्यवान, विलक्षण प्रतिभासम्पन्न, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी दीक्षाविधि के 50 वर्ष पूर्ण किये, यह कोई सामान्य उपलब्धि नहीं है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाने के तुल्य ही होगा। पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के पावन प्रसंग पर जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित करना एक स्वागत योग्य निर्णय है।

इसी अवसर पर 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' का प्रकाशन भी एक अभिनंदनीय प्रयास है। इस पावन प्रसंग पर परमपूज्य माताजी के श्रीचरणों में अंतर्मन से अत्यंत विनयपूर्वक अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ।

श्री वीरप्रभु से कामना है कि पूज्य माताजी शारीरिक रूप से स्वस्थ रहते हुए दीर्घायु प्राप्त करें, उनका पावन साया सदैव हम सब पर बना रहे, उनके शुभाशीष हमें प्राप्त होते रहें और उनके पावन सानिध्य में धर्म की प्रभावना भी निरंतर होती रहे। इन्हीं मंगल भावनाओं सहित–

–पं. जयसेन जैन, इंदौर
(सम्पादक–सन्मति वाणी–मासिक)

"दीक्षाया: सुवर्णोत्सवैषा विनत प्रार्थना"

नमामि त्वां सदा चरणारविन्दौ,
ज्ञानमती माता गणिनीश्रेष्ठा,
ज्ञानमार्तण्डा प्रगूढा लेखिका,
त्वमसि संस्कृतेः संरक्षिका,
वरेण्या शरण्या चिदानंदरूपा।

ज्ञानदीप्त्याऽज्ञानध्वान्तं हरसि समेषाम्,
प्रदीप्ता असि त्वं भानुवत् पृथिव्याम्
(अस्याम्),
सदा मातरिश्वेव भक्ताश्रयाऽसि,
सदा हंसवत् ज्ञानमज्ञानं विचिनोषि।

तथा ऋतं चानृतं यथावत् निधत्से,
कृपां त्वां निधेहि अत्र स्वभक्ते,
सर्ववन्द्यैर्वृता वन्दनीया सदा,
अध्यात्मपुष्टा अजस्रं ज्ञानमूला।
चरणपतितानामुद्धरस्व, हे मात,
दीक्षाया: सुवर्णोत्सवैषा विनतप्रार्थना।

–कु. भारती पेंदे, सोलापुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वंदन मेरा बारम्बार

रत्नत्रय की उत्कृष्ट साधिका "स्वाध्यायः परमं तपः" सूत्र को साकार करने वाली तपोमूर्ति, श्रुतज्ञानरूप चैतन्यमूर्ति, सौम्यमूर्ति बाल ब्र. 105 गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के युगल चरण में आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष के पावन प्रसंग पर उनकी रत्नत्रय धर्म की वंदना-अभिवंदना करता हूँ।

द्विशताधिक ग्रंथों के आलेखन में पंचशताधिक विशाल विधानों की प्रणयनकर्त्री, दुरूह विषय न्याय के अनेक ग्रंथों की टीकाकर्त्री, जम्बूद्वीप के साकार रूप को हस्तिनापुर में निर्मायित्री, स्व-परकल्याण निरत, असाधारण व्यक्तित्व की धनी, सिद्धहस्त लेखनी वाली परमपूज्य प्रथम गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी को मेरा बारम्बार प्रणाम है।

विश्व की अनुपम एवं अद्वितीय धरोहर जम्बूद्वीप को मूर्तरूप देना, यह उनके उदात्त स्वस्थ मानसिकता एवं बौद्धिक चिन्तन की उत्कृष्ट परिणति है, जो आज जन-जन के लिए विस्मयकारी है।

योजनाबद्ध तरीके से तीर्थक्षेत्रों का विकास, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास-संरक्षण-संवर्धन भी आपकी जिनायतनों के प्रति अगाध श्रद्धा का दिग्दर्शन है।

ऐसी परमपुनीत तपोमूर्ति प्रथम गणिनी आर्यिका श्री के चरणों में मेरा शत-शत वंदन, अभिनंदन।

स्वस्थ चित्त रहकर दीर्घायु हों, ऐसी पवित्र भावना के साथ—

-महेन्द्र कुमार जैन शास्त्री 'प्रतिष्ठाचार्य', मुरैना (म.प्र.)

विनयांजलि

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जैन समाज को अपनी ज्ञानोपासना से स्वाध्याय की रुचि निर्माण की। हम पंडितों को आपने अनेक विधानों द्वारा यह ज्ञापित किया है कि यथार्थ में विधान की पद्धति क्या है? आज जैन समाज अपने श्रावकाचार से विचलित हो रहा है। देव, शास्त्र और गुरु के प्रति उदासीनता दिखाई दे रही है परन्तु पूज्य श्री माताजी ने समाज में देव, शास्त्र के प्रति अप्रतिम भावभक्ति निर्माण की। आप धर्म ध्यान के प्रति हमेशा जागृत रहती हैं। आपका पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत है। आपके भाई कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी पूरे समर्पण से जम्बूद्वीप की व्यवस्था में रत हैं। आप तपस्विनी हैं। ज्ञानाराधना से आज साध्वी समाज में सर्वतोपरि हैं।

विदुषीरत्न श्री ज्ञानमती मातजी ने अनेक विद्वानों का सत्कार कर एक अभिनव क्रांति की है। विद्वानों का सम्मान अर्थात् सारस्वतों का सम्मान होगा क्योंकि उन्होंने अपना पूरा जीवन जैन शास्त्रों के अध्ययन में समर्पित किया है।

आपने कठिन तपस्या द्वारा अपने दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण किये हैं। इसलिए ऐसे स्वर्ण जयंती महोत्सव की मैं सफलता चाहता हूँ। आपको निरामय आयु प्राप्त हो, आपका स्वास्थ्य उत्तम रहे, यह मेरी विनयांजलि।

-पं. नागनाथ जैन (काटकर), मुम्बई (महा.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भजन

तर्ज-तीरथ करने चली सती.....................

दीक्षा लेकर चलीं आर्यिका, अपने कर्म जलाने को।
ज्ञानमती बन भ्रमण किया तब, सबको ज्ञान सिखाने को।।
दीक्षा लेकर बनी आर्यिका..................।।
पूर्ण चाँदनी जग में फैली, मैना का जब जनम हुआ।
एक गगन में एक भवन में, दो चंदा का मिलन हुआ।।
पूर्ण चांदनी जग में फैली, मैना का यश गाने को...........
मैना का यश गाने को।।दीक्षा लेकर.।।
शैशव में ही बाला ने, गृह से मिथ्यात्व भगाय दिया।
यौवन में पग रखते ही, गृहबंधन को ठुकराय दिया।।
चलीं देशभूषण के ढिग फिर, साधुमार्ग अपनाने को।।
साधुमार्ग अपनाने को।।दीक्षा लेकर.।।
श्रवणबेलगोला का पर्वत, सबके मन को भाया था।
माताजी ने एक वर्ष तक, रहकर ध्यान लगाया था।।
बाहूबलि स्तोत्र रचा तब, भक्तिमार्ग सिखलाने को।।
भक्तिमार्ग सिखलाने को।।दीक्षा लेकर.।।
बालसती यह प्रथम हुई, अपने युग की माताओं में।
ग्रंथों की रचनाएँ भी हैं, प्रथम किया इनने जग में।।
'त्रिशला'' इनके त्याग ज्ञान को, आयी शीश झुकाने को।।
आयी शीश झुकाने को।।दीक्षा लेकर.।।

-श्रीमती त्रिशला जैन, नाकाहिंडोला-लखनऊ

विनयांजलि

साध्वी, वागीश्वरी, साक्षात् सरस्वती पूज्या गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी स्वयं धन्य हैं और धरा को धन्य किया है अपने जन्म से। आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से वीरमती माताजी ने अपने परिवर्तित नाम 'आर्यिका ज्ञानमती' नाम को उत्तरोत्तर सार्थक किया है। सन् 1956, वैशाख वदी दूज से निरन्तर स्वाध्याय, अध्यापन, मनन-चिंतन एवं सृजन के द्वारा अद्यावधि सार्थकता प्रदान की है। उन्होंने युगनिर्मात्री आर्यिका के रूप में हस्तिनापुर की ऐतिहासिक भूमि पर जो दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना कराई, वह अप्रतिम एवं अनुपम है।

जम्बूद्वीप की संरचना, कमलमंदिर एवं सम्यग्ज्ञान नामक मासिक पत्रिका के माध्यम से गणित, भूगोल, खगोल शास्त्र, ज्योतिष, जैनदर्शन एवं साहित्य को जो नूतन आयाम प्रदान किया है, वह आपकी अलौकिक प्रतिभा का परिचायक है। द्विशताधिक मौलिक ग्रंथों की संरचना आपकी असाधारण सृजनशक्ति का प्रमाण है।

आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने 22 अक्टूबर सन् 1934 में टिकैतनगर में पिता श्री छोटेलाल जी व माता मोहिनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवी को अपने जन्म से कृतार्थ किया। बाल सुलभ किन्तु आदर्श जैन श्रावक की दिनचर्या से आप्लावित सत्रह वर्ष का समय कैसे गुजर गया, यह मालूम नहीं पड़ा। असाधारण करनी के रूप में अपनी सुरभि चतुर्दिक फैलाने के लिए ही मानों साधनारत रहती रहीं और आचार्य श्री देशभूषणजी महाराज से 18 वर्ष की आयु में सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य के व्रत को धारण किया। सन् 1953 में ही आचार्य श्री से क्षुल्लिका दीक्षा प्राप्त कर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया और 'मैना' मैना की तरह फुर्र करती हुई उड़ चली अपने अलौकिक लक्ष्य प्राप्ति की ओर।

कठिन तप-साधना में लीन फिर भी साहित्य साधना के लिए सदैव सजग रहीं। आपने भक्ति संगीत के रूप में इन्द्रध्वज विधान, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र विधान आदि की रचना कर भक्तिसंगीत की अनूठी सरिता प्रवाहित की। शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों एवं राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों की कल्पना आपके ही मनमस्तिष्क की उपज हैं। क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी ने तथा शोध संस्थान के अध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने स्थायी स्तंभों के रूप में आपको निश्छल एवं निःस्वार्थ भाव से जो सहयोग प्रदान किया है, वह अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय है।

गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी के दीक्षा दिवस के इस अपूर्व अवसर पर मैं अपनी विनयांजलि उनके श्रीचरणों में समर्पित कर अपने को गौरवान्वित मानता हूँ।

-पूर्णचंद्र जैन शास्त्री, सागर (म.प्र.)

भव्यात्माओं का किया उद्धार

वंदन करूँ पंच परम गुरु, चतुर्विंशति जिन महाराज।
नमन जिन भाषित भारती, सम्यग्ज्ञान प्राप्ति ममकाज।।1।।

मंगलकर्ता हैं महावीर प्रभु, मंगलकारी गौतम गणेश।
मांगलिक कुन्दकुन्द सूरि, मंगल कारक सद्धर्म जिनेश।।2।।

श्री शांतिसागर के पट्टधर थे, वीरसागर जी मुनिनाथ।
तिन दीक्षित माता ज्ञानमती, करूँ वंदामि जोड़कर हाथ।।3।।

उन्नीस सौ चौंतीस सन् ईसवी, आश्विन पूर्णचन्द्र आकाश।
टिकैतनगर धन्य धन्य हुआ, जन-जन में भरा उल्लास।।4।।

छोटेलाल मोहिनी दम्पत्ति की, पुण्य से पावन हो गयी कोख।
कन्या मैना के आगमन से, छा गया घर में हर्ष आलोक।।5।।

पद्मनंदीपंचविंशतिका को तुम्हें, माँ मोहिनी ने कीना प्रदान।
अंकुरित हुआ वैराग्य मन में, सम्यक् मार्ग की हुई पहचान।।6।।

अठारह वर्ष की अल्पआयु में, तुम्हें मिले देशभूषण मुनिनाथ।
सप्तम प्रतिमा ग्रहण करके, छोड़ा घर परिजनों का संग साथ।।7।।

राजस्थान में श्री महावीर जी है, नामी अतिशय तीरथ धाम।
क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण की, गुरु ने दिया वीरमती नाम।।8।।

क्षुल्लिका विशालमती सहित, दक्षिण भारत को किया विहार।
प्रेरणास्पद वाणी मिली तुम्हें, शांतिसूरिवर के सुने विचार।।9।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ससंघ वीरसिंधु सूरि पधारे, पुण्यधरा माधोराजपुरा ग्राम।
चतुर्विधसंघ की उपस्थिति, चतुर्थकालीन दृश्य अभिराम।।10।।
वैशाख कृष्णा द्वितीया दिवस, चौबीस सौ बियासी वीर निर्वाण।
वीर सिंधु आचार्य ने तुमको, आर्यिका दीक्षा कर दी प्रदान।।11।।
'ज्ञानमती' नामांकित कर बोले, रखना सदा नाम का ध्यान।
स्वयं ज्ञानार्जन करते रहना, भव्यों को देते रहना निज ज्ञान।।12।।
राँवका सागरमल चांददेवी को, गुरु ने दिया आशीष आदेश।
प्रबल पुण्य से सौभाग्य मिला, बने आपके धर्म पितृ मातेश।।13।।
दीक्षा समारोह स्थल पर आया, हुंकार भर इक सांड नस्ली बैल।
गुरु दर्शन कर वह लौट पड़ा, अर्पित कर सींग फंसी गुड़ भेल।।14।।
देख अधिक जन समूह को, प्रबंध समिति हो गई भयभीत।
गुरु समक्ष आशंका जतायी, भोज्यसामग्री हो जावे न व्यतीत।।15।।
वस्त्र मंत्रित कर कहा गुरु ने, इससे ढ़क रखें भोजन भण्डार।
अतिथि अभ्यागत सब तृप्त होंगे, रहेगा न कोई निर-आहार।।16।।
श्वेत साटिका में शोभे हंसिनी, कमण्डलु पिच्छिका कर धार।
ज्ञान सरोवर में विचरती तथा, स्व-पर का करती उपकार।।17।।
पंच महाव्रत पंच समिति, इन्द्रिय विजय पंच प्रकार।
षट्आवश्यक व अन्य गुण, करती पालन सह उपचार।।18।।
शिष्या ज्ञानमती मात थी, वीर सिंधु गुरुराज।।
प्रथम बालसति मात को, दिया शुभाशिर्वाद।।19।।
श्रमणी पद नाम किया सार्थक, आत्मश्रम करती आप कठोर।
ज्ञान ध्यान तप के बल पर पहुँचीं, शून्य से शतक की ओर।।20।।
गुरुवर की अनुज्ञा से किया, ससंघ स्वतंत्र मंगल विहार।
नगरों गाँवों में विचरण कर, भव्यात्माओं का किया उद्धार।।21।।
भाव भक्तिपूर्वक वंदन किये, समस्त भारत के तीरथ धाम।
निर्वाण क्षेत्र सिद्धक्षेत्र सहित, दिव्य जिनगृह जो नामी नाम।।22।।
आपने संयम पथ था अपनाया, परिजनों को भी आया उत्साह।
पावन प्रेरणा थी मिली आपसे, चार भव्यजनों ने पकड़ी सत्राह।।23।।
आपके पावन सानिध्य में कर, संयम तप व्रत स्वाध्याय।
कई नर पुंगव जन्म धन्य कर, बने साधु सूरि उपाध्याय।।24।।
माँ ब्राह्मी से चन्दनबाला तक, गणिनियों सा तुममें होता प्रतिभास।
चारों अनुयोगों की तुम हो ज्ञाता, श्रुतसंवर्धन में रचा नव इतिहास।।25।।
वयोवृद्ध हो ज्ञानवृद्ध हो परन्तु, तन मन वाणी न लेती विराम।
साहित्य सृजन तीर्थप्रवर्तन को, देती रहती अहर्निश नव आयाम।।26।।
हस्तिनापुर में करी स्थापना श्री त्रिलोक जैन शोध संस्थान।
तिलोयपण्णत्ति में जो लिखित, भव्यरचना रची जम्बूद्वीप महान।।27।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रबल पुण्य से अनुकूल रहे, द्रव्य क्षेत्र काल और भाव।
शत प्रतिशत होते सफल, लक्ष्य योजना और प्रस्ताव।।28।।
परामर्षक आर्यिका अभय चंदना तथा मोती सिन्धु उत्तम सुखकार।
योजनाएँ कार्यान्वित करते रहते, व्रती श्रावक ब्रह्म रविन्द्र कुमार।।29।।
ऋषभदेव का समवसरण तथा, वीर का नंद्यावर्त आवास।
प्रेरणास्पद रहे रथ संचालन, धर्म के प्रति बढ़ा विश्वास।।30।।
अयोध्या, वाराणसी, प्रयाग, कुण्डलपुर का होवे विकास।
ब्रदीनाथ उज्जैन अहिक्षेत्र में सफल हुए सार्थक प्रयास।।31।।
जनभाषा लिपि में रचित किये, गणित पूजन मण्डल विधान।
विश्वभर में हुए लोकप्रिय, सबका जिनभक्ति में बढ़ा रुझान।।32।।
था अष्टसहस्री ग्रंथ जिसकी, कष्टसहस्री बनी पहिचान।
संस्कृत हिन्दी टीकाएँ लिख दी, साहित्य जगत की निधि महान।।33।।
वर्ष सतानवें माह मार्च में, हुआ पुनः मंगल विहार।
माधोराजपुरा के जैनाजैन में, छाया उल्लास उत्साह अपार।।34।।
गणिनी माता ज्ञानमती की, गगन गूंज हुयी जयकार।
झालर घंटा वादित्र बजे, नर नारी नाचे गाते मंगलाचार।।35।।
साक्षी वटवृक्ष अब भी खड़ा, नगर किले के बिल्कुल पास।
जिसके नीचे हुई थी दीक्षा, फैली तप संयम की सुबास।।36।।
धर्मसभा में सर्वसम्मति से, शुभ कारक निर्णय हुआ तत्काल।
माँ दीक्षा की पावन स्मृति में, निर्मित होवे दीक्षा तीर्थ विशाल।।37।।
भू आवंटन की चली प्रक्रिया, राज्य शासन ने किया स्वीकार।
क्षेत्र समिति का उत्साह बढ़ा, कार्य प्रगति को मिला विस्तार।।38।।
दीक्षा स्थली माधोराजपुरा में, होवे आगामी भव्य चातुर्मास।
श्राविका श्राविकाओं के मन में, है अभिलाषा व विश्वास।।39।।
माता तेरी पुण्यवर्गणाओं से, प्रस्तावित भूखण्ड हो गया ओतप्रोत।
निर्माण हेतु नल कूप खुदाया, खराश में फूटा मधुर जल स्तोत्र।।40।।
है माताजी से यही निवेदन, कि क्षेत्र को देवें भव्य स्वरूप।
विश्व गगन पर रविवत् चमके, ज्ञान ध्यान संयम केन्द्र अनूप।।41।।
आपके संपर्क सानिध्य में जो रहते थे, वे निज जीवन लेते सुधार।
भव्यों भक्तों शिष्य शिष्याओं की, श्री चरणों में लगती दीर्घ कतार।।42।।
धर्म प्रभावक कार्यों में रहतीं व्यस्त, किन्तु न भूलतीं आत्म कल्याण।
जल में कमलवत् रहती हो तुम, चिन्तन में रहतीं सदैव भेद विज्ञान।।43।।
स्वर्ण महोत्सव पर यही शुभ भावना, प्रकट करते मंगल उद्गार।
आपके कुशल नेतृत्व में होवे, श्रमण संस्कृति की जय जयकार।।44।।
शताधिक वर्ष की आयु पावें, साता वेदनीय रहे विद्यमान।
आयु कर्म क्षीण जब होवे, समाधियुक्त हो देह अवसान।।45।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारी लिंग नष्ट कर नर बने, मिले कुल जाति धर्म महान।
दीक्षित हो केवल्य बोधि गह, फिर पावें मोक्ष परम स्थान।।46।।
आपके कर्त्तय व व्यक्तित्व का, हो नहीं सकता पूर्ण बखान।
है केवल बाल चेष्टा ही मेरी, जैसे रवि को दीप दर्शन समान।।47।।
कवि नहीं कविसुत नहीं हूँ, न जानूं छंद लय व ताल।
गुरु भक्ति में स्वयमेव बन गई, शब्द सुमन विनय माल।।48।।
दर्शनीय है व्यक्तित्व आपका और, अनुकरणीय है कर्त्तत्व कलाप।
स्वर्ण महोत्सव पर विनयांजलि, समर्पित करता है जैन चन्द मिलाप।।49।।
वीरसिंधु की जीवन्त सुकृति, गणिनी माँ आर्यिका ज्ञानमती।
मूलगुणों का करे प्रति पालन, चारों अनुयोगों का भी अनुशीलन।।50।।
हे! माँ जिनवाणी की वरद सुता, आर्यिका संघ की शीर्षस्थ चन्दन।
श्री चरणों में वंदामि वंदामि, साष्टांग सविनय करें अभिवंदन।।51।।

-मिलापचंद जैन सोगाणी, जयपुर (राज.)

विनयांजलि

जन-जन को सर्वतोभद्र, इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम महामण्डल विधान आदि के माध्यम से भक्ति गंगा में अवगाहन कराकर पाप पंक से मुक्त कराने वाली परमपूज्यनीया ज्ञानमती माताजी ने न केवल चारों अनुयोगों के सिद्धान्तों के रहस्य को वाणी, लेखनी और शिल्प के माध्यम से हमारे समक्ष उद्घाटित किया है बल्कि उन्होंने आज के इस उपभोक्तावादी और भौतिकवादी युग में न्याय के क्लिष्टतम ग्रंथ, अष्टसहस्त्री पर स्याद्वाद चिंतामणि नामक टीका की रचना कर इसे हमारे लिए बोधगम्य बनाया है। इस टीका ग्रंथ में श्रद्धेय माताजी ने अष्टसहस्त्री का अनुवाद करने के साथ ही साथ स्थान-स्थान पर विशेषार्थों तथा अध्याय के अंत में सारांश देकर न्याय के क्लिष्ट विषय को इतना सरल बना दिया है कि इसका अध्ययन करते ही वस्तुतत्त्व पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है, अज्ञानांधकार दूर हो जाता है तथा मन असीम आल्हाद का अनुभव करता है। अष्टसहस्त्री आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रंथों के हृदय को समझने के लिए कितना महत्वपूर्ण है, इसे स्पष्ट करते हुए इसके रचयिता आचार्य विद्यानंदि कहते हैं—

श्रोतव्याष्टसहस्त्री श्रुतैः किमन्यैःसहस्त्रसंख्यानैः।
विज्ञायेत ययैव स्वसमयपरसमय सद्भावः।।

अर्थात् एक अष्टसहस्त्री ही सुननी चाहिए? हजारों ग्रंथों को सुनने से क्या प्रयोजन है क्योंकि इस एक ग्रंथ को सुनने से ही स्वसमय और परसमय के सद्भाव का ज्ञान हो जाता है।

अष्टसहस्त्री को स्वयं आचार्य विद्यानंदि कष्टसहस्त्री कहते हैं कष्टसहस्त्री सिद्धा साष्टसहस्त्री मे पुण्यात्। जो अष्टसहस्त्री स्वयं आचार्य विद्यानंदि को हजारों कष्ट झेलने के उपरांत अत्यन्त पुण्य से सिद्ध हुई है, उस अष्टसहस्त्री को हिन्दी अनुवाद, व्याख्याओं और सारांशों से सुशोभित कर हमारे जैसे अल्पज्ञों के लिए अत्यन्त सहज रूप से बोधगम्य बना देने वाली परम पूज्यनीय ज्ञानमती माताजी को मेरा सर्वांग परिपूर्ण शत-शत नमन, शत-शत वंदन।

-डॉ. राजकुमारी जैन, अजमेर (राज.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्ष परम्परा और साहित्य की संरक्षिका

हमारे आर्षप्रणीत परम्परा, संस्कृति और साहित्य को अपनी विराट ज्ञानसाधना से संरक्षित और संवर्धित करने वाली महातपस्विनी, सरस्वती की साक्षात् प्रतिमूर्ति गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी दीक्षा के 50 वर्ष पूरे किये। अपने जीवन से त्याग और आदर्श जैन श्रावक व श्राविकाओं के सामने रखा, इसलिए उनके स्वर्णजयंती महोत्सव पर अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए मुझे उनके प्रभावक कार्यों का स्मरण होता है। एतदर्थ मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ। जैन समाज ही नहीं अपितु पूरा राष्ट्र उनके इस प्रदीर्घ तपस्या से गौरवान्वित है।

पूज्य माताजी के प्रथम दर्शन मैंने सन् 1953 में किए, जब परमपूज्य आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज ने श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर उन्हें क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की थी। उस समय मैं अधिष्ठाता, संचालिका, ब्र. पू. कमलाबाई जी के आदर्श श्राविकाश्रम में छात्रा के रूप में पढ़ती थी। उस दीक्षा महोत्सव की छवि आज भी मेरी आँखों के सामने प्रतिबिम्बित होती है। पूज्य माताजी का द्वितीय दर्शन सन् 1965 में सोलापुर के स्व. पद्मश्री ब्र. सुमतिबाई जी के जैन श्राविकाश्रम में हुआ, जहाँ उनका चातुर्मास था। गोम्मटेश्वर की यात्रा करके माताजी का संघ वहाँ शुभागमन हुआ था। उनके साथ पाँच आर्यिकाएँ थीं। उस समय परमपूज्य विमलसागर महाराज जी के संघ का भी सोलापुर में चातुर्मास था। श्राविकाश्रम में दो-तीन केशलोंच भी हुए। अनेक धर्मसभा में उनके विद्वत्तापूर्ण प्रवचन सुनने का अवसर मुझे मिला। उनकी प्रतिभा और वाक्पटुता से मैं अत्यंत प्रभावित हुई। जम्बूद्वीप प्रकल्प का उद्गमस्थान और विचारों का श्रीगणेश यहीं हुआ, जो बाद में हस्तिनापुर में साकार हुआ।

पर साक्षात् उनके दर्शन और चर्चा का अवसर मुझे हस्तिनापुर में 1992 में सम्पन्न अंतर्राज्यीय चरित्र निर्माण संगोष्ठी और तत्पश्चात् होने वाली अनेक संगोष्ठियों में हुआ। उनके असीम ज्ञान, करुणा और वात्सल्य को देखकर मेरा मन आल्हादित हुआ। महिला जगत् में मैं समझती हूँ कि यह प्रथम आदर्श होगा कि जिसने अपने दृढ़ संकल्प द्वारा जंबूद्वीप जैसे विशाल तीर्थ का निर्माण कराया, जो संस्कार और संस्कृति का आधारस्तंभ है, समाज के लिए एक बड़ी धरोहर है। परमपूज्य माताजी का विशाल साहित्य हमें नित्य स्वाध्याय की प्रेरणा देता है। परमपूज्य माताजी ने जैन साहित्य में चारों अनुयोगों का स्वाध्याय स्वयं किया और श्रावकों को स्वाध्याय की प्रेरणा दी। आचार्य पूज्यपाद (सर्वार्थसिद्धि), आचार्य अकलंक देव (अष्टशती), आचार्य समंतभद्र (आप्तमीमांसा), आचार्य विद्यानंद (अष्टसहस्री) जैसे कठिनतम ग्रंथों का अनुवाद द्वारा उन्हें सहज व सुलभ बनाया। आज उनके सभी ग्रंथ हमारे स्वाध्याय के प्रेरक हैं। मैं पूज्य माताजी के इस दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर अपनी विनयांजलि प्रस्तुत करते हुए उन्हें प्रदीर्घ आयु-आरोग्य के लिए मंगल कामना करती हूँ।

-प्रा. सौ. सुजाता कु. लोखंडे, सोलापुर

ज्ञानमती तुम जग माता हो.............

महापुरुष बनते नहीं हैं, जन्म से ही पैदा होते हैं। मोहरूपी अंधकार के नष्ट हो जाने पर सम्यक्दर्शन और सम्यक्ज्ञान की प्राप्ति करके मनुष्य राग-द्वेष की निर्वृत्ति से सम्यक्चारित्र को प्राप्त करते हैं।

ज्ञान के सद्भाव का आदान-प्रदान करना और पशुत्वभाव का क्षपण करना ही दीक्षा है। प्रात:स्मरणीय परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव भारतीय जैन समाज के सौभाग्य में एवं जिन शासन के प्रभावक प्रकाश में भगवान महावीर स्वामी के शासनकाल तक जयवंत रहेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मांगलिक कामनाएँ

चारित्रचक्रवर्ती युग के प्रथम आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज की पावन मुनि परम्परा की इस महान साधिका ने अब तक के साधकों में श्रेष्ठतम स्थान प्राप्त कर जिनशासन की गरिमा को उन्नत किया, जो इतिहास की एक थाती बनकर यश:कीर्ति को अक्षुण्ण रखेगा।

पूज्य माताजी ने तीर्थों का उद्धार कराकर अपनी महान आत्मा में तीर्थत्वता की पात्रता प्राप्त की तथा भगवान महावीर स्वामी की देशना के उज्ज्वल प्रकाश को व्यापक मात्रा में जैनागम की रचना कर प्रसारित किया। सैकड़ों विद्वान शताब्दी तक जितनी साहित्य की रचना कर सकने में समर्थ नहीं हो पाते, अकेले पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने माँ सरस्वती की साक्षात् जीवन्त मूर्ति बन कर की। यथानाम तथा गुणाचरण की ऐसी मंगलकारी जीवंत साधक मूर्ति के युगल चरण कमलों में प्रज्ञावंत विश्वजनमानस त्रिकाल प्रणाम करता है।

परमपूज्य ज्ञानमती माताजी इस भूमण्डल की वह प्रकाशवान ज्योति हैं, जिन्होंने धर्मप्रभावना में जिनधर्म की रक्षा में, तीर्थों के उद्धार में और माँ जिनवाणी के व्यापक प्रचार-प्रसार में अपने मंगलकारी जीवन का एक-एक क्षण धन्य किया। वह इस युग की तीर्थरूप पावन मूर्ति, जिनवाणी रूप माँ सरस्वती की साकार मूर्ति और कलियुग में जन्में श्रावकों को सद्मार्ग पर ले जाने वाली युग की महान साधक शिरोमणि श्रेष्ठ आर्यिका के रूप में वीतराग की सम्यक् साधिका हैं, जो पंचमकाल के अंत तक वंदनीय, स्मरणीय और आराध्य के रूप में पूज्यनीय रहेंगी।

सतयुग में तीर्थंकर को जन्म देकर एक नारी धन्य होती थी परन्तु कलियुग में ऐसी महामंगलकारी नारी के रूप में ज्ञानमती माताजी ने अपार जैनागम की रचनाकर जिनवाणी को जन्म दिया। तीर्थंकरों की तीर्थभूमियों को समुन्नति के शिखर पर ले जाने का महान उत्कर्ष आपने जीवन में चरितार्थ किया और तीर्थंकर जैसा वर्णित आचरण अपने जीवन में आचरित कर मानव जन्म और मानव काया को धन्य किया। पूज्य माताजी इस शताब्दी की प्रथम आर्यिका हैं, जिनकी दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। ऐसी मंगलकारी आर्यिका के श्री पावन चरणों में मैं कोटिश: प्रणाम करता हूँ। तीर्थंकर महावीर स्वामी माताजी के ज्ञानाचरण की सुगंधि से युगों-युगों तक जन-मानस को सम्यक् आचरण की सुगंधि से सुगंधित करते रहें।

-पं. विमल कुमार जैन सोंरया, टीकमगढ़ (म.प्र.)

वात्सल्यमयी गणिनी माता ज्ञानमती जी!

प्रतिभा, दूरदर्शिता एवं कुशल नेतृत्व के कारण जिनका जीवन अथक कर्मठता तथा कर्तृत्व से समृद्ध होता है, ऐसी परमपूज्या प्रात:स्मरणीय गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के बारे में जानकर विनयांजलि अर्पित करने के भाव मन में तुरंत हुए।

पूज्य माताजी के दर्शनार्थ उनके सानिध्य में जाते रहने का क्रम चालीस सालों से मेरा रहा है। जैसे ही अनुकूलता हुई, मैं पूज्य गणिनी माताजी के प्रवचन, विविध आयोजनों का लाभ लेने के लिए पहुँचता रहा। अनेक बार त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर में पूज्य माताजी के सानिध्य में रहकर अनेक आध्यात्मिक एवं धार्मिक आयोजनों में शामिल हुआ। कई बार आहार देने का पुण्यलाभ लिया। पूज्य माताजी का श्री क्षेत्र मांगीतुंगी में चातुर्मास था, उनके वात्सल्यभाव से आकर्षित होकर भाद्रपद में अनेक धर्मप्रभावक कार्यक्रमों का लाभ लेने के लिए अनायास ही वहाँ पहुँचा। विविध आयोजनों में सहभागी होकर आत्मीय धन्यता का अनुभव हुआ।

पूज्य माताजी ने जिनवाणी रक्षा, समृद्धि, विश्व कल्याणार्थ विविध आयोजन, जैनधर्म, धर्मप्रभावना के ऐतिहासिक कार्य इत्यादि से भारतीय संस्कृति की सम्पन्नता बढ़ाई है। अपने 50 साल के आध्यात्मिक जीवन को भी गरिमामयी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनाया है। दिल्ली में कैलाशपर्वत की योजना तथा तन्निमित्त प्रभावना के आठ दिन पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में मेरे अत्यंत संस्मरणीय रहेंगे।

इसी प्रकार समाज, राष्ट्र तथा विश्व के कल्याणार्थ आपसे इसी प्रकार महान कार्य होते रहें और आपको दीर्घ आयुरारोग्य प्राप्त हो, ऐसी हार्दिक कामना पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षा स्वर्ण महोत्सव पर करता हूँ, मेरी विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

-रतनचंद सखाराम शहा, सोलापुर

'पन्यास प्रवर साध्वी श्री ज्ञानमती माताजी ज्ञान का सागर हैं'

किसी बड़े किले के अंदर एक गरीब लाचार नेत्रहीन भिक्षुक फँस गया था। वह बेचारा अंधा वहाँ से बाहर निकलना चाहता था, परन्तु बहिरद्वार को नहीं जानता था अतः बहुत दुखी था। वहाँ से गुजरने वाले हर व्यक्ति से बाहर अपने को ले जाने के लिए आग्रह कर रहा था लेकिन सब अपने-अपने कामों में व्यस्त होने से उसकी विनती को सुनकर भी अनसुनी कर रहे थे। उस अंधे की याचना जारी रही। अंततः एक बालक को उस अंधे पर दया आई। वह पास आया और कहा 'बाबा! मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ, मगर मेरे पास इतना समय नहीं कि मैं आपका हाथ पकड़कर आपको इस बड़े किले के बाहर छोड़ आऊँ। पर ये किला गोल होने के कारण मैं आपको इस किले की दीवार स्पर्श करा देता हूँ। आप इसको स्पर्श करते-करते वहाँ तक पहुँच सकते हैं, जहाँ इस किले का बहिरद्वार है। बालक की मदद से वह नेत्रहीन व्यक्ति दीवार को स्पर्श करता हुआ उस दरवाजे तक पहुँचने वाला ही था, तब अचानक उसके हाथ में खुजली हुई। वह एक हाथ से दूसरे हाथ को खुजलाते हुए आगे निकल गया। थोड़ी दूर दीवार के स्पर्श के बिना ही आगे निकल गया। फिर दीवार को स्पर्श करते हुए आगे बढ़ रहा था।

ठीक उसी तरह हम भी इस संसाररूपी भंवर में फँसे हुए हैं। यहाँ से निकलना चाहते हैं। कई आचार्य एवं शास्त्र ग्रंथ हमें इस संसार से निकालने का मार्ग बताते भी हैं लेकिन इस नेत्रहीन आदमी के जैसे हम भी उन तत्त्वों को समझकर सही ढंग से अमल में लाने में असफल रहे हैं। फलस्वरूप पुनः पुनः इस भवजलधि में गोते खाते रहते हैं।

एक आचार्य कहते हैं—

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरपि जननी जठरे शयनं।

धन्य है वह आत्मा, जिसने एक बार गुरुपदेश सुनकर अपनी आत्मा की उन्नति के लिए 'आत्मार्थे पृथ्वीं त्यजेत' रूपी ध्येय वाक्य को अमल में लाते हुए इस दुःखभरे संसार को त्यागकर वैराग्यपथ को अपनाया। इस शृंखला में हम सबके समक्ष अटूट रूप से निखरने वाला नाम है परमपूज्य विदुषी ज्ञानमती माताजी का दिव्य नाम। संसार से विरक्त होकर अपनी अठारहवीं साल की यौवनावस्था में ही इन्होंने दीक्षा ग्रहण करके वैराग्य पथ में पदार्पण किया एवं अपने कठिन आचरण द्वारा ज्ञान एवं ध्यान दोनों में सफलता पाने हेतु सार्थक साधक के रूप में निखरती हुई आज अतुलनीय स्थान प्राप्त कर चुकी हैं।

संस्कृत साहित्य के अलंकार शास्त्र में अनन्योपमालंकार नाम का एक अलंकार वर्णित है। इसका मतलब है "एक प्रसिद्ध वस्तु, जिसकी उपमा देने के लिए कोई दूसरी वस्तु नहीं मिलती, उस वस्तु की वही उपमा होती है' उसे अनन्योपमालंकार कहते हैं। उदाहरणार्थ—गगनं गगनाकारं, सागरं सागरोपमः। अर्थात् आकाश आकाश के समान है एवं सागर को सागर ही उपमा है। ठीक इसी तरह आज पूरे भारतवर्ष में परम विदुषी ज्ञानमती माताजी तुल्य अन्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोई विदुषी का मिलना दुर्लभ है अतः ज्ञानमती माताजी स्वयं ही स्वयं की उपमा बन गईं है।

हिन्दी साहित्य में एक कहावत है। "अगर योगी के पास रहकर योगी न बनो तो कोई बात नहीं, कम से कम उपयोगी अवश्य बनो" लेकिन यह कहावत पूज्य ज्ञानमती माताजी के विषय में गलत साबित होती हुई दिखाई देती है क्योंकि ये साध्वी जी तो योगियों के संगत में रहकर खुद भी योगी बन गईं। इतने में तृप्त न होते हुए समाज की उपयोगी भी बनीं। न केवल समाज की ही उपयोगी, अपितु साक्षात् योगियों की भी उपयोगी बन गईं। जी हाँ! आपके द्वारा लिखा हुआ 'दिगम्बर मुनि' नामक ग्रंथ जैन समाज एवं मुनियों, साधु-साध्वियों हेतु उपयोगी ग्रंथ माना गया है।

साधु-साध्वियों का आहारदान के लिए विधान-नवधा भक्ति, आहार देते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए, किन-किन प्रकार के विघ्न हो सकते हैं, आदि सारे विचार इसमें वर्णित हैं, जो समाज के लिए बहुत ही आवश्यक विचार हैं और मुनियों के लिए तो यह ग्रंथ भगवद्गीता के समान है क्योंकि इसमें मुनिदीक्षा विधान, मुनियों के 28 मूलगुण, उनकी दिनचर्या, आहार एवं विहार विधान, आवश्यक क्रियाएँ, नित्य एवं नैमित्तिक क्रियाकलाप आदि अत्यमूल्य विचारों का सविस्तार वर्णन है अतः यह ग्रंथ प्रत्येक मुनि को संग्रह योग्य एवं स्वाध्याय योग्य ग्रंथ माना जाता है। गतसाल दिनाँक 8 फरवरी 2005 को मुझे मद्रास विश्वविद्यालय के जैनॉलाजी विभाग में 'दिगम्बर मुनि आचार' इस विषय पर दो विशेष उपन्यास देना पड़ा, उस समय शिवकोटि आचार्य के मूलाराधना, प्रवचनसार, अनगारधर्मामृत, बृहद्दीक्षाविधि, मूलाचार टीका आदि ग्रंथों के साथ-साथ यह 'दिगम्बर मुनि' ग्रंथ मेरा प्रधान अध्ययन ग्रंथ बना हुआ था अतः मैं भी पूज्य ज्ञानमती माताजी से परोक्षरूप से उपकृत हूँ।

इस ग्रंथ के अलावा उनकी कलम से अष्टसहस्री आदि कुछ टीका ग्रंथ, त्रिलोक भास्कर, कातंत्र रूपमाला आदि क्लिष्टग्रंथ एवं इन्द्रध्वज, तीस चौबीसी, कल्पद्रुमादि आराधना ग्रंथ तथा बालविकास, जैन बाल भारती आदि लघु कथा ग्रंथ ऐसे कुल मिलाकर लगभग दो सौ से अधिक ग्रंथ प्रकटित होकर माताजी के विराट साहित्य सृजन सामर्थ्य की साक्षी के रूप में उपस्थित हैं।

दिनाँक 13 फरवरी 2006, सोमवार श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में बाहुबली भगवान के महामस्तकाभिषेक के उपलक्ष्य में 33 दिगम्बर मुनियों का दीक्षा समारोह था। उस समय इस 'दिगम्बर मुनि' ग्रंथ में वर्णित दीक्षा विधान का प्रतिफलन होता हुआ मैंने देखा।

अन्ततः अनेक जैन तीर्थों का जीर्णोद्धार करके उन्हें स्वर्णभूमि बनाने में भी सदा तत्पर-महान् उपकारी परम विदुषी, आर्यिकारत्न गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी युग-युग जियें, इससे जैन समाज एवं देश और भी उपकृत होवे, ऐसी शुभाकांक्षा करते हुए मैं अपना आलेख समाप्त करता हूँ।

-प्रो. एन. देवेन्द्र कुमार जैन, मैसूर (कर्नाटक)

हृदयवाणी

जिंदगी और जीवन दो विभिन्न शब्द हैं। जिंदगी का अर्थ जन्म से मृत्यु तक की अवधि मात्र है और कुछ भी नहीं, परन्तु जीवन का अर्थ है इस अवधि में अपनी सार्थकता को जानना परन्तु दुर्भाग्यवश विरले ही इस जिंदगी-जीवन के भेद को जान पाये हैं।

अपने जीवन की सार्थकता के मर्म को चरितार्थ करते हुए आज से 50 वर्ष पूर्व बाल्यावस्था में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आर्यिका दीक्षा धारण की। विगत 50 वर्षों में माताजी का जीवन तप, त्याग तथा संयम की त्रिवेणी की गहराईयों से साक्षात्कार कर पाया, जिसकी ऊर्जा ने उन्हें पूज्यनीय बनाया है, प्रकाशमय किया है। उनका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह प्रकाशपुंज ही आज हमारी मूढ़तामयी अंधकारिता को दूर करने में समक्ष बना है, मानवोत्थान का सृजन संभव हो पाया है।

पूज्यनीय माताजी द्वारा जैनदर्शन के अनुरूप मानव जाति के आध्यात्मिक विकास हेतु किये गये सफलतम प्रयासों की व्याख्या सीमित पृष्ठों के माध्यम से संभव नहीं। आज सम्पूर्ण जैन-अजैन समाज इनके चरणों में नतमस्तक है और अपने कल्याणार्थ उनके मार्गदर्शन का पिपासू भी।

मेरा परम सौभाग्य है कि मेरे परिवार के ऊपर माताजी का सदैव करुणामय वरदहस्त रहा है। उनके आशीर्वाद से ही डेंटल कालेज का मेरा सपना साकार हो पाया है। पिछले वर्ष जब प्रशासनिक औपचारिकताओं के निर्वाह के कारण तीर्थंकर महावीर डेंटल कालेज का प्रारंभ समयानुसार संभव नहीं प्रतीत हो रहा था, जिसके कारण मेरा चिंतित होना स्वाभाविक था, तभी अकस्मात् माताजी का ससंघ आगमन कालेज के परिसर में दिनाँक 19 मई 2005 को हुआ। आपके करकमलों द्वारा कालेज प्रांगण में 'तीर्थंकर महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ' का शिलान्यास हुआ। माताजी ने मंगल आशीर्वाद देते हुए कहा था कि कालेज के सभी कार्य समय पर मंगलपूर्ण सम्पन्न होंगे। यह उनके आगमन का ही चमत्कार था कि कालेज समय पर प्रारंभ हुआ और आज भारतवर्ष के कोने-कोने से जैन छात्र-छात्राएँ डेंटल सर्जरी की शिक्षा यहाँ प्राप्त कर रहे हैं। माताजी के इस उपकार के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ तथा उनकी इस कृपा का सदैव ऋणी रहूँगा।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि माताजी को दीर्घायुता प्रदान हो ताकि उनके ग्रंथों, दर्शन एवं वाणी से प्रेरणा प्राप्त कर समाज का प्रत्येक वर्ग अपना आत्मोत्थान कर अपने जीवन को सार्थकमय बना सके। यह मेरे पुनीत कर्मों का ही फल है कि मुझे 'गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ' के अन्तर्गत अपनी भावना अभिव्यक्त करने का दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पूज्य माताजी के आशीर्वाद की कामना रखते हुए उनके चरणों में कोटिशः वंदामि।

-सुरेश जैन, मुरादाबाद

(चेयरमैन-तीर्थंकर महावीर डेंटल कालेज एण्ड रिसर्च सेंटर)

अपूर्व ज्ञानसाधना

श्रमणपरम्परा आध्यात्मिक परम्परा पर आधारित है और अध्यात्म जैनसंस्कृति का प्राण है, जिन्होंने अध्यात्म का सहारा लिया, वे संसार से पार हो गये। अल्पवय में ही अध्यात्म का सहारा लेने वाली बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने अपूर्व ज्ञानसाधना एवं महत्वपूर्ण तपसाधना करके आर्यिका परम्परा को गौरवान्वित करते हुए इतनी ऊँचाई तक पहुँचा दिया है कि प्रत्येक विद्वान आपके चरणों में नतमस्तक है।

वस्तुतः पूज्य माताजी ने अपने नाम के अनुरूप चारों अनुयोगों में साहित्य सृजन कर जिनवाणी की अपूर्व सेवा की है, जो श्रुत के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान है।

अभी तक मैंने अनुभव किया है कि प्रत्येक विद्वान किसी एक विषय में लेखनी चलाता है, जिसमें उसकी पहुँच है परन्तु माताजी की मौलिक एवं अनूदित रचनाएँ अनेक विधाओं में होने के साथ-साथ बेजोड़ भी हैं। पूज्य माताजी में मैंने यह विशेषता देखी है कि आपसे कोई भी सैद्धान्तिक विषय पर चर्चा करे, तो आप गंभीरता के साथ उसके समक्ष प्रामाणिक एवं सूक्ष्म तर्कों से आगम की बात रखती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभी इसी वर्ष पूज्य माताजी के पावन सानिध्य में उन्हीं की कृतियों पर विद्वत् संगोष्ठी हुई थी, जो सफल संगोष्ठी थी परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि आपके सानिध्य में सैद्धान्तिक विषयों पर संगोष्ठी आयोजित हो, तो विद्वानों में जो मतैक्य नहीं है, वह काफी हद तक ठीक हो सकता है। पूज्य माताजी को प्रत्येक अनुयोग का गहरायी से अध्ययन है, वह अध्ययन विद्वानों को मार्गदर्शन बन सकता है और काफी विषय स्पष्ट हो सकते हैं। पूज्य माताजी की श्रुतसेवा जिनवाणी के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में रेखांकित रहेगी। मैं कामना करता हूँ कि आप मुक्तिपथ पर अबाध गति से चलते हुए परम्परया मोक्ष को प्राप्त करें।

–डॉ. शीतलचंद जैन, जयपुर

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी : आध्यात्मिक ऊर्जा स्रोत

विगत वर्षों में मैं पूज्य माताजी को एक योगी, विदुषी, हस्तिनापुर एवं अन्य तीर्थों के सृजक एवं तीर्थंकरों की जन्मभूमि के जीर्णोद्धारक के रूप में जानता था। दिसम्बर 2004 में भगवान पार्श्वनाथ के तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव के शुभारंभ अवसर पर आपके वाराणसी प्रवास के समय आपके दर्शन व निकट सानिध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय मैं अपने जीवन की सबसे कठिन परिस्थिति में था और आपके दर्शनमात्र से अन्तर्मन को अत्यन्त शान्ति मिली। आपसे संक्षिप्त वार्तालाप से आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रवाह हुआ। आपकी वाणी के ओज, मुख की प्रभा, ज्ञान के उत्कर्ष, सादगी एवं वात्सल्य से एक नया इतिहास जागृत हुआ।

'मेरी स्मृतियाँ' पूज्य माताजी की आत्मकथा का अध्ययन अत्यन्त ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक रहा है। यह एक बालिका के अथक पुरुषार्थ का मार्मिक एवं सजीव चित्रण है। इस पुरुषप्रधान समाज के विरोध का बड़ी शालीनता एवं दृढ़ता के साथ सामना करते हुए, वह अपना जीवन ज्ञानार्जन, योग और ज्ञान एवं धर्म के प्रसार में समर्पित कर देती है। अट्ठारह वर्ष की अल्पायु में गृह त्याग, छः मास उपरांत क्षुल्लिका रूप में जैनेश्वरी दीक्षा, ज्ञान साधना करते हुए सहस्रनाम के 1008 मंत्रों का लेखन प्रारंभ एवं जीवन के 22वें वर्ष में आर्यिका दीक्षा की एक अद्भुत मिसाल है। आपने अपने दीक्षित जीवन में तप, योग, साधना एवं अध्यात्म के अलावा अविस्मरणीय सृजन कार्य किया है। आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज द्वारा प्रदत्त 'आर्यिका ज्ञानमती' नाम को चरितार्थ करते हुए सहस्रों वर्षों बाद एक साध्वी ने अनेक धर्मग्रंथों, मंत्रों, विधान एवं पूजा की मौलिक रचना तथा संस्कृत एवं प्राकृत ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद कर जैन धर्मावलम्बियों में भक्ति एवं ज्ञान की अतुलनीय धारा प्रवाहित की।

50वें दीक्षा दिवस पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में शत-शत नमन।

–डॉ. अशोक कुमार जैन, वाराणसी

शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की प्रेरिका

वर्तमान में शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का सूत्रपात पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने किया है। इसमें वर्षभर के कोर्स को मात्र 7 दिन में पढ़कर परीक्षा देकर प्रमाणपत्र प्राप्त कर लेते हैं। कम समय में शिक्षित करने का बहुत बढ़िया साधन है शिक्षिण शिविर। पूज्य माताजी ने केवल बच्चों के लिए ही शिविर नहीं लगवाए बल्कि बड़ों के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिए, बुजुर्गों के लिए, महिलाओं के लिए और विद्वानों के लिए भी शिविर लगवाए।

एक बार माताजी ने हस्तिनापुर में विद्वानों का प्रशिक्षण शिविर रखा जिसमें सौ से अधिक विद्वान आए। उस समय पूज्य माताजी ने विद्वानों को प्रशिक्षण देने के लिए 'प्रवचन निर्देशिका' नाम से एक पुस्तक तैयार की। जिसमें माताजी ने अथक परिश्रम किया। इस पुस्तक में 50-60 पुस्तकों के उद्धरणों का संकलन करके माताजी ने इसे तैयार किया, जिसे पढ़कर कोई भी विद्वान दूसरों को अच्छी तरह प्रशिक्षित कर सकता है।

उस समय पूज्य माताजी ने उस पुस्तक के माध्यम से सभी विद्वानों को प्रशिक्षित किया। सभी विद्वान पूज्य माताजी की प्रशिक्षण शैली से बहुत प्रभावित हुए। उसकी सुगंधि पूरे भारत में फैली थी। आज तो जगह-जगह शिक्षण शिविर लगाए जा रहे हैं जिसमें बालक, बालिका, महिलाएँ, प्रौढ़ वर्ग सभी भाग ले रहे हैं। शिक्षण शिविर के माध्यम से सभी को ज्ञान प्राप्त करने में खूब आनन्द आ रहा है। पूज्य माताजी ने शिक्षण शिविर के माध्यम से जैनेतर बच्चों को भी जैनधर्म से एवं उनके सिद्धान्तों से परिचित करवाया है। जैनधर्म अहिंसामयी धर्म है, सार्वभौम धर्म है। वर्तमान में जैनधर्म का खूब प्रचार हुआ है। यह सब पूज्य माताजी की कृपाप्रसाद का फल है।

ऐसी पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। माताजी की इस स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर हमें भी अपनी विनयांजलि समर्पित करने का अवसर प्राप्त हो रहा है, यह हमारे लिए बड़े ही सौभाग्य और हर्ष का विषय है। माताजी के चरणों में नमन करते हुए हम अपने पूरे परिवार की ओर से विनयांजलि समर्पित करते हुए माताजी के दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

—अजय जैन एवं सौ. साधना जैन, मेरठ

भजन

तर्ज-फूल तुम्हें भेजा है खत में.............

माँ तुम्हें माना है मैंने, इच्छा मेरी पूरी करना,
अंत समय तुम नाम जपूँ में, हृदय बसे तेरे चरणा,
माँ तुम्हें माना है मैंने.............
पाप तो मैंने बहुत किए हैं, मैं संसारी प्राणी हूँ,
तुम दीपक हो, मैं हूँ पतंगा, तुम पर मैं बलिहारी हूँ।
जब से मैंने तुमको देखा, तृप्त हुए मेरे नयना,
अंत समय तुम नाम जपूँ मैं, हृदय बसे तेरे चरणा।
माँ तुम्हें माना है मैंने.............
अंतिम इच्छा पूरी करना, मैं तेरा गुणगान करूँ,
णमोकार का मंत्र जपूँ, और जपते जपते देह तजूँ।
इतनी शक्ति दे दो मुझको, मैं आया तेरे शरणा,
अंत समय तुम नाम जपूँ मैं, हृदय बसे तेरे चरणा।
माँ तुम्हें माना है मैंने.............

—हृदय कुमार जैन, आगरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की संप्रेरिका

वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल दोष के कारण 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियाँ हो गई हैं। ऋषभ, अजित, अभिनंदन, सुमति और अनंतनाथ ये पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या है। संभवनाथ भगवान की श्रावस्ती, पद्मप्रभु भगवान की कौशाम्बी, सुपार्श्वनाथ भगवान की भदैनी (वाराणसी) चन्द्रप्रभ की चन्द्रपुरी, पुष्पदंत भगवान की काकन्दी, शीतलनाथ की भद्दिलपुर, श्रेयांसनाथ की सारनाथ (सिंहपुरी) वासुपूज्यनाथ की चम्पापुर, विमलनाथ की कांम्पिल जी, धर्मनाथ की रौनाही (रत्नपुरी) शांतिनाथ, कुंथु और अरहनाथ की हस्तिनापुरी, मल्लिनाथ की मिथिलापुरी, मुनिसुव्रतनाथ की राजगृही, नमिनाथ की मिथिलापुरी, नेमिनाथ की शौरीपुर, पार्श्वनाथ की वाराणसी, महावीर स्वामी की कुण्डलपुर।

इनमें से माताजी ने अयोध्या, हस्तिनापुर, कुण्डलपुर, सारनाथ का विकास कराया है। काकन्दी का विकास कार्य चल रहा है। कौशाम्बी, चन्द्रपुरी, भद्दिलपुर, मिथिलापुरी इन्हें अभी विकसित करना है।

पूज्य माताजी ने 'तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समिति' बनाई है, जिसके माध्यम से धीरे-धीरे इनका भी विकास होगा। पूज्य माताजी की अन्तरंग में यही भावना रहती है कि हम नए-नए तीरथ न बनाकर जो भगवन्तों की जन्मभूमि हैं, पंचकल्याणक भूमि है, उनका विकास करें, वहाँ पर अधिक से अधिक आयोजन करें।

हम अपनी प्राचीन संस्कृति की जितनी रक्षा-सुरक्षा कर सकें, उतना हमारे लिए कम है और फिर तीन लोक के नाथ तीर्थंकर भगवान, अगर हम उनकी जन्मभूमि को विकसित करने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे, तो हमें जितना पुण्य एक सामान्य स्थान पर मंदिर निर्माण से होगा, उसका सौ गुणा पुण्य भगवान की जन्मभूमि के विकास से प्राप्त होगा।

ऐसी भगवन्तों की जन्मभूमि के विकास की सम्प्रेरिका पूज्य गणिनी माताजी के आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। हम सभी उनकी स्वर्णिम दीक्षा जयन्ती बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाने जा रहे हैं। इस अवसर पर गौरव ग्रंथ के लिए अपनी विनयांजलि हम पूज्य माताजी के प्रति समर्पित करते हैं और उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

-कलीराम जैन एवं सौ. सुलोचना जैन, मॉडल टाउन-दिल्ली

विनयांजलि

मैं पूज्यनीय गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में उनकी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर अपनी विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

पूज्यनीय माताजी ने तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास हेतु बहुत प्रेरणा दी है, जो कि एक बहुत सराहनीय कार्य है। आपने संस्कृति संरक्षण के क्षेत्र में भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना तथा अन्य तीर्थंकरों की जन्मभूमि के विकास की प्रेरणा प्रदान की, जो कि इस दिशा में एक अभूतपूर्व कार्य है।

कुछ समय पूर्व तक अधिकतर इतिहासकार एक बात पर अडिग थे कि जैनधर्म के संस्थापक भगवान महावीर हैं, जबकि इस बात के स्पष्ट उल्लेख हैं कि भगवान महावीर के पहले 23 तीर्थंकर हुए हैं। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव हैं। भगवान ऋषभदेव का जन्मस्थान अयोध्या है। पूज्य माताजी ने भगवान ऋषभदेव के जन्मस्थान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयोध्या तथा भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली प्रयाग-इलाहाबाद का विकास करवाया। मांगीतुंगी में 108 फुट ऊँची आदिनाथ की मूर्ति के निर्माण का कार्य तीव्रगति से चल रहा है, जो कि विश्व में अत्यन्त अलौकिक कार्य होगा। वर्तमान में भगवान पुष्पदंतनाथ, जो कि 9वें तीर्थंकर हैं, उनकी जन्मभूमि काकन्दी (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) के विकास का कार्य चल रहा है।

माताजी ने दीक्षित जीवन के इन 50 वर्षों में अपनी लेखनी से 200 से भी अधिक महान ग्रंथों, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक कृतियों तथा विधानों की रचना की है। इन विधानों में से इन्द्रध्वज, तीस चौबीसी, कल्पद्रुम, सिद्धचक्र, पंच परमेष्ठी आदि प्रमुख विधान हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन विधानों की भाषा बहुत रुचिकर है तथा आम आदमी आसानी से समझ सकता है। माताजी ने एक हिन्दी-अंग्रेजी का शब्दकोश बनाने की प्रेरणा दी, जिसके कारण शब्दकोश का अभूतपूर्व कार्य सम्पन्न हो गया।

आपने 3 रथों का प्रवर्तन करके जैनधर्म की देशव्यापी प्रभावना का एक अनूठा कार्य किया, जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ तथा तृतीय भगवान महावीर ज्योति रथ का प्रवर्तन क्रमशः 4 जून 1982, अप्रैल 1998 तथा 11 फरवरी 2003 को किया गया। समस्त रथों के भारत भ्रमण से जैन धर्म की प्रभावना चारों ओर बहुत फैली है। पूज्य माताजी द्वारा किये गये कार्यों का वर्णन करना असंभव है। ऐसी सुन्दर व्यक्तित्व की धनी पूज्य माताजी के चरणों में मैं अपनी विनयांजलि प्रस्तुत करता है।

-सुरेन्द्र कुमार जैन, सुल्तानपुर

विनयांजलि

धन्य धन्य ते अयोध्या नगर,
जन्मले इथे चार जीन वर,
बनले पावन टिकैत नगर,
जन्मदेवाय मैना कन्येला।
होऊनी ज्ञान मती पंचमकाल उधारीला।।१।।

धन्य ते पिता छोटेलाल,
नी माता मोहिनी गोत्र गोयल,
२२ अक्टोबर १९३४ ला,
लाभली कन्या भारत मानेला।
होऊनी ज्ञान मती पंचमकाल उधारीला।।२।।

तारुथानच भाव प्रकटले वैराग्याये,
शिष्यत्व घेतले आ-देशभूषण महाराजांचे,
वृत स्विकारले आजन्म ब्रह्मचार्याचे,
१८ या वर्षीय त्यागले गृह नी नात्याला।
होऊनी ज्ञान मती पंचमकाल उधारीला।।३।।

१८ या वर्षीय झाली क्षुल्लिका,
देशभूषण देत्ती नांव वरीमती कन्यका,
तीन च वर्षे धारीली हि पदवीका,
आचरीले घोर कृतेनी तपाचरणाता,
होऊनी ज्ञान मती पंचमकाल उधारीला।।४।।

होनाच आज्ञा आचार्य शांतिसागरांची,
देती आचार्य वीरसागर दिक्षा आर्यीकेची,
वीशीनय बनती आर्यीका ज्ञानमती नांवाची,
केली सुखपाल जैन धर्म प्रसाराजा,
होऊनी ज्ञान मती पंचमकाल उधारीला।।५।।

तिहले २०० ग्रंथ रचनेला,
पोहचल्या डि.लिट्. पदवीला,
निर्मीले अगनीन तिर्शला,
चालवीले शिष्य परंपरेला,
होऊनी ज्ञान मती पंचमकाल उधारीला।।६।।

-सुभाष भूपाल वर्डे, बारेगाँव (सांगली) महा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में शत-शत नमन। पूज्य माताजी ने अपने इस तपस्वी स्वर्णमयी जीवन में हिन्दी, संस्कृत, मराठी, कन्नड़ भाषाओं में 200 से भी अधिक महान ग्रंथों का सृजन करके साहित्य जगत पर बहुत बड़ा उपकार किया है। यह सभी ग्रंथ आज की नव पीढ़ी के लिए महान संस्कारों को पोषित करने में बहुउपयोगी हैं। पूज्य माताजी की प्रेरणा से हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना अपने आप में अलौकिक है। इसी के साथ भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ प्रयाग-इलाहाबाद, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में नवनिर्मित 'नंद्यावर्त महल' तीर्थ आदि अनेकों तीर्थों का निर्माण आपकी प्रेरणा से हुआ है, जिसकी कोई मिसाल नहीं है। पूज्य माताजी ने सचमुच समाज में नई जागृति पैदा की। ऐसी पूज्य माताजी दीर्घायु हों और उनकी छत्रछाया सदैव हम पर बनी रहे। उनकी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर उनके श्रीचरणों में यही विनयांजलि अर्पित करते हैं।

-घुरालाल सोमचंद्र शाह, मुम्बई

विनयांजलि

आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने अवध की भूमि जनपद बाराबंकी के टिकैतनगर में आश्विन शुक्ला 15, शरदपूर्णिमा को रात्रि के प्रथम प्रहर में माता मोहिनी और पिता छोटेलाल जी की प्रथम संतान कु. मैना के रूप में जन्म लिया। इनका अवतरण भारतवर्ष ही नहीं जगत् की अप्रतिम जैन साध्वी विदुषी, धैर्य, साहस एवं शांति की प्रशान्त दार्शनिक चिन्तन की उद्रक हैं। प्रतिक्षण उनका जीवन भारतीय आदर्शों, मूल्यों, जन-जीवन एवं संस्कृति से आप्लावित हो रहा है। ज्ञानमती माताजी की शिक्षाओं में रहस्य है, व्यवहार की विद्या है, ज्ञान का सूक्ष्म परिदर्शन है। सहनशीलता, त्याग और सतत आराधना का अवलोकन उनके व्यक्तिव में निरन्तर परिलक्षित होता है।

नारी सृजन का मूलाधार है। चाहे वह सृजन सृष्टि का हो अथवा किसी समाज का, चाहे परिवार का हो या प्राणियों का, चाहे निराशा से उन्मूलन का हो या आशा के संचार का, चाहे ज्ञान एवं साधना की सुरभि से आप्लावन का हो अथवा अधर्म का मूलोच्छेदन कर धर्म के आचरण एवं समर्पण का, सर्वत्र ज्ञानमती माताजी की दृष्टि तेजस्विता एवं दया से परिपूर्ण है।

स्नेहमयी माता, ज्ञान की प्रतिमूर्ति, सम्यक् चारित्र की और सम्यक् ज्ञान की पुंज हैं। जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी के पश्चात् गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने संस्कृत, हिन्दी, मराठी, कन्नड़ भाषाओं में चारों ही अनुयोगों से संबंधित 200 से अधिक साहित्यिक एवं आध्यात्मिक कृतियों का प्रणयन कर आधुनिक युग में नये— अभिनव इतिहास का विनिर्माण किया है। उनके द्वारा प्रणीत ग्रंथों में अष्टसहस्री, नियमसार, समयसार, षट्खण्डागम आदि पर हिन्दी संस्कृत भाष्य तथा त्रिलोक भास्कर, कातंत्र रूपमाला, मुनिचर्या, प्रवचन निर्देशिका, ज्ञानामृत, आराधना और जैन भूगोल आदि उल्लेखनीय एवं सराहनीय कृतियाँ हैं। यही नहीं इन्द्रध्वज, तीस चौबीसी, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीन लोक, विश्व शांति महावीर विधान, नंदीश्वर विधान, गणधरवलय, चौंसठ ऋद्धि, सिद्धचक्र, कर्मदहन, पंचपरमेष्ठी, शांति विधान और जम्बूद्वीप आदि अनेक मण्डल विधानों का लेखन, इतिहास-संस्कृति जगत में बाहुबली, संस्कार, रोहिणी नाटक आदि कृतियों का सूत्रपात निश्चयत: जैन चिन्तन में सर्वदा दिशादायक होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सांस्कृतिक स्थानों के परिवर्द्धन की शृँखला में परमपूज्यनीया माताजी की प्रेरणा से भगवान शांति-कुंथु-अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप का निर्माण, आदितीर्थंकर भगवान ऋषभदेव एवं अन्य चार तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या का विकास, भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली प्रयाग में ऋषभदेव तीर्थ का नूतन निर्माण, चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में 'नंद्यावर्त महल' का निर्माण, भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि राजगृही, महावीर स्वामी की निर्वाणभूमि पावापुरी, गणधर गौतम स्वामी की निर्वाणभूमि गुणावां जी, शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर, भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान भूमि अच्हिछत्र, सिद्धवरकूट, सनावद, टिकैतनगर, मांगीतुंगी आदि अनेक स्थानों पर किया गया निर्माण आकर्षण का केन्द्र हैं।

परमपूज्यनीया माताजी की प्रेरणा से जैनधर्म का देशव्यापी प्रचार हो रहा है, जिसमें जैनागम में वर्णित भूगोल एवं खगोल के विषय के अध्ययन-अनुसंधान की प्रक्रिया को गतिशील बनाया। प्रथम ज्ञानज्योति रथ प्रसार का शुभारंभ तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के करकमलों से हुआ। द्वितीय रथ का शुभारंभ तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और तृतीय रथ तत्कालीन महामहिम राज्यपाल डॉ. विनोदचंद्र पाण्डे द्वारा 11 फरवरी 2003 को हुआ। वर्ष 1995 में हमारे विश्वविद्यालय ने आपको डी.लिट्. की मानद् उपाधि प्रदान कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया। आप द्वारा ही विश्वविद्यालय में ऋषभदेव जैन शोध पीठ की स्थापना उ.प्र. सरकार द्वारा की गई। हमारे सम्माननीय कुलपति डॉ. एस.बी. सिंह ने आपका व्याख्यान भी कराकर सराहनीय कार्य किया।

आप जैसी महिमामयी श्री ज्ञानमती माताजी को शत-शत वंदन है।

-प्रो. विजय कुमार पाण्डे, फैजाबाद

विनयांजलि

आज के युग में ईश्वर के जीते जागते प्रतिरूप हैं तो वे केवल सन्त हैं, उनकी परम्परा को जीवित रखने वाले, गिरती हुई मानवता को नई प्रेरणा व नई दिशा का निर्धारण करने वाले, आज की नई पीढ़ी में धार्मिक आस्था को जागरूक रखने वाले सन्तों की परम्परा में ज्ञानमती माताजी का नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

आपकी सृजनात्मक कृतियाँ पाँचवें काल में चतुर्थकाल की अनुभूति प्रदान करती हैं। धार्मिक साहित्य में आपका योगदान भारत की अमूल्य धरोहर है।

मुझे सपरिवार माताजी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुछ काल के लिए ही इनका सानिध्य प्राप्त कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। आपके 50वें दीक्षा समारोह के शुभ अवसर पर मेरी सादर विनयांजलि व शुभकामनाएं।

-नरेन्द्र मोहन कासलीवाल, जयपुर (राज.)

स्वर्ग जैसा सुन्दर होता है सत्संग

साधु-सन्तों, आर्यिकाओं की सुसंगति में रहना, स्वर्ग में निवास करने के समान है, कितना बड़ा सच है यह!

परमपूज्या, बाल ब्रह्मचारिणी, परमविदुषी, रत्नत्रयपूर्ण मूर्ति, सिद्धान्तरत्न गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि 105 श्री ज्ञानमती माताजी के असीम ज्ञानोपलब्धि का मूलभूत बीज 'कातंत्र व्याकरण' है। सुखद आश्चर्य है कि पूज्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी ने इस व्याकरण को मात्र दो मास की अति अल्पावधि में हृदयंगम कर सचमुच सभी को विस्मित कर दिया। यही व्याकरण वह आधार-मित्ति है, जिसके अध्ययन-बल पर अष्टसहस्री जैसे क्लिष्टतम ग्रंथ का भाषानुवाद माताजी द्वारा संभव हो सका।

पूज्या माताजी का ज्ञानमती नाम सार्थक महत्व रखता है। उनकी कुशल एवं समर्थवान लेखनी से षट्खण्डागम, समयसार, मूलाचार और नियमसार की हिन्दी-संस्कृत टीकाएँ हमारी धरोहर बनी हैं। साथ ही ये ग्रंथ निश्चय ही उनके त्याग और संयम धारण- वृत्ति के श्रेष्ठतम परिचायक हैं।

पूज्या ज्ञानमती माताजी एक ऐसी अनुपम, अनुकरणीय, ज्ञानगुणसम्पन्न, प्रतिभावान विशिष्ट व्यक्तित्व की धनी हैं, जिन्होंने सदैव ही जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में उनका अधिकाधिक सदुपयोग किया है। वस्तुतः त्रिलोक भास्कर, मुनिचर्या, ज्ञानामृत, आराधना और जैन भूगोल जैसे महान एवं क्लिष्ट ग्रंथों की रचना उनकी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी शक्ति के अन्यतम प्रमाणरूप है।

महान आश्चर्य है पूज्य माताजी की निष्णात लेखनी ने हमें सर्वतोभद्र, कल्पद्रुम, इन्द्रध्वज, तीस चौबीसी, सिद्धचक्र, विश्वशांति महावीर जैसे प्रमुख और दीर्घ विधान रचकर हमारा बड़ा ही कल्याण किया है। ये सभी विधान हमारे मनोरथों की सिद्धि में सचमुच सहायक बने हैं। पूजा-विधानों की सम्यक् रचना-धर्मिता के क्षेत्र में हम इस युग को 'ज्ञानमती युग' की संज्ञा दें, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

वस्तुतः नित्य-नूतन-नवीन भावनाओं की उत्प्रेरिका एवं सृजनशील जननी पूज्या ज्ञानमती माताजी के इस आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव की पुण्य बेला पर उनके पावन चरण कमलों में सविनय अर्घ्य समर्पित कर यही मंगलकामना करता हूँ कि वे चिरकाल तक इस रत्नगर्भा वसुन्धरा को इसी प्रकार सुशोभित करती रहें।

और अंत में बीसवीं सदी की 'ब्राह्मी माता' 105 आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के संबंध में गुम्फित सरस कवि के निम्न उद्‌गारों का उल्लेख कर विराम लेता हूँ—

जो बतलाते नारी जीवन, लगता मधुरस की लाली है।
वह त्याग-तपस्या क्या जाने, कोमल फूलों की डाली है।।
जो कहते योगों में नारी, नर के समान कब होती है।
ऐसे लोगों को 'ज्ञानमती' का, जीवन एक चुनौती है।।

-डॉ. हेमचंद जैन, दिल्ली

विनयांजलि

परमहर्ष का विषय है कि जैनसमाज की सर्वोच्च साध्वी, अवध की अनमोल मणि, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, तीर्थोद्धारिका, गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती मनाने का सुयोग हम सभी को प्राप्त होने जा रहा है। इस पावन अवसर पर उनकी गौरव गाथाओं का संकलन करके एक 'गौरव ग्रंथ' का प्रकाशन भी हो रहा है, यह और भी अधिक प्रसन्नता की बात है।

हम अवधवासी बहुत ही सौभाग्यशाली हैं कि पूज्य माताजी का जन्म अवध प्रांत के ही टिकैतनगर कस्बे में हुआ। मैं स्वयं को और भी अधिक सौभाग्यशाली मानता हूँ कि कुलगुरु के रूप में हमें ऐसी महान साध्वी मिली हैं कि जिनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक आदर्श के रूप में केवल भारतवर्ष में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में जाना जाता है। पूज्य माताजी ने एक ओर जहाँ लगभग दो सौ ग्रंथों की रचना करके समाज के सभी वर्ग के लोगों के लिए एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिशाबोध दिशा है, वहीं समाज से विस्मृत हो रहे अनेक तीर्थों का उद्धार कराकर समाज की दृष्टि उस ओर मोड़ दी है। पूज्य माताजी के इन उपकारों के लिए जैन समाज सदैव ऋणी रहेगा।

मैं भगवान श्री जिनेन्द्रप्रभु से यही कामना करता हूँ कि दीर्घकाल तक हमें आपका सानिध्य मिलता रहे और आपकी त्याग, तपस्या, साधना और सद्उपदेशों से आज के दिशाहीन लोगों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्राप्त होती रहे।

आपके पावन श्रीचरणों में मेरा शत-शत वंदन।

-विजय कुमार जैन (पत्रकार), तहसील फतेहपुर

विनयांजलि

श्री ज्ञानमती माताजी जैन समाज की, इस सदी की प्रथम महिला साध्वी हैं, जिन्होंने स्वस्थ रहते हुए अपने तपस्वी जीवन के 50 वर्ष पूरे किये हैं। उनके सानिध्य में जैन समाज के अनेकानेक सफल आयोजन हुए हैं। माताजी के उपदेशों से जनकल्याण सम्पन्न हुआ है। सहस्र मील पैदल चलकर इन्होंने अपनी तपस्या तथा लगन की सम्पूर्ण समाज पर एक अलग छाप छोड़ी है। 'लखनऊ किंग समाचार पत्र' परिवार उनकी दीर्घायु की कामना करता है।

-के.सी. जैन, लखनऊ

(सम्पादक-लखनऊ किंग)

विनयांजलि

माताजी का जन्म शरदपूर्णिमा के दिन 22 अक्टूबर सन् 1934 को अग्रवाल जातीय में उत्तरप्रदेश के जिला बाराबंकी ग्राम टिकैतनगर में हुआ। माताजी का जन्म नाम मैना देवी था, पिताजी श्री छोटेलाल जी व माता श्री मोहिनी देवी थे। आपके 4 भाई तथा स्वयं सहित 9 बहनें थीं, जिसमें माताजी का स्थान प्राथम है। परिवार में अधिकांश मोक्षमार्ग पर लगे हैं।

आपका नाम सब लोग जानते है कि ज्ञानमती जी कौन? हस्तिनापुर वाली! आपके वैराग्य का कारण पद्मनंदिपंचविंशतिका ग्रंथ का स्वाध्याय करने से हुआ। माताजी में अनतानंत ज्ञान भरा है, वे ज्ञान की खान हैं, ज्ञान के भी कई प्रवाह हैं, इसमें अति ज्ञान भी है, इसलिए आर्यिका दीक्षा देने वाले गुरु 108 आचार्य श्री वीरसागर जी ने सही नाम रखा ज्ञानमती। आपने भी इस संसार को त्याग कर मोक्षमार्ग पर लगी हैं, जन-जन को अपनी मधुरवाणी से उपदेश देकर, नियम दिलाकर सबको कृतज्ञ किया।

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने अपने स्वयं के माध्यम से कई विधानों की रचनाएँ की। कई पुस्तकें व ग्रंथ लिखे। माताजी ने तीर्थों पर और अनेक जगह जाकर अच्छा विकास कराया, जिसमें हस्तिनापुर, अकलूज, सनावद, दिल्ली, मांगीतुंगी, अहिच्छत्र, प्रयाग, कुण्डलपुर (नालंदा), शिर्डी आदि स्थान प्रमुख हैं और मांगीतुंगी में कार्य प्रगतिशील पर चल रहा है। आपका जितना गुणगान करें, कम है।

ज्ञान की धनी, सभी गुणों से सम्पन्न, 28 मूलगुणों को निरतिचार पालन करने वाली पूज्य माताजी का 50 वाँ दीक्षा दिवस समारोह अप्रैल 2006 में हस्तिनापुर में होने जा रहा है। मैं जिनेन्द्रदेव से प्रार्थना करता हूँ कि माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिरकाल तक रहकर हमें ज्ञान की ज्योति देती रहें। इसी भावना से मैं और मेरा परिवार पूज्यनीय गणिनी 105 आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में विनयांजलि, करबद्ध वंदामि करते हैं।

-हुकमीचंद जैन, पॉण्डीचेरी

विनयांजलि

पूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी को किसी भी परिचय की आवश्यकता नहीं है। माताजी का जैन समाज के लिए महान उपकार है। जिन्होंने अपनी लेखनी से समाज के लोगों को वह कुछ दिया, जिससे वह अपना आत्म कल्याण करने में समक्ष बन सकें। वैसे तो माताजी ने जैन समाज को ही नहीं वरन् समस्त भारत को अपनी धार्मिक ओजस्वी वाणी तथा लेखनी से धार्मिक क्षेत्र में जाग्रत किया। माताश्री के पास प्रतिदिन सैकड़ों सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा समान्य व विशिष्ट व्यक्ति आकर अपनी शंकाओं का समाधन करते हैं और अपनी जिज्ञासा को शांत कर अपना जीवन सुखमय तथा शान्तमय बनाते हैं। माताजी की समाधान शैली सादगी, विद्वत्ता व प्रतिभा सम्पन्न होने से सभी पर एक अमिट छाप अंकित कर देती हैं।

आपने किशोरावस्था में ही समस्त सुविधासम्पन्न पितृगृह का त्यागकर आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त कर परमार्थ राह पर बढ़ने हेतु आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। आप वास्तव में तप-त्याग और साहस की महिमामयी मूर्ति हैं। विद्याभ्यास एवं संयम का आचरण कर निरन्तर ज्ञान-ध्यान-तप में लवलीन, गहन अध्ययन कर श्रुत सेवा एवं साहित्य साधना द्वारा जीवन को सर्वमान्य और आदरणीय बनाया।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, जम्बूद्वीप रचना की सम्प्रेरिका, अनेक तीर्थों की प्रणेत्री, अनेकों ग्रंथों की लेखिका पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के जीर्णोद्धार एवं विकास की प्रेरणा प्रदान की। जैनधर्म के सर्वोदयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार, संस्कृति की सुरक्षा, भ्रान्त इतिहास को संशोधित कर सत्य तथ्य बताने की भावना, विश्वशांति की कामना, साम्प्रदायिक सौहार्द एवं व्यसनमुक्ति की भावना, भगवान महावीर के विराट दिव्य व्यक्तित्व से परिचित कराना, उनकी उपेक्षित जन्मभूमि को विकसित करने के उद्देश्य से माताजी के आशीर्वादपूर्वक महावीर ज्योतिरथ का प्रवर्तन किया गया।

तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियाँ, जो कि इन्द्रों द्वारा भी पूज्य हैं तथा जहाँ की पवित्र रज देवता भी अपने मस्तक पर धारण करते हैं, ऐसी महान भूमियों के विकास एवं संरक्षण हेतु आपने प्रेरणा प्रदान की।

माताजी की अनेक योजनाएं और कार्यक्रम धर्म के माध्यम से प्रगतिशील रहते हैं। जैन समाज में धर्म के प्रचार-प्रसार करने हेतु समाज पूज्य ज्ञानमती माताजी का चिर ऋणी रहेगा। विकास एवं निर्माण कार्यों में माताजी का प्रयास अनुकरणीय रहा है। इसके साथ आर्यिका चंदनामती माताजी, पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज, कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन का सहयोग भी नहीं भुलाया जा सकता।

अन्त में शुभकामना के साथ जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की 50वीं स्वर्णिम दीक्षा जयंती पर अपनी हार्दिक भावनाएँ अर्पित करता हूँ।

-आर.के. जैन (वरिष्ठ पत्रकार), यमुनानगर, दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी का सम्बोधन हमेशा मिलता रहे!

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूरे कर रही हैं, यह जानकर बहुत खुशी हुई। आज जितने भी साधु-साध्वी विराजमान हैं, उनमें ज्ञानमती माताजी का दीक्षा में सर्वोच्च स्थान है।

मैंने अपने जीवन में अनेकानेक आचार्य, उपाध्याय, मुनि आर्यिका आदि के दर्शन किए हैं उसी शृँखला में ज्ञानमती माताजी के दर्शन करके मैं बहुत प्रभावित हुई। पिछले लगभग 34 वर्षों से मैं पूज्य माताजी से निकटता से परिचित हूँ। उनके अंदर ज्ञान और चारित्र तो गहराई तक है ही, वात्सल्य, करुणा, स्नेह की भी वे साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। उनका हमारे परिवार पर विशेष वात्सल्य एवं आशीर्वाद रहता है।

उनके पास जाकर ऐसा लगता है कि बस, अब यहाँ से कहीं जाना न पड़े परन्तु गृहस्थ जीवन में फंसे होने के कारण कुछ दिन के बाद घर वापस लौटना पड़ता है।

अभी कुछ समय पूर्व (जनवरी 2005 में) मैंने और मेरी पुत्रवधू उमा जैन ने पूज्य माताजी से सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण किए हैं। वे हमेशा हमें दीक्षा के लिए प्रेरणा प्रदान करती रहती हैं। मेरी प्रबल इच्छा है कि मेरा अंतिम समय पूज्य माताजी की निकटता में ही व्यतीत होवे तथा जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने की मुझे शक्ति प्राप्त हो।

पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर मैं अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित करती हूँ तथा भगवान से यह प्रार्थना करती हूँ कि पूज्य माताजी चिरायु हों ताकि उनके सम्बोधन से हम जैसे अनेकानेक प्राणी सन्मार्ग को प्राप्त करके अपनी आत्मा का कल्याण कर सकें।

-ब्र. कमला जैन, गली गुलियान-दिल्ली

विनयांजलि

संस्कृत सुभाषितकार कहते हैं—

परोपकाराय फलन्ति वृक्षः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।

इस विश्व में वृक्ष परोपकार के लिए ही है, स्वयं कुछ भी न लेते हुए वह सुंदर, मधुर और आरोग्यवर्धक ऐसे फल देते हैं। नदी भी परोपकार के लिए ही होती है, निर्मल और पवित्र जल सबको देते हुए प्रवाहित होती रहती है। गाय भी घास आदि स्वयं खाती है और अमृत के समान दुग्ध सबको बिना किसी अपेक्षा से देती है। इसी प्रकार मुझे प्राप्त हुआ यह शरीर मेरे लिए नहीं है, धर्म के लिए, समाजसेवा के लिए, औरों के कल्याण के लिए इसका उपयोग होना चाहिए, यही भावना मन में रखकर पिछले पचास साल आर्यिका पद पर आसीन होकर परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी कार्य कर रही हैं। ये इस काल में धर्मकार्य करने वाले लोगों के सामने एक आदर्श हैं।

धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्य प्रकाशन, पूजा महोत्सव, धर्म प्रभावना, रथ प्रवर्तन, युवा संगठन, तीर्थक्षेत्रों का निर्माण आदि अनेक कार्यों में उनके द्वारा दिया हुआ योगदान निश्चित रूप से प्रशंसनीय ही है। जैनधर्म की प्रभावना हेतु उन्होंने पूरे भारत वर्ष में तीन बार विविध रथों का प्रवर्तन किया है। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार), भगवान ऋषभदेव तीर्थ-प्रयाग, जंबूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. इन क्षेत्रों का निर्माण करके उसका विकास किया है। ऐसे ही अभी भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी (गोरखपुर-उ.प्र.) इस क्षेत्र का जीर्णोद्धार और विकास करने का कार्य शुरू है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विगत साल 1 अप्रैल 2005 से 3 अप्रैल 2005 तक अयोध्या में आयोजित भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक महोत्सव, विधान और विविध अधिवेशन आदि कार्यक्रम का जो सफल आयोजन हुआ था, उसकी स्मृति आज भी हमारे मनपटल पर यादगार सी बनी है। इसी प्रकार देश के विभिन्न क्षेत्रों में पूज्य माताजी के सानिध्य और आशीर्वाद से अनेक छोटी-बड़ी पूजा-विधान आदि का आयोजन हुआ है।

अनेक कलागुण के आविष्कार से सहित, असाधारण व्यक्तित्व की धनी सर्वोदयी माँ परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री 105 ज्ञानमती माताजी उनके चरणों में इस मंगल अवसर पर शत-शत नमन।

-बी.के. पाटिल, सांगली

(प्रवर्तक-दक्षिण भारत जैन सभा-मध्यवर्ती ग्रंथालय)

आध्यात्मिक आकाश में चमकता एक सितारा

सकल आर्यावर्त में भारत भूमि वह भूमिखण्ड है, जहाँ षट्काल परावर्तन के समय चतुर्थकाल आने पर तीर्थंकर जन्म लेते हैं और संसार चक्र में फंसे हुए प्राणियों को धर्म का मार्ग बताते हैं, धर्मतीर्थ की स्थापना करते हैं।

तीर्थंकर परम्परा के साथ-साथ संत परम्परा भी चलती है और ऐसे करोड़ों-करोड़ों संत उन्हीं तीर्थकरों के काल में संसार परिभ्रमण समाप्त कर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। भगवान आदिनाथ से महावीर पर्यंत 24 तीर्थंकरों का काल व्यतीत होने के बाद भी पंचमकाल के अंत तक संत परम्परा चलती रहेगी।

भगवान महावीर के बाद अनेकानेक संतों की शृंखला में इस युग के प्रथम आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की शिष्या पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, जिन्होंने ग्रंथ रचना में एक ऐसा मुकाम हासिल किया, जिसकी मिशाल भगवान महावीर के बाद तो कभी देखने को नहीं मिली।

ग्रंथ रचना ही क्या, तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मस्थली, जो समय के साथ उपेक्षित हो गईं, उनके जीर्णोद्धार की जो प्रेरणा पूज्य माताजी ने प्रदान की, उससे भक्तों को पुण्यवर्धन एवं समीचीन मार्ग के स्मरण प्रतीकों को स्थापित कर असीम पुण्य प्राप्त करने का सुयोग प्राप्त हुआ।

अध्यात्म के प्रति गहरी मानसिकता, करुणा, वात्सल्य, सम्यग्दर्शन के आठों अंगों की विभिन्न परिस्थितियों की झलक पूज्य माताजी के आचार-विचार में दिखाई देती है, उससे प्रगट होता है कि पूज्य माताजी की दिव्य देह में ऐसी कोई आत्मा अवस्थित है, मानों जिसने साक्षात् तीर्थकरों के सानिध्य को प्राप्त किया है, जिसके प्रयासों से धर्म परम्परा को पंचमकाल के अंत तक चलने में संबल प्राप्त होगा।

पूज्य माताजी के प्रबल प्रयासों से तीर्थों के विकास, ढाई शतक ग्रंथों की रचना से जिनवाणी के स्वरूप का जो अविस्मरणीय आयाम मिला है, उससे पूज्य माताजी के प्रति उनके चरणों में हमारी यही विनम्र भावना एवं विनम्र विनयांजलि है कि—

चंदा सूरज और सितारे, अमर सदा धरती पर,
कीर्ति अखंडित रहे आपकी, इसी भांति पृथ्वी पर।
जो सानिध्य मिला है माता, छूट नहीं यह जावे,
ऐसा करो उपाय कि चेला, मोक्ष परम पद पावे।।

पूज्य माताजी के चरण कमलों में कोटि-कोटि विनम्र विनयांजलि।

-किरनचंद जैन, दरियाबाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं एवं दिनाँक 14 से 16 अप्रैल 2006 तक गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव मना रहे हैं।

पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री 105 ज्ञानमती माताजी समाज की उन आर्यिकाओं में एक हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन त्याग के साथ समाज को समर्पित कर दिया। हस्तिनापुर में जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए त्रिलोक शोध संस्थान एवं जंबूद्वीप की स्थापना अपने क्षेत्र में अद्वितीय है। माताजी ने थोड़े समय में ही भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में बहुत नए रूप से जीर्णोद्धार एवं प्रयाग में तीर्थक्षेत्र बना दिया।

माताजी के लिखे हुए अनेक विधान एवं शास्त्र विद्यमान हैं। आज लाखों लोग पूज्य माताजी के दर्शन कर अपने को धन्य समझते हैं। मुझे अनेक बार पूज्य माताजी के दर्शन का सुअवसर मिला परन्तु माताजी के दिल्ली आने पर भगवान ऋषभदेव के निर्वाण महोत्सव के समय से मैं लगातार माताजी के साथ जुड़ा हुआ हूँ एवं आशीर्वाद प्राप्त कर रहा हूँ।

माताजी हर समय हर किसी के लिए ज्ञान की धारा निर्बाध रूप से बहाती हैं। उनके तो दर्शन मात्र से ही अद्भुत शांति मिलती है। मैं बहुमुखी प्रतिभाधारिणी माँ के व्यक्तित्व को शब्दों में बांधना स्वयं का अल्पज्ञान ही मानता हूँ, पर भक्तिवश अटपटे शब्दों में इतना ही मनोभाव प्रस्तुत करता हूँ कि वे शतायु हों एवं चरणों में नमोस्तु सहित अपनी विनम्र विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

-नानकचंद जैन, अशोक विहार-दिल्ली

(अध्यक्ष-श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, अशोक विहार)

विनयांजलि

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा की अर्द्ध शताब्दी की परिपूर्णता पर आपने एक गौरव ग्रंथ के रूप में उनके आध्यात्मिक आलोक से समाज को दिव्य-आभा प्रदान करने का उपक्रम किया है, यह बहुत ही स्तुत्य है।

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी आध्यात्मिक पथ की राही हैं, उन्होंने स्वयं को भव-भव के भ्रमण से मुक्त करने के लिए साधना से तपाया है। त्याग, तपस्या और ज्ञान की अग्नि में तपकर वे कुन्दन बन गई हैं। इसकी आभा से न केवल वे स्वयं दीप्त हैं अपितु विशाल श्रमण समुदाय को भी उन्होंने तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित सम्यक्दर्शन, ज्ञान और चारित्र की ओर प्रेरित कर मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर किया है। वे जिनवाणी की उद्घोषिका हैं। उस आध्यात्मिक आलोक का प्रसार पूज्य माताजी द्वारा रचित अनेक ग्रंथ-रश्मियों के रूप में हुआ है। जैनधर्म और संस्कृति के संरक्षण-संवर्द्धन में माताजी की महत्वपूर्ण भूमिका है।

पत्रकारिता और सामाजिक क्षेत्र में पचास वर्ष से अधिक समय तक सक्रिय रूप से रहने के कारण मुझे पूज्य माताजी के निकट बैठने, उनसे परिचर्चा करने व मार्गदर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य कई दशक तक मिला है। मैंने उनके अन्तर में सदैव धर्म व समाज के लिए गहरी अनुभूति की झलक पाई है। समाज उनके अवदान से उपकृत है। गौरव ग्रंथ का प्रकाशन तो उनके प्रति अन्यथा आभार है, उनकी अनुकम्पा के लिए तो समाज सदा ऋणी रहेगा। मेरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलकामना है कि पूज्य माताजी का यह मार्गदर्शन समाज को सुदीर्घकाल तक प्राप्त होता रहे।

पूज्य माताजी के चरणों में मेरा विनम्र वंदन।

-पारसदास जैन, नई दिल्ली
(पूर्व सहायक सम्पादक-नवभारत टाइम्स)

विनयांजलि

दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के पावन अवसर पर मेरी मंगल कामना है कि सरसता, सहृदयता, सद्भाव, सहिष्णुता, अध्यात्म जगत के अप्रतिम ज्योतिपुंज, सत्य, अहिंसा की तपोमूर्ति, अमल-विमलतम हंस शाश्वत आलोक के परम पूजक, सर्वभूतहितेरत पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का दिव्य कर्म एवं आदर्श जीवन सम्पूर्ण जगत के लिए प्रेरणा का महान स्रोत बने।

-सुनीलचंद सुचंती, नालंदा
(संयुक्त मंत्री-श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ पावापुरी)

दृढ़ संकल्प की मूर्ति-आर्यिका ज्ञानमती माताजी

'रहे अडोल अकंप निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जावे की प्रतिमूर्ति हैं परमपूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी। धार्मिक परिवार में जन्मीं, धार्मिक संस्कारों से सुसंस्कारित पूज्य माताजी का जीवन बालपन से ही दृढ़ता का परिचायक रहा है। माता-पिता द्वारा वैवाहिक जीवन में प्रवेश कराने का प्रयास करने के पूर्व ही पूज्य माताजी ने कन्या अवस्था में ही मन में यह संकल्प कर लिया था कि वैवाहिक जीवन पथ को कदापि स्वीकार न करके आध्यात्मिक जीवन पथ पर अपने कदम बढ़ाना है। सभी के भरसक प्रयन्तों के बावजूद भी वह अपने संकल्प पर दृढ़ रहीं और आयु के 17/18 वर्ष की अवस्था में ही पूज्य माताजी ने गृहत्याग कर दिया और सर्वप्रथम क्षुल्लिका दीक्षा के व्रत ग्रहण किये। इसके पूर्व से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर लिया था। क्षुल्लिका दीक्षा व्रत भारतरत्न स्व. आचार्य देशभूषण जी महाराज से लिया। 3 वर्ष बाद ही चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टाधीश आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा को सहर्ष स्वीकार किया।

दीक्षाकाल में शरीर से ममत्वरहित हो कठोर चारित्र का पालन करते हुए आगम ग्रंथों के स्वाध्याय और मनन-चिंतन में ध्यान लगाया। फलस्वरूप आगम ज्ञान के गहन चिंतन व अभ्यास में वह संघ में विशेष गौरव एवं मार्गदर्शक के रूप में उभरीं व सभी के लिए वह समाधान का स्तोत्र बनीं।

एक प्रसंग मुझे याद आ रहा है कि मुझे एक बार उनके साथ पद विहार में चलने का सुअवसर मिला था। विद्यार्थी अवस्था होने से एवं जिज्ञासा से युक्त होने से पूज्य माताजी के साथ चलने में बड़ा ही आनंद आ रहा था। अनेकों धार्मिक चर्चा एवं समाधान का यह क्रम इस पद विहार में पाया। पंचामृत अभिषेक की चर्चा एवं समाधान से परम संतोष हो आया था। इस प्रथम दर्शन से मैं माताजी के प्रति आकर्षित होता गया। उनका पावन सानिध्य व चरण सानिध्य इसके बाद बराबर मिलता रहा। फलस्वरूप मैं पूज्य माताजी के संघ का एक अभिन्न अंग बन गया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप के लिए हस्तिनापुर में जमीन खरीदने के पूर्व से लेकर निर्माण तक एवं प्रतिष्ठा के बाद तक मेरा संबंध इस क्षेत्र से और पूज्य माताजी से बना रहा है। मुझे इस बात का हर्ष व गौरव है कि मेरे यौवनकाल के महत्वपूर्ण क्षण मुझे पूज्य माताजी के चरणों में एवं जंबूद्वीप के स्थापना व विकास में समर्पित करने का सुअवसर मिला है। पूज्य माताजी के साहित्य का प्रचार-प्रसार करने में मुझे अपना सहयोग देने का भी गौरव प्राप्त रहा है।

मतभिन्नता होते हुए भी पूज्य माताजी का जो आशीर्वाद व वात्सल्य मेरे व परिवार के प्रति बना हुआ है, उससे उनके उदार हृदय की झलक स्पष्ट दिखाई देती है और उनके प्रति मन में सदैव पूज्य व आदर बना रहता है।

मेरी पत्नी सौ. शैलबाला (सह सम्पादिका-जैन महिलादर्श) का स्वास्थ्य खराब होने के समाचार सुनने पर पूज्य माताजी ने अपना मंगल आशीर्वाद भेजा था।

आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव पर पूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में हम सभी परिवार का शत-शत नमोस्तु! वंदामि!!!

-भरत कुमार जैन काला, मुम्बई

विनयांजलि

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में शत-शत वंदन।

हर क्षण व्यतीत होने पर एक इतिहास का सृजन होता है और उसके साथ घटित घटनाएं इतिहास का रूप लेती रहती हैं। उसमें कुछ घटनाएं अविस्मरणीय हो जाती हैं। चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों का अवतरण भूतकाल की घटनाएं हैं, जिन्होंने हमको मोक्षमार्ग की राह दिखाई, जिसमें प्रत्येक जीव आत्मा अपने को परमात्मा के रूप में परिवर्तित कर सकती है। संक्षेप में रत्नत्रय साधना एवं उसकी श्रीवृद्धि साक्षात् में मोक्षमार्ग द्वारा मोक्ष प्राप्ति का साधन है।

प्रत्येक वस्तु,राह उपलब्ध है परन्तु बिना सद्गुरु के हमारे लिए अप्राप्य होती है। गुरु के मार्गदर्शन से ही हम सही राह पर चलकर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी हमारे समक्ष मोक्षमार्ग पर चलते हुए उदाहरण प्रस्तुत कर प्रेरित करती हैं कि उस मार्ग का हम सब मन, वचन और काय के द्वारा अनुसरण कर जीवन सफल बनावें।

पूज्य माताजी ने अल्पवय में सन्यास लेकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि मोक्षमार्ग पर चलने के लिए आयु का कोई बंधन नहीं है। पूज्य आर्यिका चंदनामती माताजी ने भी उदाहरण प्रस्तुत कर सभी श्रावकगण को प्रेरित किया है। इस युग के प्रथम आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में उसको आगे बढ़ाते हुए आचार्य वीरसागर जी महाराज के द्वारा सन् 1956 में आज से पचास वर्ष पूर्व माधोराजपुरा (राज.) में आर्यिका दीक्षा लेकर पूज्य ज्ञानमती माताजी ने समस्त नारी जाति का गौरव बढ़ाया है। आज के समय में वे प्रथम साध्वी हैं जिन्होंने आर्यिका दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण करते हुए जैन आगम एवं धर्म से संबंधित मानव कल्याण एवं मार्ग दर्शन हेतु 200 से अधिक ग्रंथों का सृजन-अनुवाद किया है और उनकी लेखनी अनवरत रूप से सृजन करती चली आ रही है। हम सब सौभाग्यशाली हैं जिनके जीवन काल में ऐसी प्रेरणादायक साध्वी विद्यमान हैं। उनके मार्गदर्शन से हम लाभ उठाकर अपना कल्याण करें। परमपूज्य माताजी हम सबका इसी प्रकार मार्गदर्शन करती रहें, यही हमारी कामना है।

-प्रदीप कुमार जैन एडवो., इलाहाबाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षा के 50 वर्ष पूरे हो रहे हैं, जो कि जैन समाज के लिए बहुत बड़ी उपलब्धी है। वास्तव में यह बहुत ही गौरवशाली अविस्मरणीय समय है, जब भारतवर्ष के समस्त जैन समाज में इतनी लम्बी अवधि किसी अन्य साधु की दीक्षा को हुए हैं। पूज्य माताजी ने अपनी इस दीक्षा अवधि में जो अमूल्य निधि अपने ज्ञान व शोध के द्वारा प्रवचनों व ग्रंथों के रूप में प्रदान की है, वह युगों-युगों तक याद की जाती रहेगी। पूज्य माताजी के चरणों में शत-शत वंदन।

-रोहित कुमार जैन, लखनऊ

(मंत्री-इन्दिरा नगर दिगम्बर जैन सेवा संस्थान)

विनयांजलि

प्रातः स्मरणीय परमपूज्य गणिनीप्रमुख 105 श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर मेरी एवं मेरे परिवार की ओर से शत-शत वंदन। जैन समाज के लिए यह बड़े गर्व की बात है कि भारत वर्ष में वर्तमान सदी में प्रथम बार किसी साधु द्वारा अपनी दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। पूज्य माताजी ने अपने इस दीक्षाकाल में नाना प्रकार के ग्रंथों की रचना, टीका एवं शोधकार्य किया है। पूज्य माताजी के द्वारा अयोध्या, भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ-प्रयाग एवं कुण्डलपुर तीर्थ का विकास करवाया गया, जो कि जैन समाज के लिए एक अद्वितीय देन है। ऐसी पूज्य माताजी के चरणों में मेरा वंदन।

-राकेश जैन, लखनऊ

(उपाध्यक्ष-लखनऊ जैन मिलन)

विनयांजलि

आदरणीय पूज्य माताजी के चरणों में मेरा सादर वंदामि ! मैं पूज्य माताजी के बारे में क्या लिखूँ। उनके बारे में तो कुछ कहना सूरज को दीपक दिखाने के बराबर जैसा होगा। पूज्य माताजी के तपस्या के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, यह हम सभी के लिए गौरव की बात है। मैं इतना जरूर कहूँगा कि पूज्य माताजी ने जो कर दिया अपने इस 50 वर्षों में वह वास्तव में अविस्मरणीय रहेगा। बीच में पूज्य माताजी काफी अस्वस्थ रहीं, लेकिन माताजी ने साधु चर्या नियमित रूप से निभाई, जिसको मैंने अपनी आँखों से देखा। मैं भगवान महावीर से यही प्रार्थना करता हूँ कि पूज्य माताजी को दीर्घायु प्राप्त होवे और उनका आशीर्वाद हम सभी पर सदैव बना रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ-

-सिद्धार्थ जैन, लखनऊ

(मीडिया प्रभारी-जय जिनेन्द्र सेवा समिति)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनयांजलि

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया जा रहा है। माताजी ने इस भव में जो जगत में ख्याति या प्रसिद्धि पाई है, इसके लिए उन्होंने कई भवों से ज्ञानाभ्यास किया होगा, त्याग-तपस्या की होगी, निजपूर्ण पुरुषार्थ से निज वैभवरूपी निधि को प्राप्त किया होगा, उसका उत्तमोत्तम फल आज मिला है।

वर्तमान पर्याय में भी छोटी उम्र से कितना उच्च पुरुषार्थ निरन्तर किया है, जिससे चारों अनुयोगों के ग्रंथों का अध्ययन-मनन किया। उसके द्वारा अनेक ग्रंथों का सम्पादन किया। लेख लिखे एवं न्याय ग्रंथ का अनुवाद हिन्दी में किया, जिसको अष्टसहस्री कहते हैं। दूसरे लोग इसे कष्टसहस्री कहते हैं। उसको भी सरल बना दिया है। हिन्दी के ख्याति प्रसिद्ध विशेषज्ञों को भी सभी छंदों के नाम मालूम नहीं होंगे परन्तु पूर्वभव के स्मरण द्वारा माताजी ने सभी छंदों को इन्द्रध्वज आदि विधानों में सांगोपांग लिख दिया है। यह उनके पूर्वभव के ज्ञान की महिमा है। इससे हिन्दी साहित्य में भी आपने महान ख्याति प्राप्त की है।

आश्विन शुक्ला पक्ष की पूर्णिमा को शरदपूर्णिमा कहते हैं। आपका जन्म इसी पूर्णिमा को हुआ था। शरदपूर्णिमा का दिन एवं रात्रि की चाँदनी विशेष गुणकारी सिद्ध होती है। आयुर्वेदधन्वतरी में लिखा है-शरदपूर्णिमा की चाँदनी रात्रि में आयुर्वेदाचार्य सभी औषधियों को बिखेरकर रख देते हैं। उस रात्रि में उन औषधियों में विशेष भावना जाग्रत हो जाती है, वे ही दवाईयाँ रोगियों के रोग को मुक्त करने में अमृत के समान काम करने लगती है। यही महान विशेषता देखी जाती है। जैसे औषधियों में उस रात्रि में भावना जाग्रत होती है। अमृत के समान औषधियाँ काम करती है, उसी प्रकार माताजी ने उस दिन जन्म लेकर अपनी आत्मा को अमृत के समान बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया है।

आप अपने जीवन को केवलज्ञान लक्ष्य की पूर्ति का साधन बना रही हैं। ऐसा महान विशुद्धि का परिणाम बना रही है, जो अमर पद को प्राप्त करने में महान उपयोगी सिद्ध होगा।

श्री प्रभु से यही प्रार्थना करता हूँ कि एक दिन माताजी भी तीन ज्ञान की प्रतिमूर्ति बनकर अपने जीवन की पूर्ण सार्थकता प्राप्त करें।

माताजी के चरणों में शत-शत बार वंदामि, पूज्य माताजी शतायु हों, उनकी दीक्षा स्वर्ण जयंती पर यही विनयांजलि अर्पित करता हूँ।

-पं. अमृतलाल जैन शास्त्री 'प्रतिष्ठाचार्य', दमोह (म.प्र.)

A Wonderful Personality of the Century

Ganini Pramukh Aryikaratna Shri Gyanmati Mataji is a wonderful personality of 20th and 21st century. Mataji's personality is always in ascending direction. Not only in the Jaina society but also in whole country Mataji is recognized as a knowledgeable scholar in many fields. Mataji has mastery over all the four Anuyogas of Jaina literature, and it is no wonder that Awadh university of Faizabad has conferred honorary D.Litt. Degree on her. Mataji's life and works have become subject matters for doctoral studies in the universities. Mataji's personality is unique, as she is a prolific writer and a great preacher. Mataji's published books are hundreds and speeches are thousands

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

in numbers.

Mataji has widely travelled in all four directions of country and her 'Mangala Vihara' in Karnataka and her visit to Shravanabelagola is always remembered. Mataji is the only Aryika from north India who has learnt Kannada, speaks Kannada and has written in Kannada.

Mataji is a significant person in the present situation where gender discrimination is every where. Mataji has grown above all kinds of discriminations.

My most respectful pranams to Mataji on the occasion of Deeksha Swarna Jayanti celebration of her.

-Shubha Chandra Jain, Mysore

परमपूज्य-चारित्रचन्द्रिकाऽऽर्यिकाशिरोमणीनां गणिनीश्रीज्ञानमती मातुः
स्वर्णजयन्त्यवसरे करकञ्जयोः सादरं समर्पितम्

श्री-ज्ञानमती-पञ्चकम्

।।शिखरिणी-वृत्तम्।।

सुविद्यावागीशा गणधरसमा ज्ञानचतुरा
विधात्री शिष्याणां शुभगुणवतां शास्त्रकुशला,
पुराणानां ज्ञात्री नयपथचरा नीतिनिपुणा
सा कुर्यात्कल्याणं भवभयहरा ज्ञान-गणिनी।।1।।

मुमुक्षुर्ब्रह्मज्ञा सरलहृदया शान्तकरणा
स्वशिष्याणां शास्त्री शुभगुणधरा सिद्धमहिमा,
सुयोगा धर्मज्ञा सरलसरला कर्मकुशला
सा कुर्यात्कल्याणं भवभयहरा ज्ञान-गणिनी।।2।।

अहिंसासत्यादि - शमदमपरा ज्ञानपथिका
स्फुटं मूर्तिर्यस्याः प्रशमितमयी वाति विमला,
प्रविद्या विख्याता सुरगुरुसमा श्वेत-वसना
सा कुर्यात्कल्याणं भवभयहरा ज्ञान-गणिनी।।3।।

यशस्तेजश्शीला सरसिजसमा रागरहिता
यथाभानुर्नित्यं तपति सततं ह्युष्णकिरणः,
तथैवेयं पूज्या तपसि भुवने शुद्धचरणा
सा कुर्यात्कल्याणं भवभयहरा ज्ञान-गणिनी।।4।।

प्रकृत्या सौम्या या हिमकरसमा शान्तिचषका
सुधाविद्धा शिष्टा शुभगुणधना शुद्धकरणा,
महापीठासीना बहुगुणनिधी संस्कृतिपरा
सा कुर्यात्कल्याणं भवभयहरा ज्ञान-गणिनी।।5।।

भावत्कः वशंवदः-
* डॉ. भागचन्द्रो जैनो ''भागेन्दुः''
निदेशकः-सागर विश्वविद्यालयीन
संस्कृत-प्राकृत-जैनविद्या-शोध केन्द्रस्य
दमोहनगरम् (मध्यप्रदेशः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युग-युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं!

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के गौरव ग्रंथ प्रकाशन की बात सुनकर हृदय में अत्यन्त आल्हाद हुआ। इस अवसर पर मुझे सन् 1967 की स्मृत हो आई कि जब उन्होंने हम सभी के निवेदन को स्वीकार करके हमारे सनावद नगर में चातुर्मास सम्पन्न किया था और सभी के हृदय में ज्ञान और चारित्र का बीजारोपण किया था।

इसी क्रम में सन् 1996 में मांगीतुंगी जाते हुए पूज्य माताजी पुनः ससंघ इंदौर पधारीं, उस दौरान उनके सनावद आगमन पर उनके सानिध्य में हमारे सनावद में 'णमोकार धाम' नये तीर्थ का शिलान्यास हुआ।

मैं पूज्य माताजी के समक्ष एक सामाजिक श्रावक मात्र नहीं अपितु संघ के सदस्य की भांति हूँ। यद्यपि अस्वस्थता के कारण संघ में मेरा ज्यादा जाना तो नहीं हो पाता है परन्तु फिर भी पूज्य माताजी एवं सम्पूर्ण संघ के प्रति मेरी पूरी समर्पित श्रद्धाभक्ति है। मैं रोज पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के साथ-साथ पूज्य चन्दनामती माताजी और क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज को नमन करता हूँ।

पूज्य माताजी के स्वर्णिम दीक्षा जयंती महोत्सव के अवसर पर मैं पावागिरि ऊन एवं सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र समिति की ओर से कोटि-कोटि नमन करते हुए विनयांजलि समर्पित करता हूँ तथा भगवान से यह प्रार्थना करता हूँ कि पूज्य माताजी युग-युग तक जीती रहें और हम सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान करती रहें।

-इन्दरचंद जैन चौधरी, सनावद (म.प्र.)
(कार्याध्यक्ष-श्री पावागिरि ऊन सिद्धक्षेत्र)
(महामंत्री-श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र)

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री—आर्यिका चन्दनामती

—स्थापना—

पूजन करो जी-
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं ....
पूजन करो जी,
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

—अष्टक—

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।१।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।२।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।३।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।४।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामवाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।५।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।६।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।७।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्ट-कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।८।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।९।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शेरछंद—

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा . . .।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् . . .।।

जयमाला

—दोहा—

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन—नागिन-मेरा मन डोले . . .।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।।
माता...।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।१।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे, छोड़ी ममता माया।।
माता....।।

गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।२।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने, ज्ञान की ज्योति जलाई।।
माता....।।

शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।३।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।।
माता....।।

ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।४।।

तीर्थ अयोध्या-मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।।
माता.....।।

प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।५।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।।
माता...।।

महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।६।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।।
माता......।।

संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।७।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।
माता....।।

साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।८।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की, सरिता मुझमें भर दे।।
माता.....।।

ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।९।।

—दोहा—

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमती मात।।१०।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शंभुछंद—

जो गणिनी ज्ञानमती माता की,
करें सदा पूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को,
पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की,
ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह,
आलोक जगत को मिले सदा।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान शांतिनाथ कुंथुनाथ, अरहनाथ, तीन तीर्थंकरों की जन्मभूमि हस्तिनापुर में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित जम्बूद्वीप रचना

विश्व में प्रथम बार निर्मित जैन शास्त्रों के अनुसार खुले मैदान में जम्बूद्वीप रचना

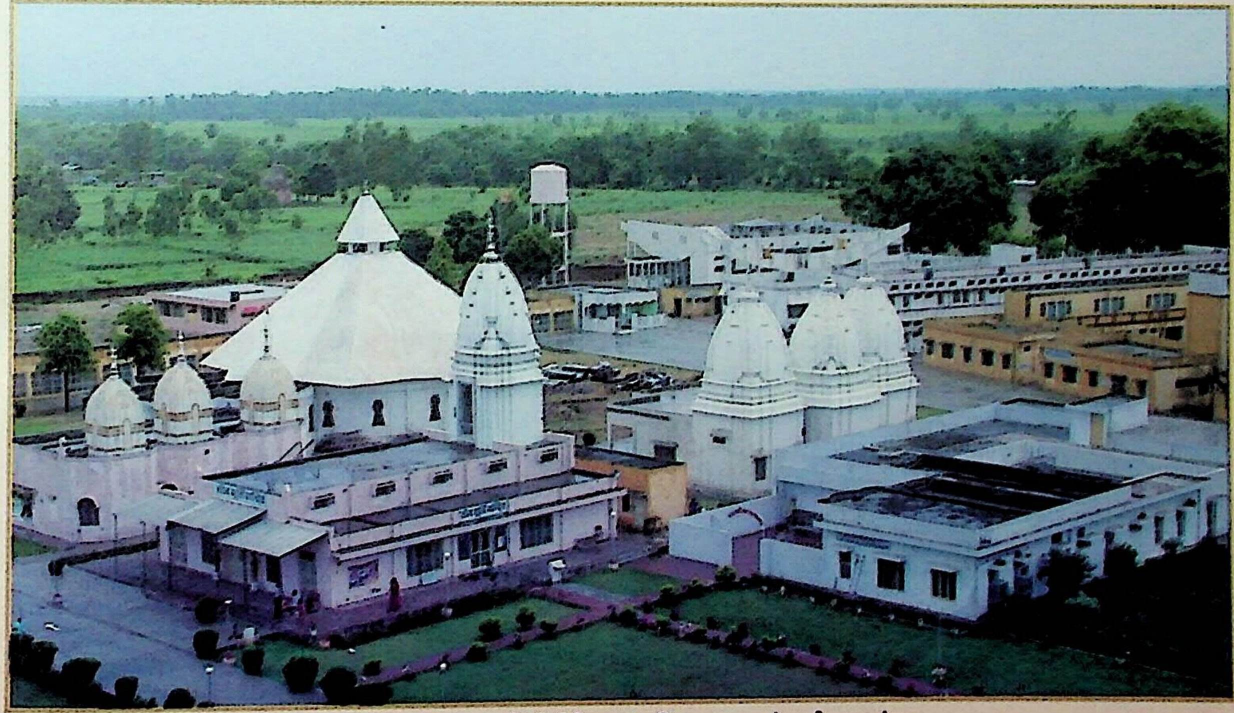

जम्बूद्वीप परिसर में निर्मित भव्य जिनालय एवं धर्मशालाएं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में विराजमान अतिशय चमत्कारी भगवान महावीर एवं ॐ व ह्रीँ की प्रतिमा

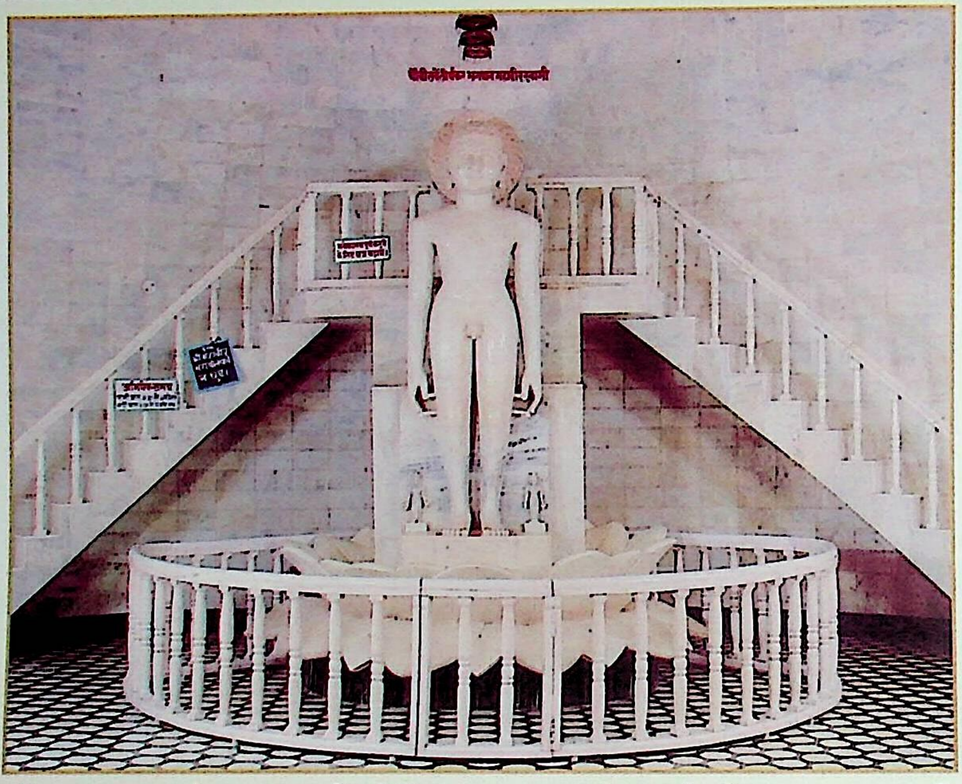

जम्बूद्वीप स्थल पर सर्वप्रथम १९७५ में प्रतिष्ठित भगवान महावीर स्वामी की भव्य खड्गासन प्रतिमा

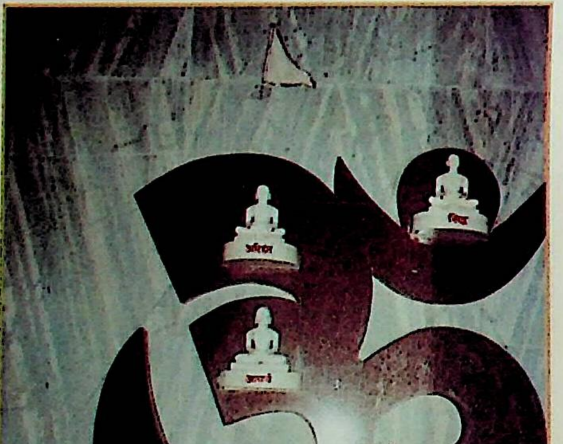

पंचपरमेष्ठी प्रतिमाओं से समन्वित ग्रेनाइट पत्थर की ॐ प्रतिमा

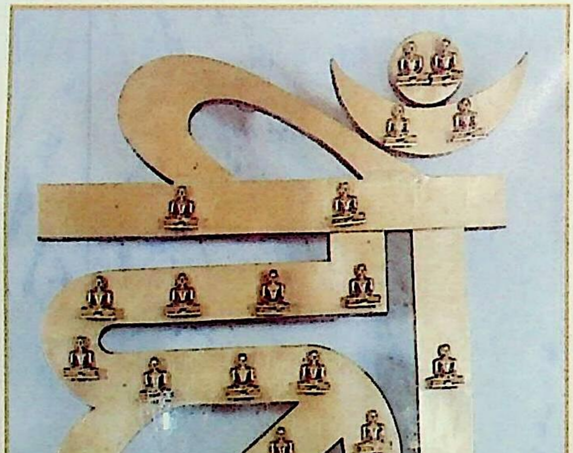

चौबीस तीर्थंकर प्रतिमाओं से समन्वित धातु से निर्मित ह्रीँ की प्रतिमा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में निर्मित भव्य दर्शनीय रचनाएँ ध्यान मंदिर, भगवान महावीर कमल मंदिर एवं भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ

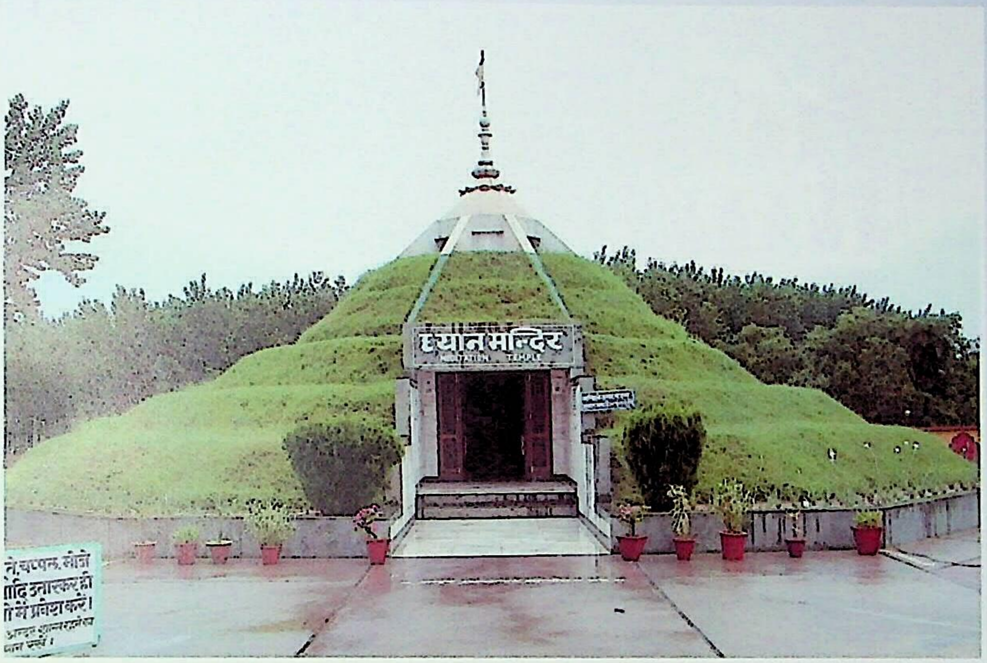

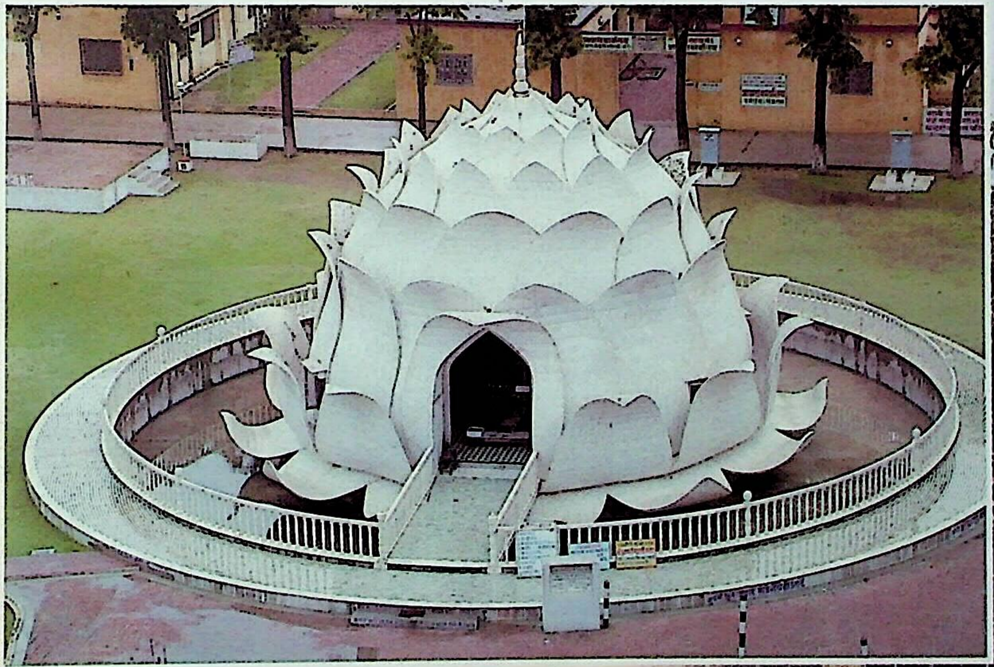

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में स्थापित कैलाशपर्वत एवं त्रिकाल चौबीसी की ७२ रत्न प्रतिमाएँ

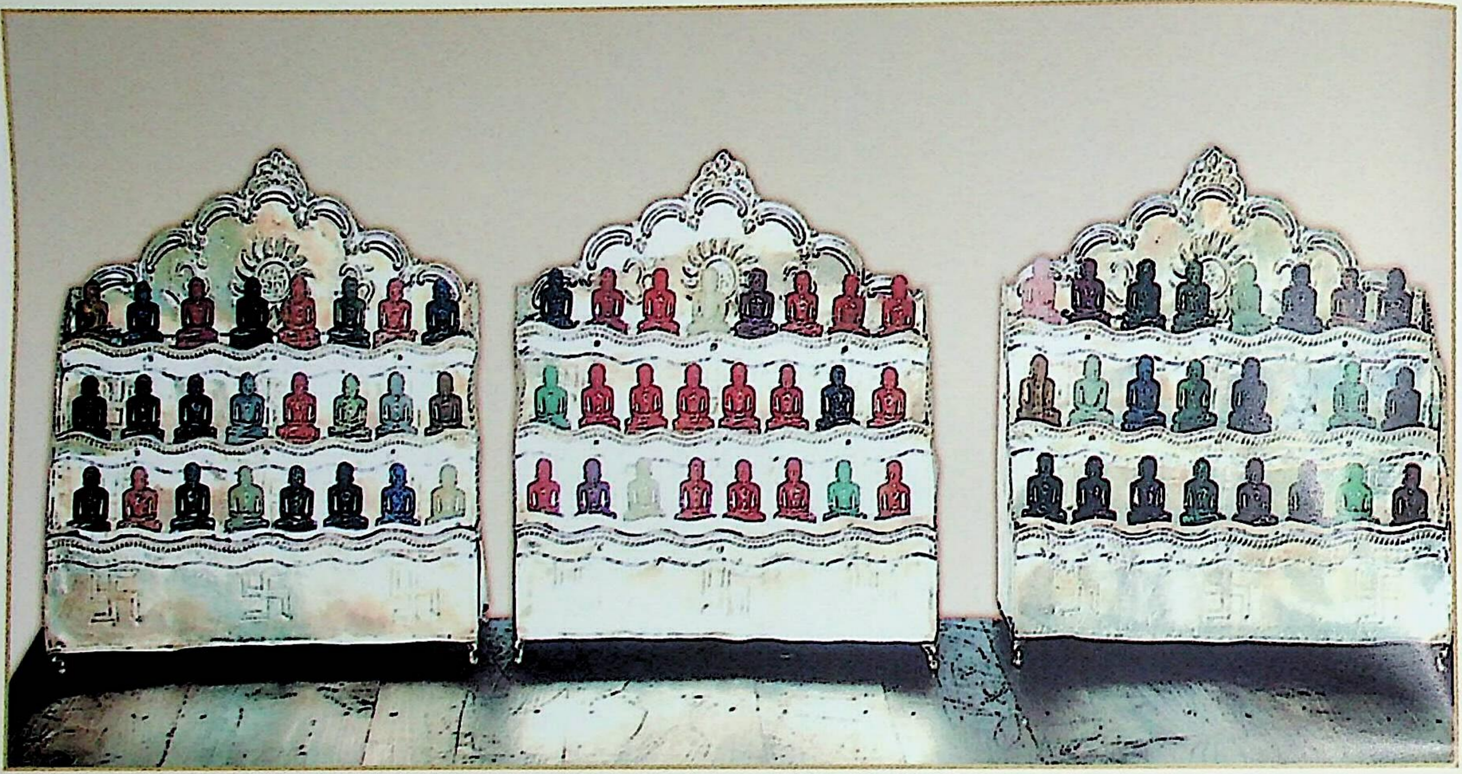

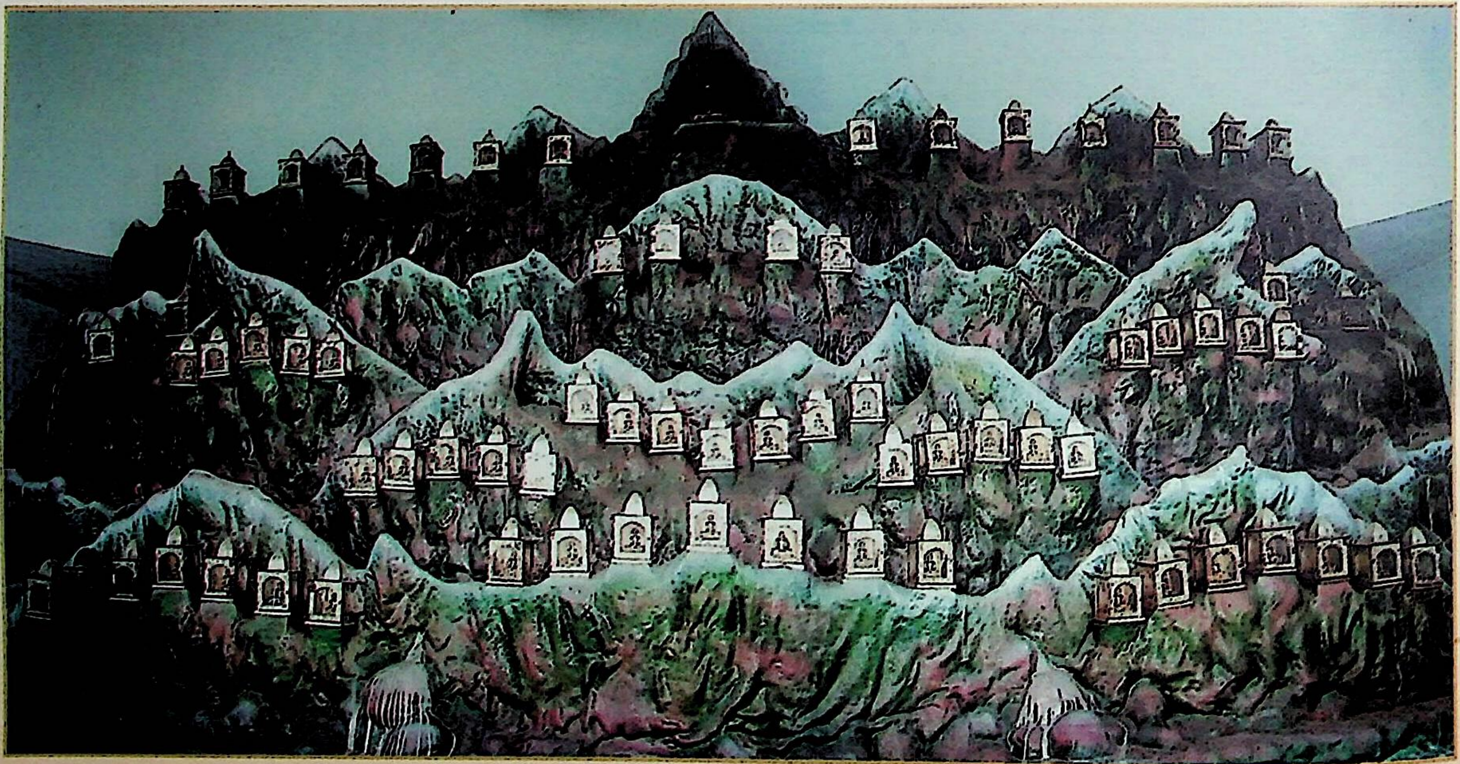

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में विराजमान तीर्थंकर प्रतिमाएं

भगवान आदिनाथ, भगवान भरत एवं भगवान बाहुबली

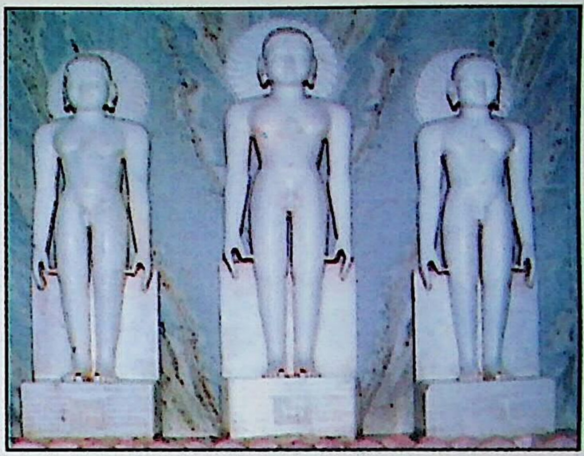

भगवान शांतिनाथ, भगवान कुंथुनाथ, भगवान अरहनाथ

विद्यमान बीस तीर्थंकर की कमलासन पर विराजमान प्रतिमाएं

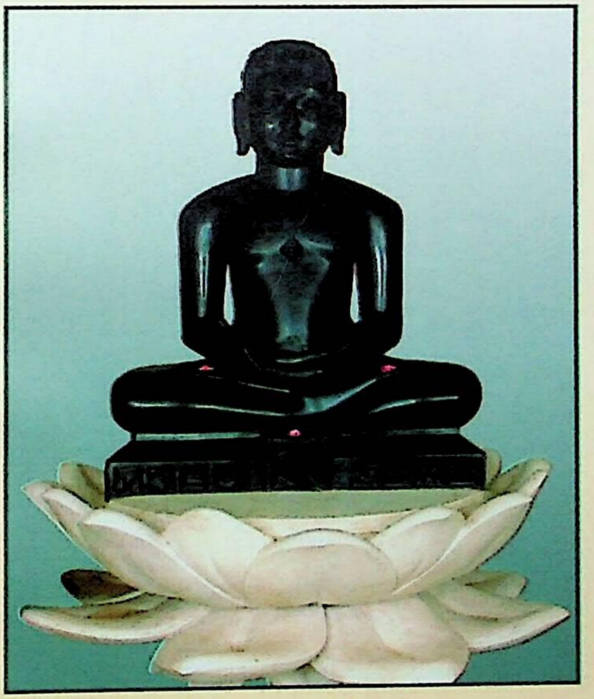

भगवान नेमिनाथ

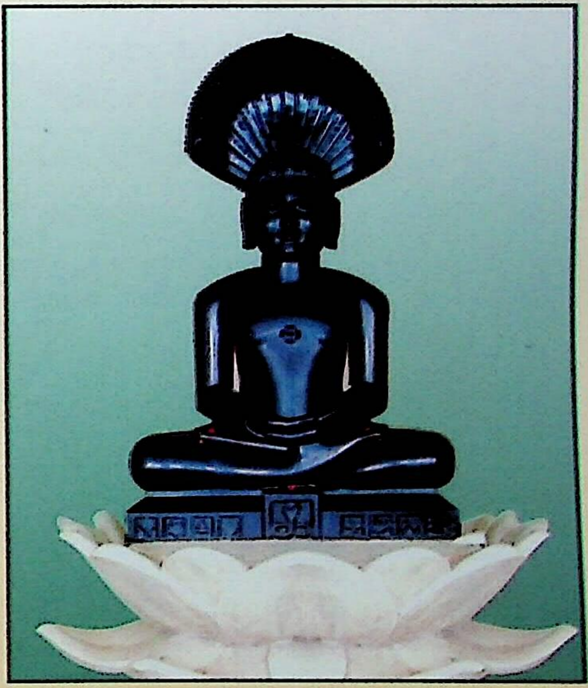

भगवान पार्श्वनाथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार में) पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित नंद्यावर्त महल एवं त्रिकाल चौबीसी मंदिर (सन् २००३-२००४)

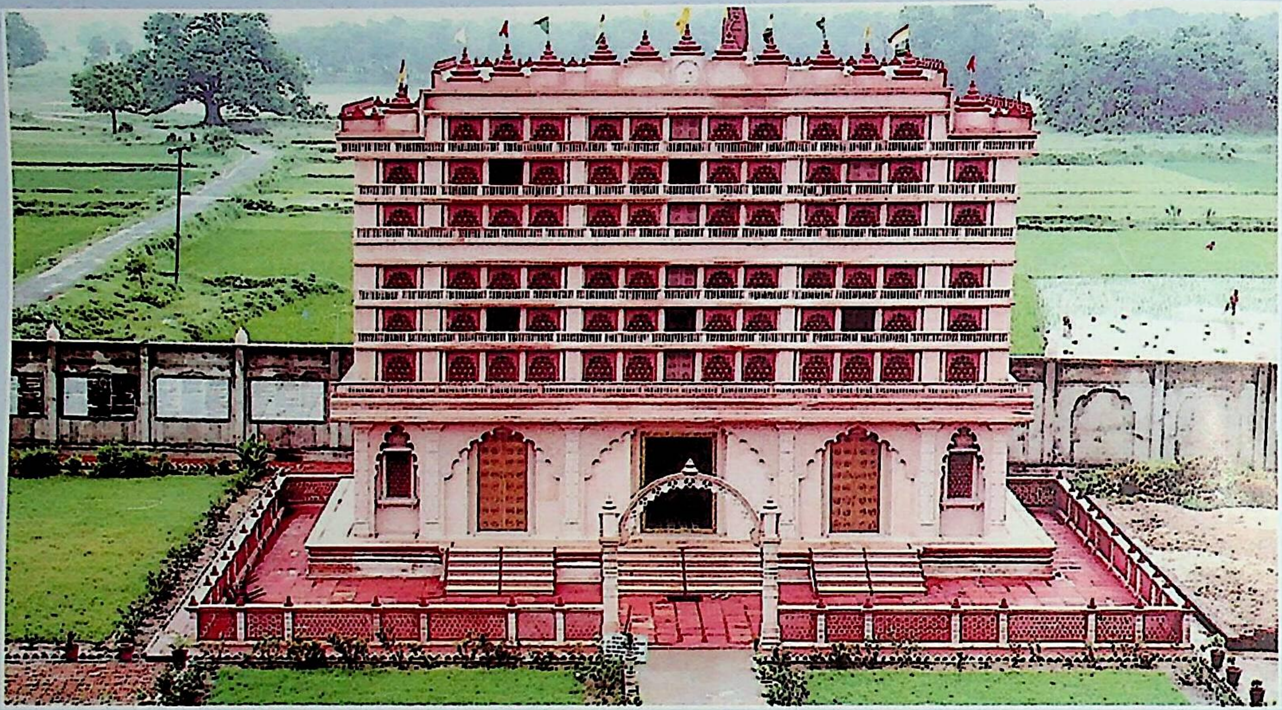

भगवान महावीर के माता-पिता जिस महल में रहते थे, उस महल का नाम नंद्यावर्त महल था उसी स्मृति में भगवान की जन्मभूमि में निर्मित भव्य नंद्यावर्त महल (महल में ऊपरी मंजिल पर भगवान शांतिनाथ का चैत्यालय भी है)

भूत, भविष्यत् एवं वर्तमानकालीन तीन चौबीसी की ७२ प्रतिमाओं से युक्त त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित भव्य मंदिर एवं जिनप्रतिमाएं (सन् २००३-२००४)

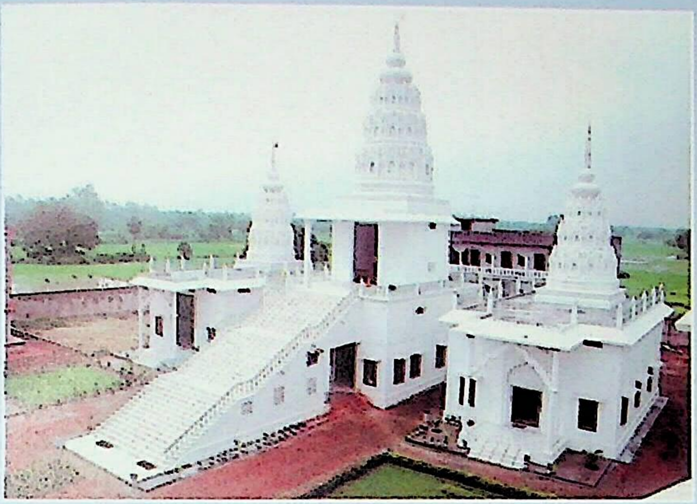

भगवान ऋषभदेव, भगवान महावीर एवं नवग्रह के ९ तीर्थंकर भगवान के उत्तुंग शिखरों से युक्त भव्य मंदिर

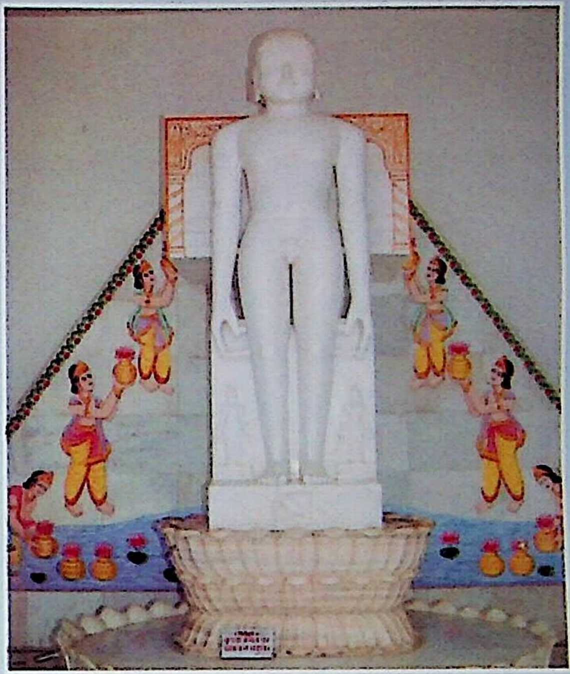

भगवान महावीर की अवगाहना प्रमाण भव्य प्रतिमा

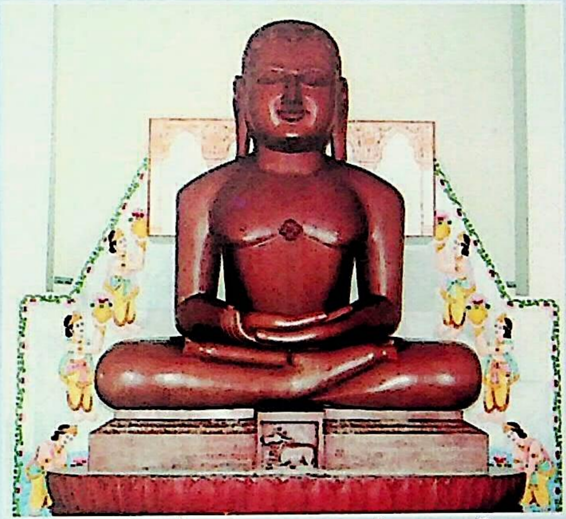

भगवान ऋषभदेव की ११ फुट उत्तुंग भव्य प्रतिमा

भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमाओं से युक्त कीर्तिस्तंभ

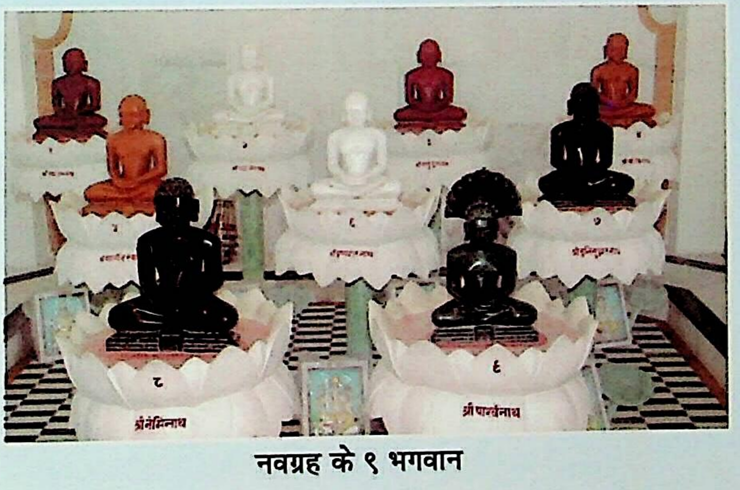

नवग्रह के ९ भगवान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में निर्मित नंद्यावर्त महल के भीतर का मनोहारी परिदृश्य

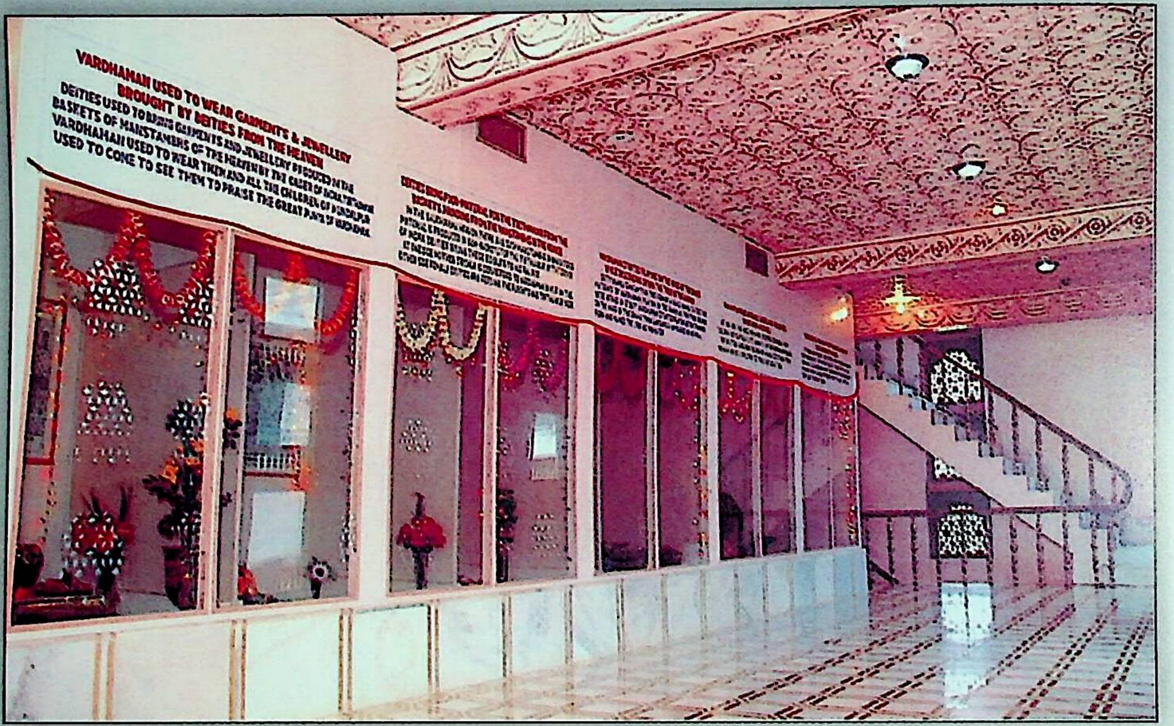

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान ऋषभदेव की दीक्षाभूमि प्रयाग-इलाहाबाद में पूज्य माताजी की प्रेरणा से नवनिर्मित ऋषभदेव तीर्थ-सन् २००१-२००२

७२ जिनमंदिर एवं भगवान ऋषभदेव की ११ फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा से युक्त भव्य कैलाशपर्वत

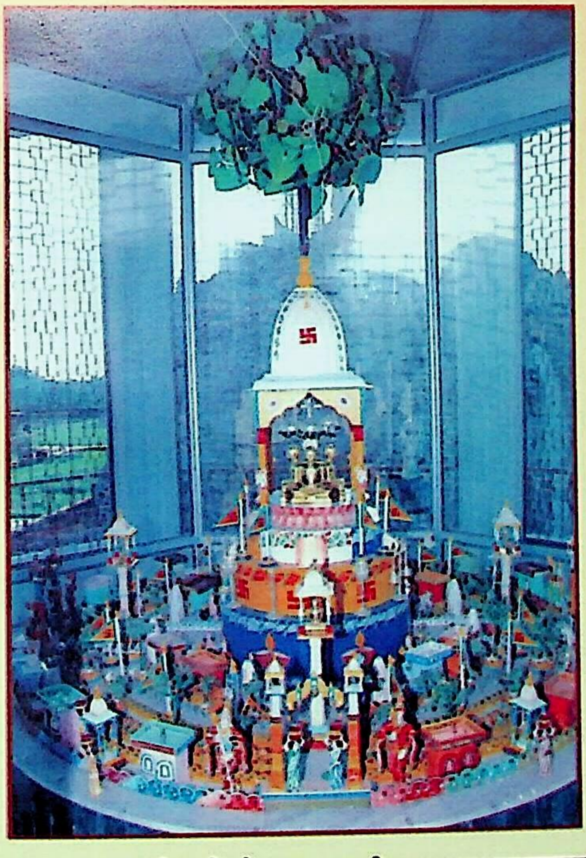

भगवान ऋषभदेव के केवलज्ञान प्रतीक स्वरूप समवसरण की रचना

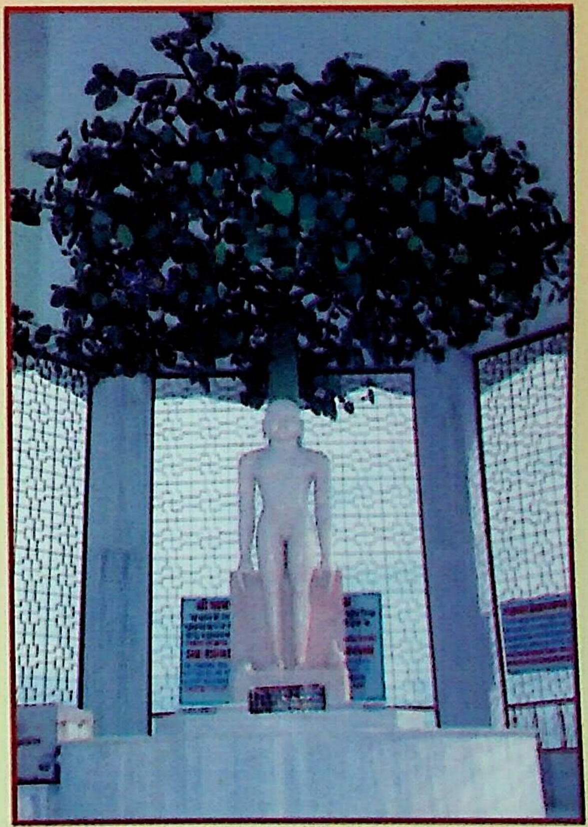

वटवृक्ष के नीचे दीक्षा मुद्रा के भगवान ऋषभदेव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान ऋषभदेव आदि पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि शाश्वत तीर्थ अयोध्या

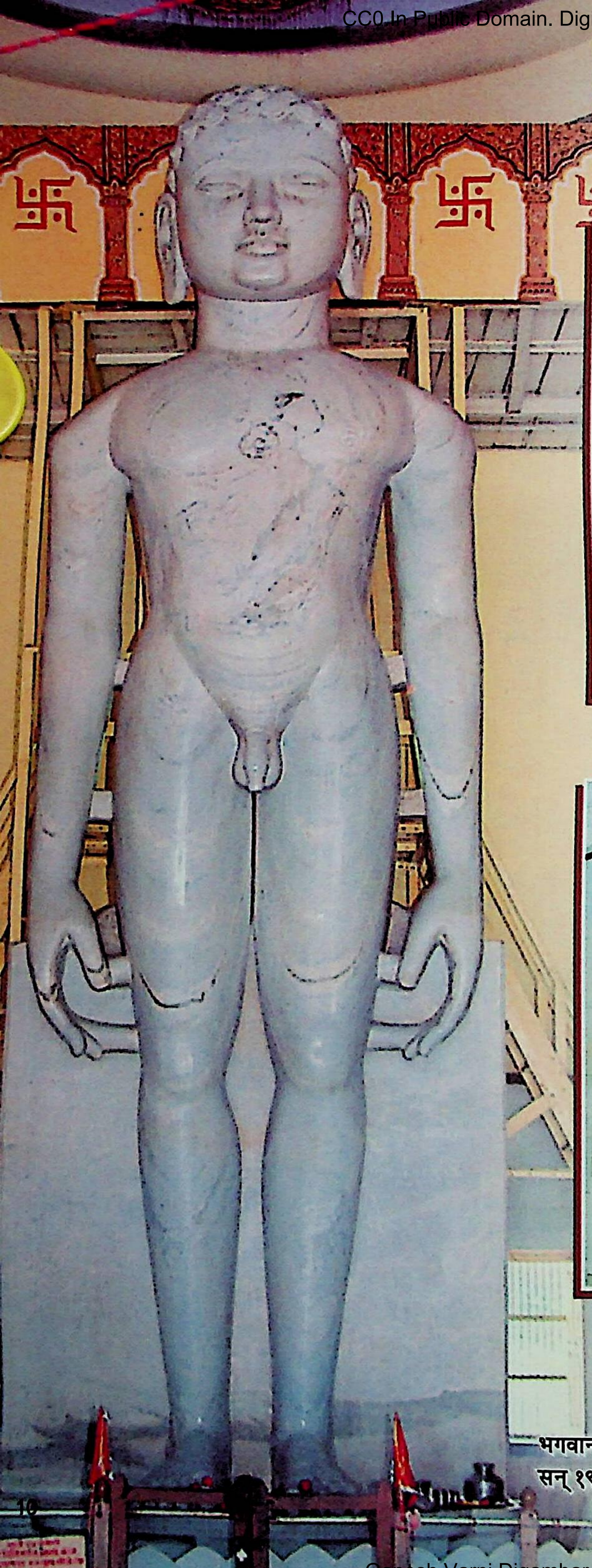

भगवान ऋषभदेव की ३१ फुट उत्तुंग सन् १९६५ में प्रतिष्ठापित प्रतिमा

भगवान ऋषभदेव का सन् १९६५ में निर्मित विशाल जिनमंदिर

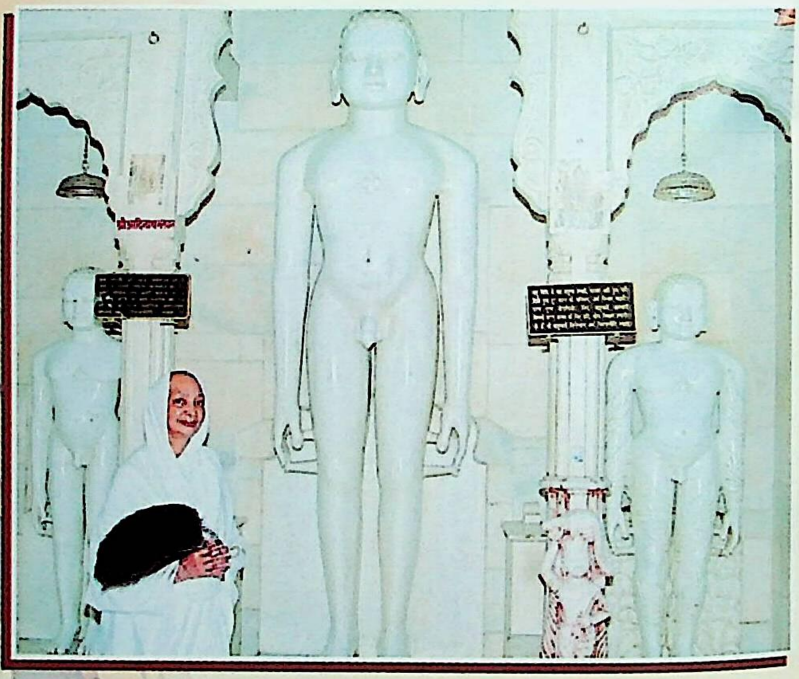

अयोध्या के कटरा जैन मंदिर में भगवान आदिनाथ, भरत, बाहुबली की प्रतिमाएं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या में पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित भव्य रचनाएं -सन् १९९४

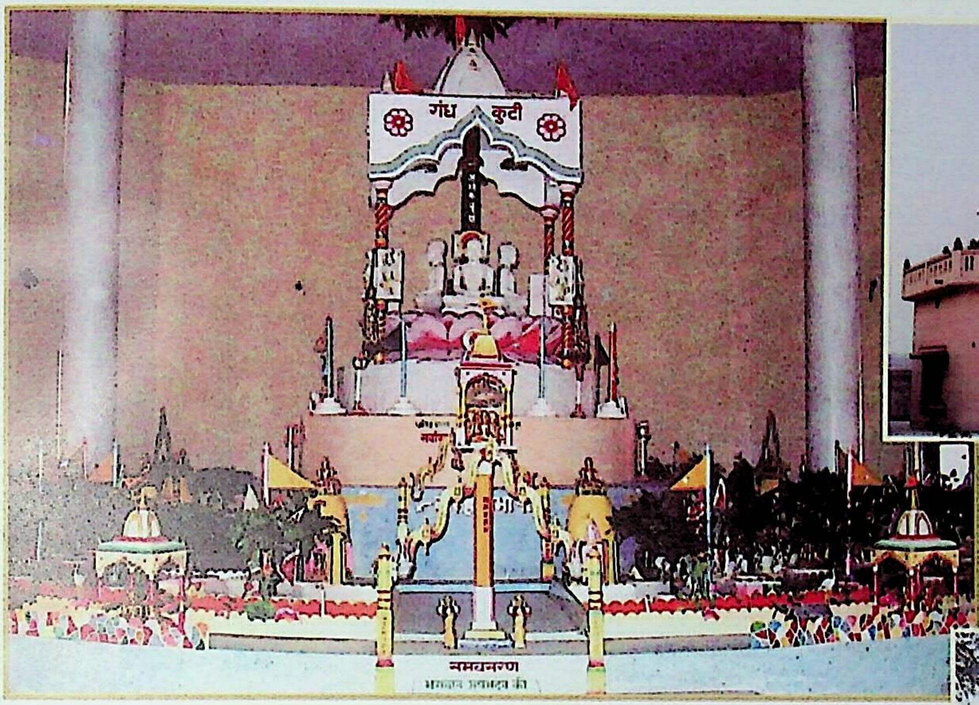

समवसरण की रचना

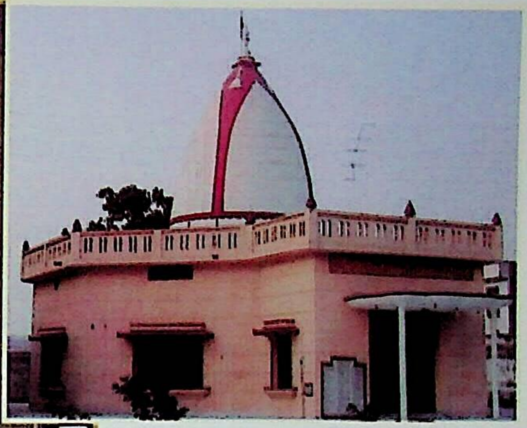

नवनिर्मित समवसरण जिनमंदिर

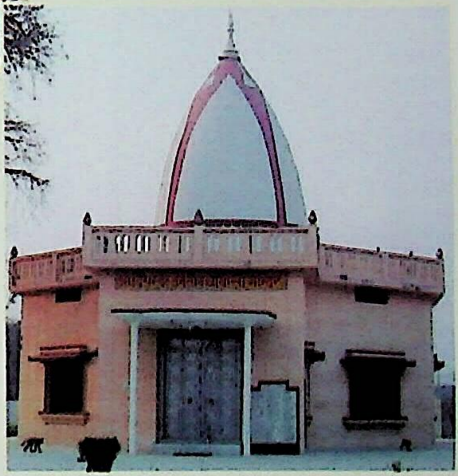

नवनिर्मित त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर।

भगवान ऋषभदेव राजकीय उद्यान राजघाट, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव की २१ फुट ऊँची प्रतिमा

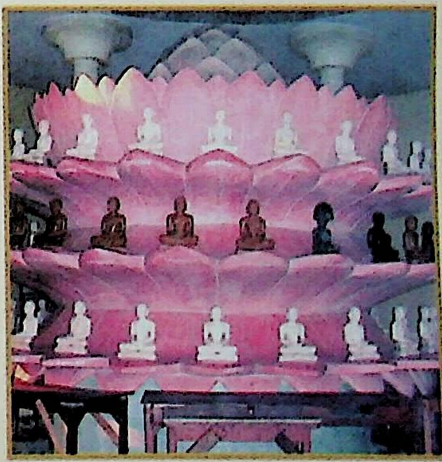

कमल पर विराजमान त्रिकाल चौबीसी की ७२ जिनप्रतिमाएं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९९ करोड़ मुनियों की निर्वाणभूमि-मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र (नासिक) महाराष्ट्र में पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से विकास कार्य

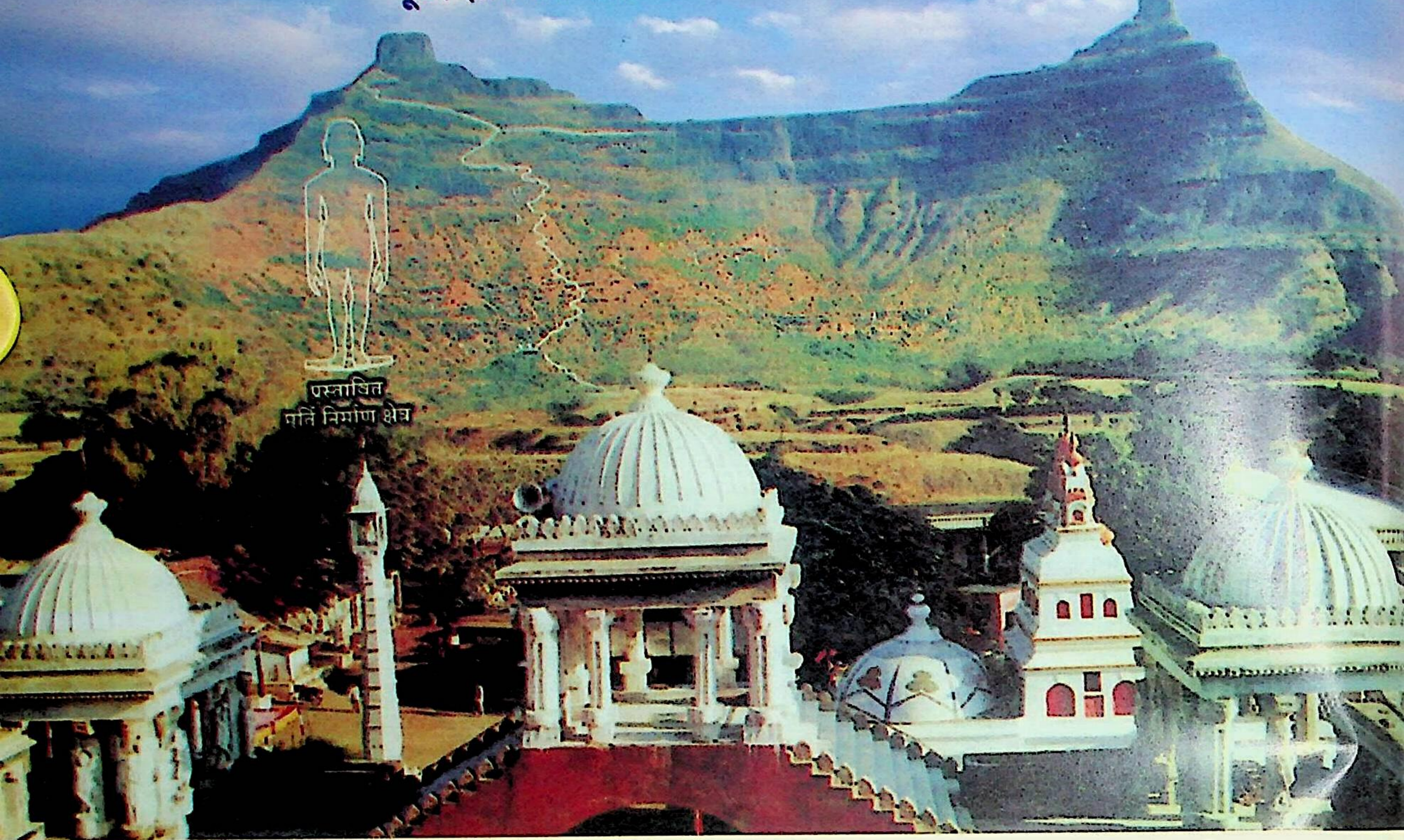

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र का पर्वत, जिसमें १०८ फुट ऊँची भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण कार्य चल रहा है

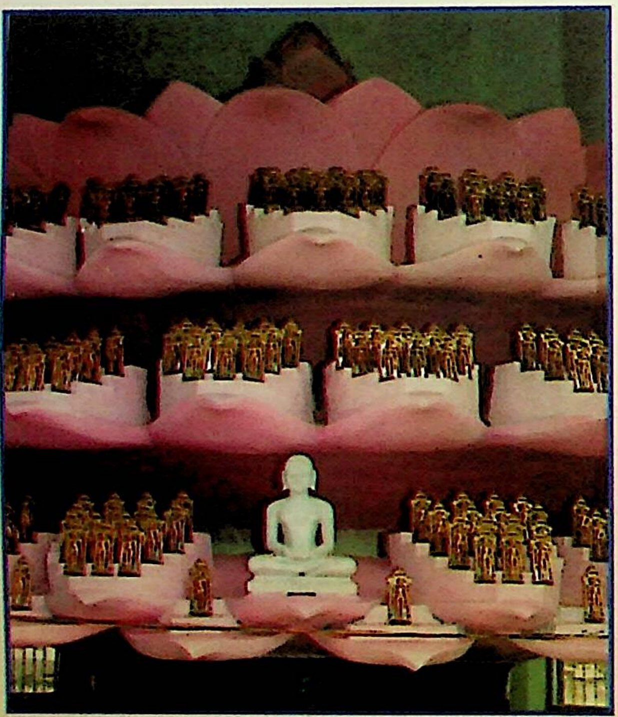

सहस्रकूट कमल मंदिर मांगीतुंगी में विराजमान

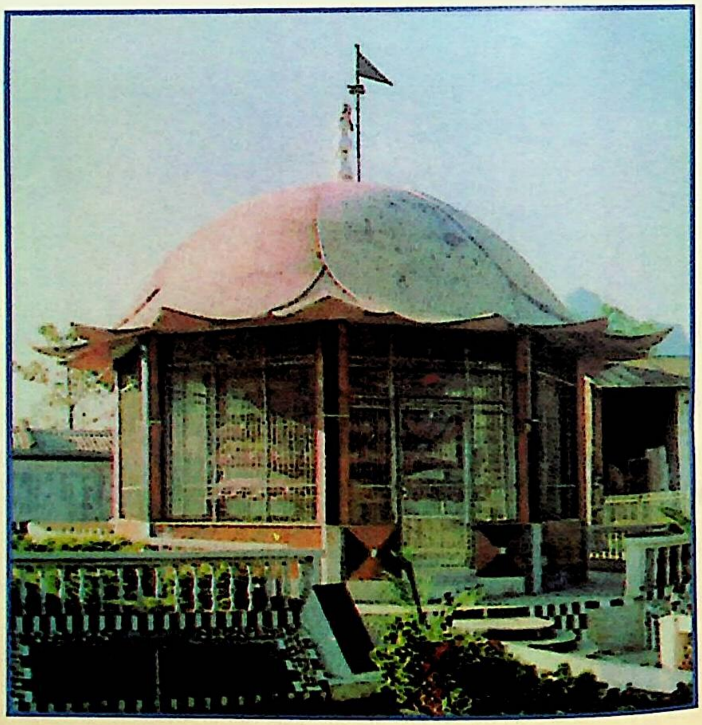

सहस्रकूट जिनमंदिर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से बिहार व झारखण्ड में निर्मित मंदिर व प्रतिमाएं-सन् २००४

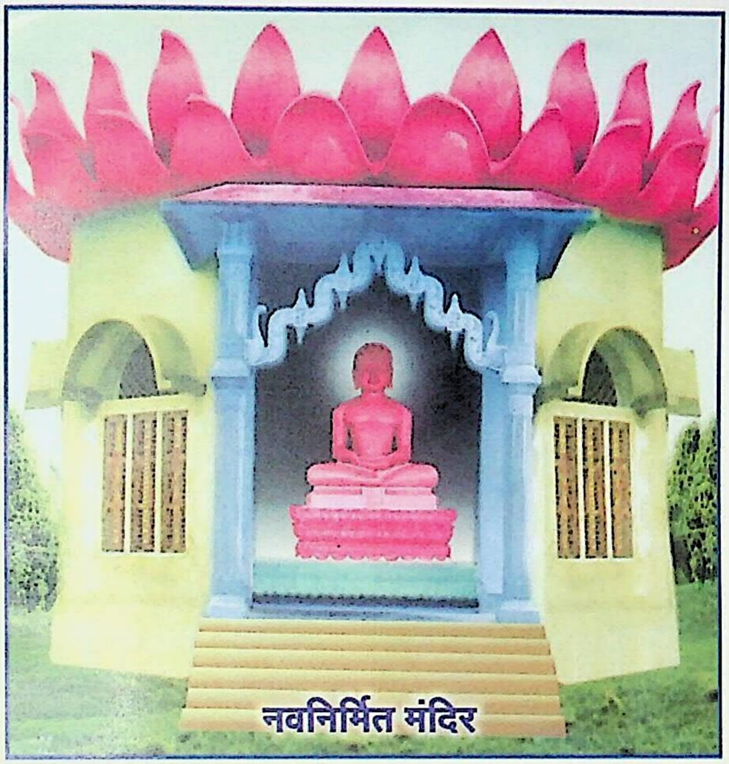

सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर नवनिर्मित भगवान ऋषभदेव जिनमंदिर

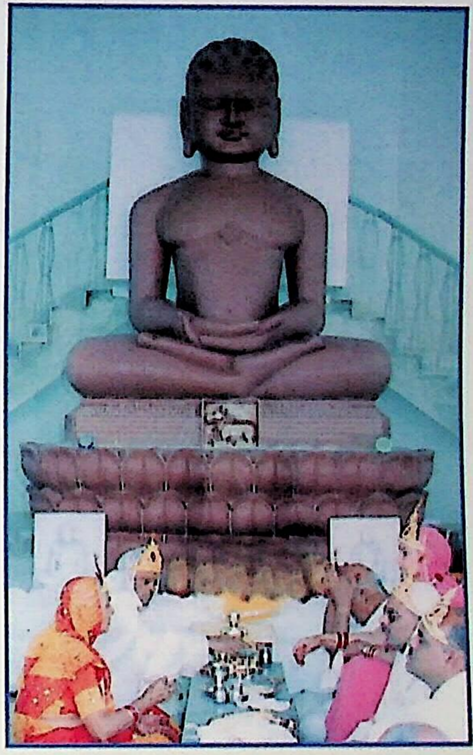

भगवान ऋषभदेव की ९ फुट उत्तुंग भव्य प्रतिमा

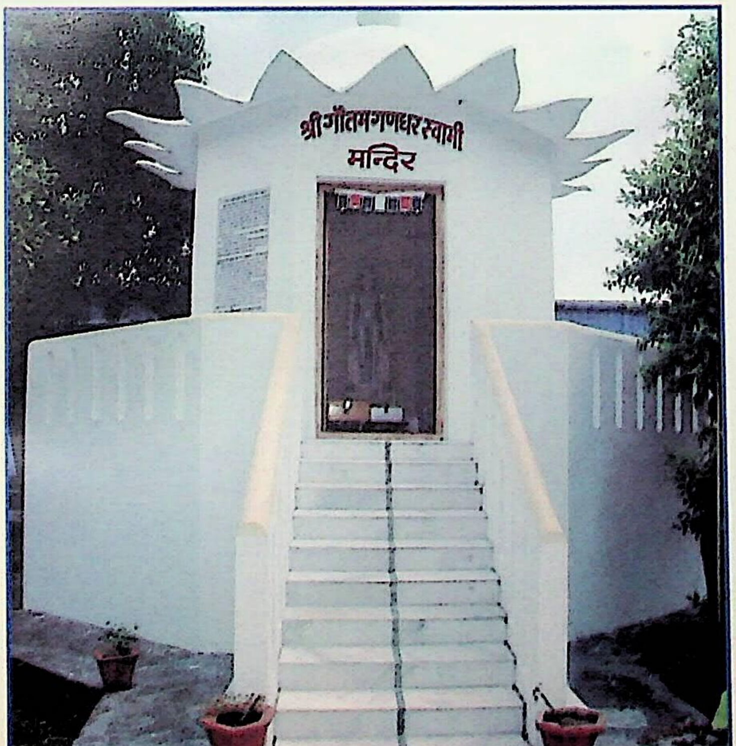

गौतम स्वामी की निर्वाणभूमि गुणावां में नवनिर्मित गौतम स्वामी मंदिर

गुणावां में प्रतिष्ठापित गौतम स्वामी की
५ फुट उत्तुंग प्रतिमा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुर (नालंदा) बिहार में पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित मंदिर व ११ फुट उत्तुंग भगवान महावीर की प्रतिमा-सन् २००४

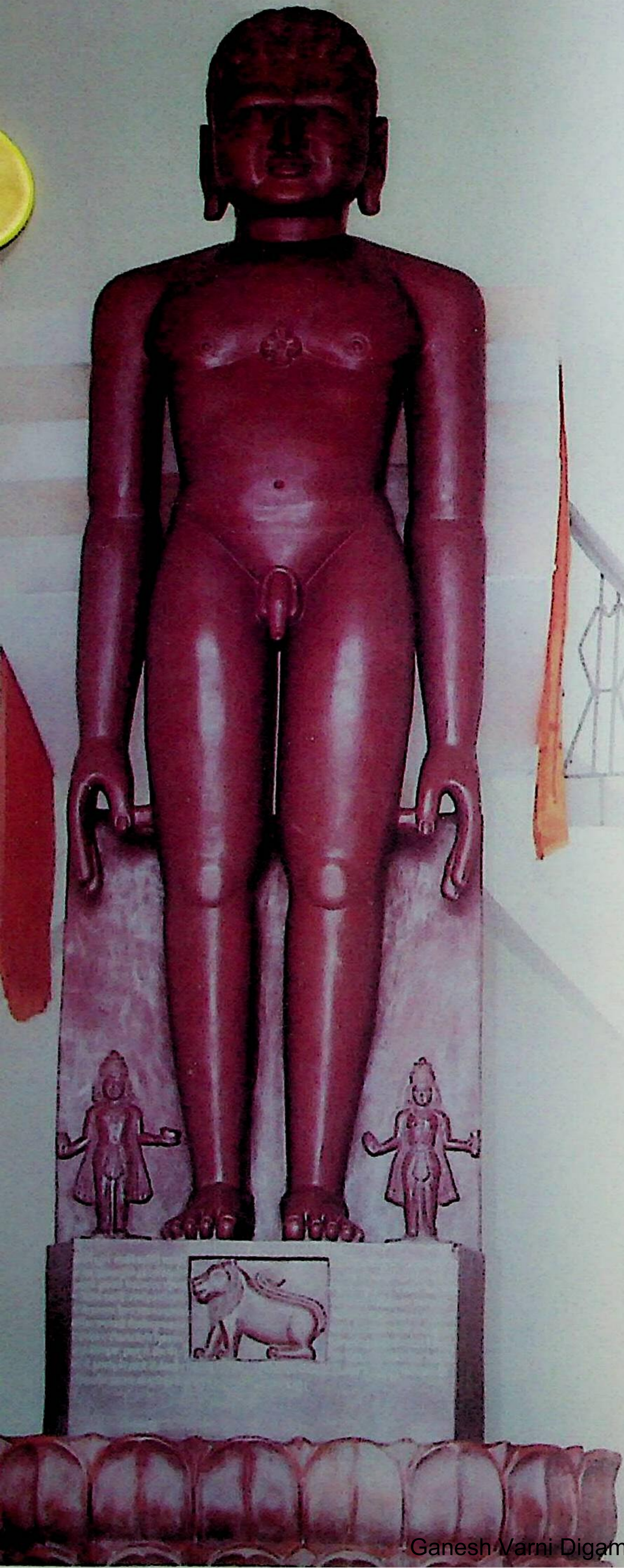

पावापुर में निर्मित भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण का प्राचीन जल मंदिर

पावापुर में निर्मित मानस्तंभ

भगवान महावीर स्वामी का नवनिर्मित जिनमंदिर

पावापुर में प्रतिष्ठापित भगवान महावीर स्वामी की ११ फुट उत्तुंग प्रतिमा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि राजगीर (नालंदा) बिहार में पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित मंदिर, प्रतिमा एवं मानस्तंभ-सन् २००४

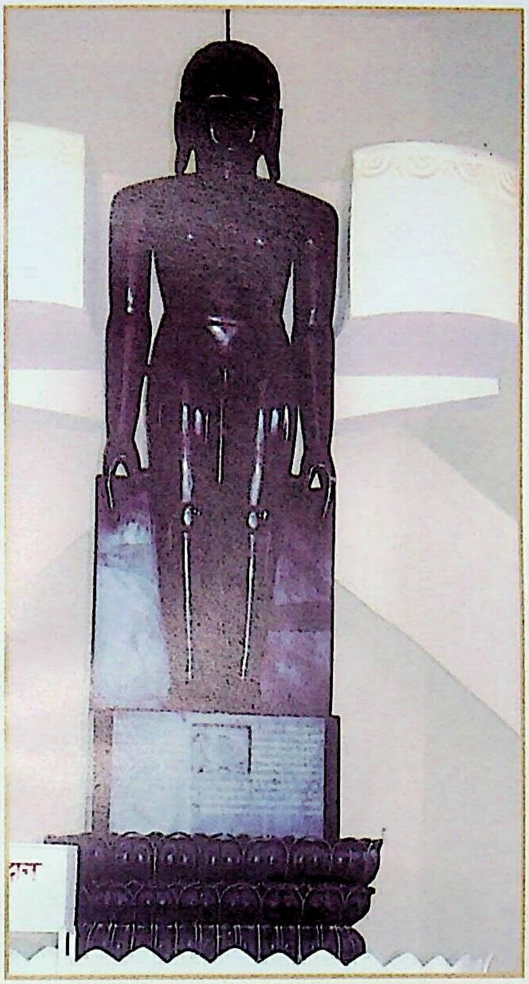

भगवान मुनिसुव्रतनाथ की १२½ फुट उत्तुंग प्रतिमा

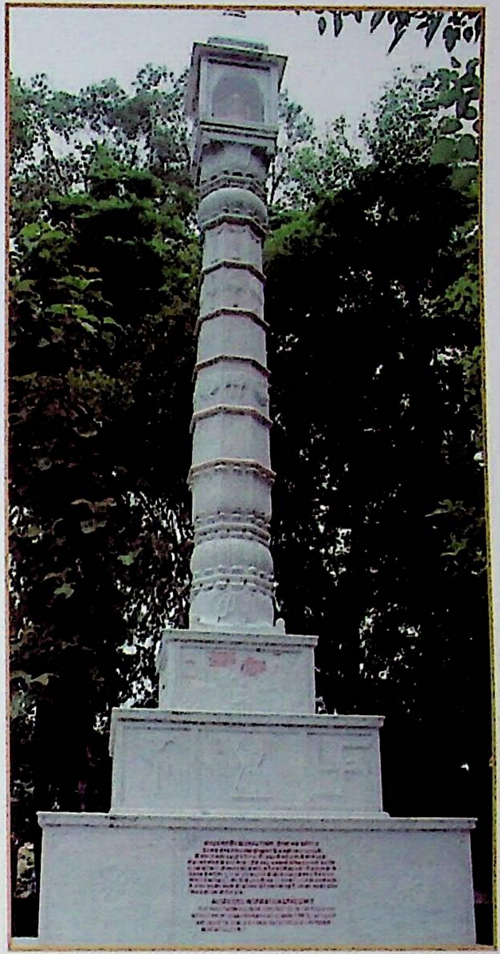

राजगीर में विपुलाचल पर्वत की तलहटी में नवनिर्मित श्वेत संगमरमर का मानस्तंभ

भगवान मुनिसुव्रतनाथ का नवनिर्मित जिनमंदिर

जवाहर नवोदय विद्यालय राजगीर में भगवान महावीर की प्रतिमा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी (राज.) में शांतिवीर नगर स्थित प्रांगण में (वर्ष १९९८) एवं भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र (बरेली) उ.प्र. में (सन् २००२) में पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से नवनिर्मित रचनाएं एवं जिनबिंब

अहिक्षेत्र में नवनिर्मित ३० चौबीसी मंदिर में विराजमान ७२० जिनप्रतिमाएं

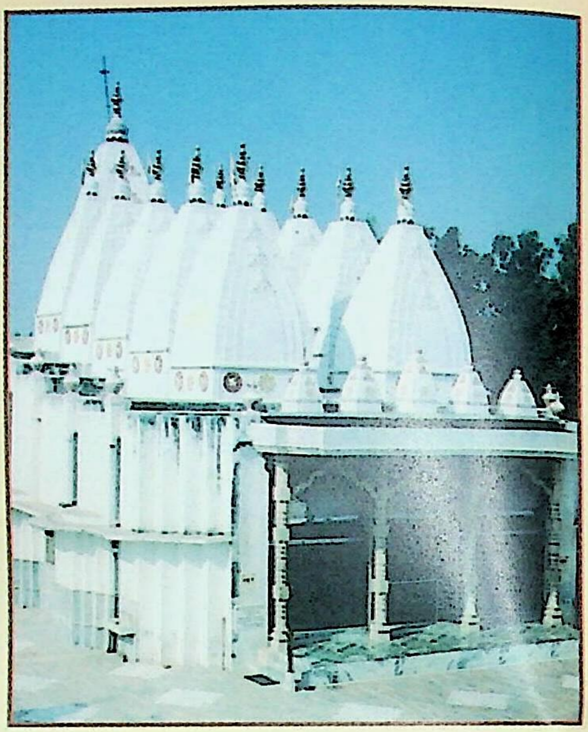

अहिक्षेत्र में नवनिर्मित ३० चौबीसी मंदिर के ११ शिखरों का दृश्य

शांतिवीर नगर श्री महावीर जी में नवनिर्मित मंदारवृक्ष मंदिर

मंदार वृक्ष मंदिर में विराजमान ४ प्रतिमाएं

मंदारवृक्ष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजधानी दिल्ली में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित मंदिर व रचनाएं

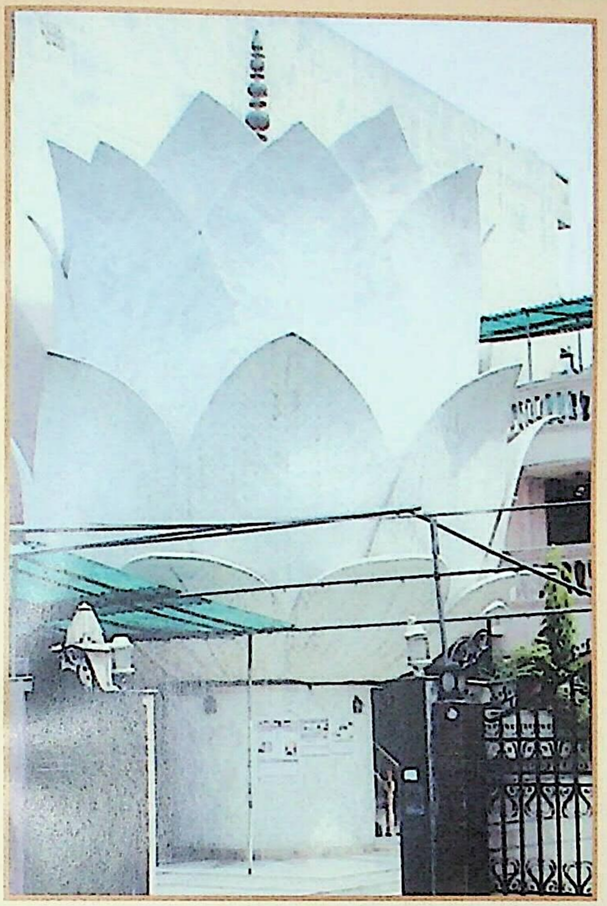

प्रीतविहार-दिल्ली में निर्मित भगवान ऋषभदेव कमल मंदिर – सन् १९९७

कमल मंदिर में विराजमान भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा

श्री अग्रवाल दि. जैन मंदिर, राजाबाजार, कनॉट प्लेस में निर्मित पावापुरी की रचना – सन् २००४

श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर, राजाबाजार दिल्ली में भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ – सन् २०००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

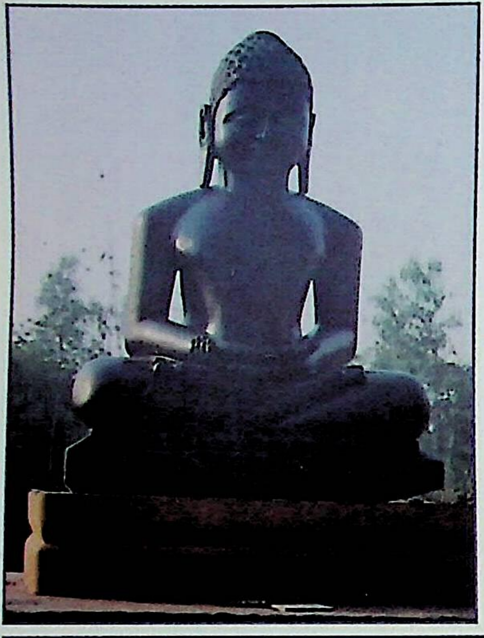

भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सारनाथ में प्रतिष्ठापित १३ फुट उत्तुंग भगवान श्रेयांसनाथ की प्रतिमा - जनवरी २००५

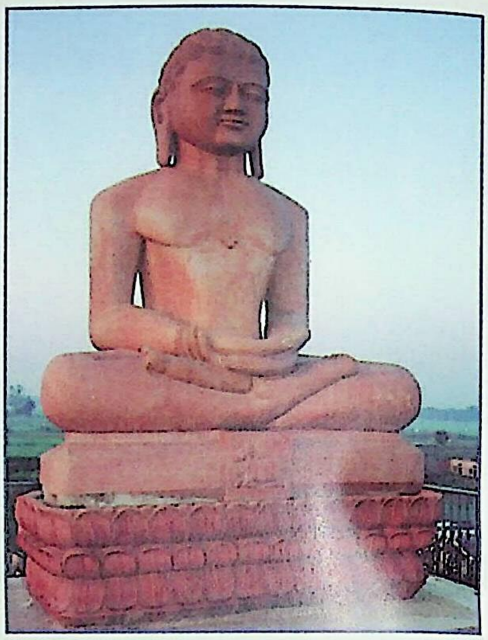

भगवान पद्मप्रभु की जन्मभूमि कौशाम्बी - प्रभासगिरी में प्रतिष्ठापित ७ फुट उत्तुंग पद्मप्रभु की प्रतिमा - सन् २००१

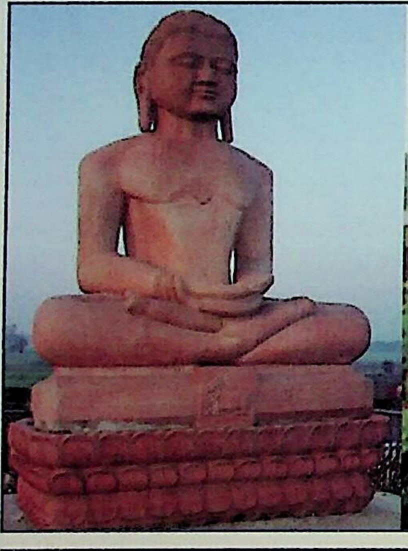

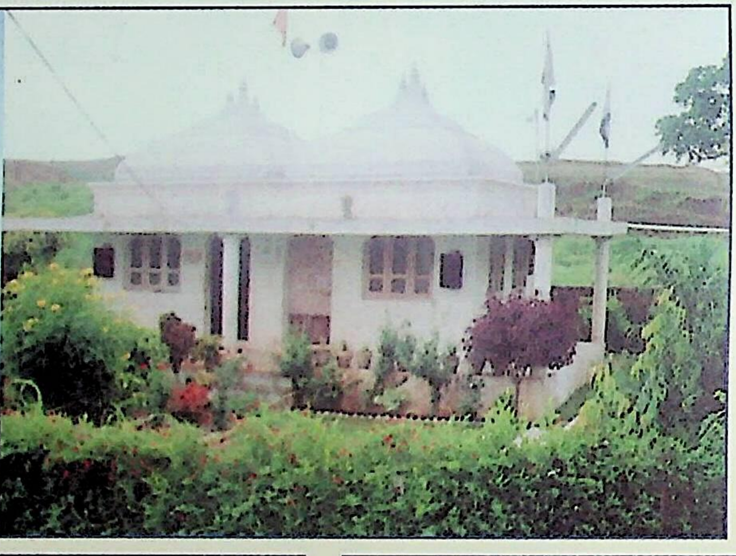

सनावद (म.प्र.) में णमोकार धाम तीर्थ पर भगवान ऋषभदेव की ७ फुट उत्तुंग प्रतिमा - सन्-२००३

कमला नगर-मेरठ में २० विद्यमान तीर्थंकर प्रतिमाएँ - सन् १९९८

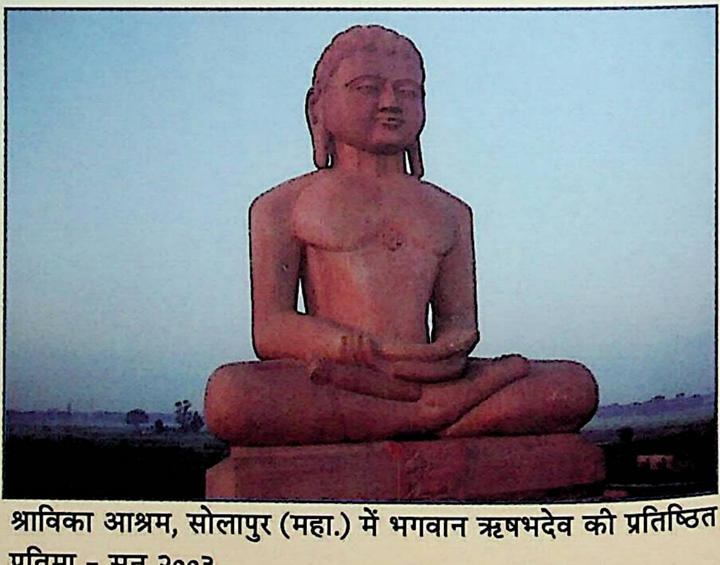

श्राविका आश्रम, सोलापुर (महा.) में भगवान ऋषभदेव की प्रतिष्ठित प्रतिमा - सन् २००३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र. में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित एवं प्रतिष्ठापित चौबीस तीर्थंकर प्रतिमाएँ

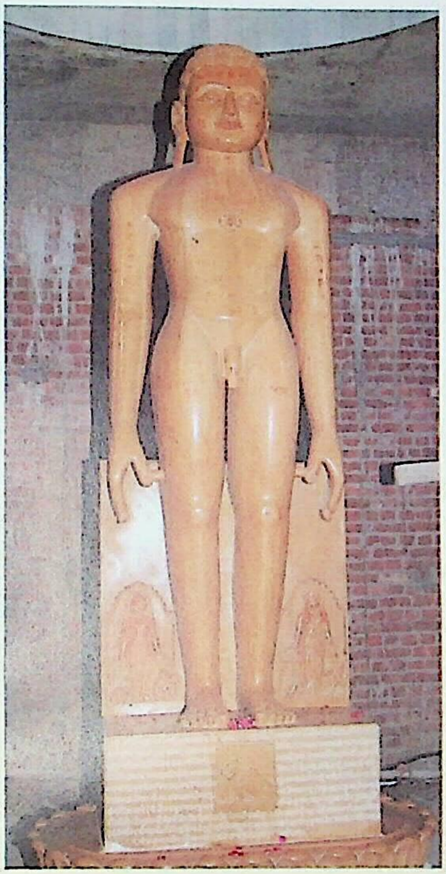

टिकैतनगर में नवनिर्मित मंदिर में मूलनायक भगवान महावीर की प्रतिमा - सन्-२००५

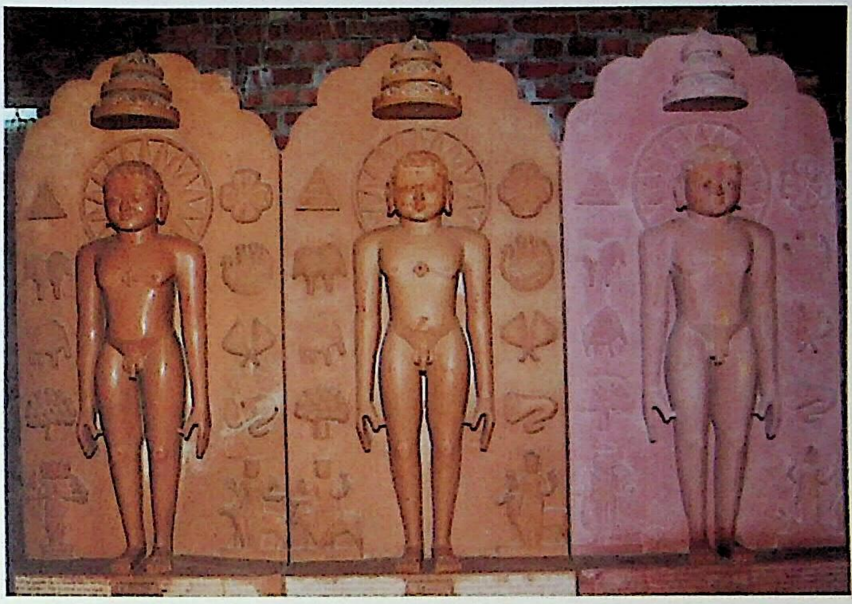

टिकैतनगर में स्थापित नवनिर्मित मंदिर में चौबीस तीर्थंकर प्रतिमाएं - सन्-२००५

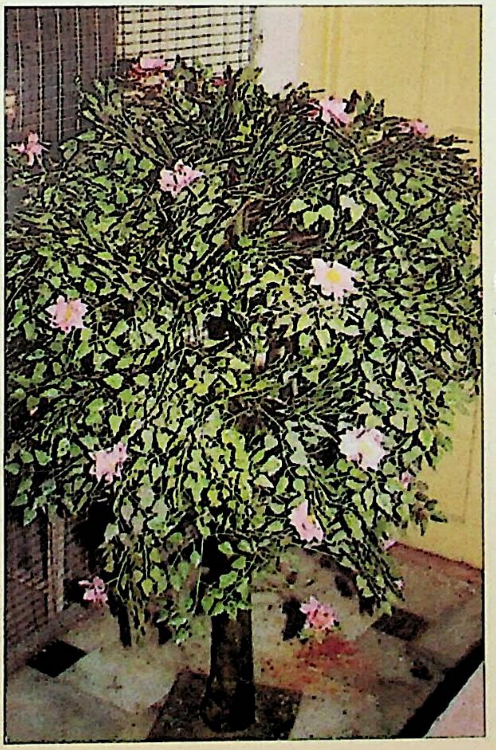

अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर (बाराबंकी) उ.प्र. में नवनिर्मित पारिजात वृक्ष - सन्-१९९५

ऋषभदेव तीर्थ- इलाहाबाद सन् २००१ एवं छपरौली (बड़ौत) उ.प्र. में सन् २००३ में नवनिर्मित कीर्तिस्तंभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की सल्लेखना के समय पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी (उस समय का नाम क्षुल्लिका वीरमती माताजी), स्थान-कुंथलगिरी (महाराष्ट्र), सन् १९५५

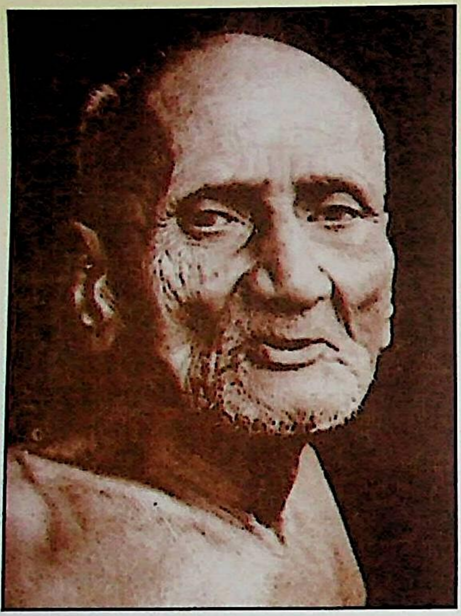

चारित्र चक्रवर्ती परमपूज्य आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज।

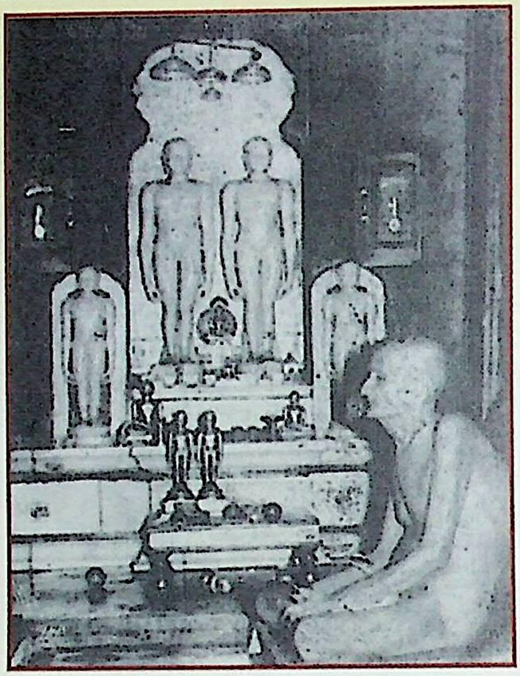

कुंथलगिरी में विराजित श्री देशभूषण कुलभूषण स्वामी के पावन सन्निधी में ध्यानमग्न आचार्य श्री शांतिसागर महाराज

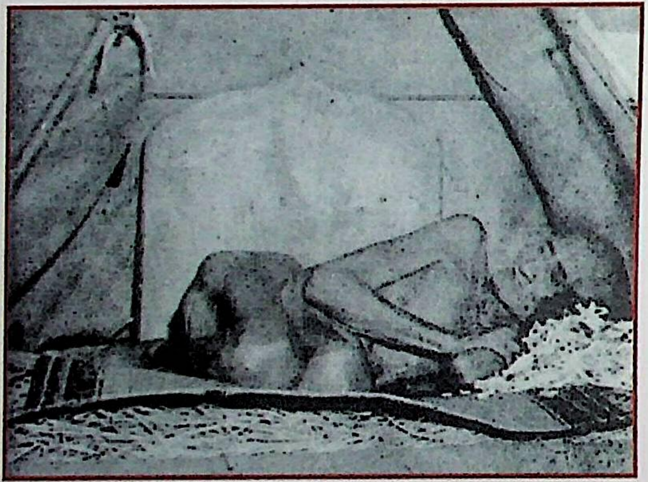

सल्लेखना के समय अन्तर्मग्न आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

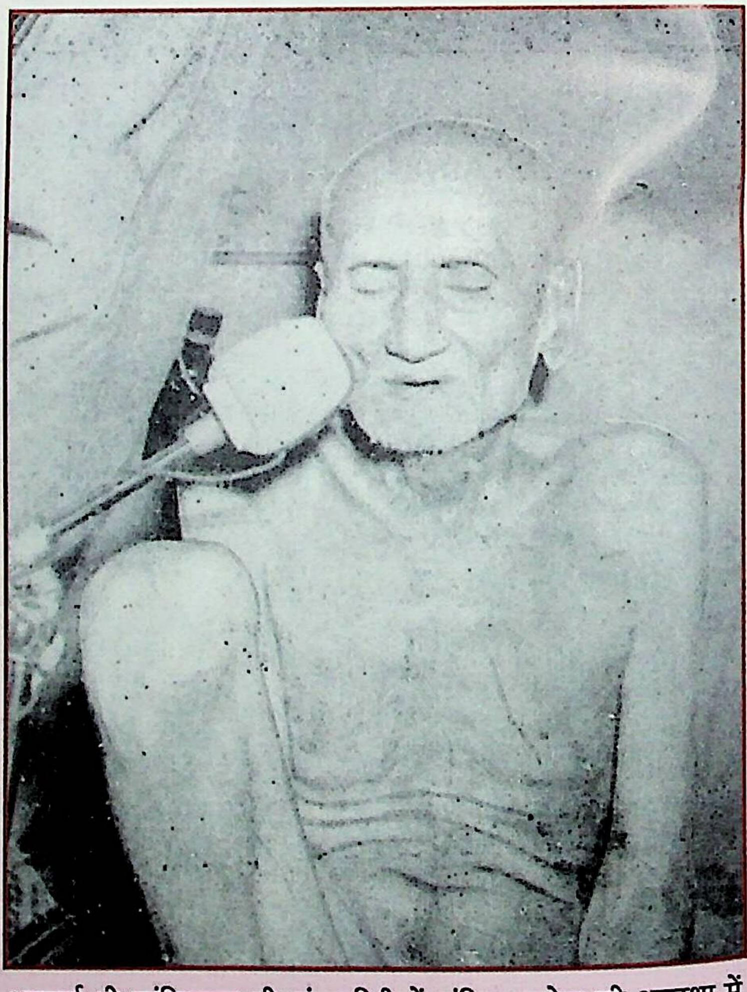

आचार्य श्री शांतिसागर जी कुंथलगिरी में अंतिम उपदेश की अवस्था में

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी कुंथलगिरी में क्षुल्लिका वीरमती माताजी के रूप में आचार्यश्री की चर्या का सम्पूर्ण अनुभव प्राप्त करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के दादागुरु आचार्यश्री शांतिसागर जी अपने ७ शिष्यों के साथ सन् १९३० एवं पूज्य माताजी के दीक्षागुरु आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के विशाल संघ में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी, सन् १९५७

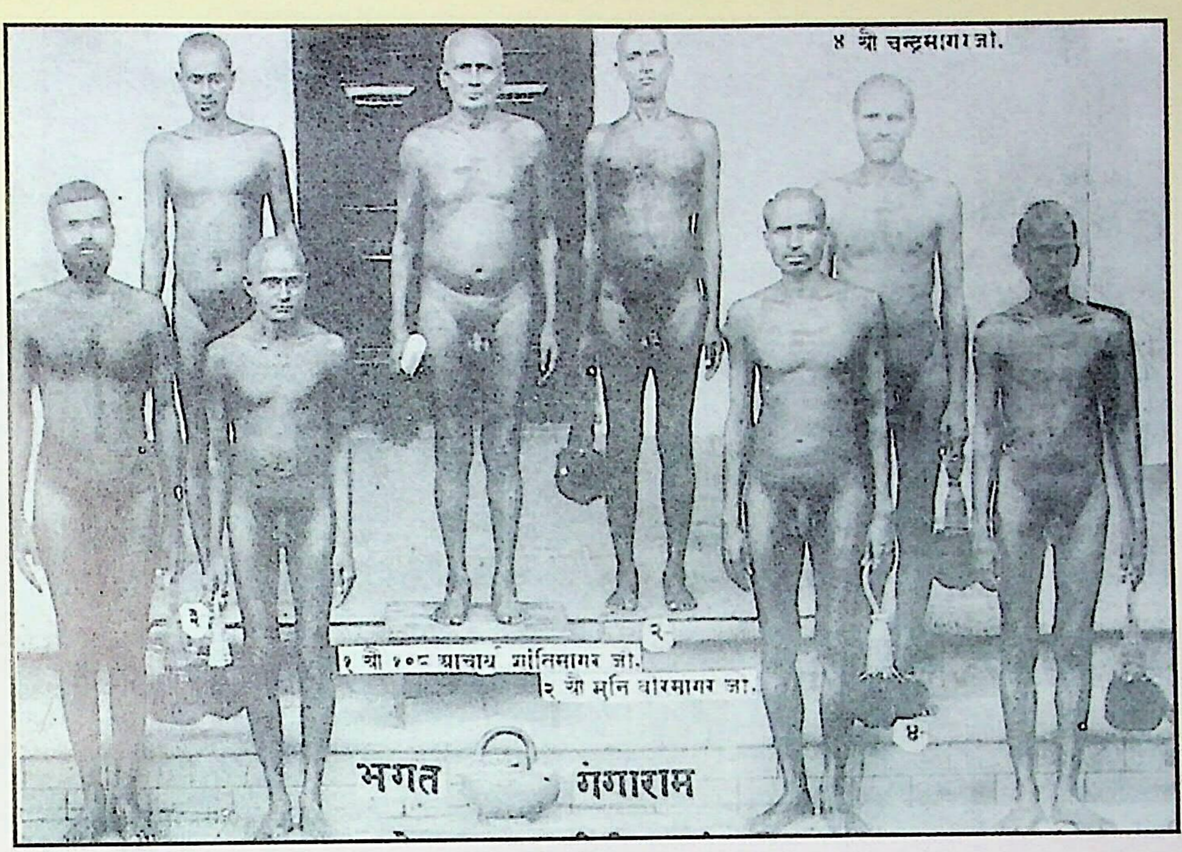

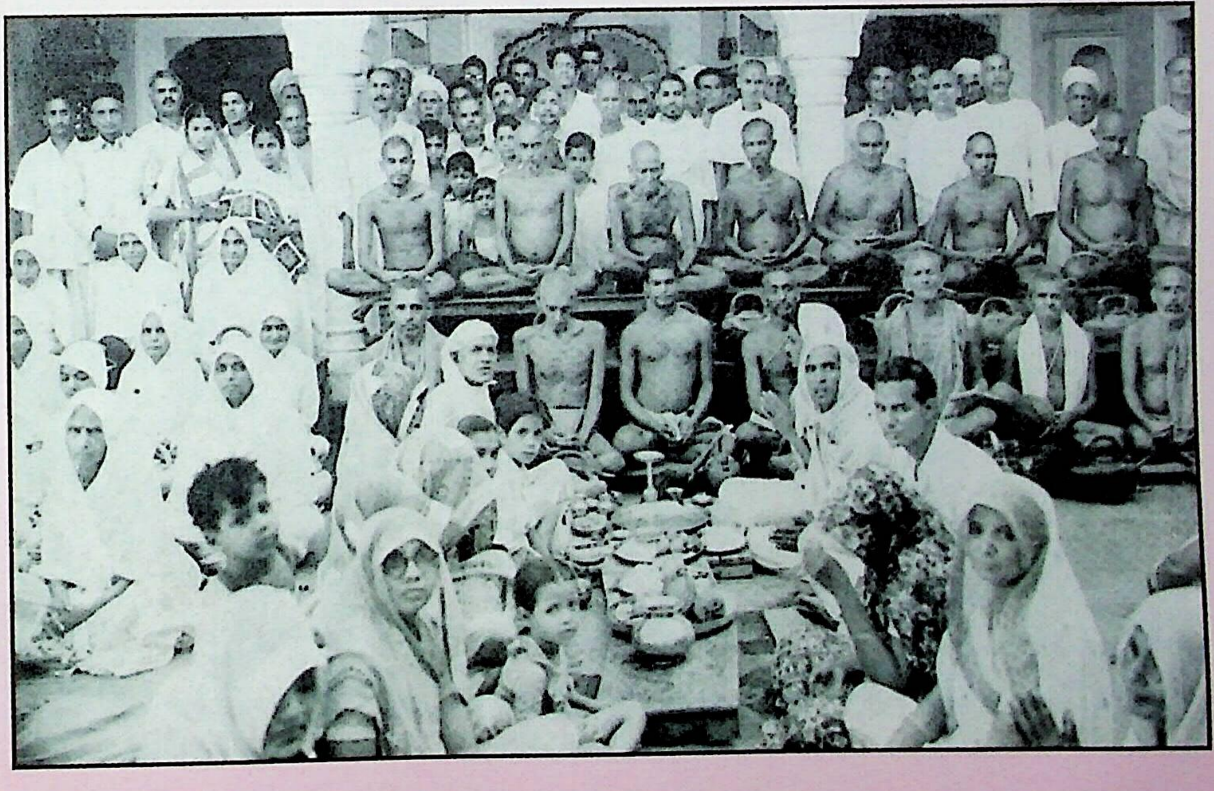

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के शिष्य आचार्य श्री पायसागर जी महाराज के साथ पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी (उस समय क्षुल्लिका वीरमती माताजी) एवं संघस्थ विशालमती आदि अन्य क्षुल्लिकाएँ, सन् १९५५

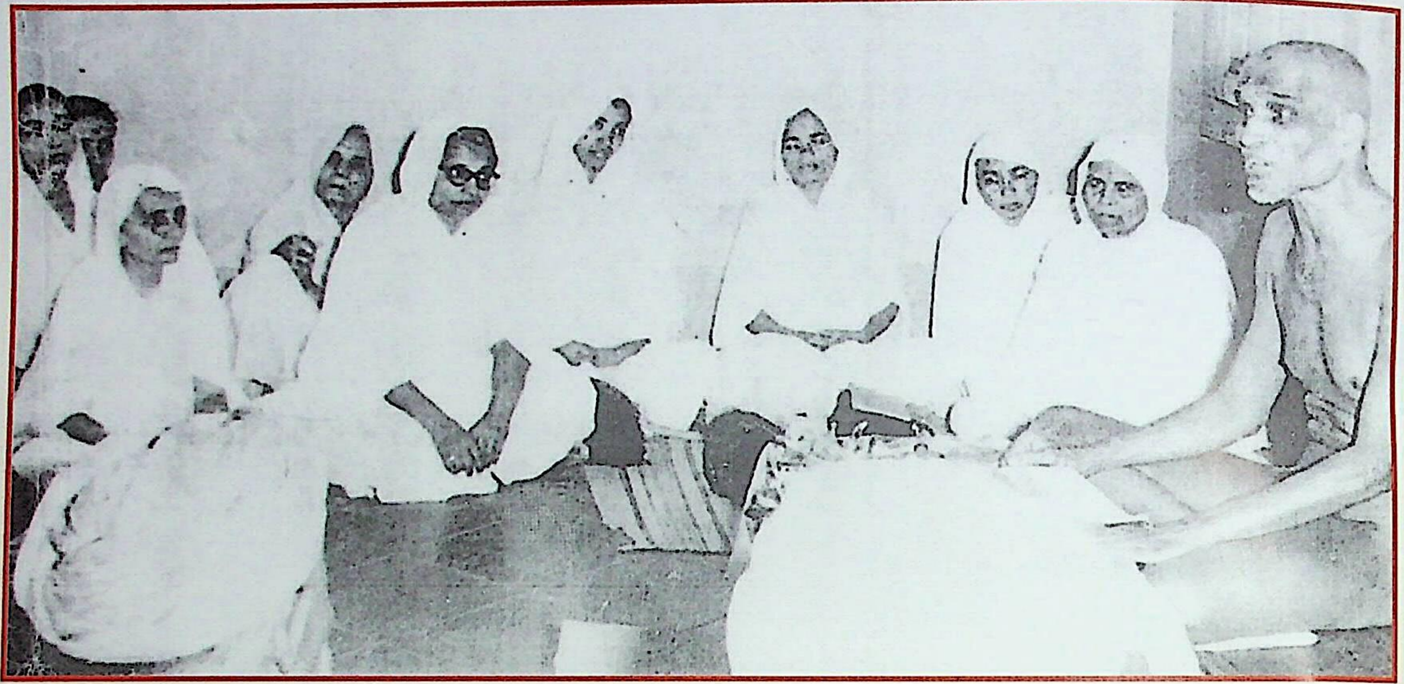

क्षुल्लिका वीरमती जी, क्षुल्लिका विशालमती जी, क्षुल्लिका विमलमती जी, क्षुल्लिका शुद्धमती माताजी।

आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात् आचार्य श्री शिवसागर जी के संघ में
पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी एवं अन्य माताजी ब्यावर (राज.)-सन् १९५८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के तृतीय पट्टाधीश आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज के संघ के साथ पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी दिगम्बर जैन लाल मंदिर दिल्ली में चातुर्मास के समय-सन् १९७४

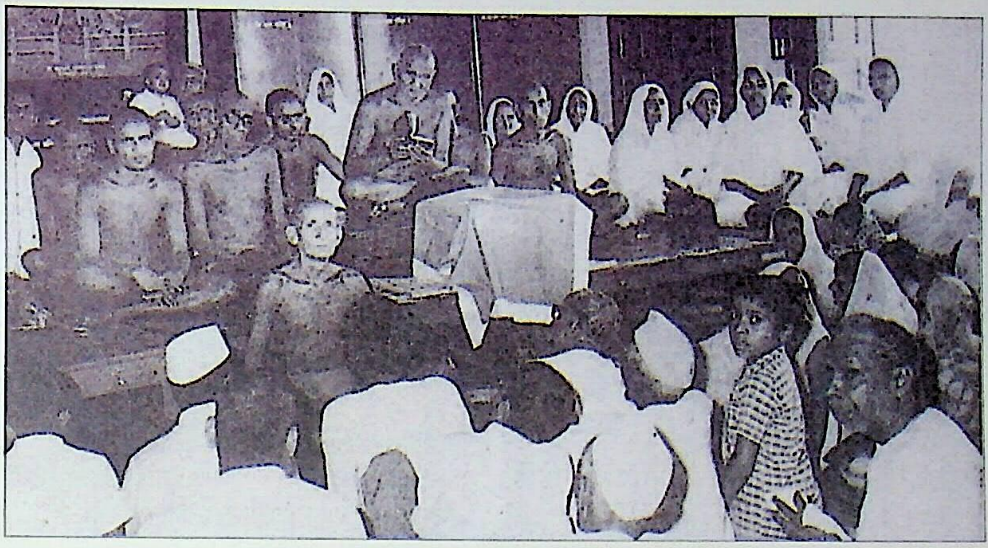

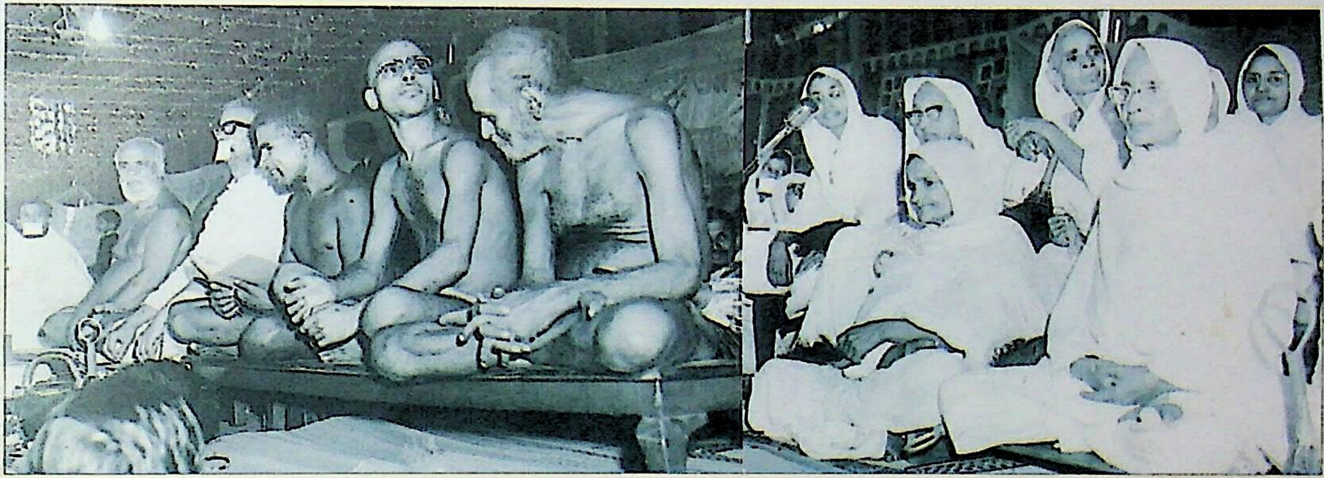

क्षुल्लिका दीक्षा गुरु भारत गौरव आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज के साथ पूज्य माताजी दिल्ली-सन् १९७२

मुनि श्री संभवसागर जी एवं मुनि श्री वर्द्धमानसागर जी (वर्तमान में आचार्य वर्द्धमानसागर) पूज्य माताजी के संघ के साथ ब्यावर (राज.)-सन् १९७२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न आचार्य संघ एवं मुनि संघों के साथ पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

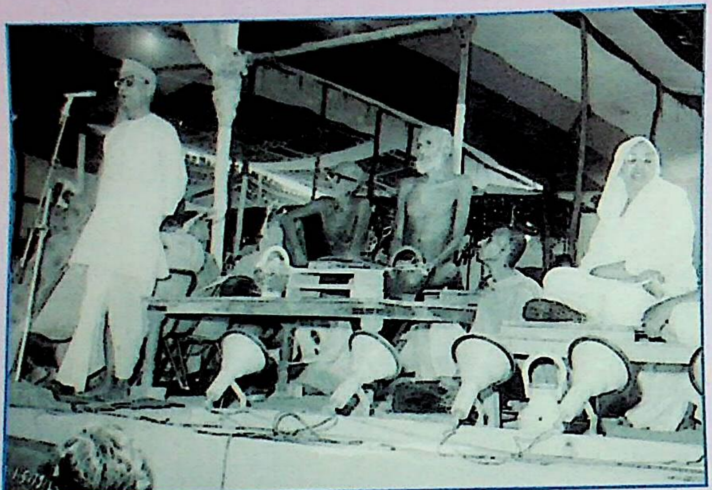

आचार्य श्री श्रेयांससागर जी (उस समय आचार्य कल्प) जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के साथ। सन् १९७९

आचार्यश्री अभिनंदनसागर जी एवं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के संघ का मंगल मिलन उदयपुर (राज.) -सन् १९९७

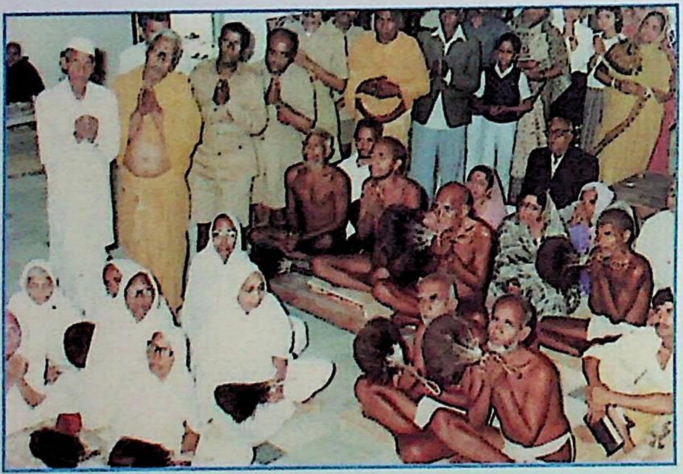

आचार्य श्री विमलसागर जी एवं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में - सन् १९८७

गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी एवं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी दोनों संघों का मिलना जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर -सन् १९८९

मुनि श्री निर्मलसागर जी एवं मुनि श्री वर्द्धमानसागर जी आदि मुनिगण एवं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी आदि आर्यिकागण हस्तिनापुर में (जम्बूद्वीप पंचकल्याणक)-सन् १९८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न आचार्यों एवं मुनिराजों के साथ पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

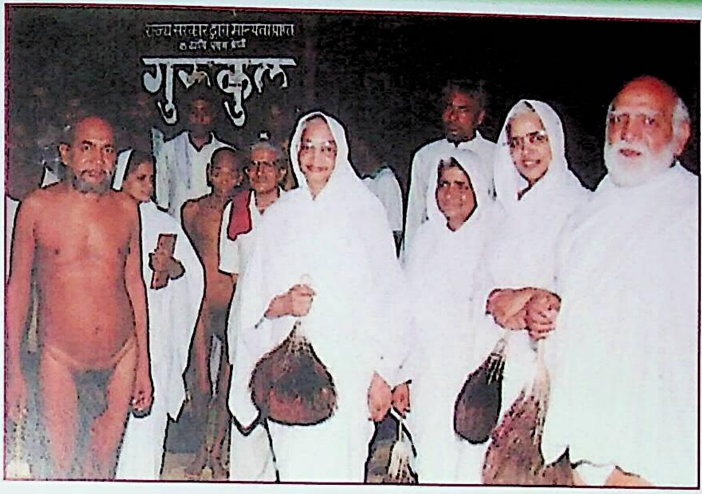

आचार्य श्री भरतसागर जी एवं गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी, दोनों संघों का इलाहाबाद के पास सैनी गांव में मंगल मिलन - सन् २००२

उपाध्याय श्री गुप्तिसागर जी एवं पूज्य माताजी राजधानी दिल्ली में पर्यूषण पर्व पर प्रवचन दि. जैन लाल मंदिर के निकट परेड ग्राउंड-सन् १९९७

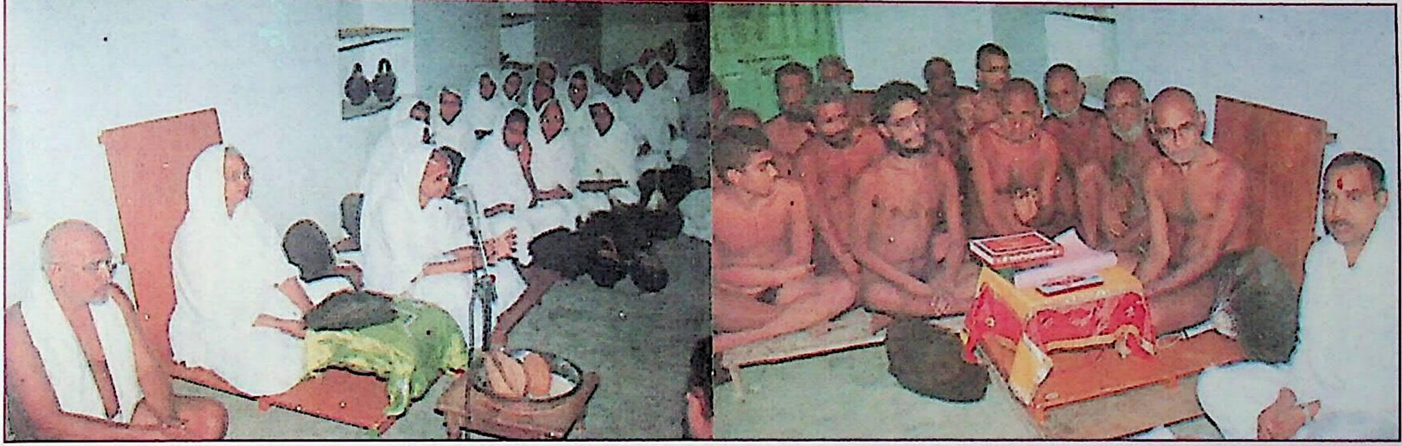

आचार्य श्री पद्मनंदी जी महाराज ससंघ एवं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी, दोनों संघों का मंगल मिलन देवपुरा (राज.)-सन् १९९७

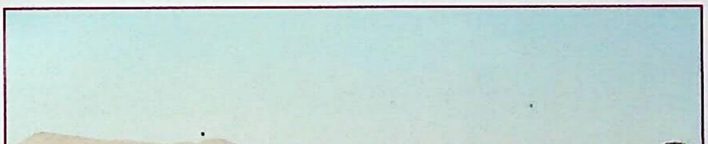

मुनि श्री हेमन्तसागर जी व मुनि श्री विरागसागर जी तथा पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी दोनों संघों का मंगल मिलन खेरवाड़ा (राज.)-सन् १९९७

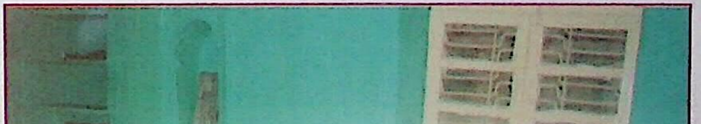

मुनि श्री तरुणसागर जी पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से चर्चा करते हुए कोटा (राज.)-सन् १९९७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप स्थल पर समय-समय पर सन्तों के मंगल पदार्पण

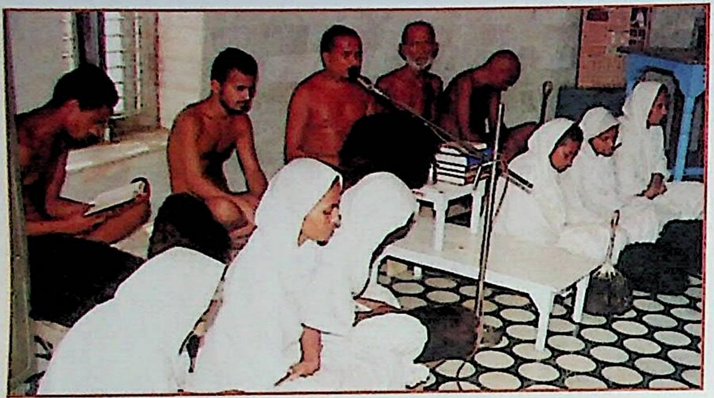

आचार्यश्री कुशाग्रनंदि जी महाराज ससंघ जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में

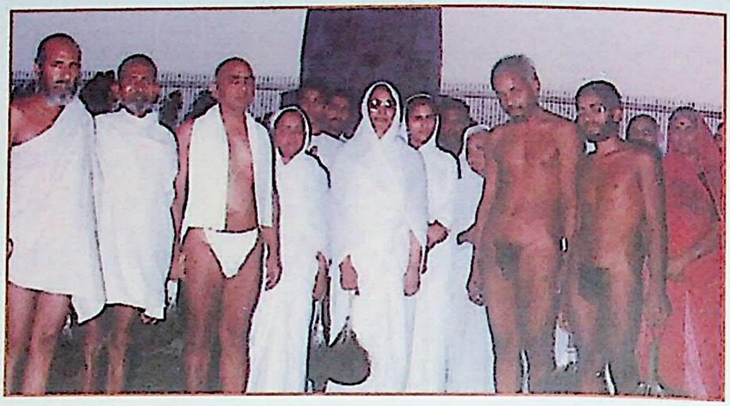

आचार्यश्री दर्शनसागर जी एवं उपाध्याय श्री समतासागर जी तथा पूज्य माताजी दोनों संघ जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर-सन् १९८८

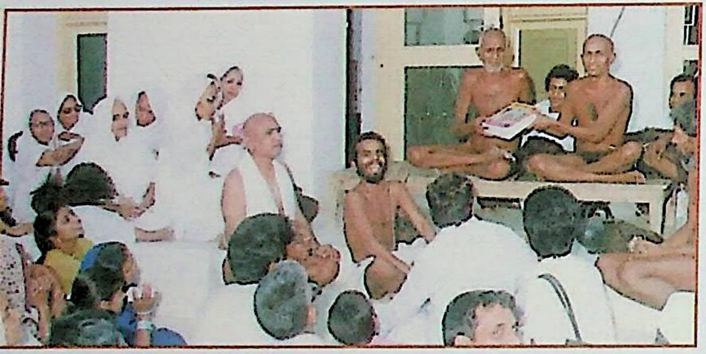

आचार्यश्री सुमतिसागर जी एवं गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी व पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी तीन संघों का मंगल मिलन जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर-सन् १९८९

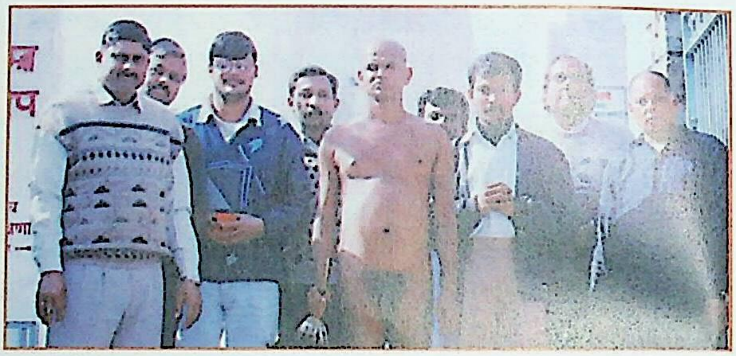

आचार्य श्री कामकुमारनंदी जी महाराज जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में

आचार्यश्री सुबाहुसागर जी केशलोंच करते हुए जम्बूद्वीप- हस्तिनापुर-सन् १९८७

पूज्य माताजी के हस्तलिखित ग्रंथ का अवलोकन करते हुए मुनि श्री कनकोज्वलनंदी जी महाराज जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर-१६ मार्च १९९८

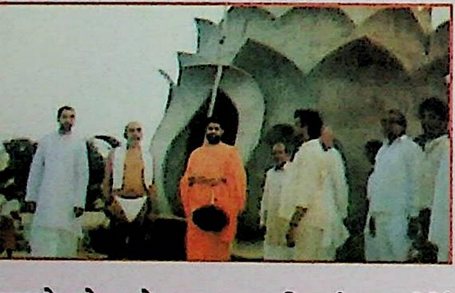

श्रवणबेलगोला के भट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में -सन् १९८८

मूडबिद्री के भट्टारक श्री चारुकीर्ति जी पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए दिल्ली-सन् २०००

पूज्य भट्टारक स्वस्ति श्री धवलकीर्ति जी पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए -सन् १९९८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी एवं संघस्थ आर्यिकाएँ

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी एवं संघस्थ शिष्याएं बांये से आर्यिका श्रेष्ठमती, आर्यिका आदिमती, आर्यिका पद्मावती, आर्यिका जिनमती, क्षुल्लिका अभयमती माताजी श्राविका संस्था नगर, सोलापुर (महाराष्ट्र) चातुर्मास-सन् १९६६

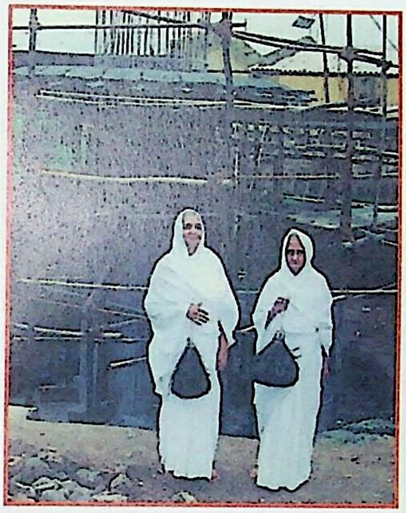

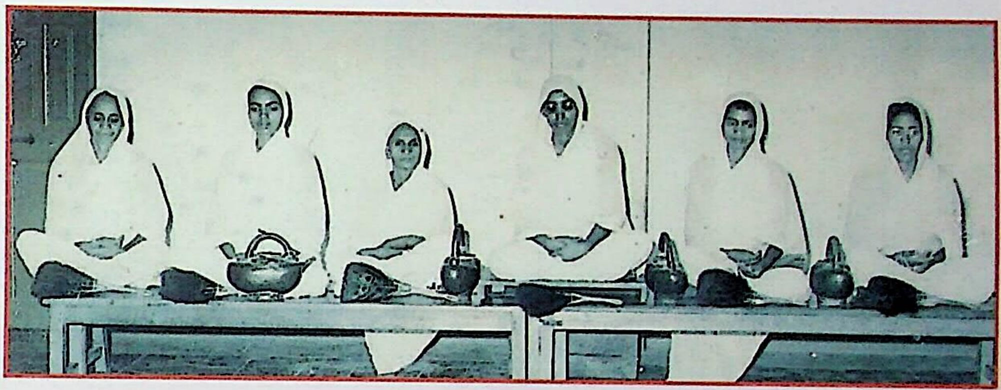

पूज्य ज्ञानमती माताजी एवं संघस्थ आर्यिकावृंद आर्यिका श्री श्रेष्ठमती जी, आर्यिका जिनमती जी, आर्यिका श्री पद्मावती जी, आर्यिका श्री आदिमती जी एवं क्षुल्लिका श्री अभयमती जी सनावद चातुर्मास-सन् १९६७

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के साथ आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी मांगीतुंगी-सन् १९९६

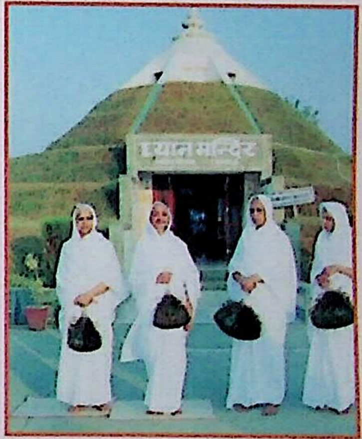

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के साथ आर्यिका श्री सुभूषणमती माताजी जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर-सन् २००५

पूज्य माताजी के साथ आर्यिका श्री रत्नमती माताजी जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर-सन् १९८१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न संप्रदायों के संतों के साथ पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

श्वेताम्बर तेरापंथ परम्परा के आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एवं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी चर्चा करते हुए दिल्ली-सन् १९९९

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी एवं श्वेताम्बर स्थानक परम्परा की आचार्य चंदना जी कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार-सन् २००४

भगवान महावीर के २६००वें जन्मकल्याणक के शुभ अवसर पर आयोजित जैन महासभा दिल्ली द्वारा दीक्षा कल्याणक महोत्सव में अनेक श्वेताम्बर आचार्य एवं सन्तगण के मध्य पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी दिल्ली-दिसम्बर २००१

अहिंसा महाकुंभ आयोजन लालकिला मैदान, दिल्ली में पूज्य ज्ञानमती माताजी एवं अन्य श्वेताम्बर साध्वियाँ - १ जनवरी २०००

पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से दि. जैन मंदिर राजाबाजार, कनॉट प्लेस नई दिल्ली में सोनगढ़ के श्री कांजी भाई चर्चा करते हुए सन् १९७४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते भारत के महामहिम राष्ट्रपति

महामहिम राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। पावापुर (नालंदा) बिहार-३१ मई २००३

महामहिम राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए दिल्ली में। सन् १९९७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारत के प्रधानमंत्री पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

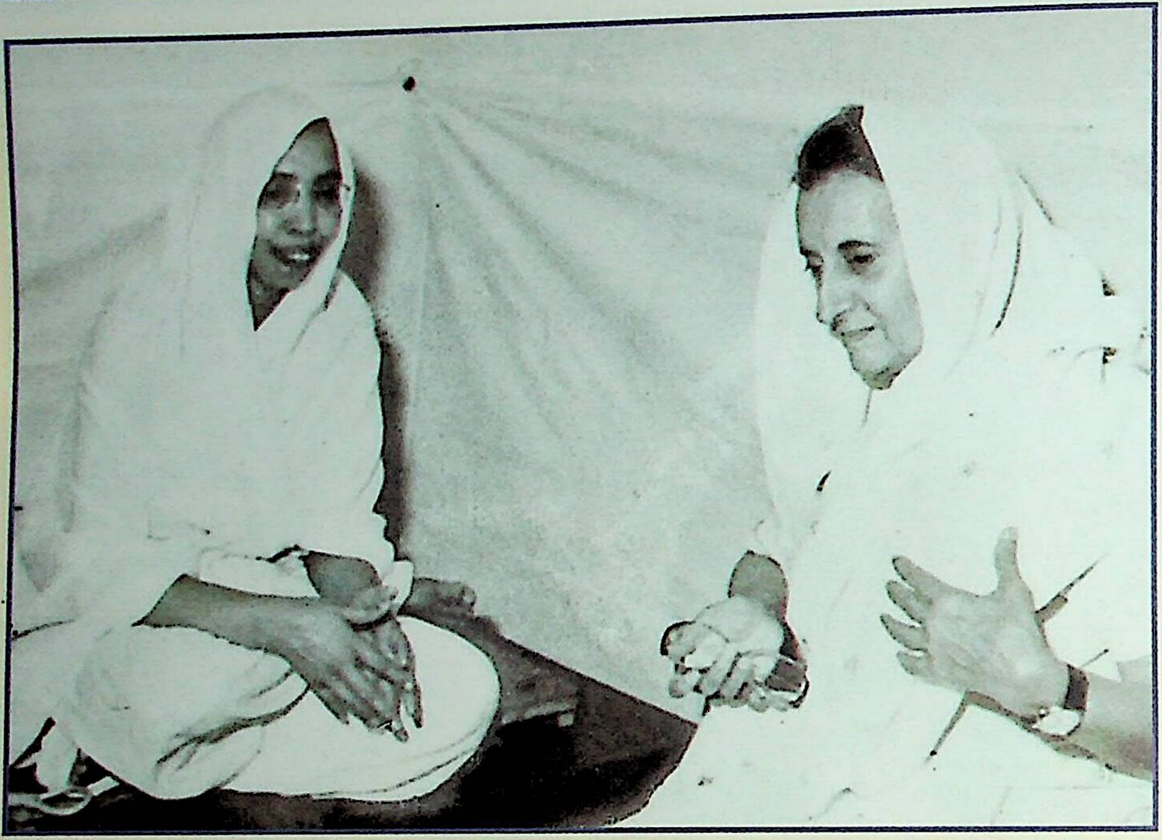

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। दिल्ली-४ जून १९८२

प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी (तत्कालीन सांसद) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। ३१ अक्टूबर १९८२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी से संस्थान के प्रतिनिधि मण्डल की भेंट-अक्टूबर २००५

सोनिया गांधी के साथ प्रतिनिधि मंडल में ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, ब्र. कुमारी स्वाति जैन, ब्र. विजय जैन, कमलचंद जैन खारी बावली, अनिल जैन, प्रीत विहार, संघपति महावीर प्रसाद जैन, कैलाश चंद जैन, करोलबाग, कैलाश चंद जैन चौधरी, सनावद

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद स्वरूप श्रीफल भेंट

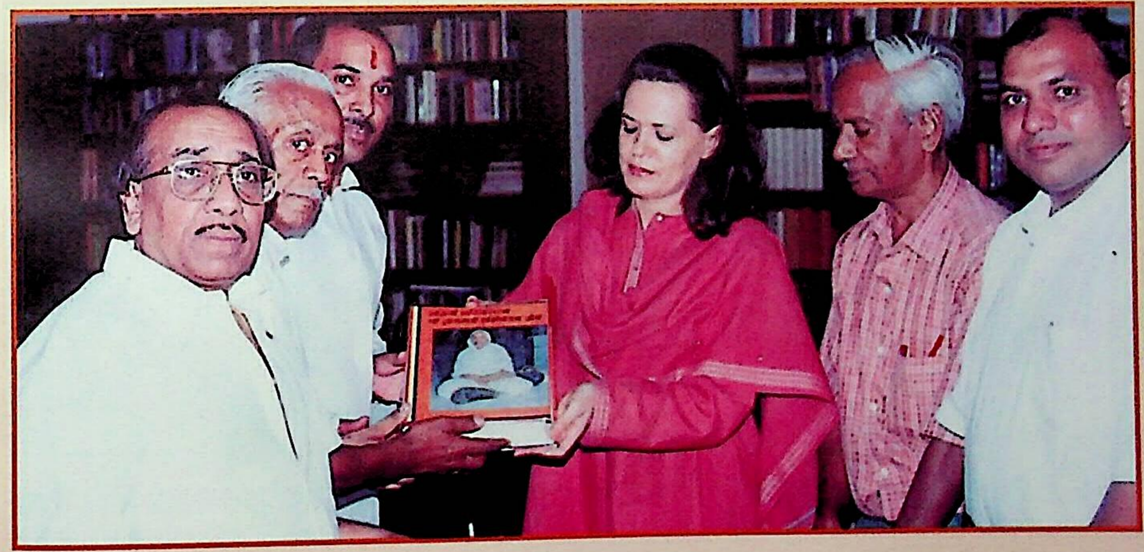

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी अभिवंदन ग्रंथ भेंट करते हुए ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार, राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स, संघपति महावीर प्रसाद जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारत के प्रधानमंत्री पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को आशीर्वाद देते हुए। समीप में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी दिल्ली-४ फरवरी २०००

प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हाराव (तत्कालीन रक्षामंत्री-भारत सरकार) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर -२८ अप्रैल १९८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न प्रदेशों के महामहिम राज्यपाल पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

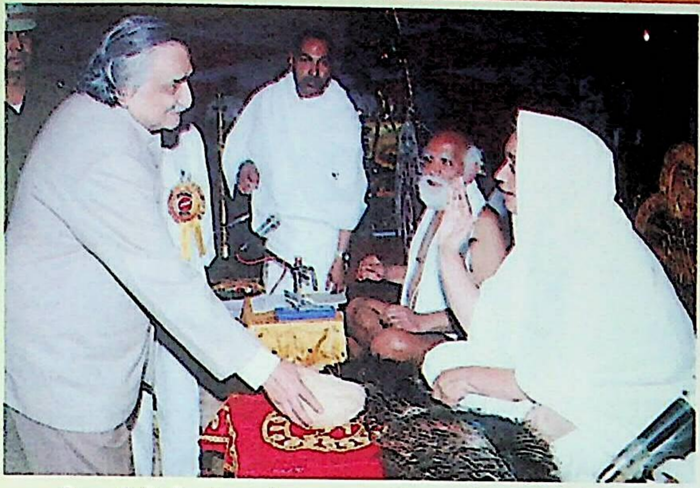

महामहिम श्री विनोदचंद पाडे (राज्यपाल बिहार प्रदेश) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार-फरवरी २००३

महामहिम राज्यपाल श्री सत्यनारायण रेड्डी जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। सन् १९९०

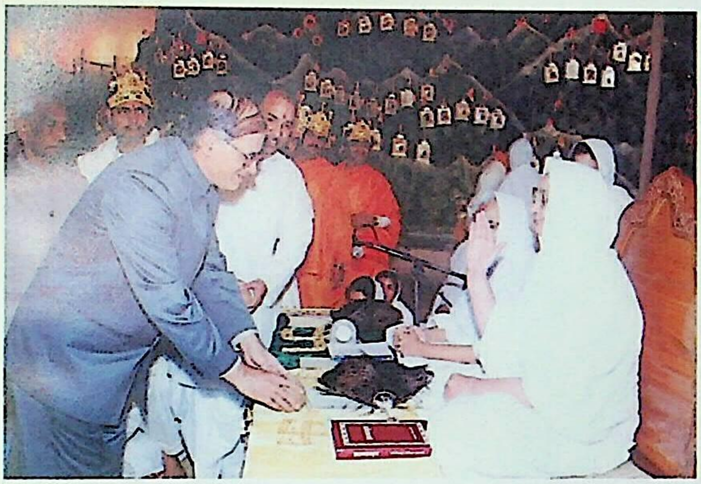

महामहिम श्री विजय कपूर (उपराज्यपाल दिल्ली) पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। दिल्ली-फरवरी २०००

महामहिम राज्यपाल श्री कृष्णपाल सिंह (गुजरात प्रदेश) गांधीनगर-गुजरात में पूज्य ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए. दिसम्बर १९९६

महामहिम श्री वेद मारवाह (राज्यपाल-मणिपुर) ६ मई २००१ साथ में पं. सुधर्मचंद एवं विजय जैन-हस्तिनापुर

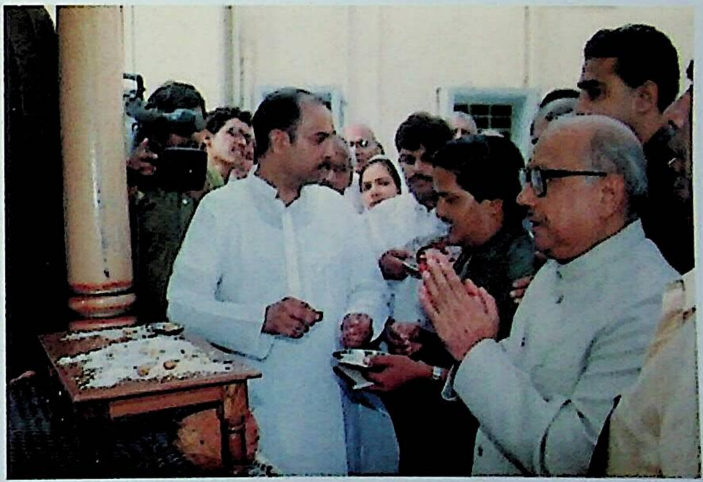

महामहिम राज्यपाल श्री एन.एल. टिबरेवाल एवं कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन के साथ। जयपुर समवसरण रथ प्रवर्तन-१९ जुलाई १९९८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माननीय मुख्यमंत्री पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर-अप्रैल १९८५

श्रीमती शीला दीक्षित (मुख्यमंत्री-दिल्ली सरकार) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। सन् २०००

माननीय श्री नितीश कुमार जी (मुख्यमंत्री-बिहार प्रदेश) (तत्कालीन रेलमंत्री-भारत सरकार) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। सन् २००३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माननीय मुख्यमंत्री एवं विधान सभाध्यक्ष पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

माननीय मुलायम सिंह यादव (मुख्यमंत्री-उत्तरप्रदेश सरकार) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। टिकैतनगर-सन् २००५

माननीय श्री माताप्रसाद पाण्डे (विधानसभा अध्यक्ष-उ.प्र.) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। टिकैतनगर- फरवरी २००५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न प्रदेशों के मुख्यमंत्री पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

माननीय श्री राजनाथ सिंह (तत्कालीन मुख्यमंत्री-उत्तरप्रदेश) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए- सन् २०००

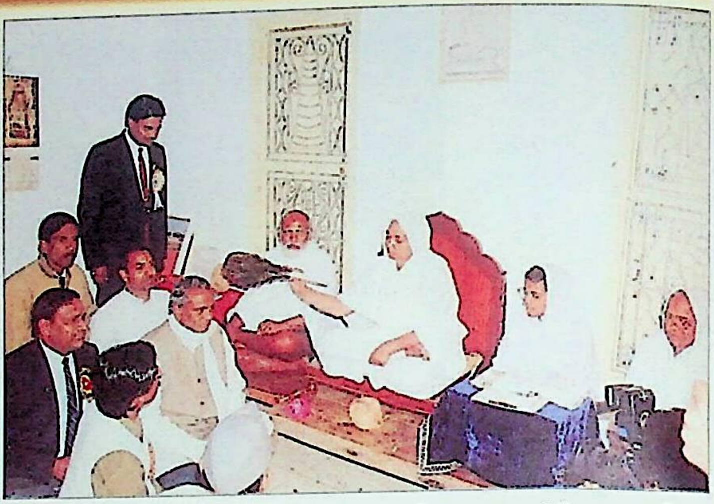

माननीय श्री कल्याणसिंह (तत्कालीन मुख्यमंत्री-उत्तरप्रदेश) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए- सन् १९९२

माननीय श्री मनोहर जोशी (तत्कालीन मुख्यमंत्री-महाराष्ट्र प्रदेश) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। मांगीतुंगी-जून १९९६

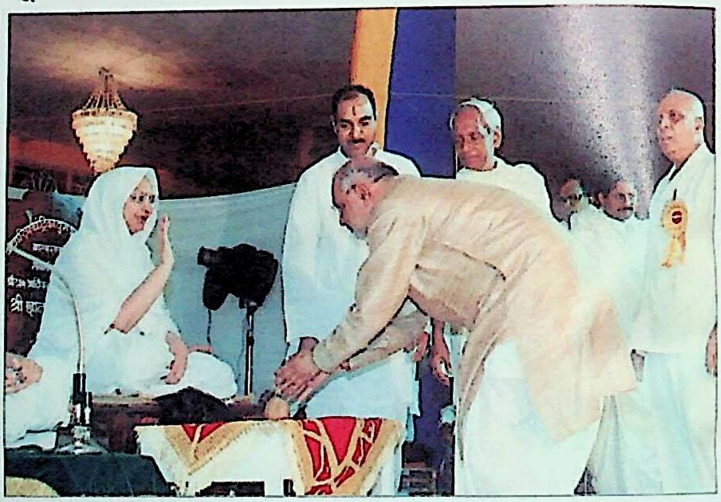

माननीय श्री साहिब सिंह वर्मा (तत्कालीन मुख्यमंत्री-दिल्ली प्रदेश) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए- सन् १९९७

माननीय श्री शंकर सिंह वाघेला (तत्कालीन मुख्यमंत्री-गुजरात प्रदेश) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। अहमदाबाद- दिसम्बर १९९६

माननीय श्री दिग्विजय सिंह (तत्कालीन मुख्यमंत्री-म.प्र.) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। दिल्ली-अक्टूबर १९९७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महामहिम राज्यपाल पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

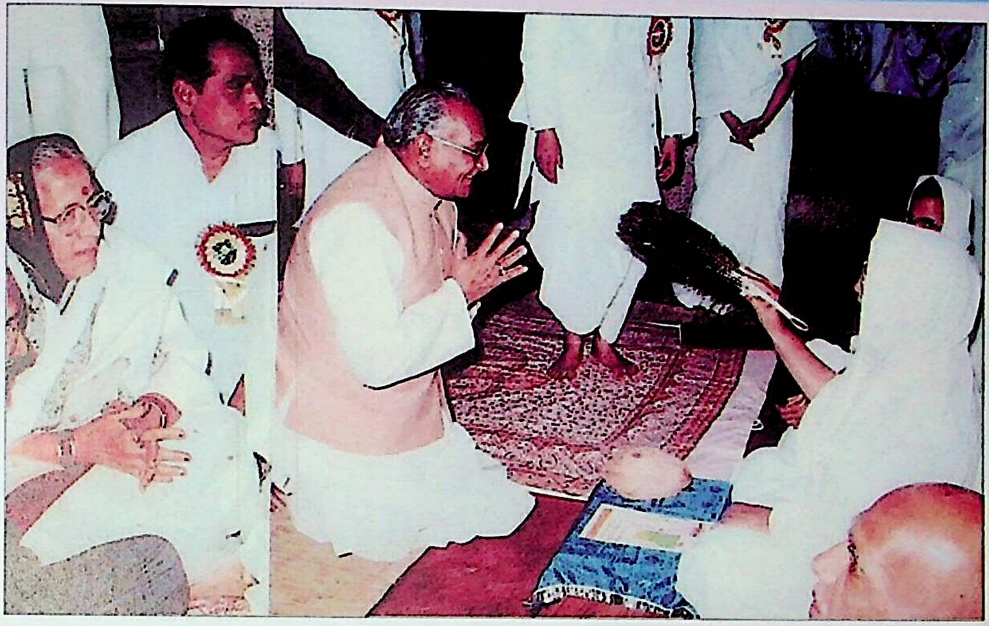

उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा। २३ फरवरी १९९४, अयोध्या

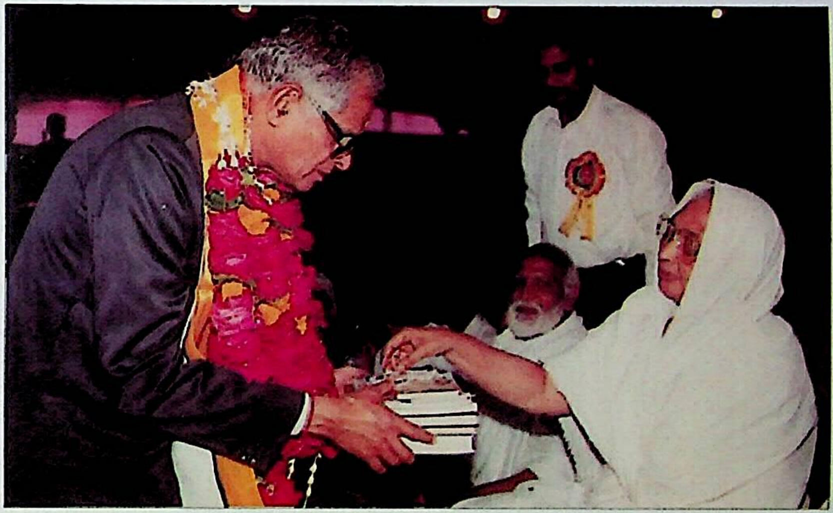

उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल पं. श्री विष्णुकांत शास्त्री। ६ फरवरी २००१, प्रयाग-इलाहाबाद

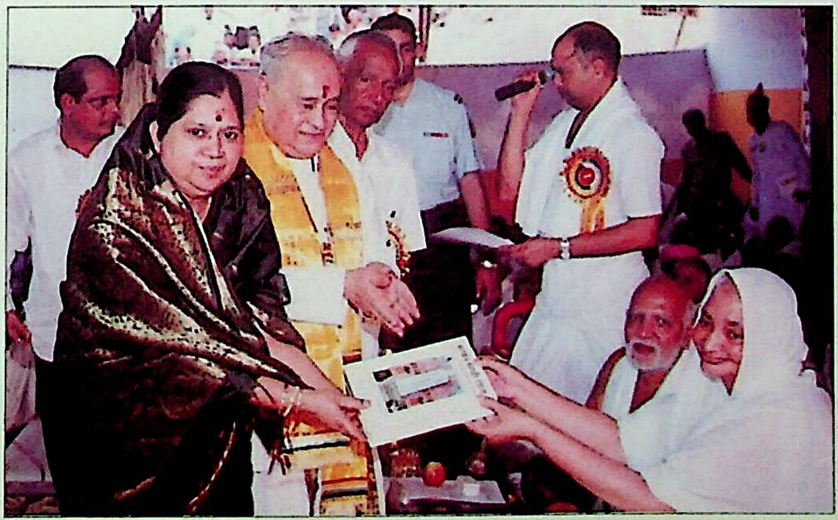

बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री एम. रामा. जोयिस। अक्टूबर २००३ कुण्डलपुर-नालन्दा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सांसद श्री जे.के. जैन पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

श्री जे.के. जैन (सांसद-राज्यसभा) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए- सन् १९८२

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी के साथ जे.के. जैन ज्ञानज्योति प्रवतन के आयोजन में- ४ जनवरी १९८२

संस्थान के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन श्री जे.के. जैन से पुस्तक का विमोचन कराते हुए-सन् १९८२

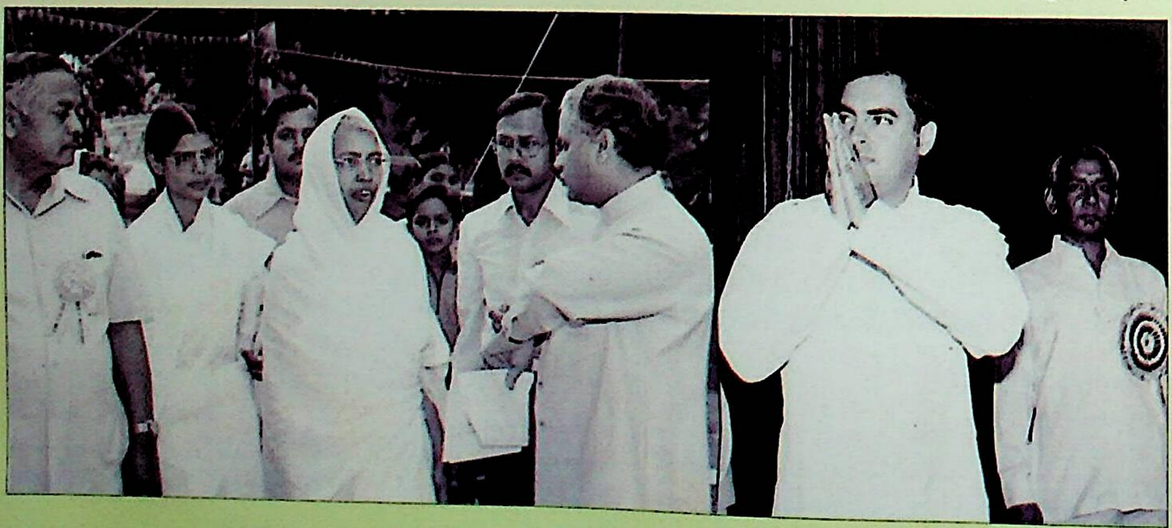

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में श्री राजीव गांधी एवं श्री जे.के. जैन फिक्की आडिटोरियम दिल्ली में ३१ अक्टूबर १९८२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वी. धनंजय कुमार (वित्त राज्यमंत्री-भारत सरकार) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

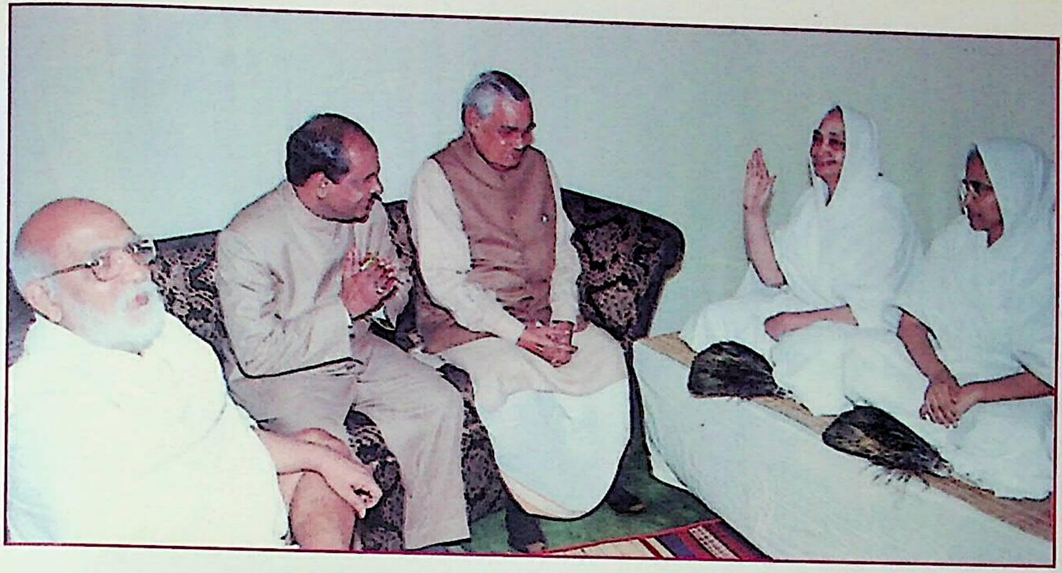

माननीय श्री वी. धनंजय कुमार जैन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। साथ में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी एवं क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज- ४ फरवरी २०००

श्री वी. धनंजय कुमार सपरिवार पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए।

माननीय श्री वी. धनंजय कुमार जैन को दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर द्वारा ऋषभदेव भगवानमहावीरजन्मभूमि नेशनल एवार्ड से सम्मान। कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार- अक्टूबर २००३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्रीगण पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

माननीय श्री जार्ज फर्नांडीज (रक्षामंत्री- भारत सरकार) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार-फरवरी २००३

माननीय श्री सी.पी. ठाकुर (स्वास्थ्य मंत्री-भारत सरकार) पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार-फरवरी २००३

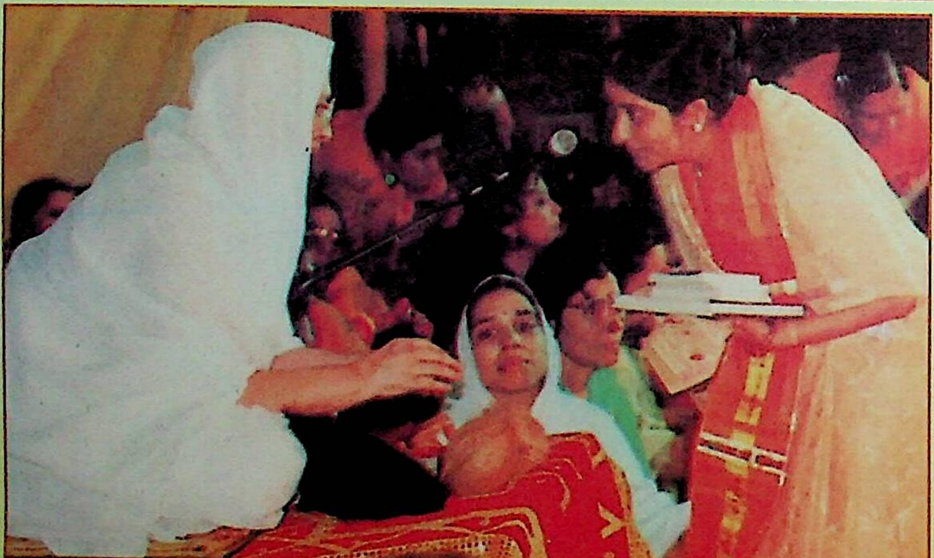

श्रीमती सुषमा स्वराज केन्द्रीय मंत्री पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। सन् १९९७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री समय-समय पर पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री श्री श्रीप्रकाश जायसवाल पूज्य ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए-अक्टूबर २००५

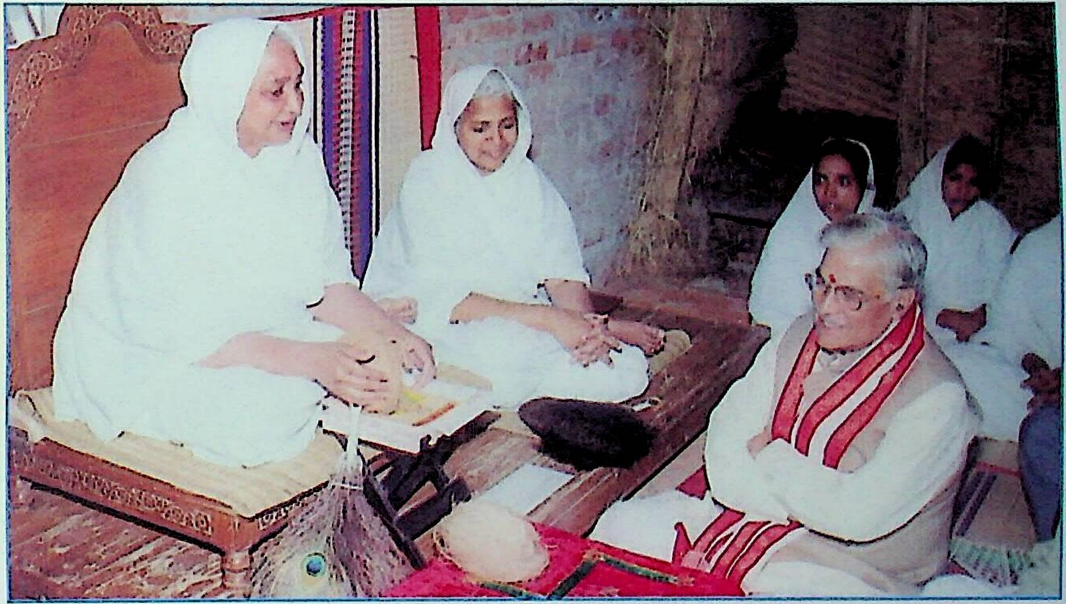

डॉ. मुरली मनोहर जोशी (मानव संसाधन विकास मंत्री) ऋषभदेव तीर्थ प्रयाग-इलाहाबाद में पूज्य माताजी से चर्चा करते हुए-४ फरवरी २००१

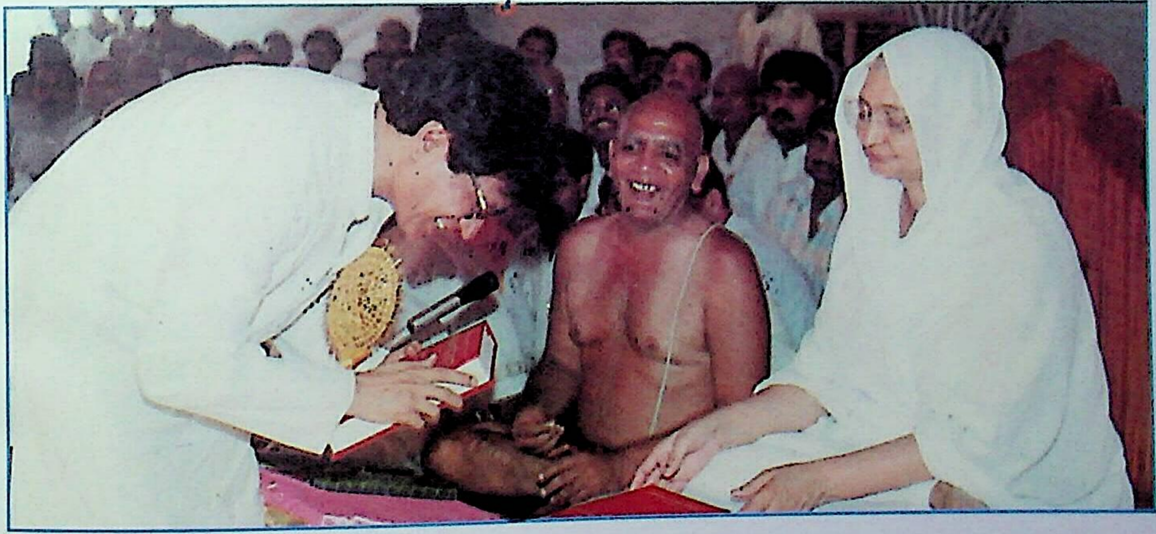

माननीय चौ. अजीत सिंह पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए-सन् १९९५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशिष्ट नेतागण पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

श्री एल.एम. सिंघवी सांसद पूज्य ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। दिल्ली-सन् २०००

माननीय श्री अशोक सिंघल (अंतर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष-विहिप) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। साथ में पूज्य अभयमती माताजी एवं क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज तथा स्वागत करते हुए संस्थान के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन। जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर-सन् २००५

श्री कल्लप्पा अवाड़े (अध्यक्ष-दक्षिण भारत जैन सभा) पूज्य ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। अयोध्या-३ अप्रैल २००५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय-समय पर भारत सरकार के मंत्रियों ने लिया आशीर्वाद

माननीय श्री रमन सिंह (केन्द्रीय वाणिज्य उद्योग राज्यमंत्री) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए। साथ में विधायक श्री नेमीचंद जैन, हस्तिनापुर-२३ अप्रैल २०००

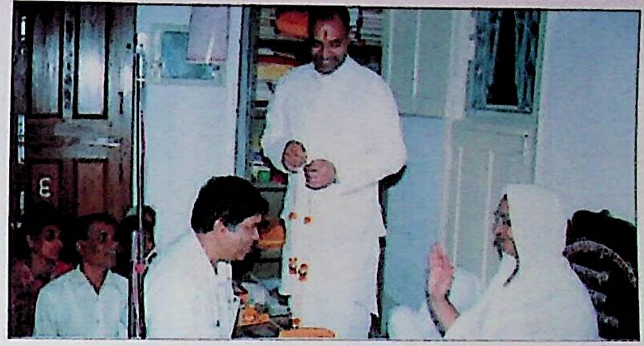

श्री ऑस्कर फर्नांडीज सांसद एवं महासचिव कांग्रेस पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए-९ फरवरी १९९९

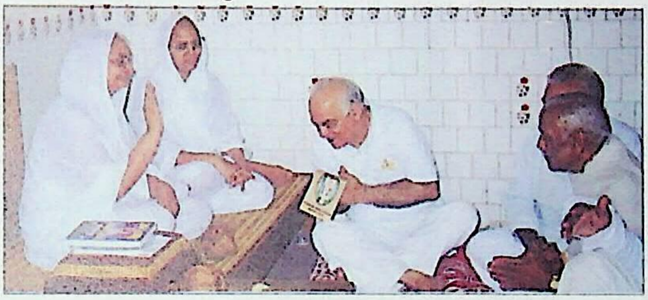

श्री मदनलाल खुराना पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए-सन् २०००

केन्द्रीय मंत्री श्री राम लालराही पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए, अयोध्या-फरवरी १९९४

केन्द्रीय मंत्री श्री ए.पी. शर्मा पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए, दिल्ली-सन् १९८०

श्री प्रकाश चंद सेठी (केन्द्रीय गृहमंत्री) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए, अक्टूबर-सन् १९८०

केन्द्रीय रेल मंत्री श्री माधवराव सिंधिया पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए, मार्च-सन् १९८७

केन्द्रीय मंत्री श्री उत्तम भाई हरजी पटेल पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए-सन् १९९२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय-समय पर सांसद एवं विधानसभा अध्यक्ष आदि नेताओं ने पूज्य ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया

श्री जयप्रकाश अग्रवाल सांसद को पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद-सन् १९९७

श्रीमती अनुराधा चौधरी सांसद का सम्मान-अक्टूबर २००५

माननीय श्री बेनी प्रसाद वर्मा सांसद का सम्मान, टिकैतनगर-१२ फरवरी २००५

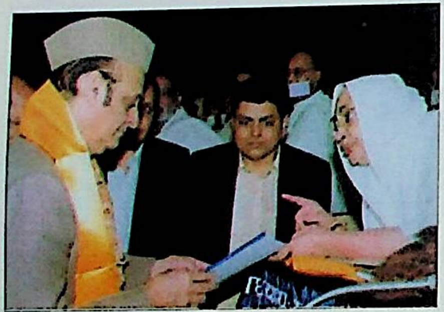

डॉ. कर्ण सिंह सांसद पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए, दिसम्बर २००१

सांसद श्री राजीव रंजन सिंह का सम्मान करते हुए रिखबदास जी जैन, वाराणसी-६ जनवरी २००५

उ.प्र. विधानसभा अध्यक्ष श्री केसरीनाथ त्रिपाठी पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए, इलाहाबाद-सन् २००२

दिल्ली विधान सभा अध्यक्ष श्री चरतीलाल गोयल पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए-सन् १९९८

श्रीमती किरण माहेश्वरी सांसद-उदयपुर महावीर ज्योति रथ पर स्वस्तिक बनाते हुए। साथ में संयोजक विजय जैन-२३ मई २००४

श्री राघव जी सांसद पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए-फरवरी २०००

सांसद श्रीमती चंद्रिका केनिया का स्वागत करते हुए श्री गणेशीलाल रानीवाला-सन् १९९२

सांसद श्री राजेश पायलेट पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए-सन् १९९८

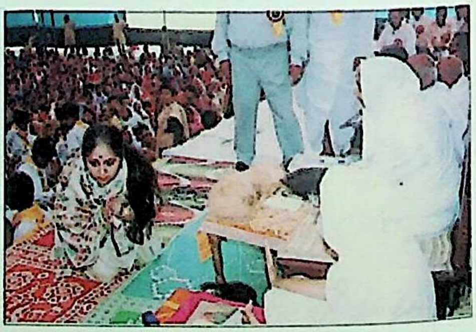

श्रीमती पूर्णिमा सेठी विधायक-दिल्ली पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए-सन् १९९७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तरप्रदेश सरकार के मंत्रीगण समय-समय पर पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

लोक निर्माण मंत्री माननीय श्री शिवपाल सिंह यादव-सन् २००५

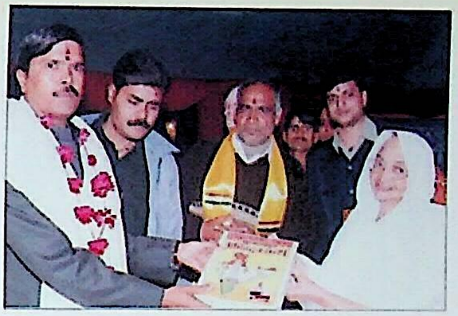

माननीय श्री राकेश वर्मा, कारागार मंत्री-फरवरी २००५

माननीय श्री नरेश अग्रवाल (परिवहन मंत्री)-अप्रैल २००५

माननीय नवाब श्री कोकब हमीद (पर्यटन मंत्री)-अक्टूबर २००५

माननीय श्री अवधेश प्रसाद (समाज कल्याण मंत्री)-अप्रैल २००५

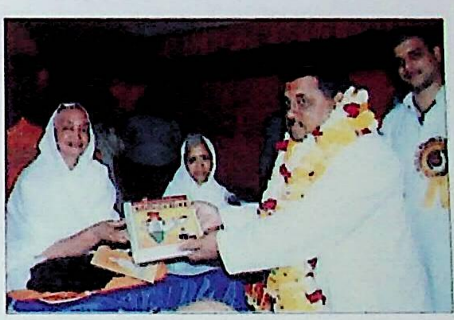

माननीय श्री मुन्ना सिंह चौहान (सिंचाई मंत्री)-अप्रैल २००५

माननीय श्री वीरेन्द्र सिंह (मंत्री)-जनवरी २००५

माननीय श्री राकेश अग्रवाल (उपाध्यक्ष-विधानसभा)-जनवरी २००५

माननीय श्री अरविंद सिंह गोप (मंत्री)-अप्रैल २००५

माननीय श्री मिराजुद्दीन (मंत्री-उत्तरप्रदेश सरकार)-१५ अक्टूबर २००५

माननीय श्री राम बहादुर सिंह (अध्यक्ष-श्रम विभाग)-दिसम्बर २००५

माननीय श्री प्रभुदयाल बाल्मीकि (अध्यक्ष-समाज कल्याण विभाग)-अक्टूबर २००५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न प्रदेश के नेताओं ने पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया

माननीय श्री ए.के. वालिया (मंत्री-दिल्ली)-सन् २०००

माननीय श्री लाल जी टंडन (नगर आवास विकास मंत्री)-सन् १९९८

माननीय श्री कलराज मिश्र (भाजपा नेता)-अक्टूबर २००२

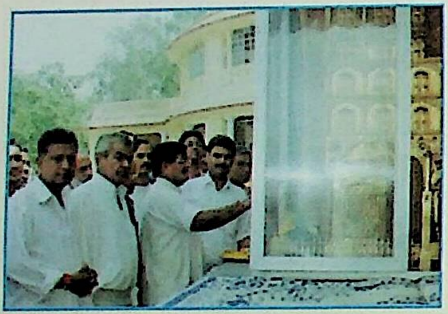

माननीय श्री गुलाबचंद कटारिया-२३ मई २००४

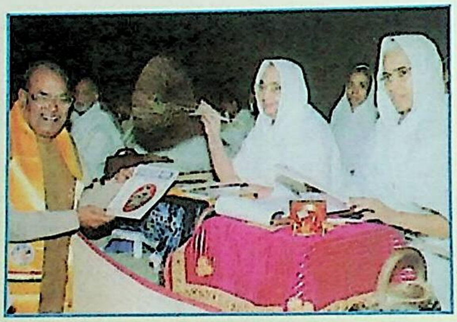

माननीय श्री मांगेराम गर्ग (अध्यक्ष-भाजपा दिल्ली प्रदेश)

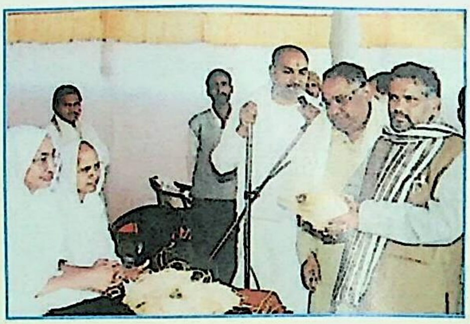

माननीय विधायक श्री श्रवण कुमार जी, नालंदा-बिहार

माननीय श्री सुरेन्द्र कुमार तरुण (पूर्व शिक्षामंत्री-बिहार)

सुश्री सीमा रिजवी एवं डॉ. अरविंद जैन (मंत्री) लखनऊ रथ प्रवर्तन-सन् १९९८

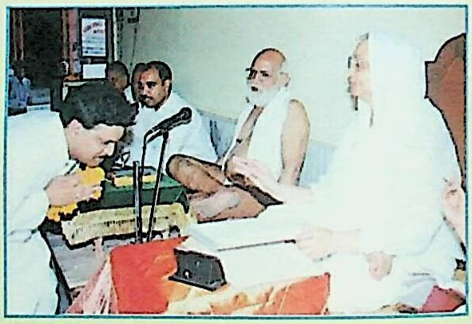

श्री राजेश जैन (विधायक-दिल्ली प्रदेश)-सन् १९९९

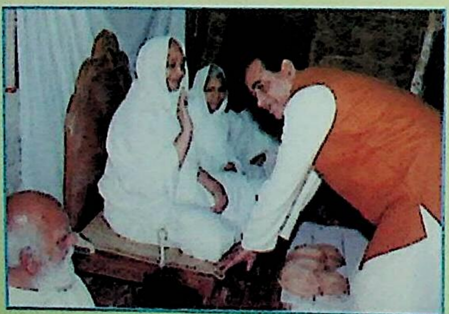

श्री राधेश्याम गुप्ता (न्यायमंत्री-उ.प्र.)-सन् २००२

प्रो. वासुदेव सिंह (खाद्य मंत्री-उ.प्र.)-सन् १९८५

माननीय श्री धनराज जी यादव (सिंचाई मंत्री)-सन् १९९८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालय के कुलपतियों ने पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया

माननीय श्री के.पी. नौटियाल (कुलपति-डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय) फैजाबाद पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी को डी.लिट्. की उपाधि प्रदान करते हुए-सन् १९९५

माननीय प्रो. श्री अंगनेलाल (कुलपति-डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय) पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए-सन् १९९५

माननीय श्री एस.बी. सिंह (कुलपति-डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय)) पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए-सन् २००५

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय-वाराणसी के कुलपति प्रो. रामचन्द्र राव हिन्दी-अंग्रेजी जैन शब्दकोश का विमोचन करते हुए-सन् २००५

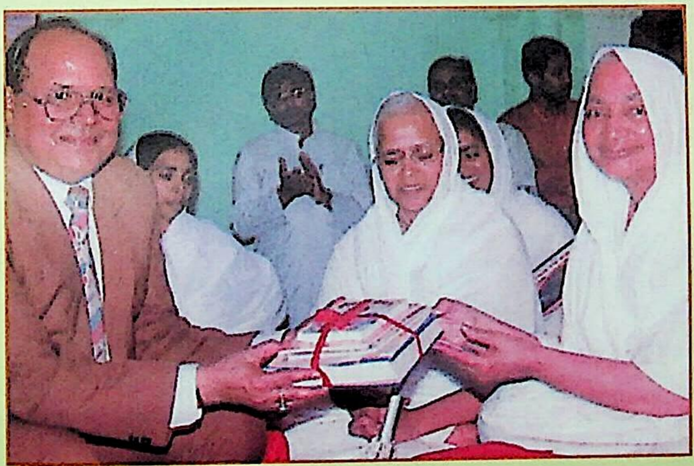

सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेन्द्र मिश्र पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए- सन् २००५

बुल्गारिया के राजदूत श्री एडविन सुगेरेव पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

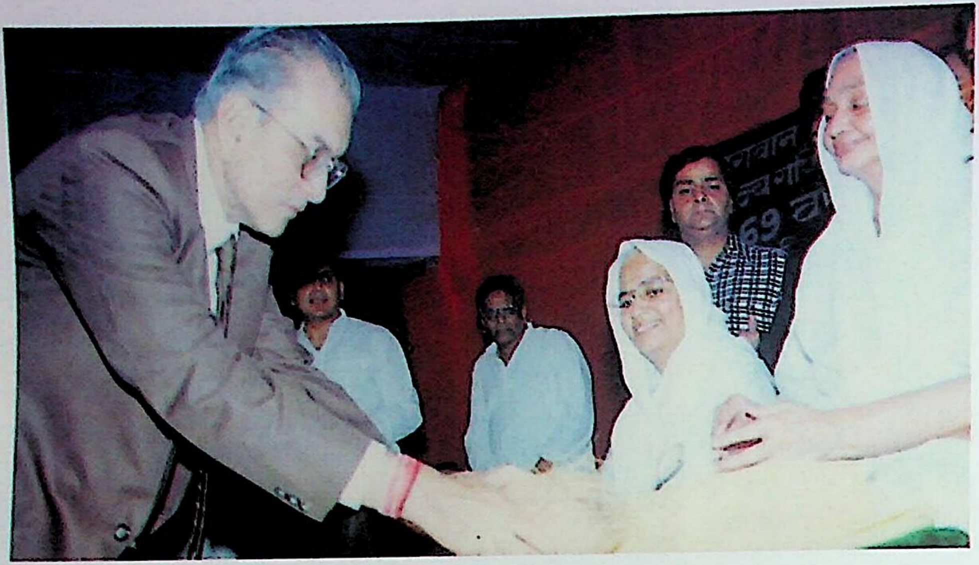

इलाहाबाद हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री श्यामल कुमार सेन पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए, इलाहाबाद-अक्टूबर २००२

माननीय श्री सुधीर नारायण (न्यायाधीश-इलाहाबाद हाईकोर्ट) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए, अक्टूबर २००५

न्यायाधीश माननीय श्री मिलापचंद जैन पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए-सन् १९९७

माननीय श्री आर.एस. गर्ग (न्यायाधीश- पटना हाईकोर्ट) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए- नवम्बर २००४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं-१९७५ एवं १९७९

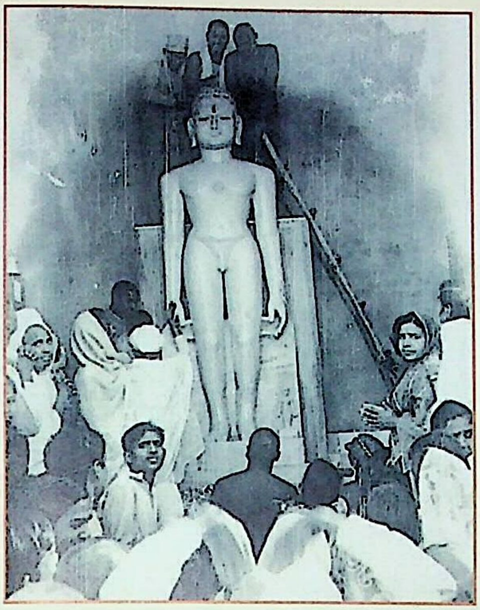

उ.प्र. सरकार के मंत्री श्री रेवती रमण जी, साथ में बायें से श्री कैलाशचंद जैन 'खद्दर वाले'-सरधना, श्री शिखरचंद जैन 'रानी मिल'-मेरठ एवं वैद्य श्री शांतिप्रसाद जैन, दिल्ली-सन् १९७९

भगवान महावीर पंचकल्याणक में आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज प्रतिमा जी के मस्तक पर संस्कार करते हुए-सन् १९७५

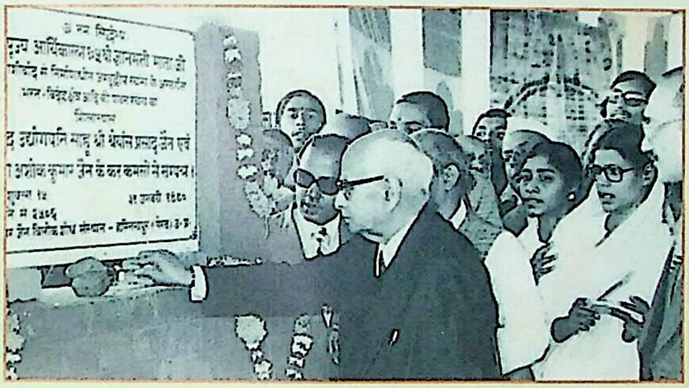

प्रसिद्ध उद्योगपति साहू श्री श्रेयांस प्रसाद जैन एवं साहू श्री अशोक कुमार जैन हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना के अंतर्गत शिलान्यास करते हुए-३१ जनवरी १९८०

शास्त्री परिषद के अध्यक्ष पं. लाल बहादुर शास्त्री एवं महामंत्री पं. बाबूलाल जमादार का सम्मान-सन् १९७९

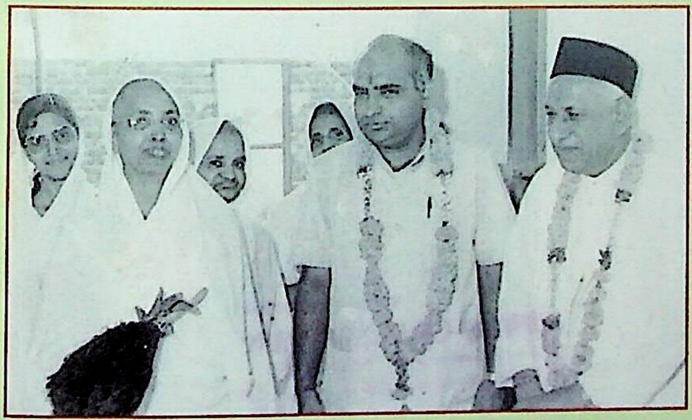

जम्बूद्वीप स्थल पर निर्मित रत्नत्रय निलय भवन का उद्घाटन करते हुए लाला श्री उग्रसेन जैन एवं उनके पुत्र श्री हेमचंद जैन, पहाड़गंज, दिल्ली-१५ मई १९८३

श्री मांगीलाल पहाड़े-हैदराबाद, श्री अमोलकचंद जैन सर्राफ-सनावद, डॉ.कैलाशचंद जैन 'राजा टायज'-दिल्ली (प्रथम अध्यक्ष-संस्थान) एवं श्री श्रीचंद जी जैन, सनावद-सन् १९७९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुदर्शन मेरु जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-१९७९

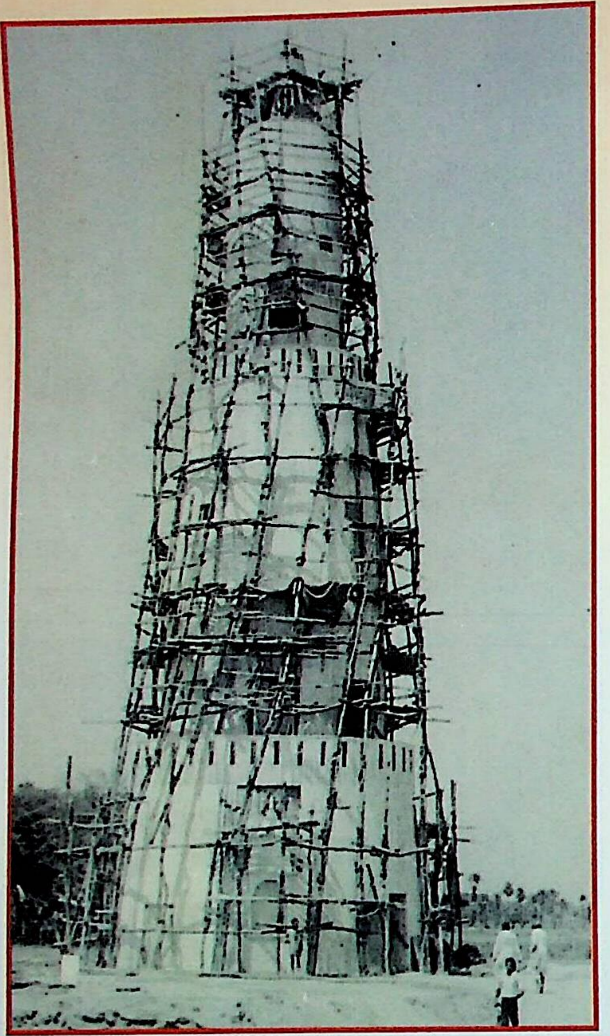

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना के मध्य निर्मित १०१ फुट ऊँचा सुमेरु पर्वत-सन् १९७९

पंचकल्याणक के सौधर्म इन्द्र श्री हरकचंद सरावगी-कलकत्ता एवं प्रतिष्ठाचार्य ब्र. श्री सूरजमल जैन भगवान का अभिषेक करते हुए

पंचकल्याणक के मध्य भगवान की दीक्षाकल्याणक का दृश्य पूज्य आचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज के करकमलों से

सुमेरु पर्वत के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की शुभ अवसर पर गजरथ का दृश्य - सन् १९७९

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी पंचकल्याणक के मध्य प्रवचन करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप पंचकल्याणक हस्तिनापुर-१९८५ की सचित्र झलकियाँ

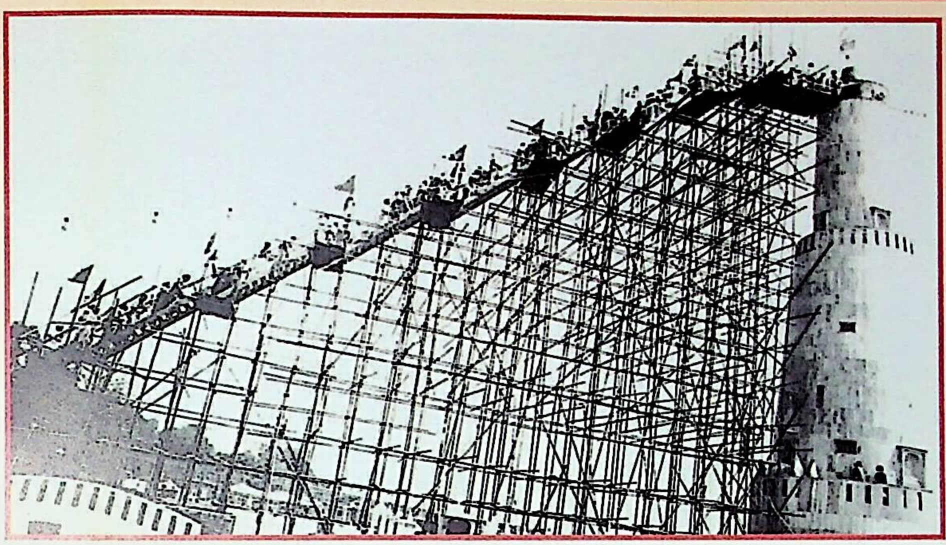

सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर अभिषेक के कलश ले जाते भक्तगण-सन् १९८५

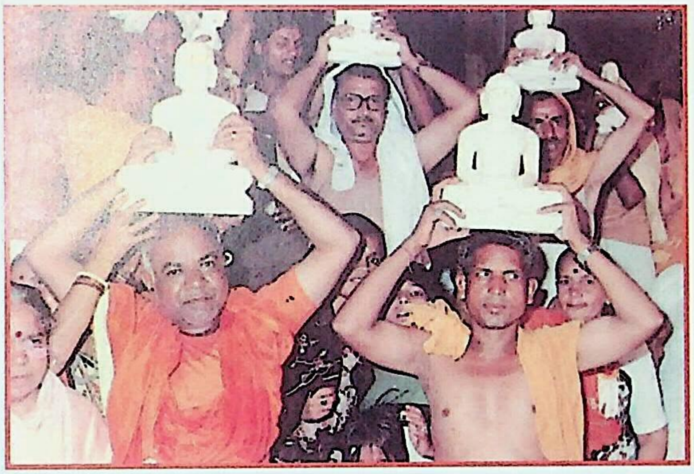

पंचकल्याणक की सम्पूर्ति पर चैत्यालयों में विराजमान करने हेतु मंच से प्रतिमाएं ले जाते हुए भक्तगण-२ मई १९८५

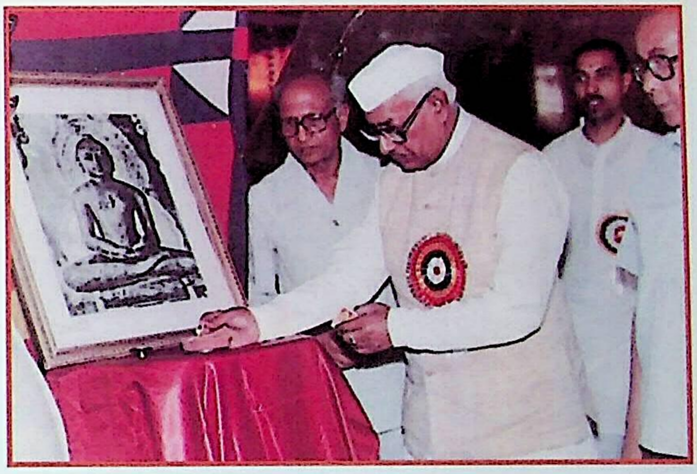

उ.प्र. सरकार के मंत्री प्रो. वासुदेव सिंह द्वीप प्रज्ज्वलित करते हुए -सन् १९८५

पंचकल्याणक के शुभ अवसर पर मूडबिद्री के भट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति स्वामी जी पूज्य माताजी के साथ

पंचकल्याणक के शुभ अवसर पर अखण्ड ध्वज स्थापित करते हुए श्री पी.एस. जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी -२ मई १९८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप पंचकल्याणक हस्तिनापुर-१९८५ की सचित्र झलकियाँ

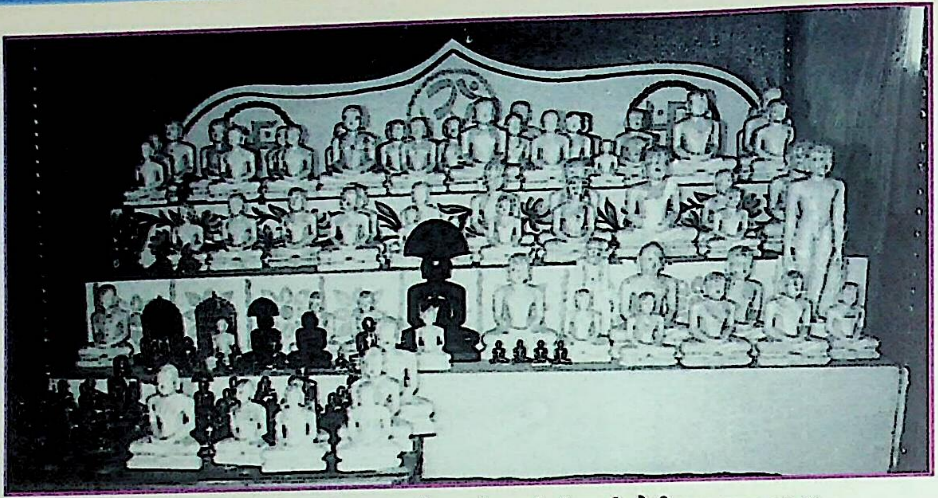

जम्बूद्वीप में विराजमान हेतु प्रतिष्ठेय प्रतिमाएं मंच की वेदी पर-सन् १९८५

पंचकल्याणक के शुभ अवसर पर माननीय श्री पी.वी. नरसिंहाराव (तत्कालीन रक्षा मंत्री-भारत सरकार) के साथ माननीय श्री जे.के. जैन एवं संस्थान के पदाधिकारीगण श्री गणेशीलाल रानीवाला, ब्र. श्री मोतीचंद जैन, श्री हेमचंद जैन-दिल्ली

उ.प्र. सरकार के मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी पूज्य माताजी के सानिध्य में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए-२९ अप्रैल १९८५

संस्थान के उपाध्यक्ष श्री सुमतप्रसाद जैन-दिल्ली माननीय श्री नरसिंहाराव को माल्यार्पण करते हुए

मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी का सम्मान करते हुए ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप महामहोत्सव-१९९०, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं कमल मंदिर कलशारोहण

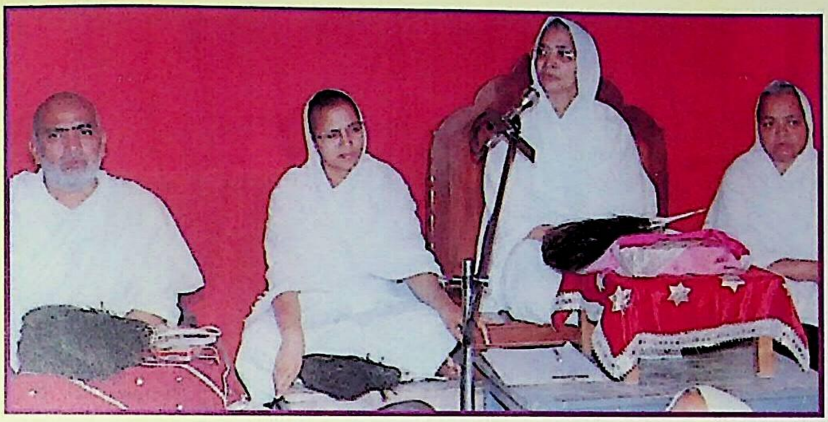

पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री शिवमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज

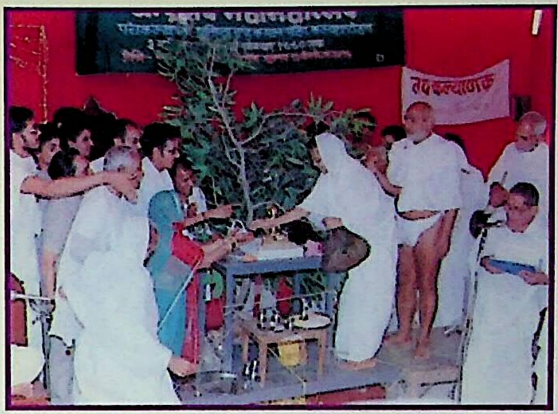

पंचकल्याणक के शुभ अवसर पर भगवान की दीक्षा का दृश्य, क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज, पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी एवं प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री फतेहसागर जैन

महोत्सव के शुभ अवसर पर मंच पर आसीन महामहिम राज्यपाल श्री बी. सत्यनारायण रेड्डी एवं संचालन करते ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन, मंत्री श्री अमरचंद जैन 'होम ब्रेड' एवं श्री महेन्द्र जैन-खतौली आदि पदाधिकारीगण

ह्रीँ के चौबीस भगवान की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठाचार्य एवं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी व ब्र. कमलेश कुमार जैन-मैनपुरी

ध्यान मंदिर पर कलशारोहण के लिए कलश की पूजा, साथ में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ

सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर जन्माभिषेक करते हुए श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स' सपरिवार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप महामहोत्सव-१९९५, ध्यान मंदिर उद्घाटन एवं कलशारोहण

जम्बूद्वीप महामहोत्सव के शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय श्री अजित सिंह केन्द्रीय खाद्य मंत्री-भारत सरकार एवं विधायक श्री जगत सिंह

पाण्डुक शिला पर अभिषेक करते हुए समाजरत्न दानवीर श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली सपरिवार

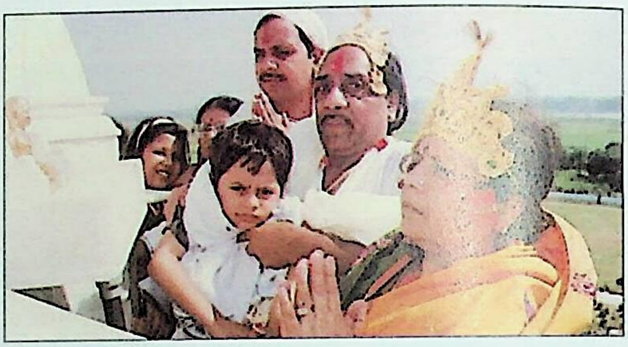

पाण्डुक शिला पर अभिषेक करते हुए संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन एवं श्री अनिल जैन, प्रीतविहार-दिल्ली सपरिवार

ध्यान मंदिर का उद्घाटन करते माननीय श्री अजित सिंह (केन्द्रीय खाद्य मंत्री)

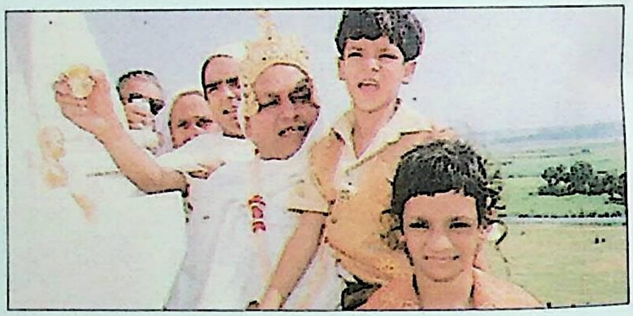

श्री प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली-दिल्ली पाण्डुक शिला पर अभिषेक करते हुए

जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित श्री णमोकार महामंत्र बैंक का उद्घाटन करते हुए माननीय श्री अजित सिंह (केन्द्रीय खाद्य मंत्री)

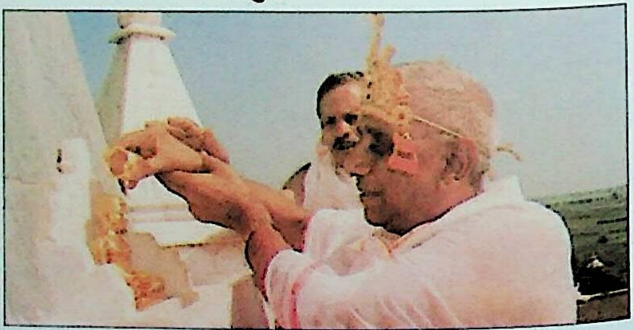

लाला श्री श्रीपाल जैन 'मोटर वाले', दिल्ली पाण्डुक शिला पर अभिषेक करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप महामहोत्सव-२०००, भगवान आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं शिखर कलशारोहण

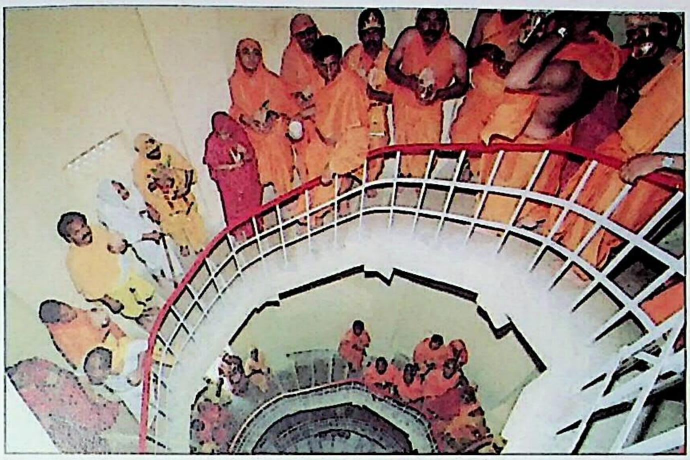

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में जन्माभिषेक के लिए सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर लेजाते हुए सौधर्म इन्द्र श्री दीपक कुमार जैन-दिल्ली एवं अन्य इन्द्र परिवार

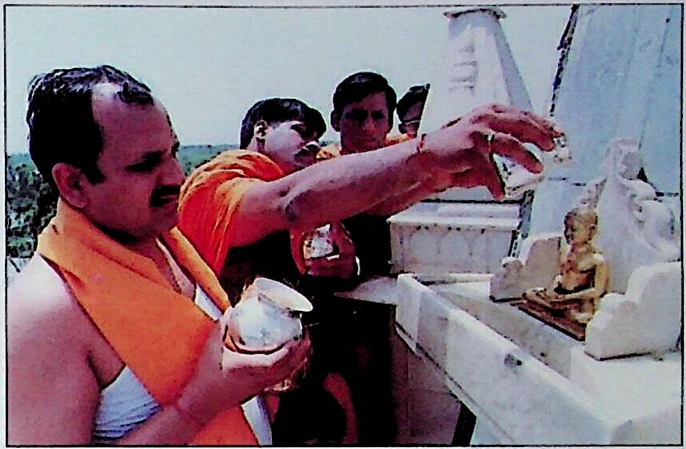

पाण्डुक शिला पर जन्माभिषेक करते हुए श्री अनिल जैन एवं दीपक जैन-दिल्ली

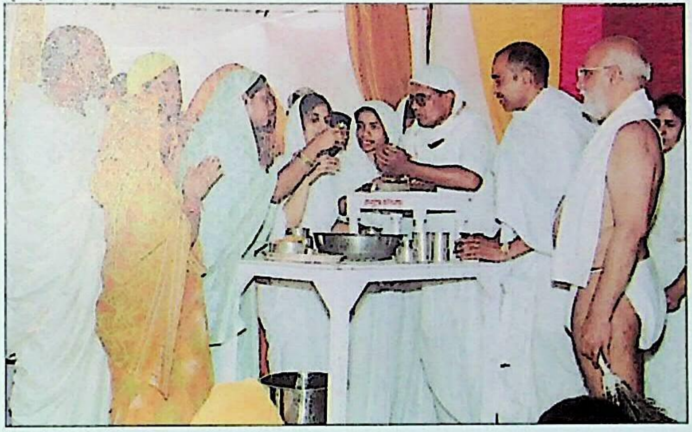

पंचकल्याणक के शुभ अवसर पर भगवान की दीक्षा के पश्चात् आहार चर्या कराते हुए प्रतिष्ठाचार्य प्रो. टीकमचंद जैन एवं आहार देते हुए श्री विमलेश जैन तथा श्रीमती बाला जैन सपरिवार

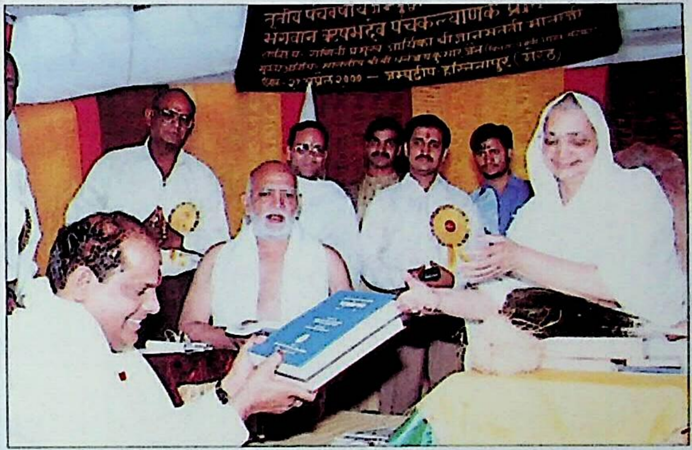

केन्द्रीय मंत्री श्री वी. धनंजय कुमार जैन पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए।

तीन मूर्ति मंदिर में नवनिर्मित शिखर पर कलश की पूजा करते हुए श्री वी. धनंजय कुमार जैन, प्रो. टीकमचंद जैन, पं. अकलंक जैन, पं. प्रवीणचंद जैन आदि

जम्बूद्वीप महामहोत्सव-२००० एवं भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के मुख्य यजमान श्री विमलेश कुमार जैन एवं उनके सुपुत्र श्री दीपक जैन का सम्मान करते हुए श्री वी. धनंजय कुमार जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

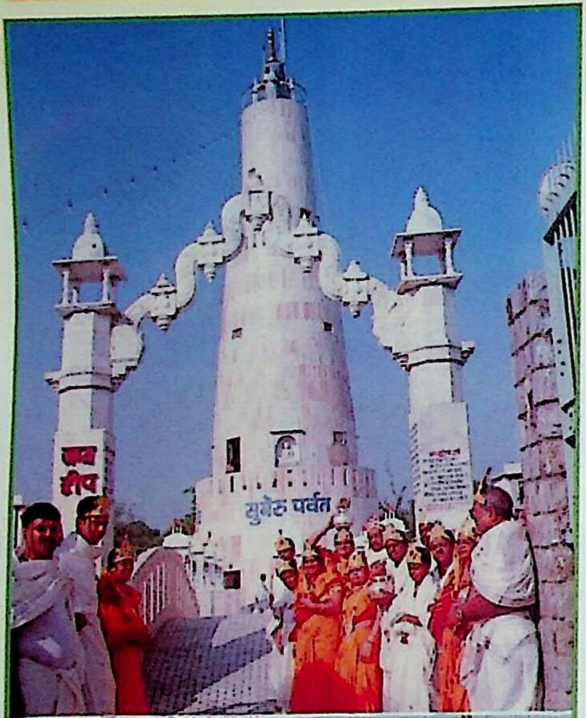

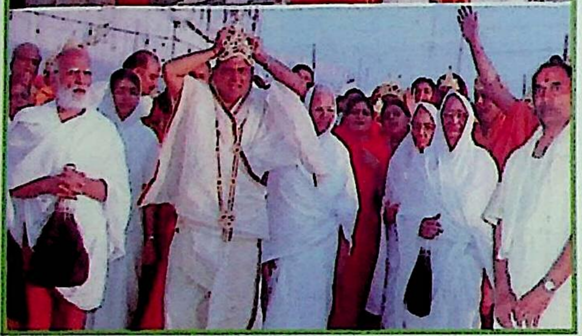

सुमेरु पर्वत की पाण्डुकशिला पर अभिषेक हेतु भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा ले जाते सौधर्म इन्द्र श्री सुनील जैन सर्राफ, सदर मेरठ एवं अभिषेक के लिए कलश ले जाते श्री वी. धनंजय कुमार जैन, संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन, श्री कमलचंद जैन आदि श्रेष्ठीगण, साथ में सानिध्य प्रदान करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज एवं ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन

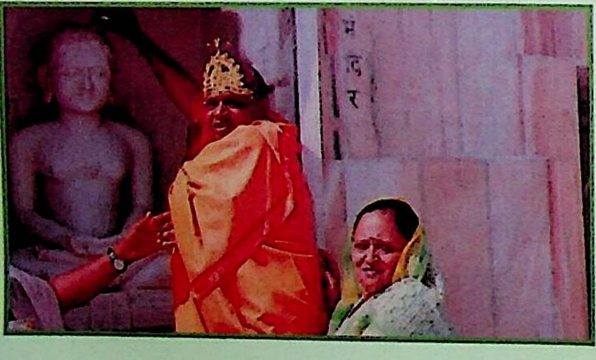

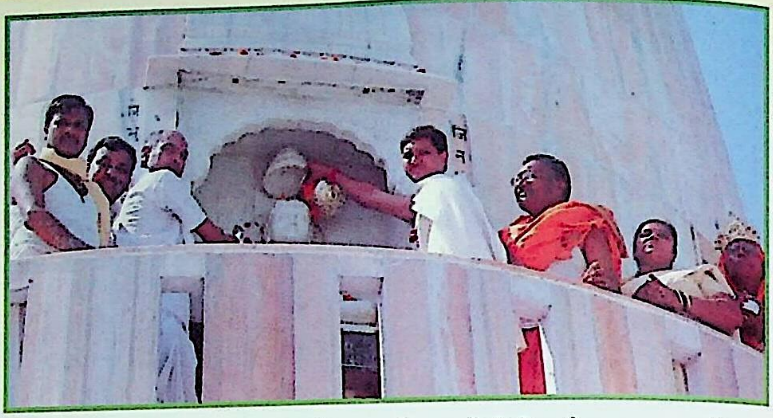

सुमेरु पर्वत पर भगवान का अभिषेक करते हुए श्री नितिन जैन-शाहदरा, विजय जैन-दरियागंज - दिल्ली

जम्बूद्वीप महामहोत्सव का कलश स्थापित करते डॉ. प्रमोद कुमार जैन-आगरा एवं श्री दीपक कुमार जैन-वाराणसी सपरिवार

जम्बूद्वीप महामहोत्सव के कुबेर इन्द्र श्री विजय जैन रत्नवृष्टि करते हुए एवं इंजी. श्री सी.आर. पाटिल-पुणे, श्री कस्तूरचंद बड़जाते, श्री राजमल जी कासलीवाल-औरंगाबाद आदि दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

सुमेरु पर्वत में भगवान का अभिषेक करते हुए
श्री कलीराम जैन एवं श्रीमती सुलोचना जैन, माडल टाउन-दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप महामहोत्सव-२००५ (बोलते चेहरे)

केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री
श्री प्रकाश जायसवाल

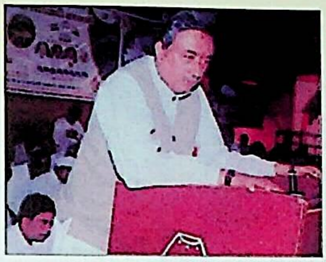
पर्यटन मंत्री उ.प्र. सरकार
नवाब कोकब हमीद

सांसद श्रीमती अनुराधा
चौधरी

डॉ. मैराजुद्दीन, मेरठ

विधायक श्री प्रभुदयाल
बाल्मीकि

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार
जैन, अध्यक्ष-जम्बूद्वीप

डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल
अध्यक्ष-महाराष्ट्र तीर्थ क्षेत्र

प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन,
फिरोजाबाद

डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद
अध्यक्ष-विद्वत् महासंघ

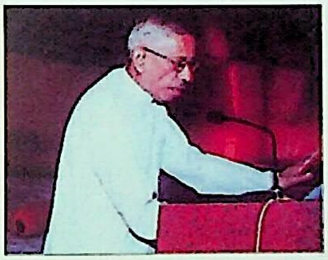
पं. शिवचरणलाल जैन-मैनपुरी
संरक्षक विद्वत् महासंघ

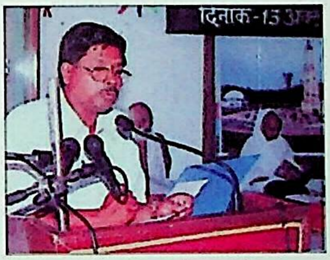
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर
महामंत्री-विद्वत् महासंघ

प्रो. के. नलिन शास्त्री
उपाध्यक्ष-विद्वत् महासंघ

डॉ. सुशील जैन
मैनपुरी

डॉ. जयकुमार उपाध्ये
दिल्ली

डॉ. अभयप्रकाश जैन
ग्वालियर

श्री विनोद हर्ष
अहमदाबाद

डॉ. मालती जैन
मैनपुरी

श्रीमती सुमन जैन, इंदौर
महामंत्री-महिला संगठन

कु. स्वाति जैन (संघस्थ)
हस्तिनापुर

कु. इन्दू जैन (संघस्थ)
हस्तिनापुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जम्बूद्वीप महामहोत्सव-२००५

सानिध्य-गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

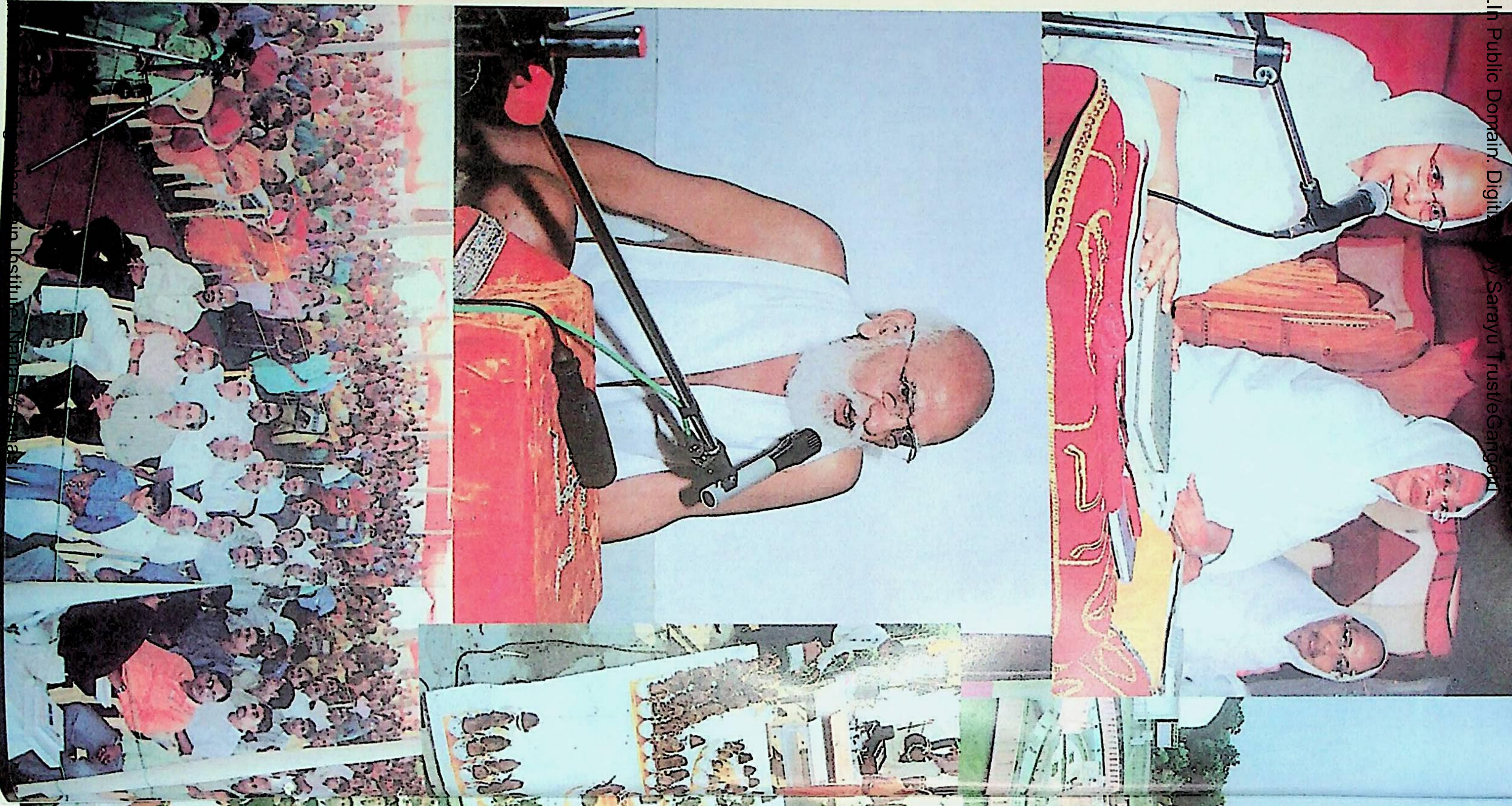

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ प्रवर्तन, उद्घाटन प्रधानमंत्री-श्रीमती इन्दिरा गांधी, लालकिला मैदान, दिल्ली-४ जून १९८२

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का उद्घाटन करते हुए

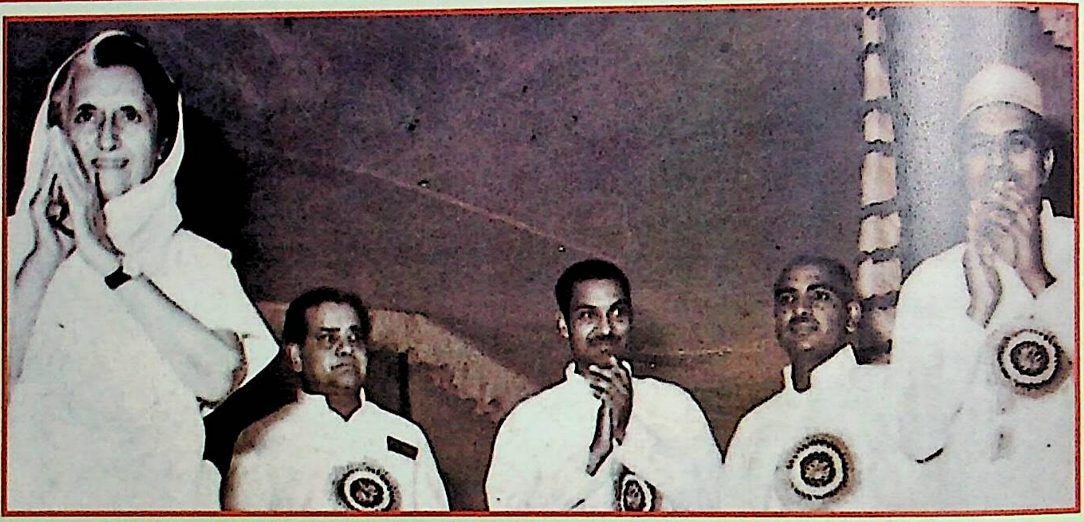

जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति प्रवर्तन मंच पर प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, गृह मंत्री-श्री प्रकाशचंद जी सेठी प्रवर्तन के महामंत्री-ब्र. श्री मोतीचंद जैन एवं महामंत्री ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, अध्यक्ष-श्री निर्मल कुमार सेठी

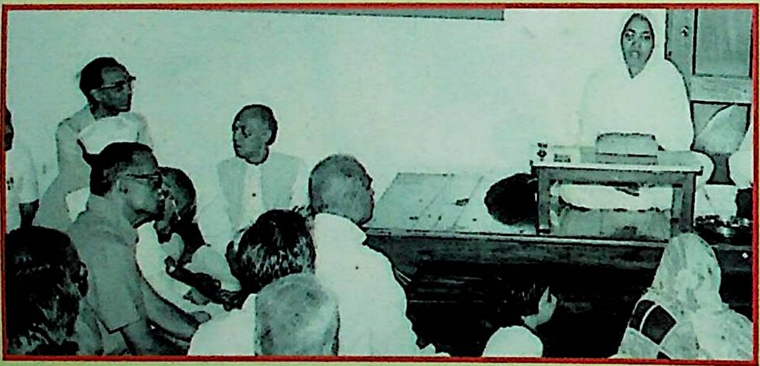

जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति प्रवर्तन हेतु श्री दिगम्बर जैन लाल मंदिर-चाँदनी चौक, दिल्ली में प्रचार कार्यालय का उद्घाटन, सानिध्य पदान करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ एवं साहू श्री रमेशचंद जैन, श्री रमेश जैन 'पी.एस. मोटर्स', श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन कम्मोजी, श्री अजित प्रसाद जैन, वैद्य श्री शांतिप्रसाद जैन, डॉ. कैलाशचंद जैन 'राजा टायज' एवं अन्य संस्था के लोग

ज्ञान ज्योति रथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ का प्रवर्तन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के करकमलों से-९ अप्रैल १९९८

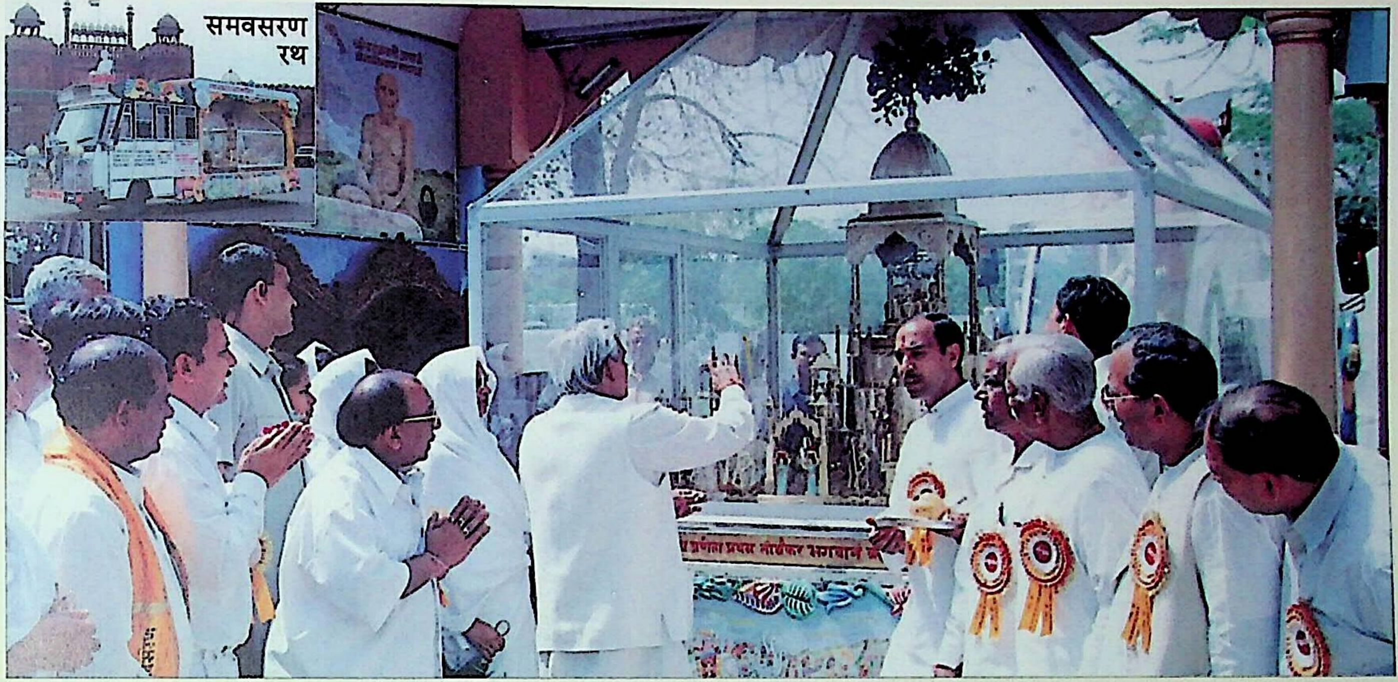

भगवान ऋषभदेव समवसरण रथ पर स्वस्तिक बनाकर उद्घाटन करते माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी, साथ में समिति के पदाधिकारीगण

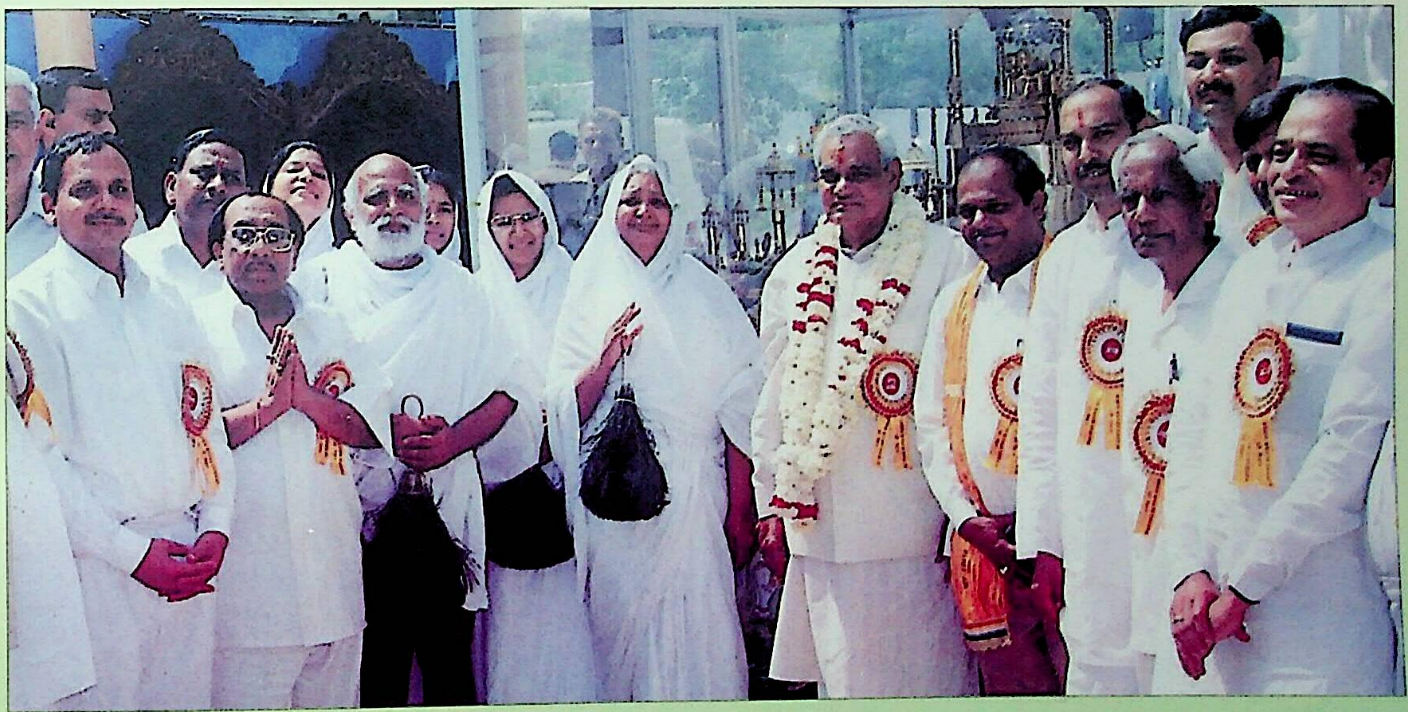

रथ प्रवर्तन के समय राजधानी दिल्ली में माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज, ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन, संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन, श्री अनिल जैन-प्रीतविहार, श्री अमरचंद जैन 'होमब्रेड', श्री वी. धनंजय कुमार जैन, श्री विजय जैन-दरियागंज, श्री कैलाशचंद जैन -करोलबाग, श्री कैलाशचंद जैन चौधरी-सनावद आदि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर ज्योति रथ प्रवर्तन, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार से प्रवर्तित-फरवरी २००३

भगवान महावीर ज्योति रथ का देश भ्रमण हेतु उद्घाटन करते हुए बिहार प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री विनोदचंद पाण्डे

महावीर ज्योति रथ प्रवर्तन के लिए मांगलिक क्रियाओं को सानिध्य प्रदान करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ एवं संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन, डॉ. श्री पन्नालाल पापड़ीवाल, श्री दीपक जैन-वाराणसी तथा संस्थान के पदाधिकारीगण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्थान द्वारा प्रदत्त गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार वर्ष-१९९५, २०००, २००५

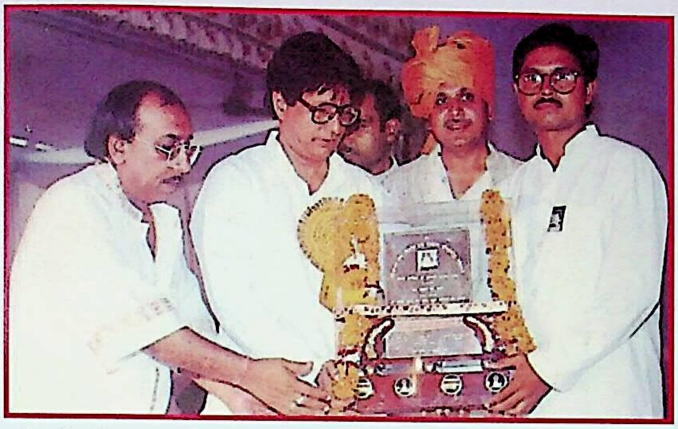

गणिनी श्री ज्ञानमती पुरस्कार-१९९५ को प्राप्त करते हुए डॉ. अनुपम जैन-इंदौर, पुरस्कार प्रदाता-श्री अनिल जैन, प्रीतविहार-दिल्ली, मुख्य अतिथि-श्री अजित सिंह (केन्द्रीय मंत्री), साथ में संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन

गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार-२००० को प्राप्त करते हुए पं. शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी (अध्यक्ष-विद्वत् महासंघ), पुरस्कार प्रदाता-श्री अनिल जैन, प्रीतविहार-दिल्ली सपरिवार एवं संस्थान के पदाधिकारी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, श्री कैलाशचंद जैन, डॉ. अनुपम जैन आदि

पुरस्कार प्राप्ति के बाद डॉ. शेखरचंद जैन पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

डॉ. अनुपम जैन पुरस्कार प्राप्ति के पश्चात् अपनी माँ, धर्मपत्नी एवं परिवार के साथ

पुरस्कार प्राप्ति के बाद पं. शिवचरनलाल जैन सपरिवार पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

डॉ. शेखरचंद जैन-अहमदाबाद (अध्यक्ष-विद्वत् महासंघ) को गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार-२००५ से सम्मानित करते हुए श्री अनिल जैन-प्रीतविहार, दिल्ली सपरिवार एवं मुख्य अतिथि केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री श्री श्रीप्रकाश जायसवाल तथा संस्थान के अध्यक्ष-ब्र.श्री रवीन्द्र कुमार जैन, महामंत्री-श्री कैलाशचंद जैन एवं डॉ. अनुपम जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में आयोजित कुलपति सम्मेलन-अक्टूबर १९९८

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के साथ विभिन्न विश्वविद्यालय के कुलपतिगण एवं पीछे वरिष्ठ प्रोफेसर तथा विद्वात्गण

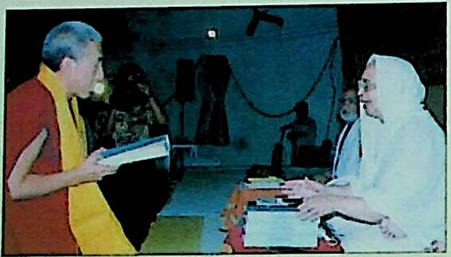

प्रो. एस. रिम्पोछे (निदेशक-तिब्बती उच्च अध्यक्ष संस्थान, वाराणसी) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

प्रो. आद्याप्रसाद मिश्र (कुलपति-महर्षि महेश योगी विश्वविद्यालय, जबलपुर) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

कुलपति सम्मेलन के विशिष्ट सहयोगी श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स' श्री वी. धनंजय जी का सम्मान करते हुए, साथ में सांसद श्री राजेश पायलट

प्रो. अलाउद्दीन अहमद (कुलपति-जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, दिल्ली) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

प्रो. मुनियम्मा (कुलपति-गुलबर्गा विश्वविद्यालय, गुलबर्गा) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

प्रो. शरद भांड (पूर्व कुलपति-भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

प्रो. विद्यावती (कुलपति- काकतिया विश्व-विद्यालय, वारांगल-आंध्रप्रदेश) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

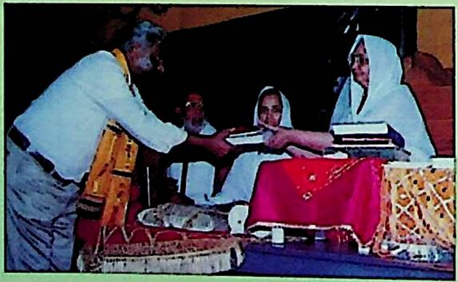

प्रो. सी. अंजनमूर्ति (कुलपति-कर्नाटक विश्वविद्यालय, मैसूर) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

प्रो. बलबीर सिंह भसीन (कुलपति-मगध विश्वविद्यालय, बोधगया) पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुलपति सम्मेलन में माननीय कुलपतिगण वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए

प्रो. एस. रिन्पोछे,
वाराणसी

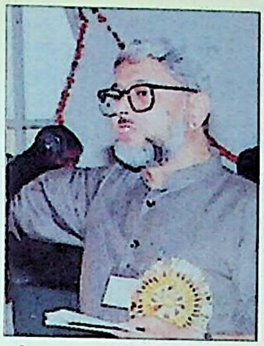
प्रो. अलाउद्दीन अहमद,
दिल्ली

प्रो. डॉ. पी. तिवारी,
मेरठ

प्रो. विद्यावती,
वारंगल

डॉ. शोभिता जैन,
दिल्ली

प्रो. उषाकर झाा.,
दरभंगा

प्रो. शरद भांड,
भोपाल

प्रो.नांदगांवकर,
उज्जैन

प्रो. सी. अंजनमूर्ति,
मैसूर

प्रो. एस.एन. हेगड़े,
मैसूर

प्रो. एस.एन.पी. सिन्हा,
पटना

प्रो. सूर्यप्रसाद सिंह,
आरा

प्रो. आद्याप्रसाद मिश्र,
जबलपुर

प्रो. इन्द्राणी चक्रवर्ती,
खैरागढ़

प्रो. ए.के. मैत्रा,
दिल्ली

प्रो. एम.एल. रंगा,
कुरुक्षेत्र

प्रो. पी.एन. मिश्रा,
इंदौर

प्रो. बलबीर सिंह भसीन,
बोधगया

प्रो. एस.के. शर्मा,
वाराणसी

प्रो. मुनियम्मा,
गुलबर्गा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनी ज्ञानमती अभिवंदन ग्रंथ समर्पण समारोह-१९९२ एवं पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती अभिनंदन ग्रंथ समर्पण समारोह-१९८३

गणिनी ज्ञानमती अभिवंदन ग्रंथ समर्पण समारोह के शुभ अवसर पर मंच पर विराजमान बीच में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी, बाएं से आर्यिका श्री शिवमती माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज

ग्रंथ समर्पण करते श्री उत्तमभाई हरजी पटेल (केन्द्रीय मंत्री), साथ में ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन, श्री अमरचंद जैन 'होम ब्रेड', श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन एवं श्री देवकुमार सिंह कासलीवाल-इंदौर

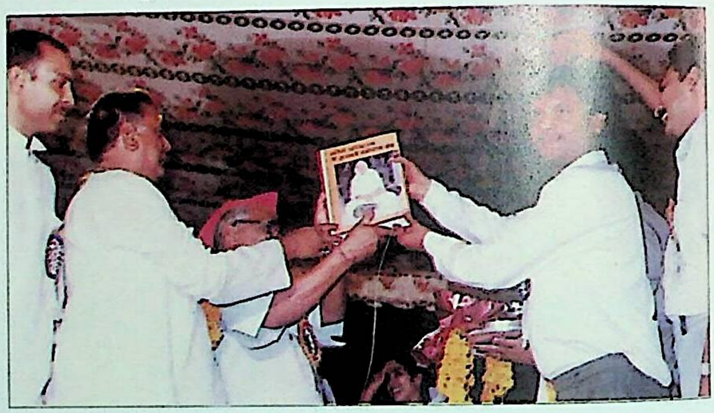

अभिवंदन ग्रंथ का विमोचन करते श्री उत्तमभाई हरजी पटेल (मंत्री भारत सरकार), साथ में श्री बाबूलाल जी पहाड़े-हैदराबाद एवं श्री राकेश जैन-मेरठ

अभिनंदन ग्रंथ समर्पण समारोह के दौरान आर्यिका श्री रत्नमती माताजी मंगल आशीर्वचन प्रदान करती हुई

सांसद श्री जे.के. जैन आर्यिका श्री रत्नमती माताजी को ग्रंथ भेंट करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी के सानिध्य एवं प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव, उद्घाटन- प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी-४ फरवरी सन् २०००, लाल किला मैदान-दिल्ली

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को मुकुट पहनाकर सम्मान करते हुए ब्र. रवीन्द्र जैन
एवं वित्त राज्यमंत्री-श्री वी. धनंजय कुमार जैन

लाल किला मैदान में अस्थायी रूप से निर्मित कैलाशपर्वत के समक्ष निर्वाणलाडू चढ़ाकर ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी, सानिध्य पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी, क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी एवं संस्थान के पदाधिकारीगण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से प्रवर्तित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ प्रवर्तन सन् १९८२ से १९८५ के मध्य विभिन्न स्थानों पर विशिष्ट आचार्य संघों द्वारा रथ के दर्शन एवं दिया गया आशीर्वाद

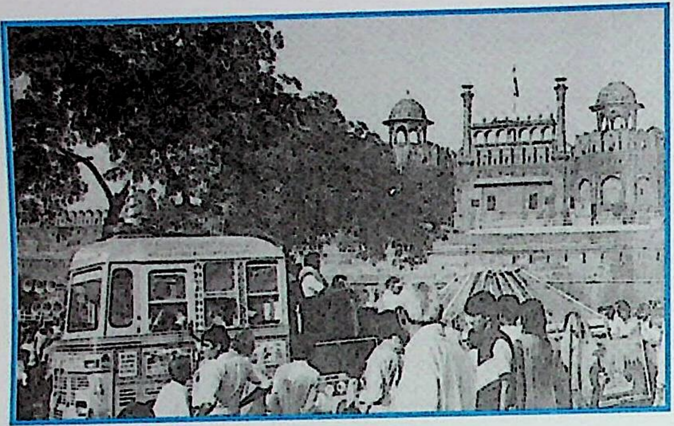

लालकिला मैदान से प्रवर्तित ज्ञानज्योति की प्रथम शोभायात्रा

आचार्य श्री धर्मसागर महाराज सम्पूर्ण संघ सहित ज्योति रथ के जुलूस में लोहारिया (राज.)

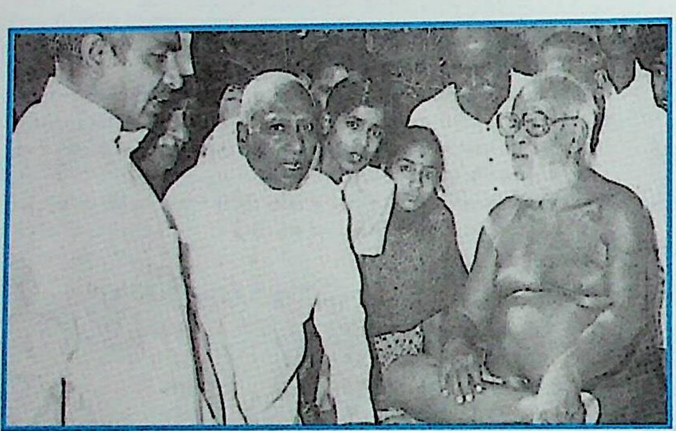

आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी ज्ञानज्योति रथ प्रवर्तन के महामंत्री ब्र. मोतीचंद जैन एवं संचालक श्री बाबूलाल जमादार से ज्योति रथ के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करते हुए

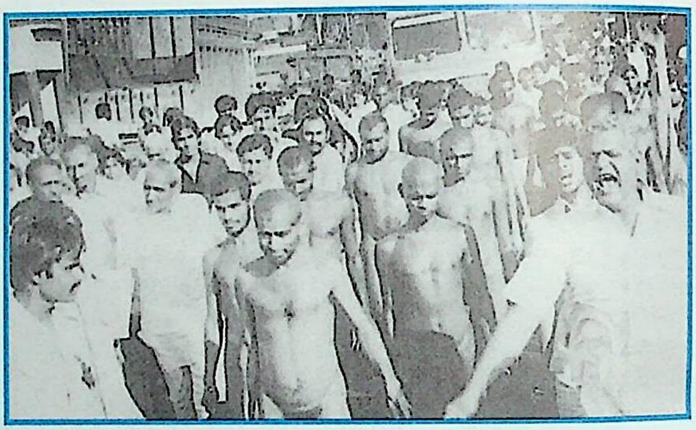

आचार्य शिरोमणि श्री विद्यासागर जी संघ सहित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति की शोभा यात्रा में चलते हुए-ईसरी बाजार, बिहार-सन् १९८२

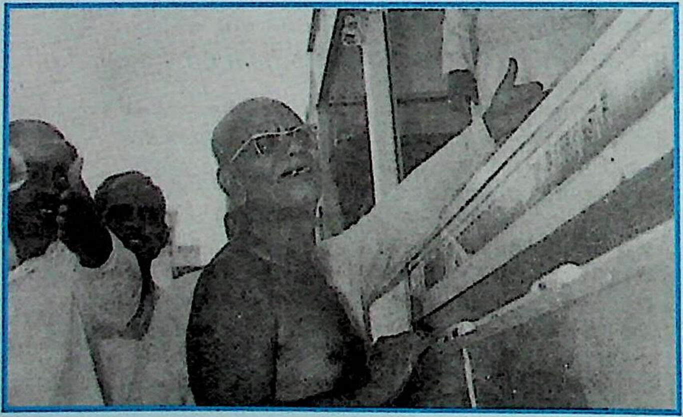

आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज सलुम्बर (राज.) में ज्ञानज्योति रथ का अवलोकन करते हुए

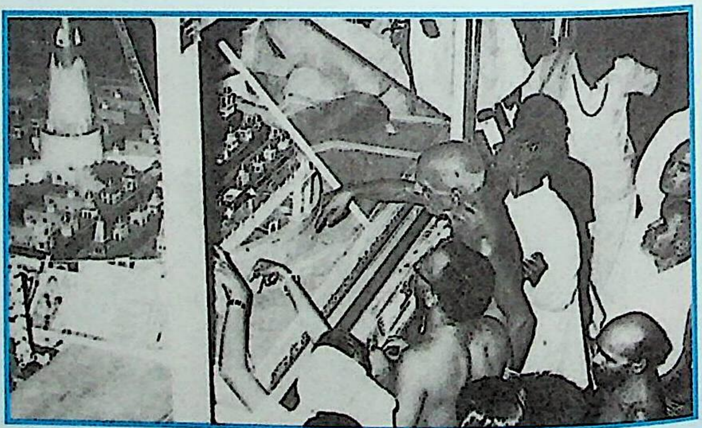

आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी महाराज ज्ञानज्योति रथ पर बने हुए जम्बूद्वीप मॉडल को समझते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानज्योति रथ प्रवर्तन सन् १९८२-१९८५ के मध्य प्रमुख आर्यिकाओं एवं पूज्य स्वस्ति श्री भट्टारकों द्वारा रथ के दर्शन एवं आशीर्वाद

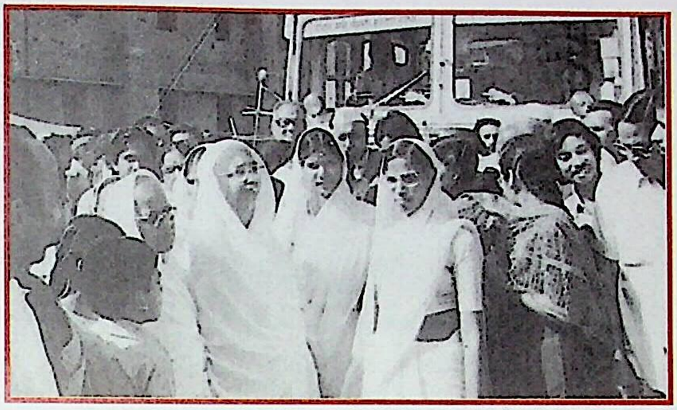

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी संघ सहित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ के साथ

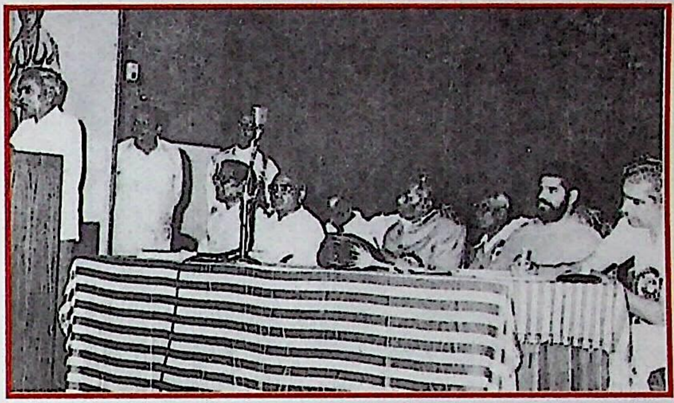

भट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी श्रवणबेलगोला एवं श्री निर्मल सेठी, श्री एम. सी. अनन्त जैन, ब्र. मोतीचंद जैन बैंगलोर में ज्ञानज्योति रथ के स्वागत में

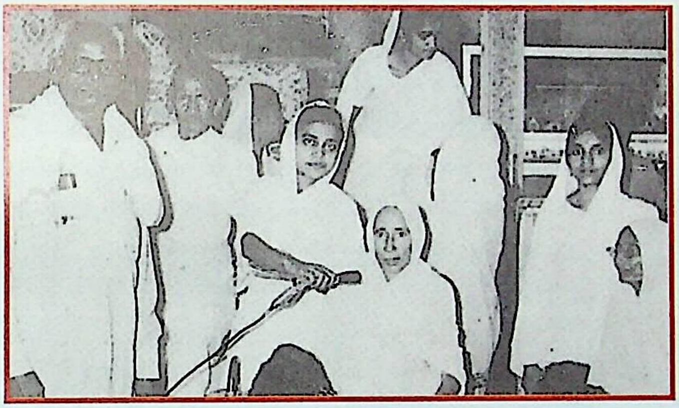

पूज्य गणिनी आर्यिका श्री विजयमती माताजी, ससंघ सेलम (तमिलनाडु) में ज्ञानज्योति रथ के स्वागत सभा में प्रवचन करते हुए, साथ में पं. श्री शिम्हाचंद शास्त्री, मद्रास

आचार्य श्री पायसागर महाराज की जन्मभूमि गोकाक में कोल्हापुर जैन मठ के भट्टारक स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन महाराज एवं नरसिंहराजपुरा के भट्टारक स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन जी ज्ञानज्योति का स्वागत करते हुए

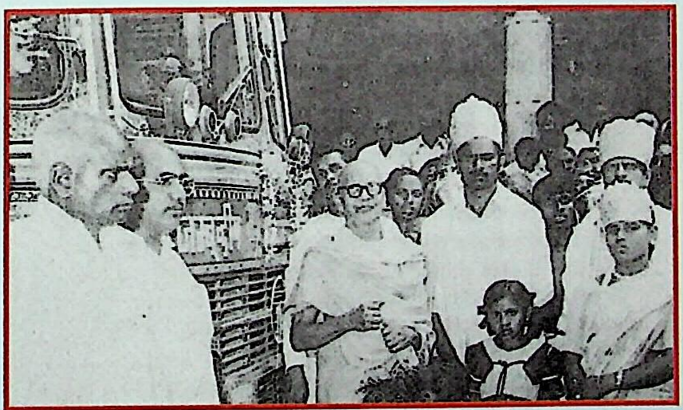

मेल चितामुर मठ के भट्टारक स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन मठ में रथ का स्वागत करते हुए, साथ में महामंत्री श्री मोतीचंद जैन, पं. श्री शिम्हाचंद शास्त्री

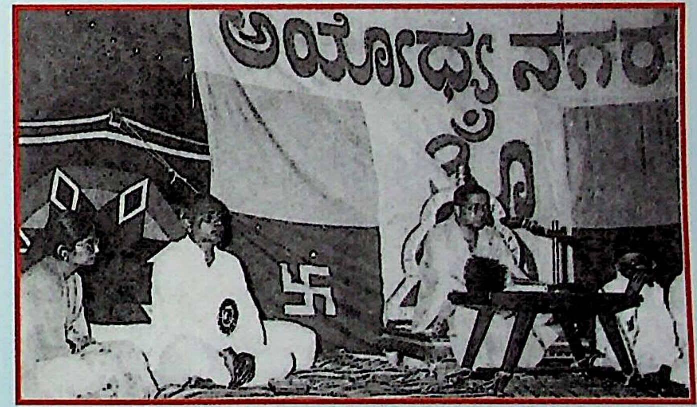

हुम्मच मठ के भट्टारक स्वस्ति श्री देवेन्द्रकीर्ति स्वामी जी सदगुर (कर्नाटक) में ज्ञानज्योति सभा को सम्बोधित करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से प्रवर्तित भगवान ऋषभदेव समवसरण रथ प्रवर्तन सन् १९९८ से २००१ के मध्य प्रमुख साधुओं द्वारा रथ के दर्शन एवं आशीर्वाद

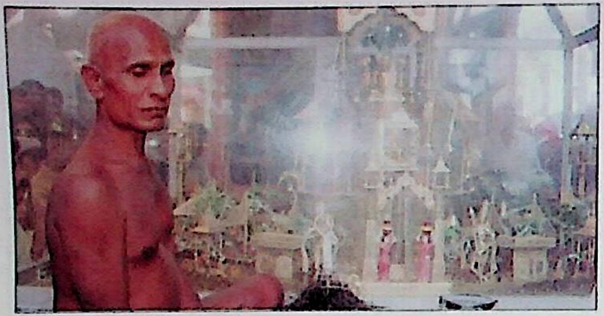

आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी महाराज भिण्डर (राज.) में समवसरण रथ का दर्शन करते हुए

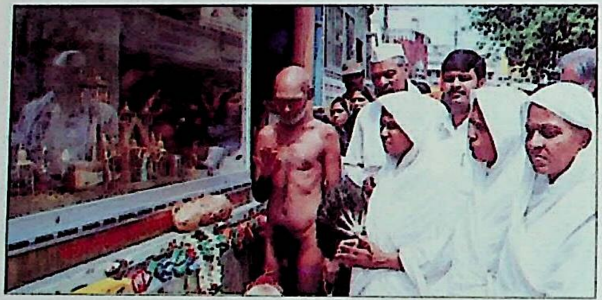

आचार्य श्री पद्मनंदी जी महाराज, ससंघ समवसरण रथ के दर्शन करते हुए, रांची (झारखण्ड)

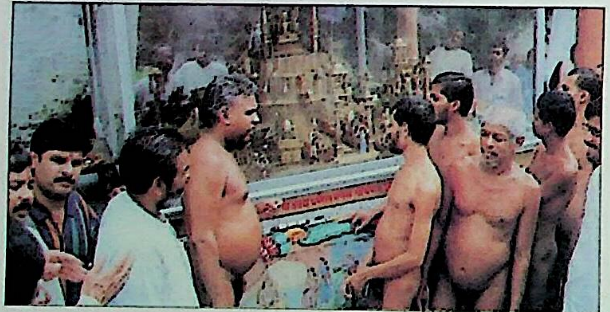

आचार्यश्री देवनन्दी जी महाराज संघ सहित द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्र पर समवसरण रथ का दर्शन करते हुए दिनाँक ९ अगस्त १९९९, साथ में कपूरचंद जैन-धुवारा

बालाचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी समवसरण रथ के जुलूस के साथ, सागवाड़ा-दिनाँक १४ मार्च १९९९, साथ में संयोजक विजय जैन एवं संचालक पं. सुधर्मचंद जैन

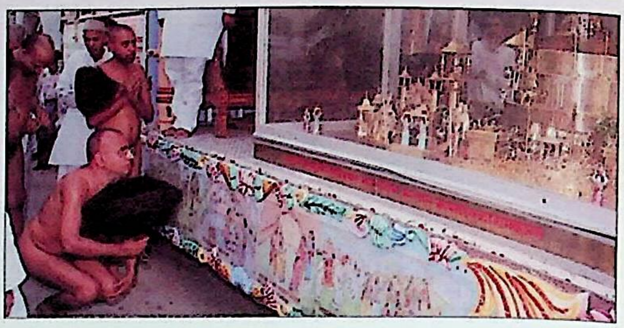

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज समवसरण रथ के दर्शन करते हुए मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)

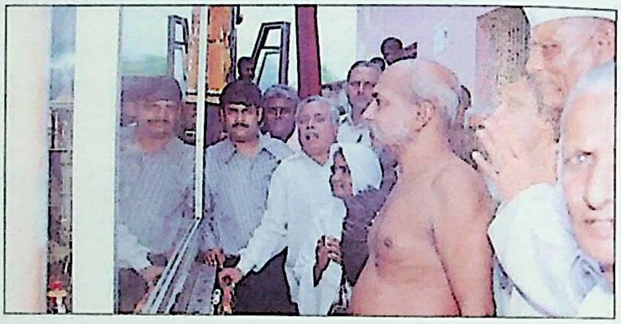

आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज एवं आर्यिका श्री स्याद्वादमती माताजी समवसरण रथ के दर्शन करते हुए-झुमरीतलैया (झारखण्ड)

आचार्यश्री निर्मलसागर जी महाराज गिरनार जी में समवसरण श्रीविहार की धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए

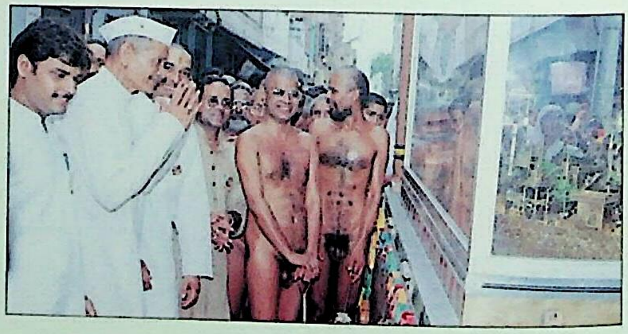

आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज संघ सहित भिण्ड में समवसरण के दर्शन करते हुए, साथ में ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, पं. सुधर्मचंद जैन, संयोजक विजय जैन, पं. प्रवीणचंद शास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान ऋषभदेव समवसरण रथ प्रवर्तन वर्ष १९९८ से २००१ के मध्य प्रमुख साधुओं का सानिध्य एवं आशीर्वाद

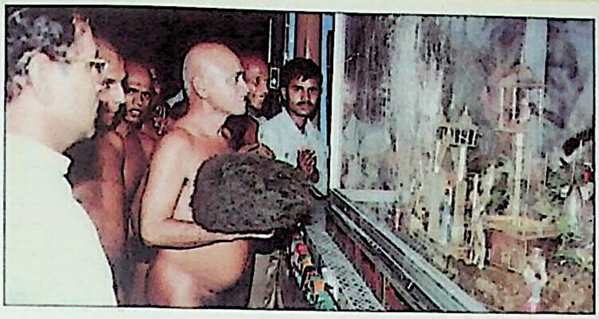

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज नेमावर में समवसरण रथ के दर्शन करते हुए

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज विशाल संघ सहित समवसरण रथ का अवलोकन करते हुए नेमावर में

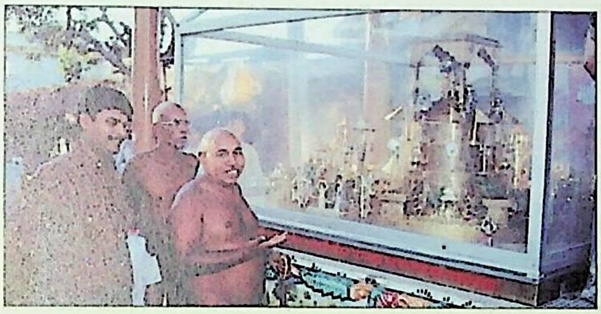

आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज पावागढ़ (गुज.) में समवसरण रथ के दर्शन करते हुए-१७ फरवरी २०००

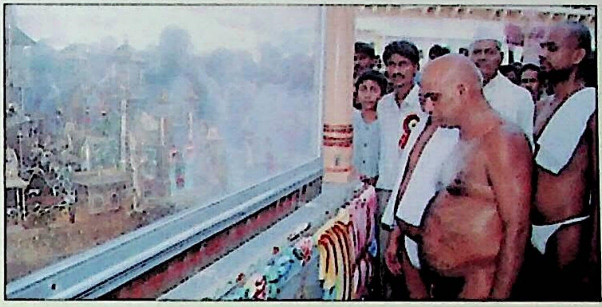

पूज्य मुनि श्री सुधासागर जी महाराज समवसरण रथ के दर्शन करते हुए सीकर (राज.) में-१९ अगस्त १९९८

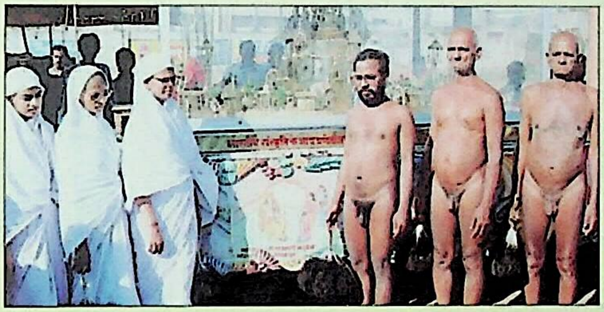

आचार्य गुप्तिनंदी जी महाराज ससंघ समवसरण रथ के साथ, परतापुर (राज.)-१० फरवरी १९९९

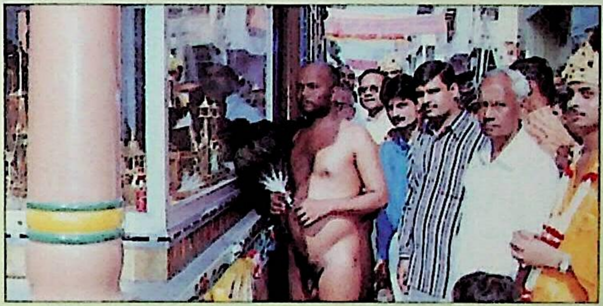

मुनि श्री अमितसागर जी मैनपुरी में समवसरण रथ के दर्शन करते हुए, साथ में ब्र. रवीन्द्र जैन, कैलाशचंद जैन-दिल्ली, संयोजक विजय जैन, प्रवीणचंद जैन शास्त्री

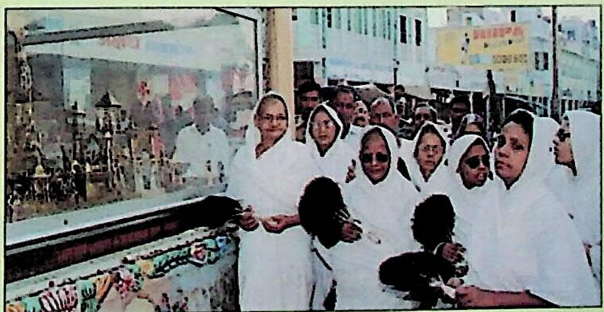

गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी ससंघ समवसरण रथ के दर्शन करते हुए

आर्यिका श्री आदिमती माताजी व श्री श्रुतमती माताजी सलुम्बर (राज.) में समवसरण रथ के साथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर से प्रवर्तित भगवान महावीर ज्योति रथ प्रवर्तन वर्ष २००३-२००४ के मध्य साधुओं का सानिध्य एवं आशीर्वाद

आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी एवं उपाध्याय श्री निजानंदसागर जी महाराज ससंघ इंदौर में महावीर ज्योति रथ के साथ मई २००३

आचार्य श्री अभिनंदनसागर महाराज रथ पर नंद्यावर्त महल देखते हुए, साथ में ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण, श्री कैलाशचंद जैन-दिल्ली, श्री अनिल जैन-दिल्ली, पं. श्री नरेशचंद जैन शास्त्री-हस्तिनापुर, श्री मनोज जैन-मेरठ

उपाध्याय श्री कामकुमारनंदी जी महाराज प्रीतविहार-दिल्ली में रथ पर स्वस्तिक बनाते हुए, साथ में श्री प्रेमचंद जैन एवं समिति के पदाधिकारीगण

मुनिश्री रविनंदी जी एवं आर्यिका श्री संयमश्री माताजी रथ के साथ चितरी (डूंगरपुर) राज.-१७ मई २००४

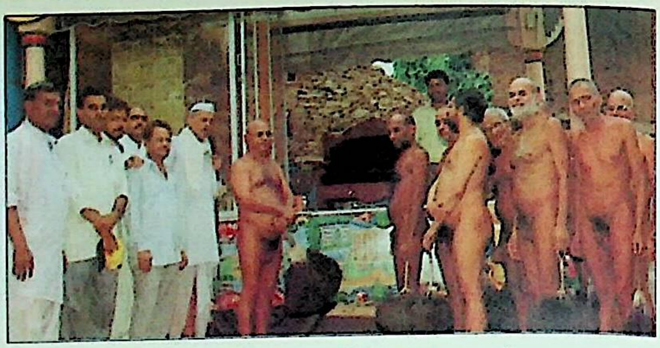

आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी व आचार्य श्री रयणसागर जी महाराज ससंघ रथ का अवलोकन करते हुए

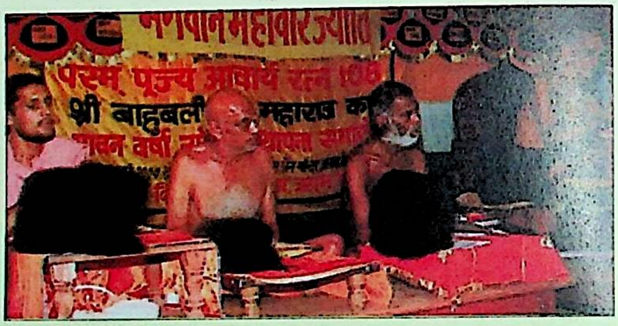

आचार्यरत्न श्री बाहुबलीसागर जी महाराज ऋषभविहार-दिल्ली में भगवान महावीर ज्योतिरथ की सभा को सम्बोधित करते हुए

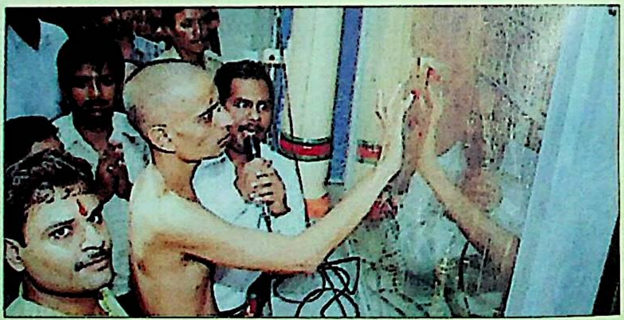

आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज शांति मोहल्ला-दिल्ली में ज्योति रथ पर स्वस्तिक बनाते हुए, साथ में विजेन्द्र जैन-शाहदरा आदि

मुनि श्री कर्मविजयनंदी जी व मुनि श्री पुण्यसागर जी झुमरीतलैया (झारखण्ड) में महावीर ज्योति रथ के साथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर ज्योति रथ प्रवर्तन वर्ष २००३-२००४ के मध्य साधुओं के सानिध्य-आशीर्वाद एवं विशिष्ट महानुभाव

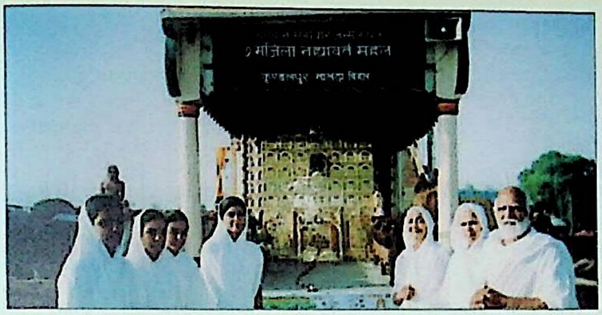

कुण्डलपुर में पूज्य माताजी ससंघ ज्योति रथ के साथ -१ मई २००३

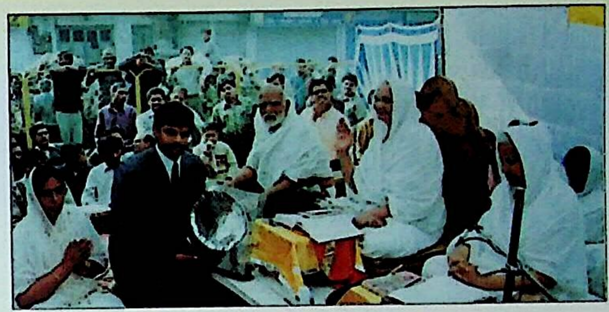

रथ के संयोजक विजय जैन पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

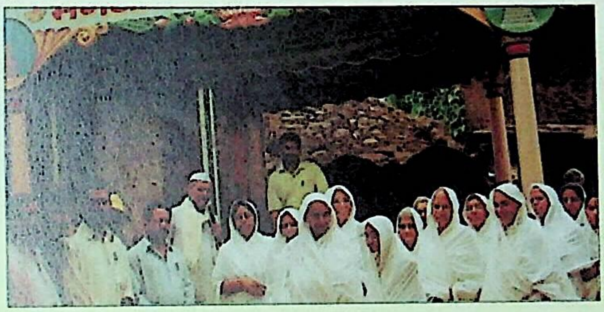

पूज्य गणिनी श्री सुपार्श्वमती माताजी महावीर ज्योति रथ के साथ पारसोला (राज.) में

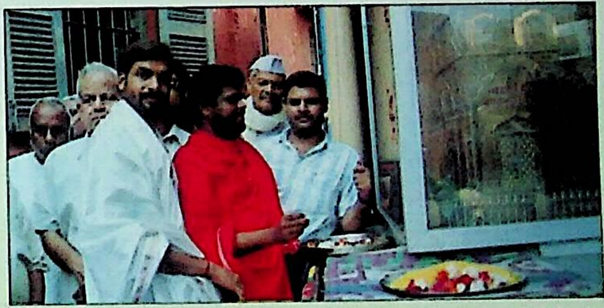

कनकगिरी-कर्नाटक के भट्टारक स्वस्ति श्री भुवनकीर्ति जी आरा-बिहार में महावीर ज्योति रथ के दर्शन करते हुए, साथ में पं. अकलंक जैन एवं संचालकगण

श्रीमती वसुन्धरा राजे सिंधिया (मुख्यमंत्री-राजस्थान) महावीर ज्योति रथ पर स्वस्तिक बनाते हुए, बागीदौरा-५ मई २००४

मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए रथ के संयोजक विजय जैन आदि

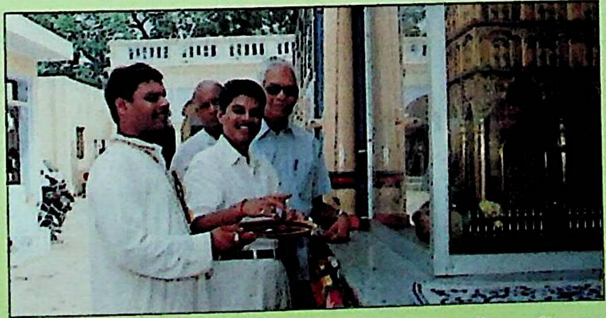

इंजी. श्री धर्मवीर जैन एवं श्री आशु जैन (इन्कमटैक्स विभाग) लखनऊ में रथ पर स्वस्तिक बनाते हुए-२२ जुलाई २००४

राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक श्री महावीर प्रसाद जैन का जयपुर में स्वागत करते हुए केन्द्रीय अध्यक्ष ब्र.रवीन्द्र जैन-१८ जनवरी २००४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

राजधानी दिल्ली में आयोजित पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान का विराट आयोजन-४ से १३ अक्टूबर १९९७

पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में आयोजित चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान में मुख्य अतिथि राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा, मुख्य यजमान श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स' एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष-साहू श्री अशोक जैन समिति के पदाधिकारीगण, ब्र. रवीन्द्र जैन, संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन, श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, श्री प्रेमचंद जैन-खारी बावली, श्री रमेश जैन पी.एस. जैन आदि पूजा-विधान में सम्मिलित तथा विधान के समापन पर रथयात्रा का दृश्य, इस विधान में लगभग ३००० स्त्री-पुरुषों ने कंकड़ बांधकर तथा हजारों लोगों ने विधान में सम्मिलित होकर धर्मलाभ लिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

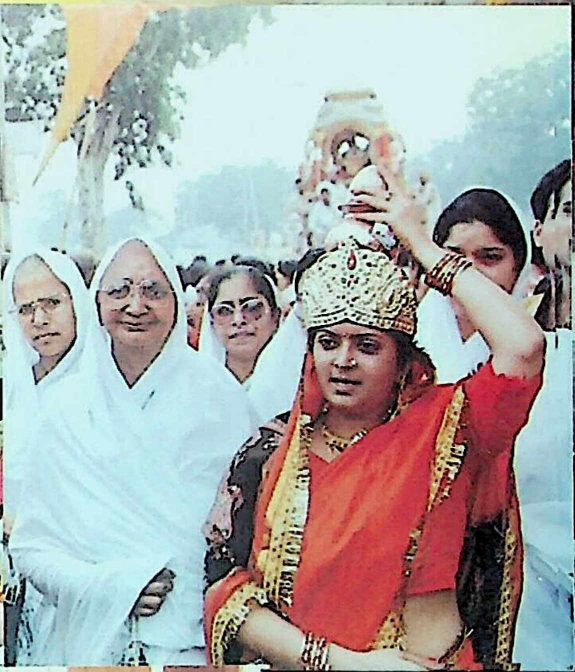

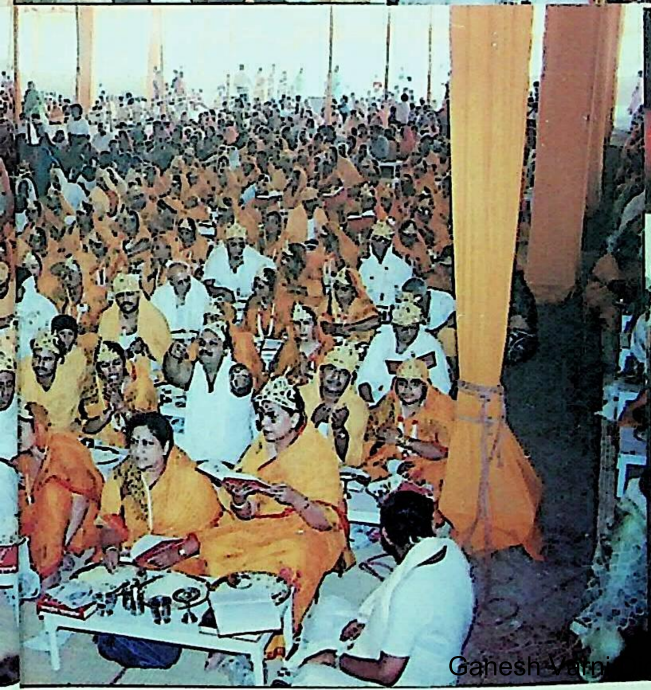

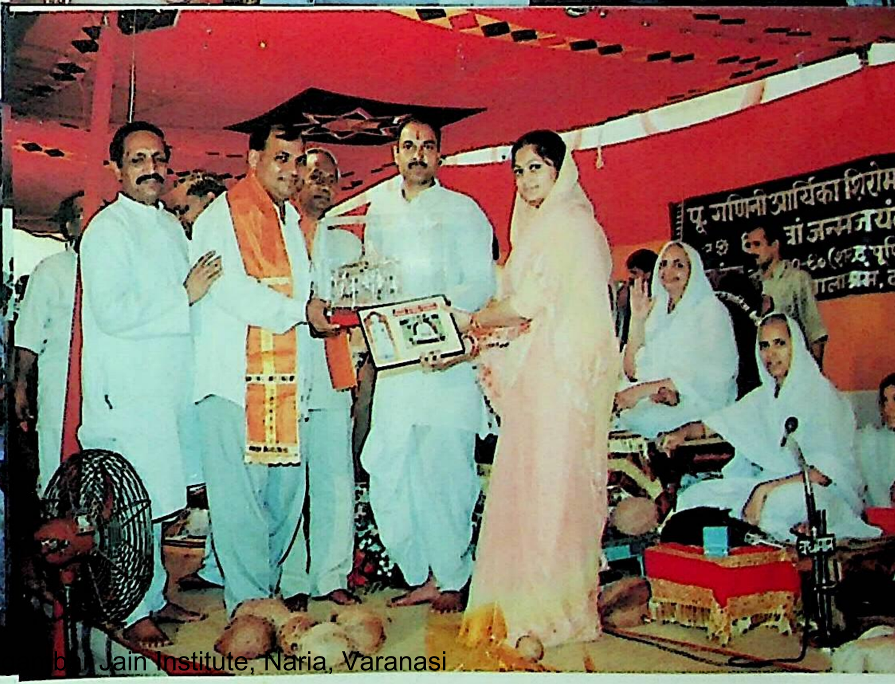

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजधानी दिल्ली में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में आयोजित भगवान महावीर २६००वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव के शुभ अवसर पर विश्वशांति महावीर विधान का भव्य आयोजन (अक्टूबर २००१)

मंच पर विराजमान पूज्य माताजी संघ सहित

विश्वशांति महावीर विधान के शुभ अवसर पर कुण्डलपुर के राजकुमार भगवान महावीर के चित्र का अनावरण करते हुए श्री वी. धनंजय कुमार जैन, श्रीमती इन्दु जैन एवं श्री आनन्द जैन 'जैन मार्बल', श्री कमलचंद जैन-दिल्ली (विधान के राजा सिद्धार्थ), श्री सतीश जैन पार्षद एवं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

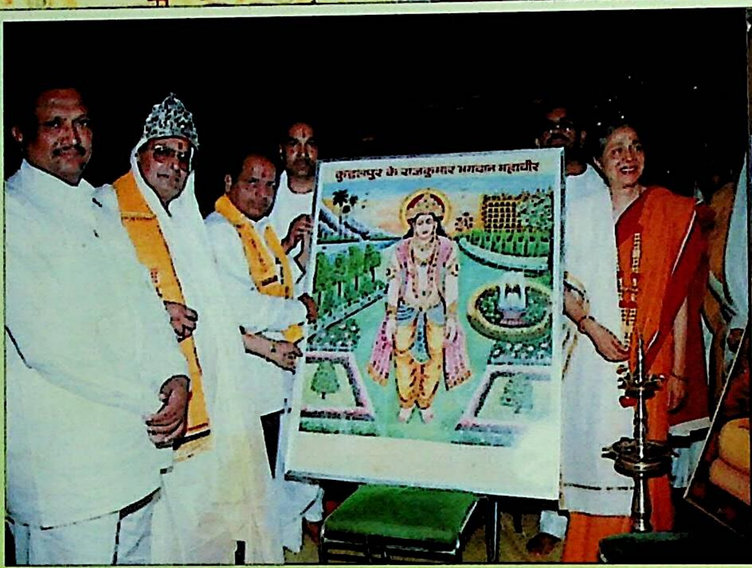

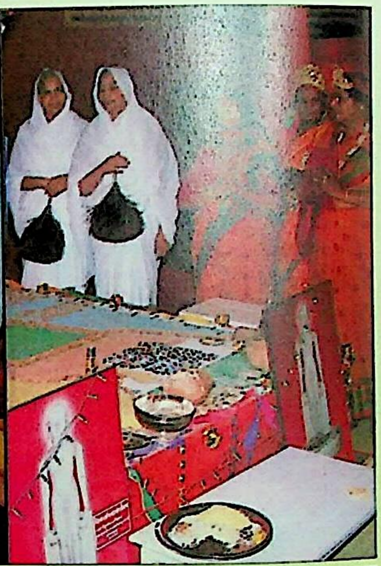

श्री जगजीवन जैन एवं श्रीमती सीमा जैन, राजौरी गार्डन, दिल्ली विश्वशांति महावीर विधान के मण्डप का उद्घाटन करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्वशांति महावीर विधान दिल्ली की सचित्र झलकियाँ

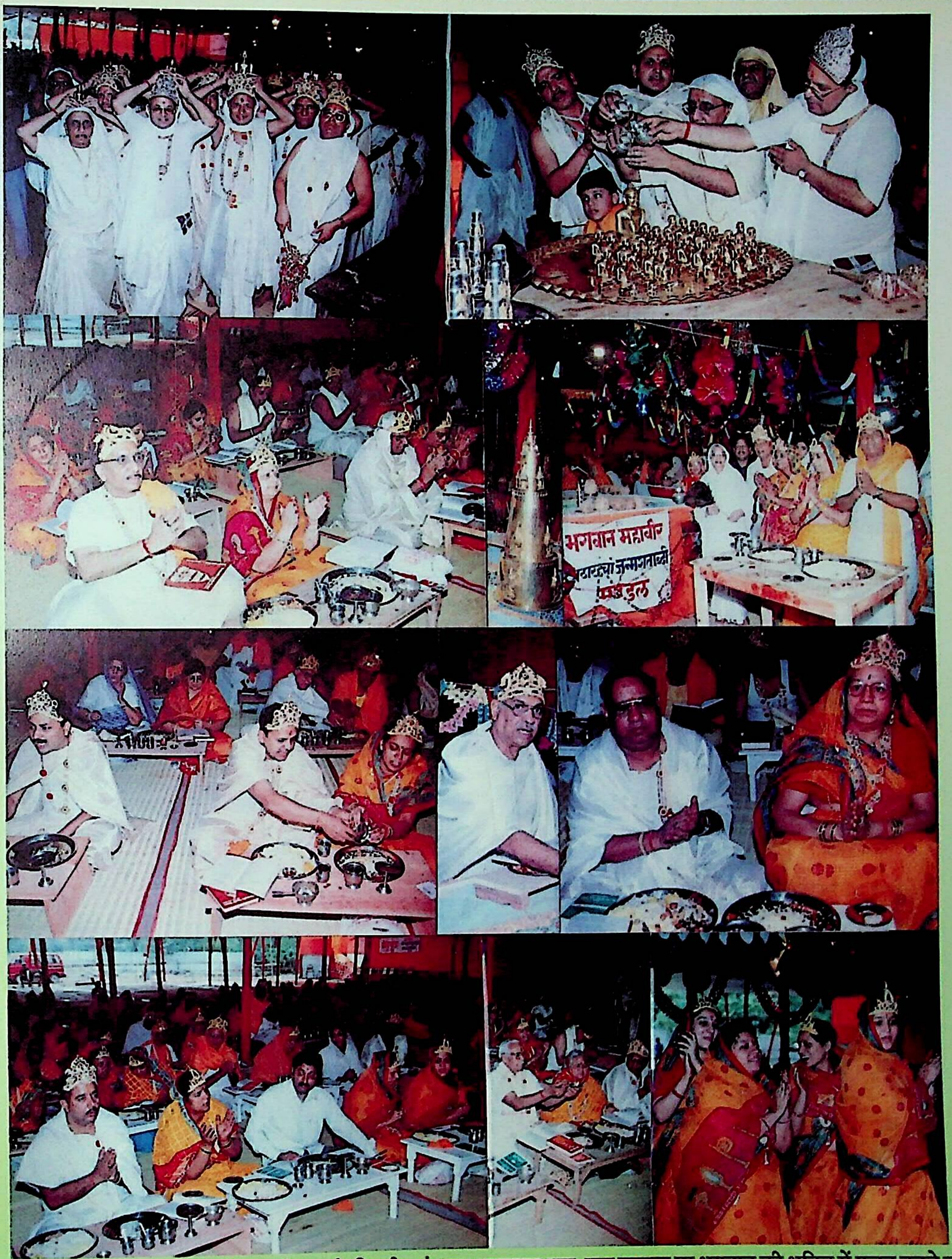

विधान के मुख्य यजमान श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली एवं अन्य भक्तगण एक-एक मण्डल पर भगवान की भक्ति में पूजन करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, उद्घाटन समारोह-जन्मनगरी वाराणसी, ६ जनवरी २००५

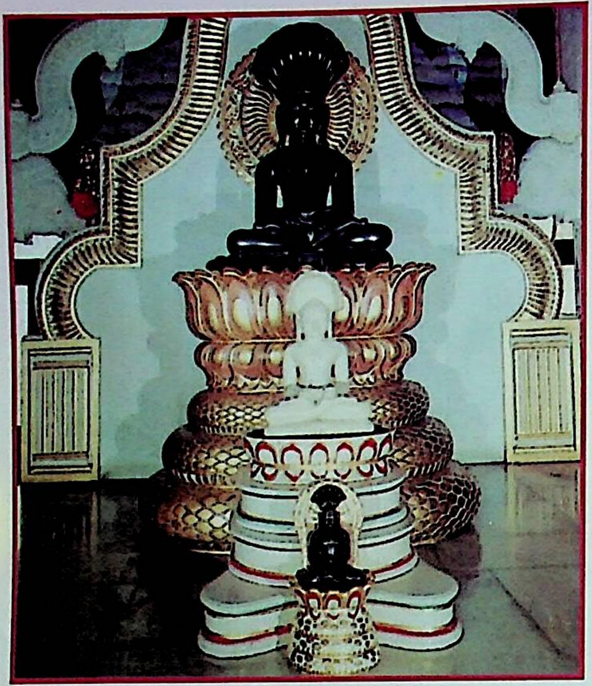

भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की मुख्य वेदी

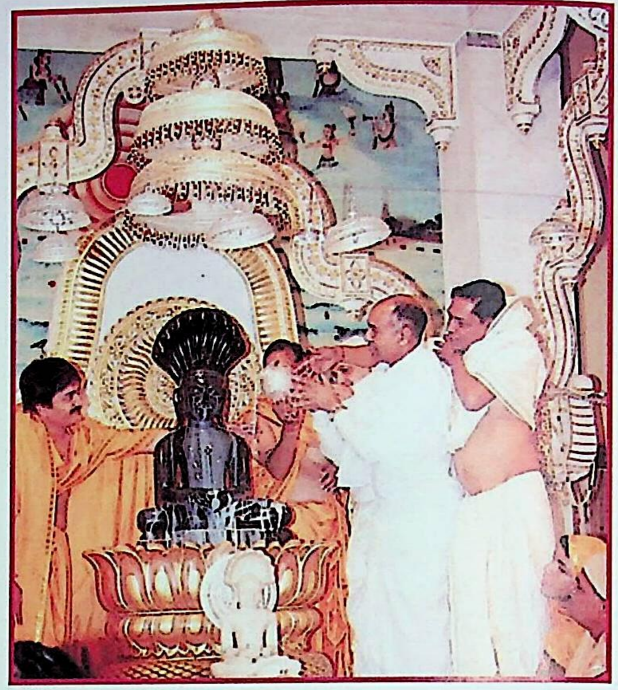

भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव के शुभ अवसर पर भगवान का अभिषेक करते हुए ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन, श्री चिरंजीलाल जैन-पटना आदि

पूज्य माताजी की प्रेरणा से धातु से निर्मित नौ मंजिला भगवान पार्श्वनाथ का सर्वार्थसिद्धि महल, जो कि भेलूपुर-वाराणसी दि. जैन मंदिर में स्थापित किया गया-६ जनवरी २००५

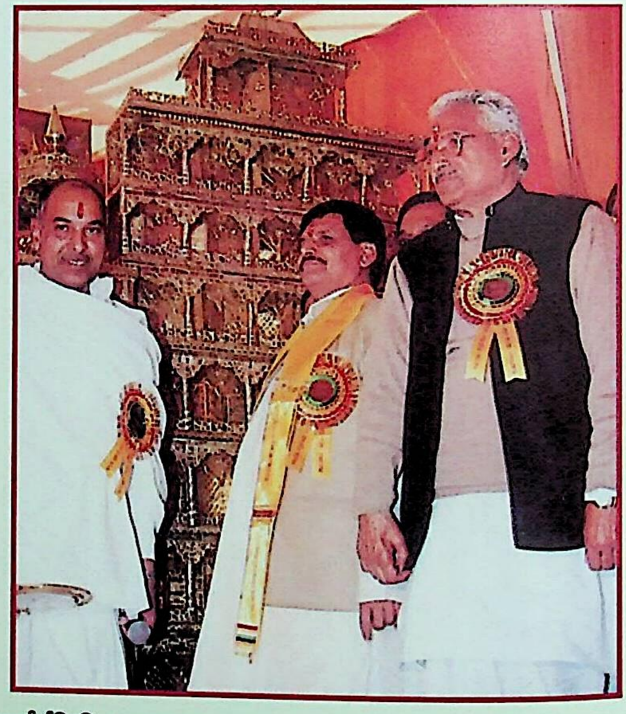

सर्वार्थसिद्धि महल का उद्घाटन करते हुए उ.प्र. विधानसभा अध्यक्ष-श्री माताप्रसाद पाण्डे, कैबिनेट मंत्री-श्री शिवपाल सिंह यादव, साथ में केन्द्रीय अध्यक्ष-ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव उद्घाटन समारोह-वाराणसी ६ जनवरी २००५ एवं टिकैतनगर १२ फरवरी २००५

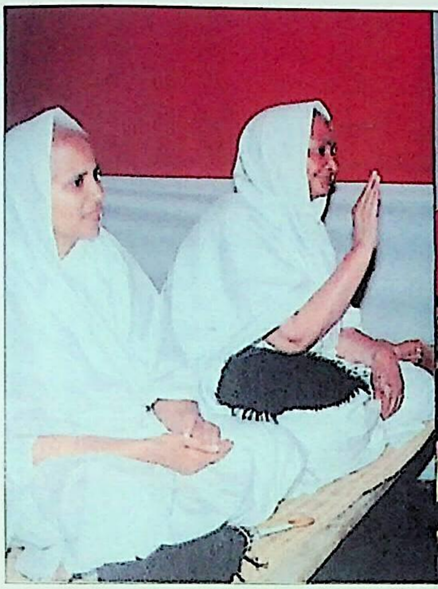

उ.प्र. सरकार के मुख्यमंत्री माननीय श्री मुलायम सिंह यादव टिकैतनगर में भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक के उपलक्ष्य में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए-१२ फरवरी २००५

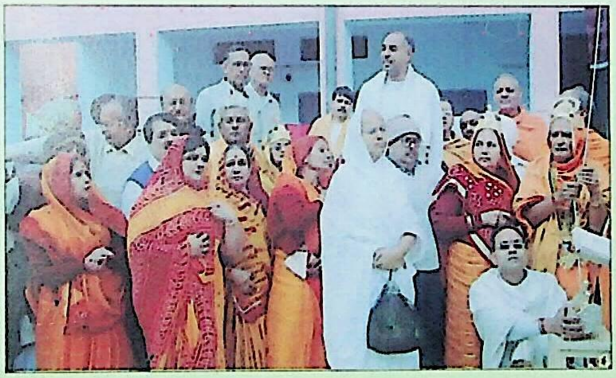

६ जनवरी को वाराणसी में झण्डारोहण करते हुए मोहनलाल धन्नालाल अजमेरा-धूलियान सपरिवार

श्री कन्हैयालाल सेठी-औरंगाबाद (बिहार) समारोह का दीप प्रज्ज्वलित करते हुए, साथ में वाराणसी जैन समाज के अध्यक्ष-श्री रिखबदास जैन एवं अन्य पदाधिकारीगण

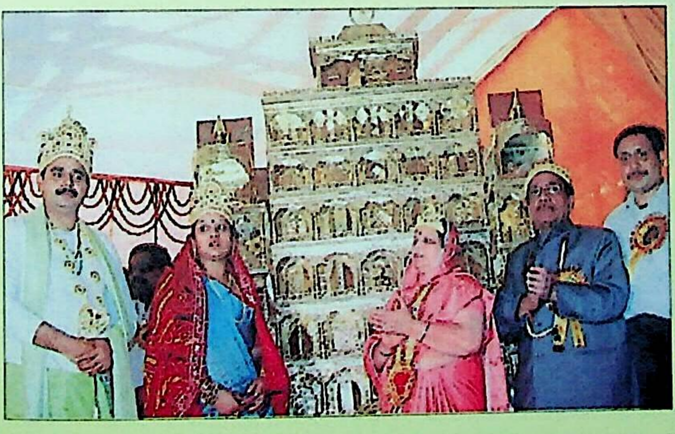

सर्वार्थसिद्धि महल के साथ आयोजन के माता-पिता संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन-दिल्ली, कुबेर श्री कमल कुमार जैन-आरा एवं वाराणसी जैन समाज के महामंत्री-श्री अरुण जैन

भगवान पार्श्वनाथ की रथयात्रा में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी, भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष-श्री एन.के. सेठी, महाराष्ट्र प्रान्तीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष-डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल, श्री कैलाशचंद जैन चौधरी-सनावद, श्री दीपक जैन-वाराणसी, भागचंद पहाड़िया, कलकत्ता एवं अन्य कार्यकर्तागण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हस्तिनापुर में आयोजित पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा एवं सानिध्य में देश के मूर्धन्य विद्वानों का प्रशिक्षण शिविर वर्ष-१९७८ (सचित्र झलकियाँ)

प्रवचन मण्डप में बैठे हुए पं. बाबूलाल जमादार आदि विद्वत्गण महिला प्रशिक्षार्थीगण एवं श्रेष्ठीगण

प्रशिक्षण शिविर में विद्वानों को प्रशिक्षित करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

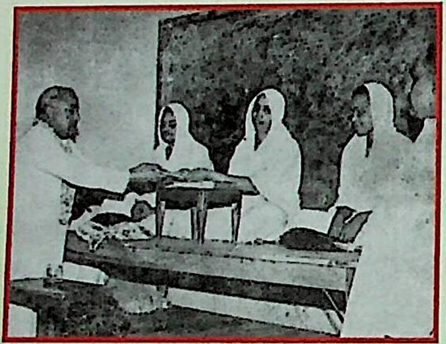

प्रशिक्षण शिविर के लिए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित प्रवचन निर्देशिका पुस्तक का विमोचन करते हुए प्रकाशचंद पाण्ड्या-कोटा

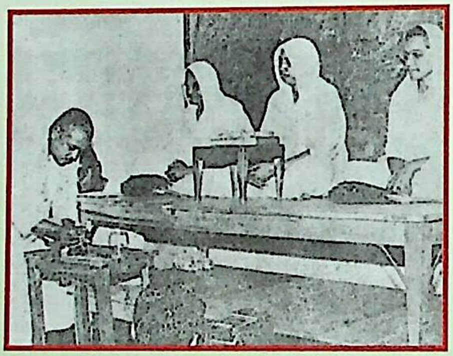

प्रशिक्षण शिविर का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते हुए श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार-दिल्ली मंच पर विराजमान पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी, पूज्य श्री रत्नमती माताजी, पूज्य श्री शिवमती माताजी - ७ अक्टूबर १९७८

प्रशिक्षण शिविर के कुलपति अनेक ग्रंथों के टीकाकार महान विद्वान पं. श्री मोतीलाल कोठारी-फलटण का सम्मान करते हुए वाणीभूषण पं. श्री बाबूलाल जमादार

प्रशिक्षण शिविर में अनेक प्रान्तों से पधारे हुए विद्वान, श्रीमंत एवं महिलाएं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्वशांति शिखर सम्मेलन अमेरिका में जैन धर्माचार्य के रूप में कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन की अमेरिका यात्रा-सितम्बर २००२

राजधानी दिल्ली से पूज्य श्री ज्ञानमती मातजी से आशीर्वाद लेकर संस्थान के अध्यक्ष ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन एवं साथ में संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री मनोज कुमार जैन अमेरिका यात्रा के लिए २६ अगस्त २००० को रवाना हुए, वहाँ पर २८ से ३१ अगस्त तक विश्व शांति शिखर सम्मेलन में भाग लेकर विभिन्न सम्प्रदायों के सन्तों से मिलना हुआ। पश्चात् १० दिन पर्यूषण पर्व में जैना सोसाइटी अमेरिका के अध्यक्ष श्री महेन्द्र पाण्ड्या के निवेदन पर जैन सेंटर में दशलक्षण पर्व के प्रवचन करके अमेरिका यात्रा से पर्यूषण के पश्चात् वापस आये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजधानी दिल्ली प्रीतविहार कालोनी में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से आयोजित कैलाशपर्वत मानसरोवर यात्रा एवं ४८ भक्तामर मण्डल विधान आयोजन-वर्ष २००० की झलकियाँ

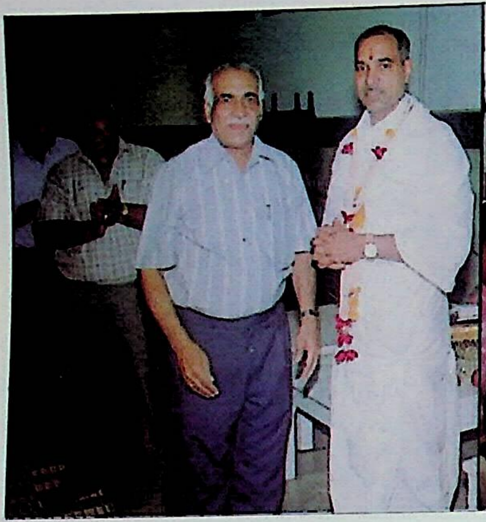

प्रीतविहार-दिल्ली में जैन समाज द्वारा आयोजित विशाल कैलाशपर्वत मानसरोवर यात्रा का दृश्य। अध्यक्ष श्री सागरचंद जैन महामंत्री-श्री अतुल कुमार जैन ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन का सम्मान करते हुए

४८ भक्तामर मण्डल विधान के आयोजन में इन्द्रगण पूजा करते हुए

मुख्य अतिथि श्री वी. धनंजय कुमार जैन एवं उनकी धर्मपत्नी का सम्मान करते हुए समाज के अध्यक्ष सागरचंद जैन, मध्य में श्री अतुल कुमार जैन एवं श्री सुनील जैन, प्रीतविहार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३ संतानों को जन्म देने वाली माँ मोहिनी जब बनीं आर्यिका श्री रत्नमती माताजी-सन् १९७१

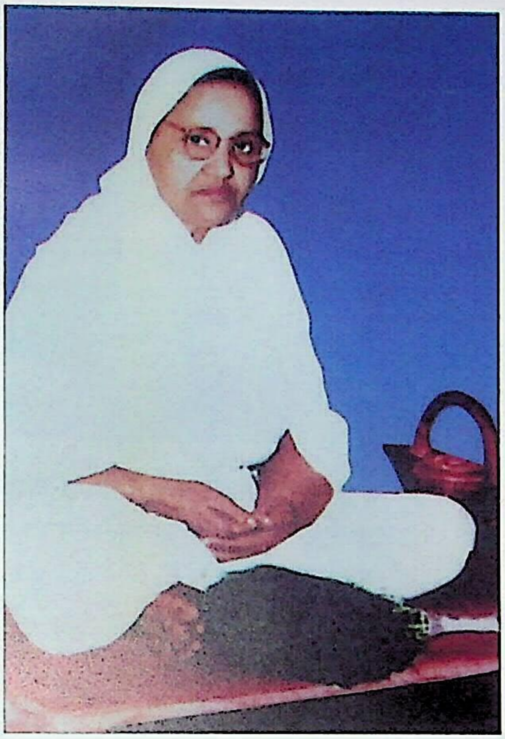

पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी

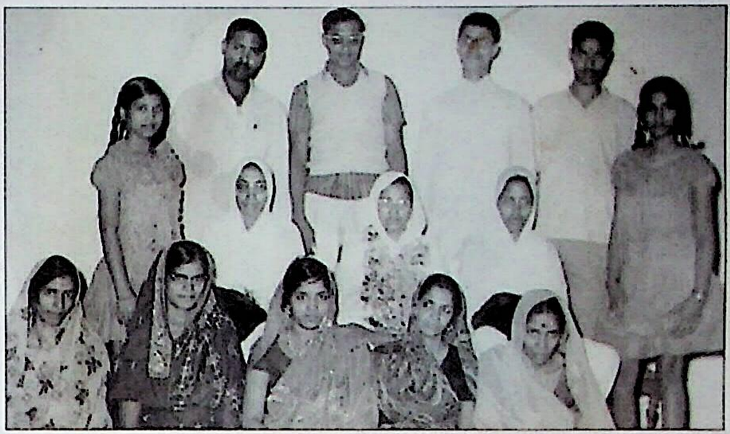

अजमेर (राज.) में दीक्षा से पूर्व श्री रत्नमती माताजी अपनी १३ सन्तानों के साथ, रत्नमती माताजी के दोनों ओर श्री ज्ञानमती माताजी व अभयमती माताजी, ऊपर की पंक्ति में ४ पुत्र कैलाशचंद जैन, प्रकाशचंद जैन, सुभाषचंद जैन एवं रवीन्द्र कुमार जैन, खड़ी दो बेटी त्रिशला एवं माधुरी, नीचे बैठे हुए बाएं श्रीमती कुमुदनी देवी, मालती, श्रीमती कामनी, श्रीमती शान्ती देवी, श्रीमती श्रीमती देवी

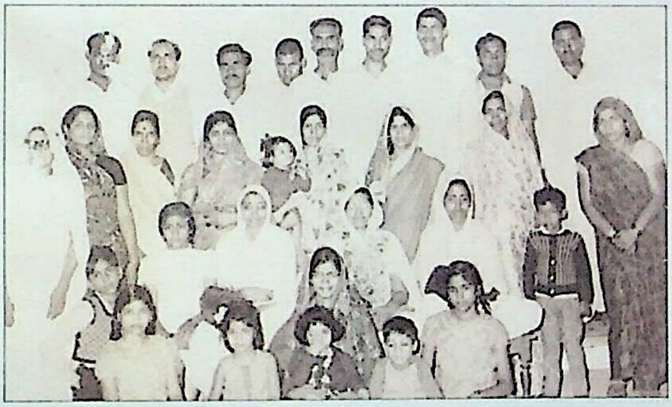

पूज्य श्री रत्नमती माताजी के दीक्षा से पूर्व ४ पुत्र, ९ पुत्रियाँ एवं भाई भगवान दास जैन, दामाद, बहुएं एवं पौत्र-पौत्रियाँ

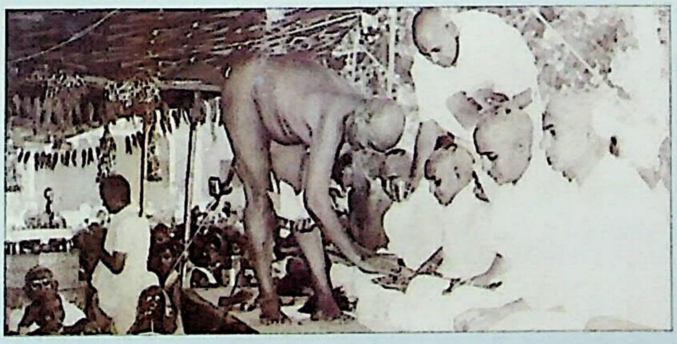

आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज श्री रत्नमती माताजी को दीक्षा के संस्कार करते हुए

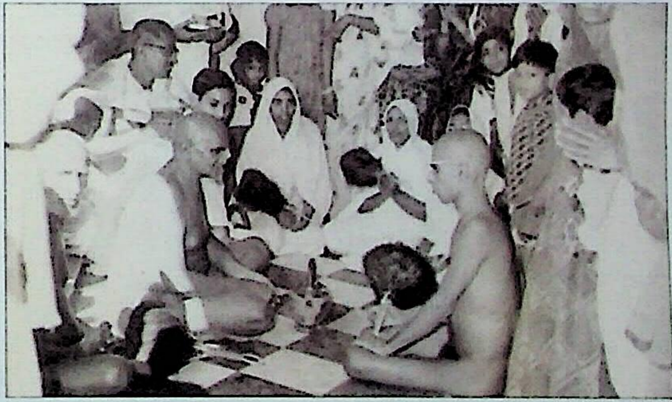

दीक्षा के पश्चात् आर्यिका श्री रत्नमती माताजी आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज को नमोस्तु करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कु. मनोवती (आर्यिका श्री अभयमती माताजी) की क्षुल्लिका दीक्षा-सन् १९६४ एवं आर्यिका दीक्षा वर्ष १९६९

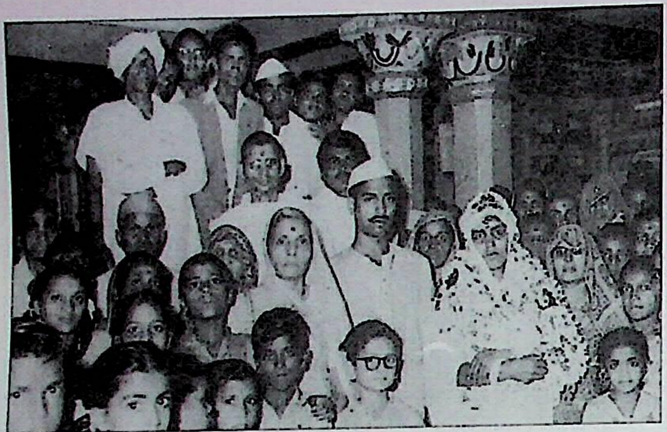

ब्र. मनोवती का दीक्षा से पूर्व का स्वागत जुलूस, हैदराबाद-सन् १९६४, साथ में भाई श्री कैलाशचंद जैन, गांधी टोपी वाले

ब्र. मनोवती को केशलोंच करके दीक्षा देते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी -सन् १९६४

पूज्य आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी

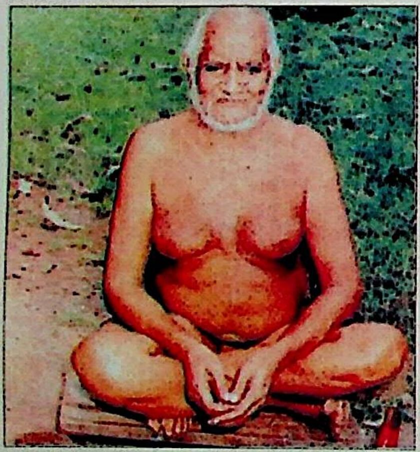

आर्यिका दीक्षा गुरु आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज

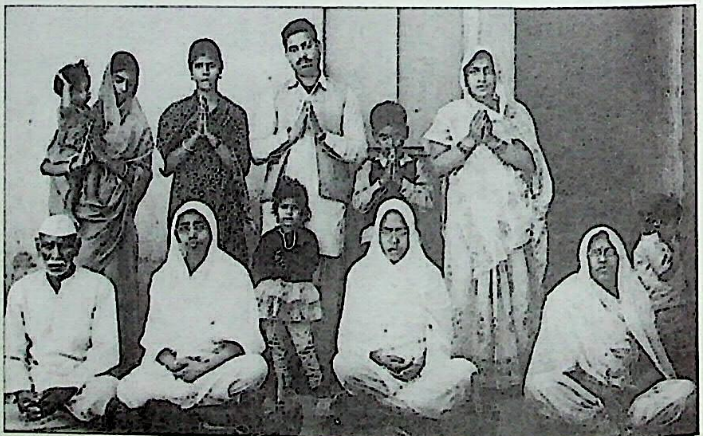

सन् १९६९ में श्री महावीर जी क्षेत्र पर श्री अभयमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के पश्चात्, पूर्व परिवार के मध्य बीचोंबीच विराजमान पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी एवं श्री अभयमती माताजी, उनके आजू-बाजू हैं पिता श्री छोटेलाल एवं माता मोहिनी देवी। पीछे पंक्ति में बाएं से दाए हैं-सौ. कुमुदिनी जैन (बहन), कु. मालती (बहन), श्री कैलाशचंद जैन (भाई), श्री जम्बू कुमार (भतीजा), सौ. चंदारानी (भाभी), दोनों माताओं के बीच में हैं बालिका अंजू (भतीजी), किनारे खड़ा बालक संजय (भानजा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्र. कु. माधुरी बर्नी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी-वर्ष १९८९

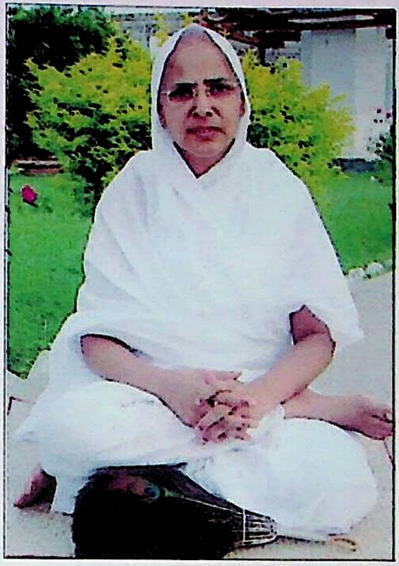

आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

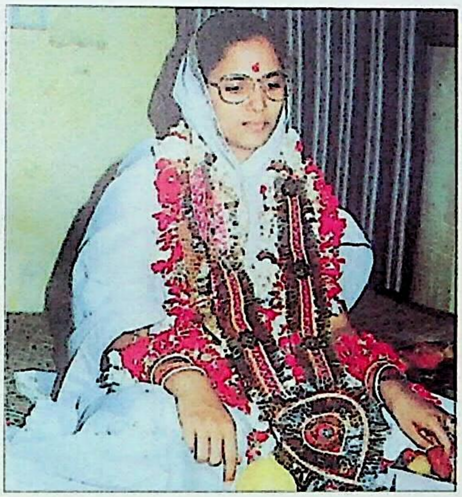

दीक्षा से पूर्व ब्र. कुमारी माधुरी शास्त्री

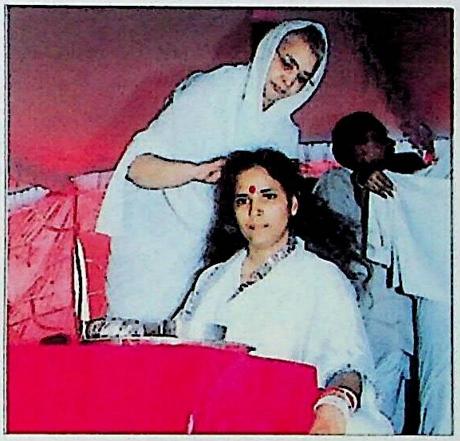

१३ अगस्त १९८९ को हस्तिनापुर में दीक्षा के लिए कु. माधुरी का केशलोंच करती हुई गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

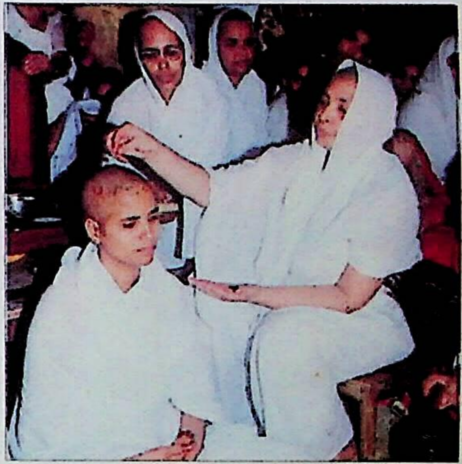

ब्र. कु. माधुरी शास्त्री पर आर्यिका दीक्षा के संस्कार करती हुईं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

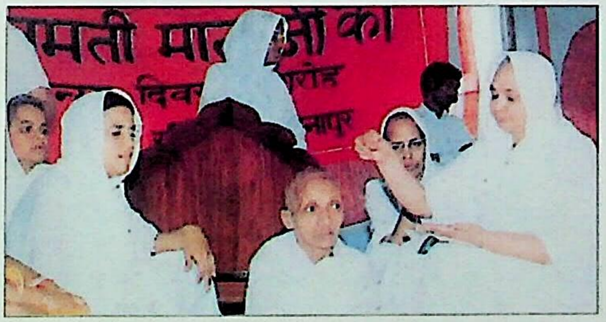

१५ अक्टूबर १९८९ को जम्बूद्वीप स्थल पर संघस्थ ब्र. श्यामाबाई को क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान करती हुईं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी। दीक्षा के पश्चात् इनका नाम क्षुल्लिका श्री श्रद्धामती माताजी रखा गया।

क्षुल्लिका श्री श्रद्धामती माताजी को दीक्षा देकर पिच्छी, कमण्डलु प्रदान करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्र. श्री मोतीचंद जैन (मंत्री-दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर) ने ली क्षुल्लक दीक्षा-वर्ष १९८७

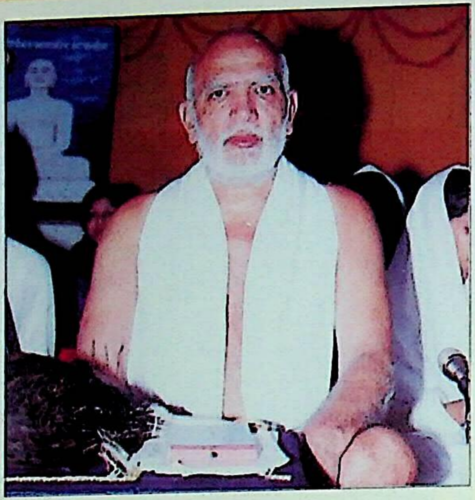

क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज

दीक्षा से पूर्व पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद लेते हुए

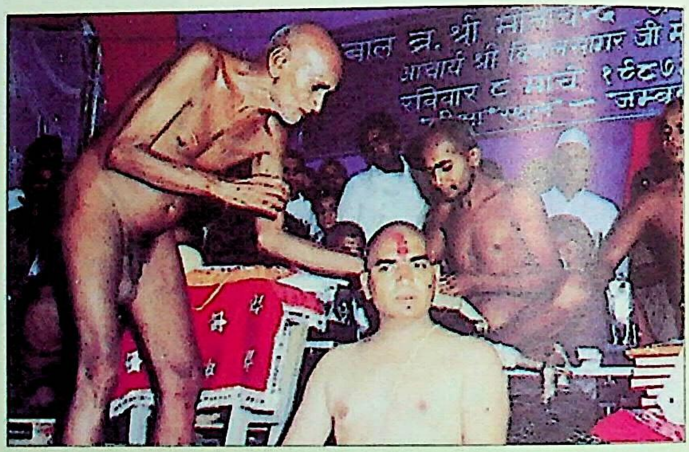

आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज क्षुल्लक दीक्षा के संस्कार करते हुए-८ मार्च १९८७

क्षुल्लक दीक्षा के संस्कार पास बैठे हैं लधु माता श्री प्रकाश चंद जैन सनावद

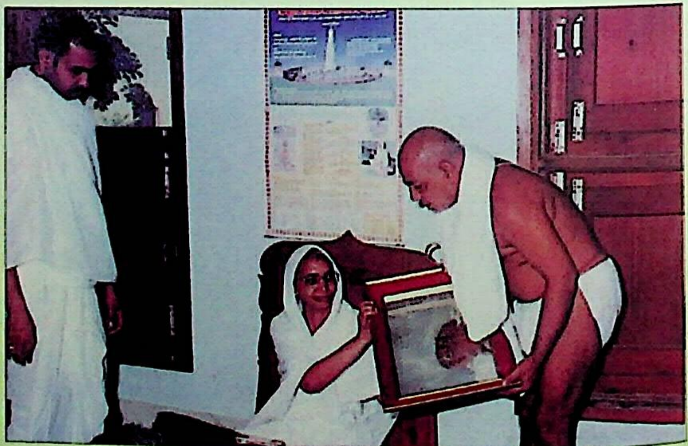

क्षुल्लक दीक्षा के पश्चात् क्षुल्लक मोतीसागर को संस्थान के पीठाधीश के पद पर पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा प्रतिष्ठित किया गया, अगस्त - १९८७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की गृहत्याग एवं वैराग्यपथ की यात्रा का शुभारंभ-वर्ष १९५२
ब्र. कु. मैना एवं उनके माता-पिता

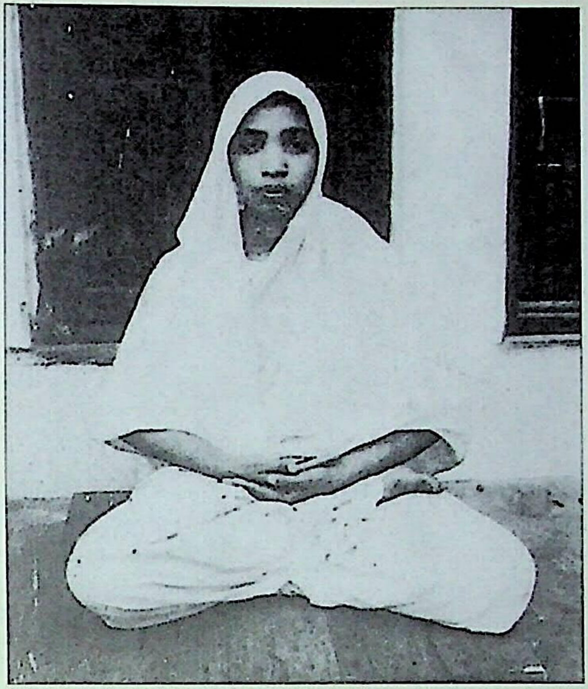

ब्र. कु. मैना के रूप में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी
-८ नवम्बर १९५२ को बाराबंकी में

पिता श्री छोटेलाल जी (पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के जनक)

माता मोहिनी देवी (पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की जन्मदात्री)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"सब छोड़ कुटुम्ब परिवार अथिर संसार मोह का नाता"

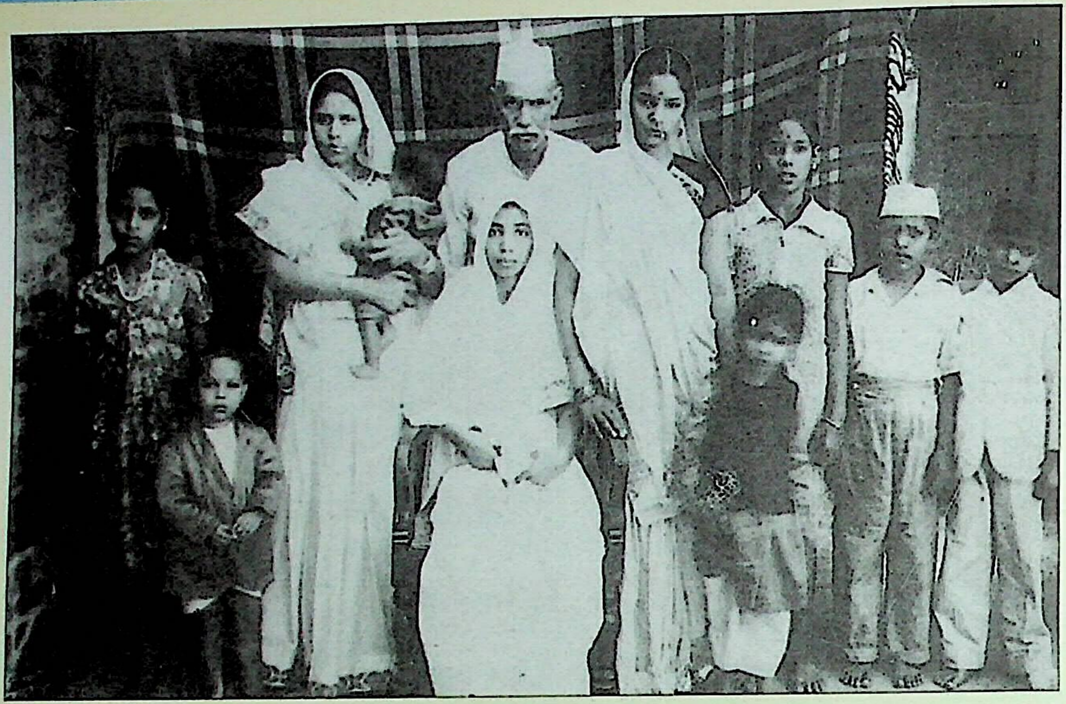

ब्र. कुमारी मैना के साथ उनके पारिवारिक जन बाएं से दाए हैं-ब्र. कु. मनोवती (वर्तमान में आर्यिका श्री अभयमती माताजी), दो वर्षीय भाई रवीन्द्र जैन, माँ मोहिनी गोद में कन्या मालती को लिए हुए पिता श्री छोटेलाल जैन, बहन शान्ति देवी, श्रीमती देवी, कुमुदनी देवी, भाई प्रकाशचंद जैन, सुभाषचंद जैन-८ नवम्बर १९५२-बाराबंकी,

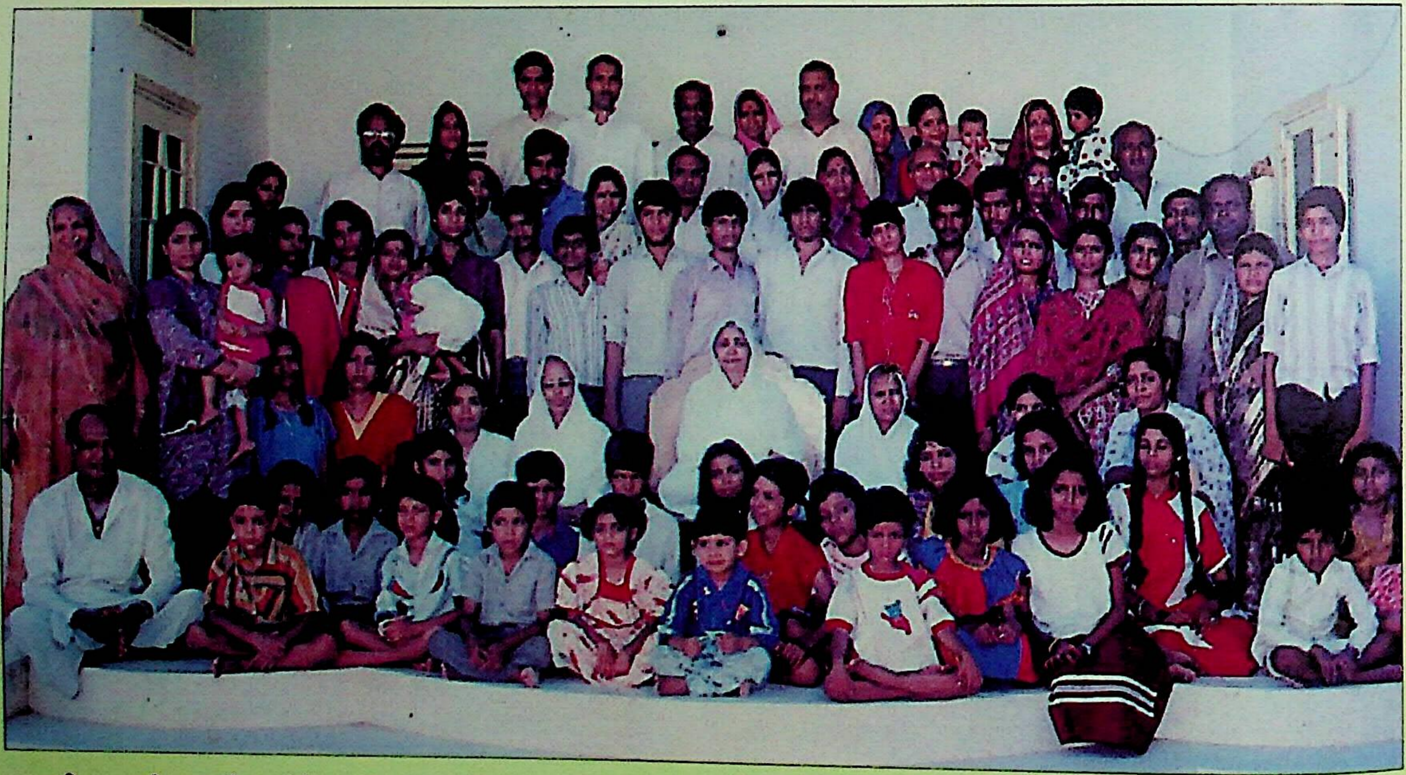

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के भाई-बहन एवं परिवारजन-सन् १९८९ (आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी की दीक्षा के समय)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के वे चरण जिन्होंने भारतवर्ष के कोने-कोने में पदविहार किया तथा वे हाथ जिनके द्वारा २५० से अधिक ग्रंथ लिखे गये

आहार से पूर्व शुद्धि करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

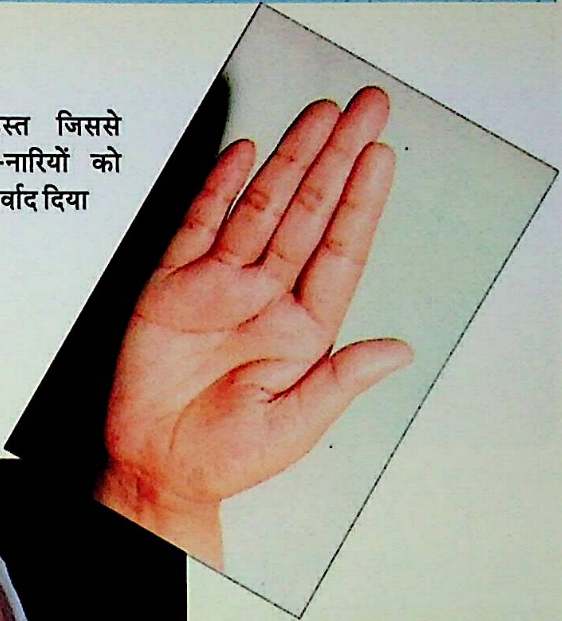

वह वरदहस्त जिससे लाखों नर-नारियों को मंगल आशीर्वाद दिया

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी

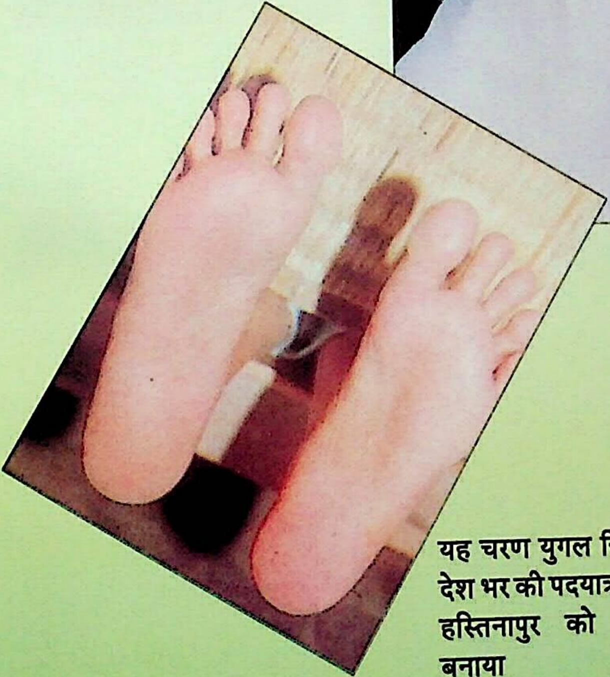

यह चरण युगल जिसने देश भर की पदयात्रा कर हस्तिनापुर को स्वर्ग बनाया

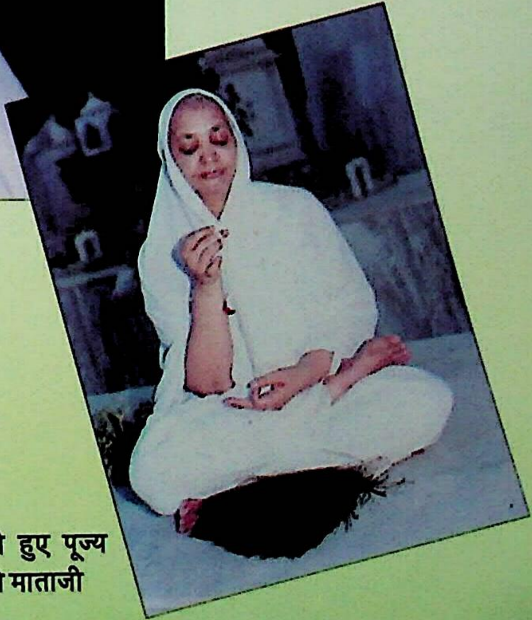

जाप्य करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप परिसर में विभिन्न जिनालयों के दर्शन करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

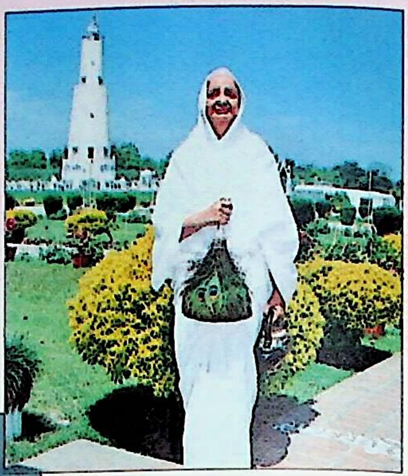

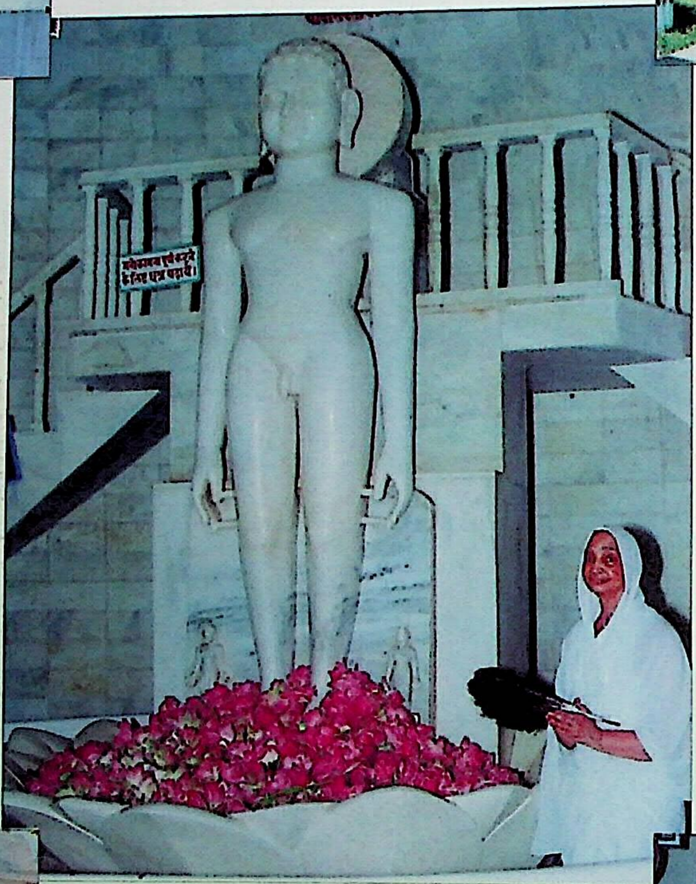

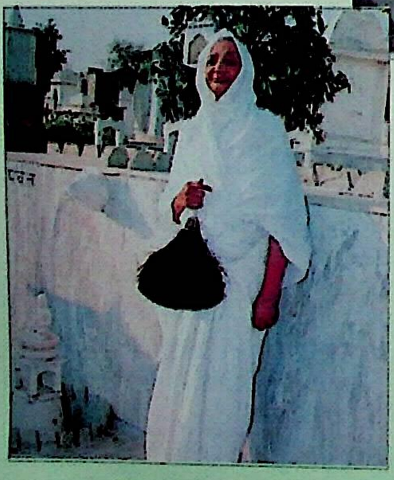

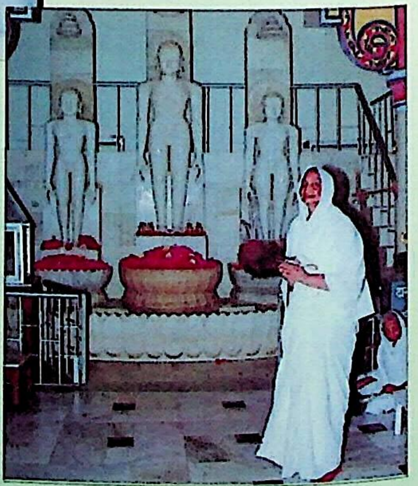

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या एवं भगवान धर्मनाथ की जन्मभूमि रतनपुरी-रौनाही तीर्थ पर दर्शन करती हुई पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी-वर्ष २००५

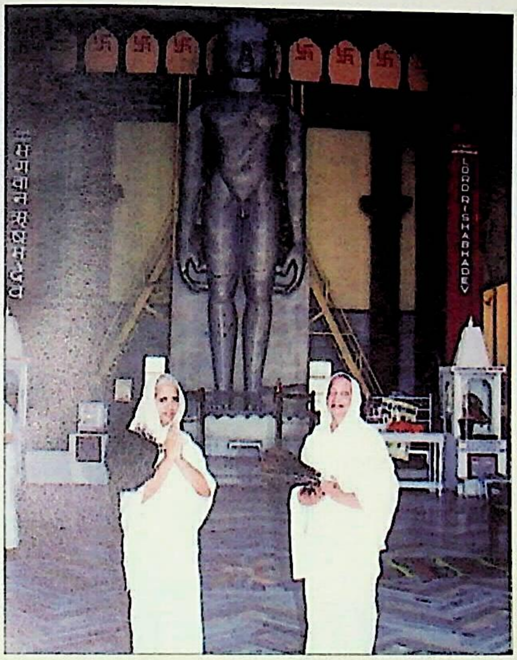

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी भगवान ऋषभदेव की ३१ फुट उत्तुंग प्रतिमा का दर्शन करती हुई

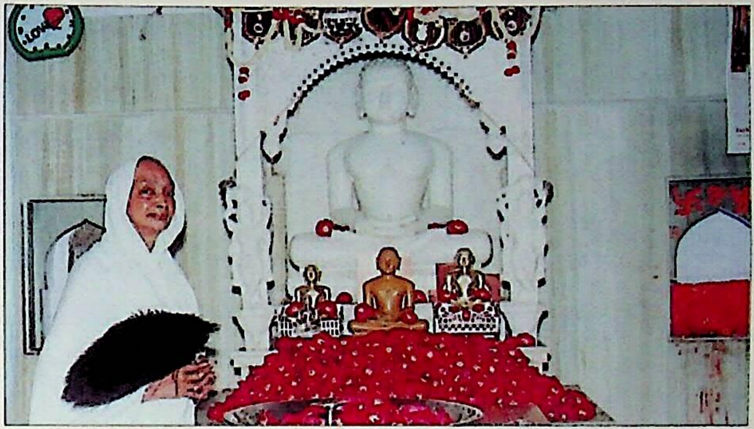

रत्नपुरी में भगवान धर्मनाथ की वेदी के दर्शन करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

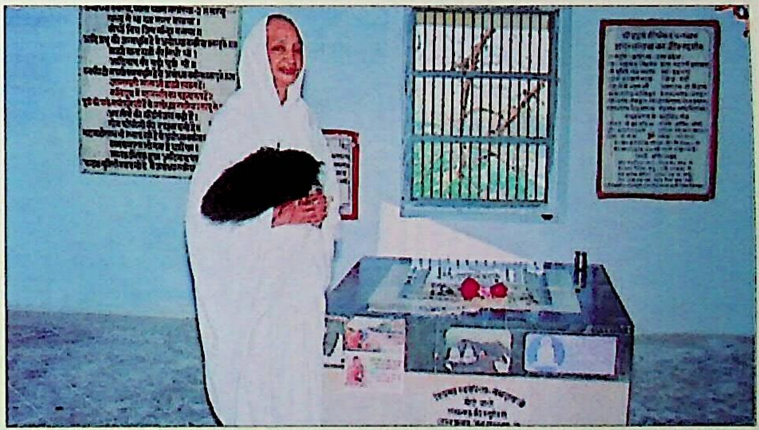

भगवान अजितनाथ की टोंक पर चरणवंदना करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी भगवान ऋषभदेव के जन्मस्थान टोंक पर दर्शन करते हुए

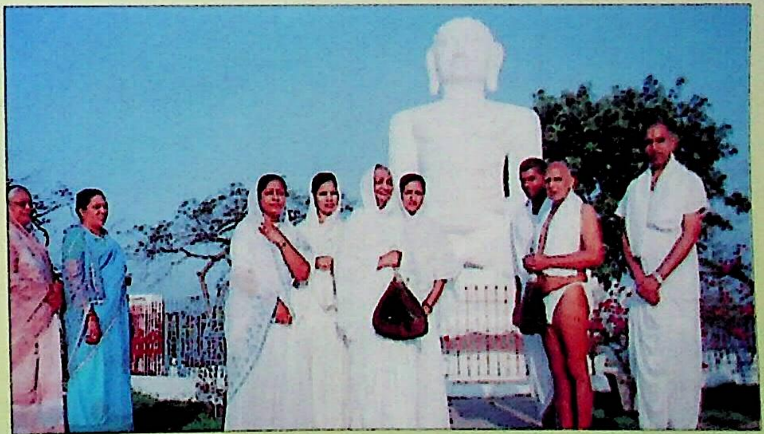

भगवान ऋषभदेव राजकीय उद्यान राजघाट अयोध्या में स्थापित २१ फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा के समक्ष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयोध्या के विभिन्न आश्रमों के सन्तगण पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का विनय करते हुए

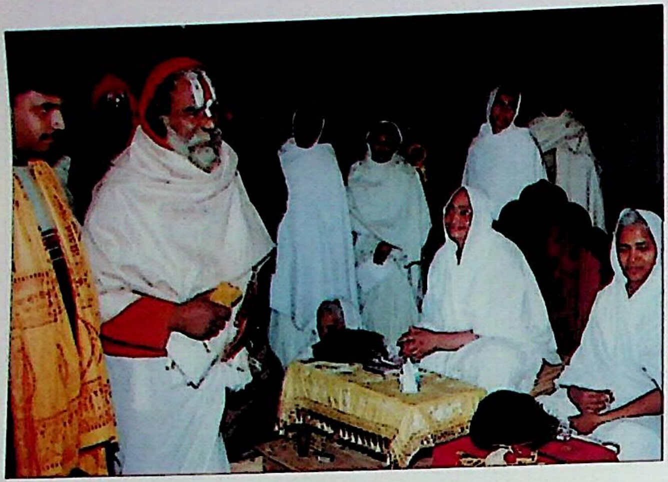

राम जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष महन्त श्री नृत्यगोपाल दास पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के साथ

हनुमान गढ़ी के महन्त श्री रामदास जी पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के साथ

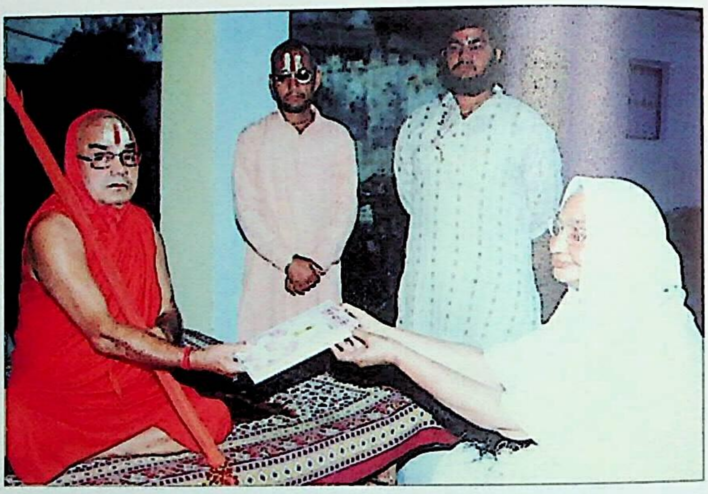

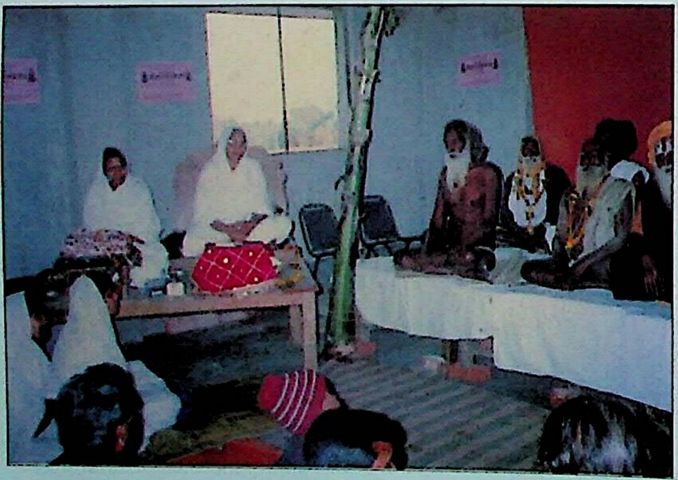

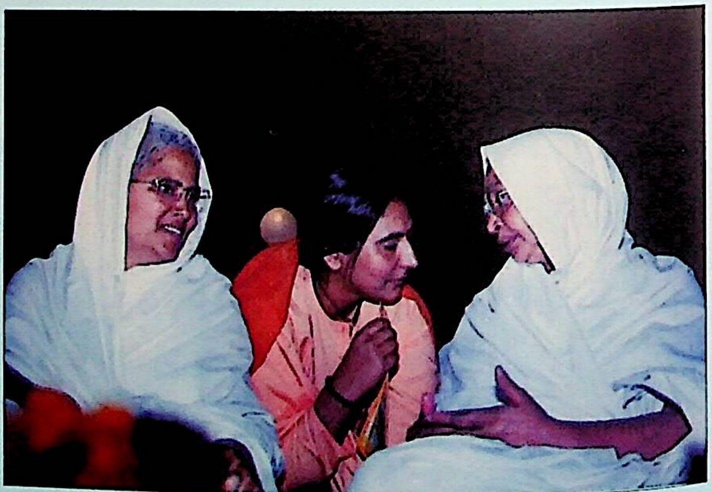

साध्वी ऋृतम्भरा पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी से चर्चा करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की हस्तिनापुर से मांगीतुंगी यात्रा के मध्य विभिन्न तीर्थों के दर्शन-सन् १९९५-९६

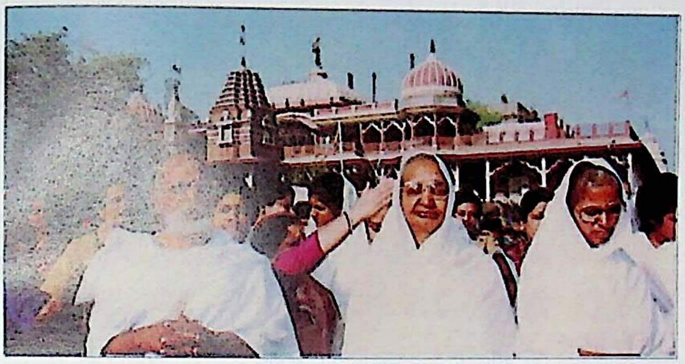

श्री दि. जैन लाल मंदिर चाँदनी चौक, दिल्ली के दर्शन कर विहार करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

पदमपुरा तीर्थ के भगवान पद्मप्रभु के दर्शन करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

तिजारा में भगवान चन्द्रप्रभु के दर्शन करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

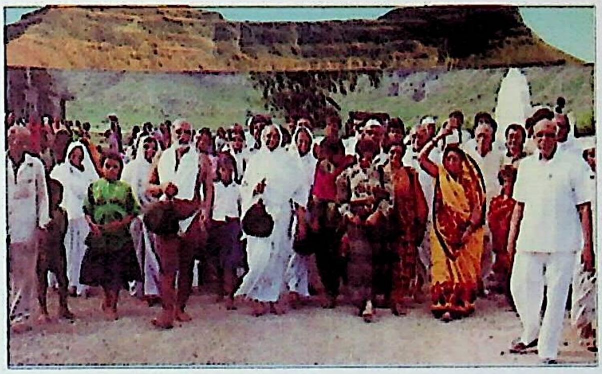

मांगीतुंगी में २८ अप्रैल १९९६ को पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल प्रवेश

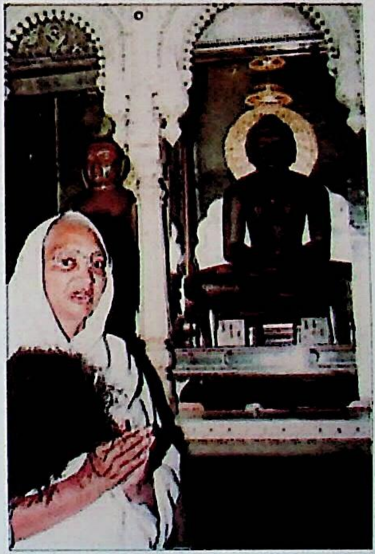

अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी भगवान के दर्शन करते हुए

चूलगिरी (जयपुर-राज.) में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज की प्रतिमा के समक्ष पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

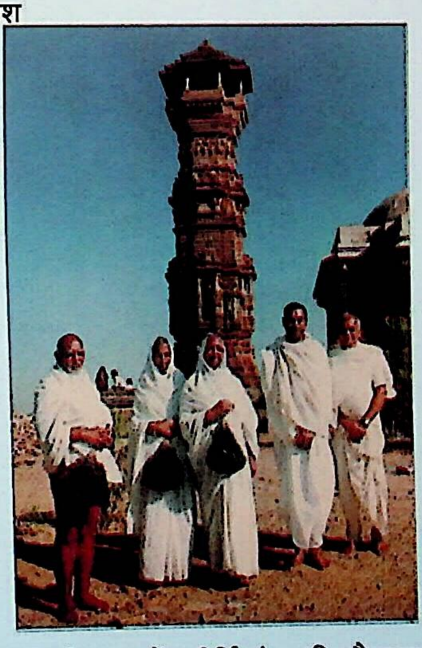

चित्तौड़गढ़ में कीर्तिस्तंभ (चित्तौड़गढ़ किले पर भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ) के दर्शन करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

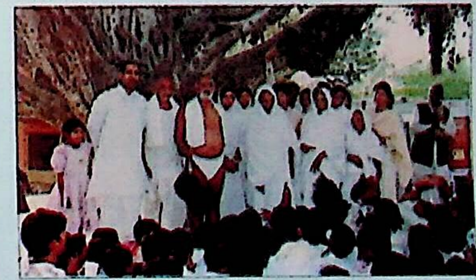

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्थल माधोराजपुरा में, जहाँ सन् १९५६ में पूज्य माताजी ने जिस वृक्ष के नीचे आचार्य वीरसागर जी से दीक्षा ली थी, उस वृक्ष के नीचे पूज्य माताजी का ४० वर्षों के पश्चात् मार्च १९९७ में मंगल पदार्पण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी दिल्ली से प्रयाग विहार के मध्य विभिन्न तीर्थों पर दर्शन करते हुए-वर्ष २०००-२००१

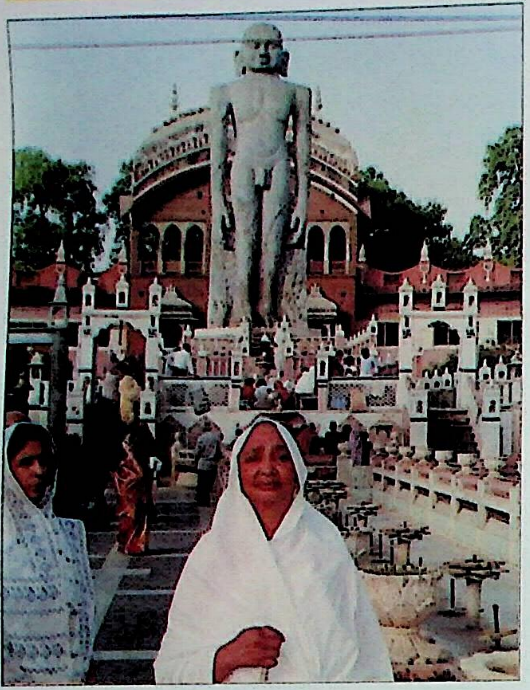

फिरोजाबाद में भगवान बाहुबली की प्रतिमा के दर्शन करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी- २३ अप्रैल २००२

शौरीपुर-बटेश्वर भगवान नेमिनाथ की जन्मभूमि में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी दर्शन करते हुए

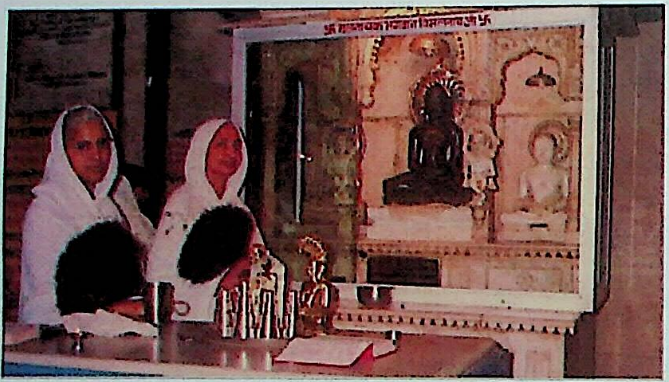

भगवान विमलनाथ की जन्मभूमि कम्पिल जी में दर्शन करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी – ९ जून २००१

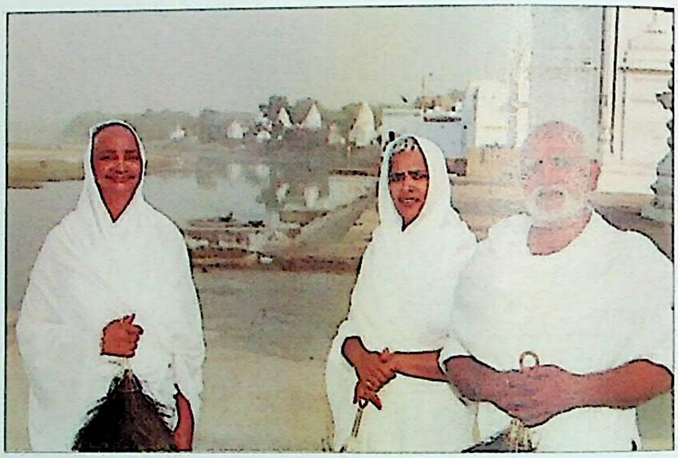

शौरीपुर-बटेश्वर भगवान नेमिनाथ की जन्मभूमि में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी दर्शन करते हुए

दिगम्बर जैन मंदिर खुर्जा में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी दर्शन करते हुए

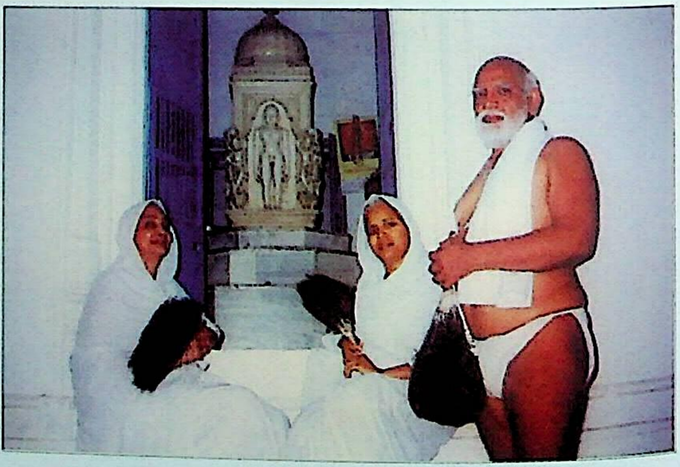

भगवान पदमप्रभु की जन्मभूमि कौशाम्बी में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी दर्शन करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की प्रेरणा से नवनिर्मित ऋषभदेव तीर्थ प्रयाग-इलाहाबाद में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी मंदिरों के दर्शन करते हुए-वर्ष २००१

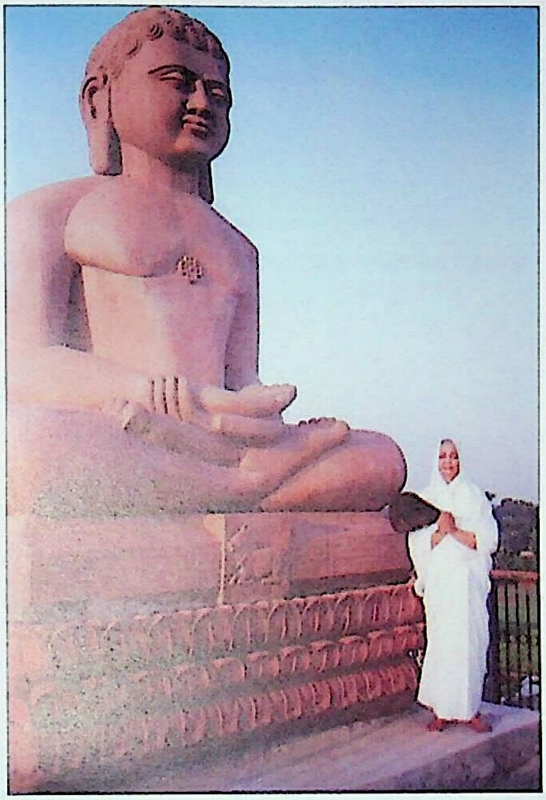

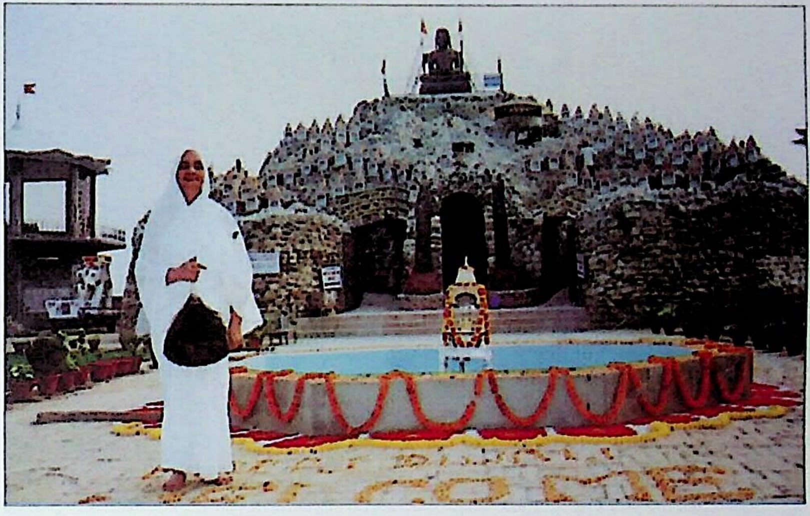

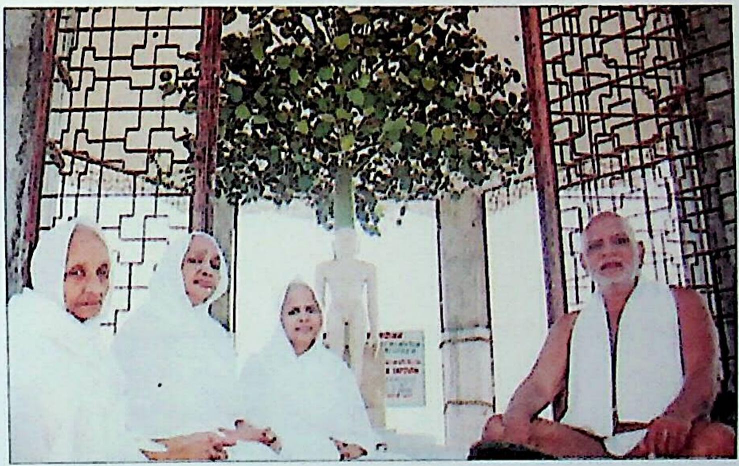

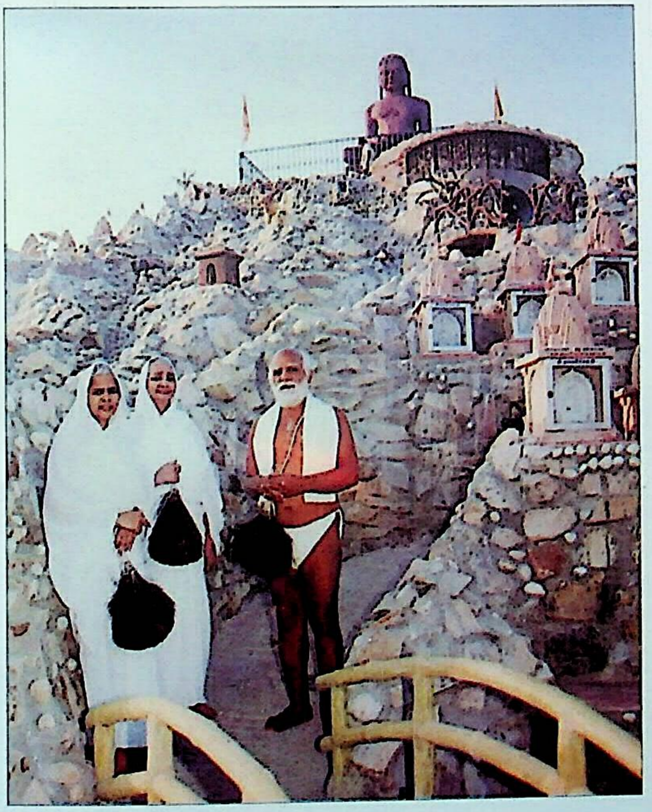

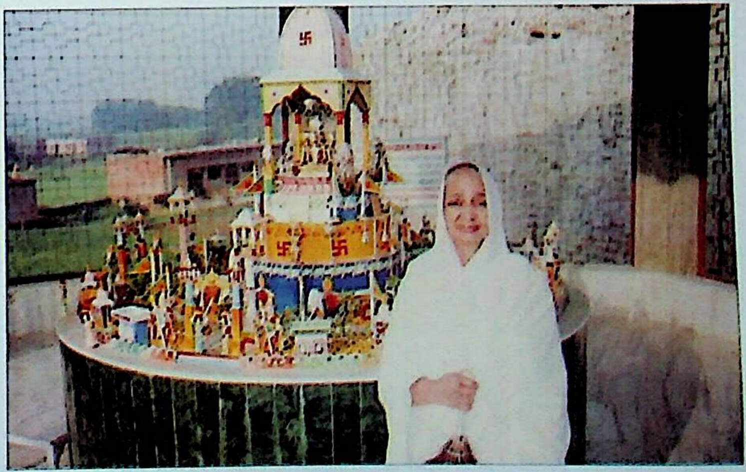

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ विकास हेतु पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का राजधानी दिल्ली से (२० फरवरी २००२) को कुण्डलपुर के लिए मंगल विहार एवं मध्य में तीर्थंकर जन्मभूमियों के दर्शन

इण्डियागेट दिल्ली से कुण्डलपुर की ओर पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का ससंघ मंगल विहार २० फरवरी २००२, साथ में संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन आदि

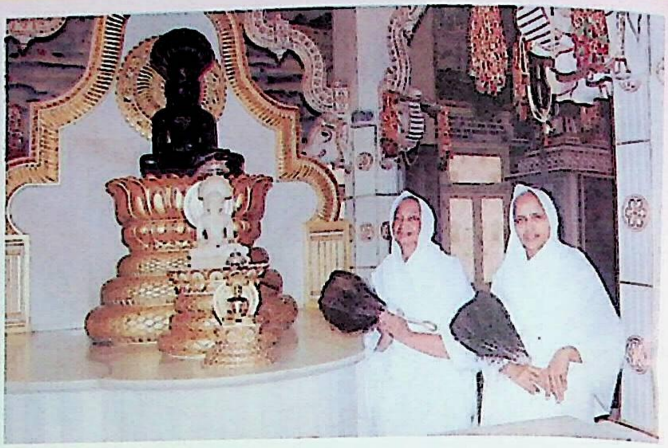

भगवान पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी में दर्शन करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

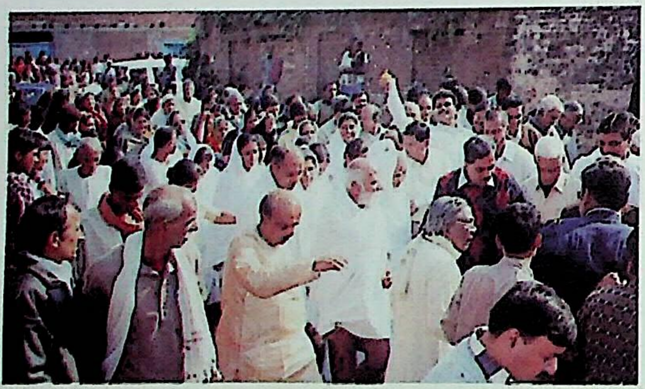

कुण्डलपुर में मंगल प्रवेश २९ दिसम्बर २००२, स्वागत करते हुए श्री रामगोपाल (अध्यक्ष-न्यास बोर्ड, बिहार) एवं अजय कुमार जैन (मंत्री-बिहार प्रान्तीय तीर्थक्षेत्र कमेटी) आदि श्रद्धालुगण

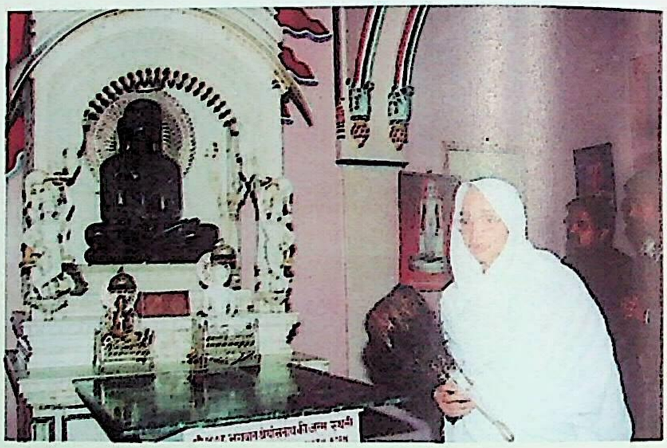

भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सारनाथ में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

प्राचीन दि. जैन मंदिर कुण्डलपुर (नालंदा) में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल प्रवेश

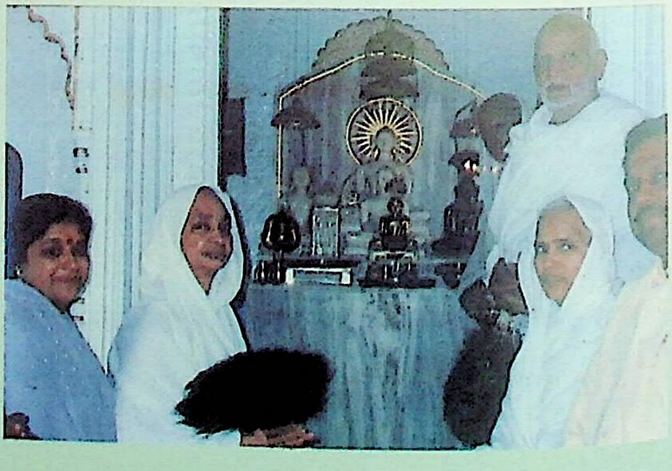

भगवान चन्द्रप्रभु की जन्मभूमि चन्द्रपुरी में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर जन्मभूमि (कुण्डलपुर) बिहार में ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-७ से १२ फरवरी २००३

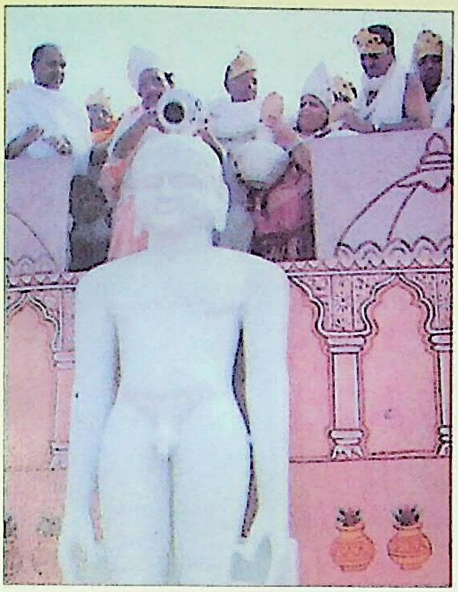

भगवान महावीर का प्रथम कलश करते हुए संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन-दिल्ली

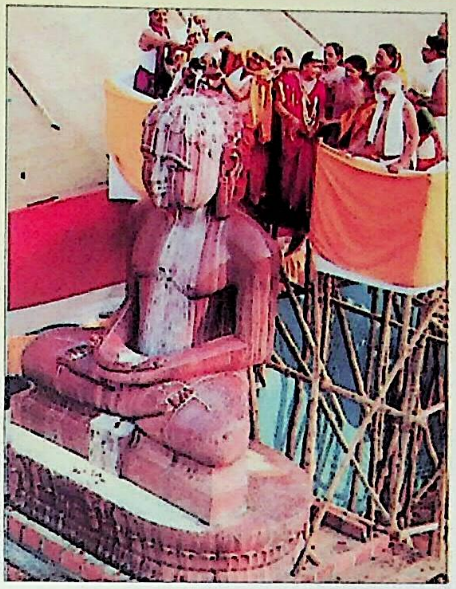

भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का मस्तकाभिषेक करते श्री दीपक जैन-वाराणसी

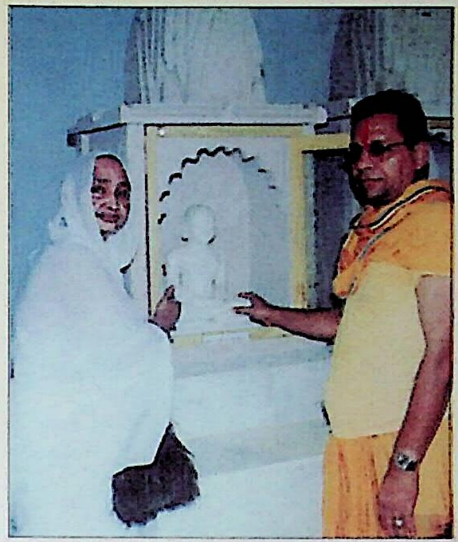

त्रिकाल चौबीसी मंदिर में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में भगवान विराजमान करते हुए श्री ज्ञानचंद जैन-आरा

कीर्तिस्तम्भ में विराजमान करने हेतु प्रतिमाएं ले जाते हुए श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली सपरिवार

नवग्रह मंदिर में प्रतिमा विराजमान करते हुए भक्तगण

नंद्यावर्त महल में भगवान शांतिनाथ जिनालय में भगवान विराजमान के पश्चात् श्री कमल कुमार जैन एवं धर्मपत्नी श्रीमती अनुपमा जैन

श्री नेम कुमार जैन-गणेशपुर का सम्मान

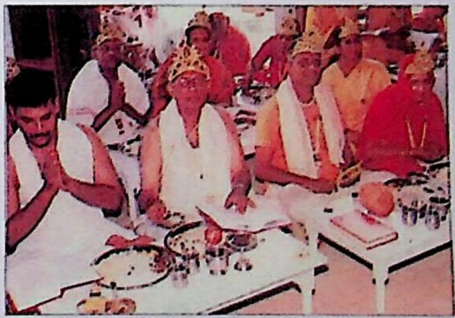

कुण्डलपुर में कल्पद्रुम विधान की पूजा करते हुए श्री जम्मनलाल जैन एडवोकेट-औरंगाबाद (महा.) एवं सुपुत्र श्री प्रमोद कुमार जैन सपरिवार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के आयोजन की सचित्र झलकियाँ-वर्ष २००३-२००४

कुण्डलपुर मार्ग का निर्माण करने हेतु शिलान्यास करते हुए विधायक श्री श्रवण कुमार, पूर्व शिक्षामंत्री श्री सुरेन्द्र कुमार तरुण, सानिध्य प्रदान करते हुए पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी (ससंघ) एवं संस्थान के पदाधिकारीगण ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन, श्री कैलाशचंद जैन-दिल्ली, श्री भागमल जैन (चित्तौड़गढ़), श्री आनन्द प्रकाश जैन-दिल्ली

श्री रामगोपाल जैन-पटना (अध्यक्ष-न्यास बोर्ड) को संस्थान द्वारा समाज रत्न की उपाधि से सम्मानित करते हुए न्यायाधीश श्री सुधीर नारायण एवं डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण, श्री अनिल जैन-दिल्ली

श्री भागमल जैन (चित्तौड़गढ़) सौधर्म इन्द्र बनकर एवं श्री राजकुमार जैन (गाजियाबाद), इंजी श्री गुणसागर जैन (दिल्ली), श्री ज्ञानसागर जैन (दिल्ली) सपरिवार सर्वतोभद्र मण्डल विधान की पूजा करते हुए

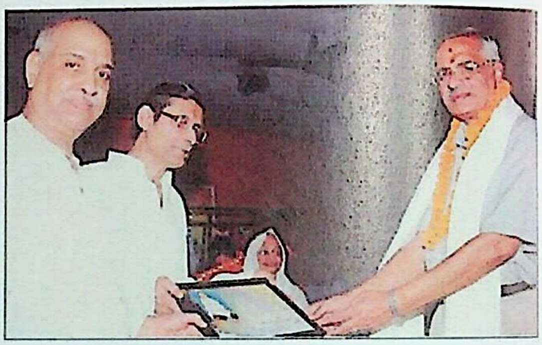

श्री अजय कुमार जैन-आरा को संस्थान की ओर से समाजरत्न की उपाधि से सम्मानित करते हुए न्यायाधीश श्री सुधीर नारायण अग्रवाल एवं श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ

श्री सुरेश चंद झांझरी व श्री नरेन्द्र झांझरी-झुमरीतलैया सपरिवार, पं. अकलंक जैन-लखनऊ सपरिवार इन्द्रध्वज विधान करते हुए

श्री प्रमोद कुमार जैन आर्ची.-दिल्ली को सम्मानित करते हुए ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन एवं श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा. (अध्यक्ष-जैन समाज टिकैतनगर)

इंजी. गुणसागर जैन-दिल्ली का सम्मान करते हुए ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन एवं श्री ज्ञानचंद जैन (अध्यक्ष-जैन समाज आरा), साथ में हैं श्री आनन्द प्रकाश जैन-दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर व भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी की वंदना करते हुए

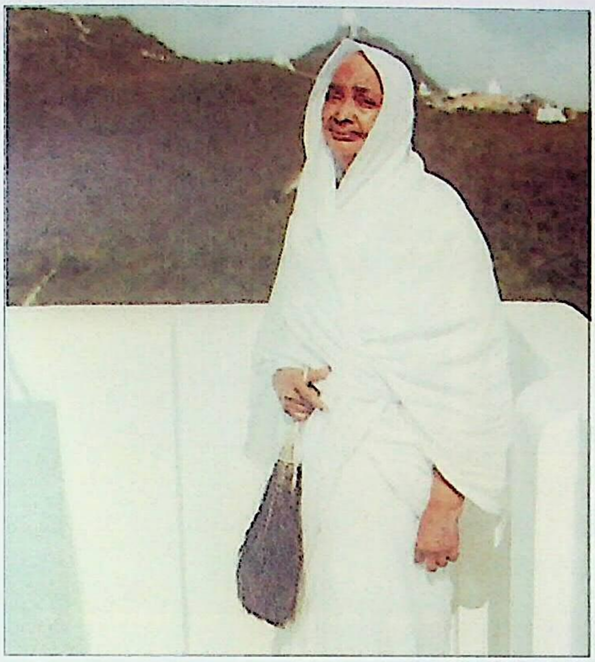

सम्मेदशिखर पर्वत पर पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

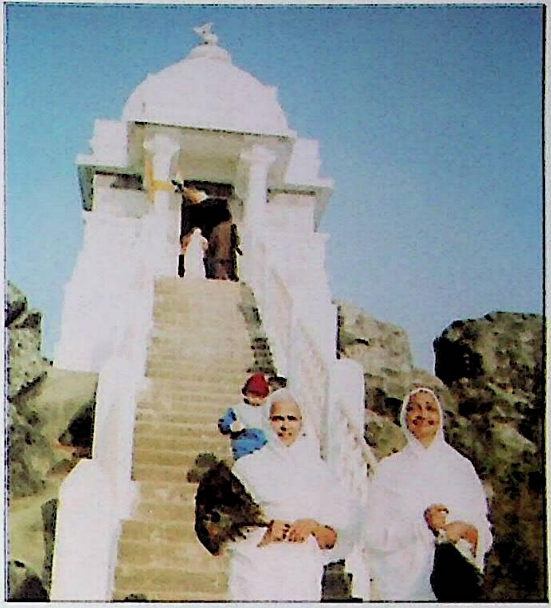

सम्मेदशिखर पर्वत पर निर्मित चन्द्रप्रभु टोंक पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी एवं पूज्य श्री चंदनामती माताजी

सम्मेदशिखर में तीस चौबीसी भगवान के दर्शन करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी (ससंघ)

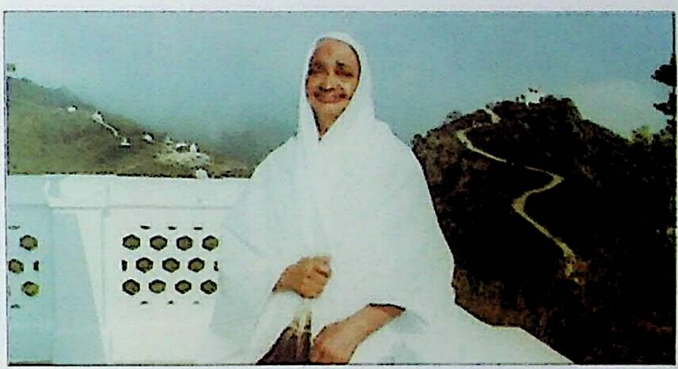

सम्मेदशिखर पर्वत पर पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

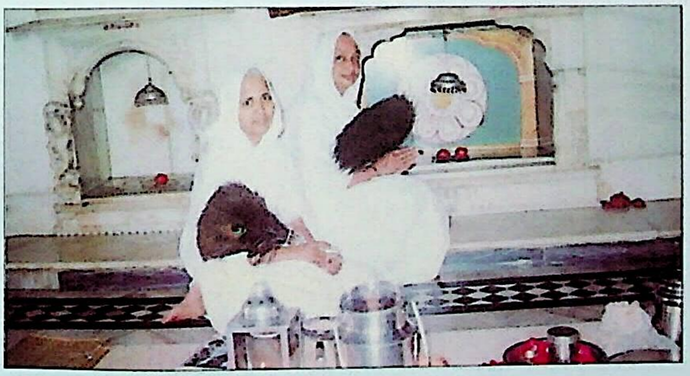

पावापुरी जल मंदिर में भगवान महावीर के चरणों के दर्शन करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

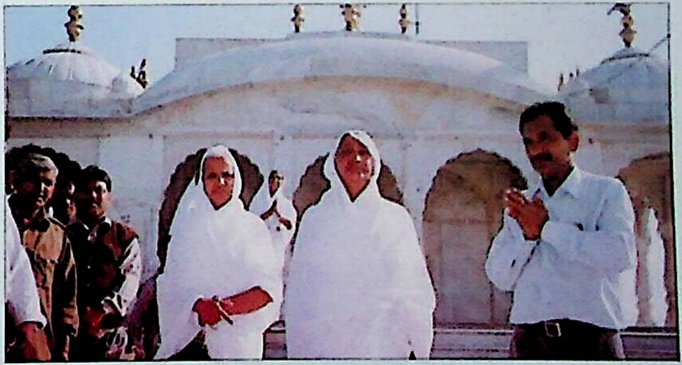

पावापुरी जल मंदिर के बाहर पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी के आशीर्वाद से संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के सानिध्य में भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-सम्मेदशिखर-२ से ७ दिसम्बर २००५

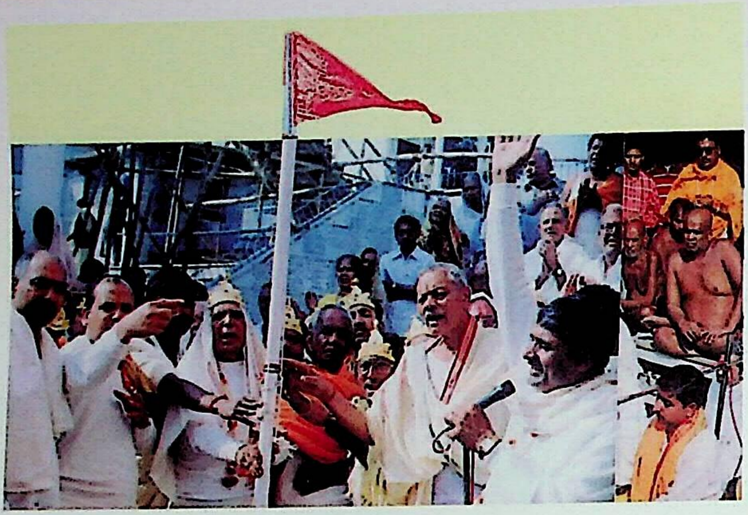

भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-सम्मेदशिखर (मधुबन) में झण्डारोहण करते हुए प्रतिष्ठा के सौधर्म इन्द्र डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण, २ से ७ दिसम्बर २००५, आशीर्वाद देते हुए बालाचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी महाराज ससंघ

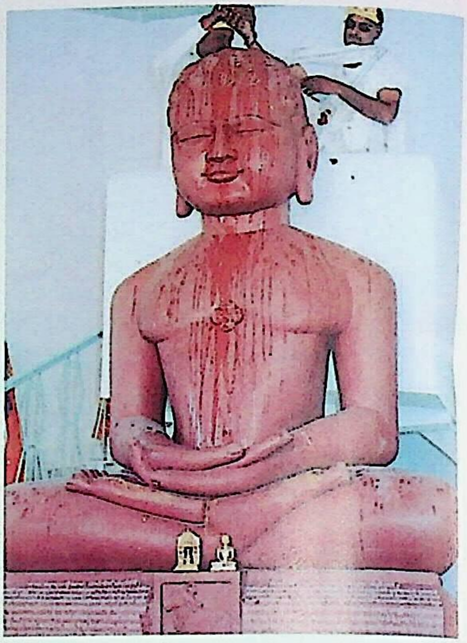

भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा

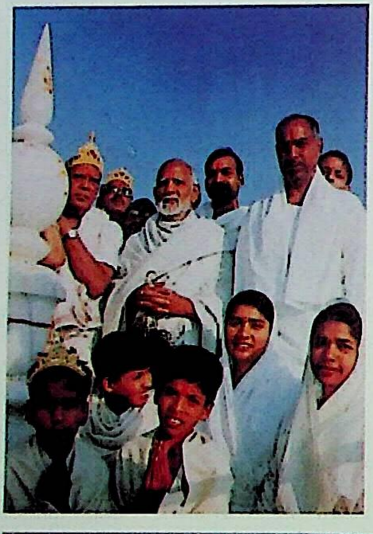

मंदिर पर कलश चढ़ाते हुए डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल, क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज, ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन आदि

बीसपंथी कोठी के पदाधिकारीगण जम्बूद्वीप के पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज को अभिवंदना प्रशस्ति भेंट करते हुए

प्रतिष्ठा आयोजक डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल का सम्मान करते हुए बीसपंथी कोठी के पदाधिकारीगण अध्यक्ष-श्री अजय जैन (आरा), महामंत्री-श्री हीराचंद शाह (मुम्बई), क्षेत्रीय मंत्री- श्री महावीर प्रसाद सेठी (सरिया), श्री नागेन्द्र जैन (आरा) एवं प्रबंधक श्री मनोहर जैन। साथ में हैं श्री चिरंजीलाल कासलीवाल-पटना एवं श्री कैलाशचंद जैन चौधरी-सनावद

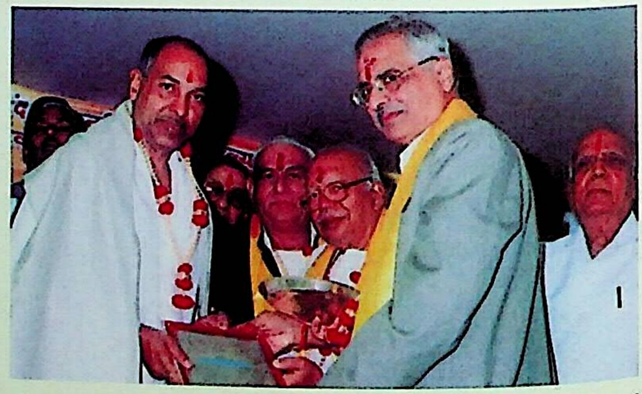

बीसपंथी कोठी के अध्यक्ष-श्री अजय कुमार जैन (आरा) एवं अन्य पदाधिकारीगण दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन का सम्मान करते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिहार की पावन धरा पर हुए माताजी के सानिध्य में पंचकल्याणक

पावापुरी में प्रतिष्ठित भगवान महावीर की विशाल प्रतिमा

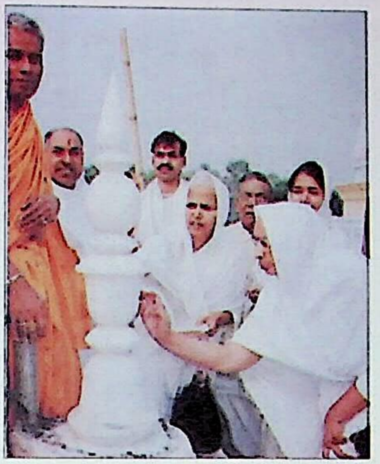

गौतम स्वामी की निर्वाणभूमि गुणावां में नवनिर्मित मंदिर पर कलश स्थापित करते हुए पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ

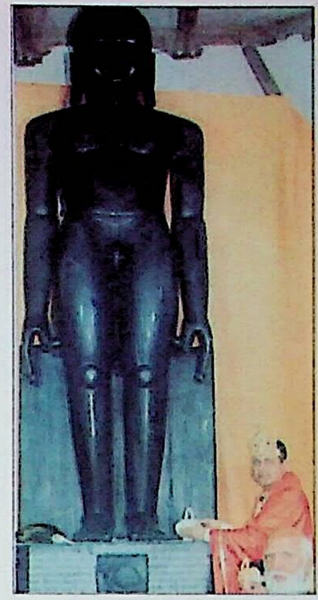

प्रतिष्ठित भगवान मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा का पंचकल्याणक करते सौधर्म इन्द्र श्री अनिल जैन-दिल्ली

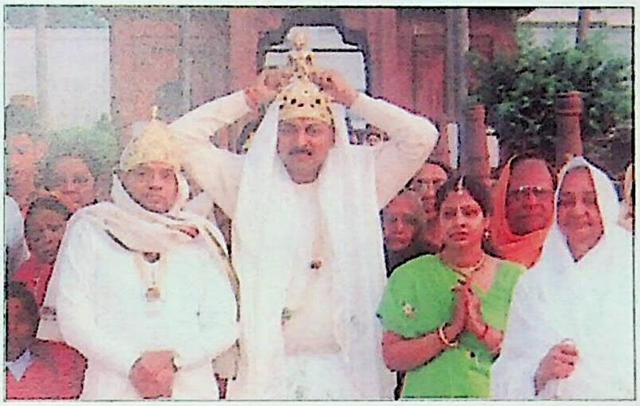

पावापुरी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में सौधर्म इन्द्र श्री विजय जैन-दरियागंज एवं इन्द्राणी श्रीमती रश्मि जैन आदि

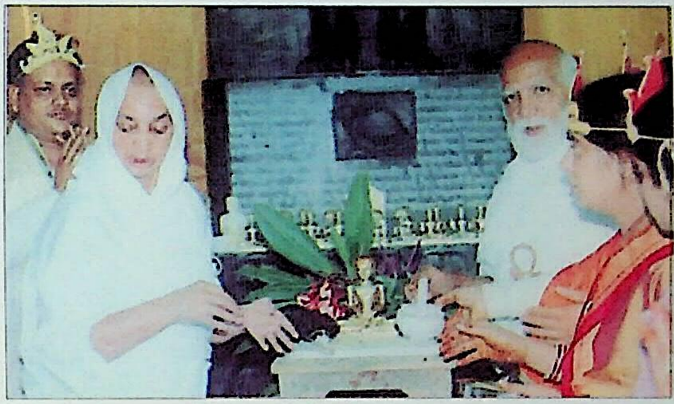

पंचकल्याणक में भगवान की दीक्षा का दृश्य

नवनिर्मित मंदिर पर कलशारोहण करते हुए श्री विजय जैन एवं श्री नितिन जैन-दिल्ली

जलमंदिर पावापुर में निर्वाणलाडू चढ़ाने का दृश्य श्री बाबूलाल पहाड़े-हैदराबाद आदि पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में

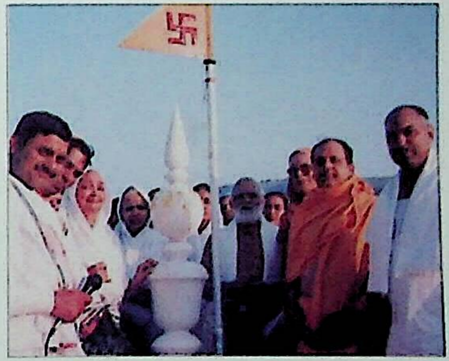

नवनिर्मित भगवान मुनिसुव्रतनाथ मंदिर पर कलशारोहण पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के संघ सानिध्य में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रयाग-इलाहाबाद में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित नवम धर्मसंसद में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ-जनवरी २००१

नवम् धर्मसंसद (महाकुंभ मेला परिसर) के मंच से अपार जनसमूह को सम्बोधित करते हुए गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी एवं उपस्थित शंकराचार्य, महामण्डलेश्वर आदि संतगण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित ऋषभदेव तीर्थ प्रयाग-इलाहाबाद में पंचकल्याणक एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक ४-८ जनवरी २००१

नवनिर्मित ऋषभदेव तीर्थ प्रयाग-इलाहाबाद में कैलाशपर्वत पर विराजमान भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा का मस्तकाभिषेक करते भरत सेना-टिकैतनगर के कार्यकर्ता-८ फरवरी २००१

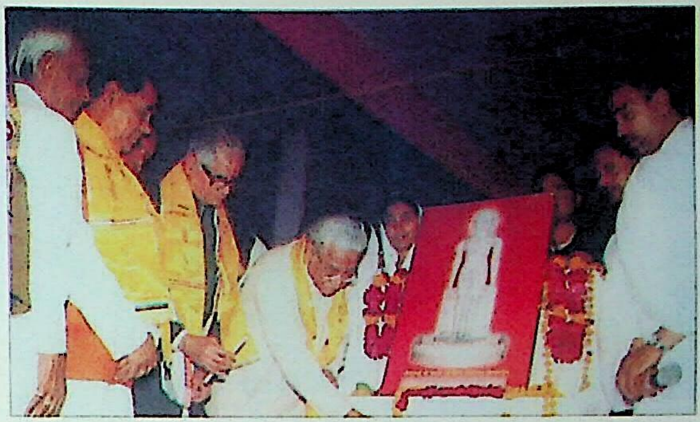

दीप प्रज्ज्वलित करते हुए विहिप के अंतर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष माननीय श्री अशोक सिंघल। महामहिम राज्यपाल पं. श्री विष्णुकांत शास्त्री एवं न्यायमंत्री उ.प्र. सरकार श्री-राधेश्याम गुप्ता

प्रयाग-इलाहाबाद में अ.भा. दि. जैन महिला संगठन का नैमित्तिक अधिवेशन-५ फरवरी, दीप प्रज्जवलित करते हुए श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी, साथ में हैं श्रीमती निर्मला जैन (अखिल भारतीय अध्यक्ष)-दिल्ली, श्रीमती सुमन जैन (केन्द्रीय महामंत्री)-इंदौर, श्रीमती आशा जैन (अध्यक्षा)-दिल्ली आदि

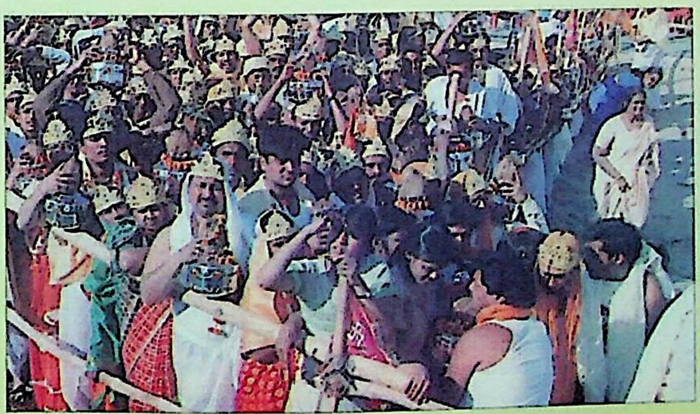

भगवान के महामस्तकाभिषेक (८ फरवरी) हेतु कलश ले जाते हुए भक्तगण

इलाहाबाद में संगम तट से जल भरते हुए इन्द्र-इन्द्राणियाँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषभदेव तीर्थ प्रयाग-इलाहाबाद में प्रतिष्ठा के सौधर्म इन्द्र एवं कैलाशपर्वत निर्माण के सहयोगी व अतिथियों के सम्मान

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए श्रीमती शैलबाला जैन (मातेश्वरी श्री आनन्द जैन-मेरठ) सौधर्म इन्द्र श्री आनंद जैन एवं धर्मपत्नी श्रीमती अलका जैन

श्री चेतनलाल जैन, प्रीतविहार-दिल्ली का सम्मान करते हुए श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली

श्रीमती सुलोचना जैन ध.प. श्री चेतनलाल जैन, प्रीतविहार-दिल्ली का सम्मान करते हुए श्रीमती सुलोचना जैन, मॉडल टाउन-दिल्ली आदि

श्री सतेन्द्र कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली का सम्मान करते हुए श्री प्रेमचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली

महामहिम राज्यपाल का सम्मान करते हुए समिति के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, महामंत्री श्री प्रेमचंद जैन-मेरठ एवं कोषाध्यक्ष श्री अनिल जैन-दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मांगीतुंगी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-सन् १९९६, सानिध्य पूज्य मुनि श्री रयणसागर जी महाराज, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं पूज्य श्री श्रेयांसमती माताजी ससंघ

मांगीतुंगी पंचकल्याणक आयोजन का झण्डारोहण करते हुए श्री रायचंद्र जैन एवं पुत्र श्री विजय कुमार जैन सपरिवार

भगवान मुनिसुव्रतनाथ की २१ फुट उत्तुंग प्रतिमा का दुग्धाभिषेक एवं नीचे भक्ति में नाच रहे भक्तगण

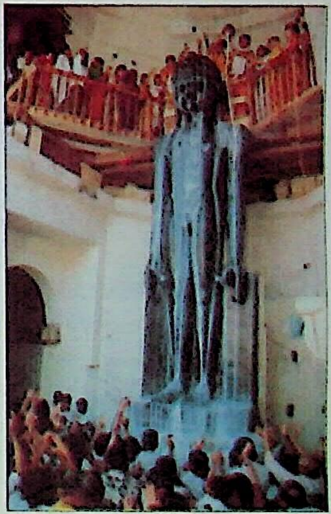

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर जोशी सभा को सम्बोधित करते हुए, सानिध्य प्रदान कर रहे हैं पूज्य मुनि श्री रयणसागर जी महाराज

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी सानिध्य प्रदान करते हुए

पूज्य आर्यिकारत्न श्री श्रेयांसमती माताजी सानिध्य प्रदान करते हुए

प्रतिष्ठा समिति के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन-हस्तिनापुर को पगड़ी बांधकर सम्मान करते हुए ट्रस्ट के अध्यक्ष-श्री हुकुमचंद गंगवाल

प्रतिष्ठा समिति के स्वागताध्यक्ष आमदार श्री जयचंद कासलीवाल का सम्मान करते हुए ट्रस्टी श्री रमनलाल कोदरलाल दोशी, मुम्बई

प्रतिष्ठा समिति के महामंत्री डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण का सम्मान करते हुए ट्रस्ट के महामंत्री ब्र. गणेशीलाल जैन-मांगीतुंगी

मांगीतुंगी में १०८ फुट भगवान ऋषभदेव मूर्ति निर्माण हेतु शिला पर प्रथम रजत छेनी लगाते हुए संघपति लाला श्री महावीर प्रसाद जैन की धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमलता जैन-दिल्ली

शिलापूजन समारोह का दृश्य

संघपति श्री महावीर प्रसाद जी का सम्मान करते हुए श्री उत्तमचंद जी गंगवाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में अयोध्या में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं दक्षिण भारत जैन सभा के राष्ट्रीय अधिवेशन-२ व ३ अप्रैल २००५

तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री एन. के. सेठी, दक्षिण भारत जैन सभा के अध्यक्ष कल्लप्पा अवाडे एवं चेयरमैन श्री डी. ए. पाटील आदि पदाधिकारीगण पूज्य माताजी को श्रवणबेलगोला पधारने हेतु निवेदन करते हुए

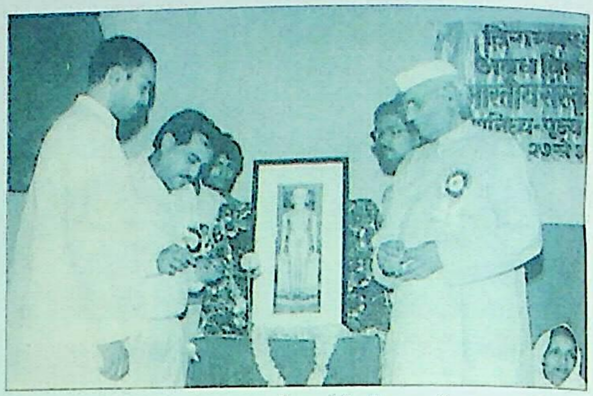

पन्नालाल सेठी, डीमापुर ऋषभदेव संगोष्ठी का दीप प्रज्जवलित करते हुए, अयोध्या

अयोध्या में आयोजित तीर्थक्षेत्र कमेटी की आमसभा में मंच पर बैठे पदाधिकारीगण एवं महा. प्रांतीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष डा. पन्नालाल पापडीवाल सभा को सम्बोधित करते हुए

अयोध्या में दक्षिण भारत जैन सभा के अधिवेशन का दीप प्रज्जवलन करते हुए श्री अरविन्द राव दोशी, मुम्बई एवं सभा के अध्यक्ष श्री कल्लप्पा अवाडे, चेयरमैन श्री डी. ए. पाटील, ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन तथा श्रीपाल जैन, गेवराई, महाराष्ट्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव अयोध्या,
सानिध्य-पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी-३ अप्रैल २००५

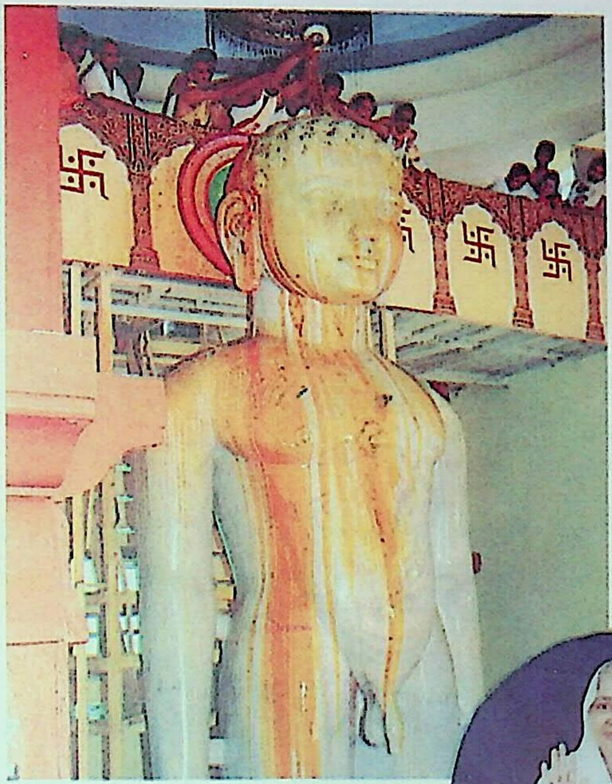

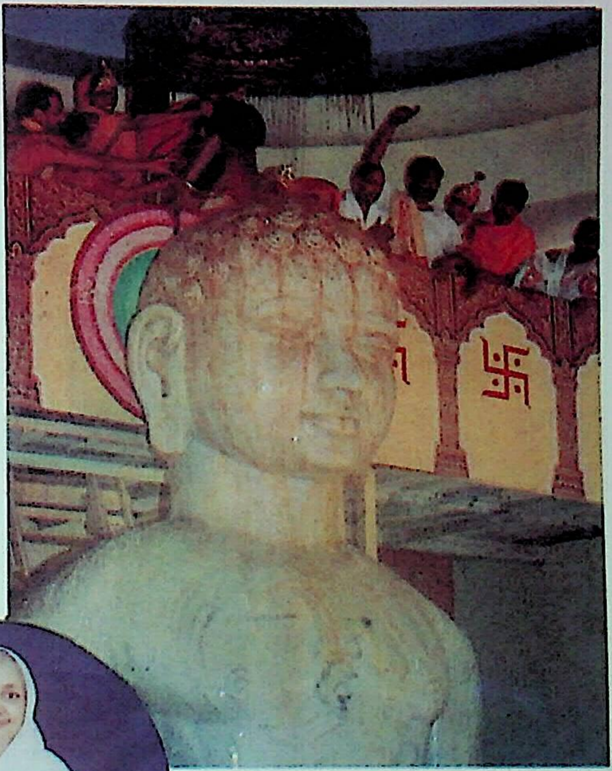

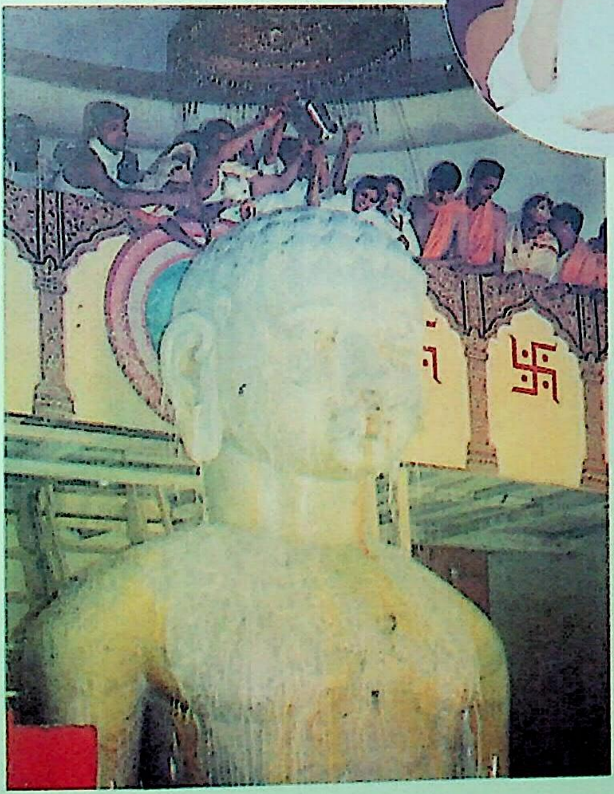

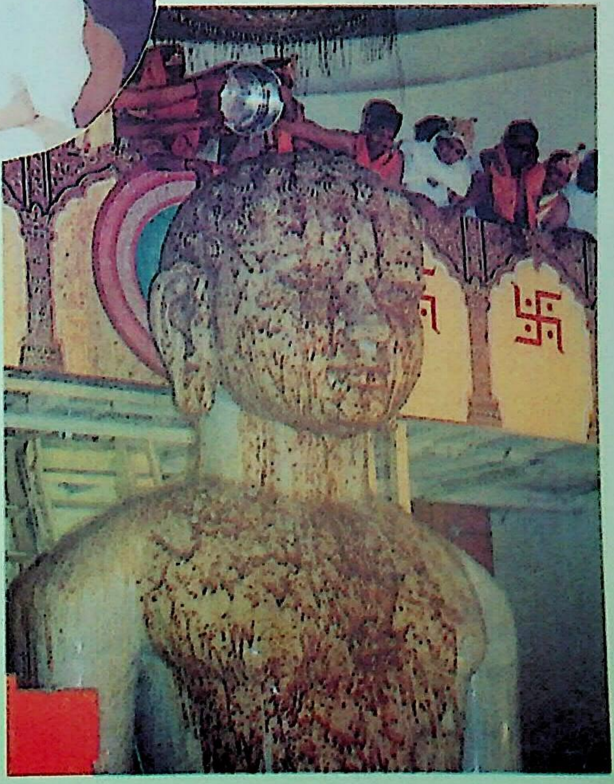

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

-जैनधर्म एवं संस्कृति के अध्ययन हेतु विदेशी शोधार्थियों का समय-समय पर हस्तिनापुर भ्रमण एवं पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी का शुभाशीर्वाद

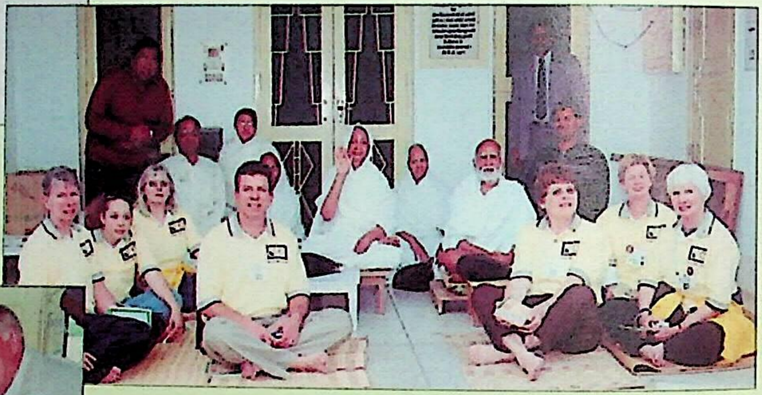

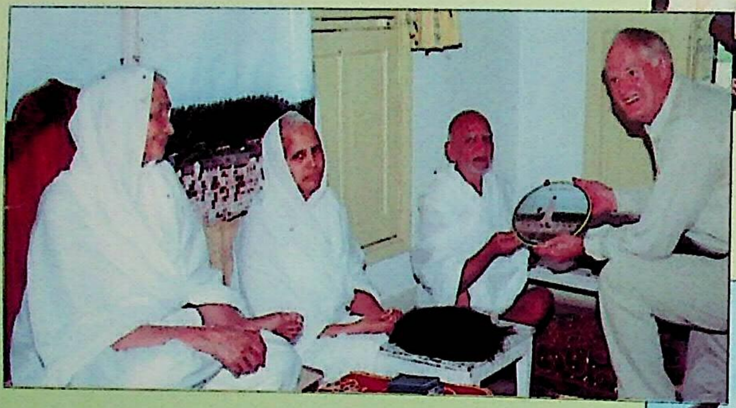

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महामस्तकाभिषेक के शुभ अवसर पर अयोध्या में माननीय मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से घोषणाएं एवं उनका क्रियान्वयन

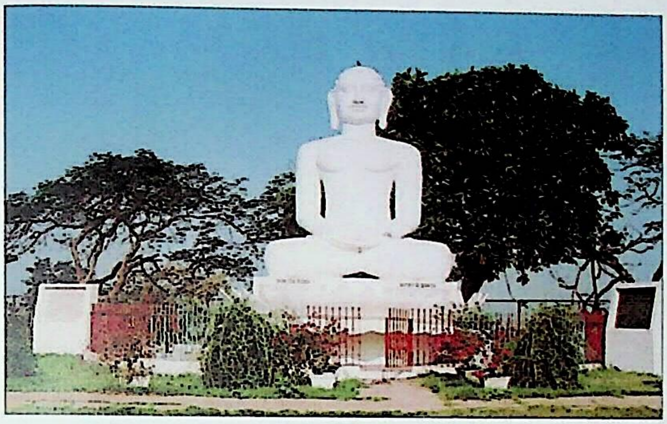

भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय उद्यान अयोध्या में निर्मित २१' ऊंची ऋषभदेव की प्रतिमा

विश्वविद्यालय में नवनिर्मित ऋषभदेव जैन शोधपीठ भवन के पोर्च पर प्रतीक रूप में भगवान ऋषभदेव की मूर्ति स्थापित करते हुए प्रकाशचन्द जैन टिकैतनगर, छोटी सा., सरोज जैन-फतेहपुर

ऋषभदेव उद्यान में प्रतिमा का अनावरण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राधेश्याम कौशिक, कमिश्नर फैजाबाद एवम् श्री जयशंकर पांडे, विधायक फैजाबाद तथा पदमचन्द जैन, त्रिलोकपुर

मूर्ति स्थापित करते हुए कुलपति अंगनेलाल जी, ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, डा. विनय जैन आदि

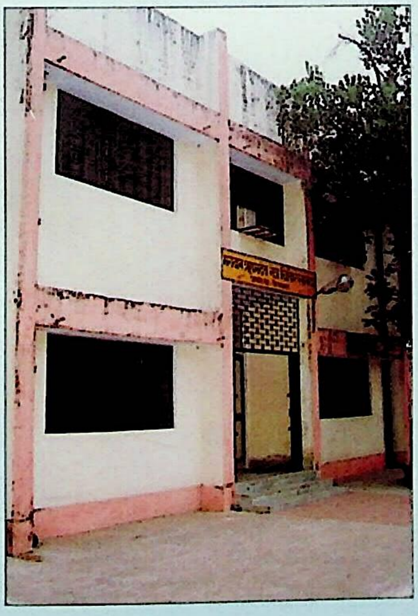

भगवान ऋषभदेव नेत्र चिकित्सालय अयोध्या का नवनिर्मित भवन

भगवान ऋषभदेव जैन शोधपीठ का नवनिर्मित भवन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी के आशीर्वाद से संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के सानिध्य में भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-सम्मेदशिखर-२ से ७ दिसम्बर २००५

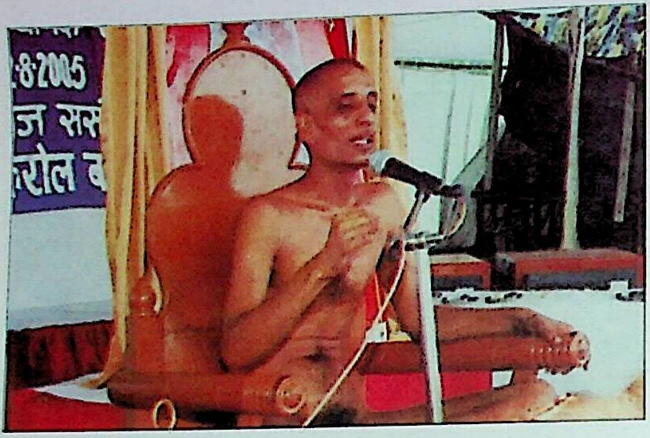

आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज सभा को संबोधित करते हुए।

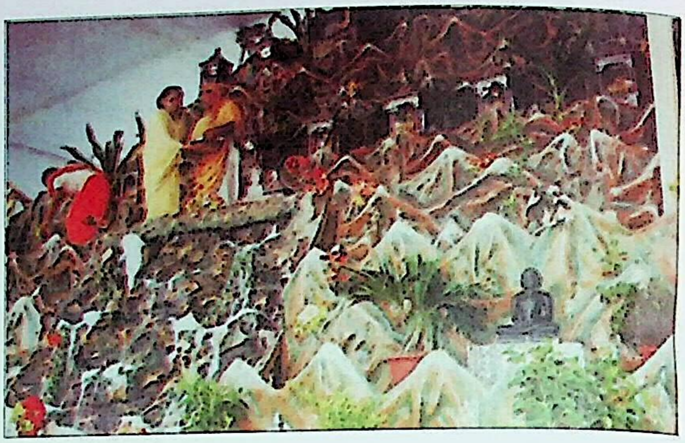

सम्मेद शिखर की प्रतिकृति का निर्माण निर्वाण लाडू के लिए

दिल्ली प्रदेश की मुख्यमंत्री मा. श्रीमती शीला दीक्षित का सम्मान करते हुए श्री कैलाशचंद जैन, करोल बाग

करोलबाग जैन समाज की ओर से कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन का सम्मान

मंच पर बैठे हुए ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, कमल चंद जैन, श्री निर्मल कुमार सेठी, श्री अनिल जैन, पवन पापड़ीवाल, कैलाश चंद जैन सर्राफ लखनऊ

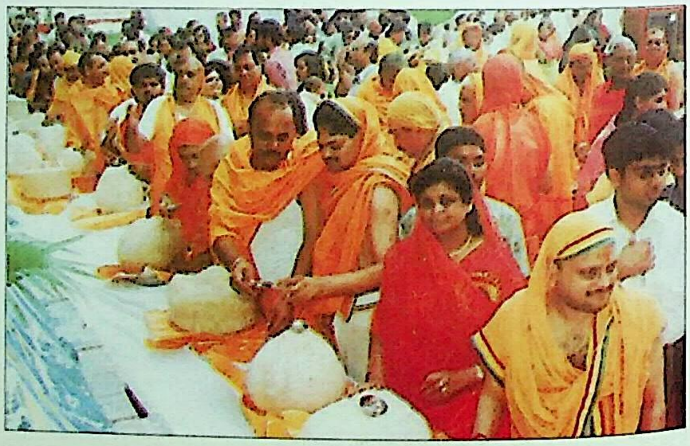

१००८ निर्वाण लाडू चढ़ाने का भव्य मनोहारी दृश्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-फरवरी २००५

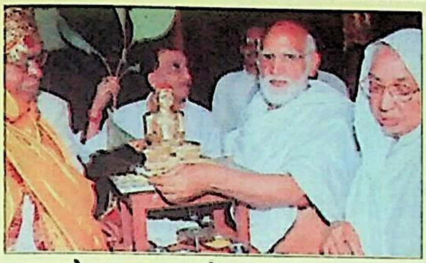

भगवान के तपकल्याणक, दीक्षा का दृश्य। पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज, पूज्य ज्ञानमती माता जी एवं श्री वीरेन्द्र जैन- सौधर्म इन्द्र

भगवान के माता - पिता
श्री प्रद्युम्न कुमार छोटी सा
ध.प. श्रीमती कामनी देवी

सौधर्म इन्द्र
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
ध.प. श्रीमती तारादेवी जैन

धन कुबेर
श्री पंकज जैन
ध.प. श्रीमती वनिता जैन

यज्ञनायक
श्री सुभाष चंद जैन
ध.प. श्रीमती सुषमा जैन

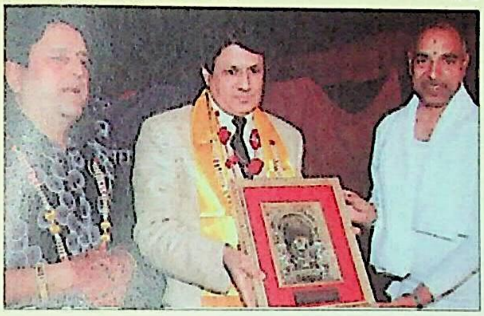

रामायण सीरियल के श्रीराम श्री अरुण गोविल एवं श्री राजेन्द्र जैन प्रसिद्ध गीतकार-मुम्बई का सम्मान करते हुए ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन।

श्री अरूण गोविल पूज्य माताजी से आशीवाद लेते हुए

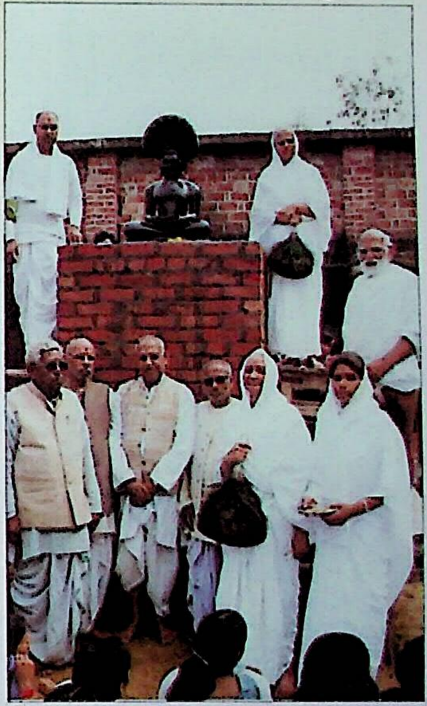

टिकैतनगर के चेयरमैन के पुत्र श्री जगदीश प्रसाद वैश्य को प्रतीकचिन्ह भेंट करते हुए नगर के पदाधिकारीगण श्री छोटी सा., श्री ऋषभचंद जैन, श्री सुनील जैन, श्री प्रद्युम्न जैन, श्री अलोक जैन।

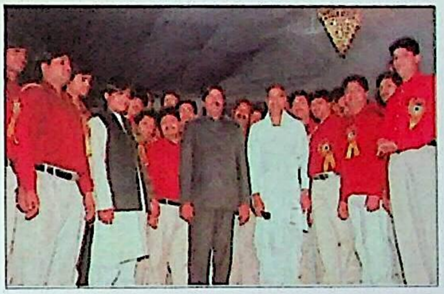

उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री राकेश वर्मा के साथ भरत सेना टिकैत नगर के युवा उत्साही कार्यकर्त्ता।

भगवान पार्श्वनाथ इण्टर कालेज, टिकैतनगर में भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापना

प्रमुख सचिव श्रम श्री चन्द्रपाल जी-लखनऊ पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए।

श्री बिजेन्द्र सिंह (आई.जी. सतर्कता)-लखनऊ पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए।

श्री अरविन्द जैन (आई.जी. सतर्कता) का सम्मान करते हुए श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ एवं श्री दीपक जैन-सुल्तानपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षाभूमि माधोराजपुरा (जयपुर) राज. में पूज्य माताजी का ससंघ दीक्षा के ४० वर्ष बाद मार्च १९९७ में पदार्पण पर ग्रामवासियों द्वारा भक्ति का दृश्य

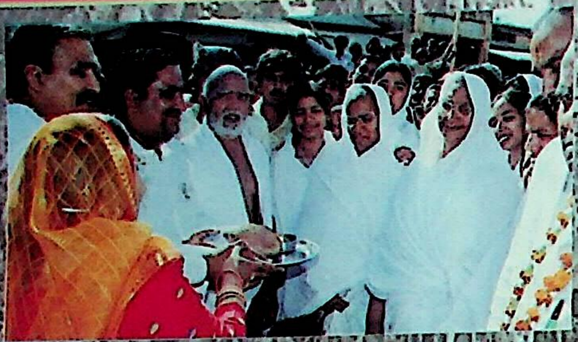

Ganesh ... Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा ७ से ११ फरवरी २००३

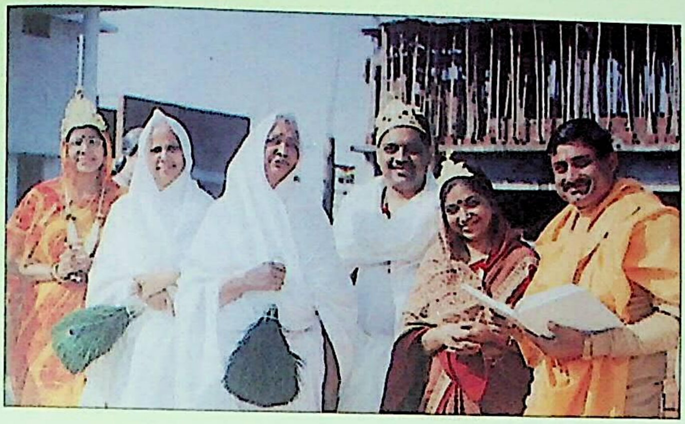

पूज्य माताजी के सानिध्य में प्रतिष्ठा के सौधर्मइन्द्र श्री दीपक जैन-वाराणसी एवं इन्द्राणी श्रीमती सुभाषिनी जैन। साथ में हैं प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन शास्त्री-हस्तिनापुर

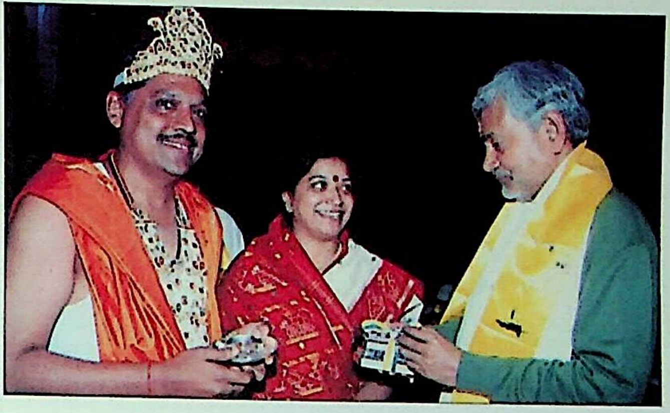

बिहार प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री माननीय श्री नीतीश कुमार जी का स्वागत करते हुए सौधर्मइन्द्र श्री दीपक जैन-वाराणसी एवं साथ में हैं इन्द्राणी श्रीमती सुभाषिनी जैन

केन्द्रीय रक्षामंत्री माननीय श्री जार्ज फर्नांडीज का स्वागत करते हुए सौधर्मइन्द्र एवं इन्द्राणी

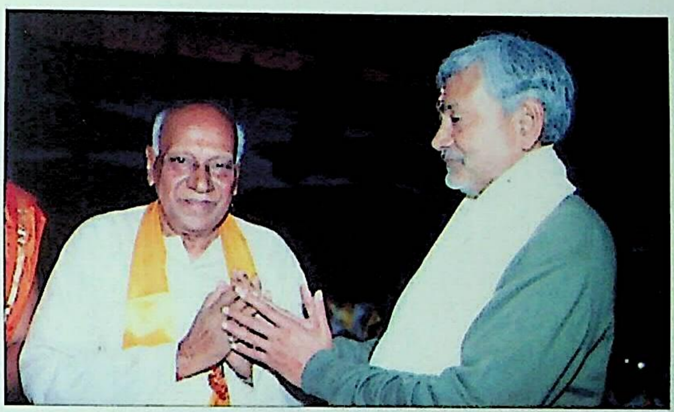

माननीय श्री नीतीश कुमार जी का स्वागत करते हुए सौधर्मइन्द्र के पिता श्री रिसबदास जैन-वाराणसी

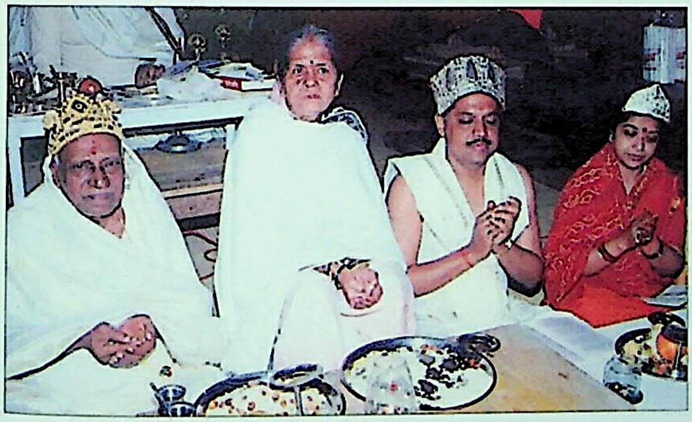

प्रतिष्ठा के मध्य पूजा-विधान करते हुए सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी एवं उनके माता-पिता

सौधर्म इन्द्र की सुपुत्री कु. स्तुति जैन चन्दनबाला बनकर भगवान को खीर का आहार कराते हुए-१० फरवरी २००३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फरवरी २००३

श्रेष्ठी श्री प्रेमचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली माननीय श्री नीतीश कुमार जी का स्वागत करते हुए। साथ में खड़े हैं श्री कमलचंद जैन, खारीबावली एवं संघपति श्री महावीरप्रसाद जैन, दिल्ली।

प्रतिष्ठा के झण्डारोहणकर्ता श्री बाबूलाल पहाड़े-हैदराबाद पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेते हुए।

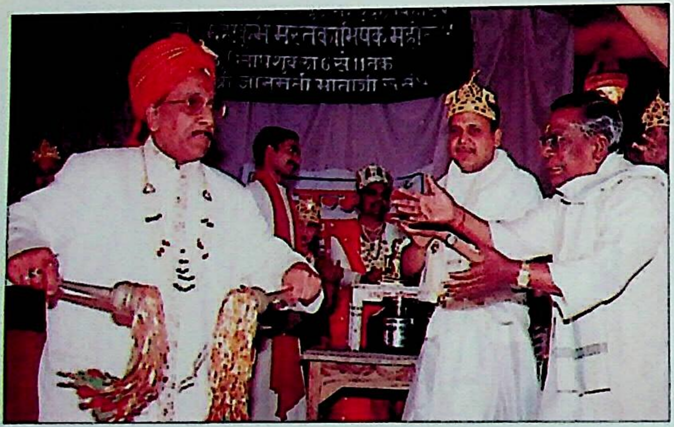

भगवान के पिता बने संघपति श्री महावीरप्रसाद जैन प्रतिष्ठा के मध्य चंवर लेकर नृत्य करते हुए। साथ में हैं श्री अनिल जैन 'कमल मंदिर' प्रीतविहार एवं रामगोपाल जैन, पटना, अध्यक्ष-बिहार न्यास बोर्ड।

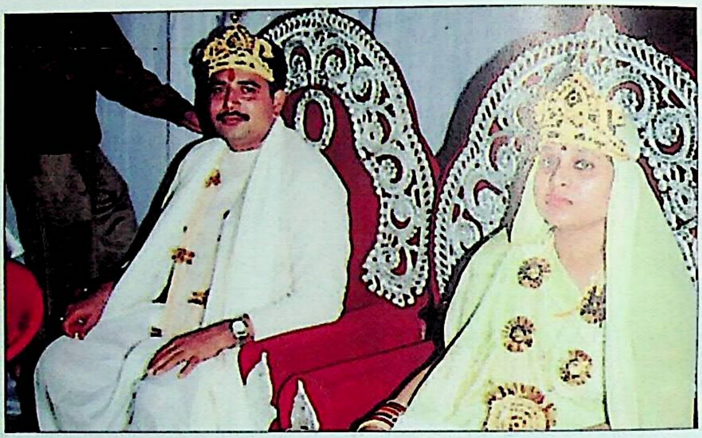

प्रतिष्ठा के कुबेर श्री कमल कुमार जैन-आरा एवं उनकी ध.प. श्रीमती अनुपमा जैन-आरा।

प्रसिद्ध मूर्तिकार श्री सूरजनारायण नाठा का स्वागत करते हुए समिति के पदाधिकारीगण।

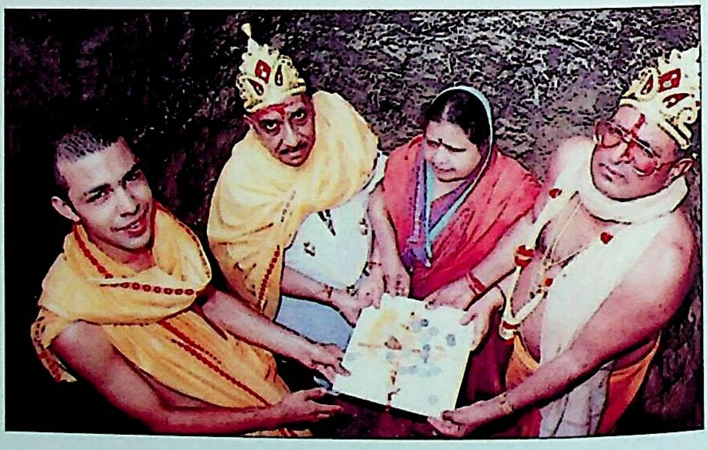

प्रतिष्ठा के मध्य नूतन मंदिर का शिलान्यास करते हुए संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन-दिल्ली एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमलता जैन, श्री कमलचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली एवं सिद्धार्थ जैन-लखनऊ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्णजयंती महोत्सव १४ से १६ अप्रैल २००६ - गौरवग्रन्थ समर्पण

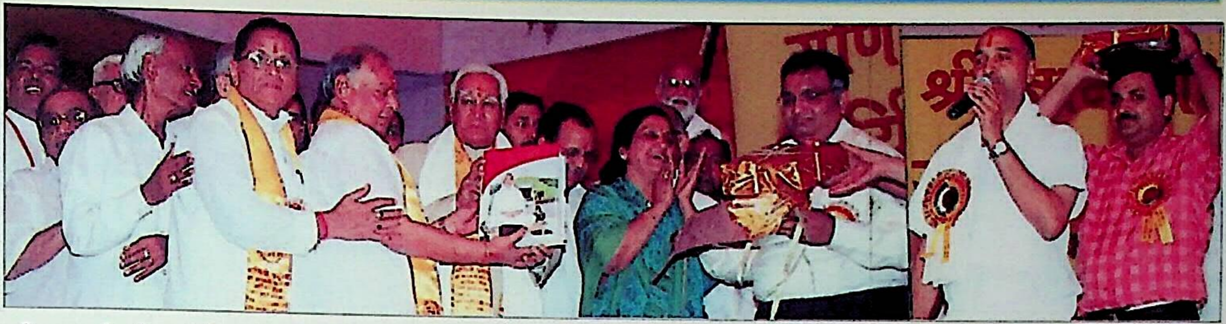

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्णजयंती के शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल-हरियाणा श्री ए.आर. किदवई की उपस्थिति में गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रन्थ का विमोचन करते हुए महोत्सव के विशिष्ट अतिथि श्री विजेन्द्र जैन, मुख्य न्यायाधीश-दिल्ली हाईकोर्ट। साथ में हैं ग्रन्थ के सौजन्यकर्ता श्री आनन्द जैन-दिल्ली एवं उनकी धर्मपत्नी तथा पूर्व सांसद श्री जे.के. जैन-दिल्ली, श्री कैलाशचंद जैन-करोलबाग-दिल्ली, संघपति श्री महावीरप्रसाद जैन-दिल्ली, श्री चिरंजीलाल कासलीवाल-पटना, श्री निर्मल कुमार सेठी-दिल्ली, श्री अनिल जैन 'कमल मंदिर' दिल्ली। संचालन कर रहे हैं कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, पास में खड़े हैं विजय जैन, दरियागंज-दिल्ली

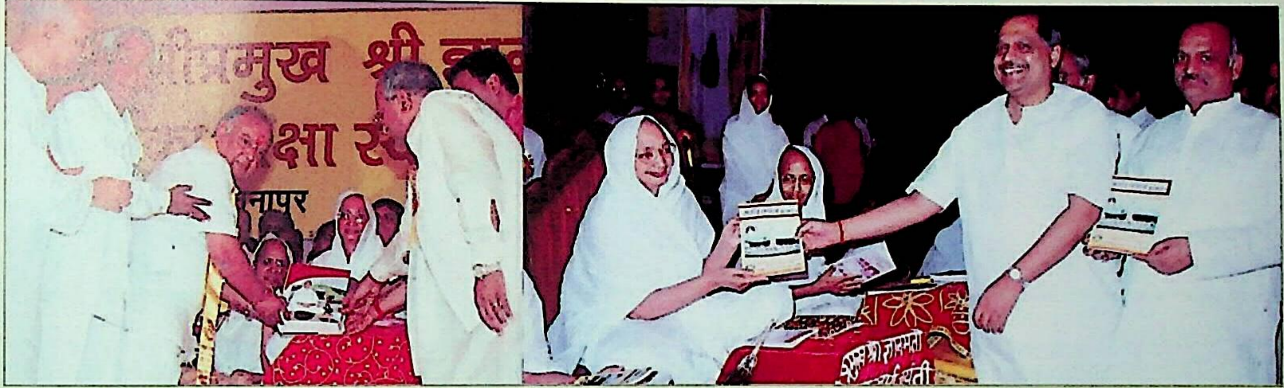

पूज्य माताजी के करकमलों में गौरव ग्रन्थ भेंट करते हुए श्री विजेन्द्र जैन, मुख्य न्यायाधीश-दिल्ली हाईकोर्ट, श्री कैलाशचंद जैन-करोलबाग-दिल्ली, श्री कैलाशचंद जैन-लखनऊ, श्री कमलचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली, श्री दीपक जैन-वाराणसी एवं डॉ. प्रमोद जैन-आगरा।

सम्पादक मण्डल एवं ग्रन्थ के सौजन्यकर्ता श्री आनन्द जैन-दिल्ली एवं उनकी धर्मपत्नी पूज्य माताजी के करकमलों में गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रन्थ समर्पित करते हुए। सम्पादक मण्डल में बाएं खड़े हैं प्रो. टीकमचंद जैन-दिल्ली, डॉ. शेखरचंद जैन-अहमदाबाद, ब्र. कु. बीना जैन-संघस्थ, ब्र. कु. इन्दू जैन-संघस्थ, ब्र. कु. स्वाति जैन-संघस्थ, वरिष्ठ सम्पादक कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन तथा प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन-फिरोजाबाद, दायें में डॉ. अनुपम जैन-इन्दौर, डॉ. श्रेयांस कुमार जैन-बड़ौत, डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर, डॉ. सुशीलचन्द्र जैन-मैनपुरी, डॉ. भागचंद जैन भागेन्दु-दमोह एवं जीवन प्रकाश जैन-हस्तिनापुर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

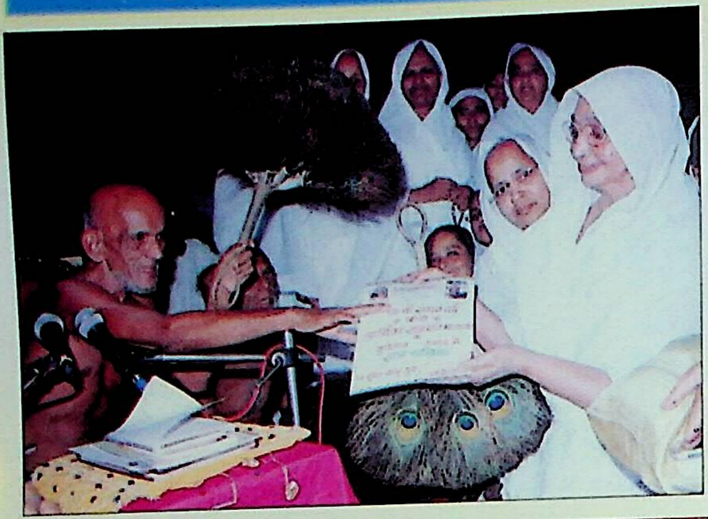

महोत्सव के मध्य भट्टारक सम्मेलन में आचार्य श्री बाहुबली सागर जी महाराज पूज्य माताजी को नूतन पिच्छी प्रदान कर 'ज्ञानचन्द्रिका' की उपाधि से विभूषित करते हुए-१५ अप्रैल २००६।

आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती समारोह की मुख्यसभा का दीप प्रज्ज्वलन कर शुभारम्भ करते हुए संतसमुदाय की ओर से अध्यक्षता करते स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन भट्टारक स्वामी जी-कोल्हापुर, सम्पूर्ण जैन समाज की ओर से अध्यक्षता करते हुए श्री सुरेन्द्र हेगड़े-बैंगलोर धर्मस्थल, सम्पूर्ण विद्वतवर्ग की ओर से अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन-फिरोजाबाद, महोत्सव समिति के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन-हस्तिनापुर। तथा साथ में खड़े हैं माननीय श्री विजेन्द्र जैन, मुख्य न्यायाधीश-दिल्ली हाईकोर्ट, पूर्व सांसद श्री जे.के. जैन-दिल्ली, पूर्व वित्तराज्य मंत्री श्री वी. धनंजय कुमार जैन-बैंगलोर एवं बाएं में पूज्य माताजी को नूतन पिच्छी भेंट करते हुए श्री दीपक जैन-वाराणसी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुभाषिनी जैन, श्री राजकुमार जैन-वीराबिल्डर्स, दिल्ली एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती आशा जैन तथा साथ में हैं श्री अनिल जैन 'कमलमंदिर' दिल्ली।

महोत्सव में दक्षिण भारत के १२ मठों से पधारे स्वस्ति श्री भट्टारकवृन्द पूज्य माताजी को पिच्छी भेंट करते हुए एवं समस्त भट्टारकवृन्द की ओर से पूज्य माताजी को 'ऐतिहासिक आर्यिका' की उपाधि से विभूषित कर प्रशस्ति का वाचन करते हुए स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन भट्टारक स्वामी जी-कोल्हापुर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खण्ड-२

मैना से ज्ञानमती तक जीवन यात्रा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

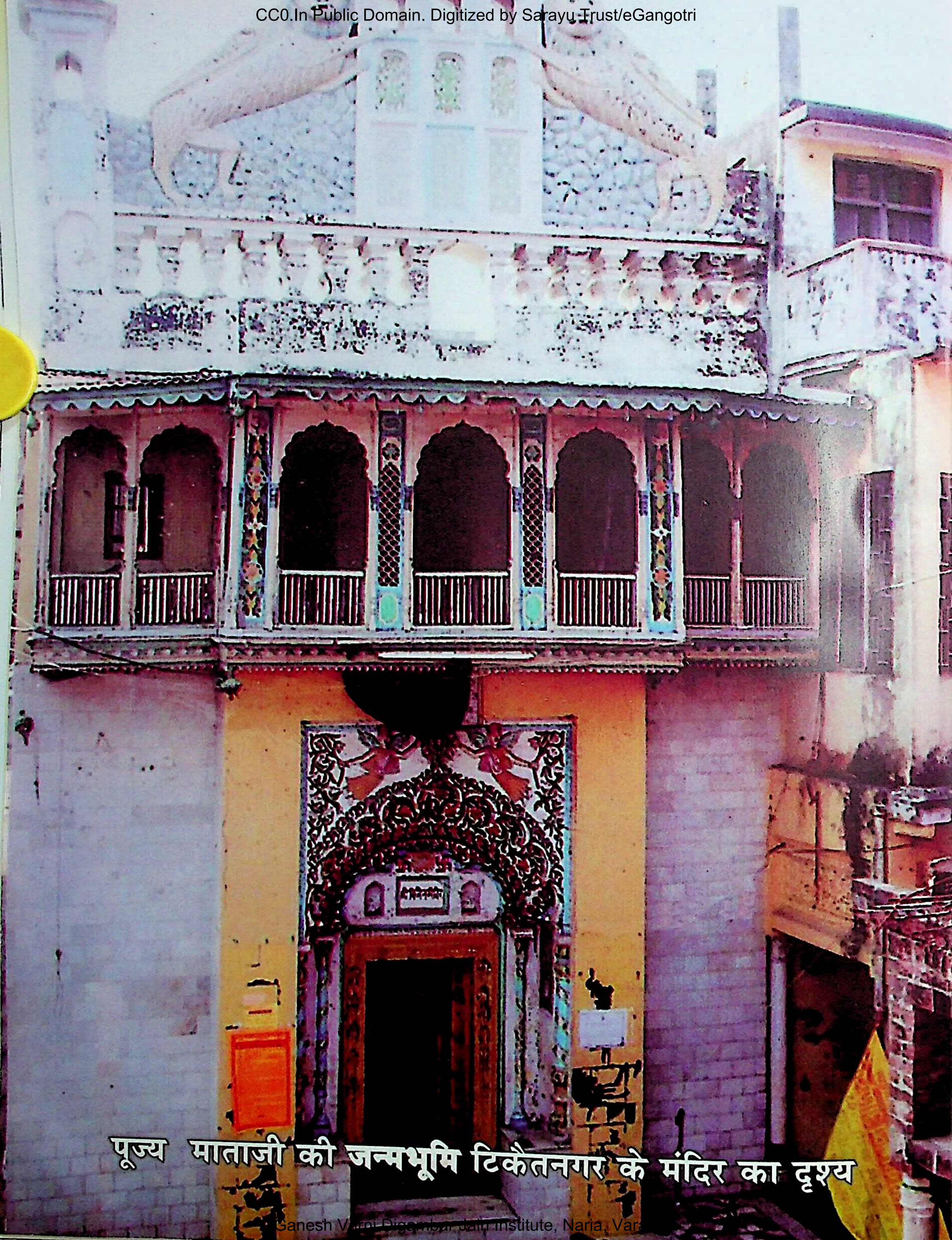

पूज्य माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर के मंदिर का दृश्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Vara

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैना से ज्ञानमती तक जीवन यात्रा

मोक्षमार्ग पर चलने वाली महान आत्माओं का जीवन खुली किताब के समान होता है, जिसे प्रत्येक प्राणी जीवन्त रूप में पढ़कर जीवन निर्माण की प्रेरणा प्राप्त करता है, ऐसी ही बीसवीं सदी की एक ऐतिहासिक मिसाल के रूप में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का जीवन दर्शन गौरव ग्रंथ के इस द्वितीय खण्ड में शब्दों द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

इसमें उनकी 'मैना से ज्ञानमती' तक जीवन यात्रा का वर्णन विभिन्न पहलुओं के द्वारा किया गया है। जिस आर्यिका दीक्षा को धारण करके उन्होंने अपने ५० वर्षीय दीक्षित जीवन को स्वर्णिम रूप में निखारा है, उस आर्यिका चर्या के वर्णन के साथ-साथ इसमें हिन्दी, अंग्रेजी एवं ब्राह्मी लिपि में पूज्य माताजी का परिचय देकर उनके जन्म एवं त्याग से पवित्र स्थलों, उनकी गुरु परम्परा आदि का उल्लेख किया गया है। इसमें माताजी के कतिपय प्रमुख शिष्य-शिष्याओं के परिचय एवं वर्तमान संघस्थ शिष्यों के लघु परिचय प्रदान किए गए हैं।

प्रेरणादायी इस खण्ड के समस्त आलेखों को सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर आप सभी को नई-नई बातों के साथ आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

4853

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका चर्या

लेखिका-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

आधुनिक परिवेश में चाहे श्रावक हो या मुनि, श्राविका हो या आर्यिका, स्पष्ट रूप में उनकी चर्या का ज्ञान होना आवश्यक है। आचार्यश्री यतिवृषभ स्वामी ने कहा है—

पंचमकाल के अंत तक मुनि-आर्यिका, श्रावक-श्राविका का चतुर्विध संघ वर्तन करेगा। अभी तो पंचमकाल के मात्र 2532 वर्ष व्यतीत हुए हैं, शेष 18468 वर्षों तक निरन्तर ऐसी ही अक्षुण्ण परम्परा चलती रहेगी। इसके फलस्वरूप वर्तमान में लगभग ग्यारह सौ की संख्या में दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों के दर्शन हो रहे हैं, यह चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज की कृपाप्रसाद का फल है।

उस चतुर्विध संघ शृंखला में महिलाओं के लिए त्याग की चरमसीमा आर्यिका का पद माना जाता है।

वैसे देखा जाए तो धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक आदि समस्त क्षेत्रों में प्राचीन काल से नारियों का योगदान रहा है। जिस प्रकार से पुरुषों को आत्मसाधना करने का एवं जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त करने का अधिकार है, उसी प्रकार से प्रत्येक महिला को, चाहे वह कुंवारी हो, सौभाग्यवती हो या विधवा हो, सभी को आत्म कल्याण करने का अधिकार सदैव से प्राप्त है।

हाँ! मध्यकाल का एक युग ऐसा आया था, जब नारियों पर अत्याचार होते थे एवं अनेकों प्रकार की प्रताड़नाएं उन्हें प्राप्त होती थीं परन्तु आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नारियों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संविधान के अनुसार भी पुत्र और पुत्री दोनों को माता-पिता की संपत्ति में बराबर का अधिकार बताया गया है।

इस कर्मयुग के प्रारंभ में जिस प्रकार से तीर्थंकर आदिनाथ ने दीक्षा लेकर मुनि परम्परा को प्रारंभ किया, उसी प्रकार उनकी पुत्री ब्राह्मी-सुन्दरी ने दीक्षा लेकर आर्यिका परम्परा का शुभारंभ किया है। किंवदन्ती में ऐसा लोग कह देते हैं कि भगवान् आदिनाथ को अपने दामाद के समक्ष मस्तक झुकाना पड़ता इसीलिए उनकी कन्याओं ने विवाह बंधन ठुकरा कर दीक्षा धारण की थी किन्तु यह बात कुछ युक्तिसंगत नहीं प्रतीत होती है, न ही इतिहास इस तथ्य को स्वीकार करता है। तीर्थंकर की तो प्रत्येक क्रिया ही अद्वितीय होती है। वे शैशव अवस्था से ही अपने माता-पिता एवं दिगम्बर मुनि को भी नमस्कार नहीं करते हैं, इसमें उनका अहंकार नहीं, बल्कि तीर्थंकर पदवी का माहात्म्य प्रगट होता है। माता-पिता या दिगम्बर मुनिराज उनकी इस क्रिया का प्रतिरोध भी नहीं करते हैं प्रत्युत् तीर्थंकर के पुण्य की सराहना करते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि ब्राह्मी-सुन्दरी कन्याओं ने उत्कट वैराग्य भावना से आर्यिका दीक्षा धारण की थी तथा हजारों आर्यिकाओं में ब्राह्मी माता ने प्रधान 'गणिनी' पद को प्राप्त किया था। 'सार्वभौम जैनधर्म प्राणिमात्र का हित करने वाला है' यह सोचकर हृदय में संसार समुद्र से पार होने की भावना को लेकर कोई महिला पहले साधु संघ में प्रवेश करती है पुनः उसके वैराग्य भावों में वृद्धि प्रारंभ होती है। चतुर्विध संघ के नायक आचार्य उसे समुचित शिक्षाएँ प्रदान कर संघ की प्रमुख आर्यिका या गणिनी के सुपुर्द कर देते हैं क्योंकि आर्यिकाएँ ही महिलाओं की सुरक्षा एवं पोषण कर सकती हैं।

जिस प्रकार से बालक माता के प्रति पूर्ण समपित होता है। चाहे माँ उसे डांटे, मारे और कितना भी अपने से दूर भगावे किन्तु बालक रोने-धोने के पश्चात् भी माँ की गोद में ही आकर शांति प्राप्त करता है। माता का हृदय बहुत ही उदार होता है, उसकी ममता के आंचल तले जाकर बड़े से बड़ा दुःख भी सुख रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसीलिए माँ की महानता बतलाते हुए नीतिकारों ने शिक्षा दी है—

"भोजन करना माँ से चाहे जहर हो,
रास्ता चलना सीधा चाहे फेर हो।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसी प्रकार वैराग्य भावयुक्त महिला भी आर्यिका माता के शिष्यत्व को स्वीकार करके स्वयं को उनके प्रति समर्पित कर देती है और उनसे निवेदन करती है कि हे मात: ! मैं अपने अनंत संसार को समाप्त करने हेतु, स्त्रीलिंग के छेदन हेतु दीक्षा ग्रहण करना चाहती हूँ अत: आप मुझे हस्तावलंबन देकर मेरी आत्मा का कल्याण कीजिए।

इन औपचारिकताओं के पश्चात् गणिनी आर्यिका उस नववैराग्यशालिनी महिला को कुछ दिन अपने पास रखती हैं और उसके मन की दृढ़ता को, शारीरिक क्षमता को एवं उसमें आर्यिका दीक्षा की योग्यता देखती हैं तथा धार्मिक अध्ययन भी कराती हैं। साधु संघ में प्रवेश करते ही वह दीक्षा धारण ही कर लेवे, यह कोई आवश्यक नहीं है। सर्वप्रथम तो उसमें साधुओं की वैयावृत्ति करने की एवं आहारदान की भावना होनी चाहिए तथा भिन्न-भिन्न प्रदेशों की, भिन्न-भिन्न प्रकृति वाली संघस्थ आर्यिकाओं व ब्रह्मचारिणियों के साथ प्रेमपूर्वक रहने की प्रवृत्ति होनी चाहिए ताकि संघ में किसी प्रकार की अशांति का वातावरण न उपस्थित होने पावे। यह यथानुरूप ढल जाना उस महिला में सबसे बड़ा गुण होना चाहिए।

कुमारी बालिकाएं तथा महिलाएँ ब्रह्मचर्य व्रत लेकर आर्यिकाओं के पास रहती हैं और आहार-दानादिक में भाग लेती हैं, यह बात "**अनंतमती**" के उदाहरण से साक्षात् स्पष्ट होती है। जैसा कि कथानक में आता है—

अंग देश के राजा प्रियदत्त और रानी अंगवती के "**अनंतमती**" नाम की एक कन्या थी। उसने बचपन में कुतूहलवश पिताजी से अष्टान्हिका पर्व में आठ दिनों का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया था, जिसके फलस्वरूप उसने आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत का पालन किया।

एक बार कोई पूर्व जन्म के वैरी शत्रु विद्याधर ने उसका हरण कर उसे एक घनघोर जंगल में डाल दिया। अनेकों कष्टों को सहन कर जैसे-तैसे उसके शील की रक्षा हुई, तब वह जिनेन्द्र भगवान का स्मरण कर भटकती हुई किसी समय '**अयोध्या**' नगरी पहुँच गई। वहाँ एक जिनमंदिर में "**पद्मश्री**" नाम की आर्यिका के दर्शन हुए, तब वह उन्हें माता समझ कर उनके पास रहने लगी।

अनंतमती के पिता उसे ढूंढते-ढूंढते जब अयोध्या पहुँचे, वहाँ एक श्रावक के घर के आगे सुन्दर चौक पूरा हुआ देखकर रोने लगे। श्रावक के द्वारा पूछने पर उसने बताया— मेरी पुत्री ऐसा चौक पूरा करती थी, अब वह पता नहीं कहाँ है? श्रावक ने आर्यिका के पास रहने वाली उस कन्या का प्रियदत्त से परिचय कराया और कहने लगा कि मेरी पत्नी इसे प्रतिदिन अपने चौके में भोजन करने के लिए बुलाती है और चौक भी यही कन्या बनाती है।

पिता पुत्री का चिरवियोग के पश्चात् मिलन होता है किन्तु अनंतमती के मन में तो संसार के प्रति पूर्ण वैराग्य हो चुका था अत: उसने पिता की आज्ञा लेकर आर्यिकाश्री के पास दीक्षा धारण कर ली और घोरातिघोर तपश्चरण करती हुई सल्लेखनापूर्वक मरण करके सहस्रार स्वर्ग में देवपद को प्राप्त कर लिया।

इसी प्रकार के अनेकों उदाहरण वर्तमान में भी देखे जाते हैं क्योंकि चाहे बालक हो या बालिका, महिलाएँ हों या पुरुष, सभी के लिए दो ही मार्ग प्रशस्त होते हैं या तो वे साधुओं को नवधाभक्तिपूर्वक आहारदान देते हैं अन्यथा स्वयं साधु परमेष्ठी के पद को धारण कर श्रावकों से आहार लेते हैं। इसके अतिरिक्त आगमानुसार तीसरी श्रेणी कोई नहीं होती। यदि मनगढ़न्त अभिप्रायों से वह श्रेणी बना ली जाती है, तो '**आप डूबे पांड्या ले डूबे जजमान**' वाली नीति ही सार्थक होती है क्योंकि नीचे पद में रहकर यदि उच्च पद की अनधिकृत क्रियाएँ की जाती हैं तो नीच गोत्र का आस्रव होता है एवं समाज भी भ्रमित हो जाती है।

संघ के बीच में एवं गणिनी गुर्वानी के अनुशासन में रहकर विद्याभ्यास करने से ब्रह्मचारिणियों के जीवन में इन अनर्गल क्रियाओं की संभावना प्राय: नहीं रहती है अत: आर्यिकाओं की प्रशस्त परम्परा इन्हीं से चलती है। जब संघ संरक्षण में रहती हुईं वे विद्या-शिक्षा में निपुण हो जाती हैं एवं व्यवहारिक ज्ञान आदि का अनुभव भी प्राप्त कर लेती हैं, तभी वे दीक्षा के योग्य मानी जाती हैं।

संघ के आचार्य अथवा गणिनी आर्यिका जी जब उस वैराग्यशील महिला का पूर्ण रूप से परीक्षण कर लेते हैं, तब उसकी दीक्षा का मंगल मुहूर्त निकालकर घोषणा करते हैं। औपचारिकता के नाते दीक्षार्थी के कुटुम्बियों से भी आज्ञा मंगानी होती है ताकि दीक्षा जैसा पुनीत कार्य निर्विघ्नरूप से सम्पन्न हो सके।

दीक्षार्थी महिला की इच्छानुसार तीर्थयात्राएँ भी उसे करवा दी जाती हैं पुन: जिनधर्म प्रभावना हेतु दीक्षार्थी की शोभायात्राएँ भी सम्पन्न होती हैं। यह कार्य गृहस्थ श्रावकों एवं दीक्षार्थी के परिवार वालों पर निर्भर रहता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह क्रियाएँ वर्तमानकाल में लोक व्यवहार की दृष्टि से और धार्मिक प्रभावना के लक्ष्य से ही की जाती हैं। इसमें आत्मकल्याण का कोई विशेष संबंध नहीं है। पूर्वकाल के उदाहरण भी अपने समक्ष हैं कि वैराग्य होने के बाद पुनः किसी घड़ी की प्रतीक्षा नहीं की जाती क्योंकि असली वैराग्य ही सर्वोत्तम शुभ मुहूर्त माना जाता है।

आदिपुराण के पृष्ठ 592 पर श्री जिनसेन आचार्य ने लिखा है—

भरतस्यानुजा ब्राह्मी दीक्षित्वा गुर्वनुग्रहात्।
गणिनी पदमार्यायां सा भेजे पूजितामरैः।।

हरिवंशपुराण पृष्ठ 183 पर प्रकरण है—

ब्राह्मी च सुन्दरी चोभे कुमार्यौ धैर्य संगते।
प्रव्रज्य बहुनारीभिरार्याणां प्रभुतां गते।

अर्थात् ब्राह्मी-सुन्दरी दोनों कन्याओं ने प्रभु आदिनाथ के समवसरण में आर्यिका दीक्षा धारण की थी और ब्राह्मी आर्यिका समस्त आर्यिकाओं में गणिनी—स्वामिनी थीं।

इस युग की प्रथम आर्यिका ने भगवान के समवसरण में दीक्षा ली थी उसके पश्चात् महिलाओं के लिए गणिनी से दीक्षा प्राप्त करने के अनेकों उदाहरण देखे जाते हैं—आदिपुराण द्वितीय भाग में पृ. 503 पर आया है—

''भरत के सेनापति जयकुमार की दीक्षा के बाद सुलोचना ने भी ब्राह्मी आर्यिका के पास दीक्षा धारण कर ली।''

अन्यत्र हरिवंश पुराण में भी कहा है—

''दुष्ट संसार के स्वभाव को जानने वाली सुलोचना ने अपनी सपत्नियों के साथ श्वेत साड़ी धारणकर ब्राह्मी तथा सुन्दरी के पास दीक्षा धारण कर ली। इसके साथ हरिवंशपुराण में आर्यिका सुलोचना को ग्यारह अंग की धारिणी भी माना है।

कुबेरमित्र की स्त्री धनवती ने संघ की स्वामिनी आर्यिका अमितमति के पास दीक्षा धारण कर ली और उन यशस्वती तथा गुणवती आर्यिकाओं की माता कुबेरसेना ने भी अपनी पुत्री के समीप दीक्षा ले ली।

पद्मपुराण में भी वर्णन आता है—

''रावण के मरने के बाद मंदोदरी ने शशिकांता आर्यिका के मनोहारी वचनों से प्रबोध को प्राप्त हो उत्कृष्ट संवेग और उत्तम गुणों को प्राप्त होती हुई, गृहस्थ की वेशभूषा को छोड़कर, श्वेत साड़ी से आवृत हुई आर्यिका हो गई। उस समय अड़तालिस हजार स्त्रियों ने संयम धारण किया था, इन्हीं में रावण की बहन, जो कि खरदूषण की पत्नी थी, उस चन्द्रनखा (सूर्पणखा) ने भी दीक्षा ले ली थी।

माता कैकेयी भरत की दीक्षा के बाद विरक्तमना एक सफेद साड़ी से युक्त होकर तीन सौ स्त्रियों के साथ **'पृथ्वीमती'** आर्यिका के पास दीक्षित हो गई थीं।

अग्नि परीक्षा के पश्चात् रामचन्द्र ने सीता से घर चलने को कहा, तब सीता ने कहा कि अब मैं **''जैनेश्वरी आर्यिका दीक्षा धारण करूँगी''**, वहीं केशलोंच करके पुनः शीघ्र जाकर पृथ्वीमती आर्यिका के पास दीक्षित हो गईं।

उनके बारे में लिखा है कि सीताजी वस्त्रमात्र परिग्रहधारिणी महाव्रतों से पवित्र अंग वाली महासंवेग को प्राप्त थीं।

इसी प्रकार से पद्मपुराण में श्री रविषेणाचार्य कहते हैं—

हनुमान जी की दीक्षा के पश्चात् उसी समय शीलरूपी आभूषणों को धारण करने वाली राजस्त्रियों ने **'बंधुमती'** आर्यिका के पास दीक्षा ले ली।

श्री रामचन्द्र के मुनि बनने के बाद सत्ताईस हजार प्रमुख स्त्रियाँ **''श्रीमती''** नामक आर्यिका के पास दीक्षित हुईं।

हरिवंश पुराण में राजुल के विषय में बताया है—

षट्सहस्रनृपस्त्रीभिः सह राजीमती सदा।
प्रव्रज्याग्रेसरी जाता सार्यिकाणां गणस्य तु।।146।।

छह हजार रानियों के साथ राजीमती ने भगवान् नेमिनाथ के समवसरण में आर्यिका दीक्षा लेकर आर्यिकाओं में प्रधान गणिनी हो गईं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हरिवंशपुराण में ही आगे—

राजा चेटक की पुत्री चंदना कुमारी, एक स्वच्छ वस्त्र धारण कर भगवान महावीर के समवसरण में आर्यिकाओं में प्रमुख हो गईं।

राजा श्रेणिक की मृत्यु के पश्चात् रानी चेलना गणिनी आर्यिका चंदना के पास दीक्षित हो गईं जो कि चंदना की बड़ी बहन थीं। ऐसा उत्तरपुराण में कथन आया है तथा—

गुणरूपी आभूषण को धारण करने वाली कुन्ती, सुभद्रा तथा द्रौपदी ने भी राजीमती गणिनी के पास उत्कृष्ट दीक्षा ले ली थी और भी पुराणों में कितने ही उदाहरण हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि एक प्रमुख गणिनी आर्यिका समवसरण में तीर्थंकर की साक्षीपूर्वक दीक्षित होकर अन्य आर्यिकाओं को दीक्षा प्रदान करती थीं।

आज भी गणिनी आर्यिकाओं के द्वारा आर्यिका, क्षुल्लिका की दीक्षाएँ प्रदान की जाती हैं, यह प्रसन्नता की बात है। इसी शृँखला में वर्तमान की सर्वाधिक प्राचीन दीक्षित परमपूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के करकमलों द्वारा मुझे भी आर्यिका चन्दनामती बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

वर्तमान युग में आचार्य और गणिनी दोनों के द्वारा महिलाओं की आर्यिका, क्षुल्लिका दीक्षा की परम्परा चली रही है अतः स्वेच्छा से वैराग्यशालिनी महिला जिनके श्रीचरणों में दीक्षा की याचना करती है, वे जिम्मेदारीपूर्वक दीक्षा देकर अनुग्रह आदि करते हुए उसे नवजीवन में प्रवेश कराते हैं।

दीक्षा दिवस से पूर्व तक उसे श्राविका के समस्त कर्तव्य पालन करने होते हैं। जैसे—जिनेन्द्र पूजा-विधान, उत्तम आदि पात्रों को शक्ति अनुसार चतुर्विध दान देकर अपने मन को पवित्र बनाती है।

दीक्षा के शुभ मुहूर्त के अवसर पर दीक्षार्थी बहन की शोभायात्रा निकाली जाती है जिसमें उसके परिवार जनों को अपने अरमान पूरे करने का सौभाग्य प्राप्त होता है यदि दीक्षार्थिनी कुंआरी या सौभाग्यवती है, तो मेंहदी रचाना आदि भी होता है। यह भी एक मंगल अवसर होता है क्योंकि उसे तो पूर्णरूप से नवजीवन में प्रवेश करना होता है।

दीक्षा का दृश्य अपने आप में एक रोमांचक दृश्य होता है। आपकी पुत्री का विवाह अपने घर के छोटे से मंडप में हो जाता है और दीक्षा का महानकार्य विशाल मंडप में सम्पन्न होता है, जहाँ एक परिवार को छोड़कर **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** अर्थात् सारे संसार को अपना कुटुम्ब समझा जाता है परन्तु वास्तविकता तो यह है कि न एक परिवार अपना है और न ही समस्त संसार अपना हो सकता है, अपना तो केवल आत्मा है, उसे पाने के लिए ही दीक्षा धारण की जाती है। जैसा कि कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा है—

आदहिदं कादव्वं जइ सक्कइ परहिदं च कादव्वं।........इत्यादि

आत्महित की प्रमुखता से ही दीक्षा लेना सर्वोत्तम कार्य है, परहित उसके साथ हो जावे तो ठीक है किन्तु मात्र परहित का ही लक्ष्य रखना आत्महित में बाधक हो सकता है।

शोभायात्रा के पश्चात् सभामंडप में पूर्वमुख या उत्तरमुख उसे बैठाकर गणिनी आर्यिका सर्वप्रथम केशलोंच प्रतिष्ठापन में सिद्ध भक्ति, योगभक्ति पढ़कर दीक्षार्थी बहन का केशलोंच प्रारंभ कर देती हैं।

देखते ही देखते सभामंडप में असीम वैराग्य का दृश्य उपस्थित हो जाता है। कई बार देखने में आता है कि वह बहन स्वयं भी वीरतापूर्वक अपना केशलोंच करती है।

वह ममता, जिसने बालिका को दुग्धपान के साथ अपने आंचल की छांव दी थी, वे कलाइयाँ, जिन्होंने सदा बहन के रक्षासूत्र को अंगीकार किया था, वह गोद, जिसने कन्या रत्न को झूले की भांति झुलाया था, वह स्नेहिल परिवार, जिसने सदैव उसके सुख-दुख में हाथ बंटाया था, सभी उस क्षण 'वैराग्य की मोहिनी मुद्रा के प्रति नतमस्तक हो जाते हैं तथा कोई-कोई चिरकालीन मोहवश अश्रुधारा से अपना मलिन हृदय भी निर्मल करते हैं।

मानव जीवन का प्रत्येक क्षण अत्यन्त अमूल्य होता है अतः उन क्षणों का सदुपयोग करना उसका कर्तव्य है। देखते ही देखते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था तीनों समयों को बिताकर व्यक्ति कालकवलित हो जाता है और आत्मा की ओर उसकी दृष्टि ही नहीं जाती है।

आपने सुना होगा गजकुमार मुनिराज के बारे में।वे भी अपने यौवन को राग की ओर ले जा रहे थे। फलस्वरूप बारात लेकर दूल्हा बनकर चल पड़े थे। विवाह भी हो गया किन्तु बारात घर तक वापस नहीं आ पाती है, रास्ते में ही उनको एक दिगम्बर मुनिराज के दर्शन हो जाते हैं। वे मुनिराज अवधिज्ञानी थे अतः गजकुमार की अल्पायु जानकर उसे सम्बोधित किया, आत्मकल्याण हेतु प्रेरणा प्रदान की।

आत्मार्थी को तो इतना संबोधन ही काफी था। गजकुमार अपनी नई-नवेली दुल्हन को रास्ते में ही छोड़कर तपोवन में जाकर गुरुदेव से मुनि दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं। बाराती अपने घर चले जाते हैं और दुल्हन की डोली अपने पिता के घर।

उस कन्या के पिता का क्रोध सातवें आसमान पर चढ़ जाता है। ओह! मेरी बेटी के साथ इतना बड़ा अन्याय! वे क्रोधावेश में ध्यानस्थ मुनिराज गजकुमार के पास पहुँचते हैं और कहते हैं—अरे ढोंगी! यदि तुझे यही करना था, तो एक कन्या के साथ शादी का नाटक क्यों रचा था? अब तो तुझे घर चलना ही पड़ेगा। जब मुनिराज कुछ न बोले तो ससुर जी को और भी गुस्सा आया अतः उन्होंने गजकुमार मुनि के मस्तक पर अंगीठी जला दी।

भयंकर अग्नि का उपसर्ग जानकर वे मुनिराज संसार-शरीर-भोगों की असारता का चिंतवन करने लगे और शरीर से आत्मा को पृथक् करने के उपाय में एकाग्रचित्त हो गए। इधर मस्तक पर अंगीठी जल रही थी और उधर आत्मा के कर्म जल रहे थे। अन्त में उपसर्ग पर विजय प्राप्त कर वे अंतकृत केवली हो गये।

देखो! संसार की स्थिति, जहाँ एक व्यक्ति त्याग की चरम सीमा पर स्थित था, वहीं दूसरा राग-द्वेष की चरमसीमा पर खड़ा हिताहित का विवेक भी खो बैठा था। जीवन के अमूल्य क्षणों का सदुपयोग किया था-गजकुमार ने। जो घड़ी हाथ से निकल जाती है, वह लाख प्रयास के बावजूद भी वापस नहीं आती। जैसे हाथ से निकला बाण और मुंह से निकली बात वापस नहीं आती है, उसी प्रकार बीती हुई प्रात भी वापस नहीं लाई जा सकती है।

मानव जीवन की दुर्लभता का चिंतन करने पर ही संसार से वैराग्य होता है और दीक्षा के शुभ परिणाम उत्पन्न होते हैं। महान पुण्योदय से जब कोई महिला दीक्षा के लिए अग्रसर होती है, तब उसकी सर्वप्रथम परीक्षा केशलोंच की क्रिया से प्रारंभ होती है।

जब पांडाल में गणिनी आर्यिका एवं अन्य आर्यिकाओं के द्वारा केशलुंचन सम्पन्न कर दिया जाता है, तभी उसके आगे दीक्षा की क्रिया प्रारंभ होती है।

केशलोंच के पश्चात् उस श्राविका को सौभाग्यवती महिलाएँ मंगल स्नान के लिए ले जाती हैं जहाँ तेल, उबटन आदि लगाकर मंगल स्नान कराकर मात्र एक साड़ी, जैसा कि उन्हें अब जीवन भर एक साड़ी ही धारण करनी है, उसे पहनाकर पुनः मंगल गीत गाती हुईं महिलाएँ उस श्राविका को पुनः स्टेज पर लाती हैं।

चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की संघ परम्परानुसार दीक्षा से पूर्व मंच पर वह श्राविका जिनेन्द्र भगवान का पंचामृत अभिषेक पूजन करती है पुनः श्रीफल लेकर गुरु चरणों में समस्त जनता की साक्षीपूर्वक दीक्षा के लिए निवेदन करती है। जिन्हें भाषण देने का अभ्यास होता है, वे मंच पर खड़ी होकर दीक्षा की प्रार्थना हेतु वैराग्य भावों से युक्त कुछ भाषण भी करती हैं और अपने परिवारजनों एवं प्राणिमात्र से क्षमायाचना करती हुई सभी के प्रति स्वयं का क्षमाभाव भी प्रगट करती हैं।

गुरु की पुनः पुनः स्वीकृति प्राप्त होने के पश्चात् वे आचार्य अथवा गणिनी सौभाग्यवती महिलाओं के द्वारा पूरे गए मंगल चौक पर दीक्षार्थी महिला को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठा देते हैं। दीक्षा प्रदान करने वाली गणिनी आर्यिका अथवा आचार्य पहले उस दीक्षार्थी से कहते हैं कि तुम्हें हमारे संघ की मर्यादा और अनुशासन में रहना होगा, एकाकी विहार नहीं करना एवं ख्याति, लाभ, पूजा में पड़कर अपनी गुरु परम्परा को नहीं तोड़ना इत्यादि बातें मजूर कराकर दीक्षा के संस्कार प्रारंभ कर दिये जाते हैं।

जब वह दीक्षार्थी महिला गुरु की सभी बातों को स्वीकार कर लेती है, तब गुरुवर्य अपने संघस्थ सभी साधुओं से, दीक्षार्थी के कुटुम्बियों से एवं वहाँ पर उपस्थित समस्त जनसमूह से पूछते हैं कि क्या इसे दीक्षा दी जावे? तब सभी साधुवर्ग भी धर्मवृद्धि से हर्षितमना होते हुए सहर्ष स्वीकृति देते हैं और श्रावकगण व दीक्षार्थी के कुटुम्बीवर्ग भी दुःखमिश्रित हर्षपूर्वक जय-जयकार की ध्वनि से सभा को गुंजायमान करते हुए स्वीकृति देते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बस फिर क्या है, शास्त्रों में वर्णित दीक्षा विधि के अनुसार गणिनी माताजी के द्वारा दीक्षार्थी का मस्तक गरम प्रासुक जल से प्रक्षालित किया जाता है पुनः मस्तक पर बीजाक्षर लिखकर पीले तंदुल और लवंग से मंत्रों का आरोपण किया जाता है। उसके हाथ में बीजाक्षर लिखकर तथा दोनों हाथों की अंजुलि में तंदुल भरकर उसमें श्रीफल आदि मंगल द्रव्य रखकर पुनः उन्हें अट्ठाईस मूलगुण प्रदान किये जाते हैं।

कहीं-कहीं व्यवस्थापकगण नवीन दीक्षिता को प्रदान करने हेतु पिच्छी, कमण्डलु, शास्त्र आदि की बोलियाँ करते हैं पुनः अपनी गुरु परम्परानुसार गुर्वावली को पढ़कर मंत्रों द्वारा गणिनी स्वयं संयम का उपकरण मयूर पंख की पिच्छिका, शौच के लिए उपकरण स्वरूप नारियल का कमंडलु और ज्ञान का उपकरण शास्त्र प्रदान करती हैं। शिष्या भी विनयपूर्वक दोनों हाथों से पिच्छिका को प्राप्त करती है, बाएँ हाथ से कमंडलु को और दोनों हाथों से शास्त्र को ग्रहण करती है।

इन्हीं संस्कारों के साथ ही गुरुद्वारा उस नवदीक्षिता का नवीन नामकरण भी किया जाता है, तभी नये नाम वाली आर्यिका माताजी की जयकारों से पंडाल गूंजने लगता है। सारी वेशभूषा और क्रियाओं के परिवर्तन के साथ ही नाम भी परिवर्तित हो जाने से अब वह पूर्ण रूप से नवजीवन में प्रवेश कर जाती है।

पुनः नवदीक्षिता आर्यिका सर्वप्रथम भक्तिपूर्वक दीक्षागुरु को नमोऽस्तु-वंदामि करके अन्य साधु-साध्वियों को नमोऽस्तु-वंदामि करके साधु श्रेणी में ही बैठ जाती है।

उस नवदीक्षिता आर्यिका को सर्वप्रथम कुछ दम्पत्ति श्रीफल आदि चढ़ाकर "वंदामि" कहकर नमस्कार करते हैं।

यह विशेष ज्ञातव्य है कि दीक्षा के दिन उस दीक्षार्थी महिला का उपवास रहता है। द्वितीय दिवस पारणा के लिए गणिनी आर्यिका के पीछे श्रावकों के घर में आहार हेतु जाती हैं। वहाँ पर श्रावक विधिवत् पड़गाहन करके नवधाभक्ति से आहारदान देकर अपना जन्म सफल समझते हैं।

जिस प्रकार से मूल— जड़ के बिना वृक्ष नहीं ठहरता, मूल— नींव के बिना मकान नहीं बनता, उसी प्रकार मूल— प्रधान आचरण के बिना श्रावक और साधु दोनों की सार्थकता नहीं होती है। यहाँ पर आर्यिकाओं की चर्या का प्रकरण चल रहा है अतः उनके मूलगुणों का ही कथन किया जा रहा है।

मुख्यरूप से मुनियों के मूलगुण 28 होते हैं। जैसा कि प्रतिक्रमण पाठ में स्थान-स्थान पर कथन आता है—

> वदसमिदिंदिय रोधो, लोचो आवासयमचेलमण्हाणं।
> खिदिसयणमदंतवणं, ठिदिभोयणमेगभत्तं च।।1।।
> एदे खलु मूलगुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
> एत्थ पमादकदादो, अइचारादो णियत्तो हं।।2।।

पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रियनिरोध, षट् आवश्यक- क्रिया, लोच, आचेलक्य, अस्नान, क्षितिशयन, अदन्तधावन, स्थितिभोजन और एकभक्त ये 28 मूलगुणों के नाम हैं। इन्हें तीर्थंकर आदि महापुरुष भी मुनि अवस्था में पालन करते हैं एवं ये स्वयं महान हैं अतः इन व्रतों को महाव्रत भी कहते हैं।

इन 28 मूलगुणों के अलग-अलग नाम और लक्षण यहाँ पर प्रस्तुत हैं।

1. अहिंसा महाव्रत— पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति और त्रस ये छह काय हैं, इन छहकायिक जीवों की हिंसा का मन-वचन-काय से पूर्णतया त्याग कर देना अहिंसा महाव्रत है। इस महाव्रत वाले सम्पूर्ण आरंभ और परिग्रह से रहित दिगम्बर मुनि होते हैं और एक साड़ी मात्र परिग्रह वाली आर्यिकाएँ होती हैं।

2. सत्य महाव्रत— रागद्वेष, मोह, क्रोध आदि दोषों से भरे हुए वचनों का त्याग करना और ऐसा सत्य भी नहीं बोलना कि जिससे प्राणियों का घात होता है, सो सत्य महाव्रत है।

3. अचौर्य महाव्रत— ग्राम, शहर आदि में किसी की भूली, रखी या गिरी हुई वस्तु को स्वयं नहीं लेना, दूसरों के द्वारा संग्रहीत शिष्य, पुस्तक आदि को भी न लेना तथा दूसरों के दिए बिना योग्य वस्तु को भी नहीं लेना अचौर्य महाव्रत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4. ब्रह्मचर्य महाव्रत—रागभाव को छोड़कर पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहना, बालिका, युवती और वृद्धा में पुत्री, बहन और माता के समान भाव रखना त्रैलोक्यपूज्य ब्रह्मचर्य व्रत है।

5. परिग्रह त्याग महाव्रत—धन, धान्य आदि दश प्रकार के बहिरंग तथा मिथ्यात्व आदि चौदह प्रकार के अंतरंग परिग्रह का त्याग करना, वस्त्राभूषण, अलंकार आदि का पूर्णतया त्याग कर देना, यहाँ तक कि लंगोटमात्र भी नहीं रखना अपरिग्रह महाव्रत है। आर्यिकाओं के लिए दो साड़ी रखने का विधान ही उनका मूलगुण होता है।

आगम में कहे अनुसार गमनागमन, भाषण आदि में सम्यक् प्रवृत्ति करना समिति है। इसके भी पाँच भेद हैं—ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेपण और उत्सर्ग।

6. ईर्यासमिति—निर्जंतुक मार्ग से सूर्योदय होने पर चार हाथ आगे जमीन देखकर एकाग्रचित्त करके तीर्थयात्रा, गुरुवंदना आदि धर्मकार्यों के लिए गमन करना ईर्यासमिति है।

7.भाषा समिति—चुगली, हँसी, कर्कश, परनिंदा आदि से रहित, हित, मित और असंदिग्ध वचन बोलना भाषा समिति है।

8. एषणा समिति—छ्यालिस दोष और बत्तीस अंतराय से रहित, नवकोटि से शुद्ध श्रावक के द्वारा तैयार किया गया ऐसा प्रासुक निर्दोष पवित्र आहार लेना एषणा समिति है।

9. आदान निक्षेपण समिति—पुस्तक, कमण्डलु आदि को रखते-उठाते समय कोमल मयूर पिच्छिका से परिमार्जन करके रखना, उठाना, तृण-घास, चटाई, पाटे आदि को भी सावधानी से देखकर पिच्छिका से परिमार्जन करके ग्रहण करना या रखना, आदान निक्षेपण समिति है।

10. उत्सर्ग समिति—हरी घास, चिंवटी आदि जीवजन्तु से रहित प्रासुक, ऐसे एकांत स्थान में मलमूत्रादि विसर्जन करना यह उत्सर्ग या प्रतिष्ठापन समिति है।

स्पर्शन, रसना आदि पाँचों इन्द्रियों को वश में रखना, इनको शुभध्यान में लगा देना पंचेन्द्रिय निरोध होता है। इसके भी पाँच इन्द्रियों की अपेक्षा से पाँच भेद होते हैं।

11. स्पर्शन इन्द्रिय निरोध—सुखदायक, कोमल स्पर्शादि में या कठोर कंकरीली भूमि आदि के स्पर्श में आनन्द या खेद नहीं करना।

12. रसनेंद्रिय निरोध—सरस, मधुर, भोजन में या नीरस, शुष्क भोजन में हर्ष-विषाद नहीं करना।

13. घ्राणेंद्रिय निरोध—सुगंधित पदार्थ में या दुर्गन्धित वस्तु में रागद्वेष नहीं करना।

14. चक्षुइंद्रिय निरोध—स्त्रियों के सुन्दर रूप या विकृतवेष आदि में रागभाव और द्वेष भाव नहीं करना।

15. कर्णेन्द्रिय निरोध—सुन्दर-सुन्दर गीत, वाद्य तथा असुन्दर-निन्दा, गाली आदि के वचनों में हर्ष-विषाद नहीं करना। यदि कोई मधुर गीतों से गान करता हो, तो उसे रागभाव से नहीं सुनना।

जो अवश—जितेन्द्रिय मुनि का कर्तव्य है, वह आवश्यक कहलाता है। उसके छः भेद हैं—समता, स्तुति, वंदना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग।

16. समता—जीवन-मरण, लाभ-अलाभ, सुख-दुःख आदि में हर्ष- विषाद नहीं करना, समान भाव रखना समता है। इसी का नाम सामायिक है। त्रिकाल में देववंदना करना यही सामायिक व्रत है। प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल में विधिवत् कम से कम एक मुहूर्त—48 मिनट तक सामायिक करना होता है।

17. स्तुति—वृषभ आदि चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति करना स्तुति नाम का आवश्यक है।

18. वंदना—अरिहंतों को, सिद्धों को, उनकी प्रतिमा को, जिनवाणी को और गुरुओं को कृतिकर्म पूर्वक नमस्कार करना वंदना है।

19. प्रतिक्रमण—अहिंसादि व्रतों में जो अतिचार आदि दोष उत्पन्न होते हैं, उनको निंदा-गर्हापूर्वक शोधन करना—दूर करना प्रतिक्रमण है। इसके भी सात भेद हैं—ऐर्यापथिक, दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक, सांवत्सरिक और उत्तमार्थ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गमनागमन से हुए दोषों को दूर करने के लिए 'पडिक्कमामि भंते! इरियावहियाए विराहणाए' इत्यादि दण्डकों का उच्चारण करके कायोत्सर्ग करना ऐर्यापथिक है। दिवस संबंधी दोषों को दूर करने के लिए सायंकाल में 'जीवे प्रमाद जनिता' इत्यादि पाठ करना दैवसिक, रात्रि संबंधी दोषों के निराकरण हेतु रात्री के अंत में प्रतिक्रमण करना रात्रिक, प्रत्येक मास की चतुर्दशी या पूर्णिमा या अमावस्या को करना पाक्षिक, कार्तिक और फाल्गुन मास के अंत में करना चातुर्मासिक, आषाढ़ की अंतिम चतुर्दशी या पूर्णिमा को करना सांवत्सरिक तथा मरणकाल में करना उत्तमार्थ प्रतिक्रमण है।

20. प्रत्याख्यान—मन-वचन-काय से भविष्य के दोषों का त्याग करना प्रत्याख्यान है। आहार ग्रहण करने के अनन्तर गुरु के पास अगले दिन आहार ग्रहण करने तक के लिए जो चतुराहार का त्याग किया जाता है, वह प्रत्याख्यान कहलाता है।

21. कायोत्सर्ग—दैवसिक, रात्रिक आदि क्रियाओं में पच्चीस या सत्ताईस उच्छ्वास प्रमाण से तथा चौवन, एक सौ आठ आदि श्वासोच्छ्वास पूर्वक णमोकार मंत्र का स्मरण करना। काय—शरीर से उत्सर्ग—ममत्व का त्याग करना कायोत्सर्ग है।

यहाँ तक इक्कीस मूलगुण हुए हैं, अब शेष सात गुण को भी स्पष्ट करते हैं।

22. (1) लोंच—अपने हाथ से अपने सिर, दाढ़ी और मूंछ के बाल उखाड़ना केशलोंच मूलगुण है। केश में जूँ आदि जीव पड़ जाने से हिंसा होगी या उन्हें संस्कारित करने के लिए तेल, साबुन आदि की जरूरत होगी, जो कि साधु पद के विरुद्ध होगा अतः दीनता, याचना, परिग्रह, अपमान आदि दोषों से बचने के लिए यह क्रिया है। लोंच के दिन उपवास करना होता है और लोंच करते या कराते समय मौन रखना होता है।

इसके उत्तम, मध्यम और जघन्य ऐसे तीन भेद हैं—दो महीने पूर्ण होने पर उत्तम, तीन महीने में मध्यम और चार महीने पूर्ण होने पर जघन्य केशलोंच कहलाता है। चार महीने के ऊपर हो जाने पर साधु प्रायश्चित्त का भागी होता है।

23. (2) अचेलकत्व—सूती, रेशमी आदि वस्त्र, पत्र, वल्कल आदि का त्याग कर देना, नग्न वेश धारण करना अचेलकत्व है। यह महापुरुषों द्वारा ही स्वीकार किया जाता है, तीनों जगत में वंदनीय महान पद है। वस्त्रों के ग्रहण करने से परिग्रह, आरंभ, धोना, सुखाना और याचना करना आदि दोष होते हैं, अतः निष्परिग्रही साधु के यह व्रत होता है।

24. (3) अस्नानव्रत—स्नान, उबटन आदि रूप शरीर के संस्कारों का त्याग करना, अस्नान व्रत है। धूलि से धूसरित, मलिन शरीरधारी मुनि कर्ममल को धो डालते हैं। चांडालादि अस्पृश्यजन, हड्डी, चर्म, विष्ठा आदि का स्पर्श हो जाने से वे मुनि दंडस्नान करके गुरु से प्रायश्चित्त ग्रहण करते हैं।

25. (4) भूमिशयन—निर्जंतुक भूमि में घास या पाटा अथवा चटाई पर शयन करना भूमिशयन व्रत है। ध्यान, स्वाध्याय आदि से या गमनागमन से आई शारीरिक थकान को दूर करने हेतु स्वल्प निद्रा का विधान है।

26. (5) अदंतधावन—नीम की लकड़ी, ब्रुश आदि से दातौन नहीं करना। दाँतों को नहीं घिसने से इंद्रियसंयम होता है, शरीर से विरागता प्रगट होती है और सर्वज्ञ देव की आज्ञा का पालन होता है।

27. (6) स्थिति भोजन—खड़े होकर अपने दोनों हाथों की अंजुलि बनाकर श्रावक के द्वारा दिया हुआ आहार ग्रहण करना स्थिति भोजन है। आर्यिकाएँ बैठकर करपात्र में आहार ग्रहण करती हैं।

28. (7) एक भक्त—सूर्योदय के अनंतर तीन घड़ी के बाद और सूर्यास्त के तीन घड़ी पहले तक दिन में सामायिक काल के सिवाय कभी भी एक बार आहार ग्रहण करना एकभक्त है। आजकल प्रायः नौ बजे से ग्यारह बजे तक साधु जन आहार को जाते हैं। कदाचित् एक बजे से भी जा सकते हैं। दिन में एक बार ही आहार को निकलना चाहिए। कदाचित् लाभ न मिलने पर उस दिन पुनः आहारार्थ नहीं जाना चाहिए।

आर्यिकाओं के ये 28 मूलगुण कैसे होते हैं? इस बात का खुलासा परमपूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित 'आर्यिका' नामक पुस्तक में है। यथा—

प्रायश्चित्त ग्रंथ में आर्यिकाओं के लिए आज्ञा प्रदान की है कि "आर्यिकाओं को अपने पहनने के लिए दो साड़ी रखना चाहिए। इन दो वस्त्रों के सिवाय तीसरा वस्त्र रखने पर उसके लिए प्रायश्चित्त होता है।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन दो वस्त्रों का ऐसा मतलब है कि दो साड़ी लगभग 16-16 हाथ की रहती हैं। एक बार में एक ही पहनना होता है, दूसरी धोकर सुखा देती हैं जो कि द्वितीय दिवस बदली जाती है। सोलह हाथ की साड़ी के विषय में आगम में कहीं वर्णन नहीं आता है, मात्र गुरु परम्परा से यह व्यवस्था चली आ रही है, आगम में तो केवल दो साड़ी मात्र का उपदेश है।

चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज (ज्ञानमती माताजी के दीक्षा गुरु) कहते थे कि दो साड़ी रखने से आर्यिका का **'आचेलक्य'** नामक मूलगुण कम नहीं होता है किन्तु उनके लिए आगम की आज्ञा होने से यही मूलगुण है। हाँ! तृतीय साड़ी यदि कोई आर्यिका रखती है, तो उसके मूलगुण में दोष अवश्य आता है। इसी प्रकार से **'स्थितिभोजन'** मूलगुण में मुनिराज खड़े होकर आहार करते हैं और आर्यिकाओं को बैठकर आहार लेना होता है, यह भी शास्त्र की आज्ञा होने से उनका मूलगुण ही है। यदि कोई आर्यिका आगमाज्ञा उलंघन कर खड़ी होकर आहार ले लेवे तो अवश्य उसका मूलगुण भंग होता है। इसीलिए उनके भी अट्ठाईस मूलगुण मानने में कोई बाधा नहीं है। यही कारण है कि आर्यिकाओं को उपचार से महाव्रती संज्ञा दी गई है।

आर्यिकाएँ साड़ीमात्र परिग्रह धारण करते हुए भी लंगोटी मात्र अल्पपरिग्रह धारक ऐलक के द्वारा पूज्य हैं। जैसा कि सागारधर्मामृत में पृष्ठ 518 पर प्रकरण आया है—

कौपीनेऽपि समूर्च्छत्वान्नार्हत्यार्यो महाव्रतं।
अपिभाक्तममूर्च्छत्वात् साटिकेऽप्यार्यिकार्हति।।36।।

पण्डित श्री आशाधर जी कहते हैं कि अहो! आश्चर्य है कि ऐलक लंगोटी में ममत्व परिणाम होने से उपचार से भी महाव्रती नहीं हो सकता है किन्तु आर्यिका साड़ी धारण करने पर भी ममत्व परिणाम रहित होने के कारण उपचार से महाव्रती कहलाती है क्योंकि ऐलक तो लंगोटी का त्याग कर सकता है फिर भी ममत्व आदि कारणों से धारण किए है किन्तु आर्यिका तो साड़ी त्याग करने में असमर्थ है। उनकी यह साड़ी बिना सिली हुई होनी चाहिए अर्थात् सिले हुए वस्त्र पहनने का उनके लिए निषेध है।

आचारसार ग्रंथ में भी वर्णन आया है—

देशव्रतान्वितैस्तासामारोप्यैते बुधैस्ततः।
महाव्रतानि सज्जातिज्ञप्त्यर्थमुपचारतः।।89।।

अर्थात् गणधर आदि देवों ने उन आर्यिकाओं की सज्जाति आदि को सूचित करने के लिए उनमें उपचार से महाव्रत का आरोपण करना बतलाया है। साड़ी धारण करने से आर्यिकाओं में देशव्रत ही होते हैं परन्तु सज्जाति आदि कारणों से गणधर आदि देवों ने उनके देशव्रतों में उपचार से महाव्रतों का आरोपण किया है।

प्रायश्चित्त ग्रंथ में भी आर्यिकाओं को मुनियों के बराबर प्रायश्चित्त का विधान है तथा क्षुल्लक आदि को उनसे आधा इत्यादि रूप से है—

साधूनां यद्वदुद्दिष्टमेवमार्यागणस्य च।
दिनस्थान त्रिकालोनं प्रायश्चित्तं समुच्यते।।114।।

जैसा प्रायश्चित्त साधुओं के लिए कहा गया है, वैसा ही आर्यिकाओं के लिए कहा गया है। विशेष इतना है कि दिन, प्रतिमा, त्रिकालयोग चकार शब्द से अथवा अन्य ग्रंथों के अनुसार पर्यायच्छेद (दीक्षा छेद) मूलस्थान तथा परिहार ये प्रायश्चित्त भी आर्यिकाओं के लिए नहीं हैं।

आर्यिकाओं के लिए दीक्षाविधि भी अलग से नहीं है। मुनिदीक्षा विधि से ही उन्हें दीक्षा दी जाती है।

इन सभी कारणों से स्पष्ट है कि आर्यिकाओं के व्रत, चर्या आदि मुनियों के सदृश हैं। कहा भी है—

धागों को बुनने से परिधान बन जाता है।
ईंटों को चुनने से मकान बन जाता है।।
गुणों को गुनने से गुणवान बन जाता है।
रत्नत्रय में रमने से मानव भगवान बन जाता है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुल मिलाकर निष्कर्ष यह निकलता है कि एक-एक मूलगुण को अतिचार रहित पालन करने वाली आर्यिका मुक्तिपथ की अनुगामिनी होती है। यही व्यवस्था अनादिकाल से चली आ रही है। वर्तमान में भी यही व्यवस्था देखने में आती है कि ये आर्यिकाएँ एक साड़ी पहनती हैं, जिससे उनका सम्पूर्ण शरीर ढका रहता है, हाथ में मयूर पंख की पिच्छी रखती हैं तथा शौच का उपकरण काठ या नारियल का कमंडलु रखती हैं।

आर्यिकाओं के 28 कायोत्सर्ग—मुनि-आर्यिकाओं के दैनिक 28 कायोत्सर्ग होते हैं जो कि प्रातःकाल से रात्रिविश्राम के पूर्व तक किये जाते हैं। उन्हीं का स्पष्टीकरण किया जाता है—

सर्वप्रथम प्रातःकाल से इन कायोत्सर्गों का शुभारंभ होता है। यूँ तो साधु जीवन में प्रतिक्षण स्वाध्याय, अध्ययन आदि की प्रमुखता होने से शुभोपयोग ही रहता है तथापि आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने कृतिकर्म विधिपूर्वक उन्हीं क्रियाओं को करने का आदेश दिया है, जिनमें कायोत्सर्गों की गणना हो जाती है। यहाँ एक कायोत्सर्ग का अभिप्राय 27 स्वासोच्छ्वास में 9 बार णमोकार मंत्र जपना है।

रात्रि एक बजे के पश्चात् से लेकर सूर्योदय से 2 घड़ी पूर्व तक यथाशक्ति स्वाध्याय करना चाहिए, इसे अपररात्रिक स्वाध्याय कहते हैं। स्वाध्याय प्रारंभ करने से पूर्व स्वाध्याय प्रतिष्ठापन हेतु लघु श्रुतभक्ति और आचार्यभक्ति संबंधी दो कायोत्सर्ग होते हैं पुनः स्वाध्याय के पश्चात् स्वाध्याय निष्ठापन हेतु श्रुतभक्ति संबंधी एक कायोत्सर्ग होता है, ऐसे एक स्वाध्याय करने में 3 कायोत्सर्ग करने होते हैं। यद्यपि यह विधि अधिक प्रचलन में नहीं है, प्रायः 9 बार णमोकार मंत्र मात्र पढ़कर लोग स्वाध्याय प्रारंभ कर देते हैं और अन्त में भी 9 बार णमोकार मंत्र पढ़कर स्वाध्याय समापन कर देते हैं किन्तु आगमानुसार उपर्युक्त विधि आवश्यक होती है। पुनः रात्रि संबंधी दोषों का शोधन करने हेतु गणिनी माताजी के पास रात्रिक प्रतिक्रमण करना होता है, जिसमें सिद्धभक्ति, प्रतिक्रमणभक्ति, वीरभक्ति और चतुर्विंशति तीर्थंकर भक्ति इन चार भक्तिसंबंधी 4 कायोत्सर्ग होते हैं पुनः रात्रियोग निष्ठापन करने हेतु योगभक्ति संबंधी एक कायोत्सर्ग होता है।

इसके अनंतर सूर्योदय से दो घड़ी पूर्व और दो घड़ी पश्चात् तक के संधिकाल में पौर्वाण्हिक सामायिक की जाती है। इस सामायिक में चैत्यभक्ति और पंचगुरुभक्ति संबंधी दो कायोत्सर्ग होते हैं। अनंतर पौर्वाण्हिक स्वाध्याय सूर्योदय के दो घड़ी बाद होता है, उसमें भी पूर्वोक्त 3 कायोत्सर्ग होते हैं।

पुनः आहारचर्या सम्पन्न होती है। उसके पश्चात् आर्यिकाएँ मध्यान्ह की सामायिक करती हैं जिसमें 2 कायोत्सर्ग होते हैं। सामायिक का जघन्य काल 2 घड़ी अर्थात् 48 मिनट होता है। इससे अधिक घंटे,दो घंटे भी सामायिक की जा सकती है। अनंतर मध्यान्ह की चार घड़ी बीत जाने पर अपराण्हिक स्वाध्याय किया जाता है जिसमें 3 कायोत्सर्ग होते हैं। इसके पश्चात् दिवस संबंधी दोषों के क्षालन हेतु सभी आर्यिकाएँ सामूहिक रूप से दैवसिक प्रतिक्रमण करती हैं, जिसमें 4 कायोत्सर्ग होते हैं पुनः अपनी वसतिका में आकर सामायिक से पूर्व रात्रियोग प्रतिष्ठापन के लिए योगभक्ति करती हैं जिसका एक कायोत्सर्ग होता है। रात्रियोग का मतलब यह है कि 'मैं आज रात्रि में इस वसतिका में ही निवास करूँगी' क्योंकि साधुजन रात्रि में यत्र-तत्र विचरण नहीं करते हैं। मल-मूत्रादि विसर्जन के लिए भी दिन में ही स्थान देख लेते हैं जो कि वसतिका के आसपास ही होता है।

अनंतर आर्यिकाएँ सायंकालिक सामायिक (देववंदना) करती हैं उसमें उपर्युक्त दो कायोत्सर्ग होते हैं, पुनः पूर्वरात्रिक स्वाध्याय के तीन कायोत्सर्ग करती हुई अपने अहोरात्रि के 28 कायोत्सर्ग प्रतिदिन पूर्ण सावधानी पूर्वक करती हैं पुनः महामंत्र का स्मरण करते हुए रात्रि विश्राम करती हैं।

यही चर्या मुनि-आर्यिकाओं की प्राचीनकाल से चली आ रही है अतः समस्त आर्यिकाओं को इन्हीं क्रियाओं का पालन करना चाहिए। यदि कोई आर्यिका विदुषी हैं तो दैनिक कर्तव्यों का पालन करते हुए उसमें से समय निकालकर भव्य प्राणियों को धर्म प्रवचन सुनाकर लाभान्वित भी करती हैं।

इस प्रकार संक्षेप में दिगम्बर जैन सम्प्रदाय में दीक्षित आर्यिकाओं के 28 कायोत्सर्ग का वर्णन मैंने किया है।

आर्यिकाओं के लिए न करने योग्य कार्य कौन से हैं—आर्यिकाओं को मुनियों की वंदना करने के लिए अकेले नहीं जाना चाहिए। गणिनी आर्यिका के साथ अथवा दो-चार आर्यिकाएं मिलकर जाना चाहिए। अकेले बैठकर दिगम्बर मुनियों से वार्तालाप नहीं करना चाहिए तथा मुनियों की सेवा, वैयावृत्ति कदापि नहीं करना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुख्यरूप से स्त्रीलिंग का छेद करने हेतु ही आर्यिका दीक्षा धारण की जाती है अतः इस पवित्र दीक्षा को प्राप्त करके सदैव जीवन को वैराग्यमयी बनाना चाहिए। गृहस्थियों की किन्हीं रागजनित बातों में उन्हें रुचि नहीं लेनी चाहिए क्योंकि गृहसंबंधी समस्त कार्य उनके लिए त्याज्य हो जाते हैं। बीमार होने पर स्वयं अपने हाथ से किसी प्रकार की औषधि भी वे नहीं बनाती हैं। अपनी गणिनी गुरु से ही अपना दुःख बालकवत् बताना चाहिए, तब वे स्वयं उसके योग्य औषधि श्रावकों के द्वारा बनवाकर आहार में दिलवाती हैं।

मुनियों के समान ही ये आर्यिकाएं श्रावक के घर में करपात्र में आहार ग्रहण करती हैं उसके पश्चात् श्रावक इनके कमण्डलु में गरम जल भर देते हैं। बिना गरम किया हुआ कच्चा जल वे नहीं छूती हैं। श्राविकाएँ या तो छने जल से इनकी साड़ी धोकर सुखा देती हैं अथवा ये स्वयं कमण्डलु के जल से साड़ी धोकर सुखा सकती हैं। आर्यिकाएं साबुन आदि का प्रयोग नहीं कर सकती हैं। वे दो, तीन या चार महीने में अपने सिर के बालों का लोंच करती हैं। मुनियों की वसतिका में आर्यिकाओं का रहना, लेटना, बैठना आदि वर्जित है।

मासिक धर्म की अवस्था में आर्यिकाएं तीन दिन तक मौन से रहती हैं तथा जिनमंदिर से अलग वसतिका में रहकर मानसिक रूप से महामंत्र का एवं बारह भावनाओं का चिंतन करती हैं। सामायिक, प्रतिक्रमण आदि भी केवल मन में चिन्तवन रूप से करती हैं। ओष्ठ, जिह्वा आदि न हिलने पाए, ऐसा मंत्र-स्तोत्रादि का चिंतन भी चलता है। वे इस अवस्था में किसी का स्पर्श भी नहीं करती हैं।

आचारसार ग्रंथ में वर्णन आया है—

ऋतौ स्नात्वा तु तुर्येन्हि, शुद्धंत्यरसभुक्तयः।
कृत्वा त्रिरात्रमेकांतरं वा सज्जपसंयुताः।।90।।

अर्थात् रजस्वला अवस्था में तीन दिनों तक यदि उपवास की शक्ति नहीं है तो छहों रस का त्याग कर नीरस आहार करती हैं तथा चौथे दिन कोई श्राविका इन्हें गरम जल से स्नान करा देती है, तब वह आर्यिका शुद्ध होकर अपनी गणिनी के पास जाकर प्रायश्चित्त ग्रहण करती हैं।

यह तो पहले बताया ही जा चुका है कि आर्यिकाएं बैठकर करपात्र में भोजन ग्रहण करती हैं। आर्यिकाएं उपचार से महाव्रती होती हैं और वे पंचम गुणस्थान से ऊपर नहीं जा सकती हैं तथापि चतुर्विध संघ में मुनियों के बाद आर्यिका की पदवी मानी जाती है। ऐलक और क्षुल्लक दीक्षा में उनसे प्राचीन भी क्यों न हों, फिर भी वे आर्यिकाओं को "वंदामि" कहकर नमस्कार करते हैं और आर्यिकाएँ उन्हें "समाधिरस्तु" आशीर्वाद प्रदान करती हैं। गुणस्थान व्यवस्था तीनों की एक सदृश है, फिर भी कर्मनिर्जरा क्षुल्लक-ऐलक की अपेक्षा आर्यिका की अधिक होती है चूँकि वे एक साड़ी धारण करती हुई भी मुनियों के समान अट्ठाईस मूलगुणों का पालन करती हैं।

आहार विधि— चतुर्विध संघ की क्रम परम्परा में आहारचर्या के लिए आर्यिकाएँ मुनियों के पश्चात् क्रमपूर्वक निकलती हैं। श्रावक-श्राविकाएँ अपने-अपने चौके के सामने उनका पड़गाहन करते हैं।

हे माताजी! वंदामि-वंदामि, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ, आहार जल शुद्ध है। इतना बोलने पर जब एक-दो आदि आर्यिकाएँ वहाँ खड़ी हो जाती हैं, तब दातार उनकी प्रदक्षिणा लगाकर उन्हें चौके में ले जाते हैं और स्वच्छ पाटे पर बैठने के लिए निवेदन करते हैं कि माताजी! उच्चासन पर विराजिए। पुनः आसन ग्रहण कर लेने पर उनके चरण प्रक्षालन करके गंधोदक मस्तक पर चढ़ाते हैं और अष्टद्रव्य से पूजा करके नमस्कार करते हैं।

इसके पश्चात् थाली में भोजन परोसकर और जल, दूध आदि सामने लाकर दिखाती हैं। आर्यिका माताजी का जो कुछ त्याग होता है, वे उसे निकलवा देती हैं, तब दातार शुद्धि बोलकर आहार शुरू करवाते हैं।

यह नवधाभक्ति की प्रक्रिया है। जैसा कि आचार्यों ने कहा भी है—

पडिगहमुच्चट्ठाणं पादोदयमच्चणं च पणमं च।
मणवयणकाय सुद्धी एसणसुद्धी य णवविहं पुण्णं।।

आहार के काल में श्रावकों के द्वारा यह नवधाभक्ति करनी आवश्यक होती है। जैसा कि चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की संघ परम्परा में चला आ रहा है। यदि यह पूरी नवधाभक्ति चौके में नहीं होती है तो आर्यिकाएँ बिना आहार किए ही चौके से वापस आ जाती हैं। इस प्रकार से नवधाभक्ति होने के बाद, आहार शुरू करने से पूर्व, आर्यिका माताजी हाथ धोकर प्रत्याख्यान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निष्ठापन क्रियापूर्वक सिद्धभक्ति करती हैं। जैसे— 'नमोस्तु आहार प्रत्याख्यान निष्ठापन क्रियायां सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं" बोलकर 9 बार णमोकार मंत्र पढ़कर लघु सिद्धभक्ति और अंचलिका पढ़कर हाथ की अंजुलि बनाती हैं, जिसमें दातार सर्वप्रथम गरम प्रासुक जल देते हैं पुनः भोजन, दूध आदि क्रमपूर्वक देते हैं। यदि किसी रोग के निमित्त से औषधि आदि की आवश्यकता होती है तो श्रावक उसी समय शुद्ध प्रासुक दवा भी दे देते हैं। आहार पूरा होने के बाद हाथ धोकर, कुल्ला करके वहीं पर लघु सिद्धभक्तिपूर्वक प्रत्याख्यान ग्रहण कर लेती हैं और कमण्डलु में जल भराकर वहाँ से आ जाती हैं। साथ में श्रावक-श्राविका उनके स्थान तक पहुँचाने के लिए उनके साथ भी आते हैं।

वे आर्यिका जी आहार से वापस आकर अपनी गणिनी के पास पुनः प्रत्याख्यान— अगले दिन आहार ग्रहण करने तक चतुराहार का त्याग कर देती हैं।

चौके में पहुँचकर प्रत्याख्यान निष्ठापन करने तथा आहार के बाद चौके में प्रत्याख्यान प्रतिष्ठापन एवं उसके पश्चात् गुरु के पास आकर प्रत्याख्यान ग्रहण करने की यह समस्त विधि आचारसार, अनगारधर्मामृत आदि ग्रंथों में वर्णित है। कोई-कोई साधु और आर्यिकाएँ आहारचर्या से पूर्व मंदिर में या गुरु के पास ही सिद्धभक्तिपूर्वक प्रत्याख्यान निष्ठापन कर लेते हैं पुनः आहार को जाते हैं, सो ठीक नहीं है क्योंकि अनगारधर्मामृत और आचारसार में स्पष्ट कहा है—

1."हेयं-त्याज्यं साधुना। निष्ठाप्यमित्यर्थः। किं तत्? प्रत्याख्यानादि-प्रत्याख्यानमुपोषितं वा। क्व? अशनादौ-भोजनारंभे। कया? सिद्धभक्त्या। किं विशिष्ट्या? लघ्व्या।" (अनगारधर्मामृत मूलप्रति पृ. 649)

2. आत्मोचितासनासीनो दातृप्रक्षालितक्रमः।
ऊर्ध्वाधःपार्श्वदिक्कोणनिक्षेपानिरीक्षणः।।118।।
वर्णी पूर्णप्रतिज्ञोऽथ सिद्धभक्तिं विधाय तत्।
प्रत्याख्यानं विनिष्ठाप्य प्रेरितो भक्तदातृभिः।।119।। (आचारसार पृ. 134)

इसी प्रकार से इन ग्रंथों में मुनियों के लिए आहार के पश्चात् चौके में और पुनः गुरु के पास आकर प्रत्याख्यान ग्रहण करने का भी खुलासा है। वही सम्पूर्ण विधि आर्यिकाओं को भी सावधानीपूर्वक पालन करनी होती है। यथा—

"आदेयं च-लघ्व्या सिद्धभक्त्या प्रतिष्ठाप्यं साधुना। किं तत्? प्रत्याख्यानादि। क्व? अंते प्रक्रमाद् भोजनस्यैव प्रान्ते। कथं? आशु-शीघ्रं भोजनांतरमेव। आचार्यासन्निधावेतद्विधेयं।"

सूरौ-आचार्यसमीपे पुनर्ग्राह्यं प्रतिष्ठाप्यं साधुना। किं तत्? प्रत्याख्यानादि। कया? लघ्व्या सिद्धभक्त्या......... लघुयोगिभक्त्यधिकया। तथा वंद्यः साधुना। कोऽसौ? स सूरिः। कया? सूरिभक्त्या। किंविशिष्ट्या? लघ्व्या।

(अनगार मूल प्रति पृ. 649)

अर्थात् इसका अभिप्राय यह है कि भोजन के अनंतर शीघ्र ही लघु सिद्धभक्तिपूर्वक साधु या आर्यिका प्रत्याख्यान अथवा उपवास ग्रहण कर लेते हैं। यह विधि वहीं चौके में की जाती है पुनः आचार्य के पास आकर लघु सिद्धभक्ति और लघुयोगिभक्ति बोलकर पुनरपि गुरु के पास प्रत्याख्यान या उपवास ग्रहण करके लघु आचार्यभक्ति द्वारा आचार्य की वंदना की जाती है।

शंका— जब गुरु के पास प्रत्याख्यान आवश्यक है तो चौके में साधु प्रत्याख्यान क्यों ग्रहण कर लेते हैं?

समाधान— यदि चौके से अपनी वसतिका में गुरु के पास आते हुए मार्ग में मरण भी हो जाये तो वह प्रत्याख्यानपूर्वक होगा, इसलिए चौके में भी प्रत्याख्यान ग्रहण किया जाता है।

इसी प्रकार से चौके में नवधाभक्ति के बाद ही सिद्धभक्तिपूर्वक प्रत्याख्यान निष्ठापना करने का हेतु भी अनगारधर्मामृत में दिया है कि—

"आहार के लिए साधु यदि निकल चुके हैं और किसी कारणवश किसी ने पड़गाहन नहीं किया या कुछ अन्य कारण से वे वापस अपनी वसतिका में आ जाते हैं तो पुनः उस दिन आहार के लिए नहीं जाते हैं— उपवास करते हैं। अतः तात्पर्य यह निकलता है कि आर्यिकाओं को भी प्रत्याख्यान की निष्ठापना चौके में नवधाभक्ति के बाद ही करनी चाहिए।

आहार के 46 दोष— श्रावक और साधु दोनों के निमित्त से आहार में कुछ दोषों की संभावना होती है। उन दोषों को टालकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आहार करना आहारशुद्धि कहलाती है। उद्गम दोष, उत्पादन दोष, एषणा दोष, संयोजना दोष, प्रमाण दोष, इंगाल दोष, धूम दोष और कारण दोष इन आठ दोषों से रहित आहार शुद्धि होती है। दातार के निमित्त से हुए दोष उद्गम दोष हैं। साधु के द्वारा आहार में हुए दोष उत्पादन संज्ञक हैं। भोजन संबंधी दोष एषणा दोष हैं। संयोग से होने वाला संयोजना दोष है। प्रमाण से अधिक आहार लेना प्रमाण दोष है। लंपटतापूर्वक आहार लेना इंगाल दोष है। दातार की या भोजन की निंदा करके आहार लेना धूम दोष है और विरुद्ध कारणों से बना हुआ आहार लेना कारण दोष है।

इनमें से उद्गम के 16, उत्पादन के 16, एषणा के 10 तथा संयोजना, प्रमाण, इंगाल और धूम ये 46 दोष होते हैं, जिनका विशेष वर्णन चरणानुयोग के ग्रंथ मूलाचार आदि से जानना चाहिए।

इन सबसे अतिरिक्त एक अधःकर्म दोष है, जो महादोष कहलाता है। इसमें कूटना, पीसना, रसोई करना, पानी भरना और झाडू लगाना ऐसे पंचसूना नाम के आरंभ से षट्कायिक जीवों की विराधना होने से यह दोष गृहस्थाश्रित है। इसको करने वाली आर्यिका वास्तव में आर्यिका नहीं मानी जाती है। यह बात निश्चित है कि गणिनी आर्यिका के संघ में या चतुर्विध संघ में रहने वाली आर्यिकाओं में इस दोष की संभावना कथमपि नहीं रहती है। हाँ! एकाकी विचरण करने वाली आर्यिका या साधु में यह दोष कदाचित् संभव हो सकते हैं। इसीलिए कुंदकुंद स्वामी ने आज्ञा दी है—

''मा भूद मे सत्तु एगागी'' अर्थात् इस पंचमकाल में मेरा कोई शत्रु साधु भी एकाकी विचरण न करे क्योंकि एकलविहार में और भी कई दोष लगने का भय रहता है। स्त्रीपर्याय होने के नाते आर्यिकाओं को हमेशा समूह बनाकर ही रहना चाहिए ताकि समस्तचर्या का निर्बाध रूप से पालन हो सके।

आर्यिकाओं की 13 क्रियाएं कौन-कौन सी हैं? छह आवश्यक क्रियाएँ, पंचपरमगुरु की वंदना तथा असही-निसही ये तेरह क्रियाएँ आर्यिकाएँ प्रतिदिन करती हैं। इनमें से आवश्यक क्रियाओं का वर्णन तो पहले किया जा चुका है, ऐसे ही पृथक्-पृथक् या एक साथ पंचपरमेष्ठी की वंदना भी की जाती है। असही और निसही का मतलब यह है कि वसतिका से बाहर जाते समय आर्यिकाएं नौ बार 'असही' शब्द का उच्चारण करती हैं तथा वसतिका में प्रवेश करते समय नौ बार 'निसही' शब्द का उच्चारण करती हैं।

आर्यिकाएँ अपनी आवश्यक क्रियाओं का पालन करते हुए शेष समय निरन्तर शास्त्र स्वाध्याय, अध्ययन-अध्यापन में लगाती हैं। वे सूत्र ग्रंथों का भी अध्ययन कर सकती हैं। जैसा कि आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने मूलाचार ग्रंथ में स्पष्ट किया है—

'अस्वाध्याय काल में मुनि और आर्यिकाओं को सूत्रग्रंथों का अध्ययन नहीं करना चाहिए किन्तु साधारण अन्य ग्रंथ अस्वाध्याय काल में भी पढ़ सकते हैं।' इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि आर्यिकाएँ भी स्वाध्यायकाल में सिद्धांत ग्रंथों को पढ़ सकती हैं।

दूसरी बात यह है कि आर्यिकाएँ द्वादशांग श्रुत के अन्तर्गत ग्यारह अंगों को भी धारण कर सकती हैं, जैसा कि हरिवंशपुराण में कथन आया है—

द्वादशांगधरो जातः क्षिप्रं मेघेश्वरो गणी।
एकादशांगभृज्जाता सार्यिकापि सुलोचना।।

अर्थात् मेघेश्वर जयकुमार शीघ्र ही द्वादशांग के पाठी होकर भगवान के गणधर हो गये और आर्यिका सुलोचना भी ग्यारह अंगों की धारक हो गईं।

वर्तमान में दिगम्बर सम्प्रदाय में ग्यारह अंग और चौदह पूर्व की उपलब्धि नहीं है, उनका अंश मात्र उपलब्ध है अतः उन्हीं का अध्ययन करना चाहिए।

दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के अनुसार साध्वियों के दो भेद हैं— आर्यिका और क्षुल्लिका। अभी तक संक्षेप में आर्यिका का स्वरूप बतलाया है, कुछ श्राविकाओं की आर्यिका दीक्षा के पूर्व क्षुल्लिका दीक्षा भी लेने की परम्परा रही है अतः उनकी क्रियाओं के बारे में भी संक्षेप में यहाँ वर्णन है— क्षुल्लिकाएँ ग्यारह प्रतिमा के व्रतों को धारण कर दो धोती और दो दुपट्टे का परिग्रह रखती हैं। इनकी समस्त चर्या क्षुल्लक के सदृश होती है। ये केशलोंच करती हैं अथवा कैंची से दो, तीन या चार महीने में सिर के केश निकालती हैं। ये भी आर्यिकाओं के पास में रहती हैं, उनके पीछे आहार को निकलकर पड़गाहन विधि से श्रावकों के यहाँ पात्र में भोजन ग्रहण करती हैं। इस प्रकार से स्त्रियों में साध्वीरूप में आर्यिका और क्षुल्लिका ये दो भेद ही होते हैं। दोनों के पास मयूर पिच्छिका रहती है। पहचान के लिए क्षुल्लिका के पास चादर रहती है और पीतल या स्टील का कमण्डलु रहता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीन ग्रंथों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि पूर्व में अधिकतर आर्यिकाएँ ही आर्यिका दीक्षा प्रदान करती थीं। तीर्थंकरों के समवसरण में भी जो आर्यिका सबसे पहले दीक्षित होती थीं, वे ही गणिनी के भार को संभालती थीं। तीर्थंकर देव के अतिरिक्त किन्हीं आचार्यों द्वारा आर्यिका दीक्षा देने के उदाहरण प्रायः कम मिलते हैं। इन आर्यिकाओं की दीक्षा के लिए जैनेश्वरी दीक्षा शब्द भी आया है। इन्हें महाव्रतपवित्रांगा भी कहा है और संयमिनी, संयतिका संज्ञा भी दी है।

जब आर्यिकाओं के व्रत को उपचार से महाव्रत कहा है और सल्लेखनाकाल में उपचार से निर्ग्रंथता का आरोपण किया है इसीलिए वे मुनियों के सदृश वंदनीय होती हैं, ऐसा समझकर आगम की मर्यादा को पालते हुए आर्यिकाओं की नवधाभक्ति करके उन्हें आहारदान देना चाहिए और समयानुसार यथोचित भक्ति करना, उन्हें पिच्छी-कमण्डलु, शास्त्र आदि दान भी देना चाहिए।

वर्तमान की आर्यिकाएँ—प्राचीनकाल में जैसे आर्यिकाएं, आचार्यों के संघ में भी रहती थीं और पृथक् भी आर्यिका संघ बनाकर विचरण करती थीं, उसी प्रकार वर्तमान में भी आचार्य श्री अभिनंदनसागर महाराज, आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज आदि बड़े-बड़े संघों में भी आर्यिकाएँ-क्षुल्लिकाएँ रहती हैं तथा गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी, गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी, गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी आदि अनेकों विदुषी आर्यिकाएँ अपने-अपने पृथक् संघों के साथ भी विचरण करती हुई धर्म की ध्वजा फहरा रही हैं।

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी वर्तमान में समस्त आर्यिकाओं में सर्वप्राचीन दीक्षित सबसे बड़ी आर्यिका हैं, जिन्होंने चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के दर्शन कर उनकी आज्ञा से उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा धारण कर 'ज्ञानमती' इस सार्थक नाम को प्राप्त किया है तथा शताब्दी के प्रथम आचार्य से लेकर अद्यावधि समस्त आचार्यों से अनुभव ज्ञान प्राप्त किया है।

संघ की सभी आर्यिकाएँ गणिनी आर्यिका के या किसी प्रमुख आर्यिका के अनुशासन में रहती हैं, प्रमुख आर्यिकाएँ उन्हें धर्म ग्रंथों का अध्ययन भी कराती हैं। इनके स्वाध्याय के लिए या लेखन कार्य के लिए ग्रंथ, स्याही, कलम, कागज आदि की व्यवस्था श्रावक-श्राविकाएँ करते हैं। वस्त्र फटने पर भक्तिपूर्वक उन्हें वस्त्र (सफेद साड़ी) प्रदान करते हैं। पिच्छी के लिए मयूर पंख लाकर देते हैं। आर्यिकाएँ भी अपने पद के अनुरूप साधुचर्या का पालन करती हैं, पद के विरुद्ध श्रावकोचित कार्यों को नहीं करती हैं, तभी उनकी आत्मा का कल्याण और स्त्रीलिंग का छेदन संभव हो पाता है। ध्यान, अध्ययन के साथ-साथ इस युग में भी महीने-महीने तक का उपवास करने वाली तपस्विनी आर्यिकाएं भी हो चुकी हैं। सन् 1971 के चातुर्मास में अजमेर नगरी में आचाय श्री धर्मसागर महाराज के संघ की आर्यिका श्री शांतिमती माताजी, आर्यिका श्री पद्मावती माताजी (ज्ञानमती माताजी की शिष्या) भादों के महीने में सोलहकारण के बत्तीस उपवास करते हुए उत्कृष्ट समाधि प्राप्त कर चुकी हैं, जिनके दर्शन करने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हो चुका है। इसी प्रकार से आठ-दस, सोलह आदि उपवास करने वाली आर्यिकाएँ आज भी विद्यमान हैं जो सम्यक्त्व सहित निर्दोष व्रतों का पालन करते हुए निश्चित ही स्त्रीपर्याय से छूटकर क्रम से देवपर्याय प्राप्त कर, वहाँ से आकर मनुष्य भव में निर्ग्रन्थ दीक्षा धारण कर मोक्ष प्राप्त करेंगी।

आर्यिकाओं की उत्कृष्ट चर्या चतुर्थकाल में ब्राह्मी, चंदना आदि माताएँ पालन करती थीं तथा पंचमकाल के अंत तक भी ऐसी चर्या का पालन करने वाली आर्यिका होती रहेंगी। जब पंचमकाल के अन्त में वीरांगज नाम के मुनिराज, सर्वश्री नाम की आर्यिका, अग्निदत्त श्रावक और पंगुश्री श्राविका इस प्रकार चतुर्विध संघ होगा, तब कल्की द्वारा मुनिराज के आहार का प्रथम ग्रास टैक्स के रूप में मांगने पर अन्तराय करके चतुर्विध संघ सल्लेखना धारण कर लेगा, तभी धर्म, अग्नि और राजा तीनों का अन्त हो जायेगा। अतः भगवान महावीर के शासन में आज तक अक्षुण्ण जैनशासन चला आ रहा है। मुनि- आर्यिकाओं की परम्परा भी इसी प्रकार से पंचमकाल के अन्त तक चलती रहेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी तो बेजोड़ हैं

लेखक-प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाश जैन, फिरोजाबाद

* जैसे रसों में इक्षुरस और नदियों में गंगा श्रेष्ठ है, वैसे ही कन्याओं में मैना श्रेष्ठ थी।
* जैसे पुष्पों में कमल और सुगंधित पदार्थों में चन्दन श्रेष्ठ है, वैसे ही क्षुल्लिकाओं में वीरमती श्रेष्ठ थीं।
* जैसे ताराओं में चन्द्रमा और वनों में नन्दनवन श्रेष्ठ है, वैसे ही ज्ञान और शील में आर्यिका ज्ञानमती श्रेष्ठ हैं।

एक ही असाधारण व्यक्तित्व की मैना से वीरमती और वीरमती से ज्ञानमती तक की यह आध्यात्मिक यात्रा 20वीं-21वीं सदी के इतिहास की एक उल्लेख्य घटना है। उनकी चर्चा और चर्या को देख-सुनकर कौन मुग्ध नहीं होता है! आचार्य श्री हेमचन्द्र ने ठीक ही लिखा है—**'जिस किसी समय में, जिस किसी रूप में, जो कोई जिस किसी नाम से प्रसिद्ध हो, यदि वह वीतराग पथ का पथिक है, तो वह त्रिकाल वंदनीय है।'**

जातक या जन्मकुण्डली के आधार पर पूज्य माताजी से आयु में हम भले ही छह माह बड़े हैं, किन्तु त्याग-तप-साधना और ज्ञान-सम्पादन में वह हमसे कितनी ज्येष्ठ और श्रेष्ठ हैं, इसे समय के पैमाने से नापना संभव नहीं है। उनकी प्रशस्त प्रेरणा से आयोजित धार्मिक प्रशिक्षण-शिविरों में सम्मिलित होकर अन्य अनेक विद्वानों की भाँति ही हमें भी जैन तत्त्वविद्या के पारायण की प्रेरणा मिलती रही है। वह जगत् की धर्मगुरु तो हैं ही, हमारी तो विद्यागुरु भी हैं। उनकी आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती पर हमारी यह विनयांजलि **'न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति'** की भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था की ही प्रतीक है।

➢स्वर्ण दीक्षा जयंती : एक दुर्लभ अवसर

आचार्य पूज्यपादस्वामी ने भव्य जीवों के लिए यह उपदेश दिया है—**'परोपकारमुत्सृज्य स्वोपकार परो भव'** अर्थात्-परोपकार की अपेक्षा स्वोपकार में लगना हितकर है। परोपकार की भावना के विकास के लिए शिक्षा और स्वोपकार की प्रेरणा प्राप्त करने के लिए दीक्षा आवश्यक है। शिक्षा व्यक्ति को बहिर्मुखी और दीक्षा अन्तर्मुखी बनाती है। एक से भोग और दूसरी से योग की ओर रुचि बढ़ती है। शिक्षा से इहलोक और दीक्षा से परलोक सुधरता है। जीवन में शिक्षा और दीक्षा दोनों की उपयोगिता है, परन्तु मुख्यता दीक्षा की ही है। कहा भी है—

आदहिदं कादव्वं, पदहिदं च कादव्वं।
आदहिद-पदहिदादो, सुट्ठु आदहिदं कादव्वं।।

गृहस्थ हो या विरक्त, दोनों के लिए आगम में स्वहितपूर्वक ही परहित की अनुमति दी गई है।

दीक्षा और प्रव्रज्या पर्यायवाची शब्द हैं। **'पवज्जा सव्वसंग परिचित्ता'** अर्थात् प्रव्रज्या या दीक्षा में पाप-मूल कहे गए सर्व परिग्रहों का त्याग करना होता है। परिग्रह-मुक्ति ही पाप-मुक्ति का हेतु है। महर्षि पुष्पदंत का कथन है—**'दीक्षां गृहणन्ति मनुजाः स्वकर्महरणाय च स्वपुण्यवृद्धये, केचित् संसृति मुक्तये'** अर्थात् दीक्षा ग्रहण करने से कर्म की हानि, पुण्य की वृद्धि एवं संस्कृति (पंचपरावर्तनरूप संसार) से मुक्ति प्राप्त होती है। देवगण भी दीक्षा के लिए तरसते रहते हैं, परन्तु अप्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय होने से वे उसे ग्रहण नहीं कर सकते। धन्य हैं वे पुण्यशाली जीव, जो दीक्षा ग्रहण कर देव-दुर्लभ अपनी मानव पर्याय को सफल और सार्थक बना लेते हैं।

शिक्षा तो कोई भी प्राप्त कर सकता है, किन्तु दीक्षार्थी तो विरले ही होते हैं। बाल्यकाल से ही जिनके परिणाम वैराग्योन्मुख होते हैं, उनकी संख्या तो उँगली के पोरों पर ही गणनीय है। पूज्य ज्ञानमती माताजी उन्हीं अत्यल्पों में से एक हैं, जिन्होंने सांसारिक या इन्द्रियजन्य सुखों के प्रति अरुचि के संस्कार माता की घुट्टी के साथ ही प्राप्त कर लिये थे। दीक्षा की अवधि जितनी-जितनी लम्बी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होती जाती है, उतनी-उतनी दीक्षित की गौरव-गरिमा बढ़ती जाती है। पूज्य माताजी का पचास वर्षों का दीक्षाकाल आज के भोग-प्रधान युग में किसी आश्चर्य से कम नहीं है। इस वर्ष वैशाख कृष्णा 2 (अप्रैल 15, 2006) को उनकी आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती निःसंदेह एक दुर्लभ अवसर है। सौभाग्यशाली हैं हम और हमारी पीढ़ी के वे सभी भक्तजन, जिनकी आँखों के सामने यह ऐतिहासिक प्रसंग उपस्थित हुआ है। जन-जन के मुख से इस समय एक ही ध्वनि निकल रही है—**'कुलं पवित्रं, जननी कृतार्था, वसुन्धरा पुण्यवती वभूव'**।

➢दीक्षा : एक नया जन्म

पक्षी और दाँत की तरह सन्त द्विजन्मा होता है। उसका पहला जन्म माता के गर्भ से होता है और दूसरा जन्म होता है आचार्य द्वारा प्रदत्त दीक्षा से। दीक्षा का अर्थ है-संसार, शरीर और भोगों से पूर्ण विरक्ति। साधु की दीक्षा तिथि ही उसकी वास्तविक जन्मतिथि है। दीक्षा के साथ ही पुरानी पर्याय का विसर्जन हो जाता है, नई पर्याय अस्तित्व में आ जाती है, नया नाम मिल जाता है, पुराना नाम छूट जाता है और बदल जाता है उसके सोच-विचार का ढंग। दीक्षा से पूर्व यह सुविधाभोगी होता है और दीक्षा के बाद उसके भीतर शुरू हो जाती है सुख की तलाश। क्षणभंगुर सुविधा और शाश्वत सुख के अंतर को वह समझने लगता है। **'मै रहूँ आप में आप लीन'** की दशा को वह प्राप्त हो जाता है। जो आत्मा का ध्यान करता है, वह शीघ्र ही सर्व दुःखों से मुक्त हो जाता है।

दीक्षा का पावन प्रसंग किसी भव्यात्मा के जीवन में किसी वरदान की प्राप्ति से कम महत्वपूर्ण नहीं है। वह परम पद की ओर ले जाने वाला एक असाधारण कदम है। जन्मजयंती का अर्थ तो होता है, पूर्व पर्याय (जो छूट गई है) का उत्सव, किन्तु दीक्षा जयंती तो वीतरागता और समता का महोत्सव है। किसी भी साधु या साध्वी की दीक्षा जयंती ही मनाई जानी चाहिए।

गणिनीप्रमुख पूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती के इस अवसर पर हम उनके वर्तमान को उनकी अतीत पर्याय के आलोक में समझने की कोशिश भी करेंगे ही, लेकिन महत्ता तो वर्तमान की ही सर्वोपरि है। किसी ने ठीक ही कहा है— **'वर्तमान में ही अतीत के बीज को अंकुरित करने और भविष्य के बीज को बोने की क्षमता है।'**

➢जीवनवृत्त : जन्म एवं नामकरण

अवध प्रान्त के टिकैतनगर कस्बे में दिनाँक 22 अक्टूबर 1934 को सुश्रावक श्री छोटेलाल जी के घर में एक कन्यारत्न ने जन्म लिया। रात्रि में सवा नौ बजे जिस समय उसने अपनी आँखें खोलीं, उस समय निरभ्र आकाश पर पूनों का चाँद अपनी निर्मल ज्योत्सना बिखेर रहा था। वह वि.सं. 1991 की शरदपूर्णिमा की रात्रि थी। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नवजात शिशु के भावी विकास में ग्रह, नक्षत्र, तिथि आदि का भी भारी प्रभाव पड़ना माना गया है। यों तो हर माह की पूर्णिमा को चन्द्रमा अपनी सोलह कलाओं के साथ खिलता ही है, किन्तु शरदपूर्णिमा की तो बात ही कुछ निराली है। गाँवों में आज भी यह माना जाता है कि शरदपूनों की चाँदनी में यदि घी-बूरा मिलाकर रख दिया जाये और उसका अल्प मात्रा में रोज सेवन किया जाये तो आँखों की रोशनी बढ़ जाती है। नेत्र-ज्योति को सुरक्षित बनाए रखने के लिए आज भी महिलाएँ चाँदनी रात में सुई में धागा पिरोने का अभ्यास करती हुई देखी जाती हैं। यह शरदपूर्णिमा यदि इस रात्रि में जन्मे नवजात शिशु के ज्ञाननेत्रोन्मीलन में निमित्त बन जाए तो इसमें आश्चर्य कैसा! शरदपूर्णिमा भारतीय संस्कृति में पर्व के रूप में मान्य है। इस दिन धर्मनिष्ठ लोग व्रत रखते हैं। पूर्णिमा का चाँद उजास (प्रकाश) का प्रतीक है। प्रकाश तो सूर्य में भी होता है, पर उसमें प्रखरता होती है। पूर्ण चन्द्र का प्रकाश शीतल होता है। इस दिन जन्मी इस बालिका को जब पूनों की चाँदनी ने नहलाया, तो इसके पीछे यही संकेत छिपा था कि यह बालिका बड़ी होकर सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश फैलायेगी और स्वयं महाव्रत अंगीकार कर सबको सुख-शीतलता प्रदान करेगी। अपनी प्रथम सन्तान के रूप में इस कन्या को जन्म देकर माता मोहिनीदेवी का मातृत्व गौरवान्वित हो गया।

भारत में अधिकांश लोग बेटे के जन्म पर खुशियाँ और बेटी के जन्म पर मातम मनाते हैं। यह खोटी परिपाटी कब से और क्यों चल पड़ी, यह तो भगवान जाने, परन्तु इस बेटी ने अपनी बालसुलभ किलकारियों और सस्मित मुख-छवि से अपने घर-आँगन में खुशियों की जो चाँदनी बिखेरी, तो बेटों पर गर्व करने वाले भी ठगे से रह गये। इस परिवार में बेटे-बेटियों के साथ कभी भेदभाव नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया गया। पूर्णमासी का चाँद भी शायद यही कहने आता है कि वह चाँदनी का अवदान देने में जिस तरह किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं करता, उसी प्रकार बेटा या बेटी के लालन-पालन में भी किसी को कभी कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए।

समय की सुई अविराम गति से घूम रही थी। उसने मोहिनीदेवी की इस लाड़ली को बढ़ने का अवसर दिया। जब भी कोई शिशु जन्म लेता है, वह धरती पर अनाम ही आता है। जीव तो सूक्ष्म है, उसे पहचाना नहीं जा सकता। किसी मनीषी ने कहा है— **'नवजात की पहचान के दो माध्यम हैं-रूप और नाम। रूप तो वह अव्यक्त जगत् से लेकर आता है और नाम व्यक्त जगत् में आने पर आरोपित किया जाता है।'** कुछ दिन बीतने पर कन्या के घरवालों ने भी इसकी पहचान के लिए शुभ मुहूर्त में इसका नामकरण संस्कार किया। नाम रखा गया—मैना। नाम मेंभी कुछ अव्यक्त संकेत छिपे होते हैं। कोई दूज को जन्म ले तो उसका नाम 'दौजी' रख देते हैं। किसी कल्याणक तिथि पर जन्मे बालक का नाम संबंधित तीर्थंकर के नाम पर रख दिया जाता है। भगवान महावीर के प्रचलित पाँचों नामों के पीछे भी कुछ संकेत निहित हैं। **मैना पक्षी के समान मधुर वाणी के कारण ही इस कन्या का नाम मैना रखा गया होगा।**

'मैना' नाम के पीछे कुछ आध्यात्मिक संकेत भी छिपे थे, अब हमें ऐसा लगता है। 'मैना' नाम 'मै' और 'ना' इन दो शब्दों से बना है। 'मै' का अर्थ है-अहंकार और ममकार। आत्म विकास में ये दोनों बाधक हैं। एक सन्त एवं एक जिज्ञासु के बीच हुआ वार्तालाप याद आ रहा है—

सन्त—'आर्य! तुमने सर्प की केंचुली को देखा है?'

जिज्ञासु—'हाँ, देखा है।'

सन्त—'केंचुली से क्या होता है?'

जिज्ञासु—'केंचुली आने पर सर्प अंधा हो जाता है।'

सन्त—'केंचुली के छूट जाने पर क्या होता है?'

जिज्ञासु—'वह देखने लग जाता है।'

सन्त ने उस जिज्ञासु को समझाया कि अहंकार और ममकार भी केंचुली के समान है। इनके रहते हुए मनुष्य अंधा हो जाता है, वह आत्मदर्शन नहीं कर सकता। 'मैना' का व्युत्पत्तिपरक अर्थ भी यही है कि जिसमें अहंकार और ममकार न हो, उसे कहते हैं-मैना। आज आयु के 72वें पायदान पर खड़ी मैना (सम्प्रति आर्यिका ज्ञानमती) ने अपने बचपन के नाम की सार्थकता सिद्ध कर दी है।

बचपन से पचपन तक माताजी का यही चिन्तन चलता रहा है—**'अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम'** अर्थात् मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, जो कुछ हो सो तुम्ही हो। मैं तो तुम्हारी शरण में हूँ। 'वीतरागस्तव 17/7' में भी भक्तकवि ने यही प्रार्थना की है—

एकोहं नास्ति मे कश्चिन्, न चाहमपि कस्यचित्।
त्वदंघ्रिशरणस्थस्य , मम दैन्यं न किंचन।

मैं अकेला हूँ। मेरा कोई नहीं है। मैं भी किसी का नही हूँ। फिर भी तुम्हारे चरण की शरण में स्थित हूँ, इसलिए मेरे मन में किंचित् भी दीनता नहीं है।

पूज्य माताजी ने अपने बचपन के नाम की सार्थकता इस अर्थ में भी सिद्ध की है कि वह घर की प्राचीर में कैद होकर नहीं रह सकीं, मैना पक्षी की तरह वैराग्य के मुक्त आकाश में विचरण कर रही हैं।

➢क्षयोपशम : खुलते गए ज्ञान के स्रोत

मैना बचपन से ही सौम्य, सुकुमार और शालीन तो थी ही, भव्यत्व भाव भी पूर्व जन्म के संस्कारों के प्रभाव से अपने साथ लेकर आई थी। यह भव्यत्व भाव उसी में प्रकट होता है, जिसमें ज्ञान की प्यास, सत्य-शोध की मनोवृत्ति, आत्मोपलब्धि का प्रयत्न और आन्तरिक अनुभूति की तड़प पाई जाती है। मैना में ये चारों ही गुणं जन्म से ही शनैः-शनैः विकसित होते हुए देखे जा रहे थे।

मैना के मन में हितकर वार्ता को सीखने और समझने की उत्कट ललक थी। उसका क्षयोपशम भी प्रबल था। जिस चर्चा को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कई-कई बार पढ़-सुनकर भी अन्य समवयस्क आत्मसात नहीं कर पाते थे, उसे वह एक-दो बार पढ़कर ही हृदयंगम कर लेती थी। अकलंक-निकलंक जैसा भाग्य पाया था उसने। वह कहती भी है—**'कई एक ग्रंथों को पढ़ते समय मुझे ऐसा लगता था कि मानों उसे मैंने पहले कभी पढ़ा है।'** मन की निर्मलता के लिए अध्ययन और मनन की ऐसी प्यास उतनी ही आवश्यक है, जितनी शरीर के स्वास्थ्य के लिए भोजन और व्यायाम की।

हमें यह तो ज्ञात नहीं है कि मैना की स्कूली शिक्षा किस स्तर तक हुई, किन्तु अपने अनुभव से हम यह कह सकते हैं कि भवितव्यता अच्छी हो, पूर्वजन्मार्जित पुण्य का उदय और स्वाध्याय की लगन हो, तो स्कूल में प्रवेश पाए बिना भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है। मैना प्रारंभ से ही प्रतिभा-सम्पन्न थी। बौद्धिक ज्ञानशक्ति की अपेक्षा उसकी अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति तीव्र थी। बौद्धिक ज्ञान से बड़ी-बड़ी उपाधियाँ, पद-पैसा-प्रभुत्व और मान-सम्मान तो मिल सकता है, किन्तु आत्म-वैभव नहीं। जिसकी आन्तरिक चेतना जाग्रत होती है, वही सत्यार्थ का प्रकाश प्राप्त कर अपने मोह, राग-द्वेष आदि से छुटकारा पा सकता है। जिससे आत्मा विशुद्ध हो, वही सच्चा ज्ञान है। मैना के ज्ञानार्जन की दिशा द्विमुखी थी, वह स्व-पर प्रकाशक थी। पर को जानकर स्व में लीन होते जाने की प्रवृत्ति ने ही मैना से ज्ञानमती होने तक का मार्ग प्रशस्त किया, यह मानने में संदेह के लिए कोई अवकाश नहीं है।

शास्त्रों में ज्ञानी को सम्बुद्ध भी कहा गया है और उसकी तीन कोटियाँ बताई गई हैं—**(1) स्वयंबुद्ध**—जो बिना किसी गुरु के स्वतः ज्ञान प्राप्त करता है **(2) प्रत्येक बुद्ध**—जो किसी निमित्त से ज्ञान प्राप्त करता है तथा **(3) उपदेशबुद्ध**—जो दूसरों के उपदेश से ज्ञान प्राप्त करता है। स्वयंबुद्ध तो तीर्थंकर होते हैं एवं शेष ज्ञानी दूसरी और तीसरी कोटि में गणनीय हैं। ज्ञान तो आत्मा की ज्योति है, वह भीतर से प्रकट होती है। विद्या बाहर की विभूति है, उसे अर्जित किया जाता है। ज्ञान उपादान है और उसकी जागृति में पारिवारिक वातावरण, गुरु, पुस्तक आदि निमित्त हैं। मैना या माताजी का उपादान जाग्रत था, इसलिए अनुकूल निमित्त पाकर और उपदेश सुनकर उनका ज्ञान निरन्तर वृद्धिंगत होता रहा। जिस प्रकार योग्य पाषाण-खण्ड में मूर्ति तो पहले से ही विद्यमान रहती है, एक कुशल कारीगर व्यर्थ के (फालतू) पाषाण-कणों को अपनी पैनी छैनी से काट-छाँटकर अलग कर देता है और मूर्ति प्रकट हो जाती है, उसी प्रकार मैना की उपादान शक्ति में ज्ञान तो पहले से ही मौजूद था, निमित्त-शिल्पी ने क्षयोपशम की छैनी का अवलम्ब पाकर अवरोधक कर्म को पृथक् कर दिया और ज्ञान के बंद स्रोत खुलते चले गये।

➢कैसे हुआ ज्ञान का विकास!

मैना के ज्ञान का विकास उसकी स्वतःस्फूर्त प्रेरणा का परिणाम है। प्रारंभिक शिक्षा यद्यपि उसने किसी धार्मिक पाठशाला में प्राप्त की थी, किन्तु वह युग स्त्री-शिक्षा की उपेक्षा का युग था। उस समय के अभिभावकों की अपनी-अपनी कन्याओं को अधिक पढ़ाने में विशेष रुचि नहीं थी। कस्बे की अन्य कन्याओं की तरह मैना को भी आगे पढ़ाई जारी रखने से रोक लिया गया, किन्तु मनस्वी मैना को किसी वैशाखी की जरूरत ही कहाँ थी! उसने घर पर ही पढ़ना जारी रखा। कभी सीता और राजुल के बारहमासा पढ़ती तो कभी बारहभावना, वैराग्य भावना, ज्ञानपचीसी और स्तुतियाँ आदि। घर में रहते हुए जब गेहूँ-चावल बीनती-शोधती या अन्य काम कर रही होती, तो पाठ भी याद करती रहती। जिसके मन में पढ़ने की ऐसी धुन सवार हो, उसे सम्बुद्ध बनने से रोकने की शक्ति किसमें हैं?

एक चरन हू नित पढ़ै तो काटै अज्ञान।
पनिहारी की लेज सों सहज कटै पाषाण।।

आठ वर्ष की उम्र से ही मैना अपनी माँ के साथ नियमित रूप से मंदिर जाने लगी थी। वहाँ बैठकर अन्य लड़कियाँ जहाँ गपशप में लीन रहतीं, वहाँ मैना मनोयोग से शास्त्र-चर्चा सुनती। उसके ज्ञानवर्धन में शास्त्र-श्रवण भी एक बलवान निमित्त रहा।

जब मैना ने दीक्षा ग्रहण कर ली, तो उन्हें पूज्य आचार्य श्री देशभूषण महाराज, आचार्यश्री शान्तिसागर महाराज एवं आचार्यश्री वीरसागर महाराज के उपदेश श्रवण और तत्त्वचर्चा का सौभाग्य मिलने लगा। वहाँ यथावसर वह स्वयं भी पढ़ती और गुरु-आज्ञा से संघस्थ सभी साधुओं और आर्यिकाओं को भी पढ़ाती। प्रत्युत्पन्नमति और अभीक्ष्णज्ञान-साधक तो वह वह थी ही, स्वयं पढ़ने और दूसरों को पढ़ाते रहने से उसकी मति पैनी होती गई। ज्यों-ज्यों ज्ञान का व्यय करते हैं, त्यों-त्यों ज्ञान बढ़ता है। धीरे-धीरे चारों ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुयोगों के सभी उच्च कोटि के सिद्धान्त एवं आगम ग्रंथों का तलस्पर्शी पाण्डित्य उसने प्राप्त कर लिया। आज वह वैदुष्य के जिस शिखर पर बैठी है, वहाँ तक पहुँचने में हम जैसे छद्मस्थों और 'पण्डित' नामधारियों को अभी कई जन्म लेने पड़ सकते हैं।

➢वैराग्योन्मुख जीवन : नैसर्गिक विरक्ति

'ज्ञानं तृतीयं पुरुषस्य नेत्रं'-जिसे दोनों चर्मचक्षुओं से देखना संभव नहीं है, उसे तीसरे ज्ञानचक्षु से देखा जा सकता है। भेदज्ञान या विवेक को ही तृतीय नेत्र कहा गया है। प्रकारान्तर से यही सम्यग्ज्ञान है। मैना ने शास्त्र-सभा में पण्डित जी के मुख से सुना था-'आत्मा में अनन्त शक्ति है।' यह एक छोटा सा वाक्य ही मैना के हृदय-परिवर्तन या वैराग्योदय में बीज मंत्र बन गया। उस अनन्त शक्ति को प्रकट करने की चाह उसके मन में उत्पन्न हो गई। उसके जीवन-प्रवाह में एक अद्भुत मोड़ आ गया। लौकिक वासनाओं के प्रति विरक्ति का भाव बढ़ने लगा। ज्ञान का फल उपेक्षा या उदासीनता है, आचार्यों की इस देशना का मर्म उसकी समझ में आने लगा। यह एक प्रकार की वैचारिक क्रान्ति थी, जिसका स्फुरण अन्तरंग से हुआ था। जो बदलाव किसी के प्रभाव या दबाव में होता है, वह तो छूट सकता है किन्तु नैसर्गिक विरक्ति में स्थायित्व होता है। ऐसी विरक्ति सम्यग्ज्ञानियों को ही सुलभ होती है।

वही प्राणी वैराग्योन्मुख होता है, जिसे यह ज्ञान है कि कोई भी विषय-वस्तु या व्यक्ति न तो सर्वतः अच्छा होता है और न बुरा। अच्छाई और बुराई का निवास लोगों की दृष्टि में है। कहावत भी है—**'जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि'**। जिसे यह ज्ञान हो जाता है, वह विषयों, पदार्थों या व्यक्तियों के प्रति मोह-ग्रस्त नहीं होता। उदाहरण के लिए लोग दहेज-प्रथा की जमकर बुराई करते हैं, लेकिन दहेज न स्वयं में अच्छा है और न बुरा। यदि सर्वथा बुरा होता तो लड़के वाले उसे चाहते क्यों और यदि सर्वथा अच्छा होता तो लड़की वाले उसे कोसते क्यों? दहेज के प्रति लोगों की समझ या दृष्टि में अन्तर है। एक दहेज तो ऐसा होता है, जो जीव के उद्धार में निमित्त बन जाता है और एक दहेज ऐसा होता है, जिसे पाने के लिए लोग पाप करने में भी नहीं हिचकते। सौभाग्यशाली मोहनीदेवी को उनके पिता (मैना के नाना) ने स्व ससुराल के लिए विदा करते समय एक धर्मग्रंथ **'पद्मनंदिपंचविंशतिका'** दहेज के रूप में अर्पित किया था। उसे पढ़कर मोहनीदेवी ने आगे चलकर आजीवन शीलव्रत एवं अष्टमी-चतुर्दशी को ब्रह्मचर्य का नियम ले लिया था। माँ की प्रेरणा से इसी ग्रंथ के 'शरीराष्टक' अध्याय को पढ़कर मैना का शरीर के प्रति ममत्व-भाव विलीन हो गया था। जिनकी दृष्टि निर्मल होती है, वे दहेज से शुभ का संचय करते हैं और जिनकी दृष्टि मलिन या राग-रंजित होती हैं, वे उससे अशुभ का सम्पादन कर लेते हैं। मोहनी और मैना के कल्याण का साधन बन गया-पिता द्वारा मोहिनी को प्राप्त दहेज। यह दोनों की वैराग्योन्मुख दृष्टि का परिणाम था। रागियों के लिए माँग कर लिया हुआ दहेज (धन-सम्पत्ति और भोग्य सामग्री) हमेशा संसारवर्धक ही होती है। किसी ने ठीक ही कहा है—

चिन्ता न कर उदय की, बन वीतराग।
होगा न बंध तब लौं, जो लौं न राग।।

दृष्टि को निर्मल बनाना ही ज्ञान का फल है। मलिनता आती है राग और द्वेष से। ज्ञान-ध्यान और स्वाध्याय उसी का सार्थक है, जिनकी दृष्टि के विकार क्षीण हो जाते हैं। आचार्य कह रहे हैं-

परं ज्ञानफलं वृत्तं, न विभूतिर्गरीयसी।
तथा हि वर्धते कर्म, सद्वृत्तेन विमुच्यते।।

अर्थात् ज्ञान का उत्कृष्ट फल चारित्र है, प्रचुर विभूति (धन-कन-कंचन आदि) नहीं। बाहरी विभूति से कर्म बँधते हैं और चारित्र से वे नष्ट हो जाते हैं। धन्य हैं वे लोग, जिन्हें ज्ञान का अपच नहीं होता।

➢संयम-पथ पर बढ़ते कदम

प्रायः यह कहा जाता है कि स्त्री कमजोर होती है और पुरुष ताकतवर। राष्ट्रकवि गुप्त ने भी स्त्री को **'अबला'** कहकर सम्बोधित किया है और उसकी कहानी को **'आँचल में दूध और आँखों में पानी'** तक समेट कर रख दिया है। पहले स्त्रियों की दशा थी भी ऐसी ही, किन्तु अब स्थितियाँ बदल रही हैं। एक दार्शनिक से जब इस संदर्भ में पूछा गया तो उसने बड़ा ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सटीक उत्तर दिया। उसने कहा— 'एक दृष्टि से पुरुष ताकतवर है, क्योंकि उसमें मस्कुलर ताकत ज्यादा है। वह ज्यादा बड़ा पत्थर उठा सकता है। एक दृष्टि से स्त्री ज्यादा ताकतवर है, क्योंकि वह ज्यादा पीड़ा झेल सकती है। पुरुष में तर्क करने की क्षमता अधिक है, तो भावना की क्षमता स्त्रियों में अधिक है। वे ज्यादा संवेदनशील होती हैं, ज्यादा प्रेम कर सकती हैं, ज्यादा अनुभूतिपूर्ण हो सकती हैं। भविष्य अब स्त्रियों का उज्ज्वल है, क्योंकि मसल्स का काम तो अब मशीन करने लगी है। पत्थर को क्रेन उठा देती है, लकड़ी को आरा मशीन काट देती है। गुणा-भाग और जोड़-बाकी का काम कैल्कुलेटर बेहतर ढंग से करने लगा है। पुरुष की मसल्स की ताकत धीरे-धीरे बेमानी होती जा रही है, परन्तु प्रेम और संवेदना का काम मशीन नहीं कर सकती है। जिन्दगी की प्रयोगशाला में बुद्धि का उतना महत्व नहीं, जितना हृदय का है। हार्दिकता स्त्रियों में अधिक है, इसलिए उनका भविष्य अच्छा दिखाई दे रहा है।'

आर्यिका ज्ञानमती जी आज इस बढ़ती मातृशक्ति की प्रतीक बन गई हैं। पर-कल्याण आसान है, आत्मकल्याण कठिन है। उसके लिए अधिक साहस जुटाना पड़ता है, अधिक शक्ति लगानी पड़ती है। बचपन से ही वैराग्योन्मुख मैना ने संयम-पथ पर उत्तरोत्तर अपने कदम बढ़ाकर मातृशक्ति को महिमा-मण्डित किया है। गत दो-ढाई दशकों में आर्यिका दीक्षा अंगीकार कर आत्मकल्याण को आतुर स्त्रियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, इसका श्रेय मैना की प्रशस्त पहल को ही दिया जायेगा। इस युग की वह वरिष्ठ आर्यिका हैं।

'संयम-पथ पर क्रमपूर्वक आरोहण करने से पतन का भय नहीं रहता'—अपने परम्परा-गुरु पूज्य आचार्यश्री शान्तिसागर जी महाराज की यह सीख सदैव मैना के ध्यान में रहती थी। स्वाध्याय करते समय छोटी-छोटी बातों का भी उस पर गहरा प्रभाव पड़ता था। एक बार तपे हुए घी में चीटिंयाँ देखकर उसने बाजार के घी का त्याग कर दिया था। बाल्यावस्था में ही शीलकथा पढ़कर उसने जिनेन्द्र भगवान की साक्षी में शीलव्रत ग्रहण कर लिया था। हर माता-पिता कन्या के सयानी होने पर उसका विवाह करना चाहते हैं, परन्तु मैना ने तो विवाह-बंधन में न फँसने का निश्चय बचपन में ही अकलंक-निकलंक नाटक देखकर कर लिया था। **'मेरी स्मृतियाँ'** में माताजी ने इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए लिखा है—

'उस लघु वय में ही एक बार पाठशाला में लड़कों ने 'अकलंक-निकलंक' नाटक खेला था, जिसमें अकलंक और उनके पिता के संवाद में अकलंक ने एक पंक्ति कही-**'प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरं'**। कीचड़ में पैर रखकर धोने की अपेक्षा कीचड़ में पैर नहीं रखना ही अच्छा है, वैसे ही विवाह करके पुनः छोड़कर दीक्षा लेने की अपेक्षा विवाह नहीं करना ही उत्तम है। यह पंक्ति मेरे हृदय में पूर्णतया उतर गई, उसी क्षण से लेकर मैं हमेशा सोचती रहती तथा यह पंक्ति मन में रहा करती।'

रत्नाकर कवि ने ठीक ही लिखा है कि ज्ञान शास्त्रों में नहीं, आत्मा में है, वह व्यक्त होना चाहिए आचरण से। संसार में ऐसे लोग बहुत हैं, जो अनेक शास्त्र पढ़ते हैं। उलटते-पलटते उनके पन्ने जीर्ण हो जाते हैं, किन्तु मन के कोने में छिपी वासना के संस्कार जीर्ण नहीं होते।

मैना पढ़ती ही नहीं थी, मनन भी करती थी और मनन के बाद जो सही जँचता, उसे आचरण में उतार लेती थी। विवाह के लिए उस पर पिता-माता, चाचा-ताऊ आदि ने बहुत जोर डाला, पर वह तो पहले ही अपनी माँ के समक्ष अपने भाव व्यक्त कर चुकी थी—**'मैं कथमपि संसार बंधन में नहीं फँसना चाहती हूँ, मैंने गृह-त्याग का पूर्ण निर्णय कर लिया है। मुझे अपनी आत्मा का कल्याण करना है। यह मनुष्य भव यूँ ही व्यर्थ नहीं खोना है।'** परिजनों ने विचार बदलने और विवाह के लिए सहमत करने के लिए हर तरह से फुसलाया, पर वह अपने इरादे से टस से मस नहीं हुई।

टिकैतनगर अवध का ही एक भू भाग है, जहाँ अंतिम कुलकर नाभिराय हुए, प्रथम तीर्थंकर आदिप्रभु ने जन्म लिया, उनकी दोनों पुत्रियों ब्राह्मी और सुन्दरी ने संसार-चक्र में फँसना स्वीकार नहीं किया। भव्यात्माओं पर भूमि का प्रभाव तो पड़ता ही है, फिर मैना ही उसकें प्रभाव से कैसे अछूती रह पाती!

कन्या के जन्मते ही उसके पिता को कन्या के विवाह की चिन्ता लग जाती है। उसकी मनोदशा का चित्रण करते हुए महाकवि कालिदास ने लिखा है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जातेति कन्या महतीहि चिन्ता,
कस्मै प्रदेयेति महान् वितर्कः।
दत्ता सुखं प्राप्स्यति वा नवेति,
कन्या पितृत्वं खलु नाम कष्टः।।

अर्थात्-कन्या के जन्म लेते ही पिता को बड़ी भारी चिंता लग जाती है कि बड़ी होने पर इसका विवाह किसके साथ करेंगे! जिस घर में इसे देंगे, वहाँ यह सुखी रहेगी या नहीं, इस प्रकार का तर्क-वितर्क होने लगता है। कन्या का पिता होना सचमुच कष्ट की बात है।

स्त्री जाति को सदियों से पराधीन बनाकर रखा गया है। उपन्यासकार आनन्दशंकर माधवन ने उसकी पराधीनता पर व्यंग्य करते हुए लिखा था-'स्त्री तो गाय के समान है। जिस प्रकार गाय को उसका मालिक जिस खूँटे पर बांध देता है, उसे उसी खूँटे पर बँधकर रहना पड़ता है, उसी प्रकार की दशा स्त्री की है। वह भी जीवन भर चाहते हुए या न चाहते हुए पति की अनुगामिनी बनी रहने को विवश है।

मैना का इरादा चूँकि आत्मस्वातन्त्र्य-समर का योद्धा बनने का था, इसलिए वह किसी खूँटे से बँधना कैसे स्वीकार कर सकती थी! किसी के हड़काने और फुसलाने में न आकर **'स्त्री-मुक्ति की पुरोधा'** के रूप में उसने इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करा लिया है। महापुराण में ठीक ही कहा गया है—**'क्रियासिद्धि सत्वे, वसति महतां नोपकरणे'** अर्थात् महान् लोग अपनी दृढ़ता से ही कार्य सिद्ध करते हैं, दूसरों के आश्रय से नहीं। इसी का नाम आत्मस्वातन्त्र्य है।

संयम-पथ की इस बड़ी बाधा के टल जाने पर मैना के कदम तेजी से आगे बढ़ने लगे। पूज्य आर्यिका चंदनामती माताजी (गृहस्थावस्था की उनकी छोटी बहन) के शब्दों में उसके आत्म-विकास की इस यात्रा की कहानी संक्षेप में इस प्रकार है-

'पिता छोटेलाल और माता मोहिनी के मातृत्व को धन्य करने वाली उस 'मैना' नाम की कन्या ने अट्ठारह वर्ष की अल्प आयु में सन् 1952 में अपनी जन्मतिथि शरदपूर्णिमा को भारत-गौरव आचार्यरत्न श्री देशभूषण महाराज से सप्तम प्रतिमा रूप आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर घर का त्याग कर दिया। पुनः सन् 1953 में चैत्र कृष्णा एकम् को श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर क्षुल्लिका-दीक्षा ग्रहण कर 'वीरमती' नाम पाया। 'वीरमती' के रूप में उन्होंने तीन चातुर्मास सम्पन्न किए। पुनः चारित्र-चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के आदेशानुसार उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज से वैशाख कृष्णा 2 (सन् 1956) को आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया।"

आज **'युग की प्रथम बाल सती'**, **'शिष्याओं की उद्धारिका'**, **'अनेक मुनियों की शिक्षागुरु'**, **'अप्रतिम साहित्य-सर्जक'**, **'कल्याणक भूमियों के विकास की सूत्रधार'**, **'तीर्थ-प्रहरी'** आदि अनेकानेक विरुदों से ख्याति-प्राप्त गणिनीप्रमुख पूज्य ज्ञानमती की कीर्ति-कौमुदी भारत में ही नही, भारत से बाहर भी फैल चुकी है। पूज्य आचार्य शांतिसागर जी महाराज शिष्याओं पर इनके अनुग्रह और वात्सल्य को देखकर इन्हें **'उत्तर की अम्मा'** कहकर सम्बोधित करते थे। आचार्य वीरसागर जी महाराज के संघस्थ साधुओं को इनके भीतर **'साक्षात् सरस्वती'** के दर्शन होते थे। यथार्थ में पूज्य ज्ञानमती माताजी तो अनुपमेय हैं, उनके गौरव के सामने सभी विशेषण फीके दिखाई देते हैं।

दीक्षा प्रदान करते समय माताजी के दीक्षा गुरु ने उनसे कहा था—**'ज्ञानमती जी! मैंने जो तुम्हारा नाम रखा है, उसका सदैव ध्यान रखना।'** माताजी ने इस गुरु-वचन को मंत्र की तरह ग्रहण किया। वे स्वयं अहर्निशि ज्ञानाराधना में रत रहती हैं और सभी शिष्य और भक्त-समुदाय को निरन्तर ज्ञान का प्रसाद बाँटती रहती हैं। उनकी शिष्याओं में पूज्य आर्यिका जिनमती, आर्यिका पद्मावती (अब समाधिस्थ), आर्यिका आदिमती, आर्यिका श्रुतमती, आर्यिका शिवमती, क्षुल्लिका शांतिमती, श्रद्धामती आदि अनेक ऐसे नाम हैं, जो उनसे ज्ञान और वात्सल्य पाकर स्वयं को कृतकृत्य मानती हैं, बड़ी श्रद्धा से इनके उपकारों का स्मरण करती हैं।

किसी मनीषी ने कहा है कि अच्छाई और बुराई दोनों ही संक्रामक होती हैं। घर में एक सुलट जाए तो सब सुलट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाते हैं और एक बिगड़ जाए तो सब बिगड़ जाते हैं। ये दोनों नींद की तरह छूत की बीमारी हैं। एक को सोते देख दूसरा भी ऊँघने लगता है। मैना छोटेलाल जी के परिवार की सबसे बड़ी कन्या थी। वह सन्मार्ग पर चल पड़ीं तो परिवार के अन्य कई सदस्यों ने भी उनका अनुगमन किया। उनकी दो छोटी बहनें आज आर्यिका अभयमती और आर्यिका चंदनामती हैं। भाई रवीन्द्र भी बालयोगी बन संघ की सेवा में दिन-रात समर्पित होकर कार्य करते हैं। उनकी '**कर्मयोगी**' की उपाधि सार्थक ही है। कु. आस्था शास्त्री, कु. बीना शास्त्री, कु. सारिका एवं कु. इन्दू जैन भी संघ में रहकर श्रावकोचित्त प्रतिमा और व्रतादि का पालन कर रही हैं, और तो और इनसे प्रेरणा पाकर इनकी जन्मदात्री माँ मोहिनी ने भी आचार्य धर्मसागर जी से आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर '**रत्नमती**' नाम प्राप्त कर कुल का गौरव बढ़ाया था। संयम का यह कैसा चमत्कार है कि उसके प्रभाव से माँ अपनी पूर्व पर्याय की पूर्व दीक्षित बेटी को अपनी माँ मान लेती है और बेटी के चारित्र को देखकर एक दिन स्वयं भी जगन्माता बनने का मार्ग स्वीकार कर लेती है। सच तो यह है कि पूज्य ज्ञानमती माताजी ने अपनी शिष्याओं पर अपना पूरा प्रशस्त स्नेह उड़ेलकर या तो उन्हें अपने समान बना लिया है या अपने समान बनने के मार्ग पर अग्रसर कर दिया है। उनके बारे में कोई भी भविष्य में यह नहीं कह सकेगा—'**जो अधीन को आप समान, करे न सो निन्दित धनवान**'।

पूज्य माताजी शास्त्र-निर्देशित समयानुसार सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण आदि क्रियाओं में सदा संलग्न रहती हैं तथा दोष-परिहार में सदा सावधान भी।

➢अप्रतिम साहित्य-सर्जक

'हमारे ही बीच हैं वे, जो धर्मशाला बनाते हैं और हमारे ही बीच हैं वे, जो मंदिरों का निर्माण करते हैं, पर क्या किसी एक ग्रंथ का निर्माण धर्मशाला और मंदिर के निर्माण से कम पवित्र है?'

— कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

प्रभाकर जी तो एक ग्रंथ के निर्माण को इतना पवित्र बता रहे हैं, जबकि माताजी ने तो ढ़ाई सौ से अधिक ग्रंथ और बीसियों मंदिर बनवाए हैं। अब पाठकवृंद ही यह निर्णय करें कि उन्होंने कितने पुण्य का संचय किया होगा!

साहित्य-सृजन एक उत्कृष्ट तप एवं पवित्र अनुष्ठान है। सिद्धान्त-महोदधि पं. माणिकचंद जी 'कौन्देय' न्यायायाचार्य जब आचार्य विद्यानंद के वज्रोपम ग्रंथ 'श्लोकवार्तिक' की टीका लिख रहे थे तो अत्यधिक श्रम से वह कई बार रुग्ण हो जाते, सिर भारी हो जाता, ऐसे चक्कर आते कि उन्हें लगता कि कहीं मृत्यु न हो जाए। महीनों के उपचार के बाद स्वस्थ हो पाते थे। माताजी के साथ भी कई बार ऐसी ही स्थितियाँ आई हैं। वह भी मृत्यु के मुख तक जाते-जाते लौट आई हैं। 'सागारधर्मामृत' में जिन भगवान और जिनवाणी की सेवा में कुछ भी अन्तर नहीं बताया है। श्रुतधर आचार्यों की यह जिन और जिनवाणी की भक्ति ही असाध्य को साध्य बनाने का कार्य करती रही है। कहा भी है—'**जिनभक्तिः किं न साधयेत्**'!

पूज्य माताजी की प्रतिभा बहुमुखी है। दर्शन, धर्म, अध्यात्म, न्याय, गणित, भूगोल, खगोल, नीति, इतिहास, कर्मकाण्ड आदि विषयों पर उनका समान अधिकार है। साहित्य की विविध शैलियों, जैसे-गद्य, पद्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, आत्मकथा, समीक्षा आदि सभी विधाओं में उन्होंने ग्रंथ लिखे हैं। एक ओर तो उन्होंने कोमलमति बालकों को संस्कारित करने के लिए सरल भाषा में पाठ्यपुस्तकें तैयार की हैं, तो दूसरी ओर प्राचीनतम साहित्य षट्खण्डागम, अष्टसहस्री, नियमसार, समयसार आदि की गुरु गंभीर टीकाएँ भी की हैं। उनके द्वारा लिखित सम्पूर्ण साहित्य का परिचय तो दूर, नामोल्लेख करना भी इस छोटे से आलेख में संभव नहीं है, फिर भी उनकी रचनाओं में जैन भारती, ज्ञानामृत, कातंत्रव्याकरण, त्रिलोक भास्कर, प्रवचन-निर्देशिका, मेरी स्मृतियाँ आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेख्य हैं। प्रतिज्ञा, संस्कार, भक्ति, आदिब्रह्मा, आटे का मुर्गा, जीवनदान आदि कृतियाँ भी जनसामान्य में लोकप्रिय सिद्ध हुई हैं। उनकी प्रत्येक कृति के पन्ने-पन्ने से उनके गहन वैदुष्य की झलक मिलती है।

चौबीस घंटों में एक बार आहार-पानी लेने वाले ये सन्त हिमगिरी-तुल्य इतना विराट् लेखन-कार्य कैसे कर लेते हैं, यह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोचकर ही आश्चर्य होता है। ऐसा ही प्रश्न एक साहित्य-महारथी सन्त से एक बार हमने किया था-'महाराज! आप एक बार आहार लेकर इतने विपुल साहित्य की रचना कर लेते हो, हम दिन में कई बार खाने वाले पूरे जीवन में उसकी नकल भी नहीं कर सकते, इसके पीछे कारण क्या है?' सन्त ने हमें निरुत्तर करते हुए उत्तर दिया-'जो खाने में ही लगा रहता है, उसके पास लिखने के लिए समय ही कहाँ बचता है? एक ही कार्य हो सकता है, या तो खा लो या लिख लो।' बात हँसी की है, पर इसमें तथ्य है।

हिन्दी-संस्कृत भाषा और उसके व्याकरण पर माताजी का असाधारण अधिकार है। चारों ही अनुयोगों से संबंधित साहित्य उन्होंने लिखा है। विधान या पूजा-साहित्य की रचना करने वाली वह इस समय की एक मात्र साध्वी हैं। उन्होंने इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, तीन लोक, सर्वतोभद्र आदि अनेक विधानों की सरस छंदों में रचना की है। पूरे देश में आज पूज्य माताजी द्वारा रचित इन्हीं विधानों के आधार पर अनुष्ठान सम्पन्न हो रहे हैं। इनमें से कुछ विधानों के नाम शास्त्रों में मिलते थे, पर वे सुलभ नहीं थे। माताजी के इस पुरुषार्थ से एक बड़े अभाव की पूर्ति हुई है। वह छंद शास्त्र में भी निष्णात हैं, इन विधानों से यह बात आइने की तरह स्पष्ट हुई है।

साहित्य और काव्य-रचना वही प्रशस्त और प्रशंसनीय मानी गई है, जो कल्याणकारक और सोद्देश्य हो तथा आत्मा को चैतन्य की जगमगाहट से प्रदीप्त करने वाली भी हो। माताजी ने संशय, विपर्यय और अध्यवसाय-रहित जैन साहित्य को जन साहित्य के रूप में प्रस्तुत करने का प्रबल पुरुषार्थ किया है। हमारे आचार्यों ने उन्हीं कवियों या रचनाकारों की प्रशंसा की है, जो धर्मकथा की रचना करते हैं। इसी भाव को व्यक्त करने वाली गाथा है—

त एव कवियो लोके त एव च विचक्षणः।
येषां धर्मकथाङ्गत्वं भारती प्रतिपद्यते ।।

पूज्य माताजी का समग्र साहित्य भव्य जीवों को समीचीन बोध प्रदान करने वाला है, इसमें कोई संदेह नहीं। उनका सृजन उनकी कीर्ति को 'यावच्चन्द्र दिवाकरौ' जीवन्त बनाए रखेगा। मशहूर शायर 'जौक' साहब ने क्या खूब फरमाया है—

रहता सखुन से नाम कयामत तलक ए जौक।
औलाद से तो यही दो पुश्त चार पुश्त ।।

माताजी के साहित्य की कुछ विशेषताओं का उल्लेख हम अवश्य करना चाहेंगे-

* 'वह जो भी लिखती हैं-आगम के उद्धरण देकर लिखती हैं। इससे कथन की प्रामाणिकता पर उँगली उठाने का प्रसंग उपस्थित नहीं होता। (माताजी की धारणा शक्ति बड़ी प्रबल है। उद्धरण प्रस्तुत करते समय उन्हें किसी ग्रंथ के पन्ने नहीं उलटने पड़ते। किसी ने ठीक ही कहा है—'यस्य धृतिः स विद्वान्')।
* विषय से हटकर कुछ स्वतंत्र रूप से यदि कहना चाहती हैं तो उसे फुटनोट में देती हैं।
* सैद्धान्तिक ग्रंथों का प्रूफ स्वयं देखती हैं, ताकि कोई अशुद्धि न रह जाए।

सभी विद्वज्जनों के लिए ये तीनों ही सावधानियाँ अनुकरणीय हैं।

➤जन्मभूमियों के विकास का अभियान

अतिशय क्षेत्रों पर पैसा बरसता है, किन्तु कल्याणक क्षेत्र प्रायः उपेक्षित हैं। कुछ क्षेत्रों की स्थिति तो इतनी दयनीय है कि वहाँ यदि कभी कोई यात्री रात्रि-विश्राम करना चाहे तो एक कमरा तक टिकने के लिए नहीं है। इस दुर्दशा पर रोना आता है।

यूँ तो अतिशय क्षेत्रों का भी महत्व है। हर मंदिर ही समवसरण का प्रतिरूप है। उसकी समुचित व्यवस्था होनी ही चाहिए, किन्तु इसका यह अर्थ तो नहीं है कि जिस पावन भूमि में तीर्थंकरों और चरमशरीरियों ने जन्म लिया, साधना की, निर्वाण प्राप्त किया तथा जिनके पुण्य-योग से वहाँ बड़े-बड़े महोत्सव हुए, उस पावन भूमि की हम उपेक्षा कर दें। यह ठीक है कि इस युग में लोग चमत्कार को नमस्कार करते हैं। अतिशय क्षेत्रों पर पूजा-पाठ करने से लौकिक मनौतियाँ पूरी होने की आशा रहती है, इसीलिए हमारे दान की धारा का प्रवाह आज उसी दिशा में बह रहा है। हमें यहाँ यह तो अवश्य सोचना चाहिए कि शलाका पुरुषों की साधनाभूमियों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर माथा टेकने से भले ही लौकिक इच्छाएँ-सन्तान का लाभ, धनवृद्धि, मुकदमें यें जीत आदि पूरी न होती हों, परन्तु अद्भुत आध्यात्मिक लाभ तो प्राप्त होता ही है। ऐसा भी नहीं है कि कल्याणक आदि क्षेत्रों की उपासना से लौकिक लाभ प्राप्त ही नहीं होता हो। निष्काम भक्ति से प्रशस्त पुण्य का जो संचय होता है, उससे अशुभोदयजनित बाधाएं स्वतः दूर होती हैं। धान के साथ भूसा तो स्वतः ही मिलता है, पर हमें धान से ज्यादा भूसे की चिन्ता लगी रहती है।

तीर्थंकरों और ऋषि-मुनियों की तपस्या के प्रभाव से उनकी साधनाभूमियों में भी अतिशय प्रकट होता है। तपःपूत भूमियाँ भी प्रतापी मनुष्यों की तरह गौरव को प्राप्त हो जाती हैं। राजा विक्रमादित्य जिस सिंहासन पर बैठकर न्याय करता था, युग बीतने पर वह मिट्टी के ढेर में दब गया। मिट्टी के उस ढेर या टीले पर भेड़ें चराने वाले गडरिया का एक निरक्षर बेटा जब बैठता तो ज्ञान की बातें करने लगता। बड़े-बड़े झगड़ों का बुद्धिपूर्वक निपटारा कर देता। टीले से उतरते ही उसका ज्ञान छूमन्तर हो जाता था। चाँदनपुर में एक टीले के नीचे दबी भगवान महावीर की मूर्ति के प्रभाव से एक गाय के थनों से दूध आपोंआप झरने लगता था। होनहार तीर्थंकर की माता दिक्कुमारियों के जटिल से जटिल प्रश्नों का सटीक समाधान करती थीं। क्या उसके पास किसी विश्वविद्यालय की बड़ी उपाधि होती है? नहीं, सातिशय पुण्यात्मा बालक के गर्भ में स्थित होने से उसकी बुद्धि अत्यन्त निर्मल हो जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि जड़ पदार्थ हो या चेतन व्यक्ति, शुभ परमाणुओं का प्रभाव सब पर अंकित होता है और निमित्त पाकर वह अनुभव में भी आता ही है।

कल्याणक भूमियों में भी अचिन्त्य प्रभाव अंकित है। वहाँ की श्रद्धापूर्वक वंदना करने से जीव को अलौकिक लाभ प्राप्त होता है। उनकी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

श्रीमन्तों के द्वारा अपनी दान की धारा को सम्यक् दिशा में मोड़ा जाना समय की माँग है। जहाँ सबसे अधिक आवश्यकता हो, वहाँ दान देने से अधिक पुण्य-लाभ प्राप्त होता है। श्रीकृष्ण ने कहा है—**'व्याधितस्यौषधं पथ्यं, नीरुजस्य किमौषधम्'** अर्थात् दवा की आवश्यकता रोगी को है, स्वस्थ व्यक्ति को नहीं। दीपक की शोभा रात्रि में है, दिन में नहीं। समुद्र पर वर्षा से क्या लाभ है? आज आर्थिक सहयोग की सबसे अधिक आवश्यकता कल्याणक क्षेत्रों को है, यह हमें समझना चाहिए।

पूज्य ज्ञानमती माताजी के मन में कल्याणक भूमियों की उपेक्षा को देखकर एक टीस सी उठती थी। उन्हें ऐसा लगता कि ये उपेक्षित भूमियाँ अपने उद्धार और विकास के लिए उनकी ओर आशाभरी आँखों से निहार रही हैं। वे जहाँ भी जातीं, इन भूमियों के विकास के लिए प्रेरणा देतीं। किसी ने कहा है कि योजना-शिल्पियों के सपने कभी अपूर्ण नहीं रहते। आँखों में यदि अरमान हों तो आशियाना दूर नहीं तथा पाँखों में यदि उड़ान हो तो आसमां दूर नहीं। दृढ़ संकल्पी लोगों के सपने अवश्य साकार होते हैं। माताजी के सच्चे हृदय की तड़प ने भी रंगत दिखाना शुरू किया। इस विकास-अभियान का पहला केन्द्र बनी भगवान शांति-कुंथु-अरहनाथ की पौराणिक-ऐतिहासिक महत्व की पावन कल्याणक भूमि हस्तिनापुर।

पूज्य माताजी की प्रशस्त प्रेरणा से यहाँ जम्बूद्वीप की रचना हुई, जो अद्वितीय बन पड़ी है। अब तक इसका वर्णन केवल शास्त्रों में पढ़ने को मिलता था। सुमेरु पर्वत को हम केवल तस्वीरों या रेखाचित्रों में देखते थे। अब उसकी हूबहू प्रतिकृति यहाँ देख सकते हैं। इस भव्य रचना ने जैन भूगोल को समझना अब सबके लिए आसान कर दिया है। इसके विस्तृत परिसर में अन्य अनेक मंदिरों का भी निर्माण हुआ है। इसकी रमणीयता को देखकर सैलानी अब इसे **'धरती का स्वर्ग'** कहने लगे हैं।

पिछले वर्षों में अयोध्या का भी अच्छा विकास हुआ है। वहाँ कई नए निर्माण हुए हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई है कि सरयू-तट पर स्थित राष्ट्रीय पार्क में भगवान आदिनाथ की विशाल प्रतिमा स्थापित की गई है। त्रिकालवर्ती तीर्थंकरों की सनातन जन्मभूमि को देश-विदेश के लोग भी अब जैन नगरी के रूप में स्वीकार करने लगे हैं। प्रथम तीर्थंकर की मूर्ति-स्थापना के कारण जैनधर्म की प्राचीनता को भी मान्यता मिली है।

इलाहाबाद या प्रयागराज भगवान आदिनाथ की दीक्षा एवं ज्ञान कल्याणक भूमि है, लेकिन लोग उसे भूलते जा रहे थे। अब वहाँ भी एक नया तीर्थ 'भगवान ऋषभदेव तपस्थली' के नाम से विकसित हो चुका है। नेशनल हाईवे पर अवस्थित होने से वह सभी को आकर्षित करता है। प्रतिदिन आने-जाने वालों का तांता लगा रहता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का दो वर्ष की अल्पावधि में जिस त्वरित गति से विकास हुआ है, वह सभी जैना-जैन को आश्चर्यचकित करता है। जो स्थान पहले सुनसान दिखाई पड़ता था, वहाँ अब बारहों महीने खूब चहल-पहल रहती है।

तीर्थराज सम्मेदशिखर जी, पावापुरी, गुणावां आदि में भी नई मूर्तियाँ स्थापित हुई हैं। भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी में पुराने जीर्ण मंदिर की जगह नया भव्य मंदिर बनने जा रहा है। श्रावस्ती, प्रभासगिरि, सनावद आदि अनेक स्थानों पर भी विकास कार्य हुए हैं, या हो रहे हैं। राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की बड़ी प्रतिमा स्थापित हुई है। लोग तो भूल ही गए थे कि वह उनकी जन्मभूमि है।

दक्षिण के सम्मेदशिखर मांगीतुंगी में शिखर पर भगवान आदिनाथ की 108 फुट की प्रतिमा पर कार्य चल रहा है। बनने पर निःसंदेह यह पावन क्षेत्र विश्व-धरोहर के रूप में गणनीय होगा। भूतल पर भी काफी कायाकल्प हुआ है। जहाँ-जहाँ माताजी का विहार होता है, वहाँ नए निर्माण और विकास कार्य हो रहे हैं।

यों तो इन सभी क्षेत्रों का विकास राज-मजदूरों ने किया है, किन्तु उनकी असली शिल्पकार तो माताजी हैं। कर्मयोगी भाई जी (ब्र. रवीन्द्रकुमार) एवं पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी ने छाया की तरह माताजी के साथ रहकर उनके इन स्वप्नों को साकार किया है।

यह अनुभव की बात है कि इन स्थानों के बारे में पढ़कर उतना समझ में नहीं आएगा, जितना आँखों से देखकर आ सकता है।

रथ-प्रवर्तनों एवं शिक्षण शिविरों के माध्यम से पूरे देश में ज्ञान का अलख जगाने का जो गुरुतर कार्य हुआ है, वह बेमिसाल है। सेमिनारों का स्तर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रहा है। एक व्यक्ति के पुण्य-प्रताप से कितना कार्य हो सकता है, इसका ठीक-ठीक आकलन करना भी किसी एक के लिए संभव नहीं है।

'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' के अनुसर कार्य सम्पादन में अड़ंगे डालने की कोशिशें भी कम नहीं हुईं, किन्तु मजबूत इरादों, समर्पित टीम और तप के प्रभाव से विघ्न-सन्तोषियों की सारी कोशिशें विफल रही हैं।

माताजी के संघस्थ शिष्यगण तो विरोध से कभी-कभी उदास भी हो जाते, किन्तु माताजी उन्हें सदैव हिम्मत बँधाती और यही कहतीं कि **'लोग तो जो कहना है, कहते ही रहेंगे, आप लोग तो धर्म-प्रभावना की योजना को आगे बढ़ाने में लगे रहें'**। उनकी इसी कर्मठता की शिक्षा के कारण ही तो उनके शिष्य ब्र. रवीन्द्र भाई जी को शास्त्री परिषद ने 'कर्मयोगी' की पदवी से अलंकृत किया था।

पूज्य माताजी की बात तो दूर, उनके शिष्य-शिष्याओं को भी हताश होते हुए कभी नहीं देखा गया। विरोध में भी विचलित न होना उनका स्वभाव है। वह प्रायः कहती हैं— **'मेरा ऐसा स्वभाव है कि बात आगमानुकूल हो, मन को जँच जाए और जम जाए, तो उसे पूरा करना ही करना। जो अपनी विचारधारा से सहमत हों, उनसे सहयोग लेना और जो असहमत हों, उन्हें गौण कर देना।'**

उनके इस सकारात्मक सोच में ही उनकी सफलता का रहस्य निहित है।

कल्याणक भूमियों, विशेषतः जन्मभूमियों के विकास में उनकी अत्यधिक रुचि रहती है। उनका कहना है कि हमारी संस्कृति का परिचय प्रदान करने वालीं ये भूमियाँ हमारी महान् संस्कृति की जीवन्त स्मारक हैं। इनका संरक्षण-संवर्धन और विकास अवश्य ही होना चाहिए।

➢ज्ञान-कल्पतरु

पूज्य माताजी इस युग की ज्ञान-कल्पतरु हैं, यह बात तो वे भी खुले दिल से स्वीकार करते हैं, जो कुछ प्रसंगों पर उनसे असहमति रखते हैं। असहमति या मतभेदों का होना तो बाप-बेटों में भी संभव है, किन्तु मनभेद नहीं होना चाहिए। मनभेद से विवाद और विवाद से विरोध उत्पन्न होते है। समय की माँग यह है कि हम विवादों को मिटाकर संवाद उत्पन्न करें। बीसपंथ, कुण्डलपुर या चर्यासंबंधी कुछ प्रसंग ऐसे नहीं हैं, जिन्हें लेकर मन में कषाय की गाँठ बाँध ली जाये। कषाय हेय है, उससे बचना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोई किसी से नाराज भी हो तो भी उसे तब तक छोटी-छोटी बातों को तूल नहीं देना चाहिए, जब तक कोई उसके रास्ते के बीच में नहीं आता हो। किसी नीतिज्ञ ने कहा है कि तुम्हें अपनी चिलम सुलगानी हो तो सुलगाओ, तुम्हें रोक कौन रहा है परन्तु अपनी चिलम सुलगाने के लिए दूसरों की झोंपड़ी तो मत जलाओ। विरोध और विवाद की स्थिति में तर्कबुद्धि मुखर हो उठती है, किन्तु हर जगह तर्क और शंका की उँगली पकड़कर चलने से तो आदमी नास्तिक बन जाता है।

ज्ञान-कल्पतरु की छाया में बैठकर यही तो सीखने की बात है कि विरोध में भी विनोद की बेल मुरझाने न पाए। एक ज्ञानी व्यक्ति से दूसरा ज्ञानी व्यक्ति ईर्ष्या करता था, बार-बार वह पहले व्यक्ति से विवाद करने लगता, कभी-कभी खूब खरी-खोटी सुनाता। एक सन्त ने उसे बुलाकर समझाया—

जाति न पूछो काउ की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, छोड़ दीजिए म्यान।।

मनुष्य सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है। उसकी श्रेष्ठता तन से नहीं, मन से आँकी जाती है। तन की अपेक्षा तो पशु उससे श्रेष्ठ हैं। वृषभस्कन्ध, गृद्धदृष्टि, सिंहनाद, अश्वगति जैसे शब्दों से तो यही आभास होता है। मनुष्य की विशेषता उसके विकसित मन और मस्तिष्क की वजह से है। मनीषियों ने उसे **'हिरण्यमय कोष'** इसीलिए तो कहा है। विकसित मन-मस्तिष्क में छिपी रहती है एक चिन्तनशील चेतना, जो अन्य प्राणियों में नहीं पाई जाती। चिड़ियाँ दाना चुगकर अपना पेट तो भर लेती हैं, किन्तु रोटी बनाना नहीं सीख पातीं। बन्दर पेड़ों की डालियों को पकड़कर उछलना-कूदना और लटकना तो जानता है, पर अपने रहने के लिए छोटा-सा घर बनाना नहीं सीख पाता। पशुओं के सामने कोई लक्ष्य या उद्देश्य नहीं रहता, किन्तु मनुष्य की हर योजना सुविचारित होती है। **'ज्ञानोहितेषामधिको विशेषः'** वाली बात है।

पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपनी विवेक-शक्ति को सतत जागृत रखें। विवेक जीवन को प्रकाश से भर देता है। सारी अच्छाइयाँ ही जीवन का प्रकाश है। दोष-दर्शन से बड़ी बुराई कोई नहीं है। हमेशा एक सूत्र-वाक्य याद रखें—

'अपना लोटा छानो, दुनियाभर के नदी-कुओं को आप नहीं छान सकते हैं।'

सद्विचार एवं सत्कर्म ही मनुष्य को ऊँचा उठाते हैं, आगे बढ़ाते और ऊर्ध्वगामी बनाते हैं। ऊर्ध्वारोहण से वंचित जीवन अध्यात्म की दृष्टि से एक निष्क्रिय जीवन है और ऐसी निष्क्रियता अभिशाप है। जैनधर्म व्यक्तिपूजा पर नहीं, गुण-पूजा पर जोर देता है। हम गुणग्राही बनें और अपने जीवन को ऊँचा उठायें।

स्वर्ण दीक्षा जयंती के इस पावन अवसर पर इस ज्ञान-कल्पतरु की छाया में बैठकर अपन तो रोज यही गुनगुनायें—

प्रतिपद्य कदा दीक्षां विहरष्याम मेदिनीम्।
क्षपयित्वा कदा कर्म प्रपत्स्ये सिद्धसंश्रयम्।।

मैं दीक्षा लेकर पृथिवी पर कब विहार करूँगा, कब कर्मों को नष्ट कर सिद्ध परमेष्ठी के आश्रय मोक्ष को प्राप्त करूँगा।

माताजी सदा जयवन्त रहें। यही आशीर्वाद दें कि ज्ञान-कल्पतरु की छाया से हम कभी वंचित न हों। हमारी तो एक ही चाह है—

'खुश रहना, खुश रखना, जीना और जिलाना।
माँ! मेरे जीवन का यही एक हो गाना।।'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The Towering Personality of Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji

Presented By—Br. Km. Swati Jain
(Sanghastha - Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji)

Pujya Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mata Ji is like the brilliant sun on the wide-spread sky of Jain tradition in the present century. All the efforts to enclose her glorious personality in words will surely remain incomplete, however with the sincere wish of paying homage to her long ascetic life, I am humbly trying to pen down her brief introduction—

1. BIRTH, RENUNCIATION & INITIATION—'Maina' was born as the first child of Smt. Mohini Devi, the wife of Shri Chotteylal Ji Jain of Tikaitnagar (Dist.-Barabanki, U.P.) on 22nd October 1934, the day of Sharad Poornima.

By the regular study (*Swadhyaya*) of *'Padmanandipānchvinshatika'*, an ancient Jain scripture, which was given to mother Mohini in dowry by her parents, Maina developed a deep feeling of renouncing the world. Infact, such feelings were deeply rooted in her since previous births.

At the tender age of 18 years, Maina took the vows of lifelong Celibacy, Seven *Pratimas* (Vows for householders) and the renouncement of home from Acharyaratna Shri Deshbhushan Ji Maharaj in 1952 on the very day of Sharad Poornima.

Later in 1953 the first *Brahmacharini* of the 20th century Km. Maina took *Kshullika Deeksha* (Primary stage of initiation) from Acharya Shri Deshbhushan Ji on *Chaitra Krishna Ekam* at Mahavir ji *Atishaya Kshetra* (Rajasthan) to become **'Kshullika Veermati'**.

In 1955 Veermati Ji stayed in the holy feet of *Charitra Chakravarti* Acharya Shri Shantisagar Ji Maharaj for one month at the time of his *Samadhi* at Kunthalgiri and as per his order, She took *Aryika Deeksha* (Highest stage of initiation for females) from Acharya Shri Veersagar Ji Maharaj, the first disciple *Pattacharya* of Acharya Shri Shantisagar Ji, on *Vaishakh Krishna Dooj* of 1956 at Madhorajpura (Jaipur-Rajasthan) to become **ARYIKA GYANMATI.**

2. STUDIES & TEACHING—Since the beginning Mata Gyanmati Ji was having keen desire for acquiring knowledge. The best means for the same was chosen by her in the form of teaching *Munis* (Digambar saints), *Aryikas* (female saints) and other disciples of the Sangh (group). She started with *'Katantra Roopmala'* (the Sanskrit Grammer) to continue with various ancient Jain scriptures as *Gommatsar, Parikshamukh, Nyaydeepika, Prameyakamalmartand, Ashtasahastri, Tattvartharajvartik, Sarvarthasiddhi, Angardharmamrit, Moolachar, Triloksar* etc. She gained a lot of knowledge in a very less time and she also became an expert of various languages as Hindi, Sankrit, Prakrit, Kannad, Marathi etc.

3. STARTED WRITING IN SANSKRIT—Infact there was no example of writing scriptures by Jain *Sadhvis* (female saints) in the history of 2500 years after Lord Mahavir, the 24th Tirthankar

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(Jain Lord) but Kshullika Veermati Ji created the landmark when she started writing with 1008 *Mantras* (holy verses) of *Sahastranam*. These *matnras* proved to be like the boon of Mata Saraswati (Goddess of Knowledge) for her. Since then Pujya Mataji did-not look behind and till date *Teekas* (explanatory notes or commentary) &original texts in Sanskrit & Hindi written by her, have crossed the number of 200.

In 1969-70 she translated the highest scripture of *Nyaya* (Jain-logic)-*Ashtasahastri* into Hindi for the surprise of the world of scholars. Afterwards explanatory notes in Sanskrit & Hindi on *Samaysar*, *Niyamsar* etc.; Scriptures for *Swadhyaya* as-*Jain Bharti*, *Gyanamrit*, *Trilok-Bhaskar*, *Pravachan Nirdeshika* etc.; Novels like *Pratigya, Sanskar, Bhakti, Adibramha, Atae Ka Murga, Jeevandan* etc.; Hindi translation of *Dravya Sangrah, Ratnakarandshravakachar, Katantra Vyakaran* etc.; *Balvikas, Balbharati, Nari Alok* etc. and a number of other scriptures show the highly talented calibre of Pujya Mataji as a versatile writer.

She has not only written on *Adhyatma* (spirituality), *Vyakaran* (grammer), *Nyaya* (logic), *Siddhant* (formulae), children literature, Novels etc. but also devotional poetic worshipping hymns i.e. *Vidhans*. *Indradhwaj, Kalpadrum, Sarvatobhadra, Teenlok, Siddhachakra, Vishwashanti Mahavir Vidhan* etc. have immersed the people into the devotion of Lord Jinendra throughout the country.

The specific characteristic of the writing of Pujya Mataji is that it is in full accordance with the ancient Jain *Agam* (scriptures).

4. *SIDDHANT CHAKRESHWARI*–At present, Pujya Mataji is indulged in writing the Sanskrit *Teeka 'Siddhant Chintamani'* of the first *Siddhant Grantha* of the Jain Philosophy i.e. *'SHATKHANDAGAM'*. She has completed 13 books, out of which the first & the second books have been published with Hindi *Teeka* also.

As 1000 years before, Acharya Shri Nemichandra Siddhantchakravarti wrote *Dravya Sangrah, Gommatsar, Labdhisar* etc. similarly Pujya Mataji is also writing on *Shatkhandagam* after a deep life-long practice of Jain *Agam* to be truely called as *Siddhant Chakreshwari* (well versed in Jain philosophical formulae).

After the writing of *Dhavla Teeka* by Acharya Shri Veersen Swami 1000 years before, for the first time the simple *teeka* of this great scripture is being written.

5. TEACHING CAMPS–By the inspiration of Pujya Mataji a number of teaching camps have been organized so that Jain scholars may understand the real theme of Jain-*Agam*.

In 1969 a specific camp on 'JAIN-ASTRONOMY' was organized between the chaturmas of Jaipur and Pujya Mataji introduced & explained extensively Jain Geography & Astronomy to the scholars.

In Oct. 1978, a teaching camp of about 100 scholars including Pt. Makkhanlal Ji Shastri, Pt. Motichand Ji Kothari, Dr. Lal Bahadur Ji Shastri etc. was organized at Hastinapur and in this camp Pujya Mataji guided the scholars on various issues related with the real Jain tradition. Even today the series is going on.

6. NATIONAL-INTERNATIONAL SEMINARS–In 1985 an International Seminar on 'Jain

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Mathematics & Cosmology' was organized at Jamboodweep-Hastinapur followed by a number of other seminars in later years. In 1998 the Vice-Chancellors of various Indian Universities gathered at Hastinapur to attend 'Lord Rishabhdev National Vice-Chancellors' Conference', in which the participants were introduced with the first Tirthankar Lord Rishabhdev as the propagator of human culture of the present age.

Through the seminar on 'Antiquity of Jainism' at Jamboodweep-Hastinapur on 11th June 2000, the message to correct the misconceptions about Jainism in the textbooks of History was also conveyed to NCERT.

Many other seminars have also been organized at different times.

7. THE DEGREE OF D.LIT. WAS AWARDED FOR THE FIRST TIME TO A SAINT/ SADHVI OF THE DIGAMBAR JAIN TRADITION—Without having the traditional degrees of the college & University, Pujya Mataji touched the heights of knowledge, teaching & literature-writing and to honour this unique talent, Avadh University-Faizabad presented the honorary degree of D.Lit. to her on 5th Feb. 1995. Pujya Mataji became the first among the Digambar Sadhu tradition to get this degree.

In the same way various *Acharyas* and social institutions have presented various titles (ranks) to her at different times such as-*Nyaya Prabhakar, Aryikaratna, Aryikashiromani, Ganini Pramukh, Vatsalyamoorti, Teerthoddharika, Yugpravartika, Charitrachandrika, Rashtragaurav, Vagdevi* etc. but remaining aloof from all these honours, she always remains engrossed in penance for self purification.

8. HISTORY WAS ALSO CHANGED—In 1992 when Pujya Mataji came to know that students all over the country are being taught that 'Lord Mahavir is the founder of Jain Dharma' through the History books published by NCERT, she was deeply hurt.

Consequently by the continuous efforts of 10 years including the direct talks with the Prime Minister, Human Resource Development Minister, Director-NCERT etc., the process of correcting the misconceptions could be initiated.

9. DEDICATION FOR THE DEVELOPMENT OF PILGRIMAGES—Pujya Mataji have always been dedicated for the development of the *Kalyanak Kshetras* especially the birthplaces of Tirthankar Lords. She says that such places are the great treasures of our eternal culture so we should always remain awakened for their protection & development.

Firstly at Hastinapur, the birthplace of Lord Shantinath, Kunthunath & Arahnath, the unique structure of Jain Geography 'JAMBOODWEEP' was constructed by her inspiration & guidance. The Tourism Department of U.P. Government has called it as 'A Man Made Heaven of Unparallel Superlatives and Natural Wonders' in its publications.

Samavsaran Temple & *Trikal Chaubeesi* Temple at eternal pilgrimage-Ayodhya, *Namokar Dham* at Sanavad (M.P.), Lotus temple at Preet Vihar-Delhi, *Sahastrakoot* Lotus temple at Mangitungi (Maharashtra), *Navdevta* Temple at Aklooj (Maharashtra), *Tees Chaubeesi* Temple with 11 summits at Ahichhetra, '*Tirthankar Rishabhdev Deekshasthali* at Prayag-the Initiation *(Deeksha)* & Enlightenment (*Kevalgyan*) land of Lord Rishabhdev are the consequences of the inspiration of Pujya

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Mataji only. Besides these a number of other constructions have also been done at various places.

The Birthplace of Lord Mahavir-Kundalpur (Nalanda-Bihar) has been developed magnificiently by the guidance & auspicious presence of Pujya Mataji in less than 2 years. A grand 'Nandyavarta Mahal Tirth' has been constructed there with Vishwashanti Mahavir Temple having the standing postured idol of Lord Mahavir, Navgrahshanti Jin Temple, Trikal Chaubeesi Temple & Nandyavarta Mahal- the birthpalace of Tirthankar Mahavir. Lord Mahavir Swami Kirtistambh has also been constructed.

Besides this, Muni Suvratnath Jin temple at the birthplace of Lord Muni Suvratnath-Rajgrahi along with the construction of the *Mansthambh* at the base of the Vipulachal Mountain, 'Lord Mahavir Jin Temple' with standing postured idol of Lord Mahavir at the *Pandukshila* campus infront of the *Jalmandir* of Pawapuri-the Salvation land of Lord Mahavir, Temple of Gautam Swami at His Salvation land-Gunava ji, Lord Rishabhdev Temple at Sammed Shikherji have also been constructed by the inspiration of Pujya Mataji.

At present, the development of Kakandi, the birthplace of 9th Tirthankar Lord Pushpdantnath is being done in the series of the development of the Birthplaces of Tirthankars, the sincere determination of Mataji.

10. INSPIRATION FOR THE CONSTRUCTION OF THE 108 FT. HIGH IDOL–By the inspiration of Pujya Mataji, the construction work of 108 Ft. high standing postured idol of Lord Rishabhdev has been initiated at the mountain of Mangitungi (Maharashtra). This idol will prove to be an astonishing wonder for the whole world and will also introduce the masses with the eternal culture of Jainism.

11. *GYANTIRTH* AT SHIRDI (MAHARASHTRA)–To establish Shirdi as a prominent Jain Centre, the plan of constructing *'Gyantirth'* is being worked out. At *Gyantirth*, the grand idol of Lord Parshvanath will be consecrated along with other constructions as per the guidance of Pujya Mataji.

12. VARIOUS MODES OF *DHARMA PRABHAVNA*–'Digambar Jain Institute of Cosmographic Research' was established in 1972 by the inspiration of Pujya Mataji at Delhi with the major aim of constructing Jamboodweep. This institute has remained indulged in various projects for the dissemination of the preachings of Jainism since then.

Veer Gyanodaya Granthmala publishing scriptures/books in lacs of numbers, *Samyakgyan* monthly magazine with the knowledge of *4 Anuyogas* (4 parts of Jain *Agam*), *Namokar Mahamantra* Bank etc. are some important projects to be quoted.

By the inspiration of Pujya Mataji, the then Prime Minister Smt. Indira Gandhi inaugurated 'Jamboodweep Gyan Jyoti' at Delhi in 1982. The Jyoti travelled throughout the country for 3 years and preached the lessons of Non-violence, Compassion, Universal brotherhood etc. among the masses and later it was consecrated at Jamboodweep (Hastinapur) by Shri P.V. Narsimha Rao, the then Central Defence Minister.

Similarly in Apr. 1998 the then Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee inaugurated 'Bhagwan Rishabhdev Samavsaran Shrivihar' at Delhi and it was consecrated at Kevalgyan Kalyanak Temple of Deekshasthali-Prayag after the tour of the whole India.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'Bhagwan Mahavir Jyoti' inaugurated from Lord Mahavir Birthplace-Kundalpur (Nalanda) in 2003 is also a landmark in this series.

To establish the 'Antiquity of Jainism' and the name & principles of Lord Rishabhdev among the masses Pujya Mataji got organized grand *'Chaubees Kalpadrum Mahamandal Vidhan'* at Delhi and also 'Lord Rishabhdev Birth-Anniversary Year' & 'Lord Rishabhdev International Nirvan Mahamahotsava Year' (inaugurated by the then Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee) throughout the country & aborad.

Various T.V. Channels like Aastha, Jain, Sanskar etc. have done the broadcasting of the *Pravachans* of Pujya Mataji at various times. Direct telecast of programmes of Hastinapur, Ayodhya etc. have appealed the people in large numbers.

'Akhil Bharatvarshiya Digambar Jain Mahila Sangathan' was established by the inspiration of Pujya Mataji and today through its hundreds of units, it is unifying the feminine power of the Jain society for creative aims.

A large number of other day-to-day activities of *Dharma-Prabhavna* can be added to the above, however it is not possible to give their written account. The whole of the Jain Samaj consider her as an image of sincerity & hard work.

13. STRUGGLE WINNER—Since the beginning Pujya Mataji had one aim-to do any work according to Jain *Agam* only. If any struggle comes in her way in completing her so decided aim, she is never disturbed at all but with more determination, She wins over the difficulties to ultimately achieve her goal. Whole of her life has been passed in the dissemination of the illumination of Jainism to self & all others along with following the *Moolgunas* (fundamental 28 tenets of a Jain Sadhu) strictly & protecting the *Aarsh* tradition (ancient scriptural tradition). She never allows the use of the money of any institution or Tirth or charity in the arrangement of her sangh. She has followed this vow for 50 long years. That's why *Sanghpati Shravakas* consider themselves fortunate when they take the responsibility of long distance pilgrimage tours of the Sangh of Pujya Mataji.

14. LORD PARSHVANATH BIRTH-ANNIVERSARY THIRD MILLENNIUM MAHOTSAVA—By the inspiration and in the auspicious presence of Pujya Mataji 'Lord Parshvanath Birth-Anniversary Third Millennium Mahotsava' was inaugurated on 6th Jan. 2005 at Varanasi, the birthplace of the Lord. This year was celebrated with various programmes at Ahichhetra-the *Kevalgyan* (Enlightenment) land, Shri Sammed Shikherji-the Salvation land and many other tirths related with Lord Parshvanath & throughout the country.

Pujya Mataji has inspired to celebrate the year 2006 as "Sammed Shikher Year" so that Digambar Jain Samaj may be dedicated for this great pilgrimage with all its power.

Besides this, She has also inspired to protect the Salvation land of Lord Neminath i.e. Girnarji and has attracted the mass-interest towards this issue.

15. A UNIQUE OCCASION OF THE CENTURY : DEEKSHA (INITIATION) GOLDEN ANNIVERSARY—Pujya Mataji is completing the 50 years of her *Aryika Deeksha* on *Vaishakh Krishna Dooj, Veer Nirvan Samvat* 2532 i.e. 15th Apr. 2006. Thus she is having the dignity of

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

the most anciently initiated *(Deekshit) Sadhvi* of the present Digambar Jain Sadhu tradition.

On this unique occasion the Samaj is paying its humble homage in her holy feet by organizing "Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji Aryika Deeksha Golden Anniversary Celebration" from 14th to 16th April 2006 at Jamboodweep-Hastinapur.

The list of the places of 50 *Chaturmas* of Pujya Mataji is as follows :

Sr. Place	Year	Sr. Place	Year
1. Jaipur (Khaniya)	1956	**26.** Hastinapur (Jamboodweep)	1981
2. Jaipur (Khaniya)	1957	**27.** Delhi (Kammoji Dharmashala)	1982
3. Byavar (Raj.)	1958	**28.** Hastinapur (Jamboodweep)	1983
4. Ajmer (Raj.)	1959	**29.** Hastinapur (Jamboodweep)	1984
5. Sujangarh (Raj.)	1960	**30.** Hastinapur (Jamboodweep)	1985
6. Seekar (Raj.)	1961	**31.** Hastinapur (Jamboodweep)	1986
7. Ladnu (Raj.)	1962	**32.** Hastinapur (Jamboodweep)	1987
8. Calcutta (W. Bengal)	1963	**33.** Hastinapur (Jamboodweep)	1988
9. Hyderabad (A.P.)	1964	**34.** Hastinapur (Jamboodweep)	1989
10. Shravanbelgola (Karnataka)	1965	**35.** Hastinapur (Jamboodweep)	1990
11. Solapur (Maharashtra)	1966	**36.** Sardhana (Meerut-U.P.)	1991
12. Sanavad (M.P.)	1967	**37.** Hastinapur (Jamboodweep)	1992
13. Pratapgarh (Raj.)	1968	**38.** Ayodhya	1993
14. Jaipur (Raj.)	1969	**39.** Tikaitnagar	1994
15. Tonk (Raj.)	1970	**40.** Hastinapur (Jamboodweep)	1995
16. Ajmer (Raj.)	1971	**41.** Mangitungi Siddhakshetra	1996
17. Delhi (Pahari Dhiraj)	1972	**42.** Delhi (Lal Mandi)	1997
18. Delhi (Najafgarh)	1973	**43.** Hastinapur (Jamboodweep)	1998
19. Delhi (Lal Mandir)	1974	**44.** Delhi (Cannaught Place)	1999
20. Hastinapur (Old Temple)	1975	**45.** Delhi (Preet Vihar)	2000
21. Khatauli (Muzzafarnagar)	1976	**46.** Delhi (Ashok Vihar)	2001
22. Hastinapur (Old Temple)	1977	**47.** Prayag Tirth (Allahabad)	2002
23. Hastinapur (Old Temple)	1978	**48.** Kundalpur (Nalanda-Bihar)	2003
24. Delhi (Mori Gate)	1979	**49.** Kundalpur (Nalanda-Bihar)	2004
25. Delhi (Kucha Seth)	1980	**50.** Hastinapur (Jamboodweep)	2005

16. MAY WE CELEBRATE THE DIAMOND JUBILEE OF YOUR ASCETIC LIFE—By knowing the number of the years of her penance or *Deeksha*, several *Acharyas, Munis & Aryikas* also feel dignified in telling that even my age is not as mush as Mataji has utilized in hard penance because she adopted this path at an early age of 18 years and since then she has passed each of her day in following the difficult path of *Jaineshwari Deeksha.*

We pay innumerable salutations in her holy feet with a hearty wish that all of us may be able to celebrate the Diamond Anniversary also of her asectic life.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ब्राह्मी लिपि में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय

लेखिका-डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन, वाराणसी

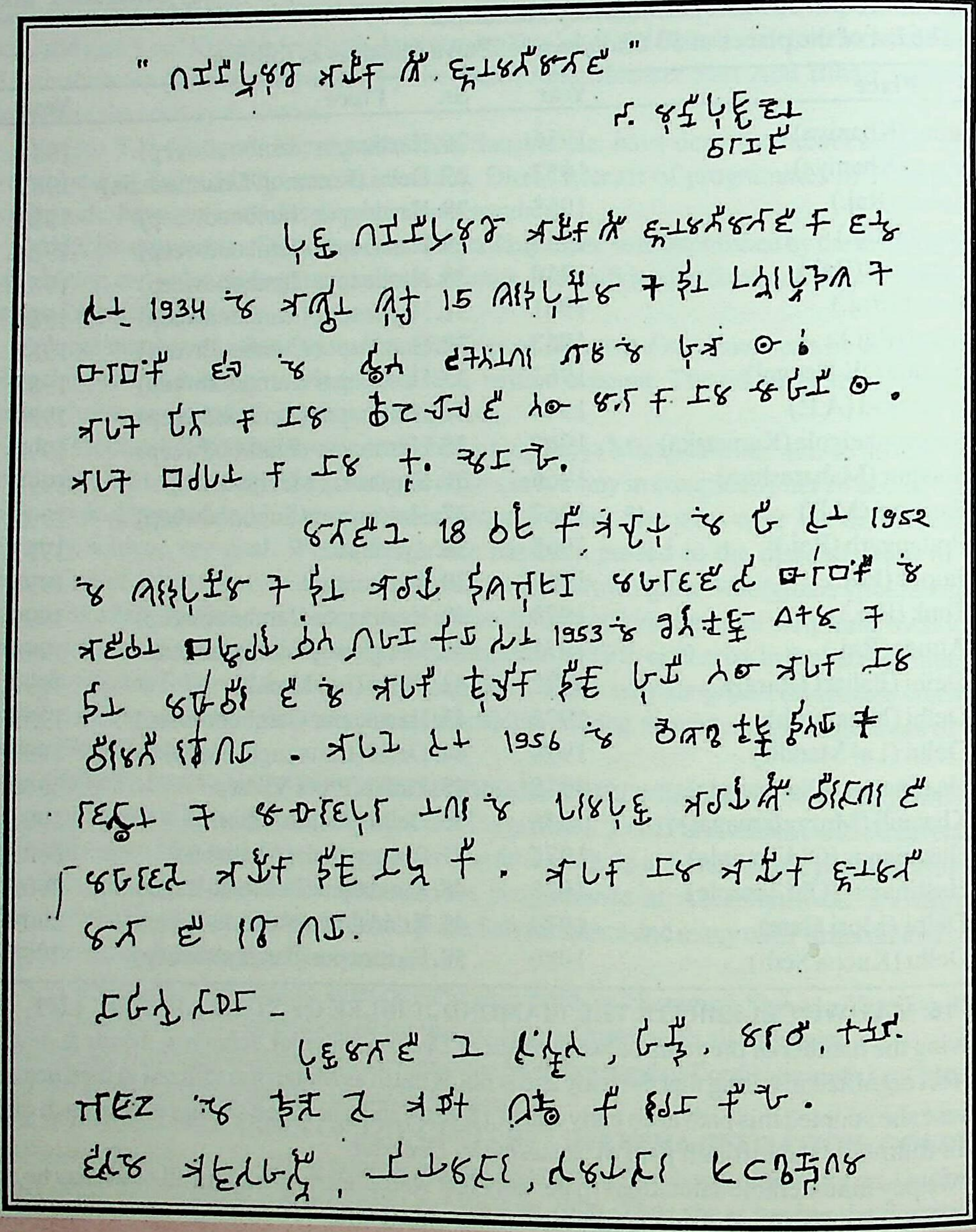

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्राह्मी लिपि में लिखित पूज्य माताजी के परिचय का हिन्दी रूपान्तरण

लेखिका-डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन, वाराणसी

पूज्य गणिनीप्रमुखा आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म सन् 1934 में आश्विन शुक्ला 15 शरदपूर्णिमा के दिन उत्तरप्रदेश के बाराबंकी जिले में स्थित टिकैतनगर ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम छोटेलाल जी तथा माता का नाम मोहिनी था। आपके बचपन का नाम कु. मैना है।

माताजी ने 18 वर्ष की अल्पायु में ही सन् 1952 में शरदपूणिमा के दिन आचार्य देशभूषण जी महाराज से बाराबंकी में आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण किया। सन् 1953 में चैत्र कृष्णा एकम् के दिन महावीर जी में आपकी क्षुल्लिका दीक्षा हुई तथा आपका नाम वीरमती रखा गया। आपने सन् 1956 में वैशाख कृष्णा द्वितीया को राजस्थान के माधोराजपुरा नगर में परमपूज्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा प्राप्त की। उसी दिन आपका नाम आर्यिका ज्ञानमती माताजी रखा गया।

साहित्य साधना-

पूज्य माताजी ने संस्कृत, हिन्दी, मराठी, कन्नड़ भाषाओं में दो सौ से अधिक ग्रंथों की रचना की है। जिसमें अष्टसहस्री, नियमसार, समयसार, षट्खण्डागम आदि की हिन्दी संस्कृत टीका तथा त्रिलोकभास्कर कातंत्ररूपमाला, मुनिचर्या, प्रवचन निर्देशिका, ज्ञानामृत, आराधना जैन भूगोल आदि ग्रंथ प्रमुख हैं। इसके अलावा आपने इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र, कल्पद्रुम, त्रैलोक्य मण्डल आदि कई पूजन-विधानों की रचना भी आपने की है। बाल साहित्य, उपन्यास तथा कई नाटक भी आपकी लेखनी से प्रसूत हैं।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना का विशाल निर्माण हुआ है। इसके अलावा कई तीर्थंकरों की जन्म तथा निर्वाणभूमियों के तीर्थों का विकास भी पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुआ है।

पूज्य माताजी का पावन जीवन हम सभी श्राविकाओं तथा श्रावकों के लिए प्रेरणादायी है। हमारी भावना है कि पूज्य माताजी इसी प्रकार आत्म साधना करते हुए हम सभी को हमेशा आशीर्वाद प्रदान करती रहें। हम भी उनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन में ज्ञान और चारित्र का विकास करें। आप दीर्घायु रहें, स्वस्थ रहें, यही हमारी मंगलकामना है। इन्हीं भावनाओं के साथ।

सरस्वती यदी समुद्रनीर स्याहि ले बना,
त्रिलोक को बनाय ग्रंथ आप कीर्ति को लिखे।
अनंत काल तक विराम ले नहीं तथापि वो,
अनंतकीर्ति आपकी कदापि माँ न लिख सके।।

सुनी सुकीर्ति आपकी अतेव मैं लिया शरण,
कृपा सुदृष्टि कीजिए न देर कीजिये प्रभो!
निकाल दुःख वार्धि से स्वपाद में निवास हो,
अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य दीजिये प्रभो!।।१।।

—गणिनी ज्ञानमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री ज्ञानमती माताजी चतुरनुयोगों के परिप्रेक्ष्य में

प्रस्तुति-आर्यिका चन्दनामती

चारित्रचन्द्रिका पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने जहाँ चारों अनुयोगों के ग्रंथों का लेखन किया है, वहीं उनका सम्पूर्ण जीवन भी समस्त अनुयोगों में निबद्ध है। इतिहास की निर्मात्री, युग की प्रथम बालसती, कुमारिकाओं की पथ प्रदर्शिका पूज्य माताजी के जीवन को लेखनी में निबद्ध करना उसी तरह से असंभव है जैसे समुद्र की सीमा को छोटे-छोटे हाथों में बाँधना। माता की गोदी से ही जिनकी प्रतिभा छलक रही थी, मातृभूमि की गलियों में जिनकी आभा झलक रही थी, बालक्रीड़ा से जिनकी ज्ञानकिरणें निकल रही थीं, युवावस्था में तपस्या की अग्नि में अपनी सुकुमार काया को तपाकर कुन्दन बनाने वाली युगप्रवर्तिका का जीवन प्रस्तुत है चारों अनुयोगों के मंच से—

प्रथमानुयोग के दर्पण में गणिनी आर्यिकाश्री

प्रश्न 1 —पुराण किसे कहते हैं?

उत्तर —पुण्य पुरुषों के पवित्र चरित्र का जिन ग्रंथों में वर्णन हो, उन्हें 'पुराण' ग्रंथ कहा जाता है।

प्रश्न 2 —गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म कहाँ हुआ था?

उत्तर —उत्तरप्रदेश के बाराबंकी जिले में 'टिकैतनगर' नामक कस्बे में ज्ञानमती माताजी का जन्म हुआ था।

प्रश्न 3 —किस सन् में कौन सी तिथि को इनका जन्म हुआ?

उत्तर —22 अक्टूबर सन् 1934 को शरदपूर्णिमा (आश्विन शु. पूर्णिमा) के दिन।

प्रश्न 4 —इनका जन्म नाम क्या था?

उत्तर —कु. मैना।

प्रश्न 5 —इनकी जाति एवं गोत्र का क्या नाम है?

उत्तर —अग्रवाल जैन जाति एवं गोयल गोत्रीय परिवार में इनका जन्म हुआ है।

प्रश्न 6 —इनके माता-पिता का क्या नाम था?

उत्तर —माता का नाम मोहिनी देवी एवं पिता का नाम छोटेलाल था।

प्रश्न 7 —जहाँ इन्होंने लौकिक शिक्षा प्राप्त की, उस शिक्षण संस्था का क्या नाम था?

उत्तर —"श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन विद्यालय" टिकैतनगर में इन्होंने लौकिक एवं धार्मिक शिक्षा प्राप्त की। वही संस्था वर्तमान में पार्श्वनाथ इंटर कालेज का रूप ले चुकी है।

प्रश्न 8 —अपने माता-पिता की ये कौन सी संतान हैं?

उत्तर —प्रथम।

प्रश्न 9 —इनके भाई कितने हैं?

उत्तर —चार-कैलाशचंद जैन, स्व. प्रकाशचंद जैन, सुभाषचंद जैन एवं ब्र. रवीन्द्र कुमार जी।

प्रश्न 10 —बहनें कितनी हैं?

उत्तर —8 बहनें हैं-सौ. शांति देवी, सौ. श्रीमती देवी, ब्र. मनोवती (आर्यिका अभयमती), श्रीमती कुमुदनी देवी, सौ. मालती शास्त्री, सौ. कामनी देवी, ब्र. माधुरी (आ. चन्दनामती), सौ. त्रिशला शास्त्री।

प्रश्न 11 —ज्ञानमती माताजी को वैराग्य कैसे हुआ?

उत्तर —"पद्मनंदिपंचविंशतिका" ग्रंथ के स्वाध्याय से इन्हें वैराग्य हुआ था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न 12 —इन्हें ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कराने में क्या अन्य भी कोई कारण बना है?

उत्तर —एक बार अकलंक-निकलंक नाटक देखकर इन्होंने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लेने का संकल्प किया।

प्रश्न 13 —इनका विवाह हुआ था या क्वाँरी अवस्था में वैराग्य हो गया था?

उत्तर —क्वाँरी अवस्था में ही इन्हें संसार से वैराग्य हो गया था।

प्रश्न 14 —ब्रह्मचर्य व्रत इन्होंने कहाँ और किस गुरु से लिया था?

उत्तर —सन् 1952 की शरदपूर्णिमा को बाराबंकी में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से सप्तमप्रतिमारूप ब्रह्मचर्यव्रत कु. मैना ने ग्रहण किया था।

प्रश्न 15 —इन्होंने क्षुल्लिका दीक्षा कहाँ और किनसे ली थी?

उत्तर —श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर सन् 1953 में चैत्र कृ. एकम् को आचार्यश्री देशभूषण जी ने इन्हें क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की थी।

प्रश्न 16 —क्षुल्लिका अवस्था में इनका क्या नाम था?

उत्तर —क्षुल्लिका वीरमती माताजी।

प्रश्न 17 —क्षुल्लिका अवस्था में ये कितने दिन रही हैं?

उत्तर —3 वर्ष 31 दिन तक ये क्षुल्लिका रही हैं।

प्रश्न 18 —वे तीन चातुर्मास इन्होंने कहाँ-कहाँ किये थे?

उत्तर —प्रथम टिकैतनगर में, द्वितीय जयपुर में और तृतीय म्हसवड़ (महाराष्ट्र) में।

प्रश्न 19 —पुनः इन्होंने आर्यिका दीक्षा किनसे ग्रहण की?

उत्तर —चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर महाराज से इन्होंने आर्यिका दीक्षा ली थी।

प्रश्न 20 —कहाँ और किस तिथि में इनकी आर्यिका दीक्षा हुई है?

उत्तर —माधोराजपुरा (राज.) में सन् 1956 में वैशाख कृष्णा दूज को आचार्यश्री वीरसागर महाराज ने इन्हें आर्यिका दीक्षा देकर ज्ञानमती नाम से अलंकृत किया।

प्रश्न 21 —चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के प्रथम दर्शन इन्होंने कब और कहाँ किए थे?

उत्तर —सन् 1954 के दिसम्बर महीने में नीरा (महाराष्ट्र) में।

प्रश्न 22 —क्या इन्होंने आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की सल्लेखना भी देखी है?

उत्तर —हाँ, सन् 1955 में एक माह कुंथलगिरि रुककर क्षुल्लिकावस्था में आचार्यश्री की प्रत्यक्ष सल्लेखना तो देखी ही है, साथ ही उनके श्रीमुख से अनेक अनुभव वाक्य भी प्राप्त किए हैं।

प्रश्न 23 —आचार्यश्री शांतिसागर जी से इन्होंने आर्यिका दीक्षा क्यों नहीं ली?

उत्तर —इन्होंने आचार्यश्री से आर्यिका दीक्षा की याचना की थी किन्तु आचार्यश्री ने कहा था कि 'मैं सल्लेखना लेने जा रहा हूँ, मैंने अब दीक्षा देने का त्याग कर दिया है। तुम मेरे शिष्य वीरसागर से आर्यिका दीक्षा लेना'। अतः उनकी आज्ञानुसार वीरसागर जी से दीक्षा ली।

प्रश्न 24 —आचार्यश्री देशभूषण जी से ही इन्होंने आर्यिकादीक्षा क्यों नहीं ली?

उत्तर —क्योंकि देशभूषण महाराज ने उस समय तक अपने हाथों से किसी भी नारी को आर्यिका दीक्षा नहीं दी थी। इनकी उत्कट इच्छा देखकर आचार्यश्री ने भी इन्हें वीरसागर जी के पास आर्यिका दीक्षा लेने की प्रेरणा दी थी।

प्रश्न 25 —श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रथमानुयोग से संबंधित कौन-कौन सी पुस्तकें लिखी हैं?

उत्तर —प्रतिज्ञा, परीक्षा, संस्कार, उपकार, जीवनदान, प्रभावना, सती अन्जना, भगवान् नेमिनाथ, भगवान ऋषभदेव,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदिब्रह्मा, कामदेव बाहुबली, योग चक्रेश्वर बाहुबली, बाहुबली नाटक, पुरुदेव नाटक, रोहिणी नाटक, एकांकी, जैन बाल भारती, नारी आलोक, चौबीस तीर्थंकर, आटे का मुर्गा, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर आदि अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

प्रश्न 26 —पूज्य माताजी के जीवन का प्रमुख उद्देश्य क्या रहा है?

उत्तर —आत्मकल्याण के साथ-साथ शिष्य-शिष्याओं को अध्ययन कराना, साहित्य सृजन, तीर्थों का उद्धार, जिनधर्म की व्यापक प्रभावना।

प्रश्न 27 —साहित्यसृजन में इनकी सबसे पहली कृति कौन सी है?

उत्तर —सन् 1955 में म्हसवड़ (महाराष्ट्र) चातुर्मास में सबसे पहले "जिनसहस्रनाम मंत्र" नाम की पुस्तक लिखी, वह इसी नाम से आज भी प्रकाशित है।

प्रश्न 28 —अयोध्या के महामस्तकाभिषेक महोत्सव की योजना माताजी के मस्तिष्क में कब आई?

उत्तर —23 अक्टूबर 1992 (धनतेरस) को जम्बूद्वीप रचना के समक्ष ध्यान करते हुए उन्हें ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक की अन्तर्प्रेरणा प्राप्त हुई थी।

प्रश्न 29 —पुनः हस्तिनापुर से अयोध्या की ओर उन्होंने कब विहार किया?

उत्तर —11 फरवरी 1993, फाल्गुन कृ. पंचमी को पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने संघ सहित अयोध्या की ओर मंगल विहार किया।

प्रश्न 30 —माताजी अयोध्या कब पहुँची थीं?

उत्तर —16 जून 1993 को वे अयोध्या पहुँचीं और जीवन में प्रथम बार भगवान श्री ऋषभदेव का दर्शन किया।

प्रश्न 31 —उनके सानिध्य में अयोध्या में कौन-कौन से नवनिर्माण हुए हैं?

उत्तर —तीन चौबीसी मंदिर, समवसरण मंदिर, अनन्तनाथ टोंक पर 19 तीर्थंकरों के चरण, सप्तऋषि के चरण, भरत बाहुबली के चरण, ब्राह्मी-सुन्दरी के चरण चिन्ह, रायगंज मंदिर परिसर में लगभग 60 फ्लैट, आचार्यश्री शांतिसागर जी एवं देशभूषण महाराज की चरण छतरी, क्षेत्रपाल-पद्मावती, गोमुख यक्षेन्द्र-चक्रेश्वरी देवी की वेदी, 50 से अधिक शिलालेख (अयोध्या के इतिहास से संबंधित), पांडुकशिला स्थल पर शांति, कुंथु, अरनाथ तीर्थंकर के चरण आदि नवनिर्माण हुए हैं।

प्रश्न 32 —महामस्तकाभिषेक महोत्सव कब सम्पन्न हुआ है?

उत्तर —24 फरवरी 1994, माघ सुदी तेरस को।

प्रश्न 33 —अयोध्या तीर्थ विकास के पश्चात् पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौन-कौन से ऐतिहासिक कार्य हुए हैं?

उत्तर —भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ विकास के पश्चात् पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 2001 में भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक भूमि प्रयाग में 'तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली' नामक तीर्थ का नवनिर्माण हुआ तथा सन् 2003-2004 में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक भव्य तीर्थ का निर्माण हुआ, इसके अतिरिक्त मांगीतुंगी, अहिच्छत्र आदि अनेक तीर्थों के जीर्णोद्धार भी समय-समय पर हुए हैं।

प्रश्न 34 —पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के इस प्रथमानुयोगमयी जीवन पक्ष से क्या निष्कर्ष निकलता है?

उत्तर —जीवन में दृढ़ संकल्पी होकर अपने लक्ष्य को पूर्ण करना, संघर्षों को झेलकर जीवन को कुन्दन सा चमकाना, न्याय का पक्ष एवं अन्याय से दूर रहना, सत्य को अपनाकर आत्मविश्वासपूर्वक उस पर अडिग रहना। ये पूज्य ज्ञानमती माताजी के आदर्श जीवन का प्रथमानुयोगमयी पक्ष विशेष पठनीय एवं अनुकरणीय है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानमती माताजी-करणानुयोग के दर्पण में

तीनों लोकों के मध्य में जीवात्मा की परिणति कहाँ, किस रूप में अवस्थित है? इस वस्तुस्थिति का ज्ञान करणानुयोग ग्रंथ कराते हैं। परम पूज्य माताजी के जीवन को करणानुयोग के परिप्रेक्ष्य में भी झांक कर देखें और प्राप्त करें उनसे कुछ आदर्श और सिद्धान्त—

प्रश्न 1 —करणानुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर —जिन ग्रंथों में लोक-अलोक के विभाग का कथन हो, युग परिवर्तन का, कर्म प्रकृतियों का वर्णन हो, उन्हें करणानुयोग ग्रंथ कहते हैं।

प्रश्न 2 —ज्ञानमती माताजी का अवस्थान किस लोक और किस गति में है?

उत्तर —मध्यलोक में मनुष्यगति में ज्ञानमती माताजी का अवस्थान है।

प्रश्न 3 —किस द्वीप और क्षेत्र में माताजी ने जन्म लिया है?

उत्तर —जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में भारतदेश के उत्तरप्रदेश में बाराबंकी जिले में इनका जन्म हुआ है।

प्रश्न 4 —माताजी के कितनी पर्याप्ति एवं इन्द्रियाँ हैं?

उत्तर —आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन ये छहों पर्याप्तियाँ एवं पाँचों इन्द्रियाँ जिस प्रकार समस्त मनुष्यों में होती हैं, उसी प्रकार ज्ञानमती माताजी के भी हैं।

प्रश्न 5 —माताजी के कितने ज्ञान हैं?

उत्तर —पंचमकाल के स्त्री-पुरुषों को मति और श्रुत ये दो ज्ञान होते हैं अतः पूज्य माताजी के भी ये दो ज्ञान ही हैं।

प्रश्न 6 —इनके प्राण कितने हैं?

उत्तर —दशों प्राण हैं।

प्रश्न 7 —पूज्य माताजी ने करणानुयोग से संबंधित कौन-कौन सी पुस्तकें लिखी हैं?

उत्तर —त्रिलोकभास्कर, जम्बूद्वीप, गोम्मटसार जीवकांड सार, गोम्मटसार कर्मकांड सार, इन्द्रध्वज विधान, सर्वतोभद्र विधान, तीन लोक विधान, जम्बूद्वीप विधान, त्रैलोक्य विधान आदि में भी करणानुयोग का ही प्रकरण है।

प्रश्न 8 —माताजी के मन में जम्बूद्वीप रचना का ध्यान कब और कहाँ आया?

उत्तर —सन् 1965 में जब इन्होंने अपने आर्यिका संघ सहित कर्नाटक प्रान्त के श्रवणबेलगोला तीर्थ पर चातुर्मास एवं एक वर्ष तक प्रवास किया था, तब 15 दिवसीय मौन लेकर ध्यान करते हुए एक दिन भगवान बाहुबली के चरण सानिध्य में ध्यान के अंदर ही तेरहद्वीप रचना का दर्शन हुआ था। उसी में से एक जम्बूद्वीप का निर्माण हस्तिनापुर में किया गया है।

प्रश्न 9 —यह जम्बूद्वीप रचना माताजी की कल्पना है या इसका शास्त्रीय प्रमाण भी है?

उत्तर —माताजी कभी भी कल्पनाओं या स्वप्नों का मूल्यांकन नहीं करती हैं। उनके ध्यान में स्वयमेव यह रचना दृष्टिगोचर हुई, तब उन्होंने ग्रंथों में उसकी खोज की और फलस्वरूप तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार आदि ग्रंथों में इस रचना का ज्यों का त्यों वर्णन पाकर बहुत प्रसन्न हुईं। अतः सारांश यह है कि जम्बूद्वीप कोई काल्पनिक रचना नहीं है। यह करणानुयोग ग्रंथों में वर्णित जैन भूगोल की रचना है।

प्रश्न 10 —बाहुबलि चरणों में प्राप्त जम्बूद्वीप का निर्माण उत्तरप्रदेश में क्यों हुआ?

उत्तर —यह तो संयोग की बात है। जहाँ की धरती पर उसके निर्माण का योग था, उसी ओर माताजी के कदम मुड़ गए और हस्तिनापुर में उसका निर्माण हो गया।

प्रश्न 11 —क्या हस्तिनापुर से जम्बूद्वीप का कोई पौराणिक संबंध जुड़ा है?

उत्तर —हाँ, यह भी एक अनहोना संयोग ही जुड़ गया। जब इतिहास एवं पुराणों का अध्ययन किया गया, तब ज्ञात हुआ कि आज से कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व भमवान ऋषभदेव के युग में हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस ने स्वप्न में सुमेरुपर्वत देखा था। सो ऐसा लगता है कि उनका स्वप्न ही आज उसी भूमि पर साकार हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14,15,16 अप्रैल 2005

प्रश्न 12 —सुमेरुपर्वत का जम्बूद्वीप से क्या संबंध है?

उत्तर —जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में ही तो सुमेरुपर्वत बना है।

प्रश्न 13 —यह सुमेरुपर्वत कितना ऊँचा है?

उत्तर —एक लाख चालिस योजन ऊँचा सुमेरु पर्वत है।

प्रश्न 14 —हस्तिनापुर में यह सुमेरुपर्वत कितना ऊँचा बना है?

उत्तर —101 फुट ऊँचा सुमेरुपर्वत वहाँ बना है।

प्रश्न 15 —उसमें ऊपर तक दर्शन करने का क्या साधन है?

उत्तर —अंदर से सीढ़ियों के माध्यम से ऊपर तक पहुँचकर सोलहों चैत्यालय के दर्शन सुलभतया हो जाते हैं।

प्रश्न 16 —उसमें सीढ़ियाँ कितनी बनी हुई हैं?

उत्तर —136 सीढ़ियाँ हस्तिनापुर के सुमेरुपर्वत में बनाई गई हैं।

प्रश्न 17 —हस्तिनापुर के जम्बूद्वीप में क्या पूरे 78 अकृत्रिम चैत्यालय दर्शाए गए हैं?

उत्तर —हाँ, वहाँ सफेद संगमरमर से बने पूरे 78 चैत्यालय बने हैं।

प्रश्न 18 —वहाँ अन्य और रंग-बिरंगे चैत्यालय किनके बने हैं?

उत्तर —जम्बूद्वीप के सभी पर्वतों पर अनेक देवभवन शास्त्रों में माने हैं उन्हीं के प्रतीक में हस्तिनापुर के जम्बूद्वीप में रंग-बिरंगे देवभवन बनाए गए हैं। ये देवों के गृह चैत्यालय हैं इसीलिए इन्हें सिद्धकूटों से भिन्न दर्शाया गया है।

प्रश्न 19 —ज्ञानमती माताजी के कौन सा गुणस्थान है?

उत्तर —पाँचवाँ गुणस्थान है।

प्रश्न 20 —गुणस्थानों को पहचानने का थर्मामीटर क्या है?

उत्तर —अन्तरंग की पहचान तो केवलीगम्य ही है किन्तु महाव्रत, अणुव्रत आदि धारण करने से बाह्यरूप से गुणस्थान पहचाने जाते हैं।

प्रश्न 21 —पूज्य ज्ञानमती माताजी का पंचम गुणस्थान किस अपेक्षा से है?

उत्तर —आगम में आर्यिकाओं का पंचम गुणस्थान ही माना गया है, क्योंकि वे उपचार से महाव्रती होती हैं तथा स्त्रियाँ पाँचवें गुणस्थान से आगे की अवस्था कभी भी प्राप्त नहीं कर सकती हैं।

प्रश्न 22 —क्या स्त्रियाँ अपने स्त्री भव से कभी मोक्ष नहीं जा सकती हैं?

उत्तर —नहीं, दिगम्बर जैन सिद्धान्त के अनुसार स्त्रियाँ मोक्ष नहीं जा सकती हैं।

प्रश्य 23 —क्या तीर्थंकर की माता भी उस भव से मोक्ष नहीं जाती हैं?

उत्तर —नहीं, क्योंकि सिद्धान्त का नियम तो अटल होता है।

प्रश्न 24 —ज्ञानमती माताजी को कौन सा सम्यग्दर्शन है?

उत्तर —क्षयोपशम सम्यग्दर्शन है।

प्रश्न 25 —स्त्रियों के कभी क्षायिक सम्यग्दर्शन हो सकता है या नहीं?

उत्तर —नहीं।

प्रश्न 26 —ज्ञानमती माताजी को इतने विशाल ज्ञान की प्राप्ति कैसे हुई?

उत्तर —पूर्व जन्म के संस्कारवश एवं इस भव में ज्ञानावरणकर्म के क्षयोपशम को ही निमित्त मानना पड़ेगा।

प्रश्न 27 —माताजी के इस करणानुयोगगत जीवन से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर -कर्मों की विचित्रता जानकर हम सभी उनसे छूटने का सतत प्रयत्न करें, यही शिक्षा मिलती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरणानुयोग की ओर माताजी के बढ़ते कदम

आगम के अनुसार सम्यक् क्रियाओं का पालन करना चारित्र कहलाता है। चरणानुयोग संबंधी शास्त्रों में इस चारित्र का वर्णन आता है। परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी, जो स्वयं "चारित्रचन्द्रिका" पद से अलंकृत हैं तथा चारित्र की जीती जागती मूर्ति हैं। आओ, हम भी उनके बढ़ते कदमों पर दृष्टिपात करें तथा उनके पदचिन्हों पर चलने का प्रयत्न करें—

प्रश्न 1 —चरणानुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर —जिन ग्रंथों में सांधु एवं गृहस्थों के चारित्र, क्रिया आदि का वर्णन होता है, वे चरणानुयोग के ग्रंथ कहे जाते हैं।

प्रश्न 2 —चारित्र के कितने भेद हैं?

उत्तर —दो भेद हैं-सकल चारित्र और विकल चारित्र।

प्रश्न 3 —सकलचारित्र किसे कहते हैं तथा यह किनके होता है?

उत्तर —महाव्रतरूप पूर्ण चारित्र को सकलचारित्र कहते हैं तथा यह सकलचारित्र मुनियों के होता है।

प्रश्न 4 —विकलचारित्र किसे कहते हैं और यह किनको होता है?

उत्तर —अणुव्रतरूप एक देशसंयम को विकलचारित्र कहते हैं और यह चारित्र ऐलक, क्षुल्लक-क्षुल्लिकाओं एवं गृहस्थ श्रावक-श्राविकाओं को होता है।

प्रश्न 5 —आर्यिकाओं के कौन सा चारित्र होता है?

उत्तर —आचारसार ग्रंथ के अनुसार आर्यिकाओं को उपचार से महाव्रती कहा गया है। पुराणों में उन्हें संयतिका शब्द से भी सम्बोधित किया गया है अतः उपचार से तो सकलचारित्र कहा जा सकता है किन्तु पंचमगुणस्थान की अपेक्षा उनके विकलचारित्र भी मान सकते हैं।

प्रश्न 6 —पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रंथ के अनुसार श्रावक के कितने मूलगुण होते हैं?

उत्तर —आठ मूलगुण होते हैं-मद्य, माँस, मधु ये तीन मकार तथा बड़, पीपल, पाकर, ऊमर और कठूमर इन पाँच उदुम्बर फलों का त्याग अष्टमूलगुण कहलाता है।

प्रश्न 7 —स्वामी श्री समन्तभद्राचार्य के अनुसार श्रावकों के अष्टमूलगुण कौन से हैं?

उत्तर —तीन मकार का त्याग और पाँच अणुव्रतों का पालन ये 8 मूलगुण रत्नकरंडश्रावकाचार में बताए गए हैं।

प्रश्न 8 —पाँच अणुव्रत कौन-कौन से हैं?

उत्तर —अहिंसाणुव्रत, सत्याणुव्रत, अचौर्याणुव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रत और परिग्रहपरिमाण अणुव्रत ये पाँच अणुव्रत कहलाते हैं।

प्रश्न 9 —अन्य तृतीय प्रकार का अष्ट मूलगुण किनने कहाँ बताया है?

उत्तर —1.मद्य 2. मांस 3. मधु इन तीन मकारों का त्याग 4. रात्रि भोजन त्याग 5. पंच उदुम्बर फलों का त्याग 6. पंचपरमेष्ठी की स्तुति 7. जीवदया पालन 8. जल छानकर पीना ये अष्टमूलगुण श्रावकों के लिए पण्डित श्री आशाधर जी ने सागारधर्मामृत ग्रंथ में बताया है।

प्रश्न 10 —अणुव्रतों का पालन करने से क्या फल मिलता है?

उत्तर —अणुव्रतों को पालने वाले श्रावक-श्राविका नियम से स्वर्ग सुखों को प्राप्त करते हैं। जैसे— अणुबम संसारी प्राणियों को नष्ट करने में सक्षम होता है वैसे ही अणुव्रत कर्मों को नष्ट करने में सक्षम है तथा परम्परा से मोक्ष प्राप्त कराने में भी समर्थ है।

प्रश्न 11 —पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने कितने वर्ष की उम्र में अणुव्रत धारण किए थे?

उत्तर —यूँ तो आठ वर्ष की उम्र के बाद ही इन्हें पूर्व जन्म के संस्कारवश बोध प्राप्त हो गया था, जिसके फलस्वरूप इन्होंने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने घर में अनेक कुरीतियों को समाप्त किया था, फिर भी विधिवत् गुरु के पादमूल में सन् 1952 की शरदपूर्णिमा को 18 वर्ष की उम्र में सप्तम प्रतिमा के व्रत लेकर अणुव्रती श्राविका की श्रेणी प्राप्त की थी।

प्रश्न 12 —महाव्रत के कितने भेद हैं?

उत्तर —पाँच भेद हैं—अहिंसा महाव्रत, सत्य महाव्रत, अचौर्य महाव्रत, ब्रह्मचर्य महाव्रत और अपरिग्रह महाव्रत।

प्रश्न 13 —इन व्रतों को "महाव्रत" संज्ञा क्यों है?

उत्तर —ये व्रत चूँकि स्वयं महान फल को देने वाले हैं तथा इनको तीर्थंकर आदि महापुरुष धारण करते हैं इसलिए इन्हें महाव्रत की संज्ञा प्राप्त है।

प्रश्न 14 —महाव्रतधारी मुनियों के मूलगुण कितने होते हैं?

उत्तर —28 मूलगुण होते हैं-पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पंचेन्द्रिय निरोध, षट्आवश्यक, केशलोंच, अचेलक, अस्नान, भूमिशयन, अदन्तधावन, खड़े होकर भोजन करना, एक बार भोजन करना 5+5+5+6+7=28।

प्रश्न 15 —पाँच समितियाँ कौन सी हैं?

उत्तर —ईर्या, भाषा, एषणा, आदान निक्षेपण, उत्सर्ग ये पाँच समितियाँ हैं।

प्रश्न 16 —पंचेन्द्रियनिरोध का क्या मतलब है?

उत्तर —स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण इन पाँचों इन्द्रियों को अनुशासित—अपने वश में रखने का नाम पंचेन्द्रिय निरोध है।

प्रश्न 17 —षट्आवश्यक कौन-कौन से हैं?

उत्तर —समता, स्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, कायोत्सर्ग।

प्रश्न 18 —इन अट्ठाईस मूलगुणों में से आर्यिकाओं के कितने मूलगुण होते हैं?

उत्तर —आर्यिकाओं के भी मुनियों के समान ही अट्ठाईस मूलगुण होते है।

प्रश्न 19 —उनके अचेलक और खड़े होकर भोजन करना ये दो मूलगुण तो हैं नहीं, अतः 26 मूलगुण ही मानना चाहिए?

उत्तर —पूज्य माताजी के गुरु आचार्यश्री वीरसागर महाराज कहा करते थे कि नग्नता के स्थान पर एक श्वेत साड़ी पहनना और बैठकर भोजन करना ये आगम की आज्ञानुसार आर्यिकाओं के मूलगुण ही माने गये हैं अतः आर्यिकाओं के 28 मूलगुण ही होते हैं, ऐसी मूलाचारानुसार आचार्यश्री शांतिसागर महाराज की मान्यता है।

प्रश्न 20 —इन्द्रध्वज विधान की रचना ज्ञानमती माताजी ने किस सन् में कहाँ की थी?

उत्तर —सन् 1976 में खतौली (उ.प्र.) में इन्द्रध्वज विधान की रचना की थी।

प्रश्न 21 —इन्द्रध्वज विधान कितने दिनों में लिखकर पूर्ण हुआ था?

उत्तर —श्रावण वदी सप्तमी से इन्द्रध्वज का लेखन पूज्य माताजी ने प्रारंभ किया था तथा कार्तिक कृष्णा अमावस को पूर्ण किया था, इस प्रकार कुल 99 दिनों में इन्द्रध्वज विधान का लेखन पूर्ण हुआ था।

प्रश्न 22 —इन्द्रध्वज विधान में कुल कितनी पूजाएँ एवं जयमाला हैं?

उत्तर —इस विधान में 50 पूजाएँ हैं और 51 जयमालाएँ हैं।

प्रश्न 23 —इन्द्रध्वज विधान में कहाँ के चैत्यालयों की पूजन होती है?

उत्तर —मध्यलोक के 458 अकृत्रिम चैत्यालयों की।

प्रश्न 24 —इस विधान में कितने अर्घ्य और पूर्णार्घ्य हैं?

उत्तर —458 अर्घ्य एवं 68 पूर्णार्घ्य हैं?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न 25 —कल्पद्रुम मण्डल विधान की रचना ज्ञानमती माताजी ने किस ग्रंथ के आधार से की है?

उत्तर —इस विधान का नाम शास्त्रों में आता था किन्तु अभी तक यह विधान देश के किसी ग्रंथालय में नहीं देखने में आया था। पूज्य माताजी ने अपने मस्तिष्क से ही चिन्तन करके समवसरण से संबंधित पूजाओं को रचकर यह एक मौलिक कृति बनाई है।

प्रश्न 26 —इस कल्पद्रुम विधान को उन्होंने कहाँ और किस सन् में लिखा है?

उत्तर —सन् 1986 में हस्तिनापुर के जम्बूद्वीप स्थल पर चातुर्मास काल में।

प्रश्न 27 —कल्पद्रुम विधान में कितनी पूजा, जयमाला हैं तथा कुल अर्घ्य कितने हैं?

उत्तर —इसमें 24 पूजाएँ हैं, 25 जयमाला हैं तथा 2424 अर्घ्य एवं 72 पूर्णार्घ्य हैं।

प्रश्न 28 —इस विधान में कितने छंदों का प्रयोग किया गया है?

उत्तर —45 छंदों का प्रयोग इस विधान में किया गया है।

प्रश्न 29 —इस कल्पद्रुम विधान को माताजी ने कितने दिन में लिखकर पूरा किया था?

उत्तर —9 जुलाई 1986, आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को पूज्य माताजी ने प्रात: 5 बजकर 45 मिनट पर इसका लेखन प्रारंभ किया तथा 17 अक्टूबर 1986 शरदपूर्णिमा को प्रात: 6.10 बजे पूर्ण किया अत: कुल 101 दिन में यह विधान लिखा गया है।

प्रश्न 30 —इस कल्पद्रुम विधान में चार दान बांटने का नियम क्यों है?

उत्तर —क्योंकि चक्रवर्तीगण चतुर्थकाल में इस विधान को करते हुए किमिच्छक दान बाँटते हैं किन्तु पंचमकाल में न चक्रवर्ती हैं और न किमिच्छक दान बँट सकता है इसीलिए स्थापना निक्षेप से चक्रवर्ती बनकर मनुष्य को यह विधान करते हुए शक्ति अनुसार चार दान बाँटने का नियम बताया गया है।

प्रश्न 31 —सर्वतोभद्र विधान में कहाँ के चैत्यालयों की कितनी पूजाएँ हैं?

उत्तर —इसमें तीनों लोकों के नवदेवता संबंधी कुल 101 पूजाएँ हैं।

प्रश्न 32 —इसमें कुल कितने अर्घ्य एवं पूर्णार्घ्य हैं?

उत्तर —सर्वतोभद्र विधान में कुल 1811 अर्घ्य हैं तथा 190 पूर्णार्घ्य हैं।

प्रश्न 33 —इसकी रचना किसने, कब और कहाँ की थी?

उत्तर —इस सर्वतोभद्र विधान की रचना पूज्य ज्ञानमती माताजी ने सन् 1987 में हस्तिनापुर में की थी।

प्रश्न 34 —इसका 'सर्वतोभद्र' नाम क्यों रखा गया है?

उत्तर —यह महायज्ञ सब तरफ से और सब प्रकार से भद्र—कल्याणकारी है अर्थात् पूजकों को सर्व सुख-संपत्ति देने वाला है इसलिए इसका नाम "सर्वतोभद्र" सार्थक है।

प्रश्न 35 —आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी द्वारा रचित मूलाचार ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद ज्ञानमती माताजी ने कब किया है और वह कहाँ से प्रकाशित हुआ है?

उत्तर —सन् 1976 में मूलाचार का अनुवाद किया है और वह "भारतीय ज्ञानपीठ" संस्था से प्रकाशित हुआ है।

प्रश्न 36 —पूज्य माताजी ने कन्नड़ भाषा में भी कोई रचनाएँ की हैं?

उत्तर —हाँ, सन् 1965 में माताजी ने कन्नड़ की बारहभावना, बाहुबली स्तुति और भद्रबाहु स्तुति रची थी, जिसमें से बारह भावना कर्नाटक प्रान्त में खूब प्रचलित है।

प्रश्न 37 —पूज्य माताजी द्वारा रचित तीन लोक विधान में कितनी पूजा-अर्घ्य आदि हैं?

उत्तर —तीन लोक विधान में 64 पूजाएँ हैं, 884 अर्घ्य तथा 140 पूर्णार्घ्य हैं, 64 जयमाला एवं 'त्रैलोक्यचूड़ामणि" नाम की एक बड़ी जयमाला है।

प्रश्न 38 —आर्यिका अवस्था में समाधिमरण करके किस स्वर्ग तक पद प्राप्त हो सकता है?

उत्तर —सोलह स्वर्ग तक इन्द्र-प्रतीन्द्र, देव आदि की पदवी आर्यिकाएँ समाधिमरण करके प्राप्त कर सकती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यानुयोग के आधार पर माताजी का शुद्धात्मतत्त्व

मुख्यरूप से जीव-अजीव इन दो तत्त्वों के आधार पर ही संसार और मोक्ष की व्यवस्था चलती है। जहाँ शुद्ध जीव-अजीव अकेले रहते हैं, वहाँ कोई संघर्ष नहीं होता है। संघर्ष तो इन दोनों के संयोग में ही देखा जाता है। पुण्य-पाप इन कर्मों में लीन आत्मा का निरीक्षण द्रव्यानुयोग कराता है। इसी शृँखला में पूज्य आर्यिकाश्री के शुद्धात्मतत्त्व की ओर भी दृष्टिपात कीजिए—

प्रश्न 1 —द्रव्यानुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर —जिन ग्रंथों में जीवादिक सप्त तत्व, नव पदार्थों का वर्णन हो, उन्हें द्रव्यानुयोगविषयक ग्रंथ कहते हैं।

प्रश्न 2 —द्रव्य के कितने भेद हैं?

उत्तर —द्रव्य के छह भेद हैं—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।

प्रश्न 3 —नवपदार्थ कौन-कौन से हैं?

उत्तर —जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य और पाप ये 9 पदार्थ हैं।

प्रश्न 4 —आचार्यश्री कुन्दकुन्दस्वामी ने द्रव्यानुयोग के कौन-कौन से ग्रंथ लिखे हैं?

उत्तर —समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पंचास्तिकाय, अष्टपाहुड़ आदि।

प्रश्न 5 —द्रव्यानुयोग का सर्वाधिक प्राचीन कौन सा ग्रंथ है?

उत्तर —"समयसार ग्रंथ" जो कि आज से दो हजार वर्ष पुराना है।

प्रश्न 6 —पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने द्रव्यानुयोग संबंधी किन-किन ग्रंथों की रचना की है?

उत्तर —1. समयसार की हिन्दी टीका 2. नियमसार की संस्कृत टीका 3. नियमसार पद्यावली 4. नियमसार पद्मप्रभमलधारी देव की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद, षट्खण्डागम ग्रंथ पर सिद्धान्तचिंतामणि नामक संस्कृत टीका का लेखन।

प्रश्न 7 —आर्यिकाओं को शुक्लध्यान हो सकता है या नहीं?

उत्तर —नहीं।

प्रश्न 8 —उन्हें स्वरूपाचरण चारित्र होता है या नहीं?

उत्तर —नहीं।

प्रश्न 9 —आजकल कुछ विद्वान चतुर्थ गुणस्थान में भी स्वरूपाचरण चारित्र मानते हैं, तब पंचम गुणस्थानवर्ती आर्यिकाओं को स्वरूपाचरण चारित्र क्यों नहीं हो सकता है?

उत्तर —स्वरूपाचरण चारित्र दिगम्बर महामुनियों के अतिरिक्त किसी को भी नहीं होता है। जैसा कि छहढाला में भी कहा है—**''यों है सकल संयम चरित, सुनिये स्वरूपाचरण अब। जिस होत प्रगटे आपनी निधि, मिटे पर की प्रवृत्ति सब।।** अर्थात् शुक्लध्यान की अवस्था में ही मुनियों को स्वरूपाचरण चारित्र होता है। आर्यिका एवं श्रावकादि को स्वरूपाचरण चारित्र कदापि नहीं हो सकता है।

प्रश्न 10 —चतुर्थ गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि असंयमी मनुष्यों के कोई चारित्र माना गया है या नहीं?

उत्तर —सामान्यतया असंयत सम्यग्दृष्टि को चारित्र नहीं होता है। हाँ, चारित्रपाहुड़ ग्रंथ में उस सम्यक्त्वरूप सदाचरण को सम्यक्त्वाचरण चारित्र कह दिया है।

प्रश्न 11 —आत्मा के कितने भेद हैं?

उत्तर —तीन भेद हैं—बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा।

प्रश्न 12 —बहिरात्मा का क्या लक्षण है?

उत्तर —शरीर, पुत्र, मित्र, मकान, वैभव आदि को आत्मस्वरूप मानने वाला, उनके संयोग-वियोग में निज आत्मा को एकान्त से सुखी-दुखी अनुभव करने वाला बहिरात्मा कहलाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न 13 —अन्तरात्मा किसे कहते हैं?

उत्तर —जो आत्मा और शरीर को तथा अन्य समस्त पर वस्तुओं को आत्मा से भिन्न समझकर उनके संयोग-वियोग में आत्मा को सुखी-दुखी अनुभव नहीं करते हैं, वे अन्तरात्मा कहलाते हैं।

प्रश्न 14 —परमात्मा कौन कहलाते हैं?

उत्तर —कर्मों का नाश करने वाले अरहन्त और सिद्ध भगवान् परमात्मा कहलाते हैं।

प्रश्न 15 —परमात्मा के कितने भेद हैं?

उत्तर —दो भेद हैं—सकल परमात्मा, निकल परमात्मा।

प्रश्न 16 —सकल परमात्मा किन्हें कहते हैं?

उत्तर —चार घातिया कर्मों का नाश करने वाले शरीर सहित अरिहंत परमेष्ठी जब तक मोक्ष प्राप्त नहीं करते हैं, तब तक सकल परमात्मा की संज्ञा से जाने जाते हैं।

प्रश्न 17 —निकल परमात्मा का क्या लक्षण है?

उत्तर —आठों कर्मों का नाश करने वाले, शरीर रहित सिद्ध परमेष्ठी निकल परमात्मा कहे जाते हैं।

प्रश्न 18 —अन्तरात्मा के कितने भेद हैं?

उत्तर —तीन भेद हैं—उत्तम अन्तरात्मा, मध्यम अन्तरात्मा, जघन्य अन्तरात्मा।

प्रश्न 19 —इन तीनों की क्या पहचान है?

उत्तर —बारहवें गुणस्थान वाले मुनिराज उत्तम अन्तरात्मा हैं। पाँचवें गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान वाले देशसंयमी एवं सकलसंयमी मध्यम अन्तरात्मा हैं तथा चतुर्थ गुणस्थानवर्ती असंयमी सम्यग्दृष्टि नर-नारी आदि जघन्य अन्तरात्मा हैं।

प्रश्न 20 —आर्यिकाएँ कौन सी आत्मा होती हैं?

उत्तर —मध्यम अन्तरात्मा की श्रेणी में आर्यिकाएँ आती हैं।

प्रश्न 21 —नय किसे कहते हैं?

उत्तर —वस्तु के एक-एक अंश को कहने वाला नय कहलाता है।

प्रश्न 22 —नय के कितने भेद हैं?

उत्तर —दो भेद हैं—व्यवहारनय, निश्चयनय।

प्रश्न 23 —व्यवहारनय के अनुसार ज्ञानमती माताजी का क्या स्वरूप है?

उत्तर —व्यवहार नयानुसार ज्ञानमती माताजी एक महिला हैं, साध्वी हैं, गणिनी आर्यिका माताजी हैं।

प्रश्न 24 —निश्चयनयानुसार उनका क्या स्वरूप है?

उत्तर —निश्चयनय से वे शुद्ध-बुद्ध, नित्य-निरंजन परमात्मस्वरूप भगवान आत्मा हैं।

प्रश्न 25 —व्यवहार और निश्चयनय के कथन से इतनी भिन्नता क्यों है?

उत्तर —क्योंकि व्यवहारनय कर्मोपाधि से सहित आत्मा का कथन करता है और निश्चयनय कर्मोपाधि से रहित शुद्ध आत्मा का कथन करता है। दोनों नयों में शक्ति और व्यक्ति का अन्तर है अर्थात् निश्चयनय अमूर्तिक आत्मा की शक्ति बताता है और व्यवहारनय व्यक्तरूप में प्रगट स्थिति का कथन करता है।

प्रश्न 26 —व्यवहारनय से ज्ञानमती माताजी क्या करती हैं?

उत्तर —व्यवहारनय से पूज्य माताजी अपने मूलगुणों का पालन करती हैं, शिष्य-शिष्याओं एवं श्रद्धालुभक्तों को शिक्षा-दीक्षा देती हैं, जगह-जगह भ्रमण करके अहिंसा धर्म का उपदेश देती हैं।

प्रश्न 27 —निश्चयनय की अपेक्षा उन्होंने अपनी आत्मशक्ति किस रूप में प्रकट की है?

उत्तर —निश्चयनय से "आत्मा अनन्त शक्तिमान् है" इस बात का रहस्य जानकर ही उन्होंने उसे प्रगट करने हेतु इस दुरूह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्याग को स्वीकार किया है। समस्त व्यवहारिक क्रियाएँ करते हुए भी आत्मसिद्धि की ओर ही उनका परम लक्ष्य रहता है। पिण्डस्थ, पदस्थ आदि ध्यानों में उनकी बहुत एकाग्रता देखी गई है।

प्रश्न 28 —निश्चयनय से ज्ञानमती माताजी में गुरु-शिष्य संबंध कैसे बनेगा?

उत्तर —निश्चयनय से माताजी का न कोई गुरु है और न कोई शिष्य है। उनकी आत्मा ही उनका वास्तविक गुरु और वास्तविक शिष्य है।

प्रश्न 29 —क्या पंचमकाल में निश्चयनयस्वरूप आत्मतत्त्व की प्राप्ति हो सकती है?

उत्तर —नहीं, पंचमकाल में तो उस आत्मतत्त्व की श्रद्धा मात्र हो सकती है, प्राप्ति नहीं।

प्रश्न 30 —तब इस कलिकाल में नर-नारियों को मुनि-आर्यिका के व्रत धारण कर घोर कष्ट सहने की क्या आवश्यकता है?

उत्तर —कई भवों में तपस्या का अभ्यास करने वाले मनुष्य ही आत्मसिद्धिपूर्वक मोक्ष प्राप्त कर पाते हैं, यही आज के युग में मुनि-आर्यिका व्रत धारण करने में हेतु है। दूसरी बात यह है कि जैन सिद्धान्त के अनुसार चतुर्थकाल के साधु जिन कर्मों को एक हजार वर्ष की तपस्या द्वारा नष्ट करते हैं, पंचमकाल में हीन संहनन के कारण उन्हीं कर्मों को एक वर्ष की तपस्या से नष्ट किया जा सकता है अतः कर्मों की निर्जरा के लिए तपस्या की जाती है।

प्रश्न 31 —द्रव्यानुयोग की सार्थकता हमारे जीवन में क्या होनी चाहिए?

उत्तर —हम भी द्रव्यदृष्टि से अपने शुद्ध आत्मतत्त्व की श्रद्धा करते हुए व्यवहार दृष्टि से उसे प्रगट करने हेतु व्रत, नियम, संयम का यथाशक्ति पालन करें, यही मानव जीवन में द्रव्यानुयोग की सार्थकता समझना चाहिए।

"यह नग्नमुद्रा ब्रह्मचर्यव्रत की कसौटी है और अपरिग्रह की चरम सीमा है।" दूसरी बात यह है कि "यह नग्नरूप तो सचमुच में प्रकृति प्रदत्त प्राकृतिक रूप है। ठंडी, गर्मी, डाँस-मच्छर आदि से शरीर की रक्षा के लिए अथवा विकार को छिपाने के लिए अथवा लज्जा के लिए वस्त्र धारण किये जाते हैं यदि इनमें से सभी पर विजय प्राप्त कर ली गई हो तो पुनः वस्त्रों की क्या आवश्यकता है? कहने का तात्पर्य यही है कि जब तक शरीर से निर्मम नहीं हुआ जायेगा और जब तक निरतिचार पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत नहीं होगा तथा जब तक निर्विकल्प धर्म-शुक्ल ध्यान नहीं होगा तब तक मुक्ति की प्राप्ति भी नहीं होगी। इसलिए मोक्ष प्राप्त करने के लिए यह नग्नवेश ही—यह दिगम्बर मुनि मुद्रा ही एक साधन है। यद्यपि इस दुःषमकाल में मोक्ष की प्राप्ति नहीं है, फिर भी पंचम काल के अन्त तक मोक्ष मार्ग चालू रहेगा। तब तक मुनि, आर्यिका और श्रावक, श्राविका आदि चतुर्विध संघ रहेगा। जिस दिन यह संघ समाधि ग्रहण कर लेगा, उसी दिन धर्म का नाश हो जायेगा, राजा का नाश हो जायेगा और अग्नि का भी नाश हो जायेगा अतः जब तक धर्म, राजा और अग्नि हैं तब तक ये यथाजातरूप धारी मुनि इस पृथ्वीतल पर विचरण करते ही रहेंगे।

(मेरी स्मृतियाँ, पेज-४०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनी आर्यिकाश्री की पवित्र जन्मभूमि

टिकैतनगर का परिचय

लेखिका-ब्र. कु. इन्दू जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

इस संसार में भूमियाँ तो अनेक हैं लेकिन पवित्र वहीं की माटी कही जाती है जहाँ पर किसी महापुरुष का जन्म होता है। न जाने कितने ही लोग इस संसार में आते और चले जाते हैं। लेकिन जो व्यक्ति अपने जीवन को परहित में लगा देता है, अपने सम्पूर्ण जीवन को आदर्शमयी बना देता है और संसार में कुछ विशेष कर जाता है "महापुरुष" वही कहलाता है और ऐसे इन महान व्यक्तियों के कार्य कलापों से वहाँ की भूमि भी आदर्शमयी, पूज्यनीय और पवित्र बन जाती है।

ऐसे सौभाग्य भी विरली ही भूमियों को मिलते हैं। भारतवर्ष की इस पावन वसुन्धरा को सदैव से यह गौरव प्राप्त होता रहा है कि वहाँ के हर प्रदेश, हर ग्राम की माटी ने वीर पुरुषों को जन्म देकर उसकी कीर्तिपताका को दिग्दिगन्त व्यापी बनाया है। जहाँ पुरुषों की महानता की बात आती है, वहीं इस क्षेत्र में महिलाएँ भी पीछे नहीं रही हैं। चाहे युद्ध का क्षेत्र हो, राजनीति का क्षेत्र हो, या फिर धर्म का क्षेत्र हो, महिलाओं ने अपने देश का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कराने में अपने कदम पीछे नहीं हटाये हैं।

इसी भारत भूमि (शस्यश्यामला भूमि) की गोद में खेलता प्रदेश 'उत्तरप्रदेश' है, वहाँ अयोध्या के निकटवर्ती इलाके को अवध प्रांत के नाम से जाना जाता है। इसी अवध के बाराबंकी जिले के पास एक ग्राम है "टिकैतनगर", जहाँ की पवित्र माटी में जन्मी एक छोटी सी बाला ने अपने कार्यों के द्वारा विश्व में एक ऐसा इतिहास बनाया है कि छोटे से ग्राम का नाम आज सम्पूर्ण विश्व में फैल गया है। इस युग की प्रथम क्वांरी कन्या, चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, आर्यिकाशिरोमणि 105 श्री ज्ञानमती माताजी जिनका कि नाम आज कौन नहीं जानता। आज बच्चे-बच्चे के मुँह पर जिनका नाम है, ऐसी उन पूज्यनीय माता ज्ञानमती जी के जन्मस्थान "टिकैतनगर" का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है—

अवध के हर दिल अजीज नवाब आसिफुद्दौला के बारे में एक जनश्रुति प्रचलित है "जिनको न दे मौला, उसको दे आसिफुद्दौला"। उनका शासनकाल अट्ठारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध माना जाता है, जिनके शासनकाल में अनेक ऐतिहासिक सुविख्यात इमारतों का निर्माण किया गया, जिसमें लखनऊ का इमामबाड़ा आज भी उन नवाब की वास्तुकलाविद् स्मृति को अपने अंचल में संजोये हुए है।

नवाब के मंत्री थे "झाऊलाल" जिन्हें कि जनता "राजा दहीगाँव" कहकर संबोधित करती थी, यह एक सुयोग प्रशासक थे। नवाब आसिफुद्दौला के आलावजीर थे "राजा टिकैतराय", जो कि नवाब की आज्ञानुसार अनेक कूपों, बावड़ियों, पुलों, राजपथों का निर्माण कराया करते थे। प्रजा भी उन्हें खूब मान-सम्मान देती थी।

आप सब कहीं भी जाकर देखिए, जहाँ कि कोई व्यक्ति अच्छे कार्य करने लगता है और उसका नाम होने लगता है, वहीं कुछ न कुछ ईर्ष्यालु लोग उसके नाम को सहन नहीं कर पाते हैं।

ठीक यही उन "राजा टिकैतराय" के साथ हुआ। कुछ विद्वेषी लोग उनकी प्रसिद्धि भी बर्दाश्त नहीं कर पाये और नवाब साहब के कान भरने शुरू कर दिये। उन्होंने कहा कि ये सिर्फ हिन्दू कुएँ, पुल वगैरह बनवाते हैं, मुसलमान इससे उपेक्षित हैं अतः इन्हें रोक दिया जाये। नवाब साहब ने तुरंत निर्माण कार्य बंद करवा दिया। राजा साहब वस्तुस्थिति को समझकर शांत रह गये। कुछ दिन बाद एक बार नवाब साहब अपने परिवारजनों के साथ रियासतंभ्रमण हेतु निकले। आगे बढ़ते समय मार्ग में एक गहरे चौड़े नाले ने जब उनके बढ़ते कदम रोक लिए तब नवाब साहब को अपनी भूल का एहसास हुआ, उन्होंने अपनी भूल का परिमार्जन किया और राजा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टिकैतराय को बे-रोकटोक निर्माण कराते रहने का आदेश दिया। फलस्वरूप राजा साहब ने अनेक कार्य किये। उदाहरणस्वरूप लखनऊ में टिकैतराय का तालाब, लखनऊ के पास टिकैतगंज और बाराबंकी जनपद में टिकैतनगर का निर्माण जो कि उनकी कीर्तिपताका को आज फहरा रहे हैं। वैसे उन्होंने अपना सम्पूर्ण ध्यान इसी टिकैतनगर पर केन्द्रित किया था। इसकी रचना भी उन्होंने बड़ी कुशलतापूर्वक करवाई थी। नगर के चारों ओर तीन हाथ चौड़ी लखौड़ी ईटों की बाउन्ड्रीवाल की चूने से जुड़ाई करवाई थी। मुख्य चौक सुन्दर, पक्का राजपथ, चारों दिशाओं में एक-एक उपचौक, आगे चारों ओर मुख्य मार्गों के प्रवेशद्वारों पर एक-एक बुलंद दरवाजा, दो छोटे दरवाजे, जिनमें लकड़ी के मजबूत किवाड़, बाहर कांटों से उभरे लगे, ऊपर नौबतखाना, ऊँची बुर्जियाँ, कंगूरे, ताखे बनाए गऐ थे। रात्रि में किवाड़ बंद कर दिये जाते थे। बाउण्ड्रीवाल से लगे हुए चारों ओर निर्मल जल से भरे हुए गहरे सरोवर, जिनमें कमल, कोकाबेली खिले, पक्षी कलरव करते रहते थे। जिनके भगनावशेष आज भी सुरक्षित हैं।

नगर को चार बार्डों में विभक्त किया गया था, जिसमें प्रामुख है-सरावगी वार्ड। उस समय राजा टिकैतराय ने नगर के अन्दर केवल वैश्य वर्ण को ससम्मान बसाया था। गाँव के चारों ओर तत्कालीन शूद्रों को बसाया गया था। टिकैतनगर से ही एक किलोमीटर की दूरी पर "कस्बा" ग्राम है, जहाँ पर लखनऊ के इमामबाड़ा में बनी एशिया की सबसे बड़ी बिना एक इंच लोहा के, सीमेंट और बीच में खम्भों के बगैर लम्बी-चौड़ी छत के साथ प्रसिद्ध भूलभुलैया की अनुकृति के समान छोटी भूलभुलैया बनाई। साथ ही एक पक्के सरोवर का निर्माण भी कराया, जिसमें कुओं से जल भरवाया गया था। राजा टिकैतराय को यह स्थान परम प्रिय था। वह जब-जब टिकैतनगर आते थे, अपना अधिकांश समय वहीं पर व्यतीत करते थे।

महाभारत काल में भी पाण्डवों ने अपना अज्ञातवास का अधिकांश समय टिकैतनगर के समीप ही बिताया है। कहा जाता है कि कुन्तेश्वर महादेव का प्रसिद्ध मंदिर किन्तूर में बनाया है तथा धर्मराज युधिष्ठिर द्वारा रोपित नन्दनवन से लाया गया पारिजात वृक्ष आज सम्पूर्ण विश्व में अकेला, अद्वितीय, विशाल, प्राचीनतम पेड़ है, जो कि समीप के ग्राम बरौलिया में लगा हुआ है। जहाँ कि सम्पूर्ण देश-विदेशों से अनेकानेक वनस्पति विज्ञानी सदैव आते रहे हैं। पर्यटन हेतु यात्री भी वहाँ आते रहते हैं। टाउन एरिया कमेटी टिकैतनगर ग्राम में ही है। आज दिगम्बर जैन अग्रवाल समाज के लगभग 100 परिवार यहाँ बसे हुए हैं, जिनमें प्रत्येक में धार्मिक भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। यहाँ दो विशाल जिनमंदिर जी हैं, पाँच गृहचैत्यालय हैं। मुख्यमंदिर में मूलनायक सातिशय पार्श्वप्रभु की, कृष्णवर्णी नेमिनाथ भगवान की, बाहुबली भगवान के साथ ही साथ शताधिक जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं। साथ ही सन् 2005 में उसी नगरी की जन्मीं सम्पूर्ण विश्व का गौरव पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संघ सानिध्य में 'अतिशयकारी भगवान महावीर मंदिर' का सुन्दर निर्माण हुआ है, जिसके शिखर की कलात्मकता अद्वितीय और नयनाभिराम है।

इस ग्राम का गौरव है कि इसकी भूमि को अनेक तपस्वियों की जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त है। इसी पवित्र भूमि को सम्पूर्ण विश्व में आलोकित करने वाली परमपूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि 105 श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री 105 रत्नमती माताजी, आर्यिका श्री 105 अभयमती माताजी, आर्यिका श्री 105 चन्दनामती माताजी, आर्यिका श्री 105 सिद्धमती माताजी, क्षुल्लिका श्री 105 विवेकमती माताजी, क्षुल्लिका श्री 105 श्रद्धामती माताजी आदि साधुओं ने यहाँ की कीर्ति अमर की है। आज भी यहाँ से त्यागीवृंद निकल रहे हैं, जिसमें आज से 12 वर्ष पूर्व पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा प्राप्त कर त्यागमार्ग में निकली उन्हीं के गृहास्थावस्था के भ्राता स्व. श्री प्रकाशचंद जी की सुपुत्री कु. इन्दु जैन एवं वहीं के श्रावक श्री कोमलचंद जैन की सुपुत्री कु. अलका जैन पूज्य माताजी के संघ में रहते हुए गुरु सेवा-वैयावृत्ति के साथ धार्मिक अध्ययन व धर्मप्रभावना के कार्यों में सतत संलग्न हैं और न जाने कितने त्यागी इसी टिकैतनगर से निकलेंगे। यहाँ की समाज अत्यन्त उदार है। प्राय: अनेक तीर्थक्षेत्रों संस्थाओं के प्रतिनिधि आर्थिक सहायता हेतु यहाँ आते रहते हैं। समाज उदारतापूर्वक उन्हें भरपूर सहयोग प्रदान करती है। प्रतिदिन शताधिक नर-नारी, युवा, वृद्ध, बाल-गोपाल जिनेन्द्र देव की अभिषेक-पूजन व्रत आदिक करते रहते हैं। श्री 108 आचार्य देशभूषण जी महाराज ससंघ, श्री 108 मुनि सुबलसागर जी ससंघ, श्री 108 आचार्य विमलसागर जी महाराज ससंघ, भट्टारक श्री देवेन्द्र कीर्ति जी नागौर, परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, आचार्य सिद्धान्तसागर महाराज एवं अनेक मुनि, आर्यिकाओं के यहाँ सुखद चातुर्मास सानंद सम्पन्न हुए हैं। यहाँ बराबर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान, इन्द्रध्वज [illegible]न, शांतिविधान, ऋषिमण्डल विधान, कल्पद्रुम महामण्डल विधान आदि अत्यन्त धर्म प्रभावनापूर्वक होते रहते हैं। धर्म की अच्छी जागृति है। [illegible] वन [illegible] टिकै[illegible]गर की भूमि को वंदन-नमन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रथम त्यागभूमि बाराबंकी का परिचय

लेखक-अजय कुमार जैन
(मंत्री-दि. जैन समाज, बाराबंकी)

आचार्यों द्वारा कथित यह श्लोक महापुरुषों की चरणरज से पवित्र भूमियों के लिए अत्यन्त सटीक है—

यत्रापि कुत्रापि भवंति हंसाः, हंसाः मही-मंडलमंडनानि।
हानिस्तु तेषां हि सरोवराणां, येषां मरालैः संह विप्रयोगः।।

अर्थात् मानसरोवर के कारण हंस को गौरव नहीं मिलता है, हंस के कारण मानसरोवर सन्मान का पात्र बनता है। हंस जहाँ भी रहता है, वही स्थल महत्त्वपूर्ण बनता है।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर से लगभग 60 किमी. दूर एवं लखनऊ राजधानी से 20 किमी. दूर स्थित बाराबंकी शहर उस समय अधिक प्रसिद्धि में आया जब उसी अवध प्रान्त के टिकैतनगर में जन्मी एक 18 वर्षीय कु. मैना ने बीसवीं शताब्दी में प्रथम बार सन् 1952 में शरदपूर्णिमा की पावन तिथि में आचार्यरत्न श्री देशभूषण महाराज से ब्रह्मचर्यव्रत लेकर न सिर्फ अपने त्यागमयी जीवन का प्रारंभीकरण किया अपितु कुमारिकाओं के लिए त्यागमार्ग की परम्परा को प्रादुर्भूत करके उसे संसार के क्षितिज पर स्थापित कर दिया। जिसके फलस्वरूप वर्तमान में हमें सैकड़ों बाल ब्रह्मचारिणी आर्यिका माताओं के दर्शन सुलभतया हो रहे हैं। पूज्य माताजी ने छोटी सी उम्र में उस समय घर-कुटुम्बीजनों एवं समाज का संघर्ष झेलकर शास्त्रीय उद्धरण प्रस्तुत करते हुए व्रत लेने हेतु त्यागमार्ग को अंगीकार करने हेतु अपनी माता मोहिनी से जिस प्रकार स्वीकृति करवाई, वह इस स्थल का गौरवमयी ऐतिहासिक पृष्ठ बन गया है, जिसे यादकर आज भी यहाँ के प्रत्यक्षदृष्टा रोमांचित हो उठते हैं और प्रत्येक धर्मानुरागी भाई-बहन स्वयं को गौरवान्वित भी महसूस करते हैं।

उस बाराबंकी शहर के सरावगी मोहल्ले में वर्तमान में छः जिनमंदिर हैं, जिसमें लगभग 125 वर्ष प्राचीन श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैनमंदिर (बड़ा मंदिर) अतिशय युक्त माना जाता है। यही वह जिनमंदिर है जहाँ सन् 1952 में श्री ज्ञानमती माताजी ने सामाजिक संघर्षों एवं पारिवारिकजनों के विरोधों को देखते हुए अतिशयकारी भगवान चन्द्रप्रभु के चरण सानिध्य में बैठकर यह प्रतिज्ञा की थी कि "ब्रह्मचर्यव्रत प्राप्ति के बाद ही मैं अन्न जल ग्रहण करूँगी, उसके पूर्व तक मेरा चतुराहार त्याग है" और सचमुच यह चमत्कार ही था कि अगले दिन ही उन्हें आचार्य श्री से सप्तम प्रतिमारूप ब्रह्मचर्य व्रत की प्राप्ति हो गई थी। इसके अतिरिक्त अन्य जिनमंदिरों में लगभग 100 वर्ष प्राचीन फुलवाड़ी मंदिर है, जो चन्द्रप्रभु दि. जैन मंदिर के परिसर में ही बना है और उसमें मूलनायक भगवान महावीर की प्रतिमा विराजमान है, इसी मंदिर परिसर में 50 वर्ष पुराना मानस्तंभ है। फुलवाड़ी परिसर में ही 30-40 वर्ष प्राचीन महावीर स्वामी चैत्यालय भी है। 50 वर्ष प्राचीन समवसरण मंदिर एवं छोटे मंदिर के रूप में कहा जाने वाला श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर है, जहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। वर्तमान में यहाँ जैन समाज के लगभग 125 घर हैं, जिसमें अग्रवाल, पल्लीवाल एवं खण्डेलवाल जाति के लोग सामाजिक एकता के साथ रहते हैं।

यहाँ पर सकल दि. जैन समाज ट्रस्ट द्वारा संचालित "महावीर जैन विद्यालय" है, जहाँ नन्हीं-मुन्नी बाल फुलवारी अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करते हैं, साथ ही उसी ट्रस्ट द्वारा संचालित "महावीर जैन औषधालय" भी है, जो प्रत्येक आगन्तुक रोगी को औषधियाँ प्रदान कर उन्हें रोगमुक्त करता है।

ऐसी परम पावन वंदनीय प्रथम त्याग भूमि, बाल ब्रह्मचारिणी माताजी की जननी बाराबंकी नगरी की पावन धरा को शतशः नमन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य ज्ञानमती माताजी की क्षुल्लिका दीक्षास्थली

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी

लेखक-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

दिगम्बर जैन संस्कृति की अमूल्य विरासत अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी तीर्थ वर्तमान में जैनसमाज के लिए सम्पूर्ण भारत का गौरव स्थल है। यह राजस्थान प्रान्त के करौली जिले के हिण्डौन उपखण्ड में गंभीर नदी के पश्चिमी तट पर चांदन गाँव में स्थित है। भगवान महावीर की अतिशययुक्त प्रतिमा के कारण यह स्थान "श्री महावीर जी" के नाम से सुविख्यात है।

आध्यात्मिकता एवं मनोकामनापूर्ति के अद्भुत समन्वय से संयुक्त इस अतिशयकारी तीर्थ पर भारतगौरव आचार्यश्री देशभूषण महाराज ने बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी कु. मैना को सन् 1953 में चैत्र कृष्णा एकम् की पवित्र तिथि में क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान कर बीसवीं सदी को जो अमूल्य एवं महान देन दी है, उसके लिए भू मण्डल युगों-युगों तक उनका चिरऋणी रहेगा।

महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर 18 वर्ष की अल्पवय में वीरता का परिचय देते हुए कुमारिकाओं का पथ प्रदर्शन कर उन्हें मोक्षमार्ग में आरूढ़ करने वाली उन "वीरमती माताजी" ने गुरु आज्ञा से चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर महाराज से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर "ज्ञानमती माताजी" के रूप में अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से जो कीर्तिमान स्थापित किया है, वह इस तीर्थ की महत्ता को और अधिक वृद्धिंगत करते हैं। युगों-युगों तक जब-जब पूज्य माताजी को स्मरण किया जाएगा, तब-तब प्रत्येक प्राणी इस पवित्र भूमि की गौरवगाथा गाते हुए इसको भी अवश्य नमन करेगा।

इस तीर्थक्षेत्र के प्रादुर्भाव के बारे में ऐसा बताया जाता है कि लगभग 400 वर्ष पूर्व चांदन गांव में विचरण करने वाली एक गाय का दूध गंभीर नदी के पास एक टीले पर स्वतः ही झर जाता था। गाय जब कई दिनों तक बिना दूध के घर पहुँचती रही तो ग्वाले ने कारण जानने के लिए गाय का पीछा किया। जब ग्वाले ने यह चमत्कार देखा तो उत्सुकतावश उसने टीले की खुदाई की। वहीं भगवान महावीर की यह दिगम्बर प्रतिमा प्रगट हुई। मूर्ति के चमत्कार और अतिशय की महिमा तेजी से सम्पूर्ण क्षेत्र में फैल गई। सभी धर्म, जाति और सम्प्रदाय के लोग भारी संख्या में दूर-दूर से दर्शनार्थ आने लगे, उनकी मनोकामनाएं पूर्ण होने लगीं, क्षेत्र मंगलमय हो उठा। समय के प्रवाह में विकसित होता यह तीर्थ आज सम्पूर्ण भारत का गौरवस्थल बन गया है।

अतिशयकारी भगवान महावीर की प्रतिमा से प्रभावित होकर बसवा निवासी श्री अमरचंद बिलाला ने यहाँ एक मंदिर का निर्माण करवाया। इस मंदिर के चारों ओर दर्शनार्थियों के ठहरने के लिए कमरों का निर्माण भक्तजनों के सहयोग से कराया गया जिसे "कटला" कहा जाता है। कटले के मध्य में स्थित है मुख्य मंदिर। इस विशाल जिनालय के गगनचुम्बी धवल शिखर एवं स्वर्ण कलशों पर फहराती जैनधर्म की ध्वजाएँ रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन, ज्ञान व चारित्र) का संदेश देती प्रतीत होती हैं। मंदिर की पार्श्ववेदी में मूलनायक के रूप में भूगर्भ से प्राप्त भगवान महावीर की प्रतिमा विराजित है तथा दायीं ओर तीर्थंकर पुष्पदंत एवं बायीं ओर तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमाएं विराजमान की गई हैं। मंदिर के भीतरी एवं बाहरी प्रकोष्ठों में संगमरमरी दीवारों पर बारीक खुदाई से तथा स्वर्णिम चित्रांकन कराकर मंदिर की छटा को आकर्षक व प्रभावशाली बनाया गया है। मंदिर की बाह्य परिक्रमा में कलात्मक भाव उत्कीर्ण किये गए हैं। मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार की सीढ़ियों को सुविधाजनक एवं आकर्षक स्वरूप दिया गया है। श्री महावीर जी में मुख्य मंदिर के अलावा गत वर्षों में 4 और मंदिरों का निर्माण हुआ। 1. शांतिवीर नगर में विशाल खड्गासन प्रतिमा एवं अन्य तीर्थंकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिमा 2. कीर्ति आश्रम चैत्यालय 3. सन्मति धर्मशाला के सामने ब्र. कमलाबाई द्वारा भगवान पार्श्वनाथ जिनालय (काँच का मंदिर) 4. ब्र. कृष्णाबाई द्वारा संचालित मुमुक्षु महिलाश्रम का जिनमंदिर।

वर्तमान में मुख्य मंदिर में जहाँ भगवान महावीर की मूलनायक प्रतिमा विराजमान है, उसके नीचे की मंजिल में ही प्राचीन लाल पाषाण से निर्मित कलात्मक मंदिर विद्यमान है जिसे 'ध्यान केन्द्र' के रूप में विकसित किया गया है।

भगवान महावीर की प्रतिमा के उद्भव स्थल पर एक कलात्मक छत्री में भगवान के चरण चिन्ह प्रतिष्ठित हैं। आज भी यहाँ दुग्धाभिषेक करने की होड़ सी लगी रहती है। इस छत्री के चारों ओर आकर्षक उद्यान विकसित किया गया है। इस उद्यान में चरणचिन्ह छत्री के सामने वाले भाग में 29 फीट ऊँचा 'महावीर स्तूप' है जिसके फलकों पर भगवान महावीर के उपदेश अंकित हैं। यह स्तूप भगवान महावीर के 2500वें निर्वाणोत्सव के पावन उपलक्ष्य में निर्मित किया गया था। चरणचिन्ह छत्री के पीछे वाले भाग को आधुनिक "बालवाटिका" का स्वरूप दिया गया है, इसमें एक आकर्षक 'बारहदरी' भी बनाई गई है। दूर-दूर से आए भक्तजन चरणचिन्ह छत्री के बाहर ही बालकों का पारम्परिक मुण्डन संस्कार आदि करवाकर अपनी आस्था और विश्वास प्रगट करते हैं।

मंदिर के मुख्य द्वार के सम्मुख 52 फुट ऊँचा संगमरमर से निर्मित कलात्मक मानस्तंभ है जिसके शीर्ष पर चार तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ हैं। यह भव्य मानस्तंभ यात्रियों को दूर से ही आकर्षित करता है।

क्षेत्र पर विभिन्न नामों की 7 धर्मशालाएँ अवस्थित हैं एवं क्षेत्र पर अन्य कई सेवाभावी संस्थाएँ हैं—

यहाँ के वार्षिक मेला की विशेष प्रसिद्धि है। महावीर जयंती के अवसर पर यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला तेरस से वैशाख कृष्णा द्वितीया तक 5 दिवसीय लक्खी मेला लगता है। इस मेले में साम्प्रदायिक, राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। भारत में यह दिगम्बर जैन तीर्थ ऐसा धार्मिक स्थल है जहाँ जैन ही नहीं अपितु सभी वर्ग के लोग सम्मिलित होकर भगवान का दर्शन-वन्दन-जयकार कर मनौतियाँ मनाते हैं।

श्री महावीर जी मंदिर और क्षेत्र का प्रबंध प्रारंभ से जयपुर के दिगम्बर जैनियों की पंचायत की ओर से मूलसंघ आम्नाय के आमेर गद्दी के दिगम्बर जैन भट्टारकों द्वारा होता था। इन भट्टारकों की नियुक्ति दिगम्बर जैन पंचायत करती थी और जयपुर राज्य की सरकार मान्यता देती थी। सन् 1998 में भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति जी के निधन के बाद जयपुर की दिगम्बर जैन पंचायत ने परम्परानुसार भट्टारक श्री चन्द्रकीर्ति जी को पदस्थापित किया। सन् 1923 में जब गांव के जमींदार हासिल देने में आनाकानी करने लगे तो जयपुर की दि. जैन पंचायतों के आग्रह पर जयपुर राज्य के कोर्ट ऑफ वार्ड्स द्वारा प्रबंध किया गया तथा दिगम्बर जैन पंचायतों की ओर से क्षेत्र पर एक मोतमिद निरन्तर मनोनीत रहा। सन् 1923 से 1930 तक क्षेत्र का प्रबंध कोर्ट ऑफ वार्ड्स ने किया। सन् 1930 में दिगम्बर जैन पंचायतों को उनके आवेदन पर प्रबंध वापिस संभला दिया गया। तभी से निरन्तर राज्य की मान्यता प्राप्त दिगम्बर जैन पंचों की कमेटी क्षेत्र का सम्पूर्ण प्रबंध कर रही है। दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम के अंतर्गत रजिस्टर्ड प्रन्यास है और इसकी प्रबंधकर्ता "प्रबंधकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी" सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट के अंतर्गत रजिस्टर्ड संस्था है। सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज एवं भक्तजनों के सहयोग से यह क्षेत्र निरन्तर प्रगति पथ की ओर अग्रसर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा भूमि

माधोराजपुरा-एक धार्मिक स्थल

लेखक-भँवर लाल जैन सेठी 'झुमर', माधोराजपुरा

गुलाबी नगरी जयपुर के निकट बसा माधोराजपुरा कस्बा एक धार्मिक स्थल है। लगभग 200 वर्ष पुराने विशाल और भव्य तीन जैन मंदिर तथा पास ही एक किलोमीटर दूर झराना में स्थित अतिशययुक्त एक पद्मप्रभु जिनालय है शांत और रमणीक उपासना स्थल माधोराजपुरा की एक नशिया के रूप में है। इसके अतिरिक्त विशाल शिवमंदिर और वैष्णव मंदिर इस बात को प्रमाणित करते हैं कि पूर्व में जैन धर्मावलम्बी और वैष्णव धर्मावलम्बी एक साथ मिलजुल कर रहते थे।

कहा जाता है कि लगभग दो सदी पूर्व, पास ही के एक छोटे से गाँव में एक राजसिंह नाम के व्यक्ति रहते थे। यह क्षत्रिय एक बहादुर व्यक्ति था। किन्तु आजीविका के उपयुक्त साधन न होने के कारण डाके डालता था। इनकी इस करतूत से जयपुर राज्य के तत्कालीन शासक महाराजा माधोसिंह बहुत चिंतित थे। अवसर देखकर एक बार उन्होंने अपने दरबार में जयसिंह को बुलाया और ऐसा निन्दित कर्म न करने के लिए समझाया। फलस्वरूप जयसिंह ने भी ऐसे घृणित कार्य को न करना स्वीकार किया, किन्तु अपनी आजीविका की मजबूरी जाहिर की, अतः महाराज माधोसिंह ने ग्राम झिराना की रियासत से काटकर एक गाँव उसे जागीर में दिया, जिसका नाम दोनों शासकों के नाम के आधार पर माधोराजपुरा रखा गया। यहाँ पर बसने के लिए आसपास के कुशल व्यापारियों, कृषकों, कारीगरों, पंडितों आदि को आमंत्रित किया गया और उन्हें भूमि व अन्य सहयोग देकर यहाँ बसाया गया। इन लोगों ने सुविधा का लाभ उठाकर यहाँ पर अपने आवास व बाजार बनाये। व्यापारियों में कुशल व्यापारी, कुशल पंडित, कुशल कारीगरों के समूह आज भी इस कस्बे में निवास करते हैं और क्षेत्र में अपना रुतबा रखते हैं।

एक और विशेषता इस कस्बे की बसावट में लाई गई, वह है इसे प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर की तर्ज पर बसाना। यह कस्बा एक निर्धारित प्लान के अनुसार बसा हुआ है। जिसमें राजकीय आवास के रूप में एक विशाल किले का निर्माण किया गया है, जिसके चारों ओर मुख्य परकोटे के नीचे गहरी खाई है। किले के सामने सीधा चौड़ा बाजार बनाया गया है और बाजार को 2 भागों में विभक्त करते हुए बीच में चोपड़नुमा कटला का निर्माण किया गया है, जिसके बीच में एक विशाल चौक और दो विशाल मंदिर हैं, जो पूर्व स्थापत्य कला के अनुसार मनोहर हैं। मुख्य बाजारों से पूरे कस्बे के चारों ओर के छोरों पर सीधे और चौड़े रास्ते बनाये गये हैं, जो बाजारों से आकर मिलते हैं। ठीक जयपुर की तरह इस कस्बे का निर्माण किया गया है। इसके अतिरिक्त यहाँ हर जाति समूहों के लिए भिन्न-भिन्न ब्लाक काटे गये हैं, जहाँ पर सम्पूर्ण पक्के मकानों और विशाल हवेलियों में विभिन्न जाति के लोग बसे हुए हैं। गाँव के चारों ओर चार कच्चे दरवाजों के साथ-साथ चारों ओर विशाल परकोटे हैं, जिसके नीचे भी गहरी खाई है। किन्तु अब ये काफी जीर्ण-शीर्ण हो चुके हैं, फिर भी अच्छी तरह देखे जा सकते हैं।

माधोराजपुरा एक विशाल व्यापारिक मण्डी भी रहा है। जहाँ आस-पास के गाँवों से सैकड़ों गाड़ियाँ रोज आकर बाजार में बिकती थीं। आज के पचास वर्ष पहले तक बाजारों में गाड़ियों की भारी भीड़ रहती थी। किन्तु समय के परिवर्तन के अनुसार अब मण्डी का कार्य भी काफी कमजोर पड़ गया है।

यह क्षेत्र जैनियों की आबादी के लिहाज से अति महत्वपूर्ण है। माधोराजपुरा के आसपास फागी, चोरू, मौजमाबाद, रैनवाल, पीपला आदि कस्बों में दिगम्बर जैन समाज की सघन आबादी है और अनेक भव्य मंदिर निर्मित हैं। इसके अतिरिक्त छोटे गाँवों में भी जहाँ दो-चार घर जैनियों के हैं, हर गाँव में जैन मंदिर बने हुए हैं। अधिकांश गाँवों को जैन निवास कहते हैं और जैन मंदिर भी हैं। इस की सूची काफी बड़ी हो सकती है।

इस क्षेत्र की एक विशेषता यह भी है कि आसपास के बड़े नगर भी जैन समाज के केन्द्र है, जिनमें दि. जैन आबादी का बाहुल्य है। ये हैं जैननगर-जयपुर, सांगानेर, अजमेर, टोंक, मालपुरा, चाकसू, निवाई आदि।

इन क्षेत्रों में बसने वाले अग्रवाल समाज के 90 प्रतिशत लोग दिगम्बर जैन धर्म को मानने वाले हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा) भी यहाँ से केवल 40 किमी. दूर है।

यहाँ के मंदिरों में जहाँ भव्यता और निर्माणकला का आकर्षण है, वहाँ अनेक मंदिरों में भारी जैन वाङ्मय भी उपलब्ध है। कई प्राचीन हस्तलिखित शास्त्र मंदिरों में सुरक्षित हैं। एक योजना के अनुसार क्षेत्र के जैन मंदिरों और शास्त्रागारों की सूची तैयार की गई थी, जो एक विशाल पुस्तक के रूप में छपकर आज भी जयपुर में भट्टारक जी की नशियाँ में उपलब्ध है।

आज भी याद है हमें वह शुभ और पावन दिन, जिस दिन एक गौरवमयी गाथा का शुभारंभ हुआ था अर्थात् आर्यिका शिरोमणि गणिनीप्रमुख, प्रख्यात विदुषी 105 श्री ज्ञानमती माताजी का आर्यिका दीक्षा ग्रहण संस्कार अपूर्व उल्लास और समारोह के साथ कस्बा माधोराजपुरा में हुआ था।

दीक्षा गुरु थे—मुनिसंघ शिरमौर्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री 108 वीरसागर जी महाराज और संघस्थ मुनिवर थे-108 श्री शिवसागर जी महाराज, 108 श्री धर्मसागर जी महाराज, 108 श्री नेमिसागर जी महाराज, 108 श्री पद्मसागर जी महाराज तथा अन्य आर्यिकागण एवं ब्रह्मचारीगण।

वैशाख का महीना, कृष्ण पक्ष की द्वितीया, विक्रम संवत् 2013—आचार्य वीरसागर महाराज, जैन दर्शन और आध्यात्म के परम उत्कृष्ट विद्वान, सम्यक्‌दर्शन-ज्ञान-चारित्र से विभूषित, महान तपोनिधि, वीतरागी और समताभावी संत, जिन्होंने परखा एक हीरे को, उसके मौलिक गुणों को और तरासी गई आभा को और उसे चुना था आर्यिका दीक्षा के लिए।

यह हीरा थीं-टिकैतनगर, जिला बाराबंकी (उ.प्र.) के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री छोटेलाल तथा श्रीमती मोहिनी देवी (धर्मपरायण नारी जो आर्यिका रत्नमती जी के नाम से विख्यात हुईं) की सुपुत्री मैना देवी। ये बालपन से ही धर्म आध्यात्म में रुचि रखने वाली एक होनहार बालिका थीं, जिन्होंने 18 वर्ष की अल्पायु में ही संसार का मोह त्याग कर सप्तम प्रतिमा धारण कर ली थी और सन् 1953 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा ले ली थी-नाम रखा गया था वीरमती। इसके बाद सन् 1956 में ही ये क्षुल्लिका वीरमती बनीं आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी, आचार्यप्रवर श्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा में दीक्षा प्राप्त कर।

यह हीरा जिसकी अद्‌भुत आभा ने सारे संसार को चमत्कृत कर दिया। जिनको अनेक उपमाओं और नामों से अलंकृत किया गया, जिन्होंने सतत् अध्ययनरत रहकर अनेकों ग्रंथों की रचना कर डाली और कई महत्वपूर्ण अध्यात्म ग्रंथों के सरल अनुवाद किये। जिनकी प्रेरणा से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर जैसे कई दर्शनीय तीर्थस्थलों का निर्माण और विस्तार हुआ। जिन्होंने कई मंडल विधानों की रचना कर जिनेन्द्र भक्ति के निमित्त अनेकों अनुष्ठानों का विधि-विधान तैयार किया। जिन्होंने ज्ञानज्योति प्रवर्तन कराकर 1045 दिनों तक सम्पूर्ण भारत में यात्रा आयोजित कर, धर्मप्रभावना के साथ-साथ अद्वितीय ख्याति प्राप्त की। जिनके पद वन्दन के लिए देश के शीर्षस्थ पदासीन राजनेताओं, अनेक धन सम्पन्न सेठ साहूकारों, अनेक विद्वानों, साहित्यकारों और कलाकारों जैसी विभूतियों की भीड़ उमड़ पड़ी।

माधोराजपुरा (तह. फागी, जिला-जयपुर, राजस्थान) कस्बे में आसपास का भारी जनसमूह उमड़ रहा था। आसपास का सारा जैन समाज एकत्रित था। मुनिसंघ के दर्शनों के साथ-साथ धर्मप्रभावना का दौर जारी था, इसी के साथ आया माता ज्ञानमती जी की दीक्षा का दिन।

दीक्षा के पहले दिन माताजी की विशाल शोभायात्रा आयोजित की गई और नर-नारियों ने उनकी शोभायात्रा पर फूलों की वर्षा करके उल्लास और सम्मान प्रकट किया तथा गाजे-बाजे के साथ भजन-नृत्य करते हुए नगर परिक्रमा की।

दूसरे दिन मुख्य बाजार के छोर पर किले के विशाल मैदान में एक विशाल पाण्डाल सजाया गया। हजारों नर-नारियों के बीच पाण्डाल में मुनिसंघ विराजमान था। भजन नृत्य आदि कार्यक्रम सम्पन्न किए जा रहे थे और दीक्षा संबंधी कार्यक्रम सम्पन्न कराया जा रहा था कि अचानक एक अद्‌भुत घटना घटी। एक सांड (बैल) आया, जिसके एक सींग में गुड़ की भेली फंसी हुई थी। यह भीड़ को चीरता हुआ तेजी से पाण्डाल में मुनिसंघ के समीप मंच तक पहुँच गया। पाण्डाल में खलबली मच गई, क्योंकि सांड जैसे जानवर काफी उद्दण्ड और मारक होते हैं। किन्तु आचार्यश्री के संबोधन से पाण्डाल में बैठे लोग शान्त हो गये और आश्चर्य से साँड की तरफ देखने लगे। साँड मंच के पास तेजी से उद्‌विग्न अवस्था में पहुँचा किन्तु मंच के पास पहुँचते ही शान्त होकर खड़ा रहा। सभी मुनिराजों की तरफ देखा। हो रहे दीक्षा संस्कार पर नजर डाली और शान्त कदमों से मंच के एक छोर से दूसरे छोर तक,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नतमस्तक होकर पाण्डाल के बाहर निकल गया। सांड के सींग में फंसी हुई गुड़ की भेली भी मंच के पास गिर गई, मानों उसने यह गुड़ की भेली भावों से मुनिराजों को समर्पित की हो। यह सब देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसा उद्दण्ड जानवर इस प्रकार शान्त होकर कैसे निकल गया?

इसी तरह की एक और घटना को भी लोग चमत्कार ही मानते हैं। जो इस प्रकार है—

दीक्षा संस्कार को देखने के लिए आसपास के श्रावकों के साथ-साथ टोंक, मालपुरा, केकड़ी, फुलेरा और जयपुर तथा जहाँ-जहाँ स्थानीय लोगों की रिश्तेदारियाँ थीं, वहाँ से काफी संख्या में आकर श्रावक जन एकत्रित हो गये थे। सभी आगन्तुक श्रावकों के लिए सहभोज की व्यवस्था की गई थी। स्थानीय प्रबंधकों को यह आशा नहीं थी कि इतना भारी श्रावक समुदाय इसमें उमड़ पड़ेगा। सामान्यत: ऐसे आयोजन तो होते ही रहते हैं, उतनी ही संख्या का अनुमान लगाकर भोजन की व्यवस्था की गई थी। लेकिन इतनी अधिक संख्या को देखकर स्थानीय व्यवस्थापकों को भोज्य पदार्थों में कमी पड़ जाने की चिंता उत्पन्न हो गई। तुरंत विशेष व्यवस्था के लिए प्लान बनाया गया। बात आचार्य वीरसागर जी तक भी पहुँच गई। महाराज ने स्थानीय व्यवस्थापकों को मंच पर बुलाया और एक सफेद चादर की मांग की। चादर लाई गई। आचार्य श्री ने उसे अभिमंत्रित किया और व्यवस्थापकों को सौंपते हुए कहा कि आप इस चादर को भंडार गृह में ले जाकर डाल दें और सारी विशेष व्यवस्था की चिंता छोड़कर आराम से श्रद्धापूर्वक कार्यक्रम को देखें। कोई कमी नहीं आयेगी। आचार्यश्री का आदेश पाकर लोग निश्चिन्त हो गये। फिर भी लोगों के मन में यह शंका थी कि कहीं बात खराब न हो जाये। किन्तु आश्चर्य की बात है कि सारा कार्य आराम से निबट गया। अच्छी तरह भोज का कार्यक्रम सम्पन्न हो गया और किसी भी प्रकार की कमी महसूस नहीं की गई।

माताजी का दीक्षा संस्कार मंच पर सम्पन्न कराया जा रहा था और यह दीक्षा मंडप वटवृक्ष के नीचे बना था, जो कि शायद इसी बात का द्योतक था कि आज से करोड़ों वर्ष पूर्व भगवान ऋषभदेव ने वटवृक्ष के नीचे दीक्षा लेकर मुनि परम्परा को जीवन्त किया था, उसी क्रम में वटवृक्ष के नीचे वाली यह दीक्षा भी किसी महत्वपूर्ण तथ्य का संकेत थी और वह था-बीसवीं शताब्दी में उनके द्वारा होने वाला प्रत्येक कार्य अपने आप में अद्वितीय और सर्वप्रथम कार्य होता है, फिर चाहे वह लघु हो अथवा वृहद्। दीक्षा के समय माताजी के चेहरे पर अभूतपूर्व प्रसन्नता और उत्साह झलक रहा था। जय-जयकार के शब्दों से पाण्डाल गुंजायमान हो रहा था। दीक्षा के समय माता-पिता बनाये जाते हैं, इनका स्थान लिया था स्थानीय स्व. सेठ श्री सागरमल रांवका और उनकी श्रीमती ने। जिनके सुपुत्र संतोष कुमार रांवका आज भी सपरिवार माताजी के प्रति अनन्य श्रद्धाभाव रखते हैं और उनके दर्शनार्थ जाते-आते रहते हैं।

बहुत समय बीत गया। समारोह को सम्पन्न कराने और शामिल होने वाले अधिकांश श्रावक-श्राविकाएँ दिवंगत हो चुके हैं। किन्तु श्री गुलकंद बाकलीवाल, भँवरलाल सेठी, रतनलाल कासलीवाल, लक्ष्मी नारायण बोहरा, रतनलाल पापड़ीवाल, मोतीलाल चाँदवाड़, रामस्वरूप चौरया वाले तथा चेतनलाल कांगला आदि आज भी मौजूद हैं, जिन्होंने इस दीक्षा समारोह को अपनी आँखों से देखा था और हर कार्यक्रम के सहयोगी भी बने थे। वैसे अगली पीढ़ी के युवकों में भी इसकी धुँधली यादें शेष है।

हमें इस बात पर गर्व है कि आज समाज और सम्पूर्ण देश में विख्यात परमविदुषी, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का दीक्षा संस्कार यहाँ पर हुआ है। इस पुनीत कार्य से यह स्थान पावन और तीर्थस्थल रूप बन गया है।

हमारी अभिलाषा है कि इस स्थान पर माताजी की दीक्षा की स्मृति में एक भव्य जिनालय और स्मृति संस्थान का निर्माण कराया जाये। जिसके लिए आवश्यक प्लान तैयार करके भूमि अधिग्रहण कर ली गई है और निर्माण कार्य की तैयारियाँ चालू है।

माधोराजपुरा कस्बे में विशाल और भव्य तीन जैन मंदिर हैं और एक नशियाँ झराना में हैं लगभग 50 घर दिगम्बर जैनों के हैं। क्षेत्र के श्रावकों में माताजी के प्रति पूर्ण श्रद्धा है, जो कि सदैव तक बनी रहेगी और शीघ्र ही दीक्षा स्मृति रूप जिनालय एवं स्मृति संस्थान के निर्माण के साथ यह क्षेत्र एक दर्शनीय तीर्थस्थल के रूप में विख्यात होगा, ऐसी तप:पूत माताजी को वन्दन-अभिवंदन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के क्षुल्लिका दीक्षा प्रदाता गुरु

आचार्य श्री देशभूषण महाराज का परिचय

लेखक-डॉ. जयकुमार उपाध्ये, दिल्ली

विश्वविभूति कालजयी व्यक्तित्व—भारत एक धर्म प्रधान देश है। इस देश ने कल्याणकारी अनेक महापुरुषों को जन्म दिया है। परमहंस महापुरुषों में दिगम्बर जैन निर्ग्रंथ साधुओं का अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान है। कलियुग के भोग एवं विषयों में आसक्त जगत में उज्ज्वल हृदयी जितेन्द्रिय पूर्ण दिगम्बर पवित्र आचार वाले निर्ग्रंथश्रमणों की कल्पना करना भी कठिन था। ऐसी स्थिति में चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज जैसे धर्मपुत्र रत्न ने उत्पन्न होकर दिगम्बर श्रमण परम्परा के स्वरूप और गौरव को वृद्धिंगत किया है।

अनेक दिव्य प्रेरणा एवं जैनधर्म प्रभावक भव्य प्रकाश प्राप्त करके मनस्वी, ओजस्वी, तेजपुंज, परमकारुणिक, बालब्रह्मचारी, निस्पृह परमपूज्य आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज का चरित्र वंदनीय एवं अनुकरणीय है।

आत्मानुसंधान में ज्योतिपुरुष, धर्मध्वज आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज का जन्म सन् 1905, मगसिर शुक्ला 2 को दक्षिणभारत के कर्नाटक प्रांत के बेलगाँव जिले के (कोथलपुर) कोथली नामक ग्राम में हुआ। आपके पिता का नाम श्री सत्यगौड़ा पाटिल तथा माता का नाम श्रीमती अक्का देवी था। आपके पूज्य पिता अपने क्षेत्र के एक सुप्रतिष्ठित व्यक्ति थे तथा सत्यवादिता एवं धर्मपरायणता के लिए उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। अपने एकमात्र पुत्र को उन्होंने बालगौड़ा नाम दिया। प्यार से वे उसे बालप्पा कहकर भी सम्बोधित करते थे। बालक बालगौड़ा के भाग्य में मानो वात्सल्य का संयोग नहीं था। केवल तीन मास के उपरांत ही माता श्री अक्कादेवी ने अपना नश्वर शरीर छोड़ दिया था। मातृस्नेह से वंचित इस बालक के लालन-पालन का भार पिता के ऊपर आ पड़ा। बालक ने अपने नानी के ममता से परिपूर्ण स्नेह प्राप्तकर विद्याध्ययन प्रारंभ किया। उन्होंने अपने विशेष साधना, श्रम, प्रतिभा एवं एकाग्रता के बल पर अनेक विद्याओं को हासिल किया। आपकी रुचि भूगोल, चित्रकला एवं इतिहास में अधिक रही। कन्नड़ एवं मराठी साहित्य की ओर उनका विशेष झुकाव था। 12 वर्ष की उम्र में अपने पिता की एकमात्र वात्सल्य छाया से आप वंचित हो गए। आपका वंश राजवंश था। आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के परिवार के साथ आपके पारिवारिक संबंध थे। दुर्भाग्यवश आपकी चाची की विवाह के आठ दिन बाद कुएँ में गिरकर मृत्यु हो गई। मृत शरीर के मांस, मज्जा, हड्डी आदि अन्य घृणित पदार्थों को देखकर बालगौड़ा के कोमल मन को गहरा आघात पहुँचा। उनकी चाची लावण्य से परिपूर्ण अत्यन्त रूपवती थी। उसी क्षण आपने जीवनपर्यन्त त्यागमय जीवन व्यतीत करने का संकल्प कर लिया। बालक बालगौड़ा ने आत्मकल्याण की कामना से प्रवचनपरमेष्ठी प्रातःस्मरणीय आचार्यश्री पायसागर जी महाराज के प्रिय शिष्य महामुनि श्री जयकीर्ति जी स्तवनिधि में मंगल सानिध्य प्राप्त किया और वैराग्य भावों को प्रकट किया। मुनि श्री ने उन्हें अपने शिष्य के रूप में अंगीकार कर लिया और धर्म ग्रंथों का अध्ययन कराना प्रारंभ कर दिया।

साधना के पथ पर—पूज्य आचार्यश्री जयकीर्ति जी के निकट सम्पर्क में आकर कायाकल्प हो गया। इन्हें गुरुदेव के द्वारा सदाचार एवं आध्यात्मिक विकास हेतु जैनागम के मौलिक पाठ्यक्रम द्वारा स्वाध्याय कराया गया। आचार्यश्री जयकीर्ति का संघ दुर्ग (मध्यप्रदेश) चातुर्मास सम्पन्न करके सुप्रसिद्ध तीर्थ रामटेक आया था। वहाँ पर उनके विकासशील आध्यात्मिक साधना को देखते हुए क्षुल्लक दीक्षा प्रदान किया गया। उस समय आपने भगवान श्री शांतिनाथ जी का दर्शन, अभिषेक एवं पूजन बड़े भक्तिपूर्वक किया। दो माह बाद आपकी ऐलक दीक्षा हुई। श्री क्षेत्र कुंथलगिरी पर देशभूषण-कुलभूषण जी के मोक्षगमन से पवित्र क्षेत्र पर गुरुदेव जयकीर्ति महाराज के द्वारा आपकी जैनश्वरी दिगम्बर मुनि दीक्षा की संस्कार विधि सम्पन्न हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वतंत्रतापूर्व के चातुर्मास—स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व आपके चातुर्मास मांगुर, श्रवणबेलगोला, नागपुर, कोल्हापुर, शमनेवाड़ी, भोज, बोरगांव, पट्टणकुडी, स्तवनिधि, गलतगा इत्यादि क्षेत्रों में सम्पन्न हुए। भारतीय स्वतंतत्रा की पावन बेला में आप उत्तरभारत की सांस्कृतिक नगरी बनारस में पधारे। अपने बनारस प्रवास में आपने धर्म के विशदरूप की व्याख्या करते हुए जनसाधारण का राष्ट्र के निर्माण में सहयोग मांगा था। एक धर्मगुरु के रूप में आपने बनारस स्थित जैन तीर्थक्षेत्रों, मंदिरों एवं संस्थाओं के विकास में रुचि भी ली थी।

स्वतंत्रता परवर्ती चातुर्मास—असमय में दीक्षा गुरु आचार्यश्री जयकीर्ति महाराज का समाधिमरण हो गया और गुरु सानिध्य से आप वंचित हो गए। अपनी प्रबल साधना, धैर्यपूर्वक देश की पदयात्रा करते हुए सूरत (गुजरात) में आपका वर्षायोग ऐतिहासिक रूप में मनाया गया। जिनधर्म प्रभावना के प्रखर प्रवृत्ति का अनुभव कर जैन समाज सूरत ने आपको आचार्यपद पर प्रतिष्ठित करने का संकल्प लिया और परमपूज्य आचार्यश्री पायसागर जी महाराज की आज्ञानुसार आचार्यपद प्रतिष्ठापना समारोह महती प्रभावना के साथ 18 फरवरी 1948 में सम्पन्न हुआ। तदनन्तर आरा, लखनऊ, जयपुर, दिल्ली, कलकत्ता, कोल्हापुर, मानगांव आदि शहरों में चातुर्मास करके समाज को ज्ञान का उपदेश देकर मुक्ति मार्ग के द्वार का उद्घाटन किया है। लुप्तप्राय शास्त्रों, जिनालयों, तीर्थक्षेत्रों आदि का उद्धार करके नवनिर्माण की दिशा में रचनात्मक कार्य करके जिनवाणी, जैनधर्म और संस्कृति की रक्षा व संवर्धन किया है। आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी ने अपनी अखंड ज्ञानसाधना के साथ प्रत्येक प्राणी की रक्षा तथा उद्धार का उद्देश्य रखकर लोक मानस में विश्व बंधुत्व की भावना जागृत करते हुए मानव समाज को अनुगृहीत किया है। प्रथम विश्वयुद्ध के उन्माद से आप परिचित थे। इस महायुद्ध के कारण हुई अपार धन-जन की क्षति का स्मरण कर वे सिहर उठते थे। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का अवलोकन कर आपने विश्वयुद्ध की विभीषिका से त्रस्त मानव जाति को तीर्थंकर वाणी से विश्व मैत्री एवं अहिंसा का मंगल संदेश दिया। आपने एक धर्मगुरु के रूप में पदयात्रा मूलक जनजागरण किया। देश की जनता को निर्भीकता का पाठ पढ़ाया। आपने स्वयं अंग्रेजी शासकों, राजे रजवाड़ों की अनेक प्रतिबंधात्मक आज्ञाओं का उल्लंघन कर सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण किया। इसलिए आपको उपसर्ग भी सहने पड़े। पूज्य आचार्यश्री जी की आस्था विश्व मानवता में थी। उनके उपदेश धर्मविशेष अनुयायियों के लिए न होकर समग्र मानवता के लिए होते थे। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका का दिगम्बर साधक के रूप में प्रत्यक्ष अनुभव किया है। युद्ध जन्य उन्माद एवं उसके परिणामों की भयंकरता से वे भलीभांति परिचित थे। जब राष्ट्र पर विदेशी आक्रमण के बादल मंडरा रहे थे, तब शासन से तादात्म्य स्थापित कर राष्ट्रीय विपत्ति में अपने तपोबल से दिगम्बर जैन समाज को संगठित कर राष्ट्रीय सुरक्षा में जो योगदान किया, वह इतिहास में अजर-अमर हुआ है। देश के स्वर्णिम इतिहास में इसे एक सुखद संयोग ही मानना चाहिए कि तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री अपने मनोबल और शस्त्रबल द्वारा शत्रुओं की चुनौती का मुँहतोड़ जवाब दे रहे थे। दूसरी ओर आचार्यश्री देशभूषणजी ने धर्मात्माओं में देश की अस्मिता की रक्षा के लिए अपने तेजोमय हुँकार द्वारा एवं सिंह-गर्जना के साथ दिगम्बर जैन समाज को संगठित कर देश रक्षा के लिए प्रेरित किया। जैन शूरवीरों सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट खारबेल, सेनापतिचामुंडराय, अप्रतिम दानी भामाशाह आदि के चरित्र-गौरव का पुनः-पुनः उल्लेख करके समाज को जागृत कर राष्ट्रीय सुरक्षा में योगदान के लिए प्रेरित किया। 28 नवम्बर 1965 को आचार्यश्री की जन्मजयंती में युद्ध एवं शांति के विजेता जयजवान जयकिसान के उद्घोषक लोकप्रिय प्रधानमंत्री स्व. श्री लालबहादुर शास्त्री जी पधारे थे। आचार्यश्री ने अपने धर्मसंदेश में जैन समाज को राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में सम्पत्ति देने का परामर्श दिया। आपकी प्रेरणा से वह सभा देशभक्त एवं समर्पण का जीवित स्मारक बन गई। उपरोक्त धर्मसभा में श्रावक समुदाय एवं महिलाओं में नकद राशि के अतिरिक्त राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए स्वर्ण, आभूषण एवं मंगलसूत्र भी प्रदान किए थे। परमआदरणीय श्री शास्त्री जी भी उस हृदय से अभिभूत हो गए थे।

ऐतिहासिक पावन प्रसंग—भगवान महावीर स्वामी के 2500वें महापरिनिर्वाण अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव के लिए सबल आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्रदान किया। इसी प्रसंग में विशालकाय ग्रंथ 'भगवान महावीर और उनका तत्त्वदर्शन' का लोकार्पण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री गोपालस्वरूप जी पाठक द्वारा किया गया। विश्वधर्म सम्मेलन में उपस्थित देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को इस विशाल ग्रंथ को समर्पण किया गया। सन् 1965 में दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विश्वधर्म सम्मेलन बड़े विशाल पैमाने पर हुआ था। लाखों लोग उस महोत्सव में सम्मिलित थे। उस धर्म सम्मेलन में अनेक धर्मी साधु-संत विराजमान थे। सिक्खों के गुरु संत कृपाल सिंह आदि प्रमुख व्यक्ति भी थे। उस विशाल जनसमुदाय में सभी की दृष्टि दिगम्बर मुद्रा से शोभायमान स्वावलंबी साधुराज आचार्य देशभूषण महाराज पर केन्द्रित हो रही थी। तत्कालीन राष्ट्रपति जाकिर हुसैन ने सभा में आकर उन्हें सर्वप्रथम प्रणाम किया था।

अभिनव निर्माण—अनादिकाल से अयोध्या क्षेत्र में तीर्थंकरों का जन्म होता आया है और भविष्य में होगा। ऐसे पुनीत धरती के विकास का सूत्रपात कर विशालकाय भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा 1965 में श्री रामभक्त संत महंतों की नगरी में स्थापित किया गया। राजस्थान के जयपुर (गुलाबनगरी) में आचार्यश्री के असीम तपोबल प्रभाव से चूलगिरि का अभिनव निर्माण हुआ। आज वह क्षेत्र दर्शनार्थियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

श्रीक्षेत्र गुरुकुल की कल्पना—1967 में श्रीक्षेत्र स्तवनिधि (निपाणी) में आपका विशाल धर्मप्रभावना के साथ वर्षायोग सम्पन्न हुआ। उस समय कोथली जैन समाज के प्रमुखों ने श्रीफल चढ़ाकर विनम्र प्रार्थनापूर्वक अपने जन्मस्थान पर मंगल पदार्पण करके तपोपूत चरणरज द्वारा कृतार्थ करने का निवेदन किया। 17 जून 1967 को उनका कोथली ग्राम में मंगल प्रवेश हुआ। उन्होंने सन् 1935 में दिगम्बर परिवेश ग्रहण करने के लिए अपनी जन्मभूमि का परित्याग कर जैन संतों का सानिध्य प्राप्त किया था। आज वही दिव्य पुरुष अपनी ही जन्मभूमि में धर्मप्रभावना के निमित्त आ रहे थे। आचार्यश्री के मंगल आगमन से कोथली अपने को धन्य अनुभव कर रही थी। उनके आगमन पर समुपस्थित स्त्री-पुरुषों के नयनों से आनन्दाश्रु बह उठे। आचार्यश्री के मंगल प्रवेश से अपनी प्रसन्नता प्रगट करने के लिए द्वार-द्वार पर धर्मपुरुषों ने श्री देशभूषण जी की मंगल आरती उतारकर अपने को धन्य माना।

उनके महान व्यक्तित्व में एक आदर्श धर्मपुरुष एवं समाज शास्त्री का अद्भुत सम्मिश्रण था। कोथली-कुप्पानवाड़ी के विकास की परियोजना में उन्होंने सर्वाधिक महत्व ग्रामीणों की आवश्यकताओं पर केन्द्रित किया और अपने लोकमंगलकारी स्वरूप के कारण प्रथम चरण में मुनिनिवास, देवस्थान, गुरुकुल एवं उच्चतर माध्यमिक की योजना को प्रस्तुत किया। आचार्यश्री की इस विशाल परियोजना को कोथली में समादर एवं विस्मय की दृष्टि से देखा गया। गुरुकुल एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के माध्यम से आचार्यश्री ने निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों के अबोध बालकों को आध्यात्मिक एवं लौकिक विकास की पृष्ठभूमि निर्मित कर दी और मुनिनिवास एवं देवस्थान द्वारा आपने इस क्षेत्र का संबंध आध्यात्मिक जगत् से जोड़ दिया है। इन सभी योजनाओं के लिए वहाँ के जैन और जैनेतर बंधुओं ने भूमि के दान-पत्र स्वेच्छा से आश्रम के लिए नाम लिखे थे।

देवस्थान व मुनि निवास—आचार्यश्री देशभूषण जी की प्रेरणा से निर्मित शिखरयुक्त जिनमंदिर में तीन भाग है-गर्भालय, कलशमंडप, प्रशस्त कल्याणमंडप। गर्भ मंदिर में आदि तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की 7 फुट ऊँची श्वेत संगमरमर निर्मित भव्य, कायोत्सर्ग मनोहारी प्रतिमा विराजमान है। कलशमंडप के चारो ओर चौबीस तीर्थंकरों की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। मंदिरों की दीवारों पर स्थान-स्थान पर आचार्य कुन्दकुन्दकृत समयसार की गाथाओं को उत्कीर्ण किया गया है। मंदिर के दक्षिण भाग में थोड़े अंतराल पर जैन साधुओं की साधना के लिए 10×10 फुट आकार की गुफाएँ निर्मित की गई हैं। मंदिर के ठीक सामने नयनाभिराम संगमरमर से निर्मित विशाल मानस्तंभ है।

श्री क्षेत्र शांतिगिरि की भव्य कल्पना—शांतिगिरि का धर्मक्षेत्र के रूप में विकास करना आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज की एक विशाल परिकल्पना थी। इस क्षेत्र में आप एक कोलाहल विहीन आदर्श साधनाभूमि का विकास करना चाहते थे। उनकी दृष्टि में 'संयमी मुनियों को संसार की पीड़ा को शांत करने के लिए तपोभूमि शांतिगिरि का निर्माण किया गया।''

शांतिगिरि गुरुकुल आश्रम से लगभग डेढ़ किमी. के अंतराल पर है। यह पर्वत समतल भूमि से लगभग 145 फुट तक ऊँचा है। इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहाड़ पर समतल भूमि के मध्य भगवान श्री शांतिनाथ की 21 फुट ऊँची, भगवान श्री चन्द्रप्रभ एवं भगवान श्री महावीर स्वामी की 19-19 फुट ऊँची भव्य एवं मनोज्ञ प्रतिमाएँ स्थपित की गई है। जैनधर्म में मुनि एवं आचार्य को रत्नत्रय, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यग्चारित्र के निर्मल पालन के लिए सतर्क रहना पड़ता है। जैन तीर्थंकर परम्परा में श्री चन्द्रप्रभु, श्री शांतिनाथ एवं श्री महावीर स्वामी जी क्रमश: 8वें, 16वें एवं 24वें तीर्थंकर हैं। तीनों तीर्थंकर रत्नत्रय आराधना के प्रतीक हैं। आचार्यश्री देशभूषण जी ने रत्नत्रय की उज्ज्वलता के प्रतीक शांतिगिरि पर उपरोक्त तीनों तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विशेषरूप से प्रतिष्ठित कराई है। इन तीनों प्रतिमाओं के निकट विदेह क्षेत्र में विद्यमान बीस विहरमाण तीर्थंकरों की नयनाभिराम प्रतिमाएँ हैं। आचार्य श्री देशभूषण को अष्टान्हिका पर्व के अंतिम आठ-आठ दिनों में इन्द्रध्वज पाठ, सिद्धचक्र का पाठ एवं विशेष पूजा विधान कराने में आनन्द आता था। इसीलिए उन्होंने श्रावकों को प्रेरणा देकर शांतिगिरी पर नन्दीश्वर द्वीप-16 वापियाँ और 4 अंजनगिरि, 16 दधिमुख एवं 32 रतिकर पर्वत (अर्थात् कुल 52 पर्वत) का निर्माण करवाया है। नंदीश्वर द्वीप के प्रत्येक पर्वत पर एक-एक चैत्यालय है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार पर्वतराज अष्टान्हिका के अवसर पर देवगण उस द्वीपपर जाकर मंदिरों एवं चैत्यालयों के दर्शन करते हैं। नंदीश्वर द्वीप के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्यालयों में श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित करने का अवसर मिल जाता है।

आचार्यश्री देशभूषण जी द्वारा प्रेरित सतत् निर्माण की प्रक्रिया से पिछले वर्षों में शांतिगिरि ने जैन देवकुल के प्रतिनिधिरूप ले लिया है। पर्वत पर तीर्थंकर प्रतिमाओं के अतिरिक्त जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों यथा श्री धरसेन, श्री पुष्पदंत, श्री भूतबली, श्री कुंदकुंद, श्री समंतभद्र, श्री अमृतचन्द्र इत्यादि की प्रस्तर प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। एक पाषाण खंड पर सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर के दृश्यांकन को उत्कीर्ण कराया गया है। शांतिगिरि की गरिमा को गगनस्पर्शीरूप देने के लिए पर्वत शृंग पर 42 फुट ऊँचा मानस्तंभ बनवाया गया है। पर्वत पर स्थित अपराजित द्वार मुक्ति पथ के आकांक्षियों को अक्षय सुख के साम्राज्य में प्रवेश कराता है।,

पंचलोह धातु से निर्मित चतुर्विंशति जिनप्रतिमा, भगवान पार्श्वनाथ की 17 फुट ऊँची मनोज्ञ पाषाण-प्रतिमा सौम्य सप्तऋषि प्रतिमा, पर्वत पर विशेष रूप से स्थापित भगवान ऋषभदेव, भगवान बाहुबली एवं भगवान भरत की (क्रमश 11 फुट, 9 फुट, 9 फुट) ऊँची मनोहारी प्रतिमाएँ अनायास ही दर्शनार्थियों का ध्यान आकर्षित कर लेती है। शांतिगिरि का विशेष श्रृंगार करने हेतु महाराज जी ने पर्वत पर कमल मंदिर का निर्माण कराया है। इस अनुपम रचना में अष्टकोण कमल के मध्य में चतुर्भुज भगवान पद्मप्रभु जी की प्रतिमा को प्रतिष्ठित किया गया है। चतुर्भुज तीर्थंकर प्रतिमा के निकट आठों कमल-पत्रों पर भगवान ऋषभदेव से भगवान चन्द्रप्रभु (पहले आठ तीर्थंकर) तक की प्रतिमाएँ गोलाकार रूप में स्थापित की गई है। आठों कमल-पत्रों के शेष भाग पर क्रमश: दो-दो तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ (तीर्थंकर पुष्पदंत से भगवान महावीर स्वामी जी तक) प्रतिष्ठित की गई है। इन चौबीसों तीर्थंकरों की मूर्तियों की रंग-संयोजना उनके वर्ण के अनुरूप है।

आचार्यरत्न श्री देशभूषण महाराज जी जैन मूर्तिशास्त्र के गंभीर अध्येता एवं अन्वेषक थे। वे प्राय: प्राचीन प्रतिमाओं के भावपूर्वक दर्शन करते समय उससे तादात्म्य स्थापित कर लेते थे। अतिशयुक्त मूर्तियों के आप अद्भुत पारखी थे।

सन् 1981 में भगवान बाहुबली सहस्राब्दी समारोह से शांतिगिरि के लिए वापिस आते समय आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज को कारवार जिले के जंगल में 800 वर्ष प्राचीन भगवान श्री पार्श्वनाथ की अतिशययुक्त प्रतिमा के संबंध में जानकारी प्राप्त हुई। आचार्यश्री उस मूर्ति के दर्शन के लिए जंगल में गए। मूर्ति के अवलोकन मात्र से वे धन्य हो उठे। उन्होंने भारतीय शिल्पकला की इस अनुपम निधि को शांतिगिरि पर प्रतिष्ठित करने का संकल्प किया। आज भगवान पार्श्वनाथ की वह मनोहारी अद्भुत प्रतिमा शांतिगिरि के गौरव में भी वृद्धि कर रही है। उस अतिशययुक्त मूर्ति के छत्रजय में कुशल शिल्पियों ने कुछ रिक्त स्थान दिए है कि प्रात:कालीन अभिषेक के समय छत्रजय से जलधारा स्वयं प्रवाहित हो उठती है। उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि शांतिगिरि पर्वत पर तीर्थंकर भगवान का मणिमौक्तिकों से देवकृत अभिषेक हो रहा है। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि उस अभिषेक जल से रोग भी तत्काल दूर हो जाता है।

आचार्यश्री के अनुभवी दिशा निर्देशन में शांतिगिरि के विकास का कार्यक्रम निरन्तर गति से चल पड़ा। शांतिगिरि की विकास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योजना के बढ़ते हुए चरणों को देखकर निसंदेह कहा जा सकता है कि निकट भविष्य में शांतिगिरि यह क्षेत्र आध्यात्मिक प्रेरणा के लिए मुनियों एवं महापुरुषों को सम्पन्न रूप से आकर्षित करेगा।

गुरुकुल एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय्— तीर्थक्षेत्र का सर्वांगीण विकास करने से पूर्व आयोजकों का यह दायित्व हो जाता है कि वे संबंधित क्षेत्र के नागरिकों की भावनाओं का सम्मान करने के लिए लोककल्याण की योजनाओं को प्राथमिकता प्रदान करें। यदि निकटवर्ती क्षेत्र के निवासियों की रागात्मक अनुभूतियाँ तीर्थक्षेत्र से सम्पृक्त नहीं हो पाएगी, तो निकट भविष्य में क्षेत्र की सुरक्षा एवं प्रबंध व्यवस्था के लिए आस्थावान कार्यकर्ताओं का मिलना कठिन हो जायेगा। आचार्यश्री ने अपने प्रवास के प्रथम दिन ही यह अनुभव कर लिया था कि दीर्घ अवधि बीत जाने पर भी शांतिगिरि के आसपास के क्षेत्र में बालकों की पढ़ाई की समुचित व्यवस्था नहीं हो पाई है। वहाँ के परिवारों की आर्थिक स्थिति से भी आप परिचित थे। अतः उन्होंने सर्वप्रथम क्षेत्र के बालकों की शिक्षा के लिए विद्यालय स्थापित किया। बालकों को सुसंस्कृत बनाने एवं धर्मसंबंधी ज्ञान देने के लिए गुरुकुल की स्थापना कराई। आपकी व्यक्तिगत रुचि के कारण कोथली की कल्याणकारी परियोजना के प्रभाव से क्षेत्र में आने वाले बालकों का अभूतपूर्व विकास हुआ है। शांतिगिरि क्षेत्र पर दर्शन के निमित्त जाने वाले श्रावकों ने इस संबंध में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि आचार्यश्री देशभूषण जी ने वहाँ बालकों की ऐसी सेना खड़ी कर दी है, जो युद्धस्तर पर किसी भी काम का दायित्व अपने ऊपर लेकर कार्य को कुशलतापूर्वक पूर्ण कर देती हैं। श्री मंदिर जी में होने वाले सभी छोटे-बड़े आयोजनों की संपूर्ण व्यवस्था अब बालक दल ही करता है।

शांतिगिरि का सजीव हाथी— भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रमुख मंदिरों में पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए पशु-पक्षियों की आकृतियों की मूर्तियाँ बनायी जाती हैं। प्रायः छोटी आयु के बालक उनकी सवारी से अपना मनोरंजन करते हैं। एक बार एक व्यक्ति मातृसुख से वंचित सात दिन के गजशावक को आचार्यश्री की शरण में ले आया। आचार्यश्री ने उस गजशावक को भी स्नेह से आश्रम में स्थान दे दिया। आज वह गजशावक कोथली क्षेत्र में दर्शन-पूजन के निमित्त आने वाले श्रावकों एवं मुनियों का सूंड उठाकर स्वागत करता है। आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने के लिए वह नियमित रूप से पुष्प-गुच्छ उनके श्रीचरणों में भेंट करता है। सायंकाल के समय वह अपनी सूंड में दीपक को रखकर विभिन्न मुद्राओं से अवतरण करता है। श्रीक्षेत्र का जो योजनाबद्ध विकास किया है वह श्रमण संस्कृति के इतिहास में सदैव श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाएगा।

'जम्बूद्वीप' विशुद्धसंस्कृतिमयी संस्थाऽनया स्थापिता,
संस्थायामिह जैनशासनमयं साम्राज्यमालक्ष्यते।
जम्बूद्वीपतरोः सुशीतलघनच्छायातले लभ्यते,
स्वात्मानन्द-निराकुलत्व-लसिता शान्तिर्हि मोक्षार्थिभिः।।१।।
यस्याः प्रेरणया भवन्त्यनुदिनं कार्यक्रमाः धार्मिकाः,
संस्थानेऽत्र त्रिलोक शोध निरते जैनत्वसंरक्षके।
स्वात्मोत्थानपरोपकार-निरता श्रद्धास्पदा वन्दिता,
साध्वी ज्ञानमती विनम्र शिरसा भक्त्या मया नम्यते।।२।।

-डॉ. प्रकाशचंद जैन, साहिबाबाद (उ.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य

चारित्रचक्रवर्ती 108 श्री शांतिसागर जी महाराज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

लेखिका-आर्यिका श्री सुभूषणमती माताजी
(संघस्था-वर्तमान पट्टाचार्य श्री अभिनंदनसागर महाराज)

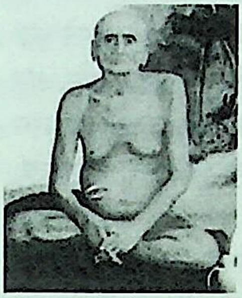

देश व समाज के विकास में सम्पदाओं की अपनी भूमिका होती है। चाहे वह सम्पदायें प्राकृतिक खनिज हो या हो साहित्यिक सम्पदा। इस तथ्य को हर व्यक्ति सहज ही स्वीकारता है। परन्तु देश व समाज के संतुलित विकास के लिए एक और अन्य सम्पदा की महती आवश्यकता होती है, वह सम्पदा है "चारित्रिक सम्पदा।" इस चारित्रिक सम्पदा के अभाव में अन्य सम्पदाएं कोई महत्व नही रखतीं, अपितु चारित्रिक सम्पदा इतनी महत्वपूर्ण है कि इसके कारण अन्य सम्पदाओं का कई गुणा महत्व हो जाता है। मानवीय इतिहास का अवलोकन करके बुद्धिजीव प्राणी इसी निष्कर्ष पर पहुँचता है कि इस चारित्रिक संपदा के अभाव में विकास होता ही नहीं है, यदि हो भी जाए तो वह विकास पंगु होता है।

प्रथम जैनाचार्य का जीवन परिचय—हम भारतीयों का सौभाग्य ही नहीं अहो भाग्य है जो इस सम्पदा के लिए हमें किसी पर आश्रित नहीं रहना पड़ता है। अपितु भारत इतना वैभव सम्पन्न देश है जहाँ पर वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी कथित चारित्रिक आदर्श मार्ग का अनुकरण करने वाले संत-योगी, श्रमण-श्रमणी जैसे साधक प्रचुर मात्रा में इस जीवन्त सम्पदा का अर्जन करने और कराने में सदा तत्पर रहते हैं। तीर्थंकरों के पश्चात् आचार्य परम्परा द्वारा इस चारित्रिक संपदा की साधना का निरंतर उपक्रम निर्विघ्न निर्विवाद चलता रहा। समय चक्र का व तात्कालिक परिस्थितियों का प्रभाव मानव चरित्र को विस्मृत करने लगा। परिणामस्वरूप सुख, शांति, आस्था, समर्पण, आध्यात्मिकता एक कोने तक सीमित हो गई। यह बात सत्य है-"समुद्र में आया तूफान सहज ही मोती प्राप्त करा देता है।" इसी प्रकार जब भारत में सर्वज्ञ प्रणीत चारित्रिक संपदा का सद्भाव नजर नहीं आ रहा था। तब चारित्रिक क्रांति हेतु इसी देश के महाराष्ट्र प्रान्त के कोल्हापुर जिले के **येळगुळ** ग्राम में माँ **श्रीमती सत्यवती**, पिता **श्रीमान भीमगोंडा पाटिल** से सन् 1872 में आषाढ़ कृ. 6 को एक महान पुरुष का जन्म हुआ। जो अपनी साधना से बने-चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज। गुरु ने बड़ी साधना के बाद शांतिसागर नाम दिया। परन्तु आपने तो गर्भ में अवतरित होने के बाद दोहला पूर्ति हेतु सहस्रदल कमलों से जिनवर की पूजा कराके माँ को उसी समय शांति का सागर बना दिया।

चारित्रिक सम्पदा के आराधकों के लिए आप प्रकाशस्तंभ है। इसलिए आपकी जीवन गाथा आज भी अनुकरणीय, चिंतनीय, कथनीय, वंदनीय, स्मरणीय बनी है। आप के चुम्बकीय व्यक्तित्व की यही एक विशेषता है 'क्रियात्मक उपदेश'। यही आपकी जीवन-चर्या का वैशिष्ट्य है जो जन्म से मरण तक संपूर्ण काल में स्पष्ट परिलक्षित होता है। क्रियात्मक उपदेश का शुभारंभ बाल्य अवस्था की इस घटना से होता है।

महापुरुषों का व्यक्तित्व कई जन्मों के सुसंस्कार की देन होता है। जैसे चंदन का वृक्ष अपनी बाल्य अवस्था में भी सुगंध गुण से सम्पन्न होता है। उसी प्रकार आचार्य श्री का बाल्यकाल भी परहितकारक, पर पीड़ा निवारक जैसी क्रियाओं से युक्त रहा। आपकी बाल सुलभ क्रीड़ा व क्रिया भी हमारे लिए शिक्षात्मक है। जैनत्व की आधार 'कारुण्य भावना' को आचार्यश्री ने अपने बाल्यकाल में ही क्रियात्मक रूप दिया, जब उन्होंने ज्वार खाने वाले पक्षी को उड़ाने की बजाय उसके लिए पीने का पानी पात्र में भरकर रखा।

'कारूण्य भावना' के परिपालन की देशना 'समयसार' आदि ग्रंथों की विवेचना के आधार पर नहीं अपितु जीवन की कार्यशाला से दी। उनका प्रत्येक आचरण रचनात्मक प्रेरणा देता था।

आपका गृहस्थ जीवन श्रावक आचार संहिता की प्रयोगशाला था। आपने श्रावकोचित नित्य क्रियाओं का तत्परता से पालन करते हुए न्यायनीति से न्यूनतम धनोपार्जन किया। आहार दान, पूजा, वैयावृत्ति आदि क्रियाओं के द्वारा आपने त्रियोग को सार्थक करने का शंखनाद किया। आपका गृहस्थ जीवन श्रावकाचार की जीवंत पाठशाला भी था, जो आज समाज देश की अनेकानेक समस्याओं का सुन्दर समाधान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैराग्य की ओर— 'क्रियात्मक उपदेश' का यह क्रम वैराग्य भावना के बाद तो बड़े आकर्षक रूप में दृष्टिगोचर होता है। जब घर में ही दीक्षा की साधना हेतु 'रस परित्याग', 'शैय्या त्याग' और 'एक भुक्ति अनुष्ठान' करते हुए निस्पृह भाव से पूर्ण कर्तव्य निष्ठता के साथ माँ-पिता व बहिन का समाधीपूर्वक पर्याय का अंत कराया व अन्य धर्मावलम्बी को भी जिनमत में स्थिर कर उनकी सल्लेखना कराई।

माता-पिता की सुचारू रीति से सल्लेखना कराने के उपरांत "अच्छा श्रावक अच्छा त्यागी" वाली नीति आपको अपने कृत संकल्प का हमेशा बोध कराती, गुरु चरण-शरण के लिए प्रेरित करती। इसी का सुपरिणाम वैराग्य के दरिया में तूफां आया और आप चल पड़े गुरु शरण की ओर, पग बढ़े उत्तूर ग्राम की ओर, निस्पृहता, वैराग्य, साधना की क्रियात्मक प्रार्थना देखकर/सुनकर परम उपकारी, दीक्षागुरु देवेन्द्र कीर्ति (देवप्पा) ने बनाया अपना लघुनंदन। सन् 1914 में ज्येष्ठ शु. 13 को क्षुल्लक दीक्षा देकर शिष्यत्व, शिवत्व का बीजारोपण किया।

तीर्थंकर के चरण स्पर्श से पुनीत सिद्धक्षेत्र श्री गिरनार जी की यात्रा का सुअवसर मिला। प्रभु नेमि की निर्वाणस्थली के दर्शन हेतु ऊपर चढ़ रहे थे, मानो ऊपर पड़े वस्त्र से मोह तज रहे थे, उत्तुंग शिखर पर पहुँच उत्तरीय वस्त्र का त्यागकर ऐलक अवस्था को प्राप्त किया।

कर्नाटक महाराष्ट्र के सीमावर्ती क्षेत्रों में विहार करते हुए उपसर्ग, परिषह जय द्वारा साधना में प्रगाढ़ता देखकर जैन-जैनेतर सभी आपकी चर्या से बहुत ही प्रभावित होते थे।

वणिक का व्यापार दिन में वृद्धि को प्राप्त होता है। परन्तु ब्याज व वैराग्य दिन-रात वृद्धि को प्राप्त होता है। इसी प्रकार आपकी वैराग्य भावना प्रतिक्षण वृद्धिंगत हो रही थी। आपकी मनोदशा चातक पक्षी सदृश हो रही थी, जिस प्रकार चातक पक्षी 'स्वाती नक्षत्र' की एक-एक बूंद के लिए आतुर रहता है, व्यग्र रहता है। उसी प्रकार ऐलक श्री शांतिसागर गुरु करकमलों से महाव्रतरूपी अमृत की उपलब्धि हेतु, यथाजात रूप हेतु, महावीर के लघुनंदन बनने हेतु और आत्मानुभूति के रसास्वादन हेतु आतुर थे और व्यग्र थे। गुरु की अनुकम्पा से आपको सौभाग्य मिला तीर्थंकर जिनबिंब के सहदीक्षित होने का, यरनाल पंचकल्याणक में गुरु ने पंचमुष्टि केशलोंच कर महाव्रतों से आपको सुसज्जित कर मुनि बनाया सन् 1920 में फाल्गुन शु. 14 को।

आपकी आगमानुसार निरतिचार चर्या से क्रियात्मक उपदेश पाकर अनेक भव्य आत्माओं ने महाव्रत व अणुव्रत स्वीकार कर मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक-क्षुल्लिका अवस्था को प्राप्त किया।

शिष्य संग्रह, संघ संचालन की प्रवीणता, धर्म प्रभावना का कौशल, ध्यान की प्रकृष्टता, समता भाव की उत्कृष्टता इन गुण के साथ सरलता, निस्पृहता आदि गुणों के भण्डार पूज्य मुनि श्री शांतिसागर जी को समडोली में आचार्य पद से अलंकृत किया गया सन् 1924 में।

चतुर्विध संघ के नायक बनकर आपने जैनधर्म की महती प्रभावना की, अवरुद्ध क्रियाओं का पुनः मार्ग प्रशस्त किया। मुनिचर्या का 'परिष्कृत रूप' इस पंचमकाल में भी संभव है, यह आपने वाणी से नहीं क्रियात्मक उपदेश से सिद्ध किया, प्रसिद्ध किया।

उपसर्ग विजयी—अनेकों बार मनुष्यकृत, तिर्यंचकृत उपसर्ग होने पर भी साम्यभाव से आप विचलित नहीं हुए। इस प्रकार उत्कृष्ट चर्या के धारी के दर्शन के लिए जैन-जैनेतर सभी लालायित रहते थे। पंचमकाल में मुनि के सद्भाव का निषेध करने वाले भी श्रद्धा से अपना मस्तक चरणों में रखते थे। विषधर विकराल नागराज भी आचार्यश्री की तपःभूत मुद्रा का दर्शन कर अपने क्रूर स्वभाव का त्यागकर शांत हो जाता था। यदि ये पंथव्या मोही, हठाग्रही आचार्यश्री के दर्शन कर यहाँ नहीं सुधरते, तो फिर कहाँ सुधरते?

इस प्रकार उन्होंने प्रभावी मुनि बनकर दक्षिण में जीर्ण मुनि परम्परा को परिमार्जित किया, फिर सुयोग्य आचार्य परमेष्ठी बनकर आगमानुसार दीक्षा-शिक्षा, प्रायश्चित के द्वारा निर्दोष मुनिचर्या व चतुर्विध संघ की व्यवस्था को पुनः स्थापित किया।

दक्षिण भारत को अपने ज्ञानामृत से व निर्दोष चर्या से धर्ममय बनाकर धर्म का पाठ पढ़ाकर आचार्यश्री ने उत्तर भारत में स्थित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शाश्वत सिद्धभूमि श्री सम्मेदशिखर जी की ओर मंगल प्रस्थान किया। जैसे समवसरण का श्रीविहार भव्य जीवों के पुण्यानुसार होता है। इसी प्रकार उत्तर भारतवासियों के पुण्योदय से आचार्यश्री ने विशाल संघ के साथ उत्तर भारत की ओर मंगल विहार किया।

निर्भीक मुनिचर्या—तत्कालीन, राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों में दिगम्बर मुनियों का विहार बड़ा कठिन काम था। सरकारी व्यवधान, जनता की अज्ञानता, मुनि विहार चर्या का लंबे अंतराल से लोप होना आदि कारणों से उत्तरभारत की ओर प्रयाण एक संघर्षमय उपक्रम था। पूज्य आचार्यश्री उस समय की विषम परिस्थितियों में भी सिंहवृत्ति के सशक्त पक्षधर थे। सरकारी अनुमति की प्रक्रिया का पूर्णरूपेण निषेध किया। मुनिचर्या स्वाधीन होती है, साधु अयाचक होता है। इसी आधार पर शान से निर्भय होकर निजाम की अनुमति के बिना भी मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में विहार किया। पर यहाँ भी आचार्यश्री का राजशाही स्वागत हुआ। प्रत्येक प्रान्त के बड़े-बड़े शहरों में धर्मप्रभावनापूर्वक विहार कर स्वाधीन मुनि विहार का पुनः प्रचलन कराया। मुगल व अंग्रेज शासक के समय दक्षिण भारत में भी निर्ग्रन्थ मुद्राधारी साधकों का सद्भाव लुप्तप्राय होकर कुछ सीमित क्षेत्रों में यदा-कदा मुनि दर्शन, विहार दृष्टिगोचर होता था और उत्तरभारत में तो मुनि परम्परा का अकाल सा चल रहा था। आचार्यश्री ने अपने विहार से अकाल का अंत कर सुकाल का प्रवर्तन किया। आचार्यश्री का दक्षिण से उत्तर की ओर मंगल विहार अनेक दृष्टि से जैन इतिहास के लिए वरदान बन गया।

आत्मशुद्धी, तीर्थ दर्शन इस विहार का मुख्य उद्देश्य तो था ही, इसकी प्राप्ति के साथ आचार्यश्री की तपोसाधना के प्रभाव से कुछ तथ्य उजागर हुए जिनसे जैनधर्म को संबल मिला।

जैन जागृति के अग्रदूत—प्रथम तो आचार्यश्री के विहार ने (सच्चे अर्थों में 'जैन जागरण' ने) धर्म जागरण का रूप ले लिया। तात्कालिक परिस्थितिवश या कालदोषवश, या पापोदयवश या थोथे ज्ञानियों के प्रभाववश, जैनबंधु अपने जैनत्व, जैनधर्म, जैन संस्कृति के प्रति उदासीन हो रहे थे। पंडितवाद जोर-शोर से चल रहा था। श्रावकाचार के प्रति अरुचि चिंतनीय थी। जैनधर्म की महिमा मंडित करने का साहस खो बैठे थे। इन समस्याओं का समाधान मिला आचार्यश्री की ज्ञानमयी गर्जना से, जिन्होंने सुप्त जैनत्व को पुन: जागृत किया।

आचार्यश्री का विहार धर्म जागरण, जैन जागरण की एक सफल क्रांति के रूप में नजर आया।

द्वितीय तथ्य था कोरे आध्यात्मकवादी और जैनाभासियों को मुंह तोड़ जवाब था-आचार्यश्री का मंगल विहार। पंडितवादी पंचमकाल में भावलिंगी मुनि निषेध का जो राग अलाप रहे थे, उसकी सिद्धि में ऐड़ी चोटी का पसीना निकाल रहे थे। पर आचार्यश्री की उत्कृष्ट चर्या, उपसर्ग परिषहजय की विशिष्टता देखकर वह भी दाँतों तले अंगुली दबाकर रह गये। मुनि का अभाव सिद्धकर जिनवाणी का अवर्णवाद करने वाले को पूज्य आचार्यश्री ने अपने आचारात्मक उपदेश से भावलिंगी मुनि का सद्भाव सिद्धकर दिखाया। आपकी चर्या मूलाचार का जीवंतरूप थी।

तृतीय तथ्य यह है जिसने विहार को ऐतिहासिक बना दिया, उस समय की राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों से मुनि विहार अवरुद्ध हो गया था। जैन मुनियों की निर्ग्रन्थ अवस्था अनुचित, असामाजिक व अमानवीय मानी जा रही थी। मुनियों का दिगम्बरत्व अशिष्टता में गिना जा रहा था। इन प्रतिकूलताओं में भी विशाल दिगम्बर मुनियों का समूह लेकर देश के एक कोने से दूसरे कोने तक विहार किया। मुख्य शहर, मुख्य रास्तों से होकर आहार चर्या व प्रवचन आदि करके मुनि विहार निषेध को जड़ से उखाड़ फेंका। राजा महाराजा, बड़े-बड़े अफसर भी प्रवचन श्रवण के इच्छुक होते थे। पूज्य श्री की ही देन है जो आज बड़े-बड़े शहरों में चातुर्मास सम्पन्न हो रहे हैं।

चतुर्थ स्थान ने भी इस विहार को ऐतिहासिक बना दिया। उस समय श्रावकाचार की मनमानी व्याख्या की जा रही थी। आदिनाथ पुराण आदि पूर्वाचार्य प्रणीत ग्रंथों में वर्णित श्रावक क्रियाओं को कोरे आध्यात्मवादी अन्य धर्म की क्रियाएँ कहकर अनेक क्रियाओं का लोप करने में लगे थे। जैसे कि उपनयन (जनेऊ) आदि के प्रसंग, परन्तु आचार्यश्री ने आगम प्रमाण देकर समझाया कि यह जैनत्व का मुख्य लक्षण है। यह जैनत्व का परिचायक है, इससे युक्त श्रावक की ही दान क्रियाएँ सुफल देने वाली होती हैं, भरत चक्रवर्ती, बाहुबली जैसे चरमशरीर ने भी स्वीकार किया था। यदि यह आगम विरुद्ध थी तो उन्हें विपरीतता में मोक्ष सिद्धि कैसे हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगम के अनुसार धार्मिक विवेचना सुनकर अनेक भव्य जीवों ने व्यवहार रत्नत्रय का प्रतीक इस ब्रह्मसूत्र को धारण किया। कर्म जैनत्व को प्राप्त किया।

बिहार ऐतिहासिक होने का पंचम महत्वपूर्ण तथ्य था—जाति शुद्धि व पिंड शुद्धि का प्रकरण। जैन धर्म अनादिनिधन है, फिर भी जैनधर्म की आयु व कद को छोटा करने का प्रयास हमेशा होता रहता है। जैनधर्म की सत्यता पर हमेशा प्रश्न खड़े होते रहते हैं। यह प्रश्नचिन्ह अन्य धर्म व अन्य दर्शन वाले लगायें, तो कोई आश्चर्य नहीं पर आश्चर्य ही नहीं महाआश्चर्य उस समय होता है, जब जैन पांडित्य की शान बघारने वालें भी जैनधर्म की सत्यता पर प्रश्नों की बौछार कर देते हैं। आचार्यश्री आहार चर्या में जाति शुद्धि व पिंड शुद्धि की अनिवार्यता का कठोरता से पालन करते थे। सुधारवादी इसे अनावश्यक कहते थे, पर आचार्यश्री आगम के प्रमाण देकर उन्हें समझाते थे। पुण्यशाली जीवों ने श्रद्धापूर्वक सुना और इस आगम विरुद्ध क्रिया को छोड़ा भी, आचार्यश्री की प्रेरणा से अनेक स्थानों पर सामाजिक प्रस्ताव पास कर इसका विरोध किया गया।

अंतिम तथ्य यह है उस समय अनेकों मुनि स्वयं दीक्षित होकर मुनिचर्या के ज्ञान के अभाव में सदोष चर्या में रत थे। तब आचार्यश्री ने गुरु की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। गुरु के अभाव में प्रायश्चित्त विधि संभव नहीं, प्रायश्चित्त बिना व्रत शुद्धि नहीं, व्रत शुद्धि बिना निर्जरा नहीं। आचार्यश्री ने स्वयं गुरु से दीक्षित होकर अन्यों को दीक्षा देकर गुरु परम्परा को जीवन्त कर आगम के आलोक में मुनिचर्या को परिमार्जित किया। इन्हीं तथ्यों से "सामाजिक कुरीतियों के विसर्जन व आगम सम्मत क्रियाओं के सृजन" से यह विहार ऐतिहासिक बन गया।

मंत्रों के जाप्य अनुष्ठानपूर्वक, अपूर्व धर्मप्रभावनापूर्वक विहार करते-करते आचार्यश्री का मंगल प्रवेश श्री शिखरजी क्षेत्र पर हुआ। आचार्यश्री के मंगल सानिध्य में धर्मप्रभावनापूर्वक पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ।

तीर्थक्षेत्र दर्शनचक्र—अनेक सिद्धों के चरण स्पर्श से पुनीत श्री क्षेत्र पर ध्यान साधना से आत्मानुभूति का रसास्वादन कर, परिणाम विशुद्धि में वृद्धि कर अपने संसार को 'चुलुक प्रमाण' कर आचार्यश्री ने मध्यप्रदेश की ओर विहार किया। कटनी में चातुर्मास सम्पन्न कर बुंदेलखण्ड की यात्रा कर दिल्ली की ओर विहार किया। दिल्ली में इतने विशाल संघ का आगमन जैनियों के लिए महान गौरव की बात थी। जैनत्व की व जैनियों की विजय थी। श्रद्धालु दर्शन, पूजन, वंदन, वैयावृत्ति, दान आदि क्रिया से पुण्य संपादन कर अपने जीवन को धन्य कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर मुनि विरोधियों के पैर के नीचे की जमीन खिसक रही थी। क्योंकि आगम की मनमानी व्याख्या कर, मुनि का अभाव बताकर लोगों को भ्रमित करने वाले स्वार्थी लोगों की बात निर्मूल निराधार सिद्ध होने लगी ऐसे उत्कृष्ट चर्या के धारक मुनियों को देखकर।

चक्रवर्ती षट्खण्ड की विजय के दौरान अर्थ विजय को प्राप्तकर विजयार्ध पर्वत पर अपनी प्रशस्ति लिखता है। सच तो यह है कि वह दूसरे की प्रशस्ति मिटाकर अपनी प्रशस्ति लिखता है। आचार्यश्री ने देश की राजधानी में आगमन कर जैनधर्म की विजय ध्वजा फहराई। किसी पाषाण पर अपनी प्रशस्ति न लिखकर श्रावकों के हृदय व दिमाग में जिनधर्म श्रद्धा की अमिट छाप लगा दी। जैनमुनि के सद्भाव व निर्दोष चर्या की गौरव गाथा सबके मन पर लिख दी। पूज्यश्री ने सच्चे अर्थों में चारित्र चक्रवर्ती शब्द को सार्थक किया, जिस प्रकार नदी शीतलता को बिखेरती हुई प्रवाहित होती रहती है ठीक उसी प्रकार आचार्यश्री अपनी तत्वमयी देशना से श्रद्धा रूपी शीतलता बिखेरते हुए अज्ञान की उष्णता को तिरोहित करते हुए अन्य प्रान्तों में स्थित तीर्थों के दर्शनार्थ विहार कर रहे थे। दिल्ली चातुर्मास के बाद राजस्थान के बड़े शहरों में धर्मप्रभावना करते हुए गुजरात के तीर्थक्षेत्रों की वंदना करने के बाद महाराष्ट्र में प्रवेश किया। लम्बे अंतराल के बाद पुनः आचार्यश्री का आगमन होने से श्रद्धालु दर्शन के लिए बड़े अधीर थे। प्रतिदिन हजारों की संख्या में दर्शनार्थी अपने नेत्रों को सफल कर रहे थे।

जिनमंदिरों की रक्षा का संकल्प—कालदोष से तीर्थंकरों पर उपसर्ग आये। अब तीर्थंकरों के अभाव में उनकी वाणी व मंदिर पर उपसर्ग आने लगे। नवदेवताओं में गर्भित 'जिनसाधु' परम्परा के सुव्यवस्थित होते ही जैन समाज के जिनमंदिरों पर बड़े उपसर्ग आये। जिनमंदिर को सरकार ने 'सार्वजनिक पूजन स्थल' घोषित कर दिया। संपूर्ण जैन समाज के सामने महान संकट भी था और संघर्ष भी। पूज्य आचार्य श्री जिनमंदिर और जिनमूर्ति की अविनय को सहन नहीं कर सके। देश में जिनधर्म की बागडोर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्यश्री के हाथ में ही थी, उस समय मात्र वही एक आचार्य परमेष्ठी थे, जो 'जिनमंदिर' की रक्षा के लिए बहुत जागरूक थे। श्रावकों द्वारा सरकार के इस निर्णय के विरुद्ध प्रयास होने पर कोई अच्छा परिणाम नजर नहीं आया। तब आचार्यश्री को अपनी साधना तपोबल की ऊर्जा का उपयोग करना पड़ा। 'जिनमंदिर' जिनमूर्ति की रक्षा के लिए आचार्यश्री ने अन्नाहार का त्याग कर दिया। आचार्यश्री के इस संकल्प से जैन समाज में सक्रियता आई। आचार्यश्री ने लगभग 3 वर्ष तक अनाज का त्याग कर दिया। इसी साधना के फलस्वरूप सरकार को अपना आदेश वापिस लेना पड़ा। आज श्रावक जो करोड़ों रुपये खर्च कर पंचकल्याणक व अन्य धार्मिक उत्सव कर तीर्थों का निर्माण कर रहे हैं, विशाल स्तर पर पूजा-अर्चना करके पुण्य संपादन का जो सुअवसर मिल रहा है वह तो आचार्यश्री की अनुकंपा व साधना का फल है।

गहन चिंतन व दूरदर्शिता आपकी जीवन शैली का अभिन्न गुण था। चतुर्थकाल में तीर्थंकरों पर उपसर्ग, पंचमकाल के प्रारंभ में धर्म पर उपसर्ग (दिगम्बर से श्वेताम्बर) फिर जिनमंदिरों पर उपसर्ग, इसके बाद जैन आगम (जिनवाणी) पर उपसर्ग (पंडितवाद पनपने से), फिर जिनसाधु पर उपसर्ग (निश्चयाभाषियों के द्वारा)। ये संकट जब भी आये, आगम ग्रंथ के आधार पर हमेशा संकट का निवारण हुआ और जैनधर्म की विजय हुई। अतः आचार्यश्री ने जैन सिद्धान्त आगम को सुरक्षित करने का दृढ़ संकल्प किया। उसी का सुपरिणाम है कि धवल आदि महान जैन ग्रंथों को ताम्र पत्रों पर लिखा गया क्योंकि वर्तमान में तीर्थंकर के अभाव में तीर्थंकर की वाणी जो हमारे पास आगम सिद्धान्त के रूप में यदि सुरक्षित है, तो व्यवहाररत्नत्रय मार्ग आदि सभी सुरक्षित रहेंगे। आचार्यश्री कहते थे कि शास्त्र (जिनवाणी) मेरे प्राण हैं। आज समाज के पास जो भी जैनधर्म है, वह आचार्यश्री के सत् पुरुषार्थ व साधना का फल है।

जिस प्रकार श्रुतकेवली भद्रबाहु ने साधु चर्या एवं धर्म की रक्षा के लिए दक्षिण की ओर विहार किया था, इसी प्रकार आचार्यश्री ने संपूर्ण भारत में पदविहार किया। साधु चर्या/ धर्म की रक्षा के लिए जिस प्रकार चक्रवर्ती षट्खण्ड का अधिपति बनकर उसका संरक्षण करता है ठीक उसी प्रकार आचार्यश्री ने चारित्र चक्रवर्ती बनकर चारित्र के आधार इन षट् स्थान का संरक्षण किया—

1. जिनमंदिर 2. जिनमूर्ति 3. जिनआगम 4. जिनधर्म 5. मुनिधर्म 6. श्रावकधर्म

आज का श्रावक धर्म के नाम पर लड़ना जानता है, पर धर्म के लिए लड़ना नहीं जानता है। वह धर्म के नाम पर सत्ता चाहता है पर धर्म के लिए समर्पण करना नहीं चाहता है।

'दिगम्बर जैन साधु का कोई नहीं होता, दिगम्बर जैन साधु किसी का नहीं होता' इसके बावजूद भी आचार्यश्री ने परकल्याण व परहिताय की भावना से प्रेरित होकर जैन समाज को वह आकार दिया, जो शब्दों में नहीं लिखा जा सकता।

अनुपम अनुकम्पा—यदि आचार्यश्री ने हमारे ऊपर अनुकंपा करके इन षट्आयतनों की रक्षा नहीं की होती, तो हमारे अंदर जैन कहने का साहस होता क्या?

इस प्रश्न की कल्पना भी हमारे दिल दिमाग को झकझोर देती है। यशोभिलाषा से दूर रहकर परकल्याण की भावना यह आपकी निष्काम साधना का ही अतिशय है।

संसार में कुछ व्यक्तियों का जन्म स्मरणीय होता है, कुछ लोगों का जन्म व जीवन स्मरणीय होता है और कुछ लोगों का जन्म, जीवन व जीवन अंत (मरण) भी स्मरणीय होता है। आचार्यश्री वह महापुरुष और महायोगी थे, जिनका जन्म, जीवन, जीवन अंत (मरण) तीनों ही स्मरणीय और अनुकरणीय है।

जो जीव माँ के गर्भ में अवतरित हो और माँ को सहस्र दल कमल से अपने आराध्य की अर्चना के भाव बने यह बात सामान्य नहीं विशेष, अति विशेष बात है। जो पूर्व जन्म में शुभ क्रियाओं व धर्म क्रियाओं में संलग्न रहकर विशिष्ट पुण्यार्जन करते हैं, जिनकी आत्मा तत्वज्ञान से सदा प्रकाशित रहती है, ऐसे महान धर्मधारक जीव के गर्भ में अवतरण होने पर ही ऐसी शुभभावना (शुभ दोहला) होती है। ऐसे पुरुष का जन्म धर्मात्माओं को, स्मरणीय व अनुकरणीय नहीं होगा क्या?

जिन महान पुरुषों का जीवन, प्रत्येक आचरण शिक्षात्मक होता है उन्हें स्मरण नहीं करना पड़ता, वे तो हमारी स्मृति में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समा जाते हैं। पूज्य आचार्यश्री का बाल्यकाल, बाल्यकाल में पाये जाने वाले दोषों से रहित होने के साथ, कुछ विशेषता से युक्त था। तरुण अवस्था में बड़ों की विनय, मधुर वार्तालाप का गुण, जिनदर्शन की प्रतिज्ञा, अध्ययन की लगन, स्वावलम्बन आदि गुण से वे सम्पन्न थे। यौवन अवस्था में वैराग्य का सागर हिलोरे ले रहा था, चिंतन में भोगों से विरक्ति, वाणी में सत्य का समावेश, शरीर में साधना की स्फूर्ति, बुद्धि में गुरु भक्ति, संकल्प में दीक्षा, आचरण में कर्त्तव्य निष्ठता, क्या ऐसा यौवन स्मरणीय-अनुकरणीय नहीं होगा?

जिन्होंने प्रौढ़ अवस्था के शुभारंभ में महाव्रतों से अपने को श्रृंगारित किया, अपनी ज्ञान कला से जैनाभासियों को क्षोभित किया, जिसने अपनी वाणी से साधर्मियों को जिन चरणानुरागी बनाया, जिसने अपने चिंतन व शुभ संकल्प से जिनधर्म की प्रभावना की, जिन्होंने अपने करकमलों से सैकड़ों की संख्या में भव्यजीवों को व्रत दिये, जिन्होंने अपने शरीर से हजारों की संख्या में उपवास किये।

सम्पूर्ण भारत की पदयात्रा—उन्होंने हजारों किमी. की संख्या में पदविहार किया, करोड़ों की संख्या में जाप किये, अपने दीक्षित जीवन में बड़े मात्रा में अनशन, तप किया, जिनमंदिर, जिनमूर्ति, जिनआगम, जिनधर्म, मुनिधर्म, श्रावकधर्म का संरक्षण, संवर्धन ही जिनका उद्देश्य था, क्या ऐसी प्रौढ़ावस्था वाला जीवन स्मरणीय-अनुकरणीय नहीं होगा? ऐसी उत्कृष्ट साधना वाले युग-पुरुष, योगी-शिरोमणि का जीवन स्मरणीय-अनुकरणीय नहीं होगा?

लोग पोशाक पहनना तो जानते हैं पर उतारना नहीं जानते हैं पर आचार्यश्री ने बखूबी से पोशाक पहनी और उसी बखूबी से पोशाक उतारी भी थी। जो बखूबी से पोशाक पहनकर बखूबी से पोशाक उतारते हैं वे अपनी साधना से ऐसी पोशाक पहनते हैं, जो कभी उतारनी नहीं पड़ती है, ऐसी पोशाक कुछ विरले लोग ही पहन पाते हैं। इसी पोशाक को पहनने के लिए पूज्य श्री ने देह को देवालय बनाकर संयमरूपी देव को प्रतिष्ठित किया, कठोर तप साधना से संयम देव की आराधना की फिर देवालय में समाधिमरण का कलशारोहण किया। नियम सल्लेखना की साधना से जिन्होंने मृत्यु को आमंत्रण दिया, 36 दिन तक जिन्होंने मृत्यु महोत्सव मनाया, यम सल्लेखनापूर्वक जिन्होंने मृत्यु को वरण किया, अंतिम श्वास तक चेतना ने जिसको शरण दिया। ऐसे महान साधक का, उपासक का जीवन स्मरणीय-अनुकरणीय नहीं होगा? मोक्ष के पिपासु को ऐसे योगी का, ऐसा जीवन अंत (मरण) स्मरणीय, अनुकरणीय नहीं होगा?

हम सब ऋणी हैं आपके—आद्यगुरु आचार्य भगवन्, आचार्य परमेष्ठी वह महान आत्मा थे, जिनका जन्म, जीवन और जीवन अंत दोनों ही वंदनीय, चिंतनीय, पूज्यनीय, स्मरणीय और अनुकरणीय है।

ऐसे महान योगी के पावन पुनीत चरणों में कोटि-कोटि वंदन। पूज्य आचार्यश्री ने अपने गृहस्थ जीवन से श्रावकों को क्रियात्मक उपदेश दिया। अपनी मुनिचर्या से साधुओं को क्रियात्मक उपदेश दिया और अपनी समाधि से मोक्षाभिलाषियों को क्रियात्मक उपदेश दिया।

अच्छा शिक्षक सम्पूर्ण जीवन पढ़ता है और पढ़ाता है। उसी प्रकार उत्तम साधक साधना करता है, करवाता है।

इस देश में जब चारित्रिक संपदा का सद्भाव नजर नहीं आ रहा था, तब पूज्य चारित्र चूड़ामणि, चारित्र नायक, चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज ने जन्म लेकर चारित्रिक सम्पदा का स्वयं अर्जन किया तथा अनेकों लोगों को चारित्रिक सम्पदा के अर्जन में लगाया, ऐसी चारित्रिक सम्पदा हमें तब तक मिलती रहे, जब तक यह आत्मा पूर्ण विकसित होकर स्वभाव में स्थिर न हो जाये।

चारित्र के हिमालय, चारित्र के सागर, चारित्र के भण्डार, चारित्र के मूर्तरूप हे आद्य गुरु! आपको कोटि-कोटि नमोस्तु, अर्पण है, समर्पण है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्रचक्रवर्ती परम्परा के प्रथम पट्टाचार्य एवं गणिनी ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा गुरु

आचार्य श्री वीरसागर महाराज का परिचय

लेखिका-गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी

जीवित रहने और मरने का बाहरी तरीका प्रायः सभी मनुष्यों का एक जैसा रहता है, किन्तु उद्देश्य में अन्तर आ जाने से जीवन बदल जाता है, दृष्टि बदल जाती है और दृष्टि बदलने से सृष्टि बदल जाती है। सारी क्रियायें एक होते हुए भी आंतरिक प्रणालियाँ विलक्षण हो जाती हैं। उनकी विचारधाराएं अलौकिक हो जाती हैं। निरुद्देश्य जीवन कूड़े-करकट के समान निरर्थक और भूमिका भारभूत रहती है। जबकि उद्देश्य पूर्ण जीवन-यापन ऐतिहासिक बन जाता है और उससे मानव को धन्य, परम पवित्र एवं महान बनने का सुअवसर मिलता है।

सभी मानव वस्त्र पहनते हैं, घर बनाते हैं, आजीविका के साधनों का अन्वेषण करते हैं। सभी की शारीरिक रचना एक सी होती है क्योंकि सभी माता के रज और पिता के वीर्य से उत्पन्न होते हैं।

आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा और परिग्रह संज्ञा भी सबके समान है। सभी का जन्म माता के उदर से होता है और धड़कन के रुक जाने से मरण होता है। इसमें कोई अन्तर नहीं है। सभी को बुढ़ापा, युवा एवं बालपन होता है। अन्तर मात्र इतना है कोई नर-पिशाच एवं पशु का जीवन जीते हैं और कोई नर व नारायण का जीवन जीते हैं। एक नारकीय एवं पशुता का जीवन यापन कर रहे हैं। कोई देव एवं महान बनने का प्रयत्न करते हैं। स्वयं महान बनते हैं और दूसरों को भी महान बनाने का प्रयत्न करते हैं। स्वयं कीचड़ से अलिप्त रहकर निकलने का प्रयत्न करते हैं और दूसरों को भी रत्नत्रय की नौका पर बिठाकर संसार समुद्र से निकालने का प्रयत्न करते हैं। इस आकाश-पाताल के अन्तर को देखकर यह जानने की इच्छा होती है कि जब जीवन-यापन करने की पद्धति साधारणतया समान है, तो यह असाधारण अन्तर कैसे उत्पन्न होता है।

मानव जाति में तीन अभिलाषा होती हैं-प्रथम अभिलाषा है शरीर को सक्रिय बनाने के लिए आहार (खाद्य पदार्थ) प्राप्त करने का प्रयत्न करना। इसका शास्त्रीय परिभाषा में दूसरा नाम है आहार संज्ञा।

दूसरी अभिलाषा है कामुकता। विषय वासनाओं की पूर्ति, इसे मन्मथ कहते हैं। इसका शास्त्रीय नाम मैथुन संज्ञा है। इन दोनों अभिलाषाओं की पूर्ति करने के लिए परिग्रह का अर्जन करने की इच्छा, इसका दूसरा नाम है परिग्रह संज्ञा। जहाँ परिग्रह रहता है वहाँ भय होना स्वाभाविक है, वह भय संज्ञा है। इनमें शरीर को क्षुधा पूर्ति की और मन को काम तृप्ति की आकांक्षा प्राणियों में सहज रहती है। इनके लिए किसी को कुछ चिंतन नहीं करना पड़ता है परन्तु इन अभिलाषाओं से प्रेरित होकर इनकी पूर्ति के लिए प्राणी घड़ी के पेन्डुलम की तरह इधर-उधर भागदौड़ करते हैं। सोचते हैं, विचारते हैं और अहर्निश इनकी पूर्ति में जीवन व्यतीत कर देते हैं। कीट पतंग आदि सारे पशु-पक्षी की प्रवृत्ति ऐसी होती है। मानव भी इसी प्रवाह में बहता रहता है।

आहार निद्रा भय मैथुनं च, एतत् समानं पशुभिर्नराणां,
धर्मो हि तेषामधिकोविशेषो, धर्मेण हीना पशुभिः समानः।

इन चार संज्ञाओं की अपेक्षा मानव और पशु में कोई अन्तर नहीं है। यदि इन दोनों में कोई अन्तर है, तो धर्माचरण का है। जिन्होंने मानव जैसी उत्तम पर्याय को प्राप्त कर इन संज्ञाओं की पूर्ति में नष्ट कर दिया, उसने मानों चिंतामणि रत्न को काक उड़ाने के लिए फेंककर नष्ट कर दिया।

पशु प्रकृति प्रदत्त कच्चा आहार करते हैं, मानव इसे पकाकर स्वादिष्ट बनाकर खाता है। अन्य प्राणी निर्लज्ज काम सेवन करते हैं, मनुष्य उसे कलात्मक बनाकर कुछ अधिक रस लेता है। अन्य प्राणी उतना ही उपार्जन करता है, जितने से पेट भर जाता है परन्तु भविष्य के लिए भी संग्रह करता है। दूसरे प्राणी काम कौतुकवश घोसलें बनाते हैं और बच्चों के बड़े होने तक उनके पोषण और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रक्षण का प्रबंध करते हैं। मानव विवाह करता है, परिवार बसाता है और उसके लिए सुविधा साधन जुटाता है। इसको विवाह विस्तार कहते हैं। इन क्रियाओं में मानव और पशुओं में कोई अन्तर नहीं है।

मानव को मानवता प्राप्त करने के लिए दृष्ट, श्रुत और अनुभूत भोगाकांक्षाओं का त्यागकर तृतीय अभिलाषा जागृत करना है, जिसमें जन्म-जन्मान्तर में उपार्जित कर्मों का विनाश होता है। वह है आत्म निरीक्षण, आत्म गुणों का विकास, आत्म सुधार।

जिस प्राणी के हृदय में आत्म अस्तित्व के श्रद्धान का सूर्योदय होता है, उससे निकली ज्ञान रश्मियाँ आत्मावलोकन में तत्पर होती हैं और संयम की सौरभ आत्मा को सुवासित करती है, उसी मानव का जन्म सार्थक होता है।

जिन मानवों का चिंतन गहराई में उतरता है, उन्हें उदरपूर्ति और कामतृप्ति जैसे क्षुद्र लाभ अपर्याप्त लगते हैं। मानवी गरिमा का स्वरूप और लक्ष्य समझ में आ जाने से वे निरंतर उस महानता की ओर अग्रसर होते हैं। जिसे मनीषियों ने आध्यात्मिकता नाम दिया है। मानव-मानव के बीच पाई जाने वाली निकृष्टता और महानता की भिन्नता का यही आन्तरिक विवेचन एवं विश्लेषण है। एक मानव जैसी उत्तम पर्याय को प्राप्त कर भोगाकांक्षा में बिताकर निन्दनीय बनता है और दूसरा आत्म विकास के मार्ग को स्वीकार कर महान बनता है तथा जन-जन के द्वारा आदरणीय होता है।

इस भूतल पर अनेक प्राणी मानव तन को धारण करते हैं और मृत्यु का ग्रास बनकर चले जाते हैं। कोई अन्तर्मुहूर्त तक जीवित रहता है और कोई एक कोटिपूर्व तक। अन्तर्मुहूर्त और एक कोटि के मध्य में अनेक प्रकार की आयु को धारण करके आते हैं और चले जाते हैं। उनमें से कुछ मानव ऐसे होते हैं, जो हिंसादि अशुभ परिणामों के द्वारा पापोपार्जन से स्वकीय आत्मा को मलिन कर दुर्गति में चले जाते हैं।

इनमें कुछ प्राणी ऐसे होते हैं, जो शुभ तथा शुद्ध भावों के द्वारा शुभ कर्मों का उपार्जन कर स्वर्ग तथा शुद्ध भावों के द्वारा कर्म कालिमाओं का प्रक्षालन कर मुक्ति पद को प्राप्त करते हैं।

इनमें कुछ प्राणी ऐसे होते हैं, जिनका नाम जल की लहरों के समान उनके साथ ही विलीन हो जाता है। कुछ प्राणी ऐसे होते हैं जिनकी अमिट छाप अनन्त काल तक धारा प्रवाह रूप से बहती रहती है और निकट भव्यरूप, परमहंस उनके स्मरणरूप अगाध जल में अवगाहन करके कर्म कालिमा को धोते हैं और अपनी आत्मा को पवित्र बनाते हैं।

आत्म विशुद्धि के द्वारा आत्मा को निर्मल कर स्वात्मोपलब्धि को प्रदान करने वाले महापुरुषों की अक्षुण्ण धारा अनादिकाल से चली आ रही है। वर्तमान में वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर, उनके बाद अनुबद्ध तीन केवली, तदनन्तर पाँच श्रुत-केवली, 11 अंग के पाठी, एक अंग के पाठी तथा चार अनुयोग के ज्ञाता, भद्रबाहु, गोवर्द्धन, धरसेन, वीरसेन, जयसेन, गुणधर, कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, उमास्वामी, पूज्यपाद, अकलंक, जिनसेन, जटानन्दी, यतिवृषभ आदि अनेक आचार्य हुए हैं, जिन्होंने जिनधर्म का उद्योतन किया। अज्ञानरूपी अंधकार को दूर भगाकर जिनधर्म की प्रभावना की और कितने ही भव्यात्माओं को रत्नत्रय निधि प्रदान कर पवित्र बनाया।

इन्हीं शृंखलाओं में शक संवत् 1724, विक्रम संवत् 1929, सन् 1872 आषाढ़ कृष्णा षष्ठी, बुधवार को महाशक्तिशाली भीमगौंडा श्रेष्ठी की सत्यवती भार्या की कुक्षि से एक महापुरुष ने जन्म लिया, जिसका नाम रखा-सातगौंडा।

सातगौंडा यह उनका सार्थक नाम था अर्थात् जैसा नाम था वैसा ही उनका काम था क्योंकि वे सत्य-समीचीन चारित्र के पालक थे। समृद्धशाली घर के होते हुए भी वे पंचेन्द्रिय विषय वासना से शून्य हृदय वाले थे। 36 वर्ष की उम्र में उन्होंने एक उपवास और एक दिन आहार का नियम लिया।

विक्रम संवत् 1972, शक संवत् 1836, ज्येष्ठ सुदी त्रयोदशी के दिन उत्तूर ग्राम के जिनमंदिर में सातगौंडा ने स्वजन, परिजन, धन-धान्यादिक का परित्याग कर क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की, जिनका नाम शांतिसागर रखा गया।

नेमिनाथ की निर्वाणभूमि गिरनार पर्वत पर ऐलक दीक्षा ग्रहण की। विक्रम संवत् 1978, फाल्गुन सुदि 12 के दिन यरनाल में मुनिपद धारण किया। आचार्य शांतिसागर महाराज ने क्षुल्लक अवस्था से लेकर समाधिमरण पर्यन्त 43 वर्ष तक धर्मामृत की वर्षा कर जनता के हृदय में धर्मांकुर उत्पन्न किये और कितने ही भव्यों को दिगम्बर दीक्षा प्रदान कर संसारोच्छेद करने का मार्ग बतलाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारत भूमि पर स्थित जीवों के महान पुण्य के उदय से उत्पन्न दिव्य ज्योति ने 84 वर्ष तक इस भूतल को ज्ञान, ध्यान, तप से आलोकित किया तथा स्वयं सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्ररूपी त्रिवेणी में अवगाहन कर अपने आपको पवित्र बनाकर कुंथलगिरि पर्वत पर व्रतों के फलस्वरूप 36 दिन की यमसल्लेखना धारण कर वि.सं. 2012 भाद्रपद शुक्ला दूज के दिन दिनाँक 18-9-55 को प्रभातकाल में 6 बजकर 55 मिनट पर परलोक यात्रा की।

इसी महापुरुष के करकमलों से दैगम्बरी दीक्षा ग्रहण कर स्वपर का कल्याण करने वाले धीर-वीर महापुरुष ने महाराष्ट्रस्थ ईर गाँव निवासी श्रीमान धर्मनिष्ठ श्रेष्ठी श्री रामसुखलाल की धर्मपरायण धर्मपत्नी भागूबाई की कुक्षि से विक्रम सं. 1933 में आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा के दिन पुत्ररूप में जन्म लिया। जन्म लेते ही सारे स्वजनों का हृदय हर्ष से ओत-प्रोत हो गया।

मानव जीवन को सुसंस्कृत करने वाले संस्कारों को जानने वाले माता-पिता ने जैनधर्म विहित गर्भ से लेकर जन्म तक के संस्कारों से बालक का संस्कार कर उनका नाम हीरालाल रखा। जब बालक आठ वर्ष का हुआ तो उनका यज्ञोपवीत संस्कार करके यज्ञोपवीत ग्रहण कराया।

तीव्र बुद्धिधारी बालक ने यद्यपि स्कूल में विशेष पठन-पाठन नहीं किया था, परन्तु बालपन में ही स्वाध्याय करने की लगन होने से वे घर में गुरु थे। कचनेर पाठशाला में बालकों को अध्यापन कराने से वे अध्यापक थे, परन्तु घर, ग्राम और आसपास के ग्रामों के लोग उनको गुरुजी के नाम से पुकारते थे। आप पूर्वभव के संस्कारों से जन्म से ही वैरागी थे। जब वे 18 वर्ष की उम्र को प्राप्त हुए, तो माता-पिता ने उनके विवाह करने का विचार किया परन्तु संसार, शरीर और भोगों से विरक्त हीरालाल ने विवाह हेतु इंकार करते हुए कहा कि मुझे संसार जाल में नहीं फंसना है।

उन्होंने मन में यह दृढ़ संकल्प किया था कि मुझे "दिगम्बर साधु बनना है" वीतराग प्रभु की प्रतिमा के समक्ष आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। एक बार उनको ऐलक पन्नालाल जी के दर्शन हुए, तब उन्होंने अपने मित्र खुशालचन्द के साथ दूसरी प्रतिमा के व्रत ग्रहण किए। वे दोनों मित्र 24 घंटे में रात्रि के 3 घंटे सोते थे, शेष समय स्वाध्याय, ध्यान, पूजन और कचनेर विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्यापन में व्यतीत करते थे। यद्यपि हीरालाल जी के पूर्वज राजस्थान के खण्डेलवाल जातीय एवं गंगवाल गोत्र के थे परन्तु महाराष्ट्र में रहने के कारण उनकी भाषा मराठी थी। शास्त्राध्ययन से उनका संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी का ज्ञान विलक्षण था। वाणी मधुरता, मुख की प्रसन्नता, पदार्थों में समता कूट-कूट कर भरी थी।

वे दोनों मित्र संसार से विरक्त थे, घर में भी दूध के सिवाय सर्व रसों के त्यागी थे। मंदिर व धर्मशाला में रहते थे। प्रतिदिन व्रत परिसंख्यान नियम लेते थे कि आज यह पुरुष, यह स्त्री, ये बालक बुलाने आयेंगे तो आहार करेंगे, अन्यथा नहीं। दिन में एक बार ही भोजन करते थे। इन दोनों के मन में एक ऐसा दृढ़ विचार था कि इस काल में भावलिंगी मुनि नहीं होते। इसलिए वे आधुनिक मुनियों को नमस्कार भी नहीं करते थे और स्वयं मुनि बनने की भावना भी नहीं करते थे।

एक दिन उनके मन में श्रवणबेलगोला के बाहुबली भगवान के दर्शन करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। जब बाहुबली के दर्शन करने निकले। मार्ग में कोन्नूर ग्राम में आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के दर्शन किये। उनके दर्शन करते ही उनको अलौकिक आनन्द का अनुभव हुआ। तत्काल उनके हृदय की भ्रान्ति निकल गई कि इस काल में भावलिंगी मुनि नहीं होते। उन्होंने नतमस्तक होकर उनके चरणों में नमस्कार किया और आचार्यवर्य से सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण कर प्रतिज्ञा की कि मैं आप के चरणों में आकर दिगम्बर मुद्रा धारण करूँगा।

बाहुबली की यात्रा कर हीरालाल जी और उनके मित्र खुशाल चन्द जी दोनों आचार्यश्री के चरणों में आये। उस समय आचार्य श्री कुंभोज में थे वहीं आकर उन दोनों ने आचार्यश्री के श्रीचरणों में नतमस्तक होकर दीक्षा की याचना की। आचार्यश्री ने वि.सं. 1980 में फाल्गुन शुक्ला अष्टमी के दिन दोनों को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की। हीरालाल जी का नाम वीरसागर जी और खुशालचंद का नाम चन्द्रसागर रखा।

क्षु. वीरसागर जी को वस्त्रों का आवरण अच्छा नहीं लगा। उनका मन तो दैगम्बरी दीक्षा के लिए अत्यन्त उत्सुक था। वे गृहस्थ से सीधे दिगम्बर मुनि बनना चाहते थे परन्तु गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य कर उन्होंने क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की।

क्षुल्लक दीक्षा के सात महीने ही निकले थे। गुरु से अनुनय विनय कर वि.सं. 1981, आश्विन शुक्ला दशमी के दिन समडोली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नगर में मुनि दीक्षा ग्रहण की। उनका वीरसागर नाम सार्थक था। वि-विशेषण, ई-लक्ष्मी रत्नत्रयरूप निधि, राति-देता है। उसको वीर कहते हैं। उन्होंने भव्य जीवों को रत्नत्रयरूपी लक्ष्मी प्रदान कर सुखी बनाया।

उन्होंने अनेकों भव्यों को दिगम्बर मुद्रा प्रदान किया जिसमें आदिसागर जी, शिवसागर जी, धर्मसागर जी, सुमतिसागर जी, पद्मसागर जी, जयसागर जी, श्रुतसागर जी, सन्मतिसागर जी आदि अनेक भव्यों को दिगम्बर मुनि बनाया।

वीरमती, सुमतिमती, पार्श्वमती, विमलमती, इन्दुमती, शांतिमती, सिद्धमती, वासमती, ज्ञानमती, सुपार्श्वमती आदि को आर्यिका दीक्षा प्रदान कर पूज्यनीय बनाकर संसार समुद्र से पार करने का प्रयत्न किया। सिद्धसागर आदि अनेक क्षुल्लक, जिनमती आदि अनेक क्षुल्लिका बनाईं। सूरजमल जी, राजमल जी आदि अनेक ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों से जिनका संघ सुशोभित था।

श्री वीरसागर जी महाराज आचार्य नहीं थे और न वे आचार्यपद के लोलुपी थे। यदि उनको कोई आचार्य कहते तो नाराजगी प्रकट करते थे। परन्तु बहुत बड़े संघ के संचालक थे। सामान्य रूप से नहीं अपितु शास्त्रोक्त दृष्टि से संघ पर अनुशासन करते थे। इतना ही नहीं वे स्वयं अपने मन पर कठोर अनुशासक थे। उनका चारित्र अति निर्मल था।

ख्याति, पूजा, लाभ से वे कोसों दूर थे। कभी उन्होंने शास्त्र विरुद्ध कार्य नहीं किया। कभी आर्यिकाओं की वसतिका में जाकर स्वाध्याय प्रतिक्रमण नहीं करते थे। आर्यिकाओं का वास उनसे बहुत दूर रहता था।

कभी उन्होंने अपना जन्मदिवस, दीक्षादिवस नहीं मनवाया। कभी चातुर्मास के समय कलश स्थापना आदि कार्य नहीं किये। वे हमेशा किसी स्थान के निर्माण कार्य के व्यामोह में नहीं आये।

वे हमेशा कहते थे कि शास्त्र के अनुसार अपनी बुद्धि को बनाने का प्रयत्न करो, अपनी बुद्धि के अनुसार शास्त्र का अर्थ मत करो। पाप से हटो, ख्याति पूजा लाभ के चक्र में मत फंसो। दीक्षा लेने वालों को पूछते थे कि तुम दीक्षा किसलिए ग्रहण करते हो, "भुक्ति के लिए कि मुक्ति के लिए" भुक्ति के लिए घर छोड़कर साधु मत बनना, क्योंकि भुक्ति तो घर में बहुत है। जिस दीक्षा (संयम) से मुक्ति मिलती है, तो भुक्ति जैसी तुच्छ बुद्धि तुम्हारे चरणों की दासी बनकर आगे-आगे दौड़ेगी।

वे शरीर से इतने निस्पृही थे कि कितनी भी पीड़ा होने पर भी उनके मुख पर सिकन नहीं थी। वि.सं. 2006 में वीरसागर महाराज का नागौर में ससंघ चातुर्मास था। तब उनकी पीठ में एक अदीठ नाम का फोड़ा हो गया था, जिससे शरीर में असह्य पीड़ा होती थी परन्तु वीरसागर महाराज की चर्या में कोई शिथिलता नहीं थी, अशुद्ध औषधियों का प्रयोग नहीं किया।

एक दिन कोई भक्त श्रावक पुराना घृत लेकर आया और कहने लगा इसके प्रयोग से आपको शान्ति मिलेगी। दुःसह फोड़ा फूट जायेगा। मुनिराज ने पूछा यह क्या है? उसने कहा हमारे किले से निकला हुआ 100 वर्ष से अधिक पुराना घृत। महाराज ने कहा मूर्ख! यह असंख्यात त्रस जीवों का पिण्ड है। इसका संयमी लोग स्पर्श नहीं करते।

उन परम साहसी धैर्यवान पुरुष ने किसी अशुद्ध औषधि का प्रयोग नहीं किया। जब फोड़ा फूटा नहीं और उसका मवाद निकालना आवश्यक था, तब चीरा देने के लिए एक वैद्यराज जी आये, तो कुछ भी औषधि लगाने नहीं दी। पीठ उनकी तरफ कर दी और कहा तुम बिना औषधि लगाये फोड़े को चीर काटकर पीव निकाल दो। उसने शस्त्र से चार अंगुल का घाव किया। परन्तु महाराज के मुख से किसी प्रकार का उफ शब्द नहीं निकला, हंसते रहें। यह सुनी हुई बातें नहीं, अपितु आँखों देखी हैं। इसको कहते हैं आत्मा और शरीर का भेदज्ञान। 80 वर्ष की उम्र में जयपुर से सम्मेदशिखर की यात्रा करने संघ सहित गये। पद यात्रा की, पैदल पहाड़ की वंदना की। प्रतिदिन 12 मील चलते, कभी 20 मील चलते परन्तु थकावट होने पर भी अपनी दैनिक चर्या में आलस्य नहीं था।

उन्होंने 33 वर्ष दिगम्बर मुद्रा में रहकर अनेक नगरों, ग्रामों में विहार कर धर्मोपदेश कर धर्म की प्रभावना की। सारे तीर्थों की पैदल यात्रा की। दोबारा सम्मेदशिखर की मुनि बनकर पैदल यात्रा की।

एक दिन सम्मेदशिखर की यात्रा में जाते समय उनको एक सौ चार डिगरी बुखार आ गया। बहुत जोर से ठंड लग रही थी, शरीर कांप रहा था। संघ के लोगों ने डोली में बिठाकर ले जाने का प्रयास किया परन्तु महाराज ने डोली का स्पर्श तक नहीं किया। इतने अधिक बुखार में भी पैदल 12 मील (18 किलोमीटर) जाकर रुके। बनारस-आरा के बीच में चलते हुए।

मार्ग में किन्हीं ताडी पिये हुए पुरुषों ने महाराज पर पत्थर फेंके परन्तु महाराज अपने ध्यान में मग्न रहे, आगे न बढ़कर वहीं बैठ गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीरसागर महाराज को निर्दोष चारित्र के धनी देखकर ही आचार्य श्री शांतिसागर महाराज ने कुंथलगिरि से आचार्यपद प्रमाणपत्र भेजकर वि.सं. 2012, भादो वदी सप्तमी के दिन जयपुर (खानियां) में उनको आचार्यपद से सुशोभित किया था।

आचार्य पदवी प्राप्त कर उन्होंने आनन्द की अनुभूति नहीं की, वे कहते थे कि यह बाह्य उपाधि है। इसे त्याग किये बिना समाधिमरण नहीं होता। शिष्यों का विशेष शुभकर्म का उदय नहीं होने से वे अधिक दिन तक आचार्य पद पर स्थित नहीं रहे। दो वर्ष के उपरान्त वि.सं. 2014 आश्विन कृष्णा अमावस्या को दिन में 11 बजे णमोकार मंत्र का ध्यान करते हुए प्राणों का विसर्जन किया। जयपुर नगर स्थित खानिया में उनकी समाधि के समय आचार्य महावीरकीर्ति आदि 27 पिच्छीधारी मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक-क्षुल्लिका थे। सबका मन खेद-खिन्न था परन्तु काल के सामने किसी का बस नहीं चलता।

उन्होंने समाधि के कितने दिन पूर्व ही पानी, छाछ और गेहूँ के सिवाय सब वस्तुओं का त्याग कर दिया था परन्तु मरण पर्यन्त अपनी चर्या में सावधान थे। इसी के फलस्वरूप उन्होंने मरण के पूर्व चतुर्दशी के दिन 2 घण्टे तक प्रतिक्रमण किया। सब को प्रायश्चित दिया, चल फिर रहे थे, किसी ने यह नहीं सोचा कि कल इस समय यह हमारे समीप नहीं रहेंगे।

गुरुदेव के समीप बैठने पर ऐसा लगता था कि हम साक्षात् जीवित समयसार के पास बैठे हैं। विषय भोगी प्राणी आत्मा का कथन तो करते हैं परन्तु आचरण में नहीं उतारते परन्तु गुरुदेव ने केवल कथन ही नहीं किया था अपितु आत्मा में उतारकर तदनुकूल आचरण किया था।

वे निरंतर कहते थे कि-ये अज्ञानी प्राणी संसार में कार्यों के लिए जितने कष्ट उठाते हैं। असंयमरूपी असिधारा शय्या पर शयन कर विषयभोग रूप विषफल को खाकर दु:खी होते हैं, उन पर करुणा आती है कि वे सद्ज्ञान को प्राप्त कर संयमरूपी पुष्प शय्या पर शयन कर आत्मानुभवरूपी अमृत फल को चख कर सुख का अनुभव क्यों नहीं करते।

अपने सद्गुणों के कारण गुरुदेव सबके प्रिय थे। वे धैर्य, नीति, मिथ्यात्व निराकरण तथा अहिंसा के प्रचार के सिवाय लौकिक व्यवहार तथा राजनीति के पंक में लिप्त नहीं थे।

गुरुदेव कहते थे कि वास्तव में शांति और उन्नति का मार्ग आत्मा के गुणों को विकसित करना तथा विलासिता से विमुख होना है। जो मानव भोग विलास से विमुख न होकर संयम की तरफ कदम बढ़ाता है, वह संयम की साधना कर नहीं सकता है, वह संयम से विमुख हो जाता है। जिनका हृदय भोग विलास की चोट से जर्जरित नहीं है, सांसारिक प्रलोभन व आपत्तियाँ उसके हृदय को विचलित नहीं कर सकतीं।

आगम परम्परा के दृढ़ संरक्षक निर्दोष चारित्र के धनी गुरुदेव शिष्यों से कहते थे कि जो भोग और मोह के मार्ग से विमुख होकर श्रेष्ठ मार्ग को स्वीकार करता है, वही सत्पुरुष एवं वास्तविक त्यागी है। तुम्हें अपनी वासनाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए। जिससे तुम्हें वे दण्डित न कर सकें।

उनका उज्ज्वल जीवन ही सबको प्रकाश प्रदान करता था। अपने शिष्यों के प्रति शासन कार्य में कभी पक्षपात, अन्याय अथवा अनीति का लवलेश मात्र भी नहीं था। इतने बड़े संघ का अनुशासन एवं अनग्रह करते हुए भी वे आत्मध्यान, शास्त्र-अध्ययन आदि स्वकीय आवश्यक कार्यों में सतत सजग रहते थे। उनका मुख्य लक्ष्य था-रागद्वेष मोह माया आदि कलंकों को दूर कर स्वकीय आत्मा को परमात्मा बनाना।

गुरुदेव किसी के द्वारा किये गये प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर देते थे, जिनको सुनकर सामने वाला चुप हो जाता था। मैंने साक्षात् कुछ उत्तर देखे हैं। उदाहरणार्थ-ईसरी चातुर्मास में एक बहुत बड़े विद्वान आये उन्होंने कहा कि यह पंचामृताभिषेक हिंसा का कारण है। आप निषेध क्यों नहीं करते। उन्होंने कहा-हरिवंशपुराण का 21वें सर्ग के 22-23 आदि श्लोक, पद्मपुराण, वरांगचरित्र, भावसंग्रह, श्रीपाल पुराण आदि। फल, पुष्प चढ़ाने के लिए देखो तिलोयपण्णत्ति आदि ग्रंथ। शास्त्र के अनुसार बुद्धि करो, बुद्धि के अनुसार शास्त्र का अर्थ मत करो।.

एक गेरुआ वस्त्र पहना हुआ व्यक्ति आया। बोला-महाराज! आप नग्न क्यों रहते हो। गुरुदेव ने कहा-आप गेरुआ कपड़ा क्यों पहने हो। उसने कहा हमारे भगवान का आदेश है। साधुओं को गेरुआ कपड़ा पहनना चाहिए। आचार्य देव ने कहा-हमारे वीतराग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु का आदेश है अपने मन को वश में करने वाले काम विजेता साधुओं को नग्न रहना है। वह साधु चुप हो गया। यह घटना मंदारगिरि की है।

एक दिन महाराज को बहुत जोर से ज्वर आया, भक्तों ने कहा महाराज थोड़ी देर विश्रान्ति लो? महाराज ने उत्तर दिया–भोगियों के लिए रोग, रोने के लिए और प्रमाद के लिए आता है और साधुओं को रोग, वैराग्य और सचेत कर प्रमाद हटाने के लिए आता है।

वे कहते थे कि जिसने जिस दिन दीक्षा ली उस दिन को मत भूलो।

मेरा सो खरा नहीं, खरा है सो मेरा है।
एक क्षण भी संयम के बिना मत बिताओ।

उनका एक-एक शब्द अर्जन किया जाय, तो शास्त्र बन सकता है। उनका आचरण स्वयं शास्त्र था। वे वचन के द्वारा नहीं बोलते थे अपितु उनका शरीर मोक्षमार्ग का कथन करता था। जब उनका स्मरण होता है, तो नेत्र सजल हो जाते हैं। स्मरण होता है उन पंक्तियों का—

ते गुरु मेरे उर बसों, जे भव जलधि जिहाज।
आप तिरें पर तारहीं, ऐसे श्री ऋषिराज।

उनका कहना था–जो व्यक्ति नकली नहीं असली आनंद चाहता है उसे अपने आप को समुद्र के समान गंभीर, मेरु के समान अचल बनाना चाहिए। वास्तव में सारे समुद्र के पानी की स्याही बनावे एवं धरती को कागज बनाये, सारी वनस्पति की कलम बनावे और सरस्वती स्वयं लिखे, तो भी गुरुओं के गुण लिखे नहीं जा सकते।

गुरुभक्ति संसार के सारे अभ्युदयों को प्रदान कर क्रम से मुक्ति पद को देती है। गुरुदेव आचार्य श्री वीरसागर जी की स्थिरता, साहस, निर्भीकता और आत्म निमग्नता आदि श्रेष्ठ गुणों को देखकर ऐसा लगता था कि वास्तव में ये चतुर्थकाल के ही साधु हैं। सम्मेदशिखर की यात्रा के समय आचार्यदेव जब कभी बैठते थे। मार्ग में सारा संघ उनको घेरकर बैठ जाता। तब वे संघ को संक्षेप में शिक्षा देते थे। सर्व साधुजनों को सदा साथ रहना चाहिए। इस काल में एकल बिहारी नहीं होना चाहिए। चतुर्थकाल में भी जो 1 माह, 2 माह, 6 माह आदि का उपवास कर सकता है, वही जिनकल्पी मुनि एकल विहारी हो सकता है अन्य नहीं।

संघस्थ साधु सुरक्षित रहता है और उसे अपनी धार्मिक मर्यादा में रहने की बहुत प्रेरणा मिलती है।

देखना है तो अपने आपको देखो, अपने दुर्गुणों को देखो दूसरों के नहीं, सुई का काम करो, कैंची का नहीं। मुनीम बनो मालिक नहीं, ज्ञाता, दृष्टा बनो कर्त्ता नहीं। मारने की इच्छा हो तो कामनाओं को मारो प्राणियों को नहीं। कम खाओ, गम खाओ और नम जाओ। श्रेष्ठ बनने की चेष्टा करो, ज्येष्ठ बनने की नहीं। उनके एक-एक शब्द शास्त्र के समान आत्महितकारी थे।

गुरुदेव का जीवन उज्ज्वल दर्पण था, जिसमें भव्यजीव अपना स्वरूप देख सकते थे।

उनको किसकी उपमा दी जाये, सागर कहें तो सागर का पानी खारा होता है। परन्तु उनका वचनामृत तो मधुर शीतल और विषयों की प्यास बुझाने वाला था। उनको चन्द्रमा की उपमा भी नहीं दे सकते, क्योंकि चन्द्रमा कालिमा सहित है। परन्तु आचार्य श्री का चरित्र निर्मल एवं उज्ज्वल था। गुलाब का फूल कांटे सहित है परन्तु आचार्य के जीवन में व्रतों के अतिचार रूप कांटे नहीं हैं।

ऐसे महान चारित्र के धनी आचार्य गुरुदेव श्री वीरसागर जी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पण करती हुई मन-वचन-काय से उनके चरणों में नमन, वंदन, अर्चन करती हूँ। हे गुरुदेव! तुम्हारे आशीर्वाद से अन्त में समाधिमरण हो, णमोकार मंत्र का जाप करते-करते प्राणों का विसर्जन हो यही कामना करती हूँ, भावना करती हूँ। ॐ शांति, शांति, शांति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के आचार्यवृंद

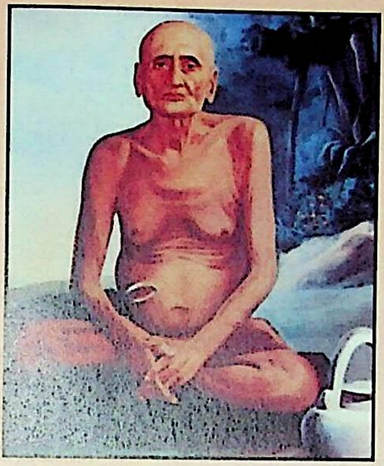

आचार्य
श्री शांतिसागर जी महाराज

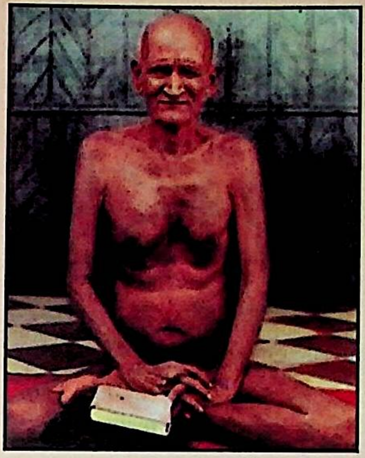

प्रथम पट्टाधीश आचार्य
श्री वीरसागर जी महाराज

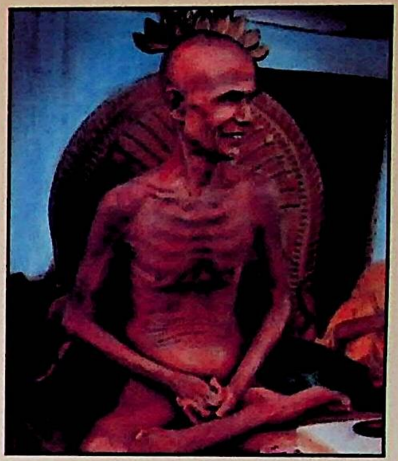

द्वितीय पट्टाधीश आचार्य
श्री शिवसागर जी महाराज

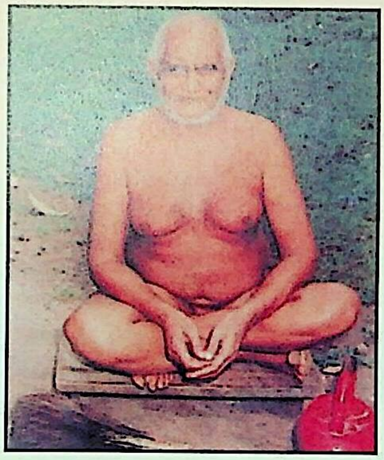

तृतीय पट्टाधीश आचार्य
श्री धर्मसागर जी महाराज

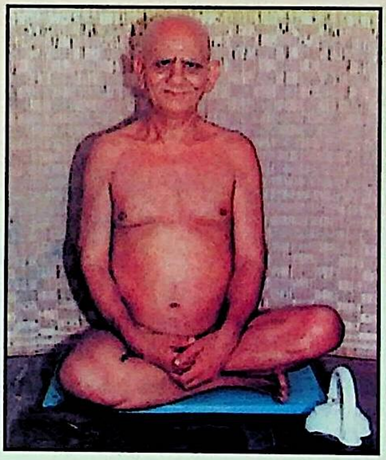

चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य
श्री अजितसागर जी महाराज

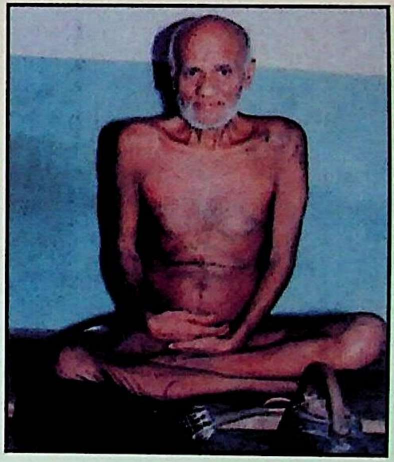

पंचम पट्टाधीश आचार्य
श्री श्रेयांससागर जी महाराज

षष्ठ पट्टाधीश आचार्य
श्री अभिनंदनसागर जी महाराज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्यश्री शांतिसागर महाराज की परम्परा के आचार्य

लेखिका-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज ने सन् 1955 में अपनी समाधि से पूर्व अपने प्रथम शिष्य आचार्यकल्प श्री वीरसागर महाराज को संघपति गेंदनमल जी के द्वारा पत्र लिखवाकर अपना आचार्य पट्ट प्रदान किया था अतः आचार्यश्री वीरसागर महाराज इस परम्परा के प्रथम पट्टाचार्य कहलाए। आगे उसी परम्परा के पट्टाचार्यों के संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत हैं—

द्वितीय पट्टाचार्य श्री शिवसागर जी महाराज

दक्षिण भारत के महाराष्ट्र प्रान्त में औरंगाबाद जिले के अड़गाँव ग्राम में श्रेष्ठी श्री नेमीचन्द्र जी रांवका के गृहांगन में माता दगड़ाबाई की कुक्षि से वि.सं. 1958 में एक पुत्र का जन्म हुआ। जिसका नाम हीरालाल रखा गया।

हीरालाल जी पूर्व जन्म के संस्कारवश बालब्रह्मचारी रहे। आचार्यश्री शांतिसागर महाराज से आपने 28 वर्ष की उम्र में द्वितीय प्रतिमा के व्रत ग्रहण किए। वि.सं. 2000 में आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की और शिवसागर नाम प्राप्त किया। वि.सं. 2006 में नागौर (राज.) में आषाढ़ शु. 11 को मुनि दीक्षा प्राप्त कर मुनि श्री शिवसागर महाराज बन गए। 8 वर्ष तक गुरु के सान्निध्य में रहकर कठोर तपस्या की पुनः वि.सं. 2014 (सन् 1957) में आचार्यश्री वीरसागर महाराज का जयपुर खानियाँ में समाधिमरण हो गया तब चतुर्विध संघ ने आपको आचार्य पट्ट पर अभिषिक्त किया। 11 वर्षों तक संघ का कुशल संचालन करने के पश्चात् वि.सं. 2026 (सन् 1969) में अल्पकालीन ज्वर होने से फाल्गुन कृ. अमावस्या के दिन अकस्मात् आपका समाधिमरण हो गया। इस परम्परा के द्वितीय पट्टाचार्य श्री शिवसागर महाराज के चरणों में कृतिकर्मपूर्वक नमोऽस्तु।

तृतीय पट्टाचार्य श्री धर्मसागर महाराज

क्षत्रिय वीरों की श्रेष्ठ भूमि राजस्थान के बूंदी जिले में गंभीरा ग्राम में श्रेष्ठी श्री बख्तावरमल के यहाँ उमरावबाई की कुक्षि से पौष शु. पूर्णिमा को एक शिशु ने जन्म लिया, जन्म नाम रखा गया चिरंजीलाल। युवावस्था में आचार्यकल्प श्री चन्द्रसागर महाराज से आपने सप्तम प्रतिमा रूप ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया तथा चैत्र शु. सप्तमी वि.सं. 2001 को उन्हीं से क्षुल्लक दीक्षा धारणकर भद्रसागर बने। पुनः आचार्यश्री वीरसागर महाराज से ऐलक दीक्षा लेकर शीघ्र ही वि.सं. 2008 की कार्तिक शु. 14 को मुनि दीक्षा प्राप्त कर मुनिश्री धर्मसागर जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। गुरुदेव की समाधि के पश्चात् श्री धर्मसागर महाराज ने एक मुनि पद्मसागर जी को साथ लेकर धर्मप्रभावना हेतु संघ से पृथक् विहार किया।

वि.सं. 2025 (सन् 1968) में बिजौलिया चातुर्मास के अनंतर महावीर जी शांतिवीर नगर में होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव में आप पधारे थे। वहीं अचानक आचार्यश्री शिवसागर महाराज की समाधि हो गई। अतः आपको इस परम्परा के तृतीय पट्टाचार्य के रूप में चतुर्विध संघ ने स्वीकार किया। चालीस वर्ष की दीर्घ संयमसाधना के अनन्तर ईसवी सन् 1987 की 22 मार्च को सीकर (राज.) में अत्यंत शांत भाव से आपने समाधिमरण को प्राप्त कर जीवन के अंतिम लक्ष्य को सिद्ध किया, ऐसे महान आचार्यश्री के पावन चरणयुगल में मेरा कोटिशः नमोस्तु।

चतुर्थ पट्टाचार्य श्री अजितसागर महाराज

विक्रम सं. 1982 में भोपाल के पास आष्टा नामक कस्बे के समीप भौंरा ग्राम में श्री जबरचंद जी जैन की धर्मपत्नी रूपाबाई की कुक्षि से एक बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम रखा गया राजमल।

वि.सं. 2002 में राजमल आचार्यश्री वीरसागर महाराज से सप्तम प्रतिमा धारण कर उनके संघ में रहने लगे। पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से आपने राजवार्तिक, गोम्मटसार, पंचाध्यायी आदि ग्रंथों का अध्ययन किया तथा उन्हीं की तीव्र प्रेरणा से वि.सं. 2018 (सन् 1961) में श्री शिवसागर महाराज के करकमलों से सीकर (राज.) में जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर "मुनि श्री अजितसागर" नाम प्राप्त किया।

आचार्यश्री धर्मसागर महाराज की समाधि के पश्चात् आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर महाराज एवं चतुर्विध संघ की अनुमतिपूर्वक 7 जून 1987 को उदयपुर (राज.) में आपके ऊपर चतुर्थ पट्टाचार्य का पद भार सौंपा गया। लगभग 3 वर्ष के अल्पकाल तक आपने आचार्यपट्ट की बागडोर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संभाली। पुनः शारीरिक अस्वस्थता के कारण 9 मई 1990, बैशाख शु. पूर्णिमा वि. सं. 2047 को साबला (राज.) में आपने इस नश्वर शरीर का त्याग कर समाधिमरण को प्राप्त किया। उन आचार्यश्री के चरणों में शत-शत वंदन।

आचार्यश्री अजितसागर जी महाराज के समाधिमरण के बाद इस परम्परा में आचार्य पट्ट के संबंध में मतभेद हो जाने से संघस्थ साधुओं ने 10 जून 1990 को आचार्यकल्प श्रेयांससागर जी महाराज को पंचम पट्टाचार्य के रूप में प्रतिष्ठापित किया तथा कुछ साधुओं ने मुनि वर्धमानसागर जी को 24 जून 1990 में पंचम पट्टाचार्य के रूप में प्रतिष्ठापित किया अतः यहाँ से इस परम्परा में 2 पट्टाचार्य परम्परा प्रारंभ हो गई हैं।

पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज

कौन जानता था कि इतने अल्पकाल में ही संघ के आचार्य अजितसागर जी समाधिस्थ हो जायेंगे? आचार्य पद की समस्या खड़ी हो गई। चतुर्थ पट्टाधीश तक यह परम्परा अक्षुण्ण थी। परन्तु आचार्य अजितसागर महाराज के पश्चात् इस परम्परा में दो विभाग हुए। बहुमत व अधिकांश साधुवर्ग एवं श्रावक वर्ग द्वारा पंचम पट्टाधीश के रूप में आचार्यरत्न श्री श्रेयांससागर महाराज को स्वीकार किया गया और 10 जून 1990 को पूज्य आचार्यश्री अजितसागर जी के पश्चात् आचार्य पद लोहारिया (राज.) में उन्हें अर्पित किया गया पुनः 24 जून 1990 को कतिपय साधुओं, श्रेष्ठी व विद्वानों द्वारा द्वितीय पंचम पट्टाधीश के रूप में मुनि श्री वर्धमानसागर महाराज को आचार्यपद पर प्रतिष्ठापित किया गया।

पंचम पट्टाचार्य के रूप में प्रतिष्ठापित आचार्यश्री श्रेयांससागर महाराज, जिनके गृहस्थ जीवन के नाना आचार्यश्री वीरसागर महाराज और बाबा आचार्यश्री चन्द्रसागर महाराज थे, ऐसे मातृ-पितृ पक्ष के धार्मिक संस्कारों से सिंचित बालक फूलचंद ने वि.सं. 1975, पौष शु. 4, सोमवार 6 जनवरी 1919 में महाराष्ट्र प्रांत के औरंगाबाद जिले के वीरगांव में श्रीमान सेठ बालचंद जी की धर्मपत्नी कुन्दनबाई की कोख से जन्म लेकर उनके मातृत्व को धन्य कर दिया, गृहस्थावस्था में चार संतानों के पिता, पहाड़े सेठ के नाम से प्रसिद्ध फूलचंद जी ने वैराग्य भाव के वृद्धिंगत होने पर वि.सं. 2018 में मुनि श्री सुपार्श्वसागर महाराज से दो प्रतिमा ग्रहण कीं, पुनः सन् 1965 में महावीर जी में शांतिवीरनगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर पत्नी लीलाबाई के साथ जैनाचार्यश्री शिवसागर महाराज से दीक्षा ग्रहण की, उसी समय उनकी माँ ने भी आर्यिका दीक्षा ग्रहण की, उनके नाम क्रमशः श्रेयांससागर महाराज, श्रेयांसमती माताजी, व अरहमती माताजी रखे गये। स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन व आत्म निरीक्षण करने वाले पूज्य श्री श्रेयांससागर जी ने निरंतर धर्म के प्रतीक तीर्थों के जीर्णोद्धार कार्य कराए। आचार्यपद प्राप्ति के पश्चात् आपने मात्र डेढ़ वर्ष के अल्पकाल तक ही संघ का संचालन किया, उसे संभाला, टूटने से बचाया और नई चेतना दी, पुनः आपकी समाधि 19 फरवरी 1992 को बांसवाड़ा (राज.) में हो गई। ऐसे महान गुरु के श्रीचरणों में शतशः नमन।

वर्तमान पट्टाचार्य श्री अभिनंदनसागर महाराज

राजस्थान का उदयपुर जिला अनेकों साधुओं के जन्म से पावन रहा है। इसी श्रृँखला में 'शेषपुर' नामक ग्राम में वर्तमान पट्टाचार्य श्री 108 अभिनंदनसागर महाराज का जन्म वि.सं. 1999 में हुआ। माता रूपाबाई एवं पिता श्री अमरचंद जी के घर पुत्र रूप में जन्मे "धनराज" के आगमन से मानो सचमुच धन-लक्ष्मी की वर्षा हो गई थी। दि. जैन समाज के बीसा नरसिंहपुरा जातीय जगुआवत गोत्रीय होनहार बालक धनराज की बाल्यकाल से ही धर्म के प्रति अतिशय रुचि थी अतः युवावस्था में भी इन्होंने बाल ब्रह्मचारी रहने का निर्णय किया और मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र पर स्वयं ही आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत तथा पाँचवीं प्रतिमा धारण कर ली। माता-पिता को सान्त्वना देकर अब ब्रह्मचारी धनराज जी त्याग की अगली सीढ़ी पर चढ़ने का प्रयास करने लगे फलस्वरूप वि.सं. 2023, सन् 1967 में आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी के शिष्य मुनि श्री वर्धमानसागर जी से मुंगाणा में क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की, पुनः वि.सं. 2025, सन् 1969 में चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज की परम्परा के द्वितीय पट्टाधीश आचार्यश्री शिवसागर महाराज से ऐलक दीक्षा और सन् 1969 में ही फाल्गुन शु. अष्टमी को श्री शांतिवीरनगर-महावीर जी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर तृतीय पट्टाचार्य श्री धर्मसागर महाराज से मुनि दीक्षा लेकर "अभिनंदनसागर" नाम प्राप्त किया।

सौम्य शांत मुद्रा, चारित्रिक दृढ़ता और ज्ञानाभ्यास की लगन के धनी मुनि अभिनंदनसागर जी ने लगभग 8 वर्षों तक उपाध्याय पद पर प्रतिष्ठापित रहकर खूब धर्मप्रभावना की पुनः आचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज की सल्लेखना के पश्चात् 8 मार्च 1992 को चतुर्विध संघ ने आपको खान्दू कालोनी (राज.) में छट्ठे पट्टाचार्य पद पर अभिषिक्त किया क्योंकि चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री की निर्दोष अविच्छिन्न परम्परा में आप ही इस परम्परा के सर्ववरिष्ठ मुनिराज हैं अतः पूर्व परम्परानुसार चतुर्विध संघ द्वारा आप आचार्यपद को प्राप्त कर इस निष्कलंक आर्ष परम्परा का संरक्षण-संवर्द्धन करने में कटिबद्ध हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरं"

(PRAKSHALANADDHI PANKASYA DOORAD SPARSHANAM VARAM)

Written By-Dr. Km. Malti Jain, Mainpuri

The most revered "Ganini Aryika Ratna Gyanmati Mataji" has completed a span of half century of her perceivance which is a highly remarkable and glorifing event and accomplishment in the annals of Digamber Jain Aryika Sangh. She has put her feet on the terrain of spiritual advancement through a unique fusion of knowledge and renunciation. The name of revered Mataji stands on the top of the ladder of such influential and inspiring ladies.

Not to say of fifty years even a century is a small and little span of time for a life given to worldly pleasures and enjoyment but on the other hand a span of half century marked by abandonment, abstinence and penance is a rare and highly amazing achievement which only a truly noble and spiritually elevated soul can aspire to achieve. In the prime of her youth beaming with energy and in the shadow of a dreamy world of worldly pleasure and enjoyment, it is indeed not only difficult but rather almost impossible to turn a blind eye towards this scenario and in its place to choose or to adopt the difficult path of knowledge and renunciation. It is certainly not a child's play but on the other hand an extremely difficult, thorn ridden, daunting and formidable task.

The revered Mataji has successfully completed this unusual task with remarkable ease and with a ever smiling face. Her renunciation of worldly pleasures is certainly not the result or outcome of an escapist approach towards life nor the same has been imposed upon her by some external force or outside agency, neither it is a decision which is being infulenced by the force of emotional upsurge nor it is a tool or via media to acquire fame and glory.

The seeds or renunciation of worldly pleasure came to be instilled in the mental make up of 'Maina' in the beginning of her childhood when she was merely seven or eight years of age. Her mother revered Mohini took the vow or observing Brahm Charya on each 'Ashtami and Chaturdashi' and in doing so she was influenced by the reading of 'पद्मनंदिपंचविंशतिका' but her unique and illustrious daughter became a 'Brahmcharini' by reading the same religious text.

In the young age this line of the dramaAklank Nikalank' 'प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरं' the realization dawned upon her that it is better not to put one's feet in the mud instead of washing them after doing so. This revealation delved deep into the psyche and touched innermost part of her heartland.

It was certainly not an easy task to abandon and severe one's ties from a large and extremely loving family and at the same time to enter into the realm of sainthood which in the parlance of Jain religion and Philosophy is known by the term 'Aryika'. The Social opposition to her move was also stiff and severe but 'Maina' who is an epitome and personification of firm and steadfast resolve overcame all these hurdles and obstructions. The ties or the bond of filial love and the highly absurd and uncalled for comments of the so called leaders of the Jain Community failed to deter or detract her from following and treading her lonely path of wordly renunciation. She began to put her feet firmly on the thorny and difficult path of the renunciation of all worldly possessions and pleasures. The blessings of elderly saints and mentors provided her solace and further helped her in chasing her lonely and difficult furrow and this turned her personage in 'Veermati' and 'Gyanmati'. Once the spiritual voyage and odyssey which she began in the year 1953 which within a short

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

span of time i.e. in the year 1956, she attained the unique, rare and astonishing distinction of becoming an 'Aryika' which is considered to be the highest Seat of penance which a lady saint can hope or aspire to achieve in this sphere.

In the golden period of last fifty years the revered Mataji with her rigorous penance, firm and resolute sense of abstinence from all pleasures and at the same time she has been able to climb dizzy and unknown and unexplored heights of deep learning. A part from here many and distinguished achievements in the field of spiritual elevation, she at the same time is endowed with a very highly agile and sharp intellect, farsightedness, deep thinking and an eternal and unquenching quest for constant endeavour which has left its marks in the diversified spheres and walks of life. The indomitable and strong will power, her capacity to guide numerous works of lasting and enduring value which are meant to benefit the world at large have become possible due to the out standing and rare personage of revered Mataji and her name and fame shall ever remain engraved in the golden letters in the pages of contemporary history.

It is indeed extremely difficult and virtually an extremely formidable and daunting task to pendown or to keep a record of her multifarious and diversified activities in the realm or her service towards the propagation of Jain religion and her singular and matchless contribution in the development of many Jain centres of pilgrimage to name a few (Hastinapur, Kundalpur, Ayodhya, Mangitungi, Allahabad, Rajgrihi, Kaushambi).

But they can only be called the tip of the iceberg of the mammoth and gigantic task, which she has under taken to perform. The tail of her out standing, rare and amazing achievements do not come to an end here. She has taken upon her-self the task of translating antiquated and ancient religious Jain texts from Sanskrit to Hindi, she has written original Jain texts, to remove widely spread misgiving and doubts about Jainism, to arrange different seminars or conferences and to promote 'Rath Pravartan' these are some of the modes and means which she has adopted to promote and propagate Jain religion. It is most cherished goal of her life. In order to achieve her aims and objectives she has established many organizations to name a few 'Akhil Bhartiya Jain Mahila Sanghtan', Tirthanakar Rishabhdeva Jain Vidvat Mahasangh, Trilok Shodha Sansthan' these remarkable and notable acts are rightly called in her context (परोपकाराय सतांविभूतयः) which literally mean that the glory and accomplishments of noble persons is meant for the welfare of the humanity at large. This saying applies with full force in the context of revered Mataji.

The feet of Mataji are so strongly rooted in the ground of renunciation and penance that no physical, mental and social obstacle can deter her or distract her from the path of rigorous spiritual penance and discipline which she has set for herself. At times severe and even incurable deceases tried to attack her physical self but with the help of her strong and indomitable will to live, her deep and abiding faith in the concept of Dharma, they failed to make any impact upon her.

The Himalaya height and the depth of the ocean which are interwoven in the unique personality of revered Mataji. It is rather not only difficult but at the same time nearly impossible to find adequate and suitable words to eulogize and enumerate her numerous qualities of head and heart.

On the occasion of the celebration of 'Sanyam Varsh' and on this highly auspicious and momentous event of this celebration, I Fervently pray to Lord Mahaveera that in his munificence and benevolence He may grant strength and fortitude to the revered Mataji so that it may enable her to pursue the path of perseverance without interruption and at the same time, we may continue to get another opportunity and privilege to celebrate her (Amrit Mahotsavasa) ones again in the years to come.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की जन्मदात्री

माता मोहिनीदेवी का परिचय

लेखिका-ब्र. कु. बीना जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

आदिब्रह्मा भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या और उसके आस-पास के क्षेत्र को भी अवध प्रान्त के नाम से जाना जाता है। वैसे इन प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव और उनके प्रथम पुत्र चक्रवर्ती सम्राट् भरत के समय वह अयोध्या नगरी 12 योजन लम्बी थी अतः 96 मील होने से लखनऊ, टिकैतनगर, त्रिलोकपुर, बाराबंकी, महमूदाबाद आदि नगर उस समय अयोध्या नगरी की पवित्र भूमि की सीमा में विद्यमान थे। वस्तुतः आज भी अयोध्या तीर्थ की पवित्रता से सम्पूर्ण अवध का वातावरण सुवासित, धर्मपरायण एवं परम पवित्र है।

उसी अवधप्रान्त के जिला सीतापुर के अन्तर्गत महमूदाबाद नामक एक नगर है, जहाँ विशाल जिनमंदिर के निकट वर्तमान में 60-70 जैन घर हैं। उसी नगरी में एक सुखपालदास जी नाम के श्रेष्ठी निवास करते थे। अग्रवाल दिगम्बर जैन जातीय लाला सुखपालदास जी की धर्मपत्नी का नाम मत्तोदेवी था। पूरे नगर में धर्मात्मा के रूप में प्रसिद्ध सुखपालदास जी भगवान की नित्य पूजन के साथ-साथ स्वाध्याय भी करते थे। सात्त्विक प्रवृत्ति वाले इन महामना श्रावक की धर्मपत्नी भी पतिव्रता आदि गुणों से सहित धर्मपरायण एवं अत्यन्त सरल प्रकृति की थीं। इन धर्मनिष्ठ दम्पत्ति के चार संताने थीं, जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-1. शिवप्यारी देवी 2. मोहिनी देवी 3. महिपालदास 4. भगवान दास। पिता सुखपालदास जी ने इन सभी संतानों को धर्ममय संस्कारों से विशेष संस्कारित किया था।

ईसवी सन् 1914 में इन धर्मपरायण दम्पत्ति की बगिया में द्वितीय कन्या रत्न के रूप में जन्मी 'मोहिनी' का नाम पिता ने बड़े ही प्यार से रखा था और माता-पिता, कुटुम्बीजनों, यहाँ तक की नगरवासियों का भी इस कन्या पर विशेष स्नेह था। अपने सहज पिता सुखपालदास जी प्रतिदिन रात्रि में अपने हाथों से बादाम भिगोकर प्रातः छीलकर दूध के साथ उस मोहिनी को देते तथा प्रतिदिन उसे अपने साथ मंदिर भी ले जाते थे। 5-6 वर्ष की उम्र में स्कूल जाने पर थोड़े ही दिनों में मोहिनी देवी ने 3-4 कक्षा तक अध्ययन कर लिया। चूँकि महमूदाबाद का इलाका मुस्लिम इलाका था अतः पिताजीने अपने महीपाल पुत्र की शिक्षा हेतु एक मौलवी अध्यापक की व्यवस्था कर रखी थी, वे उन्हें उर्दू पढ़ाते थे और तीक्ष्ण बुद्धि की धनी कन्या मोहिनी अपने छोटे भाई को उर्दू पढ़ते देख स्वयं भी उर्दू पढ़ना सीख गई। चूँकि घर में अब छोटा बालक भगवानदास था अतः उसके प्रति विशेष वात्सल्य होने से मोहिनी ने स्कूल जाना छोड़ दिया। प्रायः देखा जाता है कि होनहार, कुशाग्र बुद्धि के छात्र-छात्राएं गुरु के लिए विशेष कृपापात्र होते हैं और गुरु का उन पर विशेष स्नेह रहता है अतः जब कन्या मोहिनी कुछ दिन स्कूल नहीं गईं, तो उनकी अध्यापिकाएँ आकर लाला सुखपालदास जी से उसकी कुशाग्र बुद्धि के कारण उसे स्कूल भेजने का आग्रह करतीं, साथ ही कहतीं कि इसके बगैर तो हमारा स्कूल ही सूना हो जाता है। पिताजी की प्रेरणा के बाद भी मोहिनी भाई को खिलाने का बहाना कर स्कूल जाने को मना कर देंती। चूँकि उस समय कन्याओं को ज्यादा पढ़ाने की परम्परा नहीं थी और मुसलमानी इलाका होने के कारण माँ मत्तोदेवी भी कन्या को स्कूल भेजने का आग्रह नहीं करती थीं, अतः उनकी लौकिक शिक्षा अल्प ही रही। पुनः पिताजी ने मोहिनी के अन्दर धार्मिक संस्कार डालने हेतु उसे भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र आदि का अध्ययन कराना प्रारंभ किया और रात्रि में पूरे परिवार को एक साथ बिठाकर मोहिनी से शास्त्र पढ़वाते और बड़े खुश होते थे पुनः सबको शास्त्र का अर्थ भी समझाते थे।

एक बार पिता ने मोहिनी को एक मुद्रित ग्रंथ पद्मनन्दिपंचविंशतिका देकर उससे उसका स्वाध्याय करने को कहा। मोहिनी ने पिता की आज्ञा स्वीकार कर उस ग्रंथ का स्वाध्याय किया और उस स्वाध्याय का प्रतिफल यह रहा कि मोहिनी ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस ग्रंथ में पर्व के दिन ब्रह्मचर्य के महत्त्व को पढ़कर भगवान की प्रतिमा के सम्मुख अष्टमी, चतुर्दशी के दिन ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया और किसी को इस व्रत के बारे में विदित भी न हो सका। चूँकि जिनमंदिर में प्रतिदिन सुखपाल दास जी ही शास्त्र वांचते थे अतः सभी इन्हें पण्डित जी कहकर पुकारते थे। बड़े पुत्र महिपालदास जी कुश्ती के अच्छे खिलाड़ी बन गए थे और इलाके में बड़ी-बड़ी कुश्ती कर कई एक प्रतियोगिता जीती थीं। मोहिनी देवी के पिताजी पहले कपड़े का व्यवसाय करते थे इनका नियम था देवपूजा करके ही दुकान खोलना और अगर मंदिर न हो तो 'जाप्य' करके ही ग्राहक से बात करना। उनके इस नियम के कारण ही उनकी अंत समाधि बहुत ही अच्छी हुई। एक बार वे बिसवां में व्यापार हेतु गये, प्रातः ही एक ग्राहक आ गया, तब उन्होंने कहा-भाई ! मैं जाप्य करके ही वार्तालाप करूँगा। तब वह ग्राहक बाहर बैठ गया पुनः वह शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करने बैठे और जाप्य करते-करते ही उनके प्राण पखेरू उड़ जाने से उन्हें उत्तम गति की प्राप्ति हुई। उधर जब बहुत देर हो गई, तो उस ग्राहक ने अंदर जाकर देखा, तो उन्हें मृत पाया। तब परिवार के लोगों को बुलाकर उनकी अन्त्येष्टि की गई। वास्तव में बंधुओं ! एक छोटा से छोटा नियम भी इस जीव को संसार से पार करने में सहकारी कारण बन जाता है, इसीलिए धर्मगुरु सदैव हमें कोई न कोई व्रत नियम लेने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

सेठ सुखपालदास जी ने अपने सामने ही अपने सभी पुत्र-पुत्रियों का विवाह कर दिया था, जिसमें लाडली पुत्री मोहिनी का उन्होंने अयोध्या के निकट बसे धर्मपरायण नगर बाराबंकी जिले में स्थित टिकैतनगर नामक ग्राम धर्मात्मा श्रावक लाला धन्यकुमार जी एवं उनकी धर्मपत्नी फूलमती के द्वितीय पुत्र छोटेलाल जी के साथ किया था। लाला धन्यकुमार जी ने महमूदाबाद के लाला सुखपाल जी की बहुत ही प्रशंसा सुन रखी थी, साथ ही मोहिनी के गुणों से भी बहुत प्रभावित थे। सुखपालदास जी ने भी उनके पुत्र में एक वर के सभी गुणों को देखकर तुरंत स्वीकृति प्रदान कर दी और शुभ मुहूर्त में चि. छोटेलाल जी के साथ आयु. मोहिनी देवी का पाणिग्रह संस्कार हो गया। माता-पिता ने अश्रुपूरित नेत्रों से अपनी प्यारी पुत्री को विदाई दी, उस समय सन् 1932 में मोहिनी देवी की उम्र 18 वर्ष मात्र थी। विदाई के समय यूँ तो पिता जी ने अपनी बेटी को दहेज में यथायोग्य सब कुछ प्रदान किया, किन्तु जब उनके मन को पूर्ण संतुष्टि नहीं हुई, तो उन्होंने मोहिनी को "पद्मनन्दिपंचविंशतिका" ग्रंथ को सच्चे दहेज के रूप में देकर कहा-बिटिया मोहिनी ! तुम हमेशा इस ग्रंथ का स्वाध्याय करती रहना, इसी से तुम्हारे गृहस्थाश्रम में सुख और शांति की वृद्धि होगी और तुम्हारा यह नरभव पाना सफल हो जायेगा। पुत्री मोहिनी ने भी पिता के द्वारा स्नेहपूर्वक प्रदत्त सच्चे दहेज को सबसे अधिक मूल्यवान समझा।

ससुराल में मंगल प्रवेश कर मोहिनी ने पिता द्वारा प्रदत्त उस ग्रंथ को अनमोल निधि के रूप में संभाल कर रखा और नियमतः प्रतिदिन देवदर्शन के पश्चात् उसका स्वाध्याय किया। यहाँ इस भरे-पूरे परिवार में मोहिनी को घुलते-मिलते देर न लगी। घर में देवदर्शन, रात्रि भोजन त्याग, जल छानकर पीना, सायंकाल मंदिर जाकर आरती करना और शास्त्र सभा में बैठकर विनयपूर्वक शास्त्र सुनना आदि श्रावकोचित्त सभी क्रियाएँ होती थीं। घर के निकट जिनमंदिर होने से मंदिर के घंटे, पूजा-पाठ व आरती की आवाज घर बैठे कानों में गूंजा करती थी। गृहस्थधर्म का परिपालन करती हुई मोहिनी देवी ने सन् 1934 में आसोज सुदी पूर्णिमा-शरदपूर्णिमा की रात्रि में प्रथम पुष्प के रूप में एक कन्या रत्न को जन्म दिया, जिसकी शुभ्र चांदनी आज सारे भारतवर्ष में फैल रही है। मैना के जन्म से पहले ही मोहिनी देवी ने मैना सुन्दरी नाटक पढ़ा था और उन्हें सुरसुन्दरी-मैना सुन्दरी का संवाद याद था, उसे वे हमेशा गुनगुनाया करती थीं और यही संस्कार गर्भस्थ बालिका पर अच्छे तरह से पड़ गए। माता मोहिनी प्रतिदिन प्रातः उठकर सामायिक करती, पुनः स्नानादि से निवृत्त होकर मंदिर में जाकर भगवान की पूजा करके रसोई बनाती थीं और छोटे बच्चों को दूध पिलाते समय स्वाध्याय और भक्तामर आदि के पाठ किया करती थीं, जिससे वह दूध भी अमृत तुल्य बन जाता था और बच्चों में धार्मिक संस्कार पड़ते जाते थे। प्रतिदिन सायंकाल वे स्वयं मंदिर जातीं और बच्चों को भी भेजती थीं, प्रतिदिन किसी भी बालक को मंदिर जाए बिना नाश्ता भी नहीं मिलता था, यही कारण था कि माता मोहिनी की सभी तेरहों संतानें इसी धर्म के साँचे में ढलती चली गईं। माता मोहिनी ने अपनी पुत्री मैना की बातों को जैनागम से प्रमाणित समझकर मान्य किया और मैना की बातों को मान्यता देती रहती थीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस प्रकार माता मोहिनी ने अपनी सभी सन्तानों को सुसंस्कारित कर गृहस्थोचित सभी क्रियाओं का कुशल संचालन करते हुए अपने पति लाला छोटेलाल जी के अन्त समय में उनकी सुन्दर समाधि कराकर नारी जाति के लिए एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। अपने पुत्र-पुत्रियों को उन्होंने उसी प्रकार पालने में शिक्षा प्रदान की, जिस प्रकार रानी मदालसा ने अपने पुत्रों को पालने में शिक्षा दिया था कि-शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि, संसार माया परिवर्जितोऽसि' हे पुत्र! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन है और संसार की माया से रहित है। ऐसा सुन-सुनकर उसके सभी पुत्र युवा होकर विरक्त हो घर से चले जाते थे।

उन पुत्र-पुत्रियों की भांति ही माता मोहिनी की भी तीन पुत्रियाँ एवं एक पुत्र गृहबंधन से निकलते गए और शेष 6 पुत्रियाँ व 3 पुत्र गृहस्थ धर्म में रहकर देव-शास्त्र-गुरु का दृढ़ श्रद्धान कर धर्माराधनापूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। स्वयं माता मोहिनी ने अपने गृहस्थ जीवन में भगवान नेमिनाथ जी की प्रतिमा एवं टिकैतनगर में विराजमान ढ़ाई फुट ऊँचे 16 चैत्यालयों से समन्वित सुमेरु पर्वत का प्रतिदिन इच्छानुसार खूब पंचामृत अभिषेक किया तथा पूजा में भी उनकी गहन रुचि रही है।

मोहिनी माता बनीं आर्यिका रत्नमती—सन् 1971 में संघ का चातुर्मास अजमेर शहर में हो रहा था। उस समय मोहिनी देवी अपने बड़े पुत्र कैलाशचंद व पुत्रवधू के साथ संघ के दर्शनार्थ आईं, उस समय उनके साथ उनकी 12वें नं. की पुत्री कु. माधुरी भी थीं। संघ में आर्यिका पद्मावती माताजी ने पूर्व की भांति ही भाद्रपद मास में सोलहकारण व्रत का 1 माह का उपवास कर रखा था और पूज्य ज्ञानमती माताजी के अत्यधिक आग्रह पर भी 21 दिनों तक जल नहीं लिया, 22वें दिन उन्होंने अपनी चर्या पालन हेतु अंतिम बार जल लिया, जिसे देने का सौभाग्य माता मोहिनी और आर्यिका पद्मावती माताजी के गृहस्थावस्था के पति को प्राप्त हुआ, जो उस समय म्हसवड़ से आए थे। इस प्रकार माता मोहिनी प्रतिदिन अपने चौके में कई एक साधुओं को आहार देकर अपना जीवन सफल कर रही थीं। आसोज वदी प्रतिपदा को सायंकाल में आ. पद्मावती माताजी की प्रकृति बिगड़ी। संघ के सभी साधुगण आ गए और पद्मावती माताजी ने आचार्यश्री एवं सभी साधुओं के दर्शन कर सबसे क्षमायाचना की और साधुओं के मुख से णमोकार महामंत्र सुनते हुए इस नश्वर देह को छोड़कर स्वर्ग पद प्राप्त कर लिया। वे पद्मावती माताजी जब तक माताजी के पास रहीं, सदैव इनकी छाया की भांति रहीं और माताजी ने बड़ी तन्मयता से इनकी समाधि बनवाई थी। माता मोहिनी ने बड़ी तन्मयता से पद्मावती माताजी की सल्लेखना देखी, उसके बाद पुत्र के साथ केशरिया जी तीर्थ की यात्रा व श्रुतसागर महाराज के दर्शन कर वापस अजमेर आ गई और कैलाश को यह कहकर समझाकर वापस भेज दिया कि मुझे आर्यिका अभयमती जी के पास एक माह तक रुकने की इच्छा है, वह किशनगढ़ में थी, जो अजमेर के निकट ही है। माता मोहिनी जी किशनगढ़ जाकर एक माह रहकर वापस अजमेर आ गईं और दीपावली के बाद एक दिन आकर ज्ञानमती माताजी से कहने लगीं—

माताजी! अब मेरी इच्छा घर जाने की नहीं है। कैलाश, प्रकाश, सुभाष, रवीन्द्र सभी लड़के योग्य हैं, कुशल व्यापारी हैं। माधुरी, त्रिशला अभी छोटी हैं। कुछ दिनों बाद इनकी शादी ये भाई कर देंगे और अब मेरा मन पूर्णरूपेण विरक्त हो चुका है, मैं दीक्षा लेकर अपना आत्मकल्याण करना चाहती हूँ। चूँकि माताजी ने तो इस संदर्भ में उन्हें अनेक बार प्रेरणा दी ही थी अतः इतना सुनते ही बहुत प्रसन्न होकर कहने लगीं कि आपने बहुत अच्छा सोचा है। देखो—

''जब लो न रोग जरा गहे, तब लो झटिति निज हित करो।''

इस पंक्ति के अनुसार अभी आपका शरीर साथ दे रहा है अतः अब आपको किसी की भी परवाह न कर आत्मसाधना में ही लग जाना है। इसके साथ ही माताजी ने उन्हें यह भी बता दिया कि मैंने सुगंध दशमी के दिन माधुरी को ब्रह्मचर्य व्रत दे दिया है, उसकी शादी का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यह सुनकर आश्चर्यचकित मोहिनी माता कह उठीं कि माताजी! अभी तो माधुरी मात्र 13 वर्ष की है, वह ब्रह्मचर्य का अर्थ क्या समझे। अभी से व्रत न देकर कुछ दिन संघ में रखकर धर्म पढ़ा देतीं, तो अच्छा था। पुनः वे कहने लगीं कि अब मैं किसी के मोक्षमार्ग में बाधक क्यों बनूँ, जिसका जो भाग्य होगा, सो होगा। मुझे तो अब आर्यिका दीक्षा लेनी है।''

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी ने उसी समय रवीन्द्र कुमार को बुलाकर माँ के भाव बता दिये, जिसे सुनकर माँ के कमजोर शरीर एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से रवीन्द्र जी एकदम विक्षिप्त हो उठे, किन्तु माता मोहिनी ने उस हेतु अपना दृढ़ निश्चय रखा। माताजी ने रवीन्द्र जी की विक्षिप्तता देख उनके इधर-उधर होने पर संघस्थ शिष्य मोतीचंद जी को बुलाकर सारी बात बताई और बाजार से श्रीफल लाने को कहा। मोतीचंद जी ने.यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हो चुपचाप बाजार से श्रीफल लाकर माता मोहिनी के हाथ में दे दिया और मोहिनी देवी उसी समय माताजी के साथ सेठ साहब की नशिया में आचार्यश्री के समक्ष श्रीफल लेकर बोलीं-महाराज जी! मैं आपके करकमलों से आर्यिका दीक्षा लेना चाहती हूँ और श्रीफल चढ़ा दिया। आचार्य श्री उस समय प्रसन्नमना हो माता ज्ञानमती जी की ओर देखने लगे। उपस्थित सभी साधुवर्ग उनके वैराग्य की सराहना करने लगे। तब आचार्यश्री ने कहा कि तुम्हारा शरीर बहुत कमजोर है और यह जैनी दीक्षा तलवार की धार है। तब मोहिनी माता ने सारपूर्ण उत्तर देते हुए कहा कि महाराज जी! संसार में रहकर जितने कष्ट सहन करने पड़ते हैं, उतना कष्ट दीक्षा में नहीं है। फिर माताजी ने अजमेर के एक अति विश्वस्त श्रावक जीवनलाल जी को टिकैतनगर भेजकर यह समाचार पहुँचा दिया। इधर घर में समाचार पहुँचते ही सबको बहुत झटका लगा और सब विक्षिप्त हो रोने लगे पुनः येन-केन प्रकारेण मन को समझाकर शीघ्र ही उनके पुत्र-पुत्री, भाई आदि सब अजमेर आ गए और सभी मोहिनी जी से चिपटकर रोने लगे। सभी ने इनकी दीक्षा रोकने के बहुत प्रयत्न किए और बहुत उपद्रव भी किया। आश्चर्य तो इस बात का रहा कि रवीन्द्र जी भी उसी में शामिल हो गए चूँकि तब तक उन्होंने न ही व्रत लिया था और न ही सदा संघ में रहने का उनका निर्णय था। इन सभी प्रसंगों में मोहिनी जी निर्मोहिनी बन गईं और अपने निर्णय पर अडिग रहीं, अन्ततोगत्वा माता मोहिनी की दीक्षा का कार्यक्रम बहुत ही उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ, जो कि अजमेर नगर के लिए ऐतिहासिक अवसर था। दीक्षा के दिन मोहिनी जी के सिर के बाल छोटे थे क्योंकि उन्होंने एक माह पूर्व ही अपने केश काटे थे अतः छोटे केशों का लुंचन करना बड़ा कठिन था। जब माताजी ने चुटकी से इनको केश निकालना शुरू किया तो सारा लाल-लाल हो गया उस समय माता मोहिनी के पुत्र-पुत्री और कुटुम्बी ही क्या अनेक देखने वाले लोग भी खूब रोने लगे और मोहिनी के साहस एवं वैराग्य की प्रशंसा करने लगे। उस समय दीक्षा के अवसर पर अनेक साधुओं ने निर्णय लिया कि चूँकि माता मोहिनी साक्षात् रत्नों की खान हैं अतः इनका 'रत्नमती' यह सार्थक नाम रखना चाहिए, तब आचार्य श्री धर्मसागर महाराज ने इन्हें "आर्यिका रत्नमती माताजी" के नाम से सम्बोधित किया। उस समय अपनी जन्मदात्री माँ के आर्यिका दीक्षा के अवसर पर आर्यिका अभयमती माताजी भी किशनगढ़ से वहाँ आ गईं थीं। आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को यूँ तो दीक्षा देने-दिलाने में असीम आनन्द की अनुभूति होती ही है फिर जब उनकी जन्मदात्री और वैराग्य पथ पर बढ़ने में सहयोग देने वाली सच्ची माता आर्यिका दीक्षा ले रही हैं, फिर उनकी खुशी का क्या ठिकाना। अजमेर में दीक्षा का यह भव्य कार्यक्रम मोइनिया इस्लामिया उ.मा. विद्यालय के विशाल प्रांगण में सम्पन्न हुआ था, जहाँ अगणित जैन-जैनेतरों ने भाग लिया था।

आर्यिका श्री रत्नमती माताजी ने दीक्षा के पश्चात् पूज्य माताजी के संघ में रहते हुए 13 चातुर्मास किए और दीक्षा के पूर्व तो अनेक ग्रंथों के स्वाध्याय किए ही थे, दीक्षा के पश्चात् चारों अनुयोगों के ग्रंथों का अच्छी तरह स्वाध्याय किया। समय-समय पर, आगत यात्रियों, महिलाओं, बालिकाओं को धर्म का उपदेश देकर देवदर्शन, पूजन, रात्रि भोजन त्याग, स्वाध्याय आदि का वे उपदेश देती थीं और क्षेत्र पर आगत जैनेतर बंधुओं को मद्य, मांस, मधु त्याग की प्रेरणा देती रहती थीं। आर्यिका रत्नमती माताजी का स्वास्थ्य पित्त प्रकोप की बहुलता से युक्त था अतः इन्हें जम्बूद्वीप स्थल पर खुले स्थान के कारण गर्मी की लू लपट एवं सर्दी में ठण्ड की बाधा असह्य महसूस देती थी। इनका आहार अति अल्प था, मूंग की दाल के पानी में भीगी दो रोटी और लौकी का उबला साग वे लेती थीं तथा थोड़ी सी दूध की दलिया, थोड़ा सा दूध, अनार का रस और कभी-कभी थोड़ा सा फल, बस यही उनका आहार था। इनके इतने अधिक पथ्य को देखकर कभी-कभी वैद्य भी हैरान होकर कहते थे कि माताजी! श्रावक आहार में जो आपको देता है, सो यदि आपका त्याग न हो, तो ले लिया करें। मौसम में आने वाले फल तथा खिचड़ी, चावल भी ले लिया करें, किन्तु ये किसी की नहीं सुनती थीं। घर में भी यह अपनी सन्तानों को भी ऐसे ही पथ्य कराती रहती थीं, यही कारण है कि इनके पुत्र-पुत्रियों में खाने की जिह्वा लोलुपता नहीं दिखती है। आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का प्रायः सब त्याग है, मात्र दो अन्न, दो रस और गिने-चुने फल और उसमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भी अकसर उनका भी त्याग कर देती हैं, महीने में कई दिन नीरस भोजन करती हैं एवं अष्टमी-चतुर्दशी को तो उनका 50 वर्ष से अन्न का त्याग है।

आर्यिका श्री रत्नमती माताजी प्रातः 3 बजे उठकर महामंत्र का जाप्य करके अपर रात्रि स्वाध्याय में तत्त्वार्थ सूत्र का पाठ कर पुनः सहस्रनाम, भक्तामर, त्रिलोकवंदना, निर्वाणकाण्ड आदि स्तोत्रों का पाठ करती थीं। 7 से 8 बजे तक सामूहिक स्वाध्याय में बैठतीं अनन्तर आहार के बाद सामायिक कर विश्राम करती थीं। पुनः 2 बजे से 4 बजे तक विद्यापीठ के विद्यार्थीगण और प्राचार्य श्री आकर माताजी के सानिध्य में स्वाध्याय करते और वे मनोयोगपूर्वक उसे सुनती थीं, अनन्तर वृद्धावस्था के कारण कुछ क्षण शरीर की सेवा करवाकर दैवसिक प्रतिक्रमण करतीं पुनः सायंकाल भगवान के दर्शन कर सामायिक करती थीं। रात्रि में सर्दी के दिनों में तो पूर्व रात्रिक स्वाध्याय के स्थान पर छहढाला का पाठ सुनती थीं। इन्हें छहढाला से विशेष प्रेम था, यदि किसी कारणवश यह छहढ़ाला न सुन सकें, तो उन्हें लगता कि मैंने कुछ सुना ही नहीं है। इस प्रकार यह अपनी आगम चर्या का पूर्णतः पालन करती थीं। यदि कदाचित् पित्त प्रकोप आदि से विशेष अस्वस्थ रहती थीं, तो संघस्थ आर्यिकाएँ उन क्रियाओं को सुनाती थीं। इन्हें ऋषिमण्डल स्तोत्र और उसके मंत्र से भी विशेष प्रेम था। इनकी अस्वस्थता के कारण प्रायः संघ में चैत्यालय रहता था फिर भी मंदिर जाकर भगवान का दर्शन करके ही इन्हें संतोष होता था। पित्त प्रकोप होने से इनके शरीर के लिए उपवास हितकर नहीं था, फिर भी व्रतों का प्रेम और सल्लेखना विधि की भावना से पंचमेरु आदि व्रत (उपवासपूर्वक) किया करती थीं।

इनकी सबसे बड़ी विशेषता थी इनकी निरभिमानता, ये कभी ज्ञानमती माताजी का नाम न लेकर उन्हें 'माताजी' कहकर सम्बोधित करती थीं। वास्तव में धन्य थीं उनके जीवन की वह घड़ियाँ, जब 15 जनवरी 1985 को उन्होंने पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में हृदयस्पर्शी धार्मिक संबोधन प्राप्त कर सल्लेखना विधिपूर्वक जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में समाधि मरण किया। दिन में 1 बजकर 45 मिनट पर इस नश्वर शरीर से वह दिव्यआत्मा निकलकर देवलोक में जाकर विराजमान हो गई। यूँ तो एक जगत माता के हमारे बीच से जाने पर एक अपूर्णनीय क्षति हुई फिर भी मृत्यु से संघर्ष करना वीरता का परिचायक है और यह निश्चित है कि शीघ्र ही उन्हें सिद्धगति की प्राप्ति होगी।

पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के जीवन में 13 का अंक विशेष शुभ रहा। 13 सन्तानों को जन्म देने वाली, दीक्षा लेकर 13 प्रकार के चारित्र का परिपालन कर 13 वर्ष तक दीक्षित जीवन में रहकर उन्होंने सदैव स्व-परकल्याण का भाव रखा। जब उनकी समाधि हुई, तो उपस्थित लोगों ने रात्रि में देवों द्वारा बजाये गये बाजों की ध्वनि सुनी थी, ऐसा लगता है कि देवगति की प्राप्ति कर वे देव बनकर तीर्थ वंदना हेतु जम्बूद्वीप स्थल पर अवश्य आयी होंगी।

वस्तुतः ऐसी तपःपूत रत्नों की खान, निरभिमानी, वात्सल्यमयी, अनमोल निधियों की प्रदात्री माता रत्नमती जी शीघ्र ही सिद्धगति की प्राप्ति करेंगी, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है और उनके चरण कमलों में कोटिशः वंदन के साथ यही प्रबल भावना है कि उनकी वंशावलि की एक कली के रूप में मुझे भी उसी वंश में (उनकी नातिन के रूप में) जन्म लेकर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की छत्रछाया में रहकर आत्मकल्याण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है और उस आत्मकल्याण की भावना को वृद्धिंगत करते हुए मैं भी शीघ्र ही स्त्रीलिंग को छेदने वाली आर्यिका पदवी की प्राप्ति कर अपनी मानव पर्याय को सफल कर सकूँ। अंत में—

अनेक रत्नैरति दीप्तिमद्भिः, यथा प्रसूतैः समलंकृतोर्वी।
अन्वर्थ संज्ञामनवद्य कीर्तिम्, तामार्यिकां रत्नमतीं नमामि।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के जनक
लाला श्री छोटेलाल जी का परिचय

लेखिका-ब्र. कु. आस्था जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

जहाँ हम महामना महापुरुषों का वन्दन कर, उनका गुणानुवाद कर अपने जन्म को सार्थक समझते हैं, वहीं एक बार हमारा मस्तक उन भव्यात्माओं के जन्मदाता माता-पिता के लिए भी झुकता है, क्योंकि जिस प्रकार वृक्ष के हरे-भरे एवं फलदार होने में उसकी जड़ की मुख्यता है, जिस प्रकार किसी भी सुन्दर, आकर्षक एवं सुसज्जित मकान में उसकी नींव की प्रमुखता है, ठीक उसी प्रकार उन सन्तों की महानता, उनके व्यक्तित्व आदि में उनके माता-पिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वस्तुतः बालक की प्रथम पाठशाला उसके माता-पिता होते हैं, जिनके द्वारा प्रदत्त संस्कार बालक को महान से महान और अधम से अधम भी बना देते हैं और यह तो सभी जानते हैं कि जीवन में संस्कारों का विशेष महत्व होता है, हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण में संस्कार अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं। उन महापुरुषों के जन्मदाता को नमन करते हुए मैं आपको आज परिचित कराती हूँ। परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के गृहस्थावस्था के पिता लाला श्री छोटेलाल जी से, जिन्हें हम "चैतन्य रत्नाकर" कहते हुए स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं।

शाश्वत तीर्थ अयोध्या के निकट बाराबंकी जिले के अन्तर्गत टिकैतनगर नामक नगर में लाला श्री नौबतराय जी के सुपौत्र एवं लाला श्री धन्यकुमार जी के तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ थीं। जिनके नाम इस प्रकार हैं-बब्बूमल, छोटेलाल, बालचंद, कुनका देवी, रानी देवी, प्यारी देवी। इन सभी के पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि से समन्वित परिवार देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में सतत अग्रणी रहते हैं। तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियों में द्वितीय पुत्र के रूप में जन्मे छोटेलाल को धार्मिक संस्कार विरासत में ही प्राप्त हुए थे, तभी तो ये प्रतिदिन देवदर्शन करके ही नाश्ता आदि लेते थे। इन्होंने बचपन में स्कूल में 3-4 कक्षा तक ही अध्ययन किया पुनः व्यापार में रुचि अधिक होने से यह कपड़े का व्यापार करने लगे। बचपन से ही प्रतिदिन मंदिर जाते, पानी छानकर पीते और रात्रि में भोजन नहीं करते थे। पिता धन्यकुमार ने परम्परा के अनुसार इन्हें आठ वर्ष की उम्र से ही अष्टमूलगुण दिलाकर जनेऊ पहना दिया था। 14-15 वर्ष की छोटी सी उम्र में यह घोड़ा चलाना सीख गए और दो-चार साथियों के साथ घोड़े पर कपड़े लादकर ये टिकैतनगर के बाहर गांवों में व्यापार करने लगे। देखते ही देखते यह कुशल व्यापारी बन गए और अपने भुजबल के श्रम से अच्छा धन कमाया और प्रतिष्ठित महानुभावों में गिने जाने लगे।

युवावस्था में इनका विवाह अवध प्रान्त के महमूदाबाद नगर के लाला श्री सुखपालदास जी की सुपुत्री मोहिनी देवी के साथ सम्पन्न हुआ। पति और पत्नी संसार में गाड़ी के उन दो पहियों के समान होते हैं, जिनके साथ-साथ चलने से गृहस्थीरूपी मंजिल शीघ्र पार हो जाती है। मोहिनी देवी को भी अपने पिता से विरासत में सुसंस्कार प्राप्त हुए थे, इन्होंने अपने पिता से धार्मिक अध्ययन किया था, फिर तो सोने में सुहागा की कहावत चरितार्थ हो गई और गृहस्थावस्था में प्रवेश कर ये दम्पत्ति धर्मध्यानपूर्वक अपना काल यापन करने लगे। इनके चार पुत्र एवं नौ पुत्रियाँ, ऐसी 13 सन्तानें हुईं, जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-1. मैना 2. शांति 3. कैलाश 4. श्रीमती 5. मनोवती 6. प्रकाश 7. सुभाष 8. कुमुदनी 9. रवीन्द्र 10. मालती 11. कामिनी 12. माधुरी और 13. त्रिशला। जिनमें से कु. मैना ने 18 वर्ष की लघुवय में उस समय त्यागमार्ग को अंगीकार कर कुमारिकाओं का मार्ग प्रशस्त किया, जब कोई भी कुमारी कन्या उस समय त्यागमार्ग पर निकली ही नहीं थी और उस षोडश वर्षीय बालिका ने त्यागमार्ग पर कदम बढ़ाने के साथ उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए विश्व में अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से, जो अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है, वह युगों-युगों तक चिरस्मरणीय एवं स्तुत्य रहेगा। कु. मनोवती ने उसी पथ का अनुसरण करते हुए हैदराबाद में जो स्मरणीय दीक्षा ग्रहण की,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के जनक

लालाश्री छोटेलाल जी जैन

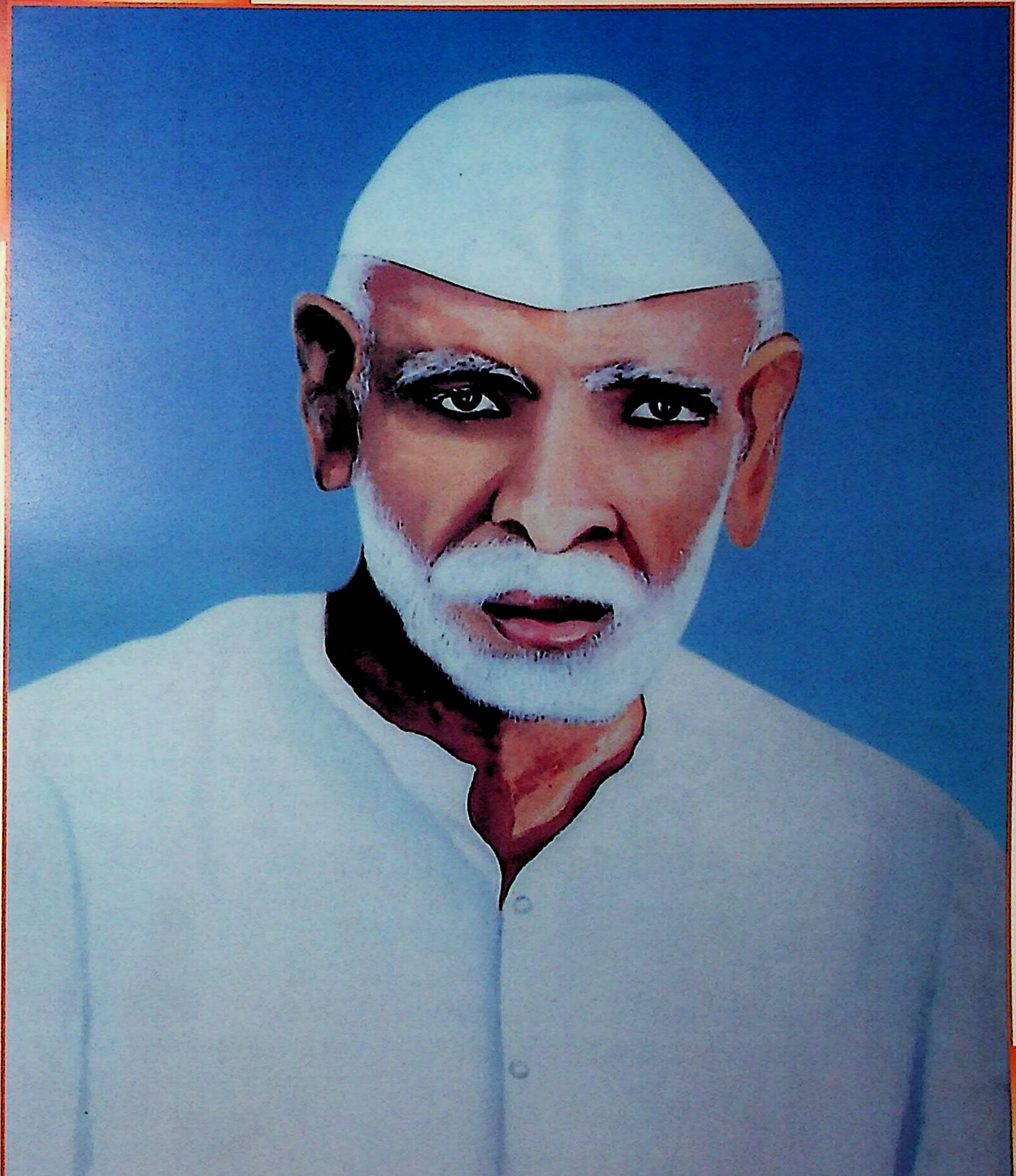

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माता मोहिनी (पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी) की १३ सन्तानें

माता मोहिनी देवी (आर्यिका श्री रत्नमती माताजी)

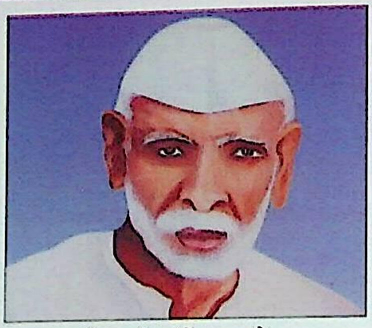
पिता श्री छोटे लाल जैन

१३ सन्तानों में से ४ सन्तानें बालब्रह्मचारी हैं

बाल ब्र. पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

बाल ब्र. पूज्य आर्यिका श्री अभयमती माताजी

बाल ब्र. पूज्य आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

बाल ब्र. कर्मयोगी रवीन्द्र कुमार जैन

९ सन्तानें गृहस्थ धर्म का पालन कर रही हैं।

श्री कैलाश चंद जैन

श्री प्रकाश चंद जैन

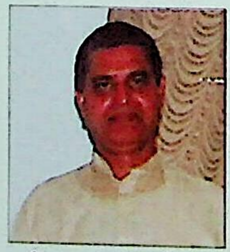
श्री सुभाष चंद जैन

श्रीमती शांति देवी जैन

श्रीमती श्रीमती देवी जैन

श्रीमती कुमुदिनी देवी जैन

श्रीमती मालती देवी जैन

श्रीमती कामनी देवी जैन

श्रीमती त्रिशला देवी जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसे लोग आज भी याद करते हैं, कु. माधुरी ने 13 वर्ष की लघुवय में ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर 18 वर्ष पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की छत्रछाया में रहकर गुरुसेवा, वैय्यावृत्ति, अध्ययन-अध्यापन द्वारा चहुँमुखी प्रतिभा को निखारते हुए 13 अगस्त 1989 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी से आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर चन्दनामती नाम प्राप्त किया है। शेष पुत्रियों में श्रीमती शांति देवी, सौ. श्रीमती देवी, श्रीमती कुमुदनी देवी, श्रीमती मालती देवी, श्रीमती कामिनी देवी व श्रीमती त्रिशला कुशलतापूर्वक गृहस्थी का संचालन कर देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करते हुए धर्माराधना में तत्पर हैं व अपनी पीढ़ी में भी धार्मिक संस्कारों का समावेश किया है।

लाला जी के चार पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र श्री कैलाशचंद जी टिकैतनगर से लखनऊ में आकर सामाजिक व राजनीतिक गतिविधियों में सक्रियरूप से भाग लेते हुए धर्माराधना में सदैव तत्पर रहते हैं, द्वितीय पुत्र श्री प्रकाशचंद जी ने भी गृहस्थावस्था में रहकर गृहस्थी का कुशल संचालन करते हुए समय-समय पर सामाजिक व राजनीति गतिविधियों में भाग लिया था। अपनी प्रौढ़ और भावपूर्ण लेखनी से सन् 1963 में पूज्य माताजी की सर्वप्रथम पूजन व भजन आदि बनाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया, विगत 21 मार्च 2005 को 3 वर्षीय लम्बी व असाध्य बीमारी के बाद णमोकार मंत्र सुनते-सुनते एवं सम्मेदशिखर व पूज्य माताजी का ध्यान करते-करते टिकैतनगर में आपका स्वर्गवास हुआ है। तृतीय पुत्र श्री सुभाषचंद जी अपनी सुमधुर वाणी से जन-जन को भजन-पूजन के माध्यम से भक्ति रस का पान कराकर गृहस्थ धर्म का कुशल संचालन कर देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में तत्पर हैं तथा चतुर्थ पुत्र 'कर्मयोगी' की उपाधि से अलंकृत लघुवय में ही ब्रह्मचर्य व्रत लेकर पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में रहकर उनके द्वारा निर्देशित प्रत्येक कार्यकलापों को मूर्तरूप देते हैं और अनेक संस्थाओं के सक्रिय अध्यक्ष व प्रत्येक युवा के आदर्श प्रेरणास्रोत हैं।

कहा जाता है कि कोई भी व्रत अथवा नियम जब लिया जाता है, तब उसकी परीक्षा अवश्य होती है। लाला जी का मंदिर जाने का नियम था, कैसी ही व्यापारिक व्यस्तता क्यों न हो, भले ही दिन में 12-1 बज जाये किन्तु लाला जी घर में आकर मंदिर जाकर दर्शन करके ही भोजन करते थे। घर में स्वाध्याय भी करते थे, जिसकी प्रेरणा इन्हें अपनी बड़ी पुत्री मैना से प्राप्त हुई थी। बाद में कभी-कभी तो शास्त्र पढ़ते-पढ़ते गद्‌गद् हो जाते, उसमें मगन हो जाते और उस आनन्द की अनुभूति वह घर में पत्नी व बच्चों को शास्त्र की बातें सुनाते हुए करते थे। उनका प्रायः यही कहना था कि भइया! तुम चाहे धर्म-कर्म थोड़ा करो, व्रत उपवास मत करो, किन्तु झूठ मत बोलो, दूसरों का गला मत काटो अर्थात् बेईमानी करके दूसरों का धन मत हड़पो, किसी को कडुवे वचन मत बोलो, यही सबसे बड़ा धर्म है। यह धर्म ही मनुष्य को मनुष्यता का पाठ सिखाता है अन्यथा मनुष्य मनुष्य न रहकर पशु अथवा हैवान बन जाता है।

उन्हें यह दृढ़ विश्वास था कि तीर्थयात्रा करने से, दान देने से, मंदिर में धन लगाने से, धार्मिक उत्सवों में बोलियाँ आदि लेने से, सच्चे साधुओं की सेवा-वैय्यावृत्ति करने से व्यापार बढ़ता है, इसीलिए वे सदा इन कार्यों में भाग लिया करते थे। अवध प्रान्त में शाश्वत तीर्थ अयोध्या से कुछ दूरी पर भगवान धर्मनाथ की जन्मभूमि रतनपुरी है, उसकी वेदी प्रतिष्ठा के समय की बात है, लाला श्री छोटेलाल जी ने उसमें वेदी का पर्दा खोलने की बोली ली थी, जब श्री जी को विराजमान करने का समय आया तब लाला जी ने अपनी बड़ी पुत्री कु. मैना से पर्दा खुलवाया। चूँकि मैना में धार्मिक संस्कार कुछ विशेष ही थे, अतः उन्होंने ज्यों ही महामंत्र का स्मरण कर पर्दा खोला कि अकस्मात् वहाँ पर एक दिव्य प्रकाश चमक उठा। वहाँ पर खड़े हुए सभी की आँखों में चकाचौंध सा हुआ और सबने प्रतिमा जी का चमत्कार और लाला जी की सुपुत्री का विशेष पुण्य जान उच्च स्वर में जय-जयकार के नारे लगाना शुरू कर दिया।

लालाजी को जिनमंदिर में होने वाली धार्मिक मीटिंगों में भी विशेष रुचि थी। वे प्रायः सभी मीटिंगों में जाते और वहाँ से आकर समाज की सारी गतिविधियों की जानकारी घर के सभी सदस्यों को दिया करते थे तथा दुकान पर होने वाली विशेष बातों को घर जाकर पुत्री मैना को सुनाया करते थे। वस्तुतः लालाजी को अपनी पुत्री मैना पर बड़ा गर्व था, जब से कु. मैना 9-10 वर्ष की हुई थी, तभी से लालाजी अपनी पुत्री मैना को अपने पुत्र के समान समझकर घर एवं दुकान की तिजोरी की चाबियाँ, रुपये-पैसे आदि सब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्हीं को संभलवाते थे। इन्होंने जब अपना नया घर बनवाना प्रारंभ किया, तो स्वयं खड़े रहकर बनवाया, ये प्रारंभ से ही बहुत परिश्रमी थे, पिता धन्यकुमार जी इनके श्रम से बहुत ही प्रसन्न रहते थे, अतः वृद्धावस्था में ये अपने इन्हीं पुत्र छोटेलाल के पास रहा करते थे और लाला जी भी अपने पिता की सेवा-सुश्रूषा अपने हाथों करके बहुत प्रसन्न होते थे। सन् 1939 में आपके पिताजी स्वर्गस्थ हुए हैं।

इन्होंने अपनी माँ के वचनों का भी सदैव सम्मान किया। कभी भी उन्हें अपमानजनक वचन स्वयं कहना तो बहुत दूर था। किसी अन्य को कहने भी नहीं दिया था। माँ के मन को किसी बात से दुःख हो, ऐसा कार्य भी कभी नहीं करते थे। माँ की इच्छा के अनुसार अपनी बहनों को बुलाकर सदा उन्हें यथायोग्य मान-सम्मान एवं वस्तुएं दिया करते थे। साथ ही घर तथा व्यापार के प्रत्येक कार्यों में अपने बड़े भाई बब्बूमल और छोटे भाई बालचंद की सलाह से ही कार्य किया करते थे, इन्होंने यह आदर्श अपने घर में भाइयों के जीवित रहने तक बराबर जीवित रखा था, आज के युग में प्रत्येक भाई के लिए यह उदाहरण अनुकरणीय है।

लाला जी में एक गुण विशेष था, वह यह कि यह अपनी पुत्रियों को रत्न के समान मानते थे। यदि कोई भी इनसे कह देता कि लाला छोटेलाल जी! आपकी तो कई पुत्रियाँ हैं और सभी कम से कम एक-एक लाख का हुण्डा हैं, तो इन शब्दों से इन्हें ऐसी नाराजगी होती कि शान्त स्वभावी लालाजी उसी समय चिढ़कर कहते कि भइया! तुम कौन होते हो मेरी पुत्रियों की गिनती करने वाले। मेरी सभी बेटियाँ अपना-अपना भाग्य लेकर आई हैं......इत्यादि। उन्होंने जीवन में कभी भी अपनी पुत्रियों को डाँटा नहीं अपितु कभी भाइयों ने कुछ कह दिया, तो उन्हें डांटा और दण्डित भी किया है, साथ ही जो लोग कन्या के जन्म से दुःखी होते या चिन्ता व्यक्त करते, तो उन्हें समझाया ही है। उनका कहना था-भइया! कन्या भी एक रत्न है, अपनी सन्तान है, उसे भार क्यों समझते हो। उसके जन्म के समय दुखी क्यों होते हो। देखो! पुरुष तो एक ही कुल की शोभा है, जबकि कन्या तो दो कुलों की शोभा होती है और फिर जन्म लेते ही सब अपना-अपना भाग्य साथ लाई हैं वे किसी के भाग्य का रत्ती भर भी नहीं ले जाएंगी। यह उदाहरण भी वर्तमान युग के माता-पिता के लिए अनुकरणीय ही नहीं सर्वथा ग्रहण करने योग्य है। इससे कन्या का मन तो जीवन भर प्रसन्न रहता ही है, साथ ही भाई-बहनों का भी आपस में जीवन भर सच्चा प्रेम बना रहता है। यही कारण है कि आज भी उस हरे-भरे परिवार में बहुत सी कन्याएं हैं। आज भी सबको अपने माता-पिता का उतना ही प्रेम मिल रहा है जितना उनके भाइयों को मिलता है।

लाला छोटेलाल जी अत्यन्त मोही प्रकृति के थे, इन्हें अपनी प्रत्येक सन्तान से बहुत मोह था। जब इनकी बड़ी पुत्री मैना को छोटी सी उम्र में वैराग्य हुआ और अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी उन्होंने दीक्षा ले ली तब पिता छोटेलाल जी को बहुत ही दुःख हुआ था। उसके बाद में वे साधुओं के संघ में आते जाते रहते थे किन्तु कुछ जन्मान्तर के संस्कार ही समझना चाहिए कि इनके सभी पुत्र-पुत्रियों ने जीवन में त्याग के लिए कदम उठाया है। उनमें जिनका पुरुषार्थ फल गया, वे त्यागमार्ग में निकल गए और जो त्याग की ओर नहीं बढ़ सके, वे आज भी अपने परिवार सहित दान, पूजा, स्वाध्याय आदि में निरत हैं। इन त्यागी पुत्र-पुत्रियों के संघ में रहने के प्रसंग पर ये बहुत ही दुखी हो जाते थे और लाखों प्रयत्नों से उन्हें रोकना चाहते थे।

सन् 1969 की बात है, शायद उनके जीवन का अन्त समय नजदीक आ रहा था, इन्हें पीलिया हो गया, जिससे ये काफी अस्वस्थ रहने लग गये थे। चूँकि समय-समय पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी (कु. मैना) ने घर के सभी लोगों को यही शिक्षा दी थी, जीवन का किया हुआ धर्मकार्य अन्त समाधि से ही सार्थक होता है अतः पिता की अच्छी तरह से सल्लेखना करवा देना और उनके अन्त समय में कोई भी उनके पास रोना नहीं। इस प्रकार माताजी की प्रेरणा से उनके पुत्रों के साथ-साथ सभी पुत्रवधूएं और पुत्रियाँ भी उनके पास धार्मिक पाठ भक्तामर स्तोत्र, समाधिमरण आदि सुनाया करते थे। उनकी पत्नी मोहिनी देवी जी ने पतिसेवा करते हुए उनकी बीमारी में अन्त समय जानकर बहुत ही सावधानीपूर्वक उन्हें सम्बोधा था। जिस समय लालाजी अस्वस्थ थे, उस समय टिकैतनगर में आचार्य सुमतिसागर जी महाराज संघ सहित आ गए थे, तब मोहिनी जी ने आचार्यश्री से प्रार्थना की थी कि "महाराज जी! आप कृपया इन्हें सम्बोधन प्रदान करें। उस समय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाराज जी ने उन्हें बहुत ही सुन्दर शब्दों में सम्बोधित करते हुए कहा कि लालाजी! तुमने आर्यिका ज्ञानमती जैसी पुत्री को जन्म देकर अपना जीवन धन्य कर लिया है, सभी यात्राएं कर ली हैं और सभी साधुओं के दर्शन करके उनका उपदेश भी सुना है, उन्हें आहार देना, वैयावृत्ति आदि भी आपने किया है। इस नश्वर शरीर से आपने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग किया है अतः अपने कुटुम्ब से मोह छोड़कर शरीर से भी मोह छोड़कर अपना अगला भव सुधार लो।" इत्यादि प्रकार से महाराज जी ने बहुत कुछ कहा था। जहाँ लालाजी लेटते थे, वहीं उनके सामने ऊपर में ज्ञानमती माताजी की पुरानी पिच्छी टंगी रहती थी, जिसे देखकर वे हाथ जोड़कर उसे नमस्कार करते थे। उनका अन्त समय जानकर औषधि अन्न आदि का त्याग कराकर उन्हें धर्मरूपी अमृत ही पिलाया जा रहा था, उन्होंने पत्नी मोहिनी देवी एवं अपने सभी पुत्र-पुत्रवधुओं आदि परिवारजनों से क्षमायाचना करके स्वयं क्षमाभाव धारण कर लिया था।

करीब मरण के एक घण्टे पूर्व की बात है, पुत्री मैना को याद करते हुए उन्होंने कहा कि था मुझे मेरी ज्ञानमती माताजी के दर्शन करवा दो। जब उन्होंने यह इच्छा कई बार व्यक्त की तब मोहिनी देवी तथा बड़े पुत्र कैलाशचंद ने कहा कि इस समय माताजी यहाँ से बहुत दूर जयपुर में विराजमान हैं, उन्होंने आपके लिए आशीर्वाद भिजवाया है। पुनरपि जब वह बोले-मुझे मेरी ज्ञानमती माताजी के दर्शन करा दो। तब घर के लोगों ने उनके सामने एक महिला को जो कि ब्रह्मचारिणी थी, श्वेत साड़ी पहने थी उसे लाकर खड़ा कर दिया और कहा कि ये आपकी ज्ञानमती माताजी आ गई हैं, दर्शन कर लो। तब उन्होंने आंख खोलकर देखा और सिर हिलाकर धीरे से कहा-"ये हमारी माताजी नहीं है"। इतना कहकर पिताजी (छोटेलाल जी) ने आँख बंद कर ली पुनः वापस नहीं खोली। उस समय उनका अन्त जानकर भी कोई रोया नहीं, अपितु उनके पास मौजूद सभी कुटुम्बीजनों ने लगातार जोर-जोर से णमोकार मंत्र का पाठ लगभग एक घंटे तक किया और उनकी सुन्दर समाधि बनवाई, जिसकी आकांक्षा प्रत्येक गृहस्थ को रहती है और विरले ही लोगों को अन्त समाधि का सौभाग्य मिल पाता है।

इस प्रकार गणिनी ज्ञानमती माताजी की स्मृति हृदय में लेकर सभी परिवार के मुख से णमोकार मंत्र सुनते-सुनते लाला छोटेलाल जी ने 25 दिसम्बर 1969 के दिन इस नश्वर शरीर को छोड़कर स्वर्गधाम को प्राप्त किया और यह उनकी पत्नी और पुत्र-पुत्रियों की गंभीरता और महानता ही रही कि प्राण निकल जाने के बाद भी सब थोड़ी देर तक णमोकार मंत्र बोलते रहे, कोई भी वहाँ रोया-धोया नहीं। अनन्तर जब शरीर ठण्डा हो गया तब रोना-धोना प्रारंभ हुआ। सभी ने पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की आज्ञा को ध्यान में रखकर पिता के जीवित क्षणों तक धैर्य धारण कर णमोकार मंत्र सुनाया। उनकी सच्ची सेवा की तथा अच्छी सल्लेखना कराकर एक आदर्श उपस्थित किया है।

कहा जाता है कि जो अपने जीवन को सत्कर्मों में लगाता है उसे सुगति की प्राप्ति होती है। श्रीमान् लाला छोटेलाल जी ने अपने जीवन में संघ दर्शन, आहारदान, तीर्थयात्रा, गुरुओं के उपदेश तथा आशीर्वाद ग्रहण आदि से जो पुण्य संचित किया था, इसी के फलस्वरूप उनकी अच्छी आयु बंध गई होगी और यही कारण भी है कि अन्त समय घर के अन्दर इतने बड़े परिवार के बीच में रहते हुए भी उनको अच्छी समाधि का लाभ मिला है। आज लालाजी हमारे बीच में इस नश्वर तन से भले ही न हों परन्तु उनकी सन्तानों को देखकर हम उनकी महानता का परिज्ञान कर सकते हैं। उनके द्वारा उन सन्तानों को प्रदत्त संस्कार आज पुष्पित और पल्लवित होकर अपनी सुरभि से समस्त संसार को महका रहे हैं। धन्य हैं ऐसे पिता जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्मुख समूचा विश्व नतमस्तक है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की ऐतिहासिक आत्मकथा

"मेरी स्मृतियाँ" से उद्धृत कुछ खास संस्मरण

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने कतिपय विद्वानों एवं श्रद्धालु भक्तों के विशेष आग्रह पर अपने संघर्षशील जीवन पर आधारित आत्मकथा के रूप में "मेरी स्मृतियाँ" नामक ग्रंथ लिखकर दिगम्बर जैन चतुर्विध संघ परम्परा का एक जीवन्त दस्तावेज प्रस्तुत किया है। इसे पढ़ने वाले पाठक एक रोमांचक उपन्यास की भाँति दिन-रात एक करके इसमें पूर्ण तल्लीन हो जाते हैं और जीवन निर्माण की नई दिशा प्राप्त कर पुनः पुनः इसे पढ़ने की भावना करते हैं। इस पूरे ग्रंथ को पढ़ने के इच्छुक भाई-बहन जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से ग्रंथ प्राप्त कर सकते हैं।

यहाँ प्रसंगोपात्त कुछ विशेष संस्मरणों को प्रस्तुत किया जा रहा है, इनसे भी आप सभी को धार्मिक एवं सामाजिक संगठन की प्रेरणा प्राप्त होगी—

(1) गाँव में महिलाओं द्वारा पूजा की परम्परा शुरू हुई—

मुझे भगवान की पूजा करने का बहुत ही प्रेम था। उस समय तक गाँव में महिलाएँ मन्दिर में पालथी मारकर नहीं बैठती थीं बल्कि पैर समेट कर बैठकर जाप करतीं और चली आती थीं। मैंने अपने हाथ से सामग्री धोकर, चौकी पर रखकर तथा सुखासन से बैठकर पूजा करना शुरू कर दिया। कुछ दिन बाद माँ भी मेरे साथ पूजा करने लगीं। उसके पूर्व यदि कोई एक-दो महिलाएँ पूजा करती थीं तो वे सूखे चावल से खड़ी-खड़ी ही पूजा पढ़कर चावल चढ़ा देती थीं। अब वे महिलाएँ पहले तो कानाफूसी करने लगीं, पश्चात् हँसना शुरू किया, फिर कहना शुरू किया कि—

"ये तो बहुत धर्मात्मा बन रही है, अब तो पुजारिन बन रही है.......!"

मैंने अच्छे उत्तम कार्य में उनके हँसने व कुछ भी कहने की परवाह नहीं की, अपना क्रम चलता रहा। पूजा करके आसन से ही बैठकर चौकी पर शास्त्र विराजमान कर स्वाध्याय करना शुरू किया, तब तो कुछ वृद्धा महिलाएं कहने लगीं—

"अरे! ये तो पंडिता बन रही है......!"

उस समय तक ऐसा पिछड़ा वातावरण था कि महिलाएँ मन्दिर में आसन से बैठने में भी हिचकिचाती थीं। जब मेरा क्रम ऐसा ही चलता देखा, तो कुछ वृद्धा महिलाएँ, युवती और धर्मनिष्ठ महिलाएँ भी धुली सामग्री लेकर आसन से बैठकर पूजा करने लगीं और शास्त्र स्वाध्याय भी ढंग से होने लगा।

आज उसी गाँव टिकैतनगर के बारे में सुनने में आता है कि वहाँ पर यदि 40 घर हैं तो प्रायः सभी ही स्त्री-पुरुष शुद्ध वस्त्र पहन कर विधिवत् जिनप्रतिमाओं का पंचामृत अभिषेक करते हैं, पुनः ठाठबाट से पूजा करते हैं। पूजा-पाठ में, विधिविधान में यदि महिलाएँ पुरुषों से आगे हैं, तो पुरुष भी पीछे नहीं हैं। सुना था (अभी सन् 1980 में) इन्द्रध्वज विधान में 50 जोड़े बैठे और भी अनेक स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया था। वहाँ पर नित्य पूजा की विशेषता तो है ही तथा नैमित्तिक विधान अनुष्ठान भी सदा ही होते रहते हैं। वहाँ पर उस समय कितनी ही महिलाओं ने मेरे से ऋषिमण्डल विधान आदि विशेष पूजायें लिखाई थीं और बड़े भाव से उन पूजाओं को करने लगी थीं।

(पृष्ठ 13)

(2) अच्छे कार्य करने में घबराना नहीं चाहिए—

मैंने बचपन से ही यह अनुभव किया है कि किसी भी अच्छे कार्य में आगे आने पर प्रायः लोगों का हँसीपात्र बनता पड़ता है, कभी-कभी अपमान भी सहने पड़ते हैं तथा कुछ लोग असहिष्णुता से निन्दा भी करने लगते हैं लेकिन बचपन से ही मेरा स्वभाव था कि मैं इन हँसी, अपमान या निन्दा से न तो घबड़ाती थी और न अपने अच्छे कार्यों से विमुख ही होती थी, प्रत्युत् अपने कर्त्तव्य में लगी रहती थी। यही बात आज भी है। वे ही संस्कार काम कर रहे हैं। मैं सोचा करती हूँ—

"हो सकता है कि यह दृढ़ता, यह मनोबल, यह शुभ कार्यों को प्रारम्भ कर न छोड़ने का साहस शायद मुझे पूर्वजन्म के विशेष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्य से ही उपलब्ध हुआ है। जब कोई व्यक्ति अच्छे कार्यों के प्रारंभ करने पर निन्दा आदि होने से उसे छोड़ देते हैं, तब मुझे उन पर बहुत ही करुणा आती है कि—

"अहो! अच्छे कार्यों में विरोध उपस्थित होने पर इन्हें उसे न छोड़ने का साहस क्यों नहीं है? छोटी-छोटी विघ्न-बाधाओं से ये लोग क्यों घबड़ा जाते हैं?"

यह अनुभव की बात है कि जिनका मनोबल मजबूत है, वे हर एक कार्य में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। हाँ, देर भले ही लगे किन्तु उन्हें असफलता नहीं मिलती है। फिर जिनके हृदय में जिनेन्द्रदेव की भक्ति विद्यमान है और जो आगम के अनुकूल प्रवृत्ति करने वाले हैं, वे यदि आगम के अनुकूल ही कोई कार्य प्रारंभ करते हैं तो उन्हें लोगों के शब्द-प्रहारों से डरना नहीं चाहिए।

(पृष्ठ 14)

(3) आर्यिकाओं की नवधाभक्ति आगम सम्मत है—

मेरी रुचि न्याय ग्रन्थों के पढ़ने में भी बहुत ही थी अतः मैंने जिनमती को परीक्षामुख और न्यायदीपिका पढ़ाना शुरू कर दिया। पं. खूबचन्द्र जी शास्त्री प्रायः प्रति वर्ष संघ में अपनी पत्नी सहित आते थे और चौका करके आहार दान का लाभ लेते रहते थे। वे प्रातः एक घण्टा कोई विशेष ग्रन्थ साधुओं की सभा में पढ़ते थे। उस वर्ष भी आये हुए थे। वे प्रवचनसार का स्वाध्याय करा रहे थे। उनका मेरे प्रति भी बहुत ही वात्सल्य भाव था अतः उन्होंने यह निर्णय किया कि इनको भी मैं कुछ अध्ययन कराऊँ। आर्यिका वीरमती माताजी ने प्रमेयकमल मार्तण्ड पढ़ने का निर्णय किया। मैं भी उसी में सम्मिलित हो गई। वे पंडितजी दो-चार दिन ही कुछ पढ़ा पाये थे कि उनको भी खांसी की तकलीफ होने से वह न्याय ग्रन्थ का अध्ययन चल नहीं पाया। फिर भी उनका धर्मप्रेम, गुरुभक्ति और आगमनिष्ठा जैसी थी, वह सब आज के विद्वानों के लिए अनुकरणीय है। बाद में मैंने बिना पढ़े ही अपनी शिष्या जिनमती को प्रमेयकमलमार्तंड पढ़ाया है।

एक बार उनके चौके से एक माताजी नवधा भक्ति की कुछ कमी होने से वापस आ गईं। आहार के अनन्तर आकर उन्होंने आचार्यश्री से कहा कि—

"पंडित खूबचन्द जी ने पड़गाहन करके प्रदक्षिणा नहीं लगाई इसलिए मैं वापस आ गई।"

आचार्यश्री ने कहा-"तुमने ठीक किया।"

अनन्तर खूबचन्द जी भी आकर बैठ गये और इसी विषय में आचार्यश्री से शंका- समाधान करने लगे। आचार्यश्री ने कहा—

"पंडित जी! जब आर्यिकाओं की आप नवधाभक्ति करते हैं, अष्टद्रव्य से पूजा करते हैं, पुनः उनकी प्रदक्षिणा लगाने में ही आपने क्या दोष समझा?"

पंडित जी की समझ में आ गया कि—"सचमुच में नवधाभक्ति के लिए आर्यिकायें पात्र हैं—योग्य हैं तो पुनः उनकी प्रदक्षिणा भी देनी चाहिए।"

(पृष्ठ 60-61)

(4) गंधोदक मस्तक पर चढ़ाने का प्रमाण—

एक दिन उन्होंने (पं. खूबचंद जी) किसी साधु को पड़गाहन कर नवधा भक्ति करते समय गंधोदक मस्तक पर नहीं लगाया प्रत्युत् उसका वंदन कर लिया। इस पर भी आचार्यश्री के पास चर्चा चली।

पंडित जी ने कहा—"महाराज जी! गंधोदक लेने का श्लोक तो यही है कि—

निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पापनाशनं।
जिनगंधोदकं वंदे, अष्टकर्मविनाशनं।।

इसमें जिनगंधोदक को वंदन करने के लिए कहा है न कि मस्तक पर लगाने के लिए। इसी बीच मैं भी आहार करके आ गई थी। उस समय वहीं बैठी थी। मैंने पद्मनंदिपंचविंशतिका में जो प्रकरण पढ़ा था सो उन्हें दिखा दिया। जो कि इस प्रकार है-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किं ते गृहाः किमिह ते गृहिणो नु येषामन्तर्मनस्सु मुनयो न हि संचरन्ति।
साक्षादथ स्मृतिवशाच्चरणोदकेन नित्यपवित्रितं धराग्रशिरःप्रदेशाः।।17।। (पद्मनंदिपंचविंशतिका,पृ. 98)

जिन मुनियों के चरणकमल के जल के स्पर्श से जिन घरों की भूमि पवित्र हो जाती है तथा जिन गृहस्थों के मस्तक भी पवित्र हो जाते हैं उन उत्तम मुनियों का जिन घरों में संचार नहीं है तथा जिन गृहस्थों के मन में भी जिन मुनियों का प्रवेश नहीं है वे घर तथा गृहस्थ दोनों ही बिना प्रयोजन के हैं इसलिए गृहस्थों को उत्तम आदि पात्रों को अवश्य दान देना चाहिए जिससे मुनियों के आगमन से उनके घर पवित्र बने रहें तथा उनका गृहस्थपना भी कार्यकारी गिना जावे।

यह देखकर वे प्रभावित हुए और बाद में सभी मुनि आर्यिकाओं के चरण प्रक्षालन के बाद गंधोदक लेकर बड़े आदर से नेत्रों में और मस्तक पर लगाने लगे।

(पृष्ठ 61)

(5) संघ से विहार के समय गुरु की शिक्षाएँ—

आचार्यश्री ने एक दिन आर्यिकाओं को आज्ञा दी कि—

"चातुर्मास के पूर्व तक तुम सभी दो ग्रुप में होकर आस-पास के गाँवों में विहार करो।"

गुरुदेव की आज्ञा प्राप्त कर आर्यिका वीरमती माताजी ने संघस्थ आर्यिकाओं को साथ में लेकर पास के किसी गाँव में जाने का निर्णय लिया। मैंने इच्छा न होते हुए भी गुरु आज्ञा शिरोधार्य कर जयपुर से बगरू जाने का विचार बनाया। कुछ दिन पूर्व क्षुल्लक सन्मतिसागर जी गुरु की आज्ञा के बिना ही बगरू चले गये थे अतः आचार्य देव ने मुझसे कई बार यह शब्द कहे कि—

"ज्ञानमती! तुम क्षुल्लक सन्मतिसागर जी को समझा कर वापस उन्हें संघ में ले आना।" जब मैं विहार कर रही थी, आचार्यदेव के पास आशीर्वाद लेने गई, तब उन्होंने कहा—

"बाई! तुम्हें मैं और कुछ नहीं कहूँगा, बस एक ही बात कहता हूँ कि तुम हमेशा अपने नाम का ध्यान रखना।'

इतना सुनकर ब्रह्मचारी श्रीलाल जी बोले—

"महाराज जी! आपने अभी वृद्धा आर्यिकाओं को विहार करते समय अनेक शिक्षायें दी थीं, आप इन्हें मात्र दो शब्द में ही कह रहे हैं कि "अपने नाम का ध्यान रखना।" बाकी कोई भी शिक्षा नहीं दे रहे हैं, ऐसा क्यों? जबकि ये तो सबसे छोटी हैं तथा नवदीक्षिता हैं।

तब आचार्यश्री ने कहा—"भाई! मैंने दो शब्द में ही इन्हें शिक्षा दे दी है। बस इनके लिए मुझे इतना ही कहना है और कुछ नहीं।"

गुरुदेव के इतने छोटे से वाक्य की अमूल्य शिक्षा को मैंने अपने हृदय में धारण किया। पुनः-पुनः गुरुदेव की चरण रज अपने मस्तक पर चढ़ाई और उनका आशीर्वाद लेकर मैंने अपने साथ में क्षुल्लिका जिनमती और पद्मावती इन दोनों को लेकर बगरू की ओर विहार कर दिया।

(पृष्ठ 63)

(6) आर्यिकाओं के कितने मूलगुण हैं?—

मैं कभी-कभी आचार्यदेव के चरण सानिध्य में बैठकर अनेक शंकाओं के समाधान प्राप्त कर लिया करती थी। वे समाधान आज हमारे मोक्ष पथ में दीप स्तम्भ बने हुए हैं।

एक बार एक आर्यिका सिद्धमती जी ने कहा—"हम आर्यिकाओं के 26 ही मूलगुण हैं। चूँकि हमारे पास वस्त्र हैं और हम लोग बैठकर आहार लेती हैं।"

तब मेरे मन में आशंका होने से मैंने आचार्यदेव के समक्ष समाधान चाहा। मैंने जाकर प्रश्न किया—"गुरुदेव! हमारे कितने मूलगुण हैं?"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्यश्री ने कहा— "तुम्हारे 28 मूलगुण हैं। देखो! दीक्षा के समय मुनिदीक्षा के ही सारे संस्कार हम आर्यिकाओं के मस्तक पर करते हैं, उन्हें 28 मूलगुणों को देते हैं। जो उनके पास साड़ी है, वह उनका मूलगुण ही है क्योंकि वे वस्त्र छोड़ नहीं सकती हैं। हाँ, यदि वे दो साड़ी के बजाए तीन साड़ी रख लें तो उनका मूलगुण अवश्य ही भंग हो जायेगा तथा बैठकर करपात्र में आहार करना भी उनका मूलगुण ही है, चूँकि वैसी ही आगम में उनके लिए आज्ञा है। इसलिए तुम्हारे 28 मूलगुण ही हैं। दूसरी बात यह है कि प्रायश्चित्त ग्रन्थ में आर्यिकाओं के लिए मुनियों के बराबर प्रायश्चित्त देने का विधान है, जबकि क्षुल्लकों को उससे आधा प्रायश्चित्त देने की आज्ञा है। तीसरी बात शास्त्रों में आर्यिकाओं को मुनियों के सदृश ही पूजा के लिए योग्य अर्थात् पूज्य माना है।"

यह समाधान प्राप्त कर मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई।

(पृष्ठ 65)

(7) संघ को संगठित करने की अपूर्व भावना—

संघ में रहने की प्रेरणा—एक बार मुनिश्री अजितसागर जी कुछ छोटी सी बात के लिए संघ से अलग होने को तैयार हो गये। उन्होंने यह बात मुझे बताई, तब मैंने उन्हें समझाने का पूरा-पूरा प्रयास किया और संघ में ही रहने का अनुरोध किया। मेरा कहना यही था कि अब तो मैं सम्मेदशिखर की यात्रा के लिए जा रही हूँ, पता नहीं कितने वर्ष बाद संघ में आकर मिलूँ? आप तो आचार्य संघ में ही रहकर धर्माराधना करते हुए संघ का गौरव बढ़ावें, संघ के साधु-साध्वियों को अध्ययन करावें और आर्ष परंपरा को अक्षुण्ण बनावें।

ये अजितसागरजी महाराज ब्र. राजमल के रूप में बचपन से संघ में रह रहे थे। आचार्य शिरोमणि श्रीवीरसागर जी महाराज को गुरु बनाया। उनके संरक्षण में बहुत कुछ अनुभव प्राप्त कर चुके थे, शास्त्रज्ञान भी अच्छा था और अब आचार्य शिवसागरजी से मुनिदीक्षा ग्रहण कर चुके थे, अतः संघ परम्परा के निर्वाह में कुशल थे। इसलिए मैंने कहा—"महाराजजी! आप संघ से अलग हो जायेंगे, तो मूलाचार ग्रंथ में कथित जो दोष हैं वे भले ही आप में नहीं आ सकेंगे लेकिन फिर भी आज्ञालोप, अनवस्था, मिथ्यात्व-आराधना, आत्मनाश और संयमविराधना इन पाँच दोषों में से 'अनवस्था' दोष तो आ ही जावेगा अर्थात् अन्य मुनि भी आपकी देखा-देखी एकलविहारी होने लगेंगे। यह उन दिनों की घटना है जब आचार्यवर्य श्रीवीरसागरजी और शिवसागर जी के संघ के कोई भी मुनि 'एकल-विहारी' नहीं हुए थे।

संघ के अन्य साधु भी मुनिश्री अजितसागर जी को संघ में रोकने के प्रयास में लगे हुए थे। कई बार मुनिश्री श्रुतसागरजी एवं मुनिश्री जयसागरजी ने मुझसे कहा—

"माताजी! हम लोग तो पुरुषार्थ कर चुके हैं, अब आपके पुरुषार्थ से ही इन्हें संघ में रोका जा सकता है.....इत्यादि।"

जब मेरे जाने का निश्चित हो गया, तब मैंने पुनः मुनिश्री अजितसागर जी से अनुनय-विनय करके संघ में रहने का अनुरोध किया क्योंकि अब मैं अनुशासन तो नहीं कर सकती थी, मात्र विनय से ही समझाने का प्रयास कर रही थी। मुनिपद आर्यिका से महान है, अपना शिष्य हो चाहे पुत्र, मुनिदीक्षा लेने के बाद बड़ी से बड़ी भी आर्यिकायें उन्हें उसी क्षण नमोऽस्तु करती हैं अतः मैं भी बहुत ही विनय से उन्हें नमस्कार करती थी। जब मुनिश्री ने किसी की भी नहीं मानी और जाने का विचार नहीं बदला, तब मैंने कहा—

"महाराजजी! यदि आप संघ से पृथक् विहार कर जायेंगे तो पुनः संघ में वापस न आने तक मैं अपने स्वास्थ्य के लिए औषधिस्वरूप ऐसे तक्र (मट्ठा) का ही त्याग कर दूँगी।" क्योंकि साधुओं के पास आहार के सिवाय भला अन्य वस्तु है ही क्या?

इतना सुनकर मुनिराज बोले—

"माताजी! मैं वापस आने के लिए नहीं जाऊँगा, जाकर पुनः आने की क्या बात?.....।"

तब मैंने कहा—"महाराजजी! तब तो जीवन भर के लिए ही मेरा तक्र का त्याग हो जावेगा.....।"

बात आई गई हो गई और सम्मेदशिखर की यात्रा हेतु मेरे विहार का समय आ गया।

(पृष्ठ 137-138)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरुषार्थ से कार्य सिद्धि हो गई—

संघ फ़िरोजाबाद तक आया ही था कि कुछ लोगों से पता चला—

"मुनिश्री अजितसागरजी आचार्यसंघ से अलग होकर जयपुर के एक मंदिर में ठहरे हुए हैं।" मुझे बहुत ही दुःख हुआ। अपने वचन के अनुसार मैंने तक्र का त्याग कर दिया। संघ यहाँ से विहार करते हुए कुछ दिनों में कानपुर आ गया। उन दिनों पेट की गड़बड़ी से तक्र ही मेरे लिए औषधि था, कुछ स्वास्थ्य गिरते देखकर संघस्थ साध्वियों और ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों को चिंता होने लगी, तभी आर्यिका आदिमती ने मेरे से तक्र लेने का बहुत आग्रह किया किन्तु जब मैंने नहीं लिया, तब उन्होंने भी अन्न का त्याग कर दिया और बोली—

"माताजी! तक्र ही आपके स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ी औषधि है अतः जब तक आप तक्र नहीं लेंगी, मैं भी अन्न नहीं लूँगी।" इधर ब्र. सुगनचंद और प्रकाशचंद को इस तरह त्याग की बात मालूम होने से वे मेरे पास आकर बहुत कुछ अनुनय-विनय करने लगे, तब मैंने कहा कि—

"जब तक मुनिश्री अजितसागर जी आचार्यसंघ में नहीं पहुँचेंगे, तब तक मैं तक्र नहीं ले सकती हूँ।"

तब इन दोनों ने जयपुर में पं. इन्द्रलालजी शास्त्री और श्रेष्ठी रामचंद्रजी कोठारी को पत्र दिया तथा सेठ हीरालालजी को भी निवाई गाँव में पत्र डाल दिया। पत्रों द्वारा विगत समाचार जानकर ये लोग ब्र. श्रीलाडमलजी को साथ लेकर मुनिश्री के पास मंदिर जी में पहुँचे और सारी बातें सुना दीं। महाराजजी ने विचार किया और उठकर खड़े होकर बोले—

"चलो, मैं आचार्यसंघ में चलता हूँ। मैं आर्यिका ज्ञानमती माताजी का आग्रह नहीं टाल सकता हूँ, वे मेरी माँ हैं.......।"

इतना कहकर उन्होंने आचार्यसंघ की ओर विहार कर दिया और संघ में पहुँच गये, तब उधर से पं. इन्द्रलालजी शास्त्री का पत्र आया कि—

"पूज्य माताजी! अब आप अपना नियम पूरा करके आहार में तक्र लेना शुरू करें, आपके पुरुषार्थ से मुनिश्री अजितसागरजी आचार्यसंघ में पहुँच गये हैं। हम लोगों को प्रसन्नता है कि आप संघस्थ मुनि-आर्यिकाओं का कितना हित चाहती हैं......इत्यादि।"

मैं तो सोचती हूँ कि यह पूज्य अजितसागर महाराज की महानता ही थी जो उन्होंने मुनि होकर भी मेरी इतनी बात मानी थी।

पत्र सुनकर मुझे भी बहुत ही प्रसन्नता हुई और अगले दिन ही मैंने अपना नियम पूरा करके आहार में तक्र ले लिया, तभी आर्यिका आदिमती ने भी आहार में अन्न ग्रहण किया। संघ में सबको बहुत ही प्रसन्नता हुई। आगे संघ सहित विहार करके मैं लखनऊ आ गई।

आज मुझे लिखते हुए अतीव प्रसन्नता है कि उस समय सन् 1962 में आचार्यसंघ में प्रवेश करने के बाद आचार्यश्री शिवसागरजी के जीवित रहने तक सन् 1969 तक ये मुनिश्री अजितसागर जी संघ में ही रहे हैं। बाद में आचार्यश्री शिवसागर जी की समाधि के पश्चात् मुनिश्री श्रुतसागरजी के साथ जयपुर से अलग हुए हैं।

इसी प्रकार गिरनार क्षेत्र की यात्रा करके वापस आते समय मुनिश्री श्रुतसागर महाराजजी संघ से अलग हो रहे थे, तब मैंने वापस संघ में न आने तक 'नमक' का त्याग कर दिया था। इसके बाद वे संघ से अलग विहार कर दो घंटे बाद ही वापस आ गये थे और बोले थे कि—

"माताजी! अब आपका नमक का त्याग पूरा हो गया, अब मैंने नियम ले लिया है कि आचार्य संघ से कभी भी अलग नहीं होऊँगा।"

वे मुनिश्री श्रुतसागरजी भी आचार्य शिवसागरजी की समाधि के बाद ही सन् 1969 में मुनिश्री अजितसागर आदि मुनि-आर्यिकाओं को लेकर संघ से पृथक् हुए थे।

उन दिनों जो मेरा संघ के मुनि-आर्यिकाओं के प्रति वात्सल्य भाव था और साधु-साध्वियाँ जो मेरी बात मानते थे, इन प्रसंगों में आचार्यश्री शिवसागर जी भी कितना मेरा गौरव करते थे? उन सब बातों का स्मरण करते ही मन पुलकित हो उठता है। इसमें मैं अपना पूर्व पुण्य, आगमानुकूल चर्या, परामर्श एवं मार्गदर्शन ही कारण समझती हूँ। मेरी जो संघ के प्रति एकसूत्र में बंधे रहने की भावना थी, वह गुरुदेव आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के उपदेश का ही प्रभाव था, गुरुदेव हमेशा कहा करते थे कि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"सुई का काम करो, कैंची का नहीं—देखो! सुई जोड़ती है और कैंची काटती है अतः सुई के समान संघ में साधु-साध्वियाँ एक-दूसरे को जोड़ने का—संघ में रहने का और रखने का प्रयास करो, अलग करने का नहीं।"

इसी प्रकार मूलाचार के पढ़ने-पढ़ाने से भी श्रीकुंदकुंददेव की गाथायें मस्तिष्क में हमेशा घूमा करती थीं और आज भी घूमती ही रहती हैं तथा खास करके यह पंक्ति तो विशेष ही स्मरण में आती रहती है कि—

"मा भूद मे सत्तु एगागी" अर्थात् मेरा शत्रु भी मुनि एकल विहारी न होवे।

इसके बाद मैं विहार करते हुए लखनऊ आ गई, यहाँ डालीगंज में ठहर गई।

(पृष्ठ 149-150)

(8) शिष्यों का पोषण करना शास्त्रोक्त है—

आगरा में एक दिन एक विद्वान् महानुभाव बोले—

"माताजी! जब साधु-साध्वियाँ घर छोड़कर दीक्षा ले लेते हैं तो पुनः संघ क्यों इकट्ठा करते हैं? अरे! एक घर छोड़ा और दूसरा बसा लिया, यह भला कहाँ की बुद्धिमानी है?

मैंने कहा—पंडितजी! संघ बनाये बगैर मोक्षमार्ग भला कैसे चलेगा? देखो, संघ में शिष्यों का संग्रह करने के लिए और उन पर अनुग्रह करने के लिए श्रीकुंदकुंददेव ने भी प्रवचनसार ग्रंथ में कहा है—

दंसणणाणुवदेसो सिस्सग्गहणं च पोसणं तेसिं।
चरिया हि सरागाणं जिणिंदपूजोवदेसो य।।248।।

सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान का उपदेश देना, शिष्यों का संग्रह करना और उनका पोषण करना तथा जिनेन्द्रदेव की पूजा का उपदेश देना, यह सब सरागचारित्री मनुष्यों की चर्या है। टीकाकार ने कहा है—"रत्नत्रयाराधनाशिक्षाशीलानां शिष्याणां ग्रहणं स्वीकार-स्तेषामेव पोषणमशनपानादिचिंता।"

रत्नत्रय आराधना की शिक्षा को ग्रहण करने वाले ऐसे शिष्यों को संघ में रखना और उनके आहार आदि की चिंता करना, आदि ये सब आचार्यों के कर्तव्य हैं।

इस प्रवचनसार के प्रमाण को सुनकर वे बहुत ही प्रसन्न हुए पुनः उन्होंने और भी शंकाएँ कीं, जिनका समाधान आगमप्रमाण सहित मैंने दे दिया।

"यह गाथा मुझे क्षुल्लिका अवस्था से ही याद थी कि जब मैंने प्रवचनसार का स्वाध्याय किया था पुनः यही गाथा रैनवाल में आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के समय जब चर्चा में आई, तब से तो मेरे हृदय-पटल पर अंकित ही हो गई है।

(पृष्ठ 146)

(9) "समय एव करोति बलाबलं"—

आर्यिकाओं को दो साड़ी अपने शरीर को ढकने के लिए ग्रहण करना होता है, यदि तीसरी साड़ी रखती हैं तो उन्हें प्रायश्चित्त का भागी माना गया है। इस नियम के अनुसार आर्यिकायें दो साड़ी रखती हैं, फिर भी एक साथ में एक ही पहनती हैं। दूसरे दिन दूसरी बदल लेती हैं।

यदि कदाचित् विशेष बीमारी आदि में कोई संघस्थ ब्रह्मचारिणी अपने पास एक नई साड़ी धोकर रखे और प्रसंगोपात्त बदला दे, तो चल भी सकता है किन्तु यह उत्सर्ग (उत्तम) मार्ग नहीं है।

हम सभी आर्यिकाएँ उस समय लगातार कई दिनों तक कुहरा, ओस, वर्षा, बूँदें, ठंडी हवा को झेलती हुयी चलती रहीं। क्रम से फिरोजाबाद पहुँचीं किन्तु कोई बीमार नहीं पड़ीं। उस समय मेरी उम्र 28 वर्ष की थी। उस ठंडी में अयोध्या तक लगभग हम लोगों ने चलायी की है।

इधर कई वर्षों में जरा सी हवा लग जाने से जुकाम, नजला, खांसी आदि प्रकोप शुरू हो जाते हैं। सन् 1970 से जुकाम होकर लगभग मुझे तीन वर्ष तक परेशान करता रहा था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन दिनों मैं कई बार सोचा करती हूँ कि—

"शक्ति, संहनन, देश, काल और वातावरण से भावों में परिवर्तन आता ही है और कर्मनिर्जरा में अंतर पड़ता ही है। अब आज यदि मैं ऐसी सर्दी झेलने की कोशिश करूँ तो सारा शरीर ही अकड़ जाये और पता नहीं कुछ व्याधि प्रकोप होकर असमाधि ही हो जाये। उस समय शरीर में शक्ति होने से सहनशीलता थी। आज कितना ही सोचो, शरीर जवाब दे देता है।

(पृष्ठ 148)

(10) साधु संघ में चैत्यालय आवश्यक है—

आचार्यश्री वीरसागरजी ने मुझे 1956 में ही जयपुर के पास के एक गांव बगरू के लिए विहार करते समय यह समझाया था कि— "देखो, ज्ञानमती जी! तुम विहार के समय एक जिनप्रतिमाजी संघ में रखना, जिससे संघस्थ ब्रह्मचारिणी उन्हीं प्रतिमा जी का अभिषेक करें और फूल, फल आदि चढ़ाकर पूजा करें चूंकि आजकल समाज में तेरह और बीस नाम से दो पंथ चल रहे हैं अतः संघस्थ चैत्यालय में बाइयां अभिषेक करती रहें, जिससे मंदिरों की परम्परा में बाधा न आवे और जैन समाज में अशांति न होवे।"

गुरुदेव के इसी आदेशानुसार सम्मेद शिखर जी के विहार में भी आचार्यश्री शिवसागर जी की आज्ञा से संघ में ब्रह्मचारी जी ने एक छोटी सी महावीर स्वामी जी की प्रतिमा रखी थी।

दूसरी बात यह भी है कि यदि कहीं विहार में 25-50 मील तक जैन मंदिर नहीं हैं, तो भी बिना दर्शन के हम लोग आहार कैसे करेंगे? जिनका यह कहना है कि "मुनि, आर्यिका आदि साधुओं को जिन दर्शन की आवश्यकता नहीं है वे बिना दर्शन किये ही आहार कर सकते हैं।" यह मान्यता हमारी गुरु परम्परा के विरुद्ध है। आचार्यश्री शांतिसागर जी, आचार्य श्रीवीरसागर जी, आचार्य श्री शिवसागर जी, आचार्य श्री धर्मसागर जी, आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी, आचार्य श्री देशभूषण जी, आचार्य श्री विमलसागर जी आदि महासाधु पुंगव जिनप्रतिमा के दर्शन करके ही आहार को उठते थे और आज भी दर्शन करके ही उठते हैं।

वास्तव में ये साधु इतने ऊँचे उपशम-क्षपक श्रेणी में चढ़ने वाले नहीं हैं और न आज जिनकल्पी मुनि ही हैं, आज के साधु स्थविर कल्पी हैं। इनकी चर्या संघ में ही मानी गई है और संघ में ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी श्रावक-श्राविका रहेंगे ही । ये लोग जिनप्रतिमा रखेंगे ही क्योंकि ये भी बिना जिनदेव के दर्शन के भोजन नहीं करते हैं। प्रतिमाधारी श्रावक तो जिनपूजा अवश्य ही करते हैं।

(पृष्ठ 171)

(11) खानदान शुद्धि-खानपान शुद्धि का उपदेश—

एक दिन यहाँ शिखर जी में भगवान् बाहुबली का 108 कलशों से महाभिषेक कराया गया, वहाँ विशाल सभा में मैंने उपदेश देते हुए कहा कि-"पिण्डशुद्धि के दो अर्थ हैं—खानदान शुद्धि और खानपान शुद्धि। जिनकी खानदान शुद्धि नहीं है, वे मोक्षमार्ग में नहीं चल सकते। भगवान् की पूजन, आहारदान और दैगम्बरी दीक्षा तथा राजा बनने का अधिकार खानदान शुद्धि वाले को ही है। खानपान शुद्धि बिगड़ने पर सुधारी जा सकती है किन्तु खानदान शुद्धि नहीं सुधारी जा सकती है।" इस उपदेश को सुनते ही पं. सुमेरुचंद दिवाकर और तीर्थ कमेटी के तत्कालीन महामंत्री चन्दूलाल जी सर्राफ उछल पड़े। गद्‌गद होकर कहने लगे—आज हमें लग रहा है कि आचार्य शांतिसागर जी की परम्परा को अक्षुण्ण रखने वाले साधु मौजूद हैं। आचार्यकल्प चन्द्रसागर जैसे निर्भीक वक्ता मौजूद हैं।.......इत्यादि कहते हुए मेरी खूब प्रशंसा की और अनेक मुनिभक्त बहुत ही प्रसन्न हुए। उस समय तो मैं इसका विशेष महत्व नहीं समझ सकी थी किन्तु आज समझ में आ रहा है कि खानदानशुद्धि अर्थात् सज्जातियत्व के समर्थक दिगम्बर जैन समाज में कम होते चले जा रहे हैं और तो क्या, कुछ दिगम्बर जैन संस्थाएँ ही विधवा विवाह और विजातीय विवाह की समर्थक हो रही हैं।

(पृष्ठ 190)

(12) भगवान बाहुबली के चरणों में "जम्बूद्वीप की उपलब्धि" (सन् 1965 की घटना)—

मैं ऊपर (विन्ध्यगिरि पर्वत पर) चढ़ गई। मेरे साथ आर्यिका पद्मावती माताजी भी थीं, चूँकि मैं अकेली कभी नहीं रही हूँ। मैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिन भर भगवान् के समक्ष बैठकर ध्यान करती, पाठ करती और चिंतन करती रहती थी, मौन ग्रहण कर लिया था। बस, स्तोत्र पाठ को ही बोलती थी। मात्र 10 बजे आहार के लिए नीचे आती थी और शुद्धि करके आहार ग्रहण करके पुनः तत्क्षण ही ऊपर चली जाती थी। किन्हीं भी शिष्याओं का कुछ भी सुख-दुख न सुनती थी और न किसी से बोलती ही थी। मन में संघ के प्रति कोई चिंता न रखने से निराकुलता भी थी। इधर भट्टारक जी ने एक बालक को वहाँ रात्रि में सोने के लिए निश्चित कर दिया था। वह कमंडलु के पानी की व्यवस्था भी बना देता था।

उन दिनों मैं रात्रि में बहुत कम सोती थी। दो-तीन बजे से ही उठकर, भगवान की मूर्ति को चंद्रमा की चांदनी में निहारती रहती थी पुनः आँख बंद करके भी ध्यान किया करती थी। "एक दिन रात्रि के पिछले प्रहर में लगभग 3-4 बजे ध्यान में सहसा मुझे कुछ अलौकिक क्षेत्रों के दर्शन होने लगे। सुमेरु पर्वत से लेकर जंबूद्वीप के हिमवान् आदि पर्वत, उनके चैत्यालयों के दर्शन हुए और धातकीखंड, पुष्करार्ध द्वीप, नंदीश्वर द्वीप, कुण्डलवर पर्वत और रुचकवर पर्वत के जिन मंदिरों के दर्शन हुए। मानों कभी पूर्व जन्म में मैंने इन अकृत्रिम चैत्यालयों के दर्शन किये ही हों। घंटों मेरा उपयोग उन्हीं मंदिरों की जिनमूर्तियों की वंदना में लगा रहा पुनः एक दिव्य प्रकाश दिखने लगा। आज भी जब मैं उन दिनों को, उस ध्यान को याद करती हूँ, तो वह प्रकाश स्मृतिपथ में आ जाता है।"

ध्यान के बाद आँखें खोलकर श्री बाहुबलि को एकटक देखा और बार-बार उनके श्रीचरणों में वंदना की। उस समय मुझे जो आनंद आया था, जो हर्षातिरेक हुआ था, वह मैं शब्दों से तो कह ही नहीं सकती हूँ। मैं बार-बार उन्हीं चैत्यालयों का स्मरण कर रही थी। लगभग साढ़े नौ बजे मैं पर्वत से नीचे धर्मशाला में अपने कमरे में आई। अन्दर जाकर अपने बस्ते से त्रिलोकसार ग्रंथ निकाला। उसमें मध्यलोक के अकृत्रिम चैत्यालयों की गणना देखी, जैसा कि मैंने ध्यान में देखा था, वैसे ही चार सौ अट्ठावन चैत्यालयों की संख्या देखी, तब मेरे हर्ष का पार नहीं रहा। मैंने सोचा—

"ध्यान में जो रचना और जो संख्या मुझे उपलब्ध हुई है, वही इस ग्रंथ में है अतः कुछ कपोलकल्पना नहीं है, प्रत्युत् सही रचना दिखी है.....अहो! मैंने पूर्व जन्म में इन चैत्यालयों के दर्शन अवश्य किये होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है।"

इधर जब आर्यिका जिनमती ने देखा कि—

अम्मा ने अंदर से त्रिलोकसार निकाला है और ये बहुत ही खुश हैं, तो पूछने लगीं-

"अम्मा! क्या देख रही हो?"

मैं कुछ भी न बोली और मुस्कराते हुए ग्रंथ लेकर ऊपर चली गई। वहाँ रहने तक बराबर यही ध्यान करती रही और ग्रंथ को पढ़कर उसका विस्तार समझती रही।

दूसरी उपलब्धि—

पर्वत पर रहते हुए वहाँ उन्हीं दिनों मैंने संस्कृत में वसंततिलकाछंद में एक बाहुबलि स्तोत्र बनाना प्रारंभ किया। वह इतना सुन्दर, सरस एवं मधुर बना है कि पढ़ने, सुनने वाले विद्वान् आनन्दमग्न हो जाते हैं। मैं समझती हूँ कि यह भगवान बाहुबलि की भक्ति का ही अतिशय था। इस स्तोत्र को कापी में लिखकर, मैं वहीं भगवान के सामने पढ़ने लगी। अंतरंग के भावों से निकले हुए शब्दों से, वर्णों से गूँथी हुई वह स्तुति पढ़ते समय मुझे रोमांच हो आता था। स्तोत्र के प्रथम श्लोक ये हैं—

सिद्धिप्रदं मुनिगणेंद्रशतेंद्रवंद्यं, कल्पद्रुमं शुभकरं धृतिकीर्तिसद्म।
पापापहं भवभृतां भववार्धिपोत-मानम्य पादयुगलं पुरुदेवसूनोः।।1।।
सप्तर्द्धिशालिगणिनां स्तुतिगोचरस्य, युद्धत्रये विजितविक्रमचक्रपस्य।।
ध्यानैकलीनतनुनिश्चलवत्सरस्य, तस्य प्रभो ऽहमपि स्तवनं विधास्ये।।2।। युग्मं।।

यह स्तोत्र मैंने इक्यावन श्लोकों में बनाया था।

इसके बाद मौन व्रत के 15 दिवस पूर्ण कर मैं नीचे आ गई। मौन छोड़कर शिष्याओं से वार्तालाप किया तो सबसे पहले उन्हें ध्यान में उपलब्ध उन चार सौ अट्ठावन (458) चैत्यालयों के दर्शन कराये, उनका विस्तार सुनाया पुनः यह स्तोत्र सुनाया। उन सबको भी महान आनन्द हुआ और उन सभी की आंखों में भी आनन्द के आँसू आ गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह वीरनिर्वाण सम्वत् 2491, आश्विनमास, ईस्वी सन् 1965, सितम्बर-अक्टूबर की बात है। श्रवणबेलगोल का यह चातुर्मास इस जम्बूद्वीप रचना के साथ-साथ एवं मेरी साहित्य रचनाओं के साथ-साथ सदा काल अमर रहेगा।

आज यहाँ हस्तिनापुर में बनी हुई जम्बूद्वीप रचना और मेरे द्वारा लिखे गये लगभग 150 ग्रन्थ (जिनमें मुद्रित हुये सौ करीब ग्रंथ-पुस्तकें) उन सबका सूत्रपात वहीं श्रवणबेलगोल में ही हुआ था।

मैंने अपने कन्नड़ के टूटे-फूटे शब्दों के उपदेश में, वहाँ के श्रावक-श्राविकाओं को भी इन चैत्यालयों का एक दो बार संक्षेप में दर्शन कराया था।

बाहुबलि चरित हिन्दी—इसके बाद मैंने नीचे वसतिका में रहते हुए, उसी आश्विन मास में एक बाहुबलि चरित बनाया, जिसमें चौबोल छंद है जो कि 108 पद्यों में है पुन: अंत में दोहा में तीन पद्य बनाकर, 111 मणियों की एक माला ही बनाकर, मानों भगवान के श्रीचरणों में चढ़ाई थी अथवा उस माला से भव्यजन भगवान को जप लेते हैं। मुझे उस समय क्या पता था कि यह रचना आगे भगवान बाहुबलि के सहस्राब्दी महोत्सव में रेकार्डिंग होकर जन-जन के मन को आल्हादित करने वाली होगी! इस स्तुति के कुछ पद्यों का प्रसारण सात सप्ताह तक आकाशवाणी दिल्ली से हुआ था। इस चरित का मोतीचन्द ने बहुत ही श्रम करके सन् 1980 में 90 मिनट का संगीत ध्वनि में टेपरेकार्ड कैसेट बनवाया था, जिसका कैसेट आज भी जब यहाँ बजता है, तब मुझे सन् 1965 की पुरानी स्मृतियाँ याद आ जाती हैं।

वहाँ श्रवणबेलगोल में रहते हुए मैंने आचार्यश्री वीरसागर जी की संस्कृत में एक लघु स्तुति बनाई। आचार्य शिवसागरजी की स्तुति बनायी, उसे लिखकर संघ में आर्यिका विशुद्धमती को भेजा कि इसे पढ़कर आचार्यश्री के सामने मेरी तरफ से वन्दना कर देना। मथुरा से यात्रा के लिए निकलते समय जो भावना आयी थी, वह सफल हुई थी, निर्विघ्न सम्मेदशिखर पर्वत की वंदना हो गई थी, तभी से मुझे श्री जम्बूस्वामी केवली भगवान के प्रति बहुत ही भक्ति थी अत: एक उनकी 8 श्लोकों में स्तुति बनायी। वहाँ पर प्रसिद्ध सांगत्यराग, जिसमें भरतेशवैभव और निरंजनस्तुति प्रसिद्ध हैं , उसी सांगत्यराग में, संस्कृत में भगवान महावीरस्वामी की एक लघु स्तुति बनायी, जो यह है—

सांगत्य राग—

मनसिजमर्दक! मुनिमनोहर्षक! वीर! महावीर! धीर!
मृत्युंजय! हंसनाथ! नमोऽस्तु ते, कर्म विध्वंसकशूर!।।1।।

मुझे प्रारंभ से ही यह श्रद्धा रही है कि जिनेन्द्र देव की भक्ति से मन में शांति होती है, सर्व अमंगल नष्ट हो जाते हैं और आत्मा को पवित्र करके भक्त एक न एक दिन अपनी आत्मा को परमात्मा बना लेता है। अतएव जिनभक्ति में सदा प्रवृत्ति रखनी चाहिए क्योंकि आज घोरातिघोर तपश्चरण तो संभव नहीं है, इसलिए भक्तिमार्ग से ही जितनी हो सके, उतनी आत्मशुद्धि कर लेनी चाहिए।

(पृष्ठ 210-212)

(13) सांवत्सरिक प्रतिक्रमण, युग प्रतिक्रमण एवं वर्षायोग स्थापना का काल—

सांवत्सरिक प्रतिक्रमण—पहले आचार्यश्री वीरसागर जी सांवत्सरिक प्रतिक्रमण दीपावली के दिन करते थे। आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज भी ऐसे करते आये थे। यहाँ सन् 1969 में जयपुर में मैंने आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज को अनगारधर्मामृत की पंक्तियाँ दिखाईं और प्रार्थना की कि—

"महाराज जी! यह सांवत्सरिक प्रतिक्रमण शास्त्राधार से आषाढ़ मास की चतुर्दशी को ही होना चाहिए।"

यथा—"आषाढ़ान्त सांवत्सरी।"[1]

आचार्यश्री मुस्कराये और बोले—

"ठीक है" पुन: उन्होंने आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को ही सांवत्सरिक प्रतिक्रमण किया। इससे पूर्व मैंने आर्यिका वीरमती माताजी को ग्रन्थ-प्रमाण दिखाकर पक्ष में ले लिया था। तभी से लेकर सन् 1986 के चातुर्मास तक आचार्यश्री यह बड़ा सांवत्सरिक प्रतिक्रमण आषाढ़ में ही करते आये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युग प्रतिक्रमण—

ऐसे ही अनगार धर्मामृत में लिखा है कि पाँच वर्ष के बाद युग प्रतिक्रमण करना चाहिए। यथा—

"तथा पंचसंवत्सरांते विधेया यौगान्ती प्रतिक्रमणा।"[2]

पाँच वर्ष के अंत में किया जाने वाला 'यौगांत' प्रतिक्रमण है। इसे ही युग प्रतिक्रमण कहते हैं।

यह भावना मैंने सन् 1985 की प्रतिष्ठा के समय आचार्यश्री धर्मसागर जी से कहलाई थी, उन्होंने स्वीकार भी कर लिया था किन्तु अत्यधिक कमजोर हो जाने से वे नहीं आ सके। बाद में सन् 1987 की प्रतिष्ठा में आचार्यश्री विमलसागर जी के सानिध्य में यहाँ हस्तिनापुर में मेरे विशेष आग्रह से फाल्गुन शु. 14 को यह युग प्रतिक्रमण प्रारम्भ किया गया।

वर्षायोग स्थापना काल— ऐसे ही आचार्यश्री वीरसागर जी और आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज वर्षायोग प्रतिष्ठापन क्रिया दिन में ही कर लेते थे। मैंने सुना था कि आचार्यकल्प श्री चन्द्रसागर जी महाराज और आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी महाराज रात्रि में ही वर्षायोग प्रतिष्ठापना करते थे। आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज ने भी जयपुर में रात्रि में ही प्रतिष्ठापन क्रिया की थी। अनगार धर्मामृत शास्त्र में लिखा है—

ततश्चतुर्दशीपूर्वरात्रे सिद्धमुनिस्तुती।
चतुर्दिक्षु परीत्याल्पाश्चैत्यभक्तिगुरुस्तुतिं।।66।।
शांतिभक्तिं च कुर्वाणैर्वर्षायोगस्तु गृह्यताम् ।
ऊर्जकृष्ण चतुर्दश्यां पश्चाद्रात्रौ च मुच्यताम् ।।66।।

मैंने आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज से कहा।

महाराज जी ने भी कहा कि—

"हाँ, आचार्यकल्प श्री चंद्रसागर जी महाराज भी रात्रि में ही स्थापना करते थे अत: ठीक है।"

ऐसा कहकर उन्होंने जयपुर से ही रात्रि में वर्षायोग स्थापना करना शुरू कर दी। उसी प्रकार दीपावली के दिन अर्थात् कार्तिक वदी चौदश की पिछली रात्रि में वर्षायोग निष्ठापन क्रिया करते थे। आर्यिकायें भी स्थापना के दिवस रात्रि में वहीं मंदिर में सायंकाल से ही आ जाती थीं और निष्ठापना के दिन पहले से ही आचार्य संघ के निकट स्थानों में रहकर पिछली रात्रि में आचार्यश्री के सानिध्य में आ जाती थीं।

सन् 1974 में आचार्यश्री धर्मसागर जी ने दिल्ली में भी चातुर्मास स्थापना लाल मंदिर में रात्रि में ही की थी और समापन क्रिया-दरियागंज के बालाश्रम में पिछली रात्रि में ही सम्पन्न की थी।

(पृष्ठ 282-283)

(14) उपवास में कुल्ला करना चाहिए?—

गुरुआज्ञा को उल्लंघन करने का दुष्परिणाम एक मुझे स्मरण में आ जाता है, तो रोमांच हो जाता है।

एक बाल विधवा महिला सन् 1957 में खानिया में आई। वह संघ में रहकर पढ़ना चाहती थी। आचार्यश्री वीरसागर जी ने मुझे बुलाकर कहा—इसे अपने पास रखो और पढ़ाओ तथा अनुशासन में रखो। मैंने प्रेम से उसे छहढाला, तत्त्वार्थसूत्र आदि पढ़ाना शुरू किया। दशलक्षण पर्व में वह दश उपवास करना चाहती थी। मैंने दो उपवास गुरुदेव से दिला दिये।

अगले दिन चर्चा हुई, उसने कहा—मैं व्रत या उपवास में कुल्ला नहीं करूँगी। यह बात संघस्थ वयोवृद्धा आर्यिका श्री सुमतिमती माताजी को मालूम हुई। उन्होंने कहा—

बिना कुल्ला किये न भगवान का अभिषेक-पूजन कर सकती हो, न आहारदान।

वह महिला जिद पर अड़ी रही, बात बढ़ गई। आर्यिका श्री वीरमती माताजी आदि ने, ब्र. सूरजमलजी ने भी समझाया। सभी बोले—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखो बाई! तुम्हारी छोटी उम्र है, अनुशासन में रहो, आज्ञा पालो, तब तो इहभव व परभव सुधरेगा अन्यथा पुनः डूब जावोगी।

उसने किसी की न मानी, तब बात दोनों आचार्यों तक गई। आचार्यश्री वीरसागर जी और आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी ने भी समझाया। उसे आगम प्रमाण भी दिखाये गये किन्तु वह महिला दुराग्रह में ही अटल रही। अन्ततोगत्वा आचार्यश्री ने कहा कि—

"इसे संघ से निकाल दो।"

उसे संघ से निकाल दिया गया। कुछ दिन बाद उसने एक तेरहपंथी मुनिराज से क्षुल्लिका दीक्षा ले ली। कुछ दिन बाद एकल विहारी हो गई। उसने दीक्षा छोड़ दी थी, अब साधारण महिला के रूप में रहती है। सन् 1987 में यहाँ हस्तिनापुर आई थी। बड़े मंदिर पर ठहरी थी। यहाँ आई, मैंने पहचान लिया। वह बहुत दुःखी होकर बोली—

"माताजी, मेरी बहुत बड़ी दुरवस्था है।"

मैंने पूछा-कहाँ रहती हो?

उसने कहा—"जबलपुर।"

मैंने पूछा—"खाने-पीने की व्यवस्था क्या है?"

उसने बताया—"वहीं बच्चों के लिए गोलियाँ बेचकर कुछ पैसे कमाकर, अपना उदर पोषण करती हूँ।"

इत्यादि करुण कथा सुनकर मेरा हृदय करुणा से भर आया और पुरानी स्मृति आकर दुराग्रह का दुष्परिणाम सामने दिखने लगा। मैं कुछ भी नहीं बोल सकी, सोचती ही रह गई।

देवपूजन, दान करने वाले श्रावक-श्राविकाओं के लिए सागारधर्मामृत व सोमदेवसूरि कृत यशस्तिलकचंपू में आचमन—कुल्ला करने के—मुख शुद्धि के प्रमाण हैं।

आप्लुतः संप्लुतस्वान्तः शुचिवासो विभूषितः।
मौनसंयमसंपन्नः कुर्याद्देवार्चनाविधिम् ।।438।।
दंतधावनशुद्धास्यो मुखवासोचिताननः।
असंजातान्यसंसर्गः सुधीर्देवानुपाचरेत् ।।439।। (यशस्तिलक चंपू)

तात्पर्य यह है कि-स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहने और चित्त को वश में करके मौन तथा संयमपूर्वक जिनेन्द्रदेव की पूजा करे। दंतधावन से मुख शुद्ध करके दूसरों को न छूकर जिनेंद्रदेव की पूजा करे।

आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज कहते थे—

उपवास में भी कुल्ला करके ही पूजन करना चाहिए, मंजन या दातोन नहीं करना चाहिए।

मुनिगण आहार के बाद बैठकर मुख शुद्धि करते हैं। अंतराय के बाद पानी नहीं पीते हैं किन्तु मुखशुद्धि—कुल्ला करते हैं अतः कुल्ला करने से पानी पीने का दोष नहीं आता है।

(पृष्ठ 286-287)

(15) अष्टसहस्री ग्रंथ के बारे में आचार्यों एवं विद्वानों के उद्गार—

सर्वप्रथम इस ग्रंथ का अनुवाद पूर्ण करने के बाद आचार्यश्री धर्मसागर जी के जन्मजयन्ती समारोह में सन् 1970 में टोडारायसिंह में इसका पालकी में जुलूस निकाला गया था। उस समय आचार्यश्री ने बहुत ही प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आशीर्वाद दिया था। आचार्यरत्न देशभूषण जी का आशीर्वाद तो बार-बार यही था कि खूब सरस्वती माता की उपासना में लगे रहो। आचार्यश्री विमलसागर जी ने तब से लेकर आज तक बार-बार इसे पूरा छपवाने की प्रेरणा दी है। आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज को जब सन् 1971 में कु.मालती हिन्दी अनुवाद दिखाने ले गई थीं, तब महाराज जी ने कुछ पेज मुनिश्री विद्यासागर जी से पढ़वाये और प्रसन्न होकर कहा—

"माताजी को कहो कि यह ग्रंथ छपवा दें, हिन्दी अनुवाद बहुत अच्छा हुआ है....।"

पंडित पन्नालाल जी साहित्याचार्य ने कई बार कहा—

"इसे अतिशीघ्र छपवाना चाहिए, जिससे विद्वद्वर्ग लाभ ले सके।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंडित हीरालाल जी सिद्धान्तशास्त्री (साढ़मल वालों) ने अनेक अनुवादित पृष्ठ सन् 1971 में ब्यावर में देखे, तब उन्होंने कहा कि—

"मेरा तो लगभग 20-25 वर्ष से न्यायग्रंथों का अभ्यास छूटा हुआ है अतः मैं पूरा तो नहीं देखूँगा। कुछ पेज देखकर बोले—

"हिन्दी अनुवाद बहुत ही अच्छा हुआ है, माताजी! अब तो आप इसे छपने भिजवा दीजिये। इसमें जितने पेज मैंने देखे, एक भी गलती नहीं समझ में आई अतः आप विद्वानों को दिखाने की बात खत्म कर दीजिये......। एक विद्वान् क्या, अनेक विद्वान् मिलकर भी इतना बढ़िया अनुवाद नहीं कर सकते हैं......।"

दिल्ली में मैं जब त्यागी भवन सेठ के कूँचा में ठहरी हुई थी। पंडित कैलाशचंद जी सिद्धान्तशास्त्री आये और नमस्कार कर बोले—

"माताजी! आपने जो अष्टसहस्री का अनुवाद किया है, सुना है वह छप रहा है, मैं उसे देखना चाहता हूँ।

मोतीचंद ने उसी समय छपे हुए लगभग 100 पेज उनके हाथ में दिये और मेरी एक हस्तलिखित कापी भी दे दी। पंडित जी ने घंटों बैठकर उन्हें पढ़ा पुनः प्रसन्न होकर बोले—

"माताजी! जब मैंने सुना कि किन्हीं ज्ञानमती नाम की आर्यिका ने अष्टसहस्री का अनुवाद किया है, तब मैंने सोचा-होंगी कोई आर्यिका, लिख दिया होगा कुछ ऊटपटाँग।....लेकिन आज मैं इन छपे हुए पृष्ठों को देखकर अवाक् रह गया हूँ।....आपने कितनी सुन्दर हिन्दी टीका की है। आपका व्याकरण ज्ञान और न्याय ज्ञान बहुत ही ऊँचा है। बहुत दिनों से पंडित दरबारीलाल जी कोठिया से इस ग्रंथ के अनुवाद के लिए कहा जा रहा था.....लेकिन इतना उत्तम अनुवाद शायद ही वे कर पाते.....।"

(पृष्ठ 336)

(16) पंचरंगी ध्वज—

एक बार (सन् 1974 में) आचार्य श्री धर्मसागर के पास लाल मंदिर के एक कमरे में कुछ लोग पंचरंगी ध्वज का विरोध लेकर आ गये। मैं बैठी सब सुनती रही। आचार्यश्री भी सुन रहे थे। कुछ देर बाद मैंने आचार्यश्री धर्मसागर जी से आज्ञा लेकर समाधान देना और समझाना शुरू किया। मैंने कहा—

"यदि चार सम्प्रदाय मान्य कोई एक वस्तु निर्णीत हुई है तो प्रभावना की दृष्टि से अच्छा ही है, बुरा क्या है?.....दिल्ली में भी दिगम्बर जैन मंदिरों के शिखरों पर कहीं चौकोन-लम्बी सी लाल रंग की ध्वजाएं हैं। ब्र. सूरजमलजी प्रतिष्ठा के अवसर पर पांच रंग की पट्टियों की ध्वजा बनवाकर ध्वजारोहण कराते हैं। इसके अतिरिक्त जम्बूद्वीप पण्णत्ति में भी पंचरंगी ध्वजाओं का वर्णन है। जैसे कि-"अकृत्रिम मंदिरों में मणिमय खम्भों के ऊपर ध्वजासमूह निर्दिष्ट किये गये हैं। ये सिंह, गज, हंस, वृषभ, कमल, मयूर, मकर, चक्र, छत्र और गरुड़ इन दस चिन्हों से चिन्हित रहती हैं। इनमें से एक-एक ध्वजा के मोतियों व मणियों की मालाओं से शोभायमान उत्तम पांच वर्ण वाली एक सौ आठ-एक सौ आठ दिव्य परिवार ध्वजाएँ होती हैं—

अट्ठसयं अट्ठसयं एगेगधयाण होंति परिवारा।
वरपंचवण्णदिव्वा मुत्तामणिदामकयसोहा।।

उन लोगों ने प्रसन्न होकर मेरी बात स्वीकार की। तब मैंने कहा—

"इस निर्वाणोत्सव में आप किसी भी विषय में अधिक ऊहापोह या विरोध न कर यदि कार्यों के सम्पन्न करने-कराने में शक्ति लगायेंगे, तो बहुत ही अच्छा रहेगा।"

उन्हें भी यह बात अच्छी लगी।

(पृष्ठ 338-339)

(17) आर्यिका रत्नमती जी की सम्यक्त्व दृढ़ता—

यहाँ ज्येष्ठ की भयंकर गर्मी में आर्यिका श्री रत्नमती माताजी को पीलिया हो गया था। यहाँ पर स्थानीय लगभग 97 की उम्र के वैद्य अतरसेन जैन बहुत ही अनुभवी वैद्य थे। इन्होंने इन माताजी के लिए एक छोटा सा यूनानी नुस्खा बताया था। वही दवा दी जा रही थी। उसी से उन्हें फायदा हुआ। वह नुस्खा यह है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कासनी के बीज 10 ग्राम, सौंफ 5 ग्राम, कालीमिर्च 5 नग, खरबूजे की गिरी 2 ग्राम, लौंग नग 1, बड़ी इलाइची नग 1, मकोय 2 ग्राम। इसको पीसकर पानी की आधा गिलास ठंडाई बनाई जावे, उसमें शक्कर मिलाकर दी जावे।

पुनः भीषण गर्मी के निमित्त से उन्हें फिर पीलिया हो गया। कुल मिलाकर इस गर्मी में उन्हें तीन बार पीलिया हुआ। राजेन्द्र प्रसाद जी (कम्मोजी) कई बार परीक्षण कराने के लिए डाक्टरों को ले आते थे।

एक बार डाक्टर ने कह दिया—

"इनके पीलिया बहुत बढ़ चुकी है, कमजोरी भी बहुत है, अब ये दो-चार दिन ही टिक सकती हैं, बचेंगी नहीं।"

एक बार कम्मोजी कोई एक पीलिया झाड़ने वाले को ले आये। मैंने भी लक्ष्य नहीं दिया। उन्हें कुछ मालूम नहीं था। उनसे श्रावक ने कहा—'माताजी! आप पाँच मिनट बैठ जाइये।'

वे बैठ गईं। झाड़ने वाले ने थाली, जल आदि रखकर कुछ पढ़ा। वे बाद में पूछने लगीं—

"ये कौन था, क्या पढ़ रहा था?"

किसी ने कहा—"यह पीलिया झाड़ने के लिए आया था.....।"

तभी माताजी ने मुझे बुलाया और दुःखित हो बोलीं—

"माताजी! आप दुनिया को तो यंत्र-मंत्र देती रहती हैं पुनः मेरी पीलिया झाड़ने के लिए किस मंत्रवादी को बुला लिया?....मैं सम्यग्दृष्टी हूँ। अजैन मंत्रों का प्रयोग नहीं कराऊँगी, मुझे तो आपके मंत्रों पर ही विश्वास है। आप ही मंत्र पढ़कर झाड़ दिया करो।"

"यह थी उनकी श्रद्धा और इतनी अस्वस्थता में भी इतनी विशेष सावधानी!"

उस दिन से प्रायः अपने लेखन आदि कार्यों से समय निकालकर मैं मंत्र पढ़कर उन्हें पीछी से झाड़ देती थी। इसी से उन्हें आत्मसंतोष हो जाता था। उधर आहार में मात्र वह उपर्युक्त ठंडाई और जरा सा अनार का रस ही ले पाती थीं। धीरे-धीरे उन्हें इसी ठंडाई से लाभ हुआ।

यही ठंडाई, सन् 1985 में मुझे जब पीलिया हो गई थी, तब मेरे लिए जीवन दान देने वाली हुई थी। लीवर की कमजोरी में आज तक मुझे यह ठंडाई आहार में दी जा रही है।

(पृष्ठ 370-371)

(18) धार्मिक नाटक की व्यवस्था कैसी हो?—

आज जैन समाज में सर्वत्र धर्मकथाओं के आधार पर अनेक नाटक दिखाये जाते हैं। आज से 30-40 वर्ष पूर्व समाज में यह प्रथा थी कि या तो नाटक में पुरुष पात्र ही रहते थे, वे ही स्त्री पात्र का अभिनय करते थे या महिलाएँ ही पूरा नाटक खेलती थीं, वे ही पुरुष पात्र बन जाती थीं। आज भी महावीर जी के आश्रम, दिल्ली के बालाश्रम आदि की बालिकाएँ ऐसा ही नाटक करती हैं।

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से कहीं-कहीं कुछ विसंगतियाँ आ गई हैं और चलचित्र (सिनेमा, टेलीविजन) को देखकर कुछ प्रबुद्ध महिलाएँ भी अपनी संस्कृति से चलायमान होती जा रही हैं। मैंने 10 वर्ष पूर्व सुना—"एक महिला ने अपने ही पुत्र-पुत्रियों को अर्थात् सगे भाई-बहनों को पति-पत्नी का पाठ दे दिया।" मैंने बुलाकर उन्हें समझाया, वे बोलीं—"माताजी! ये बालक-बालिकाएँ अभी क्या समझते हैं, अबोध हैं अतः क्या दोष है....?" मैंने कहा—"बाई! जब ये बड़े होंगे, इस नाटक को याद करेंगे तो अपने पति-पत्नी के रूप में फोटो देखेंगे, तो भला क्या सोचेंगे?.....खैर! वे 10-11 वर्ष के लगभग थे ही अतः बहुत छोटे तो नहीं थे। खैर, वे मेरी बात मान गईं और पति-पत्नी का पाठ दो कन्याओं को ही दे दिया। तब मुझे प्रसन्नता हुई।

यहाँ जंबूद्वीप पर मेरे सानिध्य में होने वाले विद्वानों के प्रशिक्षण शिविर एवं सेमिनारों में मैं सदैव कहा करती हूँ—

नाटक में कौन-कौन से स्वाँग वर्जित हैं—

सूत्तत्थपयविणट्ठो मिच्छाइट्ठी हु सो मुणेयव्वो।
खेडे वि ण कायव्वं पाणिप्पत्तं सचेलस्स।।7।। (सूत्र पाहुड़-श्री कुन्दकुन्ददेव)

अर्थ—जो मनुष्य सूत्र के अर्थ और पद से रहित हैं, उसे मिथ्यादृष्टि मानना चाहिए। वस्त्रसहित को क्रीड़ा में—खेल में भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाणिपात्र में भोजन नहीं करना चाहिए। अभिप्राय यह है कि खेल-खेल में दिगम्बर मुनि का वेष एवं चर्या नहीं करनी चाहिए।

इसी प्रकार क्रीड़ा में या नाटक में दिगम्बर मुनि की दीक्षा नहीं दिखाना चाहिए। आर्यिका, क्षुल्लक, ऐलक और क्षुल्लिका भी नहीं बनाना चाहिए। तीर्थंकर का पाठ कराने में दीक्षा के पूर्व के पाठ कराना चाहिए। बाद में स्टेचू या चित्र को रखकर पर्दे के पीछे से पाठ बोलना चाहिए। दीक्षा लेने का भेष किसी भी हालत में नहीं ग्रहण करना चाहिए। यह मयूर पंख की पिच्छी सहित मुद्रा पूज्य है, इसे स्वांग— नाटक में भी कभी नहीं करना चाहिए। इसके विषय में ब्रह्मगुलाल की कथा प्रसिद्ध है, वे स्वांग में मुनि बने, फिर वापस घर नहीं गये, मुनि बन गए।

नाटक में भी बालिकाओं और बालकों को एक साथ नहीं रखना चाहिए। पति-पत्नी का पाठ तो कभी भी किसी को नहीं देना चाहिए। भारतीय नारी स्वप्न में भी यदि किसी को पति कहती है, मान लेती है या मन में भी सोच लेती है, तो उसके शील में दूषण माना जाता है। आजकल कोई प्रबुद्ध लोग भी भाई-बहनों को पति-पत्नी का पाठ दे देते हैं। कहते हैं— ये अभी अबोध हैं, क्या समझेंगे? ऐसी स्थिति देखकर बहुत ही दुख होता है।

क्या कोई भी प्रबुद्ध पुरुष अपनी माँ या पुत्री को हंसी-मजाक में भी पत्नी कहकर सम्बोधित कर सकता है? और यदि ऐसा करता है तो क्या लोग उसे सभ्य या शालीन पुरुष कहेंगे? ऐसे ही पर की स्त्री को नाटक में पत्नी मानना या परपुरुष को नाटक में पति मानना सर्वथा गलत है। ऐसे पाठ या तो कोई पति-पत्नी ही निष्णात हों, तो लेवें या पुरुष-पुरुष ही पति-पत्नी का पाठ करें या बालिकाएँ -बालिकाएँ ही पति-पत्नी बनें, जैसी कि पुरानी पद्धति थी।

आज जो फिल्मों में परम्परा है, वैसी ही परम्परा नाटकों में अपनाई जा रही है, यह भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है।

पंचकल्याणकों में जो भगवान के माता-पिता बनते हैं। प्राय: देखने में आता है कि पिता तो बुद्धिमान रहते हैं और माता संकोची महिला रहती है, तब कोई-कोई प्रतिष्ठाचार्य माता का पाठ बोलने के लिए कोई बालिका या महिला को बिठा देते हैं। विचार करके देखा जाये, तो वह महिला जब अन्य पुरुष को पतिदेव! या स्वामिन्! कहकर सम्बोधन करती है, तब कितना अटपटा और अशोभन लगता है। प्रतिष्ठाचार्यों को भगवान के माता-पिता में तो यह अनर्गलता या विषमता नहीं करनी चाहिए। ऐसे प्रसंग पर तो किन्हीं पति-पत्नी को ही बुलाना चाहिए।

धार्मिक मंच पर और धार्मिक नाटकों में महिलाओं और बालिकाओं को शीलधर्म की शिक्षा देने के लिए इन उपर्युक्त बातों पर ध्यान रखना चाहिए।

(पृष्ठ 489-490)

(19) मंत्र गोपनीय है—

आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज कहा करते थे— **''मत्रि गुप्तभाषणे''** मत्रि धातु गुप्त भाषण अर्थ में है। इसी धातु से मंत्र, मंत्रणा और मंत्री शब्द बने हैं। गुरुदेव का यही कहना था कि मंत्र गुरु से ही लेना चाहिए और उसे गुप्त ही रखना चाहिए। अनुष्ठान के मंत्र को हवन में भी मौन से ही बोलते हुए मात्र 'स्वाहा' का उच्चारण करना चाहिए। इस बात के अनुसार मंत्र ग्रंथों को छपाना मुझे इष्ट नहीं है.....।

गुरुमुख से मैंने कुछ मंत्र सीखे थे, आज उन्हीं को किन्हीं-किन्हीं पापभीरू श्रावकों को दे दिया करती हूँ। खास करके स्वास्थ्य लाभ, घर की शांति और व्यापार लाभ के लिए ही प्राय: लोग आते हैं। गुरुमुख से मैंने सुना है— महामंत्र णमोकार मंत्र तो मातृका मंत्र है, इसे चाहे जैसे व चाहे जिस स्थिति में जपो, यह फलेगा ही फलेगा, माता के समान सुख ही देगा, कभी हानि नहीं करेगा। हाँ! दूसरे बीजाक्षर सहित जो मंत्र होते हैं, उनको यदि अशुद्ध जप ले, तो लाभ की बजाए हानि की भी संभावना रहती है अत: णमोकार मंत्र के सिवाय अन्य मंत्र गुरु से ही लेना चाहिए तथा उन्हें गुप्त ही रखना चाहिए।

(पृष्ठ 538-539)

(20) पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में सूरिमंत्र—

वर्तमान में कई एक वर्षों से पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में मुनियों द्वारा 'सूरिमंत्र' दिया जाने का एक विषय चल पड़ा है। कानजी पंथियों द्वारा करायी जाने वाली प्रतिष्ठाओं के विरोध में यह एक विषय बनाया गया है। मैंने सन् 1952 से देखा है कि आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज या प्रथम आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परंपरा के आचार्यों में यह चर्चा कभी भी नहीं आई थी। आचार्यश्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीरसागर जी महाराज के शिष्य प्रतिष्ठाचार्य संहितासूरि ब्र.सूरजमल जी ने बिना साधु-संघों के भी अनेक प्रतिष्ठाएँ करायी हैं। वे भी कहते थे कि श्री नेमिचंद्र प्रतिष्ठातिलक, पं. प्रवर आशाधर जी कृत प्रतिष्ठासारोद्धार आदि ग्रंथों में कहीं भी ऐसा उल्लेख नहीं है कि 'सूरिमंत्र' दिगंबर आचार्य ही देवें। यदि 'सूरि' अर्थात् आचार्य द्वारा दिया जाने वाला मंत्र ही 'सूरिमंत्र' है, तो उपाध्याय मुनि या सामान्य मुनियों के द्वारा भी 'सूरिमंत्र' नहीं दिलाया जा सकता है। वास्तव में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की सारी क्रियाएँ योग्य प्रतिष्ठाचार्यों द्वारा ही संपन्न करायी जाती है। हाँ! आचार्यसंघ, मुनिसंघ या आर्यिकासंघ आदि को आमंत्रित कर उनका सानिध्य प्राप्त करना यह तो श्रावकों द्वारा कराये गये सभी विशेष अनुष्ठानों में उत्तम है। फिर भी यदि संघ सानिध्य संभव न हो पाए, तो प्रतिष्ठाएं न हों, ऐसी बात नहीं है।

आज तो कई एक कानजीपंथविरोधी विद्वानों ने उन एकांती मुनि विरोधियों का विरोध करते-करते भूत-भविष्यत्कालीन तीर्थंकर प्रतिमा, भगवान पार्श्वनाथ की फणा सहित प्रतिमा एवं भगवान बाहुबली की प्रतिमा की प्रतिष्ठा का ही विरोध कर दिया है, जो कि अत्यन्त गलत है।

(पृष्ठ 583)

(21) वर्षायोग स्थापना में मंगलकलश स्थापना कब से शुरू हुई?—

मैंने बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज, उनके प्रथम शिष्य एवं प्रथम पट्टाचार्य गुरुवर्य श्री वीरसागर जी महाराज, आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज एवं आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज के संघ सानिध्य में वर्षायोग—चातुर्मास स्थापना देखी है एवं उनके साथ स्थापना की है।

इनमें से किन्हीं भी आचार्यों ने एवं आचार्य देशभूषण जी आदि आचार्यों ने चातुर्मास स्थापना के समय मंगलकलश स्थापित नहीं कराया था।

यह परंपरा 8-10 वर्षों में कब और कैसे चली? कुछ श्रावकों के विशेष आग्रह से सन् 1996 आदि में मैंने भी मंगलकलश स्थापना की अनुमति दे दी किंतु मुझे यह परंपरा समझ में नहीं आ रही है अत: अब मैंने 2-3 बार के बाद इसे छोड़ दिया।

मुझे आश्चर्य होता है कि कोई साधु एक मंगल कलश स्थापना करते हैं तो कोई-कोई तीन, सात, नौ, इक्कीस तथा कोई साधु एक सौ आठ मंगल कलश स्थापित करने लगे हैं। उनकी ऊँची-ऊँची बोलियों से ही साधुओं की महानता को आंका जाने लगा है।

सबसे अधिक आश्चर्य तो तब हुआ, जब मैंने स्वयं देखा—एक ग्राम के मंदिर में एक काँचकेस में मंगल कलश रखा था। चातुर्मास के बाद साधु वहाँ से विहार कर चुके थे, फिर भी प्रतिदिन लोग भगवान के दर्शन के बाद उस कलश के आगे चावल चढ़ाकर घुटने टेककर पंचांग नमस्कार कर रहे थे। मैंने पूछा—ऐसा क्यों? तब भक्तों ने कहा—मुझे गुरुदेव की आज्ञा है आदि......।

पोस्टर एवं कुंकुम पत्रिका में भी "चातुर्मास स्थापना समारोह" या "वर्षायोग स्थापना समारोह" न छपाकर "मंगल कलश स्थापना समारोह" छपने लगा है।

यह "मंगल कलश स्थापना" न तो कहीं आचारसार, मूलाचार, भगवती आराधना आदि मुनियों के आचार ग्रंथों में है और न कहीं उमास्वामी श्रावकाचार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, वसुनंदिश्रावकाचार, सागारधर्मामृत आदि श्रावकाचार ग्रंथों में ही है।

अत: मुझे "वर्षायोग स्थापना" के दिन यह मंगल कलश स्थापना करना इष्ट नहीं है और मैं यह जानना चाहती हूँ कि यह परम्परा कब, कैसे एवं किसके द्वारा प्रारंभ की गई तथा अनेक साधुसंघ उसका अनुसरण क्यों करने लग गये?

(पृष्ठ 586)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14,15,16 अप्रैल 2008

पूज्य माताजी के प्रमुख शिष्य-शिष्याओं के संक्षिप्त परिचय

यूँ तो पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने घर से निकलकर मोक्षमार्ग में कदम रखते ही स्वकल्याण के साथ-साथ अनेक शिवपथ के पथिकों को हस्तावलम्बन देकर उन्हें धर्मसंरक्षण प्रदान करना प्रारंभ कर दिया था। उनमें स्व. ब्र. चाँदबाई-लखनऊ, सौ. महिला-स्व.आर्यिका शांतिमती-बाराबंकी, क्षुल्लिका वृषभसेना जी आदि थीं। इसी प्रकार माताजी के कई शिष्य-शिष्याओं में कुछ प्रमुख नाम ऐसे रहे, जिन्होंने इनसे बड़े-बड़े ग्रंथों का अध्ययन कर इनकी प्रबल प्रेरणा प्राप्त कर दीक्षा धारण की तथा अनेकों ने इनकी प्रेरणा से गृहत्याग करके ब्रह्मचर्यव्रत आदि लेकर इनसे सर्वतोमुखी अध्ययन कर एवं अनेक संस्कार-शिक्षाएँ प्राप्त कर आचार्य, मुनि, आर्यिका की पदवी प्राप्त कर स्व-परकल्याण किया है। यथा-ब्र. राजमल जी-स्व. आचार्यश्री अजितसागर महाराज, आचार्य श्री अभिनंदनसागर महाराज (वर्तमान पट्टाचार्य), ब्र. यशवन्त जी-आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज (वर्तमान पट्टाचार्य), ब्र. सुरेश जी-स्व. मुनि श्री संभवसागर महाराज, स्व. मुनि श्री भव्यसागर जी, ब्र. सुरेश जी-मुनि श्री रविनंदी महाराज, ब्र. सुभाष जी (बंडा)-मुनिराज, ब्र. श्रीचन्द जी-स्व. मुनि श्री अमेयसागर महाराज, ब्र. कु. प्रभावती-स्व. आर्यिका श्री जिनमती माताजी, सौ. ब्र. सोनू बाई-स्व. आर्यिका श्री पद्मावती माताजी, ब्र. अंगूरी बाई-आर्यिका श्री आदिमती माताजी, ब्र. रतनी बाई-स्व. आर्यिका श्री श्रेष्ठमती माताजी, ब्र. कु. मनोवती-आर्यिका श्री अभयमती माताजी, ब्र. कु. सुशीला-आर्यिका श्री श्रुतमती माताजी, ब्र. कु. माधुरी-आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, ब्र. कु. शीला-आर्यिका श्री शिवमती माताजी, ब्र. कु. मनोरमा-आर्यिका श्री सम्मेदशिखरमती माताजी, ब्र. कु. कला-आर्यिका श्री कैलाशमती माताजी, स्व. आर्यिका यशोमती माताजी, स्व. आर्यिका श्री संयममती माताजी, ब्र. मोतीचंद जी-पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज, ब्र. श्यामाबाई-स्व. क्षुल्लिका श्रद्धामती माताजी आदि हैं। इनमें से कुछ शिष्य-शिष्याओं के संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

परमपूज्य आर्यिका श्री जिनमती माताजी

लेखिका-श्रीमती मालती शास्त्री, मोरीगेट-दिल्ली

"यदि कल्याण की इच्छा है तो विषयों को विष के समान त्याग देना चाहिए। क्षमा, सरलता, दया, पवित्रता और सत्य को अमृत के समान ग्रहण करना चाहिए" इस तथ्य का बोध महाराष्ट्र प्रान्त की एक बाला को हुआ और वह आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के उपवन का एक सुरभित पुष्प बन गईं। कु. प्रभावती का जन्म वि. सं. 1990 (सन् 1933) फाल्गुन शु. 15 के दिन म्हसवड़ (महा.) में हुआ था, इनके पिता का नाम श्री फूलचंद जैन एवं माता का नाम श्रीमती कस्तूरी देवी था। जैनधर्म के कर्मसिद्धान्तानुसार बालिका प्रभावती के दुर्भाग्य से पितृ एवं मातृ वियोग उन्हें बचपन में ही हो गया अतः उनका लालन-पालन मामाजी के घर पर हुआ था।

सन् 1955 की बात है, उस समय पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, क्षु.वीरमती माताजी के रूप में थीं और चारित्र चक्रवर्ती आचार्यवर्य श्री शांतिसागर जी महाराज के सल्लेखना के समय आचार्य श्री के दर्शनार्थ क्षु. विशालमती माताजी के साथ दक्षिण भारत में विहार कर रही थीं, उन्होंने म्हसवड़ में चातुर्मास किया। उस चातुर्मास के मध्य अनेक बालिकाएँ पूज्य माताजी से कातंत्र व्याकरण, द्रव्य संग्रह, तत्त्वार्थसूत्र आदि ग्रंथों का अध्ययन कर रही थीं और उन्हीं बालिकाओं में वह 22 वर्षीया बालिका कु. प्रभावती भी थी। माताजी ने उसके मनोभावों को जानकर अपने वात्सल्य के प्रभाव से कु. प्रभावती को त्यागमार्ग के प्रति आकर्षित किया और सन् 1955 की दीपावली की पावन तिथि में वीरप्रभु के निर्वाणदिवस पर उन्हें आजीवन ब्रह्मचर्य एवं 10वीं प्रतिमा का व्रत दे दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वास्तव में गुरु का सानिध्य एवं वात्सल्य जीवन को मात्र सुवासित ही नहीं करता अपितु उसे परमपूज्य भी बना देता है। इस विषय में एक दोहा बड़ा प्रसिद्ध है—

गुरु प्रजापति सारिखा, घड़-घड़ काढ़े खोट।
भीतर से रक्षा करे, ऊपर मारे चोट।।

जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता है तो वह मटके पर चोट मारता है लेकिन भीतर में दूसरे हाथ से सहारा भी रखता है, उसी प्रकार गुरु भी एक-एक दोष निकालने के लिए ऊपर से भले ही कठोरता दिखाए पर भीतर में वात्सल्य एवं अपनत्व होता है, जो शिष्य को कुन्दन बनाकर चमका देता है, यही हुआ उस बालिका प्रभावती के साथ। म्हसवड़ से विहार कर पूज्य माताजी ने प्रभावती एवं एक और सौभाग्यवती महिला सोनूबाई को साथ लेकर आचार्यश्री वीरसागर महाराज के संघ में प्रवेश किया और स्वयं आचार्य महाराज से माधोराजपुरा में आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया था तथा ब्र. प्रभावती को क्षुल्लिका दीक्षा दिलाकर जिनमती नामकरण किया और फिर तो उस तपस्विनी माता ने अपनी योग्य शिष्या को छहढाला, द्रव्यसंग्रह से लेकर जैनेन्द्र प्रक्रिया, जैनेन्द्र महावृत्ति, गोम्मटसार, लब्धिसार, मूलाचार, अनगार धर्मामृत, प्रमेय कमल मार्तण्ड, न्यायकुमुदचन्द्र, राजवार्तिक आदि प्रारंभ से लेकर उच्चतम ग्रंथों का मूल से अध्ययन कराकर निष्णात बना दिया।

संघ में यद्यपि न्याय, व्याकरण आदि ग्रंथों का पठन-पाठन बहुत ही अल्प मात्रा में होता था फिर भी न्याय ग्रंथों की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को न्याय ग्रंथों के पठन-पाठन से बड़ा ही प्रेम रहा है अतः वे अपनी सभी शिष्याओं को न्याय के परीक्षामुख से लेकर अष्टसहस्री आदि उच्चतम ग्रंथों का एवं कातंत्र व्याकरण, जैनेन्द्र प्रक्रिया आदि का अध्ययन कराती थीं। क्षु. जिनमती माताजी ने ११ प्रतिमा के व्रतों का परिपालन करते हुए पूज्य माताजी से क्रमशः न्याय, व्याकरण और सैद्धान्तिक ग्रंथों का अध्ययन किया और अपनी कुशाग्रबुद्धि के कारण परम विदुषी हो गईं। ज्ञान और चारित्र की बढ़ती धारा ने महाव्रत धारण की क्षमता उत्पन्न कर दी, परिणाम स्वरूप वि. सं. 2016 (सन् 1961) कार्तिक शु. 4 के दिन सीकर (राज.) के मनोरम समारोह में आचार्यश्री शिवसागर महाराज से जिनमती माताजी ने आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर ली।

आर्यिका श्री जिनमती माताजी प्रारंभ से ही निरन्तर पूज्य माताजी के सानिध्य में ज्ञानार्जन करती रहीं, सन् 1962 में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने सम्मेदशिखर यात्रा के लिए गुरु आज्ञा से संघ से अलग प्रस्थान किया, तब उनके साथ आर्यिका श्री पद्मावती माताजी, आर्यिका श्री जिनमती माताजी, आर्यिका श्री आदिमती माताजी एवं क्षुल्लिका श्री श्रेयांसमती माताजी थीं। पूज्य माताजी में यह विशेषता रही है कि यात्रा के प्रवास में भी अपनी शिष्याओं को सदैव अध्ययन में व्यस्त रखती हैं, उस समय भी वह अपनी शिष्याओं को सदा व्यस्त रखती थीं। 1969-70 में जब पूज्य माताजी अष्टसहस्री का अनुवाद कर रही थीं, उस समय उन्होंने जिनमती माताजी को प्रमेयकमल मार्तण्ड का अनुवाद करने की प्रेरणा प्रदान की, वे प्रतिदिन अनुवाद करके प्रायः दिखाती रहती थीं। उन्होंने उस अनुवाद को पूर्ण कर जब माताजी के करकमलों में समर्पित किया। उस समय माताजी बहुत ही प्रसन्न हुईं। इस प्रकार आर्यिका जिनमती माताजी ने 16 वर्ष तक निरन्तर पूज्य माताजी की छत्रछाया में रहकर सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्ररूपी निधि को प्राप्त किया है।

वास्तव में कोई माता तो केवल जन्म ही प्रदान करती है लेकिन पूज्य गणिनी माताजी ने अपनी सभी शिष्याओं को घर से निकालकर उनको केवल चारित्र पथ पर ही नहीं आरूढ़ किया बल्कि उनके ज्ञान का पूर्ण विकास करके निष्णात बनाया है। कई बार जिनमती माताजी स्वयं भी कहा करती थीं कि गर्भाधान क्रिया से न्यून ज्ञानमती माताजी ही हमारी सच्ची माता और पिता हैं, इनके मेरे ऊपर बहुत ही उपकार हैं। माता की महिमा का वर्णन करते हुए आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने तो यहाँ तक कह दिया कि भगवान भी माता के समान हैं। "मातेव बालस्य हितानुशास्ता" भगवन्! आप माता के समान बालकों के लिए हित का अनुशासन करने वाली हैं, वास्तव में सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र में हाथ पकड़कर लगाने वाले गुरु ही सच्ची माता होते हैं।

पूज्य आर्यिका श्री जिनमती माताजी सदैव पूज्य ज्ञानमती माताजी को ही अपना मूल गुरु मानती थीं, उनकी प्रेरणा से जहाँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्होंने 'प्रमेयकमल मार्तण्ड' ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया, वहीं पूर्व में दी गई प्रेरणा के आधार पर आगे जाकर सन् 1988-89 में मरणकण्डिका का भी अनुवाद किया। भगवती आराधना ग्रंथ की गाथाओं के आधार से श्री अमितगति आचार्य द्वारा रचित संस्कृत श्लोकों की भी हिंदी की है। जिसे कि गणिनी माताजी ने 'भगवती आराधना सार' के नाम से उन्हें अनुवाद करने की प्रेरणा दी थी तथा अन्य कतिपय पुस्तकों का लेखन भी किया है। सन् 1985 में राजस्थान से वे पुनः अपनी गुरु पूज्य माताजी के दर्शनार्थ हस्तिनापुर पधारीं और एक निश्छल बालक की भाँति अनेक वर्षों का अपना सुख-दुःख माँ से कहकर मन शांत किया, कई प्रायश्चित्त ग्रहण किये तथा माताजी की वैयावृत्ति अपने हाथों से करते हुए हार्दिक संतोष एवं प्रसन्नता का अनुभव किया।

सन 1996 में जब पूज्य ज्ञानमती माताजी संघ सहित मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की ओर जा रही थीं तब 3 फरवरी को राजस्थान के 'इन्द्रगढ़' नगर में सूचना मिली कि महाराष्ट्र के 'सांगली' नगर में 31 जनवरी 1996 को जिनमती माताजी की रक्तक्षय के कारण कमजोरी अधिक आ जाने से विधिवत् समाधि हो गई है। सुनकर माताजी को दुःख होना स्वाभाविक था किन्तु तत्त्वज्ञान से चिन्तन करके वैराग्य भावना भाई और अपनी शिष्या के कुछ संस्मरण हम लोगों को सुनाकर गुरु-शिष्य का महत्त्व समझाया।

उन आर्यिका श्री जिनमती माताजी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करती हूँ।

जैन समाज टिकैतनगर के आग्रह पर एक बार मैं वहाँ पर्यूषण पर्व में गया था और उनके गृहस्थी के घर में मुझे उसी स्थान पर ठहराया गया, जहाँ माताजी का स्वध्याय कक्ष था। मुझे बताया गया कि इसी स्थान पर माताजी अपना ज्ञानाभ्यास किया करती थीं, मुझे बड़ी खुशी हुई।

पूज्य माताजी अपने लौकिक ज्ञान को भले ही उतना अधिक न बढ़ा सकी हों, जितना उन्होंने अपने धार्मिक ज्ञान को बढ़ाया है। वे ज्ञान की विविध विधाओं में पारंगत हुईं। क्या व्याकरण, क्या सिद्धान्त, क्या न्याय, क्या दर्शन और क्या साहित्य। प्रतीत होता है कि वे ''सरस्वती की मूर्ति'' हैं। उनके ज्ञान का क्षयोपशम निःसंदेह अद्भुत है।

ज्ञान के क्षेत्र के अलावा तीर्थ प्रचार का भी कार्य उन्होंने ऐसा किया है, जो शताब्दियों तक रहेगा और जन-जन उसे देखकर अपनी श्रद्धा को सुदृढ़ करेंगे। जम्बूद्वीप, सुमेरु आदि आगम-अभिहित तत्त्वों एवं तथ्यों को मूर्तरूप देकर उन्होंने यथार्थता का रेखांकन किया है, जो आरंभ में कुछ लोगों के लिए कर्मोदयवश हास्य-स्थान भी रहा है, किन्तु माताजी ने अपने संकल्प और साहस को नहीं छोड़ा।

उनका व्यक्तित्व ज्यों-ज्यों बढ़ता गया त्यों-त्यों उनमें गंभीरता, विवेचकता और दूरदर्शिता भी बढ़ती गई। इतना ही नहीं, उनका कृतित्व भी उत्तरोत्तर बढ़ता गया। आज वे ज्ञान और वैराग्य में निष्णात होने की ओर उन्मुख हैं। राष्ट्र उनका अभिवंदन करे, यह उचित ही है।

—डॉ. दरबारीलाल कोठिया, बीना (सन् 1992)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमपूज्य आर्यिका श्री आदिमती माताजी

लेखिका-आर्यिका सुबोधमती
(शिष्या-आर्यिका श्री आदिमती माताजी)

यह भारत वसुन्धरा प्रारंभ से ही अनेकानेक ऋषि मुनियों की विहार स्थली रही है। जिस प्रकार समय-समय पर इस भूमि पर तीर्थंकरों तथा अन्य महापुरुषों ने जन्म लेकर तथा धर्म का प्रचार-प्रसार कर इस भारतभूमि को अलंकृत किया है, उसी प्रकार महिलाओं ने भी जन्म लेकर अपने सत्कार्यों द्वारा उच्च आदर्श उपस्थित किया है। परमपूज्य गणिनी 105 आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी जिनके ज्ञान की सुरभि सम्पूर्ण भारतवर्ष में जगह-जगह व्याप्त है। उन्हीं की सुशिष्या परमपूज्य 105 आर्यिकारत्न श्री आदिमती माताजी हैं।

आपका जन्म सन् 1937 में अजमेर नगर में धर्मनिष्ठ श्रेष्ठी श्री जीवनलाल जी के आँगन में मातुश्री भगवान देवी की पवित्र कुक्षि से एक कन्यारत्न के रूप में हुआ। माता-पिता ने प्यार से आपका नाम अंगूरी बाई रखा। जिस प्रकार अंगूर अंदर और बाहर से एक दम कोमल और मधुर रस से परिपूर्ण होता है। उसी प्रकार आप का हृदय भी कोमल और वात्सल्यरस से परिपूर्ण है। आप अपने माता-पिता की सबसे छोटी संतान हैं। धीरे-धीरे आप कुछ बड़ी हुईं, तो आपको अध्ययन के लिए श्री भाग्य मातेश्वरी कन्या पाठशाला में प्रवेश दिलाया। वहाँ पर आपने प्रवेशिका तक अध्ययन प्राप्त किया, उसके बाद करीब 14 वर्ष की अल्प वय में ही आपका शुभ विवाह हुआ। लेकिन विधाता से आपका ये सुख देखा न गया और करीब 19 वर्ष की अल्प आयु में ही आप वैधव्य अवस्था को प्राप्त हो गईं। आप की शुरू से ही धर्म के प्रति अधिक रुचि थी, फिर आपने संसार से विरक्त हो अपने को धर्ममार्ग में लगा दिया। सन् 1957 में श्रेष्ठी श्री हीरालाल जी (निवाई वाले) परमपूज्य 108 आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज को श्री गिरनार जी की यात्रा के लिए ले जा रहे थे। उस समय समस्त संघ का अजमेर में आगमन हुआ, वहीं पर परमपूज्य 105 आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का आपको सानिध्य प्राप्त हुआ। तभी से आपने मन में ये धारण कर लिया कि अब माताजी के साथ ही रहकर धर्म का अध्ययन करूँगी। अतः आपने पूज्य माताजी की छत्रछाया में रहकर धार्मिक अध्ययन प्रारंभ किया तथा माताजी का सानिध्य प्राप्त कर आपका वैराग्य और भी वृद्धिंगत हुआ। सन् 1958 में एक वर्ष तक आपने आरा बाल आश्रम में रहकर संस्कृत प्रथमा की परीक्षा उत्तीर्ण की।

सन् 1959 में 108 आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज का चातुर्मास हुआ। चातुर्मास के अंतर्गत ही पूज्य माताजी के पास रहकर आपने न्याय, व्याकरण, सिद्धान्त शास्त्र आदि अनेक साहित्य ग्रंथों का अध्ययन किया। आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज से सुजानगढ़ चातुर्मास में पूज्य माताजी ने आपको दूसरी प्रतिमा के व्रत दिलवाये। आचार्यश्री ने वहाँ से विहार कर दिया। फिर सीकर के लिए प्रस्थान किया। सन् 1961 में आचार्यश्री का ससंघ चातुर्मास सीकर में हुआ। चातुर्मास के अंतर्गत ही पूज्य माताजी ने आपको नारी जीवन की सर्वोत्कृष्ट आर्यिका दीक्षा दिलायी। आपकी दीक्षा कार्तिक शुक्ला चतुर्थी को हुई। दीक्षा के एक वर्ष पश्चात् ही पूज्य माताजी के साथ आप बंगाल, बिहार, उड़ीसा, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों की यात्रा करते हुए वापस आचार्यश्री के सानिध्य में आ गईं। दिल्ली में 2500वाँ निर्वाण महोत्सव के पहले पूज्य माताजी की प्रेरणा से आपने गोम्मटसार कर्मकाण्ड की टीका प्रारंभ की, यद्यपि माताजी स्वयं इस कार्य को करने में सक्षम थीं, लेकिन उनकी भावना हर समय अपनी शिष्याओं को ज्ञान क्षेत्र में आगे बढ़ाने की रही, उसके बाद भी आपने समयसार कलश (अमृतचन्द्र स्वामी), पतन से बचिये, रत्नकरण्ड श्रावकाचार आदि ग्रंथों की टीका की और पूज्य माताजी की ही प्रेरणा एवं आशीर्वाद से जब माताजी से सलुम्बर में मिलन हुआ, तो आपने भगवती आराधना ग्रंथ की टीका की। पूज्य माताजी के आशीर्वाद से भगवती आराधना ग्रंथ छप कर भी आ चुका है, आपका स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी आप निरन्तर ध्यान, अध्ययन, जप, तप आदि में संलग्न रहती हैं। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आपको स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता रहे, जिससे जिनवाणी सेवा का कार्य निरन्तर चलता रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमपूज्य आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी

लेखिका-ब्र. कु. चन्द्रिका जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

जैन संस्कृति की महान धरोहर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की गृहस्थावस्था की छोटी बहिन एवं माता मोहिनी की पाँचवी कन्यारत्न कु. मनोवती (आर्यिका श्री अभयमती माताजी) का जन्म सन् 1943 में मगशिर शु. पंचमी की पवित्र तिथि में हुआ था।

पुत्र से भी अधिक पुत्रियों को वात्सल्य प्रदान करने वाले पिता श्री छोटेलाल जी ने अपनी इस पुत्री का नाम भी बड़े प्यार से "मनोवती" रखा। माता से प्राप्त धार्मिक संस्कार, गांव का प्राकृतिक वातावरण, घर का स्नेहिल वातावरण, पाठशाला का धार्मिक वातावरण तथा बड़ी बहन मैना का स्नेह, इन सबने बालिका मनोवती के ऊपर गहरी छाप छोड़ी। चूँकि गाँव में 4-5 क्लास तक लौकिक अध्ययन के पश्चात् पढ़ने की कोई सुविधा नहीं थी अतः ग्यारह-बारह वर्ष की उम्र के पश्चात् प्रत्येक बालिका के लिए घर ही विद्यालय था। कु. मनोवती को भी माता मोहिनी घर के कामकाज से फुर्सत पाने के बाद धार्मिक पाठ पढ़ने की प्रेरणा प्रदान करतीं, जिसका प्रतिफल यह निकला कि मनोवती ने भी अपने नाम को सार्थक करने हेतु अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने का संकल्प कर लिया।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के पदचिन्हों पर चलने की उत्कट भावना रखने वाली बालिका मनोवती ने सन् 1952 में बड़ी बहन मैना को संघर्षों पर विजय प्राप्त कर त्यागमार्ग अंगीकार करने का उनका साहस देखा था और उनकी भी अभिलाषा उत्तरोत्तर वृद्धिंगत हो रही थी। किन्तु उन भावनाओं को साकार रूप मिलने की काललब्धि आई सन् 1962 में, जब वह लाडनू (राज.) में अपनी माँ एवं लघु भ्राता रवीन्द्र कुमार के साथ आचार्य श्री शिवसागर महाराज के दर्शनार्थ आईं और पूज्य माताजी के दर्शन किए। फिर क्या था, सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाली, गंभीर मुद्रा, शान्त स्वभावी एवं धार्मिक अध्ययन को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानने वाली कु. मनोवती माँ के लाख समझाने के बावजूद दृढ़तापूर्वक आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत लेकर पूज्य ज्ञानमती माताजी के पास अध्ययन करने लगीं। सन् 1962 में पूज्य माताजी ने आचार्यश्री शिवसागर महाराज की आज्ञा से अपनी 4 शिष्याओं (आर्यिकाओं) के साथ शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर की ओर विहार किया उस समय कु. मनोवती भी ब्रह्मचारिणी अवस्था में माताजी के साथ थीं।

चूँकि साधु और श्रावक धर्मरूपी गाड़ी के दो पहिए हैं और इन दोनों के परस्पर पूरक होने से ही संसार और मोक्ष की व्यवस्था चलती है। बिना श्रावक के साधु और बिना साधु के श्रावक की गाड़ी सुचारू रूप से नहीं चलती है और साधु के विहार में कुशल संघ संचालक की भी आवश्यकता होती है। उस सम्मेदशिखर यात्रा के समय कु. मनोवती ने ब्र. श्री सुगनचंद जी एवं अपने छोटे भाई श्री प्रकाशचंद जी के साथ कुशलतापूर्वक संघ संचालन किया। जगह-जगह के प्राकृतिक वातावरण में आत्मसाधना करते हुए संघ छः माह में सम्मेदशिखर पहुँच गया। 20 तीर्थंकरों तथा करोड़ों मुनियों की निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर की परम पूज्य धरा के दर्शन व विशाल पर्वत की वंदना कर सभी साधु पुण्य अर्जित करने लगे, उस समय ब्र. मनोवती जी ने भी तीर्थ पर रहकर गिरिराज की अनेक वंदनाएं कीं।

सन् 1963 में पूज्य माताजी का चातुर्मास कलकत्ता में हुआ, उस समय माताजी की आज्ञानुसार वह गिरनार यात्रा के लिए गईं। उस समय यह बार-बार माताजी से दीक्षा हेतु आग्रह करती थीं, वैसे कु.मनोवती के मन में दीक्षा लेने की तीव्र अभिलाषा आने के बाद माताजी ने हैदराबाद की ओर मंगल विहार किया और उनकी दीक्षा हेतु अति उत्कृष्ट भावना को देखते हुए पूज्य माताजी ने उनको क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की। उस समय ब्र. मनोवती जी की दीक्षा का अद्भुत एवं अद्वितीय दृश्य हैदराबाद के इतिहास का अविस्मरणीय पृष्ठ बन गया और "क्षुल्लिका अभयमती जी" के रूप में आपको पाकर हर्षित हो उठा। चातुर्मास के बाद संघ विहार करके श्रवणबेलगोला भगवान बाहुबली के श्रीचरणों में पहुँचा। उस प्रथम पदयात्रा से इन्हें विशेष शारीरिक कष्ट हुआ, चूँकि प्रारंभ से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही स्वास्थ्य की दृष्टि से यह कमजोर थीं अतः गंभीररूप से बीमार हुईं लेकिन पूज्य माताजी के आशीर्वाद तथा भगवान बाहुबली की छत्रछाया में स्वास्थ्य लाभ करते हुए माताजी के साथ अध्ययन और रत्नत्रय साधना में निमग्न रहीं। सन् 1969 में माताजी संघ सहित श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र में आचार्य श्री शिवसागर महाराज के सानिध्य में आयोजित होने वाली पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में पहुँची। उस समय विधि के अनहोने प्रसंग से आचार्यश्री बीमार पड़ गए और देखते ही देखते फाल्गुन वदी अमावस्या को वह दिव्यात्मा इस नश्वर शरीर का त्याग कर अविनश्वर सुख में विलीन हो गई, इस आकस्मिक निधन से समस्त संघ को गहरा धक्का लगा और सभी साधु निराश हो गए किन्तु "विधि के विधान को कोई टाल नहीं सकता" और साधु के मरण को भी महोत्सव संज्ञा मान आगम की आज्ञानुसार अपनी चर्या में संलग्न रहते हुए चतुर्विध संघ ने मिलकर मुनि धर्मसागर जी महाराज को फाल्गुन सुदी अष्टमी को आचार्यपट्ट प्रदान किया और आचार्यश्री ने भी कुशलतापूर्वक संघ का दायित्व निर्वहन करते हुए पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई। उसी दिन फाल्गुन शु. अष्टमी को आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के करकमलों से कई दीक्षाएं सम्पन्न हुईं, जिसमें क्षुल्लिका श्री अभयमती माताजी को आर्यिका अभयमती माताजी के रूप में आचार्य श्री ने प्रथम आर्यिका दीक्षा प्रदान की थी, तब से लेकर आज तक पूज्य आर्यिका श्री अभयमती माताजी अपने आत्मकल्याण के साथ-साथ परकल्याण में भी संलग्न हैं।

आर्यिका चर्या का आगमोक्त परिपालन करते हुए आपने भारत के अनेक नगरों में पदविहार कर धर्म की गंगा बहाई है, जिसमें कई वर्षों तक बुंदेलखण्ड की यात्रा करते हुए आपने कई एक महिला मण्डल एवं स्वाध्याय मण्डल की स्थापना की, साथ ही कई पुस्तकों का लेखन व पद्यानुवाद कार्य भी किया। सदैव चारित्र में दृढ़ रहते हुए आज भी वह अपने संयम पालन में पूर्णरूपेण सजग हैं तथा अपने कमजोर शरीर से भी आर्यिका चर्या का पालन कर रही हैं अतः आपके इन्हीं सब गुणों को देखते हुए पूज्य माताजी ने आपको समय-समय पर "आर्यिकारत्न" एवं "चारित्रश्रमणी" की उपाधि से अलंकृत किया है।

वस्तुतः ऐसी महान गुणों की धारक पूज्य माताजी सदैव दीर्घायु रहते हुए अपना वरदहस्त हम सब पर बनाए रखें, यही वीरप्रभु से मंगल प्रार्थना है।

पूज्य माताजी ने जब क्षुल्लिका दीक्षा ली तब आपका नाम "वीरमती" रख दिया, मानो इस नाम की प्रेरणा भगवान् महावीर से ही मिली हो। इसके बाद माताजी ने आर्यिका दीक्षा ली, तब आपका नाम 'ज्ञानमती' रखा गया। इस नाम के साथ ही पूज्य माताजी ने ज्ञान (सरस्वती) की उपासना प्रारंभ कर दी। पूज्य माताजी का स्वाध्याय और अध्ययन इतना वृद्धिंगत हुआ मानो सरस्वती स्वयं ही आकर उनके हृदय में विराजमान हो गई। साध्वी जगत् में विद्वत्ता के नाते आज माताजी का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। व्याकरण, साहित्य, दर्शन, छंद आदि शास्त्रों का आपको तलस्पर्शी ज्ञान है। आपके प्रवचन बड़े प्रभावक एवं मधुर होते हैं। आप हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़ आदि अनेक भाषाओं की पारंगत विदुषी हैं। आपने अपनी ज्ञान गरिमा से अनेक त्यागियों, साध्वियों एवं श्रावकों का उपकार किया। प्राचीन काल में जो साहित्य लिखा गया, वह या तो आचार्य रचित है अथवा साधु और विद्वानों के द्वारा रचित है-किसी स्त्री या साध्वीकृत कोई रचना या ग्रंथ उपलब्ध नहीं। माता ज्ञानमती जी ने अपनी बौद्धिक प्रतिभा से जो आर्ष ग्रंथों की रचना की है, वह तो अद्वितीय ही है, लेकिन संस्कृत में भी बहुत सुन्दर रचनाएँ की हैं।

—डॉ. लाल बहादुर शास्त्री, दिल्ली (सन् 1992)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

प्रस्तुति-ब्र. कु. स्वाति जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

"वात्सल्य की अविरल धारा, जिनमें बहती नित है,
गुरुभक्ति की प्रबल भावना, जिनमें सदा निहित है,
सामंजस्य प्रेम मैत्री जो, सिखलाती नित-प्रति हैं,
ऐसी माँ "चंदनामती' जी, नित ही अभिवंदित हैं।"

अनंतानंत जीवों से परिपूरित संसार सागर में जो विरले जीव जन्म-मरण के कुचक्र से छूटकर शाश्वत सुख की प्राप्ति के प्रयास में संलग्न होते हैं, वे ही अपने जीवन को भी सफल करते हैं और अन्य जीवन रूपी दीपकों को प्रकाशित करने में भी निमित्त बनते हैं। ऐसा ही एक मधुरिम व्यक्तित्व है— प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का, जो जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की अनन्य समर्पित शिष्या होने के साथ-साथ अपेन वात्सल्यमयी व्यवहार से सभी पर अपनी अमिट छाप छोड़ने में सक्षम हैं। किसी भव्य जीव को जिनेन्द्र भगवान प्रणीत शाश्वत मोक्षमार्ग के प्रति आसक्त करने में जो प्रयासरत रहे, वास्तव में वह स्तुत्य है, क्योंकि अनादिकाल से जीव ने न जाने किन-किन भौतिकताओं में बंधकर स्वयं को कल्याण के पथ से वंचित रखा है।

जन्म, शिक्षा एवं वैराग्य पथ पर बढ़े बाल कदम—

बाराबंकी जिले के टिकैतनगर ग्राम में 18 मई सन् 1958, ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या को गणिनी ज्ञानमती माताजी जैसे महान रत्न को प्रसूत करने वाली माता मोहिनी की कोख से 12वीं संतान के रूप में जन्म लेने वाली "कु. माधुरी" बालपन से ही पिता श्री छोटेलाल जी सहित समस्त परिवार एवं परिजनों की लाडली बिटिया के रूप में सर्वप्रिय थीं। माँ ने दूध पिलाने से लेकर पालन-पोषण करने तक प्रत्येक संतान पर अभिन्न धार्मिक संस्कार तो डाले ही थे, जिससे कु. माधुरी भी अछूती नहीं रहीं।

तीक्ष्ण बुद्धि वाली इस बालिका ने लौकिक शिक्षा की ओर कदम बढ़ाये तो सदैव अपनी सहेलियों सहित समस्त शिक्षक वर्ग को भी विशेष प्रभावित करते हुए क्रमशः मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। अकादमिक उपलब्धियाँ कु. माधुरी की प्रतिभा से कहीं भी परे नहीं थीं, तथापि शाश्वत उन्नति का मार्ग इस कन्यारत्न के भविष्य का निर्माता बनकर समक्ष खड़ा था अतः उसी होनहार के अनुरूप अपनी बड़ी बहन कु. मैना के "आर्यिका ज्ञानमती माताजी" के रूप में दर्शन प्राप्त कर वैराग्य को प्राप्त इस बालिका ने मात्र 13 वर्ष की अल्प आयु में सन् 1971 में सुगंधदशमी के दिन अजमेर में उनसे आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर लिया। जिस आयु में बालक-बालिकाएँ खाने-खेलने में ही संलग्न रहते हैं, उस अल्पवय में बालब्रह्मचर्य व्रत को धारण करना कु. माधुरी के स्वर्णिम भविष्य का ही परिचायक था। माता मोहिनी की सन्तानों ने ये विशिष्ट धार्मिक संस्कार मानों विरासत में ही पाये थे।

धार्मिक अध्ययन एवं गुरुसेवा को बनाया जीवन—

वैराग्यपथ पर बढ़ चली इस बाला ने अब धार्मिक अध्ययन एवं गुरु सेवा को ही अपना प्रमुख लक्ष्य बना लिया। शास्त्री, विद्यावाचस्पति इत्यादि धार्मिक शिक्षा को प्राप्त करते हुए आपने जैनागम संबंधी हजारों गाथाएँ, श्लोक इत्यादि कंठाग्र करके अपनी मेधा शक्ति का परिचय प्रदान किया। वस्तुतः इस क्षयोपशम विशेष के अतिरिक्त अविरल सेवा भावना, पूर्ण अनुकूलता, वैयावृत्ति, परिपूर्ण समर्पण, संघ में सभी के प्रति वात्सल्यमयी सौहार्दभाव इत्यादि गुणों से आपने पूज्य माताजी को विशेष प्रभावित किया था। 'गुरु यदि दिन को रात कहें तो रात, यदि रात को दिन कहें तो दिन' इस भावना का परिपालन करने वाली कु. माधुरी शास्त्री ने क्रमशः 18 वर्षों तक ब्रह्मचारिणी अवस्था में रहकर पूज्य माताजी की भरपूर सेवा की। विशेष बात यह थी कि अध्ययन के साथ-साथ लेख, भजन, पूजन, चालीसा इत्यादि लिखने का प्रवाह भी निरंतर चलता रहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका दीक्षा से बनी 'चंदनामती'—

चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की गुरु परम्परा में प्रविष्ट भव्य जीव संयम धारण करना अपना आभूषण समझते हैं, तद्नुसार राजधानी दिल्ली में पूज्य ज्ञानमती माताजी से सन् 1982 में दो प्रतिमा के व्रत एवं हस्तिनापुर में सन् 1987 में सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग के व्रतों को क्रमशः धारण करते हुए आपने नारी जीवन के सर्वोत्कृष्ट पद की प्राप्ति के क्रम में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में श्रावण शुक्ला ग्यारस, 13 अगस्त 1989 को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के करकमलों से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर ''आर्यिका चन्दनामती'' नाम प्राप्त किया। आर्यिका श्री रत्नमती माताजी एवं आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी रूप शिल्पियों से सुसंस्कारित, व्यवहार में मांधुर्य गुण की धनी 'माधुरी' जी को अपने शिष्ट आचरण के अनुरूप ही नाम प्राप्त हुआ था।

प्रभावी लेखनी से सुसज्जित व्यक्तित्व—

आपकी लेखनी बाल्यकाल से ही अत्यंत प्रभावी, ओजपूर्ण एवं सारगर्भित रही है, पद्य लेखन आपके लिए क्षणों का काम रहता है अतः अब तक आप सैकड़ों भजन, आरती, चालीसा, पूजन, स्तुति, मुक्तक इत्यादि का लेखन कर चुकी हैं। समयसार के कलश काव्यों का पद्यानुवाद, भक्तामर विधान, नवग्रहशांति विधान, मनोकामना सिद्धि महावीर विधान, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, महावीर स्तोत्र की संस्कृत-हिन्दी टीका, ज्ञानज्योति की भारत यात्रा, अवध की अनमोल मणि, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, ज्ञान रश्मि (पूज्य ज्ञानमती माताजी के प्रवचनों का संकलन) इत्यादि कितनी ही कृतियाँ आपके ज्ञानगुण को प्रदर्शित करने में सक्षम हैं। आर्यिका रत्नमती अभिनंदन ग्रंथ, आचार्यश्री वीरसागर स्मृति ग्रंथ, गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती अभिनंदन ग्रंथ, कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी जैन शब्दकोश इत्यादि ग्रंथों का समायोजन आपके कठोर परिश्रम का ही सुफल है। आपका सृजनात्मक मस्तिष्क धर्मप्रभावना के नये-नये आयामों को साकार धरातल देते हुए सदैव उत्साहपूर्ण होकर पठन-पाठन-लेखन में ही दत्तचित्त रहता है, यह गुण आपने अपनी महान गुरु पूज्य ज्ञानमती माताजी से विरासत में ही प्राप्त किया है। आप मात्र वार्तालाप के स्थान पर सदैव कार्यरत रहने की नीति में ही विश्वास रखती हैं, जो विशेष अनुकरणीय है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के मुखपत्र 'सम्यग्ज्ञान' का समायोजन भी प्रतिमाह आपके द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है। वर्तमान में आप महान सिद्धांत ग्रंथ 'षट्खण्डागम' की पूज्य ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित सिद्धांतचिंतामणि टीका के हिंदी अनुवाद के कार्य में संलग्न हैं, हिन्दी टीका सहित दो पुस्तकों का प्रकाशन भी सम्पन्न हो चुका है। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं की विद्वान पूज्य माताजी द्वारा जिनवाणी की जो विशिष्ट सेवा की जा रही है, वह निःसंदेह ही सभी के लिए पथ प्रदर्शन का कार्य करेगी।

वक्तृत्व कला की धनी पूज्य माताजी—

पूज्य चंदनामती माताजी के विशिष्ट गुण के रूप में अवस्थित है उनकी वक्तृत्व एवं गायन क्षमता। आपकी ओजपूर्ण एवं प्रभावक प्रवचन शैली से श्रोता प्रभावित हुए बिना रह नहीं पाता है और जिन संस्कृति तथा गुरु परम्परा के प्रति अनुरक्त होकर ही प्रवचनसभा से उठता है। पूज्य ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित भक्ति विधानों की पूजा को जब आप अपनी मधुर आवाज में सम्पन्न कराती हैं तो सभी भक्तगण जिनेन्द्र भगवान की भक्ति के रस का वास्तविक आस्वादन कर हर्ष विभोर हो उठते हैं।

गुरुभक्ति की विशिष्ट भावना—

पूज्य चंदनामती माताजी छाया की भाँति पूज्य ज्ञानमती माताजी के साथ रहते हुए उनकी प्रत्येक कार्ययोजना में सहभागी बनकर अपना सौभाग्य समझती हैं, अयोध्या-मांगीतुंगी-प्रयाग-कुण्डलपुर (नालंदा) इत्यादि तीर्थों के विकास एवं सभी राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों को अपनी गुरु की भावना के अनुरूप सफलता के उच्च शिखर तक पहुँचाने हेतु आप हर क्षण प्रयत्नशील रही हैं, वस्तुतः ऐसे शिष्यरत्न ही अपने भविष्य को भी उज्ज्वल बना लेते हैं। स्वयं में प्रतिभा की परिपूर्णता होते हुए भी ख्याति-पूजा-लाभ की कामना से अपना अलग व्यक्तित्व बनाने की किसी आकांक्षा ने आपको स्पर्श नहीं किया है, यह विशेष अनुकरणीय बात है। वरन् जैसे-जैसे आपकी प्रतिभा में निखार आया है, वैसे-वैसे पूज्य माताजी के प्रति आपके समर्पण की भावना में अभिवृद्धि ही हुई है। संघस्थ सभी शिष्य-शिष्याओं को पूज्य ज्ञानमती माताजी की ज्ञान एवं चारित्र रश्मियों के प्रति अधिकाधिक समर्पित होने की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिक्षा ही आपसे सर्वदा प्राप्त हुआ करती है, जो उनकी अनन्य गुरुभक्ति का ही परिचायक है। सभी के बीच सामंजस्य कैसे स्थापित हो, सभी लोग प्रसन्नचित्त होकर गुरुआज्ञा के पालन में कैसे निरत रह सकें, यही प्रयास वह सदैव किया करती हैं। यही कारण है कि हृदय के समस्त मनोभावों को आपके समक्ष व्यक्त करके सभी को विशेष संतुष्टि की अनुभूति होती है।

गुरु परम्परा की कट्टर पोषक—

पूज्य ज्ञानमती माताजी के साथ हजारों कि.मी. की पदयात्रा करके आपने जनमानस में अहिंसा, शाकाहार, सदाचार की भावनाओं को आरोपित करने का विशेष पुरुषार्थ किया है, जो कि आज के समाज की प्रमुख आवश्यकता है। जैन युवावर्ग को मांसाहार से सर्वदा दूर रहने एवं रात्रि भोजन के त्याग की विशेष प्रेरणाएँ आपसे सदैव प्राप्त हुआ करती हैं। चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की गुरु परम्परा के प्रति आपका विशेष समर्पण सदा से रहा है, अत: अपने सानिध्य में आने वाले प्रत्येक बालक-बालिका पर इस गुरु परम्परा के संस्कार डालने में आपको विशेष आनंद की प्राप्ति होती है। वास्तव में भौतिकता की होड़ में नेत्र बंद कर दौड़ रहे युवावर्ग को यदि कोई वात्सल्यपूर्ण भव्य जीव शाश्वत धर्म के मार्ग के प्रति अनुरक्त करता है, तो इसे विशेष सौभाग्य ही मानना चाहिए।

प्रज्ञाश्रमणी पद से अलंकृत—

आपकी प्रखर मेधा एवं इस गुण-विभूषित व्यक्तित्व के सम्मानार्थ पूज्य ज्ञानमती माताजी ने सन् 1997 में राजधानी दिल्ली में आयोजित विशाल कल्पद्रुम महामण्डल विधान के समापन अवसर पर आपको **'प्रज्ञाश्रमणी'** की उपाधि से अलंकृत किया। पुनश्च आप सदा यही कहा करती हैं कि पूज्य ज्ञानमती माताजी का वात्सल्यमयी वरदहस्त ही मेरे जीवन की सबसे बड़ी सौगात है और इन्हीं गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञानामृत ने ही मेरा शृँगार किया है अत: इस महान जिन संस्कृति, तीर्थ संरक्षण एवं गुरुसेवा में मेरे शरीर का रोम-रोम भी समर्पित होकर काम आ जाये, तो वह ही मेरे लिए सर्वाधिक आनंददायी अनुभूति है।

ऐसे आदर्श व्यक्तित्व को धारण करने वाली पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी प्रतिक्षण साधना के उच्च सोपानों पर आरोहण करते हुए कतिपय ही भवों में रत्नत्रय की पूर्ण विशुद्धि के साथ मोक्षलक्ष्मी का वरण करें, यही मंगलभावना है। साथ ही जिनेन्द्र प्रभु से यह प्रार्थना भी है कि जिन परमपूज्य प्रात:स्मरणीय राष्ट्रगौरव गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं परमपूज्य श्री चंदनामती माताजी की जो महान उपकारी छत्रछाया मुझे प्राप्त हुई है, वह मोक्षप्राप्ति तक रक्षाकवच की भाँति मुझे सांसारिक विषय भोगों से पूर्णतया रक्षित करते हुए जिनशासन में अवगाहन के योग्य बनाएँ, ताकि एक दिन ऐसा आ सके कि अपने अनंत चतुष्टय में निमग्न होकर सदैव के लिए मेरे चतुर्गति परिभ्रमण की भी निवृत्ति हो सके।

"देखो! महिलायें रोटी बनाती हैं, तवे पर डालती हैं, उलट-पलट देती हैं, झट से फूल जाती है। उनके दो भाग हो जाते हैं। फिर ये कुशल महिलायें जब दोनों तरफ पक जाती हैं तब उतारकर नीचे अंगारे पर डाल देती हैं और वह उसकी राख को झाड़ने के लिए चूल्हे के ऊपर एक तरफ पटक देती हैं। अनन्तर उसमें घी चुपड़ कर आपको खाने को दे देती हैं। वह रोटी आपको स्वादिष्ट लगती है और स्वास्थ्य के लिए भी अच्छी रहती है। उसी प्रकार से पहले इस शरीर सहित आत्मा को बाह्य-अभ्यंतर तप में पका लो, फिर उपसर्ग-परीषह आदि अग्नि पर पड़ते ही या ध्यान रूपी अग्नि में पड़ते ही उसके दो भाग हो जाते हैं अर्थात् "आत्मा भिन्न है और शरीर भिन्न है" ऐसा अनुभव होने लगेगा पुन: वह भेद-विज्ञान तुम्हें आत्मा से उत्पन्न परमानंदरूपी अमृत का स्वाद दिलायेगा और तुम्हें शरीर से भिन्न कर—छुड़ाकर शाश्वत स्वस्थता प्राप्त करा देगा।"

(मेरी स्मृतियाँ, पेज ४५)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज

—डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन 'वास्तु सलाहकार', भोपाल (म.प्र.)

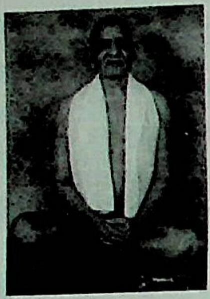

गुरु और शिष्य के उपकार तथा कृतज्ञता के सम्राट चन्द्रगुप्त और एकलव्य जैसे अनेकों उदाहरण हमें प्राचीन इतिहास में मिल जाते हैं किन्तु आज के पंचमकाल में जब भौतिकता की चकाचौंध में डूबा और स्वार्थ में अंधा व्यक्ति रिश्ते नातों को भी भूलकर अपने में मग्न है तब वर्तमान में हमें बिरले ही ऐसे व्यक्ति मिलेंगे, जिन्होंने अपने जीवन में कृतज्ञता का अद्वितीय आदर्श उपस्थित किया हो।

ऐसे ही विरले व्यक्तियों में से एक, गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सुयोग्य शिष्य परमपूज्य पीठाधींश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष रूप में हमारे सम्मुख है, जिन्होंने प्रारंभ से ही गुरु के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित कर अपने कर्त्तव्य का परिपालन करना अपने जीवन का ध्येय बनाया और उसमें सदा सफल भी रहे हैं। गुरु के द्वारा रात को दिन कहने पर दिन मानने वाले पूज्य पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज में कृतज्ञता के साथ-साथ सहिष्णुता गुण भी विशेष है और ये दोनों गुण बहुधा एक व्यक्ति में मिलना दुर्लभ ही है। अगर हम यह कहें कि पूज्य क्षुल्लक जी के इन्हीं गुणों के कारण आज हमें विश्व की अद्वितीय और नयनाभिराम कृति जम्बूद्वीप रचना के दर्शन हो रहे हैं, तो शायद यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

गुरुभक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करने वाले पूज्य श्री का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने का मेरा यह लघु प्रयास है क्योंकि ऐसे व्यक्तित्व का तो पूरा जीवन ही एक इतिहास होता है।

जन्म—मध्यप्रदेश की धर्मपरायण नगरी सनावद में श्रेष्ठी श्री अमोलकचंद जी सर्राफ की धर्मपत्नी सौ. रूपाबाई ने आश्विन वदी चतुर्दशी, सोमवार वि.सं. 1986, 30 सितम्बर 1940 ई. के दिन एक पुत्ररत्न को जन्म दिया, जिसका नाम उन्होंने बड़े प्यार से 'मोतीचन्द' रखा। बड़े पुत्र के रूप में जन्में मोतीचंद के 3 भाई और 3 बहनों में बड़ी 2 बहनें सौ. गुलाब बाई, चतुरमणी बाई व छोटी बहन सौ. किरणबाई हैं तथा छोटे भाई इन्दरचंद, प्रकाशचंद हैं व एक सबसे छोटे भाई अरुण कुमार का कुछ वर्ष पूर्व ही स्वर्गवास हो चुका है। आपके परिवार का मूल व्यवसाय सर्राफे का व्यापार है। वर्तमान में आपके दोनो लघु भ्राता श्री इन्दरचंद जी, श्री प्रकाशचंद जी अपने पैतृक व्यवसाय को कुशलतापूर्वक करते हुए अपनी गृहस्थी का संचालन कर रहे हैं।

वैराग्य एवं ब्रह्मचर्यव्रत—इतने सम्पन्न परिवार के मध्य रहते हुए भी मोतीचंद जी को सांसारिक वैभव में रंचमात्र भी रुचि नहीं रही फलतः सन् 1958 में 18 वर्ष की लघुवय में इन्होंने स्वरुचि से जिनप्रतिमा के सम्मुख आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर लिया। चूँकि प्रत्येक माता-पिता पुत्र जन्म के साथ ही यह सुखद स्वप्न संजोते हैं कि मेरा बेटा बड़ा होकर घर के सभी कार्यभार को संभालते हुए विवाह कर गृहस्थी का कुशलतापूर्वक संचालन करे और सदा खुश रहे अतः घर वालों को पता लगने पर उन्होंने मोतीचंद जी को बहुत प्रकार से समझाया किन्तु दृढ़तापूर्वक अपने पथ का चयन कर लेने वाले अपने सुयोग्य पुत्र को जब वे नहीं समझा सके, तब पिता ने व्यापार का सम्पूर्ण भार इन पर छोड़ दिया। 9 वर्षों तक व्यापार के कार्यों में रचे-पचे रहने पर भी वे सदैव चक्रवर्ती वज्रनाभि की वैराग्य भावना का चिंतन करते हुए अपने में दृढ़ रहे।

धार्मिक कार्यकलाप—ब्र. मोतीचंद जी का गृहस्थ जीवन बड़ा सुकुमाल था अतः ब्रह्मचर्यव्रत होते हुए भी इनके मन में कभी साधु संघ में रहने का विचार नहीं आया। व्यापार के साथ ही यह अपनी रुचि से सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदा अग्रणी रहे। समय-समय पर धार्मिक झांकियों व नाटकों के माध्यम से समाज में धार्मिक अभिरुचि को जागृत करते हुए आप स्वयं भी नाटकों में भाग लेते थे। एक बार नाटक में किया गया निकलंक के पात्र का अभिनय आपके जीवन में अमिट छाप छोड़ गया कि संघर्षों में भी अपने पथ से विचलित नहीं होना व्यक्ति को उन्नति के शिखर पर ले जाता है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रुचि रखने के साथ-साथ ये रात्रि में शास्त्रसभा एवं पाठशाला का संचालन भी करते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संघ में प्रवेश व धार्मिक शिक्षण—आपके जीवन में एक नया अध्याय तब जुड़ा जब सन् 1967 में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का ससंघ चातुर्मास सनावद में हुआ। यहाँ यह लिखना प्रासंगिक होगा कि मोतीचंद जी स्वधर्मी बंधुओं का पूरा ध्यान रखते थे, जो संस्कार आज भी उनमें विद्यमान हैं। जब पूज्य माताजी का संघ सनावद से 18 किलोमीटर दूर बेड़िया ग्राम पहुँचा, वह दिन रविवार का था। मुझे ऐसा लगता है कि पूज्य क्षुल्लक से मेरा कोई पूर्व जन्म का संबंध रहा होगा अत: मुझे दुपहर में घर से बुलाकर पूज्य माताजी का सनावद की ओर आने का प्रोग्राम मालूम करने के लिए भेजा। उस समय हमारे पास किराये के लिए पैसे नहीं थे तब भाई सा. ने दो रुपये देकर मुझे पूज्य माताजी के पास भेजकर मेरे जीवन की दिशा बदलने का जो उपकार किया है वह ऋण मैं अपने इस जन्म में शायद ही चुका पाऊँ। उसके 2 दिन बाद जब माताजी का संघ सनावद आया, तब से आप पूज्य माताजी के संघ से पूर्णत: जुड़े रहे और उस 7 माह में पूज्य माताजी ने इन्हें घर से निकालने का प्रयास प्रारंभ किया। पूज्य माताजी का कहना रहा कि जब तुम्हें आजीवन ब्रह्मचर्य दिया है, तो गृहस्थी का प्रपंच छोड़ो और सर्वप्रथम सनावद में ही इन्हें गोम्मटसार जीवकाण्ड आदि ग्रंथों का अध्ययन कराना प्रारंभ किया। पूज्य माताजी की शिक्षाप्रद नीतियों से प्रभावित होकर सन् 1968 में मोतीचंद जी अध्ययन के उद्देश्य से संघ में आए और तभी से माताजी की विशेष प्रेरणा और आचार्यश्री शिवसागर महाराज का स्नेह प्राप्त कर संघस्थ शिष्य के रूप में रहने लगे। अध्ययन के फलस्वरूप मात्र 3-4 वर्षों के अन्दर ही इन्होंने शास्त्री व न्यायतीर्थ की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर लीं, तब से आज तक माताजी के पास रहकर आप चारों अनुयोगों के स्वाध्याय में संलग्न हैं।

जम्बूद्वीप रचना का श्रेय—सन् 1965 में माताजी के मस्तिष्क में जम्बूद्वीप रचना की योजना आई, जिसे साकार करने हेतु माताजी के निर्देशानुसार कई स्थानों का निर्णय हुआ किन्तु जिस भूमि पर इसका योग था रचना का निर्माण वहीं हुआ। सन् 1967 में हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना निर्माण के समय आपने माताजी को यह वचन दिया कि "मैं तन-मन-धन से इस योजना को साकार करूँगा, आपके संयम में किसी प्रकार की बाधा नहीं आने दूँगा" और उन्होंने अपने वचनों का पूर्णरूपेण पालन करके अथक परिश्रम पूर्वक हस्तिनापुर की पावन धरा पर जम्बूद्वीप रचना को साकार रूप दिया।

ज्ञानज्योति रथ के साथ भारत भ्रमण—4 जून 1982 को भारत की राजधानी दिल्ली के लालकिला मैदान से पूज्य माताजी के आशीर्वाद व तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी के कर-कमलों से प्रवर्तित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ के 1045 दिन तक हुए भारत भ्रमण के मध्य आपने लगभग पूरे हिन्दुस्तान में अहिंसा व जैनधर्म के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करते हुए कुशलतापूर्वक ज्ञानज्योति का प्रवर्तन कराया।

दीक्षा की ओर बढ़ते कदम—माताजी इनकी सुकुमारता देखकर कभी इन्हें त्याग की प्रेरणा नहीं देती थीं किन्तु इन्होंने प्रारंभ से ही स्वरुचि से शोध का भोजन करना प्रारंभ किया और सन् 1981 से 85 तक नमक और मीठा इन दोनों सुस्वादु रसों का त्याग कर दिया था। इनका यह अभ्यास त्यागमार्ग की उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए ही था, यही कारण है कि 4-5 वर्षों से दीक्षा हेतु आतुर मोतीचंद जी को जम्बूद्वीप रचना निर्माण की पूर्णता के बाद माताजी ने दीक्षा हेतु सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

जम्बूद्वीप स्थल पर प्रथम ऐतिहासिक दीक्षा समारोह—पूज्य माताजी की भावनानुसार 12 अक्टूबर 1986 आसोज शुक्ला दशमी को फिरोजाबाद में आपने आचार्य श्री विमलसागर महाराज के समक्ष क्षुल्लक दीक्षा प्रदान करने हेतु विनम्र निवेदन किया, तब आचार्य श्री ने उसे स्वीकार कर अपने विशाल संघ सहित जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर आने की स्वीकृति दी। पुनः फाल्गुन शुक्ला नवमी, 8 मार्च 1987 के शुभ मुहूर्त में विशाल जनसमुदाय के बीच आपको क्षुल्लक दीक्षा प्रदान कर 'मोतीसागर' संज्ञा प्रदान की और अपने आशीर्वाद में इन्हें ज्ञानज्योति भारत भ्रमण से धर्म का डंका बजाने के कारण चक्रवर्ती की उपमा प्रदान कर परम प्रसन्न हुए।

पीठाधीश पद—दीक्षा के पश्चात् संस्थान की गतिविधियों के पूर्ववत् निर्देशन व इसके संरक्षण-संवर्धन हेतु माताजी ने आगम ग्रंथों के अनेक प्रमाण निकालकर 2 अगस्त 1987 श्रावण शुक्ला सप्तमी के शुभ दिन आपको संस्थान के 'पीठाधीश' पद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर आसीन किया। तब से लेकर आज तक अपनी आगम चर्या का निर्बाधरूप से पालन करते हुए पूज्य क्षुल्लक संस्थान की प्रत्येक गतिविधियों में अपना कुशल निर्देशन प्रदान करते हैं।

प्रत्येक कार्य में अग्रणी रहते हैं—पूज्य माताजी द्वारा प्रारंभ किए गए प्रत्येक कार्यों में क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज का विशेष योगदान रहता है। प्रत्येक कार्य को अनुशासनबद्ध तरीके से सफलतापूर्वक सम्पन्न करना ही आपका एकमात्र लक्ष्य रहता है, फिर चाहे वह अयोध्या, हस्तिनापुर, मांगीतुंगी, प्रयाग, कुण्डलपुर आदि तीर्थों का विकास कार्य हो, भगवान ऋषभदेव मस्तकाभिषेक महोत्सव, भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती महामहोत्सव, अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान, विश्वशांति महावीर विधान, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार, भगवान महावीर ज्योति रथ भ्रमण आदि वृहद् आयोजन हों अथवा समय-समय पर आयोजित अनेक लघु व वृहत् कार्यक्रम ही क्यों न हों, उसमें सदैव आपका कुशल दिशानिर्देश मिलता रहता है।

धर्म दिवाकर क्षुल्लकरत्न की उपाधि से अलंकृत—आपके इन्हीं सब कार्यकलापों को देखते हुए पूज्य माताजी ने चौबीस कल्पद्रुम विधान के समापन अवसर पर आपको सन् 1997 में दिल्ली के लाल मंदिर की सभा में "धर्म दिवाकर-क्षुल्लकरत्न" की उपाधि से विभूषित किया है।

सतत ज्ञानाराधना एवं अपनी आगमचर्या में संलग्न ऐसे गुरुभक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करने वाले पूज्य पीठाधीश क्षुल्लकरत्न धर्मदिवाकर श्री मोतीसागर महाराज के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर हम भी अपने जीवन को समुन्नत बनाएं तथा पूज्य क्षुल्लक श्री सदैव हम सभी को इसी प्रकार निर्देशन प्रदान कर अपने अनुभव ज्ञान से हमें लाभान्वित करते रहें, यही भगवान जिनेन्द्र से मंगल कामना है।

क्षुल्लिका श्री शांतिमती माताजी

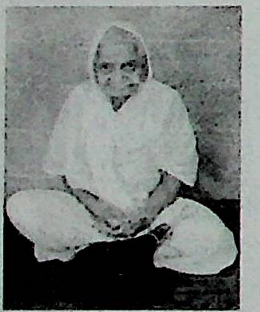

मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले में ग्राम "मोहनगढ़" में श्री धर्मदास मोदी की ध.प. श्रीमती भूरीबाई ने वि.सं. 1987 में एक कन्या को जन्म दिया, जिनका नाम रखा गया-कस्तूरीबाई।

14 वर्ष की अवस्था में ग्राम "मवई" के दानवीर बजाज नाथूराम जी के छोटे भाई "श्री छक्कीलाल" जी के साथ इनका विवाह हुआ। एक पुत्र एवं तीन पुत्रियों की माँ कस्तूरीबाई लगभग 22 वर्ष तक पति के साथ रहीं, पश्चात् वि.सं. 2023 में पति का देहावसान हो गया। पुनः वि.सं. 2035 में फाल्गुन कृ. पंचमी को आचार्यश्री पार्श्वसागर जी से टीकमगढ़ के पास 'बमोरी' ग्राम में क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण कर "शांतिमती" नाम प्राप्त किया।

लगभग 27 वर्षों से आप परमपूज्य आर्यिका श्री अभयमती माताजी के साथ रहती हैं और उन्हें ही अपना विद्यागुरु मानती हैं। 76 वर्ष की इस वृद्धावस्था में भी आप निर्विघ्न रत्नत्रय साधना में अग्रसर हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

लेखक-मनोज जैन, मेरठ
(मंत्री-दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर)

रत्नों की खान से रत्न निकला करते हैं यह सत्य है। तभी तो माता मोहिनी की पवित्र कुक्षि से एक नहीं कई-कई रत्न निकले और समस्त संसार को अपनी दिव्य आभा से प्रकाशमान कर दिया। उन्हीं रत्नों में से एक रत्न हैं हमारे जाने-माने नवयुवकों के आदर्श कर्मयोगी ब्रह्मचारी भाई श्री रवीन्द्र जी। आप भी माता मोहिनी व पिता श्री छोटेलाल जी की नवमीं संतान हैं। आपका जन्म ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुतपंचमी) सन् 1950 में हुआ है। पिता श्री छोटेलाल जी एवं माता मोहिनी ने अपने चार पुत्रों में से एकमात्र इसी पुत्र को लखनऊ यूनिवर्सिटी से बी.ए. तक अध्ययन कराया था। स्नातक होने के बाद भी संसार के मोहचक्र में फंसना इन्होंने स्वीकार नहीं किया।

भोगों को भोगने के बाद उससे विरक्ति होना तो प्रायः देखा जाता है परन्तु जब पूर्ण यौवन और भोगोपभोग के समस्त साधन उपस्थित हों उस समय उन सबका परित्याग कर त्याग के कठिन मार्ग पर स्वयं को समर्पित कर देने वाले विरले ही लोग होते हैं। उसी श्रृंखला की एक कड़ी ब्र.रवीन्द्र जी भी हैं जिन्होंने सन् 1968 से पूज्य माताजी द्वारा प्रेरित किये जाने पर अन्ततोगत्वा अप्रैल सन् 1972 में पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज से नागौर (राज.) में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण किया। उसके बाद से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में ब्र. मोतीचंद जी के साथ संस्थान का सम्पूर्ण दायित्व संभालते हुए सन् 1987 में पूज्य माताजी के पास सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण कर आप गृहविरत हो गये।

जम्बूद्वीप स्थल आपकी विशेष कर्मभूमि है यहीं से अपनी धार्मिक क्रियाओं का पालन करते हुए आप संस्था संचालन, सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का सम्पादन, पूज्य माताजी द्वारा लिखित सैकड़ों ग्रंथों का सम्पादन आदि कर रहे हैं। आप जहाँ श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, श्री अयोध्या दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री 1008 माँगीतुंगी बड़ी मूर्ति निर्माण कमेटी, तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थक्षेत्र कमेटी, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति आदि अनेकों तीर्थों के अध्यक्ष हैं वहीं आप अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद के भी अध्यक्ष पद का भार संभाल रहे हैं। इतने अधिक कार्यों को करते हुए भी आपकी सबसे बड़ी विशेषता रही है कि कभी भी आपके चेहरे पर शिथिलता या क्रोध के भाव नहीं दिखते। हमेशा हंसता-मुस्कुराता, मधुरता बिखेरता आपका व्यक्तित्व आइने की तरह स्वच्छ है। तभी तो आपकी ओजस्वी वाणी, स्पष्टवादिता, कर्मठता, सहजता आदि गुणों के द्वारा भाई रवीन्द्र जी से आज सारा देश परिचित हो चुका है। पूज्य माताजी से प्राप्त संस्कारों के अनुसार संघर्ष झेलकर भी सत्य को उजागर करना आपकी पहचान बन गयी है। जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण धर्म, धर्मायतन एवं गुरुओं की सेवा में व्यतीत हुआ हो, समाज सेवा में व्यतीत हुआ हो ऐसे भाई जी के नाम से जाना जाने वाला व्यक्तित्व अखिल भारतवर्षीय शास्त्री परिषद द्वारा सन् 1992 में '**कर्मयोगी**' की उपाधि से विभूषित किया गया जो कि नवयुवकों के लिए '**कर्मयोगी भाई जी**' के रूप में सचमुच अनुकरणीय है।

सन् 1996 में मांगीतुंगी (महा.) में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के सुअवसर पर वीर सेवा दल की ओर से आपके कार्यकलापों का मूल्यांकन करते हुए '**धर्मसंरक्षणाचार्य**' की उपाधि से विभूषित किया गया। आप विद्वत्ता के साथ-साथ अपूर्व कार्यप्रणाली की क्षमता के धनी हैं। पूज्य माताजी के द्वारा संकल्पित प्रत्येक क्षेत्र में साहित्यिक, निर्माणात्मक, सृजनात्मक कार्यों को मूर्तरूप प्रदान करने वाले भाई श्री रवीन्द्र जी ने सन् 2000 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष के अंतर्गत न्यूयार्क-अमेरिका (यू.एन.ओ.) में आयोजित **विश्वशांति शिखर सम्मेलन** में जैन धर्माचार्य के रूप में सम्मिलित होकर जैनधर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार किया और आज भी जैनधर्म के प्रचार-प्रसार हेतु सतत संलग्न हैं। वास्तव में देखा जाये तो योग्य व्यक्ति की पहचान उसके कर्मठ व्यक्तित्व से ही होती है। कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी जैन समाज के क्षितिज पर चमकते अनोखे सितारे हैं। आपके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन के लिए मंगल कामना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी के वर्तमान संघस्थ ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों का परिचय

लेखिका-श्रीमती त्रिशला जैन, लखनऊ

ब्र. कु. बीना जैन

कु. बीना का जन्म कानपुर (उ.प्र.) में 15 दिसम्बर 1969 में हुआ। आपकी माता का नाम श्रीमती कुमुदनी देवी और पिता का नाम स्व. श्री प्रकाशचंद जैन है। यह आपका सौभाग्य ही है कि आपको विरासत में ही धर्म के संस्कार प्राप्त हुए हैं और परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की गृहस्थावस्था की भानजी होने का गौरव प्राप्त है। इनका गोत्र गर्ग है तथा इनके 2 भाई व 2 बहनें हैं।

आपको 13 वर्ष की बाल्यावस्था में (सन् 1983) ही पूज्य माताजी के संघ का संपर्क प्राप्त हुआ। प्रारंभ में 5 वर्ष का ब्रह्मचर्यव्रत लेकर संघ में रहने के पश्चात् 31 मई सन् 1989 को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण किया, पुनः 15 अक्टूबर 1989 को दो प्रतिमा एवं सन् 1994 में सप्तम प्रतिमा ग्रहण की। लौकिक शिक्षा हाईस्कूल तक प्राप्त की एवं धर्म में शास्त्री एवं आचार्य प्रथम खण्ड की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की हैं। धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ गुरु सेवा-वैयावृत्ति-संघ व्यवस्था आदि में निरन्तर सजग रहते हुए वर्तमान में पूज्य माताजी की छत्रछाया में साधनारत हैं।

ब्र. कु. आस्था जैन

सन् 1969 में भाद्रपद शु. ग्यारस तिथि में जिला बहराइच के "परवरपुर" ग्राम में इनका जन्म हुआ। इनके पिता का नाम श्री प्रेमचंद जैन एवं माता का नाम सौ. श्रीमती देवी है। 7 फरवरी 1988 को इन्होंने पूज्य माताजी से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लिया तथा 14 फरवरी 1988 को 2 प्रतिमा एवं सन् 1995 में सप्तम प्रतिमा ग्रहण की। इनका गोत्र सिंघल है तथा इनकी 3 बहनें एवं दो भाई हैं।

इन्हें भी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की गृहस्थावस्था की भानजी होने का गौरव प्राप्त है। इनकी लौकिक शिक्षा बी.ए. प्रथम वर्ष तक है तथा धार्मिक शिक्षा में शास्त्री एवं आचार्य प्रथमखण्ड की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की हैं। धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ गुरु सेवा-वैयावृत्ति करते हुए पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में अध्ययनरत हैं।

ब्र. कु. सारिका जैन

कु. सारिका का जन्म सन् 1978 में वैशाख शु. पूर्णिमा को अवध प्रान्त के दरियाबाद ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री जयप्रकाश जैन एवं माता सौ. कामिनी देवी हैं। सन् 1991 में इन्होंने पूज्य माताजी से आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत लिया तथा 1995 में अयोध्या तीर्थ पर 2 प्रतिमा एवं 1996 में धूलिया (महा.) में सप्तम प्रतिमा ग्रहण की। इनका गोत्र मुद्‌गल है। आपके 2 भाई एवं 2 बहनें हैं।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की भानजी होने का सौभाग्य इन्हें भी प्राप्त हुआ है। लौकिक शिक्षा इण्टरमीडिएट तथा धार्मिक शिक्षा शास्त्री प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। धार्मिक अध्ययन के साथ गुरु सेवा-वैयावृत्ति में मगन रहते हुए माताजी के सानिध्य में अध्ययनरत हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्र. कु. चन्द्रिका जैन

14 नवम्बर 1977 को म.प्र. की धर्मपरायण नगरी सनावद में इनका जन्म हुआ। इनके पिता का नाम श्री प्रकाशचंद जैन एवं माता का नाम सौ. मधुबाला जैन है। पूज्य माताजी के दर्शनार्थ आयी कु. चन्द्रिका ने सन् 1994 में बाराबंकी (उ.प्र.) में पूज्य माताजी से आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण किया। शाश्वत तीर्थ अयोध्या में 3 फरवरी 1995 में 2 प्रतिमा एवं मई 1996 में मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के मध्य 7 प्रतिमा ग्रहण की। पोरवाड़ दि. जैन जाति में जन्मी कु. चन्द्रिका का गोत्र पंचोलिया है एवं आपके 2 छोटे भाई हैं।

आप पूज्य माताजी के संघस्थ शिष्य क्षुल्लक मोतीसागर महाराज की गृहस्थावस्था की भतीजी हैं। लौकिक शिक्षा इण्टरमीडिएट व धार्मिक शिक्षा शास्त्री प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। गुरु के चरण सानिध्य में धर्माराधनापूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए गुरु सेवा-वैयावृत्ति में सतत संलग्न हैं।

ब्र. कु. इन्दू जैन

ब्र. कु. इन्दू का जन्म अवध प्रान्त की धर्मपरायण नगरी टिकैतनगर (बाराबंकी) में 12 अक्टूबर 1973 को हुआ। आपके पिता का नाम स्व. श्री प्रकाशचंद जैन एवं माता का नाम श्रीमती ज्ञानादेवी है। यह आपका सौभाग्य है कि आपको अपनी दादी-पिता आदि से विरासत में ही धार्मिक संस्कार प्राप्त हुए। पश्चात् परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के गृहस्थावस्था की भतीजी होने का गौरव भी आपको भी प्राप्त हुआ। इनका गोत्र गोयल है तथा इनके 4 भाई व 2 बहनें हैं।

पूज्य माताजी ससंघ के 41 वर्ष पश्चात् जन्मभूमि में हुए चातुर्मास के मध्य सन् 1994 की शरदपूर्णिमा (आ.शु. पूर्णिमा) को पूज्य माताजी एवं संघस्थ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की वात्सल्यपूर्ण प्रेरणा से पूज्य माताजी से आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत लिया तथा 3 फरवरी 1995 में शाश्वत तीर्थ अयोध्या में 2 प्रतिमा व मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के मध्य मई 1996 में 7 प्रतिमा ग्रहण की। लौकिक शिक्षा एम.ए. (संस्कृत साहित्य) अवध यूनिवर्सिटी से की तथा धार्मिक शिक्षा शास्त्री प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ गुरु सेवा-वैयावृत्ति में निरन्तर सजग रहते हुए वर्तमान में आप पूज्य माताजी की छत्रछाया में साधनारत हैं।

ब्र. कु. अलका जैन

कु. अलका का जन्म भी अवध प्रान्त के टिकैतनगर ग्राम में 10 नवम्बर 1977 को हुआ। आपके पिता का नाम श्री कोमलचंद जैन एवं माता का नाम श्रीमती शशि जैन है। आपकी जाति अग्रवाल जैन एवं गोत्र गर्ग है एवं आपके 1 भाई व 3 बहनें हैं।

पूज्य माताजी के सन् 1994 में टिकैतनगर चातुर्मास के मध्य आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण किया। 3 फरवरी 1995 को अयोध्या तीर्थक्षेत्र पर 2 प्रतिमा एवं मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के मध्य मई 1996 में 7 प्रतिमा ग्रहण की। लौकिक शिक्षा इण्टरमीडिएट एवं धार्मिक शिक्षा विशारद तक की है। गुरु के चरण सानिध्य में धर्माराधनापूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए गुरु सेवा-वैयावृत्ति में सतत संलग्न हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्र.. कु. प्रीति जैन

कु. प्रीति का जन्म म.प्र. की सुसनेर नगरी में 13 जनवरी 1973 को हुआ। आपके पिता का नाम श्री निर्मल कुमार जैन एवं माता का नाम श्रीमती मैना बाई हैं। आपकी जाति खण्डेलवाल एवं गोत्र लुहाड़िया है तथा आपका 1 भाई है। पूज्य माताजी के मांगीतुंगी विहार के मध्य सुसनेर (मध्यप्रदेश) में प्रथम पदार्पण पर 27 फरवरी 1996 को इन्होंने आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण किया तथा बेड़िया (म.प्र.) में 1996 में 2 प्रतिमा व 1998 में 7 प्रतिमा श्रुतपंचमी के दिन जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में ग्रहण की। लौकिक शिक्षा बी.ए. द्वितीय तथा धार्मिक शिक्षा विशारद तक है। धार्मिक अध्ययन के साथ गुरु सेवा-वैय्यावृत्ति में निरन्तर संलग्न रहते हुए पूज्य माताजी के सानिध्य में साधनारत हैं।

ब्र. कु. स्वाति जैन

ब्र. कु. स्वाति जैन का जन्म उ.प्र. के नजीबाबाद नगर में 27 मार्च 1970 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री शीतल प्रसाद जैन एवं माता का नाम श्रीमती सरोज जैन है। आपका गोत्र गोयल है एवं आपके 1 भाई व एक बहन हैं।

पूज्य माताजी की संघस्थ ब्र. कु. माधुरी शास्त्री (वर्तमान आर्यिका चंदनामती माताजी) के नजीबाबाद आगमन पर उनसे साक्षात्कार के पश्चात् वैराग्य भाव को प्राप्त होकर 19 जुलाई 1987 को हस्तिनापुर में पूज्य ज्ञानमती माताजी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया तथा 16 अक्टूबर 1997, शरदपूर्णिमा को दिल्ली में 2 प्रतिमा ग्रहण की। पूज्य माताजी के संघ में रहने का सौभाग्य इन्हें सन् 1999 में प्राप्त हुआ। लौकिक शिक्षा में इन्होंने रुड़की विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. (बायोसाइंसेज) करने के पश्चात् एन.सी.ई.आर.टी. (दिल्ली) में रिसर्च एसोसिएट के रूप में कार्य अनुभव प्राप्त किया। संघ में रहकर धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ गुरु सेवा-वैयावृत्ति में निरन्तर सजग रहते हुए वर्तमान में आप पूज्य माताजी की छत्रछाया में साधनारत हैं।

ब्र. विजय कुमार जैन

ब्रह्मचारी विजय जैन (पिंकू) का जन्म ६ अगस्त १९७५, श्रावण शुक्ला सप्तमी को उ.प्र. के कानपुर नगर में हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती कुमुदनी देवी एवं पिता का नाम स्व. श्री प्रकाशचंद जैन है। दो भाई एवं ३ बहनों में आप सबसे छोटे हैं। आपकी लौकिक शिक्षा बी.कॉम. तक है।

सौभाग्यवश आपको भी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के गृहस्थावस्था की लघु बहन के सुपुत्र होने का गौरव प्राप्त है, संघस्थ ब्र. कु. बीना जैन आपकी बड़ी बहन हैं, विरासत में प्राप्त संस्कारों के फलस्वरूप प्रारंभ से ही इनकी रुचि धार्मिक कार्यकलापों में रही और समय-समय पर माताजी के पास आकर तत्त्वार्थसूत्र, छहढ़ाला, द्रव्यसंग्रह आदि धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन किया।

सन् १९९८ में पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रवर्तित 'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार' रथ के भारत भ्रमण एवं सन् २००३ में "भगवान महावीर ज्योति रथ" के भारत भ्रमण का सफल संयोजन करके ब्र. विजय ने अपनी कार्यकुशलता का परिचय दिया है। पुनः ९ जनवरी २००६ को पूज्य माताजी से आपने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। वर्तमान में पूज्य माताजी की छत्रछाया में रहकर स्वाध्याय, अध्ययन, गुरु सेवा एवं संस्थान के कार्यकलाप आदि में सतत संलग्न हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिनाँक 30 अक्टूबर 2003 को निम्न प्रशस्ति पत्र उपस्थित समस्त जैन समाज के प्रतिनिधियों द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों में भेंट किया गया।

"श्री ऋषभदेवाय नमः"

परमपूज्य युगप्रवर्तिका गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के पावन करकमलों में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज की ओर से समर्पित

चारित्रचन्द्रिका

पदालंकरण

अवधवासियों के महान पुण्योदय से पूज्य माताजी का मंगल विहार अवध प्रान्त में हुआ है, इसी शृँखला में 'श्री ऋषभजन्मभूमि अयोध्या' को उनके चातुर्मास का प्रथम सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है।

ऐतिहासिक तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर दिनाँक 11 अक्टूबर 1992 शरदपूर्णिमा को अवध की अनमोलमणि, न्यायप्रभाकर, ब्राह्मी की प्रतिमूर्ति, कुमारिकाओं की पथप्रदर्शिका, विधानवाचस्पति परमपूज्य 105 गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के 59वें जन्मजयंती महोत्सव पर अभिवंदन ग्रंथ समर्पण की मंगल बेला में चारित्र उत्थान वर्ष मनाने का संकल्प लिया था।

आज 30 अक्टूबर 1993 शरदपूर्णिमा के दिन चारित्र उत्थान वर्ष के समापन पर हिन्दुस्तान के हम सभी श्रावक-श्राविकाएँ अपनी चैतन्य निधि ज्ञानमती माताजी के 60वें जन्मदिवस पर उन्हें "चारित्रचन्द्रिका" पदवी से अलंकृत कर अतिशायी गौरव का अनुभव करते हैं।

श्री चारित्रचन्द्रिका माँ के चरणों में वंदन है।

युग की पहली ज्ञानमती माताजी को अभिवंदन है।।

श्री ऋषभदेव दि. जैन मंदिर अयोध्या-30-10-1993

हम हैं आपके चरणों में नत भारत के अनेक प्रदेशों से पधारे श्रद्धालु भक्तगण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। श्री वीतरागाय नमः।।

गुरुदेव श्री 108 आचार्य देशभूषण जी मुनिराज की परम शिष्या चारित्रमूर्ति
श्री 105 क्षुल्लिका वीरमती जी (वर्तमान गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी) के चरणारविंद में प्रस्तुत

अभिनंदन-पत्र

1. हे साध्वी श्रेष्ठ! आज हम टिकैतनगर निवासी अपने परम सौभाग्य की भूरि-भूरि सराहना करते हैं कि हम लोगों में से ही एक आप हैं जो आज इस जगत पूज्य पद प्रतिष्ठित हैं। यह हमारे लिए गौरव एवं सौभाग्य की बात है और हमें विश्वास है कि आपकी यह दुर्द्धर तप की तेज शिखा हमारे गौरव को सदैव गौरवान्वित करती रहेगी।

2. तपोनिधे! आज इस दुःषम काल में जबकि धर्म और नैतिकता मनुष्य से कोसों दूर है और इस पर घातक प्रहार हो रहे हैं। ऐसे कलिकाल में भी क्षण भंगुर संसार के समस्त कल्पित सुखों को ठुकरा कर इस दुर्द्धर महाव्रत का आह्वान किया है अति साहस का काम है। हम आपके इस सत्साहस का हृदय से अभिनंदन करते हैं, अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

3. चारित्रमूर्ते! बाल्यावस्था से ही आप धर्मानुरागी रही हैं एवं चारित्र से विशेष प्रेम रहा है और आज अपने जीवन को अपनी स्वप्न कल्पनाओं को आधार बनाकर उसे साकाररूप में परिणत किया है। यह आपके अदम्य उत्साह का परिचायक है। अतएव आज हम सब आपको

"चारित्रमूर्ति"

उपाधि से विभूषित कर अपार आनंद का अनुभव कर रहे हैं। प्रभु आपकी इस चारित्र साधना में सहायक हों, यही अभिलाषा है।

4. बालब्रह्मचारिणी! आपने आजन्म अविवाहित रहकर एवं संसार-वासना से दूर हटकर कठोर बालब्रह्मचर्यव्रत का अनुष्ठान किया है। आपके इस तेज पुंज से विजयी कामदेव भी आज चरणों में नम्रीभूत है। इस विजय श्री से जो आदर्श उपस्थित है, कालान्तर में हम भी इन पदचिन्हों को अपना लक्ष्य बनाकर जीवन यात्रा आरंभ करें और सफल हों, श्री वीरप्रभो से यही प्रार्थना है।

5. विशालबाहु! हम कर्मभार से दबे हुए प्राणी भवसागर में गोते लगा रहे हैं। हमारे नयन किसी प्रथ प्रदर्शक के आगमन की प्रतीक्षा में हैं और आज सहसा आपको अपने सामने पाकर दौड़ पड़े हैं। आप अपनी विशाल बाहुओं से हम कर्मों से ठगे हुए प्राणियों की रक्षा करेंगी।

6. मातु श्री! आप अपने कठोर तपश्चरण से कर्म बंधनों को तो काट ही रही हैं। साथ में जैसे कोई वशीकरण मंत्र भी साधतीं जा रही हैं। जिससे कि जिसको एक बार भी आपका दर्शन मिल जाता है, जाने का ध्यान ही नहीं रहता है। आपकी हंसमुख एवं मिष्टवाणी उसके तमाम सुध-बुध को खो देती है। विशेषकर हम बच्चों पर आपका विशेष अत्यधिक स्नेह रहा है। पर आज आपके सहसा गमन से टिकैतनगर निवासियों के हृदय में जो भाव आ रहे हैं अगण्य हैं।

7. स्वामिन्! इस बार जाने किसके पुण्योदय से आपके चातुर्मास का प्रथम अवसर आपकी जन्मभूमि को ही प्राप्त हुआ है, पर आपकी हम किसी प्रकार भी किंचित् मात्र सेवा नहीं कर सके हैं और न आपसे हम कुछ लाभ ही उठा पाये हैं। इसमें हम अपने को ही सर्वत्र दोषी पाते हैं। आप से विनम्र सानुरोध है कि पुनः पदार्पण कर अपने चरण चिन्हों पर हमें भी अनुसरण करने की प्रेरणा करती रहें। अंत में यही सविनय प्रार्थना है कि हमारे अज्ञान जनित प्रमाद एवं अविनय को क्षमा करें और हमें सन्मार्ग पर आरूढ़ होने की शक्ति प्रदान करती रहें। आपकी अमृतमय वाणी हमारे जीवन उत्थान में सहायक हों।

हम हैं आपके चरणों के चिर सेवक समस्त दि. जैन बाल बंधु, टिकैतनगर

दिनाँक 26 दिसम्बर 1953

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Dr. RAM MANOHAR LOHIA UNIVERSITY

Doctor of Letters

This is to certify that the Degree of Doctor of Letters (Honoris Causa) of this University has been Conferred upon Ganini Aryika Ratna Shri Gyanamati Mata at the eleventh Convocation.

साहित्य–वारिधि

प्रमाणित किया जाता है कि गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माता को इस विश्वविद्यालय के एकादश दीक्षान्त समारोह में साहित्य वारिधि की मानद् उपाधि प्रदान की गई।

VICE-CHANCELLOR
कुलपति
फैजाबाद, ५ फरवरी, १९९५

CHANCELLOR
कुलाधिपति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रमण संस्कृति की संवाहिका, भारतीय संस्कृति की जीवन्त-प्राणवन्त प्रतीक, विश्वधर्म की प्रभावी प्रवक्ता, स्याद्वाद सिद्धान्त की वाग्मी विवेचिका, सन्यान्वेषी, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि परमपूज्या श्री ज्ञानमती माताजी के पाद-पद्मों में समर्पित

सादर अभिवन्दना आलेख

आत्मान्वेषी आर्यिकाशिरोमणि—भारत की हृदयस्थली राजधानी दिल्ली का यह परम सौभाग्य है कि नूतन सहस्राब्दि के उन ऐतिहासिक क्षणों में अपनी सम्पूर्ण निष्ठा, आत्मीयता, शोभा-शालीनता, सुषमा-सुकुमारता के साथ आपकी अभिवंदना में नतमस्तक है, जब आप शक्ति एवं सौन्दर्य, शील एवं साधना, श्रम एवं श्रामण्य तथा असि, मसि एवं कृषि की मूर्तिमन्त अभिव्यक्ति, भगवान ऋषभदेव की अराधना एवं उनके संस्कृति पुरोधा रूप की पुनर्प्रतिष्ठापना के महायज्ञ को सम्पूर्ण मानवीय इयत्ता को समर्पित कर रही हैं। परमपूज्या, आज शांति के इस शिविर में, करुणा की क्रोड़ में, श्रद्धा और विश्वास के पुष्पों से आपकी वंदना करते हुए हम अभ्यर्थना करते हैं कि अनुकम्पापूर्वक आप हम सबकी प्रणाम-सेतु बनें और हमारी भी श्रद्धाभिषिका प्रणतियाँ आदि ब्रह्मा, भारत के जनक भगवान ऋषभदेव के चरणों में अर्पित करने की महती कृपा करें।

करुणामूर्ति परम साधिका—मातु श्री, आप श्रमण संस्कृति की उस परमोज्जवला धारा की सर्वोच्च प्रतीक हैं, जो सिंधु घाटी की प्राचीनतम सभ्यता के रूप में आज भी अवशिष्ट है और पूरे विश्व को अपनी अप्रतिम गौरव-गाथा सुना रही है। हे महान साधिके, जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय की संकीर्णताओं के पार, आप उस आर्यावर्त की सच्ची श्रामण्यमयी प्रतिनिधि हैं, जो पूरी वसुधा को अपना कुटुम्ब मानता है। आपकी अपरिमित करुणा ने संकीर्णताओं की समस्त अंधी, जर्जर, प्राचीरों को ढ़हा दिया है और यही कारण है कि आपकी तेजोमय चरित्र-संबलित वाणी, सहस्र-सहस्र जनों को परितृप्त करती है। वास्तव में आप सत्वेषु मैत्री की परम ज्योति की सर्वोपरि प्रस्तुति हैं, जिसमें प्रत्येक प्राणी आत्म-कल्याण को साकार हुआ अनुभव करता है।

वाङ्मय और वाग्मिता की प्रज्ञ शिल्पी—आप सर्वप्रथम वाग्मी आर्यिका-प्रवर हैं जो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र्य के सर्वभूतकल्याणकारी माध्यम से सभी वर्गों, सभी जातियों और सभी देशों के मनुजों को सहज ही जोड़े हुए हैं। विश्व के इतिहास और मानव संस्कृति की सुसमीक्षित चेतना से सम्पन्न आपके चिन्तन अवबोध के अनेक आयाम हैं। आपकी समन्वय-विधायी प्रज्ञा, भारत में समागत विभिन्न संस्कृतियों से संबद्ध अनेकानेक मतवादों का, चिंतन और अनुभूति के फलक पर, अद्भुत एकत्व की प्राप्ति करती है। गोस्वामी जी ने जटिल से जटिल भाव-बोध और अनुभूति-संहति को अत्यन्त ऋजु-स्पष्टता के साथ सम्प्रेषित करने में जो सफलता पाई है, वही आपके कर्मनिष्ठ जीवन के रचनाशिल्प का व्यावर्त्तक गुण-धर्म है। उन्हीं की तरह, आपने अनुभूति के विस्तार को, विषय की गूढ़ताओं एवं तकनीकी संश्लिष्टताओं के बावजूद स्पष्ट रेखाओं में बाँधने की सफल साधना की है। आपके जीवन की यथार्थ-विषयक-अपरिमिति दृष्टि, गहन जीवनानुभूति और ऊर्ध्वात्मक ऊर्जा का महार्णव हम सभी के लिए प्रेरणा का प्रकाश-पुंज है, जो नवजीवन की चेतना का अनुप्राणक है, और है, अपूर्णताओं और खण्डदृष्टियों के बीच पूर्णता और सामंजस्य का तत्त्वदर्शी सूत्रधार। आपकी सर्जना का संसार सम-सामयिक साहित्य का प्रकर्ष-केतु है और हमें विश्वास है कि वह वाल्मीकि के रामायण, व्यास के महाभारत और तुलसी के मानस की भाँति सार्वभौम मानव-संस्कृति की कल्पलता में अभ्युदय एवं निःश्रेयस-विधायक-पुण्य-प्रसून बनकर खिलेगा और सब प्रकार के द्वन्दों से ऊपर उठकर अपूर्णताओं एवं खण्डदृष्टियों के बीच पूर्णता एवं सामंजस्य के अनेकान्तिक अनुसंधान की साधना को वृद्धिंगत करता रहेगा।

स्नेहमयी, करुणामयी, जगदम्बा—करुणामयी मातृस्वरूपा! यह कोई प्रशस्ति या अभिनंदन नहीं है, प्रत्युत है यह हम लक्ष-लक्ष भारतवासियों के हृदयों का पुनीत-श्रद्धा-नवनीत क्योंकि आपने अपनी प्रखर-प्रांजल साधना, अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी वाणी तथा भारत की समस्त उज्जवलताओं के अभिमन्थन द्वारा सम्पूर्ण विश्व को एक नया विश्वास, नयी आशा, अभिनव आस्था और चिरस्मरणीय प्रेरणा दी है। हमें विश्वास है कि आपका दिव्यावदान, अखिल विश्व को अहिंसा, मनुजता, सत्य, स्नेह और आत्मीयता की ओर उन्मुख करेगा, जिससे सर्वत्र शान्ति, सुख, समता और समृद्धि की शीतल चाँदनी, सारे प्राणियों का अभिषेक कर सकेगी। आप शतायु हों और इस देश की समृद्ध श्रमण परम्परा को उत्तरोत्तर अभिसिंचित करें, यही हमारे चित्त के मंगल भाव हैं, यही हमारी कामना है और यही है, हमारी प्रार्थना भी।

हम हैं,

आपके सुदीर्घ एवं जनकल्याणी जीवन के मंगल आकांक्षी, सदस्यगण

तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ

नई दिल्ली, 13 अक्टूबर 2000

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खण्ड-३

साहित्य सृजन में तूमने नूतन इतिहास बनाया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भगवान ऋषभदेव दीक्षा भूमि प्रयाग-इलाहाबाद में
निर्मित भव्य कैलाशपर्वत

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu... Gangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहित्य सृजन में तुमने नूतन इतिहास बनाया

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री जी ने जहाँ प्राचीन तीर्थ भूमियों का विकास करवाकर उन्हें जीवंत रूप प्रदान किया है, वहीं उन्होंने श्रुत की सेवा में भी ऐसा योगदान दिया है, जिसे सदियों तक विस्मृत नहीं किया जा सकता। भगवान महावीर स्वामी के बाद जहाँ 2600 वर्षों में किसी महिला साध्वी द्वारा साहित्य सृजन का प्रमाण नहीं मिलता है, वहीं पूज्य माताजी ने एक नहीं, दो नहीं अपितु 200 से भी अधिक महान ग्रंथों की रचना करके ऐतिहासिक कार्य किया है। पूज्य माताजी द्वारा रचित ग्रंथों-विधानों आदि के माध्यम से पिछले 40 वर्षों में जो धर्म की प्रभावना हुई है, वह शब्दों में नहीं कही जा सकती है।

पूज्य माताजी द्वारा रचित कतिपय टीका ग्रंथों, मौलिक ग्रंथों एवं विधानों के संबंध में इस खण्ड में विभिन्न विद्वानों के आलेख प्रस्तुत किये गये हैं। विषय की अधिकता के कारण अन्य समस्त ग्रंथों एवं रचनाओं का संक्षिप्त विवरण खण्ड के अंत में प्रस्तुत किया गया है।

माताजी की कृतियों पर शोध करने-कराने वाले विद्वानों के लिए यह खण्ड अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा तथा स्वाध्यायी महानुभावों को इससे चारों अनुयोगों के ग्रंथ पढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्टसहस्री हिन्दी अनुवाद की विशेषताएं

लेखक—प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर, नागपुर *

रूपरेखा—1. अनुवाद कला और विवरणात्मक पद्धति
2. वाक्यविज्ञान और शब्दचयन, पदबन्ध, उपवाक्य आदि
3. अनुवाद के प्रकार-शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद और पर्याय के आधार पर अनुवाद, टीकानुवाद
4. अनुवादक की अपेक्षित योग्यता
5. अष्टसहस्री के हिन्दी अनुवाद की विशेषताएँ—
(1) मूल ग्रंथ का सटिप्पण सम्पादन (2) अष्टशती की पृथक् पहचान (3) निर्दोष अनुवाद (4) अर्थात्, अर्थ, भावार्थ और विशेषार्थ के माध्यम से स्पष्टता (5) सारांश के माध्यम से विषय की सरलतम प्रस्तुति।

अनुवाद कला—

अनुवाद कला भाषाविज्ञान की एक विशिष्ट शाखा है, जिसके आधार पर अनुदित कृति को कसौटी पर कसा जाता है। परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी आध्यात्मिकता और वैदुष्य की प्रतिकृति हैं। उन्होंने शताधिक ग्रंथों का अनूठा प्रणयनकर साहित्यिक क्षेत्र की अभिवृद्धि की है। वे संस्कृत और प्राकृत भाषाओं में भी निष्णात हैं। आचार्य विद्यानंद कृत अष्टसहस्री जैसे दुष्प्रवेश्य दार्शनिक ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद कर उन्होंने अपने संस्कृत पाण्डित्य का सुन्दर परिचय दिया है। यहाँ हम इस अनुवाद को अनुवाद कला के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास करेंगे।

अनुवाद एक ऐसी भाषिक प्रक्रिया है, जिसमें लेखक की अभिव्यक्ति का रूपान्तरण किया जाता है। इसे हम भिन्न भाषा में मूल विषय की पुनरुक्ति कह सकते हैं। अनुवाद का अर्थ ही है पृष्ठ कथन या समानान्तर कथन। न्यायसूत्र के अनुसार विधि और विहित का अनुवचन ही "अनुवाद" है (विधिविहित स्यानुवचनमनुवादः)। मीमांसा में इसी विधि प्राप्त आशय का दूसरे शब्दों में समर्थन के लिए कथन करना ही 'अनुवाद' कहा गया है। वह तीन प्रकार है-भूतार्थानुवाद, स्तुत्यर्थानुवाद और गुणानुवाद। उपनिषदों में यही अनुवाद शब्द 'पुनरुक्ति' अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

आज यह अनुवाद अंग्रेजी शब्द 'ट्रांसलेशन' के अर्थ में विकसित हुआ है, जिसे हम दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों कहना कह सकते हैं। वर्तमान भाषाविज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद की परिभाषा अनेकरूपों में दिखाई देती है। उन परिभाषाओं के विस्तार में न जाकर हम यहाँ इतना ही कहना चाहेंगे कि अनुवाद में एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। भाषाविद् नायडा के अनुसार अनुवाद के तीन स्वरूप हैं—(1) शाब्दिक अनुवाद (2) भावानुवाद और (3) पर्याय के आधार पर अनुवाद। सारानुवाद, टीकानुवाद आदि और भी अनेक रूप प्राप्त होते हैं।

अनुवादक को इस अनुवाद की प्रक्रिया में द्विभाषी होना आवश्यक है। दोनों भाषाओं का समुचित ज्ञान न होने पर अनुवादक विषय के साथ न्याय नहीं कर सकता और फिर यदि वह भाषाशास्त्र का भी कुशल अध्येता हो, तो निःसंदेह वह सफल अनुवादक सिद्ध हो सकता है। यह अनुवाद विज्ञान विवरणात्मक भाषाशास्त्र के अन्तर्गत आता है, जिसमें ध्वनिप्रक्रिया, व्याकरणात्मक और रूपस्वनिर्मात्मक विशेषताओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अनुवाद करते समय अनुवादक कभी-कभी उपयुक्त शब्द के चुनाव में कठिनाई का अनुभव करता है। भाषा संस्कृति से जुड़ी रहती है। हर संस्कृति की अपनी-अपनी विशेषताएँ होती हैं और उन विशेषताओं को अभिव्यक्त करने के लिए विशेष शब्द भी होते हैं। दूसरी भाषाओं में ऐसे विशिष्ट शब्दों के लिए प्रतिशब्द प्राप्त हो जायें, यह सरल नहीं होता। फिर सांस्कृतिक और दार्शनिक शब्दावली होती है, जिसका अनुवाद संक्षेप में करना कठिन हो जाता है। अनुवादक के समक्ष पर्यायवाची शब्दों में से यथायोग्य शब्दों को उठाना भी कष्टसाध्य होता है। व्यवहारतः सभी पर्यायों में निकटता तो होती है पर अर्थ की समानता कम होती है। ऐसी स्थिति में वह उपयुक्त और निकटतम शब्द का चुनाव करता है। इसी तरह

* संयुक्त निदेशक-राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं समाशोधन केन्द्र, श्रवणबेलगोला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाक्यविज्ञान की ओर भी ध्यान देना अनुवादक के लिए आवश्यक हो जाता है। इसके अन्तर्गत वह उसके पदबंध और उपवाक्यों पर अपना ध्यान विशेषरूप से केन्द्रित करता है। प्रत्येक भाषा का अपना गठन होता है, उसकी अपनी वाक्य रचना होती है, जो उस भाषा की प्रकृति के अनुकूल होती है। अंग्रेजी की वाक्य रचना का हिन्दी की वाक्य रचना पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। पर भारतीय भाषाओं की प्रवृत्ति लगभग समान है। अतएव अनुवाद में इस दृष्टि से कठिनाई नहीं होती। फिर भी सजीवता और स्वाभाविकता बनाए रखने के लिए मूल भाषा की सामग्री को अपनी भाषा की प्रकृति के अनुसार लिखना अधिक श्रेयस्कर है। इस दृष्टि से अनुवादक को स्रोत भाषा में प्रयुक्त वाक्यांश/मुहावरों की पृष्ठभूमि अच्छी तरह समझना चाहिए और उसके समकक्ष अभिव्यक्ति देने के लिए सटीक मुहावरों का चयन करना चाहिए। अनुवादक वस्तुतः अभिव्यक्ति का ही अनुवाद करता है, शब्द का नहीं।

अनुवाद की समग्रता पर विचार करते हुए हम उसके मुख्यतः तीन रूपों पर विचार कर सकते हैं-शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद और पर्याय के आधार पर अनुवाद—

(1) शाब्दिक अनुवाद—शाब्दिक अनुवाद में मात्र शब्द बदलने से काम नहीं चलता, उसके व्याकरणिक रूप पर भी ध्यान देना आवश्यक हो जाता है। शब्द भण्डार का निर्माण और संग्रह कर के अनुवादक यत्किंचित् आवश्यक परिवर्तन के साथ मूल शब्दों को ही स्वीकार कर लेता है। पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में तो शाब्दिक अनुवाद के सिद्धान्त का ही पालन करना पड़ता है। लिप्यन्तरण की समस्या अवश्य रहती है पर संस्कृत से हिन्दी में यह समस्या अधिक नहीं रहती। इस संदर्भ में अनुवादक को यह अवश्य ध्यान रखना होगा कि शाब्दिक अनुवाद क्लिष्ट, जटिल, अटपटा और हास्यास्पद न हो। उसका शब्दचयन यथानुरूप हो और व्याकरणिक संरचना की उपेक्षा न हो।

(2) भावानुवाद में अनुवादक को लेखक के भाव को ध्यान में रखना पड़ता है। उसे व्यक्तिगत दृष्टि से शब्द के वाक्य के विश्लेषण से दूर रहना चाहिए। यदि वह अपनी मौलिकता का सदुपयोग करता है, तो अनुदित कृति में मूल जैसा आनन्द आ जाता है, रोचकता बढ़ जाती है, अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि होती है। अनुवादक को यह ध्यान में रखना होगा कि वह अपनी विचारधारा से पाठक को प्रभावित करने के लिए कहीं मूल से हट तो नहीं रहा है। भावानुवाद वस्तुतः छायानुवाद नहीं है। वह तो भावों का मात्र बाहक है, संकेतक है। अतएव उसे मूल के निकटतम ही रहना चाहिए।

(3) पर्याय के आधार पर होने वाले अनुवाद में पर्यायार्थक शब्दों का विशेष महत्व होता है। अनुवादक पर्यायार्थक शब्दों में से यथोचित शब्दों का चयन करता है ताकि शब्द की मूल आत्मा तिरोहित न हो सके। शब्द की वास्तविक शक्ति उसके प्रयोग में ही निहित होती है। व्यवहारतः सब पर्यायों में निकटता होती है पर उनके प्रयोग से अर्थ में भिन्नता आ जाती है। भारतीय परम्परा में इसी को अर्थ-संकेत कहा जाता है। शब्द शक्तियों में प्रसंगादि की दृष्टि से अर्थ तत्त्व का महत्त्व अधिक हो जाता है। अनुवादक को इसका विशेष ध्यान रखते हुए शब्दचयन करना पड़ता है।

(4) भारतीय वाङ्मय में टीकानुवाद भी एक प्राचीन पद्धति रही है। मूल ग्रंथ पर टीका, भाष्य, अनुटीका, वृत्ति आदि लिखे जाते रहे हैं। अनुवादक उन्हें अपनी भाषा में अनूदित करता है। तत्त्वार्थ सूत्र, आप्तमीमांसा आदि संस्कृत ग्रंथ ऐसे ही हैं जिनपर विविध टीकाएँ लिखी गईं हैं और भिन्न भाषी विद्वानों ने उनका अनुवाद अपनी भाषाओं में किया है। यह टीकानुवाद उपर्युक्त भेदों के अन्तर्गत समाहित हो जाता है।

अनुवाद के संदर्भ में तीन महत्वपूर्ण पक्ष हैं—प्रथम अनुवादक को मूलस्रोत की भाषिक संरचना का परिज्ञान होना चाहिए और द्वितीय उसकी विषय वस्तु की अच्छी जानकारी होना चाहिए। तीसरा पक्ष है ऐतिहासिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक धरातल से परिचित रहना। इन तीन पक्षों के आधार पर ही वह मूल के सत्य को सुन्दरतम ढंग से सुरक्षित रख सकता है। इसलिए कहा गया है कि "अगर सुन्दर है तो सत्य (वफादार) नहीं हो सकता। अनुवाद वस्तुतः उस पत्नी की तरह होता है, जो अगर वफादार है तो खूबसूरत नहीं हो सकती और खूबसूरत है तो वफादार नहीं हो सकती।"

अष्टसहस्त्री का हिन्दी अनुवाद—

आचार्य समन्तभद्र ने आचार्य उमास्वामी के मंगलाचरण पर देवागमस्तोत्र (114 कारिकाओं की रचना की) और आचार्य अकलंक ने उस पर अष्टशती ग्रंथ लिखा। आचार्य विद्यानंद ने उसी की विस्तृत टीका अष्टसहस्त्री के नाम से की। यह अष्टसहस्त्री जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शन ही नहीं बल्कि समग्र भारतीय दर्शनों का अगाध भण्डार है। आचार्य विद्यानंद ने स्वयं इसे "कष्टसहस्री सिद्धा" कहकर इसकी अगाधता का परिचय दिया है। पूज्य माताश्री ने इसी अष्टसहस्री का हिन्दी अनुवाद किया, जिसकी हिन्दी टीका का नाम उन्होंने "स्याद्वाद चिन्तामणि भाषा टीका" रखा है। इस टीका के लिखने की पृष्ठभूमि में क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी (ब्र. मोतीचंद के रूप में) जैसे उनके संघस्थ साधु आदि विद्यार्थी थे, जिन्हें माताश्री ने सन् 1969 (वी. नि. सं. 2497) के जयपुर चातुर्मास में अष्टसहस्री पढ़ाई थी। अपने अध्यापन के दौरान माताश्री को छात्र-छात्राओं की कठिनाइयों का अनुभव हुआ। फलतः उन्होंने सन् 1969 के चातुर्मास में अनुवाद प्रारंभ करके सन् 1971 में पौष शुक्ला द्वादशी, 9 जनवरी के दिन यह अनुवाद कार्य पूर्ण किया। प्रथमतः उन्होंने 54 सारांश लिखे, जो छात्रों के लिए परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हुए। ये सारांश बाद में हिन्दी टीका के साथ यथास्थान जोड़ दिये गये। लगभग सवा एक वर्ष में यह अनुवाद पूरा हो गया। इतने वृहदाकार और गंभीर दार्शनिक ग्रंथ का अनुवाद इतनी जल्दी पूरा करना सरल नहीं रहा होगा। यह तो वस्तुतः उनकी अगाध विद्वत्ता और कर्मनिष्ठ क्षमता का प्रतीक है। इसमें प्रकरणों के शीर्षक दिये गये हैं और भावार्थ तथा विशेषार्थ देकर विशिष्ट स्थलों को स्पष्ट किया गया है।

आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज संस्कृत के विश्रुत विद्वान थे। उन्हें जब यह अनुवाद दिखाया गया, तो वृद्धावस्था के कारण वे स्वयं उसे पूरा तो नहीं देख सके, पर जो भी पृष्ठ पढ़कर सुनाये गये, उससे उन्होंने संतोष और प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा- "अनुवाद बहुत ही सरल, स्पष्ट एवं प्रभावक हुआ है। माताजी स्वयं एक बार उसका पुनरीक्षण कर लें।" तदनुसार माताजी ने पुनः उसे पढ़ा और यथावश्यक सुधारकर अंतिम रूप दिया। बाद में पं. हीरालाल जी सिद्धान्तशास्त्री ने भी इस अनुवाद के कुछ पृष्ठों का पारायण किया और उसे विशुद्ध कहकर भूरि-भूरि प्रशंसा की। इतना ही नहीं, ऐलक पन्नालाल दि. जैन सरस्वती भवन ब्यावर से अष्टसहस्री की एक प्राचीन पाण्डुलिपि भी माताजी को दी, जिसमें कुछ अधिक टिप्पणियाँ और पाठातंर दिये गये थे। माताजी ने उनका भी यथावश्यक उपयोग कर लिया। इसी तरह दि. जैन नया मंदिर धर्मपुरा, दिल्ली के प्राचीन शास्त्र भंडार से प्राप्त प्रति का भी समुचित उपयोग कर उसकी टिप्पणियों और पाठान्तरों को इसमें समाहित किया गया। इस तरह अनुवाद को अपार श्रम, निष्ठा और प्रतिभा के साथ पूरा होने के बाद ही तीन भागों में उसे प्रकाशित किया गया। द्वितीय भाग में पूज्य क्षुल्लक मोतीसागर जी ने अष्टसहस्री के विख्यात विद्वान न्यायाचार्य पं. दरबारीलाल जी कोठिया, लाल बहादुर जी शास्त्री, फूलचंद जी शास्त्री, मोतीलाल जी कोठारी, पन्नालाल जी साहित्याचार्य आदि विद्वानों के नामों का भी उल्लेख किया है, जिन्हें यह अनुवाद दिखाया गया। सभी विद्वानों ने उसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

जब मुझसे इसी अनुवाद पर आलेख तैयार करने को कहा गया तब मन में विचार आया कि इन नामी विद्वानों की मुहर लगने के बाद में मैं उसे क्या देखता। फिर भी आदेश का पालन तो करना ही था। समय निकालकर मैंने भी इन तीन भागों को उलटा-पलटा, कतिपय स्थलों के अनुवाद को देखा और आश्वस्त हुआ कि अनुवाद निश्चितरूप से विशुद्ध हुआ है। माताजी ने अपनी सारस्वत प्रतिभा का भलीभांति उपयोग बड़े परिश्रम के साथ अष्टसहस्री के अनुवाद में किया है। मैंने उसे अनुवाद विज्ञान की कसौटी पर भी कसा और पाया कि वह इस दृष्टि से भी प्रभावक और निर्दोष सिद्ध हुआ है। गुरुवर्य पं. दरबारीलाल जी कोठिया के सहयोग से मैंने भी अष्टसहस्री के अनुवाद करने की योजना बनाई थी। परन्तु उनके अस्वस्थ हो जाने से मैं साहस नहीं कर सका। पूज्य माताजी ने इस कार्य को बड़ी सहजता के साथ पूरा कर दिया। बड़ी प्रसन्नता हुई। उनकी विद्वत्ता के प्रति मेरा विनम्र अभिवादन।

मेरी दृष्टि से इस अनुवाद की प्रमुख निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं—

1. मूल ग्रंथ का सम्पादन—

माताजी ने अष्टसहस्री का अनुवाद ही नहीं किया है, उसका सम्पादन भी किया है। माणिकचन्द्र ग्रंथमाला से प्रकाशित मात्र संस्कृत के संस्करण में न सही ढंग से शीर्षक दिये गये थे और न ही उसमें विशेष टिप्पण थे। माताजी ने इन सभी कमियों को दूर कर दिया। उन्होंने अपने इस अनुवाद संस्करण को तीन भागों में विभाजित किया है—

(1) प्रथम भाग में प्रथम 6 कारिकाओं पर महाभाष्य समाहित है। इसमें आप्तपरीक्षा, नियोगवाद, विधिवाद, भावनावाद, वेद का अप्रामाण्य, चार्वाक मत का खण्डन, शून्यवाद, तत्त्वोपप्लववाद, अद्वैतवाद, सर्वज्ञसिद्धि, मोक्ष, संसार तत्त्व आदि विषयों पर विस्तार से विवेचन किया गया है। परिशिष्ट में षट्कारिकान्तर्गत अष्टशती, उद्धृत श्लोक सूची और पारिभाषिक शब्दों का अर्थ दिया गया है। इसमें 'न्यायसार' नामक स्वतंत्र ग्रंथ भी परिशिष्ट में समाविष्ट है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(2) द्वितीय भाग में 7 कारिकाओं से 23 कारिकाओं तक की व्याख्या सन्निहित है। यहाँ तक प्रथम परिच्छेद पूरा हुआ है। इसमें चित्रद्वैतवाद, निरंशज्ञान, प्रत्यक्ष प्रमाण, शून्यवाद, अभाववाद, ब्रह्माद्वैतवाद, सत्ताद्वैतवाद, शब्दनित्यत्व, द्रव्यक्षेत्रकाल-भाव संबंध, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक पदार्थ-स्वरूप नैरात्म्यवाद, सत्-असत्, निर्विकल्पवाद, स्वलक्षण, सविकल्पवाद, शब्दाद्वैतवाद, वस्तुत्ववाद, सप्तभंगवाद, अन्यापोहवाद, विधिनिषेधवाद, अर्थक्रियाकारित्व आदि विषयों पर विचार-विमर्श किया गया है।

(3) तृतीय भाग में 24वीं कारिका से 114वीं कारिकाओं तक का विवरण है। यह विवरण दस परिच्छेदों में विभक्त है। इन परिच्छेदों में अद्वैतवाद, ब्रह्माद्वैतवाद, पुरुषाद्वैतवाद, सन्तानवाद, विज्ञानाद्वैतवाद, आत्मवाद, क्षणिकवाद, संवेदनाद्वैतवाद, अवक्तव्यवाद, पंचस्कन्धवाद, प्रत्यभिज्ञानवाद, समवायवाद, द्रव्य-पर्यायवाद, हेतुवाद, आगमवाद, अपौरुषेयत्व, भाग्य और पुरुषार्थ संबंध, पुण्य-पाप, मिथ्याज्ञान और सम्यग्ज्ञान, ईश्वर सृष्टिकर्तृत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व, प्रमाणवाद, द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक नयवाद, सुनय-कुनय, स्याद्वाद और अनेकान्तवाद आदि विषयों का विवेचन किया गया है। इन तीनों भागों में अष्टशती को बोल्ड टाईप में दिया गया है। बम्बई से प्रकाशित अष्टसहस्री में अष्टशती को अष्टसहस्री में ही समाहित कर दिया गया था। यहाँ अष्टशती के हिन्दी अनुवाद को भी गहरे काले अक्षरों में दिया गया है और उसे चिन्हित भी कर दिया गया है। परिशिष्ट में भी मूलकारिका के साथ अष्टशती को प्रस्तुत किया गया है। मुद्रित प्रति के अतिरिक्त दिल्ली से प्राप्त तीन प्रतियाँ भी अ,ब,स से संकेतित हैं तथा व्यावर व दिल्ली की हस्तलिखित अष्टसहस्री में 'भाष्य' पद से अष्टशती को पृथक् कर दिया गया है। उन सभी के आधार से पाठभेद भी परिशिष्ट में नीचे दिया गया है।

(2) निर्दोष अनुवाद—

अनुवाद शाब्दिक हुआ है और कहीं-कहीं भावानुवाद भी दिखाई दिया है। पर वह इतना निर्दोष और तथ्यग्राही है कि पाठक अवाक् रह जाता है। अनुवाद में प्रवाह है, गति है, भाषा सशक्त है, संस्कृतनिष्ठ है। यदि मूल ग्रंथ को अलग कर दिया जाये तो पाठक को पता नहीं चलेगा कि यह अनुवाद है। अनुवाद की अभिव्यक्ति में स्पष्टता है। यथास्थान योग्य शीर्षक पाकर पाठक और भी आश्वस्त हो जाता है। सारांश, भावार्थ और विशेषार्थ तो उस विषय को और भी स्पष्ट करते चले जाते हैं। अनुवाद भाग में जैन, बौद्ध, नैयायिक, वैशेषिक आदि को स्वतंत्र पैराग्राफ में पाकर पाठक विषय को आसानी से हृदयंगम कर लेता है। अनुवाद में शब्दचयन भी सुन्दर और सशक्त हुआ है। 'अर्थात्' के माध्यम से भी विषय को कुशलतापूर्वक समझाया गया है।

इस ग्रंथ में संस्कृत और हिन्दी में जो शीर्षक हैं उन्हें पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने बनाये हैं, जिनका संकेत यह ( ) । प्रारंभ से अष्टशती को संस्कृत एवं हिन्दी में गहरे काले अक्षरों में लिया है। ब्यावर सरस्वती भवन की हस्तलिखित प्रति की टिप्पणियों को पृथक् दिखाने के लिए अंग्रेजी अंकों द्वारा संकेत किया है। पाठान्तर के लिए 'इतिपा.' संकेत दिया है। दिल्ली से उपलब्ध प्रति की टिप्पणी और पाठांतरों में "दि. प्र."' संकेत दिया है। यथावश्यक 'इति वा क्वचित् पाठः' संकेत देकर चिन्तन के और भी द्वार खोल दिये हैं। धरमपुरा दिल्ली के नया मंदिर जी से श्री पन्नालाल जी अग्रवाल के सौजन्य से तीन प्रतियाँ हस्तलिखित अष्टशती की प्राप्त हुई हैं, जिनका सांकेतिक नाम 'अ,ब,स' दिया है।

परिशिष्ट में मूलकारिका के साथ अष्टशती को दिया है। उस अष्टशती की एक मुद्रित प्रति है, जो कि भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशित संस्था से प्रकाशित हुई है। तीन प्रतियाँ दिल्ली की है, जो कि 'अ,ब,स' से संकेतित हैं तथा ब्यावर व दिल्ली की हस्तलिखित अष्टसहस्री में 'भाष्य' पद से अष्टशती को पृथक् किया है। उन सभी के आधार से पाठभेद भी परिशिष्ट में नीचे दिया गया है। इस प्रथम भाग में जितने भी उद्धृत श्लोक आये हैं, उन्हें भी अकारादि के अनुक्रम से दिया है। अनंतर पारिभाषिक शब्दों के अर्थों का स्पष्टीकरण किया गया है।

अष्टसहस्री आदि सभी न्याय ग्रंथों में प्रवेश कराने के लिए कुंजी के समान 'न्यायसार' नामक स्वतंत्र संकलित ग्रंथ को परिशिष्ट में जोड़ दिया गया है। अन्य दार्शनिक (दर्शन शास्त्र) प्रमाण के लक्षण और भेदों को किस रूप में मानते हैं, उसका भी वर्णन है। इसी प्रकार जैनाचार्यों द्वारा मान्य प्रमाण के भेद-प्रभेदों का भी संकलन किया गया है। संसार, मोक्ष, आत्मा एवं ज्ञान आदि के विषय में अन्य दर्शनों की मान्यता के साथ-साथ जैनाचार्यों की समीचीन मान्यता को भी दर्शाया गया है।

परिशिष्ट में न्यायसार ग्रंथ देकर अष्टसहस्री के पाठकों को विषयबोध का महापथ और भी सरल बना दिया। माताजी ने कुछ स्वरचित संस्कृत पद्यों को भी यथास्थान जोड़ दिया जिससे विषय की चेतना में उठाव आ गया। इस महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्य के लिए माताजी को जितनी भी बधाईयाँ दी जायें, उतनी कम हैं। उन्होंने प्रारंभ से ही अष्टशती को संस्कृत एवं हिन्दी में गहरे काले अक्षरों में लिखा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(3) सारांश

तीनों भागों में अनुवाद के बीच-बीच में जो सारांश दिये गये हैं, वे अपने आप में एक ग्रंथ का रूप ले लेते हैं। पाठक इन सारांशों के शीर्षक देखकर उनकी उपयोगिता पर विचार कर सकते हैं—

प्रथम भाग

1. आप्त परीक्षण का सारांश (पृ. 18)
2. नियोगवाद के खण्डन का सारांश (पृ. 42)
3. विधिवाद के खण्डन का सारांश (पृ. 88)
4. भावनावाद के खण्डन का सारांश (पृ. 187)
5. चार्वाक् मत के खण्डन का सारांश (पृ. 187)
6. तत्त्वोपप्लववादी के खण्डन का सारांश (पृ. 224)
7. सर्वज्ञ के अतीन्द्रिय ज्ञान की सिद्धि का सारांश (पृ. 279)
8. सर्वज्ञ के दोषावरण के अभाव का सारांश (पृ. 312)
9. सर्वज्ञसिद्धि का सारांश (पृ. 350)
10. चार्वाक् मत के खण्डन का सारांश (पृ. 361)
11. चार्वाक् मीमांसक और नैयायिक ज्ञान को स्वसंविदित नहीं मानते हैं। उनकी इस विचारधारा के खण्डन का सारांश (पृ. 373)
12. सांख्यादि के द्वारा मान्य संसार मोक्ष के खण्डन का सारांश (पृ. 393)
13. सांख्याभिमत संसार-मोक्ष कारण के खण्डन का सारांश (पृ. 402)
14. नवनीत

द्वितीय भाग

1. एकान्त शासन में दूषण का सारांश (पृ. 101)
2. जय पराजय व्यवस्था का सारांश (पृ. 103)
3. एकान्तवाद में पुण्य-पापादि के अभाव का सारांश (पृ. 103)
4. भावैकान्त के खण्डन का सारांश (पृ. 105)
5. प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव की सिद्धि का सारांश (पृ. 131)
6. मीमांसकाभिमत शब्दनित्यत्व के खंडन का सारांश (पृ.166)
7. नैयायिकाभिमत शब्दनित्यत्व का सारांश (पृ. 173)
8. नैयायिकाभिमत शब्द अमूर्तत्त्व के खण्डन का सारांश (पृ. 177)
9. इतरेतराभाव का सारांश (पृ. 214)
10. इतरेतराभाव और अत्यंताभाव की सिद्धि का सारांश (पृ. 218)
11. अत्यंताभाव का सारांश (पृ. 232)
12. अभावैकांत पक्ष के खंडन का सारांश (पृ. 248)
13. सत्, असत्, उभयैकात्म्य के खण्डन का सारांश (पृ. 253)
14. अवक्तव्य के खण्डन का सारांश (पृ. 282)
15. अनेकांतसिद्धि का सारांश (पृ. 355)
16. अस्तित्व, नास्तित्व धर्म अविनाभावी का सारांश (पृ. 389)
17. स्याद्वाद के अर्थक्रियाकारित्व का सारांश (पृ. 420)

तृतीय भाग

1. अद्वैतवाद खण्डन का सारांश (पृ. 32)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. योगाभिमत पृथक्त्वैकांत खण्डन का सारांश (पृ. 40)
3. बौद्धाभिमत पृथक्त्वैकांत खण्डन का सारांश (पृ. 54)
4. बौद्धाभिमत सामान्य खण्डन का सारांश (पृ. 70)
5. पृथक्त्वैकत्व रूप अनेकांत की सिद्धि का सारांश (पृ. 85)
6. विवक्षा एवं अविवक्षा के विषय का सारांश (पृ. 91)
7. भेदाभेद वस्तु प्रमाण का विषय है (पृ. 99)
8. नित्य एकान्त के खण्डन का सारांश (पृ. 119)
9. बौद्धाभिमत क्षणिकैकान्त खण्डन का सारांश (पृ. 168)
10. बौद्धाभिमत अवक्तव्य के खण्डन का सारांश (पृ. 194)
11. बौद्धाभिमत निर्हेतुक नाश एवं विसदृश कार्योत्पाद हेतु के खण्डन का सारांश (पृ. 212)
12. नित्य एवं क्षणिक में स्याद्वाद सिद्धि का सारांश (पृ. 256)
13. यौगाभिमत कार्य-कारणादिक के भिन्नत्व का खण्डन (पृ. 297)
14. परमाणु के अभिन्नैकान्त खण्डन का सारांश (पृ. 307)
15. सांख्याभिमत कार्य-कारण के एकत्व का निरास (पृ. 311)
16. यौग के उभयैकान्त एवं बौद्ध के अवाच्यत्व का खण्डन (पृ. 314)
17. कथंचित् अन्यत्व अनन्यत्व की सिद्धि का सारांश (पृ. 332)
18. एकान्तरूप अपेक्षा-अनपेक्षा का खण्डन व स्याद्वादसिद्धि का सारांश (पृ. 347)
19. ऐकांतिक हेतुवाद अथवा आगमवाद का खण्डन, स्याद्वादसिद्धि (पृ. 371)
20. अपौरुषेय वेद का खण्डन (पृ. 372)
21. अन्तरंगार्थ एवं बहिरंगार्थ के एकांत का खण्डन एवं स्याद्वादसिद्धि (पृ. 405)
22. प्रत्यक्ष एवं बहिरंगार्थ के एकांत का खण्डन एवं स्याद्वादसिद्धि (पृ. 406)
23. जीव के अस्तित्व की सिद्धि का सारांश (पृ. 433)
24. दैव एवं पुरुषार्थ के एकान्त निरसन का सारांश (पृ. 446)
25. पुण्य पापवाद का सारांश (पृ. 457)
26. अज्ञान से बंध एवं ज्ञान से मोक्ष के खण्डन का सारांश (पृ. 481)
27. ईश्वर सृष्टि-कर्तृत्व के खण्डन का सारांश (पृ. 514)
28. प्रमाण का लक्षण और फल स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क की पृथक् सिद्धि (पृ. 551)
29. स्याद्वाद लक्षण का सारांश (पृ. 569)
30. नयों के लक्षण का सारांश (पृ. 599)

इस तरह अष्टसहस्री के सम्पूर्ण अनुवाद का पारायण करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पूज्य माताजी ने अपनी सारस्वत प्रतिभा और वैदुष्य का उपयोगकर अनुवाद को पूर्णत: निर्दोष एवं सर्वग्राही बना दिया है। लगभग प्रत्येक प्रकरण में भावार्थ और विशेषार्थ तथा बाद में सारांश देकर इस अनुवाद विधा को नया आयाम तो दिया ही है, साथ ही विषय को अधिकाधिक स्पष्ट करने का भी यथाशक्य प्रयत्न किया है। जैनदर्शन के मर्म को समझने के लिए यह अनुवाद वस्तुत: एक स्वतंत्र ग्रंथ का रूप ले सकता है। स्याद्वाद और अनेकान्तवाद की शैली में लगभग सभी दार्शनिक विषयों पर आचार्य समन्तभद्र, अकलंक और विद्यानंद की तार्किक तथा व्यवहारिक दृष्टि की झांकी इस अष्टसहस्री में मिल जाती है। इस दुरूह और दुष्प्रवेश्य ग्रंथ का अनुवाद पूज्य माताजी ने इतने कम समय में और इतनी सरल शैली में पूरा कर दिया, यह कदाचित् 'न भूतो न भविष्यति' की उक्ति को स्मृतिपथ पर लाता रहेगा। भाषाविज्ञान की अनुवाद विज्ञान शैली की दृष्टि से भी यह अनुवाद खरा उतरता है। उनके इस वैदुष्य भरे व्यक्तित्व को पुन: पुन: अभिवंदामि। वे निरामय रहकर शतायु हों और इसी तरह जैन वाङ्मय की अभिवृद्धि करती रहें, यही हमारी भावना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समयसार की 'ज्ञानज्योति' टीका का वैशिष्ट्य

लेखक—डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
(अध्यक्ष-अ. भा. दि. जैन शास्त्री परिषद)

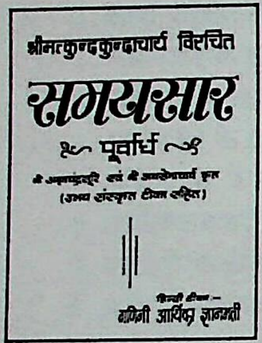

अध्यात्म की अजस्र स्रोतस्विनी प्रवाहित करने वाला श्रीमत्कुन्दकुन्दाचार्य विरचित समयसार आत्मतत्त्व निरूपण करने वाले ग्रंथों में सर्वश्रेष्ठ है। इस ग्रंथराज पर असाधारण प्रतिभाशाली आचार्य श्री अमृतचन्द्रसूरि ने दण्डान्वय प्रक्रिया का आश्रय लेकर 'आत्मख्याति' नामक टीका लिखी, जिसकी भाषा समाज बहुल है और दार्शनिक प्रकरणों की अधिकता के कारण सामान्यजनों को दुरुह है। इसमें समयसार को नाटक का रूप दिया गया है। नाटकीय निर्देशों को पूरा-पूरा स्थान दिया है। यथा पीठिका परिच्छेद को पूर्वरङ्ग कहा गया है। ग्रंथ को नाटक के समान 9 अंकों में विभक्त किया गया है-1. जीवाजीव 2. कर्त्ताकर्म 3. पुण्य-पाप 4. आस्रव 5. संवर 6. निर्जरा 7. बंध 8. मोक्ष 9. सर्वविशुद्धज्ञान। नवम अंक के अन्त में समाप्तिसूचक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-"इतिश्रीअमृतचन्द्रसूरिविरचिताय समयसारव्याख्यामात्मख्यातौ सर्वविशुद्धज्ञानप्ररूपको नवमोङ्कः" नवम अंक के बाद नयों का सामञ्जस्य उपस्थित करने के लिए स्याद्वादाधिकार तथा उपायोपेय भावाधिकार नामक दो स्वतंत्र परिशिष्ट जोड़ दिए हैं। आत्मख्याति टीका चार सौ पन्द्रह गाथाओं पर लिखी गई है, उसी के मध्य 278 कलश काव्यों के माध्यम से सारभूत विषयों को प्रस्तुत किया है। कलश काव्य भावपूर्ण एवं रोचक हैं।

आचार्य श्री अमृतचन्द्रसूरि का अनुगमन करते हुए विलक्षण प्रतिभावान आचार्यवर्य श्री जयसेन स्वामी ने समयसार के ऊपर अत्यन्त सरल और सुबोध संस्कृत में तात्पर्यवृत्ति टीका लिखी है। इसमें गुणस्थान विवक्षा से कथन किया गया है किस गुणस्थानवर्ती की क्या पात्रता होती है। इससे आचार्य जयसेन स्वामी को विशेष प्रसिद्धि मिली है। इन्होंने पदखण्डना विधि को अपनाया है। टीका लिखने की इनकी विशेष विधि है। मूल की सुरक्षा की है। इसलिए यह विधि श्रेष्ठ है। श्री कुन्दकुन्दाचार्य के मूल शब्दों की संरक्षा में प्राकृत शब्दानुसारी इस टीका का महत्वपूर्ण स्थान है। यह 439 गाथाओं पर लिखी हुई तात्पर्यवृत्ति समयसार को दस अधिकारों में विभक्त करती है। आचार्य अमृतचन्द्रसूरि ने जीवाजीवाधिकार की टीका एक साथ कर एक अंक माना है किन्तु श्री जयसेन स्वामी ने उसको दो अधिकारों में विभक्त कर टीका की है। अन्त में स्याद्वाद अधिकाररूप से ग्रंथ समाप्ति के बाद जोड़ा है। आचार्य श्री जयसेन की विशेषता है कि प्रत्येक अधिकार या उपपरिच्छेद के प्रारंभ में इन्होंने इस अधिकार का विश्लेषण विषय वस्तुओं के अनुसार उत्थानिका के रूप में गाथाओं की संख्या को भी उपस्थित कर दिया। इस टीका ने अध्यात्म और सिद्धान्त में रुचि रखने वालों को प्रभावित किया है।

समयसार की आत्मख्याति और तात्पर्यवृत्ति दोनों टीकाओं का सम्यक् स्वाध्याय कर संस्कृति संवाहिका अध्यात्मविद्या प्रवीणा गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने दोनों टीकाओं को एक साथ विविध रहस्योद्घाटन के साथ प्रस्तुत करने का विचार बनाया। दोनों संस्कृत टीकाओं का अक्षरशः अनुवाद करते हुए विशेषार्थ भावार्थ सहित "ज्ञानज्योति" नामक टीका लिखी। ज्ञानज्योति रथ का सम्पूर्ण देश में प्रवर्तन चल रहा था और गणिनीप्रमुख आर्यिकाश्री का समयसार टीका लिखते हुए आत्मरथ प्रवर्तित था अतः टीका का नाम "ज्ञान ज्योति" रखा गया।

समयसार पर हिन्दी भाषा में अनेक टीकाएँ लिखी जा चुकी थीं उनमें विशेषार्थ आदि द्वारा विषयों को भी स्पष्ट किया गया था फिर भी आर्यिकारत्न को व्याख्या लिखने की आवश्यकता महसूस हुई क्योंकि कोई भी टीका आत्मख्याति और तात्पर्यवृत्ति तथा अध्यात्मामृतकलश के हिन्दी भाषा सहित एक साथ नहीं थी। स्वाध्यायियों को अध्यात्म और सिद्धान्त के विषय स्पष्ट नहीं हो पाते थे। जो विषय आत्मख्याति से स्पष्ट नहीं होता वह तात्पर्यवृत्ति स्पष्ट करती है। दोनों टीकाओं का एक साथ अर्थ देखने पर विषय की स्पष्टता हो जाती है। इसलिए माताजी ने दोनों टीकाओं को सार्थ एक साथ तैयार किया है। आत्मख्याति टीका के बाद विशेषार्थ और तात्पर्यवृत्ति के पश्चात् भावार्थ लिखकर निश्चय-व्यवहार परक अर्थ को सुस्पष्ट कर वर्तमान में व्यवहार को असत्यार्थ और हेय मानने वाले लोगों के भ्रम का निवारण करने और सम्यक् बोध कराने का प्रयत्न किया है। यथा गाथा संख्या आठ[1] की आत्मख्याति टीका

1. जह णवि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणा उ गाहेउं। तह ववहारेण विणा परमत्थुवएसणमसक्कं।।8।।समयसार।। (आ.ता.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में श्री अमृतचन्द्रसूरि ने कहा है कि "इति वचनात् व्यवहारनयो नानुसर्तव्यः" इस कथन से व्यवहार नय अनुसरण करने योग्य नहीं किन्तु वहीं आगे 11वीं[1] गाथा की टीका के अंत में कहते हैं "अथ च केषाञ्चित्कदाचित् सोऽपि प्रयोजनवान्" अर्थात् किन्हीं लोगों को व्यवहार प्रयोजनीभूत है। पुनः 12वीं[2] गाथा की टीका में स्वयं श्री अमृतचन्द्रसूरि कह रहे हैं कि जो सोलह ताव से तपे शुद्ध स्वर्ण के समान परमभाव का अनुभव करते हैं, उनके लिए निश्चयनय प्रयोजनवान् है, उसके पहले एक दो आदि से लेकर पन्द्रह ताव तक शुद्ध होते हुए सुवर्ण के समान अपरमभाव में स्थित जनों को व्यवहारनय प्रयोजनभूत है। इसका अर्थ स्पष्ट है कि पूर्ण शुद्ध हुए बारहवें गुणस्थानवर्ती के लिए अथवा जिनके बुद्धिपूर्वक राग का अभाव है, ऐसे शुद्धोपयोगी निर्विकल्पध्यानी मुनि के लिए निश्चय प्रयोजनीभूत है। शेष चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम गुणस्थानवर्ती जनों को व्यवहार पूर्णतः कार्यकारी है।

दोनों नयों की क्या व्यवस्था है और वे किसकी अपेक्षा प्रयोजनीभूत हैं और किसकी अपेक्षा प्रयोजनीभूत नहीं हैं बताने में आगम और अध्यात्म का सम्यक् अनुगम करने वाली गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ही समर्थ हुई हैं क्योंकि इतनी स्पष्टता अन्य टीकाओं में देखने को नहीं मिलती है।

सम्यक्त्व के स्वरूप को प्रतिपादन करते हुए आचार्यश्री कुन्दकुन्द ने कहा है—

भूयत्थेणाभिगदा जीवाजीवा य पुण्यपावं च।
आसवसंवरणिज्जर बंधो मोक्खो य सम्मत्तं।।13।। (अ.)

भूतार्थ से जाने हुए जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष ये नव पदार्थ ही सम्यक्त्व हैं।

इस गाथा से एक प्रश्न खड़ा हो गया है कि भूतार्थ की विवक्षा से ये नव पदार्थ कैसे होंगे क्योंकि भूतार्थ तो शुद्धनय है। शुद्धनय से जीव के साथ कर्म का संबंध हो नहीं सकता है। तब भूतार्थ से क्या अर्थ लिया जाये? इसका समाधान टीकाकर्त्री ने बहुत सुन्दर किया है कि यहाँ पर 'भूतार्थ' शब्द से अशुद्ध निश्चयनयरूप भूतार्थ को लेना चाहिए। इसी गाथा की तात्पर्यवृत्ति में व्यवहार के भूतार्थ और अभूतार्थ और निश्चय के भूतार्थ-अभूतार्थ किये गये हैं। भूतार्थ के शुद्धनिश्चय और अशुद्धनिश्चय दो भेद करना चाहिए। शुद्धनिश्चय से नव पदार्थ की व्यवस्था नहीं बन सकती है किन्तु अशुद्धनिश्चय से अवश्य बनेगी।

इस टीका की यह भी विशेषता है कि जो विषय सामान्यतः स्पष्ट न हो रहा हो उसे माताजी ने प्रश्नोत्तर शैली में समझाकर स्पष्ट कर दिया जैसे कि-नव पदार्थ सम्यक्त्व कैसे होंगे? क्योंकि आत्मा का श्रद्धानरूप भाव सम्यग्दर्शन होता है? इसका समाधान करते हुए बताया है कि यहाँ कारण में कार्य का उपचार करके अभेदोपचार से इन नव तत्त्वों को ही सम्यग्दर्शन कह दिया है। चूँकि ये नवतत्त्व जो श्रद्धानरूप सम्यक्त्व हैं उसके लिए कारण हैं अथवा उसके विषय हैं। इस दृष्टि से भी विषय, नव तत्त्व और विषयी सम्यक्त्व इनमें अभेद करके अभेदोपचार से इन्हें ही सम्यक्त्व कह दिया है।

इस प्रकार स्पष्टीकरण करना टीका की अपनी विशेषता है। इसकी विशेषताओं को गिनाया नहीं जा सकता है यह टीका हर दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसमें समग्रता के दर्शन होते हैं। आत्मख्याति के अंगभूत कलशकाव्य साथ में दिये गये हैं उनका काव्यार्थरूप में अर्थ उपस्थित किया गया है। विशेषार्थ को अन्य ग्रंथों के प्रमाण देकर लिखने से प्रामाणिक बनाया गया है। सम्यक्त्व के प्रकरण में कलश काव्य का मुक्तकरूप में छायानुवाद दृष्टव्य है—

जिस तरह वर्णमाला कलाप में स्वर्ण निमग्न रहा जानो।
यह आत्मज्योति वैसे ही नव तत्त्वों के मध्य छिपी मानो।।
सब द्रव्यों से जो भिन्न सदा, है एक रूप चेतन देखो।
हर पर्यायों में आत्मज्योति, चिच्चमत्कार भासित लेखो।।

---

1. ववहारोऽभूयत्थो भूयत्थो देसिदो दु सुद्धणओ।
भूयत्थमस्सिदो खलु सम्माइट्ठी हवइ जीवो।।11।। समयसार (आ.)
2. सुद्धो सुद्धादेसो णायव्वो परमभावदरसीहिं।
ववहारदेसिदा पुण जे दु अपरमेट्ठिदा भावे।।12।। समयसार (आ.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसके द्वारा आत्म ज्योति के स्वरूप को जनसाधारण को समझाने में रोचकता उत्पन्न की गई है। इसी प्रकार आत्म ख्याति के अनुवाद के साथ कलशों का काव्यार्थ और उनका भी भावार्थ देकर टीका को अध्यात्मरसिक विद्वानों के लिए स्पृहणीय बना दिया गया है।

आचार्य जयसेन स्वामी सम्यक्त्व की प्रतिपादिका उक्त गाथा से ही जीवाधिकार का प्रारंभ करते हैं। जयसेनाचार्य के कथ्य को बहुत सरल भाषा में आर्यिका श्री ने प्रस्तुत किया है कि ये नव पदार्थ अभेदरत्नत्रय लक्षण निर्विकल्पध्यान में अभूतार्थ हैं इसके पहले तक भूतार्थ हैं। इससे इस भूतार्थ का प्रयोजनीभूत यह अर्थ सुघटित हो जाता है और इससे यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि शुद्धोपयोग के पहले-पहले यह निश्चय सम्यक्त्व भी नहीं होता है। यहाँ पर भी जो भूतार्थ को निश्चयनय कहा है उससे अशुद्धनिश्चयनय ही ठीक लगता है क्योंकि शुद्ध निश्चयनय से तो जीव त्रिकाल शुद्ध सिद्ध ही है। ऐसे ही प्रमाण नय आदि भी छठे गुणस्थान तक प्रयोजनीभूत ही हैं।[1]

इस प्रकार से भावार्थ और विशेषार्थ लिखकर माताजी ने इस टीका को सर्वजन बोध्य बना दिया इसीलिए जबसे यह टीका प्रकाश में आयी स्वाध्यायियों ने इसे स्वाध्याय का विषय बनाया है। इसमें गाथाओं का छन्दानुवाद भी अपना महत्त्व रखता है। गणिनीप्रमुख ने काव्य रचना के माध्यम से पूजा साहित्य की जो अभिवृद्धि की है, वैसी अद्यावधि अन्य किसी कवि या कवियित्री के द्वारा नहीं हुई है। अध्यात्म ग्रंथों का पद्यानुवाद भी अनूठा है, जो गाथाओं के पूर्ण अर्थ को प्रगट करता है।[2] टीका में अन्य मतों का पक्ष रखते हुए उनका खण्डन भी बड़ी कुशलता से किया है यद्यपि श्रीमत्कुन्दकुन्दाचार्य अजीवाधिकार के प्रारंभ में पाँच गाथाओं में अन्यमतावलम्बियों की अत्यावश्यक मान्यताओं को दर्शाते हैं। आत्मख्याति और तात्पर्यवृत्ति भी उन्हें स्पष्ट करती हैं किन्तु पांचों गाथाओं का सार संक्षेप में आर्यिकाश्री ने विशेषार्थ द्वारा दर्शाकर आत्माविषयक मान्यताओं को सहज में बता दिया। जैसे-गाथाओं में आचार्य देव ने पूर्वपक्ष की तरफ से आठ मान्यताएं रखी हैं। 1. रागद्वेष आदि विभाव परिणाम ही जीव है, 2. कर्म ही जीव है 3. तीव्र-मन्द अनुभाग से सहित परिणामों की परम्परा ही जीव है 4. शरीररूपनोकर्म ही जीव है 5. पुण्य-पापकर्मों का समूह ही जीव है 6. साता असातारूप से सुख-दुःख का अनुभव ही जीव है 7. आत्मा और कर्म ये दोनों मिलकर ही जीव है 8. आठों कर्मों का संयोग ही जीव है।

इस प्रकार से अन्य मान्यताओं को बताकर आचार्यदेव की कथनी[3] को सरल शब्दों में बता दिया है कि जीव और पुद्गल अनादिकाल से एक क्षेत्रावगाही होकर संसारी बने हुए हैं विकारसहित अनेक अवस्थाओं में परिणमन करते हैं। इत्यादि रूप से जीव-अजीव अधिकार संबंधी सभी गाथाओं को स्पष्ट कर भेदविज्ञान को समझा दिया है। व्यवहार-निश्चय की परस्पर मैत्रीरूप मीमांसा अद्भुत है। निश्चयाभासी एकान्तवादियों के लिए आखें खोलने वाली है। उनके मिथ्यात्व को गलाकर सम्यक्त्व की ज्योति प्रदान करने वाली है।

इस 'ज्ञानज्योति' टीका में शुद्धोपयोग की स्वामित्व विवक्षा पर विशेष चिन्तन है। इसमें अनेक गाथाओं के विशेषार्थों में इस विषय को विस्तार से खोला गया है। शुद्धात्म स्वभाव में तल्लीन रहने वाला ही शुद्धोपयोगी होता है। शुद्धोपयोग के बल से ही आस्रव भावों को नष्ट करता है। समयसार की कर्तृकर्माधिकार की 78वीं गाथा में स्पष्ट किया गया है कि शुद्धोपयोग के द्वारा ही जीव विचारता है कि मैं निश्चय से एक हूँ, शुद्ध हूँ, ममता रहित हूँ और ज्ञानदर्शन से परिपूर्ण हूँ। अतः इसी स्वभाव में स्थित होता हुआ एवं चैतन्य के अनुभव में लीन होता हुआ मैं इन क्रोधादिक समस्त आस्रव भावों का क्षय करता हूँ। आचार्य श्री जयसेन ने भूताविष्ट और ध्यानाविष्ट दृष्टान्तों द्वारा समझाया है कि जैसे किसी पुरुष के भूत आदि ग्रह लग गया हो तो वह भूत में और अपने आप में भेद को नहीं जानता हुआ मनुष्य से न करने योग्य बड़ी भारी शिला उठाना आदि रूप आश्चर्यजनक व्यापार को करता हुआ दीख पड़ता है, उसी प्रकार यह जीव भी वीतरागमय परम सामायिक भाव में परिणत होने वाला शुद्धोपयोग है लक्षण जिसका ऐसे भेदज्ञान के न होने से कामक्रोधादिभावों में प्रवृत्ति करने वाला होता है[4] और भेदज्ञान होने पर शुद्धात्मा के सुखानुभवरूप स्वसंवेदन ज्ञान वाला होता है[5]।

वर्तमान में कुछ लोग अविरत सम्यक्त्व के काल में शुद्धात्मा के सुखानुभव रूप स्वसंवेदन का समर्थन करते हैं उन्हें समझाते हुए

1. समयसार (पूर्वार्द्ध) पृष्ठ 79।
2. धर्मादि छहों द्रव्य मेरे कुछ भी नहीं हैं। उपयोगमयी आत्मा निश्चय से कही है।
   उनको हि धर्म निर्ममत्व ज्ञानिजन कहें। मुनि शुद्धज्ञानी ही इसे प्राप्त कर सकें।।37।। स.सा. (आ.)
3. समयसार पूर्वार्द्ध, पृष्ठ 179
4-5. कर्तृकर्माधिकार (स.सा.) गाथा. 96 की टीका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहा है कि स्वसंवेदन भी सराग और वीतराग के भेद से दो प्रकार का है अर्थात् विषय सुखानुभव के आनन्दरूप स्वसंवेदन ज्ञान सर्वजन प्रसिद्ध सराग है किन्तु जो शुद्धात्मा के सुखानुभवरूप स्वसंवेदन ज्ञान होता है, वह वीतराग स्वसंवेदन है अतएव यह सर्वत्र मानना चाहिए कि वीतराग स्वसंवेदन शुद्धोपयोग के बिना संभव नहीं है और शुद्धोपयोग अप्रमत्त निर्विकल्प समाधि के बिना संभव नहीं है।

शुद्धात्मा की भावना और शुद्धोपयोग को एक मान कर वर्तमान में अनेक लोग भ्रमित हो रहे हैं उनके भ्रम का निवारण करते हुए कहा है कि शुद्धात्मा की भावना व शुद्धोपयोगी में इतना ही अन्तर है जितना की विद्यार्थी और अध्यापक में है। शुद्धात्मा की भावना अलब्धोप्लिप्सा नहीं प्राप्त हुई वस्तु के प्राप्त करने की उत्सुकता रूप होने से अविरत सम्यग्दृष्टि आदि के भी होती है किन्तु शुद्धोपयोग तो शुद्धात्मा से तन्मयता रूप होता है जैसा कि कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा है "जिसने निज शुद्धात्मा आदि पदार्थ और सूत्र को भलीभांति जान लिया है। जो संयम और तप से युक्त है। राग रहित है जिसको सुख दुःख समान हैं, वे शुद्धोपयोगी श्रमण कहा गया है[1]।

इससे स्पष्ट है कि काम क्रोधादि विकारी भावों का मूलोच्छेद करने वाला ही शुद्धोपयोगी है। गृहस्थ को विकारों का मूलोच्छेद कदापि संभव नहीं है, क्योंकि वह कौटुम्बिक कार्यों में फंसा होकर निर्द्वन्दता प्राप्त करने में कैसे समर्थ हो सकता है? अतएव अविरत संम्यग्दृष्टि को शुद्धोपयोगी कहना आगम और अध्यात्म का अपलाप है।

आर्यिकाश्री ने ज्ञानी के स्वरूप को प्रतिपादित करने वाली गाथा[2] को भावार्थ के द्वारा सहज बोधगम्य बना दिया अर्थात् जब कर्त्ता-कर्म का संबंध छूट जाता है, तब वह आत्मज्ञानी हो जाता है। यह पूर्ण ज्ञान तो केवलज्ञानी के होता है उससे पूर्व श्रेणी में महामुनि निर्विकल्प ध्यान में अनुभव करते हैं। वे मात्र ज्ञाता दृष्टा ही रहते हैं। शिर पर अंगीठी जला देने पर भी उन्हें मान नहीं होता है, वे ही ज्ञानी कहलाते हैं। इससे पहिले श्रद्धान मात्र से अपने आपको ज्ञाता दृष्टा समझते हैं, विश्वास करते हैं किन्तु राग-द्वेष आदि रूप से तद्रूप परिणत हो जाने से ज्ञानी नहीं हो पाते हैं[3]। कलशकाव्य के द्वारा भी यही बताया गया है[4]।

इस प्रकार उदाहरण आदि के माध्यम से समयसार में वर्णित विषयों को माताजी ने अनूठे ढंग से स्पष्ट किया है। अध्यात्म प्रधान समयसार की यह हिन्दी टीका माताजी की गहरी आध्यात्मिक अभिरुचि की दिग्दर्शिका है। इसमें माताजी ने अपनी बुद्धिबल के आधार पर सूक्ष्म से सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों को जनसामान्य के लिए ग्राह्य बना दिया है। आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव, आचार्य श्री अमृतचन्द्रसूरि आचार्य श्री जयसेन स्वामी द्वारा प्रतिपादित सूक्ष्म और गंभीर सिद्धान्तों को अपनी सरल भाषा में प्रश्नोत्तर शैली और उदाहरणों के माध्यम से समझाकर जिनवाणी आराधकों का महान उपकार किया है।

समयसार को पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो भागों की टीका के साथ प्रकाशित कराया गया है। पूर्वार्द्ध में जीवाजीवाधिकार, कर्तृकर्माधिकार, पुण्य-पापाधिकार, आस्रवाधिकार, संवराधिकार का विवेचन है और उत्तरार्द्ध में निर्जराधिकार, बंधाधिकार, मोक्षाधिकार, सर्वविशुद्धज्ञानाधिकार के बाद स्याद्वादाधिकार का वर्णन है। परिशिष्ट में दसों अधिकारों की गाथाओं को प्रस्तुत किया गया है। पूर्वार्द्ध में प्रकाशित अधिकारों का अन्वयार्थ भी उत्तरार्द्ध में प्रकाशित किया गया है जिससे स्वाध्याय करने वाले सम्पूर्ण ग्रंथ को उत्तरार्द्ध एक भाग द्वारा पढ़ सकते हैं। इस टीका में माताजी की बेजोड़ भाषाशैली उनके अध्ययन, चिंतन एवं साहित्यसृजन, भाषानुवाद की विलक्षण प्रतिभा पद-पद पर दृष्टिगत होती है।

समयसार "उत्तरार्द्ध" में "पूर्वार्द्ध" की तरह ही शैली को अपनाया गया है। निर्जराधिकार में सम्यग्दृष्टि का वर्णन करते हुए निम्न गाथा है—

एवं सम्माद्दिट्ठी, अप्पाणं मुणदि जाणयसहावं।
उदयं कम्मविवागं, य मुअदि तच्चं वियाणंतो।।200।।आ. 210 ता.

---

1. सुविदिदपयत्थसुत्तो संयम तव संजुदो विगदरागो।
   समणो समसुहदुक्खो भणिदो सुद्धोव ओगोत्ति।।14।प्रवचनसार
2. कम्मस्स य परिणामं णोकम्मस्स य तहेव परिणामं।
   ण करेइ एयमादा जो जाणदि सो हवदि णाणी।।75।।(आ.)
3. समयसार पूर्वार्द्ध पृष्ठ 287
4. व्याप्यव्यापक भावरूप इक में अन्य स्वरूपं नहीं। द्रव्यं औ गुण भाव-भावक बिना कर्त्ता न कर्म स्थिती।।
   ऐसा श्रेष्ठ विवेक भेदकर, जो मिथ्यान्धकारं नशे। सो ज्ञानी यह धन्य शोभित अहो, कर्तृत्व शून्यं कहे।।49।कर्तृकर्माधिकार, पृ. 286

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थात् इस प्रकार सम्यग्दृष्टि आत्मा को ज्ञायक स्वभाव जानता है और वास्तविक तत्त्व को जानते हुए उदयस्वरूप कर्म के फल को छोड़ देता है।

आचार्य अमृतचन्द्र स्वामी सम्यग्दृष्टि को निज स्वरूप को जानने वाला और कर्मों के उदय के फलस्वरूप से उत्पन्न हुए समस्त परभावों को छोड़ने वाला बताकर उसे ज्ञान वैराग्य सम्पन्न कहते हैं। कलश के माध्यम से कहते हैं कि "मैं सम्यग्दृष्टि हूँ मुझे कभी भी बंध नहीं होता है, ऐसा मानकर जिनका मुख गर्व से ऊँचा और पुलकित हो रहा है, ऐसे रागी जीव भले ही महाव्रतादि का आचरण करें तथा समितियों का भी उत्कृष्ट रीति से अवलम्बन लेवें तो भी वे अभी भी पापी हैं क्योंकि वे आत्मा और अनात्मा के ज्ञान से रहित होने से सम्यग्दर्शन से ही रिक्त हैं[1]।

इस कलश काव्य के आधार पर जो लोग मुनियों को पापी आदि शब्दों का व्यवहार कर देते हैं उन दुष्ट लोगों के लिए टीकाकर्त्री ने विशेषार्थ में समझाया है कि यह ग्रंथ महाव्रत-समितियों में तत्पर मुनियों के लिए ही है वे ही सच्चे भेदज्ञानी होकर सम्यग्दृष्टि बनते हैं वे ही वीतरागी होकर कर्मबंध से छूट सकते हैं। महाव्रत और समिति के पालक मुनि पापी नहीं है किन्तु जो सरागी मुनि हैं महाव्रत समिति आदि चारित्र में तत्पर हैं फिर भी मैं सम्यग्दृष्टि हूँ मुझे कदाचित् भी कर्मबंध नहीं होता, ऐसा अहंकार करके ऊँचा मुख करते हुए अहंकार से चूर हो रहे हैं उनको ही यहाँ पापी कहा है।

आर्यिकाश्री ने स्पष्ट किया है कि सरागसंयमी मुनियों के दसवें गुणस्थान तक अपने अपने गुणस्थानों के अनुसार कर्मों का बंध हो रहा है। जानकार अपने को अबंधक नहीं कहेगा। जो अहंकारवश कहे कि मेरे कर्मों का बंध नहीं हो रहा है, वह अज्ञानी है। अहंकार करने वाले भी मुनि को आचार्य अमृतचन्द्रसूरि जैसे उनके गुरु उन्हें पापी कह सकते हैं। न कि गृहस्थ व्यक्ति जो निरन्तर सांसारिक भोगों में लिप्त हैं। जो अविरत हैं, वे कहते हैं कि समिति और व्रत पालक मुनि तो पापी हैं और हम सम्यग्दृष्टि हैं, ऐसे लोग संयम द्वेषी हैं, मुनिद्रोही हैं। संयम द्वेषी सम्यग्दृष्टि कदापि नहीं हो सकता।

रागी जीव सम्यग्दृष्टि क्यों नहीं होता? इस प्रश्न के उत्तर में आचार्य श्री कुन्दकुन्द ने कहा है कि जिसके रागादि भावों का अणुमात्र भी विद्यमान है, वह भले ही सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता हो, फिर भी आत्मा को नहीं जानता है और वह आत्मा का न जानता हुआ अनात्मा को भी नहीं जानता है, वह जीव-अजीव को नहीं जानता हुआ सम्यग्दृष्टि कैसे हो सकता है[2]?

गाथा संख्या 201 में "सव्वागमधरोवि' पद है जिसका अर्थ अमृतचन्द्रसूरि 'श्रुतकेवली सदृश' करते हैं[3] श्रुतकेवली भावलिङ्गी मुनि ही होते हैं, वे तो सम्यग्दृष्टि नियम से होंगे, उनमें सम्यक्त्वपने का संदेह असंगत है अतः माताजी ने इस विषय को बहुत सुन्दर स्पष्टीकरण दिया है कि दिगम्बर मुद्राधारी कोई-कोई ग्यारह अंग चौदह पूर्व के ज्ञाता श्रुतकेवली होते हैं वे भावलिङ्गी मुनि ही होते हैं अतः सर्वागम से ग्यारह अंग 10 पूर्व तक का ही ज्ञान लेना चाहिए तथा च. जो राग का अणुमात्र भी न होने से सम्यग्दृष्टि कहा है वे सम्यग्दृष्टि ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान में वीतरागी ही होंगे। दसवें गुणस्थान तक के सरागी मुनि कथमपि नहीं होंगे।

इस प्रकार से 'ज्ञानज्योति' नामक इस टीका में अन्य भी अनेक सैद्धान्तिक विषयों को स्पष्ट किया गया है। पूरा का पूरा टीका ग्रंथ अपने आप में अद्भुत है। समयसार के हार्द को प्रस्फुटित करने में पूर्णरूपेण समर्थ है। माताजी ने इसमें किसी भी रूप में कमी नहीं रहने दी है। जहाँ माताजी का पूजा साहित्य समृद्ध है, वहाँ उनका टीका साहित्य भी अपूर्व है। संस्कृत काव्य जगत् में टीकाकार के रूप में जो ख्याति मल्लिनाथ को मिली, साहित्य शास्त्र के टीकाकार में अभिनव गुप्त को मिली, उनसे भी अधिक संस्कृत और हिन्दी टीका करने में आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की कीर्ति है। यद्यपि माताजी की दार्शनिक ग्रंथों की टीकाओं ने विद्वानों को उनका चरण चञ्चरीक बना दिया और अध्यात्मिक ग्रंथों में नियमसार की स्याद्वाद चन्द्रिका और हिन्दी टीका महत्वपूर्ण है। समयसार की ज्ञानज्योति टीका की प्रशंसा के लिए शब्द नहीं हैं, निश्चितरूप से सुधीजन इसका आदर के साथ पठन-पाठन करके आध्यात्मिक रहस्यों को आत्मसात् करेंगे। अध्यात्म विषयों की प्रतिपादिका यह टीका मुक्ति पथिकों के लिए अत्यधिक उपयोगी है।

1. सम्यग्दृष्टिः स्वयमयमहं जातु बन्धो न मे स्या-दित्युत्तानोत्पुलकवदना रागिणोप्याचरन्तु।
आलम्बंतां समितिपरतां ते यतोऽद्यापि पापा-आत्मानात्मावगमविरहात्सन्ति सम्यक्त्वरिक्ताः।।137।। (अध्यात्म कलश)
2. परमाणुमित्तयं पि हु रायादीणं तु विज्जदे जस्स। णवि सो जाणदि अप्पाणयं तु सव्वागमधरोवि।।201।।आ.ता.।।211।।
अप्पाणमयाणंतो अणप्पयं चावि सो अयाणंतो। कह होदि सम्मदिट्ठी जीवाजीवे अयाणंतो।।202।। (आ.) ता. 212
3. स श्रुतकेवलिकल्पोऽपि तथापि ज्ञानमयभावनामभावेन न जानात्यात्मानं यस्तु आत्मानं न जानाति सोऽनात्मानमपि न जानीति।। आत्म. गा. 201

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षट्खण्डागम की सिद्धान्तचिन्तामणि टीका

लेखक—डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर *

षट्खण्डागम में गणितीय विषय होने से यह ग्रंथ जिज्ञासु श्रमणों और श्रावकों की गति से बाह्य रहा है। इसकी धवला टीका भी अतीव क्लिष्ट है। पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने षट्खण्डागम पर सिद्धान्तचिंतामणि टीका लिखकर तथा उसमें धवला के सरल अंशों को यथावत् समाविष्ट करके जिज्ञासुओं पर महान् उपकार किया है।

पूज्य माताजी ने सिद्धान्तचिंतामणि टीका का मंगलाचरण करते हुए सर्वप्रथम त्रैलोक्यमूर्धा पर विराजमान सर्व सिद्धों को अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए नमस्कार करके उन शान्तिनाथ भगवान को हृदय में धारण किया है, जो शान्तिनाथ भगवान सभी कार्यों के अन्त में इष्ट हैं। सर्वक्रियान्त का तात्पर्य शान्तिभक्ति, शान्तिपाठ आदि से है। मुनिजन पर्व क्रियाओं के अंत में शान्तिभक्ति करते हैं और श्रावक पूजा के अंत में शान्तिपाठ पढ़ते हैं। माताजी ने लिखा है—

''सिद्धान् सिद्ध्यर्थमानम्य, सर्वांस्त्रैलोक्यमूर्धगान्।
इष्टः सर्वक्रियान्तेऽसौ, शान्तीशो हृदि धार्यते।।''

तदनन्तर माताजी ने अर्हन्तों, चौबीस तीर्थंकरों, विदेहस्थ विद्यमान बीस तीर्थंकरों को प्रणाम करके हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र को नमस्कार किया है तथा द्वादशांग वाणी को हृदय में अवतरित किया है। मुनियों को नमस्कार की शृंखला में युगादिसमुद्भव वृषभसेन गणधर से लेकर पंचमकाल के अंत में होने वाले श्री वीरांगज मुनि को नमस्कार करते हुए पूज्य माताजी ने सभी दिगम्बर श्रमणों के प्रति अपनी भक्ति निवेदित की है। गुरु परम्परा के प्रति प्रणति निवेदन करके माताजी ने प्रथम गणिनी ब्राह्मी आर्यिका से लेकर पंचमकाल के अंत में होने वाली सर्वश्री आर्यिका तक को वंदामि करके ग्यारह अंग की पाठी सुलोचना आर्यिका की वंदना की है। अंत में माताजी ने सिद्धान्तचिन्तामणि टीका हेतु प्रार्थना करने वाली आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी को ज्ञानवृद्धि का आशीर्वाद प्रदान किया है—

''ज्ञानवृद्धिं क्रियान्नित्यमार्यिका चन्दनामतिः।
यस्याः प्रार्थनयेदानीं टीका प्रारभ्यते मया।।''

सिद्धान्तचिंतामणि का प्रयोजन—पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने सिद्धान्तचिंतामणि का प्रयोजन स्वयं को तथा अन्य भव्यात्माओं को कैवल्यप्राप्ति हेतु बीजभूत कहा है। इससे स्पष्ट है कि उनकी दृष्टि में टीका का प्रयोजन स्वपर का परम कल्याण है। एक इन्द्रवज्रा छंद द्वारा माताजी ने अपनी कामना इस प्रकार व्यक्त की है—

''सिद्धान्तचिंतामणिनामधेया, सिद्धान्तबोधामृतदानदक्षा।
टीका भवेत्स्वात्मपरात्मनोर्हि, कैवल्यलब्ध्यै खलु बीजभूता।''

मूलानुगामी टीका—'नामूलं लिख्यते किंचित्.....' मल्लिनाथ की इस उक्ति के अनुसार टीका उसे कहा जाता है, जिसमें वह कुछ न कहा जाये, जो मूल में न हो और उसे बिल्कुल न छोड़ा जाये, जो मूल में हो। सिद्धान्तचिंतामणि में यह उक्ति पूर्णतया चरितार्थ होती है।

पीठिकाव्याख्यान में टीका का प्रयोजन सुस्पष्ट करते हुए माताजी ने लिखा है—"ममासौ टीका भव्यान् सिद्धान्तग्रन्थे प्रवेशयितुं सहकारिणी स्वात्मनि हर्षोत्पादिनी च भविष्यति।" पुनः उन्होंने कहा है-"नद्याः नवघटे भृतं जलमिव इयं टीका सर्वजनमनांसि संतर्पिष्यति एवेति मया विश्वस्ते।

भाषा सरल, सुबोध एवं सहजगम्य—सिद्धान्तचिंतामणि टीका की भाषा अत्यन्त सरल है तथा संस्कृत का साधारण जानकार भी टीका के कथ्य को आसानी से समझ सकता है। 'असंजदसम्माइट्ठी' सूत्र की टीका दृष्टव्य है—"समीचीना दृष्टिः श्रद्धा

* विभागाध्यक्ष-संस्कृत विभाग, एस. डी. कालेज, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यस्यासौ सम्यग्दृष्टिः, असंयतश्चासौ सम्यग्दृष्टिश्च असंयतसम्यग्दृष्टिः। सोऽपि सम्यग्दृष्टिः त्रिविधः-क्षायिकसम्यग्दृष्टिः, वेदकसम्यग्दृष्टिः, उपशमसम्यग्दृष्टिश्चेति। दर्शनचरणगुण-घातिचतुरनन्तानुबंधिप्रकृतीनां मिथ्यात्व-सम्यक्त्व-सम्यक्त्वमिथ्यात्वत्रिदर्शनमोहप्रकृतीनां चैतासां सप्तप्रकृतीनां निरवशेषक्षयेण क्षायिकसम्यग्दृष्टिरुच्यते। एतासामेव सप्तप्रकृतीनामुपशमेन उपशमसम्यग्दृष्टिर्भवति। सम्यक्त्व-संज्ञितदर्शनमोहनीय-भेदकर्मणः उदयेन वेदकसम्यग्दृष्टिर्गीयते।"

प्रश्नोत्तर शास्त्रीय एवं तार्किक—सिद्धान्तचिंतामणि टीका में जहाँ विषय को प्रश्नोत्तर शैली में उपस्थित किया है, वहाँ वह तार्किक तो है ही, शास्त्रीय भी है। तृतीय महाधिकार में असंयत जीवों के गुणस्थान का कथन करते हुए सूत्र आया है—

'असंजदा एइंदियप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति'।।130।।

इसकी टीका में प्रश्नोत्तर दृष्टव्य है—

'मिथ्यादृष्टयोऽपि केचित् संयता दृश्यन्ते इति चेत्?

'न सम्यक्त्वमन्तरेण संयमानुपपत्तेः।

सिद्धानां कः संयमो भवतीति चेत्?

नैकोऽपि संयमः, यथाबुद्धिपूर्वकनिवृत्तेरभावान्न संयतास्ते सिद्धाः, तत एव न संयतासंयताः नाप्यसंयताः प्रणष्टाशेषपापक्रियत्वात्।

इसी प्रकार संज्ञी जीवों के कथन में भी प्रश्नोत्तर शैली दृष्टव्य है—

संज्ञिनो जीवाः मिथ्यादृष्टिगुणस्थानादारभ्य क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थपर्यन्ताः भवन्तीति।

समनस्कत्वात्सयोगकेवलिनोऽपि संज्ञिनः इति चेत्?

न, तेषां केवलिनां क्षीणज्ञानदर्शनावरणानां मनोऽवलम्बनबलेन बाह्यार्थग्रहणाभावतो न ते संज्ञिनः उच्यन्ते।

तर्हि भवन्तु केवलिनोऽसंज्ञिनः इति चेत्?

न, साक्षात्कृताशेषपदार्थानां सर्वज्ञानाम् असंज्ञित्वविरोधात्।

ते सर्वज्ञाः विकलेन्द्रियवत् मनोऽनपेक्ष्य बाह्यार्थान् गृह्णन्ति इति चेत्?

नैतद् वक्तव्यम्। मनसोऽभावेऽसंज्ञिनां बुद्ध्यतिशयाभावोऽपि वर्तते। नैतादृशं केवलिनां भगवतां, अतएव ते सर्वज्ञाः आवरणविगमात् पूर्णज्ञानिनः सन्ति।

पूर्वाचार्यों के प्रति अगाध श्रद्धा तथा अनिह्नव गुण—पूज्य माताजी ने सिद्धान्तचिन्तामणि टीका में पूर्वपरम्पराप्रणीत 22 ग्रंथों के संदर्भों का ससम्मान उल्लेख किया है। प्रारंभिक भूमिका में पूज्य माताजी ने स्पष्टतया स्वीकार किया है कि इस टीका में धवला की पंक्तियों की संस्कृत छाया, कहीं संक्षेपीकरण तथा प्रसंगोपात्त अन्य ग्रंथों के विशिष्ट संदर्भों को संग्रहीत किया गया है। वे लिखती हैं—

"अस्य षट्खण्डागमग्रन्थराजस्य षट्टीकाः श्रूयन्ते, परन्तु वर्तमानकाले एका धवलाख्या एव टीका उपलभ्यते। अस्याः टीकायाः आधारेणैव विशेषतया स्वस्य ज्ञातुमर्हाणि प्रकरणान्युद्धृत्योद्धृत्य क्वचित्प्राकृतपंक्तीः, क्वचित्प्राकृतपंक्तीनां संस्कृतछायां कृत्वा, अन्येषामपि ग्रन्थानां विशेषोद्धरणानि अपि संगृह्य मयेयं सिद्धान्तचिंतामणिर्नामधेया टीका लिख्यते।

माताजी ने उद्धृत ग्रंथों का यथास्थान नामोल्लेख तथा उनके लेखकों का सम्मान सहित उल्लेख करके अनिन्हवाचार का पालन किया है। पूज्य माताजी मूलाचार को आचार्य कुन्दकुन्द कृत मानती हैं। दिक्शुद्धिप्रकरण में 'श्रीकुन्दकुन्ददेवेनापि प्रोक्तं दिक्शुद्धिप्रकरणं' कहकर माताजी ने मूलाचार की गाथा को उद्धृत किया है—

'णवसत्तपंचगाहापरिमाणं दिसिविभागसोधीए।
पुव्वण्हे अवरण्हे पदोसकाले य सज्झाए।।'

विशिष्ट नारियों की प्रशंसा—वेद मार्गणा में गोम्मटसार की जीवतत्त्वप्रदीपिका टीका से 'स्त्री' शब्द की निरूक्ति 'स्तृणाति स्वयमन्यं च दोषैः इति स्त्री (जो अपने को और दूसरे पुरुष को दोषों से आच्छादित करती है, वह स्त्री है) इस निरुक्ति पर टिप्पणी करते हुए माताजी लिखती हैं कि सब स्त्रियों में यह लक्षण घटित नहीं होता है। इस संदर्भ में माताजी ने ज्ञानार्णव से तीन श्लोक उद्धृत किये हैं—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यमिभिर्जन्मनिर्विण्णैर्दूषिता यद्यपि स्त्रियः।
तथाप्येकान्ततस्तासां विद्यते नाद्यसंभवः।।
ननु सन्ति जीवलोके काश्चिच्छमशीलसंयमोपेताः।
निजवंशतिलकभूताःश्रुतसत्यसमन्विताः नार्यः।।
सतीत्वेन महत्त्वेन वृत्तेन विनयेन च।
विवेकेन स्त्रियः काश्चित् भूषयन्ति धरातलम्।।

उदाहरण के रूप में माताजी ने सभी तीर्थंकरों की माताओं; ब्राह्मी, सुन्दरी, चन्दना आदि आर्यिकाओं; सीता, अंजना आदि सतियों को उद्धृत करते हुए उन्हें इन्द्र एवं चक्रवर्ती आदि द्वारा भी पूजित कहा है।

कोई भी भाववेद मुक्ति में बाधक नहीं है, किन्तु द्रव्यवेद बाधक है। अतः कहीं भाव की अपेक्षा द्रव्य की अधिक सामर्थ्य हो सकती है। द्रव्य स्त्रीवेद मुक्ति में बाधक तो है, पर वह सर्वथा गर्ह्य ही नहीं है।

पण्डितों को उचित सम्मान— पूज्य माताजी ने सिद्धांतचिंतामणि टीका में पंडित प्रवर आशाधरप्रणीत अनगारधर्मामृत एवं डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री द्वारा लिखित ग्रंथ महामंत्र णमोकार : एक अनुचिंतन' का सादर उल्लेख करके पण्डितों के प्रति भी उचित सम्मान प्रकट किया है। सरस्वती की आराधना से आराधक भी सम्मान्य हो जाता है— यह बात माताजी द्वारा पण्डितों के ग्रंथों को उल्लिखित करने से स्पष्ट हो जाती है।

आचार्य वीरसेन स्वामी की तरह पापभीरुता— 'विद्या ददाति विनयं' का साक्षात् निदर्शन सिद्धान्तचिंतामणि टीका में देखा जा सकता है। इतनी विद्वत्तापूर्ण टीका होने पर भी माताजी लिखती हैं—

'नायं मम प्रयासः स्वविद्वत्ताप्रदर्शनार्थं, प्रत्युत् स्वज्ञानावरणकर्मक्षयोपशमवृद्ध्यर्थं सिद्धान्तसूत्रग्रन्थे प्रवेशकरणार्थं स्वात्मनि परमाह्लादमुत्पादयितुं चायं उपक्रमः क्रियते।........क्वायं द्वादशांगमहार्णवः सिद्धान्तागमः। क्व च मम लवलेशज्ञानधारिणी अल्पबुद्धिः। अस्मिन् कार्ये ममेदं साहसं केवलं जलसंस्थितचन्द्रबिम्बं ग्रहीतुर्मनसो बालस्येव।'

निदर्शना अलंकार के शोभन प्रयोग के साथ आत्मलघुता का यह दर्शन कविकुलकमलाकर कालिदास के बाद माताजी में दृष्टिगोचर होता है।

आचार्य वीरसेन स्वामी का स्पष्ट अभिमत है कि जब किसी विषय में दो मत मिलें तो दोनों ही मतों को संग्रह करना चाहिए। क्योंकि केवली या श्रुतकेवली ही उसे जान सकते हैं। इस समय उसका निर्णय नहीं हो सकता है। अतः पापभीरुता का विनाश न हो जाये, इस कारण दोनों मत संग्रहणीय हैं। माताजी का भी स्पष्ट मत है कि दोनों मतों का संग्रह करने से कोई मिथ्यादृष्टि नहीं हो जाता है। हमें किसी एक मत को अप्रमाण कहने का साहस नहीं करना चाहिए। माताजी ने लिखा है—

'एतत्प्रश्नोत्तरैः विज्ञायते, पूर्वाचार्यैः लिखित-शास्त्राणि प्रमाणमेव। तेषां मध्ये यत् किमपि परस्पर-विरोधिवाक्यंभवेत् तदा द्वयोरपि वाक्ययोः श्रद्धानं कर्तव्यं, न च एकस्य प्रामाण्यं अन्यस्य अप्रामाण्यं वक्तव्यमिति।'

सिद्धान्तचिंतामणि की अन्य विशेषताएं—

(1) टीकाकर्त्री गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने श्रीमत्पुष्पदन्ताचार्य के द्वारा प्रस्तुत णमोकार महामंत्र मंगल गाथासूत्र का विस्तृत व्याख्यान किया है। इस व्याख्यान में उन्होंने अरिहंत, अरहंत और अरुहंत तीनों शब्दों को प्राचीन एवं परम्परागत स्वीकार किया है—

(क) अरिहननाद् अरिहंता-अरिर्मोहः।
रजोहननाद्वा अरिहंता-ज्ञानदृगावरणानि रजांसीव रजांसि।
रहस्याभावाद् वा अरिहंता-रहस्यमन्तरायः।
(ख) 'अरहंताणं' इति पाठान्तरे अतिशयपूजार्हत्वाद्वा अर्हन्तः।
(ग) 'अरुहंताणं' इत्यपि पाठान्तरे अरोहद्भ्यः अनुपजायमानेभ्यः क्षीणकर्मबीजत्वात्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमोकार मंत्र के विशद व्याख्यान के प्रसंग में माताजी ने परमेष्ठियों के गुणों का विस्तृत व्याख्यान अपनी टीका में किया है।

प्रायः यह कहा जाता है कि जैनधर्म में णमोकार मंत्र में लोक के सभी साधुओं को नमस्कार किया गया है किन्तु यह बात सर्वथा समीचीन नहीं है। वास्तव में यहाँ भावलिंगी आचार्य, उपाध्याय एवं साधुओं को ही नमस्कार है। माताजी ने इस बात को स्पष्ट किया है। वे लिखती हैं—

अत्राचार्योपाध्यायसाधव एते त्रयोऽपि भावलिंगिनो मुनय एव गृहीतव्याः। किंच त्रिसंख्योननवकोटिमुनीश्वराणां संख्यायां षष्ठगुणस्थानादारभ्य अयोगकेवलिपर्यन्ताः मुनयः संग्रहीताः सन्ति। अतो ज्ञायतेऽत्र पंचनमस्कारमंत्रे द्रव्यलिंगिनः साधवोऽन्यवेषधारिणो वा न गृहीतव्या भवन्ति इति। प्रत्युत् षष्ठगुणस्थानादारभ्य द्वादशमगुणस्थानवर्ति–पर्यन्तमुनयो ज्ञातव्याः किंच त्रयोदशमचतुर्दशमगुण–स्थानवर्तिनः अर्हत्सु अन्तर्भवन्तीति।

यद्यपि पुष्पदन्ताचार्य ने णमोकारमंत्र को प्रथम गाथासूत्र माना है और आगे के सूत्रों का प्रारंभ दो संख्या से किया है तथापि संग्रहीत होने से यह अनादिनिधन है। माताजी ने लिखा है—

'अयं महामंत्रः मंगलाचरणरूपेणात्र संग्रहीतोऽपि अनादिनिधनः, न तु केनापि रचितो ग्रथितो वा'।

(2) पीठिका व्याख्यान में माताजी ने वर्ण्य महाधिकार के कथ्य का कथन कर दिया है, जिससे प्रारंभ में ही यह ज्ञात हो जाता है कि आगे का विवेचन क्या है? इससे जिज्ञासुओं की जिंज्ञासा का शमन तो होता ही है, उनकी रुचि भी जागृत होती है।

(3) दिक्कालशुद्धिविचार प्रकरण में माताजी ने उन लोगों को सचेत किया है जो कभी भी सिद्धान्तग्रंथों को पढ़ने बैठ जाते हैं। उन्होंने मूलाचार के आधार पर दिक्शुद्धि का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। दिक्शुद्धिपूर्वक स्वाध्याय से ज्ञान में निर्मलता आती है। इस प्रसंग में माताजी ने यह भी स्पष्ट किया है कि मुनियों के समान ही आर्यिकाओं को भी सिद्धान्त ग्रंथ पढ़ने का अधिकार है– 'अत्रैतत् ज्ञातव्यं मुनीनामिव आर्यिकाणामपि सिद्धान्तग्रंथपठनस्याधिकारोऽस्ति'।

(4) माताजी ने अपनी सिद्धान्तचिंतामणि टीका में इतिहास की सुरक्षा की दृष्टि से प्रसंगतः आवश्यक उल्लेख भी विस्मृत नहीं किये हैं। 'ॐ' बीजाक्षर में पञ्चपरमेष्ठियों का समावेश स्पष्ट करते हुए उसे पंचपरमेष्ठी का वाचक बताया है। अन्त में हस्तिनापुर में 'ॐ' प्रतिमा की स्थापना का कथन करते हुए माताजी ने लिखा है—

'हस्तिनापुर क्षेत्रे जम्बूद्वीपस्थले एकस्मिन् मन्दिरे एकोनविंशत्यधिकपंचविंशतिशततमे वीराब्दे मत्प्रेरणया 'ॐ' निर्मापितोऽस्ति। अस्मिन् ॐकारे पञ्चपरमेष्ठिनां मूर्तयो विराजमाना भविष्यन्ति। अयं ॐ मंत्रः किञ्चिन्न्यूनं सार्धत्रिहस्तप्रमाणमस्ति। एष मंत्रो बृहदाकारेण प्रथमबारमेवात्र निर्मापितोऽभवत्। अयं मन्त्राकारः सदैव जम्बूद्वीपस्थलं हस्तिनापुरक्षेत्रं च रक्षेदिति प्रार्थयामहे।

(5) पूज्य माताजी ने अपनी टीका में सन्धियों का सर्वत्र बहुलता से प्रयोग किया है। विराम में पदान्त म् का अनुस्वार उन्होंने श्री शर्ववर्मकृत कातंत्रव्याकरण के 'विरामे वा' सूत्र के अनुसार वैकल्पिक मानकर किया है। यह व्याकरणगत अशुद्धि तो नहीं कही जा सकती है, परन्तु पाणिनीय व्याकरण के अध्येताओं को खटकती अवश्य है अतः पाणिनी व्याकरण अध्येताओं को जैन व्याकरण का अध्ययन करके इस विशेष नियम का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

यह आलेख षट्खण्डागम खण्ड 1 भाग 1 की सिद्धांतचिंतामणि टीका के आधार पर लिखा गया है। संस्कृत टीका ग्रंथों में श्रेय और प्रेम की साधक यह टीका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसे देखकर लगता है कि पूज्य माताजी में कवित्व का बीजरूप संस्कार पूर्वजन्म का विद्यमान है। लोक, शास्त्र, काव्य आदि के अवेक्षण से उनमें निपुणता का आधान है तथा स्वाध्याय से उन्हें संस्कृत भाषा में रचना का अभ्यास प्राप्त हुआ है। इस प्रकार सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र की एकता की तरह उन्हें ग्रंथ रचना में शक्ति, निपुणता एवं अभ्यास इन तीनों की एकता भी प्राप्त है।

अंत में मैं पूज्य माताजी के चरणों में 'वंदामि' निवेदन करता हुआ भावना भाता हूँ—

या धार्मिकोद्धरणरक्षणकार्यदक्षा,
याऽचालयत्तदनु गोष्ठिपवित्रकार्यम्।
स्वाधीनराष्ट्रगतगौरवकारणं या,
सा भारते विजयते गणिनी सुविज्ञा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्कृत के आधुनिक टीका साहित्य की अनुपम कृति

नियमसार प्राभृत और उसकी टीका ''स्याद्वाद चन्द्रिका'' का वैशिष्ट्य

लेखक — प्रो. डॉ. भागचंद्र जैन 'भागेन्दु', दमोह *

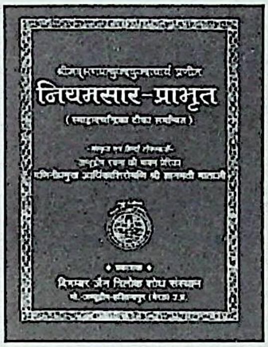

आचार्य कुन्दकुन्द : नियमसार प्राभृत के रचयिता — भारतीय चिन्तकों और ग्रंथकारों में आ. कुन्दकुन्द का स्थान अग्रपंक्ति में प्रतिष्ठित है। उन्होंने अपने विपुल एवं असाधारण प्राकृत वाङमय के द्वारा भारतीय संस्कृति को अध्यात्म एवं तत्त्वज्ञान-प्रधान विचार तथा आचार प्रदान किया और उसे अद्भुत ढंग से प्रभावित किया है। भारतीय वाङ्मय में प्राकृत भाषा के महापण्डित और इस भाषा में निबद्ध सिद्धान्त-साहित्य के अद्वितीय रचयिता के रूप में आ. कुन्दकुन्द का नाम अत्यन्त विश्रुत है। उन्होंने स्वान्तः सुखाय के साथ लोकहिताय विस्तृत रूप से श्रुत का प्रणयन किया। उनका समग्र-चिन्तन मानव-जीवन मूल्यों पर आधृत है। जीवन के आदर्शोन्मुख यथार्थ आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथों का मूल विषय है। उनकी दृष्टि ने अध्यात्म को जन-जन की पहचान बना दी। जिस जीवन के परम लक्ष्य को तीर्थंकर महावीर ने अपने जीवन का आधार बनाकर जन-मानस तक पहुँचाने का कार्य किया, उसी को आ. कुन्दकुन्द ने भी अपने समय में किया। तीर्थंकर महावीर की सर्वतोन्मुखी दृष्टि उनके प्रत्येक ग्रंथ में निदर्शित है। श्रमण संस्कृति के इतिहास में तीर्थंकर महावीर और गौतम गणधर के पश्चात् प्रातः वंद्य कलिकाल सर्वज्ञ श्री कुन्दकुन्द आचार्य भास्करसदृश भासमान हैं, जिन्होंने दो हजार वर्ष पूर्व विक्रम की प्रथम शताब्दी में प्राकृत वाणी में यह उद्घोष किया कि प्रत्येक मानव परम तत्त्व का अनुभूत स्वर स्वानुभूति द्वारा प्राप्त कर सकता है।

आचार्य कुन्दकुन्द भारतीय अध्यात्म-परम्परा के महान् तत्त्वान्वेषी, आत्मानुभवी सफल साधक थे। आचार्यों की परम्परा में, ग्रंथों के निर्माण में, विषयों के प्रतिपादन में और जैन दर्शन के मौलिक सिद्धान्तों को कालान्तर में प्रामाणिकता प्रदान करने में आ. कुन्दकुन्द को महान् श्रेय प्राप्त है। चौबीसवें तीर्थंकर महावीर और उनके प्रमुख शिष्य इन्द्रभूति गौतम गणधर के साथ मंगलाचरण में उनका नाम समादृत है और प्रत्येक मंगल कार्य के प्रारंभ में 'मंगलं कुन्दकुन्दाद्यः' कहकर उनका नाम बहुत आदरपूर्वक लिया जाता है। परवर्ती ग्रंथकारों एवं टीकाकारों के लिए वे प्रेरणा स्रोत रहे। दिगम्बर जैन आम्नाय के साधु अपने आपको आचार्य कुन्दकुन्द की परम्परा का मानने में गौरव की अनुभूति करते हैं। उनके उत्तरवर्ती ग्रंथकारों के ग्रंथों और शिलालेखों में उनकी असाधारण विद्वत्ता, अनुपम संयम, अद्भुत इन्द्रियविजय और अनेक ऋद्धि-सिद्धियों आदि विशेषताओं का ससम्मान उल्लेख किया गया है।[1]

समय — आचार्य कुन्दकुन्द के समय के विषय में अनेक मत हैं। डॉ. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये[2] ने उन सभी मतों पर विमर्शपूर्वक उनका अस्तित्व समय ईसवी सन् का प्रारंभ निर्णीत किया है। मूलसंघ की उपलब्ध पट्टावली के अनुसार भी यही समय माना गया है। पं. जुगल किशोर मुख्तार, प्रो. ए. चक्रवर्ती, डॉ. ज्योति प्रसाद जैन[3], प्रो. हार्नले[4] आदि इतिहासवेत्ताओं ने भी आचार्य कुन्दकुन्द का यही समय प्रमाणित किया है।

ग्रंथरचना — आचार्य कुन्दकुन्द ने अपनी ग्रंथ रचना के लिए प्राकृत, पाली और संस्कृत इन तीन प्राचीन भारतीय भाषाओं में से प्राकृत को चुना। प्राकृत उस समय जन भाषा के रूप में प्रख्यात थी और वे जनता-जनार्दन तक अपने चिन्तन को पहुँचाना चाहते थे। अतएव उनकी सभी कृतियाँ प्राकृत में ही निबद्ध उपलब्ध हैं। प्राकृत वाङ्मय के रचनाकारों में आचार्य कुन्दकुन्द का मूर्धन्य स्थान है। उन्होंने जितना प्राकृत वाङ्मय रचा है उतना अन्य किसी मनीषी ने नहीं लिखा। प्रसिद्धि है कि आ. कुन्दकुन्द ने 84 पाहुड़ों (प्राभृतों-प्रकरण ग्रंथों) की रचना शौरसेनी प्राकृत में की थी।

सम्प्रति उपलब्ध उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं —

1. प्रवचनसार 2. पंचास्तिकाय 3. समयसार 4. नियमसार 5. दंसण पाहुड़ 6. चरित्त पाहुड़ 7. सुत्त पाहुड़ 8. बोध पाहुड़ 9. भाव पाहुड़ 10. मोक्ख पाहुड़ 11. लिंग पाहुड़ 12. सील पाहुड़ 13. बारस अणुवेक्खा 14. सिद्ध भत्ति 15. सुदभत्ति

* प्राध्यापक संस्कृत एवं पूर्व सचिव म.प्र. संस्कृत अकादमी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

16. चारित्त भत्ति 17. योग भत्ति 18. आइरिय भत्ति 19. णिव्वाण भत्ति 20. पंच गुरु भक्ति 21. थोस्सामि थुदि 22. कुरल काव्य। इन रचनाओं के अतिरिक्त रयणसार और मूलाचार को भी इनकी रचना माना जाता है।

नियमसार प्राभृत—प्रातः वंदनीय आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी (प्रथम शती ई.) ने अध्यात्म, दर्शन एवं मोक्षमार्ग विषयक 'नियमसार प्राभृत' नामक महान ग्रंथराज की रचना की है। यद्यपि इस ग्रंथ की उतनी प्रसिद्धि नहीं है, जितनी उनके द्वारा प्रणीत समयसार आदि ग्रंथों की है। पुनरपि-नियमसार प्राभृत अपने ढंग की अनूठी रचना है।

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने 'नियम' शब्द का अर्थ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का परिपालन एवं 'सार' का अर्थ-विपर्यय, विसंगतियों रहित उक्त रत्नत्रय का निर्वाह करना किया है तथा पाहुड़ या प्राभृत का सामान्य लक्षण इस प्रकार है–जम्हा पदेहि फुंडं। तम्हा पाहुडं[5]।-प्रकृष्टेन तीर्थंकरेण आभृतं प्रस्थापितं इति प्राभृतम्। प्रकृष्टैराचार्यैर्विद्यावित्तवद्भिराभृतं धारितं व्याख्यातमानीतमिति वा प्राभृतम्।[6]

जो पदों से स्फुट-व्यक्त है वह 'पाहुड़' कहलाता है। जो प्रकृष्ट अर्थात् तीर्थंकर के द्वारा आभृत अर्थात् प्रस्थापित किया गया है वह 'प्राभृत' है। अथवा जिसके विद्या ही धन है, ऐसे उत्कृष्ट आचार्यों के द्वारा जो धारण किया गया है, अथवा व्याख्यान किया गया है, अथवा परम्परा से लाया गया है वह 'प्राभृत' है।

तात्पर्य यह है कि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र का जो वास्तविक रूप है तदनुरूप प्रवृत्ति का नाम 'नियमसार प्राभृत' है। इस 'नियमसार प्राभृत' को उन्होंने दो रूपों में विभक्त कर दिया है। वे रूप हैं—1. मार्ग और 2. मार्ग का फल। मार्ग का अर्थ है-सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का पालन और फल का अर्थ है-मोक्ष। अर्थात् जो कार्य जिस उद्देश्य से किया जाता है उस उद्देश्य की सिद्धि फल है और जो कार्य किया जाता है उसका नाम मार्ग है। तात्पर्य यह है कि आ. कुन्दकुन्द स्वामी ने अपने आध्यात्मिक ग्रंथ 'नियमसार प्राभृत' में इन दोनों का ही विवेचन किया है। इन दोनों के विश्लेषण में उन्होंने व्यवहारदृष्टि और निश्चयदृष्टि-दोनों को ही अपनाया है।

'नियमसार प्राभृत' में कुल बारह अधिकार हैं। आ. कुन्दकुन्द स्वामी ने मात्र 187 गाथाओं में वर्ण्य विषय का समीचीन विश्लेषण प्रौढ़ शैली एवं प्राञ्जल शौर सेनी प्राकृत भाषा में करके 'गागर में सागर' समाविष्ट करने की उक्ति चरितार्थ की है। इसीलिए यह ग्रंथराज श्रमणों-साधुओं का कण्ठहार है।

'नियमसार प्राभृत' के प्रतिपाद्य विषय का विश्लेषण निम्नलिखित बारह अधिकारों में किया गया है—

1. जीवाधिकार 2. अजीवाधिकार 3. सम्यग्ज्ञानाधिकार (शुद्धभावाधिकार) 4. व्यवहार चारित्राधिकार 5. परमार्थ प्रतिक्रमण अधिकार 6. निश्चय प्रत्याख्यान अधिकार 7. परमालोचना अधिकार 8. शुद्ध निश्चय प्रायश्चित्ताधिकार 9. परम समाधि अधिकार 10. परम भक्ति अधिकार 11. निश्चय परमावश्यक अधिकार 12. शुद्धोपयोगाधिकार।

नियमसार प्राभृत का अभीष्ट—आचार्य कुन्दकुन्द की रचनाओं में यह विशेषता है कि जब वे व्यवहार का आश्रय लेकर किसी तत्त्व का निरूपण करेंगे तो उसके पश्चात् व्यवहार विरोधी निश्चय दृष्टि से भी उसके स्वरूप का व्याख्यान करेंगे। 'नियमसार प्राभृत' में भी उन्होंने इसी दृष्टि को ही अपनाया है। सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान के आधारभूत सात तत्त्वों का विवेचन पहले दो अधिकारों में किया है। प्रथम अधिकार जीवाधिकार है और द्वितीय अधिकार अजीवाधिकार है। प्रथम अध्याय में मात्र जीव तत्त्व का और द्वितीय अजीवाधिकार में पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल इन पाँच का निरूपण किया है। इन दोनों ही अधिकारों में व्यवहार दृष्टि को प्रधान करके उक्त सभी विवेचन हैं। पुनः उनकी दृष्टि शुद्ध निश्चय नय पर केन्द्रित हो जाती हैं अतः तृतीय अधिकार शुद्ध जीवाधिकार है।[7] आगे चारित्र अधिकार में भी यही क्रम अपनाया गया है, पहले व्यवहार चारित्र का वर्णन किया जिसमें पाँच महाव्रत और पाँच समितियों का वर्णन है, तत्पश्चात् निश्चय चारित्र का व्याख्यान है जिसमें निश्चय षडावश्यक का व्याख्यान है। ग्रंथ का अन्तिम अधिकार शुद्धोपयोगाधिकार है। इस प्रकार सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्रभूत नियम का दोनों दृष्टियों से निर्विरोध अतः सारभूत विवेचन किया गया है। यही 'नियमसार प्राभृत' का अभीष्ट भी है।

तात्त्विक विवेचन—आ. कुन्दकुन्द के प्राकृत वाङ्मय का मंथन करने पर सुस्पष्ट होता है कि उसका अधिकांश तात्त्विक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निरूपणपरक ही है और वह उनका अपना निजी ही है। समयसार और नियमसार प्राभृत में जो शुद्ध-आत्मा का विस्तृत और विशद विवेचन है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

उदाहरणार्थ—'नियमसार प्राभृत' के कतिपय प्रसङ्ग देखिए-नियमसार प्राभृत (गाथा 159)[8] में व्यवहारनय से आत्मा को सर्वज्ञ और निश्चयनय से आत्मज्ञ निरूपित करना कुन्दकुन्द का अपना निजी एवं सर्वथा नया विचार है।

षट्खण्डागम में निर्दिष्ट ज्ञान और दर्शन के यौगपद्य का सर्वप्रथम समर्थन इस 'नियमसार प्राभृत' की गाथा 160[9] में मिलता है।

पुद्गल के दो तथा छह भेदों का निरूपण (नि.गा. 20-24)[10], परमाणु का स्वरूप कथन (नि.गा. 26)[11], कर्मभूमिज और भोगभूमिज-मनुष्यों के ये दो भेद (नि. गा. 16)[12] इसी में निदर्शित हैं। इसी प्रकार अन्य विश्लेषणों में भी तात्त्विक विवेचना समुपलब्ध है।

उल्लेखनीय है कि आ. कुन्दकुन्द के वाङ्मय ने सैद्धान्तिक चिन्तना की जो दृष्टि प्रस्तुत की है वह उनकी अपूर्व देन है और वह उत्तरकालीन ग्रंथकारों द्वारा समादृत एवं सम्पुष्ट हुई है। इसी से आ. कुन्दकुन्द को सर्वाधिक सम्मान मिला और वे मूलसंघ के नायक माने गये हैं।

नियमसार प्राभृत की टीकाएँ—

इस ग्रंथ की निम्नलिखित टीकाएँ उपलब्ध हैं—

1. आचार्य पद्मप्रभ मलधारीदेव कृत संस्कृत टीका—आचार्य पद्मप्रभ मलधारी देव (बारहवीं शती) संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित, दि. जैन मुनि और अध्यात्म विद्या के रसिक मनीषी थे। उन्होंने 'नियमसार प्राभृत' पर तात्पर्यवृत्ति नामक सुरुचिपूर्ण संस्कृत में टीका का सर्वप्रथम प्रणयन किया।

(2) ब्र. शीतलप्रसाद जी द्वारा प्रणीत हिन्दी टीका—आचार्य पद्मप्रभ मलधारीदेव प्रणीत संस्कृत टीका का आश्रय लेकर ब्रह्मचारी जी ने नियमसार का सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद किया। यह टीका बहुत उपयोगी और प्रशंसित हुई।

(3) सोनगढ़ से प्रकाशित गुजराती एवं हिन्दी टीका—'नियमसार प्राभृत' की आ. पद्मप्रभ मलधारीदेव कृत संस्कृत टीका का ही गुजराती अनुवाद श्री हिम्मतलाल जेठलाल शाह ने किया और उसका हिन्दी रूपान्तरण श्री मगनलाल जैन ने किया, जो सोनगढ़ से प्रकाशित है। इनकी अनेक टिप्पणियाँ आगमसम्मत नहीं है और इनमें एकान्त निश्चयाभास को सम्पुष्ट करने का प्रयास हुआ है।

(4) आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी द्वारा प्रणीत हिन्दी टीका—'नियमसार प्राभृत' की आचार्य पद्मप्रभ मलधारीदेव कृत तात्पर्यवृत्ति नामक संस्कृत टीका का सम्यक्तया अध्यात्म अमृत मंथन कर आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी ने हिन्दी भाषात्मक टीका का सृजन कार्य चैत्र कृष्णा 9 वीर नि. सम्वत् 2502 में पूर्ण किया है। अनेक विशेषताओं और महामनीषी डॉ. पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य की प्रस्तावना से अभिमंडित इस कृति का प्रकाशन वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के पुष्प संख्या 75 के रूप में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर से माघ शुक्ला त्रयोदशी वीर नि. सम्वत् 2511 तदनुसार 3 फरवरी 1985 को हुआ।

इस टीका की विशेषताएँ—ग्रंथ के प्रारंभ में मुद्रित आद्य उपोद्घात में पूज्य माताजी ने नियमसार प्राभृत की उपयोगी गाथाओं को विषयानुसार वर्गीकृत कर प्रस्तुत किया है। टीका करते समय अन्वयार्थ, शब्दार्थ एवं भावार्थ सुगम शैली में प्रस्तुत किए हैं। ग्रंथ के अंत में सन्निविष्ट परिशिष्टों में, मुनियों के लिए निर्दिष्ट गाथाएँ, निश्चयनय एवं व्यवहारनय निर्देशक गाथाएँ तथा आवश्यक विशेष गाथाएँ दी गई हैं। गाथानुक्रमणिका, श्लोक सूची, उद्धृत पद्यों की वर्णानुसार सूची समाहित होने से शोधकर्ताओं को बहुत सुविधा हुई है। 530 पृष्ठों में प्रकाशित इस ग्रंथ के टीका कार्य में 27 ग्रंथों से सहायता ली गई है। इस ग्रंथराज के प्रारंभ में इसके प्रति श्रद्धाभरित भक्तिप्रसून समर्पित करते हुए पूजनीया ज्ञानमती माताजी ने स्वयं लिखा है—

नयद्वयात्मकं तत्त्वं स्वात्मानन्दैकनिर्भरम्।
अनन्त-दर्शन-ज्ञान-सौख्य वीर्यात्मकं ध्रुवम्।।

महान् कृति स्याद्वाद-चन्द्रिका टीका—आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी की अनन्य भक्त, अध्यात्म-रसिक, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, 275 से अधिक ग्रंथों की प्रणेत्री, चारित्र चन्द्रिका, गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न पूजनीया ज्ञानमती माताजी ने 'नियमसार प्राभृत' ग्रंथ के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हार्द को सुस्पष्ट करने हेतु संस्कृत भाषा में 'स्याद्वाद-चन्द्रिका' नामक महत्त्वपूर्ण टीका और उसका हिन्दीअनुवाद भी प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ के विषय विवेचन के अनुसार ही पूजनीया माताजी ने व्यवहारनय एवं निश्चयनय की पद-पद पर विवक्षा लेते हुए द्रव्यानुयोग से अध्यात्म को उपवृंहित किया है। इसलिए इस ग्रंथराज की टीका का नामकरण 'स्याद्वाद चन्द्रिका' सर्वथा उपयुक्त है। इस नामकरण की सार्थकता[13] के संबंध में स्वयं माताजी के शब्द मननीय हैं—

"अयं ग्रन्थो नियमकुमुदं विकासयितुं चन्द्रोदयस्ततो नियमकुमुदचन्द्रोदयोऽथवा यतिकैरवाणि प्रफुल्लीकर्तुं राकानिशीथिनीनाथत्वाद् यतिकैरवचन्द्रोदयोऽस्ति। अस्मिन् पदे पदे व्यवहार-निश्चय-नययो र्व्यवहार-निश्चयक्रिययो-र्व्यवहार-निश्चयमार्गयोश्च परस्परमित्रत्वात् अस्य विषयः स्याद्वादगर्भीकृतो वर्ततेऽस्य टीका चन्द्रोदयस्य चन्द्रिका इव विभासतेऽतो 'स्याद्वादचन्द्रिका' नाम्ना सार्थक्यं लभते। यथा चन्द्रस्य चन्द्रिका ज्योत्सना सर्वजगद् आह्लादयति, उग्ररश्मिहुताशनविषादिभ्यः संतप्तजनान् प्रीणयति शीतीकरोति, तथैवैयं 'स्याद्वादचन्द्रिका' टीका भवभवाग्निसंतप्तभव्यजीवान् आह्लादयिष्यति, प्रीणयिष्यति, शीतीकरिष्यति, तेषां मनः कुमुदानि विकासयिष्यति, महामहोतमसाऽज्ञानध्वांतेन वा पथभ्रष्टजनानां हितपथं प्रकाशयिष्यति, नात्र सन्देहः।

नामकरण की सार्थकता—वस्तुतः यह ग्रंथ सम्यक् रत्नत्रय रूपी कुमुदों को विकसित करने में चन्द्रमा के उदय के समान होने से 'नियम-कुमुद-चन्द्रोदय' है और श्रमणों के लिए मोक्षमार्ग (नियम) के हेतु अनुपम पाथेय है। अतः इसे 'यतिकैरव चन्द्रोदय' नाम से विश्लेषित किया है और इसकी टीका में पद-पद पर व्यवहार-निश्चय नय, व्यवहार-निश्चय क्रिया और व्यवहार-निश्चय मोक्षमार्ग का वर्णन है। अतः स्याद्वाद से समन्वित होने के कारण इसका 'स्याद्वादचन्द्रिका' यह नाम सार्थक है।

इस टीका का महत्व—इसमें माताजी का ज्ञानगौरव सहज ही मुखरित हुआ है। इस ग्रंथ की संस्कृत टीका में उनके द्वारा अधीत चारों अनुयोग-संबंधी अनेक ग्रंथों को उद्धृत कर विवेच्य विषय को सुस्पष्ट किया गया है।

आचार्य कुन्दकुन्द प्रणीत 'नियमसार प्राभृत' ग्रंथ में कुल 187 गाथाएँ हैं। पूजनीया माताजी ने इन्हें तीन महाधिकारों में विभक्त कर प्रतिपाद्य विषय के अनुरूप नाम प्रदान किया है और तदनुरूप गाथाएँ भी रेखांकित की है। उनके नाम हैं— 1. व्यवहार मोक्षमार्ग 76 गाथाएँ 2. निश्चय मोक्षमार्ग 82 गाथाएँ 3. मोक्ष 29 गाथाएँ = कुल 187 गाथाएँ। मूलतः जीव, अजीव आदि तत्त्वों के विवेच्य क्रम से इस ग्रंथ में बारह अधिकार हैं। पूजनीया माताजी ने इस ग्रंथपर अपनी 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका में प्रत्येक अधिकार के अन्तर्गत अधिकार निर्दिष्ट कर सेंतीस अन्तराधिकार निर्दिष्ट किये हैं।

टीका का रचनाकाल—इस टीका का लेखन कार्य वैशाख शुक्ला तृतीया (अक्षय-तृतीया) वीर निर्वाण संवत् 2504 ईसवी सन् 1978 को प्रारंभ हुआ और मध्य में प्रभावना कार्यों की व्यस्ततावश व्यवधानित यह कार्य मगसिर सुदी पूर्णिमा (8 दिसम्बर 1984) को पूर्णता को प्राप्त हुआ[14]। ग्रंथ की पूर्णता पर तत्कालीन संघस्थ ब्र. कु. माधुरी शास्त्री (अब पूजनीया आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी), ब्र. मोतीचंद्र जी (अब 105 क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज), ब्र. रवीन्द्र कुमार जी प्रभृति शिष्यों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने इस ग्रंथ की पूजा करके सभा में विनयांजलि समर्पित करके 'सरस्वती वन्दना समारोह' पूर्वक स्याद्वाद-चन्द्रिका टीका युक्त ग्रंथ को पालकीमें विराजमान कर शोभायात्रा निकाली और विशेष उत्सव किया।

इस टीका का वैशिष्ट्य—आचार्य कुन्दकुन्द प्रणीत 'नियमसार प्राभृत' ग्रंथ की 'स्याद्वाद चन्द्रिका टीका' के प्रणयन में पूजनीया माता जी का बहुआयामी विशाल अध्ययन, तुलनात्मक प्रत्यवेक्षण तथा विश्लेषण और समीक्षण क्षमता स्वतः अभिव्यञ्जित हुए हैं। इस टीका की प्रामाणिकता इसी से स्पष्ट है कि इसमें धवला, कसाय पाहुड़, समयसार, मूलाचार, पञ्चास्तिकाय, लब्धिसार, तत्त्वार्थसूत्र, रत्नकरण्डक, भद्रबाहुचरित, अष्टसहस्री, तिलोयपण्णत्ति, कातंत्र रूपमाला, आप्तमीमांसा, ज्ञानार्णव, परमात्मप्रकाश, पद्मनन्दि पंचविंशतिका, गोम्मटसार, वृहद् द्रव्यसंग्रह, तत्त्वार्थराजवार्तिक, श्लोकवार्तिक, विविध पुराण, विभिन्न स्तोत्र, भक्तियाँ, समाधिशतक आदि 62 ग्रंथों को यथास्थान, यथाप्रसङ्ग संदर्भित कर उनके उद्धरण दिये गये हैं।

माताजी की विनम्रता, दृढ़ता और कल्याण कामना—टीकाकर्त्री ने पूर्वाचार्यों, अपने दीक्षा गुरुओं और शिक्षागुरुओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर लघुता तथा विनम्रता प्रकट की है और उन्होंने अपना संकल्प दोहराया है कि इस टीका में एकान्त दुराग्रह को दूर कर दोनों नयों में परस्पर मैत्री स्थापित की गई है। ग्रंथ की प्रशस्ति में उन्होंने अपना अभीष्ट स्पष्ट किया है कि 'आत्म विशुद्धि तथा मन की एकाग्रता होवे तथा भविष्य में स्वात्मसिद्धि होवे। इस रचना के सभी पाठकों, चिन्तकों और उपदेशकों को भी सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के लाभ हेतु उन्होंने शुभ भावना प्रकट की है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्कृत में टीका करना बहुत कठिन कार्य—सम्प्रति विविध ग्रंथों के हिन्दी आदि विभिन्न भाषाओं में टीकाकार तो अनेक हैं किन्तु संस्कृत में टीका करने या इसकी क्षमता रखने वाले मनीषी अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं। हमारे गुरुवर पूज्यपाद पं. डॉ.पन्नालाल जी साहित्याचार्य कहते थे कि मूल ग्रंथ की रचना की अपेक्षा टीकाकार को अपनी टीका में जो श्रम, अनुसंधान, शब्द और अर्थ की सङ्गति तथा तात्पर्य की ओर ध्यान देना पड़ता है। वह अत्यन्त कष्टसाध्य है वस्तुतः संस्कृत में टीका करना बहुत ही कठिन है। इसमें प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ मूल रचयिता के अभिप्राय पर भी विमर्श करना होता है। अन्य ग्रंथों के संदर्भ और उद्धरण भी दृष्टि में रखने होते हैं।

'स्याद्वाद चन्द्रिका' में विशेषताएँ ही विशेषताएँ—आचार्य कुन्दकुन्द-प्रणीत 'नियमसार प्राभृत' ग्रंथ पर पूजनीया ज्ञानमती माताजी द्वारा विरचित 'स्याद्‌वाद चन्द्रिका' टीका के अनुशीलन के उपरांत हमारा सुस्पष्ट अभिमत है कि इस टीका के प्रणयन में पूजनीया माता जी ने कठोर परिश्रम किया है। इस टीका में वे सभी तत्त्व विद्यमान हैं जो प्रबुद्ध टीकाकार को अपने दृष्टिपथ में रखने चाहिए। इस टीका में खण्डान्वय एवं दण्डान्वय को लेकर पहले तो सामान्य अर्थ किया है, तत्पश्चात् उसी गाथा का विस्तार से अर्थ-भाष्य किया है, प्रत्येक शब्द की व्याकरण सम्मत व्युत्पत्ति दी गई है, अर्थ के समर्थन में विभिन्न ग्रंथों के प्रमाण दिये गये हैं। 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका की भाषा शैली भी प्राचीन आचार्यों जैसी ही है।

आचार्य पद्मप्रभमलधारीदेव की ''तात्पर्यवृत्ति' नामक प्राचीन संस्कृत टीका और आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी की नवीन 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका दोनों टीकाओं को तुलनात्मक दृष्टि से अनुशीलन करने पर स्पष्ट होता है कि 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका में अनेक विशेषताएँ हैं-जैसे-नियमसार प्राभृत ग्रंथ में मंगलाचरण रूप प्रथम गाथा को लीजिए—

णमिऊण जिणं वीरं, अणंत वरणाण दंसणसहावं।
वोच्छामि णियमसारं, केवलिसुयकेवलीभणिदं।।

इस गाथा में 'वीर' शब्द की व्युत्पत्ति पद्मप्रभमलधारीदेव की टीका में एक ही की गई हे जो इस प्रकार है-'वीरो विक्रान्तः वीरयते शूरयते विक्रांतति कर्मारातीन् विजयते इति वीरः।' अर्थात् जो कर्म शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है वह वीर है।

किन्तु माताजी द्वारा प्रणीत स्याद्वाद चन्द्रिका टीका में[15] इस व्युत्पत्ति के साथ अन्य दो व्युत्पत्तियाँ और की गई हैं। वे इस प्रकार हैं—

1. वि-विशिष्टा ई-लक्ष्मीः तां राति-ददाति इति वीरः। अर्थात् जो विशिष्ट लक्ष्मी (मुक्ति लक्ष्मी) देता है वह वीर है। यह प्रथम व्युत्पत्ति है।

2. दूसरी व्युत्पत्ति इस प्रकार है-'क, ट, प, य पुरस्थ वर्णै र्नव-नव पञ्चाष्टकल्पितैः क्रमशः।'-इस सूत्र के अनुसार-'क' से 9, 'ट' से 9, 'प' से 5, तथा 'य' से 8 अक्षरों को क्रम से गिनना चाहिए। अतः 'य' से 8 अक्षरों की गिनती इस प्रकार है-य, र, ल, व श, ष, स ह। इन अक्षरों में 'र' का नम्बर दूसरा है और 'व' का नम्बर चौथा है।

'वीर' शब्द में उक्त दो ही अक्षर हैं। इसमें 'व' नम्बर चार और 'र' नम्बर दो इनको क्रम से रखने पर 42 संख्या होती है और संख्या के विषय में नियम हैं-'अङ्कानां वामतो गतिः'-अङ्कों को उलटी तरफ से गिनना चाहिए। ऐसा करने पर 42 को उलटा करने पर 24 होता है। अर्थात्-'वीर' शब्द का अर्थ हुआ 24 तीर्थंकर। अतः 'वीरं नत्वा' का स्फुट अर्थ हुआ 24 तीर्थंकरों को नमस्कार करके। इस प्रकार पूजनीया माताजी द्वारा रचित 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका में विशेषताएँ ही विशेषताएँ हैं।

3. इस ग्रंथ की गाथाओं की उत्थानिका में भी उक्त 'तात्पर्य वृत्ति' नामक प्राचीन संस्कृत टीका से माताजी द्वारा विहित इस नवीन संस्कृत टीका में अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। यथा-मंगलाचरण की प्रथम गाथा में पहले ''तात्पर्यवृत्ति' नामक प्राचीन टीका में उत्थानिका इस प्रकार है—

'अथात्र जिनं नत्वेत्यनेन शास्त्रस्यादावसाधारणं मङ्गलमपि हितम्।'

किन्तु माताजी द्वारा विहित संस्कृत टीका में उत्थानिका इस प्रकार है—

'अथ तावच्छात्रस्यादौ गाथायाः पूर्वार्धेन निर्विघ्नशास्त्रपरिसमाप्त्यादिहेतुना मङ्गलार्थमिष्टदेवता-नमस्कारमुत्तरार्धेन च नियमसारग्रन्थव्याख्यानं चिकीर्षवः श्रीकुन्दकुन्ददेवाः सूत्रमिदमवतारयन्ति[16]।

इन दोनों उत्थानिकाओं में पहली में मात्र इतनी ही सूचना दी है कि 'जिनेन्द्र को नमस्कारपूर्वक शास्त्र के आरंभ में मङ्गलाचरण किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किन्तु माताजी के द्वारा निहित उत्थानिका में मङ्गलाचरण रूप गाथा का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि 'गाथा के पूर्वार्द्ध में शास्त्र की निर्विघ्न समाप्ति के लिए इष्ट देवता को नमस्कार करते हुए तथा गाथा के उत्तरार्द्ध में नियमसार प्राभृत ग्रंथ की व्याख्या करने के लिए इच्छुक आचार्य कुन्दकुन्ददेव इस गाथा सूत्र को कहते हैं।'

इससे सुस्पष्ट है कि प्रथम उत्थानिका की अपेक्षा द्वितीय उत्थानिका अधिक स्पष्ट एवं अर्थ बोध कराने वाली है।

4. माताजी द्वारा विहित 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका का प्रारंभ भी बहुत सुन्दर है। इसमें सर्वप्रथम 'जिनपति'[17] को नमस्कार किया है। द्वितीय पद्य में स्याद्वादरूपी अमृत से परिपूर्ण जिनवाणी[18] को नमस्कार किया है। तृतीय पद्य में गौतम आदि गुरु जनों को प्रणाम किया है।[19] इस प्रकार देव-शास्त्र-गुरु को नमस्कार करने के उपरान्त विवेच्य ग्रंथ 'नियमसार प्राभृत' के रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द को नमनपूर्वक प्रार्थना की है कि वे तब तक मेरे हृदयकमल में विराजमान रहें जब तक कि मेरी आत्मसिद्धि न हो जाये।[20]

'स्याद्वाद चन्द्रिका' प्रणयन का सुदृढ़ संकल्प — इसके पश्चात् पूजनीया माताजी ने इस ग्रंथ की यह टीका 'स्याद्वादचन्द्रिका' लिखने का संकल्प अत्यन्त दृढ़तापूर्वक अर्थगौरवगर्भित अनुप्रासमयी शैली में अभिव्यक्त किया है–

भेदाभेदत्रिरत्नानां व्यक्त्यर्थमचिरान्मयि।
सेयं नियमसारस्य वृत्ति र्विव्रियते मया।।[21]

(भेदरत्नत्रय और अभेद रत्नत्रय-इन दोनों का मुझमें परिपूर्ण प्रकटीकरण शीघ्र होवे, इस भावना के साथ मैं इस नियमसार ग्रंथ की विवृति (विस्तृत टीका) लिख रही हूँ।)

इस प्रकार प्रस्तुत 'स्याद्वादचन्द्रिका' टीका के प्रारंभिक मंगलाचरण के प्रथम तीन पद्यों में सम्यक् रत्नत्रय के धनी-देव-शास्त्र-गुरु को नमस्कार तथा चतुर्थ पद्य में भेदाभेद रत्नत्रय का ज्ञान कराने वाले आचार्य कुन्दकुन्द का स्मरण एवं पंचम पद्य में भेदाभेद रत्नत्रय की पूर्णता प्राप्त करने के लिए पूजनीया माताजी ने अपनी मनोभावना प्रकट की है।

माताजी का अद्‌भुत प्रत्युत्पन्नमतित्व, अनुपम वाग्वैदग्ध्य और अभिराम वैदुष्य — अतएव अत्यन्त गौरवपूर्वक यह तथ्य रेखांकित करना चाहता हूँ कि आचार्य कुन्दकुन्द प्रणीत नियमसार प्राभृत ग्रंथ की 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका के प्रारंभ में पूजनीया माताजी ने पंच-पद्यात्मक जो मंगलाचरण किया है वह उनके अनुपम प्रत्युत्पन्नमतित्व और अभिराम वैदुष्य का परिणाम तो है ही, सम्पूर्ण 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका में भी ये तीनों गुण पद-पद पर स्फुटित हुए हैं।

प्रौढ़ पाण्डित्य की निदर्शिका — आचार्य कुन्दकुन्द प्रणीत 'नियमसार प्राभृत' ग्रंथराज की 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका परमपूजनीया गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी के जैन दर्शन एवं अध्यात्म के साथ-साथ समग्र भारतीय मनीषा, दर्शनशास्त्र, परा और अपरा विद्या, धर्मविज्ञान, मनोविज्ञान, इतिहास, संस्कृति, काव्यशास्त्र, भाषाशास्त्र तथा भाषा विज्ञान, विशुद्ध श्रमण चर्या, सदाचार प्रवण तपो निष्ठा और आर्षमार्गीय आगम परिज्ञान के प्रौढ़ता की निदर्शक तो है ही, प्राचीन व्याख्या शैली एवं नवीन विवेचना पद्धति में सामंजस्य की अभिव्यञ्जिका भी है। समग्र संस्कृत साहित्य के व्यापक परिप्रेक्ष्य में इस टीका का अनुशीलन और आकलन करते हुए हम कहना चाहेंगे कि इस टीका भाष्य के माध्यम से पूज्य माताजी की प्रौढ़ रचनाधर्मिता, उत्कृष्ट सृजनशीलता और उदात्त मानवीय भावों का साधिकार सम्प्रेषण तथा परम कल्याणकारी प्रवृत्तियों के वैश्वीकरण की अभिराम प्रक्रिया का चूड़ान्त निदर्शन इस महान् ग्रंथराज में हुआ है।

आचार्य कुन्दकुन्द के अध्यात्म-प्रधान दार्शनिक ग्रंथ 'नियमसार प्राभृत' की इस 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका के पाठकों को संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध टीकाकार श्री मल्लिनाथ का स्मरण सहज ही हो आता है। बल्कि माता जी अनेक मायनों में मल्लिनाथ से बहुत आगे हैं। जैसे—(1) मल्लिनाथ के द्वारा टीकाकृत कृतियाँ संस्कृत में प्रणीत हैं, जबकि यह कृति संस्कृति की उत्स प्राकृत-शौरसेनी प्राकृत में प्रणीत हैं। (2) मल्लिनाथ के युग में संस्कृत रचनाधर्मिता का प्राचुर्य और प्राधान्य था, जबकि संस्कृत-विरल बीसवीं शताब्दी में प्रथम शती ई. के प्राकृत भाषा के महान् दार्शनिक आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथ की राष्ट्रीय अस्मिता की परिचायक संस्कृत तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी में टीका प्रस्तुत करके माताजी प्राचीन एवं नवीन के मध्य सेतु के रूप में अधिष्ठित हुई हैं।

संस्कृत काव्यजगत् में विख्यात आदिकवि बाल्मीकि के स्वाभाविक प्रस्तुतिकरण महर्षि व्यास की विश्लेषण क्षमता, महाकवि भास की सहजता, महाकवि कालिदास की उपमा प्रधान वैदर्भी शैली में निरूपणपरता, महाकवि दण्डी का पदलालित्य, महाकवि बाणभट्ट का वाणीविलास-नादसौन्दर्य, महाकवि भारवि का अर्थगौरव तथा महाकवि माघ और श्रीहर्ष के प्रौढ़ पाण्डित्य जैसे गुणों के एकत्र समवाय से अभिमण्डित 'स्याद्वाद चन्द्रिका' नामक इस टीका कृति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में जैन तत्त्व ज्ञान की सहज निःस्यूति हुई है। विषय के प्रतिपादन में वैदर्भी शैली, प्रसाद-माधुर्य गुणों और शान्त रस से ओतप्रोत प्राञ्जल, परिष्कृत और परिनिष्ठित संस्कृत भाषा में प्रवाहमय चिन्तन की अभिव्यक्ति से ऐसा प्रतीत होता है कि पूजनीया माताजी की जिह्वा पर सरस्वती विराजमान हैं। ऐसे ही प्रभूत आगम ग्रंथों के विश्लेषण, व्याख्यान विवेचन, लेखन, तपोनिष्ठ जीवन चर्या और जीवन्त कृतित्व के आधार पर उन्हें इस युग का ''श्रुतकेवली'' कहा जा सकता है।

'नियमसार प्राभृत' महाशास्त्र की 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका की परिसमाप्ति पर फलश्रुति, टीका के नामकरण की सार्थकता[22], टीका का रचनाकाल और इतिवृत्त तथा कल्याणकामना अभिव्यक्त की गई है।[23], टीकाकर्त्री प्रशस्ति में पूजनीया माताजी ने अपने आराध्य गुरुवृन्द, अपनी वैराग्य कथा, संघ वृत्त और रचनाकाल, तथा इस टीकाकृति के चिरस्थायित्व की मंगल भावना उपन्यस्त की है।[24]

सर्वतोभावेन सुन्दर और सुपाच्य—गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी ने इस कृति को सर्वतो भावेन सुन्दर और सुपाच्य बनाया है। वे ऐसी साध्वी महिलारत्न हैं जिन्होंने 'नियमसार प्राभृत' की 'स्याद्वाद चन्द्रिका' संस्कृत टीका की रचना कर सम्पूर्ण साध्वी जगत् को महान् उच्चासन पर बैठा दिया है। उन्होंने इस रचना से साधुवर्ग एवं विद्वत्वर्ग को आह्लादित तथा आत्मविभोर होने का अवसर सुलभ कराया है। वस्तुतः पूजनीया माताजी के द्वारा प्रणीत, निष्पन्न और निष्पादित सभी कार्य महान तथा अभूतपूर्व हैं। ऐसी परमपूजनीया गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री 105 ज्ञानमती माताजी युग-युग जियें, उनका समग्र कृतित्व जयवन्त होवे और उनका सम्पूर्ण संघ भी उनकी ही भांति स्व-पर कल्याण के साथ जिनशासन की महती प्रभावना और सम्वर्द्धन में निरन्तर प्रवृत्त रहे। वर्धतां जिनशासनम्।

प्रकुर्यात् कल्याणं भवभयहरा ज्ञान-गणिनी।

सादर नमन

संदर्भ ग्रंथ

1. ऐसे ही एक विश्लेषण के लिए देखिए—डॉ. हीरालाल जैन-जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, चन्द्रगिरि-श्रवणबेलगोला अभिलेखः
   वन्द्यो विभु र्भुवि न कैरिह कौण्डकुन्दः, कुन्दप्रभाप्रणयि-कीर्त्तिविभूषिताशः।
   यश्चाहचारणकराम्बुजचञ्चरीकश्चक्रे श्रुतस्य भरते प्रयतः प्रतिष्ठाम्।।
2. A. दे.-प्रवचनसार की प्रस्तावना-डॉ. ए.एन. उपाध्ये
   B. नन्दि संघ पट्टावली
3. Jain sources of the History of Ancient India.
4. Jain Antiquary, Vol. 20, 21
5. कसाय पाहुड़/मु. 1.12-13, 299-326
6. कसाय पाहुड़, पुस्तक सं.12-13 प्रकरण 297/325/10
7. विस्तार के लिए देखिए-नियमसार प्राभृत, गाथा 38 तथा 47-48-49
8. जाणदि पस्सदि सव्वं, ववहारणयेण केवली भगवं।
   केवलणाणी जाणदि, पस्सदि णियमेण अप्पाणं।।159।।
9. जुगवं वट्टइ णाणं, केवल णाणिस्स दंसणं च तहा।
   दिणयरपयासतापं, जइ वट्टइ तह मुणेयव्वं।।160।।
10. विस्तार के लिए देखिए-नियमसार प्राभृतम्, गाथा 21-24 तथा पृष्ठ 82-85
11. विस्तार के लिए देखिए-वही, गाथा 26, पृ. 87-90
12. विस्तार के लिए देखिए-वही, गाथा 16 तथा पृ. 55
    माणुस्सा दुवियप्पा कम्ममहीभोगभूमिसंजादा।
    सत्तविहा णेरइया पादव्वा पुढविभेएण।।
13. देखिए-नियमसार प्राभृतम्, पृ. -553
14. नियमसार प्राभृतम्-टीका कर्त्र्याः प्रशस्तिः, पृ. 558-564
15. विस्तार के लिए देखिए-नियमसार प्राभृतम्, पृ. 4-5
16. नियमसार प्राभृतम्, पृ. 4
17. भक्त्याहं प्रणमाम्यसौ जिनपति में स्यात्सदा सिद्धये
    दे.-नियमसार प्राभृतम्, स्याद्वाद चन्द्रिका टीका के मंगलाचरण के प्रथम पद्य की अंतिम पंक्ति
18. वन्दे वागीश्वरीं नित्यं जिनवक्त्राब्जनिर्गताम्।
    वाक्शुद्ध्यै नयसिद्ध्यै च, स्याद्वादामृतगर्भिणीम्।।
    दे.-उक्त टीका, मंगलाचरण का द्वितीय पद्य
19. दे.-वही, पद्य संख्या 3
20. दे.-वही, पद्य सं. 4
21. दे.-वही, पद्य सं. 5
22. दे.-वही, पृ. सं. 553
23. दे.-वही, पृ. सं. 557-558
24. दे.-वही, पृ. सं. 559-564

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी एवं त्रिलोक भास्कर

—डॉ. अनुपम जैन, इंदौर
(प्राध्यापक गणित एवं निदेशक-गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठ, इंदौर)

1934 की शरदपूर्णिमा के उस शुभ दिन जब चन्द्रमा की शुभ्र छटा सम्पूर्ण धरा को अपने आवेश में समेटे थे, तब उ.प्र. के बाराबंकी जनपद के ग्राम टिकैतनगर में बाबू छोटेलाल जी जैन के घर एक कन्या का जन्म हुआ। कौन जानता था कि माँ मोहिनी की यह कन्या एक दिन जगत् माता बनकर अपने ज्ञान के प्रकाश से सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करेगी। वर्तमान में जम्बूद्वीप की पावन प्रेरिका, चारित्रचन्द्रिका, विधानवाचस्पति, तीर्थोद्धारिका, वात्सल्यमूर्ति, युगप्रवर्तिका आदि दर्जनों उपाधियों से विभूषित गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का जीवन अनवरत साधना एवं त्यागमय जीवन का एक अनूठा उदाहरण है। द्मनंदिपंचविंशतिका के स्वाध्याय के कारण बचपन से ही विकसित वैराग्य के बीज 1952 में शरदपूर्णिमा के दिन ही प्रस्फुटित हुए जब बाराबंकी में आपने आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से सप्तम प्रतिमा (ब्रह्मचर्य) के व्रत अंगीकार किये। 1953 में चैत्र कृष्णा एकम् को श्री महावीर जी में आपने आचार्य श्री देशभूषण जी से क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण कर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया। व्रत एवं नियमों का कठोरता से पालन करते हुए आप अपनी संज्ञा 'वीरमती' को तो सार्थक कर ही रही थीं, किन्तु आपको मात्र क्षुल्लिका के व्रतों से संतोष कहाँ। 19 वर्ष की यौवनावस्था में क्षुल्लिका के व्रतों का कठोरता से पालन करने के साथ ही आप निरन्तर वैराग्य के भावों को विकसित करती रहीं एवं अनन्तर इस युग के महान आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की आज्ञा से उनके ही पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी से वैशाख कृष्णा द्वितीया को (1956 ईसवी) माधोराजपुरा की पवित्र भूमि में आर्यिका के व्रतों को अंगीकार कर 'ज्ञानमती' की सार्थक संज्ञा प्राप्त की। धन्य हैं वे भविष्य दृष्टा आचार्य श्री वीरसागर जी जिन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से इनकी प्रतिभा का आकलन कर इन्हें "ज्ञानमती" नाम दिया। आपकी उत्कृष्ट साधना एवं कठोर तपस्या का ही यह प्रभाव है कि आपके संपर्क में आने वाला प्रत्येक श्रावक/श्राविका आपके सम्मुख स्वयमेव नतमस्तक हो जाता है। आपकी माँ मोहिनी ने भी आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के रूप में आपके पास अनवरत साधनारत रहकर मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य 'समाधि' (1985) प्राप्त की। आपकी दो बहनें आर्यिका श्री अभयमती माताजी एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी (संघस्थ) आपके ही पथ का अनुगमन कर रही हैं। आपके भाई कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी (संघस्थ) भी आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं सात प्रतिमा के व्रतों को स्वीकार कर अनवरत रूप से धर्म एवं समाज की सेवा में संलग्न हैं। वे सम्प्रति दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान-हस्तिनापुर, अयोध्या दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, भगवान ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग, अखिल भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समिति-हस्तिनापुर, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति कुण्डलपुर, भगवान ऋषभदेव 108 फुट उत्तुंग मूर्ति निर्माण कमेटी-मांगीतुगी एवं अ.भा. दि. जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। शेष 9 भाई-बहन श्रावक धर्मों का पालन करते हुए गृहस्थ जीवन में रत हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

1. श्रीमती शान्ति देवी 2. श्रीमती श्रीमती देवी 3.श्रीमती कुमुदनी देवी 4. श्रीमती मालती जैन 5. श्रीमती कामिनी जैन 6. श्रीमती त्रिशला जैन 7. श्री कैलाशचंद जैन 8. श्री प्रकाशचंद जैन एवं 9. श्री सुभाषचंद जैन। गत वर्ष 21 मार्च 2005 को एक भाई श्री प्रकाशचंद जैन का निधन हो गया है।

पूज्य माताजी का व्यक्तित्व बहुआयामी है। जहाँ उन्होंने सम्पूर्ण भारत की पदयात्रा कर शताधिक आत्माओं में वैराग्य की ज्योति जगाई है, वहीं हस्तिनापुर में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के प्रबंधकों को प्रेरणा देकर जम्बूद्वीप की प्रतिकृति के रूप में न केवल जैन समाज अपितु सम्पूर्ण विश्व को एक अद्वितीय उपहार दिया है। खुले आकाश के नीचे वलयाकार लवण समुद्र से वेष्ठित 101 फीट उत्तुंग सुमेरु के चतुर्दिक् बनी जम्बूद्वीप की भव्य रचना को देखकर तिलोयपण्णत्ति, जम्बूद्वीवपण्णत्तिसंगहो में निहित भूगोल विषयक सामग्री को सहज ही हृदयंगम किया जा सकता है। वर्तमान में 'जम्बूद्वीप- के नाम से विख्यात इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिसर में स्थित कमलमंदिर, ध्यान मंदिर, त्रिमूर्ति मंदिर, सहस्रकूट जिनालय, ॐ मंदिर, भगवान वासुपूज्य मंदिर, इन्द्रध्वज मंदिर, जम्बूद्वीप पुस्तकालय, विस्तृत उद्यान समग्र रूप से इसकी शोभा में अभिवृद्धि करते हैं। आपकी प्रेरणा से त्याग मार्ग पर प्रवृत्त अनेक आत्माएँ आज मुनि व आर्यिका पद को सुशोभित कर रही हैं। आपकी शिष्या कु. माधुरी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी के रूप में एवं आपके शिष्य श्री मोतीचंद जी क्षुल्लक मोतीसागर जी के रूप में संघ में ही अध्ययन एवं साधनारत हैं। इसके अतिरिक्त वर्तमान में भी 8 अन्य ब्र. बहनें व्रत नियमों को अंगीकार कर संघ में साधनारत हैं। पूज्य माताजी को 1 मई 1985 को गणिनी पद से विभूषित किया गया।

1982 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी के करकमलों से उद्घाटित जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति ने 4 जून 1982 से 28 अप्रैल 1985 के मध्य देश में अहिंसा, शाकाहार एवं नैतिक मूल्यों के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

1981, 1982, 1985 एवं 1992 में मेरठ विश्वविद्यालय एवं 1993 में अवध विश्वविद्यालय के सहयोग से पूज्य माताजी के सानिध्य में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों एवं १९९८ में भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन का आयोजन किया जा चुका है।

हस्तिनापुर के बाद आपकी दृष्टि भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या पर पड़ी। आपके मंगल पदार्पण से अयोध्या का कायाकल्प होने के साथ वहाँ भगवान ऋषभदेव की विशाल मूर्ति का महामस्तकाभिषेक राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न हुआ। भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव का आयोजन, मांगीतुंगी, महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) तथा ऋषभदेव तपस्थली-प्रयाग का विकास आपकी ही प्रेरणा से सम्पन्न हुआ है।

साहित्य के क्षेत्र में पूज्य माताजी की प्रतिभा विलक्षण है। आपके द्वारा प्रणीत 200 से भी अधिक ग्रंथों का आज तक प्रकाशन हो चुका है। महिला के माध्यम से भारतीय संस्कृति की अनुपम सेवा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के भाव से ही डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद ने आपको 1995 में डी.लिट्. की मानद उपाधि से सम्मानित किया। जहाँ आपने अष्टसहस्री सदृश न्याय के क्लिष्ट ग्रंथ की टीका लिखी, वहीं नियमसार की स्याद्वाद चन्द्रिका टीका लिखकर एक इतिहास रचा है। मूलाचार की टीका, कातंत्ररूपमाला, त्रिलोक भास्कर, जैन ज्योतिर्लोक, न्यायसार, नियमसार प्राभृत आदि आपकी बहुर्चित प्रौढ़ कृतियाँ हैं। आपने जैन भारती, दिगम्बर मुनि, आर्यिका, प्रवचन निर्देशिका सदृश कृतियाँ स्वाध्याय में रत या उन्मुख पाठकों को दी। किसी भी आर्यिका द्वारा लिखी गई प्रथम आत्मकथा 'मेरी स्मृतियाँ' समकालीन घटनाओं का जीवन्त दस्तावेज है। पूज्य माताजी बच्चों को संस्कारित करने के प्रति सदैव जागरूक रही हैं आपने अनेक वर्ष पूर्व बाल विकास (भाग 1-4), जैन बाल भारती (भाग 1-3), धरती के देवता, जीवन दान सदृश लोकप्रिय कृतियाँ दी हैं। समाज की नारी शक्ति को संस्कारित कर उसकी शक्ति को संस्कार निर्माण में लगाने के भाव से आपने नारी आलोक (भाग 1-3), पतिव्रता, परीक्षा, सती अंजना जैसी सरल एवं सुरुचिपूर्ण कृतियाँ दी हैं। यह विवरण कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता यदि मैं विधानों की चर्चा न करूँ। 20 वर्ष पूर्व तक मात्र अष्टान्हिका में ही सिद्धचक्र विधान तथा पर्यूषण पर्व के दिनों में चौबीसी या पंच परमेष्ठी विधानों की चर्चा होती थी किन्तु आज साल के ३६५ दिन देश के अनेकों भागों में पूज्य माताजी द्वारा रचित सर्वतोभद्र, कल्पद्रुम, इन्द्रध्वज, तीन लोक, त्रैलोक्य मण्डल, जम्बूद्वीप मण्डल, जिन सहस्रनाम आदि विधानों की पंक्तियाँ गुंजायमान होती रहती हैं एवं भक्तगण इस विलक्षण प्रतिभा की धनी माँ के चरणों में नतमस्तक हो भक्तिगंगा में डुबकियाँ लगाते रहते हैं। इस प्राथमिक चर्चा के उपरान्त हम पूज्य माताजी के करणानुयोग विषयक साहित्यिक कृतित्व की चर्चा करेंगे।

वर्तमान में उपलब्ध प्राचीन धर्म ग्रंथों के उल्लेखों एवं सभ्यता के प्रारंभिक युग के अवशेषों से यह स्पष्टतः प्रमाणित हो चुका है कि जैनधर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है। इस प्राचीन धर्म के विशाल वांग्मय, द्वादशांग वाणी के दृष्टिवाद अंग के अन्तर्गत परिकर्म एवं 'पूर्व साहित्य' में लोक के स्वरूप एवं विस्तार की व्यापक रूप से चर्चा है। 'करणानुयोग' संस्थान विचय नामक धर्मध्यान का प्रमुख अंग होने के कारण जैनाचार्यों ने इसे अपने अध्ययन में प्रमुख स्थान दिया। वस्तुतः कर्मों की क्रमिक निर्जरा के उपरान्त आत्मा की स्थिति, सिद्ध परमेष्ठियों के वर्तमान निवास स्थान, बीस तीर्थंकरों के समवसरणों की स्थिति एवं तीर्थंकरों की जन्मकालीन घटनाओं को समीचीन रूप से हृदयंगम करने हेतु लोक संरचना का ज्ञान अपरिहार्य रूप से आवश्यक है।

काल परिवर्तन के साथ ही जैनाचार्यों द्वारा प्रणीत एतद् विषयक ग्रंथों की भाषा एवं शैली में तो परिवर्तन हुआ है, तथापि ग्रंथों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की विषयवस्तु एवं विचारों की एकरूपता इतर समाजों द्वारा अपने विचारों से अनेकशः परिवर्तनों के बावजूद अक्षुण्ण रही है। लोक के स्वरूप एवं विस्तार के अध्ययन की दृष्टि से तत्त्वार्थसूत्र एवं उसकी आचार्य पूज्यपाद, आचार्य अकलंकदेव एवं आचार्य विद्यानंद कृत टीकाएँ, लोक विभाग, तिलोयपण्णत्ति, जम्बूद्वीवपण्णत्तिसंगहो, त्रिलोकसार आदि दिगम्बर परम्परा के ग्रंथ पठनीय हैं किन्तु इन ग्रंथों की विशालता, विवेचनों की जटिलता, जैन पारिभाषिक शब्दावली के बाहुल्य के कारण यह ग्रंथ न केवल जनसामान्य बल्कि प्रबुद्ध श्रावकों की पहुँच से भी दूर रहे। लम्बे समय तक जैन समाज के पंडित वर्ग ने भी तत्त्वार्थसूत्र की चर्चाओं में तीसरे एवं चौथे अध्याय की एक या अधिक कारणों से निरन्तर उपेक्षा की। कुछ ने तो उसे क्षेपक मान लिया क्योंकि उनकी दृष्टि से यह सारे विवेचन कपोल कल्पित हैं। वर्तमान विज्ञान के बहुप्रचलित निष्कर्षों से इन विवेचनों का साम्य न होने से विद्वानों ने रक्षात्मक मुद्रा अपना ली है। किन्तु जैनाचार्यों के वचनों एवं आचार्य प्रणीत ग्रंथों पर पूर्ण विश्वास रखने वाली पूज्य माताजी ने करणानुयोग के ग्रंथों में उपलब्ध विवेचनों, तिलोयपण्णत्ती, जम्बूद्वीवपण्णत्तिसंगहो आदि में उपलब्ध विवेचनों के आधार पर त्रिलोक भास्कर, जैन ज्योतिर्लोक, जम्बूद्वीप एवं जैन भूगोल जैसी प्रौढ़, आगमनिष्ठ एवं प्रामाणिक कृतियाँ, सरल सुबोध भाषा में दी। हम यहाँ त्रिलोक भास्कर की विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगे। समीक्ष्यकृति त्रिलोक भास्कर, वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला का तृतीय पुष्प है। इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1975 में तथा द्वितीय संस्करण 1999 में प्रकाशित हुआ है। डिमाई आकार की 300 पृष्ठों की यह पुस्तक अनेक श्वेत/श्याम चित्रों, तालिकाओं, रेखाचित्रों से सुसज्जित है। जिसमें दिगम्बर मान्यतानुसार लोक के स्वरूप का प्रामाणिक विवेचन किया गया है।

कृति के प्रारंभ में श्री सुमेरचंद्र जैन दिवाकर द्वारा "त्रिलोक भास्कर-एक अध्ययन" भूमिका रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें दृष्टिवाद के परिकर्मादि का वर्णन देते हुए लोक विषयक विभिन्न धर्मों में प्राचलित मान्यताएँ बतलाई गई हैं। उनके परिप्रेक्ष्य में जैन आगम की लोक विषयक मान्यताओं का विशद विवरण देते हुए समन्वय प्रस्तुत किया गया है। श्री सुमेरचंद ने अनेक विदेशी विद्वानों को उद्धृत करते हुए करणानुयोग के ग्रंथों की आवश्यकता, उपयोगिता एवं अपरिहार्यता को सक्षमता से प्रस्तुत करते हुए सही मायनों में ग्रंथ के अध्ययन की भूमिका बना दी। अगले पृष्ठ में ब्र मोतीचंद्र जैन (पूज्य क्षुल्लक मोतीसागर जी) द्वारा प्राक्कथन दिया गया है, जिसमें महायोजन, कोस, योजन, गज, मील आदि इकाइयों के बीच संबंध स्थापित करते हुए योजन का परिष्कृत बोध कराया गया है। योजन का मान अनेक विद्वानों ने अलग-अलग रूप में प्रस्तुत किया है और यह सुनिश्चित है कि तीन प्रकार के अंगुलों पर आधारित योजन के प्रमाण लोक, गणित, ज्योतिष के अनुसार अलग-अलग होते हैं।

तदुपरांत पूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का जीवन परिचय एवं कृतित्व दिया गया है। तत्पश्चात् उन्हीं के द्वारा रचित त्रैलोक्य चैत्य वंदना पद्य में दी गई है, जिसमें तीनों भुवन के जिनभवनों आदि की समस्त विराजित प्रतिमाओं की वंदना दी गई है।

प्रारंभ सामान्य लोक में वर्णन से है, जिसमें लोक के तीन विभाग, त्रसनाली, अधोलोक, मध्यलोक एवं ऊर्ध्वलोक संबंधी रचनाएँ वातवलय आदि के माप, लंबाई, चौड़ाई, क्षेत्रफल और मान फल रूप में दिये गये हैं। कोस, योजन, अंगुल, पल्य, सागर आदि के प्रमाणों को निकालने की विधियाँ दी गई हैं।

तत्पश्चात् अधोलोक का वर्णन प्रारंभ होता है, जिसमें पृथिवयों के नाम, मोटाई, नरक बिल, बिलों के प्रकार, संख्या, विस्तार, प्रमाण अन्तराल पटलान्तर आदि का विशद वर्णन है। नरक में उत्पत्ति दुःख सम्यक्त्व के कारण, शरीर अवगाहना, लेश्या, आयु आदि का वर्णन है। इसके बाद अगले परिच्छेद में भवनवासी देवों का विवरण है। जिसमें उनके स्थान, भेद, चिन्ह, भवन संख्या, इन्द्र भवन, जिनमंदिर, परिवार देव, आहार, उच्छ्वास, इन्द्र वैभव, आयु, अवगाहना, ज्ञान, विक्रिया आदि का चार्ट सहित वर्णन है। इसी प्रकार का विवरण व्यन्तरवासी देव संबंधी है। मध्यलोक के विवरण में जम्बूद्वीप, भरतक्षेत्र, हिमवन पर्वत, गंगादि नदी, सरोवर, कूट, सुमेरु पर्वत, पांडुक शिला, वन, चैत्यवृक्ष, मानस्तंभ, सौमनस भवन, नंदनवन, हरित एवं सीतादो नदियों का वर्णन है। कुरु, वृक्ष, विदेह, पर्वत, नदी, द्वीप, आर्यखण्ड आदि का संख्यामानादि सहित एवं चित्रों सहित वर्णन है। पुनः विभिन्न षट्कालों में होने वाले परिवर्तनों का भी विवरण दिया गया है।

तत्पश्चात् जम्बूद्वीप के सात क्षेत्र, बत्तीस विदेह, चौंतीस कर्मभूमि आदि का विवरण है। लवणसमुद्र, पाताल, धातकीखण्ड द्वीप एवं पुष्कर द्वीप, उनके विभिन्न क्षेत्र, पर्वतविस्तार आदि का विवरण दिया गया है। मानुषोत्तर पर्वत, मनुष्यों का अस्तित्व, सम्यक्त्व के कारण आदि दिये गये हैं। पुनः नन्दीश्वर द्वीप का सुचारू वर्णन देते हुए अंजनगिरि, बावड़ी आदि की सुन्दर रचनाओं का विवरण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। यहाँ तक कि ज्योतिषी देव, सूर्य, चन्द्र संख्या, परिवार, गलियाँ, तारा आदि का संख्या सहित पूर्ण विवरण दिया गया है।

इसके बाद ऊर्ध्वलोक परिच्छेद में वैमानिक शीर्षक से कल्प के 12 भेद, कल्पातीत देवों के भेद, नव अनुदिश, पाँच अनुत्तर, विमान संख्या, इन्द्रक प्रस्तार, विमानों के नाम, संख्या, इंद्रों के चिन्ह, उनके नगरों आदि का विवरण है। देवों के विशद विवरण में उनकी आयु, जन्म, सुख, आहार, उच्छ्वास, लेश्या, अवधिज्ञान, विक्रियाशक्ति, परिवार, इन्द्र की महादेवियाँ, वल्लभिका, सम्यक्त्व के कारण, गमन, शक्ति आदि का वर्णन दिया गया है। तत्पश्चात् ऊर्ध्वलोक के चैत्यालय, सिद्ध शिला, सिद्धलोकादि के विवरण से ग्रंथ समाप्त होता है। अंत में अनेक सारणियों एवं चार्टों द्वारा संक्षेप में विविध वर्णन दिए गए है।

इस प्रकार जिनागम प्रणीत तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, लोकविभाग, जम्बूद्वीपपण्णत्तिसंगहो आदि करणानुयोग विषयक ग्रंथ एवं सामग्री को सुचारू रूप एवं अत्यन्त सुस्पष्टरूप से रचित कर यह सर्व गुण सम्पन्न कृति बनाई गई है। इसमें सभी वर्णन प्रामाणिक रूप में उपलब्ध हैं। सामान्य गृहस्थों के अध्ययन के लिए यह नितान्त आवश्यक तो है ही, साथ ही विद्वत्वर्ग द्वारा भी इससे लाभ लिया जा सकता है। विधानादि के लिए नक्शे सर्वांगपूर्ण, सुन्दर एवं स्पष्ट बनाये गये हैं। चार्ट, चित्र, सारणी, भौगोलिक, ज्योतिष एवं लोक संबंधी विभिन्न नक्शों तथा संख्याओं के कारण इस ग्रंथ की उपयोगिता अतुलनीय हो गई है। पूज्य माताजी ने सभी विषय को सुबोध बनाने की दृष्टि से जितनी तालिकाओं और रेखाचित्रों का प्रयोग किया है, उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इस कृति का सृजन वैज्ञानिक प्रस्तुतिकरण की प्रक्रियाओं से भिन्न सुदीर्घ अनुभवी शिक्षक ने किया है, जबकि पूज्य माताजी की लौकिक शिक्षा लगभग शून्य है। इसे देखकर यह मानना पड़ता है कि माताजी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी और दिव्य अलौकिक शक्तियों से परिपूर्ण सरस्वती की प्रतिमूर्ति हैं। पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने इस ग्रंथ की रचनाकर करणानुयोग के सागर को गागर में भर दिया है। गणित की रुक्षता में जो स्निग्धता आज दिखाई दे रही है और दूसरों के द्वारा अनुकरणीय बनती जा रही है, वह पूज्य माताजी का ही अगम्य भूमि पर किया गया अद्वितीय प्रयास है। गणित की निष्पक्षता, दुरुहता, सर्वतोभद्रमयी उपयोगिता को उनकी अभिरुचि ने कृतकृत्य कर दिया है। उनका यह प्रयास सर्वोत्तम, सर्वग्राह्य एवं सर्वप्रिय है, साथ ही वह अभूतपूर्व अमर एवं आधारभूत है।

हम उनकी इस कृति की प्रशंसा को शब्दातीत पा रहे हैं। उन्होंने ऐसे ही अन्य विलक्षण कृतियों की भी रचनाकर समाज एवं विद्वत्वर्ग के चिर कृतज्ञ बना दिया है।

हमारा वर्तमान विश्व मध्यलोक के प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप के अन्तर्गत भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में ही स्थित है। इस प्रकार भरतक्षेत्र का आर्यखण्ड ही हमें दृष्टिगोचर होता है किन्तु 5 म्लेच्छ खण्डों के बारे में हमारी जानकारी कुछ भी नहीं है। उसी प्रकार जम्बूद्वीप के अन्य क्षेत्र भी हमें इस विश्व में नहीं दिखते हैं। अतएव अधिकांश व्यक्ति इस जानकारी पर संदेह करने लगते हैं। कृति की प्रस्तावना में श्री सुमेरचंद जैन ने Dr. Helmuth, Dr. Khol आदि विद्वानों को तो उद्धृत किया ही है, विगत दिनों मेरी चर्चा देश के वरिष्ठ अंतरिक्ष वैज्ञानिक तथा राष्ट्रीय भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद के डॉ. राजमल जी से हुई। वे नासा (अमेरिका) तथा विश्व की अनेक अंतरिक्ष प्रयोगशालाओं से नजदीकी से जुड़े हैं। आपने बताया कि जैन परम्परा में विवेचित ब्रह्माण्ड विषयक विवेचनों, जिसमें मध्यलोक और जम्बूद्वीप समाहित है, के बारे में तथ्यात्मक, प्रामाणिक जानकारी देने वाली अलभ्य कृति त्रिलोक भास्कर है। आज नवीनतम अनुसंधानों के आधार पर वैज्ञानिकों ने यह स्पष्टत: स्वीकार किया है कि उनका ब्रह्माण्ड के बारे में उपलब्ध ज्ञान 5 प्रतिशत से भी कम है। जिस विषय में वैज्ञानिक 95 प्रतिशत अज्ञान के अंधकार में डूबे हैं, उनके प्राथमिक अनुमानों के आधार पर हम दिव्य दृष्टि सम्पन्न जैनाचार्यों के कृतित्व, संस्थापनाओं और निष्पत्तियों को नकार दें, यह कहाँ तक उचित है? यहाँ यह भी ध्यान रखना होगा कि वैज्ञानिक शताब्दियों तक गलत प्रस्तुतीकरण करने के बाद आज जो नवीन प्रतिस्थापनाएं कर रहे हैं उनमें से अनेक का प्रतिपादन जैनाचार्यों ने सहस्रों वर्ष पूर्ण कर दिया था। आज जरूरत इस बात की है कि पूज्य माताजी द्वारा रचित "त्रिलोक भास्कर" पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद कराकर ब्रह्माण्ड के विषय में शोध और अनुसंधान करने वाले वैज्ञानिकों के सम्मुख ब्रह्माण्ड का एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत करें। निश्चय ही इससे वैज्ञानिकों को शोध के बारे में नई दिशा मिल सकती है। हेयदृष्टि को तिलांजलि देकर हम पूर्ण विश्वास के साथ अपने विषय का प्रस्तुतीकरण करें और इस प्रस्तुतिकरण में मार्गदर्शक होगी 'त्रिलोक भास्कर'। समाज के विद्वत्जनों से अपेक्षा है कि इस विषय पर शोध करें और जैन भूगोल को एक सुदृढ़ आधार प्रदान करें। कृति की लेखिका पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में नमन करते हुए मैं अपनी बात को विराम देता हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूलाचार : आदर्श टीकानुवाद

लेखक—पं. शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी
(संरक्षक एवं पूर्व अध्यक्ष-तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ)

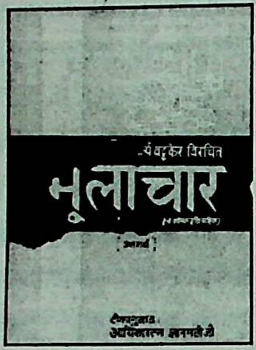

जानन्न ज्ञायते यस्मात्तदज्ञानं प्रकीर्त्तितम्।
तद्भित्वोदितं यत्तद् केवलज्ञानमिष्यते।।1।।
केवलज्ञानप्राप्त्यर्थं या बुद्धिर्वरीयसी।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै ज्ञानमत्यै नमो नमः।।2।। (स्वोपज्ञ)

प्रास्ताविक—वर्तमान में श्रमण जैन परम्परा में विश्ववंद्य भगवान महावीर स्वामी 24वें तीर्थंकर का शासन अविच्छिन्न रूप से प्रवर्तमान है। उनकी दिव्य ध्वनि के प्रख्यापक द्वादशांग श्रुत में प्रथम आचारांग है। इसमें श्रमणचर्या का 18000 पदों में वर्णन है। गौतम गणधर ने इसे सर्वप्रथम स्थान दिया है। दि. जैन वाङ्मय में उनकी अनुसारता एवं उनके मूल शब्दों को भी समाविष्ट किए हुए 'मूलाचार' नामक महनीय कृति है। इसके रचयिता मूलसंघ के स्थायित्वकारी दृढ़ स्तम्भ महामुनि आ. कुन्दकुन्द स्वामी हैं जिन्होंने लगभग 2000 वर्ष पूर्व भारत भूमि को अलंकृत किया था। इनके नामों में वट्टकेर आचार्य नाम भी संभाव्य है। प्रस्तुत वृहद् ग्रंथ का नामकरण मूलसंघ धर्मस्य मूलंदया, मूलगुणों के पालक श्रमणत्व आयाम द्वादशांग में आचारांग की मूलता-प्रथमता, आचार विषयक, मूल ग्रंथता आदि दृष्टियों से किया गया प्रतीत होता है। संक्षेप में कथनीय है कि यह मोक्षमार्ग की मूल आधारशिला का ही स्वरूप है।

प्राकृत ग्रंथ पर मेघचन्द्राचार्य ने कन्नड़ भाषा में (1403 गाथाओं में) वृत्ति रूप तथा आचार्य वसुनन्दिसिद्धान्त देव ने 1252 गाथाओं में आचारवृत्ति नामक संस्कृत भाषा में टीका का प्रणयन किया। बड़े हर्ष का विषय है कि उत्कृष्ट क्षयोपशमधारी, 250 से अधिक ग्रंथों की रचयित्री पूज्य गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने उक्त वसुनन्दि आचार्य (11वीं शती) द्वारा लिखित 'आचारवृत्ति' टीका का अनुवाद कर अब से लगभग 27 वर्ष पूर्व अक्षयतृतीया[1] वीर नि. सं. 2504 बुधवार को प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ वर्तमान में जम्बूद्वीप रचना अलंकार का रूप ले चुकी है, हस्तिनापुर में जिनमंदिर में पूर्ण किया था। इसका प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा सन् 1984 में प्रथम संस्करण के रूप में हुआ था। द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ संस्करण के बाद पाँचवाँ संस्करण भी 2002 में प्रकाशित किया जा चुका है। इससे इस ग्रंथ की लोकप्रियता का सहज अनुमान हो जाता है। हिन्दी भाषा-भाषियों आमजनों व विद्वानों दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

यह ग्रंथ दो खण्डों में प्रकाशित हुआ है। पूर्वार्द्ध में मूलाचार के 12 अधिकारों में से 1. मूलगुणाधिकार 2. वृहत्प्रत्याख्यानसंस्तरस्तवाधिकार 3. संक्षेप प्रत्याख्यानाधिकार 4. सामाचाराधिकार 5. पंचाचाराधिकार 6. पिंडशुद्धि-अधिकार 7. षडावश्यकाधिकार, इन सात अधिकारों के टीकानुवाद को सम्मिलित किया गया है। उत्तरार्ध में 8. द्वादशानुप्रेक्षाधिकार 9. अनगारभावनाधिकार 10. समयसाराधिकार 11. शीलगुणाधिकार 12. पर्याप्त्यधिकार, इन 5 अधिकारों में निबद्ध टीकानुवाद प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक मण्डल में वरिष्ठ एवं प्रसिद्ध ख्याति प्राप्त जैन जगत के मूर्धन्य निम्नलिखित विद्वान सम्मिलित हैं—

1. सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री
2. पं. जगन्मोहनलाल शास्त्री
3. डॉ. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य

---

1. कुरुजांगलदेशेऽस्मिन् सुक्षेत्रे हस्तिनापुरे। दिक्शून्यपञ्चयुग्मांके वीराब्दे विश्रुते भुवि।।7।।
अक्षयाख्यतृतीयां वैशाखे बुधवासरे। जिनदेवालये ह्येषोऽनुवादः पूर्णतामगात्।।8।। पू. माताजी कृत प्रशस्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रधान सम्पादकीय में डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन ने माताजी के प्रस्तुत कार्य की प्रशंसा में निम्न उद्गार व्यक्त किये हैं—

"हमें प्रसन्नता है कि विदुषी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने वृत्ति समन्वित मूलाचार का भाषानुवाद बड़े उत्साह एवं परिश्रमपूर्वक सरल सुबोध शैली में किया है।............आर्यिका माताजी को अनेकशः साधुवाद है तथा उपरोक्त पंडितत्रय अपने महत्योगदान के लिए साधुवाद के पात्र हैं।"

सम्पादकत्रय का माताजी के प्रति जो अभिमत है, उसे भी यहाँ संक्षेप में उद्धृत करने का लोभ-संवरण नहीं कर पा रहा हूँ, दृष्टव्य है।

"हमें प्रसन्नता होती है कि कुछ आर्यिकाओं ने आगम ग्रंथों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर उनकी टीकाएँ लिखना प्रारंभ किया है। इन आर्यिकाओं के नाम हैं, श्री 105 आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी (अष्टसहस्री, नियमसार, कातन्त्र रूपमाला आदि ग्रंथों की टीकाकार).........। ये माताएँ ज्ञान-ध्यान में तत्पर रहती हुई जैन वाङ्मय की उपासना करती रहें, यह आकांक्षा है।" (सम्पादकीय, प्रथम संस्करण)

उपरोक्त विद्वानों के द्वारा (विशेष कर पं. जगन्मोहनलाल शास्त्री द्वारा) पाण्डुलिपि का पूर्णरूप से आद्योपान्त पढ़कर सम्पादन किया जाना तथा उपर्युक्त विचारों का प्रकटीकरण यह प्रमाणित करता है कि वस्तुतः यह टीकानुवाद प्रामाणिक आवश्यकता की पूर्तिरूप एवं सुन्दर कृति है।

साहित्य क्षेत्र में अनुवाद तथा विशेष रूप से संस्कृत-प्राकृत टीकानुवाद भी वह विद्या है, जिसके द्वारा मूलग्रंथ की टीका के गूढ़गर्भ विषयों को सरल सुबोध शैली में जनसाधारण एवं विद्वानों, दोनों के लिए स्पष्ट किया जावे। माताजी अनुवाद कला में भी निष्णात एवं सिद्धहस्त हैं। इसका प्रमुख कारण उनकी बहुभाषामिज्ञता, सिद्धान्त, दर्शन, व्याकरण, न्याय, आगम की तलस्पर्शी प्रौढ़ जानकारी, छंद, रस, शब्द रचना की अधिकारिता आदि की समाविष्टरूप है। इसके साथ ही प्रशम, संवेग, आस्तिक्य, अनुकम्पा और निर्वेद भावना के आप्त, आगम, गुरु भक्ति के रस में सिक्त प्रवाह ने उन्हें ज्ञानावरण कर्म का अपेक्षित क्षयोपशम प्रदान किया है। उन्होंने स्वाध्याय के द्वारा चारों अनुयोगों के आगमाभ्यास, पठन-पाठन-शिक्षण-प्रशिक्षण का क्रम अनवरत चालू रखा है। प्रस्तुत मूलाचार की वसुनन्दि आचार्यकृत आचारवृत्ति का भाषानुवाद कर उन्होंने प्रवचन भक्ति और धर्मप्रभावना के क्षेत्र में महान् कार्य किया है। उनकी इस कृति की जितनी प्रशंसा की जाये, थोड़ी है।

यहाँ हम बिन्दुवार इस महनीय ग्रंथ की विशेषताओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे। पाठकगण अपेक्षित जानकारी से लाभान्वित होंगे।

1. आद्य उपोद्घात (अ)—पूज्य आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने दोनों खंडों के प्रारंभ में पृथक्-पृथक् रूप से प्रस्तावना को समाहित किए हुए आद्य उपोद्घात लिखा है। इसमें मूलाचार के विषय में होने वाली जिज्ञासाओं का समाधान किया है। अनेकों चर्चित विषयों को उपयोगी जानकर स्पष्ट किया है। प्रथमतः 12 अधिकारों के विषय का अति संक्षेप से विषय वर्णित किया गया है। सामान्यरूप से इस विवेचन पर दृष्टिपात करने से मूलाचार के समग्र विषय पर जानकारी उपलब्ध होती है। माताजी ने इस प्ररूपण से मूलाचार के स्वरूप का ही प्रकाशन किया है, इसे निम्नरूप से अवगम किया जा सकता है।

मूलाचार शास्त्र से मूलगुणों का साधन, मूलगुणों से शुद्धिस्वरूप साध्य, पापयोग का प्रत्याख्यान और सन्यासमरण का स्वरूप, पापों के त्याग का संक्षिप्त वर्णन, 10 प्रकार का मुण्डन, प्रातः से रात्रि पर्यन्त साधु-चर्या का वर्णन, औघिक-पदविभागी सामाचार, एकल विहार का निषेध, आर्यिका-चर्या, पंचाचार (दर्शनाचार आदि) का विवेचन, उद्गम आदि 8 दोषों से रहित पिंडशुद्धि (आहार शुद्धि), 46 कुल दोष व 32 अन्तराय टालकर भोजनशुद्धि, समता, स्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, कायोत्सर्ग, इन छः आवश्यक स्वरूप, अध्रुव आदि द्वादश अनुप्रेक्षा, मुनियों की उत्कृष्ट चर्या, लिंग, व्रत आदि 10 शुद्धियों का विवेचन, समयसार अधिकारगत चारित्रशुद्धि, 10 स्थिति कल्प भेद, शील के 18 हजार भेद व 84 लाख उत्तरगुण, पर्याप्ति, जीवों के भेद-प्रभेद तपश्चरण, कर्मक्षय विधान द्वारा मोक्षप्राप्ति आदि का ज्ञान इस विवरण से इष्ट है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ब) टीकानुवादकर्त्री माताजी ने ग्रंथ और ग्रंथकार की द्विविधा में व्याप्त असमंजस को विभिन्न युक्तियों एवं दृष्टिकोणों से दूर कर स्पष्ट निर्णय किया है, जिससे पाठक को सहमति व्यक्त करनी ही पड़ेगी। उन्होंने इस हेतु आधार दिया है, जिसके अनेक रूप हैं।

(1) टीकाकार मेघचंद्राचार्य की कर्णाट वृत्ति में 1403 गाथाओं एवं आ. वसुनन्दि की आचारवृत्ति में 1252 गाथाओं की टीका है। गाथाओं के अंतर को पृथक् कर देखें तो दोनों की गाथाएं वही की वही हैं। साथ ही आचार्य वसुनन्दि ने अन्तरित गाथाओं का भाव भी 1252 गाथाओं की टीका में समाविष्ट किया है। इससे माताजी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि दोनों ग्रंथ पृथक् न होकर एक 'मूलाचार' ही है। दोनों विख्यात आचार्यों ने मूलाचार नाम ही दिया है। किसी संख्यान्तरत्व से पृथक् ग्रन्थता सिद्ध करना अभीष्ट नहीं है। जैसे समयसार ग्रंथ की प्रसिद्ध दो टीकाएँ हैं। आ. अमृतचन्द्रसूरि की आत्मख्याति में उन्होंने 415 गाथाओं की टीका प्रस्तुत की है और जयसेनाचार्य ने 439 गाथाओं की तात्पर्यवृत्ति टीका की है परन्तु अद्यावधि दोनों एक ही ग्रंथ है। उसी प्रकार मूलाचार भी दो न होकर एक ही स्वीकार करना चाहिए। जब ग्रंथ एक है तो रचयिता भी एक आचार्य ही सिद्ध होते हैं। रहा नाम का प्रश्न, इस संबंध में अनुवादकर्त्री ने स्पष्ट निर्णय किया है कि दोनों नाम कुन्दकुन्द और वट्टकेर एक ही आचार्य कुन्दकुन्द के नाम हैं। ज्ञातव्य है कि आचार्य कुन्दकुन्द ने षट्खण्डागम के प्रथम तीन खण्ड जीवस्थान, क्षुद्रकबन्ध और बन्धस्वामित्व पर परिकर्म नाम की टीका का प्रणयन किया था अत: वे वृत्तिकार थे। वृत्तिकार का प्राकृतरूप 'वट्टकेर' है। इसी हेतु से माताजी ने प्रकट किया कि कुन्दकुन्द के अनेक नामों के साथ ही वे ही वट्टकेराचार्य थे।

(2) अन्य प्रस्तुत तर्कों में एक यह भी दिया है कि आचार्य वसुनन्दि ने भी ग्रंथ की परिसमाप्ति पर कुन्दकुन्द ग्रंथकार का नाम दिया है दृष्टव्य है—

'इति मूलाचारविवृत्तौ द्वादशोऽध्याय: कुन्दकुन्दाचार्यप्रणीतमूलाचाराख्यविवृत्ति:। कृतिरियं वसुनन्दिन: श्री श्रमणस्य।''

(3) यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि मूलाचार में रचित गाथाएं बहुसंख्या में कुन्दकुन्द के अन्य ग्रंथों समयपाहुड़, प्रवचनसार, नियमसार और पंचास्तिकाय आदि में पाई जाती है अत: इस प्रकार भी सिद्ध होता है कि मूलाचार एक ही ग्रंथ है और उसके रचयिता वट्टकेर संज्ञा से विभूषित आचार्य कुन्दकुन्द ही हैं। माताजी ने विस्तार से प्रकाश डाला है, पठनीय है।

मेरी दृष्टि में एक बात यह भी है कि श्रमणमूलसंघ के उद्धर्त्ता आ. कुन्दकुन्द यदि मुनि के यथार्थ आचार परक कोई ग्रंथ न रचते तो श्रमण परम्परा शिथिलत्व को छोड़कर निर्ग्रन्थ रूप में स्थापित करने वाले रूप में कुन्दकुन्द को क्यों स्वीकार करती। उन्होंने अवश्य ही मूलश्रुत यह आचारांग का रूप मूलाचार अवश्य ही लिखा है।

(स) आद्य उपोद्घात में माताजी ने वसुनन्दि सिद्धान्तदेव से अतिरिक्त (मूलपाठ से अन्य) आ. मेघचन्द्र द्वारा टीकाकृत गाथाओं की विवरण सूचना दी है तथा शान्तिसागर संस्था फलटण से प्रकाशित मूलाचार में समाविष्ट गाथाओं का आपेक्षित चिन्हांकन भी सूचित किया है तथा आगे टिप्पणियों में खुलासा भी किया है।

(द) आद्य उपोद्घात (उत्तरार्ध) के अन्तर्गत मूलाचार मान्य शुक्लध्यान का अवस्थान 11वें गुणस्थान का उल्लेख कर धवला पुस्तक 13 के अनुसार धर्मध्यान 10वें गुणस्थान तक प्रकट कर परिशेष न्याय से शुक्लध्यान 11 गुणस्थान में मानकर ऐक्य स्थापित किया है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि शुक्लध्यान का प्रारंभ मूलाचार में अन्य दृष्टि से व अन्य सर्वार्थसिद्धि आदि व तात्पर्यवृत्ति (जयसेन कृत) में 8वें गुणस्थान में माना गया है। यह सब ऊहापोह उत्तरार्द्ध के आद्य उपोद्घात से ज्ञातव्य है।

(य) इसी में अनुवादकर्त्री ने गृहीतार्थ-अगृहीतार्थ विहार, एकल विहार योग्यता, स्वच्छन्दता परिहार आदि विषयों का खुलासा किया है।

2. मूलाचार के प्रस्तुत अनुवाद में शब्द एवं वाक्य-विन्यास की प्रौढ़ता के दर्शन होते हैं। माताजी आगम विद् भाषाविद् एवं सिद्धहस्त टीकाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं, अत: शब्द उनसे प्रभावित होकर माला में मोतियों की भाँति सुशोभित होते जाते हैं। कहीं भी विषयान्तरता या स्खलन नहीं है।

3. पूर्व में फलटण से प्रकाशित पं. जिनदास फडकुले द्वारा कृत भाषानुवाद के अनेक महत्वपूर्ण अंशों के अर्थ को पूरा करने हेतु भी माताजी ने मंतव्य सम्मिलित किए हैं। माताजी के शब्दों को उद्धृत करता हूँ,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"मैंने मूलाचार ग्रंथ के अनुवाद के पूर्व भी श्री वट्टकेराचार्यकृत मूलाचार और इस कुन्दकुन्द-कृत मूलाचार का कई बार स्वाध्याय किया था। अपनी शिष्या आर्यिका जिनमती को वट्टकेर कृत मूलाचार की मूल गाथाएँ पढ़ाई भी थीं। पुनः 1977 में जब हस्तिनापुर में प्रातः इसका सामूहिक स्वाध्याय चलता था, तब श्री वसुनन्दि आचार्य की टीका का वाचन होता था। यह ग्रंथ और इसकी यह टीका मुझे अत्यधिक प्रिय थी। पं. जिनदास द्वारा अनूदित मूलाचार में बहुत कुछ महत्वपूर्ण अंश नहीं आ पाये हैं, यह बात मुझे ध्यान में आ जाती थी। अतः शब्दशः टीका का अनुवाद पुनरपि हो इस भावना से तथा अपने चरणानुयोग के ज्ञान को परिपुष्ट करने की भावना से मैंने उन्हीं स्वाध्याय काल के दिनों में इस महाग्रंथ का अनुवाद करना शुरू कर दिया।"

4. गाथागत अर्थ की स्पष्टता का टीकाकर्त्री का प्रयत्न रहा है। आचार्य वसुनन्दि की 'आचारवृत्ति' एवं मेघचन्द्राचार्य की 'मुनिजनचिन्तामणि' दोनों के मन्तव्यों को गर्भित किए हुए अपेक्षित विस्तार किया गया है। प्रायः अनपेक्षित विस्तार से बचने का भाव दृष्टिगत होता है। अति उपयोगी जानकर ही विस्तार अधिक किया है, यह कुछ ही स्थलों पर प्रकट है, उदाहरणार्थ गाथा सं. 276 व 692 का विशेषार्थ है। जो विषय टीकाकार से अस्पृष्ट है आवश्यक समझकर उसे भी स्पष्ट व प्रकट किया गया है। टीकाकार के अभिप्राय को मुख्य रखा गया है।

5. आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने गाथा क्रमांक 187 में कहा है—

एसो अज्जाणं पि य सामाचारो जहक्खिओ पुव्वं।
सव्वम्हि अहोरत्ते विभासिदव्वो जधाजोग्गं।।

इसका आशय यह है कि आर्यिकाओं का समाचार भी पूर्व प्रतिपादित मुनि समाचार की विधि के समान है। इस गाथा की आचारवृत्ति की उत्थानिका में आचार्य वसुनन्दिसिद्धान्तदेव ने कहा है—

"**यदि यतीनामयं न्याय आर्यिकाणां क इत्यत आह**"। यदि मुनियों के लिए ऐसा न्याय है, तो आर्यिकाओं के लिए क्या आदेश है?

आगे टीका में लिखा है "एषः आर्याणामपि च सामाचारः।" अर्थात् आर्यिकाओं का भी वही सामाचार है। प्रस्तुत आचारवृत्ति के भावार्थ में अनुवादकर्त्री का खुलासा उनके शब्दों में निम्न प्रकार है—

"**भावार्थ**—इस गाथा से यह स्पष्ट हो जाता है कि आर्यिकाओं के लिए वे ही 28 मूलगुण और वे ही प्रत्याख्यान, संस्तर ग्रहण आदि तथा वे ही औधिक, पदविभागिक समाचार माने गये हैं जो कि यहाँ तक 4 अध्यायों में मुनियों के लिए वर्णित हैं। मात्र यथायोग्य पद से टीकाकार ने स्पष्ट कर दिया है कि उन्हें वृक्षमूल, आतापन, अभ्रावकाश और प्रतिमायोग आदि उत्तर योगों के करने का अधिकार नहीं है और यही कारण है कि आर्यिकाओं के पृथक् दीक्षाविधि का पृथक् विधि-विधान का ग्रंथ नहीं है।"

उपरोक्त उदाहरण से ज्ञात होता है कि माताजी के अनुवाद में भी यह सावधानी है कि आगम व परम्परा से विरोध न हो। पंचाचाराधिकार की गाथा क्रमांक 203 का विशेषार्थ भी दृष्टव्य है।

सम्पूर्ण ग्रंथ पर दृष्टिपात करने से यह प्रतीत होता है कि माताजी के प्रस्तुत टीकानुवाद में अनेकों विशेषताएँ हैं जिनमें से ऊपर वर्णित आद्य उपोद्घात व अन्य कतिपय विषयों पर ध्यान आकर्षित किया गया है। पूरा ग्रंथ पठनीय है। प्रकाशक संस्था व सम्पादक मंडल और अन्य पाठकों ने इसको सराहनीय बतलाया है। 108 कण्ठहार गाथाओं के प्रस्तुतीकरण, 35 पुण्यपाठ योग्य गाथाओं के पृथक् उद्धृतीकरण, गाथानुक्रमणिका और पारिभाषिक शब्द कोष युक्त माताजी की स्वयं की शुद्धि हेतु किया गया है यह ग्रंथ उन्हीं के शब्दों में निम्न प्रकार अजर अमर रहे।

यावत् श्री जैनधर्मोऽयं विद्यते पृथिवीतले।
तावत्स्थेयादयं ग्रन्थो मूलाचारोऽस्तु मे श्रियै।। (प्रशस्ति)

।। इत्यलम् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैनागम का सार : ज्ञानामृत
(एक अनुशीलन)

लेखक—प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद *

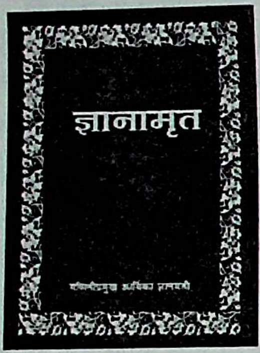

अब वह समय तो बीत गया, जब हमारे बुजुर्ग अपने होनहार बालकों को मोरेना, वाराणसी, सागर, हस्तिनापुर आदि स्थानों पर स्थापित जैन संस्कृत गुरुकुलों में भेजकर वहाँ से उन्हें विद्वान् बनकर निकलते देखना पसंद करते थे। पूज्य श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी, पण्डित गोपालदास जी वरैया, महात्मा भगवानदीन जी आदि के प्रयत्नों से जैन विद्याध्ययन के प्रति आई जागृति आज सुषुप्ति के कगार पर है। संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार बसाने की प्रवृत्ति के बढ़ने, जैन श्रावकों के गाँवों को छोड़कर प्रायः शहरों में बस जाने तथा भौतिकता की आँधी में लोगों के अत्यधिक सुविधाभोगी हो जाने से इन दिनों अर्थकारी विद्यार्जन के प्रति आकर्षण बढ़ा है तथा जैन विद्या के केन्द्र सिकुड़ते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में स्वाध्याय एवं साधु-संगति ही एक मात्र ऐसे माध्यम हैं, जिनकी शरण में रहकर भव्य एवं जैन तत्त्वजिज्ञासु जीव भवतरणी विद्या का ज्ञान प्राप्त कर आत्म कल्याण कर सकते हैं। ऐसे जिज्ञासुओं की संख्या भी आज अत्यल्प है, यह भी एक तथ्य है।

महामनीषी कौटिल्य ने अपने एक शतक में लिखा है कि शास्त्र अनन्त और विद्यायें अनेकानेक हैं, किन्तु मनुष्य के पास समय का अभाव है। अपनी लौकिक व्यस्तताओं के चलते यदि ध्यानाध्ययन के लिए वह थोड़ा-सा भी समय निकाल पाता है तो उसमें भी बीमारियों, मुकदमों और प्रतिकूल संयोगों की बाधाएं आती रहती हैं। ऐसी स्थिति में तत्त्व जिज्ञासुओं के सामने एक समस्या यह रहती है कि वे क्या और कितना पढ़ें? कौटिल्य ने ऐसे जिज्ञासुओं को परामर्श देते हुए कहा है-'यत्सारभूतं तदुपासनीयम्' अर्थात् जो सारभूत है, उसे जानें-पढ़ें और उसी की उपासना करें। विदुषी गणिनी आर्यिका पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी लेखनीरूपी मथानी से चतुरनुयोग-विभक्त विशाल शास्त्र-समुद्र के मंथन द्वारा ज्ञानामृत निकालकर ग्रंथ रूप कलश में भरकर जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत किया है, जिसका आचमन कर वे जैन विद्या के सार को सहजता से हृदयंगम कर सकते हैं।

'ज्ञानामृत' ग्रंथ में पूज्य माताजी ने जैनाध्यात्म एवं जैनागम से संबंधित 25 शीर्षकों के साथ जैन विद्या का सार संक्षेप जैन वाङ्मय के 42 ग्रंथों के आधार पर प्रस्तुत किया है। इस कृति में जैन वाङ्मय का सार समाहित है, यह कहना उपयुक्त ही होगा। किसी विषय-वस्तु की विस्तारपूर्वक प्रस्तुति की तुलना में उसे संक्षेप में लिखना एक कठिन एवं श्रमसाध्य अनुष्ठान है। चिट्ठी तो कोई अल्पज्ञानी भी लिख सकता है, किन्तु तार की भाषा सामान्य लोग नहीं लिख पाते हैं। तार लिखवाने के लिए अभ्यस्त लोगों का सहारा लेना पड़ता है। ज्ञान के विशेष क्षयोपशम एवं वर्ण्य विषय पर पूर्ण अधिकार के बिना संक्षेप में लिखना संभव नहीं है। पूज्य माताजी की प्रबल तर्कणा शक्ति एवं विलक्षण प्रतिभा के मेल से प्रसूत यह तत्त्व जिज्ञासुओं के लिए कितना उपयोगी है, इसका निर्णय इसको पढ़कर कोई भी कर सकता है।

पूज्य आचार्य माणिक्यनन्दी ने लिखा है कि जैन सिद्धान्त ग्रंथों में वर्णित सूक्ष्म तत्त्वों के सम्यक् परिशीलन के लिए दस जन्मों तक जैन वाङ्मय का स्वाध्याय करते रहने के बाद भी विरले पुण्यशाली जीव ही 'हिताहितप्राप्ति-परिहार' में समर्थ हो पाते हैं। इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के विछोह में बुद्धि को लिप्त न करने वाले ही जिनशासन के रहस्य को समझ सकते हैं। यहाँ हम अपने अनुभव से यह कह सकते हैं कि जो भव्य जीव विनयपूर्वक इस ज्ञानामृत का पारायण करेगा, उसकी बुद्धि में 'स्वोपकारपरो भव' की प्रशस्त प्रेरणा आए बिना नहीं रहेगी। गागर में सागर को समेटे हुए यह ग्रंथ घर-घर में स्वाध्याय-पीठिका पर विराजमान करने योग्य है।

श्री मज्जिनेन्द्रदेव के दिव्य उपदेश में निहित विविध प्रमेयों को सरल एवं बोधगम्य भाषा में व्याख्यायित करने वाली इस कृति का हम यहाँ एक संक्षिप्त अनुशीलन प्रस्तुत कर रहे हैं—

---

* पूर्व अध्यक्ष-अखिल भारतवर्षीय दि. जैन शास्त्री परिषद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैनों के लिए णमोकार महामंत्र कल्पतरु के समान है। जो लोग सुख पाना चाहते हैं, उन्हें सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते और खाते-पीते निरन्तर इस मंत्र का भावपूर्वक स्मरण करते रहना चाहिए। वीतरागता एवं निस्पृहता के प्रतीक पंच परम पद को छोड़कर शेष सब अपद हैं, इस सूत्र को पकड़कर भव्य जीव आत्म-अनात्म तत्त्व में भेद करना सीख जाते हैं। इस मंत्र के पैंतीस अक्षरों में जैनशासन का सार विद्यमान है। सात तत्त्व, नव पदार्थ, रत्नत्रय, गुणस्थान, मार्गणा, अणुव्रत-महाव्रत, कर्म प्रकृतियों आदि का पूरा-पूरा आगमिक चिन्तन इस ग्रंथ में समाहित है। इस विषय पर प्रस्तुत कृति के 'णमोकार मंत्र का अर्थ' शीर्षक आलेख से यथेष्ट जानकारी प्राप्त की जा सकती है। सिद्धों से पूर्व अर्हन्तों को नमस्कार क्यों किया जाता है, इसकी बुद्धि सम्मत व्याख्या विशेषरूप से पठनीय है।

जैनागम में हमारे आचार्यों ने सागार एवं अनगार रूप द्विविध धर्म का विस्तार से विवेचन किया है। सागार अर्थात् गृहस्थ के कर्तव्यों पर आचार्य पद्मनन्दि, समन्तभद्र, गुणभद्र आदि ने अच्छा प्रकाश डाला है। पण्डित आशाधर जी द्वारा रचित 'सागारधर्मामृत' को श्रावकों की आचार-संहिता ही कहा जा सकता है। गौतम स्वामी-प्रणीत प्रतिक्रमण सूत्र भी सभी के लिए मार्गदर्शक हैं। पुराणों के स्वाध्याय से एक आदर्श श्रावक के स्वरूप को समझने में पर्याप्त सहायता मिलती है। एक सद्गृहस्थ की चर्या में अष्ट मूलगुण, षडावश्यक क्रियाओं, बारह भावनाओं, बारह व्रतों, दान आदि का बड़ा महत्व है। सप्त व्यसन-त्यागपूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करने वाले सद्गृहस्थ को सन्त तिरुवल्लवर ने 'पूतात्मा सा ऋषेरपि' कहकर महिमा-मण्डित किया है। आचार्य पद्मनन्दि ने भी 'पूज्यं तद् गार्हस्थ्यं' कहकर उसकी प्रशंसा की है। प्रस्तुत 'ज्ञानामृत' ग्रंथ में विविध आचार्यों द्वारा वर्णित श्रावकाचार का सार गृहस्थ धर्म, उपासक धर्म, दान, सुदं मे आउस्सन्तो, जैनधर्म आदि शीर्षक आलेखों में प्रस्तुत किया गया है। जिन सुधी श्रावकों के पास विविध ग्रंथों के स्वाध्याय के लिए समय का अभाव है, उनके लिए यह कृति एक सरल एवं सुवाच्य कुंजी के समान है।

एक आदर्श श्रावक में श्रद्धा, विवेक और आचरण का संगम दृष्टिगत होना चाहिए। इस तरह के संगम से ही सदाचारी नागरिक बनने का मार्ग प्रशस्त होगा। यह ग्रंथ किसी भी गृहस्थ का इस दिशा में यथेष्ट मार्गदर्शन करने में समर्थ सिद्ध होगा। इसमें हमें संदेह नहीं है।

श्रावक धर्म से भी यति या अनगार धर्म श्रेष्ठ है। यति या साधु एक सद्गृहस्थ के लिए आदर्श होते हैं। इसीलिए आचार्य अमृतचन्द्र जी ने सर्वप्रथम उच्च वीतराग साधु धर्म का उपदेश करने का निर्देश दिया है। जिन पुरुषों में सामर्थ्य है, उन्हें मुनि बनकर अपना आत्मकल्याण करना चाहिए, किन्तु किसी कारण से-कर्मोदयवश या शक्ति की न्यूनता से यदि कोई मुनि बनने का संकल्प नहीं जुटा पाए तो उसके लिए घर में रहकर सागार धर्म का पालन करना ही इष्ट है। पण्डित आशाधर जी ने लिखा है कि सज्जन पुरुषों को दीक्षा के लिए प्रेरित करो। जिस प्रकार वंश चलाने के लिए पुत्र को गोद लेते हैं, उसी प्रकार समाज के सम्यक् संचालन के लिए साधु बनाइए।

प्रस्तुत ज्ञानामृत ग्रंथ में मुनिचर्या एवं आर्यिकाचर्या शीर्षक आलेखों में मूलाचार में वर्णित श्रमणाचार का दिग्दर्शन कराया गया है। मुनियों और आर्यिकाओं की समाचारी विधि को लेकर उठने वाली शंकाओं का शास्त्रोक्त समाधान भ्रम-निवारण में सहायक है। इस कृति को पढ़कर किसी का इस भव में मुनि बनने का भाव बने या न बने, पर मुनियों के प्रति श्रद्धा का भाव अवश्य जागृत होगा और श्रद्धाभाव से जीव एक दिन अजर-अमर बन जाता है, ऐसा आगम का मत है।

'सम्मत्तस्स णिमित्तं जिणसुत्तं' के अनुसार जिनेन्द्र कथित सूत्र सम्यग्दर्शन में निमित्त हैं और इस सम्यग्दर्शन को धर्म का मूल कहा गया है। दर्शन-भ्रष्ट निर्वाण को प्राप्त नहीं हो सकता। चरित्र-भ्रष्ट तो एक बार सुलट भी सकता है, किन्तु दर्शन-भ्रष्ट के सुलटने का कोई उपाय नहीं है। श्रावक या मुनि के ज्ञान और चारित्र यदि सम्यक्त्व सहित हों तो वह भव-सन्तति को छेदने की सामर्थ्य रखते हैं। 'सम्यक्त्व सार' शीर्षक आलेख में पूज्य माताजी ने ठीक ही लिखा है-'सम्यक्त्व ज्योति आत्मा के स्वभाव को प्रकट कर समस्त परभाव को आत्मा से जुदा दिखलाने वाला एक अमूल्य और अलौकिक पारदर्शक यंत्र है।' प्रस्तुत अध्याय में दस प्रकार के सम्यक्त्व की चर्चा करते हुए वर्तमान दुःषम काल में द्वादशांग श्रुत के उपलब्ध न होने से अन्त के चार प्रकार के विस्तार, अर्थ, अवगाढ़ और परमावगाढ़ सम्यक्त्व तो नहीं होते, किन्तु आज्ञा समुद्भव, मार्ग समुद्भव, उपदेश समुद्भव आदि छह प्रकार के सम्यक्त्व हो सकते हैं, यह बताया गया है। कुछ लोगों की धारणा है कि यह सम्यक्त्व केवल समयसार आदि अध्यात्म ग्रंथों के पढ़ने से ही होता है, अन्य अनुयोगों का स्वाध्याय उसमें सहायक नहीं है। इस कृति में युक्ति और आगम से यह सिद्ध किया गया है कि यह धारणा सही नहीं है। भव्य जीव को चारों ही अनुयोगों का स्वाध्याय करना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समयसार जैनाध्यात्म का सिरमौर ग्रंथ है, किन्तु नय एवं गुणस्थान-विवक्षा का समीचीन ज्ञान न होने से अर्थ का अनर्थ होने की संभावना रहती है। पण्डित-प्रवर बनारसीदास जैसे सुधी व्यक्ति भी पाण्डे राजमल्ल जी की समयसार की टीका को पढ़कर इसी कारण सोलह वर्षों तक भ्रमित रहे और यह मान बैठे कि एक द्रव्य दूसरे का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। एकान्त मिथ्यात्व के भँवर में फँसकर वह पूर्व में लिए अपने नियमों को छोड़ बैठे। अपनी आत्मकथा 'अर्ध कथानक' में अपनी इस भूल का उन्होंने विस्तार से वर्णन किया है। ऐसी भूल से बचने के लिए इस ग्रंथ का 'समयसार का सार' शीर्षक आलेख आँख खोलने वाला है। इसे पढ़कर समयसार का स्वाध्याय करने वाले भटकेंगे नहीं। यह आलेख एक महत्वपूर्ण निर्देशिका के समान है।

सप्त परमस्थान, गतियों के आने-जाने के द्वार, जीव के स्वतत्त्व, चारित्र प्राभृतसार, बोध प्राभृतसार, त्रिलोक विज्ञान, अलौकिक गणित आदि आलेख जैनधर्म के मर्म एवं गूढ़-गंभीर रहस्य का उद्घाटन करने वाले हैं। हम अधिक विस्तार में न जाते हुए मात्र यह कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार डाक्टरों के लिए 'मेटेरिया मीडिका' की और वकीलों के लिए 'इण्डियन पिनल कोड' की उपयोगिता है, उसी प्रकार यह 'ज्ञानामृत' ग्रंथ धर्म-जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी है। सुधीजनों को इसका स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए, इस अनुशंसा के साथ हम प्रस्तुत अनुशीलन को विराम दे रहे हैं।

मुक्तक

पूछकर शशि धरातल के चाँद को कुछ बहाने से।
ज्योत्सनाओं से बह निकले सुधा निर्झर सुहाने से।
यही तो चाँद है जिसको मेरा अमृत पिलाना है।
गगन औ भूमि में अमरत्व का संदेश लाना है।।1।।
णमंसामि क्रिया जिसके चरणरज को नमन करती।
नीर से भर कलशझारी पादकमलों में नित नमतीं।।
आर्यिका पद में दिखती है अकिंचन सौम्य मुद्रा है।
रत्न माँ मोहिनी का जो सूर्य के सम चमकता है।।2।।
श्री लक्ष्मी ज्ञान श्री से जगत को वश में कर डाला।
ज्ञानसिंधु में रम करके सृजन साहित्य कर डाला।।
महकती है तुम्हारे गुण की सौरभ आज दुनियाँ में।
तीर पाने को भवदधि का दिखाया मार्ग दुनियाँ में।।3।।
मानकर हार चंदा ने कलंकित मुँह न दिखलाया।
तानकर सो गया फिर शरदपूर्णिमा को निकल आया।।
जीत होती सदा वैराग्य के सच्चे पुजारी की।
कीर्ति प्रसारित हुई जग में ज्ञान वैराग्यधारी की।।4।।
जन्मदात्री की गोदी को परम पावन किया तुमने।
यशकला से गुरु का नामयश द्विगुणित किया तुमने।।
आज इस दीक्षा दिन पर मात इक वरदान माँगू मैं।
"चंदनामती" तेरे संयम की सरिता में नहालूँ मैं।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'प्रवचन निर्देशिका' पुस्तक : जिसने जीवन दिशा ही बदल दी

लेखक—डॉ.सुशीलचंद्र जैन, मैनपुरी

एक डाक्टर को विद्वानों की श्रेणी में लाने तथा कुशल वक्ता बनाने का एकमात्र श्रेय है तो वह परमपूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी तथा उनके द्वारा रचित पुस्तक ''प्रवचन निर्देशिका'' को सन् 1976 में चिकित्सा विज्ञान का कोर्स पूरा करने के बाद मैं चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न था कि एकांतवाद, मुनिनिंदा, प्रथमानुयोग की अवहेलनानिमित्त कुछ सुनियोजित षड्यंत्रों के प्रभाव के कारण धर्म की ओर अभिरुचि हुई। सन् 1978 में हस्तिनापुर में पूज्य ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में शास्त्री परिषद के अध्यक्ष डॉ.लाल बहादुर शास्त्री की अध्यक्षता व कुशल वक्ता पं. बाबूलाल जी जमादार के संचालकत्व में लगभग 100-150 विद्वानों का शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर चल रहा था। मैं भी उसमें एक शिविरार्थी के रूप में शामिल था। एक दिन प्रात:कालीन सत्र के बाद लगभग 10 बजे पूज्य माताजी ने मुझे बुलवाया तथा कहा कि तुम्हें दोपहर के सत्र में बोलना है। मैं अवाक् रह गया। मैंने पूज्य माताजी से निवेदन किया कि मुझ डाक्टर को धर्म की कोई ए, बी, सी, डी नहीं आती, कभी प्रवचन दिया नहीं। मैं क्या बोल पाऊँगा? परन्तु माताजी ने कुछ नहीं सुनी तथा आज्ञा दी कि तुम्हें बोलना ही है। तो बिना मन के आज्ञा स्वीकार करनी पड़ी। मैटर हेतु पूज्य माताजी ने 'प्रवचन निर्देशिका' देते हुए विषय दिया ''सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में बाह्य कारण''। उस दिन खाना भी नहीं खा सका। नोट्स बनाने व पढ़ने में लग गया। दोपहर 2 बजे का सत्र मेरे द्वारा ही प्रारंभ हुआ। 15 मिनट की प्रस्तुति के बाद पूज्य माताजी, विद्वत्जनों, उपस्थित जन समुदाय ने जो प्रतिक्रिया दी, उसने इतना संबल, प्रोत्साहन दिया कि बस उसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा। श्रीमंत कैलाशचंद जैन, राजाटॉयज वाले, दिल्ली वाले मुझे अपनी गाड़ी से ले गये तथा ग्रीन पार्क मंदिर में उसी की पुनरावृत्ति करवाई, जो पहले प्रवचन के रूप में लोगों ने बहुत पसंद की। आज अगर देश में कुशल प्रवचनकार के रूप मे मेरी परिगणना होती है, तो उसकी नींव परमपूज्य ज्ञानमती माताजी तथा ''प्रवचन निर्देशिका'' ही है, इसे स्वीकार करने में मुझे कोई झिझक नहीं है। परम पूज्य ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद, दूरदृष्टि, मार्गदर्शन ने ही एक डाक्टर को विद्वान् के रूप में परिवर्तित करने का कमाल किया, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

पुस्तक की भूमिका—विद्वान् समाज के दर्पण हैं। विद्वानों की आदर्श वाणी व उनके आदर्श जीवन से समाज को दिशा प्राप्त होती है। सभी विद्वान संगठित होकर समाज को सही मार्गदर्शन दें एवं पूर्वाचार्यप्रणीत आगम ग्रंथों के आधार पर आर्षमार्ग व श्रमण परम्परा के अनुकूल प्रवचन कर समाज को सही मार्गदर्शन दें, इस हेतु 2 जुलाई 1968 को श्री भारतवर्षीय शांतिवीर संरक्षिणी सभा के महामंत्री श्री गणेशीलाल जी रानीवालां तथा श्री त्रिलोक चंद जी कोठारी-कोटा ने हस्तिनापुर जाकर परमपूज्य माताजी से निवेदन किया कि विद्वान् समाज को सही मार्गदर्शन देने में वर्तमान परिस्थिति में सक्षम हैं, इस हेतु आपके चरण सानिध्य में एक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर लगे तथा उसमें प्रशिक्षण हेतु एक पुस्तक भी आगमानुकूल तैयार हो, जिसमें विभिन्न संदर्भ हो। यद्यपि उस समय पूज्य माताजी का स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक नहीं था परन्तु फिर भी परम पूज्य माताजी की सदैव भावना रही है कि समाज के हित के लिए जो भी आवश्यक कार्य हों, अवश्य किये जावे। लगभग 2 माह के अल्पकाल में ही विपरीत स्वास्थ्य के बाद भी सैकड़ों आगम के उद्धरणों से युक्त लेखन संपन्न करके इसका नाम रखा 'प्रवचन निर्देशिका' तथा यही बाद में हस्तिनापुर में ही आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आधार बनी।

पुस्तक का विषय—पुस्तक के प्रारंभ में प्रवचन पद्धति का निर्देश दिया गया है, जिसमें प्रवचनकर्त्ता कैसा हो, उसके आवश्यक गुण, प्रवचन का विषय, प्रवचन का फल के बारे में मार्गदर्शन किया गया है।

पुस्तक के मंगलाचरण में 4 श्लोकों द्वारा संस्कृत में मंगलाचरण करते हुए माताजी ने सर्वज्ञ वीतराग भगवान को नमस्कार करते हुए लिखा है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वज्ञो वीतरागोऽर्हन्, श्रेयोमार्गस्य शासकः।
नमस्करोमि तं भक्त्या, सपुष्यात् मे समीहितम्।।

इसी पुस्तक की सातवीं अध्याय के मंगलाचरण में मुनि-आर्यिकाओं के संदर्भ में पूज्य माताजी ने बड़ा ही सुन्दर लिखा है, जो सैकड़ों वर्ष बाद एक ऐतिहासिक महत्व का होगा—

अहो दुषम कालांतं, श्रमणाश्चार्यिका इह।
विहरन्ति निराबाधं, कुर्यस्ते ताश्चमंगलम्।।

अहो! दुषम पंचम काल में श्रमण व आर्यिका इस लोक में निराबाध विहार कर रहे हैं, वे हमारा मंगल करें।

जैसे भूधरदास आदि की रचनाओं को देखकर लगता है कि उस समय मुनि कम थे, वैसे ही इन पंक्तियों को देखकर 500 वर्ष बाद लोग कहेंगे कि 2000 ई. के आसपास श्रमण आर्यिका खूब थे तथा उनका निराबाध विहार होता था।

पुस्तक में विषय सामग्री—पुस्तक 226 पृष्ठीय है। प्रारंभिक विवेचन के बाद पूज्य माताजी ने ग्रंथ को सात अधिकारों में विभाजित किया है—

1. सम्यग्दर्शन	60 पृ.
2. व्यवहार-निश्चयनय	38 पृ.
3. निमित्त-उपादान	39 पृ.
4. चारों अनुयोगों की सार्थकता	21 पृ.
5. पंचमकाल में मुनियों का अस्तित्व	34 पृ.
6. ग्रंथों के अध्ययन-अध्यापन की शैली	26 पृ.
7. ध्यान की आवश्यकता व स्वरूप	9 पृ.
	कुल-227 पृष्ठ

ग्रंथों के उद्धरण—इस पुस्तक के लेखन में पूज्य ज्ञानमती माताजी ने 68 ग्रंथों के उद्धरण देते हुए उन्हें संबंधित विषयों हेतु आगम का आधार बनाया है।

प्रथम अधिकार (सम्यग्दर्शन)—इस अधिकार में सर्वप्रथम सम्यग्दर्शन किसको और कब होता है? माताजी ने विशेषरूप से इसका विवेचन किया है। (प्र.नि.पृ. 11) जिस प्रकार हमें आचार्य कुंदकुंद के ग्रंथों पर पूर्ण श्रद्धा है, उसी प्रकार हमें अन्य आचार्यों के, यथा श्री गुणधर आचार्य, श्री पुष्पदंत और श्री भूतबली आ. के वचन भी प्रमाण होने चाहिए क्योंकि "कषाय पाहुड़" नामक सिद्धान्त ग्रंथ तो द्वादशांग का अंश है।

इसके बाद सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के बाह्य कारणों का वर्णन करते हुए उनकी विवेचना की गई है। इसमें 1. जातिस्मरण 2. धर्मोपदेश 3. वेदनानुभूति 4. जिनबिंब दर्शन। जिनमहिमा दर्शन तथा लब्धि सम्पन्न ऋषियों का दर्शन भी इसी में शामिल किया गया है। जब ग्रंथों में सम्यक्त्व के बाह्य कारण गिनाये हैं, तो फिर अन्तरंग निमित्त को सर्वथा अकिंचित् कर कैसे कहा जा सकता है? **"जाइस्सरणजिणबिंबदंसणेहि विणा उप्पज्जमाणणइसग्गिय पढमसम्मत्तस्स असंभवादो।"** (पृ. 17), यहाँ पर असंभव शब्द का प्रयोग आचार्यों ने किया है, इसी संदर्भ में जिनेन्द्र भगवान की भक्ति पर भी पूज्य माताजी ने जो विवेचन किया है, वह स्तुत्य है। सम्यग्दर्शन के अंतःकारणों में दर्शन मोहनीय व अनंतानुबंधी चतुष्क का उपशम, क्षयोपशम व क्षय गिनाये गये हैं।

तत्पश्चात् सम्यक्त्व को प्राप्त करने के लिए पाँच लब्धियों—क्षयोपशम लब्धि, विशुद्ध लब्धि, देशनालब्धि, प्रायोग्य लब्धि व करण लब्धि का विस्तार से विवेचन है। पहली चारों लब्धियाँ भव्य, अभव्य दोनों को होती है परन्तु पाँचवीं करण लब्धि केवल भव्य को ही होती है। करणलब्धि के तीन भाग हैं—अधःकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण। पूज्य माताजी ने इनका विस्तार से विवेचन किया है। क्षायिक सम्यक्त्व के कारण के बाद निसर्गज व अधिगमज सम्यक्त्व की चर्चा है। पंचमकाल में उपशम तथा क्षयोपशम सम्यक्त्व ही होता है, क्षायिक नहीं। सम्यक्त्व के लक्षण, सम्यक्त्व के दश भेद, सराग व वीतराग सम्यक्त्व की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन करने के बाद, सम्यग्दृष्टि जीव कहाँ-कहाँ जन्म लेते हैं, व कहाँ नहीं का विवेचन किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Sansthan, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशुभोपयोग, शुभोपयोग तथा शुद्धोपयोग का वर्णन करते हुए कौन सा उपयोग कहाँ होता है, इसका विवेचन माताजी ने बहुत श्रेष्ठरूप में किया है तथा चौथे गुणस्थान में आत्मानुभूति या शुद्धोपयोग का निषेध आगमानुकूल किया है। मुनियों के सप्तम गुणस्थान में वीतराग सम्यक्त्व हो सकता है। स्त्रियों के वीतराग सम्यक्त्व या क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता। पूज्य माताजी ने 80 आगमोक्त उदाहरण देकर सम्यग्दर्शन के बारे में आर्ष परम्परानुसार श्रेष्ठ विवेचन किया है।

द्वितीय अधिकार (व्यवहारनय, निश्चयनय)—प्रत्येक वस्तु अनन्त धर्मात्मक है। उनमें से एक-एक धर्म को कहने वाले नय होते हैं। **''प्रमाणनयैरधिगमः''** प्रमाण व नय के द्वारा वस्तु का ज्ञान होता है। सकलदेश ज्ञान कराने वाला प्रमाण होता है तथा एक देश ज्ञान कराने वाला नय कहलाता है। **''नयति इति नयः''** में नय वस्तु के स्वरूप का ज्ञान कराने में साधन होते हैं। कुछ लोगों की ऐसी धारणा हो गई है कि व्यवहारनय झूठा है, अप्रयोजनीय है या गलत बताता है और निश्चयनय ही उपादेय, प्रयोजनवान या सत्य है। इसकी वास्तविकता आगम परिप्रेक्ष्य में क्या है? इस अधिकार में पूज्य माताजी ने 73 आगम प्रमाण के द्वारा बताया है कि दूसरे की अपेक्षा रखने वाले नय सुनय हैं तथा दूसरे के विषय की अपेक्षा न रखने वाले नय दुर्नय हैं। व्यवहारनय तथा निश्चयनय या पर्यायार्थिक नय और द्रव्यार्थिकनय के प्रमुख दो भेद हैं—**''णिच्छववहारणया मूलमभेया णयाण सव्वाणं।''** (आलाप पद्धति) व्यवहारनय झूठा नहीं है, वह पर्याय को इंगित करता है, भेदरूप कथन करता है। अपरमभाव जहाँ तक है, वहाँ एक व्यवहारनय प्रयोजनमान है तथा अपरमभाव में निश्चयनय प्रयोजनमान है।'

''सुद्धो सुद्धादेसो, णायव्वो परमभावदरिसीहिं।
ववहारदेसिदा पुण, जे दु अपरमे ट्ठिदा भावे।।12।।'' (समयसार)

समयसार में आचार्य कुन्दकुन्द ने ऐसा स्पष्ट लिखा है कि जीव में कर्म बंधे हुए या नहीं बंधे हुए हैं, इसे तो नय पक्ष जानो किन्तु जो दोनों नय पक्षों से अतिक्रान्त हो चुका है, वह ही समयसार है।

''कम्मं बद्धमबद्धं, जीवे एवं तु जाण णयपक्खे।
पक्खातिक्कंतो पुण, भण्णदि जो सो समयसारो''।।142।। (समयसार) प्र. नि. पृ. 88)

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि दोनों नय ही यथावश्यक उपयोगी हैं।

बाद में इन्हीं दो नयों का आचार्यों ने विस्तार करते हुए नय के निम्न भेद बताये हैं। 1. नैगम 2. संग्रह 3. व्यवहार 4. ऋजुसूत्र 5. शब्द 6. समभिरूढ 7. एवं भूत (आचार्य उमास्वामी, तत्त्वार्थसूत्र)। नय चक्र में उसके और भी विस्तार किये हैं या अनन्त धर्मात्मक वस्तु को कहने वाले अनन्त्यनय हैं, ऐसा भी कहा है। उपनय तीन हैं—1. सद्‌भूत व्यवहारउपनय, इसके दो भेद हैं-शुद्ध सद्‌भूत व्यवहार, अशुद्धसद्‌भूतव्यवहार 2. असद्‌भूत व्यवहारउपनय-इसके तीन भेद हैं-स्वजात्यसद्‌भूत व्यवहारउपनय, विजात्यसद्‌भूत व्यवहार उपनय, स्वजातिविजात्यसद्‌भूत व्यवहारउपनय, 3. उपचरितअसद्‌भूत व्यवहारउपनय। इसके भी तीन ही उपरोक्त भेद हैं।

पूज्य माताजी ने सभी नयों का विस्तार से वर्णन किया है तथा इसी अधिकार में व्यवहार व निश्चय मोक्षमार्ग की भी चर्चा की है तथा व्यवहार को निश्चय का साधन बताया है। श्रावक के लिए भक्तिमार्ग, व्यवहारमार्ग ही समीचीन एवम् अनुकरणीय है।

तृतीय अधिकार (निमित्त-उपादान)—कुछ लोगों में ऐसी मिथ्याधारणा बलवती हो गई है कि जो कुछ है, वह उपादान ही है। निमित्त सर्वथा अकिंचित्कर है या निमित्त कुछ नहीं करता। ऐसा जिन लोगों ने मत चलाया, वह अपने पूर्व संस्कारों को नहीं छोड़ सके, यदि इस मान्यता को सही मान लिया जावे कि निमित्त सर्वथा कुछ नहीं करता, तो फिर कपड़े पहने ही मोक्ष मानने में या घर में ही मोक्ष मानने में क्या दिक्कत है? कपड़े और घर तो परनिमित्त हैं, आत्मा के परिणाम मोक्ष के हैं ही, तो कपड़े पहने घर में ही मोक्ष हो जाना चाहिए परन्तु ऐसा दिगम्बर मान्यता में तो होता नहीं। अतः निमित्त को सर्वथा अकिंचित्कर कैसे स्वीकार किया जा सकता है? संसारी जीव की बात तो अलग, सिद्ध भगवान भी ''धर्मास्तिकायाभावात्'' धर्मद्रव्य के अभाव के कारण सिद्धशिला से आगे गमन नहीं करते तथा अधर्म द्रव्य के निमित्त से वहीं विराजते हैं। जब सिद्ध भगवान तक को निमित्त बाधक बनता है तो संसारी जीवों को निमित्त का प्रभाव पड़ता है, ऐसा मानने में क्या दिक्कत है?

अंतरंग कारण उपादान कहलाता है या जो कार्यरूप परिणत होता है, वह उपादान कहलाता है। निमित्त, हेतु, साधन, कारण यह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब पर्यायवाची हैं। सहकारी कारण को निमित्त कहते हैं। प्रत्येक कारण बाह्य व अंतरंग दोनों हेतुओं की अपेक्षा रखते हैं। उपादान सबल तो निमित्त निर्बल और जब निमित्त सबल तो उपादान निर्बल, अतः जब बाह्य निमित्त की प्रधानता से कार्य होता है, तो उस निमित्त से कार्य हुआ, ऐसा कहा जाता है। निमित्त मिलने पर कार्य हो भी न भी हो, परन्तु जब कार्य होगा, तो निमित्त के बिना नहीं होगा। आटा में रोटी, पूड़ी, पराठा, बाटी, हलुआ सभी बनने की उपादान योग्यता है लेकिन ग्रहिणी की इच्छा तथा बाह्य निमित्तों से उसे जो बनाना होता है, वैसे निमित्त मिलाकर उपादान आटा को तद्‌रूप परिणमन निमित्त की सहायता से करा लिया जाता है।

तीर्थंकर प्रकृति का बंध केवलीश्रुतकेवली के पादमूल में ही होता है। ऐसा नियम है (पृ.101)। यह चरण सानिध्य बाह्य निमित्त ही तो है, उपादान तो आत्मा है। शास्त्र ज्ञान में निमित्त हैं, जिनबिंब सम्यग्दर्शन में निमित्त हैं, अरिहंत भक्ति कर्मक्षय में निमित्त है, मूलगुण उत्तरगुण में निमित्त हैं, औषधि व्याधिनिवारण में निमित्त है, विष आदि अकाल मरण में निमित्त हैं। संसार व मोक्ष के कारण भी आगम में वर्णित हैं। मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग, बंध के कारण तथा रत्नत्रय मोक्ष का कारण है। इस प्रकार अनेकों उदाहरण देकर पूज्य माताजी ने स्पष्ट किया है कि निमित्त को सर्वथा अकिंचित्कर कहना आगमविरुद्ध है।

इसी प्रकरण में पृ. 112 पर आत्मा मूर्तिक भी है, अमूर्तिक भी है, कर्त्ता भी है, भोक्ता भी है आदि को अकलंक देव आदि के उद्धरणों से स्पष्ट किया है। अनेकांत, सप्तभंग, अकालमरण, मिथ्यात्व, 363 पाखंड मत का वर्णन करने के बाद माताजी ने कर्म कुछ नहीं करते या एकांत से कर्म ही सब कुछ करते हैं, इसका पृ. 131 से बहुत ही सुंदर विवेचन किया है।

सार यह निकलता है कि कथंचित् निमित्त प्रधान है तथा कथंचित् उपादान बलवान है। अनेकांत जैनधर्म का प्राण है। प्रत्येक द्रव्य स्वभाव से अपना स्वतंत्र अस्तित्व लिये हुए है, फिर भी अन्य के लिए निमित्त, सहकारी कारण बनता है। जीव व पुद्‌गल एक-दूसरे के निमित्त से विकारी होते हैं, फिर भी उपादान रूप से जीव पुद्‌गल नहीं होता, पुद्‌गल जीव नहीं होता। धर्मादिक चार द्रव्य निमित्त बनकर भी स्वयं विकारी नहीं होते तथा न दूसरे को विकारी करते हैं। निमित्त नैमित्तिक संबंधों को तो स्वीकार करना ही पड़ेगा।

चतुर्थ अधिकार (चारों अनुयोगों की सार्थकता)—जिन भगवान के मुख कमल से निर्गत, पूर्वापर विरोध से रहित, वचन आगम—जिनागम हैं। तीर्थंकर की ध्वनि को गणधर ने सुना तथा उसे द्वादशांग के रूप में गूंथा अतः द्वादशांग ही जिनागम हैं। ये जिनागम औषधि के समान हैं, विषय सुख का विसर्जन कराने वाले, अमृतस्वरूप हैं, जन्म-मरण-व्याधि का नाश करने वाले हैं तथा सर्वदुःखों का क्षय करने वाले हैं।

''जिणवयणमोसहमिणं, विसयसुहविरेयणं अमिदभूदं।
जरमरणबाहिहरणं, खयकरणं सव्वदुक्खाणं।।17।।'' (दर्शन पाहुड़)

इसी द्वादशांग को **''प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः''** कहकर जिनागम को प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग इन चार अनुयोगों में विभाजित किया गया है, इन्हें ही चार वेद कहते हैं, ये चारों अनुयोग ही सम्यक्त्व की उत्पत्ति में कारण हैं, बोधि-समाधि के निधान हैं। कुछ लोग केवल द्रव्यानुयोग का पठन-पाठन करते हुए मात्र इसे ही मोक्षमार्ग में उपयोगी मानते हैं, अन्य अनुयोग का परिहार करते हुए प्रथमानुयोग को तो कहानी-किस्से तक कह देते हैं परन्तु ऐसी विचारधारा आगमानुकूल नहीं है। चारों अनुयोग ही जिनागम में उपयोगी हैं। इस बात को पूज्य माताजी ने चालीस आगमप्रमाणों द्वारा स्पष्ट किया है। रत्नकरण्ड श्रावकाचार से चारों अनुयोगों की परिभाषा (पृ. 140) को उद्‌धृत करते हुए पहले चारों अनुयोग क्या हैं, उनके विवेच्य विषय क्या हैं? इसे स्पष्ट किया है। अनेकों शंकाएँ प्रथमानुयोग के दृष्टान्तों को पढ़कर ही शान्त होती हैं। इसके अनेक उदाहरण पूज्य माताजी ने उद्‌धृत किए हैं। उदाहरणार्थ—क्या मुनि किसी विधान में शामिल हो सकते हैं? इस शंका के निवारण के लिए उत्तरपुराण के 63वें पर्व से एक दृष्टान्त पृ. 143 पर अच्छी तरह स्पष्ट किया है कि ये आगमानुकूल है। मिथ्यात्व से भय उत्पन्न करने में भी प्रथमानुयोग को उपयोगी माना है। तीर्थंकर आदि 63 शलाका पुरुषों का इतिहास, पुण्य-पाप का फल, मोक्ष की प्राप्ति के उदाहरण, महापुरुषों के आदर्श जीवन का अनुकरण आदि सभी प्रथमानुयोग से ही प्राप्त होता है।

करणानुयोग से चतुर्गति संबंधी विषय, लोक, कर्म सिद्धान्त आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।

चरणानुयोग से सागार, अनगाररूप से चारित्र की उत्पत्ति, वृद्धि व उनके फल का परिज्ञान होता है। चारित्र धारण करने के लिए चरणानुयोग की शरण में जाना ही होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यानुयोग छह द्रव्यों, सात तत्व, नव पदार्थ, स्वपर भेद विज्ञान आदि का विस्तार से वर्णन करके जीव को निर्विकल्प समाधि की ओर बढ़ाकर एक आत्मा की ओर ले जाने का प्रयास करता है।

इस प्रकार से प्रथमानुयोग से महापुरुषों का आदर्श ग्रहण कर, करणानुयोग से संसार से भयभीत होकर, चरणानुयोग से चारित्र को धारण कर, द्रव्यानुयोग से शुद्धात्मा का ध्यान करके श्रुतज्ञान का फल, जो अच्युत मोक्ष पद की प्राप्ति है, उसे प्राप्त करना चाहिए। चारों अनुयोगों के बिना पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।

पंचम अधिकार (पंचम काल में मुनियों का अस्तित्व)—कुछ एकान्तवादी जो अपने को, वस्त्रधारी होते हुए भी, सद्गुरु के रूप में पुजवाने में लिप्त हैं, अपने ज्ञान व पूजा के अहंकार में ऐसी मान्यता प्रचारित करने में लगे हैं कि आजकल अर्थात् पंचमकाल में मुनि नहीं होते, उनमें 28 मूलगुण नहीं होते, वे भावलिंगी नहीं होते, उनको आहार नहीं देना चाहिए, उन्हें वन में रहना चाहिए, आदि मुनिधर्म के संबंध में अनेकों अनर्गल चर्चायें समाज में फैलाई, लोगों को मुनि परम्परा से दूर करने का प्रयास किया, संभवत: वास्तविक कारण तो यह रहा कि स्वयं जब मुनि नहीं बन सके तो दूसरों को मुनि मानने से अपना पद नीचे हो जायेगा अत: भ्रम फैलाकर लोगों की आस्था मुनिपद से भ्रमित कर दी।

इन्हीं सब बातों का पूज्य माताजी ने इस पंचम अधिकार में विस्तार से विवेचन किया है। आगम में जिनकल्पी व स्थविरकल्पी दो प्रकार के मुनियों का वर्णन मिलता है। उत्तमसंहनन के धारी, मोक्षगामी मुनिराज जिनकल्पी कहलाते हैं। वर्तमान में जिनकल्पी मुनि नहीं होते, स्थविरकल्पी मुनिराज ही होते हैं (प्र.नि.पृ. 162)। अत: वर्तमान के मुनिराजों में जिनकल्पी मुनिराजों की चर्या, उत्तम संहनन के अभाव में संभव नहीं है परन्तु फिर भी वह स्थविरकल्पी मुनि तो हैं ही। आचार्य कुन्दकुन्द भी तो पंचमकाल में ही मुनि हुए हैं, तो फिर पंचमकाल में मुनि नहीं होते, ऐसा कहना उचित नहीं। आगम में तो पंचमकाल के अंत तक चतुर्विधसंघ रहेगा, ऐसा लिखा है तथा हर एक हजार साल बाद एक अवधिज्ञानी मुनिवर होंगे, ऐसा आचार्यों का कथन है।

पुनश्च तत्त्वार्थसूत्र, सर्वार्थसिद्धि, तत्त्वार्थवार्तिक आदि में आचार्यों के, मुनियों के 5 भेद बताये हैं "पुलाक, वकुश, कुशील, निर्ग्रंथ, स्नातक इन सभी को निर्ग्रन्थ ही कहा है। यहाँ आचार्यों ने पुलाक व वकुश की जो परिभाषा दी है, वह दृष्टव्य है (प्र. नि. पृ. 168- 169)। उत्तरगुणों में हीनता तथा क्वचित् व कदाचित् व्रतों में दोष होने पर भी उन्हें निर्ग्रन्थ मुनि ही माना गया है। यहाँ पुलाक को श्रुतज्ञान उत्कृष्ट से अभिन्न दशपूर्व तक होना माना है (प्र. नि. 171)। परन्तु इस लिंगी मुनि को पूर्व का ज्ञान नहीं हो सकता अत: पुलाक मुनि भी द्रव्यलिंगी न होकर भावलिंगी मुनि ही हैं। आज भी भावलिंगी मुनि होते हैं। दूसरा विवेचन प्र. नि.पृ. 173 पर माताजी ने बहुत ही विस्तार से किया है, जो दृष्टव्य है। (सरागमुनि/वीतरागी मुनि) भगवान महावीर के तीर्थ में धर्म व्युच्छित्ति नहीं होना आगम में बताया है (पृ. 175), तो फिर वर्तमान में हम मुनियों का अभाव कैसे कह सकते हैं?

पृ. 177 पर श्रावकों हेतु ग्रंथकर्ताओं के क्या आदेश हैं? विषय पर उपासकाध्ययन से आचार्य सोमदेव तथा सागारधर्मामृत से विषयों को उठाकर वर्तमान में श्रावक कैसे निर्णय ले? इस पर समीचीन मार्गदर्शन दिया है।

मुनिवरों की विभिन्न चर्याओं में शंका उठाकर उनका आगमोक्त समाधान परमपूज्य माताजी ने पृ. 181 व आगे के पृष्ठों में किया है, जिसमें वर्तमान में उठने वाली अनेक शंकाओं का निवारण आसानी से हो जाता है।

पृ. 189 से आर्यिकाओं की चर्या का वर्णन किया गया है। जिसमें आर्यिका संबंधी अनेक प्रश्नों का समाधान किया गया है। आर्यिकाओं की पूजा के संदर्भ में पृ. 189 पर पद्मपुराण पर्व 36, श्लोक 138 का उद्धरण पूज्य माताजी ने दिया है, उसमें लिखा है-

"वरधर्मापि सर्वेण, संघेन सहितापरम्।
राघवेण ससीतेन, नीता तुष्टेन पूजनम् ।।138।।"

अर्थात् रामचन्द्र ने सीता के साथ मंदिर में संघ के साथ जो वरधर्मा नाम की आर्यिका ठहरी थी, उनकी पूजा की।

इस प्रकार इस अध्याय में मुनि और आर्यिका के संबंध में आगमोक्त उदाहरणों द्वारा विभिन्न शंकाओं का स्पष्टीकरण करते हुए पंचमकाल के अंत तक चतुर्विधसंघ रहने का प्रमाण दिया है।

छठा अधिकार (ग्रंथों के अध्ययन, अध्यापन की शैली)—आज यद्यपि स्वाध्याय का प्रचलन बहुत बढ़ गया है परन्तु स्वाध्याय का जो फल प्राप्त होना चाहिए, वह दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है अपितु श्रावकों और गृहस्थों का शिथिलाचार स्वाध्याय के बावजूद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतना अधिक बढ़ गया है कि जैनत्व के तीन चिन्ह ही दृष्टिगोचर होना मुश्किल देखा जा रहा है। तो फिर क्या इसे स्वाध्याय मानना चाहिए? आचार्य कुन्दकुन्द ने लिखा कि ज्ञान का फल चारित्र है। अगर ज्ञान सही प्राप्त हुआ है, तो फिर चारित्र प्रगट होना ही चाहिए। स्वाध्याय को परमतप कहा है। तप कर्मों की निर्जरा का कारण है, फिर भी आज स्वाध्याय करते हुए भी बंध के कारण क्यों बढ़ रहे हैं। इन सबका मूलकारण है, ग्रंथों के अध्ययन और अध्यापन की शैली का आगमानुकूल न होना। सर्वार्थसिद्धि में आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने त्रयो: वक्तारः लिखकर तीन वक्ता ही माने हैं—1. तीर्थंकर 2. गणधर 3. आरातीय । आचार्य अर्थात् रत्नत्रयधारी मुनिवरों को ही आचार्य वक्ता स्वीकार करते हैं। अतः रत्नत्रयधारी गुरु के मुख से ही शास्त्रों को पढ़ना सर्वश्रेष्ठ है। अध्ययन, अध्यापन में सम्यग्ज्ञान के आठ भेदों का भी अवश्य ही ध्यान रखना चाहिए। एक ग्रंथ को दो-तीन, चार बार पढ़ना चाहिए तथा पूर्वापर प्रसंगों को ध्यान रखना चाहिए। आचार्य प्रणीत ग्रंथों को ही प्रमुखता देनी चाहिए। पढ़ते समय पापभीरू होना चाहिए। चार अनुयोगों के अनुसार ग्रंथों को क्रमपूर्वक ही पढ़ना चाहिए। शिष्य कैसे हों? गुरु परम्परा का महत्व, पूर्वाचार्यों की पापभीरूता, अध्ययन-अध्यापन का फल, पढ़ते समय श्रावक का कर्तव्य, प्रवचन की शैली आदि का विवेचन करते हुए पहले मुनि धर्म का ही उपदेश देना चाहिए। (पृ. 213), ऐसा न होने पर श्रावकों के अनुकूल उपदेश देना चाहिए। अधिकार के अन्त में धवला के आधार पर चार प्रकार की कथाओं का वर्णन करते हुए आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेदनी, निर्वेदनी का विवेचन किया। ये सभी केवलज्ञान प्रगट होने में साधन हैं और रत्नत्रय की प्राप्ति कराने वाले हैं। एक बात अध्ययन-अध्यापन में विशेष चिंतनीय है कि हमें अपनी बुद्धि से शास्त्रों को नहीं पढ़ना चाहिए अपितु शास्त्रों के अनुसार अपनी बुद्धि बनानी चाहिए।

सातवाँ अधिकार (ध्यान की आवश्यकता)—प्रवचन निर्देशिका के अंतिम अधिकार के रूप में पूज्य माताजी ने ध्यान की आवश्यकता पर जोर दिया है। यद्यपि ज्ञानार्णव पृ. 67 पर आचार्य शुभचन्द्राचार्य ने गृहस्थ आश्रम में ध्यान की सिद्धि का निषेध किया है अत: मोक्ष वाला एकाग्रचिन्तानिरोध अर्थात् किसी एक विषय पर मन का स्थिर हो जाना, इस काल में संभव नहीं है। ध्यान चार प्रकार का है-आर्त, रौद्र, धर्म व शुक्लध्यान। इसमें प्रथम के दो तो संसार के कारण हैं और सभी संसारी जीवों को होते हैं परन्तु अंत के दो मोक्ष के कारण हैं 'परे मोक्ष हेतुः' शुक्लध्यान उत्तम संहननधारी महामुनियों तथा अरहन्त परमेष्ठी के ही होता है, यह आज संभव नहीं है अतः आर्त, रौद्र ध्यान को छोड़कर धर्मध्यान का अवलम्बन लेना ही उपयोगी है। आचार्यों ने 12 प्रकार के तप, 6 बाह्य तथा 6 अभ्यन्तर का वर्णन करते हुए ध्यान को अंतिम तप कहा है। तप से ही निर्जरा होती है। "तपसानिर्जरा च।" अत: मोक्षमार्ग बिना ध्यान के नहीं बनता। धर्मध्यान के प्रकरण में (पृ. 220) चार भेद—आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय और संस्थान विचय का वर्णन करते हुए पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपस्थ और रूपातीत ध्यान का वर्णन किया है (पृ. 221-225)। इसमें पिण्डस्थ ध्यान में पाँच प्रकार की धारणाओं पार्थिवी, आग्नेयी, श्वसना, वारुणी और तत्वरूपवती का वर्णन किया है। इन ध्यानों के अभ्यास से योगीजन निर्विकल्प ध्यान में पहुँचने की योग्यता प्राप्त कर लेते हैं। गृहस्थों के लिए पूजा, दान, शील, उपवास, षट्आवश्यक में भी धर्मध्यान होता है।

प्रशस्ति—ग्रंथ का समापन करते हुए अंत में पूज्य माताजी ने प्रशस्ति में लिखा है कि हस्तिनापुर के शान्तिनाथ जिनालय में भाद्रपद मास की अनन्त चतुर्दशी को महावीर निर्वाणोत्सव संवत् 2504 में इस ग्रंथ की पूर्णता हुई, जो विद्वानों को आगम के अनुकूल प्रवचन करने, शास्त्रों को सही समझने तथा समाज का सही मार्गदर्शन करने में उपयोगी होगी। जब तक पृथ्वी तल पर जैन प्रवचन हो, तब तक आरातीय विद्वानों को प्रवचन में यह पुस्तक सहायक बने,आगम को धारण करने वाली हो तथा लोगों को पापभीरू तथा मिथ्यात्व व पाप की क्रियाओं से बचाकर सर्वअर्थ की सिद्धि प्रदान करने वाली हो।

उपसंहार—इस प्रकार प्रवचन निर्देशिका में पूज्य आर्यिकारत्न गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने गागर में सागर की कहावत को चरितार्थ कर दिया है। एकान्त मिथ्यावादियों ने अपने संगठन व अर्थ की प्रधानता से समाज में जो विग्रह तथा आगम विरुद्ध मान्यताओं का प्रचलन किया, उससे बचने हेतु माताजी ने प्रवचन निर्देशिका के माध्यम से प्रचलित विषयों के ऊपर आगमोक्त उदाहरण देकर आर्षमार्ग व श्रमण परम्परा पर बड़ा ही उपकार किया है।

सैकड़ों ग्रंथों का लेखन, अनेक तीर्थों के नवनिर्माण एवं जीर्णोद्धार, जम्बूद्वीप का निर्माण, विश्वविद्यालयों में धर्म का अध्यापन आदि अनेकों ऐसे कार्य पूज्य माताजी के आशीर्वाद और सानिध्य से सम्पन्न हुए और हो रहे हैं, जो हमारी ऐतिहासिक धरोहर रहे हैं। पूज्य माताजी यथा नाम तथा गुण हैं। हम सब कामना करते हैं कि वे आगामी पर्यायों में पूर्णज्ञान अर्थात् केवलज्ञान की धारी बनें, पूज्य माताजी के चरणों में कोटि-कोटि वंदामि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नियमसार

—पं. शिखरचंद जैन 'साहित्याचार्य' (पूर्व प्राचार्य), सागर

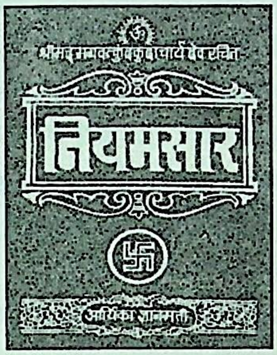

अध्यात्म दर्शन एवं मोक्षमार्ग विषयों से सम्पन्न ग्रंथराज नियमसार या नियम प्राभृत महर्षि कुन्दकुन्द की विशिष्ट कृति है। नियम अर्थात् रत्नत्रय—सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्‌चारित्र अथवा मोक्षमार्ग तथा मार्गफलरूप मोक्ष के स्वरूप का वर्णन कर श्रमणों को स्पष्ट रूप से दिशाबोध कराना इस ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य है। इस ग्रंथ के बारह अधिकारों में मात्र 187 गाथायें हैं। इन गाथाओं द्वारा मुनियों के आचार का वर्णन किया गया है। इस ग्रंथ में 12 अधिकार हैं। उनमें से चार अधिकारों में व्यवहार रत्नत्रय का वर्णन है, पाँचवे से लेकर ग्यारहवें अधिकार तक निश्चय रत्नत्रय का वर्णन है, इसके बाद बारहवें अधिकार में मार्ग के फलस्वरूप निर्वाण का वर्णन करते हुए अर्हंत् और सिद्ध परमात्मा के स्वरूप का वर्णन किया गया है। इस प्रकार नियमसार ग्रंथ में मार्ग और मार्ग के फल का वर्णन किया गया है। बारह अधिकारों के नाम इस प्रकार हैं—

1. जीव 2. अजीव 3. शुद्धभाव 4. व्यवहार चारित्र 5. परमार्थ प्रतिक्रमण 6. निश्चय 7. परम आलोचना 8. शुद्ध निश्चय प्रायश्चित्त 9. परमसमाधि 10. परमभक्ति 11. निश्चय परम आवश्यक 12. शुद्ध उपयोग।

1. जीवाधिकार—इस प्रथम अधिकार में 19 गाथाओं द्वारा जीव के स्वरूप का सम्यक् वर्णन किया गया है। मंगलाचरण में भगवान महावीर को प्रणाम कर गाथा उत्तरार्द्ध या प्रतिज्ञासूत्र में नियमसार को केवली-श्रुतकेवली प्रणीत कहा है। नियमसार के नियम को उठाते हुए आचार्यप्रवर कुन्दकुन्द ने मार्ग और मार्ग के फलरूप में रत्नत्रय और मोक्ष को निरूपित किया है। मोक्ष के उपाय नियम से कर्त्तव्यरूप रत्नत्रय को नियम शब्द से व्याख्यापित किया है। इसके साथ ही व्यवहार सम्यग्दर्शन का स्वरूप उसके विषयभूत आप्त/परमात्मा, आगम एवं गुरु का वर्णन है। तत्त्वार्थों का नाम निर्देश करने के बाद जीव का लक्षण, उपयोग, स्वभावज्ञान, स्वभावदर्शन, विभावज्ञान, विभावदर्शन, स्वभावपर्यायों का विवरण तथा जीव की मनुष्यादि विभाव पर्यायों, आत्मा के कर्त्तव्य और भोक्तत्व का वर्णन किया है। अन्त में द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नयों से जीव का विशेष उल्लेख है।

2. अजीवाधिकार—इस अधिकार में सम्यक्त्व के विषयभूत अजीव तत्व का विवेचन करते हुए ग्रंथकर्ता ने पुद्‌गल के अणु और स्कंध दो भेद करके स्कन्ध के छह भेद और अणु के दो भेद किये हैं। इस ग्रंथ में विशेषता यही है कि ये अजीव के भेद भी जीव के समान स्वभाव-विभाव रूप से किए गए हैं। इनकी गुण पर्यायों को बतलाकर धर्म, अधर्म, आकाश और कालद्रव्य का वर्णन किया है। गाथा चौंतीसवीं में अस्तिकाय का लक्षण करके 35-36वीं गाथा में सर्वद्रव्य के प्रदेशों की संख्या बतलाई है। गाथा 37वीं में चेतन, अचेतन और मूर्त-अमूर्त द्रव्यों का विवेचन है। इस अधिकार में सर्वप्रथम मध्यलोक के 458 अकृत्रिम जिन चैत्यालयों की वंदना की है। पुद्‌गल द्रव्य का विवेचन करते समय टीका में तात्पर्य अर्थ में यह दिखाया गया है कि इस पुद्‌गल के संयोग से ही संसार परम्परा चलती है। इसका संपर्क छोड़ने योग्य है। गाथा 30वीं में धर्म और अधर्म के निमित्त से ही सिद्ध भगवान लोकाकाश के अग्रभाग पर स्थित हैं। लोकाकाश में नहीं जा सकते अतः सिद्ध भगवान भी कथंचित् निमित्ताधीन हैं। सिद्ध परमेष्ठी हम लोगों की रिद्धि में भी निमित्त हैं। गाथा 31-32 वीं में कालद्रव्य का कुछ पाठभेद चर्चा का विषय है। इसका वर्णन गोम्मटसार ग्रंथ के आधार पर स्पष्ट किया गया है। गाथा 35-36 में अमूर्तिक द्रव्यों के भी प्रदेश मुख्य हैं न कि कल्पित। टीका में तत्त्वार्थ राजवार्तिक के आधार से स्पष्ट किया है। गाथा 37 में संसारी जीवों के शरीर तथा आत्मा का संसर्ग दिखाया गया है। कुल 18 गाथाओं द्वारा छह तत्वों के अन्तर्गत स्थित चिंतामणि आत्मा को नमस्कार किया है।

3. शुद्धभाव अधिकार—इस अधिकार में सम्यग्ज्ञान का वर्णन किया गया है। शुद्धभाव अधिकार में शुद्ध नय की अपेक्षा से जीव को शुद्ध, सिद्ध सदृश बतलाया गया है। "अरसमरूवमगंधं" गाथा आचार्य कुन्दकुन्द को अधिक प्रिय थी। गाथा 49 में नय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विवक्षा द्वारा एकान्तवादियों को सावधान किया गया है। सम्यग्दर्शन, ज्ञान का लक्षण बताकर सम्यक्त्व के अन्तरंग-बहिरंग कारण बताए गए हैं। इस अधिकार में 18 गाथाएँ हैं। टीका द्वारा पूज्य आर्यिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा सर्वप्रथम भेदज्ञान से युक्त दर्शन-विशुद्धि आदि सोलह कारण भावनाओं के बल से तीर्थंकर प्रकृति का बंध करने वाले जिन महापुरुषों का अभिषेक पाँच मेरुओं पर होता है उनको तथा उन मेरुओं के अस्सी जिनमंदिरों को नमस्कार किया है। गाथा 47 में संसारी जीवों को सिद्ध समान बताया है। गाथा 49 में नयों का विवेचन आलाप पद्धति के आधार पर किया गया है। गाथा 52 में टीका में सम्यक्त्व का लक्षण कसायपाहुड़ आदि ग्रंथों के आधार पर स्पष्ट किया है। गाथा 53 में धवला के आधार पर सम्यक्त्व के बहिरंग कारणों पर प्रकाश डाला है। गाथा 54 में व्यवहार-निश्चयचारित्र के कथन की प्रतिज्ञा की है। पूज्य माताजी ने उपसंहार में मनुष्यलोक के तीन सौ अट्ठानवे चैत्यालयों की वंदना की है।

4. व्यवहार चारित्राधिकार—इस अधिकार में पाँच समिति, तीन गुप्ति का वर्णन किया है। महाव्रत और समिति में निश्चय नय को न घटाकर गुप्तियों में व्यवहार-गुप्ति, निश्चय-गुप्ति दो भेद किए हैं। पाँच गाथाओं द्वारा परमेष्ठियों का लक्षण बताया गया है। गाथा 76 में व्यवहार को नयाश्रित चारित्र कहा गया है। आगे निश्चय नयचारित्र कहा है—

''एरिसय भावणाए, ववहारणयस्स होदि चारित्तं।
णिच्छयस्सचरणं, एत्तो उड्ढं पवक्खामि।।''

इस अधिकार में पूज्य माताजी ने जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में इस पंचमकाल में भी तेरहविध चारित्र के धारक दिगम्बर मुनियों को नमस्कार किया है। अन्त में शांतिनाथ भगवान की वंदना की गई है।

5. परमार्थ प्रतिक्रमण अधिकार—इस अधिकार में पहले भेद विज्ञान की भावना तथा निश्चय प्रतिक्रमण का लक्षण बताया गया है। इसमें 18 गाथाएं हैं। पूज्य ज्ञानमती माताजी द्वारा टीका में इन्द्रभूति गौतम स्वामी को नमस्कार किया गया है। उनके द्वारा रचित 'प्रतिक्रमण' पाठ' की पंक्तियों को लिया गया है। व्यवहार प्रतिक्रमणपूर्वक ही निश्चय प्रतिक्रमण सिद्ध किया गया है। गाथा 93 की टीका में बताया गया है कि आज के साधुओं को सात प्रकार के प्रतिक्रमण करना चाहिए। अंत में आचार्य कुन्दकुन्द से लेकर अपने आर्यिका दीक्षा के गुरु आचार्य वीरसागर जी तक गुरुओं को नमस्कार किया है।

6. निश्चय प्रत्याख्यान अधिकार—इस अधिकार में आचार्य प्रवर श्री कुन्दकुन्द देव ने आत्मा के ध्यान को ही निश्चय प्रत्याख्यान त्याग कहा है तथा परवस्तुओं के ममत्व को छोड़कर आत्मा का आलम्बन लेने की प्रेरणा दी है। यह महामुनियों के ही संभव है। इस अधिकार में 12 गाथाएँ हैं। पूज्य गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने तीन कम नव करोड़ मुनियों को तथा ढाई द्वीप के मुनियों को नमस्कार किया है। अन्त में भगवान आदिनाथ तथा दानतीर्थ प्रवर्तक राजा श्रेयांस का पावन स्मरण किया है।

7. परम आलोचना अधिकार—इस अधिकार में कुल 6 गाथायें हैं। आत्मा के ध्यान को ही निश्चय आलोचना कहा गया है। टीका में पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने सर्वप्रथम आदिनाथ भगवान के चौरासी गणधरों को नमस्कार किया है। मूलाचार तथा समयसार आदि के आधार से व्यवहार-निश्चय आलोचना को बतलाया गया है। अन्त में जम्बूद्वीप के अकृत्रिम 78 जिन मंदिरों में स्थित जिनप्रतिमाओं को नमस्कार किया गया है।

8. शुद्ध निश्चय प्रायश्चित्त अधिकार—इस अधिकार में 9 गाथाओं द्वारा निश्चय प्रायश्चित्त का वर्णन किया गया है। पूज्य माताजी ने भगवान शांतिनाथ को नमस्कार किया है। व्यवहार प्रायश्चित्त के दो भेद बतलाए गए हैं। व्यवहार तपश्चरण का भी महत्व बतलाया गया है। गौतम स्वामी द्वारा रचित सूचक गाथा द्वारा ध्यान का महत्व बतलाया गया है। गाथा 121 में शरीर से ममत्व छुड़ाने का अच्छा विवेचन है। इसी तारतम्य में भगवान बाहुबली को नमस्कार किया है। कायोत्सर्ग का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

9. परमसमाधि अधिकार—आचार्य कुन्दकुन्द देव ने ध्यान को ही परमसमाधि कहा है, यह भी मुनियों के ही संभव है। स्थायी सामायिक का सुन्दर विवेचन है।इस अधिकार में 12 गाथाएँ हैं। पूज्य चारित्र चन्द्रिका गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी ने टीका में सर्वप्रथम चौबीस तीर्थंकरों के चौदह सौ बावन गणधरों को नमस्कार किया है। गाथा 142 द्वारा भगवान आदिनाथ के निश्चल ध्यान पर प्रकाश डाला गया है। जिनकल्पी तथा स्थविर कल्पी मुनि की चर्या बतलाई है। पंचम काल में पूर्ण समता, ध्यान तथा स्थायी सामायिक को एकार्थवाची बतलाया है। गाथा 125 से 133 तक अनुष्टुप छंद है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

10. परमभक्ति अधिकार—इस अधिकार में कुल 6 गाथाएं हैं। आचार्य कुन्दकुन्द ने स्पष्ट किया है कि भक्ति के बिना श्रावक या श्रमण किसी को भी सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। मुनि को ही निश्चय भक्ति प्राप्त होती है। योग भक्ति तथा योग का लक्षण बतलाया गया है। हिन्दी टीका तथा स्याद्वाद चन्द्रिका टीका द्वारा कैलाशगिरि आदि निर्वाणभूमि को नमस्कार किया है। भक्ति को ही सम्यग्दर्शन बताया गया है। इसमें चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है।

11. निश्चय परम आवश्यक अधिकार—इस अधिकार में कुल 18 गाथाएँ हैं। विशिष्ट पद्धति से आवश्यक का लक्षण बताया गया है। जो मुनि स्ववश हैं, उन्हीं के आवश्यक होता है, अन्यवश मुनि के नहीं, अन्यवश के संबंध में कहा गया है—

''जो चरदि संजदो खलु, सुहभावं सो हवेइ अण्णवसो।''

तथा—**''दव्व गुण पज्जयाणं, चित्तं जो कुणइसो विअण्णवसो।।''**

ग्रंथकार ने कहा है "जो धर्म-शुक्ल ध्यान से परिणत हैं, वे श्रमण अन्तरात्मा हैं। ध्यान रहित श्रमण बहिरात्मा हैं।" साक्षात् अन्तरात्मा क्षीणकषाय बारहवें गुणस्थानवर्ती मुनि ही हैं। यह गुणस्थान श्री कुन्दकुन्ददेव को इस भव में प्राप्त नहीं हुआ था। इसके होने पर तो अन्तर्मुहूर्त में नियम से केवलज्ञान प्रकट हो जाता है।

पद्मप्रभमलधारी देव ने पंचमकाल में अध्यात्म ध्यान का निषेध करके श्रद्धान करने का ही आदेश दिया है, कहा भी है—

''असारे संसारे किल विलसिते पाप बहुले।
न मुक्तिमार्गेऽस्मिन्ननघ, जिननाथस्य भवति।।
अतोऽध्यात्मध्यानं कथमिह भवेन्निर्मलधियां।
निजात्मश्रद्धानं भवभय हरं स्वीकृतमिदम्।।

12. शुद्ध उपयोग अधिकार—इस अधिकार में कुल 29 गाथाएँ हैं। इसमें शुद्धोपयोग का लक्षण, उससे प्राप्त होने वाले निर्वाणपद का वर्णन किया गया है। इसमें दार्शनिक पद्धति के दर्शन होते हैं। गाथा प्रथम महत्वपूर्ण है—

''जाणदि पस्सदि सव्वं, ववहारणयेण केवली भगवं।
केवलणाणी जाणदि, पस्सदि णियमेण अप्पाणं।।''

अर्थ—केवलज्ञानी परमात्मा व्यवहारनय से सर्वज्ञ और सर्वदृष्टा हैं एवं निश्चयनय से वे अपनी आत्मा को ही जानते और देखते हैं। स्पष्ट होता है कि सर्वज्ञता ही आत्मज्ञता है, आत्मज्ञता ही सर्वज्ञता है। नय विभाग की युक्ति से आचार्य कुन्दकुन्द देव ने स्पष्ट किया है। यथार्थ में केवली आत्मा से तन्मय होकर जानते हैं। तन्मयता ही तो निश्चयनय का विषय है। उसी प्रकार यथार्थता केवली समस्त विश्व को अतन्मय होकर जानते हैं। अतन्मयता अध्यात्म शैली में व्यवहारनय का विषय है। केवली की आत्मा में समस्त विश्व प्रतिबिम्बित होता है।

आत्मा ज्ञान प्रमाण है। आत्मा ही ज्ञान है। बिना प्रयत्न के आत्मज्ञ केवली सर्वज्ञ हो जाते हैं। दर्पण में वस्तु का प्रतिबिम्ब अवश्य ही दृष्टिगत होता है। आचार्य कुन्दकुन्द ने दोनों नयों की यथारूप सार्थकता बताई है। नियमसार ग्रंथ रत्नत्रयरूपी कुमुदों को विकसित करने में चन्द्रमा के उदय के समान होने से नियम कुमुद चन्द्रोदय है और इसकी टीका में पद-पद पर व्यवहार निश्चयनय, व्यवहार निश्चय क्रिया और व्यवहार निश्चय मोक्षमार्ग का वर्णन है। स्याद्वाद से समन्वित होने के कारण पूज्य माताजी द्वारा प्रणीत "स्याद्वाद चन्द्रिका" टीका की सार्थकता सिद्ध है। मनुष्यलोकप्रमाण सिद्धशिला के ऊपर सिद्धलोक सिद्ध भगवन्तों से ठसाठस भरा हुआ है। ढाईद्वीप, दो समुद्र से सर्वस्थान से जीव कर्म मुक्त होकर सिद्धलोक में पहुँचे हैं। ऐसे अनन्त सिद्धों को नमस्कार किया गया है। इस नियमसार ग्रंथ में कुल गाथाएँ 187 हैं। छियत्तर, बयासी और उनतीस गाथाओं से इसमें पूज्य माताजी ने तीन महाधिकार माने हैं, जिनके नाम हैं—व्यवहार मोक्षमार्ग, निश्चय मोक्षमार्ग और मोक्ष।

गणिनी आर्यिका ज्ञानमती कृत हिन्दी टीका का महत्व (अन्य टीकाओं के परिप्रेक्ष्य में)—

नियमसार की अनेक टीकाएँ हैं किन्तु गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीका संस्कृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में तथा उसका अविकल हिन्दी अनुवाद काफी उपयोगी है। पाठकगण को इस टीका द्वारा निहित मूलग्रंथ का आशय समझने में काफी सरलता होती है।

प्रथम टीका—आचार्य पद्मप्रभमलधारी देव कृत तात्पर्यवृत्ति टीका भी समयोपयोगी है। सामयिक वाक्यों का प्रयोग पाठकगण की दृष्टि से क्लिष्ट है। इस टीकाग्रंथ में यथास्थान अध्यात्म अमृत कलश पद्यों का उपयोग भी दृष्टव्य है।

द्वितीय टीका—ब्र. शीतलप्रसाद जी ने आचार्य पद्मप्रभ मलधारी देव कृत नियमसार तात्पर्यवृत्ति टीका का हिन्दी रूपान्तरण किया है। इसमें काफी अशुद्धियाँ थीं अत: संशोधित प्रकाशन योग्य है।

तृतीय टीका—हिम्मतलाल जेठालाल शाह ने गुजराती में अनुवाद किया था। इसमें आचार्य पद्मप्रभ मलधारी देव की तात्पर्यवृत्ति टीका का आश्रय था। इसमें एकान्त निश्चयाभास को पुष्ट किया गया है अत: पाठकों को भ्रमित करता है। सोनगढ़ साहित्य एकान्तवादी परिप्रेक्ष्य में हेय है, सावधानी आवश्यक है।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी कृत हिन्दी टीका—श्री पद्मप्रभ मलधारी देव की ही तात्पर्यवृत्ति टीका का आध्यात्मिक दृष्टि से मंथन कर पूज्य माताजी ने इस नियमसार ग्रंथ की हिन्दी भाषा की टीका का प्रणयन किया है। भावार्थ और टिप्पणी आदि में पूर्ण सावधानी बरती गई है। पूज्य माताजी ने संस्कृत में "स्याद्वाद चन्द्रिका" टीका लिखकर तथा उसका हिन्दी अनुवाद कर काफी उपकार किया है। सहजगम्यता द्वारा पाठकगण इस ग्रंथराज नियमसार को आसानी से समझ जाते हैं। मूल गाथाओं का पद्यानुवाद काफी महत्वपूर्ण है। "अरसमरूवमगंधं" गाथा द्वारा कुन्दकुन्द स्वामी के गुणों को आत्मसात् करने की प्रेरणा सुधी पाठकों को मिल जाती है।

प्रस्तुत नियमसार की विषयवस्तु नियम से करने योग्य व्यवहार एवं निश्चय, साध्य-साधन के रूप में मान्य-दर्शन-ज्ञान-चारित्र है। इसका प्रामाणिक व्याख्यान अव्रती द्वारा शोभा नहीं पाता किन्तु व्रती पूज्य माताजी सदृश मुख से निसृत व्याख्यान शोभा पाता है। पूज्य माताजी ने 27 ग्रंथों का सहारा लेकर इस हिन्दी अनुवाद को तथा इस ग्रंथ को काफी अभिनंदनीय बना दिया है। पूज्य माताजी द्वारा हिन्दी टीका पृ. क्र. 49 द्वारा अपनी संस्कृत के प्रति रुचि तथा प्रतिभा का जो परिचय दिया है, वह वंदनीय है। संस्कृत में नियमसार ग्रंथ की वंदना लिखकर इस ग्रंथ में चार चाँद लगा दिए हैं। पद्य दृष्टव्य हैं—

"नय द्वयात्मकं तत्त्वं स्वात्मानन्दैक निर्भरं।
अनन्त दर्शनज्ञान सौख्यवीर्यात्मकं ध्रुवम्।।"

अत्यंत हर्ष की बात है कि पूज्य माताजी ने नियमसार ग्रंथ की "स्याद्वाद चन्द्रिका" टीका तथा उसका हिन्दी अनुवाद कर समाज का काफी मार्गदर्शन किया है। नियमसार प्राभृत महाग्रंथ मुनिचर्या का व्यवहार-निश्चय उभयरूपों में व्याख्यान करने वाला ग्रंथ है। पूज्य माताजी का आत्मसिद्धि का प्रयोजन इसकी टीका से सार्थक हुआ है। स्वयं की स्वाध्याय, ज्ञानार्जन और ज्ञानवृद्धि की भी कामना पूर्ण हुई है। सोने की खान से ही सोना प्राप्त होता है। ज्ञानदान से ज्ञानावरण का क्षयोपशम भी वृद्धि को प्राप्त होता है।

हिन्दी अनुवाद सहित इस ग्रंथ को पढ़ने वाला अपनी आत्मा को भी परमात्मा बनाने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। मेरी दृष्टि में पूज्य माताजी ने संस्कृत टीका के साथ हिन्दी में सरल शब्दों में अनुवाद कर हमारा काफी उपकार किया है। यह टीकाग्रंथ **"अणोरणीयान महतो महीयान"** की उक्ति को चरितार्थ करता है।

ग्रंथकर्ता आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव—दिगम्बर जैन आम्नाय में श्री कुन्दकुन्दाचार्य का नाम श्री गणधर देव के पश्चात् लिया जाता है। गणधर देव के समान ही आदर किया जाता है तथा प्रामाणिक माना जाता है। कहा भी है—

मंङ्गलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यौ, जैन धर्मोस्तु मंगलं।।

आचार्य कुन्दकुन्द अत्यन्त वीतरागी तथा आध्यात्मिक वृत्ति के साधु थे। आप अध्यात्म विषय के गहन पारखी थे। आपके अनेकों नाम प्रसिद्ध हैं। आपके जीवन में कुछ चमत्कारों तथा ऋद्धियों का भी उल्लेख मिलता है। आप अनेकों विषयों के पारगामी विद्वान थे। इन्हें करणानुयोग तथा गणित विषय का भी ज्ञान था। करणानुयोग के मूलभूत व सर्वप्रथम ग्रंथ षट्खंडागम पर इन्होंने परिकर्म नाम की टीका लिखी थी। यह टीका आज उपलब्ध नहीं है। इनके आध्यात्मिक ग्रंथों को पढ़कर अज्ञानीजन उनके अभिप्राय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की गहनता को स्पर्श न करने के कारण अपने को एकदम शुद्ध-बुद्ध और जीवनमुक्त मानकर स्वेच्छाचारी बन जाते हैं। उन्होंने व्यवहार और निश्चयनयों की यथाविधि प्रामाणिकता सिद्ध की है। उन्हें कुन्दकुन्द, वक्रग्रीव, एलाचार्य, गृद्धपिच्छ तथा पद्मनंदी नामों से जाना जाता है। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी वि. सं. 49 में आचार्य पद पर आसीन हुए थे। उन्होंने 96 वर्ष का यशस्वी जीवन जीकर त्याग तपस्या से निर्ग्रन्थ श्रमण परम्परा को कायम रखा। दिगम्बर जैनधर्म और सम्प्रदाय पर उनका महान उपकार है। उन्होंने स्वयं भद्रबाहु श्रुतकेवली को अपने गमक गुरु के रूप में प्रणाम किया है। आचार्य कुन्दकुन्द के पट्टशिष्य तत्त्वार्थसूत्र के कर्त्ता आचार्य उमास्वामी का जैन साहित्य में सूत्र परम्परा का श्रीगणेश करने का महान उपकार है।

आचार्य कुन्दकुन्द का जन्म तमिलनाडु में पोन्नूमलै के निकट गोण्डकुन्दपुर नामक स्थान में हुआ था। पिता का नाम कर्कुन्ड एवं माता का नाम श्रीमती था। इन्होंने 8 वर्ष की उम्र में ही दीक्षा ले ली थी तथा जन्म से ही वस्त्रधारण नहीं किए थे। माता के संस्कार इन पर पूर्णरूप से प्रतिफलित हुए थे। इनके जीवन में ''भूतो न भविष्यति'' वाली कहावत चरितार्थ होती है। कविवर वृन्दावन जी द्वारा की गई इनकी स्तुति महत्वपूर्ण एवं परिचयात्मक दृष्टव्य है—

''जास के मुखार विन्द तैं प्रकाशवान वृन्द,
स्याद्वाद जैन बैन इन्दु कुन्द कुन्द से।
तास के अभ्यास तैं, विकास भेद ज्ञान होत,
मूढ़ सो लखै नहीं कुबुद्धि कुन्दकुन्द से।।
देत हैं असीस सीस नाम इन्द्र चन्द्र जाहि
मोह मारखंड मारतंड कुन्द कुन्द से।।''
''शुद्ध बुद्धि वृद्धि प्रसिद्धि सिद्धि ऋद्धिदा,
हुए हैं, न होहिंगे, मुनीन्द्र कुन्द कुन्द से।।''

नियमसार प्राभृत टीका रचयित्री पूज्य गणिनी ज्ञानमती-व्यक्तित्व एवं कृतित्व—

न्याय प्रभाकर सिद्धांत वाचस्पति, आर्यिकारत्न, सर्वोच्च गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैन समाज में एक सुप्रसिद्ध लेखिका, चिंतक एवं विदुषी हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन साहित्य के पठन-पाठन व मनन चिन्तन में व्यतीत हुआ है। आपका जन्म टिकैतनगर, जिला बाराबंकी (उ.प्र.) में वि. सं. 1991 ईसवी सन् 1934 के 22 अक्टूबर शरदपूर्णिमा के दिन हुआ था। पिता का नाम श्री छोटेलाल जैन तथा माता का नाम मोहिनी देवी था। माता मोहिनी देवी आर्यिका रत्नमती के नाम से 15 जनवरी 1985 को समाधिमरण प्राप्त कर चुकी हैं। पूज्य ज्ञानमती माताजी के बचपन का नाम मैना था। 18 वर्ष की अल्पायु में सन् 1952 में ब्रह्मचर्यव्रत धारणकर चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से सन् 1956 में आर्यिका दीक्षा ग्रहण की थी।

पद्मनंदिपंचविंशतिका के स्वाध्याय से इनके भावी गौरवमय, आध्यात्मिक, संयम एवं त्यागमय जीवन की पृष्ठभूमि निर्मित हुई है। आपका परिवार संयम के क्षेत्र में अग्रणी है। आपके गृहस्थ जीवन की एक बहिन पूज्य आर्यिका अभयमती माताजी के नाम से संयम साधना में रत हैं। एक बहन आर्यिकारत्न चंदनामती माताजी के नाम से पूज्य ज्ञानमती माताजी के संघ में रहकर संयम के साथ सत्साहित्य के लेखनकार्य में व्यस्त हैं तथा पूज्य माताजी की पथानुगामी हैं। आपके गृहस्थ जीवन के भ्राता कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी भी पूज्य माताजी के संघस्थ रहकर माँ जिनवाणी की सेवा कर रहे हैं।

कृतित्व—पूज्य ज्ञानमती माताजी ने लगभग 200 से भी अधिक ग्रंथों की रचना की है। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की ऐतिहासिक रचना दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, प्रयाग में ऋषभदेव दीक्षास्थली, कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि तथा नंद्यावर्त महल का प्रणयन आपके शुभाशीष का ही फल है। पूज्य माताजी का प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी भाषाओं तथा व्याकरण, छंद, अलंकार, न्याय आदि विषयों पर पूर्ण अधिकार है। जिनवाणी माता की सेवा उन्होंने विभिन्न साहित्य लिखकर की है, जो अविस्मरणीय है तथा रहेगी। अष्टसहस्री, मूलाचार, समयसार, षट्खंडागम, कातंत्र व्याकरण, नियमसार स्याद्वाद चन्द्रिका, आराधना, प्रवचन निर्देशिका, कई प्रकार के विधान तथा 'मेरी स्मृतियाँ' नाम से आत्मकथा लिखकर महान उपकार किया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी का शुभाशीष मुझे भी प्राप्त है, यह मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ की स्थापना भी आपकी कृपा का फल है। भगवान जिनेन्द्रदेव से पूज्य माताजी के सुदीर्घ तथा निरोग जीवन की मंगल कामना करता हूँ। वे सदैव संयम पथ पर अग्रसर होकर हम सभी को अपना शुभाशीष देती रहें।

समापन कथ्य—पूज्य ज्ञानमती माताजी की सुयोग शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी की प्रेरणा से देश के यशस्वी विद्वत् प्रवर तथा देवशास्त्र गुरु के परमभक्त मैनपुरी उ.प्र. निवासी श्रीमान् पं. शिवचरनलाल जी जैन ने नियमसार प्राभृत ग्रंथ पर लिखी गई 'स्याद्वाद चन्द्रिका' टीकाग्रंथ पर अपना शोध प्रबंध ''नियमसार स्याद्वाद चन्द्रिका एक अनुशीलन'' लिखकर जैन समाज का बड़ा उपकार किया है। वे पूज्य माताजी के अनन्य भक्त हैं। यह शोध प्रबंध ग्रंथ एक प्रशंसनीय कार्य है। इस सफल समीक्षात्मक कृति हेतु मैं श्रीमान् पं. शिवचरनलाल जी मैनपुरी का अभिनंदन करता हूँ तथा वीर प्रभु से उनके भावी, सुदीर्घ निरोग जीवन की कामना करता हूँ। पं. जी का वात्सल्य प्रेम मुझे भी मिला है। यही कामना है कि पं. शिवचरनलाल जी इसी प्रकार जैनागम सम्मत प्रमाणिक ग्रंथों की रचना कर माँ जिनवाणी की निरन्तर सेवा करते रहें।

यह आलेख समाप्त करने के पूर्व मैंने शतवार पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के शुभाशीष का पावन स्मरण किया है। हम सब पूज्य माताजी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन सफल करें, इसी भावना के साथ—

'आयु कटती रात दिन, ज्यों करोत ते काठ।
हित अपना जल्दी करो, पड़ा रहेगा ठाठ।।''

किं बहुना।

वंदना

प्रभु भक्ति तेरी करते-करते, खुद को भगवान बना लेंगे।
भगवान्-२ नहीं बनते जब तक , तब तक हम भक्ति न छोड़ेंगे।। टेक.।।

प्रभु आज मेरा समकित, क्षायोपशमिक ही है।
चल मलिन अगाढ़ सभी, दोषों से मल युत है।।
प्रभु तुम अनंत सम्यक्त्व धनी, तुम पद का वंदन कर लेंगे।।
भगवान्-२ नहीं बनते जब तक , तब तक हम भक्ति न छोड़ेंगे।।१।।

प्रभु तुम सानिध्य मिले, कब ऐसा दिन होगा।
क्षायिक सम्यक्त्व तभी, मुझमें प्रगटित होगा।।
हम इसीलिए सारा जीवन, तुमको ही समर्पण कर देंगे।।
भगवान्-२ नहीं बनते जब तक , तब तक हम भक्ति न छोड़ेंगे।।२।।

-गणिनी ज्ञानमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैनभारती : समीक्षात्मक अध्ययन

लेखक—डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद *

जैनभारती परमपूज्या गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने जैन साहित्य को समृद्ध करने हेतु विविध प्रकार के साहित्य का सृजन किया है। अनेक महान ग्रंथों की टीकाएँ लिखी हैं तो अनेक विधान, पूजा, कथा साहित्य एवं क्लिष्ट व्याकरण विषयक ग्रंथों की रचना विवेचना की है। उनका उद्देश्य कठिन विषयों को सरल भाषा में प्रस्तुत कर जैन साहित्य को जन साहित्य के रूप में प्रस्तुत करने का रहा है। इसी शृंखला में जैनभारती ग्रंथ की रचना की गई है। इस कृति में एक ही स्थान पर चारों अनुयोगों को सार रूप में प्रस्तुत किया गया है। पूरा ग्रंथ पढ़ने के पश्चात् लगता है जैसे अब अन्य कुछ पढ़ना बाकी ही नहीं रह गया है। यह ग्रंथ चारों अनुयोगों का सार भूत ग्रंथ है। संपूर्ण जैन विद्याओं का समावेश होने से इसका नाम जैनभारती रखा है, जो सार्थक है। मूलतः गणधर देव ने श्रुतरूप जितना भी ज्ञान निबद्ध किया है, वही द्वादशांग रूप में आगम के रूप में विद्यमान है। भगवान महावीर की वाणी के विवेचक गणधर देव के पश्चात् इसके पूर्ण ज्ञाता अंतिम श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु आचार्य हुए। उत्तरोत्तर यह ज्ञान घटता गया। श्री धरसेनाचार्य को 12वें दृष्टिवाद अंग के अग्रायणीय नामक द्वितीयपूर्व का ज्ञान था। उन्होंने श्रुत विच्छेद के भविष्य को ज्ञात कर वह ज्ञान पुष्पदंत व भूतबली को दिया जिससे षट्खंडागम की रचना हुई, उसी तरह श्री गुणधर आचार्य को पाँचवे ज्ञान प्रवाद पूर्व की दसवीं वस्तु का ज्ञान था। जो 'कषायपाहुड़सुत्त' के नाम से ग्रंथबद्ध है। इन्हीं सिद्धान्त सूत्रों पर धवला व जयधवला नामक टीकाएँ हुईं। इसी परम्परा में कुन्दकुन्दाचार्य, उमास्वामी, समंतभद्र, पूज्यपाद, अकलंकदेव आदि आचार्यों ने प्रमाणभूत ग्रंथों की रचना की। इन आचार्यों की प्रमाणिक वाणी वास्तव में भगवान की ही वाणी है।

जैनदर्शन में कहा है—'जो न्यूनतम, अधिकता से रहित हैं, विपरीत नहीं हैं। संदेह रहित हैं, ऐसे वचनों को जैनाचार्य वेद कहते हैं। इन्हें प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग ऐसे चार अनुयोग या वेद माना है।" जैनभारती में इन्हीं चार वेदों का समन्वित स्वरूप है। कृति में क्रम से चारों अनुयोगों के विषय का प्रस्तुतिकरण किया गया है।

प्रथमानुयोग

सर्वप्रथम प्रथमानुयोग को समझाते हुए लिखा है—

"प्रथमानुयोगमर्थाख्यानं चरितं पुराणमपि पुण्यम्।
बोधि समाधि निधानं बोधति बोधः समीचीनः।।"

अर्थात् जो शास्त्र परमार्थ के विषयभूत धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष पुरुषार्थ का कथन करते हैं, एक पुरुष के आश्रित कथा को, त्रेषठ शलाका पुरुषों के चारित्र को तथा पुण्यास्रव करने वाली कथाओं को कहता है और बोधि रत्नत्रय, समाधि-ध्यान का निधान-कोष है, ऐसे प्रथमानुयोग रूप शास्त्रों को सम्यग्ज्ञान जानता है अर्थात् जिसमें चार पुरुषार्थ और महापुरुषों के चारित्र का वर्णन हो वह प्रथमानुयोग है। इसे पढ़ने से पुण्यास्रव-रत्नत्रय की प्राप्ति और समाधि की सिद्धि होती है।

इस प्रथम श्लोक की व्याख्या में ही स्पष्ट हो गया है कि इस प्रथमानुयोग के अन्तर्गत 63 शलाका पुरुषों का चरित्र प्रस्तुत है, जो इस तथ्य का द्योतक है कि ऐसे पुरुषों की जीवनी पुण्यास्रव का कारण बनती है। ऐसे पथ पर चलकर ही मोक्ष का अंतिम पुरुषार्थ सिद्ध हो सकता है। हम भी इन महापुरुषों जैसे बनें, ऐसी प्रेरणा मिलती है। इससे हमारे ज्ञान में वृद्धि व उत्तम चारित्र धारण की भावना प्रबल होती है।

कृति में पंचपरमेष्ठी को नमस्कार करते हुए 'जिन' शब्द की व्युत्पत्ति उस मार्ग के प्रणेता जिनराज हैं। उनके द्वारा प्रशस्त मार्ग जैनधर्म है। उनकी दिव्यध्वनि ही जिनवाणी-जिनागम या जिनभारती है। इससे यह भी बोध हुआ कि इस जैनभारती का प्रतिपाद्य जिनेश्वर की दिव्यध्वनि का ही प्रतिबिंब है। जैनधर्म अनादिनिधन धर्म है। यह विश्व भी अनादि निधन है। जैनाचार्यों ने इस रचना को स्वयं सिद्ध माना है।

---

* प्राध्यापक हिन्दी एवं अध्यक्ष-तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृति में सर्वप्रथम सृष्टि के क्रम को जैन वैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। इस आर्यखण्ड में अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी ऐसे दो काल विभाग हैं, जो मनुष्य या सृष्टि के उत्कर्ष और उपकर्ष को दर्शाते हैं। आचार्यों ने इसी अवसर्पिणी काल के 6 भेद करते हुए उसके सुख के क्रमिक ह्रास और सुख के क्रमिक विकास को प्रस्तुत करते हुए उन्हें सुषमा-सुषमा, सुषमा, सुषमा-दुषमा, दुषमा-सुषमा, दुषमा एवं अति दुषमा नाम दिए हैं। इसके विपरीत क्रम उत्सर्पिणी काल के होते हैं। इसमें प्रथमकाल चार कोड़ा-कोड़ी सागर, द्वितीयकाल तीन कोड़ा-कोड़ीसागर, तृतीय काल दो कोड़ा-कोड़ी सागर, चतुर्थ काल 42 हजार वर्ष कम एक कोड़ा-कोड़ीसागर, पंचमकाल इक्कीस हजार वर्ष प्रमाण और छठाकाल भी इक्कीस हजार वर्ष प्रमाण है।

कृति में कालपरिवर्तन के साथ प्रथमकाल की भूमि, मौसम, वृक्ष, समूह की स्थिति, मनुष्य का शरीर, आयु, जीवन शैली, शरीर में स्थित हड्डियों, शक्ति, देह सौन्दर्य आदि का वर्णन किया गया है। इस प्रथम काल में सबकुछ उत्तम ही है। इस काल में असंज्ञी जीव, जाति विरोधी जीव भी नहीं होते। गर्मी-सर्दी, अंधकार और रात-दिन का भेद नहीं होता एवं परस्त्रीहरण, परधन हरण आदि व्यसन नहीं होते.....। इस काल में 10 प्रकार के कल्पवृक्षों का बाहुल्य होता है। मनुष्य भोगभूमियों के सुख भोगते हैं। यहाँ वे ही जीव उत्पन्न होते हैं 'जिन्होंने पूर्व भव में मनुष्य आयु को बांध लिया है और पश्चात् तीर्थंकर के पादमूल में क्षायिक सम्यग्दर्शन को प्राप्त किया है, ऐसे कितने ही सम्यग्दृष्टि पुरुष भी भोगभूमि में जन्म लेते हैं। इसी प्रसंग में भोगभूमि के उत्पत्ति स्थान, युगल वृद्धि आदि का वर्णन है।

द्वितीय काल में घटती आयु, संहनन का वर्णन है। मनुष्य का आहार तीसरे दिन मात्र बहेड़ा के बराबर होने लगता है। यद्यपि यहाँ सुख की हानि है पर वह अत्यधिक नहीं है।

तृतीयकाल में मनुष्य की ऊँचाई, बल, बुद्धि, आयु, तेज उत्तरोत्तर घटने लगते हैं। यद्यपि शरीर समचतुरस्र संस्थान से युक्त होता है। एकदिन के अन्तराल में एक आंवले बराबर आहार लेते हैं। अन्य सुख सुषमा-सुषमा जैसे ही होते हैं।

इसी तृतीयकाल में कुलकरों की उत्पत्ति होती है। इसमें आयु, बल, ऋद्धि, अवगाहना और तेज घटते-घटते जब तृतीयकाल में पल्योपम के आठवें भाग मात्र काल शेष रह जाता है। तब कुलकरों की उत्पत्ति का प्रारंभ होता है। इस काल में प्रतिश्रुति, सन्मति, क्षेमंकर, क्षेमंधर, सीमकंर कुलकर हुए। इस काल में यदि किसी से अपराध हो जाता तो हाय ! बुरा किया इतना ही कहना पर्याप्त था।

पश्चात् सीमंधर, विमलवाहन, चक्षुष्मान, यशस्वान्, अभिचंद्र इन कुलकरों के समय अपराध करने पर 'अब ऐसा मत करना' शब्दों को बढ़ाकर खेद प्रकाशक शब्द कहे जाते थे।

पश्चात्-चन्द्रमा, मरुदेव, प्रसेनजित एवं नाभिराज चौदहवें कुलकर में प्रत्येक कुलकर की आयु उनके काल में हुए सृष्टि में परिवर्तन, नवीन बोध आदि का वर्णन, दंडव्यवस्था का वर्णन किया गया है। मनुष्य जन्म में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाया है। अंतिम कुलकर नाभिराज के समय में बालकों के नाभि नाल को काटने का वर्णन मिलता है। इस समय में कल्पवृक्ष नष्ट हो गये, बादल गरजने लगे, वर्षा होने लगी, वनस्पतियाँ उगने लगीं। इन सबसे अनजान लोगों को नाभिराय ने भोजन आदि का ज्ञान दिया-आजीविका के साधन समझाए।

इसी श्रृंखला में नाभिराज कुलकर के पश्चात् भरतक्षेत्र में 63 शलाका पुरुष उत्पन्न होने लगते हैं, जिनमें 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलभद्र, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण होते हैं। इन कुलकरों के समय में भी 11वें से लेकर शेष कुलकरों ने 'हा', 'मा', 'धिक' इन तीन दण्डों की व्यवस्था की थी अर्थात् खेद हैं-'अब ऐसा नहीं करना', 'तुम्हें धिक्कार है जो रोकने पर भी अपराध करते हो।'

जब चक्रवर्ती भरत के समय तक अपराधों में वृद्धि हुई तो वध, बंधन, शारीरिक दंड की व्यवस्था हुई। कृति में इन त्रेसठ शलाका पुरुषों के नाम प्रस्तुत किए गए हैं। जिनमें—

(1) 24 तीर्थंकर—ऋषभनाथ से महावीर तक

(2) 12 चक्रवर्ती—भरत, सगर, मघवा, सनत्कुमार, शांति, कुंथु, अर, सुभौम, पद्म, हरिषेण, जयसेन, ब्रह्मदत्त।

(3) 9 बलभद्र—विचल, अचल, सुधर्म, सुप्रभ, सुदर्शन, नंदी, नंदिमित्र, रामचंद्र और बलदेव।

(4) 9 नारायण—त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ठ, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, पुरुषसिंह, पुण्डरीक, नारायण (लक्ष्मण) और श्रीकृष्ण।

(5) 9 प्रतिनारायण—अश्वग्रीव, तारक, मेरक, मधुकैटभ, नि:शुंभ, बलि, प्रहरण, रावण और जरासंघ।

इसी तृतीयकाल में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव हुए। जब तृतीयकाल में चौरासीलाख वर्ष पूर्व तीन वर्ष साढ़े आठ माह प्रमाण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काल शेष रह गया तब अंतिम कुलकर महाराजा नाभिराज की महारानी मरुदेवी ने प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को जन्म दिया। इन्होंने प्रजा को षट् क्रियाएं सिखाई, विवाह विधि, राजव्यवस्था आदि का प्रारंभ किया।

भगवान ऋषभदेव के मोक्ष जाने के बाद तीन वर्ष साढ़े आठ माह व्यतीत होने पर दुषमा-सुषमा चतुर्थकाल प्रारंभ हुआ। भगवान ऋषभनाथ के पश्चात् कितने वर्ष के बाद द्वितीय तीर्थंकर से 23 वें तीर्थंकर तक के जन्म वर्षों को बताया गया है। भगवान पार्श्वनाथ के 250 वर्षों के पश्चात् वीर भगवान सिद्ध हुए उस समय पंचमकाल के प्रवेश होने में तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष थे।

पंचमकाल भगवान महावीर के मोक्ष जाने के बाद प्रारंभ हुआ तदनुसार आयु-संहनन अल्प होने लगा।

भगवान महावीर के पश्चात् धर्मतीर्थ परम्परा का प्रारंभ हुआ। केवली परम्परा जंबूस्वामी तक चली है। इसी परम्परा में नंदि, नंदिमित्र, अपराजित, गोवर्धन व भद्रबाहु श्रुतकेवली हुए जिनका काल 100 वर्ष प्रमाण है। पश्चात्-दशपूर्वी आचार्य हुए जिनका 183 वर्ष प्रमाण काल है। इसके बाद 11 अंगधारी, आचारांगधारी, सुभद्र, यशोभद्र, यशोबाहु एवं लोहाचार्य हुए। यह धर्मतीर्थ पंचमकाल के अंत तक चलेगा। उपरोक्त आचारांग धारी तक 683 वर्ष का काल गया, शेष 20317 वर्ष तक इस काल में धर्म चलेगा।

ग्रंथ में कल्की का जन्म-कार्य व भगवान महावीर के निर्वाण से इस कल्की का काल 12 हजार वर्ष माना गया है।

श्री वीरप्रभु के निर्वाण जाने के बाद छः सौ पाँच वर्ष और पाँच माह व्यतीत हो जाने पर 'विक्रम' नामक शकराजा हुआ। उसके बाद 394 वर्ष 7 माह बीतने पर प्रथम कल्की उत्पन्न हुआ था। कल्की ने अपना पापरूप प्रकट किया और मुनि आहार में से प्रथम ग्रास शुल्क रूप में मांगने लगा। जिससे मुनि अन्तराय मानकर निराहार रह जाते। यद्यपि असुरदेव उस कल्की को मार डालते हैं। उसके पुत्र द्वारा रक्षा की याचना करने पर 'धर्मपूर्वक राज्य करने की शिक्षा देकर उसे छोड़ देते हैं। पर 2 वर्षों के बाद ही वही हीनता की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है।' इस प्रकार एक हजार वर्षों के पश्चात् पृथक्-पृथक् एक-एक कल्की तथा पाँच सौ वर्षों के पश्चात् एक-एक उपकल्की होता है और पापोदय से अनेक प्रकार के पीड़ित मनुष्य दिखाई देने लगते हैं।

इस प्रकार से दुषमा काल में धर्म-आयु-ऊँचाई कम होती जाती है और अंत में विषम स्वभावी 21वाँ कल्की उत्पन्न होता है। उस समय सिर्फ एक मुनि 'वीरांगज' एक आर्यिका 'सर्वश्री' तथा 'अग्निदत्त व पंगु श्री' श्रावक-श्राविका रहेंगे। उन पर भी इस कल्की का अत्याचार होगा। वे मुनि अवधिज्ञान से 3 दिन की आयु शेष जानकर चारों समाधिमरण ग्रहण करेंगे। पश्चात् इस कल्की का भी अंत हो जायेगा।

इस घटना के 3 वर्ष 8 माह और 1 पक्ष के अनन्तर विषम छठाकाल आयेगा। धर्म-आयु-ऊँचाई सभी ह्रास की चरमसीमा पर होंगे। लोग कुरूप, बौने, नंगे, मूर्ख होंगे। इस काल में नरक व तिर्यंचगति से आने वाले जीव जन्म लेंगे और जब इस काल के 49 दिन कम 21 हजार वर्ष बीत जायेंगे तब घोर प्रलयकाल प्रवृत्त होगा। सातदिन तक घोर प्रलयंकारी आंधी चलेगी जिसमें अत्यंत शीतलजल, क्षारजल, विष, धुंआ, धूलि, वज्र एवं जलती हुई दुष्प्रेक्ष्य अग्निज्वाला बरसेगी। यह 7 प्रकार की वर्षा कुल 49 दिन होगी। जिससे पृथ्वी एक योजन भाग नीचे तक नष्ट हो जाती है।

इसी क्रम में पुनः उत्सर्पिणी काल का क्रम प्रारंभ होता है, जिसमें धर्म, मनुष्य की आयु, कद-संहनन वृद्धिंगत होते जाते हैं।

ये दोनों प्रकार के काल परिवर्तन भरत एवं ऐरावत क्षेत्र के आर्यखंडों में अनन्तानंत होते हैं। 'असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल की शलाकाओं के बीत जाने पर प्रसिद्ध एक हुंडावसर्पिणी आती है। उसके चिन्ह इस प्रकार होते हैं-इस काल के भीतर सुषमा-दुषमा नामक तृतीय काल की स्थिति में कुल काल अवशिष्ट रहने पर भी वर्षादि होने लगती है। विकलेन्द्रिय जीव उत्पन्न होने लगते हैं। कल्पवृक्षों का अंत व कर्मभूमि का व्यापार प्रारंभ होने लगता है। इसी काल में प्रथम तीर्थंकर व प्रथम चक्रवर्ती उत्पन्न होते हैं। इस कालदोष के कारण चक्रवर्ती का विजयभंग होता है। उसके द्वारा ब्राह्मणवर्ण की उत्पत्ति होती है। इस काल में 58 ही शलाका पुरुष होते हैं और 9वें तीर्थंकर से 16वें तीर्थंकर तक सात तीर्थों में धर्म का विच्छेद हो जाता है। 11 रुद्र व 9 कलहप्रिय नारद उत्पन्न होते हैं। उपरांत छठें, 23वें और अंतिम तीर्थंकर पर उपसर्ग होते हैं। 3-4-5वें काल में धर्म को नष्ट करने वाले पापिष्ठ, कुदेव आदि पैदा होते हैं। अनेक उपद्रव, कल्की का उपद्रव आदि होते हैं।

एक ओर ग्यारह रुद्र, नव नारद विकृति फैलाते हैं तो साथ ही 24 कामदेव भी जन्म लेकर धर्म की प्रभावना बढ़ाते हैं। प्रथम कामदेव भगवान बाहुबली थे, तो अंतिम कामदेव जम्बूस्वामी हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी क्रम में कृति में तीर्थंकरों के जन्म से उनके मोक्ष तक की यात्रा का रुचिकर वर्णन है। तीर्थंकर की माता के 16 स्वप्न-उनके फल, माता की सेवा में रत श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी षट् कुमारियों एवं दिक्कुमारियों द्वारा माता की सेवा करने का वर्णन है। तीर्थंकर का जन्म, इन्द्राणी द्वारा शिशु का ले जाना, ऐरावत हाथी जो एक लाख योजन विस्तार वाला है उस पर आरूढ़ होकर अयोध्या में आना। इन्द्र द्वारा बालक को सुमेरु पर्वत की ईशानकोण की पांडुक शिला पर ले जाकर अपनी हजारों भुजाओं द्वारा हजारों कलशों से अभिषेक करना आदि का वर्णन है। उनकी शिक्षा-दीक्षा का निमित्त, केवलज्ञान, समवसरण आदि का वर्णन है। इसमें समवसरण का विस्तृत वर्णन किया गया है।

भगवान ऋषभदेव के पूर्वभवों का वर्णन प्रस्तुत है। गंधिलदेश का राजकुमार महाबल से वज्रजंघ, स्वर्ग के श्रीधरदेव, वज्रनाभि तक के जीवन की हजारों लाखों वर्षों की यात्रा करके अहमिन्द्र देव से ऋषभदेव नामक तीर्थंकर तक की कथा प्रस्तुत है।

इसी संदर्भ में अयोध्या की रचना उसके महलों का सौन्दर्य वर्णन अति उपमा-युक्त है-'राजा नाभिराज के उस प्रासाद का नाम सर्वतोभद्र था। उसके खंभे स्वर्णमय थे, दीवारें नाना प्रकार के मणियों से निर्मित थी। वह पुखराज, मूंगा, मोतियों की माला से सुशोभित था, वह 91 खंडों से युक्त था। कोट-वाटिका, बाग-बगीचों से अलंकृत था।

भगवान ऋषभदेव के जन्म से पूर्व माता की सेवा में स्थित देवियों की सेवा-गर्भ शोधन आदि का अलंकारिक शैली में वर्णन किया गया है। एक उदाहरण-'मरुदेवी के निर्मल गर्भ में स्थित तथा मति, श्रुत और अवधि इन तीनों ज्ञानों से विशुद्ध अन्तःकरण को धारण करने वाले भगवान ऋषभदेव ऐसे सुशोभित होते थे, जैसे स्फटिकमणि के बने हुए घर के बीच में रखा हुआ निश्चल दीपक सुशोभित होता है।

इस कृति में भगवान ऋषभदेव के जन्म से मोक्ष तक की प्रत्येक अवस्था का बड़ा ही विस्तृत, अलंकारिक भाषा में वर्णन किया गया है। कैसे भगवान ने पुत्रियों को विद्याध्ययन कराया, लोगों को जीवन जीने की कला सिखाई। कैसे 3 वर्णों का अस्तित्व बना इन सबका विषद वर्णन है। समवसरण का वर्णन अत्यंत प्रभावशाली है। उसमें 12 सभाओं का वर्णन है, जिनमें मुनि, कल्पवासिनी देवियाँ, आर्यिकाएं, ज्योतिषी देवों की देवियाँ, व्यंतर देवों की देवियाँ, भवनवासी देवों की देवियाँ, भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषी देव, कल्पवासी देव, मनुष्य और तिर्यंचों के स्थानों का वर्णन है। भगवान के आठ प्रतिहार्य के साथ उनके जन्म के दश अतिशय, केवलज्ञान के दश अतिशय विशेष देवकृत चौदह अतिशयों का वर्णन है।

भरत जो चक्रवर्ती थे उनके यहाँ पुत्र जन्म हुआ, चक्ररत्न की प्राप्ति हुई और भगवान को केवलज्ञान हुआ। इन तीनों में वह सर्वप्रथम भगवान के केवलज्ञान के उत्सव को मनाने हेतु समवसरण में जाकर भगवान की पूजा करते हैं।

भगवान आदिनाथ से पूर्व उनके एक पुत्र अनन्तवीर्य मोक्ष प्राप्त करते हैं। मारीचि द्वारा मिथ्याधर्म का प्रारंभ भी होता है। भगवान के समवसरण में 84 गणधर, 84 ऋषिगण, साढ़े 3 लाख आर्यिकाएं, 3 लाख श्रावक एवं 5 लाख श्राविकाएं थीं।

भरत ने दिग्विजय से लौटने पर ब्राह्मण वर्ण की स्थापना की। उन्हें द्विज बनाया-संस्कारित किया। जब भरत ने इस वर्ण की स्थापना की बात भगवान से कही और गुणदोष के बारे में पूछा तो उन्होंने भविष्य बतलाते हुए कहा-जब तक चतुर्थ काल की स्थिति रहेगी तब तक तो प्रायः ये उचित आचार का पालन करते रहेंगे परंतु जब कलयुग निकट आयेगा, तब ये जातिवाद के अभिमान से सदाचार से भ्रष्ट होकर समीचीन मोक्षमार्ग के विरोधी बन जायेंगे।'

इसी क्रम में ऋषभनाथ के मोक्षगमन के पश्चात् चतुर्थकाल में अजितनाथ से लेकर महावीर स्वामी तक तीर्थंकर हुए।

इसी क्रम में भगवान महावीर के जीवन का विस्तृत परिचय प्रस्तुत है। पुरुरवा भील से-मरीचि का जीव बनकर अनेकानेक भव धारण कर सिंह की योनि में मुनि का उपदेश पाकर-संयम धारण कर यह जीव अच्युत स्वर्ग में पुष्पोत्तर विमान में इन्द्र के रूप में जन्म लेता है और वहाँ से चलकर महावीर अंतिम तीर्थंकर बनता है। पूरे पाँचों कल्याणकों का उत्तम ढंग से कथारूप वर्णन सुन्दर रूप से हुआ है।

पश्चात् 12 चक्रवर्तियों का वर्णन है। सभी के वैभव दृष्टव्य हैं-उनके 96 हजार रानियाँ (32 हजार आर्यखंड की कन्याएं, 32 हजार विद्याधर, 32 हजार म्लेच्छ कन्याएं) असंख्यात हजार पुत्र-पुत्रियाँ, 32 हजार गणबद्ध राजा, 360 अंग रक्षक, 360 रसोइये, साढ़े 3 करोड़ बंधुवर्ग, 3 करोड़ गायें, 1 करोड़ थालियाँ, 84 लाख भद्रहाथी, 84 लाख रथ, 18 करोड़ घोड़े, 84 करोड़ आम वीर, 88 हजार म्लेच्छ राजा, अनेकों करोड़ विद्याधर, 32 हजार मुकुटबद्ध राजा, 32 हजार नाट्य शालाएं, 32 हजार संगीत शालाएं, 48 करोड़ पदातिगण होते थे। उनके पास 96 करोड़ ग्राम, 75 हजार नगर, 16 हजार खेट, 24 हजार कर्वट, 4 हजार मटंब, 48 हजार पत्तन, 99 हजार द्रोणमुख, 14 हजार संचारन, 56 अन्तर्द्वीप, 700 कुक्षिनिवास, 28 हजार दुर्गादि,14 रत्न, 9 नवनिधि एवं दशांग मंत्र होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृति में चक्रवर्ती, बलभद्र नारायण-प्रतिनारायणों का विशद वर्णन किया गया है।

कृति में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र का जैन आगमानुकूल वर्णन है। राजा दशरथ के चार पत्नी अपराजिता, सुमित्रा, कैकेई और सुप्रभा हैं। इस चरित्र वर्णन के साथ जुड़े प्रसंग-स्थानों का वर्णन है जिनमें लंकानगरी, सीता विवाह, रामचन्द्र के बनवास, रावण की मृत्यु, सीता के निष्कासन, सिद्धार्थ क्षुल्लक द्वारा सीता के पुत्रों की शिक्षा-दीक्षा, रामचंद्र का पुत्रों के साथ युद्ध, सीता की अग्निपरीक्षा, रामचंद्र का शोक-दीक्षा, निर्वाणगमन आदि का वर्णन है।

करणानुयोग

कृति का दूसरा खण्ड करणानुयोग से संबद्ध है। करणानुयोग की विशेषता अंकित करते हुए कहा है—

लोकालोक विभक्तेर्युगपरिवृत्तेश्चतुर्गतीनां च।
आदर्शमिव तथामतिरवैति करणानुयोगं च।।

उक्त प्रकार का सम्यग्ज्ञान ही लोक-अलोक के विभाग को, युगों के परिवर्तन द्वारा चारों गतियों को दर्पण सदृश ऐसे करणानुयोग को जानता है। जिसमें लोक-अलोक, युग परिवर्तन और चतुर्गति परिवर्तन का वर्णन है, इस अनुयोग से संपूर्ण विश्व का स्वरूप जान लिया जाता है।

यह करणानुयोग संपूर्ण जैन भूगोल का ज्ञान प्रदाता है। सर्वप्रथम सामान्य लोक का वर्णन है। जो अनन्तानंत अलोकाकाश के बहुमध्य भाग में 343 राजु प्रमाण पुरूषाकार लोकाकाश है। यह लोकाकाश जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और काल इन पाँच द्रव्यों से व्याप्त है। इसके तीन भेद हैं-अधोलोक, मध्यलोक एवं ऊर्ध्वलोक। संपूर्ण लोक की ऊँचाई 14 राजु प्रमाण एवं मोटाई 7 राजू है।

लोक का वर्णन करते हुए उसकी 14 राजु ऊँचाई में 7 राजु में अधोलोक, 7 राजु में स्वर्गादि हैं। इन दोनों के मध्य 99 हजार 40 योजन ऊँचा मध्यलोक है। इसकी चौड़ाई 7 राजु है, जो घटते-घटते 1 राजु रह जाती है। पुनः मध्यलोक से ऊपर बढ़ते-बढ़ते 5वें स्वर्ग तक 5 राजु होकर आगे घटते-घटते लोक के अग्रभाग तक 1 राजु रह जाती है। तीनों लोकों के बीच 1 राजु चौड़ी 1 राजु मोटी त्रसनाली है, जो 13 राजु ऊँची है, इसी में त्रसजीव पाये जाते हैं। इस लोक का घनफल 343 राजू है। इस लोकाकाश के चारों तरफ तीन वातवलय हैं। सर्वप्रथम लोकको चारों ओर से वेष्टित करके घनोदधि वातवलय है, इसको वेष्टित करके घनवात है एवं इसको वेष्टित करके तनुवातवलय है। तनुवात के चारों ओर अनन्त अलोकाकाश है। इसमें घनोदधिवात वलय गोमूत्र वर्ण का है, धनवात मूँगे के वर्णवाला एवं तनुवात अनेक वर्ण का है।

अधोलोक में प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी है। उसके नीचे शर्कराप्रभा, बालुका प्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा एवं महातमःप्रभा भूमियाँ हैं। ये 7 पृथ्वियाँ 6 राजु में हैं एवं 7वें राजु में निगोद है। इसी क्रम में धम्मा, वंशा, मेघा, अंजना, अरिष्टा, मघवी एवं माघवी सात नरक हैं। इसी क्रम में रत्नप्रभा पृथ्वी के 3 भाग (खर, पंक एवं अब्बहुल) की चर्चा एवं नरकों के बिलों, वहाँ का उष्ण, शीत वातावरण एवं नरक के अतीव दुःखों का वर्णन करते हुए सातों नरकों की आयु प्रस्तुत है। (देखें पृ. 69) नरक में भी तीसरे नरक तक नारकी जाति स्मरण, दुर्वार वेदना या देवों के संबोधन से भवों को चूर्ण करने में समर्थ सम्यग्दर्शन को प्राप्त कर लेते हैं। शेष चार नरकों में जातिस्मरण व वेदना अनुभव से सम्यक्त्व प्राप्त होता है।

मध्यलोक 1 राजू चौड़ा 1 लाख 40 योजन ऊँचा है, चूड़ी के आकार का है। इसी के मध्य एक लाख योजन व्यास वाला जम्बूद्वीप स्थित है। इसमें क्रम से एक-दूसरे को घेरे हुए धातकीखंड, पुष्करद्वीप एवं अंत में स्वयंभूरमण द्वीप है। इनको घेरे हुए क्रमशः कालोदधि एवं अंत में स्वयंभूरमण समुद्र है।

जम्बूद्वीप के मध्य एक लाख योजन ऊँचा तथा 10 हजार योजन विस्तार वाला सुमेरुपर्वत है। जम्बूद्वीप में 6 कुलाचल व सात क्षेत्र हैं। 6 कुलाचल हैं-हिमवान, महाहिमवान, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी। 7 क्षेत्र हैं-भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत एवं ऐरावत। इसी क्रम में क्षेत्र एवं पर्वतों के शास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत हैं। विजयार्धपर्वत भरत क्षेत्र के मध्य में है, जो 50 योजन×25 योजन विस्तार का है। इसी में विद्याधर, देवों के निवास एवं 9 कूट हैं, जिनमें एक कूट सिद्धायतन नाम से है।

हिमवान पर्वत 42105269/10 मी. विस्तार का है। इसमें पद्मनामक सरोवर 1000500 योजन का, 10 योजन गहरा है। अन्य आगे के पर्वतों पर महापद्म, तिगिंच्छ, केशरी, पुण्डरीक, महापुण्डरीक सरोवर हैं। इस सरोवर के मध्य एक योजन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का कमल है। जिसकी कर्णिका पर निर्मित भवन में श्रीदेवी का निवास है। अन्य 140115 कमल हैं जिन पर श्रीदेवी का परिवार रहता है। अन्य आगे के सरोवर के कमलों पर ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी देवियाँ रहती हैं। इसी क्रम में गंगानदी एवं गंगाकुंड का वर्णन है।

सुमेरुपर्वत का वर्णन करते हुए कहा है कि वह विदेहक्षेत्र के बीचोंबीच 1 लाख 40 योजन ऊँचा है। नींव एक हजार योजन है, पृथ्वी तल पर 10 हजार योजन विस्तार है। पृथ्वी तल पर भद्रसालवन है। इसके ऊपर 5 सौ योजन जाकर नंदनवन है। इनकी चारों दिशाओं में चार चैत्यालय हैं। इसके ऊपर साढ़े बासठ हजार योजन पर सौमनस वन है, जो 500 योजन चौड़ा कटनीरूप है। इस वन के 36 हजार योजन ऊपर पाण्डुक वन है। सभी के चारों दिशाओं में चार चैत्यालय हैं। पाण्डुक वन की चारों दिशाओं में चार शिलाएँ हैं, जो अर्ध चंद्राकार हैं जो अष्ट मंगलद्रव्यों से सुशोभित हैं। इनमें क्रमशः पाण्डुक शिला पर भरतक्षेत्र के तीर्थंकरों का अभिषेक करते हैं। दूसरी पाण्डु कंबला शिला पर पश्चिम विदेह क्षेत्र के तीर्थंकरों का, रक्ता शिला पर, ऐरावत क्षेत्र के एवं रक्तकंबला शिला पर, पूर्व विदेह क्षेत्र के तीर्थंकरों का अभिषेक किया जाता है।

इसी क्रम में लवणसमुद्र, पुष्करार्ध द्वीप, 170 कर्मभूमियों, 30 भोगभूमियों, 96 कुभोगभूमियों का आकार एवं उनके विस्तार का वर्णन है।

यहाँ के कुमानुषों का वर्णन देखिए-'पूर्व दिशा में रहने वाले मनुष्य एक पैर वाले, पश्चिम दिशा के पूँछवाले, दक्षिण दिशा के सींग वाले एवं उत्तर दिशा के गूंगे होते हैं। वे युगल में जन्मते हैं और युगल में मरते हैं।

कृति में जम्बूद्वीप के 78 अकृत्रिम, मध्यलोक के 458 अकृत्रिम चैत्यालयों का वर्णन है। पश्चात् भवनवासी, व्यंतरवासी, ज्योतिर्वासी एवं कल्पवासी देवों का वर्णन करते हुए उनके स्थान, भेद, भवनों का प्रमाण, जिनमंदिर भवनवासी देवों के इन्द्र उनके परिवार का वर्णन किया है। इसी प्रकार अन्य व्यंतर ज्योतिर्वासी, कल्पवासी देवों का सविस्तार वर्णन प्रस्तुत हुआ है।

सौधर्म इन्द्र का विशेष वर्णन करते हुए उसका नाम, प्रासाद, परिवारदेव, परिवार, ऐरावत हाथी, देवियाँ, राजांगण, उनकी सभा, जिनमंदिर, शरीर की अवगाहना, उत्कृष्ट आयु, अवधिज्ञान, श्वासोच्छवास ग्रहण काल, लौकांतिक देव, एक भवावतारी देव आदि का वर्णन किया गया है।

इसी करणानुयोग के विभाग में जीव के पंचपरिवर्तन की चर्चा करते हुए जीव के संसारी एवं मुक्त दो भेद बताये हैं। 'चतुर्गतौ संसरणं संसारः' अर्थात् चतुर्गति में संसरण करना परिभ्रमण करना इसका नाम संसार है। ये संसार 5 भेदवाला है द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव एवं भाव। इन्हें परिवर्तन भी कहते हैं। द्रव्यसंसार के क्रमशः कर्मद्रव्य परिवर्तन एवं नोकर्म द्रव्य परिवर्तन दो भेद हैं। कर्मबंध के 5 कारण हैं-मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग। जीव प्रतिसमय ज्ञानावरण आदि सात कर्मों के योग्य पुद्गलों के स्कंधों को ग्रहण करता रहता है। आयुकर्म सदा नहीं बांधता। आबाधाकाल पूर्ण होने पर उन्हें भोग कर छोड़ देता है। अनंतबार गृहीत को ग्रहण कर छोड़ दिया। उसके बाद जब वे ही पुद्गल वैसे ही रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि भावों को लेकर उसी के वैसे ही परिणामों से पुनः कर्मरूप परिणत होते हैं, उसे कर्मद्रव्य परिवर्तन कहते हैं। इसी प्रकार एक जीव के औदारिक, वैक्रियिक और आहारक इन तीनों शरीरों की 6 पर्याप्तियों के योग्य नोकर्म पुद्गल स्कंध ग्रहण किया और भोगकर छोड़ दिया। पूर्वोक्त क्रम के अनुसार जब वे ही नो कर्म पुद्गल उसी रूप, रस, गंध, आदि को लेकर जीव के पुनः नो कर्म रूप से ग्रहण किए जाते हैं उसे नोकर्म द्रव्य परिवर्तन कहते हैं। इसी क्रम में क्षेत्र, काल, भव, भाव परिवर्तन की चर्चा की गई है।

कृति में इसी संदर्भ में कालपरिवर्तन की चर्चा की गई है। जिसमें व्यवहार काल की विशेष संख्याओं का वर्णन है। जो द्रव्यों की पर्यायों को बदलने में सहायक हो, उसे वर्तना कहते हैं। यह काल अत्यंत सूक्ष्म परमाणु के बराबर है और असंख्यात होने के कारण समस्त लोकाकाश से भरा हुआ है अर्थात् कालद्रव्य का एक-एक परमाणु लोकाकाश के एक-एक प्रदेश पर स्थित है।

काल के भेद एवं व्यवहार काल का पूरा गणित आंकड़ों के साथ प्रस्तुत किया है। हमारे शास्त्रों में जो पल्य, सागर, धनुष, योजन आदि के नामों का उल्लेख है उसका पूरा प्रमाण प्रस्तुत किया गया है। इसी में व्यवहार पल्य, उद्धार पल्य, अद्धा पल्य, सागर का गणित-प्रमाण प्रस्तुत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी वेद के अन्तर्गत तीनलोक में सिद्ध जीव कहाँ हैं इसकी चर्चा की गई है। वे अष्टम भूमि अर्थात् तीन भुवन के मस्तक पर 'ईषत्प्राग्भार' नामक 8वीं पृथ्वी पर हैं, जो एक राजू चौड़ी व 7 राजू लंबी है एवं आठ योजन मोटी है।

सिद्धशिला-आठवीं पृथ्वी के मध्य रजतमयी, श्वेत छत्राकार, मनुष्य क्षेत्र के समान गोल, 45 योजन व्यासवाली सिद्धशिला है। सर्वार्थसिद्धि विमान से 12 योजन अन्तराल छोड़कर सिद्धक्षेत्र है।

यहाँ पर सिद्धों के सुख एवं निवास का वर्णन है।

इस करणानुयोग का आधार तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, जम्बूद्वीपपण्णत्ति आदि ग्रंथों के आधार पर लेखिका ने उसे अपनी शैली में ज्ञानवर्धक रूप से प्रस्तुत किया है।

चरणानुयोग

चरणानुयोग की व्याख्या कहते हुए कहा है—

"गृहमेध्यनगाराणां चारित्रोत्पत्तिवृद्धिरक्षाङ्गम्।
चरणानुयोग समयं, सम्यग्ज्ञानं विजानाति।।"

अर्थात्-सम्यग्ज्ञान ही गृहस्थ और मुनियों के चरित्र की उत्पत्ति, वृद्धि और रक्षा के अंगभूत चरणानुयोग शास्त्र को जानता है अर्थात् जिसमें श्रावक और मुनिधर्म का वर्णन किया जाता है, वह चरणानुयोग है।

सर्वप्रथम धर्म का लक्षण प्रस्तुत है। जो प्राणियों को संसार के दुखों से निकाल कर उत्तम सुखों में पहुँचाता है। यह धर्म रत्नत्रय स्वरूप है। रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार पर सम्यग्दर्शन की व्याख्या, उसका तीन मूढ़ता रहित व 8 अंग सहित वर्णन किया है। श्रावक के 70 गुण रयणसार के आधार पर प्रस्तुत हैं, जिनमें 8 मूलगुण, 12 उत्तरगुण का पालन, 7 व्यसन व 25 सम्यक्त्व के दोषों का त्याग, 12 प्रकार की वैराग्य भावना का चिन्तवन, सम्यग्दर्शन के 5 अतिचारों का त्याग एवं भक्तिभावना का समावेश है।

सच्चे देव का 18 दोष रहित लक्षण, सच्चे शास्त्र का लक्षण, सच्चे गुरु का लक्षण प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक शब्द का अर्थ व भावार्थ प्रस्तुत किया गया है। उनकी व्याख्या कर हमारे ज्ञान में वृद्धि की गई है। जिनमें सम्यग्दर्शन के आठ अंग, तीन मूढ़ता, आठ मद (ज्ञान-पूजा-कुल-जाति, बल-ऋद्धि, तप और शरीर) छह आयतन (कुदेव, कुदेव मंदिर, कुशास्त्र, कुशास्त्र के धारक, खोटी तपस्या एवं खोटी तपस्या करने वाले)

25 दोष-सम्यग्दर्शन के 8 अंगों के विपरीत आठ दोष, आठ मद, तीन मूढ़ता, 6 आयतन=25

इसी क्रम में सम्यग्दर्शन की व्याख्या, भेद प्रस्तुत करते हुए-निर्वेद, निन्दा, गर्हा, उपशम, भक्ति, वात्सल्य और अनुकंपा 8 गुणों का परिचय दिया गया है।

सम्यग्ज्ञान की व्याख्या करते हुए कहा है कि-'संशय, विपर्यय एवं अनध्यवसाय रहित पदार्थों को जानना सम्यग्ज्ञान है। इसके 11 अंग 14 पूर्व रूप भेद माने गये हैं अथवा प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग भेद माने गये हैं।'

आ. गुणभद्र का कथन प्रस्तुत करते हुए कहा है-"जो श्रुतस्कंधरूप वृक्ष अनेक धर्मात्मक पदार्थ रूप फूल एवं फलों के भार से अतिशय झुका हुआ है, उन्नत है तथा समीचीन एवं विस्तृत मतिज्ञान रूप जड़ से स्थिर है, उस श्रुतस्कंध वृक्ष के ऊपर बुद्धिमान साधुओं को अपने मनरूपी बंदर को प्रतिदिन रमाना चाहिए। अर्थात् चंचल मन को विषयों की ओर से खींच कर इसे श्रुत के अभ्यास मे लगाने से राग-द्वेष की प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है। इससे संवर पूर्वक कर्मों की निर्जरा होकर मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।"

कृति में सम्यक्चारित्र का वर्णन व भेद कहने के पश्चात् पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत की व्याख्या, इस प्रकार बारह व्रत का वर्णन करने के पश्चात् सल्लेखना के स्वरूप को विविध ग्रंथों के उद्धरण देकर समझाया है। "प्रतिकार रहित उपसर्ग आने पर, दुष्काल होने पर, बुढ़ापा अथवा रोग विशेष के आने पर रत्नत्रय धर्म की आराधना करते हुए शरीर का त्याग करना सल्लेखना है। श्रावक के 12 व्रतों के अंत में संल्लेखना करने का विधान है।" लेखिका ने वसुनंदिश्रावकाचार का संदर्भ देते हुए लिखा है कि 'जो सल्लेखना विधि से मरण करता है वह कम से कम 1 या 2 भव या अधिक से अधिक 7-8 भव ग्रहण कर मोक्ष पा लेता है।'

श्रावक की 11 प्रतिमाओं का वर्णन करते हुए क्षुल्लक-ऐलक का स्वरूप बतलाया है। इन प्रतिमाओं में व्रत, सामायिक, प्रोषधोपवास, सचित्त त्याग, रात्रिभुक्ति त्याग, ब्रह्मचर्य, आरंभ त्याग, परिग्रह त्याग, अनुमति त्याग एवं उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यहाँ पाक्षिक, नैष्ठिक एवं साधक श्रावक के गुण, चर्या के स्वरूप का वर्णन किया गया है। उसकी 53 क्रियाओं का उल्लेख है (8 मूलगुण, 12 व्रत, 12 तप, 1 समता, 11 प्रतिमा, 4 प्रकार का दान, 1 जल जालन, 1 रात्रि भोजन त्याग, 3 दर्शन-ज्ञान-चारित्र)। जीवन के चार आश्रमों का वर्णन करते हुए कैसे भिक्षुक अवस्था तक पहुँचें इसका क्रमिक वर्णन है। गृहस्थों के 6 कर्मों में-इज्या, वार्ता, दत्ति, स्वाध्याय, संयम, तप हैं। इज्या अर्थात् पूजा जिसके नित्यमह, चतुर्मुख, कल्पद्रुम, अष्टान्हिक एवं इन्द्रध्वज प्रकार हैं।

शास्त्र समुच्चयसार ग्रंथ में पूजा के 10 भेद हैं—

(1) देव इन्द्रों द्वारा की जाने वाली पूजा-'महाभद्र' हैं। (2) इन्द्रों द्वारा की जाने वाली पूजा-इन्द्रध्वज पूजा है। (3) चारों प्रकार के देवों द्वारा की जाने वाली पूजा-सर्वतोभद्र' पूजा है। (4) चक्रवर्ती द्वारा की जाने वाली पूजा-चतुर्मुख पूजा है। (5) विद्याधरों द्वारा की जाने वाली पूजा-रथावर्तन पूजा है। (6) महामण्डलीक द्वारा की जाने वाली पूजा-इन्द्र केतु पूजा है। (7) मण्डलेश्वर द्वारा की जाने वाली पूजा-महापूजा है। (8) अर्ध मंडलेश्वर द्वारा की जाने वाली पूजा-महामहिम पूजा है। (9) नंदीश्वर में अष्टान्हिका में की जाने वाली पूजा-अष्टान्हिक पूजा है एवं (10) प्रतिदिन की जाने वाली-दैनिक पूजा है।

भिक्षुक आश्रम अर्थात् अंतिम चतुर्थ आश्रम का वर्णन करते हुए कहा है कि 'भगवान अरहंत देव की दिगंबर अवस्था को धारण करने वाले भिक्षु कहलाते हैं।' इनके अनगार, यति, मुनि और ऋषि चार भेद होते हैं। साधारण साधु अनगार है। जो उपशम-क्षपक श्रेणी में विराजमान हैं वे यति हैं, अवधि-मनःपर्यय व केवलज्ञानी मुनि हैं, ऋद्धिधारी ऋषि हैं। इनमें भी राजर्षि, ब्रह्मर्षि, देवर्षि एवं परमर्षि चार भेद हैं। जिन्हें विक्रिया सिद्धि एवं अक्षीण ऋद्धि प्राप्त है वे राजर्षि हैं। बुद्धि-औषधि ऋद्धि के धारक ब्रह्मर्षि हैं, आकाशगामिनी ऋद्धि के धारक देवर्षि हैं एवं केवलज्ञानी परमर्षि हैं।

श्रावक के पूजन-दान-शील, उपवास चार धर्म हैं जबकि देवपूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान 6 कर्म हैं।

श्रावक के लिए भोजन अर्थात् आहार देने के महान पुण्य का वर्णन करते हुए कहा है कि-'आहारदान देने मात्र से ही श्रावक धन्य कहलाता है तथा पंचाश्चर्य को प्राप्त होता हुआ देवताओं से पूज्य होता है।' कहा गया है कि मुनीश्वरों को आहार देने के पश्चात् शेष अन्न प्रसादरूप ग्रहण करने से उत्तम सुखों को प्राप्त कर क्रमशः मोक्ष को प्राप्त करता है।

श्रावक के लिए सामायिक विधि समझाते हुए उसकी क्रिया-फल का वर्णन किया है। श्री वामदेव ने भावसंग्रह के उद्धरण देकर कहा है-'प्रतिदिन तीनों कालों में श्रावक जिनपूजा पूर्वक सामायिक करें क्योंकि जिनपूजा के बिना सभी सामायिक क्रियाएं दूर ही हैं अर्थात् नहीं हो सकती।' प्रातःकाल उठकर शौच, आचमनपूर्वक प्रभातिक करें। शुद्ध जल से स्नान कर मंत्र स्नान व व्रत स्नान ऐसे तीन स्नान करें। धुले वस्त्र पहिनकर जिनमंदिर में निःसहि का उच्चारण कर ईर्यापथ शुद्धि करके जिनेन्द्र भगवान का स्तवन करें। इसी प्रकार अष्टद्रव्य से पूजा करे। फिर स्वाध्याय करे।

इसी अध्याय में सूतक पातक का वर्णन है। यद्यपि आगम ग्रंथों में पातक शब्द नहीं है। तथापि व्यवहार में प्रयुक्त सूतक-पातक युग्म शब्द का प्रयोग किया गया है। उसके अन्तर्गत घर-परिवार के लोगों का कुछ कालावधि के लिए देवपूजा-आहारदान कार्य वर्जित माने जाते हैं। जातीय बंधुओं में प्रत्यासन्न और अप्रत्यासन्न दो भेद हैं। चार पीढ़ी तक के बंधुवर्ग प्रत्यासन्न हैं इसके आगे अप्रत्यासन्न हैं। जन्म का सूतक चार पीढ़ी तक-10 दिन, पाँचवी पीढ़ी में 6 दिन, 6ठी में 4 दिन, 7वीं में 3 दिन ऐसे ही मरण का जानना। तपस्वियों व राजा को सूतक नहीं लगता। मंत्री, सेनापति, प्रजा, दास एवं दुर्भिक्ष आपत्ति पर मरने से सूतक नहीं लगता। युद्ध में मरने पर सूतक नहीं लगता।

तीन महिने का गर्भस्राव होने पर-3 दिन, तीन से 6 महीने तक-जितने महिने उतने दिन, 6 से 8 महीने तक-10 दिन।

ऐसे ही अन्य प्रसंगों के मरण के सूतक का वर्णन है। रजस्वला स्त्री का अशौच दोष वर्णन किया है।

आचार्यों ने श्रावक की क्रियाओं का वर्णन किया है। यह वर्णन आदिपुराण में भी पूरे विस्तार के साथ वर्णित है। इनमें गर्भान्वय क्रियाएं, दीक्षान्वय की 48 एवं कर्त्रन्वय की 7 क्रियाएं कुल (53+48+7=108) हैं।

गर्भान्वय की 53 क्रियाओं में से प्रारंभ की 13 क्रियाएं कम करने पर शेष 40 वे ही क्रियाएं होती हैं तथा अन्य अवतार, वृत्तलाभ, स्थानलाभ, गणग्रह, पूजाराध्य, पुण्य, यज्ञ, दृढ़चर्या एवं उपयोगिता 8 क्रियाएं अन्य होने से 40+8 कुल 48 क्रियाएं हो जाती हैं।

इस प्रकार गर्भान्वय की 53+दीक्षा की नवीन 8=61 क्रियाएँ हैं। कर्त्रन्वय की 7 क्रियाओं के अन्तर्गत-सज्जाति, सद्गृहीत्व, पारिव्राज्य, सुरेन्द्रता, साम्राज्य, आर्हन्त्य एवं परिनिर्वाण क्रियाएं हैं जिनका संबंध विशेषतः दीक्षा धारण करने योग्य वंश से लेकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षट्कर्म पालन करते हुए दीक्षा ग्रहण कर, सुरेन्द्र पद की प्राप्ति, चक्रवर्ती का साम्राज्य भोगते हुए अरहंतपद प्राप्त कर निर्वाण तक की ऊर्ध्वगामी क्रियाओं का परिचय दिया गया है।

बारह अनुप्रेक्षा गृहस्थ श्रावक जो पंच अणुव्रतों का धारक व पालक है, वह वैराग्य वृत्ति जागृत करने हेतु इन 12 भावनाओं का चिन्तवन करता है। ये वैराग्य की जन्मदात्री भावनाएं होने से माता के समान हैं। इनमें अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ एवं धर्म अनुप्रेक्षा हैं। ये भावनाएं वैराग्य की ओर उन्मुख करती हैं, प्रेरित करती हैं एवं वैराग्यभाव को दृढ़ करती हुई मुनि दीक्षा होने की प्रेरणा देती हैं।

श्रावक धर्म के साथ मुनि धर्म का वर्णन व आचरण का वर्णन किया गया है।

मुनि 28 मूलगुण (5 महाव्रत, 5 समिति, 5 इन्द्रियवश करना, 6 आवश्यक, लोच, आचेलकत्व, स्नानत्याग, क्षितिशयन, अदन्त धावन, खड़े होकर आहार, दिन में एक बार आहार ये मूलगुण हैं। मुनि के छह आवश्यकों में-समता, स्तव, वंदना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान एवं व्युत्सर्ग का समावेश है।

पिंडशुद्धि प्रकरण-पिंड शुद्धि अर्थात् आहार शुद्धि। इसमें उद्गमदोष, उत्पादन दोष, ऐषणादोष, संयोजना दोष, प्रमाणदोष, इंगालदोष, धूमदोष एवं कारण दोष 8 दोष हैं। इस प्रकरण में उद्गम के 16, उत्पादन के 16, ऐषणा के 10 एवं अन्य के 1-1 कुल 46 भेदों का वर्णन किया है। कृति में सभी दोषों के नाम उसकी व्याख्या आदि का सूक्ष्म वर्णन प्रस्तुत है। साधु को इन 46 दोषों से युक्त आहार नहीं करना चाहिए।

इसी परिप्रेक्ष्य में साधु को आहार लेते समय 32 प्रकार के कारणों से अन्तराय हो सकता है। यदि इन 32 प्रकारों में से एक भी कारण हो तो साधु अन्तराय मानकर आहार नहीं लेता या आहार का त्याग कर देता है।

मूलतः साधु का आहार लेने का उद्देश्य खाने के लिए जीना नहीं है अपितु-क्षुधा वेदना को मिटाने, वैय्यावृत्ति करने, सामायिक आदि क्रियाएं करने, संयम का दृढ़ता से पालन करने, प्राणों की चिंता करते हुए धर्मचिंता आदि हेतु आहार ग्रहण करता है। उसका उद्देश्य शरीर को जीवित एवं स्वस्थ रखकर धर्मसाधना, तेरह प्रकार के संयम का पालन करना, रत्नत्रय की सिद्धि हेतु तप में आरूढ़ होना दशधर्मों का पालन करना होता है।

कृति में समाचार का वर्णन करते हुए कहा है-'रागद्वेष रहित प्रवृत्ति को समाचार कहते हैं अथवा निरतिचार मूलगुणों का आचरण समाचार है अथवा प्रमत्तसंयत आदि मुनियों का अहिंसादिरूप आचार समाचार है अथवा सब क्षेत्रों में कायोत्सर्ग आदि आचारों का पालन करना समाचार है।'

समाचार के औधिक व पदविभागिक दो भेद हैं। सामान्य आचार को औधिक कहते हैं इसके 10 भेद हैं। सूर्योदय से अहोरात्र तक मुनियों का जितना आचार है वह सब पदविभागिक है।

इसमें औधिक के-इच्छाकार, मिथ्याकार, तथाकार, आसिका, निषेधिका, आपृच्छा, प्रतिपृच्छा, छंदन, सनियंत्रण व उपसंयत भेद हैं।

पदविभागिक समाचार में कोई उत्साही मुनि गुरु के पास श्रुत पढ़कर अन्य आचार्य के पास पढ़ने के लिए जाना चाहे तो वह गुरु के पास विनय से अन्यत्र जाने की आज्ञा हेतु बार-बार प्रश्न करता है.......आज्ञा पाकर दो या तीन मुनियों के साथ जाता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में आर्यिकाओं का समाचार प्रस्तुत किया है। उनकी वृत्तियों में स्थान, दो साड़ी रखने, बैठकर आहार लेने, निवास आदि का वर्णन किया है।

मुनिसंघ के मूलाचार में पाँच आधार बताये हैं उनका यहाँ प्रस्तुतिकरण किया है। जिनमें आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर एवं गणधर पाँच प्रकार हैं। पूर्वाचार्यों ने एकलविहार का निषेध किया है।

कृति में आचार्य, उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी के लक्षण प्रस्तुत किए हैं।

आचार्य-दर्शन ज्ञान चारित्र तप एवं वीर्याचार का स्वयं आचरण करता है। वे 36 गुणों के धारक होते हैं।

उपाध्याय-जो तत्कालीन परमागम के व्याख्याता हैं। जो शिष्यों को पढ़ाते हैं। इनके 25 गुण होते हैं। वे 11 अंग 14 पूर्व के ज्ञाता होते हैं। इन अंगों के पठन-पाठन करने से 25 गुणधारी कहलाते हैं। (देखे पृ. 133)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधु-28 मूलगुणों का पालन करते हैं। 18 हजार शील के भेदों के धारक 84 लाख उत्तर गुणों के पालक साधु परमेष्ठी हैं।

यहाँ चारित्र के 13 भेद बताये हैं जिनमें (5 महाव्रत, 5 समिति, 3 गुप्ति) करण के 13 भेद (षट्आवश्यक क्रिया, पंचपरमेष्ठी को नमस्कार, अ:सही व नि:सही)

परमेष्ठी, प्रतिक्रमण को समझाते हुए कायोत्सर्ग की व्याख्या करते हुए उसके 28 कायोत्सर्ग भेदों को प्रस्तुत किया है।

कृति में अनगार धर्मामृत के आधार से मुनि की दिनचर्या की चर्चा प्रस्तुत की गई है। 'संयमी साधु शुद्ध स्वात्मोपलब्धि के प्रधान कारणभूत समाधि की सिद्धि के लिए अहर्निश स्वाध्याय आदि परिकर्म को विधिवत् करे।' इसमें प्रात:काल से अहोरात्रि तक की चर्या का निर्देश है। वह नियमानुसार लघु श्रुतभक्ति, आचार्यभक्ति आदि करते हुए नियमानुसार प्रतिक्रमण करे। सूर्योदय से दो घड़ी तक देववंदना करे। इसमें ईर्यापथ शुद्धि करके सामायिक स्वीकार करके चैत्यभक्ति एवं पंचमहागुरुभक्ति करे। अंत में समाधिभक्ति करे। अवशिष्ट समय में आत्मध्यान करे।

सूर्योदय से दो घड़ी बीतने पर माध्यान्हिक देववंदना करे। लघुश्रुत व आचार्यभक्ति पूर्वक आचार्य वंदना करे। यदि उपवास हो तो ध्यान-आराधना करे अन्यथा गुरुवंदना कर गोचरी को जावे। पश्चात् गुरु के पास आकर लघुसिद्धभक्ति बोलकर प्रत्याख्यान ग्रहणकर, आचार्यभक्ति द्वारा आचार्य की वंदना कर गोचरी संबंधी दोषों का प्रतिक्रमण करे। पुन: अपराह्िक स्वाध्याय, प्रतिष्ठापन कर सूर्यास्त से दो घड़ी पूर्व विसर्जित करे। अनन्तर दैविसिक प्रतिक्रमण करे। अंत में रात्रि में सोने से पूर्व लघु योग भक्ति बोलकर-"मैं आज रात्रि में इसी वसति में रहूँगा" ऐसा नियम लेकर पुन: लघुश्रुत आचार्य भक्ति द्वारा चार घड़ी पर्यंत शयन करे।

साधु की नैमित्तिक क्रियाओं की चर्चा करते हुए प्रत्येक चतुर्दशी, अष्टमी, अष्टान्हिका पर्व में कैसी कितनी भक्तियाँ करनी चाहिए-यह समझाया है। उदाहरण स्वरूप चतुर्दशी के दिन देववंदना में सिद्ध, चैत्य, श्रुत, पंचगुरु एवं शांति ये 5 भक्तियाँ करनी चाहिए। अथवा चैत्य-पंचगुरु के मध्य में श्रुतभक्ति करके तीन भक्तियां करनी चाहिए। अष्टमी के दिन सिद्ध, श्रुत भक्ति, आलोचना सहित चारित्रभक्ति करके 'इच्छामि भँते अट्ठमियम्हि' बोलकर शांतिभक्ति करके समाधिभक्ति करनी चाहिए। अष्टान्हिका पर्व में पौर्वान्हिक स्वाध्याय के बाद सभी साधु मिलकर सिद्ध, नंदीश्वर, पंचगुरु एवं शांतिभक्ति का पाठ करें।

साधु के वर्षायोग का वर्णन करते हुए उनकी स्थापना (आषाढ़ शुक्ला 13 के दिन 'मंगलगोचर मध्यान्ह वंदना' करके आहार के बाद वृहत् सिद्धभक्ति योगपूर्वक उपवास ग्रहण करके आचार्यभक्ति, वृहत् शांतिभक्ति करे। अनन्तर आषाढ़ शुक्ला 14 को पूर्वरात्रि में वर्षायोग प्रतिष्ठापन में क्रियाकलाप के आधार से सिद्धभक्ति, योगभक्ति, चैत्यभक्ति करके वर्षायोग ग्रहण करें।

इसी तरह कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की पश्चिम रात्रि में वर्षायोग का निष्ठापन करके 'रात्रि प्रतिक्रमण' कर पुन: वीर निर्वाण क्रिया करें। कृति में आगे मुनियों के दशधर्मों की चर्चा प्रस्तुत की गई है। इसी संदर्भ में 16 भावनाओं का चिन्तवन करना चाहिए। उसमें दर्शनविशुद्धि का होना आवश्यक है। ये भावनाएं तीर्थंकर प्रकृति के बंध का कारण हैं। ऐसा उल्लेख तिलोयपण्णत्ति में है कि "अनेक तपस्वी मुनियों को अनेक प्रकार की ऋद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। इनमें मुख्य हैं बुद्धि ऋद्धि, विक्रिया, क्रिया, तप, बल, औषधि, रस एवं क्षेत्र ऋद्धि। इनमें क्रमश: बुद्धि ऋद्धि के 18, विक्रिया के 11, क्रियाके 2, तप के 7,बल के 3, औषधि के 8, रस के 6 भेद और क्षेत्र के 2 ऐसे कुल 57 भेद हैं। (विशेष हेतु देखे पृ. 14)

कृति में सल्लेखना का उल्लेख करते हुए उसके पंडित-पंडित, पंडित, बाल-पंडित, बालमरण एवं बाल-बाल मरण, ऐसे 5 भेदों की चर्चा की है। इसमें केवलीमरण पंडित-पंडित मरण है। छठे से 11वें गुणस्थान तक का पंडित मरण है। देश संयम का मरण बाल पंडित मरण है, अविरत सम्यग्दृष्टि का बालमरण है जबकि मिथ्यादृष्टि, अपघात आदि बाल मरण हैं।

इसी के साथ इन पंडित मरण के प्रायोगमन, भक्तप्रतिज्ञा एवं इंगिनीमरण के भेदों को समझाया है। इसी के साथ 12 वर्ष के भीतर मरण को स्वीकार करने वाले मुनि कैसे 12 वर्ष व्यतीत करें इसका वर्णन करते हुए कहा है कि प्रथम 4 वर्ष अनशन, अवमौदर्य, सर्वतोभद्र, एकावली, दिव्यावली, रत्नावली, सिंहावलोकन तप द्वारा बिताये। आगे के 4 वर्ष रसत्याग करके पूर्ण करें। 2 वर्ष कभी अल्प, कभी नीरस भोजन करे। पुन: 1 वर्ष अल्प आहार में व्यतीत करे। बाद के 6 महीने तक अनुत्कृष्ट तप करें। बाद के 6 माह सर्वोत्कृष्ट तप करके पूरा करे। इसी के साथ निर्यापक जो सल्लेखना कराये उन 48 साधुओं का कार्य विवरण है। (देखें पृ. 147)

कृति में पुलाक, वकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ एवं स्नातक 5 प्रकार के मुनियों की चर्चा की है। संयमी मुनियों की संख्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

89999997 (तीन कम नौ करोड़) बताई है। इसी प्रकरण या अनुयोग में ध्यान की व्याख्या, उसके 4 भेद (आर्त-रौद्र-धर्म और शुक्ल) उपभेदों की चर्चा प्रस्तुत है। इनमें धर्मध्यान के 4 भेद आज्ञाविचय, अपाय, विपाक एवं संस्थानविचय की स्पष्टता की है। अन्यत्र प्रतिक्रमण ग्रंथत्रयी में जो 10 भेद माने गये हैं। उनका उल्लेख है। (पृ. 149) संस्थानविचय के पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, रूपातीत भेदों की चर्चा की गई है। इसमें पिंडस्थ ध्यान की पार्थिवी, आग्नेयी, श्वसना, वायवी एवं तत्त्वरूपवती धारणाओं की चर्चा है। अंत में शुक्ल ध्यान का लक्षण प्रस्तुत करते हुए उसके पृथकत्व वितर्क, एकत्व वितर्क, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति एवं व्युपरतक्रियानिर्वृत्ति भेदों की चर्चा की गई हैं। उसके लक्षणों को समझाया गया है। इन चार में से प्रथम दो छद्मस्थ योगी-12वें गुणस्थान पर्यन्त श्रुतकेवलियों के होते हैं, अंतिम दो केवलज्ञानियों के होते हैं।

लेखिका आर्यिका जी ने किन ग्रंथों से ये वर्णन प्रस्तुत किए हैं उनका उल्लेख करते हुए विशेष ज्ञान हेतु रत्नकरण्ड-श्रावकाचार, पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय, सागारधर्मामृत, मूलाचार, भगवती आराधना, चारित्रसार, आचारसार, अनगार धर्मामृत ग्रंथों के स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी है।

द्रव्यानुयोग

द्रव्यानुयोग के गुणों का चित्रण करते हुए कहा है—

"जीवाजीव सुतत्त्वे, पुण्यापुण्ये च बन्धमोक्षौ च।
द्रव्यानुयोग दीपः, श्रुतविद्यालोकमातनुते।।"

अर्थात् द्रव्यानुयोगरूपी दीपक जीव-अजीव रूप सुतत्त्वों को, पुण्य-पाप और बंध-मोक्ष का तथा भावरूपी प्रकाश को विस्तृत करता है। अर्थात् जिसमें छहों द्रव्यों का,पुण्य-पाप और बंध-मोक्ष का विस्तृत वर्णन रहता है, वह द्रव्यानुयोग है।

सर्वप्रथम द्रव्य का लक्षण 'सत्' कहते हुए जीव-पुद्गल, धर्म-अधर्म-आकाश एवं काल द्रव्यों के नाम प्रस्तुत किए हैं। इसमें तत्त्वार्थसूत्र के आधार पर जीव द्रव्य को समझने हेतु नव अधिकारों को बताया है जिनमें-जीवत्व, उपयोगमयत्व, अमूर्तिकत्व, कर्तृत्व, स्वदेह परिणामत्व, भोक्तृत्व, संसारित्व, सिद्धत्व एवं स्वभाव से उर्ध्वगमन ये नव अधिकार होते हैं। इनके लक्षणों को समझाते हुए आगे 14 गुणस्थानों का वर्णन करके उनके लक्षणों को या जो इन गुणस्थानों में प्रतिष्ठित होता है उसकी स्थिति कैसी बनती है इसे समझाते हुए साधक की सिद्धावस्था तक का वर्णन किया है। लिखा है-'इन चौदह गुणस्थानों के अनन्तर गुणस्थानातीत सिद्ध होते हैं, वे अपर कर्मों से रहित, शांतिमय, निरंजन, सम्यक्त्व आदि गुणों से सहित कृतकृत्य हो चुके हैं और लोक के अग्रभाग में निवास करने वाले हैं-उन्हें सिद्ध कहते हैं।'

कृति में जीवसमास, पर्याप्ति उसके भेद (आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास भाषा और मन) का परिचय दिया है। प्राण उसके भेदों की चर्चा की है। जैनदर्शन में 'मार्गणा' विशेष शब्द प्रयोग है, जिसका अर्थ है 'अन्वेषण' जिन भावों द्वारा अथवा जिन पर्यायों में जीव का अन्वेषण किया जावे उसका नाम मार्गणा है। मार्गणा के 14 भेद हैं जिनमें "गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञा एवं आहार है।' पुनश्च प्रत्येक वर्गणा का लक्षण भेद-उपभेद समझाये गये हैं। (देखिए पृष्ठ 159 से 162)

इसके पश्चात् उपयोग अर्थात् जीव के भाव को समझाते हुए कहा है कि जीव का जो भाव ज्ञेय वस्तु को ग्रहण करने के लिए प्रवृत्त होता है उसको उपयोग कहते हैं। यह साकार व निराकार है। साकार के अन्तर्गत 5 ज्ञान व 3 कुज्ञान हैं जबकि चार प्रकार का दर्शन निराकारोपयोग है। इस प्रकार के गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, चौदह मार्गणा और उपयोग सब मिलाकर 20 प्ररूपणाएं होती हैं।

इसी क्रम में अजीव द्रव्य, उसके लक्षण, प्रकार, पर्यायें समझाई गई हैं। उसमें पाँच अस्तिकाय (जीव-पुद्गल, धर्म-अधर्म, आकाश को समझाकर छहों द्रव्यों के प्रदेशों की स्थिति समझाई है।

तत्त्वार्थ सूत्र के आधार पर प्रमाण और नयों द्वारा जीवादि पदार्थों के बोध को प्रमाण के वर्णन के अन्तर्गत समझाया है। जिसमें सम्यग्ज्ञान प्रमाण है। इसके प्रत्यक्ष व परोक्ष दो भेद हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में पदार्थ को जानने की पद्धति जैसे-अवग्रह, ईहा, अवाय एवं धारणा को प्रस्तुत कर अवग्रह के 12 प्रकारों को सोदाहरण समझाया गया है। इसको गणितीय स्वरूप में इस प्रकार कहा गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ईहा-अवाय-धारणा, के भी 12-12 भेद हैं अतः कुल चारों के 12×4=48 भेद हुए। इनमें से प्रत्येक का ज्ञान 5 इन्द्रिय व 1 मन से होता है अतः 48×6=288 भेद होते हैं। कृति में आगे श्रुतज्ञान के लक्षण-भेद प्रस्तुत करते हुए जिनके अक्षरात्मक व अनक्षरात्मक मुख्य दो भेद कहे हैं। लेखिका ने यह प्रस्तुत किया है कि श्रुतज्ञान जो द्वादशांग रूप है उसमें समस्त पद 1 अरब, 12 करोड़, 83 लाख, 58 हजार-पाँच मध्यम पद हैं। जिनमें

(1) आचारांग—18 हजार पद-मुनिचर्या का वर्णन हैं।

(2) सूत्रकृतांग—36 हजार पद-इसमें सूत्ररूप व्यवहार क्रिया। स्व-समय का वर्णन हैं।

(3) स्थानांग—42 हजार पद-समस्त द्रव्यों के एक से लेकर समस्त संभव विकल्पों का वर्णन हैं।

(4) समवायांग—1 लाख 64 हजार पद समस्त द्रव्यों के पारस्परिक सादृश्य का वर्णन हैं।

(5) व्याख्या प्रज्ञप्ति—2 लाख, 28 हजार पद-इसमें 60 हजार प्रश्नों के उत्तर हैं।

(6) ज्ञातृकथा—5 लाख 56 हजार पद हैं। इनमें गणधर आदि की कथाएं तीर्थंकरों का महत्त्व वर्णित है।

(7) उपासकाध्ययन—11 लाख 70 हजार पद हैं। जिसमें श्रावकाचार वर्णन है।

(8) अन्तःकृतदशांग—23 लाख 28 हजार पद हैं। इसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय के 10-10 मुनियों के तीव्र उपसर्ग सहन करके मुक्ति का कथन हैं।

(9) अनुत्तरौपपादिक दशांग में 92 लाख 44 हजार पद हैं। प्रत्येक तीर्थंकर के समय में 10-10 मुनियों के घोर उपसर्ग को सहन कर विजय आदि अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होने का कथन हैं।

(10) प्रश्न व्याकरण में 93 लाख 16 हजार पद हैं इनमें नष्ट, मुष्टि, चिंता आदि प्रश्नों के अनुसार हानि-लाभ आदि बतलाने का विवरण है।

(11) विपाकसूत्र में 18 लाख 40 हजार पद हैं, इसमें कर्मों के फल देने का विशद वर्णन हैं।

(12) दृष्टिवाद में 1 अरब 86 करोड़, 85 लाख 6 हजार 5 पद हैं। इनमें 363 मिथ्यामतों का वर्णन एवं उनके निराकरण का वर्णन है। इनके 5 भेद हैं-परिकर्म, सूत्र, प्रथमानुयोग, पूर्वगत एवं चूलिका। कृति में इन पांचों के विवरण शास्त्र उनके पद का विषद वर्णन प्रस्तुत है। (देखे पृष्ठ 68 से 170)

कृति में प्रकारान्त से प्रमाण के भेद प्रभेदों का वर्णन किया है एवं उसके प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रमाण की व्याख्या भेद-प्रभेद को समझाया गया है।

नय—मूलतः नय अर्थात् पदार्थ के एक देश को ग्रहण करने वाले ज्ञाता के अभिप्राय विशेष को नय कहते हैं। इसके मूल 9 भेद हैं इन्हीं के द्वारा पदार्थ को पूर्णरूप से जाना जा सकता हैं वे हैं-द्रव्यार्थिकनय, पर्यायार्थिक नय, नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ एवं एवंभूत।

इन सभी भेदोपभेदों को सोदाहरण समझाया गया है। इसी परिप्रेक्ष्य में अध्यात्म की अपेक्षा निश्चय व्यवहार नय को प्रस्तुत किया है। कहा है—'निश्चयनय अभेदोपचार से पदार्थ को जानता है अर्थात् अभेद को विषय करता है। व्यवहारनय भेदोपचार से पदार्थ को जानता है अर्थात् भेद को विषय करता है। इसी शृंखला में इन नयों के भेदोपभेदों का स्वरूप समझाया है।'

सप्तभंगी—कृति में सप्तभंगी को समझाते हुए लिखा है—

"प्रश्नवशादेकस्मिन् वस्तुन्यविरोधेन विधिप्रतिषेधकल्पना सप्तभंगी।"

अर्थात् प्रश्न के निमित्त से एक ही वस्तु में प्रत्यक्षादि प्रमाणों से अविरुद्ध विधि और प्रतिषेध की कल्पना सप्तभंगी है। यथा-स्यादस्तिजीवः। स्यान्नास्ति जीवः। स्यादस्ति नास्ति जीवः। स्यादवक्तव्यो जीवः। स्यादस्ति अवक्तव्यो जीवः। स्यान्नास्ति अवक्तव्यो जीवः। स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्यो जीवः।।

"स्व द्रव्य क्षेत्र, काल, भाव और भव की अपेक्षा जीव 'अस्तिरूप' है। पर द्रव्यादि चतुष्टय की अपेक्षा से जीव नास्ति रूप है। क्रम से स्व-पर चतुष्टय की अपेक्षा जीव अस्ति नास्ति रूप है। युगपत् स्वपरचतुष्टय की अपेक्षा से जीव अवक्तव्य रूप है। स्व-चतुष्टय की विविक्षा करने से एवं युगपत् दोनों धर्मों को न कह सकने से जीव अस्ति अवक्तव्य हैं पर चतुष्टय की विविक्षा करने एवं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युगपत् दोनों धर्मों को न कह सकने से जीव नास्ति अवक्तव्य है। स्वपर चतुष्टय की विविक्षा से एवं युगपत दोनों धर्मों को न कह सकने से जीव अस्ति-नास्ति अवक्तव्य है।

इन नयों को प्रश्नोत्तरी के माध्यम से समझाया है। मूलतः वस्तु का मूल्यांकन 7 ही प्रकार से संभव है।

इसी के साथ सम्यक् एकांत, मिथ्या एकांत, सम्यक् अनेकांत एवं मिथ्या अनेकांत को समझाया गया है।

आगे जीव के असाधारण पाँच भावों को जो उसके स्वतत्त्व कहलाते हैं उन्हें समझाया है जो 5 हैं (औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदायिक एवं पारिणामिक)

दर्शन समीक्षा—इस प्रकरण के अन्तर्गत दर्शन को समझाते हुए कहा है कि जिसके द्वारा वस्तु तत्व का निर्णय किया जाता है वह दर्शन शास्त्र है। "दृश्यते निर्णीयते वस्तुतत्त्वमनेनेति दर्शनम्" अर्थात् दर्शन शास्त्र तर्क-वितर्क मन्थन में परीक्षा स्वरूप हैं जो कि तत्त्वों के निर्णय में प्रयोजक हैं।

जैसे यह संसार नित्य है या अनित्य? इसका स्रष्टा कोई है या नहीं? आत्मा का स्वरूप क्या है? इसका पुनर्जन्म होता है या नहीं? इत्यादि प्रश्नों का समुचित उत्तर देना दर्शन शास्त्र का काम है।

इसमें भारतीय व पाश्चात्य दर्शन दो भाग हैं।

वैदिक दर्शन में मुख्यतः साँख्य, वेदान्त, मीमांसा, योग, न्याय तथा वैशेषिक दर्शन हैं।

अवैदिक दर्शन में-जैन-बौद्ध, चार्वाक माने गये हैं। इसी प्रकरण में इन सभी दर्शनों की विवेचना करते हुए उनके स्वरूप आदि विशेषताओं को समझाया गया है।

कृति में मोक्षमार्ग को प्रस्तुत करते हुए निश्चय व व्यवहार मोक्षमार्ग को स्पष्ट किया गया है। जैसे-सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान एवं सम्यग्चारित्र तीनों की एकता व्यवहारनय से मोक्ष का कारण है और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रमयी निज आत्मा निश्चयनय से मोक्ष का कारण है क्योंकि आत्मा को छोड़कर अन्य द्रव्य में रत्नत्रय नहीं रहता। इस कारण से रत्नत्रयमयी आत्मा ही निश्चयनय से मोक्ष का कारण है। इन भेदों को कृति में समझाते हुए उसके स्वरूप, आदि का कथन किया है। (विशेष ज्ञान हेतु देखे पृष्ठ 185 से 190)

कर्म सिद्धांत की चर्चा करते हुए उसके बंध-खिरने की अवस्था आदि के वर्णन के साथ 8 कर्मों की चर्चा उसके उदाहरण देकर समझाया गया है। उसे प्रतीकात्मक रूप में कहा है यथा—

ज्ञानावरण—जो आत्मा के गुणों को प्रकट न होने दे-देवता के मुख पर पड़ा हुआ वस्त्र।

दर्शनावरण—जो आत्मा के दर्शन न होने दे-राजा का पहरेदार।

वेदनीय—जो सुख-दुख का वेदन कराये-शहद से लपेटी तलवार की धार।

मोहनीय—जो आत्मा को मोहित करे जैसे मदिरापान।

आयु—जो जीव को उस-उस पर्याय में रोके रहे-सांकल-काठ का यंत्र।

नाम—जो अनेक तरह के शरीर की रचना करे-जैसे चित्रकार।

गोत्र—जो ऊँच-नीचपने को प्राप्त करावे-जैसे कुंभकार।

अंतराय—जो दाता और पात्र में अन्तर-व्यवधान करे जैसे भंडारी राजा को दान देने से रोके।

कृति में पुनश्च इन कर्मों के भेदोपभेदों का वर्णन है। (देखे पृष्ठ 195 से 202)

इन भेदोपभेदों के पश्चात् आठों कर्मों के आस्रव के कारणों को प्रस्तुत किया है।

ज्ञानावरण-दर्शनावरण कर्म के आस्रव हैं:-ज्ञान और दर्शन में किए गए प्रदोष, निन्हव, मात्सर्य, अन्तराय, आसादन और उपघात।

वेदनीय के आस्रव-निज, पर तथा दोनों के विषय में स्थित दुख-शोक, ताप, क्रंदन, वध और परिदेवन। इसी प्रकार अन्य कर्मों का भी वर्णन है।

कृति में तीर्थंकर पद के आस्रव में 16 प्रकार या कारण बताये हैं। जिनमें दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्तप, शक्तितस्त्याग, साधु समाधि, वैय्यावृत्तकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना एवं प्रवचन वात्सल्य। कर्मबंध के मुख्य कारण हैं मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग। इनके भेदोपभेद प्रस्तुत किए गये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

363 मत-जिसमें सर्वथा एकनय का ही ग्रहण पाया जाता है, ऐसे जो एकांत मत हैं।

इनमें क्रियावादियों के 180, अक्रियावादियों के 84, अज्ञानवादियों के 67, वैनयिकवादियों के 32 भेद हैं। आर्यिका माताजी ने इन 363 मतों के भेदों के कारण भी संख्या में प्रस्तुत किए हैं। (विशेष समझने हेतु देखें पृ. संख्या 207 से 209)

मुक्ति के कारण—इसमें सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को मोक्षमार्ग माना गया है। इसको लब्धि का अर्थ बताते हुए उनके 5
प्रकारों को प्रस्तुत किया है। ये पांच लब्धियाँ हैं-(1) क्षयोपशम (2) विशुद्धि (3) देशना (4) प्रायोग्य (5) करण। इनमें प्रथम चार साधारण हैं जो भव्य-अभव्य दोनों को होती हैं परंतु 5वीं करणलब्धि-सम्यक्त्व और चारित्र की ओर झुके हुए भव्यजीव को ही होती है।

क्षयोपशमलब्धि—अशुभ ज्ञानावरण आदि कर्मों का अनुभाग जिस काल में समय-समय पर अनन्तगुना घटता हुआ उदय को प्राप्त होवे उस काल को क्षयोपशम लब्धि कहते हैं।

विशुद्धिलब्धि—क्षयोपशम लब्धि के जीव के साता आदि प्रकृति के लिए बंधन के कारणभूत जो शुद्ध परिणाम हैं वह विशुद्धि लब्धि है।

देशनालब्धि—सच्चे तत्त्वों का उपदेश देने वाले आचार्य का लाभ या उपदेश का लाभ होना देशनालब्धि है। नरक में चूँकि उपदेशक नहीं हैं, अतः वहाँ पूर्वभव के श्रवण किए गये उपदेशों के संस्कार के बल से देशनालब्धि होकर सम्यक्त्व हो सकता है।

प्रायोग्य लब्धि—पूर्वोक्त तीन लब्धि वाला जीव हर समय विशुद्धि की बढ़ोत्तरी होने से आयु के बिना सात कर्मों की स्थिति घटाता हुआ कर्मों के फल देने की शक्ति को कमजोर कर दे, ऐसे कार्य की योग्यता प्रायोग्य लब्धि है।

करणलब्धि—इस प्रकार अभव्य के भी योग्य 4 लब्धिरूप परिणामों को समाप्त कर भव्यजीव ही अधःप्रवृत्त, अपूर्व व अनिवृत्तिकरण इन तीन परिणामों को करता है ये तीनों करण अन्तर्मुहूर्त में हो जाते हैं और तीनों का काल भी पृथक्-पृथक् अन्तर्मुहूर्त है।

इसी के अन्तर्गत तीनों कारणों का स्वरूप, प्रकार प्रस्तुत करते हुए देश चारित्र एवं सकल चारित्र की व्याख्या एवं उसके कारणों को दर्शाया है एवं कर्मों के नाश का कारण भी प्रस्तुत है। किस गुणस्थान में कौन से कर्मों का नाश होता है और कैसे 63 प्रकृत्तियों का नाश करके महामुनि अर्हंत बनते हैं।

कृति में केवली के कवलाहार का निराकरण करते हुए कहा है कि केवली के मोहनीयकर्म का अभाव होने से राग-द्वेष नष्ट हो जाते हैं एवं ज्ञानावरण के अभाव से इन्द्रिय जनित ज्ञान भी नष्ट हो जाता है। अर्थात् सुख-दुख नहीं रहते। इस कारण क्षुधादि परीषह नहीं रहते। अतः उन्हें दूर करने के लिए आहारादि संभव नहीं। उनके औदारिक शरीर के योग्य उत्तम कर्म परमाणु प्रति समय आते रहते हैं तथा नोकर्म वर्गणा को ग्रहण करने का नाम ही आहारवर्गणा है। उसका उद्‌भव केवली को है। उसमें-ओज, लोप, मानस, केवल, कर्म और नोकर्म हैं जिनमें केवली के कर्म-नोकर्म ये दो आहार होते हैं कवलाहार नहीं।

कृति में 72 प्रकृतियों के नाम प्रस्तुत किए हैं।

मुक्तजीव अलोकाकाश के बाहर नहीं जाते क्योंकि वहाँ धर्म द्रव्य नहीं है। सिद्धों की अवगाहना 525 धनुष हैं। जघन्य 3.5 अरत्नि प्रमाण है।

एक समय में एक ही जीव सिद्ध होता है अधिक से अधिक एक समय में 108 जीव सिद्ध होते हैं।

अन्त में सिद्धपरमेष्ठी के आठ गुणों को प्रस्तुत किया है।

''सम्मत्तणाणदंसण वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघुमव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।''

सिद्धों के 8 कर्मों के क्षय से आठ गुण प्रकट होते हैं। मोहनीय कर्म के क्षय से सम्यक्त्व, ज्ञानावरण के क्षय से केवलज्ञान, दर्शनावरण के क्षय से केवलदर्शन, अंतराय कर्म के क्षय से अनंतवीर्य, नामकर्म के अभाव से सूक्ष्मत्व, आयुकर्म के अभाव से अवगाहनत्व, गोत्रकर्म के अभाव से अगुरुलघु तथा वेदनीय कर्म के अभाव से अव्याबाध सुख, सिद्धों में ये 8 गुण होते हैं।

वास्तव में माताजी का यह उपकार है कि अनेक आगम ग्रंथों का दोहन एक ही ग्रंथ में प्रस्तुत कर पाठकों को ज्ञान प्राप्ति की सुविधा प्रदान कराई है। इस ग्रंथ के अध्ययन से अल्पज्ञ भी जैन दर्शन का ज्ञान प्राप्त कर उसके विशेष अध्ययन के लिए प्रस्तुत हो सकता है।

यह तो गागर में सागर भरने की बात है। इस आलेख में कृति का मात्र आचमन ही प्रस्तुत है अधिक ज्ञान हेतु पूरे ग्रंथ का स्वाध्याय कर विशेष ज्ञान प्राप्ति के हेतु स्वयं को प्रस्तुत किया जा सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरी स्मृतियाँ : एक अध्ययन

लेखक—डॉ. कपूरचंद जैन, खतौली
(अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, श्री कुंदकुंद पी.जी. कालेज, खतौली)

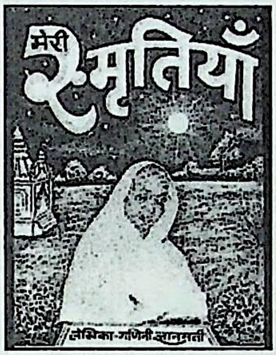

हिन्दी साहित्य को जैन साहित्यकारों की सबसे बड़ी देन एक नई विद्या को आरंभ करने के रूप में हैं। पं. बनारसीदास ने अर्ध कथानक लिखकर हिन्दी में 'आत्मकथा' विद्या का प्रणयन किया था। इसके बाद अनेक जैन-अजैन विभूतियों ने अपनी आत्मकथाएँ लिखीं किन्तु जो प्रसिद्धि पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी द्वारा लिखित 'मेरी जीवन गाथा' को मिली, वैसी अन्य किसी जैन महापुरुष की आत्मकथा को नहीं मिली। वर्तमान में राष्ट्रगौरव आर्यिकाशिरोमणि गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित 'मेरी स्मृतियाँ' ने जो ख्याति अर्जित की है, वह अपना उदाहरण आप है। पूज्य माताजी ने अनेक दुरूह जैन आगम ग्रंथों की टीका लिखकर जैन साहित्य की जो सेवा की है, वह बेमिशाल है। संस्कृति के संरक्षण में माताजी की प्रेरणा से निर्मित 'जम्बूद्वीप' उनकी कीर्ति कौमुदी को दिग्दिगन्तव्यापिनी बना रहा है और 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' बनाता रहेगा।

मेरी स्मृतियाँ का दूसरा संस्करण मेरे सामने है किन्तु वस्तुतः यह दूसरा नहीं तीसरा संस्करण है और वह भी पूर्णतः परिवर्धित। 1984 में 'मेरी स्मृतियाँ' एक छोटी पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुई थी। 1990 में यह एक मोटी पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई और अब यह अपने वृहद वर्तमान रूप में ईसवी सन् 2004 में प्रकाशित हुई है। इसका प्रकाशन दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. द्वारा किया गया है।

लगभग 600 पृष्ठों में लिखित 'मेरी स्मृतियाँ' में माताजी की 1990 तक की तो विस्तृत स्मृतियाँ हैं, उसके आगे के 14 वर्ष अर्थात् सन् 2004 तक की स्मृतियों को संक्षेप में लेखनीबद्ध किया गया है। आत्मप्रशंसा के भय से अनेक प्रकरण छोड़ दिये गये हैं। जैसा कि 'कैसे लिखी गई मेरी स्मृतियाँ' शीर्षक भूमिका में आर्यिका चंदनामती जी ने लिखा भी है-'......अरुचिपूर्ण भावना से लिखी इस कृति को देखकर हमें पूरा संतोष तो नहीं हुआ, क्योंकि हमने स्वयं 20 वर्षों से पूज्य माताजी के पास रहते हुए अनेकों खट्टे-मीठे अनुभव ऐसे प्राप्त करते देखे हैं, जिनका इसमें उल्लेख ही नहीं किया गया है। शायद आत्मप्रशंसा के भय से ही वे प्रकरण छोड़े गये हैं।'

इसी भूमिका में आर्यिका चंदनामती जी ने ठीक ही लिखा है— 'किसी भी लेखक के लिए मौलिक ग्रंथ रचना अनुवाद कार्य करना तथा अन्य किसी महापुरुष के जीवनवृत्त का लेखनी द्वारा चित्रांकन करना जितना दुरूह कार्य है, उससे कहीं अधिक कठिन कार्य अपने जीवन की स्मृतियों को अपनी ही लेखनी द्वारा बद्ध करना है।''

'मेरी स्मृतियाँ' का प्रारंभ माताजी की सात-आठ वर्ष की अवस्था से होता है। स्वयं माताजी ने लिखा है— 'जब सात-आठ वर्ष की मेरी अवस्था होगी, ...' ग्रंथ में उस सबसे महत्वपूर्ण प्रसंग को लिखा गया है, जिसने एक बालिका को आर्यिका बनने की प्रेरणा दी। उसी घटना ने उन्हें विवाह से वैराग्य की ओर बढ़ा दिया— 'उस लघुवय में ही एक बार पाठशाला में लड़कों ने 'अकलंक निकलंक' नाटक खेला था। जिसमें अकलंक और उनके पिता के संवाद में अकलंक ने एक पंक्ति कही— **''प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरं''** कीचड़ में पैर रखकर धोने की अपेक्षा कीचड़ में पैर नहीं रखना ही अच्छा है, वैसे ही विवाह करके पुनः छोड़कर दीक्षा लेने की अपेक्षा विवाह नहीं करना ही उत्तम है। यह पंक्ति मेरे हृदय में पूर्णतया उतर गई और उसी क्षण से लेकर मैं हमेशा सोचती रहती तथा यह पंक्ति मन में रटा करती।'

उपरोक्त उद्धरण से हम एक बात और सिद्ध करना चाहते हैं कि 'मेरी स्मृतियाँ' में जगह-जगह सूक्तियों, उद्धरणों, आगम वाक्यों को दिया गया है। इस संदर्भ में पृ. 12, 61, 87, 88, 546 आदि विशेष दृष्टव्य हैं।

पूज्य माताजी जिस स्थान, विशेषतः तीर्थों की यात्रा का वर्णन करती हैं, उसका पूरा इतिहास लिख देती हैं। इस दृष्टि से पावापुरी (161), चम्पापुर (161) पावापुरी आदि के वर्णन दृष्टव्य हैं।

माताजी की शैली की यह विशेषता है कि वे यदि कुछ अतिरिक्त कहना चाहती हैं तो उसे फुटनोटं में देती हैं। स्वयं उन्हें लगता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है कि इस शब्द का अर्थ पाठकों को कठिन लगेगा या देशान्तर में इसका अन्य अर्थ हो सकता है तो उस शब्द का अर्थ फुटनोट में दे देती हैं। जैसे पृष्ठ 57 के फुटनोट में लिखा गया है–'यहाँ बाई शब्द वात्सल्यपूर्वक बेटी वाचक है।'

इस ग्रंथ से ऐसे अनेक रहस्य खुलते हैं, जो पाठकों को कभी मिल ही नहीं सकते थे। इस संदर्भ में जम्बूद्वीप निर्माण प्रकरण या विभिन्न विधानों के प्रकरणों को लिया जा सकता है। विभिन्न ग्रंथों की रचना किस प्रेरणा से और कब माताजी ने की? इसका खुलासा भी इन स्मृतियों से हुआ है। कहीं-कहीं तो माताजी लिखते-लिखते एकदम वैराग्य की प्रतिमूर्ति के समान दिखाई देती हैं। जैसे अपनी माँ (गृहस्थ अवस्था की) आर्यिका रत्नमती माताजी के संदर्भ में यह संस्मरण—

'.........मैं दीक्षा लेकर आत्म कल्याण करना चाहती हूँ, मैं तो कई बार प्रेरणा देती ही रहती थी अतः मैं इतना सुनते ही बहुत प्रसन्न हुई और बोली "आपने बहुत अच्छा सोचा है–जब लों न रोग जरा गहे तब लों झटिति नित हित करो।' इस पंक्ति के अनुसार अभी आपका शरीर भी साथ दे रहा है अतः अब आपको किसी की भी परवाह न करके आत्मसाधना में ही लग जाना चाहिए........। अच्छा, एक बात मैं आज आपको और बता दूँ, मैंने सुगंध दशमी के दिन माधुरी को ब्रह्मचर्यव्रत दे दिया है, अतः उसकी तो शादी का सवाल ही नहीं उठता है। (पृ. 301)

इसी प्रकार पृष्ठ 338 के एक संस्मरण में जैन पंचरंगी ध्वजा के संदर्भ में माताजी के विचार महत्वपूर्ण हैं। पृष्ठ 315 से ज्ञात होता है कि अष्टसहस्री ग्रंथ के अंतिम प्रूफ माताजी स्वयं देखती थीं। यदि लेखक ही ग्रंथ के प्रूफ देखे, तो उस ग्रंथ की प्रामाणिकता शत-प्रतिशत होती है। यहीं वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की स्थापना का भी पाठकों को पता चलता है। पृष्ठ 58 और 65 में मुनिराज एवं आर्यिका के 28 मूलगुणों की चर्चा की गई है, जिससे इस विषय में लेखिका के विचारों का आभास मिलता है।

पृष्ठ 543 से सप्तम खण्ड प्रारंभ होता है और आरंभ में ही ज्ञात हो जाता है कि आगे क्या लिखा जाने वाला है? इस प्रकार पाठकों में एक जिज्ञासा उदित होती है, जो संस्मरण साहित्य की विशेषता ही नहीं, अपरिहार्यता भी है। लगभग पूरी पुस्तक में ही इस शैली के दर्शन होते हैं। पाठक जब एक प्रकरण को प्रारंभ करता है, तो उसे पूरा पढ़कर ही दम लेता है।

पृष्ठ 592, जहाँ ग्रंथ का समापन होता है, के दो संदर्भ यहाँ उल्लिखित हैं। प्रथम से चौंसठ ऋद्धि विधान कराने में माताजी की यह भावना उनके अन्तःकरण को प्रकट करने में पूर्णतः सक्षम हुई है। जिसमें कहा गया है कि 'संसारी प्राणी जैनधर्म जैसे सच्चे धर्म को छोड़कर इधर-उधर मिथ्यादेवी-देवताओं के पास जाकर अपनी श्रद्धा को तिलांजलि न देने पावें।"

इसी पृष्ठ के दूसरे संदर्भ में ग्रंथ रचना का उद्देश्य बतलाया गया है। यथा — इस 'मेरी स्मृतियाँ' को भी मैंने शिष्यों के हठाग्रह, विद्वानों के विशेष आग्रह से एक अरुचिपूर्ण भाव से ही लिखा है, स्वप्रशंसा के भाव से नहीं। इसका अनुभव मुझे ही है। इसके अतिरिक्त मैंने जो भी ग्रंथ व पुस्तकें लिखी हैं, उनमें से किसी के लिए भले ही किसी की प्रेरणा रही हो, फिर भी मैंने अतीव रुचि से आत्मा की शुद्धि व परोपकार की भावना से ही लिखे हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।'

ग्रंथ की भाषा अत्यन्त सरल, सरस और प्रवाहमयी है किन्तु कहीं-कहीं अधिक संदर्भों के देने से बोझिल बन गई है। जैसे पृष्ठ 165 के स्वरचित छंद, पूजन तथा उनका हिन्दी अनुवाद दिया जाना है किन्तु यह एक अध्यात्मयोगिनी की आत्मकथा है अतः इसमें ऐसे उद्धरण रचनाएं, दूषण नहीं, उसके भूषण हैं।

ग्रंथ की एक विशेषता यह भी है कि जैन समाज का बीसवीं-इक्कीसवीं सदी का काफी इतिहास इसमें संग्रहीत हो गया है। जैन समाज अपने इतिहास के लेखन के प्रति गंभीर नहीं रहा है, फलतः बहुत से तथ्य काल के गाल में समा गये हैं। इस ग्रंथ में घटनाओं की तिथियाँ दे दी गई हैं। मैं नहीं जानता कि माताजी अपनी डायरी लिखती हैं कि नहीं किन्तु इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि यदि बिना डायरी के इतनी तिथियाँ लिखी गई हैं, तो यह अपने आप में एक उदाहरण है। इस दृष्टि से माताजी का 'विलक्षण प्रतिभा की धनी' विशेषण सर्वथा सार्थक है।

मेरी स्मृतियाँ को पूज्य माताजी का प्रामाणिक जीवन चरित भी कहा जा सकता है। यह इसलिए भी कि आज विपुल मात्रा में जीवन चरित लिखे जा रहे हैं। जिन्होंने कभी हमारे साधकों का कमण्डलु नहीं उठाया, किलो-दो किलोमीटर पदयात्रा नहीं की, वे कल्पना के आधार पर ही जीवन चरित लिख रहे हैं, यह चिंता का विषय है।

संक्षेप में मेरी स्मृतियाँ एक अध्यात्म पथ की साधिका द्वारा अपने साधनामय जीवन का प्रामाणिक लेखा-जोखा है, जो साधना पथ के साधकों को साधनामयी प्रेरणा देता है और साधना पथ पर अग्रसर करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य ज्ञानमती माताजी की कृति "जैन भूगोल" : एक अनुचिंतन

लेखक—प्रो. नलिन के शास्त्री, दिल्ली *

उत्थानिका—आर्यावर्त की सभ्यता के क्षितिज पर अनेक धर्मों, संस्कृतियों तथा दार्शनिक अवधारणाओं के बिम्ब उदित हुए हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण मानवीय चेतना को प्रबोधित किया है। इस परम्परा का एक अत्यन्त उदात्त स्वरूप जैनधर्म के मौलिक चिन्तन को अपने युगान्तरकारी स्पन्दन से जन-जन को स्फूर्त करता रहा है। जैनधर्म का शाश्वत दार्शनिक अवबोध विभिन्न कालखण्डों में उसके साधकों द्वारा आख्यायित हुआ है और वस्तु स्वातन्त्र्य की क्रान्तिकारी अवधारणा के माध्यम से जैन व्याप्ति को असीमित विस्तार देने में सफलता प्राप्त की गई है। साधकों की इस महनीय परम्परा की एक अद्भुत कड़ी परम विदुषी, गणिनीप्रमुख पूज्य साध्वी ज्ञानमती माताजी ने दो सौ से अधिक ग्रंथों के माध्यम से वस्तुनिष्ठ चिन्तन को आख्यायित किया है, ज्ञानमय आत्मवैभव को रेखांकित किया है और दी है प्रेरणा अपने प्रत्येक वाक्य से/वाच्य से, पर से स्वामित्व के विसर्जन की।

परमपूज्या माताजी के रचनाधर्मी संसार का प्रतिपाद्य वह जैनधर्म है, जो मानव तथा सृष्टि के अस्तित्व के बहु-आयामों की तलस्पर्शी खोज करता है और एक तात्त्विक एवं तार्किक उत्तर प्रस्तुत कर आडम्बरों एवं अन्ध विश्वासों से परे आत्म स्वातन्त्र्य की मौलिक आख्या को प्रतिष्ठित करता है। पूज्या माताजी की कृति जैन भूगोल लोक के शाश्वत स्वरूप को प्रतिष्ठित करते हुए कालचक्र की आरोही एवं अवरोही गतियों की समीक्षा कर लोक-अलोक के विभाग युग परिवर्तनों तथा जीवों की चतुर्गतियों के निरूपक अनुयोगों से जन-जन का करुणानुयोगीय साक्षात्कार कराती है। अधोलोक, मध्यलोक तथा ऊर्ध्वलोकों के वर्णन में विदुषी माताजी ने नरक, स्वर्ग, द्वीप, समुद्र, सुमेरु पर्वत, देवलोक आदि से संबंधित भूगोलीय एवं खगोलीय आगमिक कथनों के प्रतिपाद्य का सुबोध कराया है।

लोक परिचय—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल नामक 6 द्रव्यों से निर्मित लोक अनादि-अनिधन तथा अकृत्रिम है। जिसके तीन रूप हैं—अधोलोक, मध्यलोक एवं ऊर्ध्वलोक। दोनों पैरों को फैलाकर, कमर पर हाथ रखे पुरुष सदृश लोक की ऊँचाई, ऊपर-नीचे चौदह राजू है तथा मोटाई सात राजू है। लोक के तल भाग की चौड़ाई सात राजू है जो ऊपर की दिशा में, क्रमशः घटते हुए एक राजू रह जाती है। लोक के मध्य में एक राजू चौड़ी, एक राजू मोटी और चौदह राजू ऊँचाई वाली त्रसनाली है, जिसमें त्रसजीवों की अवस्थिति होती है। लोक के चारों ओर से तीन प्रकार के वातवलय, घनोदधि, घनवातवलय तथा तनुवातवलय परिवेष्टित करते हैं तथा अपने दबाव के माध्यम से लोक में सन्तुलन स्थापित करते हैं। लोक के तीन प्रकार हैं—

1. अधोलोक—सात राजू की ऊँचाई वाला यह लोक नारकी तथा भवनवासी देवों का निवास होता है। यह लोक का निचला हिस्सा निर्मित करता है।

2. मध्यलोक—एक लाख चालीस योजन की ऊँचाई वाला, असंख्यात द्वीपों तथा समुद्रों से परिवेष्टित इस मध्य लोक में मनुष्य, तिर्यंच, व्यन्तर तथा ज्योतिष्क देव निवास करते हैं।

3. ऊर्ध्वलोक—सात राजू ऊँचा ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक से ऊपर लोकान्त तक अवस्थित है, जिसमें वैमानिक देवों का वास होता है। इसके शिखर पर मुक्त जीव विराजमान होते हैं।

अधोलोक

वेत्रासन के समान आकार वाले, सात राजू की ऊँचाई वाले अधोलोक में रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभा और महातमप्रभा नामक सात नरकभूमियाँ विद्यमान हैं जो छः राजू में अवस्थित हैं तथा सातवें और अंतिम राजू में निगोदिया जीवों की अवस्थिति है। अधोलोक के अंतिम एक राजू के क्षेत्र को कलकल पृथ्वी भी कहा जाता है। घम्मा, वंशा, मेघा, अंजना,

* कुलसचिव एवं प्राध्यापक-वनस्पति शास्त्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरिष्टा, मघवी और माघवी नामक सात पृथ्वियाँ एक-दूसरे के नीचे क्रमशः घनोदधि-वातवलय, घनवात-वलय, तनुवात वलय और आकाश पर प्रतिष्ठित हैं। सातों नर्क भूमियों में उनचास पटल या प्रस्तार हैं जिनमें नारकी जीव इन्द्रक, श्रेणीबद्ध तथा प्रकीर्णक नर्कबिलों में रहते हुए क्षेत्रजनित, शारीरिक, मानसिक और असुरकृत दुःखों को भोगते हैं। नारकियों के शरीर अत्यन्त विकृत तथा हुण्डक संस्थान वाले होते हैं।

मध्यलोक

मध्यलोक में जम्बूद्वीप, लवण समुद्र सहित असंख्यात द्वीप एवं समुद्र हैं। इसका विस्तार पूर्व-पश्चिम में एक राजू चौड़ा तथा उत्तर-दक्षिण में सात राजू है। इसमें जम्बूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप और लवण समुद्र आदि असंख्यात समुद्र हैं। तिर्यक्-तिरछा फैला होने के कारण इसे तिर्यक्लोक भी कहते हैं। मध्यलोक के मध्य में थाली की आकृति का जम्बूद्वीप है, जिसका व्यास-विस्तार एक लाख योजन है। दो लाख योजन के व्यास-विस्तार वाला लवण समुद्र जम्बूद्वीप को परिवेष्टित करता है। लवण समुद्र, चार लाख योजन के विस्तार वाले धातकीखण्ड द्वीप से घिरा है। धातकीखण्ड द्वीप को आठ लाख योजन के विस्तार वाला कालोदधि समुद्र परिवेष्टित करता है। पुष्करवर समुद्र, पुष्करवर द्वीप को परिवेष्टित करता है तथा उसके आगे क्रमशः वारुणीवर, क्षीरवर, घृतवर, सौद्रवर, नन्दीश्वर, वरुणवर, अरुणवर, कुण्डलवर, शंखवर, रुचकवर, भुजंगवर, कुशवर, क्रौंचवर आदि द्वीप क्रमानुगत रूप से एक-दूसरे को घेरते हैं। असंख्यात द्वीपों एवं समुद्रों के अन्त में स्वयंभूरमणद्वीप और स्वयंभूरमण समुद्र अवस्थित है। सभी द्वीपों एवं समुद्रों का आकार चूड़ी सदृश है। जम्बूद्वीप, लवणसमुद्र, धातकीखण्ड, कालोदधिसमुद्र और पुष्करवरद्वीप में मनुष्य निवास करते हैं, हालाँकि पुष्करद्वीप के मध्यभाग में वलयाकृति का मानुषोत्तर पर्वत अवस्थित है। जिसे मनुष्य पार नहीं कर सकते एवं यह द्वीप को दो भागों में विभक्त कर देता है।

जम्बूद्वीप—थाली की आकृति वाले जम्बूद्वीप में भरतवर्ष, हैमवतवर्ष, विदेहवर्ष, रम्यक्वर्ष, हैरण्यवत वर्ष और ऐरावत वर्ष नामक सात क्षेत्र तथा हिमवान, महाहिमवान, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी नामक छः कुलाचल पर्वत हैं। इन पर्वतों पर पद्म, महापद्म, तिगिंछ, केशरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक नामक छः सरोवर हैं, जिनसे गंगा, सिंधु, रोहित, रोहितास्या, हरित, हरिकान्ता, सीता, सीतोदा, नारी, नरकान्ता, सुवर्णकूला, रूप्यकूला और रक्ता, रक्तोदा नाम की चौदह नदियाँ निकलती हैं। इन युगलरूप नदियों में से पूर्व-पूर्व की नदी पूर्व समुद्र और बाद की नदी पश्चिम समुद्र में गिरती हैं।

भरतक्षेत्र—जम्बूद्वीप के दक्षिणभाग में अवस्थित भरतक्षेत्र के उत्तर में हिमवान पर्वत और शेष दिशाओं में लवणसागर है। इस क्षेत्र के मध्य में पूर्व-पश्चिम दिशा में फैला रजतमय विजयार्द्ध पर्वत है। विजयार्द्ध एवं हिमवान् पर्वतों से निकलने वाली गंगा और सिंधु नदियों के उद्‌गम के कारण भरतक्षेत्र छः खण्डों में विभाजित हो जाता है। विजयार्द्ध पर्वत के दक्षिणी भाग के तीन खण्डों में मध्य का खण्ड, आर्यखण्ड और शेष खण्ड म्लेच्छ खण्ड कहलाते हैं। आर्यखण्ड, धर्म तीर्थ के प्रवर्तन का केन्द्र होता है।

भरत क्षेत्र से दोगुने विस्तार वाला, उसकी उत्तरोन्मुखी दिशा में अवस्थित हिमवान् पर्वत की पूर्व दिशा में जिन मंदिर है एवं अन्य दिशाओं में व्यन्तर देव तथा देवियों के भवन हैं। इस स्वर्णमय पर्वत के मध्य में पद्म सरोवर है तथा पूर्व एवं पश्चिमी द्वारों से क्रमशः गंगा एवं सिंधु नदी तथा उत्तर द्वार से रोहितास्या नदी उद्‌गमित होती है। हैमवत क्षेत्र, हिमवान् पर्वत के उत्तर तथा महाहिमवान् पर्वत के दक्षिण भाग में अवस्थित है।

हैमवत क्षेत्र से चौगुने क्षेत्रफल वाला हरिक्षेत्र महाहिमवान् पर्वत के उत्तर और निषध पर्वत के दक्षिण में अवस्थित है। हरिक्षेत्र के उत्तर में तपाये हुए स्वर्ण सदृश एवं महाहिमवान् पर्वत से चार गुना क्षेत्रफल वाला निषधकूट है। जिसमें नौ कूट अवस्थित हैं। इसकी पूर्व दिशा में सिद्धायतन कूट अवस्थित है, जिसमें जिन मंदिर विराजमान है तथा शेष कूटों में व्यन्तर देवों के भवन हैं। पर्वत के मध्य में तिगिंछ सरोवर अवस्थित है।

हरिक्षेत्र में चार गुना क्षेत्रफल लिए हुए, निषध पर्वत के उत्तर और नील पर्वत के दक्षिण में विदेह क्षेत्र विद्यमान है,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो जम्बूद्वीप का मध्यवर्ती क्षेत्र है। विदेह क्षेत्र के मध्य में सुमेरु पर्वत है जिसकी ऊँचाई एक लाख चालीस योजन है। पृथ्वी तल पर प्रारंभ में सुमेरु पर्वत का विस्तार दस हजार योजन है, जो ऊपर क्रमशः घटता गया है। भद्रशाल, नन्दन, सौमनस और पाण्डुक नामक चार वनों से यह आवृत्त है। सुमेरु पर्वत के चारों वनों की चारों दिशाओं में चार-चार अकृत्रिम जिनालय हैं और पाण्डुक वन की ईशान आदि चारों विदिशाओं में पाण्डुक, पाण्डुकम्बला, रक्ता और रक्तकम्बला नामक चार शिलाएँ हैं। ईशान दिशा स्थित पाण्डुक शिला पर, भरत क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है। पाण्डुकम्बला पर विदेह, रक्ता पर ऐरावत एवं रक्तकम्बला पर पश्चिम विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले तीर्थंकरों का जन्माभिषेक आयोज़ित होता है।

विदेह क्षेत्र—विदेह क्षेत्र, कुरुक्षेत्र एवं विदेह, दो क्षेत्रों में विभक्त है। सुमेरु पर्वत के दक्षिण और निषध पर्वत के उत्तर में देवकुरु है तथा मेरु पर्वत के उत्तर एवं नील पर्वत के दक्षिण में उत्तर कुरु अवस्थित है। यह उत्तम भोगभूमि है। सुमेरु पर्वत के मूलभाग में चार गजदंत पर्वत हैं जो एक ओर निषध और नील कुलाचलों को संस्पर्शित करते हैं तो दूसरी ओर सुमेरु पर्वत को। इनके नाम क्रमशः, सौमनस, विद्युत्प्रभ, गन्धमादन और माल्यवान हैं।

अन्य पर्वत, सरोवर, वृक्ष आदि—यमकगिरि नामक पर्वत सीतोदा एवं सीता नदी के तट पर अवस्थित है, जिनके मध्य पाँच सरोवर हैं। प्रत्येक तालाब के पूर्व-पश्चिम तटों पर पाँच-पाँच के समूह में दो सौ कनकगिरि विद्यमान हैं। देवकुरु में निषध पर्वत के उत्तर, विद्युत्प्रभ गजदन्त के पूर्व, सीतोदा नदी के पश्चिम और सुमेरु पर्वत की नैऋत्य दिशा में शाल्मली वृक्ष समूह है। सुमेरु पर्वत की ईशान दिशा में, नील पर्वत के दक्षिण, माल्यवान गजदंत के पश्चिम और सीता नदी के पूर्व में जम्बूवृक्ष की अवस्थिति है। ये दोनों वृक्ष पृथ्वीमय हैं और अपने-अपने परिवार वृक्ष-समूहों के साथ शोभायमान हैं।

विदेह के बत्तीस क्षेत्र—विदेह में कुल बत्तीस खण्ड हैं जो क्षेत्र के नाम से भी अभिहित होते हैं एवं निम्नलिखित हैं—

पूर्व विदेह—कच्छा, सुकच्छा, महाकच्छा, कच्छकावती, आवर्ता, लांग्लावर्ता, पुष्कला एवं पुष्कलावती। ये सीतानदी और कुलाचल के मध्य अवस्थित हैं। सीतानदी एवं निषध पर्वत के मध्य वत्सा, सुवत्सा, महावत्सा, वत्सकावती, रम्या, रम्यका, रमणीया तथा मंगलावती की अवस्थिति है।

पश्चिम विदेह—सीतोदा नदी और निषध पर्वत के मध्य पद्मा, सुपद्मा, महापद्मा, पद्मकावती, शंखा, नलिना, कुमदा और सरिता क्षेत्र अवस्थित हैं। नील पर्वत एवं सीतोदा नदी के मध्य वप्रा, सुवप्रा, महावप्रा, वप्रकावती, गंधा, सुगंधा, गंधिला और गंधमालिनी क्षेत्र अवस्थित हैं।

इन बत्तीस विदेह क्षेत्रों में बत्तीस राजधानियाँ, बत्तीस विजयार्द्ध पर्वत और बत्तीस वृषभगिरि स्थित हैं। प्रत्येक विदेह क्षेत्र में एक-एक आर्यखण्ड अवस्थित है। जहाँ तीर्थंकर एवं शलाका पुरुष उत्पन्न होते रहते हैं। साथ ही पाँच-पाँच म्लेच्छखण्ड भी पाये जाते हैं। सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र, एक मेरु, दो कुरु, जम्बू और शाल्मलि वृक्ष, छः कुलाचल, छः महासरोवर, बीस सरोवर, चौदह महानदियाँ, बारह विभंगा नदियाँ, चार नाभि पर्वत, चार यमकगिरि, दो सौ कनकगिरि आठ दिग्गजेन्द्र पर्वत, चौंतीस आर्यखण्ड, चौंतीस विजयार्ध पर्वत एवं चौंतीस वृषभगिरि अवस्थित हैं।

लवण समुद्र—दो लाख योजन का विस्तार लिए हुए चूड़ी के आकार वाले लवण समुद्र के मध्य तल में चारों ओर एक हजार आठ विवर हैं। इसके मध्य भाग की गहराई एक सहस्र योजन है। इस मध्य भाग में जल व वायु की हानि एवं वृद्धि होती रहती है। पातालों के अतिरिक्त इस समुद्र में सूर्यद्वीप, चन्द्रद्वीप, प्रभासद्वीप, मगधद्वीप आदि अनेक द्वीप विद्यमान हैं, जिनमें भवनवासी देवों का आवास रहता है। इसके अतिरिक्त अड़तालीस कुमानुषद्वीप हैं, जिनमें कुभोग भूमियाँ हैं।

धातकीखण्ड—वलयाकार धातकी खण्ड, लवणसमुद्र के बाद अवस्थित है, जिसका विस्तार चार लाख योजन है। इस द्वीप की उत्तर-दक्षिण दिशा में उत्तर दक्षिणलम्बायमान दो इष्वाकार पर्वत हैं जो द्वीप को पूर्व एवं पश्चिम भागों में विभक्त कर देते हैं। ये पर्वत वर्षधर या कुलाचल कहलाते हैं, जिनमें एक-एक जिनालय और शेष कूटों पर व्यन्तर देवों का निवास होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घातकीखण्ड को आठ लाख योजन के विस्तार वाला कालोदधि समुद्र परिवेष्टित करता है, जिसके भीतरी और बाहरी भागों में चौबीस-चौबीस अन्तर्द्वीप हैं, जिनमें कुभोग भूमि के मनुष्य और तिर्यंच निवास करते हैं।

पुष्करवर द्वीप, कालोदधि समुद्र के चारों ओर अवस्थित है, जिसका व्यास—विस्तार सोलह लाख योजन है। इसके मध्य में स्थित कुण्डलाकार मानुषोत्तर पर्वत के द्वारा दो भाग, अभ्यन्तर और बाह्य पहचाने जाते हैं। अभ्यन्तर भाग में मनुष्यों का अवस्थान है और वे अपनी सीमाओं के पार नहीं जा सकते। मनुष्यों के लिए उपलब्ध लोक विस्तार कुल पैंतालीस लाख योजन है।

नन्दीश्वर द्वीप—नन्दीश्वर समुद्र से परिवेष्टित यह आठवाँ द्वीप है,जिसका विस्तार एक सौ तिरेसठ करोड़ चौरासी लाख योजन है। इसके मध्य में इन्द्रनील मणि से निर्मित चौरासी हजार योजन विस्तृत अंजनगिरि पर्वत है। इसके चारों ओर एक लाख योजन की चार-चार वापियाँ हैं। इन वापियों के चारों ओर एक लाख योजन लम्बे और पचास हजार योजन चौड़े चार.वन हैं और प्रत्येक वन में वन के नाम से स्थापित चैत्यवृक्ष हैं। प्रत्येक वापिका के बहु मध्यभाग में दही के समान वर्ण वाले दधिमुख नामक उत्तम पर्वत हैं, जो दस हजार योजन ऊँचे हैं। नन्दीश्वर द्वीप में बावन जिन मंदिर हैं। प्रत्येक जिन मंदिर में एक सौ आठ गर्भगृह हैं और प्रत्येक गर्भगृह में पाँच सौ धनुष ऊँची पद्मासन जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं। इन जिन मंदिरों में देवगण अर्चन का पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं। अष्टान्हिक पर्व में सौधर्म आदि इन्द्र व अन्य देवगण भक्तिभाव से पूजन-अर्चन करते हैं।

ग्यारहवाँ द्वीप कुण्डलवर नाम का है, जिसके बहुमध्य भाग में मानुषोत्तरवत् एक कुण्डलाकार पर्वत है। इस पर्वत पर चारों दिशाओं में जिनमंदिर हैं। रुचकवर नामक तेरहवें द्वीप में, बीच में रुचकवर पर्वत है, जिसकी चारों दिशाओं में जिन मंदिर विराजमान हैं।

इस प्रकार मानुषोत्तर पर्वत के बाहर नंदीश्वर द्वीप के बावन एवं कुण्डलवर तथा रुचकवर पर्वत के चार-चार अर्थात् कुल साठ जिनालय हैं। मनुष्यलोक के तीन सौ अट्ठानवे जिन मंदिरों को मिला लें तो अकृत्रिम जिनालयों की कुल संख्या चार सौ अट्ठावन हो जाती है।

अंतिम द्वीप स्वयंभूरमण है जिसके मध्य में स्वयंभूरमण पर्वत है। इस पर्वत के अभ्यन्तर भाग में जघन्य भोगभूमि है, जहाँ मात्र एकेन्द्रिय और संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच पाये जाते हैं।

ऊर्ध्वलोक

ऊर्ध्वलोक में भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवों तथा सिद्धों का निवास होता है। इस प्रकरण में देवों के निवास, आहार, उच्छ्वास, गमनागमन, रूप-लावण्य और शरीर-स्वभाव, प्रवीचार, आयु, देवियों का उल्लेखन, विक्रिया सामर्थ्य, शारीरिक अवगाहना, अवधि क्षेत्र, गुणस्थान, लेश्या विचार, गति-अगति, अणिमादि गुणों आदि की विवेचना की गई है। सिद्ध लोक का व्यास-विस्तार पैंतालीस लाख योजन है जो ईषत्प्राग्भार नामक आठवीं पृथ्वी के मध्य में अवस्थित है। इस रजतवर्ण छत्राकार सिद्धक्षेत्र के उपरिम तनुवातवलय में सम्यक्त्व आदि आठ गुणों से युक्त एवं अनन्त सुख से तृप्त सिद्ध भगवान विराजते हैं।

पूज्या माताजी की पुस्तक जैन भूगोल एक संबोधि है, जिसमें संलब्ध है पूरी मानवता को दिया गया जैन आचार्यों की भौगोलिक शोध के विचार-नवनीत का प्रतिबोध। भूगोल की गणितीय अवधारणाओं की चर्चा में भी विदुषी लेखिका आत्मा को चैतन्य की जगमगाहट से दीप्त करने के मिशन में कहीं भी शिथिल नहीं होती और भक्ति के अनुगुंजन के महत्व को, अतीन्द्रिय चेतना के स्तर पर सहज, स्थायी, शाश्वत और निरपेक्ष सुख की संप्राप्ति हेतु रेखांकित करना नहीं भूलतीं। एतदर्थ मैं उनके प्रति नतमस्तक होता हुआ उनके साहित्यिक अवदान को भारतीय संस्कृति की बहुमूल्य निधि मानता हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा प्रणीत समग्र ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय

(चतुरनुयोगों के क्रमानुसार)

प्रस्तुति—पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी

प्रथमानुयोग (उपन्यास/बाल साहित्य)

1. मेरी स्मृतियाँ—राजधानी दिल्ली में वीर सं. 2508 सन् 1982 में इसे लिखना प्रारंभ किया। हस्तिनापुर में वीर सं. 2509 सन् 1983 में लिखकर पूर्ण किया। संघ के शिष्य-शिष्याओं तथा समाज के वरिष्ठ श्रेष्ठी, विद्वान् एवं कार्यकर्ताओं के विशेष आग्रह पर पूज्य माताजी ने अपने दीर्घ जीवन की आत्मकथा लिखी है। यह एक श्रमसाध्य कार्य था, भूली बिसरी स्मृतियों को याद कर उन्हें लिपिबद्ध करना और वह भी पाठकों की दृष्टि से। इसे लिखते समय माताजी के मस्तिष्क पर बहुत जोर पड़ा। इस ग्रंथ में अपने बाल्यकाल से (सन् 1940) से सन् 2004 तक की घटनाओं को तो दर्शाया ही है। साथ ही देशकाल की परिस्थितियों पर भी दृष्टिपात किया है। यह केवल आत्मकथा का ग्रंथ ही नहीं है अपितु विगत 60-65 वर्षों का दिगम्बर जैन समाज का इतिहास है। इन विगत वर्षों में हुई विशेष घटनाओं को भी अपने अनुभवों के आधार पर अंकित किया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2516, अप्रैल 1990 में पुनः आगे की स्मृतियों सहित सन् २००४ में प्रकाशित हुआ है।

2. भगवान ऋषभदेव का समवसरण—वीर सं. 2523, सन् 1997 में इस पुस्तक को लिखा। इसमें पूज्य माताजी ने महापुराण, हरिवंशपुराण, तिलोयपण्णत्ति आदि ग्रंथों के आधार से भगवान ऋषभदेव के समवसरण का सुन्दर वर्णन किया है। माताजी ने समवसरण का वर्णन आगम से पढ़कर ही समवसरण का सुन्दर रथ बनवाकर उसका श्रीविहार भारतदेश में कराया। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2424, चैत्र शुक्ला तेरस, महावीर जयंती, 9 अपैल 1998, पृष्ठ सं. 44 है।

इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद डॉ. एस. बाया ने किया है। इसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2525 सन् 1999 में छप चुका है।

3. तीर्थंकर ऋषभदेव के दश अवतार—वीर सं. 2525 सन् 1999 में पूज्य माताजी ने यह पुस्तक लिखी, इसमें भगवान ऋषभदेव कैसे बने? उनके पूर्व के दश भवों का वर्णन किया है। राजा महाबल की पर्याय से उनके जीवन का उत्थान प्रारंभ हुआ पुनः ललितांग देव, राजा वज्रजंघ, भोगभूमि आर्य, श्रीधरदेव, सुविधि राजा, अच्युतेन्द्र, वज्रनाभि चक्रवर्ती, सर्वार्थसिद्धि के अहमिन्द्र आदि भवों का वर्णनकर भगवान ऋषभदेव के पंचकल्याणक का वर्णन किया है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2525, रक्षा बंधन पर्व 26 अगस्त 1999, पृ. सं. 72 है।

4. भगवान महावीर कैसे बने—भगवान महावीर स्वामी की जीवनी-पुरुरवा भील से महावीर बनने तक का विवरण संक्षेप में बहुत ही सुगम शैली में दिया गया है। भगवान महावीर के पच्चीस सौवें निर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर वीर सं. 2500, सितम्बर 1974 में इस पुस्तक के प्रथम संस्कार का प्रकाशन किया गया। पृष्ठ संख्या 40 है।

5. चौबीस तीर्थंकर—दिल्ली लाल मंदिर में भगवान महावीर स्वामी के 2500वें निर्वाण उत्सव पर वीर सं. 2500 सन् 1974 में यह पुस्तक लिखी। चौबीस तीर्थंकरों का अलग-अलग संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत पुस्तक में दिया गया है। प्रत्येक तीर्थंकरों की पूर्व पर्याय से आगमन, पाँच कल्याणकों के स्थान, तिथियाँ आदि दी गई हैं। तीर्थंकरों के जीवन की लगभग सभी प्रमुख घटनाएँ प्रत्येक परिचय में एक ही पुस्तक में माताजी ने संगृहीत कर दी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2505, सन् 1979 में, पृष्ठ संख्या 88 है।

6. भगवान बाहुबली—भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोला के पावन प्रसंग पर भगवान बाहुबली की जीवन गाथा तथा 57 फुट ऊँची अति मनोज्ञ प्रतिमा का प्रत्यक्ष या परोक्ष दर्शन का आनन्द प्राप्त कराने के लिए यह पुस्तक तैयार की गई। इसमें 111 पद्यों में बाहुबली लावणी तथा गद्य में जीवन चरित्र दिया गया है। दोनों रचनाएँ पूज्य माताजी कृत हैं। बाहुबली लावणी का सृजन वीर सं. 2491, सन् 1965 में श्रवणबेलगोला में साक्षात् बाहुबली की प्रतिमा के समक्ष बैठकर माताजी ने किया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था। वीर सं. 2507, सन् 1981 में इसी लावणी को संगीतबद्ध करके 7 सप्ताह तक आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित किया गया था, जिसका शीर्षक था "पाषाण बोलते हैं।" प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, मार्च 1980, पृष्ठ संख्या 56 है।

7. भगवान वृषभदेव—जैन संस्कृति के प्रथम तीर्थंकर युग प्रवर्तक देवाधिदेव भगवान आदिनाथ का जीवन वृत्त-पाँचों कल्याणक तथा उनके पूर्व भव इस उपन्यास में दिये गये हैं। पुस्तक छोटी होते हुए भी सारगर्भित है। पूज्य माताजी की अपनी यह एक विशिष्ट शैली है कि पुस्तक छोटी हो या बड़ी, पूजाएं हों या स्वाध्याय के ग्रंथ, सभी में सुगमता से जैनधर्म के चारों अनुयोगों का समावेश कर देती हैं। माताजी द्वारा लिखी प्रत्येक पुस्तक को पढ़ने से जीवन जीने की कला प्राप्त होती है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 70 है।

8. भगवान नेमिनाथ—इसमें हरिवंशपुराण के आधार से पूज्य माताजी ने भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र उपन्यास शैली में प्रस्तुत किया है। पूज्य माताजी ने 'नेमि निर्माण काव्य' के आधार से भी भगवान नेमिनाथ के पूर्वभवों का वर्णन किया है। इसमें तीर्थंकरों की एक विशेषता बताई है कि उन्होंने पूर्व भवों में अनेकों व्रत किए। इसमें पूज्य माताजी ने 30-35 व्रतों को लिखा है। जैसे-सर्वतोभद्र, वसन्त भद्र, सिंह निष्क्रीडित, मेरुपंक्तिव्रत आदि। इसमें उत्तरपुराण और निर्वाणकाण्ड का भी आधार लिया है।

9. अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर—वीर सं. 2527 सन् 2001 में भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती वर्ष के अन्तर्गत यह पुस्तक लिखी। इसमें भगवान महावीर स्वामी का परिचय एवं उनके पंचकल्याणकों का वर्णन है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2526, आश्विन शु. 5, 21 अक्टूबर 2001, पृष्ठ संख्या 16 है।

10. भगवान पार्श्वनाथ—भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में वीर सं. 2530 सन् 2004 में यह पुस्तक लिखकर तैयार की। इस पुस्तक में भगवान पार्श्वनाथ का परिचय एवं उनके दशभवों का वर्णन है। इसके साथ ही तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास की आवश्यकता, तीर्थंकर जन्मभूमि वंदना भी लिखी है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2530, श्रावण शुक्ला सप्तमी सन् 2004, पृष्ठ संख्या 72 है।

11. भगवान महावीर—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में वीर सं. 2003 में यह पुस्तक तैयार की । इसमें भगवान महावीर स्वामी का परिचय, जन्मभूमि कुण्डलपुर, भगवान महावीर के पाँचों कल्याणक एवं भगवान महावीर के पूर्व के 10 भवों का भी वर्णन है। इसके साथ ही भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर एक वास्तविक तथ्य आदि कई लेख एवं वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों के नाम हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2530, माघ शु. 11, 1 फरवरी 2004, पृष्ठ संख्या 154 है।

12. श्री ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या—ऋषभ जन्मभूमि अयोध्या में वीर सं. 2519, सन् 1993 में पूज्य माताजी ने यह पुस्तक लिखी। वर्तमान में युग की आदि में भगवान ऋषभदेव ने जन्म लेकर यहीं से धर्म की परम्परा को प्रवर्तित किया है। अतएव उनका परिचय देते हुए अन्य तीर्थंकरों का, भरत आदि चक्रवर्तियों का तथा श्रीरामचन्द्र आदि महापुरुषों का भी संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक में दिया गया है। वर्तमान में जैन-जैनेतर लोग तथा अपने भारतवर्ष के ही नहीं विदेशों के लोग भी 'ऋषभ जन्मभूमि' के नाम से भी इस अयोध्या का महत्व समझे, इसी भावना से पूज्य माताजी ने यह 'श्री ऋषभ जन्मभूमि अयोध्या' पुस्तक लिखी है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2519, आश्विन शु. 15, शरदपूर्णिमा, 30 अक्टूबर 1993, पृष्ठ संख्या 56 है।

13. जैनधर्म एवं भगवान ऋषभदेव—वीर सं. 2424, सन् 1998 में भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार के अवसर पर यह पुस्तक लिखी। इसमें तीर्थंकर ऋषभदेव के बारे में वर्णन है, जो करोड़ों वर्ष पूर्व के इतिहास का स्मरण कराता है। जैनधर्म के कर्मसिद्धान्त, सृष्टि रचना, तीर्थंकरों के पंचकल्याणक, जैनधर्म की उदारता आदि का भी संक्षिप्त वर्णन है तथा भगवान ऋषभदेव के पुत्र सम्राट् चक्रवर्ती भरत के नाम पर हमारे इस देश का 'भारत' नाम विभिन्न वेदपुराणों के माध्यम से सिद्ध किया है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2525 वैशाख कृष्णा 2, 2 अप्रैल 1999 पृष्ठ संख्या 16 है। इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने किया है। जिसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2526, 4 फरवरी 2000 में छप चुका है।

14. तीर्थंकर जीवन दर्शन—वीर सं. 2527, सन् 2001 भगवान महावीर स्वामी के 260वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत इस पुस्तक को लिखा। इस पुस्तक में चौबीस तीर्थंकरों के संक्षिप्त परिचय प्रदान किए हैं, जिसमें उनके पंचकल्याण तिथि,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचकल्याणक स्थान के साथ-साथ तीर्थंकरों के माता-पिता, चिन्ह, वर्ण, देहवर्ण, आयु, अवगाहना आदि का वर्णन है। प्रथम संस्करण— वीर सं. 2527, श्रावण शु. 15, रक्षाबंधन पर्व 4, अगस्त 2001, पृ. सं. 32 है।

15. तीर्थंकर महावीर और धर्मतीर्थ— भगवान महावीर के पच्चीस सौंवे निर्वाण महोत्सव के पावन प्रसंग पर भगवान महावीर के जीवन चरित्र एवं जैनधर्म का जन-जन को परिचय प्रदान कराने के लिए यह छोटी सी पुस्तक लिखी थी। बड़ी संख्या में इसका प्रकाशन हुआ। प्रथम संस्करण वीर सं. 2500, सितम्बर 1974 में, पृष्ठ संख्या 16 है। इसका अंग्रेजी में ब्र. कु. स्वाति जैन ने अनुवाद किया है, जो कि छप चुका है।

16. प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज—बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के 131वें संयम वर्ष (2003-2004) के अवसर पर इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इसमें महाराज के जीवन चरित्र का वर्णन है, जिन्होंने बीसवीं सदी में जन्म लेकर धरती पर लुप्त प्राय हो रही मुनि परम्परा को पुनरुज्जीवित किया था तथा जिन्होंने वास्तव में शान्ति के सागर बनकर समस्त प्राणियों को शान्ति का उपदेश प्रदान किया था। प्रथम संस्करण-वीर सं. 2530, आषाढ़ कृष्णा षष्ठी, 7 जून 2004, पृष्ठ संख्या 80 है।

17. बाल विकास (भाग-1)—जैनधर्म का प्रारंभिक ज्ञान अर्जन करने के लिए इस सचित्र पुस्तक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2500, सन् 1974 में हुआ। पृ. संख्या 20 है। इसका अंग्रेजी अनुवाद श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन 'ठेकेदार'-दिल्ली ने किया है, जो कि छप चुका है।

18. बाल विकास (भाग-2)—इसके प्रथम भाग की शृँखला में और आगे का ज्ञान अर्जन कराने के लिए दूसरे भाग का प्रकाशन हुआ था। प्रथम संस्करण वीर सं. 2500, सन् 1974 है। पृष्ठ संख्या 36 है। इसका भी अंग्रेजी अनुवाद श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार ने किया है, जो कि शीघ्र प्रकाशनाधीन है।

19. बाल विकास (भाग-3)—इसके दो भागों की शृँखला को आगे बढ़ाते हुए इसका तीसरा भाग प्रकाशित किया गया। प्रथम संस्करण वीर सं. 2501, सन् 1975। पृष्ठ संख्या 64 है।

20. बाल विकास (भाग-4)—ज्ञानार्जन की श्रेणी को आगे बढ़ाते हुए इस चौथे भाग का प्रकाशन किया गया। प्रथम संस्करण वीर सं. 2502, सन् 1976, पृष्ठ संख्या 80 है।

नोट—इन चार भागों को पढ़कर कोई भी विद्यार्थी/पाठक जैनधर्म के अच्छे ज्ञाता बन सकते हैं। बाल विकास के चारों भाग कन्नड़, मराठी, गुजराती, तमिल भाषा में भी छप चुके हैं।

21. जैन बाल भारती (भाग-1)—जैन परम्परा में सुप्रसिद्ध महापुरुषों की जीवनी से संबंधित 17 शिक्षास्पद कथानक इस पुस्तक में दिये गये हैं, जो कि रोचक व सुगम हैं। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2508 जनवरी 1982 में, पृष्ठ संख्या 52 है।

22. जैन बाल भारती (भाग-2)—इस भाग में 14 कथानक है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2508, जनवरी 1982 में पृष्ठ संख्या 56 है।

23. जैन बाल भारती (भाग-3)—इस भाग में 13 कथानक हैं। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2508, जनवरी 1982 में, पृष्ठ संख्या 72 है।

24. नारी आलोक (भाग-1)—इस पुस्तक में प्रश्नोत्तर के माध्यम से अनेक विषयों का एवं इतिहास प्रसिद्ध महिलाओं एवं महापुरुषों के जीवन वृत्त का बोध कराया गया है। 25 लेख हैं प्रत्येक लेख रोचक एवं प्रेरणास्पद हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2508, सन् 1982 में, पृष्ठ संख्या 75 है।

25. नारी आलोक (भाग-2)—प्रथम भाग की तरह दूसरे भाग में भी 24 लेख हैं, जिनमें भिन्न-भिन्न विषयों को सुगम भाषा में प्रश्नोत्तर के माध्यम से खोला गया है तथा कुछ में कथाएँ भी दी गई हैं। लेख आबाल-गोपाल, स्त्री-पुरुष सभी के पढ़ने योग्य हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2508, सन् 1982 में, पृष्ठ संख्या 106 है।

26. भरत बाहुबली (चित्र कथा)—बालक-बालिकाओं को भगवान भरत बाहुबली की जीवन का सुगमता से परिचय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कराने के लिए चित्रों के माध्यम से कथा लिखी, जो कि अति आधुनिक शैली में है। इसका प्रकाशन नवभारत टाइम्स से प्रकाशित होने वाले इन्द्रजाल कामिक्स की शृँखला नं 368 में वीर सं. 2507, फरवरी 1981 में भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महोत्सव के पावन अवसर पर हिन्दी व अंग्रेजी में किया गया। इसका अंग्रेजी में अनुवाद शीना जैन ने किया है।

27. ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर—हस्तिनापुर में वीर सं. 2500 भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव पर ज्येष्ठ शु. दशमी, गुरुवार को यह कृति पूर्ण किया। हस्तिनापुर की ऐतिहासिक घटनाओं का इस पुस्तक में शास्त्रों के आधार से संक्षेप में उल्लेख किया है। इस तीर्थक्षेत्र पर वर्तमान में उपलब्ध मंदिरों का भी दिग्दर्शन कराया है। प्रथम संस्करण, वीर सं. 2500, शरदपूर्णिमा सन् 1974, पृष्ठ संख्या 60 है।

28. जम्बूद्वीप गाइड—इस लघु पुस्तिका में माताजी ने जम्बूद्वीप को जानने के लिए सरल भाषा में जम्बूद्वीप के चैत्यालय, नदी, पर्वत, क्षेत्र आदि का दिग्दर्शन कराया है। साथ ही जिस पावन भूमि पर भव्य जम्बूद्वीप रचना का निर्माण हुआ है। उसकी प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओं का भी अतिसंक्षेप में वर्णन किया है। अंत में जम्बूद्वीप रचना से संबंधित कुछ भजन भी दिये हैं। प्रथम संस्करण वीर सं.2507, जनवरी 1981 में, पृष्ठ संख्या 24 है। इस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद श्रीमती राजरानी जैन, मोरीगेट-दिल्ली ने किया है, जिसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2509, 14 नवम्बर 1983 में छप चुका है।

29. संस्कार—वीर सं. 2501, सन् 1975 में यह उपन्यास माताजी ने लिखा। इसमें भगवान पार्श्वनाथ का मरुभूति की पर्याय से लेकर पार्श्वनाथ तक 10 भवों का कथानक के रूप में वर्णन है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2507, सन् 1981, पृष्ठ संख्या 72 है।

30. आटे का मुर्गा—यशोधर चरित्र पर लिखा गया यह उपन्यास हिंसा के दुष्परिणाम को बताने वाला है। आटे का मुर्गा बनाकर उसकी बलि करना भी कितने महान् पाप बंध का कारण बना? अति रोमांचक कथानक है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 148 है।

31. जीवनदान—जीव दया पर लिखे गये इस उपन्यास में मृगसेन धीवर द्वारा ली गई छोटी सी प्रतिज्ञा उसे अगले भव में पाँच बार जीवन रक्षा में सहकारी होती है। इस घटना को बहुत ही सरल भाषा में प्रदर्शित करता है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507 सन् 1981 में, पृष्ठ 36 है। इस पुस्तक पर श्रीमती राजरानी जैन, मोरीगेट-दिल्ली ने अंग्रेजी अनुवाद किया है, जिसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, 16 मार्च 1984 में छप चुका है।

32. उपकार—वीर सं. 2503, सन् 1977 में यह उपन्यास लिखा। जीवंधर कुमार के जीवन के उतार-चढ़ाव को दर्शाने वाला यह उपन्यास सुकृत की महिमा को प्रकट करता है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981, पृष्ठ संख्या 60 है।

33. परीक्षा—वीर सं. 2504, सन् 1979 में यह उपन्यास लिखा। पद्मपुराण के आधार से उपन्यास की शैली में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी एवं सीताजी का जीवनवृत्त इसमें है। पृष्ठ संख्या 160 है।

34. प्रतिज्ञा—हस्तिनापुर में वीर सं. 2503 सन् 1977 में "मनोवती की दर्शन कथा" के आधार पर लिखा हुआ यह रोमांचक उपन्यास है। पृष्ठ संख्या 128 है।

35. भक्ति—वीर सं. 2506, सन् 1980 में यह पुस्तक लिखी है। यह भी उपन्यास है, जिसमें सेठ सुदर्शन, महामुनि सुकुमाल, रक्षाबंधन एवं अंजन चोर की कथाएँ हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 106 है।

36. प्रभावना—इस उपन्यास में अकलंक-निकलंक का जीवन-वृत्त दिया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, सन् 1980 में, पृष्ठ संख्या 80 है।

37. योगचक्रेश्वर बाहुबली—वीर सं. 2505, सन् 1979 में यह पुस्तक लिखी। भगवान बाहुबली की जीवनी एवं श्रवणबेलगोला की प्रतिमा निर्माण का रोचक प्रसंग उपन्यास की शैली में निरूपित है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, सितम्बर 1980 में, पृष्ठ संख्या 115 है।

38. कामदेव बाहुबली—वीर सं. 2506, सन् 1980 में यह पुस्तक लिखी। भगवान बाहुबली जिन्होंने जीतकर भी अस्थिर राज्य संपदा का त्याग कर इस भारत भूमि पर एक महान् परम्परा का बीजारोपण किया, जिसका भारत के शासक आज भी अनुकरण कर रहे हैं, उनका प्रेरणास्पद कथानक इस छोटे से उपन्यास में अवतरित किया है। यह उपन्यास हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं मराठी भाषाओं में प्रकाशित किया गया। वीर सं. 2507, सन् 1981 में भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक महोत्सव श्रवणबेलगोला के अवसर पर। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 39 है।

39. आदिब्रह्मा—वीर सं. 2507, सन् 1981 में यह पुस्तक लिखी। जैन संस्कृति के वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों में प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का चरित्र संक्षेप में दिया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ 164 है।

40. पतिव्रता—उपन्यासों की शृँखला में यह भी अपना विशेष महत्व रखता है। अपने कोढ़ी पति कोटिभट श्रीपाल का एवं उसके सैकड़ों योद्धा साथियों का कुष्ठ रोग दूर करने वाली शील शिरोमणि मैना सती को जैन समाज का ऐसा कौन व्यक्ति होगा, जो न जानता हो। जिसने सिद्धचक्र विधान रचाकर भगवत् भक्ति के प्रभाव के अभिषेक का गंधोदक लगाकर महारोग को दूर किया। अतिरोमांचक कथानक है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 92 है।

41. एकांकी प्रथम भाग—इसमें तीन कथानक लघु नाटिकाओं के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। (1) दृढ़सूर्य चोर एवं णमोकार महामंत्र का प्रभाव (2) अहिंसा की पूजा (यमपाल चांडाल की दृढ़ प्रतिज्ञा) (3) सती चंदना। प्रथम संस्करण वीर सं. 2509, अक्टूबर 1983 में, पृष्ठ 48 है।

42. एकांकी द्वितीय भाग—इसमें भी तीन कथानक लघु नाटिकाओं के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं-(1) तीर्थंकर ऋषभदेव (2) अकाल मृत्यु विजय (पोदनपुर नरेश विजय महाराज (3) प्रत्युपकार पूर्व भव में राजा मेघरथ के रूप में भगवान शांतिनाथ। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, अक्टूबर 1984, पृष्ठ संख्या 64 है।

43. सती अंजना—जैन जगत में सती अंजना का नाम सुपरिचित है। इस उपन्यास में अंजना की जीवनी अति सुंदर एवं आकर्षक शैली में लिखी की गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, सन् 1988 में, पृष्ठ संख्या 128 है।

44. जैन महाभारत—विश्व विख्यात कौरव-पाण्डवों की जीवन कथा जैन पाण्डव पुराण में विस्तार से दी गई है, उसी को संक्षिप्त सरल एवं सुबोध शैली में इस उपन्यास में दिया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, 25 दिसम्बर 1989 में, पृष्ठ संख्या 80 है।

45. भरत का भारत—वीर सं. 2509 सन् 1983 में यह पुस्तक लिखी। भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) के ज्येष्ठ पुत्र भरत जिनके नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा, जो कि इस युग के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट हुए एवं अंत में दैगम्बरी दीक्षा धारण कर मोक्ष प्राप्त किया, उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं को दर्शाया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2518 अक्टूबर 1992 में, पृष्ठ संख्या 260 है।

46. रोहिणी नाटक—वीर सं. 2502, सन् 1976 में यह नाटक लिखा। महारानी रोहिणी जो कि महाराजा अशोक की पत्नी थी, जिसके पुण्य का इतना प्रबल उदय था कि उसे यह भी मालूम नहीं था कि रोना किसे कहते हैं? उसने ऐसे महान पुण्य का बंध रोहिणी व्रत करके किया था, उस व्रत की महिमा इस नाटक में दिखाई गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981, पृष्ठ 72 है।

47. बाहुबली नाटक—भगवान बाहुबली का जीवन चरित्र तथा उनकी प्रतिमाओं के निर्माण का इतिहास, विशेषकर कर्नाटक प्रदेश में श्रवणबेलगोला स्थित 57 फुट ऊँची प्रतिमा के निर्माण का इतिहास इस लघुकाय पुस्तक में नाटक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में पृष्ठ संख्या 72 है।

48. पुरुदेव नाटक—भगवान ऋषभदेव के परम पावन जीवनवृत्त को प्रदर्शित करने वाले इस नाटक का प्रकाशन भी महोत्सव के शुभ अवसर पर किया गया। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 122 है।

अप्रकाशित ग्रंथ

49. ऐतिहासिक आर्यिकाएँ—इसमें आदिपुराण, पद्मपुराण आदि ग्रंथों के आधार से ब्राह्मी-सुन्दरी आदि लगभग 27 महान्-महान् आर्यिकाओं का सुंदर वर्णन है।

50. रोहिणी कथा—'बृहत्कथाकोश' संस्कृत पुस्तक से इस कथा का हिन्दी अनुवाद है। यह अच्छी रोचक कथा है।

51. बोध कथाएँ—इसमें संक्षेप में कतिपय पौराणिक लघु कथाएँ दी गई हैं। कुछ संस्कृत में रचित लघु कथाएँ भी हैं।

52. समवसरण—तिलोयपण्णत्ति के आधार से तीर्थंकर भगवान के समवसरण का इसमें संक्षिप्त वर्णन है। आदिपुराण,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हरिवंश पुराण आदि ग्रंथों के आधार भी लिए गए हैं।

53. तीर्थंकर महावीर की शासन परम्परा

54. प्राचीन दिगम्बर जैन साधु

55. प्राचीन आर्यिकाएं

करणानुयोग (सिद्धान्त ग्रंथ)

56. षट्खण्डागम (सिद्धान्तचिंतामणि टीका समन्वितः) खण्ड 1, पुस्तक 1—हस्तिनापुर जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की प्रार्थना से आश्विन शुक्ला पूर्णिमा वीर सं. 2521, 8 अक्टूबर 1995 को प्रातः 11 बजकर 25 मिनट पर मंगलाचरण लिखकर संस्कृत टीका लिखने का सूत्रपात किया।

आचार्य पुष्पदन्त भूतबलि द्वारा रचित इन षट्खण्डागम सूत्रों पर श्री वीरसेनाचार्य के पश्चात् किसी भी आरातीय आचार्य अथवा विद्वान ने लेखनी चलाने का उपक्रम नहीं किया था। वह उद्यम इस सदी की ऐतिहासिक नारी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने कर दिया है। श्री पुष्पदंत भूतबलि आचार्य ने जिनागम को छह खण्डों में विभाजित करके 'षट्खण्डागम' यह सार्थक नाम देकर सिद्धान्त सूत्रों को लिपिबद्ध किया है।

छह खण्ड के नाम—1. जीव स्थान 2. क्षुद्रक बंध 3. बंध स्वामित्व विचय 4. वेदनाखण्ड 5. वर्गणाखण्ड 6. महाबंध ये नाम हैं।

वर्तमान में सोलह पुस्तकों में पाँच खण्ड माने गए हैं। उनके सूत्रों की गणना छह हजार आठ सौ इकतालीस है। (6841) छः पुस्तकों तक प्रथम खण्ड, सातवीं पुस्तक में द्वितीय खण्ड, आठवीं पुस्तक में तृतीय खण्ड, नवमी से बारहवीं पुस्तक तक चतुर्थ खण्ड, तेरहवीं पुस्तक से सोलहवीं तक पाँचवां खण्ड है।

प्रथम खण्ड में आठ अनुयोगद्वार एवं अंत में एक चूलिका अधिकार है, जिसके नव भेद हैं। आठ अनुयोग द्वार के नाम— 1. सत्प्ररूपणा 2. द्रव्य प्रमाणानुगम 3. क्षेत्रानुगम 4. स्पर्शानुगम 5. कालानुगम 6. अन्तरानुगम 7. भावानुगम 8. अल्पबहुत्वानुगम है।

षट्खण्डागम की इस प्रथम खण्ड की प्रथम पुस्तक में सत्प्ररूपणा के एक सौ सतहत्तर (177) सूत्र छपे हैं, वे श्री पुष्पदन्ताचार्य द्वारा विरचित हैं। इन 177 सूत्र पर संस्कृत टीका पूज्य माताजी ने सरल भाषा में की है और इसका हिन्दी अनुवाद पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने किया है। इस प्रथम पुस्तक की टीका को पूज्य माताजी ने पिड़ावा (राज.) में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी वीर सं. 2522, 25 फरवरी 1996 को लिखकर पूर्ण किया। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2524, आश्विन शुक्ला 15, शरदपूर्णिमा 5 अक्टूबर 1998। पृष्ठ संख्या 512 है।

57. षट्खण्डागमः (सिद्धान्तचिंतामणि टीका समन्वितः) प्रथम खण्ड-पुस्तक 2—

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने षट्खण्डागम की द्वितीय पुस्तक का लेखन कार्य मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की यात्रा के मध्य मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में वीर सं. 2522, चैत्र कृष्णा एकम्, 6 मार्च 1996 को मंगलाचरण लिखकर उसकी टीका लिखना प्रारंभ किया। इसमें सत्प्ररूपणा के अन्तर्गत 177 सूत्रों में गुणस्थान, जीव समास, पर्याप्ति और चौदह मार्गणाओं का विस्तार से वर्णन किया है। इसकी हिन्दी टीका प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा की गई है।

इस पुस्तक में गुणस्थान और मार्गणा इन दोनों महाधिकारों में मिलकर उसकी बीस प्ररूपणाओं के द्वारा ग्रंथ में पाँच सौ पैंतालिस (545) संदृष्टियाँ हैं।

हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर निर्वाण संवत् 2525 की माघ शुक्ला पंचमी (बसंत पंचमी) सन् 1999 के दिन यह टीका पूर्ण हुई है। प्रकाशन—वीर सं. 2531, आश्विन शु. पूर्णिमा (शरदपूर्णिमा) 17 अक्टूबर 2005, पृष्ठ संख्या 382 है।

58. त्रिलोक भास्कर—दिल्ली पहाड़ी धीरज पर वीर सं. 2498 (सन् 1972) के चातुर्मास में करणानुयोग से संबंधित ग्रंथ 'त्रिलोक भास्कर' लिखा। वैसे तो तीनलोक का विस्तृत वर्णन तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, लोक विभाग आदि अनेक ग्रंथों में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्वाचार्यों ने किया है, किन्तु सुगमता की दृष्टि से पूज्य माताजी ने सरल हिन्दी में उन्हीं ग्रंथों का सार इसमें लिया है। यथास्थान चार्ट एवं चित्रों को देकर इसे विशेष रूप से पठनीय बना दिया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2500 सन् 1974 में, पृष्ठ संख्या 280 है।

59. गोम्मटसार जीवकांडसार—आचार्य नेमीचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित गोम्मटसार जीवकांड ग्रंथ 734 प्राकृत गाथाओं में रचित है। अधिक दुरूह होने से इसे हृदयंगम करना जनसाधारण के बस की बात नहीं है। इस दृष्टि से माताजी ने 734 गाथाओं में से 149 गाथाएँ चयनकर इस साररूप पुस्तक का सृजन किया है। यह भी विद्यार्थियों के लिए एवं संक्षेप रुचि वालों के लिए अति उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं.2514, अक्टूबर 1988 में, पृष्ठ संख्या 158 है।

60. गोम्मटसार कर्मकाण्डसार—आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित गोम्मटसार कर्मकांड नामक ग्रंथ में नौ अध्यायों में 972 गाथाएँ प्राकृत में हैं। यह ग्रंथ भी उपर्युक्त की तरह सरलता से समझ में आ जावे, इसे दृष्टि में रखकर पूज्य माताजी ने पूरे ग्रंथ से 133 गाथाओं को साररूप छांटकर लघुकाय बना दिया है। परीक्षार्थियों के लिए विशेष उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515 अक्टूबर 1989 में, पृष्ठ संख्या 112 है।

61. भावत्रिभंगी—दिल्ली-नजफगढ़ वीर. सं. 2599, सन् 1973 के चातुर्मास में भावत्रिभंगी ग्रंथ का अनुवाद किया। आचार्य श्रुतमुनि विरचित इस कृति में क्षायिक आदि 5 भावों में मार्गणाओं व गुणस्थानों को घटित किया है। इसमें 116 गाथाएँ है। पूज्य माताजी ने इसका अनुवाद करके सैद्धान्तिक चर्चा प्रेमियों के लिए इसे सुगम बना दिया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, नवम्बर 1988 में, पृष्ठ संख्या 80 है।

62. जैन भूगोल—इस छोटी सी पुस्तक में अनेकों ग्रंथों के साररूप में सरल भाषा में जम्बूद्वीप, नंदीश्वर द्वीप व तीन लोक का अति संक्षिप्त वर्णन किया है। इस पुस्तक को पढ़कर पृथ्वी मण्डल का सहज ज्ञान प्राप्त हो सकता है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, मार्च 1984 में, पृष्ठ संख्या 60 है। इस पुस्तक का डॉ. एस.एस. लिश्क-पटियाला (पंजाब) ने अंग्रेजी में अनुवाद किया है। जिसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, सन् 1985 में छप चुका है।

63. चर्चा शतक—कविवर द्यानतरायजी ने इस कृति में तीन लोक, गुणस्थान, मार्गणा, जीव समास, चार गति आदि विभिन्न विषयों पर 100 श्लोकों की रचना ढुंढारी भाषा में की है, जिनसे अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है। श्लोकों का हिन्दी अर्थ भी दिया गया है। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से इसका प्रथम बार प्रकाशन हुआ है। चर्चा प्रेमियों के लिए यह अच्छा ग्रंथ है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, फरवरी 1989 में, पृष्ठ संख्या 146 है।

64. ज्ञानज्योति गाइड—4 जून 1982 को दिल्ली के लाल किला मैदान से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के करकमलों से एवं पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति प्रवर्तन का शुभारंभ हुआ था। संपूर्ण भारतवर्ष में 1045 दिनों तक भ्रमण हुआ। आवश्यकता को देखते हुए 1984 में इस ज्ञानज्योति गाइड पुस्तक का सृजन माताजी ने किया। इसको पढ़ने से हस्तिनापुर का इतिहास, जम्बूद्वीप रचना का परिचय तथा ज्योति रथ पर दिये गये चित्रों का परिचय प्राप्त होता है। हिन्दी के अतिरिक्त मराठी व असमिया भाषा में भी इसका प्रकाशन किया गया। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, सन् 1984 में, पृष्ठ संख्या 44 है।

65. हस्तिनापुर—वीर सं. 2509, सन् 1983 में यह पुस्तक लिखी। इसमें पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर का प्राचीन इतिहास, भगवान ऋषभदेव का इक्षुरस आहार, रक्षाबंधन पर्व, महाभारत युद्ध आदि बहुत से विषयों का वर्णन किया है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2510, ज्येष्ठ शुक्ला 9, सन् 1984, पृष्ठ संख्या 36 है।

66. जम्बूद्वीप—तीन लोक विषयक अनेक ग्रंथों में जम्बूद्वीप का विस्तृत विवेचन पढ़ने को मिलता है, उन ग्रंथों को पढ़कर, अच्छी तरह से मनन चिंतन, अध्ययन करके माताजी ने यह जम्बूद्वीप नाम की छोटी सी पुस्तक तैयार की है। "गागर में सागर" के समान जम्बूद्वीप विषयक पर्याप्त जानकारी इस पुस्तक से प्राप्त हो जावेगी। यथास्थान तत् संबंधि कुछ चित्र भी दिये गये हैं। प्रथम संस्करण वीर संवत् 2500 सन् 1974 में, पृष्ठ संख्या 80 है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रकाशित ग्रंथ

67. आस्रवत्रिभंगी—पाँच मिथ्यात्व आदि से आस्रव के 57 भेद हैं। इन्हें चौदह गुणस्थान और मार्गणाओं में घटाया है और चार्ट भी दिये गये हैं। यह श्री श्रुतमुनि की रचना है। माताजी ने सन् 1973 में इसका अनुवाद किया है।

68. जैन गणित—इसमें तिलोयपण्णत्ति आदि के आधार से जैनगणित का सुंदर विवेचन है।

69. त्रिलोक विज्ञान

70. आर्यखंड व्यवस्था एवं-अलौकिक गणित

71. मानवलोक

72. गत्यागति एवं जीव के स्वतत्त्व

73. जैनदर्शन में निमित्त-उपादान

74. सम्यग्दर्शन

75. षट्खण्डागम सार

चरणानुयोग (पूजा/विधान साहित्य)

76. मूलाचार पूर्वार्ध—लेखन प्रारंभ वीर सं. 2503, सन् 1977, हस्तिनापुर प्राचीन मंदिर। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2510, सन् 1984, पृष्ठ संख्या 504 है।

77. मूलाचार उत्तरार्ध—लेखन समापन—वीर सं. 2504, वैशाख वदी तीज (अक्षय तृतीया), बुधवार सन् 1978, हस्तिनापुर। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2512, सन् 1986, पृष्ठ संख्या 410 है। इन दोनों ग्रंथों का प्रकाशन "भारतीय ज्ञानपीठ" संस्था से हुआ है।

आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी के द्वारा रचित दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों की आचार संहिता को दर्शाने वाला यह मूलाचार ग्रंथ है। द्वादश अधिकारों में विभक्त प्राकृत भाषा की 1243 गाथाओं में निबद्ध 'मूलाचार' नामक ग्रंथराज दिगंबर आम्नाय में मुनिधर्म के प्रतिपादक शास्त्रों में प्राय: सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है। इन अधिकारों के प्रतिपाद्य विषय हैं क्रमश:-मूलगुण, वृहत्प्रत्याख्यान, संक्षेप प्रत्याख्यान, समयाचार, पंचाचार, पिण्डशुद्धि, षडावश्यक, द्वादशानुप्रेक्षा, अनगार भावना, समयसार, शीलगुण प्रस्तार और पर्याप्ति। वस्तुत: प्रथम अधिकार में निर्देशित मुनिपद के अट्ठाईस मूलगुणों का विस्तार ही शेष अधिकारों में किया गया है। मूलाचार पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों की टीका का हिन्दी अनुवाद पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने किया है। मूलाचार के दोनों भागों का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ से हुआ है।

78. मुनिचर्या—हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर सं. 2517, वैशाख कृष्णा द्वितीया सन् 1991 में यह ग्रंथ पूर्ण किया। मुनि-आर्यिकाओं की नित्य-नैमित्तिक क्रियाओं संबंधी अनेक ग्रंथों का प्रकाशन विभिन्न स्थानों से समय-समय पर हुआ है, किन्तु वे भक्तियाँ आदि संस्कृत-प्राकृत में हैं, जिनका अर्थ बहुत कम त्यागी वर्ग समझ पाते थे। इस कमी की पूर्ति माताजी ने की। सभी भक्तियों का दैनिक व पाक्षिक प्रतिक्रमण पाठों का हिन्दी में पद्यानुवाद कर दिया है, उसी का यह प्रकाशन है। अब इन पाठों को पढ़ने वाले प्रत्येक साधु को यह सहज रूप में समझ में आ जावेगा कि वे क्या पढ़ रहे हैं। दिगम्बर मुनि आर्यिकाओं के लिए यह ग्रंथ विशेष रूप से उपयोगी है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2517, अगस्त 1991 में, पृष्ठ संख्या 628 है।

79. आराधना (अपरनाम-श्रमणचर्या)—हस्तिनापुर में वीर सं. 2503, सन् 1977 में यह पुस्तक लिखी। इसमें दिगम्बर मुनि-आर्यिकाओं की दीक्षा से समाधिपर्यंत प्रतिदिन प्रात: से सायंकाल तक की जाने वाली चर्या एवं क्रियाओं को दर्शाया गया है। गणिनी माताजी ने अपने संस्कृत-व्यांकरण छंद का पूर्णरूप से इसमें सदुपयोग किया है। संपूर्ण 451 संस्कृत श्लोक स्वयं माताजी द्वारा रचित हैं। प्रत्येक श्लोक का हिन्दी में अर्थ तथा जगह-जगह भावार्थ भी उन्हीं का है। श्लोकों के शीर्षक भी दिये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधु-साध्वियों के लिए एवं उनकी चर्या को जानने वाले जिज्ञासु श्रावक-श्राविकाओं के लिए यह छोटा सा ग्रंथ अति उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2505, सन् 1979 में, पृष्ठ संख्या 143 है।

80. जिनस्तोत्र संग्रह—पूज्य गणिनी आर्यिका श्री की संस्कृत काव्यप्रतिभा का परिचायक यह अभूतपूर्व ग्रंथ है। इसमें उनके द्वारा रचित समस्त संस्कृत एवं हिन्दी स्तुतियों का समावेश है। ग्रंथ के चतुर्थखण्ड में एक "कल्याणकल्पतरु" नामक संस्कृत स्तोत्र है। छंदशास्त्र की दृष्टि से इस स्तोत्र का विद्वज्जगत् विशेष मूल्यांकन करेगा, क्योंकि इस पूरे स्तोत्र में 144 छंदों का प्रयोग किया गया है। कुल छह खण्डों में निबद्ध यह ग्रंथ है, जिसमें द्वितीय खण्ड से चतुर्थखण्ड तक पूज्य माताजी द्वारा ही रचित स्तोत्र हैं तथा प्रथम, पंचम एवं छठे खण्डों में अन्य आचार्यों तथा विद्वानों द्वारा रचित संस्कृत-हिन्दी स्तोत्र हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2518, जून 1992, पृ. 532 है।

81. कल्याणकल्पतरु स्तोत्र (छन्दोमंजरी)—हस्तिनापुर प्राचीन मंदिर वीर सं. 2501 (सन् 1975) में पूज्य माताजी ने सभी छंदों का प्रयोग भगवान की स्तुति करने हेतु एक 'कल्याण कल्पतरु स्तोत्र' की मौलिक रचना की। इस स्तोत्र में भगवान ऋषभदेव से लेकर महावीर स्वामी तक चौबीसों तीर्थंकरों की पृथक्-पृथक् स्तुतियाँ हैं। इनमें क्रम से एकाक्षरी से लेकर तीस अक्षरी छंद तक कुल एक सौ चवालिस (144) छंदों का प्रयोग किया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2518, 13 अगस्त 1992, पृष्ठ संख्या 162 है।

82. सामायिक एवं श्रावक प्रतिक्रमण—सामायिक पाठ अनेक प्रकार के प्रचलित हैं। इस पुस्तक में प्राचीन क्रियाकलाप ग्रंथ से प्राप्त सामायिक पाठ व उसका माताजी द्वारा अनुवादित हिन्दी पद्यानुवाद दिया गया है। साथ ही श्रावक प्रतिक्रमण व उसका हिन्दी पद्यानुवाद भी दिया गया है। हिन्दी पद्यानुवाद हो जाने से साधुवर्ग एवं श्रावकों के लिए सामायिक पाठ सुरुचिकर हो गया है। इसी प्रकार से श्रावकों के लिए प्रतिक्रमण पाठ भी अच्छी तरह से समझ में आ जायेगा। इसका प्रकाशन सन् 1991 में हुआ है।

83. आर्यिका—खतौली (मुजफ्फरनगर) में वीर सं. 2502, माघ शुक्ला तेरस, सन् 1976 में यह पुस्तक लिखी। प्रस्तुत पुस्तक के सृजन की एक विशेष स्मरणीय घटना रही। एन. शान्ता नामक एक फ्रांसीसी महिला जैन साध्वी एवं क्रिश्चियन साध्वी पर शोध प्रबंध लिख रही थी। बहुत प्रयास के बाद भी उन्हें दिगम्बर साध्वियों के बारे में प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं हो पा रही थी। दैवयोग से उनकी भेंट बनारस में डॉ. गोकुलचंद जैन से हुई। उन्होंने इसके लिए पूज्य ज्ञानमती माताजी का नाम सुझाया। वे ढूँढ़कर माताजी के पास आईं और आर्यिका चर्या की जानकारी के लिए अनेक प्रश्न किये। कुछ प्रश्नों के उत्तर माताजी ने तत्काल दिये एवं शेष प्रश्नों के समाधान रूप में "आर्यिका" नाम से यह पूरी पुस्तक ही तैयार कर दी। जब वे दूसरी बार आईं तो पुस्तक देखकर बहुत प्रसन्न हुईं। "एक पंथ दो काज" हो गये। एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति हुई। आर्यिकाओं की चर्या का ज्ञान कराने वाली एक प्रामाणिक पुस्तक तैयार हो गई। प्रथम संस्करण वीर सं. 2502, सन् 1976 में, पृष्ठ संख्या 80 है।

84. शिक्षण पद्धति—दिल्ली में वीर सं. 2505 सन् 1979 में यह पुस्तक लिखी। बालक-बालिकाओं तथा जैनधर्म का प्रारंभिक ज्ञान अर्जन करने वाले युवा एवं प्रौढ़ स्त्री-पुरुषों को किस प्रकार से शिक्षण देना चाहिए कि जिससे उनको समीचीन ज्ञान की प्राप्ति हो तथा जिनधर्म के दृढ़ श्रद्धानी बनें। इस पुस्तक में बालविकास चार भाग, छहढाला तथा द्रव्य संग्रह पुस्तकों को किस प्रकार से पढ़ना चाहिए, उसकी पद्धति शिक्षकों के लिए दी गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2505, सितम्बर 1979 में, पृष्ठ संख्या 32 है।

85. रत्नकरण्ड श्रावकाचार—दिल्ली में वीर सं. 2506, चैत्र कृष्णा नवमी, ऋषभजयंती, सन् 1980 में इसका पद्यानुवाद किया। तार्किक शिरोमणि आचार्य समंतभद्रकृत सर्व परिचित रत्नकरण्ड श्रावकाचार ग्रंथ के 150 श्लोकों का माताजी ने हिन्दी पद्यानुवाद किया है। इसमें हिन्दी पद्य तथा पद्यों के सामने संक्षेप में अर्थ दिया गया है। शिक्षण शिविरों तथा विद्यालयों के लिए विशेष उपयोगी है। रत्नकरण्ड पद्यावली के नाम से प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, मई 1980 में, पृष्ठ संख्या 106 है।

86. सोलह भावना—जिनकी भावना भाने से तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो जाता है, ऐसी सोलह भावनाओं का स्वरूप एवं एक-एक भावना संबंधी कथा इस पुस्तक में दी गई है। कथाएँ पुराण ग्रंथों से माताजी ने स्वयं संकलित की हैं। स्वाध्याय के लिए तो उत्तम है ही, प्रवचनकार विद्वानों के लिए भी विशेषरूप से उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, फरवरी 1985 में, पृष्ठ संख्या 100 है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

87. जिनसहस्रनाम मंत्र—म्हसवड़ (जि. सोलापुर-महाराष्ट्र) के चातुर्मास में श्रावण शु. एकम् वीर सं. 2581, सन् 1955 के दिन जिनसहस्रनाम मंत्र लिखना प्रारंभ कर श्रावण शु. 3, वीर सं. 2581, सन् 1955 को ये 1008 मंत्र पूर्ण किए। पूज्य माताजी ने क्षुल्लिका दीक्षा लेने के दो वर्ष पश्चात् अपनी लेखनी से सर्वप्रथम भगवान् के 1008 नामों के मंत्र बनाये। जिसका प्रकाशन वीर सं. 2581, सन् 1955 में म्हसवड़ (सोलापुर) महा. से हुआ था। उसके बाद दूसरी बार मार्च सन् 1992 में उसका प्रकाशन हुआ है। इस पुस्तक में माताजी द्वारा रचित जिनसहस्रनाम पूजा तथा सरस्वती पूजा भी दी गई है। सहस्रनाम मंत्र नित्य पठनीय है। भगवान के नाम मंत्रों से प्रारंभ हुई लेखनी से अब तक 250 ग्रंथ लिखे जा चुके हैं। पृ. सं. 48 है।

88. सामायिक—इस पुस्तक में सुप्रभात स्तोत्र, मंगल स्तुति, देववंदना विधि, सामायिक विधि, पूजा मुख विधि, पूजा अन्त्य विधि, चतुर्दशी क्रिया विधि, अष्टमी क्रिया विधि, अष्टान्हिका आदि पर्वों में करने योग्य विधि, शांति भक्ति, श्री बाहुबली स्तोत्र, उषावंदना, जंबूद्वीप स्तुति, त्रैलौक्य चैत्य वंदना, श्री सम्मेदशिखर वंदना, उपसर्ग विजयी श्री पार्श्वनाथ स्तुति, श्री पार्श्वजिन स्तुति, समाधि भक्ति, श्री वीराष्टक स्तोत्र है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2498, आश्विन कृष्णा एकम् (क्षमावणी), सितम्बर 1972, पृष्ठ संख्या 58 है।

89. सामायिक पाठ (देववंदना)—सामायिक का दूसरा नाम देववंदना भी शास्त्रों में आया है। इस पुस्तक में शास्त्रोक्त विधि से सामायिक करने की प्रक्रिया दी गई है। माताजी ने हिन्दी पद्यानुवाद कर दिया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, अक्षय तृतीया सन् 1988 में, पृष्ठ संख्या 16 है।

90. कुन्दकुन्द का भक्तिराग—भक्तिमार्ग का प्रचार-प्रसार आज से नहीं, आचार्य कुन्दकुन्द के समय से था। वीतराग मार्ग का अनुसरण करते हुए स्वयं आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने भक्ति पाठों की रचना की। ये भक्तियाँ प्राकृत भाषा में रचित हैं। आर्यिका रत्नमती जी के विशेष आग्रह से पूज्य माताजी ने इनका हिन्दी पद्यानुवाद सन् 1972 में कर दिया था, किन्तु उनका प्रकाशन सन् 1985 में हो पाया।

इस पुस्तक में आचार्य पूज्यपाद कृत संस्कृत भक्तियों का तथा गौतम गणधर रचित दो भकितयों का हिन्दी पद्यानुवाद भी दिया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, वैशाख कृष्णा द्वितीया, अप्रैल 1985 में, पृष्ठ संख्या 151 है।

91. दशधर्म—उत्तम क्षमा आदि दश धर्मों के विवेचन रूप में छोटी-बड़ी अनेक पुस्तकों का प्रकाशन विभिन्न स्थानों से विभिन्न लेखकों के द्वारा हुआ है, किन्तु यह अपने प्रकार की एक अलग ही पुस्तक है। इसमें प्राकृत वाली दशधर्म की पूजा के एक-एक धर्म के अर्घ्य के श्लोकों को प्रारंभ में देकर उसका अर्थ, उस धर्म से संबंधित कथाएँ एवं इस धर्म का विवेचन दिया है। पुस्तक के अंत में माताजी द्वारा रचित दशधर्म की एक-एक हिन्दी कविता भी दी गई है। प्रवचनकर्ताओं के लिए यह पुस्तक विशेष उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2509, 21 अप्रैल 1983 में, पृष्ठ संख्या 110 है।

92. दिगम्बर मुनि—वैसे तो दिगम्बर मुनि-आर्यिकाओं की चर्या संबंधी अनेक ग्रंथ लिखे गये हैं, जैसे-मूलाचार, अनगार-धर्मामृत इत्यादि, किन्तु ये ग्रंथ बड़े-बड़े हैं। सामान्यजन इन ग्रंथों को पढ़कर संक्षेप में मुनिचर्या की जानकारी प्राप्त नहीं कर पावेंगे। इसे लक्ष्य में रखकर माताजी ने उक्त ग्रंथों के सार से, न बहुत संक्षिप्त न अति विस्तृत अपितु मध्यम रूप में इस "दिगम्बर मुनि" नाम से ग्रंथ को लिखकर तैयार किया। जिन-जिन ग्रंथों से जिस विषय को इसमें लिया है, नीचे टिप्पणी में उन ग्रंथों का नाम दे दिया है। समस्त विश्व के लोगों के लिए दिगम्बर मुनि आर्यिकाओं की दीक्षा से समाधिपर्यंत प्रतिदिन प्रातः से रात्रि तक की जाने वाली क्रियाओं का सरलता से बोध कराया गया है। स्वयं मुनि--आर्यिकाओं के लिए भी यह ग्रंथ अत्यंत उपयोगी है। पृष्ठ संख्या 332 है।

93. आत्मा की खोज—हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर सं. 2501, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा गुरुवार, सन् 1975 को यह पुस्तक लिखी। चौबीस तीर्थंकरों की चौबीस स्तुतियों में तीर्थंकरों का पूरा परिचय आलंकारिक शैली में दिया गया है। पुस्तक के अंत में आत्म-पीयूष नाम से 45 पद्यों की एक भावपूर्ण स्तुति है, जिसमें शुद्धात्मा की भावना भाई गई है। नित्य पाठ करने योग्य है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2501, सन् 1975 में, पृष्ठ सं. 36 है।

94. धरती के देवता—देव स्वर्ग में भी रहते हैं व पृथ्वी पर भी, किन्तु यहाँ धरती के देवता का तात्पर्य है मानव शरीर को धारण करने वाले दिगम्बर मुनि। पूज्य माताजी ने अति संक्षेप में इस छोटी सी पुस्तक में यह बताया है कि दिगम्बर मुनि कैसे बनते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं? प्रात: से रात्रि तक क्या करते हैं? किन महान् गुणों का पालन करते हैं? इत्यादि। अन्य धर्मावलम्बियों ने दिगम्बर मुनि अवस्था को सर्वश्रेष्ठ माना है। यह बताया गया है। यह पुस्तक जैन व जैनेतर सभी के लिए पठनीय है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2508 जून 1982 में, पृष्ठ संख्या 40 है।

95. इन्द्रध्वज विधान—खतौली (उ.प्र.) के चातुर्मास में श्रावण कृष्णा 1, वीर सं. 2503 से प्रारंभ कर वीर सं. 2502, कार्तिक कृ. अमावस्या दीपावली पर्व सन् 1976 में पहली बार स्वतंत्ररूप से इसे हिन्दी भाषा में पूज्य माताजी द्वारा लिया गया। तब से सारे देश में इस विधान की धूम मची हुई है। इसमें मध्यलोक के 458 अकृत्रिम जिनचैत्यालयों की पूजा है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2504, अक्टूबर 1978 में, पृष्ठ संख्या 496 है।

96. कल्पद्रुम विधान—हस्तिनापुर में वीर सं. 2512, आषाढ़ शु.2, 7 जुलाई 1986 से प्रारंभ कर आश्विन शु. 15, वीर सं. 2512, सन् 1986 को पूर्ण किया। सन् 1986 में यह विधान पहली बार पूज्य माताजी की कलम से लिखा गया। इससे पहले इस नाम से कोई भी रचना देखने में नहीं आई। इसमें समवसरण की पूजा है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2513, 8 मार्च 1987 में, पृष्ठ संख्या 464 है।

97. सर्वतोभद्र विधान—हस्तिनापुर में वीर सं. 2512, आश्विन शु. 15, शरदपूर्णिमा 1986 को प्रारंभ कर माघ शु. 10, वीर सं. 2513, सन् 1987 में पूर्ा किया। इस विधान की रचना सर्वप्रथम पूज्य माताजी ने की। इसमें तीन लोक के समस्त अकृत्रिम जिनचैत्यालयों की 101 पूजाएँ हैं। अर्घ्य 2000 हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, सितम्बर 1988 में, पृष्ठ संख्या 870।

98. तीन लोक विधान—(मध्यम तीनलोक विधान) हस्तिनापुर में आश्विन शु. 15 से प्रारंभ कर पौष शु. 13, वीर सं. 2513 सन् 1987 में पूर्ण किया। इसमें तीन लोक संबंधी 64 पूजाएँ हैं। अर्घ्य 884 एवं पूर्णार्घ्य 140 हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, सितम्बर 1988 में, पृष्ठ 308 है।

99. त्रैलोक्य विधान (लघु तीन लोक विधान)—हस्तिनापुर में आश्विन शु. 15, वीर सं. 2512 से प्रारंभ कर पौष शु. 13, वीर सं. 2513 सन् 1987 को पूर्ण किया है। इस विधान में भी तीन लोक की समस्त अकृत्रिम जिनप्रतिमाओं की पूजा है। इसमें 567 अर्घ्य व 74 पूर्णार्घ्य है। यह लघु तीन लोक विधान है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, सन् 1988 में, पृष्ठ 308 है।

100. श्री सिद्धचक्र विधान—हस्तिनापुर जम्बूद्वीप पर वीर सं. 2518, आश्विन सुदी पूर्णिमा (शरदपूर्णिमा) 11 अक्टूबर सन् 1992 को यह विधान पूर्ण किया। सिद्धचक्र मण्डल विधानों के आयोजन की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। आज से लगभग 20-22 वर्ष पूर्व अष्टान्हिका पर्वों में यत्र-तत्र कविवर सन्तलाल जी द्वारा रचित सिद्धचक्र विधान होते रहते थे। जिनमें न तो किसी विद्वान विशेष की आवश्यकता होती थी और न ही संगीतकार बुलाए जाते थे। किन्तु जब से सन् 1976 में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने इन्द्रध्वज विधान की रचना कर दी, जब से समाज में मण्डल विधानों की नई लहर सी छा गई। काफी दिनों से अनेक श्रीमानों एवं धीमानों द्वारा पूज्य माताजी के पास एक विनय विज्ञप्ति संदेश ला रही थी कि आप अपनी सरस, सरल एवं मधुर शैली में नवीन सिद्धचक्र विधान की रचना कर दीजिए। तब माताजी ने मात्र 3 माह 15 दिन की अल्पावधि में यह काव्यग्रंथ अपनी अलौकिक प्रतिभा से रच दिया। प्रथम संस्करण—सन् 1993 में, पृष्ठ संख्या 333 है।

101. नंदीश्वर विधान—पूज्य माताजी ने वीर सं. 2500 माघ शुक्ला दशमी सन् 1974 में यह विधान रचकर पूर्ण किया। इस विधान में पाँच पूजाओं में संक्षेप में नंदीश्वर द्वीप के बावन जिनमंदिरों की पूजा की गई है। इस विधान को आष्टान्हिक पर्व के आठ दिनों तक प्रतिदिन करना चाहिए। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2521, आश्विन सुदी पूर्णिमा, सन् 1995, पृष्ठ संख्या 56 है।

102. विश्वशांति महावीर विधान—भगवान ऋषभदेव के तपकल्याणक एवं ज्ञानकल्याणक से पवित्र तीर्थ प्रयाग (इलाहाबाद) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ पर वीर सं. 2527, पौष सुदी षष्ठी ईसवी सन् 1 जनवरी 2000 को यह विधान पूर्ण किया।

इस महावीर विधान को 2600वीं जन्मजयंती से जोड़ते हुए पूज्य माताजी ने इसमें महावीर स्वामी के गुण, नाम, विशेषण एवं उनके पुण्य आदि गुणों का बखान करते हुए पूरे 2600 मंत्र लिखे हैं। भगवान महावीर के 2526वें निर्वाण दिवस के समापन एवं 2527वें वर्ष के प्रारंभ में कार्तिक कृष्णा अमावस दिनाँक 27-10-2000 मंगलवार को मंगलाचरणपूर्वक प्रारंभ किया। इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतिशयकारी महाविधान का लेखन 1-1-2001, सोमवार, वीर निर्वाण संवत् 2527, पौष शुक्ला षष्ठी को पूर्ण हुआ। अर्थात् पूरे 66 दिन तक लिखी गई 135 पृष्ठों की यह कृति 67वें दिन स्वयं अपने करकमलों द्वारा पूजय माताजी ने प्रभुचरणों में समर्पित कर असीम आल्हाद का अनुभव किया। प्रथम संस्करण—अप्रैल सन् 2001 में, पृष्ठ संख्या 300

103. जम्बूद्वीप मण्डल विधान—हस्तिनापुर जम्बूद्वीप पर ज्येष्ठ सुदी पंचमी (श्रुत पंचमी) वीर सं. 2512, सन् 1986 में यह विधान पूर्ण किया। इस विधान में जम्बूद्वीप के अकृत्रिम व कृत्रिम चैत्यालयों की पूजाएँ हैं। इसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2513, मार्च 1987 में प्रकाशित हुआ है। पृष्ठ संख्या 270 है।

104. श्री पंचकल्याणक विधान—सरधना (मेरठ) उ.प्र. के चातुर्मास में वीर सं. 2517 भादों वदी एकम् सन् 1991 को सोलहकारण पर्व में यह विधान लिखकर पूर्ण किया। इस पूजन विधान में कुल 6 पूजाएँ हैं और 120 अर्घ्य हैं, 5 पूर्णार्घ्य हैं एवं 6 जयमालाएँ हैं। इस विधान में पंचकल्याणक की तिथियां, नक्षत्र, योग, दीक्षा वन, दीक्षा वृक्ष, सह दीक्षित मुनि, दीक्षा के समय के उपवास दीक्षा के समय की पालकी, वैराग्य के कारण आदि विषय उत्तरपुराण ग्रंथ के आधार से लिए गए हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2519, माघ कृ. 14, सन् 1993, पृष्ठ 56 है।

105. चौंसठ ऋद्धि विधान—हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर सं. 2519 पौष कृष्णा द्वितीया सन् 1993 में यह विधान लिखकर पूर्ण किया। इस विधान में सर्वप्रथम गणधर और मुनिगण सहित चौबीस तीर्थंकरों की पूजा है। पुनः चौसठ ऋद्धि की समुच्चय पूजा है। अनंतर क्रम से आठों ऋद्धियों की आठ पूजाएँ हैं। इस प्रकार इस विधान में 10 पूजाएँ हैं। 24+64=88 अर्घ्य है। 9 पूर्णार्घ्य हैं और दस जयमालाएँ हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2521, आश्विन शुक्ला 15, 8 अक्टूबर 1995, पृष्ठ संख्या 63 है।

106. श्रुतस्कंध विधान—हस्तिनापुर में वीर सं. 2515, ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी 'श्रुतपंचमी' सन् 1986 में इस विधान को लिखकर पूर्ण किया। इस विधान में द्वादशांग जिनवाणी की पूजा के बाद आठ दल में द्वादशांग के 12 अर्घ्य, दृष्टिवाद के परिकर्म के 5 अर्घ्य, दृष्टिवाद भेदसूत्र का 1 अर्घ्य, पूर्वगत के 14 अर्घ्य, चूलिका के 5 अर्घ्य, अंगबाह्य के 14 भेद के 14 अर्घ्य, अनुयोग के 4 अर्घ्य एवं कतिपय ग्रंथों के 10 अर्घ्य हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर 12+5+1+14+5+14+4+10=65 अर्घ्य हैं। 2 पूर्णार्घ्य हैं और 1 जयमाला है। यह विधान श्रुत ज्ञान को वृद्धिंगत करने वाला है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2521, आश्विन शुक्ला 15, 8 अक्टूबर 1995, पृष्ठ संख्या 48 है।

107. पंचपरमेष्ठी विधान—हस्तिनापुर में वीर सं. 2503, सन् 1977 में आश्विन शुक्ला दशमी को यह विधान पूर्ण किया। पंचपरमेष्ठी जैनधर्म के मूल आधार है। प्रत्येक संज्ञी जीव (मनुष्य या तिर्यंच) इन्हीं का नाम जपकर, पूजा भक्ति करके अपने पापों का नाश करते हैं। इस विधान में भी पंचपरमेष्ठी के गुणों की आराधना की गई है। प्रथम संस्करण वीर संवत् 2508 में, मार्च 1982 में, पृष्ठ संख्या 68 है।

108. सहस्रनाम विधान—टिकैतनगर (बाराबंकी-उ.प्र.) में वीर सं. 2520, सन् 1994 के चातुर्मास में भाद्रपद कृ. 2 को यह विधान प्रारंभ कर आश्विन शु. 15, शरदपूर्णिमा वीर सं. 2520, सन् 1994 में पूर्ण किया। इसमें भगवान के 1008 मंत्रों की पूजा है। इसमें 11 पूजाएँ हैं, 1008 अर्घ्य एवं 12 जयमालाएँ हैं। इन मंत्रों की आराधना, उपासना, पूजा से मन की शुद्धि एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। प्रथम संस्करण—वीर नि. सं. 2521, वीर शासन जयंती, श्रावण कृ. एकम् 13 जुलाई 1995, पृष्ठ संख्या 160 है।

109. बीस तीर्थंकर विधान—हस्तिनापुर में कार्तिक कृष्णा एकम् से प्रारंभ कर कार्तिक कृष्णा सप्तमी वीर सं. 2503 सन् 1977 में यह विधान पूर्ण किया। तीस चौबीसी विधान के अंत में 245 पृष्ठ पर विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान (लघु) छपा हुआ है। यह विधान अभी अलग से छपने के लिए प्रकाशाधीन है। पाँच महाविदेहों में 4-4 तीर्थंकर आज भी विहार कर रहे हैं। इस विधान में विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा एवं बीस तीर्थंकरों के अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य और जयमाला है।

110. चौबीस तीर्थंकर विधान—वीर सं. 2519, मगसिर वदी तेरस सन् 1993 में यह विधान पूर्ण किया। यह विधान अभी जम्बूद्वीप पूजांजलि में पृष्ठ 331 से पृष्ठ 452 तक छपा हुआ है। इसे पूज्य माताजी ने ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन के विशेष आग्रह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से बनाया है। इसमें सर्वप्रथम मंगल स्तोत्र के बाद चौबीस तीर्थंकर समुच्चयं पूजा, उसके बाद चौबीसों भगवान की पूजा, पंचकल्याणक के अर्घ्य एवं जयमालाएं है। अंत में बड़ी जयमाला एवं प्रशस्ति है।

111. यागमण्डल विधान—राजधानी दिल्ली कनॉट प्लेस के चातुर्मास में वीर सं. 2525 फाल्गुन कृष्णा चौदस सन् 1999 में यह विधान लिखकर पूर्ण किया। प्रतिष्ठातिलक नामक प्राचीन प्रतिष्ठा ग्रंथ में यह यागमण्डल विधान संस्कृत भाषा में निबद्ध है। श्री नेमिचन्द्र देव द्वारा रचित उसी यागमण्डल पूजा-विधान का पूर्ण आधार लेकर ही पूज्य माताजी ने अत्यल्प समय में उसकी हिन्दी पद्य रचना प्राञ्जल भाषा में करके सर्वजन सुलभ बना दिया है। इस विधान में कुल 9 पूजाएँ हैं तथा 210 अर्घ्य और 12 पूर्णार्घ्य हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2525, श्रुतपंचमी 18 जून 1999, पृ. सं. 168 है।

112. पंचमेरु विधान—हस्तिनापुर में वीर सं. 2503, माघ शु. सप्तमी, सन् 1977 में व्रत उद्यापन के निमित्त यह विधान रचा। अढ़ाई द्वीप में सुदर्शन मेरु आदि पाँच मेरु अवस्थित है। प्रत्येक मेरु के चार-चार वन में 16-16 अकृत्रिम चैत्यालय हैं। इस प्रकार 80 चैत्यालयों में विराजमान अकृत्रिम जिनप्रतिमाओं की इसमें पूजा की गई है। आज इन पंचमेरुओं के साक्षात् दर्शन की शक्ति नहीं है। अतः इनकी भक्तिभाव से पूजा करके साक्षात् दर्शनों का लाभ प्राप्त किया जा सकता है, इन्हीं भावों से माताजी ने इस विधान की रचना की है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, सन् 1988 में, पृष्ठ संख्या 64 है।

113. जम्बूद्वीप पूजांजलि—दिगम्बर जैन पूजा एवं नित्यपाठ विषयक गुटके व जिनवाणी संग्रह प्राचीन समय से हस्तलिखित व छपे हुए प्रकाशित होते रहे हैं। फिर भी भक्तों का वर्षों से आग्रह था कि माताजी की लिखी हुई पूजाओं का संग्रह जम्बूद्वीप संस्थान से प्रकाशित किया जावे। तदनुसार जम्बूद्वीप पूजांजलि नाम से प्राचीन एवं नवीन पूजाओं, स्तुति एवं स्तोत्रों का मिला-जुला प्रकाशन प्रथम संकरण वीर सं. 2514, नवम्बर 1988 में प्रकाशित हुआ। पृष्ठ संख्या 540 है।

114. शांति विधान—दिल्ली-कूचा सेठ में वीर संवत् 2506, वैशाख शुक्ला दशमी, सन् 1980 में यह विधान लिखा। सुख, शांति की प्राप्ति के लिए भगवान शांतिनाथ की पूजा है, इसमें 120 अर्घ्य हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, सन् 1980 में, पृष्ठ संख्या 48 है।

115. ऋषिमंडल विधान—दिल्ली-कूचा सेठ में वीर सं. 2506, चैत्र शुक्ला द्वितीया सन् 1980 में यह विधान लिखा। यह विधान दिगम्बर जैन समाज में चिरकाल से प्रसिद्ध है। सुख, शांति व समृद्धि के लिए इस विधान का पूजन व ऋषिमण्डल स्तोत्र का पाठ किया जाता है। माताजी ने विधान पूजन व स्तोत्र भी हिन्दी में बना दिया है, जिससे पढ़ने वालों को विशेष आनन्द प्राप्त होता है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 52 है।

116. जम्बूद्वीप पूजन विधान—अकृत्रिम जिन चैत्यालयों की भक्ति से सराबोर होकर जम्बूद्वीप रचना निर्माण कराने की अतिउत्कट भावना से पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर के प्राचीन शांतिनाथ जिनालय में भगवान के समक्ष बैठकर जीवन में पहली बार पूजन की रचना की। वीर सं. 2500 सन् 1974 में हस्तिनापुर में आषाढ़ शु. 1 को रात्रि में विधान बनाया। प्रातः आ.शु. 2 को जयमाला पूर्ण की। दो घंटे बाद ही जंबूद्वीप बनाने हेतु जगह (खेत) खरीदने हेतु बयाना दिया गया एवं आ.शु. 3 को सुमेरु का शिलान्यास कराकर माताजी ने दिल्ली की ओर से विहार कर दिया। इसके बाद तो माताजी ने अनेकों पूजाएँ व विधानों की रचना की। इस लघु विधान में जम्बूद्वीप के 78 अकृत्रिम जिनचैत्यालयों के अतिरिक्त जम्बूद्वीप में स्थित समस्त देव भवनों में विराजमान अकृत्रिम जिनप्रतिमाओं की भी पूजा दी गई है। प्रथम संस्कर वीर सं. 2500, सितम्बर 1974 में, पृष्ठ संख्या 64 है।

117. सुदर्शन मेरु पूजा—पूज्य माताजी द्वारा लिखित सुदर्शन मेरु पूजा एवं सुमेरु वंदना के अतिरिक्त अन्य लेखकों की कविताएँ व भजन भी इसमें दिये गये हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506 सन् 1980 में, पृष्ठ संख्या 54 है।

118. श्री ऋषभदेव विधान—अयोध्या महातीर्थ में वीर सं. 2519, शरदपूर्णिमा के दिन सन् 1993 में यह ऋषभदेव विधान पूज्य माताजी ने लिखकर पूर्ण किया। इस विधान में पाँच वलय के माध्यम से अर्घ्यों का विभाजन किया है। प्रथम वलय में 46 गुणों में 46 अर्घ्य, द्वितीय में 18 दोषों से रहित अर्हन्त के 18 अर्घ्य, तृतीय में 48 प्रकार के संकटों के निवारण हेतु 48 अर्घ्य, चतुर्थ में भगवान के 84 गणधरों को 84 अर्घ्य तथा पंचम वलय में सिद्धपद के 8 गुणों के प्रतीक में 8 अर्घ्य हैं। इस प्रकार पूरे विधान में एक पूजा, 204 अर्घ्य तथा 5 पूर्णार्घ्य हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2523, दशलक्षण पर्व सन् 1997, पृष्ठ संख्या 54 है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

119. श्री नेमिनाथ विधान—हस्तिनापुर में वीर सं. 2531, श्रावण शुक्ला षष्ठी तिथि में सन् 2005 में श्री नेमिनाथ विधान की रचना की। इस पूजा विधान में भगवान नेमिनाथ की पूजा के साथ 108 मंत्र के अर्घ्य हैं। भगवान नेमिनाथ निर्वाण भूमि गिरनार सुरक्षा दिवस के उपलक्ष्य में गिरनार पर्वत की रक्षा हेतु पूज्य माताजी ने यह विधान रचा है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2532, मगसिर कृष्णा दशमी भगवान महावीर दीक्षा तिथि 27 जनवरी 2005, पृष्ठ संख्या 63 है।

120. मनोकामना सिद्धि भगवान महावीर व्रत एवं महावीर पूजा—वीर सं. 2526, सन् 2000 भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती वर्ष में यह पुस्तक लिखी। इसमें भगवान महावीर स्वामी की पूजा एवं महावीर व्रत के 108 मंत्र हैं और महावीर स्वामी का परिचय है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2527, आश्विन शु. 5, 21 अक्टूबर 2001, पृष्ठ संख्या 24 है।

121. श्री वीरगुणसंपद् विधान—प्रयाग तीर्थ पर वीर सं. 2528 मगसिर शुक्ला पूर्णिमा सन् 2002 भगवा महावीर स्वामी के 2600 वें जन्मकल्याणक उत्सव पर इस विधान को लिखकर पूर्ण किया। यह विश्वशांति महावीर विधान का लघु रूप विधान है। इसमें महावीर स्वामी की पूजा एवं 1008 नाम मंत्र के अर्घ्य है। इस मण्डल विधान में दस कोठों में प्रत्येक कोठे में सौ-सौ अर्घ्य और अंतिम कोष्ठक में 108 अर्घ्य चढ़ाए जाते हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2528, माघ कृ. 14, श्री ऋषभदेव निर्वाण दिवस, 10 फरवरी 2002, पृष्ठ संख्या 72 है।

122. महावीर समवसरण विधान—भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में वीर सं. 2529, आषाढ़ सुदी छठ, सन् 2003 को 'वीरशासन जयंती' के निमित्त से पूज्य माताजी ने यह विधान लिखकर पूर्ण किया। 2003 में माताजी के सानिध्य में वीरशासन जयंती पर्व समारोह राजगृही में विपुलाचल पर्वत पर धूमधाम से मनाया गया था। इस विधान में भगवान महावीर के समवसरण की महिमा का सुन्दर वर्णन किया है। इसमें एक पूजा एवं 121 अर्घ्य तथा 10 पूर्णार्घ्य हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2529, शरदपूर्णिमा 10 अक्टूबर 2003, पृष्ठ संख्या 48 है।

123. जिनगुण संपत्ति विधान—हस्तिनापुर में वीर नि.सं. 2503, वैशाख सुदी पूर्णिमा सन् 1977 में यह जिनगुणसम्पत्ति विधान लिखकर पूर्ण किया। इस विधान में जिनगुणसंपद, सोलहकारण, पंचकल्याणक, अष्टमहाप्रातिहार्य, 10 जन्मातिशय, केवलज्ञानातिशय 10, सुदेवकृत 14 अतिशय इस प्रकार सात वलय पूजा में 63 महावैभवशाली गुणों की अर्चा आराधना है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2511, पौष शुक्ला पूर्णिमा, जनवरी 1985, पृष्ठ संख्या 48 है।

124. श्री पार्श्वनाथ विधान—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, नंद्यावर्त महल में चातुर्मास के मध्य वीर सं. 2529, श्रावण शुक्ला एकम् सन् 2003 में श्री पार्श्वनाथ विधान पूर्ण हुआ। इसमें भगवान पार्श्वनाथ के 108 मंत्र के अर्घ्य हैं। भगवान पार्श्वनाथ का यह लघु विधान सभी के रोग-शोक, दुख, दारिद्रय को हरने वाला है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2529, पौष कृष्णा एकादशी, 19 दिसम्बर 2003, पृष्ठ संख्या 47।

125. तीस चौबीसी विधान—हस्तिनापुर में श्रावण शुक्ला 1, वीर सं. 2503, सन् 1977 में प्रारंभ कर कार्तिक कृ. अमावस्या वीर सं. 2503, सन् 1977 में पूर्ण किया। इस ग्रंथ में पंचमेरु संबंधि वर्तमान, भूत एवं भविष्यत्कालीन तीस चौबीसी के 720 तीर्थंकरों की पूजाएँ हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, जनवरी 1981 में, पृष्ठ संख्या 244।

126. आचार्य श्री शांतिसागर विधान—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में वीर सं. 2530, आषाढ़ वदी छट्ठ, 8 जून 2004 में यह विधान लिखा। 'गुरुणां गुरु' चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य हुए हैं। पूज्य माताजी ने इनके दर्शन किये। इनका अनुवभ ज्ञान प्राप्त किया एवं कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर इनकी सल्लेखना देखी है। इस विधान में 216 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य और 1 जयमाला है।

127. विषापहार विधान—जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर पर वीर सं. 2532, माघ कृष्णा तृतीया सन् 2006 को यह विधान लिखकर पूर्ण किया। श्री धनंजय कवि विरचित 'विषापहार स्तोत्र' पर यह विधान रचा है। इसमें विषापहार पूजा, 48 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य और एक जयमाला है। जिस विषापहार स्तोत्र की रचना से धनंजय कवि के पुत्र पर चढ़ा सर्प का विष उतर गया था। उस स्तोत्र पर रचित विधान को लगातार 40 दिन करने से रोग, शोक, दरिद्रता दूर होकर स्वस्थ शरीर की प्राप्ति होगी। पृष्ठ संख्या 25 है।

128. भगवान बाहुबली विधान—जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर पर वीर सं. 2532, माघ शु. 13, सन् 2006 में यह विधान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्ण किया। वीर सं. 2532, 8 फरवरी से 19 फरवरी 2006 तक श्रवणबेलगोल तीर्थ पर होने वाले भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक के अवसर पर पूज्य माताजी ने यह विधान रचा। जिसे पूज्य माताजी की संघ की ब्रह्मचारिणी बहनों ने 21 फरवरी 2006 को श्रवणबेलगोला तीर्थ पर जाकर भगवान बाहुबली के सामने किया। इसमें श्री बाहुबली वंदना श्री बाहुबली पूजा, 156 अर्घ्य, 4 पूर्णार्घ्य और 1 जयमाला है। पृष्ठ संख्या 38 है।

129. श्री समवसरण विधान—जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में वीर सं. 2532, पौष शुक्ला चौदस, सन् 2006 को यह विधान लिखकर पूर्ण किया। इसमें 24 तीर्थंकरों के समवसरण की पूजा है। इसमें 14 पूजा, 760 अर्घ्य, 16 पूर्णार्घ्य, 14 जयमाला और 1 बड़ी जयमाला है। इसमें माताजी ने 23 प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है। प्रथम संस्करण-वीर सं. 2532, चैत्र कृष्णा एकम्, 15 मार्च 2006, पृष्ठ संख्या 212 है।

130. गणधरवलय विधान—जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में वीर संवत् 2519, पौष शुक्ला पूर्णिमा सन् 1993 को माताजी ने यह विधन लिखकर पूर्ण किया। इस विधान में गणधर वलय के 48 मंत्रों के माध्यम से 48 ऋद्धियों को नमन किया है। इसे करने से रोग, शोक, दरिद्रता, मानसिक पीड़ा आदि सभी संकट दूर हो जाते हैं तथा दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य, सुकीर्ति, वैभव, संपत्ति आदि सभी मनोवाञ्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। प्रथम संस्करण-वीर सं. 2525, शरदपूर्णिमा 24 अक्टूबर 1999, पृष्ठ संख्या 56 है।

131. आचार्य श्री वीरसागर विधान—हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर सं. 2532, चैत्र शुक्ला एकम् सन् 2006 में पूज्य माताजी ने यह विधान पूर्ण किया। इसमें 216 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य और एक जयमाला है। चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के ये पट्टशिष्य आचार्य हुए हैं एवं पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा गुरु थे। उनकी भक्ति से प्रेरित होकर पूज्य माताजी ने यह विधान बनाया है।

132. अयोध्या तीर्थक्षेत्र पूजा—वीर सं. 2519, सन् 1993 में अयोध्या तीर्थ पर पूज्य माताजी ने यह पुस्तक लिखी। इसमें अयोध्या तीर्थक्षेत्र पूजा के साथ अयोध्या में जन्में भगवान ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ और अनन्तनाथ इन पाँच तीर्थंकरों की पूजा एवं उनकी स्तुति है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2519, शरद पूर्णिमा, 30 अक्टूबर 1993, पृष्ठ संख्या 62 है।

133. अहिच्छत्र पूजा संग्रह—भगवान महावीर के 2600वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष में इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इस पुस्तक में मंगलाष्टक, पंचामृत अभिषेक पाठ, तीस चौबीसी पूजन, बीस तीर्थंकर पूजा, श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ पूजा आदि अनेक विषय संग्रहीत हैं। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2528, अप्रैल 2002, पृष्ठ संख्या 168 है।

134. दशलक्षण धर्म पूजा—पूजा-विधान के क्षेत्र में माताजी ने अभूतपूर्व क्रांति उत्पन्न कर दी है। नित्य नियम पूजा में देवशास्त्र गुरु पूजा की जगह बहुतायत से अब माताजी द्वारा लिखी हुई नवदेवता पूजा नगर-नगर में होने लगी है। इसी शृँखला में पूज्य माताजी ने दशलक्षण धर्म की पूजा सरस छंदों में लिखी है। पुस्तक के अंत में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी कृत चौबीस तीर्थंकर समन्वित "ह्रीँ" की पूजा दी गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2516, भादों सुदि पंचमी, 25 अगस्त 1990 में, पृष्ठ संख्या 24 है।

135. दीपावली पूजन—कई वर्षों से जैन समाज में जैन पद्धति में दीपावली पूजन की पुस्तक की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी, जिसकी पूर्ति माताजी ने कर दी। प्रथम संस्करण वीर सं. 2517, नवम्बर 1991 में, पृष्ठ संख्या 40 है। इसका कन्नड़ में अनुवाद भी हुआ है, जो कि छप चुका है।

136. सम्मेदशिखर टोंक पूजन—पूज्य माताजी ने महान सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर की भक्ति से ओत-प्रोत होकर वहाँ की प्रत्येक टोंक के अर्घ्य चढ़ाने के लिए सुन्दर पद्य बनाए हैं। अर्घ्यों के पश्चात् बख्तावर कवि रचित प्रचलित पार्श्वनाथ पूजा एवं शांति विसर्जन पाठ दिया गया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, 1988 में, पृष्ठ संख्या 68 है।

137. मण्डल विधान प्रारंभ एवं हवन विधि—मंडल विधानों के प्रारंभ में सकलीकरण, मंडपप्रतिष्ठा, इन्द्रप्रतिष्ठा आदि कराने की विधि जैसे तो विस्तारपूर्वक प्रतिष्ठा ग्रंथों में दी गई है किन्तु उतनी बड़ी विधि विधानों में करा पाना कठिन है तथा आज विधि विधान कराने वाले विद्वानों का संस्कृत भाषा का ज्ञान भी अल्प है अत: माताजी ने अधिकांश का हिन्दी पद्यानुवाद कर दिया है तथा क्रियाओं के कराने का संकेत भी हिन्दी में दे दिया है। जिससे कि कराने वाले तथा करने वाले उन क्रियाओं को अच्छी तरह से समझ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाते हैं। पुस्तक के अंत में हवन कराने की विधि व हवन कुंड बनाने के चित्र भी दिये हैं। इस प्रकार विधिविधान कराने की यह एक प्रामाणिक पुस्तक तैयार हो गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2514, जनवरी 1988 में, पृष्ठ संख्या 128 है।

138. हस्तिनापुर पूजा—हस्तिनापुर क्षेत्र की पूजन, आदिनाथ, भरत, बाहुबली पूजन तथा शांति, कुंथु, अरनाथ की पूजन दी गई हैं, जो कि पूजन माताजी द्वारा रचित है। पूजाओं को पढ़ने से तत् संबंधी पूर्ण परिचय प्राप्त हो जाता है। प्रथम संसकरण वीर सं. 2511, 28 अप्रैल 1985 में, पृष्ठ संख्या 24 है।

139. जम्बूद्वीप पूजा एवं भक्ति—जम्बूद्वीप के कृत्रिम-अकृत्रिम जिनालयों की एक पूजा तथा जिनालयों की एवं सुमेरु की भक्ति पूज्य माताजी द्वारा रचित है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, अप्रैल 1985 में, पृष्ठ संख्या 32 है।

140. श्री ऋषभदेव पूजा—वीर सं. 2526, सन् 2000 भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत यह पुस्तक लिखी। इसमें नवदेवता पूजा, ऋषभदेव पूजा, कैलाशपर्वत की पूजा एवं निर्वाणकाण्ड है। प्रथम संस्करण— वीर सं. 2526, माघ कृ. 14, 4 फरवरी 2000, पृष्ठ संख्या 24 है।

141. बाहुबली स्तोत्र एवं पूजा—इसमें दिया गया 44 पद्यों में संस्कृत में रचित बाहुबली स्तोत्र माताजी ने वीर सं. 2491, सन् 1965 में श्रवणबेलगोला में लिखा था, तभी छप भी गया था। यह पुनर्मुद्रण है। अंत में बाहुबली की पूजा है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 68 है।

142. बाहुबली पूजा—भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक के पावन प्रसंग पर इस छोटी सी पुस्तिका का प्रकाशन किया गया। इसमें भगवान बाहुबली की पूजन के अतिरिक्त बाहुबली अष्टक एवं कई आरतियाँ दी गई हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में। पृष्ठ संख्या 32 है।

143. अभिषेक एवं पूजा—इस पुस्तक में पूजामुख विधि, पूजाअंत्यविधि प्रतिष्ठातिलक से लेकर माताजी ने उसका हिन्दी पद्यानुवाद किया है, पंचामृत अभिषेक पाठ हिन्दी पद्यानुवाद तथा माताजी द्वारा ही रचित कुछ पूजाएँ हैं, जो कि अच्छी लय में बनाई गई हैं, भावपूर्ण भी हैं। पृष्ठ संख्या 96 है।

144. तीर्थंकर त्रय पूजा—भगवन शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ की सामूहिक पूजा व अलग-अलग पूजा, भगवान बाहुबली की पूजा तथा हस्तिनापुर क्षेत्र का संक्षेप में प्राचीन-अर्वाचीन परिचय दिया है। सभी पूजाएँ माताजी द्वारा रचित हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 40 है।

145. नित्य पूजा—इस पुस्तक में सर्वजनप्रिय नवदेवता पूजन, सिद्ध पूजा एवं बाहुबली पूजा तथा कुछ भजन व आरती हैं। तीनों पूजाएँ पूज्य माताजी द्वारा रचित हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, सन् 1980 में, पृष्ठ संख्या 28 है।

146. श्री जिनसहस्रनाम व्रत विधि व पूजा-(सन् 1955, म्हसवड़ चातुर्मास में रचित)—वीर सं. 2481, सन् 1955 में सर्वप्रथम म्हसवड़ चातुर्मास में भगवान के 1008 नाम मंत्रों को बनाकर माताजी ने लेखनी प्रारंभ की। म्हसवड़ चातुर्मास में छपी सबसे प्रथम पुस्तक है। इसमें जिनसहस्रनाम विधि, श्री जिनसहस्रनाम पूजा (संस्कृत में) 1008 मंत्र एवं आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की यमसल्लेखना पर पूज्य माताजी द्वारा क्षुल्लिका वीरमती की अवस्था में प्रस्तुत की गई श्रद्धांजलि है। पृष्ठ संख्या 20 है।

147. व्रत विधि एवं पूजा—दिगम्बर जैन समाज में विधिपूर्वक व्रतों को करने की अतिप्राचीन परम्परा है। इस पुस्तक में णमोकार व्रत, जिनगुणसंपत्ति, रोहिणी, पंचपरमेष्ठी एवं सप्तपरमस्थान व्रतों में की जाने वाली पूजाएँ दी हैं, जो कि पूज्य माताजी द्वारा बनाई गई हैं। इन व्रतों की विधि, व्रतों से संबंधित जाप्य मंत्र तथा कुछ की संक्षिप्त कथा भी दी है। इनके अतिरिक्त वृहत्पल्य व्रत की विधि भी दी गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2503, सन् 1977 में, पृष्ठ संख्या 52 है।

148. व्रत विधि सुमनावलिः-(सन् 1966, सोलापुर चातुर्मास में प्रकाशित)—इसमें चक्रवाल व्रतविधि, वृहत्पल्य व्रत-विधि, मुष्टितंदुल व्रतविधि, नंदीश्वर पक्ति व्रतविधि, मेरुपंक्ति व्रतविधि, कर्मनिर्जरा व्रतविधि, मंगल त्रयोदशी व्रतविधि एवं सप्त-परम स्थान व्रतविधि है। प्रथम संस्करण— वीर सं. 2493, सन् 1966 में सोलापुर से प्रकाशित है। पृष्ठ संख्या 50 है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

149. जिनस्तवन माला—जयपुर (राज.) के चातुर्मास में वीर सं. 2495 सन् 1969 में यह पुस्तक रची। इसमें माताजी की रचित 9 स्तुतियों का संकलन है। पूज्य माताजी ने अपने जीवन में अनेक संस्कृत, हिन्दी स्तुतियों का सृजन किया है। माताजी ने प्रारंभ से ही भक्तिमार्ग को प्राथमिकता दी। भगवान जिनेन्द्र की भक्ति से बड़े से बड़े संकट दूर हो जाते हैं तथा सभी प्रकार से सुख, संम्पत्ति, संतति की प्राप्ति होती है। माताजी द्वारा रचित कुछ स्तुतियों को वीर सं. 2495, सन् 1969 में जयपुर चातुर्मास में इसके प्रथम संस्करण में प्रकाशित किया था। पृष्ठ संख्या 60 है।

150. श्री वीरजिन स्तुति—वीर सं. 2493, सन् 1967 में सोलापुर चातुर्मास के मध्य शरदपूर्णिमा के अवसर पर अपने जीवन के 36 वर्ष की पूर्णता पर पूज्य माताजी द्वारा 36 पद्यों में भगवान महावीर की गुणस्तुति रूप में लिखी गई भावांजलि, 28 पद्यों की जम्बूद्वीप स्तुति तथा 5 पद्यों की मंगल स्तुति इस लघुकाय पुस्तक में दी गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2500, विजयदशमी, अक्टूबर 1974, पृष्ठ संख्या 32 है। इस स्तुति के ऊपर आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने संस्कृत एवं हिन्दी टीका लिखी है, जो 'महावीर स्तोत्र' नाम से अक्टूबर 2003 में प्रकाशित हुई है।

151. बाहुबली स्तोत्र (कन्नड़ भाषा में)-(सोलापुर से प्रकाशित)—वीर सं. 2491, सन् 1965, श्रवणबेलगोला तीर्थ पर चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी ने कन्नड़ भाषा में बाहुबली स्तोत्र लिखा। इसमें बाहुबली स्तोत्र, चन्द्रप्रभ स्तुति, णमोकार मंत्र का महात्म्य, बारह भावना सभी कन्नड़ में अनुवादित है। प्रकाशन—वीर सं. 2491, सन् 1967, पृष्ठ संख्या 52 है।

152. बाहुबली स्तुति (कन्नड़ में)-(श्रवणबेलगोला से प्रकाशित)—वीर सं. 2491 सन् 1965, श्रवणबेलगुल तीर्थ पर पूज्य माताजी ने यह पुस्तक कन्नड़ में लिखी। इसमें बाहुबली स्तुति, भक्तामर स्तोत्र, जिनगुण सम्पत्ति व्रतकथा, बारहभावना, दशलक्षण, आकाशपंचमी, पुष्पांजलि, सुगंधदशमी, रत्नत्रय व्रत, णमोकार व्रत, लब्धि विधान व्रत आदि व्रतों की विधि और मंत्र, उद्यापन विधि है। प्रकाशन—वीर सं. 2491, सन् 1965, पृष्ठ संख्या 40 है।

153. प्रयाग तीर्थ वंदना—वीर सं. 2526 सन् 2000 में पूज्य माताजी ने यह पुस्तक लिखी। इसमें माताजी ने प्रयाग तीर्थ का परिचय, प्रयाग तीर्थ स्तुति एवं श्री ऋषभदेवजिन स्तोत्र दिया है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2527, माघ कृष्णा 14, 23 जनवरी 2001, पृष्ठ संख्या 21 है।

154. भक्ति पल्लवी—(सन् 1967, सनावद चातुर्मास के मध्य प्रकाशित) इस पुस्तक में पात्रकेसरी स्तोत्र, सिद्धक्षेत्र वंदना, त्रिलोक चैत्यवंदना, सम्मेदशिखर वंदना और शांतिजिनस्तवन है। यह पुस्तक इंदौर से प्रकाशित है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2493, 1 जुलाई 1967, पृष्ठ संख्या 40 है।

155. वन्दना सुमनावलिः-(सन् 1966 सोलापुर चातुर्मास में प्रकाशित)—इस पुस्तक में त्रैलोक्य चैत्यवंदना (संस्कृत) श्री सम्मेदशिखर वंदना (संस्कृत), सिद्धक्षेत्र वंदना, त्रैलोक्य चैत्यवंदना श्री सम्मेदशिखर वंदना, कवलचांद्रायण व्रत-विधि, संस्कृत में चांद्रायण व्रतोद्यापन विधान है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2492, अक्टूबर 1966 में, पृष्ठ संख्या 38 है।

156. भक्ति कुसुमावली—वीर सं. 2491 सन् 1965 से 1967 के मध्य माताजी ने जो हिन्दी-संस्कृत की स्तुतियाँ बनाई थीं, उनमें से 6 स्तुतियाँ इसमें दी गई हैं, जो कि नित्य पाठ करने लायक हैं। प्रथम संस्करण "भक्ति सुमनावली" नाम की पुस्तक के रूप में सोलापुर (महा.) से वीर सं. 2491, सन् 1965 में हुआ था। पृष्ठ संख्या 62 है।

157. भक्तिसुधा—लगभग 12 संस्कृत-हिन्दी स्तुतियों को इसमें पूज्य माताजी ने संकलित किया है। इसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2497 सन् 1971 में प्रकाशित किया गया था। पुनः कतिपय परिवर्तन-परिवर्द्धन के साथ इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण मई 1992 में प्रकाशित हुआ है। पृष्ठ संख्या 40 है।

158. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति—जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में वीर संवत् 2501 श्रावण शुक्ला पूर्णिमा गुरुवार, सन् 1975 में चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति की रचना पूर्ण की। शंभु छंद में रचित इन स्तुतियों में प्रत्येक तीर्थंकर के नाम, उनके चिन्ह, माता-पिता के नाम, जन्मनगरी और निर्वाणभूमि के नाम, पाँचों कल्याणक की तिथियाँ, शरीर की ऊँचाई, शरीर का वर्ण, आयु, वंश इत्यादि समस्त इतिहास भरा हुआ है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2525 श्रावण शुक्ला पूर्णिमा 26 अगस्त, 1999, पृष्ठ संख्या 56 है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रकाशित ग्रंथ

159. पात्रकेसरी स्तोत्र—श्री पात्रकेसरी आचार्य ने 50 श्लोकों में अर्हंतदेव की स्तुति करते हुए अन्य सम्प्रदायों का निराकरण करके जैन सम्प्रदाय को सार्वभौम धर्म सिद्ध किया है। इस स्तुति का माताजी द्वारा रचित पद्यानुवाद स्तुति के भाव को अच्छा प्रस्फुटित कर रहा है।

160. मूलाचार का सार—मुनियों के आचार ग्रंथों में सर्वोपरि ग्रंथ मूलाचार का सार माताजी द्वारा लिखित है। इस पूरे ग्रंथ का सार लेकर नवनीत रूप में यह मूलाचार का सार बताया है। इसको पढ़कर मूलाचार ग्रंथ का स्वाध्याय करने से बहुत ही सरलता रहेगी।

161. षट्आवश्यक क्रिया—मूलाचार ग्रंथ के आधार से मुनि-आर्यिकाओं की छह आवश्यक क्रियाओं का बहुत ही सुन्दर विवेचन है।

162. नवदेवता विधान—ढाई द्वीप में एक सौ सत्तर कर्मभूमियाँ है। इनमें होने वाले अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और चैत्यालय इन नवदेवताओं की इस विधान में छह पूजाएँ हैं।

163. आगम दर्पण—वर्तमान में दिगम्बर सम्प्रदाय में तेरहपंथ और बीसपंथ चल रहे हैं। इस छोटी सी पुस्तक में जैन शास्त्रों के आधार से पूजाविधि का वर्णन है, अतः इसका आगम दर्पण यह नाम सार्थक है।

164. गणधरवलय मंत्र (अर्थ सहित)—धवला पुस्तक नवमी के आधार से 'णमो जिणाणं' आदि गणधर वलय मंत्रों के अर्थ का सुंदर विवेचन है। कई एक प्रकरण बहुत महत्वपूर्ण हैं।

165. दिगम्बर जैनाचार्य—श्री गुणधर आचार्य, श्री धरसेनाचार्य आदि प्राचीन महान् ऐसे 14 आचार्यों का जीवनवृत्त वर्णित है।

166. सप्तपरमस्थान—महापुराण के आधार से सज्जाति, सद्गार्हस्थ आदि सात परमस्थानों का विवेचन है। एक-एक विषय को पुष्ट करने हेतु जयधवला आदि अन्य ग्रंथों के उद्धरण भी दिये गये हैं।

167. व्रतविधि एवं पूजा (भाग-2)—इसमें मुक्तावली आदि व्रतों की विधि एवं उन व्रत संबंधी पूजाएँ भी दी गई हैं। इसमें रोहिणी व्रत की विधि भी दी गई है।

168. गृहस्थ धर्म—इसमें वसुनन्दि श्रावकाचार आदि के आधार से गृहस्थ के धर्म-कर्त्तव्य का संक्षिप्त व सरल विवेचन है।

169. जैनदर्शन—इसमें जैनदर्शन के मूल ऐसे कर्म सिद्धान्त का संक्षिप्त व सरल विवेचन है।

170. दिव्यध्वनि—अरिहंत देव की दिव्यध्वनि कब, कैसे व कितनी भाषाओं में खिरती है। इसका सरल विवेचन है।

171. मुनिसुव्रतनाथ विधान
172. मध्यलोक विधान
173. तीन चौबीसी विधान
174. ७२० तीर्थंकर विधान
175. सरस्वती विधान
176. कर्मदहन विधान
177. पुण्यास्रव विधान
178. णमोकार महामंत्र-एक अध्ययन
179. सम्यक्त्व-प्राभृतादिसार
180. सुदं मे आउस्संतो!
181. द्वादशांग श्रुतज्ञान का विषय
182. त्रैलोक्य जिनालय व्रत आदि संग्रह
183. पार्श्वनाथ व्रत
184. चारित्रलब्धि व्रत
185. तीस चौबीसी व्रत
186. पुण्यास्रव व्रत
187. चौंसठऋद्धि व्रत एवं गणधरवलय व्रत
188. तीन चौबीसी व्रत
189. पंचकल्याणक
190. पंचमकाल के अंत तक चतुर्विध संघ
191. जैन ग्रंथों के अध्ययन का क्रम
192. मुनि दीक्षा विधि
193. उपासक धर्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यानुयोग

194. अष्टसहस्री प्रथम भाग—जैन न्यायदर्शन का अतिप्राचीन ग्रंथ है। सर्वप्रथम उमास्वामी के मंगलाचरण पर टीका रूप में आचार्य समंतभद्र स्वामी ने 114 कारिकाएं लिखकर "आप्त मीमांसा" नाम से रचना की। इन्हीं कारिकाओं पर आचार्य अकलंकदेव ने अष्टशती नाम से टीका लिखी। पुनः कारिकाओं एवं अष्टशती को लेकर अब से 1200 वर्ष पूर्व आचार्य विद्यानंद स्वामी ने अष्टसहस्री नाम से आठ हजार श्लोक प्रमाण विस्तृत टीका का निर्माण किया तथा स्वयं आचार्य महोदय ने उसे कष्टसहस्री नाम दिया। इसमें विभिन्न एकांत मतों के पक्ष को अनेकांत शैली में खण्डन करके स्याद्वादमत की पुष्टि की गई है।

पूज्य माताजी ने इस ग्रंथ की हिन्दी टीका करके जन-जन के लिए सुगम सहस्री बना दिया। इस प्रथम भाग में 6 कारिकाओं की टीका हुई है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2500 सन् 1974 में। पृष्ठ संख्या 456, प्रथम संस्करण में अंत में 120 पृष्ठीय न्यायसार ग्रंथ को भी जोड़ दिया गया है। द्वितीय संस्करण का प्रकाशन मार्च 1989 में/पृष्ठ संख्या 444 है।

195. अष्टसहस्री द्वितीय भाग—पूर्ण अष्टसहस्री की टीका तो जनवरी सन् 1971 में ही माताजी ने लिखकर तैयार कर ली थी, किन्तु इस दूसरे भाग के प्रकाशन में अप्रत्याशित विलम्ब हो गया। इस द्वितीय भाग में कारिका 7 से 23 तक की टीका है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, मार्च 1989 में, पृष्ठ संख्या 424 है।

196. अष्टसहस्री तृतीय भाग—इसमें कारिका 24 से 114 की टीका हुई है। तीनों भागों में पूज्य माताजी ने जगह-जगह विशेषार्थ व भावार्थ तो दिये ही हैं, सारांशों के दे देने से परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों को अतीव सुगमता हो गई है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2516, मार्च 1990 में, पृष्ठ संख्या 608 है।

तीन भागों में प्रकाशित इस अष्टसहस्री की हिन्दी टीका का नाम स्याद्वाद चिन्तामणि टीका है। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के प्रथम पुष्प के रूप में प्रकाशित इस ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद सहित प्रथम भाग के विमोचन में राजधानी दिल्ली के अन्दर आचार्य श्री धर्मसागर महाराज, आचार्य श्री देशभूषण महाराज, उपाध्याय श्री विद्यानंद महाराज एवं चारों सम्प्रदाय के अनेक वरिष्ठ साधु-साध्वियों का सानिध्य रहा।

197. नियमसार प्राभृत—हस्तिनापुर में वीर सं. 2504, सन् 1978 में आचार्य श्री कुन्दकुन्द की नियमसार ग्रंथ की गाथाओं पर संस्कृत टीका लिखने का भाव बनाया और लगभग 62 ग्रंथों के उद्धरण आदि के साथ नय व्यवस्था द्वारा गुणस्थान आदि के प्रकरण को स्पष्ट करते हुए वीर सं. 2511, मगसिर वदी सप्तमी सन् 1985 में इस ग्रंथ पर 'स्याद्वाद चन्द्रिका' संस्कृत टीका लिखकर पूर्ण की। नियमसार की आ. पद्मप्रभमलधारीदेव कृत टीका का हिन्दी करने के बाद माताजी के भाव नियमसार पर ही पुनः संस्कृत टीका लिखने के हुए। तदनुसार संस्कृत टीका लिखकर स्वयं ही माताजी ने उसकी हिन्दी टीका भी कर दी। हिन्दी टीका के साथ-साथ आवश्यकतानुसार भावार्थ-विशेषार्थ देकर विषय को अच्छी तरह से स्पष्ट कर दिया है। अध्यात्म को आत्मसात् करने के लिए यह नियमसार प्राभृत टीका अति उपयोगी है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2511, वैशाख शु. 8, 28 अप्रैल 1985 में, पृष्ठ संख्या 578 है।

198. नियमसार—हस्तिनापुर में वीर सं. 2502, चैत्र कृष्णा नवमी को इस ग्रंथ का अनुवाद पूर्ण किया। आचार्य कुन्दकुन्द के इस ग्रंथ की आ. पद्मप्रभमलधारीकृत प्रथम संस्कृत टीका की हिन्दी टीका पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने अतीव सुगम शैली में अथक परिश्रम करके की है। इसमें भावार्थ-विशेषार्थ भी दिये हैं। अनेक स्थलों पर गुणस्थानों का स्पष्टीकरण किया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2511, माघ शु. 13, फरवरी, 1985 में, पृष्ठ संख्या 582 है।

199. न्यायसार—दिल्ली, नजफगढ़, वीर सं. 2499 (सन् 1973) में मौलिक ग्रंथ 'न्यायसार' लिखा। जैन न्यायदर्शन में प्रवेश करने के लिए यह कुंजी के समान है। इसमें जैन न्यायदर्शन में प्रयुक्त होने वाले अनेक शब्दों की परिभाषाएँ दी गई हैं। अनंतर अन्य दर्शनों की मान्यता को दर्शाते हुए वे असमीचीन क्यों हैं, उसे दिया गया है। न्याय की शैली में उनका खण्डन किया गया है। इस ग्रंथ के निर्माण में माताजी ने बहुत परिश्रम किया है। प्रथम संस्करण वीर सं.2500, सितम्बर 1974 में, पृष्ठ संख्या 120 है।

200. कातंत्ररूपमाला—वीर सं. 2499, आश्विन शरद पूर्णिमा, सन् 1973, दिल्ली-नजफगढ़ में यह जैन व्याकरण पूर्ण की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सर्ववर्म आचार्य प्रणीत यह कातंत्ररूपमाला नाम की व्याकरण दि. जैन परम्परा में संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए सबसे सरल व्याकरण है। इसमें कुल 1383 सूत्र हैं। आचार्य भावसेन त्रैविद्य ने इसकी टीका लिखी है। वीर सं. 2480, सन् 1954 में जयपुर में माताजी ने इस व्याकरण को मात्र 2 माह में कण्ठस्थ कर लिया था, यही व्याकरण माताजी के ज्ञानरूपी महल की नींव का प्रथम पत्थर है।

अनेक विद्यार्थियों की इस व्याकरण को पढ़ने की रुचि एवं आग्रह से माताजी ने वीर सं. 2499, सन् 1973 में इसके सूत्रों व टीका का हिन्दी अनुवाद किया। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2513, मार्च 1987 में हुआ, पृष्ठ संख्या 452 है। ।

201. समयसार पूर्वार्द्ध—हस्तिनापुर में फाल्गुन सुदी ग्यारस वीर सं. 2515, सन् 1989 में इसका अनुवाद पूर्ण किया। आचार्य कुन्दकुन्द कृत समयसार पर आचार्य अमृतचन्द्र एवं आचार्य जयसेन ने संस्कृत में विस्तृत टीकाएँ लिखी हैं। वर्तमान में जयपुर के विद्वान पं. जयचंद जी छाबड़ा ने आचार्य अमृतचन्द्रकृत टीका का ढुंढारी भाषा में अनुवाद किया। आचार्य अमृतचन्द्र कृत टीका का नाम "आत्मख्याति" है। इसकी कई हिन्दी टीकाएँ प्रकाशित हुई हैं, किन्तु आचार्य जयसेन कृत तात्पर्यवृत्ति टीका की हिन्दी स्व. आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने की है। अब तक दोनों आचार्यों की अलग-अलग टीकाएँ छपती रहीं। कुछ विद्वानों की यह धारणा बनी हुई है कि दोनों आचार्यों की टीका में मतभेद हैं किन्तु इस धारणा को दूर करने के लिए पूज्य माताजी ने दोनों आचार्यों की संस्कृत टीका व उन पर लिखी गई अपनी ज्ञान ज्योति नाम से हिन्दी टीकाएँ एक साथ इस कृति में प्रकाशित की है।

समयसार पूर्वार्ध में पाँच अधिकार है—1. जीवाजीवाधिकार 2. कर्तृकर्म अधिकार 3. पुण्य पाप अधिकार 4. आश्रव अधिकार 5. संवर अधिकार।

आवश्यकतानुसार स्पष्टीकरण के लिए जगह-जगह भावार्थ-विशेषार्थ भी दिये गये हैं तथा प्रत्येक अधिकार के अंत में सारांश भी दिये हैं, जिनके कारण यह कृति अतिविशिष्ट बन गई है। समयसार पूर्वार्ध में आचार्य अमृतचन्द्र के अनुसार 192 गाथाओं की तथा आचार्य जयसेन के अनुसार 201 गाथाओं की टीका छपी है। शेष उत्तरार्ध में प्रकाशित है। दोनों आचार्यों की टीका का हिन्दी अनुवाद एक साथ पहली बार प्रकाशित हुआ है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2516, माघ शु. 5, 31 जनवरी 1990 में, पृष्ठ संख्या 660 है।

202. समयसार उत्तरार्द्ध—समयसार उत्तरार्ध में 4 अधिकार हैं—1. निर्जरा अधिकार 2. बंध अधिकार 3. मोक्षाधिकार 4. सर्वविशुद्ध ज्ञानाधिकार। उत्तरार्ध में आचार्य श्री अमृतचंद्र के अनुसार 193 गाथा से 415 गाथाओं की तथा आचार्य जयसेन के अनुसार 202 गाथा से 436 गाथाओं की टीका की है एवं एक साथ हिन्दी अनुवाद किया है। आत्मख्याति टीका में कलश काव्य का पद्यानुवाद एवं मूल गाथाओं का पद्यानुवाद आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने किया है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2521, 8 अक्टूबर 1995, शरदपूर्णिमा, हस्तिनापुर, पृष्ठ संख्या 656 है।

203. प्रवचन निर्देशिका—हस्तिनापुर में वीर सं. 2504, भादों शुक्ला चतुर्दशी सन् 1978 में यह पुस्तक तैयार की। पूज्य माताजी के सानिध्य में हस्तिनापुर में वीर सं. 2504, सन् 1978 के अक्टूबर माह में शांतिवीर सिद्धांत संरक्षिणी सभा व दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में एक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया था। शिविरार्थियों को प्रवचनकला का शिक्षण देने के लिए माताजी ने शिविर से पूर्व यह पुस्तक मात्र दो माह में लिखकर तैयार कर दी। इसमें 65 ग्रंथों से संकलन है। प्रवचनकर्त्ताओं के अति उपयोगी है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2504, अक्टूबर 1978 में, पृष्ठ संख्या 228 है।

204. जैन भारती—हस्तिनापुर तीर्थ पर वीर नि. सं. 2501, माघ सुदी पंचमी, रविवार सन् 1975 में जैन भारती ग्रंथ पूर्ण किया। पूज्य माताजी ने अपने दीक्षित जीवन में सैकड़ों ग्रंथों का अध्ययन, स्वाध्याय किया है, उनमें से साररूप यह ग्रंथ माताजी ने लिखा है। इसमें एक-एक अनुयोग के विषय प्रारंभ से अंत तक संक्षेप में दिये हैं। चार खण्डों में चार अनुयोगों को बहुत ही सुगम शैली में प्रतिपादित किया है। जैनधर्म का प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए जैन एवं जैनेतर सभी के लिए महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

प्रथम संस्करण वीर सं. 2507, सन् 1981 में, पृष्ठ संख्या 244 है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

205. नियमसार पद्यावली—हस्तिनापुर में वीर सं. 2503, सन् 1977 में, आचार्य कुन्दकुन्दकृत आध्यात्मिक ग्रंथ नियमसार की 187 गाथाओं का हिन्दी पद्यानुवाद माताजी ने किया है। इसमें मूल गाथाएँ, पद्यानुवाद तथा गाथाओं के नीचे संक्षेप में अर्थ भी दिया है। अध्यात्म रस का आनन्द लेने के लिए पद्यानुवाद सुरुचिकर है। प्रत्येक अधिकार के अंत में सारांश भी दिये हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2506, अक्टूबर 1980 में, पृष्ठ संख्या 112 है।

206. ज्ञानामृत—हस्तिनापुर-जम्बूद्वीप स्थल पर आश्विन शुक्ला पूर्णिमा वीर सं. 2514, सन् 1988 में इस ग्रंथ को लिखकर पूर्ण किया। अनेकों ग्रंथों का सार सरलता से इस ग्रंथ में दिया गया है। ग्रंथ का सम्पूर्ण विषय आचार्य प्रणीत शास्त्रों के आधार से लिया गया है। गूढ़ तत्वों को सरलता से समझने के लिए यह ग्रंथ अति उपयोगी है। नित्य स्वाध्याय के लिए अच्छा ग्रंथ है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, मई 1989 में, पृष्ठ संख्या 368 है।

207. आलाप पद्धति-(इंदौर से प्रकाशित)—सनावद (म.प्र.) वीर सं. 2493, सन् 1967 के चातुर्मास में आचार्य श्री देवसेन विरचित 'आलाप पद्धति' का माताजी ने हिन्दी अनुवाद किया है। इसमें नयों का बहुत सुन्दर एवं सरल ढंग से विवेचन किया है। प्रकाशन—वीर सं. 2494, 10 जनवरी 1968, पृष्ठ संख्या 48 है।

208. महावीर देशना—भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती वर्ष के अन्तर्गत पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने दिल्ली में वीर नि. संवत् 2527, नवम्बर 2001 में इस ग्रंथ को लिखा है। वीर सं. 2529, सन् 2003 में कुण्डलपुर के प्रथम पंचकल्याणक महोत्सव में ग्रंथ का विमोचन हुआ। इस ग्रंथ में 9 अधिकारों में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान कल्याणक, भगवान महावीर का समवसरण, प्रथम दिव्यध्वनि, द्वादशांग, गौतम स्वामी परिचय, चौबीस तीर्थंकर, दिगम्बर जैन मुनिचर्या, मुनियों के भेद-प्रभेद वर्षायोग, आर्यिका चर्या, श्रावकचर्या, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म आदि का वर्णन है। प्रथम संस्करण—वीर सं. 2529, माघ शुक्ला 7, 8 फरवरी 2003, पृष्ठ संख्या 568 है।

209. द्रव्य संग्रह—वीर सं. 2502, मास शुक्ल वैशाख अक्षय तृतीया, सन् 1976 में इस ग्रंथ का गद्य, पद्य में अनुवाद किया। इसके मूलकर्त्ता आचार्यश्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती हैं। इसमें प्राकृत भाषा में रचित 58 श्लोक है। पूज्य माताजी ने प्राकृत श्लोकों का सरल हिन्दी में पद्यानुवाद तथ संक्षेप में प्रत्येक श्लोक का अर्थ व भावार्थ भी दिया है। परीक्षालयों के पाठ्यक्रमों में इसे रखा गया है। विद्यार्थियों के लिए सहज पठनीय व स्मरणीय है। प्रथम संस्करण वीर सं.2502, सन् 1976, पृष्ठ संख्या 44 है।

210. समाधितंत्र-इष्टोपदेश-वीर सं. 2502, ज्येष्ठ वदी सप्तमी, सन् 1976 में इस ग्रंथ का पद्यानुवाद किया। आचार्य पूज्यपादकृत इन दोनों ग्रंथों का इसमें मूल श्लोकों सहित पद्यानुवाद दिया गया है। समाधितंत्र में 105 श्लोक तथा इष्टोपदेश में 51 श्लोक हैं। प्रारंभ में अध्यात्म प्रवेश के लिए ये ग्रंथ अति सुगम हैं। प्रथम संस्करण वीर सं. 2502 सन् 1976 में, पृष्ठ संख्या 40 है।

211. कुन्दकुन्द मणिमाला—वीर सं. 2514, सन् 1988 में यह पुस्तक लिखी। आचार्य श्री कुन्दकुन्द कृत समयसार आदि 9 ग्रंथों में से भक्तिपरक एवं निश्चय व्यवहार समन्वयपरक 108 गाथाओं को लेकर उनका अर्थ एवं विशेषार्थ दिया गया है। पुस्तक के अंत में श्लोकों हिन्दी का पद्यानुवाद भी दिया गया है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन वीर सं. 2516, जनवरी 1990 में किया गया। पृष्ठ संख्या 150 है।

212. कुन्दकुन्द के भक्तिप्रसून—भक्तिमार्ग सुगम है। भक्तिपाठ में तन्मयता आती है। भक्तियों का पाठ सभी वर्ग के लिए लाभप्रद है। आचार्य कुन्दकुन्द द्विसहस्राब्दि महोत्सव के पावन प्रसंग पर उन्हीं की रचित भक्तियों का हिन्दी पद्यानुवाद सहित प्रकाशन करवाकर माताजी ने उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2515, अप्रैल 1989 में, पृष्ठ संख्या 48 है।

213. अनादि जैनधर्म—भगवान जिनेन्द्र के द्वारा प्रतिपादित धर्म को जैनधर्म कहते है। जैनधर्म प्राणीमात्र का धर्म है। इसे तो पशु-पक्षियों तक ने धारण किया है। संसार का प्रत्येक मनुष्य इसे धारण कर सकता है। इसलिए माताजी ने यह छोटी सी पुस्तक लिखी है। जैनधर्म का प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत अच्छी पुस्तक है। प्रथम संस्करण वीर सं. 2510, जुलाई 1984 में, पृष्ठ संख्या 44 है। इसका अंग्रेजी में अनुवाद श्री रजनीश जैन, मॉडल बस्ती-दिल्ली ने किया है। इसका प्रथम संस्करण वीर सं. 2525 सन् 1999 में छप चुका है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रकाशित ग्रंथ

214. लघीयस्त्रयादि संग्रह—श्री अकलंकदेव ने इसमें प्रमाण, नय और प्रवचन इन तीन विषयों का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। इसमें इन्हीं आचार्य देव की स्वोपज्ञविवृत्ति नाम से टीका का भी हिन्दी अनुवाद किया है। श्री अभयनंदिसूरि ने इस पर तात्पर्यवृत्ति टीका लिखी है। इन दोनों टीकाओं का उसमें अनुवाद है।

215. अष्टसहस्रीसार—अष्टसहस्री ग्रंथ के जो मुख्य-मुख्य विषय आये हैं, उनको सार रूप में इसमें दिया गया है, ऐसे ये त्रेसठ सारांश है। जैसे-नैयायिक ने शब्द को आकाश का गुण अमूर्तिक माना है, जैनाचार्य ने इसका खंडन करके शब्द को पुद्गल की पर्याय होने से मूर्तिक सिद्ध किया है।

216. आप्तमीमांसा—इसमें श्रीसमंतभद्र स्वामी ने आप्त को न्याय की कसौटी पर कसकर सच्चे देव सिद्ध किया है। इसमें 114 कारिकाओं का अन्वयार्थ, पद्यानुवाद, अर्थ और भावार्थ भी दिया गया है।

217. भावसंग्रह—श्री वामदेव पंडित ने संस्कृत में इस ग्रंथ को रचा है। इसमें औपशमिक आदि पाँच प्रकार के भावों का चौदह गुणस्थानों में विवेचन है। विशेषकर पाँचवें गुणस्थान के वर्णन में श्रावकों की पूजा, दान आदि क्रियाओं का अच्छा विवेचन है। विधिपूर्वक देवपूजा को ही श्रावक की सामायिक क्रिया कहा है। इसका अनुवाद माताजी ने सन् 1973 में किया था। एक प्रकार से यह बहुत ही सुन्दर श्रावकाचार है।

218. नियमसार कलश—नियमसार श्री कुंदकुंददेवकृत है। इसकी टीका श्रीपद्मप्रभमलधारी देव नाम के आचार्य ने की है। इस टीका में बहुत ही सुंदर पद्य आये हैं। उन्हें लेकर 'नियमसार कलश' नाम देकर माताजी ने हिन्दी अर्थ किया है। सन् 1976 में यह अनुवाद हुआ है।

219. जैनेन्द्र प्रक्रिया पूर्वार्द्ध—श्री पूज्यपाद स्वामीकृत 'जैनेन्द्र व्याकरण' के सूत्रों पर श्री गुणनंदि आचार्य ने 'जैनेन्द्र प्रक्रिया' नाम से टीका रची है। इसको संघ में माताजी ने मुनियों-आर्यिकाओं आदि को पढ़ाया था। सन् 1975 में हस्तिनापुर में माताजी ने इसका अनुवाद किया है।

220. द्रव्यसंग्रहसार—श्री नेमिचन्द्राचार्य रचित द्रव्यसंग्रह का माताजी ने पद्यानुवाद किया था, उनके साथ ही कुछ विशेष विस्तार करके यह 'द्रव्यसंग्रहसार' पुस्तक लिखी है।

221. तत्त्वार्थसूत्र एक अध्ययन—श्री उमास्वामी आचार्य द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर यह विस्तृत विवेचन तत्त्वार्थवार्तिक ग्रंथ के आधार से है।

222. समयसार का सार—श्री कुंदकुंददेव विरचित समयसार का सार रूप यह नवनीत माताजी द्वारा लिखा गया है। इसको पढ़कर यदि समयसार का स्वाध्याय करेंगे, तो बहुत ही सुगमता रहेगी। अतः यह समयसार की कुंजी ही है।

223. ध्यान साधना—इसमें ज्ञानार्णव आदि ग्रंथों के आधार से पिण्डस्थ ध्यान का वर्णन है। पिण्डस्थ ध्यान की पार्थिवी आदि धारणाओं के एवं ह्रीं के ध्यान हेतु चित्र भी दिये गये हैं।

224. अध्यात्मसार—परमात्मप्रकाश आदि ग्रंथों के आधार से इसमें आत्मा के शुद्ध स्वरूप का अच्छा विवेचन है, अतः इसका अध्यात्मसार यह नाम सार्थक है।

225. षट्खण्डागम सिद्धान्तचिंतामणिटीका समन्वित-पुस्तक ३
226. " " " -पुस्तक ४
227. " " " -पुस्तक ५
228. " " " -पुस्तक ६
229. " " " -पुस्तक ७
230. " " " -पुस्तक ८

231. षट्खण्डागम सिद्धान्तचिंतामणिटीका समन्वित-पुस्तक ९
232. " " " -पुस्तक १०
233. " " " -पुस्तक ११
234. " " " -पुस्तक १२
235. " " " -पुस्तक १३
236. " " " -पुस्तक १४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खण्ड-४

पूज्य माताजी की ऐतिहासिक यात्राएँ एवं सृजनात्मक उपलब्धियाँ

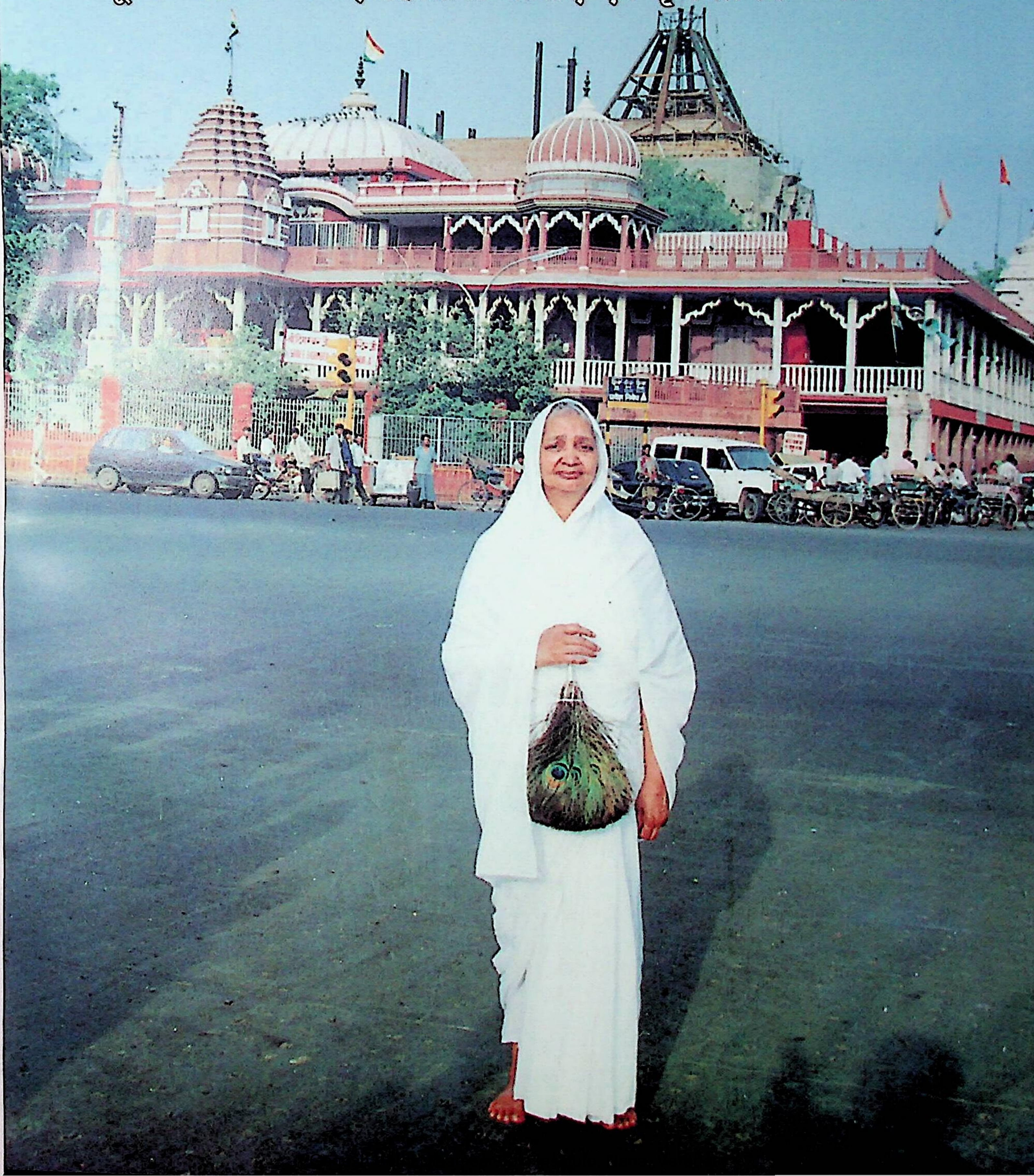

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की ऐतिहासिक यात्राएँ एवं सृजनात्मक उपलब्धियाँ

प्रस्तुति-आर्यिका चन्दनामती

यूँ तो संसार का प्रत्येक प्राणी चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता हुआ चतुर्गति की यात्रा कर रहा है। फिर भी इस यात्रा को समाप्त करने हेतु ही भव्यप्राणी धर्म तीर्थों की यात्रा करते हैं। इस तीर्थयात्रा की परम्परा प्राचीनकाल से साधु और श्रावक दोनों में देखी गई है। जहाँ गौतम गणधर स्वामी ने प्रतिक्रमण के दण्डक सूत्रों में अट्ठावयम्मि सम्मेदे उज्जंते चंपाए पावाए.........इत्यादि कहकर तीर्थों के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है, वहीं आचार्य श्रीकुन्दकुन्द स्वामी ने संघ सहित गिरनार तीर्थ की वंदना करके निर्ग्रन्थ दिगम्बर शासन की महती प्रभावना की है। उसी परम्परा के संवाहक बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज ने सन् 1928 में अपने सप्तऋषि शिष्यों सहित शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र की यात्रा करके चतुर्विध संघ के पुनरुद्धार एवं सदाचरण के प्रचार-प्रसार का अद्भुत इतिहास बनाया है। इसी प्रकार वर्तमान में इस अवनीतल पर विद्यमान अनेक चतुर्विध संघों के भी देशभर में यत्र-तत्र विचरण से धर्मप्रभावना, तीर्थोद्धार, नवतीर्थनिर्माण के साथ-साथ संयमियों की संख्या में काफी वृद्धि हो रही है।

इसी शृँखला में चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर परम्परा की प्रमुख गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने भी अपने दीर्घकालीन दीक्षित जीवन में देश के विभिन्न अंचलों में मंगल विहार करके धर्मप्रभावना, शिष्यसंग्रह, साहित्यसृजन, शिविर-संगोष्ठी आदि कार्यक्रमों के साथ-साथ अनेक तीर्थयात्राओं के माध्यम से जो निधियाँ समाज को प्रदान की हैं, वे वास्तव में ऐतिहासिक हैं।

सन् 1952 में गृहत्याग के साथ सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण करके सर्वप्रथम अपने लक्ष्य की सिद्धिस्वरूप सन् 1953 में क्षुल्लिका दीक्षा धारण करके अपने ज्ञान की नींव मजबूत बनाने हेतु इन्होंने संस्कृत व्याकरण का अध्ययन किया पुनः गुरुआज्ञा से क्षुल्लिका विशालमती जी के साथ सन् 1954 में दक्षिण भारत की यात्रा करते हुए चारित्रचकवर्ती गुरुदेव का दर्शन किया पुनः सन् 1955 में कुंथलगिरि तीर्थ पर आचार्यश्री की सल्लेखना देखी और इस यात्रा के मध्य म्हसवड़ (महाराष्ट्र) से दो शिष्याओं (सौ. सोनू बाई-आर्यिका पद्मावती एवं कु. प्रभावती-आर्यिका जिनमती जी) की उपलब्धि हुई। तत्पश्चात् आचार्यश्री शांतिसागर महाराज की आज्ञानुसार सन् 1956 में उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर महाराज से आर्यिका दीक्षा लेकर उस परम्परानुवर्ती संघ में सन् 1962 तक रहकर अनेक मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी तथा गृहस्थ श्रावक-श्राविकाओं को अध्ययन कराकर अपने ज्ञान को खूब वृद्धिंगत किया पुनः सन् 1963 में आचार्यश्री शिवसागर महाराज की आज्ञापूर्वक अपने आर्यिका संघ के साथ सम्मेदशिखर यात्रा के लिए राजस्थान से विहार किया।

उस यात्रा के अन्तर्गत सन् 1963-64-65 के चातुर्मास क्रमशः तीन प्रदेशों कलकत्ता (प. बंगाल), हैदराबाद (आंध्रप्रदेश) और श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में ऐतिहासिक उपलब्धि एवं धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुए। पुनः सन् 1967 के सनावद (म.प्र.) चातुर्मास में ब्र. मोतीचंद और यशवन्त जी को घर से निकाला। जिसमें से ब्र. यशवन्त जी तो वर्तमान में आचार्य श्री वर्धमानसागर के नाम से प्रसिद्ध हैं एवं मोतीचंद जी आज भी पूज्य माताजी के शिष्यत्व में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पीठाधीश पद पर आसीन होकर क्षुल्लक मोतीसागर के रूप में विख्यात हैं।

यात्राओं के संदर्भ में यूँ तो माताजी के जीवन की अनेक उपलब्धियाँ अविस्मरणीय हैं किन्तु सन् 1965 की श्रवणबेलगोला यात्रा विशेष ऐतिहासिक इसलिए रही कि बाहुबली भगवान के चरणों में किये गये ध्यान के प्रतिफल में जम्बूद्वीप की रचना संसार को प्राप्त हुई है। सन् 1965 से 1971 तक पुनः आचार्यश्री शिवसागर जी एवं आचार्यश्री धर्मसागर महाराज के संघ में रहकर मुनि-आर्यिका आदि सभी को खूब अध्ययन कराया, तत्पश्चात् माताजी अपने आर्यिकासंघ सहित राजस्थान से दिल्ली पधारीं और सन् 1972 से 1974 तक तीन चातुर्मास दिल्ली की विभिन्न कॉलोनियों में सम्पन्न करके धर्मप्रभावना एवं अध्यापन के साथ-साथ "दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान" की स्थापना, जम्बूद्वीप निर्माण की रूपरेखा एवं भगवान महावीर 2500वाँ निर्वाण महोत्सव मनाना आदि प्रमुख रहे।

पुनः 1975 से 1992 तक 17 वर्षों का काल दिल्ली, हस्तिनापुर, खतौली, सरधना आदि प्रवास में व्यतीत हुआ, जिसमें जम्बूद्वीप रचना का निर्माण एवं साहित्य लेखन की प्रमुखता रही। पूज्य माताजी ने इन सभी कार्यों का उल्लेख स्वयं अपनी लेखनी से "मेरी स्मृतियाँ" नामक आत्मकथा ग्रंथ में प्रस्तुत किया है।

सन् 1993 से सन् 2005 तक 12 वर्षों में पूज्य माताजी की जो ऐतिहासिक यात्राओं द्वारा संसार को स्वर्णिम उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं, उनको इस "ऐतिहासिक यात्रा" खण्ड में कतिपय झलकियों के रूप में मैंने प्रस्तुत किया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शाश्वत तीर्थ अयोध्या की मंगल यात्रा

एवं आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव का प्रथम महामस्तकाभिषेक

दक्षिण भारत में श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबलि महामस्तकाभिषेक की परम्परा तो एक हजार वर्षों से चली आ रही है किन्तु उत्तर भारत में महामस्तकाभिषेकों की परम्परा प्राय: नहीं देखी जाती थी अत: पूज्य माताजी की प्रेरणा से शाश्वत तीर्थ अयोध्या में विराजमान 31 फुट उत्तुंग प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक युग-युग के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गया।

➢सुमेरु पर्वत के ध्यान की उपलब्धि —

धनतेरस की प्रत्यूष बेला थी, जब वीर निर्वाण संवत् 2518 समापन की राह देख रहा था। हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र के जम्बूद्वीप स्थल पर युगप्रवर्तिका, पूज्य 105 गणिनी, आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रात:कालीन सामायिक में सुमेरु पर्वत का ध्यान करते-करते अयोध्या के भगवान ऋषभदेव का उन्हें ध्यान में ही दर्शन हो गया। भगवान महावीर स्वामी के कमल मंदिर एवं त्रिमूर्ति मंदिर के दर्शन करके जम्बूद्वीप की प्रदक्षिणा लगाते हुए वे मुझसे बोलीं—

"चन्दनामती! आज मेरे भाव अयोध्या तीर्थ की ओर विहार करने के लिए हो रहे हैं।" मैं आश्चर्य से माताजी को देखने लगी कि आज कौन सी प्रबल प्रेरणा इन्हें प्राप्त हुई है? कहाँ तो सौ-पचास किलोमीटर विहार के लिए भी हकीम जी राय नहीं देते हैं क्योंकि चलने का अधिक परिश्रम इनके स्वास्थ्य के प्रतिकूल है, पुन: छह सौ किलोमीटर तक अयोध्या का रास्ता भला कैसे सोचा जा सकता है?

मेरी प्रश्नवाचक मुद्रा देखकर पूज्य माताजी स्वयमेव बोल पड़ीं—

"आज प्रात:काल के ध्यान में मुझे अन्तर्प्रेरणा प्राप्त हुई है कि अयोध्या में विराजमान भगवान ऋषभदेव की उत्तुंग प्रतिमा का **"महामस्तकाभिषेक"** करवाने के लिए अयोध्या जाना है।"

थोड़े से वार्तालाप के बाद हम लोग अपनी वसतिका (रत्नत्रयनिलय) में आ गए। सामूहिक स्वाध्याय के अनन्तर क्षुल्लक मोतीसागरजी के समक्ष चर्चा आई लेकिन बात हँसी में उड़ गई। यह कहकर कि इतने लम्बे प्रवास के बारे में सोचा ही नहीं जा सकता है। "न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी" इस सूक्ति को कहकर हम लोग निश्चिन्त हो गए किन्तु प्रबल प्रेरणा भला शारीरिक शक्ति कहाँ देखती है?

माताजी का चिन्तन चलता रहा कि अपने परमपिता आदीश्वर बाबा के पास कब और किस प्रकार पहुँचना है? ब्र.रवीन्द्र कुमार जी उस दिन दिल्ली गए हुए थे। अगले दिन कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को वे हस्तिनापुर आए, चातुर्मास समापन की उस तिथि को सभी साधुओं के उपवास थे, मैंने अपना केशलोंच भी किया था। केशलोंच के बाद मध्यान्ह 11 बजे पूज्य माताजी रवीन्द्र जी से भी कहने लगीं कि मुझे अयोध्या तीर्थक्षेत्र की यात्रा हेतु विहार करना है।

थोड़ी देर हँसी मजाक के बाद विहार की इस भावना ने गंभीर रूप धारण कर लिया और माताजी बोलीं—"विहार तो मुझे करना है, रही बात आदिनाथ स्वामी के मस्तकाभिषेक की, उसका भार तुम्हीं (रवीन्द्र जी) को लेना होगा।"

एक बात यहाँ और स्मरणीय है कि राजस्थान की राजधानी जयपुर शहर के जैन श्रावकों ने सितम्बर 1992 में जयपुर में विशाल स्तर पर कल्पद्रुम महामंडल विधान आयोजित किया था। आचार्य श्री कुंथुसागरजी महाराज के सानिध्य में जम्बूद्वीप के सुप्रसिद्ध विद्वान पंडित सुधर्मचन्द्र शास्त्री एवं पंडित नरेश कुमार शास्त्री ने उस विधान को शास्त्रोक्त विधि से सम्पन्न कराया था। विधान में 1200 नर-नारियों ने पूजन की तथा प्रतिदिन 5000 लोग उस संगीतमयी पूजन को सुनने आते थे।

लाखों रुपये खर्च करके वहाँ के श्रावकों ने उस विधान को सम्पन्न कर राजस्थान में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया पुन: उन सभी ने निर्णय किया कि कल्पद्रुम विधान की रचयित्री पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के पास जाकर उनका अभिनन्दन करना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिनाँक 18 अक्टूबर 1992 रविवार को जयपुर से 40 बसों एवं अनेक कारों में हजारों नर-नारी हस्तिनापुर पधारे। जम्बूद्वीप संस्थान के पदाधिकारियों ने उन सबका यथोचित आतिथ्य किया पुनः एक विशाल पांडाल में वहाँ उन सभी ने माताजी की अष्टद्रव्य से संगीतमय पूजन की और एक प्रशस्तिपत्र के माध्यम से पूज्य माताजी को "**आर्यिकाशिरोमणि**" की उपाधि प्रदान की।

खुशी में झूमते हुए उन जयपुर के नागरिकों ने गणिनी आर्यिकाश्री के चरणों में श्रीफल भेंट करके जयपुर में चातुर्मास करने का साग्रह निवेदन किया तथा यह प्रार्थना की कि हम लोग आपके सानिध्य में आपके ही द्वारा रचित "**सर्वतोभद्रविधान**" इससे भी बड़े रूप में करेंगे, जिसमें 5 हजार नर-नारी पूजन में बैठेंगे तथा पचीसों हजार जनता प्रतिदिन आपका प्रवचन सुनकर लाभान्वित होगी। आपका यह जयपुर चातुर्मास हम इतिहास का अविस्मरणीय पृष्ठ बनाएंगे, आपकी स्वीकृति प्राप्त होते ही हम लोग आपके संघ का विहार पूरी व्यवस्था के साथ कराएंगे, प्रतिदिन सैकड़ों व्यक्ति आपके साथ पदविहार करेंगे.......इत्यादि।

इस प्रकार अपनी भक्ति भावनाएँ प्रगट कर तथा पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त कर जयपुर के भक्तगण तो चले गए किन्तु हम लोगों को कुछ चिन्तन करने का विषय वे प्रदान कर गए कि प्रत्यक्ष एवं परोक्ष में गुरु भक्ति कैसे होती है?

राजस्थान तो यूं भी भक्ति के क्षेत्र में सदा सरस रहा है इसीलिए वहाँ हमेशा साधुओं का सानिध्य बना ही रहता है।

➢प्रबल इच्छा को मिला एक सम्बल—

24 अक्टूबर 1992 कार्तिक कृ. चतुर्दशी को जब अयोध्या विहार की प्रारंभिक वार्ता चल रही थी, तब रवीन्द्र जी को जयपुर के भक्तों की बात याद आ गई और वे बोल पड़े कि "माताजी! विहार ही करना है तो जयपुर की ओर करिये, वहाँ विशाल स्तरीय आयोजन हो सकते हैं। फिर हम सभी का यह कहना रहा कि इतने लम्बे विहार के बारे में तो आपको सोचना भी नहीं चाहिए क्योंकि स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है तथा देश के हालात भी इन दिनों ठीक नहीं चल रहे हैं। अयोध्या के विवाद को लेकर कहीं भी क़िसी भी समय झगड़ा हो सकता है।"

उस दिन की बात तो लगभग यहीं पूरी हो गई, उसके बाद कई दिनों तक कोई चर्चा विहार संबंधी नहीं हुई अतः हम लोगों ने समझा कि अब माताजी ने अयोध्या विहार का अपना निर्णय बदल दिया है लेकिन उनके हृदय में अन्तर्प्रेरणा बराबर चलती रही जो पुनः प्रगट हुई 30 नवम्बर 1992 को।

हुआ यूं कि उत्तरप्रदेश की तहसील फतेहपुर से जैन समाज के अध्यक्ष श्री सरोज कुमार जैन अपने अन्य और निकटस्थ साथियों के साथ हस्तिनापुर आए हुए थे। उन्होंने पूज्य माताजी के पास श्रीफल चढ़ाकर अवध प्रान्त में विहार करने हेतु निवेदन किया, तब माताजी मुस्कुराकर उनसे उधर के रूट की जानकारी करने लगीं। अवध के उन महानुभावों को तो शायद स्वप्न में भी उम्मीद नहीं थी कि माताजी का हमारे नगरों की ओर कभी विहार हो भी सकता है। बस वे जब भी आते थे तो निवेदन अवश्य करते थे कि माताजी! क्या कभी आप अपनी जन्मभूमि की ओर भी ध्यान देंगी? आपका क्षेत्र ही आपका सानिध्य नहीं प्राप्त कर पा रहा है, यह तो "**दीपक तले अंधेरे**" वाली कहावत सिद्ध हो रही है।

सदैव की श्रद्धाभक्ति के अनुसार ही 30 नवम्बर को सरोज जी ने कहा था किन्तु इस बार की स्थिति देखकर वे कुछ आश्वस्त हुए और थोड़ी ही देर बाद मेरे पास आकर पूछने लगे—

"माताजी! क्या संघ का विहार वास्तव में हमारे प्रान्त की ओर हो सकता है?"

मैंने कहा—"**इसमें असंभव जैसी भी कोई बात नहीं है, भक्ति के बल पर सब कुछ संभव हो सकता है।**" फिर मैंने धनतेरस के दिन वाली थोड़ी सी बात भी उन्हें बताई, तब वे बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि "**लगता है अवध प्रदेश की लाटरी खुलने के दिन आ गए हैं।**"

उस समय हस्तिनापुर में क्षुल्लक मोतीसागर महाराज, ब्र.रवीन्द्र जी आदि कोई भी नहीं थे क्योंकि ये लोग सनावद (म.प्र.) क्षु. मोतीसागर जी की जन्मभूमि में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में गए हुए थे।

ये लोग अभी सनावद से वापस भी नहीं आए थे, उससे पूर्व पूज्य माताजी ने अयोध्या की ओर विहार क़रने का 90 प्रतिशत मन बना लिया और मुझे विहार की व्यवस्था बनाने हेतु निर्देश देने लगीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी का पक्का निर्णय सुनकर मुझे कुछ घबड़ाहट सी होने लगी कि इतने कमजोर स्वास्थ्य में माताजी इतनी दूर कैसे विहार करेंगी? मैंने माताजी से कहा कि क्षुल्लक जी और रवीन्द्रजी के आने पर आप विचार-विमर्श करके निर्णय लीजिए किन्तु वे भला अब किसकी मानने वाली थीं! उन्होंने कहा कि तुम उधर प्रान्त में अब सूचना करा सकती हो कि फरवरी में मेरा विहार हस्तिनापुर से होगा।

मेरा हृदय अभी तक अन्दर से गवाही नहीं दे रहा था कि माताजी का विहार हो ही जाएगा, फिर भी मैंने टिकैतनगर के श्रावक प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटीशाह) एवं फतेहपुर के सरोज जैन को संभावित विहार की सूचना भिजवा दी, ताकि पक्का निर्णय समाज के समक्ष आ सके।

➢6 दिसम्बर 1992 ने पुन: निर्णय बदलवाना चाहा—

यह एक अनहोना संयोग ही कहना पड़ेगा कि माताजी ने एक अत्यन्त विवादित एवं हरवक्त आग की लपटों में घिरे **''अयोध्या''** तीर्थक्षेत्र की ओर ही विहार करने का निर्णय लिया, मानो भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि की प्रबल प्रेरणा ही उन्हें खींच रही थी। तभी एक बड़ा भारी प्रसंग आया—6 दिसम्बर 1992 का, जब अयोध्या में हिन्दू-मुस्लिम विवाद जोरों से छिड़ गया और तमाम नरनारी बलिवेदी पर चढ़ गये।

पश्चिमी उत्तरप्रदेश के मवाना, मेरठ, सरधना आदि नगरों के लोगों को जब ज्ञात होना प्रारंभ हुआ कि पूज्य ज्ञानमती माताजी संघ सहित अयोध्या तीर्थ की ओर विहार करने वाली हैं, तब भक्तगण हस्तिनापुर आ-आकर अपनी विज्ञप्ति रखने लगे कि **''इस समय के माहौल में यहाँ से आपका अयोध्या के लिए विहार करना कथमपि उचित नहीं है।''**

कुछ लोगों ने माहौल का भय दिखाया एवं कुछ ने माताजी के स्वास्थ्य के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा कि **''माताजी! अब आपको इधर ही आसपास थोड़ा-थोड़ा विहार करना चाहिए, ज्यादा दूर की यात्रा नहीं सोचना चाहिए।''** इसी तरह से अवध की ओर विहार करने की नरम-गरम वार्ता चलती रही, तभी दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में टिकैतनगर के प्रद्युम्न कुमार जैन उर्फ छोटी शाह तथा सुभाषचन्द्र जैन हस्तिनापुर पहुँचे और पूज्य माताजी के श्रीचरणों में श्रीफल भेंट किया। छोटीशाह कहने लगे कि—**''माताजी! आपके इस विहार कराने का भार मैं अकेला उठाऊँगा और संघ को किसी तरह का कष्ट नहीं होने पाएगा।''**

अनेक ऊहापोहों के बाद माताजी ने अपनी पूर्ण स्वीकृति अयोध्या विहार के लिए प्रदान कर दी और संघपति के रूप में श्री छोटीशाह जी को मंगल आशीर्वाद दिया। ये लोग प्रसन्नमना घर वापस चले गये और धीरे-धीरे यह समाचार अवध की जनता में हवा की तरह फैल गया।इसी मध्य एक-दो ज्योतिषाचार्य ने भी आकर हम लोगों को बताया कि पूज्य माताजी के करकमलों से अयोध्या विकास का योग इतना प्रबल है कि कितनी भी अड़चनें आने पर इनके कदम अब रुक नहीं सकते हैं।

➢अयोध्या के लिए विहार का मंगल मुहूर्त—

जनवरी में भीषण सर्दी के कारण विहार करना संभव नहीं था किन्तु पूज्य माताजी की अन्तर आत्मा तो भगवान ऋषभदेव के दर्शन को व्याकुल थी अत: शुभमुहूर्त निश्चित किया-11 फरवरी 1993, फाल्गुन कृष्णा पंचमी का। यद्यपि माताजी के भक्तगणों को भली भाँति ज्ञात है कि इनके द्वारा संकल्पित प्रत्येक कदम दृढ़ता के साथ सतत आगे ही बढ़ता है, वह कभी पीछे नहीं हटता तथापि उनका रागी मन गुरु छाया से दूर रहने की विकलता से तड़पने लगा और उन्होंने हर संभव प्रयत्न किये कि माताजी का विहार किसी तरह स्थगित हो जावे।

इधर अवध प्रान्त में हर्ष का वातावरण छाया था, टिकैतनगर में संघपति छोटीशाह जी विहार की तैयारी में जुटे थे। वे समयानुसार 9 फरवरी को अपने लवाजमें के साथ हस्तिनापुर पहुँच गए और बताने लगे कि 8-10 दिन पूर्व हस्तिनापुर के मनोज कुमार जैन एवं मवाना (वर्तमान में दोनों मेरठ निवासी) के राकेश जैन के पत्र मेरे पास पहुँचे थे कि देश की परिस्थितियों के कारण पूज्य माताजी का विहार स्थगित हो गया है अत: आप लोग अब तैयारी न करें और न हस्तिनापुर आवें। तब मैंने पूछा—फिर भी आप पूरी तैयारी करके कैसे आ गए हैं? वे हंसकर कहने लगे—आखिर तो भगवान् भी भक्तों के वश में होते हैं, फिर पूज्य माताजी ने मुझे स्वीकृति प्रदान की थी, यदि कोई कारण था तो संघ से कोई सूचना जाती। मैंने तो सोच लिया कि अब चाहे हस्तिनापुर में सत्याग्रह ही क्यों न करना पड़े किन्तु मैं संघ को लिए बिना वापस नहीं लौट सकता हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यहाँ आप लोग समझ गए होंगे कि मोह के कारण ही इन भक्तों ने झूठे पत्र डाल दिये थे किन्तु पूज्य माताजी का संघ सहित मंगल विहार 11 फरवरी, फाल्गुन कृ. 5 को दिन में 2 बजे हस्तिनापुर से अवध प्रान्त की ओर हो गया। संयोग और वियोग के सुख-दुःख मिश्रित अनेक नेत्र अश्रुपूरित थे। जम्बूद्वीप का चप्पा-चप्पा अपनी माता को निहार रहा था तथा उनकी मनोकामना की सफलता हेतु अपने मंगल भाव प्रेषित कर रहा था।

➢चरण पड़ते ही गंगा में डूबा व्यक्ति तिर गया—

घटना है 13 फरवरी 1993 के अपरान्ह 4 बजे की, जब पूज्य माताजी मीरापुर से चलकर 14 किमी. दूर बैराज के गेस्ट हाउस पर पहुँची थीं। बैराज के पुल पर एक अतिशय चमत्कार हुआ, जिसे सभी ने आँखों से देखा। हुआ यूँ कि माताजी के आने से एक घंटे पहले एक व्यक्ति स्नान करते-करते गंगा में गिर गया था। वह बेचारा उस तेज धार में तैरने की कोशिश कर रहा था किन्तु लगभग डूबने ही वाला था कि माताजी के चरण उस पुल पर पड़े और न जाने कहाँ से 3-4 व्यक्तियों ने आकर उसी क्षण उसे बचा लिया। पानी से निकलते ही उस गिरे हुए मनुष्य की दृष्टि सबसे पहले पूज्य माताजी पर पड़ी और वह वहीं चीख पड़ा—अरे अम्माजी! आपकी कृपा से आज मैं बचा हूँ, मुझे आशीर्वाद प्रदान कीजिए। बचाने वाले आदमी भी कहाँ से आए थे एवं कहाँ चले गए? कुछ पता ही नहीं चला। इसीलिए तो कवियों ने तपस्वी सन्तों की महिमा बताते हुए कहा है—

''वे गुरु चरण जहाँ धरें, जग में तीरथ होय।''

➢परीक्षा की कठिन घड़ियाँ—

सुकुमाल, सुकौशल मुनियों की तथा चन्दनबाला, सीता आदि आर्यिकाओं की कोमल काया एवं उनके कठोर तप की कथाएँ पुराणों में पढ़ने को मिला करती हैं। वर्तमान के साधु-साध्वी भी उस तपस्या की साधना कर अपनी मानव पर्याय सार्थक करते हैं। मैंने सुना भी था कि दीक्षा लेने के बाद अनेक परीक्षा की घड़ियाँ सामने आती हैं, जिन्हें सहन करने से ही उत्तीर्णता प्राप्त होती है और भविष्य के संकट झेलने की क्षमता जागृत होती है। बड़े उत्साहपूर्वक मैंने भी असीमित कल्पनाएँ संजोकर हस्तिनापुर से विहार किया था किन्तु अभी तो दो दिन ही बीते थे कि 13 फरवरी को मेरे पैरों में बड़े-बड़े छाले पड़ गए। अंगुलियों के सहारे चलने से सारी अंगुलियों में भी चने जैसे फफोले उठ आए। यह शायद मेरी कठिन परीक्षा थी कि अभी से तुम्हारा यह हाल है तो छह-सात सौ क़िलोमीटर का रास्ता कैसे पार कर पाओगी? पूज्य माताजी मुझे देखकर कभी चिन्तित होतीं कि कैसे क्या होगा? कभी वे साहस दिलातीं और कहतीं कि पहले मुझे भी इसी तरह छाले पड़ते थे, खून बहता था। मैंने कहा कि लगता है भगवान् ऋषभदेव मेरी कड़ी परीक्षा ले रहे हैं। मेरे जीवन की ये पहली घड़ियाँ थीं, जब मैंने साधु अवस्था का पद विहार कष्ट इस तरह झेला था। चलते समय जो कष्ट होता था, वह सब अपने विश्रामस्थल पर पहुँचकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद एवं मातृत्व स्नेह पाकर समाप्त हो जाता था।

आश्चर्य तो मुझे स्वयं पर उस दिन हुआ, जब 14 फरवरी को बिजनौर पहुँचते ही 15 ता. को सुबह एक डाक्टर महोदय ने आकर मेरी स्थिति देखते ही एक बड़ा सा छाला पकड़कर नोंच दिया, अब अन्दर की लाल खाल दिखने लगी थी। प्रत्यक्ष जाहिर था कि अब कुछ दिन विहार नहीं हो सकता है। डॉक्टर ने कुछ मल्हम लगाकर पट्टी बाँध दी और बोले कि 2-4 दिन चलना नहीं है वर्ना सेप्टिक होने का डर है।

जिस दिन से हस्तिनापुर से विहार हुआ था, प्रत्येक नगर में प्रोग्राम तारीखों के हिसाब से अप-टू-डेट तैयार कर लिए गए थे। अब बिजनौर में रुकने का मतलब था कि आगे कई दिनों का कार्यक्रम अस्त-व्यस्त होता। 15 फरवरी को वहाँ विश्राम था, अगले दिन मैंने हृदय में भगवान का स्मरण किया और पूज्य माताजी का आशीर्वाद मिला, बस रास्ता कैसे तय हो गया, पता ही न चला। रास्ते में बरसात आई तो मुझे चलने में और अधिक सुविधा ही महसूस हुई।

हाँ! रास्ते में मैं सदैव पूज्य माताजी द्वारा बताया हुआ यह मंत्र अवश्य पढ़ती रहती थी—**''ॐ ह्रीं अनंतबलप्राप्तये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः।''**

यद्यपि 28 फरवरी तक मुझे पैर के छालों से काफी तकलीफ रही, फिर भी विहार कभी रुका नहीं, इसे मैं प्रभु का आशीर्वाद समझती हूँ। शायद परीक्षा में उत्तीर्ण भी हुई तभी अपने गन्तव्य तक पहुँच सकी। मेरे साथ में टिकैतनगर के श्री मदनलाल जैन पैदल चलते हुए मेरे कष्टों का अनुभव करते रहते थे। वे अपने साथियों से कहते थे—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रक्त की धारा पैरों से बहती रही,
चन्दनामती की पदयात्रा चलती रही।।

वास्तव में यह जैनीचर्या इसीलिए तलवार की धार के समान कही गई है कि इसमें कहीं किसी शिथिलता की गुंजाइश नहीं है। पंचमकाल के अंत तक दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों की यह चर्या इसी प्रकार चलती रहेगी, इसमें संदेह नहीं करना चाहिए।

➢अहिच्छत्र तीर्थ के प्रथम दर्शन कर अमूल्य न्योछावर भेंट की—

जैसे नई दुल्हन का प्रथम बार मुख दर्शन करके सभी पारिवारिक जन उसे कुछ न कुछ भेंट देते हैं उसी प्रकार पूज्य माताजी ने "अहिच्छत्र" तीर्थ के प्रथम दर्शन कर वहाँ एक बहुमूल्य भेंट समर्पित की।

जीवन में प्रथम बार वे 13 मार्च 1993 को अहिच्छत्र पहुँची थीं। वहाँ 3 दिन विश्राम भी रहा पुनः तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ के दर्शन से माताजी के हृदय में भावना जागृत हुई कि यहाँ तीस चौबीसी तीर्थंकरों की सात सौ बीस जिन प्रतिमाएँ विराजमान होनी चाहिए। इसी भावना के अनुसार उन्होंने 16 मार्च 1993 मंगलवार को भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती महोत्सव में प्रवचन करते हुए इस योजना को घोषित किया और इस निर्माण की जिम्मेदारी प्रेमचंद जैन, तेल वाले मेरठ निवासी को सौंपी। जिनेन्द्र भक्ति का अतिशय तुरंत फलित हुआ, योजना की घोषणा होते ही अनेक श्रद्धालुओं ने अपने-अपने नाम प्रतिमा हेतु लिखवाने शुरू कर दिये। देखते ही देखते लाखों रुपये की स्वीकृतियाँ हो गईं। पूज्य माताजी की वह भेंट वहाँ साकार रूप ले चुकी है। इस भेंट को पूज्य माताजी भगवान पार्श्वनाथ के श्री चरणों में अपनी श्रद्धा पुष्प न्योछावर मानती हैं। उनका कहना है कि साधु और श्रावक दोनों के सम्मेलन से ही तीर्थों का विकास संभव है।

अहिच्छत्र की एक नई संस्था "ज्ञानतीर्थ" है, वहीं हमारे संघ का तीन दिन विश्राम रहा। इस संस्था के प्रमुख श्री सलेकचन्द्र जैन दिल्ली वालों को भी माताजी ने मंदिर निर्माण की उचित रूपरेखा तथा "पार्श्वनाथ कला मंदिरम्" नाम से नवीन आकर्षक योजना भी बताई जिसमें भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से संबंधित इलेक्ट्रॉनिक झांकियों को दर्शाया जावे, तो जनता का आकर्षण बढ़ेगा।

➢बाल कल्याण का अनूठा दृश्य—

बच्चे हमारे देश और समाज की आधारशिला हैं, उन्हें सम्बोधित करना साधुओं का भी परम कर्तव्य होता है। पूज्य ज्ञानमती माताजी तो इस दिशा में पूर्णरूप से अग्रसर रहती हैं। तभी तो उन्होंने जहाँ अष्टसहस्री जैसे क्लिष्टतम ग्रंथ का हिन्दी में अनुवाद किया, वहीं बालोपयोगी "बाल विकास" नाम से 4 लघु पुस्तकें भी लिखी हैं जो विभिन्न परीक्षा बोर्डों में पढ़ाई जा रही हैं।

बरेली में मंगल पदार्पण करने के बाद वहाँ के एडवोकेट सत्येन्द्र कुमार जैन ने एक स्कूल में पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्रवचन कराने की चर्चा की थी पुनः 22 मार्च 1993 को "बरेली फ्लोर मिल" से "फरीदपुर" के रास्ते में वह स्कूल आया। स्कूल का नाम था—"मानस स्थली पब्लिक स्कूल"। यहाँ पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार सारा स्टॉफ संघ के स्वागत को आतुर था। स्कूल के "लेक्चर हॉल" में हम लोगों के प्रवचन हुए पुनः माताजी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में अहिंसा और सदाचार के विषय में बच्चों को बताया और वहाँ के शिक्षक-शिक्षिकाओं को आशीर्वाद प्रदान किया।

➢जिनकी दृष्टिमात्र से खीर अक्षय हो गई—

बात है 24 मार्च 1993 की, जब हम लोग प्रातः "टिसुवा" से "फतेहगंज" आए थे। संघ संचालक छोटी शाह जी ने उस दिन अपने अतिथियों के लिए खीर बनाई थी। संयोगवश वहाँ टिकैतनगर और तहसील फतेहपुर के कई लोग पहुँच गए थे अतः छोटी शाह को चिन्ता हो गई कि कहीं खीर कम ना पड़ जाए। दूध और मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी और वे सबको पेट भर खीर खिलाना चाहते थे।

पूज्य माताजी भोजनशाला के पास वाले कमरे में ही भगवान का अभिषेक देखने जा रही थीं कि वहीं छोटीशाह से बोल पड़ीं—मेहमानों के लिए क्या बनाया है? उन्होंने कहा—"माताजी! खीर बनाई है। यह देखिये! बन गई है, आप आशीर्वाद दीजिए कि कम ना पड़े क्योंकि लोग ज्यादा हो गए हैं।" पूज्य माताजी ने अनायास ही उस पर दृष्टि डाली और बोलीं—चिन्ता मत करो, कोई कमी नहीं होगी।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संघपति छोटीशाह आज भी उस प्रसंग को याद करते ही रोमांचित और गद्‌गद हो जाते हैं तथा अनेक लोगों के समक्ष भी कहने लगते हैं कि उस दिन मेरी वह थोड़ी सी खीर अक्षय हो गई। सैकड़ों लोगों के खाने के बाद भी मैंने वह खीर गाँव वालों को खिलाई, फिर भी शाम तक बची रही पुनः दूसरे दिन सवेरे कुछ लोगों को बाँटकर बर्तन खाली किया।

यह सब दीर्घकालीन तपस्या एवं त्याग का ही प्रभाव है जो पंचमकाल में भी दृष्टिगोचर हो रहा है। गुरु की कृपा प्रसाद से सन् 1993 एवं 1994 छोटीशाह के लिए आर्थिक दृष्टि से भी अति उत्तम रहे।

➢जैनियों को भी जैनत्व सिखलाने की आवश्यकता—

कहते हैं कि सोते को जगाने की कला तो संसार जानता है किन्तु जागते मानवों के ज्ञानचक्षु खोलकर जगाना केवल सद्‌गुरु ही जानते हैं। बरेली और सीतापुर के बीच में ''शाहजहाँपुर'' एक विख्यात शहरं है। वहाँ जैन मंदिर है और लगभग 25-30 घर भी जैनियों के हैं किन्तु पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि मंदिर में कभी पूजन प्रक्षाल भी ठीक से नहीं होती है।

पूज्य माताजी ने मंदिर की वेदी में जो कमी थी, उसे अपने हाथों से दूर किया तथा सबको जैन धर्म के प्रति जागरूक किया। वहाँ संघ 27-28 मार्च दो दिन रुका। मंदिर के पास ही भगवानदास जैन के मकान में ही हम लोग ठहरे थे। गुरुचरणों का एवं उपदेश का वहाँ जो प्रभाव पड़ा, उसे आज तक भी वहाँ के लोग आकर बताते हैं और ज्ञानमती माताजी के कार्यक्रमों का पता लगते ही वे लोग सदैव वहाँ पहुँचने की कोशिश करते हैं।

➢खतरा डरकर भाग गया—

शाहजहाँपुर से लगभग 30 किमी. दूर नहर कालोनी की एक कोठी पर हम लोगों का रात्रि विश्राम था। यहाँ रात्रि में कुछ पुलिसवालों ने आकर संघ के लोगों में दहशत पैदा कर दी कि यहाँ तो रोज दुर्घटनाएं होती हैं। यह डकैत-बदमाशों का अड्डा है, आप लोगों को यहाँ नहीं ठहरना चाहिए क्योंकि हम लोग सुरक्षा नहीं कर सकते हैं।

संघपति थोड़ा डर गए और बोले—अब तो रात हो गई है, हमारे साधु रात्रि में विहार नहीं करते हैं अतः हम लोग यहीं ठहरेंगे, आपसे जो सहायता बने कर देना अन्यथा हम लोग भाग्य भरोसे हैं। उन्होंने माताजी को यह बात बताई एवं बोले कि पुलिस वाले कह गए हैं कि रात्रि में कोई कमरे से बाहर मत निकलना।

माताजी ने मुस्कराकर कहा—''छोटी शाह! सबसे कह दो कोई चिन्ता न करें। जितनी बार जिसको बाहर निकलना है निकले, किसी को कोई खतरा नहीं रहेगा। मैं सबकी पहरेदारी करने के लिए बैठी हूँ।'' सभी लोग हँस पड़े किन्तु चूँकि कई गृहस्थ महिलाएं भी साथ में थीं, सबके पास 10-5 तोले सोने के जेवर भी थे अतः सबके मन के अन्दर डर घुसा था। प्रतिदिन की भाँति सबने मंगल प्रभात में आँखें खोलीं और कोई खतरे की स्थिति सामने नहीं आई। **''साधु की तपस्या के समक्ष ऐसे अनेक खतरे भी स्वयं डरकर भाग जाते हैं''** यह मैंने इस प्रवास में अनुभव किया।

➢सीतापुर से शुरू हुई अयोध्या की विकास यात्रा—

सीतापुर अवधप्रान्त का प्रवेश द्वार माना जाता है। वहाँ 4 अप्रैल 1993 चैत्र शु. 12 को पूज्य गणिनी माताजी के संघ का मंगल पदार्पण हुआ। दूसरे दिन उनके सानिध्य में महावीर जयंती पर्व मनाया गया पुनः 8 अप्रैल—वैशाख कृष्णा दूज को आर्यिकाश्री का 37 वाँ आर्यिका दीक्षा जयंती समारोह खूब धूम-धाम से आयोजित किया गया। अवधप्रान्त के समस्त ग्राम, नगर, शहरों की भारी भीड़ सीतापुर में अपनी विभूति के प्रथम दर्शन करने आई।

यहाँ के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सुन्दर व्यवस्था बनाई। सहगल धर्मशाला के पास विशाल पांडाल में समारोह सम्पन्न हुआ। सभा के बीच में ही अयोध्या के उद्धार और विकास का माहौल बना। पूज्य माताजी ने अयोध्या में भूत, वर्तमान एवं भविष्यत्काल संबंधी त्रिकाल चौबीसी तीर्थंकरों की 72 प्रतिमाओं का एक नया मंदिर बनाने की प्रेरणा दी, तत्क्षण ही 15 मिनिट में समस्त प्रतिमाओं के दातार भी घोषित हो गए। इस प्रकार शुभलक्षणपूर्वक अयोध्या के विकास की कहानी का शुभारंभ हुआ।

सीतापुर निवासी एक वृद्ध महानुभाव विष्णुकुमार जैन (मुन्ने बाबू) ने उस दिन माताजी के समक्ष संकल्प किया कि यदि आप अयोध्या तीर्थ पर चातुर्मास करेंगी, तो मैं अपना पूरा समय वहीं निकालूँगा। उन्होंने सपत्नीक अपने वचन का निर्वाह किया और माताजी के प्रवास में अपना पूरा समय अयोध्या के लिए प्रदान किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢पीहर में बेटी की तेज आवाज सुनकर दिल्ली वाले बोल उठे—

दीक्षा जयंती की प्रवचन सभा में पूज्य माताजी एवं मेरा ओजस्वी प्रवचन सुनकर दिल्ली से आई जिनेन्द्र प्रसाद ठेकेदार की धर्मपत्नी सौ. विमला देवी बोल उठीं—

"माताजी! जैसे पीहर में पहुँचकर बेटी की आवाज तेज हो जाती है, वैसे ही आज मुझे लगता है कि आप लोगों में भी अपने पीहर अवध में आने से काफी ओजस्विता और अपनत्व जागृत हो गया है। तभी तो आपने अधिकारपूर्ण भाषा में अयोध्या की बात कही और यहाँ की जनता ने भी कितने अपनत्व भाव से उसे स्वीकार कर यह उत्साह प्रदर्शित किया है।" उनका कहना था कि "आपकी ऐसी जोशीली वाणी मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी तो यह जन्मक्षेत्र के परमाणुओं का ही प्रभाव है।"

➢अवध का पहला केशलोंच बिसवां में—

कई दिन से महमूदाबाद के लोग संघ के आगमन आदि का माहौल बनाते हुए अपेक्षा कर रहे थे कि पूज्य माताजी का केशलोंच समारोह हम महमूदाबाद में मनाएँ। कार्यक्रम लगभग निर्णय की कोटि में ही पहुँच गया था किन्तु दिनाँक 11 अप्रैल को माताजी ने अपनी डायरी देखी तो बोल पड़ीं कि अभी महमूदाबाद पहुँचने में लगभग 8 दिन लग जाएंगे और मेरा केशलोंच का समय आ गया है अतः कल बिसवां में मैं केशलोंच करूंगी।

यह अनहोना समाचार सुनते ही बिसवां वालों की मानों लाटरी खुल गई। उन लोगों ने आनन-फानन में एक रात के अन्दर सारी तैयारी कर ली। वहाँ शिवाले के प्रांगण में पांडाल बना और जैन-अजैन तमाम जनता ने जैन साध्वी के केशलोंच का यह प्रथम दृश्य अपने नगर में देखा। इस अवसर पर अहिंसा-शाकाहार संगोष्ठी भी की गई, जिसमें स्थानीय 5-6 वक्ताओं ने अच्छे वक्तव्य प्रस्तुत किये। केशलोंच की बोलियों के माध्यम से स्थानीय जैन समाज को लगभग 35-40 हजार रुपये की आय हुई। सामान्य जनता एवं प्रबुद्ध वर्ग ने संप्रदाय का भेद मिटाकर माताजी की मंगलवाणी का पूरा लाभ उठाया तथा मांसाहार, शराब, जुंआ आदि व्यसनों का सैकड़ों लोगों ने त्याग किया। वहाँ पधारे महमूदाबाद के भूतपूर्व विधायक (भाजपा) ने भी उस दिन प्रवचन से प्रभावित होकर मांसाहार का त्याग कर दिया।

➢सिधौली में मंदिर संबंधी विवाद दूर हुआ—

15 अप्रैल 1993 को संघ का प्रवेश सिधौली में हुआ। सारा नगर तोरण द्वारों से सुसज्जित था, सर्वोदय स्कूल के बच्चों ने जुलूस में शामिल होकर मंगल आरती उतारी। यहाँ भी "कनोड़िया भवन" के प्रांगण में "अहिंसा सम्मेलन" में पूज्य माताजी एवं हम लोगों के प्रवचन हुए। कार्यक्रम में परगनाधिकारी तथा डी.वाई.एस.पी. आए और उन लोगों ने माँसाहार का पूर्णरूपेण त्याग किया।

सिधौली में एक जैन मंदिर है, वहाँ सन् 1989 में मैंने ब्रह्मचारिणी अवस्था में इन्द्रध्वज विधान करवाया था, उस समय से मंदिर में दो नई वेदियाँ बनाने की योजना चल रही थी किन्तु उसके विस्तारीकरण में आपसी विवाद हो गया था अतः वह कार्य अधूरा पड़ा था। पुनः वह विषय पूज्य माताजी के समक्ष आया, तब उन्होंने आपस में विचार-विमर्श करके शास्त्रीय आधार से उनका समाधान दिया, जिससे वहाँ के सारे विवाद समाप्त हो गए और मंदिर को बढ़ाने हेतु शिलान्यास माताजी के सानिध्य में हुआ, अब उसका निर्माण पूर्ण हो चुका है। वहाँ की समाज के विशेष आग्रह पर ब्र. कर्मयोगी रवीन्द्रकुमार जी ने जयपुर से उनकी प्रस्तावित मूर्तियाँ भी शीघ्र बनवाकर समाज को दे दीं। उनकी पंचकल्याणक भी सम्पन्न हो चुकी है।

➢महमूदाबाद में ननिहाली तरीके का स्वागत—

जन्म के रिश्ते से महमूदाबाद पूज्य माताजी एवं हमारा ननिहाल है। हमारी माँ मोहिनीजी के पिता श्री सुखपालदास जैन यहाँ के जाने माने पंडित कहे जाते थे। संयोग भी कैसा बना कि नाना-मामा अपनी भानजी के दर्शन को भी तरस गए क्योंकि ज्ञानमती माताजी सन् 1952 के बाद कभी यहाँ आई ही नहीं थीं। अब जब सौभाग्य से उनका आगमन अवध में हुआ, तब वे सभी संसार से चले गए हैं। हम लोगों के महमूदाबाद पहुँचने से पूर्व 21 फरवरी 1993 को एक मामा, जिनका नाम "भगवानदास" था, वे भी माताजी के आगमन की खुशियों को हृदय में रखकर ही स्वर्ग चले गये।

खैर! इन संबंधियों से अब माताजी को क्या लेना देना? यदि इनके प्रति इन्हें जरा भी स्नेह होता, तो क्या 40 वर्षों में कभी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने जन्म क्षेत्र में जाने का विचार न बनातीं? यह तो धरती का सौभाग्य ही कहना होगा कि अयोध्या के भगवान् ऋषभदेव के दर्शन के निमित्त से पूज्य माताजी अवध में पधारीं और छोटे-छोटे नगरों को भी उनके पदार्पण का लाभ प्राप्त हुआ।

इसी शृंखला में महमूदाबाद का भी नम्बर आया था। 20 अप्रैल 1993 को नगर की हर गली अपनी बेटी की इन्तजारी में ढेरों पुष्प बरसाने को आतुर थी। ज्यों ही संघ का पदार्पण नगर में हुआ कि एक किमी. दूर से ही श्रद्धालुभक्त बैन्ड बाजे, संगीत मंडली आदि के साथ पूज्य श्री का स्वागत करने पहुँच गए। किसी विवाह में भी शायद ऐसी खुशियाँ नहीं मनाई गई होंगी, जो 20 अप्रैल को सब ने सामूहिक रूप से मनाई थी। इतनी पुष्पवृष्टि महमूदाबाद में हुई कि पूरा बाजार गुलाब के फूलों से पट गया था।

नगर के राजा साहब भी स्वागत करने आए। यहाँ लगभग 8 दिन वास्तव्य रहा, इसी मध्य चारित्र निर्माण संगोष्ठी हुई। अक्षय तृतीया पर्व मनाया गया तथा माताजी के सार्वजनिक प्रवचनों से पूरे नगर की जनता ने लाभ प्राप्त किया।

यहाँ आयोजित अहिंसा संगोष्ठी में डा. शेखर जैन, अहमदाबाद एवं प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन, फिरोजाबाद के प्रवचनों से जनता लाभान्वित हुई एवं दोनों विद्वानों का स्वागत हुआ।

➢छोटे-छोटे गाँवों में भी बड़ा स्वागत हुआ—

पैतेपुर और बेलहरा इन छोटे गाँव वालों ने भी संघ का जी भर कर स्वागत किया। 1 किमी. दूर से ही शाही जुलूस, पूज्य माताजी के ऊपर चंदोवा, नगर भर में तोरणद्वार आदि सजाए गए थे। सार्वजनिक सभाओं में मंगल प्रवचन, संघपति महोदय का भावभीना स्वागत इन सब कार्यों ने छोटे नगरों का नाम भी इतिहास में जोड़ दिया।

➢प्रथम मस्तकाभिषेक इतिहास का शुभारंभ फतेहपुर से—

तहसील फतेहपुर की जैन समाज के अध्यक्ष सरोज कुमार जैन हस्तिनापुर से लेकर पूरे रास्ते बराबर आते रहे और छोटी शाह से मार्ग संबंधी व्यवस्था की जानकारी प्राप्त करते रहे। इनके साथ में वहाँ के अनेक महानुभाव अहिच्छत्र से ही अपने नगर पदार्पण की बात करने लगे थे। काफी इंतजार के बाद 29 अप्रैल को पूज्य माताजी का संघ सहित मंगल पदार्पण फतेहपुर में हुआ। 3 किमी. दूर से ही विशाल जुलूस के मध्य पुष्पवृष्टि का आकर्षक दृश्य था। स्वागत बैनर, अनगिनत तोरण, जगह-जगह दूध से चरण प्रक्षालन, मंगल आरती तथा जन-जन की आँखों में स्नेह अश्रु अपनी विभूति के प्रति असीम वात्सल्य के प्रतीक थे।

यहाँ के एक श्रावक निर्मल कुमार जैन काफी दिनों से जीवन-मरण के झूले में झूल रहे थे, सो उन्हें पूज्य माताजी का अपमृत्युघातक विशेष आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

2 मई 1993 को फतेहपुर में श्रावक सम्मेलन एवं अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी की बैठक का कार्यक्रम पूर्वसुनियोजित था। सरोजकुमार जी एवं उनके सहयोगियों ने रात भर जागरण करके पांडाल एवं मंच को सुन्दर ढंग से सुसज्जित किया और आगत अतिथियों का जी भरकर स्वागत किया।

अयोध्या की बैठक श्री सुमेरचन्द पाटनी की अध्यक्षता में हुई। उसी में पूज्य माताजी ने सबके समक्ष अयोध्या में भगवान ऋषभदेव के महामस्तकाभिषेक महोत्सव की योजना बताते हुए एक महोत्सव समिति की घोषणा की। उन्होंने अपने श्रीमुख से ही महोत्सव समिति के अध्यक्ष के रूप में निर्मल कुमार जैन सेठी एवं महामंत्री के पद हेतु कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी का नाम घोषित किया, जिसको सभी ने प्रसन्नतापूर्वक गुरु आज्ञा रूप में स्वीकार किया। इसी प्रकार समिति के कोषाध्यक्ष छोटीशाह चुने गए एवं कलश आवंटन के अध्यक्ष सुमेरचन्द पाटनी बनाए गए और महोत्सव के प्रचार का कार्य यहीं से प्रारंभ हुआ।

फतेहपुर में मात्र 4 दिन आर्यिका संघ का प्रवास रहा किन्तु उसी मध्य अनेक निर्माणात्मक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक कार्यक्रमों से जैन-अजैन सभी ने अपूर्व लाभ प्राप्त किया। पूज्य माताजी का "गणिनी पद प्रतिष्ठापना समारोह" भी 2 मई को यहीं मनाया गया जिसमें शोभायात्रा निकाली गई तथा माताजी के करकमलों में एक बृहद् अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया, संघपति छोटीशाह को भी सम्मान पत्र से सम्मानित किया गया।

➢अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर के दर्शन—

बाईसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के अतिशयों से पवित्र नगरी त्रिलोकपुर में 4 मई 1993 को आर्यिका संघ का शुभागमन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुआ। यहाँ के कर्मठ कार्यकर्ता पदमचन्द जैन पूज्य माताजी के अनन्य भक्त हैं। त्रिलोकपुर कार्यक्रम बनवाने में इन्होंने अत्यन्त परिश्रम किया, तब वहाँ दो दिन संघ का सानिध्य प्राप्त हो सका। भरपूर स्वागत एवं आतिथ्य सत्कार का प्रमुख श्रेय पदमचन्द जी को प्राप्त हुआ तथा सारी समाज ने गुरुवाणी, आहारदान, वैयावृत्ति का पुण्य संचित किया। पूज्य माताजी ने इस अतिशय क्षेत्र के विकास में भी पूरी रुचि ली जिसके फलस्वरूप वे वहाँ दुबारा नवम्बर 1994 में गईं और कल्पद्रुम मंडल विधान, भगवान नेमिनाथ का मस्तकाभिषेक आदि कार्यक्रम उनके संघ सानिध्य में सम्पन्न हुए।

➢पारिजात कल्पवृक्ष की स्थापना—

भगवान नेमिनाथ के चरण सानिध्य में पहुँचने से पूर्व पूज्य माताजी ने त्रिलोकपुर को एक नई भेंट प्रदान करने का शुभ भाव बनाया था। उन्होंने बताया कि भगवान नेमिनाथ के समवसरण में चार सिद्धार्थ वृक्ष होते हैं जिसमें चारों दिशाओं में चार सिद्ध प्रतिमाएँ रहती हैं। उनके नाम हैं—नमेरु, मंदार, सन्तानक और पारिजात। इनमें से एक **''पारिजात कल्पवृक्ष''** की स्थापना त्रिलोकपुर में करने का संकल्प ज्यों ही उन्होंने त्रिलोकपुर में विधान के मध्य प्रगट किया, तत्क्षण दानदातार तैयार हो गये। अब वह कल्पवृक्ष भी तैयार हो चुका है और चार सिद्ध प्रतिमाओं से समन्वित सिद्धार्थ वृक्ष त्रिलोकपुर में भक्तों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

यह एक सुखद संयोग की बात है कि त्रिलोकपुर के पास ''बरोलिया'' नामक एक गांव में पारिजात नाम का वनस्पतिकायिक वृक्ष भी है जिसके बारे में किंवदन्ती चली आ रही है कि पांडव उसे स्वर्ग से लेकर आए थे। उसे देखने के लिए भी दूर-दूर से लोग जाते हैं क्योंकि एशिया में केवल एक स्थान ''बरोलिया'' में ही यह वृक्ष पाया गया है।

➢जन्मभूमि का रोमाँचक मिलन—

माता कौशल्या की भाँति विरह की अग्नि में जल रही टिकैतनगर जन्मभूमि को आज अपने पूनों के चाँद का दर्शन होने वाला है। इस खुशी में 9 मई 1993 को नगर का कण-कण झूम रहा था। हर घर के द्वार पर मंगल चौक पूरे गए थे। संघपति छोटीशाह तो आज फूले नहीं समा रहे थे क्योंकि उनका परिश्रम आज फलीभूत होकर सामने आया था।

टिकैतनगर में नगर सीमा के प्रतीक मुख्य चार फाटक बने हैं, वे चारों दिशाओं में पुरानी किलाबन्दी के सूचक हैं। उन चारों फाटकों तक विशाल जुलूस के साथ माताजी एवं संघ को घुमाया गया। जब से अवध में संघ का भ्रमण प्रारंभ हुआ था, प्रत्येक गाँव के लोग स्वागत करने के बाद यही कहते थे कि हम तो कुछ भी नहीं कर सकते हैं, टिकैतनगर का प्रवेश देखने लायक रहेगा। सुन-सुनकर हम भी सोचते थे कि ये जाने क्यों ऐसा सोच रहे हैं? किन्तु जब जन्मभूमि की माटी का स्पर्श हुआ तो देखा, इससे भी कई गुना अधिक नगरी की सजावट, बैनर, तोरणद्वार तो स्वागत का दृश्य उपस्थित कर ही रहे थे, उसके साथ ही ''अमर उद्योग'' से प्रारंभ हुए जुलूस में 40 मोटर साइकिलों पर केशरिया झण्डा लिए हुए नौजवान, 40 महिलाएँ मंगल कलश लिए हुए आगे चल रही थीं। धरती की भीड़ के साथ-साथ मकानों की छतें भी नर-नारियों से भरी हुई थीं क्योंकि सभी अपनी विश्वविख्यात विभूति को देखने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। हर्ष के अश्रु नगरवासियों की आँखों में समा नहीं रहे थे अतः छलककर बाहर आने को आतुर थे।

बाजार के एक विशाल पांडाल में मंगल प्रवेश की प्रवचन सभा हुई। उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री कल्याणसिंह ने पधारकर पूज्य माताजी के चरणों में विनयांजलि अर्पित की तथा अपार भीड़ को सम्बोधित किया। राम के अयोध्या आगमन के समान ही इस दृश्य ने हर किसी को भाव विह्वल कर दिया था।

➢नहीं लेखनी लिख सकती है मातृभूमि के आँसू को—

वह एक अजीब गर्मागरम माहौल था, जब टिकैतनगर में 26 मई 1993 को यह निर्णय होने वाला था कि पूज्य माताजी के संघ का प्रथम चातुर्मास अवध के किस नगर में होगा? टिकैतनगर की जनता अन्य स्थानों से निवेदन करने आने वालों को देख-देखकर बेचैन थी, उन्हें डर था कि कहीं कोई हमारी माताजी को अब हमसे छीन न ले। अनेक गीत, भजनों के माध्यम से सबने अनशन धरने की भक्तिभरी धमकियाँ भी दे डाली थीं। 26 ता.को भाग्य परीक्षण का सभी को बेसब्री से इंतजार था। कोई उस दिन मंदिर में नियम लेकर बैठ गए थे कि जब तक यहाँ के चातुर्मास का निर्णय नहीं सुन लेंगे, तब तक अन्न जल नहीं ग्रहण करेंगे, कितनों ने मनौतियाँ मान रखी थीं,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कितने बाल-युवा दिलों ने माताजी के भवन के बाहर वोट क्लब का दृश्य उपस्थित कर तरह-तरह के पोस्टर, पेम्पलेट, नारे आदि अपनी माँग पूरी करने में लगाए थे।

मुझे स्वयं समझ नहीं आता है कि उन नाजुक क्षणों को मैं अपनी लेखनी से किस प्रकार लिखूँ? जब आत्मदाह तक की बात कानों में आ चुकी थी। टिकैतनगर का चौक बाजार उस भीषण गर्मी में भी जनसमूह से खचाखच भरा था। नर-नारियों, बालक-बालिकाओं, युवकों सबके जोशीले चेहरे देखकर हम सब भी असमंजस में पड़े थे। उस स्थिति का कुछ अंश वीडियो कैसेट से अथवा प्रत्यक्षदर्शियों से ही ज्ञात हो सकता है। मेरे कानों में तो आज भी वहाँ के 1-2 भजनों की पंक्तियाँ टकराती रहती हैं। जैसे—

''मेरी नगरी में चौमास, होगा ही होगा''......।

''श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी को, मैं तो आज मनाय लूँगी।''

कितने लोगों की तो आँखें रोते-रोते सूज गई थीं। कमरे के बाहर धरना दिये हुए युवकों को जब ब्र. रवीन्द्र जी ने कुछ समझाने की कोशिश की, तो लोगों ने उन्हें गोद में उठाकर एक कमरे में बंद कर दिया। ऐसी विचित्र स्थिति पूज्य माताजी ने भी इससे पूर्व कभी नहीं देखी थी। खैर! काफी जोशीले वातावरण में टिकैतनगर चातुर्मास की 99 प्रतिशत स्वीकृति की घोषणा पूज्य गणिनी आर्यिका श्री के मुखारविन्द से हो गई और नगर में चारों ओर दीवाली जैसी खुशियाँ मनाई जाने लगीं। फतेहपुर, बाराबंकी आदि स्थानों के महानुभावों को उस दिन अपने नगरों में चातुर्मास की स्वीकृति न मिलने के कारण जो दुःख हुआ, उसे भी मेरी लेखनी लिखने में असमर्थ है।

➢अयोध्या विहार की भूमिका—

चातुर्मास की स्वीकृति पाकर नगरी आश्वस्त थी। अभी आषाढ़ सुदी चतुर्दशी आने में लगभग 40 दिन शेष थे। 29 मई से 4 जून तक लघु पंचकल्याणक का आयोजन हुआ। इसी के बीच एक दिन 3 जून को लखनऊ से सुमेरचन्द पाटनी पूज्य माताजी के दर्शनार्थ आए। वे चूँकि उन दिनों अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष थे अतः अपने अनुभव के आधार पर अयोध्या की दुर्दशा का बखान करते हुए कहने लगे— माताजी! मेरा निवेदन है कि आप ब्र. रवीन्द्र जी को कुछ वर्षों के लिए अयोध्या का अध्यक्ष बना दें और वहाँ का विकास, जीर्णोद्धार करवा दें, यह आपका परम उपकार होगा। पूज्य माताजी ने उन्हें सांत्वना प्रदान की तथा अयोध्या की विकासशील गतिविधियों पर चर्चा की।

आपसी विचार के बाद ब्र. रवीन्द्रजी ने प्रस्ताव रखा कि माताजी! अयोध्या में जिस "तीन चौबीसी मंदिर" का निर्माण होगा, उसका शिलान्यास यदि आपके सानिध्य में उचित स्थान देखकर हो जावे तो उत्तम रहेगा। आखिरकार चातुर्मास से पूर्व अयोध्या का विहार निर्णीत हो गया और 8 जून को टिकैतनगर से तीर्थ अयोध्या की ओर संघ का विहार हो गया, 16 जून 1993 को माताजी अपने ध्यान का केन्द्र आदिप्रभु के चरणों में पहुँच गईं।

➢आँसू भी तीर्थ के लिए उपहार बन गए—

आप सोच रहे होंगे कि भला आँसू उपहार कैसे बन सकते हैं? रोना तो प्रायः अशुभ माना जाता है परन्तु आपके और ज्ञानमती माताजी के आँसुओं में भी अन्तर है, आप तो सांसारिक भोगोपभोग वस्तुओं के लिए आँसू बहाते हैं जबकि ज्ञानमती माताजी के आँसू तीर्थ की दुर्दशा देखकर अनायास ही आँखों से निकल पड़े, उनको इस बात का बेहद दुःख हुआ कि हमारे प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि की यह स्थिति है?

इसे अद्भुत संयोग कहें या चमत्कार? वहाँ की स्थिति को देखते ही पूज्य माताजी ने एक प्रतिशत छूट का लाभ उठाते हुए वर्ष 1993 का चातुर्मास अयोध्या में ही करने का पक्का निर्णय ले लिया। इस चातुर्मास काल में सम्पूर्ण अवध ने भरपूर लाभ लिया। भादों में दशलक्षण पर्व में एक साथ 7 इन्द्रध्वज विधानों का अभूतपूर्व कार्यक्रम सम्पन्न हुआ पुनः शरदपूर्णिमा 30 अक्टूबर 1993 को पूज्य माताजी की 60वीं जन्मजयंती मनाई गई।

➢मणि-कांचन का अद्भुत संयोग—

भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या में कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व जन्म लिया था किन्तु काल के थपेड़ों ने उनकी स्मृतियों को धूमिल कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिया था। हाँ! उनके वंशज मर्यादा पुरुषोत्तम राम को अयोध्यावासी जरूर याद करते हैं क्योंकि उनका कथानक अभी मात्र 9 लाख वर्ष पुराना है।

इसी प्राचीन इतिहास की स्मृति दिलाने हेतु सन् 1951-52 में एक बार आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज अवध प्रान्त में पधारे और उनकी पावन प्रेरणा से अयोध्या के प्राचीन कटरा मंदिर में भगवान ऋषभदेव-भरत-बाहुबली की तीन प्रतिमाएँ विराजमान हुईं। उसी समय एक विशाल प्रतिमा भगवान ऋषभदेव की उन्होंने यहाँ और विराजमान करने की प्रेरणा दी। उस प्रतिमा का निर्माण सन् 1965 में पूर्ण हुआ, तब पुनः आचार्यश्री के सानिध्य में रायगंज के प्रांगण में इस 31 फुट ऊँची प्रतिमा की स्थापना पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक हुई। इतना सब कुछ होने के बाद भी दुर्भाग्यवश अयोध्या तीर्थ का यथोचित विकास न हो सका। यहाँ तक कि आचार्य श्री देशभूषण महाराज ने अयोध्या विकास की उत्कट भावना से "दूध" का त्याग कर दिया था कि जब तक इस तीर्थ का विकास नहीं हो जाएगा, मैं आहार में दूध नहीं ग्रहण करूँगा। उनका यह त्याग संभवतः सन् 1965 में पूर्ण हुआ। यह कौन जानता था कि इसका पुनः उद्धार करने एक दिन स्वयं अवध क्षेत्र की ब्राह्मी माता ज्ञानमती जी पधारेंगी! सन् 1992 में 23 अक्टूबर धनतेरस का दिन सचमुच ऐतिहासिक पृष्ठ बन कर आया था, ज्ञानमती माताजी को अयोध्या के विकास की स्मृति दिलाने। तभी तो मानो प्रभु की प्रेरणा पाकर वे सबके मना करने के बावजूद भी हस्तिनापुर से अपने पिता ऋषभदेव के दर्शनार्थ चल पड़ीं। 4 माह, 5 दिन की पदयात्रा के बाद उनका संघ सहित पदार्पण अयोध्या की धरती पर हुआ, फिर तो वसुन्धरा के भाग्य ही पलट गए। जिस भूमि ने सदियों से किसी संत का चातुर्मास अपनी आँखों से नहीं देखा था, उसने अपनी पुत्री ज्ञानमती जी का जबर्दस्ती यहाँ चातुर्मास कराकर दिखा दिया कि अब मैं अबला नहीं सबला बन गई हूँ। यह मणिकांचन का संयोग एक अनहोना संयोग ही है, जिसे विधाता ने करोड़ों वर्ष पूर्व लिखा होगा।

➢बसन्तोत्सव अपनी चरम सीमा पर था—

भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक हेतु 24 फरवरी 1994 का शुभ मुहूर्त पूज्य माताजी ने अनेक मुहूर्तज्ञों से सलाह करके निश्चित किया और उसी निर्णीत तिथि के अनुसार एक नवीन गठित **"मस्तकाभिषेक महोत्सव समिति"** अपने कार्य में संलग्न हो गई।

दिन बीते, माह बीते और देखते ही देखते अयोध्या में 24 फरवरी को बसन्तोत्सव का रंग छा गया। प्रात:काल से ही केशरिया वस्त्रों में लिपटा विशाल जनसमूह अपने पूर्वनिर्धारित कलशों को पाने हेतु आतुर हो रहा था।

कलशव्यवस्था के आयोजकों ने सुचारू व्यवस्था बनाने के लिए मंदिर के बाहर काफी दूर से बेरीकेटिंग बनाई थी ताकि क्रम-क्रम से ही लोग सीढ़ियों से चढ़कर मचान तक पहुँचें और अपने कलशों को प्रभु के मस्तक पर ढुरा सकें।

भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक देखने हेतु पूज्य माताजी के आदेशानुसार मंदिर के बाहर लघुद्वार भी तोड़कर काफी बड़ा कर दिया गया था, जिससे प्रत्येक दर्शनार्थी ने बिना किसी व्यवधान के पूरा अभिषेक देखा। मंदिर के बाहर दोनों ओर से मजबूत सीढ़ियों का निर्माण किया गया था, जिस पर एक ओर से जाने तथा दूसरी ओर से वापस आने की व्यवस्था थी। केशरिया झण्डों से सजी सीढ़ियों पर जगह जगह स्वयंसेवक नियुक्त किए गए, जो कलशपास लिये हुए नरनारियों को ही ऊपर चढ़ने दे रहे थे।

मंदिर के ठीक सामने बाहर चबूतरे पर 1008 कलश स्वस्तिक के आकार में सजाए गए थे। आम के पत्ते, फूल की माला एवं नारियल से सजे हुए वे कलश बसन्ती बहार बिखेरते हुए जनमानस को अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे। सर्वप्रथम उन समस्त कलशों की पूजन की गई पुनः प्रेरणास्रोत पूज्य माताजी एवं यहाँ पधारे मुनि संघ के मंगल सानिध्य में महामस्तकाभिषेक प्रारंभ हुआ।मस्तकाभिषेक से पूर्व स्वर्णकलश की बोली लेने वाले श्री महावीर प्रसाद जैन, बंगाली स्वीट सेंटर-दिल्ली का महोत्सव समिति की ओर से भगवान ऋषभदेव का प्रतीक भेंट कर सम्मान किया गया तथा तीर्थंकर कलश करने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले महानुभावों का भी भगवान ऋषभदेव का प्रतीक भेंट कर स्वागत किया गया।

➢महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली ने प्रथम अभिषेक स्वर्णकलश से किया—

जिस मस्तकाभिषेक की प्रतीक्षा वर्ष भर से की जा रही थी, उसका प्रथम सौभाग्य प्राप्त किया दिल्ली निवासी श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेंटर ने। 24 फरवरी 1994 को मध्यान्ह 11 बजकर 5 मिनट पर जब वे असली सोने का सुसज्जित कलश लेकर अपनी धर्मपत्नी एवं परिवार सहित सीढ़ियों पर चढ़ने से पूर्व अनेक श्रद्धालुओं को कलश का स्पर्श कराने लगे, तब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान ऋषभदेव की जय-जयकार से आकाश गुंजायमान हो उठा। ठीक 11 बजकर 15 मिनट पर भगवान के मस्तक पर प्रथम कलश की धारा होते ही जहाँ भक्तगण भावविभोर हो उठे, वहीं गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के हर्षाश्रु भी भक्तों की निगाहों से छिप न सके।

जो कुछ भी वहाँ उस क्षण हो रहा था, वह सब स्वाभाविक भी था। हर श्रद्धालु सोच सकता है कि जिस प्रबल भावना को संजोकर मातुश्री अथक परिश्रमपूर्वक अयोध्या में आई थीं, आज उसे सफलीभूत देखकर उनके वे नेत्र भला अपनी आनन्दभेंट प्रभु चरणों में क्यों न चढ़ाते!

श्री वादिराज मुनिराज की ये पंक्तियाँ यहाँ सार्थक सिद्ध हो रही थीं—

''आनन्दाश्रुस्नपितवदनं गद्गदंचाभिजल्पन्.........''

पूरे परिवार ने उस सोने के कलश से क्रम-क्रम से अभिषेक किया पुनः हर्षोल्लासपूर्वक भेंट में प्राप्त उस पवित्र कलश को मस्तक पर लगाया।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि मस्तकाभिषेक महोत्सव समिति की ओर से समस्त कलश करने वालों को पूर्व योजनानुसार स्वर्ण, रजत एवं सामान्य कलश भेंट स्वरूप प्रदान किए गए।

इसी शृंखला में प्रथम स्वर्णकलश से अभिषेक करके महावीर प्रसाद जैन ने खुशी से नाचते हुए हजारों रुपयों की एवं रजत पुष्पों की रत्नवृष्टि प्रभु ऋषभदेव एवं ज्ञानमती माताजी के ऊपर कर डाली, जिससे उन्होंने निश्चित ही सातिशय पुण्य बंध कर लिया।

➢तीर्थंकर के मस्तक पर तीर्थंकर कलशों से महाभिषेक—

जब रजत धातु से निर्मित तीर्थंकर नामक कलशों से तीर्थंकर प्रभु का अभिषेक हुआ, तब तीर्थंकर ऋषभदेव की जय-जयकार करते हुए भक्तगण झूम उठे। इस सौभाग्य को प्राप्त करने वालों में साहू अशोक कुमार जैन, श्री निर्मल कुमार सेठी, श्री गजराज गंगवाल, श्री श्रीपाल मोटर वाले-दिल्ली, श्री आर.के. जैन-मुम्बई, श्री पदमचंद पाटनी-दिल्ली, श्री राजकुमार जैन-प्रीतमपुरा, दिल्ली, श्री शीतल प्रसाद जैन-दिल्ली आदि प्रमुख रहे।

इसके पश्चात् गणधर कलश से दिल्ली के श्री अजितप्रसाद विनोद कुमार जैन पटाखे वालों एवं श्री देवेन्द्र कुमार जैन प्रीतविहार-दिल्ली ने अभिषेक किया पुनः चक्रवर्ती कलश प्राप्त करने का सौभाग्य मिला श्री पदमचंद अशोक कुमार-इलाहाबाद, श्री प्रेमचंद जैन-पहाड़गंज, नई दिल्ली, श्री कमलकुमार जैन, खारीबावली-दिल्ली, श्री आनंद जी दीपक जी, पूषा रोड-नई दिल्ली, श्री हेमचंद विजय कुमार जैन, सरस्वती विहार-दिल्ली, श्री देवकुमार सिंह कासलीवाल-इंदौर एवं श्री मुकेश कुमार जैन-इंदौर को।

अभिषेक की इसी शृंखला में भरतकलशों से अभिषेक के पश्चात् पंचामृत अभिषेक हुआ, जिससे अयोध्या की धरती केशरिया हो गई।

➢राजधानी लखनऊ में व्यापक धर्म प्रभावना—

लखनऊ की वसुन्धरा ने अपनी राजमाता के रूप में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का भावभीना स्वागत तो किया ही और 1 मई 1994 को उनकी दीक्षा जयंती का समारोह रवीन्द्रालय में मनाकर त्याग का आदर्श भी प्रस्तुत किया। लगातार 2 माह तक लखनऊ की सभी कॉलोनियों में आर्यिका संघ के पदार्पण से महती धर्म प्रभावना हुई। इस प्रवास से जनता को ज्ञात हो सका कि आचार्य संघ एवं मुनि संघों के समान ही **'गणिनी आर्यिका संघ'** भी त्याग और ज्ञान के माध्यम होते हैं। इससे पूर्व लखनऊ तथा पूरे अवध में आज तक कभी किसी आर्यिका संघ का पदार्पण नहीं हुआ था।

➢इन्दिरा नगर में श्रावक सम्मेलन (जब दान के लिए स्वर्णाभूषण भी उतरने लगे)—

लखनऊ की एक कॉलोनी इन्द्रानगर है, जहाँ विशेष शिक्षित जैन समुदाय को पाकर पूज्य माताजी ने भी अपने ज्ञान का अमृत खुले दिल से वितरित किया। 5 दिन तक वहाँ विभिन्न विषयों पर संगोष्ठी चली पुनः 19 जून 1994 को एक श्रावक सम्मेलन हुआ, जिसमें अनेक वक्ताओं के साथ ही हम लोगों ने भी श्रावकों को सम्बोधित किया। वहाँ एक विशाल जिनमंदिर का निर्माण उन दिनों चल रहा था। प्रवचन के मध्य कुछ महिलाएँ इतनी भावुक हो उठीं कि उन्होंने अपने स्वर्ण आभूषण भी उतार-उतारकर मंदिर निर्माण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के लिए दान कर दिये। त्याग और दान का यह अनुपम उदाहरण प्रत्येक श्रावक-श्राविका के लिए अनुकरणीय है, जब देखते ही देखते वाणी के जादू से लाखों रुपये का अनुदान मंदिर के लिए एकत्रित हो गया।

➢वर्षों का मनमुटाव जिनकी प्रेरणा से स्नेहबंधन में बदल गया—

बाराबंकी वालों के विशेष आग्रह पर पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने यहाँ कई वर्षों से चले आ रहे आपसी मनमुटाव संबंधी दो विवादों को बड़ी ही कुशलतापूर्वक समाप्त करवाकर आपसी सौहार्द्र की स्थापना कराई।

विवादग्रस्त दोनों पक्षों के लोगों ने माताजी से करबद्ध निवेदन किया कि यहाँ समाज के लोगों में चुनाव संबंधी बहुत बड़ा विवाद है, जिससे काफी तनाव है तथा दूसरा संघर्ष महावीर विद्यालय का है। इन दोनों विवादों के कारण समाज में आपसी मतभेद-मनभेद व कषाय का वातावरण बना हुआ है, इसे आपके आशीर्वाद से हम लोग समाप्त करना चाहते हैं। प्रशंसा की बात यह रही कि अनेक प्रबुद्ध लोगों ने यह कहा कि पूज्य माताजी! आपका जो भी आदेश होगा, हम उसे सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से भी अधिक आदरपूर्वक स्वीकार करेंगे, पुनः हुआ भी यही।

दोनों पक्षों की बात सुनने के बाद पूज्य माताजी ने जो भी निर्णय दिया, उसे सभी लोगों ने मान्य किया और आपस में एक-दूसरे के साथ गले मिलकर विवाद समाप्त कर दिया। दो वर्षों से जो चार्ज विद्यालय कमेटी को नहीं प्राप्त हुआ था, गोलक नहीं खुली थी, वह सब सम्पूर्ण चार्ज़ नई कमेटी को पुरानी कमेटी ने सौंप दिया।

बाराबंकी की जैन समाज आज भी पूज्य माताजी के प्रति पूर्ण कृतज्ञ है तथा यह महसूस करती है कि माताजी के संघ सहित पदार्पण से हमारी समाज की खोई एकता पुनः स्थापित हुई है। गुरुसानिध्य से प्राप्त होने वाली सुभिक्षता का यह अनुपम उदाहरण है।

➢सन् 1994 का चातुर्मास जन्मभूमि-टिकैतनगर में—

यद्यपि लखनऊ प्रवास के मध्य वहाँ के नागरिकों ने लखनऊ में चातुर्मास करने हेतु पूज्य माताजी से अनेक बार श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया किन्तु चूँकि सन् 1993 में पूज्य माताजी ने टिकैतनगर में 99 प्रतिशत चातुर्मास की स्वीकृति देकर एक प्रतिशत की छूट में अयोध्या तीर्थ पर चातुर्मास कर लिया था, उस समय टिकैतनगर के लोग बहुत दुःखी हो गए थे अतः सन् 1994 का चातुर्मास पूज्य माताजी ने टिकैतनगर में किया। चातुर्मास के मध्य अनेक प्रकार के प्रभावनात्मक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

➢संभावित कलह वास्तविक क्षमावणी बन गई—

जैसा कि बीसों वर्ष से टिकैतनगर में क्षमावणी पर्व के दिन सामाजिक संघर्ष चुनाव आदि किसी न किसी विषय को लेकर अवश्य हुआ करता था। यह भावी आशंका पूज्य माताजी के समक्ष भी आई तो उन्होंने कहा कि क्षमावणी पर्व तो आत्मशुद्धि के लिए आता है, इस दिन सामाजिक चुनाव या आर्थिक लेखा-जोखा लेकर नहीं बैठना चाहिए किन्तु इसके लिए कोई अतिरिक्त दिवस निर्धारित करें और यह पर्व अत्यन्त सौहार्द्र पूर्वक पारस्परिक क्षमायाचना करके मनावें। पूज्य माताजी की यह भावना सफल हुई और क्षमावणी पर्व चिरकाल पश्चात् वहाँ धूमधाम से बिना विवाद के सम्पन्न हो गया।

पूज्य माताजी की यह शिक्षा अन्य समाजों को भी ग्रहण करके सामाजिक चुनाव, आर्थिक व्यवस्था आदि के कार्य पर्व के दिन न करके अन्य साधारण तारीखों में करना चाहिए ताकि हमारे पवित्र पर्व शालीनता के साथ लोग मना सकें।

➢आचार्य श्री वीरसागर महाराज चरण स्थापना—

आश्विन कृष्णा अमावस्या को गणिनी आर्यिकाश्री के दीक्षागुरु आचार्य श्री वीरसागर महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई तथा उनकी प्रेरणा से मंदिर जी में सुमेरु पर्वत के समक्ष आचार्यश्री के चरण विराजमान किए गये। यहाँ लोगों ने बताया कि सन् 1954 में आचार्यश्री वीरसागर महाराज अपने संघ के साथ टिकैतनगर पधारे थे और उनके पावन करकमलों से भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा वेदी में विराजमान हुई थी। सो अब 40 वर्ष बाद उनके चरणों की स्थापना से पुनः उनकी स्मृतियाँ ताजी हो गईं।

➢जन्मभूमि में मनाई गई षष्ठी पूर्ति—

यह एक मणि-कांचन संयोग ही माना जाएगा कि जहाँ आठ वर्ष का शैशव बीता, वहीं ज्ञानमती माताजी ने अपने जीवन के साठ वर्ष पूर्ण किए। नगरवासियों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक उनके ''षष्ठिपूर्ति'' समारोह को मनाया। इसके अन्तर्गत कई कार्यक्रमों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के साथ-साथ देशभर से आमंत्रित 61 श्रेष्ठियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल श्री मोतीलाल जी वोरा, कारागार मंत्री-श्री अवधेश प्रसाद जी एवं फैजाबाद के पूर्व विधायक श्री जयशंकर पांडे आदि अनेक शासन-प्रशासन के लोग पधारे। विशेष बात यह है कि कारागार मंत्री ने इस अवसर पर जेल से 61 कैदियों को रिहा करने की घोषणा करते हुए स्वयं भी मानव कल्याण के पथ पर चलने का संकल्प लिया था।

➢विदाई के रोमांचक क्षण, आँसुओं से भीगे तन-मन—

चातुर्मास समापन के क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहे थे, नगरवासियों की विह्वलता बढ़ती जा रही थी और आखिर वह मंगलविहार के दिन अश्रु सरिता रूप में फूट पड़ी। ओह! मैंने आज तक जीवन में ऐसा करुण क्रन्दन नहीं देखा। पिछले वर्ष तो मैं सोचती थी कि इन्हें अपनी निधि के चातुर्मास का लाभ न मिलने के कारण ये इतने दुखी हो रहे थे, किन्तु अब चातुर्मास होने के बाद इतिहास पुरुष जीवन्धर के समान अपनी माता को अपने नगर से जाने ही नहीं देना चाहते थे और अपनी इच्छा सफल होती न देख रोने के सिवाय उनके पास कोई चारा भी न था। जिनमंदिर से पूज्य माताजी के संघ सहित निकलते ही प्रत्येक श्रावक अपने घर के समक्ष उनके चरण प्रक्षाल करते हुए आरती करते ही फूट-फूट कर रो पड़ते। इन भावभीने क्षणों में हमारे संघ के लोगों की भी निष्ठुरता में कमी आ गई और कई जगह उन सबकी आँखें भी सजल हो गईं। गाँव का हर वृद्ध,बालक, महिला, युवा सभी तो सिसकियाँ भर-भर कर रो रहे थे। हम तो किंकर्तव्य विमूढ़ हो सबके मोह की लीला देख रहे थे और महसूस कर रहे थे कि इनकी अन्तर्वेदना वर्षों तक कोई दूर नहीं कर पाएगा। अत्यन्त कठोर हृदय होने के बावजूद भी उस समय पूज्य माताजी उन सबके शोक की उमड़ती सरिता को देख पाने में कठिनाई महसूस कर रही थीं।

युवकों की भजन पंक्तियाँ निरन्तर 6 किमी. तक गूंजती रहीं और हजारों नर-नारियों को रुलाती रहीं—

"माता तुम न जाना भूल, तुम तो चलीं दूर-दूर, हमें याद रखना"।

इसे बाल अपनत्व कहूँ या धर्म स्नेह? आज भी जब मैं उस दृश्य का स्मरण कर लेती हूँ तो सारा शरीर रोमांचित हो जाता है पुनः एक क्षण को उस वीतराग अवस्था को प्राप्त करने के लिए मन आतुर होता है जिसमें रंचमात्र मोहकर्म सताने न पावे क्योंकि मोक्ष प्राप्ति तो उस अवस्था से ही हो सकती है।

प्राचीन कथानक के अनुसार जैसे बलराम जब कोलाहल देखकर, अपने रूप के प्रति आकर्षण देखकर, ध्यान में विघ्न उपस्थित होता देख कर, जनता के स्नेह से अपने को विमुख करने हेतु मांगीतुंगी (महाराष्ट्र में) पर्वत पर जाकर जंगल की ओर मुँह करके जनता की ओर पीठ करके ध्यान में खड़े हो गए थे। इसी प्रकार पूज्य माताजी भी अपने कर्तव्य का निर्वाह करने के पश्चात् सारे अवधवासियों के स्नेह से अपने को विमुख करने हेतु चल पड़ीं दूसरी दिशा की ओर। अब उनका लक्ष्य भगवान ऋषभदेव और तीर्थ अयोध्या पर केन्द्रित हो गया, जिससे वहाँ के अधूरे कार्य पूर्ण सम्पन्न होकर क्षेत्र की कीर्तिध्वजा दिग्दिगन्त में फहराने लगे।

➢अयोध्या तीर्थ पर पुनः आगमन—

टिकैतनगर में चातुर्मास सम्पन्न करने के पश्चात् पूज्य माताजी 16 दिसम्बर 1994 को पुनः अयोध्या पधारीं, वहाँ पहुँचने के बाद 14 फरवरी 1995 तक समवसरण मंदिर एवं रचना का निर्माण कार्य द्रुतगति से पूर्ण हुआ पुनः 15 फरवरी 1995 से नवनिर्मित समवसरण मंदिर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवाकर आर्यिकाश्री ने तीर्थ और भगवान के श्रीचरणों में अपनी एवं देशभर की ओर से द्वितीय धरोहर भेंट में चढ़ाई। प्रतिष्ठा के अंतिम दिवस अर्थात् निर्वाणकल्याणक के दिन दोनों नूतन मंदिरों (तीन चौबीसी मंदिर एवं समवसरण रचना मंदिर) के शिखरों पर कलशारोहण हुआ एवं सन् 1994 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से मुख्यमंत्री मुलायम सिंह द्वारा घोषित वहाँ के राजकीय उद्यान का नामकरण "भगवान ऋषभदेव उद्यान" किया गया एवं उस उद्यान में भगवान ऋषभदेव की आर.सी.सी. से निर्मित विशाल प्रतिमा स्थापित हुई।

➢विश्वविद्यालय ने डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान कर अपने को गौरवान्वित किया—

अयोध्या प्रवास के दौरान फैजाबाद के अवध विश्वविद्यालय के कुलपति श्री के.पी. नौटियाल जी कई बार पूज्य माताजी के दर्शन हेतु पधारे तथा जब उन्होंने यह जाना कि पूज्य माताजी इसी अवध प्रांत की अनमोल मणि हैं और इन्होंने एक छोटे कस्बे में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छोटी सी लौकिक शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद भी अपने ज्ञान के आधार पर एक-दो नहीं अपितु दो सौ से अधिक ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित कर दिया है, तब वे अपने आपको गौरवशाली समझते हुए बोले—माताजी! हम आपको विश्वविद्यालय की सबसे बड़ी मानद् उपाधि डी.लिट्. से सम्मानित करके अपने विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाना चाहते हैं परन्तु पूज्य माताजी ने हंसकर उनकी बातों को टाल दिया वे बोलीं—भैय्या! हमारे पास तो अपने गुरु द्वारा प्रदत्त आर्यिका और गणिनी पद ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, शेष हमें कोई पदवी नहीं चाहिए।"

लेकिन ऐसा कहते हैं कि विचारक व्यक्ति के मन में यदि गहराई से कोई विचार समा जाता है, तो वह एक न एक दिन मूर्तरूप अवश्य लेता है। यही अवध विश्वविद्यालय के कुलपति जी के साथ भी हुआ, पूज्य माताजी की बात सुनकर उस समय तो कुलपति जी चले गए परन्तु जनवरी 1995 के अंतिम सप्ताह में एक दिन उन्होंने किसी के द्वारा समाचार भिजवाया कि मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव द्वारा भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक महोत्सव के मंच से घोषित ऋषभदेव जैन चेयर के भवन बनाने हेतु सरकार से पैसा प्राप्त हो गया है, उस भवन के शिलान्यास हेतु माताजी मुहूर्त निश्चित कर दें एवं अपना सानिध्य प्रदान करने हेतु स्वीकृति प्रदान करें।

शिलान्यास की बात आते ही पूज्य माताजी ने 5 फरवरी की तिथि घोषित करते हुए अपने पहुँचने की स्वीकृति दे दी। उस दिन कुलपति जी ने बहुत ही सूझ-बूझ का परिचय देते हुए शिलान्यास के पश्चात् उसी दिन (5 फरवरी 1995 को) पूज्य माताजी को विश्वविद्यालय लाकर डी.लिट्. की मानद् उपाधि प्रदान करके अपने विश्वविद्यालय का गौरव वृद्धिंगत कर लिया।

➢अयोध्या से मंगल विहार—

भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती के पश्चात् 28 मार्च 1995 को पूज्य माताजी ने अपने संघ के साथ अयोध्या से मंगल विहार कर दिया। बड़े बाबा के श्रीचरण छोड़ते हुए उन्हें भी मानसिक वेदना हुई तथा उन्होंने अपने उद्बोधन में अवधवासियों को अयोध्या तीर्थ की तन-मन-धन से रक्षा करने का संदेश दिया। पूज्यश्री की उक्त भावना को मैंने एक भजन में संजोया, जिसने समय के अनुरूप तीर्थभक्तों को प्रबल प्रेरणा प्रदान किया—

भजन

तर्ज—हम लाए हैं तूफान से किस्ती निकाल के..........

निधियाँ कई दे दी हैं, अयोध्या को मात ने।
अब तीर्थ को रखना, मेरे भक्तों! संभाल के।।टेक.।।

आए थे कभी देशभूषण जी महामुनी।
जिनकी कृपा से ऋषभदेव मूर्ति है बनी।।
उपकार उनका लिख गया इस तीर्थ भाल पे।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।1।।

वीरान हो गई थी पुनः पुरी अयोध्या।
जिनधर्म की प्रभावना न हुई थी यहाँ।।
प्रचलित है रामजन्मभूमि की मिशाल से।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।2।।

इस अवध की अनमोल मणी ज्ञानमती माँ।
गणिनी शिरोमणी तथा चारित्र चन्द्रिका।।
उनकी गई इक दृष्टि अयोध्या विकास पे।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज संघ सहित आ गईं इस आदि तीर्थ पर।
फिर छा गई यह ऋषभ जन्मभूमि जगत पर।।
अतिशायि कार्य हो गये हैं अल्पकाल में।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।4।।

फिर ना कभी वीरान हो जावे ये बगीचा।
श्री देशभूषण ज्ञानमती ने इसे सींचा।।
चैतन्य तीर्थ ''चन्दना'' गुरु ही त्रिकाल में।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।5।।

इस प्रकार अयोध्या की गलियाँ, वहाँ की जनता, वहाँ की इमारतें सब अपनी पुत्री को विदाई देते समय शून्यता का अनुभव कर रही थीं। अयोध्या के पत्रकार बंधु, वहाँ के सन्त-महन्त उस भावी शून्यता को शब्दों में प्रगट करते हुए कह रहे थे—

'पूज्य माताजी! आपके यहाँ पर विराजने से इतने दिन अयोध्या में जो चारों तरफ अमन—चैन हुई है, वह कहीं आपके जाते ही फिर न खत्म हो जाए, इसलिए आप अयोध्या से न जाएँ, यही आपसे हमारी प्रार्थना है।' एक प्रभावी महंत जी अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए बोले-

''अयोध्या में महन्त बहुत हैं किन्तु सन्त के रूप में हमने आपको पहली बार पाया है। वास्तव में महानता का अन्त करने वाले महन्त कहलाते हैं तथा संसार का अन्त करने के पथ पर चलने वाले सन्त कहे जाते हैं। यदि हमारी नगरी में आप जैसे निःस्वार्थ सन्त रहने लग जावें, तो इसका उत्थान अवश्य हो सकता है।''

सबकी भावनाओं का सम्मान करती हुईं, हृदय से जन-जन को आशीर्वाद प्रदान करती हुईं पूज्य माताजी ने 28 मार्च की शाम तक अयोध्या की सीमा पार कर ली और मन में प्रभु की मूरत बसाए हुए चल पड़ीं अपने गन्तत्व की ओर। पूरे 60 दिनों में अयोध्या से हस्तिनापुर की यात्रा सम्पन्न हुई।

➢सीतापुर में हुआ अवध यात्रा का समापन —

पिछले वर्ष अयोध्या में धर्मामृत की वर्षा करने के बाद पूज्य माताजी अयोध्या से विहार करके फतेहपुर, बेलहरा, पैतेपुर, महमूदाबाद, सिधौली होती हुई 28 अप्रैल 1995 को सीतापुर पहुँचीं। उनके मंगलपदार्पण पर सीतापुर जैन मंदिर के पीछे एक त्यागीभवन का शिलान्यास हुआ तथा वहीं से भक्तों ने भावभीनी विदाई दी।

इस अवसर पर लखनऊ से श्री सुमेरचंद जैन पाटनी व श्री विजय कुमार जैन पधारे और पाटनी जी ने सभा में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि **आज 14 महीने के बाद मैं पूज्य माताजी के दर्शन करने आया हूँ। इसे मैं अपना दुर्भाग्य मानता हूँ। इस मध्य मेरे मन में कारणवश कुछ गलतफहमी उत्पन्न हो गई थी जिनके कारण मैं संघ के दर्शन को नहीं आ सका और अयोध्या के द्वितीय पंचकल्याणक में भी भाग न ले सका। अभी मैं 5-7 दिन पूर्व ही अयोध्या होकर आया हूँ, वहाँ के कार्यकलापों की तो जितनी प्रशंसा की जावे, कम है। इतने कम समय में जो अनेक विशाल निर्माण हुए हैं, इतिहास उन्हें युगों-युगों तक स्वर्णाक्षरों में अंकित रखेगा। पूज्य माताजी अब अवधप्रान्त से विहार कर रही हैं, मैं कई दिनों से उनके दर्शन करने एवं क्षमायाचना करने हेतु आने वाला था किन्तु पारिवारिक परिस्थितियों के कारण नहीं आ सका। आज अवध यात्रा के समापन की बेला में माताजी से व आर्यिका संघ से क्षमायाचना करता हुआ यही आशा रखता हूँ कि मेरे ऊपर आप लोगों का पूर्व जैसा आशीर्वाद तथा स्नेह बना रहेगा।** अन्त में पाटनी जी ने कहा कि **अयोध्या तीर्थक्षेत्र की नई कमेटी के प्रति मेरी पूर्ण आस्था है, उसके प्रति मेरा कोई दुर्भाव नहीं है। आज पूज्य माताजी के समक्ष मैं पुरानी बातों का त्याग करके जा रहा हूँ। भाई रवीन्द्र जी अयोध्या के कार्य में मुझसे जब भी कोई सहयोग मागेंगे, मैं सदैव सहयोग दूँगा।**

अवध यात्रा समापन के समय अपने मंगल उद्‌बोधन में परमपूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आशीर्वादात्मक प्रवचन में कहा कि साधु तो क्षमा की मूर्ति होते हैं। आप सभी अपने शाश्वत तीर्थ अयोध्या का सतत विकास करते हुए उसकी रक्षा करें, यही मेरा सबके लिए मंगल आशीर्वाद है।

➢धीवर ने मछली मारने का त्याग कर दिया—

एक भन्डिया नामक ग्राम में संघ का रात्रि विश्राम था। वहाँ जनता की भीड़ उमड़ आने पर पूज्य माताजी ने क्षुल्लक मोतीसागर को प्रवचन के लिए संकेत किया। उन्होंने प्रवचन में धीवर का एक प्राचीन कथानक सुनाते हुए कहा कि उसने एक महात्मा जी से एक दिन नियम ले लिया कि 'पहली मछली जो मेरे जाल में फँसेगी उसे मैं छोड़ दिया करूँगा।'' इस नियम के अनुसान उसने एक मछली को उसी दिन पांच बार जीवनदान दिया और कोई दूसरी मछली दिन भर जाल में न आने पर भी उसने नियम नहीं तोड़ा। भले ही उसे तथा उसके परिवार को भूखे रहना पड़ा।

उस नियम के प्रभाव से अगले जन्म में वह धीवर एक धनी सेठ का लड़का हुआ और जीवन में पाँच बार मृत्यु से उसकी रक्षा हुई। अत: प्रत्येक प्राणी को अपने समान मानकर किसी की हिंसा नहीं करना चाहिए।

उक्त प्रवचन समाप्त होते ही सभा में एक धीवर जाति का व्यक्ति उठ खड़ा हुआ और उसने जीवन भर के लिए मछली मारने तथा खाने का त्याग कर दिया। क्षुल्लक जी ने उसे सम्मानित किया, पुन: कई लोगों ने मांसाहार का त्याग किया।

प्राचीन काल के समान आज भी साधुओं की सत्संग सभाओं से अनेक जीवों का कल्याण होता है। देखो न! पौराणिक धीवर ने तो पहली मछली को जीवन दान देने का नियम लिया था। किन्तु आज के धीवर ने उससे भी अधिक साहस का परिचय दिया, निश्चित ही उसका भव सुधरने वाला होगा।

ऐसे छोटे-छोटे संस्मरणों से अवध यात्रा का एक वृहत् पुराण तैयार हो सकता है किन्तु यहाँ मैंने केवल दो-चार उदाहरण लिखकर ही साधु-सानिध्य से होने वाले परोपकारों को प्रस्तुत किया है।

पुन: 28 मई 1995, ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी भगवान शान्तिनाथ के जन्म, तप एवं निर्वाणकल्याणक की पावन बेला में पूज्य माताजी अपने संघ के साथ हस्तिनापुर पधारीं।

➢हस्तिनापुर तीर्थ पर मंगल-पदार्पण—

इस प्रकार अयोध्या से यहाँ तक के पदविहार में अनेक प्रकार के खट्टे-मीठे अनुभवों का आनन्द लेते हुए संघ का मंगल पदार्पण हस्तिनापुर के जम्बूद्वीप-स्थल पर हुआ। तीर्थ के अतुलनीय सौन्दर्य को देखते ही मन प्रसन्नता से भर उठा तथा इतनी लम्बी यात्रा की सारी थकान दूर हो गई।

➢वर्षायोग स्थापना—

'धरती का स्वर्ग' कही जाने वाली हस्तिनापुर की धरती पर जिस दिन से पूज्य माताजी ने प्रवेश किया, नित्य ही छोटे-बड़े कार्यक्रम आयोजित होने लगे। इसी शृंखला में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के पदाधिकारियों के विशेष आग्रह से पूज्य माताजी ने ईसवी सन् 1995 का वर्षायोग जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित किया।

चातुर्मास के मध्य रक्षाबंधन पर्व, दशलक्षण पर्व आदि कार्यक्रम विशेष आयोजनपूर्वक सम्पन्न हुए तथा जम्बूद्वीप का द्वितीय महामहोत्सव एवं पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का जन्मदिवस अद्वितीय समारोह के साथ मनाया गया।

➢सोने में सुगंधि—

पाँच वर्षों के बाद जम्बूद्वीप महामहोत्सव का यह आयोजन इसलिए और अधिक महिमामंडित बन गया क्योंकि उसी दिन आयोजन की प्रेरिका चारित्र चन्द्रिका गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की जन्म और वैराग्यजयन्ती भी आ गई थी। वह पवित्र दिवस था आश्विन शुक्ला पूर्णिमा (शरदपूर्णिमा) 8 अक्टूबर 1995 रविवार का। जब चन्द्रमा अपनी सोलह कलाओं से परिपूर्ण होकर अमृतमयी किरणें बिखेरता है, उसी शरदपूर्णिमा की रात्रि के प्रथम प्रहर में जन्म लेने वाली कन्यारत्न ने सन् 1952 में शरदपूर्णिमा के दिन ही गृहबन्धन को त्याग कर रत्नत्रयपथ की ओर कदम बढ़ाए थे, इसीलिए शरदपूर्णिमा की तिथि वैराग्यदिवस से भी प्रसिद्ध हुई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢महामहोत्सव के अवसर पर महाभिषेक—

विश्व की अलौकिक एवं एकमात्र जम्बूद्वीप रचना के मध्य निर्मित उत्तुंग सुमेरु पर्वत पर शरदपूर्णिमा की प्रातः से ही आम जनता के जाने पर प्रतिबंध लगा हुआ था, क्योंकि उस दिन वहाँ की पाण्डुक आदि चारों शिलाओं पर तीर्थंकर भगवन्तों का 1008 कलशों से महाभिषेक होने वाला था। कलशाभिषेक करने वालों को क्रम-क्रम से वहाँ तक पहुँचाने हेतु सुन्दर और मजबूत व्यवस्था बनाई गई।

जम्बूद्वीप के सामने एक बड़े चबूतरे पर अनेक कर्मठ महानुभावों के सहयोग से शास्त्रोक्त विधि से बनाए गए मंडल पर 1008 कलश जल भरवाकर स्थापित किये गए। सुमेरु पर्वत की ही डिजाइन में बने ये रंगबिरंगे कलश दर्शकों के विशेष आकर्षण के केन्द्र रहे। संसार में प्रथम बार इस प्रकार के सुमेरु कलश निर्मित हुए, जो अभिषेक करने वाले महानुभावों को महोत्सव समिति की ओर से भेंट कर दिए गए। सुमेरु पर्वत के पांडुक वन में बनी पाण्डुक, पांडुकंबला, रक्ता और रक्तकंबला इन चार शिलाओं पर भरतक्षेत्र, पश्चिम विदेह, ऐरावत क्षेत्र और पूर्व विदेह में जन्में तीर्थंकरों का अभिषेक होना था, जो कि जन्माभिषेक का प्रतीक था। उन तीर्थंकरों को अपनी-अपनी शिलाओं पर विराजमान करने का सौभाग्य अनेक श्रावकों ने प्राप्त किया।

➢'सुमेरु कलश' से प्रथम अभिषेक—

पूर्व नियोजित व्यवस्थानुसार प्रथम नम्बर के 'सुमेरु कलश' से अभिषेक करने वाले महानुभावों के लिए स्वर्ण के कलश बनाए गए थे।

सुमेरु कलश से सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य जिन महानुभावों ने प्राप्त किया, उन्हें वह स्वर्ण कलश स्मृतिस्वरूप भेंट कर दिया गया।

अन्य कलशों के द्वारा भी क्रम-क्रम से समस्त नरनारियों ने अभिषेक कर असीम पुण्य संचित किया। महिलाओं के लिए स्पेशल बनी केशरिया साड़ियाँ तथा पुरुषों के लिए सफेद धोती-दुपट्टे भी सबको प्रदान किए गए। उन्हें पहनकर पंक्तिबद्ध खड़े हुए इन्द्र-इन्द्राणियों की शोभा से महाभिषेक का वातावरण और भी मनमोहक बन गया था।

गीत-संगीत की मधुर ध्वनियों के बीच न्हवन करने वाले भक्तगण अभिषेक करते रहे और देखने वाली जनता के लिए नीचे पांडाल में क्लोजसर्किट टी.वी. की व्यवस्था थी, उनमें देख-देखकर वे सभी हर्षायमान हो नृत्य-गीत करके आनंद प्राप्त कर रहे थे। पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी, मैं, क्षुल्लक मोतीसागर महाराज, क्षुल्लिका श्रद्धामती जी एवं समस्त ब्रह्मचारिणी बहनों सहित पूरे संघ का सानिध्य भी भक्तों को उत्साह प्रदान कर रहा था तथा विभिन्न विद्वानों के द्वारा जहाँ अभिषेक मंत्रों का उच्चारण चल रहा था, वहीं सामयिक भाषणों से सुमेरु पर्वत, जम्बूद्वीप और महामहोत्सव से संबंधित अनेक तथ्यपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त हो रही थीं।

यह अभिषेक क्रम प्रातः 9 बजे से मध्यान्ह 1 बजे तक चला, जिसमें सुमेरु कलश, रत्नकलश, सुवर्ण कलश करने के पश्चात् कुछ श्रद्धालुओं ने पंचामृत अभिषेक करने का पुण्य लाभ प्राप्त किया।

➢महोत्सव एवं जन्मजयंती की विशाल सभा—

यूँ तो प्रातः 5 बजे से ही 'रत्नत्रय निलय' में अवध प्रान्त से आई जनता ने पुत्र जन्म जैसी खुशियाँ मनाना प्रारंभ कर दिया था, चरण प्रक्षालन, आरती, भजन, बधाई, पुष्पवृष्टि, रत्नवृष्टि आदि से जम्बूद्वीप परिसर अतिशय सुगंधित हो गया था, फिर भी मध्यान्ह 2 बजे से जम्बूद्वीप रचना की उत्तर दिशा में एक विशाल पांडाल में सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। यहाँ मुख्यअतिथि के रूप में पधारे भारत सरकार के केन्द्रीय खाद्य मंत्री-चौधरी श्री अजित सिंह जी।

सभा का शुभारंभ संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों द्वारा 'शारद वंदना' से हुआ पुनः महोत्सव समिति के उपस्थित कार्यकर्ताओं ने मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत किया और उन्हें महोत्सव का प्रतीक '**सुमेरुकलश**' भेंट किया गया।

➢सरस्वती और लक्ष्मी का रूप बन गईं तब पूज्य माताजी—

सभा मंच पर बीचों बीच अपने संघ सहित काष्ठासन पर विराजमान पूज्य वात्सल्यमूर्ति-तीर्थोद्धारिका गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी सचमुच में उस दिन सरस्वती और लक्ष्मी दोनों का प्रतिनिधित्व करती प्रतीत हो रही थीं क्योंकि उनके बाईं ओर सरस्वती पुत्र विद्वानों का समूह अपनी माता के चरणों में विनयांजलि करने को आतुर बैठा था और उनके दाईं ओर राजनेता-समाजनेता, लक्ष्मीपुत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमानगण अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने को लालायित थे। सभी के मुंह से श्रद्धापूरित शब्द निकल रहे थे कि ''इन शारद माता ने अपने ज्ञान की लक्ष्मी से निज को तो अक्षय निधि का भंडार बनाया ही है, इस वीरान हस्तिनापुर तीर्थ को भी साक्षात् समवसरण का स्वरूप प्रदान कर संसार में अमर कर दिया है।''

जिनके वचनों से सरस्वती—जिनवाणी का रस टपकता है, सम्यग्ज्ञान का अमृत बरसता है, न्याय का रूप झलकता है, भक्ति का प्रवाह छलकता है, सिद्धान्त का समन्दर निकलता है, अध्यात्म का तेज दिखता है, वात्सल्य का भाव महकता है, निस्पृहता का सूत्र मिलता है, निश्छलता का मूर्तरूप खिलता है, ऐसी न्यायप्रभाकर, विधानवाचस्पति, साहित्य वारिधि, विद्यावाचस्पति, आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी इस युग की सरस्वती का रूप हैं तभी निर्दोष ज्ञान प्राप्ति की इच्छा से विद्वत्गण इनके सानिध्य को प्राप्त कर अतिहर्षित होते हैं।

जिनकी जिह्वा को दीर्घकालीन भाषासमिति ने वचनसिद्धि प्राप्त करा दी है अतः जिनकी एक प्रेरणा पर तीर्थोद्धार, मंदिर निर्माण, शिक्षा क्षेत्र, साहित्य प्रकाशन, महामस्तकाभिषेक आदि महोत्सवों के लिए श्रेष्ठीगण अपनी अर्थांजलि समर्पित करने को उत्सुक रहते हैं, वे श्रीमानों की श्रद्धापात्र इसीलिए हैं कि तीर्थंकर जन्मभूमियों के उद्धार-विकास की निश्छल और निस्पृह भावना उनके अंदर कूट-कूट कर भरी हुई है। वे अनेक कर्मठ साधुओं तथा श्रावकों को भी प्रेरणा दिया करती हैं कि तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि के प्रतीक कई तीर्थ आज बिल्कुल उपेक्षित हैं, उनके उद्धार-विकास-प्रचार का कार्य यदि एक-एक साधुसंघ और एक-एक गाँव, शहर के श्रेष्ठी अपने ऊपर ले लें, तो निश्चित ही शीघ्र उन तीर्थों का यश संसार में फैल जाएगा और श्रीमानों के धन का सदुपयोग भी हो जावेगा।

श्रुतज्ञान की लक्ष्मी जिन्हें पूर्व भव के संस्कारों से प्राप्त हुई है, उन पूज्य माताजी में लक्ष्मी और सरस्वती पर्यायवाची के समान ही प्रतीत होती हैं।

➢गणिनी आर्यिका ज्ञानमती पुरस्कार डॉ. अनुपम जैन को—

मेरी प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा घोषित तथा श्री अनिल कुमार जैन, कमल मंदिर-दिल्ली द्वारा अपने सुपुत्र चिरंजीव अतिशय जैन के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में स्थापित ''गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती पुरस्कार'' द्वारा प्रथम बार डॉ. अनुपम जैन-इंदौर को सम्मानित किया गया। इस सम्मान में संस्थान ने डॉ. अनुपम जी को एक लाख रुपये की नगद राशि, रजत प्रशस्ति पत्र भेंट किया तथा शॉल, माल्यार्पण एवं श्रीफल समर्पित कर स्वागत किया। यह सम्मान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय खाद्य मंत्री श्री अजित सिंह के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

महोत्सव समिति के अध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने सम्मान के इस प्रसंग में बताया कि जैन समाज के द्वारा प्रथम बार इतनी बड़ी राशि वाले पुरस्कार से किसी जैन विद्वान को सम्मानित किया गया है। इससे पूर्व हमारी कतिपय संस्थाओं ने अन्य विद्वानों को ही ऐसे बड़े सम्मान प्रदान किए हैं किन्तु यहाँ पर चयन समिति ने डॉ. जैन को सम्मानित करने का निर्णय लिया। इस पुरस्कार के संस्थापक श्री अनिल जैन के प्रति भी महोत्सव समिति एवं संस्थान ने आभार प्रगट किया।

➢भगवान ऋषभदेव और अयोध्या तो इनके अन्तस में व्याप्त है—

मैंने अपने विनयांजलि वक्तव्य में कहा कि आकाश से ऊँचे आदर्श, पर्वत से कठोर तप और नदी सरिताओं से लम्बी कीर्तिपताका से युक्त व्यक्तित्व का नाम है—आर्यिका ज्ञानमती। इनके जीवन का एक-एक क्षण स्वर्णाक्षरों में अंकित होने वाला ऐतिहासिक पन्ना है। एक अंग्रेजी लेखक की ये पंक्तियाँ इनके जीवन पर पूर्णरूप से घटित होती हैं—

Count your night by stars, not shadows.
Count your life with smiles, not tears.
And with joy and every birthday.
Count your age by friends, not years.

अर्थात् इन्होंने अपने जीवन को मात्र वर्षों से नहीं, अलौकिक कार्यों से महान बनाने में एक मिशाल कायम की है।

➢मंत्री जी ने चरण प्रक्षालन का सौभाग्य लिया—

पारम्परिक व्यवस्थानुसार पूज्य माताजी के चरण प्रक्षाल-पिच्छिका परिवर्तन आदि की बोलियाँ प्रारंभ हुईं, उस समय माननीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री अजित सिंह जी की उत्कण्ठा को देखकर पूज्य माताजी के चरण प्रक्षालन करने का सुअवसर उन्हें प्रदान किया गया। माननीय मंत्री जी दूध और जल से पूज्य माताजी के पावन चरण धोकर हर्षित हुए एवं उस चरणोदक को मस्तक पर लगाया।

इसी क्रम में पिच्छिका प्रदान करने का सौभाग्य श्री कमल कुमार जैन-मौसम विहार-दिल्ली को प्राप्त हुआ। उन्होंने सपरिवार मंच पर आकर पूज्य माताजी के करकमलों में नवीन पिच्छी प्रदान कर उनकी पुरानी पिच्छी प्राप्त की। जैन साधु के संयम का उपकरण पिच्छी है, यह जिन्हें प्राप्त होती है, उनके घर में सदैव धन-धान्य की वृद्धि होती है।

इसी संदर्भ में एक प्रत्यक्ष घटित अतिशय याद आ रहा है कि 10-12 वर्ष पूर्व एक सज्जन ने स्वप्न देखा कि ज्ञानमती माताजी की पिच्छी में से कीमती रत्न झड़ रहे हैं फिर उन्होंने स्वप्न के अनुसार एक दिन हस्तिनापुर आकर माताजी से उनके हाथ की पुरानी पिच्छी लेकर नई प्रदान कर गए पुन: उनके साथ वास्तव में चमत्कार हो गया कि पिच्छी घर में पहुँचते ही एक नये पेट्रोलपम्प को खरीदा और कुछ ही दिनों में वे कई पेट्रोल पम्प के मालिक बन गए। इस घटना के पश्चात् वे आज भी कहते हैं कि माताजी की पिच्छी से तो सचमुच रतन ही बरसते हैं। दरअसल जिस पिच्छिका से साधुजन सदा समस्त जीवों की रक्षा करते हैं, उसे हाथ में लेकर सामायिक-प्रतिक्रमण तथा न जाने कितने मंत्रों का जाप्य आदि करते हैं, उसमें ऐसे चमत्कार प्रगट हो जाना कोई अतिशयोक्ति की बात नहीं है।

जन्मजयंती के इस पावन प्रसंग पर शौच का उपकरण 'कमण्डलु' प्रदान किया श्री कमलचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली ने। ज्ञान का उपकरण 'शास्त्र' भेंट करने के लिए श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स'-दिल्ली वाले पधारे और कमलाकार आरती में सजे 62 दीपकों से आरती उतारी—श्री मनोज कुमार जैन (मेरठ) सपरिवार ने, तब पूज्य ज्ञानमती माताजी की जयजयकारों से वातावरण गूंज उठा।

➢सम्पूर्ण समारोह की आधारशिला गणिनी आर्यिका श्री का देशवासियों के लिए पावन संदेश—

"ॐ नम: सिद्धेभ्य:" हमारे विद्वान् और भक्तगण शायद यह भूल जाते हैं कि आज मेरा 62वाँ जन्मदिन नहीं, बल्कि 43वाँ संयमदिवस है। 62 वर्ष पूर्व तो शरदपूर्णिमा को मेरे इस नश्वर शरीर का जन्म हुआ था। खैर! संयम धारण करने वाले संयमियों का सम्मान करना हमारे देश की परम्परा रही है और इसके लिए आचार्यों ने कहा भी है—**''देवा वि तस्स पणमंति, जस्स धम्मे सया मणो''** अर्थात् जिसके हृदय में धर्म विद्यमान है, देवता भी उसको नमस्कार करते हैं। अत: आप लोग आज मेरी नहीं, धर्म की जयंती मना रहे हैं।

जैन रामायण में एक बहुत सुन्दर बात आई कि **''जिस देश का आश्रय लेकर साधु तपस्या करते हैं, उस देश के राजा को साधु की तपस्या का छठा भाग पुण्य स्वयं प्राप्त हो जाता है।''** इस आधार से हम लोगों की तपस्या का पुण्य हमारे राजनेता भी ले रहे हैं, इससे पुण्य का खजाना कम न होकर बढ़ता ही रहता है। अभी मंत्री अजित सिंह जी रत्नत्रय की सुन्दर व्याख्या कर रहे थे, सो इसी रत्नत्रय को धारण करके वे अपनी आत्मा को अजित पद की प्राप्ति करावें, यही उनके लिए मेरा मंगल आशीर्वाद है।

➢जाति संगठन पर बल—

आज के इस प्रसंग में मुझे एक बात और कहनी है कि अभी कुछ दिनों से चर्चा सामने आई है कि सरकार ने जैनियों को अल्पसंख्यक की श्रेणी से अलग कर दिया है। यह एक विषय बन गया है कि सरकार में जैनियों की इतनी उपेक्षा क्यों है? इन सबका मूल कारण है हमारी संगठन शक्ति की कमी। हम सबको संगठित होकर कदम उठाना चाहिए क्योंकि जब अखिल भारतीय स्तर की संस्थाएँ इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठा रही हैं, तब जनता की आवाज ही सरकार तक जानी चाहिए और अजित सिंह जैसे नेताओं के माध्यम से अपनी बात सरकार तक पहुँचाएं तथा यदि इसमें भी सफलता न मिले तो आन्दोलन करें, क्योंकि जैनी अहिंसक हैं किन्तु कायर नहीं हैं।

इसके साथ एक उपाय मेरी समझ में और आया है जिसे मैं कई सभाओं में कह चुकी हूँ कि जैनधर्म एक प्राकृतिक धर्म है न कि जाति विशेष है। जैनधर्म पालन करने वालों की 84 जातियाँ पुरानी फूलमाल पच्चीसी में पढ़ी जाती थीं। अग्रवाल, खण्डेलवाल, पल्लीवाल, बघेरवाल, पोरवाड, लमेचू, परवार, गोलालारे आदि सभी जातियों का अपना अस्तित्व है, ये सभी किसी न किसी रूप में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनादि हैं। काल के अनुसार केवल उनके नामों में कुछ परिवर्तन हो जाता है। जैसे आम, गुलाब, गेहूँ, चावल आदि में अनेक जातियाँ होती हैं, वैसे ही 84 जातियाँ जैनियों की मानी गई हैं। इनमें से कई जातियों के सशक्त संगठन बने हुए हैं किन्तु अभी कई जातियाँ अपने संगठन में पीछे हैं सो प्रत्येक जाति को अपने-अपने संयोजक आदि बनाकर जातीय संगठन मजबूत करना चाहिए तथा राष्ट्रीय जनगणना में सभी को जैन अवश्य लिखना चाहिए किन्तु लोग अपने गोत्र कासलीवाल, सेठी, छाबड़ा, पाण्ड्या आदि को ही प्रधान कर देते हैं, इससे उनके नाम में जैनत्व नहीं झलकता है अतः यदि गोत्र प्रमुख करें तो उसके बाद जैन शब्द जरूर लिखें और अपना संगठित स्वरूप सरकार के समक्ष रखकर अल्पसंख्यक की श्रेणी प्राप्त करें।

जम्बूद्वीप महामहोत्सव में यहाँ पर अनेक धार्मिक और शैक्षणिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए हैं। उन सबकी पुण्यवर्गणाएँ सारे विश्व में फैलकर सुख-शांति-समृद्धि और क्षेम को स्थापित करेंगी। इसके साथ ही समारोह को सम्पन्न करने वाले, उसमें भाग लेने वाले, अनुमोदना देने वाले सभी लोग असीम पुण्य के भागी बनें, सबका कल्याण हो, यही मेरा आप सबके लिए मंगल आशीर्वाद है।

इस प्रकार शरद पूर्णिमा की अमृतमयी बेला में देश की जनता ने पूनों के चाँदस्वरूप पूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना की तथा पूज्यश्री का अमृतमयी आशीर्वाद ग्रहण किया पुनः देर रात तक आरती-भजन-नृत्य-संगीत का कार्यक्रम चलता रहा, भक्तगण अपनी भक्ति प्रदर्शित करते रहे और माताजी नभ के चन्द्रमा की साक्षी में अपना ज्ञान परिमार्जित करती रहीं। देखते ही देखते घड़ी में ज्यों ही 9 बजकर 15 मिनट हुए, तुरंत असली जन्म की सूचना देते हुए अवध से आए नर-नारियों ने घंटे, थाल और ढोल-मंजीरे बजाने शुरू कर दिए। महिलाओं ने बधाई गीत गाए, बालिकाओं ने मंगल गान गाए और पुरुषों ने अपने विनयभाव प्रस्तुत किए। इस प्रकार पूर्ण चाँदनी को फैलाकर पूनों के चाँद ने अपनी सुनहरी आयु का नया अध्याय खोल दिया।

इस प्रकार विभिन्न कार्यक्रमों के मध्य वर्षायोग के 4 महीने कब व्यतीत हो गए, पता ही नहीं चला। आखिरकार कार्तिक कृ. अमावस्या को दीपावली पर्व के साथ ही चातुर्मास समापन की घड़ी भी आ गई। कमल मंदिर में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर आयोजित निर्वाणलाडू कार्यक्रम के साथ ही पूज्य माताजी ने शास्त्रोक्त विधि द्वारा चातुर्मास समापन की घोषणा कर दी।

स्व. डॉ. दरबारीलाल कोठिया के उद्गार —

अत्यन्त प्रमोद की बात है कि केवल अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग में ही नहीं, चारित्राचारादि पंन्नाचार में सतत निरत पूज्य ज्ञानमती माताजी ने अष्टसहस्री जैसे दुरूह न्याय ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद के अभाव की पूर्ति का सफल एवं स्तुत्य कार्य किया है। अष्टसहस्री जितना जटिल और दुखगाह दार्शनिक ग्रंथ है, इसे तज्ज्ञ विद्वान् ही जानते हैं। एक ही स्थल पर बौद्ध दर्शन की चर्चा करते-करते अन्य दर्शनों की भी चर्चा आ जाती है, जिसे समझना साधारण बुद्धि का कार्य नहीं है। उसे समझने-समझाने के लिए बुद्धि का बहु-आयाम करना पड़ता है। जिसका सभी भारतीय दर्शनों में गहरा प्रवेश हो वही अष्टसहस्री का मर्मोद्घाटन कर सकता है। माताजी ने इस दुखगाह ग्रंथ का अति सरल हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करके जिस साहस एवं बुद्धि वैभव का परिचय दिया है वह निःसंदेह स्तुत्य है।''

5 जुलाई 1974, वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मांगीतुगी सिद्धक्षेत्र की पर्वतीय यात्रा

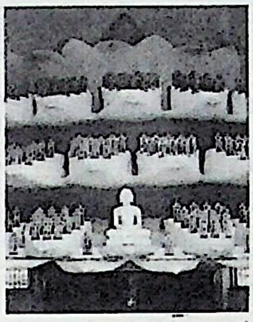

चूँकि कई वर्षों से मांगीतुंगी तीर्थ पर विराजमान पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी के निवेदन भरे पत्र आ रहे थे कि पूज्य माताजी! अब आचार्य श्रेयांससागर महाराज नहीं हैं अत: आप जैसी दिव्य शक्ति के द्वारा ही यहाँ की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हो सकती है........आदि तथा मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र ट्रस्ट मंडल का भी अतीव आग्रह था कि पूज्य माताजी एक बार मांगीतुंगी पधारकर यहाँ की अनेक वर्षों से अवरुद्ध पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न करवा दीजिए अत: पूज्य माताजी ने आखिरकार उनके निवेदन को स्वीकार कर ही लिया।

25 नवम्बर 1995 को पूज्य माताजी ने मानसिक चिन्तन करके अनायास ही यह निर्णय ले लिया कि मुझे अपने शरीर-स्वास्थ्य को भी न देखकर भगवान राम की निर्वाणभूमि एवं बीसवीं सदी के प्रथम पट्टाधीश श्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के पट्टाचार्य स्व. 108 श्री श्रेयांससागर जी महाराज की कर्मभूमि मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के लिए विहार अवश्य करना है।

पर्वत से नदियों के निकलने की अनादि परम्परा है किन्तु नदी कभी पर्वत को जन्म देती हो ऐसा सुनने, देखने अथवा पढ़ने में नहीं आया। इसी अदृष्टपूर्व इतिहास का परिचय कराती है गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की हस्तिनापुर से मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र तक की यह पर्वतीय यात्रा।

निर्णय के पश्चात् मात्र 2 दिन का अन्तराल देकर 27 नवम्बर 1995, मगशिर शु. षष्ठी को हस्तिनापुर जम्बूद्वीप में विराजमान अतिशयकारी सिद्ध प्रतिमाओं को नमन करके पूज्य माताजी ने संघ सहित मंगल विहार कर दिया। गंगा के तट से यह ज्ञान की गंगा जब बहती हुई पर्वत की वन्दना हेतु चल पड़ी, तो मार्ग में अनेक पर्वतीय कार्य होने लगे।

➢चुनाव की विजयश्री से प्रारंभ हुआ विहार का प्रथम दौर—

आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित ईर्यापथ शुद्धि का एक श्लोक है—

श्रीमुखालोकनादेव,श्रीमुखालोकनं भवेत्।
आलोकन विहीनस्य, तत्सुखावाप्तय: कुत:।।

अर्थात् अन्तरंग और बहिरंग लक्ष्मी से युक्त श्री जिनेन्द्र भगवान के मुख का अवलोकन करने वाले मनुष्य को लक्ष्मी— धन की प्राप्ति होती है। इससे विपरीत भगवान का दर्शन नहीं करने वाले को उस लक्ष्मी सुख की प्राप्ति कैसे हो सकती है? यह जिनेन्द्र दर्शन की महत्ता को प्रगट करने वाला श्लोक है जिसका सारांश है कि व्यवहारिक और आत्मिक दोनों प्रकार की लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिए आर्हन्त्य लक्ष्मी को प्राप्त भगवान जिनेन्द्र की भक्ति करना आवश्यक है।

पूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि 105 श्री ज्ञानमती माताजी ने 27 नवम्बर 1995 को मध्यान्ह 3 बजे तीर्थ क्षेत्र परिसर से अपनी शिष्यमंडली के साथ जय जयकार के वातावरण में मांगीतुंगी का लक्ष्य लेकर मंगल विहार किया। आगे हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन (जहाँ 15 हजार की जनसंख्या है) से कुछ पूर्व ही पोस्ट आफिस के मोड़ के पास मनोज कुमार जैन की मम्मी श्रीमती आदर्श जैन (ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन, हस्तिनापुर निवासी, मेरठ प्रवासी) संघ को अपने गृह चैत्यालय का दर्शन करने को निवेदन करने हेतु परिवार के साथ खड़ी थीं, उनके हाथों में ढेर सारे फूल थे।

वे प्रथम बार हस्तिनापुर टाउन एरिया के चुनाव में मेम्बरशिप के लिए भारतीय जनता पार्टी की ओर से खड़ी हुई थीं। पूज्य माताजी का आशीर्वाद पहले ही ग्रहण कर चुकी थीं, उस दिन हार-जीत का निर्णय मिलने वाला था अत: उनके संबंधीजन मवाना गए हुए थे।

संयोग की बात, पूज्य माताजी एवं हम लोग ज्यों ही उनके समीप तक पहुँचने वाले थे और पुष्पों से भरी उनकी अंजुली गुरुचरणों में न्यौछावर होने ही वाली थी, उसी समय किसी ने आकर उन्हें संदेश दिया कि ''आप चुनाव में विजयी हो गई हैं अत:

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बधाई स्वीकार करें।'' श्रीमती आदर्श जैन ने सर्वप्रथम गुरुचरणों में नमन किया और पुष्पांजलि बिखेरती हुई कहने लगीं कि **''माताजी का वरदहस्त ही मेरे लिए सबसे बड़ी सफलता का संबल है, मैं इससे ज्यादा और कुछ नहीं मानती।''**

उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान करता हुआ गणिनी माताजी का संघ आगे बढ़ा, हमारा उस दिन का प्रथम रात्रिविश्राम **''मवाना''** नगर में होना था, वहाँ नगर प्रवेश करते ही पूर्व में आशीर्वादप्राप्त विजयी महिलाएँ पूज्य मातुश्री के दर्शन करने आ गईं, माताजी ने उन्हें पुनः अहिंसा एवं सदाचारपूर्वक समाज संचालन का शुभाशीष प्रदान किया।

उसके पश्चात् हम लोग 2 दिन बाद **''मेरठ''** शहर में पहुँचे, वहाँ भी माताजी से पूर्व परिचित विजयी नगरप्रमुख आशीर्वाद लेने आए और शाकाहारी होने तथा न्यायपूर्वक जनता का कार्य करने हेतु संकल्प लिया। इसी प्रकार मोदीनगर, गाजियाबाद आदि नगरों में भी विजयश्री प्राप्त करने वालों के समाचार मिले, तब माताजी ने सभी को प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से आशीर्वाद प्रदान किया। जनता ने उनकी इस उदारता पर कोटि-कोटि वन्दन करके अपने को धन्य माना और इस विजय कथानक के साथ संघ का प्रभावनापूर्ण मंगल विहार द्रुतगति से प्रारंभ हुआ, तो शुभ शकुन के आधार पर सर्वत्र धर्म की, संघ की विजय ही विजय होती चली गई।

➢उत्तर वालों की दृष्टि में यह विदेश यात्रा थी—

जब पश्चिमी उत्तरप्रदेश वालों को ज्ञात हुआ कि ज्ञानमती माताजी उत्तर भारत को छोड़कर बहुत दूर जा रही हैं, तब अनेक भक्त चिन्तित हो उठे और माताजी को समझाने का भी प्रयास किया कि **''आपका स्वास्थ्य अब बहुत ज्यादा विहार के लायक नहीं है, आप इधर इलाके में ही विहार करके हम लोगों को ज्ञान लाभ प्रदान करें, आपके बिना जम्बूद्वीप की रौनक समाप्त हो जाती है......इत्यादि।''**

जब विहार की चर्चा दैनिक अखबारों में आ गई, तब मेरठ निवासी श्री अमरचन्द जैन होमब्रेड की धर्मपत्नी श्रीमती कमलेश जैन ने आकर मुझसे कहा कि आज सवेरे मंदिर में चर्चा हो रही थी कि **''ज्ञानमती माताजी विदेश जा रही हैं।''** वे पुनः मुझसे पूछने लगीं कि **''क्या दिगम्बर जैन साधु-साध्वी विदेश जा सकते हैं?''** मैं हँसने लगी और फिर विचार आया कि **''देखो! हमारी जनता कितनी भोली, अन्जान और ममत्व परिणामों से परिपूर्ण है कि वह माताजी को अपने से दूर जाती देखकर मोह को संवृत नहीं कर पाती है, तभी उनके द्वारा किये जाने वाले प्रदेश परिवर्तन को देश का ही परिवर्तन मानकर इसे विदेश यात्रा समझने लगी है।''**

पुनः मैंने कमलेश जी को बताया कि दिगम्बर जैन मुनि एवं आर्यिकाओं को चूँकि जीवनभर पदविहार का नियम होता है, हवाई जहाज, रेल, मोटर आदि समस्त वाहन पर बैठने के लिए पूर्ण त्यागी होते हैं अतः वे विदेश जा ही नहीं सकते हैं। आज तक कोई भी मुनि-आर्यिकाओं के विदेश यात्रा के कोई उदाहरण भी नहीं हैं अतः उन लोगों के लिए ऐसा सोचना भी दोषास्पद है। हाँ, इन साधुओं से अतिरिक्त भट्टारकगण, ब्रह्मचारिणी बहनें एवं कुछ जैन विद्वान् विदेशों में जाकर अवश्य यथायोग्य धर्मप्रभावना करते हैं।

वैसे इस यात्रा के विषय में मैंने यह जरूर अनुभव किया कि हर स्त्री-पुरुष पूज्य ज्ञानमती माताजी को अत्यन्त स्नेहपूर्ण नजरों से देखकर नमन करते और यह कहने को बाध्य हो जाते कि **''माताजी ने बहुत लम्बी यात्रा सोच ली है, भगवान इनका स्वास्थ्य ठीक रखे और पूरा संघ कुशलतापूर्वक शीघ्र मांगीतुंगी से वापस उत्तर भारत में आवे, हमें इनके पुनः दर्शन जल्दी ही प्राप्त हों, यही भावना है।''**

दिल्ली में तो कुछ पुरानी परिचित महिलाएँ सिसक-सिसक कर रोती हुई आपस में कह रही थीं कि हमारी माताजी हमसे दूर जा रही हैं। पता नहीं, मेरे जीवन में इनका पुनः दर्शन होगा या नहीं। मैंने उन्हें बहुत धैर्य बंधाया कि आप लोग अपना दिल इतना छोटा न करें किन्तु वे तो अपनी वृद्धावस्था, रुग्णता तथा गुरुवियोग के कारण दुःख का अनुभव कर रही थीं। पूज्य माताजी ने उन सबको बड़े प्रेम से पुण्यतीर्थ की वंदना का महत्त्व बताकर शांत किया तथा सबके लिए खूब-खूब आशीर्वाद देते हुए महाराष्ट्र से शीघ्र वापस आने का आश्वासन दिया।

➢मांगीतुंगी का नाम भी लोग ठीक से नहीं जानते थे—

उत्तरप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान आदि प्रान्तों में जब हम लोगों का भ्रमण हुआ, तब देखा कि कोई कहता—माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मांगातुंगा जा रही हैं, कोई मानतुंगगिरि कहते, कोई मांगेतुंगे इत्यादि, उन्हें मांगीतुंगी का ठीक से नाम तक नहीं मालूम था। यह स्थिति देखकर जब हम लोग उस सिद्धक्षेत्र के महत्व पर प्रकाश डालते, तब जनता कहने लगती थी कि अब आपके निमित्त से हमारे दर्शन भी हो जायेंगे। इस प्रकार हजारों नर-नारियों को जीवन में पहली बार मांगीतुंगी के दर्शनों का सौभाग्य पूज्य ज्ञानमती माताजी के वहाँ पहुँचने पर प्राप्त हुआ।

शायद इसी स्थिति से अवगत पूज्य आचार्य श्री विद्यानंद महाराज ने दिल्ली में कहा था कि **"अब मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की प्रसिद्धि विश्वव्यापी होने वाली है क्योंकि ज्ञानमती माताजी जैसी कर्मठ साध्वी के कदम उस ओर बढ़ गए हैं।** उन्होंने इस यात्रा के प्रति मंगल कामना करते हुए माताजी के "कुन्दकुन्द भारती" से विहार के समय कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी को एक मंगल कलश प्रदान किया था।

➢समयानुसार शब्दों की खोज—

दिल्ली प्रवास की अंतिम श्रृंखला में दिनाँक 17 दिसम्बर 1995 को आचार्य श्री विद्यानंद महाराज एवं गणिनी आर्यिका संघ का मिलन कुन्दकुन्द भारती में हुआ, जो परम वात्सल्य अंग के प्रतीक रूप में जैन समाज के लिए एक आदर्श बना। उस समय दोनों ज्ञानियों में तमाम तत्त्वचर्चा एवं विचारों के आदान-प्रदान हुए। महाराज श्री ने अमरकोष की एक पंक्ति लिखकर माताजी के कमरे में भिजवाई, जो उनकी गुणग्राहकता एवं सामयिक शब्दान्वेषण की ही विशेषता थी। पंक्ति निम्न प्रकार से है—

"स्यादाचार्याऽपि च स्वतः" (अमरकोश, 2/6/14)

इसका अर्थ है कि जो स्वतः ही शब्दों की व्याख्या करने वाली नारी है वह **"आचार्या"** संज्ञक है।

इसी बात को उन्होंने प्रवचन में भी कहकर ज्ञानमती माताजी को **'आचार्या'** संज्ञा से सम्बोधित किया था। दिगम्बर जैन परम्परा में आर्यिकाओं के लिए यद्यपि इस पदवी की परम्परा नहीं है, उन्हें **'गणिनी'** के रूप में ही सर्वोच्च पदवी से अलंकृत किया है, फिर भी ज्ञानी की कीमत ज्ञानी पुरुष ही कर सकते हैं, यह बात एक सूक्तिश्लोक भी बताता है—

विद्वान् एव विजानाति, विद्वज्जन परिश्रमम्।
न हि वन्ध्या विजानाति, पुत्रप्रसववेदनाम्।।

अर्थात् विद्वान ही विद्वानों का मूल्यांकन करते हैं।

➢संघपति की नम्रता और त्याग का अद्वितीय उदाहरण—

11 दिसम्बर 1995 को दरियागंज-नई दिल्ली के बाल आश्रम प्रांगण में दिल्ली पंचायत के द्वारा पूज्य माताजी की स्वागत सभा आयोजित की गई थी। उस सभा में जैन समाज के शीर्ष नेता साहू अशोक कुमार जैन (अब स्वर्गीय) ने संघ को मांगीतुंगी तक पहुँचाने की जिम्मेदारी लेने वाले लाला श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेंटर-साउथ एक्स., नई दिल्ली का पगड़ी बांधकर स्वागत किया और वहीं से उन्हें **"संघपति"** की उपाधि दी गई।

➢स्वागत के पश्चात् महावीर प्रसाद ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा—

"मैं तो संघ की सेवा करने वाला सामान्य श्रावक हूँ मुझे संघपति मत कहिए। आज के मौके पर मैं पूज्य माताजी से एक मांग करना चाहता हूँ। जैसे भगवान राम को नदी पार करवाने के पश्चात् मल्लाह ने उनसे कहा था कि "भगवन्! जिस प्रकार मैंने आपको नदी पार कराई है, उसी प्रकार आप भी मुझे इस संसाररूपी नदी से पार लगा देना, इसके अतिरिक्त मैं आपसे और कोई कीमत नहीं चाहता हूँ।" इसी प्रकार पूज्य माताजी! **मैं तो आपको मांगीतुंगी की यात्रा कराऊँगा ही, लेकिन मेरी भी आपसे यह प्रार्थना है कि आप मुझे सिद्धशिला की यात्रा अवश्य करा देना।"**

इस यात्रा के प्रारंभ होते ही महावीर प्रसाद जी ने मांगीतुंगी पहुँचने एवं पंचकल्याणक होने तक शक्कर का त्याग कर दिया, जो अत्यन्त आग्रह के पश्चात् उन्होंने 23 मई 1996 को पूर्ण किया। यह उनकी नम्रता एवं त्याग का ही उदाहरण है। दिल्ली जैसी आधुनिक नगरी में रहते हुए भी यह दम्पत्ति वास्तव में आदर्श गुरुभक्त हैं। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमलता जी व्रत-उपवास, आहारदान, वैयावृत्ति आदि करने में रानी चेलना का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इन्हीं के संस्कारों से संस्कारित पूरा परिवार अत्यन्त धर्मनिष्ठ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢ददाति यत्तु यस्यास्ति, सुप्रसिद्धमिदं वचः—

आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी की उक्त नीति के अनुसार यह सत्य है कि "**जिसके पास जो वस्तु होती है, वह वही दे सकता है**" अर्थात् सन्त-साधु ज्ञान तथा चारित्र की प्रतिमूर्ति होते हैं अतः वे सबको अपने उपदेशों के माध्यम से ज्ञान प्रदान करते हैं, इसी प्रकार श्रेष्ठी जनों के पास धन होता है अतः वे जिनमंदिर, मूर्ति आदि का निर्माण, गुरुओं के विहार में आर्थिक योगदान आदि देकर अपने द्रव्य का सदुपयोग करते हैं।

यूँ तो संघपति ने संघ संचालन का पूर्णभार वहन करने का संकल्प लिया ही था, फिर भी खारीबावली दिल्ली के द्वितीय श्रेष्ठी लाला प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन ने भी अपनी उदारता का परिचय देते हुए संघस्थ कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी के एक इशारे पर मंगल विहार के मार्ग का सर्वेक्षण करने हेतु नई "टाटा सूमो" गाड़ी उन्हें प्रदान की। इसके अतिरिक्त भी वे सदा संघ की सेवा हेतु हाथ जोड़कर निवेदन करते कि मेरे योग्य सेवा मुझे अवश्य बताइये। यह सब उनके पुण्य का ही प्रभाव समझना चाहिए, जो इस प्रकार की भावना व्यक्त करके अगले जन्म के लिए अपना रिजर्व फण्ड तैयार कर लेते हैं।

दिल्ली से विहार करके पूज्य माताजी का संघ सहित मांगीतुंगी में मंगल पदार्पण पूरे पाँच माह के पश्चात् 27 अप्रैल 1996 को हुआ। इस मध्य उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र इन छह प्रान्तों में विभिन्न नवनिर्माण योजनाएँ एवं धर्म-प्रभावना के अनेक विशाल कार्य सम्पन्न हुए, जो समय-समय पर सम्यग्ज्ञान तथा अन्य अखबारों के माध्यम से आपको ज्ञात हुए हैं। यहाँ संक्षेप में मैं उन स्थानों के नाम प्रस्तुत करके पाठकों को उनसे परिचित कराना चाहती हूँ, जहाँ (अयोध्या एवं मांगीतुंगी के मध्य) पूज्य माताजी ने नवनिर्माण कराने की प्रेरणा प्रदान की—

सन् 1993-94 में—

कहाँ	क्या
1. अहिच्छत्र तीर्थ (उ.प्र.)	तीस चौबीसी मंदिर (11 शिखर का)
2. अयोध्या (उ.प्र.)	समवसरण एवं तीन चौबीसी मंदिर
3. त्रिलोकपुर (उ.प्र.)	पारिजात चैत्यवृक्ष
4. टिकैतनगर (उ.प्र.)	ह्रीँ एवं बीस तीर्थंकर प्रतिमा
5. सिधौली (उ.प्र.)	मंदिर विस्तारीकरण का शिलान्यास
6. तहसील फतेहपुर (उ.प्र.)	विद्यालय शिलान्यास
7. सीतापुर (उ.प्र.)	स्वाध्याय भवन
8. दरियाबाद (उ.प्र.)	श्री ऋषभदेव उद्यान

सन् 1995-96 में—

9. मेरठ (कमलानगर)	बीस तीर्थंकर एवं चौबीस तीर्थंकर कमल रचना
10. प्रीतविहार-दिल्ली (अनिल जैन की कोठी के प्रांगण में)	भगवान ऋषभदेव कमल मंदिर
11. चमत्कार जी सवाई माधोपुर (राज.)	कैलाशपर्वत
12. श्री शान्तिवीर नगर, महावीर जी (राज.)	मन्दार कल्पवृक्ष
13. केशवरायपाटन (राज.)	पंचपहाड़ी एवं दिव्यध्वनि स्तंभ
14. कोटा (राज.)	तीन लोक रचना
15. पिड़ावा (राज.)	श्री पार्श्वनाथ समवसरण रचना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

16. जयसिंहपुर (उज्जैन) म.प्र.	महावीर की तपोभूमि एवं आ. शांतिसागर मांगलिक भवन
17. लक्ष्मीनगर, उज्जैन	आ. शांतिसागर मांगलिक भवन
18. गोम्मटगिरी, इंदौर (म.प्र.)	ह्रीँ प्रतिमा युक्त ध्यान केन्द्र
19. सुदामानगर, इंदौर	तीन चौबीसी जिन प्रतिमा, आचार्य श्री शांतिसागर जी एवं वीरसागर जी महाराज के चरण
20. सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र	तेरहद्वीप रचना
21. सनावद	णमोकार धाम
22. पावागिरि-ऊन सिद्धक्षेत्र	सुवर्णभद्र आदि चार मुनियों के चरण तथा आ. शांतिसागर-वीरसागर जी के चरण
23. सेंधवा	गृहचैत्यालय
24. शांतिनगर-धूलिया (महा.)	दि. जैन छात्रावास का शिलान्यास
25. मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र	सहस्रकूट कमल मंदिर, नवग्रह चरण एवं सीता माता के चरण (पर्वत पर)
26. चाँदवड़ (महा.)	नवग्रह के 9 चरण (नवग्रह शांति मंदिर हेतु)
सन् 1996-97 में—	
27. पावागढ़ (गुजरात)	ध्यान मंदिर में ह्रीँ की प्रतिमा, उद्यान में सीता-लवकुश का इतिहास
28. ईडर (गुजरात)	पहाड़ी पर ह्रीँ की प्रतिमा, पहाड़ी को ऋषभदेवगिरि नामकरण
29. तारंगा जी सिद्धक्षेत्र (गुज.)	भगवान ऋषभदेव की ग्रेनाइट प्रतिमा, आ. शांतिसागर जी की प्रतिमा (गुफा में)
30. डेरोल (गुज.)	बीस तीर्थंकर के चरण, आ. शांतिसागर, वीरसागर महाराज के चरण
31. खेरवाड़ा (राज.)	पहाड़ी पर कैलाशपर्वत का शिलान्यास
32. ऋषभदेव केशरिया जी	पहाड़ी पर अयोध्या नगरी की रचना का शिलान्यास
33. सलूम्बर (राज.)	प्रयाग रचना
34. झाड़ोल (राज.)	ह्रीँ प्रतिमा स्थापना की प्रेरणा
35. देवपुरा (राज.)	नवग्रहशांति मंदिर
36. उदयपुर (राज.)	महावीर स्वामी का समवसरण (यंत्र स्थापन), ऋषभदेव प्रतिमा स्थापना
37. अणिन्दा पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र (राज.)	ॐ और ह्रीँ की प्रतिमा स्थापना
38. चित्तौड़ (राज.)	ह्रीँ की प्रतिमा
39. जूनिया (टोंक-राज.)	ह्रीँ की प्रतिमा
40. भीलवाड़ा (आर.के. कालोनी)	चैत्यवृक्ष
41. केकड़ी (अजमेर-राज.)	सम्मेदशिखर रचना
42. रेवाड़ी (हरियाणा)	कैलाशपर्वत की वेदी (मंदिर में)

इनमें से अनेक स्थलों पर संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन-बंगाली स्वीट सेंटर एवं लाला प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन-खारीबावली दिल्ली ने लाखों रुपये की दानराशि घोषित करके कीर्तिमान स्थापित किया। इसी प्रकार से पूज्य माताजी के अन्य कई भक्तों ने समय-समय पर पहुँचकर कई योजनाओं में सहयोग प्रदान कर पुण्यलाभ प्राप्त किया।

यह तो मैंने नवनिर्माण की योजनाओं का संक्षिप्त उल्लेख किया है इसके अतिरिक्त कई नगरों में गृहचैत्यालय, अतिथिभवन, औषधालय आदि के निर्माण की भी प्रेरणा प्रदान की है, जिनमें से कई निर्माण तो पूर्ण हो चुके हैं तथा अनेक स्थानों पर यथायोग्य निर्माणकार्य द्रुतगति से चल रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा—

मांगीतुंगी पर्वत पर बैठकर एक दिन ध्यान करते हुए पूज्य माताजी को आभास हुआ कि यहाँ की किसी चट्टान में पूर्वमुखी भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का अखण्ड पाषाण छिपा हुआ है, जिसका निर्माण होना चाहिए। पुनः वास्तुशास्त्री से जानकारी करने पर ज्ञात हुआ कि मांगी पर्वत के नीचे (सुधबुध-गुफा के ऊपर) वास्तव में 500 फुट की एक अखंड चट्टान कसौटी के अमूल्य पाषाण की है। यह सब जानकर सारी जनता का रोम-रोम पुलकित हो उठा एवं क्षेत्र के ट्रस्टी तथा श्री जयचंद जैन कासलीवाल (एम.एल.ए.) तथा डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल (अध्यक्ष- महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र कमेटी) ने पूज्य माताजी से उस प्रतिमा को साकार करवाने हेतु बारम्बार निवेदन किया। 27 अक्टूबर को इसकी घोषणा होते ही दिल्ली, महाराष्ट्र के अनेक दानियों ने लाखों रुपये की न्योछावर राशि लिखवा दी। उस प्रतिमा निर्माण का दुरूह कार्यभार मुख्यरूप से कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र जी, डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल जी एवं आमदार कासलीवाल जी को सौंपा गया, प्रगति कार्य निरन्तर चल रहा है। यह विशाल प्रतिमा विश्व की एक अनुपम कृति होगी, जो युगों-युगों तक दिगम्बरत्व का अलख जगाती रहेगी। इस कठिन निर्माणकार्य की निर्विघ्न सफलता हेतु पूज्य माताजी ने सभी को एक मंत्र जपने का आदेश दिया जो निम्न प्रकार है—

''ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः''

आप सभी पाठकजन भी इस मंत्र की माला अवश्य फेरें ताकि पुण्यार्जन के साथ-साथ जिनप्रतिमा के निर्माण में भी आपका मानसिक सहयोग प्राप्त हो सके।

➢संक्रान्ति की प्रादेशिक प्रथा बड़ी विचित्र लगी—

14 जनवरी 1996 को हम लोग राजस्थान के बाँदीकुई नगर में थे, वहाँ चौके में पूज्य माताजी को अष्टमी के दिन बिल्कुल नीरस आहार करते देखकर लोगों ने कहा कि **''आज के दिन तो हमारे प्रान्त में गरीब-अमीर सभी के घरों में ''दाल-बाटी-चूरमा'' अवश्य खाया जाता है।** अतः माताजी को भी आज नीरस भोजन नहीं करना चाहिए। मैंने कहा कि यह तो प्रान्तीय परम्पराएँ हैं, उत्तरप्रदेश के अवध इलाके में आज के दिन लोग उड़द की खिचड़ी बनाकर खाते हैं, इसी प्रकार अलग-अलग प्रदेश में अलग-अलग परम्पराएँ होंगी।

पुनः वहाँ के कई भाई-बहनों ने बताया कि **"आज संक्रान्ति के दिन हमारे प्रान्त में बच्चे-बूढ़े महिलाएँ सभी गोलियाँ जरूर खेलते हैं और जो लोग नहीं खेलते हैं, उनके शरीर में फोड़े-फुंसी-गुमड़े आदि निकल आते हैं। इसी प्रकार पतंग भी आज खूब उड़ाई जाती है, कितने बच्चे पतंग उड़ाते-काटते छतों से गिरकर घायल भी होते हैं किन्तु पतंग उड़ाना छोड़ते नहीं हैं।"**

ये विचित्र परम्परापोषक बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि लोग कैसी-कैसी धारणाएँ बना लेते हैं और उन्हें प्राचीन प्रथा के आधार पर चलाते रहते हैं।

संक्रान्ति के दिन पतंग उड़ाने की परम्परा गुजरात में भी देखने को मिली।

➢देवों की याद दिला दी एक भक्त आजाद कुमार जैन की सेवा ने—

पिड़ावा से आगे सुसनेर तक का रास्ता भी बहुत अधिक पथरीला एवं कंकरीला था। वहाँ से विहार करते हुए रास्ते में शाजापुर-मध्यप्रदेश के इंजीनियर आजाद कुमार जैन (सनावद निवासी) आ गये और पद- विहार की कठिन परिस्थिति देखकर रात्रि में वापस चले गये।

पुनः 26 फरवरी को प्रातः जब हम बोलियाबारी से श्यामपुर जा रहे थे तो रास्ते में देखा कि सैकड़ों मजदूर सड़क से कंकड़-पत्थर दूर करके झाड़ू लगा रहे थे। हम सोचने लगे कि शायद सड़क बनाने हेतु सरकारी आदेशानुसार यह कार्य हो रहा है लेकिन उन लोगों ने बताया कि **''आप सभी साधुओं के पदविहार का कष्ट देखकर इंजीनियर साहब आजाद कुमार जैन के आदेश पर यह सफाई चल रही है, सुसनेर तक यह सड़क आपको बिल्कुल स्वच्छ मिलेगी।''**

यह सेवा देखकर पूज्य माताजी कहने लगीं कि पहले जब भगवान् का समवसरण विहार करता था, तो वायुकुमार देव हवा से पृथ्वी स्वच्छ करते थे, मेघकुमार देव धरती को जल से एकदम शुद्ध करते थे। आज मेरे भक्त आजाद ने देवता के समान ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने अधिकार का सदुपयोग करके सड़क को निष्कंटक बना दिया, इससे इन्होंने असीम पुण्य का संचय कर गुरुभक्ति का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

➢मांगीतुंगी के कीड़े पलायमान हो गये थे—

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम आदि निन्यानवे करोड़ मुनिराजों की निर्वाणभूमि मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर जब पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का वर्षायोग चल रहा था, अत्यधिक वर्षा होने के बावजूद भी वहाँ कभी बरसाती कीड़े, डाँस, मच्छर आदि नहीं दिखते थे, तब वहाँ रहने वाली आर्यिका श्री श्रेयाँसमती माताजी, सुगुणमती माताजी, सुदृष्टिमती माताजी आदि कई बार कहा करती थीं कि "माताजी! हर वर्ष तो यहाँ पर बरसात में सर्प, बिच्छू खूब दिखते थे, मच्छरों के कारण तो यहाँ बिजली जलाना ही मुश्किल था किन्तु इस बार न एक मच्छर दिख रहा है और न सर्पादि का कोई उपद्रव है। आपके तप का यह प्रभाव हम लोगों को प्रत्यक्ष देखने को मिल रहा है।"

➢मुनि श्री रयणसागर जी की गुणग्राहकता—

मांगीतुंगी के पंचकल्याणक में पूज्य मुनि श्री रयणसागर महाराज (परमपूज्य स्व. मुनि श्री दयासागर जी महाराज के शिष्य) का भी मंगल पदार्पण हुआ था। हम लोगों ने उनके पहली बार दर्शन किए थे और वे भी पूज्य ज्ञानमती माताजी से प्रथम बार मिलकर अतीव प्रसन्न थे। उन्होंने प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात् भी 1 माह मांगीतुंगी में रुककर अनेक विषयों पर माताजी से चर्चा की, तमाम परम्परा एवं आगम से संबंधित ज्ञान को ग्रहणकर वे सदैव कहा करते थे कि अम्मा! आपने आचार्य शांतिसागर महाराज की परम्परा में जो प्रभावक अभिवृद्धि की है, उसे हम लोग कभी भूल नहीं सकते, आपके ज्ञान के समक्ष हम तो बिल्कुल बालक के समान हैं। पूज्य महाराजश्री ने भगवान् ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव में भी अपना सक्रिय योगदान प्रदान करने का आश्वासन देते हुए कहा कि मैं जहाँ भी रहूँगा, आपके द्वारा भेजे गये सभी कार्यक्रम सामाजिक स्तर पर अवश्य आयोजित कराऊँगा, यह उनकी गुणग्राहकता का ही प्रतीक है।

➢गाँव में सर्कस आया है?

भौतिकवादी इस युग में दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों का मंगल पदविहार धर्म से अनभिज्ञ लोगों के लिए वास्तव में बड़े अचम्भे का कारण बन रहा है। आज से 70-80 वर्ष पूर्व जब बीसवीं शताब्दी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज का संघ दक्षिण भारत से उत्तरप्रांत की ओर आया था, तब संघपति सेठ पूनमचंद घासीलाल जवेरी (बम्बई) ने बैलगाड़ियों में संघ संचालन का सारा सामान रखकर पूरी यात्रा सम्पन्न कराई थी परन्तु आज तो भौतिक संसाधनों ने संघ संचालकों की सारी समस्या ही हल कर दी है।

पूज्य माताजी के संघ के संघपति महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट, दिल्ली वालों ने प्रारंभ से विहार की व्यवस्था हेतु दो गाड़ियाँ (ट्रक एवं मेटाडोर), मोटर साइकिल तथा छोटे-मोटे कार्यों के लिए 2-3 साइकिलों का प्रबंध कर लिया था। संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनें संघ का कुशल संचालन करती हुई 10 जनवरी 1996 को राजस्थान के एक गाँव "ढिगवड़ा" के स्कूल में पहुँचीं। सबसे पहले वहाँ रात्रिविश्राम का सामान (चावल की घास, चटाई, पाटे आदि) जालीनुमा बने हुए ट्रक में लेकर वे लोग गई थीं क्योंकि सर्दी का मौसम था। शाम को 5 बजे हम लोग भी वहाँ पहुँच गये तो कु.बीना, आस्था आदि बहनें कहने लगीं कि यहाँ आते ही स्कूल के बच्चे, अध्यापक तथा गाँव के लोगों की भीड़ लग गई और वे हम लोगों से पूछने लगे कि—

"दीदी! क्या यह सर्कस की गाड़ी आई है? आज यहाँ सर्कस दिखाया जायेगा क्या?" हमने कहा कि नहीं, यहाँ पर जैन साध्वी ज्ञानमती माताजी का संघ आ रहा है, वे लोग यहाँ रात्रि विश्राम करेंगी। गाड़ी से सामान निकालते हुए हमने घास के बोरे उतरवाये जो कि आप लोगों के सोने हेतु हम कमरे में ले जा रहे थे, तो उन लोगों ने पूछा कि—

"क्या आपके साथ घोड़े भी हैं? उन्हें खिलाने के लिए घास वगैरह भी क्या आप साथ में ही रखती हैं?"

इतना सब बताते हुए वे बालिकाएँ जोर-जोर से हँसने लगीं और कहने लगीं—माताजी! जब हम लोग छोटे-छोटे उन गाँवों में, जहाँ जैन श्रावक नहीं होते हैं वहाँ, स्कूल, पंचायत भवन, डाकबंगले आदि स्थानों पर पहुँचते हैं, तो लोग तरह-तरह के प्रश्न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूछकर हम लोगों का मनोरंजन कर देते हैं। ये सब सुनकर पूज्य माताजी कहने लगीं कि—"देखो! हम जैन साधु-साध्वियों की चर्या ही ऐसी है, जिसे अन्य लोगों के लिए समझना बड़ा कठिन है। तुम लोग इतना अवश्य ध्यान रखना कि इन प्रश्नों का उत्तर हमेशा प्रौढ़तापूर्वक देना और कभी उनकी हँसी मत उड़ाना।"

हम लोगों को पदविहार के मध्य जिन गाँवों में जैन श्रावक नहीं होते हैं, वहाँ स्कूल, कॉलेज में ही ठहरना पड़ता है, तब अनेक प्रकार के प्रसंगों का सामना करना पड़ता है पुनः वहाँ प्रवचन-प्रश्नमंच, पुरस्कार आदि आयोजित करके हजारों-हजार बालक-बालिकाओं, अध्यापक-अध्यापिकाओं को धर्मज्ञान देकर अपूर्व प्रसन्नता का अनुभव होता है।

➢भगवान राम के समान तीर्थ का उद्धार—

मांगीतुंगी में 19 मई 1996 को पूज्य गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए एक पौराणिक घटना सुनाई कि आज से नौ लाख वर्ष पूर्व मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम वन में विचरण करते-करते कुंथलगिरि के निकट जब आये, तो वहाँ गाँव के बाहर देखा कि शाम को सारे नर-नारी अपने-अपने सिर पर सामान लिए आगे चले जा रहे हैं। उन्होंने लक्ष्मण से पता लगवाया तो ज्ञात हुआ कि यहाँ पर कोई दैत्य शाम होते ही भयंकर शब्द करता है, जिसके कारण नगर के तमाम लोग भय के कारण मर जाते हैं, गर्भवती स्त्रियों के गर्भपात हो जाते हैं, कितने ही बालक काल के गाल में समाहित हो जाते हैं इसीलिए ये सब नर-नारी शाम को गाँव छोड़कर भाग जाते हैं और प्रातःकाल गाँव में वापस आ जाते हैं, यह सुनकर सीता कहने लगी कि शाम हो रही है, अभी यहाँ वही भयंकर शब्द शुरू हो जायेगा। इसीलिए हम भी गाँव वालों के साथ चलें और प्रातः वापिस आ जायेंगे। लेकिन राम ने कहा—नहीं, हम लोग आज उस राक्षस से आमना-सामना करके नगर वालों के संकट को दूर करेंगे। सीता के जिद्द करने पर भी वे राजी नहीं हुए और जल्दी-जल्दी वे सभी कुंथलगिरि के पर्वत पर चढ़ गए। वहाँ सामने देखते हैं कि दो महान मुनिराज अपने अखण्ड ध्यान में लीन हैं। सायंकाल होते ही एक राक्षस की भयंकर आवाज से पर्वत हिलने लगा। भयभीत हुई सीता को उन्होंने दोनों मुनियों के बीच में बिठा दिया तथा स्वयं धनुष की टंकार से उस दैत्य का सामना करने लगे। थोड़ी ही देर में दैत्य की शक्ति कुंठित हो गई और वह इन्हें नारायण व बलभद्र का अवतार मानकर अपनी विक्रिया समाप्त कर भाग गया। इस प्रकार मुनियों का उपसर्ग दूर होते ही शुक्लध्यान के द्वारा उन्होंने केवलज्ञान की प्राप्ति कर ली। तब वहाँ देवों ने भी आकर गंधकुटी की रचना करके कुलभूषण, देशभूषण नामक केवली भगवंतों की महान पूजा की पुनः रामचन्द्र ने बहुत समय तक उस पर्वत पर रहकर कई जिनालयों का निर्माण कराया।

इस प्रवचन से परिलक्षित होता है कि रामचन्द्र जैसे महापुरुष भी तीर्थों के उद्धार एवं मुनियों की रक्षा हेतु पूर्ण पुरुषार्थ करते थे। यह तो नौ लाख वर्ष पूर्व का प्राचीन कथानक है किन्तु ऐसा लगने लगता है कि साक्षात् राम का रूप धारण करके ही पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर, अयोध्या, मांगीतुंगी एवं अन्य अनेक तीर्थों के उद्धार का बीड़ा उठाया है। उन्हें इन उद्धारों के लिए कितने ही संघर्ष एवं कष्ट झेलने पड़ते हैं, तो भी वे अपने पुरुषार्थ से विचलित नहीं होती हैं तथा निस्पृहवृत्ति से भाई गई उनकी भावना आशातीत सफलताओं के साथ सम्पन्न होती है। यही कारण है कि जिस मांगीतुंगी तीर्थ को लोग जानते भी नहीं थे, वह सारे देश में अब प्रसिद्धि को प्राप्त हो गया।

➢महाराष्ट्र का लघु भ्रमण नया अनुभव दे गया—

नीतिकारों ने कहा है कि—

पद्मिन्यो राजहंसाश्च, निर्ग्रन्थाश्च तपोधनाः।
यत्र देशे प्रसर्पन्ति, सुभिक्षं तत्र जायते।।

अर्थात् पद्मिनी जाति की स्त्रियाँ, राजहंस, निर्ग्रन्थ साधु-साध्वी जहाँ भी विचरण करते हैं, वहाँ सुभिक्ष हो जाता है। यह नीति तो 9 जून 1996 रविवार को तभी सार्थक हो गई थी, जब मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर वर्षायोग स्थापना की स्वीकृति पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रदान कर दी थी। उस प्रवचन सभा के पश्चात् ज्यों ही माताजी पांडाल से उठकर त्यागीभवन में पहुँचीं, त्यों ही मूसलाधार वर्षा के द्वारा मेघदेवता ने उनके प्रति आदरांजलि प्रगट की थी पुनः महाराष्ट्र के अन्य नगरों की जनता भी चातुर्मास से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्व डेढ़ माह के समय में उन्हें अपने शहरों में ले जाने के लिए लालायित हो उठी और मालेगांव, नाँदगाँव, सटाणा, कोपरगाँव आदि स्थानों से पधारे प्रमुख जनों ने श्रीफल चढ़ाकर निवेदन भी किया।

मौसम और स्वास्थ्य यद्यपि दोनों की विशेष अनुकूलता नहीं थी फिर भी भक्तों की भक्ति ने मन को उद्वेलित किया और 2 जुलाई 1996, आषाढ़ शुक्ला दूज को माताजी मालेगांव का प्रमुख लक्ष्य लेकर अपने संघ के साथ विहार कर गईं। विहार के दो दिन पश्चात् मालेगांव वालों को सूचना मिली कि **''ज्ञानमती माताजी का मांगीतुंगी से हमारे शहर के लिए विहार हो चुका है''** पुनः उन लोगों ने मार्ग में आकर कार्यक्रम की रूपरेखा समझी। मंगल विहार का यह अनुभव भी अपने आप में अपूर्व ही था कि साधु को विहार से पूर्व गन्तव्य स्थान के लिए सूचित करना कोई आवश्यक नहीं है, वे तो अतिथी होते हैं अतः कभी भी, कहीं भी बिना सूचना के विहार कर सकते हैं, इससे उन्हें निश्चित ही नये-नये अनुभव प्राप्त होते हैं। कहा भी है—

तिथिपर्वोत्सवा सर्वे, त्यक्ता येन महात्मना।
अतिथिं ते विजानीयात्, शेषमभ्यागतं विदुः।।

अर्थात् समस्त तिथियाँ, पर्व और उत्सवसंबंधी विकल्पों से ये साधु-साध्वी सदा ही दूर रहते हैं, इसीलिए इनका "अतिथि" यह यथार्थ नाम है तथा शेष लोगों को विद्वानों ने **''अभ्यागत''** संज्ञा से सम्बोधित किया है।

➢हम उन्हें हँसे, वे हमें हँस रहे थे—

हम लोग 4 जुलाई को पदविहार करते हुए प्रातः 8 बजे "आसखेड़ा" के विद्यालय में पहुँचे, जहाँ संघ की ब्रह्मचारिणी बहनों ने आहारचर्या की व्यवस्था की हुई थी। स्कूल के अध्यापकों की अभिरुचि देखकर वहाँ मध्यान्हकालीन प्रवचन का आयोजन किया गया। सारे स्कूल के लगभग 1000 बालक-बालिकाएँ प्रवचन सभा में एकत्रित हुए, सभामंच पर ब्र. श्रीचन्द जी एवं ब्र. गौतमचन्द जी के साथ सर्वप्रथम क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज का पदार्पण हुआ और उन्हें एक चादर-लंगोट की वेशभूषा में देखकर सब बच्चों की हँसी का फौव्वारा छूट पड़ा। अध्यापकों ने अनुशासनपूर्ण दृष्टि से उन्हें शान्त किया और ब्र. गौतमजी ने मराठी भाषा में प्रवचन करके जैन गुरुओं की महत्ता तथा विद्यार्थी के गुणों पर भी प्रकाश डाला।

उसके बाद मोतीसागर महाराज ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि—**''आप लोग मुझे देखकर हँस रहे हैं एवं आप लोगों को देखकर मुझे हँसी आ रही है कि आज के इस आधुनिक युग में भी आप बालकगण नेकर-शर्ट की ड्रेस के साथ-साथ सिर पर सफेद टोपी लगाए हुए हैं। जैसे यह आपके स्कूल की ड्रेस है, वैसे ही यह हमारी ड्रेस है। हमारे देश के राष्ट्रपति महात्मागांधी की भी लगभग ऐसी ही वेशभूषा थी जो कि साधुता की प्रतीक थी।**

साधुगण चलते-फिरते विद्यालय होते हैं, इनसे चारित्र निर्माण की अपूर्व प्रेरणा देश और समाज को प्राप्त होती है। पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी जैसी महान् साध्वी का पदार्पण आज आपके स्कूल में हुआ है, जिन्होंने नारी उत्थान के लिए जैन समाज में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। एक कवि ने इनके लिए कहा है—

जो बतलाते नारी जीवन, लगता मधुरस की लाली है।
वह त्याग तपस्या क्या जाने, कोमल फूलों की डाली है।।
जो कहते योगों में नारी, नर के समान कब होती है।
ऐसे लोगों को ज्ञानमती का, जीवन एक चुनौती है।।

इसके पश्चात् मेरा उद्बोधन हुआ पुनः गणिनी माताजी ने स्कूल के बालक-बालिकाओं को, अध्यापकों एवं नगर के नागरिकों को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। यह स्कूल "कर्मवीर भाऊरावपाटील" की स्मृति में रैय्यत समाज द्वारा निर्मित है, यहाँ टोपी लगाना प्रत्येक विद्यार्थी को आवश्यक है।

मैं सोचती हूँ कि जब आज पूरे भारत में दिगम्बर जैन साधुओं के चतुर्विध संघ का विहार हो रहा है, जैन-अजैन सभी को उनके दर्शन भी सुलभतया होते हैं क्योंकि विहार करते समय साधुओं को अधिकतर विद्यालयों में ही ठहरना पड़ता है, फिर भी अभी इस साधुचर्या से अनभिज्ञ लोगों के लिए मुनि और क्षुल्लक, ऐलक की मुद्रा हास्यास्पद ही बनी हुई है। धन्य है यह जैनी चर्या! जिसका धरती पर कभी एकछत्र शासन था किन्तु वह प्राकृतिक सार्वभौम जैनधर्म इस सदी में अन्य धर्मों की अपेक्षा पीछे हो रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢पंचामृत अभिषेक महाराष्ट्र की पहचान है—

बहुत पहले से सुना करती थी कि दक्षिण भारत में तेरहपंथ-बीसपंथ का कोई भेदभाव नहीं रहता है, वहाँ प्रत्येक दिगम्बर जैन मंदिर में स्त्री-पुरुष सभी मिलकर प्राचीन शास्त्रीय परम्परानुसार जिनेन्द्र भगवान् का पंचामृत अभिषेक करते हैं। इस शताब्दी के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्तिसागर महाराज भी इसी परम्परा को मानकर सदैव भगवान का पंचामृत अभिषेक देखा करते थे।

यूँ तो महाराष्ट्र प्रान्त में हम लोग जब से आए थे, तब से प्रत्येक गाँव में श्रद्धालु भक्त पूज्य माताजी को मंदिर में प्रवेश करते ही अभिषेक दिखाने को आतुर रहते थे तथा इधर घर-घर में बनाए हुए अपने गृह चैत्यालय का दर्शन कराने भी संघ को ले जाने का प्रयास करते थे किन्तु मालेगाँव शहर में 8 जुलाई 1996 को जब गणिनी माताजी का संघ सहित मंगल प्रवेश हुआ, तो वहाँ के मंदिर में अभिषेक की जो शास्त्रोक्त प्रक्रियां देखी, वह मेरे लिए अविस्मरणीय हो गई। वहाँ के श्रावक-श्राविकाओं ने पं. आशाधर जी द्वारा रचित संस्कृत अभिषेक पाठ का सुन्दर स्वर में उच्चारण करते हुए लगभग 1 घंटे में अभिषेक पूर्ण किया और संघ को पवित्र गन्धोदक प्रदान किया।

जहाँ दक्षिण भारत में पंथवाद की निष्पक्ष रूप से एकरूपता है, वहीं उत्तर भारत में दोनों पंथों का प्रचलन वर्तमान में देखा जा रहा है तथा कहीं-कहीं तेरहपंथ की खींचातानी भी शुद्धतेरहपंथ के नाम पर शुरू हो गई। इन विवादों में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी सदैव सामञ्जस्य की स्थिति ही पसंद करती हैं, यही कारण है कि उनकी पावन प्रेरणा से सन् 1972 में स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की रजिस्टर्ड कमेटी में सन् 1975 में ही यह रेजूलेशन पास किया गया कि—**''वर्तमान में दिगम्बर जैन आम्नाय में बीसपंथ और तेरहपंथ ये दो पंथ प्रचलित हैं। जंबूद्वीप के सभी जिनमंदिरों में दोनों पंथ के अनुयायी अपनी-अपनी इच्छानुसार अभिषेक पूजा कर सकते हैं, यहाँ पंथवाद का कोई विवाद नहीं रहेगा।''**

उनकी इस दीर्घदर्शिता के कारण उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम चारों दिशाओं से तथा सारे देश की जनता, जो जम्बूद्वीप रचना के दर्शन करने हस्तिनापुर पहुँचती है, उसे उपर्युक्त शिलालेख देखकर परम आह्लाद का अनुभव होता है तथा पूज्य ज्ञानमती माताजी की उदारनीति से उन्हें संतोष मिलता है।

➢गुरु की किञ्चित् अस्वस्थता का समाचार पा दौड़े आए लाला प्रेमचंद जी—

गुरु और शिष्य के निश्छल प्रेम की बातें इतिहासों में कई बार पढ़ी और सुनी थीं कि—

**''गुरु और शिष्य की कौन-सी बात अंजानी है।
सागर को मालूम है कि बूँद में कितना पानी है।।**

किन्तु वर्तमान में जब विशिष्ट भक्तों की गुरुभक्ति सामने देखने को मिलती है, तो सम्राट चन्द्रगुप्त की स्मृति आए बिना नहीं रहती जिन्होंने मुनि बनकर श्रुतकेवली भद्रबाहु की जंगल में बारह वर्षों तक भक्ति करके देवों के भी आसन को कम्पित कर दिया था।

मालेगाँव विहार से पूर्व एक बार पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का स्वास्थ्य शारीरिक आदि परिश्रम के कारण कुछ नरम हो गया था, वह खबर किसी तरह से दिल्ली में संघपति महावीर प्रसाद एवं प्रेमचंद जी को पता लगी, तो उन्हें खूब बेचैनी हो गई और दोनों तुरंत मांगीतुंगी जाने को तैयार हो गये। इसी मध्य इन लोगों को ज्ञात हुआ कि अनिल कुमार जैन कागजी स्वास्थ्य समाचार लेने जा चुके हैं, तब तक रवीन्द्र जी का फोन भी मिल गया कि स्वास्थ्य अब मध्यम है, कुछ कमजोरी विशेष के कारण गड़बड़ हो गया था। अनिल जी ने भी पुनः दिल्ली पहुँचकर सबको माताजी की स्वस्थता की सूचना दे दी थी किन्तु सबसे सुनने के बावजूद भी लाला प्रेमचंद जैन-खारीबावली दिल्ली वालों को चैन न पड़ी। हम लोग ''गायत्री भवन'' में ठहरे हुए थे, जब उन्होंने पूज्य माताजी से सारे कुशल समाचार पूछ लिए, तभी चैन की साँस लेकर स्नान-भोजन आदि किया।

पुनः प्रेमचंद जी तीन-चार दिन संघ के साथ ही रहे और संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों से सारी संघ व्यवस्था संबंधी जानकारी लेकर कहने लगे कि **''पूज्य माताजी हमारे देश की ऐसी निधि हैं, जिनके समक्ष सोना, चाँदी, हीरा, मोती, माणिक्य सारे रत्नों की कीमत भी कुछ नहीं है। इन्हें जरा भी कष्ट होते ही हम लोग बेचैन हो जाते हैं, आप लोग इनकी स्वस्थता का पूरा ध्यान रखें क्योंकि हम लोगों को अभी इन्हें कुशलतापूर्वक इधर से विहार कराकर दिल्ली ले जाना है और बड़े-बड़े धर्मकार्य इनके माध्यम से सफल करना है।**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनकी यह भक्तिपूर्ण वार्ता सुनकर मैंने कहा— प्रेमचंद जी! असाता कर्म के आगे कभी-कभी बाह्य उपचार भी असफल हो जाते हैं। माताजी इन छोटे-छोटे कष्टों से कभी घबराती नहीं हैं, उनका तत्त्वज्ञान, भेदविज्ञान बहुत दृढ़ है अत: आप लोग भी घबराया मत करो। आपकी माताजी को हम लोग कुशलतापूर्वक ही सदा देखते हैं और सकुशल ही ये दिल्ली तक की लम्बी यात्रा भी तय कर लेंगी। खैर! अपनी गुरुभक्ति का परिचय देकर वे श्रावकरत्न तो वापस चले गए किन्तु उनकी भावनाओं की चर्चा हम कई दिन तक करते रहे।

➢समाजों की समयसूचकता—

राजस्थान में "रठोड़ा" नामक एक छोटा सा गाँव है, जहाँ जैन समाज अत्यन्त श्रद्धालु गुरुभक्त है। हमें पहले ही ज्ञात हो गया था कि इस गाँव में 6-7 श्रावक मुनि बन चुके हैं। आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के संघ में मुनि श्री भूपेन्द्र सागर एवं योगेन्द्र सागर महाराज समाधिस्थ हो चुके हैं उनके गृहस्थावस्था के भाई-बन्धुओं ने भी आकर पूज्य माताजी से रठोड़ा चलने का अतीव आग्रह किया। छोटा गांव होने के नाते गलियाँ थोड़ी गंदी भी थीं लेकिन सबकी पवित्र भावना देखते हुए संघ को वहाँ जाना पड़ा।

आगे के अपने निश्चित कार्यक्रम के अनुसार 28 जनवरी 1997 को वहाँ आहार हुआ और मध्यान्हकालीन प्रवचन के पश्चात् शाम 3.30 बजे वहाँ से विहार हो गया। काफी दूर तक गांव के सैकड़ों नर-नारी भेजने आए, रास्ते में चलते हुए हमने कुछ लोगों से पूछा कि **"आप लोगों ने आज पूरे दिन हमारे प्रवास, जुलूस आदि किसी भी आयोजन में अपने गाँव के साधुओं की एक बार भी जयकार नहीं बोली, क्या आप लोगों की उनके प्रति श्रद्धा नहीं है?"**

यह सुनकर रठोड़ा समाज के प्रमुख लोग कहने लगे कि "माताजी! हमारी नीति तो यह है कि जिस दूल्हे की बारात निकलती हो, उसके ही गीत गाने चाहिए। जो साधु हमारे गांव में आते हैं, हम उनकी जयकार करते हैं। हमारे गांव के साधुओं में हमारी पूरी श्रद्धा है तथा आप जैसे लोगों के मुखारविन्द से हम अपने साधुओं की प्रशंसा सुनकर असीम प्रसन्नता का अनुभव कर लेते हैं और हम यह सोचते हैं कि हमारे जय बोलने की अपेक्षा दूसरों से सुनना ज्यादा अच्छा है क्योंकि अपने ही मुँह मियां मिट्ठू बनने में क्या मजेदारी है?"

इसी प्रकार का वातावरण आचार्य शांतिसागर महाराज छाणी वालों की जन्मभूमि छाणी (राजस्थान) में भी देखने को मिला। गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि प्रान्त के अनेक ऐसे गाँव के श्रावकों की समयसूचकता वास्तव में सभी के लिए अनुकरणीय आदर्श के रूप में प्रतीत हुई। इस प्रवास के मध्य एक स्थान ऐसा भी मिला, जहाँ पर ज्ञात हुआ कि जो भी साधु यहाँ आते हैं, उनसे इस गांव के जन्में साधु की जय बोलने की जबर्दस्ती कुछ लोग करते हैं लेकिन यह वास्तविक गुरुभक्ति का नमूना नहीं है क्योंकि यह विषय साधुओं की व्यक्तिगत श्रद्धा का है, समाज को इसमें उन्हें बाध्य नहीं करना चाहिए। हाँ! चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की जय प्रत्येक धर्म सभाओं में अवश्य बोलना चाहिए क्योंकि उनकी ही कृपा से इस बीसवीं शताब्दी में दिगम्बर सन्तों के निर्बाध रूप से दर्शन प्राप्त हो रहे हैं।

मेरी दृष्टि से तो प्रत्येक जिनमंदिरों के अंदर और बाहर पेन्टर से निम्न पंक्तियाँ लिखवा देनी चाहिए, जो बच्चे-बच्चे के मुँह से जुलूस आदि के नारे के रूप में उच्चारण भी कराना चाहिए—

1. गली-गली में गूंजे नाद—ऋषभदेव जय आदिनाथ।।

2. जैनं जयतु शासनम्—वन्दे शान्तिसागरम्।।

➢साधु के मान ही नहीं तो अपमान कैसा?

धर्मप्राण भारतदेश की इस वसुधा पर सन्तों के प्रति आस्था लगभग सभी सम्प्रदायों में आज भी चरमसीमा पर देखी जाती है और दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों के कठोर त्याग के प्रति तो प्रत्येक प्राणी नतमस्तक होकर गौरव का अनुभव करता है, फिर भी कभी-कभी पदविहार करते हुए हम साधुओं को कुछ विपरीत अनुभव भी आते हैं।

दिनाँक 25 जुलाई 1996 की बात है, जब संघ मांगीतुंगी में चातुर्मास स्थापित करने हेतु चाँदवड़ (महाराष्ट्र) से मांगीतुंगी जा रहा था, बीच में तहाराबाद से पूर्व करंजाड नाम का एक छोटा सा गांव था। वहाँ स्कूल में व्यवस्थापकों ने आहार की व्यवस्था की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थी। हम लोग जब वहाँ पहुँचे, तो संघस्थ बहनों ने चौके के बाहर बरामदे में ही हमारे बैठने का इंतजाम किया था, पूछने पर ज्ञात हुआ कि यहाँ के लोग अन्य कमरे नहीं देंगे। आमने-सामने वहाँ दो स्कूल थे, उनमें कमरे भी खुले हुए साफ दिख रहे थे किन्तु स्कूल के लोगों की अनुमति बिना संघ का कोई व्यक्ति उनमें घुसा नहीं और जैसे-तैसे तकलीफ सहन करके शुद्धि, आहार आदि सभी कार्य किये गये।

हम लोग आपस में विचार करने लगे कि देखो। बेचारे अज्ञानी जीवों की कैसी स्थिति है, जो साधुचर्या की महत्ता ही नहीं जानते हैं। खैर! साधुओं को तो हर तरह के प्रसंगों में समता भाव रखकर खुशी-खुशी उन्हें झेलना होता है। हमने कहा कि एक ही दिन में दो तरह के अनुभव आ गये। कल शाम को यहाँ से 9 किमी. पहले बनौली नामक ग्राम में हम एक अजैन व्यक्ति के यहाँ रात्रि विश्राम करके आज सुबह वहाँ से निकलने लगे, तो पास के घर वाले एक सज्जन ने पूज्य माताजी के चरणस्पर्श करते हुए कहा कि "मेरे भाग्य में आपका सत्संग नहीं था इसीलिए आप मेरे यहाँ नहीं ठहरीं, जबकि मैंने कल बड़े उत्साहपूर्वक अपना मकान खाली कर दिया था कि माताजी यहाँ ठहरेंगी और हमें उनसे धर्मलाभ का अवसर प्राप्त होगा।"

इस विषय में हमें कुछ मालूम भी नहीं था, पिछले गाँव सटाणा के श्रावकों ने जहाँ बताया, हम वहीं रुक गए। उन महानुभाव की आँखों में प्रेम के अश्रु आ गये तो माताजी ने उन्हें सांत्वना देते हुए खूब-खूब आशीर्वाद प्रदान किया और विहार करके आगे करंजाड आकर इससे ठीक विपरीत स्थिति देखी, तो हँसी भी आई और उन जीवों पर करुणा भी जागृत हुई।

मध्यान्ह की सामायिक के बाद माताजी ने मुझे एवं मोतीसागर जी को कहा कि "**स्कूल के अध्यापक एवं बच्चों को प्रवचन सुनाना है।**" तब मैंने अवश्य कहा कि "माताजी! इतनी उदारता तो नहीं करनी चाहिए जहाँ साधुओं के प्रति श्रद्धा के भाव नहीं हैं, वहाँ फालतू प्रवचन करने से क्या लाभ?" किन्तु माताजी कहने लगीं— नहीं बेटा! ऐसा नहीं सोचा जाता है, धर्म से अनभिज्ञ इन अज्ञानी प्राणियों को सम्बोधन प्रदान करना साधुओं का कर्तव्य है। इन प्रसंगों में हमें अपना अपमान नहीं मानना चाहिए क्योंकि मेरे गुरु महाराज आचार्य शांतिसागर एवं वीरसागर महाराज कहा करते थे कि साधु के जब मान ही नहीं होता, तो उनका अपमान कैसे हो सकता है?

पुनः हम लोगों ने वहाँ प्रवचन किया, प्रश्नमंच करके बच्चों को 10 पुरस्कार भी प्रदान किये गये। यह सब देखकर स्कूल के अध्यापक एवं बच्चे सभी जैन सन्तों की चर्या से अत्यन्त प्रभावित हुए और कई लोगों ने शराब, अण्डा, माँस, बीड़ी, सिगरेट, जुआ आदि व्यसनों का त्याग किया, जिससे हम लोगों को भी बड़ी प्रसन्नता हुई।

वास्तव में जैन साधुचर्या की यह विचित्रता ही है। अनेक शहर एवं नगरों में जैन श्रावक बेचारे तरसते रहते हैं कि महाराज या माताजी के चरण किसी तरह मेरे घर में पड़ जाएँ किन्तु आहार का चौका या चैत्यालय हुए बिना अथवा किसी विशेष प्रसंग के अतिरिक्त साधु उनके यहाँ जाते नहीं हैं किन्तु विहार करते हुए मार्ग में स्कूलों में तथा पटेल, पाटील, वैष्णव मकान-मंदिर आदि स्थानों पर हम लोग अपने आप ठहरते हैं क्योंकि 15 से 25 किमी. से अधिक एक दिन में पदविहार नहीं हो पाता है।

➢संघर्ष विजय में परिवर्तित हो गये—

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने अपने गुरु की सूक्ति का सदैव पालन करके संघर्षों पर विजय प्राप्त की है कि "**सुई का काम करो कैंची का नहीं**" अर्थात् सामाजिक संगठन पर बल देकर सबको एकता के सूत्र में बाँधना चाहिए, विघटन का कार्य कभी नहीं करना चाहिए। मंगल विहारों के मध्य यूँ तो अनेक स्थानों पर कई संघर्ष समाप्त होकर सामाजिक एकता की स्थापना हुई है किन्तु कुछ स्थान तो इस बात के अमिट संस्मरण ही बनकर रह गए। जैसे—

1. उज्जैन (म.प्र.) की दिगम्बर जैन समाज में कई वर्षों से आपसी फूट थी। जिसके कारण मुनिसंघ व्यवस्था कमेटी के मंच पर भी कभी उन विरोधियों को बिठाया नहीं जाता था। महावीर जयंती के वार्षिक कार्यक्रम भी दोनों ग्रुप अलग-अलग मनाकर दो रथयात्रा निकालते थे। ये सब बातें माताजी को ज्ञात हुईं तो वहाँ 6 मार्च 1996 को जब माताजी का 43वाँ क्षुल्लिका दीक्षा दिवस मनाया जा रहा था एवं माताजी की प्रेरणा से वहाँ जयसिंहपुरा में "भगवान् महावीर तपोवन" का शिलान्यास हो रहा था, उसी मंगलबेला में माताजी ने दोनों पक्षों को निष्पक्षरूप से समझाकर क्षणमात्र में सभा के अंदर परस्पर में क्षमायाचना करवा कर उन्हें गले मिलवा दिया और सभा में दोनों पक्षों की ओर से घोषणा कर दी गई कि "**आज से हम सब एकजुट होकर धर्मप्रभावना के**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार्य करेंगे, महावीर जयंती में एक ही रथ निकलेगा, उस दिन सबका सामूहिक भोज होगा तथा उज्जैन में पधारने वाले सभी साधु-साध्वियों का सदैव सम्मान होगा इत्यादि।''

2. हम लोग तेज रफ्तार से मांगीतुंगी की ओर बढ़े जा रहे थे कि 16 अप्रैल 1996 को नरडाणा (महाराष्ट्र) के निकट एक लोहा फैक्ट्री में रात्रि विश्राम था। 17 अप्रैल को प्रातः विहार करके सोनगिर पहुँचना था तभी प्रातः 5 बजे मांगीतुंगी से ब्र. गणेशीलाल जी (महामंत्री क्षेत्र कमेटी), डा. पन्नालाल पापड़ीवाल (महामंत्री-मांगीतुंगी पंचकल्याणक समिति), रविकुमार जैन (ट्रस्टी) आदि कई लोगों ने आकर मांगीतुंगी में कल 16 तारीख को घटी अघटित घटना के बारे में बताते हुए काफी चिन्ता एवं रोष व्यक्त किया। उनकी संक्षिप्त रिपोर्ट सुनकर पूज्य माताजी के मुँह से तत्काल निकल पड़ा कि **''कोई चिन्ता मत करो, संकट आया था, टल गया, अब तुम्हारा कार्यक्रम बिल्कुल निर्विघ्न शानदार सम्पन्न होगा। यदि किसी ने इसमें विघ्न डालने का जरा भी दुष्प्रयास किया, तो वह सफल नहीं हो पायेगा। तुम लोग अपने कार्य में लग जाओ और दूसरी ओर कोई लक्ष्य मत दो।''**

यह गुरुवाणी सुनकर सभी कार्यकर्त्ता प्रसन्न होकर अपने-अपने कार्यों में संलग्न होकर प्रतिष्ठा के कार्य में लग गये। 2-4 दिन बाद सारे विघ्न स्वयमेव शान्त हो गये और माताजी के संघ का मांगीतुंगी में पदार्पण, ग्यारह सौ पचास प्रतिमाओं का पंचकल्याणक एवं मुनिसुव्रत भगवान् की 21 फुट उत्तुंग प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक आदि समस्त समारोह आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुए। वहाँ उपस्थित 1 लाख जनता को देखकर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री मनोहर जी जोशी भी भाषण में कहने लगे कि **मैंने आज तक महाराष्ट्र की किसी राजनीतिक सभा में भी इतनी अपार भीड़ नहीं देखी।**

3. मांगीतुंगी से हम सभी वापस दिल्ली की ओर अत्यन्त शीघ्रता के साथ विहार कर रहे थे, रास्ते में 27 फरवरी को राजस्थान का एक नगर ''केकड़ी'' आया, वहाँ प्रातः 9 बजे पहुँचे और मध्यान्ह 3 बजे विहार हो गया किन्तु इन छह घंटों में ही केकड़ी की काया पलट हो गई। वहाँ अत्यन्त प्राचीन प्रतिमाओं सहित चार जिनमंदिरों के दर्शन किये और एक नवनिर्मित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में जगह देखकर माताजी ने सम्मेदशिखर की रचना निर्माण की बात कही, तो तुरंत दानदातारों की इच्छा साकार हो गई और पूरा प्रारूप 15 मिनट में तैयार होकर आर्थिक लाभ से भी परिपूर्ण हो गया।

मध्यान्ह में 1 बजे से उसी मंदिर के विशाल हॉल में प्रवचन सभा चल रही थी, इसी मध्य 1-2 महानुभावों ने क्षुल्लक मोतीसागर जी को बताया कि यहाँ कई वर्षों से समाज में काफी आपसी संघर्ष चल रहा है, इस मंदिर की मूर्ति पर कोर्टकेस चल रहा है, हम लोग इस फूट के कारण परेशान हैं। पूज्य माताजी यदि हमारे इस झगड़े को मैत्री में परिवर्तित करा दें, तो हम उनके बड़े आभारी होंगे।

मेरे प्रवचन के बीच में ही महाराज जी ने पूज्य माताजी को सारी बात बताई, तभी ज्ञात हुआ कि जो सज्जन इस मंदिर में कभी पैर भी नहीं रखते थे, वे आज आप लोगों का प्रवचन सुनने यहाँ आए हैं और उन्होंने सम्मेदशिखर की नवनिर्माण योजना में आज पहला नाम अपना लिखाया है। किसी व्यक्ति ने आकर यह भी बताया कि कई सन्तों एवं महानुभावों ने अनेक बार इस विषय में पुरुषार्थ किये हैं लेकिन आज तक सफलता नहीं मिल सकी है।

पूज्य माताजी ने संक्षेप में ही स्थिति का परीक्षण किया और सभा में उन दोनों पार्टियों को सम्बोधन प्रदान किया। सारी समाज आश्चर्यचकित हो देख रही थी कि कौन सा जादू हो गया है! संयोगवश उस लघु सम्बोधन से ही दोनों प्रतिद्वन्द्वी आपस में क्षमायाचना करके सबके सामने गले मिल गये तभा सभा में घोषणा कर दी कि आज से हमारा समस्त वैर विरोध समाप्त हो गया तथा हम आगे सभी कार्यों में पूरा सहयोग प्रदान करेंगे। सभी नर-नारियों के नेत्रों में हर्ष के अश्रु थे एवं धन्य-धन्य, जय-जय की ध्वनि सबके मुख से निकल रही थी। बेचारे जोर-जोर से कहने लगे कि ऐसी माता यहाँ फिर-फिर आवें, हे ज्ञानमती माताजी! तुम्हारी आयु में मेरे जीवन के क्षण भी लग जाएँ, तुम्हें ऐसी लम्बी उमर मिले।

यहाँ से विहार करने के बाद भागचन्द जैन एडवोकेट रास्ते में कहने लगे कि आज यहाँ जो आश्चर्यजनक कार्य 6 घण्टे में हुए हैं, वे छह माह में भी संभव नहीं थे। माताजी! हमारे केकड़ी के लोग आज अतीव प्रसन्न हैं, आपने जो सामाजिक एकता हमारे यहाँ स्थापित करवा दी है, उस उपकार को हम लोग कभी भूल नहीं सकते हैं।

यहाँ प्रसंगोपात्त मुझे ध्यान आ गया कि 3-4 दिन पहले केकड़ी से भागचन्द जी वकील साहब, मोहनलाल जैन कटारिया आदि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ महानुभाव शाहपुर में माताजी को आमंत्रण देने आए थे पुनः विहार में मेरे साथ पैदल चलते हुए वकील साहब ने मुझे कहा— "माताजी! कल सोते हुए पिछली रात्रि में मैंने स्वप्न देखा कि एक बड़े से हाथी के ऊपर एक छोटा हाथी चढ़ा हुआ है एवं दोनों प्रेमपूर्वक आलिंगन कर रहे हैं। मेरे इस स्वप्न का क्या फल हो सकता है? कृपया आप बताने का कष्ट करें कि यह मेरे शुभ का प्रतीक है या अशुभ का?

मैंने कहा कि देखो! न तो मुझे निमित्त ज्ञान है, न ही ज्योतिषज्ञान, किन्तु आपका स्वप्न सुनकर जरुर लगता है कि यह किसी न किसी मंगल मिलन का प्रतीक है। वकील साहब बोले कि पूज्य ज्ञानमती माताजी जैसी महान् साध्वी के दर्शन से ज्यादा और मंगल मिलन क्या होगा? लेकिन आज जब अनहोना सामाजिक संगठन का कार्य हुआ, तब मैंने वकील साहब से कहा कि आपका स्वप्न वास्तव में तो आज साकार हुआ है।

केकड़ी में निवाई (राज.) के कई लोग पूज्य माताजी को निवाई चलने का आग्रह करने हेतु आए हुए थे, यह सारा चमत्कार प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देखकर लालचन्द जी, भागचन्द जी आदि महानुभाव विनम्र निवेदन करने लगे कि माताजी! हमारे निवाई में पिछले वर्ष से काफी सामाजिक फूट हो गई है, हम लोग उससे बहुत दुःखी हैं। हमें विश्वास है कि आपके चरण पड़ने से वहाँ भी अपूर्व शांति की स्थापना होगी अतः आप दया करके वहाँ जरुर चलें। उनके अत्यन्त आग्रह के बावजूद भी चूँकि माधोराजपुरा, जयपुर और दिल्ली पदार्पण की तारीखें पहले ही निश्चित हो चुकी थीं अतः निवाई वालों को निराश होना पड़ा पुनः वहाँ के लालचन्द जी हमारे साथ में आमेर तक बराबर पैदल चलते रहे और वापस जाते समय उनकी आँखों से धर्मप्रेम की अविरल अश्रुधारा निकल रही थी, जो उनकी गुरुभक्ति का प्रतीक थी।

➢काल के अनुसार साधुचर्या पर चिन्तन होना चाहिए—

हम लोग गुजरात के एक शहर "ईडर" में गए। वहाँ अत्यन्त भक्तिमान समाज है तथा मंदिरों में काफी प्राचीन प्रतिमाएँ हैं। यहाँ एक छोटी सी पहाड़ी पर दिगम्बर जैन मंदिर है, उसे पूज्य माताजी की प्रेरणा से "ऋषभदेवगिरि" नाम प्रदान किया गया है।

इस ईडर शहर में आहारचर्या के समय मैं 3-4 चौके से वापस लौटी पुनः प्रकाशचन्द जैन नाम के श्रावक के चौके में आहार हुआ। कारण यह था कि चौके में स्टोव पर खाना बनाया गया था और आहार के समय स्टोव बाहर कर दिये जाने पर भी मिट्टी के तेल (घासलेट, कैरोसिन) की काफी दुर्गन्ध थी। मुझे समझ में नहीं आया कि आहार करूँ या न करूँ? क्योंकि अभी तक अपनी संघ परम्परा (आचार्य शांतिसागर परम्परा) में गैस या स्टोव का बना भोजन साधुओं के आहार में खुला नहीं है। इसीलिए मैं उन घरों से लौट आई एवं प्रशस्त चौके में आहार करने के बाद मैंने पूज्य माताजी से निवेदन किया कि ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिए?

उन्होंने तो मुझे कहा कि तुमने ठीक किया। चूँकि इस विषय पर अभी कोई सामूहिक निर्णय नहीं हुआ है इसीलिए पुरानी परम्परानुसार लकड़ी या कोयले की अग्नि पर बना भोजन ही अपने को लेना है।

फिर भी मेरा कहना यही है कि इन सामयिक समस्याओं पर साधुओं को एकजुट होकर मीटिंग करना चाहिए और कुछ तथ्यों की सामूहिक उद्घोषणा होनी चाहिए। जैसे आज से 32 वर्ष पूर्व दिसम्बर 1974 में परमपूज्य आचार्य श्री धर्मसागर महाराज ने मेरठ शहर की रेलवे रोड स्थित धर्मशाला में बैठकर 40 साधु-साध्वियों के बीच में कुएँ के जल से संबंधित निर्णय लिया था कि बोरिंग एवं हैण्डपम्प का जल कुएँ के समान ही शुद्ध है क्योंकि आजकल गाँवों के कुएँ सूख गए हैं, उनका पानी सड़ रहा है तथा घरों की छोटी चक्की का आटा चौके में प्रयोग किया जा सकता है.........इत्यादि पुनः फरवरी 1975 में हस्तिनापुर में आचार्यश्री ने चौके के चंदोवे के विषय में निर्णय दिया कि लिन्टर वाली साफ-सुथरी छतों में बिना चंदोवे के भी आहार हो सकता है और कड़ियों की घास-फूस वाली छत में चंदोवा लगाना आवश्यक है। इन्हीं निर्णयों के अनुसार उस संघ परम्परा में मध्यम स्तरीय क्रियाओं का परिपालन चल रहा है। संभवतः इन्हीं जैसी तमाम समस्याओं के समाधान हेतु ही मूलाचार में आचार्य श्री कुंदकुंददेव ने पाँच-पाँच वर्ष में साधुओं को एक जगह एकत्रित होकर "युगप्रतिक्रमण" करने का निर्देश दिया है लेकिन वर्तमान में वह परम्परा लुप्त ही हो गई। सन् 1987 में हस्तिनापुर में पूज्य ज्ञानमती माताजी ने आचार्य विमलसागर महाराज के साथ में उस युगप्रतिक्रमण का प्रारंभीकरण किया और उसके बाद वे अपने संघ में ही 5-5 वर्ष के बाद यह प्रतिक्रमण किया करती हैं। क्या ही अच्छा हो, यदि 1000 की संख्या में विद्यमान आचार्य, उपाध्याय, मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक-क्षुल्लिका आदि सभी किसी तीर्थ या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शहर में एकत्रित होकर उदार भाव से एक-दूसरे के अनुभव सुनें एवं सब मिलकर कुछ न कुछ समाधान ढूँढकर समाज में एक सदृश प्रवृत्ति का दिग्दर्शन करायें।

➢स्वप्न में सरस्वती की बात साकार हो गई—

पूज्य गणिनी माताजी ने 8 अक्टूबर 1995 को हस्तिनापुर में जैन सिद्धान्त के सर्वोच्च सूत्रग्रंथ षट्खण्डागम की "सिद्धान्तचिन्तामणि" नाम की संस्कृत टीका लेखन का दुरूह कार्य शुरू किया था पुन: 27 नवम्बर को मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के लिए हस्तिनापुर से विहार कर दिया, तब तक केवल 25-30 पृष्ठों का लेखन हुआ था, इस बारे में उन्हें एक दिन चिन्ता हो गई कि मैंने इतना लम्बा विहार सोच तो लिया है किन्तु मेरा यह लेखन का कार्य रास्ते में तो हो नहीं सकता है, कैसे और कब यह टीका पूरी होगी?

संयोगवश दूसरे दिन रात्रि में माताजी ने स्वप्न देखा कि **"सरस्वती माताजी साक्षात् प्रगट होकर मुझसे कह रही हैं—ज्ञानमती जी! तुम चिन्ता मत करो, तुम्हारा लेखन बराबर चलता रहेगा, रास्ते में तुम्हें कोई बाधा नहीं होगी।"**

माताजी ने सुबह मुझे बताते हुए कहा कि **"जीवन में पहली बार मेरी सरस्वती माता से वार्ता हुई है। पता नहीं कितनी सफलता मुझे मिलेगी!"**

आश्चर्य ही नहीं, शायद यह अतिशयोक्ति ही है कि इस यात्रा में भी माताजी का लेखन कार्य बराबर चलता रहा और 7 मार्च 1997 को कुल 463 दिन में 1000 (एक हजार) पृष्ठों में प्रथमखण्ड की छहों पुस्तकों की संस्कृत टीका का ऐतिहासिक लेखन कार्य पूर्ण किया एवं द्वितीय खण्ड का कार्य प्रारंभ किया।

इस मध्य मांगीतुंगी से विहार करते समय भी ठीक उसी प्रकार का स्वप्न हुआ कि सरस्वती माता कह रही हैं—**देखो ज्ञानमती जी! मैंने तुमसे कहा था न कि तुम्हारा काम नहीं रुकेगा। अब तो तुम खुश हो?**

सुबह होते ही फिर पूज्य माताजी कहने लगीं— चन्दनामती! देखो, सरस्वती माता की कही हुई सारी बातें कैसी साकार हो रही हैं। मैंने तो जीवन में पहली बार ही इस प्रकार स्वप्नों में सरस्वती देवी से साक्षात्कार किया है।

आज के क्षणों में मुझे लगता है कि जैसे पुष्पदन्त-भूतबली मुनियों के समक्ष मंत्र सिद्ध से देवियाँ प्रगट हो गई थीं और उनके द्वारा षट्खण्डागम सूत्रग्रंथ का लेखन पूर्ण कर दिये जाने पर देवताओं ने आकर उनकी पूजा की थी, उसी प्रकार यदि शारदा माता की दीर्घकाल से सेवा कर रहीं अर्थात् साहित्य सृजन कर रहीं ज्ञानमती माताजी से प्रसन्न होकर चक्रेश्वरी आदि कोई व्यन्तर देवियाँ स्वप्न में उन्हें समाधान देकर सन्तुष्ट कर दें, तो शायद कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है।

➢साधु बने हैं तो सहना ही पड़ेगा—

कई बार आहार के पश्चात् महिलाओं को एक गीत गाते सुना जाता है—

"माताजी दीक्षा दे दो, चलूँगी थारे साथ।
मैं लड्डू खाने वाली, मुझे रोटी लगे उदास।
रोटी में गुजर करूँगी, चलूँगी थारे साथ।।"

यह गीत सुनकर कभी मैं हँसा करती थी और सोचा करती थी कि "श्रावक लोग तो बेचारे भक्तिवश चौके में इतनी सारे चीजें बनाते हैं कि हम साधुजन उन्हें देखकर ही घबड़ा जाते हैं और अपनी चर्या-स्वाध्याय-सामायिक आदि क्रियाओं की निष्प्रमाद चर्या निर्वाह हेतु कभी-कभी हमें उन चीजों का त्याग भी करना पड़ता है, फिर ये महिलाएँ गीत में ऐसा क्यों बोलती हैं? किन्तु वास्तव में नये गाँव, नये प्रदेशों में पदविहार करने पर आहारसंबंधी तमाम अनुभव आते हैं, तो उनकी पंक्तियाँ सार्थक प्रतीत होने लगती हैं।"

हम राजस्थान के एक गाँव झालरापाटन में थे, वहाँ अनेक चौकों में जहाँ-जहाँ जिसकी विधि मिली, वहाँ गये। मेरा जहाँ पड़गाहन हुआ, वहाँ आहार की सारी वस्तुओं में नमक की जगह फिटकरी मिली हुई थी। संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनें पास में बैठकर शोधन कर-करके लोगों से आहार दिलवा रही थीं। मुझे दाल, सब्जी कुछ अच्छी नहीं लग रही थी किन्तु साधुचर्या की कठिनता समझ-समझ कर लगभग प्रतिदिन की भाँति ही आहार ले लिया, कोई कुछ समझ नहीं पाया कि कुछ गड़बड़ है। यहाँ तक कि फलों में भी नमक समझकर फिटकरी मिला-मिला कर देते रहे, संकेत न करने की आदत के कारण मैंने थोड़े-बहुत फल भी ले लिए पुन:

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आहार के बाद जब मैंने स्थान पर आकर पूज्य माताजी से प्रत्याख्यान ग्रहण करते समय बताया कि आहार में फिटकरी लेने के कारण जी मिचली हो रही है। माताजी ने थोड़ा अमृतधारा और घी की मालिश करवाई और कहने लगीं कि—

"बेटा! साधु बने हो, तो यह सब तो सहना ही पड़ेगा वर्ना कर्म निर्जरा कैसे होगी?" ऐसे अनुभव कई जगह प्राय: आते ही रहते हैं, जब या तो नमक की जगह दूसरी चीज या नमक बहुत अधिक हो गया अथवा डाला ही नहीं गया, तो गुरुकृपा से खुशी-खुशी सहन करने में कोई कष्ट महसूस नहीं होता है और आहार में कड़वी तूमड़ी आदि के इतिहास याद करके कष्ट सहन करने की अपूर्व क्षमता भी आती है।

➢दीक्षास्थली माधोराजपुरा की आत्मीयता—

आंज से 50 वर्ष पूर्व राजस्थान की जिस पवित्र नगरी माधोराजपुरा में युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी ने आचार्य श्री वीरसागर महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा धारणकर ''ज्ञानमती'' नाम प्राप्त किया था, वहाँ के श्रावकों की अत्यधिक भक्ति के कारण माधोराजपुरा में भी संघ का पदार्पण गुरुवार, 6 मार्च 1997 को हुआ। पूज्य माताजी भी दीक्षा के बाद पहली बार वहाँ पहुँच रही थीं इसीलिए वहाँ के उत्साह एवं प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था।

नगर प्रवेश की मंगल बेला में दिल्ली से भी संघपति जी पूरे दलबल के साथ पहुँच गये क्योंकि उन सभी लोगों को माधोराजपुरा वालों ने अतीव आग्रहपूर्वक आमंत्रण भेजा था। दीक्षा नगरी जहाँ किसी नववधू की भांति खूब सजाई गई थी, वहीं राजकीय प्राथमिक विद्यालय स्कूल से प्रारंभ होने वाले जुलूस में विशेष रूप से तीन घोड़े भी मंगाए गए थे, जो राजस्थान, अवध एवं राजधानी दिल्ली के नाम से प्रतिनिधित्व करते हुए वहाँ के नवयुवकों को बैठाकर आगे-आगे चल रहे थे। मुख्य प्रवेशद्वार पर एवं अन्य कई द्वारों पर माताजी के बड़े-बड़े फोटो (कट आउट) लगाए गए थे। तरह-तरह के झाड़-फानूस, बिजली, झालर, घंटे आदि सजाकर समस्त जाति-सम्प्रदाय के नागरिक पलख पांवड़े बिछाकर अपनी निधि का स्वागत करने को आतुर थे। गुलाब के फूलों की वृष्टि, रतन एवं सितारों को बरसाकर मकानों की छत से, अटारियों से एवं गलियों से उछल-उछलकर लोग नारे एवं जयजयकारों से नगरी को गुंजायमान कर रहे थे।

पूज्य माताजी वहाँ तीन दिन रुकीं तो हिन्दू, मुसलमान, जैन आदि सम्पूर्ण जाति-बन्धुओं ने अपनी दुकानें एवं समस्त प्रतिष्ठान बंद रखे तथा प्रवचन सभा में भाग लिया। गाँव में जितनी भी संस्थाएँ, कमेटी, सोसाइटी थीं, सभी के लगभग 20-25 प्रतिनिधियों ने माताजी का सम्मान किया पुन: उन्हें संघपति की ओर से माताजी के लेमिनेटेड चित्र एवं कुछ साहित्य भेंट किया गया।

➢बेटी विदा कराने का भी मुहूर्त होता है—

हम लोग 5 मार्च की शाम को फागी से विहार करके 5 किमी. दूर एक प्याऊ पर आ गये थे, जहाँ से माधोराजपुरा केवल 3 किमी.था। यद्यपि वहाँ स्थान अत्यन्त अल्प एवं खराब था किन्तु खुला एरिया होने के कारण उन लोगों ने शामियाना, टेन्ट वगैरह लगाकर रात में खूब भजन-कीर्तन किया, सैकड़ों लोग रात में वहीं सोये।

6 मार्च को प्रात: 7 बजे माधोराजपुरा के कुछ पुरुष एवं 1-2 महिलाओं ने आकर माताजी को श्रीफल चढ़ाया, हम सभी को साड़ियाँ भेंट की और बोले कि ''**माताजी! अब आप पीहर की ओर प्रस्थान करें, हम आपको विदा कराने आए हैं।** यह सुनकर हम लोग हँसने लगे। वे पुन: बोले कि कल बुधवार था, हमारे राजस्थान में बुधवार को बेटी को ससुराल से पीहर नही लाते हैं इसीलिए कल शाम को हमने आपको यहाँ ठहरने का कष्ट दिया वर्ना केवल दो किमी. चलकर ही माधोराजपुरा के सुन्दर स्कूल में आपका रात्रि विश्राम कराते।"

पूज्य माताजी तो ऐसे व्यवहारिक प्रसंगों से पूर्ण अनभिज्ञ रही हैं अत: वे बहुत संकोच करने लगती हैं इन छोटी-छोटी मनोरंजक बातों पर। यहाँ भी उक्त बात सुनते ही उन्होंने शरम के कारण सिर झुका लिया और उन लोगों के कमरे से बाहर जाते ही हमसे बोलीं—''**यह सब क्या हो रहा है? मुझे यह ड्रामा अच्छा नहीं लगता। साधुओं का भी भला कोई पीहर या ससुराल होता है।**'' हम सब लोगों ने किंचित् हँसी के साथ इस विषय को यह कहकर समाप्त किया कि ''**आपकी ज्ञानमती पर्याय की जन्मभूमि तो यह है ही, फिर पहली बार आगमन के कारण जहाँ लोगों में जोश-खरोश है, वहीं सांसारिक अपनत्व भी उमड़ पड़ने से यदि कोई स्नेहिल शब्द मुँह से निकल जाते हैं, तो इसमें शरमाने की क्या बात है?**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी का सुन्दर गौरवर्णी चेहरा लज्जावश लाल सुर्ख सा हो गया, आखिर अपनी दीक्षाभूमि के नागरिकों का अप्रतिम वात्सल्य देखकर हृदय में गौरव तो हुआ ही होगा कि कम से कम आज भी उन सबके मन में त्याग एवं त्यागियों के प्रति नम्र भावना है जो कि पूरे गाँव की सर्वतोमुखी उन्नति का प्रतीक है।

खैर! गुरुवार को प्रात: इस मंगल रश्म रिवाज के पश्चात् माधोराजपुरा में पूज्य माताजी का संघ सहित गुरु एवं बेटी दोनों रूप में मंगल पदार्पण हो गया। पता नहीं ये रिवाज अन्य प्रान्तों में भी हैं या नहीं कि बेटी को किस दिन विदा नहीं कराते हैं और किस दिन कराते हैं? मुझे भी इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है।

➢रिश्तेदारी भी निकल गई—

अभी तो माताजी को छोटी सी बात में ही संकोच उत्पन्न हो रहा था और अब बात उससे भी आगे बढ़ गई, जब नगर के अन्दर प्रवेश करते ही ऊँची ध्वनि सुनाई पड़ने लगी—**''मेरी बहना आई है, ज्ञान की गंगा लाई है''** एवं **''हर माँ की बेटी कैसी हो, ज्ञानमती जी जैसी हो.........**आदि। कुछ देर बाद ही ज्ञात हुआ कि जुलूस में जो मंगल कलश लेकर सबसे आगे चल रहे थे, वे राँवका दिगम्बर जैन परिवार के लोग थे, इनके माता-पिता श्रीमती एवं श्री सागरचन्द जैन राँवका पूज्य माताजी की दीक्षा के समय उनके माता-पिता बने थे। संतोष कुमार जैन राँवका उनके सबसे बड़े सुपुत्र हैं, उनके पूरे परिवार ने उस दिन विशेष रूप से स्वागत किया। जुलूस के बीच में माताजी की मंगल आरती जब राँवका मकान के पास उतारी गई, तो बूढ़ी माँ जी आकर माताजी के चरणों से लिपट गईं और हर्ष के अश्रुओं से उनके चरणप्रक्षाल करने लगीं। वह दृश्य अत्यन्त हृदयद्रावक एवं प्रेरक बन गया था। वास्तव में इन खुशियों का वर्णन लेखनी के द्वारा नहीं किया जा सकता है। आगन्तुक हजारों अतिथि उन दृश्यों को देखकर द्रवित हो गये थे।

मैंने उस दिन अपने सार्वजनिक वक्तव्य में कहा था कि "जब सन् 1956 में यहाँ माताजी की आर्यिका दीक्षा हो रही थी, तब इनके माता-पिता पूर्ण स्वस्थरूप में टिकैतनगर (उ.प्र.) में मौजूद थे लेकिन न जाने क्यों? उन्हें खबर भी नहीं दी गई कि तुम्हारी बेटी की दीक्षा हो रही है। मैंने अपने होश में उन माता-पिता की अविरल अश्रुधारा देखी है, जो बेटी की दीक्षा देखने को तरस गये और कहते रह गये कि आखिर हमने क्या गुनाह किया था, जो हमें एक पत्र देकर बुलाया भी नहीं गया। हमने उसे पैदा किया था, हमें उससे तीव्र मोह था लेकिन हम उसे उठाकर तो नहीं ले आते।"

इसमें ज्ञानमती माताजी की निस्पृहता, निष्ठुरता और निर्मोहिता तो प्रमुख रही ही होगी किन्तु आचार्यसंघ की व्यवहारशून्यता भी माननी ही होगी कि संघ के किसी साधु, ब्रह्मचारी, साध्वी आदि किसी के मन में भी न आया कि जहाँ सबके पास दीक्षा के पोस्टर-पत्र आमंत्रण हेतु भेजे जा रहे हैं, वहीं मूल दीक्षार्थी के घर या गाँव में भी पता पूछकर एक समाचार भी तो भेजा जाये।

खैर! दीक्षा तो हो ही गई और वैशाख कृष्णा दूज के दिन ली गई दीक्षा दूज के चाँद की तरह ही असीम वृद्धि में परिवर्तित हुई किन्तु गृहस्थावस्था के माता-पिता परिकर के न आने से इस राँवका परिवार का पुण्य जागृत हुआ, जो भव-भव में उन लोगों के लिए अविस्मरणीय रहेगा। माधोराजपुरा के नागरिक यदि ज्ञानमती माताजी को अपने गाँव की पुत्री मानते हैं, तो यहाँ का बच्चा-बच्चा इनका भाई और भतीजा है और सभी को इनके आदर्शों का पालन करते हुए त्याग एवं सदाचार का परिचय देना चाहिए।

➢दीक्षा में वटवृक्ष का अद्भुत संयोग—

हमने वहाँ पहुँचकर माताजी से पूछा कि **''आपकी दीक्षा किस स्थान पर हुई थी?''** वे कहने लगीं कि मुझे ज्यादा स्मृति तो नहीं है किन्तु धुंधली सी याद ताजी हो रही है कि वहाँ पर एक बड़ का बहुत बड़ा पेड़ था। हमारी जिज्ञासा जानकर माधोराजपुरा के लोग हमें उस मुख्य स्थान पर ले गये, जहाँ सन् 1956 में पूज्य माताजी की दीक्षा हुई थी। मेन बाजार के उस स्थान पर एक बहुत पुराना खूब बड़ा वटवृक्ष था। माताजी को भी उसे देखते ही दीक्षा के समय का सारा नजारा याद आ गया।

इस प्रसंग में मैंने कहा कि माताजी ने भगवान् ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या की छत्रछाया में जन्म लेकर उनकी पुत्री ब्राह्मी गणिनी जैसा ही मार्ग स्वीकार किया और यह भी संयोग की ही बात है कि ऋषभदेव ने वटवृक्ष के नीचे दीक्षा ली थी, तो माताजी के गुरुदेव ने भी उनके लिए वटवृक्ष वाला स्थान ही चुना, शायद इसीलिए भगवान् ऋषभदेव इनके परमइष्ट आराध्य देव बन गये, उनके परमाणु ही कुछ इनके अन्दर समा गये, तभी ज्ञान की अजस्र धारा प्रवाहित करती हुईं जहाँ इन्होंने दो सौ से अधिक ग्रन्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिखकर नारी गरिमा का कीर्तिमान स्थापित किया, वर्तमान में षट्खंडागम की संस्कृत टीका, "सिद्धान्तचिन्तामणि" का लेखन कर रही हैं, वहीं भगवान् ऋषभदेव का जन्मजयंती महोत्सव, अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार आदि अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करवाकर जन-जन को जैनधर्म की प्राचीनता से परिचित किया है।

उस प्राचीन वटवृक्ष के नीचे खड़े होकर ग्रामवासियों ने पूज्य माताजी से अपने कल्याण हेतु किंचित् सन्देश व आशीर्वाद प्राप्त किया तथा कई फोटो खिंचवाए।

➢उस सांड के पोते को भी देखा—

ब्र. सूरजमल बाबाजी-निवाई (राज.) वालों के मुख से तो कई बार हम लोग सुना करते थे कि माताजी की दीक्षा के समय एक बड़ा सांड सभा को पार करके सीधे मंच के पास इनके मंगल चौक (जिस पर इन्हें दीक्षा के लिए बिठाया जा चुका था) के समक्ष नतमस्तक हो गया था। तब तमाम लोगों ने उसे कोई भव्य प्राणी समझकर लड्डू-फल खिलाए थे। वही बात माधोराजपुरा में उस वृक्ष के नीचे खड़े कई प्रत्यक्षदर्शी प्रौढ़ व्यक्तियों ने हम सबको बताई। उसके साथ एक रोमांचक घटना यह ज्ञात हुई कि गाँव के लोग उस सांड को माताजी की दीक्षा के बाद से लेकर जीवनपर्यन्त लड्डू या अन्य मिष्ठान्न ही खिलाते रहे।

कुछ लोगों ने बताया कि उसे हम लोग जैन श्रावक जैसा मानते थे और वह कभी किसी को हानि नहीं पहुँचाता था। हाँ, इतना अवश्य था कि वह जिस मकान या दुकान के सामने जाकर खड़ा हो जाता, वही उसे मिठाई खिलाने लगते तथा यदि कभी कोई उसके सामने अरुचि से मिठाई पेश करता था, तो वह पता नहीं कैसे उसकी मनोभावना दूषित जानकर मिठाई नहीं खाता और आगे बढ़ जाता। कुल मिलाकर पूरे कस्बे में उसे देवता जैसा मानकर उसकी आवभगत की जाती थी।

सबसे अधिक आश्चर्य तो तब हुआ, जब पता लगा कि अभी 3-4 वर्ष पूर्व ही वह मरा है। उसके मरने पर गाँव में उसकी शवयात्रा निकाली गई और उसके अंतिम संस्कार स्थल पर स्मृतिस्वरूप एक चबूतरा बनाया गया। तब मैंने उन लोगों को सलाह दी कि कहीं इस चबूतरे के निमित्त से किसी मिथ्यात्व का प्रचार न होने लगे इसीलिए आप लोग यहाँ एक शिलापट्ट लिखवाकर लगा दें कि **"यहाँ दफनाया गया सांड एक अहिंसक पशु बनकर सदाचारी मनुष्य के समान क्रिया करता था। पूज्य ज्ञानमती माताजी की दीक्षा के समय अत्यन्त नम्रता का परिचय देकर इसने सबके हृदय में अपना स्थान बना लिया था, इसीलिए नगरवासियों ने उसकी स्मृति में इस चबूतरे का निर्माण कराया है, आप सब इसके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करें।"**

वहाँ से हम अपने विश्रामस्थल की ओर लौट रहे थे, तो रास्ते में एक सांड बैठा था, गाँव के लोगों ने बताया कि "माताजी! यह उसी सांड का पोता है, इसे भी सब लड्डू खिलाते हैं।" हमारे खड़े होने पर वह थोड़ी देर देखता ही रहा पुनः एक थाल में कुछ लोग नुक्ती ले आए और उसे बड़े प्रेम से खिलाया। कुछ बच्चों ने छेड़खानी की तो वह भागने लगा किन्तु हम लोगों को देखकर पुनः शान्तभाव से बैठ गया। इसमें कुछ न कुछ पूर्व जन्म के संस्कार अवश्य होंगे। हो सकता है पहले मनुष्य पर्याय में इसने सन्तों का सत्संग किया हो किन्तु कुछ मायाचारी आदि कारणों से मरकर तिर्यंच बन गया और अब संत चरणों में नमन करने से कुछ जातिस्मरण हो गया हो, या आगे के लिए शुभगति का बंध हो गया हो इसीलिए उसने इतनी शान्तता का परिचय प्रदान किया।

माधोराजपुरा कस्बे की यूँ तो कुल आबादी 10-12 हजार है, जिसमें लगभग 70 घर जैन समाज के हैं, 4 जैन मंदिर हैं, जो अपनी प्राचीनता का परिचय दे रहे हैं। दीक्षास्थली के पीछे ही विशाल प्राचीन किला खण्डहर के रूप में पड़ा है, उसे भी हम लोग देखने गये तो कई ऐतिहासिक तथ्य ज्ञात हुए।

➢आर्यिका ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ माधोराजपुरा—

माधोराजपुरा के लोग कई वर्षों से इस नगर में **"ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ"** के नाम से एक तीर्थ बनाना चाहते हैं, उसी निमित्त से वहाँ पूर्व निर्धारित योजनानुसार दिल्ली के जाने माने भक्त श्रेष्ठी कमलचन्द जैन-खारीबावली के सौजन्य से एक **"ज्ञानमती कीर्तिस्तंभ"** का शिलान्यास कराया गया तथा संघपति महावीर प्रसाद जैन-दिल्ली, प्रेमचंद जैन खारीबावली-दिल्ली, अनिल कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली तथा प्रो. टीकमचंद जैन-दिल्ली एवं आसपास के अनेक दानी महानुभावों ने भी गुरुभक्ति का परिचय देते हुए तीर्थ निर्माण हेतु अपनी अर्थांजलियाँ समर्पित की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस दीक्षा तीर्थ परिसर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान की विशाल प्रतिमा विराजमान करने के साथ-साथ चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाएँ भी विराजमान होंगी तथा औषधालय, पुस्तकालय, विद्यालय आदि का निर्माण भी प्रस्तावित है। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के अन्तर्गत इस तीर्थ का निर्माण एक चिरस्थाई स्मृति को साकार करने वाला है।

➢मौसम का धन्यवाद कैसे करें?

पूज्य माताजी के प्रवचन में कई बार सुना करती हूँ—

पद्मिनी जाति की विशेष स्त्रियाँ, राजहंस और निर्ग्रंथ तपोधन-साधु-साध्वी जिस देश में विचरण करते हैं, वहाँ स्वयमेव सुभिक्ष हो जाया करता है। इस दु:षमकाल में हमारे भारत देश में न तो पद्मिनी स्त्रियाँ हैं, न मानसरोवर पर रहने वाले राजहंस हैं, न ही ऋद्धिधारी जिनकल्पी महामुनि हैं और न ही विशल्या जैसी दिव्यशक्तिधारिणी कन्याएँ हैं, जिनकी दृष्टिमात्र से सारे रोग-शोक-महामारी नष्ट हो जाये किन्तु फिर भी कठोर तपस्या करने वाले एवं दीर्घकालीन दीक्षा लक्ष्मी से समन्वित कुछ साधु-साध्वी आज भी इस धरती पर उपर्युक्त श्लोकार्थ को अंशमात्र साकार करने वाले अवश्य विद्यमान हैं, जिनके समक्ष प्रकृति को भी नमन करना ही पड़ता है।

हमारे इस लम्बे प्रवास में भी हमारे साथ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का प्राचीन प्रतिमा की भाँति अतिशय ही रहा कि प्रकृति ने मौसम की अनुकूलता करके पग-पग पर हमारा सहयोग किया। मांगीतुंगी जाते समय हम 27 नवम्बर 1995 से 15 फरवरी 1996 तक केवल एक ही समय दिन में 1 बजे से 4 बजे तक चलते थे, उसके बाद सुबह-दोपहर दोनों समय चलकर पूरे पाँच महिने में 1620 किमी. का रास्ता तय किया था किन्तु वापसी में 1800 किमी. केवल 135 दिन में (साढ़े चार माह में) चले, उसमें खास निमित्त मौसम की अनुकूलता का रहा। दिसम्बर, जनवरी के महीने में उत्तरी इलाकों में जबर्दस्त सर्दी होती है, उस समय हम महाराष्ट्र और गुजरात की सड़कों पर दोनों समय चलते थे, वहाँ का गुलाबी मौसम हमारे विहार में अतीव सहायक रहता था पुन: 23 जनवरी से राजस्थान में जब हमारा प्रवेश हुआ, तो भीषण ठंड का दौर निकल चुका था अत: वहाँ भी सुबह 7-8 बजे से चलने में कभी असुविधा नहीं हुई। इसीलिए हम कहीं भी पूर्व निर्धारित समय से लेट नहीं पहुँचे बल्कि कहीं-कहीं तो ज्यादा चलने के कारण समय से एक दिन पूर्व ही पहुँच गये। जो रास्ता हमें बहुत लम्बा लग रहा था, वह भी मौसम के सहयोग एवं माताजी द्वारा प्रदत्त मंत्र जाप्य से शीघ्र ही पार हो गया।

जयपुर से दिल्ली तक सड़क मार्ग 270 किमी. है, उसकी चिन्ता कई दिन पूर्व से थी कि 30 मार्च 1997 को दिल्ली प्रवेश की तारीख दे दी गई है और 16 मार्च की शाम को हम जयपुर से निकलेंगे, तो बीच के केवल 13 दिनों में हमारे अत्यन्त थके पैर हमें दिल्ली कैसे पहुँचा देंगे? किन्तु हम तो निरन्तर मंत्रजाप्य करते हुए आगे बढ़ रहे थे।

हम रोज 22-23 किमी. की रफ्तार से चले और 29 मार्च की शाम 5 बजे ही दिल्ली के दरियागंज बाल आश्रम में पहुँच गये। बीच में 26-27 मार्च की भीषण गर्मी देखकर हम थोड़ा परेशान हुए पुन: 27 तारीख को जब ब्र. रवीन्द्र जी ने कैलाशचंद्र जैन-करोलबाग एवं नरेश जैन बंसल से हमारे पास समाचार भिजवाया कि गुड़गाँवा से 15 किमी. यदि चल लें, तो नरेश बंसल के शोरूम पर रात्रि विश्राम कर लें, उनकी बड़ी इच्छा है। मैंने कहा कि इस गर्मी में इतना लम्बा चलना दोपहर में संभव ही नहीं है किन्तु पता नहीं क्या चमत्कार हुआ कि दोपहर में बादल घिर आए, ठंडी-ठंडी हवा ऐसी चलने लगी, जैसे गर्मी का मौसम ही न हो।

मैं यद्यपि गुड़गाँवा में भी 2 किमी. अधिक एक भक्त के यहाँ चलकर आई थी और सुबह तो 10 किमी. चली ही थी, फिर भी पैरों में न जाने कहाँ से शक्ति आ गई कि हँसते-मुस्कराते रास्ता पार हो गया। संभवत: उस दिन पूरे प्रवास का सबसे ज्यादा किमी. (26 किमी.) चलना पड़ा था। फिर रात में तेज बरसात आने से अगले दिन 29 मार्च को शोरूम से 10 किमी. चलकर सफदरजंग एन्क्लेव में राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स की कोठी पर आए, वहाँ आकर आहार करके शाम को दरियागंज पहुँचे।

मौसम ने इन सब प्रसंगों में साथ देकर वास्तव में सन्त तपस्या के प्रभाव का परिचय प्रदान किया है। उसका धन्यवाद भला किन शब्दों में किया जाये? वह तो बस सदा तपस्वियों की साधना में बाधक न बनकर साधक बना रहे, यही समय की माँग है वर्ना इस धरती पर प्राकृतिक प्रकोप मानवों की दानवता के कारण अपना विकराल रूप धारण किए हुए हैं जिन्हें दूर करने में मात्र सन्तों की तपस्या, आध्यात्मिकता ही साधन है, बाकी कुछ नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢घटाने की कोशिश में रास्ता बढ़ता ही गया—

गुजरात प्रान्त से विहार करके जब दिल्ली जाने का रूट बना, तो लग रहा था कि रास्ता थोड़ा जरूर बढ़ रहा है किन्तु सबने समझाया कि माताजी! आप मध्यप्रदेश के सबसे कम वाले शिवपुरी रूट से जाएँगी, तो लगभग 1300 (तेरह सौ) किमी. और गुजरात होकर जाने में केवल 100 (सौ) किमी. ज्यादा पड़ेगा परन्तु सारा गुजरात, जो आपके दर्शनों का प्यासा है, उसे लाभ मिल जायेगा। सबकी भक्तिपरक बातें सुनकर माताजी ने गुजरात का निर्णय दे दिया। उसके बाद तो रास्ता बढ़ता ही चला गया। सबसे पहले जो अहमदाबाद मांगीतुंगी से केवल 350 किमी. था, हमें पावागढ़ सिद्धक्षेत्र होकर जाने में 500 किमी. पड़ गया, पुनः उस प्रान्त वालों के अत्यधिक आग्रह पर ईडर, हिम्मतनगर, सलाल आदि नगरों का दौरा करने पर रास्ता अधिक हो गया और आगे कई जगह ब्र. श्रीचन्द जी गाड़ी लेकर लम्बे रास्ते को कम करने गये, तो अनभिज्ञता के कारण वह रूट ज्यादा हो गया, फिर श्रावकों ने बताया कि आप यदि उस रास्ते से आते तो 10-15 किमी. कम चलना पड़ता। कई जगह ऐसी ही बातें सुनकर हम लोग हँसते और आपस में कहते कि **"ज्यों-ज्यों दवा करने चले, त्यों-त्यों मरज बढ़ता ही जा रहा है।"** फिर भी हम सब सकुशल रहे, कोई बीमार नहीं हुआ, यही सबसे बड़ा प्रभु का आशीर्वाद रहा। तारंगासिद्धक्षेत्र की वंदना के लिए भी लगभग 80 किमी. एवं अणिंदा पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र के दर्शन हेतु भी 30-40 किमी. बढ़ाये गये।

➢पुरानी शिष्याओं का मिलन—

पूज्य माताजी की सबसे पुरानी शिष्याओं में आर्यिका जिनमती जी, आदिमती जी थीं। दक्षिण भारत की यात्रा के समय माताजी बोली थीं कि कहीं न कहीं जिनमती जी मुझे जरूर मिलेंगी लेकिन 1 फरवरी 1996 को इन्द्रगढ़ (राज.) में पता लगा कि जिनमती माताजी की अत्यधिक रक्तक्षय के कारण 30 जनवरी को समाधि हो गई। शिष्या के वियोग का समाचार सुनकर यद्यपि काफी देर हृदय में विक्षिप्तता रही, फिर अपने तत्त्वज्ञान से उन्होंने हम सबको पुरानी बातें सुनाकर श्रद्धांजलि सभा रखी और धीरे-धीरे सब कुछ सामान्य हो गया।

अब जब माताजी को गुजरात से राजस्थान होकर दिल्ली जाना था, तब वहाँ साबला में विराजमान दूसरी पुरानी शिष्या आदिमती माताजी एवं श्रुतमती माताजी को कहलवाया कि कहीं न कहीं आकर मिलना जरूर है। उधर उन लोगों की तीव्र इच्छा थी अपनी अम्मा से मिलने की। बीच में लोहारिया के प्रमुख श्रावक नाथूलाल सेठ, मगनलाल जैन आदि काफी प्रयासरत थे कि पूज्य माताजी के संघ को हम लोहारिया जरूर ले जायेंगे और वहीं इस वर्ष का चातुर्मास भी करायेंगे किन्तु रूट कुछ इस प्रकार बना कि लोहारिया के साथ-साथ डूंगरपुर, सागवाड़ा आदि विशेष भक्तिमान नगरों के श्रावक भी रोते ही रह गये और माताजी वहाँ न जा सकीं। चूँकि दिल्ली तक की सारी तारीखें पूर्व निर्धारित हो चुकी थीं और इस सौ किलोमीटर के एरिये को बढ़ा देने से सारा प्रोग्राम उलट-पुलट हो जाता, फिर आगे की गर्मी से भी जी घबड़ा रहा था। लम्बी चलाई के कारण हम सब काफी थके भी थे अतः सारी परिस्थितियाँ देखकर माताजी ने भक्तों के दुःख से दुःखी होने के बावजूद भी उन सबको मना कर दिया और सलूम्बर (राज.) में आदिमती माताजी, श्रुतमती जी एवं नवदीक्षित आर्यिका सुबोधमती जी को आने का संदेश भिजवा दिया।

हम लोग इधर केशरिया जी से विहार करते हुए 29 जनवरी 1997 को प्रातः सलूम्बर पहुँचे थे और उधर साबला से विहार करके ये तीनों माताजी 28 जनवरी को सलूम्बर आ गई थीं। सुबह नगर प्रवेश से पूर्व ही ये माताजी रास्ते में आ गईं और अपनी अम्मा से चिपककर सिसक-सिसककर रोने लगीं। माताजी ने उन्हें खूब वात्सल्यपूर्वक देखा और 22 वर्ष से बिछुड़ी शिष्याओं का सुख-दुःख पूछकर उन्हें सांत्वना प्रदान की। दो दिन तक वहाँ उन लोगों के साथ हम सभी को रहने का, विचारों के आदान-प्रदान का मौका मिला। आदिमती माताजी, श्रुतमती माताजी ने पूज्य माताजी की खूब वैयावृत्ति की, उनसे अनेक शिक्षाएँ प्राप्त की तथा पुनः-पुनः गुरुदर्शन की इच्छा व्यक्त करते हुए तीसरे दिन हम लोगों के विहार के पश्चात् वे भी साबला की ओर विहार कर गईं। गुरु-शिष्य का यह रोमांचक मिलन वास्तव में इतिहास का एक अंग बन गया और मेरी मनोभावना प्रबल होकर संकल्प में परिवर्तित हुई कि **"मैं गुरु की छत्रछाया जीवन में कभी नहीं छोडूंगी ताकि जीवित रहते हुए गुरुवियोग का दुःख मुझे सहन न करना पड़े।"**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢क्षुल्लक मोतीसागर जी का अपूर्व समर्पण—

पूज्य माताजी के वर्तमानकालीन संघस्थ शिष्यों में क्षुल्लक मोतीसागर महाराज सर्वाधिक पुराने शिष्य हैं। सन् 1967 में सनावद (म.प्र.) चातुर्मास से माताजी का शिष्यत्व स्वीकार करने के बाद आज तक 40 वर्षों में ब्र. मोतीचंद से क्षुल्लक मोतीसागर बनकर जहाँ आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है, वहीं धर्मप्रभावना के प्रत्येक कार्य में बीजारोपण करने का श्रेय भी इन्हें प्राप्त है। जम्बूद्वीप निर्माण, ज्ञानज्योति रथ प्रवर्तन, अयोध्या विकास, मांगीतुंगी पंचकल्याणक, प्रयाग एवं कुण्डलपुर तीर्थ निर्माण, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार, भगवान महावीर ज्योति रथ प्रवर्तन तथा अन्य-अन्य तमाम कार्य जो पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से हुए, उन सबमें क्षुल्लक मोतीसागर जी का समर्पण सदा अविस्मरणीय रहा है। यद्यपि क्षुल्लक के लिए पदविहार करना मुनि-आर्यिका के समान अनिवार्य नहीं है, फिर भी इन्होंने अयोध्या एवं मांगीतुंगी यात्रा का पूरा प्रवास (लगभग 6 हजार किमी.) पैदल ही करके अपूर्व धर्मप्रभावना का कार्य किया है एवं संघ की व्यवस्था को बहुत ही मनोयोग से संभाला है।

पूज्य माताजी के श्रीचरणों में क्षुल्लक जी की इसी प्रकार से समर्पित भावना सदा बनी रहे तथा इनके स्वस्थ जीवन में सर्वतोमुखी प्रगति हो, यही मेरी मंगल कामना है।

➢ब्र. कर्मयोगी रवीन्द्र जी की कर्मठता—

योग्य व्यक्ति की पहचान उनके कर्मठ व्यक्तित्व से होती है और वे कर्मठ व्यक्तित्व समाज में बिरले लोग ही होते हैं। पूज्य माताजी के संघस्थ कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी उन बिरले नवयुवकों में से ही जैन समाज के क्षितिज पर चमकते अनोखे सितारे हैं, जो विद्वत्ता के साथ-साथ अपूर्व कार्यप्रणाली की क्षमता के धनी हैं। पूज्य माताजी के द्वारा संकल्पित प्रत्येक साहित्यिक, निर्माणात्मक, सृजनात्मक कार्यों को समाज में मूर्तरूप प्रदान करने वाले रवीन्द्र जी से देश की लगभग समस्त जनता परिचित हो चुकी है। उनकी लगनशीलता एवं कर्मठता के फलस्वरूप ही अयोध्या, मांगीतुंगी, प्रयाग, कुण्डलपुर आदि के विशाल कार्य पूज्य माताजी की भावना के अनुरूप सम्पन्न हुए हैं। इसीलिए जहाँ अवध की जनता ने उन्हें अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी का दो बार अध्यक्ष बनाया, वहीं मांगीतुंगी में निर्मित होने वाली 108 फुट उत्तुंग भगवान् ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा निर्माण योजना का भी इन्हें दक्षिण भारत की जनता ने अध्यक्ष बनाया तथा मांगीतुंगी के जटिल कार्य पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न कराने के पश्चात् उधर के अनेक नगरों में रवीन्द्र जी का भावभीना स्वागत हुआ।

➢महाराष्ट्र प्रान्त का ऐतिहासिक महोत्सव—

लघु सम्मेदशिखर के नाम से जाना जाने वाला महाराष्ट्र प्रान्त का सर्वप्राचीन दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी तीर्थ अब सम्पूर्ण भारत के मानस पटल पर उभर कर आ गया है। 55 वर्षों के पश्चात् वहाँ 19 मई से 23 मई 1996 तक पंचकल्याणक महोत्सव एवं तीर्थंकर श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक समारोह जिन आशातीत सफलताओं के साथ सम्पन्न हुआ, उसके लिए वहाँ पधारे धर्म गुरुओं के मंगल आशीर्वाद, दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, अवध आदि प्रान्तों का आर्थिक सहयोग, अनेक कर्मठ कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत, महाराष्ट्र की जनता का अदम्य उत्साह, प्रदेश के दैनिक अखबारों के संपादक एवं संवाददाताओं का प्रचारात्मक सहयोग, प्रादेशिक दूरदर्शन विभाग का सहयोग, जैन पत्र-पत्रिकाओं का सहयोग, प्रतिष्ठाचार्य तथा उनके सहयोगी विद्वानों का वैधानिक सहयोग, पुलिस विभाग, प्रशासन सहयोग आदि अनेक निमित्त दृष्टिगोचर होते हैं।

➢ठण्डे मौसम ने हिल स्टेशन की याद दिला दी—

यहाँ पर सर्वाधिक सहयोग मौसम ने दिया, जिसके लिए आयोजकगण पूर्व से चिंतित थे कि इतनी भीषण गर्मी वाले ज्येष्ठ माह में कितने यात्री यहाँ आएंगे और कैसे गर्मी सहन करेंगे? किन्तु इसे अतिशय चमत्कार ही कहना होगा कि दिन में लू-लपट का नाम नहीं था एवं शाम होते ही मौसम हिल स्टेशन जैसा सुहावना हो जाता था। पिछली रात्रि में तो सभी लोग हल्की रजाइयाँ अथवा मोटी चादरें ओढ़कर चैन की नींद सोते थे, सुबह स्नान में गरम पानी खोजते यात्री अपनी-अपनी बाल्टियाँ लेकर टहलते नजर आते पुनः सभी के मुँह से यही निकलता था कि यहाँ आकर तो शिमला-मसूरी आदि हिल स्टेशन जैसा आनन्द आ रहा है एवं पवित्र तीर्थ की वंदना के साथ ही, गुरुदर्शन तथा पंचकल्याणक महोत्सव देखकर पुण्य संचय भी हो रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢भूमि देवता ने जल समस्या हल कर दी—

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पंचकल्याणक करने में दीर्घकाल से जल की समस्या भी बाधा उत्पन्न कर रही थी, जिसके कारण वहाँ के ट्रस्टी कहा करते थे कि जब तक पानी की व्यवस्था नहीं होगी, तब तक हम लोग महोत्सव कैसे कर सकते हैं? तब 15 दिसम्बर 1995 को पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने कहा कि **"सब चिंता छोड़ दो, जाओ, जहाँ खुदाई करोगे, वहीं पानी निकल पड़ेगा, पंचकल्याणक मई में ही होगा और सब लोग पानी पीकर पानी-पानी हो जायेंगे।"** और हुआ भी यही कि उस पहाड़ी क्षेत्र पर जहाँ पत्थर की चट्टानों में कभी-कहीं पानी नहीं दिखता था, वहाँ भगवान मुनिसुव्रतनाथ एवं माताजी का नाम लेकर बोरिंग कराते ही पानी निकल पड़ा और वह पाइप लाइनों से पूरी जनता तक पहुँचाया गया, जिससे जनता को जल के अभाव का सामना नहीं करना पड़ा।

➢सिद्धक्षेत्र का प्रथम चातुर्मास अपूर्व सिद्धी का प्रतीक बना—

यूँ तो पूज्य माताजी द्वारा त्यागमय जीवन में कदम रखने के पश्चात् उनके अनेक चातुर्मास विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न शहरों एवं तीर्थों पर सम्पन्न हो चुके थे किन्तु उन्होंने अभी तक किसी सिद्धक्षेत्र पर चातुर्मास नहीं किया था, वह संयोग मिला सन् 1996 में 99 करोड़ मुनिवरों की निर्वाणभूमि सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी को।

इसे सिद्धक्षेत्र का अतिशय कहा जाए, आर्यिका श्रेयांसमती माताजी व संघ की प्रबल इच्छा कही जाए या महाराष्ट्र की जनता का भाग्य, नासिक जिले के लोकप्रिय विधायक (आमदार) जयचंद कासलीवाल और डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल (महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष) का अकाट्य पुरुषार्थ कहा जाये, अथवा पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की आन्तरिक भावना?

जो कुछ भी मानें किन्तु उसके पीछे निर्वाणभूमि के प्रति छिपी माताजी की अनन्य भक्ति भावना तो स्वीकार करना ही पड़ेगा क्योंकि आग्रह करते-करते जब एक दिन भक्तों ने इस बात पर माताजी का ध्यान केन्द्रिय किया कि आपका एक चातुर्मास सिद्धक्षेत्र पर भी होना चाहिए, तब उन्होंने चिन्तन किया और हम लोगों से कहने लगीं कि वास्तव में मैंने सन् 1952 के श्रावण मास में घर छोड़ा और तब से आज तक मेरे 44 चातुर्मासों में कोई सिद्धक्षेत्र चातुर्मास स्थल नहीं है। सन् 1963 में सम्मेदशिखर का योग भी आया था किन्तु कलकत्ता वालों के अत्यधिक आग्रह से मैंने 10 दिन में 300 किमी. की तीव्र गति की पदयात्रा करके कलकत्ता पहुँचकर चातुर्मास स्थापित किया था। अब मेरी कुछ इच्छा है कि इस सिद्धक्षेत्र पर एक चातुर्मास कर ही लें।" हम लोगों ने (मैंने, क्षुल्लक मोतीसागर जी और ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने) कहा कि आपकी इच्छा और आदेश के समक्ष हम विनयावनत हैं और हम कुछ भी सुझाव कैसे दे सकते हैं? सबके मिले-जुले योगदान से चातुर्मास मांगीतुगी में हो गया और वह पूज्य माताजी तथा सिद्धक्षेत्र दोनों के जीवन में अपूर्व सिद्धि का प्रतीक बन गया।

➢सहस्रकूट कमलमंदिर एक अपूर्व देन—

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर लगभग 10 वर्ष पूर्व स्व. पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज की प्रेरणा से धातु की एक हजार आठ खड्गासन प्रतिमाओं के निर्माण हेतु दातारों ने पैसे दिए किन्तु वे प्रतिमाएँ अभी निर्मित नहीं हो सकी थीं। गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिकारत्न श्री श्रेयांसमती माताजी की प्रबल प्रेरणा से वहाँ के ट्रस्टीगण मई 1996 तक वे समस्त प्रतिमाएँ जयपुर से बनवाकर ले आये और समय से उनकी प्राण-प्रतिष्ठा भी हो गई।

इसी मध्य जब पूज्य माताजी ने एक दिन आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी से पूछा कि ये सहस्रकूट प्रतिमाएँ कहाँ विराजमान होंगी? तब श्रेयांसमती माताजी ने विश्वहितंकर सातिशय चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर के शिखर पर ले जाकर स्थान दिखाया, जहाँ शिखर में तीन कटनी का गोल छोटा सा चबूतरा बना था, वहाँ जगह इतनी छोटी थी कि अन्दर जाकर तो कोई दर्शन ही नहीं कर सकता था। उसे देखकर माताजी कहने लगीं—

"मुझे ये स्थान सहस्रकूट जिनालय के लिए बिल्कुल पसंद नहीं है। इतनी सुन्दर प्रथम बार निर्मित खड्गासन सहस्रकूट प्रतिमाओं के लिए तो मंदिर अलग से ही बनना चाहिए।"

यह सुनकर श्रेयांसमती माताजी एवं कुछ ट्रस्टी महानुभाव बोल पड़े—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"माताजी ! हम लोगों ने तो अभी तक इस बारे में कुछ सोचा भी नहीं है। आप जैसा चाहें, वैसा मंदिर बनवा दीजिए।"

उस दिन माताजी ने कुछ चिन्तन किया और एक कमल जिनालय का निर्माण करवाकर उसकी 108 पंखुडियों पर ये प्रतिमाएँ विराजमान करने की प्रेरणा दी। ब्र.रवीन्द्र जी से उसकी रूपरेखा बनवाकर क्षुल्लक मोतीसागर महाराज ने 22 मई 1996 को विशाल सभा में ज्यों ही उस मंदिर की घोषणा की, दानदातारों की भीड़ लग गई और शीघ्र ही लाखों रुपये की स्वीकृतियाँ हो गईं। इसके पश्चात् समस्या थी कि मंदिर का निर्माण कैसे और कौन करवाएगा? क्षेत्र पर तो विशाल निर्माणाधीन मुनिसुव्रत मंदिर ही अभी अधूरा पड़ा था, यात्रियों की सुविधा हेतु अनेक वर्षों से स्वीकृत 20 कमरों का निर्माण भी आज तक पूरा नहीं हो पाया था, तो अब बिल्कुल नया काम करवाने की जिम्मेदारी भला कौन लेता? किन्तु सभी ट्रस्टियों की इच्छा थी कि माताजी ने जैसे जगह-जगह नई योजनाएँ साकार करवाई हैं, उसी प्रकार यहाँ भी कोई न कोई नई रचना अवश्य बन जावे।

ट्रस्टियों ने सोच-विचार कर कमल मंदिर के निर्माण का संयोजक डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल को बनाया किन्तु वे भी इतना बड़ा कार्य अक्टूबर तक मात्र 3 महीने के अन्दर करवाने में परेशानी महसूस कर रहे थे। यह सारी प्रक्रिया तथा प्रारंभ में कार्य की रुकावट आदि देखकर पूज्य गणिनी माताजी ने कमल मंदिर के निर्माण की जिम्मेदारी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन के ऊपर डालते हुए कहा कि **"24 अक्टूबर आश्विन शुक्ला त्रयोदशी को शुभ मुहूर्त में कमल की 108 पंखुडियों पर सहस्रकूट की 1008 प्रतिमाएँ विराजमान करना है।"**

इतनी सब बात होने के बाद जगह का पूर्णरूपेण निर्णय हेकर 5 जून 1996 को शिलान्यास उस स्थान पर किया गया, जहाँ तीर्थक्षेत्र के महामंत्री वयोवृद्ध ब्र. गणेशीलाल जी सपरिवार 65 वर्षों से निवास कर रहे थे। उन्होंने स्वेच्छा से अपना अहोभाग्य समझते हुए टूटे-फूटे जीर्ण मकान को छोड़कर नए कमरों में गृहस्थी परिवर्तन कर लिया। उसके बाद 2 जुलाई 1996 को पूज्य माताजी का मालेगांव की ओर ससंघ मंगल विहार हो गया और रवीन्द्र जी हस्तिनापुर चले गये। इस मध्य जीर्ण मकान को गिरवाने, नींव खुदवाने आदि का काम डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल ने द्रुतगति से करवाया पुनः पूज्य माताजी का संघ 26 जुलाई को मांगीतुंगी पहुँच गया। 29 जुलाई (आषाढ़ शु. 14) को पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी, इन दोनों संघों ने वर्षायोग स्थापना की और रवीन्द्र जी ने कमल मंदिर का नक्शा बनवाकर कार्य प्रारंभ करवा दिया। उन्होंने आसाम के कारीगर वासुदेवपाल को 108 पांखुडी बनाने का ठेका दे दिया किन्तु अगस्त के अंतिम सप्ताह तक निर्माण की मंद स्थिति देखकर क्षुल्लक मोतीसागर जी को चिंता हुई और उन्होंने रवीन्द्र जी को परामर्श देते हुए कहा कि "यह मंदिर इस गति से अक्टूबर तक तैयार नहीं हो सकता है। इसे वास्तव में पूरा करने के लिए तुम्हें हस्तिनापुर से अपने कारीगर, सुपरवाइजर आदि को बुलाना पड़ेगा।"

तब रवीन्द्र जी ने तत्काल फोन करके हस्तिनापुर से अपनी पूरी निर्माण की टीम बुलाई और सितम्बर से कार्य तूफानी स्तर पर प्रारंभ हो गया। इस प्रकार 3-4 बार में हस्तिनापुर से सुपरवाइजर (शरीफ अहमद), मिस्त्री, मजदूर, लुहार, बढ़ई आदि लगभग 20-25 व्यक्तियों ने मांगीतुंगी पहुँचकर 20 अक्टूबर 1996 तक बाहर की रेलिंग आदि सहित पूरा "सहस्रकूट कमल मंदिर" तैयार करके क्षेत्र को प्रदान कर दिया, जिसमें 22 से 24 अक्टूबर तक वेदी शुद्धि, प्रतिष्ठा का कार्य हुआ एवं 24 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे प्रतिमाएं विराजमान हो गईं तथा मध्यान्ह 3 बजे मंदिर पर कलशारोहण, ध्वजारोहण द्वारा अतिशय कान्ति का उद्योत होने लगा। मंदिर का उद्घाटन 26 अक्टूबर 1996 को संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन (बंगाली स्वीट सेंटर-दिल्ली) ने किया तथा दोनों संघों के पावन सानिध्य में इस वृहत् कार्य की पूर्णता पर गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वादात्मक उद्बोधन को पाकर जनमानस आल्हादित हो गया।

महाराष्ट्र एवं सुदूरवर्ती प्रान्तों के तमाम तीर्थयात्रियों ने यहाँ पहुँचकर यही कहा कि 3 माह में मांगीतुंगी की तो काया ही पलट गई है। मात्र एक कमल मंदिर की पूर्णता ही नहीं, पूज्य ज्ञानमती माताजी के लगभग 6 माह के प्रवास के अंतर्गत सरकार एवं समाज सभी का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ, जो क्षेत्र की चतुर्मुखी प्रगति का कारण बना। नासिक जिले के लोकप्रिय विधायक (आमदार) श्री जयचंद जैन कासलीवाल ने महाराष्ट्र सरकार की ओर से मांगीतुंगी पर्वत की चोटी तक विद्युत प्रकाश की स्थाई व्यवस्था करवा दी, यात्रियों को धर्मशाला से पर्वत के निकट सीढ़ियों तक जाने हेतु पक्की सड़क पुल का निर्माण भी करवा दिया।

इस प्रकार सिद्धक्षेत्र का यह प्रथम चातुर्मास महाराष्ट्र प्रान्त के लिए अपूर्व सिद्धी एवं प्रसिद्धी में निमित्त बन गया, क्योंकि शासन के अतिरिक्त दिगम्बर जैन समाज का भी आशातीत सहयोग प्राप्त हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢मांगीतुंगी तीर्थ से विहार—

मूर्ति निर्माण की घोषणा से जहाँ एक ओर सभी के हृदय खुशी से अभिभूत हो रहे थे, वहीं पूज्य माताजी के मांगीतुंगी से विहार की घोषणा ने सभी को गंभीर मुद्रा में डाल दिया। पिछले 6-7 महीनों से माताजी के सानिध्य में जो उल्लास एवं उमंग देखने को मिलती थी, सभी को उसके खो जाने का डर था। आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी, उनके संघ की सभी आर्यिकाएँ, पूज्य माताजी के असीमवात्सल्य को पाकर हृदय से अभिभूत थीं। खैर........... चातुर्मास के उपरान्त अपने पूर्व नियोजित कार्यक्रमानुसार पूज्य माताजी ने 14 नवम्बर 1996 को वहाँ से विहार कर दिया एवं 30 मार्च 1997 को संघ सहित भारत की राजधानी दिल्ली पहुँच गईं।

➢आर्यिका माताजी का वात्सल्य भुलाया नहीं जा सकता—

जिस दिन से हम लोगों ने हस्तिनापुर से मांगीतुंगी की ओर विहार किया था, उस दिन से ही मांगीतुंगी में विराजमान पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी के अतिरिक्त आर्यिका श्री सुगुणमती माताजी, आर्यिका श्री चन्द्रमती माताजी, आर्यिका श्री सुदृष्टिमती माताजी, आर्यिका श्री मनोमती माताजी, आर्यिका श्री दक्षमती माताजी आदि आर्यिकाएँ भी अतीव प्रसन्न थीं कि इस निमित्त से हमें पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन एवं उनसे ज्ञानार्जन और दीर्घकालीन अनुभव भी प्राप्त हो सकेगा। हम लोगों की निर्विघ्न यात्रा सम्पन्नता हेतु इन सभी माताओं ने जाप्यादि के अनुष्ठान भी किये थे तथा वहाँ पहुँचने पर इन लोगों के असीम वात्सल्य ने हमारी सारी थकान दूर कर दी थी।

मांगीतुंगी पंचकल्याणक एवं चातुर्मास के प्रवासकाल में पूज्य सभी माताजी के साथ बिताए गए स्वाध्याय, आगमचर्चा, वैयावृत्ति आदि के स्वर्णिम क्षण सदैव याद आते हैं। गणिनी माताजी के प्रति इन लोगों की अगाढ़ श्रद्धा-भक्ति तो थी ही, मुझ लघु दीक्षित आर्यिका व क्षुल्लक मोतीसागर जी के लिए भी सदा विनय, वात्सल्य एवं गुणग्राहकता ही झलकती थी। यही कारण रहा कि हम सबको भी वहाँ का प्रत्येक कार्य जम्बूद्वीप के समान अपना प्रतीत होता था और कठिन से कठिन कार्य करके, लेखन आदि का परिश्रम करके भी हमें थकावट महसूस नहीं होती थी।

वहाँ कुछ अत्यधिक पुराने एवं दकियानूसी विचारों वाली एक आर्यिका मनोमती जी थीं, जो चौके में किसी श्रावक-श्राविका को पॉलिस्टर के कपड़े पहने देख लेतीं या किसी की चोटी में रबड़ बैंड, हाथ में अंगूठी आदि देख लेतीं, तो कभी-कभी बेचैन होकर आहार छोड़ देतीं या काफी हूँ हूँ करके चौके के बाहर से उन्हें भगा देती थीं, तो मैं तथा संघ की ब्रह्मचारिणी बहनें उनके साथ खूब मजाक भी करती थीं लेकिन उन्होंने कभी बुरा न मानकर सदैव मुस्कराहट का ही परिचय देते हुए कहा कि तुम खूब हँस लो, मुझे अच्छा लगता है, परन्तु मैं क्या करूँ? मुझे यह सब देखकर घबड़ाहट होने लगती है।

पूज्य माताजी जब उन्हें समझातीं, तो वे बड़े विनय भाव से कहने लगतीं कि **ऐसी वात्सल्यमयी माँ मुझे बड़े भाग्य से मिली है, इस प्रकार बच्चों के समान प्यार से समझाने वाला मुझे जीवन में कोई नहीं मिला था। आपके जाने के बाद मुझे इस तरह से कौन समझाएगा ?........इत्यादि।''**

इसी प्रकार एक वयोवृद्ध आर्यिका श्री सुगुणमती माताजी दिन में 4-5 बार मंदिर दर्शन करने जातीं, कभी-कभी गिर जाने पर चोट लगने पर भी उन्हें 2-4 बार मंदिर दर्शन के बिना चैन नहीं पड़ती थी, तो क्षुल्लक मोतीसागर जी ने उन्हें 'दर्शनमती' कहना शुरू कर दिया लेकिन वे बिल्कुल भी बुरा न मान कर यही कहती रहतीं कि **''आप लोगों का प्रेम हमेशा याद आएगा तथा आप सभी का दिन भर कार्य करने का जो सुन्दर तरीका है, सामूहिक स्वाध्याय, सामूहिक अध्ययन, संघ का अनुशासन आदि देखकर मन बड़ा प्रसन्न होता है।''**

इस प्रकार आर्यिका श्री सुदृष्टिमती माताजी हमेशा पूज्य गणिनी माताजी के लिए शास्त्रभंडार से शास्त्र निकालना, वैयावृत्ति करना, पिच्छी बनाना आदि प्रत्येक कार्य हेतु हरदम तैयार रहतीं और हम लोगों के सुख-दुःख का भी खूब ध्यान रखते हुए प्रसन्नता का अनुभव करतीं। इन छोटी उम्र वाली माताजी की नवोदित प्रतिभा भविष्य में निश्चित ही गुरु परम्परा वृद्धि में चार चाँद लगाएगी।

चातुर्मास में श्रावण शु. 8 को औरंगाबाद की एक ब्रह्मचारिणी राजाबाई कासलीवाल ने आर्यिका दीक्षा लेकर शैलमती नाम प्राप्त किया। वे भी मांगीतुंगी के इतिहास से जुड़ी एक कड़ी हैं। इन समस्त माताओं से युक्त आर्यिका संघ का वात्सल्य अब तो हमारे जीवन का अविस्मरणीय अंग ही बनकर रह गया है क्योंकि पदविहारी साधुओं का मिलन तो यदा-कदा ही संभव होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢हरियाणा राज्य में प्रेरणादायी प्रतिबंध—

23 मार्च 1997 को हम लोग राजस्थान के "शाजांपुर" के डाकबंगले में ठहरे थे। अगले दिन 24 मार्च को होली थी इसीलिए जगह-जगह शराब की दुकानों पर लोग झूमते नजर आते थे। उस दिन शाम को ठीक 6 बजे राजस्थान प्रान्त की सीमा समाप्त करके "बावल" नामक गाँव के स्कूल में आए तो हरियाणा की सीमा प्रारंभ होते ही वहाँ के लोगों ने बताया कि "माताजी! हमारे हरियाणा में तो सरकार की ओर से कानून लागू है कि शराब पीकर यदि कोई गाड़ी चलाता पाया गया, पीता हुआ कोई सड़क पर देखा गया अथवा शराब की बोतलें लेकर किसी को पकड़ा गया तो उसे सीधे जेल भेज दिया जाता है। इसके साथ ही पूरे हरियाणा में कोई शराब की दुकान नहीं खोल सकता है **यह राजकीय प्रतिबंध है।**"

यह प्रतिबंध सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई और हमने कहा कि यदि इसी प्रकार हर प्रदेशों में ऐसे ही कानून बन जाएं, तो हमारा देश **"सोने की चिड़िया"** की सार्थकता को पा जावे, जिस हरियाणा को हम बहुत बिगड़ा हुआ क्षेत्र माना करते थे, वहाँ बहुत ही सदाचार प्रवृत्ति देखने को मिली। यहाँ तक कि हम लोगों ने होली (दुलहंडी) के मुख्यदिवस पर भी दोनों समय पदविहार किया। रेवाड़ी एवं दिल्ली के श्रावक साथ रहे, कहीं भी किसी प्रकार की समस्या सामने नहीं आई।

➢टूरिंग शिलान्यास—

यूँ तो हम लोग मांगीतुंगी से विहार करते हुए जगह-जगह नई-नई योजनाओं के शिलान्यास करते आए थे। उसी श्रृंखला में हरियाणा प्रान्त भी अछूता नहीं रहा, रेवाड़ी के मॉडल-टाउन एरिया में नवनिर्मित होने वाले मंदिरजी के लिए पूज्य माताजी ने कैलाशपर्वत की वेदी का शिलान्यास संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों को भेजकर करवाया क्योंकि 25 मार्च को वहाँ चैत्र कृष्णा एकम तिथि को पूज्य माताजी का 44वाँ क्षुल्लिका दीक्षा दिवस शहर में मनाया जा रहा था पुनः उसी दिन आगे धारूहेड़ा के लिए विहार भी था किन्तु 26 मार्च को धारूहेड़ा पहुँचते ही चमत्कार की मानो पराकाष्ठा ही हो गई। हुआ यूँ कि धारूहेड़ा में गाँव से बाहर मेन हाईवे रोड पर **"जैन पब्लिक स्कूल"** में पूज्य माताजी व हम सभी को जरा सी देर रोककर देवेन्द्र कुमार जैन नामक वहाँ के श्रावक ने कहा कि पिछले वर्ष यहाँ से जाते समय आपने आशीर्वाद दिया था, तो हमें खूब बड़ी भूमि स्कूल के पार्क हेतु मिल गई है, अब आप ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि हम इस भूमि का अच्छा विकास कर सकें।

पूज्य माताजी हम लोगों के साथ लघु विचार-विमर्श करके बोलीं कि इस पार्क का नाम **"भगवान ऋषभदेव पार्क"** रखो तथा इस पार्क में एक छोटा सा कैलाशपर्वत बनाकर उस पर भगवान ऋषभदेव की पद्मासन प्रतिमा विराजमान करो ताकि दोनों ओर से निकली मुख्य सड़कों पर चलते पथिकों की दृष्टि भगवान् पर पड़े और अनायास ही वे अपने पापों का नाश करने में सफल हो सकें।

धारूहेड़ा के जो 4-5 लोग साथ थे, उन्हें यह प्रस्ताव बहुत अच्छा लगा फिर तो **"शुभस्य शीघ्रं"** वाली नीति सार्थक हो गई और देखते ही देखते कैलाशपर्वत का स्थान निश्चित हो गया, पूज्य माताजी के करकमलों से वहाँ रक्षायंत्र स्थापित करवाने के दृष्टिकोण से गड्ढा खुदने लगा, फिर एक सज्जन बोले कि "माताजी! यदि आप आदेश करें तो शिलान्यास ही हो जाये। मैं अभी 5 मिनट में सारी सामग्री ले आता हूँ।" माताजी की स्वीकृति होते ही सारा समारोह घंटे भर में सम्पन्न हो गया। तब तक गाँव के 20-25 नर-नारी भी वहाँ आ गये थे, क्षुल्लक मोतीसागर जी की प्रेरणा से बोली भी हुईं, तो मिनटों में 1 लाख से अधिक धनराशि एकत्रित हो गई। सभी ने उत्साहपूर्वक कैलाशपर्वत का शिलान्यास किया पुनः माताजी के संघ का 'धारूहेड़ा" गाँव के अन्दर पदार्पण हुआ और आहार के पश्चात् मध्यान्ह प्रवचन करके 4 बजे ही आगे विहार हो गया।

इतना सब देखकर कई नगरों के लोग तो कहने लगते थे कि आपके संघ में यह तो देवोपुनीत जैसी व्यवस्था लगती है कि 2-4 घंटों में ही आपके संघ के माध्यम से समाज को कई प्रकार की उपलब्धियाँ हो जाती हैं। उस दिन तो मैं भी कह उठी कि "माताजी! आप वास्तव में अब **"शिलान्यासमती"** और **"निर्माणमती"** के रूप में ही साकार हो रही हैं क्योंकि अब तो चलते-फिरते शिलान्यास होने लगे हैं।

➢स्वप्नवत् सारा विहार सम्पन्न हो गया—

अपने निश्चित कार्यक्रमानुसार जब हम लोग 30 मार्च 1997 को लालकिला मैदान दिल्ली आ गए, तो संघपति महावीर प्रसाद जी,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनकी पत्नी सौ. कुसुमलता जी, प्रेमचंद जी-खारीबावली, कमलचंद जैन आदि महानुभाव कहने लगे कि माताजी! आज ऐसा लग रहा है, मानो यह सब स्वप्न था। क्या यह वास्तव में सत्य घटना है कि आप लोग 3600 किमी. एक वर्ष में चलकर वापस आ गये हैं?

सत्य को ही स्वप्न समझने में मैं स्वयं भी सम्मिलित हो गई और समझ नहीं आया कि इतनी भारी धर्मप्रभावना के साथ उत्तर से दक्षिण-पश्चिम की सीमाओं को अपने ही पैरों से नाप लेना वास्तव में भगवान ऋषभदेव का जाप्य मंत्र एवं पूज्य माताजी का आशीर्वाद ही हमारा संबल रहा है। पाठकजन इस स्वप्न को पूर्ण सत्य ही मानें और अपने आत्मबल को वृद्धिंगत कर देव-शास्त्र-गुरु के परमभक्त बनें।

➢धर्मगुरुओं से वात्सल्यपूर्ण मिलन—

हस्तिनापुर से मांगीतुंगी एवं मांगीतुंगी से वापस दिल्ली प्रवास तक मध्य में कुछ स्थानों पर दिगम्बर जैन आचार्यों, मुनियों एवं आर्यिकाओं से भी मिलकर अनेक सामयिक विषयों पर चर्चाएं हुईं, वे स्थान और साधु के नाम इस प्रकार हैं—

1. आचार्य श्री विद्यानंद महाराज	—दिल्ली
2. आचार्य श्री सन्मतिसागर महाराज संघ	—दिल्ली
3. आर्यिका कुलभूषणमती माताजी	—महावीर जी (राज.)
4. मुनि श्री सिद्धान्तसागर महाराज	—सवाई माधोपुर (साहू सीमेंट फैक्ट्री)राज.
5. मुनि श्री तरुणसागर महाराज	—कोटा (राज.)
6. मुनि श्री निजानंदसागर महाराज	—इंदौर (म.प्र.)
7. मुनि श्री रयणसागर महाराज	—मांगीतुंगी (महा.)
8. आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी	—मांगीतुंगी (महा.)
9. आर्यिका श्री कीर्तिमती माताजी	—महुवा (गुज.)
10. मुनि श्री कीर्तिधरनंदी महाराज	—अहमदाबाद
11. मुनि श्री हेमंतसागर एवं विरागसागर महाराज	—खेरवाड़ा एवं केशरिया जी (राज.)
12. आर्यिका श्री आदिमती एवं श्रुतमती माताजी	—सलूम्बर (राज.)
13. आचार्य श्री पद्मनंदि महाराज संघ	—देवपुरा (राज.)
14. आचार्य श्री अभिनन्दन सागर महाराज संघ	—उदयपुर (राज.)
15. आचार्य श्री नेमिसागर महाराज	—दिल्ली-लालमंदिर

➢राजनेताओं को मंगल आशीर्वाद—

अनेक नगर एवं शहरों में छोटे-बड़े राजनेता, पुलिस अधिकारी, पटवारी, नगरप्रमुख, सरपंच आदि ने आकर पूज्य माताजी के श्रीचरणों में वंदन कर शुभाशीर्वाद प्राप्त किया है, उनमें से कुछ प्रमुख नेताओं के नाम प्रसंगोपात्त यहाँ दे रही हूँ—

नेता के नाम	कहाँ आए?
1. श्री चरती लाल गोयल (दिल्ली प्रदेश विधान सभा अध्यक्ष)	दरियागंज, दिल्ली
2. श्री मनोहर जोशी -मुख्यमंत्री महाराष्ट्र प्रदेश	मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र
3. श्री जयचंद जैन कासलीवाल (विधायक) महाराष्ट्र	मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र
4. महाराष्ट्र शासन के अनेक विभागीय मंत्री	मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र
5. श्री शंकर सिंह वाघेला (मुख्यमंत्री गुजरात प्रदेश)	अहमदाबाद (गुजरात)
6. श्री कृष्णपाल सिंह-महामहिम राज्यपाल, गांधीनगर (गुजरात)	गुजरात
7. दीप्तीवेनपटेल चेयर मैन महिला उत्कर्ष मंडल, गुजरात	अहमदाबाद
8. आनन्दीबेनपटेल सांसद	अहमदाबाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

9. भावनाबेन दवे (भूतपूर्व मेयर अहमदाबाद)	अहमदाबाद
10. लीलाबेन अध्वर्यु (कार्पोरेटर)	अहमदाबाद
11. श्री दिनेश चंद रावल (चेयरमेन इंडियन काउंसिल ऑफ वेलफेयर)	अहमदाबाद
12. श्री विजय भाई पटेल (सांसद)	अहमदाबाद
13. श्री यतीन भाई ओझा (विधान सभा सदस्य)	अहमदाबाद
14. श्री शांतिलाल चपलोत (राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष)	सलूम्बर (राज.)
15. श्री साहब सिंह वर्मा (मुख्यमंत्री दिल्ली प्रदेश)	लालकिला मैदान, दिल्ली
16. श्री जय प्रकाश अग्रवाल (सांसद)	लालकिला मैदान, दिल्ली
17. कु. पूर्णिमा सेठी (विधायक) दिल्ली	लालकिला, दिल्ली
18. श्री मदनलाल गाबा (क्षेत्रीय विधायक)	ऋषभविहार, दिल्ली
19. डा. हर्षवर्धन (स्वास्थ्य एवं शिक्षामंत्री-दिल्ली प्रदेश)	ऋषभविहार, दिल्ली
20. श्रीमती मिथिलेश जैन (अध्यक्ष पर्यावरण विभाग)	ऋषभविहार, दिल्ली
21. श्री जय प्रकाश अग्रवाल (सांसद)	ऋषभविहार, दिल्ली
22. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन (वित्त राज्य मंत्री भारत सरकार)	सूर्य नगर (गाजियाबाद)
23. श्री वासुदेव कप्तान-विधायक दिल्ली प्रदेश	लालकिला मैदान, दिल्ली

➢राजधानी में प्रवेश के साथ ही कार्यक्रमों का सिलसिला शुरू हो गया—

अब तक दिल्ली वाले भी अच्छी तरह से समझ चुके हैं कि ज्ञानमती माताजी न तो स्वयं खाली बैठती हैं और न वे किसी को जरा भी देर खाली बैठने देती हैं अत: दिल्ली में 30 मार्च 1997 को मंगल प्रवेश होते ही 2 अप्रैल को भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव का विशेष कार्यक्रम दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर एवं अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत के संयुक्त तत्त्वावधान में रथयात्रा एवं दिगम्बर जैन लाल मंदिर में 108 चाँदी के कलशों से भगवान ऋषभदेव का जन्माभिषेकपूर्वक मनाया गया तथा इस वर्ष को "**भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव वर्ष**" घोषित किया गया।

इसी अवसर पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से चाँदनी चौक, दिल्ली में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की इकाई का दीप जलाकर उद्घाटन किया गया। वर्तमान में दिल्ली की विभिन्न कॉलोनियों में उस महिला संगठन की लगभग 50 इकाईयाँ कार्य कर रही हैं।

इसके अतिरिक्त पूज्य माताजी की प्रेरणा से अक्टूबर 1996 में एक साथ चौबीस कल्पद्रुम विधानों का विराट आयोजन हुआ, 22 मार्च 1998 को भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ का प्रवर्तन, अक्टूबर 1998 में हस्तिनापुर में भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, फरवरी 2000 में दिल्ली में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव, अप्रैल 2000 में हस्तिनापुर में तृतीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, जून 2000 में जम्बूद्वीप स्थल पर इतिहासकार सम्मेलन आदि अनेकानेक कार्यक्रम पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में आयोजित किए गए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रयाग तीर्थ की ऐतिहासिक यात्रा

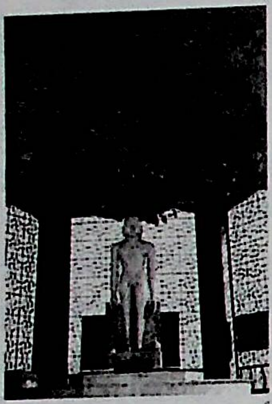

➢प्रयाग तीर्थ की यात्रा ने असली महाकुंभ का रूपक प्रस्तुत किया—

विश्व के क्षितिज पर महाकुंभ नगरी के रूप में विख्यात तीर्थ प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) को कौन नहीं जानता? आध्यात्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वैभव को स्वयं में समेटे यह नगरी गंगा,यमुना एवं सरस्वती नदियों की त्रिवेणी का संगम स्थल है। कहा जाता है कि यहाँ गंगा और यमुना नदियाँ तो बहती हुई आकर मिलती हैं और सरस्वती अदृश्य रूप से इसमें प्रवाहमान है। करोड़ों-करोड़ों हिन्दुओं की आस्था के केन्द्रबिन्दु इस संगम स्थल पर आकर अनेकों हिन्दू श्रद्धालु भक्त इसमें स्नान करके अपने मानव जीवन को धन्य समझते हैं तथा स्वयं को पुण्यशाली मानते हैं किन्तु वास्तव में हम प्राचीन इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हमें ज्ञात होता है कि आज से कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या नगरी में जन्म लेकर जहाँ कर्मभूमि की आदि में प्रजा को जीवन जीने की कला सिखाई, राजनीति, न्यायनीति, वर्णव्यवस्था आदि का सूत्रपात किया, वहीं नीलांजना के नृत्य से वैराग्य को प्राप्त कर इसी प्रयाग की पवित्र धरती पर वटवृक्ष के नीचे प्रथम जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मुनि परम्परा को प्रादुर्भूत किया था और वह वटवृक्ष आज करोड़ों वर्ष बाद भी प्रयाग की भूमि पर अवस्थित रहकर भगवान ऋषभदेव एवं मुनि परम्परा के प्रारंभीकरण की गौरव गाथा का दिग्दर्शन करा रहा है।

महानुभावों! चूँकि उस वटवृक्ष के नीचे घोरातिघोर तपश्चरण कर उन आदिब्रह्मा आदि 1008 नामों से समलंकृत भगवान ऋषभदेव ने सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्ररूपी रत्नत्रयी त्रिवेणी में अवगाहन कर अपनी आत्मा की विशुद्धि कर परमात्म स्वरूप की प्राप्ति की थी और वास्तविक रूप में वही त्रिवेणी संगम के रूप में जाना गया था, जिसमें अवगाहन करके कोई भी प्राणी अपनी आत्मा को परमात्मा बना सकता है परन्तु युग बदला और इतिहास भी बदल गया, सतयुग कलियुग में परिवर्तित हो गया, जिस प्रयाग नगरी के बारे में जैन रामायण-पद्मपुराण में वर्णन आता है—

प्रजाग इति देशोसौ, प्रजाभ्योस्मिन् गतो यतः।
प्रकृष्टो वा कृतस्त्यागः, प्रयागस्तेन कीर्तितः।।281।। (तृतीय पर्व, पृ. 51)

अर्थात् भगवान ऋषभदेव अयोध्या की प्रजा समूह से दूर हो जिस स्थान पर पहुँचे थे, उस स्थान का नाम '**प्रयाग**' प्रसिद्ध हो गया अथवा भगवान ने उस स्थान पर बहुत भारी याग अर्थात् त्याग किया था, इसीलिए उसका नाम ''**प्रयाग**'' प्रसिद्ध हो गया।

उस प्रयाग तीर्थ को लोग कालदोषवश विस्मृत कर बैठे और चूँकि वहाँ प्रति 12 वर्षों में संगम के तट पर महाकुंभ मेला लगता है अतः उस तीर्थ को विश्व महाकुंभ नगरी के रूप में जानने लगा किन्तु युग परिवर्तन के बाद भी धरती की पावनता ने भारत देश को अनेक इतिहासपुरुष प्रदान किए हैं। दक्षिण भारत में जहाँ एक चारित्रचक्रवर्ती ने जन्म लेकर मुनि परम्परा का पुनरुद्धार किया, वहीं उत्तर भारत ने एक चारित्रचन्द्रिका को जन्म देकर संसार की कन्याओं के लिए माता ब्राह्मी का पथ प्रदर्शित किया है। दक्षिण भारत के उस रत्न का नाम था 'चारित्रचक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज' और उत्तर भारत की इस निधि का नाम है—''चारित्र चन्द्रिका गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी'' उन चारित्र चक्रवर्ती गुरुवर को तो मैं अपने चर्मचक्षुओं से देख नहीं पाई किन्तु उनका प्रतिनिधित्व कर रहीं उन चारित्रचन्द्रिका को देखने का हमें पुण्य अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने अपने 53 वर्षीय तपस्वी जीवन में जो सोचा, वह करके दिखलाया। उनके कार्यकलाप देखने से ज्ञात होता है कि उन्हें तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं पंचकल्याणक भूमियों से अत्यधिक लगाव है और वह निरन्तर सभी को यही प्रेरणा देती हैं कि हमें अपना सर्वस्व न्योछावर करके भी इन तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि एवं पंचकल्याणक भूमियों के संरक्षण-संवर्धन, विकास एवं जीर्णोद्धार में लगना चाहिए।

प्रत्येक धरती के गर्भ में उसका भविष्य लिखा हुआ एक अज्ञात कोने में छिपा रहता है और समय आने पर वही जन्मकुंडली बनकर प्रकट होता है, यही घटना प्रयाग तीर्थ के साथ घटी, जब इस पावन तीर्थ को लेकर करोड़ों हिन्दू इक्कीसवीं सदी का प्रथम महाकुंभ मना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहे थे, उस समय पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने नई सदी को नव उपहार के रूप में 'तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ' के रूप में एक अनुपम सौगात भेंट की, जो युगों-युगों तक जैनधर्म की प्राचीनता एवं उसकी यशपताका को जीवन्त रखेगा।

➢भूमि भी नहीं थी और पंचकल्याणक की घोषणा कर दी—

जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण स्वर्णिम इतिहास का एक नवीन पृष्ठ है, जिनका प्रत्येक कदम एक नये तीर्थ के निर्माण का प्रारंभ है, जिनकी विचार परम्परा का प्रत्येक बिन्दु अपने में सागर की गहराइयों को समाहित किए हुए है, जिनकी लेखनी से निकला प्रत्येक शब्द जिनागम का सार है, ऐसी पूज्य माताजी की सर्वतोन्मुखी प्रेरणाएँ सदैव ही हम सभी के लिए आदर्श रही हैं। अगर यह कहा जाए कि ज्ञानमती माताजी की डिक्शनरी में असंभव नाम का कोई शब्द नहीं है, तो कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है।

जनसाधारण के लिए जहाँ यह बात बहुत विशेषता रखती है कि अगर हमें एक छोटा सा घर भी बनाना है, तो हमें भूखण्ड की आवश्यकता होगी किन्तु सरस्वतीस्वरूपा ज्ञानमती माताजी तो योजना के प्रारंभ होते ही उसे मूर्तरूप दे देती हैं, फिर चाहे वह किसी तीर्थ का निर्माण हो अथवा कोई महोत्सव इत्यादि, यही बात प्रयाग तीर्थ के लिए भी लागू हुई कि पूज्य माताजी ने पंचकल्याणक, महाकुंभ मस्तकाभिषेक इत्यादि कार्यक्रमों की तिथियाँ घोषित कर दीं, प्रयाग के लिए विहार का समय निश्चित कर लिया पर आश्चर्य यह कि अभी तीर्थ निर्माण के लिए भूमि ही नहीं क्रय की गई थी! अन्ततोगत्वा समिति के सदस्यों को साथ लेकर भाई रवीन्द्र जी दो-तीन बार इलाहाबाद गए और यह भी पूज्य माताजी का आशीर्वाद और जिनेन्द्र भक्ति की महिमा ही थी कि 2-3 बार के प्रयास में ही इलाहाबाद शहर से 12 किमी. दूर बनारस हाइवे पर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर की ओर से भूमि का क्रय किया गया। 3 जुलाई 2000 का शुभ दिवस इतिहास के पन्नों में अंकित हो गया, जब एक प्राचीन तीर्थ के प्रकटीकरण का शुभ योग आया।

➢तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ का शिलान्यास—

माताजी की प्रेरणा से राजधानी दिल्ली में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष के अन्तर्गत **''कैलाश पर्वत मानसरोवर यात्रा''** का आयोजन चल रहा था। पूज्य माताजी एवं हम सभी उस कृत्रिम पर्वत की वंदना कर जहाँ उन आदिप्रभु को स्मरण कर रहे थे, वहीं भाई जी एवं समिति के कार्यकर्तागण 'तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग' के शिलान्यास हेतु माताजी का आशीर्वाद प्राप्त कर प्रयाग की ओर रवाना हो गए। 4 अक्टूबर 2000, प्रातः 9 बजे की मंगलबेला में शिलान्यास का कार्यक्रम अत्यन्त सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इलाहाबाद मण्डल के मण्डलायुक्त श्री सदाकांत जी का उद्बोधन अत्यन्त उत्साहपूर्वक हुआ। आज माताजी बहुत प्रसन्न थीं, कहने लगीं-''चन्दनामती! जैसे नेताजी सुभाषचंद बोस ने नारा दिया था कि **''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा''** उसी प्रकार वर्तमान में मेरा नारा है कि **''तुम हमें सहयोग दो, हम तुम्हें तीर्थ देंगे।''** उस समय माताजी की उत्कट प्रभुभक्ति देखकर मन में रोमांच हो आया कि जिन चारित्रचक्री गुरु की यह शिष्या हैं, उनकी छाया तो इनमें पड़ना स्वाभाविक ही है। वैसे कई बार अर्थव्यवस्था के कारण कार्यों में रुकावट आ जाती है अन्यथा माताजी की भावनाएँ तो ना जाने कितनी ऊँची हैं, जिससे जैनधर्म आकाश की ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है।

➢एक नहीं तीन-तीन संघपति तैयार हो गए—

दिगम्बर जैन साधुओं के पदविहार की परम्परा अनादिकालीन है। पदविहार की महत्ता एवं आनन्द कुछ अलग है। साधु के पदविहार से समाज में नूतन जागृति आती है। नगर-नगर, डगर-डगर के जनमानस को साधु दर्शन के साथ-साथ जीवन निर्माण की प्रेरणा प्राप्त होती है। जैन ही नहीं, जैनेतर नागरिक को भी साधु की मंगल वाणी सुनने का अवसर सहज ही प्राप्त हो जाता है। वाणी तो मानव दिन भर सुनता है किन्तु बोलने से पहले जिस महापुरुष के जीवन में वाणी का सार अवतरित हो चुका है, उनकी वाणी का प्रभाव अचूक होता है और फिर जिनसंस्कृति की संरक्षिका और संवाहिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के मंगल विहार की बात हो, तो फिर कहना ही क्या!

पूज्य माताजी के मस्तिष्क में जब प्रयाग की ओर मंगल विहार की बात आई और लोगों तक यह बात गई, बस माताजी का मंगल विहार कराने हेतु एक नहीं तीन-तीन संघपति तैयार हो गये। सर्वप्रथम अयोध्या तीर्थ की ओर मंगल विहार करवाने वाले संघपति लाला श्री प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी शाह)-टिकैतनगर वालों ने आकर माताजी से श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया और स्नानादि दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर पूजा-पाठ कर ही रहे थे कि इतने में मेरठ निवासी श्री आनन्द कुमार जैन, (जैन मार्बल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होम) जो काफी दिनों से माताजी से आगामी विहार हेतु संघपति बनने का निवेदन कर रहे थे, आकर साष्टांग माताजी के चरणों में लेट गए और बार-बार निवेदन करने लगे, उधर संघपति महावीर प्रसाद जी तो मन में यही स्वप्न संजोए बैठे थे कि यह सौभाग्य मुझे ही मिलने वाला है। इधर माताजी ने सभी का आग्रह देखकर यही कहा कि जिसका पुण्य होगा, उसे यह अवसर मिल जाएगा और आखिर पुण्य का उदय आया मेरठ निवासी श्री आनन्द जैन (जैन मार्बल होम) का, जिन्होंने प्रयाग यात्रा करवाकर अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करने के साथ-साथ सातिशय पुण्य का संचय कर लिया और इस ऐतिहासिक कड़ी में अपना नाम भी अंकित करा लिया। कुछ दिनों बाद महावीर प्रसाद जी की धर्मपत्नी कुसुमलता जी आकर मुझसे बताने लगीं कि माताजी! जब इन्हें पता लगा कि इस ऐतिहासिक यात्रा का सौभाग्य किसी और को प्राप्त हो गया है, तो यह बहुत रोये। उनकी बात सुनकर यही लगा कि ऐसी विराट व्यक्तित्व की घनी ऐतिहासिक प्रतिभा के लिए अगर एक क्या सौ-सौ संघपति भी आतुर हो उठें, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

➢प्रभु ऋषभदेव के प्रथम मुखावलोकन पूर्वक प्रारंभ हुआ प्रयाग का मंगल विहार—

श्रीभूपाल कवि विरचित 'जिनचतुर्विंशतिका' स्तोत्र में बड़ा ही सुन्दर एवं सजीव वर्णन आया है—

श्री लीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदं,
वाग्देवीरतिकेतनं जयरमाक्रीडानिधानं महत्।
स स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं,
प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनाङ्घ्रिद्वयम्।।

अर्थात् जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल के समय जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करता है, वह बहुत ही सम्पत्तिशाली होता है, पृथ्वी उसके वश में रहती है, उसकी कीर्ति सब ओर फैल जाती है, वह हमेशा प्रसन्न रहता है, उसे अनेक विद्याएँ प्राप्त हो जाती हैं, युद्ध में उसकी विजय होती है, अधिक क्या कहें, उसे सब उत्सव प्राप्त होते हैं। यह जिनेन्द्र दर्शन की महत्ता को प्रकट करने वाला श्लोक है जिसका तात्पर्य है कि जिनेन्द्र भगवान के दर्शन मात्र से ही स्वयमेव बड़े-बड़े कार्यों की सिद्धि हो जाती है।

यह एक अद्भुत ऐतिहासिक संयोग ही रहा कि प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में नवनिर्माणाधीन **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली''** में विराजमान होने वाली भगवान ऋषभदेव की 14 फुट उत्तुंग प्रतिमा जयपुर से प्रयाग के लिए 30 अक्टूबर 2000 को रवाना हो चुकी थीं और माताजी के विहार का शुभ मुहूर्त 1 नवम्बर 2000 का निकला था। 1 नवम्बर को ट्राला दिल्ली से होते हुए जाना था, तो भाई जी के प्रयासों के फलस्वरूप उसे प्रीतविहार लाया गया और पूज्य माताजी ने संघ सहित प्रभु ऋषभदेव का प्रथम मुखावलोकन कर कुछ धार्मिक विधि सम्पन्न कराई। मैंने एवं क्षुल्लक मोतीसागर जी ने ट्राले के अन्दर जाकर प्रतिमा पर स्वस्तिक आदि बनाया। बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में मुखावलोकन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् प्रातः 10 बजे कमल मंदिर से संघ सहित मंगल विहार हुआ और वास्तव में प्रभु के मुखावलोकनपूर्वक प्रारंभ हुआ यह विहार स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने वाला स्वर्णिम पृष्ठ बन गया।

➢विदेशों में भी भगवान ऋषभदेव का नाम पहुँचाया—

नई सहस्राब्दि के प्रवेश पर सम्पूर्ण विश्व में शांति एवं समरसता स्थापित करने हेतु विश्वभर के धर्माचार्यों का **''विश्व शांति शिखर सम्मेलन''** यूनाइटेड नेशन्स द्वारा न्यूयार्क (अमेरिका) में 28 से 31 अगस्त 2000 तक आयोजित किया गया।

उस शिखर सम्मेलन में मुझे पत्र द्वारा ससम्मान आमंत्रित किया गया था परन्तु साध्वी चर्या के नियमों की आबद्धता के कारण मेरा इसमें भाग लेना संभव नहीं था अतः पूज्य माताजी की आज्ञानुसार कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन को भेजने का निर्णय लिया गया। सम्पूर्ण भारतवर्ष से निमंत्रित सौ से अधिक संप्रदाय के धर्माचार्यों के साथ ही दिगम्बर जैन समाज के धर्माचार्य के रूप में ब्र.रवीन्द्र जी का इस शिखर सम्मेलन में भाग लेना मात्र गौरव एवं हर्ष का ही विषय नहीं था, वरन् अनादि निधन शाश्वत जैनधर्म की प्राचीनता एवं इसके सार्वभौम सिद्धान्तों की विश्वभर के लिए उपयोगिता को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में यह नींव का पत्थर सिद्ध हुआ। इस शिखर सम्मेलन में इन्हीं प्रयाग के भगवान ऋषभदेव के चित्र सहित जैनधर्म एवं भगवान ऋषभदेव का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं प्रयाग में होने वाली पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के English Folder के माध्यम से विदेशों तक भगवान ऋषभदेव की धूम मच गई और अनेकों धर्माचार्यों के साथ-साथ विश्व के कोने-कोने से सम्मेलन में पधारे अतिथियों एवं विदेशियों ने जैनधर्म का साररूप ज्ञान प्राप्त किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢प्रीतविहार निवासी चेतनलाल जी का भी पुण्य जागृत हो उठा—

आचार्य पद्मनंदि रचित ''पद्मनंदिपंचविंशतिका'' नामक ग्रंथ में दान का बड़ा ही सुन्दर वर्णन आया है कि—

आयासकोटिभिरुपार्जितमङ्गजेभ्यो
यज्जीवितादपि निजाद्दयितं जनानाम्।
वित्तस्य तस्य सुगतिः खलु दानमेक-
मन्या विपत्तय इति प्रवदन्ति सन्तः।। (पृष्ठ 95, श्लोक 7)

अर्थात् नाना प्रकार के दुःखों से जो धन पैदा किया गया है तथा जो पुत्रों से व अपने जीवन से भी अधिक प्यारा है, उस धन की यदि अच्छी गति है, तो केवल दान ही है। अर्थात् वह धन केवल दान से ही सफल होता है किन्तु दान के अतिरिक्त दिया हुआ धन विपत्ति का कारण है, ऐसा सज्जन पुरुष कहते हैं इसलिए भव्यजीवों को अपना कमाया हुआ धन दान में ही खर्च करना चाहिए।

इस श्लोक का तात्पर्य यह है कि हमें पुण्य योग से चंचला लक्ष्मी की प्राप्ति हुई है, उसका उपयोग हमें उत्तम पात्र के दान में करके आगामी पुण्य का बंध कर लेना चाहिए क्योंकि हमें ज्ञान की प्राप्ति भी पूर्वोपार्जित पुण्य के उदय से हुई है। ऐसा ही पुण्यबंध का सुअवसर दिल्ली-प्रीतविहार निवासी लाला श्री चेतनलाल जी को प्राप्त हुआ। हुआ यूँ कि पूज्य माताजी का ससंघ कमल मंदिर से विहार होकर रात्रि विश्राम चेतनलाल जी के अतीव आग्रह पर उनकी फैक्ट्री पर हुआ पुनः अगले दिन प्रातःकालीन सभा में उन्हें मात्र थोड़ा सा सम्बोधन प्राप्त होते ही उनकी पत्नी श्रीमती सुलोचना जी ने प्रयाग तीर्थ पर निर्मित होने वाले कैलाशपर्वत एवं उसमें विराजमान होने वाली 72 प्रतिमाओं के निर्माण की स्वीकृति प्रदान कर अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करते हुए सातिशय पुण्य का बंध कर लिया क्योंकि शास्त्रों में कहा है—

जो धनिया के बराबर जिनमंदिर बनाकर उसमें सरसों बराबर जिनबिंब विराजमान करते हैं, उनके अनंत पुण्य की कल्पना नहीं की जा सकती है, फिर जो उत्तुंग जिनभवन का निर्माण कराकर जिनबिंब स्थापना कर उनकी प्राणप्रतिष्ठा कराते हैं, उनके अपूर्व पुण्य का वर्णन करने में तो साक्षात् शारदा माता भी सक्षम नहीं हैं।

➢विहिप नेता श्री अशोक सिंघल छोटे से गाँव में आ गए—

दादरी से आगे हम लोग चिटहरा के प्राइमरी स्कूल में ठहरे थे, वहाँ हमें सूचना मिली कि विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष अशोक सिंघल जी पूज्य माताजी के दर्शन करने के लिए यहाँ पधार रहे हैं, छोटे से गाँव के टूटे-फूटे स्कूल के मात्र 2 कमरों में जैसे-तैसे संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों ने व्यवस्था की थी। करीब 10 बजे सिंघल जी आए और 11 बजे तक माताजी से बहुत ही रुचिपूर्वक वार्ता की और प्रयाग के महाकुंभ मेले में नवम धर्मसंसद के मंच पर पधारकर जैनधर्म का प्रतिनिधित्व करने का आग्रह किया। उस समय उनकी मुखमुद्रा से झलकती प्रसन्नता यह स्पष्ट बता रही थी कि राजसी ठाठ से रहने वाले सिंघल जी को उस छोटे से कस्बे में गुरु दर्शन कर अपरिमित प्रसन्नता हुई।

➢विहार के साथ-साथ लेखनी भी चल रही थी—

त्याग और वैराग्य की जीवन्त मूर्ति पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने इस नश्वर शरीर को कुछ न गिनते हुए सदैव धर्मप्रभावना, संस्कृति सुरक्षा, धर्म-धर्मायतनों की रक्षा और जिनवाणी माँ की सेवा में अहर्निश अपने जीवन को समर्पित किया है, तभी आज इनकी सर्वदा प्रवाहमान लेखनी से 200 से अधिक ग्रंथ निःसृत होकर जन-जन में ज्ञान, भक्ति, अध्यात्म व नूतन चेतना का संचार कर रहे हैं। इनके विराट व्यक्तित्व का मूल्यांकन चंद शब्दों में कर पाना कठिन ही नहीं, असंभव सा प्रतीत होता है, डॉ. कस्तूरचंद जैन कासलीवाल-जयपुर ने तो इनकी पहचान बताते हुए कहा है—

ज्ञानमती माताजी तेरी यही निशानी,
एक हाथ में पिच्छी, दूजे में जिनवाणी।।

चाहे तीरथ हो या मंदिर, जंगल हो या शहर, एकान्त स्थान हो या विशाल जनसभा, माताजी की लेखनी धाराप्रवाह संस्कृत भाषा में चलती रहती है। अगर आम आदमी को एक छोटा सा पत्र भी लिखना हो, तो 10 बार सोचता है किन्तु माताजी के मुख में व लेखनी में तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साक्षात् सरस्वती विराजमान हैं, आप कभी भी उनका लिखा कोई भी पेज उठाकर देख लें, कहीं कोई काट-पीट, कोई अशुद्धि नहीं मिल सकती। प्रयाग यात्रा के मध्य दोनों समय विहार चल रहा था, फिर भी माताजी को जैसे ही समय मिलता, वह अपना लेखन कार्य प्रारंभ कर देती थीं। चूँकि भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव नजदीक आ रहा था और माताजी की भावना इस वर्ष में प्रभु महावीर के चरणों में अपनी कोई कृति समर्पित करने की थी अतः उन्होंने भगवान महावीर के 2526वें निर्वाण दिवस के समापन एवं 2527वें वर्ष के प्रारंभ में कार्तिक कृष्णा एकम की तिथि में मंगलाचरणपूर्वक उसका प्रारंभीकरण कर दिया था और उसी को गति प्रदान करने हेतु वे विश्वशांति महावीर विधान के लिए 2600 मंत्र बना रही थीं।

➢ऐतिहासिक जैन स्वर्ण मंदिर के दर्शन किए—

9 नवम्बर 2000 को हम लोग खुर्जा (बुलंदशहर) पहुँचे। यहाँ 2 दिगम्बर जैन मंदिर हैं। मध्यान्ह में संघ सहित दोनों मंदिरों के दर्शन करने गए। बड़ा मंदिर 200 वर्ष पुराना है, यहाँ पूरे मंदिर में कुन्दन का काम है। यह मंदिर भारतवर्ष की एक प्राचीन बहुमूल्य धरोहर के रूप में उत्तरप्रदेश की जैन समाज का गौरव है। यहाँ सोने का काफी बड़ा रथ है, लकड़ी का ऐरावत हाथी है, विशाल शास्त्र भण्डार में हस्तलिखित ताड़पत्र के ग्रंथ हैं। इन शास्त्रों में एक स्वर्णाक्षरों में लिखित तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ देखा तथा मणि एवं स्वर्ण के सुन्दर रंगीन चित्र देखे। उसके पश्चात् छोटे मंदिर के दर्शन किए। वहाँ भी कुन्दन का काम पूरे मंदिर में है। प्राचीन धरोहर एवं जिनसंस्कृति के वैभव का छोटा सा नमूना देखकर मन गद्गद हो उठा। उस समय ताम्रपत्रों को देखते हुए माताजी ने बताया कि—"चंदनामती! इन्हें देखकर मुझे आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की स्मृति हो आई, जिन्होंने अथक परिश्रमपूर्वक ताम्रपत्रों पर धवला ग्रंथ को उत्कीर्ण कराया था। वर्तमान में यह सब हमारे लिए प्राचीन धरोहर के रूप में हैं, जिनकी सुरक्षा करना प्रत्येक जैन श्रावक का कर्त्तव्य है। हम इसे देखकर सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि आज से कुल 100 वर्ष पूर्व हमारी जिनसंस्कृति का वैभव कितना वृहत् रहा होगा किन्तु कालदोषवश काफी कुछ लुप्तप्राय हो गया और अब हमारे पास जो पूर्वाचार्यों की धरोहर है, आचार्य महाराज कहते थे कि हमें अपना सर्वस्व न्योछावर कर उसे बचाना चाहिए।" खुर्जा में एक दिन का प्रवास था चूँकि खुर्जा की खुरचन बड़ी मशहूर है, हमारे साथ चल रहे दिल्ली निवासी पुष्पेन्द्र जी कहने लगे कि माताजी! हमने तो यहाँ की खुरचन खाई भी, स्टॉफ वालों को खिलाया भी और घर के लिए भी बांधकर ले जा रहे हैं। सुनकर हँसी भी आई कि श्रावकों को इन सब चीजों में ही विशेष आनन्द आता है और हम लोग धर्म की खुरचन का स्वाद लेने में खुश होते हैं।

➢एटा के इतिहास में त्रिवेणी संगम की अद्भुत कड़ी जुड़ गई—

एटा शहर में पूज्य मुनि श्री अमितसागर महाराज एवं गणिनी श्री विशुद्धमती माताजी पूर्व से ही विराजमान थीं, आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी की संघस्थ बहनें 2-3 दिन से बराबर पूज्य माताजी के दर्शन हेतु आ रही थीं चूँकि इन लोगों ने अभी तक माताजी को देखा नहीं था अतः मिलने की उत्कंठा से ही दोनों संघ विराजमान थे। 19 नवम्बर 2000 को प्रातः पूज्य माताजी का संघ सहित मंगल पदार्पण भव्य शोभायात्रापूर्वक एटा शहर में हुआ। इन दोनों संघों के साथ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संघ का मिलन सचमुच वहाँ के इतिहास में त्रिवेणी संगम की कड़ी को जोड़ गया। तीनों संघों के पारस्परिक मिलन व वात्सल्य से सारा समाज भावविभोर हो गया तथा पूज्य माताजी के श्रीचरणों में एटा चातुर्मास हेतु बारम्बार निवेदन करने लगा। प्रवेश की इस धर्मसभा में अति उत्साही मुनि श्री अमितसागर महाराज ने माताजी के प्रति बड़े ही सुन्दर शब्दों में कहा कि आज ज्ञानमती माताजी में मुझे नारी के तीन रूप (सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा) दिख रहे हैं, पुनः उन्होंने इसका रोचक विश्लेषण किया।

दो दिवसीय इस प्रवास के मध्य तीनों संघों की आपस में अनेक सैद्धान्तिक चर्चाएं हुईं पुनः 21 नवम्बर को हम जब एटा से निकलने लगे, तो गणिनी विशुद्धमती माताजी थोड़ी दूर तक भेजने आईं और मुनि श्री अमितसागर महाराज के संघस्थ साधुओं ने माताजी से कहा कि-माताजी! ऐसा आशीर्वाद रखना कि आपका भतीजा (अमितसागर जी) खूब धर्मप्रभावना करता रहे और हम लोग उनके बेटे बनकर धर्मसाधना करते रहें। सुनकर मन में बड़ा आल्हाद हुआ पुनः हम वहाँ से कुरावली की ओर विहार कर गए। दरअसल ये मुनि अमितसागर जी आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के शिष्य हैं और धर्मसागर जी एवं ज्ञानमती माताजी एक ही गुरु आचार्यश्री वीरसागर जी के शिष्य हैं, इसीलिए अपने पिता धर्मसागर जी की गुरु बहिन के नाते अमितसागर महाराज ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्हें मजाक में ही बुआ कहकर अपने को इनका भतीजा कह दिया था। इसका आशय तो मात्र उनका माताजी के प्रति गुणग्राहकता का भाव ही था।

➢कन्नौज में दो लाभ एक साथ—

इत्र के लिए देश-विदेश में मशहूर कन्नौज नगरी का भी मानो भाग्य खिल उठा कि कई-कई सौभाग्य उसे एक साथ प्राप्त हो गए। 1 दिसम्बर 2000 को माताजी ने कन्नौज में मंगल प्रवेश किया और अगले दिन पूज्य माताजी को केशलोंच करना था, उसी शाम वहाँ पर माताजी की प्रेरणा से प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रवर्तित "**भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ**" व विशाल ऐरावत हाथी रथ आ पहुँचा।' भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत प्रवर्तित इस रथ का दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि स्थानों पर घूमकर धर्म की विजयपताका को फहराते हुए अब उत्तरप्रदेश में भ्रमण प्रारंभ हुआ था और 2 दिसम्बर को इसका कन्नौज में कार्यक्रम था। मध्यान्ह में पाण्डाल में ही माताजी का केशलोंच हुआ और उसी सभा में समवसरण श्रीविहार की सभा चली। जहाँ कन्नौज निवासी एक ओर केशलोंच का वैराग्यवर्धक दृश्य देखकर अभिभूत हो रहे थे, वहीं समवसरण के दर्शन कर प्रसन्न हो रहे थे। स्वयं माताजी भी आज बहुत प्रसन्न थीं क्योंकि दिल्ली से समवसरण प्रवर्तन के बाद आज प्रथम बार पूज्य माताजी को समवसरण के दर्शन हुए थे अतः माताजी का उपवास होने के बाद भी वे जुलूस में साथ-साथ चलीं। वस्तुतः जिनेन्द्र भगवान की भक्ति पूज्य माताजी के अन्दर कूट-कूट कर भरी है। इससे उनमें आत्मशक्ति आ जाना सहज सी बात है।

➢तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ पर जिनमंदिरों का शिलान्यास हुआ—

प्रयाग तीर्थ की ओर विहार करते हुए संघ का मंगल पदार्पण औद्योगिक नगरी (कपड़ा उद्योग) के रूप में मशहूर कानपुर शहर में हुआ। जहाँ 10 दिसम्बर 2000 को प्रयाग में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के संदर्भ में एक मीटिंग रखी गई, जिसमें स्थान-स्थान से अनेकों लोग पधारे। इस सभा में श्रीप्रकाश जायसवाल (सांसद एवं उ.प्र. कांग्रेस अध्यक्ष) भी पधारे और अपने सुन्दर विचार व्यक्त किए। 11 दिसम्बर को प्रयाग तीर्थ पर निर्मित होने वाले जिनमंदिरों का शिलान्यास समारोह का कार्यक्रम था अतः कार्यकर्ताओं का एक समूह एवं अनेक भक्तगण सभा के पश्चात् प्रयाग की ओर रवाना हुए।

तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग में 11 दिसम्बर, मगशिर शुक्ला पूर्णिमा के दिन भव्य शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें 14 फुट पद्मासन भगवान की 51 फुट ऊँचे कैलाशपर्वत पर बनने वाली वेदी, दीक्षाकल्याणक तपोवन, समवसरण मंदिर, कीर्तिस्तंभ, गणिनी ज्ञानमती निलय एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हेतु मंच निर्माण के शिलान्यास सम्पन्न हुए। जिस-जिस ने भी इस समसामयिक कार्य के बारे में सुना, उसने खूब प्रशंसा करते हुए कहा कि शीघ्र ही यह अद्वितीय तीर्थ भारत की धरोहर बनने जा रहा है।

➢न्यायालय की नगरी इलाहाबाद में हुआ मंगल प्रवेश—

अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं को अपने गर्भ में समेटे इलाहाबाद नगरी वर्तमान में उत्तरप्रदेश के उच्च न्यायालय के रूप में बहुत प्रसिद्ध है, जहाँ की हाईकोर्ट में आकर व्यक्ति को सर्वदा न्याय प्राप्ति की आशा रहती है। 1 नवम्बर 2000 को दिल्ली से पदविहार कर, प्रयाग तीर्थ को अपना लक्ष्य बनाकर हम संघ सहित अपनी मंजिल के आखिरी पड़ाव पर आ गये थे। यूँ तो जैन साधु का कोई नियत स्थान नहीं होता, पर जिस लक्ष्य से विहार करते हैं, उसकी सिद्धि हो जाने पर निसर्गतः प्रसन्नता होती ही है।

29 तारीख को प्रातःकाल इलाहाबाद की ही एक कालोनी प्रीतमनगर में श्री पी.के. जैन (वकील) के निवास पर आहार हुआ और आहार व सामायिक के पश्चात् 12.15 बजे इलाहाबाद की जीरोरोड स्थित जैन धर्मशाला में मंगल पदार्पण हेतु वहाँ से विहार हुआ। आज इलाहाबाद के नागरिकों का उत्साह देखते ही बनता था, ऐसा लग रहा था कि उन्हें कोई अनमोल निधि मिल गई हो। 2 बजे प्रयाग होटल के पास से जुलूस प्रारंभ हुआ। जैन विद्यालय के 500 बच्चे हाथों में सुन्दर-सुन्दर सूक्तियों के बैनर लेकर चल रहे थे, स्थान-स्थान पर लगे बैनर जन-जन की माताजी के प्रति श्रद्धा को दर्शा रहे थे। स्वरूपरानी पार्क-जीरोरोड के पाण्डाल में हुई धर्मसभा में मुख्य अतिथि श्री के.पी. श्रीवास्तव, इलाहाबाद के मेयर तथा विधानसभा अध्यक्ष के साथ-साथ अनेक जैन-अजैन लोग एक बार माताजी के दर्शन की लालसा से अपार जनसमूह के रूप में उपस्थित हुए थे। वास्तव में पूज्य माताजी के बारे में कही हुई ये पंक्तियां कितनी सार्थक हैं—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यूँ तो कितनी हो चुकीं और कितनी होंगी माताएँ हैं।
जिनकी तप-त्याग-तपस्या से, गौरवमय दशों दिशाएँ हैं।।
पर वर्तमान में ज्ञानमती, माता सी कोई न माता हैं।
जिनके चरणों में दो क्षण को, दुःख को भी सुख मिल जाता है।।

➢प्रथम दर्शन कर अमूल्य कृति भेंट की—

जैनधर्म के अनुसार वीर नि.सं. सर्वाधिक प्राचीन होने से भगवान महावीर के निर्वाण प्राप्ति का अगला दिवस कार्तिक शुक्ला एकम् वर्ष का प्रारंभ अर्थात् नया वर्ष माना जाता है परन्तु वर्तमान में ईसवी सन् अधिक प्रचलन में है अतः 1 जनवरी को सम्पूर्ण भारत में इसे ही वर्ष का प्रथम दिवस मानकर लोग नाना प्रकार से उसे मनाते हुए अपनी खुशियाँ प्रकट करते हैं। अनेकों प्रकार से ग्रीटिंग्स, गिफ्ट आइटम का अपने प्रियजनों में आदान-प्रदान व पार्टी देना आदि एक साधारण सी बात है परन्तु दिगम्बर जैन साधु-साध्वी जो परम पिता परमेश्वर, माँ जिनवाणी तथा जिनधर्म को अपना सर्वस्व मानते हैं, उनके लिए प्रत्येक दिवस का शुभारंभ जिन मुखावलोकन से होता है और किसी विशेष दिवस में भी वह प्रभुभक्ति व जिनधर्म प्रभावना को ही मुख्यता देते हैं, फिर चाहे वह रक्षाबंधन हो या दीपावली, वर्ष का प्रारंभ दिवस हो या अन्य कुछ।

फिर भी हमारे नव वर्ष 2001 के नूतन वर्ष प्रथम दिवस का शुभारंभ निर्माणाधीन तीर्थराज प्रयाग में मंगल प्रवेश एवं तीर्थंकर ऋषभदेव के प्रथम दर्शन से हुआ। हुआ यूँ कि हम लोगों ने 1 नवम्बर 2000 को दिल्ली से विहार करके 29 दिसम्बर को प्रयाग शहर में प्रवेश किया। 58 दिवसीय इस विहार के पश्चात् इलाहाबादवासियों के अतीव आग्रह पर 3 दिन जैन विद्यालय में रहने के बाद 1 जनवरी 2001 को प्रातः 8 बजे वहाँ से चलकर 13 किमी. दूर बनारस हाइवे रोड पर निर्माणाधीन **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ''** पर 11.15 पर मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ आकर परम आल्हाद के कारण हर्ष के अश्रु आ गए, देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि ब्र.रवीन्द्र जी के कुशल नेतृत्व में सारा निर्माण कार्य खूब जोरों से चल रहा है। उस समय तीर्थ क्षेत्र पर प्रवेश कर प्रतिष्ठेय जिनप्रतिमा का प्रथम दर्शन कर माताजी ने अपनी नूतन कृति के रूप में भगवान ऋषभदेव के श्रीचरणों में **''विश्वशांति महावीर विधान''** को समर्पित कर परम आल्हाद का अनुभव किया। कार्तिक कृष्णा अमावस 27-10-2000 को मंगलाचरणपूर्वक प्रारंभ किए गए अतिशयकारी महाविधान का लेखन 1-1-2001, वीर नि. सं. 2527, पौष शु. षष्ठी को पूर्ण हुआ। 66 दिन तक लिखी गई 135 पृष्ठों की इस कृति में अन्तर्ज्ञान से निकले शब्द इनकी कार्यसिद्धि में कारण तो बने ही, निराबाध चलने वाले इस लेखन के मंत्रों ने हम सभी को शक्ति प्रदान की, तभी व्यापक प्रभावनापूर्वक यह यात्रा सम्पन्न हुई और इस धरा को दीक्षास्थली तीर्थ जैसी महान उपलब्धि हुई।

➢एक अजैन व्यक्ति ने भी महान पुण्य का संचय कर लिया—

स्वामी समन्तभद्राचार्य ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार नामक ग्रंथ में दान का बड़ा सुन्दर महत्व बताया है—

क्षितिगतमिव-वटबीजं, पात्रगतं दानमल्पमपि काले।
फलतिच्छायाविभवं, बहुफलमिष्टं शरीरभृताम्।।

जिस प्रकार वट का बीज बहुत छोटा होता है परन्तु उस छोटे बीज से इतना विशाल वृक्ष होता है कि जिसकी छाया में हजारों पुरुष बैठ सकते हैं, उसी प्रकार पात्रों को भक्तिपूर्वक दिया हुआ थोड़ा भी दान विशिष्ट फल को देता है।

दान देते समय दातार के इतने विशुद्ध परिणाम होते हैं, जिसकी तुलना नहीं की जा सकती है। उन्हीं विशुद्ध परिणामों के कारण जिस जीव के कुगति बंध होकर परभव संबंधी आयु का बंध यदि नहीं पड़ा है, तो वह कुगति बंध को छेदकर सुगतिबंध को कर लेता है। और तो क्या? दान देने की अनुमोदना करने वाले भी भोगभूमि जैसे उत्तम क्षेत्र में जाकर जन्म धारण करते हैं, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण आहारदान देने वाले राजा वज्रजंघ, रानी श्रीमती के साथ-साथ सिंह, सूकर, नेवला, बंदर जैसे पशु थे, जिन्होंने अनुमोदनामात्र से उत्तम भोगभूमि प्राप्त की।

दीक्षास्थली तीर्थ पर यूँ तो निर्माणकार्य द्रुतगति से चल रहा था किन्तु अभी वहाँ ठहरने जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी। दिन में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी और हम लोग वहाँ जाकर एक छोटे से कपड़े के टेंट में रुक जाते थे और माताजी सामायिक, ध्यान व अनेकों जाप्यादि वहाँ करती थीं, प्रतिदिन ब्रह्मचारिणी बहनें भगवान को वहाँ विराजमान करके विधानपूजा करती थीं किन्तु संगम का तट और अत्यधिक सर्दी होने से खुले में रहना वहाँ के कार्यकर्ताओं को इष्ट नहीं था अतः उन्होंने माताजी से बार-बार यही आग्रह किया कि अभी आप कुछ दिन इलाहाबाद शहर में रुकिए परन्तु मेरी विशेष इच्छा थी कि हम लोग अब यहीं तीर्थ पर ही रुकें। संयोगवश शहर से नवगठित अ.भा.दि. जैन महिला संगठन-इलाहाबाद इकाई की अध्यक्षा-श्रीमती साधना जी माताजी के दर्शनार्थ वहाँ आई थीं, हम लोगों की इच्छा देखकर उन्होंने पास के ही एक अजैन गृहस्थ के पास जाकर बातचीत की। भव्यपरिणामी उस गृहस्थ ने खुशी-खुशी अपने छोटे से घर के तीन कमरे खाली करके महान पुण्य का संचय कर लिया। शीघ्र ही संघस्थ ब्र. बहनों ने वहाँ जाकर सफाई करके रात्रि विश्राम की व्यवस्था कर दी और हमारा कई दिनों तक रात्रिकालीन प्रवास उसके घर में रहा। वहीं पास में ही एक और अजैन के काफी पुराने मकान में भूसे से भरे दो कमरे थे, जब ब्र. बहनों ने उनसे जाकर बात की, तो वह भी अपने कमरे खाली करने को तैयार हो गया और उसमें बहनों ने अपने ठहरने व चौके की व्यवस्था की।

➢लोक निर्माण राज्यमंत्री माताजी के दर्शनार्थ पधारे—

दीक्षास्थली तीर्थ पर पदार्पण के साथ ही पूज्य माताजी के दर्शनार्थ अनेक नेतागण, प्रशासनिक अधिकारी एवं अनेकों संस्थाओं के प्रतिष्ठित पदाधिकारियों का आवागमन प्रारंभ हो गया। 2 जनवरी 2001 को इलाहाबाद निवासी भाजपा नेता श्री सुनील कुमार जैन के साथ लोकनिर्माण राज्यमंत्री श्री राकेश दत्त तिवारी आये और उन्होंने लोकनिर्माण विभाग द्वारा महाकुंभ मेला परिसर में होने वाले **''भगवान ऋषभदेव सनातन संस्कृति संगम''** में अनेकों प्रवेश द्वार एवं बोर्डों पर जैन तीर्थ दीक्षास्थली का नाम लिखवाने की बात कही।

इससे पूर्व गोवंश रक्षा एवं मांस निर्यात विरोध परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री के.एल. गोधा जी-उदयपुर (राज.) कई बार माताजी के पास आकर कुंभ मेले में जैन शासन की प्रभावना करने हेतु बार-बार आग्रह कर रहे थे। अभी भी उनका आना बराबर चालू था और विशेष आग्रह कर आखिरकार उन्होंने मेला परिसर में जैनधर्म की प्रभावना हेतु 4 दिवसीय कार्यक्रम की स्वीकृति प्राप्त कर ली और बहुत प्रसन्न होकर इस कार्य में लग गए।

➢कैलाशपर्वत पर विराजमान हुईं भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा—

दीक्षास्थली तीर्थ परिसर के बीचोंबीच में भगवान ऋषभदेव की निर्वाणस्थली को भारत भू पर साकार कर जन-जन को उसका सहजता-सुलभता के साथ दर्शन करवाने हेतु कैलाशपर्वत की प्रतिकृति का निर्माण कार्य भी द्रुतगति से चल रहा था, 17 जनवरी के पावन दिवस, माघ कृष्णा अष्टमी को 51 फुट ऊँचे निर्माणाधीन कैलाशपर्वत के ऊपर निर्मित की गई वेदी पर पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में क्रेन द्वारा मूर्ति चढ़ाने की प्रक्रिया अपरान्ह 3 बजे से प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम जिस कमल पर श्रीजी को विराजमान करना था, उसे चढ़ाया गया पुनः 18 जनवरी को मध्यान्ह 11.5 बजे क्रेन द्वारा ही भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा कमलासन पर विराजमान की गई, ज्यों-ज्यों प्रतिमा जी ऊपर चढ़ रही थीं, त्यों-त्यों भक्तों के जयकारों से सम्पूर्ण आकाशमंडल गुंजायमान हो रहा था, प्रतिमा विराजमान होते ही पूज्य माताजी की आंखों से हर्षाश्रु छलकने लगे, तब मुझे लगा कि मानो आज हमारी यात्रा पूर्ण हुई है, जिन आदि प्रभु के सर्वोदयी-अहिंसामयी सिद्धान्तों एवं जैनधर्म की प्राचीनता के दिग्दिगन्त्व्यापी प्रचार-प्रसार के लक्ष्य को लेकर हम निकले थे, वह दिन अब दूर नहीं है। अब यह तीर्थ जिनधर्म की सांस्कृतिक धरोहर बनकर विश्व के क्षितिज पर उदीयमान सूर्य की भांति चमकेगा और सम्पूर्ण विश्व में जैनधर्म एवं तीर्थंकरपरम्परा की कीर्तिध्वजा लहराएगी।

➢प्रयाग के महाकुंभ मेले में प्रथम बार जैनधर्म का प्रतिनिधित्व—

यह भी स्वर्णिम इतिहास का निर्माण ही कहा जाएगा, जब प्रयाग के विश्वप्रसिद्ध 12 वर्षीय महाकुंभ मेले में प्रथम बार जैनधर्म का प्रतिनिधित्व पूज्य माताजी ने किया। कई माह पूर्व से विश्व हिन्दू परिषद की उच्च स्तरीय समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा निवेदन किए जाने पर माताजी ने परिषद द्वारा आयोजित **''धर्म संसद''** (नवम) में संघ सहित अपना सानिध्य प्रदान करने की स्वीकृति दी पुनः तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं गोवंश रक्षा तथा मांस निर्यात विरोध परिषद के संयुक्त तत्वावधान में कुंभ मेला परिसर में जैनधर्म का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

18 जनवरी 2001 को भगवान की मूर्ति कैलाशपर्वत पर विराजमान करने के पश्चात् गाजे-बाजे एवं जयघोषों के बीच 108 कलशों को मस्तक पर धारण किए हुए इन्द्राणियों तथा सैकड़ों स्कूली बच्चों (जैन विद्यालय, प्रयाग) सहित जुलूस में भगवान को पालकी में विराजमान करके माताजी एवं हम सभी ने संघ सहित महाकुंभ मेला परिसर में प्रवेश किया। जहाँ **''ऋषभदेव मण्डप''** में झण्डारोहण तथा भगवान का पंचामृत अभिषेक एवं महाशांतिधारा सम्पन्न की गई तथा प्रतिदिन मध्यान्ह में संघस्थ बहनों एवं प्रो. टीकमचंद जैन-दिल्ली द्वारा अनेकों विधानों का आयोजन किया गया, जिसमें जैनसमाज के अलावा अजैनों ने भी पधारकर जैनधर्म की महिमा को जाना।

➢भगवान ऋषभदेव सनातन संस्कृति संगम—

19 जनवरी 2001 को मेला परिसर में मंगल प्रवेश के साथ ही विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ता हमें अपने पाण्डाल में ले गए। उस समय मैंने सिंघल जी के आग्रह विशेष पर आज के विश्व की सबसे ज्वलंत समस्या आतंकवाद से निपटने हेतु भगवान ऋषभदेव की अहिंसामयी नीति एवं आपसी बन्धुत्व तथा संगठनरूप शक्ति पर धर्मसंसद के मंच से समस्त साधु-सन्तों के बीच प्रकाश डाला, जिसे सुनकर उन्हें लगा कि अहिंसा ही एक ऐसा प्रबल साधन है, जिसके द्वारा हम विश्व में शांति व मैत्रीभाव की पुनर्स्थापना कर सकते हैं।

वास्तव में अहिंसा धर्म का जितना सूक्ष्म विवेचन आचार्यों ने जैनधर्म में किया है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकता है। 20 जनवरी को माताजी ने इसी मंच से भगवान ऋषभदेव को मानवीय संस्कृति का प्रथम प्रतिपादक सिद्ध करते हुए जब उनके सर्वोदयी सिद्धान्तों को विश्वशांति के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक बताया, तो अपार जनसमूह ने भगवान के जयघोषों से समस्त परिसर को गुंजायमान कर दिया। अगर यह कहा जाए कि महाकुंभ मेले के मध्य जैनधर्म के इस जगमगाते सूर्योदय ने युगों-युगों के लिए शाश्वत इतिहास का निर्माण कर दिया, तो शायद कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं होगी।

➢मेला परिसर के जैन पाण्डाल में 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाए गए—

यह एक अनहोना संयोग था, जब मेला परिसर के मध्य प्रथम बार जैनमंच से भगवान ऋषभदेव का निर्वाण महोत्सव इतनी धूमधाम से मनाया जा रहा था। निर्वाण दिवस की पूर्व संध्या पर 21 जनवरी को इसी मण्डप में विशिष्ट अतिथियों के बीच जब 1008 निर्वाण लाडू चढ़ाए गए, तो उपस्थित जनसमूह के उत्साह एवं भक्तिभाव की धारा ने करोड़ों वर्ष पूर्व का इतिहास सजीव कर दिया।

भक्ति आयोजन से गद्‌गद हुए संघपति लाला महावीर प्रसाद जी बोले— माताजी ! मेरी सभी को 1008 थाल एवं लाडू बांटने की भावना है पुनः उन्होंने माताजी की आज्ञा पाकर जैन-अजैन सभी को थाल एवं लाडू वितरित किए तथा कलश यात्रा में 108 महिलाओं को कलश, साड़ियाँ आदि भेंट की। विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक सिंघल, भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री गुमानमल लोढ़ा, आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी, गोवंश रक्षा एवं मांस निर्यात विरोध परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-श्री के.एल. गोधा-उदयपुर, श्री हुकुमचंद साबला-इंदौर आदि महानुभावों की उपस्थिति एवं जैन संस्कृति तथा भगवान ऋषभदेव पर हुए उनके ओजपूर्ण संभाषणों से सभा अत्यन्त गरिमामयी वातावरण में सम्पन्न हुई। इस चतुर्दिवसीय कार्यक्रम में भगवान ऋषभदेव चित्र प्रदर्शनी के सैकड़ों चित्रों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, व्यसनमुक्ति, अहिंसा धर्म एवं भगवान ऋषभदेव-महावीर स्वामी के जीवन दर्शन से जनसाधारण को परिचित कराया गया।

पुनः नवनिर्मित प्रयाग तीर्थ में भी माघ कृष्णा चतुर्दशी को **''भगवान ऋषभदेव निर्वाणकल्याणक दिवस''** पर निर्वाणलाडू चढ़ाया गया।

➢साकार होता तीर्थ का विकसित स्वरूप—

मात्र कुछ माह की ही अल्पावधि में विकसित स्वरूप प्राप्त करते दीक्षास्थली तीर्थ को जब पूज्य माताजी जैसी महान साध्वी का सानिध्य प्राप्त हुआ, तो वह उनके द्वारा प्रवाहित अजस्र ज्ञानधारा में अक्षयवट की भांति अभिसिंचित होकर देश-विदेश को अपनी ज्ञानछाया से संतृप्त करने लगा और अब तो देखते ही देखते वह समय भी आ गया, जब सभी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा कर उन्हें जगत्पूज्य भगवान बनाना था। अतः पूज्य माताजी की प्रेरणा से ब्र. रवीन्द्र जी व अन्य कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा 4 फरवरी से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

8 फरवरी 2001 तक "**भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक**" का विराट आयोजन किया गया, जिसका झण्डारोहण 29 जनवरी 2001 को माताजी के अनन्य भक्त श्री अनिल जैन (कमल मंदिर)-प्रीतविहार, दिल्ली ने किया। 4 फरवरी से 8 फरवरी तक गर्भ, जन्म, दीक्षा आदि पांचों कल्याणकों का दिग्दर्शन कराया गया तथा समस्त आगमोक्त अंतरंग क्रियाएं सम्पन्न कर पाषाण प्रतिमा को जगत्पूज्य बनाया गया।

➢तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ का लोकार्पण—

4 फरवरी 2001 को मध्यान्ह 1 बजे केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री (भारत सरकार) श्री मुरली मनोहर जोशी एवं उ.प्र. लोक निर्माण राज्यमंत्री श्री राकेश दत्त त्रिपाठी पूज्य माताजी के दर्शन हेतु पधारे और जोशी जी ने तीर्थ का लोकार्पण कर परम प्रसन्नता व्यक्त की। उन्हें जब हम लोगों ने अपने प्रवचन के माध्यम से इस तीर्थ की महत्ता, जैनधर्म की प्राचीनता एवं पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से लोगों को दिग्भ्रमित किए जाने वाले अंशों के बारे में बताया तो वे बोले—

माताजी! मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि आपकी प्रेरणा से जिस तीर्थ का निर्माण हुआ है मुझे उसके लोकार्पण हेतु आने का सुंअवसर मिला। जरूर हमने पिछले जन्मों में कुछ अच्छे कार्य किए होंगे, जो हमें भारत के आध्यात्मिक संतों की पुण्य साधना एवं तपस्या का फल मिलता है। जैनधर्म शाश्वत धर्म है, वह किसी जाति सम्प्रदाय का नहीं बल्कि मानवधर्म है। माताजी से चर्चा होने पर मेरे ध्यान में बात आई और मैंने पुस्तकों को देखा, सभी धर्मों के वास्तविक अंशों की सत्यता रहे, किसी धर्म के मानने वालों को चोट न पहुँचे, असंतोष व अपमान न हो, इस बात का ध्यान रखते हुए आगे आने वाले पाठ्यक्रम में निश्चित बदलाव होगा।

➢संगम के जल से हुआ प्रभु का जन्माभिषेक—

प्रयाग में पंचकल्याणक के मध्य 5 फरवरी को सौधर्म इन्द्र श्री आनन्द कुमार जैन-मेरठ अपने इन्द्र परिवार के साथ संगम के तट से जल लाने हेतु ऐरावत हाथी पर बैठकर भव्य जुलूस के साथ वहाँ गए, उस समय संगम तट पर गीत, भजन, नृत्यपूर्वक निकली उस शोभायात्रा का दृश्य ही अलौकिक था, वह जुलूस संगम के तट पर जाकर एक सुन्दर सी कतार में पंक्तिबद्ध हो गया, जो कि सचमुच के जन्माभिषेक जैसा आभास करवा रहा था। सभी इन्द्र-इन्द्राणी कलशों में संगम का जल भरकर पुनः भव्य जुलूसपूर्वक वापस आए और तीर्थ परिसर में नवनिर्मित पाण्डुकशिला पर जिनशिशु का 108 कलशों से न्हवन कर शचि (श्रीमती अलका जैन-मेरठ) ने तीर्थंकर शिशु को वस्त्राभरणों से अलंकृत कर माता-पिता को सौंप दिया।

➢तीर्थंकर भगवान का जन्माभिषेक मुनियों द्वारा भी दर्शनीय है—

प्रसंगोपात्त यहाँ एक बात अवश्य बताना चाहूँगी। चूंकि विषय चल रहा है तीर्थंकर भगवान के जन्माभिषेक का और वर्तमान में कुछ साधु यह कहकर जन्मकल्याणक महोत्सव के जुलूस एवं पाण्डुकशिला पर होने वाले जन्माभिषेक को देखने नहीं जाते हैं कि "**साधुओं को मात्र दीक्षाकल्याणक आदि में जाना चाहिए, जन्मकल्याणक में वे भाग नहीं ले सकते हैं।**" इस विषय में आगम में प्रमाण मिलता है कि चारणऋद्धिधारी मुनि भी जिनेन्द्र भगवान का जन्माभिषेक बड़े भक्ति-भाव से देखते हैं। जैसा कि महापुराण नामक आर्ष ग्रंथ में वर्णन आया है—

सानन्दं त्रिदशेश्वरैः सचकितं देवीभिरुत्पुष्करैः,
सत्रासं सुरवारणैः प्रणिहितैराक्तादरं चारणैः।
साशङ्कं गगनेचरैः किमिदमित्यालोकितो यः स्फुरन्,
मेरोर्मूर्द्धिन स नोऽवताज्जिनविभोर्जन्मोत्सवाम्भः प्लवः।।216।। (पर्व 13)

अर्थात् मेरुपर्वत के मस्तक पर स्फुरायमान होता हुआ जिनेन्द्र भगवान के जन्माभिषेक का वह जलप्रवाह हम सबकी रक्षा करे, जिसे कि इन्द्रों ने बड़े आनन्द से, देवियों ने आश्चर्य से, देवों के हाथियों ने सूंड ऊँची करके बड़े भय से, चारण ऋद्धिधारी मुनियों ने एकाग्रचित्त होकर बड़े आदर से और विद्याधरों ने "यह क्या है" ऐसी शंका करते हुए देखा था।"

इससे सिद्ध होता है कि वर्तमान के दिगम्बर मुनि, आचार्य या उपाध्याय आदि को जन्मकल्याणक जुलूस में सम्मिलित होने में रंचमात्र भी दोष नहीं है। बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज, आचार्य श्री धर्मसागर महाराज आदि चतुर्विध संघ सहित जन्माभिषेक देखते थे। तीर्थंकर भगवान का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जन्मकल्याणक दिव्य अलौकिक होता है अतः सामान्य मुनि एवं आचार्यों को उनका जन्माभिषेक देखने में कोई विकल्प नहीं करना चाहिए। तीर्थंकर की महिमा का वर्णन तो अनिर्वचनीय है।

➢प्रयाग तीर्थ पर प्रथम बार पूज्य माताजी द्वारा दो कन्याओं को ब्राह्मी-सुन्दरी बनाकर विद्यादान—

पंचकल्याणक में प्रथम बार दिखाया जाने वाला यह दृश्य अद्भुत ही था, जब पूज्य माताजी ने भगवान ऋषभदेव की ब्राह्मी-सुन्दरी पुत्रियों के विद्याध्ययन के दृश्य को दर्शाते हुए स्वयं अपने हाथों से रजत थाल में दो क्वांरी कन्याओं को विद्याध्ययन करवाया, जिसमें ब्राह्मी बनने का सौभाग्य-कु. मानवी जैन-मेरठ एवं सुन्दरी बनने का सौभाग्य-कु. रूबी जैन -इलाहाबाद को प्राप्त हुआ। इसके साथ ही भगवान ऋषभदेव द्वारा दिये गये विद्यादान एवं राजनीति का वर्णन पूज्य माताजी ने अपने उपदेश में किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में न्यायमूर्ति श्री डी.पी.एस. चौहान (चेयरमैन-म.प्र. लीगल सर्विस अथॉरिटी, जबलपुर), डॉ. अरविंद कुमार जैन-स्वास्थ्य राज्यमंत्री (उ.प्र.) तथा नार्दर्न इण्डिया पत्रिका के सम्पादक श्री प्रेमशंकर दीक्षित जी पधारे, जिनका कमेटी की ओर से स्वागत किया गया। माननीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री जी ने कहा कि यह सारी व्यवस्था जो वर्तमान में है, वह भगवान ऋषभदेव की देन है, भगवान ने सबको जीवन जीने की कला सिखाई, जिनका वर्णन वेदों में भी आता है। हम लोग पंचकल्याणक को जैन रामलीला कहते हैं, भगवान ऋषभदेव ने नौ निधियाँ व चौदह रत्नों को त्यागकर विभाव परिणति को मिटाया, हमारा भी आपसे निवेदन है कि सबको जैन दर्शन व भगवान का स्वरूप समझाकर संस्कारित करें। चाहे भगवान ऋषभदेव हों, भरत हों या राम हों, इंसान में से ही भगवान बने हैं और बाकी लोग समझते हैं कि भगवान ने हमें बनाया है, जो उनकी मिथ्या भ्रांति है।

➢अयोध्या के महन्त नृत्यगोपालदास जी का आगमन—

प्रयाग तीर्थ एवं भगवान ऋषभदेव के दर्शनार्थ पधारे हुए अयोध्या की छोटी छावनी के महन्त नृत्य गोपालदास जी ने पूज्य माताजी के गुणों एवं वात्सल्यमयी रूप की प्रशंसा करते हुए कहा कि जैनधर्म में त्याग-तपस्या की प्रधानता है। जैन साधु-साध्वी कठोर तप करते हैं, जैनधर्म मानवों का संवर्धन एवं संरक्षण कर रहा है, इसी प्रकार की समता-ममता हमें मिले, यही कामना है।

इलाहाबाद विकास प्राधिकरण सचिव श्री इष्टदेव प्रसाद राय एवं मुख्य अभियंता श्री के.के. पाण्डेय जी ने भी पधारकर पूज्य माताजी के दर्शन कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया।

➢7 फरवरी को प्रयाग तीर्थ कुछ क्षण के लिए हस्तिनापुरी बन गया—

भगवान ऋषभदेव प्रयाग की पावन भूमि पर दीक्षा ग्रहण कर छः माह योग में लीन रहने के पश्चात् जब मुनिपरम्परा को जीवन्त रखने हेतु (आहारचर्या बतलाने हेतु) आहारार्थ निकले, तब किसी को भी आहार की विधि न मालूम होने से जनता भगवान को नाना प्रकार के वस्त्राभरण, मिष्ठान्न, भोजन, पुत्री आदि दिखाकर उन्हें ग्रहण करने की प्रार्थना करते थे। छः माह के भ्रमण के पश्चात् उन्हें हस्तिनापुर की पावन धरा पर वहाँ के युवराज श्रेयांस ने आठ भव पूर्व के जातिस्मरणपूर्वक आहार की विधि ज्ञात होने पर एक वर्ष 39 दिन के उपवास के बाद प्रथम बार इक्षुरस का आहार दिया, वह तिथि वैशाख शु. तीज थी, जो **'अक्षय तृतीया'** के नाम से अक्षय हो गई।

उसी आहारचर्या की याद दिलाता भगवान की आहारचर्या का दृश्य जब तीर्थ परिसर में दर्शाया गया, तो कुछ क्षण के लिए प्रयाग तीर्थ हस्तिनापुरी के रूप में परिवर्तित हो गया। आहारचर्या के समय यत्र-तत्र जेवर, कपड़े आदि लेकर भगवान को बुलाते लोगों का अजब ही नजारा था और जब श्रेयांस राजा के महल में भगवान का पड़गाहन हुआ, तो जयजयकारों से पाण्डाल गुंजायमान हो उठा था।

➢दीक्षाकल्याणक तपोवन का उद्घाटन—

दीक्षास्थली तीर्थ पर नवनिर्मित करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम दीक्षा की स्मृति को चिरस्थाई बनाने वाले "भगवान ऋषभदेव दीक्षाकल्याणक तपोवन" का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में पधारे महामहिम श्री विष्णुकांत शास्त्री (राज्यपाल उत्तरप्रदेश) एवं सभाध्यक्ष श्री अशोक सिंघल द्वारा 7 फरवरी को मध्याह्न 1 बजे हुआ। इसी अवसर पर माननीय राज्यपाल जी की भतीजी 'जया कालिया (राष्ट्रीय सदस्य-समाज कल्याण बोर्ड), न्यायमूर्ति श्री राधेश्याम गुप्ता (उ.प्र. सरकार) व अन्य प्रशासनिक अधिकारी पधारे।

कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय राज्यपाल जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं संघस्थ बहनों के मंगलाचरण पूर्वक हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी ने कहा कि नेता भाषण अधिक करते हैं किन्तु काम कम करते हैं, आज हमें प्रसन्नता है कि महामहिम जी काम करने वाले नेता हैं। जिस दिन से मैंने सुना कि ऐसे अद्वितीय राज्यपाल, जिन्होंने भगवान ऋषभदेव की शिक्षा को स्वयं तो अपने जीवन में उतारा ही, बल्कि राज्यपाल बनते ही घोषणा कर दी कि हमारे राजभवन में मांसाहार क्या, प्याज भी इस्तेमाल नहीं होगा, सुनकर बेहद खुशी हुई। माताजी को नेताओं को बुलाने का यही उद्देश्य रहा है कि यहाँ आने पर उन्हें शाकाहारी जीवन की प्रेरणा दी जाए।

➢महामहिम द्वारा 'प्रयाग तीर्थ वंदना' पुस्तक का विमोचन—

महामहिम जी ने पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा संस्कृत भाषा में लिखित 'प्रयाग तीर्थ वंदना' नामक नूतन कृति का विमोचन किया और स्वहस्ताक्षर युक्त एक प्रति माताजी के करकमलों में भेंट की।

पुनः मैंने महामहिम जी को बताया कि सन् 1998 में **''ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार''** का राजधानी दिल्ली से प्रवर्तन करते समय प्रधानमंत्री जी ने माताजी से प्राप्त छठे अंश आशीर्वाद से भी अधिक की कामना की थी, उस समय माताजी ने कहा था कि हम अपनी तपस्या का पुण्य देंगे और सरकार स्थिर होगी, उन्होंने अटल जी को भगवान ऋषभदेव के चरणचिन्ह दिये, पुनः 4 फरवरी 2000 को निर्वाणोत्सव के उद्घाटन पर आए प्रधानमंत्री जी ने फिर वही शब्द दोहराए कि तब का आशीर्वाद अभी तक मेरे काम आया, अब आज का आशीर्वाद आगे तक काम आएगा। यह सुनकर राज्यपाल जी बहुत प्रसन्न हुए।

➢पूज्य गणिनी माताजी ने कहा—

यह वही पवित्र भूमि है, जहाँ भगवान ने दीक्षा लेकर वटवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया था। महामहिम जैसे लोगों का इस धर्ममंच पर आने का यही तात्पर्य है कि वे अपने कर्मों से ढके आवरण को हटाकर वास्तविक ज्ञान प्राप्त करें। जैनधर्म शम-दम शासनरूप है, जहाँ इन्द्रियों का दमन व कषायों का शमन किया जाता है, राज्यपाल जी उत्तरप्रदेश का गौरव हैं, अगर सारा देश ऐसा ही क्रम लागू करे, तो क्या ही अच्छा हो! आवश्यकता है भगवान ऋषभदेव-महावीर के सिद्धान्तों को विश्व में पहुँचाने की। राज्यपाल जी भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखकर चरम शिखर पर पहुँचावें और सिंघल जी महापुरुष राम की जन्मभूमि की रक्षा के साथ मर्यादा की रक्षा के कार्य में सफल हों, यही आशीर्वाद है।

➢राज्यपाल जी भारत गौरव की उपाधि से सम्मानित—

इस अवसर पर राज्यपाल जी के शुद्ध-सात्त्विक व धर्माचरण से युक्त जीवन से प्रभावित होकर दीक्षास्थली तीर्थ के कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा उन्हें **''भारत गौरव''** की उपाधि से सम्मानित कर प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

➢भव्य समवसरण रथ की शोभायात्रा—

7 फरवरी 2001 को सायं 5 बजे भगवान के केवलज्ञान की सम्पूर्ण क्रियाएं सम्पन्न हुईं जिसमें संयोगवश भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ के आगमन से उसकी शोभा द्विगुणित हो उठी और उसी में भरत चक्रवर्ती आदि को क्रम से बिठाकर 12 सभा का दृश्य उपस्थित कर शोभायात्रा निकाली गई।

मंच पर परदे के अन्दर जिनप्रतिमाओं एवं कैलाशपर्वत, तपोवन आदि में विराजमान जिनप्रतिमाओं को सूरिमंत्र प्रदान कर केवलज्ञान की घोषणा होते ही पर्दा खुल गया और क्षणमात्र में 12 सभाओं का दृश्य उपस्थित हो गया।

➢असली कैलाशपर्वत पर चढ़ाया गया निर्वाणलाडू—

जिस कैलाशपर्वत से भगवान ऋषभदेव ने मोक्ष प्राप्त किया, उसी कैलाशपर्वत की भव्य प्रतिकृति पर विराजमान 14 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की मनोहारी प्रतिमा निर्वाणकल्याणक के पश्चात् परम पूज्य बन गई, पुनः श्रीजी के सम्मुख पूजनपूर्वक निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। इस भव्य प्रतिकृति के निर्माण का पुण्य प्राप्त करने वाली श्रीमती सुलोचना जैन ध.प.श्री चेतनलाल जैन-प्रीतविहार, दिल्ली ने सपरिवार उपस्थित होकर परम आनंद के साथ भगवान का अभिषेक किया।

➢समवसरण मंदिर का उद्घाटन—

जिस पुरिमतालपुर के उद्यान में भगवान ऋषभदेव को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी, वर्तमान में वह उद्यान भी प्रयाग में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही माना जाता है। भगवान के केवलज्ञान होते ही धरती से 5 हजार धनुष (20 हजार हाथ) ऊपर अधर आकाश में धनकुबेर ने समवसरण की रचना की थी, उसी समवसरण की भव्य प्रतिकृति एक रथ के रूप में पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से राजधानी दिल्ली के लाल किला मैदान से सन् 1998 में उद्घाटित हुई, जिसे भारत भ्रमण हेतु तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रवर्तित किया और लगभग 3 साल तक भारत के कोने-कोने में अहिंसा, शाकाहार, विश्वमैत्री तथा तीर्थंकर भगवान के सर्वोदयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने के बाद प्रयाग तीर्थ के इसी जिनमंदिर में विराजमान की गई। तीर्थ के गौरव अध्यक्ष एवं केन्द्रीय वस्त्र राज्यमंत्री (भारत सरकार) श्री वी. धनंजय कुमार जैन ने इसका उद्घाटन कर परम प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर अ.भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष-साहू रमेश चंद जैन भी पधारे। साहू जी तीर्थ के प्रथम दर्शन कर भावविभोर हो उठे और बोले-तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षाभूमि पर आने के निमित्त से मैं 50 वर्ष बाद प्रयाग की धरती पर आया हूँ। तीर्थक्षेत्र कमेटी का अध्यक्ष होने के नाते मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि एक प्राचीन तीर्थ पुनरुद्धार होकर तीर्थों की श्रृंखला में जुड़ गया, ऐसी पवित्र स्थली पर हम उत्सव मना रहे हैं, सभी को बधाई।

मैं विश्वास दिलाता हूँ कि पूर्ण मनोयोग के साथ तीर्थों की सेवा में संलग्न रहूँगा।

➢बसन्तोत्सव के बसंती माहौल में इक्कीसवीं सदी का प्रथम महाकुंभ—

देखते ही देखते वह पावन घड़ी आ गई, जिसका उस दिन से इंतजार था, जिस दिन से इस तीर्थ को साकाररूप देने की घोषणा हुई थी। प्रातःकाल से ही केशरिया वस्त्रों में लिपटा विशाल जनसमूह अपने पूर्वनिर्धारित कलशों को पाने हेतु आतुर हो उठा था।

ऊपर जाने के लिए दोनों ओर से मजबूत सीढ़ियाँ बनाई गई थीं, जिस पर एक ओर से चढ़ने तथा दूसरी ओर से उतरने की व्यवस्था थी। केशरिया झण्डों से सजी सीढ़ियों पर स्थान-स्थान पर खड़े सुयोग्य कार्यकर्ता कलश पास देखकर ही नर-नारियों को ऊपर चढ़ने दे रहे थे।

कैलाशपर्वत के ठीक सामने चबूतरे पर भरत सेना-टिकैतनगर के कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा सजाए गए महाकुंभ की आकृति के 1008 स्वर्ण, रजत आदि महाकुंभ बसन्ती बहार बिखेरते हुए जनमानस को अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे।

➢स्वर्ण महाकुंभ से प्रथम मस्तकाभिषेक—

दुल्हन के समान इस नूतन तीर्थ भूमि पर अभिषेक करने को आतुर बंधुओं का तांता लगा था। प्रथम स्वर्ण महाकुंभ कलश लेकर लाला महावीर प्रसाद जी के साथ वस्त्र राज्यमंत्री श्री वी. धनंजय कुमार जी ने ऊपर पहुँचकर ज्यों ही मंत्रोच्चारण प्रारंभ होते ही कलश प्रारंभ किया, उपस्थित भक्तगण भावविभोर हो उठे और हों भी क्यों न, मध्यान्ह 11.15 मिनट पर किया गया यह प्रथम कलश वास्तव में इतिहास का अमिट पन्ना जो बनकर रह गया था।

जिन-जिन कलशों से प्रभु के मस्तक पर अभिषेक हो रहा था, उस-उस वर्ण में भगवान सभी के नेत्रों को आनन्दकारी लग रहे थे। सफेद दूध के पड़ते ही पूरी प्रतिमा श्वेतवर्णी हो उठी, दधि पड़ते ही ऐसा प्रतीत हुआ मानों घड़े भर मोती प्रभु के ऊपर बरसाए गए हों, केशर और सर्वौषधि की सुगंधि से जहाँ सारा वातावरण महक उठा, वहीं पुष्पवृष्टि में बरसाए गए पुष्प धनकुबेर के द्वारा की जाने वाली रत्नवृष्टि की याद दिला रहे थे। इस पंचामृत अभिषेक से कैलाशपर्वत तो सुवासित हुआ ही, भक्तगणों ने अपने वस्त्रों को, शरीर को सुगंधित किया और शीशी, छन्ने एवं स्टील की डिब्बियों में भरकर अपने घर भी ले गए।

इस दृश्य को कैलाशपर्वत की प्रतिकृति के निर्माता श्री चेतनलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती सुलोचना जैन सपरिवार देखकर परम हर्षित हो रही थीं, कैंसर जैसी घातक बीमारी से ग्रस्त होने के बावजूद भी उनकी तीव्र अभिलाषा ने उन्हें महाकुंभ मेले की भयंकर भीड़ में कैलाशपर्वत के दर्शन की शक्ति प्रदान कर दी। आश्चर्य तो तब हुआ, जब वे रात में बैठकर पूरा सांस्कृतिक कार्यक्रम रुचिपूर्वक देखती रहीं। पुनः कार्यक्रम समापन के बाद सकुशल वे दिल्ली पहुँच गईं और इसी पुण्य के फलस्वरूप आगे वे निराकुलतापूर्वक जून 2001 में समाधिपूर्वक स्वर्गवासी हो गईं।

➢संमापन की विदाई बेला में कई हर्षपूरित नेत्र माताजी का गुणगान कर रहे थे—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाकुंभ मस्तकाभिषेक समापन की बेला में सभी को पूज्य माताजी का वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद प्रवचन भी प्राप्त हुआ, जिसे सुनकर सभी के नेत्रों में हर्षपूरित अश्रु भर गए और सभी बोल उठे—हे माता! तू धन्य है, तेरी महिमा अपरम्पार है।

➢ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव की ऐतिहासिक धरोहर है यह तीर्थ—

"शास्त्रों में आचार्यों ने कहा है कि सौ नये मंदिर का निर्माण कराने से जो पुण्य अर्जित होता है, उससे कई गुना अधिक पुण्य एक पुराने जीर्ण-शीर्ण मंदिर अथवा तीर्थंकर भगवन्तों की गर्भ, जन्मादि पंचकल्याणक भूमियों के उद्धार, संरक्षण-संवर्धन करने में है। ये पंचकल्याणक भूमियाँ एवं प्राचीन मंदिर हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं और धर्म के प्रतीक हैं, इनकी रक्षा करना हम सबका प्रथम पुण्य कर्त्तव्य है। वे तीर्थ हमारे धर्म के स्तम्भ हैं, आधारशिला हैं। ये हमें सदैव धर्म की प्रेरणा देकर हमारा आत्मकल्याण कराने में सहायक होते हैं।"

शास्त्र-पुराणों में इन तीर्थों को अचेतन तीर्थ एवं पंचपरमेष्ठी भगवन्तों को चेतन तीर्थ माना है। वर्तमान में चेतन तीर्थों के द्वारा ही इन अचेतन तीर्थों का विकास, जीर्णोद्धार, संरक्षण-संवर्धन संभव है। शायद यही कारण है कि पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी सदैव तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों के विकासादि में स्वयं भी तत्पर रहती हैं और सभी को उसमें दत्तचित्त रहने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। वस्तुतः इसी प्रेरणा का प्रतिफल यह **"तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली"** तीर्थ है, जो करोड़ों वर्ष पूर्व के इतिहास को वर्तमान में पुनः जीवन्त कर रहा है। भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव के समापन अवसर पर निर्मित यह तीर्थ समस्त जैनधर्मावलम्बियों की ऐतिहासिक धरोहर है, जो युगों-युगों तक उन स्मृतियों को तरोताजा करते हुए तीर्थंकर भगवन्तों के अहिंसा, अनेकान्तवाद, विश्वमैत्री, प्राणीमात्र के प्रति करुणा जैसे सर्वोदयी सिद्धान्तों को जन-जन में प्रतिष्ठापित करता रहेगा।

➢तीर्थ पर प्रथम केशलोंच का सौभाग्य मुझे भी मिल गया—

जिस पवित्र धरा पर आज से करोड़ों वर्ष पूर्व सिद्ध प्रभु की साक्षी लेकर भगवान ऋषभदेव ने पंचमुष्टि केशलुंचन किया था और जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मुनिपरम्परा को जीवन्त किया था, उसी पावन भूमि पर तीर्थ के नवनिर्माण के पश्चात् प्रथम बार मुझे केशलोंच करने का सौभाग्य प्राप्त हआ। इस अवसर पर श्री विक्रमाजीत तिवारी (ए.डी.एम.एफ.) इलाहाबाद और श्री मुन्नीलाल पाण्डे (एस.डी.एम.) ने पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। उस समय माताजी ने उपस्थित मुख्य अतिथि, विभिन्न पत्रकारों तथा जनसमूह को केशलोंच की महिमा बताते हुए कहा कि भगवान ऋषभदेव ने प्रयाग में ही वटवृक्ष के नीचे प्रथम केशलोंच किया था पुनः जब उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया, तब उनके समवसरण में उनके पुत्र वृषभसेन एवं ब्राह्मी-सुन्दरी पुत्रियों ने केशलोंच कर मुनि और आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर प्रथम गणधर तथा प्रथम गणिनी का पद प्राप्त किया था।

तिवारी जी को 15 फरवरी को गोरखपुर विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि मिलने के उपलक्ष्य में कैलाशपर्वत का मोमेन्टो देकर कमेटी द्वारा सम्मानित किया गया।

➢तीर्थ पर अनेकों विधान सम्पन्न हुए—

इस तीर्थ पर पंचकल्याणक की पूर्णता के पश्चात् से अनेकों लघु एवं वृहद् विधान प्रारंभ हो गए। सर्वप्रथम कैलाशपर्वत के गुफा मंदिर में 16 फरवरी से **'समवसरण विधान'** प्रारंभ हुआ, जिसमें हजारीबाग की कुछ महिलाओं एवं संघस्थ ब्र.कु. इन्दु ने भाग लिया पुनः अष्टान्हिक पर्व में इलाहाबाद जैन समाज द्वारा **"सिद्धचक्र पाठ"** किया गया। इसके अतिरिक्त 1 जनवरी 2001 को पूज्य माताजी के तीर्थ पर मंगल प्रवेश से लेकर जब तक प्रवास रहा, तब तक निरन्तर संघस्थ बहनों द्वारा ऋषभदेव विधान, शांतिविधान, ऋषिमण्डल विधान आदि अनेकों विधान आयोजित होते रहे। जिनेन्द्र भगवान की भक्ति को अपना प्रमुख ध्येय मानने वाली पूज्य माताजी का यही कहना रहता है कि भगवान की भक्ति से बड़ी-बड़ी आपदाएँ दूर होकर अलौकिक सुख के साथ-साथ आध्यात्मिक सुख भी मिलता है अतः हमें अपने जीवन में प्रतिदिन कुछ समय प्रभु भक्ति के लिए अवश्य निकालना चाहिए।

➢भगवान ऋषभदेव का जन्म-तपकल्याणक एवं पूज्य माताजी का केशलोंच समारोह—

चैत्र कृष्णा नवमी की तिथि भगवान ऋषभदेव के जन्म एवं तपकल्याणक से पावन है। दीक्षास्थली तीर्थ पर भगवान के जन्म व तपकल्याणक अवसर पर पूज्य माताजी का केशलोंच हुआ। सभा के पश्चात् कैलाशपर्वत पर विराजमान बड़े भगवान का पंचामृत अभिषेक हुआ तथा वटवृक्ष के नीचे ध्यानस्थ महामुनि का 108 कलशों से अभिषेक हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज के पावन दिवस मैंने दीक्षा वाले भगवान के पास एक नया कमण्डलु रखकर माताजी से शुद्ध करवाकर लिया और नई पिच्छी रखवाकर पूज्य माताजी ने ग्रहण की, सो उस दिन बड़ा सौभाग्य प्रतीत हुआ कि प्रयाग के असली दीक्षानगर में प्रभु के दीक्षाकल्याणक के दिवस दीक्षा के उपकरण हम लोगों ने प्राप्त किए।

➢एक ऐतिहासिक दिवस—

27 मार्च 2001 की तिथि को मैंने ऐतिहासिक इसलिए बताया क्योंकि जिस पवित्र वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव ने आज से करोड़ों वर्ष पूर्व दीक्षा ली थी, वह आज भी वंश परम्परा से अक्षय होकर मिलिट्री एरिये में स्थित है और उसी वटवृक्ष को देखने के लिए हम सभी पूज्य माताजी के साथ आज पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 7 बजे पहुँच गए। चूँकि उस एरिया में सरकारी आदेशानुसार ही जाया जा सकता है अत: उन सभी औपचारिकताओं को जैन तीर्थ के कार्यकर्ताओं ने पूर्ण कर सरकारी आदेश ले लिया था। पूज्य माताजी नें पहले से ही भगवान ऋषभदेव के चरण बनवा लिए थे अत: सभी ब्रह्मचारिणी बहनों ने चरण, पूजन सामग्री, जल एवं यंत्र साथ में ले लिए थे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने अक्षयवट के नीचे यंत्र स्थापित कर वहीं भगवान के चरण विराजमान कर उनका अभिषेक-पूजन कराया, सामूहिक भक्तामर स्तोत्र का पाठ हुआ और माताजी का संक्षिप्त उद्बोधन हुआ।

वहाँ हमें जैन समाज के लोगों ने बताया कि अभी 2-3 वर्ष पूर्व तक यहाँ भगवान के चरण विराजमान थे और हम लोग प्रतिवर्ष अक्षयतृतीया के दिन सारी जैन समाज के साथ आकर भक्तामर स्तोत्र का पाठ भी किया करते थे। अब पुन: चरण स्थापना करते देखकर उन सभी को परम आल्हाद हुआ। इस प्रकरण को लिखने तक ज्ञात हुआ है कि भगवान ऋषभदेव के वे श्रीचरण वटवृक्ष के नीचे ज्यों की त्यों विराजमान हैं। आज भी वहाँ यह किंवदन्ति प्रसिद्ध है कि इसी वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव को दिव्य केवलज्ञान प्रगट हुआ था।

पूरी हिन्दू समाज के लोग इस वटवृक्ष को बहुत ही पूज्य मानते हैं और बड़ी श्रद्धा से इसे अक्षयवट मानकर दर्शन करते हैं।

➢विश्वशांति महावीर विधान के साथ प्रारंभ हुआ प्रयाग में भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मजयंती महोत्सव—

यह हमारे भारत का गौरव ही है कि इस देश में भगवान ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यंत 24 तीर्थंकर भगवन्तों ने जन्म लेकर इसे सनाथ किया है। भगवान महावीर को जन्म लेकर 2599 वर्ष व्यतीत हो गये और 6 अप्रैल 2001, चैत्र शु. तेरस को उनका 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव पूरे देश में अनेक राष्ट्रीय, केन्द्रीय, सामाजिक स्तर की कमेटियों द्वारा छोटे-बड़े आयोजन के रूप में मनाने की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही थीं, इसी शृँखला में पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में 1 अप्रैल से 9 अप्रैल 2001 तक प्रयाग में 2600 मंत्रों से समन्वित "विश्वशांति महावीर विधान" का आयोजन किया गया, जिसमें सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनने का गौरव श्री कृष्ण कुमार जैन एवं श्रीमती साधना जैन को प्राप्त हुआ। सुमेरु पर्वत के आकर्षक मण्डल से युक्त और रत्नों द्वारा पूजा-जाप्य से स्वयं में अद्भुत इस मण्डल विधान में अनेक धर्मनिष्ठ श्रद्धालु भक्तों ने शांतिधारा, रत्नजाप्य, मण्डल विधान, आरती आदि का सौभाग्य प्राप्त किया।

➢प्रयागवासियों को जीवन में अमूल्य क्षण प्राप्त हुए—

यह प्रयागवासियों का परम सौभाग्य ही था कि जिन पूज्यनीया ज्ञानमती माताजी का दिल्ली निवासी 2600वें जन्मजयंती महामहोत्सव हेतु पलक पांवड़े बिछाकर इंतजार कर रहे थे, उनके सानिध्य में उन्हें भगवान महावीर का महोत्सव मनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ चूँकि यह महोत्सव इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ बनकर युगों-युगों के लिए चिरस्थायी स्मृति जन-जन को प्रदान करेगा।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार प्रात: 5.30 बजे बैण्ड-बाजे के साथ शहर के मुख्य मार्गों से प्रभात भेरी निकली, पश्चात् माताजी की प्रेरणा से जन्मोत्सव की खुशी में नवनिर्मित 'महावीर जयंती भवन' में जनता द्वारा घंटा, बाजे, शंख, ढोलक आदि बजाकर भगवान के चरणों में दीपक, फल आदि समर्पित किए गए और इन्द्रों द्वारा की गई रत्नवृष्टि के प्रतीकरूप रत्नवृष्टि कर उन रत्नों को जनता में वितरित किया गया। जन्म महोत्सव का झण्डारोहण प्रात: 7.15 बजे स्वरूपरानी पार्क में हुआ, पश्चात् धर्मसभा हुई, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जी.वी. मेहता तथा कौशाम्बी के युवा जिलाधिकारी श्री पार्श्वसारथी शर्मा जी व विशिष्ट अतिथि श्रीमती उषा मेहता जी पधारे। पूज्य माताजी ने इन अतिथियों एवं उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए उन्हें भगवान महावीर के जीवन से परिचित करवाया। साथ ही उन्होंने आज के पवित्र अवसर पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व अन्य शासकगणों को अपने हृदय में अहिंसा धारण कर अहिंसक राष्ट्र व विश्वशांति की स्थापना का आशीर्वाद दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रो. महोदय द्वारा सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका अप्रैल माह के महावीर जयंती अंक के विमोचन एवं सम्माननीय अतिथियों द्वारा समवसरण श्रीविहार रथ व जन्मकल्याणक प्रतीक ऐरावत हाथी रथ पर स्वस्तिक बनाकर भव्य एवं अद्भुत रथयात्रा जुलूस शहर के विभिन्न मार्गों से निकला, जिसमें बैण्ड, बाजे, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ, ऐरावत हाथी रथ, पारम्परिक रथ, 26 घोड़े, हाथी, इन्द्राणियों की मंगल कलश यात्रा, महावीर अहिंसा रैली रूप 2600 बच्चों का ध्वजा जुलूस जन-जन की प्रशंसा का केन्द्र बने। स्थान-स्थान पर प्रसाद वितरण व प्रतीक रूप में अनेक वस्तुएँ बाँटी गईं। जुलूस का समापन पाण्डुक शिला पर जन्माभिषेकपूर्वक हुआ और उसके बाद सामूहिक प्रीतिभोज हुआ। इस अवसर पर जैन समाज के सारे प्रतिष्ठान बंद रहे। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम से पूर्व धर्मसभा में अनेक प्रशासनिक अधिकारी व मंत्रीगण पधारे, जिसमें लोक निर्माण विभाग एवं सिचाई मंत्री श्री ओमप्रकाश सिंह द्वारा पूज्य माताजी द्वारा रचित "भगवान महावीर कैसे बने?" कृति का विमोचन किया गया तथा भगवान को पालना झुलाने का कार्यक्रम हुआ।

➢सुमेरु पर्वत पर जन्माभिषेक से उद्घाटित हुआ 2600वाँ महावीर महोत्सव—

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना के बीचों-बीच में विश्व की प्रथम कृति के रूप में निर्मित 101 फुट ऊँचे सुमेरुपर्वत की पाण्डुक शिला पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से वहाँ के पदाधिकारियों एवं संघस्थ ब्र. बहनों द्वारा 6 अप्रैल को ही प्रातः 6 बजे महावीर स्वामी का जन्माभिषेक किया गया, उसके पश्चात् सर्वत्र 2600वें जन्मकल्याणक उत्सव को विभिन्न आयोजनों के साथ मनाना प्रारंभ हो गया।

➢भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव का राष्ट्रीय स्तर पर भव्य उद्घाटन समारोह—

विश्ववंद्य भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव को मनाने की शुभ घड़ियाँ असंख्य खुशियाँ लेकर हम सबके समक्ष आ गईं; जब जनता के साथ-साथ भारत सरकार ने भी महावीर जन्मोत्सव मनाने की घोषणा कर धरती को महावीर से परिचित होने का स्वर्णिम अवसर प्रदान कर दिया। इस राष्ट्रीय महोत्सव का भव्य उद्घाटन भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 6 अप्रैल 2001 को प्रातः 10 बजे दिल्ली के इन्दिरागांधी (इंडोर) स्टेडियम में किया गया। इस पावन अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी के साथ गृहमंत्री—श्री लालकृष्ण आडवाणी, संचार मंत्री—श्री रामविलास पासवान एवं केन्द्रीय मंत्री—श्री सुन्दरलाल पटवा, केन्द्रीय वस्त्रराज्यमंत्री—श्री वी. धनंजय कुमार भी उपस्थित थे। उद्घाटन तो हो गया और सरकार ने इस महोत्सव हेतु 100 करोड़ रुपये का अनुदान घोषित करते हुए डाक टिकट भी जारी कर दिया परन्तु कुछ ऐसा अघटित कार्य उस सभा में हो गया, जो दिगम्बर जैन समाज के लिए एक कटु अनुभव प्रदान कर गया। पूज्य आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज दो मुनियों के साथ उस सभा में सानिध्य प्रदान करने गये थे किन्तु वे कारणवश स्टेडियम के बाहर से ही वापस आ गये।

यहाँ इस प्रसंग में ज्ञातव्य है कि सन् 1974 में भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव राष्ट्रव्यापी स्तर पर सरकार एवं समाज द्वारा मनाया गया था। वह पूरा दृश्य आज भी मेरी आँखों के समक्ष है, जब सन् 1972 में ही दिल्ली के प्रमुख कार्यकर्ता श्री परसादी लाल जैन पाटनी, श्री पारसदास जैन मोटर वाले, डॉ.कैलाशचंद जैन राजा ट्वायज आदि अनेक महानुभावों ने ब्यावर (राज.) में जाकर पूज्य माताजी को निर्वाण महोत्सव की रूपरेखा बताकर दिल्ली पधारने हेतु निवेदन किया और उनके निवेदन को स्वीकार कर माताजी अपने संघ सहित राजस्थान से दिल्ली पधारीं। उस समय आचार्यरत्न श्री देशभूषण महाराज चांदनी चौक, कम्मोजी की धर्मशाला में विराजमान थे और माताजी पहाड़ी धीरज-दिल्ली में चातुर्मास स्थापित करके आचार्यश्री के दर्शनार्थ आया करती थीं जिससे आचार्यश्री के मुख से कई बार महावीर निर्वाणोत्सव की व्यापक चर्चाएँ सुनी गईं। स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के मुनि श्री सुशील कुमार जी, आचार्य देशभूषण महाराज एवं साहू शान्तिप्रसाद जैन उस विषय की रूपरेखा तैयार करने में पूरे मनोयोग से लगे हुए थे पुनः सन् 1973 में मुनि श्री विद्यानंद जी महाराज-दिल्ली पधारे, तब उपर्युक्त विचार-विमर्श में विद्यानंद महाराज एवं ज्ञानमती माताजी का पूरा सहयोग लिया जाता था।

उस समय विभिन्न सम्प्रदायों में विभक्त सम्पूर्ण जैन समाज ने हर तरह से एकजुट होकर अपना संगठित रूप प्रस्तुत किया था,जिससे प्रभावित होकर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सरकारी स्तर पर कमेटी गठित कर कार्यक्रम की व्यापक रूपरेखा बनाई थी। इस संगठन का एक उदाहरण आचार्य श्री देशभूषण महाराज के मुख से सुना है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"सन् 1972 में एक दिन संसद भवन में महावीर निर्वाण महोत्सव की बैठक थी। मुनि सुशील कुमार जी उसमें भाग लेने आए। मैं भी दिगम्बर समाज के लोगों द्वारा मना करने पर भी 2-3 भक्तों को लेकर संसद भवन पहुँचा किन्तु वहाँ दिगम्बर साधुओं का प्रवेश निषिद्ध होने के कारण मुझे प्रधानमंत्री के सुरक्षाकर्मियों ने बाहर ही रोक दिया। मैं बिना एतराज के वहीं खड़ा रहा और अंदर मुनि सुशील कुमार जी को यह सूचना मिलते ही वे भी बाहर आ गए तथा इन्दिरा जी से उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि यदि हमारे आचार्य देशभूषण महाराज संसद की इस मीटिंग में नहीं आएंगे, तो मैं भी मीटिंग में भाग नहीं लूँगा और यह कार्यक्रम होना संभव नहीं है। मुनि जी की ऐसी एकता एवं मैत्री भावना देखकर इन्दिरा जी मुझे ससम्मान संसद भवन में ले गईं और निर्वाण महोत्सव संबंधी वह मीटिंग बड़े सुन्दर वातावरण में सम्पन्न हुई।"

दिल्ली के इस धर्मप्रभावक वातावरण को देखकर तभी पूज्य माताजी ने अनेकानेक प्रेरणा भरे पत्र भेजकर आचार्यश्री धर्मसागर महाराज को भी संघ सहित दिल्ली पधारने का निवेदन किया था पुनः जुलाई 1974 को आचार्य संघ का दिल्ली आगमन हुआ और नवम्बर 1974 में भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ था। यह बात मैंने यहाँ इसीलिए उल्लिखित की है कि उस समय से लेकर आज तक की स्थिति में देश की राजनीति के समान ही जैन समाज की अखण्डता में भी बिखराव आया है, इस कटुसत्य को हम सभी को स्वीकार करना पड़ेगा। सामाजिक संगठन में विश्वास रखने वाले उदारहृदयी जो साधु एवं श्रावक उस समय थे, आज उनमें से कुछ का साया हमारे ऊपर से उठ गया है और संकीर्ण विचारधारा के कुछ लोग अपना द्वेषजाल फैलाकर सरेआम सरकार के सामने भी अपनी अखण्डता में दरारें डालकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। यहाँ सोचने की बात यह है कि आचार्य देशभूषण महाराज संसद के अन्दर समाचार दिए बिना यदि बाहर से वापस चले गए होते, तो समस्या का समाधान कदापि नहीं होता।

➢जमीन आसमान का अन्तर था दोनों सार्वजनिक सभाओं में—

13 नवम्बर 1974 में महावीर निर्वाणोत्सव की रामलीला मैदान दिल्ली की मुख्य सभा तथा 6 अप्रैल 2001 में महावीर जयंती महोत्सव की इन्दिरा गांधी स्टेडियम दिल्ली के उद्घाटन समारोह की सभा में जमीन-आसमान का अन्तर दिख रहा था, जिसका टी.वी. के आस्था चैनल पर प्रसारण देखकर दिगम्बर जैन समाज के बच्चे-बच्चे के मन को आघात पहुँचा। कहाँ सन् 1974 में दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों की अल्प संख्या होते हुए भी उस मंच पर 62 साधु-साध्वी विराजमान थे और कहाँ अब लगभग एक हज़ार-साधु-साध्वियों के रहते हुए भी उनमें से 6 अप्रैल को स्टेडियम में मंच पर एक भी साधु-साध्वी, क्षुल्लक-क्षुल्लिका आदि में से कोई अस्तित्व नजर नहीं आया। दिगम्बर जैन समाज के पदाधिकारियों को दिल्ली एवं आस-पास उपस्थित मुनि-आर्यिकाओं, क्षुल्लक-क्षुल्लिका आदि को आमंत्रित करना चाहिए था। यदि पदाधिकारियों द्वारा उन्हें आमंत्रित किया गया था, तो उन सभी साधु-साध्वियों को कार्यक्रम में उपस्थित होना चाहिए था। आश्चर्य की बात यह रही कि श्वेताम्बर सम्प्रदाय के भी पधारे साधु-साध्वी में से किसी ने प्रधानमंत्री एवं अन्य आगन्तुक शासनाधिकारियों को भगवान महावीर जन्मोत्सव को आयोजित करने हेतु एक भी वाक्य का आशीर्वाद नहीं बोला, जबकि इससे पूर्व 9 अप्रैल 1998 एवं 4 फरवरी 2000 को भगवान ऋषभदेव के कार्यक्रमों में पधारकर प्रधानमंत्री जी ने पूज्य माताजी के आशीर्वादात्मक प्रवचन को अपने वक्तव्य में देश रक्षा के लिए कवचरूप स्वीकार किया था।

➢नहीं लेखनी लिख सकती है ऐसी विषम परिस्थिति को—

प्रयाग में विराजित पूज्य माताजी एवं हम लोगों को जब प्रयागवासियों ने टी.वी. के माध्यम से वह दृश्य दिखाया और उस दृश्य को प्रत्यक्षदर्शियों के मुख से सुना गया, तो जिस अन्तर्वेदना का अनुभव हुआ, उसे मैं अपनी लेखनी से लिख भी नहीं सकती। पूज्य माताजी के मुख से तो बार-बार यही शब्द निकला कि वे महामना आचार्य देशभूषण महाराज, आचार्य सुशील मुनि एवं साहू शान्तिप्रसाद जैन यदि आज जीवित होते, तो ऐसा दृश्य कदापि उपस्थित नहीं होता, किन्तु तत्त्वज्ञानी माताजी पुनः कहती हैं कि क्या जिस घर से बड़े-बूढ़े लोगों का साया उठ जाता है, उस घर में शादी, विवाह या अन्य बड़े-छोटे कार्य बंद हो जाते हैं? कभी नहीं, बल्कि घर की भावी पीढ़ी उससे भी अधिक धूमधाम से सभी व्यवहारिक कार्यों को सम्पन्न करती है, उसी प्रकार हमारी समाज के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्णधारों को भी प्राचीन साधु-साध्वियों के अनुभव का लाभ उठाते हुए महावीर जन्मोत्सव को अतीव उत्साह के साथ मनाना चाहिए तथा सामाजिक विघटनकारी व्यक्तित्व से सदैव सावधान रहकर अपनी अस्मिता की रक्षा करनी चाहिए।

➢अनेक गणमान्य महानुभावों द्वारा पूज्य माताजी से किया गया अतीव आग्रह—

राजधानी दिल्ली में जन्मजयंती महोत्सव के उद्‌घाटन सत्र में घटित अप्रत्याशित घटना से सम्पूर्ण जैन समाज में छाई उदासीनता एवं कष्ट को देखते हुए साहू रमेश जी जैन आदि अनेकानेक गणमान्य महानुभावों के फोन ब्रह्मचारी रवीन्द्र जी के पास आने लगे और लोगों ने तो यहाँ तक कहना प्रारंभ कर दिया कि अगर माताजी दिल्ली में होतीं, तो 2600वें जन्मोत्सव के उद्‌घाटन समारोह का नजारा ही अलग होता। भाई जी! आप तो कैसे भी करके माताजी को जल्दी से जल्दी दिल्ली ले आओ। जो हो गया, वह तो अब वापस नहीं आ सकता किन्तु अब आगामी 1 वर्ष के अन्तर्गत हम माताजी के वात्सल्यपूर्ण प्रेरणा एवं दिशानिर्देश में इसे एक नया रूप प्रदान करेंगे ताकि लोग इस घटना को भूलकर इस 2600वें जन्मोत्सव की एक यादगार छवि अपने मन में बनावें।

➢पूज्य माताजी का 46वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस—

9 अप्रैल 2001, वैशाख कृ. दूज को वृहद् शांतिधारापूर्वक विश्वशांति महावीर विधान की सम्पन्नता के साथ पूज्य माताजी का 46वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, जिसमें अनेकों महानुभावों ने पूज्य माताजी के चरणों में अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित की।

➢कौशाम्बी-प्रभाषगिरि तीर्थ के पदाधिकारियों ने विनम्र प्रार्थना की—

इलाहाबाद (प्रयाग) के निकट ही भगवान पद्मप्रभु के गर्भ एवं जन्मकल्याणक से पवित्र कौशाम्बी तीर्थ है तथा उसी से कुछ दूरी पर स्थित प्रभाषगिरि (पभौसा) तीर्थ है जो भगवान पद्मप्रभु के दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक से पवित्र विश्व की प्राचीन ऐतिहासिक नगरी होने के साथ ही जैन संस्कृति का प्रतीक, भक्ति व आस्था का आधार, उपासना और साधना का केन्द्र है। आत्मकल्याण का पाठ पढ़ाने वाले इस कौशाम्बी तीर्थ के साथ जहाँ भगवान पद्मप्रभु का इतिहास जुड़ा है, वहीं आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व का इतिहास भी जुड़ा है, जब महासती चंदना द्वारा भगवान महावीर को आहारदान देने पर न केवल पंचाश्चर्य की वृष्टि हुई थी अपितु चंदना की लौहश्रृंखला टूटने का चमत्कार भी हुआ था।

यह एक सुखद संयोग और सोने में सुहागा वाली बात हुई, जहाँ निर्वाणोत्सव के समापन के साथ ही भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मजयंती महोत्सव आ गया, वहीं कौशाम्बी-प्रभाषगिरि के कार्यकर्ताओं को एक सुनहरा मौका मिल गया ''महावीर स्वामी की चमत्कारिक आहारभूमि एवं भगवान पद्मप्रभु की जन्मभूमि के उद्धार का''।

चूँकि शास्त्र-पुराणों की बातें कतिपय लोग ही जानते हैं अतः कार्यकर्ताओं के अतीव आग्रह से इस प्राचीन कथानक को साकाररूप प्रदान करने हेतु पूज्य माताजी ने इलाहाबाद शहर से ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ पर पधारकर पुनः 21 अप्रैल को कौशाम्बी तीर्थ की ओर मंगल विहार किया।

➢प्रभासगिरि तीर्थ चमक उठा विश्व के व्योम पर—

सन्तों के बारे में कहा है कि—

जहाँ पड़े गुरुचरण वहाँ की, रज चंदन हो जाती है।
मरुथल में भी कल-कल करती, कालिन्दी बह जाती है।।

यह पंक्तियाँ पूज्य माताजी के जीवन पर पूर्णतः चरितार्थ होती हैं। जहाँ भी उनके चरण पड़े हैं, वहाँ जंगल में मंगल हो गया, जीर्ण-शीर्ण अवस्था वाले तीर्थों ने विकसित स्वरूप प्राप्त कर लिया। प्रभाषगिरि तीर्थ पर 2 मई 2001 से 7 मई 2001, वैशाख शु. 10 से वैशाख शु. 15 तक आयोजित **''तीर्थंकर महावीर जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव** में अपना मंगल सानिध्य प्रदान करने हेतु उन्होंने 1 मई को मंगल प्रवेश किया। यह एक संयोग ही था कि पूज्य माताजी के मंगल आगमन के साथ-साथ आगे-आगे प्रतिष्ठेय भगवान की प्रतिमा जी आईं, जिससे माताजी के मन में बड़ी प्रसन्नता रही। 2 मई को हम पूरे संघ सहित प्रभाषगिरि पर्वत की वंदना हेतु गये। छोटी सी सुरम्य पहाड़ी देखकर मन प्रसन्न हो गया। हमने वहाँ माताजी के साथ भक्ति पाठ किया तथा संघस्थ बहनों ने भगवान का अभिषेक-पूजन किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

8.30 बजे प्रतिष्ठा महोत्सव का झण्डारोहण हुआ एवं मध्यान्ह 3 बजे भगवान पद्मप्रभु की सवा सात फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा क्रेन द्वारा विराजमान की गईं। पश्चात् भगवान के गर्भकल्याणक आदि अन्तरंग क्रियाओं द्वारा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा प्रारंभ हो गई। 5 मई को प्रभावनापूर्वक भगवान महावीर के प्रथम आहार का दृश्य दिखाया गया एवं मानस्तंभ में विराजमान भगवन्तों का महामस्तकाभिषेक हुआ।

➢दिल्ली की ओर विहार की घोषणा सुन प्रयागवासी रो पड़े—

राजधानी दिल्ली के भक्तों, श्रेष्ठियों एवं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के पुनः-पुनः दिल्ली की ओर मंगल विहार के अतीव आग्रह को देखते हुए माताजी ने 6 मई को सांयकालीन प्रवचन सभा में दिल्ली की ओर मंगल विहार एवं वहीं के चातुर्मास की घोषणा कर दी, तो इलाहाबाद वालों को अत्यधिक दुःख हुआ। कुछ महिलाएँ तो फूट-फूट कर रोने लगीं। दरअसल लगभग 15 दिन से इलाहाबाद वालों ने कई बार नारियल चढ़ाकर नए तीर्थ पर चातुर्मास हेतु निवेदन किया था और उन्हें कुछ विश्वास सा हो गया था कि शायद दीक्षास्थली में ही चौमासा हो जाएगा किन्तु आज निर्णय सुनते ही सब बहुत दुःखी हुए।

वस्तुतः सन्त-साधु का आहार-विहार अनियत (अनिश्चित) ही होता है अतः बहती धार के समान कब किस ओर मुड़ जाएँ, कुछ निश्चित नहीं है। फिर जहाँ धर्मरक्षा, तीर्थरक्षा इत्यादि विषय सामने हों, तो भक्तों का आग्रह छोड़कर भी उस ओर लक्ष्य करना ही होता है अतः श्रावक-श्राविकाओं को साधु-साध्वियों से ज्यादा मोह नहीं करना चाहिए।

➢भगवान विमलनाथ की जन्मभूमि कम्पिला जी तीर्थ पर पड़े पूज्य माताजी के चरण —

प्रयाग तीर्थ का विकसित स्वरूप देखकर पूज्य माताजी ने 22 अप्रैल 2001 को दिल्ली की ओर मंगल विहार कर दिया। विहार की शृँखला में कन्नौज, फर्रुक्खाबाद, कायमगंज आदि स्थानों पर होते हुए जैनधर्म के तेरहवें तीर्थंकर भगवान विमलनाथ के गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञानकल्याणक से पवित्र भूमि श्री कंपिला जी दि. जैन तीर्थ (जि. फर्रुखाबाद) में पूज्य माताजी के आगमन पर एक नवीन सूर्य का उदय हुआ, जब इस तीर्थ के विकास हेतु 'सती द्रौपदी कला मन्दिरम्'' एवं तीर्थंकर परम्परा के प्रवर्तक आदिब्रह्मा भगवान ऋषभदेव की सवा सात फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा की स्थापना की घोषणा पूज्य माताजी द्वारा की गई।

महान शीलवती महाभारत काल की सती द्रौपदी की जन्मस्थली एवं स्वयंवर स्थली 'कंपिला जी' में दस इलेक्ट्रानिक झांकियों से समन्वित 'कला मंदिरम्' की उद्घोषणा के पीछे पूज्य माताजी की यही भावना निहित रही कि इस माध्यम से क्षेत्र के विकास एवं आकर्षण में वृद्धि के साथ-साथ जनसाधारण को जहाँ भगवान ऋषभदेव-महावीर स्वामी की झाँकियों के द्वारा जैनधर्म की प्राचीनता एवं अविच्छिन्न परम्परा का ज्ञान होगा, वहीं भगवान विमलनाथ का जीवनवृत्त एवं सती द्रौपदी का पंचभर्तारी न होकर उनके द्वारा एक पतिव्रत धर्म पालन से उत्पन्न शील व्रत का माहात्म्य भी सामने आएगा।

➢एक आश्चर्यकारी घटना सुनने में आई—

26 जून 2001 को हम लोग राजधानी दिल्ली के निकट नोएडा में ठहरे हुए थे। शाम को यहाँ कुछ महिलाएं माताजी के दर्शनार्थ आईं और मुझसे कहने लगीं कि माताजी! यहाँ पर हम लोगों ने भी ज्ञानमती माताजी द्वारा दी गई रोटी कटोरदान में रखकर एक सप्ताह बाद दो रोटी बनकर निकलते देखा है और ऐसा तमाम महिलाओं के घर में हुआ है। लोगों ने इसे चमत्कार माना है कि जिसके यहाँ रोटी आएगी, उसकी खूब उन्नति होगी। सुनकर हमें बड़ी हँसी आई और आश्चर्य भी हुआ कि साधु तो मात्र आशीष देते हैं रोटी इत्यादि नहीं, फिर यह हवा किसके द्वारा और कैसे फैलाई गई है। इसी प्रकार अनेक लोगों से यह बात सुनी गई, जबकि माताजी ने कभी किसी को रोटी नहीं दी थी बल्कि अक्षीण महानस ऋद्धि का मंत्र अवश्य दिया करती हैं।

➢अशोक विहार-दिल्ली में वर्षायोग स्थापना—

3 जुलाई को सत्यवती कालोनी से दिल्ली विहार करके हमने पूज्य माताजी के साथ चातुर्मास स्थल की ओर पदार्पण किया। एक कि.मी. लम्बे जुलूस में अपार जनसमूह की उपस्थिति यह दर्शा रही थी कि किस प्रकार दिल्लीवासी पूज्य माताजी का इंतजार कर रहे थे। पूरे रास्ते में बैनर लगे थे, पंचरंगी द्वार लगे थे तथा मंदिर के आस-पास भी खूब सजावट थी। मंदिर में मंगल प्रवेश की सभा में संघपति श्री आनंद जी-पवन जी (जैन मार्बल होम-मेरठ), ब्र. रवीन्द्र जी तथा संघस्थ बहनों का समाज द्वारा सम्मान किया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गया। 9 बजे तक चली सभा के बाद जुलूस के साथ संघ को वसतिका तक लाने के मध्य पचासों घरों के आगे लोगों ने खूब स्वागत करते हुए पाद प्रक्षाल, आरती, पुष्पवृष्टि आदि की। हर घर के आगे फूल व रंगोली के चौक बने थे।

4 जुलाई 2001 को वर्षायोग स्थल का नामकरण "महावीर निलय" घोषित किया गया। अपरान्ह 3 बजे महावीर निलय से पूज्य माताजी जुलूस के साथ मंदिर जी में पहुँचीं, जहाँ वर्षायोग स्थापना की सभा हुई। साहू रमेशचंद जी की अध्यक्षता में आयोजित इस सभा में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद श्री साहिब सिंह वर्मा एवं विधायक दीपचंद बंधु जी उपस्थित थे। इस अवसर पर साहू जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि "यदि माताजी 6 अप्रैल के कार्यक्रम में होतीं, तो जो दुर्घटना दि. जैन समाज के साथ हुई है, वह न होती। हम लोगों ने दीक्षास्थली में ही माताजी से महावीर जयंती तक दिल्ली पधारने का निवेदन किया था लेकिन पदविहार करने वाले साधुओं की भी अपनी चर्या है। खैर! अब मुझे विश्वास है कि माताजी के निर्देशन में आगामी कार्यक्रमों से अच्छी धर्मप्रभावना होगी।"

वास्तव में इस चातुर्मास के अन्तर्गत अनेक धर्मप्रभावनात्मक कार्य सम्पन्न हुए तथा भक्ति महाकुंभ के रूप में "विश्वशांति महावीर विधान" को वृहद्रूप में करने की घोषणा की गई।

➢छब्बिस सौ मंत्रों के साथ छब्बिस सौ रतन चढ़ाए गए 26 मंडलों पर—

चूँकि भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष वर्तमान सहस्राब्दि के लिए एक स्वर्णिम उपहार लाया और इस उपहार को प्रत्येक जनमानस विविध कार्यकलापों के माध्यम से विभक्त करना चाहता था, साथ ही भगवान महावीर के प्रति अपने श्रद्धा, भक्ति और विनय के पुष्प समर्पित कर उन क्षणों को चिरस्थाई करने की भावना थी क्योंकि यह अवसर पुनः जीवन में प्राप्त नहीं होने वाला था। जहाँ स्वयं भारत सरकार उन अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के इस 2600वें जन्मोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर '**अहिंसा वर्ष**' के रूप में अनेकों कार्यक्रमों के माध्यम से मनाकर उन महामानव के पावन चरणयुगल में अपनी पुष्पांजलि समर्पित कर रहा था, वहीं सम्पूर्ण जैन समाज के गौरव साधु-साध्वी, शीर्षस्थ नेता एवं श्रावक भी अनेक धार्मिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं निर्माण कार्यों के द्वारा अपने श्रद्धा पुष्प उन्हें समर्पित कर रहे थे। चूँकि भारतीय संस्कृति युगों-युगों से अपनी श्रद्धा-भक्ति के कारण विश्व के मानसपटल पर अपनी आभा को विस्तारित किए हुए है अतः पाश्चात्य संस्कृति का समावेश होते हुए भी आज तक देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा दृष्टिगत होती है।

तीर्थंकर महावीर की आराधना के इस क्रम में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने अनेकानेक कार्यकलापों के अन्तर्गत उनके 2600 गुणों का स्मरण करते हुए 2600 मंत्रों से समन्वित "**विश्वशांति महावीर विधान**" की रचना करके जहाँ तीर्थंकर भगवान के प्रति अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए, वहीं उस नूतन रचना से सम्पूर्ण देशवासियों को भगवान महावीर की सर्वोदयी गरिमा का भी परिचय प्राप्त हुआ। दिल्लीवासियों के अतीव आग्रह पर मई-जून की भीषण गर्मी में विहार कर जनसाधारण में भगवान महावीर के जन्मकल्याणक महोत्सव को अनुगुंजित करने हेतु जब माताजी ने विहार कर दिल्ली में पदार्पण किया, तो दिल्लीवासियों में एक बार पुनः आशा जगी। वहाँ पहुँचकर माताजी ने कार्यकर्ताओं की मीटिंग करके "**विश्वशांति महावीर विधान**" के वृहत् आयोजन की रूपरेखा जनता के समक्ष रखी, जन-जन की सराहना को प्राप्तकर यह योजना गतिशील होने लगी। इसी मध्य दिल्ली के प्रमुख लोगों का आग्रह अत्यधिक प्रबल होने लगा कि संघ का प्रवास दिल्ली में ऐसे केन्द्रीय स्थल पर हो, जहाँ रहकर सरलता से इतने बड़े आयोजन की गतिविधियाँ संचालित की जा सकें, फलस्वरूप अशोक विहार में चातुर्मास स्थापित कर पूज्य माताजी ने श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर, राजाबाजार-कनॉट प्लेस में अपना ससंघ प्रवास रखा।

➢भगवान की भक्ति से विश्वशांति संभव है—

चूँकि इस राष्ट्रीय आयोजन हेतु आयोजन स्थल के चयन की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी, अतएव अनेक स्थानों का निरीक्षण करने के पश्चात् दिल्ली गेट स्थित फिरोजशाह कोटला मैदान का चयन हुआ, जिसमें "**भगवान महावीर मण्डप**" के रूप में भव्य पाण्डाल के अन्दर 26 मण्डलों को बनाकर इस आयोजन का प्रारंभीकरण किया गया। इस मध्य अमेरिका में 11 सितम्बर 2001 को वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए आतंकवादी हमले के बाद विश्वयुद्ध जैसा भयावह वातावरण निर्मित हो गया था, ऐसी विषम परिस्थिति में कभी-कभी विधान का आयोजन स्थगित करने की बात भी आई किन्तु पूज्य माताजी ने दृढ़तापूर्वक सभी को आदेश दिया कि यह भक्ति का आयोजन है, इसे टालो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मत और भगवान की कृपा से उन मंत्रों द्वारा सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित होगी। श्री एस.के. जैन-अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, दिल्ली द्वारा दिया गया समस्त सुरक्षा व्यवस्था का आश्वासन भी कार्यक्रम की पूर्णता में सभी के लिए विशेष सम्बल रहा।

➤28 अक्टूबर समापन समारोह-एक झलक—

28 अक्टूबर को प्रातः 9.30 बजे **''विश्वशांति महावीर विधान''** के समापन समारोह की सभा हुई, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध सांसद, विधिवेत्ता एवं न्यायविद् श्री एल.एम. सिंघवी एवं विशिष्ट अतिथि श्री सलेकचंद कागजी, प्रो. श्री रतनचंद जैन एवं श्री एल.एल. आच्छा जी ने पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

सभा का संचालन करते हुए संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी ने कहा कि महानुभावों! ज्ञानमती माताजी इसलिए महान नहीं हैं कि वे बड़े-बड़े कार्य करवाती हैं प्रत्युत् इनके जीवन से हमें सबसे बड़ी बात यह सीखनी है कि हमें अपने सिद्धान्त, अपने जीवन में चारित्रिक दृढ़ता आदि को ख्याति, लाभ, पूजा के प्रभाव में बहकर छोड़ना नहीं है। आज महावीर के शासनकाल की गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी का जीवन प्रत्येक व्यक्ति के लिए और खासतौर से साधु परम्परा के लिए एक आदर्श है। वर्तमान में जो समाज में यह बात कहते हैं कि आप स्थाई आयोजन रखिए, आप निर्माण करिए, वह आपको जीवन निर्माण की दिशा से दूर ले जा रहे हैं। आज पूजा-भक्ति ही माध्यम है पंचमकाल में कर्म निर्जरा करने के लिए, इसके अलावा मोक्षप्राप्ति का कोई उपाय नहीं है।

और शायद यही कारण रहा कि इन सभी बातों पर दृष्टिपात करते हुए स्वयं माननीय सिंघवी जी ने कहा कि यह एक कार्य का समापन है किन्तु एक अभियान का शुभारंभ है। इस अभियान में एक मर्यादा, एक भक्ति का स्वर, एक दृष्टि और एक सृष्टि हुई है और उसके लिए हम माताजी को हजार-हजार, लाख-लाख धन्यवाद दें, तो भी थोड़ा होगा। गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी का उपकार हम सब पर है, उन्होंने वैसे तो जीवन भर अपनी तपस्या, साधना, शिक्षा एवं सारस्वत उपक्रमों से हमें अनुगृहीत किया है किन्तु उस लम्बी शृंखला में आज एक बड़ा अवदान जुड़ गया है, वह है **'विश्वशांति महावीर विधान'** जो 26 मण्डल विधानों के राष्ट्रीय आयोजन के रूप में है यानि हर मण्डल सौ वर्ष का प्रतीक है, इस प्रकार 2600 वर्ष का यह भगवान महावीर का विधान एक उत्कृष्ट, उत्कर्ष का क्षण हम सबके लिए लाया है।

भगवान महावीर के इस 2600वें जन्मकल्याणक के मंच पर एक छवि कुण्डलपुर के राजकुमार भगवान महावीर की है तथा दूसरी छवि है तीर्थंकर भगवान महावीर की। आज हम इन छवियों में अहिंसा, अनेकांत की जीवनयात्रा एवं अपरिग्रह के सिद्धान्त की उज्ज्वल छवि देखते हैं। हमको यह क्षण 2600 वर्ष बाद मिला, यह हमारे ऊपर पूज्य माताजी का ऋण है। यह एक तरह की गंगोत्री और यमुनोत्री हैं, जिनने मंत्रों के माध्यम से इस उपदेश को हम तक पहुँचाया है। ज्ञानमती माताजी ने चरैवेति-चरैवेति के मंत्र को चरितार्थ किया है इसलिए यह अभियान शुरू हुआ है। जैन महासभा दिल्ली के महासचिव प्रो. रतन जैन ने कहा कि ''आज यदि साध्वी श्रेष्ठ, दीर्घतपस्विनी, ज्ञानमती माताजी का मूल्यांकन करना है, तो उस घटना के संदर्भ में करें कि आज हिन्दुस्तान का कोई विद्वान यह कहने का दुस्साहस नहीं कर सकता कि जैनधर्म की स्थापना भगवान महावीर ने की थी। आज अगर इतिहास में बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी के अन्दर जैन संस्कृति में किसी एक व्यक्ति का इतना बड़ा उद्घोष है, योगदान है कि उन्होंने जैनधर्म को ऋषभदेव से जोड़ा है, तो वह कार्य केवल ज्ञानमती माताजी ने किया है। कार्यक्रमों की इस धूम में, 100 करोड़ रुपये की इस आंधी में, प्रधानमंत्री के बराबर अपनी कुर्सी ढूंढ़ने की लालसा में, आज जैन समाज को कोई चिंतनपूर्ण कार्यक्रम दे पा रहा है, तो वह ज्ञानमती माताजी हैं और यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि अगर सांस्कृतिक मंत्री जी को माताजी की शरण मिल जाए तो भगवान महावीर का जन्मकल्याणक, जो अपनी आभा नहीं बना पा रहा है, वह सारे विश्व में अपनी आभा बना लेगा। हमने भगवान महावीर को नहीं देखा, पर उनके शासन में ज्ञानमती माताजी को देख रहे हैं। यह हमसे भूल हो गई, भगवान महावीर के 2500वें निर्वाणोत्सव से सबक लेकर भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक का भार हमें ज्ञानमती माताजी को सौंपना चाहिए था, खैर! जब जागो तभी सबेरा। आज समाज की दशा और दिशा से हम भलीभांति परिचित हैं **'संघे शक्तिः कलियुगे'** जो समाज आज एक होकर चलेंगे, वही अपनी विजयपताका फहराएंगे और इस आंदोलन में कोई अपनी आहुति दे रहा है, तो वह ज्ञानमती माताजी जैसी तपस्वी संत हैं, मैं इस अभियान को अपनी श्रद्धा का अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।''

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢गणिनी माताजी को दी गईं विभिन्न उपाधियाँ—

गुरुभक्त्या भवेदत्र, महारण्ये महत्पुरम्।
तत्राभीष्टं फलं चैव, कल्पवल्ल्येव विन्दते।।

अर्थात् गुरुभक्ति से महावन में भी बड़ा भारी नगर हो सकता है और उसमें कल्पलता के समान अभीष्ट फल प्राप्त हो सकते हैं।

शायद यही कारण है कि श्रावक अनेक प्रकार से गुरु की सेवा करके अपना अहोभाग्य मानता है, फिर सन्त-साधु तो त्याग और वैराग्य की मूर्ति होते हैं, उनके लिए तो निन्दक या प्रशंसक दोनों समान हैं, कोई उनकी निन्दा करे या प्रशंसा, वे प्रत्येक के प्रति समता भाव रखते हैं। गुरुभक्ति कर पुण्यबंध का ऐसा ही उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इस महायज्ञ के समापन अवसर पर अनेक प्रान्तों से पधारे प्रतिनिधियों ने पूज्य माताजी को उपाधियों से विभूषित कर अपना गौरव माना। यूँ तो माताजी सदैव कहती हैं कि मेरे गुरु द्वारा दी गई आर्यिका दीक्षा की उपाधि ही मेरे लिए सबसे महान है परन्तु पूज्य माताजी को समय-समय पर आचार्यों, समाजों एवं विश्वविद्यालय द्वारा अनेक उपाधियाँ प्राप्त हुईं हैं, उसी श्रृंखला में महाराष्ट्र प्रांत के प्रतिनिधियों ने उन्हें **''राष्ट्रगौरव''**, अवधप्रान्त ने **''धर्ममूर्ति''** एवं दिल्ली के प्रतिनिधिमण्डल ने **''विश्वविभूति''** की उपाधि से विभूषित कर अपने प्रांत का गौरव वृद्धिंगत किया।

➢दिल्ली में स्थाई निर्मित पावापुरी रचना के समक्ष 2600 निर्वाणलाडू चढ़ाए गए—

जब सारा देश भगवान महावीर का जन्मकल्याणक महोत्सव अपने-अपने स्तर पर मना रहा था, उस समय पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से उनके संघ सानिध्य में राजधानी दिल्ली के कनॉट प्लेस-राजा बाजार स्थित श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर के प्रांगण में पावापुरी सरोवर की स्थाई रचना बनाकर ''दीपावली'' के शुभ दिन कार्तिक कृष्णा अमावस्या, 15 नवम्बर को प्रातः 2 600 निर्वाणलाडू चढ़ाने का भव्य आयोजन किया गया।

''विश्वशांति महावीर विधान'' के राष्ट्रीय आयोजन के प्रमुख इन्द्र श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली का रजत प्रशस्ति पत्र से सम्मान करते हुए ''दानवीर समाजरत्न'' तथा संघपति लाला महावीर प्रसाद जी, श्री प्रेमचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली व राजकुमार जैन-वीरा बिल्डर्स को भी ''दानवीर समाजरत्न'' की उपाधि प्रदान की गई। श्री आनन्द जैन-जैन मार्बल होम, मेरठ, श्री श्रीपाल जैन 'मोटर वाले-राजपुर रोड, को 'समाजरत्न' की उपाधि देते हुए सभी सौधर्म इन्द्र एवं विशेष दानदातारों तथा कार्यकर्ताओं का भी प्रशस्तिपत्र द्वारा सम्मान किया गया।

➢जप-तप के रूप में साकार हुआ भगवान महावीर का दीक्षाकल्याणक महोत्सव—

10 दिसम्बर 2001 को राजधानी दिल्ली के तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में जैन समाज के सभी सम्प्रदायों के 200 से भी अधिक साधु-साध्वियों के सानिध्य में 'जप-तप महाकुंभ' के रूप में भगवान महावीर का दीक्षाकल्याणक महोत्सव विलक्षण रूप में सम्पन्न हुआ।

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव समिति, दिल्ली द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में जैनाचार्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज एवं सभी सम्प्रदायों के विविध साधु-साध्वियों के मध्य पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी (ससंघ) ने अपना सानिध्य प्रदान किया एवं उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित किया। पूज्य माताजी ने इस अवसर पर कहा कि यदि समस्त साधुवर्ग एकजुट होकर पूरे समाज का नेतृत्व करें, तो भगवान महावीर का यह 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव नई ऊँचाईयों को छू सकता है। भारत सरकार को इस महोत्सव के लिए माताजी ने मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए अहिंसा एवं अनेकांत के सर्वोदयी सिद्धान्तों को विश्वव्यापी स्तर पर प्रचार करने की प्रेरणा दी।

सांसद श्री दिलीप गांधी, डॉ. कर्ण सिंह-सांसद एवं संस्कृति मंत्री श्री जगमोहन जी के निजी सचिव श्री अशोक भट्ट (आई.ए.एस.), दिल्ली भाजपा अध्यक्ष श्री मांगेराम गर्ग एवं प्रख्यात विधिवेत्ता डॉ. एल.एम. सिंघवी मुख्य अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

पुनः मैंने पूज्य माताजी की आज्ञानुसार लघु सामायिक एवं ध्यान का अभ्यास कराया। णमोकार मंत्र, मेरी भावना, महावीराष्टक, महावीर चालीसा, शांति पाठ, भक्तामर इत्यादि के सामूहिक पाठ से सारा स्टेडियम गूंज उठा। इस महोत्सव का झण्डारोहण संघपति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाला महावीर प्रसाद जैन (बंगाली स्वीट सैंटर, दिल्ली) द्वारा किया गया। स्वागताध्यक्ष श्री मोहनलाल सेठिया ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया। सभा का कुशल संचालन महोत्सव समिति के महासचिव प्रो. रतन जैन ने किया। अन्य प्रमुख व्यक्तित्व थे-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, श्री रिसबचंद जैन (अध्यक्ष महोत्सव समिति), श्री मांगीलाल सेठिया, श्री सुखराज सेठिया, श्री वी.सी. जैन भाभू, श्री के. एल. पटावरी, श्री दीपचंद जैन, श्री आर.डी. जैन, श्री नेमिचंद जैन इत्यादि। अंत में आचार्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज ने सभी को संकल्प ग्रहण कराते हुए अणुव्रती जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज ने समस्त साधुवर्ग को पूज्य माताजी द्वारा रचित सिद्धान्तचिंतामणि टीका सहित षट्खण्डागम ग्रंथ एवं अन्य साहित्य प्रदान किया।

➢अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद का रजत जयंती समारोह—

ग्रंथ पुराणों में वर्णन आता है कि भगवान ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट् भरत ने पंचमकाल में होने वाले धर्म के उत्थान-ह्रास आदि को सूचित करने वाले 16 स्वप्न देखे थे, जिसमें एक स्वप्न था कि महारथ में गोवत्स जुते हुए हैं और उसका फल यह था कि धर्म की गाड़ी को युवा कंधे ही खींचेंगे और उन्हीं स्वप्नों का साकार स्वरूप आज देखने में आता है कि जिनधर्मरूपी गाड़ी में युवा वर्ग ही आचार्य, उपाध्याय, साधु, गणिनी, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी आदि रूपों में संवाहक बन रहे हैं तथा धर्म की गाड़ी को खींचकर धर्मरूपी खेती को वृद्धिंगत कर रहे हैं।

पूज्य माताजी के क्षुल्लिका दीक्षा गुरु आचार्य श्री देशभूषण महाराज की प्रेरणा से युवाओं की एक संस्था 'अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद' की स्थापना 1 जनवरी 1974 को हुई थी, जो वर्तमान में पूज्य माताजी की प्रेरणा प्राप्त कर धर्म की चहुँमुखी प्रगति कर रही है। भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत उस संस्था के 25 वर्ष पूर्ण होने पर पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं संघ सानिध्य में युवा परिषद का रजत जयंती समारोह एवं दिगम्बर जैन युवाओं का राष्ट्रीय सम्मेलन 6 जनवरी 2002 को प्रातः 10 बजे फिक्की ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया, इस अवसर पर प्रख्यात विधिवेत्ता डॉ. एल.एम. सिंघवी आदि अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने की। युवा परिषद की दिल्ली प्रदेश समिति की ओर से आयोजित इस समारोह में दिल्ली की विभिन्न कालोनियों के 26 युवाओं को (26 प्रकार के नियमों का पालन कर जैनत्व की शान कायम रखने वाले एवं जिनधर्म पताका को फहराने वाले) 'युवारत्न' की उपाधि से अलंकृत करते हुए सम्मानित किया गया, जिसमें प्रथम सम्मान प्राप्त किया ग्रीन पार्क निवासी श्री अरिहंत कुमार जैन ने। साथ ही सभी को माताजी एवं संघस्थ साधुओं का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ। "पूज्य माताजी ने इस समारोह जैसे विशाल कार्यक्रम को सम्पन्न करवाकर अंततः मन में कब से चली आ रही भावना को मूर्तरूप देने का निर्णय किया और वह भावना थी— भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) का विकास। जिनेन्द्र भगवान के शासन में हम सबको जिनधर्म का महान पवित्र पथ प्राप्त हुआ है, उनकी जन्मभूमि का कण-कण हमारे लिए परम पवित्र एवं मूल्यवान है। पूज्य माताजी की अतीव इच्छा थी कि भगवान के 2600वें जन्मजयंती वर्ष की सार्थकता तभी है, जब भगवान महावीर की जन्मभूमि विश्वभर में महिमामण्डित हो जाए व समस्त समाज जागृत होकर महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर की महानता एवं उपयोगिता को समझकर उसके विकास हेतु कटिबद्ध हो जाए। वस्तुतः महान पुरुषों की दृष्टि ही दूरदर्शितापूर्ण एवं सबल भविष्य की सम्पोषक होती है।"

➢मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत ने चमत्कार दिखाया—

पूज्य माताजी ने स्वरचित "विश्वशांति महावीर विधान के 2600 मंत्रों में से 108 मंत्र लेकर 'मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत' की रचना की, जिसे मैंने पूज्य माताजी से नवम्बर 2001 में ग्रहण किया और दिसम्बर 2001 में उस व्रत को प्रारंभ किया, मेरे साथ-साथ संघ में सभी ने इस व्रत को ग्रहण किया। 10 फरवरी तक मेरे मात्र 4 ही व्रत हुए थे कि एक दिन राजा बाजार की धर्मशाला में प्रवास के मध्य मैंने संघ चैत्यालय में श्री जी का अभिषेक देखने के बाद पूज्य माताजी से निवेदन किया कि माताजी! यूँ तो सारे भारत में राष्ट्रीय स्तर पर भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष धूमधाम से विविध आयोजनों के माध्यम से मनाया जा रहा है और प्रांतीय, सामाजिक, प्रादेशिक स्तर पर भी लोग नाना आयोजन कर रहे हैं परन्तु जिन शासनपति भगवान महावीर के शासनकाल में हम और आप सभी लोग रह रहे हैं, उनकी जन्मभूमि की ओर किसी की दृष्टि नहीं है और आप उसे विश्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के मानसपटल पर लाना भी चाहती हैं, तो क्यों न आप भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार कर उसे उसका वास्तविक स्वरूप प्रदान करें!

उस समय पूज्य माताजी ने मेरी प्रार्थना को सुना और मनन भी किया। चूँकि माताजी इस जन्मोत्सव हेतु राजधानी दिल्ली में आयोजित होने वाले कार्यक्रम की वृहद् रूपरेखाएँ बना रही थीं, साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी कमजोर था किन्तु न जाने उस दिन माताजी को क्या हुआ कि उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य एवं भक्तों के अतीव आग्रह को मद्देनजर करते हुए कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार की घोषणा ही कर दी, फिर तो पूरे दिल्ली की जैन समाज में हलचल मच गई कि एक बार पुनः माताजी हमें छोड़कर विहार की योजना बना रही हैं किन्तु पूज्य गणिनी माताजी के हृदय में तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों के विकास की भावना हर क्षण विद्यमान रही है और विशेषरूप से भगवान महावीर की जन्मभूमि के विषय में कुछ आधुनिक इतिहासकारों द्वारा उठाए गए विवाद से पूज्य माताजी बड़ी आश्चर्यचकित हुईं कि वर्तमान की अर्वाचीन शोधों के आधार पर प्राचीन कल्याणक भूमियों को परिवर्तन करने वाली प्रथा हमारी संस्कृति एवं मूल आचार पद्धति पर ही आघात करने लगी है। अतः उन्होंने मन ही मन कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार का दृढ़ निश्चय कर लिया।

वस्तुतः मुझे तो यह उस व्रत का ही चमत्कार दृष्टिगत हुआ, जिसे लेते और करते समय मैंने प्रबल भावना संजोई थी कि कभी जन्मभूमि कुण्डलपुर के साक्षात् दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो और इस महोत्सव वर्ष में भगवान महावीर की जन्मभूमि विश्व के मानस पटल पर अंकित हो जावे। इसीलिए शायद भगबान महावीर की शासन देवी सिद्धायिनी माता ने ही पूज्य माताजी को अन्तर्प्रेरणा प्रदान कर उसे मूर्तरूप दे दिया। उनके इस निर्णय से मुझे सर्वाधिक प्रसन्नता तो हुई ही, महावीर व्रत के प्रति मेरी श्रद्धा और अधिक प्रगाढ़ हो गई पुनः पाँच हजार से भी अधिक नर-नारियों ने यह व्रत ग्रहण किया। मैंने आगे जाकर उन्हीं मंत्रों से "मनोकामना सिद्धि विधान" की रचना भी की है।

मुक्तक

नैराश्यमद में डूबते, नर के लिए नव आस हो।
कोई अलौकिक शक्ति हो, अभिव्यक्ति हो विश्वास हो।।
कलिकाल की नव ज्योति हो, उत्कर्ष का आभास हो।
मानो न मानो सत्य है, तुम स्वयं में इतिहास हो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर जन्मभूमि
कुण्डलपुर की अविस्मरणीय यात्रा
(भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव की अमिट उपलब्धि)

वैदिक ग्रंथ मनुस्मृति के एक श्लोक से मैं इस ऐतिहासिक यात्रा का शुभारंभ करती हूँ—

यत्र योगेश्वरो कृष्णः, यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीविजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम।।

अर्थात् धृतराष्ट्र के समीप बैठे एक संजय नामक दिव्यज्ञानी पुरुष ने कुरुक्षेत्र में चल रहे कौरव-पांडव के युद्ध को अपने दिव्यचक्षु से देखकर कहा कि—हे राजन्! जहाँ साक्षात् योगेश्वर नारायण श्री कृष्ण मौजूद हैं, जहाँ धनुर्विद्या में प्रवीण अर्जुन महारथी ने धनुष-बाण संभाल रखा है, वहाँ विजयश्री उन्हीं को प्राप्त होगी, ऐसी मेरी निश्चित मान्यता है।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार ही वर्तमान में पूरे जैन समाज की यह निश्चित धारणा बन गई है कि "जिस कार्य को योगीश्वरी के रूप में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने हाथ में ले लिया है एवं मूर्तरूप देने में कर्मठ पार्थ जैसे कार्यकर्ता जुट गये, तो समझो वह कार्य निश्चितरूप से अपूर्व सफलता के साथ पूर्ण होना ही है।"

वह कार्य चाहे शिष्य निर्माण का रहा, साहित्य सृजन का रहा, जंबूद्वीप रचना निर्माण का रहा या अन्य तीर्थों के निर्माण, विकास एवं जीर्णोद्धार का रहा, सभी के द्वारा ज्ञानमती माताजी की पहचान एक फौलादी व्यक्तित्व के रूप में बन चुकी है।

इन अनेक विशेषताओं से समन्वित पूज्य माताजी ने यूँ तो अपने 53 वर्ष के संयमी जीवन में लगभग पूरे देश में भ्रमण करके अनेक तीर्थयात्राएँ सम्पन्न की हैं, तथापि भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर की यह यात्रा विशेषरूप से ऐतिहासिक यात्रा इसलिए बन गई कि इसमें मात्र तीर्थयात्रा का भाव नहीं वरन् इतिहास एवं संस्कृति के संरक्षण का मूल लक्ष्य समाविष्ट है। जैसे—आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने जिनधर्म की रक्षा हेतु संघ सहित गिरनार सिद्धक्षेत्र की वंदना की थी और अकलंक देव ने जिनधर्म की प्रभावना हेतु तारादेवी से शास्त्रार्थ किया था। इसी प्रकार प्राचीन परम्परा एवं आर्ष ग्रंथानुसार भगवान महावीर जन्मभूमि के उपेक्षित स्वरूप को विकास का नया आयाम देने हेतु ही ज्ञानमती माताजी ने कुण्डलपुर यात्रा का संकल्प लिया। संभवतः दूरगामी भविष्य को देखते हुए ही वर्तमान के विद्वत् शिरोमणि प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन-फिरोजाबाद (उ.प्र.) प्रायः सभाओं में भी कहा करते हैं कि "पूज्य ज्ञानमती माताजी ने अपने जीवन में जितने भी कार्य किये हैं, वे सभी तराजू के एक पलड़े पर रखे जायें और कुण्डलपुर विकास प्रेरणा का कार्य दूसरे पलड़े पर रखा जाये तो मेरी दृष्टि में दूसरा पलड़ा भारी रहेगा क्योंकि युग-युग तक उनकी यह देन जैनसमाज ही नहीं, विश्व के लिए अविस्मरणीय हो गई और प्राचीन वास्तविक जन्मभूमि की रक्षा का यह कार्य वास्तव में ऐतिहासिक है।"

नूतन इतिहास का निर्माण एवं प्राचीन इतिहास की रक्षा करने वाले विरले महापुरुषों में ज्ञानमती माताजी ने सचमुच इस युग में कीर्तिमान स्थापित किया है जो श्रद्धालुओं के लिए श्रद्धास्पद रहा एवं कतिपय असहिष्णु व्यक्तियों के लिए निंदास्पद होने से तीव्र कर्मबंध का कारण भी बना।

➢कुण्डलपुर के लिए विहार की बात सुनकर दिल्लीवासी अधीर हो उठे—

13 फरवरी 2002 का वह शुभ दिन, जहाँ कुण्डलपुर के विकास की नूतन कथा का प्रारंभीकरण था, वहीं दिल्लीवासियों के लिए आश्चर्यमिश्रित दुःख का कारण था। विहार की बात सुनते ही वे अधीर हो उठे। महिला संगठन की अध्यक्षा श्रीमती आशा जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को सुनकर तो गहरा धक्का लगा कि कहाँ तो हम लोग मार्च में महिला संगठन का इतना भव्य कार्यक्रम माताजी की प्रेरणा एवं सानिध्य में आयोजित कर रहे थे और कहाँ माताजी ने हमें छोड़कर इतनी दूर जाने का निर्णय ले लिया। मॉडल टाउन की सुलोचना जी रोने लगीं और भी अनेकों भक्तों की आँखों से अश्रुधारा बह निकली, अनेक लोग कहने लगे — माताजी! आप हमें इस जन्मजयंती महोत्सव वर्ष में जो भी कार्य बताएंगी, हम करेंगे, पर आप हमसे दूर मत जाइए। परन्तु दृढ़निश्चयी माताजी के मुख से निकला प्रत्येक शब्द पत्थर की लकीर के समान अमिट होता है अत: उन्होंने सभी को समझा-बुझाकर शांत कर दिया और देखते ही देखते विहार की वह पावन बेला भी आ गई पुन: 20 फरवरी 2002 को पूज्य माताजी का राजाबाजार से मंगल विहार हो गया।

➢इण्डिया गेट से हुआ मंगल विहार —

वह ऐतिहासिक दिवस बड़ा शुभ था जब प्रात:काल से ही अनेकों शुभ समाचार मिल रहे थे। विहार से पूर्व हुई विशेष सभा में अनेकों गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे, जिनमें श्री निर्मल जी सेठी, श्री चक्रेश जैन, प्रो. रतन जैन, श्री सरोज जैन-तह. फतेहपुर, श्री कैलाशचंद जैन-लखनऊ रहे और सभी लोग इण्डिया गेट तक झण्डा लेकर अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक चले। कनॉट प्लेस से इण्डिया गेट तक पहुँची इस पदयात्रा में सभी के मुख पर प्रसन्नता थी कि भगवान महावीर की जन्मभूमि अब शीघ्र ही विश्व के मानस पटल पर छा जाएगी। पदविहार करने वाला प्रत्येक व्यक्ति भगवान महावीर एवं पूज्य माताजी के जयकारों से हर गली को अनुगुंजित कर रहा था। इण्डिया गेट पर पहुँचकर पूज्य माताजी ने देश के नाम अपना मंगल संदेश प्रसारित किया और फिर तो उस ऐतिहासिक स्थल से बढ़े माताजी के कदमों ने मानो कुण्डलपुर के इतिहास का प्रथम पृष्ठ ही लिख दिया।

➢संघपति की विनम्र प्रार्थना —

पूज्य माताजी के कुण्डलपुर विहार की बात जब संघपति महावीर प्रसाद जी-बंगाली स्वीट सेंटर, दिल्ली ने सुनी, तो वे तुरंत बोल पड़े — माताजी! आपके विहार की बात सुनकर मुझे हर्ष और विषाद दोनों हो रहे हैं। विषाद तो इसलिए कि आप हम भक्तों को छोड़कर इतनी दूर जा रही हैं और हर्ष इसलिए कि अब आपके करकमलों से एक और तीर्थ का उद्धार होने वाला है। उन्होंने आगे कहा —

माताजी! वैदिक महाभारत में यह वर्णन आता है कि जब कौरवों और पाण्डवों का युद्ध होने वाला था, तो श्रीकृष्ण ने दोनों पक्षों से एक-एक वर मांगने के लिए कहा था तो कौरवों ने अक्षौहिणी सेना मांगी थी जबकि पांडवों ने श्रीकृष्ण को ही मांग लिया था उसी प्रकार पूज्य माताजी! लोग भले ही सरकार द्वारा घोषित 100 करोड़ के अनुदान को पाने में लगे हुए हैं किंतु मैं तो समाज से आप जैसी तपस्वी साध्वी को पाने की इच्छा रखता हूँ, जिनके माध्यम से समय-समय पर हमें मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे। पुन: उन्होंने वैदिक रामायण का भी एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि जिस प्रकार चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात् जब रामचन्द्र अयोध्या में वापस आए, तो राम के राज्याभिषेक की तैयारियाँ की जा रही थीं। राज्याभिषेक से पूर्व श्री रामचन्द्र ने माता कौशल्या से कहा — माते! आज बहुत ही प्रसन्नता का दिवस है, इस अवसर पर मेरी इच्छा है कि राजतिलक की खुशी में चारों पुत्रवधुओं को भी कुछ न कुछ भेंट दी जाए। माता कौशल्या द्वारा सभी से पूछने पर किसी ने कुछ और किसी ने कुछ मांगा परन्तु शत्रुघ्न की पत्नी श्रुतिकीर्ति खामोश रहीं। उनसे पूछा गया कि आप भी कुछ मांगे, आप खामोश क्यों हैं? जब कई बार उनसे कहा गया तो वे बोलीं — पहले आप वचन दें कि मैं जो मांगूंगी, वह आप अवश्य देंगे। तब राम ने कहा — तुम अधिक से अधिक अयोध्या का राज्य मांगोगी, वह तो मैंने भरत-शत्रुघ्न को दिया हुआ ही है, अभी तो मैं उस सिंहासन पर बैठा भी नही हूँ। फिर भी मैं वचन देता हूँ कि तुम जो भी मांगोगी, मैं अवश्य दूँगा। इस प्रकार के वचनों को सुनकर श्रुतिकीर्ति आश्वस्त हो गईं और बोलीं — मुझे आप लोगों के वो वस्त्र चाहिए, जो आप लोगों ने वनवास में पहने थे, ताकि मैं भी आने वाली पीढ़ियों को बता सकूँ कि हमारे वंश में ऐसे आज्ञाकारी महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपने सुखों की परवाह न करके अपने पिता के वचनों का पालन किया। उसी प्रकार माताजी! मुझे भी आपके कुण्डलपुर जाते समय आपकी एवं चंदनामती माताजी की वह पवित्र साड़ी चाहिए, जिसे पहनकर आप लोगों ने कुण्डलपुर के विषय में चिंतन किया है क्योंकि यह सब सिद्धायिनी देवी की प्रेरणा का फल है। आपकी ये पवित्र साड़ी मेरे परिवार की भावी पीढ़ी को भी आप जैसे महान गुरुओं की भक्ति करने की प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

इसके साथ ही उन्होंने एक पंक्ति भी गुनगुनाई —

''रहके साथ तुम्हारे मैंने मांग लिए कुण्डलपुर के भगवान''

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢2601/-की राशि कुण्डलपुर के लिए वरदान बन गई—

यूँ तो भारत जैसे धर्मपरायण देश में अनेक ऐसे धर्मपरायण श्रेष्ठी उपस्थित हैं, जो चाहें तो केवल अपने ही धन से एक-एक तीर्थ को विकसित कर सकते हैं परन्तु माताजी का सदैव यही कहना रहता है कि तीर्थ विकास में जन-जन की भावनाएँ जुड़नी चाहिए, जिससे प्रत्येक श्रावक को यह लगे कि यह तीर्थ मेरा है और मैंने भी इसमें अपनी कुछ अर्थांजलि समर्पित की है। फिर बिना सबके सहयोग के तीर्थविकास संभव नहीं है। अतः जन-जन की भावनाएँ उस तीर्थ के साथ जोड़ने के उद्देश्य से भगवान महावीर के 2600 वर्षों के प्रतीकरूप 2601/- की अनुदान राशि की घोषणा की गई। फिर तो देखते ही देखते 2601/- की राशि देने वालों की लाइन लग गई, जिसमें सर्वप्रथम राशि देने का सौभाग्य श्री महेन्द्र जैन, मुकेश जैन, जिनेन्द्र प्रसाद जैन-ठेकेदार परिवार ने प्राप्त किया। इस प्रकार उस 2601/-की राशि ने बूंद-बूंद से सागर भरने की सूक्ति को चरितार्थ करते हुए कुण्डलपुर तीर्थ को साकार रूप दे दिया।

➢अनेक भव्यात्माओं ने लिए "मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत"—

जिस मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत ने मेरे मनोभावों को फलीभूत किया, उस महान व्रत को हजारों लोग ग्रहणकर अपनी मनोकामनाओं को सफलीभूत करें, ऐसी मेरी हार्दिक भावना थी, अतः माताजी की आज्ञा से मैंने स्थान-स्थान पर अनेकों श्रावक-श्राविकाओं को इस व्रत का महत्त्व बताया। फिर तो अनेकों स्त्री-पुरुषों ने इस व्रत को ग्रहण किया, आगरा शहर में तो एक स्थान पर 150 लोगों ने "महावीर व्रत" को ग्रहण किया। इसी प्रकार अनेकों स्थानों पर हजारों लोगों ने इस व्रत को ग्रहण किया, जिसमें से कई भाई-बहनों के व्रत पूर्ण भी हो चुके हैं और कुछ लोग तो 2-3 बार इस व्रत को कर चुके हैं और इसके प्रत्यक्ष चमत्कार का वर्णन करते नहीं थकते हैं।

➢कुण्डलपुर जैन तीर्थ के मंत्री अजय जी के द्वारा तीर्थ विकास की विस्तृत चर्चा—

10 मार्च को हम लोग छटीकरा नामक छोटे से ग्राम के पंचायत भवन में ठहरे हुए थे, वहाँ पटना से कुण्डलपुर तीर्थ के मानद मंत्री अजय कुमार जैन एवं राजगृही के मैनेजर माताजी के दर्शनार्थ पधारे। उस समय अजय जी ने माताजी को बताया कि किस प्रकार वैशाली स्थापना के बाद कुण्डलपुर को उपेक्षित किया गया किन्तु फिर भी वैशाली का न जाने कैसा योग रहा कि अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी उसका विकास नहीं हो पाया।

पुनः जब पूज्य माताजी से उनकी कुण्डलपुर विकास के संदर्भ में विस्तृत चर्चा हुई, तो सारी बात होने के बाद अजय जी मुझसे बोले कि माताजी! आज बड़ी माताजी से बात करके मेरा दिमाग एकदम ठीक हो गया और मेरा Brain Wash हो गया है।

➢सिद्धक्षेत्र चौरासी मथुरा में मंगल पदार्पण—

11 मार्च को प्रातः 9.30 बजे अंतिम अनुबद्ध केवली श्री जम्बूस्वामी की निर्वाणभूमि चौरासी मथुरा तीर्थ पर पहुँचकर मंदिर दर्शन कर मन आल्हादित हो उठा। यहाँ आकर पता लगा कि आज से 200 वर्ष पूर्व यहाँ खुदाई में जिस स्थान पर जम्बूस्वामी के पाषाण चरण मिले हैं, तब से उसी स्थान पर तीर्थ बनाया गया है, उससे पूर्व यह तीर्थ नहीं था, हाँ! गाँव में अवश्य मंदिर रहे होंगे। यहाँ तीर्थ पर लगे शिलालेख में लिखा है कि जम्बूस्वामी ने 84 वर्ष की आयु में 84 लाख योनियों से छूटकर यहाँ से मोक्ष प्राप्त किया था, इसलिए इस क्षेत्र का "चौरासी मथुरा" नाम पड़ा।

शाम 4 बजे पूज्य माताजी एवं हम सभी ने क्षेत्र परिसर का भ्रमण किया। 12 मार्च को मथुरा के जिनमंदिर में पूज्य माताजी ने जम्बूस्वामी के श्रीचरणों में केशलोंच किया। इस अवसर पर बल्लभगढ़, फरीदाबाद, पलवल, कामा, भरतपुर, कोसीकलां आदि स्थानों से बसों द्वारा काफी लोग इस केशलोंच समारोह को देखने हेतु पधारे। दिल्ली से संघपति लाला महावीर प्रसाद जी (सपत्नीक), प्रेमचंद जी, कमलचंद जी, अनिल जी, सत्येन्द्र जी, जिन्नो जी आदि कई लोग पधारे तथा समारोह के बाद जब कुण्डलपुर के शिलान्यास संबंधी मीटिंग हुई, तो कमलचंद जी-खारीबावली ने प्रसन्नमना होकर दिल्ली से पूरी एक रेलबोगी निःशुल्क ले जाने एवं भोजन आदि संबंधी व्यवस्था अपनी ओर से करने की स्वीकृति प्रदान की।

मथुरा के 6 दिवसीय प्रवास में जहाँ हमने जिनमंदिरों के दर्शन के साथ-साथ कृष्ण जन्मभूमि, मथुरा संग्रहालय, कंकाली टीला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदि का अवलोकन किया, वहीं आचार्य श्री सुबलसागर महाराज की शिष्याओं—आर्यिका श्री अजितमती माताजी एवं सुमतिमती माताजी से मिलकर मन में बड़ी खुशी हुई। सरल स्वभावी माताद्वय पूज्य ज्ञानमती माताजी के दर्शन कर भावविभोर हो गईं और माताजी से दूर होते समय इनकी आँखों में अश्रु आ गए। वास्तव में साधु-साध्वियों का पारस्परिक मिलन भी बड़ा रोमांचक और वात्सल्यमयी रहता है।

➢ताज नगरी आगरा में संघ का मंगल पदार्पण एवं महती धर्मप्रभावना—

मुगल सम्राट् शाहजहाँ और उनकी बेगम मुमताज के युग की याद दिलाती ताज नगरी आगरा जहाँ पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है, वहीं यह धर्मपरायण नगरी के रूप में भी जानी जाती है, जहाँ अनेकों जिनमंदिर जैनत्व की पताका को फहरा रहे हैं। 20 मार्च को संघ का मंगल पदार्पण प्रभावनापूर्वक आगरा शहर में हुआ। हरिपर्वत कालोनी के शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दर्शन के पश्चात् परिसर में निर्मित विशाल हॉल में प्रवचन सभा हुई। आगरा की दिगम्बर जैन परिषद यहाँ की सबसे प्रमुख संस्था मानी जाती है।

प्रवचन सभा में क्षुल्लक मोतीसागर जी ने अपने ओजस्वी प्रवचन में आगरावासियों को कुण्डलपुर के विकास अभियान के साथ जोड़ने हेतु आह्वान किया तथा उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह कुण्डलपुर जन-जन के 2601 रु. के सहयोग से निर्मित किया जा रहा है और पूरे देश की जनता के साथ-साथ आगरावासियों के भी अधिक से अधिक नाम कुण्डलपुर की इस विकास योजना में आना चाहिए। उनके उद्बोधन के पश्चात् परिषद के महामंत्री तथा सभा के कुशल संचालक श्री जितेन्द्र जी ने पूरी आगरा समाज को सम्बोधित करते हुए कहा कि पूज्य माताजी द्वारा कुण्डलपुर विकास का यह अभियान हम सभी के लिए गौरव का विषय है। पुनः इसमें आगरा के 500 लोगों के नाम लिखवाने की उन्होंने घोषणा की। उनकी भावना के अनुसार आगरा से 300 से भी अधिक नाम हुए, जो कुण्डलपुर के शिलालेख पर अंकित हो चुके हैं।

➢गांधी के दाण्डी मार्च का प्रतीक है यह कुण्डलपुर यात्रा—

आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। जैसे परतन्त्र भारत को आजाद कराने के लिए महात्मा गांधी ने मार्च 1930 में दांडी मार्च प्रारंभ किया था और उस यात्रा का महत्त्व 15 अगस्त 1947 को दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा झण्डा फहराने के बाद देशवासियों को ज्ञात हुआ था, वैसे ही आज हमारी राष्ट्रगौरव पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की इण्डिया गेट दिल्ली से प्रारंभ हुई महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर-नालंदा (बिहार) तक की यह यात्रा जैन समाज के लिए दांडी मार्च से अधिक महत्त्वपूर्ण है। कुण्डलपुर का विकास होकर जिस दिन महावीर जन्मभूमि का वास्तविक रूप निखरकर आएगा, उस दिन माताजी की यात्रा सारे जैन समाज के लिए एक असली इतिहास का दिग्दर्शन कराएगी।

उक्त विचार कमलानगर-आगरा में पूज्य माताजी के पदार्पण अवसर पर प्रवचन सभा के कुशल युवा संचालक श्री मनोज कुमार जैन ने प्रकट करते हुए कहा कि हम सोच भी नहीं सकते थे कि पूज्य माताजी जैसी महान साध्वी के चरण कभी हमारे आगरा शहर में भी पड़ेंगे।'' वास्तव में भक्तिगंगा में सराबोर आगरा की जनता फरवरी 2003 में कुण्डलपुर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव में जाने हेतु जहाँ अभी से संकल्पित हो रही थी, वहीं उसके विकास के लिए पूर्ण समर्पण भाव को भी दर्शा रही थी।

➢पूज्य माताजी का 50वाँ क्षुल्लिका दीक्षा दिवस—

चैत्र वदी एकम् की वह पवित्र तिथि आगरा में आ गई, जब श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण महाराज ने इस युग की प्रथम कुंवारी कन्या को क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान कर ''वीरमती'' नाम से सुशोभित किया था, आज वीरमती से ज्ञानमती तक के उन 50 वर्षों में उन महातपस्विनी माताजी ने जैन जगत को अनगिनत चेतन-अचेतन निधियाँ प्रदान कीं, जिनका उपकार यह जगती युगों-युगों तक नहीं चुका सकती, आगरा वालों का यह महान सौभाग्य ही था कि उन्हें इस तिथि को आत्मसात करने का सुनहरा मौका मिल गया था अतः प्रातः 8.30 बजे से 11.30 बजे तक धर्मशाला प्रांगण में सभा का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक लोगों ने पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित की।

➢''आधी रोटी खाएंगे, पर कुण्डलपुर को बनाएंगे''—

समाजसेवी श्रावक श्री शिखरचंद जैन-आगरा के द्वारा अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए कहे गए उक्त वाक्य ने आगरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाज की भक्ति भावनाओं को आंदोलित कर दिया और उनके इस नारे के साथ अनेकानेक भक्तों ने "महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर" को सिर आँखों पर रखकर उसके विकास में भारी योगदान दिया।

परिषद के यशस्वी अध्यक्ष श्री मनोहरलाल जैन ने असीम उत्साह के साथ कुण्डलपुर में भगवान महावीर स्वामी के महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव में भारी जनसमूह के साथ भाग लेने का उद्घोष किया।

बेलनगंज से छीपीटोला और छीपीटोला से ताजगंज में पदार्पण हुआ, यहाँ का मंदिर 400 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है और यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की अत्यन्त सुन्दर वि.सं. 1497 की प्रतिमा विराजमान हैं। ताजगंज से ज्योतिनगर पुनः जयपुर हाउस होते हुए हरिपर्वत पहुँचे। इस प्रकार आगरा के 30 मंदिरों के दर्शन कर पूज्य माताजी एवं हम सभी का मन प्रसन्न हो उठा, वस्तुतः ये जिनमंदिर हमारी जिनसंस्कृति के गौरव हैं, उनकी शान हैं।

इस प्रकार आगरा की 26 कालोनियों की ओर से लोगों ने माताजी के श्रीचरणों में श्रीफल समर्पित कर वहाँ पधारने का अनुरोध किया। लगभग 19 दिवसीय आगरा प्रवास के मध्य संघ का आगरा की विभिन्न कालोनियों में भ्रमण हुआ।

➢कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में कीर्तिस्तंभ शिलान्यास समारोह—

कुण्डलपुर तीर्थ विकास की शृंखला में प्रथम कृति के रूप में प्राचीन मंदिर में भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ के शिलान्यास का सुयोग 24 मार्च 2002, रविवार, फाल्गुन शु. 10 को आया, जब दिल्ली से लाला कमलचंद जी (कीर्तिस्तंभ निर्माणकर्ता) ट्रेन की एक बोगी द्वारा अनेक श्रद्धालुभक्तों के साथ कुण्डलपुर की पावन धरा पर पहुँचे। संघ से ब्र.रवीन्द्र जी एवं ब्र. बहनों— कु. आस्था एवं कु. सारिका जैन ने भी पूज्य माताजी की आज्ञानुसार वहाँ जाकर उसे सानन्द सम्पन्न करवाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

समाजरत्न श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली ने अपने पांचों भाइयों एवं समस्त परिवार सहित कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास किया।

इस अवसर पर अनेक स्थानों से लोग पधारे तथा बिहार प्रान्त के पूर्व शिक्षामंत्री ने भी पधारकर पूज्य माताजी को परोक्षरूप में नमन करते हुए अपार प्रसन्नता व्यक्त की।

➢सुहाग नगरी फिरोजाबाद में हुई ज्ञानामृत वर्षा—

आगरा शहर में भारी धर्मप्रभावना करने के पश्चात् एत्मादपुर, टूण्डला आदि होते हुए 15 अप्रैल 2002 को पूज्य माताजी एवं समस्त संघ का मंगल प्रवेश सुहाग नगरी के रूप में विख्यात फिरोजाबाद के छदामी लाल जैन ट्रस्ट के दिगम्बर जैन मंदिर में हुआ।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से यहाँ विराजमान भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा का 108 कलशों से मस्तकाभिषेक हुआ। फिरोजाबाद में 15 दिवसीय प्रवास के मध्य अनेकों जिनमंदिरों के दर्शन का सुयोग प्राप्त हुआ, जिसमें यहाँ के अतिशयकारी चन्द्रप्रभु जिनमंदिर में एक 84 वर्षीय प्रेमचंद जैन ने हमें बताया कि माताजी ! चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज ने कहा था कि यह चन्द्रप्रभु भगवान बनारस की शिवपिंडी से निकले हुए हैं अतः यह 1000 वर्ष प्राचीन प्रतिमा है, उनके दर्शन करके मन अति प्रसन्न हुआ।

➢पूज्य माताजी का 47वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस—

महापुराण में आचार्य जिनसेन स्वामी कहते हैं—

पुण्ये प्रसेदुषि नृणां किमिवास्त्यलङ्घ्यम्?

अर्थात् पुण्य के प्रसाद से मनुष्यों को सब कुछ प्राप्त हो सकता है। शायद यही कारण था कि फिरोजाबाद की जनता को एक के बाद एक सुअवसर प्राप्त हो रहे थे, इसी क्रम में उन्हें पूज्य माताजी का 47वाँ आर्यिका दीक्षा जयंती महोत्सव मनाने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ।

वैशाख कृष्णा दूज की इस दीक्षा तिथि पर आयोजित 47वें आर्यिका दीक्षा दिवस समारोह में पूज्य माताजी को फिरोजाबाद दिगम्बर जैन समाज द्वारा "युगनायिका" की उपाधि से अलंकृत किया गया।

आयोजित विनयांजलि सभा में डॉ. विमला जैन, डॉ. रश्मि जैन, एडवोकेट अनूप चंद जैन, श्री भागचंद जैन, श्री कांतिचंद-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिरोजाबाद, पण्डित सुधर्मचंद शास्त्री-जबलपुर, श्री अनिल जैन (कमल मंदिर), लाला महावीर प्रसाद जैन संघपति-दिल्ली आदि महानुभावों ने अपनी विनम्र विनयांजलि पूज्य माताजी के चरणों में अर्पित की। प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मात्र सरकार से करोड़ों रुपया पाने के लालच में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर को उपेक्षित कर कतिपय नेताओं द्वारा पाश्चात्य एवं स्वदेशी विद्वानों— जैकोबी, योगेन्द्र मिश्र आदि के समर्थन से वैशाली को भगवान महावीर की जन्मभूमि सिद्ध किया जा रहा है, ऐसे समय में पूज्य माताजी ने समस्त समाज को जागृत करके महान उपकार किया है। **पूज्य माताजी का कुण्डलपुर की ओर विहार ही सबसे बड़ा प्रमाण है कि कुण्डलपुर ही भगवान महावीर की जन्मभूमि है, जो भी इस ऐतिहासिक तथ्य को बदलना चाहते हैं, उन्हें इतिहास कभी माफ नहीं करेगा।**

तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास जैन अस्मिता की रक्षा है—

आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी ने कहा है—

इक्षोर्विकाररसपृक्तगुणेन लोके, पिष्टोधिकं मधुरता-मुपयाति यद्वत्।।
तद्वच्च पुण्यपुरुषैरुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगता-मिह पावनानि।।

अर्थात् जिस प्रकार शक्कर-चीनी के मिश्रण से आटा मीठा-सुस्वादु हो जाता है, उसी प्रकार पुण्यात्मा महापुरुष की चरण रज से यह धरती भी पवित्र तीर्थ का स्वरूप प्राप्त करती है। तीन लोक के अग्रभाग पर सिद्धशिला के ऊपर अनन्तानन्त सिद्ध परमात्मा विराजमान हैं, उन सभी सिद्धों को तथा सिद्धपद के प्राप्तिस्थल समस्त तीर्थों को मेरा बारम्बार नमस्कार है।

ऐसे तीर्थों को जैनाचार्यों ने तीन भेदों में विभक्त किया है— 1. तीर्थक्षेत्र 2. सिद्धक्षेत्र 3. अतिशय क्षेत्र। तीर्थंकर भगवन्त, सामान्य केवली तथा विशिष्ट आचार्य एवं मुनियों के गर्भ-जन्म-तप-ज्ञानकल्याणक अथवा उनके मंगल विहारों से पावन स्थल तीर्थक्षेत्र कहलाते हैं, जहाँ से भगवन्तों ने मोक्ष प्राप्त किया, उन्हें सिद्धक्षेत्र या निर्वाणक्षेत्र कहते हैं और विशेष इतिहास या चमत्कारों से संबंधित भूमियाँ अतिशय क्षेत्र के रूप में मानी जाती हैं।

इन पवित्र भूमियों की शृंखला में भारत की धरती पर अहिंसा के अवतार माने जाने वाले जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की वह जन्मभूमि, जहाँ 2600 वर्ष पूर्व देवोपुनीत असंख्य वैभव था, रत्नों के भण्डार भरे थे एवं इन्द्रों से भी पूज्य महाराजा सिद्धार्थ एवं महारानी त्रिशला के सुख की तुलना संसार का कोई प्राणी नहीं कर सकता था, वह कुण्डलपुर पिछली शताब्दियों के परतन्त्रकालीन युग में अत्यन्त अल्प सीमा में सिमट कर रह गया पुनः जैन समाज ने कुछ अतिशय-चमत्कारों की ओर अधिक आकर्षित हो जाने के कारण अपने शाश्वत एवं महत्वपूर्ण तीर्थों को उपेक्षित कर दिया। यही कारण रहा कि अयोध्या एवं सम्मेदशिखर जैसे अनादिकालीन तीर्थ तथा वर्तमानकालीन अन्य तीर्थंकरों की जन्मभूमियाँ कुण्डलपुर, सिंहपुरी, चन्द्रपुरी, काकन्दी, मिथिला, भद्दिलपुर आदि तीर्थ भी उपेक्षा के क्रम में आ गए और आज वे अपने सौभाग्य को पुनः प्राप्त करने के इंतजार में हैं किन्तु वास्तव में देखा जाए, तो तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास जैन अस्मिता की रक्षा है। यदि हम और आप सभी मिलकर प्राथमिक तौर पर इन तीर्थंकर जन्मभूमियों के जीर्णोद्धार एवं विकास में संलग्न हो जावें, तो वह दिन दूर नहीं, जब हम स्वयं अपनी आँखों से उनका वास्तविक विकसित रूप देख सकेंगे।

➢शौरीपुर की पवित्र रज को छुआ—

जिनशासन के वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों में 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के वैराग्य की गाथा एवं उनके तीन कल्याणक से पवित्र गिरनार सिद्धक्षेत्र आज प्रत्येक जनमानस की चर्चा के विषय हैं। उन नेमि तीर्थंकर के साथ वह राजुल सती भी धन्य हो गईं, जिन्होंने नेमिप्रभु के विवाह के वक्त वैरागी हो जाने पर स्वयं भी उनके पादमूल में आर्यिका दीक्षा लेकर अपना नाम अमर कर लिया और सिद्धपद की अनुगामिनी हो गई थीं। उन नेमि जिनेश्वर ने जिस पवित्र भू पर जन्म लिया, जहाँ अपनी शैशवावस्था, कुमारावस्था बिताई, उसके बारे में कतिपय लोग ही जानते हैं, जो जैन समाज के लिए चिन्तन का विषय है।

3 मई 2002 को उस पवित्र धरा की धूलि को मस्तक पर चढ़ाकर उन प्रभुवर को नमन करने का सौभाग्य पूज्य माताजी के कुण्डलपुर विहार के मध्य हम सभी को प्राप्त हुआ। यहाँ पास में बटेश्वर में रुकने की अच्छी व्यवस्था है, जिनमंदिर में नेमिनाथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान की मनोज्ञ, प्राचीन प्रतिमा विराजमान है परन्तु उससे 2 किमी. दूर शौरीपुर, जो वास्तविक जन्मभूमि है, अत्यन्त उपेक्षित है और वहाँ लोग जाने से भी डरते हैं। जब पूज्य माताजी ने वहाँ जाने की बात कही, तो तीर्थ के पदाधिकारियों एवं शिरसागंज व आसपास से पधारे दर्शनार्थियों ने कहा कि — माताजी! आप कल ही शौरीपुर जाना और दर्शन करके वापस आकर यहीं ठहरना किन्तु माताजी ने कहा कि मैं एक दिन अपने असली तीर्थ पर अवश्य रुकूँगी। सो शाम को विहार कर रात्रि विश्राम वहीं किया। चूँकि 50 वर्षों में कोई साधु इस शौरीपुर तीर्थ पर नहीं रुका था और पूज्य माताजी संघ की छोटी-छोटी सुकुमार बालिकाओं को लेकर निर्भयमना इस तीर्थ पर रुकी थीं अतः अज्ञात भय के कारण यहाँ कमेटी के लोगों ने पुलिस चौकी से दो बंदूकधारी सिपाही बुलाकर पहरे पर तैनात कर दिए लेकिन पूज्य माताजी का यही कहना रहा कि भइया! अपन साधु हैं और साधु को किसी उपसर्ग, भय अथवा मृत्यु का डर व चिंता नहीं रहती।

वैसे क्षेत्र सुंदर होने के साथ साफ-सुथरा है किन्तु बटेश्वर से शौरीपुर आने का रास्ता बड़ा सुनसान व निर्जन है। 4 मई को पूज्य माताजी ने प्रातः 5 बजे तीर्थ के मंदिर जी में जाकर सामायिक व ध्यान किया, दोनों मंदिर के दर्शन कर अभिषेक देखा तथा वरुआमठ के बड़े मंदिर वाले खड्गासन नेमिनाथ बाबा का 108 कलशों से अभिषेक कराया। यहाँ की प्रतिमा की प्रशस्ति में 50 वर्ष पूर्व के गणतंत्र शासन एवं राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का नाम भी अंकित है। प्रतिमा के आजू-बाजू में सुन्दर यक्ष-यक्षी हैं। आगरा से आए क्षेत्र के पदाधिकारी श्री स्वरूपचंद जैन मार्शन्स (अध्यक्ष), श्री मनोहरलाल जी, श्री निर्मल जैन आदि ने क्षेत्र की प्रगति के लिए पूज्य माताजी से काफी विस्तृत चर्चा की।

➢भयंकर लू के थपेड़े भी सहन किये—

जसवन्तनगर से इटावा की ओर जब संघ का प्रस्थान हुआ, तो भयंकर गर्मी पड़ रही थी। वहाँ उस समय 48 डिग्री तापमान चल रहा था। आगे-पीछे, ऊपर-नीचे चारों ओर से चल रहे भयंकर लू के थपेड़ों के कारण पदविहार करना अत्यन्त कठिन प्रतीत हो रहा था और साथ चलने वाले लोग बार-बार यही कह रहे थे कि माताजी! इतनी भयंकर गर्मी में आप किस प्रकार नंगे पैर चल रही हैं, हम तो पैरों में चप्पल-जूते पहने हैं, फिर भी हमारे लिए चलना मुश्किल है। सचमुच जैनी दीक्षा तलवार की धार पर चलने के समान है। माताजी! इतनी गर्मी में तो आप कहीं एक जगह विश्राम करें।

परन्तु साधु के लिए क्या गर्मी, क्या सर्दी? उन्होंने तो इन सभी परीषहों को सहन करने के लिए ही दीक्षा ली है अतः मन में भगवान महावीर की भक्ति को संजोए हम अपने पथ पर बढ़ते रहे। उस समय संघ की ब्रह्मचारिणी बहनों के भी स्वास्थ्य काफी गड़बड़ हुए। इटावा में भी प्रवेश के समय हवा बंद होने के कारण चलने में बहुत कठिनाई हुई और उसमें भी लगभग 2 किमी. का जुलूस था। 15 मई को इटावा में ही अक्षय तृतीया पर्व का विशेष कार्यक्रम रखा गया और पूरे नगरवासियों ने भगवान को इक्षुरस का आहार दिया पुनः सभी को प्रसाद वितरित किया गया। 17 मई को इटावा के छिपैटी मंदिर में वेदी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

➢पूज्य माताजी का नागरिक अभिनंदन—

इटावा नगरी में 18 मई को खुशियों का माहौल था क्योंकि आज वहाँ के नागरिक माताजी का अभिनंदन करना चाहते थे। प्रातःकालीन भव्य सभा का आयोजन उन्होंने मंदिर परिसर के ही भव्य प्रांगण में किया था। उसमें अनेक गणमान्य महानुभावों ने पूज्य माताजी के प्रति अपने सुन्दर विचार प्रस्तुत किए और जन्मभूमि कुण्डलपुर विकास की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। लेकिन भीषण गर्मी के कारण माताजी वहाँ इतनी अस्वस्थ हो गईं कि वे कमरे से बाहर पाण्डाल में भी न आ सकीं। पुनः पूरी सभा मेरे एवं क्षुल्लक मोतीसागर जी के सानिध्य में चली और सम्पूर्ण जैन समाज इटावा की ओर से पूज्य माताजी का अभिनंदन करके प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया, उस समय भी माताजी ने यही वाक्य दोहराए कि भाई! मैंने जो कदम बढ़ाए हैं अथवा जो मैं तीर्थंकर जन्मभूमि का विकास करवा रही हूँ, वह अपनी प्रभावना अथवा अपने अभिनंदन के लिए नहीं, अपितु तीर्थ एवं तीर्थंकर भगवन्तों की प्रभावना हेतु निकली हूँ, मेरे लिए तो मेरा सब कुछ मेरी आर्यिका पदवी ही है। माताजी की एकदम निढाल अवस्था देखकर इटावा वाले माताजी को 2-4 दिन वहीं रोकने के लिए अत्यर्थ निवेदन कर रहे थे किन्तु माताजी अगले दिन प्रातः विहार करके जब आगे खुले स्कूल में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकर ठहरीं, तो उनका स्वास्थ्य कुछ ठीक हो गया। शहर के प्रदूषण एवं गर्मी से उन्हें गर्मी में प्रायः तकलीफ हो जाया करती है। इसीलिए देखा है कि गर्मी का विहार इनके लिए अति हानिकारक रहता है।

➢बदलते मौसम से बढ़ गई विहार की गति—

पिछले दिनों की पड़ी भयंकर गर्मी को देखकर एक बार तो यही लगा कि शायद विहार की गति मंद पड़ जाएगी और हम लोग नियत समय पर प्रयाग तीर्थ पर नहीं पहुँच सकते हैं परन्तु हमें निश्चित रूप से मौसम को धन्यवाद देना पड़ेगा कि 28 मई की रात्रि में 2 बजे अत्यधिक आंधी और बारिश के कारण सुबह मौसम बेहद सुहावना रहा और हम लोगों को जिस स्थान घाटमपुर में रुकना था, उसे छोड़कर आगे जाकर रुके और चूँकि वहाँ 2-3 जैन घर हैं अत: घाटमपुर के स्त्री-पुरुषों ने वहीं परासगांव के विद्यालय में आकर प्रवचन का लाभ लिया।

मौसम अच्छा हो जाने के कारण आगे विहार का कार्यक्रम कुछ द्रुतगति से बनने लगा और हमें ऐसा लगा कि हम जल्दी ही प्रयाग-इलाहाबाद पहुँच जायेंगे।

➢इलाहाबाद शहर में संघ का मंगल पदार्पण—

11 जून 2002 को पूज्य माताजी ने संघ सहित एक बार पुन: इलाहाबाद नगरी में मंगल प्रवेश किया था। यह सूक्ति लोक व्यवहार में बड़ी प्रसिद्ध है—**बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख।**'' अथवा यो कहें कि कभी-कभी अनायास ही व्यक्ति को ऐसी अनमोल वस्तु मिल जाती है जिसकी उसने कल्पना भी न की हो और शायद यही इलाहाबादवासियों के साथ हो रहा था। क्योंकि एक बार पुन: पूज्य माताजी के दर्शनों का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हो रहा था। यहाँ बैण्ड-बाजे के साथ सारे समाज के लोग भव्य स्वागत हेतु उमड़ पड़े थे। एकदिवसीय प्रवास नई धर्मशाला में रहा। पिछले वर्ष इस नई धर्मशाला का उद्घाटन पूज्य माताजी के सानिध्य में विश्वशांति महावीर विधानपूर्वक हुआ था और उस समय मैंने वहाँ के कार्यकर्ताओं को प्रेरणा दी थी कि आप लोग इस भवन का नाम ''**महावीर जयंती भवन**'' रखें, सो वहाँ देखा कि भवन के आगे ''**महावीर जयंती भवन**'' का उद्घाटन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में 6 अप्रैल 2001 को हुआ" इस मैटर का शिलालेख लगा था। जिसे देखकर मन में खुशी हुई क्योंकि माताजी की इस भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महामहोत्सव के अन्तर्गत प्रत्येक जैन श्रावक के लिए यही प्रेरणा रही है कि आप सब अपने शहर में नूतन जिनमंदिर, धर्मशाला आदि के निर्माण कराते समय "भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत" अवश्य लिखें तथा धर्मशाला आदि का नामकरण भगवान महावीर के नाम पर करें।

➢कुण्डलपुर की यात्रा ने ऋषभदेव दीक्षास्थली के दर्शन कराये—

पदविहार करने वाले साधु के लिए एक बार किसी तीर्थ से निकलने के बाद वापस पुन: आना कोई निश्चित नहीं होता है, यह एक सुखद और अनहोना संयोग ही था कि कुण्डलपुर की ओर हो रहे विहार के कारण एक बार पुन: हमें दीक्षास्थली तीर्थ के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो गया और उस क्षण की स्मृति हो आई, जब इस तीर्थ को छोड़ते समय अत्यन्त विह्वलता के कारण मेरी आँखों में अश्रु आ गए थे, उस समय मैंने भगवान ऋषभदेव की चरण वंदना करते हुए यही भावना निवेदित की थी—

''यह प्रार्थना है मेरी, श्री ऋषभ प्रभु जी तुमसे।
इक बार फिर बुलाना अपनी तपस्थली पे।''

शायद मेरी उस सच्ची भावना को, उस प्रार्थना को पूर्ण होने में मात्र 1 वर्ष का ही समय लगा और एक वर्ष के बाद ही पुन: न सिर्फ दिल्ली से मंगल विहार के पश्चात् 113 दिनों में तीर्थ पर आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ अपितु सन् 2002 के चातुर्मास का योग भी यहीं आ गया। मन के उस आल्हाद को शब्दों के माध्यम से प्रकट करने में मैं असमर्थता महसूस कर रही हूँ।

➢भव्य कैलाशपर्वत पर 72 प्रतिमाएँ विराजमान हुईं—

पूज्य माताजी की प्रेरणा से "तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली" प्रयाग दिगम्बर जैन तीर्थ के नाम से एक ही वर्ष में प्रसिद्ध हो जाने वाले इस तीर्थ पर दीक्षाकल्याणक तपोवन में धातु के वटवृक्ष के नीचे महामुनि ऋषभदेव की पिच्छी-कमण्डलु सहित खड्गासन प्रतिमा, केवलज्ञान कल्याणक समवसरण, निर्वाणकल्याणक कैलाशपर्वत एवं भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ इत्यादि रचनाएँ इस प्राचीनतम तीर्थ "प्रयाग" में भगवान ऋषभदेव के स्वर्णिम इतिहास की गाथा प्रत्यक्ष उच्चारित कर रहे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

24 जून 2002, ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा को पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में भारतवर्ष में प्रथम बार निर्मित सुन्दर कैलाशपर्वत का उद्घाटन एवं लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ पर 108 फुट लम्बे, 72 फुट चौड़े एवं 51 फुट ऊँचे कैलाशपर्वत की अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक रचना का निर्माण मात्र एक वर्ष की अल्प अवधि में किया गया। पानी के झरनों, फव्वारों एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से समन्वित इस कैलाशपर्वत पर 72 जिनमंदिर स्थापित किए गए, जो सम्राट भरत चक्रवर्ती द्वारा वास्तविक कैलाशपर्वत पर विराजमान 72 जिनचैत्यालयों की याद दिलाते हैं। भूत, भविष्यत् एवं वर्तमानकाल की तीन चौबीसी की 72 जिनप्रतिमाओं को कैलाशपर्वत पर निर्माण का सौजन्य प्रदान करने वाली स्व. श्रीमती सुलोचना जैन ध.प. श्री चेतनलाल जैन के सुपुत्र श्री सत्येन्द्र कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली ने अपने विशाल परिकर के साथ प्रातः 9.30 बजे पर्वत पर स्थापित जिनचैत्यालयों में तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाओं को विराजमान किया, साथ ही राजधानी दिल्ली, महाराष्ट्र, म.प्र., उ.प्र., अवध प्रान्त इत्यादि सभी अंचलों के श्रावकों ने भी प्रतिमाएं विराजमान करने का पुण्य प्राप्त किया। इसके साथ ही अनिल कुमार जैन, कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली के सौजन्य से निर्मित 31 फुट ऊँचे "भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ" में भी 8 प्रतिमाएँ विराजमान की गईं। इस अवसर पर सतेन्द्र कुमार जी को 'दानवीर' की उपाधि से अलंकृत करते हुए रजत प्रशस्ति भेंट की गई।

➢वर्षायोग स्थापना में कलश स्थापना की परम्परा कब से चली?—

इलाहाबाद-बनारस हाइवे पर स्थित इस प्रथम दिगम्बर जैन तीर्थ पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं हम सभी को मंगल चातुर्मास स्थापित करने का सुयोग 23 जुलाई 2002 को प्राप्त हुआ।

पूज्य माताजी का वर्षायोग स्थापना के बारे में सदैव यही कहना रहा है कि मुझे "**वर्षायोग स्थापना**" के दिन मंगल कलश स्थापना करना इष्ट नहीं है और मैं जानना चाहती हूँ कि यह परम्परा कब, कैसे एवं किसके द्वारा प्रारंभ की गई तथा अनेक साधुसंघ उसका अनुकरण क्यों करने लग गये?

उनका कहना है कि मैंने बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज, उनके प्रथम शिष्य एवं प्रथम पट्टाचार्य गुरुवर्य श्री वीरसागर जी महाराज, आचार्य श्री शिवसागर महाराज एवं आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज के संघ सानिध्य में वर्षायोग-चातुर्मास स्थापना देखी है एवं उनके साथ स्थापना की है। इनमें से किन्हीं भी आचार्यों ने एवं आचार्य देशभूषण जी आदि आचार्यों ने चातुर्मास स्थापना के समय मंगल कलश स्थापित नहीं कराया था। यह चिन्तनीय है कि यह परम्परा 15-20 वर्षों में कब और कैसे चली? माताजी तो यह सुनकर ही आश्चर्यचकित हो उठती हैं कि कोई साधु एक मंगल कलश स्थापना करते हैं तो कोई-कोई तीन, सात, नौ, इक्कीस तथा कोई साधु एक सौ आठ मंगल कलश भी स्थापित करने लगे हैं और उनकी ऊंची-ऊंची बोलियों से ही साधुओं की महानता को आंका जाने लगा है। सबसे अधिक आश्चर्य एक स्थान पर दिखा, जब एक गांव के मंदिर में एक कांचकेस में मंगल कलश रखा था। चातुर्मास के बाद साधु वहाँ से विहार कर चुके थे, फिर भी प्रतिदिन लोग भगवान के दर्शन के बाद उस कलश के आगे चावल चढ़ाकर घुटने टेककर पंचांग नमस्कार कर रहे थे। तब उन श्रावक से माताजी ने पूछा—ऐसा क्यों कर रहे हो? तब उसने कहा—मुझे गुरुदेव की आज्ञा है इत्यादि..........वर्तमान में पोस्टर एवं कुंकुम पत्रिका में भी "चातुर्मास स्थापना समारोह" या "वर्षायोग स्थापना समारोह" न छपाकर "मंगल कलश स्थापना समारोह" छपने लगा है। यह "मंगल कलश स्थापना" न तो कहीं आचारसार, मूलाचार, भगवती आराधना आदि मुनियों के आचार ग्रंथों में है और न कहीं उमास्वामी श्रावकाचार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, वसुनंदि श्रावकाचार, सागार धर्मामृत आदि श्रावकाचार ग्रंथों में ही है।

➢मोक्ष सप्तमी के दिन कुण्डलपुर में नई जमीन की रजिस्ट्री हुई—

4 अगस्त 2002 को ब्र. रवीन्द्र जी पूज्य माताजी का मंगलमय आशीर्वाद लेकर कुण्डलपुर-नालंदा (बिहार) में भूमि क्रय हेतु कई पदाधिकारियों के साथ गए थे, 6 अगस्त को वहाँ से ब्र. रवीन्द्र जी का फोन आया कि वहाँ जमीन की रजिस्ट्री हेतु लिखा-पढ़ी शुरू हो गई है। यह सुनकर पूज्य माताजी एवं हम सभी को बड़ा आल्हाद हुआ कि आज श्रावण कृष्णा त्रयोदशी-मंगलवार के दिन जमीन के कार्य का आरंभ हुआ है, उस समय माताजी के मुख से सहसा निकल पड़ा कि यहाँ सभी लोग खूब मंत्र जाप्य करो, निश्चित ही मंगलत्रयोदशी के दिन आरंभ हुआ कुण्डलपुर का निर्माण खूब विश्वव्यापी होगा। पुनः दुबारा जाने पर 14 अगस्त (श्रावण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शु. सप्तमी) को जमीन की पूरी रजिस्ट्री हो गई, यह सुनकर प्रयाग में हम सभी खुशी से झूम उठे, पुनः माताजी ने वहाँ के कार्यकर्ताओं से कहा कि कल प्रातः भगवान के सामने 108 दीपक जलाकर भगवान की आरती करो और सबको खुशी से लड्डू बांटो।

वस्तुतः जिनके रग-रग में मात्र तीर्थंकर प्रभु की भक्ति ही समाई हो, उन मातुश्री को तीर्थंकर जन्मभूमि उद्धार के प्रारंभीकरण की मंगल सूचना कितना आल्हाद प्रदान करेगी, उसका वर्णन शायद लेखनी द्वारा शक्य नहीं है।

➢स्वर्णिम शरदपूर्णिमा एवं कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन—

प्रयाग तीर्थ की पावन वसुन्धरा पर पूज्य माताजी का 69वाँ जन्मदिवस एवं 51वाँ त्यागदिवस-स्वर्णिम शरदपूर्णिमा 19 से 21 अक्टूबर 2002 तक विविध आयोजनों के साथ अत्यंत सफलता एवं स्वर्णिम आभा सहित सम्पन्न हुआ।

उसमें झण्डारोहण के पश्चात् प्रातः 10.30 बजे "कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन" का उद्घाटन हुआ। माननीय मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण जी अग्रवाल (न्यायाधीश-इलाहाबाद उच्च न्यायालय) द्वारा द्वीप प्रज्वलन कर इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ, जिसके अन्तर्गत दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन युवा परिषद द्वारा आयोजित विभिन्न सत्रों में 'भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर ही है' इस बात पर विशेषरूप से सभी का ध्यान केन्द्रित कराया गया।

➢कुण्डलपुर का पलड़ा हमेशा भारी रहेगा—

इस महासम्मेलन में प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी ने प्रभावशाली ढंग से अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हर क्षेत्र का विकास होना चाहिए, वैशाली का भी और कुण्डलपुर का भी, पर वैशाली का विकास भगवान महावीर के स्मारक के रूप में हो और कुण्डलपुर का विकास जन्मभूमि के रूप में हो। अब तक वैशाली का विकास नहीं हो पाया उसका कारण यही था कि उसके आस-पास भगवान महावीर से संबंधित कोई क्षेत्र ही नहीं है जबकि कुण्डलपुर (नालंदा) के पास गुणावां, नवादा, सम्मेदशिखर इत्यादि सभी तीर्थक्षेत्र विद्यमान रहे हैं अतः सैकड़ों वर्षों से उसे ही जन्मभूमि के रूप में मान्यता प्राप्त है। 56 वर्ष से स्मारक के रूप में वैशाली के विकास की बात पर विश्वास करके इसका विरोध नहीं किया गया किन्तु यह तो समाज के साथ धोखे जैसी बात रही कि उसे जन्मभूमि के रूप में प्रचारित करने की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई जबकि सत्यता तो ये है कि कम से कम वैशाली को जन्मभूमि का रूप देने से पूर्व साधु संगीति बुलाई जाती और उनसे इस विषय में शास्त्र सम्मत निर्णय लिया जाता। जनता की श्रद्धा तो कुण्डलपुर के प्रति ही रही है और रहेगी, उसको कोई बदल नहीं सकता। चिंता जमीन के टुकड़े की नहीं है वरन् महावीर के सिद्धान्तों को सुरक्षित रखने की है। हमें हर हाल में आगम की बात माननी है। जहाँ सदियों से भगवान महावीर का जन्मकल्याणक मनाया जा रहा है, वह तो पूजा प्रतिष्ठा के द्वारा जन्मभूमि बन ही गया है, सदियाँ बीत जाएंगी परन्तु श्रद्धा नहीं बदलेगी। कुण्डलपुर का सवाल अदम्य रूप से साहसी पूज्य ज्ञानमती माताजी के द्वारा पूरी शक्ति के साथ उठाया गया है, अब उसे कोई नहीं रोक सकता। वास्तव में अगर माताजी के द्वारा विकसित सारे तीर्थों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाए और कुण्डलपुर का कार्य एक पलड़े पर, तो कुण्डलपुर का पलड़ा भारी रहेगा क्योंकि यह कार्य इतिहास की सुरक्षा का है न कि केवल मंदिर निर्माण का है।

➢पंचामृत अभिषेक आगम कथित है—

वर्तमान में अनेक स्थानों पर श्री जिनेन्द्र भगवान का पंचामृत अभिषेक नहीं होता है जबकि प्राचीन आगम ग्रंथों में पूर्वाचार्यों द्वारा कथित वाणी के अनुसार पंचामृत अभिषेक करना चाहिए।

वर्तमान में आचार्य पूज्यपाद स्वामी रचित अभिषेक पाठ सर्वमान्य है जिसमें पूज्यपाद स्वामी ने पंचामृत के एक-एक श्लोक में बड़ा सुन्दर विवेचन किया है और उसका हिन्दी पद्यानुवाद पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने किया है, जो कि कई एक संघों में तथा कई एक श्रावकों द्वारा भक्तिपूर्वक किया जाता है।

आचार्य जटासिंहनन्दि कृत वरांग चरित्र में 23वें सर्ग के 77वें पद्य में लिखा है—

संस्थाप्य यत्नात्प्रतिमा जिनानां, नरामराणां सुखमभ्युपैति।
क्षीराभिषेक प्रमुखक्रियाभिः, राज्याभिषेकस्य भवेत्स भागी।।77।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थात् जो पुरुष दूध, दही, इक्षुरस आदि के द्वारा जिनेन्द्र देव का पंचामृत अभिषेक करते हैं, वे स्वयं राज्य अभिषेक आदि के अधिकारी होते हैं।

उमास्वामी श्रावकाचार में आचार्य उमास्वामी (द्वितीय शताब्दी) ने कहा है—

शुद्धतोयेक्षुसर्पिर्भिर्दुग्धदध्याम्रजैः रसैः।
सर्वौषधिभिरुच्चूर्णैर्भावात्संस्नापये जिनान्।।

अर्थात् शुद्धजल, इक्षुरस, घी, दूध, दही, आम्ररस और सर्वौषधि इत्यादिकों से जिन भगवान का अभिषेक करता हूँ। इसी प्रकार यशस्तिलक महाकाव्य, सकलकीर्ति आचार्य विरचित श्रीपाल चरित्र, आचार्य वसुनंदिकृत वसुनन्दि श्रावकाचार, देवसेनाचार्य रचित भावसंग्रह आदि महान ग्रंथों में पंचामृत अभिषेक पाठ का वर्णन है। जिसे विस्तारपूर्वक पढ़कर श्रावकों को उससे शिक्षा ग्रहण कर आगमपरम्परानुसार पंचामृत अभिषेक करना चाहिए।

यदि अपनी प्रांतीय परम्परानुसार कोई केवल जलाभिषेक ही करते हैं, तो भी पंचामृत अभिषेक करने वालों को गलत कभी नहीं मानना चाहिए। आज भी तमाम उत्तर भारत के तेरहपंथी लोग दक्षिण भारत में जाकर भगवान बाहुबली का खूब पंचामृत अभिषेक करते हैं और स्त्रियाँ भी अभिषेक करके अपनी स्त्रीपर्याय को सार्थक करती हैं।

➢पं. श्री सुमेरचंद्र जैन दिवाकर का मरणोपरांत सम्मान—

जैन शासन के महान मनीषी विद्वान् पं. सुमेर चंद जी दिवाकर द्वारा सन् 1968 में लिखित "महाश्रमण महावीर" के पूज्य गणिनी माताजी की प्रेरणा से किये गये पुनर्प्रकाशन का विमोचन प्रा. नरेन्द्र प्रकाश जी द्वारा संपन्न किया गया। साथ ही पं. जी को दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा मरणोपरांत "जिनशासन रत्न" की उपाधि प्रदान की गयी। जिसे उनके परिवार के श्री अभिनंदन दिवाकर-सिवनी, श्री ऋषभ दिवाकर, श्री पवन दिवाकर (सुपुत्र- श्री श्रेयांस दिवाकर) आदि ने ग्रहण किया। इस अवसर पर श्री अभिनंदन जी ने कहा कि इस ग्रन्थ का प्रथम प्रकाशन आचार्य देशभूषण महाराज जी की कृपा प्रसाद से हुआ था और अब उन्हीं की शिष्या पूज्य गणिनीश्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से इसका द्वितीय बार प्रकाशन हुआ है। मेरे दादा पं. सुमेर चंद जी कहा करते थे कि कुण्डलपुर (नालंदा) के अतिरिक्त भगवान महावीर की कोई अन्य जन्मभूमि हो ही नहीं सकती। पूर्णतः आगम की वाणी पर लिखित यह महान पुस्तक पं. सुमेरचंद जी की विद्वत्ता का अनुपम उदाहरण है।

➢कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन का समापन—

कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन के विविध सत्रों से प्राप्त तथ्यों एवं विचार धाराओं को समन्वित करते हुए तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहू रमेश चंद जैन-दिल्ली को भेजे जाने वाले एक पत्र का वाचन किया गया, जिस पर उपस्थित जनसमूह ने अपने हस्ताक्षरों के माध्यम से अपनी सम्मति प्रदान की।

➢भगवान ऋषभदेव समवसरण स्थापना—

भगवान ऋषभदेव के जिस समवसरण रथ ने पूरे देश में घूमकर अहिंसा धर्म का प्रचार किया, उसे 21 अक्टूबर 2002, शरदपूर्णिमा के दिन प्रयाग तीर्थ परिसर में नवनिर्मित समवसरण मंदिर में विराजमान किया गया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायाधीश महोदय श्री श्यामल कुमार ने भगवान ऋषभदेव समवसरण स्थापना के शिलापट्ट का अनावरण किया और समवसरण के दर्शन कर अपने को सौभाग्यशाली माना।

इस अवसर पर पूज्य माताजी के 69वें जन्मदिवस एवं 51वें त्यागदिवस को 'स्वर्णिम शरदपूर्णिमा' के रूप में मनाने हेतु पूरे देश से हजारों श्रद्धालु भक्तों ने पधारकर तीर्थ एवं गुरु दर्शन का अपूर्व पुण्य प्राप्त किया।

➢न्यायाधीश सम्मेलन एक उपलब्धि—

प्रयाग तीर्थ पर चातुर्मास के मध्य यूँ तो अनेक प्रभावनात्मक कार्यक्रम सम्पन्न हुए, फिर भी पूज्य माताजी की प्रेरणा से उत्तरप्रदेश हाईकोर्ट के न्यायाधीशों को आमंत्रित करके 3 नवम्बर 2002 को अहिंसा एवं न्याय विषय पर एक "न्यायाधीश सम्मेलन" आयोजित हुआ, जिसमें न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण अग्रवाल एवं न्यायमूर्ति श्री एम.सी. जैन की भूमिका विशेष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सराहनीय रही। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों सहित प्रशासनिक विभाग, सरकारी स्वास्थ्य विभाग, शैक्षणिक क्षेत्र इत्यादि के विशिष्ट महानुभावों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

सम्मेलन में न्यायमूर्ति श्री आर.के. शुक्ला,न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण, न्यायमूर्ति श्री सखाराम सिंह, न्यायमूर्ति श्री एम.सी. जैन, न्यायमूर्ति श्री एस.के. अग्रवाल, न्यायमूर्ति श्री एस.पी. मेहरोत्रा ने 'अहिंसा एवं न्याय' विषय पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग की प्रो. गीता देवी, डॉ. उर्मिला जैन (इला.), अधिवक्ता श्री राजीव गुप्ता आदि ने सभी को अपने विचारों से परिचित कराया। ब्र. रवीन्द्र जी ने अपने स्वागत भाषण में जैन साधु-साध्वी चर्या पर प्रकाश डालते हुए सभी पधारे अतिथियों के लिए आभार व्यक्त किया। पूज्य माताजी ने अपने विस्तृत उद्बोधन में प्रयाग की भूमि को प्रारंभ से ही न्याय की भूमि के रूप में बताते हुए भारतीय संस्कृति, जैनधर्म, अहिंसा आदि शाश्वत मूल्यों की उपादेयता, अल्पसंख्यक इत्यादि विषयों पर प्रभावी विचार व्यक्त किए। उच्च शिक्षा आयोग (इला.) के सचिव श्री विक्रमाजीत तिवारी, अपर नगर मजिस्ट्रेट श्री मुन्नीलाल पाण्डेय, हरीशचंद अनुसंधान संस्थान-झूसी के निदेशक प्रो. रवि एस. कुलकर्णी एवं वैज्ञानिक डॉ. भाई वी.एस. पासी, उपमुख्य चिकित्सा अधिकारी (इला.), डॉ. वी.डी.पाण्डेय, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अधिवक्ताओं एवं अन्य विशिष्टगणों ने भी सम्मेलन में भाग लिया। सभी आगंतुक अतिथियों को तीर्थ का प्रतीक चिन्ह एवं साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर दीक्षास्थली तीर्थ की ओर से इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पुस्तकालय हेतु एक अलमारी सहित साहित्य प्रदान किया गया।

➢201 वन्दना कर हृदय प्रफुल्लित हो उठा—

तीर्थ पर मंगल पदार्पण से लेकर चातुर्मास एवं वहाँ प्रवास तक पूज्य माताजी एवं हम सभी को तीर्थ पर स्थित जिनमंदिरों के बार-बार दर्शन का सौभाग्य तो मिला ही, कैलाशपर्वत की वंदना का भी महान सुयोग प्राप्त हुआ। पूज्य माताजी ने कैलाशपर्वत की 148 वंदना पूर्ण कीं एवं मैंने 201 वंदना पूर्ण करके परम तृप्ति का अनुभव किया।

➢दीपावली पर जगमगा उठा तीर्थ—

4 नवम्बर 2002, कार्तिक कृष्णा अमावस्या, भगवान महावीर की निर्वाण बेला में दीक्षास्थली तीर्थ पर कैलाशपर्वत के सामने निर्मित पावापुरी की अत्यन्त आकर्षक रचना के समक्ष सैकड़ों लोगों द्वारा सामूहिक रूप से भगवान महावीर का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। कैलाशपर्वत पर विराजमान 72 प्रतिमाओं में से भगवान महावीर की प्रतिमा के समक्ष भी निर्वाणलाडू चढ़ाया गया एवं विशालकाय भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक भी सम्पन्न किया गया। ब्रह्म मुहूर्त में पूज्य माताजी एवं संघस्थ साधुओं द्वारा वर्षायोग निष्ठापना क्रिया के साथ चातुर्मास का समापन हुआ। रात्रि में असंख्य दीप जलने पर नूतन तीर्थ सचमुच जगमगा उठा।

➢कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार—

सफलतापूर्वक एवं विशेष उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुए तीर्थ के इस चातुर्मास के अनन्तर 10 नवम्बर 2002 को पुनः कुण्डलपुर तीर्थ की ओर मंगल विहार हुआ। यद्यपि तीर्थ से मंगल विहार होने के कारण मन में थोड़ा कष्ट तो हुआ, फिर भी यहाँ 5 माह का प्रवास मिल जाने से हृदय में तृप्ति और मानसिक शांति भी थी।

प्रातः 9 बजे से दीक्षाकल्याणक मंदिर एवं समवसरण मंदिर के कलशारोहण-ध्वजस्थापना की विधि सम्पन्न हुई तथा वटवृक्ष मंदिर के महामुनि ऋषभदेव का पंचामृत अभिषेक हुआ। मध्यान्ह में 2 बजे से मंगल विहार की प्रवचन सभा हुई तथा इलाहाबाद के अनेक महानुभावों का सम्मान हुआ। हाईकोर्ट के जस्टिस श्री एम.सी. जैन ने सभाध्यक्षता की तथा विहार में पूरे रास्ते पैदल चले। इस विहार की सभा में इलाहाबाद के ए.डी.एम.-श्री मुन्नीलाल पांडे आए और काफी दूर पैदल चले पुनः 2 किमी. दूर जब हम सरायइनायत पहुँचे तो वहाँ के थाने में वहाँ के आफीसर के कहने से माताजी अंदर तक गईं, वे माताजी को वहाँ ले गए, जहाँ उन्होंने 4-5 ट्रक गाय-भैसों को कत्लखाने जाने से रोका था। इस अहिंसक कार्य के लिए माताजी ने उन्हें खूब-खूब आशीर्वाद दिया।

➢पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी में अपूर्व उत्साह—

वाराणसी नगरी में 19 नवम्बर 2002 को बिल्कुल उत्सव जैसा माहौल था और हो भी क्यों नहीं, शायद ही उन्होंने कभी सोचा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होगा कि इतनी महान साध्वी माता का हमारे बनारस में भी मंगल पदार्पण होगा अथवा यूँ समझिये कि आज तो कुंआ स्वयं प्यासे के पास चलकर आ गया था। कई दिनों से वहाँ की स्थानीय समाज के लोग उत्साहपूर्वक माताजी के स्वागत की तैयारियों में लगे हुए थे, प्रात:कालीन इस स्वागत जुलूस में हाथी, घोड़े एवं शहनाई, बैण्ड के साथ अपार जनसमूह उपस्थित था। 4-5 किमी. लम्बे इस जुलूस में 3-4 सरकारी नेता माताजी के दर्शनार्थ पधारे, कई न्यूज पेपर एवं टी.वी. चैनल की कई टीमें पूरे जुलूस-सभा आदि का कवरेज कर रही थीं, पूरे रास्ते में कई स्थानों पर मंगल आरती, पुष्पवृष्टि आदि हुई।

मध्यान्ह में 2.30 बजे से मंदिर के बाहर बने भव्य पाण्डाल में विशाल प्रवचन सभा हुई, जिसमें वाराणसी नगरी के सभी गणमान्य महानुभाव उपस्थित हुए, पूरा प्रांगण भरा रहा। इस अवसर पर इलाहाबाद से भी अनेक महानुभाव पूज्य माताजी के दर्शनार्थ पधारे, जिसका स्वागत वाराणसी जैन समाज द्वारा किया गया। रात तक चले इस कार्यक्रम को देखकर लोगों का यही कहना रहा कि माताजी! बनारस में पहली बार ऐसा उत्साह देखा जा रहा है।

➢भगवान सुपार्श्वनाथ जन्मभूमि की चरणरज मस्तक पर चढ़ाई—

20 नवम्बर को हम लोग वाराणसी में ही स्थित भदैनी मंदिर के दर्शनार्थ गए जो कि भगवान सुपार्श्वनाथ की जन्मभूमि है, गंगा के तट पर बसे इस रमणीक स्थल को भी जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। पुनः स्याद्वाद महाविद्यालय में भी मंदिर के दर्शन करके माताजी ने संक्षिप्त उद्‌बोधन दिया, जिसमें डॉ. फूलचंद जैन प्रेमी, डॉ. कमलेश जैन, पं. बाबूलाल जी फागुल्ल आदि विद्वान उपस्थित थे। वहाँ के प्राचार्य जी ने संस्कृत भाषा में पूज्य माताजी के प्रति आभार एवं सम्मान व्यक्त किया।

➢काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में गूंज उठा धर्म का शंखनाद—

21 नवम्बर को मध्यान्ह 1.30 बजे वाराणसी के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय भवन में गूंजे धर्म के शंखनाद से वहाँ के विद्वत्वर्ग पूज्य माताजी के चरणों में नतमस्तक हो गये। प्रवचन सभा में कार्यक्रम का शुभारंभ संघस्थ बहनों कु. चन्द्रिका एवं इन्दु के भजन से हुआ, पुनः वैदिक मंगलाचरण डॉ. नरेन्द्र तिवारी ने प्रस्तुत किया। संस्कृत विभाग की छात्राओं द्वारा कुलगीत की प्रस्तुति एवं माननीय कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी जी के द्वारा महामना की प्रतिमा पर माल्यार्पण के पश्चात् प्रवचन शृँखला का शुभारंभ हुआ।

सर्वप्रथम प्रो. सुदर्शनलाल जैन ने पूज्य माताजी का परिचय देते हुए माताजी को फैजाबाद यूनिवर्सिटी से प्राप्त डी.लिट्. की मानद उपाधि का विस्तृत वर्णन किया पुनः मैंने और संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी ने "धर्म और संस्कृति" विषय पर सभी को उद्‌बोधन दिया। मुख्य अतिथि प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने धर्म और संस्कृति पर विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए पूज्य माताजी एवं हम लोगों के संस्कृत उच्चारण की शुद्धता की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। सारस्वत अतिथि सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेन्द्र मिश्र ने धर्म और संस्कृति को राष्ट्रीय महत्त्व प्रदान करते हुए वर्तमान समय में सन्तों की उपादेयता पर प्रकाश डाला। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अणुव्रत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी **उत्तम भारतीय संस्कृति में किसी की मृत्यु को मरा हुआ न कहकर देवलोक हो गया कहा जाता है। वास्तव में संस्कारों से संस्कारित जीवन ही संस्कृति है। काटना, तोड़ना हमारी संस्कृति नहीं है। जब हम संस्कार से पाषाण को भगवान बना सकते हैं तो आत्मा को संस्कारित कर भगवान नहीं बना सकते क्या? आत्मा की सत्ता शाश्वत है, उसकी शाश्वत दृष्टि हमारी संस्कृति है। जैनधर्म के सारे ग्रंथ संस्कृत और प्राकृत में हैं।**

पूज्य माताजी ने कुलपति महोदय को विश्वविद्यालय में प्राकृत विभाग की महत्ता बताते हुए प्रतिवर्ष विश्वविद्यालय में भगवान ऋषभदेव एवं भगवान पार्श्वनाथ पर संगोष्ठी हेतु प्रेरणा प्रदान की, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामचन्द्र राव ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि धर्म सामान्यजनों के लिए समझना आसान नहीं है अत: सन्त-महात्माओं की आवश्यकता होती है। दिगम्बर जैन समाज काशी की ओर से श्री मुन्नीबाबू एवं संकल्प संस्था (वाराणसी) के पदाधिकारी श्री दीपक जैन एवं अन्य गणमान्य बंधुओं द्वारा दोनों कुलपति एवं प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी को विशेष स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी (अध्यक्ष-जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर) ने संस्थान की ओर से एक अलमारी एवं पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय हेतु प्रदान किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢भगवान श्रेयांसनाथ जन्मभूमि कहलाई ''श्रेयांसनाथ धर्मस्थल''—

वर्तमानकालीन चौबीसी के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ के जन्म से पावन भूमि शास्त्र पुराणों में सिंहपुरी के नाम से वर्णित है, जिसे वर्तमान में सारनाथ के नाम से जाना जाता है और मुख्यरूप से यह बौद्धतीर्थ के रूप में प्रसिद्धि को प्राप्त है। उस पवित्र भूमि पर पूज्य माताजी के चरण पड़े 24 नवम्बर 2002 को, वहाँ के जिनमंदिर के दर्शन के पश्चात् जब हम दिगम्बर जैन धर्मशाला में पहुँचे, तो वहाँ के कार्यकर्ताओं ने भगवान श्रेयांसनाथ की बड़ी मूर्ति दिखाते हुए माताजी को बताया कि काफी दिनों से यह मूर्ति आई हुई रखी है और इसकी पंचकल्याणक का कोई योग नहीं आ रहा है। अगर आप चाहें, तो शीघ्र ही इसका पंचकल्याणक संभव हो सकेगा, उस समय माताजी ने उसे विचारणीय विषय के अन्तर्गत रख दिया, चूँकि अभी माताजी का लक्ष्य कुण्डलपुर तीर्थ का विकास था। उस समय माताजी ने उस तीर्थ को **''श्रेयांसनाथ धर्मस्थल''** के नाम से घोषित किया।

➢चन्द्रप्रभू की जन्मभूमि चन्द्रपुरी के दर्शन—

जिन अतिशयकारी चन्द्रप्रभु तीर्थंकर के अतिशय क्षेत्र तिजारा में चमत्कारों के कारण अतिशायी भीड़ रहती है और निरन्तर यात्रियों का तांता लगा रहता है, उन तीर्थंकर भगवान ने किस स्थल पर जन्म लिया तथा उस तीर्थ की वर्तमान में क्या स्थिति है, शायद किसी ने जानने की भी कोशिश नहीं की। शास्त्र-पुराणों में वर्णित उन अष्टम तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु की जन्मभूमि पर जब 27 अक्टूबर को पूज्य माताजी ने पदार्पण किया, तो उसकी वीरानियत देखकर उनके मन को अत्यधिक कष्ट हुआ। चन्द्रावती के नाम से मशहूर उस तीर्थ पर दो दिवसीय प्रवास के मध्य धर्मोपदेश के साथ-साथ दो दिवसीय **''पंचकल्याणक विधान''** आदि विविध धार्मिक कार्यक्रम हुए। वहाँ के कार्यकर्ताओं को तीर्थ विकास की प्रेरणा देने के पश्चात् माताजी ने 28 नवम्बर को भगवान का विधिवत् पंचामृत अभिषेक देखा और भगवान चन्द्रप्रभु एवं उनके जन्म से पावन चन्द्रपुरी तीर्थ को बारम्बार नमन कर आगे की ओर विहार किया।

➢धर्मनगरी आरा हो उठी कुण्डलपुरमय—

कुण्डलपुर (नालंदा) की ओर मंगल विहार करते हुए संघ का 10 दिसम्बर से 16 दिसम्बर 2002 तक आरा शहर में मंगल प्रवास विशेष धर्मप्रभावना सहित जन-जन को कुण्डलपुर के साथ एकाकार करते हुए पूर्ण हुआ। हरप्रसाद दास जैन विद्यालय, आरा के प्रांगण में षड्दिवसीय धर्मामृत की वर्षा आरावासियों को लम्बे समय तक स्मरण रहेगी। 10 दिसम्बर को प्रातःकाल भारी जनसमूह के मध्य गली-गली को गुंजायमान कर देने वाली भव्य स्वागत यात्रा निकली, सारी समाज में अत्यन्त उत्साह था, पूरे शहर में स्थान-स्थान पर अनेक तोरणद्वार, बैनर आदि लगाए गए था। मध्यान्ह 2 बजे 'धर्म की महासभा' नाम से विशाल प्रवचन सभा का आयोजन हुआ। प्रतिदिन प्रवचनों के माध्यम से जिनेन्द्रभक्ति, ध्यान, तीर्थदर्शन, तीर्थोद्धार इत्यादि विविध विषयों के ज्ञान ने जनसमूह को नवीन चेतना से समन्वित किया।

➢सरस्वती सम माता ज्ञानमती जी को दी ''वाग्देवी'' की उपाधि—

15 दिसम्बर 2002 को दिल्ली एवं अनेक स्थानों से पधारे प्रतिनिधियों के मध्य कुण्डलपुर विकास संबंधी एक महत्त्वपूर्ण बैठक कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसके मध्य कुण्डलपुर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में बनने वाले सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री दीपक जैन एवं उनकी धर्मपत्नी सहित उनके माता-पिता तथा पुत्र-पुत्री का कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति की ओर से विशेष सम्मान किया गया। इसी बैठक के मध्य सम्पूर्ण आरा जैन समाज ने पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को "वाग्देवी" की उपाधि प्रदान करते हुए अपने को सौभाग्यशाली माना।

➢पटना शहर में ज्ञानामृत की वर्षा—

13 दिसम्बर 2002 को आरा शहर में पटना के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रामगोपाल जी, अजय जी आदि अनेक गणमान्य महानुभावों ने पटना पदार्पण के लिए पूज्य माताजी को श्रीफल चढ़ाया, उनके आग्रह पर माताजी ने संघ सहित 19 दिसम्बर को पटना में मंगल प्रवेश किया। 4 दिवसीय इस प्रवास में संघ सानिध्य का लाभ पटनावासियों के लिए महान सौभाग्य का सूचक बनकर अवतरित हुआ, जब पूज्य माताजी के मुखारविंद से हुई ज्ञानामृत की वर्षा ने समस्त जैन समाज को सराबोर कर दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होगा कि इतनी महान साध्वी माता का हमारे बनारस में भी मंगल पदार्पण होगा अथवा यूँ समझिये कि आज तो कुंआ स्वयं प्यासे के पास चलकर आ गया था। कई दिनों से वहाँ की स्थानीय समाज के लोग उत्साहपूर्वक माताजी के स्वागत की तैयारियों में लगे हुए थे, प्रातःकालीन इस स्वागत जुलूस में हाथी, घोड़े एवं शहनाई, बैण्ड के साथ अपार जनसमूह उपस्थित था। 4-5 किमी. लम्बे इस जुलूस में 3-4 सरकारी नेता माताजी के दर्शनार्थ पधारे, कई न्यूज पेपर एवं टी.वी. चैनल की कई टीमें पूरे जुलूस-सभा आदि का कवरेज कर रही थीं, पूरे रास्ते में कई स्थानों पर मंगल आरती, पुष्पवृष्टि आदि हुई।

मध्यान्ह में 2.30 बजे से मंदिर के बाहर बने भव्य पाण्डाल में विशाल प्रवचन सभा हुई, जिसमें वाराणसी नगरी के सभी गणमान्य महानुभाव उपस्थित हुए, पूरा प्रांगण भरा रहा। इस अवसर पर इलाहाबाद से भी अनेक महानुभाव पूज्य माताजी के दर्शनार्थ पधारे, जिसका स्वागत वाराणसी जैन समाज द्वारा किया गया। रात तक चले इस कार्यक्रम को देखकर लोगों का यही कहना रहा कि माताजी! बनारस में पहली बार ऐसा उत्साह देखा जा रहा है।

➢भगवान सुपार्श्वनाथ जन्मभूमि की चरणरज मस्तक पर चढ़ाई—

20 नवम्बर को हम लोग वाराणसी में ही स्थित भदैनी मंदिर के दर्शनार्थ गए जो कि भगवान सुपार्श्वनाथ की जन्मभूमि है, गंगा के तट पर बसे इस रमणीक स्थल को भी जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। पुनः स्याद्वाद महाविद्यालय में भी मंदिर के दर्शन करके माताजी ने संक्षिप्त उद्‌बोधन दिया, जिसमें डॉ. फूलचंद जैन प्रेमी, डॉ. कमलेश जैन, पं. बाबूलाल जी फागुल्ल आदि विद्वान उपस्थित थे। वहाँ के प्राचार्य जी ने संस्कृत भाषा में पूज्य माताजी के प्रति आभार एवं सम्मान व्यक्त किया।

➢काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में गूंज उठा धर्म का शंखनाद—

21 नवम्बर को मध्यान्ह 1.30 बजे वाराणसी के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय भवन में गूंजे धर्म के शंखनाद से वहाँ के विद्वत्वर्ग पूज्य माताजी के चरणों में नतमस्तक हो गये। प्रवचन सभा में कार्यक्रम का शुभारंभ संघस्थ बहनों कु. चन्द्रिका एवं इन्दु के भजन से हुआ, पुनः वैदिक मंगलाचरण डॉ. नरेन्द्र तिवारी ने प्रस्तुत किया। संस्कृत विभाग की छात्राओं द्वारा कुलगीत की प्रस्तुति एवं माननीय कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी जी के द्वारा महामना की प्रतिमा पर माल्यार्पण के पश्चात् प्रवचन शृँखला का शुभारंभ हुआ।

सर्वप्रथम प्रो. सुदर्शनलाल जैन ने पूज्य माताजी का परिचय देते हुए माताजी को फैजाबाद यूनिवर्सिटी से प्राप्त डी.लिट्. की मानद उपाधि का विस्तृत वर्णन किया पुनः मैंने और संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी ने "धर्म और संस्कृति" विषय पर सभी को उद्‌बोधन दिया। मुख्य अतिथि प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने धर्म और संस्कृति पर विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए पूज्य माताजी एवं हम लोगों के संस्कृत उच्चारण की शुद्धता की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। सारस्वत अतिथि सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेन्द्र मिश्र ने धर्म और संस्कृति को राष्ट्रीय महत्त्व प्रदान करते हुए वर्तमान समय में सन्तों की उपादेयता पर प्रकाश डाला। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अणुव्रत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि **हमारी उत्तम भारतीय संस्कृति में किसी की मृत्यु को मरा हुआ न कहकर देवलोक हो गया कहा जाता है। वास्तव में संस्कारों से संस्कारित जीवन ही संस्कृति है। काटना, तोड़ना हमारी संस्कृति नहीं है। जब हम संस्कार से पाषाण को भगवान बना सकते हैं तो आत्मा को संस्कारित कर भगवान नहीं बना सकते क्या? आत्मा की सत्ता शाश्वत है, उसकी शाश्वत दृष्टि हमारी संस्कृति है। जैनधर्म के सारे ग्रंथ संस्कृत और प्राकृत में हैं।**

पूज्य माताजी ने कुलपति महोदय को विश्वविद्यालय में प्राकृत विभाग की महत्ता बताते हुए प्रतिवर्ष विश्वविद्यालय में भगवान ऋषभदेव एवं भगवान पार्श्वनाथ पर संगोष्ठी हेतु प्रेरणा प्रदान की, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामचन्द्र राव ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि धर्म सामान्यजनों के लिए समझना आसान नहीं है अतः सन्त-महात्माओं की आवश्यकता होती है। दिगम्बर जैन समाज काशी की ओर से श्री मुन्नीबाबू एवं संकल्प संस्था (वाराणसी) के पदाधिकारी श्री दीपक जैन एवं अन्य गणमान्य बंधुओं द्वारा दोनों कुलपति एवं प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी को विशेष स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी (अध्यक्ष-जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर) ने संस्थान की ओर से एक अलमारी एवं पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय हेतु प्रदान किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢भगवान श्रेयांसनाथ जन्मभूमि कहलाई ''श्रेयांसनाथ धर्मस्थल''—

वर्तमानकालीन चौबीसी के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ के जन्म से पावन भूमि शास्त्र पुराणों में सिंहपुरी के नाम से वर्णित है, जिसे वर्तमान में सारनाथ के नाम से जाना जाता है और मुख्यरूप से यह बौद्धतीर्थ के रूप में प्रसिद्धि को प्राप्त है। उस पवित्र भूमि पर पूज्य माताजी के चरण पड़े 24 नवम्बर 2002 को, वहाँ के जिनमंदिर के दर्शन के पश्चात् जब हम दिगम्बर जैन धर्मशाला में पहुँचे, तो वहाँ के कार्यकर्ताओं ने भगवान श्रेयांसनाथ की बड़ी मूर्ति दिखाते हुए माताजी को बताया कि काफी दिनों से यह मूर्ति आई हुई रखी है और इसकी पंचकल्याणक का कोई योग नहीं आ रहा है। अगर आप चाहें, तो शीघ्र ही इसका पंचकल्याणक संभव हो सकेगा, उस समय माताजी ने उसे विचारणीय विषय के अन्तर्गत रख दिया, चूँकि अभी माताजी का लक्ष्य कुण्डलपुर तीर्थ का विकास था। उस समय माताजी ने उस तीर्थ को ''**श्रेयांसनाथ धर्मस्थल**'' के नाम से घोषित किया।

➢चन्द्रप्रभू की जन्मभूमि चन्द्रपुरी के दर्शन—

जिन अतिशयकारी चन्द्रप्रभु तीर्थंकर के अतिशय क्षेत्र तिजारा में चमत्कारों के कारण अतिशायी भीड़ रहती है और निरन्तर यात्रियों का तांता लगा रहता है, उन तीर्थंकर भगवान ने किस स्थल पर जन्म लिया तथा उस तीर्थ की वर्तमान में क्या स्थिति है, शायद किसी ने जानने की भी कोशिश नहीं की। शास्त्र-पुराणों में वर्णित उन अष्टम तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु की जन्मभूमि पर जब 27 अक्टूबर को पूज्य माताजी ने पदार्पण किया, तो उसकी वीरानियत देखकर उनके मन को अत्यधिक कष्ट हुआ। चन्द्रावती के नाम से मशहूर उस तीर्थ पर दो दिवसीय प्रवास के मध्य धर्मोपदेश के साथ-साथ दो दिवसीय ''**पंचकल्याणक विधान**'' आदि विविध धार्मिक कार्यक्रम हुए। वहाँ के कार्यकर्ताओं को तीर्थ विकास की प्रेरणा देने के पश्चात् माताजी ने 28 नवम्बर को भगवान का विधिवत् पंचामृत अभिषेक देखा और भगवान चन्द्रप्रभु एवं उनके जन्म से पावन चन्द्रपुरी तीर्थ को बारम्बार नमन कर आगे की ओर विहार किया।

➢धर्मनगरी आरा हो उठी कुण्डलपुरमय—

कुण्डलपुर (नालंदा) की ओर मंगल विहार करते हुए संघ का 10 दिसम्बर से 16 दिसम्बर 2002 तक आरा शहर में मंगल प्रवास विशेष धर्मप्रभावना सहित जन-जन को कुण्डलपुर के साथ एकाकार करते हुए पूर्ण हुआ। हरप्रसाद दास जैन विद्यालय, आरा के प्रांगण में षड्दिवसीय धर्मामृत की वर्षा आरावासियों को लम्बे समय तक स्मरण रहेगी। 10 दिसम्बर को प्रात:काल भारी जनसमूह के मध्य गली-गली को गुंजायमान कर देने वाली भव्य स्वागत यात्रा निकली, सारी समाज में अत्यन्त उत्साह था, पूरे शहर में स्थान-स्थान पर अनेक तोरणद्वार, बैनर आदि लगाए गए था। मध्यान्ह 2 बजे 'धर्म की महासभा' नाम से विशाल प्रवचन सभा का आयोजन हुआ। प्रतिदिन प्रवचनों के माध्यम से जिनेन्द्रभक्ति, ध्यान, तीर्थदर्शन, तीर्थोद्धार इत्यादि विविध विषयों के ज्ञान ने जनसमूह को नवीन चेतना से समन्वित किया।

➢सरस्वती सम माता ज्ञानमती जी को दी ''वाग्देवी'' की उपाधि—

15 दिसम्बर 2002 को दिल्ली एवं अनेक स्थानों से पधारे प्रतिनिधियों के मध्य कुण्डलपुर विकास संबंधी एक महत्त्वपूर्ण बैठक कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसके मध्य कुण्डलपुर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में बनने वाले सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री दीपक जैन एवं उनकी धर्मपत्नी सहित उनके माता-पिता तथा पुत्र-पुत्री का कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति की ओर से विशेष सम्मान किया गया। इसी बैठक के मध्य सम्पूर्ण आरा जैन समाज ने पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को "वाग्देवी" की उपाधि प्रदान करते हुए अपने को सौभाग्यशाली माना।

➢पटना शहर में ज्ञानामृत की वर्षा—

13 दिसम्बर 2002 को आरा शहर में पटना के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रामगोपाल जी, अजय जी आदि अनेक गणमान्य महानुभावों ने पटना पदार्पण के लिए पूज्य माताजी को श्रीफल चढ़ाया, उनके आग्रह पर माताजी ने संघ सहित 19 दिसम्बर को पटना में मंगल प्रवेश किया। 4 दिवसीय इस प्रवास में संघ सानिध्य का लाभ पटनावासियों के लिए महान सौभाग्य का सूचक बनकर अवतरित हुआ, जब पूज्य माताजी के मुखारविंद से हुई ज्ञानामृत की वर्षा ने समस्त जैन समाज को सराबोर कर दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

19 व 20 दिसम्बर को दिगम्बर जैन मंदिर मीठापुर के प्रवास में प्रवचन सभाओं के अतिरिक्त ध्यान साधना का आयोजन हुआ तथा दिन में 1 बजे से मंदिर जी में 1008 अर्घ्य से समन्वित वीरगुणसंपद् विधान हुआ। उसी के मध्य हुए वक्तव्य से जनसमूह ने माताजी के मुखारविंद से कुण्डलपुर के महत्व को जाना। 21 व 22 दिसम्बर 2002 को जैनभवन, कांग्रेस मैदान-कदमकुंआ में संघ का प्रवास रहा, जहाँ 22 दिसम्बर को माताजी के पावन सानिध्य में दश दिवसीय शिक्षण शिविर का विधिवत् उद्घाटन भी सम्पन्न हुआ।

पूज्य माताजी ने जिस दिन से पटना में मंगल पदार्पण किया, तब से बिहार दिगम्बर जैन तीर्थ न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी पूरा दिन संघ की सेवा में लगे रहते थे जबकि यहाँ के लोगों ने बताया कि ये इस प्रकार कभी किसी साधु के साथ नहीं लगे हैं। वैसे पटना के लोगों में वैशाली के संस्कार कुछ ज्यादा थे किन्तु तीन दिनों के अन्तर्गत पूज्य माताजी एवं हम लोगों के प्रवचन से सभी को वास्तविकता समझ में आई और उनके हृदय में कुण्डलपुर के प्रति सहयोग की भावनाएँ भी वृद्धिंगत हुईं।

➢सिद्धक्षेत्र गुलजारबाग के दर्शन किए—

पटना से विहार कर 7 किमी. दूर सिद्धक्षेत्र गुलजारबाग में मंगल पदार्पण हुआ। सेठ सुदर्शन की निर्वाणभूमि के नाम से विख्यात यह स्थल कभी दिगम्बर जैन धर्मावलम्बियों का पूज्य पवित्र तीर्थ था परन्तु वर्तमान में कालदोषवश अथवा समाज की सुप्ततावश वह अपने लिए केवल दर्शन हेतु उपलब्ध रहता है। दिगम्बर जैन धर्मशाला में स्थित भगवान नेमिनाथ जिनमंदिर के दर्शन कर उपस्थित जनसमुदाय को पूज्य माताजी ने अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मध्यान्ह 3 बजे हम लोग पुरानी पटना सिटी में गए, वहाँ 4 दिगम्बर जैन मंदिर हैं किन्तु जैन घर केवल 5-7 होने से उन मंदिरों की स्थिति नाजुक है। वहाँ के लोगों ने बताया कि पहले कभी यहाँ 500 जैन घर थे किन्तु धीरे-धीरे लोगों के बाहर चले जाने से अब पटना सिटी में धर्मरुचि बहुत कम हो गई है।

यह सुनकर मन में बड़ा दुख हुआ कि जिनसंस्कृति की इन अमिट धरोहरों की दिगम्बर जैन समाज अगर देखरेख नहीं करेगा, तो एक न एक दिन फिर कोई अराजक तत्त्व इन पर अपना कब्जा जमा लेंगे, वस्तुतः अभी दिगम्बर जैन समाज के जागृत होने की अत्यधिक आवश्यकता है।

➢बना नंद्यावर्त महान हे माता तेरी कृपा से (स्वप्न में दिखा तीर्थ का साकाररूप)—

शास्त्र पुराणों में वर्णन आता है कि स्वस्थ अवस्था में देखा गया स्वप्न उचित फल को प्रदान करता है।" फिर इस समय तो हम सभी के मन में उठते-बैठते कुण्डलपुर तीर्थ विकास की ही धुन रहती थी। 26 दिसम्बर की रात्रि, जब हम अपनी मंजिल से कुछ ही दूर पर थे, रात्रि में 3 बजे मैंने स्वप्न में देखा कि एक बहुत बड़े पाण्डाल में खूब पूजा-भक्ति हो रही है और उसी के मध्य वाद्य यंत्र बजाने की प्रतियोगिता चल रही है, तो सब लोग बांसुरी, ढपली, मंजीरा, बैण्ड आदि बजा रहे हैं, उसी में वाराणसी निवासी सेठ रिसबदास जी की पुत्रवधू (दीपक जी की धर्मपत्नी) श्रीमती सुभाषिनी ने अपनी बेटी स्तुति को एक भजन लिखकर भेजा, तो वह बजाती, गाती और नाचती हुई एकदम पीछे से आगे तक आ गई और माताजी की गोद में सिर रखकर भावविह्वल हो बोलने लगी।

कु. स्तुति ने जो गीत गाया, उसके पूरे शब्द तो मुझे याद नहीं हैं किन्तु भाव थे कि माता! हम लोगों ने तो आपके द्वारा ही धर्ममार्ग और ज्ञान प्राप्त किया है और आप अब हमें मत छोड़ना। उस भजन की एक कर्णप्रिय पंक्ति मुझे अवश्य याद रही—**बना नंद्यावर्त महान, हे माता! तेरी कृपा से।** मैंने तुरंत यह सपना माताजी से 3 बजे रात्रि में ही बताया, तो उसे सुनकर माताजी को बड़ी प्रसन्नता हुई।

ठीक इसी प्रकार का तीर्थ के साकाररूप को प्रदर्शित करता स्वप्न मैंने 28 दिसम्बर को रात्रि में देखा कि कुण्डलपुर में चलते-चलते मुझे ठोकर लगी और कंकर उठाते ही धरती से एक चांदी की प्रतिमा निकल पड़ी, पुनः 5-6 पीतल धातु की प्रतिमाएँ निकल पड़ीं और उन प्रतिमाओं को मैंने जल्दी से उठा लिया है। सुबह उठते ही मन में बड़ी प्रसन्नता हुई और मैंने पूज्य माताजी को बताया तो उन्होंने कहा कि ये स्वप्न तीर्थ के विकसित स्वरूप और 2600 वर्षों के पुनः जीवन्त होते इतिहास को सूचित कर रहे हैं।

➢एक ऐतिहासिक यात्रा की सुखद पूर्णता—

जिन शासनपति भगवान महावीर की छत्रछाया में हम और आप रहकर धर्म का निराबाध पालन करते हुए संसार भ्रमण को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाप्त करने हेतु अग्रसर हैं, उनकी जन्मभूमि की चरण रज मस्तक पर लगाना, साक्षात् रूप में वहाँ पहुँचना, एक स्वप्न की भाँति ही था किन्तु पूज्य माताजी जैसी दैवी शक्ति के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है। तभी तो इतनी कठिन यात्रा सुखद पूर्णता के साथ सम्पन्न हो गई। पग-पग करके धर्म का अलख जगाते हुए, 1300 किमी. की दूरी तय करके हृदय में अपूर्व उल्लास एवं आनन्द के साथ पूज्य माताजी एवं समस्त संघ के साथ जब हमने 29 दिसम्बर 2002 को भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में प्रवेश किया, तो 50 वर्षों के पश्चात् इस भूमि पर आयोजित जुलूस ने चारों दिशाओं को भगवान महावीर की जयकारों से गुंजायमान करते हुए 2600 वर्ष पूर्व के इतिहास को साकार करने का ऐतिहासिक प्रयास किया।

राजधानी दिल्ली, वाराणसी, आरा, पटना, कोडरमा, इलाहाबाद, महाराष्ट्र आदि विविध अंचलों से पधारे भक्तों के अतिरिक्त सैकड़ों स्थानीय ग्रामवासियों ने अपूर्व उत्साह के साथ शोभायात्रा एवं धर्मसभा में भाग लिया। नालंदा स्थित श्वेताम्बर जैन मंदिर से प्रारंभ होकर जुलूस मध्यान्ह लगभग 1.30 बजे कुण्डलपुर अवस्थित प्राचीन भगवान महावीर मंदिर में पहुँचा, वहाँ के पदाधिकारियों श्री अजय जी-आरा आदि ने संघ का स्वागत किया, मंदिर जी में प्रवेश कर भगवान महावीर का दर्शन करके पूज्य माताजी ने 20 फरवरी को राजधानी दिल्ली से प्रारंभ यात्रा की सकुशल सुखद पूर्णता पर विशेष आंतरिक आल्हाद एवं प्रसन्नता का अनुभव किया।

तत्पश्चात् पुराने मंदिर के समक्ष नवीन निर्माण के लिए क्रय की गई भूमि पर आयोजित धर्मसभा में स्थानीय प्रो. विजय कुमार शर्मा ने सभी कुण्डलपुरवासियों की ओर से जैन समाज को यह विश्वास दिलाया कि पूज्य माताजी द्वारा उठाये गए हर कदम को हम सिर-माथे पर लेंगे। पूर्व शिक्षा मंत्री (बिहार सरकार) श्री तरुण जी ने कहा कि पूज्य माताजी के आने से तो सारा विवाद ही समाप्त हो गया है क्योंकि माता ही संतान को वास्तविकता का बोध कराती है। बिहार तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री अजय कुमार जैन ने जन्मभूमि के रूप में पूज्य माताजी द्वारा कुण्डलपुर के विकास के संकल्प की पुरजोर प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि 50 वर्ष पूर्व वैशाली को जन्मभूमि के रूप में प्रचारित करना प्रारंभ किया गया, पर 95 प्रतिशत जनता की श्रद्धा कुण्डलपुर (नालंदा) के साथ ही जुड़ी रही और आज भी जुड़ी है। पूज्य माताजी के कुण्डलपुर मंगल प्रवेश की पावन बेला में भक्तों द्वारा खूब रत्नवृष्टि की गई एवं रात्रि में 108 दीपकों से भगवान महावीर की मंगल आरती सम्पन्न की गई।

वस्तुतः अत्यन्त शुभ एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में भगवान महावीर जन्मभूमि का एक नूतन पृष्ठ प्रारंभ हुआ, जिसका भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल रहा।

➢कुण्डलपुर विकास के प्रारंभिक चरण—

कुण्डलपुर में संघ का मंगल पदार्पण होते ही उत्तरमुखी नूतन क्रीत भूमि पर भगवान महावीर मंदिर का शिलान्यास पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में श्री दीपक जैन-वाराणसी (सपत्नीक) ने 29 दिसम्बर 2002 को किया। शिलान्यास करके ज्यों ही माताजी आगे बढ़ीं, तो सामने सुसज्जित हाथी दिखाई दिया, उसे सभी ने लड्डू एवं गुड़ खिलाकर भगवान महावीर की जयकारों से कुण्डलपुर को गुंजायमान कर दिया। पूज्य माताजी को इस दृश्य के शुभ शकुन ने कार्य की मंगलमयी पूर्णता हेतु आश्वस्त किया पुनः हम सभी लोग प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर परिसर के कमरों में आकर ठहरे और भक्तों की भीड़ ने अपने-अपने घर की ओर प्रस्थान कर दिया पुनः संघ की दिनचर्या 30 दिसम्बर से प्रारंभ हो गई। माताजी प्रतिदिन नवविकसित तीर्थ भूमि पर जाकर बाहर मैदान में ही संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों से पूजा, विधान और जाप्य आदि का अनुष्ठान कराने लगीं। नवविकसित तीर्थ पर निर्माणकार्य द्रुतगति से चल रहा था तथा भीषण सर्दी ने भी उसमें कोई व्यवधान नहीं पैदा होने दिया।

➢असली जन्मभूमि का चमत्कार—

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वादपूर्वक ईसवी सन् के नववर्ष 2003 का सुप्रभात हुआ, प्रातःकाल भगवान का पंचामृत अभिषेक हुआ और प्रतिदिन के क्रमानुसार प्रातः 6.30 से 7 बजे संघस्थ शिष्याओं को अध्ययन कराया, पुनः गुरुवंदना के पश्चात् जब माताजी की ब्र.रवीन्द्र जी के साथ नूतन तीर्थ नंद्यावर्त महल के मास्टर प्लान पर चर्चा हुई तो मात्र डेढ़-दो घंटे के अंदर ही पूरा मास्टर प्लान निर्णीत हो गया कि परिसर में तीन मंदिर उत्तरमुखी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(महावीर मंदिर, ऋषभदेव मंदिर एवं नवग्रहशांति मंदिर) रहेंगे, पूर्वमुखी तीन मंजिला तीन चौबीसी मंदिर और उसके सामने नंद्यावर्त महल बनेगा। त्यागी भवन, धर्मशाला दक्षिण में मंदिर के पीछे एवं बाजू में रहेंगे।

➢अनेक शंकाओं का समाधान करने वाली सच्ची वीर जन्मभूमि है कुण्डलपुरी—

ईसवी सन् के नये वर्ष के शुभारंभ में सम्पूर्ण देशवासियों, देश के शासक-प्रशासक तथा भारत की सीमा पर तैनात वीर सुरक्षा सैनिकों के लिए नववर्ष का मंगलमयी आशीर्वाद प्रदान कर, भारत देश के गौरव को सदा वृद्धिंगत होने का शुभाशीर्वाद प्रदान करते हुए अपने उद्बोधन में पूज्य माताजी ने कहा कि जब से मैंने कुण्डलपुर में कदम रखा है, तब से मुझे अनेक प्रकार की सुखद अनुभूतियाँ हुई हैं तथा 2-3 दिन के प्रवास में ही मेरी अनेक समस्याओं का समाधान हुआ है और इन सब उपलब्धियों से मुझे यह पक्का विश्वास हो गया है कि जहाँ 2600 वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने जन्म लिया था, जहाँ उन वीर प्रभु को पालने में झूलते हुए देखने मात्र से संजय-विजय नामक चारण ऋद्धिधारी मुनियों की शंका का निवारण हो गया था, वह यही भगवान महावीर की सच्ची जन्मभूमि कुण्डलपुरी है। उस पवित्र स्थल की चरणरज प्राप्त कर वर्तमान युग के साधुओं की शंका का समाधान एवं भक्तों की मनोकामना की सिद्धि हो जाए, तो कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है।" यदि आप लोग भी सच्ची भक्ति के साथ कुण्डलपुर के 'महावीर बाबा' का दर्शन करेंगे, तो निश्चित रूप से मनोकामनाओं की सिद्धि होगी तथा समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा।

➢घर-घर चर्चा कुण्डलपुर की—

पूज्य गणिनी माताजी के मुख में वास्तव में साक्षात् सरस्वती माता वास करती हैं और उनका उच्चरित प्रत्येक शब्द आगम का अटल वाक्य और अकाट्य सत्य है, उनकी उस सारभूत वाणी का ज्ञान जब जैन टी.वी. चैनल के माध्यम से 10 जनवरी 2003 से घर बैठे लोगों को प्रातः 7 बजे से सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तो भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव के संदर्भ में जनता ने जैन आगम से संबंधित समस्त तथ्यों का विवेचन पूज्य माताजी के मुखारविंद से सुनकर भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के वास्तविक तथ्यों की जानकारी प्राप्त की, जिससे स्वतः ही घर-घर कुण्डलपुर की चर्चा फैल गई। वास्तव में आज के भौतिकवादी युग में मीडिया एवं टी.वी. चैनल प्रचार-प्रसार के सशक्त माध्यम हैं।

➢नंद्यावर्त महल तीर्थ पर भगवान ऋषभदेव की वेदी का शिलान्यास—

तीर्थ परिसर में द्रुतगति से निर्माणकार्य चल रहा था, उसी क्रम में नंद्यावर्त परिसर में भगवान महावीर मंदिर के दाहिने हाथ निर्मित होने वाले भगवान ऋषभदेव मंदिर की वेदी का शिलान्यास 5 जनवरी 2003 को प्रातः 9.30 बजे किया गया , जिसमें भगवान ऋषभदेव की सवा ग्यारह फुट पद्मासन प्रतिमा विराजमान होनी थीं और 31×48 फुट लम्बा-चौड़ा एवं 21 फुट ऊँचा मंदिर बनाने का निर्णय हुआ। यह प्रतिमा वाराणसी निवासी श्री रिसबदास दीपक कुमार जैन की ओर से विराजमान होने की स्वीकृति प्राप्त हुई।

➢जहरीले जीव किसी का कुछ न बिगाड़ सके—

नंद्यावर्त महल परिसर की जिस भूमि का क्रय किया गया था, वहाँ ऊबड़-खाबड़ जमीन के अतिरिक्त कंटीली झाड़ियाँ और जीव-जन्तु भरे पड़े थे। धीरे-धीरे उस स्थल को सपाट एवं स्वच्छ कर निर्माण के योग्य बनाया जा रहा था किन्तु वहाँ के कर्मचारी और स्टॉफ के कार्यकर्ता आकर माताजी को बताते कि माताजी! यहाँ तो जरा सी मिट्टी फावड़े से हटाने में ही एक साथ कई-कई बिच्छू निकल आते हैं, हर दिन साँप भी निकलते हैं लेकिन आपके आशीर्वाद से हम निराबाध अपना कार्य कर रहे हैं परन्तु थोड़ा भय तो लगता ही है। एक दिन तो दो बड़े जीव-गोह निकल पड़े, जिसे स्टॉफ के ही सतवीर सिंह ने बांधकर हम लोगों को दिखाया। मैंने तो पहली बार ही इस जानवर को देखा था अतः उसे देखकर तो एकदम रोंगटे खड़े हो गए। उस समय सतवीर ने बताया कि माताजी! यह बड़ा जहरीला और तेज पकड़ वाला जानवर होता है, चोर लोग पूर्व में इसे किसी की मकान की छत पर डालकर उसमें रस्से बांधकर ऊपर चढ़ जाते थे, तो भी यह गिरने वाला जीव नहीं है अर्थात् अपने पंजों से यह उस स्थान को एकदम जकड़ लेता है।

इन सबको देखकर माताजी ने सरसों मंत्रित कर सभी दिशाओं में क्षेपण करवाईं, तब से इन जीवों की बहुलता समाप्तप्राय सी हो गई। हाँ! यदा-कदा कभी कोई जीव निकले भी, तो इतने दिन के प्रवास में कभी किसी का कोई अहित नहीं हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢जोर-शोर से तैयारियाँ प्रारंभ हो गईं—

7 फरवरी से 12 फरवरी 2003, माघ शु. 6 से 10 तक होने वाले महोत्सव को सम्पन्न करने हेतु कई बैठकें सम्पन्न हुईं, जिनमें पटना, आरा, कोडरमा, गया, हजारीबाग तथा दिल्ली-मेरठ आदि के श्रावकों ने अपनी-अपनी विभागीय जिम्मेदारियाँ संभालीं और रवीन्द्र जी के साथ सभी ने कंधे से कंधा मिलाकर कार्य में सहयोग प्रदान किया।

कुण्डलपुर में नवविकसित हो रहे परिसर का नाम भगवान महावीर के जन्म से पावन महल के नाम पर "नंद्यावर्त महल" रखा गया। भगवान महावीर के जन्म महल के नाम से इंगित किए गए इस तीर्थ परिसर के अनेकों बोर्ड, बैनर, पोस्टर आदि देश के कोने-कोने में लगाए गए और पंचकल्याणक की व्यापक तैयारियाँ होने लगीं। 14 जनवरी 2003 को उस नंद्यावर्त महल परिसर में सर्वप्रथम जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से भगवान ऋषभदेव तीर्थंकर की सवा ग्यारह फुट लालवर्णी पद्मासन प्रतिमा का मंगल पदार्पण हुआ। उन्हें यथास्थान वेदी पर विराजमान करने हेतु भगवान महावीर मंदिर के दाईं ओर वेदी का निर्माण पहले शुरू कर दिया गया। इसी प्रकार मूल मंदिर के बाईं ओर नवग्रहशांति जिनमंदिर का शिलान्यास 9 फरवरी 2003 को श्री ज्ञानचंद जैन-आरा ने किया। इस परिसर में इन तीन मंदिरों के अतिरिक्त त्रिकाल चौबीसी मंदिर (तीन मंजिला), नंद्यावर्त महल विशेष रूप से बनाने का निर्णय हुआ, किन्तु सर्वप्रथम फरवरी में होने वाले पंचकल्याणक में जिन-जिन प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा होनी थी, उनको विराजमान करने हेतु वेदी आदि के निर्माण प्राथमिक स्तर पर द्रुतगति से हुए पुनः कुछ अस्थाई कच्चे कमरे बनाकर भाई जी ने पूज्य माताजी एवं हम सभी को नंद्यावर्त परिसर में 30 जनवरी 2003 को प्रवेश कराया, इससे पूर्व 25 जनवरी को मैंने नंद्यावर्त स्थल-कुण्डलपुर में प्रथम बार अपने दीक्षित जीवन का 43वाँ केशलोंच किया। लगभग 1 माह से पूज्य माताजी एवं हम सभी प्राचीन मंदिर के कमरों में थे चूँकि पंचकल्याणक के दिनों में बार-बार वहाँ से नंद्यावर्त परिसर में आने लायक पूज्य माताजी का स्वास्थ्य नहीं था, इसलिए माताजी ने टीन के कमरों में रहना उचित समझा। इस मध्य कुण्डलपुर में दूर-दूर से भक्तों के समूह आए और सब तेज गति से कुण्डलपुर का विकास कार्य होते देखकर खूब प्रसन्न होते एवं प्रशंसा करते-करते सबके नेत्रों से हर्षाश्रु निकल पड़ते, वस्तुतः यह सब कलियुग में जिनेन्द्र भगवान का प्रभाव मानना चाहिए कि अच्छे कार्यों को देखकर असली भक्त गद्‌गद हुए बिना नहीं रहते।

➢कुण्डलपुर यात्रा ने लिया सार्थक रूप—

महोत्सव की तैयारी में कुण्डलपुर के अन्दर आयोजन समिति द्वारा आगन्तुक श्रद्धालुओं के लिए बसाई गई नगरी को देखकर लोग इसे देवोपुनीत अतिशय ही मान रहे थे क्योंकि लगभग 100 वर्षों में वहाँ ऐसा कोई अद्वितीय आयोजन हुआ ही नहीं था। श्रद्धालुओं के निरन्तर आगमन के साथ माताजी को बार-बार मूलनायक भगवान महावीर के आने और उन्हें यथास्थान वेदी पर विराजमान करने की चिंता थी, जिसका निवारण 7 फरवरी को गर्भकल्याणक के दिन ही हुआ। प्रतिमा तो 5 फरवरी, माघ शु. चतुर्दशी की रात्रि में जयपुर से कुण्डलपुर पहुँच गई, अगले दिन 6 फरवरी को क्रेन ने प्रतिमा की पेटी 25 फुट ऊँचे महावीर मंदिर के प्लेटफार्म पर पहुँचा दी किन्तु वेदी पर विराजमान करना क्रेन के लिए भी असंभव था अतः चैनपुली के द्वारा 7 फरवरी की मध्यान्ह 1 बजे से प्रतिमा विराजमान का उपक्रम प्रारंभ हुआ। पूज्य माताजी उस समय वहीं बैठकर मंत्र जाप्य करती रहीं पुनः मैंने, संघस्थ क्षु. मोतीसागर जी, रवीन्द्र जी आदि के साथ सेठ रिसबदास जी-वाराणसी आदि श्रावकों ने शाम तक वहीं बैठकर मंत्र जाप्य किया और जब शाम 7 बजकर 50 मिनट पर भगवान महावीर यथास्थान विराजमान हो गए, तब भक्तगणों ने रत्नवृष्टि, जय-जयकारों के स्वरों से सम्पूर्ण परिसर को गुंजायमान कर दिया।

➢तपस्या के प्रभाव से होती है बड़े-बड़े कार्यों की पूर्णता—

नंद्यावर्त परिसर में यूं तो कार्य तेजी से चल रहा था लेकिन कभी-कभी बारिश हो जाने से कार्य में व्यवधान आने की संभावना प्रतीत होती थी। 1 फरवरी को प्रातः 5 बजे से बरसात प्रारंभ हो गई अतः मिस्त्री-मजदूरों के काम में थोड़ी बाधा आई किन्तु पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार 11 बजे से भगवान महावीर मंदिर का लिन्टर पड़ना शुरू हुआ, जो रात को 11 बजे तक चला। दिन भर पता लगता रहा कि बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली आदि सब जगह मूसलाधार बारिश हो रही है किन्तु यहाँ दिन भर थोड़ी हवा चलती रही और कुछ-कुछ धूप भी निकली अतः छत पड़ने में कोई बाधा नहीं आई। वस्तुतः यह सब पूज्य माताजी की तपस्या का प्रभाव ही है कि किसी न किसी तरह समय पर बड़े-बड़े कार्य पूर्ण हो ही जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➤सत्यमेव जयते—

यह अटल सत्य है कि अंततः "सत्य की ही विजय होती है" भ्रांत व्युत्पत्तियों के बादल भले ही कितने सघन क्यों न हों, सत्य का सूर्य चमचमाते हुए सारे अंधकार को नष्ट करता ही है। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में मात्र डेढ़ माह के अल्प समय में हुए नवनिर्माण एवं उसके पश्चात् आयोजित राष्ट्रीय स्तर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव की अत्यन्त शालीन, पूर्ण निर्विघ्न एवं उत्कृष्ट भावना ने इस सर्वकालिक सिद्धान्त को और भी दृढ़ता से सुस्थापित कर दिया है।

प्रतिष्ठा महोत्सव के छह दिनों (7 से 12 फरवरी 2003) के मध्य मानों कुण्डलपुर की धरती पर स्वर्ग ही उतर आया था। चारों ओर फैले जंगल के बीच मानों महामंगल ही घटित हो रहा था, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि देवताओं ने आकर कुण्डलपुर महानगरी बसा दी है, जहाँ महान उत्सव, महान हर्ष का माहौल था। देश के विविध प्रान्तों से पधारे जैन श्रद्धालुओं एवं अजैन समाज की प्रतिदिन इतनी भीड़ रही कि 'नंद्यावर्त मंडप' में पैर रखने मात्र की जगह नहीं बची थी। सारे धार्मिक विधिविधान, रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि सभी इतने सुव्यवस्थित एवं निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हुए कि बार-बार ऐसा लगता था कि मानों स्वयं देवगण ही स्वर्ग से सारी व्यवस्था संचालित कर रहे हैं। प्रतिष्ठा के मध्य मौसम ने भी पूरा साथ दिया, ठंड की कठोरता में समुचित कमी आ जाने से यात्रियों को भी किसी कष्ट का आभास नहीं हो रहा था। चारों ओर खुशियों का ऐसा सैलाब उमड़ रहा था जिसको कहने में असमर्थता सी अनुभव हो रही है और मेरे शब्द भी कम पड़ रहे हैं। यह सब देखकर बिहार प्रांत के लोगों का कहना था कि मात्र कुण्डलपुर में ही नहीं अपितु पूरे बिहार प्रांत में इतना विशाल, इतना भव्य एवं इतना सफल-सुव्यवस्थित कार्यक्रम हमारी कभी देखने में नहीं आया है। खैर! कठोर परिश्रम के पश्चात् ऐसी अभिव्यक्ति हृदय को शीतल तो लगती ही है। जनसाधारण के अतिरिक्त आगन्तुक प्रशासनिक अधिकारी एवं मंत्रीगण भी जहाँ कुण्डलपुर के इस वैभव से अभिभूत दिखाई पड़े, वहीं दिग्गज राजनेताओं ने भी कार्यक्रम में पधारकर जब भगवान महावीर जन्मभूमि के रूप में कुण्डलपुर के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की, तो हृदय को अपार प्रसन्नता हुई।

➤गांधी के दांडी मार्च की तरह हजारों कदम बढ़ चले—

इधर पूज्य माताजी के कुण्डलपुर की ओर बढ़ते कदमों के साथ समाज के कदम भी महात्मा गांधी के दांडी मार्च की भांति उस ओर जुड़ने लगे और उधर ब्र. रवीन्द्र जी एवं उनकी सक्रिय टीम ने माताजी के स्वप्न को साकार रूप देना प्रारंभ कर दिया परन्तु बरसात के कारण कुण्डलपुर की भूमि पर निर्माण कार्य में बाधा आने लगी, समय की अल्पता थी, फिर भी शुरू हुआ जन्मभूमि की पावन मिट्टी का चमत्कार। 16 दिसम्बर 2002 को मकराना (राज.) में 40 वर्षों बाद बेदाग श्वेत पाषाण की एक बड़ी शिला मिली। भगवान महावीर की अवगाहना प्रमाण अर्थात् 7 हाथ ऊँची (11 फुट) खड्गासन प्रतिमा बनाने के लिए यह शिला पर्याप्त थी, इस खबर से हम सभी को आंतरिक संतुष्टि एवं हर्ष हुआ। यद्यपि फरवरी की प्रतिष्ठा का समय निकट था, फिर भी जयपुर के प्रसिद्ध मूर्तिकार श्री सूरज नारायण नाठा, उनके पुत्र राजेश नाठा एवं सहयोगियों द्वारा मूर्ति निर्माण का कार्य रात-दिन लगकर प्रारंभ किया गया। इधर पूज्य माताजी एवं हम सभी संघ सहित कुण्डलपुर पहुँच गए और मात्र डेढ़ माह का अल्प समय था फिर भी जन्मभूमि की धरती का अतिशय, कि एक के बाद एक कार्य बनते चले गए। कड़ाके की ठण्ड के बावजूद कार्य पूरे जोर-शोर से प्रारंभ हो गया, प्रतिष्ठा हेतु आवास-पाण्डाल आदि सभी कार्य तीव्र गति से चलने लगे और धीरे-धीरे प्रतिष्ठा महोत्सव की घड़ियाँ समीप आ गईं। क्रमशः मूर्तियों का आना, एक-एक कर विराजमान होना, सब चमत्कार जैसा हो रहा था, श्वेत पाषाण की बेदाग आकर्षक प्रतिमा तो इतनी मनोरम लग रही थी कि सभी नजरें एकटक उनको निहार रही थीं, तभी तो संघपति जी ने जल्दी से उसमें काला धागा बांध दिया था और उस समय का माहौल एकदम दिव्य प्रतीत हो रहा था।

➤शासन देवी-देवता पूज्य हैं—

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह बात अत्यन्त चिन्तनीय है कि चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों के यक्ष-यक्षिणी, शासन देव-देवी को मिथ्यादृष्टि कहकर कुछ लोगों के द्वारा उन्हें जिनमंदिरों से हटवाया जा रहा है। यक्ष-यक्षिणी यद्यपि चतुर्थ गुणस्थानवर्ती हैं, पंचम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणस्थानवर्ती श्रावक उनकी पूजा कैसे करें, कैसे उनको मंत्रों से अर्घ्य चढ़ाएँ इत्यादि प्रश्न उठते हैं लेकिन पूज्य माताजी का सदैव यही कहना रहता है कि शास्त्रों में जो वर्णन है, उस पर अनेक प्रकार के तर्क नहीं उठाना चाहिए क्योंकि पूज्यपाद स्वामी एक महान आचार्य हुए हैं, हजारों वर्ष पूर्व उनके द्वारा रचित सर्वार्थसिद्धि, समाधिशतक, जैनेन्द्र व्याकरण आदि प्रसिद्ध ग्रंथ हैं, उसके अतिरिक्त उन दिगम्बर परम्परा के महान आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी का बनाया हुआ पंचामृत अभिषेक पाठ भी उपलब्ध होता है और दक्षिण के शिलालेखों में भी उनका खूब वर्णन आया है, उन्होंने पंचामृत अभिषेक पाठ में भगवान की पूजा विधि का वर्णन करते हुए एक जगह बताया है—

तत्र स्थाप्यास्तिथीशा गृहसुरपतयो यक्षयक्ष्यः क्रमेण।
द्वारेशा लोकपाला विधिवदिह मया मंत्रतो व्याह्वियन्ते।।

अर्थात् भगवान की पूजा करते हुए उसी में वहीं पर पन्द्रह तिथि देवता, नवग्रह, सुरपति आदि और यक्ष-यक्षिणी (जिसमें 24 यक्ष व 24 शासन देवी मानी हैं), पाँच क्षेत्रपाल, द्वारपाल, लोकपाल आदि की क्रम से मंत्रों से स्थापना की जानी चाहिए। उन्होंने उसमें दश दिक्पालों का मंत्र भी दिया है— ॐ ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्णसर्वलक्षण सम्पूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारा इन्द्राग्नियम-नैर्ऋतवरुणवायुकुबेरेशानधरणेन्द्रसोमनामदशलोकपालाः! आगच्छत आगच्छत संवौषट्, स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भवत-भवत वषट् इदं अर्घ्यं पाद्यं गृह्णीध्वं गृह्णीध्वं ॐ भूर्भुः स्वः स्वाहा स्वधा।

यह पूज्यपाद स्वामी का दिक्पाल के आह्वान का मंत्र है। अतः विचार करने का विषय है कि जब पूज्यपाद स्वामी जैसे महान आचार्य के द्वारा दिक्पाल, यक्ष-यक्षिणी आदि के आह्वान व अर्घ्य के मंत्र ग्रंथों में वर्णित हैं, तो इसे मिथ्यात्व कहना और इन देवी-देवताओं की मूर्तियों को मंदिर से हटाने का प्रयत्न करना आगम के विपरीत है। आज हम जितने भी प्राचीन मंदिर एवं मूर्तियाँ देखें, उन सबमें भगवान के आजू-बाजू में यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं चूँकि यह शासन देव-देवी हमेशा धर्म की रक्षा करने वाले माने गए हैं। कोई इन्हें अरहंत या सिद्ध भगवान मानकर नहीं पूजते हैं, इन्हें शासन देव-देवी मानकर ही इनकी आराधना करते हैं और इनकी उपासना पद्धति में थोड़ा अन्तर है, वह सभी को ग्रंथों से समझना चाहिए।

वस्तुतः आगम की आज्ञा का उल्लंघन करने से, पूज्यपाद जैसे महान आचार्यों की अवहेलना करने से अवश्य मिथ्यात्व आ जाता है। अतः शासन देव-देवी की उपासना या भक्ति मिथ्यात्व नहीं है बल्कि किसी न किसी रूप में वर्तमान में प्रायः घर-घर में मिथ्यात्व डेरा डाले हुए है, वे पता नहीं किन-किन देवी-देवताओं की पूजा करते हैं, तो ऐसी स्थिति में यदि अपने गार्हस्थ्य जीवन में अनेक प्रकार के इच्छाओं की पूर्ति के लिए वे लोग शासन देव-देवी की भक्ति करते हैं तो वह मिथ्यात्व नहीं है, यह निश्चित है। जैन ग्रंथों— तिलोयपण्णत्ति, उमास्वामी श्रावकाचार, वसुनंदि श्रावकाचार आदि के आधार से या और भी अनेक श्रावकाचार ग्रंथों से, प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ एवं पूज्यपाद आदि आचार्यों के अभिषेकपाठादि की व्यवस्थानुसार इसे मिथ्यात्व नहीं कहकर धर्म के मर्म को समझना चाहिए।

➢सच्ची जन्मभूमि में लहराया ध्वज विश्व को देगा सुख-शांति—

यहाँ आयोजित ऐतिहासिक भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का शुभारंभ झण्डारोहण पूर्वक हुआ। पूज्य माताजी ने आगत अतिथियों एवं उपस्थित जनसमुदाय को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए इस सुअवसर पर कहा कि आज भगवान महावीर की सच्ची जन्मभूमि में लहराया धर्मध्वज सारे विश्व में लहराएगा और इस ध्वज की शीतल छाया में अगणित भव्यात्मा सुख और शांति का अनुभव करेंगे। यह सत्य है कि अब हर माह अनेकों स्थानों पर अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ होती हैं परन्तु कुण्डलपुर की यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा और महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव इसलिए महत्वपूर्ण है, इसलिए ऐतिहासिक है क्योंकि यह संस्कृति की सुरक्षा है, जन्मभूमि, धर्म और आर्ष परम्परा की सुरक्षा है। बात यह है कि दृढ़ संकल्पी साधुओं, आगम परम्परा की रक्षा करने वाले साधुओं, संस्कृति की सुरक्षा करने वाले साधुओं, तीर्थों की जन्मभूमि की रक्षा का संकल्प करने वाले साधुओं के किसी कदम से कदाचित् उनके भक्त उनसे विमुख हो सकते हैं, पर उस साधु के अंतरंग में दृढ़ विश्वास होता है कि शास्त्र जो कह रहा है, जिनवाणी जो कह रही है, उसी के अनुरूप मेरा आचरण है। ''आगम चक्खू साहू'' अर्थात् साधु के पास आगम चक्षु होता है। हम अपनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करते हैं, हवा के अनुकूल नहीं करते हैं। वह साधु-साधु नहीं है, जो अपने मन, देश या विचारधारा को अपने मन के अनुकूल नहीं करते हैं, हवा के अनुकूल नहीं करते हैं। वह साधु-साधु नहीं है, जो अपने मन, देश या पाश्चात्य संस्कृति अथवा समाज के अनुकूल चले। साधु तो आगम के अनुकूल चलते हैं, उन्हें न कोई देश, न कोई राष्ट्र, न कोई सरकार, न कोई समाज और न कोई भक्त चला सकता है, साधु तो मात्र आगम की आज्ञानुसार चला करते हैं। यह जैनेश्वरी दीक्षा, यह मयूर पंख की पिच्छी इसी बात को दृढ़ता से अनुमोदित करती है।

➢ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा —

भगवान महावीर की खड्गासन मनोज्ञ प्रतिमा के विराजमान होते ही 7 फरवरी से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव प्रारंभ हो गया। यह प्रतिमा विराजमान करने का सौभाग्य पूज्य माताजी के संघपति लाला श्री महावीर प्रसाद जैन-साउथ एक्स. दिल्ली एवं उनके परिवार को प्राप्त हुआ। प्रतिष्ठा में भी उन्होंने एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. कुसुमलता जैन ने भगवान के माता-पिता बनने का पुण्य प्राप्त किया। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनारस के श्री दीपक जैन एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. सुभाषिनी जैन बने। धनकुबेर का प्रमुख पद आरा निवासी श्री कमल कुमार जैन एवं सौ. अनुपमा जैन को प्राप्त हुआ। इन इन्द्र परिवार के द्वारा किये गये गर्भकल्याणक महोत्सव के सुन्दर मंचन ने सभी को 2600 वर्ष पूर्व के इतिहास को पुनर्स्मरण करने हेतु बाध्य कर दिया। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी एवं कुबेर आदि इन्द्र-इन्द्राणी द्वारा बीच-बीच में बोले गए अंग्रेजी संवाद भी विशेष आकर्षक रहे। 8 फ़रवरी को जन्मकल्याणक हुआ, जिसमें अंतरंग एवं बाह्य क्रियाओं के साथ-साथ जिनबालक को जन्माभिषेक के लिए सुमेरु पर्वत पर ले जाने का 'जन्मकल्याणक जुलूस' विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा, जो कि नंद्यावर्त स्थल कुण्डलपुर से नालंदा खण्डहर तक गया। सैकड़ों वर्षों के इतिहास में कुण्डलपुर की गलियों में निकलने वाला यह ऐतिहासिक जुलूस था। धनकुबेर सभी स्थानीय निवासियों को रत्न वितरित करते जा रहे थे। देश के कोने-कोने से पधारे श्रद्धालुओं एवं स्थानीय समाज का उत्साह देखते ही बनता था। पूरे नालंदा व बड़गाँव निवासियों को लड्डू का प्रसाद दिया गया।

रात्रि में शास्त्र प्रवचन की सभा में मूर्धन्य विद्वान पं. शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी ने भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर, उनके सर्वोदयी सिद्धान्तों एवं ब्राह्मी माता के रूप में प्रतिष्ठित पूज्य माताजी के प्रति अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। 12 फरवरी 2003 को भगवान के निर्वाणकल्याणक की क्रियापूर्वक निर्वाण लाडू समर्पण के पश्चात् पूर्णाहुति हवन सम्पन्न किया गया, साथ ही लगभग 100 प्रतिष्ठित जिनप्रतिमाओं (त्रिकाल चौबीसी की 72 सहित) को नवनिर्मित वेदी में विराजमान कर दिया गया। उस समय भक्तगणों ने अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ नृत्य करते हुए भगवान विराजमान करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इसके साथ ही पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित कुण्डलपुर के प्राचीन मंदिर प्रांगण में **''भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ''** में **श्री कमलचंद जैन-खारीबावली-दिल्ली** एवं परिवार द्वारा भगवान महावीर की **8 जिनप्रतिमाएँ** भी विराजमान की गईं।

➢कुण्डलपुर का विकास संस्कृति सुरक्षा के लिए बना नींव का पत्थर —

9 फरवरी को नवग्रह शांति मंदिर एवं रत्नत्रय निलय के शिलान्यास के बाद **''नंद्यावर्त मण्डप''** में आयोजित हुआ **''कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन''**। जिसका संचालन किया अखिल भारतीय दि. जैन शास्त्री परिषद के अध्यक्ष-प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन-फिरोजाबाद ने। डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल (महा.) की अध्यक्षता, अ.भा.दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय महामंत्री-श्री माणिकचंद पाटनी के मुख्य आतिथ्य तथा पं. शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी, डॉ. अनुपम जैन-इंदौर, श्री रमेश कासलीवाल-इंदौर, पं. लालचंद जैन 'राकेश', श्री उमेश जैन-फिरोजाबाद, पं. जयसेन जैन-इंदौर आदि विद्वानों सहित बिहार दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री अजय जैन (आरा) एवं बिहार दि. जैन तीर्थक्षेत्र न्यास बोर्ड के अध्यक्ष-श्री रामगोपाल जैन (पटना) एवं अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी ने अपने प्रभावपूर्ण उद्बोधन में कहा कि यह इस जन्मभूमि की मिट्टी का चमत्कार है जो मात्र सवा महीने में ही हमें इतना विशाल निर्माणकार्य एवं वृहद् पंचकल्याणक देखने का अवसर प्राप्त हो रहा है। वस्तुतः कुण्डलपुर के अतिरिक्त भगवान महावीर की जन्मभूमि न कहीं और थी, न है और न कभी आगे हो सकती है। डॉ. अनुपम जैन-इंदौर ने भी अपने वक्तव्य में जन्मभूमि कुण्डलपुर के विकास की प्रारंभ से लेकर अब तक की सम्पूर्ण गतिविधियों का प्रभावक विवरण प्रस्तुत किया। स्थानीय डॉ. रामदेव सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि पूज्य माताजी द्वारा इस क्षेत्र के विकास से हम क्षेत्रवासियों को जो खुशी हुई है, वह वर्णनातीत है। श्री अजय कुमार जी-आरा तो कहने लगे कि आज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी के प्रयासों के कारण ही हम सबमें यह साहस आ गया है कि हम इस वैभवशाली कुण्डलपुर को पुनः भगवान महावीर की जन्मभूमि घोषित कर सके हैं। किन्हीं भी विद्वानों को अपनी सोच अथवा शोध के आधार पर कोई भी ऐसा वक्तव्य अथवा लेखन समाज के बीच में नहीं प्रस्तुत करना चाहिए, जिसके माध्यम से समाज में भ्रम उत्पन्न हो अथवा विवाद की स्थितियाँ आ जावें। मुख्य अतिथि **श्री माणिकचंद जी** ने कहा कि जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास पूज्य माताजी का समाज पर बहुत बड़ा उपकार है। साररूप में इस महासम्मेलन से यही तथ्य प्रकट में आया और विद्वानों द्वारा सारगर्भित उद्बोधनों में एक स्वर से यह घोषित किया गया कि जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास संस्कृति सुरक्षा के लिए नींव के पत्थर के रूप में सिद्ध होगा।

➢भगवान महावीर ज्योति रथ का मंगल उद्घाटन—

आचार्य समन्तभद्राचार्य ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार नामक ग्रंथ में सम्यग्दर्शन के आठ अंगों का वर्णन करते हुए प्रभावना अंग का लक्षण बताया है–

अज्ञानतिमिरव्याप्ति-मपाकृत्य यथायथम्।
जिनशासनमाहात्म्य-प्रकाशः स्यात्प्रभावना।।

अर्थात् अज्ञानरूपी अंधकार के विस्तार को दूर कर अपनी शक्ति के अनुसार जिनशासन के माहात्म्य को प्रकट करना सम्यग्दर्शन का प्रभावना अंग है।

मोक्षमार्ग की गाड़ी के दो पहिये माने गए हैं — साधु और श्रावक। इन दोनों के परस्पर पूरक होने से ही संसार व मोक्षमार्ग की परम्परा निरन्तर प्रवाहमान है। आचार्यों द्वारा कहे गये समस्त आगमोक्त तथ्यों का परिपालन जहाँ पूर्णरूपेण साधुगण करते हैं, वहीं श्रावक भी एकदेश रूप, उसका परिपालन करते हैं। चूँकि यहाँ चर्चा प्रभावना अंग की हो रही है, उस क्रम में वर्तमान में साधु जिनशासन के माहात्म्य को प्रकट करने हेतु महती धर्मप्रभावना करते हुए आत्म व परकल्याण में सदैव तत्पर रहते हैं और श्रावक भी अपनी शक्ति के अनुसार अपनी अर्थांजलि, भावांजलि व पुष्पांजलि समर्पित कर जिनशासन के माहात्म्य को प्रकट कर महान पुण्य का संचय करते हैं और अपनी भवभ्रमण परम्परा को अल्प कर लेते हैं।

उसी प्रभावना अंग का परिपालन कर पूर्वाचार्यों द्वारा निर्दिष्ट आगम वाक्य को प्रमाण मानने वाली पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा किए गए अद्वितीय कार्यों का सीमित शब्दों में वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। उनके द्वारा किए गए धर्मप्रभावना के प्रत्येक कार्य प्रशंसनीय, वंदनीय एवं अनुकरणीय हैं। वर्तमान युग में जब भारत के अंदर भी पाश्चात्य संस्कृति की होड़वश आधुनिक शैली जैसे — पत्र-पत्रिकाएँ, मोबाइल, कम्प्यूटर, इण्टरनेट, फैक्स आदि के माध्यम से प्रचार-प्रसार का युग आ गया है, ऐसे समय में माताजी द्वारा जिनधर्म की प्रभावना, जिनधर्म की प्राचीनता एवं तीर्थंकर भगवन्तों के सर्वोदयी सिद्धान्तों से जन-जन को परिचित करवाने में रथ भ्रमण का ऐसा माध्यम बनकर आया, जिसके द्वारा भारत की जनता ने न सिर्फ इन उद्देश्यों को जाना, समझा व हृदयंगम किया अपितु जिन जानकारियों व तीर्थ विकास को लेकर इन रथों का भ्रमण हुआ, उससे पूरे देश की भावनाएँ जुड़ीं और उन्होंने अपनी अर्थांजलि, भावांजलि के कुछ पत्र-पुष्प समर्पित कर प्राणप्रण से उसे अपना मानकर उसकी सुरक्षा व उत्तरोत्तर वृद्धि का संकल्प भी लिया जिसमें प्रथम रथ **''जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ''** का भ्रमण (माननीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा प्रवर्तित) सम्पूर्ण भारत के कोने-कोने में हुआ, जिसके द्वारा भारत की जनता ने जैन भूगोल का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर जम्बूद्वीप के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की और उससे एकत्रित राशि का प्रतिफल **'धरती का स्वर्ग'** कही जाने वाली जम्बूद्वीप रचना है, इसी शृंखला में द्वितीय रथ **''भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार''** रथ का भारत भ्रमण (तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रवर्तित) जैनधर्म की प्राचीनता, अहिंसा-शाकाहार एवं भगवान ऋषभदेव के अहिंसामयी-सर्वोदयी सिद्धान्तों की अनुगूंज के उद्देश्य को लेकर निकला और उसका प्रतिफल **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ''** है पुनः तृतीय 'भगवान महावीर ज्योति रथ का प्रवर्तन' भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर से पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुआ, जिसके भारत भ्रमण का उद्देश्य। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर का प्रचार-प्रसार।

11 फरवरी 2003 को बिहार के महामहिम राज्यपाल डॉ. विनोद चंद पाण्डेय जी के द्वारा भगवान महावीर ज्योतिरथ पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्तिक बनाकर एवं दीप प्रज्वलन करके रथ का उद्घाटन सम्पन्न हुआ, उस समय प्रसन्नमना राज्यपाल जी ने रथ का उद्घाटन कर स्वयं को अत्यन्त गौरवान्वित अनुभव किया पुनः महावीर जयंती के शुभ दिवस 15 अप्रैल 2003 को माताजी के शुभाशीर्वाद को प्राप्त कर उस रथ को भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तित किया गया। देश के विभिन्न अंचलों में लगभग डेढ़ वर्ष तक भ्रमण कर जन-जन को भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर की यथार्थता का परिज्ञान कराते हुए इस रथ ने तीर्थ विकास में कुछ आर्थिक योगदान भी समर्पित किया।

इससे पूर्व आयोजित रथ उद्घाटन की धर्मसभा में महामहिम जी ने माताजी द्वारा लिखित **'महावीर देशना ग्रंथ'** का विमोचन किया। प्रस्तुत ग्रंथ में दिगम्बर जैन मान्यतानुसार भगवान महावीर के सम्पूर्ण जीवन चरित्र की व्याख्या के साथ-साथ उनकी देशना से प्राप्त सिद्धान्तों का विशद वर्णन है।

➢तीर्थंकर जन्मभूमि विकास महाधिवेशन—

10 फरवरी को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के मध्य विशेष महाधिवेशन हुआ, जिसका विषय था—तीर्थंकर जन्मभूमि विकास महाधिवेशन। चन्द्रप्रभु भगवान की जन्मभूमि चन्द्रपुरी, भगवान पार्श्वनाथ-सुपार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी, भगवान संभवनाथ की जन्मभूमि श्रावस्ती, भगवान नेमिनाथ की जन्मभूमि शौरीपुर, भगवान धर्मनाथ की जन्मभूमि रौनाही, 5 तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या, भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि राजगृही से पधारे पदाधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्र के विषय में विशेष जानकारी प्रदान करते हुए भविष्य में आवश्यक विकास योजनाओं से सभा को अवगत कराया। मैंने उन लोगों को सम्बोधित करते हुए यही प्रेरणा प्रदान की कि आज लोग अतिशय क्षेत्रों के पीछे तो भागते हैं परन्तु तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास के विषय में सोचने वाले बहुत ही कम व्यक्ति हैं। पूज्य माताजी का यह जैन समाज पर महानं उपकार है कि उन्होंने हमें इस विषय में कदम उठाने के लिए प्रेरित किया है पुनः मैंने माताजी की प्रेरणानुसार जन्मभूमि विकास के निम्न बिंदु बताए—

1. प्रत्येक तीर्थंकर जन्मभूमि पर संबंधित तीर्थंकर भगवान की बड़ी प्रतिमा विराजमान की जाये।

2. प्रत्येक जन्मभूमि पर संबंधित तीर्थंकर भगवान के नाम के कीर्तिस्तंभ बनाए जाएं, जिसमें दिगम्बर जैनागम के अनुसार उनका जीवन चरित्र, सिद्धान्त आदि उत्कीर्ण हों।

3. जन्मकल्याणक के दिवस पर उन भगवान का मस्तकाभिषेक किया जाए।

4. निर्वाण तिथि में निर्वाणलाडू चढ़ाने का सामूहिक आयोजन सम्पन्न किया जाये।

➢महावीर जैन शब्दकोश एक विशेष उपहार बना—

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मोत्सव वर्ष के अन्तर्गत वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता को देखते हुए मैं माताजी से एक जैनधर्म के हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश के बारे में कहने लगीं तो माताजी ने कहा कि चंदनामती! अगर तुम्हें इतने दुरुह कार्य को करना ही है, तो तुम भगवान महावीर के नाम पर इस शब्दकोश को बनाओ। उसी के फलस्वरूप मैंने डॉ. अनुपम जैन (महामंत्री-विद्वत् महासंघ), जीवन प्रकाशन जैन-इंदौर एवं संघस्थ ब्र. कु. स्वाति जैन के साथ परिश्रम करके तीन वर्षों में लगभग 15 हजार शब्दों का शब्दकोश तैयार किया, जिसे मैंने माताजी के निर्देशन से शास्त्रीय प्रामाणिकरूप में प्रस्तुत किया है। यह शब्दकोश वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए जैनधर्म के ज्ञान हेतु अत्यन्त उपयोगी है। 6 जनवरी 2005 को वाराणसी में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति ने उस शब्दकोश का विमोचन किया।

➢भगवान महावीर का महाकुम्भ मस्तकाभिषेक—

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के समापन अवसर पर हुआ उन श्वेतवर्णी, मनोहारी, अवगाहना प्रमाण शासनपति भगवान महावीर का 1008 महाकुंभों से मस्तकाभिषेक। जिस मनोहारी दृश्य की प्रतीक्षा प्रत्येक नेत्रों को आकुलित किए हुए थी, आखिरकार वह स्वर्णिम घड़ियाँ नजदीक आ ही गईं, जिसमें प्रथम कलश करने का सौभाग्य मूर्ति सौजन्यकर्ता श्री महावीर प्रसाद जी ने प्राप्त किया। अहोभाग्य था उन नर-नारियों का, जिन्होंने प्रभु के तन पर बहती पंचामृत की धाराओं को किया, देखा और जीवन को धन्य किया, जल, नारियल रस, इक्षुरस, अनार रस, मौसमी रस, सन्तरा रस, अंगूर रस, घृताभिषेक, दुग्धाभिषेक, दधि अभिषेक, सर्वौषधि,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुष्कोण कलश, केशर, पुष्पवृष्टि, मंगल आरती सुगंधित जल एवं शांतिधारा के क्रमानुसार अभिषेक ने करने-कराने वालों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उस समय जहाँ अनार रस की धारा से श्वेत प्रतिमा जामुनी होकर चमकने लगी, वहीं संतरा रस के अभिषेक ने प्रभु को पीतवर्णी कर दिया। सर्वौषधि से प्रभु लालवर्णी हो उठे तो केशर से केशरिया हुए प्रभु मन को लुभाने लगे और पुष्पवृष्टि होते ही तो नभमण्डल जयकारों से गुंजित हो उठा। भगवान महावीर के मस्तकाभिषेक के पश्चात भगवान महावीर मंदिर के दाहिनी ओर विराजमान भगवान ऋषभदेव की 14 फुट उत्तुंग लालवर्णी पद्मासन प्रतिमा पर प्रथम कलश करने का सौभाग्य मूर्ति सौजन्यकर्ता श्री रिसभदास दीपक कुमार जैन-वाराणसी ने प्राप्त किया, साथ ही उन लालवर्णी प्रभुवर का दुग्धाभिषेक भी हुआ, जिससे कुछ क्षण को प्रतिमा श्वेतवर्णी हो उठी, पुनः शांतिधारा के पश्चात् अत्यन्त हर्षोल्लास के वातावरण में भगवान का मस्तकाभिषेक महोत्सव पूर्ण हुआ।

देश के सुदूरवर्ती प्रांतों से पधारे हजारों श्रद्धालुओं द्वारा पीले वस्त्रों में 1008 चमचमाते स्वर्ण, रजत आदि कलशों से भगवान के महाकुंभ मस्तकाभिषेक की छटा देखते ही बनी थी। इस महाकुंभ में सभी कलश करने वाले महानुभावों को वे कलश भेंट स्वरूप प्रदान किये गये। इस प्रकार जन्मभूमि-कुण्डलपुर को चार चांद लगा देने वाला 21वीं सदी का यह ऐतिहासिक पंचकल्याणक इतिहास के रूप में सदैव के लिए स्थापित हो गया।

➢नालंदा म्यूजियम एवं खण्डहर भी बताते हैं जैन इतिहास—

कुण्डलपुर में अवस्थित नालंदा खण्डहर जहाँ पुरातात्त्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, वहीं उसका सूक्ष्मता से अवलोकन एवं वहाँ उपलब्ध प्राचीन खण्डहर, उत्कीर्ण जैनमूर्तियाँ, गाइड्स द्वारा बताई गई गौरवमयी कथाएँ इस बात की ओर इंगित करती हैं कि कभी यह खण्डहर ही नंद्यावर्त महल था, जो सात मंजिल का था और यहीं महावीर प्रभु जन्मे थे, कालदोष के कारण आज उसका यह रूप है, फिर भी इसमें जैनत्व ही दृष्टिगत होता है। 16 फरवरी 2003 को पूज्य माताजी एवं हम लोग नालंदा का खण्डहर देखने गये, साथ में और भी अनेक श्रेष्ठी महानुभाव थे, वहाँ म्यूजियम में उपस्थित पाण्डेय जी ने खूब रुचिपूर्वक हमें पूरा म्यूजियम दिखाया। वहाँ दो जैन मूर्तियाँ भी रखी हैं, जो भगवान ऋषभदेव एवं भगवान पार्श्वनाथ की हैं, उसके पश्चात् हमने नालंदा का खण्डहर भी देखा और उस विशाल महल के खण्डहरों को देखकर उन क्षणों का स्मरण किया, जब वीर प्रभु ने 2600 वर्ष पूर्व यहाँ जन्म लिया होगा और यह एक समृद्धिशाली नगरी एवं स्वर्णमयी महल रहा होगा।

शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर यात्रा

जैनधर्म में दो ही अनादिनिधन तीर्थ माने गये हैं—1. अयोध्या और 2. सम्मेदशिखर। इनमें शाश्वत जन्मभूमि का गौरव जहाँ अयोध्या नगरी को प्राप्त है, वहीं अनन्तानन्त तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर परम पावन, पूज्यनीय एवं वंदनीय है और जिसका कण-कण पवित्र है, उस पवित्र तीर्थ की वंदना करने वाला नियम से भव्य है और 49 भवों में मोक्ष को प्राप्त कर लेगा, ऐसा वर्णन है। कहा भी है—**"एक बार वंदे जो कोई, तांहि नरक पशुगति नहिं होई"**।

उस पवित्र तीर्थराज की वंदना पूज्य माताजी ने आर्यिका दीक्षा लेने के बाद सन् 1962-63 में की थी तथा स्वयं मैंने भी दीक्षा के पूर्व ही की थी, दीक्षा के पश्चात् मुझे उस तीर्थराज की वंदना का सौभाग्य अभी तक नहीं प्राप्त हो सका था, पुनः अब उस यात्रा का संयोग भगवान महावीर की कृपा से ही प्राप्त हो रहा था इसलिए इस यात्रा को लेकर मन में बड़ा आल्हाद था। पंचकल्याणक के पश्चात् 19 फरवरी 2003 को पूज्य माताजी ने संघ सहित सम्मेदशिखर के लिए कुण्डलपुर से मंगल विहार किया। उस मार्ग में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि एवं भगवान महावीर की प्रथम देशनास्थली राजगृही तीर्थ, भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी एवं गौतम गणधर स्वामी की निर्वाणभूमि गुणावां जी सिद्धक्षेत्र का दर्शन कर उन महापुरुषों की चरण रज से पावन धरा को नमन कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इसी विहार के मध्य माताजी ने राजगृही के जवाहर नवोदय विद्यालय में भगवान महावीर की पद्मासन प्रतिमा तथा जैन तीर्थ परिसर में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की बड़ी प्रतिमा, पावापुरी सिद्धक्षेत्र पर भगवान महावीर की बड़ी प्रतिमा, गुणावां सिद्धक्षेत्र पर गौतम गणधर स्वामी की प्रतिमा आदि विराजमान करने की प्रेरणा देते हुए झुमरीतलैया (कोडरमा), सरिया आदि जैन समाज के नगरों में होते हुए 12 मार्च 2003 (फाल्गुन शु. नवमी) को शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर में पदार्पण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया। पूज्य माताजी को 40 वर्षों बाद क्षेत्र पर अनेक संस्थाओं द्वारा अनेक निर्माण देखकर मन में असीम आल्हाद हुआ और इस अनादि तीर्थ के पुनः दर्शन होने पर हम सभी ने अपने भाग्य की सराहना की।

➢जीवन की अमिट देन बनी पर्वत वंदना—

13 मार्च 2003, फाल्गुन शु. 10 को पूज्य माताजी ने बीसपंथी कोठी में प्रातःकाल केशलोंच किया और पर्वत वंदना की तीव्र उत्कण्ठा में उसी उपवास के दिन मध्यान्ह में 2 बजे संघ सहित पहाड़ पर चली गईं। वहाँ चोपड़ा कुंड पर निर्मित जिनमंदिर एवं धर्मशाला में ठहरकर पर्वत की तीन वंदनाएं सम्पन्न कीं। 15 मार्च को हस्तिनापुर से रवीन्द्र जी, वाराणसी से दीपक जी एवं आरा से कमल कुमार जी आ गए पुनः वे लोग एवं अनेकों भक्तों ने 16 मार्च को माताजी के साथ सम्मेदशिखर की वंदना करके जीवन को धन्य माना। वंदना के मध्य प्रत्येक टोंक पर जल, दूध, चंदन से भगवान के चरणों का सभी श्रावकों ने अभिषेक किया, अर्घ्य चढ़ाया, रत्नवृष्टि की, चांदी की लौंग एवं चांदी के कमलपुष्प चढ़ाए तथा निर्वाणलाडू चढ़ाकर आरती करके अपनी भक्ति को प्रदर्शित किया। भगवान पार्श्वनाथ की टोंक पर पहुँचकर पूज्य माताजी ने पिण्डस्थ ध्यान में लीन होकर भगवान के मुक्तिगमन के क्षणों की पावन अनुभूति की, पश्चात् पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों का अभिषेक, पूजन हुआ और निर्वाणलाडू चढ़वाने के बाद हम सभी लोग पहाड़ से नीचे धर्मशाला (बीसपंथी कोठी) में वापस आ गए। उसके बाद 21 मार्च को हम लोग दोबारा पहाड़ पर गए, वहाँ चोपड़ा कुण्ड की धर्मशाला में रहकर चार वंदना कीं, इस प्रकार कुल 7 वंदना करके हमारी सम्मेदशिखर यात्रा इस जीवन की अमिट देन बन गई। चोपड़ा कुंड पर बने दिगम्बर जैन मंदिर को देखकर हम सभी का हृदय फूला नहीं समाया और पूज्य माताजी ने सभी कार्यकर्ताओं को लाखों-लाख आशीर्वाद प्रदान कर जिनधर्म की प्रभावना में सदैव लगे रहने की प्रेरणा दी।

पर्वत से शाम को वापस आकर हमने पूरे संघ के साथ पूज्य माताजी की सात प्रदक्षिणाएँ लगाईं, पाद प्रक्षाल, अर्घ्य समर्पण कर उनकी आरती उतरवाई पुनः मैंने कहा कि इनका महान उपकार हम लोगों पर है, जिनके निमित्त से सम्मेदशिखर की 7 वंदना हुईं अतः इनकी जितनी विनय आदि की जाए, उतनी ही कम है।

➢श्रावक सम्मेलन एवं 51वाँ क्षुल्लिका दीक्षा समारोह—

होली के अवसर पर सम्मेदशिखर का जैनमेला प्राचीनकाल से प्रसिद्ध रहा है। देश के विभिन्न प्रान्तों के लोग वहाँ फाल्गुन मास की आष्टान्हिका में सिद्धचक्र, इन्द्रध्वज आदि विधान करने अथवा होली के रंगों से बचने के लिए बड़ी संख्या में लोग सम्मेदशिखर यात्रा हेतु जाते हैं और वहाँ भगवान पार्श्वनाथ के भक्तिरूपी रंग से परस्पर में केशरिया होली खेलते हैं। ऐसी होली के दिन चैत्र कृ. एकम् को ही 50 वर्ष पूर्व महावीर जी अतिशयक्षेत्र पर आचार्य श्री देशभूषण महाराज के करकमलों से बाल ब्र. मैना ने क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहणकर "वीरमती" नाम प्राप्त किया था। सम्मेदशिखर में चैत्र कृ. एकम् को माताजी ने अपने दीक्षित जीवन के 50 वर्ष पूर्ण किए थे। उस पावन अवसर पर वहाँ पधारे सभी भक्तों ने पूज्य माताजी के प्रति अपनी भक्ति भावनाएँ प्रस्तुत कीं।

इसी मेले के अवसर पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से वहाँ 19 मार्च को श्रावक महासम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, उसमें माताजी ने श्रावक के कर्त्तव्यों पर प्रकाश डालते हुए सम्मेदशिखर तीर्थरक्षा हेतु सभी को विशेष प्रेरणा प्रदान की तथा तीर्थरक्षा हेतु मुनि श्री आर्यनंदी महाराज के उपकारों का स्मरण करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी को कहा कि सम्मेदशिखर में उनका एक स्मारक अवश्य बनाना चाहिए। पुनः अनेक वक्ताओं ने वर्तमान में चल रहे तीर्थ विकास के प्रति अपने श्रद्धाभाव व्यक्त करते हुए सभी को अष्टमूलगुण, पँच अणुव्रत आदि धारण करके गुरुभक्ति, तीर्थभक्ति के लिए प्रेरित किया।

➢ऋषभजयंती के दिन हुआ ऋषभदेव मंदिर का शिलान्यास—

पूज्य माताजी एवं हम सभी ने शिखरजी में नीचे सभी मंदिरों का दर्शन किया, तब मन में आए चिंतन के अनुसार उन्होंने आपस में विचार-विमर्श किया कि भगवान पार्श्वनाथ की इस धरती पर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का अस्तित्व होना भी अति आवश्यक है, जिससे प्रत्येक यात्री जैनधर्म की प्राचीनता से परिचित हो सके पुनः पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार वहाँ की बीसपंथी कोठी के पदाधिकारियों ने इस विषय में रुचि ली और चौबीस टोंक बाहुबली मंदिर में प्रवेश करते ही जो प्रांगण अभी खाली था, वहाँ 27 मार्च 2003 ऋषभदेव जन्मजयंती के दिन मंदिर का शिलान्यास डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल-पैठण (महा.) (अध्यक्ष-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाराष्ट्र प्रांतीय तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं महामंत्री-108 फुट मूर्ति निर्माण ट्रस्ट मांगीतुंगी) सपरिवार ने किया। डॉ. पापड़ीवाल परिवार के ही अर्थ सौजन्य से वहाँ मंदिर निर्माण एवं 9 फुट उत्तुंग पद्मासन मूर्ति स्थापित हुई, जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा दिसम्बर 2005 मगशिर शु. 1 से सप्तमी तक में संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी के सानिध्य में सानन्द सम्पन्न हुई।

डॉ. पापड़ीवाल जी को शाश्वत तीर्थ पर जो यह पुण्य अवसर प्राप्त हुआ है, इस हेतु वे पूज्य माताजी एवं समस्त संघ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। वास्तव में यह उनका जन्म-जन्मातर का पुण्य ही है, जो उन्हें शाश्वत तीर्थ पर जिनमंदिर बनाकर मूर्ति विराजमान करने का पुण्य प्राप्त हुआ। ऋषभजयंती के दिन सम्मेदशिखर में प्रथम बार माताजी की प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती धूमधाम से मनाई गई तथा रथयात्रा के साथ-साथ 108 कलशों से भगवान का अभिषेक भी हुआ।

➢कुण्डलपुर में संघ का पुनरागमन—

सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र की अविस्मरणीय यात्रा के उपरांत पूज्य माताजी एवं हम सभी ने 29 मार्च को पुनः कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार किया। 10 अप्रैल को 8.15 बजे नंद्यावर्त महल परिसर में संघ का मंगल पदार्पण हुआ।

दीपनगर रेलवे लाइन के पास से आते हुए देखा कि वहाँ "दीपनगर कुण्डलपुर हाल्ट" का बोर्ड लगा है, देखकर प्रसन्नता हुई कि पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारे रेलमंत्री नितीश कुमार जी के आदेशानुसार यह कार्य किया गया है। इस हाल्ट स्टेशन का कुछ विस्तारीकरण भी हुआ है

➢कुण्डलपुर में पुनः प्रारंभ हुआ महावीर जयंती मनाने का क्रम—

हम सभी की तीव्र भावना थी कि भगवान महावीर की जन्मभूमि पर उनकी जन्मजयंती खूब धूमधाम से मनाई जाए, अतः हम लोगों ने माताजी से बार-बार आग्रह किया कि आप शीघ्र ही कुण्डलपुर की ओर विहार करें, फलस्वरूप माताजी ने सम्मेदशिखर से विहार कर कुण्डलपुर पहुँचकर महावीर जयंती को व्यापक रूप प्रदान किया, निर्णीत विचारानुसार उसके पोस्टर भी समिति ने छपवाकर देश भर में भेज दिए थे, पुनः 15 अप्रैल, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को कुण्डलपुर में भारी प्रभावनापूर्वक महावीर जयंती का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें झुमरीतलैया, नवादा, इस्लामपुर, हरिद्वार, कलकत्ता, औरंगाबाद, लखनऊ आदि स्थानों से अनेकों महानुभाव पधारे और बहुत ही प्रभावनापूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। धर्मसभा के पश्चात् रथयात्रा नालंदा तक गई, तो पूरे रास्ते नागरिकों को रत्न एवं लड्डू वितरित किए गए। सायं 4 बजे प्राचीन मंदिर में भगवान महावीर का 108 कलशों से अभिषेक हुआ, जिसमें पूज्य माताजी एवं समस्त संघ का सानिध्य रहा, पुनः नंद्यावर्त परिसर में पालना झुलाया गया।

➢तीर्थक्षेत्रों को बदलने का अधिकार किसी को नहीं है—

पूज्य माताजी की तीर्थरक्षा के प्रति समर्पित भावनाओं को देखकर वास्तव में ये पंक्तियाँ मुझे बड़ी ही सुन्दर लगती हैं—

दुर्गम पथ को सुगम बनाना ही सच्ची कर्मठता है।
जंगल में मंगल कर महल बनाना सच्ची गुरुता है।।
तीरथ को नवतीर्थ बनाना ही सच्ची सक्रियता है।
तीरथ का उद्धार न करना मानव की निष्क्रियता है।।

माताजी सदा यही कहती हैं कि तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियाँ, जो कि इन्द्रों द्वारा भी पूज्य हैं, तथा जहाँ की पवित्र रज देवता भी अपने मस्तक पर धारण करते हैं, ऐसी महान भूमियों के विकास एवं संरक्षण का दायित्व यदि वर्तमान में तीर्थक्षेत्र कमेटी को सौंपा गया है, तो उसे समझना चाहिए कि तीर्थक्षेत्र किसी की बपौती नहीं हैं वरन् सम्पूर्ण जैनसमाज की धरोहर हैं, इसलिए किसी को भी तीर्थ बदलने का अधिकार नहीं है। किसी भी संस्था अथवा व्यक्ति विशेष को जनता के श्रद्धाभाव का उचित समादर करते हुए प्राचीनकाल से चले आ रहे तीर्थों के संरक्षण एवं विकास का ही दायित्व संभालना चाहिए।

➢राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को भी आकर अच्छा लगा—

भारतवर्ष के प्रथम नागरिक-राष्ट्रपति डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम का तीन दिवसीय बिहार यात्रा के मध्य भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी तीर्थ पर 30 मई 2003, ज्येष्ठ कृ. अमावस को आगमन हुआ। चूँकि कई दिनों से श्वेताम्बर जैन समाज के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पदाधिकारी श्री सुनील कुमार जैन सुचंती का आग्रह था कि माताजी! आप उस कार्यक्रम में अपना सानिध्य अवश्य प्रदान कर हमें गौरवान्वित करें अतः उनके विशेष आग्रह पर माताजी ने उस कार्यक्रम में पधारने की स्वीकृति दे दी। मध्यान्ह 1 बजे दिगम्बर व श्वेताम्बर प्रतिनिधियों के साथ पावापुरी के प्रसिद्ध जलमंदिर अर्थात् भगवान महावीर की निर्वाणस्थली का दर्शन करके डॉ. कलाम 'गांव मंदिर के दर्शनार्थ पधारे और वहाँ के प्रवचन हाल में आयोजित सभा में सर्वप्रथम अत्यन्त विनम्र भाव से राष्ट्रपति जी ने पूज्य माताजी के चरणों में नारियल चढ़ाकर आशीर्वाद ग्रहण किया और बहुत प्रसन्न हुए। उस समय पूज्य माताजी ने राष्ट्रपति जी की शाकाहार रूप अहिंसात्मक प्रवृत्ति की हार्दिक प्रशंसा करते हुए आशीर्वाद प्रवचन में कहा कि— यह महान गौरव एवं आत्मसंतुष्टि का विषय है कि अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के सिद्धान्तों को आत्मसात करते हुए भारतवर्ष के प्रथम नागरिक अर्थात् राष्ट्रपति के रूप में आप पूर्णतया शाकाहारी जीवन का परिपालन करने वाले हैं, जीवदया की इस भावना हेतु आपके लिए मेरा बहुत-बहुत हार्दिक आशीर्वाद है तथा यही मंगलकामना है कि भगवान महावीर के सर्वोदयी शासन की छत्रछाया सदैव आप पर बनी रहे एवं मातृभूमि की निश्छल भाव से सेवा करते हुए आपका यश दिग्दिगन्त व्यापी बने।

महामहिम राष्ट्रपति पूज्य माताजी के आशीर्वचन से अत्यन्त प्रभावित हुए एवं खड़े होकर पूज्य माताजी की ओर से विशेष रूप से अवलोकन करते हुए अपने अंग्रेजी उद्बोधन में कहा कि आज जब मैंने जलमंदिर के दर्शन किए, तो यह सोचकर कि कभी इसी भूमि पर स्वयं भगवान महावीर चले होंगे, मैं अत्यन्त रोमांचित हो गया। जिस प्रकार जैसे-जैसे सरोवर में पानी बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे उसमें खिले कमल और ऊपर उठते जाते हैं, उसी प्रकार हमें भी अपने विचारों को ऊर्ध्वगामी बनाना है, हम शांति को अपनी सांस के साथ अंदर ले जाएं और समस्त हिंसा, अन्याय एवं बुराइयों के विचारों को बाहर आने वाली सांस के साथ बाहर निकाल दें। आप जैसे संत अपनी साधना से समस्त जनता को खुशी प्रदान करें, यही मेरी मंगल भावना है। पुनः मैंने राष्ट्रपति जी को भगवान महावीर के चित्र का प्रतीक चिन्ह प्रदान किया एवं संघस्थ ब्र. रवीन्द्र जी ने डॉ. कलाम को माताजी द्वारा लिखित साहित्य व चित्र भेंट किया।

➤राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ जिनमंदिर का शिलान्यास—

1 जून 2003, ज्येष्ठ शु. एकम को पूज्य माताजी एवं संघ सानिध्य में राजगृही के लाल मंदिर परिसर में भगवान मुनिसुव्रतनाथ जिनमंदिर का शिलान्यास समस्त धार्मिक विधि-विधानपूर्वक किया गया, जिसमें अनेक महानुभावों ने इसे माताजी की तीर्थ के प्रति अटूट भक्ति मानते हुए इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

वस्तुतः पूज्य माताजी द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य ऐतिहासिक है क्योंकि वह सदैव तीर्थंकरों के सर्वोदयी सिद्धान्तों को प्रसारित करने में ही संलग्न हैं। उन तीर्थंकर भगवन्तों ने सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप महान विज्ञान का उपदेश दिया है, उन्होंने बताया है कि भेद-विज्ञानरूपी मिसाइल से आत्मा पर लगी हुई समस्त कर्मकालिमा का विनाश करके शुक्लध्यान द्वारा आत्मा को पूर्ण विजयी बनाया जा सकता है, ऐसे तीर्थंकर भगवन्तों की वाणी का ज्ञान प्राप्त करने हेतु दिगम्बर आम्नाय के प्राचीन ग्रंथों के तथ्यों को प्रकाश में लाना चाहिए, जिससे समस्त भ्रांत धारणाएँ मिट सकें।

➤माताजी ने तीर्थ को बनाया नहीं, बचाया है—

पूज्य माताजी द्वारा किए गए इस कार्य की आज सर्वत्र प्रशंसा का होना इस बात का द्योतक है कि उन्होंने कुण्डलपुर नाम के किसी नए तीर्थ को बनाने का संकल्प नहीं लिया वरन् सदियों से बसी हुई जो भगवान महावीर जन्मभूमि थी, उसे भुलाने का जब प्रयास किया गया तब उन्होंने इसको पुनर्जीवन प्रदान करने की प्रेरणा मात्र देकर प्राचीन तीर्थ को नया रूप देकर उसे बचाया है। आज तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियाँ तो उपेक्षित पड़ी हैं और उनके नाम के अतिशयक्षेत्र हजारों-लाखों दीपकों से शोभायमान हो रहे हैं, यह किस प्रकार का न्याय है? यह सही है कि अतिशय क्षेत्र भी पूज्य हैं पर माताजी का कहना है कि जन्मभूमियों की इस उपेक्षा के प्रति समाज को अब जागृत होना चाहिए। प्राथमिकता के साथ सभी श्रावकों को तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास का उद्यम करना चाहिए क्योंकि जन्म लिए बिना न अतिशय क्षेत्र बन सकते हैं और न निर्वाणभूमियाँ बन सकती हैं। तीर्थंकर जन्मभूमियाँ हमारी संस्कृति की उद्गम स्थलियाँ हैं, उनकी सुरक्षा अपनी संस्कृति की सुरक्षा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢नवग्रहशांति मंदिर की प्रतिमाओं का पंचकल्याणक—

दिनाँक 5 जुलाई से 9 जुलाई 2003, (आषाढ़ शु. षष्ठी से दशमी) तक आरा निवासी श्री ज्ञानचंद जैन एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. शशिलता जैन ने सम्पूर्ण समाज के साथ मिलकर कुण्डलपुर में नवग्रह की 9 तीर्थंकर प्रतिमाओं का लघु पंचकल्याणक प्रभावना के साथ सम्पन्न किया। 9 तीर्थंकर भगवन्तों से समन्वित सुन्दर कमल पर विराजमान मनोज्ञ मूर्तियाँ देखकर एक बार तो कदम ठिठक ही पड़ते हैं और वहाँ बैठकर स्वतः अपने ग्रहों की शांति हेतु उन प्रभुवर को भजने की इच्छा प्रकट हो उठती है। सर्वग्रह अरिष्ट निवारक यह नवग्रहशांति जिनमंदिर भारत का प्रथम एवं अनूठा जिनमंदिर है।

➢कुण्डलपुर में सैकड़ों वर्षों के इतिहास में प्रथम चातुर्मास हुआ—

तीर्थ के उभरते स्वरूप को देखने की अभिलाषा एवं भगवान महावीर के कल्याणकों से पवित्र तीर्थ त्रिवेणी (कुण्डलपुर, राजगृही, पावापुरी) में भक्ति स्नान करने की भावना से पूज्य माताजी ने यह निर्णय लिया कि सन् 2003 का वर्षायोग मुझे यहीं कुण्डलपुर में भगवान महावीर की छत्रछाया में सम्पन्न करना है पुनः जब 12 जुलाई आषाढ़ शु. चतुर्दशी को चातुर्मास स्थापना की सभा हुई, तो बिहार प्रान्त के भक्तों ने बताया कि सौ वर्षों के इतिहास में कुण्डलपुर के अंदर किसी साधु का चातुर्मास होना अब तक नहीं सुना गया। अब पूज्य माताजी के चातुर्मास से यह तीर्थ देश-विदेश के यात्रियों का पर्यटन केन्द्र बन जायेगा। उनका यह मूल्यांकन वास्तव में खरा उतरा और दूर-दूर से यात्री कुण्डलपुर आकर चलते निर्माण कार्य को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने अपूर्व सहयोग की भावना व्यक्त करते थे। उसी के फलस्वरूप तीर्थ का स्वरूप अति शीघ्र साकार हुआ।

➢कुण्डलपुर महोत्सव में पर्यटन विभाग बिहार सरकार का संयुक्त तत्वावधान—

भगवान महावीर जन्मभूमि की प्रगति के बढ़ते चरण राज्य सरकार की दृष्टि का भी केन्द्र बने और पर्यटन विभाग के अधिकारी आए दिन कुण्डलपुर में आकर उसकी वास्तविकता से परिचित होने लगे। तब एक दिन पूज्य माताजी एवं हम लोगों ने अक्टूबर में **''कुण्डलपुर महोत्सव''** आयोजित करने की रूपरेखा बनाई। समिति के अल्प प्रयासों से पर्यटन विभाग का संयुक्त तत्वावधान उस महोत्सव में जुड़ा और 8 से 10 अक्टूबर 2003 (आसोज शु. तेरस से शरदपूर्णिमा) तक खूब धूमधाम से महोत्सव आयोजित हुआ। उसमें पूरे देश से एवं विशेषरूप से दिल्ली तथा बिहार प्रान्त से हजारों की संख्या में पधारे नर-नारियों ने कुण्डलपुर के निखरे स्वरूप को देखकर माताजी को कोटि-कोटि धन्यवाद दिया तो माताजी कहने लगीं कि यह सारा स्वरूप आप श्रावकों के श्रम का ही प्रतीक है, मेरा इसमें कुछ नहीं है। मुझे तो इस माध्यम से महावीर स्वामी की चरण रज प्राप्त हो गई है, यही मेरा धन्य भाग्य है।

➢तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समिति की घोषणा—

कुण्डलपुर महोत्सव में ही 10 अक्टूबर शरदपूर्णिमा को पूज्य माताजी ने धनंजय जी एवं उपस्थित श्रद्धालुभक्तों, देश के शासक-प्रशासकगण को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए भारत की सम्पूर्ण जैन समाज को चौबीसों तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों के जीर्णोद्धार एवं विकास करने को संस्कृति सुरक्षा बताते हुए प्रेरणा प्रदान की और एक विकास समिति की घोषणा कर दी, जो प्राथमिक स्तर पर कुण्डलपुर की देखरेख पुनः अन्य तीर्थों का सर्वे प्लान बनाते हुए तीर्थ विकास कार्य में संलग्न है। तीर्थ विकास की उस शृंखला में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी की बारी आई, जिसका शिलान्यास मगशिर कृ. पंचमी, 20 नवम्बर 2005 में श्री राजकुमार जैन-वीरा बिल्डर्स, दिल्ली द्वारा किया गया और उसका निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है, शीघ्र ही वह तीर्थ भी दुनिया की दृष्टि में छा जाने वाला है।

➢भव्य पंचकल्याणकों से जगमगा उठीं पंचकल्याणक भूमियाँ—

भारतवर्ष में उत्तरप्रदेश एवं बिहार प्रान्त को ही तीर्थंकर भगवन्तों की पंचकल्याणक भूमियों का गौरव प्राप्त है, पूज्य माताजी की प्रेरणा से यूँ तो अनेक पंचकल्याणक हुए हैं और हो रहे हैं परन्तु जहाँ स्वयं ही पंचकल्याणक मनाए गए हों, उस स्थल पर पंचकल्याणक का होना अभूतपूर्व होने के साथ-साथ ऐतिहासिक भी है। माताजी की पावन प्रेरणा से विकासोन्मुखी कुण्डलपुर के साथ-साथ भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी एवं भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि तथा भगवान महावीर प्रथम देशना भूमि राजगृही तीर्थ पर आयोजित हुए पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव से वह दोनों कल्याणक भूमियाँ जगमगा उठीं। सर्वप्रथम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र के पाण्डुकशिला परिसर में श्री विजय कुमार जैन-दरियागंज एवं श्री सुभाषचंद जैन-ऋषभविहार, दिल्ली के सौजन्य से भगवान महावीर की सवा ग्यारह फुट खड्गासन प्रतिमा कमलाकार नूतन जिनमंदिर में मगसिर सुदी पंचमी 28 नवम्बर से मगसिर सुदी दशमी, 3 दिसम्बर तक महती प्रभावनापूर्वक प्रतिष्ठित हुईं तथा राजगृही तीर्थ पर श्री अनिल कुमार जैन (कमल मंदिर)-प्रीतविहार, दिल्ली के सौजन्य से 3 दिसम्बर 2003 से 8 दिसम्बर 2003 (मगसिर सुदी दशमी से पूर्णिमा तक) श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव (लाल मंदिर के प्रांगण में) विशेष धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ।

➤भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव की प्रथम घोषणा—

उत्सव और महोत्सवों को मनाने की परम्परा भारत देश में प्राचीनकाल से रही है, उसी परम्परानुसार सन् 1974 में भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव, सन् 2000 में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव एवं सन् 2001 में भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव सरकार और समाज ने मिलकर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया है, इसी प्रकार अब तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के माध्यम से जैनधर्म का प्राचीन इतिहास दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाने हेतु पूज्य माताजी ने 5 दिसम्बर 2003 मगशिर शु. 12 को राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के मध्य **''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव''** मनाने हेतु घोषणा की और उसे वाराणसी तीर्थ (भगवान पार्श्वनाथ जन्मभूमि) से उद्घाटित करने हेतु विचार-विमर्श प्रारंभ हो गया।

➤स्वप्न ने दिलाया अग्रिम आशीर्वाद—

आचार्य जिनसेनस्वामी ने महापुराण में स्वप्न के संबंध में लिखा है कि—

ते च स्वप्नाद्द्विधाऽऽम्नाताः स्वस्थास्वस्थात्मगोचराः।
समैस्तु धातुभिः स्वस्था विषमैरितरे मताः।।56-पर्व 41।।
तथ्याः स्युः स्वस्थ सन्दृष्टा मिथ्यास्वप्ना विपर्ययात्।
जगत्प्रतीतमेतद्धि विद्धि स्वप्नविमर्शनम्।।60।।

अर्थात् स्वप्न दो प्रकार के माने गये हैं। एक अपनी स्वस्थ अवस्था में दिखने वाले और दूसरे अस्वस्थ अवस्था में दिखने वाले। जो धातुओं की समानता रखते हुए दिखते हैं, वे स्वस्थ अवस्था के कहलाते हैं और जो धातुओं की विषमता-न्यूनाधिकता रहते हुए दिखते हैं, वे अस्वस्थ कहलाते हैं।

फरवरी 2004 में कुण्डलपुर प्रवास के मध्य मैं पूज्य माताजी द्वारा लिखे जा रहे महान षट्खण्डागम ग्रंथ की सिद्धान्तचिंतामणि संस्कृत टीका की द्वितीय पुस्तक का हिन्दी अनुवाद कर रही थी। 16 फरवरी फाल्गुन शु. 11 को मैंने प्रातः 7.35 बजे भगवान ऋषभदेव प्रतिमा के सानिध्य एवं पूज्य माताजी की छत्रछाया में बैठकर षट्खण्डागम द्वितीय पुस्तक की हिन्दी टीका पूर्ण की। यूँ तो 31 दिसम्बर 2003 को औपचारिक रूप से मैंने अंतिम पृष्ठ लिख दिया था किन्तु मध्य में 20-25 पृष्ठों का कार्य शेष था, जो 31 जनवरी 2004 को शुरू करके आज पूर्ण किया और पूज्य माताजी के करकमलों में पूरे हस्तलिखित पृष्ठ समर्पित करके असीम संतुष्टि का अनुभव किया। चूँकि इस समय हर समय शुभोपयोग ही चल रहा था पुनः सुबह ही मुझे 4 बजे स्वप्न हुआ कि एक हाथी (फूलमाला पहने हुए) ने आकर मुझे नमस्कार किया, इससे पूर्व भी मैंने 4 फरवरी की रात्रि में यही स्वप्न देखा था कि फूलों से सजा हुआ एक हाथी घुटने टेकर मुझे नमस्कार कर रहा है। प्रातःकाल जब मैंने माताजी को वह स्वप्न बताया तो माताजी बहुत ही प्रसन्न हुईं और अग्रिम उन्नति का खूब आशीर्वाद देते हुए उन्होंने कहा कि चंदनामती! तुम जल्दी-जल्दी मेरी सब पुस्तकों की हिन्दी कर दो, मुझे तुम्हारे अनुवाद से बहुत संतोष मिलता है। उस समय मुझे यही लगा कि इसी प्रकार गुरु कृपा से मिलने वाली शक्ति से मैं आगे भविष्य में भी बहुत कुछ कार्य कर सकूँगी।

➤अनुपम छटा बिखेरता नंद्यावर्त महल दर्शनीय एवं वंदनीय हो गया—

सन् 2004 के द्वितीय चातुर्मास के मध्य भगवान महावीर के जन्म से पावन नंद्यावर्त महल की भव्य प्रतिकृति ने जब अपना साकार स्वरूप प्राप्त किया और उसके अन्दर 2600 वर्ष पूर्व का इतिहास चित्रमय प्राचीन कलाकृतियों के साथ दर्शाया गया, तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसकी छटा देखते ही बनती थी, जहाँ पर्यटकों का आकर्षण पूर्व में नालंदा के खण्डहर थे, आज यह भव्य प्रतिकृति हो गई और सम्पूर्ण बिहार क्या पूरे देश में इसकी चर्चा फैल गई, दूर-दूर से आने वाला यात्री इसे देखकर आल्हादित हो उठता और माताजी के समयोचित कार्य की प्रशंसा करते नहीं थकता था। भीतर में तीन मंजिल परन्तु बाहर से सात मंजिल का रूप दर्शाते इस महल को दर्शनीय होने के साथ-साथ वंदनीय होने का सौभाग्य तब प्राप्त हुआ, जब इसमें ऊपर की मंजिल पर भगवान शांतिनाथ जिनालय की स्थापना की गई और उसका पंचकल्याणक इसी प्रवास के मध्य पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में 28 जून से 2 जुलाई 2004, आषाढ़ शु. 10 से पूर्णिमा तक विशेष भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुआ। भगवान शांतिनाथ, चन्द्रप्रभु एवं भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं की यह लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा युवारत्न प्रतिष्ठाचार्य पं. अकलंक जैन के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुई। इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में श्री कमल कुमार जैन-आरा ने सौधर्म इन्द्र बनने एवं सेठ श्री रिसबदास जी-वाराणसी ने सपत्नीक भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। इसी प्रतिष्ठा में संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन-दिल्ली के सौजन्य से राजगृही में निर्मित होने वाले मानस्तंभ की 4 प्रतिमाओं एवं गुणावां जी में विराजमान होने वाली गौतम गणधर की खड्गासन प्रतिमा तथा राजस्थान के लावा मंदिर व गोम्मटगिरि-इंदौर में विराजमान होने वाली ह्रीँ मंत्र की 24-24 प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हुई।

2 जुलाई 2004 को तीर्थ परिसर में नवनिर्मित त्रिकाल चौबीसी मंदिर की दो मंजिलों में क्रमशः भूतकाल एवं वर्तमानकाल की चौबीसी प्रतिमाओं को वेदी में विराजमान किया गया तथा नंद्यावर्त तीर्थ के मेनगेट सर्वार्थसिद्धि द्वार एवं कल्पवृक्ष कार्यालय का शिलान्यास भी हुआ।

➢तीर्थ त्रिवेणी का अपूर्व संगम—

पूज्य माताजी के साथ-साथ हम सबको भी एक साथ तीन-तीन तीर्थों के दर्शन का सुयोग प्राप्त हुआ अतः सबके हृदय में बड़ा आल्हाद रहा। कुण्डलपुर प्रवास करते हुए प्रतिमाह एक बार राजगृही और एक बार पावापुरी जाकर पर्वत वंदना, जल मंदिर में ध्यान आदि करना वास्तव में जन्म-जन्म में संचित पुण्य का फल प्रतीत होता था।

➢कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन—

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का एवं वहाँ की प्राचीन सांस्कृतिक नगरी की ऐतिहासिकता, भगवान के राजवंश की महत्ता, तीर्थंकर पद की सार्थकता आदि से जन-जन को परिचित कराने हेतु कुण्डलपुर समिति ने पूज्य माताजी की प्रेरणा से एक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशन की योजना बनाई। उसके प्रधान सम्पादक कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी, प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन-फिरोजाबाद तथा सम्पादक मण्डल के सभी सम्पादकों के कुशल सम्पादन में तथा संघस्थ ब्र. बहनों की कार्यकुशलता, मेरे व संघस्थ क्षु. मोतीसागर जी के अथक परिश्रम तथा पूज्य माताजी के शुभाशीर्वाद से भगवान महावीर जन्मभूमि की गरिमा के अनुरूप सुन्दर ग्रंथ का प्रकाशन हुआ। दानवीर समाजरत्न श्री कमलचंद जी-खारीबावली-दिल्ली परिवार के अर्थ सौजन्य से प्रकाशित हुए इस ग्रंथ का विमोचन 'जन्मभूमि कुण्डलपुर' की पावन धरा पर 'कुण्डलपुर महोत्सव-2004' के मध्य हुआ।

➢सिद्धायिनी माता बोल उठीं यह ही है सच्ची जन्मभूमि—

17 अक्टूबर को एक सुखद स्वप्न ने गिरनार तीर्थ पर आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा घटित उस घटना की याद दिला दी, जब पाषाण की अम्बिका देवी बोल पड़ी थीं, कि सत्य पंथ निर्ग्रंथ दिगम्बर................ ऐसा ही एक स्वप्न में मैंने देखा कि एक मंदिर में सिद्धायिनी माता विराजमान हैं, मैं उनके समीप में बैठी हूँ, पीछे पूज्य माताजी खड़ी हैं और बहुत सारी भीड़ है। मैं कह रही हूँ कि किस प्रकार इस सच्ची जन्मभूमि को विश्वव्यापी स्वरूप प्राप्त हो, तभी पाषाण की सिद्धायिनी माता 3 बार बोल पड़ीं कि **सच्ची जन्मभूमि यह ही है**, पुनः माताजी ने कहा—**जयतु सिद्धायिनी माता**, तब पुनः सिद्धायिनी माता ने वही शब्द 3 बार बोला और उनके ऐसा बोलते ही अपार जनसमूह के जय-जयकारों से आकाशमण्डल गुंजायमान हो रहा है। यह स्वप्न देखकर जब मेरी आंख खुली, तो सचमुच में नेत्रों से हर्ष के अश्रु बह रहे थे। उस समय 3.15 बजा था, पुनः 5 बजे जब मैंने माताजी को इस स्वप्न के बारे में बताया तो वे बोलीं कि चंदनामती! वीर प्रभु की जन्मभूमि यही थी, यही है और यही रहेगी। देखना, मात्र कुछ ही समय में यह जन्मभूमि विश्व के मानस पटल पर छा जायेगी और वास्तव में पूज्य माताजी के वचन सत्य निकले।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢मेरे ज्ञानार्जन का अपूर्व केन्द्र बनी कुण्डलपुर तीर्थ यात्रा—

इस कुण्डलपुर यात्रा का मेरे लिए जो सर्वाधिक विशिष्ट पहलू रहा, वह रहा ज्ञानार्जन का अमूल्य उपहार, जो इस वास्तविक जन्मभूमि को जन्मभूमि सिद्ध करने हेतु मुझे विशेषरूप से प्राप्त हुआ। वर्षों पहले से पूज्य माताजी के मुख से इन तीर्थों के बारे में सुनती थी और मैंने स्वयं भी दीक्षा लेने से पूर्व इस स्थान की वंदना की थी। पुनः जब वैशाली को भगवान महावीर जन्मभूमि मानने वाली विचारधारा विशेषरूप से समक्ष आई, तब तो चिंतन के माध्यम से वास्तविक शोध को उजागर करने का मानस और भी दृढ़ होता गया। विहार के मध्य भी जहाँ कहीं भी पुस्तकालय उपलब्ध होता, वहाँ ही विविध ग्रंथों से साक्ष्य एकत्रित करने की भावना बनी रहती। मन में बार-बार यही विचार आता कि शोध तो वही सार्थक है, जिसके माध्यम से प्राचीन दिगम्बर जैनागम एवं जैनाचार्यों के कथन को ही परिपुष्टता प्राप्त हो, वही बुद्धि सार्थक है, जो अपनी प्राचीन संस्कृति के प्रति कटिबद्ध रहे। इन्हीं भावनाओं से ओत-प्रोत होकर जन्मभूमि कुण्डलपुर से संबंधित ज्ञानार्जन एवं आगमिक शोध में मुझे जो हार्दिक आनन्द प्राप्त हुआ वह वचनातीत है। कुण्डलपुर की धरती पर बैठकर भी अध्ययन-स्वाध्याय का विशेष ही अवसर रहा क्योंकि यहीं पर ही मैंने ''**भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी जैन शब्दकोश**'' को पूज्य माताजी की छत्रछाया में बैठकर गहन मनन-चिंतन के बाद निर्णयात्मक स्वरूप प्रदान किया, जिसमें संघस्थ ब्र. स्वाति जैन (M.Sc.-Bio Sciences), श्री कोमलचंद जैन-इंदौर (रिटायर्ड प्रिंसिपल) एवं जीवन प्रकाश जैन-इंदौर (M.Sc.-Maths) का विशेष सहयोग रहा है। इसी प्रकार कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ हेतु गुरु आज्ञापूर्वक इसे सर्वांगीण बनाने का प्रयास भी ज्ञानार्जन की दिशा में सार्थक कदम ही सिद्ध हुआ।

वास्तविकता तो यही है कि ज्ञान की प्राप्ति में जो आनन्द आत्मा से उद्भूत होता है, वह अनुपम एवं अतुलनीय है, जितनी संतुष्टि सम्यग्ज्ञान के माध्यम से प्राप्त होती है, वह संसार की किसी भी अन्य सामग्री से नहीं प्राप्त हो सकती। इस कुण्डलपुर विकास ने मुझे स्वाध्याय एवं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग का जो अवसर प्रदान किया है, वह ही मेरे लिए अनुपम निधि है।

➢मत जाओ माँ इस नगरी से, यह धरा तुम्हारे बिन सूनी—

भगवान महावीर जन्मभूमि के मात्र 22 माह के अल्प समय में नंद्यावर्त महल तीर्थ के रूप में ऐतिहासिक नवविकास सम्पन्न करवाकर जब 14 नवम्बर 2004, कार्तिक शु. दूज को अपरान्ह 3 बजे पूज्य माताजी एवं हम लोगों ने कुण्डलपुर से हस्तिनापुर की ओर मंगल विहार किया, तो बिहारवासी एकदम अधीर हो उठे, बार-बार पूज्य माताजी से अनुनय-विनय करके वे सब कहने लगे कि माताजी! अभी तो इस तीर्थ ने अपने विकसित स्वरूप को प्राप्त ही किया है, अभी तो यह 22 माह का बालक है, जिसे आपको और परिपक्व करना है, आपने अभी यहाँ का आनंद ही क्या लिया, मात्र यहाँ की धूल-मिट्टी ही मिली है आपको, अब जब इस विकसित तीर्थ पर कुछ क्षण रहने का समय है, तब आप विहार कर रही हैं, माताजी! कृपया इस तीर्थ और हम बिहारवासियों को छोड़कर मत जाइए, इतना कहते-कहते बेचारे दुखी होकर रोने लगे और जब भी माताजी की मौनपूर्वक मुस्कान देखी तो बेचारे पुनः-पुनः पधारने का निवेदन करने लगे। उस समय माताजी ने उन सबको यही सम्बोधन प्रदान किया कि देखो! साधु के लिए क्या जंगल, क्या महल! हमने कोई अपने लिए तीर्थ नहीं बनाया प्रत्युत् भारत की समस्त जैन जनता के लिए बनाया है और जिनसंस्कृति की सुरक्षा मात्र की है, बस आप सब प्राणप्रण से सदा इस तीर्थ की सुरक्षा करते रहें, यही मेरे प्रति आपका सच्चा समादर होगा। हालांकि तीर्थ को छोड़ते हुए एक बार पूज्य माताजी एवं हम सभी की आँखों में अश्रु आ गए कि अब ना जाने कब इस पवित्र माटी को छूने और वीरप्रभु को नमन करने का सौभाग्य प्राप्त हो, किन्तु सन्त तो नदियों की बहती धारा के समान होते हैं, जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण कर सदैव निज-परकल्याण में ही तत्पर रहते हैं।

➢भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव—

काफी दिनों से पूज्य माताजी के मन में 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने हेतु भावना चल रही थी, उन्होंने इस महोत्सव के उद्घाटन हेतु पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी में भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक दिवस (पौष कृ. 11) की तिथि भी पहले से ही निश्चित कर दी थी अतः अब कुण्डलपुर से मंगल विहार करते समय यद्यपि प्रमुख लक्ष्य वाराणसी पहुँचने का था, फिर भी कुण्डलपुर के निकटवर्ती तीर्थ— राजगृही, पावापुरी, गुणावां में भी प्रारंभ किए गए निर्माण की पूर्णता पर वहाँ भगवान विराजमान आदि कार्यों को सम्पन्न कराने का संयोग भी प्राप्त हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14 नवम्बर 2004 को कुण्डलपुर से मंगल विहार के पश्चात् 15 नवम्बर को पूज्य माताजी ने राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ के नवीन मंदिर पर कलशारोहण सम्पन्न करवाया तथा संघस्थ बहनों ने 1008 मंत्रों से भगवान के श्रीचरणों में गुलाब के पुष्प समर्पित किए पुनः विपुलाचल पर्वत की तलहटी में भगवान महावीर एवं उनके शिष्य गौतम गणधर की प्राचीन घटनाओं की स्मृति दिलाते हुए पूज्य माताजी की प्रेरणा से संघपति लाला महावीर प्रसाद जी द्वारा नवनिर्मित मानस्तंभ की वेदीशुद्धि की गई तथा 17 नवम्बर, कार्तिक शु. षष्ठी को प्रातःकाल मानस्तंभ में भगवान महावीर की चार प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ विराजमान की गईं। इससे पूर्व 16 नवम्बर को मध्यान्ह में राजगृही में संचालित जवाहर नवोदय विद्यालय में पूज्य माताजी की ही प्रेरणा से श्री मनोज कुमार जैन-मेरठ के सौजन्य से विराजित भगवान महावीर की अत्यन्त मनोहारी, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह आदि का संदेश देने वाली पद्मासन लाल प्रतिमा का अनावरण ब्र.रवीन्द्र जी द्वारा संघ सानिध्य में किया गया।

पुनः तीर्थ को चमन करने की इस श्रृंखला में 19 नवम्बर 2004, कार्तिक शु. अष्टमी को गौतम गणधर की निर्वाणभूमि गुणावां जी सिद्धक्षेत्र पर नवनिर्मित मंदिर में संघपति लाला श्रीमहावीर प्रसाद जी के सौजन्य से श्वेत पाषाण की साढ़े 5 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा विराजमान की गई और मंदिर पर कलशारोहण भी हुआ। कलशारोहण के पश्चात् गुणावां जी मंदिर में मूलवेदी के बाहर हॉल की नवीन वेदियों में माता पद्मावती देवी एवं धरणेन्द्र देव की मूर्ति विराजमान की गई। मध्यान्ह में गौतम स्वामी की 1008 पुष्पों से आराधना की गई पुनः बिहार तीर्थ न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी एवं मंत्री-श्री अजय जी ने संघ का स्वागत सम्मान किया। संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी की अचानक आई अस्वस्थता के कारण गुणावां जी सिद्धक्षेत्र पर हुए 15 दिवसीय प्रवास के मध्य अनेकों विधान-अनुष्ठान भी सम्पन्न हुए। इससे पूर्व देखे गये राजगृही तीर्थ पर दो दिवसीय प्रवास के मध्य राजा श्रेणिक का खजाना, पहाड़ की गुफा में उत्कीर्ण अनेक जैन मूर्तियाँ, सदैव चिरस्मरणीय रहेंगे जो जैनत्व की गौरवगाथा का सुन्दर वर्णन करते हैं कि कभी यहाँ जैनधर्म ही विद्यमान रहा होगा। इसी प्रकार गुणावां जी के प्रवास के मध्य श्री गौतम गणधर स्वामी के श्रीचरणों में एवं निर्वाणस्थली जलमंदिर में किया गया ध्यान भी सदैव चिरस्मरणीय रहेगा।

➢तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का भव्य उद्घाटन वाराणसी में—

भगवान पार्श्वनाथ एवं सुपार्श्वनाथ के जन्म से पावन है वाराणसी नगरी। जहाँ 22 दिसम्बर 2004 को मुगलसराय से चलकर दिन में 4 बजे पूज्य माताजी का संघ सहित मैदागिन धर्मशाला में मंगल पदार्पण हुआ लेकिन आज इस नगरी में पदार्पण का उद्देश्य था **"भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का भव्य उद्घाटन"**, 6 जनवरी 2005 को भव्यता के साथ विशाल जनसमूह के बीच सानंद सम्पन्न होने वाले इस महोत्सव की पूर्व बेला में 23 दिसम्बर को माताजी संघ के भेलूपुर मंदिर में मंगल पदार्पण अवसर पर मूलवेदी में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ का भारी भीड़ के मध्य पंचामृत अभिषेक सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् प्रारंभ हुई कार्यक्रमों की श्रृंखला, जिसमें सर्वप्रथम कुबेर द्वारा पन्द्रह माह तक हुई रत्नवृष्टि के प्रतीक में 15 दिनों तक प्रतिदिन रत्नवृष्टि कर सभी में रत्न वितरित किए गए।

6 जनवरी 2005, पौष कृ. एकादशी को भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक दिवस के अवसर पर श्री धन्नालाल मोहनलाल अजित कुमार जैन अजमेरा परिवार-धूलियान (प. बंगाल) द्वारा माताजी के संघ सानिध्य में किए गए झण्डारोहण पूर्वक कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। जन्मभूमि वाराणसी में निकाली गई भव्य ऐतिहासिक शोभायात्रा वास्तव में अभूतपूर्व थी।

➢भगवान पार्श्वनाथ के 9 मंजिले धातु के महल का अनावरण—

भव्य शोभायात्रा के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में मुख्य अतिथि के रूप में उ.प्र. सरकार के लोकनिर्माण मंत्री—श्री शिवपाल सिंह यादव, समारोह अध्यक्ष के रूप में उत्तरप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष-श्री माताप्रसाद पाण्डेय तथा अनेक अन्य मंत्री व विशिष्ट गणमान्य महानुभाव पधारे। दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के पश्चात् मंगलकलश की स्थापना हुई पुनः "भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी जैन शब्दकोश" का विमोचन सारस्वत अतिथि श्री पी.रामचन्द्र राव (कुलपति-बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) द्वारा हुआ पुनः मुख्य अतिथि द्वारा भगवान पार्श्वनाथ के 9 मंजिले धातु के महल का अनावरण हुआ। साथ ही मेरे द्वारा लिखित भजनों की ऑडियो कैसेट का विमोचन विधानसभा अध्यक्ष जी द्वारा कराया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी ने अपने मंगल प्रवचन में सभी को शुभाशीष देते हुए यही प्रेरणा दी कि इस वर्ष सम्मेदशिखर में राष्ट्रीय स्तर पर भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण महोत्सव मनाया जाये। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष-श्री एन.के. सेठी ने दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों को जैन संस्कृति का प्रतीक बताते हुए उनके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु जैन समाज के हित में अनेक महत्वपूर्ण मुद्दे पर अपने विचार प्रकट किए। साथ ही यह भी कहा कि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का प्रत्येक समारोह पूर्ण भव्यता के साथ ही मनाया जाता है और यदि मैं आज के इस भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव में नहीं आता, तो मेरी हानि होती। सायंकाल प्रसिद्ध संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन-मुम्बई द्वारा भव्य सांस्कृतिक संध्या के आयोजन से पूरा पाण्डाल पार्श्वनाथमय हो गया। महोत्सव के द्वितीय दिवस 7 जनवरी को भेलूपुर दि. जैन मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की मनोज्ञ प्रतिमा का 1008 कलशों से मस्तकाभिषेक किया गया, साथ ही मानस्तंभ में विराजमान भगवन्तों की प्रतिमाओं का भी भक्तों द्वारा अभिषेक किया गया। मध्यान्ह में तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ का अधिवेशन हुआ, जिसमें बनारस हिन्दी विश्वविद्यालय एवं सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय आदि कई जगह से पधारे 25 विद्वानों एवं विद्वत् महासंघ के 25 विद्वानों का भावभीना स्वागत किया गया।

समारोह के तृतीय दिवस 8 जनवरी को 108 इन्द्र-इन्द्राणियों के साथ भगवान पार्श्वनाथ मण्डल विधान के आयोजनपूर्वक कार्यक्रम का समापन हुआ और सायंकाल तीनों दिन भगवान पार्श्वनाथ की 1008 दीपकों से मंगल आरती की गई।

➢सारनाथ में फहराया जिनधर्म का ध्वज—

जैनधर्म के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी (सारनाथ) में पूज्य माताजी एवं समस्त संघ के सानिध्य में 16 जनवरी से 20 जनवरी 2005 पौष कृ. 7 से पौष शु. 11 तक श्री दिगम्बर जैन समाज काशी द्वारा श्री 1008 भगवान श्रेयांसनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भव्य आयोजन के रूप में निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

चिरप्रतीक्षित इस प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजन में वाराणसी जैन समाज का उत्साह विशेषरूप से दृष्टव्य रहा। बौद्ध तीर्थ के रूप में विश्वभर में प्रसिद्ध सारनाथ में जैनधर्म की कीर्तिपताका फहराने का यह अद्भुत अवसर था। पूज्य माताजी के शुभाशीर्वाद एवं कुशल दिशा-निर्देशन के मध्य सम्पन्न इस प्रतिष्ठा में सभी लोगों ने विशेष हार्दिक आल्हाद का अनुभव तो किया ही, साथ ही करोड़ों वर्ष पूर्व तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ ने गर्भ,जन्म, तप एवं ज्ञानकल्याणक के माध्यम से जिस भूमि को परम पवित्र किया था, उसे तीर्थंकर जन्मभूमि के विकास की श्रृंखला में एक नवीन आयाम प्राप्त हुआ।

महोत्सव के समापन में 11 फुट उत्तुंग श्यामवर्णी भगवान श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का पंचामृत एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक सानन्द सम्पन्न हुआ।

➢माताजी के पदार्पण से पुनः महक उठा प्रयाग तीर्थ—

चूंकि वाराणसी में पूज्य माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर के अनेक गणमान्य महानुभाव आकर पूज्य माताजी के श्रीचरणों में वहाँ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवाने हेतु श्रीफल चढ़ाकर निवेदन करने आए थे, इससे पूर्व भी वे कई बार माताजी के पास आकर इस हेतु आग्रह कर चुके थे अतः माताजी ने उन्हें पूर्ण स्वीकृति प्रदान कर दी। फिर तो सभी के चेहरे खिल उठे और सभी ने जोर-शोर से तैयारियाँ करनी प्रारंभ कर दीं। वाराणसी से टिकैतनगर की ओर मंगल विहार के मध्य संघ का मंगल पदार्पण 24 जनवरी 2005, पौष शु. चतुर्दशी को तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ पर हुआ। अपने उद्भव की प्रेरणास्रोत को पाकर दीक्षास्थली तीर्थ का हर कण पुनः आल्हादित हो उठा। 26 जनवरी 2005 को इलाहाबाद जैन समाज की भारी उपस्थिति के बीच कैलाशपर्वत पर विराजमान भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक सम्पन्न किया गया तथा सामूहिक पूजन करके निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण जी एवं न्यायमूर्ति श्री एम.सी.जैन ने कार्यक्रम में भाग लेकर निर्वाणलाडू चढाया।

➢टिकैतनगर में संघ का मंगल प्रवेश—

4 फरवरी 2005, माघ कृ. दशमी को पूज्य माताजी ने जब अपनी जन्मभूमि में 11 वर्षों के पश्चात् पुनः संघ सहित मंगल प्रवेश किया, तो अपने ग्राम की विश्वप्रसिद्ध निधि का पुनः दर्शन प्राप्त करके टिकैतनगर का बच्चा-बच्चा अत्यन्त उत्साहित एवं आनन्दित हो उठा। बैण्ड-बाजे सहित विशाल जुलूस के साथ संघ को नगर में मंगल प्रवेश कराया गया। भरतसेना टिकैतनगर के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवयुवकों ने ''जैनं जयतु शासनं-वंदे ज्ञानमती मातरम्'' इत्यादि गगनभेदी नारों से समस्त नगर को गुंजायमान कर दिया। क्रमबद्ध कतार में चलते नेमी पब्लिक स्कूल के बालकों द्वारा हाथों में ली गई संदेश युक्त तख्तियाँ एवं नवयुवकों के हाथ में फहराते केशरिया ध्वज समस्त नगरवासियों को चहुँओर जिनधर्म की विजयपताका फहराते हुए माताजी के मंगल आगमन का संदेश प्रदान कर रही थीं। स्थान-स्थान पर जैन-जैनेतर बंधुओं ने पूज्य माताजी के चरणों का प्रक्षालन करके आरती उतारी तथा बारम्बार पुष्पवृष्टि करते हुए संघ को शहर के चारों फाटक तक घुमाया। उस समय सभी का उत्साह एवं हर्ष देखते ही बनता था। सभी जैन बंधुओं ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर जुलूस तथा सम्पूर्ण प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लिया जो कि प्रत्येक जैन समाज के लिए अनुकरणीय है। प्राचीन जिनमंदिर में विराजमान अतिशयकारी मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ एवं अन्य जिनबिंबों तथा समस्त चैत्यालयों के 11 वर्षों के पश्चात् दर्शन किये।

वस्तुतः 20वीं सदी में त्याग तपस्या की शाश्वत संस्कृति को जीवन्त रखने वाली अपने गर्भ से प्रसूत निधि को पाकर आज टिकैतनगर का चप्पा-चप्पा हार्दिक आल्हाद में सराबोर हो उठा।

➢टिकैतनगर में हुआ अद्भुत चमत्कार—

पूज्य ज्ञानमती माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर में एक अतिप्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है, जहाँ पूरी जैन समाज दर्शन-पूजन के लिए एकत्रित होती है। वहाँ समाज की भावनानुसार दूसरा मंदिर बनाने का निर्णय हुआ अतः पुराने मंदिर के बगल में ही पुराने स्कूल का भवन तोड़कर विशाल जिनमंदिर का निर्माण सन् 2003-2004 में हो गया। इस मंदिर के अंदर बीचों बीच की तीन वेदियों में मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण खड्गासन प्रतिमा, सहस्रकूट चैत्यालय एवं ह्रीँ प्रतिमा के साथ चारों ओर 4-4 फिट खड्गासन चौबीस तीर्थंकर भगवंतों की प्रतिमाएँ विराजमान करने हेतु वहाँ के अनेक श्रद्धालु भक्तों ने अपने द्रव्य का सदुपयोग किया।

टिकैतनगर समाज ने एक स्वर से यह निर्णय लिया कि इस मंदिर का पंचकल्याणक महोत्सव हम लोगों को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संघ सानिध्य में ही करना है और प्रतिष्ठा महोत्सव का सम्पूर्ण कार्य कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी के कुशल नेतृत्व में होगा। इस बात की स्वीकृति लेने हेतु समाज के अध्यक्ष प्रद्युम्न कुमार जैन सर्राफ (छोटी सा.) एवं महामंत्री ऋषभ कुमार सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने सन् 2002-03-04 में (प्रयाग, कुण्डलपुर, बनारस आदि स्थानों पर) आकर पूज्य माताजी के पास श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया। माताजी ने भी कुण्डलपुर (बिहार) से दिल्ली-हस्तिनापुर वापसी के मार्ग में अयोध्या और टिकैतनगर का भी कार्यक्रम सोचकर उन लोगों को 99 प्रतिशत स्वीकृति दे दी।

➢मध्य में आ गया एक विघ्न—

जैन मोहल्ले के ठीक मध्य में निर्मित हो रहे इस मंदिर का प्राथमिक निर्माण लगभग पूर्ण हो गया था। अकस्मात् एक मुनि जी एवं एक वास्तुशास्त्री ने वहाँ के कुछ लोगों को यह कहकर गुमराह कर दिया कि यह मंदिर गलत बना है और तुम लोगों के लिए हानिकारक है। फिर क्या था? वे लोग आकुलित हो उठे और कहने लगे कि हम इस मंदिर में भगवान विराजमान नहीं होने देंगे। सन् 2004 में आकस्मिक इस विघ्न के उपस्थित हो जाने पर बने-बनाये मंदिर की फिनिशिंग का कार्य रुक गया और अनेक लोग कुण्डलपुर चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी से अत्यंत आग्रहपूर्वक कहने लगे कि माताजी! आप किसी तरह से सबका समाधान करके हमारी प्रतिष्ठा करवा दीजिए। हमारी सभी चौबीसों प्रतिमाएँ, सहस्रकूट आदि (मूलनायक महावीर स्वामी को छोड़कर) सब वर्षों पूर्व आ गये हैं, अब आप ही कोई उपाय कीजिए।

पूज्य माताजी ने उन लोगों का अपनत्व एवं अधिकारपूर्ण निवेदन देखकर टिकैतनगर जैन समाज के नाम से वहाँ यह पत्र लिखवा दिया कि फरवरी 2005 में (8 से 14 फरवरी, माघ कृ. चतुर्दशी से माघ शु. षष्ठी तक) प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगी पुनः वे भगवान स्वयं विराजमान होने के लिए अपने स्थान का निर्णय कर लेंगे, आप लोग उसकी चिंता छोड़ दें। इसके बाद माताजी ने बनारस से टिकैतनगर के लिए यह सोचकर विहार कर दिया कि जब प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हो जाएंगी, तो उन्हें जहाँ विराजमान होना होगा, अपने आप स्थान निश्चित हो जाएगा।

हम लोग रास्ते में ही थे, टिकैतनगर के श्रावक-श्राविका साथ में चल रहे थे, तभी एक सज्जन के मोबाइल पर फोन आया कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टिकैतनगर के नये मंदिर की चौबीसों वेदियाँ तेजी से तोड़ी जा रही हैं। यह समाचार जानकर माताजी को एकदम से बड़ा सदमा सा लगा किन्तु वे तुरंत कहने लगीं कि "देखो! कर्म की विचित्रता! किसी ने वेदियाँ बनाकर पुण्य का अर्जन किया और कोई अब उन्हें तुड़वाकर तीव्र पाप का बंध कर रहे हैं। वैसे वह मंदिर वास्तुशास्त्रियों के निर्देशानुसार बिल्कुल सही बना है उससे किसी की भी हानि नहीं हो सकती है। शायद वहाँ के लोग किसी के द्वारा गुमराह किये गये हैं, इसीलिए उन्हें वहम हो रहा है। खैर! ज्ञात हुआ कि दो-तीन दिन में सब वेदियाँ टूट गई हैं और कुछ लोग यह कह रहे हैं कि देखते हैं अब इस मंदिर में भगवान कैसे विराजमान कर लेंगे.....इत्यादि।

समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की भावना एवं आग्रहानुसार भाई रवीन्द्र जी जनवरी 2005 को वहाँ पहुँच गए और अपनी कार्यकुशलता एवं संगठन क्षमता के आधार पर उन्होंने सम्पूर्ण समाज के बच्चे-बच्चे को अपने साथ यह कहकर जोड़ लिया कि समाज जहाँ चाहेगा, भगवान वहीं विराजमान किए जायेंगे, माताजी तो केवल मूर्तियों की प्रतिष्ठा करवाने आ रही हैं। वे मूर्तियाँ तब तक अपने पुराने मंदिर के हॉल में विराजमान हो जाएंगी, पुनः आगे मिल-बैठकर सब समाज के लोग मंदिर का निर्णय कर लेंगे। टिकैतनगर के लोग एकमत से राजी होकर मार्ग में पूज्य माताजी के दर्शनार्थ आये, तब एक सज्जन के मुँह से निकला कि "माताजी! जैसे विशल्या ज्यों-ज्यों लक्ष्मण के पास-पास पहुँचने लगी थी, त्यों-त्यों लक्ष्मण के शरीर में प्रविष्ट अमोघ शक्ति का असर घटने लगा था और बिल्कुल पास में जाकर लक्ष्मण का स्पर्श करते ही तो वह दैवी शक्ति एकदम निकलकर भाग गई और लक्ष्मण पूर्ण स्वस्थ होकर उठ बैठे थे। उसी प्रकार आपके टिकैतनगर के पास आते ही धीरे-धीरे सारे विघ्न समाप्त होकर समाज में एकता का रूपक बन रहा है और लगता है कि वहाँ आपके साक्षात् पहुँचते ही सम्पूर्ण समस्याएं अपने आप सुलझ जाएंगी। बस आपके पहुँचने भर की देर है, हम लोगों को विश्वास है कि हमारे टिकैतनगर में कुछ न कुछ चमत्कार अवश्य प्रगट होगा। दूसरे ने कहा कि — आखिर तो टिकैतनगर आपकी भी तो जन्मभूमि है, वह धरती अपनी कुलदेवी स्वरूपा आपके बिना कुछ निर्णय भी कैसे कर सकती है?

कुल मिलाकर उधर रवीन्द्र जी के नेतृत्व में पंचकल्याणक का कार्यालय चलने लगा। सभी युवक, वृद्ध, महिलाएं, बालक-बालिकाएं आदि खूब उत्साहपूर्वक कार्य में लग गये। पोस्टर, निमंत्रण कार्ड आदि छपकर पूरे प्रांत में ही नहीं, देशभर में पहुँच गये और इधर जब माताजी संघ सहित 4 फरवरी 2005 को टिकैतनगर पहुँचीं, तो वहाँ ग्राम पंचायत एवं जैन समाज के द्वारा बड़ा भारी स्वागत हुआ। संघ के ठहरने की व्यवस्था यद्यपि कैलाशचंद सर्राफ के खाली मकान में की गई थी किन्तु माताजी ने वहाँ संघस्थ सभी को ठहराकर स्वयं उस दिन नये मंदिर के एक मात्र अपूर्ण कमरे में ठहर गईं। मैं तो उनके साथ थी ही, सर्दी और शौच आदि की अव्यवस्था तो थी किन्तु माताजी ने वहीं रहकर अगले दिन 5 फरवरी को सबेरे से अभिषेक, शांतिधारा, पूजा-पाठ आदि कराना शुरू कर दिया। हम लोग उस दिन कैलाश जी के मकान में थे।

अपने नियत मुहूर्त के अनुसार 6 फरवरी, माघ कृ. 12 को झण्डारोहण-अंकुरारोपण हो गया। 7 फरवरी को जयपुर से मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा भी आ गईं। पुनः नये मंदिर के हॉल में अगले दिन 8 फरवरी को प्रतिष्ठाचार्य नरेश शास्त्री ने यागमण्डल विधान कराया। नवग्रह होम, पूजन के साथ विधान का समापन करके कुछ लोग पाण्डाल में भेरीताड़न विधि कर रहे थे और कुछ समाज के लोग भगवान के माता-पिता, प्रतिष्ठा के इन्द्र-इन्द्राणियों के जुलूस में व्यस्त थे।

दिन के लगभग 4 बजे थे कि कुछ बच्चे दौड़े-दौड़े हमारे पास आए और कहने लगे कि नये मंदिर में मूर्तियाँ ले जाई जा रही हैं। माताजी! अब ये सब मूर्तियाँ नये मंदिर में विराजमान होकर ही पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगी। हम लोग ज्यादा कुछ मामला समझ नहीं पाए, फिर विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ कि चौक बाजार में कुछ लोगों की आपस में कहा-सुनी हो गई और तब कुछ लोगों में भी जोश आ गया कि देखते हैं कौन रोकता है मूर्तियों को विराजमान होने से! फिर तो आनन-फानन में लोग स्वयं मिलकर 1 घंटे के अंदर सारी मूर्तियाँ नये मंदिर में ले आए। हम लोग जब सायं 5 बजे अपनी वसतिका से मंदिर में पहुँचे, तो वहाँ की खुशियों का जलवा देखने लायक था। सभी आपस में एक-दूसरे के गले से लिपटे जा रहे थे, नाच रहे थे, उछल-उछल कर खूब जय-जयकार कर रहे थे। और तो और! वहाँ संघ के पहुँचते ही महावीर नामक एक युवक ने पूज्य माताजी को ही गोद में उठाकर (मस्तक पर धारण कर) जोर-जोर से उनकी जय बोलने लगे। सभी चमत्कार-चमत्कार कहकर फूले नहीं समा रहे थे, हर्ष के आंसुओं से सबके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तन-मन भीगे पड़े थे। अरे! मुझे तो इस समय लिखते हुए भी वे रोमांचक क्षण याद आ रहे हैं और सारा शरीर रोमांचित हो रहा है, क्योंकि टिकैतनगर में ऐसे अतिशयकारी क्षण इससे पहले कभी नहीं प्रस्तुत हुए थे। उस दिन वहाँ, होली, दीवाली, रक्षाबंधन आदि सारे उत्सवों के दृश्य मानों एक साथ उपस्थित हो गये थे। आबाल-वृद्ध सभी जहाँ इसे ज्ञानमती माताजी की तपस्या का चमत्कार कह-कहकर चिल्ला रहे थे, वहीं माताजी ने सबको अपने उद्बोधन में भगवान महावीर की अवगाहना प्रमाण प्रतिमा के चमत्काररूप में इन घड़ियों को प्रस्तुत किया। जो भी हो, सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति का चमत्कार अवर्णनीय तो है ही।

सबसे बड़ा चमत्कार तो यह देखने में आया कि 3-4 वर्ष के बच्चे भी पूरी रात सड़क से लेकर मंदिर तक ईंटें ला-लाकर देते रहे, मिस्त्री के साथ तमाम लोग सीमेंट, मसाला बनाकर खुद भी वेदियों की चिनाई करने लगे और रात भर सभी ने पुरुषार्थ करके चेनपुली से प्रातः ठीक 4.30 बजे सवा ग्यारह फुट उत्तुंग भगवान महावीर स्वामी की पीतवर्णी प्रतिमा मूलवेदी बनाकर उस पर विराजमान कर दी। इस प्रकार सबेरे तक सभी 25 प्रतिमाएँ यथास्थान वेदी बनाकर विराजमान हो गईं और महावीर स्वामी के एक ओर सहस्रकूट चैत्यालय जुड़ने लगा तथा दूसरी ओर वेदी में चौबीस तीर्थंकर से समन्वित "ह्रीं" मंत्र की प्रतिमा (पूर्व में प्रतिष्ठित की हुई) विराजमान हो गईं। प्रातः से टिकैतनगर समाज की पूरी जनता मंदिर का यह चमत्कारिक दृश्य देखकर मानो निहाल हुई जा रही थी, क्योंकि सभी के घर से इसमें कुछ न कुछ अर्थांजलि समर्पित की गई थी और 30 वर्षों के बाद नगर में हो रही इस पंचकल्याणक का इंतजार लोग वर्षों से कर रहे थे। वह समय अब साक्षात् आ जाने पर हर बच्चे, बूढ़े, युवक, महिला के अन्दर न जाने कहाँ से अपूर्व शक्ति प्रगट हो गई थी कि वे वेदी बनाना, ईंट ढोना, सामान लाना, प्रतिमा चढ़ाना, पांडाल बनाना, सफाई करना आदि सभी कार्यों को किसी मजदूर की सहायता न लेकर स्वयं ही कर लेना चाहते थे।

इस उत्साह से भरे वातावरण में 7 फरवरी से 14 फरवरी 2005 तक चमत्कारिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तो सम्पन्न हुई ही, पुनः शीघ्र ही मंदिर के ऊपर दक्षिण भारत की कला वाले शिखर का निर्माण भी हो गया और अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पन्न होने के पश्चात् हस्तिनापुर की ओर विहार करते समय पूज्य माताजी पुनः जन्मभूमि के भक्तों का आग्रह मानकर टिकैतनगर पधारीं और 13 अप्रैल को मंदिर के शिखर पर कलशारोहण एवं ध्वजस्थापन करवा दिया।

प्रसन्नता की बात यह है कि उस मंदिर के पंचकल्याणक के बाद वहाँ सभी परिवार में खूब शांति है और सभी श्रद्धा-भक्ति के साथ जिनेन्द्र भक्ति में संलग्न हैं। जिनेन्द्र भगवान की कृपा से टिकैतनगर के सभी जैन परिवार समृद्ध हैं एवं निरंतर धर्म और धन में वृद्धि करते हुए पूज्य माताजी एवं समस्त गुरुओं के प्रति समर्पित रहते हैं, यही उनके उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक है। वहाँ जैन समाज के साथ-साथ "भरतसेना" नामक एक संगठन के युवा कार्यकर्ता अपने कार्यकलापों से टिकैतनगर का नाम गौरवान्वित कर रहे हैं। अपनी यात्रा के मध्य इस प्रसंग को लिखने तक मुझे ज्ञात हुआ कि उस नूतन "चमत्कारिक भगवान महावीर जिनमंदिर" में पूरा संगमरमर पत्थर लगकर कार्य सम्पन्न हो चुका है और भक्तों द्वारा वहाँ प्रतिदिन खूब पूजा-भक्ति का वातावरण बना रहता है।

मुख्यमंत्री ने ''भगवान पार्श्वनाथ वर्ष'' का दीप प्रज्वलित किया—

12 फरवरी 2005, माघ शु. चतुर्थी को मध्यान्हकालीन सभा में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव एवं अनेक नेतागण पधारे, जिसमें माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने पूज्य माताजी द्वारा "भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव" को पूरे देश में एक वर्ष तक मनाने हेतु घोषित किये गये ''**पार्श्वनाथ वर्ष**'' का उद्घाटन पार्श्वनाथ प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया।

➢राजधानी लखनऊ में विश्वशांति महावीर विधान का विशाल आयोजन—

टिकैतनगर में भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजन के पश्चात् माताजी भिटरिया, बाराबंकी आदि स्थानों पर होते हुए उत्तरप्रदेश की राजधानी नवाबों की नगरी लखनऊ में पधारीं, जहाँ उनके ससंघ सानिध्य में चौक (लखनऊ) स्थित श्री 1008 भगवान नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में 24 फरवरी से 3 मार्च 2005, माघ शु. पूर्णिमा से फाल्गुन कृ. सप्तमी तक भारी धर्मप्रभावनापूर्वक श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ सपरिवार द्वारा विश्वशांति महावीर विधान सम्पन्न हुआ। विधान के मध्य 27 फरवरी को "अयोध्या महाकुंभ मस्तकाभिषेक अधिवेशन" ब्र. रवीन्द्र जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, पुनः 1 मार्च को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी संघसहित ऐशबाग स्थित श्री दिगम्बर जैन धर्मसंरक्षिणी महासभा के केन्द्रीय कार्यालय में पधारीं, जहाँ महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने पूज्य माताजी का भावभीना स्वागत किया, तत्पश्चात् श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर-चारबाग में भारी भीड़ ने पूज्य माताजी के मंगल प्रवचनों का लाभ प्राप्त किया। 2 मार्च को संघ ने श्री 1008 भगवान आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर-अहियागंज का दर्शन किया तथा यहाँ भी विशाल धर्मसभा आयोजित की गई।

3 मार्च को चौक मंदिर में पूर्णाहुति हवन के पश्चात् विशाल रथयात्रा निकाली गई, जिसमें श्री विजेन्द्र सिंह (आई.जी लखनऊ) एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री के.सी. जैन-मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। 4 मार्च को माताजी श्री 1008 भगवान पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सहादतगंज-लखनऊ में दर्शनार्थ पधारीं जहाँ श्रद्धालु भक्तों ने उनके सानिध्य में **''भगवान ऋषभदेव विधान''** सम्पन्न करके जिनभक्ति का विशेष लाभ प्राप्त किया। सायंकाल डालीगंज स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में विशाल जुलूस के साथ संघ का मंगल प्रवेश हुआ। सम्पूर्ण जुलूस में भक्तों द्वारा की गई भारी पुष्पवृष्टि के माध्यम से लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। 15 मार्च को श्री प्रद्युम्न कुमार जैन "छोटी सा."-टिकैतनगर, उनके पुत्र अमरचंद जैन एवं समस्त परिवार द्वारा डालीगंज मंदिर में चांदी के 108 कमल चढ़ाकर **''भगवान पार्श्वनाथ विधान''** सम्पन्न किया गया। 6 मार्च से 10 मार्च तक इन्दिरानगर दिगम्बर जैन मंदिर में संघ सानिध्य में विश्वशांति महावीर विधान अत्यन्त प्रसन्नता एवं उत्साह के माहौल में हुआ। पं. नरेश कुमार जैन शास्त्री ने सभी विधि-विधान सम्पन्न कराए। 10 मार्च को सायंकाल गोमतीनगर दिगम्बर जैन मंदिर में संघ का मंगल प्रवेश हुआ, जहाँ भारी भीड़ ने पूज्य माताजी के दर्शन एवं प्रवचनों का लाभ प्राप्त करते हुए स्वयं को धन्य माना। पुनः 11 मार्च को पूज्य माताजी का प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या हेतु मंगल विहार हो गया।

➢अयोध्या में हुआ पूज्य माताजी का अभूतपूर्व स्वागत—

11 वर्ष बाद अयोध्या पधारने पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ का अयोध्यावासियों एवं वहाँ के संत-महंतों द्वारा हार्दिक स्वागत एवं सम्मान किया गया।

17 मार्च 2005, फाल्गुन शु. सप्तमी को अयोध्या प्रवेश के समय अयोध्या की सीमा में पहुँचते ही गुरुकुल महाविद्यालय, रानोपाली-अयोध्या में प्राचार्य श्री योगेन्द्र नाथ त्रिपाठी एवं सैकड़ों बटुक (ब्रह्मचारी बालक) वेदपाठी विद्यार्थियों ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूज्य माताजी पर पुष्पवृष्टि करते हुए स्वागत किया।

तत्पश्चात् नगरपालिका अध्यक्ष-सरदार महेन्द्र सिंह एवं अयोध्या व्यापार मंडल के अध्यक्ष श्री सुफलचंद मौर्य ने लगभग 100 व्यापारियों के साथ टेढ़ी बाजार में संघ का स्वागत किया। पुनः बिड़ला मंदिर-अयोध्या के समक्ष हनुमानगढ़ी (अयोध्या) के सरपंच श्री अवधेश दास जी महाराज ने पुष्पवृष्टि करके पूज्य माताजी का सम्मान किया।

दंतधावन कुण्ड पर समाजवादी संत सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष-महंत श्री भवनाथदास जी महाराज ने दर्जनों साधुओं के साथ पुष्पवृष्टि करके स्वागत की श्रृंखला को आगे बढ़ाया।

तत्पश्चात् रायगंज स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर (बड़ी मूर्ति) पहुँचने पर संघ का समिति के पदाधिकारियों द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। पुष्पवृष्टि, चरण प्रक्षालन, मंगल आरती के साथ भगवान ऋषभदेव एवं पूज्य माताजी की जयकारों से सारा परिसर गुंजायमान हो गया। मंदिर में पहुँचकर भगवान ऋषभदेव की बड़ी मूर्ति के चरणाभिषेक के पश्चात् भगवान चन्द्रप्रभ का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया एवं रत्नवृष्टि की गई। इस अवसर पर सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित थे।

22 मार्च, फाल्गुन शु. 12 को श्री रामजन्मभूमि निर्माण कार्यशाला (प्रभारी-श्री अन्नु भाई सोमपुरा), कारसेवकपुरम् (प्रभारी-श्री प्रकाश अवस्थी), मणीरामदास जी की छावनी (वाल्मीकि भवन)-वासुदेव घाट (श्री कृपालु रामदास जी महाराज 'पंजाबी बाबा'), श्री हनुमान बाग (श्री विदुर कुमार शास्त्री) इत्यादि स्थानों पर पूज्य माताजी का स्वागत किया गया।

24 मार्च को महर्षि वेदविज्ञान विद्यापीठ (अयोध्या) में विद्यार्थियों हेतु मंगल प्रवचन करने पधारीं। पूज्य ज्ञानमती माताजी एवं संघस्थ साधुओं का वहाँ के आचार्यवर्ग एवं वेदपाठी विद्यार्थियों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारपूर्वक पुष्पवृष्टि करते हुए भावभीना सम्मान किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

25 मार्च को तुलसी स्मारक भवन (अयोध्या) के प्रमुख अधिकारी, दिगम्बर अखाड़ा-अयोध्या (पूर्व महंत-स्व. श्री परमहंस रामचन्द्र दास जी महाराज) के वर्तमान महंत श्री सुरेशदास जी महाराज, जगद्गुरु रामानंदाचार्य, स्वामी श्री हर्याचार्य जी महाराज एवं पीठाधीश्वर महंत श्री कौशलकिशोर दास जी महाराज (बड़ा भक्तमाल) ने अपने-अपने यहाँ पूज्य माताजी (ससंघ) का स्वागत किया। सभी ने पूज्य माताजी को अपना साहित्य भी प्रदान किया।

27 मार्च को सुग्रीव किला में जगत्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के नेतृत्व में वहाँ के विद्यार्थियों ने वैदिक ऋचाएँ पढ़ते हुए पुष्पवृष्टि करके संघ का भावभीना स्वागत किया।

28 मार्च को प्रातःकाल रामजन्मभूमि के परिदर्शन के पश्चात् सी.आर.पी.एफ. (महिला विंग)-कटरा, काकभुशुण्ड मंदिर, रत्नसिंहासन (महंत अरुणदास एवं देवकीनंदन दास), कनकभवन, बड़ा स्थान (दशरथ राजगद्दी) इत्यादि स्थानों पर संघ का सम्मान किया गया।

इसी दिन सायंकाल हनुमानगढ़ी में गद्दीनशीन श्री रमेशदास जी महाराज एवं अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत श्री ज्ञानदास जी महाराज की उपस्थिति में पूज्य माताजी का स्वागत किया गया। इस अवसर पर श्री ज्ञानदास जी महाराज ने कहा कि विश्व के लिए भगवान ऋषभदेव का जितना बड़ा योगदान है, उतना किसी अन्य का नहीं है।

31 मार्च को सायंकाल अयोध्या नरेश श्री विमलेन्द्र मोहन प्रताप मिश्र (पप्पू भैय्या) ने अपने विशाल राजमहल में अपने परिवार के साथ पूज्य माताजी एवं संघ का भावभीना स्वागत किया। चरण प्रक्षालन एवं आरती के पश्चात् संघस्थ साधुओं के प्रवचनों का लाभ सभी को प्राप्त हुआ।

➢अयोध्या के महामस्तकाभिषेक ने 11 वर्ष पूर्व की याद दिला दी—

सन् 1993 में जब पूज्य माताजी का अयोध्या में 50 वर्षों में प्रथम चातुर्मास हुआ था, उस समय फरवरी 1994 में हुए अद्वितीय उत्तरभारत के प्रथम महामस्तकाभिषेक ने पूरे देशवासियों को भक्ति के रंग में रंग दिया था, उस समय पूज्य माताजी ने वहाँ के पदाधिकारियों को प्रति पाँच वर्षों में महामस्तकाभिषेक करने की प्रेरणा प्रदान की थी परन्तु पता नहीं क्या योग रहा कि एक नहीं कई-कई बार मस्तकाभिषेक के आयोजन की चर्चा होने के बाद वह मूर्त रूप में परिणत नहीं हो सका, शायद उन आदिप्रभू को अपनी ब्राह्मी सदृश पुत्री का ही इंतजार था, तभी तो पूज्य माताजी पुनः अयोध्या में महामस्तकाभिषेक कराने के लक्ष्य से ही अवध प्रांत में पधारीं और देखते ही देखते एक बार फिर पूरे अवध क्या पूरे देश में एक शंखनाद हो उठा — चलो अयोध्या! प्रभु ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक करने और पुनः देश का श्रद्धालु वर्ग रंग गया भक्ति के रंग में, खेलने लगा केशरिया होली, उड़ चली सर्वत्र प्रभु नाम व जन्मभूमि की सुगंधि। सचमुच अयोध्या के द्वितीय मस्तकाभिषेक ने 11 वर्ष पूर्व की याद दिला दी।

''भारत भूषण'' की उपाधि से अलंकृत—

बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी माता ज्ञानमती जी को टिकैतनगर की जिस भूमि ने अपने गर्भ से प्रसूत किया है, विशल्या सदृश उन माता के प्रति बच्चे-बच्चे के लिए यह महानतम गौरव की बात है। वह निधि आज उन टिकैतनगर वासियों के मान को उच्चतम सीमा तक वृद्धिंगत करते हुए राष्ट्र क्या पूरे विश्व की गौरव हैं, इस खुशी में टिकैतनगर का चप्पा-चप्पा फूला नहीं समाया और नागरिक अभिनंदन के अवसर पर उन्हें ''भारतभूषण'' की उपाधि से अलंकृत कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभूत किया। वास्तव में ऐसी महान निधि की जन्मदात्री टिकैतनगर की धरती सदैव-सदैव के लिए कृतकृत्य हो गई है।

➢महमूदाबाद में मना 50वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस-

अवध प्रांत का गौरवपूर्ण ऐतिहासिक नगर महमूदाबाद उस मकान की नींव अथवा वृक्ष के मूल की भांति है, जहाँ जन्मी मोहिनी कन्या ने टिकैतनगर के श्रेष्ठी छोटेलाल जी की धर्मपत्नी बनकर संस्कारों का जो उपवन सजाया, उसमें सुरभित एक पुष्प से ही सारा संसार महक उठा। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की गृहस्थावस्था की माता मोहिनी देवी, जो बाद में आर्यिका रत्नमती माताजी बनीं, उनकी जन्मभूमि होने से यह माताजी की ननिहाल है और ननिहाल वालों का यूँ ही अपने नाती-नातिन, भानजे-भानजी के प्रति विशेष वात्सल्य रहता है, फिर ऐसी जगन्माता की वह ननिहाल हो, जो विश्व में धर्म का डंका बजा रही हैं तथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनका गौरव अपनी चरम सीमा पर हो! उन बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 50वाँ आर्यिका दीक्षा समारोह मनाने का सौभाग्य महमूदाबाद नगरी को प्राप्त होना ही उनके लिए भारी गौरव की बात थी। पास के ही नगर तहसील फतेहपुर में महावीर जयंती महोत्सव करने के पश्चात् माताजी महमूदाबाद पधारीं और वैशाख कृष्णा द्वितीया, 26 अप्रैल 2005 को सर्वप्रथम प्रातःकाल भगवान पार्श्वनाथ गर्भकल्याणक के उपलक्ष्य में पार्श्वनाथ की रथयात्रा निकाली गई एवं मध्यान्ह 2 बजे से विशाल धर्मसभा आयोजित की गई, जिसमें उ.प्र. सरकार के परिवहन मंत्री श्री नरेश अग्रवाल मुख्य अतिथि एवं जिला पंचायत अध्यक्ष-श्री महेन्द्र सिंह वर्मा, विधायक श्री नरेन्द्र सिंह वर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। समारोह में अनेक गणमान्य महानुभावों ने पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित की एवं पूज्य माताजी को पिच्छी-कमण्डलु, शास्त्र आदि समर्पित कर अपना अहोभाग्य माना।

➤अहिच्छत्र में भगवान पार्श्वनाथ मस्तकाभिषेक महोत्सव—

पूज्य माताजी एवं हम सभी लोग महमूदाबाद से सीतापुर, शाहजहांपुर, बरेली आदि स्थानों पर होते हुए 10 मई 2005, वैशाख शु. 2 को भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान एवं उपसर्ग विजय भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर पहुँचे।

इसी अहिच्छत्र तीर्थ पर सन् 1993 में अयोध्या की ओर मंगल विहार करते समय जब माताजी का मंगल पदार्पण हुआ था, उस समय उन्होंने वहाँ के कार्यकर्ताओं को तीस चौबीसी मंदिर निर्माण की प्रेरणा प्रदान की थी और आज जब 15 वर्षों बाद अहिच्छत्र तीर्थ पर आना हुआ, तो सभी जिनमंदिरों के दर्शन के साथ-साथ नवनिर्मित 11 शिखर वाले तीस चौबीसी मंदिर के दर्शन कर मन आल्हादित हो उठा। चूंकि माताजी की प्रेरणा से सम्पूर्ण भारतवर्ष में **''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव''** विविध आयोजनों के माध्यम से मनाया जा रहा था अतः वहाँ भी तिखाल वाले बाबा मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ महामस्तकाभिषेक महोत्सव एवं भगवान पार्श्वनाथ रथयात्रा का विशाल आयोजन 15 मई 2005 को हजारों श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के मध्य हर्षोल्लासपूर्ण और भक्तिमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। यहाँ तिखाल वाले बाबा की मूर्ति अति प्राचीन है। कहा जाता है कि भगवान पार्श्वनाथ के ऊपर उपसर्ग के पश्चात् देवों द्वारा विराजमान की गई यह प्रतिमा है। इसमें वेदी के नीचे एक बिल बना हुआ है तथा एक कटोरे में प्रतिदिन दूध रखा जाता है, वहाँ के मैनेजर आनंद जैन ने बताया कि इस बिल में एक सर्प रहता है, जो अक्सर आकर बिना किसी को नुकसान पहुँचाए वहाँ दूध पीकर चला जाता है।

तीस चौबीसी मंदिर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की अवगाहना प्रमाण प्रतिमा के महामस्तकाभिषेक के समय माताजी ने सभी पदाधिकारियों को अहिच्छत्र में प्रतिवर्ष ऐसा ही विशाल मस्तकाभिषेक करने की प्रेरणा प्रदान की। सायंकाल मंदिर जी में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की प्राचीन प्रतिमा की 1008 दीपकों से महाआरती हुई।

अहिच्छत्र प्रवास के मध्य पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं सानिध्य में 10 मई से क्रमशः **''भगवान पार्श्वनाथ समवसरण विधान'' ,''अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान'', ''जम्बूद्वीप विधान'', ''तीस चौबीसी विधान'', ''कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान''** इत्यादि सम्पन्न किए गए तथा माता पद्मावती की 1008 मंत्रों से महाआराधना सम्पन्न की गई।

➤जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में हुआ मंगल पदार्पण—

अहिच्छत्र तीर्थ से मंगल विहार कर पूज्य माताजी का संघ सहित शाहबाद, धरमपुरकलाँ, जलालपुर, अमरोहा, मुरादाबाद, धनौरामण्डी आदि स्थानों पर होते हुए 25 मई 2005, ज्येष्ठ कृ. दूज को 5 वर्षों के बाद जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण हुआ।

➤एक बार फिर से आई अस्वस्थता की विषम परिस्थिति—

मार्ग में अत्यधिक गर्मी के कारण मुरादाबाद के बाद 20 मई 2005, वैशाख शु. 11 की रात्रि से पूज्य माताजी को ज्वर आना प्रारंभ हो गया था। 21 तारीख को हम लोग धनौरामण्डी पहुँचे, यहाँ इसीलिए तीन दिन रुके कि हो सकता है, माताजी का बुखार उतर जाये और उनको कुछ आराम मिल जाये लेकिन बुखार था कि उतरने की बजाय बढ़ता ही चला जा रहा था। मेरठ से हकीम सैफुद्दीन एवं वैद्य महावीर प्रसाद जैन को बुलाया गया। उन लोगों ने माताजी को देखकर यह निर्णय दिया कि अत्यधिक गर्मी होने के कारण शरीर में पानी की कमी हो गई है, उसी इन्फेक्शन से बुखार आ गया है, जब तक इन्फेक्शन दूर नहीं होगा, तब तक बुखार नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जायेगा लेकिन दृढ़संकल्पी माताजी ने कोई भी दवा लेने से इंकार कर दिया। उस समय दिल्ली से लाला महावीर प्रसाद जी संघपति और कमलचंद जी खारीबावली वाले आए हुए थे और वहीं ठहरे हुए थे। माताजी सबके समझाने के बाद भी विहार करना चाहती थीं।

24 मई, ज्येष्ठ कृ. एकम् की रात 12 बजे तक तेज बुखार रहा किन्तु 25 मई को प्रातः 4.30 बजे माताजी ने कहा कि मुझे आज यहाँ से विहार करना है और संयोग से तब तक बुखार उतर भी गया और माताजी ने धनौरामण्डी से हस्तिनापुर की ओर मंगल विहार कर दिया। अगले दिन माताजी को पुनः बुखार चढ़ गया, ऐसी विषम परिस्थिति में पूज्य माताजी को विहार कराना किसी को भी इष्ट नहीं था, तुरंत ही भाई जी ने कई स्थानों पर पूज्य माताजी के बुखार की सूचना दे दी और लोगों के आने का क्रम प्रारंभ हो गया, लोगों ने बहुत ही आग्रह कर माताजी को रोकना चाहा, पर दृढ़ इच्छाशक्ति की धनी माताजी ने कहा कि मैं हस्तिनापुर की ओर विहार अवश्य करूँगी, संयोगवश माताजी ने जम्बूद्वीप के पदाधिकारियों द्वारा 25 मई के मंगल प्रवेश का पोस्टर भी देख लिया था अतः अत्यन्त अशक्तता होते हुए भी छोटे रास्ते दर्वड़पुर (गंगा पुल पार करके) से निश्चित तारीख में भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में मंगल प्रवेश किया, यहाँ आने के बाद भी माताजी को बुखार आता रहा किन्तु इस पवित्र धरा पर पहुँचकर उन्होंने महान आत्मिक शांति का अनुभव किया, जब किसी भी प्रकार बुखार नहीं उतरा, तो एक बार पुनः जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में हकीम सैफुद्दीन एवं वैद्य आदि ने निर्णय दिया कि माताजी को टाइफाइड (मियादी) बुखार है, तब सबको गहन चिन्ता हो उठी और लोगों को जिस प्रकार से भी खबर मिली, दूर-दूर से लोग वैद्य, हकीमों को लेकर आने लगे, इसी बीच डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण इंदौर से प्लेन द्वारा एक वैद्य जी को लेकर आ गए लेकिन माताजी ने पुनः दृढ़तापूर्वक किसी भी वैद्य, हकीम की दवाई लेने से मना कर दिया और पुराने हकीम सैफुद्दीन की सलाह के अनुसार चिरायता भिगोकर उसका पानी प्रतिदिन पूज्य माताजी को आहार में सबसे पहले दिया जाने लगा, इससे 2-4 दिनों में बुखार तो उतर गया परन्तु शारीरिक अस्वस्थता से अशक्तता अत्यधिक रही। आहार में मात्र पानी, दूध, लौकी की सब्जी का पानी, कासनी के बीज की ठण्डाई ही जरा-जरा सी जा पाती थी जबकि लोगों का यही कहना था कि माताजी के पेट में कुछ ठोस पदार्थ (मूंग की दाल, खिचड़ी आदि) जाना चाहिए किन्तु दिगम्बर जैन साधुचर्या तो आत्मबल के आधार पर ही चलती है।

➢4 जून की चिंताजनक रात्रि—

4 जून 2005, ज्येष्ठ कृ. त्रयोदशी की शाम को प्रतिक्रमण तक पूज्य माताजी पूरी तरह से सावधानीपूर्वक बातचीत कर रही थीं पुनः प्रतिक्रमण के पश्चात् हम लोगों द्वारा वंदामि करने पर न माताजी कुछ बोलीं और न ही पिच्छी उठाई, केवल एक करवट से अचेत सदृश लेटी रहीं, जिससे रात्रि में सभी को बड़ी घबराहट रही, जिन-जिन को जिस-जिस प्रकार यह समाचार मिला, वे सभी भक्त जिस अवस्था में बैठे थे, उस अवस्था में हस्तिनापुर के लिए रवाना हो गए, जो साधन मिला उसमें चाहे जैसी परेशानियाँ आईं, सबको झेलते हुए आने वाले यात्रियों का तांता सा लग गया। उस समय माताजी के कमरे में ब्र. रवीन्द्र जी, संघपति महावीर प्रसाद जी, उनकी धर्मपत्नी कुसुमलता जी, अनिल जी, राकेश जी, मनोज, सुनील सर्राफ-मेरठ आदि भक्तिमान श्रावक रातभर माताजी को पाठ सुनाते रहे, इधर मैंने त्यागी भवन के बाहर एकत्रित जनसमुदाय को अनुशासित कर उसे सम्बोधित किया कि देखो! इनकी 53 वर्ष की तपस्या में आकुलता पैदा नहीं करना है, उसमें बाधक न बनकर सब लोग दूर से मौनपूर्वक दर्शन करो.....इत्यादि। साथ ही टिकैतनगर आदि स्थानों से आए हुए सभी पारिवारिकजनों को भी माताजी के कमरे में जाने से सख्तीपूर्वक इसलिए मना किया कि इनके मोहपूर्ण व्यवहार से माताजी को कोई व्यवधान न हो, जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

चूँकि कई रात्रि से मैं सोई नहीं थी और उस रात्रि तो नींद आने का प्रश्न ही नहीं था, अतः मैं भी माताजी के पास बैठी पाठ पढ़ रही थी, उस समय सभी ने विशेष आग्रह पर मुझे रात्रि 1.30 बजे थोड़ी देर विश्राम करने और स्वयं वहाँ उपस्थित रहने का आश्वासन दिया, उस समय मैं संघ के चैत्यालय वाले कमरे में आकर कुछ देर के लिए लेट गई, प्रातः 3.30 बजे की बात है, मुझे दो बार तेज-तेज आवाज सुनाई दी— चन्दनामती, चन्दनामती! उठो! न जाने कहाँ से यह आवाज आई थी। मैं तुरंत उठकर माताजी के पास गई, उन्हें गणधरवलय मंत्र, सुप्रभात स्तोत्र सुनाकर उठाना चाहा, तो भी वे पाषाणवत् रहीं, पुनः मैंने थोड़ा जोर से कहा माताजी! उठिये! प्रतिक्रमण सुनाऊँ, प्रतिक्रमण का समय हो गया है, आप 11 घण्टे से लघुशंका भी नहीं गई हैं, उठिये! तब उन्होंने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थोड़ी आंख खोली और मेरे सहारे से उठीं, लघुशंका गईं। मैं जल्दी से चौकी पर बैठाकर उन्हें छोटे कमरे से हॉल में ले आई, तभी यह खबर फैलते देर नहीं लगी और सबके चेहरे पर छाई खुशियों का वर्णन करना वास्तव में संभव नहीं है। इस दौरान भारत के कोने-कोने में श्रद्धालुभक्तों ने माताजी के स्वास्थ्य लाभ के लिए मंत्र, विधान-अनुष्ठान एवं मनौतियाँ तक मांग रखी थी, शायद उन सबकी सच्ची भावना और माताजी के आयुकर्म ने एक बार पुनः हमारी निधि हमें लौटा दी।

➢सचमुच में चमत्कारी हैं कल्पवृक्ष महावीर स्वामी—

4 जून की ही रात्रि में जब माताजी की तबियत ज्यादा गड़बड़ हुई, तो मैं कुछ भक्त श्रावकों के साथ कल्पवृक्ष भगवान महावीर के कमलमंदिर में गई और भगवान के दर्शन करते हुए स्वतः मेरे मुख से निकल पड़ा—हे महावीर स्वामी! पूज्य माताजी का कुछ बाल बांका नहीं होना चाहिए, माताजी बड़ी उत्कण्ठा से हस्तिनापुर तीर्थ के दर्शन करने आई हैं। कुण्डलपुर की यह ऐतिहासिक यात्रा हम सबके लिए वरदान बने। भगवन्! माताजी आपकी जन्मभूमि का खूब चमत्कार फैलाकर आई हैं, सो अब इनकी स्वस्थता का चमत्कार भी आपकी कृपाप्रसाद से होना ही चाहिए........ इत्यादि।

उस समय मेरी बाईं आँख फड़क उठी और मुझे लगा कि जब भक्तिपूर्वक निकले पौद्गलिक शब्द जाकर सिद्धशिला तक का स्पर्श करके आ कर मनोकामना सिद्ध कर देते हैं, तब मेरी भी यह भावना निश्चित सफल होगी और वास्तव में चमत्कार ही हो गया। ज्येष्ठ कृ. 14, 5 जून को माताजी ने त्यागी भवन से ही न सिर्फ भगवान शांतिनाथ के जन्मकल्याणक का सुमेरु पर अभिषेक देखा, उनके सानिध्य में शांतिनाथ का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया, बल्कि आगन्तुक भक्तों को मुस्कुराकर आशीर्वाद भी दिया। उस समय माताजी ने बताया कि मैं रात में अन्तरंग से पूर्णरूपेण सचेत अवस्था में थी, मात्र अत्यधिक कमजोरी के कारण हिला-डुला भी नहीं जा रहा था, मैंने रात्रि में भक्तामर, अध्यात्मपीयूष आदि सारे पाठ जिस-जिसने सुनाए हैं, सब सुने हैं और चूँकि कमजोरी अधिक थी, इसलिए मन ही मन नियम सल्लेखना ले ली थी कि उठकर आहार करने लायक स्थिति रही तो ठीक है अन्यथा समाधि ले लूँगी। वे बहुत धीरे से मुझसे बोलीं कि देखो चंदनामती! आज भगवान शांतिनाथ के जन्मदिन मुझे भी नया जीवन मिला है और मेरी दो घाटी पार हुई हैं। पहली धनौरा मण्डी की (वहाँ भी चक्कर आने से स्थिति गंभीर हो गई थी) और दूसरी आज रात्रि की, अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ, यह सब सुनकर सभी लोगों में हर्ष की लहर दौड़ गई।

उन्होंने बताया कि मैं तो उस समय चिंतन कर रही थी कि—

अहमिक्को खलु सुद्धो, दंसणणाणमइओ सदारूवी।
णवि अत्थि मज्झ किंचिवि, अण्णं परमाणुमित्तं पि।।

अर्थात् मैं अकेला हूँ, निश्चयनय से शुद्ध हूँ, दर्शन ज्ञानमयी हूँ और सदा अमूर्तिक हूँ, अन्य परमाणुमात्र भी मेरा नहीं है, इसी प्रकार पूज्यपाद स्वामी के श्लोक भी स्मृतिपथ पर आते रहे कि—

न मे मृत्युः कुतो भीतिः, न मे व्याधिः कुतो व्यथा।
नाहं बालो न वृद्धोऽहं, न युवैतानि पुद्गले।।

माताजी सदा यही कहती हैं कि "परमानन्द संयुक्तं निर्विकारं निरामयं" आदि पंक्तियाँ भी असाता को झेलने में शक्ति प्रदान करती हैं। उस समय अनेक लोगों के मुख से यह निकला कि माताजी इतने महान कार्यों को करवाकर आई हैं, इसलिए माताजी को भीषण नजर लग गई है। खैर! साधु को क्या नजर लगना! यह सब तो साता-असाता कर्मों का ही प्रतिफल होता है।

➢अवर्णनीय है माताजी की ऐतिहासिक यात्रा—

पुरातन कवियों के द्वारा वर्णित गुरुओं की महिमा आज भी प्रत्यक्ष देखी जाती है कि जंगल में भी गुरुजनों के विराजने से स्वर्ग जैसा वातावरण निर्मित हो जाता है और अनजान रास्ते में भी स्वयमेव चिरपरिचित पगडंडी बन जाती है।

इनके विषय में लोगों की आम धारणा बन चुकी है कि ज्ञानमती माताजी जिस कार्य में हाथ लगा देती हैं, वह अवश्यमेव परिपूर्ण हो जाता है तथा उनके छूने से मिट्टी भी सोना बन जाती है। यह सब उनकी दीर्घकालीन तपस्या, आगमनिष्ठा एवं दृढ़ संकल्पशक्ति का ही प्रतिफल है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अगर पूज्य माताजी की ऐतिहासिक यात्राओं और उनके कार्यकलापों को विस्तार पूर्वक लिखा जाये, तो कई एक ग्रंथ बनकर तैयार हो जायें परन्तु ऐसी देवीस्वरूपा, प्राचीन साध्वी, महानतम गुणों की खान माताजी के बारे में कुछ शब्दों में लिखना एक बालक के द्वारा अथाह समुद्र का माप बताने जैसा बाल प्रयास ही समझना चाहिए। हाँ! इतना अवश्य कहूँगी कि पूज्य माताजी का हर कदम किसी न किसी नए लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ता है, उनके ये कदम हमेशा-हमेशा इसी तरह आगे बढ़ते रहें, यही वीर प्रभू से मंगल कामना है।

➢अनेक उपलब्धियों से समन्वित रहा जम्बूद्वीप महामहोत्सव-2005—

प्रति पाँच वर्षों में आयोजित होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव की भांति ही सन् 2005 में आयोजित होने वाला जम्बूद्वीप महामहोत्सव 13 से 17 अक्टूबर 2005, आसोज शु. 11 से पूर्णिमा तक राष्ट्रीय स्तर पर अनेक उपलब्धियों एवं आशातीत सफलता के साथ मनाया गया। लम्बे समय से प्रतीक्षारत इस महोत्सव में विविध आयोजनों के माध्यम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से करोड़ों भक्तों ने आध्यात्मिक गंगा में स्नान कर अपने को सौभाग्यशाली माना तथा असीम आनन्द और पुण्य की प्राप्ति की।

इस महोत्सव में लगातार पाँच दिनों तक महत्वपूर्ण शोधात्मक आलेखों के वाचन के साथ **गणिनी ज्ञानमती संस्कृत एवं अध्यात्म साहित्य संगोष्ठी** का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें जैन समाज के अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने भाग लेकर पूज्य माताजी द्वारा रचित विभिन्न ग्रंथों पर अपने शोधात्मक आलेख प्रस्तुत किए। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद, अ.भा. दि. जैन विद्वत् परिषद, तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ जैसी सर्वोच्च विद्वत् संस्थाओं का प्रतिनिधित्व प्राप्त होने से संगोष्ठी की उपादेयता कहीं अधिक वृद्धिंगत हो गई तथा विद्वानों द्वारा अनेक प्रश्नों के किए जाने पर आगमसम्मत अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ व मार्गदर्शन पूज्य माताजी द्वारा सभी को प्राप्त हुआ।

आसोज शु. 14, 16 अक्टूबर (रविवार) को जम्बूद्वीप महामहोत्सव के मुख्य कार्यक्रम के रूप में यहाँ निर्मित 101 फुट ऊँचे सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर भगवान शांतिनाथ के मस्तकाभिषेक का कार्यक्रम प्रातः 8 बजे से प्रारंभ हुआ तथा 17 अक्टूबर को शरदपूर्णिमा के पावन अवसर पर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 72वाँ जन्मजयंती समारोह भव्य स्तर पर मनाया गया और इन दोनों कार्यक्रमों को आस्था चैनल के माध्यम से दुनिया भर में करोड़ों लोगों ने देखा और उसकी सुरभि इतनी फैली कि आज तक उसकी खूब सराहना हो रही है। उस दिवस पर लोगों द्वारा मोबाइल, एस.एम.एस. के माध्यम से बधाईयाँ एवं शुभकामना संदेश देने वालों का तांता लग गया। दिनाँक 16 अक्टूबर को महामस्तकाभिषेक महोत्सव का सीधा प्रसारण जब दुनिया के करोड़ों लोगों ने देखा। सैकड़ों भक्तों ने फोन के माध्यम से अपने कलश बुक करवाए और भगवान के महामस्तकाभिषेक में अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिभागी बनकर अपार हर्ष का अनुभव किया।

वस्तुतः तीर्थदर्शन एवं गुरुदर्शन बड़े ही सौभाग्य से प्राप्त होते हैं अतः आस्था चैनल के माध्यम से जब जन-जन ने जम्बूद्वीप जैसे महान तीर्थ एवं महान साध्वी पूज्य माताजी के दर्शन किए, तो वे एक बार इस धरती के स्वर्ग पर आने एवं माताजी की चरणवन्दना करने हेतु लालायित हो उठे, आज भी ऐसे कितने लोग आते हैं जो बताते हैं कि माताजी ! हम आस्था चैनल पर आपका कार्यक्रम देखकर प्रथम बार साक्षात् आपके दर्शन करने आए हैं।

➢तेरहद्वीप रचना का शिलान्यास—

महोत्सव की अन्य उपलब्धियों में अगली कड़ी के रूप में रहा तेरहद्वीप मंदिर में मध्यलोक के तेरह द्वीपों की अकृत्रिम रचना का शिलान्यास। सन् 1965 में पूज्य माताजी के ध्यान में प्रकट हुई तेरहद्वीप की अकृत्रिम रचना अब शीघ्र ही जम्बूद्वीप स्थल पर निर्मित हो रही है। इस रचना का शिलान्यास शरदपूर्णिमा के ही दिन 17 अक्टूबर 2005 को श्री दीपक जैन-वाराणसी एवं डॉ. प्रमोद कुमार जैन-आगरा के द्वारा हुआ। यह रचना भी अपने आप में विश्व की अनोखी रचना होगी।

➢महोत्सव में हुईं आगामी कार्यक्रमों की घोषणाएँ—

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी अपनी प्रकृति के अनुसार किसी एक महोत्सव, आयोजन या प्रोजेक्ट के समापन से पूर्व ही आगामी कार्य को सुनिश्चित करके समाज में घोषणा कर देती हैं, इसी बात को दरशाते हुए उन्होंने महोत्सव के समापन पर आगामी वर्ष 2006 को भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि **''सम्मेदशिखर वर्ष''** के रूप में मनाने की प्रेरणा समाज को प्रदान की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

➢तीरथ विकास क्रम जारी है, अब काकन्दी की बारी है—

पुनः एक ऐतिहासिक कार्य पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुआ। वह है, तीर्थ विकास के क्रम में नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंत की उपेक्षित एवं विस्मृत जन्मभूमि काकन्दी (गोरखपुर-उ.प्र. के निकट अवस्थित) का विकास कार्य। 20 नवम्बर 2005 को इस तीर्थ पर पूज्य माताजी के अनन्य भक्त श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स'-दिल्ली द्वारा वहाँ एक नये मंदिर का शिलान्यास सम्पन्न हुआ, जो संभवतः वर्ष 2006 के अंदर ही विकसित होकर विश्वपटल पर छा जायेगा और जन-जन को भगवान पुष्पदंतनाथ की गौरव गाथा से परिचित करवाएगा।

इस प्रकार नित्य नूतन योजनाओं की जननी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की यात्राओं के माध्यम से मैंने यहाँ पर उनके द्वारा दी गई जैन संस्कृति की अमिट धरोहरों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की है। आप भी उनकी यात्राओं से प्रेरणा प्राप्त करके समय-समय पर अपनी धार्मिक तीर्थ यात्रा से अपने जीवन को समुन्नत बनाएँ, इसी मंगलकामना के साथ यात्रा के प्रकरण को यहीं विराम दिया जाता है।

गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमतीमातुः पवित्रगुर्वावलिः

निजकेवलज्ञानज्योतिषा त्रिलोकवर्तिचराचरसमस्तपदार्थानां हस्तामलकवत् जानंति वृषभादयः चतुर्विंशतितीर्थंकराः। तीर्थस्य अविच्छिन्न परम्परायां सम्प्रति श्रीवर्धमानभगवतः सार्वभौमशासनं वर्धते। तस्यैव वीरजिनेन्द्रस्य शासनकाले श्रीकुन्दकुन्दाम्नाये नंदिसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे चारित्रचक्रवर्ती श्रीशांतिसागराचार्यवर्यस्तत्प्रथमपट्टाधीशो आचार्यः श्रीवीरसागर-मुनीन्द्रोऽस्य करकमलात् ''वीराब्दे (२४८२) द्व्यशीत्यधिकचतुर्विंशतिशततमे वर्षे बैशाखमासे कृष्णपक्षे द्वितीयातिथौ राजस्थानप्रान्तस्य माधोराजपुरापत्तने'' सुदीक्षिता महासाध्वी आर्यिका श्री ज्ञानमती माता इह जगति चिरकालपर्यंतं भव्यप्राणिनां कल्याणं कुर्यात् सम्यग्ज्ञानप्रकाशं च कुर्यात्।

अधुना—

वीराब्दे अष्टादशोत्तरपंचविंशतिशततमे वर्षे आश्विनशुक्लापूर्णिमायां तिथौ रविवासरे मातुः गुणानुरागवशात् भाक्तिकजनाः एकस्याभिवन्दनग्रंथस्य प्रकाशनं कृत्वा अस्याः करकमलयोः समर्पयन्ति स्म। निजख्यातिलाभपूजाभ्यः दूरीभूत्वा गणिनीआर्यिकाश्रीज्ञानमती माता ज्ञानध्यानतपोरक्ता विराजिता। मातुःज्ञानप्रकाशिकादृष्टिःयुगानुयुगपर्यन्तं वसुन्धरां विकासयेत्। इति वर्धताम् गुरुशासनम्।

-आर्यिका चन्दनामतिः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजस्थान की राजधानी जयपुर (जैनपुर)
का
विशाल दिगम्बर जैन समाज

सरस्वती की साक्षात् प्रतिमूर्ति, अनेकानेक आगम ग्रंथों की रचयिता,
जम्बूद्वीप रचना की प्रेरणास्रोत, बाल ब्रह्मचारिणी,
बहुप्रभावी व्यक्तित्व की धनी, बहुश्रुत आर्यिकारत्न

श्री 105 ज्ञानमती माताजी

को उनके 59वें वर्ष पर उनके
कृतित्व एवं व्यक्तित्व के प्रति
शत-शत नमन करते हुए

आर्यिका शिरोमणि

से सम्मानित कर अतीव
गौरवान्वित हो रहा है।

हम सब

दिगम्बर जैन समाज जयपुर

दिनाँक 18 अक्टूबर 1992

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। श्री गणिनी ज्ञानमती मात्रे नमः।।

तीर्थंकर भगवान के पश्चात् 2500 वर्षों के अन्तर्गत भारत के इतिहास में
बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी गणिनी आर्यिका
श्री ज्ञानमती माताजी के रूप में आपने अष्टसहस्री,
नियमसार, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों पर हिन्दी
एवं संस्कृत की विशाल टीकाएँ रचकर एवं
दो सौ ग्रंथों का लेखन करके जैन
समाज को गौरव के शिखर
पर पहुँचाया है।

एतदर्थ

हम सभी गुजरातवासी आपके गुजरात
प्रान्त के मंगल पदार्पण के शुभ अवसर
पर अपने पुण्य की सराहना करते हुए आपको

'श्रुत तीर्थ प्रकाशिका'

पद से अलंकृत करके गौरव का अनुभव करते हैं।
चिरकाल तक आपकी छत्रछाया हम सबके मस्तक पर
बनी रहे, भगवान जिनेन्द्र से हम यही प्रार्थना करते हैं।
हम हैं आपके शुभाशीर्वाद के अभिलाषी

—समर्पणकर्ता—

गुजरात प्रांत के समस्त दिगम्बर जैन समाज और
कल्पद्रुम महामण्डल आयोजन समिति, सोला, अहमदाबाद

—प्रदानकर्ता—

श्री शंकर सिंह वाघेला, मुख्यमंत्री-गुजरात राज्य
अहमदाबाद, 4 जनवरी 1997

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(राजधानी दिल्ली में देशभर से पधारे भक्तों ने पूज्य माताजी के चरणों में अपने श्रद्धासुमन समर्पित करते हुए कुछ उपाधियों से उन्हें अलंकृत किया। उनमें से अवध प्रान्त के द्वारा 'धर्ममूर्ति' पदवी एवं दिल्ली के भक्तों द्वारा सामूहिक रूप में 'विश्वविभूति' के सम्मानपूर्वक जयजयकारों से राजधानी को गुंजायमान कर दिया। इसी शृँखला में महाराष्ट्र से पधारे विशिष्ट प्रतिनिधिमण्डल द्वारा समर्पित 'राष्ट्रगौरव' प्रशस्ति यहाँ प्रस्तुत है—

राजधानी दिल्ली में विश्वशांति महावीर विधान के राष्ट्रीय आयोजन के अवसर पर

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के

श्रीचरणों में महाराष्ट्र प्रान्त की दिगम्बर जैन समाज द्वारा

प्रस्तुत अभिवंदना

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव को प्रभावक रूप प्रदान करने वाली ब्राह्मी माता की प्रतिकृति, जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय महोत्सवों की सम्प्रेरिका

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

की प्रेरणा से श्री मांगीतुंगी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र की पहाड़ी पर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उत्तुंग प्रतिमा का निर्माण होने जा रहा है। इस अद्वितीय कार्यकलाप हेतु पूज्य गणिनीश्री को आज

''राष्ट्र गौरव''

के पद से अलंकृत करते हुए हम अत्यन्त गौरवान्वित हैं।

चरणों में नतमस्तक

महाराष्ट्र दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी 108 फुट प्रतिमा निर्माण ट्रस्ट एवं महाराष्ट्र के प्रतिनिधिगण

डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल, पैठण

झम्मनलाल जैन, औरंगाबाद

धर्मचंद प्रदीप कुमार जैन, सटाणा

निहालचंद पांडे, चांदवड़

28 अक्टूबर 2001, भगवान महावीर मण्डप, दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली-प्रयाग तीर्थ की पावन सम्प्रेरिका जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में प्रयाग जैन समाज की ओर से

विनम्र विनयांजलिरूप अभिनंदन पत्र

हमारे जीवन में महान पुण्य का उदय हुआ जबकि हम सब लोगों ने एक प्राचीनतम तीर्थ को तीर्थ स्वरूप में पुनः स्थापित होते हुए अपनी आँखों से देखा। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने एक कुशल शिल्पी की भाँति भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग को अपने प्रज्ञाबल की छेनी से तराश कर 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली-प्रयाग तीर्थ' जैसी अनुपम भेंट पूरे विश्व को प्रदान कर दी और हम सब इस स्वर्णिम इतिहास के साक्षी बने गये।

प्रयाग की यह भूमि करोड़ों वर्ष उपरांत एक बार पुनः वैराग्य, ज्ञान, संयम से सिंचित होते हुए सदैव के लिए जैन तीर्थ के रूप में स्थापित हो गई, धन्य है उन गणिनी माता की अपूर्व दूरदर्शिता, उत्कृष्ट प्रतिभा एवं महान प्रज्ञा कि जिसने हम सब प्रयागवासियों सहित समस्त विश्व को एक विस्मृत इतिहास को इतने उत्कृष्ट रूप में स्मरण करने हेतु माध्यम प्रदान कर दिया। मात्र डेढ़ वर्ष के अल्प समय में निर्मित इस आकर्षक जैन तीर्थ ने देशभर में अपनी सुगंधि वितरित करके भक्तों को अपनी ओर कदम बढ़ाने के लिए विवश कर दिया है, हमारा पूरा इलाहाबाद नगर धन्य हो उठा है।

पूर्व में भी हम सब जैन समाज की महान साध्वी के रूप में पूज्य ज्ञानमती माताजी का नाम सदा से सुनते आये थे, उनके द्वारा लिखित साहित्य पढ़ते थे, उनके द्वारा लिखे सरस भक्ति विधानों को भक्तिभाव से किया करते थे। पर जब उनका साक्षात् सानिध्य मिला तो जैसे सहज, सरल वात्सल्य से युक्त मोक्ष का मार्ग दिखलाने वाली सच्ची माता ही हमें प्राप्त हो गई। ऐसी सरस्वती माता का यश युगों-युगों तक निश्चित ही चिरंजीव रहने वाला है।

आपके प्रभावी नायकत्व एवं अनुशासन की छाप हमने आपके संघ में देखी है। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज एवं कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन का आपके दिशा-निर्देश के प्रति जो समर्पण, आपसी सामंजस्य एवं कर्मठ परिश्रम दृष्टिगत होता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। क्षुल्लिका श्रद्धामती माताजी एवं संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनें भी अहर्निश धर्मसाधना एवं गुरुसेवा में ही तत्पर दिखाई पड़ती हैं, यह सब आपके यशस्वी व्यक्तित्व की ही प्रतिबिम्ब है। आपके ६९वें जन्मदिवस एवं ५१वें संयम दिवस स्वर्णिम शरदपूर्णिमा २१ अक्टूबर २००२ को इस मंगल अवसर पर हम अत्यंत विनीत भाव से आपके श्रीचरणों में अपनी कोटिशः विनयांजलि प्रस्तुत करते हुए आपके सुदीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं।

–निवेदक–

सकल दिगम्बर जैन समाज प्रयाग

आनंद प्रकाश जैन
(कोषाध्यक्ष)

21 अक्टूबर 2002

हेमचंद जैन
(मंत्री)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खण्ड-५

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के अमूल्य प्रवचन एवं समसामयिक वार्ता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में
निर्मित भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के अमूल्य प्रवचन एवं समसामयिक वार्ता

प्रमुख रूप से जिनेन्द्र भगवान के मुख से निर्गत प्रकृष्ट-उत्कृष्ट वचनों को वास्तविक प्रवचन संज्ञा प्राप्त है, उनके मार्ग पर चलने वाले साधु-संतों के द्वारा उपदिष्ट वचनों को भी प्रवचन कहा गया है।

पुनः परम्परा से जिनवाणी के संरक्षक विद्वानों के द्वारा भी शास्त्र की गद्दी से दिये गये उपदेशों को कथंचित प्रवचन कहा गया है, जिनका श्रवण करके समय-समय पर श्रावक-श्राविकाओं ने प्रवृत्ति एवं निवृत्ति मार्ग रूप गृहस्थ तथा साधु धर्म को ग्रहण कर मानव जन्म को सफल बनाया है, वर्तमान में भी उस प्रवचन की अजस्र धारा मुनि-आर्यिकाओं एवं विद्वानों के द्वारा प्रवाहित हो रही है।

वर्तमान में चारों अनुयोगों में निबद्ध जिनवाणी के अनेक ऐसे विषय हैं कि जिन्हें कठिन मानकर लोग या तो उन्हें पढ़ते-सुनते नहीं है अथवा एकांगी रूप में उनको सुनकरके गुमराह भी होते देखे जाते हैं।

गौरव ग्रंथ के इस पंचम खण्ड में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा समय-समय पर दिये गये कुछ ऐसे ही प्रवचनों का संकलन प्रस्तुत किया गया है, जिन्हें पढ़कर आप सभी बहुत ही सरलतापूर्वक जैनागम के उन कठिन विषयों को समझ सकते हैं तथा उनसे समय-समय पर की गई कुछ चर्चा-वार्ताएँ एवं शंका समाधान भी इस खण्ड में समाविष्ट हैं, जिनके द्वारा सामान्य पाठकों की भी अनेक शंकाओं का समाधान सहज प्राप्त हो सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वरूपाचरण चारित्र

प्रवचन-1

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः, सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि, साधवो मम मंगलम्।।

आज मैं स्वरूपाचरण चारित्र के बारे में कुछ प्रकाश डालूँगी। विचार करके देखा जाये जैसा कि मैंने अनेक ग्रंथों का स्वाध्याय किया है, अपने दीक्षा गुरु आचार्यश्री वीरसागर महाराज के मुख से बहुत कुछ सुना है लेकिन स्वरूपाचरण चारित्र का नाम नहीं सुना। अनगार धर्मामृत, समयसार, प्रवचनसार आदि ग्रंथों में भी कहीं स्वरूपाचरण का नाम नहीं आया है। हाँ, छहढालाकार पं. दौलतराम जी ने छठी ढाल में स्वरूपाचरण चारित्र को लिया है। ग्रंथों में शुद्धोपयोग शब्द आया है। शब्द का अन्तर होते हुए भी अर्थ साम्य से स्वरूपाचरण चारित्र और शुद्धोपयोग पर्यायवाची शब्द दिखते हैं। उसी पर मैं प्रकाश डाल रही हूँ। मेरे सामने प्रवचनसार प्रमुख ग्रंथ है, इसमें नवमीं गाथा में लिखा है—

जीवो परिणमदि जदा, सुहेण असुहेण वा सुहो असुहो।
सुद्धेण तदा सुद्धो, हवदि हि परिणाम सब्भावो।।9।।

अर्थात् जब यह जीव शुभ और अशुभ रूप से परिणमन करता है तब यह शुभ और अशुभरूप होता है और जब शुद्धरूप से परिणमन करता है तब शुद्धरूप होता है। चूँकि जीव का स्वभाव परिणमनशील है। अब मैं टीकाकार श्री अमृतचंद्रसूरि की पंक्ति बताती हूँ—

'शुभेनाशुभेन वा रागभावेन परिणमति।' जब जीव शुभ अथवा अशुभ राग भाव से परिणमन करता है तब शुभ व अशुभ-रूप होता है।

'यदा पुनः शुद्धेनारागभावेन परिणमति।' और जब जीव शुद्धरूप से अथवा अराग भाव-विराग भाव से परिणमन करता है, तब शुद्धरूप होता है।

शुद्धारागपरिणतस्फटिकवत्परिणामस्वभावाः सन् शुद्धो भवतीति, इसलिए शुद्ध अर्थात् अराग भाव से परिणत स्फटिक के समान परिणमन स्वभाव वाला जीव शुद्ध हो जाता है। अराग भाव क्या है?

श्री अमृतचंद सूरि का अभिप्राय अरागभाव से शुद्धभाव से है। कुछ लोग शुद्धभाव को चौथे गुणस्थान में घसीटते हैं। लेकिन यह यहाँ नहीं घटेगा।

श्री जयसेनस्वामी की पंक्ति देखें—

'मिथ्यात्वसासादनमिश्रगुणस्थानत्रये तारतम्येनाशुभोपयोगः।' श्री जयसेन स्वामी तात्पर्यवृत्ति टीका में कह रहे हैं कि मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र इन तीन गुणस्थानों में तरतमता से अशुभोपयोग है।

'तदनन्तरमसंयत सम्यग्दृष्टि देशविरत प्रमतसंयतगुणस्थानत्रये तारतम्येन शुभोपयोगः।'

उसके बाद असंयत सम्यग्दृष्टि, देशविरत, प्रमत्तसंयत इन तीन गुणस्थानों में तारतम्यता से शुभोपयोग है।

'तदनन्तरमप्रत्तादिक्षीणकषायांतगुणस्थानषट्के तारतम्येन शुद्धोपयोगः।'

अप्रमत्त से लेकर क्षीण कषाय गुणस्थान तक षट्के यानि छः गुणस्थान में सातवें, आठवें, नवमें, दसवें, ग्यारहवें और बारहवें गुणस्थान तक तरतमता से शुद्धोपयोग है।

तदनन्तरं सयोग्ययोगि जिनगुणस्थानद्वये शुद्धोपयोग फलमिति भावार्थः।।9।।

इसके अनन्तर सयोगी और अयोगी जिन दो गुणस्थानों में शुद्धोपयोग का फल है। यह श्री जयसेन स्वामी की भाषा है। यही भाषा छहढालाकार पं. श्री दौलतराम जी ने की भी है। मैं छहढालाकार की पूरी पंक्तियों का अर्थ बताती हूँ—

''यों है सकल संयम चरित, सुनिए स्वरूपाचरण अब।
जिस होत प्रगटे आपनी निधि, मिटे पर की प्रवृति सब।।''

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं. श्री दौलतराम जी ने पहले साधुओं के 28 मूलगुणों का वर्णन किया, फिर बारह तप, दसधर्म आदि उत्तरगुणों का वर्णन किया। इसके बाद उन्होंने कहा–सकल संयम चारित्र यानि पूर्ण संयम मुनियों के होता है। अत: यह सकल संयम चारित्र हुआ। अब स्वरूपाचरण को सुनें, जिसके प्रगट होते ही अपनी ज्ञानादि निधि–सम्पत्ति प्रगट हो जाती है और पर वस्तुओं से सब प्रकार की प्रवृत्ति हट जाती है, उसे स्वरूपाचरण चारित्र कहते हैं। अब मैं बताती हूँ छहढालाकार इस स्वरूपाचरण चारित्र को कहाँ तक मान रहे हैं—

''जिन परम पैनी सुबुधि छैनी, डारि अन्तर भेदिया,
वरणादि अरु रागादि तैं, निज भाव को न्यारा किया।
निजमाहिं निज के हेतु निजकर, आप को आपै गह्यो,
गुण गुणी ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय, मंझार कछु भेद न रह्यो।।''

ये कह रहे हैं जिन्होंने पैनी प्रज्ञारूपी छैनी को अन्दर डाल करके अंतरंग में भेद विज्ञान किया है। वर्णादि–रूप आदि बीस गुणों से और रागादि भावों से अपने आत्मभाव को एकदम पृथक् किया है और अपने आप में यानि अपनी आत्मा में ही स्थिर हुए हैं, उस समय उनके गुण, गुणी, ज्ञाता, ज्ञांन, ज्ञेय में कुछ भी भेद नहीं रह जाता, सब विकल्प मिट जाते हैं। यही भाषा श्री अमृतचंद्रसूरि की समयसार में है—

'उदयति न नयश्री रस्तमेति प्रमाणं। (अमृतचंद्र गाथा 13 की टीका में कलशकाव्य में) जहाँ पर प्रमाण भी अस्त हो जाते हैं नयों का प्रकाश नहीं रहता है आदि। पं. श्री दौलतराम जी ने आगे कहा—

जहँ ध्यान ध्याता ध्येय को, न विकल्प वच भेद न जहाँ,
चिद्भाव कर्म चिदेस कर्ता, चेतना किरिया तहाँ।।
तीनों अभिन्न अखिन्न शुध, उपयोग की निश्चल दशा,
प्रगटी जहाँ दृग ज्ञान व्रत, ये तीनधा एकहि लसा।।

आत्म ध्यान की अवस्था में शुभोपयोग की निश्चलदशा, शुद्धोपयोग की निश्चलदशा प्रगट हो जाती है। सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र एकरूप बन जाते हैं यानि अभेद रत्नत्रय प्रगट हो जाता है। आगे देखिए—

परिमाण नय निक्षेप को, न उद्योत अनुभव में दिखे।
दृग ज्ञान सुख बल-मय सदा, नहिं आनभाव जु मो विखें।।
मैं साध्य साधक मैं अबाधक, कर्म अरु तसु फलनितें।
चितिंडचंडअखंड सुगुण करण्ड, च्युत पुनि कलनिते।
यों चिन्त्य निज में थिर भये, तिनि अकथ जो आनन्द लह्यो।
सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा, अहमिंद्र के नाहीं कह्यो।।
तबही शुकल ध्यानाग्नि करि, चउ घाति विध कानन दह्यो।
सब लख्यो केवलज्ञान करि, भवि लोक को शिवमग कह्यो।।

पं. श्री दौलतराम जी कह रहे हैं जब वे मुनिराज इस प्रकार का चिन्तन करते हुए अपने आप में–आत्म ध्यान में लीन हो जाते हैं, उस समय उनको जो आनन्द आता है, वह इन्द्र, धरणेन्द्र, चक्रवर्ती, अहमिन्द्र को भी नहीं मिलता। फिर क्या होता है? उस समय वे शुक्लध्यान रूपी अग्नि के द्वारा चार घातियाँ कर्मरूपी वन को नष्ट कर देते हैं और केवलज्ञान से समस्त लोक–अलोक को जानकर भव्यों को मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि छहढालाकार स्वरूपाचरण नाम से शुद्धोपयोग को कह रहे हैं और सातवें गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक पहुँचा रहे हैं, क्योंकि बारहवें गुणस्थान के अंत में शुद्धोपयोग के बल से ही घातिया कर्मों को नाश करके केवली बनते हैं। इसमें जो सराग और वीतराग की बात आई, उसके बारे में मैं आपको बताऊँ– श्री कुन्दकुन्द स्वामी के प्रवचनसार में 12वीं गाथा की टीका में श्रीजयसेनस्वामी ने लिखा है–**'तच्चारित्रं अपहृतसंयमोपेक्षया संयमभेदेन सराग-वीतरागभेदेन शुभोपयोग शुद्धोपयोग भेदेन च द्विधा भवति।**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्र के दो भेद हैं-अपहृत संयम, उपेक्षा संयम अथवा सराग चारित्र, वीतराग चारित्र अथवा शुभोपयोग और शुद्धोपयोग। इसी को भेद रत्नत्रय और अभेदरत्नत्रय भी कहते हैं। जो अपहृत संयम है उसके सराग चारित्र, शुभोपयोग, भेद रत्नत्रय ये पर्यायवाची नाम हैं और उपेक्षा संयम के वीतराग चारित्र, शुद्धोपयोग, अभेदरत्नत्रय ये पर्यायवाची नाम हैं। इसी को छहढालाकार ने अपने शब्दों में स्वरूपाचरण कहा है।

एक बात मैं आपको बताती हूँ। मैंने नियमसारप्राभृत ग्रंथ पर स्याद्वादचन्द्रिका टीका लिखी है। सन् 1985-86 में मैं कुछ अस्वस्थ चल रही थी। उस समय पं. श्री फूलचंद जी शास्त्री प्रतिदिन मेरे पास आते थे। एक दिन वे बोले-माताजी! मैं आपकी कुछ वैय्यावृत्ति करना चाहता हूँ यानि मैं कुछ स्वाध्याय आपको सुनाना चाहता हूँ। मैं उस समय ज्यादा बैठ नहीं पाती थी अतः मुझे संकोच रहता था। फिर भी उन्होंने कहा, माताजी आप लेटी रहिएगा मैं आपको स्वाध्याय सुनाऊँगा। ठण्डी के दिन थे, प्रतिदिन वे पुराने मंदिर से आते, उस समय हमारे यहाँ स्याद्वादचन्द्रिका का स्वाध्याय चल रहा था, उन्होंने कहा मैं इसी नियमसार ग्रंथ की, माताजी की लिखी टीका को सुनाऊँगा, मैं इसे पढ़ना भी चाहता हूँ। उन्होंने दो-तीन महीनों में उसे आद्योपांत सुनाया। कुछ थोड़े पेज आखिरी के बचे थे, तब उन्होंने एक दिन एक बात कही। स्वाध्याय में ब्र. मोतीचंद जी, ब्र.रवीन्द्र जी भी बैठते थे। पं. जी ने कहा-माताजी आपने टीका बहुत सुन्दर लिखी है, एक-एक शब्द चुन करके रखा है और न जाने कितने ग्रंथों के समयोचित उद्धरण भी दिए हैं। इस प्रकार से वे जितनी तारीफ कर सकते थे खूब किया। फिर बोले-वर्तमान में दो धाराएं आगम में हैं लेकिन माताजी! आपने एक धारा का अनुसरण किया है। मैंने पूछा दो धारा कौन सी हैं, तो वे बोले-एक ने चौथे गुणस्थान में वीतराग चारित्र को माना है और एक ने सातवें गुणस्थान से माना है।

मैंने कहा-पं. जी आगम में तो दो धारा नहीं हैं। वर्तमान में विद्वानों में दो धारा हो रही हैं। पं. जी बोले-आगम में है। मैंने कहा-कौन से आगम में है। तो वे चिन्तन करके बोले-अनगारधर्मामृत में। सराग-वीतराग की व्याख्या करते हुए उसमें लिखा है। मैंने उसी समय ब्र. माधुरी से अनगारधर्मामृत मंगवाया। जो पंक्ति उन्होंने बताई थी मैंने उसे खोलकर उन्हें दिखाया, तो उनकी बात उनसे कट गई और सातवें की बजाय ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान में चली गई। खूब मजा आया, वे भी हँसे, अन्तरंग में उन्हें झेंप भी आई, संकोच भी हुआ। वह पंक्ति थी—

ज्ञे सरागे सरागं स्याच्छमादिव्यक्तिलक्षणं।
विरागे दर्शनं त्वात्मशुद्धिमात्रं विरागकम्।।51।। (अनगार धर्मामृत पृ. 152)

इसकी टीका पं. आशाधर जी ने स्वयं की है। उन्होंने टीका में लिखा है—'**दर्शनं सरागं स्यात् सरागे असंयत सम्यग्दर्शनादौ।**' सराग सम्यग्दर्शन कहाँ होता है?-सराग में, सराग व्यक्ति में, सराग जीव में, चाहे वह स्त्री, पुरुष, देव हो, असंयत सम्यग्दृष्टि आदि राग सहित जीव में सराग सम्यग्दर्शन होता है और जो विराग में सम्यग्दर्शन होता है वह वीतराग सम्यग्दर्शन कहलाता है। वह कहाँ होता है? तो इनकी टीका आगे देखिए—

विरागे-उपशांतकषायादिगुणस्थानवर्तिनी दर्शनं स्यात्। विराग यानि उपशांत कषाय आदि गुणस्थानवर्ती जीवों के वीतराग सम्यग्दर्शन होता है और यह वीतराग सम्यग्दर्शन आत्मविशुद्धि मात्र रूप होता है। श्री जयसेन स्वामी तो सातवें से ले रहे थे जबकि पं. आशाधर जी ने ग्यारहवें, बारहवें में पहुँचा दिया। अब पं. जी की बोलती बंद हो गई। वे बोले-माताजी आप तो सबसे आगे निकल गई हैं। मेरी बात मेरे से ही काट दी। बात यह है कि कभी-कभी ग़लतफहमी भी हो जाती है। टीका न पढ़कर 'विरागे आत्मशुद्धिमात्रम्' देखकर कोई चौथे में घटित करने लगते हैं।

अब मैं आपको आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के शब्दों में बताती हूँ वे कहते थे स्वरूपाचरण नाम से शब्द आगम में नहीं है। शुद्धोपयोग शब्द है जो कि सातवें से बारहवें गुणस्थान तक है। ग्यारहवें, बारहवें गुणस्थान में यथाख्यात चारित्र रहता है यह बात ध्यान में रखना चाहिए। ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान का जो यथाख्यात चारित्र या यथाख्यात संयम है, उसमें भी शुद्धोपयोग अभेद रत्नत्रय, वीतराग चारित्र, उपेक्षा संयम ये सब पर्यायवाची नाम ग्यारहवें, बारहवें गुणस्थान तक पहुँचते हैं। क्योंकि शुद्धोपयोग का फल अथवा अपहृत संयम के बाद उपेक्षा संयम का फल तेरहवां गुणस्थान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपेक्षा संयम कहो या वीतराग चारित्र, वीतराग संयम कहो या शुद्धोपयोग, स्वरूपाचरण कहो या अभेदरत्नत्रय, ये सब पर्यायवाची नाम है। ये जब 12वें गुणस्थान में पहुँचते हैं, तो यथाख्यात चारित्र में भी घट जाते हैं।

तो कथंचित् मेरा कहना यह है कि सातवें गुणस्थान से लेकर दसवें गुणस्थान तक स्वरूपाचरण चारित्र है। सिद्धांत की भाषा में, धवला की भाषा में वह धर्मध्यान के भेदरूप में है। क्योंकि धवलाकार ने वहाँ तक अर्थात् दसवें तक धर्मध्यान माना है। मूलाचार ग्रंथ में श्रीकुंदकुंद स्वामी ने 10वें गुणस्थान तक धर्मध्यान माना है। 11वें 12वें गुणस्थान में शुक्ल ध्यान माना है। 12वें गुणस्थान तक, यथाख्यात चारित्र तक यह व्याख्या चली जाती है।

एक बात मैं आपको और बताऊँ अभी हस्तिनापुर में 13, 14, 15 अक्टूबर 2005 में विद्वानों की संगोष्ठी थी। उसमें यह विषय आया था। मैंने इस पर प्रकाश डाला। मुझे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि दिल्ली में कतिपय विद्वानों ने अर्थ का अनर्थ किया है। मैं इस बात को बताना चाहती हूँ कि यथाख्यात संयम-यथाख्यात चारित्र में स्वरूपाचरण गर्भित है, न कि यथाख्यात चारित्र स्वरूपाचरण में गर्भित है। यथाख्यात चारित्र तो 11वें 12वें गुणस्थान में होता है। जबकि स्वरूपाचरण चारित्र 7वें से लेकर 10वें तक तो है ही, 12वें तक भी है, तो स्वरूपाचरण शब्द, अभेद रत्नत्रय शब्द, उपेक्षा संयम शब्द, शुद्धोपयोग शब्द ये 11, 12वें गुणस्थान में भी चले जाते हैं। इस बात को ध्यान में रखना चाहिए। अर्थ का अनर्थ कभी नहीं करना चाहिए।

छहढाला की पंक्ति का आधार लेकर ही मैंने कहा है—

सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा अहमिन्द्र के नाहीं कह्यो।
तबहि शुकल ध्यानाग्नि करि, चउघाति विध कानन दह्यो।।

शुक्लध्यान के द्वारा चार प्रकार के घातिया कर्मरूपी वन को दग्ध कर दिया। इसका मतलब यह है कि छहढालाकार 11वें 12वें गुणस्थान में उस स्वरूपाचरण चारित्र को मान रहे हैं। एक बात और मैं खुलासा कर दूँ कि सन् 1955 में दिसम्बर में जब मैं आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के संघ में पहुँची। उस समय संघ में आर्यिका माताएं ब्रह्मचारिणियों को सिद्धान्त प्रवेशिका पढ़ाती थीं। जब यह चर्चा का विषय बना कि स्वरूपाचरण चारित्र को श्री गोपालदास वरैया ने सिद्धान्त प्रवेशिका में चौथे गुणस्थान में माना है और छहढालाकार ने स्वरूपाचरण चारित्र को सातवें से माना है, यानि सकल संयम के बाद माना है। तो स्वरूपाचरण की व्याख्या ऐसे भी कर सकते हैं 'स्वरूपे आचरणं स्वरूपाचरणं'। श्री जयसेन स्वामी ने अभेद रत्नत्रय स्वरूप, निश्चय रत्नत्रय स्वरूप को एक रूप में घटित किया है। शुद्ध आत्म तत्त्व का सम्यक् श्रद्धान, ज्ञान और अनुचरण रूप अभेद रत्नत्रय ऐसा घटित किया है, तो 'स्वरूपेआचरणं स्वरूपाचरणं' इस शब्द से व्याख्या घट जायेगी।

उस समय आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज ने सिद्धान्त प्रवेशिका संघ में पढ़ाना ही बंद कर दिया। वे बोले पं. गोपालदास वरैया ने जो इसमें चौथे गुणस्थान में स्वरूपाचरण चारित्र लिख दिया है यह गलत है। इसलिए संघ में इसे कोई नहीं पढ़ेगा। इस बात को हमेशा ध्यान में रखना जो चौथे गुणस्थान में स्वरूपाचरण को मानते हैं, वह कथमपि समयसार से, प्रवचनसार से, या अनगार धर्मामृत से कहीं भी घटित नहीं होता है।

आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज और भी प्रमाण देते थे, उसे आर्ष परम्परा के सभी विद्वान पुष्ट करते थे। वे कहते थे कि श्री कुन्दकुन्द स्वामी का बनाया हुआ चारित्रपाहुड़ ग्रंथ है, उसमें चारित्र के दो भेद किए हैं-सम्यक्त्वाचरण और संयमाचरण। सम्यक्त्वाचरण को सम्यक्त्वरूप में लिया है जिसमें आठ अंग हो, प्रशम, संवेग, अनुकम्पा, आस्तिक्य ये चारगुण हों, वह सम्यक्त्वाचरण चारित्र है। संयमाचरण चारित्र में उन्होंने 2 भेद किए हैं-देशसंयम, सकल संयम। देशसंयम की व्याख्या अविरत सम्यग्दृष्टि में नहीं घटेगी। पाँचवे गुणस्थान में घटेगी। अविरत सम्यग्दृष्टि यानि चौथे गुणस्थान में सम्यक्त्वाचरण है। संयमाचरण पाँचवे गुणस्थान से शुरू होता है उसमें पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत को लिया है।

यह पंक्ति मैं आपको बताऊँ—

दंसणवय सामाइय पोसह सचित्त रायभत्ते य।
बंभारम्भ परिग्गह, अणुमणमुद्दिट्ठ देसविरदो य।। (चारित्र पाहुड़ गाथा 22, पृ. 82)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पञ्चेवणुव्वयाइं गुणव्वयाइं हवंति तह तिण्णि।
सिक्खावय चत्तारि य सञ्जम चरणं च सायारं।।23।। पृ. 85

पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत, अथवा ग्यारह प्रतिमाएं ये सागार का संयमाचरण है और इसके बाद अनगार का संयमाचरण 28 मूलगुणरूप है। तो सम्यक्त्वाचरण में उन्होंने स्वरूपाचरण को नहीं लिया है। कहने का मतलब ये रहा आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज, आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज एवं इस परम्परा के सभी साधु यह कहा करते थे कि सम्यक्त्वाचरण नाम का आगम में चारित्र आया है स्वरूपाचरण नाम से कोई चारित्र नहीं आया है। सन् 1959-60 में जब संघ में श्री ज्ञानसागर जी मुनि बने थे, वे भी इस विषय पर बहुत अच्छा प्रकाश डालते थे। समयसार आदि के स्वाध्याय में श्री जयसेन स्वामी की टीका ले करके, शुद्धोपयोग को 7वें से स्वीकार करके, आत्म विशुद्धि मात्र जो वीतराग अवस्था है, उसे सातवें से ही घटित करते थे। सबको बहुत अच्छा लगता था। एक बार मैंने श्री ज्ञानसागरजी महाराज से आग्रह किया कि आपकी संस्कृत अच्छी है अतः आप श्री जयसेनाचार्य की तात्पर्यवृत्ति टीका का हिन्दी अनुवाद कर दीजिए। चूँकि उस समय समयसार के जितने भी अनुवाद थे वे सब अमृतचन्द्रसूरि की टीका के अनुवाद थे। इसीलिए खींचतान करके अर्थ का अनर्थ हुआ करता था। तब श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने जयसेनाचार्य की टीका का हिन्दी अनुवाद बहुत अच्छा किया है, जो कि छप चुका है।

उसके अनन्तर मैंने हस्तिनापुर में सन् 1985-86 के बाद समयसार की दोनों टीकाओं का श्रीअमृतचन्द्रसूरि और श्री जयसेनस्वामी की टीकाओं का हिन्दी अनुवाद 'ज्ञानज्योति' की टीका नाम से किया है। उसमें जगह-जगह भावार्थ और विशेषार्थ खोले हैं आगे पीछे का संदर्भ जोड़ा है, जिससे कोई भी अर्थ का अनर्थ न कर सके।

समयसार की भाषा में क्या है? पहले तो ये निश्चय को लेते हैं, फिर व्यवहार को लेते हैं, फिर दोनों का समन्वय करते हैं यह उनकी एक पद्धति है। निश्चय को पकड़कर कोई एकांगी न बन जाए। केवल व्यवहार को समझकर कोई एकांगी न हो जाय, इसलिए फिर उन्होंने समन्वय किया है। मैंने समन्वय परक गाथाएं एक बार निकालकर अलग से छपाई थी। दिल्ली में सन् 1980 में समयसार की वाचना में विद्वानों को दिया था। एक महीने तक वाचना चली, उस समय पं. श्री कैलाशचंद जी शास्त्री भी आये थे। उस वाचना में भाग लिया था और दो दिन उन्होंने भी इसका वाचन किया। पं. श्री जगन्मोहनलाल शास्त्री और अनेक विद्वानों ने भी इसका वाचन किया था। विशेष रूप में पं. श्री पन्नालाल जी साहित्याचार्य को आमंत्रित किया था, वे इसमें प्रमुखरूप से वाचन करते थे।

मैंने निश्चयपरक गाथाएं छाँट-छाँटकर अलग निकाली, व्यवहारपरक गाथाओं को अलग निकाला और समन्वयपरक गाथाएं भी अलग करके दिखाया है। लोगों को बहुत अच्छा लगा। इसमें जगह-जगह गाथाओं में मुनि शब्द आया है, श्रावक शब्द नहीं आया है। इस बात पर भी मैंने प्रकाश डाला था। नियमसार में एक भक्ति नाम का अधिकार है, उसमें श्रावक शब्द और मुनि शब्द दोनों आये हैं। सकल संयमधारी मुनि अर्थात् 28 मूलगुणधारी मुनि में ये सब बातें शुद्धोपयोग की अर्थात् निश्चय की घटित हो जाती हैं। इस प्रकार मैंने आपको स्पष्ट बता दिया कि सम्यक्त्वाचरण और संयमाचरण दो ही अपने यहाँ माने हैं, स्वरूपाचरण को नहीं माना है। छहढालाकार के शब्दों में हम स्वरूपाचरण को लेते भी हैं तो इसमें कोई बाधा नहीं है। 'स्वरूपे आचरणं स्वरूपाचरणं' इन्होंने सातवें गुणस्थान से उसको घटित किया है। इन्होंने बहुत स्पष्ट कहा है—

'यों हैं सकल संयम चरित सुनिए स्वरूपाचरण अब।'

यहाँ तक इन्होंने सकलसंयम का वर्णन मूलगुण और उत्तरगुण रूप से कर दिया है और स्वरूपाचरण को इन्होंने शुक्लध्यान तक केवलज्ञान होने तक पहुँचाया है। इस सब बातों को देखते हुए यह समझ में आता है कि स्वरूपाचरण शब्द शुद्धोपयोग का पर्यायवाची शब्द है जो कि सातवें से शुरू होकर बारहवें तक रहता है और शुद्धोपयोग का फल 13वाँ, 14वाँ गुणस्थान है, जो कि केवली अवस्था में है यह निष्कर्ष निकलता है। इस बात को अच्छी तरह से समझना चाहिए।

वर्तमान में विचार करके देखा जाये कि हम लोग इसको क्यों पढ़ें, जब हम लोग इसके अधिकारी ही नहीं हैं। तो बात यह है कि भावना बहुत बड़ी चीज है। जब हम शुक्लध्यान की भावना, सिद्ध होने की भावना भाते हैं तो समयसार पढ़कर समयसाररूप बनने की भावना क्यों नहीं भा सकते। पिण्डस्थ ध्यान में जब तत्त्वरूपवती धारणा की जाती है तब ऊर्ध्वगमन की भावना भाई जाती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज एकाग्रचिंतानिरोधरूप धर्मध्यान नहीं हो सकता है क्योंकि अपने में इतनी संहनन शक्ति नहीं है। आज धर्मध्यान भी भावनारूप है। आचार्यों ने जगह-जगह कहा है भावना, चिन्तन, अभ्यास यही सब चलते हैं, आज जिसे हम ध्यान कह देते हैं। पिण्डस्थ ध्यान, पदस्थ ध्यान, कोई भी ध्यान हो, आज की भायी गई भावना एक न एक दिन शुक्ल ध्यानरूप परिणत हो सकती है। पाँचवे गुणस्थान तक ये भावना रूप चलेगी। छठे गुणस्थान में अगर भावलिंगी हैं तो छठे, सातवें में परिवर्तन करते रहेंगे। सातवें गुणस्थान में शुद्धोपयोग कहीं-कहीं माना है। आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज कहा करते थे कि सातवें गुणस्थान में दो पाये हैं एक स्वस्थान अप्रमत्त और दूसरा सातिशय अप्रमत्त। सातिशय अप्रमत्त से शुद्धोपयोग शुरू होता है और स्वस्थान अप्रमत्त में शुभोपयोग ही रहता है।

जो भी हो वर्तमान में स्वस्थान अप्रमत्त ही है सातिशय अप्रमत्त नहीं है। अगर हम स्वस्थान अप्रमत्त में भी शुद्धोपयोग को मानें तो कोई आगम से बाधा नहीं आती है क्योंकि जहाँ शुभोपयोग को सातवें से शुरू किया है, वहाँ दो भेद नहीं खोले हैं। कहीं-कहीं खोला है अतः मुनि ही इसके अधिकारी हैं, हम और आप देशव्रती संयमासंयमी गुणस्थान की चरमसीमा को प्राप्त करने वाले इसकी भावना ही भा सकते हैं और भावना भाते ही रहना चाहिए भावना ही एक दिन फलवती होती है।

भावना, अभ्यास, चिन्तन बार-बार उसकी ओर अपना उपयोग लगाना, उसको प्राप्त करने की उत्कट तीव्र अभिलाषा होना ये भी बहुत बड़ी बात है। कभी-कभी मैं प्रवचन में कह दिया करती हूँ कि खेल-खेल में जैसे बालक राजा बन जाते हैं, प्रधानमंत्री बन जाते हैं या खेल के खिलाड़ी बन जाते हैं, कुछ भी बन जाते हैं। ऐसे ही जब आप बार-बार चिंतन करेंगे कि मैं ऊर्ध्वगमन स्वभाव वाला होने से एक समय में ऊर्ध्वगमन करते-करते सिद्धालय में विराजमान हो गया हूँ। जहाँ भगवान महावीर विराजमान हैं, ऐसे सिद्धालय में मेरी आत्मा शुद्ध चिच्चैतन्य स्वरूप आठों कर्मों से रहित विराजमान है। ऐसी भावना भाने से एक न एक दिन वह अभ्यास फलीभूत हो जायेगा। इसीलिए सिद्धभूमियों की वंदना की जाती है। तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों की वंदना की जाती है। तीर्थयात्रा का भी यही अभिप्राय रहता है।

भगवान शांतिनाथ ने हस्तिनापुर में जन्म लेकर राज्य किया और अनेक प्रकार से अपने चक्ररत्न के द्वारा दिग्विजय करके छहखण्डों को जीतकर एक छत्र शासन किया पुनः इसी हस्तिनापुर की भूमि में भगवान शांतिनाथ ने दीक्षा ग्रहण की, दीक्षा ग्रहण करते ही उन्हें मनःपर्ययज्ञान प्रकट हो जाता है। दीक्षा लेते समय इतनी विशुद्धि होती है कि पहले शुद्धोपयोग होता है फिर शुभोपयोग होता है।

किन्हीं भी दीक्षा लेने वाले दिगम्बर जैन साधुओं का भी यह नियम है कि वे पहले सांतवे गुणस्थान में जायेंगे फिर छठे में आयेंगे। जब सामान्य साधुओं के लिए इतनी विशुद्धि मानी गई है तो भगवान तीर्थंकर के लिए कहना ही क्या? जिस भूमि पर भगवान शांतिनाथ ने दीक्षा लेकर मनःपर्ययज्ञान प्राप्त किया और अनेक प्रकार से ध्यान, तपश्चरण किया। पुनः यत्र-तत्र पूरे भारत में विचरण करके इसी हस्तिनापुर की भूमि में वापस आकर सहस्राम्रवन में दिव्य केवलज्ञान प्राप्त किया। ऐसी इस पावन भूमि पर बैठ करके बार-बार यह चिंतन करना चाहिए कि ऐसी शुद्ध अवस्था को एक दिन हम भी प्राप्त करें।

''बोधिः समाधिः परिणाम शुद्धिः, स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्य सिद्धिः।
चिन्तामणिं चिंतित वस्तुदाने, त्वां वंद्यमानस्य ममास्तु देवी!।।''11।। (द्वात्रिंशतिका-सामायिक पाठ)

ये प्रार्थना सरस्वती देवी से हम लोग किया करते हैं। यहाँ कहने का मतलब यह रहा कि जब तक हम शुद्धोपयोग की स्थिति को न प्राप्त कर सके तब तक शुभोपयोग में रहते हुए उस शुद्धोपयोग की भावना भाएं और उसे प्राप्त करने के पुरुषार्थ के लिए बार-बार चिंतन करें कि हे भगवन्! कब वह समय आवे, जब हम शुभोपयोग में रहते हुए अशुभोपयोग से पूर्णरूपेण बचे और शुद्धोपयोग को प्राप्त कर सके।

'विषय कषाय वंचनार्थं पंचपरमेष्ठीनां आराधना।'

पंचपरमेष्ठियों की आराधना, विषय कषाय से अपनी आत्मा को छुड़ाने के लिए बार-बार की जाती है। ऐसी भावना भाते रहें। यही भावना श्रेयस्कर फलीभूत होएगी। इस प्रकार से स्वरूपाचरण के बारे में मैंने कुछ प्रकाश डाला है। इस पर आप चिन्तन करें, विचार करें और आगम के परिप्रेक्ष्य में इस तथ्य को-रहस्य को समझें, यही मेरी मंगल प्रेरणा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवचन-2

जम्बूद्वीप क्या है?

श्रीमते वर्धमानाय नमो नमित विद्विषे।
यज्ज्ञानान्तर्गतं भूत्वा त्रैलोक्यं गोष्पदायते।।

भव्यात्माओं!

आज मैं आपको जम्बूद्वीप में ले चलती हूँ। जम्बूद्वीप क्या है? मध्यलोक में सर्वप्रथम द्वीप का नाम जम्बूद्वीप है। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की बहुत ही सुन्दर रचना बनी है, जिसे दर्शकगण धरती का स्वर्ग कहते हैं और बहुत ही पुलकित होकर दर्शन करके प्रशंसा करते हुए तृप्त नहीं होते। ऐसे जम्बूद्वीप के बारे में शास्त्रीय आधार से मैं आपको बताती हूँ। जम्बूद्वीप 1 लाख योजन विस्तृत थाली के समान गोलाकार वाला है। यह बड़ा योजन है, जिसमें 2000 कोस यानि 4000 मील माने गए हैं, अतः यह जम्बूद्वीप 40 करोड़ मील विस्तार वाला है। इसमें बीचों बीच में सुमेरुपर्वत है। यह सुमेरुपर्वत 1 लाख योजन ऊँचा है। पृथ्वी में इसकी जड़ 1000 योजन मानी गई है और ऊपर 40 योजन की चूलिका है।

अब क्रम से मैं आपको बताती हूँ। सबसे पहले जम्बूद्वीप में 6 पर्वत और 7 क्षेत्र हैं। यद्यपि यहाँ हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप में प्रवेश करते समय सबसे पहले विदेह क्षेत्र आता है। विदेह क्षेत्र से होते हुए सभी लोग सुमेरु पर्वत पर चढ़ते हैं। लेकिन आप इसे दक्षिण से समझेंगे, तो आपको ज्यादा स्पष्ट समझ में आएगा। जम्बूद्वीप के बाहर चारों तरफ घेर करके लवण समुद्र है। जम्बूद्वीप में दक्षिण से पूर्व पश्चिम समुद्र का स्पर्श करते हुए हिमवन, महाहिमवन, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी ये छह पर्वत हैं। हिमवन आदि 6 पर्वतों से जम्बूद्वीप में 7 क्षेत्र हो जाते हैं। सबसे पहले हिमवन पर्वत के दक्षिण में भरत क्षेत्र है। भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत, ऐसे 7 क्षेत्र हैं। तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ में आप सभी पढ़ते हैं-हिमवन आदि छः पर्वतों पर क्रम से पद्म, महापद्म, तिगिंच्छ, केशरी, पुण्डरीक, महापुण्डरीक ऐसे छः सरोवर बने हुए हैं। इन सरोवरों पर बहुत ही सुन्दर कमल खिले हुए हैं। हिमवन पर्वत के पद्मसरोवर में 1 लाख 40 हजार से अधिक कमल हैं। लेकिन एक मुख्य कमल बहुत सुन्दर और विस्तृत है। उस कमल की कर्णिका पर भवन बने हैं। छः मुख्य कमल की कर्णिका पर छः भवनों में श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ये छः देवियाँ रहती हैं और मुख्य कमल के चारों तरफ जो कमल खिले हुए हैं, उनमें देवी के परिवार कमल, जो कि मुख्य कमल से आधे-आधे प्रमाण वाले हैं, उनमें भी भवन बने हुए हैं, उनमें परिवार देवियाँ रहती हैं। ये देवियाँ हमेशा भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में जब तीर्थंकर भगवान माता के गर्भ में आते हैं, तब माता की सेवा के लिए आती हैं।

आप पंचकल्याणक में देखते हैं आठ देवियों के बनाने की परम्परा है। उनमें शान्ति और पुष्टि को और जोड़ देते हैं। विदेह क्षेत्र में, ऐरावत क्षेत्र में भी जब तीर्थंकर भगवान माता के गर्भ में आते हैं, तब ये देवियाँ बड़े उत्साह, भक्ति से, आनन्दपूर्वक, इन्द्र की आज्ञा से माता की सेवा के लिए आती हैं। हस्तिनापुर में आप जम्बूद्वीप में देखे, यहाँ 6 पर्वतों पर 6 सरोवर बने हैं, उनमें कमल पर देवियों के छोटे-छोटे भवन बने हैं और उनमें छोटी-छोटी देवियाँ विराजमान हैं। इन 6 सरोवरों से 14 नदियाँ निकलती हैं। जिनके नाम हैं-गंगा, सिंधु, रोहित, रोहितास्या, हरित, हरिकांता, सीता, सीतोदा, नारी, नरकांता, स्वर्णकूला, रूप्यकूला, रक्ता, रक्तोदा। प्रथम और अन्तिम सरोवर से 3-3 नदियाँ निकलती हैं, बाकी 4 सरोवरों से 2-2 नदियाँ निकलती हैं। इन 14 नदियों में से भरत क्षेत्र में दो नदियाँ आई हैं गंगा, सिंधु और ऐरावत क्षेत्र में दो नदियाँ गई हैं रक्ता रक्तोदा। इनके निमित्त से इन दोनों क्षेत्रों में यानि भरत और ऐरावत क्षेत्र में छः-छः खण्ड हो जाते हैं। इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है — भरतक्षेत्र में बीचों बीच में लम्बा पूर्व और पश्चिम समुद्र को स्पर्श करता हुआ विजयार्ध पर्वत है। जिस पर विद्याधर लोग रहते हैं। विजयार्ध पर्वत के नीचे गुफाएं हैं। चक्रवर्ती जब दिग्विजय के लिए निकलते हैं, तब इन गुफाओं के द्वार को दण्डरत्न से खोलते हैं और छः महीने तक उसमें से अग्नि जैसी भयंकर ज्वाला निकलती है, जब वह ज्वाला शांत हो जाती है, तब उस गुफा से प्रवेश कर चक्रवर्ती विजयार्ध के दूसरी तरफ उत्तर में जाकर तीनखण्ड को जीतते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना में देखें। हिमवन पर्वत के पद्म सरोवर के पूर्व दिशा में सुन्दर तोरण बना हुआ है। तोरण द्वार से गंगा नदी निकलकर नीचे गिरती है और आगे बढ़ती हुई विजयार्ध पर्वत की गुफा से बाहर आ करके सर्पाकार बहती हुई पूर्व लवण समुद्र में प्रवेशकर जाती है। इसी प्रकार पद्म सरोवर के पश्चिम से सिंधु नदी निकलकर नीचे गिर करके विजयार्ध पर्वत की गुफा से आकर पश्चिम में लवण समुद्र में प्रवेश कर जाती है। इस प्रकार विजयार्ध पर्वत के इधर तीन खण्ड और उधर तीन खण्ड हो जाते हैं। यानि गंगा-सिंधु नदी और विजयार्ध पर्वत के निमित्त से भरतक्षेत्र के छः खण्ड हो जाते हैं। इनमें से बीच का आर्यखण्ड और बाकी पाँच म्लेच्छ खण्ड कहलाते हैं। आज का उपलब्ध सारा विश्व इसी भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में है। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में विश्व का नक्शा रखा हुआ है। इस नक्शे में जहाँ भारत लिखा है, वहाँ आप और हम सभी रह रहे हैं। इसी भारत देश में जन्मभूमि अयोध्या नगरी और सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर ये शाश्वत तीर्थ है और बाकी सारे तीर्थ, भगवन्तों की पंचकल्याणक भूमियाँ स्वरूप तीर्थक्षेत्र, अतिशयक्षेत्र सभी भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में है।

एक विशेष बात यह है कि जहाँ पर गंगा, सिंधु आदि नदियाँ गिरी हैं, वहाँ पर बहुत सुन्दर रचना है। वहाँ एक कुण्ड बना है, कुण्ड में छोटा सा पर्वत है, पर्वत के ऊपर गंगा देवी का भवन बना है, गंगा देवी अपने भवन में रहती है, गंगा देवी के भवन की छत पर खिले हुए कमल पर जटाजूट समेत एक अर्हंत भगवान की प्रतिमा विराजमान है। जहाँ से गंगा नदी नीचे की ओर गिरती है वहाँ पर गोमुख का आकार बना हुआ है। यह सभी रचना शाश्वत अनादि निधन अकृत्रिम है, कभी कष्ट नहीं होने वाली, रत्नों से निर्मित है। उस गोमुख द्वार से गंगा नदी निकलकर साक्षात् भगवान के मस्तक पर मूसलाधार, मोटी धारा से गिरती हुई, भगवान का अभिषेक करती हुई विजयार्ध पर्वत की गुफा में जाकर दक्षिण द्वार से निकलकर पूर्व समुद्र में प्रवेश कर जाती है। इसी तरह से सिंधु नदी के नीचे रचना बनी हुई है। वहाँ सिंधु देवी का भवन बना हुआ है। इसी पद्म सरोवर से उत्तर तोरणद्वार से रोहितास्या नदी निकल कर हैमवत क्षेत्र में बहती हुई पश्चिम समुद्र में मिल जाती है। महाहिमवन पर्वत के महापद्म सरोवर से रोहित नदी निकलकर हैमवत क्षेत्र में बहती हुई पूर्व समुद्र में मिल जाती है, ऐसे ही आगे नदियों का क्रम है। 14 नदियाँ इस प्रकार से निकलती है। विदेह क्षेत्र में सीता-सीतोदा नदी है।

अब आप देखिए कि जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र कितना बड़ा है? 1 लाख योजन में 190 का भाग देने पर $526\frac{6}{19}$ योजन भरतक्षेत्र का प्रमाण आता है। भरतक्षेत्र से हिमवन पर्वत दूना, हिमवन पर्वत से हैमवत क्षेत्र दूना, इससे दूना महाहिमवान पर्वत है, इससे दूना हरिक्षेत्र, उससे दूना निषध पर्वत है। इसके बाद आधी-आधी व्यवस्था होकर हिमवन और शिखरी पर्वत का प्रमाण समान है। भरत, ऐरावत का प्रमाण एक समान है।

सृष्टि की रचना के क्रम में बताया है कि षट्काल परिवर्तन भरत और ऐरावत क्षेत्र के आर्यखण्ड में ही होता है। म्लेच्छ खण्ड में पूरा परिवर्तन नहीं होता और न विजयार्ध पर्वत की श्रेणियों में रहने वाले विद्याधरों में होता है। वहाँ केवल चतुर्थ काल के आदि से अन्त तक का परिवर्तन होता है, ऐसी व्यवस्था बनी है।

हैमवत क्षेत्र, हरिक्षेत्र और बीच में विदेह क्षेत्र है उसमें दक्षिण में देवकुरु और उत्तर में उत्तर कुरु है और आगे रम्यक क्षेत्र, हैरण्यवत क्षेत्र, इन छः क्षेत्रों में भोगभूमि की व्यवस्था है। हैमवत क्षेत्र में जघन्य भोगभूमि, हरिक्षेत्र में मध्यम भोगभूमि, देवकुरु में उत्तम भोगभूमि है। इसी तरह से उत्तकुरु में उत्तम भोगभूमि, रम्यक क्षेत्र में मध्यम भोगभूमि और हैरण्यवत क्षेत्र में जघन्य भोगभूमि की व्यवस्था है। ये भोगभूमि की व्यवस्था शाश्वत है, अशाश्वत नहीं है। भरतक्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र के आर्यखण्ड में प्रथम, द्वितीय, तृतीय काल में भोगभूमि की व्यवस्था रहती है। बाकी तीन काल में कर्मभूमि की व्यवस्था रहती है। जो छः भोग भूमि शाश्वत बताई हैं, वे अनादिकालीन हैं, अनन्त काल तक रहेंगी, इनमें कभी परिवर्तन नहीं होता। आदि से अंत तक व्यवस्था ज्यों की त्यों बनी रहती है। जैसे-जघन्य भोगभूमि में 1 कोस का शरीर, 1 पल्य की आयु आदि है।

अब मैं आपको विदेह क्षेत्र ले चलती हूँ, जहाँ पर बहुत सुन्दर व्यवस्था है। पहले मैं सुमेरु पर्वत का वर्णन करती हूँ, जिसका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप प्रतिदिन सामायिक में ध्यान करें, ब्रह्म मुहूर्त में उठकर 5 मिनट सुमेरु का ध्यान करें। इससे असंख्यात गुणी पाप कर्मों की निर्जरा होगी और असंख्यात गुणा पुण्य का आश्रव होगा। महान पुण्य का बंध होगा और एक न एक दिन आप सभी साक्षात् विदेहक्षेत्र में स्थित अकृत्रिम सुमेरु पर्वत का दर्शन कर लेंगे। अगर आपने हस्तिनापुर में सुमेरु पर्वत का दर्शन किया है, तो उसका ध्यान करें। उसको देखते हुए अकृत्रिम सुमेरु पर्वत का चिन्तन करें। अकृत्रिम सुमेरु पर्वत 10 हजार योजन विस्तृत और 1 लाख 40 योजन ऊँचा है। 1000 योजन की नींव है और 40 योजन की चूलिका है। सबसे नीचे भद्रसाल वन है। इसमें बहुत सुन्दर उद्यान-बगीचा है। नाना प्रकार के सुन्दर वृक्ष फूल लगे हैं। यहाँ एक बात ध्यान में रखना है कि यह सब वृक्ष, फल-फूल वनस्पतिकायिक नहीं है प्रत्युत् रत्नों से बने पृथ्वीकायिक है। इस भद्रसाल वन में चारों दिशा में एक-एक विशाल जिनमंदिर है। इनका नाम है त्रिभुवन तिलक जिनमंदिर। उनमें 108-108 जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं। भद्रशाल वन से 500 योजन ऊपर जाकर नंदनवन है। 500 योजन अन्दर प्रवेश करके कटनी है। इसमें भी चारों दिशाओं में 4 जिनमंदिर है। आगे साढ़े बासठ हजार योजन ऊपर जाकर सौमनस वन है। इसका घटने का क्रम बहुत सुन्दर है, चाहे जैसा ऊबड़-खाबड़ आकार से नहीं घटा है, प्रत्युत अणु-अणु के क्रम से घटता हुआ बहुत सुन्दर चिकना है। जैसा कि आप हस्तिनापुर में देखें। साढ़े बासठ हजार योजन ऊपर सौमनस वन है। इसकी कटनी भी अंदर 500 योजन की है। इसमें भी चारों दिशाओं में 4 जिनमंदिर हैं। इसके ऊपर 36 हजार योजन जाकर पांडुकवन है। धीरे-धीरे क्रम से घटता हुआ है। उसकी भी कटनी 494 योजन की है। पाण्डुक वन के चारों दिशाओं में 4 जिनमंदिर हैं। उसके ऊपर 40 योजन की चूलिका है, जो कि नीचे 12 योजन चौड़ी है और ऊपर घटती हुई 4 योजन मात्र रह गई है। 4 योजन भी काफी बड़ा है। अतः चूलिका का अग्रभाग 4000 मील से गुणा करने पर 16000 मील का हो जाता है। पाण्डुकवन में चारों विदिशाओं में 4 शिलाएँ हैं। ईशान में पांडुक शिला, आग्नेय में पांडुकम्बला, नैऋत्य में रक्ता और वायव्य में रक्तकम्बला, ऐसी 4 शिलाएँ हैं। पाण्डुकशिला पर भरतक्षेत्र के भगवान का, पाण्डुकम्बला पर पूर्व विदेह के तीर्थंकरों का, रक्ता शिला पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का, रक्त कम्बला शिला पर पश्चिम विदेह के तीर्थंकरों का जन्माभिषेक किया जाता है।

भरतक्षेत्र जिसका विस्तार $526\frac{6}{19}$ योजन बताया है, इसको हम 4000 मील से गुणा करते हैं, तो 21 लाख 5 हजार 263 मील का क्षेत्र आता है। अर्थात् भरतक्षेत्र बहुत विस्तृत है। जैनभारती, जम्बूद्वीप, त्रिलोक भास्कर पुस्तक में मैंने योजन को मील रूप बना-बना करके स्पष्टरूप से विस्तार से दिया है। इस प्रकार सुमेरु में 16 जिनमंदिर हो गए और सभी में 108-108 जिनप्रतिमाएँ हैं। हस्तिनापुर में सुमेरु में 1-1 प्रतिमाएँ विराजमान हैं। पाण्डुकवन में चारों शिलाएँ दिखाई हैं। समय-समय पर इन शिलाओं पर भगवान का जन्माभिषेक किया जाता है। अकृत्रिम सुमेरु पर्वत लगभग 61 हजार योजन ऊँचाई तक बहुत ही सुन्दर, सर्व वर्ण का, पंचवर्णी, रत्नों से निर्मित है। इसके आगे स्वर्णमयी है। इसकी चूलिका वैडूर्यमणि से निर्मित नीलमरत्न के समान चमकती हुई है। ऐसा यह सुमेरु पर्वत, इसकी वंदना, इसका ध्यान समस्त पापों को नष्ट करके महान पुण्य का सम्पादन कराने वाला है। इसका ध्यान कभी न कभी सुमेरु पर्वत पर जन्माभिषेक कराने का सौभाग्य प्राप्त करा सकता है। आप इतनी भावना अवश्य भायें कि हमें अकृत्रिम सुमेरु पर्वत पर अभिषेक करने का और देखने का सौभाग्य प्राप्त हो। जो व्रती हैं, सम्यग्दृष्टि हैं वे नियम से देव पर्याय को प्राप्त करेंगे और वहाँ जाकर सुमेरु पर्वत पर भगवान का जन्माभिषेक करने का, देखने का अवसर अवश्य प्राप्त करेंगे।

अभी आपने जम्बूद्वीप महामहोत्सव-2005 में सुमेरु पर्वत की पाण्डुकशिला पर शांतिनाथ भगवान का जन्माभिषेक देखा। सुमेरु पर्वत के नन्दन वन, पाण्डुकवन, सौमनस वन के पूर्व दिशा के भगवन्तों का अभिषेक भी दिखाया गया। लोग बहुत प्रसन्न हुए। आस्था चैनल के माध्यम से लाखों, करोड़ों लोगों ने घर बैठे अभिषेक देखा। केवल भारत में ही नहीं विदेशों में भी लोगों ने देखा। जगह-जगह से सूचना प्राप्त हुई। लोग प्रशंसा करते हुए तृप्त नहीं हो रहे थे।

अब हम आपको आगे बताते हैं, सुमेरुपर्वत के नीचे भद्रसाल वन की चारों विदिशा में 4 गजदंत पर्वत है। जो आगे आकर नील और निषध पर्वत का स्पर्श कर रहे हैं। मूल में इनकी ऊँचाई 400 योजन की है। इस गजदंत पर्वत पर भी जिनमंदिर है और देवभवन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भी बने हुए हैं। दो-दो गजदंत पर्वत के बीच में देवकुरु और उत्तरकुरु है। उत्तरकुरु में बहुत ही सुन्दर जम्बूवृक्ष है, जो कि अकृत्रिम अनादिनिधन वनस्पतिकायिक न होकर पृथ्वीकायिक रत्नों से निर्मित है। इसमें जामुन के पत्ते, फूल, फल लगे हुए हैं। इस वृक्ष की उत्तरी शाखा पर एक जिनमंदिर बना हुआ है और 3 शाखाओं पर देवों के भवन हैं, ऐसे ही देवकुरु में बहुत ही सुन्दर शाल्मली वृक्ष है। उसकी दक्षिणी शाखा में जिनमंदिर है और तीन शाखा पर देवों के भवन हैं। इस प्रकार देवकुरु-उत्तरकुरु में जम्बूवृक्ष-शाल्मलि वृक्ष है। हवा के झकोरे से जिनके पत्ते हिलते हैं और फूल सुगंधि युक्त हैं। फल साक्षात् फल के समान है, लेकिन उसे खा नहीं सकते हैं। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप में धातु से बने हुए जम्बूवृक्ष और शाल्मलि वृक्ष हैं। इसमें भी फल लगे हुए हैं, जिन्हें कई बार बंदर तोड़ लेते हैं।

विदेह क्षेत्र में बीचों बीच में सीता नदी बह रही है। हस्तिनापुर में आप जम्बूद्वीप रचना में ध्यान दें, तो देखेंगे कि सीता नदी के आजू-बाजू में चलने के लिए पगडंडी बनाई गई है। सबसे पहले इसमें दीवाल है, जिसे वेदिका कहते हैं। सीतानदी के उत्तर में 4 वक्षार पर्वत है और दक्षिण में 4 वक्षार पर्वत हैं। जिनके नाम हैं क्रमशः-चित्रकूट, नलिनकूट, पद्मकूट और एक शैलकूट। दक्षिण में त्रिकूट, वैश्रवण, अंजन, आत्मांजन। इन वक्षार पर्वत के बीच में 3 विभंगा नदियाँ हैं। विभंगा नदियों के नाम यथास्थान लिखे हुए हैं। इस प्रकार 4 वक्षार पर्वत और 3 विभंगा नदियों के विभाजन से 8 क्षेत्र बन गए। इन 8 क्षेत्रों के नाम इस प्रकार हैं-कच्छा, सुकच्छा, महाकच्छा, कच्छकावती, आवर्ता, लांगलावर्ता, पुष्कला और पुष्कलावती। ये आठ विदेहक्षेत्र सीता नदी के उत्तर में बने हुए हैं। ये विदेहक्षेत्र भरतक्षेत्र की अपेक्षा चौगुने विस्तार वाले हैं। क्योंकि विदेहक्षेत्र तक रचना दूनी-दूनी है। हस्तिनापुर में रचना दूनी-दूनी नहीं ली गई है। क्योंकि बनाने में संभव नहीं थी अतः विदेह क्षेत्र छोटे-छोटे दिख रहे हैं। विदेह क्षेत्र में बीचों बीच में विजयार्ध पर्वत है और नील पर्वत की तलहटी में कुण्ड बने हुए हैं। उन कुण्डों के तोरण द्वार से रक्ता, रक्तोदा नदी निकलकर सीता नदी में प्रवेश कर जाती है। अतः प्रत्येक क्षेत्र के भी छः छः खण्ड हो जाते हैं। 5 म्लेच्छ खण्ड, 1 आर्यखण्ड है। विदेह क्षेत्र में शाश्वत कर्मभूमि रहती है। इस प्रकार से मैंने आपको 8 विदेहक्षेत्र की व्यवस्था बताई है।

जम्बूद्वीप के वर्णन में अब मैं आपको सीतानदी के दक्षिण भाग में ले चलती हूँ। यहाँ पर भी 4 वक्षार पर्वत और 3 विभंगा नदी के निमित्त से 8 विदेह क्षेत्र हो जाते हैं। एक बात बीच में मैं और बता दूँ, जहाँ से हम वक्षार पर्वत को, वत्सा आदि विदेह क्षेत्र को देखते हैं, उसके पहले देवारण्य बने हुए हैं, पश्चिम में भूतारण्य आता है। यानि पूर्व विदेह के अंत में जम्बूद्वीप की जगती (वेदिका) के पास सीता नदी के दोनों किनारों पर रमणीय देवारण्य वन स्थित हैं और पश्चिम विदेह के अंत में जम्बूद्वीप की जगती (वेदिका) के पास सीतोदा नदी के दोनों किनारों पर भूतारण्य वन हैं। इन वनों में सुवर्ण, रत्न, चाँदी से निर्मित वेदी, तोरण, ध्वज पताकादिकों से मंडित विशाल प्रासाद हैं। इन प्रासादों में उपपाद शय्या, अभिषेक गृह, क्रीड़नशाला, जिनभवन आदि विद्यमान हैं।

सीतानदी के दक्षिण भाग में आठ विदेह देश के नाम है—

वत्सा, सुवत्सा, महावत्सा, वत्सकावती, रम्या, सुरम्या, रमणीया, मंगलावती। इनमें भी विजयार्ध पर्वत हैं। प्रत्येक विजयार्ध पर्वत के ऊपर आजू-बाजू में दो-दो कटनी हैं। पहली-पहली कटनी पर आभियोग्य जाति के देव रहते हैं। दूसरी-दूसरी कटनियों पर विद्याधर रहते हैं और तीसरी कटनी यानि सबसे ऊपर समतल भाग पर नौ कूट बने हुए हैं। इनमें एक कूट पर जिनमंदिर और 8 कूटों पर देवों के भवन बने हुए हैं। जम्बूद्वीप में सर्वत्र विजयार्ध पर्वत की यही व्यवस्था है। भरत, ऐरावत क्षेत्र में ऐसे ही विजयार्ध पर्वत है। विदेह क्षेत्र में विजयार्ध पर्वत के नीचे गुफा से और दक्षिण तरफ निषध पर्वत की तलहटी में जो कुण्ड बने हुए हैं, उन कुण्डों से गंगा सिंधु नदी निकलकर विजयार्ध पर्वत की गुफा से होते हुए निकलती हैं, तो इस एक-एक विदेह क्षेत्र के छः छः खण्ड करती हुई सीता नदी में प्रवेश कर जाती है। सब जगह प्रवेश के स्थान पर रत्नों से निर्मित तोरणद्वार बने हुए हैं। उन तोरणद्वारों के अग्रभाग पर सर्वत्र अकृत्रिम जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं। इन जिनप्रतिमाओं को देवगण, मनुष्य, ऋद्धिधारी महामुनि भी नमस्कार करते हैं।

इस प्रकार मैंने आपको पूर्व दिशा के 16 विदेह क्षेत्रों के नाम बताए। अब मैं आपको सुमेरु पर्वत के पश्चिम दिशा में ले चलती हूँ। यहाँ पर सीतोदा नदी के दक्षिण भाग में 4 वक्षार पर्वत हैं, उनके नाम हैं-श्रद्धावान, विजटावान, आशीविष और सुखावह। सीतोदा नदी के दक्षिण भाग में 4 वक्षार पर्वत हैं उनके नाम हैं-चन्द्रमाल, सूर्यमाल, देवमाल और नागमाल। इनमें तीन-तीन विभंगा नदियाँ हैं, अतः 4 वक्षार पर्वत और 3 विभंगा नदियों के निमित्त से सीतोदा नदी के दक्षिण में 8 विदेह क्षेत्र हो गए, जिनके नाम है क्रमशः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मा, सुपद्मा, महापद्मा, पद्मकावती, शंखा, नलिना, कुमुदा और सरित। प्रत्येक क्षेत्र के बीचों बीच में विजयार्ध पर्वत है। निषध पर्वत की तलहटी से गंगा, सिंधु नदी निकल करके सीतोदा नदी में प्रवेश करती हैं। जिससे छः छः खण्ड हो जाते हैं। एक आर्यखण्ड और 5 म्लेच्छ खण्ड। इस आर्यखण्ड में हमेशा तीर्थंकर, चक्रवर्ती, नारायण, प्रतिनारायण आदि महापुरुष जन्म लेते रहते हैं, जो कर्मों को नष्ट कर केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्षपद को प्राप्त कर लेते हैं।

सीतोदा नदी के उत्तर तट में भी आठ क्षेत्र हो जाते हैं-वप्रा, सुवप्रा, महावप्रा, वप्रकावती, गंधा, सुगंधा, गंधिला, गंधमालिनी। वक्षार पर्वत और विभंगा नदी के निमित्त से होने वाले इन 8 विदेह क्षेत्रों में भी प्रत्येक में बीचों बीच में विजयार्ध पर्वत की गुफाओं से बहती हुई.छः छः खण्ड करती हुई सीतोदा नदी लवण समुद्र में प्रवेश कर जाती है।

इस प्रकार से पूर्व और पश्चिम विदेह क्षेत्र में 32 विदेह क्षेत्र हो गए और 32 विदेह क्षेत्र में छः छः खण्ड हो गए। 32 आर्यखण्ड हो गए। इन आर्यखण्डों में आज भी तीर्थंकर, चक्रवर्ती आदि विद्यमान हैं। पूर्व विदेह में पुष्कलावती क्षेत्र के आर्यखण्ड में श्री सीमंधर भगवान का समवसरण है, जो कि हस्तिनापुर के जम्बूद्वीप में चतुर्मुखी प्रतिमा के रूप में छोटा सा दिखाया गया है। सीता नदी के दक्षिण में वत्सादेश में आर्यखण्ड श्री युगमंधर भगवान का समवसरण है।

पश्चिम विदेह में सरित विदेह क्षेत्र में 'श्री बाहु' भगवान का समवसरण है और वप्रा विदेह के आर्यखण्ड में 'श्री सुबाहु' भगवान का समवसरण है। ये 4 समवसरण आज विद्यमान हैं। इन्हें विद्यमान तीर्थंकर या विहरमाण तीर्थंकर कहते हैं। असंख्य देवगण इनकी पूजा भक्ति करते हैं और मुनिगण भी समवसरण में भगवान की भक्ति वंदना करते हैं। शिलालेखों में उत्कीर्ण लेखों से प्रतीत हुआ है और कुछ ग्रंथों में वर्णन आया है, कुछ टीकाकारों ने भी लिखा है कि आज से 2000 वर्ष पूर्व श्री कुन्दकुन्द स्वामी को एक देव उनकी जिनभक्ति से प्रसन्न होकर विमान में बिठाकर विदेह क्षेत्र में ले गया था, वहाँ पर श्री कुंदकुंद देव ने सीमंधर भगवान के समवसरण में पहुँचकर भगवान का दर्शन किया। वहाँ पर 500 धनुष शरीर की अवगाहना है। यहाँ भरतक्षेत्र में भी भगवान श्री आदिनाथ के समय 500 धनुष की अवगाहना, कोटि पूर्व की आयु आदि थी। विदेह क्षेत्र में श्री कुन्दकुन्द स्वामी को वहाँ के मनुष्य ने हाथ पर रख लिया और प्रश्न किया-हे भगवन्! यह इलायची के बराबर मनुष्य के समान कौन है? तब भगवान ने बताया कि यह भरतक्षेत्र से आए हुए हैं, इनका श्री कुन्दकुन्द नाम है ये एक महानुनि आचार्य हैं। उस समय से उनका नाम एलाचार्य पड़ गया, ऐसा वर्णन आता है।

श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने साक्षात् भगवान के मुख से जो सुना वह अष्टपाहुड़, समयसार आदि ग्रंथों में वर्णित किया है तथा इन्होंने 84 पाहुड़ लिखे। आज 84 पाहुड़ तो उपलब्ध नहीं है। पर इनके द्वारा लिखित समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पंचास्तिकाय, रयणसार और अष्टपाहुड़ आदि ग्रंथ उपलब्ध है। इन ग्रंथों में से 108 गाथा साररूप में छाँटकर मैंने 'कुन्दकुन्द मणिमाला' नाम से एक छोटी सी पुस्तक बनाई है। इनके द्वारा लिखित मूलाचार ग्रंथ मुनियों के लिए और 'रयणसार' ग्रंथ श्रावकों के लिए बहुत प्रसिद्ध और उपयोगी है। अष्टपाहुड़ ग्रंथ में मुनि और श्रावक सभी के लिए उपयोगी बहुत ही सुन्दर वर्णन आया है। समयसार ग्रंथ तो अध्यात्म शिरोमणि, महासाधुओं के पढ़ने का ग्रंथ है। आज कुछ अव्रतियों ने, कुछ पण्डितों ने, कतिपय विद्वानों ने और कानजी भाई ने इसे पढ़कर निश्चयाभासी बनकर अनर्थ कर डाला। इन्होंने अर्थ का अनर्थ करके शास्त्र को शस्त्र बना दिया। वे निश्चयाभासी बन गए। सोनगढ़ एक पंथ बन गया, जिसे कानजी पंथ कहते हैं। इन लोगों ने मुनियों को नमस्कार नहीं किया। मुनियों को द्रव्यलिंगी, पाखण्डी, ढोंगी कहा। और यहाँ तक कह दिया कि यह सभी मुनि नरक जायेंगे और जो इन मुनियों को आहार देंगे, वे गर्भ में गल-गल कर मरेंगे। यानि गर्भ में ही उनका मरण हो जायेगा......आदि कटु शब्दों का प्रयोग किया। जिन्होंने वर्तमान में किसी पिच्छीधारी को नमस्कार नहीं किया, स्वयं प्रतिमा रूप व्रत ग्रहण नहीं किया। प्रतिमाधारी अगर वहाँ जाते हैं, तो वे प्रतिमा छोड़कर अव्रती बन जाते हैं।

मैं बता रही थी समयसार ग्रंथ अध्यात्म का सर्वोत्तम ग्रंथ है। इसमें निश्चयपरक एवं व्यवहारपरक गाथाएँ हैं और समन्वयपरक गाथाएँ भी हैं। मैंने एक बार दिल्ली में सन् 1980 में इस ग्रंथ पर एक महीने वाचना रखी, जिसमें पं. श्री कैलाशचंद जी, पं. श्री जगन्मोहनलाल जी, पं. श्री कुंजीलाल जी, पं. श्री पन्नालाल जी साहित्याचार्य आदि अनेक विद्वान पधारें। विद्वानों के सामने जब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाचना हुई, तब मैंने व्यवहारपरक गाथाओं को अलग से उद्धृत किया था, निश्चयपरक गाथाओं को अलग छांटा था, समन्वय परक गाथाओं को अलग लिया था। यह समयसार एक महान ग्रंथ है। समस्याओं से घिरे, आर्तरौद्र ध्यान से घिरे श्रावक हों या साधु, जिन्हें मानसिक अशान्ति हो, रुग्ण अवस्था हो या सल्लेखना का समय हो, इस समयसार ग्रंथ का अध्यात्म ही काम आता है।

''अहमिक्को खलु शुद्धो, दंसणणाण मइयो सदा रूवी।
णवि अत्थि मज्झ किंचिवि, अण्णं परमाणु मित्तंपि।।''

अर्थात् मैं एक हूँ, शुद्ध हूँ, ज्ञानदर्शन स्वरूपी हूँ, अमूर्तिक हूँ। अन्य परमाणु मात्र भी मेरा नहीं है। यह अध्यात्म चिन्तन मैंने स्वयं अनुभव किया है। समयसार ग्रंथ की ज्ञानज्योति नाम से हिन्दी टीका, अनुवाद भी मैंने किया है। समयसार का सार भी लिखा है। श्री अमृतचन्द्रसूरि और श्री जयसेनसूरि दोनों आचार्यों की टीका का हिन्दी अनुवाद करके अच्छी तरह से मैंने निश्चय-व्यवहार का समन्वय किया है। उसको पढ़कर आप निश्चित ही निश्चयाभासी नहीं बनेंगे और न व्यवहाराभासी बनेंगे। बल्कि दोनों नयों का समन्वय करते हुए अपनी चर्या को आगम के अनुकूल ढाल करके आत्म चिन्तन करेंगे। यह समयसार निश्चयनय की अपेक्षा आत्मा को शुद्ध बता करके, भगवान बता करके ध्यान करने की प्रेरणा देता है और संकट की घड़ी में शरीर से मोह को हटाता है, कम करता है। रुग्ण अवस्था में बहुत ही उपयोगी महान औषधि, महान रसायन है। मेरा स्वयं का अपना अनुभव है और सभी साधुगण इसका अनुभव करते हैं। व्यवहार के अनुसार अपनी चर्या, अपनी क्रिया में सावधान रहना चाहिए और निश्चयनय से अपनी आत्मा का चिंतन करना चाहिए, यही समयसार का सार है।

मैं आपको 32 विदेहों के बारे में बता रही थी, जहाँ शाश्वत कर्मभूमि है। वहाँ पर किसी प्रकार का कभी परिवर्तन नहीं होता है। वहाँ भूकंप, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि अनेक प्रकार के प्राकृतिक प्रकोप नहीं आते हैं। आप सोचेंगे, ऐसे विदेह क्षेत्र में हम जन्म ले लें। लेकिन ध्यान रखना सम्यग्दृष्टि नियम से देवायु को ही बांधता है। देवगति में ही जन्म लेता है। अगर बद्धायुष्क यानि पहले उसने नरक की आयु बांध ली, फिर सम्यग्दृष्टि बना, तो पहले नरक तक ही जायेगा, नीचे नरक में नहीं और अगर तिर्यंच आयु बांध ली है, तो भोगभूमि का तिर्यंच होगा। इसी तरह अगर पहले मनुष्य आयु बांध ली, फिर सम्यग्दृष्टि बना, तो भोगभूमि का मनुष्य होगा, कर्मभूमि का नहीं। अगर आप विदेह क्षेत्र जाना चाहते हैं, तो सम्यग्दर्शन छोड़कर मिथ्यादृष्टि बनकर जाना होगा। लेकिन ऐसी गलती आप कभी नहीं करना। क्योंकि सम्यग्दृष्टि होकर आप नियम से, अगर आयु नहीं बांधी है, तो देवायु बाधेंगे, स्वर्ग में देवपद प्राप्त करेंगे और वहाँ से विदेह क्षेत्र जाकर सारा नजारा देख सकते हैं। वहाँ केवली भगवन्तों के दर्शन करके, साक्षात् सीमंधर भगवान के समवसरण में दर्शन करके उनकी सारी वाणी सुनकर अपने जीवन को सार्थक करेंगे।

32 विदेहों में शाश्वत कर्मभूमि है और भरत, ऐरावत क्षेत्र में अशाश्वत कर्मभूमि है। भोगभूमि के बारे में मैंने आपको बताया है कि जघन्य भोगभूमि में 1 कोस ऊँचा शरीर और 1 पल्य की आयु आदि है और भोगभूमि में 10 प्रकार के कल्पवृक्ष हैं। उन कल्पवृक्षों से भोग्य सामग्री मिल जाती है। वहाँ कोई व्यापार, काम धंधा नहीं है। कदाचित्-क्वचित् उनके पुण्य कर्म के उदय से कोई चारण ऋद्धिधारी मुनि पहुँच गए और उन्हें सम्बोधन करके उन्हें सम्यक्त्व ग्रहण करा दे, यह तो संभव है पर वहाँ व्रत संभव नहीं है, कोई व्रती नहीं बन सकते हैं। सम्यग्दृष्टि बन सकते हैं। वहाँ पर किसी को जाति स्मरण से सम्यक्त्व हो जाता है, किसी को गुरुओं के उपदेश से और किसी को आपस में धर्मचर्चा करने से सम्यग्दर्शन हो जाता है। जिनबिंब दर्शन का प्रसंग उन्हें नहीं प्राप्त हो पाता है, क्योंकि उनके न तो कोई ऋद्धि है और न कहीं इधर-उधर जा सकते हैं। भोगभूमि खासकर वही लोग जाते हैं, जो सत् पात्रों को दान देते हैं लेकिन जिनके सम्यक्त्व नहीं है, भद्रजीव हैं, मंदकषायी हैं, जो भव्यात्मा गुरुओं को आहार देते हैं वे विशेष पुण्य करके भोगभूमि में जन्म लेते हैं।

आगे मैं आपको बताती हूँ। शाश्वत भोगभूमि 6 हैं और शाश्वत कर्मभूमि 32 हैं। इनके अतिरिक्त जहाँ अशाश्वत कर्मभूमि हैं, जहाँ षट्काल परिवर्तन की व्यवस्था है, वहाँ मैं आपको ले चलती हूँ। भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में जहाँ हम और आप रह रहे हैं, यहाँ शाश्वत तीर्थ अयोध्या है, जो कि अनन्तानन्त तीर्थंकरों की जन्मभूमि हो चुकी है, वर्तमान में यहाँ पर 5 तीर्थंकरों ने जन्म लिया है, श्री ऋषभदेव, श्री अजितनाथ, श्री अभिनंदननाथ जी, श्री सुमतिनाथ और श्री अनन्तनाथ। बाकी शेष तीर्थंकरों की जन्मभूमि अन्यत्र हो गई। यह हुण्डावसर्पिणी काल का दोष है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं आपको हुण्डावसर्पिणी काल के दोष के बारे में और बताती हूँ-असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी बीत जाने के बाद कहीं एक हुण्डावसर्पिणी काल आता है। इसमें सुषमा-दुषमा नामक तृतीय काल की स्थिति में कुछ काल अवशेष रहने पर ही वर्षा आदि पड़ने लगती है। विकलत्रय यानि दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति होने लगती है। तृतीय काल के अंत में ही कल्पवृक्षों का अभाव होने लगता है। कर्मभूमि प्रारंभ हो जाती है। तृतीयकाल में 14 कुलकर उत्पन्न हो जाते हैं। प्रथम तीर्थंकर और प्रथम चक्रवर्ती भी उत्पन्न हो जाते हैं। इस हुण्डावसर्पिणी काल के दोष से चक्रवर्ती का विजय भंग हो जाता है। जैसा कि आप जानते होंगे कि भगवान बाहुबली, श्री ऋषभदेव के द्वितीय पुत्र, अद्वितीय कामदेव भी थे। इन्होंने भरत चक्रवर्ती के शासन को नहीं स्वीकारा। 6 खण्ड पृथ्वी को जीतने के बाद भी भरत चक्रवर्ती का चक्ररत्न अयोध्या के बाहर ही खड़ा रह गया। लोग भले ही भरत जी को दोष दें, पर भरत जी का इसमें कोई दोष नहीं। वह कर भी क्या करते थे, कब तक बाहर बैठे रहते, जब तक चक्ररत्न अन्दर प्रवेश नहीं करता, तब तक साम्राज्य पट्ट पर, चक्रवर्ती पद पर उनका अभिषेक नहीं हो सकता था। 32 हजार मुकुटबद्ध राजा उस समय यह दृश्य देख रहे थे, क्यों चक्ररत्न अयोध्या में प्रवेश नहीं कर रहा है और जब यह ज्ञात हुआ कि उनके भाइयों ने अभी उनकी आधीनता स्वीकार नहीं की है। इसलिए चक्ररत्न अन्दर प्रवेश नहीं कर रहा है, तब भरत ने पहले अपने 99 भाइयों के पास संदेश भेजा। संदेश सुनकर सभी भाई विरक्तमना होकर आपस में बोले हम चक्रवर्ती के साम्राज्य काल में उनके शासन में नहीं रहेंगे और स्वाभिमानपूर्वक भगवान श्री ऋषभदेव के समवसरण में जाकर दीक्षा ले ली। जब बाहुबली के पास दूत गया। तब बाहुबली भरत जी की आधीनता न स्वीकार कर युद्ध के लिए तैयार हो गए।

मंत्रियों ने जब युद्ध के बारे में सुना, तो उन्होंने आपस में मंत्रणा की कि यह युद्ध व्यक्तियों के विनाश के लिए होगा। क्योंकि ये दोनों चरमशरीरी हैं और तद्भव मोक्षगामी है अतः उन्होंने तीन युद्ध-दृष्टि युद्ध, जल युद्ध और मल्ल युद्ध निर्धारित किए। इन तीनों ही युद्ध में भरत जी हार गए। क्योंकि भरत के शरीर की ऊँचाई 500 धनुष थी और बाहुबली की 525 धनुष थी। यह हुण्डावसर्पिणी काल का ही दोष है जो कि चक्रवर्ती का विजयभंग हुआ। भरत ने बाहुबली पर चक्र चला दिया। उस समय प्रजा ने उन्हें खूब धिक्कारा, लेकिन चक्रवर्ती करते क्या? कब तक बाहर बैठे रहते। लेकिन यह नियम है कि चक्ररत्न अपने वंशज पर नहीं चलता है अतः वह चक्ररत्न कामदेव बाहुबली की परिक्रमा देकर उनके हाथ में ठहर गया। लेकिन बाहुबली चक्रवर्ती तो बन नहीं सकते थे अतः यह सब देखकर बाहुबली को उसी क्षण वैराग्य हो गया, उन्होंने बारह भावनाओं का चिन्तन करते हुए महल में जाकर अपने पुत्र को राज्य दिया और जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर एक वर्ष का योग धारण कर लिया।

लोग कहते हैं कि बाहुबली जी को शल्य थी, वे एक पैर पर खड़े थे और यह सोच रहे थे कि मैं भरत की भूमि पर खड़ा हूँ, यह बात बिल्कुल गलत है। क्योंकि शल्य तीन है-मिथ्यात्व शल्य, मायाशल्य और निदान शल्य। ये तीनों ही शल्य बाहुबली में नहीं थी। महापुराण में बताया है कि उन्हें कभी-कभी यह विकल्प आ जाता था कि मेरे द्वारा भरत का अपमान हो गया है, उन्हें क्लेश हो गया। इसी कारण से वे शुक्ल ध्यान को प्राप्त नहीं कर पाये थे। वे अपने धर्मध्यान में छठे, सातवें गुणस्थान में उतरते चढ़ते रहे। उनके सभी ऋद्धियाँ प्रगट हो गईं, मनःपर्ययज्ञान हो गया। यह सब भावलिंगी मुनि के ही होता है, द्रव्यलिंगी और शल्य वाले मुनि को ऋद्धि प्रगट नहीं हो सकती है। तत्त्वार्थसूत्र में एक सूत्र आया है-'निःशल्योव्रती' निःशल्य ही व्रती होता है। फिर बाहुबली तो महाव्रती थे, उनके शल्य नहीं, विकल्प था। एक वर्ष बाद भरत आकर उन्हें नमस्कार करते हैं उनकी पूजा करते हैं, बस उसी क्षण इनका विकल्प दूर हो जाता है, एक वर्ष का ध्यान पूर्ण हो जाता है और वे एकदम शुक्लध्यान में आरोहण करके केवली बन जाते हैं।

इस प्रकार मैंने आपको बताया हुण्डावसर्पिणी काल के दोष के कारण चक्रवर्ती का मानभंग हुआ और चक्रवर्ती के द्वारा ब्राह्मण वर्ण की उत्पत्ति-अर्थात् चतुर्थ वर्ण की स्थापना हुई। 32 विदेह क्षेत्रों में तीन वर्ण ही हैं, ब्राह्मण वर्ण नहीं है। और भी जैसे 363 पाखण्ड मत भगवान श्री ऋषभदेव की दीक्षा के समय बन गए। आप जानते होंगे, जब भगवान श्री ऋषभदेव ने प्रयाग में जाकर वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा ली, उस समय 4000 राजाओं ने भी दीक्षा ले ली थी। भगवान ने तो 6 महीने का योग ले लिया था, पर वे राजागण मुनि अवस्था में भूख प्यास को अधिक दिन तक झेल नहीं पाए, तो झरने का पानी पीने लगे, वन के फल खाने लगे, तब वनदेवता ने उन्हें मना किया, कि आप इस जिनमुद्रा में अनर्गल प्रवृत्ति नहीं कर सकते। तब उन लोगों ने नाना प्रकार के वेश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बना लिए। उसी समय से 363 पाखण्ड मत चल गये और न जाने कितने भेद-प्रभेद हो गए, आज तो हजारों-हजारों मत हो गए हैं और भी जैसे हमेशा 63 शलाकापुरुष होते थे। लेकिन इस बार 58 ही हुए। क्योंकि सोलहवें, सत्तरहवें और अट्ठारहवें तीर्थंकर चक्रवर्ती भी थे। इसके अतिरिक्त नौंवे तीर्थंकर पुष्पदंत से लेकर धर्मनाथ तक सात तीर्थंकर के तीर्थकाल में धर्म का व्युच्छेद हो गया। यानि चतुर्विध संघ-मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका, श्रावक-श्राविका नहीं रहे। 11 रुद्र, कलह प्रिय 9 नारद की उत्पत्ति भी हुण्डावसर्पिणी काल का दोष है। श्री पारसनाथ आदि तीर्थंकरों पर उपसर्ग होना भी काल का दोष है। नाना प्रकार के वेषधारी, कुलिंगी, अनेक प्रकार के चण्डी-मुण्डी के मंदिर बन जाना यह सब भी काल दोष से है। यह बात हमेशा ध्यान रखना आज जो द्रव्य मिथ्यात्व दिख रहा है, यह काल दोष से है। भाव मिथ्यात्व तो सब जगह है-स्वर्ग में, नव ग्रैवेयक तक, नरकों में, 32 विदेहों में, भोगभूमि में सर्वत्र है लेकिन द्रव्य मिथ्यात्व नहीं है।

एक बात मैं आपको और बताऊँ, जो आज अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकंप, वज्राग्नि, दावानल आदि अग्नि का प्रकोप और अनेक प्रकार के आतंक होते हैं, यह सब भी कालदोष के कारण है। काल दोष से ही हस्तिनापुर में तीन तीर्थंकर जन्में, बनारस में दो तीर्थंकर जन्में और तीर्थंकर अन्यत्र जन्में। 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियाँ हो गई हैं। इनमें से कालदोष के कारण ही कुछ अविकसित हैं, कुछ जन्मभूमियों की हालत ऐसी दयनीय हो गई है, जिसे देखकर मन में बहुत कष्ट होता है। तीर्थंकरों की जन्मभूमि के विकास के लिए ही मैंने तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समिति भी बनाई है। इस समिति के माध्यम से जन्मभूमि का विकास कार्य चल रहा है। तत्काल में अयोध्या, कुण्डलपुर आदि अनेक तीर्थों का विकास हुआ है। भगवान श्री पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी जो कि अत्यन्त जीर्ण अवस्था में है, जहाँ यात्री न के बराबर जाते हैं, अभी जहाँ मूर्ति चोरी हो गई थी, वहाँ मैंने शिलान्यास करवा कर भक्तों को संकल्प कराया कि आप श्री पुष्पदंतनाथ भगवान की जन्मभूमि का विकास करें। निकट भविष्य में उसका विकास होगा। काल दोष के कारण ही 24 तीर्थंकरों की 5 निर्वाणभूमि बन गईं, जबकि सम्मेदशिखर शाश्वत निर्वाणभूमि है। हमेशा वहीं से सभी तीर्थंकर मोक्ष जाते हैं, लेकिन वर्तमान में 20 तीर्थंकर मोक्ष गएं हैं। श्री ऋषभदेव, भरत, बाहुबली, कैलाशपर्वत से मोक्ष गए हैं। बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य चम्पापुरी से मोक्ष गए। श्री महावीर स्वामी पावापुरी से, श्री नेमिनाथ भगवान गिरनार पर्वत से मोक्ष गए।

पृथ्वी पर जो भूकंप आदि आते हैं उनमें एक कारण और भी है अत्यर्थ हिंसा। आज कई कत्ल खाने बन गए हैं। जब वहाँ से पशुओं की भयंकर चीत्कार उठती है, तो पृथ्वी कांप उठती है। जब अधिक पाप होता है, तो पृथ्वी कांप उठती है इसलिए भूकंप आदि दुर्घटनाएँ होती है।

अब मैं आपको जम्बूद्वीप के 78 जिनमंदिरों का दर्शन कराऊँगी। मध्यलोक में जम्बूद्वीप से लेकर तेरहवें द्वीप तक 458 जिनमंदिर हैं। जम्बूद्वीप में 78 अकृत्रिम जिनमंदिर हैं, सुमेरु में 16 जिनमंदिर है-4 भद्रसाल वन के, 4 नंदनवन के, 4 सौमनस वन के और 4 पाण्डुक वन के, सब मिलाकर 16 जिनमंदिर हुए। 1 जम्बूवृक्ष और 1 शाल्मलि वृक्ष को मिलाकर 18 हुए 4 गजदंत पर्वत के ऐसे 22 हुए 16 वक्षार पर्वत के जिनमंदिर, और 34 विजयार्ध के और 6 कुलाचल-हिमवन, महाहिमवन, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी ये सब मिलाकर 78 जिनमंदिर जम्बूद्वीप में हैं।

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप में जो आपको अनेकों जिनमंदिर दिखते हैं, उन्हें आप ध्यान से देखें तो उनमें 78 जिनमंदिर हैं बाकी देवभवन हैं उन देवभवनों में भी जिनमंदिर हैं। जैसे हिमवन पर्वत पर 11 कूट माने हैं, उन पर एक जिनमंदिर हैं, जिसे सिद्धकूट कहते हैं और बाकी 10 कूटों पर देवों के भवन हैं, उन भवनों पर जिनमंदिर दिखाए गए हैं जिन्हें गृह चैत्यालय कहते हैं। महाहिमवन पर्वत पर 8 कूट माने हैं, उनमें 1 सिद्धकूट और 7 देवभवन और उन पर जिनमंदिर हैं। निषध पर्वत पर 9 कूट हैं, उनमें 1 सिद्धकूट और बाकी देवभवन हैं। ऐसे ही नील, रुक्मी, शिखरी पर्वत पर जिनमंदिर और देवभवन दिखाए गए हैं। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप में कुल मिलाकर 78 जिनमंदिर और 123 देवभवन बने हैं। जम्बूद्वीप के प्रवेश द्वार में एक अनावृत यक्ष का देवभवन बना हुआ है, जिसमें ऊपर जिनप्रतिमा विराजमान हैं। नीचे अनावृत यक्ष-यक्षिणी सहित बैठे हुए हैं। यह जम्बूद्वीप के रक्षक अनावृत यक्ष माने गए हैं और दूसरी तरफ क्षेत्रपाल विराजमान हैं।

इस प्रकार जम्बूद्वीप के 78 जिनमंदिर और 123 देवभवनों के ऊपर जिनमंदिर, उनमें जिनप्रतिमाएँ, उन्हें आप नमस्कार करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यहाँ पर भगवान के 6 समवसरण भी दिखाए गए हैं। विदेहक्षेत्र में श्री सीमंधर, श्री युगमंधर, श्री बाहु और श्री सुबाहु इन 4 तीर्थंकरों के समवसरण और भरतक्षेत्र में भगवान श्री ऋषभदेव का समवसरण, ऐरावत क्षेत्र में श्री बालचंद्र तीर्थंकर का समवसरण दिखाया गया है। यहाँ केवल चतुर्मुखी प्रतिमा दिखाई गई है। इन छः समवसरण में विराजमान भगवन्तों को भक्तिपूर्वक नमस्कार करें।

अब आपको यह बात स्पष्ट समझना है कि जैसे भरतक्षेत्र में षट्काल परिवर्तन चल रहा है, उसी प्रकार ऐरावत क्षेत्र में भी षट्काल परिवर्तन हो रहा होगा। ऐरावत क्षेत्र में भी इस समय पंचमकाल होगा, ऐसा मेरा अनुमान है। चूँकि एक कथा आती है, जिसके माध्यम से मैंने यह निष्कर्ष निकाला है कि श्रीकृष्ण के समय द्रौपदी का अपहरण हुआ। अपहरण एक देव ने किया, वह देव द्रौपदी को धातकीखण्ड के भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में ले गया, तो इसका मतलब यह है कि द्रौपदी के शरीर की अवगाहना प्रमाण ही वहाँ का राजा था। अतः यह निश्चित है धातकी खण्ड के भरत और ऐरावत क्षेत्र में, पुष्करार्ध द्वीप के भरत और ऐरावत क्षेत्र में भी षट्काल परिवर्तन यहाँ के समान ही चलता रहता है। वर्तमान में जैसी स्थिति यहाँ है, वैसी स्थिति वहाँ होना संभव है।

इस प्रकार से सृष्टि रचना के क्रम में मैंने आपको 170 कर्मभूमि बताई। पूरे ढाई द्वीप में 170 कर्मभूमि हैं, जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र, ऐरावत क्षेत्र और 32 विदेहक्षेत्र को मिलाकर 34 कर्मभूमि हैं। ऐसे ही पूर्वधातकी खण्ड में 34 कर्मभूमि, पश्चिम धातकी खण्ड में 34, पूर्व पुष्करार्ध द्वीप में 34, पश्चिम पुष्करार्ध में 34 सब मिलाकर 170 कर्मभूमि हैं। जिसमें विदेह क्षेत्र की 160 शाश्वत कर्मभूमि हैं। भरत और ऐरावत की 10 अशाश्वत कर्मभूमि हैं। जम्बूद्वीप में बाकी भोगभूमि की व्यवस्था है।

इस प्रकार से मैंने जम्बूद्वीप के बारे में आपको बताया। जंम्बूद्वीप के दर्शन, वंदन से महान पुण्य का बंध होता है। मैं समझती हूँ—

'अजानतस्त्वां नमतः फलं यत्, तज्जानतोऽन्यं न तु देवतेति।
हरिन्मणिं काचधिया दधानस्तं तस्य बुद्ध्या वहतो न रिक्तः।।

तीर्थ हस्तिनापुर में जैनेतर बंधु या कोई भी लोग आते हैं पर्यटन की दृष्टि से, मनोरंजन की दृष्टि से आकर घूमते है और यूँ ही हाथ जोड़ लेते हैं या फिर ऐसे ही दर्शन करते हैं तो भी बिना जाने, बिना देखें भी उनको पुण्य का बंध हो जाता है। जैसे मिश्री, शक्कर को बिना रुचि के भी खाने पर या कोई जबरदस्ती खिला दे, तो भी इसका स्वाद मीठा ही आता है, ऐसे ही तीर्थ दर्शन का फल अच्छा ही मिलता है। यह जम्बूद्वीप सदा काल स्थिर रहे और आप सभी इसकी वंदना करके पुण्य का संचय करते रहें, यही मेरा मंगल आशीर्वाद है।

आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर महाराज कहते थे —

पारसमणि तो लोहे को सोना बनाता है, पारसरूप नहीं बनाता। किन्तु ज्ञानमती माताजी वह पारस हैं, जो लोहे को सोना ही नहीं किन्तु पारस बना देती हैं। प्रत्युत् "निज सम की बात तो जाने दो, निज से महान कर देती हैं।" अर्थात् अपने ब्रह्मचारी शिष्यों को मुनि पद दिलाकर उन्हें नमस्कार करके असीम उदारता एवं आगमनिष्ठता का परिचय प्रदान करती हैं।

मई १९८८, लूणवां (राज.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवचन-3

आर्यिकाओं की नवधाभक्ति आगमोक्त है

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि साधवो मम मंगलम्।।

भव्यात्माओं! मैं आर्यिका की चर्या के बारे में आपको बताती हूँ। आर्यिकाएँ यद्यपि उपचार से महाव्रती हैं फिर भी वे अट्ठाईस मूलगुणों को धारण करती हैं, नवधाभक्ति की पात्र हैं और सिद्धांत ग्रंथ आदि को पढ़ने का, लिखने का उन्हें अधिकार है। इस विषय पर मैं आपको आगम के परिप्रेक्ष्य में बताती हूँ—

चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की परम्परा में जो दीक्षाविधि मुनियों की मानी है, वही दीक्षा विधि आर्यिकाओं की भी मानी है। जिस प्रकार मुनियों के 28 मूलगुण होते हैं, उसी प्रकार आर्यिकाओं के भी 28 मूलगुण माने हैं। दीक्षा के समय जो संस्कार मुनियों पर किए जाते हैं, वही आर्यिकाओं पर भी किए जाते हैं।

एक बार किसी ने आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से प्रश्न किया कि आर्यिकाओं के तो 26 मूलगुण ही हैं क्योंकि वे वस्त्र रखती हैं और बैठकर आहार करती हैं। तब आचार्यश्री ने कहा कि बैठकर आहार करना और दो साड़ी मात्र परिग्रह रखना यह उनका मूलगुण है अतः आर्यिकाओं के 26 मूलगुण न होकर 28 मूलगुण ही हैं। आचारसार ग्रंथ में लिखा है—

देशव्रतान्वितैस्तासामारोप्यन्ते बुधैस्ततः।
महाव्रतानि सज्जाति ज्ञप्त्यर्थमुपचारतः।।89।। (आचारसार)

गणधर आदि देवों ने आर्यिकाओं की सज्जाति आदि को सूचित करने के लिए उनमें उपचार से महाव्रत का आरोपण करना बताया है। यही कारण है कि ग्रंथों में महाव्रत पवित्रांगा, संयता, संयतिका आदि शब्दों का प्रयोग आर्यिका के लिए आया है और उन्हें मुनियों के समान पूज्य माना है। सागारधर्मामृत में आया है—

कौपीनेऽपि समुर्च्छत्वान्नार्हत्यार्यो महाव्रतम्।
अपि भाक्तममूर्च्छत्वात् साटकेऽप्यार्यिकार्हति।।36।। (सागार, पृ. 518)

अहो! आश्चर्य है, ऐलक लंगोटी में ममत्व परिणाम होने से उपचार से महाव्रती नहीं हो सकता किन्तु आर्यिकाएं साड़ी मात्र परिग्रह होते हुए भी उसमें ममत्व रहित होने से उपचार से महाव्रती कहलाती हैं। आर्यिकाएं ऐलक के द्वारा पूज्य मानी गई हैं। ऐलक देशव्रती ही माने गए हैं। आगम के परिप्रेक्ष्य में जैसा गुरुओं ने मुझे बताया है उसी का मैंने प्रमाण दिया है। मूलाचार ग्रंथ में भी लिखा है—

एसो अज्जाणं पिय सामाचारो जहाक्खिओ पुव्वं।
सव्वह्मि अहोरत्ते विभासिदव्वो जधाजोग्गं।।187।।(मूलाचार)

जितनी समाचारी विधि का वर्णन मुनियों के लिए किया है, उतनी ही समाचारी विधि आर्यिकाओं के लिए भी है। अहोरात्र, सभी काल में उन्हें ये सभी क्रियाएं विधिवत् करनी चाहिए। 'जहा जोग्गं' का अर्थ टीकाकार ने किया है 'यथायोग्य' अर्थात् वर्षा ऋतु में, वृक्ष के नीचे आतापन आदि जो योग हैं इन योगों को छोड़ करके तथा दिन में सूर्य की तरफ मुख करके खड़े होना, प्रतिमायोग आदि धारण करना, इन्हें छोड़कर बाकी सभी क्रियाएँ मुनियों के समान हैं। आचारसार में भी कहा है—

लज्जाविनय-वैराग्य-सदाचार-विभूषिते।
आर्याव्राते समाचारः संयतेष्विव किन्त्विह।।81।।(आचारसार पृ. 42)

लज्जा,विनय, वैराग्य और सदाचार से विभूषित आर्यिकाओं के समूह में समाचार विधि मुनियों के समान ही सारी समझ लेना चाहिए। किन्तु कुछ अन्तर है वह बताते हैं—

साधुनां यद्वदुद्दिष्टमेवमार्यागणस्य च।
दिनस्थान त्रिकालोनं प्रायश्चित्तं समुच्यते।। (प्रायश्चित्त ग्रंथ)

मुनियों के लिए जो क्रियाएँ बताई हैं, वही सब आर्यिकाओं के लिए भी बताई हैं अन्तर इतना है कि 'दिनप्रतिमायोग' आर्यिकाओं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के लिए वर्जित है। इन्हीं आधार से आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज, आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज हमेशा आर्यिकाओं के लिए पूरी विधि मुनि के समान मानकर, वे नवधाभक्ति के लिए पात्र हैं, ऐसा हमेशा प्रतिपादन करते थे। यही कारण है कि इस परम्परा में आर्यिकाओं की नवधाभक्ति, पूजा आदि चल रही है। प्रथमानुयोग में भी अनेक प्रकरण आए हैं—

श्री रामचन्द्र जी जैसे महापुरुषों ने भी 'वरधर्मा' नाम की महागणिनी की पूजा की है। दूसरी बात यह है जैसे समवसरण में मुनियों में प्रमुख 'गणधर' माने गए हैं उसी प्रकार आर्यिकाओं में प्रमुख 'गणिनी' भी मानी गई हैं। तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में जहाँ 24 तीर्थंकरों के एक-एक गणधर के नाम हैं, वहीं एक-एक गणिनी के नाम भी प्रसिद्ध हैं। गणधर यानि गणों के नायक आचार्य के समान महान उसी प्रकार से 'गणिनी' यानि आर्यिकाओं में प्रधान, शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित्त आदि देने के लिए सक्षम मानी गई हैं। गणिनी आचार्यों के समान पद को धारण करने वाली मानी गई हैं।

आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज और भी प्रमाण दिया करते थे। प्रायश्चित्त ग्रंथ में मुनियों और आर्यिकाओं का प्रायश्चित्त समान माना है। पुनर्दीक्षा, छेद, पारंचिक ये प्रायश्चित्त आर्यिकाओं के लिए नहीं माने हैं। क्षुल्लक, क्षुल्लिकाओं के लिए उससे आधा प्रायश्चित्त माना है। ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणियों के लिए उससे आधा माना है। इससे भी ज्ञात होता है कि मुनियों की चर्या के समान, आर्यिकाओं की चर्या शास्त्र विहित है।

अब मैं आपको बताती हूँ कि जो यह चर्चा आती है कि क्या आर्यिकाएँ सिद्धान्त ग्रंथ पढ़ सकती हैं, उनकी टीका आदि लिख सकती हैं। मैं इसके लिए भी आपको प्रमाण बताती हूँ। वसुनन्दिश्रावकाचार में आया है—

दिण पडिमवीरचरिया तियालजोगेसुणत्थि अहियारो।
सिद्धंत रहस्साण वि अज्झयणं देसविरदाणं।।(वसुनंदि श्रा.पृ. 112)

पहली प्रतिमा से लेकर ग्यारहवीं प्रतिमा तक सभी देशविरत माने हैं, इनके लिए जिनप्रतिमा, वीर चर्या, त्रिकालयोग, आतापन, वृक्षमूल आदि योग करने का अधिकार नहीं है और सिद्धान्तग्रंथों के पढ़ने का और प्रायश्चित्त ग्रंथों के पढ़ने का भी अधिकार नहीं है। अब मैं मूलाचार की पंक्ति आपको दिखाती हूँ, जिसमें आर्यिकाओं को सिद्धान्त ग्रंथ पढ़ने का अधिकार है—

तं पढिदुमसज्झाये णो कप्पदि विरद इत्थिवग्गस्स।
एत्तो अण्णोगंथो कप्पदि पढिदुमसज्झाये।।97।। (मूलाचार)

अस्वाध्याय काल में 'विरद' यानि संयत-मुनियों के लिए और 'इत्थि वग्गस्स' से स्त्री वर्ग यानि आर्यिकाओं के लिए कहा है। टीकाकार ने लिखा है कि तत्सूत्रं पठितुं अस्वाध्याये न कल्प्यते न युज्यते।' अर्थात् अस्वाध्यायकाल में सूत्र ग्रंथों का पढ़ना युक्त नहीं है, स्वाध्यायकाल में उसे पढ़ सकते हैं। इसका मतलब यह निकलता है कि आर्यिकाएं स्वाध्यायकाल में सिद्धांत ग्रंथ पढ़ सकती हैं, उन्हें सिद्धांत ग्रंथ पढ़ने का पूरा अधिकार है। अब आप पुराणों के और भी उदाहरण देखिए—

द्वादशांगधरोजातः क्षिप्रं मेघेश्वरो गणी।
एकादशांग भृज्जाता सार्यिकापि सुलोचना।।52।। (हरिवंश पुराण पृ. 213)

मेघेश्वर यानि जयकुमार भगवान के समवसरण में दीक्षित होकर भगवान के गणधर बन गए और शीघ्र ही द्वादशांग के धारी हो गए। सुलोचना भी आर्यिकादीक्षा लेकर ग्यारह अंग की धारिणी हो गईं। दिगम्बर सम्प्रदाय में वर्तमान में ग्यारह अंग और चौदहपूर्व ग्रंथ नहीं हैं, उनका अंश धवला ग्रंथ को माना गया है।

इस प्रकार देखा जाये जब आर्यिका 11 अंग की पाठी हो सकती हैं, तो आज सिद्धान्तग्रंथ पढ़ने और लिखने की पात्र क्यों नहीं हो सकती? शास्त्र में ऐलक और क्षुल्लक को अंग, पूर्व पढ़ने का अधिकार नहीं दिया है। आजकल कोई-कोई साधु, आर्यिकाओं को सिद्धान्त ग्रंथ पढ़ने का तो निषेध करते हैं और अव्रती पण्डितों के और अव्रती श्रावक-श्राविकाओं के बीच षट्खण्डागम ग्रंथ की वाचना करते हैं। मैं सोचती हूँ यह कहाँ तक उचित है। आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की आज्ञा से विद्वानों ने इन ग्रंथों को पढ़ा और इसका हिन्दी अनुवाद भी किया है। ताड़पत्री से, मूल कन्नड़ लिपि से हिन्दी में अनुवाद करके उसको प्रकाशित कराया है।

आचार्यों ने सिद्धान्त ग्रंथों को पढ़ने में दिक्शुद्धि मानी है। अव्रती श्रावकों के बीच में जब इसकी वाचना होती है तो दिक्शुद्धि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं होती है जबकि दिक्शुद्धि होना आवश्यक है। दिक्शुद्धि का अर्थ मूलाचार में भी बताया है और षट्खण्डागम की धवला टीका में नवमीं पुस्तक में इसका विस्तार से वर्णन आया है—

'पच्छिम रत्ति सज्झायं..................(धवला पृ. 9)
णवसत्त पंचगाहा परिमाण दिसि विभाग सोधीये।
पुव्वण्हे अवरण्हे पदोसकाले य सज्झाये।।92।।(मूला.)

मूलाचार में बताया है पश्चिम रात्रि में स्वाध्याय को विसर्जित करके पुनः पूर्वाण्ह के स्वाध्याय के लिए दिक्शुद्धि करें। दिक्शुद्धि की विधि यह है कि चारों दिशाओं में 3-3 श्वासोच्छ्वासपूर्वक एक बार णमोकार मंत्र यानि 27 श्वासोच्छ्वासपूर्वक 9-9 बार णमोकार मंत्र का जाप्य करके दिक्शोधन विधि करें। पश्चिम रात्रि में सिद्धान्त ग्रंथों को पढ़ने का सामान्य मुनियों के लिए निषेध किया है। ऋद्धिधारी मुनियों के लिए छूट की है। 'दिगम्बर मुनि' और 'आर्यिका' नामक पुस्तक में मैंने दिग्शोधन विधि को बहुत स्पष्टरूप में लिखा है—

'अथ पौर्वाण्हिक वाचना क्रियायां पूर्वदिक्शुद्धिं करोम्यहं।' ऐसा बोलकर खड़े होकर पूर्वदिशा में 27 श्वासोच्छ्वासपूर्वक 9 बार णमोकारमंत्र का जाप्य करें, पुनः इसी विधि से दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में भी श्वासोच्छ्वासपूर्वक 9-9 बार णमोकार मंत्र पढ़कर दिक्शुद्धि करें। पुनः पूर्वाण्हकाल में स्वाध्याय करें। पूर्वाण्हकाल के स्वाध्याय के समापन के बाद अपराण्हकाल के स्वाध्याय के लिए 7-7 बार श्वासोच्छ्वासपूर्वक णमोकार मंत्र पढ़कर दिक्शुद्धि करें। पूर्वाण्ह में सायंकाल के स्वाध्याय के लिए दिक्शुद्धि कर ली जाती है। पुनः अपरान्हकाल में स्वाध्याय को विसर्जित करके पूर्वरात्रि स्वाध्याय के लिए श्वासोच्छ्वासपूर्वक 5-5 बार णमोकार मंत्र पढ़कर चारों दिशाओं में दिक्शुद्धि की जाती है।

जब से मैंने मूलाचार ग्रंथ में और नवमीं पुस्तक धवला में दिक्शुद्धि की विधि पढ़ी है, तब से बराबर मैं षट्खण्डागम के लेखन के समय और षट्खण्डागम के स्वाध्याय के समय स्वयं दिक्शुद्धि करती हूँ और अपनी शिष्याओं से भी कराती हूँ। मैंने देखा है आजकल कोई-कोई साधु भी दिग्शुद्धि नहीं करते हैं। अस्वाध्यायकाल में जो सिद्धान्तग्रंथों के स्वाध्याय को वर्जित कहा है उसमें अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावस को, आष्टान्हिक पर्व में, सामायिक काल में भी वर्जित कहा है। मैंने देखा है कुछ विद्वान जो प्रातः सामायिक का काल है उसमें भी धवला, समयसार आदि का स्वाध्याय करते रहते हैं। सूर्योदय के 2 घड़ी पहले और 2 घड़ी पीछे स्वाध्याय के लिए अकाल है। इस समय षट्खण्डागम आदि ग्रंथों का स्वाध्याय नहीं करना चाहिए। इसी तरह मध्यान्ह में 12 बजे के 2 घड़ी पहले और 2 घड़ी पीछे तक का काल स्वाध्याय के लिए अकाल माना है। इसी तरह सायंकाल में सूर्यास्त के 2 घड़ी पहले और 2 घड़ी पीछे तक अस्वाध्याय काल माना है। मैंने देखा है कहीं-कहीं वाचना करने वाले इन बातों का ध्यान नहीं रखते हैं। जबकि उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए। और भी स्वाध्याय के अकाल माने गए हैं, जैसे-दिग्दाह, उल्कापात, किसी का मरण, राजनैतिक क्षेत्र में किसी विशेष का मरण, साधुओं के मरण आदि में भी अकाल माना गया है और उसके लिए ग्रंथों में दिन की व्यवस्था बताई गई है, जैसे संघ में आचार्य का समाधिमरण हो तो संघ में तीन दिन का स्वाध्याय वर्जित है। सामान्य मुनि का मरण हो तो एक दिन का स्वाध्याय वर्जित है।

संघ में हम लोगों ने आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज की आज्ञा से ही सिद्धान्त ग्रंथ पढ़ा है, सुना है। ब्यावर में पं. पन्नालाल जी सोनी के सामने किसी से यह चर्चा आई थी तब उन्होंने भी अनेक प्रमाण दिखाए थे। मूलाचार में एक और पंक्ति आई है। टीका में-**तपस्विनीनां साटकमात्र परिग्रहेऽपि तत्र ममत्व परित्यागादुपचारत्वे नैर्ग्रन्थ्य व्यवहरणानुसरणात्।.....(मूलाचार पृ. 210)**

तपस्विनी अर्थात् आर्यिकाओं में साड़ी मात्र परिग्रह होते हुए भी उनका उनमें ममत्व का परित्याग होने से उपचार से उनमें निर्ग्रंथ का व्यवहार पाया जाता है। आचार्यों ने आर्यिकाओं के लिए दो साड़ी अंग को प्रक्षादन करने के लिए माने हैं। आचार्यों ने पुराणों में आर्यिकाओं के लिए संयता शब्द दिया है। देखिए पद्मपुराण तृतीय भाग में-**''त्यक्ताशेषगृहस्थवेषरचना मन्दोदरी संयता''**। मन्दोदरी गृहस्थ के वेश को छोड़कर आर्यिका बन गईं। पद्मपुराण में और भी आया है—

''साहं दुःख क्षयाकांक्षा दीक्षां जैनेश्वरी भजे।'' (पद्मपुराण तृतीय भाग पृ. 284)

सीता ने श्रीरामचंद्र जी से कहा-दुःख के क्षय की आकांक्षा से मैं जैनेश्वरी दीक्षा को ग्रहण करती हूँ।

'महाव्रत पवित्रांगा महासंवेगसंगता।' (पद्मपुराण तृतीय भाग)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मपुराण में महाव्रत से पवित्र है अंग जिसका ऐसे महासंवेग से संगत महासती सीता आर्यिका का वर्णन किया है। ऐसे अनेक वर्णन शास्त्रों में आए हैं अतः यह निश्चित समझना चाहिए कि आर्यिकाएं उपचार से महाव्रती हैं। भले ही इनका गुणस्थान पाँचवा-देशसंयत है, लेकिन ये देशव्रती नहीं है। व्यवहार में मुनिवत् सारी चर्या मानी है और वे पूर्णरूपेण नवधाभक्ति की पात्र हैं।

आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज एवं आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज ने आगम के परिप्रेक्ष्य में विद्वानों की सभा में बैठकर एक-एक छोटे-छोटे विषयों को अच्छी तरह से विचार-विमर्श करके ही प्रत्येक प्रक्रिया लागू की है। अतः इनकी परम्परा में आर्यिकाओं की चर्या में नवधाभक्ति बराबर चली आ रही है और चलती रहेगी।

एक विषय और आता है कि मुनियों को नमस्कार करते समय आर्यिकाएं, महिलाएं तीन हाथ दूर से नमस्कार करें। मूलाचार ग्रंथ में आया है कि 3, 4, 5 हाथ दूर से नमस्कार करें। मैंने मूलाचार ग्रंथ, आचारसार, भगवती आराधना आदि अनेक ग्रंथों के आधार से 'आराधना' नाम की पुस्तक लिखी है। संक्षेप में 444 श्लोकों में उसे बनाया है। उसका अध्ययन करते हुए एक विद्वान ने प्रश्न किया कि जब आर्यिकाओं को 3,4,5 हाथ दूर से आचार्य, उपाध्याय, साधुओं को नमस्कार करने का विधान है, तो वे मुनियों के चरण नहीं छू सकती हैं। इस पर मैंने उन्हें समाधान दिया कि नमस्कार करने की व्यवस्था अलग है और चरण छूने की व्यवस्था अलग है। भगवान की वंदना में भगवान का स्पर्श न करते हुए दूर से वंदना करने की विधि बतलाई है इसलिए कि, उस समय आसादना न हो। बाकी हर बातें विवेक से काम लेने की हैं।

मुनियों को 3,4,5 हाथ दूर से नमस्कार करने के लिए शास्त्र में लिखा है, तो इस बात पर कुछ लोग कह देते हैं कि मुनियों को आहार भी दूर से देना चाहिए। लेकिन आहार देते समय 3,4,5 हाथ दूर से आहार देना संभव नहीं है। किसी महिला का हाथ मुनि के हाथ तक ग्रास देने में इतनी दूर से सक्षम नहीं हो सकता है। यह हास्यास्पद विषय है। नमस्कार की व्यवस्था केवल नमस्कार के समय लागू होगी अन्य समय नहीं लागू होगी। आज महिलाएँ सभी मुनियों को आहार देती हैं, जिसे आप सभी स्वीकार करते हैं। सन् 1956-57 में एक शिवजी रामजी नाम के पण्डित जी ने कह दिया था कि महिलाएँ मुनियों को आहार नहीं दे सकती हैं, तब काफी हंगामा हुआ था, बहुत ही विवाद उठा था। यह सुनकर उस समय बम्बई में नेमिसागर महाराज ने, उपवास कर लिया था। तब आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज ने उन्हें आहार लेने की आज्ञा भिजवाई थी। अनन्तर खानिया-जयपुर में आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के संघ में उन विद्वान को बुलाया गया और उन्हें मूलाचार की पंक्तियाँ दिखाई थी कि सूती यानि प्रसूती आदि महिलाएं आहार नहीं दे सकती हैं इसका मतलब यह हुआ कि बाकी समय वे शुद्ध हैं और आहार दे सकती हैं। आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज ने और आचार्यश्री महावीर कीर्ति जी महाराज ने उन्हें और भी अच्छे समाधान दिए थे।

आचार्य शांतिसागर जी की परम्परा में मुनियों की वैय्यावृत्ति—घी आदि से मालिस, पैर धोना आदि आर्यिकाएं नहीं करती हैं। किन्तु श्राविकाओं के लिए नवधाभक्ति में पाद प्रक्षाल आवश्यक है और पादप्रक्षाल बिना हाथ लगाए संभव ही नहीं है। चरण पर ऊपर से जल डालना अविनय का सूचक है। आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज का कहना था कि चौके में श्राविकाओं को मुनियों के चरण प्रक्षाल हाथ लगाकर करना चाहिए और श्रावक भी आर्यिकाओं के पाद प्रक्षाल करते समय हाथ से चरण स्पर्श करके पाद प्रक्षाल करें, इसमें कोई दोष नहीं है। आचार्यश्री कहते थे चौके में अगर श्रावक पूरी नवधाभक्ति न करें, तो उस चौके से निकल जाना चाहिए। जहाँ चौके में पाद प्रक्षाल करके गंधोदक न लें,वहाँ से भी निकल जाना चाहिए। ऐसा वे हम लोगों को आदेश देते थे। तो यह सब व्यवस्थाएँ अलग हैं।

हमारे संघ में नवधाभक्ति के समान, मुनियों के चरण स्पर्श की बराबर छूट रही है। चरण स्पर्श करने में मैं भी कोई दोष नहीं मानती हूँ। मैंने स्वयं आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के, आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के कभी-कभी विशेष प्रसंगों में चरण स्पर्श किए हैं और उन्होंने मस्तक पर पिच्छी रखकर आशीर्वाद भी दिया है। दीक्षाविधि करते समय आचार्यश्री मस्तक पर हाथ रखकर संस्कार करते हैं, यह दोष नहीं है। 3,4,5 हाथ दूर से दीक्षाविधि संभव नहीं है। स्पर्श करने मात्र से ब्रह्मचर्य में दोष नहीं आता है बल्कि मैंने जहाँ तक समझा है कि अगर कोई स्पर्श न भी करें, लेकिन उसकी दृष्टि ठीक नहीं है कटाक्षपूर्ण दृष्टि है, मान लीजिए कोई साधु किसी महिला के प्रति आसक्त है, कोई ब्रह्मचर्य में स्खलित हो गया है तो उसकी कटाक्षपूर्ण दृष्टि से दूर से भी उसे दोष लग रहा है।

राजवार्तिक ग्रंथ में भी लिखा है कि कोई भी स्त्री, पुरुष आदि मिलकर देववंदना, पूजा आदि करते हैं, भाई-बहन मिलकर पूजा करते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं, तो वह दोषास्पद नहीं है। ब्रह्मचर्य में दोष तो भावों से ही लगता है। केवल चरणस्पर्श मात्र से ब्रह्मचर्य में दोष नहीं लगता है। इन सभी बातों को विवेकपूर्ण दृष्टि से देखना चाहिए। मैंने देखा है कुछ संघों में जब ब्रह्मचारिणियाँ हाथ में भगवन्तों की, गुरुओं की फोटो ले लेती हैं, तो कुछ लोग कह देते हैं कि जब तुम इनके चरण छूते नहीं तो हाथ में कैसे ले लिया। तब वे कह देंती कि ये अचेतन हैं चेतन नहीं।

लेकिन चेतन मुनि के मन में चरण छूते ही विकार आ जाए, इस बात को मैं नहीं स्वीकार करती। कहने को तो एक व्यक्ति ने यहाँ तक कह दिया कि जो महिलाएँ या बालिकाएँ भगवान का अभिषेक करती हैं उन्हें ब्रह्मचर्य में दोष लग जाता है जबकि यह तो बहुत ही मूर्खतापूर्ण कथन है। भगवन्तों की मूर्तियाँ नग्न दिगम्बर, निर्विकार वेश में खड़ी हैं, कोई महिला अभिषेक करते समय विकारी हो जाये ऐसा तीन काल में संभव नहीं है। यह सब हास्यास्पद पूर्ण कथन है। इन सब बातों को विवेक से ही सोचना चाहिए। महिलाओं के लिए अभिषेक करना, नवधाभक्ति करना, गुरुओं के चरण स्पर्श करना आदि सब शास्त्रों में वर्णित है। रानी चेलना ने भी मुनि के गले से मरा हुआ सर्प निकाला आदि ऐसे अनेक स्पष्ट उदाहरण देखे जाते हैं।

इस प्रकार इन सब बातों को मैंने आगम के परिप्रेक्ष्य में और गुरु परम्परा में जो देखा है और जो सुना है उसी के अनुसार समाधान दिया है। आप सभी विद्वानों को, सभी श्रावक-श्राविकाओं को इन सभी समाधानों को प्राप्त करके अपनी बुद्धि सही, समीचीन रखनी चाहिए और श्रद्धापूर्वक मुनियों की, आर्यिकाओं की नवधाभक्ति आदि करके अपने जीवन को भी सार्थक करना चाहिए। यही मेरा कथन है, यही मेरा आदेश है, उपदेश है और मंगल प्रेरणा है।

आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी चतुर्विध संघ के नायक थे—

कुछ लोग कह सकते हैं कि कुंदकुंददेव अकेले ही आचार्य थे। यह बात भी निराधार है, पहले तो वे संघ के नायक महान् आचार्य गिरनार पर्वत पर संघ सहित ही पहुँचे थे। दूसरी बात गुर्वावली में श्री गुप्तिगुप्त भद्रबाहु आदि से लेकर 102 आचार्यों की पट्टावली दी है। उसमें इन्हें पाँचवें पट्ट पर लिया है। यथा–
1. श्री गुप्तिगुप्त 2. भद्रबाहु 3. माघनन्दी 4. जिनचन्द्र 5. कुन्दकुन्द 6. उमास्वामी आदि। इससे स्पष्ट है कि जिनचन्द्र आचार्य ने इन्हें अपना पट्ट दिया, पश्चात् इन्होंने उमास्वामी को अपने पट्ट का आचार्य बनाया। यही बात नंदिसंघ की पट्टावली के आचार्यों की नामावली में है। यथा-4. जिनचंद्र, 5. कुन्दकुन्दाचार्य 6. उमास्वामी।' इन उदाहरणों से सर्वथा स्पष्ट है कि ये महान् संघ के आचार्य थे। दूसरी बात यह भी है कि इन्होंने स्वयं अपने मूलाचार में 'माभूद मे सत्तु एगागी'-मेरा शत्रु भी एकाकी न रहे, ऐसा कहकर पंचम काल में एकाकी रहने का मुनियों के लिए निषेध किया है। इनके आदर्श जीवन, उपदेश व आदेश से आज के आत्म हितैषियों को अपना श्रद्धान व जीवन उज्ज्वल बनाना चाहिए।

-गणिनी ज्ञानमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्वानों के लिए दिशा निर्देश

प्रवचन-4

वर्तमान में विद्वानों के लिए मैं कुछ दिशा निर्देश देना चाहती हूँ जैसा कि मैंने अपने गुरु परम्परा में देखा है, सुना है। बात यह है कि विद्वानों को आगम के परिप्रेक्ष्य में अपनी चर्या बनानी चाहिए और उसी के अनुकूल सभा में प्रवचन करना चाहिए। वर्तमान में दिगम्बर परम्परा में दो भेद चले आ रहे हैं-तेरहपंथ और बीस पंथ। तेरहपंथ लगभग 400 वर्ष पुराना है। उसका उल्लेख पं. श्री बनारसीदास जी ने अपनी आत्मकथा में किया है जिसे मैंने पढ़ा है। इस विषय में मैं आपको नहीं ले जाऊँगी। मैं तो इतना कहूँगी कि आगम के परिप्रेक्ष्य में हर एक विषय को समझना और समझाना चाहिए। विद्वानों को प्रान्तीय परम्परा का दुराग्रह नहीं रखना चाहिए।

सबसे पहला उदाहरण पं. श्री सुमेरचंद जी दिवाकर का मैं आपको बताती हूँ। इन्होंने इसे अपने 'चारित्र चक्रवर्ती' और 'आध्यात्मिक ज्योति' ग्रंथ में लिखा है। ये चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के परमभक्त, अन्यतम शिष्य रहे हैं। इन्होंने अपने मुख से स्वयं कई बातें बताई थीं। आचार्य शांतिसागर जी महाराज प्रतिदिन पंचामृत अभिषेक देखकर आहार के लिए उठते थे। मैंने स्वयं भी देखा है कुंथलगिरि में अंतिम दिन तक भी उन्होंने पंचामृत अभिषेक देखा है। उनकी समाधि के समय मैं एक महीना कुंथलगिरि रही। मैंने देखा प्रतिदिन पंचामृत अभिषेक की बोली होती थी। उत्तरप्रदेश के भी लोग बोली लेते थे, सेठ भागचंद जी सोनी-अजमेर ने भी एक दिन बोली ली थी और उन्होंने अपनी पत्नी के साथ बड़ी भक्ति और श्रद्धा से भगवान का पंचामृत अभिषेक किया था। एक दिन आचार्यश्री ने पं. श्री सुमेरचंद जी से कहा-आप पंचामृत अभिषेक को प्रमाणिक मानते हैं कि नहीं, तब पं. जी ने कहा-हाँ, आगम में लिखा है, मैं इसको प्रमाणिक मानता हूँ। तो आचार्यश्री ने कहा-फिर आप पंचामृत अभिषेक क्यों नहीं करते हैं। पं. जी ने कहा-मेरे प्रान्त में बुजुर्गों में परम्परा नहीं है, इसलिए मैं नहीं करता हूँ। एक दिन पंचामृत अभिषेक हो रहा था आचार्यश्री देख रहे थे। पं. श्री सुमेरचंद जी जल का अभिषेक करके पीछे सरके, तो आचार्यश्री ने उनका हाथ पकड़ लिया और दूध के कलश से अभिषेक हो रहा था उसमें उनका हाथ लगा दिया यह लोगों के लिए कौतुक का विषय था। पं. श्री सुमेरचंद जी जब इस संस्मरण को सुनाने लगते थे, तो उनकी आँखों में अश्रु आ जाते थे, वे हर्ष-विभोर हो जाते थे और गुरु के उपकार को स्मरण करते और कहते कि आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज किस तरह से विद्वानों को आगमनिष्ठ बनाते थे और आगम के अनुरूप प्रवृत्ति करने को शिक्षा देते, आदेश देते और जबरदस्ती प्रेरित भी करते थे।

मैं आपको आर्यिका विशुद्धमती जी के बारे में बताती हूँ जो सतना की थीं। उन्होंने मुझे बताया कि मेरी दीक्षा के समय आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज ने कह दिया कि तुम्हें सभा में पंचामृत अभिषेक करना होगा। तो मेरे सामने समस्या थी मैं बुंदेलखण्ड की थी और जहाँ कट्टर तेरहपंथी लोग रहते हैं, जहाँ पंचामृत अभिषेक नहीं करते हैं और न स्त्रियाँ अभिषेक करती हैं। तब मैंने पं. श्री पन्नालाल जी साहित्याचार्य, पं. श्री जगन्मोहनलाल शास्त्री और पं. श्री कैलाशचंद जी आदि से पूछा कि क्या आगम में प्रमाण है और मुझे अभिषेक करना उचित है? तब विद्वानों ने कहा-हाँ, आगम में प्रमाण है और जब आप आचार्यश्री शिवसागर जी को अपना गुरु बना रही हैं तो आपको उनकी बात मानकर अभिषेक करना चाहिए। उन्होंने बताया कि जब मैंने सभा में पंचामृत अभिषेक किया उसके अनंतर मेरी दीक्षा हुई है।

पं. श्री पन्नालाल जी साहित्याचार्य को मैंने देखा कि वे दुराग्रही नहीं थे। दिल्ली में और हस्तिनापुर में मैंने उन्हें दो बार अपने प्रशिक्षण शिविर में कुलपति के पद पर आसीन कराया। दिल्ली दरियागंज की घटना है जब वे अष्टमी, चतुर्दशी को हरी नहीं लेते थे। यह एक प्रान्तीय परम्परा है मैं तो समझती हूँ सारे भारत की जैन समाज में ऐसा है। लेकिन ऐसा कहीं अपने दिगम्बर परम्परा के जैन ग्रंथों में देखने को नहीं मिलता है। आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज कहते थे अगर आप अष्टमी, चौदस को हरी नहीं खायेंगे दोष मानेंगे तो नवमी, दशमी को भी नहीं खा सकते। फल वृक्ष से अलग होने के बाद निर्जीव है। उसे प्रासुक करके खाने में कोई दोष नहीं है।

हम वनस्पति के कण-कण में जीव नहीं मानते। आचार्य वीरसागर जी महाराज ऐसा नहीं मानते थे कि फल को गरम करो, बिना गर्म किए फल सचित्त हैं, अचित्त नहीं। आचार्य शांतिसागर जी महाराज आदि सभी बिना गरम किए फल लेते थे। आचार्य संघ में हरे फल को, हरे फल के रस को लेने की परम्परा बराबर चली आई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्यश्री ने मेरी माँ मोहिनी से भी कहा था कि अष्टमी चतुर्दशी को अगर आपका गृहस्थाश्रम में हरी का त्याग भी है तो यहाँ संघ में आकर लेना पड़ेगा। उनके आग्रह से, आदेश से मेरी माँ मोहिनी ने भी अष्टमी, चतुर्दशी को हरी लेना शुरू किया था और मैंने भी आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज के कहने से ही अष्टमी-चतुर्दशी को हरी लेना शुरू कर दिया था। यह परम्परा किसी श्वेताम्बर मान्यता से आई है अपने दिगम्बर किसी ग्रंथ में नहीं है। एक बार पं. पन्नालाल जी से हरी के विषय में चर्चा हुई। ब्र. माधुरी ने सूखे चने, मटर आदि लाकर उसमें जीव दिखा दिए। सूखे चने, मटर आदि में जीव पड़ जाते हैं। जब इन्हें पानी में भिगोया जाता है तो फूलने के बाद जीव दिखते हैं। तब पं. श्री पन्नालाल जी ने स्वीकार किया कि अष्टमी को सूखे चने, मटर आदि की सब्जी खाना यह आगम परम्परा नहीं है।

मैं एक उदाहरण और आपको बताती हूँ ब्र. श्री फागूलाल जी का। इन्होंने आचार्यश्री वीरसागर जी से मुनिदीक्षा ली थी। सन् 1956 में जब मैं संघ में पहुँची, तब ये क्षुल्लक श्री चिदानंद सागर जी थे। इन्होंने अपनी एक घटना सुनाई थी। इन्होंने बताया कि मैं कट्टर तेरहपंथी था। कलकत्ते में रहता था। दिगम्बर धर्म से प्रभावित होकर मैं ओसवाल श्वेताम्बर से दिगम्बर बन गया। मैंने दिगम्बर धर्म को अपनाया। संघ में ब्र.श्री प्यारेलाल भगतजी की संगति से मैं पूर्णरूपेण सुधारक विचारधारा का हो गया था। जब आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज का चातुर्मास ईसरी में हो रहा था, तब पंचामृत अभिषेक को देखकर मैंने प्यारेलाल जी से चर्चा की कि संघ में ऐसा क्यों होता है? महिलाएँ भी अभिषेक करती हैं यह सब क्या है? तब श्री प्यारेलाल जी ने कहा-यह सब आगम सम्मत है। आगम में दूध, दही वगैरह से अभिषेक का विधान है यह कोई दोष नहीं है। आज जो यह तेरहपंथ की परम्परा चली है इसका कारण, कुछ लोगों ने दूध, दही से अभिषेक करके, गंधोदक विसर्जित नहीं किया होगा उसमें जीव जन्तु मरे होंगे, मक्खियाँ गिर गई होंगी, जिसे देखकर लोगों ने दूध, दही से अभिषेक करने को मना कर दिया होगा और कारण यह भी हो सकता है कि बाजार का दूध, दही लाकर अभिषेक कर दिया होगा। जबकि शुद्ध दूध, दही जैसा कि श्रावक साधुओं को आहार में देते हैं, वैसा लाकर अभिषेक करना चाहिए था। कुछ इन्हीं कारणों से तेरहपंथ की परम्परा चली है।

क्षुल्लक श्री चिदानंद जी ने बताया कि तब मैंने ब्रह्मचारी अवस्था में उनसे पूछा अगर मैं अपने हाथ से गाय का दूध निकाल कर लाऊँ तो बेलगछिया के मंदिर में दूध, दही का अभिषेक कर सकता हूँ। तब प्यारेलाल जी ने कहा-हाँ कर सकते हो। तब मैंने ऐसा किया। लेकिन प्रान्तीय परम्परा से मंदिर में ऐसा अभिषेक न होने से कहीं बहुत ज्यादा विवाद का विषय न बन जाये अतः मैंने प्रतिदिन दूध का अभिषेक नहीं किया। पुरानी बाड़ी के मंदिर में पंचामृत अभिषेक की परम्परा थी अतः वहाँ जाकर मैं कभी-कभी दूध का अभिषेक कर आता था। मेरे कलकत्ता चातुर्मास में ब्र. श्री प्यारेलाल जी ने बीस पंथ परम्परा को आगम सम्मत कहकर समर्थन दिया था। जब मैंने सन् 1963 में कलकत्ता में बेलगछिया में चातुर्मास किया, उस समय ब्र. प्यारेलाल जी मुझसे अत्यधिक प्रभावित थे। वे मेरी प्रातः 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक की चर्या अपनी आँखों से देखा करते थे और सभी बातों में रुचि लेते एवं मेरे पास अत्यधिक समय देते थे।

आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज की आज्ञा थी कि संघ में चैत्यालय रखना। उनका कहना था कि संघ में ब्रह्मचारिणी बहनें प्रतिमा जी रखें और प्रतिदिन पंचामृत अभिषेक-पूजन करें। क्योंकि कहीं भी समाज में जाकर झगड़ा करना नहीं है, कहीं पर पंचामृत अभिषेक होता है कहीं नहीं, कहीं स्त्रियों को अभिषेक करने देते हैं कहीं नही। अतः संघ में प्रतिमा जी रखना जरूरी है। दूसरी बात यह भी है कि जब साधु एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए विहार करते हैं तो रास्ते में जगह-जगह पड़ाव डालना पड़ता है, जहाँ मंदिर नहीं होते तो साधु बिना दर्शन किए, बिना अभिषेक देखे आहार पर नहीं उठ सकते, अतः संघ में प्रतिमा जी रखना बहुत आवश्यक है।

मैंने बचपन से लेकर आज तक सीरियस स्थिति में भी भगवान् के दर्शन किए बगैर आहार नहीं किया है और न मैंने संघ में साधुओं को देखा है। आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा से पूर्णरूपेण बंधे हुए साधुओं के संघ में चैत्यालय रहता है, संघ के ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणियाँ अभिषेक करते हैं और प्रतिदिन साधु दर्शन करते हैं, अभिषेक देखते हैं, दर्शन करके ही आहार पर उठते हैं।

आज कुछ संघों में परम्परा चल गई है कि जब साधु शहर से विहार करते हैं तब यदि 50-60 किमी. तक जैन के गाँव नहीं आते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं जैन मंदिर नहीं हैं तो उनके साथ के श्रावक कहते हैं कि मैंने तो गुरु के दर्शन कर लिए, मेरे देवदर्शन का नियम पूरा हो गया है। लेकिन ऐसा नहीं है, अभी साधु देव नहीं हैं यह बात ध्यान में रखना चाहिए, उनके दर्शन से देवदर्शन का नियम पूरा नहीं हो सकता।

आचार्यश्री शांतिसागर जी एवं आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के अनुसार भगवान के बिना दर्शन किए साधु को आहार पर नहीं उठना चाहिए, यह एक स्वस्थ परम्परा है। आज जो संघ में चैत्यालय रखते हैं, तो कुछ लोग उनकी टीका टिप्पणी करते हैं। आज विपरीत हो रहा है, बड़ा आश्चर्य हो रहा है और वैसा ही लगता है जैसा कि एक बार हम लोग विहार करके मेरठ से हस्तिनापुर आ रहे थे, तो बीच में एक इचौंली गाँव में ठहरे, वहाँ पर मंदिर नहीं है, उस दिन वहाँ पर कुछ श्वेताम्बर साध्वियाँ ठहरी हुई थीं। होता क्या है? उन साध्वियों ने वहाँ पर अपने कपड़े वगैरह धोए। मेरठ के कुछ सज्जन बहुत सी पूड़ी, सब्जी, नुक्ती, पकवान वगैरह सब बाजार की बनी हुई वस्तुएँ अपने खाने के लिए लेकर आये थे, जब उन्होंने अपने खाने के लिए सामान खोला, तो वे सभी श्वेताम्बरी साध्वियाँ वहाँ अपने पात्र लेकर पहुँच गईं और माँगकर उनका खाना ले लिया और खा लिया। जब जाने लग गईं तब हम लोगों से बोलीं-आप लोग उद्दिष्ट आहार लेंगी क्योंकि आपके निमित्त से यहाँ चौका बन रहा है। इस प्रकार कहकर वे हम पर दोषारोपण थोप गईं। हम हँसते रहे, आश्चर्य किया, उनको क्या समाधान करना, क्या बात करना और वे सब तो ऐसा कहकर चल पड़ीं। तो ऐसे ही लगता है जो स्वयं आगम परम्परा को न निभायें, गुरु परम्परा से अतिरिक्त रहे और दूसरों की निंदा करने लग जाए यह तो उल्टा हो रहा है।

मैं कलकत्ता चातुर्मास के समय की बात बताऊँ, एक दिन ब्र. प्यारेलाल भगत जी के सामने चर्चा आई कि संघ में प्रतिदिन चैत्यालय में पंचामृत अभिषेक होता है। 5 किलो दूध आता है, दूध से शांतिधारा होती है। वहाँ पर कुछ श्रावक लोग जो चौके के लिए शुद्ध दूध लेने जाते थे, वे शुद्ध दूध लाकर भक्ति से भगवान का अभिषेक करते थे। टीकमचंद जी और कई एक श्रावक भक्तिमान थे। उन्होंने अपना रोज का नियम बना रखा था कि जब तक माताजी यहाँ रहेंगी, तब तक हम रोज चैत्यालय में दूध से अभिषेक एवं शांतिधारा करेंगे। एक दिन किसी ने यह चर्चा उठाई कि प्रतिदिन इतना-इतना दूध आता है जो कि बेकार ही जाता है, किसी के पेट में नहीं जाता है। तब भगतजी ने समाधान दिया कि जो भगवान का दूध से अभिषेक और शांतिधारा कर रहे हैं वे तो महान पुण्य का संचय कर रहे हैं, तुम उसे गलत कहकर क्यों पाप बांध रहे हो। अरे! लोगों ने तो भगवान की भक्ति में हीरे-मोती चढ़ाए हैं, रत्न चढ़ाएँ हैं, सोने की गिन्नी, मोहरें चढ़ाई हैं। चढ़ा हुआ द्रव्य माली को जाता है, तो जाने दो, दूध भी जाता है जाने दो, तुम्हारा क्या बिगड़ता है, यह सब तो आगम सम्मत क्रियाएँ हैं।

मैं वहाँ मंदिर में भगवान के चरण का स्पर्श कर लेती थी, उस पर भी समाज में कुछ विवाद उठा था। तब भी ब्र. प्यारेलाल भगत जी ने उन लोगों से कहा देखिए आप तेरहपंथी हैं तो भी आर्यिका को पड़गाहन करके चौके में उनका चरण प्रक्षाल करते हैं। नवधाभक्ति में चरण प्रक्षालकर चरण छूते हैं कि नहीं, तो वे बोले छूते हैं, तो आर्यिकाएं सामान्य महिलाओं की कोटि में आपके लिए नहीं हैं बोले नहीं, वे तो पूज्य हैं महान हैं। तब भगत जी बोलें जब वे महान हैं, पूज्य हैं तो भगवान के चरण का स्पर्श कर लिया तो इसमें आप तेरहपंथी को भी ऐतराज नहीं करना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने समाधान दिया। कलकत्ता में एक ब्र. चमेलीबाई जी भी कट्टर तेरहपंथी थीं। लेकिन भगतजी के अनुशासन में चलती थी, हमारे पास बैठती थी, पंचसंग्रह का खूब स्वाध्याय चलता था, गोम्मटसार कर्मकाण्ड आदि ऊँचे-ऊँचे ग्रंथों के स्वाध्याय चलते थे, वे 2-3 घंटे स्वाध्याय में भाग लेती थीं। कई बार स्त्री अभिषेक के बारे में चर्चा होती थी। मैंने उन्हें प्रमाण भी दिखाए और कहा कि अगर स्त्री अपवित्र है तो वह पंचकल्याणक में क्यों भाग लेती है?, इन्द्राणी क्यों बनती है?, जिनबालक को लेकर क्यों जाती हैं?, हवन में क्यों शामिल होती हैं?, स्त्रियाँ साधुओं को आहार देती हैं तो उन्हें शुद्ध मानेंगे कि नहीं। तब उनके गले मेरी बात उतर गई। उन्होंने एक दिन कहा माताजी मैं सम्यग्दृष्टि हूँ मैं भी अभिषेक जरूर करूँगी, लेकिन यहाँ परम्परा नहीं है अतः मैं आपके संघ के चैत्यालय में अभिषेक करूँगी। कई बार वे चैत्यालय में आकर दूध से अभिषेक कर जातीं, लेकिन जरा जल्दी आकर कर जाती थीं, कि ज्यादा समाज में चर्चा का विषय न बने। लेकिन उन्हें इस बात पर पूर्ण श्रद्धा हो गई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्तमान में कई बातें ऐसी हैं, मेरा तो विद्वानों से यही कहना रहता है कि आप जिन-जिन साधुओं से बंधे हुए हैं, बंधे रहें लेकिन आप लोगों को अन्य साधुओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए और न कभी वर्गभेद करना चाहिए। वर्तमान में साधुओं के निमित्त से आज वर्गोदय हो रहा है। कहा जाता है यह उस परम्परा के साधु के भक्त हैं, यह उस परम्परा के पण्डित हैं, ऐसा साधुओं के निमित्त से वर्गोदय होना बहुत गलत है, भगवान का शासन सर्वोदयी शासन है।

आगरा के एक सज्जन फिरोजाबाद में मंच पर खड़े होकर सर्वोदय पाठशाला का खूब प्रचार कर रहे थे कि हम सर्वोदय पाठशाला खोल रहे हैं और स्वयं वर्गोदय से बंधे हुए थे वर्गोदय का प्रचार कर रहे थे। एक वर्ग से जुड़े थे, दूसरे वर्ग के साधु तक को नमस्कार नहीं करते थे। मुनि भक्त तो थे, लेकिन केवल अपने वर्ग की आर्यिकाओं, मुनियों को नमस्कार करते थे, दूसरे वर्ग के साधु-साध्वियों को नमस्कार नहीं करते थे अतः लोग उन्हें अच्छा नहीं कहते थे। स्वयं में भले ही वे अपने को राजा समझे लेकिन ऐसी बात अच्छी नहीं है।

देखा जाये तो साधुओं के निमित्त से, विद्वानों के निमित्त से या संस्थाओं के निमित्त से वर्गभेद नहीं होना चाहिए क्योंकि अपनी दिगम्बर जैन समाज मुट्ठी भर ही तो है। भगवान ऋषभदेव, भगवान महावीर का शासन, शाश्वत जैनधर्म, तीर्थंकर परम्परा यह सब हमारा और आपका बनाया हुआ नहीं है। हम और आप इसमें संशोधन, परिवर्तन, परिवर्धन नहीं कर सकते हैं। हमारा और आपका यही कर्तव्य है कि उस सर्वोदयी शासन में वर्गोदय न करें, विद्वान अगर दूसरे साधुओं का भी सम्मान और आगम का सम्मान सामने रख करके अपनी चर्या बनाते हैं और आगम के आधार को लेकर ही सभा में प्रवचन करते हैं तो ठीक है।

आप सभा में तेरहपंथ, बीसपंथ विषय को न लें। लेकिन अलग से जब आपके सामने चर्चा आवे तो बीसपंथ का खण्डन, जिनशासन देवी-देवताओं का खण्डन नहीं करना चाहिए। आगम में शासन देव-देवियों की पूजन का, भक्ति का विधान है मैं इसके अनेकों प्रमाण आपको दिखा सकती हूँ। श्री पूज्यपाद स्वामी का पंचामृत अभिषेक पाठ में है, शिलालेखों में यह बात स्पष्ट है। इस अभिषेक पाठ में दिक्पालों का आह्वान, उनको अर्घ्य चढ़ाना, शासन देव-देवियों का आह्वान, उनको अर्घ्य चढ़ाना स्पष्ट लिखा हुआ है।

आज यह देखा जाता है कि मेरे द्वारा रचित कल्पद्रुम विधान विद्वान कराने के लिए ले जाते हैं, तेरह पंथ से करते हैं तो उसमें जो शासन देव-देवियों के अर्घ्य हैं, भगवान के माता-पिता के अर्घ्य हैं, उसको छोड़ देते हैं। उसके मंत्रों को भी बदल देते हैं, जबकि यह बहुत गलत है, किसी की कृति को कांट-छांट करना, घटाना-बढ़ाना, परिवर्तन करना आदि सब दोषास्पद है। देखा जाये तो यह विद्वानों के लिए उचित नहीं है। उन्हें हमेशा अपने प्राचीन ग्रंथों के आलोक में हर एक बात को समझना चाहिए और प्रान्त का, परम्परा का दुराग्रह छोड़ करके आगम के पक्ष का समर्थन करना चाहिए।

और भी कई एक विषय ऐसे हैं, सज्जातियत्व का विषय भी ऐसा है। वर्तमान में सूरिमंत्र के बारे में बड़ी चर्चा उठती है कि जहाँ पर आचार्य, मुनि न हो वहाँ प्रतिष्ठा में कौन सूरिमंत्र दे जबकि यह बात निराधार है। आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज कहते थे कि किसी भी प्रतिष्ठा ग्रंथ में यह नहीं है कि मुनि ही सूरिमंत्र दे, सूरि का अर्थ है आचार्य, लेकिन यहाँ पर जो सूरिमंत्र है वह प्रतिष्ठाचार्य से संबंधित है। प्रतिष्ठाचार्य का अर्थ है जो प्रतिष्ठा कराने में सूरि हैं प्रधान हैं अर्थात् उस विषय के आचार्य हैं। प्रतिष्ठाचार्य, पंडिताचार्य, विधानाचार्य ये सभी अपने-अपने विषय के आचार्य हैं, अतः प्रतिष्ठाचार्य को सूरिमंत्र देने के लिए पूर्ण अधिकार है।

इस प्रकार मैंने विद्वानों के लिए कुछ दिशा निर्देश दिए.हैं, जिन्हें आप सभी विद्वान आगम के परिप्रेक्ष्य में प्रयोग में लाएंगे, ऐसा मेरा कथन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवचन-5

सृष्टि की व्यवस्था

नमः श्री पुरुदेवाय, धर्मतीर्थप्रवर्तिने।
सर्वा विद्या-कला, यस्मा-दाविर्भूता महीतले।।

यह सृष्टि अनादि है, अनंत है और शाश्वत है। इसको रचने वाला कोई ईश्वर, सृष्टा, ब्रह्मा या विधाता नहीं है, प्रत्युत् यह स्वयंसिद्ध है, प्राकृतिक है, अनादिकाल से है और अनंतकाल तक रहेगी। जैन परम्परा के अनुसार आचार्यों ने बताया है कि यह संसार तीन लोक में विभक्त है—

लोगो अकिट्टिमो खलु, अणाइणिहणो सहावणिव्वत्तो।
जीवाजीवेहिं फुडो, सव्वागासवयवो णिच्चो।।

यह लोक अर्थात् संसार अथवा शास्त्रीय भाषा में कहें तो लोकाकाश अकृत्रिम है, अनादिनिधन है, स्वभाव से निर्मित है और जीव-अजीव से भरा हुआ है। ये नित्य है और जो सम्पूर्ण आकाश है उसका एक अव्यव स्वरूप है। वस्तुतः आकाश के दो भेद हैं- अलोकाकाश और लोकाकाश। अलोकाकाश अत्यंत विस्तृत है और उसके बीचों-बीच में लोकाकाश है।

तीन लोक का आकार आपने देखा ही है, जैनधर्म का प्रतीक चिन्ह भी तीन लोक का यह आकार ही है। यहाँ जम्बूद्वीप में आप खिड़की, दरवाजों, ग्रिल सभी में तीन लोक के इस आकार को देख सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति दोनों पैरों को फैलाकर खड़ा हो जाये और अपने दोनों हाथ कमर पर रख ले, तो जो 'पुरुषाकार' बनता है, वही तीनलोक अथवा लोकाकाश का आकार है। मैं प्रतिदिन इस पुरुषाकार लोकाकाश का ध्यान कराती हूँ, मैं स्वयं तीन लोक का आकार बनाकर खड़ी हो जाती हूँ और लोगों को भी इसी प्रकार खड़ा करती हूँ, इस ध्यान में बड़ा ही आनंद आता है।

यह लोकाकाश मूल में 7 राजू चौड़ा है, 14 राजू ऊँचा है, मध्य में घटते हुए बीचों-बीच में 1 राजू रह गया है, पुनः बढ़ते-बढ़ते ब्रह्म लोक के पास अर्थात् कोहनी वाले स्थान पर 5 राजू हो गया है और पुनः ऊपर की ओर सिद्धशिला तक घटते-घटते 1 राजू रह गया है। इसकी मोटाई सर्वत्र 7 राजू है। ऐसे इस लोकाकाश में सबसे नीचे अधोलोक में निगोद है, उसके ऊपर 7 नरक हैं, इनमें से प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भाग हैं-खर भाग, पंक भाग और अब्बहुल भाग। अब्बहुल भाग में नारकी हैं और दो भागों में भवनवासी देवों के भवन बने हुए हैं, गौणरूप में व्यंतर देवों के भवन भी इन दो भागों में हैं।

अपने शरीर में नाभि स्थान पर 1 राजू चौड़े मध्यलोक की कल्पना करें, जिसमें थाली के समान आकार वाले गोलाकार असंख्यात द्वीप-समुद्र हैं, जिनमें से प्रथम द्वीप का नाम है-'जम्बूद्वीप'। ऊपर ऊर्ध्वलोक में सौधर्म स्वर्ग से सर्वार्थसिद्धि तक 16 स्वर्ग, 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश और 5 अनुत्तर हैं, उसके ऊपर सिद्धशिला है।

आप लोगों को ध्यान यह रखना है कि इस लोकाकाश में अधोलोक 7 राजू ऊँचा है और ऊर्ध्वलोक भी 7 राजू ऊँचा है, जबकि मध्यलोक की ऊँचाई ऊर्ध्वलोक से मात्र 1 लाख 40 योजन ली गई है, जो राजू के सामने नगण्य ही है क्योंकि 1 राजू में असंख्यात योजन होते हैं। 1 योजन में 2000 कोस अर्थात् 4000 मील हैं।

जब मैं लोकाकाश का ध्यान कराती हूँ तो मेरा उद्देश्य रहता है कि जब आप अपने शरीर में ही शाश्वत जिनमंदिरों की स्थापना करके उनको नमन करेंगे, तो शरीर विशुद्ध हो जायेगा, आत्मा पवित्र हो जायेगी, असीम पुण्य का संचय होगा, शरीर से आधि-व्याधि-रोग पलायमान हो जायेंगे और भूत-प्रेत-व्यंतर आदि की बाधाएँ भी दूर हो जायेंगी।

सर्वप्रथम नाभि से नीचे अधोलोक में भवनवासी देवों के 7 करोड़ 72 लाख जिनमंदिर हैं, उनको नमस्कार हो; मध्यलोक में जम्बूद्वीप से लेकर 13 द्वीप पर्यंत 458 जिनमंदिर हैं, उनको नमस्कार हो, ऊर्ध्वलोक में अर्थात् नाभि के ऊपर सौधर्म स्वर्ग से लेकर सर्वार्थसिद्धिपर्यंत 84 लाख 97 हजार 23 जिनमंदिर हैं, उनको नमस्कार हो। तीन लोक में कुल 8 करोड़ 56 लाख 97 हजार 481 जिनमंदिर हैं, इन सबमें 108-108 प्रतिमाएँ होने से कुल 925 करोड़ 53 लाख 27 हजार 948 जिनप्रतिमाएँ हैं, इन सभी जिनमंदिरों एवं जिनप्रतिमाओं को मेरा बारम्बार नमस्कार है, ऐसा चिंतवन करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुनः मध्यलोक में देखिए जहाँ व्यंतर देवों के जम्बूद्वीप से लेकर स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत असंख्यात भवन हैं, भवन-भवनपुर-आवास आदि, प्रत्येक में उनके जिनमंदिर बने हैं, जिनमें से प्रत्येक में 108-108 जिनप्रतिमाएँ हैं, उनको नमस्कार करिये। सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र, तारा इत्यादि पाँच प्रकार के जो ज्योतिष्क देव हमें दिख रहे हैं, वे भी जम्बूद्वीप से लेकर स्वयंभूरमण समुद्र तक असंख्यात हैं, प्रत्येक के विमान में एक-एक जिनमंदिर है, तो इस प्रकार ज्योतिर्वासी देवों के असंख्यात जिनमंदिर हो गये और उनमें 108-108 प्रतिमाएं हैं, उनको नमस्कार करिए।

पुनः आप देखें ढ़ाई द्वीप को अर्थात् सुमेरु पर्वत को वेष्टित किए हुए प्रथम 'जम्बूद्वीप', पुनः जम्बूद्वीप को घेरे हुए लवण समुद्र, उसके पश्चात् धातकीखण्ड द्वीप, उसके पश्चात् कालोदधि समुद्र और उसके बाद पुष्करार्द्ध द्वीप। इस ढ़ाई द्वीप में 170 कर्मभूमि हैं, इन सभी कर्मभूमियों में जितने भी अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और जिनचैत्यालय रूप नवदेवता हैं, उनको नमस्कार करें; जितने भी कृत्रिम जिनमंदिर-जिनप्रतिमाएँ हैं, उनको नमस्कार करें; विद्यमान बीस तीर्थंकर-सीमंधर, युगमंधर, बाहु, सुबाहु आदि हैं, उनको नमस्कार करें। पाँच भरत-पाँच ऐरावत क्षेत्रों में भूत-भविष्यत-वर्तमान संबंधी तीस चौबीसी के 720 तीर्थंकर भगवन्तों को नमस्कार करें, साथ ही ढ़ाई द्वीप की सभी कर्मभूमियों में जितनी भी पंचकल्याणक भूमियाँ हैं, निर्वाणभूमियाँ हैं, अतिशयक्षेत्र हैं, उन सबको नमस्कार करें।

इसके पश्चात् आपको सिद्धशिला का ध्यान करना है। लोक के अग्रभाग पर सिद्धशिला है, आप चिंतन करें कि जो मैंने पुरुषाकार लोकाकाश बनाया है, उसके ठीक अग्रभाग पर ढ़ाई द्वीप के समान 45 लाख योजन विस्तृत उत्तान कटोरे के आकार वाली अर्धचन्द्राकार सिद्धशिला मेरे मस्तक पर विराजमान है और उस पर अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठी विराजमान हैं। पुनः चिन्तन करें कि जीव का स्वभाव ऊर्ध्वगामी है और ऊर्ध्वगमन स्वभावी मेरी आत्मा उसी सिद्धशिला पर पहुँचकर अनंत सिद्धों के बीच विराजमान हो गयी है, चिच्चैतन्य स्वरूप भगवान आत्मा सब कर्मों से पृथक होकर सिद्धशिला पर पहुँच गई है, उन सब सिद्धों को मेरा बारम्बार नमस्कार हो।

''त्रिभुवन के मस्तक पर, सिद्धशिला पर सिद्ध अनंतानंत।
नमूँ नमूँ त्रिभुवन के सभी, तीर्थ को जिससे हो भव अंत।।''

तो इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक, आल्हादपूर्वक प्रतिदिन ये तीन लोक का ध्यान मैं करती हूँ और आपको भी प्रतिदिन इस ध्यान को करना चाहिए।

तीन लोक की इस अनादिनिधन रचना के चिंतन के पश्चात् अब आपको सृष्टि की व्यवस्था के विषय में समझना है। ढ़ाई द्वीप में 170 कर्मभूमियों में 160 कर्मभूमियाँ विदेह क्षेत्र में हैं, जहाँ शाश्वत कर्मभूमि है। वहाँ पर सदाकाल चतुर्थ काल की आदि (प्रारंभ) जैसी व्यवस्था ही रहती है अर्थात् यहाँ भरतक्षेत्र में भगवान ऋषभदेव के समय जैसा काल था, वही वहाँ सर्वदा विद्यमान रहता है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है। 160 विदेहों की तो यह व्यवस्था है।

अब आगे देखें! जम्बूद्वीप में एक भरत-एक ऐरावत हैं, धातकी खण्ड में 2 भरत-2 ऐरावत हैं, पुष्करार्द्ध द्वीप में दो भरत-दो ऐरावत हैं, इस प्रकार कुल मिलाकर 5 भरत-5 ऐरावत क्षेत्र हुए , जिनमें से प्रत्येक के आर्यखण्ड में एक-एक कर्मभूमि होने से 10 कर्मभूमियाँ हुईं और कुल मिलाकर 160+10=170 कर्मभूमियाँ हो गईं। 5 भरत-5 ऐरावत क्षेत्रों में सदैव काल परिवर्तन होता रहता है। यह काल परिवर्तन अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी कालों के रूप में होता है। अवसर्पिणी के बाद उत्सर्पिणी, पुनः अवसर्पिणी पुनः उत्सर्पिणी यह क्रम सदा चला करता है।

प्रत्येक अवसर्पिणी 10 कोड़ा-कोड़ी सागर की होती है और प्रत्येक उत्सर्पिणी भी 10 कोड़ा-कोड़ी सागर की होती है। वर्तमान में जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में अवसर्पिणी ही चल रही है। इस अवसर्पिणी में मनुष्यों की आयु, ऊँचाई, सुख इत्यादि में क्रम-क्रम से हानि होती जाती है और उत्सर्पिणी में वृद्धि होती जाती है।

अवसर्पिणी के 6 भेद होते हैं-सुषमा-सुषमा, सुषमा, सुषमा-दुषमा, दुषमा-सुषमा, दुषमा और अति दुषमा। उत्सर्पिणी में यही क्रम विपरीत हो जाता है अर्थात् अति दुषमा, दुषमा, दुषमा-सुषमा, सुषमा-दुषमा, सुषमा और सुषमा-सुषमा। आपको यह ध्यान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रखना है कि सुषमा-सुषमा, सुषमा और सुषमा-दुषमा में क्रम से उत्तम भोगभूमि, मध्यम भोगभूमि और जघन्य भोगभूमि की व्यवस्था रहती है।

इस बार भरतक्षेत्र में अवसर्पिणी के स्थान पर हुण्डावसर्पिणी काल चल रहा है। हुण्डावसर्पिणी अर्थात् जिसमें अघटित घटनाएं घट जाएं, ये करोड़ों-करोड़ों कल्पकालों के बाद आता है, कितनी ही अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी बीत जाती हैं, तब एक हुण्डावसर्पिणी काल आता है।

इस हुण्डावसर्पिणी के दोष से तृतीय काल के अंत में ही 14 कुलकर हुए, भगवान ऋषभदेव हुए, भरत चक्रवर्ती हुए और भगवान ऋषभदेव तृतीय काल के अंत में ही मोक्ष चले गये। वैसे तो अवसर्पिणी में चतुर्थ काल के आदि से अंत तक ही 24 तीर्थंकर होते हैं और उसी काल में मोक्ष जाते हैं परन्तु हुण्डावसर्पिणी के दोष से इस बार तृतीय काल में तीर्थंकर का जन्म एवं मोक्षगमन हुआ है।

प्रथम काल अर्थात् उत्तम भोगभूमि में 3 पल्य की आयु और 3 कोस ऊँचा शरीर था, घटते-घटते क्रम से द्वितीय काल में 2 पल्य की आयु और 2 कोस ऊँचा शरीर और तृतीयकाल में 1 पल्य की आयु और 1 कोस ऊँचा शरीर हो गया और घटते-घटते तृतीय काल के अंत में अंतिम कुलकर नाभिराय के शरीर की ऊँचाई 525 धनुष रह गई। एक धनुष में 4 हाथ माने गये हैं। भगवान ऋषभदेव की ऊँचाई 500 धनुष थी। युग की आदि में भोगभूमि समाप्त हो गई और कर्मभूमि प्रारंभ हो गई।

तीर्थंकर गर्भ-जन्म से ही मति, श्रुत व अवधि इन तीन ज्ञान के धारी होते हैं। अतः भगवान ऋषभदेव ने अपने अवधिज्ञान से विदेह क्षेत्र की कर्मभूमि का स्मरण करते हुए चिंतन किया कि वहाँ पर क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये तीन वर्ण हैं तथा असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प इन षट् क्रियाओं के द्वारा जीवनयापन किया जाता है, उसी प्रकार यहाँ भरतक्षेत्र में भी वही व्यवस्थाएँ बनाना चाहिए। अतः प्रभु ने प्रजा को इसी प्रकार का उपदेश दिया तथा क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन वर्णों की स्थापना की। इन्द्र को उन्होंने ग्राम, नगर, पुर, खेट इत्यादि बनाने की आज्ञा दी, जिसे देव कारीगरों ने देखते-देखते पूर्ण कर दिया। अनेकानेक ग्राम, नगर, शहर सब निर्मित हो गये, महल-मकान आदि निर्मित हो गये। पहले भोगभूमि में क्या था कि दश प्रकार के कल्पवृक्षों से महल, मकान, भोजन, वस्त्राभूषण इत्यादि सब प्राप्त हो जाते थे परन्तु कर्मभूमि में सब व्यवस्थाओं को बनाने की आवश्यकता थी। अतः भगवान ऋषभदेव ने प्रजा को समस्त क्रियाएँ सिखाईं-कैसे बीज बोना, कैसे उगाना, कैसे धान्य काटना, कैसे आटा पीसना, कैसे भोजन बनाना, कैसे खाना-खिलाना इत्यादि सब व्यवस्थाओं से परिचित करा दिया।

चतुर्थ काल एक कोड़ा-कोड़ी सागर का था, उसमें 24 तीर्थंकर हुए (भगवान ऋषभदेव तृतीय काल के अंत में ही हो गये थे), 12 चक्रवर्ती हुए, 9 बलदेव, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण, ऐसे 63 शलाका पुरुष हुए। 24 कामदेव, 9 नारद और रुद्र भी हुए हैं। इन सबका वर्णन आप महापुराण, आदिपुराण, हरिवंशपुराण, तिलोयपण्णत्ति आदि ग्रंथों के स्वाध्याय से समझ सकते हैं।

तो इस प्रकार इस क्रम से सृष्टि प्राकृतिक एवं स्वाभाविक रूप से चलती रहती है, जैसे मेघ स्वाभाविक रूप से ही आकाश में छा जाते हैं, उनसे स्वाभाविक रूप से जलवृष्टि होती है, आकाश में इन्द्रधनुष स्वाभाविक रूप से बन जाता है, स्वाभाविक रूप से ही शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, शरद ऋतु इत्यादि का परिवर्तन चलता रहता है, इसी प्रकार सृष्टि भी अपने क्रम से स्वतः ही चलती रहती है।

चतुर्थ काल की आदि में 525 धनुष ऊँचा बाहुबली का शरीर था, 500 धनुष ऊँचा भगवान ऋषभदेव का शरीर था, जबकि उत्कृष्ट आयु 1 कोटि वर्ष पूर्व की अर्थात् बहुत बड़ी आयु थी। चतुर्थकाल के अंत तक घटते-घटते शरीर की ऊँचाई 7 हाथ और आयु 120 वर्ष रह गई। धीरे-धीरे क्रम से घटते हुए शरीर साढ़े 3 हाथ का रह गया और पंचमकाल में भी यह घटने का क्रम जारी है।

चतुर्थकाल के अंत में 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म हुआ, आज से 2604 वर्ष पूर्व। उनके मोक्षगमन के पश्चात् 3 वर्ष साढ़े 8 माह तक चतुर्थकाल रहा तथा पुनः पंचमकाल प्रारंभ हुआ। हम और आप पंचम काल में निवास कर रहे हैं। आयु, शरीर की ऊँचाई, सुख आदि सभी में देखते-देखते ह्रास हुआ है, हो रहा है। आप देखते हैं आपके बाबा अथवा पिता में जो शक्ति थी चलने की, बोलने की, खाने की, पचाने की अर्थात् जो स्वस्थता थी, आज आप में उन सभी चीजों में ह्रास दिखायी पड़ता है, आपकी संतान की शक्ति आपसे भी कम है, तो इस प्रकार से षट्काल का परिवर्तन होता चला आ रहा है। आगे छठा काल आ जायेगा, उसमें अग्नि भी नहीं रहेगी क्योंकि पंचमकाल के अंत में ही अग्नि समाप्त हो जायेगी, राजा भी नहीं रहेगा, धर्म भी नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहेगा, अत्यंत निष्कृष्ट यह काल होगा, मनुष्यों का जीवन पशुवत् व्यतीत होगा, अत्यंत दुःखी जीवन रहेगा। उसके पश्चात् उत्सर्पिणी काल आयेगा, जिसमें पहले छठा काल आयेगा, पुनः पाँचवां, चौथा इत्यादि तो इस प्रकार से सृष्टि के परिवर्तन का यह क्रम चला आ रहा है। जैन ग्रंथों के अनुसार सृष्टि की यह व्यवस्था स्वाभाविक रूप से चली आ रही है, किसी ब्रह्मा इत्यादि के द्वारा इसका संचालन जैन दर्शन में नहीं माना गया है। आज बालकों को पढ़ा दिया जाता है कि पूर्व में बंदर मनुष्य के पूर्वज थे, उनके रोम घिस गये, पूँछ घिस गयी तो उनसे धीरे-धीरे मनुष्यों का विकास हो गया, पर जैनागम के अनुसार ये कल्पनाएँ निराधार किंवदंतियाँ हैं।

हम मनु की संतान हैं, हमारे पूर्वज कहीं अधिक उन्नतिशील थे। मनु 'कुलकर' को कहते हैं। भगवान ऋषभदेव अंतिम 14वें कुलकर नाभिराय के पुत्र थे। 'मनु' से ही मानव बना है।

मनोरपत्यं मानवः (मनु की संतान को मानव कहते हैं) तो हम सब कुलकरों की संतान हैं।

देखिए! ये तो कोई भी नहीं कह सकता कि पहले बीज है कि वृक्ष संतान परम्परा अनादि है। उसकी आदि नहीं है पर अंत तो है। बीज को जला दो तो उसकी परम्परा का अंत हो जायेगा। इसी प्रकार हमारी और आपकी परम्परा भी अनादिकाल से चली आयी है। हमारे पिता, उनके पिता, उनके पिता इत्यादि, यह पूर्वजों की परम्परा कब से चली आई है, हम नहीं कह सकते। सभी माता-पिता से ही उत्पन्न हुए हैं, अपने आप नहीं तो इस प्रकार हमारी यह कुल परम्परा उद्भव की दृष्टि से अनादि है, परन्तु इस परम्परा को समाप्त किया जा सकता है। भगवान महावीर ने शादी नहीं की तो उनकी कुल परम्परा नहीं चली परन्तु और तीर्थंकरों ने शादी की तो उनकी परम्परा तो चली आ रही है तो इस परम्परा का हमें गौरव होता है।

मैं तो कहूँगी कि हस्तिनापुर के निकट रहने वाले तीर्थंकर शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ की वंश परम्परा के हैं। हम लोग अयोध्या के निकट जन्म लेने वाले भगवान ऋषभदेव की परम्परा, उनके खानदान के हैं। बनारस में रहने वालों को मैं गौरव से कहती हूँ कि आप उग्रवंश के, महाराज अश्वसेन के वंश के हैं। बिहार में रहने वालों को मैं कहूँगी कि आप राजा सिद्धार्थ के जो भाई इत्यादि रहे होंगे, उनकी वंश परम्परा के हैं तो बात ये है कि यह खानदान परम्परा कहीं न कहीं से चली आ रही है, उसका कोई आदि नहीं है और उसको बनाने वाला ईश्वर भी नहीं है, ये प्राकृतिक है और हमें इन सब बातों पर विश्वास रखना है।

ये विश्वास का विषय है। सोचिए! हमने लंदन नहीं देखा, अमेरिका नहीं देखा, जर्मन नहीं देखा पर फिर भी हम विश्वास करते हैं क्योंकि आप जैसे कई लोग वहाँ जाकर आते हैं और हमें बताते हैं, अतः जो चीज हमने नहीं देखी है, वह नहीं है, ऐसा कहना अथवा मानना उचित नहीं है। तो भगवान ने जो देखा है, सर्वज्ञ ने जो देखा है, उनकी वाणी में जो स्पष्ट है, वह है, ऐसा हमें दृढ़ विश्वास रखना है। इस प्रकार से संसार भी है, परलोक भी है, जीव का जन्म-मरण भी है, सुमेरुपर्वत भी है, जम्बूद्वीप भी है, स्वर्ग-नरक भी हैं, आत्मा का अस्तित्व भी है, इन सब बातों को हमें हृदय से स्वीकार करना है। सुमेरु पर्वत हमें साक्षात् नहीं दिखता है पर सर्वज्ञ देव की वाणी के अनुसार यह हमसे 20 करोड़ मील की दूरी पर है, तो हमें इसके प्रति किंचित् मात्र भी संशय नहीं रखना है। वैदिक ग्रंथों में भी सुमेरु पर्वत को मध्यलोक का मापदंड कहा है तथा इस पर ब्रह्मा का निवास माना है। जैनागम के अनुसार सुमेरु पर्वत पर 16 अकृत्रिम चैत्यालय हैं, इसके पाण्डुक वन की 4 शिलाओं में से पाण्डुकशिला पर जन्मजात तीर्थंकर शिशु का जन्माभिषेक होता है। यहाँ जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में निर्मित सुमेरु पर्वत की पाण्डुकशिला पर भी भक्तगण भगवान का जन्माभिषेक करते हैं, जब भी किन्हीं तीर्थंकर भगवान का जन्मकल्याणक आता है, तब मेरी प्रेरणा से उन्हीं भगवान की प्रतिमा पाण्डुक शिला पर ले जाकर जन्माभिषेक किया जाता है। तो बात यह है कि हमारे शास्त्रों में जो वर्णित है, हमारे आचार्यों ने जो कहा है, वह सत्य है, यही दृढ़ विश्वास रूपी आस्तिक्य भावना है, इसी का नाम सम्यग्दर्शन है।

आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करो, परलोक को स्वीकार करो, चतुर्गति परिभ्रमण को स्वीकार करो, नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति अर्थात् इन चारों गति में से किसी न किसी से हम आये हैं और किसी न किसी गति में हमें जाना है। जैसे-जैसे पुण्य-पाप का हम संचय करेंगे, वैसी ही गति में हम जन्म धारण करेंगे। इसीलिए तो आचार्यों का कहना है कि आप अपनी प्रवृत्ति अच्छी बनाओ, आचरण अच्छा रखो, सम्यग्दृष्टी बनो, ज्ञान का अर्जन करो, अपना चारित्र ऐसा सदाचारमय बनाओ कि उच्चगति मिले, देवगति मिले। आप चाहें तो स्वर्ग को प्राप्त कर सकते हैं और चाहें तो पुरुषार्थ करके मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं। ठीक है कि आज पंचमकाल में मोक्ष नहीं है पर परम्परा से तो मोक्ष है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो इस प्रकार संक्षेप में मैंने ये व्यवस्था आपको बतायी। आपको याद रखना है कि मध्यलोक की 170 कर्मभूमियों में ही तीर्थंकर आदि महापुरुष होते हैं और इन्हीं कर्मभूमियों में आप या हम मुनि दीक्षा धारण करके, तपश्चरण करके अपने कर्मों को काटकर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं, इसीलिए इनका 'कर्मभूमि' नाम सार्थक है। 'कर्म' अर्थात् क्रियाएँ जहाँ पर की जाये, जहाँ असि-मसि-कृषि इत्यादि षट्आवश्यक क्रियाओं का अभ्यास हो, जहाँ श्रावक देवपूजा, गुरुपास्ति इत्यादि षट्क्रियाएं करते हों, जहाँ मुनि सामायिक, देववंदना, स्तुति आदि अपनी आवश्यक क्रियाओं को करके मोक्षपुरुषार्थ को सिद्ध करें, वहीं कर्मभूमि है। कर्मभूमि का अर्थ यही है कि जहाँ पर जीव कर्म करके सुख-दुख के भोक्ता बनते हैं और पुरुषार्थ करके कर्मों को काटकर परम्परा से मोक्ष भी प्राप्त कर लेते हैं अतः इसका 'कर्मभूमि' नाम सार्थक है।

अपने को यह समझना है कि पूर्व में हमने कोई अशुभ कर्म संचित किया होगा, जिससे हमें पंचमकाल में मानव जीवन मिला, पर फिर भी मैं कहती हूँ कि अपने को महान पुण्यशाली मानो कि हमें जैन कुल, जैनधर्म मिला है, जिनवाणी का अध्ययन-स्वाध्याय का अवसर मिला, गुरुओं का समागम मिला। बहुत बड़ा पुण्य है। हम तो पंचमकाल में जन्म लेकर भी अपने को चतुर्थकाल से श्रेष्ठ मानते हैं, क्यों? क्योंकि चतुर्थकाल में हमने यदि सम्यक्त्व प्राप्त किया होता, चारित्र ग्रहण किया होता तो हम मोक्ष प्राप्त कर लेते। तो वह चतुर्थकाल हमारे किस काम का था, जिसमें हमनें मोक्ष पुरुषार्थ नहीं साधा और यह पंचमकाल हमारे लिए श्रेष्ठ है, जिसमें हमने धर्म पुरुषार्थ प्राप्त करके मोक्ष प्राप्ति के पुरुषार्थ का अभ्यास प्रारंभ किया है। तो इस प्रकार हमें इस पंचमकाल को भी अच्छा मानना है, जिसमें हमने सम्यग्दर्शन प्राप्त किया है, समीचीन ज्ञान प्राप्त किया है, गुरुओं के समागम से हमें चारित्र धारण करने की पात्रता, योग्यता एवं भव्यता प्राप्त हुई है, आज हम अपनी शक्ति के अनुसार अणुव्रत, पंच महाव्रत ग्रहण कर सकते हैं, पुरुषार्थ कर सकते हैं, तो हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ यही है कि हम अपने सम्यग्दर्शन को दृढ़ रखें, भगवन्तों की भक्ति करते हुए, स्वाध्याय करते हुए अपने ज्ञान की अभिवृद्धि करें। तीन ही रत्न हैं संसार में—

'देव, शास्त्र, गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।'

देव की पूजा से आपको सम्यग्दर्शन रूपी रत्न मिलेगा, शास्त्र स्वाध्याय से आपको सम्यग्ज्ञानरूपी रत्न मिलेगा, गुरुओं के प्रसाद से आपको सम्यकचारित्र रूपी रत्न मिलेगा, तो तीन रत्न आपको तीन ही रत्न देने वाले हैं।

तो यही ध्यान रखना है कि कभी अपने आपको हम निरुत्साहित न करें वरन् सदैव विचार करें कि हम अतीव पुण्यशाली हैं, महान सौभाग्यशाली हैं, सदैव चिंतन करें कि मेरी आत्मा भगवान आत्मा है, शुद्ध निश्चयनय से हम भगवान आत्मा हैं और व्यवहार से हम संसारी हैं। हमें अपनी आत्मा को पवित्र भगवान आत्मा बनाना है। जितना पुरुषार्थ बन सकें उतना करके इस पंचमकाल में भी अपनी मनुष्य पर्याय को हमें सार्थक करना है।

परम पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर महाराज ने कहा—

मैं और आर्यिका ज्ञानमती जी दोनों ने आचार्य श्री वीरसागर महाराज से दीक्षा ली, किन्तु ज्ञानमती माताजी ने आत्मकल्याण एवं शिष्य निर्माण के साथ-साथ साहित्य सृजन एवं तीर्थ निर्माण आदि जो लोकोत्तर कार्य किये हैं उसके लिए साधु समाज एवं सम्पूर्ण जैन समाज उनका उपकार भूल नहीं सकता है।

अक्टूबर 1982, लोहारिया (राज.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवचन-८

वैराग्यपथ पर बढ़ते कदमों को रोकें नहीं

नमः श्री वर्धमानाय, निर्धूतकलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां, यद्विद्या दर्पणायते।।

भव्यात्माओं!

संसार में मनुष्य पर्याय अत्यन्त दुर्लभ है और उसको प्राप्त करके हमेशा उसको सार्थक करने का पुरुषार्थ करते रहना चाहिए।

इष्टोपदेश ग्रंथ में आचार्यश्री पूज्यपाद स्वामी कहते हैं-

इतश्चिन्तामणिर्दिव्यः, इतः पिण्याक खण्डकं।
ध्यानेन चेदुभे लभ्ये, क्वाद्रियन्तां विवेकिनः।।

अर्थात् आपके एक हाथ में चिन्तामणि रत्न है और दूसरे हाथ में खली का टुकड़ा है, अब आप स्वयं विचार करें कि आप किसमें आदर करेंगे? चिन्तामणि रत्न में या खली के टुकड़े में?

इस पर किसी ने प्रश्न किया कि चिन्तामणि रत्न क्या है? उसको उत्तर मिला—"धर्म है।" पुनः प्रश्न किया—वह धर्म क्या है? तब समाधान देते हैं—जो संसार के दुःखों से प्राणियों को निकालकर उत्तम सुख में पहुँचा दे, वह धर्म है। वह धर्म दो भागों में विभक्त है—गृहस्थ धर्म और मुनिधर्म अर्थात् प्रवृत्तिधर्म और निवृत्ति धर्म अथवा भक्तिमार्ग-वैराग्यमार्ग।

इसमें विचार करने का विषय यह है कि पहले किस धर्म का निरूपण किया जाये? आप तो यही कहेंगे कि सबसे पहले गृहस्थधर्म को धारण करना चाहिए पुनः मुनिधर्म को, लेकिन आचार्यों ने ऐसा नहीं कहा है।

पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय ग्रंथ में श्री अमृतचन्द्रसूरि जैसे महान आचार्य कहते हैं कि—

यो यतिधर्ममकथयन्नुपदिशति गृहस्थधर्ममल्पमतिः।
तस्य भगवत्प्रवचने प्रदर्शितं निग्रहस्थानम्।।18।।

अर्थात् जो साधु सामने आए हुए भव्यप्राणियों को मुनिधर्म का उपदेश न देकर गृहस्थधर्म का उपदेश देते हैं, वे भगवान के प्रवचन में निग्रह अर्थात् प्रायश्चित्त के भागी माने गए हैं क्योंकि व्यवहार में भी देखा जाता है कि कोई भी व्यापारी ग्राहक को सबसे पहले बहुमूल्य वस्तु दिखाता है, जब ग्राहक उस महंगी वस्तु को लेने में सक्षम नहीं होता है, तब वह सस्ती वस्तु दिखाता है, उसी प्रकार साधुगण सर्वप्रथम मुनिधर्म का ही उपदेश देते हैं, बाद में गृहस्थधर्म का स्वरूप कहते हैं, ऐसा प्रथमानुयोग आदि पुराण ग्रंथों में वर्णन आता है।

इस संदर्भ में वज्रकुमार मुनि की कथा इस प्रकार है—

एक बार सोमदत्त ब्राह्मण अपनी गर्भवती पत्नी के दोहले की पूर्ति हेतु आम की खोज करते-करते एक उद्यान में पहुँचे। वहाँ वज्रकुमार मुनिराज आम्रवृक्ष के नीचे विराजमान थे। मुनि की तपश्चर्या के प्रभाव से असमय में ही उस वृक्ष में आम्रफल आ गए थे। सोमदत्त ने मुनि के निकट पहुँचकर उनको नमस्कार किया। मुनिराज ने उन्हें मुनिधर्म का उपदेश दिया, जिसके प्रभाव से वे सोमदत्त मुनि बन गये। मुनि बनने से पूर्व किसी व्यक्ति के द्वारा उन्होंने पत्नी के लिए आम भिजवा दिया। उपदेश का प्रभाव देखिए! गर्भवती पत्नी को छोड़कर सोमदत्त ने मुनिदीक्षा धारण कर ली!

इस प्रकार के अनेकों रोमांचकारी उदाहरण शास्त्रों में पढ़ने को मिलते हैं।

इसी संदर्भ में दूसरा कथानक है—

अयोध्या के राजा सुरेन्द्रमन्यु के पुत्र वज्रबाहु का विवाह हस्तिनापुर के राजा इभवाहन की कन्या मनोदया के साथ सम्पन्न हुआ। कुछ दिन बाद पुत्री मनोदया के भाई उदयसुन्दर अपनी बहन को विदा कराने उसकी ससुराल गए, उस समय वज्रबाहु अपनी पत्नी के गुण, सौन्दर्य आदि में इतने अधिक आसक्त थे कि वे उसको पीहर भेजने के लिए सहमत नहीं थे। तब उदयसुन्दर ने वज्रबाहु से भी हस्तिनापुर चलकर कुछ दिन वहाँ रहने की बात कही, वे तैयार हो गये और उनके साथ चल पड़े।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस समय कन्यापक्ष और वरपक्ष के सब मिलाकर कुल 26 राजकुमार साथ में थे। नवविवाहिता मनोदया कन्या के साथ अन्य कई महिलाएँ भी थीं। उन सभी ने मार्ग में एक उद्यान में पड़ाव डाला। उस उद्यान में पर्वत की चोटी पर एक नग्न दिगम्बर मुनिराज ध्यान में लीन थे। सभी लोग वन क्रीड़ा आदि करने में मग्न थे। वन की शोभा देखते-देखते अचानक वज्रबाहु की दृष्टि मुनिराज के मुखमण्डल पर पड़ी, वे एकटक होकर मुनिराज को देखने लगे, उनके अन्तरंग में अनेक विचारधाराएँ हिलोरें लेने लगीं। वे सोचने लगे- "अहो! मनुष्यपर्याय ही सर्वोत्कृष्ट, श्रेष्ठ चिन्तामणि रत्न है। देखो! ये महासाधु कैसे तपश्चरण कर रहे हैं! अगर मैं भी इस प्रकार से संसार के विषय भोगों को छोड़कर ऐसी उत्तम जैनेश्वरी दीक्षा धारण करके आत्मिक, अतीन्द्रिय, उत्तम सुख को प्राप्त कर लूँ, तो कितना अच्छा होगा!"

इस प्रकार उनके हृदय में वैराग्य की भावनाएँ उमड़ पड़ीं, वे अपलक दृष्टि से मुनि को देखते हुए अपने चिन्तन में इतने निमग्न थे कि उन्हें यह आभास ही नहीं था कि कहाँ, क्या हो रहा है? तभी उनके साले उदयसुन्दर ने मजाक करते हुए कहा— अरे जीजाजी! क्या आप मुनि बनना चाहते हैं? एकटक होकर बहुत देर से आप मुनि को देख रहे हैं! क्या आपको दीक्षा लेना है क्या? वज्रबाहु ने अपने भावों को अन्तरंग में छिपाते हुए सहजता से उत्तर दिया— 'अगर मैं दीक्षा लेता हूँ तो आप क्या करेंगे? बताइए। चूँकि उदयसुन्दर ने स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं की थी कि ये दीक्षा धारण कर लेंगे बल्कि वे समझ रहे थे कि सब बिल्कुल मजाक है, जब ये अपनी पत्नी अर्थात् मेरी बहन में अत्यधिक आसक्ति के कारण हमारे साथ अयोध्या से हस्तिनापुर चल रहे हैं, तो ये भला कैसे दीक्षा लेंगे? अतः उन्होंने भी सरलभाव से कह दिया— 'जब आप दीक्षा लेंगे, तब मैं भी दीक्षा ले लूँगा।" बस, फिर क्या था! बिना किसी से कुछ कहे सुने वे युवराज वज्रबाहु पर्वत की ओर चल पड़े, वहाँ पहुँचकर उन्होंने विवाह के समय के अपने बेशकीमती वस्त्र-आभूषण आदि उतारकर मुनिराज से निवेदन किया— 'भगवन्! मुझे जैनेश्वरी दीक्षा लेनी है, शीघ्र ही मुझे इस संसार समुद्र से पार पहुँचाने वाली जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान कीजिए।' तभी उदयसुन्दर जोर-जोर से कहने लगे— जीजाजी! यह आप क्या कह रहे हैं? मैं तो यह सब मजाक में कह रहा था। आप वापस चलिए, मेरी नवविवाहिता बहन आपके बिना कैसे रह पाएगी? तब वज्रबाहु ने कहा— उदयसुन्दर! अब आप भी अपने कर्तव्य को निभाइए, अभी आपने कहा था कि आपके साथ मैं भी दीक्षा ले लूँगा अतः अब आप भी तैयार हो जाइए। यह सुनकर उदयसुन्दर भी तुरंत दीक्षा लेने के लिए तैयार हो गए। इतना ही नहीं, साथ में आए सभी 26 राजकुमारों ने भी राज्यवैभव का त्याग करके, बिना माता-पिता की आज्ञा के जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली।

अब मनोदया चिन्तन करती है— 'मुझ नवविवाहिता को छोड़कर मेरे पतिदेव महामुनि बन गए हैं, अब मेरा कर्तव्य क्या है? रोने-धोने से तो अब कुछ भी लाभ नहीं है।" इस प्रकार विचार करके वह मनोदया श्वेत साड़ी पहनकर आर्यिका दीक्षा के लिए तत्पर हो जाती है तथा उसके साथ में सभी राजकुमारों की पत्नियाँ भी दीक्षा धारण कर लेती हैं।

वास्तव में वह कितना रोमांचकारी दृश्य रहा होगा!

इधर अयोध्या में जब वज्रबाहु के बाबा ने यह समाचार सुना, तो वे विचार करने लगे कि— अरे! मेरे पोते ने जैनेश्वरी दीक्षा ले ली और मैं अभी घर में ही पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि में मग्न हूँ।"

इतना चिन्तन करते ही उनको भी राज्यवैभव से विरक्ति हो गई, तब उन्होंने वज्रबाहु के भाई को राज्यभार सौंपकर निर्वाणसंगम नामक महामुनि के पास जाकर जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली।

कहने का तात्पर्य यही है कि इस प्रकार के एक, दो नहीं, हजारों उदाहरण जैन ग्रंथों में भरे पड़े हैं। ये तो पूर्व समय की बात है, वर्तमान में भी इस प्रकार के उदाहरण देखने को मिल जाते हैं। आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज बताया करते थे कि जब वे संघ में आए और दीक्षा लेने के लिए तैयार हो गए, तब उनमें उनके एक रिश्तेदार भी थे, जो उनको समझाने आए थे परन्तु उन्होंने भी दीक्षा लेकर अपनी आत्मा का कल्याण कर लिया।

आज भी लगभग एक हजार साधुओं में ऐसे कई उदाहरण मिल जायेंगे।

कभी-कभी महिलाओं के मुँह से एक भजन सुना है, जिसकी पंक्तियाँ बहुत कर्णप्रिय लगती हैं—

जीवन के किसी भी क्षण में, वैराग्य उपज सकता है।
संसार में रहकर प्राणी, संसार को तज सकता है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थात् किसी भी क्षण में किसी को भी वैराग्य उत्पन्न हो सकता है। यह कोई नियम नहीं है कि बचपन में वैराग्य क्यों? शादी होने के बाद वैराग्य क्यों? गर्भवती महिला को छोड़कर वैराग्य क्यों? आदि।

यहाँ एक और रोमांचकारी कथानक प्रस्तुत है—

इसी जम्बूद्वीप के पूर्वविदेह में वत्सकावती देश है, उसमें अपराजित और अनन्तवीर्य नामक दो भाई बलभद्र और नारायण पद से सुशोभित थे। इनमें से बलभद्र अपराजित की कन्या सुमति, बहुत ही गुणवती एवं रूपवती थी। किसी समय अपराजित महाराज ने दमवर नाम के चारण ऋद्धिधारी महामुनि का पड़गाहन कर उन्हें नवधाभक्तिपूर्वक आहारदान दिया, जिसके प्रभाव से वहाँ पंचाश्चर्यवृष्टि हुई। उसी समय वह सुमति कन्या आहारदान आदि क्रियाओं को देखकर प्रसन्नचित्त होती हुई महामुनि को नमस्कार करके उनके चरण सानिध्य में बैठ गई। बलभद्र महाराज अपराजित अपनी रूप और गुणों की खान, नवयौवन सम्पन्न कन्या को देखकर विचार करने लगे कि—'मुझे अब इस कन्या का विवाह करना है।' यह सोचकर उन्होंने कुछ क्षण बाद सभामण्डप में प्रवेश किया। वहाँ उन्होंने अपने मंत्रियों के साथ मंत्रणा करके एक विशाल स्वयंवर मण्डप तैयार कराया। हजारों राजपुत्र उस स्वयंवर मण्डप में उपस्थित हुए।

स्वयंवर की बात चली तो पहले आपको यह बता दूँ कि यह स्वयंवर प्रथा भी अनादि है। युग की आदि में भगवान ऋषभदेव के समय वाराणसी के महाराजा अकम्पन ने अपनी पुत्री सुलोचना के लिए स्वयंवर मण्डप तैयार कराया था, जिसमें सुलोचना ने हस्तिनापुर के युवराज (भरतचक्रवर्ती के सेनापति) जयकुमार के गले में वरमाला डाली थी, तब से यहाँ भारत में भी स्वयंवर की परम्परा चली आ रही है।

इधर अर्धचक्री बलभद्र अपराजित की पुत्री का स्वयंवर हो रहा था, कन्या सुमति हाथ में पुष्प और रत्नों की सुन्दर माला लेकर अपनी सखियों के साथ स्वयंवर मंडप में प्रवेश करती है। वह क्रम-क्रम से एक-एक राजकुमार के मुख पर दृष्टि डाल रही है, तभी अकस्मात् स्वर्ग से विमान में बैठकर एक देवी वहाँ आती है और वह देवी सुमति कन्या के सामने खड़ी होकर कहती है—

सखी! हमारी और तुम्हारी स्वर्ग में प्रतिज्ञा हुई थी कि हम दोनों में जो कन्या मध्यलोक में पहले जन्म लेगी, दूसरी कन्या उसे वैराग्य उत्पन्न कराकर दीक्षा दिलाएगी, तुमको याद है कि नहीं! अकस्मात् सुमती को याद आने लगा। तब वह देवी आगे कहती है कि हम दोनों देवियाँ एक बार नंदीश्वर द्वीप में देवों द्वारा आष्टान्हिक पर्व में किए जा रहे महामह पूजायज्ञ में गए थे पुनः सुमेरु पर्वत की वंदना करने गए थे, वहाँ विराजमान धृतिषेण नामक महामुनिराज के दर्शन करके उनसे प्रश्न किया था कि—भगवन्! हम दोनों को मोक्ष की प्राप्ति कब होगी? तब मुनिराज ने बताया कि—इस भव से चौथे भव में तुम दोनों मुक्तिपद को प्राप्त करोगी।" अतः हे सखी! मैं अवधिज्ञान से इन सब बातों को जानकर तुम्हें समझाने के लिए आई हूँ।

इतना सुनकर सुमतिकन्या को वैराग्य हो गया और उसी क्षण रत्नमाला वहीं पर रखकर वह विरक्तमना आर्यिका दीक्षा के लिए तत्पर हो गई। सभा मण्डप में उत्सुकता से बैठे सभी हजारों राजकुमार आश्चर्यचकित हो सुमति की ओर देखने लगे। तभी वहाँ महाराजा अपराजित भी आ गए, बोले—बेटी! क्या बात है? सुमति ने कहा—पिताजी! मुझे संसार के विषय-भोगों में नहीं फंसना है अपितु मुझे आर्यिका दीक्षा लेना है।' यह सुनकर पिता ने पुत्री सुमति को सहर्ष आर्यिका दीक्षा हेतु स्वीकृति प्रदान कर दी।

वास्तव में इस विचित्र संसार में सभी तरह के लोग देखे जाते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि जिस समय नारायण लक्ष्मण की मृत्यु हुई, मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र अत्यन्त विक्षिप्त अवस्था में लक्ष्मण के शव को लेकर विचरण कर रहे थे। उस समय सभी लोग रामचन्द्र को समझाते कि लक्ष्मण अब जीवित नहीं हैं, ये मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं, परन्तु रामचन्द्र यह नहीं समझ पा रहे थे कि लक्ष्मण मर चुके हैं, वे कहते कि अभी लक्ष्मण उठेंगे, स्नान करेंगे, भोजन करेंगे। वे लक्ष्मण से कहते—उठो लक्ष्मण! तुम मुझसे बात क्यों नहीं करते हो? तुम आँख क्यों नहीं खोल रहे हो? क्या तुम मुझसे नाराज हो?

सीता के दोनों पुत्र-लवकुश पिता की इस दयनीय अवस्था को देखकर विरक्त हो गए और जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण करके वे वन में चले गए, तब रामचन्द्र कहते हैं—जाओ! देखो! उन दोनों को क्या हो गया है? क्या उन्हें वातरोग हो गया है? जाओ, उन्हें पकड़कर ले आओ! वे दोनों कहाँ चले गए? क्यों चले गए?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मों की विचित्रता तो देखिए! स्वयं तो अशान्त थे ही, दोनों पुत्रों ने दीक्षा ले ली, तो उन्हें वापस लाओ-वापस लाओ कह-कहकर आकुलता करते थे।

एक बार नारायण श्रीकृष्ण एवं बलदेव, दोनों भाई अनेक परिजन एवं पुरजनों के साथ भगवान नेमिनाथ के समवसरण में पहुँचे। भगवान का दिव्य उपदेश सुनकर श्रीकृष्ण ने प्रश्न किया— भगवन्! देवों द्वारा बनाई गई यह द्वारिकानगरी कब तक रहेगी? भगवान की दिव्यध्वनि खिरी, श्री वरदत्त नामक प्रमुख गणधर ने बताया— हे नारायण श्रीकृष्ण! बारह वर्ष में यह द्वारिकानगरी भस्म हो जायेगी। वो कैसे भगवन्! इसके उत्तर में गणधर देव बताते हैं— किसी समय द्वीपायनमुनि तपश्चर्या में लीन होंगे। कुछ राजपुत्र मदिरा पीकर उनके ऊपर उपसर्ग करेंगे, जिससे उनको क्रोध उत्पन्न होगा, उनकी तपश्चर्या के प्रभाव से क्रोधावेश में उनके शरीर से एक तैजस पुतला निकलेगा और वह पुतला बारह योजन की इस द्वारिकानगरी को भस्मसात् कर देगा। उन्होंने पुनः प्रश्न किया— भगवन्! फिर उस समय कौन जीवित बचेगा? उत्तर मिलता है— आप और बलभद्र आदि दो-तीन लोग ही बचेंगे। अब किसी ने प्रश्न किया— भगवन्! श्रीकृष्ण की मृत्यु कैसे होगी? तो गणधरदेव ने बताया कि— जरत्कुमार के बाण से इनकी मृत्यु होगी। यह सुनकर जरत्कुमार उसी समय घबराकर, घर छोड़कर कहीं चले गए, द्वीपायन मुनि ने बारह वर्ष तक के लिए उस क्षेत्र को छोड़ दिया परन्तु भगवन्तों की वाणी अटल होती है, उसको कोई टाल नहीं सकता।

उस समय श्रीकृष्ण ने राजमहल में आकर यह घोषणा कर दी कि 'मेरे जितने भी परिवार के लोग हैं, परिजन-पुरजन, रानी-पट्टरानियाँ, पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र आदि हैं, उनमें से जो भी राजसुख का त्याग करके दीक्षा लेना चाहें, ले सकते हैं, ऐसी मेरी आज्ञा है।''

उस समय प्रद्युम्न, शंबुकुमार आदि ने विरक्तमना होकर दीक्षा धारण की थी।

इस प्रकार वैराग्यपथ में बढ़ने वालों को रोकने वाले भी हैं और उन्हें आज्ञा देने वाले भी बहुत लोग हैं।

मुझे इस बात का गौरव है कि सन् 1952 में घर से निकलने के समय मेरे माता-पिता ने मुझे समझा-बुझाकर रोकने की बहुत कोशिश की परन्तु किसी प्रकार की जबर्दस्ती नहीं की। मुझे याद है कि जब बाराबंकी में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज के केशलोंच के समय मैंने भी विरक्तमना होकर सभा में अपने केश उखाड़ने शुरू किए, उस समय मेरी माँ शोक से मूर्च्छित हो गई थीं। चूँकि सभा में उपस्थित सभी लोग जोर-जोर से शोर तो मचा रहे थे, परन्तु हाथ पकड़कर रोकने का साहस किसी में नहीं था। उस समय महाराज जी के संकेत से मेरी माँ के मामा बब्बूमल जी ने मेरा हाथ पकड़कर रोक दिया, तब तक मेरा आधा केशलोंच हो चुका था पुनः रात्रिभर मेरा और मेरी माँ का संवाद चला, मैंने माँ को खूब समझाया, तब मेरी माँ ने एक कागज पर लिखकर दिया कि— महाराज जी! आप मेरी बेटी को दीक्षा दे दीजिए, ऐसी मेरी आज्ञा है, यह दीक्षा को उत्तमरूप से निभाएगी।''

घर में मैं पिताजी को भी समझाया करती थी, वे मेरी हर बात को मानते थे। लोगों ने पिताजी को बहुत भड़काया कि इसे जबर्दस्ती उठाकर गाड़ी में डालो और घर ले जाओ परन्तु पिताजी ने यही कहा कि-मैं ऐसा नहीं करूँगा, मैं इसे समझाऊँगा, यह खुशी-खुशी चलेगी, तो ठीक है। उनके समझाने पर भी जब मैं नहीं मानी, तो वे बहुत विक्षिप्त होकर एक जंगल में जाकर बैठ गए। लोग खूब ढूंढते रहे, ऐसा लगता कि कुंए में कूद गए अथवा अपघात कर लिया। अनेक लोग मुझसे कहते— क्या यही अहिंसा धर्म है। माता-पिता मर जाएँ और तुम दीक्षा ले लो! लेकिन मैंने दृढ़ प्रतिज्ञ होकर यही कहा कि— संसार में अनन्त माता-पिता हो चुके हैं। कौन किसकी माता? कौन किसका पिता? कौन संसार में ऐसा है, जो किसी की माता न हुआ हो, जो किसी का पिता न हुआ हो! आदि। खैर..........दो-तीन दिन के बाद ताऊ जी उनको (पिताजी को) जंगल से ढूंढकर लाए, तब भी वह मेरे मोह में विक्षिप्त होकर रोते रहते थे।

हमारे संघ में एक संभवसागर जी मुनि थे। मेरी प्रेरणा से वे क्षुल्लक हुए पुनः मुनि बने, मैंने उनको सप्तम प्रतिमा के व्रत दिये थे। वह उदयपुर का बालक सुरेश, अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र, जबर्दस्ती भाग-भागकर आता, उसको कमरे में बंद कर दिया जाता, तब भी खुलने पर जबर्दस्ती भाग आता।

सन् 1964 में मुझे पुनः शिखरजी में मिला, मैंने उसे सप्तम प्रतिमा के व्रत दिए, आगे वह संभवसागर क्षुल्लक हुए पुनः मुनि संभवसागर जी बने और अंत में सुन्दर समाधि को प्राप्त किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी संदर्भ में भगवान नेमिनाथ के पूर्वभव का बहुत ही रोमांचकारी वर्णन है—

पुष्करार्ध द्वीप में विजयार्ध पर्वत पर सूर्यप्रभ नाम के विद्याधर राजा थे। उनके तीन पुत्र थे—चिन्तागति, मनोगति और चपलगति। ये तीनों विद्याधर पुत्र अपनी विद्या के बल से प्रतिदिन सुमेरुपर्वत की वंदना करने जाया करते थे। उसी विजयार्ध की उत्तरश्रेणी में अरिन्दमन नामक नगर में अरिंजय राजा राज्य करते थे, उनकी महारानी अजितसेना की पुत्री प्रीतिमती थी। कन्या प्रीतिमती ने एक बार यह संकल्प कर लिया कि 'सुमेरु पर्वत की वंदना में जो मुझे जीत लेगा, मैं उसी के साथ विवाह करूँगी' इस गतियुद्ध में अनेकों राजकुमार प्रीतिमती से पराजित होते चले गए। ये तीनों विद्याधर पुत्र भी वहाँ पहुँचे। सर्वप्रथम मनोगति और फिर चपलगति तो इस गतियुद्ध में प्रीतिमती से पराजित हो गए। अब चिन्तागति नामक बड़े भाई के साथ गतियुद्ध प्रारंभ हुआ। इस बार चिन्तागति ने प्रीतिमती को पराजित कर दिया। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार प्रीतिमती ने हाथों में रत्नों की माला लेकर स्वयंवर मण्डप में प्रवेश किया और चिन्तागति के गले में वरमाला डालने को उद्यत हुई परन्तु चिन्तागति ने कहा—नहीं, यह वरमाला मेरे योग्य नहीं है, इसे तुम मेरे भाई के गले में डाल दो। प्रीतिमती ने कहा—ऐसा कैसे हो सकता है? गतियुद्ध में मुझे पराजित तो आपने किया है अतः मैं आपको ही पति के रूप में स्वीकार करूँगी, आपके भाई को नहीं। चिन्तागति ने कहा—चूँकि इससे पहले तुम्हारा मेरे दोनों भाइयों के साथ गतियुद्ध हो चुका है अतः तुम मेरे लिए त्याज्य हो। यह सुनकर प्रीतिमती कन्या को वैराग्य हो गया। उसने माता-पिता की आज्ञा लेकर आर्यिका दीक्षा धारण कर ली। उसके इस साहस को देखकर उसके साथ अन्य अनेक कन्याओं ने भी दीक्षा ग्रहण कर ली तथा अनेक राजकुमारों के साथ चिन्तागति आदि तीनों भाइयों ने भी जैनेश्वरी दीक्षा ले ली।

कालान्तर में ये चिन्तागति विद्याधर भगवान नेमिनाथ हुए हैं और कन्या प्रीतिमती राजुल के रूप में विख्यात हुई है।

आप देखिए! जम्बूकुमार की चार कन्याओं के साथ सगाई हो गई थी पुनः उन्हें वैराग्य हो गया। माता-पिता ने बहुत समझाया कि बेटा! तुम इन कन्याओं के साथ विवाह कर लो। कन्याओं के माता-पिता ने भी जम्बूकुमार से भी विवाह हेतु अतीव आग्रह किया। अन्ततः जम्बू कुमार ने स्पष्ट शब्दों में कहा—मैं इस शर्त पर विवाह करूँगा कि विवाह के अगले दिन प्रातःकाल ही मैं दीक्षा ले लूँगा। सबने उनकी शर्त मान ली क्योंकि सबको यह विश्वास था कि विवाह के बाद ये चारों कन्याएँ इन्हें अपने रूप-यौवन में आसक्त कर लेंगी, जम्बूकुमार दीक्षा की बात बिल्कुल भूल जाएंगे, इनका वैराग्य पलायमान हो जायेगा।

अन्ततोगत्वा जम्बूकुमार का विवाह हुआ। रात्रिभर चारों कन्याएं जम्बूकुमार से राग की बातें करती रहीं और जम्बूकुमार उनसे वैराग्य की बातें करते रहे। जम्बूकुमार की माता चोरी-छिपे यह सब सुनकर आकुल-व्याकुल हो रही थीं।

उसी समय राजमहल में विद्युत् चोर (500 चोरों का सरदार) चोरी करने आ गया, उसने जम्बू कुमार की माँ को विक्षिप्तावस्था में देखा तो उनसे पूछा—बहन जी! आप इतनी परेशान क्यों हैं? आप बार-बार इधर से उधर चक्कर क्यों लगा रही हैं? मैं यहाँ चोरी करने के लिए घुसा था।

उन्होंने कहा—भाई! तू सब कुछ ले जा, मगर मेरा बेटा जो सुबह दीक्षा लेने वाला है, तू उसे समझा दे। मैं उसके वियोग की कल्पना करके बहुत चिंतित हूँ। यह सुनकर वह चोर जम्बूकुमार को समझाने गया परन्तु जम्बूकुमार की वैराग्यवर्धक बातें सुनकर वह भी विरक्त हो गया।

प्रातःकाल जम्बूकुमार ने अपनी नवविवाहिता पत्नियों के साथ दीक्षा ले ली, उन सभी के माता-पिता ने भी दीक्षा ले ली, और तो और, उस चोर ने भी अपने 500 साथियों के साथ जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली। चूँकि ये सभी चोर क्षत्रिय कुल के थे, मात्र संगति से चोर बन गए थे।

इस प्रकार के अनेकों उदाहरण शास्त्रों में हैं। कोई नवविवाहिता पत्नी को छोड़कर दीक्षित हो जाते हैं, कोई गर्भस्थ शिशु को राज्य सौंपकर दीक्षा ले लेते हैं तथा भगवान नेमिनाथ ने तो विवाह के बीच में तोरण से ही रथ को मोड़कर दीक्षा ग्रहण कर ली थी।

बात यह है कि जिनका संसार कम हो जाता है अर्थात् जो मोक्ष के निकट पहुँच जाते हैं, ऐसे भव्य जीवों के भाव दीक्षा लेने के हो जाते हैं अन्यथा संसार में कई लोग तो दुख से पीड़ित होकर अपघात कर लेते हैं परन्तु उनके दीक्षा लेने के भाव नहीं होते हैं।

एक बार की बात है, आचार्यकल्प श्री चन्द्रसागर जी महाराज के सामने किसी ने कहा कि—ये जो लोग दीक्षा लेते हैं न! इनके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घर में खाने का ठिकाना नहीं रहता है, इन्हें व्यापार करना नहीं आता है, अकर्मण्यता के कारण दीक्षा ले लेते हैं। आचार्यश्री ने कहा—किसी गरीब-दुखी को मेरे सामने बुलाकर लाओ, देखूँ! उसके दीक्षा के भाव होते हैं क्या? नहीं होंगे।

यह वास्तविकता है कि दीक्षा के भाव तो सम्पन्न घराने के लोगों में भी हो सकते हैं, किसी गरीब में भी हो सकते हैं, इस विषय में कुछ निश्चित नहीं है। कहा भी है—

"मुनि सकल-व्रती बड़भागी, भव-भोगनतें वैरागी"

अर्थात् जो महान पुण्यशाली हैं, उनके ही वैराग्य के भाव होते हैं अतः आप सभी का यह परम कर्तव्य है कि अगर आप स्वयं दीक्षा न ले सकें, तो जो लोग वैराग्य भाव से ओत-प्रोत होकर दीक्षा लेने के उन्मुख हैं, उनको कभी रोकें नहीं, अपितु उनको आज्ञा प्रदान करके उनकी अनुमोदना करें, इससे आपको भी महान पुण्य का बंध होगा।

इस प्रकार मनुष्य जीवन को सफल करने का यही उपाय है।

शुभाशीष का वरदहस्त जन-जन को मिलता जाए

—आर्यिका चन्दनामती

बांध न पाया वैभव तुमको अपनी सीमाओं में।
रहीं अडिग कर्तव्यनिष्ठ तुम जीवन झंझाओं में।।
त्याग तपस्या की प्रतिमा तुम सत्यज्ञान की ग़रिमा।
मानवता भी धन्य हो गई, पाकर तुम जैसी माँ।।1।।

मुक्त प्रलोभन आडंबर से संयत सात्विक जीवन।
काया से प्रतिबिम्बित होता अथक परिश्रम चिन्तन।।
सफल आपका तप संयम है आशाओं की चिर जाय।
हे जगमाता! प्रेम और वात्सल्य तुम्हारा अक्षय।।2।।

इनके अभिनंदन में संस्कृति का अभिनंदन होगा।
इनके पदवन्दन में जननी का पदवन्दन होगा।।
सत्य साधना कि इस साधिका को विश्राम नहीं है।
जनआराधनमय आराधक को अभिमान नहीं है।।3।।

इसीलिए यह स्वर्णिम बेला अधिक सुखद बन आई।
श्रद्धा औ पुष्पों की माला खुद पुष्पित हो आई।।
ऐसा ही इक अवसर इस जीवन में फिर-फिर आए।
शुभाशीष का वरदहस्त जन-जन को मिलता जाए।।4।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के जीवन से संबंधित एक परिचर्चा

(पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज की)

क्षुल्लक मोतीसागर जी—वंदामि, माताजी!

गणिनी ज्ञानमती माताजी—बोधिलाभोऽस्तु!

मोतीसागर—पूज्य माताजी! आज मैं आपसे बीसवीं शताब्दी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज से संबंधित कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ। वर्तमान में आप उस परम्परा की सबसे वरिष्ठ और प्राचीन दीक्षित आर्यिका जी हैं तथा आपने आचार्य श्री के साक्षात् दर्शन करके उनकी अमूल्य शिक्षाएँ भी प्राप्त की हैं अतः मैं आपके माध्यम से प्राप्त कुछ आवश्यक जानकारियों से प्रबुद्ध जैन समाज को भी अवगत कराना चाहता हूँ।

माताजी—ठीक है, पूछो! मेरी जानकारी में आचार्य श्री से संबंधित जो भी विषय हैं मैं अवश्य बतलाऊँगी।

मोतीसागर—आपने आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के प्रथम दर्शन किस सन् में किए थे?

माताजी—सन् 1954 में नीरा (महाराष्ट्र) में मैंने क्षुल्लिका अवस्था में आचार्यश्री के प्रथम दर्शन किए थे।

मोतीसागर—उस समय आपको कैसा लगा और आचार्यश्री ने आपसे क्या वार्तालाप किया था?

माताजी—मुझे तो बहुत अच्छा लगा था क्योंकि आचार्यश्री की तपस्वी छवि में चतुर्थकालीन मुनि के दर्शन होते थे। मैं उस समय बहुत छोटी मात्र 20 वर्ष की थी फिर भी आचार्यश्री ने जब मेरे साथ गई क्षुल्लिका वीरमती जी से मेरा परिचय प्राप्त किया, तो बड़े खुश होकर मुझे "उत्तर की अम्मा" कहकर खूब वात्सल्यभाव से आशीर्वाद दिया था।

उन्होंने मुझसे सबसे पहली बात यही कही थी कि "अम्मा! अभी तुम्हारी उम्र बहुत ही छोटी है, तीस वर्ष तक किसी न किसी के साथ ही रहना, अकेली नहीं रहना। खूब धार्मिक अध्ययन करना, अनगार धर्मामृत, भगवती आराधना और समयसार अवश्य पढ़ना। मैंने भगवती आराधना 36 बार पढ़ी है।"

इसके अतिरिक्त और भी कई चर्चाएं उपगूहन अंग आदि के बारे में की थी, जो मैं कई बार प्रवचनों में बताया करती हूँ। कुल मिलाकर उस समय मुझे ऐसा लगा कि मैंने मानो अमृत से ही स्नान कर लिया है और अब मुझे संसार का अंत करने वाले महान् गुरु प्राप्त हो गये हैं। पुनः उनके पास 3 दिन रुककर मैं क्षुल्लिका विशालमती जी के साथ वापस जयपुर आ गई। उसके बाद मैंने बारामती (महाराष्ट्र) में आचार्यश्री के दर्शन सन् 1955 में किए और उसी सन् में आचार्यश्री की समाधि मुझे कुंथलगिरि में साक्षात् देखने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था।

मोतीसागर—पूज्य माताजी! उस समय देशभर में लगभग कितने साधु-साध्वी थे? कुछ को तो आपने भी देखा ही होगा?

माताजी—इस संबंध में मैं बताती हूँ कि उत्तर से दक्षिण भारत तक पूरे देश में उस समय लगभग 25 मुनिराज, 15-20 आर्यिकाएं थीं। (दक्षिण में कोई आर्यिका नहीं थीं), करीब 20-25 क्षुल्लक और 25 ही क्षुल्लिकाएं रही होंगी अर्थात् कुल मिलाकर 100 से अधिक पिच्छीधारी तो थे ही नहीं।

मैंने तब सन् 1955 में विशालमती अम्मा के साथ महाराष्ट्र के गांव रुकड़ी में (आचार्यश्री शांतिसागर जी के बड़े भाई) मुनि श्री वर्धमानसागर जी के दर्शन किये और निपाणी में मुनि श्री अनन्तकीर्ति जी के, सोलापुर में आचार्यश्री पायसागर जी के, बम्बई में मुनि श्री नेमिसागर जी के, कोल्हापुर के पास एक गाँव में मुनि श्री महाबल जी के तथा चाकसू (राज.) में आचार्यकल्प श्री वीरसागर महाराज के संघ सहित दर्शन किये। इन संतों से मैंने कई अनुभवपूर्ण बातें भी सीखीं पुनः आचार्यश्री शांतिसागर महाराज की आज्ञा से सन् 1956 में मैंने उन्हीं के प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी से आर्यिका दीक्षा प्राप्त की है।

मोतीसागर—उन आचार्यश्री के जन्म, दीक्षा, गुरु आदि के संबंध में भी कुछ संक्षिप्त जानकारी चाहता हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी—ठीक है, मैं बताती हूँ उसे ध्यानपूर्वक सुनो—

सन् 1872 में आषाढ़ कृष्णा षष्ठी के दिन महाराष्ट्र प्रान्त में कोल्हापुर जिले के 'येळगुळ' ग्राम में इनका जन्म हुआ था। पिता का नाम भीमगौंडा और माता का नाम सत्यवती था। सन् 1914 में "उत्तूर" ग्राम में उन्होंने मुनिश्री देवेन्द्रकीर्ति जी से ज्येष्ठ शुक्ला तेरस को क्षुल्लक दीक्षा ली तथा सन् 1920 में "यरनाल" में उनसे ही फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी को मुनिदीक्षा धारण की थी। पुनः सन् 1924 में "समडोली" ग्राम में चतुर्विध संघ द्वारा उन्हें आचार्यपद प्रदान किया गया। यही आचार्यश्री का संक्षिप्त परिचय है। आचार्य बनने के बाद उनका सन् 1928 में सम्मेदशिखर यात्रा के निमित्त उत्तरभारत में विहार हुआ तब से यतिपरम्परा में निरन्तर वृद्धि हुई है उसी के फलस्वरूप आज लगभग 1100 साधु-साध्वी भारत में विचरण कर रहे हैं।

मोतीसागर—पूज्य माताजी! अभी कुछ दिन पूर्व नई चर्चा सामने आई कि शांतिसागर महाराज के गुरु मुनि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी ने अपने शिष्य शांतिसागर जी से पुनर्दीक्षा ग्रहण की थी, तब उनका नाम मुनि सिद्धसागर रखा गया था। क्या यह बात सच है?

श्री ज्ञानमती माताजी—मैंने तो ऐसा कभी सुना नहीं। सन् 1954-55 में दक्षिण भारत में आचार्यश्री शांतिसागर महाराज से दीक्षित क्षुल्लिका श्री अजितमती अम्मा से भी मेरी मुनि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी के बारे में बात हुई थी, तब उन्होंने मात्र इतना बताया था कि देवेन्द्रकीर्ति महाराज की आहारचर्या मात्र थोड़ी सी सदोष थी कि वे मंदिर के उपाध्याय के कहे अनुसार निमंत्रणपूर्वक श्रावक के घर में आहार को चले जाते थे और उधर की परम्परानुसार आहार के बाद श्रावक से दक्षिणा स्वरूप पैसे ले लेते थे, जो कि उपाध्याय को दे दिया करते थे। सो बाद में शांतिसागर जी की देखी गई आगमोक्त चर्यानुसार उसमें संशोधन करके निर्दोष मुनिचर्या का पालन करने लगे। बाकी न तो वे शांतिसागर महाराज के शिष्य बने थे और न पुनर्दीक्षा ली थी। इसलिए मेरा तो कहना यही है कि ऐसी भ्रान्त धारणाओं को प्रचार में नहीं लाना चाहिए।

मोतीसागर—माताजी! पूज्य आचार्यश्री ने अपने जीवन में व्यक्तिगत तपस्या के अतिरिक्त समाज को भी कुछ देन अवश्य दी होगी।

माताजी—उन महापुरुष की देन तो भला शब्दों में क्या बताऊँ मैं? मानो उनके जीवन का प्रत्येक क्षण आत्मकल्याण के साथ-साथ समाजकल्याण के लिए ही बना था। जैसे-चतुर्विध संघ बनाकर अनेक दीक्षाएं देकर जैन मुनिपरम्परा को पुनरुज्जीवित किया। कुम्भोज बाहुबली आदि अनेक तीर्थों पर जिनप्रतिमा स्थापित करने की प्रेरणा दी,षट्खण्डागम ग्रंथ को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण कराकर जिनवाणी को स्थायित्व प्रदान किया एवं देशभर में मंगलविहार के द्वारा अपूर्व धर्मप्रभावना के कार्य किए हैं।

एक बात इसमें और ध्यान देने की है कि इतने महान कार्यों को करने के बाद भी आचार्यश्री का तप अविस्मरणीय रहा है, उन्होंने अपने 36 वर्षीय दीक्षित जीवन में 25 वर्ष 6 माह उपवास अनेक व्रतों के माध्यम से किये थे।

मोतीसागर—सुना है शांतिसागर महाराज से पूर्व कोई आचार्य नहीं थे?

माताजी—हाँ, बात तो सही है। उससे पूर्व कुछ मुनिराज तो थे लेकिन उनमें से कोई आचार्य पदवी के धारक नहीं थे। इसके अतिरिक्त भी पहले मुनियों की चर्या जो कुछ दोषास्पद थी उसे आचार्यश्री ने मूलाचार, अनगारधर्मामृत आदि ग्रंथों के आधार से संशोधित किया था, इसके लिए उन्हें काफी कष्ट सहन करने पड़े क्योंकि उस समय गृहस्थ श्रावकों को भी मुनियों की निर्दोष आहारचर्या आदि का ज्ञान नहीं था, वे एक घर में चौका लगाकर साधु को आहार के लिए निमंत्रणपूर्वक ले जाते थे।

मोतीसागर—इस बारे में तो मैंने भी कई बार सुना है कि आचार्यश्री प्रारंभ में केवल चावल और दूध ही आहार में लेते थे फिर धीरे-धीरे काफी पूछताछ के बाद गेहूँ की रोटी, सब्जी, फल आदि श्रावकों ने देना शुरू किया था। माताजी! लोग कहते हैं कि इस पंचमकाल में उपसर्ग सहन करने वाले सच्चे साधु होते ही नहीं हैं, तो उनके लिए आप क्या कहना चाहेंगी?

माताजी—देखो! दुराग्रही लोगों के लिए तो कोई भी प्रमाण देना बेकार है, वे तो बेचारे खुद ही कर्म के मारे होते हैं क्योंकि सच्चे को झूठा कहने वालों की गति कर्म सिद्धान्त के दर्पण में स्वयं झलक जाती है। आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी आदि आचार्यों ने भी पंचमकाल के अन्त तक सच्चे भावलिंगी साधु होना स्वीकार किया है। कहा भी है-"भरहे दुस्समकाले, धम्मज्झाणं हवेइ साहुस्स। तं अप्पसहावठिदे, णहु मण्णइ सो वि अण्णाणी।।" अर्थात् "इस दुःषमकाल में भरतक्षेत्र के अन्दर धर्मध्यान से युक्त साधु आत्मस्वभाव में स्थिर हुए रहते हैं, जो ऐसा नहीं मानते हैं वे अज्ञानी हैं।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमपूज्य आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के ऊपर आये उपसर्गों को देखने और दूर करने वाले कतिपय श्रावक-श्राविकाएं आदि तो आज भी दक्षिण भारत में विद्यमान हैं। मैंने तो लोगों के मुँह से सुना और "चारित्रचक्रवर्ती" पुस्तक में पढ़ा है कि "आचार्यश्री एक बार कोन्नूर की गुफा में ध्यान कर रहे थे तो भयंकर सर्प उनके शरीर पर घंटों क्रीड़ा करके चला गया। एक बार उनके शरीर पर चीटियों का बड़ा भारी उपसर्ग रहा, तो भी वे गजकुमार मुनि के समान ध्यान में निश्चल रहे। दो-तीन दिन गुफा से बाहर नहीं निकलने पर श्रावकों ने वहाँ जाकर देखा तब चीटियाँ हटाईं और आचार्यश्री के लहूलुहान शरीर को साफ किया।

अब तुम खुद ही बताओ कि ये आचार्य महाराज तो अभी लगभग 80-90 वर्ष पूर्व ही हुए हैं और ऐसे तिर्यंचकृत कई उपसर्ग सहन किए हैं। उन्हें नहीं मानने वालों को कर्महीन या अभागे से ज्यादा और क्या कहा जा सकता है।

मोतीसागर—माताजी! प्रतिवर्ष भादों शुक्ला दूज को आचार्यश्री की पुण्यतिथि आती है, उसे मनाने के लिए आपका समाज के लिए क्या संदेश है?

माताजी—मुझे तो सन् 1955 का वह दृश्य याद करके आज एकदम विह्वलता सी आ रही है। जब एक माह तक कुंथलगिरि में रहकर मैंने रोज आचार्यश्री के दर्शन के साथ-साथ उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, जिनेन्द्रभक्ति और आत्मा के प्रति लगन देखने का जो सौभाग्य प्राप्त किया है उसके आधार पर मैं भारत की समस्त दिगम्बर जैन समाज को यही प्रेरणा देना चाहती हूँ कि "चारित्रचक्रवर्ती पदवी को सार्थक करने वाले आचार्यश्री शांतिसागर महाराज की प्रतिमाएँ और उनके श्रीचरण अपने-अपने मंदिरों में विराजमान करें, प्रतिदिन उनकी पूजा-अर्चना- गुरुभक्ति करें और उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर खूब प्रभावनात्मक वैराग्यसभाएं आयोजित करें, उनके जीवन परिचय पर भाषण प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, आरती, चालीसा, सामूहिक पूजन आदि कार्यक्रम रखें और आचार्यश्री के गुणों का स्मरण कर गुरुनिंदा न करने का संकल्प लेवें तथा पं. सुमेरचन्द्र जैन दिवाकर द्वारा लिखित "चारित्रचक्रवर्ती" पुस्तक का स्वाध्याय बच्चे-बूढ़े सभी को अवश्य ही करना चाहिए।

पूज्य गुरूणांगुरु आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के चरणों में मेरी तो यही विनम्र श्रद्धांजलि है कि आपके समान मुझे भी वीरमरण करने का अवसर प्राप्त हो तथा वैसे ही कुछ शारीरिक-आत्मिक दृढ़ता मिले ताकि स्त्रीपर्याय का छेदकर शीघ्र मोक्ष की प्राप्ति हो।

मोतीसागर—आज आपसे पूज्य आचार्यश्री के बारे में अनेक जानकारियाँ मिली हैं, मैं समझता हूँ कि इन बातों से समाज अवश्य मार्गदर्शन प्राप्त करेगी। आपके चरणों में वंदामि करते हुए मैं इस वार्ता को विराम देता हूँ।

णाणमई मादा अट्ठगं

युम्हाकं चरणेसु एसु दिणदो, सज्झायतो पुण्णधी। हिन्दी सक्कदगंध कत्तु पडिहा युत्ता सया अज्झिगा।
वेरग्गेण टिकेतपट्टणपमे णिक्कय्य संकप्पिदा। जम्बुद्दीव-विणीद-णाण-वसुहा जोदीं दिहिं सेविदा।।1।।

उवट्ठिदे सिद्धिगिरम्हिधीरे मोती-रवीन्दा तवपादलीणा।
पसंदरूवी हि सरस्सदी या पचारयामास जिणेंदचक्कं।।2।।

सरूवरूवा जुगजोदिरूवा सण्णाणसीला, हृदये विसाला।
णमोऽत्थु तुज्झं णमामि, सया करोदु वरधम्मकज्जम्।।3।।

अज्झत्तदिट्ठी सहिदा सहावा, सद्धम्ममग्गा तव पव्वदे सया।
णियप्प कल्लाणवदा गभीरा, सा णाणदेवी विदधातु भद्दं।।4।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवश्यक शंका-समाधान

(गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से आर्यिका चन्दनामती माताजी द्वारा समय-समय पर किये गये कतिपय विषयों पर शंका-समाधान यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इनका सूक्ष्मता से अवलोकन करने पर श्रद्धालु पाठकों को अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा)

विषय-''विद्यमान बीस तीर्थंकर कहाँ-कहाँ?''

चन्दनामती माताजी—पूज्य माताजी! वन्दामि, मैं आपसे बीस विद्यमान तीर्थंकरों के बारे में कुछ प्रश्न पूछना चाहती हूँ। जनसामान्य के ज्ञान हेतु उत्तर देने की कृपा करें।

श्री ज्ञानमती माताजी—विषय तो बहुत अच्छा है, पूछो।

चन्दनामती—मंदिरों में प्राय: प्रतिदिन पूजा करने वाले स्त्री-पुरुष बीस तीर्थंकरों की पूजा करते अथवा अर्घ्य चढ़ाते देखे जाते हैं। ये तीर्थंकर आज इस पृथ्वीतल पर तो दिखते नहीं हैं फिर भी इनके साथ ''विद्यमान'' शब्द क्यों लगा रहता है?

श्री ज्ञानमती माताजी—इस भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में इस समय पंचमकाल चल रहा है अत: वर्तमान में यहाँ कोई तीर्थंकर नहीं हैं किन्तु विदेहक्षेत्रों में सदैव चतुर्थकाल ही रहता है, वहाँ तीर्थंकर हमेशा विद्यमान रहते हैं इसीलिए विद्यमान बीस तीर्थंकरों की पूजा की जाती है। आज भी विदेहक्षेत्र में तीर्थंकर हो रहे हैं।

चन्दनामती—उन तीर्थंकरों की संख्या बीस ही निश्चित क्यों है? या तो भरतक्षेत्र के तीर्थंकरों के समान 24 होनी चाहिए अथवा 32 विदेह क्षेत्रों के हिसाब से 32 होनी चाहिए?

श्री ज्ञानमती माताजी—भरतक्षेत्र और विदेहक्षेत्र की सभी व्यवस्थाओं में समानता नहीं है। भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में षट्काल परिवर्तन होता है अत: वहाँ मात्र चतुर्थकाल में हमेशा 24 तीर्थंकर होते हैं। वहाँ की यह संख्या निश्चित है इसलिए भूतकाल में वहाँ अनन्त चौबीसी तो हो चुकी हैं आगे भी अनन्तों चैबीसी होती रहेंगी। विदेह क्षेत्र में ऐसा कोई क्रम नहीं है। वहाँ की व्यवस्था मैं बतलाती हूँ कि बीस तीर्थंकर कहाँ-कहाँ रहते हैं—

ढाई द्वीप के पाँच मेरु संबंधी पाँच महाविदेहों में ये बीस तीर्थंकर सतत विहार करते रहते हैं अत: इन्हें ''विहरमाण बीस तीर्थंकर'' भी कहते हैं।

चन्दनामती—तो क्या इन तीर्थंकरों की आयु कभी समाप्त ही नहीं होती है अथवा उन्हीं के स्थान पर उसी नाम वाले दूसरे तीर्थंकर हुआ करते हैं?

श्री ज्ञानमती माताजी—आयु तो सभी जीवों की एक न एक दिन समाप्त होती ही है विदेह क्षेत्र में उत्कृष्ट आयु एक कोटि वर्ष पूर्व की है। अत: वे तीर्थंकर भी अपनी आयु पूरी करके जब मोक्ष चले जाते हैं तब वहीं विदेह क्षेत्र में दूसरे तीर्थंकर का जन्म होता है। हाँ, नाम वे ही होने से यही अनुमान लगता है कि इन तीर्थंकरों के जो नाम निश्चित हैं वे ही हमेशा रहते हैं इस विषय में कोई विशेष खुलासा नहीं मिलता है।

चन्दनामती—आपने बताया कि पाँच महाविदेहों में ये बीसों तीर्थंकर होते हैं, सो इनका क्रम किस प्रकार है?

श्री ज्ञानमती माताजी—प्रत्येक विदेह क्षेत्रों में भी भरतक्षेत्र के समान 6-6 खण्ड होते हैं। उनमें भी आर्यखण्डों में ही तीर्थंकरों का जन्म होता है। सर्वप्रथम जम्बूद्वीप में ही सुमेरुपर्वत के पूर्व पश्चिम में सीता-सीतोदा नदी के द्वारा विदेह क्षेत्र के 4 भेद हो जाते हैं। उनमें से पूर्व विदेह में सीता नदी के उत्तर तट पर ''पुंडरीकिणी'' नगरी में ''सीमन्धर'' नाम के तीर्थंकर हैं एवं दक्षिण तट पर विजया नगरी में 'युगमन्धर' तीर्थंकर हैं। इसी प्रकार पश्चिम विदेह में सीतोदा नदी के उत्तर तट की अयोध्या नगरी में 'बाहु' जिनेन्द्र हैं तथा दक्षिण तट पर स्थित सुसीमा नाम की नगरी में 'सुबाहु' तीर्थंकर का समवसरण है।

ये जम्बूद्वीप संबंधी 4 तीर्थंकर हुए इसी प्रकार पूर्वधातकी खण्ड के विजय मेरु संबंधी चार तीर्थंकर हैं जिनकी नगरी और तीर्थंकर के नाम इस प्रकार हैं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विजय मेरु के पूर्व में सीता नदी के उत्तर तट पर "अलकापुरी" नगरी में 'संजातक' तीर्थंकर हैं, दक्षिण तट पर विजया नगरी में "स्वयंप्रभ" तीर्थंकर हैं। विजयमेरु के पश्चिम विदेह में सीतोदा नदी के दक्षिण तट पर सुसीमा नगरी में "ऋषभानन" तीर्थंकर तथा उत्तर तट पर 'अयोध्या' नगरी में 'अनन्तवीर्य' तीर्थंकर विराजमान हैं।

पश्चिमधातकी खण्डद्वीप के अचलमेरु संबंधी चार तीर्थंकरों के नगर और तीर्थंकर के नाम निम्न प्रकार हैं—

सीता नदी के उत्तर तट पर विजयानगरी में 'सूरिप्रभ' तीर्थंकर एवं दक्षिण तट की "पुंडरीकिणी" नगरी में 'विशालकीर्ति' जिनेन्द्र का समवसरण है।

सीतोदा नदी के दक्षिण तट पर 'सुसीमा' नगरी में "श्रीवज्रधर" तीर्थंकर तथा उत्तरतट की 'पुंडरीकिणी' नगरी में "चन्द्रानन" भगवान विराजमान हैं।

इसी प्रकार आगे पूर्व पुष्करार्ध द्वीप में मन्दरमेरु संबंधी 4 तीर्थंकर एवं दक्षिण तट की विजया 'नगरी में "भुजंगम" तीर्थंकर का सतत विहार हो रहा है।

सीतोदा नदी के दक्षिण तट की "सुसीमा" नगरी में "ईश्वर" जिनेन्द्र तथा उत्तर तट पर 'अयोध्या' नगरी में "नेमीप्रभु" तीर्थंकर हैं।

पश्चिम पुष्करार्धद्वीप में विद्युन्माली मेरु संबंधी 4 तीर्थंकर हैं—

पश्चिम पुष्कर के पूर्व विदेह में सीता नदी के उत्तर तट पर "पुण्डरीकिणी" नगरी में 'वीरसेन" तथा दक्षिण तट पर "विजया" नगरी में "महाभद्र" तीर्थंकर हैं।

पश्चिम पुष्कर के पश्चिम विदेह में सीतोदा नदी के दक्षिण तट पर "सुसीमा नगरी" में "देवयश" तीर्थंकर तथा उत्तर तट पर "अयोध्या" नामक नगरी में "अजितवीर्य" तीर्थंकर समवसरण सहित विराजमान हैं।

इस प्रकार पाँच मेरु संबंधी इन बीस तीर्थंकरों का क्रम मैंने बतलाया है। कम से कम इतने तीर्थंकर तो विदेहक्षेत्रों में सतत रहते ही हैं तथा अधिक से अधिक यदि एक साथ होवें तो 32 विदेहों की प्रत्येक नगरियों में 1-1 तीर्थंकर हो सकते हैं तब पाँचों मेरु संबंधी 32-32 विदेहों में 32×5=160 तीर्थंकर एक साथ विदेहक्षेत्रों में रह सकते हैं।

चन्दनामती—जैसे हमारे भरतक्षेत्र के तीर्थंकरों की पहचान के लिए चिन्ह होते हैं क्या वहाँ के तीर्थंकरों के भी उसी प्रकार चिन्ह होते हैं अथवा नहीं?

श्री ज्ञानमती माताजी—हाँ, चिन्ह तो वहाँ भी होते हैं। बिना चिन्ह के तीर्थंकर की पहचान कैसे हो सकती है। मैंने उन तीर्थंकरों की जन्म नगरियों के नाम तो बताए ही हैं अब उनके चिन्ह और माता-पिता के नाम और बताती हूँ—

तीर्थंकर नाम	चिन्ह	माता का नाम	पिता का नाम
1. सीमंधर	बैल	सती	श्रेयांस
2. युगमंधर	हाथी	सुतारा	दृढ़रथ
3. श्रीबाहु	हिरण		
4. सुबाहु	बन्दर		
5. संजातक	सूर्य	देवसेना	देवसेन
6. स्वयंप्रभ	चन्द्रमा	सुमंगला	मित्रभूति
7. ऋषभानन	सिंह	वीरसेना	नृपकीर्ति
8. अनन्तवीर्य	हाथी	सुमंगला	मेघरथ
9. सूरिप्रभ	सूर्य	भद्रा	नागराज
10. विशालकीर्ति	चन्द्रमा	विजया	विजय
11. वज्रधर	शंख	सरस्वती	पद्मरथ
12. चन्द्रानन	बैल		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

13. चन्द्रबाहु	कमल	रेणुका	देवनन्दि
14. भुजंगम	चन्द्रमा	जिनमती	महाबल
15. ईश्वर	सूर्य	ज्वाला	गलसेन
16. नेमीप्रभ	बैल		
17. वीरसेन	ऐरावत हाथी	भानुमती	भूपाल
18. महाभद्र	चन्द्रमा	उमा	देवराज
19. देवयश	स्वस्तिक	गंगा देवी	श्रीभूति
20. अजितवीर्य	कमल	कनकमाला	सुबोध

चन्दनामती—पूज्य माताजी! आज विहरमाण बीस तीर्थंकरों के विषय में आपसे पर्याप्त ज्ञान प्राप्त हुआ है। हमारे पाठकों को भी इस चर्चा से ज्ञान प्राप्त होगा। क्योंकि आज बहुत से लोगों को मैंने यह पूछते देखा है कि पूजा तो हम रोज विद्यमान बीस तीर्थंकरों की करते हैं किन्तु यह पता नहीं है कि ये होते कहाँ हैं?

श्री ज्ञानमती माताजी—पूजन का अभिप्राय आदि समझते हुए पूजा करने से पुण्य अधिक मिलता है तथा स्वाध्याय का लाभ भी प्राप्त होता है। मैं तो यही चाहती हूँ कि आगम के अनेक छोटे-बड़े विषयों का ज्ञान जनसामान्य को प्राप्त होता रहे। इसके लिए मुझे यदि परिश्रम भी करना पड़ता है तो मन को बड़ा संतोष मिलता है।

चन्दनामती—आपकी इस उदार भावना के लिए मैं किन शब्दों में आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करूँ समझ में नहीं आता है। शायद आपके गुरुदेव आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज ने इसीलिए आपका 'ज्ञानमती' नाम सार्थक ही रखा है। आपके श्रीचरणों में पुनः नमन करते हुए मैं आज के विषय को यहीं सम्पन्न करती हूँ।

नोट—(पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित बीस तीर्थंकर विधान में से तीर्थंकरों के चिन्ह, मात-पिता और नगरी के नाम लिए गए हैं। इसमें बाहु, सुबाहु, चन्द्रानन एवं नेमीप्रभु इन 4 तीर्थंकरों के माता-पिता के नाम नहीं मिल पाए हैं। यदि किन्हीं स्वाध्यायी महानुभावों को उनके नाम कहीं किसी ग्रंथ में प्राप्त हों, तो हमें सूचित करें।)

विषय-''जिनेन्द्र देव की अष्टविधि पूजा में स्थापना करना आवश्यक क्यों?''

चन्दनामती—पूज्य माताजी! मैं आपसे जिनेन्द्र पूजा से संबंधित कुछ जानकारी श्रद्धालुभक्तों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहती हूँ।

श्री ज्ञानमती माताजी—ठीक है, पूछो।

चन्दनामती—आगम के अनुसार पूजा की सही विधि क्या है? कृपया बताने का कष्ट करें।

श्री ज्ञानमती माताजी—पूजा विधि के परिज्ञान हेतु श्रावकों को श्रावकचार ग्रंथों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। जैसे उमास्वामी श्रावकाचार में आचार्यश्री उमास्वामी ने पूजा विधि बहुत अच्छी तरह बतलाई है—

आह्वाननं च प्रथमं, ततः संस्थापनम् परम्।
सन्निधीकरणं कृत्वा, पूजनं तदनन्तरम्।।147।।
ततो विसर्जनं कार्यं, ततः क्षमापणा मता।
पंचोपचारोपचितिः, कर्तव्याहर्निशं जनैः।।148।।

देखो! इन श्लोकों में स्पष्ट कहा है कि पूजा में सर्वप्रथम आह्वान, स्थापन और सन्निधीकरण करके अष्टद्रव्य से पूजन करें, पुनः विसर्जन करें। इस प्रकार प्रतिदिन पंचोपचारी पूजा करनी चाहिए। भगवान का अभिषेक पूजा के पहले किया जाता है अर्थात् अभिषेकपूर्वक पूजन करने से षट्प्रकारी पूजा हो जाती है।

चन्दनामती—लेकिन कुछ लोग यह कहते हैं कि जब भगवान की प्रतिमा सामने विराजमान ही है तो उनकी स्थापना चावलों से करने की क्या जरूरत है?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री ज्ञानमती माताजी—पूजा तो किसी न किसी भगवान के सामने ही मंदिर में की जाती है। घर में बैठकर फोटो आदि के सामने द्रव्य चढ़ाने से पूजा नहीं होती है। इसी उमास्वामी श्रावकाचार में पृष्ठ नं. 59 पर इस विषय पर विशेष खुलासा भी है—

"पूजा करने के पहले आह्वानन, स्थापन, सन्निधीकरण अवश्य करना चाहिए। जो लोग आह्वानन नहीं करते हैं वे गहरी भूल करते हैं। ऐसे लोग कहते हैं कि जब भगवान की प्रतिमा सामने विराजमान हैं तब फिर आह्वानन करने की क्या आवश्यकता है परन्तु ऐसे लोग आह्वानन का अर्थ नहीं समझते हैं। जैन शास्त्रों में एक स्थापना निक्षेप माना है। साकार या निराकार पदार्थ में किसी के गुण का आरोपण करना स्थापना निक्षेप है, जैसे सामने की विराजमान प्रतिमा में किसी तीर्थंकर की स्थापना है परन्तु आह्वानन स्थापन में जो स्थापना है वह स्थापना निक्षेप नहीं है, वह तो पूजा का एक अंग है।

जैसे किसी बड़े आदमी या छोटे आदमी को बुलाते हैं और वह बुलाया हुआ व्यक्ति जब सामने आ जाता है, तो उसके आदर-सत्कार के लिए कहा जाता है कि आइए साहब! अच्छे तो हैं आइए! यहाँ बैठिए। इस प्रकार कहना आदर सत्कार का एक अंग है। उसी प्रकार आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण भी पूजा या आदर सत्कार के अंग है। यदि बुलाने वाला मनुष्य आए हुए अतिथि को आइए, बैठिए इत्यादि वचन न कहे तो वह आया हुआ व्यक्ति अपना अनादर समझता है। उसी प्रकार यदि पूजा के पहले आह्वानन स्थापन न किया जाए, तो वह भी एक प्रकार से भगवान का अनादर समझना चाहिए। आह्वानन स्थापन का अर्थ भी 'आइए यहाँ विराजिए' यही होता है और इसीलिए वह पूजा का अंग माना जाता है।

प्राचीन एवं अर्वाचीन जितनी भी पूजाएँ हैं उन सबमें आह्वानन स्थापन है इसलिए पूजा में आह्वानन स्थापन न करना पूजा शास्त्र के विपरीत चलना है।"

चन्दनामती—आजकल श्रावकों की पूजा पद्धति में बहुत विवाद चलता है, इस विषय में आपका क्या अभिमत है?

श्री ज्ञानमती माताजी—बात यह है कि इस युग में आगम—जिनवाणी ही हम सबके लिए आधार है, उसके अनुसार यदि श्रावक और साधु क्रियाएँ करें तो कभी विवाद की स्थिति ही नहीं आ सकती है। जैसे-रयणसार, वसुनन्दि श्रावकाचार, उमास्वामी श्रावकाचार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार आदि श्रावकाचार ग्रंथों में ही पूजा पद्धति का वर्णन है। इनका स्वाध्याय श्रावकों को अवश्य करना चाहिए।

चन्दनामती—क्या मुनि एवं आर्यिका आदि भी श्रावकों को पूजा का उपदेश दे सकते हैं? मैंने तो पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय में पढ़ा है कि मुनि को मुनिधर्म का उपदेश ही देना चाहिए। यदि वे पहले गृहस्थधर्म का उपदेश देते हैं, तो दोष के भागी होते हैं।

श्री ज्ञानमती माताजी—पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय में आचार्यश्री अमृतचन्द्र जी ने यह श्लोक कहा है—

यो यतिधर्ममकथयन्नुपदिशति गृहस्थधर्ममल्पमतिः।
तस्य भगवत्प्रवचने प्रदर्शितं निग्रहस्थानम्।।

अर्थात् जो साधु अपने पास आए हुए भव्य श्रावक को पहले यति-मुनिधर्म का उपदेश न देकर गृहस्थ धर्म का उपदेश देता है वह जिनागम के अनुसार प्रायश्चित्त का भागी होता है। इसका अभिप्राय यही खोला है कि यदि आगन्तुक भक्तश्रावक मुनिधर्म ग्रहण करने में सक्षम है तो पहले श्रावक धर्म का उपदेश देने से वह वहीं तक सीमित रह जावेगा। जैसे ग्राहक के आने पर दुकानदार पहले तो अच्छा कीमती माल दिखाता है, तब ग्राहक यदि अर्थ सम्पन्न है तो ऊँची वस्तु खरीद लेता है अन्यथा उससे कम कीमत का माल दिखाने का अभिप्राय व्यक्त करता है, तब दुकानदार उसे दूसरा कम कीमत वाला माल दिखाकर संतुष्ट करता है। ठीक इसी प्रकार मुनि को तो श्रावक के लिए पहले मुनिधर्म का ही उपदेश देना चाहिए यदि वह गृहस्थ उसे धारण करने में असमर्थता व्यक्त करता है तो बाद में उसके लिए श्रावक धर्म का उपदेश देना चाहिए। जैसा कि पद्मपुराण के अनुसार अयोध्या के राजा श्री रामचन्द्र के भाई भरत के लिए "द्युति" नामक जैनाचार्य ने गृहस्थ धर्म का उपदेश देते हुए कहा था कि "हे भरत! गृहस्थ धर्म भी मुनिधर्म का लघुभ्राता है।"

यहाँ तो केवल सबसे पहले अपने पास आए हुए श्रावक को उपदेश देने का क्रम बताया है, जिसका रहस्य तुमने समझ ही लिया है। आगे एक प्रमाण मैं प्रवचनसार का बताती हूँ उसमें आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी छठे-सातवें गुणस्थानवर्ती आचार्यों के लिए जिनेन्द्रपूजा के उपदेश का अधिकार बताया है। देखें गाथा नं. 248—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दंसणणाणुवदेसो, सिस्सग्गहणं च पोसणं तेसिं।
चरिया हि सरागाणं, जिणिन्द पूजोवदेसो य।।

अर्थात् दर्शन और ज्ञान का उपदेश देना, शिष्यों का संग्रह करना, उनका पोषण करना तथा जिनेन्द्रदेव की पूजा का उपदेश देना, यह सब सरागी मुनि-शुभोपयोगी मुनियों की चर्या है।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कुन्दकुन्दाचार्य की दृष्टि में मुनियों के द्वारा दानपूजा आदि का उपदेश देना दोषास्पद नहीं है। किन्तु उपदेश पूर्वाचार्यों की परम्परानुसार ही देना चाहिए, अपने मन से या प्रान्तीय परम्परा के हठाग्रह से युक्त होकर आगम का अपलाप नहीं करना चाहिए। देखो! मैना सुन्दरी ने मुनिराज के उपदेश से ही सिद्धचक्र आराधना करके अपने पति एवं समस्त कुष्ठियों का कष्ट रोग दूर किया था। ऐसे कई उदाहरण ग्रंथों में मिलते हैं।

चन्दनामती—पूजा करने वालों को मुख्यरूप से किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

श्री ज्ञानमती माताजी—सबसे पहले तो पूजक के लिए उमास्वामी आचार्य ने निर्देश दिया है कि "खण्डितवस्त्र (वस्त्र का टुकड़ा), गला हुआ वस्त्र, फटा हुआ वस्त्र और मैला वस्त्र पहन कर दान, पूजा, जप, होम और स्वाध्याय नहीं करना चाहिए। क्योंकि ऐसे वस्त्र पहनकर किया गया दान-पूजन आदि सब निष्फल हो जाता है।"

दूसरी बात शुद्ध जल से अष्टद्रव्य धोकर पूजन करनी चाहिए। तभी अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है। आठों द्रव्यों में से किसी भी द्रव्य के चढ़ाने में हिंसा या सावद्य की कल्पना नहीं करनी चाहिए क्योंकि आचार्यों ने कहा है कि—'जिस वायु से पर्वत के समान बड़े-बड़े हाथी उड़ जाते हैं उस वायु के सामने क्या डांस, मच्छर टिक सकते हैं? कभी नहीं। उसी प्रकार जिस पूजा से जन्म जन्मान्तर के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं उस पूजा से क्या उसी से उत्पन्न होने वाली थोड़ी सी हिंसा नष्ट नहीं होगी? अवश्य होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

मेरा तो कहना यही है कि उत्तम कुल में जन्म लेकर जब तक साधु बनने की शक्ति नहीं है, तब तक श्रावक-श्राविकाओं को खूब दान पूजा कर करके पुण्यार्जन करना चाहिए।

तीसरी बात पूजकों के लिए यह है कि अपने शरीर को शुद्ध करने के लिए भगवान् का गन्धोदक लेना चाहिए, चन्दन से तिलक लगाना चाहिए और सन्तति की वृद्धि के लिए शेषाक्षत ले लेना चाहिए।

चन्दनामती—शेषाक्षत किसे कहते हैं?

श्री ज्ञानमती माताजी—पूजा करने के बाद बचे हुए अक्षतों को शेषाक्षत कहते हैं। पूजा के बाद उन अक्षतों को मस्तक पर लगाना चाहिए। आजकल इसकी परम्परा नहीं है किन्तु शास्त्रों में ऐसा उल्लेख आया है कि सुलोचना अपने पिता के पास शेषाक्षत लेकर गई थी।

इसकी जगह वर्तमान में यह परम्परा देखी है कि ठोना में जो स्थापना के चावल या लौंग होते हैं उन्हें लोग मस्तक पर चढ़ाते हैं, लेकिन इसका आगम में कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। इस शेषाक्षत वाले प्रकरण से मुझे तो यही समझ में आता है कि जैसे चौके में साधुओं को आहार देने के पश्चात् थाली में बचे हुए भोजन को लोग पवित्र प्रसाद मानकर खाते और खिलाते हैं उसी प्रकार जिन द्रव्यों से भगवान् की पूजा की गई है उन बचे हुए चावल आदि को शेषाक्षत-पवित्र मानकर उन्हें मस्तक पर चढ़ाने का उल्लेख है। ऐसा ही मेरे गुरु आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज भी कई बार कहा करते थे।

चन्दनामती—आज आपसे चर्चा करने में यह निष्कर्ष निकला कि पूजा के प्रारंभ में स्थापना करना अति आवश्यक है क्योंकि आगम का विधान है।

श्री ज्ञानमती माताजी—हाँ, यह तो मैंने जो कुछ भी बताया है श्रावकाचारों के आधार से ही है, मेरे मन का कुछ नहीं है। आह्वानन, स्थापन और सन्निधीकरण करने की भी अपनी एक विधि होती है, उसे उमास्वामी श्रावकाचार में देखना चाहिए, जहाँ पूजन संबंधी अन्य और भी निर्देश आचार्यश्री ने दिये हैं।

चन्दनामती—वंदामि माताजी! इस विषय को मैं यही विराम देती हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके द्वारा प्रतिपादित पूजन पद्धति के विषय से श्रावक-श्राविकाएं अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे। पुनः पुनः आपके श्रीचरणों में वंदामि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय-"जैनागम में वर्णित हवन विधि आवश्यक क्यों?"

चन्दनामती—पूज्य माताजी! वंदामि, आपने श्रावकों को पूजा के विषय में जो आगम प्रमाण बताए, उनसे श्रद्धालुजन अवश्य संतुष्ट होंगे। अब मैं आपसे हवन विधि के बारे में कुछ समयोचित बातें पूछना चाहती हूँ।

श्री ज्ञानमती माताजी—पूछो।

चन्दनामती—पूजा विधानों के समापन में एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में अग्निकुण्डों में हवन क्यों किया जाता है?

श्री ज्ञानमती माताजी—ऐसा आगम का विधान है कि प्रत्येक पूजा-विधानों के अन्त में हवन अवश्य करना चाहिए अन्यथा वह यज्ञ अधूरा कहलाता है। सभी विधानों के शुभारंभ में विधानाचार्य पण्डित जी उस विधान के मूलमंत्र का जाप्यानुष्ठान सभी पूजकों से करवाते हैं, जो कि पूरे विधान तक किया जाता है। अन्त में सभी के मंत्रों का कुल जोड़ लगाकर उसकी दशमांश आहुति अग्नि में कराने की प्राचीन परम्परा है।

इसी प्रकार पंचकल्याणकों में भी प्रतिष्ठाचार्य इन्द्र-इन्द्राणियों से कई दिन पूर्व से ही पूजा-पाठ और मंत्र अनुष्ठान प्रतिष्ठा स्थल पर शुरू करवा देते हैं और विधिवत् उन मंत्रों की आहुतिपूर्वक हवन कराते हैं इसकी पूरी विधि जानने हेतु आचार्यश्री नेमिचन्द्र स्वामी द्वारा रचित प्रतिष्ठा तिलक आदि प्रतिष्ठा ग्रंथ देखना चाहिए।

चन्दनामती—हवन की वास्तविक (शास्त्रोक्त) विधि क्या है?

श्री ज्ञानमती माताजी—प्रतिष्ठा शास्त्रों के अनुसार हवन की विधि निम्न प्रकार है—

मंडप के सामने वेदी के सम्मुख चौकोर, गोल और त्रिकोण ऐसे तीन कुण्ड बनवाना चाहिए। यदि तीन कुण्ड बनवाने में असुविधा हो तो एक चौकोर कुण्ड बना लें। हवन करने वालों की संख्या यदि अधिक हो, तो अलग से स्थण्डिल बना लेना चाहिए।

पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य द्वारा संपादित "मंदिर वेदी प्रतिष्ठा-कलशारोहण विधि" नामक पुस्तक में भी उन्होंने हवन से संबंधित प्रारंभिक जानकारी देते हुए उपर्युक्त बातें भी बताई हैं तथा पृ. नं.-74 पर हवन करने वालों के लिए विशेष नियम भी बताए हैं। जैसे-हवन के लिए साकल्य (धूप) आदि और समिधाएं (लकड़ी के टुकड़े) पहले से तैयार करके रखें। हवन करने वाले दो वस्त्र पहनकर हवन करें इसके बाद थोड़ी सी हवन क्रिया बताकर पृ.77 पर उल्लेख किया है—

"ॐ ह्रीं होमार्थं अग्नित्रयाधारभूतां समिधां स्थापयामि" इत्यादि मंत्र बोलते हुए कुण्डों के अंदर समिधा (लकड़ी) स्थापित करें पुनः ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं" यह मंत्र बोलकर कपूर जलाकर हवनकुण्ड में डालें अनंतर "ॐ ह्रीं श्रीं रं रं रं रं रं दर्भपूलेन ज्वालय ज्वालय नमः फट् स्वाहा" इस मंत्र का उच्चारण करते हुए डाभ के पूले से हवन कुण्ड की अग्नि संधुक्षित करें।

इसके बाद पण्डित पन्नालाल जी ने प्रतिष्ठाशास्त्रों के अनुसार तीनों कुण्डों को अलग-अलग मंत्रों द्वारा अर्घ्य चढ़ाने का नियम बताया है तथा पीठिका मंत्र, जाति मंत्र, निस्तारक मंत्र, ऋषि मंत्र, सुरेन्द्र मंत्र, परमराजादि मंत्र एवं परमेष्ठि मंत्रों से आहुतियाँ देना बताया है और जिस मंत्र का अनुष्ठान किया गया है उसकी दशांश आहुतियाँ भी देने के लिए लिखा है। स्वाहा बोलते हुए हवनकुण्डों में धूप, घी, लौंग, सप्तधान्य समिधा आदि की आहुतियाँ दी जाती हैं।

चन्दनामती—पूज्य माताजी! ये तीन कुण्ड किस अभिप्राय से बनाए जाते हैं। कृपया इस विषय में बताने का कष्ट करें।

श्री ज्ञानमती माताजी—आचार्यश्री जिनसेन द्वारा रचित आदिपुराण के द्वितीय भाग (भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित) में 40वें पर्व में उत्तरचूलिका रूप क्रियाओं के कथन में हवन विधि भी खूब अच्छी तरह बताई है। इसमें पृ. 301 श्री जिनसेन स्वामी कहते हैं।

कुण्डत्रये प्रणेतव्यास्त्रय एते महाग्नयः।
गार्हपत्याहवनीय दक्षिणाग्निप्रसिद्धयः।।84।।

अर्थात् गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणाग्नि नाम से प्रसिद्ध तीनों महाअग्नियों को तीनों कुण्डों में स्थापित करना चाहिए। इसका अभिप्राय यह है कि चौकोर कुण्ड तीर्थंकर कुण्ड कहलाता है, गोलकुण्ड गणधर कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है तथा त्रिकोण कुण्ड सामान्य केवली कुण्ड के नाम से जाना जाता है। शास्त्रों में वर्णन आता है कि तीर्थंकर, गणधर और सामान्य केवलियों के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्वाण होने पर अग्नि कुमार इन्द्र आकर उन-उन नाम वाले चौकोर, गोल और त्रिकोण कुण्ड बनाकर अपने मुकुट से अग्नि जलाकर उनके परमौदारिक शरीर का संस्कार करते हैं इसीलिए चौकोर कुण्ड जिसमें तीर्थंकरों के शरीर का संस्कार होता है उसकी अग्नि को गार्हपत्य अग्नि कहा है, गोल कुण्ड जिसमें गणधरों के शरीर का संस्कार होता है उसे आहवनीय कुण्ड एवं उसकी अग्नि को आहवनींय अग्नि कहते हैं तथा त्रिकोणकुण्ड जो सामान्य केवलियों के अंतिम संस्कार से पवित्र है उसमें जलाई जाने वाली अग्नि दक्षिणाग्नि कहलाती है।

इन अग्नियों के लिए जिनसेन स्वामी ने पुनः कहा है—

न स्वतोऽग्नेः पवित्रत्वं, देवतारूपमेव वा।
किन्त्वर्हद्दिव्यमूर्तीज्या-सम्बन्धात् पावनोऽनलः।।88।।

अर्थात् "अग्नि में स्वयं पवित्रता नहीं है और न वह देवतारूप ही है। किन्तु अरहन्तदेव की दिव्यमूर्ति की पूजा के संबंध से वह अग्नि पवित्र हो जाती है। इसीलिए ही द्विजोत्तम लोग इसे पूजा का अंग मानकर इसकी पूजा करते हैं। अतएव निर्वाणक्षेत्र की पूजा के समान अग्नि की पूजा करने में कोई दोष नहीं है। (आदिपुराण, द्वितीय भाग, पर्व-40, पृ. 30)

चन्दनामती—यदि अग्नि में हवन न करके पीले चावलों से हवन विधि कर ली जावे तो क्या हानि है?

श्री ज्ञानमती माताजी—पीले चावलों से पुष्पांजलि हो सकती है, हवन नहीं। हवन का अभिप्राय ही यह है कि अग्नि में आहुति डालना। यदि पुष्पों से हवन किया जा सकता तो पूर्व के आचार्य और विद्वान् अग्नि में हवन करने की विधि क्यों बताते?

चन्दनामती—आजकल कुछ लोग कहते हैं कि धूप से हवन नहीं करना चाहिए क्योंकि पूर्वकाल में राजा वज्रजंघ और रानी श्रीमती का धूप के धुएं में दम घुटने के कारण मरण हो गया था। हवन के धुएँ से भी छोटे-छोटे अनेकों जीवों का घात संभव है अतः हवन-हिंसा का कारण माना जाता है। इस बारे में आपका क्या अभिप्राय है?

श्री ज्ञानमती माताजी—देखो! अपने स्वार्थ की पूर्ति करने हेतु लोग किसी भी शब्द और कथानक का अर्थ कैसा बदल देते हैं यह बड़े आश्चर्य की बात है। राजा वज्रजंघ और रानी श्रीमती के मरण में धूप का निमित्त ही नहीं था किन्तु कर्मचारियों की असावधानी उसमें प्रबल निमित्त था कि वे धूप जलाने के बाद खिड़कियाँ खोलना भूल गए थे जिससे कमरे में धूएं की गैस भर गई और दोनों का मरण हो गया। दूसरी बात पंचेन्द्रिय विषय भोगों के निमित्त आचार्य ने स्वयं धिक्कारा है किन्तु भगवान की पूजा से उस कथन का तात्पर्य कथमपि नहीं है। जिन आचार्यश्री जिनसेन ने आदिपुराण के पर्व 9 के छंद 30 में भोगों को बुरा कहा है उन्हीं जिनसेन स्वमी ने तो पर्व 40 में हवनविधि का विस्तृत वर्णन किया है। अज्ञानी और सरल प्रवृत्ति वाले श्रावक-श्राविकाओं को अपने मन की एक पंक्ति दिखाकर उन्हें पुण्यक्रिया से वंचित करना अपराध नहीं तो क्या है? मेरा तो श्रावकों से भी यही कहना रहता है कि प्राचीन आचार्यों द्वारा रचित ग्रंथों को तुम स्वयं पढ़ो ताकि दिग्भ्रमित होने की गुंजाइश ही न रहे। अरे भाई! यदि भोजन करते हुए किसी की मृत्यु हो जाती है तो सभी भोजन का त्याग कर देते हैं? नहीं, उसी प्रकार हवन आदि क्रियाओं का निषेध तो कभी किया ही नहीं जा सकता। हाँ, विवेकपूर्वक इन क्रियाओं को करने का उपदेश अवश्य देना चाहिए।

तुमने दूसरी बात कही कि "हवन हिंसा का कारण माना जाता है" सो इस बारे में तो आचार्यश्री समन्तभद्र स्वामी ने अपने वृहत्स्वयंभूस्तोत्र के अन्तर्गत भगवान वासुपूज्य की स्तुति करते हुए कहा है—

पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य, सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ।
दोषायनालं कणिका विषस्य, न दूषिका शीतशिवाम्बुराशौ।।3।।

इसका अर्थ यह है कि "हे भगवन्! आप पूज्य हैं, जिन हैं। आपकी पूजा करने वाले मनुष्य के जो आरंभजनित थोड़ा सा पाप होता है वह बहुत बड़ी पुण्य की राशि में उसी प्रकार दोष का कारण नहीं है, जैसे शीतल जल से युक्त बहुत बड़े समुद्र में विष की कणिका डाल देने पर भी वह जल को दूषित नहीं कर सकती है।"

अर्थात् हवन करना, पूजन विधान, मंदिर निर्माण आदि प्रत्येक शुभ कार्य करने में जो थोड़ी बहुत हिंसा होती है वह उन्हीं कार्यों से संचित हुई महान पुण्यराशि में विलुप्त हो जाती है अतः जिनेन्द्रभक्ति संबंधी कार्यों में कभी हिंसात्मक भावना भी नहीं लानी चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस बारे में पं. नाथूलाल जी शास्त्री-इंदौर वालों ने अपनी "जैन संस्कार विधि" नामक पुस्तक में अच्छा खुलासा किया है। देखें पृ. नं. 2-3 पर—

"संस्कार विधि" में प्रत्येक संस्कार में हवन करने का विधान है। लगभग 10 वर्ष से यह विचारधारा प्रचारित की जा रही है कि "हवन हिंसा का कारण है" जबकि मंदिरों में बिजली, पंखे और बिम्ब प्रतिष्ठाओं में बड़े-बड़े भोज व बिजली आदि में उससे भी अधिक हिंसा होती है। "गृहस्थ को सभी धार्मिक कार्य सावधानी और मर्यादापूर्वक करना चाहिए।" क्योंकि वह संकल्पी हिंसा का सर्वथा त्यागी है। इसके पहले तो कभी किसी ने इस संबंध में किसी ग्रंथ का प्रमाण देकर हवन का निषेध नहीं बताया बल्कि सभी प्रतिष्ठा पाठों व महापुराण में हवन के मंत्र और अग्नि स्थापन के मंत्र तथा गोल, चौकोर व त्रिकोण कुण्डों का विधान बताया है। कोई भी शांतिमंत्र जपने पर जयसेन प्रतिष्ठापाठ के श्लोक 359-421 के अनुसार अग्निसंस्कार पूर्वक बिना दशांश हवन के पूर्ण नहीं माना जाता है। हवन के द्रव्यों व घृत को अग्नि में क्षेपण से वैज्ञानिकों ने अनेक लाभ बताए हैं। विविध रोगों की चिकित्सा और वातावरण की शुद्धि हवन से होती है। अभी हरिद्वार में हवन से बड़े-बड़े रोग दूर करने हेतु शोध संस्थान की स्थापना भी हो चुकी है।"

चन्दनामती—पूज्य माताजी! इस संबंध में एक प्रश्न और है कि हवन में प्रयुक्त होने वाली समिधा कैसी होनी चाहिए? इस बारे में भी क्या कोई प्रमाण है?

श्री ज्ञानमती माताजी—हाँ, प्रतिष्ठातिलक में एक श्लोक आया है—

क्षीरद्रुमाणां च पलाशकानां, नवांगुलायामसमिद्भिरद्य।
द्वित्र्यंगुलप्रमितनाहमयी भिरग्नौ करात्करोम्यष्टशतेन होमम्।।

अर्थात् आम्रपलाशादि वृक्षों की 9 अंगुल लम्बी एवं 2-3 अंगुल मोटी लकड़ियों से 108 बार आहुति देना चाहिए (यह समिधाहुति कहलाती है) अन्यत्र कहीं 12 अंगुल लम्बी समिधा से आहुति करना भी बताया है।

चन्दनामती—आपके श्रीचरणों में वंदामि। आपने अपना अमूल्य समय देकर आज बहुत सारी ज्ञान की बातें बताई हैं। आशा है पूजा-विधान करने वाले इस चर्चा से अवश्य लाभान्वित होंगे।

विषय-"कुर्वेऽहं या करोम्यहं?"

चन्दनामती—पूज्य माताजी! इस परिचर्चा में मैं आपसे दिगम्बर जैन साधुचर्या और उनके प्रतिक्रमण संबंधी कुछ प्रश्न पूछना चाहती हूँ।

श्री ज्ञानमती माताजी—पूछो, क्या पूछ रही हो?

चन्दनामती—हम लोग जो प्रतिदिन दैवसिक-रात्रिक प्रतिक्रमण और चतुर्दशी को पाक्षिक प्रतिक्रमण करते हैं, उसमें सिद्ध, चैत्य आदि भक्तियाँ पढ़ने से पूर्व जो प्रतिज्ञा की जाती है जैसे-

"दैवसिक प्रतिक्रमण क्रियायां................सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं" इत्यादि पाठ पढ़ते हैं। पिछले कुछ वर्षों से कतिपय नई पुस्तकों में "कायोत्सर्गं कुर्वेऽहं" पाठ छप रहा है, जबकि आप हम लोगों को 'करोम्यहं' ही पढ़ने को कहती हैं। इस विषय में जानना चाहती हूँ कि आप कुर्वेऽहं क्यों नहीं पढ़ती हैं तथा इस विषय में आगम प्रमाण क्या है?

श्री ज्ञानमती माताजी—डुकृञ्-करणे धातु से करोमि और कुर्वे ये दोनों क्रिया उत्तम पुरुष के एक वचन में बनती हैं। जिसमें 'करोमि' परस्मैपदी है और 'कुर्वे' आत्मनेपदी है। अहं कर्ता के साथ करोमि या कुर्वे क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

इस विषय में आगम प्रमाण जो मुझे प्राप्त हुए हैं उनमें से अति प्राचीन ग्रंथ 'आचारसार' जो सिद्धान्तचक्रवर्ती श्री वीरनन्दि आचार्य द्वारा रचित है उसमें 'करोम्यहं' पाठ ही है। जैसे-"क्रियायामस्यां व्युत्सर्गं, भक्तेरस्याः करोम्यहं।" इसका अर्थ यही है कि अस्यां क्रियायां अस्याः भक्तेः व्युत्सर्गं करोम्यहं अर्थात् इस क्रिया को करने में मैं इस भक्ति का कायोत्सर्ग करता हूँ। जहाँ जिस क्रिया में जो भक्ति पढ़ते हैं वहाँ उस क्रिया का नाम और भक्ति का नाम पढ़ते हैं।

दूसरा प्रमाण अनगार धर्मामृत में पाक्षिक प्रतिक्रमण के पाँच श्लोकों की स्वोपज्ञ टीका में 'करोम्यहं' शब्द का प्रयोग पन्द्रह बार टीकाकार ने किया है। जैसे-"सर्वातिचार विशुद्ध्यर्थं................सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीसरा प्रमाण दैवसिक और पाक्षिक प्रतिक्रमण जो कि "क्रियाकलाप" के आधार से सभी पुस्तकों में छपे हुए हैं उसमें पं. पन्नालाल जी सोनी ने प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के अनुसार 'करोम्यहं' पाठ ही सभी जगह दिया है।

चतुर्थ प्रमाण चारित्रसार ग्रंथ के पृष्ठ 146-147 पर मिलता है। जैसा कि देवतास्तवन क्रिया में लिखा है—

"चैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोमीति विज्ञाप्य............."

"पंचगुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोमीति विज्ञाप्य................."

इसी प्रकार श्री प्रभाचन्द्राचार्य की टीका सहित सामायिकभाष्य नामक पुस्तक जो कि सोलापुर से प्रकाशित है। उसमें बड़ी सामायिक में भी 'करोमि' पाठ ही आता है।

प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ में भी "करोम्यहं" पाठ ही है।

मेरा तो कहने का तात्पर्य यही है कि सामायिक और प्रतिक्रमण की रचना करने वाले प्राचीन आचार्य निश्चित ही संस्कृत ज्ञान से परिपूर्ण थे उन्हें भी आत्मनेपदी और परस्मैपदी क्रियाओं का पूर्ण ज्ञान था उनके ग्रंथों में "करोमि" क्रिया मिलती है अतः "कुर्वे" क्रिया अपने मन से लगाने का अधिकार हम लोगों को नहीं है। यह परिवर्तन किसने किया है मुझे पता नहीं।

देखो! मेरी नीति तो यह है कि कहीं कोई पाठ यदि अपने को नहीं जंचता है या शास्त्र से उसमें कुछ अशुद्धि प्रतीत होती है तो उस भिन्न पाठ को टिप्पण में देना चाहिए, उसी में परिवर्तन-परिवर्द्धन नहीं करना चाहिए। स्वरचित अपनी कृति में कोई कैसा भी पाठ रख सकता है किन्तु दूसरे की कृति में परिवर्तन करना एक नैतिक अपराध भी है। जो लोग उपर्युक्त समस्त ग्रंथों का स्वाध्याय नहीं करते हैं वे तो पुराना, नया पाठ समझ ही नहीं सकते हैं। मेरा तो सभी विद्वानों से भी यही कहना रहता है कि किसी की कृति में अपने मन से कोई संशोधन न करें, ईमानदारीपूर्वक किसी भी भिन्न पाठ को टिप्पण में ही देवें, ताकि पाठक संशोधित पाठ को ही असली पाठ न समझ लेवें।

चन्दनामती—पूज्य माताजी! मेरा द्वितीय प्रश्न आपसे साधुओं की आहार चर्या के विषय में है। आपने तो हम लोगों को बतलाया है कि आहार शुरू करने से पूर्व चौके में ही प्रत्याख्यान निष्ठापन करके सिद्धभक्ति पढ़ो पुनः आहार शुरू करो किन्तु कुछ संघों में मैंने देखा है कि साधुगण आहारचर्या को निकलने से पूर्व ही गुरु के पास प्रत्याख्यान निष्ठापन कर लेते हैं। इस संबंध में आगम प्रमाण क्या है? कृपया बताने का कष्ट करें।

श्री ज्ञानमती माताजी—इस विषय में अनगार धर्मामृत और आचारसार इन दो ग्रंथों में बहुत स्पष्ट खुलासा है कि साधु को चौके में पहुँचने के पश्चात् श्रावकों द्वारा नवधाभक्ति के अनंतर ही पूर्व दिन के ग्रहण किए गए प्रत्याख्यान की निष्ठापना करके लघु सिद्धभक्ति पढ़े पुनः करपात्र की अंजुलि बनाकर भोजन ग्रहण करें। क्योंकि सिद्धभक्तिपूर्वक प्रत्याख्यान निष्ठापना के पश्चात् तो समस्त अन्तरायों का पालन करना भी आवश्यक होता है।

अनगार धर्मामृत के पृ. 649 पर लिखा है—

"हेयं-त्याज्यं साधुना। निष्ठाप्यमित्यर्थः। किं तत्? प्रत्याख्यानादि-प्रत्याख्यानमुपोषितं वा। क्व? अशनादौ-भोजनारंभे। कया? सिद्धभक्त्या। किंविशिष्ट्या? लघ्व्या।"

अर्थात् चौके में नवधाभक्तिपूर्ण हो जाने पर जब श्रावक मुनि से आहार ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करते हैं तब वे मुनि अपने खड़े होने की जगह और दातार के खड़े होने की जगह को ठीक से देख लेते हैं कि कोई विकलत्रय आदि जीव जन्तु तो नहीं है। पुनः शुद्ध गरम प्रासुक जल से श्रावक द्वारा हाथ धुलाए जाने पर वे "पूर्व दिन के ग्रहण किए गए प्रत्याख्यान या उपवास का सिद्धभक्तिपूर्वक निष्ठापन करके आहार शुरू करते हैं।"

इसी प्रकार आचारसार ग्रंथ में भी कहा है—

दातार के द्वारा पादप्रक्षाल आदि क्रियाओं के होने के बाद, उनके द्वारा प्रार्थना की जाने पर साधु सिद्धभक्ति करके प्रत्याख्यान का निष्ठापन करते हैं और समचतुरंगुल पाद से (पैरों में चार अंगुल का अन्तर रखकर) खड़े होकर नाभि से ऊपर हाथ रखते हुए करपात्र में दातार द्वारा प्रदत्त आहार ग्रहण करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुनः अनगार में वर्णन है कि आहार करने के पश्चात् साधु वहीं (चौके में) लघु सिद्धभक्तिपूर्वक प्रत्याख्यान ग्रहण कर लें, इसके बाद गुरु के पास आकर लघुसिद्धभक्ति और योगभक्ति पढ़कर पुनः गुरु के पास प्रत्याख्यान ग्रहण करके लघु आचार्यभक्तिपूर्वक गुरु की वंदना करें। वे पंक्तियाँ अनगार धर्मामृत के पृ. 649 पर इस प्रकार हैं-

"आदेयं च-लघ्व्या सिद्ध भक्तया प्रतिष्ठाप्यं साधुना। किं तत्? प्रत्याख्यानादि।

क्व? अंते प्रक्रमाद् भोजनस्यैव प्रान्ते। कथं? आशु-शीघ्रं भोजनांतरमेव। आचार्यासन्निधावेतद्विधेयं।" सूरौ-आचार्यसमीपे पुनर्ग्राह्यं प्रतिष्ठाप्यं साधुना। किं तत्? प्रत्याख्यानादि। कया? लघ्व्या सिद्धभक्त्या लघुयोगिभक्त्या। तथा वंद्यः साधुना। कोऽसौ? स सूरिः। कया? सूरिभक्त्या। किंविशिष्टया? लघ्व्या।

चंदनामती—माताजी! जैसे आहार के बाद गुरु के पास प्रत्याख्यान ग्रहण करने की बात है वैसे ही आहार से पहले भी यदि गुरु के पास आहार प्रत्याख्यान निष्ठापन करके साधु आहार को जाते हैं? तो क्या बाधा है?

श्री ज्ञानमती माताजी—सबसे बड़ी बाधा तो आगम आज्ञा का उलंघन है। जैसा कि ऊपर आगम पंक्तियाँ दी ही गई हैं। पहले गुरु के पास प्रत्याख्यान निष्ठापन इसलिए नहीं किया जाता है कि सिद्धभक्तिपूर्वक प्रत्याख्यान निष्ठापन के पश्चात् समस्त अन्तरायों का पालन आवश्यक हो जाता है तथा मान लो किसी कारण से आहार की विधि नहीं मिली तो अगले दिन आहार लेने तक उनको अप्रत्याख्यान में ही रहना पड़ेगा। अथवा किसी साधु का मार्ग में मरण हो जावे तो प्रत्याख्यानरहित मरण कहलाएगा किन्तु चौके में प्रत्याख्यान निष्ठापन करने पर इन दोषों की संभावना नहीं रहती है।

भोजन के अंत में वहीं (चौके में) प्रत्याख्यान ग्रहण करने में हेतु दिया है कि यदि कदाचित् गुरु के पास आते हुए मार्ग में मरण भी हो जाये तो वह प्रत्याख्यानपूर्वक होगा। बाद में दुबारा गुरु के पास भी विधिवत् प्रत्याख्यान ग्रहण करने का आदेश भी दिया है।

यहाँ यह बात ध्यान देने की है कि आहार से पूर्व गुरु के पास प्रत्याख्यान निष्ठापन न करने से गुरु का कोई अपमान नहीं है बल्कि यह परम्परा कब से, किसने और किस आधार से चालू की है मुझे समझ में नहीं आता। साधु की तो प्रत्येक क्रिया के लिए आगम के आधार भरे पड़ें हैं। क्रियाकलाप में भी यही विधि है एवं हमें गुरुपरम्परा से भी यही विधि प्राप्त हुई है।

बात यह है कि अनगारधर्मामृत, मूलाचार और आचारसार आदि चरणानुयोग के ग्रंथों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए, उसी से इन सब क्रियाओं का ज्ञान होता है।

चंदनामती—वंदामि माताजी! आपसे आज इन दो प्रश्नों का समाधान पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आपका ज्ञानरूपी वरदहस्त हम सबके मस्तक पर सदैव बना रहे, इसी कामना के साथ लेखनी को विराम देती हूँ।

विषय-"णमोकार मंत्र एवं चत्तारिमंगल"

चन्दनामती—पूज्य माताजी! जिस णमोकार महामंत्र को सभी जैन लोग उच्चारण करते हैं उसके बारे में मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ।

श्री ज्ञानमती माताजी—पूछो, क्या पूछना है?

चन्दनामती—णमोकार मंत्र के प्रथम पद में कोई तो 'णमो अरिहंताणं" पढ़ते हैं तथा कुछ लोगों को "णमो अरहंताणं" भी पढ़ते देखा है। इस विषय में आगम का क्या प्रमाण है?

श्री ज्ञानमती माताजी—आगम-सूत्र ग्रंथ धवला की प्रथम पुस्तक में इस विषय का अच्छा खुलासा है। उसी के आधार से मैं तुम्हें बताती हूँ।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

धवला के मूल मंगलाचरण में यही मंत्र आया है जिसमें। "अरिहंताणं" पाठ ही लिया है। आगे टीकाकार श्री वीरसेनस्वामी ने और टिप्पणकार ने 'अरहंताणं' पद को भी शुद्ध माना है। इसी का स्पष्टीकरण-"अरिहननादरिहंता"।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1. केवलज्ञानादि संपूर्ण आत्मगुणों के आविर्भाव को रोकने में समर्थ होने से मोह प्रधान अरि-शत्रु है और उस शत्रु के नाश करने से 'अरिहंत' यह संज्ञा प्राप्त होती है।

2. "रजो हननाद्वा अरिहन्ता" अथवा रज अर्थात् आवरण-कर्मों के नाश करने से अरिहंत हैं। ज्ञानावरण और दर्शनावरण कर्मधूलि की तरह बाह्य और अंतरंग स्वरूप समस्त त्रिकाल गोचर अनंत अर्थपर्याय और व्यंजनपर्याय स्वरूप वस्तुओं को विषय करने वाले बोध और अनुभव के प्रतिबंधक होने से रज कहलाते हैं, उनका नाश करने वाले अरिहंत हैं।

3. "रहस्याभावाद्वा अरिहन्ता" अथवा रहस्य के अभाव से भी अरिहंत होते हैं। रहस्य अन्तराय कर्म को कहते हैं। अन्तराय कर्म का नाश शेष तीन घातिया कर्मों के नाश का अविनाभावी है और अन्तराय कर्म के नाश होने पर अघातिया कर्म भ्रष्ट बीज के समान निःशक्त हो जाते हैं। ऐसे अन्तराय कर्म के नाश से अरिहंत होते हैं।

4. "अतिशयपूजा र्हत्वाद्वार्हन्तः" अथवा सातिशयपूजा के योग्य होने से अर्हन्त होते हैं। क्योंकि गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवल और निर्वाण इन पाँचों कल्याणकों में देवों द्वारा की गई पूजाएं देव, असुर और मनुष्यों को प्राप्त पूजाओं से अधिक अर्थात् महान हैं, इसलिए इन अतिशयों के योग्य होने से अर्हन्त होते हैं। यहाँ अर्हं धातु पूजा अर्थ में है उससे 'अरहन्त' बना है।

इस प्रकार आगम के आधार से तो णमो अरिहंताणं और णमो अरहंताणं दोनों ही पद ठीक हैं इनके उच्चारण में कोई दोष नहीं है। फिर भी मूलपाठ अरिहंताणं है अतः हम लोग अरिहंताणं ही पढ़ते हैं।

चन्दनामती—इसका समाधान तो हो गया। एक दूसरा प्रश्न भी आज हम सबके सामने है कि जो चत्तारिमंगल का पाठ पढ़ा जाता है उसमें बहुत सारे लोग तो विभक्तियाँ लगाकर पढ़ते हैं। जैसे-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, अरिहंता लोगुत्तमा या अरिहंते सरणं पव्वज्जामि इत्यादि।

आप तो बिना विभक्ति का पाठ पढ़ती हैं तथा हम लोगों को भी बिना विभक्ति वाला पाठ ही पढ़ने को कहती हैं, किन्तु इसमें आगम प्रमाण क्या है? कृपया बताने का कष्ट करें।

श्री ज्ञानमती माताजी—इस विषय में आगम प्रमाण जो मेरे देखने में आया वह क्रियाकलाप नामक ग्रंथ है। जिसे पण्डित श्री पन्नालाल जी सोनी ब्यावर वालों ने संपादित करके छपवाया था। उस क्रियाकलाप की उन्हें कई हस्तलिखित प्राचीन प्रतियाँ भी उपलब्ध हुई थीं। उन प्रतियों के आधार पर पण्डित जी ने क्रियाकलाप ग्रंथ के पृ. 89 पर पाक्षिक प्रतिक्रमण का दंडक दिया है। जिसमें बिना विभक्ति वाला पाठ ही छपा है, जो कि बहुत प्राचीन माना जाता है। इसी क्रियाकलाप में सामायिक दण्डक की टीका में श्री प्रभाचन्द्राचार्य ने बिना विभक्ति का ही पाठ लिया है। जैसे-अरिहंतमंगलं, सिद्धमंगलं, अरिहंतलोगुत्तमा, सिद्धलोगुत्तमा, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।'

इससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रंथ के टीकाकार को भी बिना विभक्ति वाला प्राचीन पाठ ही ठीक लगा था। इसी प्रकार ज्ञानार्णव, प्रतिष्ठातिलक, प्रतिष्ठासारोद्धार आदि ग्रंथों में भी बिना विभक्ति के ही पाठ देखे जाते हैं।

चन्दनामती—माताजी! पहले एक बार आपने मुझसे ब्रह्मचारिणी अवस्था में चत्तारिमंगल विषयक कुछ पत्राचार भी कराए थे। उसमें विद्वानों के क्या अभिमत आए थे?

श्री ज्ञानमती माताजी—हाँ, सन् 1983 में तुम्हारे द्वारा किए गए पत्राचार के उत्तर में भी विद्वानों के उत्तर आए थे जिन्हें मैंने 'मेरी स्मृतियाँ' में दिया भी है। पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य ने लिखा था कि "श्वेताम्बरों के यहाँ विभक्ति सहित पाठ प्रचलित है। उसमें व्याकरण की दृष्टि से कोई अशुद्धि नहीं है अत उसे दिगम्बर जैनियों ने भी अपना लिया है।

ब्र. सूरजमल जी प्रतिष्ठाचार्य एवं पं. शिखरचंद प्रतिष्ठाचार्य ने भी बिना विभक्ति वाले प्राचीन पाठ को ही मान्यता दी है।

स्व. पं. मोतीलाल जी कोठारी फल्टण वालों से एक बार दरियागंज- दिल्ली में मेरी चर्चा हुई थी, उन्होंने प्राचीन विभक्ति रहित पाठ को प्रामाणिक कहा था।

पं. सुमेरचंद दिवाकर-सिवनी वालों से भी दिल्ली में इस विषय पर वार्ता हुई थी तब उन्होंने भी प्राचीन पाठ को ही मान्यता दी थी।

चन्दनामती—यदि व्याकरण से विभक्ति सहित पाठ शुद्ध है तो उसे पढ़ने में क्या बाधा है?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री ज्ञानमती माताजी—बात यह है कि मंत्रशास्त्र का व्याकरण अलग ही होता है, आज उसको जानने वाले विद्वान् नहीं हैं। अतः मेरी मान्यता तो यही है कि प्राचीन पाठ में अपनी बुद्धि से परिवर्तन, परिवर्द्धन नहीं करना चाहिए।

सन् 1958 में ब्यावर चातुर्मास में मैंने पं. पन्नालाल जी सोनी से इस विषय में चर्चा की थी, तब उन्होंने कहा था कि–

हमारे यहाँ सरस्वती भवन में बहुत प्राचीन यंत्रों में भी बिना विभक्ति वाला प्राचीन पाठ ही है, हस्तलिखित प्रतियों में भी वही पाठ मिलता है। विभक्ति सहित चत्तारिमंगल का पाठ शास्त्रों में देखने को नहीं आया है अतः प्राचीन पाठ ही पढ़ना चाहिए। आजकल के विद्वानों द्वारा संशोधित पाठ नहीं अपनाना चाहिए।

उन्होंने भी इस बात पर जोर दिया था कि मंत्रों का व्याकरण अलग ही होता है, आज हम लोगों को उसका ज्ञान नहीं है अतः मूलमंत्रों में अपने मन से विभक्तियाँ नहीं लगानी चाहिए।

एक पत्र सन् 1983 में क्षुल्लक श्री सिद्धसागर जी का मौजमाबाद से प्राप्त हुआ था। उससे मुझे बहुत संतोष हुआ था। उन्होंने लिखा था—

"अ आ इ उ ए तथा ओ को व्याकरण सूत्र के अनुसार समान भी माना जाता है। 'एदे छ च समाणा' इस प्राकृत सूत्र के अनुसार अरहंता मंगलं के स्थान पर अरहंत मंगलं, सिद्धा मंगलं के स्थान पर सिद्ध मंगलं तथा साहू मंगलं के स्थान में साहूमंगलं और केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं है। 'आ' तथा 'अ' को समान मानकर अरहंत के 'आ' के स्थान में 'अ' पाठ रखा गया है यह व्याकरण से शुद्ध है। इसी प्रकार 'अरहंत लोगुत्तमा' इत्यादि पाठ भी शुद्ध है। 'अरहंते सरणं पव्वज्जामि' के स्थान पर 'अरहंत सरणं पव्वज्जामि' पाठ शुद्ध है क्योंकि 'एदे छ च समाणा' इस व्याकरण सूत्र के अनुसार 'ए' तथा 'अ' को समान मानकर 'ए' के स्थान में 'अ' पाठ शुद्ध है।

इसलिए जो चत्तारिमंगल पाठ विभक्ति रहित है, प्राचीन काल से चला आ रहा है वह शुद्ध है। शास्त्रों और यंत्रों में भी विभक्ति रहित ही जो पाठ देखे जाते हैं, वे शुद्ध हैं और लाघवयुक्त हैं।

चन्दनामती—इससे निष्कर्ष क्या निकालें?

श्री ज्ञानमती माताजी—निष्कर्ष तो यही निकलता है कि प्राचीन पाठ ही पढना चाहिए। क्योंकि खोज करने से यही प्रतीत होता है कि समस्त पूर्वाचार्यों की प्राचीन पद्धति के अनुसार बिना विभक्ति वाला पाठ ही पढ़ते और लिखते आए हैं। अतः हम लोगों को इस विषय में अपनी बुद्धि न लगाकर प्राचीन पाठ का ही अनुरण करना चाहिए।

चन्दनामती—आपके श्रीचरणों में बारम्बार वंदामि। णमोकार मंत्र और चत्तारिमंगल पर आपके द्वारा जो समुचित समाधान प्राप्त हुआ है, उससे समस्त जनमानस को अवश्य ही मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

नियमसार की स्याद्वादचन्द्रिका टीका साहित्य जगत के मस्तक का टीका है—

पूज्य गणिनी आर्यिका माता ज्ञानमती जी ही एक ऐसी साध्वी मणि हैं, जिन्होंने नियमसार की संस्कृत टीका लिखकर नारी जगत् को ही नहीं सम्पूर्ण जैन समाज को एक महान उच्चासन पर बैठा दिया है। यदि उस स्याद्वादचन्द्रिका टीका को वर्तमान साहित्यजगत् के मस्तक का टीका कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। संस्कृत ग्रंथों की टीकाएँ तो बहुत हैं किन्तु वे सब पुरुष विद्वानों द्वारा की हुई टीकाएँ हैं। किसी आर्यिका माता के द्वारा की गई यह पहली ही टीका है, जो शब्द, अर्थ और अभिप्रायों से सम्पन्न है। ज्ञानमती माताजी ने जो भी कार्य किये हैं, वे सभी महान और अभूतपूर्व हैं।

अप्रैल सन् 1985

स्व. डॉ. लाल बहादुर शास्त्री
(अध्यक्ष-अ.भा.दि. जैन शास्त्री परिषद)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से एक विशेष साक्षात्कार

-स्थान-	-दिनाँक-	-साक्षात्कारकर्ता-
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर	4 मार्च 2006	डॉ. श्रेयांस कुमार जैन-बड़ौत डॉ. जयकुमार जैन-मुजफ्फरनगर

डॉ. श्रेयांस—पूज्य माताजी! वंदामि, आज हम लोग आपसे 'चतुर्थ गुणस्थान की पात्रता' के विषय में विद्वानों के बीच चलने वाली ऊहापोह के विषय में समाधान प्राप्त करने हेतु उपस्थित हुए हैं। इस क्रम में मेरा प्रथम प्रश्न है—

चतुर्थ गुणस्थानवर्ती को निश्चल अनुभूति हो सकती है या नहीं?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—श्रद्धा, प्रतीति, विश्वास, अनुभूति ये सब पर्यायवाची शब्द हैं। चतुर्थगुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टी को यह प्रतिभास रहता है कि देह अलग है, आत्मा अलग है अर्थात् उसे भेदविज्ञान का दृढ़ श्रद्धान रहता है अतः इस अनुभूति को मानने में कोई दोष नहीं है पर निश्चल अनुभूति या निर्विकल्प ध्यान या निर्विकल्प समाधि या शुद्धोपयोग जिसे कहते हैं, उस रूप अनुभूति चतुर्थ गुणस्थान में नहीं हो सकती।

अर्थात् श्रद्धानरूप से प्रतीति या अनुभूति मानने में दोष नहीं है पर चतुर्थ गुणस्थान में शुद्धोपयोग मानना आगमसम्मत नहीं है।

डॉ. श्रेयांस—अर्थात् आगम वाक्य श्रद्धा चतुर्थगुणस्थानवर्ती को हो सकती है पर क्या श्रद्धा रूप अनुभव उसके लिए संभव है? परमात्म प्रकाश गाथा नं. 12 की टीका में चतुर्थ, पंचम, षष्ठ गुणस्थानवर्ती के लिए सराग स्वसंवेदन कहा है तो इस गुणस्थान में आंशिक शुद्धोपयोग की संभावना है क्या?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—शुद्धोपयोग शब्द कहने से आगम में बाधा आती है क्योंकि आचार्यों ने शुद्धोपयोग को सातवें गुणस्थान से ही माना है। अंश में तो हम यह भी कह देते हैं कि हमारा श्रुतज्ञान केवलज्ञान का अंश है, केवलज्ञान का बीज है, परन्तु हमारा श्रुतज्ञान केवलज्ञान नहीं है, केवलज्ञान अलग ही है। इसी प्रकार मुनियों को जो शुद्धोपयोग होता है, वह अलग ही होता है, उसकी श्रद्धा, विश्वास, प्रतीति तो सातवें गुणस्थान से पूर्व होती है, पर वह साक्षात् नहीं होता है।

यदि सातवें गुणस्थान से पूर्व हम शुद्धोपयोग का अंश मानें तो आचार्य स्वयं कहते कि शुद्धोपयोग का प्रारंभ हो गया है, भले ही अत्यंत सूक्ष्म रूप में अथवा अत्यंत अल्प समय के लिए, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं कहा। वरन् प्रवचनसार गाथा 9 की तात्पर्यवृत्ति टीका (पृष्ठ 20) में स्पष्टतया उल्लिखित है—

"मिथ्यात्व-सासादन मिश्रगुणस्थानत्रये तारतम्येनाशुभोपयोगः तदनंतरमसंयतसम्यग्दृष्टिदेशविरत-प्रमत्तसंयतगुणस्थान-त्रये तारतम्येन शुभोपयोगः, तदनंतरमप्रमत्तादिक्षीण-कषायान्तगुणस्थानषट्केतारतम्येन शुद्धोपयोगः, तदनंतरं सयोग्ययोगीजिनगुणस्थानद्वये शुद्धोपयोगफलमिति।"

अर्थात् मिथ्यात्व, सासादन और मिश्र इन तीन गुणस्थानों में तरतमता से अशुभोपयोग है, इसके बाद असंयतसम्यग्दृष्टि, देशविरत और प्रमत्तविरत इन तीन गुणस्थानों में तरतमता से शुभोपयोग है, इसके अनन्तर अप्रमत्त संयत से लेकर क्षीणकषाय तक इन छह गुणस्थानों में तरतमता से शुद्धोपयोग है........आदि।

यहाँ चौथे-पाँचवे और छठे गुणस्थान में आचार्यों ने तरतमता से शुद्धोपयोग नहीं बताया वरन् शुभोपयोग बताया और आगे स्पष्ट रूप से कह दिया कि सातवें गुणस्थान से लेकर अगले 6 गुणस्थानों में अर्थात् 12वें गुणस्थान तक तरतमता से शुद्धोपयोग है। ऐसा हो सकता है कि उन पूर्वाचार्यों के समक्ष भी इस प्रकार की शंकाएँ आती होंगी, तभी उन्होंने इतना स्पष्ट रूप से बताया है।

अतः हम सातवें गुणस्थान से पूर्व शुद्धोपयोग का अंश न मानें। शुद्धनिश्चयनय से मैं सिद्ध हूँ, यह बात श्रद्धान रूप में कही जाती है, श्रद्धान का अर्थ ये नहीं है कि अंश रूप में हम सिद्ध हो गये, वरन् हम श्रद्धानरूप में सिद्ध हैं अतः शुद्धोपयोग रूप चिंतन अवश्य करना चाहिए परन्तु शुद्धोपयोग का अंश प्रारंभ हो गया है, ऐसा मानने में बाधा आती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डॉ. श्रेयांस—अर्थात् इसे आगम वाक्य श्रद्धा तो कहा जा सकता है, परन्तु तद्रूप अनुभूति या अनुभव नहीं कहा जा सकता, यदि कहा जा सकता हो तो बतावें?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—शब्दों में इसे अनुभव रूप कह सकते हैं पर शुद्धोपयोग रूप अनुभव यह नहीं है अथवा निर्विकल्प रूप अनुभव यह नहीं है। यह सविकल्प रूप अनुभव है। निश्चल अनुभूति रूप एकाग्रता मुनियों के शुद्धोपयोग में ही होती है।

पूज्य चंदनामती माताजी—सविकल्प अनुभव को तो शुद्धोपयोग का नाम दिया ही नहीं जा सकता, वह नाम तो निर्विकल्प अनुभव के लिए ही है।

डॉ. श्रेयांस—माताजी! इसका अर्थ क्या हम ये समझें कि उपयोग आत्मा की एक समय की एकाग्रता रूप अनुभूति है और उसमें अंश-अंशी का भेदपना नहीं पाया जाता है?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—हाँ! इसमें यह भेदपना नहीं माना जा सकता है। अंश रूप में यदि शुद्धोपयोग मानें तो आचार्यों की वाणी से बाधा आती है, अतः हम शुद्ध निश्चयनय की प्रतीति, प्रतिभास तो कह सकते हैं, पर उसका अंश नहीं कह सकते।

डॉ. श्रेयांस—माताजी! कृपया हमें बतायें कि आचार्यों के कौन-कौन से ऐसे वाक्य हैं, जिनसे विरोध आता है?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—एक तो 'जयसेन स्वामी' का मैंने आपको पहले उदाहरण बताया कि 'तदनंतरमप्रमत्तादिक्षीणकषायान्तगुण-स्थानषट्केतारतम्येन शुद्धोपयोगः' अतः यहाँ चौथे-पाँचवे-छठे गुणस्थान में शुद्धोपयोग की बात ही नहीं कही। पुनः अनगारधर्मामृत टीका में भी इसी से मिलते-जुलते वाक्य हैं, उन्होंने 11-12वें गुणस्थान में ही वीतराग चारित्र को घटित किया है, जो अभेदरत्नत्रय अथवा शुद्धोपयोग के साथ अविनाभूत है। चारित्र के दो भेद किये हैं-अपहृत संयम और उपेक्षा संयम, इसी प्रकार शुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग दो भेद हैं, सराग चारित्र और वीतराग चारित्र ये दो भेद हैं। पूर्ण वीतराग चारित्र तो 11-12वें गुणस्थान में ही घटेगा, जहाँ मोहनीय का बिल्कुल अभाव हो गया, लेकिन फिर भी जयसेनाचार्य के शब्दों में सातवें गुणस्थान से ही उपेक्षा संयम अथवा वीतराग चारित्र अथवा शुद्धोपयोग को मान लिया गया है।

पण्डित आशाधर जी ने अनगारधर्मामृत की स्वोपज्ञ टीका में वीतराग चारित्र अथवा वीतराग संयम को 11वें-12वें गुणस्थान में ही घटित किया है।

डॉ. श्रेयाँस—पूज्य माताजी! अभी आपने चारित्र और सम्यक्त्व को एक रूप में अनुभव के साथ जोड़ने का क्रम बताया है जबकि चारित्र अलग है और सम्यक्त्व अलग है और इसलिए अलग-अलग ही उसकी अनुभूति होनी चाहिए और अलग-अलग ही उसकी पात्रता होनी चाहिए।

पूज्य ज्ञानमती माताजी—देखिए! चतुर्थगुणस्थान में मात्र सम्यग्दर्शन है, चारित्र नहीं है, इसीलिए उसे कहा जाता है 'असंयत सम्यग्दृष्टि'।

जबकि जो चारित्र वीतराग सम्यक्त्व के साथ अविनाभावी है, वह वीतराग चारित्र है अर्थात् यह वीतराग चारित्र वीतराग सम्यक्त्व के बिना घटित ही नहीं होगा।

समयसार में व्यवहार नय से पंचपरमेष्ठी की भक्ति को सम्यक्त्व कहा गया है, परन्तु जहाँ तक निश्चय सम्यक्त्व की बात है वह चौथे गुणस्थान में घटित ही नहीं होता क्योंकि वह वीतरागचारित्र के साथ अविनाभावी है, जो छठे गुणस्थान के बाद ही घटित होगा। यथा-समयसार गाथा 173 से 176 की तात्पर्यवृत्ति टीका (पृ. 43) में लिखा है—

"भक्तिः पुनः सम्यक्त्वं भण्यते व्यवहारेण सरागसम्यग्दृष्टीनां पंचपरमेष्ठ्याराधनरूपा निश्चयेन वीतरागसम्यग्दृष्टीनां शुद्धात्मतत्त्वभावनारूपा चेति।"

"भक्ति ही पुनः सम्यक्त्व कहलाती है। व्यवहार से सराग सम्यग्दृष्टियों की भक्ति पंचपरमेष्ठी के आराधनरूप है और निश्चय से वीतराग सम्यग्दृष्टियों की भक्ति शुद्धात्मतत्त्व की भावनारूप है।"

इस प्रकरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि शुद्धात्मतत्त्व की भावनारूप भक्ति छठे गुणस्थान के ऊपर वाले वीतरागियों के ही होती है।

पुनः मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा 43 प्रकृतियों के बंध का अभाव हो जाने से पंचमगुणस्थानवर्ती 'सराग सम्यग्दृष्टि' है। छठे गुणस्थान तक सराग सम्यग्दर्शन है और वहीं तक सराग चारित्र है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डॉ. श्रेयांस—स्वामी अकलंक देव ने क्षायिक सम्यग्दृष्टी को वीतराग सम्यग्दृष्टि कहा है तो इस अपेक्षा से वह निश्चय सम्यग्दृष्टी होकर शुद्धोपयोगी माना जाना चाहिए।

पूज्य ज्ञानमती माताजी—यह कथन सम्यक्त्व की अपेक्षा है। निश्चय सम्यक्त्व तो सातवें गुणस्थान से ही होगा, इसके पूर्व नहीं। मुझे ऐसा लगता है कि चल, मलिन, अगाढ़ आदि दोषों का अभाव हो जाने से उत्पन्न निर्दोषत्व की अपेक्षा क्षायिक सम्यग्दृष्टी को वीतराग सम्यग्दृष्टि कहा गया होगा।

चतुर्थगुणस्थानवर्ती क्षायिक सम्यग्दृष्टी में आत्मविशुद्धी होती है परन्तु यह आत्मविशुद्धी शुद्धोपयोग रूप नहीं है। शुद्धोपयोग तो श्रेणी में ही होता है।

प्रवचनसार की गाथा नं. 238 में कहा है—

जं अण्णाणी कम्मं, खवेदि भवसयसहस्सकोडीहिं।
तं णाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ उस्सासमेत्तेण।।238।।

अर्थात् अज्ञानी कोटिसहस्र भवों में जितने कर्मों की निर्जरा करता है, ज्ञानी तीन गुप्ति से रक्षित होकर एक श्वासमात्र में उतने कर्मों की निर्जरा कर देता है।

दौलतराम जी ने भी छहढ़ाला में यही बात कही है—

कोटिजन्म तप तपै, ज्ञानबिन कर्म झरै जै।
ज्ञानी के छिन में त्रिगुप्तितैं सहज टरै ते।।

देखने का विषय यह है कि 'त्रिगुप्ति' किन को होती है। अरे! जब मुनियों में से भी सभी मुनियों को त्रिगुप्ति नहीं होती, विरले मुनियों को ही होती है, तो चतुर्थगुणस्थान में तो अभी महाव्रत और समिति ही नहीं है तो गुप्ति कैसे हो जायेगी?

इस प्रकार दौलतराम जी की पंक्ति आगम से असम्मत नहीं है, मात्र उसके अर्थ का विर्पयास वर्तमान में हो गया है और इस पंक्ति में वर्णित 'ज्ञानी' को लोग चतुर्थगुणस्थान में घटित करने लगे हैं।

डॉ. श्रेयांस—माताजी! आपने बताया कि चतुर्थगुणस्थान में चारित्र नहीं होता, जबकि स्वामी भट्टाकलंकदेव ने 'राजवार्तिक' की प्रथम अध्याय के प्रथम सूत्र में ही लिख दिया है—'**सम्यग्दर्शनस्य सम्यग्ज्ञानस्य वा अन्यतरस्यात्मलाभे चारित्रं उत्तरं भजनीयम्।**' भजनीयम् का अर्थ हो जाता है कि चारित्र हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है, तब ऐसा कैसे संभव है?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—इसका सीधा अभिप्राय यही है कि सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान होने के पश्चात् कोई चारित्र ग्रहण कर भी सकता है अथवा नहीं भी कर सकता है अर्थात् चौथे गुणस्थान में ही बना रह सकता है। इसका अर्थ ये नहीं है कि चतुर्थगुणस्थान में चारित्र है।

रत्नकरण्डश्रावकाचार में भी कहा है—

मोहतिमिरापहरणे दर्शनलाभादवाप्तसंज्ञानः।
रागद्वेषनिवृत्यै चरणं प्रतिपद्यते साधुः।।

अतः भजनीयम् का अर्थ यही है कि कोई उसी भव में चारित्र ग्रहण कर लेता है, कोई नहीं करता है। जैसे-नारकी चारित्र ग्रहण नहीं कर सकते, देव भी चारित्र ग्रहण नहीं कर सकते, तिर्यंचों और मनुष्यों में चारित्र ग्रहण कर भी सकते हैं, नहीं भी कर सकते हैं अन्यथा असंयत सम्यग्दृष्टि में उनकी गणना हो ही नहीं पायेगी।

डॉ. श्रेयांस—आपकी बात बिल्कुल ठीक है, उत्तरपुराण में भी यही बात कही है—

सततमेव सम्यक्त्वज्ञानाभ्यां चरितं मतम्।
स्यातां विनापि तेन तेन गुणस्थाने चतुर्थके।।

अर्थात् सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान से सहित ही सम्यग्चारित्र होता है, परन्तु चतुर्थ गुणस्थान में सम्यंग्दर्शन व सम्यग्ज्ञान तो होता है, पर सम्यग्चारित्र नहीं होता। अर्थात् 'भजनीयम्' का अर्थ 'हो सकता है', यह न लेकर ग्रहण करने के ही अर्थ में लेना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य ज्ञानमती माताजी—हाँ! यह बिल्कुल उचित है क्योंकि **'निश्चयचारित्राविनाभावीवीतरागसम्यग्दृष्टिर्भूत्वा............।'** (समयसार गाथा 74, तात्पर्य वृ.टी.पृ. 122)

अर्थात् जो निश्चय चारित्र के साथ अविनाभावी है वही वीतराग सम्यग्दर्शन होता है।

डॉ. श्रेयांस—एक प्रश्न और है, माताजी! चतुर्थगुणस्थानवर्ती का वेद्य-वेदक भाव क्या है? क्या वह मात्र सुख का वेदक है या उसे दुख का अनुभव०.न भी है?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—चतुर्थगुणस्थानवर्ती दुःख का अनुभव तो करते हैं। उदाहरण के लिए राजा श्रेणिक का जीव क्षायिक सम्यग्दृष्टी एवं चतुर्थगुणस्थानवर्ती है तथा इस समय नरक में हैं तो वहाँ उनके प्रतिक्षण सुख का वेदन हो रहा है, यह हम कह ही नहीं सकते। जिस क्षण तत्व की ओर दृष्टि जाती होगी, अवधिज्ञान से सोचते होंगे कि मैं तीर्थंकर का जीव हूँ, कर्म के उदय से मुझे यह दुःख मिल रहा है, उस समय उन्हें शांति मिल जाती होगी परन्तु जो त्रास-संताप एवं शारीरिक पीड़ा उस जीव को प्रतिक्षण झेलनी पड़ती है, उससे दुःख का अनुभवन न आये, ऐसा नहीं है।

और उदाहरण हम देख सकते हैं। सीता का वियोग हुआ तो राम को दुःख हुआ, यदि दुःख व चिंता नही हुई होती, तो वह अनेक उपाय करके सीता को खोजने का प्रयास क्यों करते? इसी प्रकार जब चक्ररत्न अयोध्या में प्रविष्ट नहीं हुआ, तब भरतचक्रवर्ती को क्लेश हुआ और जब उन्होंने चक्र चलाया होगा, तो आर्तध्यान न हुआ हो, ऐसा संभव नहीं है। अंतर यही है कि शारीरिक वेदना की स्थिति में सम्यग्दृष्टी जीव जब यह चिंतन करता है कि वेदना शरीर को है आत्मा को नहीं तो उसको उस क्षण मानसिक शांति मिल जाती है, परन्तु शारीरिक वेदना तो बनी ही रहती है। इस प्रकार सुख और दुःख दोनों का वेदन होता है।

डॉ. श्रेयांस—क्या वह चतुर्थगुणस्थानवर्ती जीव दुःख को अपना मानता है या उसमें उदासीन रहता है?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—बार-बार उस दुःख की ओर से अपनी दृष्टि को हटाना, उदासीन होने का प्रयास करना सम्यग्दृष्टी का कार्य है परन्तु वह दुःख का अनुभव करता ही नहीं है, ऐसा हम नहीं मान सकते।

आप मुनियों का उदाहरण लें। छठे गुणस्थान में असाता की उदीरणा मानी है, अर्थात् उपसर्ग छठे गुणस्थान तक होता है अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो छठे गुणस्थान तक मुनियों को उपसर्ग का अनुभव आता है, अब जैसे ही उपसर्ग से उनका ध्यान हटा और आत्मा में स्थिर हुआ, उन्हें दुःख का अनुभव आना समाप्त हो जाता है।

देखिए! भगवान पार्श्वनाथ पर सात दिन तक उपसर्ग हुआ और इन सात दिनों तक यदि उनकी निर्विकल्प ध्यान की स्थिति मानी जाये, तो उन्हें केवलज्ञान हो जाना चाहिए था परन्तु ऐसा नहीं हुआ, सात दिन तक वह छठे-सातवें गुणस्थान में आते जाते रहे, छठे में आते तो उन्हें उपसर्ग का अनुभव आता और सातवें में चढ़ जाते तो उन्हें उपसर्ग का अनुभव आना बंद हो जाता, यही स्थिति सात दिन तक चलती रही।

डॉ. श्रेयांस—पूज्य माताजी! एक पद्य आता है—

'चिन्मूरति दृगधारी की मोहे रीति लागत अटापटी
सदन निवासी तदपि उदासी तातैं आस्रव छटाछटी'

अर्थात् सम्यग्दृष्टी बिल्कुल उदास रहता है, इस कथन के विषय में आप क्या कहना चाहेंगी?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—यह कथन प्रतिक्षण की अपेक्षा नहीं है। सम्यग्दृष्टी अधिकतम उदास रह सकता है पर जिस समय खाना खाता है अथवा अन्य क्रियाएँ करता है, उस समय तद्रूप परिणाम होना कोई असंभव नहीं है। वास्तव में तो सम्यग्दृष्टी को रौद्रध्यान भी हो सकता है।

जैसे मुनियों के छठा-सातवाँ गुणस्थान अंतर्मुहूर्तू-अंतर्मुहूर्त के लिए हुआ करता है, उसी प्रकार सम्यग्दृष्टी को भावों में तरतमता चला करती है, उसे गुणस्थान बदलना नहीं कहते हैं। कोई समय ऐसा आता है कि वह सांसारिक कार्यों में दत्तचित्त हो रहा है, उस समय उसे 'चिदानंद चैतन्य के रस की गटागटी' नहीं है परन्तु अधिकतम समय वह तत्वचिंतन करता है, संसार से उदासीन रहता है, यह समझना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डॉ. श्रेयांस—माताजी! इस संदर्भ में कोई गाथा भी है क्या?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—रत्नकरण्डश्रावकाचार में कथन है—

सम्यग्दर्शनशुद्धः संसारशरीरभोगनिर्विण्णः।
पंचगुरुचरणशरणः दर्शनिकस्तत्त्वपथगृह्यः।।

सम्यग्दृष्टी संसार, शरीर, भोगों से उदास तो रहता है, पर यह उदासीनता 24 घंटे उपयोग रूप नहीं मानी जा सकती, कभी शक्तिरूप से तो कभी व्यक्तरूप से हमें मानना पड़ेगा। सर्वथा एकांतरूप से सदैव व्यक्त अवस्था ही नहीं मानी जा सकती।

डॉ. श्रेयांस—माताजी! यह स्पष्ट हो गया है कि—

''परिणमदि जेणदव्वं तक्कालं तम्मयत्ति पण्णत्तं''

अर्थात् कुंदकुंद स्वामी के कथन सर्वथा उचित सिद्ध होते हैं कि जिस काल में जीव जो कार्य करता है, उस काल में उसका वैसा ही परिणमन हो जाता है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी—हाँ! अंतर इतना ही है कि मिथ्यादृष्टि के भावों में दुःख-सुख से एकमेक अवस्था रहती है और सम्यग्दृष्टी के भावों में भिन्नता जरूर अनुभव में आती है तथा मिथ्यादृष्टी की पापबंध की ओर कोई दृष्टि नहीं रहती जबकि सम्यग्दृष्टी तत्वचिंतन द्वारा इससे बचने का सदैव प्रयास करता है।

पूज्य चन्दनामती माताजी—पूज्य माताजी! जहाँ तक मैंने समझा है कि अविरत सम्यग्दृष्टी को शुद्धोपयोग नहीं हो सकता तो कृपया ये बताएँ कि क्या पंचम काल के मुनियों को शुद्धोपयोग माना जा सकता है तथा ग्यारह अंग तक का ज्ञान धारण करने वाली आर्यिकाओं को शुद्धोपयोग की संभावना है क्या?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—शास्त्रों में यह स्पष्ट है कि पंचमकाल के अंत तक भावलिंगी मुनि रहेंगे, जिनके छठा-सातवाँ गुणस्थान निश्चित ही रहेगा, तो उनके सातवें गुणस्थान में शुद्धोपयोग मानने में कोई बाधा नहीं आती है। क्योंकि उनको स्वस्थान अप्रमत्त ही है, सातिशय अप्रमत्त नहीं हो सकता तो भी उनके लिए शुद्धोपयोग का प्रारंभ माना जा सकता है।

जहाँ तक आर्यिकाओं का प्रश्न है तो अनुभूति, श्रद्धा, प्रतीति तो उन्हें है तथा ग्यारह अंग का ज्ञान होने से उनमें आत्म-निर्मलता भी है पर यह शुद्धोपयोग रूप नहीं है, यह निश्चित है। वास्तव में वस्त्रधारी को शुद्धोपयोग नहीं हो सकता है।

डॉ. श्रेयांस—माताजी! आचार्यश्री जयसेन स्वामी ने सातवें गुणस्थान में निरअतिशय में भी शुद्धोपयोग को माना है, जबकि आचार्यश्री अमृतचंद्रसूरि ने श्रेणी से पूर्व शुद्धोपयोग को माना ही नहीं है, शुक्लध्यान और शुद्धोपयोग को पर्यायवाची माना है, उस पर आपका क्या अभिमत है?

पूज्य ज्ञानमती माताजी—मूलाचार एवं षट्खण्डागम की दसवीं पुस्तक में धर्मध्यान को दसवें गुणस्थान तक माना है, शुक्लध्यान को ग्यारहवें से ही माना है। परन्तु ज्ञानार्णव, सर्वार्थसिद्धि आदि में श्रेणी में भी शुक्लध्यान को मान लिया गया है, धर्मध्यान को सातवें तक पुनः सातिशय अप्रमत्त से लेकर आगे के गुणस्थानों में अर्थात् श्रेणी में शुक्लध्यान माना है, इसी प्रकार हम शुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग की बात भी आचार्यों के कथन की अपेक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

डॉ. श्रेयांस—माताजी! आज आपके पास आकर बहुत सी जिज्ञासाएँ शांत हुई हैं, मुझे विश्वास है कि पाठकगणों को भी इस चर्चा से उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा। आपका दिशानिर्देश इसी प्रकार हमें प्राप्त होता रहे, इसी भावना के साथ आपके श्रीचरणों में विनम्र वंदन ज्ञापित करता हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के 50 स्वर्णिम वर्ष एवं वर्षायोग

प्रस्तुति-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

मनुष्य जन्म की शोभा सम्यग्दर्शन के साथ संयम परिपालन में है। स्वर्ग के देवेन्द्र भी मनुष्य पर्याय को प्राप्त करने की सदा कामना किया करते हैं, उसका कारण यही है कि संयम, रत्नत्रयरूप धर्म, वीतराग मोक्षमार्ग मात्र मनुष्य पर्याय से ही प्राप्त हो सकता है। किसी भी भव्य जीव को सम्यग्दर्शन की प्राप्ति तो नरक, स्वर्ग और तिर्यंच गति में हो सकती है लेकिन सकल संयमरूप चारित्र की प्राप्ति मनुष्य पर्याय के अतिरिक्त कहीं सुलभ नहीं है।

आचार्य श्री कुंदकुंद देव ने समयसार की गाथा नं. 4 में क्या अद्भुत बात लिखी है—

सुदपरिचिदाणुभूदा सव्वस्स वि कामभोगबंधकहा ।
एयत्तस्सुवलंभो णवरि ण सुलहो विहत्तस्स ।।

देखे, सुने और अनुभव में आए हुए ऐसे काम भोग और बंध की कथा तो अनादिकाल से सुनते आ रहे हैं। लेकिन वीतराग शुद्ध आत्मा का कथन करने वाले ऐसे जिनधर्म की प्राप्ति बड़ी ही दुर्लभ है।

वास्तव में रत्नत्रय रूप वीतराग धर्म का कुतूहल मात्र से ग्रहण करने वाले भी अनेक प्राणी इस संसार समुद्र से पार हो गये, तो जो साक्षात् रत्नत्रय की मूर्ति हैं, ऐसे महान वंदनीय वर्तमान आचार्य, उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी निश्चित ही मोक्षमार्ग के दर्पण हैं। लेकिन खेद है कि करोड़ों अरबों की आबादी में मात्र 1100 के लगभग संयमी दिगम्बर जैन साधु-साध्वी रत्नत्रय धर्म का पालन करने वाले हैं। इन सभी रत्नत्रय मूर्तियों में कुछ संयमी जो विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न हैं, जिनसे स्वकल्याण के साथ समाज को भी कुछ उपलब्धि हुई है उनमें परमश्रद्धेय पूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के नाम को भुलाया नहीं जा सकेगा। पूज्य माताजी वैशाख कृ. 2, 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण कर रही हैं। इस आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर हम पूज्य माताजी के पावन चरण कमलों में यही कामना करते हैं कि माताजी दीर्घायु होकर हम सभी को इसी प्रकार रत्नत्रय मार्ग को दिखाती रहें।

पूज्य माताजी ने 18 वर्ष की लघुवय में आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत (सप्तम प्रतिमा) एवं चैत्र कृष्णा 1, सन् 1953 में श्री महावीर जी क्षेत्र पर 108 आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण की। 3 वर्ष बाद वैशाख कृ. 2, सन् 1956 में माधोराजपुरा (राज.) में आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा लेकर भारतवर्ष के विभिन्न अंचलों में मंगल विहार एवं चातुर्मास करके जो ज्ञान गंगा प्रवाहित की है, उनका संक्षिप्त वर्णन इस खण्ड में प्रस्तुत किया जा रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षुल्लिका दीक्षा के तीन चातुर्मास

पहला चातुर्मास (सन् 1953-टिकैतनगर-उ.प्र.)

आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज ने सन् 1952 का चातुर्मास बाराबंकी शहर में किया था, वहाँ से मात्र 60 कि.मी. दूर टिकैतनगर है। कु. मैना को आचार्यश्री के प्रथम दर्शन का सौभाग्य इससे पूर्व टिकैतनगर में ही हुआ था, किन्तु आजीवन ब्रह्मचर्य तथा सप्तम प्रतिमा के व्रत आचार्यश्री से बाराबंकी में अंगीकार किये। छोटी उम्र थी-बाराबंकी नगर के अनेक लोगों ने तथा पारिवारिक माता-पिता, भाई-बहनों ने बड़ा व्यवधान उपस्थित किया। आचार्यश्री भी उस व्यवधान के समक्ष ढीले पढ़ गये थे। लेकिन कु. मैना का संकल्प दृढ़ ही रहा। बाराबंकी चातुर्मास के बाद आचार्यश्री का विहार लखनऊ हुआ। लखनऊ में परम गुरुभक्त सेठ सीमंधर दास जी एवं जुग्गामल जी ने आचार्यसंघ को श्री महावीर जी की यात्रा कराने का इरादा किया। आचार्यश्री की स्वीकृति मिलते ही आपने संघ सहित पूरे ठाठ-बाट से श्री महावीर जी के लिए प्रस्थान कर दिया। मार्ग में लश्कर, ग्वालियर, सोनागिरि आदि क्षेत्रों की यात्राएं भी सम्पन्न कीं।

श्री महावीर जी में ही कु. मैना ने आचार्यश्री से पुनः कर्मबंधन से छूटने रूप ऐसी दीक्षा प्रदान करने की याचना की। परिणाम स्वरूप वहीं श्री महावीर जी में चैत्र कृष्णा 1, सन् 1953 में आचार्यश्री ने आपको क्षुल्लिका दीक्षा देकर **वीरमती** नाम प्रदान किया।

महावीर जी से संघ का पदार्पण आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, कानपुर आदि होते हुए पुनः लखनऊ होता है और दैवयोग से आपका प्रथम चातुर्मास आचार्यश्री देशभूषण जी के साथ ही टिकैतनगर (अपनी जन्मभूमि) में हो गया।

टिकैतनगर में सर्वप्रथम आपने जीवकाण्ड आदि ग्रंथों का अध्ययन-स्वाध्याय किया।

टिकैतनगर चातुर्मास के पश्चात् आचार्यसंघ का विहार होता है और 6 कि.मी. दूर ही दरियाबाद में संघ पहुँचता है। संघ में एक क्षुल्लिका श्री विशालमती माताजी और थीं। यहाँ से आचार्य महाराज की आज्ञा पाकर आपने क्षुल्लिका वीरमती जी, क्षुल्लिका विशालमती जी के साथ सम्मेदशिखर जी, पावापुरी आदि तीर्थों की यात्रा के लिए प्रस्थान किया और कुछ ही दिनों में यात्रा करके पुनः दरियाबाद आचार्यश्री के संघ में वापस आ गईं।

आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज वहाँ से विहार करते-करते एक बार पुनः श्री महावीर जी क्षेत्र पर पधारे और चांदनपुर के भगवान महावीर की तीर्थ वंदना के पश्चात् जयपुर, टोंक, निवाई आदि राजस्थान के ग्रामों में संघ का विहार होता हुआ अगला चातुर्मास जयपुर होता है।

दूसरा चातुर्मास (सन् 1954, जयपुर-राजस्थान)

आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज के संघ में अत्यन्त अल्पवय वाली इस क्षुल्लिका वीरमती को देखकर अनेक श्रावकगण आचार्य महाराज से यही प्रश्न करते कि आपने इतनी छोटी वय में इन्हें दीक्षा कैसे प्रदान कर दी। लेकिन क्षुल्लिका 'वीरमती' के ज्ञान के क्षयोपशम को देखकर साधारणजन ही नहीं बल्कि पं. श्री भंवरलाल जी न्यायतीर्थ आदि विशिष्टजन भी पूज्य माताजी के सन्निकट में आये। उस समय पूज्य माताजी नें संस्कृत का विशेष अभ्यास करने हेतु व्याकरण पढ़ने का निश्चय किया। कुछ विद्वान व्याकरण पढ़ाने के लिए पधारे भी, लेकिन माता जी 1 दिन में जितने व्याकरण सूत्र पढ़ना चाहती थीं, वे उतने सूत्र 1 माह में पढ़ाना चाहते थे अतः कई विद्वान वापस चले गये। पुनः एक ब्राह्मण विद्वान पं. दामोदराचार्य को पं. भंवरलाल जी ने बुलाकर पूज्य माताजी को व्याकरण पढ़ाने हेतु नियत किया। उन्होंने माताजी की जिज्ञासा अनुसार ही 25-50 सूत्र प्रतिदिन माताजी को पढ़ाये, जिन्हें तुरंत माताजी सुना दिया करती थीं। पं. दामोदराचार्य जी ने स्वयं कहा कि आज तक व्याकरण को इस प्रकार इतना अधिक हृदयंगम करने वाला कोई दूसरा विद्यार्थी हमारी नजर में नहीं आया। यह तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्व प्रदत्त विशेष क्षयोपशम की बात है पूज्य माताजी ने पूरी 'कातंत्र व्याकरण' का 2 माह में अध्ययन समाप्त कर लिया और वहीं से जैन ग्रंथों का मूल संस्कृत से अभ्यास प्रारंभ कर दिया।

कातंत्र व्याकरण का 2 माह में अध्ययन ही जयपुर चातुर्मास की विशिष्ट उपलब्धि माताजी के प्रारंभिक जीवन की थी।

जयपुर चातुर्मास समापन के बाद— जयपुर चातुर्मास के मध्य ही आपको ज्ञात हुआ कि परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज दक्षिण में हैं और उन्होंने सल्लेखना ले रखी है। अतः शीघ्र ही उन महातपस्वी के दर्शन कर लेना चाहिए ऐसी एक भावना मन में उत्पन्न हुई। प्रथम दीक्षा एवं शिक्षा गुरु आ. श्री देशभूषण जी के समक्ष आपने निवेदन किया। आचार्यश्री ने इस शुभ कार्य हेतु तुरंत आज्ञा प्रदान कर दी।

आचार्यश्री की आज्ञा प्राप्त होते ही आपने क्षुल्लिका विशालमती जी को साथ लेकर आचार्यप्रवर शांतिसागर जी महाराज के दर्शनार्थ प्रस्थान कर दिया और दक्षिण के 'नीरा' नामक गांव में आचार्यश्री के प्रथम दर्शन कर अपने जीवन को धन्य माना और उनसे आज्ञा लेकर आप और क्षुल्लिका विशालमती जी ने आस-पास फलटण, दहीगांव, सोलापुर, कोल्हापुर आदि नगरों का भ्रमण करके तीर्थ यात्राएँ भी कीं और समाज को भी ज्ञान से लाभान्वित किया।

चातुर्मास का समय निकट आने पर म्हसवड़ (सातारा) महाराष्ट्र समाज की प्रार्थना को स्वीकार करके आपने म्हसवड़ के चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान कर दी।

तीसरा चातुर्मास (सन् 1955, म्हसवड़-महाराष्ट्र)

इस चातुर्मास में वहाँ की कुमारी बालिकाओं को आपने द्रव्य संग्रह, तत्त्वार्थसूत्र आदि विषयों का अध्ययन कराना प्रारंभ कर दिया और उस अध्यापन के निमित्त से स्वंय में क्षयोपशम की वृद्धि होती गई। माताजी के ज्ञान का क्षयोपशम देखकर वहाँ कुमारी प्रभावती (स्व. आर्यिका जिनमती जी) और सौभाग्यवती सोनूबाई (स्व. आर्यिका पद्मावती जी) ने पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में रहकर ज्ञानार्जन का निर्णय किया।

इसी चातुर्मास के समय आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज ने कुंथलगिरि में समाधि ग्रहण कर ली और अन्त में सब कुछ त्याग करके मात्र जल व जल का भी त्याग करके लाखों की समाज को बिलखता छोड़कर अपने इस नश्वर शरीर का त्याग कर दिया। आचार्यश्री की समाधि दर्शन हेतु पूज्य माताजी ने समाधि से 1 माह पूर्व म्हसवड़, चातुर्मास के मध्य ही कुंथलगिरि जाकर आचार्य श्री का आशीर्वाद एवं उनके त्याग वैराग्य को देखने का अवसर प्राप्त किया। यहीं पर पूज्य माताजी ने आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा प्रदान करने की याचना की। लेकिन आचार्यप्रवर ने कहा कि मैंने तो समाधि ले ली है और दीक्षा देने का त्याग कर दिया है अतः तुम अब मेरे शिष्य आचार्य वीरसागर जी से जाकर दीक्षा ग्रहण कर लेना। मैंने अपना आचार्य पट्ट उन्हें प्रदान कर दिया है। ऐसा शुभ आशीर्वाद प्रदान कर दिया। आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की भादवा सुदी 2 को समाधि सम्पन्न हो जाती है। उसके बाद पूज्य माताजी पुनः म्हसवड़ आकर चातुर्मास पूर्ण करती हैं।

म्हसवड़ चातुर्मास के बाद— कु. प्रभावती एवं श्रीमती सोनूबाई की विशेष जिज्ञासा देखकर आपने क्रमशः 10वीं तथा सप्तम प्रतिमा के व्रत देकर अपने संघ में रख लिया। इसके बाद आपने अपनी शिष्याओं सहित आचार्यश्री वीरसागर जी के साथ ही रहने का निर्णय किया। आचार्य संघ का विहार होता हुआ संघ माधोराजपुरा पहुँचता है। पुनः-पुनः याचना करने पर क्षुल्लिका वीरमती जी को वि.सं. 2013, सन् 1956, वैशाख कृष्णा 2 को वीरसागर जी ने माधोराजपुरा (राज.) में आर्यिका दीक्षा प्रदान करके ज्ञान के क्षयोपशम को देखकर गुणानुरूप ही 'ज्ञानमती' यह नामकरण कर दिया। वहीं पर कु. प्रभावती को भी क्षुल्लिका दीक्षा दिलाकर उनका नाम श्री जिनमती जी रखा गया। माधोराजपुरा एवं आसपास की हजारों की जनता ने पूज्य माताजी के वैराग्य परक दृश्य को देखकर अपने को धन्य माना। संघ का आसपास विहार होता हुआ चातुर्मास खानिया (जयपुर) होने का निर्णय हो जाता है। पश्चात् ब्र. सोनू बाई को दीक्षा देकर क्षुल्लिका पद्मावती नाम रखा गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका दीक्षा के 50 चातुर्मास (सन् 1956-2005)

सन् 1956 में वैशाख कृष्णा 2 को आर्यिका दीक्षा लेने के बाद पूज्य ज्ञानमती माताजी अपने गुरुसंघ के साथ माधोराजपुरा से जयपुर आ गईं पुनः वहीं खानिया जी में चातुर्मास का संयोग प्राप्त हो गया। सन् 1956 से लेकर 2006 तक 50 चातुर्मासों की पवित्र श्रृँखला का परिचय यहाँ संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है—

प्रथम चातुर्मास (सन् 1956, जयपुर खानिया-राजस्थान)

आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज अत्यन्त मृदुभाषी थे। जब भी आर्यिका ज्ञानमती जी आचार्यश्री के पास जातीं तो आचार्यश्री माताजी के ज्ञान के क्षयोपशम एवं पठन-पाठन की शैली से बहुत ही प्रसन्नचित्त होते थे।

यहाँ पर पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी शिष्या क्षु. जिनमती जी को सागार धर्मामृत, गोम्मट्टसार, परीक्षामुख और न्यायदीपिका का अध्ययन करा दिया।

चातुर्मास के बाद—आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के संघ का विहार जयपुर में ही प्रमुख मंदिर एवं कॉलोनियों में चलता रहा। जयपुर वासियों ने आचार्यश्री को जयपुर से आगे प्रस्थान ही नहीं करने दिया। समाज की असीम भक्ति देखकर अगला चातुर्मास पुनः खानिया ही करने का आचार्यश्री ने निर्णय करके घोषणा कर दी। फिर तो जयपुर समाज के हर्ष का ठिकाना ही न रहा।

दूसरा चातुर्मास (सन् 1957, जयपुर खानिया-राजस्थान)

खानिया में इस वर्ष आचार्य श्री वीरसागर महाराज संघ सहित एवं आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज संघ सहित 2 संघों का एक साथ चातुर्मास होने से बहुत ही आनन्द की वर्षा हुई।

चातुर्मास के मध्य ही आश्विन वदी अमावस्या को आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज की समाधि हो गई और समाधि के अनन्तर मुनि श्री शिवसागर महाराज को इस महान संघ के नेतृत्व को संभालने के लिए आचार्य पट्ट प्रदान किया गया।

चातुर्मास के अनन्तर आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज के संघ का विहार गिरनार जी की यात्रा के लिए हो जाता है।

खानिया चातुर्मास के बाद गिरनार यात्रा—आचार्यश्री शिवसागर महाराज के संघ की गिरनार यात्रा कराने के लिए परम गुरुभक्त संघपति सेठ हीरालालजी पाटनी-निवाई (राज.) वालों ने कदम उठाया। मार्ग में ब्यावर, अजमेर, आबू, सिरोही, सोनगढ़ आदि अनेक स्थानों से विहार करता हुआ संघ गिरनार जी पहुँच जाता है और कुछ दिन गिरनार जी की तीर्थ वंदना में रहकर पश्चात् तारंगा, पालीताना आदि तीर्थों की वंदना करता हुआ संघ का पदार्पण वापस ब्यावर होता है तथा अगला चातुर्मास भी ब्यावर ही करने का निर्णय हो जाता है।

गिरनार यात्रा के मध्य मार्ग के विहार में ही देवागमस्तोत्र, समाधिशतक, आत्मानुशासन आदि का अध्ययन पूज्य माताजी ने क्षुल्लिका जिनमती जी को कराया और स्वयं तथा जिनमती जी ने इन सभी ग्रंथों के श्लोकों को कण्ठस्थ कर लिया।

तीसरा चातुर्मास (सन् 1958, ब्यावर-राजस्थान)

ब्यावर का चातुर्मास भी अपना कुछ महत्व रखता है। क्योंकि जिन ग्रंथों का अध्ययन पूज्य माताजी ने किसी गुरु मुख से नहीं किया उनका अध्यापन स्वयं ही क्षुल्लिका जिनमती जी एवं कई आर्यिकाओं को तथा ब्र. राजमल जी को कराया ग्रंथों में प्रमुख हैं-राजवार्तिक अध्याय 2 से 10 तक एवं गोम्मटसार कर्मकांड आदि। वास्तव में अध्यापन से स्वयं में अध्ययन हो जाता है।

इस चातुर्मास के मध्य पं. पन्नालाल जी सोनी एवं पं. श्री खूबचंद जी आदि विद्वानों को पूज्य माताजी से तत्त्वचर्चा आदि का अवसर प्राप्त हुआ। यह चातुर्मास सेठ चम्पालाल जी की नसिया ब्यावर में हुआ था।

ब्यावर चातुर्मास के बाद—ब्यावर में चातुर्मास पूर्ण करके संघ का विहार जयपुर के लिए होता है और आचार्यश्री के सानिध्य में ही जयपुर में श्री दीवान जी की नसिया के मानस्तंभ की प्रतिष्ठा विविध कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न होती है। पश्चात् संघ आसपास नगरों में विहार करता हुआ अजमेर समाज के विशेष आग्रह को न टाल सका और अगला चातुर्मास अजमेर (राज.) करने का निर्णय हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौथा चातुर्मास (सन् 1959, अजमेर-राजस्थान)

पूज्य माताजी को अध्ययन-अध्यापन एवं शिष्यानुग्रह में रुचि थी, सो वह कार्य यहाँ भी चालू रहा और पंचाध्यायी का स्वाध्याय चला। सबको माताजी ने पात्रकेसरी स्तोत्र का अध्ययन कराया। ब्र. विद्यावती बाई को सर्वार्थसिद्धि का अध्ययन कराया। अजमेर में अंगूरीबाई (वर्तमान आर्यिका आदिमती) को अध्ययन कराना प्रारंभ किया और बाद में ज्ञान एवं त्याग की वृद्धि की भावना से अपने साथ में ही रख लिया।

इस चातुर्मास में एक दुर्भाग्य की बात यह रही कि पूज्य माताजी को शारीरिक कष्ट 'संग्रहणी' का प्रकोप प्रारंभ हो गया, जो आज तक विद्यमान है। परन्तु धन्य हैं ऐसी माता, जिन्होंने भेद-विज्ञान के बल से आत्मज्ञान को प्राप्त कर शारीरिक वेदना को कुछ नहीं गिना। इसीलिए पठन-पाठन में निरत रहकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग प्राप्त किया।

पाँचवा चातुर्मास (सन् 1960, सुजानगढ़-राजस्थान)

आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज के विशाल संघ का चातुर्मास पूर्ण होकर संघ सहित अजमेर से विहार होता है और अनेक नगरों में विहार करते हुए संघ का मंगल आगमन सुजानगढ़ होकर यहीं चातुर्मास होता है। यहाँ पर क्षुल्लिका जिनमती जी को जैनेन्द्र प्रक्रिया व्याकरण और मूलाचार आदि ग्रंथों का अध्ययन कराया।

सुजानगढ़ चातुर्मास के बाद—सुजानगढ़ से संघ लाडनू (राज.) पहुँचा। वहाँ पर श्री चंद्रसागर स्मारक की विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई और आचार्यश्री के सानिध्य में ही मानस्तंभ निर्माण के लिए शिलान्यास कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। पश्चात् संघ का विहार सीकर होता है और बाद में संघ सानिध्य में ही फतेपुर शेखावाटी में वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न होती है। वहाँ से पुनः संघ सीकर आता है और समाज के विशेष आग्रह पर विशाल संघ का अगला चातुर्मास कराने का सौभाग्य सीकर नगरवासियों को ही प्राप्त हो जाता है।

छठा चातुर्मास (सन् 1961, सीकर-राजस्थान)

जिस नगर में इतने विशाल संघ का चातुर्मास हो जाये। वास्तव में वह धरती धन्य हो जाती है। वहाँ का हर नागरिक कुछ न कुछ रूप में धार्मिक-आत्मिक क्रियाओं से आबद्ध हो ही जाता है। फिर जहाँ पर श्रद्धा, ज्ञान और त्याग इन तीनों की त्रिवेणी बह रही हो, वहाँ का क्या कहना! सीकर में विशाल 'दीक्षा समारोह' का आयोजन हो गया। ब्र. राजमल जी की मुनि दीक्षा हुई उनका नाम अजितसागर रखा गया और क्षु. जिनमती जी की आर्यिका दीक्षा हुई तथा ब्र. अंगूरीबाई की आर्यिका दीक्षा तथा ब्र. रतनीबाई की क्षुल्लिका दीक्षा पूज्य माताजी की प्रेरणा से सम्पन्न हुई और क्रमशः नामकरण आर्यिका आदिमती जी एवं क्षुल्लिका श्रेयांसमती जी इस प्रकार किया गया।

सीकर नगर में ही पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी प्रमुख शिष्या आ. जिनमती जी को प्रमेयकमल मार्तण्ड, लब्धिसार आदि ग्रंथों का अध्ययन कराया। आज प्रमेयकमलमार्तण्ड का अनुवाद होकर प्रकाशित हो चुका है।

सीकर चातुर्मास के बाद—जिस प्रकार से किसी को अनुपम निधि (कोई रत्नों का खजाना) प्राप्त हो जाये, तो वह उसे छोड़ना नहीं चाहता है और बार-बार उसे संभालकर रखता है, उसी प्रकार लाडनू नगर निवासियों का संघ सानिध्य से अभी मन संतुष्ट नहीं हुआ था। परिणामस्वरूप सीकर जाकर पुनः संघ को लाडनू लाते हैं और आचार्यश्री के सानिध्य में पुनः मानस्तंभ का विशाल पंचकल्याणक महोत्सव करके भी संतुष्टि प्राप्त नहीं करते हैं; अगला चातुर्मास करने की भी स्वीकृति प्राप्त कर लेते हैं-

सातवाँ चातुर्मास (सन् 1962, लाडनू-राजस्थान)

इस चातुर्मास के मध्य पूज्य ज्ञानमती माताजी ने जिनमती जी को शब्दार्णव चन्द्रिका, गद्य चिंतामणि, धर्म शर्माभ्युदय आदि ग्रंथों का अध्ययन कराया। यहीं पर टिकैतनगर से आपकी अनुजा कुमारी मनोवती माँ के साथ यात्रार्थ आईं थीं। उन्हें आचार्य शिवसागर जी महाराज से 1 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत दिलाकर अध्ययन का प्रलोभन देकर कुछ दिन के लिए साथ में रख लिया। पश्चात् कुछ वर्षों बाद तो वह आर्यिका अभयमती बन गईं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाडनू चातुर्मास के बाद—लाडनू चातुर्मास के बाद पूज्य माताजी की प्रबल भावना सम्मेदशिखर तीर्थराज की यात्रा की होती है। आचार्यश्री शिवसागर जी से आप आज्ञा मांगती हैं, लेकिन आचार्यश्री शिवसागर महाराज एक ज्ञानपुंज को संघ से जाने नहीं देना चाहते, इस कारण आज्ञा देने में विचार करते हैं। फिर भी आपके ऊपर आचार्यश्री का विशेष अनुग्रह होने के कारण आज्ञा प्राप्त हो जाती है और आप अपनी शिष्याएं (1) जिनमती जी (2) आदिमती जी (3) पद्मावती जी (4) श्रेयांसमती जी को साथ लेकर यात्रार्थ प्रस्थान कर देती हैं। संघ संचालन का भार ब्र. सुगनचंद जी एवं ब्र. मनोवती जी द्वारा सहर्ष स्वीकार करने के पश्चात् अनंतानंत मोक्षगामियों की पवित्र भूमि के लिए संघ जयपुर-आगरा-मथुरा-फिरोजाबाद-मैनपुरी-कानपुर-लखनऊ-टिकैतनगर-अयोध्या-वाराणसी-पावापुरी-राजगृही-गुणावां-नवादा-चम्पापुर आदि तीर्थों की वंदना करता हुआ सम्मेदशिखर पहुँच जाता है। सम्मेदशिखर में इस आर्यिका संघ का अवस्थान 1 माह तक रहा। कुछ दिन संघ ईसरी भी रहता है। कलकत्ता समाज का विशेष आग्रह होने पर अत्यन्त अल्प समय मात्र 10 दिन में ईसरी से कलकत्ता पहुँचकर पूज्य माताजी का अगला मंगल चातुर्मास कलकत्ता होता है।

आठवाँ चातुर्मास (सन् 1963, कलकत्ता-प. बंगाल)

कलकत्ता नगरी को कई वर्षों से किसी भी साधु के चातुर्मास कराने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। पूज्य माताजी जैसे विशिष्ट ज्ञानी साधु को पाकर कलकत्ता के श्रावकगण खुशी में नाच रहे थे और दिन-रात पूज्य संघ से लाभान्वित होने की चेष्टा करते रहते थे। यहाँ पर पूज्य माताजी के प्रतिदिन प्रवचन हुए। ब्र. प्यारेलाल भगत जी की पूज्य माताजी के प्रति अगाढ़ श्रद्धा एवं भक्ति रही। प्रवचनों में पूज्य माताजी ने हर जिज्ञासु की शंकाओं का समाधान करने का समय दिया और शास्त्राधार से हर प्रश्न का समाधान करके आर्षपरम्परा को दृढ़ किया। यहाँ पर आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी की सुपुत्री कु. सुशीला ने पूज्य माताजी के ज्ञान से प्रभावित होकर माताजी से ही 5 वर्ष के लिए ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर लिया और भाइयों के अत्यन्त मना करने पर पर भी संघ में रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया। पूज्य माताजी ने कलकत्ता चातुर्मास में शिष्याओं को पंच संग्रह, न्यायकुमुदचन्द्र आदि ग्रंथों का अध्ययन कराया।

कलकत्ता चातुर्मास के बाद—कलकत्ता से विहार करके संघ का सम्मेदशिखर पुनः आगमन होता है। नंदीश्वर पंचकल्याणक के समय संघ सम्मेदशिखर ही रहा। पश्चात् विहार करते हुए पुरलिया, चाईबासा, कटक आदि होते हुए खण्डगिरि उदयगिरि की यात्रा करके विशाखापट्टनम् आदि होते हुए संघ का अगला चातुर्मास आंध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद में होता है।

नवमाँ चातुर्मास (सन् 1964, हैदराबाद-आंध्रप्रदेश)

हैदराबाद में पूज्य माताजी का स्वास्थ्य बहुत ही प्रतिकूल रहा। फिर भी प्रवचन एवं धर्मप्रभावना, पूजन-विधान आदि समय-समय पर होते रहे। चातुर्मास के मध्य पूजन विधान 50-60 की संख्या में हुए।

विशेष—हैदराबाद मुसलमानी रियासत होने के कारण यहाँ पर जैन मंदिर पर शिखर बनाने पर प्रतिबंध था, लेकिन अब धर्मनिरपेक्ष जनतंत्र शासन होने के कारण ऐसा प्रतिबंध तो होना नहीं चाहिए अतः 1 दिन पूज्य माताजी ने अपने प्रवचन में श्री मंदिर जी के ऊपर शिखर बनाने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए शिखर बनवाने की प्रेरणा की। तत्काल ही श्री जयचंद जी लुहाड़े ने केशरबाग के मंदिर में शिखर के निर्माण का निर्णय लिया और अति शीघ्र शिखर का निर्माण भी कराकर उसमें भगवान शांतिनाथ स्वामी की प्रतिमा विराजमान कराके उसकी वेदी प्रतिष्ठा भी धूमधाम से सम्पन्न करा दी।

हैदराबाद से ब्र. सुरेश कुमार जी की दीक्षा के भाव देखकर पूज्य माताजी ने आचार्यश्री शिवसागर महाराज के संघ में भेजकर क्षुल्लक दीक्षा दिला दी, जिनका नाम संभवसागर रखा। कालान्तर में यह मुनि बने और अब उनकी समाधि भी हो चुकी है। आचार्यश्री की आज्ञा मंगाकर माताजी ने ब्र.मनोवती को स्वयं ही हैदराबाद में क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की। अब यहाँ से संघ में 5+1=6 साध्वी हो गयीं।

हैदराबाद चातुर्मास के बाद—यहाँ से पूज्य आर्यिका संघ का विहार अनंतपुरी होते हुए मैसूर की ओर होता है और अगला चातुर्मास भगवान बाहुबली के पावन चरणों में श्रवणबेलगोला होने का निर्णय हो जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दसवाँ चातुर्मास (सन् 1965, श्रवणबेलगोला-कर्नाटक)

यहाँ पर पूज्य माताजी ने कन्नड़ भाषा का 15 दिवस में अभ्यास करके अपनी शिष्याओं को भी कन्नड़ लेखन-वाचन में कुशल बना दिया। चातुर्मास के मध्य 15 दिन मौन साधना से पहाड़ पर ही भगवान बाहुबली स्वामी के चरण सानिध्य में रहकर पूज्य माताजी ने ध्यानाभ्यास किया। यहीं पर ध्यान में मध्यलोक के 458 अकृत्रिम चैत्यालयों का दृश्य झलकने के बाद उसकी रचना मस्तिष्क में आने लगी। श्रवणबेलगोला में ही भगवान बाहुबली की अत्यन्त मधुर काव्य में संस्कृत स्तोत्र की रचना की और हिन्दी पद्य में भगवान बाहुबली चरित्र का निर्माण किया और भी कई गुरु स्तुतियाँ संस्कृत व कन्नड़ भाषा में निर्मित कीं। यहाँ से कु. शीला ने (वर्तमान आर्यिका शिवमती जी) भी साथ में रहकर पूज्य माताजी से ज्ञानाभ्यास प्रारंभ किया।

श्रवणबेलगोला का रम्य स्थान, भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा एवं अन्य प्रभावशील जिन चैत्य के आकर्षण से पूज्य माताजी संघ सहित यहाँ पर 1 वर्ष तक रहीं और ग्रंथ स्तुति रचना तथा ध्यान आदि का विशेष क्षयोपशम भी भगवान बाहुबली के चरण-प्रसाद से प्राप्त किया।

श्रवणबेलगोला चातुर्मास के बाद—यहाँ से विहार करके पूज्य माताजी ने मूडबिद्री, हुबली, बीजापुर, सहस्रफणा पारसनाथ आदि की यात्राएं कीं और अगला चातुर्मास सोलापुर करने का निर्णय कर दिया।

ग्यारहवाँ चातुर्मास (सन् 1966, सोलापुर-महाराष्ट्र)

सोलापुर श्राविका संस्थान की संस्थापिका पद्मश्री ब्र. सुमतिबाई जी शाह, सुश्री बाल ब्र. विद्युल्लता जी शाह एवं पं. वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री आदि विद्वान व श्रीमानों के विशेष आग्रह पर पूज्य माताजी ने सोलापुर के श्राविकाश्रम में चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की तथा सोलापुर शहर में आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज के संघ का चातुर्मास होने से बहुत ही प्रभावना हुई।

सोलापुर चातुर्मास में प्रतिदिन पूज्य माताजी के विभिन्न विषयों पर प्रवचन होते रहे। 1 दिन प्रवचन में पूज्य माताजी अकृत्रिम चैत्यालयों का विस्तृत वर्णन कर रही थीं। प्रवचन के मध्य ही ब्र. सुमतिबाई जी इतनी आनन्द विभोर हो गईं कि सभा के मध्य ही बोलीं कि जिस प्रकार आज हमारे देश में नंदीश्वर द्वीप की रचनाएं, समवसरण की रचनाएं आदि बनी हुई हैं, उसी प्रकार यह मध्यलोक की रचना भी निर्मित होवे, तो कितना अच्छा लगेगा। बाद में सुमतिबाई जी की बहुत प्रेरणा रही कि यह रचना सोलापुर आश्रम में ही बना दी जाये, लेकिन पूज्य माताजी का वहाँ से शीघ्र विहार का निर्णय श्रवण कर उन्हें बहुत ही खेद रहा। वही रचना आज हस्तिनापुर में साकार हो चुकी है।

सोलापुर में द्रव्यसंग्रह-सामायिक विधि आदि विषयों पर एक शिक्षण शिविर का पूज्य माताजी ने आयोजन किया। यहाँ पर कई पुस्तकों का प्रकाशन भी पण्डित वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री के सम्पादकत्व में हुआ।

सोलापुर चातुर्मास के बाद—चातुर्मास समाप्त करके पूज्य माताजी ने संघ सहित विहार करके कुंथलगिरि, तेर, पैठण आदि की यात्राएं करते हुए औरंगाबाद, एलोरा की यात्राएं की और नांदगांव, मांगीतुंगी, गजपंथा आदि की यात्रा करते हुए बड़वानी-ऊन होकर मध्यप्रदेश के सनावद नगर में पदार्पण किया।

सनावद से पूज्य माताजी का विहार सिद्धवरकूट से होते हुए इंदौर हुआ। इंदौर में एक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक प्रौढ़ पुरुष महिलाओं ने भाग लिया। आलाप पद्धति का संक्षिप्त अनुवाद सहित प्रकाशन हुआ और पात्रकेशरी स्तोत्र का पद्यानुवाद भी प्रकाशित हुआ।

यहाँ पर इंदौर निवासी पूज्य माताजी के चातुर्मास हेतु बहुत ही दृढ़ता से लगे हुए थे, उधर सनावदवासियों के प्रयास से आचार्य श्री शिवसागर जी ने सनावद के लिए आज्ञा प्रदान कर दी अत: अगले चातुर्मास का सौभाग्य सनावद नगरवासियों को प्राप्त हुआ।

बारहवाँ चातुर्मास (सन् 1967, सनावद-मध्यप्रदेश)

'सिद्धवरकूट' जैसे रम्यतीर्थ की वंदना करने वालों को सनावद नगर का ज्ञान अनायास ही हो जाता है। चातुर्मास के मध्य यहाँ भी एक शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें प्रौढ़ वर्गों ने बड़ी श्रद्धाभक्ति से भाग लिया। उसी शिविर के एक विद्यार्थी यशवंत कुमार थे, जो कि पुरुषार्थ सिद्धिउपाय पढ़ रहे थे। पूज्य माताजी के साथ आकर ब्रह्मचारी बन गये और बाद में मुनि वर्धमानसागर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनकर वर्तमान में आचार्य बनकर चतुर्विध संघ का संचालन कर रहे हैं। मैं (मोतीसागर) स्वयं भी उसी चातुर्मास की देन हूँ कि पूज्य माताजी ने मुझे घर से निकालकर अपना शिष्य बनाया। उनके आदेशानुसार जम्बूद्वीप रचना आदि के निर्माण में मैंने पूरा मनोयोग लगाया और क्षुल्लक दीक्षा धारण कर वर्तमान में आपकी छत्रछाया में रत्नत्रय साधना चल रही है।

सनावद चातुर्मास के बाद—ब्र. मोतीचंद (मैं), यशवंत कुमार आदि अनेक श्रावकों के साथ पूज्य माताजी ने सनावद से विहार करके मुक्तागिरि की यात्रा की। पश्चात् सलुम्बर के पास आचार्यश्री शिवसागर जी के संघ में शीघ्र पदार्पण की भावना से उधर की तरफ विहार किया। मार्ग में बांसवाड़ा में पूज्य माताजी का मंगल आगमन होता है। वहाँ पर सेठ पन्नालाल ने अपनी सुपुत्री कु. कला व कु. कनक को पूज्य माताजी को अध्ययन हेतु प्रदान किया। पूज्य माताजी ने दोनों कुमारिकाओं को 5-5 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत देकर साथ में रखकर अध्ययन कराया। उसमें से कु. कला ने पूज्य माताजी से शास्त्री कोर्स तक अध्ययन करके शास्त्री की परीक्षा पास कर ली और आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर लिया। वर्तमान में वह आर्यिका कैलाशमती माताजी के रूप में धर्मप्रभावना कर रही हैं। पश्चात् शीघ्र ही पूज्य माताजी ने अपने शिष्य-शिष्याओं के साथ आचार्यश्री शिवसागर महाराज के संघ में पुनः पदार्पण किया। उस समय आचार्यश्री शिवसागर जी एवं समस्त संघ को बहुत ही प्रसन्नता हुई तथा अगला चातुर्मास आचार्यश्री के साथ ही प्रतापगढ़ करने का निश्चय हुआ।

तेरहवाँ चातुर्मास (सन् 1968, प्रतापगढ़-राजस्थान)

प्रतापगढ़ राजस्थान का अच्छा नगर है। यहाँ चातुर्मास में प्रवचनादि से खूब धर्म प्रभावना हुई। पूज्य माताजी ने संघस्थ शिष्य मोतीचंद जैन (मुझे), यशवंत कुमार जैन एवं अपनी शिष्याओं को शास्त्री कोर्स का अध्ययन प्रारंभ कराया और सोलापुर बोर्ड से परीक्षाएं भी दिलवायीं।

प्रतापगढ़ चातुर्मास के बाद—इसी वर्ष फाल्गुन माह में श्री महावीर जी क्षेत्र पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के विशेष आमंत्रण को न टालकर आचार्यश्री शिवसागर महाराज ने संघ सहित महावीर जी क्षेत्र की ओर विहार कर दिया और कोटा, सवाई माधोपुर, इन्दरगढ़ आदि होते हुए संघ का आगमन श्री महावीर जी क्षेत्र पर हो जाता है।

श्री महावीर जी में आचार्यश्री शिवसागर जी की आकस्मिक समाधि हो जाने से संघ नेतृत्व का एक भीषण संकट उत्पन्न हुआ। पश्चात् मुनि श्री धर्मसागर जी महाराज को समस्त संघ एवं श्रावकों के मध्य आचार्य पट्ट प्रदान करके संघ के नेतृत्व की बागडोर प्रदान की गई, जो अपने निर्मल चारित्र के द्वारा मुनि परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए सारे देश की आँख के सितारे बने और समस्त जैन समाज आपके त्याग और निस्पृह जीवन से प्रभावित हुआ।

महावीर जी से आचार्यसंघ का विहार अजमेर निवासियों के चातुर्मास की प्रार्थना पर अजमेर के लिए हुआ परन्तु मार्ग में ही जयपुर निवासियों ने किसी तरह संघ को आगे बढ़ने ही न दिया और अंत में निराश होकर अजमेरवासियों को वापस जाना पड़ा। इस प्रकार अगला चातुर्मास जयपुर ही होने का निर्णय हो जाता है।

चौदहवाँ चातुर्मास (सन् 1969, जयपुर-राजस्थान)

जयपुर चातुर्मास के मध्य सभी शिष्य-शिष्याओं को पूज्य माताजी अष्टसहस्री, राजवार्तिक, जैनेन्द्र प्रक्रिया, शब्दार्णव चंद्रिका, गद्यचिंतामणि आदि शास्त्री, न्यायतीर्थ कोर्स के विषयों का दिन में 6 घण्टे अध्ययन कराती थीं। इसके अलावा सामूहिक रूप से अनेक आर्यिकाएं और मुनिगण भी पूज्य माताजी से स्वाध्याय का लाभ प्राप्त कर रहे थे। यहीं पर पूज्य माताजी ने अष्टसहस्री ग्रंथ की हिन्दी टीका करना प्रारंभ किया और टीका द्रुतगति से चलती रही। पं. सत्यंधर कुमार जी सेठी उज्जैन वाले भी माताजी से बहुत प्रभावित रहे। जयपुर चातुर्मास के मध्य "जैन ज्योतिर्लोक" नामक विषय पर एक शिक्षण-शिविर का आयोजन हुआ। आयोजन काफी सफल रहा। जैन ज्योतिर्लोक, उषा वंदना, शांति भक्ति का प्रत्यक्ष फल, जिन स्तवन माला आदि पुस्तकों का प्रकाशन भी जयपुर में किया गया।

जयपुर चातुर्मास के बाद—जयपुर से संघ का विहार होकर निवाई आदि होते हुए अगला चातुर्मास टोंक (राज.) में होने का निर्णय हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पन्द्रहवाँ चातुर्मास (सन् 1970, टोंक-राजस्थान)

टोंक चातुर्मास के मध्य भी अध्यापन कार्य एवं हिन्दी टीका का कार्य निरन्तर चलता रहा। टोंक में पूज्य माताजी को पुनः दूसरा शारीरिक कष्ट 'नजला' प्रारंभ हो गया, जिसने कार्य में बड़ा व्यवधान उपस्थित किया और कई माह तक इस रोग से माताजी को बहुत परेशानी रही, फिर भी ज्ञानोपयोग में ढिलाई नहीं आने दी और शीघ्र ही अष्टसहस्री जैसे दुरूह ग्रंथ की हिन्दी टीका पूर्ण कर दी।

टोंक चातुर्मास के बाद—संघ अनेक नगरों में विहार करते हुए टोडारायसिंह में मंगल पदार्पण करता है। यहाँ पर पूज्य माताजी द्वारा अष्टसहस्री ग्रंथ की हिन्दी टीका पूर्ण हो जाती है। आचार्यश्री के चरण सानिध्य में हिन्दी टीका की विधिवत् पूजन की गई। पश्चात् आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज के जन्मदिवस पर रथयात्रा के जुलूस के साथ अष्टसहस्री टीका को पालकी में विराजमान कर उसका भी जुलूस निकालकर प्रभावना की गई।

टोडारायसिंह से संघ का आगमन पुनः टोंक में होता है। यहाँ पर विशाल पंचकल्याणक का आयोजन आचार्यश्री के सानिध्य में हुआ। यहाँ टोंक प्रतिष्ठा को देखने हेतु पूज्य माताजी के ज्येष्ठ भ्राता श्री कैलाशचंद जी के साथ रवीन्द्र कुमार आये थे। यहीं से उन्हें पूज्य माताजी से ज्ञानार्जन का सानिध्य प्राप्त हुआ। कई वर्षों से अजमेर निवासी आचार्यश्री के संघ का चातुर्मास कराने के लिए बहुत ही लालायित थे अतः टोंक पंचकल्याणक के बाद संघ पीपलू, मालपुरा, लावा, पचेवर, सोडा, दूदू आदि होता हुआ किशनगढ़ पहुँचता है। किशनगढ़ में कई वर्षों के बाद आचार्यश्री धर्मसागर जी संघ एवं आचार्यश्री ज्ञानसागर जी के संघ का मंगल मिलन होता है। पश्चात् संघ चातुर्मास से पूर्व ही अजमेर पहुँचकर अजमेर में चातुर्मास की घोषणा हो जाती है।

सोलहवाँ चातुर्मास (सन् 1971, अजमेर-राजस्थान)

अजमेर चातुर्मास में पूज्य माताजी का समयसार, अष्टसहस्री आदि का स्वाध्याय एवं प्रवचन चला। यहाँ जैन ज्योतिर्लोक विषय पर मोनियाकरीमियां हाई स्कूल के हॉल में एक प्रभावशाली प्रवचन हुआ, जिसमें अनेक पत्रकार एवं विशिष्ट जैन-अजैन हजारों की प्रबुद्ध जनता उपस्थित हुई थी। सर सेठ सा. भागचंद जी सोनी पूज्य माताजी से तत्त्व चर्चा में बड़ा ही समय निकालकर लाभ प्राप्त करते रहते थे। अजमेर चातुर्मास के बाद अजमेर में ही पूज्य माताजी की जन्मदात्री माँ मोहिनी जी एवं अन्य ब्रह्मचारिणी बाइयों की दीक्षाएं बड़े ही धूमधाम से सम्पन्न हुईं, जिसमें पच्चीसों हजार की जनता एकटक दीक्षा समारोह के वैराग्य परक दृश्य को देखकर अपने नेत्रों को सफल कर रही थीं। कु. माधुरी ने यहीं पर सुगंधदशमी के दिन 13 वर्ष की उम्र में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया। वर्तमान में वे आर्यिका चंदनामती माताजी के रूप में पूज्य माताजी के संघ में रत्नत्रय साधनारत हैं।

चातुर्मास के बाद—अजमेर चातुर्मास के बाद संघ का विहार होता है। स्वास्थ्य ठीक न होने से मध्य में पूज्य माताजी अपनी कुछ शिष्य-शिष्याओं के साथ ब्यावर रुक जाती हैं। ब्यावर के शास्त्र भंडार से 1 हस्तलिखित प्रति अष्टसहस्री की प्राप्त होने से टिप्पणी एवं पाठांतर का कार्य भी प्रारंभ हुआ।

राय सा. चांदमल जी पाण्ड्या-गोहाटी, सेठ माणिकचंद वीरचंद गांधी-फलटण, परसादीलाल पाटनी-दिल्ली, पारसदास मोटर वाले आदि महानुभावों की विशेष प्रेरणा होने से ब्यावर से विहार कर पूज्य माताजी अपने शिष्य-शिष्याओं सहित जयपुर होते हुए भारत की राजधानी दिल्ली में पदार्पण करती हैं।

सत्रहवाँ चातुर्मास (सन् 1972, पहाड़ीधीरज-दिल्ली)

पहाड़ी धीरज-दिल्ली में 2 मुनिराज (मुनि श्री संभवसागर जी एवं मुनि श्री वर्धमानसागर जी) एवं 4 माताजी ऐसे 6 त्यागियों के संघ का चातुर्मास स्थापित हुआ। चातुर्मास के मध्य ही दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुई, जिसके प्रथम अध्यक्ष-डॉ. कैलाशचंद जैन राजाटॉयज-दिल्ली एवं प्रधानमंत्री-वैद्य शांतीप्रसाद जी-दिल्ली (फर्म राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड संस) मनोनीत किये गये। संस्थान के अन्तर्गत ही 'वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला' स्थापित की गई। अष्टसहस्री के अलावा त्रिलोक भास्कर नामक मौलिक ग्रंथ भी माताजी ने इसी चातुर्मास के मध्य लिखा। जिसमें त्रिलोकसार, तिलोयपण्णत्ति, जम्बूद्वीपपण्णत्ति आदि ग्रंथों के आधार से योजन को मील आदि सरल आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत किया गया। यहाँ पर डॉ. कैलाशचंद जी 'राजा टॉयज' वालों ने माताजी के प्रवचन समयसार, तत्त्वार्थसूत्र आदि पर रिकार्ड किये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी ने दिल्ली की मीनाबाई एवं ब्र. मनोवती बाई को आचार्य देशभूषण जी से दीक्षा दिलाई। उनके क्रम से यशोमती और संयममती नामकरण हुए, उन दोनों ने 3 वर्ष तक पूज्य माताजी के सानिध्य में ध्यानअध्ययन किया है।

अठारहवाँ चातुर्मास (सन् 1973, नजफगढ़-दिल्ली)

नजफगढ़-दिल्ली के इस चातुर्मास के मध्य विविध कार्यक्रमों के साथ ही पूज्य माताजी ग्रंथ रचना में सतत संलग्न रहीं और न्यायसार नामक तर्कशास्त्र के एक ग्रंथ का निर्माण किया तथा भावसंग्रह, भावत्रिभंगी, आस्रव त्रिभंगी का अनुवाद करके कातंत्र व्याकरण का अनुवाद प्रारंभ किया।

चातुर्मास के बाद संघ का विहार दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर होकर अगला चातुर्मास पुनः आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज के साथ ही दिल्ली में होता है।

उन्नीसवाँ चातुर्मास (सन् 1974, लाल मंदिर-दिल्ली)

भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण महोत्सव वर्ष होने के कारण सारे देश में भगवान महावीर के अहिंसात्मक संदेशों की धूम चल रही थी और देश की राजधानी दिल्ली में आचार्यश्री धर्मसागर जी का संघ सहित चातुर्मास, आचार्य श्री देशभूषण जी का संघ सहित चातुर्मास, मुनि श्री विद्यानंद जी का चातुर्मास एवं आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का चातुर्मास होने से जो प्रभावना हुई है, वह भी आने वाली भावी परम्परा के लिए एक प्रेरणा और आदर्श का विषय रहेगा। इस चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी द्वारा लिखित और अनुवादित 13 पुस्तकों का प्रकाशन सम्पन्न हुआ, जिसमें भगवान महावीर के जीवन पर लिखी गई सचित्र पुस्तक (भगवान महावीर कैसे बने) भी निर्वाण महोत्सव में एक अनूठी पुस्तक सिद्ध हुई और प्रेस से आते ही 25000 पुस्तकें समाप्त हो गईं अतः 10 हजार पुस्तकों का 1 माह के अन्दर पुनः प्रकाशन किया गया।

बच्चों के प्रारंभिक ज्ञान हेतु बालविकास के प्रथम भाग का प्रकाशन भी दिल्ली में इसी समय हुआ था।

निर्वाण महोत्सव के इस पुनीत वर्ष में ही पूज्य माताजी द्वारा अनुवादित अष्टसहस्री ग्रंथ एवं अन्य कतिपय पुस्तकों का एक विशाल समारोहपूर्वक माननीय साहू शांतिप्रसाद जी के सम्मुख गणमान्य राजनेताओं एवं समस्त दिगम्बर, श्वेताम्बर आचार्य-उपाध्याय संघ सानिध्य में विमोचन किया गया।

इसी वर्ष दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के एवं समीचीन धर्मज्ञान के प्रचार हेतु संस्थान के अंतर्गत ही एक मासिक पत्रिका "सम्यग्ज्ञान" का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, जो कि आज देश के कोने-कोने एवं हर प्रांत में अपनी अनूठी शैली से प्रशंसित हो चुकी है।

चातुर्मास के बाद—दिल्ली से आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज संघ सहित, उपाध्यायमुनि श्री विद्यानंद जी महाराज एवं आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का विहार होकर मेरठ होता हुआ ऐतिहासिक तीर्थ क्षेत्र हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण होता है। यहाँ पर नवनिर्मित 3 विशाल जिनबिंबों की आचार्य, उपाध्याय एवं समस्त साधुओं के सानिध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न होती है। पुनः आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज का चातुर्मास सहारनपुर, पूज्य माताजी का चातुर्मास हस्तिनापुर और उपाध्याय विद्यानंद जी का चातुर्मास जगाधरी होने से उत्तर भारत में धर्मप्रभावना कायम रही।

बीसवाँ चातुर्मास (सन् 1975, हस्तिनापुर-उत्तरप्रदेश)

हस्तिनापुर में एकांत एवं शांतिप्रिय स्थान होने से पूज्य माताजी का अध्ययन-अध्यापन पूर्व समय से भी तीव्र गति से चला। कई ग्रंथों के अनुवाद किये और सामूहिक स्वाध्याय से अनेक भव्य जीवों को बहुत ही लाभ प्राप्त हुआ।

प्रकाशन में बालविकास के चारों भागों का प्रकाशन प्रमुख रहा।

इक्कीसवाँ चातुर्मास (सन् 1976, खतौली-उत्तरप्रदेश)

यहाँ पर चातुर्मास से पूर्व ही एक शिक्षण शिविर का आयोजन पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुआ, जिसमें लगभग 500 स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। उस शिविर में सरल रीति से विषय समझने की दृष्टि से द्रव्यसंग्रह, समाधिशतक एवं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इष्टोपदेश का पूज्य माताजी ने पद्यानुवाद करके बड़ा ही उपकार किया। इन पुस्तकों के प्रकाशन के साथ ही अन्य कतिपय 'आर्यिका' आदि पुस्तकों का भी प्रकाशन कार्य सम्पन्न हुआ।

इस चातुर्मास की एक उपलब्धि यह रही कि पूज्य माताजी ने इन्द्रध्वज विधान हिन्दी भाषा में लिखना प्रारंभ किया और 3 माह के अल्प समय में 50 पूजाओं से युक्त इस वृहद् ग्रंथ का निर्माण करके एक अद्‌भुत कार्य कर दिखाया है। इस इन्द्रध्वज विधान का जब से प्रकाशन हुआ है। तब से लेकर भारत के कोने-कोने में यह विधान हर वर्ष महती धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न किया जाता है।

बाईसवाँ चातुर्मास (सन् 1977, हस्तिनापुर-उत्तरप्रदेश)

स्वास्थ्य की प्रतिकूलता रहने से पूज्य माताजी ने पुनः हस्तिनापुर के प्राचीन मंदिर में चातुर्मास करके मूलाचार का शब्दशः हिन्दी अनुवाद करने का संकल्प किया। यह ग्रंथ भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हो चुका है। अन्य कई पुस्तकें सम-सामयिक विषयों पर लिखीं-जिसमें दिगम्बर मुनि, धरती के देवता एवं 3-4 पूजन विधान की पुस्तकें प्रमुख हैं।

तेईसवाँ चातुर्मास (सन् 1978, हस्तिनापुर-उत्तरप्रदेश)

2 जुलाई सन् 1978 को अखिल भारतीय दिगम्बर जैन शांतिवीर सिद्धान्त संरक्षिणी सभा के माननीय मंत्री श्री गणेशीलाल जी रानीवाला एवं श्री त्रिलोकचंद जी कोठारी-कोटा आदि महानुभावों ने पूज्य माताजी के पास उपस्थित होकर पूज्य माताजी के सानिध्य में एक प्रशिक्षण शिविर लगाने के भाव व्यक्त किये, उसकी रूपरेखा तैयार की गई और पूज्य माताजी की स्वीकृति प्राप्त कर उस कार्य को विधिवत् संचालन करने में संलग्न हो गये। यह शिविर हस्तिनापुर में ही 7 अक्टूबर से 16 अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ।। इस शिविर में प्रशिक्षण हेतु एक 'प्रवचन निर्देशिका' नामक 250 पृष्ठ की पुस्तक को पूज्य माताजी ने लगभग 50-60 ग्रंथों के आधार से सप्रमाण अगस्त माह में लिखी थी, जिसका विमोचन शिविर के उद्‌घाटन के दिन हुआ था।

सन् 1978 का चातुर्मास दि. जैन बड़ा मंदिर पर हो रहा था। उसके मध्य 7 से 16 अक्टूबर तक देश भर के उच्चकोटि के विद्वानों का प्रशिक्षण शिविर रखा गया था। तदनुसार 6 अक्टूबर को विद्वानों तथा श्रेष्ठियों का आना प्रारंभ हो गया था, तभी बड़े मंदिर की कमेटी ने विद्वानों को ठहराने से मना कर दिया। कमरों में ताले डाल दिये, जिससे अचानक समस्या उत्पन्न हो गई। यह चर्चा श्वेताम्बर मंदिर जैन बालाश्रम तक पहुँच गई। बालाश्रम के कार्यकर्ताओं ने आकर माताजी से करबद्ध निवेदन किया कि माताजी! किसी प्रकार की चिंता न करें। प्रशिक्षण शिविर बालाश्रम में लगावें, सभी श्रेष्ठी तथा विद्वान भी वहीं ठहरें, वहीं सभी के भोजनादि की भी व्यवस्था करें। पूरा परिसर आपके लिए समर्पित है।

इस प्रस्ताव पर माताजी ने सभी से विचार-विमर्श किया। पुनः सभी ने एकमत से स्वीकृति प्रदान की। निर्णय होते ही वहाँ दो घंटे में संपूर्ण व्यवस्था हो गई। 7 अक्टूबर को प्रातः शिविर का उद्‌घाटन हुआ, जिसमें पं. मोतीचंद जी कोठारी-फल्टण को कुलपति बनाया गया। शिविर में शास्त्री परिषद के महामंत्री पं. बाबूलाल जी जमादार संचालक थे जिन्होंने माताजी के आदेशानुसार पूर्ण अनुशासन से 10 दिन शिविर चलाया। शिविर में डॉ. लालबहादुर शास्त्री, पं. मक्खनलाल जी शास्त्री जैसे उच्चकोटि के 80 विद्वान पधारे थे। पूज्य माताजी ने स्वयं विद्वानों को प्रवचन शैली के बारे में प्रशिक्षित किया। शिविर अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। आज भी कई युवा विद्वान उस शिविर की उपलब्धियों को याद करते हैं।

इस चातुर्मास में सुदर्शन मेरु का निर्माणकार्य द्रुतगति से चल रहा था। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने पर विचार-विमर्श प्रारंभ हो गया था। चातुर्मास समापन के पश्चात् माताजी ने ससंघ दिल्ली जाने का निश्चय किया।

चातुर्मास समापन के पश्चात्—हस्तिनापुर का चातुर्मास पूर्ण करके माताजी ने ससंघ भीषण सर्दी में विहार किया। पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी का स्वास्थ्य अनुकूल न होते हुए भी उन्हें साथ ही ले जाया गया। 19 दिसम्बर को संघ का दिल्ली में पदार्पण हुआ। वहाँ जैन बालाश्रम दरियागंज में प्रवास के मध्य सुदर्शन मेरु की प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 29 अप्रैल से 3 मई 1979 तक "श्री सुदर्शन मेरु जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव" हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. में होगा, इसके लिए प्रतिष्ठा समिति का गठन किया गया। प्रतिष्ठाचार्य के रूप में ब्र. सूरजमल जी को रखने का निर्णय किया गया।

पुनः दिल्ली से विहार करके संघ वापस हस्तिनापुर आया। निर्धारित तिथि में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद एवं निर्विघ्न सम्पन्न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुई। इस प्रतिष्ठा महोत्सव में आचार्यकल्प श्री श्रेयांससागर महाराज के ससंघ पधारने से और अधिक विशेषता आ गई। पूज्य माताजी की भावनानुसार पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के मध्य यह निर्णय लिया गया कि जम्बूद्वीप स्थल पर "आचार्य वीरसागर संस्कृत विद्यापीठ" प्रारंभ किया जावे। तदनुसार श्रावण शुक्ला एकम् के शुभ दिन विद्यापीठ का उद्घाटन हुआ, जिसमें प्रथम विद्यार्थी के रूप में सूर्यकांत (सुरेश) कोटड़िया का प्रवेश हुआ। वह प्रथम विद्यार्थी वर्तमान में मुनि श्री रविनंदी जी के रूप में धर्म की आराधना तथा धर्म की प्रभावना कर रहे हैं। इसी प्रकार नरेश कुमार जैन, प्रवीणचंद जैन ने भी इस विद्यापीठ से विद्यार्थी बनकर अध्ययन किया। वे प्रतिष्ठाचार्य के रूप में आज भी खूब धर्मप्रभावना करते हुए संस्थान की सेवा कर रहे हैं।

प्रतिष्ठा सम्पन्न होने के पश्चात् माताजी ने पूज्य रत्नमती माताजी की अनिच्छा होते हुए भी ज्येष्ठ माह की भयंकर गर्मी में पुनः दिल्ली के लिए विहार कर दिया।

चौबीसवाँ चातुर्मास (सन् 1979, मोरीगेट-दिल्ली)

8 जुलाई 1979 को दि. जैन मंदिर मोरीगेट, दिल्ली में चातुर्मास की स्थापना हुई। प्रतिदिन प्रातः प्रवचन तथा स्वाध्याय से महती धर्मप्रभावना हुई। स्त्री-पुरुषों, बालक-बालिकाओं को धर्माध्ययन भी कराया गया। उस समय संघ में आर्यिका श्री रत्नमती माताजी तथा आर्यिका श्री शिवमती माताजी थीं। सब्जी मण्डी-दिल्ली की जैन समाज के निवेदन पर श्रावण शुक्ला 7 को सब्जी मण्डी जाकर भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाणलाडू चढ़ाने के उत्सव में मंगल प्रवचन किया। उक्त कार्यक्रम में मुनि श्री मल्लिसागर जी (आ. श्री विद्यासागर जी महाराज के पिता) भी पधारे थे।

महिला समाज मोरीगेट ने दशलक्षण पर्व में इन्द्रध्वज मंडल विधान किया, जिसमें अनेक स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। दिल्ली में प्रथम बार इन्द्रध्वज विधान हो रहा था। इसीलिए दिल्ली के कोने-कोने से जैन समाज के महानुभाव विधान देखने आये।

आश्विन मास में शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का भव्य आयोजन—चूँकि मोरीगेट में स्थान पर्याप्त नहीं था इसलिए जैन बालाश्रम दरियागंज में 23 से 30 सितम्बर तक दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान,हस्तिनापुर तथा दि. जैन सिद्धांत संरक्षिणी सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें भी प्रो. मोतीचंद कोठारी-फल्टण को कुलपति बनाया गया। पं. पन्नालाल साहित्याचार्य-सागर भी पधारे थे।

डिप्टीगंज में पुनः इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का आयोजन 3 से 14 अक्टूबर तक माताजी के ससंघ सानिध्य में सम्पन्न हुआ, जिसमें शताधिक स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। महती धर्मप्रभावना हुई। विधान समापन के पश्चात् माताजी ससंघ वापस मोरीगेट पधारीं। जहाँ जैन समाज दिल्ली के अग्रणी कार्यकर्ता मुनिभक्त श्रेष्ठी श्री रमेशचंद जैन 'पी.एस. जैन मोटर्स'-राजपुर रोड ने 15 से 17 अक्टूबर तक सपरिवार पंचपरमेष्ठी विधान भक्तिविभोर होकर किया। पुनः दीपावली के दिन चातुर्मास समापन हुआ।

मोरीगेट चातुर्मास के पश्चात्—चातुर्मास समापन के पश्चात् माताजी जैन बालाश्रम, दरियागंज पधारीं। यहाँ श्री भारतवर्षीय अनाथरक्षक जैन सोसाइटी, जैन बालाश्रम दरियागंज के 75वर्ष की पूर्णता पर हीरक जयंती महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें पूज्य माताजी ने सभी कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद प्रदान किया। हीरक जयंती महोत्सव में तत्कालीन भाजपा नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी पधारे, उन्होंने भी माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्हें मैंने माताजी द्वारा लिखित साहित्य भेंट किया था।

श्री राजेन्द्र प्रसाद कम्मोजी जैन बालाश्रम, दरियागंज-दिल्ली के मंदिर में इन्द्रध्वज विधान कराना चाहते हैं। यह बात मैंने माताजी को बताई तब माताजी मोरीगेट में विराजमान थीं। कम्मोजी जब मोरीगेट आये, तब उनके आते ही माताजी ने मुझे आदेश दिया कि "इन्हें विधान सामग्री की सूची दे दो।" साथ में यह भी कहा कि कार्तिक आष्टान्हिका में विधान होगा, मैं समय पर पहुँच जाऊँगी।

कम्मोजी ने सामग्री की सूची हाथ में ली तथा माताजी के विहार की तथा विधान की रूपरेखा बनाने लगे। उठते-उठते हंसकर उन्होंने कहा कि "मैं तो विधान न कर सकने के लिए कहने आया था किन्तु आपके भावों को देखकर मना नहीं कर सका। प्रत्युत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पक्का करके जा रहा हूँ।'' यह बात सुनकर माताजी भी खूब हंसी तथा वे भी हँसे। 28 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक कार्तिक अष्टान्हिका में बहुत धूमधाम से विधान सम्पन्न हुआ।

दरियागंज से विहार कर माताजी ससंघ 25 नवम्बर को दि. जैन मंदिर, ग्रीन पार्क पहुँचीं वहाँ 29 नम्बर से 9 दिसम्बर तक ''ध्यान-साधना शिविर'' का आयोजन हुआ। संघस्थ कु. माधुरी ने सबको सामायिक विधि सिखाई तथा माताजी ने ''ह्रीं'' का ध्यान सिखाया। ध्यान करने में सभी स्त्री-पुरुषों को बहुत आनंद आया। शीतकाल में संघ का प्रवास लगभग ढ़ाई माह ग्रीनपार्क में रहा। यहाँ मंदिर में प्रात: प्रतिदिन द्रव्यसंग्रह की कक्षा चलाई जाती थी। उसके पश्चात् माताजी का प्रवचन होता था।

यहाँ परश्री निर्मल कुमार सेठी-सीतापुर वालों से परिचय हुआ। उनकी धर्मरुचि तथा उत्साह देखकर माताजी ने उन्हें अ.भा.दि. जैन महासभा का अध्यक्ष बनने की प्रेरणा दी। तदनुसार उन्हें कोटा (राज.) में महासभा की मीटिंग में अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। माताजी ने उन्हें खूब आशीर्वाद दिया। तब से माताजी के पास आकर मार्गदर्शन तथा आशीर्वाद प्रदान करते रहते हैं।

माताजी ने मुझे सेठ हीरालाल जी रानीवाला के सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जी रानीवाला के यहाँ इन्द्रध्वज विधान कराने वर्धा (महा.) भेजा था। 26 नवम्बर से 7 दिसम्बर तक खूब प्रभावनापूर्वक विधान हुआ। मैं पहली बार संघ से बाहर विधान कराने गया था।

ग्रीनपार्क में ही साहू शांतिप्रसाद जी के सुपुत्र साहू अशोक कुमार जी से निकट से परिचय हुआ। उन्हें माताजी ने समाज में आगे आने के लिए पुरजोर प्रेरणा दी। जब दो-चार बार साहू अशोक जी का ग्रीनपार्क में माताजी के पास आना हुआ। तब उन्हें हस्तिनापुर में बनने वाली जम्बूद्वीप रचना के द्वितीय चरण का शिलान्यास करने की प्रेरणा दी गई, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। तदनुसार माघ शुक्ला पूर्णिमा-31 जनवरी 1980 को साहू श्रेयांसप्रसाद जी, साहू अशोक जी व उनकी ध.प. श्रीमती इन्दु जी ने हस्तिनापुर पधारकर हजारों जनसमूह के मध्य समारोहपूर्वक शिलान्यास किया।

ग्रीनपार्क से दि. जैन मंदिर राजाबाजार-कनॉट प्लेस नई दिल्ली में 6 फरवरी 1980 को माताजी का ससंघ पदार्पण हुआ। यहाँ 23 फरवरी से 2 मार्च तक लाला श्यामलाल जी ठेकेदार परिवार की ओर से इन्द्रध्वज विधान का आयोजन फाल्गुन की आष्टान्हिका में हुआ। दिल्ली जैन समाज के अनेक विशिष्ट महानुभावों ने विधान-पूजन में भाग लेकर पुण्योपार्जन किया।

श्री छोटीशाह (प्रद्युम्न कुमार जैन) टिकैतनगर के विशेष आग्रह पर वहाँ से 10 से 19 फरवरी तक आयोजित इन्द्रध्वज विधान कराने के लिए माताजी ने कु. माधुरी को टिकैतनगर भेजा। मैंने भी वहाँ जाकर विधान के मध्य प्रवचन किये। अवध प्रांत में पहली बार यह इन्द्रध्वज विधान हुआ था, जिससे महती धर्मप्रभावना हुई।

कनॉट प्लेस से संघ सहित माताजी मंटोला पहाड़गंज पधारीं। यहाँ 7 से 16 मार्च तक शिक्षण शिविर में द्रव्य संग्रह पढ़ाया गया, बीच में पंचपरमेष्ठी विधान हुआ। चैत्र वदी 9 को ऋषभदेव जयंती मनाई गई। प्रतिदिन प्रवचन भी होते रहे। खूब लाभ समाज ने लिया।

कार्यक्रमों के साथ-साथ माताजी का लेखन कार्य भी चलता रहा। रत्नकरण्ड के पद्यों की हिन्दी श्लोकों में रचना, शांति विधान आदि ग्रंथ बनाये।

पुन: संघ का आगमन साइकिल मार्केट-चाँदनी चौक में हुआ। महावीर जयंती के संदर्भ में 23 मार्च को प्रात: हीरालाल हायर सेकेण्ड्री स्कूल, पहाड़ी धीरज में तथा उसी दिन मध्यान्ह में महावीर उद्यान कैलाश नगर के पंडाल में माताजी के ओजस्वी प्रवचन हुए। चैत्र शु. 11 से 13 तक सुभाष मैदान चाँदनी चौक में प्रतिदिन प्रात: एवं मध्यान्ह में माताजी के प्रभावी प्रवचन हुए। इनके अतिरिक्त और भी कई स्थानों में महावीर जयंती संबंधी माताजी के प्रवचन हुए।

कम्मोजी की धर्मशाला में 13 से 28 जून तक 16 दिवसीय शांतिविधान माताजी के सानिध्य में श्री विजेन्द्र कुमार जैन सर्राफ ने किया। 27 मई से 6 जून तक उसी धर्मशाला में सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बाल विकास, द्रव्य संग्रह, रत्नकरण्ड श्रावकाचार आदि का शिक्षण दिया गया। सभी वर्ग के लोगों ने लाभ लिया।

ज्येष्ठ की भयंकर गर्मी के कारण पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी को पीलिया हो गया। 97 वर्षीय हकीम अतरसेन जैन के यूनानी नुस्खे से पीलिया ठीक हुआ। पुन: दूसरी व तीसरी बार पीलिया हुआ। बीच में स्वास्थ्य बहुत नाजुक हो गया था किन्तु उसी कासनी के बीज की ठंडाई वाले नुस्खे से ठीक हो गईं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पच्चीसवाँ चातुर्मास (सन् 1980-कूचा बुलाकी बेगम, साइकिल मार्केट, चाँदनी चौक-दिल्ली)

26 जून 1980 आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को कम्मोजी की धर्मशाला में चातुर्मास की स्थापना हुई। मेरु मंदिर में 20 से 29 जुलाई तक माताजी के सानिध्य में इन्द्रध्वज विधान का आयोजन किया गया। इस मंदिर में नंदीश्वर के 52 जिनालयों की भव्य रचना बनी हुई है।

फरवरी 1981 में श्रवणबेलगोला में होने वाले "भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक" की तैयारियाँ एक वर्ष पूर्व से जोरों से प्रारंभ हो गई थीं। अतः माताजी ने भगवान बाहुबली के संबंध में साहित्य का निर्माण प्रारंभ कर दिया। उपन्यास की शैली में "योग चक्रेश्वर बाहुबली" पुस्तक लिखी। "कामदेव बाहुबली" नाम से लघु पुस्तिका लिखी, जिसका पांच भाषाओं में हजारों की संख्या में प्रकाशन किया गया। 'बाहुबली नाटक' लिखा, भरत-बाहुबली नाम से चित्रकथा (कामिक्स) का प्रकाशन हुआ। भगवान बाहुबली विषयक माताजी द्वारा लिखित हिन्दी-संस्कृत की स्तुतियों का, बाहुबली स्तोत्र, बाहुबली पूजा आदि का लाखों की संख्या में प्रकाशन किया गया। 'भगवान बाहुबली' काव्य रचना की आडियो कैसेट भी बड़ी संख्या में तैयार कराकर वितरित की गई।

दशलक्षण पर्व में माताजी के प्रवचन प्रातः कम्मोजी की धर्मशाला में तथा मध्यान्ह में कूचा सेठ के बड़े मंदिर में हुए।

भगवान बाहुबली सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोला के प्रचार-प्रसार के लिए लालकिला मैदान से जन मंगल महाकलश प्रवर्तन का उद्घाटन 29 सितम्बर 1980 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी के करकमलों से हुआ। उस सभा में पूज्य माताजी के भी आशीर्वचन हुए। यह महाकलश पूरे देश के विभिन्न अंचलों में घूमकर फरवरी 1981 में महामस्तकाभिषेक के अवसर पर श्रवणबेलगोला पहुँचा था।

श्री पन्नालाल सेठी-डीमापुर ने सपरिवार माताजी के सानिध्य में इन्द्रध्वज महामण्डल विधान 9 से 19 अगस्त तक कम्मोजी की धर्मशाला में किया। इस विधान को विधानाचार्य के रूप में मैंने सम्पन्न कराया था। अनेकों महानुभावों ने विधान में भाग लेकर खूब पुण्योपार्जन किया।

आसोज (क्वार) शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) 23 अक्टूबर 1980 को माताजी का 47वाँ जन्मदिवस माताजी के मना करने के बावजूद भी विशेष समारोहपूर्वक महावीर वाटिका, दरियागंज में विशाल पंडाल बनाकर मनाया गया। तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री श्री प्रकाशचंद जैन सेठी तथा ए.पी. शर्मा ने भाग लिया। प्रमुख अतिथियों में साहू अशोक कुमार जैन, अमरचंद पहाड़िया-कलकत्ता आदि ने विनयांजलि समर्पित की। इस अवसर पर श्री पन्नालाल सेठी-डीमापुर की ओर से वृहद् प्रीतिभोज का आयोजन किया गया था, जिसमें लगभग 5000 स्त्री-पुरुषों ने भोजन किया।

इससे पहले माताजी के दीक्षित जीवन में सन् 1966 के सोलापुर चातुर्मास में माताजी के मना करने पर भी आ. श्री विमलसागर जी महाराज के विशेष आग्रह से उन्हीं के सानिध्य में ब्र. सुमतिबाई शाह ने शरदपूर्णिमा पर माताजी के जन्मदिन को भव्यरूप में मनाया था।

जन्मदिवस के अगले दिन 24 अक्टूबर से समयसार वाचना शिविर प्रारंभ हुआ। इसमें डॉ. पन्नालाल जी साहित्याचार्य को कुलपति बनाया गया था। इसमें पं. कैलाशचंद जी सिद्धांतशास्त्री-बनारस भी पधारे थे। शिविर में 85 विद्वान एवं श्रीमान पधारे थे। शिविर में स्वयं माताजी ने प्रतिदिन समयसार पर डेढ़ घंटे तक प्रवचन किया। 2 नवम्बर 1980 को लाल मंदिर में शिविर समापन समारोह की सभा में श्री रमेशचंद जैन 'पी.एस. जैन मोटर्स' ने माताजी द्वारा लिखित एवं मुद्रित भगवान ऋषभदेव, संस्कार, प्रभावना, जीवनदान, उपकार तथा नियमसार पद्यावली पुस्तकों का विमोचन किया।

बाहुबली मस्तकाभिषेक के संदर्भ में फरवरी 1981 का सम्यग्ज्ञान "भगवान बाहुबली" विशेषांक के रूप में निकाला गया जिसमें माताजी द्वारा लिखित अनेक स्तुतियों तथा लेखों का प्रकाशन किया गया। मैं और रवीन्द्र कुमार 9 फरवरी से 5 मार्च तक श्रवणबेलगोला रहे। भगवान बाहुबली का मस्तकाभिषेक किया, समारोह का पूरा आनंद लिया। माताजी दिल्ली में रहकर पत्र-पत्रिकाओं तथा रेडियो, टी.वी. के माध्यम से समारोह की जानकारी लेती रहीं। 22 फरवरी 1981 को 1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। 24 फरवरी को श्रवणबेलगोला में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान का अधिवेशन हुआ जिसमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी द्वारा लिखित "जैन भारती" ग्रंथ का विमोचन हुआ। इस ग्रंथ की अनेकों महानुभावों तथा साधुओं ने बहुत प्रशंसा की, क्योंकि इसमें चारों अनुयोगों का संक्षेप में बहुत सुन्दर विवेचन किया गया है, जिससे जैनधर्म को सरलता से समझा जा सकता है। इसे अनेक भाषाओं में प्रकाशित करने का कार्य भी चल रहा है।

दि. जैन लाल मंदिर चाँदनी चौक में प्रेमचंद जैन (दाने वालों) ने 9 से 16 मार्च तक इन्द्रध्वज विधान माताजी के सानिध्य में कराया। विधान के समापन पर 16 मार्च को दिल्ली में प्रथम बार गजरथ निकाला गया। इन्हीं प्रेमचंद दाने वालों ने सन् 1985 में जम्बूद्वीप की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर एक रथ बनवाकर भेंट किया। इन्होंने लाल किले के सामने सुभाष मैदान में बैठकर पक्षियों के लिए अनाज बेचकर उसके लाभ से अनेक रथ बनवाकर भिन्न-भिन्न मंदिरों में भेंट करके एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए प्रस्थान—16 मार्च को लालमंदिर की विशाल सभा में सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए माताजी ने मोरीगेट में आष्टान्हिक पर्व करके 24 मार्च को हस्तिनापुर के लिए विहार किया। 9 अप्रैल को हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर पदार्पण हुआ। यहाँ अब तक दो धर्मशालाओं का निर्माण हो चुका था।

वैशाख शुक्ला 7, दिनाँक 10 मई 1981 को तीनमूर्ति मंदिर तथा रत्नत्रय निलय (त्यागी भवन) का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन प्रात:-मध्यान्ह ग्रंथों का स्वाध्याय माताजी के समक्ष चलता रहा, माताजी ग्रंथों का लेखन करती रहीं तथा निर्माणकार्य भी द्रुतगति से चलते रहे। इसी मध्य हस्तिनापुर तथा जम्बूद्वीप रचना के प्रचार-प्रसार के लिए "जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति" के नाम से एक रथ पूरे भारत में भ्रमण कराने की रूपरेखा बनाई गई।

छब्बीसवाँ चातुर्मास (सन् 1981, जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर-उ.प्र.)

8 से 18 जुलाई तक श्री निर्मल कुमार सेठी तथा श्री पन्नालाल सेठी-डीमापुर ने इन्द्रध्वज विधान माताजी के सानिध्य में भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुआ। इसी मध्य 16 जुलाई (आषाढ़ शुक्ला 14) को चातुर्मास की स्थापना की। यह जम्बूद्वीप स्थल पर पहला चातुर्मास स्थापित किया। इस चातुर्मास में निर्माण कार्यों की प्रगति के साथ-साथ "जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति" रथ प्रवर्तन के विषय में चर्चा-विचार चलता रहा।

11 से 15 अक्टूबर तक 'जम्बूद्वीप सेमिनार' का आयोजन किया गया। पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य-सागर को इस संगोष्ठी का कुलपति मनोनीत किया गया। इस संगोष्ठी के मध्य शास्त्री परिषद द्वारा प्रकाशित "पं. बाबूलाल जमादार अभिनंदन ग्रंथ" का विमोचन हुआ तथा उन्हें समर्पित किया गया। माताजी ने भी उन्हें उनकी कर्मठता तथा दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के प्रति समर्पित भावनाओं के लिए बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद दिया।

13 अक्टूबर, शरदपूर्णिमा के दिन माताजी के 48वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर आगत समस्त विद्वानों, श्रीमानों तथा नवयुवकों ने माताजी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किये।

अनेक विद्वानों के विचारों को लेकर पं. बाबूलाल जमादार ने माताजी का अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित करने की योजना बनाई। जब यह बात माताजी को ज्ञात हुई, तो उन्होंने कहा कि 'मुझमें जो कुछ भी योग्यता है, उसका श्रेय आर्यिका रत्नमती माताजी को है। उन्होंने ही मुझमें बाल्यकाल से धर्म के संस्कार भरे थे, अत: उनका अभिनंदन ग्रंथ तैयार करें। तदनुसार "आर्यिका रत्नमती अभिनंदन ग्रंथ" तैयार करके नवम्बर 1983 में रत्नमती माताजी को समर्पित किया गया।

जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का प्रवर्तन दिल्ली से प्रारंभ करने के लिए अनेक महानुभावों ने माताजी से आग्रहपूर्ण निवेदन किया, जिसमें प्रमुख थे राजेन्द्रप्रसाद कम्मोजी। साथ में यह भी कहा कि माताजी आपको भी दिल्ली चलना पड़ेगा। अनेक महानुभावों के अत्यधिक आग्रह के कारण माताजी को दिल्ली जाने का कार्यक्रम बनाना पड़ा। 13 फरवरी को हस्तिनापुर से दिल्ली के लिए माताजी ने ससंघ विहार किया। 27 फरवरी को दिल्ली मोरीगेट में पदार्पण हुआ। 2 मार्च 1982 से आष्टान्हिक पर्व में इन्द्रध्वज विधान उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री धर्मसागर जी अभिवंदन ग्रंथ का अनेक साधु-साध्वियों के सानिध्य में विमोचन हुआ, उसमें पूज्य माताजी के सानिध्य में भी मोरीगेट में राजेन्द्र प्रसाद कम्मोजी से विमोचन करवाया गया। दिल्ली की विभिन्न कालोनियों में महावीर जयंती पर माताजी के प्रवचन हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

17 अप्रैल को लाल मंदिर में माताजी के सानिध्य में ज्ञानज्योति कार्यालय का उद्घाटन हुआ। इसके साथ ही बस चेचिस खरीदकर रथ निर्माण का कार्य तेजी से प्रारंभ हो गया। रथ प्रवर्तन का उद्घाटन करने के लिए प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी से स्वीकृति लेने के लिए श्री जे.के. जैन सांसद (राज्यसभा सदस्य) से मिला गया। उनके प्रयास से 4 जून 1982 को उद्घाटन के लिए श्रीमती इन्दिरागांधी की स्वीकृति 28 मई को प्राप्त हो गई। स्वीकृति मिलते ही रथ तैयार करने की तथा उद्घाटन की तैयारियाँ बहुत तेजी से प्रारंभ हो गई। धुआंधार प्रचार किया गया। पं. बाबूलाल जी जमादार पूर्ण निष्ठा तथा तन्मयता के साथ में लगे हुए थे। रवीन्द्र कुमार तथा मैंने तैयारी में रात-दिन एक कर दिया और कई लोग जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, कैलाशचंद जैन-करोलबाग, डॉ. कैलाशचंद जैन राजा टायज, हेमचंद जैन-पहाड़गंज, गणेशीलाल रानीवाला-कोटा आदि कार्यों में जुटे हुए थे। माताजी ने शुभ मुहूर्त में जम्बूद्वीप रचना के मॉडल की मंत्रों से शुद्धि की तथा उसमें यंत्र स्थापित किया।

4 जून 1982 को लालकिला मैदान में बनाये गये विशाल पंडाल में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने शाम को 4 बजे पधारकर अत्यंत हर्ष एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में दसों हजार की भीड़ में माताजी से आशीर्वाद लेकर मंत्रोच्चारपूर्वक रथ पर पुष्पांजलि क्षेपण करके स्वस्तिक बनाकर श्रीफल चढ़ाया। रथ के देश भ्रमण के लिए शुभकामनाएं दीं। शाम को 5 बजे से रथ की शोभायात्रा चांदनी चौक से प्रारंभ होकर रात्रि में 9 बजे करोलबाग पहुँचकर समाप्त हुई। अगले दिन ग्रीनपार्क होकर रथ राजस्थान भ्रमण के लिए तिजारा पहुँचा। रथ संचालक के रूप में पं. बाबूलाल जी जमादार रथ के साथ में गये। बड़ी भक्तिभाव से राजस्थान के गाँव-गाँव में रथ का स्वागत हो रहा था। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य चल रहा था।

दिल्ली जैन समाज के प्रमुख महानुभावों के विशेष आग्रहपूर्ण निवेदन को स्वीकार करके सन् 1982 का चातुर्मास कूचा सेठ चाँदनी चौक में करने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

सत्ताइसवाँ चातुर्मास (सन् 1982-कूचा बुलाकी बेगम, साइकिल मार्केट, दिल्ली)

5 जुलाई, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की रात्रि में 8 बजे समाज के सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में वर्षायोग की स्थापना की गई। 20 अगस्त को चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर वेदवाड़ा में माताजी का प्रवचन हुआ।

13 सितम्बर से 21 सितम्बर तक श्री उग्रसेन हेमचंद जैन-पहाड़गंज की ओर से मंटोला की जैन धर्मशाला में माताजी के सानिध्य में इन्द्रध्वज मण्डल विधान हुआ। 26 सितम्बर से 10 अक्टूबर तक माताजी के सानिध्य में एक साथ दो विधान हुए। धर्मशाला में प्रातः इन्द्रध्वज विधान तथा दोपहर में प्रेमचंद जैन-महमूदाबाद वालों की तरफ से तीस चौबीसी विधान हुआ। महती धर्मप्रभावना हुई। शाहदरा में और भी कई छोटे-छोटे विधान हुए।

भोगल में माताजी के सानिध्य में 18 अक्टूबर को मंदिर का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। 21 अक्टूबर 1982 को जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति सेमिनार का उद्घाटन फिक्की आडिटोरियम नई दिल्ली में तत्कालीन संसद सदस्य श्री राजीव गांधी के करकमलों से हुआ। 22 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक सेमिनार कम्मोजी की धर्मशाला साइकिल मार्केट में सम्पन्न हुआ, जिसमें एक जापानी विद्वान भी आये थे। प्रत्येक सत्र के समापन पर माताजी ने शंकाओं का समाधान किया। 1 नवम्बर को दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान का अधिवेशन, ज्ञानज्योति प्रवर्तन पूर्वांचल समिति की तथा अ.भा.दि. जैन युवा परिषद की बैठक हुई। 2 नवम्बर को सेमिनार का समापन समारोह बहुत अच्छे रूप में हुआ।

1 नवम्बर 1982 शरदपूर्णिमा के दिन माताजी का उन्वासवाँ जन्मदिवस विद्वानों तथा दिल्ली जैन समाज के महानुभावों द्वारा उत्साहपूर्वक मनाया गया।

चातुर्मास के पश्चात्— 18 नवम्बर 1982 को कम्मोजी धर्मशाला से माताजी ने ससंघ विहार हस्तिनापुर के लिए किया। 29 नवम्बर कार्तिक शुक्ला तेरस को जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में मंगल प्रवेश हुआ। कार्तिक पूर्णिमा पर हस्तिनापुर के वार्षिक मेले में 20-25 हजार जैन-अजैन आते हैं। यह मेला 'गंगा स्नान' के मेले के नाम से भी प्रसिद्ध है। 1979 में सुमेरु पर्वत के निर्माण के पश्चात् सुमेरु पर्वत भी जनता के आकर्षण का केन्द्र बन गया था। हजारों लोगों ने सुमेरु पर्वत पर चढ़कर उसमें निर्मित 16 चैत्यालयों के दर्शन के साथ-साथ चारों तरफ के प्राकृतिक सौंदर्य का भी आनंद लेने लगे थे। जम्बूद्वीप स्थल पर तीन मूर्ति मंदिर, रत्नत्रय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निलय (त्यागी भवन), भोजनशाला आदि के निर्माण के साथ-साथ जम्बूद्वीप रचना में हिमवान आदि पर्वतों का निर्माणकार्य द्रुतगति से चल रहा था।

दूसरी तरफ माताजी के सानिध्य में त्रिलोकसार, राजवार्तिक आदि ग्रंथों का स्वाध्याय संघ के शिष्य वर्ग के लिए चालू किया गया। माताजी द्वारा साहित्य लेखन का कार्य भी चल रहा था। दिन में एक या दो बार माताजी रचना निर्माण के कार्य को भी देख लेती थीं, जिससे कार्य करने वालों को संतोष हो जाता था कि पर्वतों आदि का निर्माण सही रूप में हो रहा है।

उधर राजस्थान में भारी धर्मप्रभावनापूर्वक जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का प्रवर्तन चल रहा था। बीच-बीच में जब पं. बाबूलाल जी जमादार घर आते, तो रथ संचालन के लिए मैं चला जाता था। बड़े शहरों में कमेटी के पदाधिकारी भी पहुँच जाते थे तथा प्रभावना देखकर हर्षित होते थे। 20 दिसम्बर 1982 को राजस्थान प्रवर्तन का समापन अति उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। राजस्थान के पश्चात् बंगाल-बिहार में रथ प्रवर्तन हुआ। पुनः उड़ीसा होकर रथ का प्रवर्तन 17 से 29 अप्रैल 1983 तक बम्बई में भारी धर्मप्रभावना के साथ हुआ।

हस्तिनापुर में माताजी के सानिध्य में समय-समय पर अनेक विधान सम्पन्न हुए। 6 मार्च 1983 को नवनिर्मित डाइनिंग हॉल का उद्घाटन हुआ। 15 मई 1983 को श्री उग्रसेन हेमचंद जैन-पहाड़गंज दिल्ली द्वारा निर्मित 'रत्नत्रय निलय' का उद्घाटन उन्हीं के करकमलों से हुआ। 5 जून से 15 जून तक तत्त्वार्थसूत्र तथा दशधर्म पर एक प्रशिक्षण शिविर जम्बूद्वीप स्थल पर सम्पन्न हुआ, जिसमें 50 विद्वानों ने प्रशिक्षण लिया।

शिविर के कुलपति पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य थे। देखते-देखते 1983 के वर्षायोग का समय आ गया। पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की अस्वस्थता को देखते हुए दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के सदस्यों के विशेष निवेदन पर माताजी ने आगामी वर्षायोग जम्बूद्वीप स्थल पर ही स्थापित करने का निर्णय किया।

अट्ठाइसवाँ चातुर्मास (सन् 1983, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, उ.प्र.)

आषाढ़ की अष्टान्हिका में नवनिर्मित डाइनिंग हॉल में एक साथ दो सिद्धचक्र विधान हुए। एक तेरहपंथ विधि से हुआ तथा दूसरा बीसपंथ आम्नाय से हुआ। यह सामंजस्य बहुत अच्छा लगा। किसी को भी किसी प्रकार की शिकायत नहीं रही, बल्कि सबको बहुत आनन्द आया। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी, 23 जुलाई को वर्ष 1983 के चातुर्मास की स्थापना हुई।

जम्बूद्वीप स्थल पर जम्बूद्वीप रचना के साथ-साथ अन्य धर्मशाला आदि के निर्माण कार्य चल रहे थे। माताजी अपने लेखन तथा पठन-पाठन में संलग्न थीं। आने वाले भक्तों तथा दर्शनार्थियों को धर्मोपदेश के साथ-साथ जम्बूद्वीप रचना से भी परिचित कराती थीं। उधर ज्ञानज्योति का भ्रमण महाराष्ट्र में चल रहा था। वहाँ की प्रभावना के समाचार जब माताजी को प्राप्त होते, तो वे बहुत हर्षित होती थीं। दैनिक धार्मिक क्रियाओं सामायिक-प्रतिक्रमण के अतिरिक्त ज्योतिरथ के निराबाध प्रवर्तन के लिए खूब माला जाप भी करती थीं।

जम्बूद्वीप रचना की पूर्णता को नजदीक देखते हुए जम्बूद्वीप रचना के लगभग 200 जिनबिंबों की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा को सम्पन्न कराने के लिए निवेदन करने हेतु संस्थान का एक प्रतिनिधिमण्डल ब्र.रवीन्द्र कुमार एवं कु. माधुरी के साथ 28 अक्टूबर 1983 को राजस्थान गया, वहाँ विभिन्न नगरों में विराजमान आचार्य श्री धर्मसागर जी, उपाध्याय श्री अजितसागर जी, मुनि श्री दयासागर जी, मुनि श्री अभिनंदनसागर जी आदि 10 संघों में जाकर नारियल चढ़ाया। औरंगाबाद में चातुर्मास कर रहे आचार्यश्री विमलसागर महाराज को भी प्रतिष्ठा पर हस्तिनापुर पधारने के लिए मैंने, श्री निर्मल कुमार सेठी आदि ने श्रीफल चढ़ाया।

11 से 21 सितम्बर 1983 तक दशलक्षण पर्व में श्री आनंद प्रकाश जैन 'सोरम वालों' ने तथा 7 से 15 नवम्बर तक श्री जयकुमार जैन विनायका-भागलपुर वालों ने जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य माताजी के सानिध्य में इन्द्रध्वज विधान किये। शरदपूर्णिमा के दिन माताजी का 50वाँ जन्मदिवस सादगी से मनाया गया।

इस चातुर्मास के मध्य पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के अभिनंदन ग्रंथ को प्रकाशित करने की तैयारी हुई। ग्रंथ तैयार हो गया। कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, 20 नवम्बर 1983 को विशाल समारोह के मध्य पूज्य रत्नमती माताजी को अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया गया। उक्त समारोह में श्री अमरचंद पहाड़िया-कलकत्ता, श्री निर्मल कुमार सेठी, लाला श्री श्यामलाल ठेकेदार, श्री गणेशीलाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रानीवाला आदि गणमान्य महानुभाव पधारे थे। सांसद श्री जे.के. जैन ने ग्रंथ विमोचन किया था। इस प्रकार अनेक प्रकार से धर्मप्रभावनापूर्वक 1983 को चातुर्मास सम्पन्न हो गया।

चातुर्मास के पश्चात्— ज्ञानज्योति रथ का प्रवर्तन तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल के पश्चात् 1 फरवरी 1984 से मध्यप्रदेश का प्रवर्तन जबलपुर से प्रारंभ हुआ। म.प्र. के अनेक मंत्री तथा नेताओं के साथ-साथ मध्यप्रदेश जैन समाज के प्रमुख सेठ देवकुमार सिंह कासलीवाल, श्री कैलाशचंद चौधरी-सनावद, श्री इन्दरचंद जैन चौधरी-सनावद आदि महानुभाव वहाँ पहुँचे थे। मैं भी गया था।

जम्बूद्वीप रचना के जिनबिंबों की पंचकल्याणक वैशाख शुक्ला 8 से 12 तदनुसार दिनाँक 28 अप्रैल से 3 मई 1984 तक करने की घोषणा माताजी ने की। 11 मार्च 1984 को दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान की बैठक पूज्य माताजी के सानिध्य में हुई, जिसमें प्रतिष्ठा समिति का गठन किया गया।

17 मई को सनावद नगर में ज्ञानज्योति रथ का भव्य स्वागतपूर्वक प्रवेश हुआ। यहाँ त्रिदिवसीय कार्यक्रम रखा गया था। दिल्ली, इंदौर आदि से अनेक गणमान्य महानुभाव तथा पं. बाबूलाल जी जमादार, डॉ. लालबहादुर शास्त्री आदि अनेक विद्वान भी उस समय सनावद पधारे थे। विशाल जनसभा के पश्चात् आकर्षक शोभायात्रा निकाली गई। सभा में सेठ अमोलकचंद जी सर्राफ को अभिनंदन पत्र भेंट किया गया।

कई दिनों से पं. जमादार जी के न जा पाने के कारण सुयोग विद्वान पं. सुधर्मचंद जी शास्त्री-तिवरी (जबलपुर) म.प्र. को जबलपुर स्थाई संचालक के रूप में नियुक्त किया गया।

14 मई 1983 को ज्योतिरथ संचालक पं. बाबूलाल जी जमादार बिहार प्रदेश से अपने घर आये थे, उसके बाद 17 मई को केवल सनावद के कार्यक्रम में आये थे। 9 जून 1984 को बड़ौत में उनके निवास पर ही पंडित जी का स्वर्गवास हो गया। पुनः एक माह पश्चात् 14 जुलाई को पंडित जी की धर्मपत्नी का भी स्वर्गवास हो गया। पंडित जी के असामयिक निधन से संस्थान के सभी सदस्यों को हार्दिक दुख हुआ। पंडित जी का वात्सल्यपूर्ण व्यवहार आज भी याद आ जाता है।

उन्नीसवाँ चातुर्मास (सन् 1984, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, उ.प्र.)

5 से 14 जुलाई 1984 तक श्री निर्मल कुमार सेठी, श्री सुमेरुचंद पाटनी-लखनऊ तथा श्री मांगीलाल पहाड़े-हैदराबाद ने मिलकर माताजी के सानिध्य में जम्बूद्वीप स्थल पर इन्द्रध्वज विधान किया। चूंकि जम्बूद्वीप की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा अगले वर्ष होना निश्चित हो गया था। उससे पहले रचना का निर्माण भी पूरा होना था अतः माताजी ने संस्थान के पदाधिकारी व सदस्यों के निवेदन को स्वीकार करके हस्तिनापुर में ही चातुर्मास की स्थापना 12 जुलाई आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को संघ सहित की।

जम्बूद्वीप रचना के निर्माण कार्य में जयपुर के मूर्ति वेदी निर्माण करने वालों के निमित्त से बीच-बीच में व्यवधान आ जाता था उसका यथोचित निराकरण किया जाता था। उधर रथ प्रवर्तन चल रहा था, उसे भी देखना होता था। प्रतिष्ठा पर यात्रियों को ठहराने के लिए धर्मशालाओं का निर्माण कार्य भी तेजी से चल रहा था। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा शानदार रूप से सम्पन्न हो, उसके लिए माताजी के पास भी विचार-विमर्श चलता रहता था। जम्बूद्वीप रचना की भव्यता को देखकर कुछ अकारणिक विद्वेषीजन झूठी भ्रातियाँ भी फैलाते रहते थे, उनका भी समय-समय पर निराकरण किया गया।

जम्बूद्वीप रचना पूर्णरूप से शास्त्रोक्त बने इस बात पर माताजी पूरा ध्यान रखती थीं। उनका ग्रंथ लेखन तथा स्वाध्याय भी निराबाध रूप से चल रहा था। भव्य समारोहपूर्वक

9 अगस्त से गुजरात में रथ प्रवर्तन प्रारंभ हुआ। 14 अक्टूबर से आसाम में ज्ञानज्योति का प्रवेश हुआ। आसाम में मैं (ब्र. मोतीचंद), रवीन्द्र कुमार, कु. माधुरी तथा सुधर्मचंद जी-तिवरी (म.प्र.) रथ प्रवर्तन में साथ में थे। प्रभावनापूर्वक नगर-नगर में प्रवर्तन हो रहा था। उसी मध्य राजधानी दिल्ली में 31 अक्टूबर 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी को उनके ही निवास पर उनके ही अंगरक्षक ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी, जिससे सारे देश में हाहाकार मच गया। साधुवर्ग को भी इस घटना से आघात पहुँचा। किन्तु होनहार को कौन टाल सकता है। अगले दिन इन्दिरा गांधी के पुत्र श्री राजीव गांधी को प्रधानमंत्री पद पर आसीन किया गया। इस घटना से एक सप्ताह तक रथ प्रवर्तन में भी मायूसी का वातावरण रहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

24 नवम्बर 1984 से उत्तरप्रदेश में ज्योति प्रवर्तन का शुभारंभ माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर से हुआ। ज्योतिरथ का स्वागत करने के लिए उत्तरप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी अपने वरिष्ठ सहयोगी मंत्री प्रो. वासुदेव सिंह के साथ हेलीकॉप्टर से पधारे। विशाल पंडाल में आकर रथ पर स्वस्तिक बनाकर, श्रीफल चढ़ाकर, आरती उतारकर स्वागत किया। सभा समापन पर उन्होंने कहा कि "मुझे ज्ञानमती माताजी के उस घर के दर्शन करना है, जहाँ विश्व की माता, अवध की अनमोल मणि ज्ञानमती माताजी ने जन्म लिया था। उनके कहते ही बिना पूर्व सूचना तथा व्यवस्था के उनको उस घर में ले जाया गया। वहाँ उन्होंने उस पवित्र भूमि को नमन किया। अतीव हर्ष व्यक्त किया। थोड़ा प्रसाद भी खाया।

हस्तिनापुर में रत्नमती माताजी तथा ज्ञानमती माताजी इस समाचार को सुनकर अतीव हर्षित हुईं। उनका आशीर्वाद टिकैतनगर की विशाल सभा में उस समय पढ़कर सुनाया गया था।

चातुर्मास के पश्चात्—

नियमसार ग्रंथ की स्याद्वाद चन्द्रिका नामक संस्कृत टीका-माताजी ने सन् 1978 में वैशाख शुक्ल 3 (अक्षय तृतीया) के शुभ दिन आचार्य कुंदकुंद कृत नियमसार की संस्कृत टीका लिखना प्रारंभ किया था। किन्तु फरवरी 1979 में छूट गई। मात्र 74 गाथाओं की टीका हुई थी। पाँच वर्ष के अन्तराल के पश्चात् 21 मई 1984 को पुनः टीका लिखना प्रारंभ कर दिया और 15 नवम्बर 1984 को मात्र साढ़े 5 माह में टीका पूर्ण कर दी। इस दिन मैं (ब्र. मोतीचंद) यहीं था। अतः उक्त टीका की हस्तलिखित प्रति को पालकी में विराजमान करके जुलूस निकाला।

पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की सल्लेखना—मगसिर शुक्ला चतुर्थी, 26 नवम्बर 1984 से रत्नमती माताजी का स्वास्थ्य विशेष रूप से ढीला होने लगा। धीरे-धीरे स्वास्थ्य गिरता गया। पूज्य बड़ी माताजी ने समझ लिया कि अब इनकी विशेषरूप से देखभाल करना आवश्यक है। अब इनका शरीर जवाब दे रहा है। अस्वस्थ होते हुए भी रत्नमती माताजी अपनी दैनिक क्रियाओं में सावधान थीं। आहार छूटता जा रहा था। उन्हें निरन्तर स्वाध्याय भक्तिपाठ आदि सुनाया जा रहा था। माघ वदी 9 दिनाँक 15 जनवरी 1985 को णमोकार महामंत्र सुनते-सुनते अत्यंत शांत परिणामों से स्वर्गसिधार गईं। 13 संतानों को जन्म देने के बाद 13 वर्ष तक 13 प्रकार के चारित्र का अच्छी तरह पालन करते हुए स्त्री पर्याय को सार्थक कर लिया।

पूज्य रत्नमती माताजी की समाधि के पश्चात् अप्रैल 1985 में होने वाली जम्बूद्वीप पंचकल्याणक प्रतिष्ठा निर्विघ्न एवं सानंद सम्पन्न हो, इसके लिए माताजी ने 15 अप्रैल 1985 से 21 अप्रैल 1985 तक प्रतिदिन अनेक विधान कराये। इस मध्य माताजी ने अनेक पूजाओं की रचना की। जम्बूद्वीप पूजा, हस्तिनापुर पूजा, आदिनाथ पूजा आदि। और भी बहुत सारा लेखन कार्य किया। बीच-बीच में प्रतिष्ठा समिति की बैठकें भी होती रहीं। प्रतिष्ठा के चार माह पूर्व से हस्तिनापुर में कार्यों की अधिकता से ज्ञान ज्योति प्रवर्तन में मेरा व रवीन्द्र कुमार का जाना कम हो गया तो संघस्थ ब्र. कु. माधुरी ने अनेकों स्थानों पर जाकर कुशल संचालन किया। इससे पहले भी कुमारी माधुरी (वर्तमान आर्यिका श्री चंदनामती माताजी) ने अनेकों नगरों, शहरों में जाकर अपने ओजस्वी प्रवचनों से महती प्रभावना की। स्थाई रूप से संचालन पं. सुधर्मचंद जी शास्त्री कर ही रहे थे।

उ.प्र. के मुख्यमंत्री का जम्बूद्वीप स्थल पर आगमन—4 मार्च 1985 को उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी जम्बूद्वीप स्थल पर पधारे। उत्तर भारत के इस एकमात्र विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव को शानदार बनाने के लिए उन्होंने रत्नत्रय निलय में बैठकर माताजी से आशीर्वाद लिया। प्रतिष्ठा में बिजली, पानी, सुरक्षा आदि सरकार की तरफ से सुनिश्चित किया। नशिया मार्ग को पक्का बनाकर उसका डामरीकरण कराया। महोत्सव के लिए शासन की तरफ से मंत्री प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी को प्रभारी बनाया। सुमेरु पर अभिषेक के लिए सरकार की तरफ से फोल्डिंग पाइप की सीढ़ियाँ बनाई गईं।

मुनिसंघ पदार्पण तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का झण्डारोहण—आचार्यश्री धर्मसागर जी संघस्थ कुछ मुनि आर्यिकावृंद 22 अप्रैल को जम्बूद्वीप स्थल पर पधारे। उसी दिन झण्डारोहण हुआ तथा रथयात्रापूर्वक भगवान पाण्डाल में विराजमान किये गये। 22 अप्रैल से ही प्रतिष्ठा का कार्यक्रम प्रारंभ हो गया। 26 से 28 अप्रैल तक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। 28 अप्रैल को ज्ञानज्योति रथ की शोभायात्रा निकालकर रथ प्रवर्तन का समापन जम्बूद्वीप स्थल पर हुआ। उसी दिन जम्बूद्वीप रचना के सामने तत्कालीन रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिंहाराव ने ज्ञानज्योति की अखण्ड स्थापना की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

28 अप्रैल से 2 मई तक बहुत भारी प्रभावनापूर्वक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई जिसका वर्णन शब्दों में करना कठिन है। 30 अप्रैल 1985 को प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त कर जम्बूद्वीप रचना का उद्घाटन किया।

पूज्य माताजी गणिनी पद से विभूषित—1 मई 1985 को भगवान ने केवलज्ञान कल्याणक के पश्चात् माताजी की शिष्या आर्यिका श्री जिनमती माताजी ने 'गणिनी' पद की क्रियाएं करवाकर 'गणिनी' पद से विभूषित किया। यह आर्यिकाओं में सर्वोच्च पद होता है। 2 मई को जम्बूद्वीप रचना के सामने अखण्ड ध्वज की स्थापना हुई, तब से निरंतर वह ध्वज लहराता रहता है। 11 वर्ष पूर्व पूज्य माताजी ने जिसका बीजारोपण किया था वह आज 2 मई 1985 को वृक्ष बनकर फलित हुआ, जिसे देखकर माताजी तथा हम सबको अपार हर्ष हुआ। बीच में कुछ विघ्न आये भी और चले गये। उनसे कार्य रुका नहीं, प्रत्युत् अतीव प्रभावना हुई।

2 मई को जम्बूद्वीप रचना में समस्त प्रतिमाएँ विराजमान होने के पश्चात् माताजी ने समस्त कार्यकर्ताओं को बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

24 जून से 3 जुलाई तक तीन मूर्ति मंदिर में एक साथ 3 इन्द्रध्वज मण्डल विधान हुए। तीन मण्डल मांडे गये। तीनों के अलग-अलग यजमान थे।

तीसवाँ चातुर्मास (सन् 1985, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, उ.प्र.)

1 जुलाई 1985, आषाढ़ शुक्ला 14 को माताजी ने जम्बूद्वीप स्थल पर वर्षायोग की स्थापना की। जम्बूद्वीप स्थल पर जम्बूद्वीप रचना के अवशेष कार्य तथा अन्य निर्माण कार्य चल रहे थे। स्वाध्याय, पठन-पाठन भी चल रहे थे। 1 अगस्त-भादों कृ. दूज से माताजी ने जम्बूद्वीप विधान बनाना प्रारंभ किया। कुछ ही पूजाएँ शेष रह गईं थीं कि भादों शुक्ला 12 को माताजी को बुखार आना प्रारंभ हो गया। धीरे-धीरे हालत बिगड़ती गई। कई वैद्य बुलाये गये किन्तु स्थिति और नाजुक हो गई। सीरियस स्थिति को देखते हुए 19 नवम्बर को मेरठ से डॉ. ए.पी. अग्रवाल को बुलाया गया। उन्होंने ठीक से जांच करके पीलिया घोषित कर दिया।

अगले दिन से उल्टी तथा बुखार की दवाई बंद करके पीलिया संबंधी दवाई प्रारंभ की गई। जो कासनी के बीज, सौंफ आदि की ठंडाई लीवर को ठीक करने के लिए आर्यिका रत्नमती माताजी को पहले दी गई थी, वह देना प्रारंभ किया गया। उसके बाद थोड़ा-थोड़ा गन्ने का रस भी दिया गया। धीरे-धीरे उल्टी होना बंद हुई। पेट में आहार रुकने लगा। स्वस्थता आते-आते पूरा चातुर्मास बीत गया। जिस कासनी के बीज आदि की ठंडाई से माताजी को पुनर्जीवन प्राप्त हुआ, वह ठंडाई अभी भी उन्हें आहार में दी जाती है। लीवर को ठीक रखने में यह ठण्डाई रामबाण औषधि है।

माताजी की अस्वस्थता के मध्य ही माताजी के परम भक्त संस्थान के मंत्री श्री अमरचंद जैन होमब्रेड-मेरठ ने 18 से 27 अक्टूबर 1985, आश्विन शुक्ला 5 से 15 (शरदपूर्णिमा) तक इन्द्रध्वज मण्डल विधान का विशाल आयोजन किया। इस शरदपूर्णिमा पर माताजी के जन्म के 51 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव के रूप में बहुत उत्साह के साथ मनाया। किन्तु अत्यन्त कमजोरी के कारण माताजी पांडाल में नहीं जा सकीं। सभी ने माताजी के पास त्यागीभवन में ही जाकर आशीर्वाद लिया।

13 अक्टूबर 1985 को अ.भा.दि. जैन युवा परिषद की कार्यकारिणी की बैठक पूज्य माताजी के सानिध्य में हुई, जिसमें ब्र. रवीन्द्र कुमार को युवा परिषद का राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। माताजी ने धर्म, धर्मात्मा तथा धर्मायतनों की रक्षा के लिए अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

कार्तिक अष्टान्हिका में 17 से 27 नवम्बर 1985 तक श्री मदनलाल जी जैन, टिकैतनगर ने यहाँ तीन मूर्ति मंदिर में इन्द्रध्वज विधान किया। 19 नवम्बर को ही 'पीलिया' रोग घोषित हुआ था। विधान में माताजी की स्थिति उठकर बैठने की नहीं थी अतः अपने कमरे में लेटकर ही पूजाएँ सुनती थीं। वे पूजाएं तथा उनकी जयमालाएं औषधि का काम कर रही थीं।

चातुर्मास के पश्चात्—थोड़ी सी स्वस्थता आने पर 29 दिसम्बर 1985 से माताजी ने पुनः थोड़ा-थोड़ा लेखन प्रारंभ कर दिया। आधा घंटा भी लेखन कर लेने से माताजी को बड़ा संतोष होता था। उन दिनों वयोवृद्ध विद्वान पं. फूलचंद जी सिद्धांतशास्त्री बड़े

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंदिर पर रह रहे थे। उन्होंने कई बार आकर माताजी से निवेदन किया कि मैं आपकी क्या वैयावृत्ति करूँ? स्वाध्याय सुनाने के लिए भी निवेदन किया किन्तु कमजोरी माताजी को इतनी अधिक थी कि स्वाध्याय अधिक देर सुनने की हिम्मत नहीं थी, फिर भी पंडित जी सर्दी में भी आकर नियमसार प्राभृत (माताजी की नियमसार पर टीका वाला ग्रंथ) 29 जनवरी 1986 से सुनाना प्रारंभ कर दिया। पंडित जी ने माताजी द्वारा की गई टीका की बहुत प्रशंसा की। भले ही कुछ विषयों में सैद्धान्तिक मतभेद था, फिर भी उनका व्यवहार सौहार्दपूर्ण रहा। 21 मई 1986 तक उक्त ग्रंथ का स्वाध्याय सुनाकर पूर्ण किया।

माघ तथा फाल्गुन में 16-16 दिन के शुक्ल पक्ष होने से दोनों महीनों में 16-16 दिन के शांति विधान हुए। फाल्गुन की अष्टान्हिका में श्रीमती शकुन्तला देवी-दिल्ली ने सिद्धचक्र विधान भी किया। पूज्य माताजी को इन विधानों पर बहुत पहले से बहुत श्रद्धा रही है। इसी से रोग-शोक नष्ट हो जाते हैं, बड़े-बड़े कार्यों की सिद्धि हो जाती है। इसीलिए अब भी छोटे-बड़े विधान कराती ही रहती हैं।

16 दिसम्बर 1985, मगसिर शुक्ला 5 को तीन मूर्ति मंदिर में आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित क्षेत्रपाल वेदी में विराजमान किये गये।

गुरु-शिष्य का मिलन—सन् 1971 से आर्यिका अभयमती माताजी ने बुंदेलखण्ड के तीर्थों के दर्शन के लिए संघ से अलग विहार कर दिया था। 15 वर्ष के पश्चात् उनको 28 अप्रैल 1986को हस्तिनापुर में गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन हुए। गुरु-शिष्य का मिलन रोमांचक था। बीमारी के कारण 'जम्बूद्वीप विधान' जो अधूरा छूट गया था। उसे 12मई 1986 से पुनः लिखना प्रारंभ करके 12 जून 1986 श्रुतपंचमी के दिन पूरा कर दिया। उसी दिन हस्तलिखित विधान की प्रति धवला ग्रंथ तथा मूलाचार ग्रंथ को पालकी में विराजमान करके शोभायात्रा निकाली। श्रुतपंचमी पर्व मनाया।

इन्द्रध्वज विधान एवं प्रशिक्षण शिविर—ज्येष्ठ शु. 12 दिनाँक 19 जून से श्री अमरचंद जैन-होमब्रेड ने तीसरी बार माताजी के सानिध्य में इन्द्रध्वज विधान कराया। इसी मध्य अमरचंद जी ने विद्वानों के लिए प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन रखा, जिसमें 50 विद्वानों ने तत्त्वार्थसूत्र तथा दशधर्मों पर प्रवचनों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस शिविर के कुलपति प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी-फिरोजाबाद को बनाया गया था।

माताजी के आदेशानुसार 14 से 21 मई 1986 तक निकटवर्ती सरधना नगर में शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें मैंने (ब्र. मोतीचंद ने) भी वहाँ जाकर बालक-बालिकाओं तथा प्रौढ़ वर्ग में धर्म के संस्कार डाले। अभी तक जम्बूद्वीप रचना के अवशेष कार्य पूरे किये जा रहे थे। वेदियों में शीशे के पल्ले लगाकर 17 जुलाई तक तीन बार में समस्त प्रतिमाएँ विराजमान कर दी गईं। जिससे माताजी के मन में बड़ा संतोष हुआ।

चातुर्मास के पश्चात्-

दीक्षा के लिए श्रीफल चढ़ाकर प्रार्थना—मैंने (ब्र0 मोतीचंद ने) 21 फरवरी 1986- माघ शु012 को पूज्य माताजी के समक्ष श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया कि माताजी! मैं क्षुल्लक दीक्षा लेना चाहता हूँ, मुझे आज्ञा प्रदान कीजिये। माताजी ने कुछ देर सोच -विचार करके उचित समय जानकर सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। उस समय माताजी ने वात्सल्यवश यह भी कहा कि "आचार्य संघ को हस्तिनापुर लाकर यहीं दीक्षा लो।" माताजी के आदेशानुसार रवीन्द्र कुमार, जिनेन्द्र प्रसाद ठेकेदार तथा कैलाशचन्द करोलबाग, विमलसागर जी महाराज से निवेदन करने 27 फरवरी को यहाँ से इन्दौर गये। आचार्यश्री से निवेदन करके 2 मार्च को वापिस आकर माताजी को बताया कि ''आचार्यश्री इन्दौर से फिरोजाबाद जाकर वहाँ से चातुर्मास करने के पश्चात् हस्तिनापुर आकर दीक्षा प्रदान करेंगे।'' अर्थात् एक वर्ष बाद दीक्षा हो सकेगी। फिरोजाबाद चातुर्मास के मध्य मैं भादों वदी 12, 1 सितम्बर को रवीन्द्र कुमार तथा पं0सुधर्मचंद जी के साथ फिरोजाबाद गया। आचार्य श्री के समक्ष श्रीफल चढ़ाया। आचार्यश्री ने कहा-फाल्गुन (मार्च) में दीक्षा का मुहूर्त है। दीक्षा के लिए एक वर्ष का समय निकालना भारी महसूस हो रहा था, फिर भी समय निकालना ही पड़ा। 5 सितम्बर-भादों सुदी 1 को पिता श्री अमोलक चन्द जी सर्राफ का स्वर्गवास हो गया। पिता के वियोग का दुःख तो हुआ ही, उसके अतिरिक्त मन में कई दिन तक यह भी खेद रहा कि ''मैं उनके सामने दीक्षा नहीं ले सका' '5 सितम्बर भादों सुदी 1 से 16 सितंबर भादों सुदी 13 तक श्री पल्टूमल जैन दिल्ली व उनके दामाद श्रीराजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स दिल्ली ने पूज्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी के सानिध्य में तीनमूर्ति मन्दिर में इन्द्रध्वज विधान किया। मध्य के समय का सदुपयोग करते हुए मैंने तीर्थयात्रायें की पुनः 12 अक्टूबर 1986 आश्विन शु010 (विजयादशमी) को फिरोजाबाद जाकर दीक्षा की तिथि सुनिश्चित करने के लिए आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज के समक्ष श्रीफल चढ़ाया। आचार्य महाराज ने 8 मार्च-फाल्गुन शुक्ला 9 रविवार को दीक्षा का शुभ मुहूर्त बतलाया। मेरे साथ वहाँ रवीन्द्र कुमार, जिनेंद्र प्रसाद ठेकेदार, राजेन्द्र प्रसाद कम्मोजी दिल्ली एवं सुरेश चंद गोटे वाले गये थे। बीच-बीच में मैं यात्राएँ करता रहा। 19 अक्टूबर को माताजी का 53वाँ जन्मदिन विशेष समारोहपूर्वक मनाया गया। मेले का आयोजन किया गया था। 20 अक्टूबर को हस्तिनापुर से हरिद्वार होकर बद्रीनाथ की यात्रा करके 25 अक्टूबर को वापस सकुशल हस्तिनापुर आ गये।

कमल मंदिर का शिलान्यास—26 अक्टूबर 1986 दिन रविवार, भादों वदी 8 के शुभ दिन श्री राजकुमार जैन वीराबिल्डर्स एवं श्रीपल्टूमल जैन दिल्ली ने कमल मंदिर का शिलान्यास किया, यहीं पर प्रारंभ में एक कमरा बनाकर भगवान महावीर स्वामी की कल्पवृक्षस्वरुप सवा नौ फुट उत्तुंगा खड़गासन प्रतिमा विराजमान की गयी थीं, इसी को घेरकर चारों तरफ कमलाकार मंदिर बनाया गया। प्रतिमा जहाँ की तहाँ खड़ी रहीं। कमरे के चारों तरफ की दीवारें हटा दी गयीं।

रवीन्द्र कुमार जी ने मेरी दीक्षा के साथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की भी घोषणा कर दी। भगवान नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमाएँ लाई गयीं। 25 फरवरी से यात्राओं का सिलसिला बंद हुआ। 8 फरवरी 1987 माघ शुक्ला 10 को माताजी ने तीनलोक विधान लिखकर पूरा किया, उसका नाम "सर्वतोभद्र विधान" रखा गया।

इक्कीसवाँ चातुर्मास (1986-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में)

14 जुलाई से 22 जुलाई तक होने वाले इन्द्रध्वज विधान के मध्य 20 जुलाई को माताजी ने चातुर्मास की स्थापना की। इसमें दो मंडल एक साथ बनाये गये। एक आनंदप्रकाशजी (सोरम वाले) दिल्ली वालों की ओर से तथा दूसरा प्रकाशचंद सुभाषचंद जैन टिकैतनगर की तरफ से। सौं. श्रीमती जैन ध0प0 प्रेमचंद जैन बहराइच वालों ने भादों वदी 3 से 12, तदनुसार 22 अगस्त से 1 सितंबर तक बहराइच में इन्द्रध्वज विधान कराया उसमें माताजी ने मुझे (ब्र0मोतीचंद) रवीन्द्र कुमार तथा माधुरी को भेजा। वहाँ अच्छी धर्मप्रभावना हुई।

सन् 1983 से कई बार माताजी के भाव 'कल्पद्रुम' विधान बनाने के हुए। उसमें लिखी जाने वाली पूजाओं की रूपरेखा भी माताजी ने लिखी। किन्तु पहले व्यस्तता के कारण तथा बाद में अस्वस्थता के कारण वह कार्य संभव नहीं हो सका। एक दिन अस्वस्थ अवस्था में माताजी ने माधुरी से कहा कि मेरे बाद तुम इस विधान को बनाना। माधुरी ने कहा माताजी ! आप जल्दी स्वस्थ होकर आप ही बनावेंगी। विधान तो क्या, और भी बहुत सारे धर्मप्रभावना के कार्य आपके द्वारा होना है।

थोड़ी स्वस्थता प्राप्त होते ही माताजी के मस्तिष्क में 8 जुलाई 1986 आषाढ़ शु01 की रात्रि में रूपरेखा प्रस्फुटित हुई और 9 जुलाई को प्रातः 5:45 पर रत्नत्रय निलय में "ॐ नमः सिद्धेभ्यः" लिखकर विधान पूजा लिखना प्रारंभ कर दिया और मन में यह सोचा कि जब भक्तामर स्तोत्र की रचना से मानतुंगाचार्य के 48 ताले टूट गये, एकीभावस्तोत्र की रचना से वादिराज मुनिराज का कुष्ठ रोग दूर हो गया, तो इस महान कल्पद्रुम विधान की रचना से मेरा शरीर स्वस्थ हो जावे, तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ! और हुआ ऐसा ही। 17 अक्टूबर1986 की शरदपूर्णिमा के दिन रचना पूर्ण हो गई, माताजी के हर्ष का पार नही रहा, वह दिन माताजी का 53वाँ जन्मदिन था, उसी दिन माताजी ने तीनलोक विधान की रचना प्रारंभ कर दी।

17 से 19 अक्टूबर तक त्रिदिवसीय जन्मदिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिल्ली तथा आसपास के अनेक नगरों से बसें आयीं। मध्य प्रदेश तथा अवध प्रांत से अनेक भक्तगण पधारे, अनेक विद्वान भी आये। उल्लासपूर्ण वातावरण में माताजी का जन्मदिन मनाया गया। अनेकों वक्ताओं ने माताजी के प्रति विनयांजलि समर्पित करते हुए उनके दीर्घ जीवन की मंगल कामना की। माताजी ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इस प्रकार विविध उपलब्धियों के साथ वर्षायोग पूर्ण हुआ।

आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का ससंघ हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण—मुझे दीक्षा प्रदान करने के लिए तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न कराने के लिए वात्सल्यदिवाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का ससंघ 1 मार्च 1986

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फाल्गुन शुक्ला दूज को जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण हुआ। संघ के आगमन से माताजी तथा हम लोगों को अतीव हर्ष हुआ। माताजी की प्रेरणा से नवनिर्मित तीन लोक विधान 20 फरवरी से मैंने प्रारंभ किया था, वह 1 मार्च को आचार्यश्री के समक्ष पूर्ण हुआ।

2 मार्च से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा प्रारंभ हो गई झण्डारोहण से पंचकल्याणक के समस्त कार्यक्रम माताजी तथा आचार्यसंघ के सानिध्य में क्रमशः सम्पन्न होने लगे। 8 मार्च रविवार, फाल्गुन शुक्ला 9 का वह शुभ दिन आ गया। प्रातः पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अंतर्गत जन्मकल्याणक मनाया गया। सुमेरू की पांडुकशिला पर जन्माभिषेक हुआ। मध्यान्ह में श्रीविमल मंडप में विशाल जनसमूह के मध्य आचार्यश्री ने मेरी क्षुल्लक दीक्षा की विधि प्रारंभ की, दीक्षा संस्कार करके "क्षुल्लक मोतीसागर" नाम घोषित किया। समारोह के मुख्य अतिथि तत्कालीन केन्द्रीय रेलमंत्री श्री माधवराव सिंधिया थे।

दीक्षा के अवसर पर गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने बहुत ही मार्मिक उद्गार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि- "मैंने सनावद में अमोलकचंद जैनरूपी सागर से मोती को लिया था, आज आचार्यश्री ने पुनः मोती को सागर से जोड़कर "क्षुल्लक मोतीसागर" बना दिया।" 9 मार्च को माँ रूपाबाई तथा संघस्थ कु0 माधुरी ने आचार्य श्री विमलसागर जी, उपाध्याय श्री भरत सागर जी, गणिनी ज्ञानमती माताजी तथा नवदीक्षित क्षुल्लक मोतीसागर आदि 9 साधुओं का पड़गाहन कर आहार दिया। 11 मार्च-फाल्गुन शु0 11 को मोक्षकल्याणकपूर्वक प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न हुई। पूज्य माताजी की भावनानुसार मुझे हस्तिनापुर में ही छोड़कर 17 मार्च 1987, चैत्र कृष्णा दूज को आचार्यसंघ का मेरठ की तरफ मंगल विहार हो गया। आचार्यसंघ के साथ 34 साधु-साध्वी थे।

22 अप्रैल-वैशाख कृष्णा 9 को सीकर (राज.) में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के तृतीय पट्टाधीश आचार्य श्री धर्मसागरजी महाराज का समाधिपूर्वक स्वर्गारोहण हो गया। उसके अगले दिन माताजी के सानिध्य में हस्तिनापुर में उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अनंतर 6 मई, बैसाख शु0 8 को उपाध्याय श्री अजितसागर जी महाराज के लिए आचार्यपद की घोषणा की गई। 7 जून ज्येष्ठ शुक्ला 10 को उदयपुर में विशाल जनसमुदाय तथा चतुर्विध संघ के सानिध्य में चतुर्थ आचार्यपट्ट प्रदान किया गया।

आचार्य श्रीधर्मसागर जी महाराज की समाधि के एक माह बाद ही आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज की उनकी जन्मभूमि कोथली में ही (28 मई 1987 ज्येष्ठ शुक्ला 1 को) समाधि होने के समाचार अचानक प्राप्त कर पूज्य माताजी तथा संघ के सभी लोग हतप्रभ रह गये। समाचार प्राप्त होने पर पूज्य माताजी के सानिध्य में उनके प्रति भी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई । आचार्यश्री ने पूज्य माताजी को 1953 में श्री महावीर जी में क्षुल्लिका दीक्षा देकर "क्षुल्लिका वीरमती" नाम प्रदान किया था।

गुजरात में शिक्षण शिविर—गुजरात प्रदेश के धर्मनिष्ठ महानुभावों के विशेष निवेदन पर पूज्य माताजी के आशीर्वाद से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध, संस्थान हस्तिनापुर द्वारा 31 मई से 8 जून 1987 तक अहमदाबाद में एक विशाल शिक्षण शिविर का आयोजन पूरे गुजरात प्रदेश के स्तर पर आयोजित किया गया। जिसमें अनेक नगरों से 1000 से अधिक स्त्री-पुरुषों तथा बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। उसमें माताजी की शिष्या कु. माधुरी (वर्तमान आर्यिका श्री चंदनामती माताजी) के साथ अनेक विद्वानों ने वहाँ जाकर शिक्षण प्रदान किया। उस शिविर को तथा चंदनामती माताजी को आज भी गुजरात वाले याद करते हैं। वैसा शिविर न उससे पहले न उसके बाद आज तक हुआ। उस शिविर के माध्यम से ही हस्तिनापुर के वीरसागर विद्यापीठ में 15-20 विद्यार्थी पढ़ने के लिए आये थे।

बत्तीसवाँ चातुर्मास (1987- जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में)

10 जुलाई 1987 आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को माताजी ने 35वाँ चातुर्मास जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित किया। उस समय 15 जुलाई से 24 जुलाई-श्रावण कृ. 5 से श्रावण कृ. 14 तक श्रीमती हीरामणी जी महमूदाबाद तथा श्री कमलचंद जैन, खारी बावली दिल्ली ने तीन मूर्ति मंदिर में दो अलग-अलग मंडल मांडकर बहुत उत्साह के साथ इन्द्रध्वज विधान किये। विधान पूजन के अतिरिक्त मध्यान्ह में छहढाला आदि की कक्षाएँ भी चलाई गईं।

वर्ष 1987 में माताजी ने विविध प्रकार का लेखन कार्य किया। "कल्याण कल्पतरू स्तोत्र" नाम से स्वरचित संस्कृत की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुर्विंशति स्तुति का अन्वय अर्थ हिन्दी में, आचार्य पूज्यपादकृत संस्कृत पंचामृत अभिषेक का हिन्दी पद्यानुवाद, सकलीकरण-हवन आदि की विधि के संस्कृत श्लोकों का भावरूप पद्यानुवाद करके "मण्डल विधान प्रारम्भ विधितथा हवनविधि" नाम से पुस्तक का सृजन, भगवान नेमिनाथ उपन्यास आदि का लेखन किया। इन दिनों में "मेरी स्मृतियाँ" नाम से एक सुंदर आत्मकथा का लेखन भी चल रहा था।

स्वास्थ्य लाभ होने के बाद माताजी का चिंतन चल रहा था कि साधु जीवन के 6 काल माने हैं- (1) दीक्षा (2) शिक्षा (3) गणपोषण (4) आत्म संस्कार (5) सल्लेखना (6) उत्तमार्थ। इनमें से प्रारंभ के तीन कार्य अच्छी तरह हो चुके हैं, अब आगे चौथे का नम्बर आ रहा है अतः दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की भावी गतिविधियों के सुदृढ़ संचालन हेतु एक नवीन रूपरेखा बनाई।

क्षुल्लक मोतीसागर को पीठाधीश बनाया—2 अगस्त 1987 रविवार श्रावण शुक्ला सप्तमी को दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की बैठक आहूत की गई, जिसमें माताजी की आज्ञा से तीन वर्ष के लिए नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन किया गया। जिसके अन्तर्गत ब्र. रवीन्द्र कुमार को अध्यक्ष, श्री जिनेंद्रप्रसाद ठेकेदार दिल्ली को कार्याध्यक्ष, श्री गणेशीलाल रानीवाला कोटा को महामंत्री तथा कु. माधुरी को मंत्री पद का भार सौंपा गया। अब तक संस्थान के कार्यों में प्रेरणा तथा मार्गदर्शन माताजी देती रहती थीं किन्तु अब आगे से क्षुल्लक मोतीसागर पर यह भार डाला जा रहा है, उन्हें स्थाईरूप से "पीठाधीश" पद पर अधिष्ठापित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त संस्थान की गतिविधियों को सुचारूरूप से देखने व चलाने के लिए एक "स्थाई समिति" का भी गठन किया गया, जिसमें सात व्यक्तियों को स्थाईरूप में लिया गया। इस भावी व्यवस्था की उपस्थित सभी महानुभावों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। अगले दिन स्थाई समिति के सदस्यों ने पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर का पादप्रक्षाल करके नूतन वस्त्र-चादर-लंगोट अर्पित किये। पूज्य माताजी ने नवीन पिच्छी प्रदान कर मंगल आशीर्वाद दिया।

इस वर्ष का दशलक्षण पर्व—इस वर्ष 1987 में माताजी ने रवीन्द्र कुमार को डॉ0 श्रेयांस कुमार बड़ौत के साथ तलौद (गुजरात), कु. माधुरी को बड़ौदा तथा पं. सुधर्मचंद, पं. प्रवीण चंद, पं. नरेश कुमार को भी गुजरात ही दशलक्षण पर्व में प्रवचन करने के लिए भेजा, अच्छी प्रभावना हुई। हस्तिनापुर में मैंने तत्वार्थसूत्र तथा दशधर्मों पर प्रवचन किये। आश्विन कृष्णा 7से आश्विन शुक्ला 1, दि. 14 से 24 सितम्बर तक श्री पुतानचंद जैन फतेहपुर वालों ने सपरिवार इन्द्रध्वज विधान किया।

आश्विन कृष्णा 14 (दि. 21 सितम्बर 1987) को मेरा 48वाँ जन्मदिन था। उस समय सनावद (म.प्र.) से (माँ) रूपाबाई तथा (बहन) किरणबाई चौधरी यहाँ आई हुई थीं। उन्होंने स्नेहवश जन्मदिवस का एक छोटा सा कार्यक्रम पूज्य माताजी से आज्ञा लेकर रख दिया। मैंने कहा-माताजी के समक्ष मेरे जन्मदिवस का कार्यक्रम अच्छा नहीं लगता............। इस पर माताजी ने कहा कि- बेटे-बटियों का माता के सामने गुणगान होता है, तो अच्छा ही है, होने दो................।

शरदपूर्णिमा आ रही थी 7 अक्टूबर बुधवार को किन्तु दिल्ली तथा आसपास के शहर वालों की सुविधा को देखते हुए 4 अक्टूबर रविवार आश्विन शुक्ला 12 को ही पूज्य माताजी के 54 वें जन्मजयंती महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिल्ली, पूर्वी उत्तरप्रदेश, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, म.प्र., राजस्थान, महाराष्ट्र, आसाम, हरियाणा आदि अनेक प्रदेशों के नगरों व शहरों से हस्तिनापुर आकर भक्तों ने जन्मजयन्ती समारोह में भाग लिया। पूज्य माताजी अपने प्रत्येक जन्मदिवस पर यह अवश्य बताती हैं कि शरद पूर्णिमा के दिन केवल मेरे शरीर का ही जन्म नहीं हुआ प्रत्युत् त्याग और संयम का भी आज ही जन्म हुआ था। सन् 1952 में बाराबंकी (उ.प्र) में शरदपूर्णिमा के दिन ही आजीवन ब्रह्मचर्य तथा गृहत्यागरूप सप्तम प्रतिमा के व्रत प्राप्त किये थे पुनः 7 अक्टूबर शरदपूर्णिमा को संघ के ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी शिष्यों ने तथा संस्थान के सदस्यों ने माताजी के पादप्रक्षाल करके पूजन की तथा 54 दीपकों से आरती उतारी। उसी दिन संस्थान की "स्थाई समिति" के सदस्यों ने पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर को (मुझे) रजत प्रशस्ति पत्र भेंट की, जिसे रत्नत्रय निलय-त्यागीभवन में लगा दिया गया।

जन्म जयंती के पावन अवसर पर श्री पुरुषोत्तमदास जैन जगाधरी (हरियाणा) वालों ने 2 अक्टूबर-आश्विन शुक्ला 10 से 11 अक्टूबर कार्तिक वदी 5 तक इन्द्रध्वज विधान किया। 20 अक्टूबर 1987 कार्तिक वदी 13 को महावीर मंदिर में विराजमान छोटी प्रतिमाओं को वहाँ से लाकर तीन मूर्ति मंदिर में अस्थाई अलमारी बनाकर उसमें लोहे का मजबूत दरवाजा लगाकर उसमें विराजमान किया गया। वे प्रतिमाएँ अभी भी उसी अस्थाई अलमारी में विराजमान हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस अक्टूबर माह में यहाँ के अतिरिक्त लखनऊ में श्री कैलाशचंद सर्राफ टिकैतनगर वालों ने, आश्विन शुक्ला में श्री वीरेन्द्र कुमार जैन ने, उसके बाद निकटवर्ती दरियाबाद में इन्द्रध्वज विधान हुये। देश में अन्यत्र भी अनेकों नगरों में इन्द्रध्वज विधान हो रहे थे। इन्द्रध्वज विधानों की सर्वत्र धूम सुनकर माताजी को बहुत प्रसन्नता होती थी क्योंकि वह उनके द्वारा ही भक्ति से रचे गये पदों की रचना थी।

अद्वितीय जम्बूद्वीप मंडल विधान पूजन—देश में सर्वत्र मंदिर या पंडाल में मंडल विधान की रचना करके पूजा की जाती है किन्तु यहाँ जम्बूद्वीप स्थल पर साक्षात् जम्बूद्वीप रचना के सामने पंडाल बनाकर उसमें पूजा करते हुए जम्बूद्वीप रचना में यथास्थान 1008 अर्घ्य व जयमाला में श्रीफल चढ़ाये गये। यह विधान 27 अक्टूबर 1987 कार्तिक शुक्ला 5 से प्रारंभ होकर कार्तिक शु. 14 दि.4 नवम्बर तक हुआ। इसके आयोजनकर्ता परमगुरुभक्त श्रीआनंद प्रकाशजी जैन (सोरम वाले) गांधी नगर दिल्ली थे, उनके साथ अनेक श्रावकों ने भी विधान-पूजन में भाग लिया। इस प्रकार के विधान का पहला ही अवसर था। बहुत ही आनंद आया। उसके बाद फिर उस प्रकार का विधान जम्बूद्वीप रचना के सामने नहीं हो सका।

चातुर्मास के पश्चात्—प्रतिदिन माताजी के सानिध्य में हम लोग स्वाध्याय पढ़ते थे। यात्रियों के लिए प्रातः-मध्यान्ह में प्रवचन भी होते थे। माताजी विभिन्न विषयों के लेखन में लगी रहती थीं। मेरे पास ग्रंथों की प्रूफरीडिंग का विशेष कार्य रहता था निर्माण कार्यों को कराने, बाहर जाने आने में, ऑफिस के कार्यों में रवीन्द्र कुमार व्यस्त रहते थे। कु. माधुरी संघ की परिचर्या के अतिरिक्त माताजी के आदेशानुसार नूतन रचनाओं का सृजन तथा प्रतिमाह सम्यग्ज्ञान पत्रिका के लिए लेख कविताएँ लिखती रहती थीं।

जम्बूद्वीप स्थल पर पहली बार कल्पद्रुम विधान का आयोजन—सन् 1986 की आश्विन शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) के शुभ दिन मात्र साढ़े तीन माह में यह कल्पद्रुम विधान लिखकर माताजी ने तैयार कर दिया था। इस समय छोटीसा टिकैतनगर उस हस्तलिखित प्रति को अपने हाथ में रखकर रथ में बैठे थे, तभी उन्होंने कह दिया था कि- "माताजी! मैं ही इस विधान को छपवाऊंगा और मैं ही सबसे पहले आपके सानिध्य में जम्बूद्वीप स्थल पर कराऊंगा।" तदनुसार उन्हें ही जम्बूद्वीप स्थल पर माताजी के सानिध्य में पहली बार इस विधान को करने का अवसर प्राप्त हुआ। 24 फरवरी 1988 फाल्गुन शुक्ला 8 से 15 तक यह विधान तीनमूर्ति मंदिर में बहुत ठाठ-बाट के साथ सम्पन्न हुआ छोटीसा सहित 5 महानुभावों को चक्रवर्ती बनाया। गोलाकार सुंदर समवसरण की रचना की गई। धातु से नवनिर्मित गंधकुटी, मानस्तंभ, तोरणद्वार, ध्वजाएं चैत्यवृक्ष, सिद्धार्थवृक्ष आदि मंडल पर पहली बार रखे गये जिससे अद्भुत शोभा व्याप्त हो गई। विधान में लिखित विधि के अनुसार चारों प्रकार का दान लगातार 8 दिन तक खूब बांटा गया, इस अवसर पर योगीराज फूलचंद जैन छतरपुर (म.प्र.) को बुलाया गया था, वे प्राणयाम तथा योग में पूर्ण निष्णात हैं । उन्होंने अनेक प्रकार के रोगों के लिए अनेक प्रकार के योग तथा प्राणायाम सिखाये। उससे सीखने वालों को स्वास्थ्य लाभ हुआ।

सन् 1988 में चैत्र वदी 9 को प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती मनाने की विशेष प्रेरणा माताजी ने जनमानस को दी और उसका कारण यह बताया कि इससे आम जनता की यह भ्रांत धारणा दूर होगी कि 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक हैं क्योंकि चौबीसवें तीर्थंकर संस्थापक नहीं हो सकते भगवान महावीर से पहले 23 तीर्थंकर हो चुके हैं। जम्बूद्वीप स्थल पर भी ऋषभदेव जन्मजयंती मनाई गई।

समय-समय पर विशेष प्रवचन—जम्बूद्वीप स्थल पर यदा-कदा होमगार्ड, एन.सी.सी., केडेट, मिलिट्री के जवानों के समूह आते रहते थे। उन्हें माताजी को उपदेश देने में विशेष आनंद इसलिए आता था क्योंकि उन्हें मांस-मदिरा का त्याग करने की प्रेरणा दी जाती थी और जब उनमें से अधिक या थोड़े लोग त्याग कर देते थे, तब अपार हर्ष होता था। प्रतिदिन कई अजैन भी दर्शनार्थ आते रहते थे, उन्हें भी अंडें, मांस, मदिरा का त्याग करवाकर छोटा मंत्र "ॐ नमः" सुख-शांति के लिए देती रहती थीं। यह क्रम अब भी चलता रहता है।

वर्ष के अंतर्गत आने वाले अनेक छोटे-बड़े पर्वों को माताजी यहाँ भी मनवातीं तथा आने वाले यात्रियों को भी प्रेरणा देती थीं तथा अब भी देती हैं जिससे धर्म की प्रभावना सदैव होती रहे तथा नई पीढ़ी को भी उन पर्वों की महत्ता का परिचय होता रहे।

अक्षय तृतीया मेला—भगवान ऋषभदेव का एक वर्ष के उपवास के बाद हस्तिनापुर में वैशाख शु. तीज को प्रथम आहार हुआ था, उस उपलक्ष्य में श्वेताम्बर जैन समाज में वर्षी तप करने की परंपरा है। वर्षी तप करने वाले एक दिन भोजन, अगले दिन केवल पानी, यह क्रम पूरे वर्ष भर तक चलाते हैं। उस क्रम में वैशाख शु. तृतीया को वे वर्षी तप करने वाले उस दिन यहाँ अंतिम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पारणा करते हैं वह तिथि अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हो गई। उस दिन प्रतिवर्ष श्वेताम्बर समाज का बड़ा मेला लगता है। माताजी की तीव्र भावना रही कि इस अवसर पर दिगम्बर समाज भी हस्तिनापुर आकर अच्छे स्तर से इस पर्व को मनावे किन्तु उनकी वह भावना अब तक भी सफल नहीं हो पाई। फिर भी माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप स्थल पर अक्षय तृतीया के दिन प्रतिवर्ष रथयात्रा निकाली जाती है। प्रसाद रूप में इक्षुरस बांटा जाता है। अभी यहाँ 9 फुट उत्तुग खड्गासन भगवान ऋषभदेव की आहारदान की प्रतिमा तीन कल्याणकों से प्रतिष्ठित विराजमान है और साथ में राजा श्रेयांस आहार देते हुए खड़े किये हैं। उसी उपलक्ष्य में अक्षयतृतीया के दिन भगवान को इक्षुरस का आहार देकर प्राचीन राजा श्रेयांस द्वारा दिये गये प्रथम आहार के दिवस को याद कर श्रद्धालु कृतकृत्य होते रहते हैं।

आचार्य कल्प श्रुतसागर जी का समाधिमरण—जब पूज्य माताजी ने यह समाचार सुना कि लूणवा (सीकर) राज. में आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी महाराज ने 28 अप्रैल को चतुर्विध आहार का त्याग कर दिया शीघ्र ही समाधिमरण की तैयारी है अत: यहाँ स्वाध्याय बंद करके तीन दिन तक प्रात: सायं णमोकार मंत्र का पाठ कराया। यहाँ से गये रवीन्द्र कुमार तथा कु. माधुरी ने 6 मई 1988 शुक्रवार जेष्ठ वदी 5 को फोन से सूचना दी कि आ.क. श्री श्रुतसागरजी महाराज का समाधि मरण हो गया,तभी यहाँ सभा का आयोजन करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आ.क. श्रुतसागर महाराज संघ के वरिष्ठतम साधु थे। क्षुल्लक अवस्था से ही माताजी के प्रति विशेष वात्सल्य था। उन्होंने 12वर्ष की समाधि ले रखी थी।

आचार्य मुनि श्री दर्शनसागरजी महाराज हस्तिनापुर पधारे—सहारनपुर में सन् 1988 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कांजीपंथी विद्वानों के द्वारा हो रही थी। उन विद्वानों ने धूप खेने से मना कर दिया अत: वहाँ की समाज ने उन विद्वानों का बहिष्कार कर दिया। दिल्ली से आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज को ले गये। उनके सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्य पं. फतहसागर जी उदयपुर वालों से प्रतिष्ठा करवाई। उन्हीं दिनों में दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर हस्तिनापुर में कांजीपंथ का शिविर न लगने वाला था । बड़ौत, खतौली आदि आसपास की जैन समाज के विशेष आग्रह से आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज 13 मई 1988 ज्येष्ठ शु. 12 को हस्तिनापुर आये ओर बड़े मंदिर में ठहरे। बड़े मंदिर की कमेटी वालों को कांजीपंथी शिविर लगाने के लिए कहा जब नहीं माने, तो आसपास व दिल्ली की मुनिभक्त समाज ने खुले आम विरोध कर दिया। अंततोगत्वा हस्तिनापुर में शिविर न लगकर मवाना में लगाना पड़ा। वे मुनिराज जम्बूद्वीप दर्शन तथा आहार के लिए भी आ जाते थे। माताजी से चर्चा-वार्ता, विचार-विमर्श भी करते थे। आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज की निर्भीकता को देखते हुए उन्हें जम्बूद्वीप स्थल पर माताजी की प्रेरणा से आसपास की जनता ने मिलकर 'धर्म केसरी' की उपाधि से अलंकृत किया।

समयसार की दोनों टीकाओं का हिन्दी अनुवाद—ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुत पंचमी) 19 जून 1988 को जिनवाणी की पूजा के अनंतर पूज्य माताजी ने समयसार ग्रंथराज की आचार्य अमृतचन्द्र तथा आचार्य जयसेनकृत संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद करना प्रारंभ किया। टीका के साथ-साथ विषय को स्पष्ट करने के लिए उनमें भावार्थ तथा विशेषार्थ भी दिये जिससे पढ़ने वालों को विषय हृदयंगम करने में सरलता हो गई। इस ग्रंथ की दोनों टीकाओं के हिन्दी अनुवाद करने में जो भाव आये, वह माताजी ने "मेरी स्मृतियाँ ग्रंथ" में इन शब्दों में लिखा है। "इस ग्रंथ के अनुवाद में मुझे जो आनंद आया, शब्दों से परे है।"

ज्येष्ठ शुक्ला तीज- 17 जून 1988 से 21 जून 1988 तक श्री शांतिलाल जी गंगवाल इम्फाल वालों ने तीन मूर्ति मंदिर में इन्द्रध्वज विधान कराया। उसमें माताजी ने प्रतिदिन प्रवचन दिया। कु. माधुरी ने सामायिक विधि सिखाई तथा 'ह्रीं' का ध्यान कराया। सबको बहुत आनंद आया।

ग्रीष्मावकाश में अवध प्रांत से आये हुए बालक-बालिकाओं के लिए शिक्षण शिविर लगाया गया। उसमें मैनें, कु. माधुरी, पं. प्रवीणचंद, पं. नरेशकुमार आदि ने उनको अनेक विषयों का अध्ययन कराया। विधि विधान प्रारंभ विधि तथा हवन विधि भी सिखाई। माताजी ने प्रवचन दिये। बच्चों ने खूब लाभ लिया। छुट्टियों में गुरु के पास आना सार्थक हो गया।

आषाढ़ की अष्टान्हिका में एक साथ दो इन्द्रध्वज विधान- श्रीमती शांतिदेवी ध.प. श्री राजकुमार जैन डालीगंज तथा उनके सुपुत्र सुशील कुमार जैन ने सपरिवार आकर तथा श्री विजेन्द्र कुमार जैन शालीमारबाग दिल्ली ने सपरिवार आकर इन्द्रध्वज विधान किया। एक ने बीस पंथ से, दूसरे ने तेरह पंथ से विधान किया। ऐसी समन्वयात्मक दृष्टि अन्यत्र देखने को बहुत कम मिलेगी। बहुत ही भक्ति विभोर होकर आनंद से दोनों ग्रुप अपनी-अपनी विधि से पूजा करते थे। माताजी के प्रवचन प्रतिदिन सुनते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य वीरसागर संस्कृत विद्यापीठ—विद्यापीठ के एक विद्यार्थी कमलेश कुमार ने 25 जुलाई 1988 को पूज्य माताजी से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया, जिससे माताजी को प्रसन्नता हुई। इस विद्यापीठ के विद्यार्थी ब्र. सुरेश जैन कोटड़िया एवं सुभाष जैन बंडा ने मुनि दीक्षा लेकर जीवन सार्थक किया है जिसका माताजी को व हमें विशेष गौरव है।

तैंतीसवाँ चातुर्मास (1988-जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में)

संस्थान के पदाधिकारी तथा सदस्यों एवं आसपास के जैन समाज के महानुभावों के निवेदन पर वर्ष 1988 का चातुर्मास हस्तिनापुर में ही 27 जुलाई को स्थापित किया। चातुर्मास में अनेक छोटे-बड़े विधान होते रहे। पूज्य माताजी द्वारा लेखन कार्य भी सतत चलता रहा। समय-समय पर प्रवचन भी होते रहते थे। दशलक्षण पर्व में अहमदाबाद से चंदूभाई, दिनेशभाई आदि कुछ श्रावक-श्राविकायें आ गये थे, अन्य स्थानों के भी श्रावक आ गये थे। पर्व पूजाओं के अतिरिक्त दस धर्म, तत्वार्थ सूत्र पर मेरे व माताजी के प्रवचन होते थे। कु. माधुरी तथा रवीन्द्र कुमार पर्व में बड़ौत में आयोजित कल्पद्रुम विधान कराने गये थे। आश्विन कृष्णा में हापुड़ में इन्द्रध्वज विधान हुआ, उसमें कु. माधुरी को ले गये थे। वहाँ बहुत उत्साह था।

कल्पद्रुम विधान—16 अक्टूबर 1988, आसौज शुक्ला 5 से जम्बूद्वीप स्थल पर श्री मांगीलाल जी पहाड़े हैदराबाद ने सपरिवार उत्साहपूर्वक कल्पद्रुम विधान किया विधान पर्यन्त चारों प्रकार के दान भी बांटे गये। शरद पूर्णिमा-25 अक्टूबर को पूज्य माताजी का 54वाँ जन्मदिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। श्री बाबूलाल जी, मांगीलालजी पहाड़े परिवार की पुत्रवधुओं तथा बालक-बालिकाओं ने मिलकर पूज्य माताजी के जीवन पर एक छोटा सा एकांकी प्रस्तुत किया। बहुत ही रोमांचक रहा। यह पहाड़े परिवार सन् 1964 से पूज्य माताजी का परम भक्त है। जब तक श्री मांगीलाल जी जीवित रहे तब तक प्रतिवर्ष माताजी के दर्शनार्थ आते रहे। कई बार माताजी की जन्मजयंती पर प्रीतिभोज किया। उनके भाई श्री बाबूलालजी पहाड़े भी बराबर आते रहते हैं तथा संस्थान की प्रगतिशील योजनाओं में आर्थिक योगदान भी करते रहते हैं। इस विधान के मध्य स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी (श्रवणबेलगोल) भी पधार थे उन्होंने इस विधान को श्रवणबेलगोल में भी कराने का निर्णय लिया। संगीतकार तथा मंडल विधान पर रखे जाने वाले मानस्तंभ, तोरणद्वार आदि उपकरण भी यहाँ से ले जाने का भाव व्यक्त किया। 16 नवम्बर से श्रवणबेलगोल में बहुत भारी उत्साह के साथ कल्पद्रुम विधान सम्पन्न हुआ। वहाँ कन्नड़भाषी अनेक भक्तों ने माताजी का बहुत गुणानुवाद किया क्योंकि माताजी ने सन् 1965 में श्रवणबेलगोल में चातुर्मास किया था।

8 नवम्बर 1988, कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की पिछली रात्रि आगमोक्त विधि से वर्षायोग की निष्ठापना माताजी ने ससंघ की तदनंतर भगवान महावीर का निर्वाण लाडु चढ़ाया गया। उसी दिन सांयको दीपावली पूजन संघस्थ ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों तथा स्टाफ वालों ने की। जम्बूद्वीप में दीपमालिका लगाई गयी।

चातुर्मास के बाद—कार्तिक अष्टान्हिका में श्री वीरेन्द्र कुमार जैन टिकैतनगर तथा श्री बिजेन्द्र कुमार जैन दिल्ली ने हस्तिनापुर सपरिवार आकर सर्वतोभद्र मंडल विधान किये। दो अलग-अलग मंडल बने थे। इस विधान में माताजी ने 108 जयमालाएँ लिखी हैं प्रत्येक जयमाला में चांदी का एक स्वस्तिक चढ़ाने का लिखा है। दोनों ग्रुप ने धातु के 108 स्वस्तिक चढ़ाये। कु. माधुरी ने भी पहली बार पूरा अपने हाथ से करके मण्डल पर 108 स्वस्तिक चढ़ाये। आचार्य सुमतिसागर जी महाराज हस्तिनापुर में बड़े मंदिर पर ठहरे थे, विधान के मध्य जम्बूद्वीप स्थल पर पधारे। तेरहपंथ-बीसपंथ का समन्वय देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि "जम्बूद्वीप के बारे में जैसी अफवाहें लोगों ने फैला रखी थीं, वैसा कुछ भी यहाँ देखने में नहीं आया, सब गलत निकला यहाँ पर बहुत ही अच्छा लगा।"

समयसार का स्वाध्याय भी माताजी के समक्ष सामूहिक रुप में चल रहा था तथा माताजी उसकी टीकाओं का अनुवाद भी कर रही थीं। 3 जनवरी 1989 को समयसार पूर्वार्ध छपने दे दिया मेरठ में सुमन प्रिंटर्स को। इसी मध्य माताजी ने आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों से मक्खनस्वरुप निश्चय-व्यवहारसमन्वयात्मक 108 गाथाएँ संकलित करके गाथाओं का अर्थ तथा भावार्थ देकर "कुन्दकुन्द मणिमाला" नाम से एक पुस्तक तैयार कर दी, उस पुस्तक का प्रकाशन भी हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मई में यहाँ आचार्य श्री कुंथुसागर महाराज का ससंघ मंगल पदार्पण हुआ। 40 दिन तक संघ हस्तिनापुर में रुका, सभी ने संघ की खूब सेवा की और पूज्य माताजी ने संघस्थ साधुओं को अनेक विषयों का अध्ययन कराया।

20 जून से श्री प्रकाशचंद जैन टिकैतनगर ने सपरिवार आकर त्रैलोक्य विधान किया। माताजी ने तीन लोक विधान तीन साइज के बनाये—बड़ा सर्वतोभद्र, मध्यम तीनलोक तथा छोटा त्रैलोक्य विधान नाम से बनाया। तन्मयता से भक्तिपूर्वक विधान पूजन की। विधान के मध्य प्रतिदिन माताजी के प्रवचन भी हुए, पूरे परिवार ने भक्ति व ज्ञान का पूरा लाभ लिया।

श्री ताराचंदजी (नरपत्या) भरतपुर (राज0) ने हस्तिनापुर आकर "जम्बूद्वीप विधान" किया। विधान के मध्य 16 जुलाई 1998- आषाढ़ शुक्ला 13 को ब्र0 रवीन्द्र कुमार, गणेशीलाल रानी वाला, जिनेन्द्र प्रसाद ठेकेदार आदि महानुभावों ने माताजी के पास बैठकर जम्बूद्वीप स्थल की प्रगति तथा 1990 में जम्बूद्वीप महोत्सव करने के बारे में विचार-विमर्श चल रहा था, तभी माताजी ने उचित समय देखकर सहसा घोषित कर दिया कि ब्र0 कु0 माधुरी की दीक्षा होगी। 13 अगस्त, श्रावण शुक्ला 11 का मुहूर्त है। यह बात सुनते ही रवीन्द्र कुमार कुछ देर के लिए हतप्रभ रह गये, जब यह देख लिया कि- माताजी का निर्णय व घोषणा दृढ़ है तब कहा कि- "दीक्षा ठाठ बाट से होगी, उत्साहपूर्वक कार्यक्रम बनाया जावेगा।"

चौंतिसवाँ चातुर्मास (1989- जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में)

दीक्षा हेतु ब्र. कु. माधुरी ने प्रार्थना की—17 जुलाई आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी के दिन चातुर्मास स्थापना हेतु उपस्थित जनसमुदाय श्रीफल चढ़ाकर प्रार्थना कर रहे थे, उसी समय ब्र0 कु0 माधुरी ने दीक्षा के लिए श्रीफल चढ़ाकर माताजी से निवेदन किया। माताजी ने सहर्ष स्वीकृती प्रदान की। यह जानकारी पूरे देश की दि0 जैन समाज को प्राप्त होते ही हर्ष का वातावरण व्याप्त हो गया। कुछ लोगों को विषाद इसलिये हुआ कि अब कु0 माधुरी जी अपने सुमधुर कंठ से विधान कराने नहीं आ सकेंगी। यह उनके वात्सल्य भाव का द्योतक था। जगह-जगह से दीक्षा पूर्व बिनोरी (शोभायात्रा) निकालने के लिए तेजी से मांग आने लगी। दीक्षा तिथि में एक माह से भी कम का समय था अतः कई जगह एक दिन में दो-दो जगह बिनोरी निकाली गयी। बिनोरी के लिए अनेक नगरों के भक्तों को मना भी करना पड़ा।

13 अगस्त, श्रावण शुक्ला 11 रविवार को दीक्षा पूर्व भी शोभायात्रा निकाली गई वह शोभायात्रा जम्बूद्वीप स्थल पर बने विशाल पंडाल में सभा के रूप में परिणत हो गई। सभा में 10,000 से अधिक जनसमुदाय उपस्थित था। अनेक प्रदेशों के भक्तगण पधारे थे उसके पश्चात् पूज्य माताजी ने अपने हाथों से दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए दीक्षार्थी कु0 माधुरी के लम्बे-लम्बे बालों का केशलोंच प्रारंभ किया। उस केशलोंच के दृश्य को देखकर सारी जनता के नेत्र अश्रुपूरित हो रहे थे किन्तु माधुरी के चेहरे पर मुस्कान थी। उस समय दीक्षा का दृश्य बड़ा ही रोमांचक था। 28 मूलगुणों का संस्कार करके पिच्छी, कमंडलु तथा शास्त्र प्रदान करने से पूर्व पहने हुए सभी वस्त्रों का त्याग करवाकर मात्र दो साड़ी प्रदान की एक उसी दिन के लिए तथा दूसरी अगले दिन के लिए। दीक्षित नाम 'आर्यिका चंदनामती' घोषित करते ही पंडाल जयकार के नारों से गूंज उठा। कु0 माधुरी बन गयीं जगतमाता। मेरे सहित सभी ने उन्हें नमोस्तु किया। आज भी अनेक भक्त उस दृश्य को याद करके रोमांचित हो जाते हैं दीक्षा के पश्चात् विगत वर्षों से चंदनामती माताजी के द्वारा भी धर्म की महती प्रभावना हो रही है। माताजी के आदेशानुसार खूब लेखन किया, भजन व पूजाएँ लिखीं, अनेकों विधान अपने मधुर कंठ से कराये, ओजस्वी प्रवचन किये, खूब पदयात्रायें की।

दशलक्षण पर्व में इन्द्रध्वज विधान सम्पन्न हुआ, जिसमें अनेक नगरों के भक्तों ने भाग लिया। प्रातः, मध्यान्ह तथा रात्रि में खूब धर्मामृत की वर्षा हुई।

शरद पूर्णिमा पर माताजी का 56वाँ जन्म दिवस त्रिदिवसीय कार्यक्रम के साथ वृहद् स्तर पर मनाया गया शरद पूर्णिमा के 8 दिन पूर्व संघस्थ वयोवृद्ध ब्रह्मचारिणी श्यामाबाई टिकैतनगर ने माताजी के समक्ष श्रीफल चढ़ाकर क्षुल्लिका दीक्षा देने के लिए प्रार्थना की थी तदनुसार 15 अक्टूबर शरदपूर्णिमा के शुभ दिन माताजी के जन्मजयंती समारोह के मध्य माताजी ने उन्हें क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान कर "क्षुल्लिका श्रद्धामती" नाम घोषित किया। उनकी समाधि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में 2004 के चातुर्मास में हो गई।

इसी शुभ अवसर पर माताजी के ससंघ सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्यों की एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी 15 से 17 अक्टूबर 1989 तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्पन्न हुई, अनेक प्रतिष्ठाचार्य पधारे थे। माताजी ने तीनों दिन प्रतिष्ठाचार्यों को सम्बोधित किया। बहुत सफल संगोष्ठी रही। इसी समारोह के मध्य प्रथम जम्बूद्वीप पंचवर्षीय महोत्सव तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 3 मई से 7 मई 1990 वैशाख शुक्ला 9 से 13 तक करने की घोषणा की गयी।

इस प्रकार विविध उपलब्धियों के साथ आसौज कृष्णा 14 को वर्षायोग का समापन हो गया।

चातुर्मास के बाद—बड़ौत में 27 नवम्बर से 14 दिसम्बर तक वृहद् तीन लोक ७विधान का आयोजन रखा गया था। बड़ौत जैन समाज के महानुभावों के विशेष आग्रह एवं निवेदन पर माताजी ने जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी थी। यहाँ से संघ सरधना पहुँचा। वहाँ माताजी का स्वास्थ्य खराब हो गया। मवाना में णमोकार मंत्र वाले बाबा आचार्य कल्याणसागर जी से भेंट हुई थी। सरधना में स्वास्थ्य सुधार होने पर बड़ौत जाते हुए बिनौली में उपाध्याय श्री ज्ञानसागर महाराज से भेंट हुई। 26 नवम्बर को बड़ौत शहर में पदार्पण हुआ। दिगम्बर जैन अतिथि भवन में गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी महाराज का संघ ठहरा हुआ था। उनका चातुर्मास यहीं हुआ था। माताजी संघ सहित अतिथि भवन के निकट गेस्ट हाउस में ठहरीं। विधान का झंडारोहण 27 को तथा विधान पूजन 28 से प्रारंभ हुई। चंदनामती माताजी ने व मैंने प्रतिदिन 1-2 घंटा विधान, पूजन पढ़ी। संघ सानिध्य में स्वाध्याय आदि भी हुआ, पूज्य माताजी ने यहाँ उपाध्याय श्री कनकनंदी आदि मुनियों के आग्रह से सभी मुनिराजों को अष्टसहस्री आदि ग्रंथों का अध्ययन भी कराया। यहाँ सर्दी बहुत अधिक हो गयी थी। यहाँ से 5 जनवरी 1990 को विहार करके मोदीनगर में 18 जनवरी से 27 जनवरी तक इन्द्रध्वज विधान कराया।

29 जनवरी को मोदीनगर से विहार करके संघ का पदार्पण 31 जनवरी को कमला नगर मेरठ में हुआ। 1 फरवरी से 12 फरवरी तक श्री प्रेमचंद जी तेलवालों ने कमलानगर मंदिर के सामने पंडाल बनाकर बहुत ठाठ-बाट से कल्पद्रुम विधान कराया, चारों प्रकार का दान खूब बांटा, पूर्ण उदारता से विधान किया। कमलानगर से 14 फरवरी को हस्तिनापुर की तरफ विहार करके मेरठ में कुछ श्रावकों के घर एक-एक दिन के विधान कराते हुए रास्ते में ठहरने के स्थानों पर, स्कूल में प्रवचन करते हुए मवाना पधारकर यहाँ भी कुछ श्रावकों के घरों में सुख-शांति के लिए छोटे विधान कराये। 22 फरवरी को हस्तिनापुर में माताजी का ससंघ मंगल पदार्पण हुआ। कार्तिक शुक्ला 1 से फाल्गुन शुक्ला तक का विहार मंगलमय रहा, विविध प्रकार से धर्मप्रभावना हुई। इस प्रवास में माताजी के साथ आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, मैं तथा क्षुल्लिका श्रद्धामती के अतिरिक्त ब्र.कु. बीना व कु. आस्था थीं दीक्षा के पश्चात् मेरा तथा चंदनामती माताजी का यह प्रथम विहार था।

जम्बूद्वीप महामहोत्सव की तैयारियाँ—जम्बूद्वीप स्थल पर आते ही संघ की दिनचर्या विधिवत् प्रारंभ हो गई। दैनिक सामूहिक स्वाध्याय भी प्रारंभ हो गया। माताजी का अपना लेखन कार्य चल रहा था। महोत्सव से पूर्व मंदिरों तथा धर्मशालाओं में रंगाई-पुताई का कार्य भी चल रहा था। पीतल की ह्रीं बनाकर उसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमा विराजमान करने के लिए पहले माताजी ने मिट्टी से ह्रीं का नमूना बनवाया। अनंतर मुरादाबाद में पीतल की ह्रीं तथा उसके नीचे पीतल का ही कमल बनने का ऑर्डर दिया गया। उसी के साथ पीतल के 5 मेरु बड़े-बड़े एवं तेरहद्वीप के 378 मंदिरों के बनाने का ऑर्डर दिया। जयपुर में प्रतिमाओं का ऑर्डर दिया गया।

फाल्गुन की अष्टान्हिका में तीस चौबीसी विधान श्री शिखरचंद जैन हापुड़ तथा श्री जिनेन्द्र प्रसाद ठेकेदार व उनकी बहन सरलाजी ने आकर सम्पन्न किया। जम्बूद्वीप पंचवर्षीय महोत्सव के साथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करने का भी निर्णय पूर्व में किया गया था अतः 4 मार्च को प्रतिष्ठा समिति की मीटिंग करके प्रतिष्ठा संबंधी कार्य भार सौंपे गये। सभी ने उत्साहपूर्वक जिम्मेदारी ली।

आचार्य पद की चर्चा—चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य श्री अजित सागर जी महाराज के असाध्य क्षयरोग को देखते हुए भावी आचार्य के बारे में चर्चा प्रारंभ हो गई। अधिकांश मुनि-आर्यिका आचार्यकल्प श्री श्रेयांस सागर जी महाराज को भावी आचार्य बनाने का निर्णय कर चुके थे। यहाँ माताजी को भी यह उचित निर्णय सुनकर प्रसन्नता हुई थी किन्तु आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात् आचार्यपद का निर्णय गंभीर विवाद में पड़ गया।

व्रतों की साधना—पूज्य माताजी ने रुग्ण तथा अशक्त शरीर से भी मनोबल के द्वारा रस-अन्न आदि त्याग करके अनेक व्रत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किये। कौन कौन से व्रत कब किये? इसका विस्तृत विवेचन माताजी ने स्वयं 'मेरी स्मृतियाँ' ग्रंथ में किया है। वर्षों तक एक अन्न-चावल लिया। बाद्र में दो अन्न लेना प्रारंभ किया, वह अब भी चल रहा है। इसी प्रकार वर्षों तक विविध प्रकार के रसों का त्याग रखा। आचार्य श्री वीरसागर महाराज की समाधि के पश्चात् गुड़, शक्कर तथा दही व तेल का भी त्याग कर दिया था। बीच में घी, नमक का भी कुछ-कुछ समय तक त्याग करती रहीं। वर्तमान में भी पूज्य माताजी केवल दो अन्न एवं दो ही रस आहार में ग्रहण करती हैं।

जम्बूद्वीप महामहोत्सव से पहले महान ग्रंथों का प्रकाशन—समयसार ग्रंथ का पूर्वार्ध छपकर आ जाने से माताजी सहित सभी को अतीव प्रसन्नता हुई। अष्टसहस्री के प्रथम भाग की प्रतियाँ समाप्त हो जाने से उसके द्वितीय संस्करण का भी प्रकाशन कर दिया गया। इसी प्रकार माताजी की भावनानुसार आचार्य श्री वीरसागर स्मृतिग्रंथ का प्रकाशन भी दिन रात एक करके किया गया। इन सभी ग्रंथों के विमोचन मई 1990 में होने वाले महोत्सव में होकर जन-जन तक पहुँचाए गये।

मेरठ में उ.प्र. की नगरपालिकाओं के अध्यक्ष, सदस्य तथा मेयरों के सम्मेलन से अनेक लोग 5 अप्रैल 1990 को जम्बूद्वीप स्थल पर आये, देखकर बहुत प्रसन्न हुए। मेरे, बड़ी माताजी के प्रवचन हुए। इसी प्रकार प्रतिदिन मेरठ संभाग, प्रदेश तथा देश के विभिन्न भागों से दर्शनार्थी बड़ी संख्या में यहाँ आते हैं, उन्हें माताजी का उपदेश सुनने का भी पुण्य अवसर प्राप्त होता रहता है।

क्षेत्र पर चल रहे निर्माण कार्यों की देखरेख विगत 7-8 वर्षों से सेवानिवृत्त इंजी0 श्री कैलाशचंद जैन तोपखाना मेरठ वाले कर रहे हैं, अवैतनिक सेवा दे रहे हैं। उनकी ध.प. कैलाशवती जी भी भक्तिपूर्वक उनके साथ यहीं रहती हैं। दोनों की दान तथा सेवावृत्ति में विशेष रुचि रही। सन् 1975 से 1987 तक जम्बूद्वीप स्थल पर चार पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं हो चुकी थीं। मई में महोत्सव के साथ पांचवीं प्रतिष्ठा होगी। प्रतिष्ठा से पूर्व 12 अप्रैल 1990 वैशाख कृष्णा दूज को एक विधान का प्रातः हवन हो रहा था, उसी दिन दूसरी तरफ मवाना के श्रीपालजी तथा उनके पुत्र ज्ञानचंद जैन इन्द्रध्वज विधान का झंडारोहण कर रहे थे। यह विधान 22 अप्रैल को सम्पन्न हुआ।

12 अप्रैल-वैशाख वदी दूज को माताजी का 34 वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस था, उस दिन जम्बूद्वीप स्थल पर माताजी के पादप्रक्षाल, आरती के द्वारा संघ के सदस्यों ने अपने भक्ति सुमन अर्पित किये माताजी के गुणानुवाद गाये। इस अवसर पर माताजी ने भी अपने गुरू आचार्य श्री वीरसागर महाराज, दीक्षा दिवस तथा अब तक किये कार्यों का स्मरण किया। अपने शिष्यों द्वारा अहर्निश किये जा रहे कार्यों को भी याद कर अति संतोष एवं हर्ष व्यक्त किया। देखते-देखते पंचवर्षीय महोत्सव व पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का समय नजदीक आ गया। 28 अप्रैल से 2 मई तक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं प्रथम पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महोत्सव 3 मई से 7 मई 1990 तक—समय आ गया चिर प्रतीक्षित प्रथम पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महोत्सव का। तिथि थी वैशाख शु0 तीज (अक्षय तृतीया), तारीख थी 27 अप्रैल 1990। कार्यक्रम प्रारंभ हुआ जम्बूद्वीप महोत्सव तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के आचार्य निमंत्रण, गुरु आज्ञा तथा झंडारोहण से। ब्र0 रवीन्द्र कुमार जैन ने संघ सानिध्य में आचार्य निमंत्रण देते हुए तिलक लगाकर कंकण बंधन किया, माला पहनाई तथा वस्त्र भेंट किये-प्रतिष्ठाचार्य पं.फतेहसागर जी, सहयोगी पं. प्रदीप कुमार कुसुंबा (महा0) पं. सुधर्मचंद जी तिवरी को। प्रतिष्ठाचार्यों तथा समिति पदाधिकारियों ने मिलकर पूज्य माताजी से श्रीफल चढ़ाकर प्रार्थना की पूरे कार्यक्रम में सानिध्य प्रदान करने के लिये। माताजी ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हुए सभी को आशीर्वाद प्रदान किया। अनंतर ''सिद्धार्थ मंडप'' के सामने बने ऊँचे ध्वजदण्ड पर झंडारोहण किया माताजी के परमभक्त श्री कमलचंद जी जैन खारी बावली दिल्ली ने सपरिवार। झंडारोहण के पश्चात् रथयात्रा एवं घटयात्रा के साथ पंडाल में बनी वेदी की शुद्धि तथा उस पर विराजमान की गईं प्रतिष्ठित प्रतिमाजी इसी के साथ प्रारंभ हो गये विविध अनुष्ठान, मंत्रजाप्य, मंडल विधान आदि।

कार्यक्रम की अगली कड़ी के रूप में 28 अप्रैल 1990 को ''ज्ञानज्योति शिक्षण/प्रशिक्षण शिविर'' का उद्घाटन हुआ। शिविर का कुलपति मुझे मनोनीत किया गया। शिविर के आयोजन का सुझाव श्री हीरालालजी अहमदाबाद ने दिया था। शिविर में अन्य स्थानों के अतिरिक्त गुजरात से भी 25-30 लोग पधारे थे। शिविर 3 मई तक चला। संघस्थ ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों, पूज्य चंदनामती माताजी तथा मैंने शिक्षण प्रदान किया। गणिनी माताजी के प्रतिदिन प्रवचन हुए। 2 मई को सबकी परीक्षा ली गई। 3 मई को समापन पर सभी को प्रमाणपत्र दिये गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में भगवान के माता-पिता बने श्री जिनेंद्र प्रसाद जैन ठेकेदार दिल्ली व उनकी ध.प. श्रीमती विमला देवी। सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ श्री मोतीचंद जैन कासलीवाल जौहरी दरीबा दिल्ली को। 3 मई की रात्रि में डी.पी कौशिक मुजफ्फरनगर द्वारा जैन रामायण पर आधारित ''सीता स्वयंवर'' नाटिका का मंचन किया गया। दर्शकों ने खूब सराहना की। अनंतर गर्भकल्याणक की बहिरंग व अंतरंग क्रियाएँ सम्पन्न हुईं। प्रतिष्ठा में 5 फुट ऊँचे धातु के ह्रीं में विराजमान होने वाली 24 प्रतिमाओं, की इन्द्रध्वज विधान में तेरह द्वीप में स्थापित करने के लिए 458 प्रतिमाएँ तथा बाहर से भी आई हुई प्रतिमाओं की प्रतिष्ठाविधि प्रारंभ हुई। 4 मई को प्रातः जन्म कल्याणक के दृश्य प्रस्तुत हुए। जन्मकल्याणक के अवसर पर ऐरावत हाथी पर शोभायात्रा निकाली गई। सुमेरु की पांडुकशिला पर जन्माभिषेक हुआ। केन्द्रीय उद्योगमंत्री चौधरी अजितसिंह ने जम्बूद्वीप पर आते हुए हेलीकॉप्टर से पुष्पवृष्टि की एवं उतकर माताजी का आशीर्वाद ग्रहण किया। तदनंतर सभामंडप में पहुँचकर मंच पर आसीन हुए। आज के इस कार्यक्रम को ''अष्टमूलगुण सम्मेलन'' नाम दिया गया था। चौधरी अजितसिंह जी के स्वागत के अनंतर मैंने व पूज्य श्री चंदनामती माताजी ने अष्टमूलगुणों तथा उसकी जीवन में महत्ता पर प्रकाश डाला। पूज्य गणिनी माताजी द्वारा अनुवादित समयसार ग्रंथ का विमोचन उद्योगमंत्री जी ने किया। मंडप के पास लगाई गई अष्टमूलगुण प्रदर्शनी का उद्घाटन भी चौधरी अजितसिंह जी ने किया, प्रदर्शनी बहुत ही आकर्षक थी। शाम को भगवान का पालना झुलाया गया।

5 मई को प्रातः बालक्रीडा दिखाई गई। मध्यान्ह में राज्याभिषेक के पश्चात् भगवान वर्धमान कुमार की दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। रात्रि में दिल्ली की सुप्रसिद्ध गायिका चैताली ने जैन भजन प्रस्तुत किये। वे स्वयं स्त्री-पुरुष की आवाज में गाकर जनता के आकर्षण का केन्द्र बन गई थीं। 6 मई को प्रातः भगवान की आहारचर्या कराने का पुण्य श्री अमरचंद जी पहाड़िया कलकत्ता को प्राप्त हुआ आज पंचवर्षीय महोत्सव के उपलक्ष्य में सुमेरु पर्वत की पांडुक शिला पर अभिषेक करने के लिए देश भर से आये भक्तों की भीड़ प्रातः से एकत्रित होना प्रारंभ हो गई। एक अनहोना शुभ संयोग प्राप्त हो गया आज के दिन। 5 वर्ष पूर्व भी आज के दिन वैशाख शुक्ला 12 की तिथि थी। वाद्यों की मंगल ध्वनि के साथ मंगल चौक पर स्थापित कलशों से हार-मुकुट धारण किये हुए केशरिया परिधान में सुसज्जित इन्द्र-इन्द्राणियों ने भक्ति-विभोर होकर अभिषेक करना प्रारंभ कर दिया।

6 मई को अपरान्ह 3 बजे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री सत्यनारायण रेड्डी एक भक्त के रुप में समारोह में पधारे। सभा मंडप में जनसमुदाय एकत्रित था। राज्यपाल महोदय के मंच पर पधारते ही करतल ध्वनि से स्वागत किया। सभा की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र कुमार जैन चीफ जस्टिस लखनऊ ने की। श्री रेड्डी जी एवं चीफ जस्टिस का स्वागत पुष्पहार, शॉल, श्रीफल से किया गया। मैंने महोत्सव की महिमा पर विचार प्रस्तुत करते हुए बताया कि पुण्ययोग से जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का पावन सानिध्य प्रथम जम्बूद्वीप महोत्सव को प्राप्त हो रहा है। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने पूज्य गणिनी माताजी द्वारा अनुवादित महान ग्रंथ अष्टसहस्री के तीनों भागों के विमोचन से पूर्व उक्त ग्रंथ की टीका की महत्ता पर प्रकाश डाला। नारी शक्ति के विषय में ओजस्वी प्रवचन किया। तीनों भागों का विमोचन करके राज्यपालजी ने पूज्य माताजी के करकमलों में प्रदान किये। माताजी ने ग्रंथ पर आशीर्वाद लिखकर रेड्डी जी को प्रदान किये। पूज्य माताजी के दीक्षागुरु आचार्य श्री वीरसागर महाराज के स्मृतिग्रंथ का विमोचन भी श्री मांगीलालजी पहाडिया, हैदराबाद ने राज्यपाल से करवाया।

राज्यपाल श्री रेड्डी जी ने अपने भाषण में कहा कि- हस्तिनापुर की धरती महान है। यहाँ की भूमि पर हुआ महाभारत का युद्ध धर्म की विजय तथा अधर्म की पराजय बताता है। मुझे पहली बार इस पवित्र तीर्थ पर आने का अवसर मिला है। ज्ञानमती माताजी जैसी महान साध्वी यहाँ त्याग और तपस्या का श्रोत बहा रही हैं। इनसे ऐसा आशीर्वाद प्राप्त करना है कि हमारा देश शक्तिशाली एवं धर्मसहिष्णु बनें। मेरी शुभकामनाएँ आप सब स्वीकार करें। पूज्य माताजी ने दूर-दूर से आये समस्त नर-नारियों को तथा राज्यपाल महोदय को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। अंत में सभाध्यक्ष जस्टिस श्री वीरेन्द्र कुमार जैन ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि ऐसे उत्सव यहाँ प्रतिवर्ष होते रहें जिससे हमें व आप सबको यहाँ प्रतिवर्ष आने का मौका मिलता रहे। दोनों अतिथियों ने मंच पर विराजमान प्रतिमाओं तथा ह्रीं के दर्शन किये अनंतर जम्बूद्वीप दर्शन करते हुए प्रोटोकोल को मद्देनजर करके सुमेरुपर्वत की 136 सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर तक जाकर चारों तरफ का प्राकृतिक सौंदर्य देखते रहे, नौकाविहार भी किया। अंत में कमल मंदिर के उद्घाटन के रूप में शिलापट्ट का अनावरण कर मंदिर के दर्शन करके दिल्ली के लिए रवाना हो गए, पूरे ढाई घंटे रुके।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

12 बजे से 3 बजे तक केवलज्ञान कल्याणक की क्रियाएँ हुईं। समवसरण की रचना दिखाई गई। पूज्य माताजी का मंगल प्रवचन भी हुआ। रात्रि में ''महाराज कृष्ण कुमार कत्थक कला केन्द्र'' दिल्ली द्वारा जैन शास्त्रों के आधार से महाभारत की काव्य में नाटिका दिखाई गई, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

7 मई को प्रात: पावापुरी की रचना बनाकर भगवान महावीर का मोक्षगमन दिखाया गया। कमल मंदिर पर कलशारोहण तथा ध्वजारोहण किया श्रीमती उर्मिला देवी संतोष कुमार जैन दिल्ली ने। इन्हीं की तरफ से कमल मंदिर में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा स्थापित की गई थी। मध्यान्ह में समापन पर रथयात्रा निकाली गई। समस्त आगत विद्वानों, श्रीमानों तथा लगनशील कार्यकर्ताओं का समिति की ओर से स्वागत तथा अभिनंदन किया गया। समस्त प्रतिमाएँ यथास्थान विराजमान कर दी गईं। महोत्सव सानंद तथा निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

आचार्यकल्प श्री श्रेयांससागर जी महाराज को पंचम पट्टाचार्य पद पर प्रतिष्ठापित किया गया—चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य श्री अजितसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात् पंचम पट्टाचार्य के विषय में काफी प्रयास के बाद भी जब एकमत नहीं बन पाया, तब दो पट्टाचार्य बनाये गये। उनमें से एक आचार्यकल्प श्री श्रेयांससागर जी महाराज को बनाया गया। लोहारिया (राज.) में 10 जून 1990 को 34 पिच्छीधारी मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक क्षुल्लिकाओं, पचासों व्रतियों तथा 25 हजार श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति में पंचम पट्टाचार्य के पद पर प्रतिष्ठापित किया गया। इस समारोह में हस्तिनापुर से कर्मयोगी ब्र0 रवीन्द्र कुमार को माताजी ने अपनी सहमति के साथ भेजा था। उक्त समारोह में देश के सैंकड़ों नगरों से भक्तगण पधारे थे। आचार्यपद के संस्कार उपाध्याय श्री अभिनंदनसागर जी महाराज ने किये। समस्त विधि-विधान ब्र0 श्री सूरजमलजी बाबाजी ने कराये। यह कार्यक्रम प्रात: 8:30 से प्रारंभ होकर 1.30 बजे तक-5 घंटे चला।

पैंतिसवाँ चातुर्मास (1990- जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में)

पूज्य माताजी ने 6 जुलाई 1990 आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को जम्बूद्वीप स्थल पर संघसहित वर्षायोग की स्थापना की। आषाढ़ शु. पूर्णिमा को आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की जन्मजयन्ती, श्रावण कृष्णा एकम् को वीरशासन जयंती एवं श्रावण शुक्ला 7 को भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण कल्याण के उपलक्ष्य में अभिषेक-पूजा पूर्वक माताजी के सानिध्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया।

वैसे तो माताजी विविध प्रकार के लेखन में संलग्न रहती थीं फिर भी समय निकालकर कार्यक्रमों में सानिध्य एवं धर्मोपदेश भी देती रहती थीं।

दशलक्षण पर्व में श्री मनोज कुमार जैन हस्तिनापुर ने इन्द्रध्वज मंडल विधान बहुत हर्षोल्लास से सपरिवार किया। प्रात: विधान पूजन, मध्यान्ह में दशधर्म तथा तत्वार्थसूत्र पर प्रवचन तथा रात्रि में भक्ति, भजन, आरती नृत्य तथा प्रवचन प्रश्न-मंच हुए। विद्यापीठ के विद्यार्थी ब्र. धरणेन्द्र कुमार (तमिलनाडु वाले) विधानचार्य थे। भादव सुदी दूज को चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की 35 वीं पुण्य तिथी मनाई गई।

25 सितम्बर, आसोज शुक्ला 6 से 7 अक्टूबर, आसौज शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) तक जम्बूद्वीप स्थल पर तीनलोक मंडल विधान का आयोजन किया गया जिसमें मेरठ, दिल्ली, हापुड़ से भक्त महानुभावों ने पधारकर भक्ति गंगा में अवगाहन कर पुण्योपार्जन किया। देश के विभिन्न नगरों के अशांत वातावरण को देखते हुए माताजी का 57 वाँ जन्म दिवस 2 अक्टूबर (शरद पूर्णिमा) के दिन सादगी से मनाया गया।

1 अगस्त 1990 को सुप्रसिद्ध विद्वान श्री मोतीचंद गौतमचंद कोठारी, फल्टन (महा.) का उनके गृहनगर फल्टन में 90 वर्ष की आयु में समाधिमरण हो गया। आपने संस्थान द्वारा आयोजित शिक्षण- प्रशिक्षण शिविरों में कुलपति के पद को गौरवान्वित किया था। उन्हें संस्थान की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

पूज्य माताजी का 57 वाँ जन्म दिवस शरदपूर्णिमा के दिन श्रीमती संतोषकुमारी के नेतृत्व में नागौर (राज.) में जैन समाज ने हर्षोल्लास के साथ मनाया। माताजी की पूजन करके उनके चित्र के समक्ष 57 दीपकों से आरती उतारी।

सरधना (मेरठ) उ.प्र. में प्रथम बार विशाल कल्पद्रुम विधान का भव्य आयोजन—कार्तिक अष्टान्हिका के अवसर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर 24 अक्टूबर से 2 नवम्बर 1990 तक विधान किया गया। विधान से पूर्व जैन समाज के वरिष्ठ महानुभावों ने हस्तिनापुर आकर पू. माताजी से ससंघ सानिध्य प्रदान करने के लिए सरधना पधारने हेतु निवेदन किया। माताजी ने अपनी शिष्या आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा क्षुल्लिका श्री श्रद्धामती माताजी को भेज दिया। चंदनामती माताजी का समाज ने भव्य स्वागत किया। उनके वहाँ पधार जाने से समाज में अभूतपूर्व उत्साह जागृत हो गया। विधानाचार्य के रूप में पं. प्रवीणचंद शास्त्री एवं ब्र. धरणेन्द्रकुमार विधानाचार्य थे। विधान करने वालों को बहुत आनंद आया। विधान सम्पन्न करवाकर श्री चंदनामती माताजी वापस हस्तिनापुर पधार गईं।

दीपावली 1990 के दिन माताजी ने ससंघ चातुर्मास प्रातः समापन किया तदुपरांत कमलमंदिर में भगवान महावीर के निर्वाण के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। शाम को दीपमालिका लगाई गई। दीपावली पूजन की गई।

चातुर्मास के पश्चात्—21 दिसम्बर 1990 को पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज की 72 वीं जन्मजयंती पर माताजी के सानिध्य में सभा का आयोजन करके उनके प्रति विनयांजलि अर्पित की गई।

9 जनवरी 1991 माघ कृष्णा 9 को आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की छठी पुण्यतिथी मनाई गई उनके चरणों का प्रक्षाल करके पूजन की गई तथा सभा में श्रद्धांजलि समर्पित की गई। सन् 1985 में उनकी जम्बूद्वीप स्थल पर ही समाधि हुई थी।

आर्यिका पवित्र श्री एवं पावनश्री माताजी का जम्बूद्वीप स्थल पर ढ़ाई माह तक प्रवास रहा। उन्होंने पूज्य माताजी से खूब ज्ञान अर्जित किया, अनुभव सुने।

उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज भी तीन दिन रुके। माताजी से आध्यात्मिक चर्चाएँ कीं। पूज्य माताजी की शिष्या आर्यिका श्री श्रेष्ठमती माताजी का चित्तौड़-रेनवाल (राज.) में फाल्गुन वदी अमावस्या सन् 1991 को सामान्य अस्वस्थता के बाद अचानक समाधिमरण हो गया। वे पूज्य मुनि श्री गुणसागर जी तथा आर्यिका श्री आदि मती माताजी के साथ थीं। समाधि का समाचार सुनकर यहाँ गणिनी माताजी को खेद हुआ। उनके प्रति यहाँ सबने श्रद्धांजलि अर्पित की।

पुज्य गणिनी माताजी की आज्ञा से 15 फरवरी 1991 को चंदनामती माताजी ने मवाना पहुँचकर फाल्गुन के अष्टान्हिक पर्व में श्री सिद्धचक्र मंडल विधान कराया। 20 फरवरी से25 फरवरी तक मुझे भी माताजी ने मवाना भेजा। वहाँ जाकर मैने भी पूजाएं पढ़ी तथा प्रवचन किये। विधान में ब्र. रवीन्द्र जी, ब्र. कमलेश, ब्र. धरणेन्द्र, ब्र. जवेरचंद तथा ब्र. कु. बीना आदि भी पहुँचे थे, मैं 25 को वापस हस्तिनापुर आ गया। जिस दिन विधान का पूर्णाहुति हवन हुआ उसी दिन खाड़ी युद्ध समाप्ति की सूचना से पूरे नगर में हर्ष छा गया। पूज्य चंदनामती माताजी 2 मार्च को वापस हस्तिनापुर पधार गईं।

हस्तिनापुर में होली मेला—प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष (1991) में होली मेले पर जम्बूद्वीप स्थल से रथयात्रा पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ सानिध्य में निकाली गई। माताजी का प्रवचन भी हुआ। आसपास के विभिन्न नगरों से 6-7 हजार श्रावक-श्राविकाओं ने आकर जम्बूद्वीप दर्शन किये।

अप्रैल 1991 में पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का अभिनंदनग्रंथ प्रकाशित करने की रूपरेखा बनाई गई। 9 मार्च 1991, चैत्र वदी 9 को भगवान ऋषभदेव की जयंती के उपलक्ष्य में जम्बूद्वीपस्थल पर विविध कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रातः प्रभातफेरी तथा 108 कलशों से तथा पंचामृत अभिषेक, मध्यान्ह में धर्मसभा में गणिनी माताजी व संघ के साधुओं के प्रवचन हुए। इस शुभ अवसर पर सेंट्रल टाउन हस्तिनापुर के विद्यालयों में से सात विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के द्वारा ऋषभदेव सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। उनमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार दिये गये। कार्यक्रम में 4-5 हजार छात्र-छात्राएं तथा निकटवर्ती अनेक नगरों से जैन बंधू पधारे थे। कार्यक्रम बहुत रोचक थे। सभी ने प्रशंसा की।

आर्यिका श्री पवित्रश्री एवं पावनश्री माताजी का 7 मार्च को जम्बूद्वीपस्थल से विहार हुआ। विगत ढाई माह से जम्बूद्वीपस्थल पर प्रवास करके पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी से खूब ज्ञान लाभ तथा अनुभव लाभ प्राप्त किया।

नांदणी (जिला- कोल्हापुर) महा. के भट्टारक श्री जिनसेन स्वामी का 7 मार्च 1991 को मठ में समाधि मरण हो गया। आपने अंतसमय में आ. श्री सुबलसागर जी महाराज से मुनि दीक्षा ले ली थी। आपने पूर्व में हस्तिनापुर पधारकर पूज्य माताजी से विविध विषयों पर धार्मिक चर्चा की थी। आप क्षुल्लक पद का निर्वाह करते थे। जम्बूद्वीपस्थल पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उनके स्थान पर क्षुल्लक श्री चन्द्रभूषणजी (शिष्य- आचार्य श्री देशभूषणजी) को भट्टारक पद पर क्षुल्लक वेश में प्रतिष्ठापित किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनि श्री निर्वाणसागर जी महाराज का इन्दौर में 12 मार्च 1991 को समाधिमरण हो गया। उनके प्रति संस्थान की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई पूज्य मुनि श्री 13 वर्ष पूर्व हस्तिनापुर पधारे थे। उन्होंने जम्बूद्वीप संस्थान के विकास के लिए जो सहयोग श्रावकों से करवाया वह चिस्मरणीय रहेगा।

आचार्य श्री वीरसागर महाराज के शिष्य ब्र. सुगनचंदजी अजमेर का अपने गृह नगर में 24 मार्च 1991 चैत्र शु. 9 को 85 वर्ष की अवस्था में समाधि मरण हो गया। उनके प्रति संस्थान के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उन्होंने माताजी की प्रेरणा से सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये थे सन् 1962 से 1967 तक माताजी के संघ के साथ रहे थे। कलकत्ता, कटक, श्रवणबेलगोल, सोलापुर तथा सनावद तक की यात्रा में समय-समय पर जाकर यात्रा में सहयोग दिया था।

संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से स्थापित ब्राह्मी आश्रम जबलपुर की 27 बालब्रह्मचारिणी बहनें 20 अप्रैल को पूज्य गणिनी माताजी के दर्शनार्थ पधारी थीं। 5 दिन तक माताजी के पास रहकर अनेक प्रकार के अनुभव तथा मार्गदर्शन आर्यिका चर्या के विषय में तथा अन्य धार्मिक विषयों में प्राप्त किये। शंकाओं का समाधान भी प्राप्त किया तथा विविध विषयों पर मार्मिक प्रवचन भी सुने।

बारामती (महाराष्ट्र) में वयोवृद्ध आर्यिका श्री अजितमती माताजी का 29 अप्रैल सन् 1991 को महामंत्र श्रवण करते हुए समाधिमरण हो गया। अजितमती माताजी ने अब से 63 वर्ष पूर्व सन् 1928 में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा धारण की थी। आपने 12 वर्ष की सल्लेखना ले रखी थी उसका यह अंतिम वर्ष था। 7 जनवरी 1991 को आचार्य बाहुबलीसागर महाराज ने आपको आर्यिका दीक्षा प्रदान कर दी। समाधिपर्यंत आचार्य बाहुबली सागर जी महाराज वहीं रहे। समाधि होने की सूचना प्राप्त होने पर जम्बूद्वीपस्थल पर सभा करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूज्य माताजी ने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि आचार्य श्री शांतिसागर महाराज का अंतिम दीपक बुझ गया। आर्यिका अजितमती माताजी की समाधि आर्यिकाओं के लिए अनुकरणीय है।

दिल्ली हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री मिलापचंदजी जैन ने 12 मई 1991 को जम्बूद्वीप स्थल पर पधारकर माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। 16 मई को जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में अक्षयतृतीया पर्व मनाया गया। रथयात्रा निकाली गई। इक्षुरस का प्रसाद वितरित किया गया। 21 मई 1991 को पूर्व प्रधानमंत्री तथा कांग्रेस अध्यक्ष श्री राजीव गांधी की हत्या मद्रास के निकट पेरम्बदूर में मानव बम के द्वारा कर दी गई। देश के लिए दुखद घटना रही। इस घटना से माताजी व संघ को भी हार्दिक क्षोभ हुआ। संस्थान की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूज्य माताजी के सानिध्य में वैशाख शु. 7 को सुदर्शनमेरु स्थापनादिवस, वै.शु.12 को जम्बूद्वीप प्रतिष्ठापना दिवस तथा 4 जून को ज्ञानज्योति प्रवर्तन की वर्षगांठ मनाई गई।

जैनसमाज सरधना के विशेष निवेदन को स्वीकार करके माताजी ने ससंघ 13 जुलाई 1991 को सरधना के लिए मंगल विहार किया। 20 जुलाई को भव्य स्वागत के साथ संघ का सरधना नगर में मंगल पदार्पण हुआ।

छब्बीसवाँ चातुर्मास (1991- सरधना, जि.-मेरठ- उ.प्र. में)

25 जुलाई आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को चातुर्मास की स्थापना उल्लास पूर्ण वातावरण में हुई। श्रावण मास में विविध कार्यक्रम- गुरुपूर्णिमा, वीरशासन जयंति, भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणदिवस आदि आयोजित किये गये। प्रतिदिन आ. श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर (मेरे) एवं गणिनी माताजी के प्रवचन हुये। 11 अगस्त को महिला मण्डल स्थापना, श्रा.कृ.14 से श्रा0शु0 7 तक प्रतिदिन एक एक विधान हुए। 13 अगस्त को आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का दीक्षा दिवस मनाया गया। उसीदिन दि. जैन बालिकासंघ की स्थापना की गई। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर विशेष प्रवचन सभा हुई "अहिंसा से ही विश्वशांति संभव है" विषय पर भाषण प्रतियोगिता हुई जिसमें जैनेतर वक्ताओं ने भी भाग लिया। 24 अगस्त को जैन कन्या इन्टर कालेज में रक्षाबंधन पर्व पर विशेष प्रवचन हुए। 25 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व का धार्मिक एवं राष्ट्रीय महत्व पर सार्वजनिक प्रवचन हुए।

11 सितम्बर से 24 सितम्बर तक सर्वतोभद्र महामंडल विधान सम्पन्न हुआ। 200 से अधिक स्त्री पुरुषों ने भाग लेकर पूजन की । 11 सितम्बर को अ.भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहू श्री अशोककुमार जैन ने सरधना पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। 16 से 22 अक्टूबर तक शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसमें सभी वय के लोगों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राप्त किया माताजी के धर्मोपदेश सुने। 23 अक्टूबर शरदपूर्णिमा के दिन पू.गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की 58 वीं जन्म जयंती विशाल समारोह पूर्वक मनाई गई जिसमें मुख्य अतिथी के रुप में भा.ज.पा. के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुरली मनोहर जोशी पधारे थे। श्री जोशी जी ने माताजी द्वारा संकलित ''मुनिचर्या'' नामक ग्रंथ का विमोचन किया।

22 अक्टूबर को अ. भा. दि. जैन युवा परिषद की कार्यकारिणी की बैठक में आगामी तीन वर्ष के लिए बा.ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन को अध्यक्ष, मनोज कुमार हस्तिनापुर को महामंत्री सहित 16 पदाधिकारी एवं सदस्यों का चयन किया गया। 26 अक्टूबर को माताजी का ससंघ लश्करगंज में पदार्पण हुआ वहाँ एक सप्ताह का प्रवास रहा प्रतिदिन प्रातः से शाम तक प्रवचन, प्रश्नमंच सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। 2 नवम्बर को संघ का गांधीनगर कालोनी में आगमन हुआ पूरे चातुर्मास में सरधना नगर धर्ममय हो गया था। धर्मामृत की खूब वर्षा हुई।

13 नवम्बर को माताजी का सरधना नगर से पुनः हस्तिनापुर के लिए मंगल विहार हुआ। अनेकों स्त्री पुरुष कह रहे थे कि हम माताजी के बिना कैसे रहेंगे। माताजी का स्नेह वात्सल्य आगे कब कैसे मिलेगा। 14 नवम्बर को संघ सलावा पहुँचा। श्री अमरचंद होमब्रेड मेरठ वालों ने जैन समाज सलावा के साथ अपनी जन्मनगरी में भावभीना स्वागत किया। तीन दिन तक प्रातः मध्यान्ह तथा रात्रि में प्रवचन आदि के विविध कार्यक्रम हुए। जैनेतर समाज ने भी सभी कार्यक्रमों में उत्साह पूर्वक भाग लिया। सलावा से महलका, मवाना होते हुए 19 नवम्बर को माताजी का ससंघ जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में बैंडबाजों के साथ मंगल पदार्पण हुआ।

चातुर्मास के पश्चात्—20 नवम्बर कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी को पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में वार्षिक रथयात्रा निकाली गई। 21 नवम्बर कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को लगभग 20-25 हजार जैन-अजैन श्रद्धालुओं ने जम्बूद्वीप दर्शन का लाभ लिया। पूज्य माताजी के सानिध्य में प्रतिदिन धवला ग्रंथ का स्वाध्याय प्रातः चलता रहा माताजी का लेखन कार्य चलता रहा। शिष्यों का पठन-पाठन होता रहा। समय-समय पर सामयिक विषयों पर कार्यक्रम भी कराती रहीं। देश के विभिन्न प्रदेशों से आने वाले भक्तों तथा दर्शनार्थियों को धर्मोपदेश देकर कृतकत्य करती रहीं।

28 जनवरी 1992 माघ वदी 9 को आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 7वीं पुण्य तिथी पर उनकी चरणछत्री पर चरणों का प्रक्षाल करके पूजन की गई। श्रद्धांजलि सभा में उनके गुणों का स्मरण करते हुए संघ के साधुओं ने तथा अन्य वक्ताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की। गणिनी माताजी ने भी उनके जीवन की विशेषताओं से सभी को परिचित कराया। वे वास्तव में मोहिनी से निर्मोहिनी बन गईं। वे रत्नों की खान थीं।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की परम्परा के पंचमपट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज का बांसवाड़ा (राज0) में 19 फरवरी 1992 को समाधिमरण हो गया। उन्होंने सन् 1993 में श्रवणबेलगोल में होने वाले भगवान बाहुबली के मस्तकाभिषेक में सम्मिलित होने के लिए 5 फरवरी 1992 को सलुम्बर (राज0) से विहार किया था।.भीमपुर (राज0) में पहुँचने पर आहार के बाद स्वास्थ बिगड़ गया। दो दिन में कई दस्त-उल्टी हो गए तब भी आगे विहार कर दिया। अंततोगत्वा 19 फरवरी को बांसवाड़ा में समाधिमरण हो गया। हस्तिनापुर में सूचना मिलते ही श्रद्धांजलि सभा में उनके प्रति संघ के साधुओं व व्रतियों ने श्रद्धांजलि समर्पित की। गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने भी कहा कि संघ परम्परा का एक निर्भीक एवं तपस्वी साधु अचानक चला गया। होनी को कौन टाल सकता है।

24 फरवरी से 4 मार्च 1992 तक सरधना निवासी श्री नरेन्द्र कुमार सुनील कुमार (मे.सुनील टेक्सटाईल्स) ने पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में जम्बूद्वीपस्थल पर इन्द्रध्वज विधान किया।

हस्तिनापुर में भारत विकास परिषद के दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन करने पधारे उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री कल्याणसिंह जी ने 15 फरवरी को जम्बूद्वीप स्थल पर बने हेलीपेड पर हेलीकॉप्टर से उतरते ही त्यागीभवन पधारकर पूज्य गणिनी माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। माताजी ने देश तथा प्रदेश को अहिंसा के रास्ते पर चलाने की प्रेरणा दी।

16 फरवरी को कल्पवृक्ष सदृश कमलमंदिर में विराजमान भगवान महावीर की प्रतिमा का 17 वां प्रतिष्ठापना दिवस माताजी की छत्र छाया में मनाया गया। यह प्रतिमा 17 वर्ष पूर्व 1975 में माघ शु . 13 को एक छोटे कमरे में विराजमान की गई थी। बाद में उसी जगह भव्य कमल मंदिर बनाया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज के स्वर्गारोहण के पश्चात् उसी संघ परम्परा के वरिष्ठ मुनिराज उपाध्याय श्री अभिनंदनसागर जी महाराज को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी तथा अन्य कई साधुओं की सहमति से 8 मार्च 1992 को खांदू कालोनी बांसवाड़ा में चतुर्विध संघ के सानिध्य में षष्ठम पट्टाचार्य के पद पर प्रतिष्ठापित किया। उक्त समारोह में माताजी ने यहाँ से ब्र. रवीन्द्र कुमार को भेजा था।

पूज्य माताजी के सानिध्य में होली मेले पर वार्षिक रथयात्रा निकाली गई। चैत्र वदी 9 को ऋषभ जयंती 27 मार्च को तथा चैत्र शुक्ला 13, 15 अप्रैल को महावीर जयंती मनाई गई। वै. शु. 3 को अक्षय तृतीया पर्व मनाया गया इसी दिन भगवान ऋषभदेव का प्रथम आहार हस्तिनापुर में हुआ था।

जैन समाज के शीर्ष नेता साहू श्री श्रेयांसप्रसाद जी का 17 मार्च को निधन हो गया। उनके प्रति संस्थान के पदाधिकारियों व सदस्यों ने 19 मार्च को श्रद्धांजलि समर्पित की। साहूजी ने सन् 1980 में जम्बूद्वीप के द्वितीय चरण का शिलान्यास किया था। भगवान बाहुबली के 1981 में सहस्राब्दि महोत्सव के विषय में उन्होंने समय-समय पर पूज्य माताजी से मार्गदर्शन भी प्राप्त किया था।

कलकत्ता के कर्मठ कार्यकर्ता श्री कल्याणचंद पाटनी का 14 मार्च 1992 को सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। सन् 1963 में जब माताजी का चातुर्मास कलकत्ता में हुआ था तभी से पाटनी जी की माताजी के प्रति अनन्य भक्ति रही। 14 मार्च को ही करुणादीप के यशस्वी संपादक श्री जिनेद्र प्रकाश जैन का एटा (उ.प्र) में आकस्मिक निधन हो गया इनकी भी पूज्य माताजी के प्रति अपार भक्ति थी। दोनों महानुभावों के प्रति संस्थान की ओर से श्रद्धांजलि समर्पित की गई।

श्री अमरचंद जैन होमब्रेड परिवार मेरठ ने 29 मई से 9 जून तक इन्द्रध्वज विधान किया। पू. गणिनी माताजी के प्रतिदिन विधान के मध्य प्रवचन हुए। मध्य में 31 मई ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी को भगवान शांतिनाथ के निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया तथा रथयात्रा निकाली गई। आषाढ़ अष्टान्हिका में श्री सुधीरकुमार, सुभाषचंद जैन मुजफ्फरनगर ने श्री सिद्धचक्र विधान हर्षोल्लास से किया। ब्र. धरणेन्द्र विधानाचार्य थें । विधानों में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी एवं क्षुल्लक श्री मोतीसागर (मेरे) तथा आ. श्री अभयमती माताजी के समय समय पर प्रवचन हुए।

सैंतिसवाँ चातुर्मास (1992-जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में)

13 जुलाई 1992- आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को जम्बूद्वीपस्थल पर गणिनी माताजी ने ससंघ वर्षायोग की स्थापना की। वर्षायोग स्थापना के अगले दिन पूज्य माताजी के दीक्षा गुरु आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज का स्मरण करते हुए गुरूपूर्णिमा के रुप में उनका जन्मदिन मनाया गया। श्रावण कृ. एकम को भगवान महावीर की प्रथम दिव्यध्वनि खिरी थी। उसका स्मरण करते हुए उसे "वीर शासन जयंती" के रूप में मनाया गया। सम्मेदशिखर से मोक्ष प्राप्त करने वाले भगवान पार्श्वनाथ अंतिम तीर्थंकर थे उनका श्रा. शु. 7 को मोक्षकल्याणक मनाया गया। सम्मेदशिखर पर्वत की कृत्रिम रचना बनाकर निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। भादव शुक्ला दूज- 29 अगस्त को बीसवीं शताब्दि के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की 37वीं पुण्य तिथी पर उनकी पूजा भक्ति तथा गुणानुवाद करके मनाई गई। समस्त कार्यक्रमों में पू. गणिनी माताजी का ससंघ सानिध्य प्राप्त रहा।

दशलक्षण पर्व में श्री मनोजकुमार जैन हस्तिनापुर ने सपरिवार कल्पद्रुम विधान सम्पन्न किया। श्री अमरचंद होमब्रेड ने भी द्वितीय चक्रवर्ती बनकर पूजा की। विधान पूजन के अतिरिक्त पर्व सम्बंधी प्रवचनों का भी लाभ सबको मिला। विधान की विधि के अनुसार विधान पर्यंत प्रतिदिन चारों प्रकार का दान बांटा गया।

8 से 12 अक्टूबर 1992 तक जम्बूद्वीप स्थल पर "चारित्र निर्माण संगोष्ठी" का आयोजन पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में जम्बूद्वीपस्थल पर किया गया। इस संगोष्ठी में देश भर से 100 से अधिक उच्चकोटि के विद्वानों के अतिरिक्त सेठ श्री देवकुमार सिंह जी कासलीवाल इंदौर जैसे अनेक श्रेष्ठीगण भी पधारे थे। बहुत सफल संगोष्ठी रही।

11 अक्टूबर 1992- आसौज शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) के शुभ दिन पू. गणिनी प्रमुख माताजी की 59 वीं जन्म जयंती विशाल समारोह पूर्वक मनाई गई । मुख्य अतिथी के रुप में केन्द्रिय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री उत्तम भाई पटेल पधारे थे। राज्य सभा सदस्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द्रिका केनिया भी पधारी थीं। अनेकों प्रदेशों के भक्त भी बड़ी संख्या में पूज्य माताजी के प्रति अपने भक्ति सुमन समर्पित करने के लिए पधारे थे। उसी दिन पूज्य माताजी को उनका अभिनंदनग्रंथ मंत्री महोदय ने विमोचित करके उनके कर कमलों में समर्पित किया।

''गणिनी ज्ञानमती अभिवंदन ग्रंथ'' के संपादक मंडल में कई विद्वानों के नाम हैं किन्तु उसके तैयार करने में सर्वाधिक परिश्रम आ. श्री चंदनामती माताजी ने किया। कई महीनों का समय उसमें लगाया। यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। सदियों तक यह ग्रंथ ज्ञानमती माताजी की महिमा को प्रद्योतित करता रहेगा।

राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर में 17 से 29 सितम्बर 1992 तक पू. माताजी द्वारा रचित कल्पद्रुम महामंडल विधान का आयोजन विशाल रुप में किया गया था। जिसमें 1300 स्त्री-पुरुषों ने पूजन की तथा प्रतिदिन 5 से 10 हजार स्त्री-पुरुष विधान देखने तथा सुनने आते थें। विधान के निर्विघ्न एवं सानंद सम्पन्नता से हर्षित होकर जयपुर से 45 बसों द्वारा 3000 श्रावक-श्राविकाओं ने 18 अक्टूबर 1992 को आकर विशाल सभा में विधान की महिमा को बताते हुए पूज्य गणिनी माताजी को ''आर्यिका शिरोमणी'' की उपाधि प्रदान करते हुए सम्मानित किया। संस्थान की ओर से आगत समस्त महानुभावों का स्वागत किया गया।

14 अक्टू. कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को पिछली रात्रि में पूज्य माताजी ने वर्षायोग का समापन किया अनंतर भगवान महावीर के निर्वाण के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाकर दीपावली मनाई गई।

चातुर्मास के पश्चात्—सनावद (म.प्र.) में सम्पन्न पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में क्षुल्लक मोतीसागर जी- धर्मकेशरी आचार्य श्री दर्शन सागर जी महाराज तथा उपाध्याय श्री समतासागर जी महाराज की प्रेरणा एवं सानिध्य में 26 से 30 नवम्बर 1992 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न हुई उसमें सम्मिलित होने के लिए आचार्य श्री ने मुझे (क्षुल्लक मोतीसागर) को सनावद आने के लिए समाज को विशेष प्रेरणा दी। तदनुसार पूज्य माताजी ने मुझे सनावद जाने का आदेश दिया। ब्र. रवीन्द्र कुमार, मनोज कुमार आदि के साथ मैं सनावद गया। 1 दिसम्बर को सनावद से वापस प्रस्थान करके सिद्धवरकुट, पावागिरी-ऊन बड़वानी, बनेड़िया, बजरंगगढ़ के दर्शन करते हुए 5 दिसम्बर को हस्तिनापुर आ गये।

माघ वदी 9 दि. 16 जनवरी 1993 को पू. आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 8वीं पुण्यतिथी प्रतिवर्षानुसार पादप्रक्षाल, पूजन श्रद्धांजलि सभा करके मनाई गई।

वैसे तो माताजी को धनतेरस-23 अक्टूबर 1992 को प्रातः 4 बजे सामायिक के पश्चात् ध्यान करते हुए रायगंज अयोध्या में स्थित भगवान ऋषभदेव की विशालकाय 31 फुट उत्तुंग प्रतिमा के दर्शन करते हुए अंतर्मन में उस विशाल प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक कराने की प्रेरणा प्राप्त हुई। तभी माताजी ने अयोध्या जाने का मन बना लिया था किन्तु अनेक प्रकार से ऊहापोह के पश्चात् अंततोगत्वा अयोध्या के लिए विहार करने का निश्चय हो गया। इससे पहले माताजी ने कभी उस प्रतिमा के साक्षात् दर्शन नहीं किये थे।

जम्बूद्वीप स्थल पर तेरहद्वीप रचना मंदिर का शिलान्यास—पूज्य गणिनी आर्यिका शिरोमणी श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ मंगल सानिध्य में लाला महावीरप्रसाद जैन बंगाली स्वीट, साउथ एक्स. नई दिल्ली के कर कमलों से तेरहद्वीप रचना मंदिर का शिलान्यास 5 फरवरी 1993 माघ शुक्ला तेरस को किया गया। इस मंदिर में तेरहद्वीप की रचना बनाई जावेंगी जिसमें 458 अकृत्रिम चैत्यालयों में 458 प्रतिमाएं विराजमान की जावेंगी।

अयोध्या के लिए मंगल विहार—11 फरवरी 1993 तिथी फाल्गुन कृष्णा पंचमी गुरुवार को मध्यान्ह 1 बजे पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने ससंघ अयोध्या तीर्थ के लिए जम्बूद्वीपस्थल से मंगलविहार कर दिया संघ में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर, क्षुल्लिका श्रद्धामती, ब्र. रवीन्द्र कुमार, ब्र0 कु0 बीना, कु. आस्था आदि थे। हस्तिनापुर से बहसूमा, मीरापुर, बिजनौर, नहटोर, धामपुर, स्योहरा, काँठ तथा मुरादाबाद में धर्मप्रभावना करते हुए 12 मार्च को भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान कल्याणक भूमि अहिक्षेत्र में पदार्पण हुआ। यहाँ संघ 3 दिन रहा। उसी समय इस पुनीत क्षेत्र पर माताजी ने तीस चौबीसी की 720 प्रतिमाओं की स्थापना की योजना प्रदान की। यह योजना साकार होकर वहाँ 11 शिखरों वाला अति सुंदर विशाल मंदिर बनकर तैयार हो गया है उसमें 720 प्रतिमाएं भव्य कमलों पर विराजमान की गई हैं।

अहिक्षेत्र से बरेली शाहजहाँपुर होते हुए महावीर जयंती पर सीतापुर संघ पहुँचा। अहिक्षेत्र से पूर्व 1 मार्च से 6 मार्च 1993

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तक श्री निर्मल कुमार सेठी की शुगर मिल बिलारी में सिद्धचक्रविधान माताजी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ यहाँ अयोध्या तीर्थविकास के लिए चर्चा प्रारंभ हुई।

4 अप्रैल को महावीर जयंती सीतापुर में उत्साहपूर्वक मनाई गई। वहीं पर पू. माताजी का 37 वाँ आर्यिका दीक्षा जयंती महोत्सव बैसाख वदी दूज -8 अप्रेल 1993 को भव्य रूप में मनाया गया। यहीं पर अयोध्या में त्रिकाल चौबीसी की 72 प्रतिमाएं स्थापित करने की योजना ने साकार रूप धारण किया। 15 मिनट में 62 प्रतिमाओं के दातार सुनिश्चित हो गये। सीतापुर से सिधौली, बिसवां होते हुए पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी (गणिनी माताजी की जन्मदात्री मां) की जन्मभूमि महमूदाबाद में माताजी के प्रथम बार पदार्पण के मंगल अवसर पर भव्य स्वागत किया। 25 अप्रैल को अक्षय तृतीया पर्व सोल्लास मनाया गया। वहाँ भारी धर्म प्रभावना करके संघ फतेहपुर पहुँचा। फतेहपुर में अपूर्व उत्साह के साथ धर्मामृत की वर्षा हुई।

40 वर्ष के पश्चात् पूज्य माताजी का संघ सहित जन्मभूमि टिकैतनगर में मंगल पदार्पण— अवध के अनेकों नगरों में महती प्रभावना करते हुए पूज्य माताजी का अपनी जन्मनगरी टिकैतनगर (जिला-बाराबंकी) उ.प्र. में ससंघ 9 मई 1993 रविवार को मंगल पदार्पण हुआ। भारी गरम जोशी के साथ स्वागत किया गया। स्वागत के लिए प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह पधारे थे। संघ का 8 जून तक टिकैतनगर में प्रवास रहा। 8 जून को अयोध्या तीर्थ के लिए टिकैतनगर से मंगल विहार हुआ।

अयोध्या तीर्थ पर 16 जून को माताजी का ससंघ पदार्पण हुआ। 17 जून को त्रिकाल चौबीसी मंदिर का शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। वैसे तो माताजी ने आने वाला1993 का चातुर्मास टिकैतनगर में करने की 99 प्रतिशत स्वीकृती प्रदान कर दी थी किन्तु अयोध्या तीर्थ की दयनीय स्थिती को देखते हुए उन्होंने 1 प्रतिशत छूट का लाभ उठाते हुए अयोध्या में ही 1993 का चातुर्मास करने की घोषणा कर दी।

अड़तीसवाँ चातुर्मास (1993- अयोध्या तीर्थ में)

पूज्य माताजी ने आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी-2 जुलाई 1993 को संघ सहित रायगंज दि. जैन मंदिर अयोध्या में बड़ी मूर्ति के सामने वर्षायोग की स्थापना की। यहाँ 10 माह तक प्रवास रहा। 10 माह में पूजा विधान आदि के विविध कार्यक्रम होते रहे। तीन चौबीसी मंदिर का निर्माण कार्य चलता रहा। सन् 1965 में बड़ी प्रतिमा विराजमान होने के पश्चात 28 वर्षों से या उससे पूर्व बीसवीं शताब्दी में किसी दि. जैन साधु साध्वी को चातुर्मास का अवसर नहीं आ पाया। माताजी का यह अयोध्या में प्रथम चातुर्मास था।

पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की 60 वीं जन्म जयन्ती तथा भारतीय संस्कृति के आद्यप्रणेता भगवान ऋषभदेव पर राष्ट्रीय संगोष्ठी— 27 से 31 अक्टूबर 1993 तक भगवान ऋषभदेव पर एक विशाल संगोष्ठी का आयोजन पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में रायगंज दि. जैन मंदिर के सामने बडे भव्य पंडाल में रखी गई थी जिसके विविध सत्रों में अनेकों विद्वानों ने अपने आलेख पढ़े। इस संगोष्ठी में शताधिक जैन तथा जैनेतर विद्वान पधारे थे। यह संगोष्ठी दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर तथा अवध विश्व विद्यालय फैजाबाद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई थी। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. अनुपम जैन इंदौर थे। संगोष्ठी का समापन 31 अक्टूबर को किया गया। 30 अक्टूबर 1993 आसौज शु. 15 (शरदपूर्णिमा) के शुभ दिन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की 60 वीं जन्मजयन्ती का कार्यक्रम प्रात: सूर्योदय से पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। भक्तों ने आकर माताजी के पाद प्रक्षाल कर आरती उतारी, पुष्प वृष्टि की, भजन गाए, नृत्य किये। सर्वत्र खुशी का वातावरण व्याप्त था क्योंकि स्वयं माताजी प्रसन्न मुद्रा में सबको मंगल आशीर्वाद प्रदान कर रही थीं। मध्यान्ह में विशाल विनयांजली सभा की अध्यक्षता की श्री निर्मल कुमार सेठी ने, तथा मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे श्री आर.के.जैन बंबई। अनेक श्रीमानों, विद्वानों, भक्तों तथा कार्यकर्ताओं ने अपनी विनयांजलियाँ भक्ति विभोर होकर अर्पित की। माताजी में विद्यमान अनेक गुणों का वर्णन 5-10 मिनट, घंटे-दो घंटे अथवा दो चार दिनों में करना संभव नहीं था। विनयांजलि केवल प्रतीकात्मकरुप में ही कर पा रहे थे समयाभाव के कारण। पूज्य माताजी द्वारा लिखित "अयोध्या तीर्थ पूजा" पुस्तक का विमोचन श्री त्रिलोक चंद जी कोठारी कोटा ने किया। और भी अनेक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं के विमोचन हुए जिनमें भगवान ऋषभदेव विषयक सामग्री थी। "जैन साहित्य में राम" विषय पर निबंध प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्रदान किये गये। बाल लेखकों को भी पुरस्कृत किया गया। पुरस्कारों की राशि श्री छोटेलाल जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पारमार्थिक ट्रस्ट टिकैतनगर तथा श्रीमती रूपाबाई पारमार्थिक ट्रस्ट सनावद के सौजन्य से प्रदान की गई। ''ज्ञानमती चित्रप्रतियोगिता'' में 39 चित्र प्राप्त हुए थे। उन चित्र निर्माताओं को भी प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा शेष को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। अनेक महानुभावों ने इस शुभ अवसर पर 60-60 वस्तुएं आगत महानुभावों को भेंट में दी ''ऋषभ जन्मभूमि अयोध्या'' पुस्तक जो कि गणिनी माताजी ने अयोध्या में ही लिखकर तैयार की थी उसका विमोचन श्री उम्मेदमल पांड्या ने किया।

छोटी छावनी अयोध्या के सुप्रसिद्ध महंत श्री नृत्यगोपालदासजी ने समारोह में पधारकर अपनी विनम्र पुष्पांजलि समर्पित की। दिल्ली, आसाम, नागालैंड, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अनेक नगरों, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, हैदराबाद तथा अवध के प्रत्येक जैन आबादी वाले नगरों तथा शहरों से हजारों की संख्या में पधारकर माताजी की जन्मजयन्ती भारी उत्साहपूर्वक मनाई। पू.माताजी का अवध तथा अयोध्या में पहली बार दीर्घकालीन प्रवास तथा चातुर्मास हुआ था। स्व. आचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज की नातिन, मांगीतुंगी के निकट ओझर नगर (नासिक) से पधारीं संसार की सबसे छोटी उम्र की जादूगर कु. पल्लवी जैन कासलीवाल तथा भाई चि. पराग कासलीवाल ने अपने अनोखे जादू के कार्यक्रम को दिखाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। दिन में अपनी वाणी रूपी जादू से माताजी के प्रति जो आकर्षक तथा ओजस्वी भाषण दिया उससे सारी जनता रोमांचित हो गई।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को ' 'चारित्र चन्द्रिका' ' की दिव्य उपाधि यहीं प्रदान की गई—यूं तो माताजी को पूर्व में समय-समय पर अनेक उपाधियों से विभूषित किया गया फिर ''चारित्र चन्द्रिका'' की उपाधि भी अतीव सार्थक तथा सामयिक रही। सन् 1992 में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने शरदपूर्णिमा 11 अक्टूबर को ''चरित्र निर्माण संगोष्ठी में आगामी वर्ष को चारित्र उत्थान वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की थी। उसी वर्ष के समापन पर यह पुनीत उपाधि संघ तथा समस्त जनता ने भक्तिविभोर होकर 30 अक्टूबर 1993 शरदपूर्णिमा के पावन दिन प्रदान की।

9 नवम्बर को महाराजा इंटर कालेज में पूज्य माताजी के मंगल प्रवचन हुए। कालेज के प्राचार्य श्री सुधांशु जी, विद्यार्थियों तथा अध्यापकों ने सरस्वती वंदना के साथ पुष्प अर्पित करते हुए भव्य स्वागत किया। यह कालेज अयोध्या के राजा साहब द्वारा संचालित है 1600 छात्र-छात्राओं ने भगवान ऋषभदेव तथा अयोध्या की प्राचीनता का इतिहास रुचिपूर्वक सुना। मेरे व आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के भी प्रवचन हुए। इस अवसर पर गुजरात के मुख्यमंत्री चिमन भाई पटेल की ध.प. श्रीमती उर्मिला बेन पटेल भी दर्शनार्थ आ गई थीं।

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की पिछली रात्रि में आगम की आज्ञानुसार पूज्य माताजी ने ससंघ भक्ति पाठ करके चातुर्मास समाप्ति की घोषणा की अनंतर भगवान महावीर की पूजा करके निर्वाणलाडू चढ़ाकर दीपावली पर्व मनाया गया। अयोध्या की पावन भूमि पर वर्ष 1993 का यह चातुर्मास अनेक महान उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास के पश्चात्—चातुर्मास समाप्ति के साथ जोरदार तैयारियाँ प्रारंभ हो गईं भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा के महामस्तकाभिषेक की तथा नवनिर्मित त्रिकाल चौबीसी मंदिर में विराजमान होने वाली त्रिकाल चौबीसी की 72 जिनप्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की। तथा वैसे तो पूरे चातुर्मास में इस विषय पर अनेकों बैठकें अयोध्या, लखनऊ, दिल्ली तथा अयोध्या में होती रहीं किन्तु अब उसको मूर्तरूप प्रदान करने का समय आ गया। पूरे देश में इस कार्यक्रम की गूंज फैल गई। पूरे अयोध्या का वातावरण ऋषभदेव मय हो गया।

भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या में भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तथा महामस्तकाभिषेक महोत्सव का शुभारंभ—13 फरवरी 1994 रविवार को विशाल पंडाल के सामने दिल्ली निवासी श्री वीरचंद बड़जात्या ने पूज्य गणिनी माताजी का आशीर्वाद प्राप्त करके महोत्सव का शुभारंभ झंडारोहण से किया। प्रतिष्ठाचार्य थे- ब्र.बाबा सूरजमलजी। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे केन्द्रीय ग्राम विकास मंत्री उत्तमभाई हरजीभाई पटेल तथा उ.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री भा.ज.पा. नेता श्री कल्याण सिंह जी। अयोध्या के विधायक श्री लल्लूसिंह जी भी पधारे थे। कार्यक्रम की प्रथम सभा ''भरत मंडप'' में हुई जिसका संचालन कर्मयोगी ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन ने किया। मेरें, आ. श्री चंदनामती माताजी के तथा गणिनी माताजी के प्रवचन तथा आशीर्वचन हुए। भगवान के मातापिता बनने का सौभाग्य बाराबंकी निवासी श्री चंदनलालजी व उनकी ध.प. को प्राप्त हुआ सौधर्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्र श्री अनिल कुमार जैन प्रीतविहार दिल्ली को बनने का सुअवसर मिला। 13 से 18 फरवरी तक विविध मंडल विधान अनुष्ठान होते रहे ऋषभदेव पंचकल्याणक तो देश भर में होते रहते हैं वहाँ उन्हें अपने मंडप को अयोध्यापुरी नाम देना पड़ता है किन्तु यहाँ मणिकांचन संयोग रहा कि ऋषभदेव की नगरी अयोध्या में ही ऋषभदेव पंचकल्याणक हो रहा था।

19 फरवरी से 23 फरवरी तक क्रमश: पंचकल्याणक हुए। 19 फरवरी को गर्भकल्याणक के दिन केन्द्रीय उपगृहराज्यमंत्री श्री रामलालराही ने पधारकर विशाल प्रतिमा के दर्शन किये तथा माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। रात्रि में गर्भकल्याणक के बाह्य दृश्य दिखाये तथा अंतरंग क्रियाएं हुई।

20 फरवरी 1994 को प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव पधारे—20 फरवरी को प्रात: जन्मकल्याणक के अंतर्गत भगवान का जन्माभिषेक हुआ सैकड़ों नर-नारियों ने पांडुक शिला पर जन्माभिषेक किया। मध्यान्ह में 3 बजे उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री मुलायमसिंह यादव हेलीकॉप्टर से पधारे। मंदिर परिसर में पधारकर सर्वप्रथम पूज्य माताजी के कक्ष में पधारकर माताजी का विशेष आशीर्वाद ग्रहण किया तथा कुछ सामयिक चर्चा तथा विशेष मार्ग दर्शन प्राप्तकर भगवान ऋषभदेव के दर्शन करते हुए सभा मंच पर पधारे। उपस्थित जनसमुदाय ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ मुख्यमंत्री जी का अभिवादन-स्वागत किया। मुख्यमंत्री के साथ प्रदेश के जेल मंत्री श्री अवधेश प्रसादजी, ग्रामीण विकास मंत्री श्री उमाशंकर कौशिक आदि भी पधारे थे। सभी का समिति की ओर से स्वागत किया गया। सभा की अध्यक्षता कर रहे श्री कैलाशचंद जी चौधरी सनावद का स्वागत मुख्यमंत्री जी ने किया। सभा का संचालन कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने किया।

मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह जी ने अपने भाषण में स्पष्ट शब्दों में कहा कि "राजनीति में आने से पहले मेरा जीवन जैन समाज के मध्य बीता। जैन स्कूल में पढ़ा तथा जैन स्कूल में ही पढ़ाया" इस अवसर पर अनेक घोषणाएं भी की जिनमें कुछ इस प्रकार से थीं- 1-अयोध्या में ऋषभदेव नेत्र चिकित्सालय खोला जावेगा 2-राजघाट राजकीय उद्यान का नाम "ऋषभदेव राजकीय उद्यान कर दिया जावेगा 3-अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद में "भगवान ऋषभदेव जैनचेयर" की स्थापना के लिए उ. प्र. सरकार की ओर से 25 लाख रु. दिया जावेगा 4-अयोध्या में "अवध प्रेसक्लब की स्थापना तथा भवन के लिए 10 लाख रु. अनुदान दिया जावेगा इत्यादि मुख्यमंत्री जी ने जो जो घोषणाएं की उनमें से उपरोक्त सभी मूर्तरूप में परिणत हो गई हैं। सभा में मेरे व श्री आ. चंदनामती माताजी के प्रवचनों के अनंतर गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ओजस्वी प्रवचन हुए।

तपकल्याणक के दिन 21 फरवरी को रात्रि में कवि सम्मेलन हुआ, 22 फरवरी को केवलज्ञान कल्याणक के दिन महिलासम्मेलन हुआ। समवसरण की रचना की गई। 23 फरवरी को प्रात: निर्वाणकल्याणक के पश्चात नवनिर्मित कमल मंदिर में अति सुंदर खिली कमल की गुलाबी पखुंडियों पर क्रमश: त्रिकाल चौबीसी की 72 प्रतिमाएं दातारों ने अपने हाथों से विराजमान की। प्रतिमाओं के विराजमान होने से कमल की आभा शत गुनी हो गई। 23 फरवरी के मध्यान्ह में उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा पधारे। पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त कर सभा में पधारे। सभा की अध्यक्षता जैन समाज के अग्रणी नेता साहू श्री अशोक कुमार जैन ने की। समिती की ओर से राज्यपाल महोदय का स्वागत किया गया। साथ में पधारीं उनकी ध.प. का भी स्वागत किया गया। साहू श्री अशोक कुमार जी का भी स्वागत हुआ। साहू अशोक जी तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष होते हुए भी पहली बार अयोध्या पधारे थे। अयोध्या का मंदिर उन्हीं के पिता श्री साहू शांतिप्रसाद जी ने बनवाया था। मेरे पू. श्री. चंदनामती माताजी तथा गणिनी माताजी के प्रवचन हुए रात्रि में सुप्रसिद्ध संगीतकार रवीन्द्र जैन बम्बई के भजनों की धूम सभा मंडप में रही। उनका एक भजन बड़ा मार्मिक रहा अयोध्या की महिमा के विषय में-"सिर धरने वाली धरती पर पग रखना पड़ते हैं" इत्यादि। साहू अशोक कुमार जी ने अपने भाग्य की सराहना करते हुए पूज्य माताजी का भक्ति पूर्वक आभार व्यक्त किया कि "इस समारोह में मुझे आमंत्रित नहीं किया जाता तो न मालूम कब इस महान शाश्वत तीर्थ के दर्शन होते।" राज्यपाल श्री वोराजी ने भी अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि अयोध्या की प्रसिद्धि अभी तक दुनिया में राम जन्मभूमि के नाम से थी किन्तु पूज्य माताजी के इस प्रयास से अब जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जन्मभूमि के नाम से भी जानी जावेगी।

24 फरवरी 1994 का दिन अयोध्या के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया—23 फरवरी को अयोध्या की गली गली जैन श्रावक-श्राविकाओं से भरी हुई थी। देश के अनेक प्रदेशों से हजारों की संख्या में भक्तगण अयोध्या में पहली बार भगवान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक देखने तथा करने आये थे। 24 फरवरी को प्रातःकाल बहुत बड़ी संख्या में केशरिया परिधान से सुसज्जित होकर अभिषेक करने के लिए तत्पर थे। महामस्तकाभिषेक में प्रथम कलश करने का सौभाग्य दिल्ली के श्रेष्ठी लाला महावीर प्रसाद जी जैन बंगाली स्वीट साउथएक्स नई दिल्ली को प्राप्त हुआ। जल के कलशों से अभिषेक के पश्चात् पंचामृत अभिषेक हुआ। क्रमशः नारियल जल, इक्षुरस, घृत, दूध, दही, सर्वोषधि, कल्कचूर्ण, केशर से अभिषेक की छटा देखते ही बनती थी। भक्तगण भक्ति में सराबोर होकर नृत्य कर रहे थे। वे स्वयं भी अभिषेक के गंधोदक से रंगीन हो रहे थे। इस अवसर पर संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन ने भजनों के माध्यम से सभी को भक्ति में सराबोर कर दिया। मंदिर के भीतर भक्तगण भगवान पर पुष्पवृष्टि कर रहे थे तथा बाहर में अयोध्या के राजा विमान से पुष्पवृष्टि करके भगवान के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित कर रहे थे आकाशवाणी से कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया जा रहा था। पूज्य गणिनी माताजी व समस्त संघ के हर्ष का पारावार नहीं था सभी के परिश्रम ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिये। भगवान की आरती तथा शांतिधारा से महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम का समापन हुआ। पूज्य माताजी ने आकाशवाणी के माध्यम से समस्त जन समुदाय को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

समारोह सदियों के लिए अपनी अमिट छाप छोड़ गया। अयोध्या के इतिहास में एक कीर्तिमान स्थापित कर गया। इससे पहले अयोध्या में जैन समुदाय की इतनी बड़ी भीड़ कभी नहीं देखी गई। पूज्य माताजी ने जिस उद्देश्य को लेकर हस्तिनापुर से विहार किया था वह शतप्रतिशत सफल रहा। जैन अयोध्या की वीरानियत दूर हो गई। भय के भूत भाग गये, सांप बिच्छू चले गये, गुंडे पलायमान हो गये। बी.बी.सी लंदन ने अपने प्रसारण में कहा कि अभी तक अयोध्या में दो शक्तियाँ देखी जा रही थी किन्तु अब तीसरी शक्ति के रूप में जैन उभरकर आये हैं। आगे प्रति पांच वर्ष में इस प्रकार का महामस्तकाभिषेक करने की प्रेरणा पूज्य माताजी ने समिति को प्रदान की जिसे सभी ने विनयपूर्वक स्वीकार किया।

16 जून 1993 से 6 अप्रैल 1994 तक के 295 दिन जैन तीर्थ अयोध्या के इतिहास में स्वर्णिम रहे केवल पंचकल्याणक अथवा महामस्तकाभिषेक ही नहीं हुआ अपितु क्षेत्र का आमूल चूल विकास हुआ, टोकों के जीर्णोद्धार हुए। अनेक शिलालेख लगे। यात्रियों की आवासीय सुविधा के लिए "ज्ञानमती निलय" का भव्य निर्माण हुआ।

अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी का चुनाव—पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तथा भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव 24 फरवरी 1994 में सम्पन्न होने के पश्चात् चैत्र कृष्णा नवमी 4 अप्रैल 1994 को भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती का वार्षिकोत्सव पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में रथयात्रा तथा भगवान के अभिषेक पूर्वक सम्पन्न हुआ। उसी दिन अयोध्या तीर्थ क्षेत्र कमेटी का चुनाव भी हुआ। जिसमे ब्र. रवीन्द्र कुमार को अध्यक्ष, सरोज जैन फतेहपुर को महामंत्री, तथा प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी सा) टिकैतनगर को कोषाध्यक्ष के रूप में चुना गया। उपाध्यक्ष, मंत्री आदि के पदों के लिए योग्य एवं अनुभवी महानुभावों को चुना गया। इस कमेटी के पदाधिकारियों का चुनाव आगामी 3 वर्ष के लिए किया गया। विगत 12 वर्षों से लगभग वे ही पदाधिकारी क्षेत्र की उन्नति कर रहे हैं।

6 अप्रैल 1994 को माताजी ने ससंघ अयोध्या से लखनऊ के लिए मंगल प्रस्थान किया। 22 अप्रैल को लखनऊ में संघ का पदार्पण डालीगंज में हुआ दो माह तक लखनऊ की विभिन्न कालोनियों में माताजी का भ्रमण हुआ जिससे अनेक प्रकार के आयोजनों से सर्वत्र ज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई। 11 जून से 19 जून तक इन्दिरानगर कालोनी में शिक्षण शिविर, संगोष्ठी तथा श्रावक सम्मेलन आदि सम्पन्न हुए।

पूज्य माताजी के मंगल सानिध्य में चारबाग में महावीर जयंती का समारोह बहुत उत्साह पूर्वक मनाया गया। बैसाख कृष्णा दूज 1 मई 1994 को लखनऊ के सुप्रसिद्ध आडिटोरियम "रवीन्द्रालय" में पू. माताजी का 38वाँ आर्यिका दीक्षा जयंती का कार्यक्रम भी अति उल्लास पूर्वक वातावरण में सम्पन्न हुआ। 9 जून को माताजी ने विशाल जन समूह के मध्य इन्दिरा नगर में वर्ष 1994 का चातुर्मास टिकैतनगर में करने की घोषणा की जिससे पूरे अवध में हर्ष की लहर दौड़ गई।

23 जून को माताजी का इन्दिरा नगर लखनऊ से विहार होकर 25 जून को बाराबंकी में पदार्पण हुआ यहाँ 10 जुलाई तक सिद्धचक्र विधान, शिक्षण शिविर आदि अनेक धर्म प्रभावना के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। 11 जुलाई को बाराबंकी से टिकैतनगर के लिए विहार हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्तालिसवाँ चातुर्मास (1994-टिकैत नगर (बाराबंकी उ.प्र. में)

21 जुलाई 1994 आषाढ़ शु. 14 को टिकैतनगर में चातुर्मास की स्थापना— चातुर्मास स्थापना के कार्यक्रम में अवध के अनेक नगरों से भक्तगण पधारे थे। इसी दिन पूज्य माताजी ने केशलोंच भी किये। पिच्छी परिवर्तन भी किया गया। पूज्य माताजी के क्षुल्लिका दीक्षा के पश्चात् प्रथम चातुर्मास सन् 1853 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज के साथ टिकैतनगर में हुआ था। तब से 40 वर्षों के बाद टिकैतनगर निवासियों को चातुर्मास कराने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ।

आषाढ़ की आष्टान्हिका में पूज्य माताजी के सानिध्य में चार सिद्धचक्र मंडल विधानों का एक साथ आयोजन किया गया। वर्षायोग के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हो गये। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को आ. श्री वीरसागर महाराज की जन्म जयन्ती, श्रावण कृष्णा एकम् को वीरशासन जयंती मनाई गई। 13 अगस्त 1994 को आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का 5 वाँ दीक्षा दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। 12,13,14, अगस्त को तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर एवं भगवान पार्श्वनाथ पर संगोष्ठी तथा चित्र प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय बालक-बालिकाओं तथा स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया प्रतियोगियों ने भगवान पार्श्वनाथ तथा सम्मेदशिखर के सुन्दर-आकर्षक चित्र बनायें। इसी शुभ अवसर पर श्री मदनलाल जैन एवं सुभाषचंद जैन ने 12 से 23 अक्टूबर तक इन्द्रध्वज विधान सम्पन्न किया जिसमें अनेकों स्त्री-पुरुषों ने भाग लेकर पुण्योपार्जन किया।

दशलक्षण पर्व से पूर्व भादव सुदी 2 दि.7 सितम्बर को चा.च. आ. श्री शांतिसागर जी महाराज की पुण्य तिथी मनाई गई उक्त अवसर पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी तथा आचार्यश्री से संबंधित चित्र प्रतियोगिता भी रखी गई थी। 9 सित. भादव सुदी 5 से 18 सित. भादव सुदी 14 तक विविध कार्यक्रमों के साथ दशलक्षण पर्व मनाया गया। दस उपवास, पांच उपवास, तीन उपवास, करने वाले अनेकों बालक-बालिकाओं तथा स्त्री पुरुषों का स्वागत किया गया। दशधर्म तथा तत्त्वार्थसूत्र पर दोनों माताजी तथा मेरे प्रवचन हुए 20 सित. को क्षमावणी पर्व मनाया गया।22 सित. को क्षमावणी पर्व के अवसर पर सार्वजनिक सभा में आ. श्री चंदनामती माताजी ने अपनी जन्मभूमि में पहली बार केशलोंच किये।

जन्मभूमि टिकैतनगर में आसौज शुक्ला 15(शरदपूर्णिमा)19 अक्टूबर 1994 को पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 61 जाँ जन्म दिन—पूज्य माताजी के षष्ठी पूर्ति समारोह के पावन अवसर पर श्री प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी सा) अमर उद्योग टिकैत नगर ने 6 से 17 अक्टूबर को सर्वतोभद्र महामंडल विधान का आयोजन किया। षष्ठी पूर्ति समारोह का भव्य आयोजन 17 से 19 अक्टूबर तक विशाल समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा, कारागार मंत्री अवधेशप्रसाद जी, फैजाबाद के पूर्व विधायक श्री जयशंकर प्रसाद पांडे आदि अनेक राजनैतिक व प्रशासनिक अधिकारी पधारे। देशभर के माताजी के निकटस्थ 61 श्रेष्ठियों का सम्मान किया गया। 61 सिलाई मशीने बांटी गईं, ग्रामीण स्त्री पुरुषों को साड़ियाँ व कम्बल बांटे गये। श्री हंसराज जैन लखनऊ वालों की तरफ से संपूर्ण टिकैत नगर के समस्त जातियों के नरनारियों को व आसपास ग्रामों से आई जनता के लिए भंडारा (प्रीतिभोज) का आयोजन किया गया। टिकैतनगर के इतिहास में एक यादगार कार्यक्रम हुआ। शरदपूर्णिमा के दिन ही श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेंटर दिल्ली के द्वारा टिकैतनगर में निर्मित ज्ञानमती कीर्तिस्तम्भ का उद्घाटन किया गया। रात्रि में डी.पी. कौशिक आर्ट ग्रुप मुजफ्फरनगर द्वारा अतीव आकर्षक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। श्री छोटी सा, श्री मदनलाल जैन तथा सुभाष चंद जैन की ओर से समस्त जैन बंधुओं के लिए प्रीतिभोज का आयोजन किया गया था।

वर्षायोग के मध्य टिकैतनगर से मात्र 6 कि.मी दूर दरियाबाद में 24 से 30 सितम्बर तक आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मैंने जाकर अनेक विषयों पर शिक्षण प्रदान करके ज्ञानामृत की वर्षा की । वहाँ के लालबहादुर शास्त्री इन्टर कालेज में भी प्रवचन हुए।

चातुर्मास समापन की पावन बेला में वर्षायोग समापन के साथ भगवान महावीर का निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। दीपावली मनाई गई। जनमानस में बाहर से उल्लास दिखाई दे रहा था किन्तु चातुर्मास समापन की घोषणा से सबके मन रोने लगे थे कि अब माताजी विहार करने के लिए स्वतंत्र हो गई हैं।

टिकैतनगर से विहार—विहार के समय मंदिर से निकलते ही स्त्री-पुरुषों, बालक-बालिकाओं की अश्रुधारा प्रवाहित होने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लगी। उसके साथ अनेक लोग जोर जोर से सिसकियाँ भर कर रोने लगे। कह रहे थे माताजी हम आपके बिना कैसे रहेगें। हमारे दिन कैसे व्यतीत होंगे कुछ आगे बढ़ने पर सिसकियाँ करुणक्रंदन में बदल गईं। ऐसा लग रहा था मानों नगर निवासी अश्रुधाराओं से माताजी के पादप्रक्षाल कर रहे हैं। अत्यंत कठोर हृदय करने के बावजूद भी सबके शोक की उमड़ती सरिता देखना पूज्य माताजी तथा समस्त संघ के लिए बहुत कठिन हो रहा था टिकैतनगर से दरियाबाद जाने तक भी 6 कि.मी. तक सैकड़ों लोगों के आंसू बंद नहीं हो पा रहे थे। (यह रुदन जन्मभूमिवासियों के अपनत्व तथा वात्सल्य को बता रहा था। वह दिन था 9 नवम्बर 1994 का)।

चातुर्मास के पश्चात्—दरियाबाद में 9 नवम्बर को संघ का प्रवेश हुआ और उसी दिन से वहाँ कल्पद्रुम विधान प्रारंभ हो गया जो 19 नवम्बर को पूर्ण हुआ। विधान के मध्य विविध प्रकार के ज्ञानवर्धक कार्यक्रम तथा दोनों माताजी व मेरे समय-समय पर प्रतिदिन प्रवचन भी हुए, दरियाबाद से अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर के लिए 20 नव. को प्रस्थान हुआ। 21 नवम्बर से 1 दिसम्बर 1994 तक कल्पद्रुम विधान प्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुआ अतिशय युक्त भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा का मस्तकाभिषेक हुआ। लखनऊ, बाराबंकी, टिकैतनगर, फतेहपुर आदि नगरों से भक्तगण बड़ी संख्या में पधारें थे।

त्रिलोकपुर से प्रस्थान करके माताजी का ससंघ 16 दिसम्बर 1994 को पुनः अयोध्या में पदार्पण हुआ। रायगंज स्थित बड़ी प्रतिमा वाले मंदिर के एक तरफ समवसरण मंदिर में समवसरण रचना तथा मंदिर के शिखर का तथा दूसरी तरफ गत वर्ष में निर्मित तीन चौबीसी मंदिर के शिखर का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा था। माताजी के पहुँचने से ज्ञान की गंगा भी प्रवाहित होने लगी। आ. चंदनामती माताजी, क्षु0 मोतीसागर जी तथा स्वयं गणिनी माताजी द्वारा संघ के शिष्यों को अध्ययन कराया जा रहा था। आने वाले श्रावक भी लाभ लेते थे। 29 दिसम्बर 1994 की शाम को सूचना मिली कि मेरे दीक्षा गुरु वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का पावन सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में आज ही समाधिमरण हो गया यह समाचार सुनकर संघ में सभी को क्षोभ हुआ। माताजी के सानिध्य में श्रद्धांजलि सभा की गई। 30 दिसम्बर को पूज्य माताजी के सानिध्य में सभा का आयोजन करके साधुओं तथा संघ के व्रतियों तथा आये हुए श्रावकों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

निर्माणाधीन समवसरण मंदिर में विराजमान होने वाली प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 15 से 20 फरवरी 1995 को होना निश्चित हुआ था उसी की तैयारी जनवरी 1995 से प्रारंभ हो गई थी। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 15 फरवरी को झंडारोहण के साथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। 16 से 20 फरवरी तक क्रमशः पंचकल्याणक महती प्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुए। 20 फरवरी को प्रातः मोक्षकल्याणक के पश्चात् समवसरण मंदिर में यथा स्थान प्रतिमाएं विराजमान की गईं अनंतर त्रिकाल चौबीसी तथा समवसरण मंदिर के शिखरों पर कलशारोहण तथा ध्वजारोहण किये गये।

ऋषभदेव राजकीय उद्यान में भगवान ऋषभदेव की 21 फुट उत्तुंग प्रतिमा का अनावरण—एक भव्य शोभायात्रा के साथ पूज्य माताजी ससंघ रायगंज से ऋषभदेव राजकीय उद्यान में पहुँची 21 फुट की प्रतिमा को बनने में एक माह का समय लगा। किन्तु राजकीय उद्यान में प्रतिमा स्थापित करने की स्वीकृति फैजाबाद के तत्कालीन कमिश्नर श्री राधेश्याम कौशिक ने मात्र 15 सेकेंड में प्रदान की थी। उन्हीं के कर कमलों से प्रतिमा का अनावरण कराया गया। कौशिकजी का भावभीना स्वागत किया गया। पूज्य माताजी ने कमिश्नर महोदय को खूब आशीर्वाद प्रदान किया। वह प्रतिमा उद्यान में आने वालों को सहज रूप में वीतरागता का पावन संदेश देकर पुण्योपार्जन करा रही है, मूर्ति निर्माता श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेंटर नई दिल्ली द्वारा लगाया गया द्रव्य सार्थक हो गया।

उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री मुलायमसिंह यादव गत वर्ष जब महामस्तकाभिषेक महोत्सव में पधारे थे तब डॉ. राममनोहर लोहिया विश्व विद्यालय में ऋषभदेव जैन शोधपीठ खोलने की घोषणा की थी। तदनुसार 5 फरवरी 1995 को उ.प्र0 के राज्यपाल के प्रमुख सचिव श्री योगेन्द्र नारायण मिश्र ने विश्वविद्यालय परिसर में शोधपीठ का शिलान्यास किया उक्त अवसर पर गणिनी माताजी, आ. श्री चंदनामती माताजी, क्षु. मोतीसागर महाराज, ब्र0 रवीन्द्रकुमार तथा संघ की ब्रह्मचारिणी बहनें उपस्थित थीं। वह शोधपीठ तैयार होकर कार्य कर रही है।

पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट् की उपाधि प्रदत्त—5 फरवरी 1995 को विश्वविद्यालय परिसर में शोधपीठ के शिलान्यास में पू. माताजी की उपस्थिती का लाभ उठाते हुए तत्कालीन कुलपति के.पी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नौटियाल ने माताजी को विश्व विद्यालय की मानद उपाधि डी.लिट. से सम्मानित किया। यह सम्मान किसी भी दि.जैन साधु को देश में प्रथम बार प्रदान किया गया।

मुख्यमंत्री महोदय की घोषणानुसार भगवान ऋषभदेव नेत्र चिकित्सालय भी अयोध्या तथा आसपास की जनता को लाभ पहुँचा रहा है। 9 मार्च 1995 को पू. माताजी ने अयोध्या में सरयूतट पर स्थित स्फटिक शिला नामक आश्रम में जाकर सर्वधर्म सम्मेलन में ससंघ उपस्थित होकर उपस्थित जनसमुदाय को जैनधर्म की प्राचीनता से अवगत कराया। 19 से 27 मार्च तक नवनिर्मित समवसरण मंदिर में कल्पद्रुम मंडल विधान सम्पन्न हुआ। विधान में अवध के अनेक नगरों से भक्तगण पधारे थें सभी ने प्रवचनों का लाभ लिया।

28 मार्च को अयोध्या से माताजी का ससंघ हस्तिनापुर के लिए मंगल विहार— मंगल विहार से पूर्व की सभा में जब आ. श्री चंदनामती माताजी ने अपने उद्बोधन के मध्य एक मार्मिक भजन प्रस्तुत किया जिससे सभी उपस्थित जन समुदाय के नेत्र सजल हो गये उसकी दो पक्तियां इस प्रकार से थीं–

निधियाँ कहीं दे दी हैं अयोध्या को मात ने।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तो सम्हाल के।।

अयोध्या से भगवान संभवनाथ की जन्मभूमि श्रावस्ती होकर बहराइच, जरवलरोड़, गनेशपुर, त्रिलोकपुर में धर्म प्रभावना करते हुए संघ का 16 अप्रैल को तहसील फतेहपुर में पदार्पण हुआ जहाँ पू. माताजी का 17 अप्रैल बैसाख वदी दूज को 39 वाँ आर्यिका दीक्षा समारोह भव्यता पूर्वक मनाया गया। फतेहपुर से भीषण गर्मी में विहार करके मार्ग के अनेक नगरों में धर्मामृत एवं ज्ञानामृत की वर्षा की।

28 मई 1995 को भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में पुनः मंगल पदार्पण— पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का संघ सहित अवध प्रांत की 20 माह की यात्रा प्रभावना पूर्वक सानंद सम्पन्न करके जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण हुआ। दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के सदस्यों ने भावभीना स्वागत किया। माताजी के आगमन से सभी अतीव हर्षित थे। स्वाध्याय,अध्ययन, पठन-पाठन, लेखन आदि दैनिक कार्यों के साथ-साथ आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनना प्रारंभ हो गयी। अक्टूबर में पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महोत्सव तथा माताजी का जन्म जयंती उत्साहपूर्वक मनाने की चर्चा चलने लगी।

चालिसवाँ चातुर्मास (1995-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में)

11 जुलाई 1995- आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को संस्थान के पदाधिकारी, सदस्यों तथा दिल्ली, मेरठ, सरधना, खतौली, मवाना आदि के भक्तों के निवेदन पर माताजी ने वर्ष 1995 का चातुर्मास जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में करने की घोषणा के साथ आगम विधिपूर्वक भक्तियाँ पढ़कर चातुर्मास की स्थापना की। प्रतिवर्षानुसार पूर्णिमा को पूज्य माताजी के दीक्षागुरु आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की जन्म जयंती तथा श्रावण कृ. 1 को वीर शासन जयंती मनाई गई जिनमें माताजी व अन्य साधुओं का उद्बोधन हुआ।

चातुर्मास स्थापना वाले दिन पू. माताजी ने केशलोच किये। आषाढ़ की अष्टान्हिका में सिद्धचक्र विधान राजकुमार जैन तथा प्रद्युम्न कुमार जैन टिकैतनगर ने किया। विधान के समापन पर बाराबंकी, तहसील फतेहपुर लखनऊ आदि से भी महानुभाव पधारें थे। कार्यक्रमों की शृंखला में श्रावण शुक्ला 7 को भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाणोत्सव मनाया गया, निर्वाण लाडू संघ के सानिध्य में चढ़ाया गया। भादों शु. दूज को चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की 41 वीं पुण्य तिथि मनाई गई। दशलक्षण पर्व में पूजा के साथ-साथ दशधर्म तथा तत्वार्थसूत्र पर प्रतिदिन गणिनी ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मेरे प्रवचन हुए, रात्रि में प्रश्नमंच तथा भजन भक्ति नृत्य हुए, इन्द्रध्वज मंडल विधान भी पर्व में सम्पन्न हुआ।

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को सामूहिक रुप से रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। अकंपनाचार्य आदि 700 मुनियों की तथा विष्णुकुमार मुनिराज की पूजन, यज्ञोपवीत परिवर्तन हेतु हवन हुआ। भगवान श्रेयांसनाथ जी का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। श्रावण शुक्ला 11 को आ. श्री चंदनामती माताजी का छठा दीक्षा दिवस तथा आसौज कृष्णा 14 को क्षु. मोतीसागर जी महाराज का 55 वाँ जन्मदिवस सामान्य रूप से मनाया गया।

विगत दो वर्षों से मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र ट्रस्ट कमेटी के महानुभाव बार-बार मांगीतुंगी पधार कर वहाँ कई वर्षों से बक्सों में बंद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने हेतु माताजी के पास आते रहे। पू. आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी ने सैकड़ों पत्र लिखकर गणिनी माताजी से निवेदन करती रहीं कि आप जैसी "दिव्य शक्ति" के आये बिना मांगीतुंगी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होना संभव नहीं है इस विषय पर माताजी ने पूर्व में तथा इस चातुर्मास में भी कई बार सोचा-विचारा किन्तु दूरी देखकर जाने की हिम्मत नहीं हो पा रही थी। चर्चाओं के चलते आसौज माह का शुक्ल पक्ष आ गया।

जम्बूद्वीप पंचवर्षीय महोत्सव तथा माताजी की जन्म जयंती के साथ विविध कार्यक्रम—जम्बूद्वीप महोत्सव की पूर्व बेला में 25 सितम्बर से 3 अक्टूबर 1995 तक तीन मूर्ति मंदिर जम्बूद्वीप स्थल पर सम्पन्न हुआ। 1 अक्टूबर को सरस्वती माता की महाआराधना की गई। जम्बूद्वीप महोत्सव का शुभारम्भ 2 अक्टूबर को श्री नरेश बंसल द्वारा किये गये झंडारोहण से हुआ। 4 से 6 अक्टूबर नवनिर्मित ॐ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर तथा शांतिनाथ मंदिर में वेदी प्रतिष्ठा होकर भगवान विराजमान करके तीनों मंदिरों पर कलशारोहण तथा ध्वजारोहण हुए। 4 से 7 अक्टूबर तक " गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी" सम्पन्न हुई जिसमें शताधिक विद्वानों ने भाग लिया। 6 अक्टूबर को अ. भा. दि. जैन युवा परिषद का नैमित्तिक अधिवेशन हुआ 7 अक्टूबर को अ.भा. दि. जैन पत्रकार सम्मेलन, चित्र प्रतियोगिता, विद्वानों के मध्य वाद-विवाद प्रतियोगिता, जम्बूद्वीप प्रदक्षिणा प्रतियोगिता आदि सम्पन्न हुए। 8 अक्टूबर 1995 को प्रातः सुदर्शन मेरू की पांडुक शिला पर 1008 कलशों से भगवान शांतिनाथ का अभिषेक हुआ। मध्यान्ह में गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 62 वें जन्म जयन्ती समारोह की विशाल सभा हुई जिसमें देश के विभिन्न प्रदेशों से हजारों की संख्या में नर-नारी सम्मिलित हुए। केंद्रीय खाद्य मंत्री चौधरी श्री अजित सिंह ने जन्मजयंती महोत्सव का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वन करके पूज्य गणिनी माताजी द्वारा रचित समयसार टीका के उत्तरार्ध का विमोचन किया। इस शुभ अवसर पर श्री अजित सिंह जी ने णमोकार महामंत्र बैंक का भी उद्घाटन किया। डॉ0 अनुपम जैन इन्दौर को "गणिनी आर्यिका ज्ञानमती पुरस्कार" संस्थान की ओर से प्रदान किया गया जिसमें एक लाख रुपया, रजत प्रशस्ति, शाल एवं श्रीफल भेंट किया गया। पुरस्कार सौजन्य कर्त्ता श्री अनिल कुमार जैन कमल मंदिर प्रीत विहार दिल्ली थे।

महोत्सव के मध्य सन् 1994 में अयोध्या में सम्पन्न महोत्सव संबंधी "अयोध्या स्मारिका" का विमोचन किया गया। शरीर स्वस्थता के लिए डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन भोपाल ने एक्यूप्रेशर चिकित्सा शिविर का आयोजन किया था। इस समारोह में 62 विद्वानों को सम्मानित किया गया। श्री मदनलाल जैन टिकैतनगर ने ग्रामीण महिलाओं को 62 साड़ियां तथा श्री उमेशचंद जैन टिकैत नगर ने 62 कम्बल वितरित किये। चौधरी अजित सिंह जी ने श्रावकों के साथ स्वयं भी माताजी के चरण दूध से प्रक्षालित किये। इस प्रकार शरदपूर्णिमा का दिन विविध कार्यक्रमों से आलोकित करता हुआ माताजी के गुणगान करता हुआ पूर्ण हुआ। पुनः पूर्णिमा के चन्द्रमा ने समस्त पृथ्वी मंडल को अपनी शुभ एवं शीतल किरणों से आलोकित करते हुए रात्रि के 9:15 पर सन् 1934 में जगत जननी गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त किया। शरदपूर्णिमा धन्य हो गई।

शरद पूर्णिमा के 15 दिन पश्चात् चातुर्मास समापन की बेला आ गई। कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की पिछली रात्रि में पू. माताजी ने ससंघ भक्तिपाठ करते हुए वर्षायोग की निष्ठापना की। अनंतर कमल मंदिर में भगवान महावीर की प्रतिमा के समक्ष अभिषेक पूजा पूर्वक निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। शाम को दीपावली मनाई गई। मवाना में पू. गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में 26 अक्टूबर से 3 नवंबर तक इन्द्रध्वज विधान सम्पन्न हुआ वहाँ 31 अक्टूबर को माताजी के सार्वजनिक सभा में केशलोंच हुए। मवाना प्रवास पर्यंत पू.आ. श्री चंदनामती माताजी के प्रवचन हुए। 3 नवम्बर को माताजी का पुनः जम्बूद्वीप स्थल पर पदार्पण हुआ 6-7 नवम्बर में कार्तिक मेला हुआ जिसमें प्रतिवर्ष की भांति 25 हजार जैन-जैनेतर नर-नारियों ने जम्बूद्वीप के दर्शन किये।

चातुर्मास के पश्चात्—25 नवम्बर 1995 को प्रातः काल पूज्य माताजी ने बिना किसी से विचार-विमर्श किये 27 नवम्बर को मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र (महाराष्ट्र) के लिए विहार की घोषणा कर दी, यह घोषणा सुनते ही संघ के सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये। फिर भी सभी ने माताजी के मुखारविंद से निकले हुए शब्दों को शिरोधार्य करके संघ की ब्रह्मचारिणी बहनों ने, संघस्थ साधुओं ने तथा ब्र. रवीन्द्र कुमार ने विहार की तैयारी प्रारंभ कर दी। 27 नवंबर सोमवार को शुभ मुहुर्त में विहार हो गया। संघ में पू. गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी, पूज्य आर्यिका श्रीचंदनामती माताजी, मैं (क्षु0 मोतीसागर) क्षु0 श्री श्रद्धामती, कर्मयोगी ब्र0 रवीन्द्र कुमार, ब्र0 श्रीचंद जैन, कु0 बीना, कु0 आस्था, कु0 सारिका, कु0 चन्द्रिका, कु0 इन्दु, कु. अलका थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेरणा क्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों को प्रदान की। वे चरण अभी कुछ समय पूर्व वेदीप्रतिष्ठा पूर्वक चरण स्थापना समारोह 18 जनवरी 2006 को स्थापित किये गये।

हस्तिनापुर से 27 नवम्बर 1995 को विहार करके कदम-कदम चलते हुए उ.प्र.,दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र इन 6 प्रदेशों की 1620 कि.मी. की यात्रा 6 खण्ड विजय के समान करते हुए प्रतिदिन 15-20 कि.मी. की पदयात्रा करके पूरे 5 माह पश्चात् 27 अप्रैल 1996 को हर्षोल्लासपूर्वक मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पदार्पण हुआ। न सर्दी देखी न गर्मी चलते ही चले गये और अंततोगत्वा अपने चरम लक्ष्य पर सकुशल पहुंच ही गये। इस पर्वतीय यात्रा ने जन-जन में जागृति उत्पन्न कर दी। पूज्य माताजी ने अपनी गहरी सूझबूझ से अनेकों स्थानों पर नूतन योजनाएं भेंट स्वरूप प्रदान कीं। मांगीतुंगी क्षेत्र पर पहुँचने से पहले ही वहाँ बाधाएं दूर होना प्रारंभ हो गईं। सबसे बड़ी बाधा दूर हुई पानी की। क्षेत्र के निकट बोरिंग होते ही भरपूर पानी उपलब्ध हो गया। पानी की समस्या हल हो गई। देश के विभिन्न प्रदेशों में लू-लपट चल रही थी किन्तु मांगीतुंगी में शीतलता थी। समस्त कार्यकर्त्ता प्रतिष्ठा महोत्सव के कार्यों को मूर्तरूप प्रदान करने में जुटे थे। 55 वर्षों के बाद पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की शुभ घड़ी आ गई। देश के विभिन्न भागों से भक्तों की टोलियाँ द्रुत गति से आना प्रारंभ हो गया। मांगीतुंगी का स्वरूप ही बदल गया, जंगल में मंगल हो गया। मुनि श्री रयणसागर जी महाराज, गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी तथा आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी तीनों संघों का मंगल मिलन हुआ। सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य ब्र. श्री सूरजमल जी बाबाजी तथा उनके समस्त सहयोगी विद्वान आ गये। प्रतिष्ठा के सौधर्म इन्द्र आदि समस्त पात्र आ गये तथा प्रतिष्ठा का शुभ दिन भी आ गया, 3 मई 1996 वैसाख शुक्ला पूर्णिमा को प्रातः काल की मंगल बेला में तीनों संघों के सानिध्य में झंडारोहण हुआ। 3मई से ही पंचकल्याणक संबधी क्रियाएं विधि-विधान प्रारंभ हो गये। 19 से 23 मई तक चिर प्रतीक्षित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मनोहर जोशी तथा कई राजनेता आये। प्रतिष्ठा के मध्य भी माताजी द्वारा किये जा रहे जाप्य मंत्रों के प्रभाव से प्राकृतिक तथा मानवीय बाधाएं भी आते-आते टल गईं, मानों चमत्कार ही हुए। चारों तरफ ओलावृष्टि हो रही थी किन्तु मांगीतुंगी में निराबाध कार्यक्रम चल रहे थे। जिन लोगों के मिजाज किन्हीं कारणवश गरम हो रहे थे, उनके भी मस्तिष्क में शांति आ गई। प्रतिष्ठा निर्विघ्न एवं सानंद सम्पन्न हो गई। 23 मई ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी को भगवान मुनिसुव्रतनाथ की विशाल प्रतिमा का पंचामृत तथा 1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक पूर्वक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। देखते ही देखते मांगीतुंगी से भक्तों का तेजी से वापसी गमन हो गया। थकान दूर होते-होते वर्षायोग का समय नजदीक आ गया। इन्दौर की जैन समाज का चातुर्मास के लिए निवेदन तथा आग्रह चल रहा था। इधर महाराष्ट्रवासियों को तृप्ति नहीं हुई थी क्योंकि प्रतिष्ठा तक का सारा समय प्रतिष्ठा व्यवस्था में व्यतीत हो गया था अतः निवेदन के साथ सत्याग्रह करने की भी चर्चा सुनाई दे रही थी। 9 जून को प्रतिष्ठा महोत्सव के कार्यकर्त्ताओं का सम्मान समारोह चल रहा था। उस समय महाराष्ट्र वालों ने पुरजोर प्रयास किया। अंततोगत्वा वर्ष 1996 का चातुर्मास मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर करने की घोषणा कर दी। इस घोषणा से पूरे महाराष्ट्र में हर्ष की लहर दौड़ गई। भक्तों ने मिठाई बाँटी, घी के दीपक जलाए तथा मेघदेवता ने प्रसन्न होकर मूसलाधार वर्षा करके प्रसन्नता व्यक्त की। मांगीतुंगी में चातुर्मास करने की घोषणा के साथ स्वयं माताजी तथा संघ के समस्त साधूगण अपने-अपने लेखन-पठन-पाठन में संलग्न हो गये। देश के विभिन्न भागों से भक्तों के आने का सिलसिला चालू रहा। यात्रीगण क्षेत्र दर्शन के साथ-साथ संघ दर्शन का भी लाभ उठाने लगे।

6 जून 1996 को मांगीतुंगी में राजकीय आश्रमशाला में दोनों माताजी व मेरे प्रवचन हुए। आज ही 6 जून आषाढ़ कृ. पंचमी को प्राचीन मंदिर के निकट सहस्रकूट मंदिर की 1008 प्रतिमाओं को विराजमान करने के लिए 108 पंखुड़ी वाले कमल के लिए कमल मंदिर का शिलान्यास संघ सानिध्य में हुआ। शिलान्यास के पश्चात् मंदिर निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई।2 जुलाई को मांगीतुंगी से मालेगाँव के लिए विहार हुआ। 7 जुलाई को मालेगाँव प्रवेश, 9 से 12 जुलाई तक वहाँ ध्यान साधना एवं शिक्षण शिविर, अनंतर कवलाना, सोनज, टाकली, चिंचवाड़ होकर संघ चांदवड़ पहुँचा। चांदवड़ में 4 दिन संघ का प्रवास रहा, समाज ने खूब धर्म लाभ लिया। चांदवड़ से सटाणा, तहाराबाद में धर्म प्रवचनों से समाज ने लाभ लिया। 26 जुलाई को संघ का पुनः मांगीतुंगी में पदार्पण हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इक्तालिसवाँ चातुर्मास (सन् 1996-मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र महा. में)

29 जुलाई 1996, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को पूज्य ज्ञानमती माताजी ने संघ सहित चातुर्मास की स्थापना की। पू0आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी ने भी अपने संघ सहित चातुर्मास की स्थापना की। 29 जुलाई से 6 अगस्त तक जैन महिलामंडल मालेगाँव की ओर से ध्यान-साधना एवं शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। आगत समस्त यात्रियों, मालेगाँव तथा आसपास के जैन श्रावक-श्राविकाओं ने ज्ञानामृत का पान किया। चातुर्मास प्रारंभ होते ही वर्षा की झड़ी के साथ-साथ कार्यक्रमों की भी झड़ी लग गई और तो और पूज्य गणिनी माताजी के विराजने से यात्रियों के आगमन की भी झड़ी लग गई। गुरुपूर्णिमा, वीरशासन जयंती, भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणोत्सव, रक्षाबंधन पर्व आदि मनाये गये। केवल कार्यक्रम ही नहीं होते रहे प्रत्युत् निर्माण कार्यों की भी झड़ी लगी हुई थी। इन सबके अतिरिक्त पू0माताजी का लेखन कार्य निरंतर जारी था। आगामी कार्यक्रमों की भी योजना बनाई जा रही थी। दिन पर दिन बीतते गये और महापर्व दशलक्षण आ गया। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी चा.च.आ. श्री शांतिसागर जी महाराज की पुण्यतिथी भादों शुक्ला दूज, 14 सितंबर 1996 को भक्तिपूर्वक मनाई गई। 17 से 27 सितम्बर तक दशलक्षण पर्व में अनेक नगरों से धर्मबंधु पधारे थे। सभी ने पूजा-पाठ के साथ साधुओं के दशधर्म तथा तत्त्वार्थसूत्र पर हुए प्रवचनों का भी भरपूर लाभ लिया। 12 अक्टूबर, आश्विन कृष्णा अमावस्या को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दीक्षा गुरू आ.श्री वीरसागर महाराज की पुण्यतिथी मनाई गई।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 63वाँ जन्मजयन्ती समारोह— पूज्य गणिनी माताजी के 63वें जन्म जयन्ती समारोह के शुभ अवसर पर 17 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक कल्पद्रुम महामंडल विधान का आयोजन किया गया। भक्तों ने भक्ति में निमग्न होकर विधान पूजन का आनंद प्राप्त किया। 22 अक्टूबर से 24 अक्टूबर तक नवनिर्मित कमलमंदिर में वेदी प्रतिष्ठा होकर कमल की 108 पंखुड़ियों पर सहस्रकूट की 1008 प्रतिमाएं विराजमान की गईं। 26 अक्टूबर, आसोज शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) के दिन पूज्य माताजी का 63वाँ जन्म दिवस समारोह महाराष्ट्र की धरती को दूसरी बार प्राप्त हुआ। इससे पहले सन् 1966 में सोलापुर में आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के सानिध्य में मनाने का सुयोग प्राप्त हुआ था। इस समारोह में दिल्ली से तो संघपति श्री महावीर प्रसाद जी पधारे ही, लाला प्रेमचंद-खारीबावली, श्रीकमलचंद जैन-खारीबावली, राजकुमार जैन वीरा विल्डर्स भी पधारे, देशभर से अनेक भक्त पधारे। सभी का आतिथ्य महाराष्ट्र वालों ने भरपूर किया। डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल पैठण, आमदार (विधायक) श्री जयचंद जैन कासलीवाल, श्री हुकुमचंद गंगवाल, रमेशचंद शाह-मालेगाँव, माणिकचंद एस. पहाड़े-मालेगाँव, श्री शरद पहाड़े- श्रीरामपुर आदि सैकड़ों महाराष्ट्र के भक्तों ने मांगीतुंगी में डेरा डालकर संघ की खूब भक्ति की। भक्ति में सराबोर रहे।

पू. गणिनी माताजी द्वारा सिद्धक्षेत्र पर किया गया प्रथम चातुर्मास अभूतपूर्व उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। माताजी का इससे पहले तथा इसके बाद भी अभी तक किसी सिद्धक्षेत्र पर चातुर्मास का यह पहला ही अवसर था। क्षेत्र पर माताजी के विराजने से जो कार्य सदियों से नहीं हुए थे वे अतिअल्प समय में सम्पन्न हो गये। आने वाला प्रत्येक यात्री कह रहा था कि माताजी ने क्षेत्र का कायाकल्प कर दिया। श्री जयचंद जी कासलीवाल ने सरकार के सहयोग से पर्वत पर बिजली पहुँचा दी। धर्मशाला से पहाड़ तक पहुँचने के लिए पक्की सड़क तथा पुल का निर्माण करा दिया। समाज के सहयोग से धर्मशालाएं बन गईं। अनेक नवनिर्माणों से क्षेत्र की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। यात्रियों की संख्या में भी भारी अभिवृद्धि हुई। माताजी के क्षेत्र पर पदार्पण के बाद से विहार पर्यंत कल्पद्रुम, सिद्धचक्र, इन्द्रध्वज आदि मिलाकर छोटे-बड़े 60 विधान सम्पन्न हुए।

मांगीतुंगी में ही बैठकर प्रयाग तीर्थ की योजना ने साकार रूप धारण किया। प्रयाग-इलाहाबाद में विशाल भूखंड लेकर उस पर सर्व सुविधायुक्त तीर्थ बनाने का निर्णय लिया गया। तीर्थ बनाने की घोषणा को सुनते ही दिल्ली के दानवीर श्रेष्ठी लाला प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन-खारी बावली, दिल्ली आ गये और बोले वटवृक्ष मंदिर मेरी तरफ से बना दीजिये, जिसमें तांबे के विशाल वट वृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव की पिच्छी कमण्डलु सहित दीक्षा मुद्रा वाली प्रतिमा रहेगी। लाला महावीर प्रसाद जी संघपति भला पीछे कब रहने वाले थे, कहने लगे- "भगवान ऋषभदेव की 11 फुट पद्मासन प्रतिमा मेरी ओर से स्थापित करवा दीजिये।" आज वह तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ इलाहाबाद शहर से 13 कि.मी. दूर (संगम से मात्र 5 कि.मी. की दूरी पर) इलाहाबाद-बनारस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हाइवे पर अपनी अपूर्व छटा बिखेर रहा है। कम से कम एक बार तो आप भी जाकर अवश्य दर्शन करें, फिर तो वहाँ बार-बार जाने का आपका मन करेगा।

पू. माताजी का 63वाँ जन्म जयन्ती समारोह तथा मांगीतुंगी में वर्ष 1996 का चातुर्मास विश्व के इतिहास में अमर हो गया— चातुर्मास समापन से लगभग 1 माह पूर्व माताजी पर्वतराज पर स्थित सुधबुध की गुफा में ध्यान कर रही थीं तभी पर्वत के मध्य पूर्वाभिमुख चट्टान में विशालकाय 108 फुट की भगवान ऋषभदेव की मूर्ति बनाने के भाव जागृत हुए। उन्होंने यह भाव वहीं निकट में बैठी हुई आर्यिका श्री चंदनामती माताजी से कहे। यह बात सुनकर भला किसको हर्ष नहीं होगा। उनके पास ही मैं भी बैठा था। ब्र. रवीन्द्र कुमार भी बैठे थे। माताजी के भावों का सभी ने समादर किया, आज्ञा को शिरोधार्य किया और तीनों लोग जुट गए उसके बारे में रूपरेखा बनाने में। 25 अक्टूबर 1996, आसौज शु. 15-शरदपूर्णिमा के शुभ दिन 108 फुट ऊँची प्रतिमा बनाने की घोषणा की गई। दान दातारों ने बढ़ चढ़कर दान राशि की घोषणा प्रारंभ कर दी। इस महान दुरूह कार्य के लिए पू0गणिनी माताजी का नाम प्रेरणा तथा आशीर्वाद के रूप में, पू0आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का नाम मार्गदर्शन के रूप में, मेरा (क्षुल्लक मोतीसागर का) नाम निर्देशन के रूप में, कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार का नाम मूर्ति निर्माण कमेटी के अध्यक्ष के रूप में, डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण का नाम महामंत्री के रूप में घोषित किया गया। वर्तमान में मूर्ति निर्माण के लिए पहाड़ की छटाई का काम चल रहा है।

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी 10 नवम्बर 1996 को वर्षायोग का समापन भक्तिपाठ के द्वारा किया गया। 15 नवम्बर 1996 को मांगीतुंगी से संघ का विहार गुजरात होकर दिल्ली की तरफ हो गया। 8 अक्टूबर 1995 की शरदपूर्णिमा के दिन हस्तिनापुर से पू. माताजी ने षट्खंडागम की "सिद्धांतचिंतामणि" नाम से सरल संस्कृत में टीका लिखना प्रारंभ किया था। तब से उनकी कलम टीका लेखन के लिए सतत चल रही है। इस अंतराल में उनकी कई यात्राएं हो गईं, अनेक कार्य हो गये। टीका के भागों का प्रकाशन भी हो गया। अभी 15वीं पुस्तक की टीका का लेखन कार्य चल रहा है। मांगीतुंगी से विहार के पूर्व ही अहमदाबाद में 26 दिसम्बर से 5 जनवरी 1997 तक कल्पद्रुम महामंडल विधान तथा विविध संगोष्ठी सम्मेलन आदि की घोषणा हो गई थी।

चातुर्मास के पश्चात्— 15 नवम्बर को मांगीतुंगी से विहार करके अनेक नगरों में ज्ञान की किरणें विकीर्ण करते हुए 15 दिसम्बर को पावागढ़ सिद्धक्षेत्र में माताजी का ससंघ पदार्पण हुआ यहाँ तहलटी के मंदिर, निर्माणाधीन ध्यान मंदिर में चौबीस प्रतिमाओं से समन्वित ह्रीँ लाला प्रेमचंद जैन खारीबावली दिल्ली की तरफ से विराजमान करने की स्वीकृती हुई थी वह ह्रीँ वहां विराजमान हो गई है।

26 दिसम्बर 1996 को अहमदाबाद में भव्य शोभायात्रा के साथ पूज्य माताजी का ससंघ मंगल पदार्पण हुआ। शहर के मेयर श्री नंदलाल वागवा तथा पूर्व मुख्यमंत्री गुजरात प्रदेश श्री सुरेश मेहता ने भावभीना स्वागत किया। 27 दिसंम्बर से 4 जनवरी 1997 तक अनेक आकर्षक कार्यक्रमों के साथ कल्पद्रुम विधान सोला रोड दिगम्बर जैन मंदिर के सामने बने विशाल पंडाल में सम्पन्न हुआ, 4 जनवरी को गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शंकरसिंह बाघेला ने पधारकर माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। विधान के मध्य प्रतिदिन दोनों माताजी व मेरे प्रवचन हुए।

नववर्ष 1997 के प्रथम दिन पू. आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने केशलोंच किये। 10 वर्ष पूर्व ही अहमदाबाद शहर में ब्र0 माधुरी (आ. चदनामती माताजी) अपने ओजस्वी प्रवचनों से गुजरात वासियों को मंत्र मुग्ध कर गई थीं। 4 जनवरी को युवा परिषद का अधिवेशन भी हुआ विधान के मध्य अनेक छोटे बड़े राजनेता, विद्वान तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता पधारे। श्री हीरालाल मेहता तथा विनोद भाई आदि ने अथक परिश्रम किया। 5 जनवरी को अहमदाबाद शहर से संघ का विहार हुआ 7 जनवरी प्रदेश की राजधानी गांधीनगर में संघ का पदार्पण हुआ जहाँ प्रदेश के राज्यपाल श्री कृष्णपाल सिंह माताजीसे आशीर्वाद लेने पधारे। राज्यपाल को लाने का श्रेय श्री कैलाशचंद जैन चौधरी सनावद को था। वे उनसे पूर्व से चिर परिचित थे।

विहार के मध्य ईडर में भी पहाड़ी पर ह्रीँ विराजमान कराने की घोषणा माताजी ने की। 15 जनवरी 1997 को तारंगा सिद्धक्षेत्र पहुंचने पर 9 फुट पद्मासन प्रतिमा ग्रेनाइट पत्थर की विराजमान करने के लिए श्री महिपाल जैन मिल्टन ग्रुप अहमदाबाद वालों को माताजी ने प्रेरणा प्रदान की थी।वह प्रतिमा वहाँ गत वर्ष विराजमान हो चुकी है। गुजरात में ज्ञान की ज्योति का प्रकाश फैलाते हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी का संघ सहित राजस्थान के खेरवाड़ा नगर में 24 जनवरी को पदार्पण हुआ। मंदिर के निकट में वर्षों से खाली पड़ी पहाड़ी को कैलाश पर्वत नाम देते हुए उस पर ऋषभदेव प्रतिमा तथा 23 तीर्थंकरों के चरण स्थापना की घोषणा हुई तभी वहाँ शिलान्यास भी करा दिया वहाँ अब उस पहाड़ी पर योजनानुसार सब बनकर तैयार होकर प्रतिष्ठा हो गई है। 24 की रात्रि में आ. शांतिसागर छाणी की जन्मभूमि छाणी में रात्रि विश्राम किया। 25 जनवरी को ऋषभदेव केशरिया जी में पूज्य माताजी का प्रथमबार पधारना हुआ। समाज ने बहुत उत्साहपूर्वक भावभीना स्वागत किया। मुख्य मंदिर के सामने पहाड़ी पर अयोध्या नगरी की रचना की प्रेरणा माताजी ने दी। 26 जनवरी को विशाल सभा में योजना की घोषणा की गई तथा शाम को शिलान्यास करवाकर संघ का विहार सलुम्बर के लिए हो गया। 30-31 ता. को सलुम्बर संघ रहा, 2 फरवरी को देवपुरा होते हुए 5 फरवरी को उदयपुर में आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी महाराज के संघ का मिलन हुआ। 8 फरवरी को आयड़, 10 को अणिंदा पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र, 16 फरवरी को चित्तौड़गढ़, 20 को भीलवाड़ा, 2 मार्च को मालपुरा तथा 3 मार्च लावा में संघ का प्रवास रहा। लगभग सभी स्थानों पर पूज्य माताजी ने चिंतन करके नूतन-आकर्षक निर्माणों की योजना भेंट स्वरूप प्रदान की। न केवल योजना दी अपितु उस योजना के लिए वहीं दातारों से राशि भी स्वीकृत हो गई।

41 वर्ष के पश्चात् दीक्षाभूमि माधोराजपुरा में 6 से 8 मार्च 1997 तक माताजी का ससंघ प्रवास—41 वर्ष पूर्व सन् 1956 में बैसाख सुदी दूज को इसी माधोराजपुरा में आ. श्री वीरसागर जी महाराज ने क्षुल्लिका वीरमती जी को दीक्षा प्रदानकर "आर्यिका ज्ञानमती" नाम प्रदान किया था। दीक्षा के बाद माताजी के पहली बार पदार्पण से माधोराजपुरा धन्य हो गया। तीन दिन तक महोत्सव जैसा वातावरण था । न केवल आसपास के अपितु दिल्ली के बड़े-बड़े श्रेष्ठी इस छोटीसी नगरी में पधारकर अपना धन्य भाग मान रहे थे। कह रहे थे कि इसी नगरी ने देश को "ज्ञानमती" जैसी महान विभूति प्रदान की। नगर के बाहर एक भूखण्ड पर दीक्षास्थली के रूप में तीर्थ जैसा बनाने की योजना का शिलान्यास किया गया। लाखों रुपयों के दान की तत्काल घोषणा हो गई। माधोराजपुरा वालों का हर्ष हृदय में समा नहीं रहा था। नगर के सभी जातियों के नर-नारी अतीव पुलकित हो रहे थे। 6 मार्च का दिन माधोराजपुरा के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ के रूप में अंकित हो गया। शिलान्यास 7 मार्च 1997 को हो गया।

9 मार्च को संघ का पदार्पण अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में हुआ क्षेत्र कमेटी अध्यक्ष भागचंदजी टोंग्या, महामंत्री श्री ज्ञानचंदजी झांझरी सहित समस्त आगत सदस्यों, यात्रियों तथा आसपास नगरों से पधारे श्रावकों ने भावभीना स्वागत किया। क्षेत्र की भारी उन्नति देखकर माताजी गदगद हो गई। 10 मार्च को भगवान पद्मप्रभु की 21 फुट खड्गासन प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक वृहद् रूप में कराया । अतिशयकारी भूगर्भ से निकली पद्मप्रभु की प्रतिमा तथा अन्य प्रतिमाओं का भी अभिषेक कराया। मंगल प्रवचन हुए।

खानिया जी की नशिया में सीढ़ी उतरते समय पू. माताजी का पैर अचानक मुड़ जाने से पैर में मोच आ गई फिर भी विहार चलता रहा। माताजी ने अपना पूरा जीवन शरीर बल से नहीं, आत्म बल से चलाया है। यही माताजी में विलक्षणता रही है। अब भी यही स्थिति है जयपुर से विहार कर 25 मार्च को रेवाड़ी के मॉडलटाउन में मंदिर निर्माण के लिए निश्चित भूखंड पर कैलाश पर्वत के आकार की वेदी बनाने के लिए माताजी ने वहाँ शिलान्यास करवाया। 25 मार्च को रेवाड़ी शहर में मंदिरों के सामने सार्वजनिक सभा में पू. माताजी का 44वाँ क्षुल्लिका दीक्षादिवस मनाया गया उस दिन तिथी चैत्र कृष्णा एकम् थी। वहाँ से धारूहेड़ा नगर में पहुँचकर आहार के पश्चात् विहार हो गया। मांगीतुंगी जाते हुए तथा मांगीतुंगी से वापस आते हुए धारूहेड़ा के अल्प प्रवास में श्री देवेन्द्र कुमार जैन ने पद्मनंदीपंचविंशतिका ग्रंथ प्रकाशन की स्वीकृती प्रदान की थी। धारूहेड़ा से गुड़गांवा होकर 29 मार्च को दिल्ली की सीमा में संघ का मंगल प्रवेश हुआ।

30 मार्च 1997 को लालकिला मैदान दिल्ली में विशाल शोभायात्रा के साथ शुभागमन हुआ। दिल्ली प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री साहबसिंह वर्मा, सांसद श्री जयप्रकाश अग्रवाल, पूर्णिमा सेठी (विधायिका), विधायक श्री वासुदेव कप्तान तथा जैन समाज दिल्ली के भक्तों तथा कार्यकर्त्ताओं ने माताजी का ससंघ भावभीना स्वागत किया। संघ के साथ-साथ संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट साउथ एक्स तथा सहसंघपति लाला प्रेमचंद जैन खारीबावली का भी गरम जोशी से स्वागत किया तथा आभार माना। दोनों महानुभावों ने संघ को निराबाध यात्रा पूर्ण कराई। कर्मयोगी ब्र0 रवीन्द्र जी का भी स्वागत सम्मान किया। जिनके अथक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिश्रम से मांगीतुंगी की यात्रा सानंद एवं निर्विघ्न सम्पन्न हुई मेरे व पूज्य श्री चंदनामती माताजी के प्रवचनों के अनंतर गणिनी माताजी के सबके लिए आशीर्वचन हुए।

दिल्ली पदार्पण के साथ 2 अप्रैल को भगवान ऋषभदेव जयंती पूर्वक विभिन्न कालोनी में भ्रमण प्रारंभ हो गया तथा कार्यक्रमों की धूम मच गई। 2 अप्रैल 1997 को ऋषभदेव जयंती के उपलक्ष्य में लालमंदिर से रथयात्रा निकाली गई तथा 108 कलशों से मंदिर में अभिषेक हुआ। उसी समय अ.भा.दि. जैन महिला संगठन की दिल्ली प्रदेश की प्रथम इकाई के रूप में चांदनी चौक इकाई का गठन किया गया जिसकी अध्यक्ष श्रीमती आशा जैन को बनाया गया। इसके बाद बाहुबली एन्क्लेव, पार्श्वविहार, पटपड़गंज, प्रीतविहार, सूर्यनगर, ऋषभविहार, सूरजमलविहार में अप्रैल-मई में लगातार माताजी के ससंघ सानिध्य में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलते रहे। सभी जगह महिला संगठन की इकाइयाँ गठित की गई जो कि अब भी सक्रिय रूप में धार्मिक, सामाजिक कार्य कर रहीं हैं। जगह-जगह माताजी के सानिध्य में महावीर जयंती मनाई गई, विधान आदि हुए।

8 जून से 15 जून 1997 तक कमलमंदिर प्रीतविहार दिल्ली की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में संघ का सानिध्य प्राप्त हुआ। श्री अनिलकुमार जैन के डी-107 प्रीतविहार स्थित कोठी के प्रांगण में मांगीतुंगी जाते समय पूज्य माताजी ने एक छोटा सा कमलमंदिर बनाने की प्रेरणा देते हुए भूमि शुद्धि के रूप में यंत्र की स्थापना की थी वहाँ शीघ्र ही अति सुंदर कमल मंदिर निर्मित हो गया था उसमें भगवान ऋषभदेव की 25 इंच की अष्टधातु की प्रतिमा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पूर्वक विराजमान होनी थी। श्री अनिलजी ने माताजी से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने के लिए निवेदन किया। तदनुसार माताजी ने प्रीतविहार पधारकर 8 से 15 जून तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा अपने संघ के सानिध्य में सम्पन्न कराई। प्रतिष्ठा के मध्य अनेक कार्यक्रम बहुत ही प्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुए। यह प्रतिष्ठा व्यक्तिगत थी फिर भी अनिल जी के निवेदन पर जैनसमाज प्रीतविहार तथा जैन समाज निर्माणविहार का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

29 जून 1997 को शालीमारबाग की धर्मसभा में राजधानी में ही चातुर्मास करने की घोषणा— प्राचीन अग्रवाल दि0 जैन पंचायत दिल्ली के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन, श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन कम्मो जी आदि दिल्ली के अनेक प्रतिष्ठित बंधुओं ने 29 जून 1997 को शालीमारबाग की विशाल सभा में श्रीफल चढ़ाकर माताजी से लालमंदिर चांदनीचौक में चातुर्मास करने की प्रार्थना की। सभी के आग्रह को स्वीकार करके माताजी ने घोषणा कर दी कि वर्ष 1997 का चातुर्मास दि0 जैन लालमंदिर चांदनीचौक दिल्ली में स्थापित होगा। संघ का प्रवास लाल मंदिर के निकट साइकिल मार्केट स्थित कम्मोजी की धर्मशाला में रहेगा। इस घोषणा से दिल्ली में सर्वत्र हर्ष की लहर दौड़ गई।

बयालिसवाँ चातुर्मास (सन् 1997-लालमंदिर, चांदनीचौक दिल्ली में)

19 जुलाई आषाढ़ शुक्ला 14 को श्री दि0 जैन लालमंदिर चांदनीचौक में चातुर्मास की स्थापना पू. माताजी ने ससंघ की। सभा में दिल्ली की अनेक कालोनियों से भक्त पधारे थे। मेरे, पू. आ. चंदनामती माताजी, तथा गणिनी माताजी के चातुर्मास की महत्ता पर प्रवचन हुए। चातुर्मास काल में पूरी दिल्ली में भ्रमण के लिए खुला रखा गया। वर्षायोग स्थापना के अगले दिन से कार्यक्रमों की श्रृंखला प्रारंभ हो गई। प्रतिवर्षानुसार आ. श्री वीरसागरजी महाराज की जन्मजयन्ती, वीरशासन जयन्ती, भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण कल्याणक, रक्षाबंधन पर्व आदि यथा समय मनाये गये। 4 सितंबर भादों सुदी दूज को पू. माताजी के ससंघ सानिध्य में श्री खण्डेलवाल दि. जैन मंदिर वेदवाड़ा में चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की 42वीं पुण्यतिथि मनाई गई। वेदवाड़ा में आचार्य श्री की पुण्यतिथि प्रतिवर्ष मनाई जाती है। यमुनापार दिल्ली की सादतपुर कालोनी में पू. गणिनी माताजी के ससंघ सानिध्य में दिगम्बर जैन मंदिर का शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें दिल्ली के गणमान्य महानुभावों तथा माताजी के भक्तों ने पधारकर मंदिर निर्माण के लिए सहयोग राशि घोषित की। शिलान्यास श्री राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स ने किया था। अब वहाँ मन्दिर का निर्माण हो चुका है।

दशलक्षण पर्व-6 सितम्बर से 15 सितम्बर 1997 तक तदनुसार भादों सुदी 4 से भादों सुदी 14 तक— पू. गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में वर्ष 1997 का दशलक्षण पर्व विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। आ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चंदनामती माताजी व गणिनी माताजी के दशधर्म तथा तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन प्रतिदिन लालकिले के सामने परेडग्राउंड (ऋषभदेव मैदान) में बने पंडाल में हुए। प्रतिदिन साहू अशोक कुमार जी भी प्रवचन सभा में पधारते थे। स्वास्थ्य खराब होने से मैं प्रवचन सभा में नहीं पहुँच सका। अंतिम दिन क्षमावणी पर्व पर विशेष प्रवचन हुए। तीर्थराज सम्मेदशिखर के विकास के लिए सहयोग की पुरजोर प्रेरणा प्रदान की गई। अनेक दानी महानुभावों ने भक्तिभाव से दान की घोषणाएं कीं। प्रतिदिन उपाध्याय श्री गुप्तिसागर महाराज के भी प्रवचन होते थे।

4 अक्टूबर से 13 अक्टूबर 1997- आसौज शुक्ला 3 से 12 तक चौबीस कल्पद्रुम विधानों का भव्य आयोजन— मांगीतुंगी से दिल्ली आने के रास्ते में ही माताजी ने संघ में आपस में विचार-विमर्श करना प्रारंभ कर दिया था कि इस बार दिल्ली में चातुर्मास हुआ तो कल्पद्रुम विधान का एक अति विशाल आयोजन करना है। चातुर्मास स्थापना के साथ ही यह निर्णय हुआ कि जैन महिलाश्रम के पास रिंगरोड़ पर शांतिवन के सामने बड़े मैदान में एक साथ 24 तीर्थंकरों के 24 समवसरण के अलग-अलग मंडल बनाकर कल्पद्रुम विधान का आयोजन 4 से 13 अक्टूबर तक किया जावे। 3 माह पूर्व से ही रूपरेखा बनकर उच्चस्तर पर प्रचार प्रारंभ हो गया। सर्वप्रथम प्रमुख चक्रवर्ती (भरत चक्रवर्ती) बनने का महान पुण्य तथा यश श्री राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स दिल्ली ने प्राप्त किया। अनंतर शेष चक्रवर्तियों का निर्णय भी होता गया। पूरी दिल्ली ही नहीं पूरे देश में इस कार्यक्रम की चर्चा घर-घर में होने लग गई। कई लोग तो सोच-सोचकर हैरान थे कि इतने बड़े आयोजन की व्यवस्था कैसे होगी। सब कुछ हुआ, सबके सामने हुआ। समय आने तक 3 हजार स्त्री-पुरुषों के नाम विधान पूजन में भाग लेने के लिए आ गये। उसके बाद स्थानाभाव के कारण मना करना पड़ा। केवल चक्रवर्ती ही नही बने, महामंडलीक राजा, मंडलीक राजा, तथा सामान्य राजा- रानी भी बने। एक एक मंडल विधान के सामने 108-108 स्त्री-पुरुषों के बैठने की व्यवस्था की गई थी। आयोजन समिति की ओर से विधान पूजन में भाग लेने वाले सभी स्त्री पुरुषों के लिए पूजन सामग्री, भोजन धोती-दुपट्टा, साड़ी तथा कालोनी से आने-जाने की बसों की व्यवस्था की गई थी।

सर्वप्रथम भरत चक्रवर्ती व उनकी पट्टरानी के रूप में श्री राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स एवं उनकी ध.प. श्रीमती आशा जैन का समिति की ओर से स्वर्ण मुकुट तथा हार पहनाकर स्वागत किया गया।

समारोह का झंडारोहण श्री वीरचंद बड़जात्या ने किया। चौबीस कल्पद्रुम विधान के 24 मण्डलों पर 24 समवसरणों से सजे विशाल पंडाल में समारोह का उद्घाटन महामहिम डॉ. शंकर दयाल शर्मा (पूर्व राष्ट्रपति भारत सरकार) के कर कमलों से हुआ। समारोह सभा की अध्यक्षता साहू श्री रमेशचंद जैन ने की। घटयात्रा पूर्वक 24 वेदियों तथा पंडाल की शुद्धि मंत्रोच्चारण पूर्वक की गई। केशरिया परिधानों से सुसज्जित 3000 स्त्री-पुरुषों तथा हजारों दर्शकों-भक्तों की भीड़ का एक अभूतपूर्व ही दृश्य था।

प्रातः जब पूजन करने के लिए भक्तगण आते थे उससे पूर्व उनके बैठने के स्थान के सामने बेंच पर पूजन सामग्री लगी हुई थालियों को देखकर लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता था। इसके लिए पुजारियों की एक बड़ी टीम सरकस की तरह जुटी हुई थी। विधान पूजन के मध्य जब पू. गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं चंदनामती का उच्च स्वर में प्रवचन होता था तब सचमुच में समवसरण में दिव्यध्वनि जैसा आभास होने लगता था। 5 अक्टूबर को जब दिल्ली प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री साहिबसिंह वर्मा ने पधारकर उस दिव्य दृश्य को देखा तो भाषण में कहने लगे "आज मेरी आंखें धन्य हो गईं मैंने आज तक ऐसा कोई धार्मिक आयोजन नहीं देखा" आयोजन एवं आयोजकों की खूब प्रशंसा की। समय-समय पर अहिंसा शाकाहार सम्मेलन, अ.भा.दि. जैन महिला संगठन का राष्ट्रीय अधिवेशन आदि भी कम प्रभावी नहीं थे। साहू अशोक कुमार जी तो उस विहंगम दृश्य को देखकर अति भाव विह्वल हो गए। कहने लगे "माताजी ऐसा विधान एक बार सम्मेदशिखर पर पधारकर करा दीजिये जिससे सम्मेदशिखर की सभी बाधाएं दूर हो जावें, क्षेत्र का कायाकल्प हो जावे"।

श्री कैलाशचंद जैन चौधरी सनावद के प्रयास से मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह जी पधारे। उन्होंने इस भव्य आयोजन से प्रभावित होकर विधान समिति की मांग पर म.प्र. की राजधानी भोपाल के एक उद्यान का नाम "भगवान ऋषभदेव उद्यान" कर देने की घोषणा कर दी। अब वहाँ उस उद्यान के नाम के साथ साथ भगवान ऋषभदेव की वाणी से संबंधित सूक्तियाँ भी शिलापट्टों पर लगा दी गई हैं। पूर्व न्यायाधीश श्री मिलापचंद जैन की उपस्थिति में यहीं पर पूज्य माताजी को "गणिनी प्रमुख" की उपाधि से समस्त दिगम्बर जैन समाज की ओर से अलंकृत किया गया। दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर के कर्मठ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फाउन्डर अध्यक्ष डॉ. कैलाशचंद जैन राजा टॉइज दिल्ली का रजत प्रशस्ति भेंट कर सम्मान किया गया। सन् 1972 में दिल्ली में इस संस्थान की स्थापना की गई थी तभी आपको प्रथम अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया था। आपने तबसे अब तक संस्थान एवं संघ की तन-मन और धन से खूब सेवा की। विधान में उल्लिखित विधि के अनुसार चारों प्रकार का दान प्रतिदिन बांटा गया। मुख्यमंत्री श्री साहिबसिंह वर्मा ने विधान के उपलक्ष्य में एक दिन दिल्ली के समस्त बूचड़खाने बंद रखने की घोषणा की थी।

1 करोड़ मंत्र जाप्य पूजा में बैठने वालों के विधान की अवधि में किये थे 13 अक्टूबर को उसकी दशमांस आहुति के रूप में हवन कुंडों में पूर्णाहुति की गई। पूर्णाहुति के समय लगभग 50 हजार दर्शकों ने मंडल विधानों के दर्शन कर अपने को धन्य माना। हवन के पश्चात् विशाल शोभायात्रा निकाली गई। सांयकाल में उन सबका सम्मान किया गया जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष में इस महा अनुष्ठान में तन-मन-धन का सहयोग प्रदान किया। अंत में सभी ने मिलकर संघ के प्रति अपनी विनय भक्ति प्रकट करते हुए विधान समिति के कर्मठ अध्यक्ष कर्मयोगी बाल ब्र0 श्री रवीन्द्र कुमार जैन का जोर शोर से सम्मान किया।

यह चौबीस कल्पद्रुम विधान न केवल दिल्ली में अपितु पूरे देश की जैन समाज के दिल दिमाग पर अमिट छाप छोड़ गया। राजधानी के व्यस्त जीवन में भी इतनी बड़ी संख्या में श्रावक श्राविकाओं ने पूजा की, पूजा सुनी, पूजा देखी। विधान पूजन के दिनों मे सुबह से शाम तक 16-16 घंटे तक कार्यक्रम हुए फिर भी किसी को थकावट या आकुलता नहीं हुई। मौसम भी सुहावना रहा। जिन्होंने साक्षात् उन विधानों के दर्शन किये वे उसे भूल नहीं सकते प्रत्युत् उस दृश्य को याद करके रोमांचित हो जाते हैं।

16 अक्टूबर को पूज्य माताजी का 64 वाँ जन्म जयंती समारोह जैन बालाश्रम दरियागंज में भव्यता के साथ मनाया गया। अनेक महानुभावों ने अपनी विजयांजलि प्रस्तुत की, पाद प्रक्षाल किये, नूतन पिच्छी भेंट की, कमण्डलु तथा शास्त्र प्रदान किया तथा आरती उतार कर अपनी भक्ति प्रकट की। माताजी प्रति जन्मदिवस पर यह अवश्य बताती है कि यह शरदपूर्णिमा शरीर के जन्मदिन के साथ त्याग और वैराग्य का भी जन्मदिन है सन् 1952 में शरदपूर्णिमा के दिन ही आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लेकर सप्तम प्रतिमा धारण की थी। 18 अक्टूबर सन् 1987 को दिगम्बर जैन लाल मंदिर में श्री सुबोध कुमार जैन आरा (बिहार) ने आरा में 75 वर्ष पूर्व सन् 1921 में स्थापित किये गये जैन बाला विश्राम के अमृत महोत्सव का आयोजन रखा था उसमें पूज्य माताजी की ससंघ उपस्थिति रही उसमें माताजी ने अपने आशीर्वचनों में ब्र0 चंदाबाई आरा का भी स्मरण किया। उनकी कर्मठता की प्रशंसा की।

31 अक्टूबर कार्तिक कृष्णा 14 की पिछली रात्रि में वर्षा योग की निष्ठापना की अनंतर लाल मंदिर में संघ के सानिध्य में निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। प्रवचन में पू0आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा गणिनी माताजी ने वीर निर्वाण संवत् पर प्रकाश डाला।

5 नवम्बर 1997 को दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए विहार करने से पूर्व दि0जैन लाल मंदिर में आयोजित सभा में दिल्ली वासियों तथा कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए सदैव धर्म कार्यों में अग्रणी रहने की प्रेरणा प्रदान की। इसी शृंखला में पू0 माताजी ने अपनी सुशिष्या आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के लिए "प्रज्ञाश्रमणी" उपाधि प्रदान की तथा मेरे लिए "धर्म दिवाकर" "क्षुल्लक रत्न" की उपाधि प्रदान की। पू0माताजी की त्रिवेणी की तीसरी धारा के रूप में कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के अग्रणी कर्मयोगी ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन के लिए भी उनके कार्यों की प्रशंसा करते हुए खूब आशीर्वाद प्रदान किया। माताजी का आशीर्वाद उपहार बन गया।

इसी शुभ अवसर पर विधान के चक्रवर्तियों, कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का स्वागत किया गया। विशेष रूप से कर्मठ व्यक्तित्व के धनी श्री रमेशचंद जैन (पी.एस. जैन मोटर्स) का सम्मान किया जिन्होंने पूरे विधान पर्यंत विधान पूजन में भाग लेकर पुण्योपार्जन तो किया ही, साथ ही संघ एवं दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान तथा रवीन्द्रजी की कार्य प्रणाली को नजदीक से देखकर बहुत प्रभावित हुए। वे गुणग्राही थे उनकी ध.प. सुशीला जी भी प्रबुद्ध महिला हैं। पूज्य माताजी के प्रति अनन्य भक्ति अब भी उनके हृदय में रहती है।

चातुर्मास के पश्चात्—5 नवम्बर 1997 को लालमंदिर की सभा में समस्त दिल्लीवासियों को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए माताजी ने ससंघ हस्तिनापुर के लिए विहार कर दिया। 10 नवम्बर को कमलानगर मेरठ में प्रवास रहा, प्रवचन हुए। 11 नवम्बर को सदर में प्रवास रहा, ऋषभएकेडमी में दोंनो माताजी व मेरे प्रवचन हुए जिसमें यात्रा के महत्वपूर्ण संस्मरण भी सुनाए।

दो वर्ष के पश्चात् हस्तिनापुर में माताजी का ससंघ मंगल पदार्पण—दो वर्ष पूर्व 27 नवंबर 1995 को जम्बूद्वीप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हस्तिनापुर से मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के लिए ससंघ विहार हुआ था। पुनः दो वर्ष बाद 14 नवम्बर 1997 को हस्तिनापुर पदार्पण हुआ दो वर्षों में जो धर्म प्रभावना के कार्य हुए हैं वे भी चमत्कारिक रहे। उसका विस्तृत विवरण प्रकाशित किया गया है। जहाँ जो कार्य माताजी के मुख से कराने के लिए निकला वह वचन सिद्धी के रूप में तत्काल स्वीकृत हो गया। शुभागमन के शुभ अवसर पर संघ के स्वागत के साथ साथ संघपति लाला महावीर प्रसाद जी, श्री प्रेमचंदजी खारी बावली तथा चौबीस कल्पद्रुम विधान के प्रमुख "भरतचक्रवर्ती" श्री राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स का भी भावभीना स्वागत संस्थान की ओर से किया गया। संघ की सकुशल वापसी पर सभी ने हर्ष व्यक्त किया।

वार्षिक कार्तिक मेले के अवसर पर कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी 13 नवम्बर को जम्बूद्वीप स्थल से वार्षिक रथ यात्रा निकाली गई 14 नवम्बर कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को 20-30 हजार जैन अजैन नर-नारियों ने जम्बूद्वीप दर्शन के साथ-साथ पूज्य माताजी के ससंघ दर्शनों का लाभ भी प्राप्त किया। माघ कृष्णा चतुर्दशी 27 जनवरी 1998 को भगवान ऋषभदेव का निर्वाणकल्याणक निर्वाण लाडू चढ़ाकर मनाया गया। 14 दिसम्बर 1997 को पू. गणिनी माताजी ने धवला ग्रंथ की संस्कृत टीका स्याद्वाद चिंतामणि के दूसरे भाग को पूर्ण किया तदुपलक्ष में हस्त लिखित टीका का जम्बूद्वीप परिसर में पालकी का जुलूस निकाला गया। 22 जनवरी 1998 माघ कृष्णा 9 को पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 13 वीं पुण्य तिथी मनाई गई। 1 फरवरी 1998 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्याय मूर्ति श्री मारकण्डे काटजू दर्शनार्थ पधारे। जम्बूद्वीप दर्शन के साथ पूज्य माताजी से भी आशीर्वाद प्राप्त किया। फाल्गुन कृष्णा एकादशी, 22 फरवरी 1998 को ससंघ सानिध्यं में भगवान ऋषभदेव का केवलज्ञान कल्याणक उत्सव मनाया गया।

जम्बूद्वीप स्थल पर नवनिर्मित ॐ मंदिर में पंचपरमेष्ठी की प्रतिमाएं ॐ में विराजमान करने के लिए वेदी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम 9 फरवरी को झंडारोहण पूर्वक प्रारंभ हुआ 11 फरवरी 1998 को प्रातः 10 बजे ॐ में पंचपरमेष्ठी की पांच प्रतिमाएं विराजमान की गईं अनंतर मंदिर के शिखर पर कलशारोहण तथा ध्वज स्थापना मंदिर निर्माता श्री प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन खारीबावली दिल्ली के हाथों से किया गया।

पूज्य माताजी का पुनः हस्तिनापुर से राजधानी दिल्ली के लिए 4 मार्च को विहार— भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार के लिए राजधानी दिल्ली से 22 मार्च 1998 को पूरे देश में समवसरण रथ का भ्रमण कराने के लिए माताजी का ससंघ 4 मार्च 1998 को हस्तिनापुर से पुनः दिल्ली के लिए विहार हुआ। 12 मार्च को संघ का मंगल पदार्पण राजधानी दिल्ली के लालमंदिर में हुआ। 22 मार्च तक संघ कम्मोजी की धर्मशाला साइकिल मार्केट में विराजमान रहा। वहीं पर रथ प्रवर्तन संबंधी व्यापक तैयारियाँ चलती रहीं

भगवान ऋषभदेव के जन्मकल्याणक दिवस 22 मार्च 1998 को "समवसरण श्री विहार रथ" का लालकिला मैदान दिल्ली से उद्घाटन— सांसद श्री वी. धनंजय कुमार जैन के कर कमलों से विशाल जन सभा के मध्य "समवसरण श्री विहार रथ" का उद्घाटन ऋषभदेव जयंती के शुभ दिन चैत्र कृ0 9 को लालकिला मैदान दिल्ली में किया गया। सभा की अध्यक्षता साहू श्री रमेशचंद जैन (न.भा.टा.) ने की। सानिध्य प्रदान किया गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्रीचंदनामती माताजी, मैंने, क्षु. श्रद्धामती जी ने, हजारों नर-नारी की सभा में उपस्थिती थी। उद्घाटन के पश्चात् बोली लेने वाले महानुभावों को रथ पर बैठाकर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा की शोभा देखते ही बन रही थी। सैकड़ों इन्द्राणियां केशरिया परिधान में कलश लेकर, सैकड़ों बालक-बालिकाएं हाथ में मंत्र लिखित रंग-बिरंगी ध्वजा-पताकाएं लेकर, ऐरावतहाथी वाले रथ पर सर्वाण्हदेव धर्मचक्र लेकर हाथी पर श्री, ह्री आदि 8 देवियाँ अष्टमंगल द्रव्य हाथ में लेकर ऐरावत हाथी के रथ पर बैठी थीं, अन्य राजा-महाराजा 32 बग्घियों पर बैठकर 32 हजार राजाओं का प्रतिनिधित्व कर रहे थें। बैंड बाजे, झांकियाँ, हाथी-घोड़े, शहनाई वादक आदि शोभायात्रा की शोभा द्विगुणित कर रहे थे। चाँदनी चौक से खारीबावली होते हुए शोभायात्रा पहाड़ीधीरज पर समाप्त हुई। रास्ते में जगह-जगह भक्तों ने जलपान आदि की व्यवस्था कर रखी थी। सभी जातियों के महानुभाव समवसरण रथ का स्वागत कर रहे थे, नमन कर रहे थे। हेलीकॉप्टर से पुष्पवृष्टि हो रही थी स्वयं माताजी के ससंघ शोभायात्रा में रहने से शोभायात्रा गरिमापूर्ण बन गई। मेघ देवता ने भी वर्षा की दो-चार बूँदे बरसा कर अपनी भक्ति प्रकट की। पहली शोभायात्रा प्रथम नंबर जैसी ही थी। माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वयं पहाड़ी धीरज पर ठहर गईं रथ भी रात में वही खड़ा रहा। प्रातः पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री जगदीश टाइटलर ने पू. माताजी से आशीर्वाद लेकर समवसरण रथ का दर्शन कर स्वागत किया।

पहाड़ी धीरज के पश्चात् 1 अप्रैल से 4 अप्रैल तक दिल्ली की विभिन्न कालोनियों में प्रतिदिन रथ का प्रवर्तन चलता रहा।

प्रधानमंत्री द्वारा समवसरण श्री विहार का भरत भ्रमण हेतु प्रवर्तन—चैत्र शुक्ला त्रयोदशी-9 अप्रैल 1998 महावीर जयंती के शुभ दिन प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेई ने देश भ्रमण के लिए समवसरण रथ के प्रवर्तन का शुभारंभ किया।

महावीर जयंती के शुभदिन तालकटोरा स्टेडियम में भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई समवसरण रथ का देशव्यापी भ्रमण प्रारंभ करने के लिए पधारे। सर्वप्रथम माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया अनंतर विशाल जन सभा के मध्य पधारकर जनता का-जैन समाज का अभिवादन स्वीकार किया। सभा की अध्यक्षता पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा वर्तमान सांसद श्री धनंजय कुमार जैन ने की। प्रधानमंत्री जी, सभाध्यक्ष तथा अन्य अतिथियों का भाव भीना स्वागत प्रवर्तन समिति की ओर से किया गया। मेरे, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा गणिनी माताजी के प्रवचन तथा आशीर्वचन हुए, कर्मयोगी ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन सहित अन्य वक्ताओं के भाषण हुए। पू0माताजी ने अपने प्रवचन में कहा-कि जिस देश का आश्रय लेकर साधूजन जो तपस्या करते हैं उसका छठा भाग पुण्य राजा को स्वयमेव प्राप्त हो जाता है। आज महावीर जयन्ती के शुभ दिन जो इस समवसरण रथ का प्रवर्तन भारत भ्रमण के लिए हो रहा है यह पूरे देश के शासकों तथा समस्त जनता के लिए मंगल तथा क्षेम को करने वाला होगा।

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई जी ने अपने भाषण में कहा कि मेरा अहोभाग्य है कि भगवान ऋषभदेव के इस समवसरण रथ का प्रवर्तन करने के लिए मुझे यहाँ आमंत्रित किया है। आगे मुस्कराते हुए अपनी विशिष्ट शैली में कहा कि माताजी की तपस्या के छठे भाग पुण्य से हमारा काम नहीं चलेगा और अधिक भाग पुण्य की हमें आवश्यकता है (उपस्थित सारे नर-नारी भी इस बात से हंस पड़े) उन्होंने कहा कि मै यह आश्वासन देता हूँ कि विश्वबंधुत्व का पाठ पढ़ाने वाले इस रथ को सभी प्रदेशों में राजकीय सम्मान प्राप्त होगा। मैं आज मुख्य रूप से ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद लेने आया था वह मुझे मिल गया।

स्टेडियम के बाहर प्रांगण में खड़े रथ पर उन्होंने स्वस्तिक बनाया, अर्घ तथा श्रीफल चढ़ाकर आरती उतारी तथा देशव्यापी प्रवर्तन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। पूर्ण निश्चिंतता से 2 घंटे तक कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सांसद श्री धनंजय कुमार जैन ने प्रधानमंत्री का आभार ज्ञापित किया।

30 अप्रैल तक माताजी का ससंघ दिल्ली में प्रवास रहा। रथ प्रवर्तन 2 मई तक दिल्ली की विभिन्न कालोनियों में होता रहा। कहीं कहीं माताजी का ससंघ सानिध्य प्राप्त होता रहा। 3 मई को रथ का प्रवेश हरियाणा में हुआ।

19 अप्रैल 1998 को नजफगढ़ में पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र निर्माण का शिलान्यास हुआ। 29 अप्रैल, वैशाख शुक्ला तीज के शुभ दिन प्रीतविहार की धर्मसभा में परम गुरुभक्त श्री राजेन्द्र प्रसाद जी (कम्मोजी) का दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर की ओर से रजत प्रशस्ति, शॉल, श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। चंदनामती माताजी तथा गणिनी माताजी ने कम्मोजी की गुरुभक्ति का उल्लेख करते हुए उनके कार्यों की प्रशंसा की तथा उनके दीर्घ तथा स्वस्थ जीवन के लिए आशीर्वाद प्रदान किया।

राजधानी से पुनः हस्तिनापुर के लिए मंगल विहार—1 मई 1998 को प्रीतविहार से माताजी ने ससंघ हस्तिनापुर के लिए विहार किया। सूर्यनगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, ऋषभांचल, मोदीनगर, मेरठ तथा मवाना में धर्मप्रभावना करते हुए 12 मई को जम्बूद्वीप स्थल, हस्तिनापुर में शुभागमन हुआ।

तियालिसवाँ चातुर्मास (1998, जम्बूद्वीप स्थल-हस्तिनापुर में)

वर्ष 1998 का चातुर्मास 8 जुलाई 1998, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ससंघ जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में आगम की विधिपूर्वक, भक्तियों का पाठ करते हुए स्थापित किया।

जहाँ से रक्षाबंधन पर्व प्रारंभ हुआ, वहाँ प्रथम बार श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को जम्बूद्वीप स्थल पर विशिष्टरूप से यह पर्व मनाया गया। प्रातः अकंपनाचार्य आदि 700 मुनियों की पूजा, विष्णुकुमार मुनिराज की पूजा, भगवान श्रेयांसनाथ के निर्वाणकल्याणक के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपलक्ष्य में भगवान की पूजा करके निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। आहार के पश्चात् खीर का प्रसाद वितरित किया गया। मध्यान्ह में मैंने रक्षाबंधन पर्व की कथा पढ़ी। दोनों माताजी के पर्व की महत्ता पर प्रवचन हुए। अंत में सभी स्त्री-पुरुषों ने ध्वजदण्ड पर रक्षासूत्र बांधकर प्रतिज्ञा ली कि "हम अपने शरीर में प्राण रहते तक धर्म तथा धर्मायतनों की तन-मन-धन से रक्षा करेंगे पुन: सभी स्त्री-पुरुषों ने आपस में भी रक्षासूत्र बांधे।

भगवान ऋषभदेव के प्रथम आहार से पवित्र हस्तिनापुर की पावन धरा पर 4 से 6 अक्टूबर 1998 तक 'भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' का अभूतपूर्व आयोजन तथा गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का 65वाँ जन्मजयंती समारोह—भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार को ध्यान में रखते हुए पूज्य माताजी ने कई माह पहले से हस्तिनापुर में देश के संपूर्ण विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का सम्मेलन रखने का निर्णय किया था। तभी से विश्वविद्यालयों से पत्राचार प्रारंभ कर दिया था। इसके लिए विशेष परिश्रम किया गया। कार्यक्रम की महत्ता को समझाने/बताने के लिए साहित्य भेजा गया। देश के उच्च शिक्षाविदों के सम्मेलन का शुभ समय आ गया 4 से 6 अक्टूबर 1998 का। उक्त सम्मेलन दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर तथा चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। सानिध्य प्राप्त हुआ पूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लिका शांतिमती जी, क्षुल्लिका श्रद्धामती जी। मैं भी कार्यक्रम में उपस्थित रहा। कार्यक्रम के सौजन्यकर्ता थे-श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स', दिल्ली। कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी समस्त समारोह के प्रमुख कर्त्ता-धर्त्ता थे। उद्देश्य था यह बताने का कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक नहीं हैं, वे तो जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे, उनसे पहले तेईस तीर्थंकर हो चुके हैं। उनमें सबसे पहले तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव थे।

कार्यक्रम में कई वर्तमान कुलपति, कुछ पूर्व कुलपति, प्रोफेसर तथा 100 से अधिक जैन विद्वान पधारे थे। 4 अक्टूबर के उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण किया मेरठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. दुर्गाप्रसाद जी ने। प्रमुख अतिथि थे राजेश पायलट (पूर्व केन्द्रीय मंत्री), श्री धनंजय कुमार जैन (पूर्व केन्द्रीय मंत्री)। संचालन किया डॉ. अनुपम जैन-इंदौर ने। देश में जैन समाज के इतिहास में इस प्रकार का कुलपति सम्मेलन पहली बार था। अनेक सत्रों के माध्यम से सबने अच्छी तरह समझ लिया कि भगवान महावीर को जैनधर्म का संस्थापक मानना, लिखना अथवा बताना बड़ी भारी भूल है। इतिहास की पुस्तकों में इस भूल को दूर करना अति आवश्यक है। आगत कुलपतियों को जम्बूद्वीप स्थल का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही सुहावना लगा। विभिन्न सत्रों में पूज्य गणिनी माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मेरे उद्बोधन हुए। सभी को जैनधर्म से भलीभांति परिचित कराया गया, साहित्य दिया गया। सबका यथोचित सम्मान किया गया।

5 अक्टूबर 1998, आसोज शुक्ला 15 (शरदपूर्णिमा) के दिन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का 65वाँ जन्मजयंती समारोह आयोजित किया गया।

जन्मजयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे-श्री धनराज यादव (सिंचाई राज्यमंत्री-उत्तरप्रदेश सरकार) तथा अध्यक्षता की-श्री कैलाशचंद जैन (पूर्व सचिव मुख्यमंत्री-उ.प्र.)। संघ के साधुओं, विद्वानों, भक्तों तथा कार्यकर्ताओं ने पूज्य माताजी के गुणानुवाद प्रस्तुत करते हुए विनयांजलि अर्पित की। माताजी की ज्ञान गरिमा से प्रभावित होकर कुलपति भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने भी अपनी विनयांजलि भक्तिभावपूर्वक समर्पित की। सभी कुलपतियों तथा विद्वानों ने माताजी से पुनीत आशीर्वाद ग्रहण किया।

6 अक्टूबर को समापन सत्र में प्रो. डी.पी. तिवारी-मेरठ, मेजर प्रो. बलवीर सिंह भसीन-गया तथा डॉ. के. नलिन शास्त्री-बोधगया की त्रिसदस्यीय समिति द्वारा तैयार किया गया "जम्बूद्वीप घोषणा पत्र" सदन के सम्मुख डॉ. अनुपम जैन-इंदौर ने प्रस्तुत किया। जिसे सभी ने सर्वानुमति से स्वीकृत किया। यह समारोह अपना एक विशेष प्रभाव छोड़ गया। पूरे देश में इसकी सर्वत्र सराहना हुई। ऐसे ही शिक्षाविदों के सम्मेलन की आवश्यकता महसूस की गई।

चातुर्मास के पश्चात्—कमलानगर-मेरठ के मंदिर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से श्री प्रेमचंद जैन 'तेल वाले'-कमलानगर, मेरठ ने 24 तीर्थंकर तथा विद्यमान 20 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान करने के लिए भव्यकमलों का निर्माण कराया। उन प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने के लिए पूज्य माताजी ने आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर जी तथा ब्र. बहनों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहित 10 नवम्बर 1998 को मेरठ के लिए मंगल विहार किया। 16 नवम्बर को कमलानगर में संघ का पदार्पण हुआ। 16 से 21 अक्टूबर तक कमलानगर में संघ का प्रवास रहा। 22 से 25 तक शास्त्रीनगर में संघ के पधारने से ज्ञानामृत की वर्षा हुई। 26 नवम्बर को पुनः कमलानगर संघ आ गया। 27 नवम्बर को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का झण्डारोहण हुआ, जिसमें जैन सभा मेरठ के गणमान्य महानुभाव पधारे। 28 नवम्बर से 3 दिसम्बर तक यथाक्रम से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई। यह प्रतिष्ठा श्री प्रेमचंद जैन 'तेल वाले' की तरफ से आयोजित थी। प्रतिष्ठाचार्य वाणीभूषण पं. नरेश कुमार जैन-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर थे। प्रतिष्ठा के समापन पर समस्त सहयोगी कार्यकर्ताओं का प्रेमचंद जी ने सम्मान किया। जैन समाज मेरठ ने प्रेमचंद जी के समस्त परिवार का स्वागत सम्मान किया। पूज्य माताजी ने प्रेमचंद जी, उनकी ध.प. सब्जी देवी तथा प्रतिष्ठा समिति के प्रमुख पदाधिकारियों को आशीर्वादस्वरूप उपाधियाँ प्रदान की। 3 दिसम्बर को मोक्षकल्याणक के पश्चात् कमलानगर मंदिर में नवनिर्मित कमलों पर प्रतिमाएँ विराजमान की गईं। 9 दिसम्बर तक मेरठ की अन्य कॉलोनियों में प्रवचनों के माध्यम से धर्मामृत की वर्षा हुई। सर्वत्र संघ का भावभीना स्वागत किया गया।

निकटवर्ती हापुड़ शहर की जैन समाज के विशेष आग्रह से माताजी ने संघ सहित 9 दिसम्बर को हापुड़ की तरफ विहार किया। 12 दिसम्बर को हापुड़ शहर में मंगल पदार्पण के अवसर पर विशाल शोभायात्रापूर्वक नगर प्रवेश हुआ। जगह-जगह पादप्रक्षाल कर आरती उतारी गई, पुष्पवृष्टि की गई। 12 से 16 दिसम्बर तक प्रातः, मध्यान्ह तथा रात्रि में प्रवचनों के अतिरिक्त विविध कार्यक्रम हुए। भीषण सर्दी के बावजूद भी दिनभर मेला सा लगा रहता था। 17 दिसम्बर को पार्श्वनाथ मंदिर के शिखर पर विधिपूर्वक ध्वजारोहण हुआ। उसी दिन हापुड़ से विहार करके 23 दिसम्बर को संघ का सकुशल जम्बूद्वीप स्थल पर पदार्पण हुआ।

मेरठ प्रवास के मध्य 25 नवम्बर को चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ में पूज्य माताजी का ससंघ पदार्पण हुआ। विश्वविद्यालय के आडिटोरियम में एक संगोष्ठी हुई, जिसमें पूज्य माताजी का समसामयिक मंगल उद्बोधन हुआ। आर्यिका श्री चंदनामती माताजी व मेरे प्रवचन हुए। संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. डी.पी. तिवारी भी पधारे। जम्बूद्वीप संस्थान के अध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने मेरठ विश्वविद्यालय एवं जम्बूद्वीप संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में पूर्व में सम्पन्न संगोष्ठियों का उल्लेख अपने भाषण में किया।

26-27 दिसम्बर 1998 को जम्बूद्वीप स्थल पर ऋषभदेव श्रावक संस्कार शिविर का आयोजन—शास्त्रीनगर-मेरठ के श्रावक-श्राविकाओं ने शिविर में विशेष रूप से भाग लिया। 26 को 4 सत्रों तथा 27 को 3 सत्रों के माध्यम से अनेक विषयों का ज्ञान प्रवचनों तथा शिक्षण के माध्यम से गणिनी माताजी, पूज्य श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मेरे द्वारा कराया गया, प्रश्नमंच भी हुए। श्रावकोचित क्रियाओं का ज्ञान भी कराया गया। 27 को समापन सत्र में सभी को धार्मिक पुस्तकों के साथ प्रमाणपत्र दिये गये।

जैन समाज के शीर्षस्थ नेता साहू श्री अशोक कुमार जैन का असामयिक निधन— जैन समाज ही नहीं अपितु समस्त भारत की प्रबुद्ध समाज को यह जानकर दुख हुआ कि जैन समाज के शीर्षस्थ नेता, भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष, बेनेट कोलमेन कं. (टाइम्स ऑफ इण्डिया) के चेयरमैन साहू श्री अशोक कुमार जैन का निधन 4 फरवरी 1999 को अमेरिका में हो गया। वे 65 वर्ष के थे। पिछले एक वर्ष से वे हृदयरोग से पीड़ित चल रहे थे। वे सच्चे "तीर्थरक्षा शिरोमणि" थे। पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के पास भी कई बार आकर आपने मार्गदर्शन प्राप्त किया था। साहूजी के निधन के समाचार ज्ञात होने पर जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में तथा ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन करके उनके प्रति संस्थान के पदाधिकारियों ने श्रद्धांजलि समर्पित की। पूज्य गणिनी माताजी ने बताया कि वे सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र के साथ आत्मसात् हो गये थे। जैन साहित्य के प्रकाशन में भी उनका अमूल्य योगदान रहा। उन्होंने अपने पिता साहू शांतिप्रसाद जी तथा ताऊ श्रेयांसप्रसाद जी के पदचिन्हों पर चलकर जैन समाज की, जैन संस्कृति की चहुँमुखी उन्नति के अनेक प्रकार के कार्य किये। उनका निधन जैन समाज की अपूरणीय क्षति है।

माघ वदी नवमी को पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 14वीं पुण्यतिथि मनाई गई। उनके गुणों का स्मरण करते हुए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। माघ कृष्णा चतुर्दशी, 16 जनवरी 1999 को जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में भगवान ऋषभदेव का निर्वाणोत्सव मनाया गया, जिसमें धर्मसभा में पूज्य माताजी व अन्य साधुओं के प्रवचन हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान के पूजा-अभिषेक के साथ निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। जम्बूद्वीप संस्थान के पदाधिकारियों के अतिरिक्त बड़े मंदिर की कमेटी के बाबू सुकुमालचंद जैन, जयप्रकाश जैन-वकील, जैन प्रकाश जैन, ऋतुराज जैन, प्रेमचंद जैन 'तेल वाले'-मेरठ आदि भी पधारे थे। अनेक वक्ताओं ने कहा कि पंथभेद को भुलाकर सामाजिक एकता की आवश्यकता है। हस्तिनापुर में भविष्य में होने वाले कार्यक्रम मिलकर मनाने की बात श्री जयप्रकाश जैन एडवोकेट ने कही।

जम्बूद्वीप स्थल पर नवीन विशाल भोजनालय का शिलान्यास 2 मार्च 1999 को अष्टान्हिका पर्व के समापन पर होली के दिन पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में अवध के प्रमुख दानी श्रेष्ठी नेमकुमार जैन-गनेशपुर (बाराबंकी-उ.प्र.) के सुपुत्र श्री अशोक कुमार जैन के करकमलों से किया गया। संस्थान की ओर से श्री अशोक जैन, उनकी ध.प. तथा उनके साथ पधारे श्री उमेश जैन-टिकैतनगर का स्वागत किया गया।

जम्बूद्वीप दर्शन के लिए देश-विदेश के यात्री तो हस्तिनापुर आते ही रहते हैं किन्तु जैनधर्म तथा दिगम्बर जैन साध्वियों की चर्या की शास्त्रीय जानकारी प्राप्त करने के लिए अमेरिका स्थित केलिफोर्निया की रिसर्च स्कॉलर (शोध छात्रा) मिस सेरीफोर 12 जनवरी 1999 को जम्बूद्वीप स्थल पर पधारीं। 12 दिन तक लगातार माताजी के पास बैठकर विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त किया। बहुत प्रसन्न रहीं। संस्थान की ओर से उनका स्वागत किया गया। उनका शोधपत्र शीघ्र ही प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने हस्तिनापुर प्रवास का तथा पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का अत्यंत श्रद्धापूर्वक उल्लेख किया।

18 अप्रैल 1999 अक्षयतृतीया पर्व पर प्रथम बार जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान ऋषभदेव के आहार का दृश्य प्रस्तुत किया गया। जम्बूद्वीप पर एक कक्ष में विराजमान भगवान ऋषभदेव की आहार मुद्रा वाली प्रतिमा के करपात्र में भक्तों ने इक्षुरस प्रदान किया। इक्षुरस का प्रसाद भी वितरित किया गया। भगवान ऋषभदेव का प्रथम आहार इसी हस्तिनापुर में राजा श्रेयांस के द्वारा इसी तीर्थ पर हुआ था। आहार के पश्चात् पंचाश्चर्य की वृष्टि की गई।

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ का प्रवर्तन विगत 1 वर्ष से दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान में महती धर्मप्रभावना के साथ चल रहा था। प्रवर्तन का संचालन युवा कार्यकर्ता विजय कुमार जैन-कानपुर कर रहे हैं। राजस्थान प्रवर्तन का समापन 4 अप्रैल 1999 को अतिशय क्षेत्र ऋषभदेव-केशरिया जी में हुआ था। पहले सन् 1982 में प्रवर्तित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ के राजस्थान प्रवर्तन के समापन का श्रेय भी इसी अतिशय क्षेत्र को प्राप्त हुआ। संयोग से यह तीर्थ भी ऋषभदेव के नाम से ही प्रसिद्ध है। राजस्थान प्रवर्तन में सर्वाधिक बोलियाँ आनंदपुरकालू के भक्तों ने ली। ज्ञानज्योति प्रवर्तन में भी राजस्थान में आनंदपुरकालू वालों की ही थी। राजस्थान के पश्चात् मध्यप्रदेश में समवसरण रथ का प्रवर्तन 5 अप्रैल 1999 को नीमच शहर से प्रारंभ हुआ।

हस्तिनापुर में जन्मे तथा सम्मेदशिखर से निर्वाणप्राप्त भगवान शांतिनाथ की जन्मजयंती तथा निर्वाणोत्सव ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी, 14 मई 1999 को मनाया गया। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी ज्येष्ठ वदी 14 को भगवान शांतिनाथ का निर्वाणोत्सव निर्वाणलाडू चढ़ाकर मनाया गया। रथयात्रा भी निकाली गई। विभिन्न नगरों से सैकड़ों की संख्या में नर-नारी पधारे थे।

हस्तिनापुर से प्रकाशित होने वाली हिन्दी मासिक पत्रिका "सम्यग्ज्ञान" के रूपहले 25 वर्ष पूर्ण हुए। जून 1999 का अंक सम्यग्ज्ञान रजत जयंती वर्ष समापन अंक के रूप में प्रकाशित किया गया था। जुलाई सन् 1974 में (भगवान महावीर 2500वें निर्वाणकल्याणक के अवसर पर) विशाल संघ के नायक आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज के करकमलों से दि. जैन लाल मंदिर, चाँदनी चौक-दिल्ली में प्रवेशांक का विमोचन हुआ था। तब से नित्य नई साज सज्जा के साथ पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की जादुई सशक्त लेखनी से प्रसूत चारों अनुयोगों के ज्ञानवर्धक लेख सतत प्रकाशित होते रहे। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के लेख, कविताएँ भी प्रकाशित होती रही हैं। दीक्षापूर्व इस महान पत्रिका का संपादक होने का गौरव मुझे तथा ब्र.रवीन्द्र कुमार को प्राप्त होता रहा। दीक्षा के पश्चात् भी मुझे समय-समय पर लेख आदि देने का अवसर मिलता रहा है। अभी भी यह पत्रिका गौरव गरिमा के साथ प्रकाशित हो रही है। 32 वर्षों का एक लम्बा इतिहास इसके साथ जुड़ा हुआ है। अब भी इसके संपादक कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी हैं।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का हस्तिनापुर से दिल्ली के लिए विहार—पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज, क्षुल्लिका श्रद्धामती माताजी तथा संघस्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

8 ब्र. बहनों ने 30 अप्रैल 1999 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से राजधानी दिल्ली के लिए मंगल विहार किया। 13 मई को श्री ऋषभदेव दिगम्बर जैन कमल मंदिर-डी 107, प्रीतविहार, दिल्ली में संघ का मंगल पदार्पण हुआ। 14 मई 1999, ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी को पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने केशलोंच किये। इसी दिन भगवान शांतिनाथ की पूजा करके संघ के सानिध्य में भगवान शांतिनाथ के निर्वाणकल्याणक के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। दिल्ली की अनेक कालोनियों से भक्तगण पधारे थे। इस अवसर पर दोनों माताजी के व मेरे प्रवचन हुए।

पूज्य गणिनी माताजी की प्रेरणा से गठित 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव समिति' की एक प्रारंभिक बैठक पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में 23 मई 1999 को रखी गई जिसमें दिल्ली तथा देश के विभिन्न नगरों-शहरों से उच्च कोटि के जैन समाज के नेता व कार्यकर्ता उपस्थित हुए। विशिष्ट दानियों तथा समाजसेवियों का स्वागत किया गया। समिति को आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले लाला महावीर प्रसाद जी संघपति, कमलचंद जी खारीबावली, प्रेमचंद जी-खारीबावली तथा पन्नालाल सेठी-डीमापुर का भी विशेषरूप से स्वागत किया गया। मेरे मंगलाचरण के अनंतर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे। ब्र. रवीन्द्र कुमार ने समिति के पदाधिकारियों के नाम की घोषणा की। सभी ने पूर्णरूपेण सहयोग का आश्वासन प्रदान किया। पूज्य श्री चंदनामती माताजी व गणिनी माताजी ने ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव की महत्ता पर प्रकाश डाला। सभी को मिलकर महोत्सव को सफल बनाने के लिए प्रेरणा व आशीर्वाद प्रदान किये।

श्रुतपंचमी पर्व, सरस्वती आराधना तथा कमल मंदिर का प्रतिष्ठापना दिवस समारोह—पूज्य गणिनी माताजी की प्रेरणा से सन् 1997 में श्री अनिल कुमार जैन ने अपनी कोठी डी-107 प्रीतविहार के प्रांगण में एक सुन्दर कमल मंदिर का निर्माण करके माताजी के ही सानिध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराई थी। उसी का द्वितीय प्रतिष्ठापना समारोह तथा लघु पंचकल्याणक संघ सानिध्य में 18 से 23 जून तक सम्पन्न हुआ। 18 जून को श्रुतपंचमी पर्व के उपलक्ष्य में सरस्वती आराधना हुई। समाज ने प्रवचनों का लाभ भी लिया। इसी शुभ दिन पूज्य माताजी द्वारा रचित यागमण्डल विधान के प्रथम संस्करण का विमोचन श्री महावीर प्रसाद जैन-भोगल वालों ने किया। वर्ष 1999 का चातुर्मास राजाबाजार-कनाट प्लेस में करने की घोषणा भी हुई। पूज्य माताजी के सानिध्य में दिगम्बर जैन मंदिर, मोरीगेट में वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण का कार्यक्रम 26 से 28 जून तक सम्पन्न हुआ।

वर्ष 1999 का चातुर्मास करने के लिए माताजी का प्रीतविहार से कैलाशनगर व मोरीगेट होकर 30 जून को श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर में मंगल पदार्पण हुआ। अग्रवाल दि. जैन मंदिर तथा खण्डेलवाल दि. जैन मंदिर राजाबाजार के पदाधिकारियों तथा दिल्ली की विभिन्न कालोनियों से पधारे महानुभावों ने संघ का भावभीना स्वागत किया। जैन सभा, नई दिल्ली तथा महिला संगठन दिल्ली के पदाधिकारियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। पूज्य माताजी ने अपने आशीर्वचनों में समस्त दिल्लीवासियों को संघ से धर्मलाभ लेने की प्रेरणा प्रदान की।

13 जुलाई 1999 को श्री अग्रवाल दि. जैन मंदिर राजाबाजार कनाट प्लेस में अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, दिल्ली प्रदेश की समस्त पचास इकाईयों की एक संयुक्त बैठक पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ सानिध्य में आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुई। समस्त इकाईयों से लगभग 400 महिलाओं ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता श्रीमती आशा जैन, चाँदनी चौक (अध्यक्ष-दिल्ली प्रदेश) ने की। समस्त इकाईयों ने अपनी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मैंने बैठक को सम्बोधित किया। 4 फरवरी 2000 से प्रारंभ होकर 1 वर्ष तक चलने वाले भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव से संबंधित विशिष्ट कार्यक्रमों से सबको परिचित कराया।

चौवालिसवाँ चातुर्मास (1999-राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली)

आगम की आज्ञानुसार आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी (27 जुलाई 1999) को मध्यान्ह में चातुर्मास स्थापना की सभा हुई। सभा की अध्यक्षता संघपति श्री महावीर प्रसाद जी ने की। श्री चक्रेश जैन (अध्यक्ष-अग्रवाल जैन पंचायत) जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार (महामंत्री-अगव्राल दि. जैन मंदिर), महेन्द्र कुमार गोधा (अध्यक्ष-खण्डेलवाल दि. जैन मंदिर), दोनों मंदिरों की समितियों के पदाधिकारी, राजाबाजार के श्रावक-श्राविका, दिल्ली की अनेक कालोनियों के भक्तगण, महिला संगठन की अनेक महिलाएँ बड़ी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या में उपस्थित हुए। सभी ने श्रीफल आदि चढ़ाकर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से चातुर्मास राजाबाजार में स्थापित करने की प्रार्थना की। सभी की प्रार्थना को सुनने के पश्चात् आर्यिका श्री चंदनामती माताजी तथा मैंने चातुर्मास/वर्षायोग की महत्ता पर प्रकाश डाला। गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने वर्ष 1999 का चातुर्मास राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में करने की घोषणा की, जिससे हर्ष की लहर दौड़ गई। मेरठ, मवाना, हापुड़, सरधना, लखनऊ, सलुम्बर (राज.) आदि से पधारे भक्तों ने भी दिल्ली वालों के साथ श्रीफल चढ़ाये। सभा के मध्य श्री कमलचंद जी-खारीबावली, दिल्ली ने ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव के फोल्डर का विमोचन किया। सामायिक के पश्चात् माताजी ने रात्रि में भक्तिपाठ करके विधिवत् चातुर्मास की स्थापना की।

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी गुरुपूर्णिमा के बाद श्रावण माह में वीरशासन जयंती, भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणोत्सव तथा रक्षाबंधन पर्व मनाये गये। रक्षाबंधन के दिन विशेष कार्यक्रम हुए। प्रातः अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों तथा विष्णकुमार मुनिराज की पूजन हुई। मध्यान्ह में रक्षाबंधन की कथा मैंने पढ़ी। दोनों माताजी के प्रवचन हुए। उपस्थित भाई-बहनों ने जैन धर्म के ध्वज दण्ड पर रक्षासूत्र बांधे तथा एक-दूसरे के हाथों में राखियाँ बांधी। पूज्य माताजी ने सभी से प्रतिज्ञा कराई कि "तन-मन-धन से जिनधर्म तथा जिनधर्मायतनों की रक्षा करेंगे"। अंत में सभी को खीर का प्रसाद बांटा गया।

कारगिल में शहीद हुए सैनिकों की आत्मा की शांति के लिए पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में 13 से 28 जुलाई तक शांतिविधान अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन दिल्ली प्रदेश द्वारा किया गया। लगभग 500 महिलाओं ने पूजन-विधान करने का सौभाग्य प्राप्त किया। 20 से 29 जुलाई तक सिद्धचक्र मण्डल विधान पूज्य माताजी के सानिध्य में राजाबाजार में श्री सुरेशचंद जैन डिप्टीगंज-दिल्ली ने किया। भादों शुक्ला दूज, 11 सितम्बर 1999 को चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की 45वीं पुण्यतिथि संघ के सानिध्य में मनाई गई। आचार्यश्री के विषय में पूज्य गणिनी माताजी, आर्यिका श्री चंदनामती माताजी व मैंने विस्तृत जानकारी प्रदान की।

भगवान ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव के केन्द्रीय कार्यालय का उद्घाटन—8 अगस्त 1999 को पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव के केन्द्रीय कार्यालय का उद्घाटन अग्रवाल दि. जैन मंदिर, राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में श्री उम्मेदमल पाण्ड्या ने फीता काटकर किया। लाल किला मैदान, दिल्ली में 4 फरवरी 2000 को विशाल पैमाने पर निर्वाण लाडू चढ़ाये जाएंगे। आर्यिका श्री चंदनामती माताजी व मैंने सभा को सम्बोधित किया। समिति के कार्याध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने महोत्सव की व्यापक रूपरेखा बतलाई। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए श्री कमलचंद जी-खारीबावली को दिल्ली प्रदेश का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। अंत में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने सबको संगठित होकर कार्यक्रम को प्रभावी रूप में करने का आशीर्वाद प्रदान किया।

दशलक्षण पर्व में विविध आकर्षक कार्यक्रम—14 सितम्बर से 24 सितम्बर 1999 तक राजाबाजार मंदिर के बाहर प्रांगण में आयोजित धर्म सभा में प्रतिदिन प्रातः गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के भगवान ऋषभदेव के दशावतारों में से एक-एक अवतार पर प्रवचन हुए। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के दशधर्मों पर क्रमशः ओजस्वी प्रवचन हुए। मैंने प्रतिदिन प्रारंभ में मंगलाचरण किया तथा अंत में प्रश्नमंच चलाया। मध्यान्ह में पं. बालमुकुंद जी शास्त्री-मुरैना ने तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन किये। प्रतिदिन रात्रि में भगवान ऋषभदेव के पूर्व दशभवों पर आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित दशावतार नाटकों का मंचन किया गया। प्रातः से शाम तक दिल्ली की विभिन्न कालोनियों से श्रोताओं/दर्शकों का आवागमन रहा। क्षमावणी पर्व पर प्रातः जैन हैप्पी स्कूल में विशाल सभा का आयोजन रखा गया, जिसमें संघ की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। मध्यान्ह में खण्डेलवाल दि. जैन मंदिर के प्रांगण में 11 उपवास करने वाले दिल्ली की विभिन्न कालोनियों से पधारे महानुभावों का स्वागत संघ के सानिध्य में श्री विजय कुमार अजय कुमार जैन सरस्वती विहार तथा अनिल जैन (कमल मंदिर), प्रीतविहार की ओर से दीवाल घड़ी तथा रजत कटोरे भेंट करके किया गया। फूलों से सुसज्जित इन्द्रों का जुलूस निकाला गया। भगवान का अभिषेक हुआ। अनंतर फूलमाल की बोली लेने वालों को फूलमाल पहनाई गई। अंत में सभी के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था थी। दशलक्षण पर्व के समस्त कार्यक्रमों का संचालन कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन ने किया।

29 अगस्त से 7 सितम्बर तक अशोक विहार फेस-1 के दि. जैन मंदिर में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान श्री राजेन्द्र कुमार जैन, चाँदी वाला परिवार की ओर से किया गया। प्रतिदिन विधान के मध्य प्रवचन हुए तथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्यान का अभ्यास कराया गया। रात्रि में नृत्य, भजन, प्रवचन तथा प्रश्नमंच आदि कार्यक्रम हुए। विधान में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 66वाँ जन्मजयंती समारोह—24 अक्टूबर 1999 शरदपूर्णिमा को जैन हैप्पी स्कूल राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में पूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का 66वाँ जन्मजयंती समारोह अत्यंत उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे थे-श्री वी. धनंजय कुमार जैन (केन्द्रीय वित्तराज्य मंत्री-भारत सरकार), सांसद श्री ताराचंद पटेल-सनावद, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त श्री डी.टी.वार्डे जैन। समारोह का उद्घाटन सांसद श्री ताराचंद पटेल ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। अतिथियों का पुष्पहार, शॉल, श्रीफल से स्वागत किया गया। मेरे मंगलाचरण के पश्चात् अनेक महानुभावों तथा विद्वानों ने पूज्य माताजी की ज्ञानगरिमा, दृढ़ संकल्पशक्ति, दूरदर्शिता, जन्मभूमियों के विकास, निस्पृहता आदि गुणों पर प्रकाश डाला। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने बताया कि पूज्य माताजी सन् 1993 से भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार में हाथ धोकर पीछे पड़ी हैं ताकि दुनिया की यह भ्रांति दूर हो जावे कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक हैं।

पूज्य माताजी प्रतिवर्ष अपने जन्मदिन पर कोई न कोई ग्रंथ पूर्ण कर भगवान जिनेन्द्र के चरणों में समर्पित करती हैं। इस वर्ष भगवान ऋषभदेव पर संस्कृत में 'ऋषभदेव चरितम्' हस्तलिखित समर्पित किया, जिसका लोकार्पण श्री धनंजय कुमार जैन (वित्त राज्य मंत्री-भारत सरकार) ने किया। भगवान ऋषभदेव पर कुछ अन्य लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तकों तथा कुछ पत्र-पत्रिकाओं के भी विमोचन हुए। "भगवान ऋषभदेव प्रश्नावली प्रतियोगिता" का लकी ड्रा खोला गया। विजेताओं को अच्छे पुरस्कार दिये गये। अनेक भक्तों ने पूज्य माताजी के 66वें जन्मदिवस पर विभिन्न प्रकार की 66-66 वस्तुएँ बांटी।

श्री धनंजय कुमार जैन (केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री) को उनकी धार्मिक क्रियाकलापों में विशेष अभिरुचि को देखकर दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर द्वारा "जैन रत्न" की उपाधि से सम्मानित करते हुए अंगवस्त्र, माला, श्रीफल के साथ 'रजत प्रशस्ति पत्र' प्रदान किया गया। णमोकार महामंत्र 25 हजार, 50 हजार अथवा सवा लाख लिखने वाले लेखकों को भी प्रमाणपत्र तथा पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

6 अक्टूबर 1998 को गठित "तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ" का अधिवेशन हुआ, जिसमें आगत 25 विद्वानों ने मिलकर कार्यकारिणी की बैठक में वरिष्ठ विद्वान पं. श्री शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी को (प्रथम) अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया। अन्य पदाधिकारियों का भी चयन हुआ। रात्रि की सभा में अन्य अनेक महानुभावों ने विनयांजलि अर्पित की तथा भगवान ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करने का आश्वासन प्रदान किया। 24 सितम्बर 1999 को जैन हैप्पी स्कूल, नई दिल्ली में भारत स्काउट एवं गाइड के वार्षिक कार्यक्रम में पूज्य माताजी ने ससंघ पधारकर आशीर्वचनों में अनुशासनपूर्वक समाज सेवा एवं देश सेवा करने की प्रेरणा प्रदान की। इस अवसर पर दिल्ली प्रदेश के स्वास्थ्य एवं पर्यावरण मंत्री डॉ. ए.के. वालिया ने भी आशीर्वाद प्राप्त किया।

चातुर्मास के पश्चात्—कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को वर्ष 1999 के चातुर्मास के समापन की घोषणा राजाबाजार दि. जैन मंदिर में भक्तिपाठ करके माताजी ने की। प्रातः भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। शाम को दीपावली की पूजन हुई।

14 नवम्बर 1999 को दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली स्थित अणुव्रत भवन में तेरहपंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य श्री महाश्रमण के संघ सानिध्य में आयोजित "अहिंसा एवं शांति प्रयासों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन" में आयोजन समिति के विशेष निवेदन पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने संघ सहित पधारकर देश-विदेश से आये प्रतिनिधियों के समक्ष अपने उद्बोधन में कहा कि "जैनधर्म के पावन सिद्धान्तों का पालन करने से विश्व में शांति की स्थापना हो सकती है। इसके लिए सर्वप्रथम अहिंसा ही प्रमुख आधार है। आचार्य महाप्रज्ञ जी से ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव के विषय में माताजी ने विशेष चर्चा की। महाप्रज्ञजी ने माताजी से 1974 से परिचय के बारे में बताते हुए अपना साहित्य माताजी को भेंट किया।

धर्मपुरा (चाँदनी चौक) स्थित सतघरा दि. जैन मंदिर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा—पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सानिध्य में सतघरा दि. जैन मंदिर में ह्रीं की चौबीस प्रतिमाओं तथा भगवान बाहुबली की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 9 से 13 दिसम्बर 1999 तक सम्पन्न हुई। 5 दिसम्बर को झण्डारोहण के साथ विधि-विधान प्रारंभ हो गये थे। प्रतिदिन पूजा एवं कल्याणकों संबंधी क्रियाओं के साथ पूज्य दोनों माताजी व मेरे प्रवचन भी होते रहे। पंचकल्याणक के प्रतिष्ठाचार्य ब्र.श्री धर्मचंद्र शास्त्री तथा संयोजक श्रीमती कमला जैन (गोटे वाली) गली गुलियान तथा श्री धीरेन्द्र जैन थे।

1 जनवरी 2000 को प्रात:कालीन प्रवचन में पूज्य गणिनी माताजी ने भारतदेश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, समस्त शासकों, देश की समस्त जनता तथा उपस्थित समस्त नर-नारियों को सुख-समृद्धि का मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि नई सहस्राब्दि विश्व में खुशहाली प्रदान करे, धरती से आतंकवाद की समाप्ति हो, आपस में भाईचारे के संबंध स्थापित हों, यही मेरा संदेश तथा शुभकामना है।

नई सहस्राब्दि के प्रथम दिन लाल किला मैदान में अहिंसा महाकुंभ सम्पन्न—1 जनवरी 2000 शनिवार के मध्यान्ह में कड़कड़ाती सर्दी में लाल किला मैदान दिल्ली में आयोजित विशाल अहिंसा महाकुंभ में विभिन्न धर्म तथा सम्प्रदाय के गुरुओं ने मिलकर सरकार से मांग की कि "अहिंसा प्रधान भारत देश से मांस निर्यात पर प्रतिबंध लगाया जावे तथा गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जावे एवं वर्ष 2000 को 'अहिंसा वर्ष' घोषित किया जावे। इस कार्यक्रम के प्रमुख सूत्रधार दिगम्बर जैन मुनि श्री तरुणसागर महाराज थे। कार्यक्रम में आचार्यश्री पुष्पदंतसागर जी महाराज सहित अनेक दिगम्बर मुनि, श्वेताम्बर साधु-साध्वी, हिन्दू धर्म के साधु-संत, धर्माचार्य आदि भी पधारे थे। सभी ने सरकार से मांस निर्यात रोकने की तथा बूचड़खानों, पोल्ट्री फार्मों की तेजी से बढ़ती संख्या पर पाबंदी लगाने की पुरजोर मांग की। इस आयोजन में अपने संघ सहित पधारकर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने वक्तव्य में बताया कि भारतीय संस्कृति के आद्यप्रणेता भगवान ऋषभदेव ने अहिंसा तथा दया को धर्म का मूल बताया, जो कि आज भी प्रासंगिक है। दिल्ली प्रदेश की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने अपने भाषण में कहा कि जैनियों की इतनी बड़ी संख्या यह बता रही है कि वे अहिंसा को अपनाना चाहते हैं। अहिंसा से ही जीवन संतुलित रह सकता है। अंत में भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेश जैन रितुराज-मेरठ ने सरकार को दिये जाने वाले ज्ञापन का वाचन किया। जयकार तथा तालियों की जोर गड़गड़ाहट से उपस्थित जन-समूह ने दिये जाने वाले ज्ञापन का समर्थन किया।

बीसवीं सदी की विदाई तथा इक्कीसवीं सदी का स्वागत करने के लिए पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में अ.भा.दि. जैन महिला संगठन, चाँदनी चौक इकाई द्वारा एक भक्ति का कार्यक्रम कम्मोजी की धर्मशाला में आयोजित किया गया। 31 दिसम्बर 1999 की रात्रि में 9 से 12.30 तक कैलाशपर्वत की रचना बनाकर उसके समक्ष भक्तिसंगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। 1 जनवरी 2000 को प्रात: भक्तामर मंडल विधान-पूजन तथा 2 जनवरी 2000 को चन्द्रप्रभु-पार्श्वनाथ पूजन तथा नवग्रहशांति विधान हुआ। विधान पूजन के मध्य मेरे, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी व गणिनी माताजी के मंगल प्रवचन हुए। माघ वदी 9 को पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की 15वीं पुण्यतिथि मनाई गई।

बहुत भारी प्रचार तथा तैयारियों के साथ आ गया भगवान ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव का समय—संघ तथा समाज ने पूज्य गणिनी माताजी के पुरजोर आह्वान तथा प्रेरणा से प्रेरित होकर कई महीनों से रात-दिन एक करके महोत्सव की तैयारी की। निर्वाण महोत्सव कार्यक्रम के 8 माह शेष रह गये थे। तैयारियाँ मंद गति से चल रही थीं, तब अगस्त 1999 में एक दिन माताजी ने रवीन्द्र कुमार की ओर देखते हुए कहा था कि "देखो रवीन्द्र! अब सब काम छोड़कर निर्वाण महोत्सव के काम में लग जाओ। यह कार्यक्रम हमारा ही नहीं है अपितु अपने परमपिता भगवान ऋषभदेव का मानकर इसमें जुट जाओ, बस मेरी यही आज्ञा है।" मात्र इतने आत्मीय शब्दों ने एक विद्युत शक्ति पैदा कर दी। लालकिला मैदान में जैनधर्म का ध्वज लहराने के लिए 5 सूत्रीय अद्भुत प्रारूप बनाया गया था—

1. कैलाशपर्वत बनाकर उस पर 72 रत्नप्रतिमाएँ विराजमान की जावें।
2. 72 रत्न प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा उसी समय हो।
3. कैलाशपर्वत के समक्ष 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाये जावें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4. लालकिला मैदान में उस समय ऋषभदेव मेले का आयोजन किया जावे।

5. केन्द्र सरकार की भावनाओं को जोड़कर भगवान ऋषभदेव को मीडिया के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर पहुँचाया जावे इत्यादि।

प्रथमतः कार्य संचालन के लिए चातुर्मास में केन्द्रीय कार्यालय राजाबाजार कनॉट प्लेस में खोला गया पुनः 10 नवम्बर 1999 को संघ कम्मोजी की धर्मशाला चाँदनी चौक चला गया, तब वहाँ कैम्प कार्यालय प्रारंभ किया गया।

पूज्य माताजी जो कुछ भी सोचती हैं, वह उससे भी अच्छे रूप में होता है क्योंकि माताजी बहुत हाईफाई नहीं सोचतीं। 72 रत्नप्रतिमाएँ बनीं, फाइवर ग्लास का विशाल कैलाशपर्वत बना, पेंटिग्स व झांकियाँ बनीं। लालकिला मैदान आरक्षित हुआ। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पधारने की स्वीकृति प्रदान की। 1008 लड्डू बने, लड्डू चढ़ाने के थाल बने। पोस्टर, पम्पलेट, फोल्डर, आमंत्रण कार्ड छपे। इलेक्ट्रानिक एवं प्रिंट मीडिया से जोरदार प्रचार हुए। देश के सभी प्रदेशों से भक्तगण पधारे। 3 फरवरी 2000 की रात्रि में सबकुछ तैयार था लालकिला मैदान में। 4 फरवरी को उषा काल की बेला में लाल किले पर देश की आन-बान-शान का प्रतीक तिरंगा लहराया और प्रारंभ हो गया निर्वाण महोत्सव भगवान की पालकी शोभायात्रा के साथ। जनमानस में अपार उत्साह था। लालकिला मैदान में वह होने जा रहा था, जो वहाँ पहले कभी नहीं हुआ था।

भगवान की पालकी लालकिला मैदान में पहुँचते ही कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में झण्डारोहण से हुआ, जिसका श्रेय श्री प्रेमचंद जैन 'तेल वाले'-मेरठ को प्राप्त हुआ। झण्डारोहण के बाद पालकी के साथ संघ मंच पर पहुँचा। पहुँचते ही कैलाशपर्वत पर प्रतिष्ठित प्रतिमाजी भगवान ऋषभदेव की तथा त्रिकाल चौबीसी की प्रतिष्ठेय 72 प्रतिमाएँ विराजमान की गईं। उद्घाटन समारोह के प्रमुख अतिथि प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा सभाध्यक्ष श्री धनंजय कुमार जैन (केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री) मंच पर पधारे। सर्वप्रथम मैंने मंगलाचरण करके समारोह की महिमा तथा भगवान ऋषभदेव के विषय में अवगत कराया। अतिथियों का स्वागत किया गया। माला मुकुट पहनाए गए। महोत्सव का उद्घाटन श्री वाजपेई जी व श्री धनंजय कुमार जी ने दीप प्रज्ज्वलन करके किया। महोत्सव के कार्याध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र जी ने महोत्सव का पूरा परिचय प्रदान किया। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव अपने विस्मृत प्राचीन इतिहास को नये युग में स्मरण दिलाने वाला ऐतिहासिक स्वर्णिम महोत्सव है। पूज्य गणिनी माताजी द्वारा लिखित स्वाध्याय के लिए सर्वजनोपयोगी ग्रंथ "ज्ञानामृत" तथा सर्वोच्च जैन ग्रंथ षट्खण्डागम पर लिखी गईं संस्कृत टीका "सिद्धान्तचिंतामणि" ग्रंथ का विमोचन प्रधानमंत्री जी ने किया। आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित भजनों की कैसेट "कैलाश पर्वत वंदना" का विमोचन भी श्री वाजपेयी जी ने किया। पूज्य गणिनी माताजी ने अपने मंगलमयी आशीर्वचनों में कहा कि "आप और हम सबके द्वारा की जा रही भगवान ऋषभदेव की भक्ति विश्व में शांति की स्थापना करेगी, पर्यावरण शुद्ध होगा, देश का वातावरण स्वस्थ/प्रशस्त होगा।

अंत में प्रधानमंत्री जी ने भक्तिपूर्वक अपने भाषण में अपनी विशिष्ट शैली में कहा कि "मैं पूज्य माताजी का आशीर्वाद लेने आया था, वह मुझे पर्याप्त मात्रा में मिल गया। अगले कार्यक्रम में आने तक यह मेरे काम आवेगा। इस अवसर पर दिया गया भाषण प्रधानमंत्री जी के चुने हुए भाषणों की पुस्तक में पूरा का पूरा छपा है। भाषणोपरांत अटल जी ने चांदी के थाल में सुंदर मोतीचूर का रखा निर्वाणलाडू श्री धनंजय जी के साथ कैलाशपर्वत के सामने भगवान ऋषभदेव के चरणों में चढ़ाया। अन्य इन्द्रों की तरह प्रधानमंत्री जी को वह रजत थाल भेंट-स्वरूप प्रदान कर दिया गया। लड्डू चढ़ाने से पहले प्रधानमंत्री जी ने अत्यंत आकर्षक एवं विशाल कैलाशपर्वत का अनावरण करके उसके प्रथम दर्शन मंत्रमुग्ध होकर किये। वे कुछ क्षणों तक पर्वत को निहारते ही रहे।

प्रधानमंत्री के प्रस्थान करते ही 4 घंटे से बंधकर बैठा विशाल जनसमूह निर्वाणलाडू चढ़ाने के लिए उमड़ पड़ा। श्रद्धाभक्ति से भरित भक्तों ने 1008 से अधिक लड्डू कुछ ही देर में चढ़ा दिये। प्रथम सिद्धिनिर्वाणलाडू चढ़ाने का सौभाग्य श्री पवन जैन, आनंद जैन, दीपक जैन तथा संजय जैन, जैन मार्बल-मेरठ वालों को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् श्री राजकुमार जैन, महक वाले, पूसा रोड-दिल्ली को, जो कि इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के सौधर्म इन्द्र बने थे, उन्होंने एक बड़ा लड्डू सपरिवार चढ़ाकर अपना अहोभाग्य माना। भक्तिगंगा का वह दृश्य भी अपूर्व ही था। लड्डू चढ़ाकर प्रीतिभोज के पश्चात् पंचकल्याणक की पूर्व क्रियाएँ प्रारंभ हो गईं। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बने श्री राजकुमार जैन, महक वाले, पूसा रोड तथा श्रीमती मधु जैन। भगवान के माता-पिता बने-श्री महेशचंद जैन-कलकत्ता वाले तथा उनकी ध.प. श्रीमती रविकांता जैन। 6 फरवरी से 10 फरवरी तक क्रमशः एक-एक कल्याणक शास्त्रोक्त विधि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से सम्पन्न हुए। प्रतिष्ठाचार्य थे पं. नरेश कुमार शास्त्री, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर तथा पं. अकलंक कुमार जैन-लखनऊ। भगवान को आहार कराने का पुण्य अवसर राजा श्रेयांस बनकर संघपति लाला महावीर प्रसाद जी, बंगाली स्वीट सेंटर, साउथ एक्स, दिल्ली को प्राप्त हुआ। 10 फरवरी को प्रातः मोक्षकल्याणक के पश्चात् 72 रत्नप्रतिमाओं का विशेष अभिषेक करने का पुण्य अवसर भक्तों को प्राप्त हुआ। अभिषेक के अंत में शांतिधारा करने का सौभाग्य मिला श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स' को।

5 फरवरी को वृहद् जैन युवा सम्मेलन हुआ, जिसका आयोजन अ.भा.दि. जैन युवा परिषद द्वारा किया गया। सम्मेलन में अनेक शीर्षस्थ संस्थाओं के युवाओं ने भाग लिया। सम्मेलन में विचार प्रस्तुत करने के लिए विषय रखा गया था "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवावर्ग की धर्म के प्रति आस्था एवं कर्तव्य"। संयोजक थे श्री बिजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा। सम्मेलन को दिल्ली जैन समाज के मंत्री श्री स्वदेशभूषण जैन ने भी सम्बोधित किया। मैंने तथा पूज्य श्री चंदनामती माताजी एवं गणिनी माताजी ने भगवान ऋषभदेव पर देश में सर्वत्र संगोष्ठियाँ रखने की प्रेरणा अपने प्रवचन में प्रदान की।

6 फरवरी को ऋषभदेव सर्वधर्म सभा का आयोजन था। सभा की अध्यक्षता पुरातत्त्वविद् श्री डॉ. मुनीशचंद जोशी ने की। मुख्य अतिथि थे श्री दिग्विजय सिंह जैन-इंदौर। अनेक धर्म के वक्ताओं ने भगवान ऋषभदेव तथा उनके जनोपयोगी-जीवनोपयोगी सिद्धान्तों की वर्तमान विश्व को आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. आचार्य प्रभाकर मिश्र का भी ओजस्वी भाषण हुआ। मेरे तथा प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के उद्बोधन के पश्चात् गणिनी ज्ञानमती माताजी के आशीर्वचन हुए। 7 फरवरी को रात्रि में सुप्रसिद्ध गीतकार श्री राजेन्द्र जैन-कलकत्ता का रंगारंग संगीत का कार्यक्रम हुआ।

7 फरवरी को मध्यान्ह में अ.भा.दि.जैन महिला संगठन का नैमित्तिक अधिवेशन हुआ। संगठन की महामंत्री श्रीमती सुमन जैन ने अब तक की प्रगति रिपोर्ट विस्तार से प्रस्तुत की, जिसे सुनकर उपस्थित महिलाओं ने करतल ध्वनि से हर्ष एवं गौरव व्यक्त किया। श्रीमती आशा जैन (अध्यक्ष-दिल्ली प्रदेश) ने भी दिल्ली की समस्त इकाईयों द्वारा प्रारंभ से अब तक किये गये कार्यों/कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत की। अनेक महिलाओं ने इस अवसर पर महिलाओं के कर्त्तव्यों पर प्रकाश डाला तथा संगठन के विकास के बारे में अपने अमूल्य सुझाव भी प्रस्तुत किये। सभी वक्ताओं ने भगवान ऋषभदेव से संबंधित कार्यक्रम पूरे वर्ष भर तक चलाने का आश्वासन दिया। मैंने उक्त अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि युग की आदि से महिलाओं ने धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में न केवल बढ़-चढ़कर भाग लिया है अपितु दिशानिर्देश भी दिया है। आज भी नारी शक्ति को जागृत करने की आवश्यकता है। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने कहा कि महिलाओं में शक्ति तो अपार है किन्तु उसे प्रगट करने से समाज सुसंस्कृत होगा। समाज में महिलाओं तथा पुरुषों की पचास-पचास प्रतिशत शक्ति काम करती है। गणिनी माताजी ने महिलाओं को संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। अंत में श्रीमती उषा पाटनी, इंदौर ने सभी का आभार प्रकट किया।

8 फरवरी की रात्रि में गिनीज बुक में अपना नाम लिखाने वाली देश-विदेश में अनेकों कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली छोटी सी बालिका कु. तन्वी तनेजा ने भरतनाट्यम-नृत्य करके सबकी खूब वाहवाही लूटी। पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री राजनाथ सिंह तथा सांसद श्री राघव जैन (मध्यप्रदेश) ने पधारकर कैलाशपर्वत के दर्शन किये तथा पूज्य माताजी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त कर भगवान ऋषभदेव के इस महान कार्यक्रम की प्रशंसा की।

रात्रि में विशाल कवि सम्मेलन रखा गया था, जिसमें हरिओम पंवार, ओ.पी. जैन-हरिणावी, ओमप्रकाश आदित्य, हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा आदि ने अपनी कविताओं के माध्यम से भगवान ऋषभदेव के गुणगान किये। अन्य विषयों पर भी विभिन्न रसों में कविता पाठ करके जनता का प्रेम प्राप्त किया। 9 फरवरी की रात्रि में जैन साहब म्यूजिकल ग्रुप दिल्ली द्वारा 'माँ पद्मावती जागरण' तथा सांस्कृतिक संध्या का कार्यक्रम रखा गया था। 10 फरवरी को प्रातः 10 बजे दिल्ली प्रदेश के उपराज्यपाल श्री विजय कपूर तथा प्रख्यात विधिवेत्ता श्री एल.एम. सिंघवी पधारे। सभा की अध्यक्षता श्री सिंघवी जी ने की। दोनों अतिथियों का स्वागत किया गया। मैंने उन्हें माताजी का चित्र तथा दोनों माताजी ने साहित्य प्रदान किया। श्री सिंघवी जी ने पूज्य माताजी के क्रियाकलापों की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा कहा कि मुझे पूज्य माताजी के दर्शन बहुत देर से हुए। बहुत पहले हो गये होते तो कुछ और ही बात होती। इस सभा के साथ ऋषभदेव महोत्सव का समापन हो गया।

अ.भा.दि. जैन युवा परिषद द्वारा इस राष्ट्रीय मंच पर कर्मठ 7 युवकों को 'युवारत्न' की उपाधि प्रदान की गई, वे युवा थे-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1. श्री अरुण जैन–दरियागंज 2. श्री राकेश कुमार जैन–ऋषभ विहार 3. श्री राजकुमार जैन–महक वाले, पूसा रोड 4. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन–ऋषभ विहार 5. श्री अशोक कुमार जैन–गली गुलियान 6. श्री सुधीर जैन–अशोक विहार, फेस–1 7. श्री बिजेन्द्र कुमार जैन–शाहदरा।

महोत्सव के मध्य लालकिला मैदान में 40 से अधिक झाँकियाँ भगवान ऋषभदेव तथा अहिंसा के विषय में आकर्षण का केन्द्र रहीं। महिला संगठन इंदौर द्वारा अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा चित्र प्रदर्शनी, पुस्तक प्रदर्शनी, लगभग 300 जैन पत्र–पत्रिकाओं की प्रदर्शनी भी दर्शकों का मन मोहित कर रही थीं। लाखों दर्शकों ने लाभ लिया। व्यसन त्याग की प्रेरणा प्राप्त की। विदेशी पर्यटक भी मेले में देखे गये। महोत्सव में आगंतुक जैन बंधुओं के लिए भोजन की निःशुल्क सुन्दर व्यवस्था थी।

प्रिंट मीडिया तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया ने भी महोत्सव के खूब समाचार प्रकाशित किये। केवल दिल्ली ही नहीं अपितु राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश तथा बंगाल, महाराष्ट्र के अखबारों में भी प्रतिदिन ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव के समाचार मुख्यता से छपते रहे।

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की सूझबूझ, कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी की कर्मठता, सैकड़ों कार्यकर्ताओं के परिश्रम तथा भक्तों के सहयोग से यह भी एक ऐतिहासिक कार्यक्रम बन गया। मुझे भी इस महोत्सव में कार्यों को करने/कराने में जो आनंद की अनुभूति हुई, वह अकथनीय है। कार्यक्रम की सफलता का सबसे बड़ा राज रहा–गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद।

वेणूर में 37 फुट उत्तुंग भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक—केन्द्रीय मंत्री श्री धनंजय कुमार जैन की जन्मभूमि वेणूर (जि.–बैंगलोर) कर्नाटक में 46 वर्ष के पश्चात् भगवान बाहुबली की 37 फुट उत्तुंग प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक विशाल जनसमूह के मध्य 10 से 18 फरवरी 2000 तक किया गया। श्री धनंजय कुमार जैन तथा श्री सुरेन्द्र जी हेगड़े के विशेष आग्रह पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद लेकर कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन के नेतृत्व में 81 यात्रियों का समूह 16 फरवरी को सहारा इण्डिया के विमान से वेणूर गया तथा 20 फरवरी को विमान से ही सकुशल यात्रा कर वापस आ गया। 18 फरवरी को 50 हजार स्त्री–पुरुष अभिषेक स्थल पर उपस्थित थे। इस महामस्तकाभिषेक की विशेषता यह रही कि रात्रि में 8 बजे से अभिषेक प्रारंभ होकर प्रातः 3 बजे तक अभिषेक चला। 1008 कलशों में प्रथम कलश संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट, एक्स. दिल्ली को प्राप्त हुआ। दूध के अभिषेक का महान सौभाग्य श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स'–दिल्ली ने प्राप्त किया। 16 से 20 फरवरी तक 81 महानुभावों ने आसपास के समस्त तीर्थों की भी यात्रा का पुण्य प्राप्त किया।

श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली के प्रांगण में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव की यादगार को चिरस्थाई बनाने के लिए पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं उन्हीं के ससंघ सानिध्य में भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास 2 मार्च 2000 को स्व. श्री महावीर प्रसाद जैन ठेकेदार परिवार के सदस्यों श्री महेन्द्र प्रसाद ठेकेदार, श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार, श्री नरेन्द्र ठेकेदार, श्री रवीन्द्र ठेकेदार ने किया। शिलान्यास की विधि ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने कराई। कुछ ही माह में वह कीर्तिस्तंभ लाल पत्थर का बनकर तैयार हो गया तथा उसमें प्रतिमाएँ भी संघ के सानिध्य में ही विराजमान कर दी गईं।

पूज्य माताजी का दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए मंगल विहार—राजधानी दिल्ली से समस्त देश में भगवान ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव की धूम मचाते हुए पूज्य गणिनी माताजी ने 31 मार्च 2000 को श्री अग्रवाल दि. जैन मंदिर राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में प्रीतविहार, ऋषभविहार, शिवम् एन्क्लेव, दि. जैन मंदिर घंटाघर, गाजियाबाद, मोदीनगर, शांतिनगर, मेरठ, दि. जैन मंदिर ढोलकी मोहल्ला तथा मवाना में संघ के सानिध्य में ऋषभदेव संगोष्ठियों का आयोजन करते हुए 13 अप्रैल 2000 को संघ का जम्बूद्वीप स्थल हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण हुआ।

16 अप्रैल से 23 अप्रैल 2000 (चैत्र शुक्ला 13 से वैशाख कृष्णा 5) तक तृतीय जम्बूद्वीप पंचवर्षीय महोत्सव तथा भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन—सन् 1985 में जम्बूद्वीप पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवसर पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के आदेशानुसार प्रति 5 वर्ष में होने वाले जम्बूद्वीप महोत्सव की शृँखला में तृतीय जम्बूद्वीप महोत्सव 16 से 23 अप्रैल तक स्वयं माताजी के ससंघ सानिध्य में आयोजित किया गया। इसी शुभ अवसर पर ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी आयोजित थी। महोत्सव के प्रमुख यजमान थे श्री दीपक कुमार जैन सुपुत्र श्री विमलेश कुमार जैन, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली। 16 अप्रैल, चैत्र शुक्ला 13 को महावीर जयंती के शुभ दिन झण्डारोहण तथा भगवान महावीर के पंचामृत एवं 1008 कलशों से अभिषेक के द्वारा महोत्सव तथा पंचकल्याणक का शुभारंभ हुआ। 16 से 18 अप्रैल तक पंचकल्याणक संबंधी पूर्व क्रियाएँ सम्पन्न हुईं। 19 से 23 अप्रैल तक क्रमश: पंचकल्याणक की विधि हुईं। पंचकल्याणक के समस्त कार्यक्रम ऋषभदेव मंडप में सम्पन्न हुए।

जम्बूद्वीप स्थल पर निर्मित होने वाले सहस्रकूट जिनालय का शिलान्यास महावीर जयंती 16 अप्रैल के शुभ दिन मंदिर निर्माता श्री महेशचंद जैन, मॉडल टाउन, दिल्ली के करकमलों से सम्पन्न हुआ। शिलान्यास के समय गणिनी माताजी ने ससंघ उपस्थित रहकर मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बने गुलमोहर पार्क-दिल्ली निवासी श्री विमलेश कुमार जैन एवं उनकी ध.प. श्रीमती बाला जैन (दीपक जैन के माता-पिता), माता-पिता श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति एवं श्रीमती कुसुमलता जी, साउथ एक्स., दिल्ली, यज्ञनायक श्री अनिल जैन, कमल मंदिर-प्रीतविहार। धनकुबेर का सौभाग्य-प्रमुख यजमान श्री दीपक जैन को प्राप्त हुआ।

15 वर्षों के पश्चात् तीन मूर्ति मंदिर के ऊपर शिखर बनकर कलशारोहण हुआ—सन् 1985 में तीनमूर्ति मंदिर में प्रतिमाएँ विराजमान हो गई थीं किन्तु शिखर एवं कलशारोहण 15 वर्ष तक नहीं हो पाया। केन्द्रीय मंत्री श्री धनंजय कुमार की उपस्थिति में 23 अप्रैल को कलश निर्माता श्री नरेशचंद जैन-गांधीनगर,दिल्ली को सुयोग प्राप्त हुआ कलशारोहण तथा ध्वजारोहण का। समारोह में प्रमुख अतिथि के रूप में पधारे थे केन्द्रीय उद्योग मंत्री डॉ. रमन सिंह। उनका भावभीना स्वागत किया गया।

20 अप्रैल 2000 वैशाख कृष्णा दूज को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 45वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस मनाया गया। विनयांजलि सभा की अध्यक्षता श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति ने की तथा मुख्य अतिथि थे श्री बाबूलाल पहाड़े-हैदराबाद। अनेक भक्तों ने अपनी विनयांललि प्रस्तुत की। मैंने तथा पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने अपने उद्बोधन में माताजी द्वारा किये जा रहे महान क़ार्यों की महिमा बतलाई। पूज्य गणिनी माताजी ने अपने दीक्षाप्रदाता गुरु आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज का स्मरण करते हुए उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का उल्लेख अपने आशीर्वचनों में किया। आगत भक्तों ने पूज्य माताजी के पादप्रक्षालन करके नूतन पिच्छिका व शास्त्र भेंट किये। अंत में श्रावकों तथा संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों ने माताजी की आरती उतारी।

ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास—21 अप्रैल 2000 को जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के मंगल सानिध्य में भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास संघपति लाला महावीर प्रसाद जी बंगाली स्वीट, साउथ एक्स. नई दिल्ली के करकमलों से सम्पन्न हुआ। कीर्तिस्तंभ का निर्माण भी संघपति जी की ओर से हुआ। सभा की अध्यक्षता लाला प्रेमचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री धनंजय कुमार जैन पधारे थे। मैंने जम्बूद्वीप रचना निर्माण तथा जम्बूद्वीप स्थल के विकास का गौरवपूर्ण इतिहास बताया। श्री धनंजय कुमार जी ने अपने भाषण में कहा कि मुझे इस स्थल पर तीसरी बार आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यहाँ आकर बड़ी शांति प्राप्त होती है। पूज्य माताजी ने जैन संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए बड़े-बड़े कार्य किये हैं तथा कर रही हैं। उन्होंने कहा कि मुझे माताजी की प्रेरणा से कई धार्मिक कार्यक्रमों में सम्मिलित होने का पुण्ययोग प्राप्त होता रहा है। श्री महावीर प्रसाद जी ने पूज्य माताजी की प्रेरणा से अन्यत्र भी कीर्तिस्तंभों का निर्माण कराया है। पूज्य गणिनी माताजी ने अपने आशीर्वचन में सभी को आशीर्वाद प्रदान करते हुए भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान के लिए प्रेरित किया।

23 अप्रैल को 7 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की धवल प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक हुआ। इस प्रतिमा का निर्माण संघपति श्री महावीर प्रसाद जी की ओर से हुआ है। जम्बूद्वीप महोत्सव के उपलक्ष्य में जम्बूद्वीप रचना के मध्य स्थित सुदर्शन मेरु पर्वत की पांडुक शिला पर समवसरण रथप्रवर्तन में बोली लेने वाले भाग्यशाली महानुभावों को अभिषेक करने का अवसर प्राप्त हुआ। महोत्सव के समापन के अवसर पर रथयात्रा निकाली गई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सनावद में निर्माणाधीन णमोकारधाम स्थल पर भगवान ऋषभदेव चैत्यालय की स्थापना—सनावद (म.प्र.) में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में स्थापित णमोकार धाम स्थल पर 13 अप्रैल 2000 को वेदी शुद्धिपूर्वक एक कक्ष में भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा विराजमान की गई। कार्यक्रम में संघ से कु. चन्द्रिका बहन को भेजा को गया था।

4 जून 2000-ज्येष्ठ शुक्ला दूज से 12 जून 2000 ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी तक पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में जम्बूद्वीप स्थल पर डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल (पैठण) महा. एवं श्री प्रकाशचंद जैन-टिकैतनगर एवं श्री आनंद जैन, जैन मार्बल-मेरठ द्वारा इन्द्रध्वज मंडल विधान सोल्लास सम्पन्न किया गया। 6 जून 2000 ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में 'श्रुत पंचमी' पर्व विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। जिनवाणी को ऐरावत हाथी पर विराजमान करके परिसर में शोभायात्रा निकाली गई। जिनवाणी की पूजा की गई। पूज्य माताजी ने 'श्रुत पंचमी' पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला।

मनीषी इतिहासकारों का सफल सम्मेलन—जैन तीर्थंकर परम्परा की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तथा इतिहास की पुस्तकों में जैनधर्म के विषय में लिखी गई भ्रामक बातों का निराकरण करने के लिए पूज्य गणिनी माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप स्थल पर देश के इतिहासकारों, पुरातत्त्वविदों तथा विद्वानों का एक सम्मेलन 11 जून 2000 को संघ के सानिध्य में रखा गया था। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'प्राचीन भारत' नामक इतिहास की पुस्तक में डॉ. आर.एस. शर्मा-पटना (बिहार) के जैनधर्म विषयक भ्रामक लेख पर विशेष चर्चा हुई। संगोष्ठी के संयोजक श्री खिल्लीमल जैन-अलवर (राज.) थे। संगोष्ठी में यह भी बताया गया कि डॉ. आर.एस. शर्मा ने पाठ संशोधित करके ऋषभदेव का नया पाठ जोड़ने की इच्छा व्यक्त की है। सम्मेलन में एन.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. प्रीतिश आचार्य (रीडर) विशेषरूप से पधारे थे। विद्वान वक्ताओं के अतिरिक्त मैंने, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी व गणिनी माताजी ने सम्मेलन को सम्बोधित किया। समागत विद्वानों का संस्थान की ओर से भावभीना स्वागत किया गया।

हस्तिनापुर से विहार से पूर्व 20 जून को प्रातः श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली की ओर से निर्मित होने वाले कैलाशपर्वत के हाल का शिलान्यास श्री कमलचंद जी जैन सपरिवार किया।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का हस्तिनापुर से दिल्ली के लिए मंगल विहार—20 जून 2000 को पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर से दिल्ली के लिए ससंघ विहार कर दिया। संघ में पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, मैं, क्षुल्लिका श्री श्रद्धामती माताजी तथा 8 ब्रह्मचारिणी बहनें थीं। 10 जुलाई 2000 को कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली में मंगल पदार्पण हुआ। श्री अनिल कुमार जैन तथा प्रीतविहार की दिगम्बर जैन समाज तथा दिल्ली की विभिन्न कालोनियों के भक्तों ने संघ का श्रद्धाभक्ति से स्वागत किया। पादप्रक्षाल तथा आरती करके पुष्पवृष्टि की। कमल मंदिर में विराजमान भगवान ऋषभदेव की अष्टधातु की अति मनोज्ञ प्रतिमा के दर्शन कर सबका मन प्रफुल्लित हो गया। श्री अनिल जी ने वर्ष 2000 का चातुर्मास कमल मंदिर में करने की प्रार्थना की, जिसे माताजी ने सहर्ष स्वीकार किया।

पैंतालिसवाँ चातुर्मास (सन् 2000-कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली में)

20 जून 2000 को पूज्य ज्ञानमती माताजी ने ससंघ हस्तिनापुर से दिल्ली की ओर मंगल विहार किया। विहार के मध्य में आने वाले मेरठ व गाजियाबाद नगर में पूज्य माताजी का प्रवास रहा। भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में 1008 संगोष्ठियों को करने की घोषणा हुई थी जिसमें से कुछ संगोष्ठियाँ मेरठ की कुछ कालोनियों में व गाजियाबाद में पूज्य माताजी के सानिध्य में हुईं।

15 जुलाई 2000 को पूज्य माताजी ने ससंघ कमल मंदिर प्रीतविहार-दिल्ली में इस सदी के अंतिम चातुर्मास की स्थापना की। आषाढ़ का महीना पर्व मास के रूप में प्रसिद्ध है क्योंकि इस माह में साधु-साध्वी स्थान-स्थान पर चातुर्मास की स्थापना करते हैं तथा वहाँ की जनता को धर्मलाभ प्राप्त होता है। पूज्य माताजी के इस वर्ष के चातुर्मास का लाभ प्रीतविहार जैन समाज को प्राप्त हुआ। चातुर्मास स्थापना की सभा का शुभारंभ मंगलाचरण द्वारा श्री महावीर प्रसाद जैन (संघपति), बंगाली स्वीट सेंटर ने किया। चातुर्मास की सभा प्रीतविहार के दिगम्बर जैन मंदिर में हुई। सभा में श्री चक्रेश जैन-दिल्ली, डॉ. अनुपम जैन-इंदौर तथा श्रीमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आशा जैन-अध्यक्षा अखिल भारतीय महिला संगठन दिल्ली ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इसी अवसर पर पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित "ऋषभदेव दशावतार नाटक" और "संस्कृत साहित्य के विकास में गणिनी ज्ञानमती माताजी का योगदान" पुस्तक का भी विमोचन हुआ। मैंने चातुर्मास के मध्य होने वाले विभिन्न धार्मिक, शैक्षणिक कार्यक्रमों में समाज के सभी लोगों को भाग लेने की प्रेरणा दी। पूज्य चंदनामती माताजी ने कहा कि यह पूज्य माताजी का 48वाँ चातुर्मास है। जिस प्रकार आचार्य मानतुंग स्वामी ने 48 काव्य रचकर 48 ताले तोड़ दिये थे, उसी प्रकार से पूज्य माताजी का 48वाँ चातुर्मास भगवान ऋषभदेव की भक्ति में समर्पित होकर कर्मशृंखला को तोड़ने के साथ नूतन इतिहास बनाएगा। जैन समाज के नेता उम्मेदमल जी पाण्ड्या ने पूज्य माताजी से चातुर्मास में पूरी दिल्ली भ्रमण को खुला रखने की तथा भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव में अपना सानिध्य प्रदान करने की प्रार्थना की। पूज्य माताजी ने सभी को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। जैन समाज प्रीतविहार के अध्यक्ष श्री सागरचंद जैन तथा महामंत्री-श्री अतुल कुमार जैन का इस कार्यक्रम में पूरा सहयोग रहा। पूज्य माताजी ने कहा कि यह प्रथम अवसर है, जब किसी श्रावक के आग्रह पर मैंने किसी कालोनी में चातुर्मास स्थापना की स्वीकृति दी। श्री अनिल कुमार जैन कागजी का यह पुण्य है, जो उनके आग्रह को पूज्य माताजी ने स्वीकार किया, पर उनके निमित्त से संपूर्ण प्रीतविहार की जैन समाज ने 4 महीने तक धर्मामृत का पान कर अपने को धन्य माना।

अनिल कुमार जैन की भक्तिभावना—विरले ही ऐसे व्यक्ति होते हैं, जब उनके भाव अपने घर में चैत्यालय बनाने के होते हैं। पूज्य माताजी के मांगीतुंगी विहार के समय सन् 1995 में पूज्य माताजी के सानिध्य में अनिल जी ने अपने गृह चैत्यालय का शिलान्यास करवाया। जिसने एक विशाल कमल मंदिर का रूप ले लिया। कई दिनों से उनकी भावना थी कि एक बार पूज्य माताजी का चातुर्मास यहाँ हो। वही भावना फलीभूत हुई और वह अवसर भी आ गया। अनिल जी की उदार भावना देखिए उन्होंने अपनी पूरी कोठी खाली कर पूरे संघ को उसमें ठहराया और स्वयं अपने परिवार के साथ फ्लैट में रहे। इस कार्य में उन्हें अपनी धर्मपत्नी श्रीमती अनिता जी का भी पूरा सहयोग मिला। तीनों बच्चों-पुत्र अतिशय और पुत्रियों अनामिका और (अनु) अंतिमा ने भी पूरे चातुर्मास में पूज्य माताजी के संघ की सेवा वैय्यावृत्ति की। पूरे परिवार ने हर्षपूर्वक संघ की भक्ति की और आगंतुक अतिथियों का भी खूब स्वागत सत्कार किया। अनिल जी ने सपरिवार पूरे समय आहारदान व गुरु सेवा कर असीम पुण्य अर्जित किया।

चातुर्मास के मध्य विभिन्न आयोजन—चातुर्मास के मध्य होने वाले प्रत्येक कार्यक्रमों में समाज के प्रत्येक व्यक्ति ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस, रक्षाबंधन पर्व, संगोष्ठियाँ, अनेक प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं। दशलक्षण पर्व में प्रतिदिन दि. जैन मंदिर में पूज्य माताजी के दशधर्मों पर मंगल प्रवचन हुए और रात्रि में भगवान ऋषभदेव के दशावतार पर नाटक का मंचन और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

कैलाश मानसरोवर यात्रा—पूज्य माताजी की मंगल प्रेरणा से प्रीतविहार जैन समाज की ओर से विकासमार्ग पर कॉफी होम के निकट 30 सितम्बर से 7 अक्टूबर तक विशाल मैदान में कैलाश पर्वत की रचना कर "कैलाश मानसरोवर यात्रा" का सुंदर आयोजन किया गया। जिसकी यात्रा कर दिल्ली तथा अनेक नगरों से पधारे जनसमूह ने साक्षात् कैलाशपर्वत की यात्रा का आनंद प्राप्त किया। आयोजन के मध्य में 1 अक्टूबर को पर्वत पर विराजमान भगवान ऋषभदेव एवं 72 रत्नप्रतिमाओं का मस्तकाभिषेक किया गया। 2 अक्टूबर को 48 भक्तामर महामण्डल विधानों को एक साथ 48 मंडल बनाकर सम्पन्न करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। पूज्य माताजी के 48वें चातुर्मास के उपलक्ष्य में ये 48 विधान एक ही पाण्डाल में आयोजित होकर विशाल विश्वशांति यज्ञ का दृश्य उपस्थित कर रहे थे। इस समारोह का उद्घाटन दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा किया गया।

पूज्य माताजी का 67वाँ जन्मजयंती समारोह—13 अक्टूबर 2000, आश्विन शुक्ला पूर्णिमा को प्रीतविहार दिल्ली में विशाल पाण्डाल बनाकर पूज्य माताजी का 67 वाँ जन्मदिवस समारोह मनाया गया। शरदपूर्णिमा की पावन बेला में सभी ने पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। इस अवसर पर 'दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर की ओर से कुछ पुरस्कार निम्न महानुभावों को प्रदान किये गये-'जम्बूद्वीप रिलीजियस एवार्ड'-मेरठ निवासी श्री कैलाशचंद जैन इंजीनियर, 'गणिनी ब्राह्मी पुरस्कार'-श्रीमती आशा जैन (अध्यक्षा-दिल्ली प्रदेश महिला संगठन) को, 'आर्यिका रत्नमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरस्कार'-प्रो. टीकमचंद जैन, शाहदरा-दिल्ली को। धार्मिक क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए इन्हें इन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

षष्ठी पूर्ति समारोह—प्रारंभ से ही पूज्य माताजी ने अपने शिष्यों को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाकर उनका उत्साह वर्धन किया है तथा उनको अपना वात्सल्य प्रदान किया है। सन् 1967 में मेरी जन्मनगरी सनावद (म.प्र.) में पूज्य माताजी का चातुर्मास हुआ, तभी माताजी के संबोधन से मैंने घर छोड़कर संघ में प्रवेश किया। संघ में रहकर अध्ययन किया तथा पूज्य माताजी की प्रेरणा से कराये गये प्रत्येक कार्य को पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न करके पुण्यार्जन किया है। इतना लम्बा समय पूज्य माताजी के सानिध्य में रहकर व्यतीत हो गया।

26 सितम्बर 2000, आश्विन वदी 14 को मैंने (क्षुल्लक मोतीसागर) अपने जीवन के 60 वर्ष पूर्ण किये। उसी उपलक्ष्य में कमलमंदिर, प्रीतविहार में षष्ठिपूर्ति समारोह मनाया गया। अनेक लोगों ने 61-61 वस्तुएँ अपनी ओर से वितरित कीं। पूज्य माताजी ने मुझे तथा आगन्तुक जनों को अपना मंगल आशीर्वाद दिया तथा मुझे पूज्य माताजी ने नई पिच्छी प्रदान की। पूज्य माताजी ने मुझे संसाररूपी कुंए से निकालकर मोक्षमार्ग में लगाया है। इनके उपकारों को मैं कभी नहीं भूल सकता।

विश्वशांति शिखर सम्मेलन—संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा आयोजित विश्वशांति शिखर सम्मेलन में धर्माचार्य के रूप में कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन ने दिगम्बर जैन समाज का प्रतिनिधित्व किया। यह सम्मेलन युनाइटेड नेशन्स द्वारा न्यूयार्क (अमेरिका) में 28 से 31 अगस्त 2000 तक आयोजित था। संपूर्ण भारत से निमंत्रित 100 से भी अधिक अनेक सम्प्रदाय के धर्माचार्यों ने इसमें भाग लिया। दिगम्बर जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए ब्र. रवीन्द्र जी ने पूज्य माताजी की आज्ञा से वहाँ जाकर विश्वभर में जैनधर्म के प्राचीन एवं अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार इस माध्यम से किया।

शिलान्यास समारोह—प्रयाग-इलाहाबाद में "तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ" का शिलान्यास समारोह 4 अक्टूबर 2000 को सम्पन्न हुआ। जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से इलाहाबाद-बनारस हाइवे पर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा भूमि क्रय कर नूतन तीर्थ का निर्माण किया गया।

प्रीतविहार में सन् 2000 के ऐतिहासिक चातुर्मास का पूज्य माताजी ने दीपावली के दिन अपनी आगमोक्त विधि से निष्ठापन किया। इस चातुर्मास के मध्य भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि प्रयाग-इलाहाबाद में नूतन तीर्थ निर्माण की रूपरेखा बनी और अनेक कार्य सम्पन्न हुए। बीसवीं सदी का यह ऐतिहासिक चातुर्मास स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

मंगल विहार—नूतन तीर्थ 'दीक्षास्थली' पर 4 से 8 फरवरी 2001 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं भगवान ऋषभदेव के 1008 महाकुंभों से मस्तकाभिषेक महोत्सव में अपना पावन सानिध्य प्रदान करने हेतु पूज्य गणिनी माताजी ने संघ सहित 1 नवम्बर 2000 को प्रातः कमलमंदिर प्रीतविहार-दिल्ली से प्रयाग की ओर मंगल विहार किया। विहार के मध्य में अनेक नगरों में पूज्य माताजी के आगमन पर संघ का भव्य स्वागत हुआ। पूज्य माताजी ने जन-जन को भगवान ऋषभदेव के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार कर जैनधर्म की प्राचीनता को सिद्ध करने की प्रेरणा दी। पूरे रास्ते महती धर्मप्रभावना हुई तथा सबने अपने नगर में पूज्य माताजी के चरण पड़ने पर अपने को धन्य माना।

नई सदी का नव उपहार-तीर्थ प्रयाग हुआ साकार—53 दिवसीय अपनी यात्रा के पश्चात् पूज्य माताजी ने प्रयाग में मंगल प्रवेश किया, वह दृश्य अनूठा था। 1 जनवरी 2001 की शुभबेला में पूज्य माताजी ने नवनिर्मित होने वाले तीर्थ "तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली" में जब प्रवेश किया, तो मात्र 1 महीने में कुछ कार्य ही हो पाया था परन्तु पूज्य माताजी के चरण पड़ते ही मात्र 2 माह के अल्पकाल में ही उस भूमि पर तीर्थ परिसर में निर्मित 51 फुट ऊँचे कैलाशपर्वत पर 14 फुट उत्तुंग पद्मासन भगवान ऋषभदेव की लालवर्णी प्रतिमा विराजमान हो गई। पर्वत के दाहिनी ओर भगवान के दीक्षाकल्याणक के प्रतीक में 'दीक्षाकल्याणक तपोवन' मंदिर में विशाल धातु के वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव की 5 फुट खड्गासन प्रतिमा स्थापित की गई तथा पर्वत के बाईं ओर ज्ञानकल्याणक के प्रतीक में 'समवसरण रचना' में चतुर्मुखी प्रतिमा विराजमान की गई। इन सभी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा कर उन्हें जगत्पूज्य बनाने के लिए पूज्य माताजी की प्रेरणा से 4 से 8 फरवरी 2001 तक भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक का विराट आयोजन किया गया। भगवान ऋषभदेव की उत्तुंग प्रतिमा का 1008 महाकुंभों से विश्व में प्रसिद्ध कुंभनगरी में महामस्तकाभिषेक किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी कार्यक्रम के साथ 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' का समापन हुआ और भगवान महावीर 2600वां जन्मकल्याणक महोत्सव कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा हुई।

विश्वशांति महावीर विधान—मंगल विहार के मध्य पूज्य माताजी ने भगवान महावीर के 2600वें जन्मजयंती समारोह के उपलक्ष्य में 2600 मंत्रों से समन्वित 'विश्वशांति महावीर विधान' नामक नूतन कृति की रचना की। जिसे भगवान ऋषभदेव के चरणों में प्रयाग तीर्थ पर पूर्ण कर भगवान महावीर के प्रति भक्ति सुमन समर्पित किये। उस हस्तलिखित कृति का लोकार्पण मुख्य अतिथि श्री धनंजय जी द्वारा किया गया।

नवम धर्म संसद में पूज्य माताजी—स्वर्णिम इतिहास का निर्माण करते हुए प्रयाग के विश्व प्रसिद्ध 12 वर्षीय महाकुंभ मेले में प्रथम बार 'जैनधर्म' का प्रतिनिधित्व पूज्य माताजी एवं संघ ने किया। विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्री अशोक सिंघल एवं अन्य कार्यकर्ताओं के आग्रह पर पूज्य माताजी वहाँ पधारीं और त्रिदिवसीय आयोजन में 'भगवान ऋषभदेव सनातन संस्कृति संगम' मंडप में भगवान का अभिषेक, पूजन, विधान आदि कार्यक्रम हुए तथा भगवान ऋषभदेव के निर्वाणदिवस की पूर्व संध्या पर 21 जनवरी को इसी मण्डप में विशिष्ट अतिथियों के बीच 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाये गये। नवम धर्मसंसद की सभा में पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी व पूज्य चंदनामती माताजी ने भगवान ऋषभदेव और उनके सर्वोदयी सिद्धान्तों को विश्वशांति के लिए महत्वपूर्ण बताया। जिसे वहाँ उपस्थित साधु-संतों ने व जनसमूह ने स्वीकार किया। भगवान ऋषभदेव के जयकारों से समस्त परिसर गुंजायमान हो गया।

पूज्य माताजी के सानिध्य में महावीर जयंती—प्रयागवासियों को पूज्य माताजी के सानिध्य में 2600वें जन्मजयंती समारोह को मनाने का अवसर प्राप्त हुआ। इस वर्ष को 'अहिंसावर्ष' के रूप में मनाये जाने की घोषणा हुई। जिसके अंतर्गत पूरे देश में वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रम करने की पूज्य माताजी ने प्रेरणा दी। इस महोत्सव के मंगलाचरण रूप में पूज्य माताजी द्वारा रचित 'विश्वशांति महावीर विधान' का भव्य आयोजन 1 से 9 अप्रैल तक उन्हीं के ससंघ सानिध्य में किया गया। प्रथम बार इलाहाबाद के नवनिर्मित 'महावीर जयंती भवन' में सुमेरुपर्वत के आकर्षक मॉडले से युक्त इस विधान में 2600 मंत्रों से समन्वित 2600 रत्न मॉडले पर चढ़ाये गये। इस अद्भुत मण्डल विधान में अनेक धर्मनिष्ठ श्रद्धालुओं ने भाग लेकर पुण्यार्जन किया। महावीर जयंती के अवसर पर 6 अप्रैल को पूज्य माताजी के सानिध्य में अहिंसा रैलीरूप 2600 बच्चों का ध्वजा लेकर चलना, ऐरावत हाथी, रथ, इंद्राणियों की मंगल कलश यात्रा, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ आदि का जुलूस बैंड-बाजे के साथ भव्यरूप में निकाला गया। जगह-जगह प्रसाद वितरण हुआ। धर्मसभा में नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। पांडुक शिला पर 1008 कलशों से न्हवन शुरू हुआ तथा रात्रि में भी पालना झुलाना आदि अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

कौशाम्बी का इतिहास जीवंत हुआ—पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से उनके मंगल सानिध्य में 2 से 7 मई 2001 तक भगवान पद्मप्रभु के गर्भ-जन्म-तप-ज्ञानकल्याणक से पवित्र कौशाम्बी-प्रभासगिरी तीर्थ पर सवा सात फुट उत्तुंग भगवान पद्मप्रभ की लालवर्णी मनोहारी पद्मासन प्रतिमा एवं ढाई फुट ऊँची मूलनायक पद्मप्रभ भगवान की पद्मासन प्रतिमा तथा नवनिर्मित मानस्तंभ में विराजित होने वाली चतुर्मुखी प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

इस प्रतिष्ठा की ऐतिहासिक विशेषता यह रही कि 2565 वर्ष पूर्व के इतिहास को साकार करते हुए भगवान महावीर 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अंतर्गत पूज्य माताजी की प्रेरणा से महामुनि महावीर एवं उनको आहार प्रदान करते हुए महासती चंदना की प्रतिमा स्थापित की गई। जनसमूह के मध्य महामुनि महावीर को आहारदान देने का दृश्य दिखाया गया, जिसमें संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन, बंगाली स्वीट्स दिल्ली ने इस प्रतिमा की स्थापना एवं प्रथम आहार देने का पुण्य प्राप्त किया।

मंगल विहार—भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि को 'तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग' के भव्य निर्माण द्वारा वास्तविक तीर्थ का स्वरूप प्रदान कर पूज्य गणिनी माताजी ने ससंघ 22 अप्रैल 2001 को दीक्षास्थली तीर्थ से राजधानी दिल्ली की ओर मंगल विहार किया।

अशोक विहार दिल्ली की जैन समाज के पदाधिकारी पूज्य माताजी के मंगल विहार के मध्य पधारे, उनके अतीव आग्रह पर पूज्य माताजी ने अशोक विहार फेज-1-दिल्ली में चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान कर दी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छियालिसवाँ चातुर्मास (सन् 2001-अशोक विहार-फेस-1-दिल्ली में)

4 जुलाई को श्री दिगम्बर जैन मंदिर, अशोक विहार, फेज-1 में मध्यान्हकालीन सभा में पूज्य माताजी ने अपने चातुर्मास स्थापना की घोषणा की। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री साहिब सिंह वर्मा मुख्य अतिथि तथा श्री दीपचंद बंधु (विधायक) विशिष्ट अतिथि रहे एवं सभा की अध्यक्षता साहू श्री रमेशचंद जैन ने की। रात्रि में पूज्य माताजी ने अपने संघस्थ साधुओं के साथ मंत्रोच्चार एवं भक्तिपाठपूर्वक चारों दिशाओं में पुष्प क्षेपण कर विधिपूर्वक चातुर्मास की स्थापना की।

15 जुलाई 2001 को अशोक विहार में दिल्ली जैन समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं की मीटिंग में भगवान महावीर 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत होने वाले प्रथम महाआयोजन के रूप में होने वाले 'विश्वशांति महावीर विधान' की नवगठित समिति का अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन को मनोनीत किया गया। यह आयोजन 21 से 28 अक्टूबर 2001 तक होना निश्चित हुआ। एक ही पाण्डाल में 26 मण्डल बनाकर प्रत्येक मांडले पर 100 व्यक्तियों को 2600 मंत्रों के साथ रत्न चढ़ाकर भगवान महावीर की पूजन हेतु 'विश्वशांति महावीर विधान' के इस अपूर्व आयोजन का सुअवसर प्राप्त हो, ऐसी व्यवस्था की रूपरेखा बनी।

भक्ति महाकुंभ की श्रृँखला में प्रथम राष्ट्रीय आयोजन—दिल्ली के ऐतिहासिक फिरोजशाह कोटला मैदान के 'भगवान महावीर मंडप' में 21 से 28 अक्टूबर तक 'विश्वशांति महावीर विधान' का विराट आयोजन किया गया। 6 अप्रैल को आयोजित उस भव्य कार्यक्रम के पश्चात् पूज्य माताजी की प्रेरणा से राजधानी दिल्ली में 26 मण्डल बनाकर विश्वशांति की कामना से रत्नों द्वारा भगवान महावीर की आराधना करने वाला यह प्रथम राष्ट्रीय आयोजन था। उद्घाटन सभा की अध्यक्षता केन्द्रीय टेक्सटाइल राज्य मंत्री श्री वी.धनंजय कुमार जैन ने की तथा मुख्य अतिथि टाइम्स ग्रुप की अध्यक्षा श्रीमती इन्दु जैन थीं। इस अवसर पर 'कुण्डलपुर के राजकुमार भगवान महावीर' के चित्र का एवं नूतन कृति 'विश्वशांति महावीर विधान' का विमोचन दोनों महानुभावों ने किया। इस विधान के 26 मण्डलों में से प्रथम मण्डल में राजा सिद्धार्थ एवं रानी त्रिशला के रूप में श्रेष्ठी श्री कमलचंद जी जैन-खारीबावली, दिल्ली एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मैनासुन्दरी ने सपरिवार पूजन करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस विधान का मुख्य आकर्षण थे सुमेरु के आकार के बने प्रत्येक मण्डल पर चढ़ने वाले 2600-2600 रत्न, जिन्हें देखने के लिए देश के कोने-कोने से लोग आ रहे थे और पूज्य माताजी की प्रशंसा करते नहीं थकते थे। यह विधान रत्नों द्वारा पूजा के कारण समस्त विधानों से अलग ही सुशोभित हो रहा था। इस विधान की जाप्य में मंत्रित किये गये रत्नों को धनकुबेर श्रद्धालुओं में वितरित करता था, जिसे प्राप्त करने के लिए लोगों में होड़ लगी रहती थी। यह दृश्य भी अभूतपूर्व होता था। भगवान महावीर के जन्मकल्याणक के प्रतीक में प्रतिदिन रात्रि में पालना झुलाया जाता था एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रतिदिन विधान के पश्चात् 2 घंटे तक "ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः" इस मंत्र का अखण्ड जाप्य होता था, जिसमें देश में व विश्व में शांति की कामना की जाती थी। पूर्णाहुति के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। 26 मण्डलों के भगवन्तों, सुमेरुपर्वत की 26 प्रतिकृतियों का महाभिषेक, शांतिधारा एवं मंगल आरती हुई।

'गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार' सम्मान—25 अक्टूबर को सायंकालीन सभा में जैन साहित्य७ में अपना विशेष योगदान प्रदान करने वाले पं. श्री शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी को दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान का प्रमुख पुरस्कार श्री अनिल कुमार अतिशय कुमार जैन, कमल मंदिर-प्रीतविहार-दिल्ली के सौजन्य से 'गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

विभिन्न उपाधियों से माताजी का सम्मान—पूज्य माताजी को समय-समय पर आचार्यों, समाज, विश्वविद्यालय व गुरुओं के द्वारा अनेक उपाधियाँ प्रदान की गईं। उसी श्रृँखला में महाराष्ट्र प्रांत के प्रतिनिधियों ने 'राष्ट्रगौरव', अवध प्रांत द्वारा 'धर्ममूर्ति' एवं दिल्ली के प्रतिनिधि मण्डल ने 'विश्वविभूति' की उपाधि से विभूषित कर अपने प्रांत का गौरव माना।

इस महाआयोजन के अवसर पर प्रथम मण्डल के प्रमुख भक्त राजा सिद्धार्थ श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली को पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा 'दानवीर-समाजरत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

पावापुरी की रचना बनी—पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में राजधानी दिल्ली के कनॉट प्लेस-राजाबाजार स्थित श्री अग्रवाल दि. जैन मंदिर के प्रांगण में पावापुरी सिद्धक्षेत्र की स्थाई एवं विशाल रचना बनकर "दीपावली" के शुभ दिन 15 नवम्बर को प्रातः 2600 निर्वाण लाडू चढ़ाने का भव्य आयोजन किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मौन यात्रा एवं सर्वधर्म सम्मेलन—भगवार महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव एवं दिल्ली प्रदेश समिति के तत्त्वावधान में भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में तथा हिंसा एवं आतंकवाद के विरोध में एक विशाल जैन पदयात्रा विजय चौक से इण्डिया गेट तक 18 नवम्बर को आयोजित की गई, जिसमें हजारों स्कूली बच्चों ने तथा गणमान्य लोगों ने अपने हाथ में लिए बैनरों से अहिंसा एवं भाईचारे का संदेश दिया।

पदयात्रा के पश्चात् इण्डिया गेट पर आयोजित सभा में दिगम्बर जैन समाज की ओर से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने अपना उद्बोधन दिया। यह प्रथम अवसर था जब 'इण्डिया गेट' से जैन समाज द्वारा अहिंसा एवं शांति का संदेश प्रसारित किया गया।

भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस—10 दिसम्बर 2001 को राजधानी दिल्ली के तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में जैन समाज के सभी संप्रदायों के 200 से भी अधिक साधु-साध्वियों के सानिध्य में 'जप तप महाकुंभ' के रूप में भगवान महावीर का दीक्षाकल्याणक महोत्सव एक विलक्षण रूप में सम्पन्न हुआ। जिसमें पूज्य माताजी ने भी अपना ससंघ सानिध्य प्रदान किया और उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया।

रजत जयंती समारोह—6 जनवरी 2002 को राजधानी दिल्ली के फिक्की ऑडिटोरियम में पूज्य माताजी एवं संघ के सानिध्य में अखिल भारतवर्षीय दि. जैन युवा परिषद का रजत जयंती समारोह-राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का वृहद् आयोजन हुआ, जिसे दिल्ली प्रदेश शाखा ने आयोजित किया, जिसका मुख्य विषय था ''भगवान महावीर 2600वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष में युवाओं की भूमिका''। समारोह के मुख्य अतिथि थे प्रख्यात विधिवेत्ता एवं सांसद डॉ.एल.एम.सिंघवी एवं विशिष्ट अतिथि श्री डॉ. वाचस्पति उपाध्याय (कुलपति-डॉ. लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ) थे। समारोह की अध्यक्षता युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने की। समारोह में ''कुण्डलपुर के राजकुमार भगवान महावीर'' के चित्र का अनावरण किया गया। कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार ही भगवान महावीर की वास्तविक जन्मभूमि है और उसका विकास किया जाये। इस विषय पर सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया। समारोह में विभिन्न प्रांतों के पदाधिकारियों ने भाग लिया। पूज्य माताजी ने सभी युवाओं को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

तीर्थ विकास की ओर बढ़े कदम—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार के विकास का संकल्प लेकर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का इण्डिया गेट दिल्ली से 20 फरवरी 2002 को मंगल विहार हुआ। यात्रा के संघपति बनने का सौभाग्य प्राप्त किया श्री महावीर प्रसाद जैन, बंगाली स्वीट सपरिवार एवं सहयोगी श्री प्रेमचंद जी जैन-खारीबावली-दिल्ली ने। पूज्य माताजी के हृदय में तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों के विकास की भावना हर क्षण विद्यमान रहती है। जिन भगवान महावीर के शासनकाल में हम रह रहे हैं तथा जिनका 2600वाँ जन्मकल्याणक मनाया गया, उन भगवान की जन्मभूमि वीरान पड़ी हो, जहाँ कोई एक दीपक जलाने वाला न हो, ऐसी भूमि का विकास अवश्य होना चाहिए, इसी भावना को मन में लेकर पूज्य माताजी के चरण उस तीर्थ की ओर चल पड़े। पूज्य माताजी के इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए सभी दिल्लीवासी और पूरा देश उनके पीछे चल पड़ा। जन-जन को एक नारा दिया गया-'तीरथ विकास क्रम जारी है अब कुण्डलपुर की बारी है।'

यात्रा के प्रथम पड़ाव के रूप में 'मथुरा' सिद्धक्षेत्र के दर्शन कर जंबूस्वामी के चरणों में अपने भक्ति सुमन अर्पित किये। उसके पश्चात् आगरा, फिरोजाबाद, एटा आदि महानगरों में भगवान महावीर जन्मभूमि के विकास की गूंज करते हुए संघ आगे बढ़ रहा था।

मांगीतुंगी में शिलापूजन समारोह—भगवान ऋषभदेव की परम्परा में अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में 99 करोड़ महामुनियों की निर्वाणभूमि महाराष्ट्र प्रांत के मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के पर्वत की अखण्डशिला में भगवान ऋषभदेव 108 फुट विशालकाय मूर्ति निर्माण हेतु शिलापूजन समारोह 3 मार्च 2002 को श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, बंगाली स्वीट सेंटर, दिल्ली सपरिवार द्वारा सानंद सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दूर-दूर से हजारों श्रद्धालु भक्तों ने पधारकर अपना अहोभाग्य माना। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सन् 1996 में मांगीतुंगी चातुर्मास के मध्य शरदपूर्णिमा के दिन इस प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा प्रदान की थी, तब से आज तक लगातार मूर्ति निर्माण कार्य जारी है।

कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास—24 मार्च 2002, फाल्गुन शु. 10 को भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(नालंदा-बिहार) में महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास सानंद सम्पन्न हुआ। शिलान्यास 'समाजरत्न-दानवीर' श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली ने अपने परिवार सहित किया।

महिला सम्मेलन—31 मार्च 2001 को 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत पूज्य माताजी की प्रेरणा से अ.भा. दि. जैन महिला संगठन, दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय प्रतिभाशाली महिला सम्मान, त्रिशला माता सम्मान समारोह एवं 5वाँ वार्षिकोत्सव फिक्की ऑडिटोरियम,नई दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

महावीर जयंती एवं दीक्षा दिवस—25 अप्रैल 2002 को फिरोजाबाद (उ.प्र.) में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में महावीर जयंती कार्यक्रम की विशाल रथयात्रा निकाली गई, धर्मसभा हुई एवं रात्रि में 2600 दीपकों से भगवान की मंगल आरती की गई। राजधानी दिल्ली में भगवान महावीर जन्मकल्याणक वर्ष की समापन सभा सिरीफोर्ट ऑडिटोरियम नई दिल्ली में हुई। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने समापन सभा में कहा कि इस समारोह का समापन न मानकर भगवान महावीर के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार की शृँखला जारी रहनी चाहिए। पूज्य माताजी ने भी अपना मंगल आशीर्वाद नेताओं के लिए व जनता के लिए प्रेषित किया।

28 अप्रैल, वैशाख कृष्णा दूज को भारी भीड़ के मध्य माताजी का 47वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर सकल दिगम्बर जैन समाज फिरोजाबाद ने पूज्य माताजी को 'युगनायिका' की उपाधि से अलंकृत किया।

सैंतालिसवाँ चातुर्मास (2002, प्रयाग-इलाहाबाद में)

दिल्ली राजधानी से 20 फरवरी 2002 को कुण्डलपुर (नालंदा) तीर्थ के लिए मंगल विहार करते हुए पूज्य माताजी ससंघ 12 जून 2002 को प्रयाग तीर्थ पर पुनः पधारीं।

लोकार्पण एवं उद्घाटन—ऋषभदेव दीक्षास्थली पर निर्मित अत्यंत सुंदर 51 फुट ऊँचे कैलाशपर्वत का निर्माण 1 वर्ष की अल्प अवधि में किया गया। फव्वारों एवं झरनों के प्राकृतिक सौंदर्य से समन्वित इस कैलाशपर्वत पर 72 जिनमंदिर स्थापित किये गये। इन 72 जिनमंदिरों में 24 जून, ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा को पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में भूत, भविष्यत्, वर्तमानकाल की तीन चौबीसी की विधिपूर्वक प्रतिष्ठापना के साथ भव्य कैलाशपर्वत का उद्घाटन एवं लोकार्पण समारोह सम्पन्न किया गया। इस कैलाशपर्वत के निर्माण का सौजन्य प्रदान करने वाली स्व. श्रीमती सुलोचना जैन ध.प. श्री चेतनलाल जैन के सुपुत्र श्री सतेन्द्र कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली ने अपने परिवार सहित इन प्रतिमाओं को विराजमान किया।

साथ ही श्री अनिल कुमार जैन, कमल मंदिर-प्रीतविहार के सौजन्य से निर्मित 31 फुट ऊँचे 'भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ' में भी 8 प्रतिमाएँ विराजमान की गईं।

वर्षायोग स्थापना—दिगम्बर जैन तीर्थ ऋषभदेव दीक्षास्थली, प्रयाग पर तीर्थ की पावन प्रेरिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ की प्रथम बार वर्षायोग स्थापना 23 जुलाई आषाढ़ सुदी 14 को धर्मप्रभावनापूर्वक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर दिल्ली, इलाहाबाद शहर एवं विविध प्रान्तों से आये भक्तों ने पूज्य माताजी को श्रीफल समर्पित कर चातुर्मास स्थापना हेतु निवेदन किया।

हस्तिनापुर तीर्थ पर पंचकल्याणक—भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ तीर्थंकरों की जन्मभूमि ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में जम्बूद्वीपस्थल पर नवनिर्मित श्री सहस्रकूट जिनमंदिर का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ। दिनाँक 11 जुलाई से 15 जुलाई 2002 तक होने वाले इस महोत्सव को कराने का श्रेय प्राप्त किया मंदिर निर्माता स्व. श्री मदनलाल जैन सर्राफ, मॉडल टाउन, दिल्ली के परिवार वालों ने। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से मेरे (क्षुल्लक मोतीसागर महाराज) सानिध्य में संपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शिलान्यास—15 अगस्त 2002 को श्रावणशुक्ला सप्तमी (14 अगस्त) भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। तत्पश्चात् तीर्थ पर श्री प्रकाशचंद जैन (इला.) एवं परिवार द्वारा 'महावीर प्रवचन हाल' का शिलान्यास किया गया। प्रवचन सभा एवं अन्य बड़े कार्यक्रमों हेतु शीघ्र ही इस हाल के निर्माण की घोषणा हुई।

त्रिदिवसीय भव्य कार्यक्रम—19 से 21 अक्टूबर तक ऋषभदेव समवसरण स्थापना, महामस्तकाभिषेक एवं कुण्डलपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राष्ट्रीय महासम्मेलन का त्रिदिवसीय आयोजन किया गया। 19 अक्टूबर 2002 शनिवार को भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन का उद्घाटन किया गया। प्रथम सत्र में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान एवं द्वितीय सत्र में अ.भा.दि. जैन महिला संगठन एवं युवा परिषद का सम्मेलन हुआ। रात्रि में णमोकार महामंत्र लेखकों का पुरस्कार सम्मान रखा गया। 20 अक्टूबर को प्रातः कैलाश पर्वत पर विराजमान भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक हुआ। मध्यान्ह में महासम्मेलन के तृतीय सत्र में अ.भा.दि. जैन शास्त्री परिषद एवं तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ का अधिवेशन हुआ। पश्चात् सम्मान समारोह में भगवान ऋषभदेव पुरस्कार-डॉ. अनुपम जैन-इंदौर को, दि. जैन परिषद आगरा के सौजन्य से, जम्बूद्वीप पुरस्कार वर्ष 2001-पं. श्री धनराज जैन-अमीनगरसराय को तथा जंबूद्वीप पुरस्कार वर्ष 2002, डॉ. श्री शेखरजैन, अहमदाबाद को प्रदान किया गया। ये दोनों पुरस्कार दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के द्वारा प्रति वर्ष प्रदान किये जाते हैं। आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-2001-श्रीमती अलका जैन ध.प. श्री नवीन जैन-पहाड़गंज-दिल्ली के सौजन्य से डॉ. नंदलाल जैन-रीवां (म.प्र.) को प्रदान किया गया।

रात्रि में पं. सुमेरचंद दिवाकर द्वारा लिखित 'महाश्रमण महावीर' ग्रंथ के पुनर्प्रकाशन का विमोचन एवं मरणोपरांत पं. जी का 'जिनशासन रत्न' की उपाधि से सम्मान किया गया।

21 अक्टूबर शरदपूर्णिमा को मध्यान्ह में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के करकमलों से प्रवर्तित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार का भारतभ्रमण के पश्चात् भगवान ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ में नवनिर्मित 'समवसरण मंदिर' में उस ऐतिहासिक धातु से निर्मित समवसरण को स्थापित किया गया।

स्वर्णिम शरदपूर्णिमा—पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 69वाँ जन्मदिवस एवं 51वाँ त्यागदिवस 'स्वणिम शरदपूर्णिमा' के रूप में प्रयाग तीर्थ पर 21 अक्टूबर को विविध आयोजनों के साथ मनाया गया। शरदपूर्णिमा पूज्य माताजी के जन्म के साथ-साथ उनका त्यागदिवस भी है क्योंकि इसी दिन सन् 1952 में उन्होंने गृहत्याग कर आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया था। आज उस त्याग के 50 वर्ष पूर्ण हुए, जो हमारे लिए स्वर्णिम आभा को लिए हुए आया है। यह दिन अविस्मरणीय बनकर सदैव हमारे हृदय पटल पर अंकित रहेगा। अपनी त्याग साधना के 50 वर्ष पूर्ण कर रत्नत्रय की कुशलता के साथ आगे बढ़कर पूज्य माताजी ने जिन ऊँचाईयों तक स्वयं को पहुँचाया है, वह आने वाले युगों में स्वर्णिम इतिहास के रूप में याद किया जायेगा। पूज्य माताजी देश की ही नहीं, विश्व की अमूल्य धरोहर हैं। इन महान आत्मा के जन्म से यह शरदपूर्णिमा भी ज्ञान पूर्णिमा बन गई।

न्यायाधीश सम्मेलन—तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ पर एक नवीन इतिहास की रचना हुई, जब 3 नवम्बर 2002 को पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ मंगल सानिध्य में न्यायालय नगरी, प्रयाग में भव्य न्यायाधीश सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों सहित प्रशासनिक विभाग, सरकारी स्वास्थ्य विभाग, शैक्षणिक क्षेत्र इत्यादि के विशिष्ट महानुभावों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। सभी न्यायमूर्तिगणों ने अपने विचार रखे। पूज्य माताजी ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि आप जनता के साथ न्याय करने के साथ-साथ अपनी आत्मा के साथ भी न्याय करें, उसका चिंतन करें।

कुण्डलपुर के लिए बढ़े कदम—4 नवम्बर सन् 2002 का चातुर्मास दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ पर सम्पन्न कर पूज्य माताजी के कदम पुनः अपने लक्ष्य की ओर बढ़ चले। 10 नवम्बर को पूज्य माताजी ने संघ सहित महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के लिए मंगल विहार कर दिया।

वाराणसी, आरा, पटना में धर्मप्रभावना—कुण्डलपुर बिहार के मध्य प्रयाग के पश्चात् सर्वप्रथम वाराणसी (बनारस) में पूज्य माताजी का भव्य शोभायात्रा के साथ मंगल प्रवेश हुआ। यह भगवान सुपार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ के जन्म से पवित्र नगरी है। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि भेलूपुर मंदिर में पूज्य माताजी ने दर्शन कर जन्मभूमि को नमन किया। भदैनी-वाराणसी में भगवान सुपार्श्वनाथ जी की जन्मभूमि की रज को सिर पर लगाकर माताजी आल्हादित हुईं। 10 दिवसीय प्रवास में विभिन्न कार्यक्रम हुए।

पूज्य माताजी के ससंघ आरानगर में मंगल पदार्पण करने पर आरा शहर कुण्डलपुर के और माताजी के जयकारों से गूंज उठा। बच्चे-बच्चे में उत्साह था। विशेष धर्मप्रभावना के साथ यहाँ के प्रत्येक जन-जन की भावनाएँ कुण्डलपुर के साथ जुड़ गईं। आरा जैन समाज ने पूज्य माताजी के ज्ञान की प्रशंसा करते हुए उन्हें "वाग्देवी" की उपाधि से अलंकृत कर अपने सौभाग्य की सराहना की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुण्डलपुर पहुँचने के कुछ ही दिन पूर्व का यह अंतिम नगर प्रवास था। जब माताजी बिहार प्रांत की राजधानी पटना पहुँचीं। 19 से 22 दिसम्बर के 4 दिवसीय प्रवास में ही पटनावासी ज्ञानामृत की वर्षा से सराबोर हुए। सुदर्शन स्वामी की निर्वाण स्थली गुलजारबाग के भी पूज्य माताजी ने दर्शन किये।

कुण्डलपुर प्रवेश—एक ऐतिहासिक यात्रा की सुखद पूर्णता होकर 29 दिसम्बर सन् 2002 को पूज्य गणिनी माताजी ने ससंघ अपूर्व उल्लास एवं हर्ष के साथ भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में मंगल प्रवेश किया। 20 फरवरी को राजधानी दिल्ली से विहार कर 1300 किमी. की पदयात्रा कर सकुशल अपनी संघ यात्रा की पूर्णता पर माताजी ने आतंरिक आल्हाद एवं प्रसन्नता का अनुभव किया। देश के विभिन्न प्रांतों से आये भक्तगणों ने विशाल जुलूस के साथ संघ की अगवानी की। स्थानीय ग्रामवासियों ने कहा कि पचास वर्षों के पश्चात् इस भूमि पर पुनः भगवान महावीर की जयकार गुंजायमान हो रही है। सभी ग्रामवासियों ने भी पूर्ण उत्साह से शोभायात्रा में भाग लिया। रात्रि में कुण्डलपुर प्रवेश की मंगल बेला में कुण्डलपुर स्थित प्राचीन मंदिर में भगवान महावीर के समक्ष 108 दीपक प्रज्वलित कर मंगल आरती की गई।

29 दिसम्बर को ही मंगल पदार्पण के दिन मुख्य मंदिर-भगवान महावीर मंदिर का शिलान्यास श्री ऋषभदास दीपक कुमार जैन-वाराणसी द्वारा पूज्य माताजी के सानिध्य में हो गया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा—7 फरवरी को गर्भकल्याणक के दिन ही जयपुर से बनकर आई 11 फुट ऊँची खड्गासन भगवान महावीर की प्रतिमा 25 फट की ऊँचाई पर निर्माणाधीन महावीर मंदिर में पूज्य माताजी के द्वारा किये गये अखण्ड मंत्रजाप्य के प्रभाव से विराजित हो गईं। श्वेत पाषाण की बेदाग इतनी आकर्षक प्रतिमा थी कि सभी की नजरें एकटक उसी को निहार रही थीं। पश्चात् मूर्ति पर गर्भकल्याणक के संस्कार किये गये। प्रतिष्ठा में सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य प्राप्त किया-श्री दीपक जैन-वाराणसी एवं शचि इन्द्राणी बनीं-श्रीमती सुभाषिनी जैन। माता-पिता श्री महावीर प्रसाद जी एवं श्रीमती कुसुलमा जैन दिल्ली तथा धनकुबेर-श्री कमल कुमार जैन-आरा एवं इन्द्राणी श्रीमती अनुपमा जैन थीं।

8 फरवरी को भगवान का जन्माभिषेक के पूर्व जन्मकल्याणक जुलुस निकाला गया तथा 1008 कलशों से पांडुक शिला पर जन्माभिषेक सम्पन्न हुआ।

9 फरवरी को दीक्षाकल्याणक के दिन दीक्षाविधि के संस्कार किये गये। इस दिन निर्माणाधीन नंद्यावर्त महल परिसर में नवनिर्मित 'नवग्रहशांति मंदिर' का शिलान्यास श्री ज्ञानचंद जैन-आरा निवासी ने सपरिवार किया। मध्यान्ह में राजसभा लगी, जिसमें रक्षामंत्री श्री जार्ज फर्नांडीज का मुख्य अतिथि के रूप में आगमन हुआ। उन्होंने पूज्य माताजी से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर भगवान महावीर जैन शब्दकोश का लोकार्पण भी मंत्री जी ने किया।

10 फरवरी को महामुनि महावीर की आहारचर्या, जो कि राजा कूल के महल में हुई थी, वह दृश्य दिखाया गया। मध्यान्ह में पूज्य माताजी क़ी प्रेरणा से 'तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों का विकास' नाम से महाधिवेशन हुआ। महाधिवेशन की इस सभा में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय रेलमंत्री श्री नितीश कुमार पधारे। कमेटी के निवेदन पर उन्होंने अपने भाषण में घोषित किया कि जन्मभूमि कुण्डलपुर के नाम पर दीपनगर हाल्ट को पूर्ण स्टेशन बनाकर कुण्डलपुर स्टेशन कर दिया जायेगा।

11 फरवरी को नंद्यावर्त मंडप में तीर्थंकर महावीर महामुनि को महासती चंदना द्वारा कौशाम्बी में आहारदान दिया गया, इस दृश्य को दिखाया गया। मध्यान्ह में केवलज्ञान कल्याणक की क्रियाएँ हुईं। मध्यान्हकालीन सभा में पूज्य माताजी ने भगवान महावीर ज्योतिरथ के भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन की घोषणा की। बिहार के राज्यपाल डॉ. विनोदचंद पाण्डेय जी ने इस अवसर पर पधारकर माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया एवं 'भगवान महावीर ज्योति' रथ का उद्‌घाटन कर पुण्य अर्जित किया। राज्यपाल जी ने पूज्य गणिनी माताजी द्वारा रचित 'महावीर देशना ग्रंथ' का भी विमोचन किया।

12 फरवरी को पंचकल्याणक के अंतिम दिन प्रात:काल भगवान का निर्वाणकल्याणक हुआ। पूर्णाहुति हवन के साथ (तीन चौबीसी की 72 प्रतिमा सहित) लगभग 100 प्रतिष्ठित जिनप्रतिमाओं को वेदी में विराजमान किया गया। साथ ही प्राचीन मंदिर में निर्मित 'भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ' में भी सौजन्यकर्ता श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली के परिवार द्वारा 8 जिनप्रतिमाएँ विराजमान की गईं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाकुंभ मस्तकाभिषेक—12 फरवरी को मध्यान्ह में भगवान महावीर की 11 फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा का 1008 महाकुंभों से महामस्तकाभिषेक किया गया। इस मनोहारी दृश्य को देखकर प्रत्येक जन ने अपने नेत्रों को धन्य किया। पंचामृत अभिषेक, घी, दूध, दही, केशर आदि जब भगवान पर हुआ, तो वातावरण भगवान के जयकारों से गूंज उठा।

सम्मेदशिखर के लिए मंगल विहार—कुण्डलपुर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न कराकर 19 फरवरी 2003 को शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी की वंदना की भावना लेकर पूज्य माताजी ने ससंघ मंगल विहार किया। मार्ग में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि एवं भगवान महावीर की देशनास्थली राजगृही में पूज्य माताजी ने 11 फुट खड्गासन भगवान मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा, सिद्धक्षेत्र पावापुरी में 11 फुट उत्तुंग खड्गासन भगवान महावीर की मूर्ति एवं गुणावाँ सिद्धक्षेत्र पर 5 फुट ऊँची खड्गासन गौतम स्वामी की प्रतिमा विराजमान कराने की घोषणा की। इन तीर्थों के दर्शन करते हुए नवादा, झुमरीतलैया, सरिया आदि स्थानों पर धर्मप्रभावना करते हुए 12 मार्च 2003 को शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में मंगल पदार्पण हुआ। 18 मार्च 2003 को क्षेत्र पर विशाल जनसमूह के मध्य दि. जैन बीसपंथी कोठी एवं दि. जैन समाज-मधुबन सम्मेदशिखर द्वारा आयोजित 'श्रावक महासम्मेलन' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का विषय था-तीर्थ संरक्षण एवं विकास।

मंदिर शिलान्यास—श्री सम्मेदशिखर जी में पूज्य माताजी के सानिध्य में 26 मार्च 2003, चैत्र वदी नवमी को प्रथम बार भव्यतापूर्वक भगवान ऋषभदेव जयंती का आयोजन सम्पन्न हुआ। पंचामृत अभिषेक, 108 कलशों से अभिषेक एवं रथयात्रा निकाली गई। इस अवसर पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से श्री बाहुबली मंदिर के प्रांगण में नूतन 'भगवान ऋषभदेव मंदिर' के निर्माण हेतु डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल-पैठण (महा.) ने सपरिवार शिलान्यास विधि सम्पन्न की।

महावीर जयंती का ऐतिहासिक सूत्रपात—हम सभी अपने-अपने नगरों में तो महावीर जयंती धूमधाम से मनाते हैं पर जन्मभूमि वीरान पड़ी रहती थी। पूज्य गणिनी माताजी ने 15 अप्रैल 2003, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को भगवान महावीर जन्मजयंती महोत्सव को भगवान की वास्तविक जन्मभूमि कुण्डलपुर में मनाने की प्रेरणा दी। इस ऐतिहासिक दिन को मनाने का पुनर्सूत्रपात इस भूमि पर हुआ। पूज्य माताजी के सानिध्य में नवनिर्मित नंद्यावर्त महल परिसर में प्रातः से ही कार्यक्रमों की धूम मच गई। प्रातः झण्डारोहण हुआ, प्रभातफेरी निकाली गई, मध्यान्ह में धर्मसभा हुई। रथयात्रा निकाली गई। पश्चात् भगवान महावीर का पंचामृत अभिषेक सम्पन्न हुआ। रात्रि में भगवान का पालना झुलाया गया। इस उत्सव में आरा, पटना, गया, झुमरीतलैया आदि आसपास के नगरों से वे देश के विभिन्न स्थानों से पधारे महानुभावों ने पधारकर पुण्य अर्जित किया।

महावीर ज्योति रथ प्रवर्तन—12 फरवरी को उद्घाटन के पश्चात् 15 अप्रैल 2003 महावीर जयंती के शुभ दिन पूज्य माताजी के आशीर्वाद से 'महावीर ज्योति' रथ का प्रवर्तन किया गया जो देश के विभिन्न नगरों में पहुँचकर जन-जन को जैनागम के वास्तविक ज्ञान से परिचित करायेगा एवं भगवान महावीर की वास्तविक जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से जन-जन की भावनाओं को जोड़ने वाला होगा।

जंबूद्वीप में पंचकल्याणक—12 से 16 मई (वैशाख शु. 11 से 14) तक जम्बूद्वीप- हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से एवं मंगल आशीर्वाद से मेरे (क्षुल्लक मोतीसागर) सानिध्य में नवनिर्मित 'श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर जिनमंदिर' एवं 'भगवान ऋषभदेव मंदिर' की प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। बीस तीर्थंकर मंदिर का निर्माण श्री प्रद्युम्न कुमार जैन 'छोटी सा.'-टिकैतनगर परिवार के सौजन्य से हुआ एवं भगवान ऋषभदेव मंदिर में मध्य में धातु की भगवान ऋषभदेव की एवं आजू-बाजू भगवान महावीर एवं पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ मॉडल टाउन, दिल्ली के महानुभावों द्वारा की गई।

राष्ट्रपति जी ने आशीर्वाद प्राप्त किया—भारत के प्रथम नागरिक राष्ट्रपति डॉ.ए.पी. जे. अब्दुल कलाम ने 30 मई 2003 को भगवान महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी (नालंदा) बिहार में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से विशेष मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

1 जून 2003 को राजगृही (भगवान मुनिसुव्रतनाथ जन्मभूमि) नालंदा में लाल मंदिर परिसर में पूज्य माताजी की मंगल प्रेरणा व सानिध्य में भगवान मुनिसुव्रतनाथ जिनमंदिर का शिलान्यास संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक सम्पन्न हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नंद्यावर्त महल परिसर में द्रुतगति से विभिन्न मंदिरों का निर्माण कार्य द्रुतगति से चल रहा था तथा पूज्य माताजी भी ससंघ वहाँ विराजकर अपनी आत्मसाधना में लगी थीं। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति के विशेष निवेदन पर पूज्य माताजी ने अपना सन् 2003 का चातुर्मास कुण्डलपुर में करने की स्वीकृति प्रदान की, जिससे पदाधिकारियों में नवीन शक्ति का संचार हुआ।

अड़तालिसवाँ चातुर्मास (सन् 2003, कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में)

भगवान महावीर की जन्मभूमि पर सैकड़ों वर्षों के बाद पूज्य माताजी के रूप में प्रथम बार किन्हीं जैन साधु का चातुर्मास होने जा रहा था, यह एक ऐतिहासिक कड़ी है।

स्वर्णिम वर्षायोग— भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में होने वाला यह पावन वर्षायोग मात्र वर्षायोग ही नहीं है अपितु एक ऐतिहासिक चातुर्मास होने के साथ-साथ माताजी की आर्यिका दीक्षा का स्वर्णिम वर्षायोग है। जैनागम की उच्चकोटि की लेखिका एवं जन्मभूमि विकास की प्रेरणास्रोत पूज्य माताजी ने सन् 2003 में अपने 69 वर्ष के जीवन में 50 वर्ष दीक्षित अवस्था के व्यतीत किये तथा विभिन्न नगरों में व तीर्थों पर अपने चातुर्मास कर सर्वतोमुखी प्रभावना की। यह बिहार प्रांत का पुण्योदय ही कहा जायेगा कि उन्हें वर्षायोग के रूप में स्वर्णिम वर्षायोग का लाभ मिला। 12 जुलाई 2003 को पूज्य माताजी ने ससंघ कुण्डलपुर (नालंदा) 'नंद्यावर्त महल' परिसर में अपने इस स्वर्णिम वर्षायोग की स्थापना की। इस स्वर्णिम अवसर पर देश के विभिन्न नगरों से पधारे महानुभावों ने पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

श्री नवग्रहजिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा—कुण्डलपुर के नंद्यावर्त महल परिसर में निर्माणाधीन नूतन जिनालयों में "नवग्रह शांति जिनमंदिर" में विराजमान होने वाली प्रतिमाओं की चातुर्मास स्थापना के पूर्व 4 जुलाई से 9 जुलाई 2003 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। तीर्थ विकास की प्रेरणास्रोत पूज्य माताजी के पावन सानिध्य में श्री ज्ञानचंद जी जैन-आरा एवं समस्त परिवार ने इस महोत्सव को सम्पन्न कर प्रसन्नता का अनुभव किया।

वीर शासन जयंती— श्रावण कृ. एकम्, वीर शासन जयंती के उपलक्ष्य में भगवान महावीर की देशनास्थली राजगृही तीर्थ में त्रिदिवसीय आयोजन किया गया। 13 जुलाई को मध्यान्ह में माताजी द्वारा रचित भगवान महावीर समवसरण मण्डल विधान हुआ तथा रात्रि में धन्य हुआ विपुलाचल पर्वत नाटक (पूज्य चंदनामती माताजी द्वारा रचित) का सुंदर मंचन किया गया। 14 जुलाई को पर्व के दिन 'विपुलाचल पर्वत' पर विराजमान भगवान महावीर के समवसरण के प्रतीक रूप (चतुर्मुख) चारों प्रतिमाओं का मस्तकाभिषेक किया गया। देश के कोने-कोने से पधारे श्रावकों ने उत्साहित होकर कार्यक्रम में भाग लिया। 15 जुलाई को रथयात्रा एवं जिनवाणी जुलूसपूर्वक कार्यक्रम का समापन हुआ।

दशलक्षण पर्व सम्पन्न—31 अगस्त से 9 सितम्बर तक कुण्डलपुर (नालंदा) में पूज्य माताजी के सानिध्य में 21वीं सदी में प्रथम बार दशलक्षण पर्व का भव्य आयोजन हुआ। महाराष्ट्र से पधारे 'गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल' द्वारा इस पावन पर्व पर 'कल्पद्रुम महामण्डल विधान' अत्यंत भक्तिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। सभी भक्तों ने भक्तिगंगा में अवगाहन कर पुण्य अर्जित किया।

कुण्डलपुर महोत्सव— भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में 8 से 10 अक्टूबर 2003 तक प्रथम 'कुण्डलपुर महोत्सव' का विशाल ऐतिहासिक आयोजन पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। 8 अक्टूबर को कुण्डलपुर दि. जैन समिति एवं पर्यटन विभाग-बिहार सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस महोत्सव का शुभारंभ नंद्यावर्त महल परिसर में बनाये 'सिद्धार्थ मण्डप' के समक्ष झण्डारोहणपूर्वक हुआ। उद्घाटन सभा में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे-पुरातत्व संग्रहालय, नालंदा के सहायक अधीक्षक-श्री अशोक कुमार पाण्डे। तत्पश्चात् तीर्थंकर ऋषभदेव विद्वत् महासंघ का एवं अ.भा.दि. जैन महिला संगठन का नैमित्तिक अधिवेशन हुआ। ऋषभदेशना संगठन के मुखपत्र की संपादिका श्रीमती सुमन जैन-इंदौर (केन्द्रीय महामंत्री) को दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर द्वारा "आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-2002" से सम्मानित किया गया। अग्रिम तीन वर्षों के लिए महिला संगठन की नई केन्द्रीय कार्यकारिणी की घोषणा पूज्य क्षुल्लक मोतीसागर जी (मैंने) ने की। जिसमें अध्यक्षा-श्रीमती आशा जैन-दिल्ली एवं महामंत्री-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमती सुमन जैन-इंदौर को मनोनीत किया गया। 9 अक्टूबर को प्रातः भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक हुआ। 'भगवान महावीर समवसरण मण्डल विधान' का आयोजन कलकत्तावासियों ने किया। मध्यान्ह में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान का नैमित्तिक अधिवेशन हुआ। डॉ. चिरंजीलाल जैन बगड़ा-कलकत्ता को जम्बूद्वीप पुरस्कार-2003 से सम्मानित किया गया। 'आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-2003' श्री सुरेश जैन मारोरा-शिवपुरी (म.प्र.) को दिया गया। मुख्य अतिथि के रूप में सभा में केन्द्रीय लघु उद्योग मंत्री-श्री सी.पी. ठाकुर पधारे। इस अवसर पर पूज्य चंदनामती माताजी द्वारा रचित "तीर्थंकर जन्मभूमि विधान" एवं 'गणिनी ज्ञानमती परिचय एव प्रश्नोत्तरी' पुस्तकों का विमोचन हुआ।

10 अक्टूबर शरदपूर्णिमा के दिन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का 70वाँ जन्मजयंती समारोह मनाया गया। प्रातःकाल पूज्य चंदनामती माताजी द्वारा लिखित 'गणिनी ज्ञानमती महापूजा' सम्पन्न हुई। जिसमें पूज्य माताजी के विविध गुणों का दिग्दर्शन कराने वाले 72 पद्यों के द्वारा उनके चरणों में अर्घ्य समर्पित किये गये। तत्पश्चात् मुख्य मंदिर में भगवान महावीर का मस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। मध्यान्हकालीन सभा में मुख्य अतिथि के रूप में बिहार प्रदेश के राज्यपाल न्यायमूर्ति श्री एम.रामा. जोयिस पधारे। पूज्य माताज़ी की प्रेरणा से 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' (सन् 2000 से 2001) के अवसर पर भगवान ऋषभदेव के अहिंसामयी सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार-प्रसार करने हेतु घोषित संस्थान के सर्वोच्च पुरस्कार "ऋषभदेव नेशनल एवार्ड" से सांसद श्री वी. धनंजय कुमार जैन (पूर्व वित्त राज्यमंत्री) को राज्यपाल जी ने सम्मानित किया। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के नाम पर जैन समाज में यह सर्वोच्च प्रथम पुरस्कार है। इस अवसर पर पूज्य माताजी ने तीर्थंकर भगवन्तों की वर्तमान 16 जन्मभूमियों के संरक्षण एवं विकास हेतु "भारतवर्षीय तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समिति' के गठन की घोषणा की।

इस संपूर्ण कार्यक्रम में 'गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल' महाराष्ट्र ने आगंतुक बंधुओं के लिए प्रीतिभोज की सुंदर व्यवस्था की।

दीपावली पर्व (महावीर निर्वाणोत्सव)— भगवान महावीर निर्वाणभूमि-पावापुरी में दीपावली पर्व के अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में प्रथम बार 23 से 25 अक्टूबर 2003 तक त्रिदिवसीय भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव महती धर्मप्रभावनापूर्वक मनाया गया। कार्तिक कृष्णा अमावस्या 25 अक्टूबर को निर्वाणस्थली-जलमंदिर, पावापुर में प्रातःकाल भगवान महावीर की निर्वाण बेला में भारी भीड़ के मध्य पूज्य माताजी के मंगल सानिध्य में प्रथम निर्वाणलाडू-सिद्धि निर्वाणलाडू चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त किया-श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ एवं परिवार ने। अपने 51 वर्ष के दीक्षित जीवन में प्रथम बार भगवान की निर्वाणबेला में जलमंदिर में निर्वाणलाडू चढ़वाकर पूज्य माताजी एवं संघ को जिस हार्दिक आनंद की अनुभूति हुई, वह वचनानीत है। रिमझिम फुहारों के बीच हजारों श्रद्धालुओं ने निर्वाणलाडू चढ़ाकर अपने जीवन को धन्य किया।

संकल्पदीप प्रज्वलित हुआ— पौष कृष्णा ग्यारस, 19 दिसम्बर 2003 को तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्म एवं दीक्षाकल्याणक के अवसर पर पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में 'भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' हेतु 'पार्श्वनाथ महोत्सव संकल्प ज्योति' अर्थात् अखण्ड संकल्पदीप का प्रज्ज्वलन भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) स्थित नंद्यावर्त महल परिसर के भगवान महावीर मंदिर में किया गया। दीप प्रज्वलन का सौभाग्य प्राप्त किया श्री आर.एस. तिवारी (आई.ए.एस.), सचिव पर्यटन विभाग, बिहार सरकार एवं डॉ. रवीन्द्र पंत (निदेशक-नव नालंदा महाविहार, नालंदा) ने। इसी संकल्प की परिपुष्टता के लिए पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि भेलूपुर (बनारस) में भी सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में संकल्पदीप जलाया गया। यह महोत्सव 6 जनवरी 2005 (भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक दिवस) से प्रारंभ होगा।

पावापुरी में पंचकल्याणक—24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी जी सिद्धक्षेत्र पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से उनके संघ सानिध्य में पाण्डुकशिला परिसर में भगवान महावीर की सवा ग्यारह फुट की खड्गासन प्रतिमा की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा मगसिर सुदी पंचमी, 28 नवम्बर 2003 से मगसिर सुदी दशमी, 3 दिसम्बर तक कमलाकार नूतन जिनमंदिर में सानंद सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठा महोत्सव एवं प्रतिमास्थापना मंदिर निर्माता श्री सुभाषचंद जैन, ऋषभविहार-दिल्ली एवं श्री विजय कुमार जैन-दरियागंज-दिल्ली के सौजन्य से सम्पन्न हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजगृही में प्रतिष्ठा सम्पन्न—जिनशासन में बीसवें सूर्य तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि एवं महावीर स्वामी की प्रथम देशनास्थली राजगृही में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में 3 से 8 दिसम्बर 2003 (मगसिर सुदी दशमी से पूर्णिमा तक) लाल मंदिर परिसर में निर्मित कमलाकार नूतन जिनमंदिर में विराजमान भगवान मुनिसुव्रतनाथ की साढ़े बारह फुट उत्तुंग मनोहारी खड्गासन प्रतिमा की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई। प्रतिमास्थापनकर्ता एवं मंदिर निर्माता श्री अनिल कुमार जैन (कमलमंदिर-प्रीतविहार) दिल्ली ने सौधर्म इन्द्र बनकर इस प्रतिष्ठा को सम्पन्न कर पुण्यार्जन किया।

वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण—23 फरवरी 2004 फाल्गुन शुक्ला 3 को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में नवनिर्मित नंद्यावर्त महल परिसर के मुख्य भगवान महावीर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर एवं नवग्रहशांति मंदिर के उत्तुंग कलात्मक शिखरों पर कलशारोहण का भव्य कार्यक्रम निर्विघ्नता से सम्पन्न हुआ। 101 फुट उत्तुंग भगवान महावीर मंदिर एवं 61 फुट ऊँचे ऋषभदेव मंदिर पर श्री रिषभदास दीपक कुमार जैन, सपरिवार (बनारस) एवं 61 फुट उत्तुंग नवग्रहशांति जिनमंदिर पर श्री ज्ञानचंद जी जैन सपरिवार (आरा) द्वारा कलशारोहण किया गया।

कुण्डलपुर द्वार शिलान्यास—24 फरवरी 2004 को बिहारशरीफ-राजगीर मुख्यमार्ग को भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से जोड़ने वाले दीपनगर-कुण्डलपुर मार्ग पर 'भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर द्वार' का शिलान्यास पूज्य माताजी के सानिध्य में विधायक श्रवण कुमार जी, बिहार के पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री श्री सुरेन्द्र कुमार तरुण एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने किया।

महावीर जयंती—वर्ष 2003 की भांति इस वर्ष 3 अप्रैल 2004 को भी नंद्यावर्त-कुण्डलपुर में महावीर जयंती पूज्य माताजी के ही सानिध्य में धूमधाम से मनाई गई। महावीर जयंती के अवसर पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से अण्डा, माँस, मछली इत्यादि रूप मांसाहार का सेवन जीवन भर के लिए त्याग करने हेतु ग्रामवासियों से 'शाकाहार संकल्प पत्र' भरवाए गए। 1000 से अधिक लोगों ने यह संकल्प पत्र भरकर जमा कराए। जिन्हें 'सम्मान पत्र' देकर सम्मानित किया गया।

भगवान शांतिनाथ पंचकल्याणक—भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में नवनिर्मित नंद्यावर्त महल परिसर में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में 28 जून से 2 जुलाई 2004 तक निर्माणाधीन भगवान महावीर के जन्ममहल नंद्यावर्त महल में भगवान शांतिनाथ चैत्यालय की भगवान शांतिनाथ, भगवान चन्द्रप्रभ एवं भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं की लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुई। प्रतिमाओं को विराजमान करने एवं सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया श्री कमल कुमार जैन एवं श्रीमती अनुपमा जैन-आरा ने। भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्री ऋषभदास जी जैन तथा उनकी ध.प. श्रीमती पार्वती जैन-बनारस ने प्राप्त किया। पूज्य माताजी ने भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) की कमेटी के आग्रह पर एक बार पुनः भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की।

उनंचासवाँ चातुर्मास (सन् 2004-कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार में)

1 जुलाई 2004 को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने (ससंघ) नंद्यावर्त महल-कुण्डलपुर में द्वितीय बार चातुर्मास स्थापना सम्पन्न की।

2 जुलाई को नंद्यावर्त महल परिसर में नवनिर्मित त्रिकाल चौबीसी मंदिर की 2 मंजिलों पर क्रमशः भूतकाल व वर्तमानकालीन चौबीसी प्रतिमाओं को वेदी में विराजमान किया गया, जिनकी प्रतिष्ठा फरवरी 2003 में हुई थी।

विश्वशांति महावीर विधान—प्रतिवर्ष की भांति सन् 2004 में भी 'गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल' महाराष्ट्र के भक्तों ने पूज्य माताजी के सानिध्य में दशलक्षण पर्व के 10 दिन रहकर धर्मलाभ प्राप्त किया। पूज्य माताजी द्वारा रचित 'विश्वशांति महावीर विधान' का आयोजन कर सुमेरु पर्वत के आकार के मांडले पर 2600 रत्न चढ़ाये गए। संयोजक श्री कस्तूरचंद जी बड़जाते के साथ 100 से अधिक श्रद्धालुओं ने कुण्डलपुर आकर 10 दिनों तक पूजन, भक्ति कर पुण्यार्जन किया।

शिष्या का समाधिमरण—22 सितम्बर 2004 को दशलक्षण पर्व के मध्य में ही भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर स्थित नंद्यावर्त महल तीर्थ पर पूज्य माताजी की शिष्या संघस्थ पूज्य क्षुल्लिका श्री श्रद्धामती माताजी का णमोकार महामंत्र सुनते-सुनते शांतिपूर्वक समाधिमरण हुआ। वे लगभग 15 वर्षों से क्षुल्लिका के व्रतों का पालन करते हुए पूज्य माताजी के संघ में साधनारत थीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय कुण्डलपुर महोत्सव—पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ मंगल सानिध्य में द्वितीय कुण्डलपुर महोत्सव का त्रिदिवसीय भव्य आयोजन कुण्डलपुर (नालंदा) नंद्यावर्त परिसर में किया गया। 27 अक्टूबर से 29 अक्टूबर तक होने वाले इस आयोजन में प्रथम दिन 27 अक्टूबर को संघपति महावीर प्रसाद जी जैन, कमलचंद जी, खारीबावली-दिल्ली एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने झण्डारोहण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया जिसमें मुख्य अतिथि ऊर्जा विधि एवं सूचना तथा जनसंपर्क मंत्री (बिहार सरकार) श्री श्याम रजक थे। पश्चात् मंच पर सभा में दीप प्रज्ज्वलन कर 'विश्वशांति के उपदेष्टा भगवान महावीर' विषय पर संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया। मध्यान्ह में पूज्य माताजी द्वारा जैनधर्म के प्रथम सिद्धांतग्रंथ 'षट्खण्डागम' की 13 पुस्तकों पर लिखित संस्कृत टीका की हस्तलिखित प्रतियों की महार्चना की गई। तत्पश्चात् अ.भा.दि. जैन महिला संगठन का शपथ ग्रहण समारोह हुआ तथा 'प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज' पुस्तक का विमोचन हुआ।

इस महोत्सव में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा क्रमशः निम्न पुरस्कार प्रदान किये गये। जंबूद्वीप पुरस्कार-2004 (पं. श्री सुधर्मचंद जी शास्त्री, तिवरी-जबलपुर, म.प्र.) को, आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-श्रीमती प्रभा जैन-दिल्ली को (सौजन्य-श्री कोमलचंद जैन-महमूदाबाद), कुण्डलपुर पुरस्कार-प्रो. टीकमचंद जैन-दिल्ली (सौजन्य-श्री कमलचंद कैलाशचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली) नंद्यावर्त पुरस्कार-2004-श्री विजय कुमार जैन, कानपुर (सौजन्य-श्री कृष्णकुमार कमल कुमार जैन द्वारा हरखेन कुमार जैन स्मृति न्यास, आरा की ओर से), श्री छोटेलाल जैन स्मृति पुरस्कार-2003-श्री राजेन्द्र जैन-मुम्बई को तथा सन् 2004 का पुरस्कार श्री उमेशचंद जैन-फिरोजाबाद को (सौजन्य श्री सुभाषचंद्र शुभचंद्र जैन-टिकैतनगर) प्रदान किये गये।

28 अक्टूबर, दूसरे दिन शरदपूर्णिमा को तीर्थसम्प्रेरिका पूज्य माताजी का 71वाँ जन्मजयंती समारोह मनाया गया। मध्यान्ह में विनयांजलि सभा हुई। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण जी (इलाहाबाद) थे। सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय रेल मंत्री श्री नितीश कुमार ने भी पधारकर पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। इस अवसर पर प्रकाशित 'कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ' का एवं पूज्य माताजी की आत्मकथा 'मेरी स्मृतियाँ' का विमोचन दोनों महानुभावों ने किया। इस दिन पूज्य माताजी के करकमलों से तीर्थ परिसर के कार्यालय एवं मेनगेट का स्वस्तिक बनाकर उद्घाटन किया गया। 'भगवान महावीर ज्योति' रथ की रथयात्रा निकालकर रथप्रवर्तन का समापन भी किया गया। रात्रि कार्यक्रम में श्री रामगोपाल जैन-पटना (अध्यक्ष-बिहार राज्य दि. जैन न्यास बोर्ड एवं श्री अजय जैन-पटना (मानद मंत्री-बिहार स्टेट दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी) को कमेटी द्वारा 'समाजरत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया।

महोत्सव के तीसरे दिन 29 अक्टूबर को प्रात:काल भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक करके महाशांतिधारापूर्वक कार्यक्रम का समापन हुआ।

पावापुर में निर्वाणलाडू—भगवान महावीर निर्वाणभूमि पावापुर में लगातार दूसरे वर्ष भी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में जलमंदिर में अनेक भक्तों ने कार्तिक कृष्णा अमावस्या 12 नवम्बर को निर्वाणलाडू चढ़ाकर पुण्यार्जन किया। प्रथम निर्वाणलाडू चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त किया-श्री महेशचंद अजय कुमार जैन-मुजफ्फरपुर (बिहार) ने। तत्पश्चात् पाण्डुकशिला मंदिर परिसर में नवनिर्मित भगवान महावीर मंदिर पर पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में मंदिर निर्माता श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज-दिल्ली ने कलशारोहण कार्यक्रम सम्पन्न किया तथा भगवान महावीर के समक्ष निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। निर्वाणलाडू के बाद दिगम्बर जैन मंदिर परिसर में निर्मित मानस्तंभ में भगवान महावीर की 4 पद्मासन एवं 4 खड्गासन प्रतिमाएँ विराजमान की गईं। पावापुरी में त्रिदिवसीय कार्यक्रम के बाद पूज्य माताजी ने कुण्डलपुर में आकर संघस्थ साधुओं के साथ शास्त्रोक्तविधि से चातुर्मास समापन क्रिया सम्पन्न करके कुण्डलपुर (नालंदा) के द्वितीय ऐतिहासिक चातुर्मास का समापन किया।

जन्मभूमि से जन्मभूमि की ओर मंगल विहार—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) का मात्र 22 माह के अल्पसमय में नंद्यावर्त महल तीर्थ के रूप में ऐतिहासिक भव्य नवविकास सम्पन्न करवाकर पूज्य माताजी का कुण्डलपुर से भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि-वाराणसी हेतु मंगल विहार 14 नवम्बर 2004 को हुआ।

कलशारोहण एवं प्रतिमा विराजमान कार्यक्रम—राजगृही तीर्थ पर नवनिर्मित भगवान मुनिसुव्रतनाथ मंदिर पर श्री अनिल कुमार जैन (कमलमंदिर) दिल्ली ने 15 नवम्बर को पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में कलशारोहण सम्पन्न किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

16 नवम्बर को विपुलाचल पर्वत की तलहटी में नवनिर्मित मानस्तंभ में वेदी शुद्धि की गई, जो संघपति लाला महावीर प्रसाद जी-दिल्ली के सौजन्य से निर्मित किया गया है तथा मध्यान्ह में जवाहर नवोदय विद्यालय-राजगीर में पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा श्री मनोज कुमार जैन-मेरठ के सौजन्य से विराजित भगवान महावीर की मनोहारी 5 फुट ऊँची पद्मासन लालवर्णी प्रतिमा का अनावरण पूज्य माताजी के सानिध्य में कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी एवं विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने सैकड़ों बच्चों की उपस्थिति में किया।

17 नवम्बर को प्रातः भगवान महावीर की 4 प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ मानस्तंभ में माताजी के ससंघ सानिध्य में विराजमान की गईं। गुणावां जी सिद्धक्षेत्र में प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी की निर्वाणस्थली पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से दि. जैन मंदिर प्रांगण में संघपति श्री महावीर प्रसाद जी, दिल्ली एवं परिवार के सौजन्य से नवनिर्मित मंदिर में गौतम स्वामी की सफेद पाषाण की 5 फुट ऊँची खड्गासन प्रतिष्ठित प्रतिमा 19 नवम्बर 2004 को प्रातः विराजमान की गई एवं कलशारोहण कर सभी ने पुण्य प्राप्त किया।

बनारस में मंगल आगमन— भगवान महावीर जन्मभूमि (कुण्डलपुर (नालंदा) से 14 नवम्बर 2004 को मंगल विहार करके मध्य में अनेक जगहों पर धर्मप्रभावना करते हुए दिनाँक 23 दिसम्बर 2004 को पूज्य माताजी का ससंघ भगवान पार्श्वनाथ जन्मभूमि भेलूपुर दि. जैन मंदिर में गाजे-बाजे एवं जुलूस के साथ मंगल पदार्पण हुआ।

भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव— भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं सानिध्य में 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' का उद्घाटन 6 जनवरी 2005 को विशाल जनसमूह के बीच सम्पन्न हुआ। 6 जनवरी पौष कृष्णा ग्यारस को प्रातः झण्डारोहणपूर्वक समारोह का शुभारंभ किया गया। झण्डारोहणकर्ता थे-श्री धन्नालाल अजित कुमार जी जैन अजमेरा परिवार-धूलियान (पं. बंगाल)।

विशाल रथयात्रा— तदपुरांत जैन समाज काशी द्वारा प्रातः 8 बजे मैदागिन दि. जैन मंदिर से पार्श्वनाथ भगवान को चांदी की पालकी में विराजमान कर ऐतिहासिक विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें 11 प्रसिद्ध बैण्ड, अनेक बग्घियाँ, हाथी, घोड़े, चाँदी की चंवर गाड़ी, चांदी का गजरथ, धूपगाड़ी, झण्डी गाड़ी आदि शामिल थे। अनेक महिला-पुरुष इन्द्र-इन्द्राणी एवं राजाओं के रूप में हाथी एवं बग्घियों पर बैठे थे। 2 किमी. लंबी यह यात्रा शहर के मुख्यमार्गों से होते हुए बंगाली इंटर कालेज मैदान-भेलूपुर पहुँची, जहाँ माताजी के ससंघ सानिध्य में भगवान पार्श्वनाथ जन्माभिषेक किया गया।

मध्यान्ह में विशाल पंडाल में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में सार्वजनिक धर्मसभा हुई। मुख्य अतिथि के रूप में उ.प्र.सरकार के लोक निर्माण विभाग एवं कृषि विदेश व्यापार मंत्री श्री शिवपाल सिंह यादव, समारोह अध्यक्ष के रूप में श्री माताप्रसाद पाण्डे (उ.प्र.विधानसभा अध्यक्ष) एवं विधान सभा उपाध्यक्ष आदि विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

जैन शब्दकोश विमोचन— पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के अथक परिश्रम से तैयार जैनागम के लगभग 15 हजार शब्दों की हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्या से युक्त जैन समाज में प्रथम बार प्रकाशित 'भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी जैन शब्दकोश' का विमोचन भी इस अवसर पर सारस्वत अतिथि श्री पी. रामचंद्रराव (कुलपति-बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) द्वारा किया गया।

महल का अनावरण— मुख्य अतिथि श्री शिवपाल सिंह यादव एवं सभाध्यक्ष श्री माताप्रसाद पाण्डे ने पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित भगवान पार्श्वनाथ के धातु से बने नवखण्ड के महल का मंच पर फीता काटकर अनावरण किया। रत्नवृष्टि कर जन्मकल्याणक के रत्न भक्तों में वितरित किये गये।

कैसेट विमोचन— पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित भगवान पार्श्वनाथ के नये-नये भजनों की ऑडियो कैसेट का विमोचन विधानसभाध्यक्ष ने किया।

7 जनवरी को श्री दिगम्बर जैन मंदिर भेलूपुर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा का 1008 कलशों से मस्तकाभिषेक किया गया। मानस्तंभ में विराजमान प्रतिमाओं का भी भक्तों ने अभिषेक किया।

8 जनवरी को तृतीय दिवस 108 इंद्र-इंद्राणियों के साथ 'भगवान पार्श्वनाथ मण्डल विधान' के आयोजन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। भगवान की 1008 दीपकों से मंगल आरती की गई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सारनाथ में फहरा जिनधर्म का ध्वज—11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी (सारनाथ) में पूज्य गणिनी माताजी के सानिध्य में 16 से 20 जनवरी 2005 (पौष शु. 7 से 11) तक दि. जैन समाज काशी द्वारा भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। जन्मभूमि सिंहपुरी में दिगम्बर जैन मंदिर के समक्ष विशाल मैदान में भगवान श्रेयांसनाथ की 11 फुट उत्तुंग, पद्मासन श्यामवर्णी प्रतिमा विराजमान की गई है। जिसकी पंचकल्याणक हेतु वाराणसी जैन समाज ने पूज्य माताजी से विशेष निवेदन किया। चिरप्रतीक्षित इस आयोजन में वाराणसी समाज का उत्साह विशेष दृष्टव्य था। विश्वभर में प्रसिद्ध सारनाथ में जैनधर्म की कीर्तिपताका फहराने का यह अद्भुत अवसर था।

जन्मभूमि टिकैतनगर (बाराबंकी) में अभूतपूर्व समारोह—20 जनवरी 2005 को सारनाथ से मंगल विहारकर दीक्षास्थली (प्रयाग) तीर्थ के दर्शन करते हुए पूज्य माताजी का अल्प समय में ही 4 फरवरी 2005 को अपनी जन्मभूमि टिकैतनगर में ससंघ विशाल जुलूस के साथ मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर 6 से 14 फरवरी तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में सानिध्य प्रदान करने के लिए पूज्य माताजी का आगमन हुआ था।

5 फरवरी को प्रात: अभिषेक के पश्चात् प्रतिष्ठेय 24 तीर्थंकर प्रतिमाओं का मुखावलोकन पूज्य माताजी के सानिध्य में किया गया, कार्यक्रम का झण्डारोहण हुआ।

चमत्कारिक घटना घटी—8 फरवरी को संध्याकाल में नवीन मंदिर में अभूतपूर्व उल्लास एवं हर्ष के वातावरण में 24 तीर्थंकरों की खड्गासन प्रतिमाएँ एवं सहस्रकूट चैत्यालय जैन समाज के सभी सदस्यों एवं भरतसेना के नवयुवकों ने नवीन मंदिर के हाल में अपने हाथों से लाकर विराजमान कर दीं। नूतन मंदिर में प्रतिमाओं को अचल वेदी में अचल करने के लिए 3 वर्ष के बालक से लेकर 90 वर्ष तक के वृद्ध ने कारसेवा कर रातोंरात प्रतिमाएँ यथास्थान विराजमान कर दीं।

प्रात: 9 फरवरी को 4.50 बजे भगवान महावीर की अवगाहना प्रमाण खड्गासन मूलनायक प्रतिमा भी रातों-रात कमलाकार वेदी पर खड़ी हो गई, जिससे नवीन मंदिर का सुंदर स्वरूप दिखने लगा तथा इसका नामकरण 'चमत्कारिक महावीर मंदिर' कर दिया गया। सभी ने पूरी रात भगवान एवं माताजी के जयकारों से सारा परिसर गुंजायमान कर दिया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा—9 फरवरी से 14 फरवरी तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद निर्विघ्न सम्पन्न हुई। जन्मकल्याणक के दिन आकाश से हवाई जहाज द्वारा पुष्पवृष्टि को देखकर सभी हर्ष से झूम उठे।

मुख्यमंत्री का आगमन—12 फरवरी सन् 2005 को उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री मुलायम सिंह जी यादव पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन जन्मभूमि टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र. में पधारे एवं पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्य माताजी की प्रेरणा से माननीय मुख्यमंत्री जी ने भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर 'पार्श्वनाथ वर्ष' का शुभारंभ किया।

ऋषभ जन्मभूमि अयोध्या में मंगल प्रवेश—11 वर्ष के पश्चात् 17 मार्च सन् 2005 को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी अयोध्या तीर्थ पर मंगल प्रवेश करने पर अयोध्यावासियों एवं वहाँ के संत-महंतों ने हार्दिक स्वागत एवं सम्मान किया।

महाकुंभ मस्तकाभिषेक—भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि शाश्वत तीर्थ अयोध्या में 1 से 3 अप्रैल तक द्वितीय महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव का भव्य आयोजन पूज्य माताजी एवं संघ के मंगल सानिध्य में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

1 अप्रैल को झण्डारोहणपूर्वक कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। परिसर में निर्मित पंडाल में "भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव" सम्मेलन की शृँखला में तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ एवं अ.भा.दि. जैन महिला संगठन का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। रात्रि में अ.भा.दि. जैन युवा परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ।

2 अप्रैल, चैत्र वदी अष्टमी को भगवान ऋषभदेव के जन्मकल्याणक की पूर्व बेला में विशाल रथयात्रा जुलूस निकाला गया। मध्यान्ह में भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की आमसभा हुई, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री-श्री श्रीप्रकाश जायसवाल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में समाज कल्याण मंत्री (उ.प्र.सरकार) ने पधारकर कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन किया। पूज्य माताजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि "हमारे जितने भी तीर्थ हैं, वे हमारी संस्कृति की धरोहर हैं, हमारे प्राण हैं, सर्वस्व हैं, जिनका संरक्षण एवं संवर्धन तीर्थक्षेत्र कमेटी पर निर्भर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3 अप्रैल, चैत्र वदी नवमी को भगवान ऋषभदेव जन्मकल्याणक के दिन 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा के महाकुंभ मस्तकाभिषेक के अवसर पर अयोध्या में हजारों श्रद्धालु भक्तों की भीड़ अभिषेक करने व देखने के लिए उमड़ पड़ी। कार्यक्रम के प्रारंभ में मंगल कलश स्थापना श्री दीपक जैन एवं श्रीमती सुभाषिनी जैन-वाराणसी ने किया एवं दीप प्रज्ज्वलन श्री चिरंजीलाल एवं श्रीमती सुमतीबाई जैन कासलीवाल परिवार-पटना द्वारा हुआ। भगवान के मस्तक पर प्रथम सिद्धिकलश करने का सौभाग्य संघपति लाला महावीर प्रसाद जी दिल्ली के परिवार ने प्राप्त किया। रत्नकलश की शृँखला में प्रथम कलश श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ (लखनऊ) एवं परिवार ने किया पुनः श्रद्धालुओं ने स्वर्ण कलश, रजत कलश, ज्ञान कलश, श्रद्धा कलश और भक्तिकलश से प्रभु का अभिषेक किया। उत्तुंग प्रतिमा के नीचे चरणों में खड़े होकर सभी भक्त अभिषेक की धारा से भीगकर भक्ति में थिरक रहे थे।

सीधा प्रसारण—महामस्तकाभिषेक में संपूर्ण कार्यक्रम का 4 घंटे तक सीधा प्रसारण आस्था चैनल के माध्यम से किया जा रहा था। समस्त कार्यक्रम में पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, मैंने (क्षुल्लक मोतीसागर) एवं ब्र. रवीन्द्र जी ने कामेंट्री कर देश-विदेश की जनता को अयोध्या एवं भगवान ऋषभदेव के सिद्धान्तों से परिचित कराया। पूज्य माताजी ने भी सभी के लिए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। करोड़ों लोगों ने अपने घर बैठे ही प्रभु पर पड़ती इन अभिषेक की धाराओं को देखकर अपने नेत्रों को सफल किया एवं इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा कर अपने शुभकामना संदेश भेजे।

नागरिक अभिनंदन—अयोध्या से मंगल विहार कर पूज्य माताजी पुनः टिकैतनगर पधारीं एवं वहाँ पर 13 अप्रैल 2005 को नूतन महावीर मंदिर पर बने सुंदर कलात्मक शिखर पर ध्वजारोहण एवं कलशारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न कराया। टिकैतनगर-वासियों ने पूज्य माताजी के जन्मभूमि में मंगल आगमन पर सामूहिक रूप में उनका नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया। नगर पंचायत के चेयरमैन-श्रीमती फूलमती गुप्ता के सुपुत्र ने पूज्य माताजी के चरणों में अभिनंदन पत्र समर्पित किया। टिकैतनगर समाज ने भी पूज्य माताजी को 'भारतभूषण' की उपाधि से अलंकृत कर अपने को गौरवान्वित अनुभव किया।

बिहार के मध्य में अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर के दर्शन करते हुए तह. फतेहपुर (उ.प्र.) में संघ का आगमन हुआ, जहाँ 22 अप्रैल सन् 2005 को पूज्य माताजी के सानिध्य में धूमधाम से महावीरजयंती मनाई गई।

आर्यिका दीक्षा जयंती—26 अप्रैल 2005, वैशाख कृष्णा दूज को पूज्य माताजी का महमूदाबाद (सीतापुर) नगर में 50वाँ आर्यिका दीक्षा जयंती समारोह हर्षोल्लास से मनाया गया। यह नगर पूज्य माताजी की गृहस्थावस्था की ननिहाल है, जो उनकी जन्मदात्री माँ मोहिनी देवी (आर्यिका रत्नमती माताजी) की जन्मभूमि है।

केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र में भगवान पार्श्वनाथ मस्तकाभिषेक—सारे देश में विभिन्न आयोजनों के माध्यम से मनाये जा रहे भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष 2005 के अंतर्गत भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र में पूज्य माताजी एवं संघ के सानिध्य में 15 मई 2005 को पार्श्वनाथ महामस्तकाभिषेक महोत्सव एवं रथयात्रा का विशाल आयोजन किया गया। पूज्य माताजी की प्रेरणा से नवनिर्मित 11 शिखरों से युक्त भव्य तीस चौबीसी मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की अवगाहना प्रमाण विशाल प्रतिमा का एवं मूल मंदिर में विराजमान तिखाल वाले बाबा का महाभिषेक कर भक्तों ने अपने को सौभाग्यशाली माना। 19 मई 2005 को दो दिवसीय मुरादाबाद प्रवास के मध्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर डेन्टल कॉलेज, मुरादाबाद में कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास कालेज के प्रमुख सुरेशचंद जैन द्वारा किया गया।

बढ़ चले कदम भगवान शांतिनाथ की भूमि की ओर—पूज्य माताजी का ससंघ अयोध्या एवं अहिच्छत्र तीर्थों पर महामस्तकाभिषेक सम्पन्न कराने के बाद विभिन्न स्थानों पर धर्मप्रभावना करते हुए 25 मई 2005 को भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में मंगल प्रवेश हुआ।

मार्ग में अत्यधिक गर्मी के कारण मुरादाबाद के बाद पूज्य माताजी को 20 मई से ज्वर आना प्रारंभ हो गया था किन्तु अस्वस्थ स्थिति में भी अपने आत्मबल द्वारा विहार करके पूज्य माताजी ने निश्चित तिथि में ही जंबूद्वीप-हस्तिनापुर में प्रवेश किया। लगातार 15-20 दिनों तक टाइफाइड बुखार के कारण शरीर में अत्यंत कमजोरी आ गई थी, फिर भी पूज्य माताजी अपनी प्रत्येक चर्या में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सजग रहीं। हम और आप जैसे व्यक्ति तो थोड़ा सा ज्वर आने पर ही अपने कार्यों को सुचारूरूप से नहीं कर पाते हैं। पूज्य माताजी का आत्मबल उन्हें शक्ति प्रदान करता है।

जम्बूद्वीप में आने के पश्चात् 20 दिनों तक लगातार रहे टायफाइड बुखार के कारण गंभीररूप से अस्वस्थ होने के बाद अपनी आत्मशक्ति और देशभर में भक्तों द्वारा किये जा रहे धार्मिक अनुष्ठान आदि के मंगल प्रभाव से शनैः-शनैः स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करती रहीं। अपने प्रबल आत्मबल के कारण अस्वस्थ स्थिति में भी आर्यिका चर्या का कठोरतापूर्वक परिपालन करते हुए पूज्य माताजी ने सभी की मंगलभावना के फलस्वरूप स्वाध्याय, मंदिर दर्शन एवं अपनी दिव्यवाणी से संबोधन देना प्रारंभ कर दिया। साहित्य लेखन एवं तीर्थ निर्माण के माध्यम से धर्म के संरक्षण में ऐतिहासिक कार्य करने वाली पूज्य माताजी के अस्वस्थ होने की खबर लगते ही जैन समाज एवं साधुवर्ग में गहरी चिंता व्याप्त हो गई और देश के विभिन्न अंचलों में पूज्य माताजी के स्वास्थ्य लाभ हेतु पूजा-पाठ, विधान, मंत्र-जाप्य आदि के कार्यक्रम नियमित रूप से भक्तों द्वारा किये जाने लगे। कई आचार्य संघों से मुनि-आर्यिकाओं की शुभकामना तथा विभिन्न अंचलों की उत्कृष्ट गुरुभक्ति के फलस्वरूप चमत्कार जैसा हुआ और 5 जून को माताजी को मानो नवजीवन ही प्राप्त हो गया।

कल शाम से लेकर रात तक जिनके उठकर बैठने की आश हम सभी ने छोड़ दी थी, आज 5 जून को उन्हीं माताजी ने सभी आगन्तुक भक्तों को थोड़ी देर बैठकर मुस्कुराते हुए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया और उनके सानिध्य में 101 फुट ऊँचे सुमेरुपर्वत की पाण्डुकशिला पर भगवान शांतिनाथ का पंचामृत अभिषेक होकर निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। 12 जून को श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर ज्येष्ठ जिनवर अभिषेक के बाद सरस्वती माता का पंचामृत अभिषेक किया गया। मध्यान्ह में भव्यता के साथ षट्खण्डागम ग्रंथ की एवं सरस्वती माता की महापूजा सम्पन्न हुई।

पचासवाँ चातुर्मास (सन् 2005-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर)

प्रतिवर्षानुसार सन् 2005 में 20 जुलाई, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में पूज्य माताजी ने संघ सहित चातुर्मास की स्थापना की। इस वर्ष पूर्व से ही विराजमान पूज्य आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी और क्षुल्लिका शांतिमती माताजी ने भी पूज्य माताजी, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, मेरे (क्षुल्लक मोतीसागर) साथ चातुर्मास स्थापना की। अब हम 5 साधु संघ में हो गये थे। चातुर्मास की धर्मसभा में दिल्ली, बिहार, अवध एवं आसपास के नगरों से भक्तों ने पधारकर पूज्य माताजी से चातुर्मास स्थापना के लिए निवेदन किया।

विदेशी शोधार्थी दर्शनार्थ पधारे—28 जुलाई 2005 को विदेशी शोधार्थियों के एक समूह ने जंबूद्वीप स्थल पर पधारकर जंबूद्वीप रचना एवं अन्य मंदिरों को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। विभिन्न देशों से पधारे इन शोधार्थियों ने 2 माह तक जैन समाज द्वारा चलाये गये "इंटरनेशनल समर स्कूल फॉर जैन स्टडीज' में जैनधर्म का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उसी श्रृँखला में जंबूद्वीप-हस्तिनापुर में आकर जैन साधुओं के कठोर तप एवं दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों की चर्या को समझने का प्रयास किया।

अष्टान्हिका पर्व में 14 जुलाई से 22 जुलाई 2005 तक सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) को पूज्य माताजी के सानिध्य में आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश एवं गणिनी ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा गुरु आचार्यश्री वीरसागर महाराज की प्रतिमा के अभिषेक पूजन का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया और आचार्यश्री का 130वाँ जन्मदिवस भी हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। श्रावण कृष्णा एकम् 22 जुलाई 2005 को वीरशासन जयंती पर्व के शुभ दिवस प्रातः कमल मंदिर में भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक किया गया तथा मध्यान्ह में समवसरण विधान का आयोजन सम्पन्न हुआ।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, 12 अगस्त को त्रिमूर्ति मंदिर में सम्मेदशिखर की कृत्रिम रचना के समक्ष भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाणलाडू भक्तिभावपूर्वक चढ़ाया गया। भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत पूज्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी की विशेष प्रेरणा पर देश के विविध अंचलों में व्यापकरूप से लाडू चढ़ाया गया। इसी प्रेरणा के प्रतिफल स्वरूप मोक्षसप्तमी पर सम्मेदशिखर जी में इस वर्ष अन्य वर्षों की अपेक्षा भारी भीड़ रही। माताजी के ही सानिध्य में रक्षाबंधन पर्व, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा 19 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व की उद्‌भवस्थली हस्तिनापुर में धर्म, संस्कृति, धर्मायतन, साधुगण एवं साधर्मी बंधुओं की रक्षार्थ संकल्पित कराते हुए मनाया गया।

21 अगस्त को श्री सम्मेदशिखर जी विकास समिति द्वारा जम्बूद्वीप में आयोजित साधारण सभा की बैठक एवं समाजरत्न स्व. श्री प्रकाशचंद जैन लुहाड़िया (सासनी) की दसवीं पुण्यतिथि पर विशाल सभा आयोजित की गई। 27 अगस्त को जैन मिलन मेरठ महान द्वारा आयोजित भारतीय जैन मिलन क्षेत्र संख्या 5 की द्वितीय कार्यकारिणी सभा एवं भारतीय जैन मिलन फाउण्डेशन की 2005-2006 सत्र की द्वितीय बैठक भारी भीड़ के बीच सम्पन्न हुई। 4 से 6 सितम्बर तक चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की 50वीं पुण्यतिथि त्रिदिवसीय कार्यक्रम सहित भावभीनी विनयांजलि अर्पित करते हुए मनाई गई। 8 सितम्बर से 18 सितम्बर तक दशलक्षण महापर्व पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में विशेष भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुआ। स्व. श्री जम्मनलाल जी कासलीवाल एडवो. (औरंगाबाद-महा.) द्वारा संस्थापित गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल महाराष्ट्र द्वारा इस अवसर पर त्रैलोक्य महामण्डल विधान आयोजित किया गया। महाराष्ट्र भक्तमण्डल, आंध्रप्रदेश, दिल्ली, सुल्तानपुर इत्यादि के लगभग 200 श्रद्धालुओं ने प्रतिदिन प्रातःकाल अभिषेक-पूजन, मध्यान्ह में तत्वार्थसूत्र-दशधर्म एवं भगवान पार्श्वनाथ भव प्रवचन तथा सायंकाल आरती-प्रश्नमंच-विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेकर महान पुण्योपार्जन किया। विधान के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी थे-श्री कस्तूरचंद बड़जाते एवं श्रीमती पुष्पा बड़जाते-औरंगाबाद (महा.)। 15 सितम्बर 2005 को विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष-श्री अशोक सिंघल पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने दशलक्षण पर्व के मध्य पधारे और परम प्रसन्नता का अनुभव किया।

जम्बूद्वीप महामहोत्सव-2005—प्रति पाँच वर्षों में होने वाले जंबूद्वीप महामहोत्सव 2005 का आयोजन 13 से 17 अक्टूबर तक पूज्य माताजी एवं संघ के सानिध्य में भव्यता से सम्पन्न हुआ। लंबे समय के इंतजार के बाद इस महोत्सव में विविध आयोजनों के माध्यम से प्रत्यक्ष एवं परोक्षरूप से लाखों भक्तों ने भक्ति गंगा में स्नान कर पुण्य का संपादन किया।

साहित्य संगोष्ठी— 13 अक्टूबर को प्रातः झण्डारोहणपूर्वक आयोजन का शुभारंभ हुआ। लगातार पाँच दिनों तक चलने वाले इस महोत्सव में सर्वप्रथम 13 अक्टूबर से 15 अक्टूबर तक 'गणिनी ज्ञानमती संस्कृत एवं अध्यात्म साहित्य संगोष्ठी' का आयोजन हुआ। इलाहाबाद से पधारे न्यायमूर्ति माननीय श्री सुधीर नारायण जी (सदस्य-कावेरी जल विवाद न्याय प्राधिकरण) ने दीप प्रज्जवलन कर संगोष्ठी का उद्‌घाटन किया। संगोष्ठी में अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने भाग लेकर पूज्य माताजी द्वारा रचित विभिन्न ग्रंथों पर अपने शोधात्मक आलेख प्रस्तुत किये। मैंने (क्षु. मोतीसागर जी) 'कल्पद्रुम विधान' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। विद्वानों द्वारा विभिन्न प्रश्न करने पर पूज्य माताजी ने उनके आगमसम्मत उत्तर देकर संतुष्ट किया। 15 अक्टूबर को 'श्री गिरनार जी सिद्धक्षेत्र' पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। पूज्य माताजी ने आगंतुक सभी विद्वानों को तीनलोक का ध्यान कराया।

सुमेरु पर्वत पर मस्तकाभिषेक— 16 अक्टूबर रविवार प्रातः 7 बजे से हस्तिनापुर में निर्मित सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर भगवान शांतिनाथ के महामस्तकाभिषेक का कार्यक्रम शुरू हुआ। सर्वप्रथम जंबूद्वीप के सामने बने अखण्ड ध्वजदंड पर श्री धन्नालाल मोहनलाल अजित कुमार जैन अजमेरा -धूलियान (पं. बंगाल) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। पश्चात् सौधर्म इन्द्र श्री सुनील कुमार जैन सर्राफ-मेरठ ने गाजे-बाजे से ऐरावत हाथी पर भगवान शांतिनाथ को लेकर जंबूद्वीप की परिक्रमा की और भगवान को पाण्डुकशिला पर विराजमान किया। महोत्सव का दीप प्रज्ज्वलन इंजी. सी.आर.पाटिल-पुणे द्वारा, मंगल कलश स्थापना-डॉ. प्रमोद कुमार जैन, आगरा द्वारा एवं रत्नवृष्टि श्री विजय जैन-दरियागंज, दिल्ली द्वारा की गई। भगवान शांतिनाथ का पंचामृत अभिषेक हुआ। पश्चात् क्रम-क्रम से सभी इन्द्र-इन्द्राणियों ने जाकर 1008 कलशों से भगवान का अभिषेक किया। अनेक गणमान्य महानुभावों ने मस्तकाभिषेक में भाग लेकर पुण्य अर्जित किया।

अपरान्ह में धर्मसभा में उत्तरप्रदेश सरकार के पर्यटन मंत्री-माननीय श्री नवाब कोकब हमीद, सांसद श्रीमती अनुराधा चौधरी एवं उ.प्र. आयात-निर्यात निगम के अध्यक्ष-श्री मेराजुद्दीन आदि विशिष्ट महानुभावों ने पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शरदपूर्णिमा— 17 अक्टूबर शरदपूर्णिमा को भक्तों ने पूज्य माताजी का 72वाँ जन्मजयंती समारोह मनाया। प्रातःकाल ही भक्तों ने आकर पूज्य माताजी का दूध, जल से पादप्रक्षालन किया। पूज्य माताजी की महापूजा, भक्ति, आरती की। पश्चात् भगवान शांतिनाथ की रथयात्रा एवं भगवान पार्श्वनाथ वर्ष के अन्तर्गत भगवान पार्श्वनाथ का ऐरावत हाथी पर जुलूस निकाला।

मध्यान्ह में जन्मजयंती की विनयांजलि सभा हुई। जिसमें केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री श्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया एवं अपनी विनयांजलि अर्पित की। 72 विद्युत्दीपों को जलाकर समारोह का उद्घाटन किया। अनेक भक्तों, विद्वानों एवं श्रेष्ठियों ने भी पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। जन्मजयंती पर हर्ष व्यक्त करते हुए भरतसेना-टिकैतनगर के युवकों ने 1008 रंगबिरंगे गुब्बारे आकाश में छोड़कर सभी का मन मोह लिया। हेलीकाप्टर द्वारा पुष्पवृष्टि भी की गई।

आस्था चैनल पर हुआ सजीव प्रसारण—आस्था चैनल पर लगातार दो दिनों तक करोड़ों भक्तों ने कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखकर अपार पुण्य अर्जित किया एवं मोबाइल, एस.एम.एस. के द्वारा अपने बधाई, शुभकामना संदेश भेजे। 16 अक्टूबर को मस्तकाभिषेक का सीधा प्रसारण देखकर अनेक भक्तों ने फोन के माध्यम से घर बैठे कलश बुक करवाये और अप्रत्यक्ष रूप में मस्तकाभिषेक में भाग लेकर पुण्य प्राप्त किया। 17 अक्टूबर को भी पूज्य माताजी की ज़न्मजयंती का सीधा प्रसारण देखकर देश-विदेश के भक्तों ने पूज्य माताजी के दर्शनों का लाभ लिया।

शिलान्यास— जंबूद्वीप स्थल पर निर्माणाधीन 'तेरहद्वीप रचना मंदिर' में निर्मित होने वाली 'तेरहद्वीप रचना' का शिलान्यास शरदपूर्णिमा के दिन प्रातः श्री दीपक जैन-वाराणसी एवं डॉ. प्रमोद कुमार जैन-आगरा ने किया। इस रचना में मध्यलोक के 458 जिनबिंबों की स्थापना की जायेगी।

आगामी कार्यक्रमों की घोषणाएँ— 'तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी' के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन ने घोषणा की कि जन्मभूमि विकास की शृँखला में अब पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी का विकास किया जायेगा।

पूज्य माताजी ने आगामी वर्ष 2006 को भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि "सम्मेदशिखर वर्ष" के रूप में मनाने की प्रेरणा सारे समाज को प्रदान की। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर आगामी 15 अप्रैल 2006 से अप्रैल 2007 तक 'गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती' वर्ष के रूप में मनाने हेतु घोषणा की।

पार्श्वनाथ वर्ष के अन्तर्गत आयोजित भगवान पार्श्वनाथ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को लकी ड्रा के माध्यम से सम्मानित किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम में पधारने वाले भक्तों के लिए पाँचों दिन प्रीतिभोज की व्यवस्था श्री प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी सा.) एवं पुत्रगण अमरचंद जैन, हेमचंद जैन, नेमचंद जैन-टिकैतनगर के सौजन्य से की गई।

पुरस्कार समर्पण किये गये— 17 अक्टूबर शरदपूर्णिमा को मध्यान्हकालीन सभा में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के सर्वोच्च सम्मान 'गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती पुरस्कार-2005' से विद्वत् महासंघ के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. शेखरचंद्र जैन-अहमदाबाद' को देश-विदेश में जैनधर्म की व्यापक प्रभावना एवं संस्थान की गतिविधियों में दिये अपने सहयोग हेतु सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार श्री अनिल कुमार जैन, श्रीमती अनिता जैन एवं चि. अतिशय जैन (कमल मंदिर), प्रीतविहार-दिल्ली के सौजन्य से प्रदान किया जाता है।

अन्य पुरस्कार— जंबूद्वीप पुरस्कार-2005 श्री माणिकचंद जैन पाटनी (इंदौर) को, कुण्डलपुर पुरस्कार 2005-ब्र. श्री विद्युल्लता जी शहा (सोलापुर-महा.) को, नंद्यावर्त पुरस्कार-2005-श्री पवन कुमार जी पापड़ीवाल (वास्तुशास्त्री), औरंगाबाद (महा.) को, आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-2005 श्रीमती सुलोचना जैन, मॉडल टाउन-दिल्ली को, श्री छोटेलाल जैन स्मृति पुरस्कार-2005 श्री उदयभान जैन 'युवारत्न'-जयपुर (राज.) को संस्थान की ओर से प्रदान किये गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चातुर्मास समापन— 1 नवम्बर 2005 को कार्तिक कृष्णा अमावस्या को पूज्य माताजी के साथ हम सभी ने चातुर्मास निष्ठापन की क्रिया प्रातःकाल की। पश्चात् जंबूद्वीप स्थित कमल मंदिर में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा के समक्ष आगंतुक यात्रियों व स्थानीय लोगों ने पूज्य माताजी के सानिध्य में निर्वाणलाडू चढ़ाया। शाम को सरस्वती माता एवं केवलज्ञान लक्ष्मी, गौतम गणधर स्वामी की पूजा हुई। रात्रि में दीपमालिका से पूरा जंबूद्वीप परिसर जगमगा गया।

काकंदी में शिलान्यास— तीर्थंकर जन्मभूमि विकास के क्रम में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अंतर्गत गठित भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी के द्वारा 20 नवम्बर 2005 को गोरखपुर जिले में स्थित भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी (खुखुन्दू) में परमपूज्य गणिनीप्रमुखश्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन के नेतृत्व में श्री राजकुमार जैन-श्रीमती आशा जैन 'वीरा बिल्डर्स' सपरिवार-दिल्ली के सौजन्य से भगवान पुष्पदंतनाथ मंदिर के शिलान्यास का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। संघपति लाला महावीर प्रसाद जी जैन-दिल्ली ने नूतन मंदिर के सामने अपनी ओर से भगवान पुष्पदंतनाथ का कीर्तिस्तंभ बनाने की स्वीकृति प्रदान की। अनेक महानुभावों ने तीर्थ के संरक्षक पद हेतु 27000/-रु. की राशि देने की घोषणा की तथा लगभग 30-40 व्यक्तियों ने 2700/-रु. की राशि तीर्थ विकास हेतु देकर अपना नाम अंकित कराया।

सम्मेदशिखर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा— शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर जी में मार्च सन् 2003 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके सानिध्य में भगवान ऋषभदेव जिनमंदिर का शिलान्यास हुआ था, जो बनकर पूर्णरूप से निर्मित हो गया। उस नवनिर्मित भगवान ऋषभदेव मंदिर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण का कार्यक्रम दि. 2 से 7 दिसम्बर 2005 (मगसिर शु. एकम् से मगसिर शु. सप्तमी) तक सम्पन्न हुआ। पूज्य माताजी की आज्ञा से मुझे (क्षु. मोतीसागर को) उस प्रतिष्ठा में सानिध्य प्रदान करने हेतु जाने का अवसर आया। इस मंदिर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने का श्रेय भी मंदिर निर्माता डॉ. पन्नालाल जी पापड़ीवाल एवं पुत्रगण संजय जैन, विजय जैन पापड़ीवाल-पैठण (महा.) परिवार को ही प्राप्त हुआ। मंदिर में भव्य 9 फुट पद्मासन लाल वर्ण की प्रतिमा विराजमान की गई है। शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में भगवान ऋषभदेव के मंदिर का निर्माण होना हमारी जैनधर्म की प्राचीनता का दिग्दर्शन कराने हेतु एक सशक्त प्रमाण है कि भगवान पार्श्वनाथ से पूर्व भी 22 तीर्थंकर इस धरती पर अवतरित हो चुके हैं, जिनमें प्रथम आदिब्रह्मा ऋषभदेव भगवान हैं। ब्र. रवीन्द्र कुमार जी के निर्देशन में भव्य पंचकल्याणक सानंद सम्पन्न हुई, जिसमें महाराष्ट्र प्रान्त से भी लगभग 200 व्यक्तियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

इस महोत्सव के मध्य दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर द्वारा तीर्थराज सम्मेदशिखर में जिनसंस्कृति का संरक्षण करने वाली समस्त दि. जैन संस्थाओं का प्रशस्तिपत्र, दुपट्टा, मोमेन्टो आदि के द्वारा स्वागत किया गया।

गिरनार सुरक्षा दिवस आयोजन— 1 जनवरी 2006 को विभिन्न स्थानों पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से 'गिरनार सुरक्षा दिवस' मनाया गया। राजधानी दिल्ली में शाह ऑडिटोरियम में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद-दिल्ली प्रदेश ने अपने 29वें स्थापना दिवस पर 'भगवान नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरनार सुरक्षादिवस एवं जनजागरण अभियान विषयक' भव्य राष्ट्रीय युवा सम्मेलन आयोजित किया। उक्त कार्यक्रम में उपाध्याय श्री नयनसागर जी ने ससंघ एवं पूज्य माताजी के संघ की ओर से मैंने (क्षुल्लक मोतीसागर) जाकर सानिध्य प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा परिषद के केन्द्रीय अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने की।

इस प्रकार मैंने यहाँ पूज्य माताजी के सन् 1953 से 2005 तक दीक्षित जीवन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है। यह उनके स्वर्णिम व्यक्तिव की एक झलकमात्र है, जो आप सभी के लिए प्रेरणादायी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव

खण्ड-७

राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय धर्मप्रभावना एवं तीर्थ विकास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की विश्व में सबसे ऊँची १०८ फुट की विशाल प्रतिमा का निर्माणकार्य चल रहा है

CC0.In Public Domain. Digiti... Trust/eG...
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria... ...asi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय धर्मप्रभावना एवं तीर्थ विकास

आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने रत्नकरंड श्रावकाचार नामक ग्रन्थ में प्रभावना अंग का लक्षण बताते हुए कहा है-

अज्ञानतिमिरव्याप्तिमपाकृत्य यथायथम्।
जिनशासनमहात्म्य-प्रकाशः स्यात्प्रभावना।।

अर्थात् अज्ञानरूपी अन्धकार के विस्तार को दूर कर अपनी शक्ति के अनुसार जिनशासन के माहात्म्य को प्रकट करना प्रभावना गुण है।

मोक्षमार्ग की गाड़ी के दो पहिये हैं-(1) साधु (2) श्रावक। इन दोनों के परस्पर पूरक होने से ही संसार एवं मोक्ष की व्यवस्था चलती है। यूँ तो इस प्रभावना अंग का पूर्णतः पालन करते हुए आचार्यों के निर्देशानुसार साधुगण जिनधर्म की महती प्रभावना करते हुए आत्म व पर कल्याण में सदैव तत्पर रहते हैं परन्तु श्रावक भी अपनी शक्ति के अनुसार अपनी अर्थांजलि, भावांजलि व पुष्पांजलि समर्पित कर जिनशासन के माहात्म्य को प्रकट कर महान पुण्य का संचय करते हैं और अपनी भव भ्रमण परम्परा को अल्प करने में सफल होते हैं।

उसी प्रभावना अंग का परिपालन कर पूर्वाचार्यों द्वारा निर्दिष्ट आगम वाक्य को प्रमाण मानने वाली जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा किये गये अद्वितीय कार्यों का वर्णन करने में आज के विद्वान् भी एक बार अक्षमता का अनुभव करते हैं। चाहे हम उनके द्वारा तीर्थ निर्माण पर दृष्टि डालें या तीर्थंकर भगवन्तों की पंचकल्याणक भूमियों के उद्धार पर अथवा धर्मप्रभावना के किसी भी एक विषय पर सूक्ष्म दृष्टिपात करें तो भी उनके द्वारा किए कार्य हेतु शब्द कम ही पड़ जाऐंगे।

गौरव ग्रंथ के इस खण्ड में पूज्य माताजी की प्रेरणा से सम्पन्न हुए कुछ विशेष शिविर, सेमिनार एवं महोत्सवों के द्वारा हुई धर्मप्रभावना का वर्णन विभिन्न आलेखों में दर्शाया गया है तथा जिन तीर्थों पर माताजी की प्रेरणा से नवनिर्माण आदि हुए हैं उनका भी संक्षिप्त वर्णन किया गया है। इस पूरे खण्ड के विषय को पढ़कर निश्चित ही आपके मन में भी एक नई ऊर्जा एवं तीर्थयात्रा की भावना प्रगट होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन् 1978 में हुआ एक ऐतिहासिक प्रशिक्षण शिविर

—कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

उत्तरभारत के प्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में परमपूज्य, महान विदुषी, आर्यिकारत्न 105 श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में श्री भारतवर्षीय शांतिवीर दि. जैन सिद्धान्त संरक्षिणी सभा एवं श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के तत्वावधान में 7 अक्टूबर से 16 अक्टूबर 1978 तक धार्मिक प्रशिक्षण शिविर आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन समारोह—

शिविर का उद्घाटन पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार 7 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे डॉ. श्री कैलाशचंद जैन 'राजा टॉयज'–दिल्ली की अध्यक्षता में श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन 'ठेकेदार'–दिल्ली द्वारा मंगलमय दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। उसके बाद श्री गणेशीलाल जी रानी वाला (महामंत्री सिद्धांत संरक्षिणी सभा) ने शिविर के आयोजन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। पश्चात् प्रशिक्षण शिविर के लिए निर्णीत विषयों पर आगम मंथन के द्वारा सप्रमाण आचार्यों की निर्मल वाणी को यथा तथ्य उदाहरणों से युक्त पूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित "प्रवचन निर्देशिका" नामक सर्वांग सुन्दर पुस्तक का श्री प्रकाशचंद जी पाण्ड्या सुजानगढ़ के करकमलों से विमोचन किया गया।

शिविर संचालन के लिए एक कुलपति की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए आगम के प्रकांड विद्वान, समयसार के टीकाकार सिद्धान्त वाचस्पति पं. मोतीलाल जी कोठारी–फलटण वालों का नाम सर्वसम्मति से अपार हर्ष के साथ मनोनीत किया गया।

कुलपति श्री मोतीलाल जी कोठारी ने अपने मंगलाचरण रूप प्रारंभिक प्रेरक भाषण में प्रवचन निर्देशिका पुस्तक को बहुत ही उपादेय बताते हुए उसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की और कुलपतित्व के गुरुतम भार को वहन करते हुए शिविर पर्यंत पूर्ण सहयोग का वचन प्रदान किया।

अंत में पूज्य माताजी का आशीर्वादात्मक प्रवचन प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम पूज्य माताजी ने शिविर पर्यंत सभी प्रशिक्षार्थियों को अनुशासन में रहने की निम्न प्रतिज्ञा करायीं।

(1) प्रशिक्षण शिविर के 10 दिनों में धार्मिक चर्चा को छोड़कर और कोई चर्चा न की जाये। विकथा का त्याग किया जाये। 'प्रवचन निर्देशिका' के अध्ययन में ही तत्पर रहा जाये। किसी भी व्यक्तिगत पंथवाद की चर्चा न की जाये।

(2) प्रवचन एवं प्रशिक्षण के समय कोई शंका नहीं उठाई जायेगी। शंका को नोट करके रात्रि में शंका–समाधान के समय ही उसका समाधान किया जायेगा।

(3) शिविर पर्यंत पंचाणुव्रत का पालन एवं अष्टमूल गुण का धारण सबके लिए आवश्यक है, आगे भी धारण करें तो श्रेष्ठ है।

(4) प्रत्येक कार्यक्रम में समय से 5 मिनट पूर्व सभी प्रशिक्षार्थी का उपस्थित होना आवश्यक है।

(5) प्रशिक्षण के बाद आर्ष मार्ग का यथोचित आगमोक्त प्रचार करेंगे।

(6) कुलपति की आज्ञा के बिना विषय से विषयान्तर में कोई चर्चा नहीं करेगा।

उपस्थित सभी प्रशिक्षार्थियों ने पूज्य माताजी द्वारा निर्देशित उपरोक्त समस्त अनुशासनपूर्ण बंधनों का हृदय से स्वागत किया और उपरोक्त नियमों के बंधन में रहकर तत्व निर्णय करने का पूर्ण आश्वासन प्रदान किया।

शिविर चर्या—

प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से रात्रि को 10 बजे तक व्यस्त कार्यक्रमानुसार दैवसिक चर्या का संचालन होता था। सर्वप्रथम 5 बजे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीरप्रभु के चरणकमलों में महावीराष्टक द्वारा प्रार्थना होती थी। 7 से 8 बजे तक सामूहिक अभिषेक, पूजन भगवान बाहुबलि मंदिर पर होता था। पश्चात् चाय नाश्ता लेकर सभी लोग 9 बजे से पूर्व ही प्रवचन हाल में पधार जाते थे। प्रथम सत्र में पूज्य माताजी द्वारा संदर्भित विषयों पर मंगल प्रवचन होता था। 10 बजे से 11 बजे तक भोजनादि क्रियापूर्ण करके द्वितीय सत्र प्रारंभ हो जाता था। द्वितीय सत्र के 1 घंटे के समय में एक-एक विद्वान 'प्रवचन निर्देशिका' के माध्यम से एक-एक विषय पर आगमोक्त विवेचन करते थे। पश्चात् 2 बजे तक सभी प्रशिक्षार्थियों को विश्राम अथवा स्वअध्ययन का समय दे दिया जाता था।

2 बजे से 4 बजे तक तृतीय सत्र प्रारंभ हो जाता था, जिसमें विद्वानों एवं पूज्य माताजी द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। पश्चात् भोजनादि नित्य क्रिया के बाद जम्बूद्वीप स्थल पर विराजमान भगवान महावीर स्वामी के मंदिर में सामूहिकरूप से आरती, भजन होते थे अन्त में आखिरी सत्र रात्रि के 7 बजे से 9 बजे तक बड़े ही उत्साह के साथ चलता था। इस सत्र में 1 घंटे तक विद्वानों के प्रवचन तथा 1 घंटे तक सभी को खुले रूप में शंका-समाधान का अवसर प्रदान किया जाता था। इस प्रकार प्रातः से रात्रि तक सारे कार्यक्रम बहुत ही अनुशासन एवं नियमबद्धता से उत्साहपूर्वक सम्पन्न होते थे। प्रवचन एवं शंका समाधान के द्वारा सभी विषयों को जिज्ञासु प्रशिक्षार्थियों की इच्छानुसार दूध का दूध एवं पानी का पानी कर दिया जाता था। शंका समाधान के समय जिज्ञासु जब तक तत्व का निर्णय नहीं कर लेता, तब तक बराबर उसे समय प्रदान किया जाता रहा। इस शिविर में हर जिज्ञासु की शंका का समाधान आचार्यों की करुणामयी लेखनी द्वारा लिखे गये जिनागम के अनुसार श्री मोतीलाल जी कोठारी द्वारा खोलकर रख दिया जाता था।

प्रशिक्षार्थी—

प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने के लिए भारत वर्ष के कोने-कोने से श्रीमंतवर्ग, विद्वत् वर्ग एवं महिला वर्ग के लगभग 150 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लेकर अपने को प्रशिक्षित किया। प्रशिक्षण देने में पूज्य माताजी के अतिरिक्त पं. मोतीलाल जी कोठारी-फलटण (कुलपति), डॉ. पं. लालबहादुर जी शास्त्री-दिल्ली, महान सिद्धान्त वेत्ता, विद्वत् तिलक पं. मक्खनलाल जी शास्त्री-मोरेना, श्रीमान पं. हेमचंद जी शास्त्री-अजमेर, वाणीभूषण पं. बाबूलाल जी जमादार-बड़ौत, प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी शास्त्री-फिरोजाबाद, पं. सागरमल जी जैन-विदिशा आदि विद्वानों ने बहुत ही प्रभावशाली एवं वैज्ञानिक पद्धति से प्रशिक्षार्थियों को निर्धारित विषयों पर अध्ययन कराया। प्रवचन के विषय इस प्रकार थे—

(1) सम्यग्दर्शन (2) व्यवहार नय-निश्चयनय (3) निमित्त उपादान (4) चारों अनुयोगों की सार्थकता (5) पंचमकाल में मुनियों का अस्तित्व (6) ग्रंथों के अध्ययन और अध्यापन की शैली (7) ध्यान की आवश्यकता।

सभी विद्वान उपरोक्त सात विषयों में से ही किसी विषय पर विवेचन करते थे। विवेचन का माध्यम भी मुख्यरूप से प्रवचन निर्देशिका के आधार से ही होता था।

सभी कार्यक्रमों का संचालन वाणीभूषण पं. बाबूलाल जी जमादार अथक परिश्रम एवं कुशलता से करते थे। विशेषता यह थी कि सभी विद्वान समय का पालन करते हुए तथा अनुशासन की बात को ध्यान में रखते हुए निर्धारित विषय को समय से पूर्ण कर देते थे। बीच-बीच में अन्य शिक्षार्थियों को भी अपने विचार रखने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाता था। सभी प्रशिक्षार्थियों ने बड़ी लगन एवं मनन के साथ जिनागम के रहस्य को समझा। प्रतिज्ञापूर्वक सारे कार्यक्रम सम्पन्न होते देखकर बड़ा आनन्द आ रहा था। कुलपति पं. मोतीलाल जी कोठारी के प्रति बहुत ही कृतज्ञता का भाव प्रगट किया गया क्योंकि ऐसे महान अध्येता कुलपति को पाकर सभी प्रशिक्षार्थी बहुत ही प्रसन्न रहे। कुलपति जी का सहयोग बहुत प्रशंसनीय रहा।

प्रशिक्षण देने वालों के अतिरिक्त प्रशिक्षार्थियों के नाम इस प्रकार हैं—

पं. मूलचंद जी शास्त्री-सनावद, पं. बाबूलाल जी फणीश-पावागिरी ऊन, ब्रह्मचारी गोकुलचंद जैन-जबलपुर, पं. गोकुलचंद जैन दर्शनाचार्य-दिल्ली, पं. जिनदास रामभाऊ कुरकुट परली-बैजनाथ, पं. जिनेन्द्रप्रकाश जैन सम्पादक-करुणा दीप-एटा, पं. शंकरलाल जी शास्त्री-दिल्ली, पं. शिवंचरनलाल जी जैन-मैनपुरी, पं. पन्नालाल जी न्यायतीर्थ-खातेगांव, ब्र. अमृतलाल शाह-तलोद, पं. विजय कुमार जी आचार्य-सरधना, पं. मनोहरलाल जी शास्त्री-एटा, पं. मल्लीनाथ जी शास्त्री-मद्रास, पं. लक्ष्मीचंद जैन सरोज-जावरा, पं. चन्द्रकुमार जी शास्त्री-इम्फाल, पं. गणेशीलाल जी-आगरा, पं. धर्मचंद्र जी जैन आयुर्वेदाचार्य-इंदौर, पं. भैय्यालाल जी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शास्त्री-बीना, ब्र. पं. सुमतचंद शास्त्री-मोरैना, डॉ. रमेशचंद्र जैन-बिजनौर, पं. लक्ष्मणप्रसाद जी जैन-मंडावरा, श्री त्रिलोकचंद जी जैन सर्राफ-सनावद, श्री प्रकाशचंद जी सर्राफ-सनावद, श्री अमोलकचंद जी जैन सर्राफ-सनावद, पं. विमल कुमार सोरया-मंडावरा, श्री सतीशचंद जैन-सरधना, श्री विनय कुमार जैन-सरधना, श्री प्रमोद कुमार जैन-सरधना, श्री मोतीचंद जैन-सरधना, श्री भगवानदास जैन-सरधना, श्री कैलाशचंद जैन-सरधना, श्री सुभाषचंद जैन-टिकैतनगर, श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ-टिकैतनगर, श्री भरत कुमार काला-मुम्बई, श्री अविनाश मेहता-मुम्बई, श्री मदनलाल पाटनी-कोटा, श्री भैरवलाल जी गोधा-कोटा, श्री हजारीमल जैन-कोटा, श्री प्रेमचंद जैन-कोटा, श्री रवीन्द्र कुमार जैन-कोटा, डॉ सुशीलचंद्र जैन-मैनपुरी, श्री महावीर प्रसाद जैन-मैनपुरी, श्री शांतिचंद जैन-मैनपुरी, श्री अरुण कुमार जैन वर्धमान-सराक, श्री अश्वनी कुमार जैन सराक, श्री अरुण कुमार जैन-मैनपुरी, श्री माणिकचंद पाण्ड्या-सुजानगढ़, श्री बसंत कुमार जैन-सुजानगढ़, श्री ज्ञानप्रकाश पाटनी-सुजानगढ़, श्री जिनेश्वर दास जैन-बड़ौत, प्रोफेसर श्री सुपार्श्व कुमार जैन-बड़ौत, श्री जगदीश प्रसाद जैन सर्राफ-बड़ौत, श्री प्रेमचंद जैन सर्राफ-बड़वाह, श्री धन्नीचंद जैन-कुटेसरा, श्री वीरसेन जैन-कुटसेरा, ब्रह्मचारी श्री धर्मचंद जैन (संघस्थ), श्री सुगनचंद गोधा-बड़नगर, श्री गुणवंत टोंग्या-बड़नगर, श्री अजित कुमार टोंग्या-बड़नगर, श्री रतनचंद जैन-इम्फाल, श्री राजेश कुमार जैन-टीकमगढ़, श्री महेशचंद जैन-हस्तिनापुर, श्री कीर्ति प्रसाद जैन-दिल्ली, श्री अरविंद कुमार जैन एडवोकेट-झालावाड़, श्री हजारीलाल जैन-भिंड, श्री जीवनचंद जी जैन-मण्डलेश्वर, श्री किरणमल जी मित्तल-मंदसौर, श्री अनमोल चंद जैन-दरियाबाद, श्री सुरेन्द्र कुमार जैन जौहरी-दिल्ली, श्री जीतमल जैन मंड़ाना, श्री विमलचंद जैन-मंडाना, श्री लखमीचंद जैन (मंत्री)-उनियारा, श्री निर्मल कुमार जैन-आगरा, श्री मदनलाल चांदवड़-रामगंज मंडी, श्री गणेशीलाल जैन रानीवाला-कोटा, सेठ श्री तिलोकचंद जैन कोठारी-कोटा, सेठ श्री नेमीचंद जैन बाकलीवाल-कोटा, सेठ श्री प्रकाशचंद पाण्ड्या-सुजानगढ़, सेठ श्री झूमरमल बगड़ा-सुजानगढ़, श्री मानमल गंगवाल-सुजानगढ़, श्री हुलासचंद जी पाण्ड्या-सुजानगढ़, सेठ श्री मांगीलाल सेठी-सुजानगढ़, सेठ श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन 'ठेकेदार'-दिल्ली, सेठ श्री कैलाशचंद जैन 'राजा टॉयज'-दिल्ली, श्री सौभाग्यमल जैन-कोटा, सेठ श्री शिखरचंद जैन रानी मिल-मेरठ, श्री नीरज जैन-सतना, श्री कांतीलाल मोहनलाल गांधी-रखियाल, श्री कैलाशचंद जैन-मवाना, श्री जितेन्द्र कुमार जैन सर्राफ-मेरठ, ब्र. मोतीचंद जैन न्याय तीर्थ -हस्तिनापुर, ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन शास्त्री (बी.ए.)-हस्तिनापुर, कु. मालती शास्त्री धर्मालंकार, विद्यावाचस्पति कु. माधुरी शास्त्री-हस्तिनापुर, कु. त्रिशला शास्त्री, श्रीमती कस्तूरीबाई-ललितपुर, श्रीमती राधारानी (ध.प. सेठ गणेशीलाल जी रानीवाल)-कोटा, श्रीमती प्रेमवती रानीवाला-कोटा ध.प. श्री तिलोकचंद सर्राफ-सनावद, श्रीमती सुषमा जैन ध.प. श्री सुभाषचंद जैन-टिकैतनगर, ध.प. श्री अविनाश मेहता-बम्बई, ध.प. श्री पं. हेमचंद जैन-अजमेर, श्रीमती कलावती बाई (ध.प. सेठ प्रेमचंद सर्राफ)-बड़वाह, ध.प. कांतीलाल गांधी-रखियाल, श्रीमती कुसुमलता देवी (ध.प. श्री महेशचंद जैन)-हस्तिनापुर, ध.प. श्री मांगीलाल जी-सुजानगढ़, ध.प. श्री हुलासचंद जी-सुजानगढ़, ध.प. श्री शांतिचंद जैन, ध.प. श्री मदनलाल पाटनी-कोटा,ध.प. श्री सौभाग्यमल जैन-कोटा, ध.प. श्री कैलाशचंद जैन 'राजाटायज'-दिल्ली, ध.प. सुरेन्द्र कुमार जैन-दिल्ली, ध.प. श्री शिखरचंद जैन-मेरठ, ध.प. श्री निर्मल कुमार जैन-आगरा, ध.प. श्री जगदीश प्रसाद जैन-बड़ौत, श्रीमती रामदेई-इम्फाल, कुमारी अनीता-हस्तिनापुर, श्रीमती शकुन्तला देवी जैन-दिल्ली, श्रीमती शशि जैन-मवाना, कु. गीता जैन-लखनऊ, श्रीमती रतनीदेवी-सुजानगढ़, श्रीमती मन्नी देवी-सुजानगढ़, श्रीमती शशि देवी-मैनपुरी, कुमारी सरिता जैन-मैनपुरी, श्रीमती शांती देवी जैन-कश्मीरी गेट-दिल्ली, मातेश्वरी श्री जीवनचंद जैन-मण्डलेश्वर, श्रीमती विमला जैन-कोटा, श्रीमती चंद्रावती-कोटा।

महत्वपूर्ण निर्णय —

इस प्रशिक्षण शिविर के बीच कई महत्वपूर्ण निर्णय एवं पूज्य माताजी के आदेश का पालन करने का निश्चय किया गया।

(1) पूज्य माताजी ने सभी महानुभावों से कहा कि वे किसी भी त्यागी या श्रावक के व्यक्तिगत चरित्र हननात्मक लेखों को समाचार पत्रों के माध्यम से कभी नहीं लिखेंगे।

(2) 5 विशिष्ट व्यक्तियों की एक कमेटी का गठन किया जाये। किसी भी त्यागी के संबंध में स्पष्ट रूप से आगम विरुद्ध दोष दिखने पर उसके निवारणार्थ संबंधी श्रावकगण इस कमेटी को सूचित करेंगे पुनः यह कमेटी उस त्यागी से व्यक्तिगत मिलकर उस दोष के निवारण हेतु उनसे निवेदन करे और आवश्यकता प्रतीत होने पर संबंधित आचार्य से भी निवेदन करेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(3) वर्ष में अनेक शिविर भिन्न-भिन्न स्थानों पर लगाकर उसके माध्यम से आगम का प्रचार किया जाये।

(4) सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रवचन निर्देशिका के पूर्ण अध्ययन के लिए 6 माह का और समय प्रदान किया गया पश्चात् सभी की निर्देशिका पर परीक्षा ली जावेगी। उपरोक्त बातों का आगत सभी श्रीमंत एवं विद्वत् वर्ग ने सहर्ष स्वागत किया तथा सुझाव नं. 2 पर निर्णय करके कमेटी गठन का आश्वासन भी दिया।

प्रशिक्षण शिविर का दीक्षांत समारोह, समापन समारोह एवं न्यायप्रभाकर, परम पूज्य 105 आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी का 45वाँ जन्मदिवस बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न, बाढ़ पीढ़ितों की सहायता—

श्री भारतवर्षीय शांतिवीर दिगम्बर जैन सिद्धांत संरक्षिणी सभा के तत्वावधान में श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की सहायता से परमपूज्य प्रातः स्मरणीय, न्यायप्रभाकर 105 आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में आयोजित दस दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह दिनाँक 16-10-1978 को बड़े अप्रत्याशित अनपेक्षित उत्साह के साथ मनाया गया। हमारे परम सौभाग्य से पूज्य माताजी का 45वाँ जन्मदिवस इसी दिन मनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस समारोह में उत्तरप्रदेश के सिंचाई मंत्री माननीय ठाकुर बलबीर सिंह की उपस्थिति ने मानो शरदपूर्णिमा को और भी प्रकाशित कर चार-चाँद लगा दिये। मंत्री महोदय इस समारोह में प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित हुए थे। ये सभी समारोह इस शिविर के संयोजक श्री त्रिलोकचंद जैन कोठारी-कोटा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए।

श्री कैलाशचंद जी (खद्दर वाले)-सरधना ने मंत्री महोदय का परिचय कराया। सभा के महामंत्री श्री गणेशीलाल रानीवाला ने मंत्री महोदय को माल्यार्पण कर स्वागत किया। इसके बाद सभी प्रशिक्षार्थियों को इस प्रकार की प्रतिज्ञा कुलपति श्री मोतीलाल जी कोठारी-फलटण ने दी—"हम देव, शास्त्र, गुरु की वंदना करते हुए मन से, वचन से, काय से प्रतिज्ञा करते हैं कि जो हमारी आर्ष परम्परा देव-शास्त्र-गुरु की चली आ रही है, उसकी रक्षा तन से, मन से, धन से करते हुए देश-समाज-जाति और मानवता की सेवा यथाशक्त करते रहेंगे! करते रहेंगे!! करते रहेंगे!!! तदनंतर परमपूज्य माताजी के आशीर्वाद से मंत्री महोदय द्वारा सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित कर योग्यता की दीक्षा प्रदान की गई। इसके बाद कुलपति जी गुरुओं के गुरु पं. मक्खनलाल जी तथा विशेष निमंत्रित श्री देव चैतन्य जी महाराज-मेरठ के संक्षिप्त आशीर्वादात्मक एवं प्रेरणादायक भाषण हुए। पं. मक्खनलाल जी ने मंत्री महोदय से निवेदन किया कि भगवान आदिनाथ एवं भगवान महावीर के जन्म एवं निर्वाण दिवस पर मांसाहार एवं मांस बिकने पर तथा काटने पर बंदी रखने का प्रयत्न किया जाये। पश्चात् मंत्री महोदय श्री बलवीर सिंह का भाषण हुआ। अहिंसा, दया, करुणा को जैन धर्म की महान देन बताकर जिनधर्म के गौरव पर अपना वक्तव्य दिया। सभी प्रशिक्षार्थियों का अभिनंदन किया तथा बाढ़-पीढ़ितों की सहायता करने का नम्र आह्वान किया। वाणीभूषण पं. बाबूलाल जमादार जो इन समारोह का संचालन बड़े ही प्रभावशाली ढंग से करते आ रहे थे, ने सभा की ओर से बाढ़ पीढ़ितों की सहायता हेतु प्रयत्न करने का आश्वासन दिया।

मंत्री महोदय को एवं श्री देव चैतन्य महाराज को पूज्य माताजी के आशीर्वाद के साथ 'प्रवचन निर्देशिका' की एक-एक प्रति भेंट की गई। तदनंतर कुलपति जी, पं. मक्खनलाल जी एवं देव चैतन्य महाराज का माल्यार्पण करके यथोचित सम्मान किया गया। अध्यक्ष महोदय एवं शिविर के आयोजक माननीय श्री त्रिलोकचंद-कोठारी का भाषण हुआ। ज्ञान की गंगा एवं पानी की गंगा के संगम की उपमा देते हुए शिविर के महत्व पर प्रकाश डाला। बाढ़ पीढ़ितों की सहायता का आश्वासन सभी की ओर से दिया ही नहीं, शीघ्र उसी समय स्वयं की ओर से बाढ़ पीढ़ितों के लिए एक सौ कंबल देने की घोषणा भी कर दी और अन्य उपस्थित श्रीमंतों से भी योगदान देने का आह्वान किया। इसके बाद परम विदुषी माताजी के अथक परिश्रम से तैयार की गई 'इन्द्रध्वज विधान' की पुस्तिका का श्री नेमीचंद्र जी बाकलीवाल-सुजानगढ़ निवासी के करकमलों द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों में एक प्रति भेंट कर विमोचन किया गया।

इसके बाद पूज्य माताजी का शिविर का अंतिम आशीर्वचन युक्त प्रवचन हुआ। तदनंतर श्री निर्मल कुमार जैन-आगरा,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री निर्मल कुमार सेठी–सीतापुर, श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन ठेकेदार–दिल्ली, पं. जिनेन्द्र कुमार जैन (सम्पादक–करुणादीप)–एटा, श्री कैलाशचंद जी जैन–सरधना आदि महानुभावों का फूलमाल से सम्मान किया गया। अन्त में महामंत्री श्री गणेशीलाल जी रानीवाला ने सभी का धन्यवाद किया। ज्ञान की गंगा, पानी की गंगा, सिंचाई की गंगा इसको त्रिवेणी संगम कहकर सभी को शिवर के आयोजन की उपयोगिता प्रकट करा दी। दस दिन के शिविर के मध्य परिपूर्णरूप से दूध का दूध और पानी का पानी बना दिया गया है, ऐसा महामंत्री ने कहा। अंत में पूज्य माताजी, श्री कुलपति जी, पं. मक्खनलाल जी, मंत्री महोदय, अध्यक्ष महोदय सेठ श्री कैलाशचंद जी खद्दर वाले–सरधना, पं. बाबूलाल जमादार, श्री देव चैतन्य महाराज, पं. मोतीचंद जैन सर्राफ, श्री रवीन्द्र कुमार जैन, श्री त्रिलोकचंद जैन, श्री विमलप्रसाद जैन, भोजन व्यवस्थापक, धर्मशाला व्यवस्थापक, समस्त पुलिस, सरकारी अधिकारीगण तथा आगत विद्वानों एवं प्रशिक्षार्थियों के प्रति धन्यवाद एवं आभार के भाव प्रकट किए। अंत में वाणीभूषण पं. बाबूलाल जी जमादार ने प्रशिक्षण शिविर समापन की घोषणा की। इसके तुरंत बाद ही पूज्य माताजी का 45वाँ जन्मदिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

सर्वप्रथम पूज्य माताजी के प्रति सभी ने सामूहिक शुभकामना भाकर पूज्य माताजी की सेवा में सभक्ति एक अभिनंदन पत्र, सरंक्षिणी सभा, शास्त्री परिषद, युवा परिषद, त्रिलोक शोध संस्थान तथा समस्त भारत के कोने–कोने से आगत श्रीमंत एवं विद्वत्वर्ग आदि द्वारा पूज्य माताजी के चरण में समर्पित किया गया। इसके बाद श्री चैनरूप जी बाकलीवाल, श्री जिनेन्द्र प्रसाद जी ठेकेदार, वाणीभूषण पं. बाबूलाल जी जमादार, सेठ श्री जयचंद जी लुहाड़े–हैदराबाद (महामंत्री–अ.भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी), श्री स्वरूपचंद जी सोगानी–हजारीबाग (अध्यक्ष–बंगाल, बिहार, उड़ीसा दि. जैन न्यास) आदि ने पूज्य माताजी के प्रति अपनी–अपनी शुभकामनाएँ अर्पित कीं। पूज्य माताजी ने अपनी लघुता प्रगट करते हुए सभी के प्रति वात्सल्य भाव प्रगट किया। पश्चात् माननीय सिंचाई मंत्री ठाकुर श्री बलबीर सिंह जी जम्बूद्वीप स्थल पर दर्शनार्थ गये और त्रिलोक शोध संस्थान की योजना को बहुत ही उपयोगी बताकर हर संभव योगदान करने का वचन भी प्रदान किया। त्रिलोक शोध संस्थान के अनुरोध पर मंत्री महोदय, एस.डी.एम. तहसीलदार साहब एवं पधारे हुए समस्त अधिकारीगणों ने जम्बूद्वीप स्थल पर ही मध्यान्ह का भोजन ग्रहण किया। त्रिलोक शोध संस्थान की ओर से माननीय मंत्री महोदय जी को जैन ग्रंथों का एक सेट स्वाध्याय हेतु भेंट किया गया। अंत में मंत्री महोदय ने अपने को इस आयोजन में पाकर बहुत ही प्रसन्नता का भाव प्रदर्शित करते हुए मंगल प्रस्थान किया।

इस शिविर की सम्पन्नता में उत्तरप्रदेशीय श्वेताम्बर जैन महासभा द्वारा संचालित श्री आत्मानंद जैन बालाश्रम के सुयोग्य मैनेजर श्री ज्ञानचंद जी ने हमें आवास आदि का पूरा सहयोग प्रदान किया तथा आश्रम के प्राचार्यश्री धनप्रकाश जी जैन ने भी पूर्ण सहयोग का ध्यान रखा। शिविरार्थियों के ठहरने के लिए कमरे, प्रवचन के लिए हाल एवं रसोई आदि के प्रबंध में जिस प्रकार का खुले हृदय से हमें सहयोग प्रदान किया, उसके लिए श्वेताम्बर जैन महासभा का मैं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का मैं सदैव आभार प्रदर्शित करता हूँ।

समारोह में खतौली, मेरठ, दिल्ली, सरधना, बड़ौत एवं आसपास के नगरों से अनेक श्रीमंत वर्ग ने पधारकर पूज्य माताजी के प्रति अपनी–अपनी शुभकामना अर्पित की तथा समारोह की सफलता में योगदान दिया।

प्रशिक्षण शिविर 7 ता. से 16 ता. तक जिस तरह सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, उससे प्रभावित होकर सभी श्रीमान–धीमानों ने इस प्रकार के शिविर अनेक स्थानों पर समय–समय पर लगाये जायें इस बात की इच्छा जाहिर की तथा कुछ स्थानों से निमंत्रण भी प्राप्त हुए। निमंत्रण में दिल्ली, मोरेना, सतना, सम्मेदशिखर आदि स्थान प्रमुख हैं।

शिविर सफलता में पूज्य माताजी का आशीर्वाद एवं अनुशासन बहुत ही प्रेरणादायक रहा। साथ ही दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के महामंत्री श्री कैलाशचंद जी जैन, मंत्री ब्र. श्री मोतीचंद जैन, वाणी भूषण पं. बाबूलाल जी जमादार, कुलपति श्री मोतीलाल जी कोठारी, सिद्धान्त संरक्षिणी सभा के महामंत्री श्री गणेशीलाल जी रानीवाला, शिविर संयोजक श्री त्रिलोकचंद जी कोठारी–कोटा, श्री मदनलाल जी–चांदवड़, अध्यक्ष–शोध संस्थान आदि की मनोभावना भी सफलता में मुख्य कारण रही।

प्रवचन निर्देशिका एक बहुमूल्य कृति का प्रकाशन भी इस शिविर की सफलता में एक कड़ी बन गई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रात: स्मरणीय, न्यायप्रभाकर परमपूज्य 105 आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की सेवा में सभक्ति सादर समर्पित अभिनंदन-पत्र

(सन् 1978 में प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रस्तुत किया गया)

परमआदरणीय—

इतिहास के पृष्ठों में ऐसे बहुत कम चरित्र पढ़ने में आये हैं, जिनका पूरा परिवार आचरण की सुगंधि से संस्कारित होकर धन्य हुआ हो। जन्मदायिनी माँ, सहोदरा बहन और भाई सहित जो महाव्रतों को जीवन में साकार उतारने में धन्य हुई हो, ऐसी दर्शन ज्ञान चारित्र की साकार मूर्ति के रूप में टिकैतनगर ग्राम में जन्म लेकर बालिका मैना ने आर्यिका ज्ञानमती के रूप में प्रगट होकर टिकैतनगर को तीर्थनगर बना दिया है। ऐसे महान व्यक्तित्व की वंदना कर आज हम सब गौरव का अनुभव करते हैं।

अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी—

सिद्धांत, दर्शन, व्याकरण, न्याय, काव्यशास्त्र के साथ जैन भूगोल एवं गणित जैसे क्लिष्ट गहन पूर्वाचार्यों के प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग, द्रव्यानुयोग, विषयक ग्रंथों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त कर जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में स्वपर कल्याण का जो ऐतिहासिक कार्य किया, वह युगों-युगों तक वंदनीय रहेगा।

गौरव की प्रतीक—

आपकी विलक्षण ज्ञान प्रतिभा से प्रसन्न होकर राजधानी दिल्ली में प्रातःस्मरणीय आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज एवं उपाध्याय मुनि विद्यानंद जी के सानिध्य में परमपूज्य भारतगौरव आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज के द्वारा "आर्यिकारत्न" एवं 'न्याय प्रभाकर' जैसी सम्मानजनक उपाधियों से समलंकृत होकर जो सम्मान प्राप्त किया, उससे आपकी ज्ञान गंगा की उज्ज्वलता का दर्शन हो रहा है। निरन्तर पठन-पाठन, निष्पक्ष मनन चिंतन से आपकी तेजस्विता एवं ज्ञानगरिमा अध्यात्म की गहरी से गहरी गुत्थियों को भी आगम प्रमाण की साक्षी में सरलता से सुलझाने में समर्थ रहती है। इस रूप में आप परम वंदनीय पूज्याचार्य पूज्यपाद स्वामी, अकलंकदेव, विद्यानन्दि महाराज जैसे महान आचार्यों की श्रेणी में आती हैं।

वीतरागता की दिव्यकृति—

आप बाह्य अभ्यंतर परिग्रह से ममता रहित, आडम्बर हीन, सरल, धैर्यशाली, इन्द्रिय सुखों की लिप्सा से दूर, राग-द्वेष, मोहमाया, अहंकार एवं कषायों के आवेश से विरत, ज्ञान ध्यान में लीन परोपकार की साक्षात मूर्ति हो। सदैव तप-साधना में निरत रहकर आपने इस शताब्दी की महान तपस्वी आर्यिका के रूप में पूज्यता प्राप्त कर ली है।

विश्व आश्चर्य कार्य की प्रणेत्री—

हस्तिनापुर नगरी में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान की संस्थापना कर एक विशाल जैन परम्परा के प्रतीक जम्बूद्वीप रचना की प्रेरणा देकर आपने एक ऐसा कार्य करा दिया, जो विश्व के लिए एक दर्शनीय एवं शोध बोध का केन्द्र स्थल बनने जा रहा है।

धर्मरक्षिका—

देवशास्त्र गुरु की पावनता और अखण्डता की रक्षा हेतु आपने जो समस्त भारतवर्ष के आगत विद्वानों के लिए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करवाया और एक उच्च कोटि की 'प्रवचन निर्देशिका' नामक पुस्तक का निर्माण किया, जिससे समस्त जैन समाज के विद्वान गौरवान्वित हुए, यह चिरस्मरणीय रहेगा। माँ जिनवाणी, गुरु एवं आचार्य परम्परा की पूर्ण मर्यादा की आप संरक्षिका अभिवर्द्धिका एवं महिमा विस्तार करने वाली हैं।

सिद्धान्त वाचस्पति—

आपने ग्रंथराज अष्टसहस्री, नियमसार, मूलाचार आदि अनेक ग्रंथों का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया है तथा अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना के साथ शताधिक संस्कृत, कन्नड़, हिन्दी भाषा में स्तुतियाँ सहस्राधिक आध्यात्मिक लेख और आगम ग्रंथों के पद्यानुवाद निर्माण करके जो वस्तुतः आपकी प्रत्येक कृति इतनी महत्वपूर्ण है कि यदि विश्वविद्यालय में प्रस्तुत की जाये तो उतनी ही पी.एच.डी. की उपाधियाँ सहज रूप में प्राप्त हो सकती हैं।

अस्तु, पूज्य माताजी की इन ऐतिहासिक महान साहित्य सेवाओं के उपलक्ष्य में उनके गुणों के अनुरूप 'सिद्धान्त वाचस्पति' की सम्माननीय उपाधि से अलंकृत किया जाता है।

विश्ववंदनीय—

रोष-तोष से दूर, कर्तव्यनिष्ठ, हितचिंतक, वीतराग मार्ग की प्रभावक ज्योति के रूप में हम सब आपके चरणों की वंदना करते हुए देवाधिदेव भगवान श्री शांतिनाथ से प्रार्थना करते हैं कि आप शतायु होकर इसी प्रकार भव्यों के अभ्युत्थान एवं जिनवाणी व जिनधर्म के उद्योत में योगदान देती हुई आत्मकल्याण के परमस्थान की प्राप्ति में साधक हों।

हम हैं आपके चरणचञ्चरीक

भा. शांतिवीर दि. जैन सिद्धांत संरक्षिणी सभा, दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थन, अ.भा. दि. जैन शास्त्री परिषद, अ.भा. दि. जैन युवा परिषद के सदस्य तथा पदाधिकारीगण तथा भारत के कोने-कोने से आगत लब्ध प्रतिष्ठित श्रेष्ठी एवं आत्मज्ञ जिज्ञासुगण।

16 अक्टूबर 1978, हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

पूज्य माताजी विश्व की प्रथम भारतीय नारी हैं, जिन्होंने जैन गणितीय त्रिलोक संरचना में से जम्बूद्वीप की रेखागणित को साकाररूप प्रदान किया। यह इतिहास की प्रथम गणितीय घटना कही जा सकती है, जिसने सम्पूर्ण लोक, विश्व, देश, समाज तथा व्यक्ति के ध्यान को आकर्षित किया है। जैन गणित के गांभीर्य को उन्होंने ही प्रथम बार मूल्यांकित किया, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव प्रभु की द्वितीय सुपुत्री सुन्दरी की विद्या को प्रोज्ज्वल रूप से प्रकाशित किया, जिसकी ओर इस युग में किसी का लक्ष्य नहीं गया था। यही नहीं, वरन् न्याय एवं साहित्य में भी उनकी अभूतपूर्व प्रतिभा प्रखर रूप से प्रकाशन में आई और उन्होंने जो इस ओर भी अंशदान दिया, वह ब्राह्मी की विद्या को निखारता चला आया।

इस प्रकार दोनों विद्याओं में निपुण पूज्य ज्ञानमती माताजी का जीवन एक नये दर्शन को सामने लाया है, नये आदर्श को लिए भारतीय एवं जग जीवन में क्रांति लेकर आया है।

-प्रो. एल.सी. जैन, जबलपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार

International Seminar on Jaina Mathematics & Cosmology

प्रस्तुति-डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

जैन साहित्य ज्ञान विज्ञान का अथाह सागर है तथा आधुनिक युग की अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियों के मूल सूत्र एवं विचार प्रच्छन्न रूप से प्राकृत साहित्य में निहित है। वनस्पतियों में जीवन अथवा जल में जीवराशि अथवा मापन की तालिकाएँ अथवा गणितीय प्रक्रियाएँ प्राचीन प्राकृत जैन साहित्य में उपलब्ध हैं। यह कहना तो बहुत आसान है किन्तु उसे विश्व अकादमिक समुदाय के सम्मुख प्रस्तुत करना अत्यन्त जटिल है। विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने करणानुयोग विषयक जैन साहित्य विशेषत: तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, जम्बूद्वीवपण्णत्तिसंगहो, लोक विभाग आदि का अध्ययन कर जैन समुदाय को त्रिलोक भास्कर, जैन ज्योतिर्लोक, जैनभूगोल और खगोल के विषयों को बुद्धि एवं ज्ञानगम्य बनाने हेतु करणानुयोग में विवेचित जम्बूद्वीप को एक विशालकाय मॉडल के रूप में हस्तिनापुर में ऐसा उतारा कि 101 फुट ऊँचे सुमेरु और लगभग 200 फुट व्यास के आकार के विशालकाय मॉडल को समाहित करने वाले परिक्षेत्र का ही नाम जम्बूद्वीप पड़ गया।

1981 और 1982 में आयोजित किये गये जम्बूद्वीप सेमिनारों में समागत विद्वानों ने अपने आलेखों के माध्यम से करणानुयोग में उपलब्ध विवेचनों का आधुनिक भूगोल तथा वैदिक एवं बौद्ध परम्परा के विवेचनों के साथ साम्य वैषम्य भी विवेचित किये। अनेक विसंगतियों और विरोधाभासों से परिपूर्ण ब्रह्माण्ड विज्ञान तथा उसके ज्ञान की अल्पज्ञता को जानकर विश्व खगोलविदों और ब्रह्माण्ड वैज्ञानिकों के समक्ष ब्रह्माण्ड का एक वैकल्पिक जैन परम्परामान्य मॉडल प्रस्तुत करने हेतु एवं एतद् विषयक चिन्तनों को गति देने के लिए जम्बूद्वीप पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 1985 की पूर्व बेला में दिनाँक 26-28 अप्रैल के मध्य मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ के संयुक्त तत्वावधान में जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार (International Seminar on Jaina Mathematics & Cosmology) का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए संस्थान एवं सेमिनार की प्रेरिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती ने कहा कि 'सम्पूर्ण जैन साहित्य 4 अनुयोगों में विभाजित है और किसी भी एक अनुयोग की उपेक्षा कर जैन साहित्य अथवा जैन दर्शन को नहीं समझा जा सकता। मात्र इतना ही नहीं जैन दर्शन को समझने के लिए क्रमिक रूप से पहले प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग एवं तब द्रव्यानुयोग को पढ़ना चाहिए। इस परिसर में जिस जम्बूद्वीप को आप देख रहे हैं वह करणानुयोग के विवेचनों के आधार पर मॉडलरूप में बना है। करणानुयोग के ग्रंथों में लोक के स्वरूप, पर्वतों, नदियों, कुओं के विवेचनों में बहुत सा गणित देखने को मिलता है। मैं आश करती हूँ कि यहाँ उपस्थित देश के कोने-कोने से ही नहीं अपितु विदेशों से आये विद्वान भी कर्म सिद्धान्त, भूगोल, खगोल विषयक जो ज्ञान तथा गणित के सूत्र करणानुयोग के ग्रंथों में हैं उनको ठीक प्रकार से समझकर दुनियां के सामने रखेंगे। यह पूर्वाचार्यों के प्रति हमारी श्रद्धा भक्ति का परिचायक होगा तथा बहुत सी नई बातें भी दुनियाँ के सामने आयेंगी।'

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मेरठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश मोहन ने कहा कि विगत दो-तीन दशकों में जैन ग्रंथों में निहित गणित के अनुसंधान के क्षेत्र में व्यापक प्रगति हुई है। फलत: धार्मिक पत्रिकाओं, शोध स्मारिकाओं, अभिनंदन ग्रंथों में शताधिक शोध पत्रों का प्रकाशन हुआ। किन्तु इन शोध पत्रों के अल्प भाग का प्रकाशन लब्ध-प्रतिष्ठ, बहु-प्रचलित पूर्णत: अकादमिक शोध पत्रिकाओं में होने के कारण विश्व गणित इतिहासज्ञ इन अनुसंधानों के ज्ञान से वंचित रह गये। यदि इन्हीं शोध पत्रों का प्रकाशन स्तरीय शोध पत्रिकाओं में होता अथवा इन शोध पत्रों के निष्कर्षों को समग्र रूप में प्रतिबिम्बित करने वाली किसी प्रमाणिक पुस्तक का सृजन किया गया होता, तो भारतीय गणित का इतिहास कुछ भिन्न ही होता। इस दिशा में Exact Sciences from Jaina Sources (जयपुर से प्रकाशित शृँखला) के द्वारा सुन्दर प्रयास किया जा रहा है। मुझे ऐसा बताया गया है, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा भी प्राचीन जैन गणितज्ञों के संदर्भों में लघु प्रबंधों की एक शृँखला प्रकाशित की जा रही है, जिसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम दो पुष्प इसी माह मेरठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान वाली समिति द्वारा प्रकाशित हो रहे हैं। संस्थान की यह योजना निश्चय ही सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि यहाँ पर उपस्थित गणित इतिहासज्ञों, ज्योतिर्विदों के संयुक्त प्रयासों से भारतीय गणित का विस्तृत वैभव प्रकाश में आ सकेगा। राजादित्य, ठक्कर फेरु, महिमोदय, हेमराज, टोडरमल आदि कुछ ऐसे जैन गणितज्ञ हैं, जिनके कृतित्व का आज तक समुचित मूल्यांकन नहीं हो सका है। मैं आप सबको यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि आप लोग इस संदर्भ में अपने अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो हमारे विश्वविद्यालय से आपको इस संदर्भ में पूर्ण सहयोग एवं हर संभव सहायता देने का प्रयत्न किया जायेगा।

प्रो. सुरेशचंद्र अग्रवाल ने सेमिनार के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला तो ब्रह्मचारी रवीन्द्र कुमार जैन ने संस्थान की बहुआयामी गतिविधियों को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर पूज्य माताजी द्वारा रचित 'जैन भूगोल' के डॉ. एस.एस.लिश्क द्वारा किये गये अंग्रेजी अनुवाद "Jain Geography" तथा दो मोनोग्राफ्स 'महावीराचार्य-एक समीक्षात्मक अध्ययन' द्वारा-अनुपम जैन तथा सुरेशचंद अग्रवाल एवं "Philosopher Mathematicians" द्वारा एल.सी. जैन एवं अनुपम जैन, का भी विमोचन किया गया।

सेमिनार में उद्घाटन और समापन सत्र के अतिरिक्त 6 अकादमिक सत्रों में 32 शोधपत्रों की प्रस्तुति की गई। सेमिनार का उद्घाटन उ.प्र. शासन के मंत्री प्रो. वासुदेव सिंह ने किया।

1. प्रो. एस.डी. बाजपेयी (University to Science and Technology, Port-Harcourt, Nigeria) "a Mathematical Approach to Justify Some Figures and Dates of the Pre-Historic Hindu and Jaina Mathematics —लेखक ने प्रागैतिहासिक काल की विवादास्पद भारतीय गणितीय कृतियों की तर्क संगत तिथियों के निर्धारण का प्रयास किया है।

2. प्रो. आर.सी. गुप्त (B.I.T., Ranchi) "The Jain Value of (Pi) and Its Transmission Abroad" — भारतीय प्रभाव की अरबी कृतियों तथा परिवर्तीकाल की मध्य यूरोपीयकृतियों में (Pi) के जैन परम्परा मान्य मात्र $\sqrt{10}$ की उपस्थिति का प्रमाणिक एवं व्यापक सर्वेक्षण प्रस्तुत आलेख में किया गया है।

3. डॉ. नवज्योति सिंह (NISTDS, New Delhi) "Jaina Theory of Measurement and Theory of Numbers" —संख्याओं के विचित्र संसार में संख्यात, असंख्यात और अनन्त रूप संख्याओं का विभाजन और अनन्त संख्याओं का वास्तविक निरूपण सर्वप्रथम जैनाचार्यों के ग्रंथों में देखने को मिलता है और यह विवेचन ही परिवर्तीकाल में कलन तथा संख्याओं के उच्चस्तरीय गणित के विकास का आधार बना।

4. डॉ. अनुराधा खन्ना (NISTDS, New Delhi), "Physical and Biological Notions in Jaina Cosmology" —विदुषी लेखिका ने षट्द्रव्यों तथा ब्रह्माण्ड विज्ञान के साथ इनके अन्तर संबंधों की विवेचना प्रस्तुत की।

5. डॉ. परमेश्वर झा (B.S.S. College, Supaul), "Contributions of the Jains to Astronomy and Mathematics" —वरिष्ठ इतिहासज्ञ डॉ. झा ने कुसुमपुरा (पटना) की गणितीय परम्परा को जैन गणितज्ञों के अवदान तथा उनके प्रभावों की विवेचना प्रस्तुत आलेख में की है।

6. डॉ. हरीन्द्र भूषण जैन (उज्जैन), ''षट्खण्डागम की धवला टीका में निहित गणित'' —प्रस्तुत आलेख में धवला में पाये जाने वाले गणित तथा गणितीय संकेतों, दाशमिक स्थानमान पद्धति, घातांकों के सिद्धान्त, लघुगुणक तथा अनन्त आदि की विस्तार से चर्चा की गई है।

7. प्रो. बी.एस.यादव (Delhi University, Delhi), "Mathematics of Yamatarajabhanasalagmn" — लेखक ने छंद शास्त्र के विभिन्न गणों की गणितीय विवेचना की है।

8. प्रो. एन.एल. जैन (Govt. Girls P.G. College, Rewa), "Units of Time in Jaina Canons" —लेखक ने कालमान की विभिन्न सूचियों का विश्लेषण करने के उपरांत आवली के लिए 10^{-4} सेकेण्ड का मान प्रस्तावित किया।

9. डॉ. आर.सी. जैन (विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन), ''स्याद्वाद के सप्तभंग एवं आधुनिक गणित'' —आलेख अवक्तव्य भंग की आधुनिक सांख्यिकी की प्रायिकता से साम्य स्थापित करने के लिए समर्पित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

10. प्रो. आर.एम. कासलीवाल (S.M.S. Medical College, Jaipur), "Karma and Rebirth Phenomena of Jaina Philosophy as worked out on Scientific Lines" — आलेख में विविध शोधों और घटनाओं के आधार पर पुनर्जन्म की अवधारणा की पुष्टि का प्रयास किया गया है।

11. श्री यूकियों ओहासी (Japan Research Scholar, Lucknow University, Lucknow). "Siddhanta Astronomy among Buddhists" — भारतीय, चीनी एवं जापानी ज्योतिर्विज्ञान (Astronomy) में परस्पर आदान-प्रदान तथा प्रभाव की विस्तृत विवेचना की गई है।

12. डॉ. प्रेम सुमन जैन (एम.एस.विश्वविद्यालय, उदयपुर), ''प्राचीन जैन साहित्य में गणितीय शब्दावली'' — जैन गणितीय साहित्य में पाये जाने वाले विशिष्ट शब्दों, कोण, जीवा, आयात आदि की विस्तार से चर्चा प्रस्तुत आलेख में की गई है।

13. डॉ. पारसमल अग्रवाल (उज्जैन), ''जैन द्रव्यानुयोग का गणित, आधुनिक विज्ञान एवं आध्यात्मिक प्रगति'' — अध्यात्म ग्रंथों के प्रबुद्ध अध्येता ने भौतिकी के नवीनतम अनुसंधानों के आलोक में यह प्रतिपादित किया है कि जैनाचार्यों की सदियों पूर्व स्थापित मान्यताएँ आज पुष्ट हो रही हैं।

14. डॉ. एस.एस. लिश्क (Govt. In Service Training Centre, Patiala), "Mathematical a spects of Jamboodweep" — जैन ज्योतिर्विज्ञान (Astronomy) के वरिष्ठ अध्येता ने यह सिद्ध किया कि जम्बूद्वीप विषयक विवेचन महज कल्पना नहीं अपितु गणितीय दृष्टि से सुसंगत है और इन विवेचनों पर आधारित मॉडल खगोलीय घटनाओं की सटीक व्याख्या करने में सक्षम है।

15. डॉ. गंगानाथ सिंह झा (D.S. College, Katihar), "Theory of Relativity in Jainism" — प्रस्तुत आलेख में स्याद्वाद और नयवाद के नाम से जैन आगम ग्रंथ में विवेचित सापेक्षता के सिद्धान्त की विवेचना की गई है।

16. डॉ. परमानंद सिंह (R.N. College, Hajipur), "Acharya Jayadeva and His treatment to Permutations and Combinations" — हलायुध त्रिकोण की जयदेव (पॉस्कल) त्रिभुज से साम्य वैषम्य की चर्चा की गई है।

17. श्री मोतीचंद्र जैन (दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान-हस्तिनापुर), ''षट्काल परिवर्तन'' — प्रस्तुत आलेख में प्रतिपादित किया गया है, षट्काल परिवर्तन आर्यखण्ड में होता है। ज़िसमें वर्तमान ज्ञात सम्पूर्ण पृथ्वी समाहित है।

18. ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन (दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर), ''14 धाराओं'' — आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती प्रणीत त्रिलोकसार ग्रंथ में विवेचित 14 धाराओं (Sequences) की इसमें चर्चा की गई है। लेखक ने यह भी प्रतिपादित किया है कि इन धाराओं का विषय वर्तमान में अनुपलब्ध वृहद् धारा परिकर्म शीर्षक ग्रंथ में उपलब्ध है।

19. श्रीमती अमरजीत कौर (Govt. In-Service Training Centre, Patilala), "Psycho-Social Aspects of Jaina Mathematics" — प्रस्तुत आलेख में लेखिका ने यह प्रतिपादित किया है कि जैन परम्परामान्य जीवन पद्धति ने गणित के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

20. कु. माधुरी जैन (दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर), ''जम्बूद्वीप में हम कहाँ हैं?'' — प्रस्तुत आलेख जम्बूद्वीप के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान ज्ञात पृथ्वी की विवेचना को समर्पित है।

21. श्री गणेशीलाल जैन (दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर), ''जैन दर्शन में अनन्त'' — षट्द्रव्यों के माध्यम से अनन्तों के स्वरूप और विस्तार की विवेचना इस लेख में की गई है।

22. प्रो. एम.आर. गेलड़ा (शास. एम.वी. कालेज, भीवारा) ''ऊर्ध्वलोक में तमस्काय'' — 8 प्रकार के तमस्कायों और उनकी आकृतियों की विवेचना प्रस्तुत आलेख में तार्किक रूप से की गई है।

23. डॉ. एस.आर. शर्मा (Aligarh Muslim University, Aligarh), "Thakkura Pheru and the Popularisation of Science in India in the 14th Century" — प्रस्तुत आलेख ठक्कर फेरू के ग्रंथों में प्रयुक्त प्राकृत और उसकी बोधगम्यता को समर्पित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

24. श्री सोहनलाल देवोत, (एम.एस. विश्वविद्यालय-उदयपुर), ''जैन ग्रंथों में ऊर्ध्वलोक''—इसमें जैन साहित्य में विवेचित ऊर्ध्वलोक की चर्चा है।

25. डॉ. बी.एल. सेठी (शास.पी.जी.कालेज, श्रीगंगानगर), ''आचार्य पुष्पदंत कृत आदिपुराण में जैन गणित''—आचार्य पुष्पदंतकृत आदिपुराण में उपलब्ध गणितीय सामग्री का विवेचन प्रस्तुत आलेख में किया गया है। आचार्य पुष्पदंत महावीराचार्य के परिवर्ती हैं।

26. डॉ. एस.के. जैन (Jain Inter College, Sasni, Aligarh), Siddhantachakravarti Nemichandra and his Mathematics and Geography"—इस आलेख में आ. नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती की कृतियों गोम्मटसार, जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड, त्रिलोकसार आदि ग्रंथों में उपलब्ध गणितीय और भूगोलीय सामग्री की चर्चा है।

27. प्रो. योशिमासा मिचिवाकी (Japan), "On Some Example for Mathematical Education in Japanese Mathematics"—एक ज्यामितीय समस्या विषयक भारतीय और जापानी साहित्य में उपलब्ध विवेचनों के साम्य की चर्चा की गई है।

28. प्रो. भागचंद्र 'भास्कर' (Rajsthan University, Jaipur), "Contribution of Jainas to Mathematics and Cosmology"—जैन परम्परा का गणित के क्षेत्र में अवदान का एक सामान्य सर्वेक्षण इस आलेख में प्रस्तुत किया गया है।

29. श्री पी.के. ठोलिया (Vardhman Bharati, Bangalore), "Cosmic Spiritual Telepathy—टेलीपेथी (Telepathy) की विस्मयकारी प्रवृत्ति की इस लेख में चर्चा की गई है।

30. प्रो. सुरेशचंद्र अग्रवाल (Meerut), "Mahaviracharya"—विश्वविख्यात जैन गणितज्ञ महावीराचार्य के व्यक्तित्व और कृतित्व की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत आलेख में की गई है।

31. डॉ. अनुपम जैन (Govt. Degree College, Biaora), "Ten Topics of Mathematical Discussion in Jainagamas"—जैन आगम ग्रंथों में उपलब्ध संख्यान (गणित) के प्रकारों अर्थात् गणितीय विषयों की सप्रमाण तर्कयुक्त विवेचना प्रस्तुत आलेख में की गई है।

उक्त समस्त आलेखों में अत्यन्त महत्वपूर्ण, मौलिक शोधपूर्ण विचार एवं ऐतिहासिक सामग्री तथ्यात्मक रूप से प्रस्तुत की गई तथा विद्वानों ने प्रश्नोत्तर के माध्यम से अपनी जिज्ञासाओं की तृप्ति की।

समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में भारत के तत्कालीन रक्षामंत्री एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हाराव, सांसद श्री जे.के. जैन-अलीगढ़, मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के कुलपति प्रो. ए.आर. किदवई की उपस्थिति उल्लेखनीय है। माननीय श्री पी.वी. नरसिंहाराव ने कहा कि हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों, जैन आचार्यों का गणित के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान है। शून्य एवं संख्याओं के रूप में भारत ने ऐसी चीज दी है, जिसकी मिसाल नहीं है।

पूज्य माताजी ने अपने समापन उद्बोधन में कहा कि गत तीन दिनों से यहाँ जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन चल रहा था। आज यह समापन के अंतिम चरण में है। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि इस छोटे स्थान पर भी हमें इतनी सफलता मिली है। इसका मुझे विश्वास नहीं था किन्तु हमें मिली। कई विद्वानों के सुझाव भी सामने आये। डॉ. हरीन्द्र भूषण जी ने कहा है कि जैसे ज्ञान ज्योति की अखण्ड स्थापना हुई वैसी यहाँ शोध केन्द्र की भी अखण्ड स्थापना होवे। उन्हें यह विदित ही है कि संस्थान का नाम ही शोध संस्थान है। अतः अखण्ड ज्योति की स्थापना तो उसी दिन हो गई थी, जिस दिन उसका नामकरण हो गया था। यह बात अलग है कि इस दिशा में हमारे मोतीचंद्र जी एवं रवीन्द्र कुमार जी कितना काम कर पाये हैं एवं हमारे कार्यकर्ता कितना सफल हो पाये हैं। जम्बूद्वीप का निर्माण, ज्ञान ज्योति का भ्रमण आदि ये ही कार्य विशेष रहने के कारण हम शैक्षिक दिशा में उतना जितना चाहते थे उतनी सफलता नहीं प्राप्त कर सके हैं, किन्तु मुझे प्रसन्नता है कि प्रतिवर्ष कुछ न कुछ आयोजन करके विद्वानों को एकत्र जरूरी करती रही। अब हमें थोड़े शब्दों में यह कहना है कि जैसे कि किदवई जी के बारे में मैं कहूँ मुस्लिम होकर भी आप हिन्दू, जैन लोगों के साथ जुड़कर, एक बनकर, अपनी भारतीय संस्कृति को कैसे ऊँचा उठायें, कैसे अपने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थों का विकास करें? यह सब मेरे सामने उन्होंने अपनी उत्कंठायें व्यक्त की। मैं समझती हूँ कि एक भारतीय के नाते उन्होंने बहुत सुन्दर भावनाएँ संजोयी हैं।

दूसरी बात जहाँ तक है मैं सभी का नाम नहीं लूँगी एवं इतना कहूँगी कि विद्वानों ने हमें सुझाव दिये हैं, आगे के लिए सभी विद्वानों से सुझाव आमंत्रित हैं। विद्वान विचार दें, विचार के साथ-साथ परिश्रमशील बनें और कुछ श्रमदान भी करें। सबसे बड़ी चीज जो उनसे हमें अपेक्षित है कि जैसे हमारे डॉ. अनुपम हैं, मेरी आन्तरिक इच्छा के अनुसार आज्ञा का पालन करके मेरी भावना के अनुरूप सेमिनार आयोजित करके मेरा मन प्रसन्न किया। यदि ऐसे ही आप बड़े-बड़े विद्वान समयदान/श्रमदान देना शुरू कर दें, तो जैसी भावनाएँ आप संजोये हुए हैं, उससे दस गुनी फलित होंगी। इसके साथ ही मैं श्रेष्ठियों से कहूँगी कि अभी श्रेष्ठी वर्ग बहुत है यदि वह सभी श्रेष्ठी वर्ग/श्रीमान वर्ग, शैक्षणिक विकास हेतु कल्पवृक्ष बन जायें, तो फिर देखिए भारतीय संस्कृति का मस्तक कितना ऊँचा उठेगा। श्रेष्ठीवर्ग कल्पवृक्ष बन जायें। खुला हाथ करें। यह संस्थाएँ उन्हीं के बल पर चल रही हैं। आप देख भी रहे हैं कितने थोड़े दिन में कितना काम हुआ है, इसका श्रेय किसको जायेगा-अथक परिश्रम करने वाले महारथी मोतीचन्द्र, रवीन्द्र कुमार एवं खुले मन से सहयोग देने वाली भारत की जैन समाज। आज उसी का प्रतिफल यह दिख रहा है। हर क्षेत्र के विकास में श्रम एवं धन दोनों जरूरी है।

आचार्य शांतिसागर जी महाराज गुरूणांगुरु थे। वे कहा करते थे कि विद्वान् हमारा दाहिना नेत्र एवं हाथ है। विद्वान का हम जितना भी सम्मान करें, कम है। यह जो सम्मान आज किया गया है वह तो मात्र औपचारिक है। विद्वान तो सरस्वती पुत्र हैं। मैं यह निश्चितरूप से कह सकती हूँ कि श्रेष्ठी तभी कुछ कर सकते हैं जब वे श्रीमान समाज सेवा के काम में उतर पड़ते हैं। आज कोई भी समाज का नेतृत्व कर सकता है किन्तु उसे त्याग तो करना ही होगा।

लोग मुझसे पूछते हैं कि जैन समाज इतना समृद्ध क्यों हैं। इस संदर्भ में मुझे कहना है कि उसने जीवन में सदाचार एवं त्याग को अपनाया है एवं इसी का यह फल है।

इस सेमिनार की सफलता हेतु सबको आशीर्वाद देते हुए इस विषय को यहीं यह कहकर समाप्त करती हूँ कि भविष्य में आप जैन गणित, त्रिलोक विज्ञान, अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत आदि विषयों पर ऐसे ही सेमिनार आयोजित करते रहें एवं रुचि लेते हुए दिन दूनी, रात चौगुनी अहिंसा धर्म, विश्व धर्म की प्रगति करें तथा अपने जीवन को सुखी एवं समृद्धशाली करें।

सेमिनार में अकादमिक महत्व के 5 प्रस्ताव सर्वानुमति से स्वीकृत किये गये। इन प्रस्ताव तथा सेमिनार में प्रस्तुत किये गये समस्त आलेखों को समाहित करते हुए International Seminar on Jaina Mathematics and Cosmology का प्रकाशन दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा 1991 में किया जा चुका है। फलतः हम विस्तार भय से इसका उल्लेख यहाँ नहीं कर रहे हैं। संक्षिप्ततः यह अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार अत्यन्त उपयोगी, बहुचर्चित, अकादमिक महत्व का तथा अत्यन्त सफल रहा।

इस सेमिनार के माध्यम से भारत ही नहीं अपितु विश्व के अन्य देशों में भी जैन गणित के अध्ययन को दिशा मिली और विगत 20 दशक में जैन गणित पर अनेक शोध प्रबंध तथा लगभग 100 शोधालेख देश की प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं, स्मारिकाओं एवं अभिनंदन ग्रंथों में प्रकाशित हुए हैं। पूज्य माताजी के नाम पर स्थापित गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोध पीठ की सक्रिय सहभागिता से सम्पन्न International Conference on History and Heritage of Mathematical Sciences, 16-19 Dec. 2004 में इसी कारण जैन गणित से संबद्ध 17 शोधपत्रों का वाचन हुआ। यह पूज्य माताजी की सम्यक् एवं प्रशस्त प्रेरणा का ही प्रतिफल है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"वास्तव में धरती पर चतुर्थकाल का ही दृश्य उपस्थित हुआ था"

(पूज्य माताजी की प्रेरणा से 4 अक्टूबर से 13 अक्टूबर 1997 तक राजधानी दिल्ली में शांतिवन के सामने बने विशाल पाण्डाल में आयोजित ऐतिहासिक "चौबीस कल्पद्रुम विधान" पर एक विशेष प्रस्तुति)

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

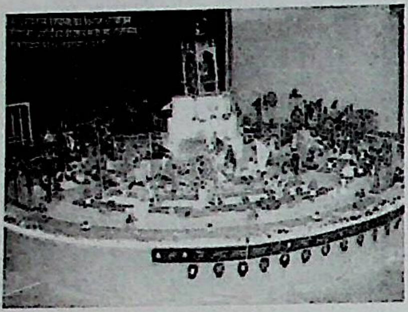

सच्चे समवसरणों की महिमा तो शास्त्रों में खूब पढ़ी और सुनी है कि साक्षात् तीर्थंकर भगवान को केवलज्ञान प्राप्त होने पर जब कुबेर द्वारा समवसरण की रचना की जाती थी, तो आकाश में अधर निर्मित दिव्य वैभव को देखने हेतु केवल देव-देवी ही नहीं जाते थे बल्कि धरती के मानव में भी आकाश तक पहुँचने की होड़ लग जाती थी और इसके लिए इन्द्र ने नीचे पृथ्वी से ऊपर समवसरण तक बीस हजार छोटी-छोटी सीढ़ियाँ बनाकर आबाल-वृद्ध तक को विशेष सुविधा प्रदान की थी।

वहाँ का सम्पूर्ण अतिशय करणानुयोग ग्रंथों से तथा महापुराण, हरिवंशपुराण आदि से जाना जा सकता है। जैसा कि हरिवंशपुराण में कथन आया है कि—

"जिस मार्ग से भगवान का श्रीविहार हो जाता है वह मार्ग अपने चिन्हों से एक वर्ष तक यह प्रगट करता था कि यहाँ भगवान का विहार हुआ है तथा रत्नवृष्टि से वह मार्ग ऐसा सुशोभित होता था, जैसे नक्षत्रों के समूह से ऐरावत हाथी सुशोभित होता है। भगवान् से अनुगृहीत भूमि में दो सौ योजन तक विप्लव आदि नहीं होते थे तथा पचास वर्ष तक उस भूमि में कोई भी उपद्रव आदि नहीं होते थे। यह भगवान की महान् महिमा ही समझनी चाहिए।"

अब प्रश्न यह उठता है कि आज इस पंचमकाल में न तो साक्षात् तीर्थंकर भगवान् हैं और न ही उनका समवसरण है, तो ऐसे चमत्कार कैसे उत्पन्न हो सकते हैं? इस सत्यता को कभी नकारा नहीं जा सकता है किन्तु आपको जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि उन तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाओं में भी पंचकल्याणक संस्कारपूर्वक वैसी ही शक्ति प्रगट हो जाती है, जिससे श्रद्धालु भक्तों को साक्षात् जिनेन्द्र भक्ति के समान ही सातिशय पुण्यफल प्राप्त होता है।

दिल्ली में आयोजित कल्पद्रुम विधान में कुछ ऐसा ही चमत्कार देखने को मिला, जिससे शास्त्रवर्णित चतुर्थकाल साकार होने लगा और ऐसा प्रतिभास हुआ कि स्वर्ग के इन्द्रों ने प्रत्यक्षरूप दिखाकर न सही किन्तु परोक्ष से अवश्य भगवान के समवसरण बनाने में सहयोग प्रदान किया है, तभी तो वहाँ सुबह से शाम तक सारा कार्य ऑटोमेटिक मशीन की भाँति चला तथा हर्षातिरेक में डूबे नर-नारी अपने सभी शारीरिक-मानसिक दुःख भूलकर केवल प्रभुभक्ति में ही मगन थे।

जिस बात का भय था वह पूर्ण शांति के साथ सम्पन्न हुआ—

जब 4 अक्टूबर 1997 को कल्पद्रुम मंडप में तीन हजार नर-नारी कल्पद्रुम प्रिंट के स्पेशल वस्त्र पहनकर प्रविष्ट हुए, तो एक बार आयोजन समिति के वरिष्ठ कार्यकर्तागण बहुत प्रसन्न हुए किन्तु फिर घबड़ाकर कहने लगे कि सबकी बैठक व्यवस्था कैसे हो पाएगी? सभी तो आगे बैठना चाहते हैं, जो कि संभव नहीं है, तो हर व्यक्ति को भला संतुष्ट कैसे किया जा सकेगा? इतने में मंच से मैंने एवं क्षुल्लक मोतीसागर जी ने सकलीकरण विधि, यज्ञदीक्षा आदि क्रियाओं को सम्पन्न कराने हेतु समस्त चक्रवर्ती एवं राजाओं को परिवार सहित बैठने की घोषणा की और नीचे रवीन्द्र कुमार जी (अध्यक्ष) एवं रमेशचंद्र जी (पी.एस. जैन मोटर्स) की सूझबूझ के अनुसार चौबीसों समवसरणों के सामने लगाई गई बेंचों के पास कई विद्वानगण भी पहुँच गए और प्रत्येक मण्डल के प्रमुख संयोजकों के निर्देशानुसार सभी नर-नारी अपने क्रम से इस प्रकार शांतिपूर्वक बैठ गए जैसे सबको स्वइच्छित स्थान ही मिल गया हो। पुनः 15-20 मिनट में ही सम्पूर्ण व्यवस्था साक्षात् समवसरण सदृश ही बन गई। जैसे भगवान के समवसरण में असंख्यातों प्राणी एक-दूसरे को धक्का-मुक्की किये बिना बैठकर प्रभु की दिव्यध्वनि का रसास्वादन प्राप्त किया करते थे, उसी प्रकार इन कृत्रिम समवसरणों में भी समस्त नर-नारी संतुष्ट होकर बैठ गए और विधान का सारा कार्य पूर्ण विधि के साथ प्रारंभ हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीचोंबीच में बने मंच से दोनों ओर लगभग डेढ़-डेढ़ सौ फुट दूर बैठे हुए स्त्री-पुरुषों ने भी अपने समीप लगे माइक हार्न से मेरी आवाज को सुनकर एवं मंच की ओर अपनी दृष्टि केन्द्रित करके सारी क्रियाएँ सम्पन्न कर लीं।

प्रथम दिन की पूजा समाप्त होने के पश्चात् रमेशचंद्र जी आकर मुझसे कहने लगे कि-माताजी! आज मुझे जिस बात का डर लग रहा था कि इतने सारे लोगों में कहीं बैठने आदि का विषय लेकर झगड़ा न हो जाए? इतनी भीड़ का एक साथ सकलीकरण कैसे हो पाएगा? लेकिन आपने इतनी शांति और गंभीरतापूर्वक सब कुछ करवा दिया, जिसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी।

मैंने उनसे कहा-भाई! जहाँ एक साथ चौबीस समवसरण रचे हों, जहाँ पूज्य ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद एवं मंत्रशक्ति साथ हो तथा आप जैसे कार्यकर्ताओं की व्यवस्था हो, वहाँ किसी अशान्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

उस दिन जो व्यक्ति जहाँ बैठ गया, वह व्यक्ति प्रतिदिन विधान के अंतिम दिवस तक वहीं बैठकर पूर्ण सुख-शांति में डूबकर जिनेन्द्रभक्ति एवं गुरु उपदेश का लाभ उठाकर मानव जीवन को धन्य करता रहा।

चौबीस समवसरणों की रचना का प्रारूप कैसे तैयार हुआ?

पूज्य माताजी के प्रेरणामयी आदेश के पश्चात् हमारी अंतरिम बैठकें प्रारंभ हुईं कि इस महाआयोजन को सफल करने के लिए दिल्ली का कौन सा और कितना बड़ा स्थल चयन किया जाय? उन दिनों मार्च-अप्रैल 1997 में हम लोग दिल्ली की जमुनापार कॉलोनियों में भ्रमण कर रहे थे, सो कुछ लोगों से विचार-विमर्श करने पर ज्ञात हुआ कि यहाँ एक बहुत बड़ा सी.बी.डी. (सेन्ट्रल बिजनेस डिस्ट्रिक्ट) नामक मैदान है, उसमें आपका सारा आयोजन विशालता के साथ सम्पन्न हो सकता है।

लगभग दो माह के ऊहापोह में आयोजन समिति ने सी.बी.डी. ग्राउन्ड का स्थान लगभग निर्णीत कर लिया और उसी का प्रचार-प्रसार भी किया जाने लगा। समिति के इस निर्णय पर विशेषरूप से ऋषभविहार बाहुबली एन्क्लेव, सूरजमल विहार आदि नूतन साफ-सुथरी कॉलोनियों में खुशी की लहर दौड़ गई और वहाँ के लोग सोचने लगे कि इस महाआयोजन के निमित्त से पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी के ससंघ चातुर्मास का लाभ हम लोगों को अनायास ही मिल जाएगा जो कि अनेक पुरुषार्थों से भी दुर्लभ रहता है। चूँकि सी.बी.डी. ग्राउन्ड इन कॉलोनियों के बिल्कुल निकट है।

इसी मध्य सूरजमल विहार कॉलोनी के श्रावकों ने तो माताजी एवं संघ के समक्ष यहाँ तक आश्वासन दे डाला कि यदि इस सी.बी.डी. मैदान में यह आयोजन होता है, तो हम लोग अपनी कॉलोनी की अनेक स्कूल, कोठियाँ (लोगों को ठहराने हेतु) खाली करवा देंगे तथा प्रत्येक घर में आपके विशेष लोगों के ठहराने के लिए हम 1-2 कमरे भी खाली कर देंगे, जिसमें आगत अतिथियों को पूरी सुविधाएँ प्राप्त होंगी।

इस प्रकार से शायद उन सबकी भावनानुसार ही जमुनापार का वह सी.बी.डी. ग्राउन्ड आयोजन समिति ने लगभग फाइनल ही कर लिया था पुनः 27 मई 1997 को हम लोग प्रीतविहार कालोनी में 'कमल मंदिर' की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में सानिध्य प्रदान करने हेतु पहुँचे थे, वहाँ शालीमार बाग, अशोक विहार, राजपुर रोड, चाँदनी चौक आदि स्थानों से अनेक सम्भ्रान्त सामाजिक नेता अपने-अपने यहाँ पधारने हेतु माताजी को श्रीफल चढ़ाने आए तब इस विशाल आयोजन की चर्चा छिड़ते ही वे लोग निवेदन करने लगे कि—

'माताजी! यह आयोजन यदि दिल्ली के किसी केन्द्रीय स्थल पर किया जावे, तो पूरी दिल्ली की जनता वहाँ पहुँचकर लाभ लेगी अन्यथा वह जमुनापार कॉलोनी का कार्यक्रम ही हो जावेगा।"

समाज के वरिष्ठ लोगों की यह बात सुनकर पूज्य माताजी व हम लोगों ने आयोजन समिति के सक्रिय संरक्षक रमेशचंद्र जैन (पी.एस. मोटर्स) राजपुर रोड, दिल्ली वालों के साथ परामर्श किया, तो उन्होंने भी यही बात दुहराई। उसके पश्चात् ब्र. रवीन्द्र कुमार जी (अध्यक्ष), कैलाशचंद जैन-करोलबाग (महामंत्री) और रमेशचंद्र जी इन तीनों महानुभावों ने कतिपय सर्वेक्षण करने के बाद निर्णय किया कि दरियागंज-दिल्ली के रिंगरोड पर शांतिवन के सामने वाले विशाल मैदान में यह विराट आयोजन सम्पन्न होगा। फिर तो वहाँ की तैयारियों की कार्यवाही शुरू हुई। महामंत्री जी ने लगभग दो महीने तक लगातार नीचे से ऊपर तक सभी सरकारी दफ्तरों में जा-जाकर लिखित आदेश पत्र प्राप्त किया पुनः उसके पश्चात् ही पोस्टर-अखबार आदि में प्रचार कार्य प्रारंभ किया गया।

मैदान की इस बुकिंग मेंअधिक समय इसलिए लगा कि सरकारी आदेशानुसार यह स्थान किसी को 8 दिन से ज्यादा नहीं दिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाता था किन्तु कल्पद्रुम विधान के आयोजन हेतु समिति को 1 माह का समय चाहिए था, क्योंकि 20 दिन में विशाल पाण्डाल का निर्माण कराना और फिर 10 दिन तक उसमें विधान का कार्यक्रम सम्पन्न करना उनका लक्ष्य था। बीच में कुछ चिन्ताजनक स्थितियाँ ऐसी भी आईं जिनमें महसूस होने लगा कि शायद यह मैदान नहीं मिल पाएगा, अत: दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय बस अड्डे के निकट, शालीमार के निकट, कुदसिया पार्क तथा राजपुर रोड आदि के अनेक स्थान भी देखे गये किन्तु कहीं स्थान छोटा, कहीं असुरक्षा एवं कहीं अन्य दूसरी समस्याएँ उपस्थित हुईं, तो एक दिन कैलाशचंद्र जी (महामंत्री) कहने लगे कि माताजी! आप तारीखें कुछ आगे-पीछे कर दें, तो सामने लालकिला मैदान में ही लोग आराम से यह महायज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं क्योंकि अक्टूबर की इन तारीखों में लगभग सभी स्थान 'रामलीला' के लिए बुक हैं।

पूज्य माताजी ने हम लोगों के साथ विचार-विमर्श किया तो निकला कि प्रथम बात तो इन तारीखों में स्कूलों की छुट्टियों के कारण स्त्री-पुरुष-बच्चे सभी इस पाठ में सुविधापूर्वक बैठ सकते हैं, दूसरी बात लालकिला मैदान के आस-पास काफी भीड़-भाड़, गाड़ियों की आवाज, धूँ-धाय की भीषण आवाजों के कारण विधान में अपूर्व शांति की प्राप्ति नहीं हो पाएगी अत: विधान के लिए तो शहर से कुछ दूर का स्थान ही समुचित रहेगा। इन सभी दृष्टियों से रिंगरोड का मैदान बिल्कुल अनुकूल बैठता था कि केन्द्र स्थल भी और शहर के प्रदूषण से दूर भी था वह स्थल।

भगवान् की सच्ची भक्ति से किये जाने वाले बड़े-बड़े धार्मिक कार्यों में कतिपय अन्तराय आने के पश्चात् भी सफलता तो साधक के चरण चूमती ही है और यही हुआ इस आयोजन के साथ भी, जब चिन्तन के साथ-साथ कुछ चिंता भी चल रही थी। इसी बीच में रवीन्द्र जी ने आकर बताया कि माताजी! 4 अक्टूबर से 16 अक्टूबर तक तो वह मैदान मिलने की स्वीकृति मिल गई है किन्तु 2 अक्टूबर को उसके सामने राजघाट पर बनी "गाँधी समाधि" पर गांधी जयंती के कारण राजनेतागण फूल चढ़ाने आते हैं अत: उसके आस-पास का पूरा परिसर पुलिस के संरक्षण में रहेगा, वे लोग हमें पांडाल नहीं बनाने देंगे और उसके पहले से हमें स्थान मिलने की अभी स्वीकृति नहीं प्राप्त हो सकी है। माताजी कहने लगीं-घबड़ाओ मत, सब ठीक होगा। तुम दो अक्टूबर को बनता हुआ पाण्डाल उसी पुलिस के हवाले कर देना, एक अहिंसक समारोहरूपी सूर्य की उगती किरणों का प्रभाव निश्चित ही समस्त सरकारी अफसरों के मन पर पड़ेगा और तुम्हें वह मैदान जितने दिन के लिए आवश्यकता है मिलेगा। आज मैंने प्रात: दरियागंज के बाल आश्रम और महिला आश्रम के जिनमंदिरों के दर्शन को जाते समय उस मैदान पर दृष्टि डाली थी, वह पूरी तरह से आयोजन के योग्य है। उनकी बात पूरी तरह से खरी उतरी और संयोग से उसी दिन महाराष्ट्र के निवासी और लोकसभा-दिल्ली के एम.पी. श्री कल्लप्पा जी जैन अवाड़े पूज्य माताजी के दर्शनार्थ कम्मोजी की धर्मशाला में पधारे, धार्मिक चर्चा के साथ-साथ कल्पद्रुम आयोजन की बात चली, तो रवीन्द्र जी की समस्या उन्होंने बात ही बात में हल कर दी तथा स्वयं भी उसमें पूरा सहयोग देने का आश्वासन प्रदान किया। पुन: श्री डी.टी. वार्डे (पुलिस उपायुक्त) एवं सांसद वीरेन्द्र कुमार जैन ने भी अपना सक्रिय योगदान दिया और 12 सितम्बर 1997 (सुगंध दशमी) के शुभ मुहूर्त में पाण्डाल का निर्माणकार्य शुरू हो गया। इस बीच में दिनाँक 1 और 2 अक्टूबर को पाण्डाल का निर्माण बंद करके सरकारी सुरक्षादल को सौंप दिया गया पुन: 2 अक्टूबर की सायंकाल से लेकर 4 अक्टूबर की प्रात: बेला तक वह विशाल पाण्डाल "कल्पद्रुम मण्डप" में परिवर्तित हो गया।

जब जनमानस का सैलाब मण्डप की ओर उमड़ा आ रहा था—

अब चिर प्रतीक्षित 4 अक्टूबर (आश्विन शु. 3) का पवित्र क्षण आ गया, जब हमारी कई महीनों की मेहनत रंग दिखाने के नजदीक थी। पूज्य माताजी व हम सभी संघ को ठहराने के लिए कार्यकर्ताओं ने उसी कल्पद्रुम मण्डप के अंदर टीन के कमरे बनाये थे, चूँकि हम लोगों की इच्छा भी यही थी कि पूरा कल्पद्रुम विधान हम अपनी आँखों से देखें, मुँह से पढ़ें, कानों से सुनें और भक्ति में विभोर होकर अपनी आत्मा और काया को पवित्र करें।

प्रात:काल 7 बजे जब हम लोग धर्मशाला से रिंगरोड की ओर चले तो जहाँ हमारे मनों में केशरिया भाव लहरा रहे थे, वहीं पूरे रास्ते में स्त्री-पुरुषों को स्पेशल केशरिया परिधानों में उधर की ओर ही भागते देखकर हर्ष से मन फूला नहीं समा रहा था। कोई अपनी कारों से, कोई समिति द्वारा लगाई गई बसों से और कुछ लोग पैदल ही चले जा रहे थे। जब पाण्डाल में पहुँचकर तीन हजार से भी अधिक स्त्री-पुरुषों को पूजन के स्थान पर देखा गया, तो अपनी ही आँखों पर जैसे विश्वास नहीं हो रहा था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौबीस समवसरणों का नक्शा देखकर लोग दंग रह गये—

रिंग रोड के मैदान में कहाँ क्या कार्यक्रम होंगे, इसका पूरा नक्शा दिल्ली के आर्कीटेक्ट पंकज जैन से बनवाया गया और वास्तुशास्त्र के अनुसार यह तय हुआ कि परिसर के आग्नेय कोण में समस्त भक्तों की भोजन व्यवस्था रहेगी, पूर्व में प्रदर्शनी और दुकानों का स्थान तय हुआ, उत्तरी भाग में सामग्री धोने एवं कपड़े बदलने की व्यवस्था रखी गई, दक्षिण भाग में गाड़ी-बसें रुकने के लिए स्थान चयन किया गया तथा बीच के तीन सौ फुट परिसर में समवसरणों की रचना करने का निर्णय लिया गया। जैसे-जैसे विधान की तारीखें नजदीक आ रही थीं, वैसे-वैसे जिन लोगों ने अपनी ओर से विधानों की स्वीकृति प्रदान की थी, वे आकुलतापूर्वक हम लोगों से पूछने लगे कि माताजी! हमारा मंडल (समवसरण) किस जगह रहेगा? हम तो आपके मंच के पास ही बैठेंगे, हमें ज्यादा दूर किसी किनारे पर मत भेज देना...........इत्यादि चर्चाएं सुन-सुनकर हम परेशान होते थे कि कैसे इस प्रकार का नक्शा बनाया जाय जिससे किसी को असंतोष न हो। अनेक अंतरिम बैठकों में तरह-तरह से प्रारूप खींचा जाता था। कभी गोलाकार रूप से चौबीसों समवसरण बनाये जाते और कभी एक लाइन में ऋषभदेव से महावीर तक लम्बा आकार खींचा जाता किन्तु कोई न कोई अव्यवस्था उन सबमें नजर आती थी फिर एक दिन पूज्य माताजी ने कागज पर खींच कर बताया कि देखो! बीचों बीच में भगवान ऋषभदेव का समवसरण बनाओ पुनः उसके बाजू (दाहिनी ओर) से किनारे तक 5 मंडल ले जाओ और उसी क्रम को घुमाते हुए पीछे भी छह मंडल बनाओ, इसी तरह से पूरा क्रम घुमाते हुए ऋषभदेव मण्डल के बाईं ओर पीछे-आगे छह-छह समवसरण बनें तो पूजा करने वाले अधिक दूर भी नहीं जाएंगे और व्यवस्था भी ठीक हो जायेगी। यह नक्शा सभी को जंच गया पुनः मध्यवर्ती भगवान् ऋषभदेव के समवसरण के बाईं ओर साधु एवं विद्वानों का एक मंच और जोड़कर पूरा प्रारूप निर्णीत किया गया। अतः पाण्डाल निर्मित होते ही 28 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक मात्र 4 दिनों में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के कारीगरों ने सारे मंडलों की लकड़ी का ढाँचा बना दिया, जिसमें ऋषभदेव का समवसरण 16-16 फुट का गोलाकार एवं 4 फुट ऊँचा बना तथा शेष 3 फुट ऊँचे, 12 फुट गोलाकार परिधि वाले बनाए गये। उनके ऊपर सुन्दर गोलाकार केशरिया चन्दोए जहाँ चारचाँद लगा रहे थे, वहीं विधान के निमित्त से बनाई गई एक सदृश गंधकुटी-वेदी की रजत कलाकारी ने जन-जन का मन आकर्षित कर लिया था। सभी अपने को देव-शास्त्र-गुरु के सम्मुख ही बैठा अनुभव करने लगे।

समवसरण के अतिशय से एक भी जन्तु नहीं दिखा—

दिल्ली के प्राचीन गुरुभक्त वयोवृद्ध श्रावक श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन कम्मोजी ने जब सुना कि माताजी कल्पद्रुम के पांडाल में ही विधान पर्यंत रहेंगी, तो एक दिन आकर निवेदन करने लगे कि माताजी! मैं आपको पांडाल में किसी भी कीमत पर नहीं रहने दूँगा, आप दरियागंज के महिलाश्रम, बालाश्रम या वहाँ पास के स्कूल आदि में ठहरें और रोज विधान में पधारकर अपना सानिध्य प्रदान कर दें। बाबूजी की इस बात पर हम लोग हँसने लगे एवं मैंने उनसे कहा कि आप चिंता न करें, आपकी माताजी को कोई तकलीफ नहीं दी जाएगी। किन्तु फिर वे बोल पड़े कि माताजी! आप मेरी बात समझा करें, उस वीरान भूमि में साँप-बिच्छू आदि जन्तु होंगे, उनसे कभी किसी को जरा भी खतरा हो गया तो क्या होगा? उनके अत्यधिक आग्रह पर माताजी ने कह दिया कि ठीक है, वहाँ पहुँचने पर देख लेंगे, दिन भर तो पाण्डाल में रहना ही है फिर शाम को स्कूल में जाकर रात्रि विश्राम वहाँ कर सकते हैं।

लेकिन आश्चर्य ही नहीं इसे चमत्कार ही कहना पड़ेगा कि उस वीरान भूमि में तो अब मण्डप बनते ही स्वर्ग जैसा आनन्द प्राप्त हो रहा था। न कोई साँप दिखा न बिच्छू बल्कि माताजी के कमरे के बगल में सामग्री धोने के लिए ठहरे पुजारियों द्वारा 1 बजे रात से शोरगुल बचाए जाने पर माताजी ने कभी कष्ट का अनुभव नहीं किया। नींद चाहे आती या नहीं आती, उन्हें सदैव स्वस्थता का ही आभास होता। वास्तविक समवसरण के समान ही जैसे वहाँ ईति-भीति-संकट-रोग आदि का नामोनिशान भी नहीं रह गया था, तभी तो हम लोगों में भी खूब परिश्रम करके भी प्रतिक्षण नवीन उत्साह, नई स्फूर्ति और नया जोश उत्पन्न होता रहता था।

विधान में भारी भीड़ के बावजूद भी किसी के एक पैसे की चोरी आदि का कोई समाचार नहीं प्राप्त हुआ, यह भी समवसरण का ही प्रभाव मानना पड़ेगा। विधान के अंतिम दिन तो जैसे कमाल ही हो गया, जब चक्रवर्ती जी की पट्टरानी का लाखों रुपये का जेवर एवं अनेक चाबियों का गुच्छा मण्डप के प्रमुख द्वार पर ज्यों का त्यों मिल गया जबकि उस जगह से हजारों लोग आए और गये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेकिन समवसरण की अतिशायी लक्ष्मी के समक्ष जैसे प्रत्येक प्राणी इतना तृप्त हो चुका था कि किसी की गिरी-पड़ी चीज की ओर दृष्टि डालना ही सबने महापाप समझ लिया था। अपनी सारी चीजें पाकर वे बहनजी खुश तो हुईं ही, साथ में प्रभु भक्ति का साक्षात् फल भी लोगों को बताने लगीं।

वस्त्र लेने की रेलमपेल का दृश्य भी दर्शनीय था—

कम्मोजी की धर्मशाला में 25 सितम्बर 1997 से स्त्री-पुरुषों के लिए पूजन के वस्त्र वितरण की व्यवस्था की गई थी। इसमें महिलाओं की केशरिया साड़ी इस बार कल्पवृक्ष की कुछ विशेष डिजाइन में बनवाई गई थी किन्तु संख्या संभावित सोचकर साड़ियाँ अभी 1500 ही बनीं थीं और पुरुषों के लिए गुजरात से स्पेशल धोती-दुपट्टों के जोड़ मंगाए गये थे। वस्त्र वितरण के प्रथम दिन ही लेने वालों की इतनी भीड़ हो गई कि शाम तक प्रबंधक नवयुवक थक गए और अगले दिन तो साड़ियाँ खतम होने पर बड़ी मारामारी मच गई, तब किसी तरह सबको यह समझाकर शान्त किया गया कि 30 सितम्बर को साड़ियों का दुबारा वितरण होगा। इसके बाद तुरंत नई साड़ियाँ बनने का आर्डर हुआ और 1-2 अक्टूबर तक बराबर वस्त्रों का वितरण चलता ही रहा। पाठ में निःशुल्क बैठने वालों को भी वस्त्र, मुकुट, माला, बस व्यवस्था, पूजन सामग्री, भोजन आदि सभी व्यवस्थाएँ सबके समान ही प्रदान की गईं, जो आयोजकों की उदारता एवं चक्रवर्तियों के किमिच्छक दान का परिचायक था।

''दिल्ली भक्ति नगरी है'' यह पूरे देश को भी ज्ञात हो गया—

जब से विधान की बात चली तब से अनेक सम्भ्रान्त लोगों से यह सुनने में आता था कि माताजी ! दिल्ली के लोग बहुत व्यस्त रहते हैं, वे दस दिन तक बंधन में रहकर पाठ में कैसे बैठ पाएंगे? लेकिन कल्पद्रुम की महिमा का बखान सुनते ही लोगों में जो भाव उमड़े उनमें समाज का उद्योगपति, पूंजीपति, व्यापारी, सरकारी नौकरी वाले, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, ऑफिसर आदि समस्त वर्गों में कोई भी ऐसा नहीं था, जिसने भक्ति न की हो। दिल्ली के इस भक्तिदृश्य की गूंज सारे देश में इस तरह गुंजायमान हो गई कि सभी कहने लगे कि दिल्ली राजधानी वास्तव में ''भक्ति नगरी'' है। वहाँ के भक्तों की भक्ति सम्पूर्ण राष्ट्र को मंगलमय जीवन प्रदान करे, यही भगवान जिनेन्द्र से प्रार्थना है।

महिला संगठनों का अपूर्व योगदान—

''अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन'' नाम की संस्था हमारे दिगम्बर जैन समाज की एक मात्र वह सशक्त संस्था है, जो नारी उद्धार, दहेज उन्मूलन, बाल संस्कार, सामाजिक चेतना आदि कार्यकलापों की ओर सक्रियतापूर्वक अग्रसर हैं। सारे देश में उसकी सैकड़ों शाखाएँ कार्यरत हैं, उसी शृँखला में पूज्य माताजी द्वारा स्थापित दिल्ली की लगभग 25 इकाई समितियों ने कल्पद्रुम मण्डल विधान में अपूर्व योगदान देकर समिति को जो सहयोग प्रदान किया है वह निश्चित ही अविस्मरणीय रहेगा।

दशलक्षण पर्व के पश्चात् जनता के भक्तिजोश से पूर्वानुमान हो गया था—

सन् 1997 का चातुर्मास पूज्य माताजी ने कम्मोजी, चक्रेश जैन (बिजली वाले) एवं अग्रवाल दि. जैन पंचायत, मुनि संघ व्यवस्था कमेटी के विशेष आग्रह पर दिगम्बर जैन लालमंदिर चाँदनी-चौक में स्थापित किया और दिगम्बर जैन अतिथि भवन (कम्मो जी की धर्मशाला) में संघ का वास्तव्य रहा अतः विधान समिति का कार्यालय भी वहीं था, सभी क्रियाकलाप वहीं से संचालित होते थे। दशलक्षण पर्व से पूर्व दिल्ली की कॉलोनियों में पत्र भेजे गये थे कि अपनी-अपनी कालोनी से विधान में बैठने वालों की संख्या सूचित करें ताकि उसी के परिणामनुसार बसों की व्यवस्था की जायेगी। पुनः 18 सितम्बर को शाह ऑडिटोरियम राजपुर रोड में माताजी जैनधर्म के चारों सम्प्रदाय की सामूहिक क्षमावणी सभा को अपना सानिध्य प्रदान करने गई थीं, वहीं लाला श्रीपाल जैन (मोटर वालों) के आवास स्थल पर एक बैठक का आयोजन रखा गया, जिसमें लगभग 500 स्त्री-पुरुषों ने पधारकर जब अपनी-अपनी कॉलोनी की रिपोर्ट बतलाना शुरू किया, तो सभी के मन हर्ष से प्रफुल्लित हो उठे।

हम सभी जो केवल 1 हजार की संख्या का अनुमान लगाए बैठे थे, सो अब दो हजार से अधिक व्यक्तियों के बैठने का समाचार जानकर व्यवस्थाओं पर विचार करने लगे पुनः अगले दिन रमेशचंद्र जी की कोठी पर संघ का विश्राम रहा, वहाँ अनेक विभागीय बैठकें करके अलग-अलग संयोजक बनाये गये और कार्य को द्रुतगति प्रदान की गई। उसके बाद तो जैसे भक्ति की लौ एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से दूसरे में प्रज्ज्वलित होती गई और विधान प्रारंभ होने तक पूजन करने वाले भक्तों की संख्या 3 हजार से भी अधिक पहुँच गई।

पूजन सामग्री बिना मांगे मिलती थी—

हजारों लोगों को पूजन के आठों द्रव्य समय पर पहुँचना भी एक समस्या थी। चावल-बादाम, जल-चंदन, दीप-धूप आदि समस्त सामग्री प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए आयोजकों ने 48 पुजारी बुलाये थे, जो सामग्री धोने के साथ-साथ उसे वितरित भी करते थे। एक-एक मण्डल के समक्ष बैठने वाले सभी राजा-रानियों को कभी कोई सामग्री मांगनी नहीं पड़ी क्योंकि 2-2 पुजारी बड़ी कुशलता के साथ हर एक समवसरण के लोगों तक द्रव्य बिना मांगे ही पहुँचाते थे।

पूजन के पश्चात् प्रत्येक नर-नारी यही कहता पाया गया कि यहाँ जैसी सुव्यवस्था हमने कहीं नहीं देखी। कई जगह हम लोग पाठ में बैठते हैं किन्तु बार-बार मांगने पर भी ठीक से सामग्री नहीं मिलती है और यहाँ तो चाहे जितना चढ़ाते जाओ फिर भी मिलता ही जाता है। यह सब समवसरण का ही प्रभाव था कि अक्षय निधि के समान सबने खूब सामग्री चढ़ाई फिर भी बाद में बच गई।

माली भी तो कम नहीं थे—

हमारी जैन समाज में पूजा-विधानों में चढ़ाई गई सामग्री को मंदिरों के मालियों को ही देने की प्राचीन परम्परा है क्योंकि वह निर्माल्य द्रव्य के रूप में है, उसे विक्रय आदि करके किसी मंदिर के कार्य में भी खर्च नहीं किया जा सकता है। इन चौबीस विधानों में लगभग 10-12 लाख रुपये की सामग्री में नारियल, गोला, बादाम, चावल, केशर आदि चढ़ाई गई, जिसको लेने हेतु 48 माली रखे गये। इनमें से 2-2 माली एक-एक मण्डल के समक्ष का सारा कार्य भी करते थे और सामग्री भी लेते थे।

इन मालियों के कार्य से भी सभी प्रसन्न रहे क्योंकि समय से पूर्व वे लोग जगह की सफाई करके चटाई, चौकी आदि लगा देते थे, जिससे सब अपने निर्धारित क्रम से बैठकर निराकुलता से पूजन करते थे। कभी किसी को अपने हाथ से चटाई-चौकी न तो लगानी पड़ी और न उठानी पड़ी।

सदावर्त की तरह प्रतिदिन सुबह से शाम तक भोजन चला—

विधान में भोजन की व्यवस्था तीन प्रकार से की गई—1. पूजा करने वालों के लिए शुद्ध भोजन 2. जनरल भोजनालय 3. प्रतिमाधारी व्रतियों के लिए पूर्ण शुद्धि सहित भोजन बिल्कुल अलग बनता था।

इनमें प्रातः 8 बजे से शाम 5 बजे तक अखण्ड भोजन व्यवस्था चलती थी, जिससे कभी किसी को इंतजार नहीं करना पड़ता था तथा आगन्तुक प्रत्येक व्यक्ति उस सदावर्त में कुछ न कुछ प्रसाद लेकर ही जाता था।

सौधर्म इन्द्र और कुबेर के आगमन पर जनता झूम उठती थी—

इस पूजन में सौधर्म इन्द्र और कुबेर का कुछ विशेष ही आकर्षण महसूस किया गया। चक्रवर्ती राजाओं के द्वारा की जाने वाली कल्पद्रुम पूजा का माहात्म्य सुनकर मानों स्वर्ग में भी चर्चा होने लगी हो, सो उसके प्रतीक में प्रतिदिन एक सौधर्म इन्द्र और एक कुबेर का चयन किया गया, जो ऐरावत हाथी पर बैठकर ठाट-बाट से जुलूसपूर्वक सभामण्डप में प्रवेश करते थे। उनका आगमन होते ही सारी जनता की दृष्टि मंच की ओर केन्द्रित हो जाती थी और अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर सभी नर-नारी भक्ति नृत्य के लिए थिरकने लगते थे। इन्द्र आकर बड़ी भक्ति से जब अपने देवपरिवार के साथ भगवान् ऋषभदेव के समवसरण के समक्ष रजत श्रीफल चढ़ाता था, उस समय संगीत लहरी के साथ लोग बोलने लगते थे-"इन्द्र आया प्रभु द्वारे छुम छन नन न"।

इसी प्रकार धनकुबेर के रूप में जो महानुभाव रत्नथाल लेकर मंच तक आते थे, उनके साथ तो बालक-वृद्ध सभी अपनी धर्यैसीमा तोड़कर दिव्यरत्नों को लेने हेतु दौड़ पड़ते थे। सर्वप्रथम कुबेर आकर समवसरण में रत्न चढ़ाता पुनः सभी को बाँटता था और काफी देर तक प्रभुभक्ति में झूम-झूमकर नृत्य करता था। ये दोनों भक्ति दृश्य कल्पद्रुम विधान में चार-चाँद लगा रहे थे। कितने ही भक्तों ने इसमें सच्चे मोती-मूंगे-माणिक आदि रत्न भी बाँटे जो लौकिक मूल्य के साथ-साथ अमूल्य-अलौकिक रत्न बन गये थे।

सभी को स्फटिक मालाएँ प्रदान की गईं—

विधान के मूल मंत्र के जाप्यानुष्ठान विधि में एक करोड़ एक लाख एक सौ ग्यारह मंत्रों का संकल्प कराया गया था, सो उसकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाप करने हेतु प्रियदर्शनी बिहार-दिल्ली के श्रावक हंसराज संजय कुमार जैन ने असली स्फटिक मणि की मालाएँ वितरित कर पुण्यलाभ प्राप्त किया।

किमिच्छक दान के प्रतीक में चार दान दिये जाते थे—

इस कलिकाल में असली चक्रवर्ती के अभाव में किमिच्छक दान का वितरण भी असंभव है अतः पूज्य माताजी की प्रेरणा से आज के स्थापना निक्षेप वाले चक्रवर्तियों ने जहाँ कृत्रिम समवसरणों की रचनाकर उनकी पूजा की थी, वहीं प्रतिदिन सहधर्मियों को भोजनदान, औषधिदान, ज्ञानदान, अभयदान ये चार दान भी वितरित होते थे।

इनमें से औषधिदान के प्रतीक में पूरे कल्पद्रुम विधान के आयोजन तक "आचार्य नमिसागर औषधालय" कूचासेठ-दिल्ली एवं मॉडल टाउन-दिल्ली की ओर से रोगियों का निःशुल्क इलाज हुआ। इसी प्रकार जहाँ प्रत्येक नर-नारी के लिए प्रतिदिन भोजन व्यवस्था वहाँ उपलब्ध थी, वहीं 5 अक्टूबर रविवार को डॉ. डी.सी. जैन के नेतृत्व में एक विशाल "अहिंसा रैली" में आए हुए हजारों बालकों को भोजन के पैकेट भी प्रदान किए गए।

ज्ञानदान में अनेक महानुभावों ने अपनी-अपनी ओर से अनेक धार्मिक एवं अहिंसक कथानकों की पुस्तकें वितरित की थीं, इस अवसर पर चाँदनी चौक-दिल्ली के श्रावक घनश्याम जैन ने णमोकार मंत्र, सम्मेदशिखर, ऋषभदेव आदि के चालीसा छपवाकर कार्ड भी सम्पूर्ण जनसमूह में वितरित किये।

सुभिक्षता का साकार नमूना—

शास्त्रों में सुना जाता है कि समवसरण के आसपास क्षेत्र में उसके अतिशय से सुभिक्षता का वातावरण रहता है अतः वहाँ किसी प्रकार की ईति-भीति, आधि-व्याधि नहीं होती है। इस बात का साक्षात् नमूना कल्पद्रुम विधान के मध्य देखने को मिला, जब एक दिन प्रातःकाल ज्ञात हुआ कि कई जगह रामलीलाओं में आज रात्रि में बम विस्फोट हुए हैं पुलिस अधिकारियों ने इस समारोह के आयोजकों को भी चेतावनी देते हुए अपनी सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने को कहा। रवीन्द्र जी ने जब यह बात पूज्य माताजी से कही, तो वे कहने लगीं कि पुलिस की सुरक्षा तो औपचारिक है किन्तु यहाँ की तो पूजाओं की शब्दवर्गणा ही सबकी रक्षा करेगी, तुम घबड़ाओ मत और यह मंत्रित सरसों ले जाकर परिसर के चारों ओर डाल दो, सब निर्विघ्न सम्पन्न होगा। पुनः उसी दिन सायं 7 बजे रिंगरोड के पास घटा मस्जिद के निकट ही एक बम विस्फोट हुआ, तब अनेक लोगों में दहशत हुई किन्तु भक्तितरंगों एवं मंत्रित सरसों आदि के प्रभाव से हमारे समारोह स्थल पर किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना नहीं घटी और सम्पूर्ण आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

वास्तव में बड़े-बड़े समारोह के सम्प न्नकरने में शास्त्रीय पूर्णविधि, पूजा भक्ति, शुद्ध यजमान, शुद्ध मंत्रपाठ करने वाले विद्वान आदि तो आवश्यक होते ही है, साथ में चतुर्मुखी प्रतिभा से संयुक्त साधु-साध्विंयों की छत्रछाया मिल जाती है, तो सोने में सुगंधी आ जाती है। अन्यथा रिंगरोड जैसे चौतरफा आवागमन वाले क्षेत्र में खुले जगह पाण्डाल में ऐसे महा आयोजनों को करने का कदम उठाना एक सन्देहास्पद एवं जोखमभरा प्रयास ही है। पूज्य माताजी ने इस समारोह की निर्विघ्न सम्पन्नता हेतु लाखों-लाख मंत्रों का जाप्य स्वयं किया, मुझसे करवाया तथा महीनों पूर्व संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों से अनेक विधान एवं मंत्रों का अनुष्ठान कराया, उन सबके प्रभाव से ही यह महायज्ञ अप्रतिम सफलता के साथ पूर्ण हुआ और बम विस्फोट आदि कोई आपत्तियाँ नहीं आईं।

सुन्दर झाँकियाँ महापुरुषों के जीवन चरित्र दर्शा रही थीं—

दिल्ली के एक श्रावक पदमचंद जैन (बर्तन वाले) एवं उनके सुपुत्र राजेश जैन ने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक उस पाण्डाल में भगवान महावीर के पंचकल्याणक संबंधी तथा नेमिनाथ स्वामी की बारात आदि दृश्यों को दर्शाने वाली सुंदर-सुंदर झाँकियाँ बनाईं, जिन्हें देखने वाला प्रत्येक व्यक्ति अतीत के इतिहास से परिचित होकर अतिशय प्रसन्न होता था।

मण्डल सजावट प्रतियोगिता ने पाण्डाल को जगमगा दिया—

यूँ तो सभी समवसरणों को महोत्सव समिति की ओर से सुसज्जित करवाया ही गया था, फिर भी भगवान् ऋषभदेव के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समवसरण में की गई विशेष सजावट की अपेक्षा शेष तेईस समवसरण सामान्यतया सजाये गये थे अतः मैंने एक दिन पूजन के मध्य घोषणा कर दी कि सभी चक्रवर्ती एवं राजागण अपने-अपने समवसरण की सजावट स्वयं करें और प्रतियोगिता के आधार पर 11 अक्टूबर को पुरस्कारों का वितरण भी किया जायेगा। इतनी घोषणा होते ही सभी जुट गये मण्डलों को सजाने में और 11 तारीख तक सबने इतना सजाया कि पूरा पाण्डाल विद्युत प्रकाश, झालर, घंटे आदि से जगमगाने लगा और 12 अक्टूबर को सायंकालीन आरती के पश्चात् तीन श्रावकों के एक निर्णायक मण्डल ने 2 घंटे तक सभी समवसरण देखकर यथायोग्य निर्णय करके तीन विशेष पुरस्कार तथा शेष सभी को सान्तवना पुरस्कार प्रदान करवाए।

लाखों मस्तक पिच्छिका से पवित्र हुए—

प्रातः 6 बजे से प्रतिदिन पाण्डाल में पण्डित जी अभिषेक की विधि प्रारंभ कर देते थे और तब से लेकर रात्रि 10 बजे तक दर्शनार्थियों का तांता तो लगा ही रहता था किन्तु विधान समापन काल के 3-4 दिनों में दूर-दराज से बेशुमार जनता आ रही थी अतः व्यवस्थापकों ने बेरीकेटिंग व्यवस्था एवं प्राइवेट सुरक्षागार्डों के द्वारा सबके लिए दर्शनों की सुचारू व्यवस्था बनाई थी। अनुमानतः उन दिनों सुबह से शाम तक 1-1 लाख व्यक्ति दर्शन करने आते थे। वे सब भगवान् के दर्शन करते-करते इतने भावुक हो जाते थे कि बीच के मंच पर विराजमान पूज्य माताजी के समक्ष आकर हर्षाश्रु झराते हुए कहने लगते कि "आप धन्य हैं, माताजी! आपको पाकर तो भारत की धरती और हम सभी धन्य हो गये हैं।"

उन यात्रियों को माताजी के चरणस्पर्श करने से रोककर सुरक्षागार्ड जब मंच पर नहीं चढ़ने देते थे, तो वे बड़े दुखी होते और कुछ भक्त तो वहीं भड़क कर कहने लगते कि "हम सैकड़ों-हजारों किलोमीटर दूर से मात्र इनका आशीर्वाद लेने तो आए हैं, आप हमें नहीं रोक सकते हैं, हम तो मंच पर अवश्य जाएंगे।"

यह आपसी कहा सुनी देखकर पूज्य माताजी ने अपना आसन मंच के बिल्कुल आगे लगवा लिया और पूरी भीड़ को अपनी पिच्छिका से खूब आशीर्वाद प्रदान किया। इस प्रकार सभी नर-नारी खूब प्रसन्न होकर पूज्य श्री की चरणरज प्राप्तकर अपने मस्तकों को पिच्छिका से पवित्र करते हुए अपने सारे दुःख भूल गये और यही क्रम 3 दिन चला ज़िसमें लाखों लोगों को निकटतम आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिला।

श्रद्धा से डूबी महिलाएँ मंच की धूल भी उठाकर ले गईं—

हमारा भारतदेश भक्ति प्रधान देश है यहाँ भगवान एवं ऋषि-मुनि-तपस्वियों के प्रति सदा से मानवमन में श्रद्धा रहती है और यही श्रद्धा उनके जीवन को खुशहाल बनाने में निमित्त बनी है। इस कल्पद्रुम मंच पर इन्द्र-कुबेर द्वारा जो रत्नवृष्टि की जाती थी, वह जो लोग उस समय प्राप्त नहीं कर पाते थे, वे विधान के पश्चात् मंच पर चढ़-चढ़ कर वहाँ पड़े सितारे और धूल ही उठाकर ले जाते थे।

एक दिन जब मैं पूजन समाप्ति के बाद मंच पर बैठी सबको आशीर्वाद प्रदान कर रही थी, तो अनेक महिलाएँ मुझसे कहने लगीं कि माताजी! एक रत्न तो मुझे दे दो। मैंने कहा कि मेरे पास रत्न कहाँ हैं? रत्न तो पैसे वालों के पास होते हैं, तब वे महिलाएँ बोलीं कि माताजी! वे नगीने वाले रत्न तो हम बाजार से भी खरीद लेंगे किन्तु यहाँ आप यदि अपने हाथ से इस मंच की धूलि भी प्रदान कर देंगी तो हम धन्य हो जाएंगे। मैंने एक बहन को जरा सी सितारों की धूलि दे दी, फिर तो महिलाओं का तांता लग गया और मुझे जल्दी ही वहाँ से उठना पड़ा। लेकिन मन में यह विचार गूंजता रहा कि वास्तव में प्रभु के समवसरण का तो कण-कण पवित्र होता है, फिर यदि ऐसी श्रद्धा हमारी समाज में है, तो यत्र-तत्र की धूलि से बचाकर हमें यह धूलि लेने से वंचित नहीं करना चाहिए।

समारोह का सबसे रोचक कार्यक्रम रहा 'दिव्यवाणी'—

दिनाँक 5 अक्टूबर, रविवार को राजपुर रोड-दिल्ली की दिगम्बर जैन समाज के द्वारा तैयार किया हुआ 'दिव्यवाणी' नाम का सांस्कृतिक कार्यक्रम रात्रिकालीन सत्र में प्रस्तुत किया गया, जो पूरे समारोह का सर्वाधिक सुन्दर कार्यक्रम माना गया। मात्र 1 घंटे की इस नाटिका में भगवान महावीर स्वामी का जीवन चरित्र दर्शाया गया था और इस नाटिका की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाज के उच्च परिवारों की महिलाओं, बालक-बालिकाओं ने ही इसमें कुशलतापूर्वक अभिनय किया और जैन समाज राजपुर रोड ने ही उसका पूर्ण अर्थभार वहन किया, कल्पद्रुम समिति ने इसमें कोई खर्च नहीं किया प्रत्युत् दर्शकों के द्वारा प्रदत्त पुरस्कार राशि भी उन लोगों ने समारोह में दान कर दी।

समारोह की शृँखला में वैदवाड़ा-दिल्ली की महिलाओं ने एवं बच्चों ने भी सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा अन्य कालोनी की समाजों एवं बाहर के भी सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, उनमें से "दिव्यवाणी" का दूरदर्शन पर भी प्रसारण आया।

सम्मेदशिखर पर्वत की प्रतिकृति भी बनी थी—

पाण्डाल के बिल्कुल निकट में सूरजमल विहार-दिल्ली के निवासी प्रवीणकुमार जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती योजना ने 'फाइवर ग्लास' का एक 'सम्मेदशिखर पर्वत' बनाकर उस पर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान कर दी, तो श्रद्धालुओं के दर्शन का वहाँ तांता ही लग गया। वास्तव में दिगम्बर जैन शास्त्रों में मात्र दो तीर्थ ही "शाश्वत" माने गये हैं-प्रथम अयोध्या और दूसरा सम्मेदशिखर। इनमें से अयोध्या तीर्थंकरों की जन्मभूमि कहलाती है और सम्मेदशिखर को निर्वाणभूमि कहकर पूजा जाता है।

निर्धूम अग्नि का दृश्य उपस्थित करते 108 हवन कुण्ड—

12 अक्टूबर को लगभग मध्यान्ह 1 बजे 1 करोड़ मंत्रों के दशमांश की आहुति के प्रतीक में जब पूर्णाहुति हवन सम्पन्न हो गया, तो तमाम श्रावक-श्राविकाओं ने हमारे कमरे में आकर कहा कि माताजी! जरा सा बाहर निकल कर तो देखिए, हवनकुण्डों से निकलती अग्नि का कितना सुन्दर नजारा है।" मैं धुएँ के डर से बाहर नहीं आ रही थी किन्तु वे लोग जबर्दस्ती मुझे बाहर लाए, तो देखकर वास्तव में आश्चर्य हुआ कि विशाल पाण्डाल में बने समस्त कुण्डों से इतनी सुन्दर निर्धूम अग्नि की ऊँची लौ उठ रही थी, जिससे मानो तीर्थंकर माता के स्वप्न वाली निर्धूम अग्नि ही साकार हो रही थी, जो भक्तों के उज्जवल-मंगलमय जीवन में सर्वतोमुखी वृद्धि की सूचना दे रही थी।

आज कुछ लोग शुद्ध तेरहपंथ के नाम पर अग्नि द्वारा हवन का विरोध करते हैं किन्तु उन्हें आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए, जिनमें तीर्थंकर कुण्ड, केवलीकुण्ड, गणधरकुण्ड का वर्णन करके उनकी अग्नि एवं भस्म को अत्यन्त पवित्र माना गया है। इन्द्र भी इन कुण्डों की भस्म स्वर्ग में ले जाकर सबको वितरित करते हैं। वही श्रद्धा आज राजधानी में भी दिख रही थी कि भक्तगण गरम-गरम भस्म ही इस प्रकार अपने साथ उठाकर ले गये कि हवन के आधा घंटा पश्चात् कुण्डों की सम्पूर्ण भस्म खतम हो गई। कितने ही लोग कुंण्डों की पवित्र ईंटें भी उठा-उठाकर ले गये, अपने घरों में मंगल के लिए उन लोगों ने वे ईंटे लगाईं जो उनकी श्रद्धा की ही निशानी है।

पाण्डाल में हवनकुण्डों के निर्माण हेतु 11 अक्टूबर को ही हस्तिनापुर से रवीन्द्र जी ने लगभग 100 कारीगर मिस्त्री बुलवा लिए थे। उन लोगों ने शाम 6 बजे से रात्रि 11 बजे तक 108 हवनकुण्ड तैयार कर दिये और समाप्त होते ही आनन-फानन में सारे पाण्डाल में ऐसी सफाई हो गई, जैसे मानो कुछ हुआ ही न हो।

इसी प्रकार पूजन व्यवस्था में पर्याप्त पुजारी होने के कारण सभी को बिना मांगे सब सामग्री यथासमय मिल जाती थी, जिससे कभी किसी को सामग्री मांगने की आकुलता नहीं करनी पड़ी।

इन सब व्यवस्थाओं का श्रेय हमारे कुशल प्रबंधकों को जाता है जिनके परिश्रमपूर्ण निर्देशन में आप सभी ने जीवन में प्रथम बार ऐसा विशाल विधान का अवसर प्राप्त कर लिया। अब तो वे पुण्यक्षण केवल स्मृतियाँ ही बनकर मस्तिष्क पटल पर भ्रमण करती रहती हैं। क्या कभी पुनः ऐसा अवसर प्राप्त हो सकता है? इस प्रश्नचिन्ह के साथ समस्त भक्तों की प्रबल भावनाओं की वृद्धि की कामना है एवं स्वयं साक्षात् समवरण के दर्शन की इच्छापूर्वक भगवान जिनेन्द्र के चरणों में शत-शत नमन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, 4-6 अक्टूबर 1998

लेखक- डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में जैन समाज की वरिष्ठ साध्वी गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की एवं अन्य कतिपय सन्तों की प्रेरणा से समाज एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा जैनधर्म एवं दर्शन के विभिन्न विषयों पर विद्वत् संगोष्ठियों के आयोजन के क्रम का सूत्रपात हो चुका था। पूज्य माताजी की प्रेरणा से स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा विभिन्न विश्वविद्यालयों के साथ सहभागिता कर अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सेमिनारों, सम्मेलनों का आयोजन किया गया। उसी में दिनाँक 4 से 6 अक्टूबर 1998 के मध्य भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन का प्रथम बार अत्यन्त सफल आयोजन सम्पन्न हुआ।

भगवान ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार तथा जैनधर्म की प्राचीनता के संदर्भ में जनसाधारण में प्रचारित हो रही निर्मूल भ्रांतियों के निरसन हेतु आयोजित इस संम्मेलन में 20 विश्वविद्यालयों के कुलपति/प्रतिकुलपति आदि तथा शताधिक जैनविद्या मनीषी सम्मिलित हुए। पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज सहित 18 संतों एवं व्रती श्रावकों, ब्रह्मचारिणी बहनों की पावन सन्निधि से भी यह सम्मेलन सुवासित होता रहा।

सम्मेलन में कुल 6 अकादमिक सत्रों में विभिन्न विश्वविद्यालयों के सम्माननीय कुलपतियों ने अपने शोध एवं विद्वत्तापूर्ण उद्बोधनों में जैनधर्म की प्राचीनता, तीर्थंकर परम्परा, भारतीय संस्कृति को श्रमण संस्कृति के अवदान एवं भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित कृषि प्रधान जीवन शैली, समाज एवं राजव्यवस्था की उपयोगिता, प्रासंगिकता एवं आवश्यकता का पुरजोर समर्थन किया। सम्मेलन में विभिन्न कुलपतियों द्वारा प्रस्तुत आलेखों तथा अनेक अनुपस्थित कुलपतियों के संदेशों को समाहित करते हुए सर्वांग पूर्ण आख्या का प्रकाशन किया जा चुका है। (आख्या-भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन) जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा 4-6 अक्टूबर 1998, फलतः पुनरावृत्ति के दोष से बचने हेतु हम यहाँ उनकी विस्तार से चर्चा नहीं कर रहे हैं। तथापि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के उद्घाटन सत्र में दिये गये आशीर्वचन को हम यहाँ उद्धृत करेंगे। **'जैनधर्म किसी व्यक्ति या जाति से जुड़ा नहीं है, यह इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वालों का धर्म है और परस्पर मैत्री करने की शिक्षा देता है। इसके तीर्थंकरों के समवसरण में पारस्परिक शत्रुता रखने वाले जीव भी वैर भाव भूलकर पास आ जाते हैं और आज यहाँ भारतीय संस्कृति का गौरव रखने वाले राजनेता और कुलपतिगण उपस्थित हैं। मुझे विश्वास है कि यहाँ उपस्थित सभी जन पारस्परिक चर्चा के माध्यम से अज्ञान के आवरण को दूर करेंगे तथ अनादिकाल से चले आ रहे प्राकृतिक जैनधर्म की शिक्षाओं और उसके सांस्कृतिक अवदान को भली प्रकार रेखांकित करेंगे।'**

अपने उक्त विचारों के माध्यम से पूज्य माताजी ने सम्मेलन के मूलभूत उद्देश्यों को प्रतिपादित किया। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षा के आदि प्रवर्तक भगवान ऋषभदेव ने अपनी पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी को अंक विद्या और लिपि विद्या लिखाकर विद्या का शुभारंभ किया। अतः त्रिवेणी का संगम यहाँ प्राप्त हुआ है। आदिब्रह्मा के पुत्र भरत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के नाम पर ही इस देश का नाम भारत पड़ा और यह भारत एक महान देश है। जिस प्रकार से किसी बगीचे में बहुत सारे फूल खिलते हैं, कुशल माली उन फूलों का गुलदस्ता बना देता है तो उसमें समस्त फूलों की मिली-जुली खुशबू आती है, उसी प्रकार इस भारत देश में जैन, बौद्ध, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि सभी जातियों की मिली-जुली सुगंधी प्राप्त होती है।

भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष तथा जामियाँ हमदर्द विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति प्रो. अलाउद्दीन ने वेद और उपनिषदों के विवरण प्रस्तुत करते हुए सिद्ध किया कि भगवान ऋषभदेव ने ही जैनधर्म चलाया था। उनके द्वारा बताये गये मानव-कल्याण के उद्देश्य आज भी सामाजिक विघटन, शोषण, साम्प्रदायिक विद्वेष और आतंकवाद के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने पुरातनकाल में थे। काकतिया विश्वविद्यालय वारंगल (आंध्र प्रदेश) की कुलपति प्रो. विद्यावती जी ने कहा कि-नारी शिक्षा के क्षेत्र में भगवान ऋषभदेव की देशना का हमने लाभ उठाया होता, तो आज हमारे देश में शत-प्रतिशत शिक्षा होती, कोई निरक्षर नहीं होता। प्रो. मुनियम्मा कुलपति गुलबर्गा विश्वविद्यालय, गुलबर्गा ने अपने उद्बोधन में आंध्र एवं कर्नाटक क्षेत्र में फैले जैन संस्कृति के पुरावशेषों के आधार पर यह प्रतिपादित किया कि इन क्षेत्रों के जन-जीवन एवं संस्कृति पर जैन तीर्थंकरों एवं आचार्यों की शिक्षा का प्रभाव है। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के पूर्व कुलपति प्रो. आर.आर.नांदगाँवकर ने भगवान ऋषभदेव एवं पर्यावरण संरक्षण विषय पर विचार व्यक्त करते हुए भगवान ऋषभदेव को विश्व का पहला पर्यावरणविद् बताया। उन्होंने कहा कि प्रकृति के अपरिमित दोहन तथा जीवन की आवश्यकताओं को अधिक बढ़ाना ही वर्तमान पर्यावरण असन्तुलन का प्रमुख कारण है। मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर के कुलपति प्रो. एस.एन. हेगड़े ने भगवान ऋषभदेव के बताये सिद्धान्तों पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि श्री ज्ञानमती माताजी के उपदेश पूरी मानवता के लिए हैं।

कार्यक्रम में प्रो. आद्याप्रसाद मिश्र-महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर, प्रो.ए. के. मैत्रा-स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्केटेक्चर-दिल्ली, मेजर बलवीर सिंह भसीन-मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार), प्रो. सी. अंजनामूर्ति-कर्नाटक खुला विश्वविद्यालय, मैसूर (कर्नाटक), प्रो. डी.पी. तिवारी-चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय-मेरठ, प्रो. इन्द्राणी चक्रवर्ती-इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय-खैरागढ़, प्रो. एम.एल. रांगा-कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय-कुरुक्षेत्र, प्रो. एस.के. शर्मा-महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ-वाराणसी, प्रो. एस. रिन्पोछे-केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी, प्रो. शरद सी. भांड-म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय-उज्जैन, डॉ. सुरेश प्रसाद सिंह-वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय-आरा (बिहार), डॉ. एस.एन.पी. सिन्हा-पटना विश्वविद्यालय-पटना, प्रो. उषाकर झा, एल.एन. मिथिला विश्वविद्यालय-दरभंगा, डॉ. शोभिता जैन-इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय-दिल्ली, प्रो. पी.एन. मिश्र, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय-इंदौर आदि विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

सम्मेलन के समापन के अवसर पर उप कुलपतियों की ओर से प्रो. भसीन ने कहा कि इस सम्मेलन में हम लोगों की जैनधर्म के प्रति बहुत सारी भ्रांतियाँ दूर हुई हैं। आज हम इसके वास्तविक तथ्य से परिचित हुए हैं। अब मैं निश्चित रूप से राष्ट्रीय शिक्षा विभाग से संपर्क करके सरकारी पाठ्य-पुस्तकों में निहित भ्रांतियों को दूर कराऊँगा। मेरा इस जम्बूद्वीप संस्थान से अनुरोध है कि आप हम लोगों को जोड़कर रखें तथा इस सम्मेलन का समापन करके इतिश्री न कर दें, क्योंकि आपके इस परिश्रम एवं आर्थिक व्यय के दूरगामी परिणाम शीघ्र ही सामने आयेंगे।

सम्मेलन के संयोजन में कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स', श्री अमरचंद जैन 'होमब्रेड', श्री मनोज कुमार जैन का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

"किसी भी कार्य को करने में मध्यम मार्ग का अनुसरण करो, न अधिक सोचो न बिना सोचे करो।"

-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुलपति सम्मेलन : एक ऐतिहासिक उपलब्धि

लेखिका-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

''कैसे सफल हुआ सम्मेलन''?

दिनाँक 1 जनवरी 1997 को अहमदाबाद (गुज.) में आपसी विचार-विमर्श के पश्चात् यह निर्णय हुआ कि "शिक्षाजगत् के सर्वोच्च अधिकारियों के बीच भगवान् ऋषभदेव पर एक सम्मेलन आयोजित किया जावे तथा अनादिनिधन, प्राकृतिक जैनधर्म के विषय में जो भ्रान्तियाँ आज सारे विश्व में व्याप्त है उसको दूर करने के लिए शिक्षाविदों तक सत्य तथ्यों को पहुँचाया जावे।" इस विषय में सर्वप्रथम वार्ता हुई उज्जैन विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री राजकुमार जैन-नाँदगाँवकर से और उन्होंने पूज्य माताजी को पूरा सहयोग प्रदान करने का वचन दिया। पुनश्च—

विचार-विमर्श एवं निर्णय की इस कड़ी को कुछ ठोस आधार मिला राजधानी दिल्ली में, जब पूज्य माताजी की प्रेरणा से कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी ने सर्वप्रथम 6 अप्रैल 1997 को इस सम्मेलन को दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा आयोजित करने की घोषणा कर दी, फिर तो उस पर गंभीरता से चिंतन होने लगा कि ''सम्मेलन का क्या नाम दिया जाये और किन पुरुषार्थों से उसे पूर्ण सफलता के लक्ष्य तक पहुँचाया जाये?''

उसमें सबसे पहला सुझाव भी आया कि—

''राष्ट्रीय शिक्षा विभाग से संपर्क करके पाठ्यपुस्तकों में जैनधर्म के प्रति लिखी गई विसंगतियों का सुधारीकरण कराया जावे।''

यद्यपि यह कार्य अत्यन्त श्रमसाध्य एवं दुरूह था। किन्तु पूज्य ज्ञानमती माताजी के प्रयास से तो अनेक असंभव कार्य भी संभव हो सके हैं, इसी धारणा को मन में बिठाकर इस शैक्षणिक कार्यक्रम का बीड़ा संस्थान द्वारा उठाया गया। इस विषय में कुछ संबंधित विद्वानों से बातचीत करके पाया गया कि इस कुलपति सम्मेलन को आयोजित करने के लिए भारी आर्थिक भार वहन करना पड़ेगा, लेकिन चूँकि पूज्य माताजी ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि विश्वविद्यालय के माध्यम से भगवान ऋषभदेव के नाम का शिक्षा जगत् में प्रचार-प्रसार करना ही है अत: निर्णय को मूर्तरूप प्रदान करके कार्य प्रारंभ कर दिया गया।

पुन: इस कार्य को प्रगति प्रदान करने के लिए संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों में अपना अनन्य सहयोग प्रदान करने वाले, माताजी के अनन्य शिष्य डॉ. अनुपम जैन को बुलाकर एक बार गंभीरतापूर्वक चर्चा की गई और सम्मेलन का नाम, आयोजन की तारीख एवं आयोजन स्थल आदि बिन्दुओं का निर्णय करने हेतु एक बैठक करने की बात तय हुई और 19 मई 1997 (वैशाख शु. 12) को सूरजमल विहार-दिल्ली में 'महेन्द्र प्रसाद हीरेन्द्र कुमार जैन' की कोठी में वह बैठकर सम्पन्न हुई, जिसमें कालोनी के अनेक शिक्षाप्रिय महानुभावों के साथ ही दिल्ली प्राचीन दि. जैन पंचायत के अध्यक्ष चक्रेश जैन (बिजली वाले) पधारे तथा डॉ. अनुपम जैन-इंदौर, प्रो. सुरेशचंद अग्रवाल (मेरठ विश्वविद्यालय), प्रो. पाण्डे जी-मेरठ विश्वविद्यालय आदि सम्मिलित हुए। पूज्य माताजी एवं हम लोगों के सानिध्य में एवं ब्र.रवीन्द्र कुमार जी की अध्यक्षता में आयोजित इस मीटिंग में प्रारंभिक तौर पर निम्न विषय तय किये गये—

1. सम्मेलन का नाम— भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. सम्मेलन कहाँ हो—जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर में (चूँकि वहाँ सुदृढ़ पुस्तकालय है तथा कुलपतियों को ठहराने योग्य समुचित कमरों की व्यवस्था है)

3. सम्मेलन की तारीख—7 दिसम्बर 1997 से 10 दिसम्बर तक

4. कुलपतियों से भगवान् ऋषभदेव से संबंधित विभिन विषयों पर शोधपूर्ण लेख लिखवाकर मंगाना चाहिए तथा उन लेखों का एक ग्रंथ प्रकाशित किया जाये।

5. हस्तिनापुर के निर्माणाधीन तेरहद्वीप रचना मंदिर को ही कान्फ्रेन्स हाल का रूप देकर उसमें सम्मेलन सम्पन्न किया जावे।

मीटिंग में हुए इन निर्णयों के पश्चात् सम्मेलन की उपयोगिता पर एक फोल्डर का प्रकाशन हुआ तथा डॉ. अनुपम जैन के द्वारा अनेक कुलपतियों से पत्राचार होने लगा। पुनः अक्टूबर 1997 में हुए चौबीस कल्पद्रुम मण्डल विधान के अवसर पर यत्किञ्चित् प्रचार भी हुआ तथा उसके बाद वृहत् प्रचार हेतु बड़ा पोस्टर छापने की बात चल ही रही थी कि कुछ कुलपतियों के पत्रों से ज्ञात हुआ कि-दिसम्बर की इन तारीखों में जम्मू शहर में भी कुलपतियों का एक सम्मेलन होने जा रहा है उसमें हम लोगों ने जाने की पूर्व स्वीकृति प्रदान कर दी है अतः अपने सम्मेलन की तारीखों में परिवर्तन कर सकें तो अच्छा होगा। इस सुझाव पर कमेटी ने गंभीरतापूर्वक विचार करके निर्णय लिया कि—

चूँकि जैन समाज में प्रथम बार इतने बड़े शैक्षणिक समारोह का आयोजन होने जा रहा है अतः कुलपतियों की सुविधा देखते हुए हम यह सम्मेलन दिसम्बर 1997 की बजाय अक्टूबर 1998 में आयोजित करेंगे, तब तक इसका व्यापक प्रचार-प्रसार भी हो सकेगा।

उक्त निर्णय पुनः जैन अखबारों में घोषित कर दिया गया, उसके बाद नवम्बर 1997 में पूज्य माताजी हस्तिनापुर पधारीं और भावी योजना भगवान ऋषभदेव समवसरंण श्रीविहार समारोह की तैयारी में हम लोग सम्मेलन की बात लगभग भूल ही गये थे। माताजी मार्च 1998 में पुनः ससंघ दिल्ली विहार कर गईं और वहाँ से 22 मार्च 1998 को समवसरण श्रीविहार का उद्घाटन हुआ तथा 9 अप्रैल को प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने माताजी से शुभाशीर्वाद प्राप्त कर समवसरण रथ को भारतभ्रमण हेतु प्रवर्तित किया। उस रथ के दिल्ली भ्रमण में जनता को भगवान ऋषभदेव के साथ-साथ पूज्य माताजी के भी संघ सहित दर्शनों एवं प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। 2 मई 1998 को वहाँ से विहार करके माताजी पुनः 12 मई को हस्तिनापुर पधारीं और उन्होंने अपना सन् 1998 का चातुर्मास जम्बूद्वीप स्थल पर करने हेतु घोषणा की, तब एक बार फिर से कुलपति सम्मेलन के आयोजन पर चर्चा छिड़ी और अक्टूबर की किन्हीं त्रिदिवसीय तारीखों में सम्मेलन रखने का निर्णय लिया गया।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान चूँकि प्रारंभ से ही धार्मिक शिविर-संगोष्ठियों का आयोजन करता रहा है तथा राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों में 'चौधरीचरणसिंह विश्वविद्यालय-मेरठ' का संयुक्त तत्वावधान भी प्राप्त करता रहा है। अब जब वह संस्थान अपने जन्म के 25 वर्ष पूर्ण कर रहा था, तो रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में इस वृहत् आयोजन को सम्पन्न करने हेतु फिर मेरठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान का सुयोग प्राप्त किया गया। वहाँ के कुलपति प्रो. दुर्गाप्रसाद जी तिवारी एवं प्रो. सुरेशचंद अग्रवाल (प्राध्यापक गणित विभाग) ने अपना सक्रिय सहयोग प्रदान कर जो यश और पुण्य अर्जित किया है वह निश्चित ही प्रशंसनीय है।

कुलपति सम्मेलन की इस प्राथमिक भूमिका के साथ अब मैं बताना चाहूँगी कि कैसे इसने अपनी सफलता के चरम लक्ष्य को प्राप्त किया है?—

सर्वप्रथम 16 जून 1998 को कुलपति सम्मेलन को सुचारू ढंग से करने हेतु कुछ विद्वानों की एक मीटिंग हस्तिनापुर में बुलाई गई, जिसमें निम्न महानुभाव उपस्थित हुए—

1. ब्र.रवीन्द्र जी 2. प्रो. राजकुमार जैन-नांदगांवकर (पूर्व कुलपति-उज्जैन विश्वविद्यालय) 3. डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर'-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नागपुर 4. डॉ. प्रेमसुमन जैन-उदयपुर 5. डॉ. शेखरचंद जैन-अहमदाबाद 6. प्रो. टीकमचंद जैन-दिल्ली एवं 7. डॉ. अनुपम जैन-इंदौर।

16 एवं 17 जून को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संघ सानिध्य एवं पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी के निर्देशन में चली इस प्रथम बैठक में निम्न बातें निर्णीत हुईं—

1. 4-5-6 अक्टूबर 1998 में त्रिदिवसीय सम्मेलन आयोजित हो।

2. प्रान्तीय संयोजक के रूप में हमारे 1-1 विद्वान् नियुक्त किये जाएं, जो अपने-अपने प्रान्त के विश्वविद्यालयों से संपर्क करके वहाँ के कुलपतियों को यहाँ के आमंत्रण से परिचित करवाकर अधिक से अधिक कुलपतियों को लाने का पुरुषार्थ करें। वे विभागीय संयोजक इस प्रकार मनोनीत किये गये—

1. मध्यप्रदेश संयोजक —प्रो. राजकुमार जैन नाँदगाँवकर, उज्जैन
2. राजस्थान संयोजक —डॉ. प्रेमसुमन जैन, उदयपुर
3. गुजरात संयोजक —डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद
4. महाराष्ट्र संयोजक —डॉ. भागचन्द जैन भास्कर, नागपुर
5. कर्नाटक संयोजक —डॉ. शुभचंद्र जैन, मैसूर
6. हरियाणा संयोजक —डॉ. धर्मचंद जैन, कुरुक्षेत्र
7. बिहार संयोजक —डॉ. नलिन के शास्त्री, पटना
8. दिल्ली संयोजक —प्रो. टीकमचंद जैन ,दिल्ली
9. उत्तरप्रदेश संयोजक —डॉ. वृषभ प्रसाद जैन-लखनऊ, डॉ. फूलचंद जैन प्रेमी-बनारस

उपर्युक्त संयोजकों को आयोजन समिति ने कुलपतियों से संपर्क करने हेतु पूरा आर्थिक सहयोग एवं अधिकार प्रदान किया।

3. संयोजक गण सम्मेलन से पूर्व प्रान्तीय कुलपतियों से भगवान् ऋषभदेव से संबंधित विभिन्न विषयों पर लिखित शोधपूर्ण आलेख मंगवाकर यहाँ भेजे, जिन्हें संकलित करके एक ग्रंथ प्रकाशित किया जावे।

4. प्रान्तीय पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई जाने वाली ''जैनधर्म से संबंधित विसंगतियाँ'' की पुस्तकें एकत्रित की जाएं तथा शिक्षा विभाग से उनमें परिवर्तन कराने हेतु कुलपतियों को एक ज्ञापन दिया जावे।

5. इस राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन में पर्यवेक्षक के रूप में जैन समाज के उच्चकोटि के प्रोफेसर एवं शास्त्रीय विद्वानों को भी आमंत्रित किया जावे।

6. समस्त कुलपतियों को ऋषभदेव से संबंधित साहित्य भेजा जावे।

पुनः इस बैठक के पश्चात् एक नया रंगीन फोल्डर प्रकाशित हुआ और तेजी से कुलपति सम्मेलन का प्रचार प्रारंभ हो गया।

फिर तो जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के प्रधान कार्यालय से समिति के अध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जी एवं मंत्री डॉ. अनुपम जैन के द्वारा केन्द्रीय पत्राचार होने लगा तथा प्रान्तीय संयोजकों ने भी अपने-अपने स्तर से हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं में पत्राचार, फोन, फैक्स तथा प्रत्यक्ष मिलकर अनेक कुलपतियों से संपर्क स्थापित किया।

इसके पश्चात् संयोजकों से पूर्ण जानकारी प्राप्त करने हेतु तथा भावी रूपरेखा निर्धारित करने की दृष्टि से दिनाँक 16 अगस्त 1998 को द्वितीय बैठक बुलाई गई, जिसमें निम्न विद्वान पधारे-

1. डॉ. राजकुमार नांदगांवकर 2. डॉ. अनुपम जैन 3. भागचंद भास्कर 4. डॉ. शुभचंद्र जैन 5. डॉ. फूलचंद जैन प्रेमी-बनारस 6. डॉ. वृषभप्रसाद जैन 7. डॉ. धर्मचंद जैन।

प्रातः 10.30 से 12 बजे तक, मध्यान्ह 2 से 3 बजे तक चले बैठक के दो सत्रों में सम्मेलन संबंधी अनेक विचार-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विमर्श हुए। इनमें से 2-3 संयोजक विद्वानों ने बताया कि "हमने जो जैनधर्म, भगवान ऋषभदेव से संबंधित हिन्दी साहित्य एवं हिन्दी भाषा के फोल्डर आदि कुलपति के पास भेजे थे, सो उनसे साक्षात् मिलने पर वहाँ के स्टॉफ से पता चला कि हमारी सभी चीजें कूड़ेदान (Dust been) में डाल दी गईं क्योंकि कुलपति जी को हिन्दी भाषा ठीक से आती नहीं है। दक्षिण भारत के प्रोफेसर के लिए तो यह बात कुछ अटपटी नहीं लगी किन्तु उत्तर भारत के कतिपय कुलपतियों की यह स्थिति सुनकर दुःख और आश्चर्य हुआ कि जैनधर्म से लोग इतनी अरुचि रखते हैं तथा अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति आज भी शिक्षाविदों का आदर भाव नही हो रहा है।

इससे विपरीत कुछ संयोजक विद्वानों ने बताया कि अनेक कुलपतियों ने इस सम्मेलन के प्रति अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की है तथा हमारे भेजे हुए साहित्य को बड़े आदरपूर्वक प्राप्त करके पढ़ना भी शुरू कर दिया है। उसी का परिणाम यह रहा कि बहुत सारे कुलपतियों ने अपने संदेश, शुभकामना, सारांश, लेखन आदि लिखकर आयोजन समिति को प्रेषित किये तथा प्रत्यक्ष में भी पधारकर अपने विचार व्यक्त किये।

इसी प्रकार सम्मेलन की गतिविधियाँ प्रगति की ओर बढ़ती रहीं, इसी मध्य 11 सितम्बर 1998 को चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय-मेरठ के कुलपति प्रो. दुर्गाप्रसाद जी तिवारी एवं डॉ. सुरेशचंद्र अग्रवाल (प्राध्यापक गणित एवं अध्यक्ष-विज्ञान संकाय) सम्मेलन स्थल का सर्वेक्षण करने हेतु पधारे और जम्बूद्वीप परिसर में युद्धस्तर पर चल रही तैयारियों को देखकर बहुत प्रसन्न हुए तथा कहने लगे कि-

"यहाँ पधारकर कुलपतियों को निश्चित ही परम आनन्द की अनुभूति होगी, क्योंकि भगवान ऋषभदेव से संबंधित जानकारियों के साथ-साथ उन्हें क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द एवं पूज्य माताजी के प्रतिभामयी व्यक्तित्व का लाभ प्राप्त होगा, जो प्रायः किसी कुलपति सम्मेलन में नहीं प्राप्त हो पाता है।"

तिवारी जी ने अपने कतिपय सुझाव भी समिति के पदाधिकारियों को प्रदान किये तथा अपनी ओर से पूरा सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया।

इस प्रकार देखते-देखते वह क्षण भी आ गया, जब जम्बूद्वीप का पूरा परिसर विद्युत् दीपकों, केशरिया ध्वजाओं एवं तोरणद्वारों से सजकर किसी नववधू की भाँति आगन्तुक अतिथियों के स्वागत हेतु तैयार खड़ा था। तीन दिन पूर्व से अध्यक्ष रवीन्द्र कुमार जी का हाथ बंटाने हेतु संस्थान के समस्त आत्मीयजन एवं कर्मठ कार्यकर्ता भी आ गये और अपने-अपने विभाग संभाल लिये। यही कारण रहा कि कुलपतिगण, प्रोफेसर, डॉक्टर, प्रतिष्ठाचार्य, विद्वान् एवं पर्यवेक्षक जनसमूह आदि सभी को आने से जाने तक, सुबह जगने से रात सोने तक, अपने ठहरने वाले स्थान से सम्मेलन हॉल में जाने तक किसी प्रकार की कमी अथवा कष्ट का अनुभव नहीं हुआ, बल्कि सबके मुँह से यही सुना गया कि-

"जैसे जम्बूद्वीप संस्थान से होने वाला प्रत्येक कार्य अपने आप में अभूतपूर्व रहता है वैसे ही यहाँ का आतिथ्य सत्कार भी अपूर्व ही रहता है जो प्रायः सब जगह देखने को नहीं मिलता है।"

भारतवर्ष में जैन समाज के अन्दर प्रथम बार आयोजित किया गया यह 'भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन" उपर्युक्त विधाओं से आशातीत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जो दूरगामी परिणामों को प्रकाशित करने में एक सूर्य के समान सिद्ध हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ACHIEVEMENTS OF BHAGWAN RISHABHDEVA INTERNATIONAL NIRVAN MAHAMAHOTSAVA YEAR

-Brahmacharini Km. Swati Jain
(Sanghastha-Pujya Ganini Shri Gyanmati Mataji)

To eliminate the misconceptions related with the origin of Jain Dharma, **Bhagwan Rishabhdeva International Nirvan Mahamahotsava** year was inaugurated by the Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee at the Red Fort Ground, Delhi on 4th Feb. 2000 by offering Nirvan Ladoo before the model of Kailash Parvat along with the Union Finance Minister Shri V. Dhananjaya Kumar Jain on the inspiration of **Pujya Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji,** the supreme Jain Sadhvi. This Nirvan Mahotsava Year full of various religious, social and academic activities was gloriously concluded at Prayag (Allahabad), the Deeksha Nagari of the first Jain Tirthankar **Lord Rishabhdeva,** where **Rishabhdev Deeksha Tirth** was developed at Allahabad-Banaras Highway, Allahabad and an auspicious programme of **Panchkalyanak Pratishtha and first Jain Mahakumbh Mastakabhishek** was organized there from 4th to 8th Feb. 2001 in the holy presence and guidance of Pujya Mataji & Sangh.

Following major programmes were reported throughout this year at National & International levels—

1. At one hand where 4th Feb. 2000, Magh Krishna Chaturdashi was celebrated at the Red Fort Ground, Delhi with the offering of Nirvan Ladoo by lacs of devotees before the model of Kailash Parvat by the inspiration of Pujya Mataji, the Panchkalyanak Pratishtha of 72 Jewel Idols & a grand Jain Fair upto 8th Feb. 2000 were proved to be the programmes of historical importance. Masses were introduced with the auspiciousness of Jain Dharma. Reports of Nirvan Diwas celebration were obtained from all over the country.

Foreign lands as Canada, Toronto, New Jersey etc. were also echoed with the proclamation of Lord Rishabhdeva when Nirvan Ladoos were offered there on 6th Feb 2000 along with Lectures & Seminar series on Rishabhdeva.

A Group of 81 pilgrims from Delhi attended the **Mahamastakabhishek** of 37 feet idol of Bhagwan Bahubali at Venur (Karnataka) in the direction of Karmayogi Br. Ravindra Kumar Jain from 16th to 20th Feb. 2000 and a grand organized programme of Panchamrit Abhishek in the guidance of Shri V. Dhananjaya Kumar Jain became a landmark of the Nirvan Mahotsava year.

2. The series of **1008 seminars** on Bhagwan Rishabdeva was inaugurated on 27th Feb. 2000 at Lal Mandir, Chandni Chowk, Delhi in the presence of Pujya Mataji & Sangh and throughout the year this process continued at various centres of the country & abroad and also in the presence of Pujya Mataji (Major details are following).

3. On 1st March, **Kevalgyan Kalyanak** of Bhagwan Rishabdeva was celebrated in Chandni Chowk, Delhi with the Panchamrit Abhishek of 72 Jewel idols in presence of Pujya Mataji and also in various parts of the Country.

4. On 12th March, the foundation stone of **"Shri Rishabhdeva Kirtistambh"** was laid down in the campus of Shri Agrawal Digambar Jain Mandir, Jaisinghpura-Cannaught place, New Delhi in the presence of Pujya Mataji and declarations were also made for the construction of such Kirtistambhs at other places. Consequently Kirtistambhs at Delhi, Hastinapur and Prayag.etc. were built.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5. In March **"Bhagwan Rishabhdeva Akhand Nirvan Jyoti"** was also lit for one year in Agrawal Digambar Jain Mandir, Cannaught Place, the Head Office.

6. On 29th March i.e. Chaitra Krishna Navmi **Rishabhdeva Janma Jayanti** was celebrated with Abhishek with 108 Kalshas in the morning and other programmes. Reports of such celebrations were obtained from all over the country.

7. "Shri Rishabhdeva-Mahavir Mahotsava" was celebrated from 29th March (Rishabh Jayanti) upto 16th April 2000 (Mahavir Jayanti) for about 20 days, during with Rishabhdeva Seminars, Debates, Speech Competition, Various Vidhans, Pujan-Abhishek, Rathyatras etc. were organized in various parts of the country.

8. Madhya Pradesh Griha (Home) Nirman Mandal decided to name one of its large residential colonies being developed at Sanavad as Adinath Nagar. One Garden at Bhopal was also named as 'Rishabhdeva Udyan' on the inspiration of Pujya Mataji.

9. Bhagwan Rishabhdeva Chaityalaya was formed in Namokar Dham at Sanavad (M.P.) on 13th April. Later 7 Ft. high idol of the Lord was consecrated there.

10. Mahavir Jayanti was celebrated on 16th April Nationally & Internationally. At the conclusion of Silver Jubilee year of the consecration of Kalpavriksha Bhagwan Mahavir Swami in Lotus Temple of Jamboodweep-Hastinapur, Mastakabhishek was performed with 1008 Kalshas along with Rathyatra. Ambassador of Bulgaria Shri Edwin Sugarev attended the function.

11. Third **Five year Jamboodweep Mahamahotsava & Bhagwan Rishabhdeva Jinbimb Panch Kalyanak Pratishtha** was celebrated at Jamboodweep-Hastinapur from 16th April to 23rd April 2000. On 16th Apr., the founding stone of Sahastrakoot Temple was laid down and on 21st Apr., the then Union Finance Minister Mr. V. Dhananjaya Kumar Jain laid down the foundation stone of Bhagwan Rishabhdeva Kirtistambh in the premises of Jamboodweep. Jamboodweep Mahamahotsava was celebrated on 23rd April with Panchamrit Abhishek by 1008 Kalshas on the Pandukshila of Sumeru Parvat & Kalsharohan was done on the newly built summit of the Trimurti Temple in the campus. Dr. Raman Singh, the then Union Industry & Commerce Minister was the chief guest of the function.

12. Shravika Sanstha Nagar, Solapur (Maharashtra) devised the full year schedule under **1008 Lord Rishabhdeva Great Salvation Felicitation Year** with a number of creative programmes. 1008 Letters of Felicitation for Pujya Ganini Shri Gyanmati Mataji were written by the sutudents of Sumatibai English High School, Solapur, Maharashtra.

13. On Vaishakh Shukla Teej i.e. 6th May the **Akshaya Tritiya** festival was celebrated with the giving of the Ahar of Sugracane Juice to the idol of Bhagwan Rishabhdeva in *Aharmudra* (In the posture of taking meals) at Jamboodweep-Hastinapur in the presence of Pujya Mataji & Sangh. This celebration was also reported from various states as Maharashtra, Gujrat, Rajasthan, M.P. & U.P. etc. A grand procession was organized for the first time in Ghatol in the auspicious presence of Acharya Shri Abhinandan Sagar ji Maharaj & Sangh.

14. A National Seminar on Antiquity of Jainism was organized at Jamboodweep (Hastinapur) in presence of Pujya Mataji & Sangh on 11th June 2000. In this Seminar, a no. of Scholars, Historians & Archaelogists presented their Articles & Proofs to ascertain the ancientness of Jainism. The representative of National Council of Educational Research and Training (NCERT), Delhi-Dr. Pritish Acharya (Reader) attended the Seminar to carry the message upto the higher authorities so that proper changes may be made in the National Text-books to represent Bhagwan Rishabhdeva as the founder of Jainism and not Bhagwan Mahavir. The process proved to be a Historical event.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

15. On 18th June, Asharh Krishna Duj, **Garbhakalyanak Mahotsava of Lord Rishabhdeva** was celebrated with Pujan, Jewel-showering & Pravachan etc.

16. On 20th June, the **founding stone of the Kailash Parvat Temple** was laid down in the campus of Jamboodweep. The model of Kailash parvat, in front of which lacs of devotees offered Nirvan Ladoos at the Red Fort Ground-Delhi, was later consecrated in this Temple.

17. On 28th July, a representation of Jain Samaj including Shri Anil Kumar Jain, Preet Vihar, Delhi and Sanghastha Brahmacharini Sisters Km. Swati Jain & Km. Sarika Jain met Prof. Arjun Dev, the head of DESSH (Dept. of Education in Social Science & Humanities)-NCERT to present the real facts about the propagation of Jainism in the present age by Lord Rishabhdeva. A detailed article & othere literature written by Pujya mataji were provided for giving the right facts in the coming Text-Books.

18. The foundation Stone of Bhagwan Rishabhdeva Dharmasthal in the Bharat Kshetra Campus was laid down at Nazafgarh, Delhi on 9th August.

19. From 28th Aug. to 31st Aug. 2000 the **World Peace Summit was organized at New York by United Nations Organization (UNO).** A golden page of History was written when Pujay Ganini Shri Gyanmati Mataji decided for his dedicated disciple Karmayogi Br. Ravindra Kumar Jain to represent the Jain Community at the world level. The folder 'Lord Rishabhdeva-the first Preacher of Non-violence & World Peace' reached the hands of the religious leaders of more than 100 countries and addressing of the asembly in the concluding session of the Summit by Ravindra Kumar Ji echoed the name & principles of Lord Rishabhdeva at the international level. Later Pravachans on Dash Dharmas & Bhakti-Vidhans at Jain Center, New York by Br. Ravindra Kumar Ji during Dashlakshan Parvas did a lot of *Dharma-Prabhavna.*

20. The then Union Finance Minister Shri V. Dhananjaya Kumar Jain and Dr. Murli Manohar Joshi, the then Central Human Resource Development Minister came for the darshan of Pujya Mata Ji on 21st Sep. 2000. Exclusive talks were made to eradicate the misconceptions in the present text-books as Bhagwan Mahavir was not the founder of Jainism but Lord Rishabhdeva propagated Jain Dharma for the first time in this age.

21. From 30th Sept. to 8th Oct. Special **Kailash-Mansarovar yatra** was organized by Digambar Jain Samaj, Preet Vihar, Delhi on Vikas Marg (Near Coffee Home) by the inspiration & in presence of Pujya Mataji.

Inaugurated by the Chief-Minister of Delhi-Smt. Sheela Deekshit and attended By Dr. A.K. Walia, Health Minister of Delhi, Shri Maninder Jeet Singh Bitta and other dignitaries, the copy structure of Kailash Parvat with 72 Chaityalayas of Teen Chaubeesi (24 Tirthankars of each of the past, present & future ages) attracted lacs of people to climb its heights. The Nirvan Bhumi of Lord Rishabhdeva became alive amongst the masses of the capital. The Ambassador of Bulgaria Mr. Edwin Sugarev attended the 48 Bhaktamar Mahamandal Vidhans on 2nd Oct. Other Bhakti Vidhans were also performed along daily Pujan-Abhishek-Shantidhara etc.

22. On 31st Oct., **The Director of National Council of Educational Research & Training (NCERT)-Delhi Prof. J.S. Rajput came Kamal Mandir, Preet Vihar for the darshan of Pujya Mataji.** A detailed dicussion ended with the assurance from Prof. Rajput that each possible effort will be made to correct the misconceptions & wrong information about Jain Dharma in the existing National Text-Books in the coming session.

Literature written by Pujya Mataji was placed in the Main Library of NCERT in a special section and Karmayogi Br. Ravindra Kumar Jain & Dr. Anupam Jain-Indore were selected as the members of the National Committee which was entitled to prepare a text-book on all the religions of the country as per the information obtained from Director's (NCERT) office.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

23. On 1st November, Pujya Mataji (with Sangh) started her on Foot Journey for Prayag (Allahabad), the Deeksha Bhumi of Lord Rishabhdeva.

HOW BHAGWAN RISHABHDEVA INTERNATIONAL NIRVAN MAHAMAHOTSAVA YEAR WAS CONCLUDED—

'Nirvan Mahamahotsava year' was concluded in the golden historical manner when Deeksha Bhumi of Lord Rishabhdeva-Prayag (Allahabad) became established in the form of a real Jain Tirth after a gap of countless years by the inspiration of Pujya Mataji and the new millennium got an utmost valuable gift in the form of **Rishabhdev Deeksha Tirth**, Prayag at Allahabad-Banaras Highway, Allahabad (U.P.) India.

The Land on which Bhagwan took first Jaineshwari Deeksha and attained Kevalgyan was untouched by the masses as a Jain Tirth. When Pujay Mataji became determined to develop it, 15000 square yard land was purchased at Allahabad by Digambar Jain Trilok Shodh Sansthan, Jamboodweep-Hastinapur.

The Tirth became remarkable in the sense that the foundation stone was laid down on 4th Oct. 2000 and in a short period of 2-3 Months only, grand construction took place-**Deeksha-Kalyanak Tapovan** having 5¼ feet high standing postured idol of Mahamuni Rishabdeva with Pichhi & Kamandalu and **Kevalgyan Kalyanak Samavsaran Temple** with *Chaturmukhi* (4-sided) idols of Bhagwan Rishabhdeva at the side of **50 feet high Kailsh Parvat on the top of which 15 feet high lotus postured Red coloured grand idol of Lord Rishabhdeva was consecrated** along with the Rishabhdeva Temple at the base of the Kailash Parvat and Rishabhdeva Kirtistambh in the campus.

A memorable progamme of **Bhagwan Rishabhdeva Panchkalyanak Pratishtha & First Jain Mahakumbh Mastakabhishek** in the form of World Peace *Mahayajna* was organized from 4th to 8th Feb. 2001 at this newly established Tirth in the auspicious presence of Pujya Mataji & Sangh and lacs of devotees from the whole country and abroad.

On 4th Feb. the then Central Human Resource Development Minister Dr. Murli Manohar Joshi inaugurated & dedicated the Rishabhdev Puram Tirth to the society with the feeling that it will act as the Live Centre to illuminate the path shown by Lord Rishabhdeva for ages to come and will spread the message of Samyakdarshan, Non-violence, World-Fraternity, Compassion and Anekantvad to the entire world. On 7th Feb. the then Governor of U.P. Shri Vishnukant Shastri inaugurated the Deeksha Kalyanak Tapovan along with Shri Ashok Singhal, the National & International Working President of Vishwa Hindu Parishad (VHP) and on 8th Feb. the then Union Textile Minister Shri V. Dhananjaya Kumar Jain & Sahu Ramesh Chand Jain, the then President-All India Tirth Kṣhetra Committee combinedly inaugurated the Kevalgyan Kalyanak Samavsaran Temple along with attending the Mahakumbh Mastakabhishek of Lord Rishabhdeva with 1008 Maha-Kumbhas of Water, Juices, Milk, Curd, Sandal, Flowers etc. All the Religious ceremonies & Bhakti-Vidhans were performed with the effect to create an atmosphere of Peace, Happiness and Bliss all around the world, Mahakumbhas were provided to all those who performed Mastakabhishek as the sacred reminiscence of the programme. At last, **Sarvashanti Mahavir Vidhan having 2600 Mantras**, written by Pujya Mataji was dedicated to the society and with this Pujya Mataji inspired the entire Jain community to be engaged in the programmes of 2600th Janm Jayanti Mahotsava year of Bhagwan Mahavir Swami.

Before the above programme, another golden page of History was written when Pujya Mataji represented the Name & Principles of Bhgwan Rishabhdeva & Jainism in the Mahakumbh Mela of Prayag for the first time. On 19th Feb. on the stage of Dharma Sansad,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narai, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Pragya Shramni Aryika Shri Chandnamati Mataji stressed on the need of the unity of the all religious powers to face the challenge of world-wide Terrorism. On the same stage on 20th Feb. Pujya Ganini Shri Gyanmati Mataji preached about the life & fundamental contribution of Lord Rishabhdeva in establishing the Human Culture & *Moksha Marg* for the first time in the beginning of the age. Besides these, daily Bhakti Vidhans were organized in 'Bhagwan Rishabhdeva Sanatan Sanskriti Sangam Mandap' along with offering of 1008 Nirvan Ladoos on the pre-evening of Bhagwan Rishabhdeva Nirvan Diwas by thousands of devotees including Shri Ashok Singhal, VHP president; Acharya Dharmendra, Justice Gumanmal Lodha & other dignitaries.

MAJOR DETAILS OF BHAGWAN RISHABHDEVA SEMINARS–

Seminars on the various aspects of the life of Lord Rishabhdeva proved to be an effective process of dissemination throughout the Nirvan Mahotsava Year. A no. of seminars were organized in the country and abroad. Some of them are as follows :

First Seminar of the series was organized from **27th Feb. to 29th Feb. 2000** at Kammo Ji Ki Jain Dharmashala, Chandni Chowk-Delhi after the inauguration on 27th Feb. at Lal Mandir-Delhi in the presence of Pujya Mata ji & Sangh. Dr. Shekhar Chand Jain-Ahmedabad; Dr. Jai Kumar Jain-Muzaffarnagar; Dr. Shreyans Kumar Jain-Baraut; Prof. Teekam Chand Jain-Delhi and a no. of other orators of Mahila Sangathan presented their views on the Subject-Grihastha (*Shravak*) Dharma and Bhagwan Rishabhdeva.

After that, **10 Seminars** were organized at Cannaught Place, Preet Vihar, Rishabh Vihar, Shivam Enclave (all in Delhi), Ghaziabad, Modinagar, Shantinagar-Meerut, Sadar-Meerut, Defence Colony-Meerut and Mawana during the journey of Pujya Mataji from Delhi to Hastinapur in the first half of April.

After it, Bhagwan Rishabhdeva-Mahavir Seminars were organized on **3rd May, 13th May, 18th May and 21st May** at Jamboodweep (Hastinapur). On 21st May, more than 20 scholars of Tirthankar Rishabhdeva Vidvat Mahasangh presented their effective views on the presently needed practical aspects of the philosophy of the first Tirthankar.

On **11th June National Seminar on 'Antiquity of Jainism'** at Jamboodweep (Hastinapur) proved to be the milestone as the prime institute of the Secondary Education of the country-NCERT took proper notice of the voice of the Jain Community.

Between the journey of Pujya Mataji from Hastinapur to Delhi between 20th June to 10th July, a no. of seminars were organized : **24th June 2000**-Pallavpuram, Meerut-"Present Need of the Principles of Lord Rishabhdeva" **27th June 2000**-D-Block, Shastri Nagar, Meerut-"Lord Rishabhdeva in Puranas".

28th June 2000—Jain Boarding House, New Prempuri, Meerut-"Life Philosophy of Bhagwan Rishabhdeva".

5th July 2000—Kavi Nagar, Ghaziabad-"Bhagwan Rishabhdeva-First Propagator of the Human Culture."

6th July 2000—Ghantaghar, Ghaziabad-"Principles of Bhagwan Rishabhdeva"

9th July 2000—Mayur Vihar, Delhi-"Lecture on Bhagwan Rishabhdeva".

On **10th Aug. 2000**, such a Seminar was organized at Kamal Mandir, Preet Vihar, Delhi by All India Digambar Jain Mahila Sangathan-Delhi Unit in the presence of Pujya Mataji; the subject was Bhagwan Rishabdeva-Mahavir : Life Philosophy. Other Seminars/Lectures were as follows :

16th Sept. 2000—Vanasthali Public Senior Secondary School-Madhu Vihar, Patpargunj, Delhi-'Introduction of the Tirthankar Tradition from Lord Rishabhdeva upto Mahavir.'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

29th Sept. 2000—Mother Teresa Public School, Preet Vihar, Delhi-'Moral Values Preached by Tirthankars'.

19-20th Nov.—Etah City, U.P.'-How Bhagwan Rishabhdeva became Tirthankar?' (in presence of Pujya Muni Shri Amit Sagar Ji & Ganini Vishuddhmati Mata Ji & their Sanghs)

Besides the above Seminars in the presence of Pujya Mataji, a no. of Speech Competitions, Debates, Lecture series etc. were also organized on various subjects as *Bhagya* (Luck)& *Purushartha* (Self efforts), *Dharma* (Religion) & *Vigyan* (Science), Rakshabandhan Lecture Series, Harms By Doordarshan etc. at various times.

Reports of organizing of such seminars have also been obtained from other parts of the country. Major details as follows :

28-29th Mar. 2000—Kund-Kund Gyanpeeth, Indore-A very successful Seminar in 4 sessions (Presence of Upadhyaya Muni Shri Nijanand Sagar Ji).

All India Digambar Jain Mahila Sangathan also organized Bhagwan Rishabhdeva Seminar at their respective places. Some details are as follows-

June 2000—Mahu, **July 2000**-Kanchanbagh-Indore, **Aug. 2000**-Rajmohalla-Indore, Kalani Nagar-Indore, Tilak Nagar-Indore, Chhatarpur, Delhi.

Sept. 2000—Mandsaur, Gautampura-Indore

Oct. 2000—Chhatarpur, Bhagwa, Bara Malhara, Dronegiri.

Dec. 2000—Shivpuri

VIDVAT MAHASANGH ORGANIZED FOLLOWING SEMINARS—

1. Dr. Sanjeev Saraaf-Sagar and Pt. Shikher Chand Jain-Sagar organized 11 Seminars at Sagar and Damoh Districts.

2. Shri Suresh Jain Marora-Shivpuri organized 5 Seminars at Shivpuri District.

3. Dr. Abhay Prakash Jain-Gwalior-2 Seminars at Gwalior.

4. Dr. Rama Jain-Chhatarpur & Mahila Sangathan combinedly organized such seminars.

Dr. Rama Jain has reported 61 Seminars in Chhatarpur & Shivpuri Districts, while 11 seminars were organized by Dr. Vandana Jain, Agar-Malwa.

As per the report obtained from Shri Ajit Jain, Canada **The International Mahavira Jain Mission of Canada (IMJMC) also celebrated Bhagwan Rishabhdeva's Nirvana Mahotsava by organizing Talks (Seminar) on June 11 at the Jain Centre in Toronto.**

Special Programmes—1. Kund-Kund Gyanpeeth Examination Institute organized a special Examination of its 10000 students on 3rd Feb. 2001. Its subject was **Bhagwan Rishabhdeva and Jain Dharma**. Out of provided 200 questions, students were tested for 50 selected queries after a gap of 3 months.

2. Tirthankar Rishabhdeva Jain Vidvat Mahasangh organized "All India Essay Competition" on the sujbect **"भगवान ऋषभदेव का संस्कृति को अवदान"** Results were obtained from M.P., Rajasthan & South India. Total 69 Essays were obtained from M.P., while 43 Essays were obtained from Rajasthan.

3. By the inspiration of Pujya Mataji, Jain Milan-Meerut organized Bhagwan Rishabhdeva Questionnaire competition on 5th Sept. 2000. 700 entries were obtained, out of which 325 entries were found to be correct (3 Categories). Prize distribution was done on 15th Sept. 2000.

Rishabdeva-Mahavir Questionnaire Competition was organized in the presence of Pujya Mataji also in Feb. 2000 and Sept. 2000. Winners were given the prizes.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4. Kund-Kund Gyanpeeth published special matter on Bhagwan Rishabhdeva in its magazine Arhat Vachan, Jan. 2001 issue remained specific in this sense. Rishabh Deshna, the magazine of Akhil Bharatvarshiya Digambar Jain Mahila Sangathan also published special matters in this year.

A no. of books were also published by Digambar Jain Trilok Shodh Sansthan as-

" ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती"

Rishabhdeva Nirvan Mahotsava-Pragya Shramni Aryika Chandnamati

Jain Dharma & Lord Rishabhdeva-Ganini Pramukh Ayika Gyanmati

(Translated by-Pragya Shramni Aryika Chandnamataji)

ऋषभदेवं दशावतार नाटक-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती माताजी

ऋषभदेव नृत्य नाटिका-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती माताजी

प्रयाग तीर्थ पूजा-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती माताजी

प्रयाग तीर्थ वंदना-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती माताजी

5. Special Articles and related News were published by various Jain Magazines & News papers, National New papers, Regional News Papers (Maharashtra, Rajasthan, Gujrat, U.P. etc.), International Magazines & New Papers as Jain Spirit, Jain Digest, India Abroad etc. throughtout the year.

6. Stories on the life of Bhagwan Rishabhdeva and Prayag Tirth kshetra were displayed by Web Dunia, (webdunia.com/kumbh up info) the Internet site which covered the entire Kumbh Mela- Prayag in Jan.-Feb. 2001. Other sites have also covered the related matter.

7. Literature, written by Pujya Ganini Shri Gyanmati Mataji on Lord Rishabhdeva and His Preachings was sent for the National Library of Bulgaria through Mr. Edwin Sugarev, Bulgarian Embassador at India.

8. Photo of **Bhagwan Rishabhdeva Teaching His Daughters Brahmi & Sundari** was sent to all the Jain Schools of Delhi & other states so that such statues may be constructed to indicate the initiation of Education & Women Education in the beginning of the age by Bhagwan.

9. Shri V. Dhananjaya Kumar Jain, Ex-Union Finance Minister, was awarded 'Bhagwan Rishabhdev National Award', the highest award of the Nirvan Mahamahotsava year. The award was presented during Kundalpur Mahotsava in the year 2003 at Kundalpur (Nalanda), the birthplace of Lord Mahavir.

Thus the Nirvan Mahotsava year proved to be a landmark and unique in its own sense. **The name of Lord Rishabhdeva again came on the tongue of the general public** and side by side the inspirator of the year Pujya Ganini Shri Gyanmati Mataji inspired to follow the path told by all the 24 Tirthankars through her Pravachans in various assemblies, T.V. channels as Doordarshan, Zee, Jain, DD-Metro, Aastha etc. (Above 100 pravachans in various T.V. channels) and Akashvani etc.

Ultimately it is to be noted that only the major details of the achievements of one year have been reported in the above article, however Pujya Mataji had started her efforts in this regard since 1993 onwards.

Thus at one side where the whole year remained engaged with a lot of activities, the conclusion of the year proved to be a real boon because a permanent Tirth-Rishabhdev Puram Digambar Jain Tirth was gifted to the world, specificity is that this Tirth will carry the illumination of Jin-Shasan & Lord Rishabhdeva to masses for ages to come.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय सहस्राब्दि का अंतिम दशक ऋषभदेवमय रहा

प्रस्तुति-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

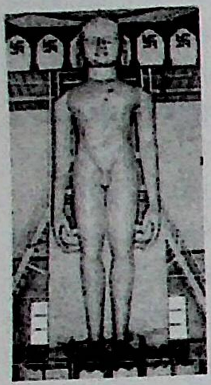

जैन रामायण पद्मपुराण की निम्न पंक्तियाँ एक वास्तविक तथ्य को उजागर करने के लिए सार्थक ही प्रतीत होती हैं—

आचाराणां विघातेन, कुदृष्टीनां च सम्पदा।
धर्मग्लानिपरिप्राप्त-मुच्छ्रयन्ते जिनोत्तमाः।।

अर्थात् जब धरती पर सदाचार का विघात होने लगता है, अत्याचार की वृद्धि होने लगती है एवं धर्म की ग्लानि-हानि होने लगती है तब तीर्थंकर महापुरुष अवतीर्ण होकर संसार को योग्य उपदेश प्रदान करते हैं।

इसी तथ्य को हिन्दू धर्म की भगवद्गीता में "यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत........" इत्यादिरूप में बताया गया है।

तात्पर्य यह है कि वर्तमान सहस्राब्दियों ने भी कलियुगी स्वरूप प्राप्त करने के साथ ही कुछ महाशक्तियों को जन्म देकर अपने असली रूप में संसार को परिचित कराया है। महाशक्तियों की इस शृँखला में बीसवीं शताब्दी ने पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैसे सर्वोदयी एवं शारदीय व्यक्तित्व को जन्म देकर धरती पर अनन्त उपकार किये हैं। इनकी प्रेरणा से जहाँ अनेक तीर्थों के विकास एवं निर्माण हुए हैं, वहीं इन्होंने इतिहास को नया रूप प्रदान करने का भी दृढ़ संकल्प लिया है, जिसके फलस्वरूप प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का प्राचीन जीवनवृत्त दुनिया के समक्ष आ सका है।

सहस्राब्दि का अंतिम दशक—

यूँ तो पूज्य ज्ञानमती माताजी ने सदैव ही भगवान ऋषभदेव के उपकारों से सबको परिचित कराने हेतु विपुल साहित्य रचना की है। सन् 1976 में संस्कृत भाषा में रचित चौबीस तीर्थंकरों का कल्याण कल्पतरु स्तोत्र एवं सन् 1987 में कल्पद्रुम विधान की संरचना में तो ऋषभदेव से महावीर तक चौबीसों तीर्थंकर भगवन्तों का सम्पूर्ण आध्यात्मिक वैभव दर्शाया ही गया है फिर भी द्वितीय सहस्राब्दि का अंतिम दशक अपने आप में विशेष सौभाग्यशाली रहा है जिसने जैनधर्म के शाश्वत, प्राकृतिक और अनादिनिधनपने पर लगे प्रश्नचिन्हों का समुचित उत्तर देते हुए विश्वस्तर पर उसे स्थापित कर भगवान महावीर से पूर्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से पार्श्वनाथ तक तेईस एवं सम्पूर्ण चौबीसों तीर्थंकरों के अस्तित्व से दुनिया को परिचित कराया है। इन दश वर्षों की कतिपय संक्षिप्त झलकियाँ प्रस्तुत करके मैं पाठकों को उस लघु इतिहास से परिचित कराना चाहती हूँ, जो पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैसी मातृशक्ति की प्रेरणा एवं समाज के भामाशाहों की दानशक्ति से निर्मित हुआ है। अतः प्रस्तुत है सहस्राब्दि के अंतिम दशक की उपलब्धियों का विवरण—

(1) 23 अक्टूबर सन् 1992, कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी (धनतेरस) का वह दिवस सचमुच इतिहास का स्वर्णिम दिवस बन गया, जब ब्रह्ममुहूर्त की एकाग्र सामायिक में पूज्य माताजी को अयोध्या में विराजमान 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव के दर्शन हुए तथा अयोध्या की ओर विहार करने की अन्तर्प्रेरणा जागृत हुई। 6 दिसम्बर 1992 को अयोध्या में बाबरी मस्जिद गिरने के भयावह कांड के पश्चात् अनेक लोगों के द्वारा रोकने के बावजूद भी उस अन्तर्प्रेरणा के संकल्प में कोई परिवर्तन नहीं आया।

(2) 11 फरवरी 1993, वीर निर्वाण संवत् 2519 की फाल्गुन कृष्णा पंचमी को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से अयोध्या की ओर हुए संघ विहार के द्वारा ऋषभदेव का जयनाद जो प्रारंभ हुआ अपने चरमलक्ष्य की प्राप्ति तक रुका ही नहीं।

(3) 16 मार्च 1996, चैत्र कृष्णा नवमी को ऋषभदेव जन्मजयंती के दिन "अहिच्छत्र" अतिशय क्षेत्र पर प्रथम तीर्थ दर्शन के उपलक्ष्य में भगवान पार्श्वनाथ के श्रीचरणों में अपनी भेंट चढ़ाने सदृश पूज्य माताजी ने वहाँ तीर्थक्षेत्र कमेटी को "तीस चौबीसी मंदिर" निर्माण की प्रेरणा प्रदान की, जो 11 शिखर वाले विशाल मंदिर के रूप में वहाँ निर्मित हो चुका है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(4) 8 अप्रैल 1993, वैशाख कृष्णा दूज को सीतापुर में पूज्य माताजी ने अपने 37वें आर्यिका दीक्षा जयंती की सभा में जब अकस्मात् अयोध्या में भगवान ऋषभदेव जिनालय के आजू-बाजू तीन चौबीसी मंदिर एवं समवसरण मंदिर निर्माण की घोषणा की, तो उपस्थित भक्तसमूह की भावनाएँ सागर की लहरों के समान वृद्धिंगत हो उठीं थीं। इस घोषणा के पीछे भी माताजी की भावना जैनधर्म की प्राचीनता को ही बतलाने की रही कि भगवान ऋषभदेव से भी पूर्व कितने सारे तीर्थंकर महापुरुषों ने जैनशासन का महत्व प्रकाशित किया तथा इस युग के अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी के आगे भी अनेक तीर्थंकर भगवान इस धरती पर जन्म लेकर जैनधर्म को प्रवर्तित करते रहेंगे। ये दोनों मंदिर अयोध्या में सन् 1994-95 में निर्मित हो चुके हैं।

(5) 30 अक्टूबर 1993 को अयोध्या तीर्थ पर चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी की 60वीं जन्मजयंती समारोह के अवसर पर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान एवं अवध विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में "भारतीय संस्कृति के आद्यप्रणेता भगवान ऋषभदेव" नाम से त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में उच्चकोटि के 60 विद्वानों ने पधारकर अपने शोधपूर्ण लेख प्रस्तुत किये।

(6) 24 फरवरी 1994, माघ शुक्ला त्रयोदशी को अयोध्या में प्रथम बार भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक एवं तीन चौबीसी प्रतिमाओं का पंचकल्याणक महोत्सव तथा प्राचीन टोंकों का जीर्णोद्धार, चौबीस तीर्थंकरों की चरण स्थापना आदि अनेक कार्य सम्पन्न हुए।

(7) सन् 1994 में ही पूज्य माताजी की प्रेरणा से उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा अयोध्या में ऋषभदेव नेत्र चिकित्सालय, ऋषभदेव राजकीय उद्यान, अवध विश्वविद्यालय में ऋषभदेव पीठ की स्थापना आदि कार्य हुए। माताजी ने अयोध्या के इस प्रवास काल में ऋषभजन्मभूमि अयोध्या, अयोध्या पूजा, भगवान ऋषभदेव विधान आदि साहित्य रचना की।

(8) 20 फरवरी 1995, फाल्गुन कृष्णा पंचमी को अयोध्या में समवसरण मंदिर की प्रतिष्ठा तथा दोनों मंदिरों पर कलशारोहण।

(9) 20 फरवरी 1995 को अयोध्या के ऋषभदेव राजकीय उद्यान में लाला महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट-दिल्ली के सौजन्य से कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी द्वारा निर्मित 21 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का फैजाबाद के कमिश्नर श्री राधेश्याम कौशिक द्वारा अनावरण।

(10) 11 मार्च 1996 को इंदौर में ही पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव द्वारा उद्घाटित नारी शक्ति के प्रतीक में "अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन" नामक एक महिलाओं की संस्था की स्थापना हुई, जिसकी देश में आज लगभग 300 इकाइयाँ हैं, ये संगठन व्यापक स्तर पर ऋषभदेव की शिक्षाओं के प्रचार में संलग्न है।

(11) 11 मार्च 1996, चैत्र कृष्णा नवमी (ऋषभदेव जन्मजयंती) के दिन कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इंदौर में (मांगीतुंगी की ओर मंगल विहार के मध्य इंदौर पदार्पण पर) पद्मश्री बाबूलाल जी जैन पाटोदी ने पूज्य माताजी के राष्ट्रव्यापी भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती मनाने के संकल्प की प्रथम शृँखला में दीप प्रज्वलित किया।

(12) अक्टूबर 1996, शरदपूर्णिमा को मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र (महा.) में चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी ने पर्वत पर किये गये ध्यान से प्राप्त अन्तर्प्रेरणा के अनुसार पर्वत के ऊपर ही पूर्व मुख चट्टान में भगवान ऋषभदेव की 108 फुट ऊँची प्रतिमा निर्माण की घोषणा कर दी, तब उसी समय संघपति महावीर प्रसाद जैन सहित दिल्ली एवं महाराष्ट्र के अनेक दानी महानुभावों ने अपनी-अपनी ओर से प्राथमिक स्तर पर एक लाख त्रेसठ हजार एक रुपये की राशि (1,63,001 रु.) घोषित करते हुए उस अद्वितीय निर्माण का संकल्प लिया। पुनः मूर्ति निर्माण का एक ट्रस्ट बनाकर ब्र. कर्मयोगी रवीन्द्र जी को अध्यक्ष, आमदार श्री जयचंद कासलीवाल को कार्याध्यक्ष, संघपति महावीर प्रसाद जैन को कोषाध्यक्ष एवं डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल को महामंत्री मनोनीत किया गया। इन सभी के साथ 21 व्यक्तियों की निर्माण कमेटी ने पर्वत पर मूर्ति निर्माण का सरकारी आदेश प्राप्त कर लिया है, वह निर्माण प्रारंभ हो चुका है, जो आने वाले युग के लिए भारतीय इतिहास को विश्व के समक्ष अति गौरव के साथ प्रस्तुत कर सकेगा।

(13) जनवरी 1997, अहमदाबाद (गुज.) में ऋषभदेव जन्मजयंती समारोह की राष्ट्रीय समिति का गठन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(14) 12 मार्च 1997 को पूज्य ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षाभूमि माधोराजपुरा (राज.) में दीक्षा तीर्थ का शिलान्यास हुआ, जहाँ संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन के सौजन्य से भगवान पार्श्वनाथ की बड़ी प्रतिमा स्थापित हो रही है तथा लाला कमलचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली के सौजन्य से गणिनी ज्ञानमती कीर्तिस्तंभ का भी निर्माण होगा।

(15) 30 मार्च 1997, चैत्र शुक्लां षष्ठी रविवार को दिल्ली के लालकिला मैदान में (माताजी के मांगीतुंगी से वापस दिल्ली आगमन की स्वागत सभा में) पूज्य माताजी ने दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री साहब सिंह वर्मा से दीप प्रज्वलित करवाकर देश भर को भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती मनाने का आह्वान किया। एक प्रेरणा पर मुख्यमंत्री ने दिल्ली के एक पार्क को भगवान ऋषभदेव मैदान का नाम देने की घोषणा की। वर्तमान में लालकिला के सामने वाला सुभाष मैदान (परेड ग्राउन्ड) का नाम ऋषभदेव ग्राउन्ड हो चुका है।

(16) 2 अप्रैल 1997, चैत्र कृष्णा नवमी को दिल्ली में प्राचीन अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के अन्तर्गत बनाई गई "भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव समिति" के संयुक्त तत्वावधान में ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव मनाया गया। कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन की अध्यक्षता वाली उपर्युक्त महोत्सव समिति द्वारा देशभर में प्रेरणास्पद पोस्टर भेजे गये अतः हजारों स्थानों पर भगवान ऋषभदेव की जयन्ती, अक्षयतृतीया पर्व, गर्भकल्याणक, मोक्षकल्याणक आदि तिथियों में व्यापक आयोजन किये गये जिससे जन-जन को जैनधर्म की प्राचीनता का परिचय प्राप्त हुआ।

(17) 9 मई 1997, वैशाख शु. 3 (अक्षयतृतीया) के दिन दिल्ली की ऋषभविहार कालोनी में पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके संघ सानिध्य में लघुपंचकल्याणक के साथ ही आहारमुद्रा वाली भगवान ऋषभदेव प्रतिमा के आहार का दृश्य एक विशाल समारोह के रूप में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में हजारों नर-नारियों ने भगवान को इक्षुरस का आहार देकर तथा देखकर प्रसाद ग्रहण किया।

(18) दिल्ली की पार्श्व विहार, बाहुबली एन्क्लेव आदि कालोनियों में पूज्य माताजी के सानिध्य में ऋषभजयंती के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

(19) मई-जून 1997 में सादतपुर-दिल्ली एवं सूर्यनगर-गाजियाबाद में मंदिर के शिलान्यास करवाकर पूज्य माताजी ने ऋषभदेव से महावीर तक चौबीसों तीर्थंकर के अस्तित्व को प्रचारित करने की प्रेरणा दी।

(20) इसी जन्मजयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत **8 जून से 15 जून 1997** तक पूज्य माताजी की प्रेरणा से श्री अनिल कुमार जैन, (डी-107, प्रीतविहार) दिल्ली ने अपने मकान के परिसर में बनाये गये कमल मंदिर में विराजमान होने वाले भगवान ऋषभदेव का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव व्यापक स्तर पर माताजी के संघ सानिध्य में सम्पन्न किया।

(21) 4 अक्टूबर से 13 अक्टूबर 1997 तक पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में दिल्ली के रिंगरोड मैदान में (राजघाट के सामने) चौबीस कल्पद्रुम मण्डल विधानों का विराट आयोजन उपर्युक्त ऋषभजयंती महोत्सव समिति द्वारा किया गया। इसमें चौबीसों भगवान के समवसरणों के समक्ष 3000 (तीन हजार) से अधिक नर-नारियों ने केशरिया परिधान में पूजा विधान किया तथा लाखों लाख लोगों ने वह महाकुंभ सदृश दृश्य देखकर राजधानी के भक्ति इतिहास को अमर कर दिखाया, जो आज भी श्रद्धालुओं के हृदयपटल पर अंकित है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा झण्डारोहण कर प्रारंभ किये गये इस अतिशयकारी भक्तियज्ञ के द्वारा जनमानस को ऋषभदेव से महावीर तक चौबीसों तीर्थंकर भगवन्तों का अस्तित्व ज्ञात हुआ और विधान की स्मृति को चिरस्थाई बनाने हेतु मुख्यमंत्री साहब सिंह वर्मा द्वारा रिंगरोड के मैदान का "कल्पद्रुम मैदान" नाम घोषित किया गया। इस अवसर पर पधारे म.प्र. के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने भोपाल के एक उद्यान का नाम ऋषभदेव उद्यान रखने की घोषणा की, जो वहाँ सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होकर नामकरण से समन्वित भी हो चुका है।

(22) 22 मार्च 1998, चैत्र कृष्णा नवमी को भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती के दिन पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में जन्मजयंती महोत्सव वर्ष के समापन के उपलक्ष्य में लाल किला मैदान दिल्ली से "भगवान ऋषभदेव समवसरण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीविहार रथ" का प्रवर्तन हुआ तथा केन्द्रीय वित्तराज्य मंत्री श्री धनंजय कुमार जैन की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तित होकर उस समवसरण एवं ऐरावत हाथी रथ के द्वारा देश के कोने-कोने में जैनधर्म की प्राचीनता एवं विश्वशांति, पारस्परिक मैत्री का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। इस समवसरण के दिल्ली प्रवर्तन के मध्य अप्रैल 1998 में नजफगढ़ दिल्ली के अंदर पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में वहाँ की समाज ने "भरतक्षेत्र रचना" नाम से एक तीर्थ बनाने का संकल्प लिया तथा शिलान्यास के पश्चात् उसका निर्माण भी माताजी के निर्देशन में करवा रहे हैं।

(23) 4 अक्टूबर से 6 अक्टूबर 1998 तक जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी के चातुर्मास के मध्य "भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन" आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में देश भर के विश्वविद्यालयों से पधारे लगभग 25 कुलपतियों एवं शताधिक विद्वानों ने ऋषभदेव एवं जैनधर्म की प्राचीनता पर अपने-अपने शोधपूर्ण आलेख तथा विचार प्रस्तुत किये। इस सम्मेलन के मध्य माताजी ने "तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ" नामक एक विद्वानों की संस्था स्थापित की, जो आज भगवान ऋषभदेव का व्यापक प्रचार कर रही है।

(24) दिसम्बर 1998 में कमलानगर-मेरठ के दिगम्बर जैन मंदिर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से श्री प्रेमचंद जैन, तेल वालों के द्वारा निर्मित 24 तीर्थंकर एवं विद्यमान 20 तीर्थंकरों के कमल मंदिरों की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा माताजी के संघ सानिध्य में सम्पन्न हुई।

(25) अप्रैल 1999 में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में ऋषभदेव के प्रथम आहार के प्रतीक में माताजी की प्रेरणा से भगवान की सवा सात फुट उत्तुंग आहारमुद्रा वाली प्रतिमा विराजमान हुई, जहाँ अक्षयतृतीया को राजा श्रेयांस द्वारा आहारदान का कार्यक्रम शुभारंभ किया गया।

(26) 22 मई 1999 को कमलमंदिर-प्रीतविहार, दिल्ली में पूज्य माताजी ने भगवान ऋषभदेव के उपकारों से सम्पूर्ण विश्व को परिचित कराने हेतु सम्पूर्ण जैन समाज के कार्यकर्ताओं को प्रेरणा प्रदानकर "भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव समिति" के नाम से एक समिति गठित कराई। पुनः अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर कनॉटप्लेस, दिल्ली में चातुर्मास के मध्य उस समिति के माध्यम से कार्याध्यक्ष ब्र. कर्मयोगी रवीन्द्र कुमार जैन ने देश-विदेश में पोस्टर, फोल्डर आदि भेजकर माघ कृष्णा चतुर्दशी, 4 फरवरी 2000 को भगवान ऋषभदेव का निर्वाणकल्याणक मनाने का आह्वान किया।

इस महोत्सव को सभी ने समय की आवश्यक मांग के रूप में स्वीकार करते हुए यथाशक्ति खूब प्रभावनापूर्वक मनाया तथा पाठ्यपुस्तकों में लिखित जैनधर्म से संबंधित भ्रान्त धारणाओं पर जब समिति ने सबका ध्यान केन्द्रित किया तो जैन समाज के अन्य लोगों ने भी सरकारी शिक्षा तंत्र को पाठ परिवर्तन एवं संशोधन करने हेतु तमाम पत्र लिखकर उन्हें दूसरा पाठ लिखने को मजबूर कर दिया, जिसके फलस्वरूप पाठ्य पुस्तकों में संशोधन हुआ भी है।

(27) 4 फरवरी से 10 फरवरी 2000 तक दिल्ली के लालकिला मैदान में वित्तराज्यमंत्री श्री धनंजय जैन की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा "ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव एवं जैन मेला" का उद्घाटन हुआ, जिसमें विशाल कैलाशपर्वत के समक्ष प्रधानमंत्री जी के साथ लगभग 50 हजार नर-नारियों ने 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाये, पुनः 6 से 10 फरवरी तक 72 रत्नप्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई तथा जैन मेले में अनेक प्रेरणास्पद चलचित्र, झाँकियाँ, प्रदर्शनी, तीर्थक्षेत्र चित्र प्रदर्शनी, दिल्ली के समस्त जैन मंदिरों की चित्र प्रदर्शनी आदि विशेष आकर्षण का केन्द्र रहीं। 4 फरवरी को ही पूज्य माताजी ने ऋषभदेव महोत्सव वर्ष तथा वर्ष भर में 1008 संगोष्ठियाँ, 108 ऋषभदेव विधान आदि की घोषणा की थी, उसका पूरा विवरण वार्षिक रिपोर्ट में दिया गया है। विदेशों में भी निर्वाण लाडू एवं संगोष्ठी सम्पन्न हुई हैं।

(28) 16 अप्रैल से 20 अप्रैल 2000 तक जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में तृतीय पंचवर्षीय महोत्सव के अवसर पर विमलेश कुमार दीपक कुमार जैन-गुलमोहर पार्क, दिल्ली की ओर से भगवान ऋषभदेव का पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हुआ तथा वहाँ त्रिमूर्ति मंदिर के शिखर पर कलशारोहण भी किया गया। जंबूद्वीप का पंचवर्षीय महोत्सव भी इन्हीं तिथियों में सम्पन्न हुआ।

(29) 6 मई 2000 को जम्बूद्वीप स्थल पर अक्षय तृतीया का उत्सव कर जनता को इक्षुरस का प्रसाद वितरित किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(30) 20 जून 2000 को प्रातः 6.30 बजे पूज्य माताजी के जम्बूद्वीप से दिल्ली की ओर विहार की बेला में जम्बूद्वीप स्थल पर अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव में बनाये गये ऐतिहासिक कैलाशपर्वत को स्थायित्व प्रदान करने हेतु एक नूतन भवन के निर्माण का शिलान्यास श्री कमलचंद जैन कैलाशचंद जैन खारीबावली-दिल्ली के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ, जो उनके सौजन्य से ही निर्मित हो चुका है।

(31) 25 जून 2000 को पल्लवपुरम्-मेरठ में पूज्य माताजी के ससंघ पदार्पण के अवसर पर भगवान ऋषभदेव संगोष्ठी के मध्य लाला प्रेमचंद जैन-तेल वाले, मेरठ की ओर से सनावद (म.प्र.) के निर्माणाधीन णमोकारधाम तीर्थ परिसर में भगवान ऋषभदेव की 7 फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा विराजमान करने की घोषणा हुई। णमोकार धाम के निर्माता श्री प्रकाशचंद जैन-सनावद भी वहाँ उपस्थित थे, उन्होंने प्रेमचंद जी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

(32) कमलमंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली में सन् 2000 के चातुर्मास के मध्य अक्टूबर में विकास मार्ग पर जैन समाज प्रीतविहार द्वारा बनाई गई "कैलाश मानसरोवर यात्रा" भी इसी महोत्सव वर्ष की महान उपलब्धि है, जिसमें लाखों नर-नारियों ने यात्रा करके भगवान ऋषभदेव के निर्वाणस्थल का महत्व समझा।

(33) 10 अगस्त 2000 को नजफगढ़ दिल्ली में भरतक्षेत्र रचना परिसर में ही "ऋषभदेव धर्मस्थल" का शिलान्यास हुआ, जहाँ भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा विराजमान करके जनमानस को जैनधर्म की प्राचीनता का दिग्दर्शन कराया जायेगा।

(34) इसी चातुर्मास के मध्य भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक भूमि प्रयाग में ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ के निर्माण की अनेकानेक बैठकें कमल मंदिर में सम्पन्न हुईं, उसी के फलस्वरूप प्रयाग में नूतन तीर्थ का विशाल निर्माण होकर पंचकल्याणक एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पन्न हुआ।

(35) अगस्त 2000 में न्यूयार्क-अमेरिका में सम्पन्न "सहस्राब्दि विश्वशांति शिखर सम्मेलन" में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की ओर से जैन धर्माचार्य के रूप में कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन ने भाग लेकर भगवान ऋषभदेव का विश्वव्यापी प्रचार किया, जो अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव को सार्थक करने का परिचायक रहा।

(36) 4 अक्टूबर 2000 को प्रयाग में "तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग-तीर्थ का शिलान्यास।

(37) 10 दिसम्बर 2000 को प्रयाग में दीक्षास्थली तीर्थ पर भगवान ऋषभदेव के दीक्षाकल्याणक तपोवन, समवसरण रचना, कैलाशपर्वत एवं ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास।

(38) निर्वाण महोत्सव के समापन एवं तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ के लोकार्पण अवसर पर प्रयाग के मंच से केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी द्वारा दिया गया। वह वक्तव्य उपर्युक्त महोत्सवों की सफलता का परिचायक रहा, जिसमें उन्होंने पाठ्यपुस्तकों में लिखे गये जैनधर्म के गलत पाठ को संशोधित कर वास्तविक तथ्यों से समन्वित पाठ जोड़ने का संकल्प विशाल जनसमूह के मध्य घोषित किया।

इस प्रकार सन् 1992 से 2001 तक पूज्य माताजी द्वारा देश-विदेश में भगवान ऋषभदेव एवं सार्वभौम जैनधर्म के प्रचार-प्रसार के कतिपय अंश मैंने प्रस्तुत किए हैं। इन दश वर्षों में धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं सार्वजनिक आदि सर्वतोमुखी रूप से ऋषभदेव का नाम जन-जन के मुख पर आया है। नूतन सहस्राब्दि में यह अनादिनिधन, प्राकृतिक जैनशासन इसी प्रकार वृद्धिंगत होता रहे, यही मंगल कामना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्वशांति शिखर सम्मेलन : न्यूयार्क में हुआ भगवान ऋषभदेव का उद्घोष

लेखक- कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

20 जून 2000 को जम्बूद्वीप में श्री बावा जैन-न्यूयार्क एवं डॉ. भूपेन्द्र मोदी, भारत से प्राप्त एक पत्र के द्वारा यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तृतीय सहस्राब्दि में अनेक राजनीतिक प्रगतियों के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा न्यूयार्क (अमेरिका) में **विश्व शांति शिखर सम्मेलन (World Peace Summit)** का आयोजन किया जा रहा है। विश्वभर के धर्माचार्यों द्वारा विश्वशांति स्थापित करने हेतु इस अनूठे महाकुंभ कार्यक्रम के महासचिव श्री बावा जैन, न्यूयार्क के इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के नाम का आमंत्रण प्राप्त हुआ था। डॉ. मोदी के संलग्न पत्र के अनुसार मैंने 25 जून को स्वामी दयानंद सरस्वती के ऋषिकेश स्थित आश्रम में इस सम्मेलन में जाने वाले भारतीय धर्माचार्यों की अग्रिम सभा में भाग लिया। इस सभा में पूर्व राष्ट्रपति श्री आर.वेंकटरामन, प्रसिद्ध जैन विधिवेत्ता श्री एल.एम.सिंघवी एवं श्री अशोक सिंघल सहित अनेक गणमान्य महानुभाव एवं विभिन्न धर्मों के लगभग 100 धर्माचार्य उपस्थित हुए। इसके माध्यम से शिखर सम्मेलन के आयोजन, उद्देश्य एवं कार्यक्रम संबंधी विस्तृत जानकारी मुझे प्राप्त हुई। आर्यिका व्रतों के परिपालन के कारण पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का इस सम्मेलन में भाग लेना संभव नहीं था, अतः द्वितीय निमंत्रण मुझे प्राप्त हुआ। इससे पूर्व अनेक बार हमारे भारतीय जैन समुदाय द्वारा कई बार आमंत्रित किए जाने पर भी विदेश यात्रा हेतु मेरी इच्छा नहीं बन सकी थी, परन्तु इस निमंत्रण पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने मुझे विशेष प्रेरणा दी कि जहाँ सम्पूर्ण विश्व में शांति, मैत्री एवं समरसता स्थापित करने के लिए सारे संसार के धर्माचार्य एकत्रित हो रहे हैं, वहाँ तुम्हें अवश्य जाना है। अतः सारी औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद मैंने अपनी प्रथम विदेश यात्रा का कार्यक्रम निर्धारित कर लिया, मेरे साथ पर्यवेक्षक (Observer) के रूप में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप के कोषाध्यक्ष श्री मनोज कुमार जैन भी गये थे।

भगवान ऋषभदेव के सर्वोदयी सिद्धान्तों को विश्व के क्षितिज पर पहुँचाने की दृष्टि से भारत के लगभग 100 धर्माचार्यों के प्रतिनिधि मण्डल के साथ मैं 27 अगस्त को एयर इंडिया विमान द्वारा दिल्ली से रवाना होकर अमेरिका पहुँचा, जहाँ 28 से 31 अगस्त तक चलने वाले इस सम्मेलन में मैंने भाग लिया, जिसका विवरण नीचे प्रस्तुत है। ज्ञातव्य है कि अमेरिका में समय (time) भारत से लगभग साढ़े 9 घंटे पीछे रहता है।

सम्मेलन के विविध सत्र

28 अगस्त 2000—सम्मेलन का 'उद्घाटन सत्र' सायं 4.30 बजे से प्रारंभ होकर 8.15 बजे रात्रि तक सम्पन्न हुआ। स्थान था-संयुक्त राष्ट्र संघ का विशाल सामान्य सभागार (General Assembly Hall); नगाड़ा वादन, शंखध्वनि, बांसुरी वादन, मुस्लिम अजान, ईसाई प्रार्थना, बौद्ध-धम्मपद पाठ आदि मंगल ध्वनियों/विभिन्न धर्मों के पाठों के साथ सम्मेलन का आरंभ हुआ।

सम्मेलन के महासचिव श्री बावा जैन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा बीच में ही सभी को मौनपूर्वक खड़े कराकर प्रार्थना कराई। इस सत्र में माता अमृतानंदामयी देवी, आचार्य चंदना जी (वीरायतन), श्री श्री रविशंकर, स्वामी चिदानंद सरस्वती, संत राजिन्दर सिंह, जे.पी. वास्वानी, दादी जानकी (ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय की अध्यक्ष) आदि भारतीय धर्माचार्यों सहित सभी धर्मों के धर्माचार्यों ने Hinduism, Buddhism, Islam, Christianity, Jainism, Sikhism, Zoroastrianism, Taoism, Judaism, Bahai आदि विश्व के प्रमुख धर्मों की 'प्रार्थनाएँ' प्रस्तुत की। सम्मेलन की उपसभापति 'डेना मरियम' ने समापन भाषण दिया। 'विश्वशांति के लिए प्रार्थना दिवस' इस प्रकार सम्पन्न हुआ।

रात्रि में विश्व हिन्दू परिषद, अमेरिका द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के आहार कक्ष में सभी के लिए शाकाहारी भोज का आयोजन था, जिसमें मैंने भाग न लेकर अपनी सामायिक आदि धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न कीं।

29 अगस्त 2000—सम्मेलन के दूसरे दिन का सत्र भी संयुक्त राष्ट्र संघ के सभागार में प्रातः 9.30 बजे से अफ्रीकी ड्रमों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(African drums) के वादन से प्रारंभ हुआ। मक्का के इमाम डॉ. अब्दुल रहमान ने अपनी मंगल कामनाओं से सत्र का प्रारंभ किया। तत्पश्चात् श्री बावा जैन के प्रारंभिक भाषण के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव कोफी ए. अन्नान ने अपने उद्घाटन भाषण के माध्यम से सम्मेलन की पृष्ठभूमि, उद्देश्यों एवं महत्ता को सारे विश्व के समक्ष प्रकट किया।

आज के दिन प्रथम सत्र की अध्यक्षता की-डॉ. करण सिंह (राज्य सभा सदस्य, भारत) ने। A call to Dialogue (संवाद हेतु आह्वानन) नामक इस सत्र में पोप जॉन पॉल द्वितीय के प्रतिनिधि, विश्व मुस्लिम लीग के महासचिव अब्दुल्ला-अल-ओबेद, जापान के शिन्टो (SHINTO) मान्यता के कुनी-कुनियाकी (Kuni Kuniaki) गिरजाघरों की विश्व काउंसिल के सचिव डॉ. कोनार्ड रेजर, जैन विद्वान् डॉ. एल.एम. सिंघवी, श्री शैंग येन (बौद्ध) एवं स्वामी आत्मस्वरूपदास आदि गणमान्य जनों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इसके बाद अमेरिकन बांसुरी वादन का कार्यक्रम हुआ। Religion, Peace and United Nations Organization (धर्मशांति एवं संयुक्त राष्ट्र संघ) विषय पर डॉ. मौरिस स्ट्रांग (सम्मेलन के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड के अध्यक्ष) के भाषण के बाद सम्मेलन के मानद् अध्यक्ष डॉ. टेड टर्नर के उद्बोधन से इस सत्र का अंत हुआ।

पुनः 12.30 से 2.30 बजे तक दोपहर के भोजन हेतु अवकाश प्रदान किया गया। 2.30 बजे दूसरा सत्र प्रारंभ हुआ, जिसका विषय था-The Role of Religion in Conflict Transformation (संघर्ष निवारण में धर्म की भूमिका), इस विषय पर माता अमृतानंदामयी देवी ने हिंदुत्व पर कन्नड़ में, श्री रबी एडिन स्टीनसाल्ट्ज (Judaism), डॉ. वान्डे एबिमबोला (Yoruba) तथा चीनी कैथोलिक कांफ्रेंस के उपसभापति विशप् (Fu Tieshen) ने चीनी भाषा में अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री एस. एन. गोयनका की बौद्ध धर्म प्रार्थना के साथ इस द्वितीय सत्र के प्रथम भाग का समापन हुआ।

पुनः इसी सत्र का द्वितीय भाग 4.35 बजे सायं से शुरू हुआ, जिसकी अध्यक्षता साहू श्रीमती इन्दू जैन, टाइम्स ग्रुप, भारत ने की। इसका विषय था-Towards a World Movement for Nonviolence (अहिंसा के लिए विश्व आंदोलन की ओर) इस सत्र में वक्ता रहे-इला गांधी (दक्षिणी अफ्रीकी की कांग्रेस सदस्या एवं महात्मा गांधी की पौत्री), बैटी विलियम्स, विशप् वष्टी मैककेन्जी एवं जेन गुडॉल। परम्परागत संगीत के साथ इस सत्र का समापन हुआ।

30 अगस्त 2000—आज के दिन न्यूयार्क के बेहतरीन वाल्डोर्फ-एस्टोरिया होटल के Grand Ballroom में प्रातः 9.15 बजे श्री मौरिस स्ट्रांग एवं डॉ. डेविड लिटिल (हार्वर्ड विश्वविद्यालय) की अध्यक्षता में Conflict Transformation विषय पर फ्रा राजावरामुनि (थाइलैंड), डॉ. अब्दुल्ला ओमार नसीफ (सऊदी अरब) तथा श्री रब्बी स्कनीयर (अमेरिका) ने क्रमशः बौद्धधर्म, इस्लाम एवं Judaism के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए।

इसके पश्चात् Forgiveness and Reconciliation विषय पर अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के महानिदेशक श्री जुआन सोमाविया (चिली), श्री जोन कैम्पबैल (अमेरिका) एवं श्री शिवाय सुब्रह्मण्यमस्वामी के भाषण हुए। 'Trialogues' विषय पर विभिन्न वक्तव्यों के पश्चात् स्वामी सत्यमित्रानंदगिरी जी द्वारा 'प्रार्थना' से इस सत्र का समापन हुआ।

भोजनोपरान्त, गरीबी उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण आदि मुख्य विषयों पर विविध भाषण सम्पन्न हुए।

31 अगस्त 2000—आज का कार्यक्रम भी 'वॉल्डोर्फ एस्टोरिया' होटल में सम्पन्न हुआ। प्रातः 9 बजे से प्रारंभ हुए सत्र की अध्यक्षता की श्री विलियम्स ल्यूरैंस (अमेरिका की संयुक्त राष्ट्र एसोसिएशन के अध्यक्ष) ने। विषय था-"संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्य गतिविधि में धार्मिक नेतृत्व को सम्मिलित करना।" मुख्य वक्ता रहे-अए-अए थांट (संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव यू थांट की पुत्री), जयंथ धनपाल (अवर महासचिव-निरस्त्रीकरण, यू.एन.ओ.), नितिन देसाई (अवर महासचिव-आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र, यू.एन.ओ.), मार्क मैलोक ब्राउन (प्रशासक), जुआन सोमाविया एवं मौरिस स्ट्रांग (संयुक्त राष्ट्र शांति विश्वविद्यालय के अध्यक्ष)। स्वामी सुश्री इंदिरा बेटी जी द्वारा प्रार्थना से यह सत्र समाप्त हुआ। ईथियोपिया-एरिट्रिया, सूडान, नाइजीरिया और सिएला लियोन में शांति स्थापना की चुनौती पर भी अन्य सत्रों में विचार प्रस्तुत किए गये।

सायं 3 बजे से समापन सत्र प्रारंभ हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री बावा जैन ने की। ईसाई प्रार्थना के पश्चात् संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। The Emerging Role of Religions नामक इस समापन सत्र में विविध वक्ताओं के भाषण सहित धर्माचार्यों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वारा संसार भर के लिए मंगल आशीर्वाद प्रदान किया गया। मैंने भी भगवान ऋषभदेव को विश्वशांति के प्रथम प्रतिपादक के रूप में वर्णित करते हुए पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का इस सम्मेलन हेतु मंगलं आशीर्वाद प्रस्तुत किया, साथ ही सम्पूर्ण भारतीय जैन समाज की ओर से श्री बावा जैन को इतनी कुशलतापूर्वक इस सम्मेलन की आयोजना हेतु हार्दिक बधाई प्रदान की। इस प्रकार विश्वशांति शिखर सम्मेलन सानंद सम्पन्न हुआ। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मैंने 'जैना' (JAINA) के अध्यक्ष श्री महेन्द्र पाण्ड्या जी के आग्रह पर 'दशलक्षण पर्व' न्यूयार्क में ही मनाने का निर्णय लिया था। 1 व 2 सितम्बर को मैं न्यूजर्सी एवं वाशिंगटन गया। 3 सितम्बर से जैन सेंटर, न्यूयार्क में प्रतिदिन दशलक्षण धर्मों पर मेरे प्रवचन सम्पन्न हुए। पूरे अमेरिका में 57 जैन सेंटर हैं, जिनमें से कुछ केवल सभास्थलों के रूप में हैं जबकि अन्यों में दिगम्बर व श्वेताम्बर मूर्तियाँ साथ-साथ विराजमान हैं। मुझे वहाँ पर सिद्धाचलम्, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर (107 मंजिला), स्टेचू ऑफ लिबर्टी आदि देखने का भी अवसर प्राप्त हुआ।

दशलक्षण पर्व की समाप्ति के पश्चात् विश्व प्रसिद्ध जल-प्रपात 'नियाग्रा फाल्स' देखकर मैं एवं मनोज जी 15 सितम्बर को भारत लौटने के लिए एयर इण्डिया विमान में सवार हुए तथा 16 तारीख की रात्रि को सकुशल दिल्ली लौट आए।

एक बात विशेष रूप से उल्लिखित करना चाहता हूँ कि यदि व्यक्ति अपने नियमों में दृढ़ रहे, तो सभी नियम पाले जा सकते हैं। मेरे लिए भी विदेश की धरती पर शुद्ध भोजन (सप्तम प्रतिमा की शुद्धि वाला) के नियम का निर्वाह पूरी तरह संभव सिद्ध हो सका।

इस यात्रा से मैंने यह निष्कर्ष भी प्राप्त किया कि विदेश यात्रा एवं धर्म प्रचार के लिए तो कभी भी जाया जा सकता है परन्तु विश्वशांति शिखर सम्मेलन के माध्यम से 100 से भी अधिक संस्कृतियों का प्रतिपादन करने वाले विविध धर्माचार्यों की वेशभूषा, रहन-सहन, भाषा, संस्कृति, कार्यपद्धति, विचार चिंतन को समीप से देखने एवं एक मंच पर बैठकर विश्व की ज्वलंत समस्याओं-गरीबी उन्मूलन, युद्ध विभीषिका, पर्यावरण विशुद्धि जैसे मुद्दों पर विचार-विमर्श करने का जो अवसर प्राप्त हुआ, वह अन्यत्र संभव नहीं हो सकता था। सभी धर्माचार्य अपने-अपने देशों की जनता में इस सम्मेलन के माध्यम से प्राप्त चिंतनीय बिंदुओं को क्रियान्वित करने का प्रयास करेंगे, तब ही इसकी सार्थकता सिद्ध होगी।

वास्तव में 'जैन' नाम से खोली गई शिक्षण संस्थाओं में यह हिंसामय बायलोजी शिक्षण नहीं होना चाहिए। अरे! आटे का मुर्गा बनाकर बलि करने वाले यशोधर राजा ने दस भवों तक जो दुःख भोगे हैं, वह कथा पढ़कर हर किसी को सोचना चाहिए कि भले ही इन मेंढकों के मारने में डाक्टरी सीखकर, आगे हजारों रोगियों का आपरेशन कर उन्हें जीवनदान देंगे किन्तु हजारों जीवनदान के पुण्य से एक जीव का बुद्धिपूर्वक घात करना, उस पुण्य से अधिक गुणा बड़ा महापाप है।''

(मेरी स्मृतियाँ, पेज-232)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी का सातिशय-भक्ति परिणाम : विश्वशांति महावीर विधान

लेखक-पं. शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी

मंगल सूत्र-

जय जय सिद्धार्थ तनय जिनवर,
जय त्रिशलानंदन वीर प्रभो।
जयत्रिभुवन के चूड़ामणि प्रभु,
जय जगत्पिता महावीर प्रभो।।
(विधान जयमाला)

विश्ववन्द्य युगनायक भगवान महावीर परम इष्ट, अधिकृत और अभिमत परम वीतराग देव हैं। वर्तमान युग की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी आराध्य सभी नव देवों के प्रति भक्तिभाव को संजोए हुए भी वीरप्रभु को विश्वशांति हेतु एवं स्वयं की मोक्षप्राप्ति हेतु परम औषधि मानती हैं। निम्न पंक्तियाँ उन पर अक्षरशः चरितार्थ होती हैं—

जिणवर चरणंबुरुहं णमंति जे परमभत्तिराएण।
ते जम्मबेलिमूलं खणंति वरमावसत्थेण।। (भाव पाहुड़, 153)

जो महानुभाव परमभक्ति अनुराग से जिनेन्द्र भगवान के चरणकमलों को नमस्कार करते हैं, वे श्रेष्ठ परिणाम रूप शस्त्र से संसाररूपी बेल के मूलकर्म को खोदकर मोक्ष प्राप्त करते हैं।

माताजी का यह विशुद्ध परिणाम बहु संख्या में पूजा विधानों की रचना के रूप में प्रकट हुआ है। विधान रचना में वे सर्वश्रेष्ठ एवं सशक्त अनुपमेय हस्ताक्षर हैं। इस प्रकार की सरस्वती सेवा के क्रम में भगवद्भक्ता और भक्तवत्सला माँ के द्वारा अति द्रुतगति से मात्र 66 दिन के अल्प समय में रचित वृहत्काय 2600 मंत्रों की अर्घ्यावली युक्त विश्वशांति विधान का सफल आयोजन (21 अक्टूबर से 28 अक्टूबर 2001) एक अनुपम मिसाल बनकर अनुल्लंघ्य पदचिन्हों को स्थापित कर गया है। मेरा भी भक्ति-पुण्यान्दोलित तन-मन इस ऐतिहासिक फिरोजशाह कोटला मैदान, दिल्ली की सर्वदृष्ट्या प्रशंसनीय धर्मप्रसूति का चश्मदीद गवाह है।

भारत की राजधानी-दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव पर पूर्ण वर्षीय कार्यक्रम के अंतर्गत प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा अहिंसा वर्ष की उद्घोषणा 6 अप्रैल 2001 को भव्य आयोजन के मध्य की गई थी। पूज्य माताजी के आशीर्वाद से इसी प्रकरण के पल्लवन में बिहार-नालंदा निकटस्थ कुण्डलपुर को अपने पावन जन्मकल्याणक से पवित्र करने वाले भगवान महावीर और उनके द्वारा प्रवर्तित अहिंसा-अनेकांत-अपरिग्रह सिद्धान्तों को जन-जन में प्रचारित करने की महत्कार्यावली वर्ष भर सम्पन्न की गई। महोत्सव प्रिय माताजी का यह प्रयास स्वर्णिम इतिहास का निर्माण कर युगों-युगों तक प्रकाशस्तंभ का कार्य करेगा।

मुझे स्मरण है कि उक्त पावन 'विश्वशांति महावीर विधान' का, जिसमें भगवान महावीर मण्डप में 26 मण्डल बनाकर 26 की संख्या में ही भगवान की प्रतिमाएं विराजमान कर 2600 मंत्रों द्वारा 2600 गुणों की पूजा-अर्चना का अष्टदिवसीय कार्यक्रम सारे नगर व देश में अपनी धार्मिक सुवास विकीर्ण करने से विश्वशांति का वातावरण निर्मित किया गया था। विपुल संख्या में पवित्र केशरिया परिधान में सज्जित, आभूषणों की चमक से चमचमाते हुए इन्द्र-इन्द्राणीगण व सहस्रों की संख्या में भक्तजन पूज्य ज्ञानमती माताजी, पूज्य चंदनामती माताजी एवं पूज्य क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज आदि संघ के नेतृत्व में, कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी के कर्मठ अवदान के अन्तर्गत चक्रवर्ती द्वारा सम्पन्न किए जाने वाले महापूजा विधान को मानों रूपायित कर रहे थे। इस भव्य आयोजन में त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर के कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम द्वारा रात दिन एक करके इस आयोजन को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव्यता और सफलता के साथ सम्पन्न करने में यह योगदान दिया था। संघस्थ बहनों ने तो इस पूजा-विधान की समस्त व्यवस्थाओं को सम्पन्न करने में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया था। डॉ. अनुपम जैन-इंदौर तथा श्री विजेन्द्र जैन-शाहदरा, दिल्ली ने मंचीय कार्य संचालन के द्वारा प्रभावना कार्य किया था।

प्रस्तुत महत्पूजा की अनेकों विशेषताएँ थीं। सभी मण्डलों पर पूजा के समर्पण द्रव्यों में रत्न राशि का प्रयोग प्रत्येक मंत्र पर किया गया था। इसमें 26 ही मण्डलों की एकत्रित रूप में 500 तक प्रदक्षिणा भी इन्द्र-इन्द्राणी द्वारा लगाई गईं थीं, जो कि अनुपमेय दृष्टान्त है। प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री सुधर्मचंद्र शास्त्री, पं. नरेशचंद्र शास्त्री, पं. अकलंक कुमार जैन, पं. प्रदीप कुमार जैन, कमलांकुर आदि के द्वारा बड़े व्यवस्थित ढंग से यह महापूजा सम्पन्न कराई गई थी। कहीं कोई आपाधापी, हड़बड़ी दिखाई नहीं दी। इतने बड़े, विशाल स्तर पर मनाये जाने वाले इस महोत्सव में धनकुबेरों द्वारा प्रति अवसर पर रत्नवृष्टि भी एक आकर्षण था। विश्वशांति हेतु प्रतिदिन मध्यान्ह में 2 घंटे विश्वशांति मंत्र का घोष होता था।

21 अक्टूबर को ध्वजारोहण सम्पन्न होने के पश्चात् उद्घाटन सभा प्रातः 8.30 पर केन्द्रीय टेक्सटाइल्स राज्यमंत्री श्री वी. धनंजय कुमार जैन की अध्यक्षता में व उद्घाटन द्वारा तथा श्रीमती साहू इन्दू जैन के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुई थी। विश्वशांति महावीर विधान का विमोचन भी अध्यक्ष द्वारा किया गया। कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने राष्ट्रीय आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत की। पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती जी ने पूज्य ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित साहित्य को विश्व के लिए अनुपम सौगात बताया। डॉ. अनुपम जैन ने पूजा विधानों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। पूज्य बड़ी माताजी ने कहा, पूजा-मण्डल विधान आत्मा की शुद्धि करने वाले तथा स्थायी परमात्म पद प्रदान करने वाले हैं। भक्ति से विश्वशांति, अहिंसा, पर्यावरण शुद्धि का वातावरण बनता है।"

प्रकृत महावीर विधान में राजा सिद्धार्थ एवं रानी त्रिशला का पद प्राप्त करने का सौभाग्य श्रेष्ठी श्री कमलचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली व उनकी सहधर्मिणी श्रीमती मैना सुन्दरी को मिला था। श्रीमान् संघपति लाला महावीर प्रसाद, प्रेमचंद जैन-खारीबावली, अनिल कुमार कागजी-प्रीतविहार, श्री जिनेन्द्र प्रसाद जैन, ठेकेदार आदि 26 सौधर्म इन्द्रों ने मण्डलों पर भक्तों का नेतृत्व किया था।

इस अर्हच्चरणसपर्या के राष्ट्रीय कार्यक्रम को साहू रमेशचंद जी, डॉ. एम.पी. जैन, डॉ. जे. के. जैन, श्री पारसदास जैन, डॉ. डी.के. जैन (2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव दि. जैन समिति के राष्ट्रीय महामंत्री), प्रो. रतन जैन, सलेकचंद कागजी, एल.एल. आच्छा, श्री शांति देसाई (महापौर-दिल्ली), श्री सतीश जैन (चेयरमैन), श्रीमती अंजली राय, श्री जेठूराम जैन, श्री जगजीवन राम, श्री नरेश जैन कागजी, श्री चेतनलाल सत्येन्द्र कुमार, श्री वीरेन्द्र जैन-शक्तिनगर आदि महानुभावों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति एवं तन-मन-धनार्पण द्वारा सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया था। समापन सत्र में प्रसिद्ध न्यायविद् एवं विधिवेत्ता श्री लक्ष्मीमल सिंघवी ने पधारकर स्वयं को गौरवान्वित किया था। प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री रवीन्द्र जैन ने भी अपनी भक्तिमय प्रस्तुति से चारचाँद लगा दिये थे।

इसी मांगलिक विराट अनुष्ठान में जैनधर्म एवं समाज के लिए वत्सल-हृदया, विश्वमैत्री एवं शांति स्थापना की प्ररोधा चारित्रचन्द्रिका, पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को श्रद्धावनत जैन समाज के द्वारा 'विश्वविभूति', धर्ममूर्ति, राष्ट्रगौरव, जिनशासन प्रभाविका संज्ञक उपाधियों से विभूषित कर हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की। वस्तुतः माताजी के विशिष्ट विराट व्यक्तित्व को शब्दावलियों द्वारा वर्णित किया जाना अशक्य ही है। वे गुणों की भंडार हैं।

फिरोजशाह कोटला मैदान को चिरस्मरणीय बनाने वाले इस शांति विधान के अंतर्गत ही मुझे भी जैन साहित्य में योगदान हेतु 'गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इसके अंतर्गत संस्थान के पदाधिकारियों कर्मयोगी ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जी, श्री कैलाशचंद जैन-करोलबाग आदि द्वारा थाल, पुष्पहार आदि के साथ एक लाख रुपये की नगद राशि व प्रशस्तिपत्र भेंट किया गया। इस अवसर पर महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी, डॉ. अभयप्रकाश जैन, डॉ. मालती जैन-मैनपुरी, पं. उत्तमचंद राकेश-ललितपुर, डॉ. संजीव सर्राफ-सागर, पं. खेमचंद जैन-जबलपुर, डॉ. जयकुमार जैन (महामंत्री-शास्त्री परिषद), डॉ. प्रकाशचंद जैन-साहिबाबाद, डॉ. कमलेश कुमार जैन, डॉ. सुरेशचंद जैन-दिल्ली आदि अनेक उच्चकोटि के विद्वानों ने पुरस्कार की महत्ता पर प्रकाश डाला। मैंने अपने ज्ञान प्रसार क्षेत्र में प्रवेश हेतु माताजी के उपकार का स्मरण करते हुए प्रायोजक श्री अनिल कुमार जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कागजी-प्रीतविहार एवं त्रिलोक शोध संस्थान का आभार व्यक्त कर पूज्य माताजी द्वारा प्राचीन आगम एवं आर्षमार्ग पर दृढ़ रहने हेतु आशीर्वाद प्राप्त किया।

उपर्युक्त प्रकार आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न विश्वशांति महावीर विधान की अनेकों उपलब्धियाँ हैं, कतिपय निम्न दृष्टव्य हैं—

1. जैनधर्म और 24 तीर्थंकरों की परम्परा विषयक जैनेतर समाज में फैले भ्रम का निवारण। वर्तमान अवसर्पिणी में भगवान ऋषभदेव से जैनधर्म का अस्तित्व आदि की प्रभावना।

2. भगवान महावीर की जन्मभूमि बिहार में नालंदा निकटस्थ प्राचीन तीर्थ कुण्डलपुर की मान्यता का प्रचार तथा उसके विकास के मार्ग का प्रशस्तीकरण। परिणामस्वरूप पूज्य माताजी के प्रवास और सानिध्य में वहाँ भव्य आयतनों का निर्माण व प्रतिष्ठा आदि कार्यक्रम।

3. इसी क्रम में तीर्थंकरों के जन्म आदि कल्याणकभूमियों के जीर्णोद्धार व विकास रूपरेखा बनकर कार्यों का निष्पादन। उदाहरणार्थ अयोध्या, काकंदी, वाराणसी आदि।

4. माताजी के पंचवर्षीय विहार से धर्मप्रभावना और जन-जागरण आदि।

5. नैमित्तिक रूप से कुण्डलपुर विधान आदि की माताजी द्वारा रचना।

संक्षेप में कथनीय है कि प्रखर ज्ञान पुंज पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा और आशीर्वाद से सम्पन्न यह मांगलिक आयोजन एक अविस्मरणीय थाती के रूप में स्थापित हो गया है।

ज्ञानं न ज्ञायते यस्मात्तदज्ञानं प्रकीर्त्तितम्।
तद्भित्वोदिता तस्यै ज्ञानमत्यै नमो नमः।।

साध्वी संयमिनी प्रशान्त-सरला सम्यक्त्व रत्नोज्ज्वला,
स्वाध्यायैकरुचिर्निजात्मनिरता मोक्षार्थिनी योगिनी।
गाम्भीर्याम्बुनिधिर्विवेकलसिता स्वच्छात्मना शोभिता,
माता ज्ञानमती विशुद्धचरिता जीयाच्चिरं गौरवात् ।।1।।

सर्वं भोगविलास-वैभवत्रयं त्यक्त्वाऽऽर्यिका याऽभवत्,
जैनेन्द्रप्रतिपादितेन सुपथा गन्तुं सदा योद्यता।
चर्यां जैनमुनेः सुपालनपरा सा त्यागिनी निष्ठया,
पूज्या ज्ञानमतीह जैनगणिनी शुभ्रैर्यशोभिर्लसेत्।।2।।

ज्ञानाम्भोधि-विहार-केलिकुशला भव्याम्बुजोल्लासदा,
ग्रन्थानां रचनाः विधाय हि तया साहित्य सेवा कृता।
विद्वत्त्वं मिलितं यदीयचरिते त्यागेन सार्धं महत्,
गुर्वी ज्ञानमती पुनातु मलिनं चित्तं मदीयं सदा।।3।।

—डॉ. प्रकाशचंद्र जैन, साहिबाबाद (उ.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

CONTRIBUTION OF GANINI PRAMUKH SHRI GYANMATI MATAJI FOR THE INTERNATIONAL PUBLICITY OF JAIN RELIGION

-Brahmacharini Km. Swati Jain
(Sanghastha-Pujya Ganini Shri Gyanmati Mataji)

Dharma-Prabhavna (to disperse the illumination of Jain Religion universally) is one of significant characteristic of *Samyakdarshan* (Right belief). Jain saints persue the strict code of *Jaineshwari Deeksha* for self elevation & purification, however they always remain effortful for preaching the religious principles to all others so that they may also proceed on the path of eternal bliss.

Pujya Ganini Pramukh Shri Gyanmati Mataji, the supreme Sadhvi of the present Jain society, presents a miraculous record in the sense that as she has touched the heights of Knowledge *(Gyan)* & Conduct *(Charitra),* she has also established the standards of *Dharma Prabhavna* in the country and abroad. Throughout her ascetic life she has made sincere efforts to propagate the Jain culture & principles among the masses out of her deep devotion in the holy feet of Lord Jinendra. She says, "The vicious circle of transmigration can be destroyed only by following the path preached by Tirthankars and the success of human life is achieved through the steps to this eternal aim only."

Pujya Mataji has always been conscious for the publicity of Jain Principles in the international world also because this philosophy is significant for the entire human race. As the saints of Digambar tradition are strictly bound to the norms of ascetic life as described in ancient Jain scriptures, they can't proceed beyond a certain limit in the field of international *Prabhavna.*

However, the keen interest & foresightedness of Pujya Mataji have proved very fruitful in this regard. A number of foreign scholars could have the fortune to get her valuable guidance for their individual upliftment and also for research purposes. Different international seminars & programmes can also be added to the list.

A brief presentation is following here in regard with the contribution of Pujya Mataji for dispersing the illumination of Jainism outside the country :

1. VALUABLE GUIDANCE FOR FOREIGN SCHOLARS

Indian land is supposed to be the home of Spirituality throughout the world. Various curious foreigners including scholars come to our motherland for getting the glimpses of the eternal culture of austerity, renunciation, restraint & devotion.

Jain saints & *Sadhvis* remain like the living images of these characteristics even today, so foreign scholars, who come to India in search of real spirituality, are always fascinated towards such personalities.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

N. Shanta, a French research scholar, came here with such an ambition. She was working with Prof R. Panikkar in the field of Religion and Philosophy. While working on the project 'Women Monastic Traditions in Asia' she was suggested by Pt. Kailash Chand Siddhantshastri, the eminent scholastic personality & other scholars at Varanasi to go to Aryika Gyanmati Mataji to have the full & exact knowledge of the *Charya* (day to day characteristics of leading life) of the *Sadhvi* of Digambar Jain tradition. She did the same and in March 1976 she reached Hastinapur, the birthplace of 3 Tirthankars-Lord Shantinath, Kunthunath & Arahnath and where Aryika Shri Gyanmati Mataji was indulged in quenching her thirst for real Knowledge (*Samyakgyan*) by the studies & writing of Jain scriptures.

You can very well understand the outcome of this visit of Ms. N. Shanta in her own words, as described in her book **"THE UNKNOWN PILGRIMS" (The Voice of the Sādhvīs : The History, Spirituality and life of the Jaina Women Ascetics)** published in 1985 in French (translated in English in 1997).

In chapter 7 of the book-'Āryikās : The Digambara Sādhvīs', she writes on page 631—

The āryikās are anagārī, nirgranthī, śramaṇī, but in regard, to the external features of this way of life, more radical in approach than the Śvetāmbara Sādhvīs.

On Page 632, She further says—

This chapter endeavours to transmit the teaching given to me by Āryikā Jñānamatī Mātājī at Hastināpura. Mātājī wrote in fact a book entitled Āryikā in response to a questionaire sent to several sadhvis. During my first stay at Hastinapura one of her brahmacārin disciples read aloud the manuscript in the presence of Mātājī and I was able to interrupt him in order to ask for explanations[1]. Later on, when I myself had studied the text with careful attention and written out a long list of questions, we discussed, during a second stay at Hastinapura, each of these questions; at the same time I was able to take part in the daily rites of Sāmāyika and Pratikramaṇa and to be present at the āhāra-vidhi[2]. This chapter, therefore, assumes a personal character because it is based on the direct teaching of Mātājī. This teaching of Mātājī, as also her writings, is always grounded in the Scriptures and in tradition. In this chapter, therefore, we refer to her as a competent authority and as a contemporary aryika who transmits to us her own fully orthodox tradition.

Infact, N. Shanta was deeply impressed with the specific interest taken by Pujya Mataji in describing the minute details of *Sadhvi Charya* of the Digambar tradition to her. Mataji not only wrote the book "ARYIKA" for her but also gave her the chance to be familiar with all the norms

---

1. In March 1976.

2. In March 1977. Subsequently I paid a brief visit to Mātājī in January, 1978. I must add that, although the sādhvīs have been unfailingly welcoming and kindly and have made a great contribution to this study, certain ones of them in a very positive and perceptive manner, Mātājī has not only shown lively interest in instructing me personally, but has even taken the trouble to wtite Āryikā and explain it to me. She has also with the utmost simplicity allowed me to live during my stays in close contact with herself and the āryikās of Hastināpura.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

directly by keeping her in close contact day & night. Ms. Shanta used to take the saltless food (*Prasad*) from the meals offered to Pujya Mataji along with observing her *Samayik, Pratikraman, Svadhyaya* & so on.

She availed the opportunity in the rightest way as evident by the contents of her book. She has very well described the characteristics of Aryikas & Kshullikas, *Strimukti-nishedh* (the exclusion of womankind from Liberation), *Deeksha-Vidhi* (The rite of Consecration), Observances practised by Aryikas (*Samayik, Vandana, Pratikraman, Pratyakhyan* etc.), the method of *Svadhyaya* (the rite in regard to Scripture study) & *Ahar* (the rite in regard to meal) etc. from Page 633 to 672.

She has also quoted about Trilok Shodh Sansthan : The Institute of Cosmographical Research at Hastinapur along with the scriptural details of Jamboodweep & Sumeru Mountain. She writes: **Mātājī, accompanied by several āryikās, spends long months at Hastināpura, working incessantly at her writings. She often goes to that part of jungle where the construction-works depicting Jambūdvīpa and Meruparvata are going on, in order to issue instructions (Pg. 674).**

At last she has written specifically about the magnetic personality of Pujya Gyanmati Mataji. She writes :

(Page 678-679) Mātājī shuns publicity. She pursues her task ardently, living her life in accordance with the stricth observance of the Digambaras, caring nothing for honours nor for making a name for herself. She is truly called 'Jñānamatī' and 'Śramanī', as being one for whom the daily acquisition, enlargement and deepening of knowledge is the supreme task and it is this knowledge that she spontaneously and ceaselessly communicates to others, more by her life and her writings than by word of mouth. For her, knowing and teaching are one and the same thing.

(Page 681) "The life of an aryikā consists in dhyāna and svādhyāya"

This is Mātājī dictum, spoken with simplicity and conviction : this is what she herself lives out completely without letting herself be distracted by a hundred and one secondary concerns. She goes straight to the essential with a penetrating intuition, sound judgement and few words. She has a keen sense of the ascesis of time.

(Page 682) Mātājī has many interests and an openness of spirit, but she is totally gripped by and absorbed in the Digambara tradition and pre-eminently concerned to transmit it to others, which in itself is an enormous task. Within this tradition her particular interest is in those values which, just because they are truly spiritual, are also universal.

Thus N. Shata could understand the heart of Jainism especially the Digambar tradition by the guidance of Pujya Gyanmati Mataji. The minute details of the various aspects in her book represent that she did not mis-interpret anything even on being a foreigner & a Non-Jain but assimilated the real knowledge in a noble way, which is worth-following by the scholars of today. This book has been proved to be a worthy guidebook for the national & international scholars working in the field of Jainism and also for the general readers.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

One more example relates to **Sherry Elizabeth Fohr (Bradford, Pennsylvania), a scholar of Department of Religious Studies of University of Virginia.** She came to India for research work on the subject 'Gender and Chastity : Female Jain Renouncers' towards the completion of her degree of Ph.D. In the year 1998 Ms. Sherry stayed with the sangh of Pujya Gyanmati Mataji at Hastinapur for about half a month to have the direct knowledge of the austere practices especially the celibacy of Jain *Sadhvis* of Digambar tradition.

She writes on the page 27 of her Ph.D. Thesis : **'Her disciples told me that Ganinī Jñānamtī Mātā Jī had become famous for being the first unmarried girl in the twentieth century to renounce in the Digambar sect and also because she had become one of the most learned Jain renouncers in India.'**

On pages 102,157-158, 169-170 also she has described that by observing the vow of celibacy since childhood, special power & purity have originated in Pujya Gyanmati Mataji and chastity is like the number one in front of a hundred thousand zeros. The zeros are religious practices, but without the number one in front of them, these practices amount to nothing.

Thus Ms. S. Fohr also had the valuable guidance of Pujya Mataji for her research work and she could present a work stressing continence for the society.

Similarly various other foreign scholars have also come to Pujya Mataji from time to time to have the knowledge of Jainism & the Digambar tradition.

2. ADDRESS OF PUJYA GYANMATI MATAJI FOR VARIOUS FOREIGN VISITORS

Except Research Scholars, eminent foreign personalities & Study groups etc. have also come to Pujya Mataji for getting her blessings & teachings at different times.

The **Ambassador of Bulgaria Mr. Edwin Sugarev** along with his counsellor Diko Dikov & family came to visit Jamboodweep-Hastinapur on 16th Apr. 2000 at the occasion of the inauguration of Bhagwan Rishabhdev Jinbimb Panchkalyanak Pratishtha. He received the blessings of Pujya Mataji, who inspired him for following the vegetarianism. Again during Kailash Mansarovar Yatra organized at Preet Vihar-Delhi Mr. Sugarev came to Pujya Mataji on 2nd Oct. 2000 for getting her valuable teachings.

On 28th Aug. 2005 the group of foreign schloars of **"International Summer School For Jain Studies"** reached Jamboodweep-Hastinapur to have the guidance of Pujya Gyanmati Mataji. The group included Prof. James L. Frederics (Los Angles), Robin Brinkmann (Claremont), Sarah Hadmack (Manoa), Tim Helton (Claremont) & Laura Newberry (Claremont) etc. Following sepecial teachings were rendered by Pujya Mataji for all the participants–

1. The aim of Human life is to liberate own soul from the cycle of births & deaths.

2. According to Jain Philosophy, no God gives joys or sorrows to us but our own deeds or *Karmas* are responsible for that.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3. The spiritual culture of India is supposed to be the best in the whole world. The Jain Culture teaches compassion for all creatures and so it mainly says that the food of a person should be purely vegetarian because meals affect the behaviour strongly. So, all of you should take the oath of being a vegetarian.

Recently from Dowagiac-MI, Barbara and Dave Groner (A Governor of Rotary International), who came for pulse polio campaign to India, visited Pujya Mataji with great enthusiasm. Ms. Eszter Szabo (USA), Judiler Smith (President-Rotary Club of Vandenberg Village, CA) and the group also visited her.

Many other names can be quoted in this series, however it is not possible to present the account of all of them.

To summarize, we can say that the knowledge and austerity of Pujay Mataji have attracted the foreigners also and they have been initiated for leading vegetarian life along with getting the knowledge of Jain philosophy.

3. INTERNATIONAL SEMINARS

(A) INTERNATIONAL SEMINAR ON JAINA MATHEMATICS AND COSMOLOGY–

An important International Seminar on Jaina Mathematics and Cosmology was held on April 26-28, 1985 at Jamboodweep-Hastinapur under the joint auspices of the Digambar Jain Institute of Cosmographic Research and the Meerut University by the inspiration & in the auspicious presence of Pujya Aryikaratna Shri Gyanmati Mataji. Besides the grand inaugural and valedictory functions, there were 6 technical sessions in which more than 30 invited talks/papers were delivered by scholars from India and abroad.

Prof. Yoshimasa Michiwaki (Gunma University, Japan), Mr. Yukio Ohashi (Ph.D. Scholar), Prof. S.D. Bajpai (Nigeria) etc. were among the participants along with a number of Distinguished Indian scholars.

Contributions of Jainas to Mathematics & Cosmology were discussed in different presentations and it was established that various mathematical concepts had already been discussed by ancient *Jainacharyas* in their scriptures and foreign scholars had invented those very later. Further research on Jain Mathematical Literature was suggested to get some new inventions.

(B) OTHER SEMINARS–

A number of other seminars were held by the inspiration of Pujya Mataji from time to time. The inferences of these seminars had been useful nationally as well as internationally and so by publishing the proceedings these facts had been made available for all.

Jamboodweep Gyan Jyoti Seminar-1981, Jamboodweep Seminar-1982, Lord Rishabhdev : the first propagator of Human Culture (Seminar 1993), Vice-Chancellors' Conference 1998 etc. can be mentioned in this regard.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4. BHAGWAN RISHABHDEV INTERNATIONAL NIRVAN MAHAMAHOTSAVA YEAR

To propagate the antiquity of Jainism through the name & principles of the first Tirthankar of the present age i.e. Bhagwan Rishabhdev, Pujya Ganini Shri Gyanmati Mataji got a number of large scale programmes organized at various times. One important programme of the series was:

'Bhagwan Rishabhdev International Nirvan Mahamahotsava year'. At one hand, the celebration was carried out in the whole country for one year and side by sidy foreign lands as Canada, Toronto, New Jersey etc. were also echoed with the proclamation of Lord Rishabhdev when Nirvan Ladoos were offered there on 6th Feb. 2000 along with Lectures & Seminar series on Rishabhdev.

The International weekly 'INDIA ABROAD' (published from Canada) published the news related with this programme from time to time.

Besides these, The International Mahavira Jain Mission of Canada (IMJMC) also celebrated Nirvan Mahotsava by organizing talks (Seminars) on June 11 at the Jain Centre in Toronto.

5. WORLD PEACE SUMMIT 2000

World Peace Summit was organized at New York by United Nations Organization (UNO) from 28th Aug. to 31st Aug. 2000. On getting the invitation in the name of her disciple-Aryika Shri Chandnamati Mataji to attend the Summit, Pujya Gyanmati Mataji suggested the name of Karmayogi Br. Ravindra Kumar Jain for the purpose because Jain saints can go from one place to another only on foot and so it was not possible for Aryika Chandnamati Mataji to attend the event. The organizing committee approved the name of Brahmachari Ravindra Kumar Ji, the another dedicated disciple of Pujya Gyanmati Mataji. He represented the Digambar Jain Community at the world level.

The folder LORD RISHABHDEV-THE FIRST PREACHER OF NON-VIOLENCE & WORLD PEACE reached the hands of the religious leaders of more then 100 countries and addressing of the assembly in the concluding session of the Summit by Ravindra ji echoed the name & principles of Lord Rishabhdev at the international level. People came to know that Lord Rishabhdev propagated the human culture by establishing 6 types of activities-*Asi* (Warfare), *Masi* (Writing), *Krishi* (Agriculture), *Vidya* (Education), *Vanijya* (Business) & *Shilp* (Craft work) and also preached about the principles of Non-Violence, Truth, Non-Stealing, Celibacy & Non-possession for the first time in this age. It was established that the principle of "Live & Let Live", propagated by Lord Rishabhdev will always remain the potent step towards the world peace.

Thus Pujya Ganini Shri Gyanmati Mataji has always taken initiatives for the publicity of Jain Philosophy not only on the national level but also on the international level. I pray to Lord Jinendra that the world may get her auspicious patronage for the long time to come.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतिहासकार सम्मेलन की सफल प्रेरणा

लेखक- जीवन प्रकाश जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

4 फरवरी 2000 को प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से उद्घाटित "भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष" के अंतर्गत उद्घोषित कार्यक्रम शृँखला में भगवान ऋषभदेव पर देशभर में 1008 संगोष्ठियाँ आयोजित करने का लक्ष्य निश्चित किया गया। अत: 11 जून 2000 को विद्वत् वर्ग के द्वारा पूज्य माताजी की सम्प्रेरणा से उनके संघ सानिध्य में जंम्बूद्वीप स्थल पर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा इसी शृंखला की "राष्ट्रीय संगोष्ठी" का सफलतम आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसके माध्यम से जो घोषणाएँ सम्मिलित रूप से संस्तुत की गई, वे निश्चित ही भविष्य में अत्यंत कार्यकारी सिद्ध होंगी। संगोष्ठी के माध्यम से NCERT, दिल्ली द्वारा प्रकाशित "प्राचीन भारत" (XI Std.) पुस्तक के लेखक डॉ. आर.एस. शर्मा तथा शेष सभी विसंगतियों युक्त पाठ्यपुस्तकों के लेखकों से यह अपील की गई कि वे वास्तविक तथ्यों को जानकर अपने लेखन में जैनधर्म की सही जानकारी प्रस्तुत करें। उपरोक्त संगोष्ठी में NCERT के प्रतिनिधि डॉ. प्रीतिश आचार्य ने भी भाग लिया।

यह अत्यंत संतुष्टि का विषय है कि संगोष्ठी के आयोजन से पूर्व ही NCERT के सामाजिक विज्ञान संकाय के विभागाध्यक्ष प्रो. अर्जुन देव जी के 19 मई 2000 के पत्र के साथ डॉ. आर.एस. शर्मा का पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें उन्होंने भगवान ऋषभदेव से संबंधित जानकारी को पाठ्य-पुस्तक में सम्मिलित करने तथा पुस्तक के हिंदी संस्करण की भाषा को सुधारने का मंतव्य निम्न प्रकार से उल्लिखित किया है—

It is not easy to underestimate the contribution of Mahavir, but I will try to be accurate and include matter on Rishabhdeva. Limitations of space and the age group for which the book is meant will have to be taken into account. I will also try to improve the language of the Hindi version with which I am not very happy. I will try to make it more respectful wherever it is necessary.

(Dr. R.S. Sharma)

उक्त पत्र पर प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने अपने मंगलमयी उद्बोधन में यही कहा कि प्रो. शर्मा को जैनधर्म का विरोधी नहीं कहा जा सकता है, उन्हें सही दिशा निर्देश देने की आवश्यकता है। पूज्य माताजी ने कहा कि जिन-जिन दर्शनों का वर्णन इतिहास में हो, उसके इतिहास विशेषज्ञ से ही उस दर्शन के विषय में लिखवाया जावे और संबंधित धर्म के धर्मगुरुओं से उसे प्रमाणित करवाकर ही पाठ्य-पुस्तकों में उसे लागू किया जाना चाहिए, ताकि पढ़ने वालों को सही ज्ञान प्राप्त हो सके। इसी अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने भी अपने मंगल प्रवचन में महत्वपूर्ण दिशानिर्देश के साथ वर्तमान की आवश्यकता पर जोर डालते हुए कहा कि हम आगम ग्रंथों, प्राचीन शिलालेखों व प्राचीन तीर्थों पर उत्कीर्ण प्राचीन मूर्तियों को देखकर इनके आधार पर इतिहास लिखें क्योंकि वर्तमान को हमारे चर्मचक्षुओं से देखते हुए तीर्थंकरों के विषय में नहीं लिखा जा सकता। शोध कुछ सीमाओं तक होता है, जैसे हम अपने पूर्वजों को अगर सैकड़ों-हजारों वर्ष बाद नकार दें, तो हास्यास्पद होगा। जहाँ तक जैनधर्म की बात है, तो इसके संस्थापक कोई न होने का कारण यह है कि जिन्होंने कर्म शत्रुओं को जीता, इन्द्रियों का निग्रह किया, वह जिन व उनके उपासक जैन कहलाए। मनुष्य क्या पशु भी इसे धारण कर सकते हैं यह स्वाधीन व स्वतंत्र आत्मा का धर्म है। इस व्याख्या के अनुसार कोई भी जैन बन सकता है।

इस प्रकार उपयोगी विचार-विमर्श के साथ यह इतिहासकार सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ और डॉ. आर.एस. शर्मा से प्राप्त पत्र से यह निष्कर्ष निकला कि इस प्रकार से समन्वित प्रयास सब प्रकार की गलत अवधारणाओं का निराकरण करके निश्चय ही जैनधर्म व भगवान ऋषभदेव के प्रकाश को संसार के कोने-कोने में विस्तीर्ण कर पायेंगे।

पाठ्य पुस्तकों में लिखित भ्रांतियों के निराकरण हेतु प्रयास निरन्तर जारी रहे और पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी सहित अनेक जैन संगठनों के समन्वित प्रयास के फलस्वरूप एक दिन ऐसा आया जब सरकार ने NCERT की कक्षा-11 की इतिहास की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक में जैनधर्म संबंधी विषय में पूर्व लिखित तथ्यों को हटाकर निम्न तथ्य समाहित किये, जिन्हें सन् 2005-2006 से छात्रों को पढ़ाना प्रारंभ किया–

History Textbook-Ancient India, by Prof. R.S. Sharma for Class XI :

Pages 91-92

1. According to the Jainas, the origin of Jainism goes back to very ancient times. They believe in twenty-four *Tirthankaras* or great teachers or leaders of their religion. The first Tirthankar is believed to be Rishabhadev who was born in Ayodhya. He is said to have laid the foundations for orderly human society. The last, twenty-fourth, *Tirthankara*, was Vardhamana Mahavira who was a contemporary of Gautama Buddha. According to the Jaina tradition, most of the early *Tirthankaras* were born in the middle Ganga basin and attained nirvana in Bihar. The twenty-third *Tirthankara* was Parshvanath who was born in Varanasi. He gave up royal life and became an ascetic. Many teachings of Jainism are attributed to him. According to Jaina tradition, he lived two hundred years before Mahavira. Mahavir is said to be the twenty-fourth.

Page 92

2. He would not stay for more than a day in a village and for more than five days in a town. During next twelev years he meditated, practised austerities of various kinds and endured many hardships. In the thirteenth year, when he had reached the age of 42, he attained *kaivalya* (Jñān).

चिन्मय ज्ञान स्वरूप, चिच्चैतन्य महान् हो।
गुणमणि स्वात्म स्वरूप, मिले आपकी भक्ति से।।1।।

चित् चिंतामणि रूप, प्रभु चिद्रूप स्वरूप हो।
नमूँ सदा गुण रूप, चिंतित फलदाता तुम्हीं।।2।।

चिच्चैतन्य स्वरूप, धर्म एक अनुपम कहा।
परमशुद्ध चिद्रूप, नमूँ आप गुण हेतु मैं।।3।।

निज आत्मा की उपलब्धि किया, संतत रत रहते उसमें ही।
मैं निज से निज में रम जाऊँ, इसलिए नमूँ तुमको नित ही।।

सिद्धों की भक्ती पूजा से 'सोहं' यह भाव प्रगट होता।
फिर पुनर्भवों से छूटें जन, निज आत्मा का अनुभव होता।।4।।

–गणिनी ज्ञानमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से प्रवर्तित रथों द्वारा हुई देशव्यापी धर्मप्रभावना

प्रस्तुति-ब्र. विजय जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

वर्तमान युग में जब देश में पाश्चात्य संस्कृति की होड़वश आधुनिक शैली जैसे-पत्र पत्रिकाएं, मोबाइल, कम्प्यूटर, इन्टरनेट आदि के माध्यम से प्रचार-प्रसार का युग आ गया है, आज प्रत्येक व्यक्ति जीवन की आपाधापी (भागदौड़) भरी व्यस्त जिन्दगी में घर बैठे हर जानकारी प्राप्त करने का इच्छुक रहता है ऐसे समय में पूज्य माताजी द्वारा जिनधर्म की प्रभावना, उसकी प्राचीनता की सिद्धि एवं तीर्थंकर भगवन्तों के सर्वोदयी सिद्धान्तों से जन-जन को परिचित करवाने में रथ भ्रमण एक ऐसा माध्यम बनकर सामने आया जिसके द्वारा प्रत्येक जनता-आबाल, गोपाल ने न सिर्फ इन उद्देश्यों को जाना, समझा, हृदयंगम किया अपितु जिन जानकारियों व तीर्थ विकास को लेकर इन रथों ने भ्रमण किया उससे प्रत्येक जन की भावनाएं जुड़ी और उन्होंने अपनी अर्थांजलि, भावांजलि के कुछ पत्र-पुष्प समर्पित कर प्राणप्रण से उसे अपना मानकर उसकी सुरक्षा व उत्तरोत्तर वृद्धि का संकल्प भी लिया जिनमें से प्रथम 'जम्बद्वीप ज्ञानज्योति रथ' का प्रवर्तन भारत की राजधानी दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला मैदान से 4 जून 1982 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा किया गया जो 1045 दिन तक सम्पूर्ण भारत के कोने-कोने में घूमा और उसके द्वारा भारत की जनता ने जैन भूगोल का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर जम्बूद्वीप आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की और उसके द्वारा एकत्रित दान राशि का प्रतिफल यह जम्बूद्वीप रचना है जिसे आज 'धरती का स्वर्ग' कहा जाता है। इस ज्ञान ज्योति की अखण्ड स्थापना जम्बूद्वीप के ठीक सामने तत्कालीन रक्षामंत्री श्री पी0वी0नरसिम्हाराव के द्वारा में सन्1985 में की गई।

इसी शृंखला में द्वितीय रथ भ्रमण के रूप में दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला मैदान से 22 मार्च 1998 को केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री श्री वी0 धनन्जय कुमार की अध्यक्षता एवं पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में उद्घाटित एवं 9 अप्रैल 1998, चैत्र सुदी तेरस-महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम से भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा सम्पूर्ण भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तित 'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार' रथ है, जो भारत में जैनधर्म की प्राचीनता, अहिंसा-शाकाहार एवं भगवान ऋषभदेव के अहिंसामयी-सर्वोदयी सिद्धान्तों की अनुगूँज के उद्देश्य को लेकर निकला और इसका सफलतम प्रचार-प्रसार हुआ उस समवसरण की स्थापना भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि पूज्य माताजी की प्रेरणा से नवनिर्मित 'तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग' तीर्थ पर की गई और उस तीर्थ को साकार रूप दिया गया।

पुनः तृतीय रथ 'भगवान महावीर ज्योति का प्रवर्तन' भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर से महावीर जयंती के ही दिन 15 अप्रैल 2003 को प्रारम्भ हुआ जिसे देश में घुमाने का एकमात्र लक्ष्य था- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर का प्रचार-प्रसार।

कहा जाता है कि सच्चे मन से भाई गई प्रत्येक भावना मूर्त रूप अवश्य लेती है फिर जिनकी रग-रग में तीर्थंकर भगवन्तों के अमर सिद्धान्तों एवं उनकी कल्याणक भूमियों के उद्धार की भावना आत्मसात हो फिर वह कार्य विशेष प्रभावना और आशातीत सफलता के साथ पूर्ण हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं है। यही कारण रहा कि पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रवर्तित इस रथ ने भी लगभग दो-ढ़ाई वर्षों तक के सफल भ्रमण के पश्चात् जन-जन के अन्तस में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर की स्मृति को तरोताजा व चिरस्थाई बनाते हुए उस तीर्थ के चहुंमुखी विकास में अपनी अहम् भूमिका निभाई।

इन्हीं जनजागृति एवं जिनशासन प्रभावना के आधारभूत रथों में से प्रस्तुत है प्रथम रथ के रूप में भ्रमण करने वाले 'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ' के भारत भ्रमण की कतिपय झलकियाँ—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजधानी दिल्ली के लाल किला मैदान से 4 जून 1982 को भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति का प्रवर्तन आरंभ किया। जो कि सम्पूर्ण देश में सत्साहित्य एवं भगवान महावीर के अहिंसामयी सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार-प्रसार करती हुई धर्म की गंगा को प्रवाहित कर रही थी। ज्ञान ज्योति का रथ एक बस चेसिस में जम्बूद्वीप मॉडल के साथ संजोया गया था। जिसमें लाइट एवं फव्वारों की आधुनिक व्यवस्था थी, जिसे देखने के लिए सम्पूर्ण नगर का जन सैलाब उमड़ पड़ता था।

जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति प्रवर्तन का उद्देश्य मात्र हस्तिनापुर में बन रही जम्बूद्वीप रचना का निर्माण करवाना ही नहीं रहा, प्रत्युत् जन सामान्य के प्रति एकता विश्व बंधुत्व और व्यापक रूप से जम्बूद्वीप का प्रचार आदि मुख्य कारण रहे। प्रवर्तन से पूर्व कुछ विशिष्ट महानुभावों ने पू0 ज्ञानमती माताजी के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि रचना निर्माण के लिए हम लोग कुछ श्रेष्ठीवर्गों के माध्यम से आर्थिक सहयोग प्राप्त करके शीघ्र ही जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य पूर्ण करा देंगे। किन्तु माताजी ने इसे अस्वीकार कर दिया। क्योंकि उनका लक्ष्य तो आर्थिक नहीं धार्मिक था, कि ज्योति के माध्यम से स्थान स्थान पर लोगों को एकता एवं अहिंसा का संदेश मिलेगा तथा लोग जम्बूद्वीप के रहस्य को समझेंगे। सबसे प्रमुख उद्देश्य यह था कि इसके माध्यम से सारा देश हस्तिनापुर तीर्थ से जुड़ेगा। पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण के परस्पर मिलाप से एक नयी शक्ति बनेगी जिसका नाम जम्बूद्वीप रचना होगा। इन्हीं भावनाओं का सपना संजोकर पूज्य माताजी ने इसका प्रवर्तन करवाया।

सर्वप्रथम राजस्थान के लगभग 330 नगरों में प्रवर्तन हुआ। पश्चात बंगाल, बिहार के लगभग 90 नगरों में व महाराष्ट्र के 350 नगरों में व तमिलनाडु, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, के लगभग सभी नगरो में उत्सव महोत्सव के साथ ज्योति भ्रमण सम्पन्न कराया गया। सम्पूर्ण हिन्दुस्तान के कोने-कोने में हिमालय से कन्याकुमारी तक विभिन्न प्रांतों की राजधानियां, महानगर, ऐतिहासिक नगर, तीर्थों उप नगरों आदि में विविध धर्माचार्यों, राजनेताओं, साहित्यकारों आदि सभी ने योगदान प्रदान किया। यह ज्योति रथ लगभग 3000 नगरो में 85000 कि.मी, के भ्रमण के पश्चात् हस्तिनापुर नगरी के पवित्र धरातल पर कमलाकार भवन में जम्बूद्वीप की प्रतिकृति स्थापित करके वहाँ ज्ञान ज्योति की अखण्ड स्थापना की गयी जिससे आने वाले पर्यटकों तथा तीर्थ यात्रियों को ज्ञान का प्रकाश मिलता रहेगा।

ज्ञान ज्योति प्रवर्तन का संकल्प—18 जुलाई 1981 का वह शुभ दिवस था जब हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर प्रथम मीटिंग हुयी। आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने मस्तिष्क में जम्बूद्वीप के मॉडल को सम्पूर्ण भारत में भ्रमण कराने का एक भाव संजोया था उसी को मूर्त रूप देने के लिए मीटिंग बुलाई थी। मीटिंग में सभी ने माताजी की इस सोच को सराहा। सारी रूपरेखा सभी के सामने रखी गयी। सभी प्रसन्न हुये। सर्वप्रथम नाम का निर्णय हुआ। सर्वसम्मति से रथ का नाम "जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति" रखा गया। अब प्रश्न यह उठा कि प्रवर्तन कहाँ से व किसके शुभ करकमलों से कराया जाए। निश्चय यह हुआ कि यदि किसी बड़े राजनेता से प्रवर्तन कराना है तो राजधानी दिल्ली से प्रवर्तन होना चाहिए। माताजी की इच्छा न होने पर भी सभी के द्वारा एक इस बात पर जोर देने पर अंत में माताजी की स्वीकृति मिल गयी। दिल्ली में मोरीगेट में माताजी का प्रवास रहा। माताजी की देख रेख में बड़ी कुशलता के साथ माडल सजने सवरने लगा। अब माननीया प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के कर कमलो से प्रवर्तन कराने का क्रम शुरु हुआ।

प्रधानमंत्री से मुलाकात—समिति का प्रतिनिधि मंडल श्रीमती इंदिरा गांधी से मिला। संक्षिप्त वार्ता के अन्तर्गत उन्होंने अत्यधिक व्यस्तता दिखाते हुए मना कर दिया। कई उच्च अधिकारियों के माध्यम से बात हुयी लेकिन बात नहीं बनी। तत्पश्चात् जे.के. जैन सांसद से मुलाकात हुयी उन्होंने सारे अभिप्राय को जाना समझा एवं आश्वासन दे दिया। माताजी का पूर्ण विश्वास था कि इंदिरा जी अवश्य आयेंगी। भावना साकार हुई। श्री जे.के. जैन का फोन डा0 कैलाश चंद जैन के पास आया कि इंदिरा जी ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। सभी कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर आ गयी। कार्यक्रम को और तीव्र गति से तैयार किया जाने लगा। आखिर वह क्षण भी आ गया जिसका सभी को इंतजार था।

ऐतिहासिक दिवस—देखते ही देखते वह दिन आ गया। 2 जून से ही लाल किला मैदान के परिसर में विशाल पांडाल और भव्य मंच तैयार था सभी तरफ ध्वाजाऐं लहरा रही थी। हर तरफ प्रशासनिक अधिकारी खड़े थे। सारी दिल्ली में जगह-जगह तोरण द्वार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनाए गये। मंच फूलों और दीपों से सजा हुआ था। सारी व्यवस्था स्वयं श्री जे.के.जैन देख रहे थे। माताजी पूर्व से ही संघ के साथ मंच पर पहुँच गयी थीं। आने वाले प्रत्येक श्रद्धालुओं को दर्शन दे रही थी। साथ में आर्यिका श्री रत्नमती माता जी भी विराजमान थीं।

माननीय इंदिरा जी का आगमन—मध्यान्ह चार बजे प्रधानमंत्री जी की कार पंडाल में प्रविष्ट हुई। उनके साथ गृहमंत्री श्री प्रकाशचंद जी सेठी, कई केन्द्रीयमंत्री व कई सांसद पधारे। जे0के0 जैन ने सर्वप्रथम इंदिरा जी को मातजी के दर्शन कराये व अनंतर सभी लोग मंच पर आ गये। इंदिरा जी व श्री ज्ञानमती माताजी की 20 मिनट तक एकांत में वार्ता चली वह बहुत प्रसन्न व प्रभावित हुई। माता जी ने देखा कि इंदिरा जी धर्म में बहुत श्रद्धा रखती हैं। इधर माताजी व प्रधानमंत्री जी की वार्ता चल रही थी उधर हजारों की संख्या में उपस्थित जन समुदाय अपने लोकप्रिय नेता की एक झलक पाने के लिए लालयित थे। इंदिरा जी के मंच पर आते ही सभी ने करतल ध्वनि की गड़गड़ाहट पूर्वक स्वागत किया। उस स्वागत का प्रत्युत्तर इंदिरा जी ने हाथ जोड़कर अभिवादन पूर्वक दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ—सभा के सफल संचालन का भार माननीय जे.के.जैन के ऊपर था। सर्वप्रथम मंगलाचरण से सभा का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण के उपरांत माननीय प्रधानमंत्री जी का पुष्पहार द्वारा स्वागत समिति के अध्यक्ष, महामंत्री व वरिष्ठ पदाधिकारियों ने किया । श्री निर्मल कुमार सेठी ने अभिनंदन पत्र पढ़ा जिसे अमरचंद पहाड़िया कलकत्ता समारोह के स्वागताध्यक्ष ने इंदिरा जी के कर कमलों में भेंट किया। जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति प्रवर्तन समिति के महामंत्री ब्र0 मोतीचंद जैन व ब्र0 रवीन्द्र कुमार जैन ने क्रम से ज्ञान ज्योति प्रवर्तन का प्रारूप एवं त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

आर्यिका श्री का मंगल उद्बोधन—श्रीमती गांधी व उपस्थित जन समुह पू0 माताजी को सुनने के लिए आतुर था। सभी उपस्थित जन समुदाय माताजी के मुखारविन्द से ज्योति रथ के उद्देश्य को सुनना चाहता था। माताजी ने ज्योति का उद्देश्य एवं महत्व पर प्रकाश डाला एवं अंत में प्रधानमंत्री जी ने रथ पर स्वस्तिक बनाकर प्रवर्तन प्रारंभ किया। सर्वप्रथम रथ पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त किया सौधर्मइन्द्र श्री निर्मल कुमार सेठी, ईशान इन्द्र श्री विमल प्रसाद जी जैन मोरीगेट दिल्ली, सानत्कुमार इन्द्र श्री सतवीर सिंह जैन मोरीगेट दिल्ली, माहेन्द्र इन्द्र श्री अनन्तवीर्य जैन हस्तिनापुर तथा कुबेर के पद पर श्री जिनेंद्र प्रसाद जैन ठेकेदार दिल्ली। ऐतिहासिक शोभायात्रा देखने को मिली। शोभायात्रा चांदनी चौक, खारी बावली, सदर बाजार, माडलबस्ती, बाडा हिन्दूराव, अजमल खाँ पार्क होती हुई छप्पर वाला करोलबाग रात्रि 9:30 बजे पहुँची। सैकडों स्थानों पर आरती स्वागत हुआ। जगह-जगह पर तोरण द्वार और बैनर लगे हुए थे। प्रभावित जन-समूह ने इसे महावीर के समवसरण की उपमा प्रदान की। इसी क्रम में 6 जून को ग्रीनपार्क एक्स. में ज्योति रथ की द्वितीय शोभायात्रा निकाली गयी।

हरियाणा में ज्ञान ज्योति प्रवर्तन—हरियाणा राज्य में फरीदाबाद नगर से भ्रमण प्रारंभ हुआ। प्रारम्भिक दौर था अति उत्साह के साथ लोगों ने अगवानी की। जन समूह के लिए एक आकर्षक दृश्य था। सभी जैन-अजैन बंधुओं ने मिलकर अभूतपूर्व स्वागत किया। रथ के प्रथम संचालक पं0 बाबूलाल जमादार ने अपने वक्तव्य में जम्बूद्वीप रचना का परिचय देते हुए बताया कि हमें पैसा मात्र नहीं चाहिए अपितु जन-जन की भावनाएँ चाहिए। इसी क्रम में बल्लभगढ़ नगर में 9 जून को प्रवर्तन हुआ रात्रि में जन समुदाय लाइट व फव्वारों का आनंद लेते थे। लोगों का शोभायात्रा से भी अधिक इस आकर्षण का आनंद लेने के लिए पूर्व रात्रि में रथ लावें ऐसा अनुरोध होने लगा। 10 जून को पलवल नगर को सुशोभित किया ज्योतिरथ ने। पूरे नगर में उल्लास का वातावरण था। शोभायात्रा में अपार जन समूह था। रात्रि में रथ की विद्युत्ज्योति सभी नागरिकों ने देखी।

रथ की समुचित व्यवस्था, कार्य के सफल संचालन, बिजली फव्वारों से युक्त रचना मॉडल की सुन्दरता आदि की चर्चाएँ बिजली की भांति सभी जगह फैल रही थी। अतः आगे-आगे नगरों के आयोजक गण अपने शहर में पूरे दिन भर के कार्यक्रम चाहने लगे। 11 जून को होडल नगर में भव्य स्वागत हुआ। 12 ता0 को नूंह (गुड़गाँवा) 13 जून को सोहना एवं बादशाहपुर में ज्योतिरथ का स्वागत हुआ। पुनः 14 जून को गुडगांवा, नगर में रथ का मंगल पदार्पण हुआ। स्वागत सभा एवं शोभायात्रा सम्पन्न हुयी। इसी के साथ हरियाणा प्रान्त के प्रवर्तन का समापन हो गया।

राजस्थान प्रवर्तन— 16जून 1982 को अतिशय क्षेत्र तिजारा से ज्योति रथ का राजस्थान प्रवर्तन प्रारम्भ हुआ। सभा विशाल क्षेत्र प्रांगण में हुयी। सभा का संचालन कुशल विद्वान पं0 बाबूलाल जमादार के द्वारा हुआ। प्रथम बार यात्रा में ब्र0 मोतीचंद जी ब्र0

Ganesh Varni Dharmarth Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रवीन्द्र जी एवं ब्र0 माधुरी जी आये। चन्द्रप्रभू भगवान की केवल ज्ञान ज्योति को प्रसारित करने वाली ज्ञान ज्योति यात्रा वास्तविक आनंद को प्रदान करने वाली थी। फिरोजपुर,नौगांवा, रामगढ़ में अपनी दिव्य प्रभा बिखेरती हुयी ज्योति अलवर नगर में पहुँची। अपार उत्साह से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री खिल्लीमल जैन एडवोकेट का सहयोग सराहनीय रहा। इसी प्रकार खेरली, भरतपुर धौलपुर, करोली आदि ग्रामों में प्रवर्तन करके अतिशय क्षेत्र महावीर जी में मंगल पदार्पण हुआ।

23 जून को अतिशय क्षेत्र पर मंगल आगमन एवं सभी का अपार स्नेह माता जी के प्रति इस बात का सूचक था कि सभी ने जितनी संस्थाएँ थी रथ का स्वागत किया। शांतिवीर नगर वाले तो इसे एकदम माताजी का रुप ही मान रहे थे। इसी क्रम में राजस्थान की राजधानी जयपुर में ज्योति रथ का मंगल पदार्पण हुआ। नारी शक्ति प्रदर्शिका श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद और राजनैतिक शक्ति श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा प्रवर्तित ज्ञान ज्योति अपने लक्ष्य को पूर्ण करती हुयी आगे बढ़ रही थी। जयपुर में आचार्य रत्न श्री देशभूषणजी महाराज के संघ सानिध्य में तथा आर्यिका अभयमती माताजी एवं क्षुल्लक श्री सन्मति सागर जी के सानिध्य में विशाल सभा हुई। यहाँ पर राजस्थान के राज्यपाल जी ने ज्योति रथ का स्वागत किया। वह स्थल भी धन्य हो गया, जहाँ माताजी बनी थीं ज्ञानमती माता। माधोराजपुरा वालों ने माताजी की इस कृति का भव्य स्वागत किया। अजमेर नगरी में सभा क्षु0 श्री सिद्धसागर जी के सानिध्य में हुई। बिजौलिया में स्वतंत्रता दिवस के दिन शोभायात्रा निकली उसका उद्घाटन श्री रामकल्याण जी आकोदिया मुन्शीफ मजिस्ट्रेट ने किया तथा भारतसिंह जी चौधरी अध्यापक माध्यमिक उच्चतर विद्यालय मुख्य अतिथी थे। बूंदी नगर में जिलाधीश श्री सज्जन सिंह राणावत, एस.एस.पी. श्री नारायण सिंह जी एवं मुख्य न्यायाधीश श्री दीनदयाल खुरेटा ने ज्योति रथ का स्वागत किया।

कोटा नगर के अन्दर दो दिवसीय कार्यक्रम रखा गया। ज्योति रथ के स्वागत के लिए दिल्ली से संसद सदस्य श्री जे0के0 जैन पधारे। सभा गीता भवन में हुई। परम पूज्य मुनिराज श्री मल्लिसागर जी के सानिध्य में सभा हुई। कोटा नगरी में लगभग 150 गेट बनाकर रथ की अगवानी की। लोहारिया नगर में आचार्य रत्न श्रीधर्मसागर जी महाराज के विशाल संघ सानिध्य में सभा हुई व शोभायात्रा निकली। आचार्यकल्प श्रुतसागर जी महाराज का भी पावन सानिध्य मिला। बांसवाडा, डूंगरपुर होता हुआ रथ उदयपुर पहुँचा। यहाँ पर आर्यिका रत्न श्री विशुद्धमती माताजी का ससंघ सानिध्य प्राप्त हुआ। क्रम से केशरिया जी में ज्योति रथ का मंगल पर्दापण हुआ। यहाँ पर राजस्थान प्रवर्तन का समापन हुआ। मुख्य अतिथि के रुप में श्री हीरालालजी देवपुरिया मंत्री राजस्थान सरकार थे। लगभग 330 नगरों में भ्रमण हुआ "यथानाम तथा गुण" की तरह राजस्थान राजाओं का ही स्थान है, यहाँ पर अपूर्व भक्ति का रंग देखने को मिलता हैं, छोटे-छोटे गांव वाले भी इतनी श्रद्धा और भक्ति का परिचय देते हैं, कि आंखों को विश्वास नही होता है।

बंगाल प्रवर्तन—30 जनवरी को सर्व प्रथम रानीगंज में कार्यक्रम हुआ जिसमें नगर पालिका के उपाध्यक्ष श्री शम्भूनाथ मण्डल ने बंगला भाषा में ओजस्वी उद्‌बोधन दिया। आगे पुरलिया में भी ज्योति रथ का भव्य स्वागत हुआ। वहाँ पर एस.पी. श्री अग्रवाल साहब पधारे। रथ खड़गपुर होते हुए कोलाघाट पहुँचा। यहाँ पर विधान सभा सदस्य श्री संदेश-रंजन मांझी सभा में मुख्य अतिथी के रुप में पधारे। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि बंगाल की जनता का यह परम सौभाग्य है कि ज्ञानमती माताजी ने हमारे प्रदेश में ज्योति यात्रा का समय प्रदान किया है। मुझे विश्वास है कि यह ज्योति जहाँ जहाँ जाएगी, मानव मात्र को एक सूत्र में बांधकर जातीय एकता स्थापित करेगी। यहाँ के कार्यकर्ता श्री विजय कुमार जैन का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ।

कलकत्ता महानगर में भव्य कार्यक्रम—कलकत्ता नगरी पू0 गणिनी आर्यिका रत्न श्री ज्ञानमती माताजी के आदर्शों, उपदेशों एवं सिंह वृत्ति से चिरपरिचित था। एक दिन पूर्व ही रात्रि में मैना सुंदरी नृत्य नाटिका का आयोजन हुआ।13 फरवरी को दि0 जैन बड़ा मंदिर में स्वागत सभा का आयोजन हुआ। जिसमें प्रो0 कल्याणमल लोढ़ा, ब्र0 मोती चंद शास्त्री, श्रीधर्मचंद मोदी ने जम्बूद्वीप्र रचना व ज्ञान ज्योति के महत्व पर प्रकाश डाला इसके पश्चात् श्री सत्यनारायण बजाज, त्रिलोकचंद जी डांगा, श्री हिम्मतसिंह जैन व श्री धन्नालाल काला आदि के भी भाषण हुए। स्वागताध्यक्ष श्री अमरचंद पहाड़िया ने अपने भाषण में कहा कि पू0 आर्यिका श्री सारे जग के लिए एक विभूति हैं। तदुपरान्त शोभायात्रा निकाली गयी। जियागंज व लालगोला इत्यादि स्थानों पर भी शोभायात्रा के कार्यक्रम हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिहार प्रवर्तन—भागलपुर से बिहार प्रवर्तन की कड़ी जुड़ी। 2 मार्च 1983 में भागलपुर में ज्योति रथ का भव्य स्वागत हुआ। चंपापुर में भी ज्योति प्रवर्तन हुआ। यहाँ आगे बढ़ते हुए राजगृही नगरी में मंगल पदार्पण हुआ उपाध्याय अमरमुनि एवं साध्वी चंदना जी (श्वेताम्बर साधुगण) ने प्रसन्नतापूर्वक ज्योति रथ का स्वागत किया। निरन्तर आगे बढ़ते हुए पटना, आरा, गया, चौपारन, रांची, डाल्टनगंज, गोमिया साड़म सभी स्थानों पर ज्योति रथ का स्वागत हुआ। पुनः फुसरो नामक ग्राम का स्वागत विशेष रहा। कई स्थान जो मार्ग में छूट रहे थे वे लोग भी आग्रहपूर्वक अपने नगर में रथ को ले गये।

सम्मेदशिखर की पावन रज से पवित्र हुयी ज्ञान ज्योति—25 मार्च को रथ शाश्वत सिद्ध क्षेत्र पर पहुँचा। यहाँ पर स्वागत सभा में परम पू0 आचार्य श्री सुबलसागर जी ससंघ पू0 आर्यिका इन्दुमती माताजी ससंघ विराजमान थे। आ0 सुबल सागर जी ने अपने मंगल उद्बोधन में ज्ञानमती माता जी को मंगल आशीर्वाद देते हुए उनके द्वारा किये हुए कार्य कलापों की प्रशंसा की। देवघर, झुमरी तिलैया, हजारी बाग, गिरिडीह होते हुए सरिया नगर में रथ का पदार्पण हुआ। यहाँ पर प्रखण्ड विकास अधिकारी श्री रामबालक सिंह ने रथ का स्वागत किया। 5 अप्रेल को रथ ईसरी बाजार पहुँचा। यहाँ पर युवाचार्य श्री विद्यासागर जी विराजमान थे जो कि स्वयं एक तीर्थ स्वरुप हैं। आचार्य श्री का स्नेह एवं प्रेम देखकर सभी जन समुदाय भाव विभोर हो गया। आचार्य श्री ने अपना पावन सानिध्य रथ यात्रा में प्रदान किया। झरिया वालों ने आर्थिक दृष्टि से रथ को अच्छा सहयोग दिया। धनबाद नगर में श्री योगेश कुमार जीं योगेश पूर्वमंत्री के मुख्य आतिथ्य में सभा हुयी। कतरासगढ़, महेशपुर, खरखरी होते हुए बोकारो स्टील सिटी में रथ का आगमन हुआ। यहाँ पर रामसिंह जी अधीक्षक ने पधारकर ज्योति रथ का स्वागत किया। टाटानगर वालों का उत्साह अपने में अपूर्व था। यहाँ पर मुनि श्री गिरीशचंद महाराज (श्वेताम्बर) के सानिध्य में सभा हुयी। माननीय कलेक्टर श्री विद्यानंद मिश्र जी भी पधारे। इसी के साथ बिहार प्रवर्तन समाप्त हो गया। इसके पश्चात् उड़ीसा प्रांत के कटक शहर में भी ज्योति रथ का स्वागत हुआ। तत्पश्चात् खण्डगिरि, उदयगिरि तीर्थ की पावन रज से पवित्र हुई ज्योति।

महाराष्ट्र प्रवर्तन—निरन्तर एक ग्राम से दूसरे ग्राम व एक नगर से दूसरे नगर तथा एक प्रांत से दूसरे प्रांत पहुँचकर ज्योति सभी को प्रकाशमान करती हुई आगे बढ़ रही थी। इसी क्रम में महाराष्ट्र प्रांत का शुभारंभ 17 अप्रैल 1983 को हुआ। सर्वप्रथम सौभाग्य बम्बई महानगरी को प्राप्त हुआ। 12 दिनें तक निरन्तर सारी महानगरी ने खूब स्वागत किया ज्योति रथ का, लगभग 266 स्थानों पर रथ प्रवर्तन महाराष्ट्र में हुआ। 6 महीने 15 दिन तक 25 जिलो में प्रवर्तन हुआ।

धन्य ज्योति जब गुरुवर आये—बम्बई में मुनि श्री नेमीसागर जी व आचार्य श्री सम्भवसागर जी ससंघ, भिवंडी में मुनि श्री अजितसागर जी, पंढ़रपुर में आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज ससंघ, करकंब में मुनि श्री आर्यनंदी जी, अकलूज में आचार्य रत्न श्रीदेशभूषण महाराज ससंघ एवं क्षु0 श्री अजितमती माताजी, पोनूर में आचार्य श्री देशभूषण महाराज ससंघ, पाटकूल में, आचार्य रत्न श्री देशभूषण महाराज ससंघ, अकलकोट में आर्यिका श्री जयमती माता जी, सोलापुर में आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज, कुंभोजबाहुबली में एलाचार्य श्री विद्यानन्द महाराज एवं मुनि श्री समन्तभद्र महाराज, कोल्हापुर में स्वस्ति श्री भट्टारक लक्ष्मीसेन स्वामी जी,नांदणी में स्वस्ति श्री भट्टारक जिनसेन स्वामी जी का सानिध्य प्राप्त हुआ।

ज्योति रथ का अभिनंदन कर धन्य हुए जब सारे—वरलीनाका में श्री भाऊराव पाटिल (संसद सदस्य कांग्रेस आई) व श्री रमणभाई अंकलेश्वरिया एम.एल.ए., हीराबाग (मुम्बई) में श्री शरद दिगे (महाराष्ट्र विधानसभाध्यक्ष), बारामती में श्री व्ही.डी.जगराव (कांग्रेस(स)के अध्यक्ष), फलटन में श्री वानखेडे प्रांत प्रमुख, म्हसवड़ श्री बाबा साहब राज्यमाने, महुद (सोलापुर) श्री गनपत राव देशमुख विधान सभाध्यक्ष, पंढ़रपुर (सोलापुर) श्री बनपाल प्रशासन डिप्टी कलेक्टर व यशवंत भाई पाटील, (अध्यक्ष जिला परिषद), कुर्डूवाडी (सोलापुर) श्री गणपतरावसाठे (विधानसभा सदस्य), करमाला श्री भिंगर तहसीलदार, शिरड़ी में श्री सुशील कुमार जी शिंदे (प्रान्तीय वित्त एवं पर्यटन मंत्री), कोपर गांव में श्री रसाद (तहसीलदार) प्रशासक एन.एस. शेख पी.एस.आय, चांदवड़ में श्री विश्वासराव नंदिडकर सिविल जज, एदलाबाद में किशनलाल संचेती सदस्य विधान सभा, सावदा में रावविष्णु पाटिल (अध्यक्ष नगर परिषद), चालीस गांव में डी.डी. चौहान (एम.एल.ए.) कन्नड में श्री अब्दुलअजीज अहमद (राज्यमंत्री), गंगापुर में सम्राट डी. लंगावकर (सिविल जज) सज्जपुर (औरंगाबाद) श्री रघुलता बाई तहसीलदार, डोणगांव में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री रंगनाथराव पाटिल आमदार व खांडरे साहब तहसीलदार, उस्मानाबाद में जिलाधीशजी, कसार (लातुर) श्री बाधमारे डी.एस.पी., नंनद (लातुर) श्री डुंगरीकर कलेक्टर, परभणी में श्री राव साहब, कृषि मंत्री व श्री रामराव लोलीकर (एस.पी.), जिंतूर (परभणी) में श्री गुलाब खालसी सिविल मजिस्ट्रेट, कुंभोज बाहुबली (कोल्हापुर) श्री बसंत दादा पाटिल, मुख्यमंत्री महाराष्ट्र सरकार, श्री शिवाजी राव देशमुख (गृहराज्यमंत्री), श्री कलप्पा अवाड़े (उद्योग मंत्री), इचलकरंजी श्री वाविस्कर कांग्रेस (आई)।

कर्नाटक, केरल, तमिलनाडू एवं आंध्र प्रदेश भ्रमण— 8 नवम्बर 1983 को कर्नाटक प्रवर्तन बेलगाम जिले से प्रारंभ हुआ। निपाणी में भव्य आयोजन हुआ। कुप्पनवाड़ी होते हुए कोथली में ज्योति रथ का मंगल पदार्पण हुआ। यह स्थान आचार्य देशभूषण महाराज की जन्म एवं कर्मस्थली है। सिद्धनाल, अक्कोल, शमनेवाड़ी होते हुए ज्योति रथ चा.च. आचार्य श्री शान्तिसागरजी महाराज की जन्मभूमि भोजग्राम में आयी। यहाँ पर खूब स्वागत हुआ। आचर्य श्री विद्यासागरजी महाराज की जन्मभूमि सदलगा में ज्योति रथ प्रवर्तन हुआ। चेयरमेन श्रीमती बाई हनवर ने स्वागत किया। अंकली, नशलापुर, शिरगुप्पी, कागवाड़ शेडवाल नगर, ऐनापुर, कोन्नूर, गोकाक, बेलगांव, हनवर हट्टी, अमदूर, शिवापुर, मेहली, थिगडोली, देवालोली, कीत्तूर, धारवाड़, हुबली, गडम, बीजापुर, इण्डी, आलन्द, बिदर, खसवकल्याण, गुलबर्गा आदि ग्राम होते हुए दावणगेरे में आचार्य कुन्थुसागर जी महाराज का संघ मिला। आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में इसे एक दिव्य ज्योति बताया और माताजी के ज्ञान की खूब प्रशंसा की। चिकमंगलूर, श्रिंगेरी, कोप्पा, कालसा, नरसिंहपुर होते हुए सिमोगा में मंगल पदार्पण हुआ यहाँ पर भट्टारक श्री देवेन्द्र कीर्ति जी ने स्वागत सभा में कन्नड़ भाषा में प्रवचन किया।

मूड़बिद्री में भट्टारक श्री चारूकीर्ति स्वामी जी के सानिध्य में सभा हुई। जैन मठ के आसपास रथ यात्रा निकाली गयी। यहाँ पर सभी ने रत्न प्रतिमाओं के दर्शन किये। यहाँ से वेणूर तथा मंगलौर, बेलतंगडी होते हुए धर्मस्थल पहुँचे। यहाँ पर धर्माधिकारी वीरेन्द्र हेगड़े ने खूब सत्कार किया। केरल, पट्टूर, कलपट्टा, सालिग्राम, श्री रंगपट्टन, चामराजनगर आदि का भ्रमण करते हुए श्रवणबेलगोला तीर्थ पर रथ का भव्य स्वागत हुआ। स्वस्ति श्री चारुकीर्ति स्वामीजी ने कहा कि यह ज्योति हमारी है क्योंकि जम्बूद्वीप माताजी के मस्तिष्क में यही भगवान बाहुबली के चरणों में ध्यान करते हुए आया था। भट्टारक जी ने रथ पर माला पहनाकर स्वागत किया। 15 जनवरी 1984 को रथ का बैंगलोर में आगमन हुआ। स्वागत सभा में एम.सी. अनन्त राजैया, भट्टारक श्री चारुकीर्ति स्वामीजी, निर्मल कुमार सेठी व मेयर साहब बैंगलोर उपस्थित थे।

तमिलनाडू में सेलम से रथ आगमन हुआ। यहाँ पर आर्यिका श्री विजयमती माताजी का ससंघ सानिध्य प्राप्त हुआ। मेलचितामूर यह स्थान एक कलाकृति तीर्थ कहा जाता है भट्टारक लक्ष्मीसेन स्वामी के सानिध्य में सभा हुयी। वंदवासी होते हुए ज्योति मद्रास पहुँची।26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) के दिन शोभायात्रा निकली। श्री मोहनमल चोरड़िया ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

आंध्र प्रदेश में हैदराबाद से ज्योति रथ प्रवर्तन प्रारंभ हुआ। शिक्षामंत्री ने आकर भव्य स्वागत किया। मंच पर तीर्थ क्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री जयचंद लोहाड़े व मांगीलाल बाबूलाल पहाड़े, शिक्षामंत्री व ब्र0 मोतीचंद जी थे। कार्यक्रम बहुत अच्छा सम्पन्न हुआ। इसी के साथ कर्नाटक, केरल तमिलनाडु आंध्र प्रदेश का प्रवर्तन सम्पन्न हुआ।

मध्यप्रदेश प्रवर्तन— मध्य प्रदेश प्रवर्तन संस्कारधानी जबलपुर से 1 फरवरी 1984 को ज्योति रथ प्रवर्तन प्रारंभ हुआ। अनेक राजनेताओं व वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं उपस्थित जन सैलाब के बीच में बहुत उल्लास पूर्वक प्रवर्तन प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम प्रशासन का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ। श्री मोतालाल जी वोरा मध्यप्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष श्रीसुभाष यादव सांसद, श्री चंद्रकांत मनोट पर्यावरण मंत्री मध्य प्रदेश, वन मंत्री श्री अजयनारायण मुसरान, प्रान्तीय पदाधिकारीगण आदि स्वागत सभा में पधारे।

नरसिंहपुर में पंद्रहसौ यात्री के यात्रा संघ ने रथ का दर्शन किया। श्वेताम्बर यात्रा संघ था। यहाँ पर वनमंत्री ने रथ का स्वागत किया। सिवनी में ज्योति रथ स्वागत के लिए प्रभा भार्गव एम.एल.ए.पधारी तथा पं.सुमेरचंद दिवाकर ने अपने वक्तव्य में पूज्य माताजी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अनेक स्थानों पर अनेक मंत्रियो एवं उच्च स्तरीय नेताओं ने आकर अपने सौभाग्य की सराहना की। भोपाल में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अर्जुन सिंह जी पधारे साथ में उद्योग मंत्री डा. श्री राजेन्द्र जैन व उद्योग राज्य मंत्री श्री सत्यनारायण अग्रवाल आदि भी आयें। माननीय मुख्यमंत्री जी ने ज्योति रथ पर स्वास्तिक बनाकर स्वागत किया। इटारसी में काकूभाई विधायक जी पधारे। सनावद नगरी में त्रिदिवसीय कार्यक्रम हुआ। सनावद नगरी में ज्योति रथ का भव्य स्वागत हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंदौर नगरी के अंदर ज्योति रथ के स्वागत हेतू देवकुमारसिंह कासलीवाल व श्री लालचंद जी मित्तल महापौर नगर निगम आये। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री बाबूलाल जी पाटोदी ने किया। 9 जून को सिहोर नगर में उपमुख्यमंत्री श्री शिवभानू सिंह सोलंकी जी ज्योति रथ के स्वागत के लिए पधारें। सिद्धक्षेत्र सोनागिर में श्री मनोहर लाल गुप्ता कलेक्टर साहब आये। लश्कर में ऊर्जा मंत्री ने ज्योति रथ का स्वागत किया। इसी प्रकार लगभग 250 नगरों में सफल प्रवर्तन सम्पन्न हुआ। 5 अगस्त को धार नगर मध्य प्रदेश में प्रान्तीय प्रवर्तन सम्पन्न हुआ।

गुजरात प्रवर्तन—गुजरात की ऐतिहासिक धरा पर राजधानी दिल्ली से प्रवर्तित ज्ञान ज्योति लगभग 800 दिनों की भारत यात्रा के पश्चात अहिंसा की मंगल ज्योति जलाने पहुँचती है। 9 अगस्त 1984 को दाहोद नगर से उसका प्रान्तीय प्रवर्तन प्रारंभ हुआ, जिसका उद्घाटन करने हेतु आदिम जाति कल्याण विभाग मंत्री श्री नायक जी एवं गुजरात राज्यमंत्री श्री ललित भाई पटेल पधारे। कलेक्टर श्री एस.के. नंदा आई.ए.एस. सभा के मुख्य अतिथि थे। आशातीत सफलताओं के साथ दाहोद से प्रवर्तन शुरू हुआ। अहमदाबाद में ज्योति रथ का भव्य स्वागत हुआ। सभा में मुनि श्री निजानंद सागर जी महाराज एवं क्षु0 श्री धवलसागर जी का मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ। गुजरात सरकार के गृहराज्य एवं शिक्षामंत्री श्री प्रबोध भाई रावल ने पधारकर ज्योति रथ का सूक्ष्मता से अवलोकन किया तथा सभा में मुख्य अतिथि का पद सुशोभित किया। श्री चिमन भाई पटेल दैनिक अखबार संदेश के मैनेजिंग डायरेक्टर ने अहमदाबाद में ज्योतिरथ का उद्घाटन किया। तलोद में रथ का भव्य स्वागत हुआ। गुजरात की राजधानी गांधीनगर में बड़े हर्षोल्लास के साथ शोभायात्रा निकली। गिरनार जी में आचार्य रत्न विमलसागर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। पालीताना सिद्धक्षेत्र में श्वेताम्बर जैन मुनि श्री अभयसागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में रथ का स्वागत हुआ। भावनगर में मुनि वैराग्यसागर जी एवं मुनिश्री सिद्धान्त सामर जी के सानिध्य में सभा हुई। बड़ौदा में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री माधवसिंह सोलंकी जी पधारे। मुख्यमंत्री जी ने अपने भाषण में कहा जब से मैं इस ज्योतिरथ के गुजरात आगमन के समाचार सुन रहा था, तभी से मन में जिज्ञासा थी कि प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने जिसका उद्घाटन किया है वह अवश्य ही कोई महान चीज होगी, क्योंकि इंदिरा जी किसी साधारण वस्तु में तो इतनी दिलचस्पी नहीं ले सकती हैं। आज प्रत्यक्ष में इस यात्रा को देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। लेकिन मुझे हैरानी हो रही है कि ज्ञानमती माताजी ने कैसे इस मॉडल को बनवाया होगा। उनका कितना महान ज्ञान होगा, जिसके द्वारा हम सभी से विस्मृत इस विषय को पुराणों से निकालकर देश को प्रदान किया है। पावागढ़, भरुच, अंकलेश्वर, सूरत, महुआ होती हुई मांडवी पहुँची यहाँ गुजरात प्रदेश का समापन हुआ। बहुत प्रभावशाली प्रर्वतन रहा।

असम प्रवर्तन—14 अक्टूबर 1984 को आसाम की राजधाना गोहाटी से ज्ञान ज्योति प्रवर्तन प्रारंभ हुआ। यहाँ पर आर्थिक दृष्टि से कार्यक्रम बहुत अच्छा हुआ। सभी पदाधिकारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। गोहाटी के पश्चात् खारू पेटिया, तेजपुर, विश्वनाथचाराली, उत्तर लखीमपुर, शिलापथार से रथ डिब्रूगढ़ पहुँचता है। ज्ञान ज्योति के शिलापथार प्रवर्तन के पश्चात् डिब्रूगढ़ जाने के मार्ग में विशाल ब्रह्मपुत्र नदी स्टीमर के द्वारा पार की गयी। तिनसुकिया वालों ने अगाध भक्ति का परिचय दिया। माननीय निर्मलकुमार सेठी ने वहाँ पहुँच कर रथ का खूब स्वागत किया। शिवसागर ग्राम में ग्रामीण विकास मंत्री श्री टंकेश्वर डिहीगिया ने रथ का स्वागत किया। 24 अक्टूबर को नागालैण्ड की राजधानी डीमापुर में रथ का भव्य स्वागत हुआ। डीमापुर में वित्तमंत्री श्री टी.ए. नुली ने रथ के उद्देश्यों से प्रभावित होकर अपनी ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

आसाम के मुख्यमंत्री ने किया ज्योति रथ का स्वागत—जैसा कि हर प्रान्त में राजनेताओं द्वारा ज्योति का भाव भीना स्वागत हुआ। उसी शृंखला में यहाँ भी मुख्यमंत्री श्री रिसांगक्रेसिंग तथा स्वास्थ्य मंत्री श्री राधा विनोद जी सपत्नीक पधारे। मंत्री महोदय ने मणिपुरी भाषा में ज्ञान ज्योति तथा भगवान महावीर के संदेशों के बारे में बतलाया कि ये सिद्धान्त हर मानव के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

विजय के लिए घोड़ा छोड़ा गया—स्वास्थ्य मंत्री ने अपने भाषण में कहा कि जिस प्रकार रामचंद्रजी ने विश्व विजय प्राप्त करने के लिए घोड़ा छोड़ा था। उसी प्रकार से ज्ञानमती माताजी ने दिग्विजय के लिए यह ज्ञान ज्योति रथ छोड़ा है। यहाँ से सिल्चर व शिलांग, नलवाड़ी, बरपेटा रोड, बंगाईगांव, गौरीपुर, धुबड़ी, दीनहट्टा होते हुए सिलीगुड़ी ज्योति पहुँची। यहाँ पर 9 नवम्बर को आसाम प्रवर्तन समाप्त हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर प्रदेश प्रवर्तन— उत्तर प्रदेश प्रवर्तन माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर से प्रारंभ हुआ। खूब जोर-शोर से कार्यक्रम की तैयारी हुई। रातोंरात सड़कों का डामरीकरण हुआ। चारों तरफ से नगर में तोरणद्वार लगाये गये। जगह-जगह चौक पूरे गये। विशाल पंडाल बनाया गया। जिधर नजर जाती थी उसी तरफ सजावट थी।

माननीय मुख्यमंत्री का आगमन—कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी ने अनेक राजनेताओं के साथ भाग लिया। टिकैतनगर के इतिहास में पहलीबार मुख्यमंत्री आये थे। ब्र0 रवीन्द्र जी की मेहनत के द्वारा ही मुख्यमंत्री का आगमन हो सका था। सभी लोगों में इतना अधिक हर्षोल्लास था कि जिसका वर्णन कर पाना दुर्लभ है। यहाँ से दरियाबाद, बाराबंकी, त्रिलोकपुर, बहराइच, फैजाबाद होते हुए अयोध्यातीर्थ पर रथ का आगमन हुआ। लखनऊ में एक बार पुनः मुख्यमंत्री ने ज्योतिरथ का स्वागत किया। महमूदाबाद आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की जन्मभूमि पर ज्योति का मंगल पदार्पण हुआ। संभल, विलासपुर, हलद्वानी, काशीपुर, खुर्जा, हापुड, बड़ागांव, गाजियाबाद, हापुड़, कांधला, शामली, बावली में अति उत्साह के साथ ज्योति रथ के कार्यक्रम सम्पन्न हुए, प्रत्येक स्थानों पर राजनेताओं एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने ज्योति रथ का भावभीना स्वागत किया। इसी के साथ हरियाणा के भी नगरों में ज्योति रथ का भ्रमण हुआ। पश्चात् पश्चिमी उत्तर प्रदेश का प्रवर्तन हुआ। अंत में वह घड़ी भी आ पहुँची जिसका इंतजार बहुत बेसब्री से सभी कर रहे थे। ज्योति रथ का आगमन हस्तिनापुर नगरी में हुआ, सेन्ट्रल टाऊन से ही रथ की अगवानी हुयी। पू0 माता जी ससंघ ज्योति रथ के स्वागत के लिए आईं। 1045 दिनों बाद माता जी ज्योतिरथ को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। शोभायात्रा के साथ ज्योति रथ को जम्बूद्वीप स्थल पर लाया गया। यह अंतिम पडाव था। 28 अप्रैल 1985 को देश के रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिंहाराव के करकमलों द्वारा यहाँ ज्ञान ज्योति जम्बूद्वीप रचना के सामने अखण्ड स्थापित कर दी गयी। साथ में जे.के.जैन संसद सदस्य भी आये। आज भी वह अखण्ड ज्योति निरन्तर प्रकाशमान होकर सभी को आलोकित कर रही है।

इस यात्रा के माध्यम से जितना द्रव्य (धन) संग्रह हुआ उसका सदुपयोग जम्बूद्वीप रचना के बनाने में किया गया है एवं जम्बूद्वीप स्थल पर आने वाले यात्रियों के सौजन्य से भी इसके स्वरूप को निखारा गया है, जो आपके सामने है।

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार का भारत भ्रमण

भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार की भारत यात्रा का संक्षिप्त विवरण-

दिल्ली उद्घाटन कार्यक्रम—22 मार्च 1998 चैत्र कृष्णा नवमी का दिन भारत के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ बनकर रह गया। आज भारत की राजधानी दिल्ली के चांदनी चौक में क्या पूरी दिल्ली नगरी में एक अजीब सा उल्लास है, उमंग है, सारी नगरी को तोरण द्वारों से सजाया गया है। ऐसा लगता है आज नगरी में कुछ विशेष उत्सव होने जा रहा है। जी हाँ यह विशेष उत्सव ही है। आज 2500 वर्षों के बाद इस अवनीतल पर भगवान ऋषभदेव का समवसरण उतर रहा है जो कि आज से करोड़ों वर्ष पूर्व निर्मित भगवान ऋषभदेव के साक्षात् समवसरण का आभास दिला रहा हो।

सांसद धनंजय कुमार जैन द्वारा उद्घाटन—नव निर्वाचित सांसद श्री वी.धनंजय कुमार जी ने दिल्ली के लाल किला मैदान से परम पूज्य गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणी श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में वरिष्ठ समाज सेवियो के साथ में समवसरण श्री विहार रथ पर स्वस्तिक बनाकर दिल्ली प्रदेश के लिए प्रवर्तित किया। सर्वप्रथम सौधर्म इन्द्र श्री प्रेमचंद जैन खारी बावली, धनकुबेर श्री अनिल कुमार जैन कागजी, भरत चक्रवर्ती श्री राजकुमार जी वीरा बिल्डर्स, राजाश्रेयांस श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेंटर एवं सर्वाण्हदेव श्री विजय कुमार जैन दरियागंज ने बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। हेलीकाप्टर द्वारा पुष्पवृष्टि करने का सौभाग्य श्री नरेश बंसल गुडगांवा, अजय कुमार जैन सरस्वती विहार सुशील कुमार जैन पहाडी धीरज एवं सुरेन्द्र कुमार जैन त्रिनगर ने प्राप्त किया। तथा मंगल आरती अजय कुमार जैन की। इसी के साथ प्रवर्तन प्रारंभ हो गया।

इन सभी कार्यक्रमों के बाद लोगों ने देखा एक विहंगम दृश्य समवसरण श्री विहार का जो कि दिल्ली के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ बनकर जुड़ गया है। युगों-युगों तक यह लोगों को स्मरण दिलाता रहेगा कि कभी राजधानी दिल्ली से समवसरण श्री विहार हुआ था जो चतुर्थकाल की याद दिला रहा था। लाखों की जनता से सहित यह ऐतिहासिक जुलूस लाल किला मैदान से प्रारंभ होकर चांदनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौक, फतेहपुरी, खारी बावली, सदर बाजार होता हुआ पहाड़ी धीरज पर पहुँचा जहाँ स्वयं देवराज इन्द्र मानो गंधोदक की वृष्टि कर रहे थे। शोभायात्रा प्रारंभ के समय काफी गर्मी थी वहीं अब समवसरण के श्रीविहार होते ही मंद सुगन्धित पवन चलने लगी थी। इस विशाल जुलूस में सुन्दर-सुन्दर झाँकियाँ, अनेक बैण्ड बाजे, इन्द्राणिया केसरिया परिधान में रजत कलश लिए हुए, भगवान

ऋषभदेव के 1008 नामों की ध्वाजाऐं लिए हुए स्कूली बालक तथा32 हजार मुकुट बद्ध राजाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए मुकुट बद्ध राजा बग्घियों में शोभायमान थे। साथ ही विशेष आकर्षण का केन्द्र समवसरण रथ व ऐरावत हाथी था। अष्ट दिक्कुमारियां अष्टमंगल द्रव्य लेकर बैठी थीं। जगह-जगह अनेक महानुभवों द्वारा ठन्डाई, फल, केशरिया दूध, शिकंजी, शर्बत, मिष्ठान, नमकीन आदि वितरित किये गये। जो कि किमिच्छक दान जैसा दृश्य उपस्थित कर रहे थे।

समवसरण श्रीविहार का समापन पहाड़ी धीरज पर हुआ। इस शुभ अवसर पर पहाड़ी धीरज जैन पंचायत (समाज) द्वारा समवसरण रथ का भावभीना स्वागत किया गया तथा समस्त आगन्तुक धर्म बन्धुओं को पहाड़ी धीरज जैन समाज द्वारा संतुष्ट किया गया। अगले दिन प्रातः पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री जगदीश टाइटलर ने आकर पूज्य माताजी का प्रवचन सुनकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

प्रधानमंत्री जी ने समवसरण रथ का भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन किया—दिनांक 9 अप्रैल 1998 को विश्व वंद्य भगवान महावीर स्वामी की जन्मजयन्ती की पावन बेला में परम पू0 गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से शुभाशीर्वाद प्राप्त कर राजधानी दिल्ली के तालकटोरा इंडोर स्टेडियम से भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री माननीय श्री अटलबिहारी वाजपेई ने भगवान ऋषभदेव समवसरण रथ का भारत भ्रमण हेतू प्रवर्तन किया।

आयोजन में माननीय प्रधानमंत्री जी लगभग 2 घंटे तक प्रसन्नता पूर्वक रहे और प्रत्येक कार्यक्रम में हर्षितमन से रुचि ली। सर्वप्रथम पूज्य माताजी से विशेष चर्चा की एवं आशीर्वाद लिया पश्चात् मंच के कार्यक्रम में एवं समवसरण श्री विहार प्रवर्तन कार्यक्रम में सम्मिलित होकर विधिवत् पूजा-अर्चना की। आज की सभा की अध्यक्षता सांसद श्री धनंजय कुमार जैन ने की। सभा का कुशल संचालन समिति के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र0 श्री रवीन्द्र कुमार जैन ने किया। अंत में रथ पर स्वास्तिक बनाकर रथ का प्रवर्तन किया।

माननीय प्रधानमंत्री जी के उद्‌गार-समवसरण श्रीविहार राजधानी दिल्ली की विभिन्न कालोनियों में 22 मार्च 1998 से 02.5.98 तक प्रवर्तन हुआ। लगभग 23 कालोनियों में पू0 गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के पावन सानिध्य में समवसरण श्रीविहार का प्रवर्तन हुआ। अति भक्ति के साथ सभी स्थानों पर अनेक मंत्रियों एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों ने स्वागत सभाओं में भाग लिया। सम्पूर्ण राजधानी को भगवान ऋषभदेव के अहिंसामयी सिद्धान्तों से आलोकित कर दिया। इसी के साथ राजधानी से रथ हरियाणा प्रांत के लिए अग्रसर हुआ।

हरियाणा प्रवर्तन कार्यक्रम-3.5.98 को हरियाणा के औद्योगिक नगर गुड़गावां से समवसरण श्री विहार पवर्तन प्रारंभ हुआ। केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सभी पदाधिकारियों ने मिलकर प्रभावशाली कार्यक्रम किया। सभा में मुनि श्री समता भूषण जी महाराज विराजमान थे। शहर में अनेक तोरण द्वार बने हुये थे। भव्यशोभायात्रा ने नगर भ्रमण किया। इसी क्रम में धारूहेड़ा होते हुए रेवाड़ी में रथ का आगमन हुआ। रेवाड़ी वालों ने बहुत सुन्दर शोभायात्रा निकाली सारे नगर को अहिंसा की वाणी से गुंजायमान कर दिया। नारनौल, रानीला होते हुए भिवानी में समवसरण का आगमन हुआ। यहाँ पर आर्यिका श्री सृष्टिभूषण माताजी व आर्यिका श्री स्वस्ति भूषणमती माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ।

हांसी, हिसार, जींद होते हुए समवसरण सफीदोमंडी पहुँचा। यहाँ पर अलग ही भक्ति का रंग था। अत्यधिक हर्ष के साथ शोभायात्रा निकाली गयी। सारे नगर में पुस्तकें व मिष्ठान का वितरण हुआ। बालक से लेकर वृद्ध तक रथ के प्रति समर्पित थे। रोहतक वालों ने भी कार्यक्रम को सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। बहादुरगढ़ होते हुए सोनीपत नगर में आगमन हुआ। यहाँ पर मुनि श्री ज्ञानभूषण जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। गन्नौर, पानीपत होते हुए करनाल नगर में रथ का आगमन हुआ। महेश नगर कैन्ट अम्बाला नगर में बिना कार्यक्रम के ही कार्यक्रम हो गया। चण्डीगढ़ वालों ने इतना भव्य स्वागत किया कि 100 वर्ष के इतिहास को पीछे छोड़ दिया। इस प्रकार से लगभग हरियाणा के 26 नगरों में रथ का प्रवर्तन हुआ। सभी नगर वालो ने खूब उत्साह के साथ स्वागत किया एवं अपने भाग्य की सराहना की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजस्थान प्रवर्तन—राजस्थान में समवसरण का शुभारंभ अतिशय क्षेत्र तिजारा से किया गया। यहाँ पर केन्द्रीय एवं प्रान्तीय समिति के सभी पदाधिकारियों की उपस्थिती में भव्य स्वागत सभा हुई। सभाध्यक्ष श्री एन.के.सेठी जयपुर (अध्यक्ष महावीर जी क्षेत्र) व मुख्य अतिथी श्री ज्ञानचंद झांझरी जयपुर थे। केन्द्रीय समिति से ब्र0 रवीन्द्र कुमार जैन हस्तिनापुर, प्रेमचंद जैन खारी बावली दिल्ली, कैलाशचंद जैन करोल बाग दिल्ली आदि वरिष्ठ पदाधिकारियों उपस्थिती में प्रभावशाली कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अतिशय क्षेत्र महावीर जी में गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमती माताजी के ससंघ सानिध्य में मंदिर प्रागंण में सभा हुई।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में समवसरण श्रीविहार रथ का स्वागत करने के लिए महामहिम राज्यपाल श्री एन.एल. टिबरेवाल जी पधारे। भट्टारक जी की नशिया में खूब भव्य स्वागत एवं सभा हुई। शोभायात्रा मार्ग में लगभग 150 तोरणद्वार लगे हुए थे। राज्यपाल जी ने अनेक घोषणाएँ भी की एवं अपनी प्रसन्नता भी व्यक्त की। जयपुर नगर में 10 दिन तक प्रतिदिन अलग-अलग स्थानों पर शोभायात्रा निकाली गयी। अनेक क्षेत्रों में भगवान ऋषभदेव की वाणी को गुंजायमान करते हुए रथ माधोराजपुरा पहुँचा। पू0 माताजी की दीक्षा स्थली होने के कारण यहाँ के लोगों का लगाव बहुत ज्यादा था। शानदार कार्यक्रम किया। मोजमाबाद में मुनि श्री वारिषेण सागर जी महाराज के सानिध्य में सभा हुयी।

मुनि सुधा सागर जी ने किये दर्शन- समवसरण श्रीविहार के सीकर आगमन पर मुनि श्री के ससंघ सानिध्य में सभा हुयी। सीकर नगरी के अन्दर मुनि श्री सुधासागर जी का चातुर्मास चल रहा था। उसी मध्य में समवसरण का भव्य स्वागत हुआ एवं भव्य शोभायात्रा निकली। नागौर नगर में गांधी चौक पर भव्य स्वागत सभा हुयी जिसम श्री जे.पी.चंदौलिया कलेक्टर नागौर ने रथ का स्वागत किया। अजमेर नगर में कलेक्टर साहब ने रथ का स्वागत किया।

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज के सानिध्य में रथ की स्वागत सभा—समवसरण रथ मदनगंज किशनगढ़ (अजमेर) में पहुँचा। यहाँ पर आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज विराजमान थे। आचार्य श्री के ससंघ सानिध्य में सभा हुई। आचार्य श्री ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि पू0 माताजी ने अद्‌भुत कार्यों को किया है समवसरण रथ उनमें से एक है। आचार्य श्री पूरी शोभायात्रा में ससंघ रथ के साथ-साथ चले। पचेवर नगर में आर्थिक दृष्टि से सबसे अच्छा कार्यक्रम हुआ। नैनवा ग्राम में आचार्य चंद्र सागर जी के सानिध्य में सभा हुई। इन्द्रगढ़ में तहसीलदार साहब ने रथ का स्वागत किया। सुसनेर नगर में आचार्य श्री दर्शनसागर जी ने स्वयं सभी कार्यक्रमों को करवाया।

कोटा नगरी में महापौर द्वारा स्वागत—कोटा नगरी के गीता भवन में स्वागत सभा का आयोजन किया गया। उपस्थिती अच्छी थी। सभाध्यक्ष श्री भागचंद टोंग्या व मुख्य अतिथी श्रीमती सुमन शृंगी महापौर कोटा थीं। केन्द्रीय एवं प्रांतीय समिति के सभी पदाधिकारीगण कोटा नगरी में पधारे। माननीया महापौर जी ने रथ पर स्वस्तिक बना कर स्वागत किया। कोटा कार्यक्रम में उत्तम चंद निर्खी कोटा वालों का सहयोग प्राप्त हुआ। बेगू नगर में रथ के स्वागत के लिए श्रीघनश्याम जैन एम.एल.ए. पधारे। चंवलेश्वर पार्श्वनाथ में समवसरण रथ पहुँचने पर खूब स्वागत हुआ। खजूरी ग्राम में वहाँ के स्थानीय विधायक श्री रतनलाल तांबी ने रथ का स्वागत किया एवं नगर के एक उद्यान का नाम भगवान ऋषभदेव उद्यान कर दिया। गुलाबपुरा, भीलवाड़ा, निमाज, पाली होते हुए आनंदपुर कालू नगर में पहुँचे बहुत उत्साही समाज था छोटा सा नगर है 30 घर जैन समाज के हैं लेकिन पूरे भारत भ्रमण में सबसे अच्छा आर्थिक सहयोग यहाँ से प्राप्त हुआ। भव्य शोभायात्रा निकली। 1जनवरी 1999 को रथ जोधपुर पहुँचा। यहाँ पर रथ के स्वागत के लिए श्री मिलापचंद जैन (पूर्व न्यायाधीश) व श्री मानसिंह देवड़ा विधायक सरदारपुरा पधारे। यहाँ से रथ बीकानेर पहुँचा। यहाँ पर भी भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सिरोही नगर में दिगम्बर एवं श्वेताम्बर समाज का सामूहिक कार्यक्रम हुआ।

विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ताओं ने किया समवसरण का स्वागत—आबू रोड़ में स्वागत सभा बाहर ही हो गई। तत्पश्चात् शोभायात्रा में प्रत्येक समाज ने रथ का स्वागत फूलों से किया। विश्व हिन्दू परिषद वालों ने रथ का स्वागत कर खूब पुष्पवृष्टि की। रथ को हर तरफ से फूलों से लाद दिया। उदयपुर में रथ आगमन पर बैंक तिराहे पर सभा हुयी। सभाध्यक्ष श्री गुलाब सिंह जी शक्तावत सहकारिता मंत्री राज.सरकार व मुख्य अतिथी श्री शांतिलाल चपलोत सांसद, श्री त्रिलोक पूर्बिया विधायक, श्री किरण माहेश्वरी सभापति नगर परिषद, डा. प्रेम सुमन जैन थे। उपस्थिती बहुत अच्छी थी। कार्यक्रम सफल बनाने में श्रीमहावीर मिण्डा जी का सहयोग रहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य अभिनंदन सागर जी के सानिध्य में समवसरण की स्वागत सभा—स्वागत सभा रानी बाग चौक में हुई। आचार्य श्री ससंघ मंचासीन थे। हर तरफ जन-सैलाब ही दिखायी देता था। जैसे चतुर्थ काल सम दृश्य था। शोभायात्रा में आचार्य श्री ससंघ चले। सभा का कुशल संचालन श्री शंकरलाल चेयरमैन ने किया। सलूम्बर में आर्यिका आदिमती माताजी व आर्यिका श्री श्रुतमती माताजी विराजमान थीं। बाँसवाड़ा ग्राम में रथ के स्वागत के लिए श्री ओ.पी. गुप्ता अतिरिक्त जिला कलेक्टर बाँसवाड़ा पधारे। उन्होंने आज के दिन को यादगार बनाने के लिए शहर के एक मार्ग का नाम भगवान ऋषभदेव मार्ग कर दिया। सागवाड़ा नगर में बालाचार्य योगीन्द्र सागर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। डूंगरपुर नगर में मुनि श्री प्रसन्न सागर जी व मुनि प्रज्ञा सागर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ।

इस प्रकार से राजस्थान के लगभग 908 नगरों में रथ भ्रमण हुआ तथा लगभग 10 माह तक राजस्थान में प्रवर्तन हुआ। सभी श्रद्धालुओं ने खूब भक्तिपूर्वक समवसरण का स्वागत किया। ऐसा लगता था कि वास्तविक समवसरण ही विचरण कर रहा हो। राजस्थान प्रवर्तन का समापन केसरियाजी में हुआ। इसी के साथ मध्य प्रदेश की ओर ले चलता हूँ आप सभी पाठकों को----

मध्यप्रदेश प्रवर्तन—मध्य प्रदेश प्रवर्तन का शुभारंभ नीमच नगर से हुआ। मध्य प्रदेश प्रवर्तन की बागडोर श्री हुकुम चंद जैन इंदौर ने संभाली। डा0 अनुपम जैन इंदौर के कुशल मार्ग दर्शन में एक प्रान्तीय कमेटी का गठन किया गया। जिससे प्रवर्तन के इस कार्य को सुलभ बनाया जा सके। नीमच नगर में विधायक श्री नंदकिशोर पटेल ने रथ का स्वागत किया। इसी के साथ प्रवर्तन प्रारंभ हुआ। बड़नगर में आचार्य श्री कुशाग्रनंदी जी महाराज का ससंघ सानिध्य प्राप्त हुआ। रतलाम में रथ के स्वागत के लिए श्री निर्मल कुमार जैन उपायुक्त बिक्रीकर विभाग, श्री राजेश जैन डिप्टी कलेक्टर पधारे। सारंगपुर में श्री कृष्ण मोहन मालवीय विधायक रथ के स्वागत के लिए पधारे।

उज्जैन नगर में फ्रीगंज मंदिर में सभा हुयी। रथ के स्वागत के लिए श्रीमती प्रीति भार्गव विधायिका पधारीं।

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी के सानिध्य मे समवसरण की सभा—नेमावरसिद्धोदय सिद्धक्षेत्र पर ससंघ आचार्य श्री विराजमान थे। रथ पूर्व संध्या पर पहुँचा। आचार्य श्री ने बहुत बारीकी से पौन घंटे तक समवसरण रचना का अवलोकन किया। 100 पिच्छीधारी के साथ तीनों तरफ से सभी साधु-साध्वियों ने दर्शन किये। एकदम चतुर्थ काल जैसा दृश्य प्रतीत होता था। स्वागत सभा में उपस्थिती बहुत अच्छी थी।

खण्डवा में घासपुरा मंदिर मे सभा हुई। सभा में मुख्य अतिथि श्री नंदकुमार चौहान सांसद खण्डवा थे। सनावद में समवसरण के स्वागत के लिए विधायक श्री जगदीश मोराडिया पधारे, सनावद नगर में रथ का भव्य स्वागत हुआ। यहाँ पर श्री प्रकाश चंद जैन सर्राफ का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ। इंदौर नगर में शांतिनाथ मांगलिक भवन में सभा हुई। जिसमें श्री देवकुमार सिंह कासलीवाल, प्रदीप कासलीवाल अध्यक्ष महासमिति, माणिक चंद पाटनी आदि ने रथ का स्वागत किया। शोभायात्रा में महिला संगठन का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। समापन सभा में उपाध्याय निजानंद सागर महाराज जी एवं पू0 एलाचार्य श्री नेमीसागर महाराज जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। श्री मधुकर वर्मा महापौर इंदौर ने सभी का इंदौर नगर में स्वागत किया। समाज के नेता श्री बाबूलाल पाटोदी ने एक विस्तृत वक्तव्य में माताजी की खूब प्रशंसा की। उपाध्याय श्री ने कहा कि माताजी इन नवीन योजनाओं के द्वारा समाज में एक धार्मिक जागृति ला रही हैं। बीनागंज में रथ के स्वागत के लिए विधायक जी पधारे।

शिवपुरी में कई माह पूर्व से समवसरण रथ के स्वागत की तैयारियाँ चल रही थी। बड़े-बड़े होल्ड़िग, बैनर व समाचार पत्रों के माध्यम से खूब प्रचार-प्रसार कर रखा था। पूर्व रात्रि में सभा हुयी। प्रातःकाल शोभायात्रा सारे नगर में घुमायी गयी। कार्यक्रम में सुरेश जैन मारोरा का सहयोग प्राप्त हुआ। भिण्ड में आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के ससंघ सानिध्य में सभा हुयी। सोनागिरिसिद्ध क्षेत्र पर साधुओं के सानिध्य में सभा हुयी। तालबेहट में आचार्य श्री विवेकसागर जी का ससंघ सानिध्य प्राप्त हुआ।

मकरोनिया में समवसरण रथ के आगमन पर भव्य स्वागत हुआ। सभा में मुख्य अतिथी श्री शिवकुमार श्रीवास्तव कुलपति सागर विश्वविद्यालय, श्री एस.सी.जैन डिप्टी कलेक्टर व मुख्य चिकित्सा अधिकारी श्री डा. बमोरया, प्रो.बी.के.जैन डीन सागर वि.वि., श्रीमती सुधा जैन स्थानीय विधायिका थी। सागर में समवसरण रथ का भव्य स्वागत हुआ। यहाँ पर आर्यिका श्री सत्यमती माताजी व आर्यिका श्री सकलमती माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। सभा मोरा जी में हुयी। मध्यान्ह में भव्य शोभायात्रा निकली। कई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थानों पर तोरण द्वार बने थे, जगह-जगह रथ की आरती व स्वागत हो रहा था। शोभायात्रा कटरा मंदिर पहुँचकर सभा में परिणत हो गयी। उपस्थिती बहुत थी। दादा डालचंद जी ने कहा कि पू0 माताजी एक बार बुन्देलखण्ड का भ्रमण करें व सागर में एक चौमासा करें। बहुत सुंदर कार्यक्रम हुआ।

दमोह नगर में आर्यिका अकम्पमती माताजी का ससंघ सानिध्य प्राप्त हुआ। कुण्डलपुर में बड़े बाबा के चरणों का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ। पटेरा में आर्यिका प्रशान्त मती माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। तिवरी में सांसद श्रीमती जयश्री बनर्जी ने रथ का स्वागत किया। कटनी में महापौर ने रथ का स्वागत किया। जबलपुर में लाड़गँज मंदिर के बाहर मेन रोड़ पर सभा हुयी। मुख्य अतिथि के रुप में अनिल शर्मा भा.ज.पा. अध्यक्ष जबलपुर पधारे। दुर्ग में सांसद महोदय श्री ताराचंद साहू ने समवसरण की स्वागत सभा में आकर अपने को धन्य माना। डोंगरगांव में श्री धनेश पाटिज जी शासन मंत्री म0प्र0 पधारे। सिवनी, केवलरी, गाडरवाड़ा, होसंगाबाद होते हुए गंजबासोदा पहुँचे। यहाँ पर बहुत भव्य स्वागत हुआ। सभा में धनकुबेर का पद श्री कन्छेदीलाल जी ने प्राप्त किया। और कन्छेदी लाल जी जैन ने यहाँ पर चुनाव में खड़े हुए थे, आज उसका रिजल्ट आना था। शोभायात्रा निकल ही रही थी तभी मार्ग में पता चला कि वे नगपालिका के अध्यक्ष पद के लिए चुन लिये गये हैं। अब तो पूरे जैन समाज की प्रसन्नता का पार ही नहीं रहा। खुशी दूनी हो गयी सभी लोगों ने कहा ये समवसरण का चमत्कार है। इस प्रकार से आगे बढ़ते हुए समापन की बेला आ गयी। लगभग म0प्र0 के 348 नगरों में सफल प्रवर्तन हुआ। इंदौर नगर के तिलकनगर कालोनी में रथ का समापन हुआ।

गुजरात प्रान्त का भ्रमण—निरन्तर एक ग्राम से दूसरे ग्राम व एक प्रांत से दूसरे प्रांत में धर्म की ध्वजा लहराते हुए भगवान ऋषभदेव के सर्वोदयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करते हुए एवं अहिंसा शाकाहार की ज्योति जगाते हुए सभी को अपने साथ मिलाते हुए समवसरण रथ का गुजरात प्रांत में पदार्पण हुआ।

दाहोद से शुभारंभ—नगर पालिका के बाहर सभा हुई, सभाध्यक्ष श्री अशोक भाई भट्ट नागरिक पूर्व0 मंत्री गुजरात प्रदेश, मुख्य अतिथी श्री जशवन्त भाई भामोर मंत्री गुजरात सरकार,श्री बाबूभाई कटारा संसद सदस्य, श्रीमती स्नेहलता बेन नगर पालिका सदस्य थे। विशिष्ट अतिथि ब्र0 रवीन्द्र कुमार जैन अध्यक्ष जम्बूद्वीप हस्तिनापुर थे। चारों तरफ स्वागत बैनर लगे थे। उत्साह पूर्वक मंत्री जी ने रथ का स्वागत किया। माननीय मंत्री जी ने अपने भाषण में कहा कि पू0गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने एक महान कार्य किया है एवं समाज को नयी दिशा प्रदान की है। समस्त कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री शैलेश भाई ने किया।

यहाँ संतरामपुर तक प्रशासन की कई गाड़ियाँ रथ को छोडने गयी। ईडर में रथ का भव्य स्वागत हुआ। सलाल नगर में श्रीमती पुष्पाबेन लीनामा मामलतदार ने स्वागत किया। हिम्मतनगर में अच्छा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तलोद ग्राम में शोभायात्रा में 100 महिलाएँ कलश लेकर चल रही थीं। गिरनार जी सिद्धक्षेत्र पर आचार्य श्री निर्मल सागर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। दहेगाम में समवसरण रथ के स्वागत के लिए श्री गाबा जी मंगा जी ठाकुर समाज कल्याण मंत्री पधारे। सूरत में प्रान्तीय समापन का कार्यक्रम हुआ। पूरे गुजरात भ्रमण में भाई विनोद हर्ष जी का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ। प्रान्तीय अध्यक्ष का पद सुशोभित किया श्री बाबूभाई गांधी तलोद ने गुजरात के 45 नगरों में समवसरण के माध्यम से भगवान ऋषभदेव की वाणी को गुंजायमान किया गया।

महाराष्ट्र प्रवर्तन—महाराष्ट्र प्रवर्तन का प्रारंभ नासिक से किया गया। नासिक में भव्य कार्यक्रम हुआ प्रान्तीय एवं केन्द्रीय समिति के पदाधिकारियों ने भाग लिया। नासिक में श्वेताम्बर साधुओं के ससंघ सानिध्य में सभा हुयी। मांगीतुंगी जी सिद्धक्षेत्र पर आर्यिका रत्न श्री श्रेयांसमती माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ, समाज का एक भी घर न होते हुए भी रथ का स्वागत एवं शोभायात्रा रखी गयी। परभणी ग्राम में बहुत अच्छा कार्यक्रम हुआ। कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर भी स्वागत सभा का आयोजन हुआ। पंढ़रपुर में मुख्य अतिथी के रूप में पधारे श्री रामचंद शिंदे प्रांताधिकारी व विशिष्ट अतिथी श्री सुभाष चंद डांगे पुलिस निरिक्षक, बसंत राव काले चेयरमैन समवसरण रथ के स्वागत के लिए पधारे। सभी ने रथ के संदर्भ में अपने विचार रखें। नातेपोते नगर में अच्छी सभा हुई। यहाँ पर सभाध्यक्ष श्री राजमालेगांवकर थे। अध्यापक महोदय जैन नहीं थे लेकिन लगभग ढ़ेड घंटे तक उन्होंने भगवान ऋषभदेव के विषय में अपना वक्तव्य दिया।

मुंबई महानगर में समवसरण का भव्य स्वागत—मुंबई में एक समिति का गठन किया गया जिससे महानगर भ्रमण का कार्यक्रम सुव्यवस्थित चलाया जा सके। भरत कुमार काला को उसका संयोजक बनाया गया। 14 ता0 को 8 बजे गोरेगांव से प्रवर्तन प्रारंभ किया गया। सभागार में भव्य स्वागत सभा हुई जिसमें विशेष रुप से भाग लिया श्री आई0 सी0 जैन, श्री नंद कुमार काले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आमदार, श्री जयचंद जी कासलीवाल चांदवड़, श्री प्रकाश अवाड़े मंत्री वस्त्रउद्योग महाराष्ट्र सरकार, श्री आर0के0 जैन अध्यक्ष द0भा0 जैनसभा, श्री शिखचंद पहाड़िया, पं0 श्री भरतकाला, डा0 पन्नालाल पापड़ीवाल महामंत्री प्रांतीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी, जसूभाई शाह आदि। सभी ने अपने वक्तव्य में माताजी की खूब प्रशंसा करते हुए इसे एक अनुपम देन बताया। मुम्बई में 23 स्थानों पर भ्रमण हुआ सभी स्थानों पर प्रभाव शाली कार्यक्रम हुए। आर्थिक एवं धार्मिक दृष्टि से कार्यक्रम बहुत अच्छे हुए। रामबाग बाड़ी में मुम्बई का मुख्य कार्यक्रम हुआ जिसमें समवसरण के स्वागत के लिए आर.के पुरोहित आमदार व अतुलभाई आमदार पधारे। सभा की अध्यक्षता श्री सरदार हीरालाल चंदूलाल ने की। इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने खूब प्रचार-प्रसार किया सारे महाराष्ट्र में पूरे कार्यक्रम में भरत कुमार काला का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ।

पूना, इचलकरंजी होते हुए कोल्हापुर एवं सांगली जिलो में रथ का भ्रमण हुआ। गांव-गांव मे (छोटे-छोटे से गाँव थे) जहाँ पर कभी कोई धार्मिक बडे आयोजन नही होते हैं वे खुश होते थे कि ये अवसर हमें प्राप्त हुआ।

नांदणीमठ में स्वागत सभा — नांदणी में समवसरण रथ आगमन हुआ। स्वामी जिनसेन भट्टारक के पावन सानिध्य में सभा हुयी। भट्टारक जी ने अपने प्रवचन में कहा कि माताजी ने समाज को एक अद्भुत देन दी है। भट्टारक जी ने रथ का स्वागत किया। सोलापुर में श्राविका आश्रम में सभा हुयी। सर्वप्रथम झंडारोहण हुआ। तत्पश्चात् बालिकाओं के द्वारा मंगलाचरण हुआ। इसी क्रम में ब्र0 विद्युल्लता बेन का स्वागत भाषण हुआ। 5000 बालिकाएं शोभायात्रा में रथ के आगे-आगे चल रहीं थीं। ध्वजाएं, झांकी, भजनमंडली आदि शोभायात्रा में सम्मिलित हुई। आडुल नगर में समवसरण आगमन पर सर्वधर्म सम्मेलन हुआ।

औरंगाबाद में समवसरण दर्शन के लिए उमड़ा जन सैलाब-औरंगाबाद वालों की पूर्व से ही तैयारी थी। सभा राजा बाजार मंदिर के बाहर हुई। जिधर नजर जाती उधर भीड़ ही भीड़ दिखती थी। सभा में आचार्य कल्प श्री करुणासागर जी महाराज व श्वेताम्बर साधु उपस्थित थे। सभाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी दर्डा ऊर्जा मंत्री महाराष्ट्र सरकार थे। मुख्य अतिथी श्री कर्मयोगी ब्र0 रवीन्द्र जैन अध्यक्ष केन्द्रीय समिति, विशिष्ट अतिथी श्री डा0 भागवत जी कराड़ महापौर, श्री बसंत जी नखड़े उपमहापौर, डा0 पन्नालाल पापडीवाल अध्यक्ष महाराष्ट्र प्रांतीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी थे। शोभायात्रा में खूब उपस्थिती थी। कोपरगांव में समवसरण श्री विहार के स्वागत के लिए श्री शंकरराज जी काले सांसद व नगर अध्यक्ष श्री दारुणकर पधारे। अकोला नगर में गोवर्धन शर्मा विधायक ने रथ का स्वागत किया।

वाशिम में मुख्यअतिथी श्री मुजावर कलेक्टर वाशिम व श्री राजेन्द्र पाटनी आमदार विधान परिषद (महा0), श्री राजेन्द्र राठी नगरअध्यक्ष, जितेन्द्र पापलकर उप विभागीय अधिकारी थे। अमरावती में रथ के स्वागत के लिए श्री अनंतभाऊ गुढ़े (खासदार) पधारे। वर्धानगर एक ऐतिहासिक नगर है यहाँ पर रथ का भव्य स्वागत हुआ। नागपुर में समवसरण पहुँचने पर बहुत भव्य कार्यक्रम हुआ। यहाँ पर दो कार्यक्रम हुए। शोभायात्रा में लगभग 10,000 (दस हजार) व्यक्ति होंगे। जगह-जगह तोरणद्वार बने थे। जगह-जगह आरती हुई। यहाँ पर ऐलक उदार सागर महाराज विराजमान थे। इस प्रकार से महाराष्ट्र की यात्रा यहीं पर सम्पन्न हुई। महाराष्ट्र के 250 नगरों में प्रवर्तन हुआ। आशातीत सफलता के साथ महाराष्ट्र प्रवर्तन सम्पन्न हुआ।

उत्तर प्रदेश प्रवर्तन — उ0प्र0 में प्रवंतन राजधानी लखनऊ से प्रारंभ हुआ। निरन्तर ढ़ाई वर्षो से 6 प्रांतों का भ्रमण करने के बाद उत्तर प्रदेश का नंबर आया। प्रतिभा सिनेमा के प्रांगण में सभा का आयोजन हुआ। सभा में अध्यक्षता ब्र0 रवीन्द्र कुमार जैन ने की व मुख्य अतिथी श्री लाल जी टंडन नगर आवास विकास मंत्री, श्री ओम प्रकाश सिंह, सिचाई मंत्री, श्रीमती सीमा रिजवी शिक्षामंत्री, श्री अरविन्द जैन चिकित्सा मंत्री, डा0एस0सी0 राय नगर प्रमुख, श्री राजेन्द्र तिवारी अध्यक्ष नगर निगम थे। सभी प्रांतीय पदाधिकारी थे। सभी मंत्रियों एवं अधिकारियों ने खूब प्रशंसा की। शोभायात्रा बहुत भव्य थी। माननीय लाल जी टंडन ने रथ पर स्वास्तिक बनाकर एवं हरी झंडी दिखाकर प्रवर्तन प्रारंभ किया।

दरियाबाद, सुमेरगंज होते हुए बाराबंकी पहुँचे। यहाँ पर आर्यिका श्री चंद्रमती व आर्यिका श्री दक्षमती माताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ। एस0पी0 सिटी ने आकर रथ का स्वागत किया। गणेशपुर में आचार्य श्री सिद्धान्त सागर जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। हरदोई नगर में श्री नरेश अग्रवाल ऊर्जा मंत्री उ0प्र0 सरकार ने रथ का स्वागत कर मांसाहार का त्याग कर दिया। तहसील फतेहपुर में बहुत शानदार कार्यक्रम हुआ। स्वागत सभा में मुख्य अतिथी श्री धनराज यादव उद्यानमंत्री थे। शोभायात्रा बहुत भव्य निकली। सम्पूर्ण कार्यक्रम में श्री सरोज जैन का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ। यहाँ पर एक स्थान पर एक मार्ग का नाम भगवान ऋषभदेव मार्ग रखा गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समवसरण त्रिलोकपुर व बहराइच होते हुए अयोध्या पहुँचा। यहाँ पर भगवान ऋषभदेव का दर्शन कर रथ आगे बढ़ा। कटरा मेदनीगंज में स्वागत के लिए मुख्य न्यायाधीश महोदय पधारे। रायबरेली ग्राम में भी कम घर होने के बाबजूद शोभायात्रा अच्छी निकली। इस प्रकार से अवध प्रांत में खूब भक्ति से समवसरण की यात्रा सम्पन्न हुई।

द्वितीय चरण का शुभारंभ मैनपुरी से—मैनपुरी में मुनि श्री अमित सागर जी महाराज के ससंघ सानिध्य में सभा हुई। सभा की अध्यक्षता पं0 शिवचरण लाल जी जैन ने की। मुख्य अतिथी ब्र0 रवीन्द्र कुमार जैन व प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी फिरोजाबाद थे। मंच संचालन डा0सुशील जैन ने किया। रथ के स्वागत के लिए श्री आर.के रस्तोगी जिलाधीश पधारे। शोभायात्रा मार्ग में जगह-जगह तोरण द्वार लगे थे व सभी समाजों ने रथ का स्वागत अपनी-अपनी विधि से किया। खूब प्रभावना के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसी के साथ छोटे बड़े नगरों में प्रभावना करते हुऐ रथ इटावा पहुँचा, यहाँ पर नगर पालिका में सभा हुई। सभा में रथ के स्वागत के लिए श्री जयवीर सिंह भदौरिया विधायक पधारे। शिकोहाबाद में मुनि श्री चैत्यसागर जी के सानिध्य में सभा हुई। जसवंतनगर होते हुए फिरोजाबाद नगर में रथ का मंगल पदार्पण हुआ।

फिरोजाबाद नगर में हुआ स्वागत—छदामीलाल जी की नशियां में समवसरण की स्वागत सभा हुई। मुख्यअतिथी श्री रघुवरदयाल वर्मा विधायक (पूर्व वनमंत्री) थे। प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाश जी का ओजस्वी वक्तव्य हुआ। पूज्य आर्यिका बाहुबलीमती माताजी के प्रवचन हुए। तत्पश्चात् शोभायात्रा निकली। एत्मातपुर में मुनि श्री पुण्यसागर जी का सानिधय प्राप्त हुआ। मथुरा, कोसी, हाथरस सासनी, सिकन्दराराऊ, हरदुआगंज, अतरौली, अलीगढ़, खुर्जा, बुलंदशहर, शिकारपुर होते हुए कन्नौज नगर में रथ का आगमन हुआ।

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में हुआ कार्यक्रम—रथ प्रवर्तन के पश्चात् पहली बार पू0 माताजी का ससंघ सानिध्य प्राप्त हुआ। पू0 माताजी का ससंघ प्रयाग (इलाहाबाद) की ओर विहार करते हुए मार्ग में कन्नौज प्रवास के दौरान सानिध्य प्राप्त हुआ। आगरा शहर में तीन कालोनियों में कार्यक्रम सम्पन्न हुए। आगरा नगरी में सभी तरफ समवसरण का ही दृश्य दिखता था। मुनि पुलक सागर जी के सानिध्य में कार्यक्रम हुआ।

कानपुर महानगर में रथ संयोजक विजय जैन को युवारत्न की उपाधि से अलंकृत किया—कानपुर महानगर का सौभाग्य था कि रथ की संप्रेरिका का सानिध्य प्राप्त हुआ। हालसी रोड़ पर पंडाल में कार्यक्रम हुआ। मुख्य अतिथि श्रीमति अनीता भटनागर जैन जिलाधिकारी कानपुर व श्री आशु जैन इन्कम टैक्स कमिश्नर थे। सभाध्यक्ष श्री प्रेमप्रकाश जी थे। यहाँ पर पू0 माताजी के द्वारा मुझे (रथ संयोजक विजय कुमार जैन को) युवारत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया। माताजी इस समय इलाहाबाद (प्रयाग) के लिए विहार कर रहीं थीं। यहाँ से हम लोग जायस होते हुए टिकैतनगर पहुँचे।

टिकैतनगर में समवसंरण का हुआ भव्य स्वागत—पू0 गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर वालों ने पूर्व से ही तैयारियां कर रखी थी। पू0 माताजी की कृति का स्वागत करने के लिए हर व्यक्ति लालायित था। पूरी नगरी ने खूब स्वागत सत्कार के साथ शोभायात्रा निकाली गई। फरुखाबाद में श्री शकुन्तला गौतम सिटी मजिस्ट्रेड ने रथ का स्वागत किया। रामपुर में समवसरण के स्वागत के लिए श्री शिव बहादुर सक्सेना राज्यमंत्री उ0प्र0 प्रशासन पधारे। अमरोहा में मुस्लिम समाज ने भी रथ का स्वागत किया। अनेक नगरों में भ्रमण करते हु बनारस नगरी में उ0प्र0 प्रवर्तन का समापन हुआ। लगभग उत्तर प्रदेश के 125 नगरों के अन्दर भगवान के समवसरण का भव्य स्वागत हुआ। शोभायात्राओं के माध्यम से सभी के बीच भगवान ऋषभदेव के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया।

बंगाल, बिहार, आसाम, नागालैण्ड, मणिपुर प्रर्वतन कार्यक्रम

सम्मेदशिखर से प्रवर्तन प्रारंभ—शाश्वत सिद्धभूमि से प्रवर्तन का शुभारंभ हुआ। यहाँ सरस्वती भवन में अनेक आचार्य एवं साधुओ के सानिध्य में सभा हुई। सभी संतो का आशीर्वेद लेकर आगे प्रर्वतन प्रारंभ हुआ। गिरिडीह, देवघर होते हुए भागलपुर में रथ का मंगल आगमन हुआ। पूरे नगर में बैनर लगे थे। जगह-जगह तोरणद्वार बने हुए थे। मुख्य अतिथी श्री राकेश मिश्र पुलिस-अधीक्षक भागलपुर थे। शोभायात्रा बहुत भव्य सम्पन्न हुई। किशनगंज जाने के लिए नदी पार करनी पड़ती थी। दोनों रथों को स्टीमर पर रखकर नदी पार करायी गयी। बंगाई गांव में समवसरण के स्वागत के लिए श्री अनिल भूषण चौधरी श्रम राज्य मंत्री आसाम सरकार पधारे। डिब्रूगढ़ में भव्य स्वागत के साथ रथयात्रा निकाली गयी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इम्फाल में राज्यपाल ने किया स्वागत—मणिपुर की राजधानी इम्फाल में प्रदेश के राज्यपाल श्री वेदमारवाह जी समसवरण के स्वागत के लिए पधारे। बहुत सुन्दर शब्दों में रथ का स्वागत भाषण किया एवं रथ पर स्वास्तिक बनाकर प्रदेश के लिए प्रवर्तन किया। यहाँ से विजयनगर पहँचे। यहाँ पर तीन दिन तक कार्यक्रम रहा। तत्पश्चात् बिहार होते हुए बंगाल का प्रवर्तन हुआ। रायगंज, धूलियान, पाकुड़, अडंगाबाद, मिर्जापुर, गनकर, जंगीपुर, सन्मतिनगर, लालगोला होते हुए जियागंज पहुँचे, यहाँ पर श्री संतोष सिंह चावला चेयरमेन ने रथ का स्वागत किया। बंडेल बाजार में आचार्य श्री वासूपूज्य सागर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। कलकत्ता में बड़ा बाजार में सभा हुई। समवसरण के स्वागत के लिए श्री सुधाशुं शील विधायक जी पधारे। यहाँ से बेल्दा, खड़गपुरं होते हुए पूरे पं0 बंगाल का प्रवर्तन हुआ। तत्पश्चात् झारखण्ड प्रर्वतन प्रारंभ हुआ। मिहिजाम में बहुत भव्य कार्यक्रम हुआ।

धनबाद होते हुए कतरासगढ़ में प्रवर्तन हुआ। सभी समाजों ने समवसरण रथ का स्वागत किया। झारखण्ड की राजधानी रांची में आचार्य पद्मनंदी जी ने ससंघ सानिध्य में सभा हुई। मुख्यअतिथी श्री रामजी लालजी शारड़ा विधि एवं न्यायमंत्री थे। विशिष्ट अतिथी श्री शिवाजी महान केरे पुलिस महानिदेशक मिगरानी व आर0के0 कटारिया आई.जी. मिगरानी थे। डाल्टनगंज में श्री इन्द्रसिंह जी नामधारी झारखण्ड विधानसभा अध्यक्ष ने समवसरण का स्वागत किया। औरंगाबाद मे रथ के स्वागत के लिए प्रभू प्रसाद जी सिविल कोर्ट जज पधारे साथ में कई वकील भी आये। रफीगंज में अंचल अधिकारी ने फीता काटकर रथ को नगर भ्रमण करवाया।

आचार्य भरत सागर जी के सानिध्य में स्वागत सभा—कोडरमा ग्राम में उत्साह अच्छा था। कई तोरण द्वार व बैनर लगे थे। आचार्य भरत सागर जी का ससंघ सानिध्य प्राप्त हुआ। स्थानीय विधायिका ने स्वास्तिक बनाकर रथ का स्वागत किया। शोभायात्रा बहुत सुन्दर निकली। आर्यिका श्री स्याद्वादमती माताजी ने अपने प्रवचन में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को सर्वश्रेष्ठ आर्यिका बताया।

यहाँ से नवादा, गुणांवा होते हुए पावापुरी व कुण्डलपुर तीर्थ पर रथ का आगमन हुआ। पटना नगर में समवसरण का भव्य स्वागत हुआ। आरा नगरी में अभूतपूर्व स्वागत हुआ। इस प्रकार से पूर्वांचल के लगभग 100 नगरों में प्रवर्तन हुआ। लगभग एक लाख कि0मी0की इस यात्रा के अन्तर्गत भगवान ऋषभदेव के सर्वोदयी सिद्धान्तो का प्रचार-प्रसार हुआ। सारे देश के लगभग 1350 नगरों में भ्रमण हुआ।

भगवान ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग इलाहाबादं तीर्थ पर समवसरण रथ के द्वारा प्राप्त अर्थांजलि का उपयोग किया गया है। वहाँ लगभग 1 वर्ष में विशाल कैलाश पर्वत, भगवान ऋषभदेव तपोवन मंदिर, समवसरण मंदिर, कीर्तिस्तंभ आदि धार्मिक रचनाओं के साथ-साथ कार्यालय, फ्लैट, प्रवचनहाल, पानी की टंकी, भोजनशाला एवं बच्चों के मनोरंजन के लिए झूले, ऐरावत हाथी, ट्रेन आदि की व्यवस्था की गयी है। जिस समवसरण के मॉडल को सारे देश में भ्रमण कराया गया उसकी स्थापना भी तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ इलाहाबाद में की गयी है। जो भी यात्री इस पर जाता है बिना प्रशंसा किये नहीं आता है। आज भी भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा पचास फुट की ऊँचाई से सभी को शान्ति का संदेश दे रही है। मेन रोड से ही पूरे तीर्थ के दर्शन प्राप्त हो जाते हैं।

इन दो रथों के प्रवर्तन की तर्ज पर ही भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) से पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा सन् 2003 में 'भगवान महावीर ज्योति रथ' का प्रवर्तन हुआ। देश के विभिन्न प्रान्तों में भ्रमण करके इस ज्योतिरथ ने जन्मभूमि का व्यापक प्रचार-प्रसार किया, पुनः अक्टूबर 2004 में उस प्रवर्तन का समापन हुआ। इस रथ की बोलियों से प्राप्त आय का सदुपयोग कुण्डलपुर तीर्थ के विकास में ही किया गया है। इस प्रवर्तन का विवरण कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ में प्रकाशित हो चुका है।

आगे की भावी योजनाओं में पूज्य माताजी की प्रेरणा से मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में पर्वत पर चल रहे भगवान ऋषभदेव की 108 फुट विशालकाय प्रतिमा का निर्माण कार्य प्रमुखता से किया जा रहा है। उसके प्रचार-प्रसार हेतु भी माताजी ने 'मांगीतुंगी मूर्ति निर्माण रथ' प्रवर्तन की प्रेरणा प्रदान की है, जो शीघ्र ही महाराष्ट्र प्रान्त में प्रवर्तित होने वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास में ज्ञानमती माताजी का अवदान

"तीर्यते संसारसागरो येनासौ तीर्थः" अर्थात् जो संसार समुद्र से तिरवाए वह तीर्थ है, इस कथन के अनुसार सच्चा धर्म ही उत्तम तीर्थ है। तीर्थ उस स्थान को कहते हैं, जहाँ साधक साधना करके आत्मसिद्धि को प्राप्त कर लेते हैं एवं "तीर्थं करोति इति तीर्थंकरः" अर्थात् धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने वाले महापुरुष तीर्थंकर कहलाते हैं। वे तीर्थंकर जहाँ जन्म लेते हैं, जहाँ दीक्षा लेते हैं, जहाँ-जहाँ विहार करते हैं, जहाँ पूर्ण ज्ञान को प्राप्त करते हैं एवं जहाँ से मोक्ष को प्राप्त करते हैं, वे सब पुण्य-पवित्र स्थल तीर्थ कहलाते हैं। उन स्थानों का कण-कण पवित्र माना जाता है और वहाँ का वातावरण भी जनमानस पर पवित्र संस्कार अंकित करता है, जिसके बारे में आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी ने कहा है कि-

इक्षोर्विकार रसपृक्तगुणेन लोके, पिष्टोधिकां मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषैरुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि।।

अर्थात् जिस प्रकार इक्षु के रस से युक्त आटा लोक में मधुर हो जाता है, उसी प्रकार पुण्य पुरुषों के गर्भ, जन्म आदि कल्याणकों के या उनके निवास पर किए गए स्थान इस संसार में पवित्र हो जाते हैं।

जिनागम में दो ही शाश्वत तीर्थ माने गये हैं-1. अयोध्या 2. सम्मेदशिखर। इनमें से अयोध्या तीर्थ अनन्तानन्त तीर्थंकर भगवन्तों की शाश्वत जन्मभूमि के रूप में जानी जाती है एवं शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर को अनन्तानन्त तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि होने का गौरव प्राप्त है। वर्तमान चौबीसी में हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश मात्र पाँच तीर्थंकर (ऋषभ, अजित, अभिनंदन, सुमति व अनन्तनाथ) जन्में एवं शेष उन्नीस तीर्थंकर अलग-अलग स्थानों पर जन्मे हैं तथा बीस तीर्थंकर सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र से मोक्ष को प्राप्त हुए और शेष चार तीर्थंकर अलग-अलग स्थानों से मोक्ष गए हैं। इसलिए 16 जन्मभूमि एवं 5 निर्वाणभूमियाँ हैं।

उन सोलह जन्मभूमियों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-

1. अयोध्या 2. श्रावस्ती 3. कौशाम्बी 4. वाराणसी 5. चन्द्रपुरी 6. काकन्दी 7. भद्रपुरी 8. सिंहपुरी 9. चम्पापुर 10. कम्पिल जी 11. रत्नपुरी 12. हस्तिनापुर 13. मिथिलापुरी 14.राजगृही 15. शौरीपुर 16. कुण्डलपुर।

ये सभी जन्मभूमियाँ हमारी संस्कृति की उद्गमस्थली हैं लेकिन समाज की सुप्तता के कारण इनमें से अनेकों जन्मभूमियाँ उपेक्षित, अविकसित, वीरान एवं जीर्णोद्धार की अवस्था मे हैं, जहाँ हम इसे कलियुग का अभिशाप कह सकते हैं, वहीं परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की सद्प्रेरणा से विश्व के क्षितिज पर पुनः दैदीप्यमान होने वाली अनेकों जन्मभूमियों को देखते हुए इसे कलियुग का वरदान ही कहेंगे कि बीसवीं शताब्दी में हमें साक्षात् सरस्वती माता की प्रतिमूर्ति, वाग्देवी स्वरूपा पूज्य ज्ञानमती माताजी का प्रेरक उद्बोधन एवं वरदहस्त प्राप्त हुआ है, जिससे इन सोलह जन्मभूमियों में से अनेक जन्मभूमि, कल्याणकभूमि एवं अन्य तीर्थों का विकास व जीर्णोद्धार पिछले वर्षों में हुआ है, उनके संक्षिप्त परिचय स्वरूप यहाँ विभिन्न आलेख प्रस्तुत किये जा रहे हैं, साथ ही इसी खंड में पूज्य माताजी द्वारा सम्पन्न हुए राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय प्रभावना से संबंधित कतिपय आलेख भी यहाँ प्रस्तुत हैं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जन्मभूमि विकास की शृँखला में प्रथम कड़ी ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर

प्रस्तुति-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन
(अध्यक्ष-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर)

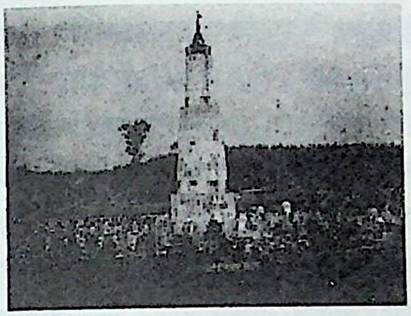

हस्तिनापुर की प्राचीनता—

भारत एक अद्भुत धनाढ्य देश है क्योंकि यहाँ सदैव आध्यात्मिक महापुरुषों ने जन्म लेकर अपनी त्याग, तपस्या एवं साहित्य लेखन आदि के द्वारा अमूल्य निधियाँ विश्व को प्रदान की हैं। इसे हम दूसरे शब्दों में ऐसे भी कह सकते हैं कि—**India is the cradle of greatmen.** यहाँ अयोध्या, हस्तिनापुर, बनारस, उज्जैन आदि अनेक पवित्र नगरियाँ हैं जिन्हें आज से कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व इन्द्र ने बसाया था। भगवान ऋषभदेव के प्रथम पुत्र, प्रथम चक्रवर्ती सम्राट् भरत के नाम पर ही देश का नाम "भारतवर्ष" पड़ा है, ऐसा प्राचीन इतिहास एवं वेदपुराणों के माध्यम से ज्ञात होता है।

जैनधर्म के 24 तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का प्रथम आहार (इक्षुरस का) हस्तिनापुर में हुआ था तथा 16-17-18वें तीन तीर्थंकर श्री शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ का जन्म हस्तिनापुर में हुआ था। करोड़ों वर्ष पूर्व यहाँ पर इन तीर्थंकरों के चार-चार कल्याणक हुए थे और तीर्थंकर, चक्रवर्ती, कामदेव इन तीन पदों के धारक इन तीनों महापुरुषों ने हस्तिनापुर को राजधानी बनाकर यहाँ से छह खण्ड का राज्य संचालित किया था। आज से लगभग १२ लाख वर्ष पूर्व यहीं से रक्षाबंधन पर्व का इतिहास प्रारंभ हुआ एवं 86500 वर्ष पूर्व महाभारत काल में भी हस्तिनापुर नगरी भारत की राजधानी मानी जाती थी। तब दिल्ली और हस्तिनापुर को संभवतः एक ही माना जाता था। जैसा कि पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक The Discovery of India के पृष्ठ 107 पर लिखा है—Dilli or Delhi, not the modern city but ancient cities situated near the modern site, named Hastinapur and Indraprastha becomes the metropolis of India. इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आज जिसे हम दिल्ली नाम से जानते हैं वह कभी हस्तिनापुर एवं इन्द्रप्रस्थ कहलाता था अतः दिल्ली और हस्तिनापुर को एक दूसरे के पूरक ही समझना चाहिए।

जम्बूद्वीप रचना से पहचान बनी है हस्तिनापुर की—

सन् 1965 में श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) चातुर्मास के मध्य जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य 105 गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी को विंध्यगिरि पर्वत पर भगवान बाहुबली के चरण सानिध्य में पिण्डस्थ ध्यान करते-करते मध्यलोक की सम्पूर्ण रचना, तेरहद्वीप का अनोखा दृश्य ध्यान की तरंगों में दिखाई दिया। पुनः दो हजार वर्ष पूर्व के लिखित तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार आदि ग्रंथों में उसका ज्यों का त्यों स्वरूप देखकर वह रचना कहीं धरती पर साकार करने की तीव्र भावना पूज्य माताजी के हृदय में आई और उसका संयोग बना हस्तिनापुर में।

कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, बंगाल, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली आदि प्रांतों में विहार करने के बाद सन् 1974 में पूज्य आर्यिका श्री का ससंघ पदार्पण हस्तिनापुर तीर्थ पर हुआ। बस तभी से हस्तिनापुर ने नये इतिहास की रचना प्रारंभ कर दी। यह एक अनहोना संयोग ही है कि आज से करोड़ों वर्ष पूर्व तृतीय काल के अंत में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के प्रथम आहार दाता-हस्तिनापुर के युवराज श्रेयांस ने स्वप्न में सुमेरु पर्वत देखा था और आज पंचमकाल में उसी हस्तिनापुर की वसुंधरा पर सुमेरु पर्वत से समन्वित पूरे जम्बूद्वीप की ही रचना पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से साकार हो उठी है।

250 फुट के व्यास में सफेद और रंगीन संगमरमर पाषाणों से निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय वृत्ताकार जम्बूद्वीप रचना का निर्माण हुआ है, जिसके बीचों बीच में हल्के गुलाबी संगमरमर के 101 फुट ऊँचे सुमेरु पर्वत की शोभा सभी के मन को आकर्षित करती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन् 1985 से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आकर्षण केन्द्र के रूप में उभरे, प्राचीन जैन साहित्य एवं भूगोल के परिचायक, वैज्ञानिकों के लिए शोध केन्द्र, आध्यात्मिक उन्नयन के लिए पवित्र स्थान, मानसिक शांति एवं जिनेन्द्र भगवान की पूजन-भक्ति के सम्पूर्ण साधनों तथा आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता सहित इस अनुपम तीर्थ की जनक संस्था का नाम है—

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान (रजि.)

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक छोटी सी भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया जो सन् 1990 में एक अनोखे "कमल मंदिर" के रूप में निर्मित हो चुका है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर के अतिशय से क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके लाखों-लाख भक्त अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं जिससे उनके समक्ष निरंतर छत्र चढ़ाने, दीपक जलाने एवं महावीर चालीसा करने का क्रम जारी रहता है।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण —

जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगमवर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत में अन्दर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

जैन एवं वैदिक ग्रंथों के अनुसार यह सुमेरुपर्वत तीनों लोकों एवं तीनों कालों में सबसे पवित्र तथा ऊँचा पर्वत माना जाता है, इसी पर्वत पर समस्त जैन तीर्थंकरों के जन्माभिषेक का वर्णन जैन शास्त्रों में मिलता है। 1 लाख 40 योजन अर्थात् 40 करोड़ मील (60 करोड़ किमी.) की ऊँचाई वाले उस अकृत्रिम सुमेरुपर्वत को विश्व में प्रथम बार हस्तिनापुर में 101 फुट ऊँची प्रतिकृति के रूप में निर्मित किया गया है।

जम्बूद्वीप बनने पर तो मानो सचमुच ही स्वर्ग धरती पर उतर आया था!

सन् 1980 में साहू श्री अशोक कुमार जैन ने अपने परिवार सहित पधारकर जम्बूद्वीप रचना का शिलान्यास किया और जैन भूगोल को दर्शाने वाली उस रचना की एक-एक कृति का निर्माण होते-होते 5 वर्ष पश्चात् सम्पूर्ण रचना बनकर तैयार हो गई। इस मध्य 4 जून 1982 को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के द्वारा संस्थान ने राजधानी दिल्ली के लालकिला मैदान से "जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति' नामक रथ का प्रवर्तन कराया। उस रथ ने 1045 दिनों तक पूरे देश में भ्रमण करके जैन भूगोल एवं अहिंसा, सदाचार, व्यसनमुक्ति का प्रचार किया पुनः 28 अप्रैल सन् 1985 को जब हस्तिनापुर में ज्ञानज्योति रथ पहुँचा तब श्री पी.वी. नरसिंहाराव (तत्कालीन रक्षामंत्री-भारत सरकार) ने वहाँ उस "अखण्ड ज्ञानज्योति" को स्थाई रूप से स्थापित किया।

उस अवसर पर संस्थान द्वारा 28 अप्रैल से 2 मई 1985 तक "जम्बूद्वीप जिनबिम्ब प्रतिष्ठापना महोत्सव" में 205 भगवन्तों की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के साथ ही उत्तरप्रदेश सरकार के सहयोग से धरती से लेकर सुमेरुपर्वत की ऊँचाई तक विशाल मचान का आकर्षक निर्माण हुआ, जिसमें पूरे देश से (ज्ञानज्योति में बोली लेकर इंद्र-इंद्राणी का पद प्राप्त करने वाले एवं अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने वाले) लाखों नर-नारियों ने हस्तिनापुर पधारकर सुमेरुपर्वत पर होने वाले महामस्तकाभिषेक में भाग लिया। उस समय हस्तिनापुर के चप्पे-चप्पे पर जनसैलाब इस प्रकार उमड़ा जैसे मानों फिर से एक बार धरती पर स्वर्ग के इन्द्र-देवगण ही उतर आये थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस महोत्सव में धार्मिक आयोजनों के साथ-साथ "जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान" पर एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार भी संस्थान ने (मेरठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में) आयोजित किया तथा उत्तरप्रदेश सरकार की ओर से तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए आगन्तुक समस्त यात्रियों की सुविधा हेतु सड़क निर्माण, बिजली, पानी, परिवहन आदि अनेक प्रकार का सरकारी सहयोग प्रदान किया।

उसके पश्चात् से आज तक उत्तरप्रदेश सरकार का सदैव यथासंभव सहयोग प्राप्त होता रहता है तथा अनेक प्रादेशिक एवं केन्द्रीय राजनेता समय-समय पर जम्बूद्वीप स्थल पर पधारकर गौरव का अनुभव करते हैं।

जम्बूद्वीप क्या है ?

जैन भूगोल का ज्ञान कराने वाली जम्बूद्वीप रचना हमारी विशाल सृष्टि की प्रतिकृति है। इसके बीचों बीच में निर्मित सुमेरुपर्वत इस रचना का मध्य केन्द्र बिंदु माना जाता है और इस सुमेरुपर्वत के कारण जम्बूद्वीप रचना के अंदर पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चार प्रकार से भिन्न-भिन्न रचना के रूपों का ज्ञान होता है जिसमें पूर्व और पश्चिम की रचना पूर्व विदेह क्षेत्र और पश्चिम विदेह क्षेत्र के नाम से जानी जाती है तथा दक्षिण दिशा में भरतक्षेत्र की प्रमुखता के साथ अन्य विजयार्ध, हिमवान् आदि पर्वत, गंगा-सिंधु आदि नदियाँ, हैमवत आदि क्षेत्र, कल्पवृक्षों से सहित भोगभूमि के दृश्य, चैत्यालय, देवभवन, कुण्ड, उपवन आदि दिखाये गये हैं एवं इसी प्रकार उत्तर दिशा में ऐरावत क्षेत्र की प्रमुखता के साथ ऐसी ही पृथक् नाम वाली सभी रचनाएं बनी हैं।

सुमेरुपर्वत के बिल्कुल नजदीक धरती पर उत्तर में धातु का जम्बूवृक्ष और दक्षिण में शाल्मलिवृक्ष बनाकर उनमें भी मंदिर दिखाये गये हैं। इन सभी रचनाओं का वर्णन यदि पहले ठीक प्रकार से तिलोयपण्णत्ती, त्रिलोकसार, तत्त्वार्थसूत्र आदि ग्रंथों में पढ़ लिया जावे पुन: जम्बूद्वीप के एक-एक हिस्से को देखें तो वास्तविक ज्ञान शीघ्र ही हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार दिये गये पूर्वाचार्यों के निर्णयानुसार वर्तमान का सम्पूर्ण विश्व (छहों महाद्वीप) दक्षिण भाग के भरतक्षेत्र में ही प्राप्य है, शेष विशाल सृष्टि तक आज हम पहुँच नहीं सकते हैं।

जम्बूद्वीप परिसर का आध्यात्मिक सौन्दर्य —

उत्तर भारत के गौरव का प्रतीक माना जाने वाला जम्बूद्वीप अपने आप में स्वयं एक परिपूर्ण आध्यात्मिक केन्द्र है, जिसके दर्शन के द्वारा देश-विदेश से आने वाले समस्त जाति के पर्यटक अद्वितीय शांति और प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। 78 जिनमंदिरों 122 देवभवनों के जिनालयों एवं 6 समवसरण मंदिरों के धार्मिक वातावरण से परिपूर्ण जम्बूद्वीप के चारों ओर निर्मित गोलाकार लवण समुद्र में भरे जल के अन्दर यात्री नौका विहार का आनंद लेते हैं तथा सायंकालीन बिजली-फौव्वारों का अलौकिक दृश्य देखने के लिए तो सभी विशेष रूप से एकत्रित होते हैं।

प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति जम्बूद्वीप रचना यद्यपि मात्र 250 डायमीटर में बनी है किन्तु वर्तमान में चूँकि दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित लगभग 35 एकड़ भूमि के परिसर में धार्मिक, शैक्षणिक, साहित्यिक आदि चहुँमुखी गतिविधियाँ निरन्तर चलती रहती हैं और मेरठ जनपद ही क्या पूरे देश में यह संस्था तथा इसका सम्पूर्ण कार्य "जम्बूद्वीप" के संक्षिप्त नाम से ही विख्यात है।

इस जम्बूद्वीप परिसर में कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट जिनालय, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, ध्यान मंदिर, कैलाशपर्वत एवं इन्द्रध्वज मंदिर (निर्माणाधीन तेरहद्वीप जिनालय) आदि हैं। इनमें से ध्यान मंदिर विशेष आकर्षक नूतन शैली में निर्मित है तथा प्रत्येक आगन्तुक को आध्यात्मिकता एवं ध्यानसाधना का जीवन्त संदेश प्रदान करता है। यहाँ "णमोकार महामंत्र बैंक" के नाम से सन् 1995 में स्थापित भवन में भक्तों द्वारा लिखे गये करोड़ों मंत्रों की कापियों का संग्रह है और वह लेखनक्रम निरंतर जारी है। इसमें एक वर्ष के अंदर सवा लाख, पचास हजार, पच्चीस हजार मंत्र लिखकर जमा करने वालों को क्रमश: हीरक, स्वर्ण एवं रजत पदक से शरदपूर्णिमा को सम्मानित किया जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बूद्वीप पुस्तकालय एवं गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठ—

शिक्षाप्रेमियों के लिए यहाँ 15 हजार पुस्तकों के भण्डारण का "जम्बूद्वीप-पुस्तकालय" है तथा "गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोध पीठ" के द्वारा विभिन्न जैन साहित्य पर शोधकार्य चलता है। हजारों मुद्रित ग्रंथों के साथ-साथ उक्त पुस्तकालय में अनेक प्राचीन प्राकृत एवं संस्कृत की पांडुलिपियाँ भी धरोहर के रूप में विद्यमान हैं। शोधपीठ का एक भवन इंदौर (म.प्र.) में भी संस्थान द्वारा निर्मित किया गया है, उसका संचालन पीठ के निदेशक डॉ. अनुपम जैन कर रहे हैं।

मनोरंजन के साधन—

आबाल-वृद्ध सभी की रुचि का ध्यान रखते हुए संस्थान द्वारा इस परिसर के अन्दर "ज्ञानमती कला मन्दिरम्" हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ, चित्रप्रदर्शनी, हंसी के फव्वारे, जम्बूद्वीप रेल, झूले तथा मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध कराये गये हैं।

हरे भरे लॉन, फुलवारी एवं सुन्दर पार्क में बैठकर जहाँ लोग प्राकृतिक सौंदर्य का रसपान करते हैं, बच्चे खेलते हुए स्वयं पुष्पवाटिका का रूप दर्शाते हैं, वहीं होली, दीवाली, कार्तिकपूर्णिमा, अक्षयतृतीया, शरदपूर्णिमा आदि विशेष मेलों के अवसर पर दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदाय के संगठन का परिचय भी प्राप्त होता है। "जम्बूद्वीप महामहोत्सव" के नाम से प्रति पाँच वर्षों में यहाँ विशेष उत्सव सम्पन्न होता है।

संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियाँ —

संस्थान परिसर में अनेकानेक निर्माणों के साथ-साथ इस संस्थान द्वारा संचालित सर्वतोमुखी कार्य सदैव राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के रहे हैं। यहाँ स्थापित वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के द्वारा दो सौ से अधिक ग्रंथों का लाखों की संख्या में प्रकाशन हुआ है तथा सन् 1974 से "सम्यग्ज्ञान" मासिक पत्रिका का निरन्तर प्रकाशन चल रहा है। पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं, संगोष्ठी, सेमिनार, सम्मेलन, शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर तो सन् 1975 से ही आयोजित होते रहे हैं, उनके अतिरिक्त पूज्य माताजी की प्रेरणा से समय-समय पर बहुत सारे प्रभावनात्मक कार्य इस संस्था ने किया है, जिनमें से कुछ प्रमुख कार्यकलाप यहाँ प्रस्तुत हैं—

1. जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति का 1045 दिन तक देशव्यापी भ्रमण (उद्घाटन 4 जून 1982, प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा)
2. भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती मनाने का देशव्यापी अभियान (1 वर्ष तक-सन् 1997 से 1998 तक)
3. चौबीस कल्पद्रुम मंडल विधान (अक्टूबर 1997, दिल्ली में राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा द्वारा उद्घाटित)
4. भगवान ऋषभदेव समवसरण श्री विहार (सन् 1998 से 2002 तक उद्घाटन द्वारा-प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी)
5. भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन (अक्टूबर 1998 में त्रिदिवसीय)
6. भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव (4 फरवरी 2000 से 4 फरवरी 2001 तक, प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित)
7. जैनधर्म की प्राचीनता पर इतिहासकारों का सम्मेलन (जून 2000, हस्तिनापुर में)
8. विश्वशांति महावीर विधान (अक्टूबर 2002, दिल्ली में आयोजित)
9. तीर्थंकर ऋषभदेव तीर्थ प्रयाग नामक दिगम्बर जैन तीर्थ का इलाहाबाद में निर्माण (सन् 2001)
10. भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार प्रदेश) में जीर्णोद्धार के साथ-साथ "नंद्यावर्त महल" नामक नूतन तीर्थ का निर्माण (सन् 2003-2004)

तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ प्रयाग का निर्माण —

पूज्य माताजी की प्रेरणा से अयोध्या, मांगीतुंगी, अहिच्छत्र, दिल्ली, मेरठ, सनावद आदि अनेक तीर्थ एवं शहरों में हुए जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण विकास के कार्यों में संस्थान ने यथासंभव सहयोग तो प्रदान किया ही है किन्तु ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव समापन एवं हिन्दुओं के द्वादशवर्षीय महाकुंभ मेले के अवसर पर प्रयागराज-इलाहाबाद (उ.प्र.) में बनारस हाइवे पर जैनधर्म के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक का प्राचीन इतिहास साकार करने हेतु उक्त तीर्थ का निर्माण कर संस्थान ने एक ऐतिहासिक कार्य किया है। जहाँ सम्पूर्ण व्यवस्था जम्बूद्वीप के समान ही संचालित हो रही हैं।

तीर्थ पर पहुँचने हेतु इस कार्यालय से संपर्क करें—

भगवान ऋषभदेव तीर्थ प्रयाग
इलाहाबाद-बनारस हाइवे, पो.-इलाहाबाद (उ.प्र.)
फोन नं.(0532) 2567067

कुण्डलपुर तीर्थ का विकास —

"नंद्यावर्त महल" के नाम से निर्मित कुण्डलपुर के तीर्थ परिसर में 108 फुट ऊँचा कलात्मक शिखर का भगवान महावीर मंदिर है तथा उसके आजू-बाजू में भगवान ऋषभदेव मंदिर, नवगृहशांति मंदिर बने हैं। महल के ठीक सामने तीन मंजिल ऊँचाा विशाल त्रिकाल चौबीसी मंदिर है। इनके अतिरिक्त वहाँ के सुंदर सर्वार्थसिद्धि द्वार में प्रवेश करते ही दाईं ओर कल्पवृक्ष कार्यालय है और अन्दर जाकर आधुनिक सुविधायुक्त "गणिनी ज्ञानमती निलय" नाम से दो मंजिली धर्मशाला के 35 फ्लैट्स हैं। सुंदर भोजनशाला, पानी की टंकी, बिजली आदि सभी सुविधाओं से सम्पन्न भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ सभी भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करता है। दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत संचालित इस तीर्थ पर पहुँचने हेतु इस पते पर संपर्क करें—

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, नंद्यावर्त महल
पो.-कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार-803111
फोन नं.-(06112) 281846

यात्री सुविधा —

हस्तिनापुर तीर्थ के जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ विशाल भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज आदि शिक्षण संस्थाएं आदि स्थाई सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचें?

भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. एवं पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यीय बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। दिल्ली एवं मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। "जम्बूद्वीप" के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और वहीं से मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि के लिए यात्रियों को लेकर जाती हैं। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवाञ्छित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

कहते हैं कि सन् 1948 में स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन की पुनर्स्थापना की थी। वहाँ से पूर्व दिशा में 2 किमी. आगे मीरापुर रोड से बाईं ओर मुड़ने पर जैन तीर्थ का परिसर प्रारंभ होता है। जहाँ दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानक-वासी जैन समाज की संस्थाएं अपने-अपने मंदिर परिसरों में विभिन्न गतिविधियों का संचालन करती हैं। ऊँचे टीले पर निर्मित लगभग 200 वर्ष पुराना दिगम्बर जैन मंदिर यहाँ का सबसे प्राचीन मंदिर है। वर्तमान में इस संस्था के द्वारा भी नंदीश्वर द्वीप, समवसरण एवं कैलाशपर्वत आदि अनेक मंदिरों का निर्माण कर यात्रियों के लिए आधुनिक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं।

ऐसे पावन तीर्थ हस्तिनापुर को कोटि-कोटि वंदन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकर जन्मभूमि अयोध्या

लेखिका-चारित्रश्रमणी आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी

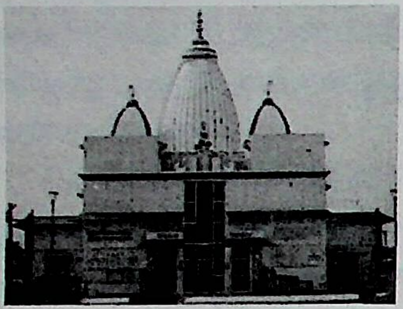

जन्मभूमि विकास की द्वितीय कड़ी के रूप में पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1993-94 में शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार हुआ अत: प्रसंगोपात्त अयोध्या का परिचय यहाँ दृष्टव्य है—

जो कर्मशत्रुओं को जीतें वे 'जिन' कहलाते हैं और जिन के उपासक "जैन" कहलाते हैं। यह जैनधर्म अनादिनिधन है और प्राणी मात्र का हित करने वाला होने से "सार्वभौम" धर्म है। इसी प्रकार से जो जीवों को संसार के दु:ख से निकालकर उत्तम सुख में पहुँचावे, वह 'धर्म' है। 'धर्म तीर्थं करोति इति तीर्थंकर:" इस व्याख्या के अनुसार जो ऐसे धर्मतीर्थ को करते हैं अर्थात् प्रवर्तन करते हैं वे "तीर्थंकर" कहलाते हैं।

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में अयोध्या नगरी है, जिसे 'साकेता', 'विनीता' और 'सुकोशला' भी कहते हैं। इस आर्यखण्ड में उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी के दोनों कालों में सुषमा-सुषमा आदि नाम से छह कालों का परिवर्तन होता रहता है। प्रत्येक के चतुर्थकाल में 24-24 तीर्थंकर जन्म लेते रहते हैं। इस नियम के अनुसार इस राजधानी अयोध्या में अतीत काल में अनंतानंत चौबीसी हो चुकी हैं और भविष्यत्काल में भी अनंतानंत चौबीसी होंगी। वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल होने से तृतीय काल के अंत में ही भगवान ऋषभदेव हुए थे और तृतीय काल में तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष रहने पर ही मोक्ष चले गए थे, इसी कालदोषवश ही इस बार अयोध्या में 5 तीर्थंकर जन्मे हैं, शेष उन्नीस तीर्थंकर अन्यत्र स्थानों पर जन्मे हैं। हुण्डावसर्पिणी काल में तृतीय काल में ही प्रथम तीर्थंकर का होना, प्रथम चक्रवर्ती का मान भंग होना, अयोध्या में पाँच तीर्थंकरों का ही जन्म लेना, शेष तीर्थंकरों का अन्यत्र जन्म लेना, नाना प्रकार के मतों का उत्पन्न हो जाना इत्यादि अघटित कार्य हो गए हैं। इस प्रकार अनादिनिधन जैनधर्म की भांति ही तीर्थंकर परम्परा भी अनादिनिधन है।

तृतीय काल के अंत में जन्में 14 कुलकरों में सभी भोगभूमिज युगलिया थे, इनमें तेरहवें एवं चौदहवें कुलकर अकेले उत्पन्न हुए थे। 14वें कुलकर नाभिराय का विवाह सौधर्मेन्द्र ने प्रधान कुल की कन्या मरुदेवी के साथ कराया था। नाभिराय ने अपने एकमात्र पुत्र तीर्थंकर ऋषभदेव का विवाह इन्द्र की अनुमति से कच्छ-महाकच्छ राजा की बहन यशस्वती और सुनन्दा के साथ किया था। यशस्वती ने भरत आदि 100 पुत्रों तथा ब्राह्मी कन्या को एवं सुनन्दा ने बाहुबली व सुन्दरी कन्या को जन्म दिया था। अयोध्या की पवित्र भूमि पर ही भगवान ऋषभदेव ने अपनी दोनों पुत्रियों को अक्षर और गणित विद्या से प्रारंभ करके सभी पुत्र-पुत्रियों को सम्पूर्ण विद्याओं-कलाओं में निष्णात कर दिया था। प्रजा को असि, मषि आदि छह क्रियाओं का उपदेश देकर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन तीन वर्णों की स्थापना करके कर्मभूमि की सृष्टि को जन्म दिया था, तब ये भगवान सरागी-गृहस्थ थे। आगे इन भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती ने इसी अयोध्या में ब्राह्मण वर्ण की स्थापना की थी। भगवान के पुत्र 'अनंतवीर्य" भगवान से पहले (सर्वप्रथम) मोक्ष गए हैं अनंतर दूसरा नम्बर मोक्षगामी में 'श्री बाहुबली' का हुआ है। ब्राह्मी-सुन्दरी ने भगवान के समवसरण में आर्यिका दीक्षा ली थी, जिसमें ब्राह्मी माता आर्यिकाओं में प्रमुख गणिनी थीं और भगवान के तृतीय पुत्र वृषभसेन प्रमुख गणधर हुए थे।

अयोध्या में ही भगवान अजितनाथ के बाद सगर चक्रवर्ती हुए हैं, जिन्होंने देव के निमित्त से वैराग्य प्राप्त कर एवं उनके साठ हजार पुत्रों ने जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त किया है। सगर चक्री के पौत्र भगीरथ ने दीक्षा लेकर गंगा के तट पर ध्यान किया था, तब देवों ने उनके चरणों का अभिषेक किया था, जिसका प्रवाह गंगा नदी में मिल जाने से तभी से गंगा नदी तीर्थ रूपता को प्राप्त हो गई है। भरत के प्रथम पुत्र अर्ककीर्ति के नाम से इस इक्ष्वाकुवंश को सूर्यवंश यह संज्ञा भी प्राप्त हुई थी। भरत के मोक्ष जाने के बाद इस वंश में लगातार चौदह हजार राजाओं ने अपने-अपने पुत्रों को राज्य देकर दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त किया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन रामायण के अनुसार इसी पवित्र अयोध्या नगरी में सूर्यवंश में राजा अनरण्य के पुत्र राजा दशरथ ने दिगम्बर दीक्षा ली थी, उन मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के भाई भरत ने भी दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त किया है। जब रामचन्द्र अपने भाई लक्ष्मण के मोह में व्याकुल थे, तभी सीता के पुत्र लव-कुश ने दिगम्बरी दीक्षा ले ली थी। इसी अयोध्या में सती सीता ने अपने शील के प्रभाव से अग्नि को सरोवर बनाकर पृथ्वीमती आर्यिका के पास आर्यिका दीक्षा लेकर घोर तपश्चर्या करके समाधिपूर्वक मरण कर स्वर्ग में प्रतीन्द्र पद प्राप्त किया था। यह रामचन्द्र त्रेसठ शलाका पुरुषों में से आठवें बलभद्र, लक्ष्मण आठवें नारायण और रावण आठवें प्रतिनारायण हुए हैं। इस प्रकार अगणित महापुरुषों ने इस अयोध्या को पवित्र किया है। कु. अनन्तमती कन्या ने भी यहीं पर आर्यिका दीक्षा ली थी।

वीर निर्वाण के लगभग 100 वर्ष बाद मगध नरेश नंदिवर्धन ने अयोध्या में मणिपर्वत नामक उत्तुंग जैन स्तूप बनाया था, जो आज भी मणिपर्वत टीला के नाम से अयोध्या प्रसिद्ध है। मौर्य सम्राट् सम्प्रति और वीर विक्रमादित्य के नाम भी इस क्षेत्र के पुराने जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार एवं नवीन मंदिरों का निर्माण कराने में ज्ञात हुए हैं। गुजरात नरेश कुमार पाल चौलुक्य (सोलंकी) ने भी यहाँ जिनमंदिर बनवाए थे। दशवीं-ग्यारहवीं शती ई. में यहाँ जैन धर्मावलम्बी श्री वास्तव्य कायस्थ राजाओं का शासन रहा है।

सन् 1194 ई. के. लगभग दिल्ली विजेता मुगल शासक मुहम्मद गौरी के भाई मखदूमशाह जूरन गौरी ने अयोध्या पर आक्रमण किया और ऋषभदेव-जन्मस्थान के विशाल जिनमंदिर को ध्वस्त करके उसके स्थान पर मस्जिद बनवा दी, शाहजूरन टीले पर मस्जिद के पीछे की ओर आदिनाथ का छोटा सा जिनमंदिर थोड़े दिनों बाद ही बन गया था। यहाँ एक कथानक सुनने में आता है कि जैनों ने जब यहाँ के शासक से आग्रह किया कि यह हमारा प्राचीन पवित्र स्थल भगवान ऋषभदेव का जन्मस्थान है अत: यहाँ मंदिर बनना चाहिए। इसके समर्थन में प्रमाण मांगे जाने पर जैनों ने कहा कि स्थान की खुदाई करके देख लिया जाए। उसमें चांदी का स्वस्तिक, नारियल तथा जलता हुआ घृतदीपक मिलेगा। अस्तु, खुदाई होने पर यथावत् वस्तुएँ मिलीं। इस पर जैनों को यहाँ मात्र एक रात में मंदिर बनाने की इजाजत मिली, फलस्वरूप मंदिर बना जिसमें बहुत छोटी सी जगह में भगवन ऋषभदेव के चरण चिन्ह विराजमान हैं।

वहाँ के शिलालेख से स्पष्ट है कि यह टोंक ला. केसरी सिंह के समय से पूर्व ही विद्यमान थी और उन्होंने 24 ई. में इसका जीर्णोद्धार कराया था, पुनः 1899 ई. में लखनऊ के पंचों ने तथा 1956 ई. में ला. जम्बू प्रसाद जैन, गोटे वाले-लखनऊ ने जीर्णोद्धार कराया था। यह टोंक स्वर्गद्वार मोहल्ले में स्थित है।

कटरा मुहल्ले में स्थित प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है, शिखरयुक्त इस मंदिर में चार वेदियाँ हैं, यहाँ पर एक प्रतिमा वि. सं. 1224 की हैं। चौथी वेदी में भगवान ऋषभदेव की 9 फुट उत्तुंग प्रतिमा व आजू-बाजू में भरत-बाहुबली की प्रतिमा आचार्यश्री देशभूषण महाराज की प्रेरणा से सन् 1952 में विराजमान की गई हैं। मंदिर के आंगन में भगवान सुमतिनाथ की टोंक है, जिसमें भगवान सुमतिनाथ के चरण विराजमान हैं। कटरा मोहल्ले में ही एक टोंक है, जिसमें अयोध्या में ही जन्में श्री भरत चक्रवर्ती और कामदेव बाहुबली के चरण विराजमान हैं तथा कटरा मंदिर के पास ही पाण्डुक शिला परिसर में भगवान शांति, कुंथु व अरहनाथ भगवान के चरण विराजमान हैं। कटरा मोहल्ले में ही भगवान अभिनंदननाथ के जन्मस्थान के प्रतीकरूप में टोंक है जो शिखरबंद है, इसमें भी भगवान के चरण स्थापित हैं। इसका जीर्णोद्धार भी सन् 1724 व सन् 1899 में हुआ है। बकसरिया टोले में जिसे बेगमपुरा भी कहते हैं, भगवान अजितनाथ की टोंक है। जन्मस्थान के प्रतीक रूप में इसमें भगवान अजितनाथ के चरण चिन्ह विराजमान हैं, यह शिखरबंद टोंक है। सरयू नदी के पास राजघाट पर भगवान अनंतनाथ के चरण चिन्ह सहित मंदिर है। इसका जीर्णोद्धार 1724 ई. में व 1899 ई. में कराया गया है। इस टोंक से लगे हुए टीले की पुरातत्व विभाग ने खुदाई कराई थी और अब से लगभग 100 वर्ष पूर्व जनरल कनिंघम ने उस टीले का वर्णन "जैन टीला" नाम से किया था। कुछ वर्ष पूर्व सरयू नदी की बाढ़ से इस टोंक को क्षति पहुँचने पर तीर्थक्षेत्र कमेटी ने जीर्णोद्धार कराया था। मुहल्ला रायगंज में रियासती बाग के मध्य में एक भव्य जिनमंदिर का निर्माण हुआ है। इसमें मूलनायक के रूप में 31 फुट ऊँची विशाल एवं मनोज्ञ भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं। सन् 1965 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज की प्रेरणा से और दिल्ली आदि स्थानों के अनेक श्रद्धालु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्साही श्रावकों के सहयोग से यह भव्य जिनमंदिर बना है, आजू-बाजू में अन्य और छह प्रतिमाएँ विराजमान हैं। ऊपर भी दो वेदियाँ हैं।

धनतेरस कार्तिक कृ. त्रयोदशी, सन् 1992 के दिन ब्राह्ममुहूर्त में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के मन में अयोध्या में विराजमान 31 फुट उत्तुंग विशाल जिनप्रतिमा के महामस्तकाभिषेक कराने की अन्तर्प्रेरणा जागृत हुई, फलस्वरूप 11 फरवरी 1993 को हस्तिनापुर से विहार कर 16 जून 1993 को अयोध्या में मंगल पदार्पण किया, उनके अवध विहार से सम्पूर्ण अवधवासियों में खुशी की लहर दौड़ गई और अवधवासी अपनी ब्राह्मी सदृश माता को पाकर कृतकृत्य हो उठे। उस समय माताजी ने भगवान की विशाल प्रतिमा के प्रथम दर्शन किए और मात्र कुछ ही दिन के प्रवास में अयोध्या तीर्थ की जीर्ण-शीर्ण अवस्था देख उनका अन्तर्हृदय रो पड़ा और उन्होंने उसी क्षण वहाँ के पदाधिकारियों की विनती स्वीकार कर अपनी जन्मभूमि के उत्साह व स्नेह को ठुकराकर अयोध्या के विकास हेतु अपना चातुर्मास स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान कर दी, फिर तो राम जन्मभूमि के नाम से विख्यात अयोध्या देखते ही देखते ऋषभ जन्मभूमि के नाम से विश्व के मानसपटल पर अंकित हो गई। 24 फरवरी 1994 को उत्तरप्रदेश में प्रथम बार भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक हुआ, साथ ही प्रथम भेंट के रूप में पूज्य माताजी ने मंदिर के आजू-बाजू तीन चौबीसी मंदिर एवं समवसरण मंदिर का निर्माण कराया। इन नूतन जिनमंदिरों में तीन चौबीसी मंदिर में तीन मंजिल वाला एक 72 दल का विस्तृत कमल है। उन दलों पर तीन चौबीसी के कुल बहत्तर तीर्थंकर भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान हैं। बायीं तरफ समवसरण में भगवान ऋषभदेव के समवसरण में गंधकुटी में 4 प्रतिमाएँ हैं और मानस्तंभ, चैत्य प्रासादभूमि, उपवनभूमि, कल्पतरु भूमि, भवनभूमि आदि में 152 जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं। श्रीमण्डप भूमि में गणधर देव, मुनिगण व आर्यिकाओं की प्रतिमाएँ भी हैं। सुन्दर बाग-बगीचे से समन्वित इस रायगंज मंदिर परिसर में प्राचीन धर्मशाला के अतिरिक्त तीन नूतन धर्मशालाएँ (डीलक्स फ्लैट युक्त), आचार्य शांतिसागर निलय, आचार्य देशभूषण निलय एवं गणिनी ज्ञानमती निलय हैं तथा सुंदर भोजनशाला भी चल रही है। पूज्य माताजी की प्रेरणा से यहाँ होने वाली पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में पधारने वाले तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने अयोध्या में भगवान ऋषभदेव नेत्र चिकित्सालय की स्थापना की तथा फैजाबाद स्थित "डा. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय" में 'ऋषभदेव जैन शोधपीठ' की भी स्थापना हुई। माताजी की ही प्रेरणा से अयोध्या के राजघाट पर स्थित राजकीय उद्यान "ऋषभदेव उद्यान" के नाम से घोषित हुआ, जहाँ 21 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा विराजमान की गई तथा टोकों का जीर्णोद्धार कर वहाँ अनेक शिलालेख लगाए गए, जो अयोध्या के इतिहास की गौरव गाथा गा रहे हैं। सरयू तट पर स्थित भगवान अनंतनाथ टोंक परिसर में 24 तीर्थंकरों के परिचय व चरण चिन्ह तथा ब्राह्मी-सुन्दरी माता के चरण विराजमान किए गए हैं।

सन् 1994 में माताजी की प्रेरणा प्राप्त कर वहाँ के पदाधिकारियों ने प्रत्येक 5 वर्ष के अनन्तर भगवान का महामस्तकाभिषेक महोत्सव आयोजित करने की घोषणा की थी, मगर शायद उस धरा को पुनः उन्हीं ब्राह्मी माता का इंतजार था, इसलिए सन् 2005 में टिकैतनगर पंचकल्याणक हेतु अवध की ओर विहार करते हुए पूज्य माताजी के श्रीचरण एक बार पुनः अयोध्या की धरा पर पड़े और उनके संघ सानिध्य में 11 वर्षों बाद उन आदीश्वर बाबा का महामस्तकाभिषेक अप्रैल 2005 में धूमधाम से सम्पूर्ण विश्व में अयोध्या की कीर्तिपताका को फहराता हुआ सम्पन्न हुआ।

इस अयोध्या तीर्थ में अन्य इतिहास ग्रंथों के अनुसार सन् 1330 में अनेक मंदिर थे। महाराजा नाभिराज का मंदिर, पार्श्वनाथ बाड़ी, गोमुख यक्ष, चक्रेश्वरी यक्षी की रत्नमयी प्रतिमा, सीताकुंड, सहस्रधारा, स्वर्गद्वार आदि अनेक जैनायतन विराजमान थे। यहाँ एक श्वेताम्बर जैन मंदिर भी है तथा वैष्णव सम्प्रदाय के साढ़े सात हजार मंदिर माने गए हैं, जिनमें हनुमानगढ़ी, सीता रसोई, दशरथ महल, कनक भवन आदि अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

ऐसी पावन शाश्वत जन्मभूमि का कण-कण परम पूज्यनीय व वंदनीय है, जिसका दर्शन-वंदन अनेक पाप कर्मों का नाश कर सातिशय पुण्य प्राप्ति में सहायक है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र का परिचय

(सन् 1996 में पूज्य माताजी के सानिध्य में विकसित किया गया)

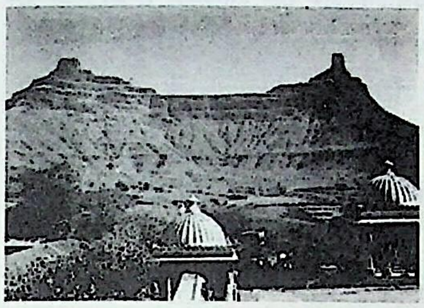

लेखिका-ब्र. कु. सारिका जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

आज से 9 लाख वर्ष पूर्व बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के तीर्थकाल में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र ने उत्तर भारत के परम पावन तीर्थ अयोध्या में जन्म लेकर अपने क्रियाकलापों से संसार में आदर्श उपस्थित किया था पुनः जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर विहार करते हुए दक्षिण भारत के इस पर्वत पर आकर उन्होंने कठोर तपश्चर्या करके मोक्षधाम प्राप्त किया था। उनके साथ ही हनुमान, सुग्रीव, सुडील, गव, गवाक्ष, नील, महानील आदि 99 करोड़ मुनियों ने भी इस पर्वत से सिद्धपद प्राप्त किया है, ऐसा पद्मपुराण आदि जैन ग्रंथों में वर्णित है।

मांगीतुंगी (भिलवाड) ग्राम के उत्तर दिशा की ओर एक पर्वतराज है, जिसकी दो चूलिकाएँ हैं। प्रथम श्री मांगीगिरि व द्वितीय श्री तुंगीगिरि के नाम से प्रसिद्ध है, जो देखने में अद्वितीय है। यह पूरा पहाड़ी क्षेत्र "गालना हिल्स" कहलाता है, जो समुद्र सतह से 4500 फीट की ऊँचाई पर है। दोनों गिरि पर दिगम्बर जैन गुफाएँ हैं, ऊपर गगनचुंबी शिखर हैं।

इन दोनों गिरि पर हजारों वर्ष प्राचीन प्रतिमाएँ एवं यक्ष-यक्षिणियों की मूर्तियाँ विराजमान हैं। तलहटी से 250 फीट ऊँचाई पर शुद्ध-बुद्ध मुनिराज के नाम से दो गुफाएँ हैं। इन गुफाओं के अंदर मूलनायक भगवान मुनिसुव्रतनाथ एवं भगवान नेमिनाथ विराजमान हैं। वस्तुतः मांगीतुंगी गिरि पर अनेकों दिगम्बर जैन प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं तथा अनेक इतिहासों को अपने गर्भ में संजोए "मांगीतुंगी" सिद्धक्षेत्र प्राचीनकाल से एक तपस्वी की भांति अडिग और निष्कामरूप से खड़ा अपनी पावनता का संदेश दे रहा है, जहाँ भक्तगण श्रद्धापूर्वक जाकर वंदना करते हैं तथा अपने असंख्य कर्मों की निर्जरा करते हैं।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री 108 शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के पंचम पट्टाधीश आचार्यश्री 108 श्रेयांससागर महाराज की प्रेरणा से लगभग 20-25 वर्ष पूर्व इस तीर्थ के विकास का कार्य एवं जीर्णोद्धार प्रारंभ हुआ। पर्वत की तलहटी में दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र तीर्थ है, जिसमें दिगम्बर जैन परम्परा के अतिप्राचीन 5 मंदिर हैं—1. श्री सातिशय विश्वहितंकर चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनमंदिर 2. श्री 1008 मूलनायक आदिनाथ भगवान जिनमंदिर 3. संकटमोचन श्री पार्श्वनाथ भगवान जिनमंदिर 4. मूलनायक मुनिसुव्रतनाथ भगवान व 24 खड्गासन तीर्थंकर जिनमंदिर 5. सहस्रकूट कमल मंदिर (गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित) साथ ही एक मानस्तंभ है। भगवान पार्श्वनाथ मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अतिशय चमत्कारिक है, जहाँ भक्तगण अपने मनोरथ सिद्ध करते हैं।

पूज्य स्व. आचार्यश्री श्रेयांससागर महाराज की पावन प्रेरणा से यहाँ वर्तमान चौबीसी मंदिर का निर्माण हुआ, मानस्तंभ का पुनः निर्माण हुआ तथा सहस्रकूट जिनप्रतिमाओं का निर्माण हुआ। आचार्यश्री अपने संघ सहित जहाँ भी विहार करते थे, इस सिद्धभूमि के विकास हेतु श्रावकों को मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की यात्रा एवं वहाँ सहयोग देने की प्रेरणा प्रदान करते थे। चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश आचार्यश्री 108 अजितसागर महाराज की समाधि के पश्चात् 10 जून 1990 को लोहारिया (राज.) की विशाल जनसभा में चतुर्विध संघ द्वारा श्री श्रेयांससागर जी महाराज को पंचम पट्टाचार्य पदवी से अलंकृत किया गया था पुनः सन् 1992 में उन्होंने अपने संघ सहित राजस्थान से श्रवणबेलगोला की ओर विहार किया, तब मार्ग में मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के पंचकल्याणक की भावना उनके मन में थी किन्तु 19 फरवरी 1992 फाल्गुन कृ. एकम् को खांदूकालोनी में अचानक दो दिन की बीमारी से उनका समाधिमरण हो गया पुनः उनकी संघस्थ शिष्या पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माताजी ने गुरु के अपूर्ण कार्य को पूर्ण करने का संकल्प लिया और अपना काफी समय इस विकास हेतु क्षेत्र के लिए समर्पित किया, वर्तमान में भी वह अपने संघ सहित मांगीतुंगी में विराजमान हैं।

महाराजश्री की समाधि के पश्चात् आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी एवं वहाँ के ट्रस्टीगण चाहते थे कि इस प्राचीन आचार्य परम्परा की सर्ववरिष्ठ दीक्षित साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन निर्देशन एवं सानिध्य में ही यहाँ का पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हो, इस हेतु उन लोगों ने 3-4 वर्षों से अपने प्रयास प्रारंभ कर दिये थे किन्तु अत्यधिक दूरी एवं स्वास्थ्य की प्रतिकूलता उसमें बाधा उत्पन्न कर रही थी। इसी बीच इस आचार्य परम्परा के संवाहक एक मुनि श्री 108 रयणसागर जी महाराज का संघ उधर प्रान्त में पहुँच गया। उन्होंने वहाँ सभी के निवेदन पर पंचकल्याणक महोत्सव में अपना सानिध्य देने की स्वीकृति प्रदान कर दी। इधर यहाँ विद्यमान आर्यिका श्री एवं ट्रस्टियों की ओर से पूज्य माताजी को पुनः-पुनः निवेदन चलता रहा कि पूज्य माताजी ! आप जैसी दिव्यशक्ति के आने पर ही यहाँ का रुका कार्य पूर्ण हो सकता है अतः आप एक बार मांगीतुंगी अवश्य पधारकर अनेक वर्षों से रुके पंचकल्याणक को सम्पन्न करा दीजिए।। परिणामस्वरूप एक दिन पूज्य माताजी के भाव बन गए और वे कहने लगीं कि मुझे मांगीतुंगी के लिए विहार करना है। देखते ही देखते 27 नवम्बर 1995 को हस्तिनापुर से माताजी का संघ सहित मांगीतुंगी के लिए विहार हो गया, फिर तो पूज्य माताजी के प्रवेश के साथ ही वहाँ यात्रियों का तांता लग गया।

यह सिद्धक्षेत्र के चमत्कार का ही प्रतिफल रहा है कि 19 मई 1996 से 23 मई 1996 तक वहाँ होने वाली पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में तीन-तीन संघों का सानिध्य प्राप्त हुआ। इतिहास बताता है कि वि.सं. 1997 में यहाँ मानस्तंभ की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के समय आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज एवं आचार्यकल्प मुनि श्री वीरसागर जी महाराज का संघ सहित पदार्पण हुआ था। उसके पश्चात् दीर्घकालीन अवधि के बाद इस तीर्थ पर त्रय संघ सानिध्य में पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ। भगवान मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर के तीर्थकाल में श्री राम, हनुमान आदि 99 करोड़ मुनिराज सिद्ध हुए थे, इसलिए आचार्यश्री श्रेयांससागर महाराज की प्रेरणा से 21 फुट उत्तुंग काले पाषाण की भगवान मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा एवं 6-6 फुट की अन्य 24 प्रतिमाएँ विराजमान की गईं।

पुनः वहाँ के आर्यिका संघ के, क्षेत्र के ट्रस्टियों एवं महाराष्ट्र प्रान्तीय भक्तों के विशेष आग्रह पर माताजी का संघ सहित 1996 का चातुर्मास मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर ही हुआ, इस चातुर्मास में अनेक उपलब्धियों के साथ एक विशेष उपलब्धि हुई, जो विश्व का आश्चर्य ही कही जायेगी, वह है पर्वत की अखण्ड शिला में प्रथम तीर्थंकर भगवान श्री ऋषभदेव की 108 फुट विशालकाय खड्गासन मूर्ति निर्माण की पावन प्रेरणा तथा मूर्ति निर्माण स्थान का निर्देशन। पुनः समस्त सरकारी कार्यवाही पूर्ण करके, मूर्ति निर्माण हेतु नई कमेटी गठित करके 3 मार्च 2002 को पर्वत पर शिलापूजन समारोह भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

मूर्ति निर्माण का कार्य योजनाबद्ध तरीके से चल रहा है। हम सभी के लिए यह कल्पना ही रोमांचकारी है, जब हम श्रवणबेलगोला की 57 फुट ऊँची विशालकाय भगवान बाहुबली की मूर्ति के दर्शन करते हैं, तो रोम-रोम पुलकित हो उठता है फिर जब उनके पिता श्री आदिनाथ स्वामी की 108 फुट विशालकाय अद्वितीय प्रतिमा निर्मित होगी, तो वह क्षण अद्भुत ही होगा।

तीर्थ पर अनेक निर्माणकार्य चल रहे हैं, यहाँ एक भव्य प्रवेशद्वार है। यात्रियों की सुविधा के लिए भोजनशाला एवं आवास हेतु अनेक धर्मशालाएँ हैं तथा पानी आदि की पूर्ण सुविधा है। यहाँ पर प्रतिवर्ष कार्तिक सुदी पूर्णिमा के दिन भव्य मेला लगता है। इस मेले में हजारों जैन, हिंदू आदि बंधु एकत्रित होते हैं।

ऐसे पावन सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी तीर्थ को शतशः नमन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नई सदी की नव उपहार-ऋषभदेव तीर्थ-प्रयाग

लेखक-जीवन प्रकाश जैन (जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर)

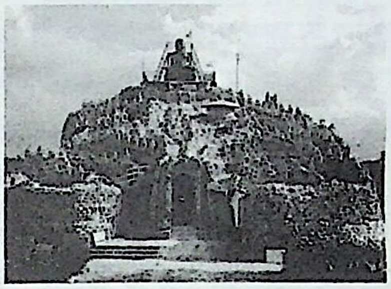

जिस प्रकार से शाश्वत तीर्थ अयोध्या एवं शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर का प्राचीन इतिहास अपनी स्वर्णिम गाथाओं से यश-कीर्ति को प्राप्त है और जन-जन को त्याग-वैराग्य का अनुपम संदेश प्रदान कर रहा है, उसी प्रकार भारत देश की इस शस्य श्यामला पावन वसुन्धरा पर कर्मयोग की आदि से प्राचीन तीर्थ प्रयाग की अद्भुत महिमा है, जिसे प्रथम त्याग (दीक्षा) भूमि, प्रथम गणधर भूमि, प्रथम केशलोंच भूमि, प्रथम केवलज्ञानभूमि एवं प्रथम आर्यिका दीक्षा भूमि होने का गौरव प्राप्त है।

आज से करोड़ों वर्ष पूर्व जैनधर्म की वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या नगरी में जन्म लेकर भोगभूमि के समापन एवं कर्मभूमि के प्रारंभ में प्रजा को जीवन जीने की कला सिखाई, अनेकों ग्राम-नगरों की रचना उनकी आज्ञानुसार इन्द्र ने की , ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन तीन वर्णों की स्थापना की, प्रजा को राजनीति आदि का उपदेश दिया, पुनः नीलांजना के नृत्य से वैराग्य को प्राप्त होने पर उन्होंने जिस सिद्धार्थ नामक वन में जाकर वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा धारण की थी, वही स्थान प्रयाग के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ, ऐसा जैन ग्रंथों में वर्णन आता है। हरिवंशपुराण में वर्णन आया है कि—

एवमुक्त्वा प्रजा यत्र, प्रजापतिमपूजयत्।
प्रदेशः स प्रजागाख्यो, यतः पूजार्थयोगतः।।

अर्थात् जहाँ दीक्षा के समय भगवान से सान्त्वना को प्राप्त करके प्रजा और सुर-असुरों ने भी भगवान की विशेष पूजा की, उसी पूजा के निमित्त से उस स्थल का "प्रयाग" यह नाम प्रसिद्ध हुआ। जैन रामायण पद्मपुराण में वर्णन आया है कि—

"प्रकृष्टो वा कृतस्त्यागः प्रयागस्तेन कीर्तिनः।"

अर्थात् प्र-उत्कृष्ट रूप से भगवान ने उस स्थान पर बहुत भारी याग अर्थात् त्याग किया, वह स्थल प्रयाग नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हो गया। उक्त कथनानुसार करोड़ों वर्ष पूर्व उस प्रयाग तीर्थ पर जिस वटवृक्ष के नीचे भगवान ने दीक्षा धारण की थी, पुनः एक हजार वर्ष तक तपश्चरण करके उसी वटवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया था, आज भी वह "अक्षय वटवृक्ष" के नाम से प्रयाग नगरी में मिलिट्री एरिया मेंसुरक्षित है। ऐसा परम पूज्यनीय-वंदनीय तीर्थ वर्तमान में "इलाहाबाद" के नाम से सम्पूर्ण भारत में जाना जाता है और ऐतिहासिकता, राजनीतिक गतिविधियों की दृष्टि से तथा न्यायालय की नगरी के रूप में तो विख्यात है ही "महाकुंभ नगरी" के रूप में भी विश्वप्रसिद्ध तीर्थ है। इस स्थान की विशेषता रही कि इलाहाबाद के साथ-साथ करोड़ों वर्ष बाद भी उसे प्रयाग नाम से भी जाना जाता है तथा राजधानी दिल्ली से इलाहाबाद जाने वाली एक ट्रेन का नाम भी "प्रयागराज एक्सप्रेस" है।

परन्तु यह काल का अभिशाप ही कहा जायेगा कि करोड़ों वर्ष प्राचीन होते हुए भी इस प्रयाग को लोग ऋषभदेव की दीक्षाभूमि के नाम से भूल गए और वहाँ बहने वाली संगम नदी के तट पर कुंभ एवं महाकुंभ स्नान के द्वारा मेला तीर्थ के रूप में उस तीर्थ की प्रसिद्धि मात्र रह गई। प्रयाग के उस प्राचीन लुप्तप्राय जैन इतिहास को नई सहस्राब्दि के वरदानरूप सच्चा स्वरूप देने का संकल्प किया जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने। उनके इस संकल्प मात्र को सुनकर पूरे विश्व की दृष्टि प्रयाग की ओर केन्द्रित हो गई। पूज्य श्री की प्रेरणा प्राप्त कर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पदाधिकारियों ने संस्थान की ओर से प्रयाग में इलाहाबाद-बनारस हाइवे रोड पर भूमि क्रय करके वहाँ "ऋषभदेव तीर्थ" के नाम से एक अलौकिक तीर्थ निर्माण का बीड़ा उठाया। राजधानी दिल्ली एवं देशभर के श्रद्धालु दिगम्बर जैन भक्तों के योगदान से इस पावन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थ का निर्माण हुआ और सम्मेदशिखर यात्रा के लिए जाते हुए साधुओं एवं यात्रियों के लिए वह तीर्थस्थल मध्य केन्द्रबिंदु बनकर जन-जन को भक्ति की प्रेरणा प्रदान कर रहा है।

उक्त संस्थान द्वारा 4 फरवरी 2000 को राजधानी दिल्ली में "भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव" का प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी से उद्घाटन कराया गया था। पुनः प्रयाग में तीर्थ निर्माण के साथ पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में 4 फरवरी से 8 फरवरी 2001 तक "जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं भगवान ऋषभदेव का 1008 कलशों से महाकुंभमस्तकाभिषेक महोत्सव" आयोजित किया गया। उस अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष का समापन 8 फरवरी 2001 को इस दीक्षास्थली तीर्थ के निर्माणपूर्वक किया गया। फलस्वरूप 2001 में तीर्थ की प्रणेत्री पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ सानिध्य एवं अनेक राजनेताओं, समाजनेताओं की गरिमामयी उपस्थिति में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तथा भगवान ऋषभदेव का महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें सम्पूर्ण देश से पधारने वाले हजारों श्रद्धालु भक्तों ने अपनी आत्मा को भगवान ऋषभदेव के भक्तिरूपी महाकुंभ स्नान से पवित्र किया, तब से प्रयाग तीर्थ पर निरन्तर साधु संघों एवं श्रद्धालु भक्तों के अवागमन का तांता लगा रहता है।

इस तीर्थ पर निर्मित वंदनीय स्थलों में प्रथम भगवान ऋषभदेव दीक्षा कल्याणक तपोवन है, तीर्थ परिसर के इस प्रथम मंदिर में धातु से निर्मित 15 फुट ऊँचे वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव की सवा पाँच फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा (पिच्छी-कमण्डलु सहित) कर्मयुग की प्रथम दीक्षा का इतिहास दर्शा रही है। सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र स्वरूप रत्नत्रय त्रिवेणी की स्मृति में ही मानो प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम पाया जाता है। इस तपोवन के सामने अनेक भक्तगण अपने बच्चों का मुण्डन संस्कार करवाकर उनमें विद्याबुद्धि एवं सदाचार के संस्कार आरोपित करते हैं। यह तपोवन सभी दर्शनार्थियों के हृदय में तप-त्याग की भावना उत्पन्न करे, यही मंगल भावना है।

दूसरा जिनमंदिर है केवलज्ञान कल्याणक समवसरण रचना का, जिस पुरिमतालपुर के उद्यान में भगवान ऋषभदेव को केवलज्ञान हुआ था, उसे प्रयाग का ही पूर्वतालपुर माना जाता है। उसी इतिहास को दर्शाने के लिए तपोवन के समान ही दूसरे कमलाकार भवन में समवसरण की रचना निर्मित है। इस समवसरण रचना का भी ऐतिहासिक महत्त्व है। मार्च 1998 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके संघ सानिध्य में राजधानी दिल्ली के लाल किला मैदान से तत्कालीन केन्द्रीय वित्तराज्यमंत्री श्री वी. धनंजय कुमार जैन की अध्यक्षता में उद्घाटित तथा प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तित "भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ" एवं "विशाल ऐरावत हाथी रथ" का संस्थान द्वारा देश के विभिन्न अंचलों में प्रभावनापूर्वक प्रवर्तन लगभग 3 वर्ष तक हुआ। उस पर्वत से प्राप्त दिगम्बर जैन श्रद्धालुओं की धनराशि का सदुपयोग संस्थान ने इस प्रयाग तीर्थ के निर्माण में किया तथा उसी ऐतिहासिक समवसरण की स्थाई रूप से स्थापना इस तीर्थ पर की गई है। धातु से निर्मित इस लघुकाय समवसरण को पूर्णरूप से शास्त्रोक्त विधि के अनुसार दर्शाया गया है। भगवान के दिव्यज्ञान का प्रतीक यह समवसरण सभी के हृदय में ज्ञान की ज्योति प्रस्फुटित करे, यही शुभेच्छा है।

ऋषभदेव तीर्थ-प्रयाग के इस परिसर में बीचोंबीच में विशाल कैलाशपर्वत का निर्माण हुआ है। जैन शास्त्रों के अनुसार कैलाशपर्वत के शिखर पर भगवान ऋषभदेव ने अंत में तपस्या करके समस्त कर्मों से रहित मोक्ष अवस्था प्राप्त की थी। वर्तमान में वह कैलाश-मानसरोवर के नाम से चीन देश की सीमा में है। अतः भारत में उसकी प्रतिकृति का दिग्दर्शन कराने हेतु प्रथम बार इस पर्वत का निर्माण प्रयाग में किया गया है, जो उत्तरप्रदेश के पर्यटन स्थलों में से एक आकर्षक स्थल है। पर्वत पर सामने ही त्रिकाल चौबीसी के 72 जिनमंदिरों एवं भगवन्तों के दर्शन से जहाँ जैन श्रद्धालु सम्राट भरत चक्रवर्ती द्वारा निर्मित 72 मंदिरों के पौराणिक इतिहास को स्मरण करने लगते हैं, वहीं समस्त सम्प्रदाय के बंधु नैसर्गिक आभायुक्त पर्वत से निकलते झरने एवं पशु-पक्षियों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर फूले नहीं समाते हैं। 108 फुट लम्बे, 72 फुट चौड़े और 50 फुट ऊँचे कैलाशपर्वत के शिखर पर 14 फुट उत्तुंग लालवर्णी भगवान ऋषभदेव की पद्मासन प्रतिमा के दर्शन से भक्तगण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनवांछित फल की प्राप्ति करते हैं। कैलाशपर्वत के नीचे 50×50 फुट का गोलाकार गुफा मंदिर है, जिसमें सवा तीन फुट की पद्मासन धातु से निर्मित भगवान ऋषभदेव की अतिशयकारी प्रतिमा विराजमान है, जो नभमण्डल में सूर्य के समान दिग्दर्शन कराती स्वर्णिम मूर्ति का आभास कराती है। भक्तों के लिए पूजा-अर्चना एवं ध्यान साधना का यह पावन स्थल सदैव भगवान के नामोच्चारण से गुंजायमान रहता है।

कैलाशपर्वत के ईशान कोण एवं समवसरण रचना के ठीक सामने 31 फुट ऊँचा गुलाबी पत्थर से निर्मित कीर्तिस्तंभ अपने आप में एक अनूठी कृति है। उसमें सबसे ऊपर के चार चैत्यालयों में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की सवा-सवा फुट की चार पद्मासन प्रतिमाएँ विराजमान हैं तथा उसके नीचे चार मंदिरों में अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की 1-1 फुट की चार पद्मासन प्रतिमाएँ हैं। इस कलात्मक कीर्तिस्तंभ में ऋषभदेव जी का चित्रमय चरित्र, उनके परिचय के शिलालेख एवं जैनधर्म के मूल सिद्धान्तों का उल्लेख है। इसी प्रकार से कैलाशपर्वत के दूसरी ओर तपोवन के सामने 21 फुट ऊँचा अखण्ड धर्मध्वज है, जिसमें स्वस्तिक चिन्ह से समन्वित केशरिया ध्वज सदैव अहिंसा धर्म एवं विश्वशांति की कीर्तिपताका को फहरा रहा है।

मात्र डेढ़-दो वर्षों में निर्मित अत्यन्त आकर्षक प्रयाग तीर्थ पर आवास एवं भोजन आदि की समुचित व्यवस्था है, परिसर में "गणिनी ज्ञानमती निलय" के नाम से आधुनिक सुविधायुक्त 26 डीलक्स फ्लैट की दो मंजिली सुन्दर धर्मशाला है तथा 16 कमरों की एक और धर्मशाला भी निर्मित है। पानी की सुविधा हेतु क्षेत्र पर बड़ी टंकी का निर्माण हो चुका है। शुद्ध जल के लिए कुंआ तथा जेट पम्प की व्यवस्था है तथा आगन्तुक यात्रियों के लिए शुद्ध भोजन की भी समुचित व्यवस्था है। सरकारी बिजली के साथ-साथ तीर्थ पर जनरेटर भी उपलब्ध है, जिससे बिजली-पानी की सुविधा के साथ-साथ फौव्वारे, झरने एवं विद्युत प्रकाश आदि के दृश्य प्रतिदिन दर्शनार्थियों के लिए सुलभ रहते हैं।

इस प्रकार अतिप्राचीन प्रयाग तीर्थ में नई रौनक के साथ बनारस हाइवे पर निर्मित उत्तरमुखी ऋषभदेव तीर्थ देशभर के यात्रियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। तीर्थ के एक ओर रेलवे लाइन पर चलती रेलगाड़ियाँ और दूसरी ओर (उत्तर में) जी.टी.रोड पर चलती कारों, बसों एवं ट्रकों में बैठे यात्री भी अनायास ही दूर से दिख रहे भगवान ऋषभदेव का दर्शन करके पुण्य प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार अनेक धरोहरों से समन्वित यह ऋषभदेव तीर्थ-प्रयाग युगों-युगों तक जन-जन के कल्याण का माध्यम बने, यही मंगल कामना है।

सिद्धोऽहं संकल्प से, तुम्हीं 'सिद्धसंकल्प'।
तुम अर्चा से दूर हों, सब संकल्प विकल्प॥

'सिद्धात्मा' भगवान को, नमते जो त्रयकाल।
स्वयं सिद्ध बन वे पुरुष, बनते जग प्रतिपाल॥

— गणिनी ज्ञानमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर 2600 वें जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर विकसित
भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर-एक परिचय

प्रस्तुति-संहितासूरि पं.नरेश कुमार जैन 'प्रतिष्ठाचार्य'
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

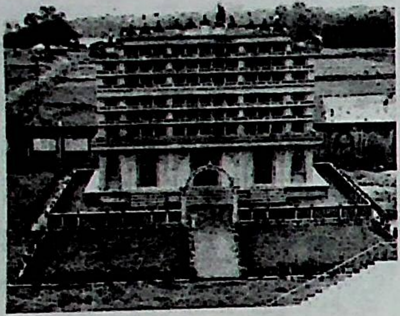

जिस प्रकार एक कुशल बागवान का परिचय बगीचे में लग रहे सुन्दर-सुन्दर खिले हुए पुष्पों से एवं सुसज्जित बाग को देखकर होता है, विद्वान का परिचय उसकी सुभाषित भाषण शैली से होता है। व्यक्ति का परिचय उसके कार्यकलापों से होता है, ज्ञानी का परिचय उसकी विनम्र भावना से होता है, उसी प्रकार किसी संस्थान का परिचय या पहचान भी उसकी विकासशील गतिविधियों से होता है। भारतदेश में ही नहीं अपितु सारे विश्व में प्रतिवर्ष अनेकों सरकारी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत संस्थानों का उदय होता है किन्तु उनमें से जिन संस्थानों को सुयोग्य संचालकों का वरदहस्त प्राप्त हुआ तथा उन्होंने कुछ करके समाज और देश का कल्याण किया, बाकी अनेकों संस्थान तो समय से पूर्व ही काल के गाल में समाहित हो गए।

यहाँ आपको बीसवीं सदी की एक ऐतिहासिक संस्थान का परिचय करा रहा हूँ जिसको इस बीसवीं सदी की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का वरदहस्त प्राप्त हुआ है, जिनका जन्म आज से लगभग 33-34 वर्ष पूर्व भारत की राजधानी दिल्ली में "दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान" के नाम से हुआ था, आज सारा विश्व जिसके सर्वतोमुखी कार्यकलापों एवं दिन प्रतिदिन नई-नई विकासशील योजनाओं को पूर्ण कार्यरूप देने से "जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर" के नाम से विशेष रूप से पहचानता है। आज सारे देश में अनेकों संस्थाएं यहाँ की कार्यप्रणाली का अनुसरण कर रही हैं। दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान ने अनेकों तीर्थों के विकास के साथ-साथ विपुल साहित्य प्रकाशन कराकर एवं अनेकों अंतर्राष्ट्रीय महा आयोजनों का कुशल संचालन करके अपने अल्पकालीन समय में देश में कार्यरत समस्त जैन संस्थाओं में सर्वोच्च पद प्राप्त किया है।

विकास की सीढ़ियाँ चढ़ता कुण्डलपुर—जब सम्पूर्ण जैन समाज के सौभाग्य से सन् 2002 में भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव भारत सरकार एवं समस्त जैन समाज द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जा रहा था, उस समय शायद यह किसी को स्मरण नहीं था कि जिन शासनपति भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक हम इतने विशाल पैमाने पर मना रहे हैं, उनकी पावन जन्मभूमि में कोई एक दीपक जलाने वाला भी है क्या? उस ओर दृष्टि गई तो हमारी परम उपकारिणी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की।

उन्होंने सोचा कि महोत्सव तो सरकार भी मना लेगी मगर हम यदि इस 2600वें जन्मोत्सव में भी उन शासनपति भगवान महावीर की जन्मभूमि को विकसित न कर सके, तो हमने उनके चरणों में क्या अर्पित किया? हमने अपने कर्तव्य का क्या निर्वाह किया? बस देखते ही देखते 20 फरवरी 2002 को कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार करने को कृतसंकल्प माताजी ने 1300 किमी. की लम्बी दूरी तय कर संघ सहित 29 दिसम्बर 2002 को उस पावन भूमि पर मंगल प्रवेश किया।

कीर्तिस्तंभ एवं महावीर मंदिर का निर्माण—परम पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत "भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति" का गठन हुआ। सर्वप्रथम भगवान महावीर स्वामी की वास्तविक जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में उपेक्षित प्राचीन जिनमंदिर में एक भव्य कीर्तिस्तंभ का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया और प्राचीन जिनमंदिर में अधिक जमीन न होने के कारण अगस्त सन् 2002 में लगभग 2 एकड़ की उत्तरमुखी भूमि परिश्रमपूर्वक बाल ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जी ने क्रय की और 29 दिसम्बर 2002 को शिलान्यास का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् द्रुतगति से जो कार्य प्रारंभ हुआ, उसे देखकर जैन समाज ही नहीं अपितु आसपास की जैनेतर समाज भी आश्चर्यचकित रह गई और देखते ही देखते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

108 फुट उत्तुंग विशाल भगवान महावीर विश्वशांति मंदिर साकाररूप से दिखने लगा। इस मंदिर में भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण जिनमूर्ति के निर्माण का आर्डर जयपुर में दिया गया था, परन्तु 9-10 माह में भी श्वेत सुन्दर पाषाण की प्राप्ति न होने पर सबको अधिक चिंता हो गई। क्योंकि पूज्य माताजी ने फरवरी 2003 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की घोषणा भी कर दी थी। पूज्य माताजी सतत मंत्र जाप्य कर रही थीं। उसी मंत्र जाप्य का प्रभाव था कि 15 दिसम्बर 2002 को सूरज नारायण नाठा (मूर्तिकार) का फोन भाई जी को आया कि पत्थर तो मिल गया है परन्तु अत्यंत महंगा है। पूज्य माताजी को बताया गया तो पूज्य माताजी ने कहा पत्थर जितना भी महंगा हो, तुरंत ले लिया जाये। पूज्य माताजी की आज्ञानुसार पत्थर क्रय करके मूर्ति का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ और मात्र डेढ़ माह की अल्प अवधि में भव्य भगवान महावीर अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा 10 फुट) उत्तुंग खड्गासन बेदाग प्रतिमा तैयार होकर स्थापित हो गई है, जिसे देखकर लोगों के मुख से सहसा निकल जाता है कि मानो साक्षात् भगवान महावीर ही पुनः अवतरित हो गये हैं। ऐसी सुन्दर प्रतिमा को विश्वशांति महावीर मंदिर में विराजमान करके 7 फरवरी 2003 से 12 फरवरी 2003 तक भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का आयोजन परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के मार्गदर्शन तथा धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज एवं कर्मयोगी ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जी (जिन्हें सभी प्यार से भाई जी कहते हैं एवं बिहार-कुण्डलपुर में जिन्हें स्वामी जी कहते हैं) के कुशल निर्देशन में सानंद धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुई। सैकड़ों वर्षों बाद प्रथम बार जैन समाज का महाआयोजन भगवान महावीर की जन्मभूमि में सम्पन्न हुआ, जिसमें हजारों की संख्या में जैन-जैनेतर भाई-बहनों ने सम्मिलित होकर अपने जीवन को धन्य किया। पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से नंद्यावर्त महल परिसर में स्थापित अन्य मंदिर-मूर्ति का वैभव देखते ही बनता है।

नाथवन में भगवान महावीर की दीक्षा मुद्रा की प्रतिमा—विश्वशांति भगवान महावीर जिनालय के नीचे भगवान महावीर ज्योति भवन में भगवान महावीर स्वामी की दीक्षा मुद्रा की मूर्ति विराजमान की गई है, जिसके दाहिनी ओर संयम का उपकरण पिच्छी एवं बायीं तरफ शौच का उपकरण कमण्डलु स्थापित है। यद्यपि तीर्थंकर महावीर प्रभु को दीक्षा लेते ही अन्तर्मुहूर्त में मनःपर्यय ज्ञान प्रगट हो जाता है तथा जन्म से ही प्रभु भोजन तो ग्रहण करते हैं परन्तु नीहार अर्थात् मल-मूत्र नहीं होता है फिर भी पिच्छी-कमण्डलु अर्हंत मुद्रा (जिनमुद्रा) के चिन्ह हैं इसलिए इनकी स्थापना की गई है।

महामुनि महावीर आहार मुद्रा में स्थित—भगवान महावीर विश्वशांति जिनालय के नीचे महावीर ज्योति भवन में बायीं ओर महामुनि महावीर स्वामी की आहार मुद्रा की प्रतिमा स्थापित है। इसी प्रतिमा के निकट आहार देते हुए महासती चन्दनबाला की प्रतिमा है। यहाँ दर्शन करते ही राजा चेटक की सबसे छोटी पुत्री चन्दनबाला का इतिहास दृष्टिगत होता है, जिसने अपने जीवन में महाकष्ट उपसर्ग सहन करने के बाद भी अपने शीलधर्म की रक्षा की।

सर्वसिद्धिदायक तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जिनालय—विश्वशांति महावीर मंदिर के दायीं ओर उत्तुंग अति प्राचीन कलात्मक शिखर से युक्त विशाल भगवान ऋषभदेव जिनमंदिर बना हुआ है। इस मंदिर के अंदर भगवान ऋषभदेव की विशाल पद्मासन मूँगे वर्ण वाली अतिशय मनोज्ञ सुन्दर प्रतिमा विराजमान की गई है। भगवान महावीर की जन्मभूमि में भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा विराजमान करने का पूज्य माताजी का उद्देश्य भी अति दूरदृष्टि को अवगत कराता है। यहाँ आने वाले देश के श्रद्धालुओं के अलावा अन्य विदेशी सैलानियों को भी जैनधर्म की अति प्राचीनता एवं जैन संस्कृति के आद्य प्रणेता आदि युगपुरुष, युगसृष्टा भगवान ऋषभदेव का भी परिचय हो। आज सर्वत्र भगवान महावीर को जैनधर्म का संस्थापक माना जा रहा है। पूज्य माताजी का यह भी उद्देश्य रहा है कि जनमानस में क्रांति भी दूर हो और जनसाधारण यह जान सकें कि जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव हैं, भगवान महावीर तो अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर हैं। इस प्रतिमा का पंचकल्याणक भी 7 फरवरी से 12 फरवरी 2003 में ही हुआ था तथा शिखर पर कलशारोहण फाल्गुन शु. 3, 23 फरवरी को सम्पन्न हुआ।

नवग्रह शांति जिनमंदिर—विश्व की अनुपम कृति नवग्रहशांति जिनमंदिर का निर्माण विश्वशांति महावीर जिनालय के बायीं ओर किया गया है। यह मंदिर भी अत्यन्त सुन्दर तोरणद्वार एवं उत्तुंग कलात्मक शिखर से युक्त बनाया गया है। शिखर में भी चारों ओर जिनप्रतिमाओं का निर्माण किया गया है। मंदिर के अंदर नौ सुन्दर-सुन्दर सफेद वर्ण के खिले हुए कमलों पर नवग्रह की शांति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेतु नव तीर्थंकर भगवन्तों की मनोज्ञ वीतरागी जिनप्रतिमाओं को प्रतिष्ठित करके विराजमान किया गया है। सूर्यग्रह की शांति हेतु पद्मप्रभु भगवान, सोमग्रह के लिए चन्द्रप्रभु भगवान, मंगल ग्रह हेतु वासुपूज्य भगवान , बुधग्रह के लिए मल्लिनाथ भगवान, गुरुग्रह हेतु महावीर स्वामी, शुक्र ग्रह के लिए पुष्पदंतनाथ भगवान, शनि ग्रह के लिए मुनिसुव्रतनाथ भगवान, राहु ग्रह के लिए नेमिनाथ भगवान व केतु ग्रह की शांति हेतु पार्श्वनाथ भगवान हैं। ये नव तीर्थंकर नवग्रह के स्वामी माने गये हैं।

त्रिकाल चौबीसी तीर्थंकर मंदिर—नवग्रहशांति जिनालय के बायीं ओर तीन खण्ड का विशाल मंदिर का निर्माण किया गया है। इस मंदिर के प्रथम खण्ड में भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाएँ सुन्दर-सुन्दर चैत्यालयों में विराजमान की गई हैं तथा द्वितीय खण्ड में वृषभादि वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकरों की और ऊपर तृतीय मंजिल में महापद्मादि भविष्यत्कालीन चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाएँ विराजमान है, जिनके दर्शन से मन प्रसन्न हो जाता है तथा अनुपम आत्मशांति का अनुभव प्राप्त होता है।

विश्व की अनुपम कृति नंद्यावर्त महल—जैनधर्म शाश्वत है, अनादिनिधन है, सार्वभौम है एवं विश्वधर्म है क्योंकि "कर्मारातीन् जयतीति जिन:" जो कर्मशत्रुओं को जीतते हैं वे जिन कहलाते हैं तथा "जिनो देवता यस्येति जैनः" इस व्युत्पत्ति के अनुसार जो जिन भगवान के उपासक हैं वे जैन कहलाते हैं।

इसी प्रकार से "धर्मतीर्थ करोतीति तीर्थंकरः" धर्म तीर्थ के करने वाले तीर्थंकर कहलाते हैं। तीर्थंकर भगवन्तों का जन्म भी श्रेष्ठ उत्तम कुल उत्तम वंश में राजा महाराजा के राजमहल में सातिशय पुण्य कर्म के उदय से होता है। भगवान ऋषभदेव का जन्म भी महाराजा नाभिराय के 84 खण्ड उत्तुंग राजमहल अयोध्या नगरी में हुआ था। उसी प्रकार भगवान महावीर स्वामी का जन्म बिहार प्रांत की वैभवशाली धन-धान्य से सम्पन्न कुण्डलपुर नगरी के महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला से सात खण्ड के दिव्य महल (नंद्यावर्त महल) में चैत्र शु. 13 तिथि में हुआ था। उसी नंद्यावर्त महल की प्रतिकृति अत्यंत मनोहारी सुन्दर आकर्षित है। इस महल के अंदर शिलापट्टों में उत्कीर्ण चित्रों एवं सुंदर कलाकृतियों के द्वारा भगवान महावीर का ऐतिहासिक जीवनदर्शन प्रस्तुत किया गया है और सबसे ऊपर भगवान शांतिनाथ जिनालय है। इसमें भगवान शांतिनाथ की धातु की विशाल आकर्षित वीतरागी 24 इंच की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इसके आजू-बाजू में भगवान चन्द्रप्रभु एवं भगवान पार्श्वनाथ की 18 इंच की प्रतिमाएँ विराजमान हैं, जिनके दर्शन से मन शांत और प्रफुल्लित हो जाता है।

प्राचीन दि. जैन महावीर जिनालय—जिस प्रकार अनेक ग्रह, नक्षत्र, तारिकाओं से गगन में चन्द्रमा शोभायमान होता है परन्तु जब उसी चन्द्रमा को राहु ग्रस लेता है तो चन्द्रमा का प्रकाश फीका हो जाता है, उसी प्रकार अनेक खेत-खलियानों, तालाबों के मध्य भगवान महावीर स्वामी का ये प्राचीन मंदिर यहाँ शोभायमान था परन्तु समाज के उपेक्षारूपी राहु से ग्रसित था ऐसे समय में जब गणिनी ज्ञानमती जी रूपी सूर्य का यहाँ उदय हुआ, तो विकास की मानों झड़ी ही लग गई। सर्वप्रथम इसी मंदिर के प्रांगण में भगवान महावीर मंदिर के सामने 36 फुट उत्तुंग कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास लाला कमलचंद जी खारीबावली-दिल्ली के परिवार की ओर से पूज्य माताजी की प्रेरणा से किया गया और देखते ही देखते कीर्तिस्तंभ के साथ-साथ सारे क्षेत्र की 18 माह की अल्प अवधि में काया ही पलट गई। देखने वाले वहाँ के निवासी भी यह विश्वास नहीं करते कि ये काम किन्हीं मनुष्यों ने किया है यह तो कोई दैवीय चमत्कार है। पूज्य माताजी एक महाशक्ति ही नहीं साक्षात् भगवती महादेवी का ही अवतार हैं। जहाँ सौ वर्षों के इतिहास में कोई ईंट न लगी हो वहाँ इतना बड़ा निर्माण आश्चर्य है। प्राचीन मंदिर के दायें-बायें पूज्य माताजी की प्रेरणा से माँ सिद्धायिनी देवी एवं मातंग देव की प्रतिमाएँ विराजमान की गई हैं। महावीर जिनालय के सामने महावीर स्वामी की चरण छत्री बनी हुई है। आजू-बाजू में भी दो चरण छत्री बनी है।

नवनिर्मित नंद्यावर्त महल परिसर में आवास, भोजन, पानी आदि की सभी व्यवस्थाएँ क्षेत्र पर समुचित रूप से उपलब्ध हैं। परिसर में बाग-बगीची, फूल-फुलवाड़ी भी दर्शनीय है। इस प्रकार समस्त प्राकृतिक सौंदर्ययुक्त नवविकसित कुण्डलपुर तीर्थ को कोटि-कोटि वंदन करता हुआ मैं सभी देशवासियों को एक बार उस पुण्य भूमि की वंदना हेतु आह्वान करता हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवविकसित कुण्डलपुर : जैसा हमने देखा

प्रस्तुति-अनूपचन्द्र जैन एडवोकेट, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

विगत सैकड़ों वर्षों से दिगम्बर जैनसमाज में भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में मान्यता-प्राप्त बिहार प्रान्त के कुण्डलपुर नामक स्थान को दर्शनार्थी प्रायः सम्मेदशिखर, नवादा, गुणावां, पावापुर एवं राजगृही की वंदना करते समय पूजते चले आ रहे हैं। यह कुण्डलपुर बिहारशरीफ के पास नालंदा जिला के अन्तर्गत आता है। मैंने भी इसकी विगत 50 वर्षों में 5 बार यात्राएँ की हैं। हाल ही में हुए इसके विकास की कहानी को लिखने का लोभ मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। मैंने इस क्षेत्र की पहली यात्रा अपनी बाल्यावस्था में वर्ष 1955 में उस समय की थी, जब मेरी आयु मात्र 12 वर्ष की थी और परमपूज्य आचार्य महावीरकीर्ति जी महाराज जो परिवार के ही थे, उस क्षेत्र में यात्रा पर थे। उस समय का कुण्डलपुर मात्र एक ग्रामीण क्षेत्र था और एक प्राचीन मंदिर वहाँ स्थित था। उसी में एक धर्मशाला भी थी, किन्तु यात्री प्रायः वहाँ ठहरते नहीं थे। या तो पावापुर में ठहरते थे या फिर राजगृही में, कुण्डलपुर में तो मात्र दर्शन करके लोग चल देते थे। इस कुण्डलपुर की मैंने वर्ष 1974,1977 एवं 2001 में भी यात्राएं कीं, किन्तु गाड़ी रोककर आधे-आधे घंटे का समय व्यतीत किया और दर्शन कर अपने को धन्य माना। कहना चाहिए कि कुण्डलपुर के विकास की ओर न तो भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी ने और न कुण्डलपुर की स्थानीय कमेटी ने कोई विशेष ध्यान दिया और इस प्रकार कुण्डलपुर दोनों की उपेक्षा के कारण अविकसित ही बना रहा।

वर्ष 2002 में गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के मन में यह विचार आया कि जिस प्रकार उन्होंने अयोध्या, मांगीतुंगी तथा प्रयाग आदि क्षेत्रों का विकास किया, उसी प्रकार भगवान महावीर की जनमानस में मान्यता प्राप्त इस जन्मस्थली का विकास भी होना चाहिए और इसी उद्देश्य से पूज्य माताजी ने दिल्ली से कुण्डलपुर की ओर विहार किया। वे उस समय फिरोजाबाद होकर गई थीं और कुण्डलपुर के विकास की परिकल्पना तथा उसे साकार करने की पूरी योजना उन्होंने भाई रवीन्द्र जी को सौंप दी थी। मुझे याद है कि इलाहाबाद के वर्षायोग की अवधि में ही श्री रवीन्द्र जी ने अगस्त 2002 में कुण्डलपुर में पुराने मंदिर के ठीक सामने उत्तरमुखी लगभग 2 एकड़ भूमि को क्रय किया और फिर प्रारंभ हुई इस क्षेत्र के विकास की चिरप्रतीक्षित योजना, जिसे मात्र 22 माह में पूरा कर भाई रवीन्द्र जी ने एक अनोखा कीर्तिमान स्थापित किया है।

पूज्य माताजी ने इलाहाबाद से बनारस, पटना, सम्मेदशिखर आदि की यात्रा करते हुए कुण्डलपुर में 2003-2004 में दो वर्षायोग सम्पन्न किये और इस क्षेत्र में विकास की एक नई कहानी को जन्म दिया। इस वर्ष 12 से 14 फरवरी तक पूज्य माताजी के वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद और भाई रवीन्द्र जी की प्रेरणा से मैंने प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाश जैन के साथ कुण्डलपुर की तीन दिवसीय यात्रा सानन्द सम्पन्न की है। वहाँ का विकास देखकर ऐसा लगता है कि यह व्यक्तिपरक नहीं है, बल्कि दैवीय चमत्कार के रूप में हुआ है। वहाँ सात मंजिला नंद्यावर्त महल, त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर, भगवान ऋषभदेव जिनालय, तीर्थंकर महावीर जिन मंदिर एवं नवग्रह शांति मंदिर के भव्य निर्माण हो चुके हैं तथा शुद्ध भोजनालय भी वहाँ चल रहा है। वहाँ कार्यरत व्यवस्थापक एवं कर्मचारियों का व्यवहार यात्रियों का मन मोह लेता है। सुन्दर महकते फूल और हरी-भरी घास से वहाँ की रमणीयता और बढ़ गई है। यही कारण है कि पहले जहाँ यहाँ आने वाले यात्रीगण एक दिन के लिए भी नहीं रुकते थे, वहाँ अप्रैल 2005 से 12 फरवरी 2006 तक लगभग सात हजार यात्रियों ने वहाँ रात्रि विश्राम किया है और इससे लगभग दूने यात्रियों की संख्या ऐसी भी है कि जो 2-3 घण्टे रहकर वहाँ से आगे की यात्रा पर गये हैं। अप्रैल 2005 से फरवरी 2006 तक रुकने वाले यात्रियों की संख्या निम्न प्रकार है-

अप्रैल 2005-89, मई 2005-79, जून 2005-80, जुलाई 2005-123, अगस्त 2005-503, सितम्बर 2005-894, अक्टूबर 2005-1266, नवम्बर 2005-1514, दिसम्बर 2005-1477, जनवरी 2006-546, फरवरी 2006-153।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यात्रियों की बढ़ती संख्या के कारण क्षेत्र पर दस नये कमरों का निर्माण भी शीघ्र शुरू होने वाला है। दाताओं के प्रस्ताव आ चुके हैं। अभी वहाँ 32 कमरे (सर्व सुविधासम्पन्न) तथा तीन हाल बन चुके हैं, लेकिन कभी-कभी यात्रियों को ठहराने के लिए ये कम पड़ जाते हैं।

इस विकास यात्रा में पूज्य माताजी की प्रशस्त प्रेरणा बेमिसाल रही है। संघ के सदस्यों तथा रवीन्द्र जी और उनके साथियों की टीम-स्प्रिट की भी कोई शानी नहीं है। जब वे 2003 के वर्षायोग के लिए यहाँ आई थीं तो मात्र टीन के 2 कमरे अस्थाई रूप से बने थे, जिसमें वे निवास करती थीं और उन्हीं परिस्थितियों में रहकर विगत 2 वर्षों में वहाँ के क्षेत्रीय लोगों का तथा सम्पूर्ण देश के दानवीरों का सहयोग लेकर उन्होंने इतना बड़ा निर्माण कार्य सम्पन्न करके एक इतिहास ही रच दिया है।

बिहार सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री श्री सुरेन्द्रकुमार तरुण तो इससे इतने प्रभावित हैं कि वह इसे दैवीय चमत्कार मानते है। नालंदा आने वाले पर्यटकों का भी क्षेत्र में निरन्तर आवागमन होता रहा है। दिनाँक 12 से 14 फरवरी तक नालंदा में ''द हैरिटेज ऑफ नालंदा' के नाम से एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित था, जिसमें लगभग 365 डेलीगेट्स विभिन्न देशों से भाग लेने आये थे। उनमें से अधिकांश विदेशी प्रबुद्धजन इस क्षेत्र पर भी पधारे। कोई दिन ऐसा नहीं जाता, जब यहाँ जैन एवं जैनेतर लोगों का आना-जाना न रहता हो। दिनाँक 14-11-04 को पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री रमेश गर्ग ने क्षेत्र के दर्शन कर लिखा था—

''तीर्थभूमि, तीर्थंकरों की भूमि, तीर्थ-यात्रियों की भूमि कुण्डलपुर माता ज्ञानमती जी के आशीर्वाद से अपना पूर्ण वैभव प्राप्त कर चुकी है। हमारी यह भावना है कि प्रभु-कृपा रही तो पुनः आऊँगा।''

अपनी टिप्पणी में श्री योगेन्द्रप्रसाद यादव (अध्यक्ष-जिला पंचायत, नालंदा) ने दिनाँक 23-11-04 में लिखा था-

''तीर्थंकर भूमि कुण्डलपुर में हम लोग आये। बहुत रमणीय स्थल है। हमें यहाँ आकर बहुत शांति का अनुभव हुआ। पिछले 22 माह में हुए निर्माण कार्यों को देखकर हमें बहुत प्रसन्नता हुई है। जिस स्थान पर पहले केवल एक प्राचीन और छोटा मंदिर था, वहाँ अब स्वर्ग बन गया है और इससे नालंदा गौरवान्वित हुआ है।''

पटना उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री एन.रे. ने दिनाँक 27-12-2005 को इस क्षेत्र पर आकर निम्न शब्दों में अपने उद्‌गार व्यक्त किये थे-

"Pleasent to visit the birth place of Mahavir well maintained temple and impressive."

दिनाँक 28-1-2006 को हिमाचल प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष श्री जी.आर. मुसाफिर सपत्नीक इस क्षेत्र में पधारे और उन्होंने लिखा-

''देखा मनमोहक, मेरे प्रणाम।''

दिनाँक 9-2-2006 को भारतीय लोकसभा के महासचिव डाक्टर पी.डी.टी. आचार्य की टिप्पणी थी-

"I am realy thrilled by the sight of the temple which is the birth place of Mahavir."

'दिनाँक 13-2-2006 को सेमिनार की मुख्य संयोजिका, गांधीवादी सांसद सुश्री निमला ताई देश पाण्डे सायं 6.00 बजे क्षेत्र में पधारीं और लगभग डेढ़ घण्टा क्षेत्र पर रहीं। उनकी टिप्पणी थी-

''पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा और परिश्रम के कारण साकारित हुआ कुण्डलपुर का यह भव्य स्थान भगवान महावीर के जन्मस्थान की महिमा, सुन्दर स्मृति-चिन्ह के रूप में प्रकट हुआ है, जो देश के लिए एक गौरव बन गया है। मेरा विश्वास है समस्त भारतीयों को इस स्थान से आध्यात्मिक सम्बल प्राप्त होगा।''

श्रद्धेया ताई जी के साथ प्रमुख सर्वोदयी चिन्तक एवं साहित्यकार डॉ. रमेश तिवारी एवं डॉ. कृष्णनाथ भी थे। वे भी इस तीर्थ पर आकर अभिभूत थे। उन्होंने भी अपने प्रशंसात्मक उद्‌गार दर्शक-पंजिका में स्वलेखनी से लिखे। उन्होंने बार-बार आकर यहाँ के दर्शन करने की इच्छा व्यक्त की।

दिनाँक 14-2-2006 को बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री गोपाल गांधी से भी हम लोगों की भेंट हुई। इस क्षेत्र के विकास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की जानकारी से वे अभिभूत हुए। उन्हें हम लोगों ने पूज्य माताजी का प्रकाशित साहित्य भेंट किया। कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ देखकर वह बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने हम लोगों के साथ प्रसन्नतापूर्वक फोटो भी खिंचवाए।

जब हम लोग कुण्डलपुर में थे, तब पुरातत्व संग्रहालय, पटना के निदेशक श्री अशोक सिन्हा का भी क्षेत्र पर शुभागमन हुआ। वह अपने साथ "India Today" का जनवरी 2006 का एक विशेष अंक Travel Plus लाये थे, जिसमें बिहार की दिव्य यात्रा (Devine Journey of Bihar) पर भी एक परिशिष्ट था। "The Jain circuit सप्तम के अन्तर्गत पावापुरी के जल मंदिर तथा कुण्डलपुर के इन नवनिर्मित मंदिरों तथा महावीर स्मृति स्तंभ के आकर्षक रंगीन चित्र छपे थे। कुण्डलपुर के चित्रों के परिचय के रूप में निम्न पंक्तियाँ छपी थीं–

"Kundalpur is considered to be the birth place of Lord Mahavira, Jainism's 24 tirthankar. Kundalpur the place, where he spent the first 22 years of his life."

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री आर्यिका ज्ञानमती माताजी की परिकल्पना साकार हुई है और कुण्डलपुर के विकास ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। आइए, हम और आप सभी मिलकर इस पवित्र क्षेत्र की बार-बार यात्रा करें और पुण्यार्जन करें।

मुक्तक

एक अकलंक धरती पे आया है फिर, जिसने सोते से सबको जगाया है फिर।
जिनसे प्राचीन इतिहास पाया है फिर, बुझते दीपक को जिसने जलाया है फिर।।1।।

उसके कार्यों की महिमा जगत ख्यात है, नाम उस प्रतिभा का ज्ञानमती मात है।
चाहे हो कल्पद्रुम पाठ या रथ चला, विश्वमैत्री का उनसे मिला पाठ है।।2।।

कान में उंगलियाँ डाल बैठे थे हम, सुनते आए महावीर से जिनधरम।
क्या ये स्वीकार है बोलो भाई-बहन? बस है पच्चिस सौ वर्षों से ही जिनधरम?।।3।।

इस कथन पर हिली गर्दनें सबकी हैं, तेरे संग स्वीकृती मात हम सबकी है।
पंचरंगी ध्वजा तेरे हाथों में हो, ध्वज के नीचे सभी जैन की शक्ति है।।4।।

बज गया फिर बिगुल ज्ञानमति मात का, होगा निर्वाण उत्सव ऋषभदेव का।
राजधानी सजे एक दुल्हन सदृश, सब घरों पर दिखे पंचरंगी ध्वजा।।5।।

दो पगों के संग कोटि पग चल दिए, स्वर में स्वर को मिला कोटि स्वर खुल गए।
मेरा जिनधर्म है प्राकृतिक धर्म बस, देता मीठा ही फल यह सभी के लिए।।6।।

श्री ऋषभदेव ने कर्मयुग आदि में, षट्क्रिया असि, मसि आदि बतलाई है।
उनके उपकारों का संस्मरण आज हो, प्रभु का निर्वाण उत्सव इसी हेतु है।।7।।

—आर्यिका चंदनामती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान भूमि
अहिच्छत्र तीर्थ का परिचय

—ब्र. (कु.) इन्दु जैन
(संघस्थ—गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

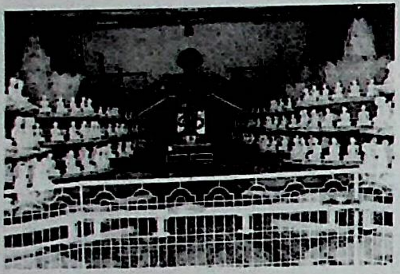

उत्तरप्रदेश के बरेली जिले की आंवला तहसील में स्थित अहिच्छत्र आजकल रामनगर का एक भाग है जिसे प्राचीन काल में संख्यावती नगरी कहा जाता था। तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञानकल्याणक भूमि अहिच्छत्र के बारे में आचार्य जिनप्रभसूरि विरचित 'विविध तीर्थकल्प' के अहिच्छत्र कल्प में लिखा है कि "संख्यावती नगरी में भगवान पार्श्वनाथ कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानारूढ़ थे। पूर्व निबद्ध वैर के कारण असुर कमठ ने उन पर नाना प्रकार के उपसर्ग किये तब नागकुमार देवों के इन्द्र, धरणेन्द्र और पद्मावती भगवान द्वारा विगत जन्म में किये गये उपकार का स्मरण कर वहाँ आये और भगवान के ऊपर सहस्र फण फैलाकर उपसर्ग निवारण किया।" यह वही धरणेन्द्र और पद्मावती थे जिन्हें तापसी नाना महीपाल के द्वारा पंचाग्नि तप हेतु लकड़ी चीरते देखकर भगवान पार्श्वनाथ ने उसमें स्थित नाग-नागिन को जानकर उन्हें न मारने की बात कही किन्तु तापसी द्वारा क्रोधावेश में लकड़ी काटते ही भीतर रहने वाले सर्प-सर्पिणी के दो टुकड़े हो गये। तब परम करुणाशील पार्श्वप्रभु ने असह्य वेदना में तड़पते हुए उन सर्प-सर्पिणी को णमोकार मंत्र सुनाया और मंत्र के फलस्वरूप शान्त भाव से मरकर वे ही धरणेन्द्र-पद्मावती हुए।

जैनेश्वरी दीक्षा लेने के पश्चात् जब पार्श्वनाथ घोर तपस्या में लीन थे तब इन धरणेन्द्र-पद्मावती के द्वारा उपसर्ग दूर करते ही उनको केवलज्ञान उत्पन्न हो गया, वह तिथि चैत्र कृष्णा चतुर्थी थी (उत्तर पुराण के अनुसार यह तिथि चैत्र कृष्णा चतुर्दशी है), तब इन्द्रों और देवों ने आकर भगवान के केवलज्ञान कल्याणक की पूजा की। तब वह संवर देव भी प्रभु के चरणों में गिर पड़ा और भगवान से बार-बार क्षमायाचना करने लगा। पश्चात् इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर ने समवसरण की रचना कर दी और प्रभु का प्रथम जगत कल्याणकारी उपदेश वहाँ पर हुआ। नागेन्द्र द्वारा भगवान् के ऊपर छत्र लगाया गया था, इस कारण इस स्थान का नाम संख्यावती के स्थान पर अहिच्छत्र प्रसिद्ध हुआ।

प्राचीन शिखरबन्द मंदिर—क्षेत्र पर एक प्राचीन शिखरबंद मंदिर है उसमें एक हरित पन्ना की पार्श्वनाथ भगवान अर्थात् तिखाल वाले बाबा की मूर्ति है। वह प्रतिमा किसी अदृश्य शक्ति द्वारा बनाई गई तथा मनोकामना पूरक बताई जाती है। यहाँ के कुएं के जल को पीने से अनेक रोग शांत हो जाते हैं ऐसा कहा जाता है।

सांस्कृतिक महत्व—पार्श्वनाथ संबंधी घटना का एक सांस्कृतिक महत्व भी है जिसने जैन मूर्तिकला को प्रभावित किया। वह है पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति पर सर्पफण का होना तथा धरणेन्द्र पद्मावती का उनके भक्त यक्ष-यक्षिणी के रूप में विशेष उल्लिखित होना।

किला—क्षेत्र से दो किमी. दूर एक प्राचीन किला है जो महाभारतकालीन कहा जाता है। इस किले के निकट ही कटारीखेड़ा नामक टीले से प्राचीन स्तंभ मिला है जो कि भग्नावस्था में है और मानस्तंभ माना जाता है। जनसाधारण में किंवदन्ती है कि यहीं प्राचीनकाल में सहस्रकूट चैत्यालय था। कुछ लोग अज्ञानतावश इस पाषाण स्तंभ को 'भीम की गदा' कहते हैं। कहा जाता है कि अपने वैभवकाल में अहिच्छत्र नगर 48 मील की परिधि में था। यहाँ के भग्नावशेषों में 18 इंच तक की ईंटें मिलती हैं।

क्षेत्र दर्शन—सड़क से कुछ फुट ऊँचाई पर तीर्थ क्षेत्र का मुख्य द्वार है। भीतर एक विशाल धर्मशाला तथा बीच में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पक्का कुआं है। बायीं ओर मंदिर का द्वार है। द्वार में प्रवेश करते ही क्षेत्र का कार्यालय है, जो काफी लम्बा चौड़ा है। सामने बायीं ओर एक छोटे गर्भगृह में वेदी में तिखाल वाले भगवान पार्श्वनाथ की सातिशय हरितपन्ना की पद्मासन मुद्रा में 9 इंच अवगाहना की सौम्य, सर्पलांछन युक्त प्रतिमा विराजमान हैं। वेदी के दायीं ओर दूसरे कमरे की वेदी में मूलनायक पार्श्वनाथ की श्यामवर्णी 1 फुट 10 इंच अवगाहना की अत्यन्त मनोहर पद्मासन प्रतिमा है। मूर्ति के नीचे सिंहासन पीठ के सामने वाले भाग में 24 तीर्थंकर प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। प्रतिमा के बायीं ओर श्वेत पाषाण युक्त पार्श्वनाथ प्रतिमा तथा दायीं ओर गर्भगृह की दो वेदी में आधुनिक प्रतिमाएं विराजमान हैं। अंतिम पांचवीं वेदी में बूंदी (राज.) में भूगर्भ से प्राप्त चौथी से नौवीं शताब्दी के मध्य की प्रतिमाएँ हैं। यहाँ एक समवसरण भी बना हुआ है। मंदिर के निकट ही रामनगर गांव में एक शिखरबंद मंदिर है जिसमें फणामण्डित श्यामवर्ण पद्मासन पार्श्वनाथ (4 फुट अवगाहना) की मनोज्ञ प्रतिमा है जिस पर पात्रकेशरी की शंका को दूर करने वाला श्लोक भी अंकित है तथा दो पाषाण एवं दो धातु प्रतिमाएं भी हैं। मंदिर के बाहर उत्तर की ओर पात्रकेशरी के चरण बने हैं।

वार्षिक मेला—क्षेत्र का वार्षिक मेला चैत्र कृष्णा अष्टमी से चैत्र कृष्णा त्रयोदशी तक होता है।

अहिच्छत्र तीर्थ की नूतन कृति—सन् 1993 में अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्र को एक नूतन कृति की प्राप्ति तब हुई जब हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र से अवधप्रान्त की ओर मंगल विहार कर रही परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी संघ सहित अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्र पर पधारीं। संयोगवश इन दिनों यहां का वार्षिक मेला भी प्रारंभ हो चुका था। अतः तीर्थक्षेत्र की प्राचीन एवं नूतन दोनों संस्थाओं ने पूज्य माताजी के पावन सानिध्य का पूरा-पूरा लाभ उठाया। 13 मार्च से 16 मार्च तक के इस प्रवास में ज्ञानतीर्थ परिसर के पाण्डाल में पूज्य माताजी के प्रवचन के साथ 15 मार्च को प्राचीन मंदिर के प्रांगण में पूज्य माताजी के सानिध्य में मेले का शुभारंभ हुआ। 16 मार्च को भगवान आदिनाथ की जन्मजयंती के पावन दिवस प्रातःकाल पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में अहिच्छत्र कमेटी के महामंत्री श्री सुमेरचंद जैन एवं अध्यक्ष-श्री प्रेमचंद जैन तेल वाले (मेरठ) बैठे हुए तीर्थक्षेत्र के उत्थान हेतु आशीर्वाद मांग रहे थे तभी माताजी के मुख से निकला कि यहां एक विशाल तीस चौबीसी तीर्थंकर मंदिर की रचना बनवाओ और उसमें सात सौ बीस जिनबिम्ब विराजमान करो। प्रेमचंद जी ने योजना को तुरंत स्वीकार किया पुनः मध्यान्हकालीन प्रवचन सभा में इस भावी निर्माण की घोषणा होते ही तुरंत 24 दातारों ने प्रतिमा विराजमान करने की स्वीकृति लिखवाई। इस प्रकार अपूर्व उत्साह के साथ पूज्य माताजी ने इस नूतन योजना को भगवान पार्श्वनाथ के चरणों में प्रथम भेंट के रूप में समर्पित किया और उनके कर्मठ भक्त कार्यकर्ताओं ने उसे शीघ्र ही मूर्तरूप देने का संकल्प लिया।

आज से कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व सम्राट् भरत चक्रवर्ती ने कैलाशपर्वत पर तीन चौबीसी के रत्नों के 72 मंदिर बनवाए थे। तीन चौबीसी की प्रतिमाएं तो आज भी कई जगह पर स्थापित हैं किन्तु तीस चौबीसी रचना की प्रथम प्रेरणा माताजी ने यहां दी थी। यह वह प्रथम तीस चौबीसी मंदिर है जिसकी योजना काफी समय से पूज्य माताजी के मस्तिष्क में थी और जिसे क्रियान्वयन करने का सौभाग्य श्री अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्राप्त हुआ। उसका प्रमुख श्रेय श्री प्रेमचंद जैन (तेल वाले) मेरठ को जाता है। वह मंदिर वहाँ बनकर पूर्ण हो चुका है एवं सन् 2002 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हो चुकी है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी मई सन् 2005 में अहिच्छत्र पधारीं तो इस 11 शिखर वाले विशाल मंदिर के दर्शन कर परम प्रसन्न हुईं, उनकी प्रेरणा से वहाँ 15 मई को तिखाल वाले बाबा अतिशयकारी पार्श्वनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक भी सम्पन्न हुआ।

विभिन्न अतिशयों से युक्त यह प्राचीनतम तीर्थ तथा उसमें निर्मित प्राचीन एवं नूतन रचनाएँ दर्शनार्थ पधारने वाले प्रत्येक यात्रीबन्धु को भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से क्षमा, सहनशीलता एवं तपस्या की प्रेरणा प्रदान करें एवं अन्तर में ज्ञानज्योति को प्रस्फुटित करे यही मंगल कामना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मेदशिखर तीर्थ पर निर्मित भगवान ऋषभदेव मंदिर

लेखक-प्रतिष्ठाचार्य युवारत्न पं. अकलंक कुमार जैन, लखनऊ

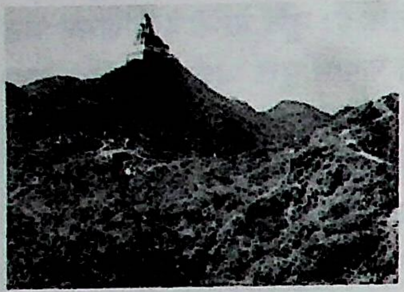

जैनधर्म के दो प्रमुख तीर्थ ऐसे हैं, जिन्हें शाश्वत तीर्थ की संज्ञा दी गई है। 1. अयोध्या 2. सम्मेदशिखर। आगम के अनुसार अयोध्या सभी तीर्थंकरों की जन्मभूमि है और सम्मेदशिखर जी सभी तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि। परन्तु हुण्डावसर्पिणी काल के दोष के कारण अयोध्या में सिर्फ पाँच तीर्थंकरों ने ही जन्म लिया और सम्मेदशिखर जी बीस तीर्थंकरों के निर्वाण से पावन हुई।

तीर्थंकर भगवन्तों के अतिरिक्त भी अनंतों मुनियों के इस परम पावन तीर्थ से मोक्ष प्राप्त करने का प्रसंग आता है। उत्तर पुराण में वर्णन आया है कि सम्राट सगर चक्रवर्ती ने अपने साठ हजार पुत्रों के साथ सम्मेदशिखर से मोक्ष प्राप्त किया है।

तीर्थराज सम्मेदशिखर (पारसनाथ हिल) वर्तमान में झारखंड प्रदेश के गिरिडीह जिले में स्थित है। यहाँ पहुँचने के लिए रेलवे के कई मार्ग हैं, भारत सरकार द्वारा भगवान पार्श्वनाथ के नाम से एक ट्रेन भी "पारसनाथ एक्सप्रेस" चलायी गयी है। पारसनाथ स्टेशन के सामने ही एक फर्लांग की दूरी पर ईसरी में दो दिगम्बर जैन धर्मशालाएं बनी हुई हैं, एक तेरहपंथी और दूसरी बीसपंथी, दोनो निकट-निकट हैं। तेरापंथी धर्मशाला में सुविधाजनक कमरे, कुंआ आदि के साथ एक विशाल चौक है, मुख्य द्वार से फाटक के दायीं ओर शिखरबंद मंदिर है, मंदिर के बराबर में एक छतरी के नीचे चरण विराजमान हैं। दोनों कोठियों के बीच की गली में उदासीनाश्रम का प्रवेश द्वार है। इस संस्था का नाम श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन शान्ति निकेतन उदासीनाश्रम है जिसकी स्थापना पूज्य क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी ने की थी। इसमें विरक्त त्यागी, ब्रह्मचारी आदि धर्मसाधना की भावना से रहते हैं। संस्था में त्यागीभवन, स्वाध्यायशाला, सरस्वती भवन, धर्मध्यानाश्रम आदि हैं। प्रवेश द्वार के बाईं ओर त्यागी भोजनशाला है। प्रांगण में 25 फुट ऊँचा वर्णी जी का समाधिस्तूप है, स्तूप से आगे पार्श्वनाथ जिनालय का भव्य भवन है। मंदिर के बगल में मुमुक्षु महिलाश्रम को मार्ग जाता है। महिलाश्रम के जिनालय में एक विशाल हॉल है जिसमें साढ़े 4 फुट अवगाहना वाली भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है। इसी प्रकार बीसपंथी धर्मशाला में भी विशाल जिनमंदिर के साथ यात्रियों के आवास आदि की समुचित व्यवस्था है।

ईसरी से लगभग 22 किमी. पर मधुबन है। मधुबन पर्वत के उत्तरी भाग की ओर है। मधुबन में तेरहपंथी और बीसपंथी दो कोठियाँ अर्थात् धर्मशालाएं हैं।

पहाड़ पर ऊपर चढ़ने पर सर्वप्रथम गौतम स्वामी की टोंक है, टोंक के बायें हाथ की ओर मुड़कर पूर्व दिशा की तरफ पन्द्रह टोंक हैं जो कूट कहलाते हैं वे क्रमशः इस प्रकार हैं—

1. कुंथुनाथ का ज्ञानधर कूट 2. नमिनाथ का मित्रधर कूट 3. अरहनाथ का नाटक कूट 4. मल्लिनाथ का संबल कूट 5. श्रेयांसनाथ का संकुल कूट 6. पुष्पदंत का सुप्रभ कूट 7. पद्मप्रभु का मोहन कूट 8. मुनिसुव्रतनाथ का निर्जर कूट 9. चन्द्रप्रभु का ललित कूट 10. आदिनाथ भगवान का कूट 11. शीतलनाथ का विद्युत कूट 12. अनन्तनाथ का स्वयम्भू कूट 13. संभवनाथ का धवल कूट 14. वासुपूज्य कूट (यहाँ 5 चरण बने हैं) 15. अभिनन्दननाथ का आनन्द कूट।

इन टोकों में चन्द्रप्रभु टोंक बहुत ऊँची हैं, अभिनंदननाथ की टोंक से उतरकर जलमंदिर आते हैं, यहाँ एक विशाल मंदिर बना हुआ है, जिसके चारों ओर जल भरा है, पहले इस मंदिर में दिगम्बर वीतराग प्रतिमाएं विराजमान थीं, दोनों सम्प्रदाय के लोग यहाँ दर्शन-पूजन करते थे किन्तु धीरे-धीरे श्वेताम्बरों ने मंदिर पर अपना अधिकार कर लिया है।

यहाँ से गौतम स्वामी की टोंक पर पहुँचते हैं। इस स्थान से चारों ओर रास्ते जाते हैं किन्तु यात्रा पूरी करने हेतु यहां से पश्चिम दिशा की ओर जाकर नौ टोकों की वन्दना सभी लोग करते हैं। इनमें— 1. धर्मनाथ का सुदत्तवरकूट 2. सुमतिनाथ का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अविचल कूट 3. शांतिनाथ का शांतिप्रभ कूट 4. महावीर का कूट 5. सुपार्श्वनाथ का प्रभास कूट 6. विमलनाथ का सुवीर कूट 7. अजितनाथ का सिद्धवर कूट 8. नमिनाथ का मित्रधर कूट एवं 9. पार्श्वनाथ का सुवर्णभद्र कूट है। इन टोकों में भगवान पार्श्वनाथ की यह टोंक सबसे ऊँची है।

भगवान ऋषभदेव जिनमंदिर का निर्माण—

शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर में मुख्यरूप से बीसपंथी-तेरहपंथी कोठी के साथ-साथ पिछले 25-30 वर्षों से अनेक नवनिर्माणों के द्वारा भारी विकास कार्य हुआ है। पूज्य आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज की प्रेरणा से समवसरण मंदिर, तीस चौबीसी मंदिर आदि के विशाल निर्माण, गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी की प्रेरणा से मध्यलोक रचना, आचार्यश्री संभवसागर महाराज की प्रेरणा से त्रियोग आश्रम, आचार्यश्री सुमतिसागर महाराज की प्रेरणा से त्यागी-व्रती आश्रम आदि निर्माणों के साथ वहाँ अनेक संस्थाएँ अपने-अपने नवनिर्माण आदि कार्यकलापों के द्वारा सिद्धक्षेत्र की गरिमा वृद्धि में अपना सक्रिय योगदान प्रदान कर रही हैं। इसी शृँखला में पर्वतराज के चौपड़ा कुण्ड पर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर एवं धर्मशाला यात्रियों के लिए विशेष सुविधा प्रदान करते हुए यात्रा के आनंद को द्विगुणित कर देते हैं।

सन् 2003 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने पावन तीर्थ सम्मेदशिखर के इतिहास में एक नया अध्याय और जोड़ दिया। पूज्य माताजी ने वहाँ पर भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा एवं मंदिर निर्माण की प्रेरणा दी। इस मंदिर को निर्माण कराने का पुण्यलाभ डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल-पैठण (महाराष्ट्र) परिवार को प्राप्त हुआ है। वर्तमान में यह निर्माण कार्य पूर्ण होकर दिसम्बर 2005 में प्रतिमा जी की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हो गई और उस भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा को सम्पन्न कराने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। निश्चित ही भव्य और मनोज्ञ प्रतिमा हर व्यक्ति को जैनधर्म की प्राचीनता एवं भगवान आदिनाथ के जीवन को याद कराती रहेगी।

शास्त्रों में तो शिखर जी की वंदना का फल बताते हुए कहा है कि व्यक्ति इस पर्वत की वंदना करके अधिकतम 49 भव धारण करने के बाद मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। ऐसे पावन सिद्धधाम तीर्थ सम्मेदशिखर को कोटि-कोटि नमन।

निज सृष्टी को निर्मिता, 'वेधा' जग विख्यात।
धर्मसृष्टि सर्जन किया, नमत मिटे भव आर्त।।1।।

समवसरण में चहुँदिशी, मुख दीखे प्रभु आप।।
अतः 'विश्वतोमुख' तुम्हीं, नमत हरूँ संताप।।3।।

कर्मभूमि की आदि में, उपदेशा षट्कर्म।
अतः 'विश्वकर्मा' तुम्हीं, जजत मिले निजशर्म।।4।।

—गणिनी ज्ञानमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि
राजगृही तीर्थ को पूज्य माताजी का अवदान

लेखक-डॉ. हेमन्त कुमार, राजगृही

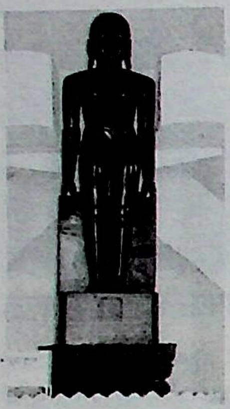

जैनधर्म एवं संस्कृति का मूर्धन्य केन्द्र, बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की चार कल्याणकों से पवित्र भूमि, भगवान महावीर स्वामी की प्रथम देशना स्थली एवं अनेक मुनियों की निर्वाणभूमि राजगृही का कण-कण अनेक महान विभूतियों के चरण रज से पवित्र है। प्रकृति की सुरम्य वादियों में अवस्थित अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल राजगृही भारतभूमि के भव्य ललाट की बिन्दिया के रूप में विख्यात रही है। राजनैतिक कारणों से भले ही राजगृही का महत्व कम हो गया हो किन्तु सांस्कृतिक प्रेरणास्रोत एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के अग्रदूत के रूप में राजगृही का महत्व कभी भी कम नहीं हो सका। इन्हीं कारणों से श्रद्धाभिभूत होकर विद्वानों एवं बहुमुखी विराट व्यक्तित्व को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए युगों-युगों से अपनी पावन प्रेरणा एवं सानिध्य में अनेक साधना-आराधना केन्द्रों, जिनालय-देवालय आदि का निर्माण कराया।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का महान उपकार भी इस नगर एवं नगरवासियों को प्राप्त हुआ। वर्ष 2003 के प्रारंभ में पूज्य माताजी का ससंघ मंगल पदार्पण राजगृही में प्रथम बार हुआ। पूज्य माताजी के नगर में प्रवेश करते ही नगरवासियों ने पूर्ण धार्मिक वातावरण में हर्षोल्लासपूर्वक पूरे संघ का स्वागत एवं अभिनंदन किया। चारों ओर पूज्य माताजी के जयघोष से वातावरण गुंजायमान हो उठा। राजगृही नगर में पूज्य माताजी की मंगल प्रेरणा से अनेक जिनालयों का निर्माण एवं धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन हुआ। पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से जो नवनिर्माण हुए, उनमें प्रमुख कार्यों का संक्षिप्त वर्णन कर रहा हूँ।

बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ जिनालय का निर्माण—पूज्य माताजी का ससंघ पदार्पण राजगृही में प्रथम बार वर्ष 2003 के प्रारंभ में हुआ। उन्होंने अपने मंगल प्रवचन में उपस्थित श्रोताओं से पूछा कि राजगृही नगरी में किस तीर्थंकर का जन्म हुआ था? उपस्थित लोगों में एक-दो को छोड़कर किसी ने भी सही उत्तर नहीं दिया। पूज्य माताजी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि जब राजगृही नगर के लोग ही नहीं जानते हैं, तो बाहर से आने वाला व्यक्ति कैसे जानेगा कि यह नगर बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की जन्मभूमि है। उन्होंने कहा कि आज से बारह लाख सोलह हजार वर्ष पूर्व इस नगर में बीसवें तीर्थंकर का जन्म हुआ था। यह नगरी भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की चार कल्याणक भूमि है। इसलिए इस क्षेत्र पर प्रथमतः एक बोर्ड लगाना चाहिए। जिस पर यह लिखा हो कि राजगृही बीसवें तीर्थंकर की जन्मभूमि है और यहाँ एक जिनालय का निर्माण कराकर उसमें विशाल एवं मनोज्ञ खड्गासन प्रतिमा की स्थापना कराना चाहिए। बस क्या था, पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार बोर्ड तो यथाशीघ्र लगवा दिया गया और जिनालय निर्माण हेतु स्थल का चयन भी शीघ्र ही कर लिया गया।

श्री दिगम्बर जैन लालमंदिर परिसर में भव्य जिनालय निर्माण कराने एवं भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की प्रतिमा स्थापित कराने हेतु श्री अनिल कुमार जैन, कमल मंदिर-प्रीतविहार, दिल्ली ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। अल्पावधि में ही मंदिर का निर्माण एवं प्रतिमा स्थापना का कार्य पूर्ण हो गया और वर्ष 2003 के अन्त में 3 दिसम्बर से 8 दिसम्बर तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी करा दी गई। अब राजगृही क्षेत्र पर आने वाले सभी श्रद्धालु स्वयमेव जान जाते हैं कि राजगृही बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि है।

भगवान महावीर प्रतिमा की स्थापना—पूज्य ज्ञानमती माताजी का राजगृही नगर में प्रथम बार मंगल पदार्पण के शुभ अवसर पर जवाहर नवोदय विद्यालय के प्रांगण में भव्य स्वागत एवं अभिनंदन विद्यालय परिवार की ओर से किया गया। इस पावन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवसर पर जवाहर नवोदय विद्यालय के प्राचार्य ने पूज्य माताजी से आग्रह किया कि आपकी प्रेरणा से विद्यालय प्रांगण में भगवान महावीर की प्रतिमा की स्थापना हो जाती तो बच्चों में जैनधर्म एवं भगवान महावीर को जानने-समझने की उत्सुकता और बढ़ेगी तथा यहाँ आने वाला प्रत्येक व्यक्ति भगवान महावीर से परिचित हो सकेगा। उस समय वहाँ उपस्थित राजगृही के अनेक बुद्धिजीवियों ने इसका समर्थन किया। पूज्य माताजी ने इस आग्रह को स्वीकार करते हुए श्री मनोज कुमार जैन-मेरठ को प्रेरित कर सन् 2003 में ही वहाँ प्रतिमा की स्थापना करवा दी और 8 दिसम्बर 2003 को प्रतिमा का अनावरण करके विद्यालय परिसर में प्रार्थना का केन्द्र स्थापित करा दिया।

ह्रीँ प्रतिमा की स्थापना—वीरशासन जयंती का वह पावन अवसर ऐतिहासिक हो गया, जब 14 जुलाई 2003 को विपुलाचल पर्वत पर निर्मित भगवान महावीर प्रथम देशना स्मारक के हॉल में निर्मित ध्यान कक्ष में ह्रीँ प्रतिमा की स्थापना पूज्य माताजी के सानिध्य में की गई। देश के कोने-कोने से आये श्रद्धालु वीरशासन जयंती के अवसर पर भगवान का महामस्तकाभिषेक करने हेतु विपुलाचल पर्वत पर उपस्थित थे। इसी मंगलमय अवसर पर पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से ह्रीँ प्रतिमा की स्थापना की गई।

चित्र प्रदर्शनी—वीरशासन जयंती-2003 के पावन अवसर पर विपुलाचल पर्वत पर निर्मित भगवान महावीर प्रथम देशना स्मारक के हॉल में भगवान महावीर के जीवन पर आधारित चित्र प्रदर्शनी का शुभारंभ किया गया। पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से इस चित्र प्रदर्शनी को बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मानद्‌मंत्री श्री अजय कुमार जैन-आरा ने लगवाया और आज इस प्रदर्शनी के माध्यम से विपुलाचल पर्वत पर जाने वाले सभी जैन-जैनेतर बंधु लाभान्वित हो रहे हैं और भगवान महावीर के वास्तविक जीवन दर्शन से परिचित हो रहे हैं।

गणधर गौतम एवं सुधर्माचार्य के चरणों की स्थापना—पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से विपुलाचल पर्वत पर वीर शासन जयंती 2003 के दिन भगवान महावीर के प्रथम शिष्य गौतम गणधर एवं सुधर्माचार्य गणधर के चरणों की स्थापना बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा की गई।

मानस्तंभ का निर्माण—भगवान महावीर की प्रथम देशनास्थली परम पावन विपुलाचल पर्वत की तलहटी में अवस्थित भगवान महावीर उद्यान परिसर में पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से मानस्तंभ का निर्माण कराया गया। 14 जुलाई 2003 को वीरशासन जयंती के मंगलमयी अवसर पर पूज्य माताजी ससंघ विपुलाचल पर्वत पर उपस्थित थीं। उसी समय बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मानद् मंत्री अजय कुमार जैन ने पूज्य माताजी से निवेदन किया कि पर्वत की तलहटी में कमेटी की जमीन है, जो पर्वत पर जाने के प्रवेश द्वार पर भगवान महावीर उद्यान के नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ एक मानस्तंभ का निर्माण करवाने की भावना है। आपके मंगल आशीर्वाद एवं पावन प्रेरणा से वहाँ मानस्तंभ का निर्माण हो जाये तो आपकी बड़ी कृपा होगी और चिर-प्रतीक्षित भावना भी पूर्ण हो जायेगी। पूज्य माताजी ने तत्काल कहा कि आपने अपनी नहीं मेरी भावना व्यक्त कर दी है। बस उसी समय पूज्य माताजी के संघपति लाला श्री महावीर प्रसाद जैन-दिल्ली ने कहा कि यदि मानस्तंभ बनाने हेतु मुझे अनुमति प्रदान करें, तो मुझ पर बड़ा उपकार होगा। पूज्य माताजी ने उन्हें इस कार्य की पूर्णता हेतु आशीर्वाद प्रदान किया। बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मानद् मंत्री ने पूज्य माताजी का महान उपकार मानते हुए संघपति महोदय को धन्यवाद दिया। 8 दिसम्बर 2003 को पूज्य माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में मानस्तंभ का शिलान्यास किया गया और नवम्बर 2004 में नवनिर्मित मानस्तंभ में प्रतिमा विराजित कर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करा दी गई।

पूज्य माताजी का फरवरी 2003 से नवम्बर 2004 तक में कई बार राजगृही नगर में मंगल पदार्पण हुआ और हर बार कोई न कोई धार्मिक अनुष्ठान आयोजित होता रहा। इन दो वर्षों में राजगृही नगर का वातावरण धर्ममय बना रहा। हर माह राजगृही नगरी के लिए कुछ नयापन लाता रहा। कहने का आशय यह है कि जब तक पूज्य माताजी का प्रवास कुण्डलपुर में रहा, राजगृही नगर में धर्म सलिला प्रवाहित होती रही और राजगृही के नागरिक पुण्य लाभ लेते रहे। पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से निर्मित पवित्र जिनालयों को मैं जब भी देखता हूँ,पूज्य माताजी का आभामण्डल नजर के समक्ष उपस्थित हो जाता है। मन ही मन उनकी चरण वंदना करता हूँ और ऐसा अनुभव करता हूँ कि पूज्य माताजी मुझे अपना आशीर्वाद प्रदान कर रही हैं।

वर्तमान में राजगृही तीर्थ क्षेत्र पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से अपने विकास में अग्रसर है और उनके दोबारा मंगल पदार्पण की प्रतीक्षा कर रहा है। पूज्य माताजी ससंघ के श्रीचरणों में शत-शत वंदन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी में हुआ नवनिर्माण

प्रस्तुति-अजय कुमार जैन, आरा

ईसा पूर्व 5271 वर्ष, चतुर्थकाल की समाप्ति में तीन वर्ष साढ़े आठ मास का समय बाकी है। भगवान महावीर को विहार करते हुए लगभग तीस वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। अब भगवान, पावापुरी के अत्यंत सुंदर एवं रमणीय मनोहर उद्यान में कायोत्सर्ग मुद्रा में विराजमान हैं। यह भगवान के मोक्ष पूर्व की अंतिम देशना है। भगवान के मोक्षगमन का समय समीप है। "तुम चैतन्य हो, पुद्गल के जाल से पुरुषार्थ द्वारा अपने को निकालो", "जीवः अन्यः पुद्गलः अन्यः", "तुम्हारा कल्याण हो।"

सहसा दिव्यध्वनि बंद हो गई है। कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी का शुभ दिन है। भगवान ने काय योग, वचन योग और मनोयोग का निरोधकर प्रतिमा योग धारण किया है। रात्रि व्यतीत हो रही है। भगवान कायोत्सर्ग मुद्रा में आत्म निमग्न हैं। प्रशान्त वातावरण है। प्रतिक्षण उनकी निर्मलता बढ़ रही है। चौदश का दिन भी समाप्त हो रहा है। भगवान का शान्त, सौम्य, वस्त्ररहित, आभूषण शून्य शरीर अद्भुत दिव्य शिखा सा प्रज्वलित है। इसकी शुद्धता की कल्पना नहीं की जा सकती है।

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की पावन रात्रि। चन्द्रमा स्वाति नक्षत्र में विचरण कर रहा है। पौ फटने जा रही है। पावापुरी के बाहर अवस्थित कमल सरोवर के मध्य में मणिमय शिला पर विराजमान वीरप्रभु ने अघातिया कर्मों का क्षय करते हुए निर्बन्ध मोक्षपद प्राप्त किया है। अहा! वे सिद्ध होकर अनन्त सुख में विराजमान हो गये हैं।

आज पावापुरी की शोभा निराली है। देव और इन्द्रों की जयजयकार से सारा नभोमण्डल ध्वनित है। इस समय राजा श्रेणिक सहित चारों निकाय के देवों ने प्रजा के साथ मिलकर विधिपूर्वक भगवान की पूजा की और निर्वाणकल्याणक महोत्सव सम्पन्न किया। देवेन्द्र ने भी मोह का नाश करने वाले भगवान के शरीर के अवशेषों की अष्टद्रव्यों से पूजा की। अग्नि कुमार देवों के मुकुट से प्रगट अग्नि की ज्वाला ने दिव्य शरीर को भस्मता प्रदान की।

उस समय नगर-जन, सुर-असुर द्वारा जलाये दीपकों के प्रकाश से पावापुरी का समस्त आकाश जगमगा उठा। धरती-गगन, सभी दिव्य आलोक से व्याप्त हो गये। इस मंगलमयी महिमा को कवि रूपचंद्र ने दिल खोलकर गाया है—

निर्वाण कल्याणक सुमहिमा, सुनत सब सुख पावहीं।
मणि रूपचंद्र सु देव जिनवर, जगत मंगल गावहीं।।

पावापुरी को भगवान के निर्वाण के कारण विश्ववंद्यता प्राप्त हुई है। पावापुरी स्थित कमल सरोवर का पावन स्थल अक्षय पुण्य अर्जन करने का निमित्त बन गया है। जहाँ आज सफेद संगमरमर का अत्यंत भव्य एवं आकर्षक मंदिर है। कमलदल की आकर्षक छटा के मध्य इस जलमंदिर में भगवान महावीर के श्यामवर्ण के पाषाण के छोटे चरण विद्यमान हैं। इस मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करते ही भगवान की पावन स्मृति भक्तों के मन पर छा जाती है और देह का रोम-रोम चरम आनंद से उत्तेजित हो जाता है। वातावरण में अभी भी वीरप्रभु की दिव्य देशना एवं स्पर्श के विद्युत-कण विराजमान हैं। लगभग 60 फुट लम्बे आकर्षक लाल पत्थर के पुल पर चलकर लगता है मानों स्वर्ण कमलों पर चलकर सिद्धलोक की ओर पग बढ़ रहे हैं।

जलमंदिर के निकट श्री पावापुरी जी सिद्धक्षेत्र दिगम्बर जैन कार्यालय है। जहाँ लगभग 130 सुसज्जित एवं आधुनिक सुख-सुविधा युक्त कमरों की धर्मशाला है। यहाँ पर नौ मंदिरों का समूह है। इसमें मूलनायक भगवान महावीर की श्वेत पाषाण की साढ़े तीन फुट अवगाहना में पद्मासन प्रतिमा तथा सात फुट ऊँची मूँगे के रंग की खड्गासन प्रतिमा बड़ी मनोहारी एवं अतिशययुक्त है। धर्मशाला के प्रांगण में अड़तालिस फुट ऊँचे सफेद पाषाण में कलात्मक मानस्तंभ का निर्माण कराया गया है, जिसके शीर्ष पर भगवान महावीर की चार प्रतिमाएँ परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में विराजमान की गई हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलमंदिर के ठीक सामने एक प्राचीन समवसरण मंदिर बहुत ही भव्य एवं सुंदर बना हुआ है, जहाँ भगवान महावीर के अति प्राचीन चरण विराजमान हैं। मान्यता है कि यहाँ भगवान महावीर का समवसरण आया था।

पाण्डुकशिला परिसर में भगवान महावीर मंदिर का निर्माण—

सन् 2003 में वीरप्रभु की जन्मभूमि कुण्डलपुर के जीर्णोद्धार के लिए परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ दिल्ली से चलकर जब कुण्डलपुर पहुँची, तो श्री सिद्धक्षेत्र पावापुरी के सरोवर में खिले कमल पुष्पों की सुंदरता एवं मध्य स्थित धवल श्वेत जलमंदिर के आकर्षण से अछूती नहीं रह पाईं। यहाँ के कण-कण में वीरप्रभु के दिव्य परमाणु विद्यमान हैं। भगवान के निर्वाण की प्रातः गोधूली बेला में बहने वाली प्राण वायु अपने साथ उन अविस्मरणीय क्षणों को भी साथ लाती है, जो एक भक्त साधक की अनमोल निधि है। अनेकों शास्त्रों की रचयित्री, सिद्धान्तज्ञाता परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से यह सब छुपा नहीं है। शायद यही कारण है कि पूज्य माताजी शरीर से भले ही कुण्डलपुर में थीं, पर उनका मन सूक्ष्मरूप से हमेशा श्री मंगल क्षेत्र पावापुरी के कमल सरोवरों के मध्य विराजित वीरप्रभु के चरणों के दर्शन में लीन रहता था।

बिहार प्रवास के दौरान नियमित रूप से प्रत्येक माह पूज्य माताजी ससंघ पावापुरी पधारतीं और अत्यंत भक्तिभावपूर्वक 1008 कमलपुष्पों को चढ़वाकर वीरप्रभु के चरणों की बार-बार वंदना करती थीं।

जल मंदिर के पश्चिम में स्थित पांडुक शिला परिसर पर भगवान महावीर की 11 फुट ऊँची अवगाहना की गुलाबी पाषाण में अति सुंदर खड्गासन प्रतिमा कमल के फूल पर विराजमान है। इस अति सुंदर मंदिर का निर्माण पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से एक वर्ष की समयावधि में हुआ है। आज पावापुरी प्रवेश के समय इस भव्य प्रतिमा का प्रथम दर्शन करके देश के कोने-कोने से आने वाला प्रत्येक तीर्थयात्री गौरव एवं संतुष्टि का अनुभव करता है और निश्चयपूर्वक पूज्य ज्ञानमती माताजी के प्रति उसके दिल में असीम कृतज्ञता के भाव उमड़ते हैं।

आइये ! सब मिलकर प्रण करें कि सिद्धक्षेत्र पावापुरी का बार-बार सपरिवार दर्शन करेंगे। वीर प्रभु जिस स्थल से मुक्त होकर सिद्धलोक गये, उस पावन धरा को बार-बार नमन कर कर्ममलों का क्षय कर सच्ची भक्ति से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेंगे। भक्त कवि भागेन्दु ने सच कहा है—

शरण्यः साधूनां, भव-भव भृतामुत्तमगुणो।
महावीर स्वामी नयन-पथ गामी भवतु मे।।

सर्व जगत इक समय में अवलोकें प्रभु आप।
नमूँ 'विश्वदृक्' को सतत, समकित हो निष्पाप।।1।।

सब प्राणी के ईश तुम, अतः 'विश्वभूतेश'।
नमत ज्ञान कलिका खिले, मिलता सौख्य अशेष।।2।।

सकल विश्व को तेज से, व्याप्त किया भगवान।
'विश्वज्योति' को नित नमूँ, नशें कर्म बलवान।।3।।

तुम से बढ़कर नहिं कोई, जग में ईश्वर होय।।
नमूँ 'अनीश्वर' को सतत, कर्मकालिमा धोय।।4।।

—गणिनी ज्ञानमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धक्षेत्र गुणावां जी में गौतम गणधर विराजमान हुए

लेखक—अजय कुमार जैन, आरा

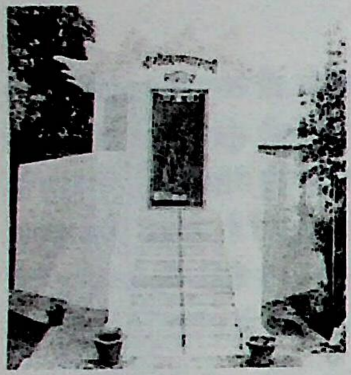

भगवान महावीर के प्रथम गणधर गौतम स्वामी की निर्वाणभूमि एवं भगवान महावीर के अनेक विहारों से पवित्र, प्रसिद्ध 'गुणशील चैत्य' (बिहार प्रान्त स्थित वर्तमान गुणावां जी) के दर्शन का आपको अवश्य सुयोग मिला होगा। तब वहाँ पर स्थित अनूठे जिन मानस्तंभ के भी आपने अवश्य दर्शन किए होंगे। कई दशक पूर्व निर्मित इस भव्य उत्तुंग मानस्तंभ का निर्माण गया निवासी श्रीमती केसरीमल लल्लूमल जी द्वारा करवाया गया था।

सबसे विचित्र एवं अनूठी बात जो इस मानस्तंभ के संबंध में आपको लगेगी, वह है, इसके शीर्ष के चारों कोनों पर बैठे चार तोते (सुग्गे)। प्रतिष्ठाचार्यों ने उन्हें यहाँ क्यों प्रतिष्ठित किया? उनका क्या महत्व है? यह सब अनजान रहस्य ही है, पर इतना जरूर है कि उन पर नजर पड़ते ही एक गजब सम्मोहक प्रभाव आपके व्यक्तित्व पर पड़ता है और पूरा जिनालय परिसर हरित, सुहावना, आकर्षक एवं जीवन्त हो जाता है।

इस पवित्र सिद्धक्षेत्र पर एक बात और आपका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगी। आपको मंदिर के इर्द-गिर्द सैकड़ों की संख्या में सुग्गे (तोते) उड़ते हुए नजर आयेंगे। इतना ही नहीं, आपको उनकी अनवरत चहचहाहट सुनकर ऐसा लगेगा, मानों वे भी भगवान की स्तुति में णमोकार मंत्र का पाठ कर आन्दोलित हो रहे हैं।

आखिर वे इतने खुश एवं सुखी क्यों है? उनकी ऊर्जा का, उनके निर्मल आचरण का क्या आद्यस्रोत है? आपकी नजर मंदिर के धवल शिखर की ओर भी जायेगी, जहाँ पर मंदिर के निर्माणकर्त्ता ने आश्चर्यजनक ढंग से, मंदिर के शिखर-गुम्बज में जानबूझ कर सैकड़ों ऐसे स्थान बना रखे हैं, जहाँ ये जीव सुख एवं शांति से निवास कर सकें। "जीओ और जीने दो" का इससे बढ़िया कोई दूसरा उदाहरण आपको नहीं मिलेगा। शायद ही कहीं किसी जिनालय में, किसी ने इतनी बढ़िया सटीक बात सोची हो, जो जिनशासन के एकदम अनुरूप है।

पिरामिड आकार के बने गुम्बज लोकाकाश में प्रवाहित ऊर्जा को आकर्षित कर अपने क्षेत्र के अंदर समाहित जीव पर आश्चर्यजनक सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। यह वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित है और शायद उस क्षेत्र में निवास कर रहे तोते भी इस प्रभाव से अछूते नहीं हैं।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, जिनका मंगल प्रवास भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर जी में था, ने एक चर्चा के दौरान तोते के महत्व को हमें बताते हुए कहा कि तिलोयपण्णत्ति में प्रकरण आया है—

"तोता चढ़ महाशुक्र सुरपति, फूलों की माला को लाते" अर्थात् महाशुक्र नाम के इन्द्र, नन्दीश्वर द्वीप में तोते के विमान पर चढ़कर जाते हैं, फूलों की माला लाते हैं और अकृत्रिम चैत्यालयों में जिनेन्द्र प्रभु की पूजा-अर्चना अत्यंत भक्ति से करते हैं।

उस गुणावां जी सिद्धक्षेत्र पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणानुसार एक लघुकाय मंदिर बनाकर उसमें गौतम गणधर की सवा पांच फुट खड्गासन श्वेतवर्णी प्रतिमा विराजमान की गई हैं। यहाँ का प्राचीन जल मंदिर भी प्रसिद्ध है जहाँ भगवान महावीर की एक पाषाण प्रतिमा विराजमान हैं। दिगम्बर-श्वेताम्बर दोनों आम्नाय के जैन श्रद्धालु उस जलमंदिर में जाकर पूजा-अर्चना करते हैं। ऐसी पावन निर्वाणभूमि गुणावां जी को शत-शत नमन करते हुए विघ्नविनाशक श्री गौतम गणधर से प्रार्थना है कि हम सभी भव्यात्माओं के लिए मुक्तिपथ में आने वाले विघ्नों का नाशकर शाश्वत सुख प्रदान करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतिशय क्षेत्र महावीर जी के श्री शांतिवीरनगर तीर्थ परिसर में निर्मित मन्दार कल्पवृक्ष

प्रस्तुति-राजकुमार जैन कोठारी, जयपुर (राज.)

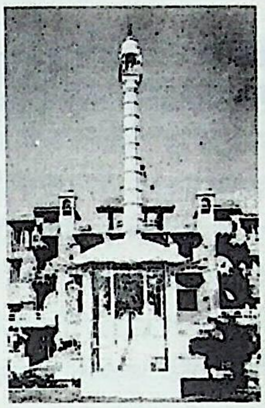

जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर के अतिशय से प्रसिद्ध महावीर जी तीर्थक्षेत्र दिगम्बर जैन धर्मावलम्बियों की श्रद्धा का केन्द्र है। उसी महावीर जी तीर्थ पर स्थित है शांतिवीर नगर नामक एक संस्थान द्वारा निर्मित तीर्थ।

सन् 1996 में मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के विकास हेतु मंगल विहार करते हुए परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का प्रथम पदार्पण तीर्थक्षेत्र पर हुआ और शांतिवीरनगर के पदाधिकारियों ने पूज्य माताजी से तीर्थ विकास हेतु विनम्र निवेदन करते हुए वहाँ घटित एक घटना के बारे में बताया कि माताजी! सन् 1994 अक्टूबर माह में एक ऐसा हादसा हुआ, जिसने सभी को चकित कर दिया। संस्थान में स्थित जिनमंदिर में हो रहे जीर्णोद्धार के समय दोपहर में यकायक मंदिर जी धराशाई हो गया। सुखद आश्चर्य यह रहा कि इस भीषण हादसे के पश्चात् भी जिनमूर्तियों एवं दर्शनार्थियों को किसी भी प्रकार की क्षति नहीं पहुँची। उस समय ऐसा आभास हुआ कि जैसे क्षेत्रपाल बाबा ने ही सारा उपसर्ग दूर कर दिया।"

तब माताजी ने काफी चिंतन करके भगवान शांतिनाथ की बड़ी प्रतिमा के ठीक सामने मन्दार कल्पवृक्ष की स्थापना की प्रेरणा दी, उस समय तत्क्षण ही पूज्य माताजी के अनन्य भक्त खारीबावली-दिल्ली निवासी श्री प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन ने उसकी स्वीकृति प्रदान की और सन् 1998 में वह कल्पवृक्ष तैयार होकर स्थापित हो गया। इधर संयोग ऐसा बना कि संस्थान की ट्रस्ट कमेटी ने ब्र. बाबा सूरजमल जी के सुझाव एवं भावनानुसार उसी संस्थान पर नूतन जिनमंदिर बनाने का निश्चय किया और संस्थान के युवा ट्रस्टी के रूप में मुझे यह जिम्मेदारी सौंपी गई। दानदातारों के सहयोग से अल्प समय में ही एक अथक परिश्रम एवं वास्तुविदों की सहायता से जिनमंदिर को भव्य एवं नवीन रूप प्रदान किया गया, परन्तु जिस नवीन जिनमंदिर की नींव ब्र. सूरजमल बाबाजी द्वारा लगाई गई थी, वे बीच में ही हमारे दुर्भाग्यवश काल के गाल में समाहित हो गए। वस्तुतः संस्थान के प्रति उनके द्वारा किए गए इस अकल्पनीय सहयोग को हम कभी नहीं भुला सकेंगे।

राजस्थान की राजधानी जयपुर से करीब 140 किमी. दूर जिला करौली में महावीर जी की पुण्य धरा पर गंभीर नदी के पूर्वी तट पर उक्त "श्री शांतिवीर दि. जैन संस्थान" स्थित है। इस संस्थान का नामकरण परम पूज्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री 108 शांतिसागर जी महाराज (दक्षिण) तथा आचार्यश्री के प्रथम पट्टाधीश एवं प्रथम शिष्य परम पूज्य 108 श्री वीरसागर महाराज के नाम पर "शांतिवीर" दि. जैन संस्थान रखा गया। इस संस्थान के द्वारा सन् 1961 में एक प्रेस को कलकत्ता से श्री महावीर जी लाकर कृष्णाबाई आश्रम से ही कई जैन शास्त्रों एवं पुराणों का प्रकाशन हुआ। तदनन्तर ब्र. श्री लाल जी ने गंभीर नदी के पूर्वी तट पर दातारों से दान के रूप में आर्थिक सहायता प्राप्त करके इस संस्थान के लिए जमीन खरीदी एवं निर्माण करवाया तथा इसी भवन में प्रेस लगाई जिससे 'श्रेयोमार्ग' नाम का पत्र भी प्रकाशित हुआ, जिसके प्रधान सम्पादक मूर्धन्य विद्वान ब्र. पं. खूबचंद जी शास्त्री-इंदौर थे।

आचार्यों व मुनिराजों के आशीर्वाद से यह संस्थान निरन्तर प्रगति करता रहा। इसी क्रम में अनेकों सुन्दरतम् प्रतिमाओं का निर्माण भी होता रहा और सन् 1965 में आचार्य श्री 108 शिवसागर महाराज के ससंघ पावन सानिध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन हुआ। दानी दाताओं के प्रदत्त सहयोग से 26 फुट उन्नत विशालकाय 1008 श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा, शांतिनाथ भगवान के तलघर में 1008 श्री महावीर स्वामी की 5 फुट उन्नत प्रतिमा, सहस्रकूट चैत्यालय एवं 3-3 फुट ऊँची चौबीसी, का निर्माण हुआ। वि.सं. 2022 (सन् 1969) में यात्रा से आकर संघ के पावन सनिध्य में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय पंचकल्याणक की योजना प्रारंभ हुई किन्तु दुर्भाग्यवश प्रतिष्ठा के 10 दिन पूर्व फाल्गुन कृष्णा अमावस्या को आचार्यश्री शिवसागर महाराज समाधिस्थ हो गए। प्रतिष्ठा पूर्ववत् विशाल रूप से ही सम्पन्न हुई और इसी शुभ अवसर पर पूज्य मुनि श्री 108 धर्मसागर जी महाराज को तपकल्याणक के अवसर पर आचार्यश्री के पट्ट पर आसीन किया गया। इस प्रकार यह संस्थान अपने चहुँमुखी कार्यकलापों से निरन्तर वृद्धि की ओर अग्रसर रहकर आगन्तुक दर्शनार्थियों को जैनत्व का पावन संदेश प्रदान कर रहा है।

अपने गुरुओं के नाम पर निर्मित इस तीर्थ परिसर में पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित अतिशयकारी मन्दार चैत्यवृक्ष तीर्थ के प्रति उनके विशेष अपनत्व एवं वात्सल्य का प्रतीक है। उसमें विराजमान सिद्धों की 4 प्रतिमाएँ सदैव तीर्थ की समृद्धि करती रहें एवं तीर्थयात्रियों की मनोकामना सिद्ध करें, यही मंगलकामना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सनावद (खरगोन) म.प्र. में निर्माणाधीन

भारत का नवोदित तीर्थ-णमोकार धाम

जो णमोकार महामंत्र अनादिकाल से जैन शासन का मूल मंत्र माना जाता है, उस महामंत्र के नाम से तीर्थ बन जाना एक अलौकिक उपलब्धि है। मध्यप्रदेश में सिद्धवरकूट तीर्थ के निकट बसा सनावद नगर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के शिष्य एवं जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पीठाधीश धर्मदिवाकर क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज की जन्मभूमि है।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की ओर विहार करती हुई पूज्य माताजी सन् 1996 में जब सनावद पहुँचीं, तो वहाँ इंदौर-खंडवा हाइवे पर इस "णमोकार धाम" तीर्थ का सूत्रपात हुआ। इस तीर्थ पर मूलनायक के रूप में भगवान ऋषभदेव की सवा सात फुट पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। सुन्दर बाग-बगीचे आदि के प्राकृतिक सौन्दर्य से समन्वित उक्त तीर्थ को साकाररूप प्राप्त हो रहा है। णमोकार के पांच पदों के प्रतीक पांच कमलों में, जिनमें एक-एक कमल पर एक-एक परमेष्ठी की प्रतिमा विराजमान हो रही है तथा उन पाँचों कमल की पंखुड़ियों पर णमोकार मंत्र के पाँचों पद स्वर्णाक्षरों में उत्कीर्ण करने की योजना है।

भारत में प्रथम बार निर्मित यह "णमोकार धाम" तीर्थ जन-जन को णमोकार महामंत्र से लाभान्वित करेगा।

उन्नयन श्रमण संस्कृति का करने वाली माता नमूँ तुम्हें।
हे तीर्थोद्धारक! युगप्रवर्तिका! त्रिकाल वन्दन करूँ तुम्हें।।
यह श्रमण संस्कृति युग-युग तक उपकार तेरा नहिं भूलेगी।
संस्कृती हेतु सर्वस्व निछावर करने की शिक्षा देगी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य माताजी की एक देन-कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली
(सन् 1997 में निर्मित)

-अनिल कुमार जैन (धर्मपुत्र) कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली

पूज्य माताजी हमारे समाज की ऐसी अमूल्य निधि हैं, जिनके समाज पर किये गये उपकारों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। हम किसी भी क्षेत्र में देखें उनकी देन अजूबी है। जब हम साहित्यिक क्षेत्र में देखते हैं, तो पता चलता है कि उनकी लेखनी ने जो भक्ति गंगा प्रवाहित की है। उसकी इस विश्व में कोई बराबरी नहीं है। चाहे वह विधानों के ग्रंथ के रूप में हो या आगम के सैद्धान्तिक ग्रंथों के रूप में, उनकी कलम से लिखा गया एक-एक शब्द मंत्र के समान व आगम के अनुसार है, जिसकी इस वर्तमान विश्व में कोई बराबरी भी नहीं कर सकता।

धर्मप्रभावना के क्षेत्र में नजर पड़ती है, तो उनके आशीर्वाद से किये गये कार्यक्रमों की सूची कभी न अंत होने वाली सी प्रतीत होती है और प्रत्येक कार्यक्रम में चाहे वह अयोध्या में भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक हो या दिल्ली में चौबीस कल्पद्रुम विधान, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप महामहोत्सव हो या भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, ज्ञानज्योति की भारतयात्रा हो या समवसरण का भारत भ्रमण सबमें जुड़ी होती हैं विशाल धर्मप्रभावना। तीर्थों के विकास के क्षेत्र में उनके द्वारा कराये गये कार्यों से आज समस्त जैन समाज का मस्तक गर्व से ऊंचा है। हस्तिनापुर, अयोध्या, कुण्डलपुर, प्रयाग, मांगीतुंगी हमारे ये सभी तीर्थ जैन समाज की धरोहर आज पूज्य ज्ञानमती माताजी की कृपा से सुरक्षित हैं।

उनकी इन्हीं देनों की शृंखला में एक नाम है राजधानी दिल्ली की प्रीतविहार कालोनी में ऋषभदेव कमल मंदिर का निर्माण। जब पूज्य माताजी का मांगीतुंगी के लिए विहार हो रहा था, तो मैंने माताजी से आशीर्वाद मांगा कि हमारे घर में एक चैत्यालय हो। माताजी ने उस विहार में दिल्ली प्रवास के समय हमारे घर के प्रांगण में एक यंत्र की स्थापना अपने हाथ से कर मानो मंदिर का शिलान्यास ही कर दिया और पूज्य माताजी की तपस्या के फलस्वरूप देखते ही देखते कमल मंदिर का निर्माण हो गया, कहीं कोई रुकावट नहीं आई, ऐसा प्रतीत होता था मानों सभी अनुकूलताएँ स्वयमेव चलकर समीप आ जाती थीं और जब पूज्य माताजी का मांगीतुंगी से दिल्ली की ओर विहार हुआ, सन् 1997 जून में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हुई। सब कार्य निर्विघ्नता से सानंद सम्पन्न हुए। जब माताजी ने पंचकल्याणक की तारीख निश्चित की थी, तो ऐसा लगता था कि इतना बड़ा कार्य इतनी जल्दी कैसे होगा? परन्तु पूज्य माताजी की तपस्या का प्रभाव था कि सब कार्य अपने आप पूरे होते गये। एक और सौभाग्य का क्षण आया, जब सन् 2000 का चातुर्मास भी इसी कमल मंदिर में हुआ। इसी चातुर्मास के अवसर पर पूज्य माताजी के व्यक्तित्व की महानता को और निकट से जानने का अवसर मिला। उनका धर्मध्यान देखकर ऐसा लगता था कि मानों वे इस भौतिक युग की नहीं है, बल्कि सतयुग की कोई देवी हैं। उनकी स्पष्टवादिता से ऐसा लगता था जैसे उनकी जिह्वा पर सरस्वती विराजमान हो। उनसे आशीर्वाद लेने के बाद लोग ऐसे प्रसन्न होते थे जैसे साक्षात् कल्पवृक्ष के पास आये हो। समय कितना अमूल्य है इस बात को उनकी दिनचर्या से जाना जा सकता था। साधु के चक्षु आगम हैं इस बात की पुष्टि ज्ञानमती माताजी से हो जाती है। चट्टान की तरह अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहने वाली ज्ञानमती माताजी को मेरा बारम्बार नमस्कार होवे।

पूज्य माताजी की दूरदर्शिता धन्य है। उनका अखण्ड ब्रह्मचर्य वीतराग देव के प्रति असीम भक्ति, निष्कलंक चारित्र वंदनीय है। उनके व्यक्तित्व में उनकी धैर्यता, गंभीरता, आगम की गहरी पकड़ उनके ज्ञान का क्षयोपशम आदि सभी गुण झलकते हैं।

पूज्य माताजी! मैं आपको बारम्बार नमस्कार करता हूँ।
जब भी नमस्कार करता हूँ, कुछ न कुछ नया प्राप्त करता हूँ।।

माताजी! वंदामि, वंदामि, वंदामि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जनवरी 1997 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित
अतिशय क्षेत्र कैलाशगिरि

लेखक-चन्द्रप्रकाश जैन, खैरवाड़ा (उदयपुर) राज.

दिगम्बर जैन समाज खैरवाड़ा के प्रत्येक सदस्य के दिलों दिमाग में यह इच्छा थी कि स्थानीय शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के समीप स्थित पहाड़ीनुमा रिक्त जमीन पर ऐसा क्या निर्माण हो कि खैरवाड़ा का नाम भारतवर्ष के जैन तीर्थ स्थानों में जुड़ सके, बच्चे-बच्चे के दिलो दिमाग के इस जज्बे को परमपूज्य गणिनी आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी ने मात्र एक दिन के खैरवाड़ा प्रवास में अपने अन्तर्ज्ञान से समझा और यहाँ कैलाशगिरी स्थापित करने का प्रकल्प प्रदान किया। आनन-फानन में उसी दिन समाज के लोगों को एकत्रित किया गया। संबंधित बोलियाँ भी बुलवाई गईं।

उसके पश्चात् परमपूज्य मुनि 108 श्री सुकुमालनंदी जी (वर्तमान में आचार्य) के खैरवाड़ा के अल्प प्रवास ने हम स्वप्न निद्रा में सोये समाज जनों को जगाया, युवा समता के धारी, ज्ञानी त्याग की प्रतिमूर्ति को देखकर खैरवाड़ा का जन-जन प्रभावित एवं नतमस्तक था तथा गुरुदेव के समक्ष प्रथम बार खैरवाड़ा में चातुर्मास करने का निवेदन किया। खैरवाड़ा से विहार के बाद गाँव-गाँव में गुरुदेव के समक्ष चातुर्मास निवेदन हेतु समाज के पंच पहुँचे। गुरुदेव ने प्रश्न किया कि क्या हम केवल चातुर्मास में मात्र चार माह रहने भर के लिए आयेंगे, तब समाज के पंचों ने गुरुदेव सुकुमालनंदी से कैलाशगिरि प्रकल्प के बारे में चर्चा की। चर्चा करने मात्र से ही हम आशान्वित हो गये थे कि यदि हम कैलाशगिरी प्रकल्प का कार्य चालू करेंगे तो निश्चत ही हमारे गाँव में गुरु का चातुर्मास होगा। किन्तु सन् 2000 में हमारी पुण्य प्रबलता कुछ कम रही होगी, तो गुरुदेव का चातुर्मास रामगढ़ में होना निश्चित हो गया।

पुनः 2 जुलाई 2001 को गुरुदेव का खैरवाड़ा में मंगल प्रवेश हुआ, मंगल प्रवेश पर ही गुरुदेव ने कैलाशगिरी प्रकल्पना की चर्चा हेतु समाज की मीटिंग हेतु आदेश दिया। समाज की मीटिंग में चर्चा हुई। गुरु आदेश से कैलाशगिरी का मॉडल एवं 6 सदस्यों की कैलाशगिरी कमेटी गठित की गई। फिर तो सब कार्य सहज फलते नजर आ रहे थे। 29 अगस्त समता दिवस (गुरुवर 108 श्री सुकुमालनंदी की 23वीं जन्मजयंती) को कैलाश पर्वत का शिलान्यास किया गया। मानो गुरु आशीर्वाद से कुबेर स्वयं धन की वर्षा कर रहे हों, कई बोलियाँ सम्पन्न हो गईं। कार्य प्रारंभ हुआ, कैलाशगिरी पर प्राकृतिक पर्वत निर्माण, स्वस्तिक निर्माण, उद्यान का निर्माण प्रत्येक व्यक्ति को जो भी कार्य सौंपा गया, सभी ने पूर्ण जिम्मेदारी से कार्य को समय पर पूर्ण किया। अब मूर्ति लाने के प्रयास हुए। कमेटी के सदस्य जयपुर गये। भाग्य की प्रबलता एवं गुरुओं के आशीर्वाद से प्रथम प्रयास में ही बिना ऑर्डर से बनी बनाई 1008 श्री आदिनाथ भगवान की श्याम वर्ण 13 फुट ऊँची प्रतिमा उपलब्ध हो गई। मूर्ति को खैरवाड़ा लाया गया। जैसे ही मूर्ति खैरवाड़ा पहुँची, पूरा जैन समाज हर्षोल्लासमय हो उठा, जय-जयकार हो उठी। पूरे खैरवाड़ा में शोभायात्रा निकाली गई। 8 नवम्बर 2001 को मूर्ति स्थापना हुई। इसी बीच 1008 श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान में भोपाल से आये संगीतकार रामकुमार ने इस संदर्भित गीत की रचना की। सभी की जुबान पर यही गीत था—

"सुनो-सुनो ऐ दुनिया वालों, ऐसा इक दिन आयेगा,
खैरवाड़ा कैलाशगिरी के नाम से जाना जायेगा।"

29 अगस्त 2001 को शिलान्यास एवं 8 नवम्बर 2001 को प्रकल्प पूर्ण होकर मूर्ति स्थापना हो जाना एवं 5 से 10 दिसम्बर 2001 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हो जाना। मात्र तीन से साढ़े तीन माह में इतना बड़ा प्रकल्प पूर्ण होना किसी अतिशय से कम न था। इसलिए श्री सुकुमालनंदी महाराज द्वारा खैरवाड़ा को अतिशय क्षेत्र कैलाशगिरी खैरवाड़ा का नाम दिया गया।

वस्तुतः पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा ही इस क्षेत्र की उद्भवस्थली है, ऐसे रमणीय तीर्थ एवं प्रेरणा व सानिध्य प्रदान करने वाले गुरुओं को कोटि-कोटिशः वंदन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से नजफगढ़-दिल्ली में भरतक्षेत्र रचना का निर्माण

प्रस्तुति-श्रीमती त्रिशला जैन, नजफगढ़-दिल्ली

भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली के एक छोर पर स्थित नजफगढ़ एक उपनगर है। नजफगढ़ में 1400 के लगभग दिगम्बर जैन समाज है। यहाँ 500 वर्ष प्राचीन भगवान पार्श्वनाथ का भव्य मंदिर है। जो कि दिल्ली के दो प्राचीनतम मंदिरों में से एक है। क्षेत्र पर समय-समय पर मुनियों का आगमन होता रहता है। आचार्य श्री शांतिसागर जी, आचार्यश्री देशभूषण जी, आचार्यश्री विद्यानंद जी, आचार्यश्री वर्धमानसागर जी, आचार्यश्री कुशाग्रनंदी जी, आचार्यश्री सन्मतिसागर जी, उपाध्याय श्री आनन्दसागर जी, उपाध्याय श्री श्रुतसागर जी, गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री दृढ़मती माताजी व अन्य प्रमुख सन्तों का यहाँ प्रवास हो चुका है।

यहाँ दिगम्बर जैन पंचायत द्वारा स्थापित 12वीं कक्षा तक मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय 27 वर्षों से चल रहा है। बाहरी दिल्ली का सबसे बड़ा होम्योपैथिक औषधालय व पक्षी आहार केन्द्र भी यहाँ समाज द्वारा स्थापित है। मंदिर से आधा किमी. दूर पर समाज की 9 एकड़ भूमि है। जिस पर पूज्यनीय गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से भरतक्षेत्र एवं भगवान ऋषभदेव धर्मस्थल की रचना का निर्माण कार्य तीव्रगति से चल रहा है।

क्षेत्र में स्थापित भगवान ऋषभदेव की पद्मासन सवा 19 फुट उत्तुंग लाल पाषाण की भव्य प्रतिमा का निर्माण जयपुर के विश्वप्रसिद्ध शिल्पकार श्री सूरज नारायण नाठा ने किया है। प्रतिमा का निर्माण श्री विजय कुमार जैन सुपुत्र स्वर्गीय लाला हंसराज जी जैन, अतुल इलैक्ट्रिक-नजफगढ़ वालों के सौजन्य से हुआ है।

भरतक्षेत्र का भूमिपूजन गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में श्री सुरेशचंद जैन सुपुत्र स्वर्गीय विमल प्रसाद जैन जी के करकमलों द्वारा सन् 1998 में सम्पन्न हुआ, ऋषभदेव स्थल का शिलान्यास 9 अगस्त सन् 2000 को श्री सुभाषचंद जी जैन सुपुत्र श्री स्वर्गीय लाला मुरारीलाल जैन के करकमलों द्वारा हुआ। सर्वप्रथम सर्वतोभद्र ईंट प्रसिद्ध उद्योगपति लाला उमेश चंद मुखिया जी के करकमलों द्वारा रखी गई।

वास्तव में पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के निर्देशन में यह विश्व में एक अनूठी रचना बन रही है। यह एक दर्शनीय एवं पूज्यनीय धर्मस्थल के रूप में है, जो कि पंचमकाल के जैन श्रावकों का अनुपम तीर्थ होगा। योजना के अन्तर्गत 40000 वर्ग गज की इस भूमि में इस क्षेत्र का निर्माण कार्य काफी आगे बढ़ चुका है। 31 फुट ऊँचे विशाल सभा भवन के शीर्ष पर जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर 1008 भगवान ऋषभदेव की सवा 19 फुट उत्तुंग पद्मासन लाल पाषाण की भव्य एवं मनोहारी प्रतिमा स्थापित हो चुकी है। 51 सीढ़ी चढ़कर भक्तजन अपने आराध्य देव के दर्शन करते हैं। दूसरी तरफ दो पर्वतों का निर्माण कार्य लगभग पूरा होनें को है। एक हिमवान पर्वत व दूसरा विजयार्ध पर्वत। हिमवान पर्वत पर 11 जिनमंदिर और विजयार्ध पर्वत पर 9 जिनमंदिर शिखरबंद बन चुके हैं। 11 मंदिरों के बीच में पद्म सरोवर और पद्म सरोवर में कमल के फूल पर श्री देवी का मंदिर भी बन रहा है।

क्षेत्र के मुख्य द्वार व मंदिरों के बीच की जगह पर एक भव्य मानस्तंभ का निर्माण प्रसिद्ध उद्योगपति लाला श्री उमेशचंद मुखिया जी द्वारा करा दिया गया है। चक्रवर्तियों का मान मर्दन करने वाले वृषभगिरि पर्वत का दृश्य भी यहाँ से नजर आता है। ये सारी रचना चारों तरफ से 25 फीट चौड़े, 1100 फुट परिधि वाले लवण समुद्र के घेरे में है। ऐसा प्रतीत होता है कि समुद्र के बीच कोई द्वीप उभरकर आया है। यात्री विद्युत् चालित नाव से लवण-समुद्र के रास्ते सारे तीर्थ की परिक्रमा कर सकते हैं। क्षेत्र में त्यागी भवन, पुस्तकालय, ध्यान केन्द्र, चिकित्सालय, भोजनालय व विशाल उद्यान का कार्य प्रगति पर है। जैनधर्म के मूल सिद्धान्त अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद, स्याद्वाद आदि का युगों-युगों तक प्रचार रहेगा। आगे आने वाले समय में इस अनुपम कृति के लिए भक्तजन पूज्य आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी को युगों-युगों तक याद करेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4853

तीर्थंकर पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ है विकास के क्रम में

लेखिका-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैन परम्परा में अत्यन्त प्राचीन काल से "काकन्दी" (गोरखपुर-उ.प्र. के निकट अवस्थित) का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। यहाँ भगवान पुष्पदंत के गर्भ-जन्म कल्याणक तो हुए ही हैं तथा इसी नगर के पुष्पक वन में उनका दीक्षा कल्याणक भी हुआ था पुनः कभी किसी काल में यह पुष्पक वन ही "ककुभ" नाम से कहलाने लगा और एक अलग तीर्थधाम बन गया। धीरे-धीरे काल के थपेड़ों ने दोनों ही तीर्थों को खण्डहरों के रूप में परिवर्तित कर दिया जो प्राचीन संस्कृति को अपनी मूक वाणी में बतला रहे हैं।

जयरामा माता और सुग्रीव पिता के यहाँ काकन्दी नगरी में मगशिर शुक्ला प्रतिपदा को मूल नक्षत्र में भगवान पुष्पदन्त का जन्म हुआ। इन्द्रों ने वहाँ पन्द्रह माह तक रत्नवृष्टि की और उनका गर्भ-जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया था।

पुष्पक वन में दीक्षा के पश्चात् भी वर्णन आता है कि चार वर्षों के भ्रमण के पश्चात् वे पुनः विहार करते हुए काकन्दी के पुष्पक वन में पधारे थे और वहीं उन्हें "नागवृक्ष" के नीचे कार्तिक शुक्ला द्वितीया को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी अतः काकन्दी उनके चार कल्याणकों से परम पावन नगरी बन गई है। केवलज्ञान उत्पन्न होने पर इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने समवसरण की रचना की तब भगवान का प्रथम कल्याणकारी दिव्य उपदेश यहीं हुआ था। ककुभ ग्राम को भी वर्तमान में "कहाऊँ" नाम से जाना जाता है, आज काकन्दी यहाँ से 16 किमी. दूर है।

कल्याणक भूमि होने के साथ-साथ यहाँ का एक प्राचीन इतिहास भी ग्रंथों में आता है कि यह महापुरुषों की उपसर्ग एवं निर्वाणभूमि भी है। भगवती आराधना (गाथा-1559) और आराधना कथा कोष (कथा 67) के आधार पर "भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ" भाग-1 में काकन्दी नगरी के परिचय में अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख करते हुए यहाँ से संबंधित अभयघोष मुनिराज का कथानक भी प्रस्तुत किया है। जो निम्न प्रकार है—

अभयघोष काकन्दी के राजा थे। उन्होंने एक बार एक कछुए की चारों टाँगे तलवार से काट दीं जिससे वह तड़प-तड़प कर मर गया और मरकर उनका ही पुत्र हो गया। कुछ दिनों बाद अभयघोष ने चन्द्रग्रहण देखकर मुनि दीक्षा ले ली। एक बार वे काकन्दी के उद्यान में तपस्या में लीन थे।

उनका पुत्र चंडवेग भ्रमण करते हुए वहाँ से निकला। जैसे ही उसने मुनि अभयघोष को देखा उसके मन में पूर्वजन्म संबंधी संस्कारों के कारण क्रोध की अग्नि भड़क उठी। उसने अपने वैर का बदला चुकाने के लिए यह उपयुक्त अवसर समझा क्योंकि वह जानता था कि ध्यान के समय मुनिराज किसी अत्याचार का प्रतीकार तो करेंगे नहीं। उसने तीक्ष्ण धार वाले शस्त्रों से निर्दयता पूर्वक उनके हाथ-पैर आदि अंगों को काटना प्रारंभ कर दिया। ध्यानलीन मुनिराज आत्मनिष्ठ थे, इस उपसर्ग को उन्होंने तीव्र वैराग्य भाव से सहन किया और धर्मध्यान से शुक्लध्यान अवस्था में आकर चार घातिया कर्मों को नष्ट कर कैवल्य अवस्था प्राप्त कर ली। अन्तकृत्केवली बनकर अभयघोष मुनिराज ने काकन्दी के उद्यान से मोक्षधाम को प्राप्त किया इसलिए यह नगरी "सिद्धक्षेत्र" के रूप में भी जानी जाती है।

वर्तमान में वहाँ खेतों के बीच में एक दिगम्बर जैन मंदिर बना हुआ है। लोगों का विश्वास है कि भगवान पुष्पदंत का जन्म यहीं हुआ था। तीर्थंकर जन्मभूमि विकास के क्रम में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत गठित भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी के द्वारा 20 नवम्बर 2005 को परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से काकन्दी तीर्थ पर कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन के नेतृत्व में दानवीर श्रेष्ठी श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स'-श्रीमती आशा जैन सपरिवार-दिल्ली के सौजन्य से भगवान पुष्पदंतनाथ मंदिर का शिलान्यास सम्पन्न हुआ है। शीघ्र ही यह तीर्थ भी विकसित स्वरूप को प्राप्त कर जिनशासन का दैदीप्यमान सूर्य बनकर अपनी दिव्यप्रभा से सभी को आलोकित करेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का गृहस्थाश्रम का परिवार वृक्ष ॥

टिकैतनगर (जि.-बाराबंकी, उ.प्र.) में अग्रवाल दिगम्बर जैन जातीय गोयल गोत्रीय परिवार में जन्मीं पूज्य ज्ञानमती माताजी के परिवार की सात पीढ़ियों के साथ उनकी माँ की तेरह सन्तानों का परिवार वृक्ष

फरवरी - सन् - 2006

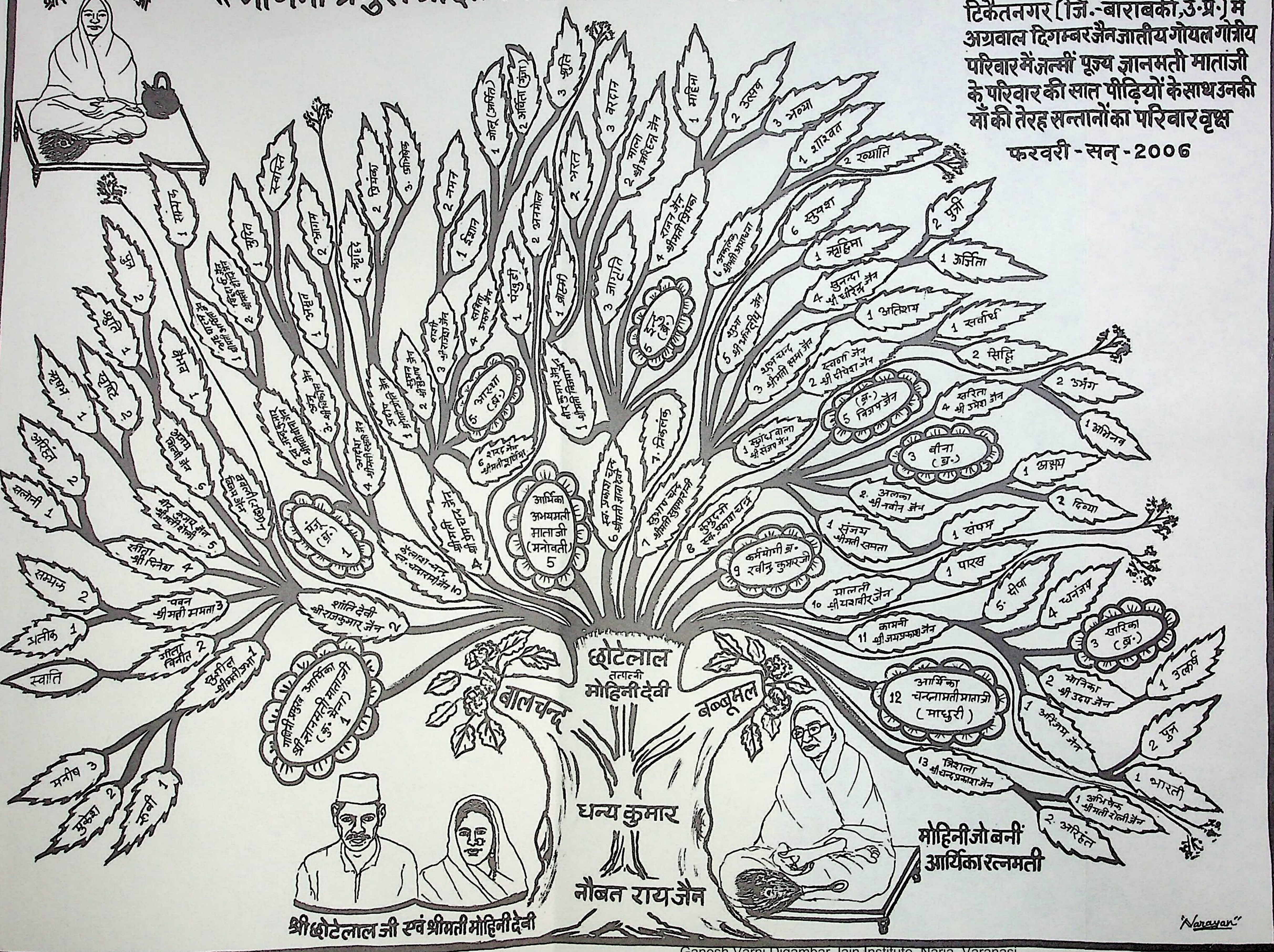

माता मोहिनी एवं पिता छोटेलाल जी की तेरह सन्तानों की सन्तान परम्परा

1- कु. मैना - पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी (बाल ब्रह्मचारिणी)

2- श्रीमती शांति देवी - श्री राजकुमार जैन (पति) 4 पुत्र, 4 पुत्रवधू, 3 पुत्री, 3 दामाद, 6 पौत्र, 3 पौत्री 2 नाती, 2 नातिन = कुल सदस्य संख्या - 29

3- श्री कैलाश चन्द्र जैन - स्व. श्रीमती चन्दारानी जैन (पत्नी) 2 पुत्र, 2 पुत्रवधू, 2 पुत्री, 1 दामाद, 4 पौत्र, 2 पौत्रवधू 1 प्रपौत्र, 1 नाती, 1 नातिन = कुल सदस्य संख्या - 18

4- सौ. श्रीमती देवी - श्री प्रेमचन्द जैन (पति) 2 पुत्र, 2 पुत्रवधू, 4 पुत्री, 3 दामाद, 2 पौत्र, 3 पौत्री 3 नाती, 2 नातिन = कुल सदस्य संख्या - 23

5- कु. मनोवती - पूज्य आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी (बाल ब्रह्मचारिणी)

6- स्व. श्री प्रकाश चन्द जैन - श्रीमती ज्ञानारानी जैन (पत्नी) 4 पुत्र, 3 पुत्रवधू, 3 पुत्री, 1 दामाद, 4 पौत्र, 4 पौत्री कुल सदस्य संख्या - 21

7- श्री सुभाष चन्द जैन - श्रीमती सुषमारानी जैन (पत्नी) 2 पुत्र, 1 पुत्रवधू, 4 पुत्री, 4 दामाद, 1 पौत्र, 1 नाती 4 नातिन = कुल सदस्य संख्या = 19

8- श्रीमती कुमुदनी देवी - स्व. श्री प्रकाश चन्द जैन (पति) 2 पुत्र, 1 पुत्रवधू, 3 पुत्री, 2 दामाद, 1 पौत्र, 3 नाती 1 नातिन = कुल सदस्य संख्या = 15

9- श्री रवीन्द्र कुमार जैन - बाल ब्रह्मचारी

10- श्रीमती मालती देवी - श्री यशवीर जैन (पति) 1 पुत्र = कुल सदस्य संख्या - 3

11- श्रीमती कामिनी देवी - श्री जय प्रकाश जैन (पति) 2 पुत्र, 3 पुत्री, 1 दामाद, 1 पौत्र, 1 पौत्री, 1 नाती कुल सदस्य संख्या = 11

12- कु. माधुरी - प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी (बाल ब्रह्मचारिणी)

13- श्रीमती त्रिशला जैन - श्री चन्द्र प्रकाश जैन (पति) 2 पुत्र, 1 पुत्रवधू = कुल सदस्य संख्या - 5

1+29+18+23+1+21+19+15+1+3+11+1+5

कुल योग - 148

फरवरी - सन् - 2006

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Sarayu Trust/eGangotri

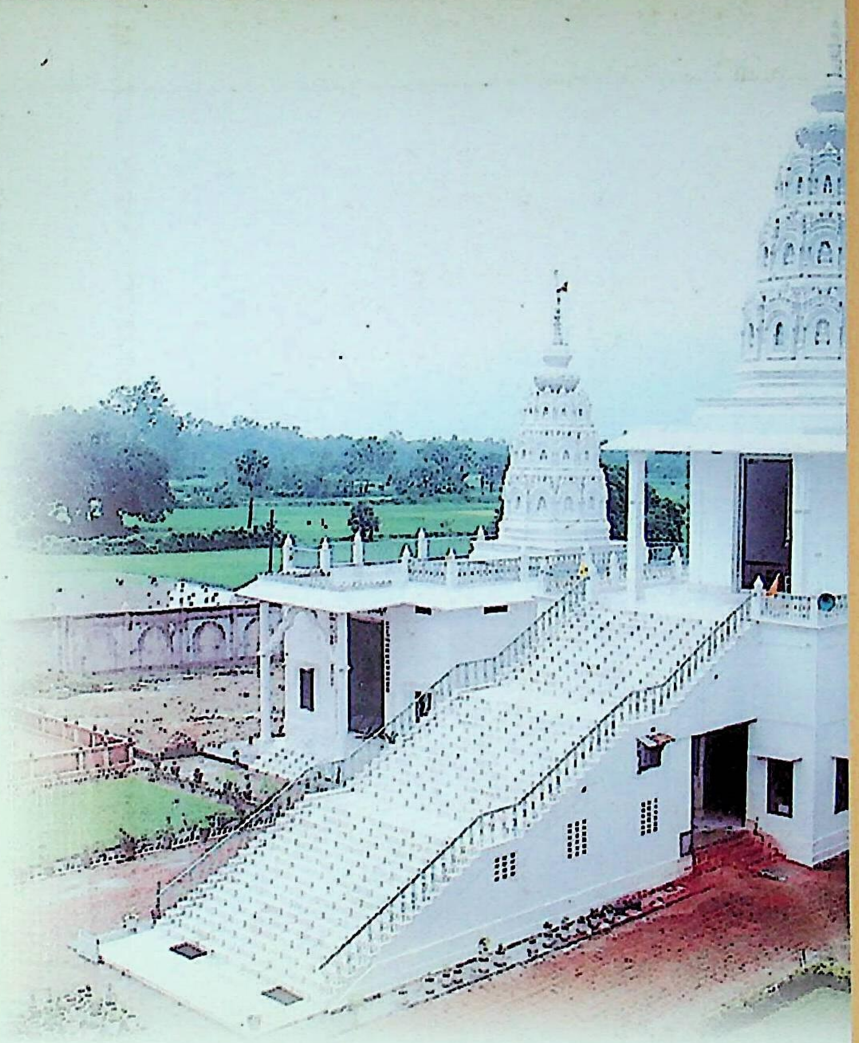

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डल
नवनिर्मित 'नंद्यावर्त महल' तीर्थ

Ganini Gyanmati Mataji : At a Glance

Birthplace : Tikaitnagar (Barabanki) U.P.

Date of Birth : 22nd Oct. 1934 (Sharad Poornima)

Childhood Name : Km. Maina

Parents : Smt. Mohini Devi & Shri Chhoteylal Jain

Vow of Celibacy & Renunciation of Home : In 1952 by Acharyaratna Shri Deshbhushan Ji Maharaj at Barabanki

Kshullika Deeksha : On Chaitra Krishna Ekam of 1953 at Mahavirji (Raj.)

Aryika Deeksha : On Vaishakh Krishna 2 of 1956 at Madhorajpura (Raj.) By Acharya Shri Veersagar Ji Maharaj, the first disciple Pattacharya of Acharya Shri Shantisagar Ji Maharaj.

Literary Work : Writer of above 200 Scriptures including Hindi Translation/Sanskrit Teekas of Ashtasahasri, Samaysar, Niyamsar, Moolachar, Katantra-Vyakaran, Shatkhandagam etc. Recipient of the honorary degree of D.Litt. in 1995 by Avadh University (Faizabad).

Inspiration for the Development of Tirths : Jamboodweep at Hastinapur, Eternal Tirth Ayodhya, Deeksha Tirth at Prayag (Allahabad), Nandyavarta Mahal Tirth at Lord Mahavir Birthplace-Kundalpur (Nalanda) & other Tirthankar Birthplaces etc. have been developed. 108 ft. high idol of Lord Rishabhdev at Mangitungi (Maha.) is in the process of development.

Academic Inspiration : International Seminar on Jain Mathematics & Cosmology, Establishment of Jain Chair at Avadh University-Faizabad, National Vice-Chancellors' Conference, National Seminar on 'Antiquity of Jainism', Judges' conference and a number of other National-International seminars.

Inspiration for various Chariots : Jamboodweep Gyan Jyoti (1982), Samavsaran Shrivihar (1998), Mahavir Jyoti (2003) travelled throughout the country for the dissemination of Jain Principles by her inspiration.

May Pujya Mataji live long with initiating new ideas into the masses.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती
वैशाख कृ. 2, दिनाँक 15 अप्रैल 2006, शनिवार